(13)

वर्ष ४० अक ३८ १३ जनवरी से १६ जनवरी २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ पा० क० १५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वप के १०० डालर

ईश्वर भक्ति की प्रेरणाओं से भरपूर भजन-सन्ध्या

आर्यजनता को ईश्वर भक्ति के रग मे रगने के लिए पश्चिमी दिल्ली के कर्मठ युवा आर्य कार्यकर्ताओ द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य के कुशल नेतृत्व प्ररणा और मार्गदर्शन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य के सगीतमय सचालन को देखकर ऐसा लगने लगा जैसे हर उपस्थित व्यक्ति ईश्वर की भक्ति मे भाव विभोर हो गया है। तनाव से मुक्ति की ओर ले जाने वाला यह भव्य दृश्य उस भजन सन्ध्या का था जिसक आयोजन ५ जनवरी २००२ को महानुभाव थे तो दूसरी तरफ आर्यसमाजो मे भजन प्रस्तुत करते करते अभ्यस्त हुए ऐसे कलाकार थे जो समय के साथ साथ सगीतरत्न बनने की ओर अग्रसर है इनमे प्रमुख थे सचालक श्री नरेन्द्र आर्य बहन शशिप्रभा आर्या तथा उनकी १० वर्षीय आकाक्षा पाती। सगीताचार्य श्री अरविन्द जी क साथ उनकी पूरी मण्डली ने सगीत और भजन की उत्तम व्यवस्था से श्रोताओ का मन मोह लिया

भजन सध्या के आरम्भिक दौर मे ही सत्यार्थ प्रकाश क प्रथम स्मुल्लास पर आधारित भजन स्वय श्री आर्य ने सग्म करत हुए कहा

ऐसी कमाई कर लो
जो सग जा सके।
मुश्किल पडे तो राह मे
कुछ काम आ सके।
चिन्ता की कोई बात नहीं
चिन्तन से काम लो।
सम्भव है पथिक आपके
बधन छुडा सके
ऐसी कमाई

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री बहन शशिप्रभा आर्या ने इश्वर का द्वार खटकान की लय मे प्रस्तुत करके आर्यजनता इतनी मग्न हो गइ कि भजन क बाद एक आर आर क स्वर गूजन लग

कु० आकाक्षा

सचालक नरेन्द्र आर्य ने **ओम बोल मेरी रसना घडी घडी** के भजन म एक उत्तम सकीतन प्रस्तुत करके ईश्वर भक्ति की लहर को पराकाष्ठा पर प दिया लहर क बाद एक और

भजन सन्ध्या मे मन मोहक भजन प्रस्तुत करते हुए श्री अरविन्द डॉ० साधना श्रीमती शशिप्रभा आर्या श्री नरेन्द्र आर्य बेटी आकाक्षा। भजनो का आनन्द लेते राज्य सभा सदस्य श्री बी०पी० सिघल सार्वदेशिक न्याय सभा क अध्यक्ष श्री रामफल बसल श्री महाशय धर्मपाल श्री विमल वधावन श्री राजीव सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा

सायकालीन शीत वातावरण मे राजौरी गार्डन क्षेत्र क गिल हाउस म आयाजित किया गया था।

राज्य सभा के सदस्य तथा पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री बी०पी० सिघल तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थ सार्वदशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति एव समाजसेवी श्री महाशय धमपाल आदि भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

अन्य समस्त कार्यक्रमो से भिन्न यह कार्यक्रम वाणी का जादू प्रस्तुत कर रहा था जिसमे एक तरफ सगीत विशेषज्ञ प्रस्तुत किया।

ओम का सिमरन किया करो।
प्रभु के सहारे जिया करो।।
वो दुनिया का मालिक है।
नाम उसी का लिया करो।।

ओ३म जाप की प्रेरणा के बाद डा० साधना परमाल न जीवात्मा को अभिमान से दूर रहकर ईश्वर से मार्गदर्शन की प्रेरणा दते हुए कहा

पग पग मुझे गिराता आया
ये मेरा अभिमान
जीवन पथ पर भटक रहा हू
राह दिखा भगवान
मुझको राह दिखा

सगीताचाय श्री अरविद ने आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यो का भावनाओ का पारम्परिक सगीत शैली मे एक मन भावन लय मे प्रस्तुत करते हुए कहा

खोलो दया का द्वार प्रभु जी
अब खोलो दया का द्वार
कई जन्मो से भटक रहा हू
मत करना इकार।।
प्रभु जी

बहन शशिप्रभा आर्या तथा उनके पति श्री जगदीश आर्य ने अपने परिवार को ही ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलाने का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। जब उनकी लगभग १० वर्षीय पोती आकाक्षा ने दो मधुर भजनो के द्वारा समूची आर्यजनता का मन मोह लिया। **अखिया प्रभु दर्शन की प्यासी** भजन को मधुर लहराता भजन बहन शशिप्रभा न प्रस्तुत किया जिसक बीच बीच मे दयानन्द बा ऋषि दयानन्द की जय जयकार स पडाल गूज उठा।

जिसके पुण्य प्रताप से
जाग उठा ससार
बोलो ऋषि दयानद की
सब मिलकर जय जयकार
जयकारा मै बी ला लया
वेदा वाले दा।
जयकारा मै बी ला लया
ऋषि दयानद दा।
घोर अन्धेरा जग मे छाया
नजर नहीं कुछ आता था।
मानव मानव की ठोकर से
जब ठुकराया जाता था।।

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

सम्पादक

*** तमसो मा ज्योतिर्गमय ***

दिल्लीस्थ - सार्वदेशिकार्य-प्रतिनिधिसभायाः सर्वसम्मत-निर्वाचन-साफल्ये शुभकामनाभिनन्दनम्

कालादार्य समाजिन समभवश्चिन्तातुरा मानसे,
वेदोद्धारण सत्पथोऽस्ति पिहितस्तस्यर्षिवर्यस्य हा।
आसन् सर्व इहासुभिर्विरहिता आर्या निराशाश्रया
लक्ष्यन्ते स्म न वे क्वचिदिध पुरतश्चाशारवे रश्मय ।।१।।

भावार्थ – चिरकाल स समस्त आर्यसमाजी अत्यन्त चिन्तातुर हो गए थे कि उन महर्षि दयानन्द सरस्वती क वद प्रचार का सन्मार्ग भी अवरुद्ध हो गया है ओर सब निष्प्राण और निराश्रय से होने लगे तथा कही पर भी आशा रवि की रश्मिया भी दिखाई नही पड रही है।। १।।

आर्याणा च शिरोमणि किल सभा जाता विवादास्पदा
न्यायागार शरण्यमेव सुतरा जग्मु सदरया इमे।
स्वीया न्यायसभा विहाय कलह कुर्वन्त एते स्थिता
रक्षेत् को यदि रक्षणार्थ सुवृति सस्य स्वय भक्षयेत्।। २।।

भावार्थ – आर्यो की शिरोमणि–सभा विवादा का थान बन चुकी थी आर इसके सदस्य न्यायालय की शरण मे पहुच गए। य न्याय सभा की उपक्षा करके परस्पर कलह करने लगे। भला विचारिए ता सही कि खेत की रक्षा के लिए लगाई गई वाड यदि फसल को स्वय खाने लग तब उसकी रक्षा कौन करगा ?।। २।।

नो कश्चित समुपाय एव विदुषा निष्पक्षता भाजिनाम
आगान्नैत्र पथ तदा समभवश्चिन्ताकुला सर्वत ।
नैराश्ये परमेश्वर च शरण सम्प्रार्थयन् श्रद्धया,
श्रीमद्रामफलाभिधो हि विधिना न्यायाधिप प्रेषित ।। ३।।

भावार्थ – निष्पक्ष विद्वाना को कोई समुचित उपाय ग मा नही सूझ रहा था तब सभी चिन्तातुर हो गए एसी निराशा की स्थिति मे आर्यो ने सर्वशरण्य भगवान स प्रार्थना की तब दव योग स श्री रामफल जी बसल एतदथ न्यायाधीश क रूप म प्राप्त हुए।। ३।।

एव कर्मठ धीर वीर पुरुष ह्युत्साह वाराम्निधिम,
आर्य सघटने पटु सुचरित श्री देवरत्न वरम।
चित्वा हर्षमुपाश्रयन्नृषि दयानन्दरय भक्त प्रियम्,
अध्यक्ष किल सर्वसम्मत विधौ निर्वाचित सव्यधु ।। ४।।

भावार्थ – तब उत्साह के समुद्र कर्मण्य धीर ओर वीर आर्यो क सगठन करने मे कुशल चरित्रवान महर्षि दयानन्द के भक्त श्री केप्टन दवरत्न जी का चयन करक सभी हर्षित हुए और सर्वसम्मति से इन्हे अध्यक्ष पद पर निवाचित किया गया।। ४।।

सोऽय कैप्टिन देवरत्न विमलाचारोऽप्युपाध्यक्षता
भार स्वे विमले वधावन बुधे वेदव्रते शर्मणि।
दायित्व खलु मन्त्रिणो ह्युपपदे वाचोनिधि चार्पयत
धीकोश जगदीश्वर शुभमवेदेतत् प्रभु प्रार्थये।। ५।।

भावार्थ – विमल आचारवान श्री कैप्टन महोदय ने उपाध्यक्षता का भार अधिवक्ता श्री विमल वधावन तथा मन्त्री पद का गुरुतर दायित्व श्री वेदव्रत शर्मा को सौपा। उपमन्त्री के रूप मे श्री वाचोनिधि का चयन किया गया तथा कोषाध्यक्ष पद पर श्री जगदीश जी को निवाचित किया गया।। ५।।

सौजन्यस्य निधि सदार्यविदुषामाम्नाय ससेविनाम्,
उत्साह सुसमेधयन् भुवि पुररकार प्रदामुत्तमाम्।
सत्सम्मान परम्परामभिनवा भव्या च सचालयन्,
आचार्यार्चित भद्रसेन तनयो जीव्याच् शत शारदम्।। ६।।

भावार्थ – शुभकामना है कि सौजन्य एव नम्रता की प्रतिमूर्ति वेद वेदाङ्ग ज्ञाता उत्तम आर्य विद्वानो के समुत्साह के सवर्धन के लिए सम्मानप्रद पुरस्कार प्रदान करने की अभिनव भव्य परम्परा का सचालन करने वाले तथा वेद एव ऋषि भक्त आचार्य प्रवर श्री भद्रसेन जी के सुपुत्र शरद शत चिरञ्जीव होवे।

अध्यक्षीय-संकल्प

नैवाऽसत्ये नवाऽन्याये, नानाचारेऽपि वर्त्मनि।
कैप्टिन देवरत्नस्य न मे सन्धिर्भविष्यति।। ७।।

भावार्थ – मुझ कैप्टन देवरत्न का असत्य अन्याय एव अनाचार क मार्ग से कभी समझौता नही होगा।। ७।।

सार्वदेश सभाध्यक्ष पदे सम्पूर्ण निष्ठया।
सर्वस्वमर्पयिष्यामि सेवमान श्रुते पथम्।। ८।।

भावार्थ – मे वैदिक पथ का अनुसरण करते हुए सार्वदेशिक सभा क अध्यक्ष पद पर सम्पूण निष्ठा से कर्तव्य पालन करते हुए सवस्व अर्पित करूगा।। ८।।

प्रतिजाने सदेवादहम, आर्य सघटनोन्नतौ।
निष्क्रियो न प्रमादी वाऽलस सेत्स्यामि सुव्रत ।। ६।।

भावार्थ – मे प्रतिज्ञा करता हू कि सदेव उत्तमव्रत धारण कर आर्यो के सगठन की उन्नति मे कदापि निष्क्रिय प्रमादी वा आलसी सिद्ध नही होऊगा।। ६।।

न चैवमाचरेय चेत्, सिद्ध स्या वा न तादृश ।।
असन्दिग्ध तदाऽहन्तु, कर्त्तव्य पदवञ्चित ।। १०।।

भावार्थ – कदाचिद् मै उक्त ऐसे आचरण का पालन करने मे सिद्ध न हाऊ तो असन्दिग्ध रूप से आर्य जनता को अधिकार दूगा कि वह मुझे पद से वञ्चित कर दे।

नाद्यावधि प्रधानेन, सभाया अपि केनचित्।
सुरपष्ट सत्यनिष्ठेन, घोषणैव विधा कृता।।
कैप्टिन देवरत्नेन प्रतिज्ञात यथा तथा।
चिर जीव्यादय लोके विशुद्धानन्ददायक ।।
मन्त्री वेदव्रत शर्मा श्री रामफल बसल।
सर्वेऽप्यन्ये सदस्या स्यु सदा साहाय्यकारिण ।।

भावार्थ – अद्यावधि सभा के किसी सत्यनिष्ठ प्रधान न इतनी स्पष्ट घोषणा नही की। ऐसा अनूठा सकल्प करने वाले कैप्टन श्री देवरत्न आर्य जनता को विशुद्ध आनन्द ओर उल्लास का वितरण करते हुए चिरजीवी हो। श्री रामफल बसल जी मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा अन्य सभी महाजन सदस्य सभा के सहायक कर्तव्यनिष्ठ सिद्ध हो।

– आर्यरत्नम् आचार्य डॉ० विशुद्धानन्द मिश्र ,
(वेदार्थ कल्पद्रुमप्रणेता)
वेद मन्दिरम्, बदायू (उ०प्र०)

स्वामी धर्मानन्द जी से
सत्यान्वेषण का आग्रह

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने कुछ लोगो द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर गठित बोगस गुट क दुष्प्रचार और विघटनवादी प्रचार अभियान में स्वामी धर्मानन्द जी का नाम घसीटने और उनके नाम का दुरुपयोग करने के विरुद्ध उन्हे अवगत कराते हुए एक पत्र लिखा है उस पत्र को अविकल रूप से यहा प्रकाशित किया जा रहा है। – सम्पादक

श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
सस्थापक आर्ष गुरुकुल आमसेना
नवापुरा उडीसा

सादर नमस्ते ।

आशा है आप स्वस्थ एव आनन्दपूर्वक होगे। आपका आशीर्वाद प्राप्त होने के पश्चात् मैंने १५ दिसम्बर को आपकी सेवा मे अपने ह्रदय की व्यथा लिखकर भेजी थी प्रत्युत्तर मे आपके आशीर्वाद की प्रतीक्षा थी जो अभी तक प्राप्त नहीं होने से आज पुन नई वेदना के साथ नई आशा को लेकर अपनी वाणी को आप तक पहुचाना अपना कर्त्तव्य समझता हू, आप इसे यथावत लेगे ऐसा विश्वास है।

प्रो० कैलाशनाथ सिह द्वारा प्रकाशित आर्यमित्र' (प्रकाशन की वैधानिकता सदिग्ध है) दिनाक २५ नवम्बर २ दिसम्बर २००१ मुझे कल प्राप्त हुआ पढकर कष्ट हुआ कि ऐसे तथाकथित आर्यनेता लोगो ने आर्यसमाज को रसातल मे पहुचाने की क्यो ठान रखी है। उसके पृष्ठ ३ पर जनमानस को सन्देश' शीर्षक मे सन्देशवाहक स्वय प्रो० कैलाशनाथ सिह स्वामी अग्निवेश तथा प्रो० शेरसिह दीपावली के अवसर पर आर्यजनता को सन्देश दे रहे हैं कि रमजान का पवित्र त्योहार हमे पवित्रता की ओर ले जाएगा और उसके बाद भगवान ईसा मसीह का जन्मदिन क्रिसमस हम सबको करुणा और शान्ति का सन्देश देगा। इसी बीच गुरुपर्व हमे गुरु नानकदेव और गुरु गोविन्द सिह जी के उपदेशो से तरगित करेगा। ऐसा सन्देश आर्यसमाज को कहा ले जाएगा ? विचारणीय गम्भीर चिन्तन का विषय है। इससे उपर्युक्त महानुभावो की भावनाए स्पष्ट प्रदर्शित हो रही हैं क्या अभी भी समय नहीं आया है कि ऐसे तत्वो से आर्यसमाज सावधान हो जाए।

राजनीति की चकाचौंध में रहने वाले वोटो की भ्रष्ट राजनीति में लिप्त स्वार्थ के वशीभूत लोग जिन्हे दल बदल से भी राहत नहीं मिली हो और सिकस्त ही सिकस्त हाथ लगी हो एक जनपद के एक क्षेत्र की जनता तक ने जिसे स्वीकार न किया हो जमानत बचाने तक के भी लाले पडे हो ऐसे सिद्धान्तविहीन उद्देश्यहीन लोग अपनी पैठ आर्यसमाज मे जमाना चाहते हैं और उसके लिए माध्यम बना रहे हैं आर्यजगत् के स्वामी सन्यासियो को भोली भाली आर्य जनता को। इसका भी प्रमाण आर्यमित्र' के उसी अक के पृष्ठ ३ पर अकित आशीर्वाद के वरदहस्त शीर्षक से प्रमाणित है जिसमे ३४ स्वामी लोगो के नाम उद्धृत हैं जिन्होंने प्रो० कैलाशनाथ सिह को आशीर्वाद दिए हैं। इससे उनका एकमात्र उद्देश्य प्रदर्शित हो रहा है कि उन्हे उक्त स्वामियो के द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त हो गए हैं जिनके आधार पर वह मनमानी तरीके से आर्यसमाज की स्थाई-अस्थाई सम्पत्ति उसके शिक्षण सस्थाओ गुरुकुलो का चीरहरण कर सकते हैं अर्थात् अपने उद्देश्यो की पूर्ति एन केन प्रकारेण करने मे वह स्वतन्त्र हैं।

स्वामी सन्यासी विद्वान आर्यसमाज की धरोहर हैं इनका दुरुपयोग असह्य है। अत ऐसे लोगो से हाथ जोडकर प्रार्थना है कि आर्यसमाज के सम्मान को हाथ लगाने का दुस्साहस न करे।

आर्यसमाज मे ऐसे स्वार्थी राजनैतिक गिनती के कुछेक लोगों का हौसला पहले प्रान्त से प्रारम्भ हुआ और वहा असफलता के आसार नजर आने पर केन्द्र पर कब्जा करने की प्रवृति के तहत न्यायालयो के दरवाजे अन्त तक खटखटाते रहे। वहा भी सत्य की विजय हुई। सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन माननीय न्यायालय के आदेश निर्देश मे सम्पन्न हुए। जिनको प्रतिनिधित्व का अधिकार प्रान्तीय सभाओं ने नहीं दिया वे सब सडक पर इकटठे हो गए। ऐसे विक्षुब्ध लोग अनुशासनहीन होकर राजनैतिक असफल लोगो की भ्रान्तियो के शिकार हो गए और उसका लाभ उन महाशयो ने उठाया और समानान्तर सार्वदेशिक सभा के गठन करने तक का दुस्साहस करने से बाज नहीं आए।

सार्वदेशिक सभा एक सगठनात्मक सस्था है जो कि आर्य जगत के आर्यसमाजो की सर्वश्रेष्ठ सस्था है इसका उत्तरदायित्व विशाल है और आज वर्तमान परिपेक्ष्य मे आर्यसमाज को विशेष भूमिका निभानी है। आर्यसमाज समझौतावादी सम्प्रदाय व राजनैतिक सस्था नहीं है जो कि मुसलमान ईसाई सिक्ख सभी सम्प्रदायो से समझौता करते फिरे। ऐसे समझौतावादी प्रवृत्ति के साम्यवादी विचारधारा के लोगो से आर्यसमाज एव आर्यसमाजियो को सावधान रहने की नितान्त आवश्यकता है।

कहने का तात्पर्य है कि ऐसे गलत अवैधानिक नेतृत्व मे आप सहभागी बने और आपकी अस्वस्थता का लोग लाभ उठावे तो आर्यसमाज का अनर्थ हो जाएगा। अत आपसे अनुरोध है कि आप कैलाशनाथ सिह एण्ड क० के चक्रव्यूह से अपने को पृथक रखे तथा सार्वदेशिक सभा को कैप्टन देवरत्न आर्य का सही नेतृत्व प्रदान हुआ है उन्हे आपका आशीर्वाद प्राप्त है ही पुन अपने आशीर्वाद से सिंचित करे – निश्चित रूप से ऐसा करने से आर्यसमाज सगठित होगा और सभी तरफ से आर्यसमाज की जय का जयघोष होगा।

भवदीय
आनन्द कुमार आर्य

सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन

आर्यसमाज करौलबाग के वार्षिकोत्सव के राष्ट्रीय सुरक्षा सम्मेलन मे सुरक्षा सम्बन्धी विषयो के विशेषज्ञो तथा आर्यजगत के विशिष्ट नेताओ ने अपने विचार प्रकट किए। आर्य समाज के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने

सुरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल।

वय तुभ्य बलिहत स्याम मत्र का उदघोष करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए हसते हसते प्राणो को न्योछावर करने का सकल्प करवाया। उन्होने कहा राष्ट्रवाद तो तलवार की धार पर चलने से चमकता है तभी एकता व अखण्डता की रक्षा हो पाती है। तभी एकता व अखण्डता की रक्षा हो पाती है। राष्ट्रवाद के पुरोधा समझोते की नौकाओ पर सवार न होकर तलवार की धार पर चलने का साहस जुटाये तभी भारत की एकता अखण्डता व आजादी की सुरक्षा की गारण्टी मिलेगी।

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख श्री इन्द्रेश जी ने धारा ३७० की समाप्ति आतकवादियो के प्रशिक्षण शिविरो को नष्ट करना व पाकिस्तान का विघटन तथा इसके लिए आवश्यकता होने पर युद्ध करना तथा कश्मीर राज्य पुनर्गठन करके बीमारी को सीमित करते हुए उसका इलाज करना। उन्होने बताया १९४७ मे जम्मू व कशमीर का क्षेत्रफल २२२२३६ वर्ग कि०मी० था। पाकिस्तान ने ७८११४ वर्ग कि मी० पर कब्जा जमाया तथा चीन ने ४२७३५ वर्ग किलोमीटर पर वर्तमान मे भारत के पास १०१३८७ वर्ग किलोमीटर शेष बचा है। १५८५३ वर्ग किलोमीटर कशमीर घाटी २६२६३ वर्ग किलोमीटर जम्मु तथा ५९२४१ वर्ग किलोमीटर लद्दाख का क्षेत्रफल है।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने वेदो मे राष्ट्र सुरक्षा का वर्णन करते हुए कई मत्र उधत किए। हिन्दुओ के पूर्वजो ने मातृभूमि की रक्षा और स्वराज्य प्राप्ति के लिए वेदो की आज्ञाओ से सदैव महान प्रेरणा ली है। आज जब हमारा राष्ट्र आन्तरिक एव बाहय षडयन्त्रो का शिकार है शत्रुओं की राष्ट्र विरोधी गतिविधियो की अनदेखी की जा रही है मुझे विश्वास है कि इस सकट की घडी मे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कटिबद्ध युवक युवतिया प्रबुद्ध नेता अध्यापकगण राष्ट्रभक्त नागरिक इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयाम अर्थात हम आत्मशक्ति के कवच से राष्ट्र को ढकते हुए ऐसी शपथ लेते हैं।

सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने उपस्थित आर्यजनों से भारत राष्ट्र को परम वैभवशाली राष्ट्र बनाने का आहवान किया।

डॉ० जयपाल विद्यालकार आचार्य महेन्द्र शास्त्री आचार्य हरिदेव एव श्री अजय भल्ला पूर्व सम्पादक नव भारत टाइम्स ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए इस बात पर जोर दिया कि आज की स्थिति मे भारत सरकार को सीमा पार कर आतकवादियो के शिविरो को नष्ट करना चाहिए इसके लिए चाहे कितनी भी कीमत चुकानी पडे वरना आने वाली पीढी वर्तमान नेतृत्व एव जनमानस को कभी क्षमा नहीं करेगी। अत मे स वो मनासी सव्रता अर्थात राष्ट्र रक्षा के लिए सभी का मन कर्म और सकल्प समन्वित हो की प्रतिज्ञा के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

– कीर्ति शर्मा प्रधान

अपसंस्कृति से बचें –

धार्मिक पर्वों और उत्सवों के नाम पर अपसंस्कृति का प्रचार

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

पर्व त्यौहार और उत्सव किसी देश की सस्कृति परम्परा तथा उसके जीवनदर्शन के परिचायक होते हैं। हमारे देश मे वैदिक पर्व तो मनाए ही जाते हैं महापुरुषो के जन्म दिन विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओ तथा अनेक पुरा कथाओ पुरा आस्थाओ तथा जनश्रुतियो से जुडे पर्व त्यौहार भी अत्यन्त समारोह पूर्वक मानए जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक इन पर्वो तथा उत्सवो को मनाने मे पूर्ण गरिमा शालीनता शिष्टता तथा लोकभावनाओं का सम्मान किया जाता था किन्तु ज्यो ज्यो सिनेमा टी०वी० आदि का अधिकाधिक प्रचार हुआ पर्वो और त्यौहारो की शालीनता और मर्यादा गायब होती गई। इस प्रकार के आयोजनो में अपसस्कृति के दूषित एव हानिकर विषाणु प्रविष्ट होने लगे तथा आज तो उनका रूप इतना विकृत हो गया है उनमे निहित सास्कृतिक तत्त्व तथा भारतीयता के जीवन मूल्य सर्वथा नष्ट हो गए हैं। इसके लिए सर्वप्रथम तो हम स्वय को ही दोषी ठहराते हैं क्योकि अर्धशती से अधिक समय हमे स्वतन्त्रता प्राप्त किए हो गए हमने अभी तक राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण नहीं किया और न अपनी पृथक पहचान ही बनाई। केवल शासको के परिवर्तन से ही कोई स्वाभिमानी राष्ट्र सन्तोष का अनुभव नहीं करता। यदि स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात भी हम विदेशियो के अनुकरण करने को ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते हैं और स्वदेश के गौरव राष्ट्रीय चरित्र तथा स्वकीय अस्मिता के प्रति उपेक्षा धारण किए रहते हैं ता इसे कोई शुभ लक्षण नहीं कहेगा।

हमारे पर्वो त्योहारो मे अपसस्कृति तथा चरित्र हीनता के विषैले तत्व किस प्रकार प्रविष्ट हो गए हैं इसे कुछ उदाहरणो से समझा जा सकता है। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र मे गणेशपूजा तथा गणेश उत्सवो का आरम्भ एक विशिष्ट प्रयोजन के लिए किया था। वे चाहते थे कि सामूहिक गणेश पूजाओ से हिन्दू समाज के विभाजित और विच्छिन्न घटको मे परस्पर प्रेम भावना तथा सहयोग को बढावा मिले। आब्राह्मण शूद्र पर्यन्त स्वय को आर्य (हिन्दू) कहने वाला जनसमूह गणेशोत्सवो के द्वारा सगठन के सूत्र मे बधे एक दूसरे के सुख–दुख को पहचाने तथा जातीय एकता को सुदृढ करे। गणेश उत्सवो को प्रचलित करने के पीछे तिलक महाराज की यही भावना थी। गणेश समारोहो से उत्पन्न जनचेतना तथा जातीय एक्य मे हुई वृद्धि को अनुभव कर अग्रेज सरकार ने तो अनेक बार इन्हे प्रतिबधित भी किया। किन्तु तत्कालीन महाराष्ट्र प्रजा ने इस उत्सव को अपना जातीय त्यौहार माना और उसमे आने वाली किसी भी बाधा को स्वीकार नहीं किया। गणेशोत्सव हमारी आजादी की लडाइ का एक अभिन्न अग था।

यहा हम इस विवाद को उठाना नहीं चाहते कि वैदिक देवता गणपति (अथवा ब्रह्मणस्पति) यजुर्वेद के २३ वे अध्याय मे और पौराणिक गौरीपुत्र लम्बोदर एकदन्त चतुर्भुज गजानन मोदकप्रिय तथा मूषक वाहन रखने वाले गणेश मे कोई साम्य है या नहीं। निश्चत ही आज हिन्दुओ के सभी धार्मिक कृत्यो मे प्रथम पूज्य विघ्न विनाशक गणपति या गणेश वैदिक देवता नहीं हैं (द्रष्टव –डॉ० सम्पूर्णानन्द रचित गणेश) इनकी पूजा अर्चना का विधान किसी श्रौत या स्मार्त कर्मकाण्ड विधायक ग्रन्थ मे नहीं मिलता कुछ अर्वाचीन गृह्य सूत्र इसके अपवाद अवश्य हैं। तथापि लोकमान्य द्वारा प्रचारित गणेश उत्सवोंका रूप आज कितना विकृत हो गया है इसे भी भुलाया नहीं जा सकता। प्रथम तो अनुकरण प्रिय हिन्दू समाज ने गणपति उत्सव को महाराष्ट्र तक ही समिति न रख कर उसे अन्य प्रान्तो तक विस्तरित कर दिया।

वस्तुत भारत में गणेश चतुर्थी (भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी) का पर्व गणेश मन्दिरो में एक दिवसीय पूजा अर्चना तक ही सीमित था किन्तु महाराष्ट्र की देखा देखी उसे बढा कर दस दिन तक के विराट आयोजन मे बदल दिया गया। अब प्रत्येक नगर के प्रत्येक मोहल्ले मे विशालकाय गणेश प्रतिमाए स्थापित की जाती हैं तथा पर्व की धार्मिक पहचान को भुला कर प्रतिमाओं के सामने नृत्य गीत आदि के लुभावने किन्तु कामुक कार्यक्रम किए जाते हैं। चकाचौंध करने वाली बिजली की रोशनी बडे बडे पाण्डल तथा लाउड स्पीकरों पर कानो के पर्दो को फाड देने वाला चीखपुकार वाला पाप सगीत आज के गणपति पर्वों मे अनिवार्यत देखा जाता है। मोहल्ले के युवक कई दिन पहले ही गणेश उत्सव के लिए चदा एकत्र करने के लिए टोलीबद्ध अभियान चलाते हैं। इस चदे के लिए साम दाम दण्ड भेद सभी प्रकार के साधन काम मे लाए जाते हैं। धनिको से जबरदस्ती चदा वसूलना डरा धमका कर व्यापारियो से मोटी रकम हथियाना और पर्व की अवधि मे ही इस धन का अपव्यय करना आज के गणेशोत्सवो की यही फलश्रुति है।

इन आयोजनो मे धार्मिक कृत्य पूजा उपासना तो नाम मात्र की होती है अधिक जोर पाण्डलो की सजावट तथा भव्य तड्क वाले आयोजनो पर ही रहता है। विसर्जन के दिन बडी भीड के साथ लेकर प्रतिमाओ को नगर के किसी जलाशय मे प्रवाहित करने के लिए जब यह समूह चलता है तो आशका यही रहती है कि उत्तेजित वातावरण कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव मे न बदल जाए। अधिकारियो और पुलिस को अतिरिक्त सावधानी बरतनी पडती है मैजिस्ट्रेटो के लिए अतिरिक्त पुलिस दल बुलाने पड्ते हैं। यदि सचमुच इन जुलूसो मे भक्ति और अध्यात्मक भावो की ही प्रधानता रहे तब तो उपद्रवो और दगो की आशका ही नहीं रहनी चाहिए। भारत का सिख समुदाय और जैन मतावलम्बी अपने गुरुपर्वो तथा महावीर जयन्ती के अवसर पर नगर कीर्तन निकालते हैं। इनमे भी भारी सख्या में स्त्री पुरुष अबाल वृद्ध सभी सम्मिलितहोते हैं किन्तु शायद ही कभी गुरु पर्व तथा महावीर जयन्ती के जुलूसो के कारण दगे भडके हो या उपद्रव हुए हो। इसके दो कारण हैं – इन जुलूसों मे भडकाने वाले नारे लगाए जाते हैं विरोधी मत सम्प्रदाय वालो की भावनाओ पर चोट पहुचाने वाले जयघोष किए जाते हैं तथा उन गलियोंओर मार्गो में जुलूस को निकालने का आग्रह किया जाता है जहा जाने से अशान्ति उत्पन्न होने की आशका रहती है।

अब मिटटी से बनी विशालकाय प्रतिमाओ को जलाशयों मे निमग्न करने के कारण होने वाले जलप्रदूषण की चर्चा करे। तलाबो का जल तो इससे अपेय होता ही है जलाशयो की भव्यता तथा सौन्दर्य भी नष्ट होता है। सरकार भी इस परिस्थिति में मूक दर्शक बनी रहती है। यदि वृद्ध जन साधारण के हित को ध्यान में रखकर कहीं बदिश लगाए तो धर्म पर आघात होने की दुहाई दी जाती है। नतीजन आप प्रतिवर्ष गणेश प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर होने वाले साम्प्रदायिक उपद्रवों धन जन की हानि तथा साम्प्रदायिक सौहार्द के हास के समाचार पढते हैं।

जो स्थिति देश मे गणेशोत्सवो में प्रविष्ट अपसस्कृति ने पैदा की है बगाल मे मनाए जाने वाली दुर्गापूजा के समारोहों मे तो वह विकृति बहुत पहले ही आ गई थी। आश्विन के नवरात्रो की दुर्गापूजा बग समाज का एक धार्मिक सास्कृतिक तथा जातीय पर्व है जो शताब्दियो से मनाया जाता रहा है। मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती के प्रकरण मे दुर्गापूजा का मूल देखा जाता है। यद्यपि हम पुराण वर्णित आघानों को आपात स्तरीय कथित वैज्ञानिक अथव मन कल्पित रूपकात्मक व्याख्या करने के पक्ष मे नहीं हैं किन्तु वर्षो पूर्व स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास टण्डन द्वारा की गई सप्तशती मे वर्णित दुर्गा के असुर सहार के उपाख्यान की व्याख्या हमे रुचिकर लगी। टण्डन जी ने बताया था कि जब समाज मे आसुरी शक्तियों की वृद्धि हो जाती है जन सामान्य को दानवीय प्रवृत्तियो के दुष्टजनो का मुकाबला करने में कठिनाई महसूस होती है तो समाज के विचारशील लोगो का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे इन दुष्ट प्रवृत्ति के लोगो का सामूहिक प्रतिकार करे। इसके लिए उन्हे अपने वैयक्तिक मतभेद तो भुलाने पडते ही हैं एक–एक व्यक्ति अपनी विशिष्ट शक्तियो, क्षमताओ तथा गुणों की एकरूपता देता है जिससे ऐसी शक्ति का निर्माण होता है जो असुर समूह का विनाश कर समाज मे सुख चैन और शान्ति का प्रसार करती है। इसी तथ्य को समझाने के लिए सप्तशती के लेखक ने विभिन्न देवताओं (इन्द्र वरुण अग्नि आदि) द्वारा अपने–अपने आयुधो को देवी को प्रदान करना तथा इस समग्र सचित सामूहिक शक्ति केद्वारा दुर्गा द्वारा शुम्भ निशुम्भ रक्तबीज महषि जैसे दानवो का दलन करना रूपक शैली मे वर्णित किया है।

टण्डन जी के मतानुसार सप्तशती की दुर्गा मानव मे अथवा प्रणिमात्र मे विद्यमान सभी शक्तियो गुणों प्रवृत्तियो तथा मनोवृत्तियो का एकीभूत आधारभूत तत्व है। इसे ही पुराणकार ने 'विष्णु माया तथा 'योगमाया' आदि शब्दो से अभिहित किया है। या देवी सर्वभूतेषु से आरम्भ होने वाले श्लोको में प्राणियो की चेतना तथा समस्त प्रवृत्तियो का आधार इसी देवी (यह परमात्मा का ही नाम है–द्रष्टव्य सत्यार्थप्रकाश का प्रथम समुल्लास) को कहकर उस सर्वविधात्री अचिन्ता अपरिमेय सनातन सत्ता को भूयोभूय नमस्कार किया गया है। पुराणो के आख्यानो मे यदि इस प्रकार के गूढ तत्वो की उपस्थिति स्वीकार भी की जाए तथापि यह कहना निरपवाद होगा कि स्थूलता से प्यार करने वाले बाह्याडम्बर बाह्याचार और आडम्बर को गले लगाने वाले हिन्दुओं ने अपने दर्शन अध्यात्म और धर्म के गूढ तत्वो को कभी समझा ही नहीं।

दुर्गापूजा के औचित्य अनौचित्य की चर्चा न भी करे तो इतना तो कहा जा सकता है कि बग समाज मे विशेषत तथा भारतीय हिन्दू समाज के मान्यत प्रचलित यह दुर्गाचन अत्यन्त विकृत हो चुका है। कलकत्ता मे दुर्गापूजा के चार दिन भयकर ध्वनि प्रदूषण वायु प्रदूषण तथा चरित्र प्रदूषण के दिन बन जाते हैं। हजारो पूजा पण्डालो को सजाने में तो लाखो रुपये व्यय होते ही हैं वैसा ही कानफोडू सगीत ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से प्रसारित होकर समीप के वृद्धो रोगियों तथा अध्ययनरत छात्रो की नींद हराम कर देता है। शासन और पुलिस भी धर्म के नाम पर आयोजित किये जाने वाले आडम्बरो को प्रतिबन्धित करने मे अशक्यता अनुभव करती है। दैवी महषिासुर मर्दनी को पूजा अर्चना तो नाममात्र की होती है। इतना अवश्य है कि प्रतिमा निर्माताओ की बन आती है। वे कुछ दिनो मे पर्याप्त धन उपार्जित कर लेते हैं। अपसस्कृति के अन्यतत्व तो यहा भी यथावत मौजूद रहते हैं। दुर्गा विसर्जन के समय होने वाले उपद्रव तथा अपात्र आयोजको द्वारा डरा धमक कर चदा वसूलना आदि अब सामान्य बाते हो गई हैं। यदि दुर्गापूजा मे दोष नहीं आए होते तो दुर्गापूजा बगाली लोगों का एक शालीन सास्कृतिक त्था भद्रता के मूल्यो को प्रोत्साहित करने वाला आदर्श पर्व था। बगाली भद्रलोक इस पर्व पर दीपावली के पर्व की ही भाति हर्ष उल्लास तथा प्रमोद से स्वय को प्रफुल्लित अनुभव करता था। सद् ग्रहस्थ नवीन वस्त्र आभूषण तथा मिष्टानो को तो खरीदते ही हैं पठनशील बगाली इन अवसर पर विमल मित्र शकर ताराशकर बधोयाध्याय आदि बगला कथाकारो की रचनाओ को क्रय करना भी नहीं भूलते। यह एक अच्छी बात है कि बगाल के अलावा अन्य नगरो प्रान्तो में बसे प्रवासी बगाली दुर्गापूजा के पर्व को परम्परागत ढग से मनाकर अपनी सास्कृतिक विरासत को जीवित रखे हुए हैं।

बगाल की दुर्गापूजा के उत्सवो मे जो विकृति आई कमोवेश गुजरात मे नवरात्रो के अवसर पर दुर्गा पण्डालों मे होने वाले गरबा नृत्यो ने वही बुराई पैदा कर दी है। गुजरात से भिन्न अन्य किसी प्रान्त मे नवरात्र के अवसर पर मोहल्लो में पण्डाल बना कर दुर्गापूजा की प्रथा कभी नहीं रही। शक्तिपीठो और देवी मन्दिरो मे भक्तगण यथाश्रद्धा पूजा अर्चना करते थे। शाक्त मतानुयायी अपने घरो पर ही पूरे नौ दिन तक दुर्गा प्रतिमा की पूजा सप्तशती पाठ अष्टमी के दिन सप्तशती के श्लोको का विनियोग करते हुए हवन यज्ञ आदि किए जाते थे। नवरात्रो के अन्तिम दिव पशु बलि का भयकर निर्मम तथा अमानुषी प्रथा तो नेपाल तथा बगाल के अतिरिक्त यत्र तत्र कुछ अन्य शाक्त स्थलो मे आज भी प्रचलित है। गुजरात की गरबा नृत्य परम्परा तो अब नाम मात्र ही रह गई है। अन्य प्रान्तो मे भी गुजरात के गरबों के अनुकरण पर मोहल्लो के सार्वजनिक स्थलो पर पूजा पण्डाल बना कर इस किस्म के नृत्यगीत किए जाते हैं। गरबो के नाम पर नौजवान लडके वासनोत्तेजक अश्लील हावभाव प्रदर्शक अभिनय करते हुए शराब के नशे मे चूर हो सह नृत्यागनाओं के असपृश्य अगो के स्पर्श की कामना वाले होकर जो अभद्र तथा नारकीय दृश्य उपस्थित करते हैं वह वर्णन की सीमा में नहीं आता है। इन गरबों के लिए युवतिया विशेषप्रकार के भडकीले वस्त्र सिलवाती हैं जिनकी पारदर्शिता अग प्रत्यगो की झलक दर्शको अधिक सही अर्थ में रसिकजनों तक पहुचा देती है। गरबो के आरम्भ मे दुर्गास्तुति का एकाध भजन तो नाम मात्र के लिए ही होता है किन्तु फिल्मी सगीत की मादक धुनों पर जो गरबे या डाडिया रास किया जाता है। वह रात्रि के नि शेष होने तक अनवरत चलता रहता है। और इसी बीच प्रणयी युगल को अभिसार के अवसर 'देवी कृपा या 'दैवी कृपा से उपलब्ध होते रहते हैं।

आधुनिक विकृत मनोवृत्ति के परिचायक इन धार्मिक पर्वो की यह कलक गाथा आधुनिक मानस की रुग्ण मानसिकता की परिचायक तो है ही धर्म के नाम पर उत्पन्न कल्मष अपावनता अश्लीलता तथा अभद्रता का चरम निदर्शक भी है।

वैदिक ज्योतिष या ज्योतिर्विज्ञान : न वैदिक, न विज्ञान

– प्रो० जयत विष्णु नार्लिकर

इस साल के शुरू मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानी यूजीसी ने घोषणा की कि वह भारतीय विश्वविद्यालयो में वैदिक ज्योतिष विभाग बनाने जा रही है। उसके पाठ्यक्रम को उन्होने ज्योर्तिविज्ञान का नाम दिया। शायद यह जताने के लिए कि ज्योतिष भी अपनी प्रकृति मे विज्ञान है। उस घोषणा मे बताया गया कि वैदिक ज्योतिष अपनी परम्परा और कालजयी ज्ञान के क्षेत्र मे एक मुख्य विषय ही नहीं है बल्कि यह मानव जीवन मे होने वाली घटनाओ और एक समय मे ब्रह्माण्ड मे घटित हो रहे बदलावो के बारे में बतलाता है।

दरअसल लोग ज्योतिष और खगोल विज्ञान को एक ही चीज मान बैठते हैं। उम्मीद है कि यूजीसी ज्योतिष की ही बात कर रहा होगा न कि खगोल विज्ञान की। सचमुच खगोल विज्ञान मानव जीवन की घटनाओ पर बात नहीं करता और न ही वह 'हिन्दू गणित वास्तुशास्त्र और मौसम विज्ञान मे नए आयाम जोडता है। जैसा कि यूजीसी दावा करती है। हा ये दावे ज्योतिष कर सकता है। बिल्कुल शुरूआत मे ही इस भेद को समझ लेना चाहिए। हमारा तो मानना है कि वैदिक ज्योतिष न तो वैदिक है और न ही विज्ञान है।

वैदिक साहित्य को पढने से यह कहीं नहीं पता चलता कि मानव की नियति पर तथाकथित नौ ग्रहो का प्रभाव पडता है।

भविष्यवाणियो या पूर्वाभासो पर कुछ नक्षत्रो की स्थिति के अनुसार बलि वगैरह देने के सन्दर्भ भी मिल जाते हैं। सात दिन के सप्ताह का विचार अपने देश मे पश्चिम से आया। अरबो के जरिए यह ग्रीक से आया। यह ग्रहो से सम्बन्धित था। आखिर सूर्य और चन्द्र नौ ग्रहो मे से ही हैं। ग्रहो के असर का विचार ही यूरोपीय है। 'सूर्य सिद्धान्त' मे एक श्लोक आता है। उसमे सूर्य असुर मामा से कह रहे हैं कि तुम अपने शहर रोम चले जाओ। मैं ब्रह्मा के शाप की वजह से तुम्हे वहीं यवन के वेष मे इसका ज्ञान दूगा। सस्कृत विद्वान सी०कुन्हन राजा साफ शब्दो में कहते हैं कि वैदिक परम्परा मे कोई ज्योतिष नहीं है। वह सर्वे ऑफ सस्कृत लिटरेचल मे आगे कहते हैं कि इस तरह के विचार चौथी सदी ई०पू० मे सिकन्दर के आक्रमण के साथ भारत मे आए।

दरअसल वैदिक खगोलशास्त्र के बारे में तो प्रामाणिक रिकॉर्ड मिलते हैं। उसमे सितारो और नक्षत्रो की स्थिति के बारे में पता चलता है। मसलन सूर्य चन्द्र की स्थिति के मद्देनजर समय और कैलेडर तय कर लिया जाता है। यहा भी एक विवाद है। कुछ जानकारो का मानना है कि प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र पश्चिम से उधार लिया हुआ है। इसके उलट कुछ विद्वान उसे पूरी तरह भारतीय मानते हैं। उनका कहना है कि वेदाग ज्योतिष से लेकर उसके स्वर्ण काल पाचवीं सदी में आर्यभटट प्रथम पर और बारहवीं सदी में भास्कर द्वितीय तक अपने यहा मौलिक काम हुआ। लेकिन ये सब दावे खगोल विज्ञान को लेकर है ज्योतिष से इसका कोई ताल्लुक नहीं है।

हमारा वैज्ञानिक समाज फिलहाल यूजीसी के खिलाफ खडा है। इसकी दिक्कत ज्योतिष को वैदिक मानने या न मानने की नहीं है। उसे परेशानी ज्योतिष को विज्ञान साबित करने को लेकर है। आइए सबसे पहले उन तथ्यों की ओर चलें जिन्हें ज्योतिष के समर्थक उठाते हैं। वह भी तब जब कोई उसे विज्ञान न मान रहा हो। उनके तर्क और तथ्य कुछ इस अदाज मे पेश होते हैं – पहला खगोलविज्ञान की ही तरह ज्योतिष मे भी ग्रहो की स्थिति का वैज्ञानिक निरीक्षण किया जाता है। इसीलिए जब खगोलविज्ञान को विज्ञान माना जाता है तो ज्योतिष को क्यो नहीं ? दूसरा कोई न कोई हमे मिल जाता है जिसने सुना होता है कि किसी ज्योतिष की भविष्यवाणी सच निकली है ? क्या सही भविष्यवाणी का मतलब यह नहीं कि ज्योतिष को विज्ञान माना जाए ?

तीसरा जरा मौसम और चिकित्सा को देखिए। मौसम की भविष्यवाणी गलत हो सकती है। डाक्टरी परीक्षण गलत हो सकता है। वह भी हर डाक्टर का अलग हो सकता है। इन्हे जब आप विज्ञान मान लेते हैं तो ज्योतिष को विज्ञान से अलग क्यो करते हैं।

चौथे कुछ ज्योतिष गलत बताते हैं क्योकि उन्होने उसे कायदे से नहीं पढा। ज्योतिष अपने आप मे पूरी तरह सही और वैज्ञानिक है उसका इस्तेमाल करने वाले गलत हो सकते हैं। पाचवा ये जो विज्ञानी हैं अक्खड स्वभाव के होते हैं। ये बिना ज्योतिष को पढे या इस्तेमाल किए उसे खारिज कर देते हैं।

अब इस सिलसिले मे यह जानना बेहद जरूरी हो जाता है कि विषय के विद्वान होने के लिए क्या–क्या होना चाहिए ? विज्ञान सदियो के थ्योरी प्रयोग और निरीक्षण के बाद यहा तक पहुचा है। विज्ञान का इतिहास गलत थ्योरियो प्रयोगो और निरीक्षणो से भरा पडा है। लेकिन विज्ञानी सबसे पहले उस तथ्य को स्वीकार करता है। वह यह भी मान लेता है कि कभी भी विज्ञान ने सब कुछ सुलझाने का दावा नहीं किया है। लेकिन ज्योतिष मे ऐसा नहीं है। खगोल के मामले मे तो विज्ञान के कठोर अनुशासन को माना जाता है। लेकिन क्या ज्योतिष के बारे मे यही कह सकते हैं ? क्या ज्योतिष के कुछ बुनियादी नियम हैं ? क्या आधार सामग्री को जाचने के लिए तथ्यपरक और तय नियम हैं या सब कुछ खास ज्योतिष पर ही निर्भर करता है ? क्या गलत भविष्यवाणी होने पर पूरी थ्योरी गलत साबित हो सकती है ?

इन तमाम सवालो का जवाब 'नहीं' है। लेकिन ज्योतिष का समर्थक यह मानने को तैयार नहीं है कि उसका विषय सम्पूर्ण नहीं है। उसका मानना है कि गलती अगर होती है तो उसका इस्तेमाल करने वाले की वजह से होती हैं ? यहा सवाल है कि तब आप कैसे पाठयपुस्तके तैयार करेगे ? और एक समान दृष्टिकोण के साथ शिक्षक कैसे पढाने को राजी हो पाएगे। जहा तक भविष्यवाणी का सवाल है शायद ज्योतिषियो ने कार्ल पॉपर के बारे मे नहीं सुना है। पॉपर का मानना था कि अगर एक भी भविष्यवाणी गलत हो जाए तो वैज्ञानिक थ्योरी को रददी की टोकरी मे डाल देना चाहिए। अब कितने ज्योतिषी इस पर खरे उतर पाएगे ?

डाक्टरी जाच और मौसम विज्ञान की भविष्यवाणिया अपने–आप मे पूरी नहीं होती। लेकिन उसकी पूरी प्रक्रिया वैज्ञानिक होती है। ये दोनों सम्पूर्ण होने का दावा नहीं करते। लेकिन समय के साथ इनमें बेहतरी आ रही है। क्या ज्योतिष ने विज्ञान अ [illegible] की बिना पर कहीं कोई बेहतरी दिखाई है ?

अगर आप यह तय कर लेते हैं कि जब भी भविष्यवाणी सही हो तो ज्योतिष विज्ञान है और अगर सही नहीं हो तो उसका इस्तेमाल करने वाला ही गडबड है तो फिर विज्ञानियो को कोसने से क्या हासिल होगा ?

दिक्कत ज्योतिष के ठीक और वैज्ञानिक होने की है। ज्योतिष ने इस सिलसिले मे अभी किया ही क्या है ?

उदाहरण के तौर पर ही सही यहा एक अध्ययन का जिक्र करना बेहतर होगा। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी बर्नी सिल्वरमैन ने यह अध्ययन किया था। यह अध्ययन जन्मपत्री के आधार पर शादी के जोडो पर किया गया। यह जानना चाहते थे कि ज्योतिष की भविष्यवाणी का शादीशुदाओ पर क्या असर पडता है ? अध्ययन २९७८ जोडो पर किया गया था जो जीवन मे खुश थे। उसमे ४७८ तलाकशुदा भी शामिल थे। उनकी जन्मपत्रिया दो प्रसिद्ध ज्योतिषयो को दी गई। हालाकि उन्हे नहीं बताया गया था कि जन्मपत्रिया किसकी हैं। सवाल था कि कौन सी जन्मपत्रिया जोडो के लिए ठीक हैं। कहने की जरूरत नहीं कि ज्योतिषयो के तीर निशान से बहुत दूर थे।

ज्योतिष के खिलाफ १९७५ मे एक बयान जारी हुआ था। उस पर हस्ताक्षर करने वाले १८६ प्रसिद्ध विज्ञानी थे। जिसमे १८ नोबल पुरस्कार विजेता भी थे। इन लोगो ने ज्योतिष को पूरी तरह अवैज्ञानिक घोषित किया था। उनका बयान अपने–आपमे सब कुछ साफ कर देता है – हम अधोहस्ताक्षरी– खगोलविज्ञानी नक्षत्र भौतिक विज्ञानी अलग–अलग क्षेत्रो के विज्ञानी–लोगो को ज्योतिषियो की निजी और सार्वजनिक तौर पर की गई भविष्यवाणियो के बारे मे आख मूद कर भरोसा करने पर चेताना चाहते हैं। जो लोग ज्योतिष मे भरोसा करना चाहते हैं उन्हे हम बताना चाहते हैं कि उसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। अनिश्चितताओ से भरे इस समय मे लोग कुछ सुविधाओ के लिए अपने फैसलो मे ज्योतिष का सहारा लेते हैं। वे भरोसा करते हैं कि नियति पूर्व निर्धारित होती है जो आपकी पहुच से बाहर है। फिर भी हम दुनिया का सामना करते हैं और हमें जानना चाहिए कि हमारा भविष्य अपने ही हाथो मे है सितारो के हाथो मे नहीं। (द ह्यूमनिस्ट सितम्बर अक्तूबर १९७५)

ज्योतिष अब तक वैज्ञानिक कसौटियो से भागता रहा है। उसे एक ऐसी मनोचिकित्सा के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है जो मनुष्य को सकट के समय मे राहत देता है। वह गम्भीर मुद्दो से जूझने के बजाए परिस्थितियों को सितारो के मत्थे मढ देता है। इस सिलसिले मे तर्क सबसे आखिर मे आता है।

मनोविज्ञान मे 'बर्नम इफेक्ट' की चर्चा होती है। इसे ज्योतिष से जोडे तो मनुष्य उन चीजो को अपने लिए चुन लेता है जो उसके काम की होती है या उस पर लागू होती है। बाकी को वह छोड देता है। ज्योतिष की भविष्यवाणिया तो कुछ इस अदाज मे होती है कि वह सब पर लागू हो जाती है। पी०टी०बर्नम एक सर्कस कम्पनी बर्नम एण्ड बेली के मालिक थ। जब उनसे उनकी सफलता का राज पूछा गया तो उन्होने कहा कि वह अपने सर्कस मे सब लग्गो के लिए कुछ न कुछ मसाला डालते हैं ताकि सब कहीं न कहीं सन्तुष्ट होकर जाए। इसी से 'बर्नम इफेक्ट' आया।

इसी बर्नम इफेक्ट को ज्योतिष को मानने और न मानने वालो पर प्रयोग किया गया। प्रयोग के तहत हर व्यक्ति को तीन प्रोफाइल दिए गए। एक खुद का चरित्र चित्रण दूसरा जन्मपत्री के आधार पर ज्योतिषी का बनाया और उसके आसपास के दूसरे समूह के किसी का प्रोफाइल तीसरा बर्नम का प्रोफाइल। बर्नम प्रोफाइल कुछ इस ढग स चलता है आप उसे आजमा कर देखिए – आपको उन लोगो की बेहद जरूरत है जो आपको पसद करें और सराहे। आपको खुद को कोसने की आदत है। आपने अपनी क्षमताओ को सही इस्तेमाल नहीं किया हैं। आपकी शख्सीयत मे कुछ कमजोरिया हैं जिन्हे आप खुद ही दूर कर लेते हैं। बाहर से आप अनुशासित और आत्मनियन्त्रित हैं लेकिर भीतर से चिन्तित और असुरक्षित महसूस करते हैं। कभी कभी आपको गम्भीर सन्देह हो जाता है कि आपने सही फैसला लिया है या गलत ? आप एक किस्म का बदलाव चाहते हैं विविधता चाहते हैं। जब उनमे रुकावट आती है तो आप असन्तुष्ट हो जाते हैं। आपको अपनी आजाद सोच पर फक्र है। दूसरे के बयानो को बिना जाचे परखे आप नहीं मानते। आप यह गलत समझते हैं कि खुद को दूसरे के सामने पूरी तरह खोल दिया जाए। कभी आप अपने आप को खोलना और समाज मे घुलना मिलना चाहते हैं लेकिन कभी आप अपने मे ही सिमट जाते हैं। आपकी कुछ इच्छाए बेहद हवाई होती हैं। सुरक्षा आपकी जिन्दगी का बडा लक्ष्य है।

जब इन प्रोफाइल पर नबर देने को कहा गया नो ज्यादातर लोगों ने बर्नम प्रोफाइल को ही पसद किया था। इससे साबित होता है कि ज्योतिष की प्रामाणिकता क्या है ? यह तर्क दिया जा सकता है कि ज्योतिष तो रहेगा और फलेगा–फूलेगा क्योकि लोगो को इससे फैसले लेने मे मदद मिलती है। राहत महसूस होती है। लेकिन अगर मनुष्य को तार्किक बने रहना है तो उसे ज्योतिष की भूलभूलैयो से दूर रहना होगा। उसे विश्वविद्यालयो में पढाना एक गलत कदम साबित हो सकता है। आर्किटेक्चर स्टाक मार्केट या मौसम की भविष्यवाणी के लिए उसका इस्तेमाल सचमुच पीछे की ओर उठा एक कदम होगा।

पश्चिम मे ज्योतिष को मजे लेने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उसे कोई खास इज्जत नहीं बख्शी जाती। लेकिन हमारे समाज में उसे कुछ ज्यादा ही गम्भीरता से लिया जाता है। समाज के हर वर्ग और जाति मे इसका असर है। लोग शादियो के लिए ज्योतिषयो तक जाते हैं। मन्त्री बनने के लिए उनसे सलाह लेते हैं।

एक ऐसा देश जो विकसित देशो के बराबर आने की कोशिश मे है उसके लिए एक ठोस और तार्किक मानव ससाधन बेहद जरूरी है। लोगो को और अन्धविश्वासी बना कर इसे हासिल नहीं किया जा सकता।

– गुजरात वैभव अहमदाबाद
दिनाक १४ १२-२००१ से साभार

आदर्श आर्य खेती, गोबर गौमूत्र से

– नरेन्द्र आर्य

ओ३म इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शनोऽअस्तु द्विपदे श चतुष्पदे।।

(यजुर्वेद अ० ३६/म० ८)

हे इन्द्र ! आप परमेश्वर्ययुक्त सब ससार के राजा हो सर्व प्रकाशक हो हे रक्षक ! आपकी कृपा से हम लोगो के द्विपदे जो पुत्रादि उनके लिए परम सुखदायक हो तथा चतुष्पदे गौ घोडा इत्यादि पशुओ के लिए भी परम सुखदायक हो जिससे हम लोगो को सदा आनन्द रहे।

गौ से प्राप्त पचगव्य एव गौमूत्र गोबर को मनुष्य जाति के लिए अनुपम महत्व को तथा समृद्ध कृषि के लिए प्रकृति के इस वरदान को महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भली प्रकार पहचान कर गौ रक्षा के लिए गौकरुणा निधि पुस्तक लिख कर गौकृष्यादि रक्षिणी सभा का गठन किया। कृष्यादि कर्मो की रक्षा के लिए गौवश की वृद्धि उन्होने आवश्यक समझी। अथर्ववेद मे धेनु सदन भूरयीणाम अर्थात गौ अनुपमेय है घोषित है गौ मूत्र मनुष्य जाति तथा चिकित्सा जगत को प्राप्त होने वाला अमूल्य अनुदान है यह धर्मानुमोदित प्राकृतिक सहज प्राप्य हानि–रहित कल्याणकारी एव आरोग्यवर्धक रसायन है। गौ ही ऐसा दिव्य प्राणी है जिसकी रीढ की हडडी मे सूर्यकेतु नाडी होती है। सूर्यकेतु नाडी सूर्य की किरणो के द्वारा रक्त मे स्वर्ण क्षार बनाती है। यही स्वर्ण क्षार गौरस मे विद्यमान है इसलिए गौ का दूध मक्खन घी मूत्र स्वर्ण आभा वाला होता है। गौमूत्र रक्त का गुर्दो द्वारा छना हुआ भाग है। गौमूत्र मे मुख्य निम्न रसायनिक तत्व पाए जाते है। नाईट्रोजन गन्धक अमोनिया ताम्बा पोटाशियम फासफोरस सोडियम मैग्नीज कैल्सियम विटामिन – ए०बी०सी०डी०ई० स्वर्ण क्षार इत्यादि। गौवश के गोबर व गौमूत्र से बने खाद का कृषि मे उपयोग करने से भूमि तथा उगने वाली फसल स्वस्थ निराग रहती हे पर्यावरण प्रदूषण रहित रहता है।

नुकसान पहुचाने वाले कीट फगस–बैक्टीरिया एव महामारी उन्ही पौधो पर जाकर लगते हैं जिनकी मिटटी रुग्ण है। पौधो की रुग्णता भूमि खेत मिटटी की रुग्णता का ही परिणाम है। मिटटी की उर्वरा शक्ति का ह्रास ही भूमि की रुगणता है। महाराष्ट्र के कृषि वैज्ञानिक मनोहर खके ने गौवश के गोबर को ही खाद बनाने के लिए सबसे उत्तम माना है। गौवश का गोबर ही वनो–खेतो मे सुरक्षित रहता है बाकी सभी पशुओ का मल नष्ट हो जाता है। मई–जून की तेज गर्मी के बाद भी जब हम जगल मे पडे गोबर को उठाते है तब भी उसके नीचे नमी मिलेगी तथा छोटे–छोटे जीव इसके नीचे मिलेगे। गौ मूत्र के चिकित्सा मे प्रयोग की जानकारी सर्वसिद्ध है परन्तु गोबर के भी आयुर्वेद मे अनेको प्रयोग है। गोबर से घर आगन लीपने से विकिरण का प्रभाव नहीं होता यह अनुसन्धान से सिद्ध है। गोबर गौमूत्र से कृषि कार्यो मे अधिकतम उपयोग हेतु उत्तम फसल–रक्षक कीट नियन्त्रक उत्तम खाद बनाने के लिए अनेको सगठन अनुसन्धान कार्यो मे लगकर नए–नए प्रयोग कर रहे है। नए सफल प्रयोग व उनका प्रचार करने मे युगनिर्माण योजना सर्वोदय गौसेवा सघ आर्यसमाज भारतीय किसान सघ के कार्यकर्ताओ का कार्य प्रशसनीय है। गौमूत्र से कृषक बन्धुओ ने अनेको प्रकार के फसल–रक्षक बनाकर प्रयोग किए है। जिनमे निम्न प्रमुख है –

१ १५ लीटर पानी मे १ लीटर गौमूत्र मिलाकर प्रति सप्ताह छिडकाव करना।

२ १० लीटर गौमूत्र मे २५० मिली० लि० नीम तेल मिलाकर ताम्बे के बर्तन मे उबालकर आधा रह जाए तब ठण्डाकर छानकर इसे १५ लीटर पानी मे २५० मिली लि० के हिसाब से मिलाकर छिडकाव करना।

३ ताम्बे के बर्तन म १० लीटर गौमूत्र मे १ किलो नीम–पत्र १ किलो निम्बोली १ किलो आक पचाग १५ दिन ढक कर रखना। १५ दिन बाद ५० ग्रा० लहसून ५० ग्राम तम्बाकू के पत्र मिलाकर आधा रह जाए तब तक उबाल कर ठण्डा कर छानकर २०० मिली दवा १५ लीटर पानी मे मिलाकर १५ दिन के अन्तराल से छिडकाव करना।

राजस्थान गौसेवा सघ ने गौमूत्र से अनेको प्रकार के कीट नियत्रक बनाकर दुर्गापुरा स्थित कृषि फार्म पर प्रयोग किए हैं। गौ सेवा सघ के कार्यकर्त्ताओ ने विभिन्न कीट नियन्त्रको का युरो–१ युरो–२ इत्यादि नाम दिए हैं। सघ द्वारा निर्मित प्रमुख सफल प्रयोग निम्न प्रकार से है।

१ युरो एक–सामग्री – नीमपत्र ३ किलो तम्बाकू आधा किलो लहसून आधा किलो।

२ युरो दो–सामग्री – नीमपत्र २५ किलो धतुर पत्र १ किलो लहसुन २५० ग्राम तम्बाकू २५० ग्राम।

३ युरो तीन–सामग्री – नीमपत्र २ किलो धतुरा बीज २५० ग्राम आक की जड २५० ग्राम लहसून २५० ग्राम तम्बाकु २५० ग्राम।

४ युरो चार–सामग्री – सीताफल बीज व पत्र १ किलो गोबर १ किलो धतुरा पचाग आधा किलो तम्बाकु २५० ग्राम।

५ युरो पाच–सामग्री–नीम पत्र २ किलो आक पचाग १ किलो धतुरा पचाग १ किलो लहसुन आधा किलो तम्बाकू आधा किलो।

उपरोक्त पाचो प्रयोगो मे मिटटी का पात्र ६० लीटर गौमूत्र ४० लीटर ताम्बे की २ छड सभी मे समान है। मिटटी का पात्र सुखाकर गौमूत्र से धोकर उसमे सभी सामग्री डाल देवे। ताम्बे की छडो मे कुछ दूरी बनाए रखने के लिए छडो के बीच नीम तना बाध देवे। [illegible] ढक्कन से बद कर ऊपर से गोबर मिटटी का लेपकर पात्र का मुह अच्छी तरह बद कर देवे। फिर मिटटी के पात्र को एक गडडा खोदकर ३/४ हिस्सा दाब देवे। पात्र का १/४ हिस्सा ऊपर रहना चाहिए। पात्र को इस प्रकार २१ दिन तक रखकर हारे पर रखकर मन्दी आच देकर उबाले। आधा रहने पर उतार कर ठण्डा कर छानकर काच मिटटी या स्टील के बर्तन मे रखे। ये उत्तम पाच प्रकार के कीट नियन्त्रक तैयार होगे। इन्हें १५ लीटर पानी में १/२ लीटर से १ लीटर तक डालकर फसल कर छिडकने के लिए प्रयोग मे लाए जा सकते हैं।

हमारी कृषि की उन्नति के लिए और कीटनाशक बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के चगुल से निकलने के लिए इस प्रकार के प्रयोग हमारे कृषक वर्ग एव कृषि वैज्ञानिको को करने होगे।

जब हम भोजन लेते हैं तो दूध घी रोटी सब्जी दाल फल इत्यादि मे से कोई अकेला लेवे तो हमारा भोजन नही होता है। सभी मिलते है तो वह भोजन कहलाता है। पौधो के सन्दर्भ मे खाद पौधो का भोजन है। खाद वह जिसमे पौधो की आवश्यकता वाले सभी तत्व हो वही खाद है यूरिया डी०ए०पी० इत्यादि एकल तत्व वाले पदार्थ खाद नहीं हो सकते। इनके खाद कहना ही गलत है। इनको हम औषधि कह सकते हैं जैसे हमे कोई बीमारी हो और वैद्य जी ने अश्वगन्धा आवला या लौहभस्म दे दिया डाक्टर जी ने विटामिन कैल्सिय आयरन इत्यादि दे दिया। ये हमारे लिए दवाई है इन्हे भोजन नहीं कह सकते। उसी प्रकार डी०ए०पी० यूरिया को हम खाद नही कह सकते इनको खाद कहकर ही हमारे कृषक वर्ग को भ्रमित किया गया है। आज हमारी खेती भी इसीलिए असफल हो रही है। हमारे खेत रुग्ण होकर खेती भी रुग्ण हो रही है। क्योकि हमने पौधो को (खेत को) आवश्यक भोजन देना बन्द कर यूरिया एव डी०ए०पी० के रूप मे दवाई देनी शुरु कर दी। मिटटी मे पूव से मौजूद भोजन समाप्त हो रहा है इसलिए मिटटी रुग्ण हो रही है। अत अच्छी खेती के लिए मिटटी की रुग्णता खत्म करनी होगी। मिटटी को पौधो की आवश्यकता के सभी तत्वो का भोजन देना होगा। अच्छी खाद बनाने के लिए कई विधियो का विकास हुआ है जिनमे कम से कम गोबर से कूडे कचरे मिटटी पान पत्ती विभिन्न प्रकार के अनुपयोगी वनस्पति पदार्थ जैसे बुई खींप आक सरसों का कचरा इत्यादि प्रयोग कर प्रचुर मात्रा मे खाद बनाने मे श्री नारायण राव पादरी पाडे (नेडप काका) द्वारा शोध की गई पद्धति को खाद बनाने की उत्तम विधि माना गया है। इसे नेडप कम्पोस्ट खाद करते है।

नेडप कम्पोस्ट खाद बनाने का तरीका –

खाद बनाने के सन्दर्भ मे कृषि वैज्ञानिको ने गलना और सडना दो शब्द प्रयोग मे लिए हैं। खाद बनने मे जीवाणुओ की प्रक्रिया होती है जब प्रक्रिया पूरी हो जाए तो उसे गलना कहा और जब वह प्रक्रिया अधूरी हो तो उस स्थित को सडना कहा गया है जैसे दूध खटटा हो गया या दूध फट गया यह प्रक्रिया सडना हुई और दूध का दही बनना उसमे जीवाणुओ की प्रक्रिया पूरी हो गई खाद के सन्दर्भ मे ऐसी पूरी होने वाली क्रिया को गलना कहा गया है।

जीवाणुओ की प्रक्रिया शीघ्र हो पूरी हो सही हो इसके लिए जीवाणुओ को आवश्यक नमी व हवा की आवश्यकता होती है। जो जीवाणु बिना हवा के काम करते है उनकी प्रक्रिया बहुत ही धीमी गति की होती है। इसीलिए खडडा खाद बनाने के मुकाबले सभी वैज्ञानिक सिद्धान्तो का ध्यान रखने के कारण नेडप कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि ज्यादा सफल रही।

नैडप काका के शोध के अनुसार उन्होने लम्बाई १२ फुट चौडाई ५ फुट ऊचाई ३ फुट इटो की जुडाई मिट्टी से और ऊपर कर रददा सीमेट से तल पक्का हर एक ईट की जुडाई के बाद ६–६ इच के छेद चारो दीवारो के छेद के मध्य मे दूसरी लाईन के छेद आए। दूसरी लाईन के दो छेदो के मध्य तीसरी लाइन के छेद इसी प्रकार छटवे और नवे रददे मे छेद के आकार का टाका (होद) बनाकर उसमे खाद बनाने की विधि (पद्धति) तैयार की। ताकि चारो दीवारो मे छेद जीवाणुओ को क्रिया करने के लिए उचित हवा मिल सके। हवा की पूर्ति दोनो तरफ से ढाई ढाई फुट हो सकती है इसलिए चौडाई ५ फुट एक दिन मे आराम से और सुविधाजनक रूप से टाका भर सके। इसलिए लम्बाई १२ फुट टाके के बाहर खडा आदमी बिना अन्दर घुसे टाके मे आवश्यक सामान सुविधाजनक रूप से जचा सके। इसलिए ऊचाई ३ फुट रखी। फर्श पक्का ताकि घुलनशील तत्त्व पानी के साथ नीचे न जाए और आस पास के पेडो की जडे वहा इक्टठी न हो। ऊपरी रददा पक्का ताकि ईट गिरे नहीं और टाका हमेशा काम आता रहे।

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर

राष्ट्रोत्थान में आर्यसमाज का योगदान

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली मे शानिवार दिनाक २६–१२–२००१ को प्रात ११ बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा एव कर्मठ मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने की। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न स्कूलो के बच्चो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता का विषय **' राष्ट्रोत्थान मे आर्यसमाज का योगदान'** था। प्रतियोगिता मे भाग लेने आए बच्चो के अभिभावक स्कूलो की अध्यापिकाए उपस्थित थे। प्रतियोगिता के सयोजक श्री जगन्नाथ ढीगरा ने मच सचालन किया। प्रत्येक प्रतियोगी को ४ मिनट का समय दिया गया।

५ वर्षीय बालक आनन्द उपाध्याय ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण से अपना भाषण प्रारम्भ किया। राष्ट्र के उत्थान मे आर्यसमाज की भूमिका पर बालक ने कहा कि महर्षि दयानन्द की कृपा से ही आज हम दलित ससद भवन तक पहुचे हैं। बालक आनन्द ने श्री राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन चरित्र के सस्मरण बताए।

सचदेवा पब्लिक स्कूल के छात्र सौरभ खुराना ने अपने भाषण मे कहा कि आर्यसमाज ने हिन्दू जाति मे जागृति पैदा की। आर्यसमाज ने स्त्रियो की शिक्षा तथा शुद्धि आन्दोलन चलाया।

डी०ए०वी० स्कूल पुष्पाजलि के छात्र आशुष गुप्ता ने आर्यसमाज की शिक्षा के क्षेत्र मे भूमिका पर प्रकाश डाला।

कुलाची हसराज माडल स्कूल की छात्रा अग्रिम महाजन ने कहा कि आर्यसमाज ने भारत मे ही नही बल्कि पूरे विश्व मे वेद वाणी पहुचाई।

सर्वोदय विद्यालय की छात्रा शुभा चोपडा ने अपने भाषण मे कहा कि जब देश गुलाम था देश मे कुरीतिया थीं उस समय आर्यसमाज की स्थापना हुई आर्यसमाज के नियम किसी विशेष धर्म या देश को ध्यान मे रखकर नहीं बनाए गए थे बल्कि मानव के कल्याण के लिए बनाए गए थे। महर्षि दयानन्द ने नारी को बराबरी का अधिकार दिलाया।

माऊट आबू स्कूल रोहिणी के छात्रो राहुल विकास मीनाक्षी ने कहा कि आर्यसमाज के योगदान को शब्दो की सीमा मे नही बाधा जा सकता।

सी०आर०पी०एफ० स्कूल की छात्रा सुमन गौहर ने अपने भाषण मे लाला हसराज प० गुरुदत्त लाला लाजपत राय द्वारा किए गए कार्यो पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने बच्चो की प्रशसा की और आह्वान किया कि वे आर्य समाज की मुख्य धारा से जुडे उन्होने आर्यसमाज के पदाधिकारियो को इस प्रकार की प्रतियोगिता के आयोजन के लिए बधाई दी। श्री नरेन्द्र आर्य ने कहा कि आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विशेष प्रस्ताव पारित करके सरकार को चेतावनी दी है कि मनगढन्त झूठी और निराधार बातो को इतिहास से हटाया जाए। आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाली बातो को भी हटाया जाए।

इस अवसर पर स्वामी आनन्द वेश जी भी उपस्थित थे। स्वामीजी ने सभी प्रतियोगियो को साधुवाद दिया। प्रतियोगिता क अन्त म आर्यसमाज सरस्वती विहार के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य ने श्री नरेन्द्र आर्य तथा अन्य उपस्थित लोगो का धन्यवाद किया।

सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

झीलों की विश्व विख्यात सुरम्य नगरी उदयपुर में कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन स्थल पवित्र ऐतिहासिक महल नवलखा महल में

दिनांक २६ से २८ फरवरी २००२ में

प्रमुख अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व वरिष्ठ उप प्रधान श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास – कैप्टन देवरत्न आर्य। आर्ष सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन। आर्य जगत की प्रमुख विभूतियो एव आभा मण्डल को एक साथ देखने सुनने का अभूतपूर्व अवसर –

अनुरोध अधिकाधिक सख्या मे पधारे। मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करे। अपने आने की अग्रिम सूचना देवे।

स्वामी तत्वबोध सरस्वती — अध्यक्ष
गोपीलाल एरन — मत्री
अशोक आर्य — सयोजक समारोह
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा आर्य रत्न सम्मान राशि, एक लाख की घोषणा

ट्रस्ट की एक आवश्यक बैठक मे यह निश्चय हुआ कि सृष्टि सवत १९६०८५३१०१ से **आर्य रत्न** सम्मान राशि एक लाख रुपये से उस विद्वान सन्यासी को सम्मानित किया जावे जिसका सम्पूर्ण जीवन बिना कोई भेद भाव व लोभ लालच के समाज सेवा एव वैदिक मान्यताओ के प्रचार और प्रसार मे समर्पित एव सर्वमान्य रहा हो।

अत उपरोक्त श्रेणी मे आने वाले विद्वान या समाज सेवी उक्त सम्मान के लिए स्वय या उनके जीवन से पूर्णतया परिचित नजदीकी विद्वान द्वारा लिखित जानकारी ट्रस्ट के पते पर १५ जनवरी २००२ तक आमन्त्रित की जाती है। सम्मान के लिए आए आवेदनो पर चयन समिति का निर्णय ही मान्य होगा।

सम्पर्क करे – मैनेजिग ट्रस्टी
राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट ३८७ आर्योदय रूईकर मार्ग महाल नागपुर ४४० ००२ (महाराष्ट्र)

इस्लाम ही आतंकवाद है

नरकटियागज (प० चम्पारण) ३ दिसम्बर २००१ सोमवार। आज अपराह्न १ बजे से आर्यसमाज नरकटियागज द्वारा आर्यसमाज चौक पर एक दिवसीय प्रचार कार्य किया गया। इस अवसर पर दिल्ली से पधारे प० महेन्द्रपाल आर्य द्वारा विश्व स्तर पर फैले इस्लामी आतकवाद तथा उनके फैलने के कारणो पर विशेष चर्चा की गयी। उन्होने कहा कि इस्लाम और आतकवाद अलग अलग नहीं है बल्कि इस्लाम ही आतकवाद है। कुरान की कई आयते आतकवाद के लिए मुसलमानो को प्रेरित करती है।

इस उपलक्ष्य मे रवि कुमार आर्य (नरकटियागज) सुमेधा कुमारी आर्या (नरकटियागज) एव अवधेश कुमार आर्य (पीपरा चौक) द्वारा सुमधुर भजन भी प्रस्तुत किए गए।

पृष्ठ ६ का शेष भाग

आदर्श आर्य खेती........

टाका भराई विधि – गोबर साफ छनी अच्छी मिटटी वनस्पति सामग्री पूरी एकत्र करने के बाद एक ही दिन मे या ज्यादा से ज्यादा ४८ घण्टे मे निश्चित विधि से भरकर टाका गोबर मिटटी से सील कर देना चाहिए। ताकि आचार डालने की तरह कम्पोस्ट खाद बनने कि क्रिया मे कोई बाधा न आए। टाका भरने का काम शुरू करने से पहले टाके के अन्दर की दीवार एव फर्श पर गोबर पानी का घोल छिडककर अच्छी तरह गीला कर लेवे। पहली परत मे ६ ईंच वनस्पतिक पदार्थ दूसरी परत मे अच्छी तरह भीग जाए उतना गोबर पानी का घोल (४ किलो गोबर १२५ से १५० लीटर पानी मिलाकर घोल तैयार करे) तीसरी परत मे सूखी छनी साफ मिटटी (बिलु रेत नही) वनस्पति वाली परत की लगभग आधी मात्रा मे बिछाकर ऊपर गोबर–पानी का घोल समतल बिछा देवे। इसी प्रकार परत–दर–परत टाके को ऊपर से डेढ फुट ऊचाई तक झौपडी नुमा आकार मे बिछा देवे। और गोबर के मिश्रण से अच्छी तरह लीप देव। १५–२० दिन बाद खाद सामग्री सिकुड कर टाके के मुह से ५–६ ईच नीचे (अन्दर) जाएगी तब पहले की तरह वनस्पतिक पदार्थ गोबर घोल और छनी मिटटी की परतो से पुन टाके को डेढ फुट ऊचाई तक भर देवे। लगभग ६० से १२० दिन मे अच्छी सुगन्ध वाली रवेदार खाद तैयार होगी। नमी रखने एव दरारे बद रखने के लिए गोबर पानी का छिडकाव करते रहना चाहिए। आवश्यक लगे तो छेदो मे भी पानी छिडके।

वनस्पति पदार्थ गोबर से खाद बनाने के लिए अन्य भी कई विधिया कृषको ने प्रयोग मे ली है जिसमे बिना टाका बनाए नेडप काका की विधि अनुसार ही खाद बनाना भी काफी सफल रहा है। इसमे ५ फुट चौडाई ३ फुट ऊचाई लम्बाई सुविधानुसार रखकर पहले वनस्पति पदार्थ फिर गोबर पानी का घोल फिर मिटटी इसी प्रकार परत दर परत नेडप काका की विधिनुसार ही खाद सामग्री जाचकर गोबर मिटटी से अच्छी तरह नीचे से ६ ईंच छोडकर लीपते है। इस विधि मे नीचे प्लास्टिक का टुकडा रखते है एव ऊपर भी काला प्लास्टिक लेकर ढक देते है। ताकि पानी वाष्पीकरण होने के बाद वापिस उसी पर पडता रहे।८–६ दिन मे गोबर पानी का छिडकाव प्लास्टिक हटाकर करना चाहिए ताकि आवश्यक नमी बनी रहे।

जिन किसानो ने गडडे बना लिए है और गुडडो मे खद बनाते है वे भी नेडप पद्धति से खाद सामग्री जचाते (भराई) करते समय गडडे के बीचो–बीचो चार फुट लम्बे ५–६ ईंच गोलाई के डण्डे या पाइप रखकर हर दस पन्द्रह दिन मे डण्डो को घुमाते रहे ताकि जीवाणुओ को आवश्यक हवा मिल सके और खाद्य जल्दी पक सके। जो किसान बन्धु टाका नहीं बना सकत वे खीप या ज्वार बाजरी अरहर कपास आदि के डण्ठल की ५ फुट चौडी [illegible] सुविधानुसार लम्बी दीवार बनाकर उसमे नेडप विधि से सामग्री भरकर ऊपर से लीप कर एव ७–८ दिन के अन्तराल से पानी छिडकर तीन चार माह मे खाद तैयार कर सकते हैं।

आशा है हमारे सभी प्रतिभावान किसान बुद्धिमान युवक स्वदेशी स्वावलम्बी खेती मे अपना दिमाग लगाएगे। गाव और खेती को फिर से आबाद करेगे। खेती के लिए गौवश की वृद्धि मे सहायक बनेगे। इसी विश्वास के साथ।

– **प्रान्तीय मन्त्री भारतीय किसान सघ निवास खाजूवाला (बीकनेर)**

सरकार की दोहरी नीति

हिन्दी और भारतीय भाषाओं के विकास में बाधक

– डॉ० परमानन्द पाचाल

कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत मे जिस अग्रेजी की दल दल से उबारने के लिए भारतीय भाषाओ के विकास का प्रावधान हमारे सविधान मे किया गया है हम उसके उल्टे ही चल रहे हैं। हमारा ध्यान आज भी भारतीय भाषाओ विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बजाए अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की ओर ही दिखाई देता है।

सविधान की आठवीं अनुसूची मे जिन १८ भारतीय भाषाओ का उल्लेख है उनमे अग्रेजी का कोई स्थान नहीं है। सविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार सघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी किन्तु साथ ही यह भी कहा गया है कि अग्रेजी का प्रयोग अगले १५ वर्षो तक चलता रहेगा।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए अनुच्छद ३५१ मे विशेष निर्देश दिए गए है जबकि सविधान मे अग्रेजी भाषा के विकास सम्बन्धी कोई भी निर्देश नहीं है। ये निदेश निम्न प्रकार है –

सघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढाए उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामाजिक सस्कृति के सभी तत्वो की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति मे हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के ओर आठवीं अनुसूची मे विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओ के प्रयुक्त रूप शैली और पदो को आत्मसात करते हुए और जहा आवश्यक या वाछनीय हो उनके शब्द भण्डार के लिए मुख्यत सस्कृत से और गौणत अन्य भाषाओ के शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

सविधान के अनुच्छेद १२० २१० तथा ३४३ से ३५१ तक मे सरकारी भाषा सम्बन्धी प्रावधान हैं किन्तु कहीं भी अग्रेजी को बढावा देने की बात नहीं कही गई है।

राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा सशोधित १९६७) द्वारा सविधान के अनुच्छेद ३४३ मे निर्दिष्ट अग्रेजी के प्रयोग की १५ वर्ष की अवधि को बढा दिया गया। किन्तु साथ ही हिन्दी के निरन्तर अधिक से अधिक प्रयोग की भी व्यवस्था की गई। अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की बात इस अधिनियम मे भी नहीं है।

ससद के दोनो सदनो द्वारा १९६८ मे पारित सकल्प मे भी कहा गया है कि जब कि सविधान की आठवीं अनुसूची मे हिन्दी के अतिरिक्त भारत की १४ मुख्य भाषाओ का उल्लेख किया गया है और देश की शैक्षणिक एव सास्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओ के पूर्ण विकास के हेतु सामूहिक उपाय किए जाने चाहिए। हिन्दी के साथ साथ इन भाषाओ के समन्वित विकास के लिए भारत द्वारा राज्य सरकारो के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के सचार का प्रभावी माध्यम बने।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो मे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने का दायित्व गृह मन्त्रालय के राजभाषा विभाग का है। वहा अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की कोई योजना नही है। फिर अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की जिम्मेवारी किस मन्त्रालय की है ?

भारत सरकार के कार्य आवटन नियम

जहा तक हिन्दी और भारतीय भाषाओ के उन्नयन और सवर्द्धन का प्रश्न है यह कार्य मानव ससाधन विकास मन्त्रालय का है। पहले सस्कृति विभाग भी इसी के साथ था। भारत सरकार के कार्य आवटन नियम १९६१ (यथा सशोधित) जिन्हे मन्त्रिमण्डल सचिवालय द्वारा प्रकाशित किया गया है मे मानव ससाधन विकास मन्त्रालय को सौपे गए कार्यो का उल्लेख है। उनके अनुसार निम्न मदो मे हिन्दी और अन्य भाषाओ से सम्बन्धित कार्यो का विवरण है –

मद १७ – हिन्दी के शिक्षण और सवर्द्धन के लिए वित्तीय सहायता देना।

मद १८ – सस्कृत का प्रचार और विकास।

मद ५१ – आधुनिक भारतीय भाषाओ के सम्बर्द्धन के लिए स्वैच्छिक सगठनो को वित्तीय सहायता देना।

भाषा प्रभाग ने भारतीय भाषाओ मे प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने हेतु एक योजना परिचालित की है। किन्तु खेद है कि इस योजना को अब अग्रेजी भाष के प्रोत्साहन के लिए भी लागू कर दिया गया है। ऐसा क्यो ? क्या अग्रेजी भाषा का विकास करना भी भारत का कर्त्तव्य है अग्रेजी मे सृजनात्मक साहित्य रचना के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन देना क्या हमारा कार्य है ?

निश्चय है इस निर्णय पर गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि यह योजना हिन्दी (उसकी बोलियो सहित) सस्कृत सिधी उर्दू तथा आठवीं अनसूची की सभी भाषाओ के विकास के लिए है किन्तु समझ मे नहीं आता कि अग्रेजी के लिए जो भारतीय भाषा नहीं है और जिसका स्थान शनै शनै हिन्दी लेती जा रही है क्यो इस योजना मे शामिल किया गया है ? लगता है कि हम अग्रेजी का मोह नहीं छोड पा रहे हैं और राजभाषा हिन्दी को नेक नियती से हम लागू करना नहीं चाहते हैं। नहीं तो हम अग्रेजी के विकास के लिए जो हमारी राष्ट्रीय नीति के अनुकूल नहीं है प्रोत्साहन योजना क्यो लागू करते।

यहीं नही सस्कृति मन्त्रालय की एक साहित्यिक सस्था साहित्य अकादेमी भी इसी प्रकार से अग्रेजी के सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए दिल खोलकर लगी है।

साहित्य अकादेमी की १० सितम्बर को १९६७ को हुई सामान्य परिषद् की बैठक मे प्रकाशन नीति के सम्बन्ध मे कहा गया था कि साहित्य अकादेमी मूलत और प्रधानत भारतीय लेखको का एक ऐसा सघ है जो भारतीय भाषाओ मे साहित्यिक कार्यो को प्रोत्साहन देने और उनमे समन्वय स्थापित करने का कार्य करती है।

कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत मे जिस अग्रेजी की दल दल से उबारने के लिए भारतीय भाषाओ के विकास का प्रावधान हमारे सविधान मे किया गया है हम उसके उल्टे ही चल रहे है। हमारा ध्यान आज भी भारतीय भाषाओ, विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बजाए अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की ओर ही दिखाई देता है।

आज गाव गाव और गली गली मे अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो की जो बाढ आ रही है उसका दुष्परिणाम क्या होने वाला है, जरा सोचिए। आज से दस पन्द्रह वर्षो के बाद जब ये ही छात्र कार्यालयो मे पहुचेगे तो ये स्वय ही हिन्दी को नकार देगे क्योकि हिन्दी मे इनकी गति नहीं के बराबर होगी। इसमे हमारे उच्चस्तरीय भर्ती अभिकरणो का भी कम योगदान नहीं है, जहा से अग्रेजी का दबदबा हटने वाला नहीं है।

यह अच्छी बात है कि साहित्य अकादेमी भारतीय भाषाओ मे उत्कृष्ट रचनाओ के लेखको को प्रति वर्ष पुरस्कार प्रदान करती है। अकादेमी ने अब अपने कार्य क्षेत्र को बढाकर भारत की कई उप भाषाओ जैसे मैथिली डोगरी तथा राजस्थानी के साथ साथ अग्रेजी को भी शामिल कर लिया है और अब प्रति वर्ष अग्रेजी लेखको को पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। जबकि यह पैसा भारतीय भाषाओ के विकास पर ही होना चाहिए। अग्रेजी तो भारतीय भाषा है ही नहीं। फिर अग्रेजी लेखको को पुरस्कार देने का क्या औचित्य है ? एक ओर तो हम अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और भारतीय भाषाओ को लाना चाहते हैं दूसरी और अग्रेजी के लिए पुरस्कार देकर उसे प्रोत्साहन दे रहे है। ऐसा क्यो हैं ? कौन बताए ?

लगता है भारतीय भाषाओ के विकास के लिए सरकार और ससद कोई भी कानून बनाती रहे किन्तु अग्रेजी की घुसपैठ अवश्य रहेगी। बात हम कुछ भी कहे किन्तु पतनाला यहीं पडेगा वाली कहावत आज हमारी भाषा नीति की परिचायक बन गई है। भारतीय शासन तन्त्र मे आज भी निहित स्वार्थ वाला एक ऐसा वर्ग बैठा है जो किसी न किसी आड मे अग्रेजी को हटने नहीं दे रहा है और भारतीय भाषाओ को उनका उचित स्थान दिलाने मे अडगे लगा रहा है।

आज गाव गाव और गली गली मे अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो की जो बाढ आ रही है उसका दुष्परिणाम क्या होने वाला है जरा सोचिए। आज से दस पन्द्रह वर्षो के बाद जब ये ही छात्र कार्यालयो मे पहुचेगे तो ये स्वय ही हिन्दी को नकार देगे क्योकि हिन्दी मे इनकी गति नहीं के बराबर होगी। इसमे हमारे उच्चस्तरीय भर्ती अभिकरणो का भी कम योगदान नही है जहा से अग्रेजी का दबदबा हटने वाला नहीं है।

अन्त मे इग्लैण्ड के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय स्पडर के उन शब्दो को उद्धत करना अप्रासगिक न होगा जो उसने भोपाल मे आयोजित विश्व कविता समारोह मे कहे थे। उसने कहा था कि भारत एक ऐसा अकेला देश है जो ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा था पर वास्तविक अर्थो मे अब भी उससे बाहर नहीं आ पाया है। यह देश इतने दिनो के बाद भी अग्रेजी की गुलामी से नहीं उतरा है। भारतीय लोग अग्रेजी भाषा के प्रेम मे पड गए हैं। यह प्यार एक त्रासदिक प्यार है।

यहा यह स्मरण दिलाना भी अप्रासगिक न होगा कि कवीन्द्र रवीन्द्र को नोबेल पुरस्कार उनकी किसी अग्रेजी रचना पर नहीं बल्कि बगला भाषा मे रचित उनकी कालजयी कृति 'गीताजली' पर मिला था। इग्लैण्ड के अग्रेजी साहित्य मे आज भी भारतीय अग्रेजी लेखको का कोई स्थान नहीं है। वे अग्रेजी साहित्य के अग नहीं बन सकते। फिर सरकारी धन का अपव्यय क्यो ? एक ओर तो सरकार ढिंढोरा पीटती है कि हम अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और भारतीय भाषाओ को लाना चाहते हैं दूसरी और अग्रेजी मे कविता कहानी उपन्यास और नाटक लिखने वाले साहित्यकारो को पुरस्कार देकर अग्रेजी को बढावा दे रही है। इस दोहरी नीति के चलते क्या भारतीय भाषाओ का विकास हो सकेगा ? क्या हिन्दी राजभाषा के रूप मे अग्रेजी का स्थान ले सकेगी ? जरा सोचिए।

– २३२ ए, पॉकेट १, मयूर विहार, फेज १, दिल्ली-११००९१

पूर्वी दिल्ली आर्यसमाज के इतिहास में प्रथम बार अद्वितीय आर्य पुरोहित कार्यशाला सम्पन्न

जन सामान्य मे सस्कारो की कमी को देखते हुए आर्यसमाज द्वारा एक धर्माचार्य कार्यशाला आर्यसमाज प्रीत विहार मे २६ व २७ दिसम्बर २००१ को लगाई गयी। वास्तव मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा वर्णित १६ (सोलह) सस्कारो का प्रचार व प्रसार मुख्यतया पुरोहितो द्वारा ही सभव है।

धर्माचार्यों की कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री माननीय श्री वेदव्रत शर्मा जी एव क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने किया। उद्घाटन भाषण मे श्री शर्मा जी ने कहा कि सस्कारो मे एकरूपता लाने के लिए काफी समय से धर्माचार्य शिविर की आवश्यकता महसूस की जा रही थी यदि हम पुरोहितो के शिविर को सही रूप प्रदान कर सके तो यह सगठन की नींव को मजबूत करने का एक सफल प्रयास होगा। आदरणीय आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के नेतृत्व मे सस्कारो को विधिवत समझते हुए हमारे धर्माचार्य इस धर्मकार्य को आगे बढाएगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। श्री रैली जी ने बताया कि हमारे सभी धर्माचार्य बहुत पढे लिखे हैं लेकिन फिर भी व्यक्ति को जीवन की अन्तिम सास तक कुछ न कुछ सीखते ही रहना चाहिए क्योकि कोई भी व्यक्ति अपने आप मे ज्ञान के क्षेत्र मे पूर्ण नहीं है। विद्या तो अनन्त होती है और सीखने की प्रक्रिया आयुपर्यन्त चलनी चाहिए। अत यहा एकत्रित पुरोहितगण अवश्य ही इस कार्यशाला से लाभान्वित होगे।

कार्यशाला मे कर्मकाण्ड के महान विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी की उपस्थिति ने इसकी शोभा को द्विगुणित कर दिया। इस कार्यशाला मे उपस्थित विद्वान पुरोहितों ने सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण से प्रारम्भ कर १६ सस्कार पर्यन्त अपनी अपनी शकाओ का समाधान किया। यह दो दिवसीय कार्यशाला दो दो सत्रो मे विभाजित थी। प्रथम सत्र प्रात ११ बजे से दोपहर ५ बजे तक चला।

धर्माचार्य कार्यशाला मे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सस्कार विधि मे लिखित एक एक शब्द तथा वाक्य को प्रमाणित सिद्ध किया गया। कार्यशाला के सचालक आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने बडे युक्ति और प्रमाण से पुरोहितो की सस्कार सम्बन्धी समस्याओ का निदान किया। शकाओं का समाधान मिलने पर समस्त पुरोहितो का हृदय प्रसन्नता से भर गया। आचार्यों ने पुरोहितो को यह भी समझाया कि वे किस प्रकार से वर्तमान समय में सस्कारो को आकर्षक एव व्यवहारिक बना सकते हैं। अन्त मे श्री आचार्य जी के निर्देशानुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने पुरोहितो को वेदार्थ कल्पद्रुम (तीनो भाग) (रचयिता आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र) अपने कर कमलो से भेट किए।
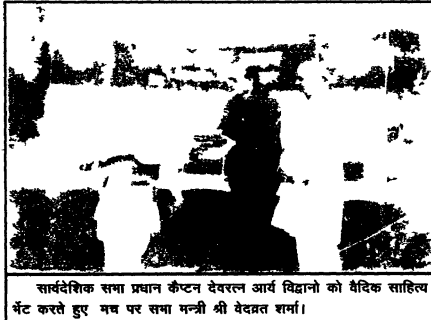
सार्वदेशिक सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य विद्वानो को वैदिक साहित्य भेंट करते हुए मच पर सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।

इस कार्यशाला मे भाग लेने वाले विद्वानो मे सर्वश्री यशपाल शास्त्री श्री पुष्पेन्द्र शास्त्री श्री रामनिवास शास्त्री श्री प० दिनेश कुमार शास्त्री श्री रामगोपाल आर्य श्री प० शत्रुघ्न श्री रामचन्द्र श्री हेमचन्द्र भारद्वाज श्री नागेन्द्र कुमार आर्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री श्री विद्याराम मिश्र श्री प० कपिल कुमार शर्मा श्री म० आर्यमुनि श्री डॉ० नरेन्द्र वेदालकार श्री डॉ० धर्मवीर श्री डॉ० ओमप्रकाश श्री रमेशचन्द्र आर्य श्री वेदप्रकाश आर्य श्री विद्यामुनि श्री कृष्ण मित्र कौशल श्री देवराज आर्य मित्र श्री केशव कुमार शर्मा श्री राधेश्याम गुप्त श्रीमती डॉ० वन्दना भटनागर श्रीमती शान्तिदेवी भटनागर आदि सम्मिलित रहे।

कार्यशाला की व्यवस्था मे आर्यसमाज प्रीत विहार के पदाधिकारियो का विशेष योगदान रहा। विशेषकर सर्वश्री गुरुचरण सिघल जी श्री बुद्धदेव आर्य जी श्री आर० एस० शर्मा जी एव श्रीमती सरला गुप्ता जी ने कार्यशाला मे प्रशसनीय योगदान दिया। — *सुरेन्द्र रैली*

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नही बिगाड़ सकता।

युवा व्यक्तित्व विकास एवं प्रशिक्षण का अद्भुत शिविर

३० दिसम्बर २००१ की प्रात काल की ठिठुरती हुई सर्दी मे आर्यसमाज के लगभग ४०० लोगो ने आर्यसमाज प्रीत विहार के साथ जुडे स्वामी दयानन्द उद्यान मे कुहरे से लिपटी हुई सुबह मे एक अद्भुत दृश्य देखा जिसमे १२ वर्ष से १८ वर्ष की आयु के बीच १५० किशोरो व युवकों ने एक के बाद एक ३० सैकण्ड से १ मिनट में अपनी बात रखी। ये उनके लिए एक ऐसा मार्मिक दृश्य था जो किसी भी आधुनिक युग के टी०वी० कार्यक्रम से ज्यादा मधुर और उत्तेजना भरा था। सभी दर्शक हैरान थे कि कैसे ये किशोर/युवा अपनी बातो को प्रभावशाली ढग से रखने मे समर्थ है। जहा एक किशोर समय की उपयोगिता को ध्यान मे रखते हुए ये शब्द कह रहा था – जिसने जाना मूल्य समय का वो आगे बढ पाया है। अलसा कर जो बैठ गया वो जीवन भर पछताया है।। तो दूसरा किशोर वक्ता अपने २४ घण्टो को किस प्रकार से २६ और २७ घण्टो मे बदले जाने की कला को सीखा है उसका तर्कपूर्ण विवरण प्रस्तुत कर रहा था।

प्रत्येक युवा/किशोर वक्ता आर्यसमाज को एक नया और स्थाई मित्र मिल जाने की घोषणा कर रहा था और दूसरी ओर एक के बाद एक किशोर वक्ता सन्ध्या यज्ञ व ध्यान की उपयोगिता का वर्णन करते नहीं थकता था। एक छोटे से मच से इतने ज्यादा १५० वक्ताओ को सुनने मे श्रोताओ को कोई बोरियत नहीं अपितु आनन्द ही आनन्द मिल रहा था क्योकि प्रत्येक किशोर वक्ता कोई न कोई जीवन उपयोगी बात अपने ढग से रखे जा रहा था।

जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने मे यदि एक वक्ता ये बता रहा था कि हमे दूसरो की आलोचना नहीं करनी चाहिए तो दूसरा युवा वक्ता समझाते हुए बता रहा था कि किसी की आलोचना करके आप किसी का भी दिल नहीं जीत सकते।

एक किशोर वक्ता ने जब ये कहा कि मेरे एक लाख शब्द भी किसी को इतना प्रभावित नहीं कर सकते जितना मेरी एक मुस्कराहट मे दूसरो को रिझाने का दम है तो सभी श्रोताओ मे प्रत्येक चेहरा मुस्करा कर खिल गया।

इन किशोरो और युवाओ का कायाकल्प आर्यसमाज प्रीत विहार मे लगे आर्यवीर दल के उस शिविर मे हुआ जो ४८ घण्टे के लिए लगाया गया था। आर्यसमाज प्रीत विहार के प्रधान व जाने माने शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने इस आवासीय शिविर मे २–२ घण्टे के चार सत्रो मे यह आश्चर्यजनक काम कर दिखाया जिसमे उन्होने प्रेरणा व व्यवहारिकता को ध्यान मे रखते हुए इनको प्रशिक्षण दिया। शिविर के आरम्भ मे ही उन्होने बच्चो को बता दिया कि वह शिक्षा नहीं बल्कि प्रशिक्षण देगे। वैसा प्रशिक्षण जैसा साइकिल चलाने तैराकी सिखाने इत्यादि मे दिया जाता है।

इस कार्यशाला का उदघाटन युवा विद्वान डा० आचार्य वागीश कुमार जी (प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल एटा एव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज काकडबाडी मुम्बई से सम्बद्ध) ने किया तथा श्री आचार्य जी ने ही बच्चो को मन तथा बुद्धि का भेद समझाया। जिसकी विस्तृत चर्चा श्री रैली जी ने व्यक्तित्व विकास एव जीवन मे सफलता पाने के लिए शिविर सत्रो मे की।

इस शिविर का सचालन सुव्यवस्थित ढग से श्री विनय आर्य सचालक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश एव उनके साथियो ने किया। तथा शिविर मे रहने–सहने खाने–पीने व भोजन आदि की सम्पूर्ण सुव्यवस्था आर्यसमाज प्रीत विहार के सरक्षक श्री गुरुचरण सिघल जी उपप्रधान श्री बुद्धदेव आर्य जी कोषाध्यक्ष श्री आर०एस०शर्मा जी एव मन्त्री श्री श्रीकृष्ण कुमार ढींगरा जी ने तहे दिल से की।

इस भव्य समारोह के समापन अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री कैप्टन देवरत्न आर्य उप प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली नगर निगम मे विपक्ष के नेता श्री रामबाबू शर्मा क्षेत्र के विधायक श्री नसीब सिह पार्षद एव पूर्व महापौर श्री योगध्यान आहूजा एव आर्यसमाज के लिए दिनरात एक कर देने वाले आर्य नेता सर्वश्री पतराम त्यागी श्री रविबहल श्री सेतिया जी श्री राजेन्द्र कुमार दुर्गा श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री श्री रोशनलाल गुप्ता श्री धर्मपाल आर्य श्री तेजपाल मलिक प्रिन्सीपल चन्द्रदेव एव स्वामी स्वरुपानन्द सरस्वती जी सम्पूर्ण कार्यक्रम के साक्षी थे। तथा सभी आर्य नेताओ ने अपने–अपने वक्तव्यो मे इस कार्यशाला की भूरि–भूरि प्रशसा की तथा बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाए सभी आर्यसमाजो मे लगे तो समाज व राष्ट्र का कायाकल्प हो सकता है।

आर्य संस्कृति के उपासक श्री सीताराम आर्य का निधन

– नीरज पाण्डेय

आर्यसमाज कलकत्ता विधान सरणी के पूर्व प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तो के अनन्य उपासक एव प्रचारक तथा महान समाजसेवी श्री सीताराम आर्य का निधन ६ दिसम्बर २००१ प्रात ४ बजे हृदय गति रूक जाने के कारण कीर्ति नगर नई दिल्ली मे हो गया। श्री सीताराम आर्य के निधन से आर्य जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री सीता ाम आर्य का अन्तिम सस्कार पजाबी बाग श्मशान घाट पर हुआ। ज्येष्ठ पुत्र श्री ओम प्रकाश आर्य ने पिता की चिता को अग्नि दी। इस अवसर पर कीर्ति नगर आर्य समाज के प्रधान डॉ० दयानन्द लीखा सहित अनेक आर्यगण उपस्थित थे।

श्री सीताराम आर्य का जन्म ग्राम फूलपुर (टाण्डा) जनपद अम्बेडकर नगर (फैजाबाद) मे सन १९२० को हुआ था। उनका जीवन आर्यसमाज के सेवा एव उत्थान मे पूर्णरूप से समर्पित था। वो आजीवन कई धार्मिक एव सामाजिक सस्थानो से जुडे रहे। किसी भी प्रकार के सामाजिक उत्थान के कार्यो मे उनकी अहम भूमिका होती थी। इस दृष्टिकोण से वे समाजसेवियो मे सबसे अग्रणी थे। आर्थिक रूप से भी वह पूर्णरूप से सहयोग देते थे। उन्हे दानवीर की श्रेणी मे रखना उचित होगा। आपने फूलपुर (टाण्डा) मे श्री रामनारायण हाईस्कूल की स्थापना की। आपने टाण्डा स्थित श्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रधान पद को सुशोभित किया था। इसी प्रकार कलकत्ता आर्यसमाज के प्रधान पद पर १६ वर्षों तक आपने निष्ठापूर्वक कार्य किया। आर्य शिक्षा मण्डल ट्रस्ट आर्य विद्यालय ट्रस्ट वैदिक अनुसधान ट्रस्ट एव आर्य सुन्दरादेवी जनकल्याण ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप मे आपने लम्बी अवधि तक कार्य किया। गुरुकुल वैदिक आश्रम एव अनाथालय पानपोस राउरकेला सुन्दरगढ के प्रधान पद पर भी आपने कार्य किया। इस सस्था का कोष जो ५० हजार था इनके प्रयत्न से आज ५० लाख का हो गया है। इसलिए उडीसा सरकार ने इजीनियरिंग कालेज की स्थापन के लिए जमीन दी है। इस राशि से इजीनियरिंग कालेज का निर्माण कार्य हो रहा है। इसके अतिरिक्त श्री सीताराम जी का सहयोग दर्जनो सस्थाओ को मिलता रहा है।

आपकी आर्यसमाज सेवा को देखते हुए सन १९८५ मे राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा राष्ट्रपति भवन में आपको सम्मानित किया गया था। इस प्रकार आपकी उपलब्धियों की एक लम्बी सूची है। जो विरले लोगो को ही प्राप्त हो पाती है।

कीर्ति नगर (नई दिल्ली) आर्यसमाज द्वारा ८ दिसम्बर को एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस महती शोक सभा मे सम्मिलित सभी प्रमुख व्यक्तियो ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए श्री सीताराम जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति नतमस्तक हो कर उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। कीर्ति यस्य स जीवति की सार्थकता को उन्होने सही रूप मे प्रदर्शित किया था।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान 'पदमश्री' डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने श्री आर्य को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनके निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। समाज के लोगो को उनके कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उनका जीवन आर्यसमाज एव समाजसेवा हेतु समर्पित था। इस शोकसभा मे ससद सदस्य श्री शकर प्रसाद जायसवाल वाराणसी ने आपकी समाजसेवा का उल्लेख करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की। इस शोकसभा मे आर्यसमाज के प्रधान श्री डॉ० दयानन्द लीखा श्री वेदप्रकाश शास्त्री डॉ० महेश विद्यालकार श्री ऋषिपाल शास्त्री श्री वेदकुमार जायसवाल आचार्य सुभाष श्री राजाराम जायसवाल आदि ने श्री आर्य के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। शोकसभा का सचालन श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा ने किया।

श्री रामविलास खुराना का ८०वां जन्मोत्सव मनाया गया

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान समाजसेवी महाशय राम विलास खुराना के ८० वे जन्मोत्सव को आर्यसमाज गुजरावाला टाऊन–२ मे 'समाज सेवा दिवस के रूप मे मनाया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री वेदव्रत शर्मा ने कहा – खुराना जी युवको व लग्नशील छात्रो के प्रतिभा विकास व रचनात्मक सामाजिक कार्यो मे सदैव प्रेरणास्रोत रहे है। वैदिक धर्म प्रचार मे वे बढ चढकर भाग लेते हैं।

इस अवसर पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ व वैदिक विद्वानो के प्रवचन भी हुए। दिल्ली के विभिन्न भागो से आर्य प्रतिनिधि पधारे।

– मदनमोहन आर्य प्रेस सचिव

भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित ऋषि सप्तम महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समारोह प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ऋषि उद्यान (आनासागर घाटी) मे १८ से २० नवम्बर तक भव्यता से सम्पन्न हुआ। मेले के शुभारम्भ से पूर्व वैदिक रीति से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डॉ० सोमदेव शास्त्री मुम्बई के ब्रह्मत्व मे आरम्भ हुआ। ऋषि मेले का शुभारम्भ परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री गजानन्द आर्य द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया।

वेद एव वैदिक धर्म मे प्रचार प्रसार हेतु आए देश के लब्ध प्रतिष्ठित सन्यासीगण यथा स्वामी सर्वानन्द जी दीनानगर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा दिए गए प्रवचनो को सुनने हेतु अपार भीड रही एव जनसमुदाय ने बडी तन्मयता एव श्रद्धा से उनके विचार सुने।

श्री राजसिंह भल्ला चुनाव अधिकारी की देखरेख में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव सम्पन्न

श्री राजसिह भल्ला

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक निर्वाचन वैदिक विद्वान तथा आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्यनेता श्री राजसिह भल्ला जी की देखरेख एव मार्गदर्शन मे सम्पन्न हुआ। इस चुनाव मे श्री धर्मपाल आर्य नया बास को भारी बहुमत से प्रधान चुना गया। श्री राजसिह भल्ला को आर्य केन्द्रीय सभा की साधारण सभा ने ३० सितम्बर को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया था। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली चार मुख्य समारोहो के लिए आयोजित हुई थी। चुनाव से पूर्व दो कार्यक्रमो के सचालन के लिए श्री भल्ला जी ने अपनी अध्यक्षता मे एक तदर्थ समिति नियुक्त की थी जिसके सयोजक पूर्व प्रधान डॉ० शिवकुमार शास्त्री थे श्री राजसिह भल्ला की सूझबूझ से यह चुनाव पूर्ण लोकतान्त्रिक तरीके से ६ जनवरी को सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री धर्मपाल आर्य को शेष कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया। नवनिर्वाचित प्रधान ने सूचित किया है कि उन्होने श्री सुरेन्द्र कुमार रैली को मन्त्री तथा श्री अरुण प्रकाश वर्मा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया है।

आर्यो सावधान ! कैलाशनाथ सिंह और अग्निवेश से

– परमानन्द आर्य वानप्रस्थी

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश (कैलाशनाथ सिह) के मुख पत्र "आर्यमित्र दिनाक २५ नवम्बर २ दिसम्बर २००१ के अक मे पृष्ठ ३ पर "जन मानस को सन्देश" शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ है। दीपावली पर्व की चर्चा करते हुए लिखा है क्या ही सुखद सयोग है कि आज से कुछ ही दिनो मे रमजान का पवित्र त्योहार लगभग महीने भर हमे पवित्रता की ओर ले जाएगा और उसके बाद भगवान ईसा मसीह का जन्म दिन क्रिसमस हम सबको करुणा और शान्ति का सन्देश देगा।" अगले पैरा मे लिखा है कि आज हम सभी समर्पित हो एक ऐसा समाज बनाने के लिए "जो हजरत मुहम्मद के शान्ति का पैगाम – इस्लाम होगा और ईसा मसीह के सपनो का ईश्वरीय साम्राज्य होगा।

इस सन्देश से ये बाते उभर कर आती है – (१) रमजान का पवित्र त्यौहार पवित्रता की ओर ले जाता है। (२) भगवान ईसा मसीह का जन्म दिन करुणा आर शान्ति का सन्देश देता है। (३) हजरत मुहम्मद का इस्लाम शान्ति का पैगाम देने वाला है। (४) ईसा मसीह का मत ईसाइयत ईश्वरीय साम्राज्य की ओर ले जाने वाला है।

आर्यो आप जानना चाहेगे कि यह पवित्र सन्देश किसने प्रसारित किया है ? **सन्देश के नीचे नाम इस क्रम में लिखें हैं प्रो० कैलाशनाथ सिह प्रधान स्वामी अग्निवेश कार्यकर्ता प्रधान प्रो० शेरसिह उपप्रधान कार्यवाहक प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ७ जन्तर मन्तर रोड नई दिल्ली।**

ज्ञातव्य है कि इसी सन्देश के आगे आशीर्वाद के वरद हस्त शीर्षक के अन्तर्गत लिखा है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के गौरवमय प्रधान पद पर प्रो० कैलाशनाथ सिह के सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर निम्न महनीय पूज्यनीय सन्यासी वर्ग का मगलमय आशीर्वाद उन्हे प्राप्त हुआ है – नामावली मे आर्यसमाज के ३४ सन्यासिया क नाम दिये हैं। हमे इस सूची की सत्यता पर विश्वास नही हुआ। जिन जिन सन्यासियो से हमने फोन पर सम्पर्क किया सभी ने यही कहा कि यह सर्वथा झूठ है और जनता को बरगलाने वाली हरकत है हमने कैलाशनाथ सिह को कोई आशीर्वाद नही दिया। वास्तविकता यह है कि लोकेषणा के भूखे व्यक्ति ने इन सन्यासियो से बिना पूछे उनके नाम छपवा दिए।

आर्य महानुभाव गत साठ वर्षो से मै आर्य समाज मे हू। यथा शक्ति आर्य समाज का काम भी किया है। शास्त्रार्थ महारथी प० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री प० रामचन्द्र देहलवी प० लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति पूज्य अमर स्वामी जी महाराज आदि अनेक वैदिक विद्वानो के भाषण सुनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थो का भी कुछ स्वाध्याय किया है। परन्तु आज तक मुझे कहीं भी यह सुनने या पढने को न ही मिला कि हजरत मुहम्मद का इस्लाम मजहब और ईसा का बाइबिल करुणा और शान्ति का पैगाम देने वाले हैं। यह तो सुनता आया हू कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और वही सच्ची शान्ति का प्रदाता है।

कुरान का आदेश तो यह है "अल्लाह के मार्ग मे लडो उनसे जो तुमसे लडते हैं। मार डालो तुम उनको जहा पाओ। कत्तल से कुफ्र बुरा है। यहा तक उनसे लडो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का। इसकी समीक्षा मे महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास मे लिखते है "जो कुरान मे ऐसी बाते न होती तो मुसलमान लोग इतना बडा अपराध जो कि अन्य मत वालो पर किया है न करते

मुसलमान मानते है कि जो हमारे दीन को न मानेगा उसको हम कतल करेगे। सो करते ही आये इसी समुल्लास मे आगे चलकर महर्षि लिखते है कुरान मे अधिकाश भाग अविद्या भ्रमजाल और मनुष्य के आत्मा को पशुवत बनाकर शान्ति भग कराके उपद्रव मचा मनुष्यो मे विद्रोह फैला परस्पर दु खोत्पत्ति करने वाला है। ऐसी ही सम्मति बाइबिल के बारे मे है। सत्यार्थ प्रकाश त्रयोदश समुल्लास के अन्तिम पैरा मे लिखते है अब कहा तक लिखे इनकी बाइबल मे लाखो बाते खडनीय है। यह तो थोडा सा चिन्हमात्र ईसाइयो की बाइबिल पुस्तक का दिखलाया है इतने से ही बुद्धिमान लोग बहुत समझ लेग। थोडी सी बातो का छोड शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के सग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसा ही बाइबल पुस्तक भी माननीय नहीं हो सकती किन्तु वह सत्य ता वेदो क स्वीकार म गृहीत हाता ही हे।

आर्य महानुभाव प्रो० कैलाशनाथ ओर स्वामी अग्निवश आदि का मत है कि मुहम्मद का मुसलमान मजहब ओर ईसा का ईसाईमत ससार मे करुणा और शान्ति के फेलाने वाल है और इसक विपरीत महर्षि दयानन्द कहत है कि ये मत ससार मे अशान्ति पैदा कर उपद्रव मचाने वाले हे।

अब मे सभी आर्यो स पूछना चाहता हू कि आप दयानन्द की मानोग या कैलाशनाथ – अग्निवेश के गुटबन्दी साथियो का ?

यदि आप अपना विचार आर्यसमाज के समाचार पत्रो मे भी प्रकाशित करा दे तो अत्युत्तम होगा। ✡

ज्ञातव्य है कि माननीय उच्च न्यायालय द्वारा केवल उसी आर्य मित्र साप्ताहिक को प्रकाशित करने के आदेश हुए है जिसके प्रकाशक सरक्षक श्री जयनारायण अरुण सभा प्रधान और सम्पादक श्री चन्द्रकिरण शर्मा सभा मन्त्री हैं और इसी आर्यमित्र को डाकटिकट की छूट माननीय उच्चन्यायालय के आदेशानुसार दी गई है। इस प्रकार कैलाशनाथ सिह द्वारा प्रकाशित आर्यमित्र फर्जी और आर्य जनता को भ्रमित करने के इरादे से अनधिकृत रूप से निकाला जा रहा है। कैलाशनाथ सिह द्वारा किए जा रहे इस दुस्साहसपूर्ण कार्य के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

– **जयनारायण अरुण** *प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०*
उप मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।। ओ३म।।

आर्य पर्वो की सूची

विक्रमी सम्वत् २०५८–५९ तदनुसार सन् २००२ ई०

क्र०स०	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१	लोहडी	पौष बदी ३०	२०५८	१३–१–२००२	रविवार
२	मकर सक्रान्ति	पौष सुदी १	२०५८	१४–१–२००२	सोमवार
३	बसन्त पचमी	माघ सुदी ५	२०५८	१७ २–२००२	रविवार
४	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी ८	२०५८	०६–३–२००२	बुधवार
५	**ऋषि पर्व**(महर्षि दयानन्द जन्म दिवस)	फाल्गुन बदी १०	२०५८	०८–३–२००२	शुक्रवार
६	**ज्योति पर्व** शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोध दिवस)	फाल्गुन बदी १४	२०५८	१२–३–२००२	मगलवार
७	लेखराम तृतीया	फाल्गुन बदी ३	२०५८	१७–३–२००२	रविवार
८	**मिलन पर्व**/नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी १५	२०५८	२८–३–२००२	गुरुवार
९	आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नव सम्वतसर/ उगाडी/गुडी पडवा/चेती चाद	चैत्र सुदी १	२०५९	१३–४–२००२	शनिवार
१०	वैशाखी	चैत्र सुदी १	२०५९	१३–४–२००२	शनिवार
११	रामनवमी	चैत्र सुदी ९	२०५९	२१–४–२००२	रविवार
१२	हरि तृतीया	श्रावण सुदी ३	२०५९	११–८–२००२	रविवार
१३	**वेद प्रचार समारोह** श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी १५	२०५९	२२–८–२००२	गुरुवार
१४	**वेद प्रचार समारोह** श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी ८	२०५९	३१–८–२००२	शनिवार
१५	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी १०	२०५९	१५–१०–२००२	मगलवार
१६	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी दिवस	आश्विन सुदी १२	२०५९	१७–१०–२००२	गुरुवार
१७	**क्षमा पर्व**/ दीपावली (महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस)	कार्तिक बदी ३०	२०५९	०४–११–२००२	सोमवार
१८	**बलिदान पर्व** स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष बदी ४	२०५९	२३–१२–२००२	सोमवार

विशेष टिप्पणी १ आर्यसमाजे इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाए।
२ देशी तिथियो मे घट बढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

वेदव्रत शर्मा

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२,

दूरभाष ३२७४७७१, ३२६०९८५

कैप्टन देवरत्न आर्य के प्रति

सोना माणिक हीरा पन्ना हे अनेक बहुमूल्य रत्न
आर्यजगत का कोहिनूर है कैप्टन देवरत्न।।

निर्धनता असान से हुआ होता देश का उदधार।
सदुपयोग करते मदिर गुरुदवारे जहा स्वर्ण असख्य टन।
आर्यो की छवि होती कुछ भिन्न ही यदि
सार्वदेशिक सभा को पहले मिल जाता यह कैप्टन।

शुभच्छा केप्टन को आप सबको जन जन को।
कृपा जिनकी हुई धन्यवाद उस ईश्वर का भेजना
प्रभु को भगवान को।

— तपेश्वर मिश्र, प्रधान, आर्यसमाज अमरावती, महाराष्ट्र

पृष्ठ १ का शेष भाग ईश्वर भक्ति की प्रेरणाओं से भरपूर ...

इस अन्तिम भजन मे ऋषि दयानन्द क कार्यो और सिद्धान्तो का विशेष रूप से उल्लख किया गया था। इस अन्तिम भजन को सुनकर तो जनता झूम उठी।

सगीत एव भजन कार्यक्रम के अन्त म आगन्तुक महानुभावा का परिचय प्रस्तुत करने के लिए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन का सचालन क लिए आमन्त्रित किया गया।

श्री वधावन ने कहा कि ईशावास्य इदम सर्व यत किम च जगत्याम जगत का साक्षात प्रस्तुतिकरण ऐसे कार्यक्रमो म दिखाई देता है। उन्होने कहा कि अन्य कायक्रमो मे विद्वता रूपी उद्बोधन तो स्वाध्यायशील महानुभावो को गम्भीर चिन्तन और मार्गदर्शन प्रस्तुत करते ही है परन्तु ऐसे सगीतमय कार्यक्रमो क द्वारा सरल शब्दो मे भक्ति की भावनाआ का सचार व्यक्ति की आत्मा आर शरीर दोना को आनन्दित कर देता है।

उन्होने कहा कि जो व्यक्ति पराक्रम का प्रदर्शन करते है उनकी कीर्ति बढती है और जो दानवीर हाते है उनका यश बढता है। आज के इस समारोह मे हम पराक्रम और दान की भावना को ही सम्मानित करने वाले हे।

सर्वप्रथम राज्य सभा के सदस्य श्री बी पी सिघल को आमन्त्रित किया गया जो पूर्व पुलिस महानिदेशक थे। उत्तर प्रदेश मे सरकार को जहा कहीं भी डाकूग्रस्त क्षेत्र देखने को मिलता था वहा पर लक्ष्यबद्ध और समयबद्ध कार्यक्रम [illegible] श्री सिघल जी की नियुक्ति हाती थी और इन्होने जीवन मे सदव हर लक्ष्य को समय से पूर्व ही प्राप्त करके दिखाया। असख्य डाकुओं को मोत के घाट उतारने वाल इन पराक्रमी पुरुष का सम्मानित करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। श्री सिघल को शाल ओढाकर सम्मानित किया गया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि भाजपा द्वारा श्री सिघल को ससद मे राज्य सभा का सदस्य बनाकर भी कही उसी सिद्धान्त का प्रतीक तो नही कि जहा पर भी डाकुओ के होने की सभावना हो वहा श्री सिघल को नियुक्त किया जाए।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल क परिचय मे श्री वधावन ने कहा कि एक राष्ट्रवादी चिन्तक होन क नात श्री बसल सदैव अपनी योग्यता और अनुभव क बल पर पवित्रता ईमानदारी और राष्ट्रभक्ति के सिद्धान्तो की रक्षा मे लगे रहे है। आयसमाज के इस सक्रमण काल से उबारने मे भी श्री बसल के अथक प्रयास जारी है।

दैनिक जागरण के यशस्वी और पराक्रमी पत्रकार श्री योगेश मिश्र को उनके राष्ट्रवादी लेखो के कारण सम्मानित किया गया। श्री मिश्र ने हाल ही मे एक लख के द्वारा दैनिक जागरण की प्रथम पक्तियो द्वारा राष्ट्र का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि भारत मे चल रहे मदरसे आतकवादी बनाने की फैक्टरियो के रूप मे कार्य कर रहे है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा न श्री योगेश मिश्र को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास पर आधारित एक स्मृति चिन्ह भेंट किया जिसमे ईश्वर की कई शक्तियो को ही ईश्वर के विभिन्न नाम बताते हुए ईश्वर को सदैव स्मरण रखने की प्रेरणा है।

दानवीर महाशय धर्मपाल जी का उनके इस अवसर पर किए गए सहयोग क लिए सम्मानित किया गया। जब कभी भी सार्वदेशिक सभा द्वारा किसी सहायता कार्यक्रम के आयोजन की घोषणा होती है महाशय जी का हर सम्भव सहयोग सदैव प्राप्त होता है।

कार्यक्रम के अन्त मे रजौरी गार्डन आर्यसमाज के प्रधान श्री सदानन्द मदान ने सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन का शाल और स्मृति चिन्ह प्रदान करके अभिनन्दन किया तथा आर्यसमाज के दायित्व निर्वहन की ईश्वरीय शक्ति का आशीर्वाद दिया।

इस भजन सध्या के आयोजन मे सहयागी सर्वश्री जगदीश आर्य नवनीत अग्रवाल रवीन्द आर्य [illegible] डाक्टर सुरेश आलूवालिया अतुल आर्य [illegible] चावला भुवनेश आर्य विवेक चडडा नरेश विग विनय मदान वीरेन्द कुमार अरुण सचदेवा हेमन्त सचदेवा सजीव सेठी रवि घई तथा समस्त उपस्थित आर्य सज्जनो माताओ तथा बच्चो का भी सचालक श्री नरेन्द्र आर्य द्वारा धन्यवाद किया गया।

कार्यक्रम के उपरान्त स्वादिष्ट भोजन का आयोजन आर्यजनो के सहयोग से किया गया।

बिछडे भाई पुनः आर्य बने

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन पर गत अनेक वर्षो से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा महाभियान के अन्तर्गत श्री स्वामी जी की देखरेख मे शुद्धि आन्दोलन रही है। इसी श्रृखला मे गत ६ दि को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे वेदिक सत्सग आश्रम कटगझरिया जिला सुन्दरगढ मे १६८ ईसाई परिवारो के ३०० से अधिक व्यक्तियो ने श्री प० विशिकेसन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर इन दीक्षित लोगो को आशीर्वाद देने तथा प्रीतिभाज मे भाग लेने के लिए भारी सख्या मे स्थानीय आदिवासी जनता [illegible]। इस अवसर पर स्थानीय [illegible] श्री गगाधर जी श्री कुलमणी आर्य श्री डीलेश्वर पटेल मस्मा श्री वासुदेव होता पामरा श्री भगतसिह श्री गेवरा ब्र० वीरेन्द्र व ब्र० वेदमित्र आदि अनेक विद्वान वक्ता कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का पूरा श्रेय श्री रामजीवन जी आर्य एव श्री धनेश्वर जी को जाता है जिन्होने इस कार्यक्रम मे महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

— सुदर्शनदेवार्य, उपमत्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

तथाकथित अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन में
हमारा कोई सहयोग नहीं

आयमित्र दिनाक २३ से ३० दिसम्बर मे यह पढकर बडा आश्चर्य हुआ कि किसी तथाकथित अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन मे २० जनवरी को एक रैली का आयोजन किया जा रहा है जिसमे हमारा नाम इस कार्यक्रम के सयोजक के रूप मे प्रकाशित है। यह कार्यक्रम न तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और न दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा या आर्य केन्द्रीय सभा अथवा किसी भी आर्यसमाज द्वारा आयोजित नहीं है। हमने ऐसे किसी कार्यक्रम मे कभी किसी प्रकार की स्वीकृति नहीं दी। आर्यजन ऐसे झूठे और मनगढन्त दुष्प्रचार के झासे मे न आए।

— सुरेन्द्र रैली, धर्मपाल आर्य
अभिमन्यु चावला, सुरेन्द्र गम्भीर,
शिव शकर गुप्ता

भजन सध्या का सचालन करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन [illegible] नरेन्द्र आर्य दनिक जागरण के पत्रकार श्री योगेश मिश्र को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री नवनीत अग्रवाल श्री जगदीश आर्य तथा अन्य।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ३६ २० जनवरी से २६ जनवरी २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ पौ० शु० ६
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल कांगड़ी के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन की घोषणा

२५, २६, २७ और २८ अप्रैल, २००२ को हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन १६ जनवरी २००२ को प्रात जालधर पहुचे स्टेशन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वरिष्ठ अधिकारियो सर्वश्री देवेन्द्र शर्मा सुदर्शन शर्मा श्रीमती राजेश शर्मा प्रेम भारद्वाज सरदारी लाल आर्य तथा कई अन्य महानुभावो ने सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो का स्वागत किया। जालधर पहुचने के तत्काल बाद पजाब सभा के प्रधान श्री हरवश लाल शर्मा तथा अन्य आर्य नेताओ के साथ एक अत्यावश्यक बैठक प्रारम्भ हुई जिसमे यह निर्णय किया गया कि आगामी २५, २६ २७ एव २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे विशाल स्तर पर गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन का आयोजन हरिद्वार की पुण्य भूमि पर किया जाए। सौ वर्ष पूर्व इस भूमि पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने अथक प्रयासो और विद्वता के बल पर गुरुकुल कागड़ी की स्थापना की थी। यह गुरुकुल अपने प्रारम्भिक काल से ही देश भक्त पैदा करने की एक फैक्ट्री के रूप मे प्रसिद्ध रहा। इस महान सस्था का जो पौधा स्वामीजी ने लगाया था वह आज एक वट वृक्ष के रूप मे स्थापित है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तत्काल बाद इस सस्था को केन्द्र सरकार ने विश्वविद्यालय के समान मान्यता प्रदान की। परन्तु दुर्भाग्य से तथा कुछ स्वार्थी तत्वो के कारण इस विशाल सस्था की कुछ बहुमूल्य भूमि बेचने का दुष्कर्म आज समूची आर्यजनता की पीडा का कारण है। इस महान सस्था के गौरव को पुन उसके मूलरूप मे स्थापित करने के उददेश्य से ही गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के आयोजन का निश्चय किया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा ने कहा कि यह महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे होगा तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय और इससे जुडी सभी सस्थाए और भारतवर्ष की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाए इस महासम्मेलन मे सहयोग करेगी तो समूचे आर्यसमाज को एक नई शक्ति प्रेरणा और उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन मिलेगा।

इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा अन्य महानुभावो ने भी अपने विचार रखे तथा महासम्मेलन के सत्रो और आयोजन के तरीको पर गहन विचार विमर्श किया। यह महासम्मेलन इतिहास के मार्ग पर सौ वर्षीय मील का पत्थर साबित होगा।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि डी०ए०वी० तथा अन्य आर्य शिक्षण सस्थाए बेशक बडा सराहनीय और प्रशसनीय कार्य कर रही हैं। इन शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से बच्चो को आर्य नागरिक बनाने मे काफी सहायता मिलती है परन्तु आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तो के देश देशान्तर मे प्रचार प्रसार की योजना केवल गुरुकुलो जैसी सस्थाओ मे ही सम्भव है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मेलन मे एक लाख की सख्या तक आर्यजनो के विशाल समागम की योजना बनाई जा रही है। इस महासम्मेलन मे आयोजित होने वाले सत्रो और विद्वान वक्ताओ का निर्धारण भी इस उद्देश्य से किया जाएगा कि ऐसे विचार और सकल्प विश्व की आर्य जनता के सामने प्रस्तुत किए जाए जिससे त्याग तपस्या और बलिदान की भावनाओ के आधार पर भविष्य का निर्माण हो। विगत वर्ष मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से जो श्रद्धा और अनुशासन की शुरुआत हुई है उसे बनाए रखने के लिए अब आर्यजनता को क्रियान्वयन के मार्ग पर ले चलने की नितान्त आवश्यकता है।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आर्यसमाज और विशेष रूप से गुरुकुल के योगदान का विस्तृत उल्लेख किया। उन्होने आशा व्यक्त की कि महासम्मेलन से हम पुराने गौरवशाली इतिहास को दोहराने के सकल्प और उसके क्रियान्वयन के तरीको पर विचार करेगे।

श्री सोमदत्त महाजन श्री देवेन्द्र शर्मा तथा श्रीमती राजेश शर्मा ने भी इस महासम्मेलन को सही समय पर एक सही शुरुआत बताया।

इस बैठक के बाद एक पत्रकार सम्मेलन को भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने सम्बोधित किया जिसमे इस महासम्मेलन की योजना के अतिरिक्त अन्य कई सामयिक विषयो जैसे इतिहास सशोधन आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाले सिद्धान्त के विरुद्ध तथा आर्यसमाज के सगठनात्मक पहलुओ पर भी पत्रकारो के प्रश्नो का सन्तोषजनक उत्तर दिया गया।

पत्रकार वार्ता के दौरान अग्निवेश द्वारा गठित और घोषित गैर कानूनी और अनधिकृत पदाधिकारियो की सूची पर टिप्पणी करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि अग्निवेश पूरी तरह से वैदिक सिद्धान्तो के समर्थक नहीं है बल्कि इसके विपरीत कई बार कम्युनिस्ट विचारधाराओ का समर्थन करते हैं। सगठन के अनुशासन को खराब करने के लिए वे कई वर्षों से कार्य करते रहे है। १६६३ मे भी एक बोगस सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो की घोषणा अनधिकृत रूप से अग्निवेश तथा कैलाशनाथ सिह आदि ने की।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पूर्णिमा स्मृति न्यास की ओर से श्री राजसिंह भल्ला का अभिनन्दन

आर्यसमाज अशोक विहार फेस ३ के तत्वावधान मे लोहडी एव मकर सक्रान्ति पर्व का आयोजन १३ जनवरी को किया गया। यज्ञ के उपरान्त वैदिक विद्वान तथा कर्मठ आर्यनेता श्री राजसिह भल्ला का पूर्णिमा स्मृति न्यास की ओर से शाल ओढाकर तथा स्मृति चिन्ह और नारियल भेट करके अभिनन्दन किया गया। पूर्णिमा स्मृति न्यास स्व० श्रीमती पूनम वधावन की स्मृति मे वैदिक विद्वानो का अभिनन्दन करने के लिए तथा अन्य धार्मिक और राष्ट्रसेवा के कार्य करने के लिए गठित किया गया है।

श्री राजसिह भल्ला

आर्यसमाज मन्दिर की ओर से भी श्री भल्ला का शाल ओढाकर स्वागत किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा श्री धर्मवीर जी का भी उनकी विशिष्ट सेवाओ के लिए अभिनन्दन किया गया।

श्री राजसिह भल्ला तथा श्री विमल वधावन ने लोहडी तथा मकर सक्रान्ति के पर्व पर आगन्तुक महानुभावो को इन पर्वो का महत्व बताते हुए शुभकामनाए दी। ✡

वैद्य इन्द्रदेव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री नियुक्त

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अतरग बैठक दिनाक १२ जनवरी २००२ मे गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय मे गैर कानूनी रूप से १४४ बीघा भूमि बेचने पर गम्भीर चर्चा होती रही। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल सिह मलिक इस चर्चा के जवाब मे सन्तोष जनक उत्तर नही दे पाए। परिणामत उन्हे महामन्त्री पद से त्यागपत्र देना पडा। अतरग सभा ने सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव के द्वारा उनके त्यागपत्र को स्वीकार किया और कर्मठ आर्यनेता श्री वैद्य इन्द्रदेव जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का महामन्त्री नियुक्त किया।

श्री वैद्य इन्द्रदेव जी

१५ जनवरी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कुछ विशेष अधिकारियो की बैठक बुलाई और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे प्रचार प्रसार को गति प्रदान करने की योजनाओ पर चर्चा की गई।

पृष्ठ १ का शेष भाग

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन की घोषणा

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर भी आर्यसमाज के सगठन को खराब करने का प्रयास किया गया। सार्वदेशिक सभा द्वारा कई बार इन्हे अपने इन कार्यो से विमुख करने की प्रेरणा की गई परन्तु इन्होने अनुशासन बनाए रखने के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया। ३ और ४ नवम्बर २००१ का त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन अदालत के आदेशानुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी की देखरेख मे सम्पन्न हुआ था। अत इन परिस्थितियो मे किसी अन्य व्यक्ति को चुनाव प्रक्रिया मे दखल या कोई घोषणा करने का कोई कानूनी अधिकार नही है। आर्यजनता अग्निवेश इन्द्रवेश तथा कैलाश नाथ सिह आदि के दुष्प्रचार अभियान से सावधान रहे।

इन बैठको के बाद सार्वदेशिक सभा के अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय गए।

सार्वदेशिक सभा समूचे आर्यजगत को इस प्रथम सूचना के आधार पर यह आह्वान करती है कि अधिक से अधिक सख्या मे २५,२६ २७ २८ अप्रैल २००२ को आयोजित इस गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए हरिद्वार पहुचने हेतु आर्यजनता को प्रेरित करे। इन तिथियो मे स्थानीय या प्रान्तीय स्तर का कोई कार्यक्रम न रखा जाए। यदि कुछ कार्यक्रम पूर्व घोषित हो तो उन्हे स्थगित करके आगे की तिथियो मे रखा जाए।

आर्य जीवन पद्धति

दो कदम चलना, चार कदम दौडना

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे धर्मप्रचार समिति द्वारा कुछ सुझाव आर्यजनता से मागे गए थे जिन्हे प्रेरणा स्वरूप अन्य आर्यजनो के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। इस स्तम्भ मे आप भी अपने क्रियाकलाप आचरण व्यवहार तथा अपने सामाजिक कार्यो को लिखकर भेजे। जिससे हमारे मार्गदर्शक आर्यसज्जनो के दो कदम चलने को हम चार कदम की दौड बना सके। इस उक्ति से अभिप्राय है कि यदि त्याग तपस्या और पवित्रता के मार्ग पर यदि हमे कोई महानुभाव दो कदम चलते नजर आए तो हम उस मार्ग पर चार कदम दौड लगाए। कृपया नि सकोच अपने विचार और अनुभव हमे भेजे।

*– **विमल वधावन** वरिष्ठ उप-प्रधान*

१ धर्म प्रचार निमित्त सार्थक कार्य तभी होगे जब हम व्यक्तिगत स्वार्थ मान अपमान की परिधि से बाहर हो जाये। कार्य करने के लिए पद की अनिवार्यता न हो हम बिना पद के भी आर्यसमाज का कार्य कर सकते है।

२ हमने आर्यसमाज को **आयसमाज** बना रखा है। हम व्यापारी न बन कर समाज के सेवक बने और अपेक्षित मौको पर समाज के प्रति सहानुभूति का व्यवहार करे। हमे अपने वैदिक प्रचार का सुअवसर स्वत मिल जाता है।

३ रविवारीय सत्सगो मे मात्र यज्ञ मे उपस्थिति देकर हम आर्यसमाज का कार्य नहीं करते उसके लिए अपने व्यवसाय का दिनचर्या का बहुमूल्य समय समाज के लिए देकर कर सकते हैं। हम भाग्यशाली है कि आज की परिस्थितियो में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त है। पहले जितना सघर्ष हमें नही करना पडेगा।

४ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा व्यवहार आचार विचार ऐसा हो कि समाज पर नकारात्मक प्रभाव न पडे क्योकि धूम्रपान करने वाला व्यक्ति हमसे यह अपेक्षा रखता है कि हम धूम्रपान न करे। हमारी प्रत्येक गतिविधि पर समाज गहरी दृष्टि रखता है और यह चाहता है कि हम आर्य बनकर उन्हे राह दिखाने का कार्य करे।

५ मैं पिछले १० वर्षों से आस पास के सैकडो गाव में अपने व्यवसाय की प्रत्यक्ष हानि करके अप्रत्यक्ष लाभ कमाने का भाग्य प्राप्त कर चुका हू। परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग मे लगाये रखे यही कामना करता हू।

६ अन्त मे मैं यही कहना चाहूगा कि हम आर्य बने। ईमानदारी निष्ठा सदभाव स्नेह से समाज मे वेद का प्रचार करे। हम व्यवसायी न बने समाज हमे जब भी याद करे तो हम अपने हानि लाभ की चिन्ता किये बगैर समाज के काम आये। एक दिन वह आयेगा कि लोग आर्यसमाज की भावना को समझेगे और हमे सफलता अवश्य मिलेगी। ✡

दाम्पत्य दर्शन

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त वी०एस०एम०

ग्रीक दार्शनिक सुकरात एक जाडे की रात अपने शिष्यो के साथ गोष्ठी के बाद घर पहुच। दरवाजे पर दस्तक दी निष्फल रही। साकल जोर से खटखटाई। दो महले पर सो रही उनकी पत्नी की मीठी नींद मे कडुआ व्यवधान पडा। झुंझला कर उठी अपशब्दो के साथ ठन्डे पानी की बाल्टी उठाई और छत से ही सुकरात के सर पर उडेल दी। ठण्डी आह भरते हुए दार्शनिक सुकरात ने शिष्यो को सीख दी प्यारे मित्रो विवाह अवश्य करना। यदि ममता भरी पत्नी मिली तो तन–मन जीवन सुखी रहेगा। यदि मिली मेरी पत्नी समान कर्कशा चुडैल प्रवृत्ति वाली तो मर समान दार्शनिक बन जाओगे।

दृश्य बदलता है। सहस्त्रो वष पूर्व अवध की राजधानी अयोध्या। श्रीराम से केकेयी कह चुकी है कि राजा दशरथ के आदेशानुसार वह १४ वर्ष तक वनवास करे। सीता जी ने अपना मन्तव्य श्री राम को बताया कि व वन मे भी पति की अनुगामी बनी रहेगी। बिना श्रीराम के सूनी अयोध्या मे वे एक पल एक क्षण भी नही रह सकती। श्री राम नही चाहते कि सीता जी वन गमन कर। व कठिनाइया और सम्भावित विपत्तिया की चचा विस्तार से करत हैं। वन मे हिसक जन्तु है नर भक्षी दानव है मानव को ताडना देने वाल दानव है सुर–हन्ता असुर है। हा वन की तृण शय्या पर अयोध्या के राजमहल मे बिछे कोमल बिछौनो का शयन–सुख कहा मिलगा ? इस सीता–राम सवाद मे दाम्पत्य दशन का मर्म है। पति–पत्नी के मध्य अपनत्व एव त्याग की भावना प्रबल है। एक दूसर को सुखी देखना चाहते है कष्ट स्वय सहकर। पत्नी पति के पारस्परिक मधुर सम्बन्ध के मूल मे है एक दूसरे को सुखी बनाने के लिए 'त्याग भाव। यदि जगल मे भटक गए हैं भूख लगी है पास मे एक ही रोटी है तो आधी आधी खाकर सो जाने मे सुख है। यदि एक अस्वस्थ है तो दूसरा चिकित्सा सेवा सुश्रूषा करे दोनो को सुख मिलेगा। ऐसी स्थिति मे सिनेमा–थियेटर क्या अकेले जाना उचित होगा ? खरीदा हुआ टिकट वापस करना ही हितकर होगा। सुख–दुख बाटने वाले ही सच्चे साथी है जीवन साथी जन्म जन्मान्तर के।

सुखी विवाहित जीवन मे पति–पत्नी के बीच अनुकूलता' की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि विवाह पूर्व स्वभाव रुचि शिक्षा जीवन दर्शन खान–पान एक दूसरे के अनुकूल हो तो सोने मे सुहागा है। यदि ऐसा नही है तो विवाह के बाद 'शय्या–सम्बन्ध' से लेकर उच्चस्तर के जीवन दर्शन तक अनुकूलता लाने का अथक प्रयास करना श्रयस्कर होगा। आइए इस पवित्र सम्बन्ध के आरम्भिक चरण से आरम्भ करे अनुकूलता के प्रश्न को १ विवाह क लिए वर–वधू स्वय एक दूसरे का चयन करे। वे वयस्क है ओर हित–अहित का ज्ञान है उन्हे। कन्या को अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार है। स्वयपर प्राचीन प्रथा ह वदोक्त है। अथर्ववेद का मन्त्र है और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे उद्धरित किया है –

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवान विन्दते पतिम

इस वद मन्त्र एव भावी वर–वधू की अनुकूलता क बारे मे महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते है –

जेसे लडके ब्रह्मचर्य सेवन स पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त हो के युवति विदुषी अपने अनुकूल प्रियसदृश स्त्रिया क साथ विवाह करते है वैस कुमारी ब्रह्मचय सेवन से वदादि शास्त्रा को पढ पर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवति होके पूर्ण युवावस्था म अपन सदृश प्रिय विद्वान पूण यवावस्था युक्त पुरुष का प्राप्त हावे।

जीवन मे रुचि एक समान होने से घर क अन्दर और बाहर पति पत्नी का परस्पर साथ रहता है। सवाद क अवसर भी अधिक मिलते है। यो अपन अपन व्यवसाय म कछ काल क लिए ता वे अलग रहना जा उचित भी है किन्तु उसक दाद सम्वाद के लिए समान विचार स सहायता मिलती है। कार्यालय या कालेज क बन्द घर लौटन पर रसोई म आपसी सहयोग से खाना बनाने और साथ खाने से प्रेम पुष्ट होता है। जूठा खाना मना है दात काटी रोटी नजदीक आने का निशान है। जब सतान का जन्म हो तो उसे मा–बाप मिलकर बडा कर तो अपनत्व मे अमूल्य मिठास आती है। क्यो न हम कह कि पति–पत्नी के बीच मानसिक निकटता के प्रत्येक अवसर का सदुपयाग कीजिए।

पति पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध मे सवाद अमृत है सवादहीनता विष है। प्रेममय सम्बन्ध को अटूट करने के लिए शारीरिक सकेत – आखे मुखमण्डल कन्धे हाथ–पैर आलिगन चुम्बन भाषायी आदान–प्रदान या केवल मौन मनन – सभी सहायक है। सवाद भग न हो। मन्त्रणा होती रहनी चाहिए। एक दूसरे की बातो पर विचारो पर तत्काल कुठाराघात न कीजिए। यदि पत्नी पालक–पनीर बनाना चाहती है तो विरोध न करे – आप को मटर मशरूम पसन्द हैं तो अगले दिन बना ले। एक दूसरे का समर्थन करे। समर्थन मे शक्ति निहित है। एक और एक होते है ग्यारह। ऋग्वेद के सगठन सूक्त के मन्त्र मानव समाज को एक सूत्र मे बाधने मे सहायक है पति–पत्नी को पास लाने मे प्ररणा का स्रात है। ऋग्वद का अतिम मन्त्र है

समानी व आकृति समाना हृदयानि व।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।

हमार हृदय और हमार सकल्प अविरोधी हे सदव मन मे परस्पर प्रेम हो सुख सम्पदा बढाने का वही साधन हे। नव विवाहितो के माता–पिता एव मित्रो की ओर से सगठन सूक्त के मन्त्र हिन्दी भाष्य सहित उपहार म दिए जान चाहिए। नव–दम्पति मन्त्रो पर मनन करे और नित्य प्रति क जीवन मे व्यवहार मे लाए। प्रेम प्रजनन मे सहायक सिद्ध होते है हमारे सगठन सूक्त क मन्त्र। यह परामर्श अनुभव आधारित है।

विवाहित जीवन को सुखमय बनाने की श्रखला मे एक महत्वपूण कडी है शय्या शिष्टाचार। शयन कक्ष मे दम्पति का पूर्ण एकान्त मिलना चाहिए पति पत्नी क बीच वह नहीं होना चाहिए छाया भी नही पडनी चाहिए निमल मन अ[illegible]न पर। मनय ह सम्भोग का ऋतुदान देने का सस्कारी सतान उत्पन्न करने की पक्रिया का। नव–विवाहितो को साधन एव साध्य का ज्ञान होना चाहिए। इस ज्ञान स लज्जावश मुख मोडना आत्महनन समान हा सकता है। काइ शकालु सज्जन इस सेक्स शिक्षा का अनुचित मानकर नाक भा सिकाड सकते है। ऐसे पति–पत्नी को यदि गन मिल कर ग्लानि होती है तो गृहस्थाश्रम म उनका प्रवेश भी अनुचित होगा। यदि वे गर्भाधान विधि से अपरिचित रहना चाहते है तो पितृ ऋण से कसे उऋण होगे ? फिर भी सत्यार्थ प्रकाश का चतुर्थ सम्मुल्लास उनका मार्ग दर्शन कर सकता है –

जब वीर्य का गर्भाशय मे गिरने का समय हो उस समय स्त्री पुरुष स्थिर और नासिका के सामने नासिका नेत्र के सामने नेत्र अर्थात सूधा शरीर और अत्यन्त प्रसन्नचित रहे डिगे नही। पुरुष अपने शरीर को ढीला छोडे और स्त्री वीर्य प्राप्ति के समय अपान वायु को ऊपर खींचे। यानि को ऊपर सकोच कर वीर्य का ऊपर आकर्षण करके गर्भाशय मे स्थिर करे पश्चात दोनो शुद्ध जल से स्नान करे

ऋषिवर प्रजनन प्रक्रिया मे पारदर्शिता के पक्षधर हैं अश्लीलता के नहीं। उन्होने ऋतुदान और प्रजनन प्रक्रिया से अलग होने पर इस विद्या को वर्जित माना है। वैदिक मान्यता क अनुसार ब्रह्मचय क वीर्य को व्यथ न जाने द। जो मासाहिक व्यक्ति इस आदश के अनुरूप शय्या शिष्टाचार का पालन करने मे असमर्थ है उन्हे भी यह जानना चाहिए कि इस मिलन मे पति–पत्नी की समान भागीदारी है। जो नर इस सेक्स को अपनी हविष की पूर्ति मात्र मानते है वह नारी को दुखी करते ह। फुटबाल विश्व कप क समय पुरुष दर रात तक टी वी० पर मैच देखते ओर मैच समाप्ति पर टी वी स्विच आफ करक पत्नी क निकट आन करत थे। साती जागती अनसयी पत्नी को यह सम्भाग नही सुहाया। एकागी सक्स से दाम्पत्य म दरार पडी। दुखी जीव स दूर भागा दाम्पत्य सुख। जब पति पत्नी को सेक्स म समान सुख मिल वही कहलाता है सम्भोग।

सस्कारी सतान आधार स्तम्भ है दाम्पत्य सुखका। बच्चा जन्म लेते ही मा बाप क सुख का स्रात बन जाता है। काइ उसे आखा का तारा कहता है ता कोई दूज क चाद। ब[illegible] [illegible] लालन–पालन शिक्षा–दीक्षा मा[illegible] पिता और आचार्य का कर्त्तव्य है। शतपथ ब्राह्मण बल देता है मातृमान पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेद। अत शिशु का जन्म दकर ही दाम्पत्य दशन की इतिश्री नहीं हो जाती। उसे गृहाश्रम म प्रवश कराकर ही माता–पिता स्वय वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश करत है। यह वैदिक परम्परा ह। अपन बच्चे को वद क अनुसार अच्छा मानव बना इसे मनुर्भव। इसका आधार है सत्य शिक्षा। बच्चे के लिए सुख सुविधा का प्रबन्ध अवश्य कीजिए कि तु पढाई–लिखाई से लाड प्यार परे रखिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक कवि के वचन को उद्धरित किया है

माता शत्रु पिता वेरी येन बालो न पाठित।
न शोभते सभामध्ये हसमध्ये बको यथा।।

सत्यार्थ प्रकाश मे ऋषिवर लिखते हैं

वे माता और पिता अपने सताना के पूर्ण वैरी है जिन्होने उनको विद्या की प्राप्ति नही कराइ वे विद्वानो की सभा मे वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते है जैस हसो के बीच मे बगुला।

अत नव विवाहित दम्पति स्वय सकल्प करे कि अपने जीवन मे ओर सतानो के जीवन मे सुख का सचार अटूट रखेगे।

– उपवन ६०६ सेक्टर २६
नोयडा २०१३०३

शिक्षा और विज्ञान के नाम पर पाखण्ड का प्रचार

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

सभी विचारशील पुरुषो की धारणा है कि शिक्षा और विशेषत वैज्ञानिक शिक्षा के द्वारा मनुष्य की चिन्तन शक्ति और उसके विवेक को बढावा मिलता है। विज्ञान का लक्ष्य ही सृष्टि मे व्याप्त सत्य का उद्‌घाटन करना है। स्वामी दयानन्द ने विज्ञान को पदार्थ विद्या का नाम दिया था और शिक्षा मे पदार्थ विद्या का पाठयक्रम रखने की पुरजोर हिमायत की थी। यद्यपि स्वामी जी के युग मे भौतिक विज्ञान ने अधिक उन्नति नहीं की थी तथापि स्वामीजी चाहते थे कि इस देश के नवयुवक नवीन विज्ञान तथा प्रौद्योगकी से परिचित हो तथा राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि मे उसका उपयोग करे। आज भारत सरकार के शिक्षा मत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी जो स्वय भौतिक विज्ञान के विद्वान है विश्वविद्यालयो मे फलित ज्योतिष पौराणिक कर्मकाण्ड तथा वैदिक गणित के नाम से प्रसिद्ध कुछ कल्पित फार्मूलो को पढाने की जबरदस्त वकालत कर रहे है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विभिन्न विश्वविद्यालयो को आर्थिक सहायता देने की बात कही है जो उपर्युक्त विषयो को अपने पाठयक्रमो मे रखता है। यह भी कहा गया है कि ये सभी विषय वैकल्पिक है और किसी छात्र को इन्हे पढना अनिवार्य नहीं है।

उधर कांग्रेस तथा वामपन्थी विचार धारा के दल शिक्षा के क्षेत्र मे प्रविष्ट किए जाने वाले नए विषयो का विरोध कर रहे है तथा उसे शिक्षा का भगवाकरण कह कर इसकी आलोचना कर रहे है। आश्चर्य तो यह है कि भगवा या काषाय का शब्दार्थ भी न समझने वाली कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाधी पानी पी पी कर सरकार को इसलिए कोस रही है कि वह शिक्षा का भगवाकरण कर रही है। हम इस बात को प्रारम्भ मे ही स्पष्ट कर देना आवश्यक समझते हैं कि भगवा रग को बदनाम करने वाले इस राजनैतिक मुहावरे भगवाकरण के प्रयोग पर हमे सख्त आपत्ति है। भारतीय सस्कृति मे भगवा रग आदर सूचक है। वह त्याग वैराग्य सेवा तथा विश्वमैत्री का प्रतीक है। आर्य जाति के साधु सन्त त्यागी तपस्वी महात्मा एव सन्यासी भगवा रग के वस्त्र पहनते हैं। शकराचार्य से लेकर स्वामी दयानन्द स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ पर्यन्त सन्यासियो के वस्त्र भगवा होते थे। समर्थ रामदास भी भगवा वस्त्रधारी थे। आज भी हमारा मस्तक भगवा वस्त्र धारी साधु सन्यासी के सामने स्वत ही झुक जाता है। अत पवित्र और आदरणीय समझे जाने वाले भगवा रग को राजनैतिक चोला पहनाना तथा उसे बदनाम करना भारतीय सस्कृति का अपमान है। क्यो हमारे साधु, सन्त महन्त और मण्डलेश्वर इस बात को लेकर क्षुद्र राजनीतिज्ञो को फटकार नहीं बताते कि वे एक दूसरे पर कीचड बेशक डाले किन्तु त्याग और वैराग्य के प्रतीक भगवा रग को बीच मे कदापि न लाये।

किन्तु हमारे इस चिन्तन के साथ कुछ और सवाल जुडे है। आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द ने फलित ज्योतिष को मिथ्या पाखण्ड बताया है। उनकी दृष्टि मे जन्मपत्र शोकपत्र है तथा शीघ्रबोध मुहूर्त चिन्तामणि आदि फलित ज्योतिष के ग्रन्थ अनार्ष है। फलत त्याज्य है। गणित ज्योतिष की स्थिति इससे भिन्न है। गणित ज्योतिष पूर्णतया वैज्ञानिक है और उसके द्वारा निकाले निष्कर्ष पूर्णतया सत्य होते है। उस सदर्भ मे स्वामी जी लिखते है – दो वर्ष मे ज्योतिषशास्त्र सूर्य सिद्धान्तादि जिसमे बीजगणित अकगणित भूगोल खगोल और भूगर्भ विद्या है इसको यथावत सीखे। परन्तु जितने ग्रह नक्षत्र जन्मपत्र राशि मुहूर्त आदि के फल के विधायक (फलित ज्योतिष) ग्रन्थ हैं उनको झूठा समझ के न पढे और न पढावे। सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास। स्वामीजी ने शीघ्रबोध के अष्टवर्षा भवेद गौरी आदि बाल विवाह विधायक श्लोको की कटु आलोचना की है। फलित ज्योतिष के द्वारा ससार मे अधविश्वास पाखण्ड भाग्यवाद अकर्मण्यता पुरुषार्थहीनता को तो बढावा मिलता ही है झूठे ज्योतिषियो के पाखण्ड जाल मे फस कर लोग अपने धन स्वास्थ्य तथा आत्मिक बल को खो बैठते हैं। स्वामी सत्यप्रकाश जी एक बहुत तथ्यपूर्ण बात कहते थे। पचास साठ वर्ष पूर्व छपने वाले हिन्दी तथा अन्य भाषाओ के समाचार पत्रो मे कहीं भी साप्ताहिक फल राशियो के अनुसार व्यक्तियो के सम्बन्ध मे भविष्य कथन आदि नहीं छपते थे। किन्तु अब प्रत्येक दैनिक अथवा साप्ताहिक पत्र का पाठक सबसे पहले साप्ताहिक राशिफल को देखता है तथा उसके आधार पर झूठे सच्चे सपने देखने लगता है। पत्रो से हम यह अपेक्षा करते हैं कि वह पाठक मे बुद्धिवाद तथा विवेक को जागृत करेगा। किन्तु इससे उलटा हो रहा है। कादम्बिनी जैसी पत्रिकाए भूत प्रेत तथा तत्र मत्रो की मिथ्या कथाओ से भरे विशेषाक छाप कर पाठको को पाखण्ड और अधविश्वास के गर्त मे ढकेलती हैं।

हमारा निवेदन है कि गणित ज्योतिष तो सदा से ही विश्वविद्यालयो के पाठयक्रमो मे रही है। स्वामी जी ने तो इस विज्ञान के अन्तर्गत एरिथमेटिक ज्यामिति बीजगणित यहा तक कि भूगर्भ विद्या तक का समावेश कर उसे व्यापक अर्थवत्ता प्रदान की है। फलित ज्योतिष के खण्डन मे प० वेदव्रत मीमासक ने जो ग्रन्थ लिखे है उनसे स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि भविष्य कथन हस्तरेखा सामुद्रिक विद्या मुहूर्त विचार दिशाशूल तथा दिनो को शुभाशुभ मानना नक्षत्रो के शुभाशुभ फलो को मानना नवग्रहो को शुभाशुभ समझना राशियो का विचार कुण्डली विचार आदि फलित ज्योतिष के अन्तर्गत आने वाले सभी विषय मिथ्या तथा कपोल कल्पित है। यहा विस्तार मे न जाकर यही कहना उचित है कि आज के वैज्ञानिक युग मे फलित ज्योतिष जैसे पाखण्ड को बढाने वाले विषयो को विश्वविद्यालयो के पाठयक्रम मे समाविष्ट करना छात्रो को मध्ययुग मे ढकेलने तुल्य है। इस फलित विद्या को सीखकर हमारे नवयुवक भी सडकछाप ज्योतिषी बनकर ससार को ठगते रहेगे। ज्योतिष के नाम पर पाखण्ड तथा पापाचार को बढाने वाले कथित ज्योतिषी डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली का कच्चा चिटठा यदि लोग पढेगे तो जान सकेगे कि आज के इस बुद्धिवाद के युग मे भी भोले भाले लोगो को ज्योतिष के नाम पर मूर्ख बनाना कितना सरल है।

अब पौरोहित्य विद्या को ले। डॉ० जोशी तथा उनके समानधर्मी लोगो का कथन है कि इस पौरोहित्य विद्या को पढकर नवयुवको को रोजगार मिलेगा। हमारा निवेदन है कि पौरोहित्य तथा कर्मकाण्ड के अन्तर्गत इस पाठयक्रम मे क्या पढाया जाएगा ? क्या उन्हे आकवलायन पारस्कर गोमिल आदि गृह्यसूत्रो की शिक्षा देकर वैदिक कर्मकाण्ड सिखाया जाएगा। क्या उन्हे दयानन्द सरस्वती प्रणीत सस्कार विधि के आधार पर सोलह सस्कारो का प्रशिक्षण दिया जाएगा। ऐसा नहीं है। उन्हे गणेश पूजन घट स्थापन नवग्रह पूजन शिव विष्णु आदि पचदेवो की पूजा दुर्गासप्तशती के अनुसार हवन (जिसमे गर्जगर्ज क्षण मूढ ! मधु यावत विवाम्हम' श्लोक के विनियोग मे यज्ञवेदी मे शराब की आहुति का विधान है) मृतक श्राद्ध शिवपिण्डी पर पचगव्यों की धारा आदि पौराणिक कृत्य सिखाये जाएगे। इस विधि को सीखे पुरोहित विवाहों को वैसा ही तमाशा बनायेगे जैसा हम हिन्दी फिल्मो मे हिन्दू विवाह तथा हिन्दु पुरोहित की दुर्दशा देखते हैं।

यही पुरोहित मदिरो मे मूर्ति स्थापना करायेगे पाषाणप्रतिमाओ मे देवताओ का आह्वान करेगे। पत्थरो मे प्राण प्रतिष्ठा का आडम्बर कर लोगो का धन हरण करेगे। यदि गरुडपुराण वाच कर यजमानो के धन का हरण करना ही पुरोहितो का इतिकर्त्तव्य माना जाये तब तो इस पौरोहित्य प्रशिक्षण से तोबा कर लेनी चाहिए।

अब गणित विद्या की कथित वैदिक शाखा को देखे। कुछ वर्ष पहले पुरी के एक दिवगत शकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ रचित वैदिक मैथेमेटिक्स नामक अग्रेजी पुस्तक छपी। इसमे वैदिक गणित के कुछ सूत्रो को उद्धृत कर गणित के कुछ प्रसगो की चर्चा की गई। जब मेरे एक परिचित ने ये वैदिक सूत्र मुझे बताये और कहा कि ये अथर्ववेद के मत्र हैं। मैंने इस सूत्रो को देखते ही कह दिया कि ये अथर्ववेद के मत्र नहीं हैं। भारती कृष्णातीर्थ के कल्पित वाक्य है। रुडकी विश्व विद्यालय के किसी प्राध्यापक ने इस वैदिक गणित का प्रचार किया। इसके अनेक कार्यशालाए आयोजित की गई तथा इस पुस्तक का प्रचार किया गया। हमारा निवेदन है कि स्वामी दयानन्द ने गणित विद्या का मूल वेदो मे दर्शाया है तथा इसी के आधार पर परवर्ती गणितज्ञो ने अपने ग्रन्थो की रचना की है। गणित जैसी विद्या को किसी दायरे मे बाधना इस विद्या का अपमान करना है।

शेष पृष्ठ ६ पर

कैसे खत्म होगा इस्लामी आतंकवाद

– राजीव चतुर्वेदी

इस शताब्दी की शुरुआत मे ही हम शान्ति की पक्षधरता को नहीं बल्कि किसी एक आतकी का साथ देने को अभिशप्त होगे ? जैसा अमेरिका मे बिन लादेन ने किया वैसा ही दाऊद इब्राहिम ने भारत के साथ मुम्बई बम काण्ड जैसी घटनाओ को अजाम देकर किया था फिर दाऊद के प्रत्यर्पण का दबाव क्यो नहीं बना रहा है अमेरिका ? जैसा कि आतकी प्रशिक्षण केन्द्रो पर अब भारत के हमले की माग उठ रही है अजहर मसूद और दाऊद को मार गिराने के लिए भारत अगर पाकिस्तान पर हमला कर दे तो वह किस तर्क से गलत कहा जाएगा? ऐसे मे भारत क्या करे कि जब आतक फैलाने के एकाधिकार या वर्चस्व की लडाई छिड चुकी हो ? दरअसल यह द्वन्द्व अमन बनाम आतक का नहीं यह द्वन्द्व है व्यक्तिगत बनाम राष्ट्रगत आतक और इस्लामिक बनाम ईसाई आतकवाद का।

चाद और 'चर्च' के इन पक्षकारो की शैलिया और हथकण्डे अलग भले ही हो पर मसूबा एक सा ही है अतिक्रमण का। हम भारल के लोग इस परिदृश्य मे कहा हैं ? यह सवाल आज इसलिए अनिवार्य है कि हमे हमेशा आतकी देश कहने वाला पाकिस्तान आज आतक के कारखाने चलाते हुए भी आतकवाद से लडने का सेहरा अपने ही माथे पर बाधने मे सफल हुआ। पाकिस्तान से भी अमरीकी प्रतिबन्ध खत्म कर दिए गए है। उसे खरबो रुपया भी बख्शीस मे दिया गया है और परमाणु प्रतिबन्ध भी हटा लिए गए है। यह सब तब हुआ जब कि भारत की मिलिट्री इटेलीजेस की रिपोर्ट के हवाले से अमेरिका को आगाह किया जा चुका था कि पाकिस्तान मे मुशर्रफ सरकार १६३ से भी अधिक आतकी प्रशिक्षण – केन्द्र चला रही है जिनमे से ७२ प्रशिक्षण केन्द्र पाकिस्तान मे और ८१ पाक अधिकृत कश्मीर मे आज भी चल रहे है।

पाकिस्तान का साथ दे रहा अमेरिका केवल अपने विरुद्ध आतकवाद की लडाई लड रहा है वह आतकवाद के खात्मे की लडाई नहीं लड रहा। हमे भी अपने विरुद्ध चलाए जा रहे पाकिस्तान प्रायोजित आतकवाद की लडाई लडनी होगी। हम कहते हैं कि – 'पाकिस्तान हमारे सब्र का इम्तहान अब और न ले और यह कहते–कहते हम अपने सब्र का अनन्त प्रतीत होता इम्तहान देते आ रहे हैं। आखिर कब तक ? अमेरिका मे जो कुछ हुआ उस मौके का फायदा उठाकर इस्राइल ने आनन–फानन उसी दिन फिलिस्तीन का फन कुचला लेकिन हम आज भी सब्र का इम्तहान देते परीक्षार्थी की मुद्रा मे हैं। दुनिया आक्रामक के साथ होती है। आज अमेरिका के साथ वह जापान है जिस पर उसने एटम बम दागे थे। वह रूस है जो इसी अफगानिस्तान के मुददे पर उसका जानी दुश्मन था। चीन भी अमेरिका के सहयोगियो की फेहरिस्त मे ऊपर है। कर्नल गद्दाफी भी अपने जानी दुश्मन अमरिका के दास्त बन चुके हैं। कुल मिलाकर आतक के सस्कारो से यह लडाई नही आतक के विभिन्न सस्करणो के बीच का द्वन्द्व है।

इसके बावजूद आज विश्व–रगमच के परिदृश्य की कल्पना करे – एक सुबह खबर थी कि एक सपेरे को साप ने डस लिया। ११ सितम्बर को अमेरिका के अहकार को डस देने वाला वह विषधर लम्बे अर्से तक अमेरिका की ही आस्तीन का साप था। उस दिन वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर की उस गगनचुम्बी इमारत के साथ ही अमेरिका का अहकार भी ढह गया था। उस दिन अमेरिका के पैर मे भी बिवाई फटी थी और उसने हमारी पीर जानी थी। उस दिन की घटना से इस्लामिक आतकवाद का घडा भर कर छलक गया था। भारत को सयम का उपदेश देने का आदी हो चुका अमरिका अपना सयम खो चुका था। एक व्यक्ति ने दुनिया के सबसे ताकतवर देश का अहकार धूलधूसरित कर दिया था। सो जवाबी हमला तो होना ही था लेकिन उसके पहले विश्व रगमच पर राष्ट्र अपनी भूमिका तलाशने और पाने की जुगत मे लग गए। उन्हे आशका थी कि कहीं वे अप्रासगिक न हो जाए।

कुछ देश तो इस सियासी शतरज की गोटो की तरह आगे पीछे सरकर कर मनोवैज्ञानिक शह मात से बचने की मुद्रा मे थे। विश्व राजनीति के इस विद्रूप होने के बावजूद भी मनोरजक परिदृश्य पर गौर करे तो आतकवाद से लडने की सैद्धान्तिक सहमति कम दरोगागीरी का मनोरोग अधिक है। कुल मिलाकर आतक के एकाधिकार की लडाई चालू हो चुकी है। हमारी इसी विवशता को कुछ लोग विश्वयुद्ध का दर्जा देने का पहले से ही मन बना चुके हैं। विश्व रगमच के पात्रो पर गौर करे – परवेज मुशर्रफ के नेतृत्व मे पाकिस्तान किसी ऐसे छुटभैये अपराधी की भूमिका मे है कि जो अपराध ी मानसिकता का तो होता लेकिन इसके लिए आवश्यक ससाधनो और साहस के अभाव मे पुलिस मुखबिर बन जाता है ताकि पुलिस सरक्षण मे अपना अपराध जारी रख सके और पुलिस का लाडला भी बना रहे। ऐसा पुलिस मुखबिर एक–एक कर अपने अपराधी साथियो के साथ दगा करके उन्हे पुलिस से पकडवाता है।

पाकिस्तान ने भी तालिबान के साथ यही किया। अमेरिका किसी ऐसे दरोगा की भूमिका मे है जिसे ज्ञापन देती भीड मे से कोई शैतान पत्थर मार देता है और भाग जाने मे सफल होता हे। दूसरी ओर इस परिदृश्य से हम सहमे हुए लोग इसमे भी सिद्धान्त या शान्ति का सन्देश तलाश रहे है। एक बात जो अब साफ है कि हमारी सरकार अभी भी आतकवाद का अमेरिका की तरह प्रतिकार नही करना चाहती। जब बिल क्लिटन भारत आए थे तब कश्मीर के चटटीसिहपुरा मे नरसहार पाकिस्तानी आतकियो ने किया था और हम मूक रहे थे। ११ सितम्बर को अमेरिका मे आतकी हमले के बाद हमारे यहा सरकारी फरमान के तहत पूरे राष्ट्र को मौन रहने को कहा गया।

हम तो दो दशको से आतकवाद के खिलाफ मौन हैं। हम दो दशको से सयम से रहने के उपदेश इसी अमेरिका और इग्लैण्ड से सुन रहे है लेकिन एक बार फिर इस्लामिक आतकवाद का प्रणेता पाकिस्तान अमेरिका का लाडला हो गया है और एक [illegible] फिर स हम ढाढस बधाया जा रहा है कि ओसामा [illegible] से निपटान के बाद पाकिस्तान के लश्कर और जैश ए मोहम्मद से भी निपटा जाएगा। लेकिन कब ? उत्तर हमे नहीं पता। इस बीच कश्मीर विधानसभा पर भी आतकी हमला हो चुका है। यह हमला ठीक उसी तर्ज पर हुआ जैसा कि अमेरिका क 'वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर या 'पेण्टागन' पर हुआ था। अन्तर बस इतना ही था कि वहा टकराने वाले हवाई जहाज थे और यहा कार। वहा की घटना का सूत्रधार ओसामा बिन लादेन था और यहा पाकिस्तान।

सैन्य खुफिया एजेन्सी की रिपोर्ट के अनुसार कारगिल युद्ध के बाद से बीते ६ सितम्बर (अमेरिकी हादसे से केवल दो दिन पहले तक) पाक अधिकृत कश्मीर के प्रशिक्षण शिविरो से भारत मे आतक बरपाने भेजे गए आतकवादियो के हमलो मे ब्रिगेडियर कर्नल पुलिस के डी०आई०जी० सेना के मेजर कैप्टन जे०सी०ओ० व पुलिस के उपाधीक्षक समेत साढे तीन सौ से भी अधिक सुरक्षाकर्मी मारे गए। बीते सितम्बर महीने में ही ऊधमपुर के अगराला धरकुण्ड और डोडा के खूनी नाले के पास हुए आतकी हमलो मे सेना व अर्धसैनिक बलो के अफसर व जवानो समेत करीब चालीस सुरक्षाकर्मी मारे गए। इसी माह इन्हीं पाकिस्तान के प्रशिक्षण शिविरो से भेजे गए आतकवादियो ने सेना पर तीन बडे हमले किए। कारगिल युद्ध के बाद १३ जुलाई ९९ से इस साल ६ सितम्बर तक इन आतकवादी प्रशिक्षण शिविरो के आतकवादियो के वष पाकिस्तान सेना ने भारतीय सैन्य ठिक व सुरक्षाबलो पर ३१ बडे हमले कि इनमे छुटपुट और रोजमर्रा के फुट हमले शामिल नहीं है। सैन्य खुफि एजेन्सी की तरफ से रक्षा मन्त्रालय दी गई जानकारी मे बताया गया है उक्त प्रशिक्षण शिविरो से प्रशिक्षण प्रा आतकवादियो ने इस साल (३० जून [illegible] तक ८३१ वडे हमल किए। इनमे [illegible] हमले सैन्य ठिकानो पर रॉकेट अ मिसाइलो से हमले हुए और २८ हमलो सुरक्षा बलो के हथियारा की लूट हुई

सैन्य दस्तावेजो के अनुसार पाकिस्त के अन्दर आतकवादियो को आधुनिक हथियारो का प्रशिक्षण देने का क इस्लामाबाद वायुसेना अडडे पर कि जा रहा है। इसके अतिरिक्त सेबटाबा अलीपु चठिया अटक अवनशरी अययूबिया कैंप बजौर बटटल चकवा चिराजफाटा डेरा गाजीखान डे इस्माइल खान इलाका गैर का मिरानशा फतेहगज गजो अक्कर गढी हबीबुल्ल गुजराव [illegible] गुजरात [illegible] तहफलिर हसलपुर (मुल्तान) हैदराबाद (सिन्ध इसाखेल जबोरी इस्लामाबाद के झा क्षेत्र झेलम खोस्त कोहला कोह कोटली लाहौर के फिउ हाउस गुलब रैनावाला कादीकोटल (मिरानशाह लरकाना (सिन्ध) मनशेरा जगल (आज कैंप) नरवल (पजाब) नकीबाबाद जग ओधी गाव ओझेरी कैंप पब्बी जग पारा चिनार पलानची पेशावर क्वे रावलपिंडी का चादनी चौक चकला फतेहाबाद मुसुम शहर सैदगल सरगोध शैकत (खोस्त) शेखुप शिकयारी सियालकोट टाडो आलि तुरबेला थाल ठडियानी ठग उठा बलूचिस्तान और वरसक प्रशिक्षण शिवि मे कैसे और कितने आतकियो [illegible] पाकिस्तान प्रशिक्षित कर रहा है इस ब्यौरा भी भारत की मिलिट्री इटेलीजेस अपनी ताजा रिपोर्ट मे शमिल किया

उक्त के अतिरिक्त आलियाबा अमीना अरजा आशकोट अथमुका बडाली बाघ बकरेल बनछत्तर ब बडीहजीरा बडी चातर बटाल भटटीव भाटपोरा भीमबर भूतही कैप चह चालकोट (रावलकोट) चरोई छब छ (अम्बोर) चिकार आदि एक सौ अधिक स्थानो पर अधिकृत कश्मीर आतकवादियो के शिवर पाकिस्तान द्वा धडल्ले से चलाए जा रहे हैं।

नोट उक्त विवरण ससद भवन हमले से पूर्व का है आतकियो द्वारा स पर हमला और वर्तमान परिस्थिति का विव अगले अकों में प्रकाशित किया जाएगा।

पर्वों का पुञ्ज : मकर संक्रान्ति

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति इन्दौर

हमारे आर्य पूर्वज इस विशाल ब्रह्माण्ड मे समय समय पर होने वाले परिवतन का सूक्ष्म निरीक्षण करते थे। उस परिवर्तन झझावतो से मानव जाति की रक्षा कर प्रकृति के विभिन्न तत्वो को अपने विकास मे सहायक बनाने का प्रयास करते थे। वैदिक ऋचाआ के दृष्टा अपने अनुभवो को वेदिक ऋचाआ द्वारा प्रकट कर प्रकृति से सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न करते थे। वैदिक आर्यो ने सूर्य चन्द्र नक्षत्र आदि का गहराई से अध्ययन मनन और चिन्तन किया था। चूकि ये सभी जड है किन्तु परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित रहते है।

यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मत्र है – **ओ३म चित्र देवानामुदगादनीक चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।**

यजुर्वेद अ० ७ मत्र ४२

इस सुन्दर और सरल मत्र मे कहा ग्या है कि दिव्यगुण युक्त विद्वानो अथवा उपासको का जीवन व बलरूप तथा अदभुत रूप वाला वह परमेश्वर सूर्य का वायु का तथा अग्नि का मार्ग दर्शक है। वह द्यूलोक पृथिवी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक को प्राप्त हो रहा है। चर अर्थात प्राणी जगत का अचर अर्थात जड जगत का आत्मा वही सूर्य सबसे अभिसरणीय अर्थात प्राप्त करने याग्य है। उसके प्रति हम सर्वस्व का समर्पण करते है। सूर्य से अधिकाधिक लाभ लेते है। इस प्रकार कारण स्वरूप परमात्मा से प्राप्त यह समस्त प्राकृतिक पदार्थ प्रकाशमान है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार जितने समय मे पृथिवी सूर्य के चारो ओर परिक्रमा पूर्ण करती है उस अवधि को एक सौर वर्ष कहते है। कुछ लम्बी मृदग वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है उस परिधि को क्रान्तिवृत कहा जाता है। हमारे मनीषियो ने इस क्राति वृत्त के १२ भाग कल्पित किये हुए हैं। इन १२ भागो के नाम उन उन स्थानो पर आकाशस्थ नक्षत्र पुञ्जो से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिए है। जैसे १ मेष २ वृषभ ३ मिथुन ४ कर्क ५ सिह ६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ६ धनु १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन। प्रत्येक भाग अथवा आकृति को राशि कहते हैं। ये सभी राशिया अथवा आकृतिया जड हैं इनका अपना काई अलग अस्तित्व नही है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि मे सक्रमण (प्रवेश) करती है तब उसे सकृान्ति कहा जाता है।

मध्ययुग अथवा पौराणिक युग (४ से ६ शताब्दी ई०) मे कतिपय स्वार्थी धन लोलुप सस्कृतज्ञ विद्वानो ने सामाजिक मानसिकता की कमजोरी का लाभ उठाकर इन नक्षत्रो ग्रहो आदि छोटे बडे पुञ्जो के आधार पर फलित ज्योतिष की कुछ कल्पित बाते गढ ली। भृगु – सहिता आदि नाम पर सुखद दुखद ग्रहो की गपोड शसी बाते समाज मे प्रचारित कर दी। मुहूर्त चौघडिया मगल सूतक पञ्चक आदि की तथ्यहीन तथा बुद्धि विवेक के विरुद्ध तथा तर्क पर न ठहरने वाली बाते समाज मे एक मानसिक भय के विचारो का प्रचार दिया। जप पुरश्चरण दान दक्षिणा जिसमे भूमि द्रव्य सोना चादी पलग बिस्तर तथा गोदान का प्रचार कर दिया। अनिष्टकारी ग्रहो नक्षत्रो (जड पदार्थ) के प्रतिनिधि बनकर सकट ग्रस्त जातक को दुख दूर करने का पाखड फैला दिया। वस्तुत देखा जाय तो इस राष्ट्र की सभी प्रकार की हानि जितना इन फलित ज्योतिषियो ने की है उतनी हानि बाहरी आक्रमणकारियो ने भी नहीं की है। फलित ज्योतिष विज्ञान प्रधान तर्क पर आधार बुद्धि और विवेक के सम्मुख कही नहीं ठहरता। दुर्भाग्य है कि समाचार पत्र पत्रिकाए जन साधारण की इसी मानसिक कमजोरी का लाभ उठाकर आर्थिक और व्यापारिक अवसर ढूढने मे लगे हैं। कम से कम पत्रकारिता के पवित्र क्षेत्र को फलित ज्योतिष की कालिमा से दूर रखना चाहिए।

प्रसग वश मकर सक्रान्ति की चर्चा चल रही है अतएव इस सबध मे इतना ही कहना पर्याप्त है कि दक्षिणायन काल मे रात्रिया दीर्घ कालीन और दिन छोटे होते है। सूर्य की मकर राशि (१०वा क्रम) की सक्राति से उत्तरायण और कर्क सक्राति (४ था क्रम) दक्षिणायन प्रारम्भ हो जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर सक्राति का अत्यधिक महत्व है। मकर का सामान्य अर्थ मगर है। जिस प्रकार यूरोप के लोग २५ दिसम्बर को बडा दिन मानते है। हम भारतीय आर्यगण मकर सक्राति को ही बडा दिन मानते है। साधारण जन की मान्यता है कि इसी दिन से ही तिल तिल दिन बढने लगता है। हमारा वर्षारम्भ आग्रहायण से होता है। चान्द्रमास के वर्ष के १० दिन कम होने पर उसे लौदमास के द्वारा सोर मास के वर्षो मे बराबर किया जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि ज्योतिष के ये सूक्ष्म सूत्र सर्वप्रथम आर्यो ने ही किए है। वेदिक साहित्य मे ज्योतिष ज्योति शास्त्र को वेद पुरुष का नेम **ज्योतिष नैन प्रोक्तम** कहा गया है।

यजुर्वेद के अध्याय ३० मन्त्र १५ के अनुसार ६० सवत्सरो मे ५ ५ के १२ युग होते है। वर्णित प्रत्येक युग मे क्रम स सवत्सर परिवत्सर इच्छावत्सर अनुवत्सर और इद्वत्सर ये ५ सज्ञाए है। ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर कहा जाता है कि रोमन लोग १० माह का वर्ष मानते थे। ज्यूलियस सीजर ने भारतीय ज्योतिष से प्रभावित होकर अपने वर्षो मे परिवर्तन कर १० माहो के स्थान पर १२ महीने किए। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि रोम निवासियो पर भारतीय ज्योतिष का बहुत प्रभाव था। ज्यूलियस सीजर ने जुलाई अपने नाम पर तथा अगस्त अपने काका (काका) ऑगस्टस के नामानुसार रख दिया।

मुसलमान आज भी चान्द्रमासो को मानकर पिछडे हुए हैं। यदि ये भी हिन्दू ज्योतिष से मिलकर कार्य करें तो इनकी ईद के चाद की अनिश्चितता की कठिनाई दूर हो सकती है। किन्तु यह सब गुण ग्राहकता पर निर्भर करता है।

मकर सक्रान्ति पर्व कृषक प्रिय त्यौहार है। कहा जाता है कि तक्षशिला मे खगोलशास्त्रीगण 'लोई शब्द से भली भाति परिचित थे इसका सम्बन्ध सीधे सूर्य से ही रखा गया है। लोई शब्द का साम्रान्य अर्थ 'गरमाहट है। हमारे पजाब–हरियाणा के कृषक को गर्मी अधिक प्रिय है। गर्मी (उष्णता) से फसल अच्छी और खूब पकती है। यही कारण है कि मकर सौर सक्रान्ति पर कृषक बहुत खुश होते है मकर सक्रान्ति से सभी लोग अपना व्यापारादि प्रारम्भ करते है और मैदानो मे आना जाना प्रारम्भ कर देते है। इस क्षेत्र मे जिस व्यक्ति के यहा गत वर्ष कोई शुभ कार्य जैसे विवाह सन्तानोतपत्ति आदि हुआ हो वह आज रात्रि को होली जलाता है। अपने सगे सम्बन्धियो तथा इष्ट मित्रो मे यह पर्व मनाकर मिठाई आदि वितरण करते है।

भारतीय दर्शन मे उत्तरायण काल तथा मृत्यु का गजब सह–सम्बन्ध माना गया है। कहते है उत्तरायणकाल मे दिवगत की आत्मा पुनर्जन्म ग्रहण नही करती। किन्तु यह वैदिक सिद्धान्त नही है। कोई भी जीव शान्तकर्मो के द्वारा अनन्त कालीन मोक्ष प्राप्त नही कर सकता। मोक्षावधि के पश्चात जीव को पुनर्जन्म ग्रहण करना पडता है।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागो मे इस पर्व को अपनी मान्यता और श्रद्धा के अनुसार मनाते है। कही पोगल (दक्षिण भारत) तथा माघ बीहू पूर्वोत्तर भारत (असम आदि) मे मनाया जाता है। इन्हीं दिनो गगा सागर (प० बगाल) मे लाखो श्रद्धालु स्नान कर अपने को पुण्य भागी मानते है। पोगल पर्व से तमिल का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। इसे बडी धूम–धाम से मनाया जाता है। हमारे यहा धार्मिक मान्यता है कि सारे तीर्थ बारम्बार गगा सागर एक बार। जहा तक माघ बीहू का सम्बन्ध है असम मे यह धान कटाई का पर्व होता है। यहा होली की तरह जी जलाकर पूजन किया जाता है। असम वासियो मे मान्यता है कि जी जलाने (अग्नि) कि साथ ही सारे पापो और बुराईयो का नाश हो जाता है। पोगल का अर्थ 'खीर होता है। केरल के क्षेत्रो मे भगवान अयप्पा का प्रख्यात मन्दिर है और यह बडा भारी आराधना केन्द्र है। कहा जाता है कि इस दिन कुछ क्षणो के लिए मन्दिर के निकट पहाडियो मे आग की लपटे उठती दिखाई पडती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इस शीत प्रधान अवसर पर तिल तुल च ताम्बल तरुणीतृप्त भोजनम हिमन्ते न सेवन्ते ते नरा मन्द भागिनम। तिल रूई गुड तथा सफल गृहस्थ जीवन द्वारा इसका लाभ उठाना चाहिए।

– सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर (म०प्र०) ४५२००६

प्रकृति परिवर्तन और हमारे आर्य पर्व

भारत विषुवत रेखा के ठीक ऊपर स्थित है। भारत तथा विषुवत रेखा के मध्य एक बहुत छोटा सी द्वीप सिहल लका अथवा श्रीलका अपनी विभिन्न प्राकृतिक विशेषताओ को लेकर विद्यमान है। भारत का ज्योतिष पर्व त्यौहार और अनेकानेक उत्सव इसी विषुवत रेखा के प्राकृतिक प्रभावो को लेकर ही निर्धारित हैं। हमारे सभी पर्व प्रकृति भूगोल खगोल तथा भूगर्भ विद्या को समेटे हुए पर्यावरण प्रधान हैं। उन्हीं मे से यह मकर सक्राति पर्व प्राकृतिक पर्यावरण से आगुठित है। – आर्यपर्व पद्धति

ऐतिहासिक विकृतियों का पुनर्मूल्यांकन

— डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

सहस्रो वर्षों की परतन्त्रता के काल मे भारत पर चारो ओर से प्रहार हुए धार्मिक भौगोलिक सामाजिक आर्थिक साहित्यिक इतिहास एव प्राचीन दस्तावेज सम्बन्धी ऐतिहासिक स्मारक पुरातात्विक सास्कृतिक अस्तित्व को बुरी तरह से रौंदा गया। मुगल हूण तुर्क मगोल पठान व फिरगियो ने तलवार व गोली से जो रक्त रजित होली खेली बालको स्त्रियो पुरुषो की मान मर्यादाओ को मिटटी मे मिलाने के प्रयत्न किए यह किसी से छिपा नही है और इस सहस्रो वर्षो के घोर कष्टमय दारुण कष्ट को भारत की बुद्धिजीवी जनता तो कभी भी भुला न पाएगी।

भौगोलिक व राजनैतिक परतन्त्रता से तो भारत के क्रान्तिकारियो अमर शहीदो ने राष्ट्र को बचा लिया परन्तु अभी जो वास्तविक परतन्त्रता है उससे मुक्ति पाना आवश्यक है समाज मे कुरीतिया अन्धविश्वास व पाखण्ड तथा मूर्ति पूजा हमारे समाज के पतन के कारण है इधर इतिहास पुस्तको मे अनेक भ्रान्ति पूर्ण विषय पढाए जाते है ऐसी बिकृतियो को अलग कर जो सत्यता है वही पढाई जानी चाहिए। सत्यतापूर्ण निष्पक्ष रूप से इतिहास मे आयी कमियो व दोषो को दूर करना आवश्यक है।

आर्य भारत के मूल निवासी हैं

आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है ओर आर्यो का मूल ज्ञान व मत वेद है रामायण महाभारत ऐतिहासिक प्राचीन ग्रन्थ है इनमे ज्ञान के विषय तो समस्त विश्व के मानव हेतु हैं परन्तु जो भौगोलिक स्थान पर्वत स्थान नगर आदि का वर्णन है वह भारत के ही है। सस्कृत सभी पाश्चात्य भाषाओ की जननी रही है आर्यो की मूल भाषा थी। आर्यो का देश भारत है जिसका प्राचीन नाम आर्यावर्त था तथा अन्य बाह्य सभी देशो मे श्रेष्ठ होने से आर्यमत ही प्रचलित था। नेहरू की अग्रेज परस्ती और डिस्कवरी ऑफ इण्डिया मे आर्यो को विदेशी बता कर अनर्थ कर दिया है नेहरू ने अग्रेजियत का प्रचार किया क्योकि जैसा राजा होता है प्रजा भी वैसी ही हो जाती है नेहरू भारतीय सस्कृति से अधिक पाश्चात्य (अग्रेजी) सस्कृति प्रेमी थे। एक ओर भौगोलिक साम्राज्य जो कशमीर की है नेहरु की ही देन है यदि उस समय स्वतन्त्रता मिलने पर भारतीयता को बढावा दिया जाता तो आज परिस्थितिया विपरीत न होतीं। आर्यो के भरतीय मूल के होने के सहस्रो अकाट्य प्रमाण हैं और बाहरी अर्थात विदेशी होने का एक भी प्रमाण नहीं है।

विकृत ऐतिहासिक तथ्य — महाराणा प्रताप का नाम लेते ही स्वतन्त्रता के उपासक राष्ट्रस्वभिमानी राष्ट्र भक्त प्रतापी वीर व चेतक पर सवार अश्वारोही का चित्र उभर कर सामने आता है वह कभी शत्रु के सामने झुका नहीं राष्ट्र रक्षा हेतु भूमि पर शयन करने की शपथ खायी और स्वर्ण पात्रो मे भोजन करने को छोड दिया था जगलो मे घास की रोटिया खानी पडी। कई अन्य शासको ने अकबर के सामने समर्पण कर दिया था परन्तु प्रतापी महाराणा प्रताप ने उससे सघर्ष किया व राष्ट्र गौरव की रक्षा हर प्रकार से की। वह महान था उसके आदर्श आज भी पालन करने योग्य है आज उस महान गौरवशाली प्रताप को महान न बता कर विदेशी लुटेरो आक्रमणकारियो और चरित्र हीन तथा राष्ट्र की अस्मिता से खिलवाड करने वाले अकबर को महान बताना कौन सा औचित्य है मुगलो से सम्बन्ध — कई पुस्तको मे भ्रान्ति पूर्ण विचार धारा है कि राजपूतो ने अपनी पुत्रियो का विवाह मुगल शासको से किया था वह सर्वथा असत्य है यह तो सभी जानते हैं कि मुगल शासक चरित्रहीन क्रूर अधम श्रेणी के होते थे तथा भारतीय कन्याओ स्त्रियो का अपहरण कर अपने यहा रखते थे राजपूत कन्याए व स्त्रिया मुगलो के हाथ पडने से पूर्व मृत्यु का आलिगन करना उचित समझती थी भारमल की दासी मानाबाई को मुगलो मे पुत्री बता दिया गया है आलम यह था कि मुगल शासक किसी की भी कन्या को अपहृत करके विवाह कर लेते थे और उसे राजपूतो की पुत्री बताना अपना गौरव समझते थे। औरगजेब एक इसाई बेगम को उदयपुरी बेगम कहता था। इतिहास साक्षी है कि उदयपुर से कोई भी कनया मुस्लिम बादशाह को नहीं दी गई। शत्रु के आक्रमण और उनके द्वारा मान मर्यादा कुचले जाने से पूर्व क्षत्राणिया जौहर कर लेती थीं उनके हृदय में राष्ट्र भक्ति व गौरवता कूट—कूट कर भरी होती थी। हाडा रानी हाडी कर्मवती पदमिनी पन्नादाय रुठी रानी उमादे भटियानी किरण देवी तथा अनेक क्षत्राणिया ने भारत भूमि मुख्यत राजस्थान मे अपना नाम अमर किया। वीर नारिया मृत्यु को खेल समझती थीं। मगला चरण कर क्षत्रियो को रण भूमि मे भेजती थी 'मडती हाटा मौतरी मरुधररै मैदान' वीर नारी के लिए कहा है —

जननी जनै तो दोय जण के दाता के सूर।
नींतर रहजे बाझणी मती गमाजे नूर।।

जहा एक से एक वीर नारिया व पुरुष हो वहा शत्रु के सम्बन्ध तो दूर उनकी छाया मे भी रहना सम्भव नही। धन के कुछ लोभी पुरुषो ने इतिहास मे बहुत से शर्मनाक द्रष्टात व विषय जान बूझकर लिखे जो कि भ्रान्ति पूर्ण है इन विषयो पर शोध आवश्यक है विचार किया जाए तो हम देखेगे कि इतिहास मे कोई भी अपमान जनक तथ्य नही है। बाद मे इसमे परिवर्तन किए गए। ऐतिहासिक स्मारक — आक्रमणकारियो ने भारतीय प्राचीन ऐतिहासिक स्थानो स्मारको को नष्ट किया व उनका नाम बदलवा दिया उनमे दिल्ली का लाल किला जामा मस्जिद तथा महरौली स्थित वेधस्तम्भ (कुतुव मीनार) आदि अनेक स्थान हैं जिन पर विचार कर सत्यनिष्कर्ष निकालना आवश्यक है।

स्वतन्त्रता सग्राम और महर्षि दयानन्द

१८५७ के आक्रमण (गदर) से पूर्व महर्षि दयानन्द ने महारानी लक्ष्मी बाई तात्या टोपे आदि को स्वराज्य का अर्थ समझाया था और दिन रात चल कर स्थान—स्थान पर वेदोपदेश दिए अग्रेजो से स्पष्ट कहा था कि क्रान्तिकारी जो कर रहे है वह उचित है स्वतन्त्रता हेतु लडना चाहिए। महर्षि ने भारतीय प्राचीन वैदिक गौरव की स्थापना हेतु ही आर्यसमाजो की स्थापना की थी वह जानते थे कि जब तक राजा व प्रजा को जाग्रत नहीं किया तो राष्ट्र को स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। महर्षि दयानन्द ने वेदो का प्रकाश किया और राष्ट्र की उन्नति हेतु ही आजीवन प्रयत्नशील रहे राष्ट्र हेतु ही अनेक कष्ट सहे विषपान किया और बलिदान हो गए उन महान सन्यासी राष्ट्र भक्त महर्षि दयानन्द को इतिहास पुस्तको मे स्थान नही दिया गया है।

अनेक और भी विषय है पूरे भारत के इतिहास का पुनमूल्याकन कर विदेशी आक्रमणकारियो द्वारा बदले गए शब्द जाल को हटाना चाहिए और जो सत्य है उसे लिखना चाहिए।

रामायण व महाभारत — कुछ तो बाद के लेखको ने इस आर्यो के इतिहास मे भ्रामक द्रष्टात व विषय भर दिए कुछ विदेशी प्रभाव से तथा समाज के पाखण्डी लोगो ने भ्रामक विषय आरोपित कर दिए तथा बहुत से लोग इन्हे काल्पनिक ही बताने लगे यह सब आर्य सस्कृति को कुचलने का कुचक्र है क्योकि किसी देश को नष्ट करना हो तो वहा के इतिहास व सस्कृति को नष्ट कर दो वह नष्ट हो जाएगा यही विदेशियो ने किया। सस्कृत के अल्पज्ञानी मोक्षमूलर ने वेद मन्त्रो का उल्टा अर्थ करके भी क्षति पहुचायी है। भारतीय इतिहास सस्कृति व साहित्य पर आज पुन विचार कर शोध करना चाहिए यही स्वतन्त्रता का सही रूप होगा।

— चन्द्रलोक खुरजा

विश्व शान्ति आत्मकल्याण यज्ञ

विश्व मे अशान्ति तथा समस्त मानवो के कष्ट को ध्यान मे रखकर विद्वान साधु सन्तो द्वारा राष्ट्र एव समस्त मानव कल्याण हेतु विश्व शान्ति आत्म कल्याण यज्ञ का आयोजन जिला ग्रामीण वेद प्रचार समिति लोहागढ के तत्वावधान मे दिनाक १३ जनवरी २००२ से १५ जनवरी तक भरतपुर के कस्बा बल्लभगढ मे किया जा रहा है। जिसमे उच्चकोटि के विद्वान साधु सन्त पधार रहे है।

अत आप सभी धर्म प्रेमी भाई बहिनो से निवेदन है कि इस पुनीत यज्ञ मे विद्वान साधु सन्तो द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करे एव तन मन धन से सहयोग देकर सफल बनाए आप सभी सादर आमन्त्रित है। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती कु० मञ्जुला सैनी नरदेव शास्त्री स्वामी विवेकान्नद स्वामी भगवान देद आदि के प्रवचन व उपदेश होगे।

स्वास्थ्य चर्चा

चोकर खाएं सेहत बनाएं

– नीरज पाण्डेय

गेहू के भार का पाचवा भाग चाकर होता हे परन्तु इस पाचवे भाग मे गेहू के सभी पोषक तत्वो का तीन चैथाई हिस्सा समाया होता है। रासायनिक विश्लेषण से ज्ञान होता है कि गेहू के चोकर मे लगभग तीन प्रतिशत वसा बारह प्रतिशत प्रोटीन तथा तीस प्रतिशत स्टार्च होता हे। इसमे कैल्शियम तथा अन्य खनिज लवणो की मात्रा भी काफी होती है।

गेहू, ज्वार मक्का आदि अनाजो को पीसकर छलनी से छानने पर छलनी मे जो अवशेष (छिलका) बचता है उसे चोकर कहते है। प्राय इस चोकर को फेक दिया जाता है या पशुओ को खिला दिया जाता है। ज्ञात हो कि यही चोकर खाद्यान्न का सर्वाधिक पौष्टिक भाग होता है। इस चोकर मे प्रोटीन विटामिन बी काम्प्लेक्स कैल्शियम कार्बोहाइड्रेट वसा लौह तत्व इत्यादि प्रचुर मात्रा मे पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमे सेललोज युक्त रेशे लिगनिन पेटोसाइनस (सेमी सेलुलोज) एव पौष्टिक पदार्थ भी पाए जाते है। हमारे शरीर मे इन तत्वो की कमी से हमे कई तरह की बीमारियो का सामना करता पडता है।

गेहू ... मे पाया जाने वाला सेलुलोज मनुष्य की पाचन नली मे नही पचता बल्कि पचे हुए अन्य खाद्य पदार्थो के आगे की ओर ले जाने मे सहायता करता है। भोजन मे इसकी अनुपस्थिति कब्ज को जन्म देती है। परीक्षणो से पता चला है कि साठ–पैसठ किलोग्राम शरीर भार वाले व्यक्ति को प्रतिदिन लगभग दस ग्राम गेहू के चोकर का सेवन करने से कब्ज की शिकायत नहीं होती। गेहू के चोकर मे पाया जाने वाला सेलुलोज पेट मे उत्पन्न वायु एव अम्ल को सोक लेता है तथा मल के साथ शरीर के बाहर निकाल देता हे। इससे पेट मे वायु या अम्लता के बढने से काई विकार उत्पन्न नहीं होते हैं। अत पाचन से सम्बन्धित पेट की बीमारियो से बचने के लिए चोकर युक्त आटे का उपयोग करना चाहिए।

तपेदिक मदाग्नि तथा मधुमेह जैसे रोगो की कुछ विशेष अवस्थाओ मे एक भाग चोकर और आठ भाग गेहू का आटा मिलाकर रोटिया खाने से लाभ होता है। स्नायु दुर्बलता एव रक्ताल्पता के रोगियो को चोकर की चाय पीनी चाहिए। इसके लिए आधा कप चोकर साफ करके चार–पाच कप पानी में दस–पन्द्रह मिनट तक उबाले फिर छन्नी से छानकर उसमे स्वाद के अनुसार शहद या चीनी तथा नींबू का रस मिलाकर पीए। प्रतिदिन सुबह–शाम एक कप चोकर की चाय पीने से काफी लाभ होता है। यह चाय गले की खराश सर्दी जुकाम आदि से भी बचाती है चोकर की चाय मोटापा दूर करने मे भी लाभप्रद है।

गेहू के भार का पाचवा भाग चोकर होता है परन्तु इस पाचवे भाग मे गेहू के सभी पोषक तत्वो का तीन चौथाई हिस्सा समाया होता है। रासायनिक विश्लेषण से ज्ञान होता है कि गेहू के चोकर मे लगभग तीन प्रतिशत वसा बारह प्रतिशत प्रोटीन तथा तीस प्रतिशत स्टार्च होता है। इसमे कैल्शियम तथा अन्य खजिन लवणो की मात्रा भी काफी होती है। गेहू के आटे से चोकर निकाल दिए जाने पर उसका कैल्शियम भी निकल जाता है। कैलिशयम शरीर के लिए आवश्यक है। इसकी कमी से शरीर के कई अगो को समुचित पोषण नहीं मिल पाता है। दतक्षय की शिकायत कैल्शियम की कमी से ही होती है। चोकरयुक्त आटे का उपयोग करने वाले के दात अन्य लोगो की अपेक्षा देर से गिरते हैं।

शोधो से सिद्ध हुआ है कि आटे से चोकर निकाल देने पर उसका आधा लौह तत्व समाप्त हो जाता है। मैदे मे तो लौह तत्व इससे भी कम रह जाता है। चोकर रहित आटे मे से पोटेशियम का तीन चौथाई भाग फास्फोरस का अस्सी प्रतिशत भाग तथा कैल्शियम का आधा भाग निकल जाता है। हमारे स्वास्थ्य सतुलन मे गेहू का चाकर महत्वपूण भूमिका निभाता है। काष्ठाशोधन मे तो चोकर हरी सब्जियो तथा फलो की तुलना मे अधिक अच्छा सिद्ध हुआ है। कोष्ठ शुद्धि के लिए उपयोग मे लायी जाने वाली ओषधियो की तरह चोकर आतो को उत्तजित ... करता बल्कि उन्ह बल और स्फूर्ति प्रदान कर सुचारू रूप से सक्रियता मे सहयोग करता है।

हैदराबाद के पोषण अनुसधान सस्थान के अनुसार चोकर मे कुछ एसे तत्व पाए जाते हैं जो वशाणु (जींस) की सरचना पर प्रभाव डालते हैं। कोलन के कैसर को रोकने मे तथा रक्त मे कोलेस्टेरॉल को कम करने मे चोकर की महत्वपूर्ण भूमिका देखी गई है। चोकर शरीर की प्रतिरोधी क्षमता को बढाकर रक्त मे इम्यूग्लोबलींस की मात्रा बढाता है। दमा प्रभूजी (एलर्जी) जैसे रोगो मे चोकर लाभकारी है।

अब चोकर को आटे का बेकार भाग न माने बल्कि उसका सही और भरपूर उपयोग करे। पचास ग्राम चोकर मे पच्चीस ग्राम तिल पच्चीस ग्राम मूगफली के दानो के टुकडे पचास ग्राम भुना बेसन तथा सौ ग्राम शक्कर या गुड मिलाकर तैयार लडडू या बर्फी का नियमित रूप से सेवन करने से सेहत दुरूस्त रहती है। सब्जी का मसाला भूनते समय थोडा सा चोकर उसमे डालकर भूनने से सब्जी की पौष्टिकता बढ जाती है।

शुभकामनाएं

– कवि रामजस आर्य

श्री देवरत्न आर्य को शुभकामना हमारी है।
आर्यसमाज का कर्मठ सेवक है दीन दुखी हितकारी है।
बहुत समय से आर्य जन ऐसी आस मे लागे थे।
4 नवम्बर 2001 मे भाग हमारे जागे थे।
समाज द्रोही अनार्यो के जो सपने वापिस भागे थे।
श्री देवरत्न आर्य जन-जन की सेवा मे आगे थे।
सर्वसम्मति से सभा प्रधान बने प्रसन्न सब नर-नारी है।
निश्चय जानो आर्यसमाज मे नयी चेतना डालेगे।
नई योजना बना-बना नई डगर भी डालेगे।
हम आर्यवीर है विश्व के उनके कहने पर चालेगे।
अंधविश्वासी, पाखण्डी के गले जनेऊ डालेगे।
सन्ध्या हवन हो घर-घर मे ऐसी परम्परा डालेगे।
हवन से शुद्ध पवन हो जा पवन से दूर बिमारी हो।
गुरुकुल मे बच्चे पढ़ाए जा जो रहे बाल ब्रह्मचारी हो।
डोरा तवीज झाड़े लावणिया न रहे विभिचारी हो।
आर्य समाज का पचार रहेगा रहे वेद प्रचारी हो।

ऋषि ऋण उतारणे का वादा कर लिया भारी है।
रामजस ... पावोगे सही आर्य बन देखो।
सभा प्रधान की नई योजना से सारे हैं प्रसन्न देखो।
वेद प्रचार ... जापान और जर्मन देखो।
आर्यसमाज न तन-मन-धन से सबकी होवे लगन देखो।
धन-धन होवे ... जी खिला वेद फुलवारी है।

– सत्यार्थ प्रचारक भजनोपदेशक मु० पो० फेफाना, त० नोहर जिला हनुमानगढ़ (राज०)

गौरवशाली भारत का बेटा श्री हमीर सिंह रघुवंशी सम्मानित

विश्व मानव कल्याण परिषद की ओर से विश्व ज्योतिष अनुसधान सस्थान के बेनर तले विठठलभाई पटेल भवन रफी मार्ग नई दिल्ली के कास्टीटयूशन क्लब मे सम्मेलन का आयोजन सस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिफूल जी के सरक्षण मे गत दिनो सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि थे प० बगाल उत्तर प्रदेश बिहार उडीसा के पूर्व राज्यपाल बी सत्यनारायण रेडडी जी।

सम्मेलन मे देश विदेश की प्रमुख हस्तियो के नागरिक अभिनन्दन के साथ उनके समाज सेवा पत्रकारिता करना सस्कृति ज्योतिष आदि आदि अन्य अनेक क्षेत्रों में उनके विशेष योगदान के लिए प्रशस्तिपत्र व स्वर्ण पदक से सम्मानित भी किया गया। स्मरण रहे कि श्री हरिफूल जी विश्व शान्ति साम्प्रदायिक सदभाव राष्ट्रीय एकता व जन कल्याण के क्षेत्र मे विगत ३३ वर्षो से प्रयासरत है तथा उनके पथ प्रदर्शक श्री अचलाराम जी गुसाई वाल की स्मृति मे उनके सस्थान द्वारा विगत १७ वर्षो से मानव समाज व देश सेवा मे सतत सलग्न प्रमुख विभूतियों को सम्मनित करते आ रहे है।

इस अवसर पर श्री हमीर सिह रघुवशी अधिष्ठाता आर्य अनाथालय दरियागज दिल्ली को समाज सेवा के क्षेत्र मे उनके उत्कृष्ठ योगदान के लिए भारत का गौरवशाली बेटा का सम्मान पूर्व राज्यपाल बी० सत्यनारायण रेडडी तथा सस्थान के अध्यक्ष श्री हरिफूल जी ने प्रधान किया।

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल (उत्तरांचल) द्वारा

स्व० शान्तिप्रकाश 'प्रेम' प्रभाकर का

८८वां जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढवाल दिनांक १२-१२-२००१

आज प्रात ११ बजे आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल (उत्तराचल) द्वारा स्व० जयानन्द भारतीय स्मारक भवन पचपुरी मे प्रसद्धि समाज सुधारक महान स्वतन्त्रता सेनानी स्व० शान्ति प्रकाश प्रेम प्रभाकर के ८८वे जन्मदिवस पर समाज के अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश जी की अध्यक्षता में वृहद यज्ञ के बाद एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया।

मच सचालन करते हुए आर्य समाज सावली आदि पचपुरी के मत्री गगाप्रसाद 'सौम्य' ने कहा मैं आज आर्य समाज सावली आदि पचपुरी के सभी आर्य सभासदो को अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम के पदाधिकारियों को तथा समस्त दानी महानुभावो को धन्यवाद दूगा जिनके सहयोग से स्व० प्रेम जी का २५ वर्षों से अधूरा कार्य १७ अक्टूबर सन् २००१ को प्रसिद्ध समाज सुधारक महान् सवतत्रता सग्राम सेनानी प्रख्यात देशमक्त कर्मवीर स्व० जयानन्द भारतीय के १२० वे जन्म दिवस पर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत जी मेहता के करकमलों द्वारा दयानन्द सेवाश्रम सघ (आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल) के भवन उद्घाटन होने पर पूर्ण हुआ। उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हे देश तथा समाज का सच्चा सेवक कहा। हम उन्हीं की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चल रहे हैं।

तत्पश्चात् ज० मा० पू० मा० वि० पचपुरी की छात्राओं द्वारा गायत्री महामत्र को अर्थ सहित गाया गया।

सर्व श्री हेमराज प्रियव्रत विश्वबन्धु भास्कर वासुदेव विमल प्र० अ० गजेसिह कण्डारी पूर्व जेष्ट प्रमुख प्रदीप कुमार स० आ०, अनन्दराम हवलदार एस० एस० वी० सुशीलचन्द्र प० अ० धर्मेन्द्र छात्र विजय कुमार पुरी सामाजिक कार्यकर्ता गुणानन्द भारतीय प्रबन्धक सोहनसिह माह अ० स० मोतीलाल आर्य कोषाध्यक्ष कु० कल्पेश्वरी वीरेन्द्रसिह स० आ० द्वारा स्व० प्रेम जी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हे प्रसिद्ध समाज सुधारक महान स्वतत्रता सग्राम सेनानी तथा कर्मवीर स्व० जयानन्द भारतीय के अधूरे कार्यों को पूरा करने वाला महान व्यक्ति कहा। हमे उनके द्वारा अधूरे कार्यों को पूरा करना है तथा उनके पद चिन्हों पर चलना है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

अध्यक्षीय प्रवचनो में श्री चन्द्रप्रकाश जी ने कहा स्व० प्रेम जी यज्ञ को महत्व देते थे। हमें उनके पद चिन्हो पर चलना है। आर्य समाज को आगे बढाना है। और महर्षि देव दयानन्द के सन्देशों को दूर दूर तक फैलाना है। स्मारक निधि द्वारा प्राप्त जयानन्द भारतीय स्मारक हेतु भूमि जो पौडी मे है के कागजो की प्राप्ति के लिए श्री विश्वबन्धु भास्कर से सहयोग की अपेक्षा की।

अन्त मे सर्व सम्मति से दो प्रस्ताव पारित हुए –

(१) पशुबलि निषेध (२) पौडी मे जयानन्द भारतीय स्मारक भवन बनाने पर। शान्तिपाठ के साथ ही कार्यक्रम का समापन। *– गगाप्रसाद सौम्य, मन्त्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल (उत्तराचल)*

जिसके हृदय में दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित में लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

पं० महेन्द्रपाल आर्य द्वारा चम्पारण (बिहार) में आर्यसमाज का प्रचार अभियान

नरकटियागज (प० चम्पारण बिहार) १२ दिसम्बर २००१ आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान् तथा कुरान पुराण एव बाईबिल के समीक्षक प० महेन्द्रपाल आर्य द्वारा १५ दिनो तक बिहार के उत्तर मे नेपाल के पास अवस्थित चम्पारण जिले के लक्ष्मीपुर (मर्जदवा) नरकटियागज भतुहवा (श्रद्धानन्द नगर) सिकटा बेतिया चनपटिया एव धूमनगर आदि स्थानो पर प्रचार कार्य किया गया। इस प्रचार अभियान मे प० महेन्द्रपाल आर्य द्वारा वैदिक कर्मकाण्ड मे सभी आर्य समाजो मे एकरूपता लाने के लिए विशेष जोर दिया गया। साथ ही विश्व आतकवाद तथा उनके फैलने के कारण पर भी व्याख्यान दिया गया।

आर्यसमाज नैनी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नैनी का बाइसवा वार्षिकोत्सव दिनाक १८ १६ एव २० फरवरी २००२ को नैनी बाजार मे मनाया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस विशाल सत्सग समारोह मे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानो द्वारा यज्ञ भजन प्रवचन एव महिला सत्सग का आयोजन है। विद्वानो द्वारा धार्मिक सामाजिक एव राष्ट्रीय भावनाओ से ओत प्रोत भजन एव व्याख्यान होगे।

कार्यक्रम

प्रात ८ से ११ बजे तक यज्ञ भजन

साय – ७ से ११ बजे तक भजन एव वेद व्याख्यान

महिला सत्सग ३ बजे से ५ बजे तक

सभी आर्य जनो से निवेदन है कि सत्सग मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाने मे सहयोग करने की कृपा करे।

आचार्य चैतन्य जी को बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जाएगा

आर्यजगत के प्रतिष्ठित नेता एव सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता और वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवान देव चैतन्य जी को उनकी साहित्यिक सेवाओ के लिए सस्कार भारती अनुष्ठान समिति द्वारा श्री बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान २००१ के लिए चुना गया है। उन्हे यह सम्मान २७ जनवरी २००२ को हापुड (उत्तर प्रदेश) मे एक विशेष समारोह मे प्रदान किया जाएगा।

– जीतेन्द्र मल्होत्रा, मन्त्री उत्कर्ष कलाकेन्द्र सुन्दरनगर (हि०प्र०)

पृष्ठ ४ का शेष भाग

शिक्षा और विज्ञान के नाम पर पाखण्ड का प्रचार

जोड बाकी गुणा भाग ज्यामिति त्रैराशिक आदि के नियम सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक है।

अब वास्तु शास्त्र के नाम का एक नया पाखण्ड चला है और पढे लिखे लोग भी इस धूर्त विद्या के शिकार हो रहे हैं। वचकवृत्ति के लोगो ने वास्तु शास्त्र के नाम पर जो ठग विद्या चलाई है उसमे बडे बडे धनीमानी कारखानो के मालिक उच्चपदस्थ सरकारी अफसर तथा साधारण मध्यवित्त के लोग ठगे जा रहे हैं यदि कोई वास्तविक वास्तुशास्त्र सचमुच कुछ है तो वह सिविल इजीनियरिंग ही है जिसमे भवननिर्माण तथा तत सम्बद्ध विषयो का विवेचन रहता है। घरो कारखानो तथा फैक्टरियों के निर्माण मे इन्हीं वास्तु विदों (इजीनियरों) का परामर्श मान्य होना चाहिए। किन्तु धनी लोगो को ठगने वाले कथित वास्तु शास्त्री बने बनाये भवनो और कर्मशालाओं को तोडने के लिए कहते हैं लाखों का नुकसान कराते हैं तथा वास्तु शान्ति के नाम पर धनिको के धन का अपहरण करते हैं। मेरे सामने राजस्थान पत्रिका के एक रविवारीय अक मे प्रकाशित डॉ० भोजराज द्विवेदी का रेमेडियल वास्तुशास्त्र शीर्षक एक लेख है। अग्रेजी शब्द रेमेडियल और सस्कृत शब्द 'वास्तुशास्त्र' से बना यह वर्ण सकरी शीर्षक लेख आद्यन्त आख के अधो और गाठ के पूरो को ठगने का महामत्र हैं। इस वचकशास्त्र के कुछ सूत्रो को देखे –

१ शुद्ध चादी का बना अभिमन्त्रित श्रीपत्र स्थापित करने से आपके घर या कारखाने मे लक्ष्मी (धन) की वर्षा होगी।

२ मारुति यत्र दुर्घटनाओ से बचाता है।

३ सूर्य यत्र राजकोप से बचाता है।

४ घुडनाल यत्र – मकान को बुरी नजर से बचाता है।

५ कृत्यानाशक यत्र – तात्रिक टोने टोटके तथा अभिचार से बचाता है।

६ वास्तु मगलकारीतोरण – बुरी आत्माओ तथा अशुभ योनियो से बचाता है।

आश्चर्य है कि आज के वैज्ञानिक युग मे पढे लिखे लोग ऐसे मूढ विश्वासो और अध धारणाओ को मानते हैं। ऐसे ही लोग जलाभिषेक तथा शिव मत्र के जाप से मदिर का निर्माण करने की बात करते है।

निष्कर्षत हम कहना चाहते हैं कि हमारा आचार्य दयानन्द विशुद्ध तर्काधारित बुद्धिवाद का प्रचारक था। वह मनुष्यो मे वैज्ञानिक सोच और विवेक पैदा करना चाहता था। जिसे आप वैज्ञानिक चिन्तन या सोच कहते हैं स्वामी जी उसे सृष्टि क्रम से अविरोधी तथ्य कहते हैं। सृष्टिक्रम के विरुद्ध मिथ्या विश्वासो और चमत्कारो के वे घोर विरोधी थे। आर्यसमाज और आर एस एस तथा विश्व हिन्दू परिषद् की अवधारणाओ मे मौलिक विरोध है। हम मूर्तियो और मदिरो मे किचितमात्र श्रद्धा नहीं रखते। पाषाण पूजको और ध्वजपूजको (स्वामी जी इन्हे लक्कड पूजक कहते थे) से हमारा प्रत्यक्ष विरोध है। किसी ईंट पत्थर के मदिर का निर्माण हमारे जातीय गौरव की वृद्धि नहीं करता। किसी विध्वस्त इमारत या पुराने खण्डहरो को तोडने मे हमे कोई गौरवानुभूति नहीं होती। उसी प्रकार करोडो व्यय कर अभ्रस्पर्शी मदिरो का निर्माण भी आडम्बर और पाखण्ड को प्रश्रय देने की क्रिया है। हम मूर्तियो की स्थापना करने तथा उनमे पाषाण पूजन को उत्तेजना देना अनार्योचित मानते हैं। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे जहा मूर्तिपूजा का शास्त्रीय प्रमाणो से खण्डन किया है वहा उसे देश की सामाजिक आर्थिक तथा राष्ट्रीय उन्नति का घातक सिद्ध किया है। इस प्रसग मे उन्होने गिना कर मूर्तिपूजा के सोलह दोष वर्णित किए हैं। स्वामी जी की दृष्टि मे मूर्तिपूजा दुराचार है – (दृष्टव्य उपदेश मजरी का अन्तिम व्याख्यान) फलित ज्योतिष पौराणिक पौरोहित्यवाद तथा मिथ्या वास्तुशास्त्र इसी मूर्तिपूजा की अवैध सन्ताने हैं।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

ध्वनि, ध्वनि प्रदूषण और हम

– मीनाक्षी दीक्षित

महाभारत के युद्ध मे अर्जुन की अनुपस्थिति मे गुरु द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की। पाण्डव पक्ष मे उदासी छा गई। अर्जुन के बिना कौन तोडेगा चक्रव्यूह? तभी अर्जुन का किशोर पुत्र अभिमन्यु उठ खडा हुआ मै तोडूगा चक्रव्यूह। तुम! कई जोडी नेत्र उसकी तरफ उठ गए तुमने चक्रव्यूह भेदन की विद्या कहा सीखी? मा के गर्भ मे – आश्चर्य की एक और रेखा उन नेत्रो मे खिच गई। हा तब मै मा के गर्भ मे था जब एक बार पिता जी ने उन्हे चक्रव्यूह भेदने की प्रक्रिया सुनाई थी तभी मेने भी सुनी थी और वह मुझ स्मरण है। उसी आधार पर मै चक्रव्यूह का भेदन करूगा

अर्जुन ने जो भी कहा वह ध्वनि के माध्यम से न केवल उसकी पत्नी सुभद्रा वरन उसके गर्भस्थ शिशु ने भी ग्रहण किया।

यह घटना मानव जीवन मे ध्वनि तरगो की महत्ता को स्थापित करती है। ध्वनि का मानव जीवन पर प्रभाव उस समय से ही पडना प्रारम्भ हो जाता है जब वह मा के गर्भ मे यानी भ्रूणावस्था मे होता है। इतना ही नही ध्वनि पशु पक्षियो और वनस्पतियो को भी प्रभावित करती है।

हमारे कान ऊर्जा के जिस रूप को ग्रहण करते हे वही ध्वनि है। इसे दूसरे शब्दो मे कहे तो जा शक्ति हमे हमारी श्रवणेन्द्रियो का बोध कराती है वह ध्वनि है। ध्वनि सदा किसी कम्पनकारी वस्तु से उत्पन्न होती हे और तरगो के रूप मे किसी माध्यम मे सचरण करते हुए हमारे कानो तक पहुचती हे। हमे सुनाई देती है। इस प्रकार ध्वनि के लिए तीन चीजो का होना अनिवार्य है – एक तो ध्वनि उत्पादक या कम्पनकारी वस्तु दूसरा इस कम्पनकारी वस्तु से उत्पन्न तरगो के लिए सचरण का माध्यम और तीसरा उसे स्वीकार करने के लिए हमारे कान।

किन्तु प्रत्येक कम्पनकारी वस्तु द्वारा उत्पन्न ध्वनि हमे सुनाई ही दे यह भी आवश्यक नहीं है। ध्वनि हमे तभी सुनाई देती है जब इसके स्रोत के कम्पन एक निश्चित सीमा मे होते हैं। कम्पनकारी वस्तु द्वारा प्रति सेकेण्ड की गयी कम्पनों की सख्या आवृत्ति कहलाती है। प्रति सेकेण्ड हुए कम्पनो की वह सीमा जिसे हमारे कान स्वीकार करते है श्रव्यता की सीमा कहलाती है। यदि ध्वनि स्रोत २० कम्पन प्रति सेकण्ड से कम कम्पन करता है तो इससे उत्पन्न हमे सुनाई नही देती और यह ध्वनि तरगे अपश्रव्य ध्वनि तरगे कहलाती है। २० कम्पन प्रति सेकेण्ड से लेकर २० हजार कम्पन प्रति सेकेण्ड उत्पन्न करने वाले ध्वनि उत्पादक से उत्पन्न ध्वनि तरगे हमे सुनाई देती हैं इन्हे श्रव्य तरगे कहते हैं। २० हजार कम्पन प्रति सेकेण्ड से अधिक वाले ध्वनि उत्पादक द्वारा उत्पन्न तरगे पराश्रव्य तरगें कहलाती है और यह भी हमे सुनाई नहीं देती।

ध्वनि की तीव्रता तारता तथा गुणवत्ता मिलकर प्रत्येक ध्वनि को एक पहचान देते है और उसे दूसरी ध्वनि से पृथक करते है। इसीलिए हम आख बन्द करके भी पहचान लेते है कि कौन सी ध्वनि किस वाद्य की है या हमारे किसी परिचित ने हमे आवाज दी है। एक गीतकार ने तो लिखा भी है नाम गुम जाएगा चेहरा ये बदल जाएगा मेरी आवाज ही पहचान है।

ऊपरी तौर पर सभी ध्वनियो को दो भागो मे बाटा जा सकता है सगीतमय ध्वनिया तथा शोर। इस वर्गीकरण के अनुसार ये सभी ध्वनिया जो हमारे कानो को अच्छी लगती है सगीतमय है तथा शेष शोर है। सगीतमय ध्वनिया भी किसी स्थिति विशेष मे शोर का रूप ले लेती है। विशिष्ट मधुरता से युक्त कुछ विशेष ध्वनिया से मूल तथा शास्त्रीय सगीत बनता है। सगीत की महत्ता इसी से स्पष्ट है कि अमेरिका के डा० हचिन्सन ने विविध प्रकार की सगीत ध्वनियो की सहायता से अनेक असाध्य रोगो की सफल चिकित्सा की है। इसी तरह कुछ कारखानो मे श्रमिको की कार्यक्षमता बढाने के लिए उन्हे विशेष प्रकार का सगीत सुनाया जाता है। गर्भवती महिलाओ को भ्रूण के सही विकास के लिए स्वस्थ और सगीतमय वातावरण मे रहने की सलाह दी जाती है। भारतीय शास्त्रीय सगीत ध्वनि ऊर्जा के सरक्षण से दीपक जला देता है और पानी बरसा देता है।

लेकिन ध्वनि के अवाछनीय और कर्ण कटु होते ही इसके सभी गुण दुर्गुणो मे बदल जाते हैं और यह शोर बन जाती है। वातावरण मे व्याप्त शोर ही ध्वनि प्रदूषण है। प्रत्येक अनावश्यक असुविधाजनक तथा अनुपयोगी ध्वनि शोर है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जो ध्वनि जिस श्रोता को अप्रिय लगे वह ध्वनि ही उस श्रोता के लिए शोर है। वैज्ञानिक दृष्टि से तीन हजार हर्ट्ज (कम्पन प्रति सेकेण्ड) से अधिक आवृत्ति की ध्वनि तरगो को शोर माना जाता है और वातावरण मे इनका होना ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

ध्वनि की प्रबलता डेसीबल मे व्यक्त की जाती है। डेसीबल वस्तुत लघु गणकीय अनुपात है। डेसीबल पैमाने पर शून्य ध्वनि प्रबलता का वह स्तर है जहा से ध्वनि का सुनाई देना आरम्भ होता है। इसी प्रकार एक डेसीबल मानव कर्ण को सुगमतापूर्वक सुनाई देने वाली ध्वनि है। ६० डेसीबल से अधिक की ध्वनि कानो के लिए तेज होती है और शोर मानी जाती है। शोर न केवल मनुष्य वरन पशु–पक्षियो और पर्यावरण को भी क्षति पहुचाता है। लगातार तेज आवाज मे रहने से बहरापन अनिद्रा चिडचिडापन दुश्चिन्ता एकाग्रता का अभाव जैसी समस्याए मनुष्यो मे देखी गयी हैं। कई बार यह लोग स्थायी बहरेपन या मानसिक असन्तुलन के शिकार भी हो सकते है। हमारी बदली हुई जीवन शैली और व्यावसायिक आवश्यकताए दोनो ही ध्वनि प्रदूषण का कारण हे। कारखानो हवाई उडानो जैसी व्यावसायिक स्थितियो मे ध्वनि प्रदूषण के स्तर मे सुधार मे आमजन की कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका नही है। लेकिन अपनी जीवन शैली के कारण होने वाले ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम मे वह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वातावरण मे व्याप्त शोर ही ध्वनि प्रदूषण है। प्रत्येक अनावश्यक असुविधाजनक तथा अनुपयोगी ध्वनि शोर है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जो ध्वनि जिस श्रोता को अप्रिय लगे वह ध्वनि ही उस श्रोता के लिए शोर है। वैज्ञानिक दृष्टि से तीन हजार हार्ट्ज (कम्पन प्रति सेकेण्ड) से अधिक आवृत्ति की ध्वनि तरगो को शोर माना जाता है और वातावरण मे इनका होना ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।

मिक्सर वैक्यूम क्लीनर वाशिंग मशीन कूलर एयर कण्डीशनर विद्युत जनित जैसे उपकरणों का उपयोग अत्यन्त आवश्यक होने पर ही करे। वाहनो के साइलेसर सदा ठीक रखें और तेज आवाज करते ही वाहन को ठीक कराए। निर्धारित मानक से अधिक के हार्न न लगाए। हार्न अनावश्यक रूप से न बजाए शान्त और वर्जित क्षेत्रो मे हार्न न बजाए। अपने रेडियो और टेलीविजन सेटस को सिर्फ उस सीमा मे सुने कि उसकी आवाज कमरे से बाहर न जाए। लाउडस्पीकर्स का उपयोग न्यूनतम करे। शादी ब्याह जैसे पारिवारिक उत्सवो मे हगामा न करे तेज आवाज मे चिल्लाकर बात न करें। ध्यान रखे ध्वनि की सीमा ६० डेसीबल से ऊपर होते ही व्यक्ति परेशान होना और चिडचिडा भरा व्यवहार करना प्रारम्भ कर देता है।

जीव विज्ञानी राबर्ट कॉक ने बहुत वर्षों पहले कहा था 'एक दिन ऐसा आएगा जब शोर मनुष्य के सबसे बडे शत्रु के रूप मे सामने होगा और उस समय उसको शोर के विरुद्ध वैसे ही युद्ध करना होगा जैसा हैजा जैसी बीमारी के खिलाफ हुआ था।

आज हम उस दिन के बहुत निकट है इसलिए ध्वनि प्रदूषण को कम करने मे अपना योगदान देने से पीछे न हटे।

(विसके)

सामाजिक चेतना जागृति तथा हिन्दू धर्म को बचाने में आर्यसमाज की अग्रणीय भूमिका – अशोक प्रधान

अमरोहा आर्यसमाज अमरोहा जनपद ज्योतिबाफुले नगर उ०प्र० की स्थापना के १००वे वर्ष मे प्रवेश करते हुए वार्षिकोत्सव का आयोजन १८ नवम्बर से २० नवम्बर २००१ तक अत्यन्त धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात ८ बजे से यज्ञ प्रारम्भ करके किया गया। यज्ञ के पश्चात विद्वत जनो के प्रवचन हुए।

ध्वजारोहण माननीय श्री अशोक प्रधान जी केन्द्रीय खाद्य एव नागरिक आपूर्ति राज्यमंत्री भारत सरकार ने किया।

विराट आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए माननीय श्री अशोक प्रधान जी ने कहा कि राष्ट्र को मजबूत दिशा देने मे आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होने कहा कि राष्ट्र की आजादी की लडाई में जितने भी स्वतन्त्रता सग्राम सैनानियों ने भाग लिया उनमे से अधिकाश आर्य समाजी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैचारिक क्राति के बल पर सामाजिक बुराईयो अन्धविश्वास भ्रातियों और कुरीतियो पर कडे प्रहार किये और सामाजिक चेतना जागृत की तथा हिन्दू धर्म को बचाने मे आर्य समाज की अग्रणीय भूमिका रही।

अपराह्न २ बजे से नगर मे विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा का निर्देशन श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य श्री मनोहर लाल आर्य कर रहे थे। श्री अशोक कुमार गुप्ता स्वागताध्यक्ष श्री सुरेश कुमार विरमानी डॉ० सीताराम बन्धु सयोजक श्री विनय प्रकाश आर्य डॉ० उर्मिला अग्रवाल प्रबन्धक तथा अन्य आर्यजन पीछे चल रहे थे।

राष्ट्र जागरण सम्मेलन का आयोजन रात्रि ८ बजे से किया गया जो रात्रि ११ तक चला जिसकी अध्यक्षता श्री हेतराम सागर ने तथा सचालन श्री मनोहर लाल आर्य ने किया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु, डा० सत्यप्रिय शास्त्री आचार्य आर्य नरेश आदि ने अपने उद्बोधन से आर्य जनता को लाभान्वित किया।

वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन अपराह्न २ बजे से साय ५ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमति उषा आर्य के सयोजकत्व मे किया गया।

रात्रि ७ बजे से १० बजे तक आर्यसम्मेलन को सम्बोधित करने वालो मे श्री योगेशदत जी भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी स्नातक वेदज्ञ डा० सत्यप्रिय शास्त्री जी आचार्य नरेश जी ने सम्बोधित किया। श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री पूर्व मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने अपने सम्बोधन मे कहा कि आर्य समाज केवल भारत वर्ष मे ही नहीं है विदेशो मे तीन सौ से अधिक आर्यसमाजें वैदिक धर्म का प्रचार कर रही है। प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन मोरिशस मे आयोजित किया गया था।

वार्षिकोत्सव के तीसरे एव अतिम दिन समापन समारोह मे पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेद भिक्षु आचार्य नरेश जी डॉ० सत्यप्रिय शास्त्री श्री सत्यदेव जी स्नातक श्री प्रेम बिहारी आर्य (वानप्रस्थी) जी ने सम्बोधित किया। मुख्यवक्ता के रूप मे आर्य विद्वान आचार्य आर्य नरेश जी ने कहा कि प्रतिदिन यज्ञ करना आर्यो की पहचान है और वेदो का प्रचार करना प्रत्येक आर्य का धर्म है।

समारोह के अत मे आर्यसमाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य ने उन सभी आर्यजनों का आभार व्यक्त किया जिन्होने तन मन धन से सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाया है। आर्यसमाज के प्रधान जी ने घोषणा की कि यह कार्यक्रम शताब्दी समारोह का शुभारम्भ है। शताब्दी समारोह वर्ष २००२ मे पूरे वर्ष चलेगा तथा विभिन्न आयोजन किये जायेगे।

– मनोहर लाल आर्य मन्त्री
आर्यसमाज अमरोहा
जनपद ज्योतिबाफूलेनगर

स्वदेश का मान करें

आओ स्वदेश का मान करे।
श्रद्धा से गौरव गान करे।।
यह देश विश्व से न्यारा है।
ईश्वर ने इसे सम्हारा है।
यहा वही ज्ञान की धारा है।
दुनिया को मिला सहारा है।।
इसके स्वरूप का ज्ञान करे। आओ०
ऐसा था अपना दिव्य देश।
देखा न किसी ने यहा क्लेश।
पाप ने न पाया था प्रवेश।
सृष्टि का हुआ था श्री गणेश।
बीते गौरव का ध्यान करे।। आओ०
जग को विद्या का दिया दान।
शासन द्वारा भी किया त्राण।
जाने न किसी के दिये प्राण।
सुविधाओ द्वारा किया मान।
इस स्थिति का निर्माण करे।। आओ०
होवे स्वधर्म का सत्प्रचार।
भागे भारत से अनाचार।
हो नष्ट सभी के दुर्विचार।
सब मे ही दीखे सदाचार।
ऐसे हम राष्ट्रोत्थान करे। आओ०
सानन्द रहे सारे मानव।
दीखे न कही कोई दानव।
स्थिति न शत्रु की हो सभव।
सर्वत्र दिखाई दे वैभव।
भगवान सदा कल्याण करे।
आओ स्वदेश का मान करे।।

– आचार्य रामकिशोर शर्मा, सोरो एटा, (उ०प्र०)

आर्यसमाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज टाण्डा का ११०वा वार्षिकोत्सव २६ से ३० नवम्बर तक बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बृहद्यज्ञ महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल फर्रुखाबाद के कुलपति आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन गौरक्षा सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का जनता जनार्दन पर व्यापक प्रभाव पडा। कश्मीर से पधारे प० नेत्रपाल शास्त्री ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त (सेवानिवृत्त) आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री जयनारायण अरुण प० दीनानाथ शास्त्री डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा अम्बेडकर नगर की पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर ने अपने उद्बोधनो से लोगो को प्रभावित किया।

आर्य विद्या प्रचार समिति टाण्डा की उपाध्यक्षा बहन ग्रोवर जी की प्रेरणा से आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान मिश्रीलाल आर्य कन्या कालेज के प्रबन्धक श्री आनन्द कुमार आर्य को आर्य समाज की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उप प्रधान पद पर सुशोभित होने के उपलक्ष्य मे सार्वजनिक अभिनन्दन २६ नवम्बर को बहुत ही उत्साह के साथ किया गया जिसमे सस्थाओ के साथ आम जनता ने बहुत स्नेह आर्य जी के प्रति दर्शाया। आनन्द जी ने इस समारोह को आर्य समाज का गौरव बतलाया तथा भविष्य मे और अधिक उत्तरदायित्व से आर्य समाज की सेवा करने का व्रत लिया। उत्सव के अन्तिम दिन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय शताब्दी पर निर्मित डाक्यूमेटरी फिल्म का प्रदर्शन ब्रिगेडियर सावन्त जी ने प्रस्तुत किया। गुरुकुल के विद्यार्थियो द्वारा व्यायाम एव शक्ति प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया। *– विश्वमित्र शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज टाण्डा (अम्बेडकर नगर)*

आर्यसमाज मोठ झासी का वार्षिकोत्सव तथा सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मोठ झासी का वार्षिकोत्सव तथा सामवेद पारायण यज्ञ बहुत धूमधाम तथा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें आर्य जगत की प्रकाण्ड विदुषी आधुनिक गार्गी डॉ० निष्ठा विद्यालकार ने अत्यन्त विद्वता पूर्ण ढग से यज्ञ मे ब्रह्मत्व किया। उनके ब्रह्मत्व मे मोठ के हजारो नर नारियो ने यज्ञ मे आहुतिया प्रदान की। साथ ही मुख्य वक्ता के रूप मे उनके सुन्दर सारगर्भित तथा प्रेरणादायी प्रवचन हुए जिसे मोठ की जनता ने खूब सराहा।

आर्य जगत के प्रसि० भजनोपदेशक सतीश सुमन तथा सुभाष राही मुजफ्फरनगर के सुन्दर भजन हुए। तथा कानपुर से पधारे लोकेन्द्र आर्य के सुन्दर प्रवचन तथा सुन्दर वेदपाठ पारायण यज्ञ में प्रस्तुत किया। ५ दिसम्बर से ६ दिसम्बर तक सामवेद पारायण यज्ञ एव वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के मन्त्री श्री भूपसिह जी ने भी एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया जिसे सुनकर सभी लोग मन्त्र मुग्ध हो गए। कार्यक्रम का सचालन श्री रवीन्द्र मोहन मिश्र ने किया।

शोक सन्देश

आर्य समाज मुसाढी के कर्मठ सदस्य श्री कमला सिह आर्य का देहावसान ६५ वर्ष की आयु मे ८ दिसम्बर २००१ को हो गया। आर्य समाज मुसाढी नालन्दा विहार के सदस्यो ने एक शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए सामूहिक प्रार्थना की।

आर्यसमाज के नवीन भवन का शिलान्यास

आर्यसमाज मॉडल टाउन लुधियाना के नये भवन का शिलान्यास श्री सत्यानन्दजी मुजाल प्रधान के द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि उपसभा पजाब की कार्यकारी प्रधाना प्रिंसीपल श्रीमति पी० पी० शर्मा तथा मन्त्री श्री इन्द्रजीत तलवार उपस्थित थे। आर्यसमाज तथा स्त्री आर्यसमाज के सभी सदस्य तथा सदस्याये उपस्थित थे। इस समाज की स्थापना आज से ५३ वर्ष पूर्व श्री सतराम जी स्याल श्री दयानन्दजी मुजाल आदि ने की थी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 20-1-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/200
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 17/18-1-200

मानव शरीर एक हवन कुण्ड है

१४ दिसम्बर २००१ को नेपाल के सिरहा जिला मे अवस्थित धनगढी बाजार मे जिला अध्यक्ष श्री रामेश्वर सिह 'रमाकर' की अध्यक्षता मे श्री सुशील कुमार आर्य के पौरोहित्य मे यज्ञ का सम्पादन हुआ। उसमे यज्ञमान के रूप मे स्थानीय वासी श्री विष्णु प्रसाद लम्साल जी सपत्नीक बडी श्रद्धा और विश्वास के साथ यज्ञोपवीत धारण किए। पश्चात श्री सुशील कुमार आर्य जी ने यह मानव शरीर भी एक हवन कुण्ड है को प्रमाणित करते हुए उन्होने कहा – यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व हवन कुण्ड को अच्छी तरह पानी से साफ किया। समिधाओ की अच्छी तरह परख कर ली गई कि कहीं किसी जीव का वास तो इसमे नहीं है। यज्ञ मे अर्पित करने वाली सामग्री को भी अच्छी तरह निरीक्षण किया गया कि कहीं दूषित पदार्थ तो नहीं मिश्रित है। घी का भी उसी प्रकार अवलोकन किया गया। ठीक ऐसे ही हमारा यह शरीर जो परम पिता परमात्मा का पवित्र हवन कुण्ड है उसमे (भीतर और बाहर) अच्छी तरह साफ सुथरा है या नहीं। अर्थात उपर से शरीर और वस्त्र की सफाई भीतर से लोभ क्रोध मोह ईर्ष्या द्वेष आदि की सफाई है अथवा नहीं ? उसी प्रकार शरीर की पाच ज्ञानेन्द्रिया और पाच कर्मेन्द्रिया हमारी समिधा है। वह भी पवित्र होनी चाहिए। अर्थात् आखे अच्छी वस्तु ही देखे कान अच्छी बात ही सुने नाक सुगन्धित या स्वास्थ्य वर्द्धक वायु ही सास ले जीभ स्वास्थ्य अनुकूल ही भोजन पसन्द करे और त्वचा जीवनोपयोगी वसतु ही स्पर्श करें उसी प्रकार हाथ से अच्छा काम (परोपकार दान लेना और दान देना) पैर धर्मोपदेशक स्थान पर चलने के लिए ही प्रेरित हो मुह से हमेशा मृदु और उपदेशपूर्ण वाणी ही निकले गुदा समय पर इतर दूषित पदार्थ विस्थापन करे और उपस्थ भी अच्छा काम करने मे ही प्रेरित हो। यही हमारी सच्ची समिधा है।

इसी प्रकार हवन कुण्ड मे अर्पित पदार्थ हमारी शुद्ध कमाई का भोजन और शुद्ध पानी है आदि बिषय पर गहन चर्चा की। फिर श्री शिव नारायण जी मधुवनी जिलावासी ने सगीत के स्वर मे ईश्वर की गाथा प्रस्तुत की। अन्त मे अध्यक्ष श्री रामेश्वर सिह 'रमाकर जी ने स्थानीय निवासियो को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा अगर आप सब हमे प्रेरित करे तो बराबर इस तरह विशिष्ठ विद्वानो का आगमन होता रहेगा और आजकल जो मानवता से दूर और दानवता का जो ताण्डव नृत्य हमारे सामने है और उससे हम सब त्रसित हैं वह अवश्य ही कम होगा और हम शान्ति की सास ले सकेगे। इसमे आप सब इन बातो को सुने और अपने जीवन मे व्यवहार रूप मे लावे। इसके बाद आप सब स्थानीय वासी के सहयोग से एक आर्य भवन का निर्माण हो जिसमे बराबर हम लोग हवन यज्ञ और प्रवचन का कार्यक्रम कर सके। इस तरह का निर्देशन दिया। फिर श्री ओमप्रकाश सिह ने कहा इस कार्यक्रम के विसर्जन में प्रत्येक अमावस्या से हम लोग ऐसा आर्य कार्यक्रम रखे यह सम्बोधन करते हुए धन्यवाद और आर्य जयघोष के साथ कार्यक्रम विसर्जन किया।

✡

राष्ट्रीय गौरक्षा महासम्मेलन

पुन्हाना मे ७ अक्तूबर २००१ को राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन का आयोजन आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात व हरियाणा राज्य गौशाला सघ के तत्वावधान में लाखों गौ भक्तों की उपस्थिति मे शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में हरियाणा राज्य से लगभग सभी गौशालाओ व आर्य समाजों सनातन धर्म सभाओ ने सयुक्त रूप से सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनाने मे सहयोग किया।

भानी राम मगल प्रधान आर्य वेद प्रचार मण्डल ने बताया कि इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने की। इस सम्मेलन में श्री रामचन्द्र बैंदा सासद फरीदाबाद तेजवीर सिह सासद मथुरा उ०प्र० ज्ञान चन्द जी अहूजा विधायक रामगढ जिला अलवर (राज) स्वामी धर्मदेव आचार्य अधिष्ठाता हरिमन्दिर आश्रम महाविद्यालय, पटौदी सुरेन्द्र खुल्लड प्रधान सनातन धर्म केन्द्रीय सभा गुडगाव कन्हैया लाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव अजीत कुमार आर्य महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद भक्त सरूपानन्द जी महाराज गुडगाव श्री युद्धबीर सिह चौधरी बावनपाल शोध प्रद्युमन कुमार प्रान्त सयोजक बजरग दल श्री झूमरमल टावरी पूर्व अध्यक्ष भारत गौ सेवक समाज भिलाई श्री स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज राजकोट रामजीलाल अग्रवाल अध्यक्ष ऋषि गो सेवा सघ देहली रामपाल अग्रवाल सदस्य गौ पशु आयोग भारत सरकार हरिओम तायल पानीपत श्री ओमा सरूपार्य पानीपत हरिश्चन्द्र सत बलीदास शिष्य महत श्री देवीदास गोपाल वेदालय श्री श्री १००८ नैमिसराय सीतापुर एवम बहुत सारे सन्त समाज एव गौ भक्तो ने भाग लिया। इससे गौ हत्या मे मेवात मे कमी आई है। अब गौ हत्या रोकने के लिए कोई ठोस कदम उठाने पर विचार किया जा रहा है।

– भानीराम मगला
प्रधान आर्य वेद प्रचार मण्डल, मेवात

आर्यसमाज कलकत्ता का ११६वां वार्षिकोत्सव

स्थानीय मुहम्मद अली पार्क मे प्रात ७ ३० से ६ ३० बजे तक अथर्व वेद ... यज्ञ के बा... अपराह्न २ ... जो कि आर्य ... सरणी से विवेक... कलाकार स्ट्रीट ... गाधी रोड होते हुए मुहम्मद अली पार्क मे साय ५ बजे पहुची। ध्वजारोहण गुजरात से पधारे हुए स्वामी सत्यपति जी योगाचार्य ने किया। शोभा यात्रा मे आर्य समाज कलकत्ता द्वारा सस्थापित आर्य कन्या महाविद्यालय महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय रघुमल आर्य विद्यालय के अध्यापक अध्यापिकाओ एव छात्र छात्राओ के अतिरिक्त स्थानीय समाजो के सदस्य पदाधिकारी गण एव मित्रो सहित हजारों लोगो ने भाग लिया। दिनाक २३–१२–२००१ से प्रतिदिन प्रात ७ ३० से ६ ३० बजे तक अथर्व वेद पारायण यज्ञ एव साय ६ से ६ बजे तक भजनोपदेश एव प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा। बीच बीच मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आर्य सस्कृति सम्मेलन एव वेद सम्मेलन के भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। यह उत्सव रविवार दिनाक ३०–१२–२००१ को सायकाल तक चला। यह जानकारी आर्यसमाज कलकत्ता के मत्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल ने दी।

वैदिक धर्म प्रचार

खगडिया गौशाला (विहार) के वार्षिकोत्सव पर दिनाक २३ २४ एव २५ नवम्बर २००१ को स्वामी अग्निव्रत जी के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन किया गया।

शोक सभा

२५ नवम्बर २००१ को आर्यसमाज मदिर खगडिया (बिहार) के प्रागण मे स्थानीय आर्य समाज के आजीवन सदस्य स्व० वीर प्रकाश जी की स्मृति मे हवन यज्ञ के पश्चात स्वामी अग्निव्रत जी की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए सामूहिक प्रार्थना की गई। यह आयोजन स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार मुकल तथा मत्री श्री केशरीनन्दन आर्य ने किया।

प्रतिष्ठा मे

निर्वाचन

आर्यसमाज विनय नगर, (सरोजनी नगर) नई दिल्ली

प्रधान – श्री देशराज बुद्धिराजा
मन्त्री – श्री पुरुषोत्तम लाल
कोषाध्यक्ष – श्री डी० के० प्रस्थी

आर्य कुमार सभा, गुरुकुल रामलिंग येडसी

प्रधान – आनन्द शास्त्री
मन्त्री – महावीर शास्त्री
कोषाध्यक्ष – रवीन्द्र शास्त्री

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल, उत्तरांचल

प्रधान – श्री चन्द्रप्रकाश कुणजोली
मन्त्री – श्री गगाप्रसाद सौम्य कपजसा
कोषाध्यक्ष – श्री मोतीलाल स्यूसी

आर्यसमाज सावली आदि पंचपुरी सहायक समिति दिल्ली

प्रधान – श्री सत्यप्रकाश
मन्त्री – श्री वेदप्रकाश
कोषाध्यक्ष – श्री सुरेन्द्र कुमार

ज़िला आर्य सभा, नवादा

प्रधान – श्री रामप्यारे प्रसाद
मन्त्री – श्री सजय कुमार सत्यार्थी
कोषाध्यक्ष – श्री राजेश कुमार आर्य

आर्यसमाज कापसहेडा, नई दिल्ली

प्रधान – श्री आदित्य मुरारी लाल वेदपा
मन्त्री – सूबेदार हरज्ञान सिह याद
कोषाध्यक्ष – श्री ईश्वर सिह आर्य

आर्यसमाज धुर्वा, रांची

प्रधान – श्री राजकपूर चौधरी
मन्त्री – श्री अनिल माझी
कोषाध्यक्ष – श्री बबन प्रसाद

आर्यसमाज कोडरमा, झारखण्ड

प्रधान – सन्तोष कुमार
मन्त्री – रामनरेश सिह
कोषाध्यक्ष – तिलक कुमार

आर्यसमाज पाबूपुरा जोधपुर

प्रधान – श्री भवर लाल आर्य
मन्त्री – श्री नेमीचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री देवकिशन आर्य

आर्यसमाज, शाहजहांपुर

प्रधान – श्री बाबूराम गुप्त
मन्त्री – श्री प्रेम बिहारी गुप्त
कोषाध्यक्ष – श्री वेदपाल सिह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२
फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८
सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.co

वर्ष ४० अक ४० २७ जनवरी से २ फरवरी २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ पौ० शु० १३
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

२६, २७, २८ फरवरी २००२ को सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के उपलक्ष्य में 'उदयपुर चलो'

अपने-अपने वर्गो के उदयपुर पहुचने की पूर्व सूचना स्वामी तत्वबोध सरस्वती नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर (राजस्थान) को अवश्य दे।

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस पवित्र और ऐतिहासिक स्थल पर बैठकर सत्यार्थ प्रकाश का बहुत बडा अश लिखा वह स्थल था – नवलखा महल उदयपुर जिसे कुछ ही वर्ष पूर्व राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री भैरो सिह शेखावत ने आर्य जनता को समर्पित किया। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस महल को एक स्मारक के रूप मे विकसित करने के लिए श्रीमददयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का गठन किया। स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी इस न्यास के आजीवन अध्यक्ष हैं तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य इस न्यास के उपाध्यक्ष हैं।

स्वामी तत्वबोध सरस्वती (पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) ने अपने जीवन की सारी कमाई (लगभग १ करोड रुपये से भी अधिक की राशि) लगाकर इस नवलखा महल को एक विशाल और ऐतिहासिक स्मारक के रूप मे विकसित कर दिया है। जहा प्रतिवर्ष की भाति इस बार भी २६ २७ और २८ **फरवरी २००२ (मगलवार बुधवार एव बृहस्पतिवार)** को सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव मे भाग लेकर प्रत्येक आर्य बन्धु को महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस भव्य स्मारक के दर्शन करके प्रेरणा के पुज उस कक्ष को निहारने का विशेष लाभ मिलेगा जिस कक्ष मे साढे छ महीने अपने आवास के दौरान महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश की बहुतायत रचना सम्पन्न की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हाल ही मे सम्पन्न हुए चुनावो मे कै० देवरत्न आर्य के प्रधान तथा उनके साथ अन्य सुशिक्षित कर्मठ एव पवित्र भावनाओ वाले पदाधिकारियो के चुने जाने के बाद आर्यजगत मे एक नई शक्ति के सचार की आशा बधी है। इस सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मे कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे इस नव गठित कार्यकारिणी एव अन्तरग के सदस्यो को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जा रहा है। जहा देश के इन आर्यनेताओ का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा।

महल की भव्य यज्ञशाला तथा **सगीतमय फव्वारा पूरे महल का अलौकिक निर्माण पुस्तकालय** तथा **महर्षि दयानन्द जी के जीवन कार्यो को चित्रो मे प्रदर्शित करती हुई दीर्घा** और वेदप्रचार वाहन के द्वारा किस प्रकार स्थानीय क्षेत्रो मे घूम घूमकर व्यापक प्रचार किया जाता है इन सब का दर्शन करके आपके मन और आत्मा से एक नई स्फूर्ति पैदा होना अत्यन्त स्वाभाविक है।

हिमाचल प्रदेश से आध्यात्मिक सन्त स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा वैदिक विद्वान सन्त महात्मा गोपाल स्वामी जी को दिल्ली से आमन्त्रित किया गया है।

आर्यजन देश के विभिन्न हिस्सो से अधिक से अधिक सख्या मे इस सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मे भाग लेने के लिए अभी से यात्रा की तैयारिया तथा रेल आरक्षण आदि करवाना प्रारम्भ कर द।

स्वामी सर्वानन्द जी के आशीर्वचन

दयानन्द मठ दीनानगर के द्वितीय आचार्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत ३ नवम्बर २००१ के चुनावो मे निर्वाचित कै० देवरत्न आर्य के प्रधान तथा उनके साथ श्री विमल वधावन कार्यकारी प्रधान एव श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री तथा अन्य समस्त साफ सुथरी छवि वाले महानुभावो द्वारा सभा के सचालन का दायित्व सम्भालने पर अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आश्रमवासियो तथा आगन्तुको के समक्ष उस प्रसन्नता को खुले शब्दो मे व्यक्त किया। स्वामी जी ने आशा व्यक्त की है कि कै० देवरत्न आर्य तथा उनके साथी आर्यसमाज की डगमगाती नाव को सकुशल चलाने मे सफल होगे। उन्होने नवनिर्वाचित पदाधिकारियो को भरपूर आशीर्वाद भी दिया है।

हाल ही मे अजमेर मे सम्पन्न हुई परोपकारिणी सभा की बैठक मे भी स्वामी सर्वानन्द जी ने कै० देवरत्न आर्य को आशीर्वाद दिया और जनसभा मे सम्बोधित करते हुए कहा कि परोपकारिणी सभा ऋषि की बनाई अपनी सभा है। जिन लोगो ने गुरुकुल कागडी मे घोटाले और सार्वदेशिक सभा मे धक्काशाही करने वाले लोगो का जमघट बनाने का प्रयास किया है। अगर ऐसा कोई प्रयास भविष्य मे किया गया तो इन लोगो के शरीर मे कीडे पडेगे। स्वामी जी ने बडे प्रेम और श्रद्धा के साथ आर्यसमाज के कार्यो को सम्पन्न करने के लिए आर्यजनता का मार्गदर्शन किया।

– **स्वामी सदानन्द सरस्वती तृतीय आचार्य**
दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

केरल मे प्रचार कार्यो के लिए श्री नरेन्द्र भूषण सम्मानित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री नरेन्द्र भूषण का केरल मे एक लाख से अधिक राशि तथा सम्मान पत्र के साथ अन्तर्राष्ट्रीय अभिनन्दन किया गया। श्री नरेन्द्र भूषण विगत कई दशको से केरल मे धर्मान्तरण रूपी ईसाचक्र का वैदिक प्रचार के माध्यम से मुकाबला कर रहे है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा अन्य समस्त पदाधिकारियो ने केरल के इस विद्वान सत के प्रति अपनी शुभकामनाए व्यक्त की है।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

२८ जनवरी जन्म तिथि पर विशेष

देश व्यापी क्रान्ति के अभिलाषी : लाला लाजपत राय

— स्व० ब्रह्मदत्त स्नातक

मै एक देशव्यापी क्रान्ति देखने का अभिलाषी हू। ऐसी क्रान्ति जो राष्ट्रजीघन के प्रवाह को उसकी नीति को देश के इतिहास को पलटकर देश को बन्धनमुक्त कर दे जहा से वह शताब्दियो के पश्चात पुन मानव जाति को जीवन ज्योति से आलोकितकर सके।

इन शब्दो मे वर्षो पूर्व लाला लाजपतराय ने देश की जनता का पुनर्निर्माण के लिए आह्वान किया था और भावी भारत के स्वरूप की अपनी कामना और कल्पना जनता जनार्दन के सम्मुख प्रस्तुत की थी। इसी ध्येय के लिए वे आजीवन कार्यरत और सघर्षरत रहे।

१३२ साल पहले जन्मे लाला लाजपत राय की प्रासगिकता आज के युग मे कितनी है इसका लेखा–जोखा राष्ट्र व समाज की वर्तमान समस्याओ के तलस्पर्शी विवेचन क क्षणो मे उपयोगी है। आज यहा एक ओर राजनैतिक दावानल और देश के अनेक भागो मे हिसा व आतकवाद का ताण्डव नृत्य चल रहा है तथा साम्प्रदायिक व विभाजन शक्तिया विदेशी तत्वो से शह पाकर सम्पूर्ण विश्व को विनाश की ओर ले जा रही है वहा देश के दूसरी ओर विचारक लोग किकर्त्तव्यविमूढ होकर बैठ गए है। और दलगत राजनीति व्यक्तियो पर केन्द्रित हो स्वार्थ की धुरी पर घूम रही है। यदि शहीदो की चिताओ से और शहीद जन्म लेते है तो भगतसिह राजगुरु सुखदेव और यतीन्द्रनाथ दास की शहादत उसका उदाहरण मौजूद है।

अपने जीवन मे लाला लाजपत राय पजाब केसरी कहलाए परन्तु वस्तुत यह उनके जीवन का एकागी चित्रण है। वे समग्र राष्ट्र के आदर्श प्रेरणापुज न केवल जीवनकाल मे अपितु आज के काल क्षणो मे भी उनका जीवन युवाओ और कार्यकर्ताओ के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम दे रहा है। लाला लाजपतराय मे जनमानस मे पैठने और उसको आकर्षित करने की गजब की चुम्बकीय शक्ति थी। वे एक सामान्य घर मे पैदा हुए यद्यपि पजाब ने राष्ट्र को उनके रूप मे एक ऐसा वीर पुरुष दिया जिसने आने वाली पीढी को एक अमूल्य सन्देश और प्रेरणा दी। आजादी मिलने से पूर्व सकट के क्षणो मे सदैव राष्ट्र ने उनकी ओर नेतृत्व के लिए निहारा। वे गरम दल नरम दल तथा आम आदमी सभी के श्रद्धास्पद रहे। सच पूछे तो पजाब के अखिल भारतीय स्तर का कोई दूसरा नेता उनके बाद हुआ ही नही। राष्ट्रीय महासभा ने दो बार उन क्षणो मे लालाजी को अध्यक्ष बनाया जबकि राजनैतिक चेतना देश मे धूमिल हो चुकी थी। और दिशा शून्यता चारो ओर व्याप्त थी। वे एक उत्कृष्ट समाज–सेवक राष्ट्रभक्त समाज कल्याण कार्य के शिल्पी होने के अलावा चोटी के पत्रकार सम्पादक एव धुरन्धर वक्ता थे।

कार्यकर्त्ताओ के जनक

अपने त्यागपूर्ण एव प्रेरक जीवन के द्वारा उन्होने स्व० लाल बहादुर शास्त्री स्व० बलवन्त मेहता (गुजरात) स्व० राधानाथ रथ व श्री विश्वनाथ दास (उडिसा) स्व० पुरुषोत्तम दास टडन को कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर कर देश कार्य मे लगाया।

अपनी योग्यता लेखन शक्ति और वक्तृत्व के द्वारा लाला जी ने जहा राजनीति मे उच्च प्रचारात्मक कार्य किया वहा भारतीय सस्कृति एव वैदिक आध्यात्मवाद का सन्देश सुदूर अमेरिका जैसे स्थानो पर पहुचा कर सच्चे अर्थो मे अपने गुरु का अनुयायी बनकर ऋषि तर्पण किया। "फादर इण्डिया" के द्वारा जहा उन्होने मिस मेयो की "मदर इण्डिया" के भारत विरोध का पर्दाफाश किया वहा श्रीकृष्ण चरित्र जैसी पुस्तके लिखकर वेदो का सन्देश सर्वसाधारण तक पहुचाया। राजनीति मे उनकी तुलना इग्लैंड के प्रधानमन्त्री प्रिट से भी अधिक थी उन्हे कुशल वक्ता तथा पार्लिआमेण्टेरियन होने का गौरव प्राप्त था।

डी०ए०वी० सस्थापको मे

पजाब मे जब पहले डी०ए०वी० कालेज की स्थापना हुई तो उसके प्रमुख सस्थापको और सचालको मे लालाजी थे। सस्था के जन्म के साथ उसके नाम पर मतभेद शुरु हो गए थे।

एक वर्ग का कहना था कि आर्य समाज के विस्तार के उद्देश्य से स्थापित इस सस्था मे दयानन्द के नाम के साथ वैदिक शब्द न जोडकर एग्लो वैदिक विशेषण देने से वेद अथवा सस्कृत को पीछे धकेल दिया गया है। ऐसे लोगो की आपत्तियो को बढता देखकर बाद मे मिडिल कक्षा तथा सस्कृत व्याकरण की अष्टाध्यायी अनिवार्य कर दी गई। इस विवाद मे लालाजी ने सस्कृत की जोरदार पैरवी की थी। "दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज मे तालीम सस्कृत पर एक मुख्तसिर नजर" नामक एक उर्दू के ट्रैक्ट मे लाला जी ने तब लिखा था –

"उन्होने (स्वामी दयानन्द ने) सब कुछ महज सस्कृत के तुफेल (कृपा) से हासिल किया था। उनकी फाजिलाना (विद्वतापूर्ण) तहरीरो और तकरीको (लेख और भाषणो) से जाहिर हो चुका था कि सस्कृत के जाखीरो (खजाने) मे किसी किस्म की विद्या की कमी नही है फिर बावजूद इसके इस वाकफियत के उसकी यादगार मे एग्लो वैदिक कालेज के नाम से क्यो नामजद किया गया ? इसकी वाजूहात साफ थी। अब्बल यह कि स्वामी जी की मशा को उन लोगो ने पहचाना था जिनकी आखे अग्रेजी तालीम की रोशनी ने खोल दी थी। सस्कृत के बहुत से फाजिल मुल्क मे मौजूद थे मगर बहुतो ने स्वामी जी के फतवे की कदर नहीं की और न कोई उनका मातकिद (विश्वासी) हुआ बल्कि उन लोगो के हाक्र मे उनको ये दिक्कते और मखालिफत उठानी पडी जो हिन्दुस्तान की मजहबी तावारीख (इतिहास) मे अपने आप ही यादगार रहेगी। (देखे इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्यसमाज का इतिहास पृष्ठ २०५ भाग दो)

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महात्मा पार्टी के दूसरे वर्ग ने गुरुकुलो की स्थापना की थी जहा सस्कृत और हिन्दी को प्रमुखता दी गई।

सन १९०० मे उर्दू मे लिखी योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र नाम पुस्तक की प्रस्तावना मे लालाजी ने स्पष्ट लिखा है कि भगवद्गीता के श्लोको के लिए मिसेज एनी बेसेन्ट के भाष्य से (अग्रेजी मे) मैने लाभ उठाया है परन्तु हर एक श्लोक के भाष्य को असल (मूल) पुस्तक से मिलाया है। यहा यह स्पष्ट नहीं है कि लालाजी ने मूल पुस्तक का यथार्थ स्वय कैसे पाया ?

— सी ४, ३३२ बी जनकपुरी, दिल्ली ५८

ओ३म ध्वजा फहराओ

मुक्त गगन मे विश्व मच पर ओम ध्वजा फहराओ।
ऋषियो के वशज भारत को जग मे फिर चमकाओ।।

भूलो नही विश्व की जनता ज्ञानार्जन को आयी।
हम ने ही बस अखिल विश्व मे निज सस्कृति चमकायी।।
धन धान्यो से पूर्ण धरा यह सोने की चिडिया कहलायी।
त्याग तपस्या बलिदानो से गुरु स्थान दिलाओ।।

किसी दूसरे की धरती पर न आखे ललचायी।
यदि किसी ने हम को छेडा तो आखे दिखलायी।
शत्रु सेनाओ से लडकर मा की लाज बचायी।
पौरुष के तुम अक्षय पुज हो पौरुष को दिखलाओ।।

इस धरती पर आकर राम ने धर्म मार्ग दिखलाया।
योगेश्वर श्री कृष्ण चन्द्र ने गीता ज्ञान सुनाया।
देव दयानन्द ने आकर वेदो का शख बजाया।
अन्धकार को दूर भगाकर वेद ज्ञान अपनाओ।।

मुक्त गगन मे विश्व मच पर ओम ध्वजा फहराओ।
ऋषियो के वशज भारत को जग मे फिर चमकाओ।।

— ओम प्रकाश शास्त्री
यू–१२८, शकरपुर, दिल्ली।

मोही के निर्मोही सन्त थे गुरु देव मेरे

– स्वामी सर्वानन्द

स्वामी सर्वानन्द जी

भूमिका

यह भारत राष्ट्र प्राचीन काल से ऋषि–मुनियो वीरो वीरागनाओ साधु, महात्माओ त्यागी तपस्वियो की भूमि रही है। इस देश का पुराना नाम आर्यावर्त था। और यहा के निवासियो को आर्य कहा जाता था। हम लोग आर्य थे। और सम्प्रति भी हम लोग आर्य ही है। अर्य धातु से निष्पन्न होकर आर्य शब्द बना। आर्य श्रेष्ठ को कहते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द एक सच्च आर्य थे। उनमे आर्यत्व के गुण विद्यमान थे। वे अद्वितीय सन्यासी थे। उन्हे लौह पुरुष कहा गया। क्योकि के अत्यन्त निर्भीक यति थे। वे किसी के आगे झुकना कायर समझते थे।

जन्म स्थान

स्वामी जी का जन्म पजाब राज्य के लुधियाना शहर से कुछ दूर मोही नामक एक छाटे से गाव में सन १६७७ पौष मास की पूर्णिमा सम्वत १६३४ मे हुआ।

माता एव पिता के नाम

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द की माता का नाम श्रीमती समा कौर एव पिता का नाम श्री भगवान सिह था। स्वामी जी के बचपन का नाम केहर सिह था। केहर सिह का अर्थ होता है शैरो के शेर। वास्तव मे उनका जैसा नाम था वैसा काम भी था। वे किसी के सा्ने झुकना नहीं जानते थे। वे बचपन से ही विनोदी स्वभाव के बालक थे। वे अत्यन्त निर्भक तेज चचल आदि प्रकृति के बालक थे।

बाल्यकाल की शिक्षा

जब केहर सिह (स्वामी) स्वतन्त्रानन्द) माता जी की मृत्यु हो गई। तब वे बहुत रोय। बचपन मे उनकी माता जी उन्हे (केहर सिह) को छोडकर सदा के लिए चली गई। स्वामी जी अपने बाल्यकाल मे मोही से अपने ननिहाल लताला भी पढने के लिए आते जाते थे। लताला मे उदासी महात्माओ का एक प्रसिद्ध डेरा था। उस समय डेरा के महत श्री प० विशनदास सस्कृतज्ञ एव सुयोग्य चिकित्सक थे। श्री प० विशनदास जी आर्यसमाज के प्रभाव मे आकर वैदिक धर्मी के हो गए। इन्हीं प० विशनदास जी के सम्पर्क मे आकर केहर सिह जी पर वैदिक धर्म की छाप पडी। स्वामी जी बाल्यकाल से किशोरावस्था मे प्रवेश करते ही स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा ले ली। उनका नाम प्राणपुरी रखा गया। वे घूम-घूम कर इतस्तत स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के प्रचार प्रसार करने लगे। वे स्वतन्त्र पूर्वक धर्मोपदेश करते रहे। बाद मे वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द हो गए।

सर्वप्रथम गुरु के दर्शन

स्वामी स्वतन्त्रानन्द (मेरे गुरु जी) से मेरी पहली मुलाकत महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी समारोह १६२५ मे मथुरा मे हुई। उस समारोह मे बहुत से महात्मा साधु मत पथ आर्यसमाज के नेतागण आए हुए थे। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के प्रथम दर्शन यहीं पर हुए।

सन्यास की दीक्षा

केहर सिह की मृत्यु हो जाने के पश्चात उनके पिता भगवान सिह ने उनके लिए सेना मे जमादार के पद पर उनकी नियुक्ति का प्रयास किया। परन्तु यह पछी अ कहा फसने वाला था। एक दिन वे घर से चुपचाप निकल पडे और गृह त्याग दिए। विक्रम सम्वत १६५८ मे गृह त्याग किया। तीन वर्षो तक इधर उधर भ्रमण करते रहे। १६५७ विक्रमी को फीरोजपुर जिला के परवरनड नामक ग्राम मे सन्यास की दीक्षा ली। सन्यास के गुरु थे श्री स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज। बाद मे वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द से प्रसिद्ध हुए।

– स्वामी स्वतन्त्रानन्द

दयानन्द मठ दीनानगर मे नजर बद स्वामी जी

दीनानगर मे नजरबद किया गया। स्वामी जी सुन जाता है कि उनकी हाथो मे थाने की हथकडी छोटी पड गई। तब स्वामी जी ने हसते हुए कहा – अब हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र होकर रहेगा। क्योकि अग्रेज अधिकारियो की हथकडियाँ छोटी पडने लगी है।

कार्य क्षेत्र

सन १६३८–३६ मे स्वामी जी एव उनके साथ अनेक आर्यसमाज के नेतागण धार्मिक एव सास्कृतिक अधिकारो की रक्षार्थ निजाम हैदराबाद गए। स्वामी जी हैदराबाद सत्याग्रह के सूत्रधार एव फील्ड मार्शल थे। महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व मे सत्याग्रह आरम्भ हुआ। आर्य हैदराबाद के सत्याग्रह मे विजयी हुए।

सन १ अप्रैल १६४० ई० को लोहार कस्बे मे आर्यसमाज की स्थापना की गई।

इसका प्रथम वार्षिक उत्सव २८–३० मार्च सन १६४१ ई० को रखा गया। इस जलसे मे स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को आमन्त्रित किया गया। २८ मार्च को सायकाल नगर कीर्तन के समान लोहे पुरुष स्वामी जी के ऊपर एव आर्यजनो के ऊपर नवाव की पुलिस के कारिन्दो एव अन्य भाडे के दरिन्दो ने जुलूस पर पीछे बर्छियो व कुल्हाडियो से आक्रमण कर दिया। सवामी जी के ऊपर भी कुल्हाडियो की चोटे पडने लगी। स्वामी जी को किसी तरह बचाने की कोशिश की गई। फूलसिह आदि लोग गिर पडे। पर स्वामी जी अन्त तक भूमि पर नहीं गिरे।

किसी कवि ने लिखा है –

स्वामी का अद्भुत बलिदान धरती हो गई लहूलुहान गूजे धरती और वितान वीरो की कैसी है शान कविवर प्रणव शास्त्री ने स्वामी जी के बारे मे लिखा है –

मातृभूमि की आखों के उज्ज्वल प्रिय तारे।
नर नायक पर दीन हीन के अतिशय प्यारे।।
नीति नियन्ता आर्य जाति के दृढ़तर नेता।
यतिवर सयम ध्यान धारणा के नचिकेता।
श्रीधर सुचि स्वाध्याय उदधि के मञ्जुल मोती
स्वाभिमान की लहर सदा थी जिसको धोती
मीत शत्रु ने सदा एक सा जिनको देखा।
स्वत्व सारण की न रही मस्तक मे रेखा।
तभी राग झनकार स्नेह के तार मिलाते।
गाता त्रस्त जनो को थे पीमूष पिलाते।।

स्वामी सधे हुए योगी थे। स्वामी जी प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियो के सागर को बडे धैर्यता के साथ सहज स्वभाव से पारकर जाया करते थे। स्वामी जी भक्त एव आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक लेखक आचार्य चमूपति जी ने विक्रय सम्वत १६६ (६३४) मे झण्डे का गीत एक कविता लिखी थी। स्वामी जी के इस मनोबल को देखकर उसके निम्न पद अनायास स्मरण हो आते है। ऐसा समझना चाहिए कि स्वामी जी जैसे कर्म योगी के अन्त करण विपदाओ की इस वेला से भी यह विचित्र ध्वनि निकल रही थी –

वीरो की उठती तरग बन।
सागर की मचलाती उमग बन।।
अमर फाग का दिव्य रग बन।
लहरा लहरा ध्वजा ओम की।
हम सब तुझ पर प्राण वार दे।
सुख सम्पत सम्मान वार दे।
यह वर दे जा ध्वज ओम की।

स्वामी जी का व्यक्तित्व महान था। उन के चेहरा सूर्य के भाति चमकता था। वे परोपकारी दीनहितैषी दयानन्द के सच्चे अनुयायी पुनीत हृदय वाले, कर्मठ त्यागी मधुर भाषी स्वाभिमानी धार्मिक इश्वरोपासक चिन्तनशील। मननशील सन्त प्रेमी समाज सुधारक वेदोद्धारक राष्ट्र प्रेमी देश भक्त वैदिक धर्मी एक सच्चे इन्सान एक सच्चे साधु, महात्मा हसमुख सन्यासी थे।

सन १६३२ ई० की बात है। शेख अब्दुल्ला की मुस्लिम काफ्रेस ने कश्मीर मे दगे किए। अनेको हिन्दू मारे गए। स्वामी जी उपदेशक महाविद्यालयो के विद्यार्थियो से बोले मुझे ऐसे युवको की आवश्यकता है। जो कश्मीर राज्य मे जाकर अपने मरे हुए हिन्दू भाईयो की लाश को पता लगावे –एव वे कहा मारे गए। वहा जाकर पता लगावे। यह कार्य उसी नौजवान से हो सकता है। जिसके मृत्योपरान्त उनके परिवार शोक न सके। स्वामी जी की बातो पर दस पन्द्रह नौजवान तैयार हो गए। स्वामी जी के साथ दस पन्दहो नौजवान चल पडे। कश्मीर की पहाडियो पर। प० ईश्वर जी दर्शनाचार्य भी स्वामी जी के साथ थे। पहाडियो पर चढते–चढते स्वामी के पैरो मे मोच आ गई। किसी तरह उनके लिए खच्चर की व्यवस्था की गई। स्वामी कुछ दूर जाने के बाद खच्चर से उतर गए। स्वामी पुन पैदल ही पहाडियो पर चढत चले गए। स्वामी जी अपने प्राणो की बाजी लगाकर सब हिन्दू भाईयो का गावेषार्थ निकल पडे। इससे यह सिद्ध होता है कि वास्तव मे स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी (मेरे गुरु जी) मोही के निमोही सन्त थे। वे धैयशाली एव निर्भीक सन्यासी थे।

किसी कवि ने स्वामी जी के बारे मे लिखा है –

हैदराबाद सत्याग्रह सिन्धु में, नवाव से टकराये।
विशालकाय महामान को देख नवाब घबराये।।
खाकर सिर पर कुल्हाडे मुह सत्य से न मोडा।
प्राण दिया बलिदानी ने पर आन को न छोडा।।
तेरा ही कृपा से आज हम गाते हैं वेद ज्ञान।
निराला ऐसे स्वामी को बार बार प्रणाम।।

अन्तिम आदेश

स्वामी स्वतन्त्रानन्द (मेरे गुरु जी) की मृत्यु के पश्चात कुछ दिन बाद मैंने रिफार्मर मे एक लेख लिखा हुआ देखा और पढा। उसमे यह लिखा हुआ था कि जब तुमने अपने गुरु से पूछा है तो तुम मेरे आदेश का पालन करना उन्होने यह लिखा था देखो रामचन्द्र मै बहुत सस्थाओ का प्रधान हू। किन्तु तू किसी सस्था का प्रधान आदि बनने की कोशीश मत करना। यदि कोई बना दे तो बन जाना। स्वय बनन की कोशीश मत करना। मेरे गुरु स्वामी स्वतन्त्रान्द जी के अन्तिम आदेश यही था।

मृत्यु

स्वामी स्वतन्त्रानन्द कैसर रोग से पीडित रहे। बहुत समय तक वैद्य डाक्टर इस रोग पीलिया समझते रहे। चिकित्सा के लिए उन्हे बम्बई ले जाया गया। वहा सेठ प्रताप सिह भूर जी चिकित्सा पर हजारो रुपये खर्च किए। उदर का आप्रेशन भी किया गया। किन्तु अवस्था नही सुधर वार्ड। अन्त मे सम्वत २०१२ वि० चैत्र शुक्ल एकादशी (३ अप्रैल सन १६५५ ई०) को प्रात ६ बजे स्वामी जी हम लोगो को सदा के लिए छोडकर चले गए। उस समय रामचन्द (स्वामी सर्वानन्द जी वहीं पर थे)स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने मृत्यु से पूर्व रामचन्द से कहा था कि रामचन्द्र। अब तुम अपने कपडे रग लेना। और मेरी शरीर की अन्त्येष्टि यहीं बम्बई मे ही कर देना। और मर पार्थिव शरीर की भस्म को मठ की पुष्प वाटिका मे खाद के स्थान डाल देना।

इत्थम स्वामी जी ने कुल ६८ वर्ष २ महीने और २५ दिन जिन्दा रहे। सम्प्रति स्वामी जी हम लोगो के मध्य विद्यमान नहीं है। परन्तु कीर्ति रूपी शरीर से वे आज भी हमारे बीच विद्यमान है। जब तक सूराज चाद और पृथ्वी रहेगी। तब तक स्वामी जी का नाम सदा अमर रहेगा।

उपसहार

स्वामी जी विनम्रशील एक सच्चे आर्यसमाजी वेदो के दीवाने परोपकारी गरीबो का रक्षक दीनहितैषी क्रान्तिकारी सन्यासी निर्भीक लौह पुरुष विद्वान साहसी राष्ट्र भक्त आदि थे।

– दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब

ईश्वर एवं मृत्यु से साक्षात्कार

— वेदाचार्य डॉ० रघुवीर वेदालकार

उक्त ज्ञान' ही पदाथ अदृश्य है। अत इनस साक्षात्कार असम्भव नही तो दुरुह अवश्य हे। इश्वर के साक्षात्कार का त' पता नही कि वह कैसा होता हागा। ह उसकी अनुभूति अवश्य हुई है तथा मेरी समझ मे परमश्वर की अनुभूति हाना ही उसका साक्षात्कार है। यह अनुभूति जिस जब भी जेसे भी हा जाए वही उसका साक्षात्कार हे। ६ हमारे यत्न एव भूमिका पर निर्भर करता है कि हम यह अनुभूति कब तथा किस रूप मे हा। परमश्वर क विषय म इससे अधिक कहने की स्थिति मे नही हू, किन्तु मृत्यु स साक्षात्कार मुझे अभी भी स्मरण है।

यह मृत्यु भी उस जगन्नियन्ता के नियन्त्रण म ही कार्य कर रही हे तथापि अत्यन्त वलवती है। पता नही कब कहा किसे धर दबाचे काई नहीं जानता। उसके जवडे म पड कर ठीक उसी तरह कि जस दीवार पर रगती छिपकली के मुख म काइ कीडा छटपटा रहा हो मृत्यु का साक्षात्कार हो ही जाएगा। यदि प्रभु कृपा स उस विकराल जबडे से बाहर आ जाए तो उन क्षणो की स्मृति भी आजन्म रहेगी। बस मेरी भी यही कहानी हे।

अब तक दो बार मृत्यु का साक्षात्कार किया हे। प्रथम वार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे पढते समय १६६६ ई० म जबकि एक दिन गगनहर को पार करने का मन हुआ। अच्छा तैराक न होने से मेरा यह कार्य दु साहस पूर्ण था। परिणाम वही हुआ कि थाडी ही देर मे मैने अनुभव किया कि मै पैरो की ओर से नहर के अथाह जल मे नीचे ही नीचे धसता चला जा रहा हू। जाते जाते पक्का निश्चय हो गया था कि आज यह अन्तिम जल समाधि है। किन्तु ऐसा नहीं हुआ जिस तरह ऊपर से तीव्र गति से गिरती गेद भूमि पर गददा खाकर फिर ऊचा उछलती है इसी प्रकार मुझे लगा कि किसी अदृश्य शक्ति ने नहर की तली से बडे जोर से मुझे ऊपर पानी की सतह पर पटक दिया। हाथ-पैर मार कर बाहर आ गया। काई कष्ट नही हुआ किन्तु उसकी स्मृति अभी भी ज्यो कि त्यो सुरक्षित है।

१४-१२-२००१ को इन्हीं यमराज महाशय के पुन दर्शन हुए किन्तु इस बार पहले की अपेक्षा अति विकराल रूप मे। शायद श्रीमान जी क्रोधित रहे होगे कि यह प्राणी मेरे जबडे से कैसे निकल भागा था। और सचमुच यमराज जी इस बार दनदनाते हुए आए। हुआ यह कि स्कूटर से सडक पर गिर कर मैं एक टैम्पू के नीचे आ फसा। शायद यमराज ने ही भेजा हागा कि इस बार तो छोडना ही नही है किन्तु मै पर्याप्त लम्बे समय से जीवेम शरद शतम तथा भूयश्च शरद शतात का जप करता आ रहा हू। यह वेद की वाणी है तथा मेरा इस पर दृढ विश्वास है। परिणाम स्वरूप दोनो मे मल्लयुद्ध प्रारम्भ हो गया। मुझे उस क्षण की पूर्ण स्मृति अभी है — जब टैम्पू रूपी यमराज के नीचे मे दबा पडा था तथापि उसके साथ जाना नही चाह रहा था। यह दुराग्रह देखकर उसका क्रोध बढा ही हागा। इसलिए उसने बलपूर्वक मुझे सडक पर घसीटना प्रारम्भ कर दिया मै कशकाय व्यक्ति उसके नीचे कितनी दर तथा कितनी दूर घिसटा इसकी स्मृति नहीं है। सम्भवत उस समय अचेत अवस्था रही होगी। टैम्पू के रूकने पर ही चेतना लौटी तथा मैन पाया कि मै सडक तथा टैम्पू के बीच मे बुरी तरह दबा पडा हू। पीठ पर पहाड जितना भार है। उस समय की स्मृति कुछ इस प्रकार है। मै पूर्णत शान्त तथा निर्द्वन्द्व स्थिति मे था। कोई भय शोक मोह आदि मेरे मन मे उस समय न था। हा ये भाव अवश्य आए कि यह क्या हुआ ? मैं इतनी जल्दी ससार से क्यो जा रहा हू। वैसे मुझे पूर्ण निश्चय हो चुका था कि अब पूर्णरूपेण मृत्यु के मुख मे हू तथा यहा से निकल नहीं सकता। यह मृत्यु से मेरा दोबारा साक्षात्कार था। इस बार भी नहीं हुआ। मृत्यु का मुख बन्द होने से पूर्व ही मुझे बाहर निकाल लिया गया। वेद कहता है — यस्य छायाऽमृत यस्य मृत्यु। मृत्यु को भी नियम मे रखने वाली एक और शक्ति है जिसे वेद 'सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात कहता है। मृत्यु यदि किसी को असमय मे ही ग्रास बनाने दौड रही है तो उसे बचाने वाला सर्वव्यापक परमेश्वर वहा पहले से ही विद्यमान है जो रक्षा कर रहा है। कुछ विद्वान लोग कहते हैं कि १०० वर्ष से पूर्व किसी दुर्घटना या रोग आदि से मरना अकाल मृत्यु हैं। मैं ऐसा नहीं समझता। योगदर्शन कहता है कि प्रत्येक प्राणी की आयु पूर्व कर्मो के आधार पर सुनिश्चित है। यही कारण है कि कुछ व्यक्ति भयकर दुर्घटनाओ के बाद भी बच जाते है तथा कुछ व्यक्ति बिना किसी कारण भी १०० वर्ष से पूर्व ही मृत्यु मुख मे चले जाते हैं।

मे अब साठ के दशक मे चल रहा हू। इस आयु म अनेक व्यक्ति ससार से चले जाते है। मुझे इस दुर्घटना मे यह सोचने पर विवश कर दिया कि यह पुनर्जन्म मिला है तो शेष जीवन को घर गृहस्थी के व्यक्तिगत कार्यो से हटकर ईश्वरीय आज्ञा मे व्यतीत कर देना चाहिए तथा शेष आगामी जीवन को सभी द्वन्द्वो से मुक्त होकर शुद्ध एव शान्त अवस्था मे जीना चाहिए। अभी इतना ही जीवन और जीने की मेरी आकाक्षा एव सकल्प है। इस घटना के माध्यम से सम्भवत परमेश्वर ने ही यह शिक्षा दी है कि मूर्ख ! इस जीवन को किसी अच्छे लक्ष्य की ओर लगा दे। शायद १६६६ मे गगानहर से बाहर फेक कर उसने ऐसा ही आदेश दिया था किन्तु मूर्ख व्यक्ति सकेत को नहीं समझ पाते। तब मैं भी नहीं समझ पाया तथा जीवन को विद्या पद-प्रतिष्ठा नौकरी तथा गृहस्थ के अर्पण कर दिया। यद्यपि अब तक का जीवन भी कुत्सित नहीं रहा है तथापि इन सबमे केवल विद्या ही स्थायी हैं। शेष सब कुछ नश्वर है। यदि मैं इनके चक्कर मे न पडकर तभी भगवदादेश के लिए अपने को समर्पित कर देता तो यह ... कुछ और ही होता।

मृत्यु का पहला अनुभव बहुत सहज था। इसीलिए मैं ससार से नहीं हट पाया। शायद इस बार इसी लिए परमेश्वर की ओर से यह दण्ड प्रहार हुआ है कि इस बार तो जीवन की दिशा बदल ही देनी होगी।

मृत्यु ! तुम्हे प्रणाम। मृत्यु के अधिपति परमेश्वर ! तुम्हे प्रणाम ! मृत्यु ! मुझे अब तेरे से कोई भय नहीं क्योकि —

त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम।
ऊर्वारूकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

— बी २६६ सरस्वती विहार
दिल्ली-३४

कृतज्ञता ज्ञापन

सार्वदेशिक मे मेरी दुर्घटना का समाचार पढकर दिल्ली तथा अन्य प्रदेशो की सभाओ आर्यसमाजो तथा अन्य सस्थाओ के माननीय अधिकारियो पूज्य सन्यासियो विद्वानो तथा अन्य स्नेही महानुभावो ने घर पर स्वय पधार कर तथा दूरभाष एव पत्रो के द्वारा जो आशीर्वाद एव स्नेह सिचित सान्त्वना मुझे प्रदान की इसके परिणाम स्वरूप प्रभु कृपा से मै अब पर्याप्त स्वस्थ हो गया हू। अत सभी महानुभावो का आभार मानते हुए उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हू।

१६-१-२००२

आभार एव धन्यवाद सहित
— डॉ० रघुवीर वेदालकार

कुल भूमि के प्रति

— डॉ० रघुवीर वेदालकार

जिसकी चरणधूलि मे खेले जहा किया विद्या मधु पान।
उस प्यारी कुलमाता को है बार बार मेरा प्रणाम।।

ऐ प्यारी कुलमात ! तेरा चीर हरण जब होता है।
दिग्दिगन्त प्रसिद्ध तेरा यह स्नातक मण्डल सोता है।।

स्नातक बन्धुओ ! लिखो शोर मचाओ हा हाकार करो।
सत्याग्रह धरनो के द्वारा निज गुस्से का इजहार करो।।

स्नातकमण्डल जागेगा तो लौटेगा माँ का सम्मान।
उस प्यारी कुल माता को दै बार बार मेरा प्रणाम।।१।।

बाल नोचते तेरे मात ! दुष्ट लफगे घुस आए।
नीलाम तेरा दामन करते बे बेहया नही शर्माए।।

स्वार्थपरायण व्यक्ति अब तेरा रक्त चूसना चाहते है।
रिश्वत लेकर भूमि बेचकर ये आनन्द मनाते है।।

इन नगो ने धन की खातिर बेच दिया अपना ईमान।
उस प्यारी कुल माता कोदै बार बार मेरा प्रणाम।।२।।

आर्यजनो ! तुमसे भी एक नम्र निवेदन करना है।
होता रहे कुछ भी फिर भी क्या तुमको चुप ही रहना है ?

उठो-उठो मुह खोलो इन घोटालो को रोक दो।
स्वार्थियो बेईमानो के मुख पर कालिख पोत दो।।

कुलमाता यह ऋणी रहेगी मानेगी सबका अहसान।
उस प्यारी कुलमाता को है बार-बार मेरा प्रणाम।।

आर्यसमाज के सच्चे प्रहरी स्वामी स्वतन्त्रानन्द

– स्वामी सोमानन्द

यह भारत राष्ट्र विश्व की धरती पर सबसे अधिक समृद्धशाली आध्यात्मिक क्षेत्र मे तपस्वियो एव वीर वीरागनाओ के क्षेत्र मे अग्रगण्य रहा है। यह देश ऋषि मुनियो एव तपस्वियो की पुनीत वसुन्धरा है। यहा पर समय समय पर भारत की बिगडती दशा को सुधारने के लिए किसी न किसी महापुरुष का जन्म अवश्य ही होता है। भारत वर्ष या आर्यावर्त की पुनीत शस्य श्यामला धरती पर अनेक महापुरुषो का जन्म हुआ। जैसे –श्रीराम श्रीकृष्ण गौतम कणाद जैमिनी कपिल महावीर दयानन्द आदि। इन्ही महापुरुषो मे से स्वामी स्वतन्त्रतानन्द स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी आर्यसमाज के स्तम्भ समाजसेवी परोपकारी दयालु निर्धन हितैषी गुरुभक्त थे।

उनका जन्म पौष्य महीने की पूर्णिमा सम्वत १६३४ सन (१८७७) ई० मे पजाब राज्य के लुधियाना नामक शहर से कुछ दूर मोही नामक ग्राम मे एक जाट सिख परिवार मे हुआ। उनके मात पिता ने अपने पुत्र का नाम केहर सिह रखा। केहर सिह की माता का देहान्त उनके बाल्यकाल मे ही हो गया।

स्वामी जी मे सन्यास लेने की इच्छा बचपन मे ही जागृत हो गई थी। एक दिन वे १५ वर्ष की आयु मे घरवालो से बिन बताए अपने घर से निकल पडे। कई वर्षो तक वे मलाया ब्रह्मा (वर्मा) आदि देशो मे भ्रमण करते रहे। विदेश से भारत वापस आने के पश्चात उन्होने फिरोजपुर जिला के पखरनड नामक ग्राम म स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती से २३ वर्ष की आयु मे विक्रम सम्वत १६५७ मे सन्यास की दीक्षा ले ली। स्वामी पूणानन्द जी ने केहर सिह का नाम प्राणपुरी रखा। जो बाद मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए।

स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन आर्यसमाज के प्रचार मे लगा दिया। उन्होने गाव गाव शहर शहर मे घूम घूमकर अनेक परिस्थितियो का सामना करते हुए वेदो का प्रचार किया। उन्होने ससार के लागो से कहा – वेदो की ओर लौटो इसी मे तुम्हारा हित होगा। ऋषि मुनियो क बताये पथपर चलो। उनके आदर्श को अपने जीवन मे उतारो। ईश्वर कृत ग्रन्थ वेदो का प्रचार सर्वत्र घूम घूम कर करो। स्वामी दयानन्द के सपनो को साकार करो।

स्वामी जी आय समाज के प्रचारार्थ दीवाने हो गए थे। वे स्वतन्त्र रूप से सर्वत्र घूम घूमकर वेदो का प्रचार करते रहे। स्वामी जी ने रामामण्डी एव कुथरावा को छोडकर लुधियाना मे आकर वेद प्रचारिणी सभा एव हिन्दी पाठशाला की स्थापना की। सन १६२० या १६२३ म आप बिना किसी सस्था क सहयोग लिए बिना जावा सुमात्रा मलाया सिगापुर फिलीपिन्स ब्रह्मा मारिशस व अफ्रीका आदि देशो मे प्रचारार्थ गए। तत्कालीन सार्वदेशिक सभा की भी स्थापना नही हुई थी। स्वामी जी ने अपने प्रवचन इच्छा तपावल एव सादगी पूर्ण व्यवहारो से वहा के लोगो क मन को जीत लिया। आपके प्रति वहा के लोगो की गहरी आस्था जम गई। सन १९४८ म आप पुन वेद प्रचारार्थ अफ्रीका गए। वहा से वापस आने के बाद सर्वत्र स्वतन्त्र पूर्वक व घूम घूम कर वेदो का प्रचार करने मे लग गए।

स्वामी जी के ब्रह्मचर्य स तप हुए शरीर ने निजाम राज्य क मनोबल को गिरा दिया। हैदराबाद स त्याग्रह आरम्भ होने लगा तो निजाम राज्य ने आर्यो को हतोत्साहित एव परास्त करने का भरसक प्रयास किया। परन्तु स्वामी जी इसमे विजयी रहे। हेदराबाद क उर्दू दैनिक रहबरे दक्कन म सत्याग्रह क विषय मे एक सम्पादकीय मे आर्यो की शक्ति का ऐसा चित्र चित्रण किया था कि निजाम राज्य की मुस्लिम प्रजा के मनोबल पर उसका घातक प्रभाव पडा।

स्वामीजी अत्यन्त बहादुर थे। व दुश्मनो के समक्ष कभी झुकना नही जानते थे। स्वामी जी बाधाओ को देखकर कभी नही घबराये। उन्होने समाज क सुधारार्थ गुरदासपुर जिल के दीनानगर नामक शहर म एक मठ की स्थापना की। जिसका नाम दयानन्द मठ रखा गया। वर्तमान समय मे स्वामी सर्वानन्द इसके कुलपति ह और स्वामी सदानन्द जी प्राचार्य पद पर आसीन हे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी बडी सूझ बूझ के साथ इस सस्था को चला रहे ह। स्वामी सर्वानन्द जी [illegible] स्वामी स्वतन्त्रानन्द क पद चिह्न पर चलते हुए उनके नियमो के अनुरूप ही अपने जीवन की दिनचर्या चला रहे ह।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी [illegible] अत्यन्त गम्भीर हे।

डा० रवीन्द्र कुमार श[illegible] सम्पादक लिखते हे –

हम स्वामी जी को याद करते रहगे।
वेदो का प्रचार सर्वत्र करते रहेगे।।
विदेशों मे भी जाकर वेदो का प्रचार करेगे।
वहा की जनता के हितार्थ वेदो के उपदेश करेगे।।
हम ईश्वर की भक्ति सदा करते रहेगे।।
हम स्वामी जी को कभी नहीं भूलगे।
उनके पथ पर हमेशा चलेगे।।
हम विपत्तियो मे भी हसते रहेगे।।
बाधाओ को देखकर नहीं घबरायेगे।
विश्व के नभ मे ओ३म ध्वज फहरायेगे।।
हम सोमवर्षक के गीत गाते रहेगे।।
स्वामी दयानन्द के सपने पूरे करेगे।
वैदिक धर्म के लिए हम मरेगे जिएगे।।
सारी दुनिया को आर्य बनाना है।
दयानन्द के सपने को विश्व में सजाना ह।
हम अपनी आत्मा का उत्थान करते रहेगे।।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की मृत्यु स्वामी सर्वानन्द जी क समक्ष मुम्बई म ३ अप्रल १९५५ का प्रात ६ बजे हो गइ। उन्होने इश्वर का ध्यान लगाकर इस नश्वर शरीर को छोड दिया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आज हम लोग क मध्य तो नही ह। परन्तु कीर्तिरूपी शरीर से वे सम्प्रति हम लोगो क बीच विद्यमान है। सूरज की भाति उनका नाम सम्पूर्ण ससार म चमकता रहेगा। स्वामीजी [illegible] निर्भय [illegible] दीन हितैषी [illegible] आर्यसमाज के एक [illegible] प्रहरी [illegible]

दयानन्द मठ दीनानगर प[illegible]

निराला संत स्वामी स्वतन्त्रानन्द

– आचार्य सदानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द को आर्य जगत मे कौन नहीं जानता है। आर्य जगत के इतिहास मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द अमर है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द सन्यासियो मे अद्वितीय हे जैसे गगन मे दिवाकर। दिवाकर अपनी ज्योति से प्रात होते ही सारे ससार को आलोकित कर देता है। उसी प्रकार स्वामी जी ने भी अपने जीवन काल मे सूरज बनकर स्वदिव्यालोक से पूरी दुनिया को आलोकित किया था। स्वामी जी अत्यन्त सरल विनम्र परोपकारी दयालु आर्यसमाज के सच्च प्रहरी थ।

स्वामी जी का जन्म वि० सम्वत १६३४ पौष्य मास पूर्णिया सन १८७७ ई० को पजाब राज्य के लुधियाना जिले मे मोहीनामक एक छोटे से गाव मे हुआ था। बचपन मे वे उनकी माता जी उन्हे छोडकर सदा के लिए चली गई। उनके वचपन का नाम केहर सिह था और पिता का नाम भगवान सिह था। बडे होने पर उन्होने २३ वर्ष की अवस्था मे स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा ली। सन्यासी बनने के पश्चात आर्यसमाज का प्रचार भारत मे ही नही किया बल्कि विदेशो मे भी जाकर प्रचार किया। उन्होने अपने अमृतोपमयी उपदेशो से वहा के लोगो को आह्लादित कर दिया। उनके प्रति लोगो की श्रद्धा अतिशय बढ गई। वास्तव मे स्वामी जी के जीवन के बारे मे अवलोकन करने से ऐसा आभास होता हे कि स्वामी जी का जीवन सदा सघर्षमय रहा है। उन्होने आर्यसमाज का कार्य जमकर किया।

स्वामी जी अत्यन्त निर्भीक निर्धन हितैषी ईश्वरोपासक साधक योगी एक सच्चे आर्य समग के पक्के अत्यन्त अनुशासित सेवक पुण्यमानी समाज सुधरक एक सच्चे राष्ट्र भक्त दानी शक्तिशाली शेरों के समान गरजने वाले मृदुभाषी तपस्वी सागर के समान गम्भीर चाद की तरल शीतल आदि थे। स्वामी जी के जीवन की गाथा का जितना वर्णन किया जाए [illegible] हू कि उतना ही कम है। वे ज्ञान के समुद्र थे।

स्वामी जी मे राष्ट्र भक्ति की भावना कूट कूट कर भरी थी। अत उन्होने राष्ट्र क हितार्थ अग्रेजो के विरुद्ध आवाज लगाई थी। स्वामी जी ने समाज एव राष्ट्र के कल्याण के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। राष्ट्र एव आर्यजगत उनका सदा ऋणी रहेगा। वेदो के दीवाने स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने अपने वैचारिक क्रातिकारी उपदेशो गर्जना एव वीरता से अग्रेजो की नीव हिला दी। अग्रेज उनक साहस को देखकर दग रह जाते थे।

आचार्य सदानन्द जी

स्वामी जी ने दीनानगर मे दयानन्द मठ की स्थापना की। सन १६३८, ३६ ई० म धम एव सस्कृति की रक्षार्थ निजाम हैदराबाद से टक्कर लेने का निश्चय किया। स्वामी जी इस सत्याग्रह के सूत्रधार एव फील्ड मार्शल थे। यह सत्याग्रह महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व मे हुआ। सहस्रो की सख्या मे आर्यलोग जेल गए। कठोर से कठोर यातनाए सहन की। अनेक आर्यो ने अपना बलिदान देकर ससार को आश्चर्य चकित कर दिया।

अप्रैल १६४० को लोहारु नामक कस्बे मे आर्यसमाज की स्थापना हुई। जिसमे आयसमाज के प्रथम अधिवेशन मे (वार्षिकोत्सव) म २६–३० मार्च सन १६४७ को स्वामी जी को बुलाया गया था। स्वामी जी उस अधिवेशन मे सम्मिलित हुए थे। २६ मार्च [illegible] नगर कीर्तन के अवसर पर नवाब की पुलिस के कारिन्दो व अन्य दरिन्दो ने जुलूस पर पीछे से लाठियो बर्छियो एव कुल्हाडियो से आक्रमण कर दिया। लगभग साठ लोग घायल हो गये। स्वामी जी पर अधाधुन्ध लाठियो कुल्हाडियो एव बर्छियो से भयकर प्रहार किया गया। शरीर का कोई भी ऐसा अग नहीं था। जिस पर स्वामी जी को चोट न लगी हो। लाठिया बछिया कुल्हाडिया स्वामी जी पर बरसते रहे। फिर भी स्वामी जी नहीं गिरे क्योकि व अत्यन्त साहसी थ।

स्वामी जी के बारे मे किसी कवि ने लिखा है –

स्वामी के अदभुत बलिदान से धरती हो गई लहुलुहान।
गूजे धरती और वितान वीरों की कैसी हे शान।।

स्वामी जी समाज सेवी थे। उन्होने समाज के लिए जो कार्य किया। वह भुलाया नही जा सकता। स्वामी सूरज के समान ससार रूपी नभ मे चमकते रहेगे। क्योकि हम लोगो को तिमिर से हटाकर प्रकाश की ओर ले आए।

तपोमय जिसका जीवन था
उनको कैसे मै भूल सकता ?
वेदो के पक्के पुजारी
उनको कैसे मै भूल सकता ?
वैदिक धर्म की खातिर स्वामी जी ने
अपने को बलिदान किया।
बचपन मे ही सन्यासी हो गये
और वेदो का प्रचार किया।
दयानन्द के पक्के अनुयायी
उनको कैसे मै भूल सकता।
जब तक सूरज चाद रहेगा
स्वामी जी का नाम रहेगा।
स्वामी जी के पथ पर चलकर
वेदो का प्रचार करेगा।
त्यागी तपस्वी कर्मठ स्वामी जी को
उनको कैसे मै भूल सकता ?।।

स्वामी जी ने समाज एव राष्ट्र क कल्याणार्थ स्वय का कुबान कर दिया।

स्वामी जी ३ अप्रैल १६५५ वि० सम्वत २०१२) को प्रात ६ बजे ईश्वर का ध्यान लगाकर सदा के लिए हम लोग को छोडकर चले गए। स्वामी जी नश्वर शरीर को छोडते समय अपने ही प्रिय शिष्य [illegible] (स्वामी सर्वानन्द) से बोले मेरे मृत्योपरान्त मेरे शरीर का अन्त्येष्टि सस्कार बम्बइ मे ही करना। [illegible] समय स्वामी जी बम्बई मे ही थ। [illegible] शरीर को कहीं ले जाने की आवश्यकता नहीं [illegible] पार्थिव शरीर की भस्म को दयानन्द मठ दीनानगर की पुष्प वाटिका मे खाद के स्थान पर डाल दना।

सम्प्रति स्वामी जी हम लोगो के मध्य नहीं है। परन्तु कीर्तिरूपी शरीर से स्वामी स्वतन्त्रातानन्द जी आज भी विद्यमान हे। राष्ट्र एव आर्यजगत स्वामी जी का हमेशा ऋणी रहेगा।

जब तक सूरज चाद रहेगा।
तब तक स्वामी जी का नाम रहेगा।

स्वामी जी अत्यन्त विनम्रशील कर्मठ परोपकारी एव एक निराले सन्त थ।

– दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

आर्यवीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द

– शेखर चन्द्र शास्त्री

भ त र्वा ऋषि मुनिया की धरती पर अन ा ुरुष सन्त एव सयासी हु म र म कृष्ण दयानन्द विव न ा दि। उन महापुरुषो मे स्वामी र त्रान्द का नाम अद्वितीय है। स्वामी न ज न अपने राष्ट्र एव धर्मार्थ अग का बान कर दिया।

मी का जन्म पोष मास की पू १९ ४ (सन १९७७ ई०) म नू स कुछ मील दूर माही के जाट म परिवार म हुआ। उनके बचपन का नाम क र सिह था। उनके पिता का नाम ज्ञान सिह था। जो सना मे अफसर थ। उनकी माता जी उन्हे छोडकर उनके बचपन म ही चली गइ। स्वामी स्वतन्त्रा अपन माता पिता की पहली सतान थ।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के घनिष्ठ सखा तथा सहयागी वेदज्ञ स्वामी वेदानन्द न लिखा ह कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी क पूवज किसी समय हल्दी घाटी के माही नामक ग्राम स चलकर पजाब क लुधियाना जिला म आकर बसे थ पजाब म आकर अपन ग्राम का नाम भी उन्हाने माही ही रखा। स्वामी जी न बहु अन्य ग्र म स्वामी पूर्णानन्द स सयास की दीक्षा ली थी। उनक न म प्राणपुरी ा ग । स्वामी जी धीर धीर सर्वत्र घूम घूम कर स्वतन्त्रपूर्वक वेदा का प्रचार करत रह। अत उनका नाम स्वतन्त्र स्वामी पड गया ओर लोग उन्हे स्वामी स्वतन्त्रानन्द के नाम से पुकारने लगे। और इसी प्रकार उनका नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्द पड गया।

स्वामी जी जिन किन्ही भी कार्यो को करने के लिए मन मे ठान लेते थे। वे उन्हे कर डालते थे।

स्वामी जी का जीवन हमेशा सघर्षमय रहा हे। व सबसे कहते थे – मनुष्य का जीवन सघर्षो स भरा पडा है। इसलिए सघर्षो स कभी भी नहीं डरना चाहिए। क्याकि जीवन पर्यन्त मनुष्य का जीवन सघर्षमय ही रहता है। वे कर्मवीर थ। इसलिए तो वे सघर्षो स जीवनभर जूझते रहे। उन्हाने अपने जीवन मे कभी हार नही मानी। वास्तव मे जो सच्चा कर्मवीर होता है। वह बाधाओ से कभी नहीं घबरता है। बल्कि उससे मुकाबला करने का यत्न करता है।

किसी कवि ने लिखा है –

देखकर बाधा विविध वहुविघ्न घवराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना हो कठिन किन्तु उकताते है नहीं।
भीड मे चचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।

वास्तव म स्वामी जी मे ऐसे गुण विद्यमान थे। व साहसी पुरुष थे। स्वामी जी निजाम हेदराबाद सग्राम मे कूद पडे। महात्मा नारायण स्वामी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द को हेदराबाद जाने के लिए मना किया। हदराबाद के सत्याग्रह म हुतात्मा वीर शातिप्रकाश जेसे कई राजकुमारो ने अपन का बलिदान कर दिया। उन बलिदानियो का नाम आर्यसमाज के इतिहास मे अमर रहगा।

गाधी जी भी सत्याग्रह से प्रभावित हुए। आर्यसमाज के कर्मठ त्यागी क्रातिकारी आर्यसमाज के एक सच्चे प्रहरी एक अच्छ वक्ता एव सगीतज्ञ कुवर सुखलाल जी न इस तरह बयान किया था

यह क्या हेदराबाद मे हो रहा है।
कि महशर का आलम क्या हो रहा है।।
हमारी हिमायत न कर प्यारे गाधी।
मगर इतना कह दे बुरा हो रहा है।।

तत्कालीन कोई भारतीय निजाम क अत्याचारो के विरुद्ध आवाज नहीं लगा सकता था। अहिसा के पुजारी महात्मा गाधी उस समय चुप थे। परन्तु महर्षि दयानन्द की शाति सना आर्य सेवको ने निजाम को पराजित कर ससार को आश्चर्य म डाल दिया।

किसी कवि ने लिखा है –

यह किसका फसाना है किसकी कहानी है।
सुनकर जिसे महफिल की हर आख मे पानी है।।
दे मुझको मिटा जालिम मत धर्म मिटा मेरा।
यह धर्म मेरे ऋषि मुनियो की निशानी है।।

स्वामी जी ने ऋषि मुनियो क पथ को अपनाया था। स्वामी जी शेरो के समान गर्जन करते थे। राष्ट्र के हितार्थ उन्होने स्वय को कुर्बान कर दिया। जब तक यह धरती रहेगी। स्वामी जी का नाम अमर रहेगा। उनका एहसान कभी भुलाया नहीं जा सकता हे। वे आर्य समाज के दीवाने थ। वेदा क प्रचारार्थ ब्रह्मा मलाया अफ्रीका आदि अनेक देशो मे गए।

स्वामी जी अत्यत निर्भीक आय सन्यासी थ। उन्हाने मृत्यु को खिलौना समझ लिया था। वे योगी थे। भगवद गीता मे कहा है – भोग कर्मसु कौशलम। अर्थात कर्म करने मे कुशलता ही योग है। इस योगी के जीवन मे पग पग म ससार ने यह कुशलता देखी। वे प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियो के सागर को बडे धैर्य से सहज स्वभाव से पारकर जाते थे। वे विपदाओ को देखकर नही घबराते थे। बल्कि उनसे मुकाबला करते थ।

वे कर्मयोगी वेदा के पण्डित परोपकारी दलितोद्धारक दीन हितैषी कर्मठ त्यागी एक अच्छे साधक ईश्वरोपासक आर्यसमाज के एक सच्च प्रहरी एव समाज सुधारक आदि थे। उनमे अनेक प्रकार की पाण्डित्य शक्ति भरी था।

किसी कवि ने लिखा हे

धन्य स्वामी पाण्डित्य तुम्हारा।
धन्य धन्य सौजन्य तुम्हारा।।
धन्य तुम्हारा सेवा सयम
ज्ञान ध्यान है धन्य तुम्हारा।।

लुधियाना जनपद मे मोही एक ग्राम है
उसी ग्राम मे स्वामी जी ने जन्म लिया था।।
उनके बचपन का नाम केहर सिह था।
जिसने हैदराबाद मे धूम मचाया था।।
स्वामी जी के तेजस्वी चेहरे को देखकर
हैदराबाद का निजाम बहुत घबराया था।।
अन्त मे निजाम यति से परास्त हुआ।
स्वामी जी ने अत्याचारियो को मिटाया था।
त्यागी तपस्वी स्वामी जी कैसे भूले हम
विदेशो मे भी ओ३म का झण्डा लहराया था।।

– *दयानन्द मठ*
दीनानगर पजाब

स्वामी जी की विचार वाटिका स्वतन्त्रानन्द

देव की महिमा सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर की इस दिव्य सृष्टि म विविध प्रकार की विचित्रताओ का समावेश है। नभतल स्पर्शी हिमाच्छादित उडखरो वाले भूधर सिन्धु की और दौडती हुई सरिताए विस्तृत वसुन्धरा पवन और गगन नाना प्रकार की औषधिया विविध प्रकार क मनुष्य विभिन्न भाषाए और यह विशाल ब्रह्माण्ड यह सब अपनी सत्ता के द्वारा उस अद्भुत देव की महिमा को प्रकट कर रहे है।

जीवन क्या है – उत्पत्ति और विनाश जन्म और मृत्यु प्रकाश और छाया की भान्ति सदा साथ रहते है। जीवन के सौन्दय की पराकष्ठा मरण मे है। यदि पुष्प पुष्पित होकर झडे नही धान खत मे पककर कटे नही तो उनका होना किस काम का। जीवन का वह सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है जव यह मरण किसी के जीवन के लिए होता है। प्रभु स्वय निरपेक्ष परोपकार कर रहे ह। करुणानि धान भगवान के अनन्त करुण कण अनवरत इस सृष्टि मे बरस रहे है। जगत के सभी पदार्थ परोपकार का परस्पर की सहायता का उत्सर्ग और बलिदान का सन्देश सुना रहे है।

सुख दुख – उन्नति और अवनति का जोडा है। चक्रवत सुख और दुख आते रहते है। मनुष्य जान बूझकर भी कुकर्मो मे फसता है और जब ईश्वरीय न्याय उसे दुख देते है तब रोता है।

ससार वीरो का – यह ससार राने के लिए नही जैसी परिस्थिति हो उसका दृढता से सामना करो।

आगे बढो देखो आर्यो मे एक बात बताता हू तुम आगे बढा यदि तुम आग नही बढ सकते त म इसको पाप ता नही समझता ५ ुर्प छ ् तिल भी न हटना। यह भी थोडी वीरता नही।

बलिदान – पीडितो का परित्राण करना अन्याय का दमन करना धर्म की रक्षा करना शक्ति का उपयोग करना है। ससार शक्तिशालियो का है यहा निरन्तर सघर्ष चल रहा है। इस सघर्ष मे जो शाक्तिशाली हैं वे ही बच पाते है। शरीर का सौन्दर्य और सुख शक्ति है। जो शरीर रोगी है उसमे न सुख है न शान्ति।

उन्होने ईश्वरीय आज्ञा का पालन करते हुए उन कर्तव्यो का पालन करने मे कभी प्रमाद नहीं किया। उनका जीवन चरित्र पढकर हम सभी कर्त्तव्य मार्ग के पथिक बनकर कल्याण के भागी बने। प्रभु हम सब को इस पथ का पाथिक बनने की शक्ति प्रदान करे।

शास्त्री राजकुमार दयानन्द सस्कृत महाविद्यालय दीनानगर पठ

स्वामी स्वतन्त्रानन्द एक सच्चे समाज सेवी एवं निर्भीक सन्यासी थे

– डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री

भारत राष्ट्र प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियो महात्माओ वीरो वीरागनाओ बहादुरो साधको ईश्वरोपासको एव सन्यासियो की वसुन्धरा रही है। जब हमारा देश गुलामी की जजीरो मे जकडा हुआ था तब अनेक वीरो ने उन जजीरों को तोडने की कोशिश की। अत मे हमारे राष्ट्र के वीरो ने उसे तोड ही डाला। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ने भी अग्रेजो के विरुद्ध आवाज लगाई। हैदराबाद के सत्याग्रह को कौन नहीं जानता। उन्होने हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लेकर वहा के निजाम को परास्त कर दिया और ससार को आश्चर्य चकित कर दिया। स्वामी जी ने राष्ट्र एव समाज के कल्याणार्थ स्वय को कुर्बान कर दिया। स्वामी जी के एहसान को हम आर्य बन्धु कभी नहीं भूल सकते। ऐसे निर्भीक दयालु परोपकारी क्रान्तिकारी सन्यासी ससार मे विरले ही पैदा होते है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द एक कर्मठ त्यागी क्रान्तिकारी सन्यासी थे। बचपन से ही उनकी इच्छा सन्यास की दीक्षा लेने की हो गई थी। ओर बहुत अल्पायु मे ही उन्होने सन्यास की दीक्षा ले ली। उनका नाम प्राणपुरी रखा गया।

स्वामीजी का जन्म सन १ ७७ वि०स० १६३४ के पौष मास की पूर्णमासी को पजाब राज्य के लुधियाना के अन्तर्गत कुछ मील दूर एक छोटा सा ग्राम है। वही स्वामी जी का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम भगवान सिह था और माता का नाम श्रीमती समा कौर था। भगवान सिह अपने पुत्र केहर सिह (स्वामी स्वतन्त्रानन्द) को कर्नल बनाना चाहते थे। परन्तु केहर सिह साधु बनना चाहते थे। बडे होने पर उन्होने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार मे लगा दिया। आजीवन आर्यसमाज ही उनका जीवन रहा। वे स्वामी दयानन्द के अनुयायी बनकर आर्य समाज को अपना जीवन बनाकर वेदा का प्रचार करना चाहते थे। अत मे उन्होने कर दिखाया। स्वामी जी महर्षि दयानन्द के पथपर चलते हुए आजीवन वेदो के प्रचार–प्रसार किए। आर्यसमाज के प्रचार मे उन्होने अपना तन मन धन सब कुछ न्योछावर कर दिया। आर्यसमाज उनका जीवन था।

स्वामीजी अत्यन्त निर्भीक सन्यासी थे। उनके जैसे सन्यासी का उत्पन्न होना भारत की धरती क लिए गौरव की बात हे। वेदो के पथपर चलते हुए धम की रक्षार्थ एव राष्ट्र की रक्षार्थ अपन जीवन को बलिदान कर दिया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने समाज के लिए जो कार्य किया उसे भुलाया नही जा सकता है। उन्होने अपने तपोबल से समाज मे फैली कुरीतियो को समाप्त किया। आजीवन आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे लगे रहे। हम ऐसे वीर सन्यासी को कभी नही भूल सकते है। वे हम आर्यजगतवासी को अधकार से प्रकाश की आर ले आए। वे वीर क्रान्तिकारी परापकारी आर्यदीवाने थे। हम लोग आजीवन उनकी गाथा को गाते रहेगे। हम उन्हे कभी नही भूल सकते है। जबतक यह सूरज चाद रहेगा। स्वामी जी का नाम अमर रहेगा।

स्वामी जी अपने माता पिता की पहली सतान थे। आधुनिक मनोवैज्ञानिक एव सस्कार पद्धति इस बात को सिद्ध करती है कि पहली सन्तान अधिक बुद्धिमान तेज वीर एव धैर्यशाली होती है। पहली सन्तान मे कुशल प्रबन्धक सफल सेनापति एव शासक बनने के गुण विद्यमान थे।

सन १६३० ई० मे हैदराबाद सत्याग्रह के समय स्वामी जी ने अपने आतरिक एव बाह्य तेज का पूर्ण परिचय दिया। माता–पिता ने उनका नाम केहर सिह रखा। केहर सिह का अर्थ होता है– शेरो का राजा। जैसा उनका नाम था वैसा ही उन्होने काम भी किया।

स्वामी जी उन सन्यासियो मे अद्वितीय थे। जिनमे शायद ही तत्कालीन मे कोई सन्यासी था। स्वामी जी बहुत निर्भीक सन्यासी थे। वे जिनको भी जबाव देते थे दो टूक जबाव देते थे। आर्य समाज उनका जीवन था। आर्यसमाज के प्रचार के लिए उन्होने अपना पूरा जीवन लगा दिया। स्वामी जी ने समाज के हितार्थ स्वजीवन को न्योछावर कर दिए।

वे अत्यन्त परोपकारी निर्धन हितैषी विनम्रशील एक सच्च सत साधु आदि थे। उनका जीवन सादगी स परिपूर्ण था। सादगी जीवन का ही व श्रेयकर समझते थे। वे मौत स कभी नही डरते थे बल्कि मौत उन[illegible]।

पुण्य कीर्ति

– तेजपाल शास्त्री

स्वामी स्वतन्त्रानन्द की पुण्य कीर्ति को।
सारी दुनिया मे फैलाकर रहेगे।।

दयानन्द मठ के है हम ब्रह्मचारी।
सबको आर्य बनाकर रहेगे।।

दयानन्द मठ के स्नातक बनकर।
दयानन्द के सपनो को साकार करेगे।।

स्वामी जी ने हमको अमृत पिलाया।
हम भी सबको वेदामृत पिलाया करेगे।।

– दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

१६३२ ई० की बात है। शेख अब्दुल्ला की मुस्लिम काफ्रेस ने कश्मीर मे दगे किए। अनेक हिन्दू मारे गए। स्वामीजी ने उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो से कहा– ऐसे युवक का नाम दो जा कश्मीर राज्य मे जाकर ग्रामो का पता लगा सके कि किस–किस गाव मे हिन्दू मारे गए। कितने लोगो के घर बर्वाद कर दिए गए। इस कार्य मे वही विद्यार्थी अपना नाम दे जिनके मर जाने पर घरवाले शोक न करे। पदह युवको ने अपने नाम दिए। स्वामी जी इस दल को साथ लेकर स्वय जम्मू कश्मीर राज्य मे गए। प्राणो के निर्मोही ही साधु के नेतृत्व मे निकले। इन युवको म जाति रक्षार्थ सेवा की एक होड लगी थी। बडे जोखिम का कार्य था। यात्रा मे स्वामी जी के पाव मे मोच आ गई। उनके लिए खच्चर किराए पर ली गई। निश्चय किया गया कि पाच–पाच की टोली अलग अलग क्षेत्रो मे जाएगी। फिर एक स्थान पर एकत्र होगे। दल चल रहा था। रास्ते मे एक स्थान पर रियासत की सेना ने आगे बढने से रोक दिया। फिर कुछ देर बाद उन्हे आगे बढने की आज्ञा दे दी। रास्ते मे नदी मिली। उसमे विचित्र रगो की सुन्दर मछलिया तैर रही थी। पाच छात्र उनको देखने मे लग गए और उसी मे खो गए। जिससे वे पीछे रह गए। [illegible]च्चरवाला बार–बा[illegible] रहा था स्वामीजो से अधेरे से पहले वहा लौटना आवश्यक हे। छा[illegible] पीछे रह गए [illegible] स्वामी जो क्रो[illegible] लाल हो रहे थे। पर्याप्त समय के बाद वह टाली भी आ गई। स्वामीजीको मालूम होत ही कहा– आ गए हो तो जल पी लो। स्वामी सोमानन्द जी नूरगढ हरियाणा वाले भी स्वामी जी के साथ थे।

वास्तव म स्वामी अत्यन्त निर्भीक थे। वे कठिन से कठिन बाधाओ को हसते–कूदते पार कर जाते थे वेदो के प्रचार मे उन्होने पूरा जीवन लगा दिया। स्वामीजी के एहसान को हम आर्यजगत वासी कभी नही भूल सकते है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द के बार मे किसी कवि ने लिखा है –

निरालस्य निर्भीक निष्काम था वह।
स्वय की प्रशसा के उपराम था वह।।
मनस्वी तपस्वी यशस्वी यती था।
दयानन्द के सम दयानन्द ही था।।

स्वामी जी ने ३ अप्रेल सन १६५५ ई० सवत २०१२ वि० चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी का प्रात ६ बजे इश्वर का ध्यान लगाकर अपनी जीवन लीला क खेल को समाप्त किया। वे ईश्वर के प्यारे हो गए। वे सदा के लिए ससार य विदा हो गए। स्वामी जी ने मृत्यु–समय स्वामी सर्वानन्द से कहा था। कि अब तुम कपडे लना तथा मेरे शरीर की अन्त्येष्टि बम्बइ मे ही कर दना। जिस समय स्वामीजी की मृत्यु हुई वे बम्बई मे ही थे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द शरीर से हमार बीच विद्यमान तो नही हे। परन्तु कीर्तिरूपी शरीर से वे आज भी हम लोगो के मध्य विद्यमान है। जब तक यह सूरज चाद और धरती रहेगी तब तक स्वामी जी का नाम इस ससार मे अमर रहेगा।

मानवता के पक्के पुजारी

– यतीन्द्र शास्त्री

मानवता के पक्के पुजारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।
इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।। १।।

जब तक सूरज चाद रहेगा स्वामी जी का नाम रहेगा।
दयानन्द मठ दीनानगर में सदा वेदमन्त्र गूजता रहेगा।।

कर्मकाण्डी आत्मवेत्ता स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।।२।।
विदेशो मे जाकर स्वामी जी ने वेदो का प्रचार किया।

वेद ईश्वर कृत ग्रन्थ है सारे लोगो का बताया।
लौहपुरुष और शेर समान स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।।३।।

हम कभी नहीं भूल सकते स्वामी जी के एहसान को।
उनके पथ पर चलते रहेगे न खोए उनके सम्मान को।।

दयानन्द के पक्क अनुयायी स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।। ४।।
स्वामी सर्वानन्द जी को उन्होने अपना शिष्य बनाया।

वेदरूपी सुमनो से उन्होने दयानन्द मठ को सजाया।।
आर्यसमाज के पक्के प्रहरी स्वामी स्वतन्त्रानन्द थे।। ५।।

दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

कार्य वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्।।

"स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज"

ब्र० उदयन

आर्यजगत क वीतराग वीर सयासी सत्त शिरामणि त्याग मूर्ति मनामन परम श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का इस समाज म कौन सा वर्ग हे जो इस सयासी महानुभाव क नाम से परिचित न हो। जिनका जीवन अहनिश सवामह की सूक्ति का अपने जीवन मे चरिताथ करत हुए वसुधव कुटम्बकम की सूक्ति को मानने वाल व जानन वाल स्वामी जी महाराज का जन्म पजाव प्रान्त क लुधियाना जिला के मोही नामक ग्राम मे वि० सम्वत १६३४ के पोष मास की पूर्णमासी को हुआ। स्वामी जी क पिता का नाम भगवान सिह था। जो सना मे उच्चाधिकारी भी थ। इस प्रकार (कहर सिह) स्वामी जी मे वीरता क गुण प्रारम्भ से ही विद्यमान थ। स्वामी जी प्रारम्भ से ही शरीर से सुडौल एव चुस्त फुतीले तथा बलिष्ठ थे।

व्युढोरस्क वृषस्कन्ध शाल प्राशुं महाभुज।
आत्म कर्म क्षम देह क्षात्रो धर्म इवाश्रिता।।

अर्थात चौडी छाती वाले बैल के कन्धा के समान कन्धे वाले साल सरीक जेसे ऊच कद वाल तथा लम्बी भुजा बाले अपना कार्य करने म समथ देह को धारण किए हुए जेसे क्षत्रिया का म पराक्रम हो उसके समान स्वामी जी थए।

जैसा कि कहा भी गया है

शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम

अर्थात शरीर के द्वारा ही सब कार्य सिद्ध होते है। एक बार की बात है कि लोहारु मे वेद प्रचार चरम सीमा पर था। आर्यसमाज का उत्सव मनाने का फैसला किया गया जिसकी आधारशिला रखकर स्वामी जी (स्वतन्त्रानन्द जी) महाराज को आमन्त्रित किया गया। और अनेक गणमान्य व्यक्तियो को भी बुलाया गया। उस समय वहा का इस्पेक्टर जमालुद्दीन था। आयसमाज अपना नगर कीर्तन की आज्ञा लेने गया तो पहले उसने आनाकानी की फिर उसने आज्ञा द दी। स्वामी जी के नेतृत्व मे जलूस चल पडा। आर्यो ने स्वामी जी को कहा कि नमाज का समय है आप ठहरे। तब स्वामी जी ने कहा कि अभी हमारा सध्या का समय है। आर्यो ने वहा खडे खडे ही सध्या की। हजारो मुसलमान रास्त मे खडे थे। भीड से पूर्व इस्पेक्टर ने कहा कि नगर कीर्तन के लिए मार्ग छोड दो। भीड ने उत्तर दिया कि हम मार्ग नही छोडेगे।

इस्पेक्टर ने स्वामी जी को कहा कि आप और किसी गली का निकल जाए जब आर्य जाग दूसरी गली की ओर मुडने लगे तभी इस्पेक्टर का इशारा मिला और लाठिया आदि हथियारो से निहत्थे आर्यो पर कहर बरपाया। स्वामी जी महाराज पर भी ऐसी अन्धाधुध लाठियो की वर्षा की जिसकी कल्पना मात्र से मनुष्य कपित हो जाता है। साथ ही बर्छियो तलवार आदि कुल्हाडियो के भी हमले हुए। उनका मकसद स्वामी जी को खत्म करना था। एक अधिकारी ने स्वामी जी पर कुल्हाडी से वार किया। स्वामी जी के सिर पर तीन इच लम्बा घाव था। जो दूर से ही मालूम पडता था। (देखिए लोहारु का इतिहास) कवि ने कुछ पक्ति लिखी हैं–

भायो की भीषण ज्वाला को
सीने मे कौन दबा सकता
अलबेले दृढ सकल्पों को
रास्ते से कौन हटा सकता
न हारा इस धरा पर
मिथ्या प्रहारो से
सुना तुमने कभी
हिमालय हिला हवाओ से
हैदराबाद सत्याग्रह मे
नवाब से टकराए
विशालकाय महाकाय को
नवाब देख चकराए
तेरी ही कृपा से आज
हम गाते ईश्वर ज्ञान

ब्र० उदयन का सन्त शिरामणि क चरणो मे प्रणाम।।

ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति

गीत

– चैन लाल शास्त्री (तृतीय वर्ष)

हम न भूलेगे तुम न भूलोगे।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द को।।

उनकी राहो पर हम सब चलेगे।
उनके सपनों को हम पूरा करेगे।।

हम न भूलेगे तुम न भूलोगे।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द को।।

जिसने अपना जीवन दिया।
अधेरो को रास्ता दिया।।

कैसे हम भूले ऐसे स्वामी को।
कैसे हम भूले ऐसे स्वामी को।।

हम न भूलेगे तुम न भूलोगे।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द को।।

विदेशो मे जाकर वेदो का प्रचार किया।
स्वामी दयानन्द का सपना साकार किया।।

हम न भूलेगे तुम न भूलोगे।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द को।।

धर्म की खातिर खुद को मिटा डाला।
कर्मठ त्यागी सत बलिदानी निराला।।

हम न भूलेगे तुम न भूलोगे।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द को।।

दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

सर्वत्र सौख्यं वितनोतु देवाः

– भद्रदेव गौड

अनादि वेदज्ञान के लिए लोक कल्याण के लिए मातृभूमि के सम्मान के लिए आहुति देने वाले आर्यसमाज के समस्त हुतात्मा तपोधन श्रद्धेय स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म वि०स० १६३४ को पजाव के लुधियाना जिले मे माही नामक गाव मे पौषमास की पूर्णमासी को हुआ। उनमे गुरु की उदारता एव पितृवत स्नेह कूट कूट कर भरा था। वह पहली पीढी के प्रसिद्ध आर्यनेताओ और कार्यकर्ताओ मे विशेष थे। उनका काम पजाब से आरम्भ हुआ परन्तु अन्त मे सारा भारतवर्ष उनके कार्यक्षेत्र मे आ गया। जितनी सुदृढ काया थी उतना ही वलिष्ठ मस्तिष्क भी था। गम्भीर विचारक एव गम्भीर नीतिचिन्तक थे। वे सिद्धान्तो के बडे पक्क थे। वे त्यागी तपस्वी क्रान्तदर्शी लौहपुरुष आर्य सयासी वीर सेनानी अनथक कार्यकर्ता ऊचे आचार विचार के आदर्श सुधारक और [illegible] । उनमे ब्रह्मशक्ति और [illegible] ओतप्रोत थी। वेद क शब्दो मे उनके लिए कह सकते हैं।

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह।
तल्लोक पुण्य प्रज्ञात यत्र देवा सहाग्निना।।

[illegible] स्वामी जी महाराज आदर्श [illegible] सयासी [illegible] देश [illegible] । इसी कारण [illegible] भारतवर्ष ही नहीं अपितु देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तरो मे भी आर्यसमाज का प्रचार किया। पुनरपि वीरभूमि हरियाणा से उनका विशष लगाव था यहा के लोगो के लडाकू स्वभाव को देखकर वे कहा करते थे लडना तो ठीक हे यह वीरता का चिन्ह है। किन्तु आपस मे नहीं लडना चाहिए। अन्याय के प्रतिकार के लिए लडना उचित है। जिस दिन ये लडना छोड देगे उस दिन इनमे क्षात्रधर्म का लोप ही हो जाएगा। श्री स्वामी जी महाराज का वीर सेनापतित्व का गुण हैदरावाद सत्याग्रह से स्पष्ट दिखाई दे गया। वहा के क्रूर और कट्टर नवाब को दवाना इन जैसे वीर पुरुषो के ही वश मे था। सत्याग्रह के समय जेल से बाहर रहते हुए भी इन्होने सत्याग्रहियो जैसा जीवन बिताया। भूमि पर सोना ज्वार की रोटी खाना (वह भी दिन मे एक बार) नगे पेर रहना घी दूध का त्याग बाल न कटवाना आदि कठोर एव तपोमय जीवन के कारण ही उस युद्ध मे उन्हे सफलता मिली। किन्तु लोहारु के अत्याचारी नवाब ने इन पर राक्षसी आक्रमण करवाकर लहूलुहान करवा दिया था। [illegible] का क्या चित्र था यह वर्णन करना शोभा नही देता किन्तु मै इतना तो कह ही सकता हू कि अन्त मे वह नवाब स्वामी जी के आगे झुक गया।

गो रक्षा के लिए भी स्वामीजी महाराज ने बहुत प्रयत्न किया। वस्तुत देखा जाए तो इनके सदप्रयत्नो से सात राज्यो मे गोवध बन्द हो गया था। किन्तु देश के दुर्भाग्य से ऐसे अवसर पर ही ईश्वर ने उनका वरदहस्त हम पर से उठा लिया। किन्तु आज बडे अफसोस के साथ कहना पड रहा है कि एक शायर के शब्दो मे

उनकी तुरबत पर नहीं जलता आज एक भी दिया
जिनके खू से महके ये चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके
जिन्होने बेचे थे शहीदो के कफन।।

आज उनके जन्म दिवस पर हम उनके जीवन से कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सके इसलिए मैने यह लख छपवाया मुझे आशा हे कि श्रद्धालु जन इन शव्दा का अपनाकर अपने श्रद्धेय वीर सेनानी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकगे।

दया के सागर थे

– प्रदीप शर्मा शास्त्री तृतीय वर्ष

दया के सागर थे स्वामी हमारे।
वेदो के पण्डित थे स्वामी हमारे।।

न कोई चेली थी न कोई चेला था।
निराला सत स्वामी अकेला था।।

दर्शनो के विद्वान थे पण्डित हमारे।
वेदो के पण्डित थे स्वामी हमारे।।

दयानन्द मठ को बनाया है तूने।
सर्वानन्द को शिष्य बनाया है तूने।।

हम आर्यगण है ऋणी तुम्हारे।
दीनो के हितैषी थे स्वामी हमारे।।

पक्के कर्मकाण्डी थे स्वामी हमारे।
वेदो के पण्डित थे स्वामी हमारे।।

वे दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे।
शराबी कबाबी और न अन्यायी थे।।

सच्चे ईश्वर भक्त थे स्वामी हमारे।
वेदो के पण्डित थे स्वामी हमारे।।

उनके सपनो को हम पूरा करेगे।
वेदो के पथपर हमेशा चलेगे।।

सच्चे समाजसेवी थे स्वामी हमारे।
दया के सागर थे स्वामी हमारे।।

– दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

२७ जनवरी जन्म शताब्दी पर विशेष

कीर्तिर्यस्य स जीवति

आचार्य भद्रसेन

तपोनिष्ठ आचार्य भद्रसेन जी का जन्म पश्चिमी पजाब मे टोबा टेकसिह के समीप एक छोटे से ग्राम मे हुआ। श्री महात्मा प्रभु आश्रित जी ने टोबा टेकसिह को कर्मस्थली बनाकर आर्य जगत मे प्रसिद्धि प्रदान की। आचार्य जी का जन्म सन १९०० के आसपास हुआ। उनकी निश्चित जन्म तिथि का पता नहीं। १९७५ मे निधन के समय वह ७५ पचहत्तर वर्ष के थे। जन्म की दृष्टि से आपके पूर्वज भाटिया बिरादरी के थे। आपके पिता श्री लाला गोधा राम जी दुकानदार थे।

अनाथ हो गए

माता पिता ने आपको रैमल दास नाम दिया। ढाई वर्ष की आयु मे मातृविहीन हो गए। आरम्भिक शिक्षा उर्दू फारसी मे हुई। बहुत मेधावी छात्र थे। आपकी लिखाई बहुत सुन्दर थी अभी होश नहीं सम्भाला था कि पिता की छत्र छाया भी छिन गई।

विपत्तियों के विद्यालय मे

आधी या तेज हवा का झौका मोमबत्ती को तो बुझा सकता है परन्तु जगल मे लगी आग को तो और भडका देता है। जन्म जन्मान्तरो के शुभ सस्कार एक पवित्र आत्मा श्री दीवान चन्द्र आर्य पटवारी के सत्सग से जाग उठे। अनाथ रैमलदास का भविष्य अन्धकारमय सा दीखता था। आर्ष पाठविधि से परमेश्वर के वेदज्ञान व सस्कृत की उच्च शिक्षा पाने के लिए जन्म स्थान सगे सम्बन्धियो मित्र बन्धुओ सबको छोडकर निकल गए। भूख प्यास और सब प्रकार के कष्ट सहे। अखबारो के हाकर बनकर भी सस्कृत व वेदाध्ययन किया। लाहौर अमृतसर आदि अनेक स्थानो पर पढते पढाते काली नदी के किनारे उत्तर प्रदेश मे वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी के तपोवन मे पूज्य प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के चरणो मे पहुचे।

– आचार्य भद्रसेन जी

स्वामी सर्वदानन्द जी की विशेष कृपा से

आयु बडी थी तथापि प्रतिभा सम्पन्न व लगनशील होने से स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के व पूज्य गुरुवर के विशेष कृपा पात्र बनकर विपत्तियों को चीरकर आगे बढने लगे। यहीं स्वामी जी व गुरुजी ने भद्रसेन नाम से विभूषित किया। सतत साधना से भद्रसेन को काशी मे वेद व्याकरण व दर्शनो के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह विपत्तियो के विद्यालय से एक यशस्वी स्नातक बनकर निकले। काशी आदि नगरो मे श्रद्धेय प० युधिष्ठिर जी मीमासक भी उनके सहपाठी थे।

शुद्धि आन्दोलन मे

शूरता की शान महाप्रतापी स्वामी श्रद्धानन्दजी ने मलकानो की शुद्धि का आन्दोलन चलाया तो प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु इन्हे शुद्धि के रणक्षेत्र मे ले गए। उर्दू, फारसी व इस्लाम के जानकार होने से इनका वहा विशेष लाभ था। एक ग्राम मे दस दल ने इस हजार बिछडे भाइयो को शुद्ध कर के इतिहास बना डाला।

गुरुजी को बदल दिया

तिवारी जी काशी मे दर्शनो के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्हीं से पूज्य जिज्ञासु जी व उनके शिष्य दर्शन पढते थे। तिवारी जी न जब शुद्धि के पक्ष मे लिखित व्यवस्था दे दी तो महामना मालवीय भी दग रह गए। यह प० ब्रह्मदत्त व उनके शिष्यो का ही चमत्कार था।

ऋषि की राह पर

बाल्यकाल मे ही पटवारी दीवानचन्द जी ने ईश्वर भक्ति का ऐसा रग चढाया कि ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र व ग्रन्थो के पारायण से वह रग और गाढा हो गया। अब योग विद्या की धुन सवार हो गई। आप आर्ष ग्रन्थो के मर्मज्ञ बनकर कैवल्य धाम लोनावला मे स्वामी कुवल्यानन्द जी से योग सीखने चले गए। तीन वर्ष से ऊपर वहा योग साधना पठन पाठन मनन चिन्तन मे लगे रहे। मराठी का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। आर्य पत्रो मे लेख देते रहे। अब गुरुजी ने उत्तराधिकारी बनाना चाहा तो करोडो की सम्पदा का त्याग करके ऋषि की बलिदान अर्ध शताब्दी पर अजमेर मे डेरा डालकर ऋषि की राह पर जीवन भेट कर दिया।

गृहस्थी बने

जाति बधन तोडकर श्रीमति सौभाग्यवती जी से विवाह किया। यह विवाह बडा अनूठा था। इसमे आर्य जगत के कई मूर्धन्य नेता व विद्वान सम्मिलित हुए थे।

क्या किया ? क्या दिया

प्रभु भक्त दयानन्द जैसी कई उत्तम लोकप्रिय पुस्तके लिखी। सैकडो मौलिक लेख लिखे। सस्कृत वेद व योग का निशुल्क प्रचार किया। ऋषिकृत ग्रन्थो की रक्षा की। उन पर शोध किया। स्वाभिमान से जिये। गुरुकुलो की सेवा की। जिसने धौस जमाई उसकी नौकरी छोड दी। यज्ञो का प्रचार किया। निर्धन लोगो तक वेद सन्देश पहुचाया। भूखे रह परन्तु जगमगाए नही। सन्तानो के विवाह जन्म की जातपात ताडकर किए। ऋषि के मिशन को सुयाग्य सुपात्र कर्मठ व लग्नशील सन्तान देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी व प० गगा प्रसाद जी उपाध्याय का इतिहास दोहराया। अपने तप त्याग विद्या सदगुणो सेवा व अपनी सन्तान के कारण आचार्य जी इतिहास म अमर हो गए।

ऐसा हो गणतंत्र हमारा

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

जनहित के प्रति रहे समर्पित
शासन तथा प्रशासन सारा।
खुशियो से हो भरा राष्ट्र यह
गुजित हो जय हिद सुनारा।
बढे सुपथ पर मिल कर सारे
राष्ट्र बने प्राणो से प्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

देश भक्ति की धार सुपावन
जन जन मे हो पुन प्रवाहित।
युवक हमारे निकले निर्भय
प्राण हथेली पर ले परहित।

आतको के उग्रवाद के
सभी सारे कसे किनारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

भ्रष्टाचार रहित हो शासन
कर्मी सारे बने हितैषी।
जगे हमारे अन्तर्मन मे
निश्छलता से भाव स्वदेशी।

कभी न मानव बने यहा का
मानवता का ही हत्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

समता समरसता समृद्धि का
हो कण कण मे नव सचारण।
सभी समस्याओ का हो फिर
आज राष्ट्र की शीघ्र निवारण।

निर्बलतम जो भारत जन है –
उनको भी अब मिले सहारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

भीष्म भीम व पार्थ सदृश हो
वीर जयी सेनानी सारे।
अपराजित हो सैन्य वाहिनी
विश्व विजय के हित हुकारे।

वसुन्धरा को मार्ग बताए–
जय ध्वज वाहक भारत न्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

– मुसाफिरखाना सुल्तानपुर (पजाब)

दयानन्द मठ दीनानगर द्वारा संचालित संस्थाएं

१ स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कालेज दीनानगर
२ शान्ति देवी आर्य महिला कालेज दीनानगर
३ स्वामी सर्वानन्द इन्स्टीटयूट मैनेजमैन्ट एण्ड टैक्नलॉजी सस्थान दीनानगर
४ दयानन्द सस्कृत महाविद्यालय दीनानगर
५ आर्य हाई सैकेण्डरी स्कूल दीनानगर
६ एस०एस० डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल दीनानगर
७ स्वामी स्वतन्त्रानन्द मॉडर्न स्कूल जगी स्वरूपदास दीनानगर
८ आर्य हिन्दी पाठशाला (अवखा) दीनानगर
९ आर्य पुत्री पाठशाला डी०जी०खा दीनानगर
१० स्वामी सर्वानन्द मॉडल स्कूल (मराडा) दीनानगर
११ आर्य प्राइमरी स्कूल दीनानगर
१२ दयानन्द मठ फार्मेसी दीनानगर
१३ नि शुल्क तनूपा औषधालय दीनानगर
१४ दयानन्द गौशाला दीनानगर

पुस्तक समीक्षा

समग्र क्रान्ति का सूत्रधार आर्यसमाज

पृष्ठ १५६ मूल्य २० रुपये

लेखक – डा० भवानी लाल भारतीय

प्रकाशक – विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सडक दिल्ली–६

गोविन्दराम हासानन्द जाना पहचाना पुराना नाम आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति समर्पित व्यक्तित्व वाल तथा आर्य साहित्य के प्रकाशन मे अत्यन्त रूचि रखने वाले आस्थावान व्यक्ति है –

महर्षि के जीवन को जन जन तक पहुचाने मे परम श्रेष्ठी हैं। भारत के नव जागरण मे महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज की प्रमुख भूमिका रही है। इस क्रान्तिकारी आन्दोलन के जानने व समझने मे जिस गौरव की अभिवृद्धि की है उसमे स्वधर्म स्वसस्कृति स्वभाषा व स्वदेशी का जो मन्त्रोच्चार किया है वह इतिहास मे अपनी अमिट छाप छोड गया है।

आर्यसमाज की स्थापना की पृष्ठ भूमि तथा विगत १२५ वर्षो मे उसके द्वारा की गई सेवाओ का आकलन करते हुए –

इस पुस्तक का परिचयात्मक स्वरूप ही लेखक का परम योगदान है।

लेखक भारतीय जी परम भारतीयता के पोषक ऋषि का यशोगान करना उनका स्वभाव है।

अत आर्यसमाज व महर्षि को समझने मे श्री भारतीय जी की लेखनी बेजोड है।

लेखक यशस्वी हो और प्रकाशक का प्रकाशन मे यशोवर्धन हो यही कामना है पाठकगण पढकर ऋषि भक्त बने।

धन्यवाद

– डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

'धर्म'

पृष्ठ १४० मूल्य १६ रु०

लेखक – स्व० प्रिन्सिपल दीवानचन्द्र जी

प्रकाशक – विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सडक दिल्ली ६

धर्म विषयक विभिन्न सन्दर्भो की विवेचना समय समय पर विद्वानो द्वारा की जाती रही है। धम क्या है ? इस पुस्तक म धर्म की चचा कही एक वचन म तो कहीं बहुवचन मे की गई है।

कहीं ईश्वरीय नियमो का वाचक है तो अन्यत्र मानवीय कर्त्तव्य कर्मो का परिचायक है। प्रस्तुत पुस्तक मे चिन्तक लेखक आर्यसमाज के शिक्षाविद प्रचार्या विद्वान गवेषक है। इस पुस्तक मे वेद दर्शन उपनिषद–मनुस्मृति महाभारत गीता द्वारा जो विचार की है उसकी विवेचना गम्भीर रूप मे की है।

वैशेषिक दर्शन ने धर्म को अभ्युदय और नि श्रेयस का हेतु बताया है वही पर पूर्वमीमान्सा मे प्रेरणा प्राप्त कर्मो का वाचक बताया है।

धारणा तत्व को सत्व वर्णाश्रम धर्म की व्याख्या करक क्षत्रियो क कुलधर्म की चर्चा की है। वेदो द्वारा अखिल धर्म का मूल कहा है – इस प्रकार श्री दीवान चन्द्र जी ने धर्म की विवेचना मे सक्षेप मे जो व्यक्त किया है जो अभिप्रेत था।

गोविन्दराम हासानन्द का जाना पहचाना नाम आर्य समाज क्षेत्र मे प्रसिद्ध है आर्य साहित्य के प्रकाशन मे आपका महत्वपूर्ण योगदान है। पाठक गण ऐसे प्रकाशन से लाभान्वित हो।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के
श्री अमरदत्त आर्य को पुत्र शोक

आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के उप प्रधान श्री अमरदत्त आर्य के पुत्र श्री अभयदत्त आर्य का २३ वर्ष की अल्पायु मे दिनाक ६ जनवरी २००२ को अस्वस्थता से अकस्मात निधन हो गया। अन्तिम क्षणो मे उसने गायत्री मत्र का लगातार जप किया और परिवार को भी जप करने को कहा। दिनाक १३ जनवरी २००२ को उनके निवास स्थान जेड ५५४ प्रेमनगर किराडी नागलोई दिल्ली मे शुद्धि शान्ति यज्ञ एव शोक सभा आयोजित की गई जिसमे सर्वश्री मोहनलाल जिज्ञासु धर्मसिह शास्त्री गोपाल आर्य रवीन्द्र कुमार मनोहरलाल आर्य सादीराम आदि सभासदो तथा अन्य आर्यबन्धुओ एव ईष्टमित्रो के समूह ने श्रद्धाजलि दी। पुरोहित श्री शास्त्री जी ने आध्यात्मिक उद्बोधन एव शोक सभा का सचालन दायित्व निभाया। शोक सभा मे सवेदनाए व्यक्त करते हुए २ मिनट का मौन रखा गया जिसमे परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को शान्ति सदगति प्राप्त हो और श्री अमरदत्त आर्य परिवार को इस गहरे दुख को सहन करने की अपार शक्ति देवे।

– हीरा सिह मन्त्री

मोही की धरती

– अमर सिह शास्त्री तृतीय वर्ष

मोही की जनता धन्य हो गई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

भगवान सिह के घर मे एक बालक का जन्म हुआ।
मोही की धरती पर एक सूरज का उदय हुआ।।

बाल्यकाल मे ही माता सो गई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

भगवान सिह केहर सिह को कर्नल बनाना चाहते थे।
उनके जो सपने थे उनको सजाना चाहते थे।।

बचपन की शिक्षा गाव मे हुई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

मोही लुधियाना जिला मे पडता है।
स्वामी जी का गुणगान आर्यजगत करता है।।

केहर के पिता की इच्छा सो गई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

केहर बोला मै वेदो का दीवाना हू।
स्वामी दयानन्द का परवाना हू।।

मेरे जीवन मे जो आधी आएगी।
वेदो के मन्त्रो से आधी मिट जाएगी।

साधु बनने की इच्छा मेरी हो गई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

मै केहर सिह सन्यासी बनना चाहता हू।
मै वदो का दीवाना वेद प्रचार करना चाहता हू।।

मेरी माताजी की मृत्यु हो गई।
मोही की धरती पवित्र हो गई।।

– दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

वैदिक मर्यादा और परम्परा की प्रतिष्ठा करने वाले राष्ट्र पुरुषों से प्रेरणा लें

बन्दा वैरागी जयन्ती पर आर्य नेताओं द्वारा भारतीय जनता का आह्वान

वीर बन्दा वैरागी समिति दिल्ली की ओर से वीर बन्दा बैरागी का जन्म दिवस समारोह मानसरोवर गार्डन रमेश नगर दिल्ली मे मनाया गया। इस समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने वीर बन्दा वैरागी के प्रति श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि ऐसे वैरागी के जन्म दिवस पर उन्हे याद करके उनके जीवन से हम प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं जिन्होने वैदिक मर्यादाओ और सनातन परम्पराओ को पुनर्जीवित किया। ऐसे महापुरुष का जीवन इतिहास की पुस्तको मे भी हो जिससे आने वाली पीढी भी उनसे प्रेरणा ले।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने वीर बन्दा बैरागी को श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी एक ऐसे राष्ट्रनायक थे जिन्होने देश को विदेशी आक्रमणकारियो से स्वतन्त्र कराके भारत के उत्तरी भाग मे अपनी राजधानी अम्बाला लोहगढ स्थापित करके अपना ध्वज एव सिक्का चलाया। ऐसे महानायक एव राष्ट्र पुरुष का जीवन प्रेरणास्रोत है।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हरबस लाल कपूर ने श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी स्वतन्त्रता का युद्ध लडते हुए चादनी चौक मे शहीद हुए। उनका जीवन प्रेरणा स्त्रोत है ऐसे महान राष्ट्रनायक की जीवनगाथा इतिहास मे शामिल की जाए।

डी०ए०वी० मैनेजिग कमेटी के मन्त्री श्री मोहनलाल ने श्रद्धासुमन भेट करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी सन्यासी होते हुए भी देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सेनापति बने और अत मे शहीद हुए।

वीर बन्दा वैरागी समिति के महामन्त्री श्री सुन्दर दास ने इस महानायक के प्रति श्रद्धासुमन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम ऐसे राष्ट्रनायक परोपकारी वैरागी राष्ट्रप्रेमी से प्रेरणा ले। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा वीर बन्दा वैरागी के जयन्ती समारोह मे उदबोधन देते हुए।

इस अवसर पर एक प्रस्ताव द्वारा मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी से माग की गई कि वीर बन्दा वैरागी का नाम इतिहास मे जोडकर उन्हे देश को स्वतन्त्र कराने वालो के इतिहास मे उचित स्थान दे।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा आदि ने किया।

इसी अवसर पर एक अन्य प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी से यह माग की गई हक वीर बन्दा बैरागी का चित्र ससद मे लगाए क्योकि वह ऐसे महापुरुष है जिन्होने देश को स्वतन्त्र कराने हेतु बलिदान दिया ऐसे प्रेरक महापुरुष से राष्ट्र को सदा प्रेरणा मिलती है। ◎

युवक हृदय सम्राट पं० नरेन्द्र जी सभागृह का उद्घाटन सम्पन्न

औरगाबाद (महाराष्ट्र) मे दिनाक १३ १-२००२ को महाराष्ट्र विधान परिषद् के सदस्य श्री शालिग्राम राजारामजी बसैये की स्थानिक विकास निधि के अन्तर्गत स्वामी रामानन्दतीर्थ हौसींग सोसायटी के प्रागण मे पाच लाख पचास हजार से ३०x५० के सभा गृह का उदघाटन भूतपूर्व खान व इस्पात केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव जी गायकवाड पाटील के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष महानगरपालिका के महापौर श्री विकासजी जैन थे साथ मे विरोधी पक्ष के नेता श्री किशोरजी तुलसीबागवाले भूतपूर्व सासद श्री पुडलिक हरि दानवे विधान परिषद सदस्य महाराष्ट्र श्री शालिग्रामजी बसैये प्रधान महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी श्रद्धानन्दजी उप प्रधान दयाराम बसैयेजी मन्त्री डॉ० सुग्रीवजी काळे प० ज्ञानेन्द्रजी शर्मा प० नरदेव जी स्नेही चन्द्रशेखर जैस्वाल का स्वागत महानगरपालिका को ओर से किया गया।

सभा के प्रधान उप प्रधान मन्त्री ने पण्डित नरेन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला व हैदराबाद मुक्ति सग्राम मे आर्यसमाज के योगदान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने मा० विधायक श्री शालिग्राम बसैयेजी का आभार किया की आपके कारण ही मराठवाडा में प० नरेन्द्र जी का सस्मरण सदा याद रहेगा। विधायक श्री शालिग्रामजी बसैयेजी ने कहा की मेरा परिवार उन्होने यदि आर्यसमाज के सानिध्य में नहीं आता तो आज हम और कहीं होते ऋषि दयानन्द को महती कृपा है की मुझे विधायक के नाते आर्यसमाज का ऋण चुकाने का अवसर मिला मैं धन्य हुआ हू जिनकी प्रेरणा से यह सभागृह बना है वह स्व० स्वामी सन्तोषानन्दजी (भूतपूर्व सग्राम सिह चौहान) आज नहीं है लेकिन उनका ही मार्गदर्शन हमे मिलता रहा है।

महापौर ने कहा की मै धन्य हुआ कि आज मेरे कार्यकाल मे प० नरेन्द्र जी के सभागृह का उदघाटन मेरी अध्यक्षता मे सम्पन्न हो रहा है। यदि आर्यसमाज का आन्दोलन हैदराबाद मे न हुआ होता तो आज जो कश्मीर की स्थिति है वही स्थिति हैदराबाद राज्य मे होती। श्री किशोर तुलसीबागवाले ने कहा कि आर्यसमाज के कार्य की आज बहुत आवश्यकता है व वह तीव्रगति से होना चाहिए आज समय की माग है।

मा० जयसिगराव गायकवाड पाटील जी ने अपनी ओजस्वी शैली मे भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा की देश धमपर मर मिटने वाले शहीदो को भूलो मत भूलो मत इ०स० १८७५ से आज तक आर्यसमाज जाग कर प्रहरी का कार्य कर रहा है जब १८७५ मे मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना हुई उसके १० वर्ष बाद १८८५ मे मेरे जन्मगाव किल्ले धारुर मे सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई। मैं भाग्यशाली हू की जन्म से पूर्व ही मुझे आर्यसमाज का सानिध्य मिला व जन्म के पश्चात आर्यसमाज का सत्सग प्राप्त हुआ। बडे बडे धुरधर नेताओ का भाषण बचपन मे ही सुनने को मिला यही कारण है कि आज भी आर्यसमाज का यह सेवक निर्भीक होकर कहता है जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय। आज मेरे जेष्ठ भ्राता मा० विधायक शालिग्राम जी बसैये बन्धु के ही मार्गदर्शन मे हम बडे हुए है। वे हमारे लिए आदर के पात्र है। प० नरेन्द्र जी के कारण ही सम्पूर्ण भारत से अखण्ड भारत से सभी आर्य हैदराबाद मे निजाम के जुल्मी राज्य को समाप्त करने के लिए आए थे यही कारण था की मराठवाडा के गाव-गाव मे आर्यसमाज स्थापित हुआ है। आओ आज फिर से आतकवाद के खिलाफ लडना है राष्ट्रद्रोहियो को सबक सिखाना है और जन जागरण करना है।

प० नरेन्द्र सभागृह के उद्घाटन समारोह का एक दृश्य। बाए माननीय केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील जी, विधायक श्री शालिग्राम जी बसैये महापौर श्री विकास जैन उपप्रधान दयाराम बसैये। दाये से श्री किशोर तुलसीबागवाला माजी विधायक बाबुराव जी जाधव।

इस कार्यक्रम मे जिला व शहर के स्वतन्त्रता सेनानी भारी सख्या मे उपस्थित थे। जिला गौरव समिति के अध्यक्ष बाबुराव जी जाधव लक्ष्मीनारायण जी लैस्वाल श्री रतिलाल जी जरीवाला सुधाकर राव देशमुख काशी नाथराव जी कुलकर्णी लक्ष्मीकान्तजी पाठक मा जी कुलगुरु भगतसिह राजुरकर महाराष्ट्र विश्वहिन्दू परिषद के भूतपूर्व अध्यक्ष भाऊसाहेब जहागीरदार अम्बादास दानवे गिरधर भाई मोतीवाला सजय खनाळ श्री चौहान जोगेन्द्र सिह चौहान ओमप्रकाश खन्ना श्री जुगलकिशोर दायमा मनोज चौडीये सौ० प्रेमलता शर्मा सौमथुरा बसैये सौ० सविता जोशी सौ० उमा देवी खन्ना हरिशकर शर्मा श्रीमती मोहना बॉई बसैये श्री क्षीरपेकर ॲड० खेकाले प्रा० गुजकर श्री दीक्षित जी आदि मान्यवर उपस्थित रहे। अत मे नागेश्वर मदिर से निराला चौक तक के मार्ग का नाम पडित नरेन्द्र जी मार्ग का उदघाटन महापौर विकास जैन के द्वारा सम्पन्न हुआ।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 27-01 2000 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 24/25 -01 2002

प्रतिष्ठा मे

महर्षि दयानन्द गौसवर्धन केन्द्र गाजीपुर मे भूसागृह के निर्माणार्थ माता ईश्वरी देवी धवन ने यज्ञ सम्पन्न करने के उपरान्त ३० ०००/ रुपये की राशि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य को प्रदान की।

(१) यज्ञ मे सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी शामिल हुए। (२) सभा प्रधान जी को दान राशि भेट करते हुए माता ईश्वरी देवी धवन साथ मे हैं श्रीमती सुशीला गम्भीर सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुरुकुल के कुलपति आचार्य प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री कुलसचिव डॉ० महावीर श्री सुबोध डॉ० [illegible] कुमार स्वामी केवलानन्द सरस्वती।

... नवाचन दिनाक २०-१-२००२ को दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे विधिवत सम्पन्न हुआ। इसमे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान – श्री मिश्री लाल गुप्ता
उप प्रधान – श्री पतराम त्यागी
मन्त्री – श्री ओमप्रकाश रुहिल
कोषाध्यक्ष – श्री राकेश शर्मा

आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान – श्री धर्मपाल विद्यार्थी
मन्त्री – श्री सूर्य प्रकाश कुमार
प्रचार मन्त्री – श्रीमती राजकुमारी आर्या
कोषाध्यक्ष – श्री अरविन्द मेहता

आर्यसमाज पश्चिम पुरी नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान – श्री लाजपतराय आर्य
मन्त्री श्री सतीश आर्य
कोषाध्यक्ष हरिचन्द्र डुडेजा।

नेत्रहीनो का शुभ विवाह व पुरस्कार वितरण समारोह

लुईस ब्रेल वैलफेयर सोसायटी व देसराज जय कुमार एजुकेशन सोसायटी के सयुक्त तत्वावधान मे १३ जनवरी (रविवार) २००२ मध्यान्ह आयुष्मती सोमा एवम चिरजीव रणजीत कुमार का शुभ विवाह दिल्ली व रोहिणी की प्रमुख सामाजिक सस्थाओ रोहिणी मैत्री सघ अग्रवाल सभा द्वारा अग्रवाल भवन प्रशान्त विहार के प्रागण मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर तमाम नेत्रहीन बारातियो को उनके दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुए कपडे जूते कम्बल साडी साबुन सन्दूक घडी छडी स्लेट अन्य सामग्री समाज के प्रमुख एव गणमान्य व्यक्तियो ने वितरित की। नव युगल जोडे को सभी समाजसेवियो ने अपना आशीर्वाद दिया।

मण्डी डबवाली में वैदिक सत्संग सम्पन्न

मण्डी डबवाली (हरियाणा) – आर्यसमाज मण्डी डबवाली ने साधनहीन होते हुए भी विगत तीन वर्षो मे पाचवी बार वार्षिक वैदिक सत्सग समारोह दिनाक २१ से २५ नवम्बर तक बडी धूमधाम से सम्पन्न किया। इस वर्ष का वैदिक सत्सग पाच दिन किया गया। इसमे स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा प्रो० सजेन्द्र जिज्ञासु जी के ओजस्वी प्रवचन वैदिक सिद्धान्तो तथा आदर्श परिवार सम्बन्धी विषयों पर हुए। प० ओम प्रकाश जी वर्मा ने अपने उच्चकोटि के भजनो द्वारा समा बाध दिया। साध्वी विशोका जी ने भी श्रेष्ठ भजनो द्वारा समा बाध दिया। इसी अवसर पर एस०डी०ओ० श्री हरीश जुनेजा श्री राजेन्दर गुप्ता एडवोकेट पूर्णचन्द जी तथा डा० जगतार सिह हरचन्द के निवासो पर हुए यज्ञ व सत्सग मे भी भारी जन समुदाय के सम्मुख विद्वानो के भजन व प्रवचन हुए पजाब के निकटवर्ती गाव मैहना मे श्री केवल कृष्ण गिल्होत्रा के निवास पर हुए सत्सग मे पूरा गाव उमड आया। अन्त मे हल्वे के अतिरिक्त पुस्तको व ऋषि दयानन्द के चित्र वाले कैलेण्डरो का प्रसाद भी बाटा गया।

डॉ० अशोक आर्य

वैदिक विद्वान् डॉ० सत्यव्रत राजेश गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से पुरस्कृत होगे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पूर्व रीडर एव निर्देशक वेदरत्न डा० सत्यव्रत राजेश के शोध ग्रन्थ 'महर्षि दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य मे समाज का स्वरूप' को गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति के निर्णायको ने पुरस्कार के लिए चयन किया है। पुरस्कार समारोह मे उत्तर प्रदेश के मान्य राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री की उपस्थिति के लिए अधिकारी गण प्रयासरत है।

डॉ० भगवती प्रसाद दिवगत

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के बहनोई डा० भगवती प्रसाद होम्योपैथ प्रसिद्ध चिकित्सक का दिनाक ३-१-२००२ को दो मास की बीमारी के बाद देहावसान हो गया। वह ८० वर्ष के थे।

वह आर्य कन्या विद्यालय के अधिकारी रहे एव आर्यसमाज के सजग कार्यकर्ता थे। पागलो की चिकित्सा का सफल उपचार करते थे। इसके वह प्रसिद्ध डॉक्टर थे।

पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम सस्कार किया गया तथा शान्ति यज्ञ के बाद क्रिया सम्पन्न हुई। आर्यसमाज को दान देकर आत्मा की सद्‌गति के लिए प्रार्थना की गई। उनके वियोग मे आत्मीयजनो व पारिवारिक जनो को कष्ट सहन करने की शक्ति की कामना परमपिता परमात्मा से की गई।

विजयदेव मिश्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाइट http //www whereisgod com

वर्ष ४० अक ४१ | ३ फरवरी से ६ फरवरी, २००२ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत् २०५८ | मा० कृ० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

राष्ट्रवादी विचारों पर रोक लगाने की दृष्टि से ही आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी कहा गया

कोलकाता में संगोष्ठी तथा कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे १६ जनवरी को शिक्षायतन सभागार मे एक विशेष सगोष्ठी आयोजित की गई। जिसका विषय था – "आर्यो का आदि देश । इस सगोष्ठी का सचालन बगाल सभा के प्रवक्ता एव वैदिक विद्वान श्री चान्दरतन दम्माणी ने किया। गोष्ठी की अध्यक्षता बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मोहनलाल जी ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा उपमन्त्री श्री भूपनारायण शास्त्री ने इस सम्मेलन मे भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि ब्रिटिश राज्य के दौरान ५ एम इतिहास पर छाए रहे। जिन्होने भारतवर्ष के इतिहास के साथ खिलवाड करने का हर सम्भव प्रयास किया। ये 5 एम थे — MERCHANT (व्यापारी) MILITARY (सेना) MISSIONARY (ईसाई प्रचारक) MACAULAY (ब्रिटिश शिक्षा योजना का जन्मदाता) MAXMULLAR (वेदो का तथाकथित ज्ञाता)। इन पाचो के बल पर भारत की प्राचीन परम्पराओ को ही नहीं बल्कि इतिहास को भी तोडने–मरोडने का हर सम्भव प्रयास किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने कहा कि जो लोग आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने के समर्थक हैं वे पहले ये बताए कि यदि आर्य विदेशी थे तो उनका निश्चित उत्पत्ति स्थान क्यो नहीं आज तक ये तथाकथित इतिहासज्ञ पता लगा पाए। उन्होने कहा कि पारसी मुसलमान और अग्रेज सबके साथ उनके उत्पत्ति स्थानो का इतिहास जुडा है जबकि आर्यो के साथ ऐसा कोई इतिहास नही है। दूसरी तरफ न ही कोई ऐसा देश है जो इस बात की पुष्टि करता हो कि भारत के आर्य उनके देश के निवासी है।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि इतिहास लेखन **'ऐसा हुआ होगा" "ऐसा हो सकता है"** या **'शायद"** जैसे शब्दो पर नहीं टिक सकता। सारा विश्व जानता है कि फूट डालकर राज करो की प्रमुख नीति पर चल रहे थे अग्रेज शासक और इसी नीति के तहत उन्होने १९०५ मे बगाल का विभाजन भी कर डाला। जबकि छ वर्ष बाद ही उस विभाजन को उन्हे भारतीय जनता के जवाबी दबाव मे रद्द करना पडा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि बगाल की इस पवित्र भूमि मे बकिमचन्द्र चटर्जी गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर केशवचन्द्र सेन तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और कई अन्य महान राष्ट्र पुरुषो का जन्म हुआ। बगाल से पनप रही राष्ट्रवादी विचारधारा के उत्तर मे ही अग्रेजो ने भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली स्थानान्तरित कर दी थी। परन्तु इसके बावजूद भी बगाल से उत्पन्न राष्ट्रवाद रुका नही। आर्यो को विदेशी और आक्रमणकारी कहने का सर्वाधिक प्रचार [illegible]शक मैक्समूलर और मैकाले ने किया परन्तु इस तथाकथित इतिहास के पीछे विलियम जोन्स की विचारधारा थी जो १७८३ मे भारत के सर्वोच्च न्यायालय का जज बनकर कलकत्ता आया था। उसे महसूस हुआ कि सस्कृत यूरोपीय भाषाओ की भी जननी लगती है। अत उसने आर्य शब्द को इण्डो यूरोपियन भाषा बोलने वाले लोगो के रूप मे प्रचारित करने का प्रयास किया। इसी सिद्धान्त के आधार पर कभी आर्य शब्द से भाषायी वर्ग समझाया गया तो कभी आर्य शब्द को जातिवादी शब्द के रूप मे प्रचारित किया गया। यह सारे कार्य और सिद्धान्त आर्यो मे भेदभाव डालने की दृष्टि से और भारत के नागरिको की राष्ट्रवादी भावनाओ के जवाब मे प्रचारित किए गए।

श्री विमल वधावन ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक बार फिर इस विषय पर जन जागृति अभियान का शुभारम्भ उसी ऐतिहासिक बगभूमि से हो रहा है [illegible] बडे बडे युग पुरुषो क[illegible] रही है। उन्होने कहा कि अधिक से अधिक जन जागृति अभियान ही सरकार को इतिहास मे सशोधन के लिए बाध्य कर सकता है।

इस सगोष्ठी मे केन्द्रीय मन्त्री श्री सत्यव्रत मुखर्जी वैदिक विद्वान प्रो० उमाकान्त उपाध्याय तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री दयानन्द आर्य तथा बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने विचार रखे।

रविवार २० जनवरी २००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के भवन मे एक सुव्यवस्थित कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे बगाल के विभिन्न हिस्सा से आर्यसमाज के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज की गतिविधियो का मूल आधार वेद का प्रचार है। वेद के नाम पर कुछ मिलावटी और अशुद्ध उपदेश भी दुनिया के सामन है परन्तु हम शुद्ध और बिना मिलावट वाले वैदिक धर्म के लिए जी रहे है और उसी के लिए मरेगे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

मध्य-भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजों के लिए सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा टी०टी० नगर भोपाल से सम्बद्ध समस्त आर्यसमाजो को आगाह किया है कि अग्निवेश द्वारा हस्ताक्षरित पत्र दिनाक २६/१२/२००१ बोगस मनगढन्त अनधिकृत गैरकानूनी तथा षडयन्त्रकारी है जिसमे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गौरीशकर कौशल की अध्यक्षता मे कार्यरत् कार्यकारिणी और अन्तरग सभा का निरस्त करके किसी तदर्थ समिति के गठन की घोषणा की गई हैं। अग्निवेश सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से कई वर्ष पूर्व से निष्कासित है। अत उनके द्वारा ऐसे किसी पत्र की कोई अधिकारिता नहीं है।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गौरी शकर कौशल तथा मन्त्री श्री भगवान दास अग्रवाल ही हैं। इन पदाधिकारियो के नेतृत्व वाली मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा विधिवत रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है अत सभी आर्यसमाजे श्री गौरी शकर कौशल की अध्यक्षता मे चल रही मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को ही सहयोग करे। ✡

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष भाग

राष्ट्रवादी विचारों पर....

यह तभी सम्भव है जब आर्यसमाज की बागडोर ओर नेतृत्व भी शुद्ध पवित्र और त्यागी तपस्वी महानुभावो के हाथ मे रहे। इस समय आर्यसमाज के सगठन मे कई सिद्धान्तहीन और राजनीतिक इच्छाओ और महत्वाकाक्षाओ वाले लोग प्रवेश करके आर्यसमाज की शक्ति का शोषण अपने निजी स्वार्थो के लिए करना चाहते है। इनक जाल निरस देह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैले हैं ओर सन्यासी वेश मे ये लाग आर्यसमाज की वैदिक धर्मी जनता को गुमराह कर रहे है। इनके पीछे बडे स्पष्ट रूप से कुछ अवैदिक और भारत की राष्ट्रद्रोही ताकतो का इन्हे खुला समर्थन मिलता है। आर्यसमाज का कोई बड से बडा नता भी ईसाइयो के अन्तर्राष्ट्रीय गुरु पोप जान पाल से यह आशा नही कर सकता कि वह किसी अन्य नेता को हवाइ जहाज का टिकट भजकर वैटिकन शहर मे बुलवाएगा और उस आर्यनेता के साथ पाप वैदिक धम के प्रचार प्रसार की योजनाए तो क्या ईसाई धर्मान्तरण को बन्द करने का आश्वासन देन जैसी कोई बात करगा। अग्निवेश जैसे भगवाधारी तथाकथित सन्यासी को पाप हवाई जहाज का टिकट भेजकर यदि वैटिकन शहर बुलाता हे ता स्पष्ट हे कि उससे ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार और धर्मान्तरण मे सहयोग करने जैसी बातो पर सहयोग मागेगा ओर मागता है। यह षडयन्त्र अग्निवश के उन दर्जनो वक्तव्यो से स्पष्ट होता हे जिसमे ये धर्मान्तरण को कभी व्यापार के रूप मे मान्यता देता है तो कभी धर्मान्तरण को ईसाइयो के सेवाकार्यो का फल बताकर उनकी पीठ ठोकी जाती है। कभी अफगानिस्तान मे बौद्ध प्रतिमाए तोडने पर हिन्दुओ के इतिहास को कलकित करने का प्रयास किया जाता है तो कभी ईसामसीह और मुहम्मद के जन्म दिवस पर लोगो को ईसाइयत ओर इस्लाम नामक पथो को विश्वशान्ति का प्रतीक बताया जाता है। ऐसे वक्तव्यो की आशा स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत राय जैसे युगपुरुषो से तो दूर किसी साधारण सच्चे आर्य से भी नही की जा सकती। इस वैदिक धर्म विरोधी और राष्ट्रद्रोही जाल मे आर्यसमाज को किसी कीमत पर फसने से रोकना होगा। सामाजिक बुराइयो और धार्मिक पाखण्ड के साथ साथ इन अन्दरूनी सगठन विरोधी ताकतो के सामने भी प्रत्येक आर्य को बाध की तरह खडे रहना चाहिए। प्रत्येक आर्यजन बाध की ईट और ककरीट के समान है जिसे बाध बनाने वाले कारीगर जहा चाहे स्थापित करदे और आर्यसमाज के लिए इस बाध को बनाने वाले मुख्य कारीगर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैं० देवरत्न आर्य है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज एक सैद्धान्तिक और अनुशासनबद्ध सस्था है। इस सस्था के सदस्य बनने स लेकर सभासद और प्रतिनिधि बनने तक के निर्धारित नियम है। यदि कोई व्यक्ति इन नियमो पर चले बिना अपने साथ २५ ५० शरीरो का जमघट इकट्ठा करके सडक पर बैठकर दावा कर कि हम आर्यसमाज के प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय सभा के या सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी है तो क्या आर्यजनता इस बदाश्त कर पाएगी।

श्री शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज की सस्थाए केवल वही मानी जाती है जो स्थानीय समाज के नियन्त्रण और निर्देशन मे चलती हैं। आर्यसमाज वही माना जाता है जो प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बद्ध होता हे। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा वही मानी जाती है जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बद्ध होती है और सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वही मानी जाती है जिसका गठन प्रान्तीय आय प्रतिनिधि सभाओ द्वारा विधिवत भेजे गए प्रतिनिधिया से होता है। सडक छाप अनधिकृत प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं बना सकते। आर्यजनता इन्हे किसी भी तरह से स्वीकार करने को तैयार नहीं।

कार्यकर्ता सम्मेलन के अध्यक्ष कैं० देवरत्न आर्य ने कहा कि १६६८ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव जब विधिवत हो रहे थे तब भी एक अनधिकृत सभा का गठन करक एक मुकदमा कर दिया गया। अदालत मे ३ वर्ष पूर्ण होने पर यह प्रार्थना की गई कि अदालत द्वारा नियुक्त व्यक्ति चुनाव करवाए। ३ नवम्बर २००१ को विधिवत चुनाव हुआ और अग्निवेश कैलाशनाथ सिह यादव आदि कुछ लोग बाहर सडक पर बैठकर बैठक करने लगे क्योकि ये किसी प्रान्त से विधिवत भेजे गए प्रतिनिधि नहीं थे। इन दोनो को सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा से कई वष पूर्व निष्कासित किया जा चुका था और यह निष्कासन अब तक भी जारी है। ये लोग अपने अपने घरो से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर पत्र व्यवहार करके आर्यजनता को गुमराह कर रहे हैं।

कैं० देवरत्न आय ने कहा कि मध्यप्रदेश मे विधिवत प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा चल रही है जिसके प्रधान श्री गौरीशकर कौशल जी हे। कुछ दिन पूर्व अग्निवेश ने सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के नकली पैड छपवाकर एक फरमान जारी किया है जिसमे तदर्थ समिति के गठन की बात कही गई है। अग्निवश के पास इस बात का कोइ जवाब नहीं होगा कि जो स्वय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से निष्कासित हो वह इस प्रकार के झूठे पत्र कैसे जारी कर सकता है। अफगानिस्तान मे बोद्ध प्रतिमाए तालिबानी आतकवादियो द्वारा तोडे जाने का दोष भी अग्निवेश ने एक लेख के माध्यम से हिन्दुओ पर लगाया।

धर्मान्तरण कार्यो मे लिप्त स्टीफन का वध होने के उपरान्त अग्निवेश देश के कई हिस्सो मे ईसाइयो द्वारा आयोजित शोकसभाओ मे भाषण देने के लिए पहुचता रहा। इसके कुछ भाषणो को तो मुम्बई के कुछ ईसाई सगठनो ने कैसट बनवाकर हजारो की सख्या मे बटवाया। क्योकि उसमे ईसाइयो का समर्थन था और हिन्दुओ का घोर विरोध था।

कैं० देवरत्न आर्य ने कुछ वर्ष पूर्व उदयपुर के नवलखा महल मे आयोजित सम्मेलन का उल्लेख करते हुए कहा कि अग्निवेश ने इस सम्मेलन मे आर्यसमाजियो से आह्वान किया कि वे अपनी बेटियो का निकाह मुसलमानो से करवाए। विश्व विख्यात वैदिक विद्वान प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने उसी समय मच से अग्निवेश को ललकारते हुए कहा कि वैदिक धर्म की वेदी से ऐसे समाज विरोधी वक्तव्य देना घोर निन्दनीय है। आर्यजनता ने भी अग्निवेश के इन विचारो का घोर विरोध किया।

कैप्टन आर्य ने हैदराबाद के एक सम्मेलन का भी उल्लेख किया जो निजाम की क्रूरताओ और वैदिक धर्मियो के आर्य सत्याग्रह की स्मृति मे आयोजित किया गया था। वहा पर भी अग्निवेश दो मुसलमान मौलवियो को लेकर मच पर आ गया और कहा कि जब मैं दुबई गया तो जामा मस्जिद के इमाम ने दुबइ के मौलवियो को फोन करके मेरी आवभगत करने को कहा। इस प्रकार आज जब मैं हैदराबाद आया तो ये दोनो मौलवी मुझे हवाइ अड्डे पर लेने पहुचे क्योकि इन्हे जामा मस्जिद के इमाम के निर्देश मिले थे। इस प्रकार के कई भाषण अग्निवेश कई समारोहो मे अक्सर व्यक्त करता है।

विदेशो के आर्यनेता ईसाइयत और इस्लाम के इस षडयन्त्रकारी जाल को समझ चुके हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को वैदिक धर्म विरोधी और राष्ट्रद्रोही षडयन्त्रो से सावधान रहना चाहिए। आर्यसमाज के नाम पर इन षडयन्त्रो को कदापि बदाश्त नही किया जा सकता।

कैं० आर्य ने कहा कि आयसमाज की स्थापना के पीछे चरित्र निर्माण और राष्ट्रसेवा के सकल्प प्रमुख थे। आर्यो पर लोग हर दृष्टि से विश्वास किया करते थे। वह एक स्वर्णिम युग था। हमे उसी स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। हमारी छवि ऐसी होनी चाहिए जिसमे किसी प्रकार के खोट की सम्भावना न हो।

उन्होने कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए हमे ऐसे गम्भीर प्रयास करने चाहिए जिससे हमारी पिछडी जातियो के लोग भी आर्य होने पर गौरव महसूस करे। भारत मे लगभग ८ करोड पिछडी जाति के लोग हैं। उन्हे साथ लेकर चलने के लिए हमे विशेष कार्यक्रम बनाने चाहिए। ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्यो का पालन करके ही हम सच्चे आर्य स्वय भी बन सकते है और आर्यो के निर्माण मे भी सहायक हो सकते हैं।

कार्यकर्त्ता सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैं० देवरत्न आर्य द्वारा बगाल के विभिन्न क्षेत्रो से आए आर्यसमाज के अधिकारियो को सम्मानित किया गया।

इस समरोह को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के प्रधान श्री मोहनलाल तथा आय प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री भूपनारायण शास्त्री ने भी इस सम्मेलन को सम्बोधित किया।

इस समारोह का कुशल सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के मन्त्री एव सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने किया।

रमेश नगर विद्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज रमेश नगर द्वारा सचालित बाल विद्यालय मे गणतन्त्र दिवस धूम धाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज क प्रधान एव दिल्ली सभा क मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। बच्चा द्वारा राष्ट्रभक्ति और वैदिक विचारो के गीत तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव तथा स्थानीय आर्यसमाजो के कई पदाधिकारी इस समारोह मे सम्मिलित हुए।

बंगाल की आर्य शिक्षण संस्था को प्रथम ग्रेड

पश्चिम बगाल शिक्षा परिषद द्वारा आर्यसमाज की शिक्षण सस्था आसनसोल दयानन्द विद्यालय जिला बर्दवान को छात्रो के उत्तम परिणाम के आधार पर ए ग्रेड सस्था घोषित किया गया है। यह जानकारी आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने दी।

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

शिक्षा एवं भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन

सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान मे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल द्वारा आहूत विद्वत् विचार गोष्ठी (Symposium) दि० १६/०१/२००२ मे गोष्ठी सयोजक श्री चान्दरतन दम्माणी का प्रतिवेदन

अतीत मे घटी प्रमुख घटनाओ को घटना क्रमानुसार उनके वास्तविक स्वरूप मे प्रस्तुत किया गया विवरण ही इतिहास' कहलाता है और यह इस उद्देश्य से लिखा जाकर विद्यार्थियो को पढाया जाता है कि वे एव अन्य देशवासी उससे शिक्षा लेकर लाभ उठा सके एव देश गलतियो से बचकर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सके। जो इतिहास इस लक्ष्य को पूरा न करे तो उससे तो किस्से कहानिया ही भली। इतिहास वाछनय इसलिए है क्योकि उसके साथ यथार्थता का बल रहता है।

हमारी एक हजार वर्ष की गुलामी का परिणाम यह हुआ कि भारत का जो इतिहास आज हमारे कोमल मति विद्यार्थियो को पढाया जाता है वह उन इतिहास लेखको या स्वयभू इतिहासकारो द्वारा लिखा होता है जो वस्तुत इतिहासकार की कोटि मे नही आते। सच कहे तो उन्होने इतिहास पर कोई शोध नही किया है। अग्रेजी या अन्य विदेशी इतिहासकारो ने जो कुछ लिख दिया है उसका अग्रेजी से अग्रेजी म अनुवाद यानि नकल करके ही वे स्वय को इतिहासकार कहे जाने मे गौरव बोध करने लग गए। यद्यपि नकल करने मे भी उन्हाने अपेक्षित अकल या कहना चाहिए विवेक से काम नही लिया।

इतिहास लिखते समय विदेशी इतिहासकारो का उनका अपना दृष्टिकोण था। वह बिल्कुल सही भी हो सकता है कुछ सही कुछ गलत भी हो सकता है। मेरा अभिप्राय आप समझ गए होगे कि आवश्यक नही कि वह हम भारतवासियो के प्रतिकूल ही रहा हो। अपनी स्वतन्त्र बुद्धि से उन्होने जैसा समझा वैसा लिखा। गुरु तेग बहादुर के विषय मे मुगल दरबार के किन्हीं सरकारी कागजो मे उन्हे कुछ मिला उसे उन्होने अधिकृत विवरण के रूप मे उद्धृत कर दिया। हमारे नकलची भारतीय इतिहासकार को यह देखना चाहिए था कि मुगल दरबार की तथाकथित उस अधिकृत सच्चाई को ही सत्य मान लेना है या नही। अजफल खा ने छत्रपति शिवाजी को पहाडी चूहा कहा तो क्या आज स्वतन्त्रता मे सास लेने वाले हम देशवासी भी शिवाजी को पहाडी चूहा कहना शुरू कर दे ? अग्रेज नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को बागी कहते थे और शहीद भगत सिह चन्द्रशेखर आजाद रामप्रसाद विस्मिल आदि को आतकवादी कहते थे। क्या हम भी उन्हे बागी और आतकवादी कहने लगे? अग्रेज इतिहासकार की दृष्टि मे सन ५७ मे इस देश की सैन्य टुकडियो द्वारा शासन की अवमानना करना 'सिपाही विद्रोह था किन्तु स्वतन्त्र भारत के निष्पक्ष इतिहास लेखक को इसे स्वतन्त्रता सग्राम का ही एक अग मान कर उस रूप मे इसे प्रस्तुत करना आवश्यक था।

मित्रो इन विद्वानो ने ऐसी पुस्तके लिखी तो इसके लिए उन्हे दोष देना व्यर्थ है। जिसके पास कोरा कागज और हाथ मे कलम है वह चाहे जो कुछ लिख सकता है अफसोस उन पर है जिन्होने इन नकलचियो को इतिहासकार मान लिया और उनकी लिखी पुस्तको को हमारे विद्यार्थियो के पाठयक्रम हेतु स्वीकृति प्रदान कर दी।

इन विद्वानो की ख्याति अपने विषय मे दक्षता के लिए नहीं प्राध्यापक पदो पर नियुक्त होने के कारण हुई ये पद इन्हे बामपन्थी विचारधारा के पुरस्कार स्वरूप मिले। अनेक वर्षो तक इन्होने राजसुख भोगा है धन और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। इनका अहकार इतना बढ गया है कि किसी बुनियादी परिवर्तन की तो बात ही दूर ये अपने लेखन मे से कुछ अश या पक्तियो के हटाए जाने मात्र से बोखला रहे है। अपने इस प्रतिवेदन मे मै उन अशो/पक्तियो को जिनको पुस्तको से हटाए जाने का निश्चय किया जा चुका है या किए जाने की आवश्यकता है जिस पर गोष्ठी मे आज हमारे बीच उपस्थित विद्वान अपना-अपना विचार प्रस्तुत करेगे आपके समक्ष रखना चाहूगा।

सज्जन ! वृन्द ! इस प्रकार के या Symposium या विद्वत विचार गोष्ठियो के आयोजन सार्थक तभी होते है जब सिद्धान्तत पूरे मित्रतापूर्ण माहौल मे मित्रतापूर्ण तरीके से भिन्न भिन्न विचार रखने वाले या यो कहे विपरीत विचार रखने वाले लोग या विद्वान भी स्वतन्त्र रूप से उसमे अपना अपना पक्ष या विचार प्रस्तुत करे एव तब आपसी ऊहा पोह मन्थन तथा तर्क वितर्क से बिना किसी प्रकार का पूर्वाग्रह रख कर किसी निष्कर्ष पर पहुचा जाए। यहा मै आपको यह बता देना आवश्यक समझता हू कि हम चाहते थे कि हमसे विपरीत विचार रखने वाले विद्वान इसमे पधार कर गोष्ठी के मित्रता पूर्ण वातावरण म कुछ हमारे विचार कुछ अन्यो के विचार भी सुने तथा उन पर अपनी प्रतिक्रिया अपना पक्ष या अपने विचार जो हमारे विचारो से भले ही मेल न खाते हो यहा आपके बीच प्रस्तुत करे। तदर्थ हमने अलीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी के इतिहास विभाग के प्रो० हबीब और इन्ही के मार्फत रोमिला थापड जिनकी इतिहास की पुस्तके हमारे विद्यालयो मे पढाई जाती है और हमारी अभिमति मे जिनमे मौलिक भूले हे वे सम्मान पूर्वक यहा आकर गोष्ठी मे योगदान करे किन्तु उनकी भी अपनी व्यस्तता रही होगी कम समय के हमारे निर्णय के चलते इस गोष्ठी हेतु हमे उनकी स्वीकृति न मिल सकी। हमारा यह प्रयास रहेगा निकट भविष्य मे इस प्रकार की गोष्ठी या सिम्पोजियम उन्हे अपने बीच ला कर की जा सके। हम चाहते थे पश्चिम बग राज्य के उच्च शिक्षा मन्त्री माननीय सत्य साधन चक्रवर्ती का मार्गदर्शन हमारी इस गोष्ठी को प्राप्त होता किन्तु अपने पूर्व निर्धारित व्यस्त कार्यक्रमो के चलते वे भी आज के इस आयोजन हेतु तो हमे उपलब्ध न हो पाए किन्तु ऐसे पक्षपात रहित आयोजन पर पधारने की उनकी कृपापूर्ण स्वीकृति आगे के दिनो मे हमे प्राप्त होगी। निर्भीक एव निष्पक्ष पत्रकार के रूप मे आज हम जिनका सर्वाधिक सम्मान कर सकते है जो स्वय भी एक अच्छे एव गम्भीर विचारक है माननीय **श्री सी०आर० इरानी जी** मेनेजिग डायरेक्टर एव चीफ एडीटर The Statemen अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के चलते इस गोष्ठी हेतु उपलब्ध नही हो पाए पर गोष्ठी की सफलता हेतु अपने सन्देश से उन्होने हमे उपकृत किया है तदर्थ हम उनके भी आभारी है। भविष्य मे इस प्रकार के विद्वत सगम पर उनका तथा पूर्व उल्लिखित सभी विद्वानो को तथा अन्यान्य विचारको को आने वाली गोष्ठी मे अपने साथ पाकर देश हित मे स्वतन्त्र एव निष्पक्ष नीति निर्धारित करने मे हम सफल होगे इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

मै यहा एक बात और स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हू कि हम किसी राजनीतिक पार्टी विशेष या उसके निर्णयो के समर्थक या विरोधी कतई नही है। आर्यसमाज का मच एक पूर्ण जिम्मेवार मच है। **'वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता '** के अनुसार राष्ट्र के जागरूक प्रहरी के रूप मे आर्यसमाज ने कभी अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया था परन्तु इधर के काल खण्ड मे हममे भी शिथिलता आयी है इसे स्वीकार करने मे मै सकोच नही करता परन्तु यह दृढता पूर्वक कह सकता हू कि आधुनिक युग मे महर्षि दयानन्द अकेला व्यक्ति हुआ जिसन जन्म स लकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को सच्चे अर्थो मे मनुष्य बनने की सार्वभौम सर्वागपूर्ण कला सूत्र रूप म प्रदान कर दी जो **सस्कार विधि, सत्यार्थ प्रकाश एव ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** के साथ ही उनके द्वारा रचित ५२ ग्रन्थो मे उपलब्ध है। आर्यसमाज को आज पुन अगडायी लेने की जरूरत है फिर यदि देशवासियो ने हमारा साथ दिया तो नि सन्देह हमारा यह प्यारा देश विश्व मानचित्र पर एक बार पुन अपना गौरवपूर्ण स्थान पा सकेगा।

आज के मूल विचारणीय विषय पर आने के पूर्व यहा मै यह सकेत मात्र कर देना चाहता हू कि इसे हम इतिहास की विडम्बना नही तो क्या कह कि विश्व भर मे कही कोई ऐसा देश या एसी सभ्यता नही मिलेगी जहा साहित्य के किसी काल्पनिक पात्र का जन्म दिवस मनाया जाता हो परन्तु हमारे यहा रामनवमी के रूप मे राम का जन्मदिवस जन्माष्टमी के रूप मे कृष्ण का जन्मदिवस मनाए जाते रहने के बावजूद यहा यह भ्रान्त धारणा बद्धमूल कर दी गयी है कि राम एव कृष्ण सरीखे पुरुष पुगव काल्पनिक है तथा रामायण एव महाभारत जैसे नीति एव इतिहास के हमारे ग्रन्थ काल्पनिक महाकाव्य है।

केन्द्र सरकार मे प्रथम बार वर्तमान मानव ससाधन मन्त्री माननीय डॉ० मुरली मनोहर जोशी जो स्वय भौतिक विज्ञान के विद्वान है ने शिक्षा को अधिक उपयोगी बनाने हेतु जहा एक ओर कतिपय विषयो यथा – ज्योतिष शास्त्र पौरोहित्य विद्या गणित विद्या की वैदिक शाखा वास्तुशास्त्र आदि को विद्यार्थियो के पाठयक्रम मे समाविष्ट करने की आवश्यकता बताई वही विद्यार्थियो को पढाए जा रहे भारत के इतिहास मे व्याप्त अनेकानेक विकृतियो मे से कुछ विकृतियो को हटा दिए जाने की राष्ट्रीय शिक्षा शोध एव प्रशिक्षण परिषद् (N C E R T) की कुछ सिफारिशो को भी मान लिया तथा इसके प्रतिफल मे भारत मे इतिहास के पुनर्लेखन का अत्यावश्यक एव अति सम्वेदनशील मुद्दा जिसकी माग आर्यसमाज द्वारा पिछले कई दशको से की जा रही थी अब उभर कर सामने आ गया है।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

एक परिचय

मारिशस से प्राप्त महर्षि दयानन्द द्वारा उद्धृत फ्रैंच ग्रन्थ

भारत में बाइबिल

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द ने अपने यशस्वी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास म फ्रेंच भाषा मे लिखी एक पुस्तक भारत मे बाइबिल (अग्रजी मे बाइबिल इन इण्डिया फ्रैंच मे La Bible dans & Inde) को उद्धृत किया है। इस पुस्तक का ऋषि क द्वारा उद्धृत अश इस प्रकार है देखो कि एक जेकालयट साहब पैरिस अर्थात फ्रास देश निवासी अपनी **बायबिल इन इण्डिया मे लिखते है कि सब विद्या और भलाइयो का भण्डार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले है। और परमात्मा की प्रार्थना करते है कि हे परमेश्वर ! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्वकाल मे थी वैसी हमारे देश की कीजिए लिखते है उस ग्रन्थ मे देख लो।**

ऋषि दयानन्द इस पुस्तक का लेखक जैकालयट बताते है वस्तुत फ्रैंच उच्चारण मे यह नाम जाक्योल्यो पूरा नाम Louis Jacolliot फ्रेंच उच्चारण ट वर्ण अनुच्चारित रहता है। [illegible] जाक्योल्यो भारत मे फ्रैंच [illegible] चन्द्रनगर (अब बगाल मे) के प्रधान न्यायाधीश थे और उन्होने इस पुस्तक की रचना १८६८ मे की थी। इसका अग्रेजी अनुवाद १८६९ मे हो गया था। स्वामीजी को इस पुस्तक का परिचय किसी अग्रेजी पठित व्यक्ति ने दिया होगा और इसके विवेचनीय विषय (भारत की महत्ता) से भी उन्हे परिचित कराया होगा। वर्षो से इस पुस्तक की मुझे तलाश थी। इसके बारे म मुझे आचार्य वेदव्रत मीमासक (प्रसिद्ध ज्योतिष विद्याविद) तथा प्रो० रामप्रकाश न जानकारी भेजने के लिए कहा था। यह प्रसन्नता की बात है कि गत मारिशस यात्रा मे मै इस पुस्तक को प्राप्त करने मे सफल रहा। आर्यसभा मारिशस के उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने अपने एक सम्बन्धी के पास यह पुस्तक होने की मुझे सूचना दी तथा आर्यसभा के व्यवस्थापक श्री आनन्द बन्धन ने इसकी सुन्दर फोटोस्टेट प्रति तैयार कराकर मुझे भेट की। एतदर्थ मैं इन दोनो महानुभावो का आभारी हू। सत्यार्थप्रकाश की मूल प्रति मे इसके लेखक का नाम भूल से गोल्डस्टकर (एक जर्मन सस्कृतज्ञ) लिखा गया था। जिसे सशोधित कर सम्भवत मुन्शी समर्थदान ने जैकालयट (जाक्योल्यो) कर दिया है।

बाइबिल इन इण्डिया का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध हिन्दी लेखक प० सन्तराम बी०ए० (होशयारपुर के निकट के बजवाडा निवासी) ने किया था तथा इसकी भूमिका भाई परमानन्द ने लिखी थी। मुख पृष्ठ न होने से यह ज्ञात नहीं हाता कि यह अनुवाद कब और कहा से प्रकाशित हुआ। बाइबिल इन इण्डिया का महत्त्व उसी दृष्टि से है कि इसमे पुरातन भारत को समस्त विद्या बुद्धि सभ्यता और सस्कृति का उदगम बताया गया है। साथ ही ईसाई मान्यताओ की तुलना मे वैदिक धर्म दर्शन और अध्यात्म को उत्कृष्ट सिद्ध किया गया है। लेखक ने इस ग्रन्थ की तैयारी मे निश्चय ही सस्कृत के विभिन्न शास्त्रा का अध्ययन किया होगा। जिस युग मे यह पुस्तक लिखी गई उस समय अधिकाश सस्कृत ग्रन्थो के यूरोपियन भाषाओ मे अनुवाद नहीं हुए थे। विलियम जोन्स तथा कोलबुक जैसे कुछ इने गिने विद्वान ही सस्कृत विद्या मे प्रवेश पा सके थे। अत अनुमान होता है कि इस फ्रैंच लेखक ने फ्रेंच उपनिवेश मे रहते समय सस्कृतज्ञ ब्राह्मणो से ही इन शास्त्रो का अध्ययन किया होगा।

इस दुलभ महत्वपूण ग्रन्थ का विस्तारपूर्वक परिचय देना अनुपयुक्त नही होगा। ग्रन्थ की भूमिका म लेखक ने भारत की विद्याओ के अधिष्ठाता ब्राह्मणो की प्रशसा मे लिखा है – ***न्याय मानवता* उत्तम श्रद्धा दया तथा ससार से निरपेक्षता आदि सद्गुणो से वे प्राचीन ब्राह्मण सुपरिचित थे। वे अपने *कथन* तथा आचरण के द्वारा इन गुणो की शिक्षा दूसरो को देते थे।** (पृ० २६) भारत की प्रशसा मे वे लिखते हैं – **भारत धरती की सस्कृति का पालना है। इस माता ने ही पश्चिम के देशो मे अपनी सन्तान को भेजकर उन्हे अपनी भाषा नीति विधिशास्त्र साहित्य तथा धर्म की शिक्षा दी है।** (पृ० २८) प्राचीन भारत प्राचीन काल की सभी सभ्यताओ का गुरुदेव था। पृ० २६ सस्कृत भाषा की प्रशसा मे लेखक ने अत्यन्त उदारता दिखाई है। वह लिखता है – **भाषा विज्ञान अब इस तथ्य को स्वीकार करता है कि प्राचीन समय की समस्त भाषा पद्धतिया सुदूर पूर्व (भारत) से ली गई थीं। भारतीय भाषा वैज्ञानिको की कृपा से ही हमारी आधुनिक (यूरोपीय) भाषाओं को अपनी व्युत्पत्ति तथा धातु मिल गए हैं।** पृ० २० पुराकाल मे सस्कृत के भारत मे सर्वत्र बोले तथा लिखे जाने के बारे मे इस फ्रैंच मनीषी ने लिखा था – **मूसा (यहूदी पैगम्बर Moses) के कई शताब्दियों पहले तक सस्कृत आम बोलचाल तथा लेखन की भाषा थी।** पृ० १५७

यूरोप मे जब सस्कृत के अध्ययन का प्रचलन आरम्भ हुआ तो इस भाषा की अदभुत रचना प्रणाली तथा व्याकरण को देखकर वहा के प्राच्य विद्या विदो ने एक स्वर से स्वीकार किया था कि सस्कृत भाषा ग्रीक से अधिक पूर्ण लैटिन से अधिक समृद्ध तथा दोनो से अधिक परिष्कृत है। (सर विलियम जोन्स – १७६६ का कथन) जाक्योल्यो ने सस्कृत के एक अ य विद्वान Burnouf बोर्नफ मैक्समूलर का वेद गुरु) के एक उद्धरण को प्रस्तुत किया जिसमे सस्कृत के अध्ययन का महत्त्व बताया गया है। बोर्नफ के अनुसार सस्कृत का अध्ययन आरम्भ कर देने के कारण हम अब ग्रीक और लैटिन भाषाओ को पहले की अपेक्षा अधिक उत्तम रीति से समझने लगे हैं। पृ० ३० आचार्य मनु की प्रशस्ति मे लखक लिखता है – मिस्र हिब्रू तथा रोमन जातियो की विधि व्यवस्थाए मनु से प्रभावित है तथा उससे प्रेरित है और हमारे वर्तमान यूरोपियन कानूनो मे भी उसका प्रभाव दृष्टिगत होता है। पृ० ३१ भारतीय दशन की प्रशसा मे फ्रास का *यह चिन्तक लिखता है* **भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास ससार के दर्शन शास्त्र का सक्षिप्त इतिहास है।** पृ० ३२ *अन्तत वह श्रद्धा विरचित स्वर मे* भारत का स्तवन करते हुए लिखता है – **प्राचीन भारत भूमि मानवता के जन्म स्थान तेरी जय हो। पूजनीय तथा समर्थ सस्कृतियो की धात्री जिसको नृशस आक्रमणो की शताब्दियो ने अभी तक विस्मृति की धूल के नीचे नहीं दबाया तेरी जय हो।** *पृ० ३६*

वेदो की महिमा का गान करते हुए लेखक ने भाव भरे शब्दो मे कहा – वेद सनातन ज्ञान के भण्डार है हमारे पूर्वजो पर ईश्वर द्वारा प्रकाशित ज्ञान के महान सूत्र है। इनसे हम स्वय को ससार के लिए अधिक उपयोगी तथा न्याय परायण होना सीखते है। पृ० ४१। यह लेखक लासेन वेबर कोलबुक विलियम जोन्स तथा बोर्नफ आदि प्राच्य विद्याविदो के कार्य की भूरि भूरि प्रशसा करता है तथा आशा रखता है कि भविष्य मे भी पूर्वीय विद्याओ के ऐसे पण्डित उत्पन्न होगे जो धर्म सदाचार तथा तत्वज्ञान के आधार पर एक नये युग का निर्माण करेगे। इन पाश्चात्य भारतविद्या विदो की प्रशसा करने के साथ साथ वह इनकी न्यूनताओ को भी उजागर करने से नहीं चूकता। जाक्योल्यो का कहना है कि जहा तक सस्कृत के ग्रन्थो का अनुवाद करने तथा उनके आशय को समझने का प्रश्न हैं उसमे विलियम जोन्स तथा कोलब्रुक ही सफल हुए हैं अन्य विद्वान इन ग्रन्थो का वास्तविक अभिप्राय समझने मे असफल रे। जोन्स और कोलब्रुक की आपेक्षिक सफलता का कारण है – **उनका भारत के विद्वानो के सम्पर्क मे रहना उनसे अपने अध्ययन मे सहायता लेना तथा उनकी शिक्षा से लाभ उठाना।**

जाक्योल्यो उन विद्वानो के कथन का प्रतिवाद करते है जो यह मानते है भारत की कला साहित्य और सभ्यता को यूनानियो ने प्रभावित किया था तथा यह भी कहते है यूरोपीय सभ्यता का उदगम मिस्र की सभ्यता है और भारत ने भाषा कला तथा नीति का ज्ञान मिस्र से प्राप्त किया। उनके विचार मे ऐसा कहना पिता को पुत्र का शिष्य बताना है। (पृ०६२) वास्तव मे भारत की कला साहित्य और तत्त्वज्ञान ही यूनान मिस्र और ईरान होता हुआ यूरोप को प्राप्त हुआ। वैदिक देवताओ की यूनानी देवताओ से तुलना करते हुए तुलनात्मक धर्म के अध्येताओ ने इनमे आश्चर्य जनक समानता बताई है। इसका एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। वेद मे आया द्यौसपितर यूनानी देवगाथा मे जूपिटर हो गया। वहा यह आकाश के पिता का वाचक है। इसका एक अन्य यूनानी रूप जीयस है जो हिब्रू मे 'जेहोवा' (यहूदी मत मे ईश्वर का प्रतीक) हो गया। तुलनात्मक अध्ययन ने तो यह भी निष्कर्ष निकाला है कि यूनानी महाकवि होमर के महाकाव्य इलियड पर वाल्मीकीय रामायण का सीधा प्रभाव है। जर्मन विद्वान हर्टल ने यह सिद्ध किया है कि सस्कृत की नीतिकथाओ (पच तत्र हितोपदेश) का जब यूरोप मे प्रचार हुआ ता उनके आधार पर ही ईसा की नीति कथाए बनी। यूरोप की नीतिकथाए ईरान सीरिया तथा मिस्र होकर वहा पहुची भारतीय कथाओ के अनुकरण पर लिखी गई। जाक्योल्यो ने इस तथ्य को स्वीकार किया है।

ससार की विभिन्न प्राचीन सभ्यताओ की तुलना करने के पश्चात इस फ्रेंच विद्वान ने यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत की आर्य सभ्यता ही क्रमश यूनान मिस्र तथा रोम की सभ्यताओ के रूप मे बदलती गई। इन देशो की सामाजिक व्यवस्थाओ जिनमे विवाह पिता पुत्र सम्बन्ध अभिभावकता दत्तक विधान ऋण विक्रय हिस्सेदारी मृत्यु पत्र (वसीयत नामा) की परस्पर की तुलना **यह** बताती है कि पश्चिमी सभ्यताओ मे प्रचलित उक्त सामाजिक विधान अधिकाश मे भारतीय विधि व्यवस्थाओ से मिलते हैं। यहा **बाइबिल इन इण्डिया** के लेखक ने मनुस्मृति के उन श्लोको को भूरिश उद्धृत किया है जो समाज और परिवार मे नारी के गौरव की स्थापना करते हैं। इन श्लोकों (शोयन्ति जामयो यत्र यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते सन्तुष्टो भार्यया मती आदि) को उद्धृत करने से यह ज्ञात होता है कि उसने मानव धर्म शास्त्र का सम्यक अध्ययन किया था।

क्रमश

आर्य भारत के आदि वासी (मूल निवासी) हैं

– स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

पराधीनता के युग मे जब भारत पर अगेजो का शासन था तो उन्होने दीर्घकाल तक भारत पर शासन करने की दृष्टि से भारत के इतिहास और उसकी सस्कृति को मिटाने के लिए योजनाबद्ध कार्य प्रारम्भ किया।

एक ओर तो लार्ड मैकाले की योजनानुसार शिक्षा पद्धति भारत मे प्रारम्भ की जो अभी तक चल रही है जिसका उद्देश्य भारत मे अग्रेजी राज्य के लिए लिपिक तैयार करना था। दूसरे उस शिक्षा–पद्धति मे पढाए जाने के लिए भारतीय इतिहास के नाम पर भारतीय इतिहास से नितात असम्बद्ध तथा भारतीय इतिहास विरोधी स्व कल्पित इतिहास लिखा कर भारतीयो को पढाना प्रारम्भ किया जिससे भारतीय अपने इतिहास से प्राप्त होने वाले अपने अतीत गौरव को भूल जाए।

दूसरा कार्य अग्रेजो ने भारतीय सस्कृति को मिटाने का किया और इस कार्य के लिए जर्मन अध्यापक मैक्समूलर को इग्लैंड मे बुलाकर उसे भारतीय सस्कृति के मूलाधार वेदो के भ्रष्ट अर्थ कराने प्रारम्भ किए। अग्रेज यह समझते थे कि इस कार्य से भारतीयो के मन मे वेद के प्रति घृणा उत्पन्न करके तथा तत्पश्चात भारतीयो को ईसाइयत के रग मे रगकर ब्रिटिश साम्राज्य को भारत मे स्थाई किया जा सकेगा।

किन्तु खेद तो यह है कि अग्रेजो के चले जाने के बाद पाच दशाब्दी बीत जाने पर अभी तक भारतीयो को वही शिक्षा मिल रही और इतिहास के नाम पर वही कुछ पढना पड रहा है जिसके परिणाम स्वरूप इस शिक्षा और इतिहास मे अनुप्रमाणित भारत के वतमान तथा कथित इतिहासवेत्ता अभी भी भारत को आर्यो का आदि देश और आर्यो को भारत का मूल निवासी मानने को तेयार नहीं। यह लोग इतने कूप मडूक हो गए हैं कि इनकी यह कूप मडूकता दुराग्रह का रूप धारण कर चुकी है। इतना दुराग्रह कि भारतीय पक्ष को सुनने उसके प्रमाण जान लने के पश्चात निरुत्तर होकर भी बिना किसी तर्क और प्रमाण के अपनी बात पर अडे रहते हैं। यह निकृष्ट कोटि की हठवादिता और दुराग्रह है। इसस जहा यह लोग जानबूझकर स्व इतिहास से अनभिज्ञ रहना चाहते हैं वहा भावी सन्ततियो को भारतीय इतिहास और सस्कृति से अनभिज्ञ रखने के कुप्रयास मे लिप्त रहकर जाति को पतन और विनाश क गर्त मे धकेलने का पाप भी करते हैं।

हमारा कहना यह है कि आर्य भारत क मूल निवासी हैं। आर्यो के यहा क मूल निवासी होने के कारण ही इस दश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त है। यदि आर्य कहीं बाहर से यहा आते और उनके आने से इस देश का नाम आर्यावर्त होता तो आर्यो के आने से पहले कोइ अन्य नाम होना चाहिए था। परन्तु तथ्य यह है कि आर्यावर्त से पहले इस देश का कोई दूसरा नाम नहीं था।

समस्त भूगोल मे कोई भी भूखण्ड ऐसा नहीं है कि जहा पर मानवी सृष्टि हो और उसका कोई नाम न हो। मनुष्य के रहने की बात छोडिए यदि किसी ऐसे भूखण्ड का मानव को पता लग जाता है जिस पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी आदि भी उसे न मिले तो वह उसका भी काई नाम रख लेता है। फिर यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है कि इस भूखण्ड मे आर्यो से पहले मनुष्यो की एक बडी सख्या निवास करती थी किन्तु इतने पर भी इसका कोई नाम नहीं था ? क्या यह इतिहास और भूगोल दोनो के साथ उन्हे स्वीकार न करने का मिथ्याचरण नहीं हैं ? ओर क्या यह इतिहास और भूगोल को न समझन की अल्प बुद्धि तथा ऐतिहासिक ओर भोगालिक अयोग्यता का प्रमाण नहीं हे ?

एक और बात यह है कि यह देश आर्यो का आदि देश तो है ही– साथ ही आर्यो का केन्द्र भी है। यह इतिहास की सत्यता भी आर्यावर्त शब्द मे ही निहित है। आर्य+ आवर्त्त अर्थात आर्यो का केन्द्र। इसस यह सिद्ध होता है कि न कवल यह देश आर्यो का आदि देश है अपितु आर्यो का केन्द्र भी यहीं है। इसी भूखण्ड से आर्य लोग भूगोल के अन्य भागो मे जाकर बसे ओर कालान्तर म जलवायु के प्रभाव तथा स्व मूल आर्यावत्त से दूर हो जाने तथा दीर्घकाल बीतने पर आर्य परम्परा से विच्छिन्न हो जाने पर विविध जातियो मे विभाजित हो गए।

वास्तविकता यही है कि भारत आर्यो का आदि देश है और आर्य यहा के मूल निवासी हैं तथा द्रविड कोल किरात शक यवन कम्बोज आदि सभी आर्यो के क्षत्रिय वर्ण मे से है और खान पान आचार विचार आदि से भ्रष्ट हो जाने के कारण यह सब लोग अलग-अलग वर्गो मे बट गए तथा पृथक-पृथक नामो से पुकारे जाने लगे।

यह पश्चिमीय दृष्टिकोण के इतिहासज्ञ सिन्धुघाटी की सभ्यता का आर्यो से प्राचीन बताते हैं। इनका कहना है कि आर्यो ने आकर सिन्धु सभ्यता को विनष्ट किया। यह भी कहते हैं कि सिन्धु सभ्यता पाच सहस्त्र वर्ष पुरानी है। स्वर्गीय डा० सम्पूर्णानन्द क अनुसार वेदा का समय १८००० वर्ष पुराना हे। यदि सिन्धु सभ्यता को पाच सहस्त्र वर्ष पुराना मान भी लिया जाए तो भी डा० सम्पूर्णानन्द की मान्यता के अनुसार आर्य सभ्यता तथाकथित सिन्धु सभ्यता स तरह सहस्त्र वर्ष पुरानी सिद्ध होती हे। दूसरी ओर इस समय ईसवी सन २००० मे कलि सम्वत ५१०० अर्थत महाभारत को जो कि कलियुग क प्रारम्भ से पहले और द्वापर के अन्त मे हुआ था – कम से कम ५१०० वर्ष बीत रहे हे। इससे यह स्पष्ट होता हे कि महाभारत युद्ध सिन्धु सभ्यता से कम से कम एक शताब्दी पूर्व अवश्य हुआ था। महाभारत आर्य इतिहास है वह न तो सिन्धु घाटी सभ्यता का इतिहास है और न द्रविड इतिहास।

सिन्धुघाटी की खुदाई में जो सील मोहरे मिली हैं उनमे से एक सील पर एक वृक्ष का चित्र है। उस वृक्ष पर दा पक्षी चित्रित हैं। एक उस वृक्ष के फल को खा रहा हे और दूसरा उसे खाते हुए देख रहा है खा नहीं रहा। इस सील के इस चित्र का आधार ऋग्वेद का मन्त्र है जिसमे प्रकृति का वृक्ष मानकर उस पर जीवात्मा और परमात्मा को पक्षी रूप मे वर्णित किया है और इस प्रकार यह दिखाया गया है कि जीव प्रकृति के पदार्थो को भोगता है और परमात्मा केवल उसका दृष्टा है। मन्त्र इस प्रकार है –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिष स्वजाते।

तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति।। ऋ० १/१६४/२०

यह सील यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि आर्य सभ्यता सिन्धु सभ्यता से पुरानी है। यदि यह मान लिया जाए कि सिन्धु घाटी के लोग इस मोहर का प्रयोग करते थे यह उन्हीं की मोहर है तो यह अपने आप मे सिद्ध हा जाता हे कि सिन्धु सभ्यता आय सभ्यता का उत्तर कालीन विकत रूप मात्र हे।

एक आर बात ध्यान दन की यह ह कि उक्त खुदाई मे शिवलिग पाए गए हैं। हिन्दुओ अथात वैदिक आर्यो को छोडकर शिवलिग पूजा अन्यत्र कहीं नहीं होती। इससे भी यही सिद्ध होता हे कि सिन्धु घाटी वासी आर्यो से पृथक नही थे।

यह भी ध्यान देने की बात है कि वैदिक आर्यो म मूर्ति पूजा जेनियो स चली है। इससे पहले मूर्ति पूजा नहीं थी। आचार्य शकर ने अनीश्वरवादी जैनियो की नगी मूर्तिया की ओर तत्कालिक सव साधारण जन का ध्यान हटाने और वैदिक धर्म के ईश्वरवाद की ओर लाने क लिए श्रृगारमय लक्ष्मीनारायण की मूर्तियो का प्रचलन कराया था। तत्पश्चात यहा विविध मूर्तियो की पूजा आर्यो (हिन्दुआ) मे प्रचलित हा गई स्मरण रहे कि जैन मत कवल पच्चीस सौ वर्ष का है और शकराचार्य का प्रादुर्भाव तब हुआ जब जैन बडे वेग के साथ भारत मे फैल रहा था। सिन्धु घाटी की खुदाई मे शिवलिग का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि सिन्धु सभ्यता पच्चीस सौ वर्ष से भी अर्वाचीन ही है प्राचीन नहीं। इस प्रकार महाभारत इस तथाकथित सिन्धु सभ्यता से न्यूनाधिक लगभग तीन सहस्त्र वर्ष पूर्व का सिद्ध होता हे।

डा० फतहसिह का कहना है कि सिन्धु सभ्यता उपनिषद कालीन है। उपनिषदे वेद से बाद की है। उपनिषदो मे से सबसे प्रथम कहलाने वाली ईशोपनिषद थाडे से रूपान्तर के साथ यजुर्वेद का ४०वा अध्याय ही है। इससे भी आर्य सभ्यता सिन्धु सभ्यता से बहुत प्राचीन सिद्ध होती है।

महामहोपाध्याय श्री प० सदाशिव शास्त्री के मत में "महाभारत युद्ध के पश्चात भारतीय सभ्यता हासोन्मुख हुई। सिन्धु घाटी से प्राप्त अवशेष इसी विनष्ट वैदिक सभ्यता के चिन्ह हे।

आधुनिक युग प्रवतक तथा बीसवीं शताब्दी के अद्वितीय वैदिक विद्वान महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे महाभारत स एक सहस्त्र वर्ष पूर्व स ही भारत मे बिगाड पैदा हो गया था इसका अर्थ है कि महर्षि छ सहस्त्र वर्ष पूर्व स अथात इसा से कम से कम चार सहस्त्र वर्ष पूव आर्य सभ्यता मे विकति आना स्वीकार करते हैं। यह बात महर्षि ने अपने सुप्रसिद्ध गन्थ सत्यार्थ प्रकाश म लिखी है। इस ग्रन्थ का पहला सस्करण १८७५ इसवीं मे छपा था। अब २००० में १२५ वर्ष इस छपे भी हो गए। इस प्रमाण से भी आय सभ्यता सिन्धु घाटी सभ्यता से बहुत पुरानी सिद्ध होती है।

इन्हीं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास के अन्त मे युधिष्ठिर से यशपाल पर्यन्त ४१५७ वर्ष राज्य करने वाल राजाओ की क्रमबद्ध सूची दी है। यशपाल पृथ्वीराज चौहान की पाचवी पीढी मे वर्णित है। पृथ्वीराज को एक सहस्त्र वष क लगभग हो रहे हैं। इस प्रकार महाभारत पाच सहस्त्र वर्ष से अधिक समय पूर्व सिद्ध होता है। रामायण युद्ध जो महाभारत से पहले हो चुका है उसे एक करोड इक्यासी लाख उनन्चास एक सौ सहस्त्र १८१४६१०० वर्ष बीत रहे हे। रामायण भी आर्यो का ही इतिहास है इसके सम्मुख सिन्धु सभ्यता कल परसो की बात है।

लेख का कलेवर अधिक बढाना हमे अभिप्रेत नहीं है। यदि रामायण से आगे वर्णन किया जाए तो आदि सृष्टि तक ही आर्य इतिहास पहुचेगा। हमारा [illegible]श्य इस लेख मे केवल यह सिद्ध करना है कि सिन्धु सभ्यता यदि कोई थी तो वह अर्वाचीन ही थी और भारत क मूल निवासी आर्य ही हैं कोई अन्य जाति नहीं। सत्य तो यह हे कि आर्यो से पहल ससार म कोइ अन्य जाति थी ही नहीं। आर्य जाति ही विश्व की सवप्रथम सबसे प्राचीन आर आदि कालीन मानव जाति हे। सिन्धु घाटी की सभ्यता नाम की कोई सभ्यता कभी नहीं थी। यहा किसी खुदाइ मे किसी समय क अवशेष निकल आने से किसी एतिहासिक तथ्य की कोई विशष उपलब्धि नहीं कही जा सकती।

किसी स्थान विशेष पर किसी बस्ती के खण्डहर कुछ क्षत्रीय वस्तुआ तथा खण्डहर होने क पूर्व की किसी ऐतिहासिक वस्तु की प्राप्ति का साधन भन्ने ही बन जाए किन्तु किसी जाति विशष क इतिहास वर्णन का साधन सिद्ध हो यह कल्पना मिथ्या है और केवल आर्य जाति को अर्वाचीन सिद्ध करन और स्वय को इतिहास म महत्वपूर्ण स्थान दिलाने की यूरोप निवासिया की कपोल कल्पना तथा उनका इतिहास निमाण का मिथ्या ओर असफल प्रयास हे।

जसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं अन्य समस्त भारतवासी भी आर्य सन्तान ही है ओर कालान्तर मे आर्य लोग दशाटन पर्यटन और व्यवसाय आदि की दृष्टि से भूमण्डल के अन्य क्षेत्रो मे गए तथा उनमे से बहुत से लोग वहीं बस गए। देश काल की परिस्थितियो से उनके आचार विचार और खान पान मे परिवर्तन हुआ। वही आर्य सन्तान विविध नामो से पृथक-पृथक जातियो के रूप म विभक्त हो गई और उन्हीं मे कुछ लोग पुन भारत आए जो इतिहास मे यवन तुर्क आदि नामो से जाने जाते हैं।

अन्त मे आर्य जाति की प्राचीनता क प्रमाण मे हम आर्य परिवारो मे विवाह आदि सस्कारो पर पुरोहितो द्वारा उच्चारण किया जान वाला सकल्प पाठ दकर इस लेख को समाप्त करते हैं। यह सकल्प आर्य इतिहास को लगभग दो खरब वष का बताता है जो मानव जाति की आयु का प्राचीनतम इतिहास हे। प्रागैतिहासिक काल की कल्पना करने वाले और आर्यजाति का इतिहास विज्ञान से अनभिज्ञ कहनेवाले इतिहासविदाभास जन इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढे आर मनन करे तथा उनमे थोडी भी नैतिकता है तो अपने दुराग्रह और मिथ्याभिमान को छोडकर सत्य को स्वीकार करे। आर्य जाति मे आदि सृष्टि से वर्तमान काल तक के अपने इतिहास को इस सकल्पपाठ मे ग्रन्थित करके सुरक्षित कर रखा है। पाठ इस प्रकार है –

ओ३म नत्सत श्री ब्रह्मणो द्वितीय महरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणेऽमुक सवत्सरायनर्तुमास पक्षदिननक्षत्रलग्न मुहूर्त्तेऽत्रेद कृत क्रियते।

अर्थ – ओ३म तत–सत परमेश्वर का इन शब्दा मे स्मरण करके यह कहा गया हे ब्रह्मा परमात्मा के दूसरे प्रहर मे सृष्टि के अर्द्ध भाग के निकट अट्ठाइसवा कलियुग और उसका प्रथम चरण अर्थत प्रारम्भ है। इसके आगे वर्ष ऋतु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहुर्त का विधान हे जो सस्कार के समय पर जोड लिया जाता है।

इस सबको गणित की रीति स जो सज्जन जानना चाहे वह महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय को पढकर जान ले। स्थानाभाव स यहा उनका वर्णन नहीं किया जा रहा।

– अध्यक्ष वैदिक सस्थान नाजीवाबाद उ०प्र०

नारीत्व

– योगेश्वर रामस्वरूप जी

ऋग्वेद मन्त्र १/४८/६ का भाव है कि सूर्य उदय हाने से पहले उषा काल प्रारम्भ होता हे। अन्धेरे म हम कुछ भी नही देख सकते लकिन उषा काल प्रारम्भ होते ही हम स्थूल (बडी) एव सूक्ष्म (छोटी) दोनो वस्तुओ को देखने मे समर्थ हो जाते ह। उषा काल ही हमे प्रकाश प्रदान करके देखने मे समर्थ करता है। इसी प्रकार कन्या भी अपने पिता एव दूसरा अपन पति का घर उज्ज्वल करती है। कन्या को इस मन्त्र मे पिता एव पति दोना घरो को उज्ज्वल करने वाली सूर्य की पुत्री कहा हे। इसी सूक्त के मन्त्र ११ मे कहा कि जैसे सूर्य उषा को प्राप्त होके ससार का प्रकाशित कर सबको सुख देता है वेसे ही पुरुषजन जब स्त्रियो को मान सम्मान आदि स भूषित करते है तब नारी भी पुरुष को भूषित करती है तथा परस्पर प्रीति – उपकार से गृहस्थ आश्रम सुखी होता है। अथर्ववेद कहता है – स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ अथात ब्रह्मा का पद स्त्री क लिए है। वेद मे प्रार्थना करते हुए हम कहत हे कि ह प्रभु तू मर पि[illegible] भी अधिक हे लकिन मेरी माता क समान हे। ऋग्वद मन्त्र १ ४८/१ मे नारी को विद्या [illegible] सुशिक्षाआ का ग्रहण करके मनुष्य का विद्या दान करने के लिए शिक्षक की पदवी से सुशोभित किया हे। इसी प्रकार चारो वेदो ने नारी को गृहस्थाश्रम का मूल कहा हे। वृक्ष की मूल यदि फलती फूलती है तभी सम्पूर्ण वृक्ष हरा भरा रहता है। शास्त्रो म भी नारी प्रशसा युक्त वचन है। अथात जहा नारी जाति का सम्मान है वहा ही देवता आनन्द मनाते है। ऋग्वेद मन्त्र १/४८/६/१० मे कन्या को सम्पूर्ण विद्याओ का ज्ञान प्राप्त करके विदुषी बनने का पुरुषो के समान अधिकार दिया है। विश्व की सर्वोत्कृष्ट सनातन सस्कृति ईश्वरीय अमर वाणी चारो वेदो मे वर्णित अनेक मन्त्रो मे कन्या – नारी की महिमा को वर्तमान मे नजर अन्दाज (उपेक्षा) करक ही आज गृहस्थ की मूल मे घुन लग गया है जिस कारण वृक्ष के पत्ते टहनिया शाखाए पिछले तीन युगो की भाति हरी भरी पुष्पवान एव मृदु मधुर फलवान दृष्टिगोचर नही हो रही हैं। कभी बाल ब्रह्मचारिणी विदुषी गार्गी राजा जनक की प्रधानाचार्य एव कात्यायनी गुरुकुल की अध्यक्षा थी। रावण जैसे दस्यु का भी मान मदन करने वाली जनक पुत्री माता सीता ही थी। वही काल ग्रास से निकाल कर लाने वाली सती सावित्री सत्यवान की कथा जगत प्रसिद्ध हे। गगा पुत्र भीष्म अपनी माता गगा के कारण ही जगत प्रसिद्ध हे। विदुषी मदालसा के सात पुत्र ऋषि एव एक पुत्र आठवा राजर्षि हाकर निज जन्म सफल कर गए। ध्रुव अपनी माता के गुणा के कारण ही आज महान ईश्वर भक्त के रूप मे याद किए जाते है। कैकेयी ने युद्ध क्षेत्र मे घायल अपने पति के प्राणो की रक्षा करने का गोरव प्राप्त किया था। पिछले तीन युगो के वैदिक काल मे ऐसी अनेक नारिया सम्पूर्ण विद्या प्राप्त करक समस्त परिवार समाज एव देश को अर्जुन युधिष्ठिर हरिश्चन्द्र एव भगीरथ जैसे अनेक राजर्षियो तथा वशिष्ठ विश्वामित्र व्यास तथा कपिल मुनि जेसे ब्रह्म–ऋषियो को जन्म दकर पृथिवी को गुणा की खान बनाती रही है। [illegible] अविद्या ग्रस्त असुर वृत्ति वाली पूतना श्रूपणखा इत्यादि नारिया का भी वणन करना अनुचित न हागा। एक तरफ नारियो की देववृत्ति और देवतृत्ति नारिया अत्यन्त अधिक थी जो वैदिक विद्या आर सुशिक्षा से ओत प्रोत थीं जिनका समाज म अत्यन्त मान सम्मान था। दूसरी तरफ विद्या हीन असुर वृत्ति वाली बहुत कम नारिया थी जिनका समाज म आदर नही था। अत वर्तमान म नारी जाति की सनातन प्रतिष्ठा पर कलक का लग जाना वर्तमान की दोषयुक्त सामाजिक व्यवस्था अविद्या एव नारी को अशिक्षित रखने के कारण ही दृष्टिगाचर हाता है। शास्त्र कहता है विद्या विहीन नर पशु समान अर्थात जिस नर नारी को विद्या प्राप्त नही है वह पशु के समान है खाना पहनना भय ग्रस्त काम क्रोधग्रस्त एव निद्रा ग्रस्त होकर जीवन व्यतीत कर देता है। विद्या के भी य दा क्षेत्र हे – प्रथम भोतिक विद्या जिसमे ऊँची ऊँची डिगरियॉ एव विज्ञान इत्यादि की पढाई पढकर ऊँचे ऊँचे पद प्राप्त करना। दूसरी विद्या है आध्यात्मिक विद्या जिसमे आचार सहिता मृदु भाषा गृहस्थ के कर्त्तव्य नैतिक शिक्षा सुखी गृहस्थ के नियम ब्रह्मचर्य यज्ञ योगाभ्यास प्रात ऊषाकाल मे उठना विद्या द्वारा बच्चो का सुसस्कार देना इत्यादि अनेक शिक्षाए है जिसका वर्णन सम्पूर्ण रूप से केवल वेदो मे ही सुलभ हे। विश्व गुरु कहलाने वाला भारत आज वेद विद्या से विहीन नजर आता है। तो यजुर्वेद मन्त्र ४०/१४ के अनुसार नर नारी दोनो को भोतिक एव आध्यात्मिक क्षेत्र मे साथ साथ उन्नति करने को कहा है। दोनो मे से एक तरफा उन्नति को अन्धकार मे प्रवेश करना कहा है। स्पष्ट है कि पुरुष अथवा नारी प्राय एक तरफा भौतिकवाद की पढाई मे उन्नति करके भ्रष्टाचार इत्यादि से बच नही पाते। कारण आध्यात्मिक वाद की उपेक्षा है। ऊपर कही विदुषी नारिया आध्यात्मिक एव भौतिक दोना उन्नति मे प्रवीण थी। अशिक्षित भूख से पीडित गरीब दिशा हीन तथा कहीं कहीं तो पेट पालने के लिए वेश्यावृत्ति स्वीकार करने वाली नारी की कोख से पुन अभिमन्यु अर्जुन सत्यवादी युधिष्ठिर श्रीराम श्रीकृष्ण राजर्षि भगीरथ जैसे महापुरुषो का जन्म होना नितान्त कठिन है। सितम्बर १६६५ मे चीन के एक नगर पेइचिग मे नारीवाद पर अन्तराष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी। प्रश्न था कि स्त्रियो का राजनीति आर अर्थनीति मे पुरुषा के समान पद देना। यह केवल भौतिकवाद की उन्नति है जो नैतिक शिक्षा से शून्य होने के कारण उसे सीता मदालसा गाधारी इत्यादि विदुषी नारियो की श्रेणी म लाकर अपनी रक्षा अपने आप करने की शक्ति प्रदान नही कर सकता। वेदिक सस्कृति के अनुसार नारी का ब्रह्मा का पद एव ईश्वर के समान का दर्जा प्राप्त है। अत हमे गहन विचार करने की आवश्यकता हे कि पुरुष नारी को दया दृष्टि क अन्तर्गत पुरुष के समान पद दे अथवा वेदो मे कही जाने वाली गृहस्थ की मूल अथवा ब्रह्मा के पद पर सुशाभित नारी का यह जन्म सिद्ध अधिकार है। वैदिक सस्कृति मे नारी दया की पात्र नही अपितु मातृत्व मधुरता एव सतान की प्रथम गुरु के रूप मे ईश्वरीय देन है अत अति आदरणीय है। अत नारी को उसका सनातन रूप ज्ञात कराने के लिए समाज सरकार एव बुद्धिजीवियो को उस भौतिक एव आध्यात्मिक शिक्षा से शिक्षित करने का क्रान्तिकारी आहान करना होगा क्योकि केवल नारी की गोद मे ही राष्ट्र का भविष्य पलता है

– वेद मन्दिर, योल कैन्ट (हिमाचल प्रदेश)

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह एवं बसन्तोत्सव

गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस रविवार १७ फरवरी २००२ को आर्यसमाज मन्दिर वाई ब्लॉक सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे प्रात ८.३० बजे से दोपहर १.३० बजे तक बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ८.३० बजे से ६.३० बज तक बृहद यज्ञ ६.३० बजे से १०.०० बजे तक भजन १०.०० बजे से १२.०० बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो का विशेष कार्यक्रम व हकीकत राय का ड्रामा एव अन्य स्कूल के बच्चो के भाषण व कविता आदि होगे। १२.०० बजे से १.३० बजे तक श्रद्धाजलि सभा होगी जिसमे उच्च कोटि के विद्वान व आर्य नेता पधार कर अपने विचार रखेगे। दोपहर १.३० बजे ऋषि लगर का सुन्दर प्रबन्ध होगा।

बच्चो की प्रतियोगिता

शनिवार १६ फरवरी २००२ को प्रात १०.०० से दोपहर १२.०० बजे तक गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी पाचवी से बारहवी कक्षा के बच्चो की प्रतियोगिता होगी जिसमे बच्चे धर्मवीर हकीकत राय के बलिदान सम्बन्धी कविता व भाषण प्रस्तुत करेगे। पाचवी से आठवी तक तथा नवीं से बारहवी कक्षा तक के बच्चो की अलग अलग प्रतियोगिता हागी व अलग-अलग ईनाम दिए जाएगे। कविता व भाषण के अलग अलग इनाम होगे।

सभी से प्रार्थना है कि अपने बच्चो के नाम शीघ्र **महामन्त्री भारतीय हकीकत राय सेवा समिति, आर्यसमाज, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली ११००२३ के पते पर भेज दे। दूरभाष ४६७७०६३**

– रोशन लाल गुप्त, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द की जय ! वैदिक धर्म की जय कब होगी ?

स्व० पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की अन्तर्वेदना

प्रिय आर्य बन्धुओ !

वैदिक धर्म की जय उस समय होगी जब हमारे कालेजो से पढकर सौ मे से ५ नवयुवक सन्यासी हो जाएगे गुरुकुलो मे से बीस मे से २ या ३ ब्रह्मचारी सन्यासी हो जाएगे और बिना गृहस्थ मे प्रवेश किए सन्यास को धारण करके वैदिक धर्म का प्रचार करेगे।

प्रचार तब होगा जब कालेजो से गुरुकुलो से युवक बी०ए० एम०ए० शास्त्री परीक्षा पास करके सन्यासी बनेगे और उनके माता पिता प्रसन्नता स कहेगे कि हा पुत्रो जाओ वैदिक धर्म का प्रचार करो। तब ऋषि दयानन्द की जय और वैदिक धर्म की जय जयकार होगी।

वैदिक धर्मियो ! सोचो तुम भी तो वेदिक धर्मी हो ? तुम मे से कोई ऐसा राजकुमार और राजकुमारी है ? वैदिक धर्म को ऐसे सच्चे वैदिक प्रचारको की आवश्यकता है। ऐसे प्रचारक सन्यासी हो सकते है जिन्होने शारीरिक अध्यात्मिक शक्ति बढाई हो जिसकी आत्मा बलवान हो चुकी हो। वह दिन कब आएगा जिस दिन आर्यसमाज से नवयुवक सन्यासी बनकर आर्यसमाज का प्रचार करेगे। अभी तो १२ या ३ वृद्ध सन्यासी रह गए है वह भी जाते रहेगे नवयुवको समझो और सोचो सन्यास की ओर झुको वीर्यवान होकर सन्यासी बनो फिर देखो कल्याण होता है कि नही।

किसी आर्यसमाजी से पूछा जाता है कि क्यो जी आप कौन है ? उत्तर मिलता है कि मै आर्यसमाजी विचार रखता हू। भाई ! केवल विचार वाले आर्यसमाजी की आवश्यकता नही है। यदि कभी थी तो वह समय व्यतीत हो चुका। अब तो कर्त्तव्य परायण आर्यो की आवश्यकता है। इसलिए यदि आपके मन मे ससार सुधार की चिन्ता हे तो पहले आप सुधरो अन्य तुम्हारे कर्त्तव्यो का अवलोकन कर सुधर जाएग। अब प्रश्न है कि अपना सुधार कैसे हो ? अहकार -- मै बडा हू मुझ से बढकर कोई नहीं है यह अहकार है शास्त्र कहता है आत्मनि आत्माभिमान ।

एक माता ने अपने पुत्र को अपने चरखे का तकला दिया और कहा कि इस का टेढापन निकलवा कर लाओ। वह गया और लुहार ने चोट लगा कर उसका टेढापन निकाल दिया अब वह लुहार से टेढापन मागता है लुहार आश्चर्य मे है कि यह क्या मागता है ? वह बालक माता के पास पहुचा माता ने उसे समझाया कि पुत्र तकले मे बल पड गया था लुहार ने चोट लगाकर सीधा कर दिया।

इसी प्रकार हमारी आत्मा म अहकार का बल पड गया है आवश्यकता है कि इसको ज्ञान रूपी चोट लगाकर सीधा किया जाए परन्तु हम क्या करते है ? तर्क कुतर्क के रण मे हमने ससार को जीत लिया परन्तु कर्त्तव्य परायण नही बने और ना अहकार का त्याग किया है। भद्र पुरुषो ! विचारो कि हमने अपने आचार्य 'देव दयानन्द की आज्ञा का पालन कहा तक किया है ? हम तो घर से निकलना ही नही जानते परन्तु बाहर निकले कौन ? गृहस्थ मे रहते हुए बाल बच्चो की ममता मोह नही छोडती सन्यासी वानप्रस्थी आश्रमी बनना नही। क्योकि मन मे यह अशुद्ध भाव बैठ गया है कि बृद्ध होने पर सन्यास ग्रहण करेगे। भला वृद्ध होकर सन्यास ग्रहण करने का क्या लाभ। जब कि समस्त इन्द्रिया शिथिल हो जाएगी उस समय क्या काम कर सकोगे ? बात यह है कि जिस पुरुष मे दुष्ट भाव हो वह बहाने बहुत किया करता है।

एक दिन ईसाईयो की मुक्ति सेना (साल्वेशन आरमी) के कुछ लोग मुझे मिले। मैने उनसे पूछा कि आपने सन्यास (पादरी) क्यो लिया ? उन्होने कहा कि ईसा ने इजिल मे लिखा है कि "मैं पिता को पुत्र से अलग करने आया हू मिलाने नही अब इस पर विचार करो कि ईसाई लोग तो सन्यास धारण करे परन्तु आर्य पुरुष सन्यास का नाम न ले। स्मरण रखो कि जब तक तुम लोगा मे से सच्चे सन्यासी नही निकलेगे तुम्हारे वैदिक धर्म का प्रचार न होगा। क्योकि सन्यासियो के बिना और कोई सीधी सीधी और खरी खरी बाते सुना नही सकता। तुम ससार को उच्च और सच्चे विचार दो। ससार तुम्हारे चरणो मे गिरेगा परन्तु करे कौन ? हम ता जगत व्यवहार मे फसे हुए है हम राज्य तथा बिरादरी का भय है परन्तु परमात्मा का नही।

उचित यह था कि पहला स्थान परमात्मा को और धर्म के भय को देते परन्तु हमने उसकी उपेक्षा किया जिसने धर्म का निरादर किया उसका कभी सत्कार नही हो सकता। इसलिए सबसे पूर्व काम क्रोध मोह अहकार पर विचार प्राप्त करके आत्मा का दृढ बनाओ जब आत्मा बल युक्त हो गया तो सब कार्यो मे सफलता प्राप्त होगी।

हमारे रोगो की जाच करके ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म रूपी औषधि पत्र हमारे हाथ मे दिया था परन्तु हम ऐसे दुर्भागी निकले कि वह औषधि पत्र ही चाट गए। अब रोग की निवृत्ति हो तो किस प्रकार। डिप्टी कमिश्नर बुलाये तो रोग ग्रस्त होते हुए भी खाट से उठकर उसके पास दौड जाएगे परन्तु आर्यसमाज के सत्सग अधिवेशन मे जाने के लिए बहाने सूझते है आज जुखाम हो गया आज घर पर मेहमान आ गए। डिप्टी कमिश्नर और बिरादरी का इतना भय परन्तु आर्यसमाज जो धर्म सभा है उसका इतना भी भय नही है। फिर वैदिक धर्म का प्रचार कर तो कोन ? वास्तव मे बात यह है कि ऋषि दयानन्द के वैदिक मिशन को पूर्ण करने के लिए इस समय किसी तेजस्वी आत्मबल आत्मा की आवश्यकता है। ससार भोगी पुरुषो से जिन्होने रुपये जैसी निकृष्ट वस्तु से धर्म को गिरा दिया वैदिक धर्म का प्रचार न हो सका। यदि हममे धर्म प्रचार की कुछ भी अभिलाषा है तो आज से ही यह प्रण कर लो कि प्राण जाए तो धर्म पर। जायदाद जाए तो धर्म पर अर्थ सन्तान चली जाए पर धर्म न जावे। जिस दिन धम यह समझ लेगा कि मेरा आदर प्राणो से भी अधिक किया है उसी दिन धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम सारे ससार मे वैदिक धर्म प्रचार करने के योग्य हो जाओगे। धर्मोरक्षिति रक्षित जब ही महर्षि दयानन्द की जय वैदिक धर्म की जय होगी।

आनन्द सग्रह से साभार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई का पुरस्कार समारोह २००२

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई ५४ द्वारा पुरस्कार समारोह का आयोजन रविवार दिनाक १० फरवरी २००२ को प्रात १० बजे से १२ ३० बजे तक आयोजित किया गया है। वर्ष २००२ मे "वेद -- वेदाग पुरस्कार से प० राजवीर जी शास्त्री (सम्पादक दयानन्द सन्देश) को वेदोपदेशक पुरस्कार से श्री उत्तमचन्द जी शरर (पानीपत हरियाणा) को एवम श्रीमती लीलावती महाशय आय महिला पुरस्कार" से सुश्री कमला जी आर्या -- अलीगढ उत्तर प्रदेश को सम्मानित किया जाएगा।

सम्मान के रूप मे उक्त विद्वानो को क्रमश २५००१/– १५००१/– ११००१/– की राशि शाल ट्राफी व श्रीफल से अभिनन्दन किया जाएगा। इसी प्रकार श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार" के अन्तर्गत श्रीमद दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटिपुरा की होनहार छात्रा सुश्री सुनेश को तथा श्री निशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद के छात्र ब्र ऋषि कुमार शुक्ल को सम्मान के रूप मे क्रमश ५०००/– ५०००/– से सम्मानित किया जाएगा।

आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री व महामन्त्री श्री यशप्रिय आर्य एवम पुरस्कार समिति के सयोजक तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के सयोजन मे आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा मनोनीत सात सदस्यीय समिति द्वारा उपरोक्त विद्वानो को सम्मानित करने का प्रस्ताव आर्य समाज सान्ताक्रुज की अन्तरग सभा ने सर्व सम्मति से स्वीकार किया है।

उपरोक्त समारोह मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध नेताओ प्रख्यात विद्वानो एवम प्रतिष्ठित सन्यासियो को आमन्त्रित किया जा रहा है।

महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती जी का निवास

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री गोपाल शरण विद्यार्थी ने विगत वर्ष उदयपुर स्थित नवलखा महल मे स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी से सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर अपना पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के कार्यो को समर्पित कर दिया है। उन्हे सन्यास आश्रम के लिए महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती नाम दिया गया है। महात्मा गोपाल स्वामी जी अब निम्न पते पर उपलब्ध हैं –

आर्यवानप्रस्थाश्रम, आर्यसमाज नोएडा

बी० ६६ सेक्टर – ३३ गौत्तम बुद्ध नगर (उ०प्र०)

फोन ६१–४५०५७३१ मो० ६८१०३२६२५५

जो व्यक्ति या सस्थाए महात्मा गोपाल स्वामी जी की हिन्दी अग्रेजी सस्कृत तथा समस्त आर्ष ग्रन्थो तथा आधुनिक विषयो पर उनकी विद्वता का लाभ उठाना चाहे वे उन्हे उपरोक्त पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

स्वास्थ्य चर्चा

नया साल नेत्र ज्योति दे सुन्दर, हो सुरक्षा बचपन से

– धर्मसिह शास्त्री

न ये वर्ष २००२ मे सबकी नेत्र ज्योति स्वस्थ और सुन्दर हो आर्य जगत के लिए शुभकामनाए है।

या द रखिए नेत्र ज्योति ईश्वर की दी हुई एक अमूल्य भेट है जिसे सुरक्षित रखने अपना हित है।

सा री दुनिया के सभी प्रकार क कार्यकलाप नेत्र ज्योति के साथ ही सम्भव होते रहते है।

ल गातार नेत्रो मे बनी रहने वाली लाली कजक्टीवाइटिस नेत्र का सक्रामक रोग उत्पन्न कर सकता हैं तुरन्त नेत्र चिकित्सक को दिखाकर उपचार की सलाह लेनी चाहिए।

ने त्र ज्योति प्रकृति का ही अनुपम उपहार है इसके बिना जीवन अन्धकारमय हो जाता है।

त्र स्त और पराश्रित हो जाता है वह व्यक्ति जिसकी किसी कारणवश नेत्रज्योति नष्ट हो जाती है।

ज्यो त्सना अर्थात चादनी रात का आनन्द उसी के लिए है जिसकी नेत्रज्योति स्वस्थ हो वरना चादनी भी अन्धकार हो जाती है।

ति मिराच्छन्न हो जाता है ससार उनके लिए जो दृष्टिविहीन है। एसे व्यक्तियो का पुनर्वास करना अति आवश्यक समझना चाहिए।

दे श मे चलाया जा रहा राष्ट्रीय दृष्टिविहीनता नियन्त्रण कार्यक्रम देशवासियो की नेत्रज्योति की सुरक्षा के लिए है।

सु दर और आकर्षक ज्योतिर्मय नेत्र किसी के भी व्यक्तित्व को चार चाद लगा सकते है।

द र दर भटकते और ठोकर खाते हैं वे दृष्टिविहीन जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता।

र हमत हो उस ईश्वर की जब मिल जाती है हमको नेत्र ज्योति सुन्दर और उज्ज्वल।

हो ली के त्योहार के अवसर पर गोबर कीचड पेन्ट रग आदि चेहरे पर मलने से नेत्रो को भारी नुकसान पहुच सकता है प्रत्येक को सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

सु रक्षा चाहे जीवन की हो या स्वास्थ्य की ज्योतिर्मय नयनो के बिना सम्भव नही।

र सीले आम पपीता अमरुद आवला हरी पत्तेदार सब्जिया और शाक नेत्र ज्योति के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते है।

क्षा रीय पदार्थ और तेजाबी रसायन आदि नेत्रो मे पड जाए तो नेत्रज्योति को हानि हो सकती है।

ब चपन पूरे जीवन का आधारबिन्दु है इसमे सामान्य स्वास्थ्य के साथ नेत्र स्वास्थ्य के नियमो का पालन करने से जीवन सुखमय सम्पन्न बन सकता है।

च लती गाडी बस तथा मन्द रोशनी मे पढने से नेत्रो को हानि का भय रहता है।

प लकबन्दी मोतियाबिन्द कालामोतिया मन्ददृष्टि आदि किसी भी रोग का निदान शीघ्र उपचार करवाने से ही नेत्रज्योति सुरक्षित रह सकती है।

न गरो मे तो नेत्रो की देखभाल उपचार ओर निदान के अनेक साधन हैं किन्तु ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रो मे इन साधनो के अभाव के कारण दृष्टिविहीनता की समस्या अधिक है।

से वाभावी स्वयसेवी सगठनो सामाजिक सस्थाओ और सरकारी प्रयासो से ही बचपन से ही नेत्र सुरक्षा की व्यवस्था तथा प्रचार प्रसार मानव कल्याणार्थ सम्भव है कृपया सावधानी बरतिए।

आपके नेत्र अनमोल हैं, उनकी रक्षा करें

– इन्द्रदेव सिह आर्य

प्रत्येक मनुष्य के लिए सभी इन्द्रिया आवश्यक हे परन्तु उनमे आखो का महत्व सबसे अधिक है। अपनी नासमझी या लापरवाही से अपने जीवन मे अन्धकार लाना भारी भूल होगी। इसलिए विशेषत वरिष्ठ नागरिको को अपनी आखो की सुरक्षा करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। आपकी आखे आपके जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण अग है। वे ही आपको जीवन मे आगे बढने मे सहायक हे इसीलिए उनका एक सार्थक नाम नेत्र है अर्थात वह जो आपको आगे ले जाता है। नेत्र शब्द नी – ले जाना धातु से बना है त्र प्रत्यय ले जाने वाले साधन का द्योतक है। वास्तव मे आख एक नाजुक अग है अत उसकी सावधानी से रक्षा और रख रखाव आवश्यक है।

सत्य तो यही है जैसा कि डॉक्टर विलियम आस्लर ने कहा था कि असली डॉक्टर वह है जा अपने द्वारा दी जाने वाली औषधियो की निरूपयोगिता अर्थात उनकी व्यर्थता को समझता है। इस कथन का तात्पर्य यही है कि कोई भी दवा या ओषधि केवल प्रकृति एव प्रयत्न मे सहायक ही होती हे। इसी प्रकार आखो की तन्दुरुस्ती के लिए आखो के स्नायु और पेशियो को आवश्यक व्यायाम प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित व्यायाम उपयोगी सिद्ध होगे –

१ आखा को बार बार खोले और बन्द करे।
२ दोनो आखो को गोल गोल फिराने की कोशिश करे व क्षितिज की ओर दृष्टि डालते हुए आखो को गोल घुमाए।
३ सूर्योदय के समय यथा सम्भव किसी कुछ ऊचे स्थान मे खडे होकर सूर्य की प्रात कालीन रश्मियो को चक्षुओ पर पडन दे।
४ आखो के एक विशेषज्ञ की राय है कि दिन मे प्रात व साय हाथ मुह धोते हुए एव स्नान करते समय इस प्रकार लगभग ४ या ५ बार आखो पर शीतल जल छिडकना आखो के लिए लाभदायक होता है। इसके उपरान्त बहुत हल्के हाथो से आखो को किन्चित ५ ७ बार दबाना उपयोगी है।
५ प्रात साय भ्रमण करते समय दूर के वृक्षो पर या बिजली के खम्भो के ऊपरी हिस्से पर ऊचे मकानो पर दृष्टि स्थिर करने का प्रयत्न करे।
६ रात्रि मे खासकर गर्मी के दिनो मे खुले मे या छत पर सोते हुए आखो को आकाश मे तारो और चाद पर डालते हुए उन्हे एकटक देखे। सूर्य की आर या बहुत तेज प्रकाश की बत्ती की ओर लगातार देखना हानिकारक है।
७ पढते समय या लिखते समय तेज बिजली का या अन्य प्रकाश सीधा आखो पर न पडने दे। वह पीछे से बाजू से आए इसकी योजना करे।
८ मन्द प्रकाश मे पढना–लिखना यथा सम्भव टाले जिससे आखा पर व्यर्थ तनाव न पडे। पर्याप्त प्रकाश मे ही पढना–लिखना उचित है।
९ बिस्तर पर पडे–पडे पढने का यत्न न करे।
१० शीर्षासन या सर्वागासन करने से नेत्रो की ज्योति बढती है व मोतियाबिन्दु पास नही फटकता।
११ विटामिन ए०बी०सी० और डी० आखो के लिए अत्यन्त उपयोगी है। ये विटामिन और शरीर के लिए आवश्यक खनिज मुख्यत भाजी पत्ते और फलो के सेवन से प्राप्त होते है। अत इन चीजो का पर्याप्त मात्रा मे सेवन करे।

पृष्ठ ३ का शेष भाग

शिक्षा एवं भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन

इतना बस होना था कि विरोधियो ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि राजग सरकार शिक्षा का भगवाकरण कर रही है तभी यहा तक भी आवाज उठा दी गयी कि यह सरकार शिक्षा का तालिबानीकरण कर रही है और इसे न रोका गया तो लोकतन्त्र समाप्त हो जाएगा देश का एक और विभाजन हो जाएगा।

भगवाकरण

हम इस बात का स्पष्ट कर देना आवश्यक समझते हैं कि भगवा रग का बदनाम करने वाले राजनीतिक मुहावरे भगवाकरण के इस रूप मे प्रयोग पर हमे सख्त आपत्ति है। इस देश की मूलभूत सस्कृति मे भगवा रग आदर सूचक है यह त्याग वैराग्य सेवा तथा विश्व मैत्री का प्रतीक है। महान आर्य जाति के साधु सन्त त्यागी तपस्वी महात्मा एव सन्यासी भगवा रग के वस्त्र पहनते हैं। भगवान आद्य शकराचार्य से लेकर स्वामी दयानन्द स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ पर्यन्त सन्यासियो के वस्त्र भगवा होते थे। हमारा मस्तक आज भी भगवा वस्त्रधारी साधु सन्यासी के सामने स्वत ही झुक जाता है अत पवित्र और आदरणीय समझे जाने वाले भगवा रग को राजनीतिक चोला पहनाना तथा उसे बदनाम करना महान भारतीय सस्कृति का अपमान है। हमारे राजनीतिज्ञो द्वारा अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थो के लिए इस रूप मे भगवा रग को बीच मे लाने की प्रवृत्ति की हम निन्दा करते है और यदि आप सबने चाहा तो तदर्थ गोष्ठी के निष्कर्ष मे एतद् विषयक निन्दा प्रस्ताव भी हम रखना चाहेगे।

तालिबानीकरण

'तालिबान एक नया शब्द है। आज के विश्व मे यह शब्द लगभग उसी रूप मे देखा जा रहा है या प्रयुक्त हो रहा है जो रामायण महाभारत मे राक्षस का है। आज इससे बडी कोई गाली नहीं है। तालिबान अफगानिस्तान मे उन लोगो का गिरोह था जिन्हे पाकिस्तानी मदरसो मे उग्रपन्थी इस्लाम की शिक्षा दी गयी थी। पाकिस्तान की सैनिक सहायता के बल पर उन्होने अफगानिस्तान के ६० प्रतिशत भाग पर कब्जा कर लिया था और अब वहा से उनके कथित सच्चे इस्लामी शासन का अन्त हो चुका है। अपने कारनामो से तालिबानी जहा एक ओर आतक के पर्याय बन गए वहीं ये लोग सारे ससार मे भय और घृणा के पात्र बन गए और 'तालिबान' शब्द एक कुत्सित गाली बन गया और इसे दुर्भाग्य नहीं तो क्या कहे कि उसी शब्द का प्रयोग चालू विकृत इतिहास को बदलने का यत्न कर रही राजग सरकार के लिए किया गया।

ज्योतिष शास्त्र

हमारा निवेदन है कि सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय ज्योतिष शास्त्र मे जहा गणित ज्योतिष (Astronomy) का बडा महत्वपूर्ण स्थान है और यही विश्व मे वैज्ञानिक खोजो मे अत्यन्त उपयोगी रहा है वहीं फलित ज्योतिष हमारी दृष्टि मे ज्योतिष विद्या के नाम पर एक कलक है। आर्यसमाज के प्रवर्तक ने इस विज्ञान के अन्तर्गत एरिथमेटिक ज्यामिति बीजगणित यहा तक कि भूगर्भ विद्या तक का समावेश कर उसे व्यापक अर्थवत्ता प्रदान की है। भविष्य कथन हस्त रेखा सामुद्रिक विद्या मुहूर्त विचार दिशाशूल तथा दिनो का शुभारम्भ मानना नक्षत्रो के शुभाशुभ फलो का मानना नवग्रहो को शुभाशुभ समझना राशियो का विचार कुण्डली विचार आदि फलित ज्योतिष के अन्तर्गत आने वाले विषय कपोल कल्पित ही है। यहा मै विस्तार मे न जाकर यही कहना चाहता हू कि (Astronomy) सत्य विद्या है किन्तु आज के वैज्ञानिक युग मे फलित ज्योतिष (Astrology) जैसे पाखण्ड को बढाने वाले विषयो को विश्वविद्यालयो के पाठयक्रम मे समाविष्ट करना छात्रो को मध्ययुग मे ढकेलने तुल्य है। इसे सीख कर हमारे नवयुवक भी सडक–छाप ज्योतिषी बन कर लोगो को ठगने लगेगे क्योकि सभी जानते है कि हमारे देश मे ज्योतिष के नाम पर लोगो को ठगना कितना सरल है।

पौरोहित्य विद्या

डा० जोशी तथा उनके समानधर्मा लोगो का कथन है कि इस विद्या को पढ कर नवयुवको को रोजगार मिलेगा। हमारा नम्र निवेदन है कि इस पाठयक्रम के अन्तर्गत हमार विद्यार्थिया को आश्वलायन पारस्कर गोभिल और सौनक आदि अत्युपयोगी गृह्य सूत्रो की शिक्षा देकर उन्हे वैदिक कर्मकाण्ड विष्णान्त बनाए जाने की योजना हो तो सचमुच देश का कल्याण होगा। इसी सन्दर्भ मे महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत सस्कार विधि के आधार पर सोलह सस्कारो का प्रशिक्षण दिया जाए तो भी अत्युत्तम होगा। परन्तु जहा तक हम समझ पाए हैं उन्हे तो गणेश पूजन, घट स्थापन नवग्रहपूजन शिव–विष्णु आदि पचदेवो की पूजा दुर्गा सप्तशती के अनुसार हवन जिसमे 'गर्ज गर्ज क्षण मूढ । मधु यावत पिबाम्यहम' श्लोक के विनियोग मे यज्ञवेदी मे शराब की आहुति का गलत विधान जो उल्लिखित है) मृतक श्राद्ध शिवपिण्डी पर पचगव्यो की धारा आदि पौराणिक कृत्य सिखाए जाएगे। जो योजना चल रही है उसके अनुसार यही पुरोहित मन्दिरो मे मूर्तियो मे देवताओं का आवाहन करेगे प्राण प्रतिष्ठा काआडम्बर कर लोगोका धन हरण करेगे। विश्वविद्यालयी शिक्षा पाठयक्रम मे भले ही वैकल्पिक विषय के रूप मे ही सही इस प्रकार की समाविष्टि पर हमे आपत्ति होनी स्वाभाविक है। हॉ डॉ० जोशी एव उनके प्रशसक समझ सकते है कि आर्यसमाज ने यहा पढाने की जो बात कहीं वह सर्वमान्य है उसमे उनका भी कोई विरोध नहीं हो सकता अत कर्मकाण्ड को समाविष्ट करना हो तो वहा हमारी बात को समाविष्ट किया जाए।

गणित विद्या की वैदिक शाखा, वास्तुशास्त्र

शिक्षा मे समाविष्ट होने वाले उपर्युक्त प्रस्तावित विषयो के सम्बन्ध मे मेरे पास यहा समय नही कि इस पर कुछ विचार व्यक्त कर सकू पर देश के एक महान विचारक पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के दयानन्द चेयर के अध्यक्ष श्रद्धेय डॉ० भवानीलाल भारतीय के स्वर मे स्वर मिला कर विनम्रता पूर्वक कहूगा कि फलित ज्योतिष पौराणिक पौरोहित्यवाद तथा वास्तुशास्त्र अन्य कुछ नही मूर्तिपूजा की अवैध सन्ताने हैं तथा विद्यार्थियो को इनसे बचाया जाए तभी अच्छा है। इस प्रकार के सन्देहास्पद विषयो को शिक्षा पाठयक्रमो मे समाविष्ट करने के पूर्व गम्भीर विचार मन्थन होना अभी बाकी है एव आशा करनी चाहिए कि डा० जोशी हमारे प्रतिवेदन पर ध्यान अवश्य देगे।

अन्त मे डा० जाशी के इतिहास के पुनर्लेखन के सकल्प की प्रशसा करते हुए हम यह आशा कर सकते है कि अन्य आवश्यक सशोधनो के साथ ही इतिहास की विकृतियो को सदा–सदा के लिए मिटा कर निम्न बातो को भी इतिहास मे समिविष्ट किया जाए यथा –

(क) हम (आर्य) इस दश मे बाहर से नहीं आए अपितु हम इस देश से दुनिया के दूसरे देशो मे गए और इस प्रकार हम विश्व की सर्वश्रेष्ठ सस्कृति के सवाहक हैं।

(ख) श्रुतियो एव इतिहास से सिद्ध है कि प्राचीन भारत मे आर्यो मे गोमास भक्षण की ता बात ही दूर है मास भक्षण तक वर्जित था।

भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन – एक निवेदन

– दयानन्द आर्य

आदरणीय महानुभावो

आधुनिक इतिहास लेखन की परम्परा ब्रिटिश शासनकाल मे शासको के इशारे पर उनके हितो को दृष्टिगत रखते हुए शुरू हुई। इस इतिहास लेखन मे भारतीय दृष्टि और भारतीय हितो की जानबूझ कर उपेक्षा की गई। इसमे केवल भारतीय दृष्टि का ही अभाव नही था ब्रिटिश शासको के हितो को ध्यान मे रखते हुए तथ्यो को भी तोडा मरोडा गया।

आजादी के ब'द या य' कहे आजादी के कुछ पहले से ही कुछ भारतीय इतिहासकारो ने ब्रिटिश इतिहासकारो द्व'रा स्थापित इतिहास लेखन की परम्परा को मामूली फर बदल के साथ जारी रखा।

इन भारतीय इतिहासकारो ने भी भारतीय सोच एव दृष्टि को न अपनाकर विदेशी सोच और दृष्टि को अपनाया।

हिन्दुओ की शानदार विरासत को लाछित किया गया उसे धूमिल करने की चेष्टा की गई वही दूसरी ओर विदेशी आक्रमणकारियो को और उनके शासन को गौरवमण्डित किया गया।

इस इतिहास को पढने वाला छात्र अपन देश की शानदार विरासत और परम्पराओ को हेय दृष्टि से देखेगा। अपने देश से जुडना नही चाहेगा। राष्ट्र के प्रति उसकी भक्ति मे कमी आएगी।

एक सबल राष्ट्र का निर्माण तभी हो सकता है जब लोग अपनी स्वर्णिम सस्कृति पर गर्व करे। हजारो साल की सस्कृति के प्रति लगाव महसूस करे तभी उनमे राष्ट्र प्रेम राष्ट्र भक्ति उपजेगी।

हमारे देश का अतीत न केवल सास्कृतिक दृष्टि से समृद्ध रहा है बल्कि हमारे देश मे शूरता और वीरता की भी कभी कोई कमी नही रही।

विज्ञान मे भारत की देन अद्वितीय रही है। आवश्यकता है इन सब को सही परिप्रेक्ष्य मे उजागर करने की और यह काम इतिहासकार ही कर सकता है।

अगर इतिहास की किसी पुस्तक को पढकर अपने प्रति हीन भावना उत्पन्न हो तो जाहिर है उस इतिहास मे राष्ट्रीय सोच और दृष्टि का अभाव है।

सच तो यह है भारत का इतिहास विदेशी आक्रमणकारियो के आने के पहले गौरवशाली और शानदार रहा है।

सदियो विदेशी सत्ता के आधीन रहने के बावजूद हमने अपने स्वर्णिम अतीत से रिश्ता नहीं तोडा है और इतना ही नहीं अतीत की शानदार विरासत और परम्पराओ को बनाए रखा उन्हे लुप्त नहीं होने दिया। इसी पर तो किसी शायर ने ठीक ही कहा है –

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

मेरी राय मे इतिहासकार इतिहास की रचना इस प्रकार करे कि लोगो मे देश प्रेम और देश भक्ति की भावना उत्पन्न हो तभी हम आज के विश्वीकरण के युग से उत्पन्न प्रतियोगिता मे सक्षम होकर मुकाबल' कर पाएगे। अतीत के प्रति गौरव बोध के अभाव मे यह कतई सम्भव नहीं।

भारतीयता हमारी प्राण वायु है इसके अभाव मे हमारी सस्कृति निर्जीव हो जाएगी। हमारा देश विज्ञान गणित कृषि ज्योतिष साहित्य आदि क्षेत्रो में अग्रणी रहा है। पिछले ९५० वर्षो से गौरवशाली इतिहास को गलत ढग से पेश करने की साजिश चलती रही है। इस कुचक्र को विफल करना देश भक्त इतिहासकारो का काम है।

गयानगर स्थित विरजानन्द भवन का गरिमामय उद्घाटन

सर्वप्रथम वैदिक पद्धति से यज्ञ का आयोजन कर समस्त विद्यालय परिसर के वातावरण को मागलिक भावना से ओत प्रोत किया गया।

दिनाक २३ दिसम्बर २००१ सन्ध्या ४ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ एव छत्तीसगढ के अन्तर्गत आर्य शिक्षा समिति मठपारा दुर्ग द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय गयानगर दुर्ग मे नवनिर्मित स्वामी विरजानन्द सभा भवन का उद्घाटन एव स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आचार्य जगददेव नैष्टिक प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश छत्तीसगढ विदर्भ के मुख्य आतिथ्य मे किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव सभा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश ने की। कार्यक्रम के स्वागत भाषण मे आर्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्रद्धेय गुलाबचन्द वानप्रस्थी जी ने विद्यालय के शैशव अवस्था से आज तक की यात्रा का सक्षिप्त परिचय दिया एव महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के अनुसार इस विद्यालय का निर्माण बालक बालिकाओ के शैक्षणिक एव नैतिक मूल्यो मे वृद्धि किया जाना बताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भार्गव जी ने अपने भाषण मे समाज मे शिक्षावान सस्कारवान एव सेवाभावी व्यक्तियो की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नैष्टिक जी ने अपने उदबोधन मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन मे प्रकाश डाला और समस्त आर्यवीरो को वेद के प्रचार प्रसार मे अग्रसर रहने के लिए कहा ताकि पूरे देश मे वेदो का प्रचार हो सके। कार्यक्रम मे श्रद्धान द जी के जीवन से सम्बन्धित भजन एव राष्ट्रीय भावना के गीत भी गाए गए।

कार्यक्रम मे श्री शिवनाथ सिह प्रधान आर्यसमाज दुर्ग ने कार्यक्रम का सफल सचालन आर्य विद्यालय मठपारा दुर्ग की प्रभारी प्राचार्य श्रीमती अनिता तलवार ने प्रभावी ढग से किया। इस कार्यक्रम मे शाल परिवार एव नगर के अनेक गणमान्य नागरिको ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त मे आर्यसमाज मठपारा दुर्ग के पुरोहित श्री लोकनाथ शास्त्री जी के द्वारा शाति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

आर्यसमाज भिलाई नगर में ऋग्वेद महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भिलाई नगर जिला दुर्ग (छत्तीसगढ) का ४२वा वार्षिक महोत्सव २० से २३ दिसम्बर २००१ तक बडे हर्षोल्लास के वातावरण मे मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य डॉ० सजय देव जी (इन्दौर) के ब्रम्हत्व मे 'ऋग्वेद महायज्ञ भी हुआ। महायज्ञ मे गुरुकुल आमसेना के विद्यार्थियो ने वेद पाठ किया। प्रतिदिन प्रात साय अचार्य डॉ० सजय देव (इन्दौर) प० वीरपाल विद्यालकार (दिल्ली) एव प० सूर्यप्रकाश मिश्र (भिलाई) के प्रवचन तथा प० दिनेशदत्त शर्मा (दिल्ली) और प० सेवकराम (दुर्ग) के भजनोपदेश हुए। स्वामी धर्मानन्द जी स्वामी व्रतानन्द जी तथा श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव ने भी उत्सव मे भाग लिया। २२ दिसम्बर को रात्रि कक्षा ६ से १२वीं तक के बच्चो की अन्तरशालेय वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई। २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया तथा महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– इन्द्र कुमार हरवानी, मन्त्री
आर्यसमाज भिलाई सेक्टर ६
जिला दुर्ग (छत्तीसगढ)

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५८वा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५८वा वार्षिकोत्सव दिनाक २४ जनवरी से २७ जनवरी २००२ तक मनाया गया है। इस अवसर पर दिनाक २६ जनवरी २००२ को वेद गोष्ठी का आयोजन प्रात १० से १२३० बजे तक किया गया। जिसका विषय था **वेदार्थ प्रक्रिया और वेदभाष्यकार**।

इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ विद्वानो के वेदोपदेश एवम श्री वेगराज आर्य (उत्तर प्रदेश) के भजनोपदेश हुए। वेदगोष्ठी मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० धर्मवीर जी (अजमेर) डॉ० भवानीलाल भारतीय (जोधपुर) डॉ० विक्रम कुमार (चण्डीगढ) आचार्य वेदव्रत मीमासक (आर्ष गुरुकुल वडलूर निजामाबाद) प्रो० कमलेश कुमार शास्त्री (अहमदाबाद) प्रो० कुशलदेव शास्त्री (नादेड) एवम मुम्बई से डॉ० वागीश शर्मा (आर्ष गुरुकुल एटा) श्री बाखरे (विभागाध्यक्ष सस्कृत विभाग मुम्बई विश्वविद्यालय) प० नरेन्द्र व लकार प महेन्द्र शास्त्री आदि विद्वान उपस्थित थे।

गुजरात मे आए भीषण भूकम्प मे मृतको की प्रथम पुण्य तिथि पर आयोजित

१०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

गुजरात कई वर्षो से दैवीय आपदाओ से पीडित रहा है। अकाल एव भूकम्प ने बुरी तरह से इस श्रद्धा भूमि को अपनी चपेट मे लिया था। २६ जनवरी २००१ मे आए विनाशकारी भूकम्प से पूरा विश्व परिचित है। इस विनाशकारी भूकम्प ने सैकडो व्यक्तियो को मृत्यु के घाट उतारा जिनमे नर नारी एव छोटे बच्चे भी थे। इसी उपलक्ष्य मे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा ट्रस्ट परिसर मे २६ जनवरी २००२ को १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया।

गुजरात की इस दैवीय आपदा के समय सभी आर्यजनो ने प्रभावित लोगो के दु ख दर्द को बाटने का प्रयत्न किया। ऋषि जन्मभूमि मे आधार राहत शिविर स्थापित कर गाव के पुनर्निर्माण एव हताहत हुए परिवारो को सहयोग सामग्री वितरित की गई। पूरे वर्ष भिन्न भिन्न गावा मे जाकर शान्ति यज्ञो का आयोजन उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया। इस समय भी सेवा चल रही है। एक वर्ष पूरा होने पर २६ जनवरी २००२ को समस्त सौराष्ट्र एव कच्छ की शान्ति एव समृद्धि क लिए ट्रस्ट ने उपरोक्त गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया है। इस महायज्ञ मे ४३२ यजमान दम्पतियो ने भाग लिया।

मनुष्य का कर्त्तव्य

लाला जगन्नाथ ने फर्रुखाबाद मे महर्षि दयानन्द से पूछा कृपा करके बतलाए कि मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है ?

महर्षि ने कहा मनुष्य का कर्त्तव्य ईश्वर प्राप्ति है जो ईश्वरीय आज्ञाओ के पालन अर्थात् वेदानुकूल आचरण धर्म के दस लक्षणो पर चलने और अधर्म त्याग से हो सकती है।

देश भक्ति की भावनाएं बच्चों में उत्पन्न करें – वेदव्रत शर्मा

राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यो, वैदिक सस्कारो एव उच्च प्रेरणाओ के प्रचार प्रसार से ही सफल गणतन्त्र स्थापित हो सकता है

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के अन्तर्गत सचालित महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल मे गणतन्त्र दिवस समारोह बडी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक क्रियान्वयन कर कोई मार्ग निर्धारित नहीं किया गया। भारतीय सविधान मे वर्णित मूल कर्त्तव्य काफी बारीकी से आर्यसमाज की मान्यताओ का ही दूसरा रूप हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस प्रकार के भव्य आयोजनो द्वारा देशभक्ति की भावनाए बच्चो मे और सामाजिक भावनाए आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ के प्रमुख प्रेरणादायक विचार है जिनके आधार पर शिक्षा योजनाए बनाई जाती हैं। उन्होने बच्चो को माता पिता की सेवा उनकी आज्ञा पालन और जीवन मे अनुशासन तथा सयम धारण करने के लिए प्रेरित किया।

इस समारोह मे दिल्ली आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभा पुरी ने किया। विभिन्न आर्यसमाजो के पदाधिकारियो के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध आर्य उद्योगपति श्री मुशी राम सेठी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त मे विशेष श्रेणियो मे उत्तीर्ण होने वाल छात्रो को छात्रवृत्तिया

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव जी २५ जनवरी को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन मे राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए। (बाए से दाए हैं) दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार सार्वदशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री चन्द्रदेव सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभापुरी। दूसरी तरफ विद्यालय के नन्हे मुन्ने बच्चे राष्ट्रीय गान गाते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव मन्त्रिणी श्रीमती शशिप्रभा आर्या तथा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य उपस्थित थे।

श्री विमल वधावन ने कहा कि भारत गणतन्त्र की रक्षा जिस प्रकार देश के अनुशासित सिपाही शस्त्रो के द्वारा करते हैं उसी प्रकार देश की रक्षा शास्त्र अर्थात बुद्धिबल के द्वारा कलम के प्रयोग से भी की जा सकती है। इस राष्ट्र कार्य मे प्रत्येक व्यक्ति अपना योगदान दे सकता है।

उ होने विद्यालय के बच्चो अभिभावको और शिक्षको से अनुरोध किया कि देश के प्रति अपने कर्त्तव्यो पर ध्यान देने के लिए स्वय भी तैयार रहे और दूसरो को भी तैयार रखे। अधिकारवाद झगडे और कलह का कारण है जबकि कर्त्तव्य पालन की भावना त्याग तथा तपस्या की प्रतीक है और इससे समाज मे शान्तिपूर्ण वातावरण बनाने मे सहायता मिलती है। विडम्बना है कि भारतीय सविधान मे नागरिको के मूल कर्त्तव्यो को प्रथम सत्ताईस वर्ष तक कोई स्थान नहीं दिया गया। १६७७ मे अनुच्छेद ५१ (क) को जोडकर नागरिको के मूल कर्त्तव्य लिखे गए परन्तु आज तक भी उनके

उत्पन्न करने के लिए आयोजको को धन्यवाद दिया। उन्होने बच्चो और अभिभावको को यह विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज के विद्यालयो मे शिक्षा ग्रहण करके कोई भी व्यक्ति धार्मिकता से अछूता नहीं रह सकता और समाज की बुराइया उसे छू भी नहीं सकतीं।

डा० महेश विद्यालकार ने उपस्थित जनता को प्रेरित करते हुए कहा कि आर्यसमाज के विद्यालय बच्चो को सस्कारवान बनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। सच्चाई ईमानदारी चरित्र निर्माण

प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव जी का शाल ओढाकर विशेष सम्मान किया गया। श्री चन्द्रदेव ने कहा कि दिल्ली की सभी शिक्षण सस्थाओ मे मुझे समन्वय करना पडता है और इस दायित्व का निर्वहन करते समय मैं यही प्रयास करता हू कि ऐसी योजनाए बने जिनसे शिक्षा के साथ साथ बच्चो का सामान्य ज्ञान तथा शारीरिक गतिविधियो के कार्यक्रम भी अवश्य चलते रहे।

इस गणतन्त्र दिवस समारोह का सचालन विद्यालय के चेयरमैन तथा

भी प्रदान की गई। ये छात्रवृत्तिया दिवगत आर्यजनो की स्मृति मे उनके परिजनो द्वारा प्रदान की गई।

आर्यसमाज अजमेर का वेद प्रचार सप्ताह धूम धाम से सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर का वेदप्रचार सप्ताह अत्यधिक हर्षोल्लास तथा धूम धाम के साथ सम्पन्न हुआ। इसमे यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ का ब्रह्मत्व आर्य जगत की सुप्रसिद्ध विदुषी आधुनिक गार्गी डा० निष्ठा विद्यालकार ने किया। इसके साथ साथ उनके वैदिक सिद्धान्तो से ओत प्रोत रोचक एव प्रेरणादायी प्रवचन हुए जिसकी अजमेर वासियो ने भूरि भूरि प्रशसा की।

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय के भी सुन्दर प्रवचन हुए। इसके साथ साथ उच्चकोटि के भजनोपदेशक श्री बेगराज आर्य तथा श्री सत्यपाल जी सरल के सुमधुर भजन एव प्रवचन हुए।

कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज के मन्त्री श्री वेदरत्न जी आर्य ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अजमेर के प्रसिद्ध सासद श्री रासा सिह रावत ने किया।

मन्त्री आर्यसमाज अजमेर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 3 2 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 31 जनवरी/1 फरवरी /2002

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वीकृत 'ओ३म्' का ही प्रयोग करे

समस्त आर्य समाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो तथा आर्य जनो स अपेक्षा की जाती है कि महर्षि द्वारा स्वीकार्य सस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध तथा वैज्ञानिक शब्द **ओ३म** का ही प्रयोग करे। अपने लैटर हैड कलैण्डर तथा जहा भी **ओ३म** शब्द के लिखने की आवश्यकता हो उसमे इसी शुद्ध शब्द **ओ३म** का ही प्रयोग करे। ऊट वाले ॐ का प्रचार तथा प्रसार न करे। — सम्पादक

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रिय पाठको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क ५०/— रुपये भिजवाने की कपा करे।

जिन सदस्यो का वार्षिक शुल्क २—३ वर्ष से प्राप्त नहीं हुआ है उनकी ग्राहक सख्या नीचे दी जा रही है कृपया अपनी ग्राहक सख्या से मिलान करे और १५०/— रुपये का मनिआर्डर शीघ्र भिजवाए। सहयोग क लिए धन्यवाद। — **सम्पादक**

ग्राहक सख्या — ८६४६ ८६८२ ८६६० ८७१८ ८७६६ ८९२५, ८९६१ ९१३४ ९१४१ ९१८९ ९१६६ ९५०१ ९५२६ ९५५४ ९५९७ ९७१२ ९७६९ ९७७४ ९८१९ ९८५५ ९९८७ १००५८ १०२०६ १०२१२ १०२५२ ११३९६ ११४०६ ११६२३ ११६४६ ११७०१ ११७६६ ११७९० ११९०३ ११९५७ १२०८४ १२०९८ १२१९९ १२२७३ १२२९४ १२३०३ १२३२३ १२५०५, १२५०९ १२५२७ १२५३९ १२५४५ १२५५५ १२६७६ १२७१३ १२७१४ १२७२७ १२७६४ १२७९७ १२८६० १२८६६ १२८७९ १२९१३ १२९३६ १२९७५, १२९८३ १३००५, १३१६३ १३१९७ १३२१२ १३२४४ १३२६४ १३३११

क्रमश

पुस्तक समीक्षा — वैदिक दर्शन एव सिद्धान्त

पृष्ठ २४५ मूल्य ९५ रुपये

लेखक प्रो० रामविचार एम०ए०

प्रकाशक विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द नई सडक दिल्ली

प्रस्तुत पुस्तक पढने से ज्ञात होता है कि स्वामी दर्शनानन्द की प्रश्नोत्तर शैली जो उन्होने उपनिषदो और दर्शनो में अपनाई है उसी की शैली सरलतम रखी है।

विषयानुसार ईश्वर के स्वरूप पर वेद की सार्थकता को प्रस्तुत कर आत्मा की सत्ता और स्वरूप पर गम्भीर विवेचन किया है। वर्ण आश्रम मोक्ष सृष्टि और आवागमन पर अच्छी समीक्षा प्रश्नोत्तर रूप मे की है।

धर्म शिक्षा का क्रम बच्चो मे सरलतम रूप से समझने मे रखा है— वेद पर शकाओ का निवारण कर्मफल पर सुलझे विचार आवागमन पर इस्लाम इसाइयत की आपत्तियो का निवारण वर्ण आश्रम का विवेचन कर जन्म परक विचार दिये है।

उपदेशक—विद्यार्थी और साधारण जनो के लिए भी वैदिक दर्शन पर सैद्धान्तिक विवेचन किया है।

प० रामचन्द्र देहलवी की व्याख्यान प्रश्नोत्तरी को पढे तो आपकी पुस्तक सही क्रान्ति का रूप प्रस्तुत करती है।

प्रो० रामविचार के पठन पाठन की शैली भी स्तुत्य है श्रोताओ मे बुद्धगम्य है विद्वानो मे पाण्डित्य की सुलझी हुई विधा दी है। प्रश्नोत्तर रूप मे प्रस्तुत इस पुस्तक मे अनेक विषयो का स्पष्टीकरण और समय समय पर उठने वाली शकाओ का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

प्रत्येक विद्वान चिन्तक एव विद्यार्थी व सर्वसाधारण के लिए उपयोगी पुस्तक है। लेखक सूझ बूझ वाले व प्रतिभाशाली विद्वान है उनकी प्रतिभा का प्रकटीकरण करने मे गोविन्दराम हासानन्द की प्रकाशन शैली उपयोगिता रखती है। प्रकाशन का लाभ पाठकगण उठाये इसी मे लेखक की विचारशैली की प्रतिमा भी निखरेगी।

— डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री मेघराज आर्यमुनि जी को मातृ शोक

आर्यसमाज सनवाड जिला उदयपुर राजस्थान के प्रधान श्री मेघराज आर्यमुनि की माता जी का स्वर्गवास १५ जनवरी २००२ को हो गया। जिनका पूर्ण वैदिक विधि से अन्त्येष्टि सस्कार डा० मोहनप्रकाश आर्य व सत्य प्रकाश आर्य ने करवाया। माता जी की आयु ९५ वर्ष की थी। उन्होने अपनी सात पीढियो को देखा। आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने उनकी आत्मा की शाति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। *— मन्त्री आर्यसमाज सनवाड उदयपुर*

जिसके हृदय मे दया है जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है जिसका शरीर परहित मे — हुआ है कलि भी उस नही बिगाड सकता।

मान-सम्मान के पीछे मार्गदर्शन की आकांक्षा

— खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारा सौभाग्य है कि आज सार्वदेशिक के प्रधान
वरिष्ठ उप प्रधान व मन्त्री हमारे बीच आए है। ✡✡✡
क्या हमे करना है क्या हम कर रहे है
हम सब आर्य जनो को यह बतलाने आए है।।

✡✡✡ *झगडे और मतभेद जितने भी है सभा और समाजो के*
अब हमे करना है उन्हे समाप्त।
सब मिलकर प्रेम से बैठे और करे चेष्टा सभी आर्य
निश्चित ही सफलता होगी हमे प्राप्त।।

आर्य समाज की समस्याए सुलझाते हुए
रखेगे हम राष्ट्रहित की समस्याओ का भी पूरा ध्यान। ✡✡✡
जैसे अब इतिहास पुनर्लेखन का प्रश्न आया
देगे सरकार को पूरा सहयोग जिससे बढेगा हमारा मान।।

✡✡✡ *देश की स्वतन्त्रता व समाज सुधार के लिए*
किया हमने ही बढ-चढकर काम फिर भी चाहा नहीं ईनाम।
इसीलिए हमारी छवि लोगो के दिलो मे है
आर्य समाज करता है देशधर्म का निस्वार्थ भाव से काम।।

पहले हम सबसे आगे रहते थे चाहे कोई भी होवे
देश धर्म समाज की सेवा व रक्षा का काम। ✡✡✡
बीच मे कुछ अपनी ही कमियो से आई हममे शिथिलता
जिससे घटा हमारा प्रभाव और सुनाम।।

✡✡✡ *वही छवि अब हम फिर लाएगे करके राष्ट्र*
समाज के हित के लिए निस्वार्थ सेवा भाव से काम।
जब तक हमारा गौरव नहीं लौटेगा तब तक हम प्रण करते हैं
नही करेगे तनिक भी आराम।।

देव दयानन्द की थी हार्दिक अभिलाषा और था सुनहरा स्वप्न
भारत ही नही बने पूरा विश्व आर्य विचार का। ✡✡✡
उसको साकार करने के लिए निवेदन है
अपने प्यारे नेताओ से जोर से आरम्भ करे कार्य वेद प्रचार का।।

✡✡✡ *स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम का बलिदान*
जो है हमारी आन व शान निरर्थक नहीं जाने देगे हम।
वेद पचार समाज सुधार व शुद्धि कार्य जो है
देश की उन्नति और समृद्धि के लिए अनिवार्य, पूर्ण करेंगे हम।।

आज तो सब आर्य बन्धु मिलकर
कर रहे है अपने नेताओ का सिर्फ औपचारिक ही मान। ✡✡✡
जब इनके नेतृत्व मे लौटेगा हमारा पुराना गौरव
तब करेगे इनका हृदय से भव्य सम्मान।।

✡✡✡ *"खुशहाल" करता है यह आह्वान जुट जाओ सब आर्यो*
निस्वार्थ त्याग और सेवा भाव से।
निश्चित ही लौटेगा हमारा पुराना स्वाभिमान जो खो दिया था
हमने अपने ही प्रेम व सगठन के अभाव से।।

१८०, महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से **प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाईट http //www whereisgod com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ४२ | १० फरवरी से १६ फरवरी २००२ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ | सम्वत २०५८ | मा० कृ० १

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डाल

२५ ईसाइयों का स्वेच्छा से वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशानुसार धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत आर्यसमाज सिकन्दाबाद आन्ध्र प्रदेश के महामत्री श्री आर० रामचन्द्र आर्य की देख रेख मे गत दो वर्षो स आर्यसमाज के प्रचारक एव शुद्धिकरण के प्रमुख श्री डा० नदनम सत्यम तथा श्री एन० अरविन्द मोहन पूर्व नाम एन० योहान के प्रचार कार्य से आध्र प्रदेश के कडपा जिला दुवूर बदवेल एव पुलिवेदुला मण्डल प्रातो के सैकडो इसाई भाइयो को शुद्धि सस्कारो के द्वारा वैदिक (हिन्दू) धर्म की दीक्षा दिलाई गई।

आध्र प्रदेश कडपा जिला के दलित वर्ग के अनक परिवारो ने सम्बन्धित तक पूर्वजो ने सामाजिक शोषण एव ऊच नीच के भेदभावो से पीडित होकर ईसाइयत को ग्रहण कर लिया था। आर्यसमाज के प्रचार से उस प्रात के पढे लिखे एव अध्यापक वर्गो मे एक नये प्रकार से दिशा निर्देश एव विश्वास प्राप्त होने लगा है।

इसी श्रृखला के अन्तर्गत दलित वर्ग के कुछ ईसाई परिवारो के सदस्यो को आर्यसमाज द्वारा शुद्धिसस्कार एव वैदिक धर्म दीक्षा से हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराने हेतु श्री वाई एस विवेकानन्द रेडडी लोकसभा सदस्य (आन्ध्र प्रदेश कडपा जिला निर्वाचन क्षेत्र) ने मत्री आर्यसमाज श्री [illegible] रामचन्द्र आर्य से फोन पर बातचीत की तथा कुछ इसाई भाइयो को वैदिक (हिन्दू) धर्म मे प्रवेश कराने हेतु एक सिफारिश पत्र भी भेजा। इस बात का ध्यान रहे कि आध्र प्रदेश शासन सभा के प्रतिपक्ष नता श्री वाई० एस० राजशेखर रेडडी कडपा जिला पुलिवेदुला निर्वाचन क्षेत्र के शासन सभा सदस्य तथा उनके भ्राता लोकसभा सदस्य श्री वाई० एस० विवकानन्द रडडी उक्त दानो भाइयो के परिवार स्वयमेव ईसाइयत से प्रभावित है।

आर्यसमाज सिकन्दाबाद मे दिनाक २७ जनवरी २००२ रविवार को प्रात १० बजे चार दम्पतियो सहित २५ ईसाइयो ने स्वेच्छा से वैदिक (हिन्दू) धर्म म प्रवश लिया। उक्त ईसाई भाइया ने आवेद पत्र तथा अफिडेविट (प्रमाण पत्र) म आर्यसमाज के समक्ष प्रषित किए।

इस समारोह म श्रीमान क्रातिकुम जी कारटकर श्री जी० कष्णाराव उपमत्री सार्वदशिक आय प्रतिनिधि स नई दिल्ली वेदभारती सस्थान अधिष्ठाता श्री क० बी० सामयाजु आर्यसमाज के प्रधान श्री पी० रामेर जी श्री अम्बादार राव पूर्व शासन स सदस्य आदि नगर द्वय के गणमान्य अ नेता तथा करीमनगर निजामाबाद वरग और रगारडडी जिलो के आर्यसमाज प्रतिष्ठित प्रतिनिधि तथा कायकर्त्ता ब उत्साह के साथ सम्मिलित हुए

२५ ईसाइयों [illegible] प्रवेश का एक दृश्य। आर्यसमाज सिकन्दराबाद मे व [illegible] का शुद्धि सस्कार करते हुए आर्य पुरोहित श्री [illegible] गोवर्धन आर्य।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजो के सूचनार्थ

मध्य प्रदेश फर्म्स सस्थाओ के रजिस्ट्रार कार्यालय भोपाल ने एक पत्र द्वारा श्री गौरी शकर कौशल जी को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भगवान दास अग्रवाल को मन्त्री एव श्री माधवी शरण अग्रवाल जी को कोषाध्यक्ष सहित ३० सदस्यो वाली सभा को मान्यता दी है जिनका चुनाव १५ ७-२००१ को सम्पन्न हुआ था। यह चुनाव उच्च न्यायालय जबलपुर के आदेशानुसार कराया गया था। रजिस्ट्रार के उक्त पत्र मे श्री सैवाराम पटेल को समस्त रिकार्ड आदि इन अधिकारियों को सौंपने का आदेश दिया है। ऐसा न करने पर उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की भी चेतावनी दी गई है।

रजिस्ट्रार कार्यालय द्वारा श्री गौरी शकर कौशल जी तथा उनके प्रधानत्व मे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की गठित अन्तरग सभा को मान्यता दी गई है। यही सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५, दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली से सम्बद्ध है।

कन्या, वैचारिक क्रान्ति की प्रणेता

माता प्रेमलता शास्त्री द्वारा हाथरस की संस्थाओं का व्यापक दौरा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के अतर्गत सचालित मातृ छाया साधना केन्द्र गुरुकुल आश्रम आगरा रोड हाथरस मे दिनाक १३-१ २००२ व १४ १ २००२ को मकर सक्रान्ति के पावन पर्व पर आसाम अरुणाचल मध्य प्रदेश मिजोरम बिहार के नन्हे नन्हे ब्रह्मचारियो द्वारा अत्यन्त मनोहर एव आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सुश्री कमला जी अधिष्ठात्री – "दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस" के ब्रह्मत्व मे बृहद यज्ञ के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलता खन्ना एव श्रीमती ईश्वर देवी मत्री रही कार्यक्रम की सयोजिका कुमारी रश्मि आर्य थी तथा मच सचालन कुमारी वर्षा आर्या ने किया।

प्रान्त प्रान्त से आये ब्रह्मचारियो द्वारा देश भक्ति और भारतीय सस्कृति एव ईश्वर भक्ति के गीतों एव नाटको द्वारा समा बाध दिया गया। माता प्रेमलता बच्चो के कार्यक्रमो को देखकर अति प्रसन्न हुई और बच्चो को पारितोषिक दिए गए। प्रसन्न भी क्यो न होतीं ये सब उन्ही की मेहनत एव पुरुषार्थ का फल है माता जी के आने का समाचार सुनकर बच्चे विशेषकर मध्य प्रदेश आसाम और नागालैण्ड के बच्चे बहुत प्रसन्न थ और माता जी को मिलने की तैयारिया कर रहे थे मातृछाया की प्रधानाचार्या श्रीमती सतोष शर्मा ने बताया कि ये विभिन्न प्रान्तो के बच्चे जो हिन्दी बिल्कुल नही जानते थे वे आज सध्या एव वेदपाठ करते हैं हमे इन बच्चो पर गर्व है मातृछाया के सचालक श्री नवल सिह चौधरी जो दिन रात बच्चो को सस्कारित करने मे जुटे हुए है उनकी कल्पना है कि इन बच्चो को भारतीय सस्कृति के प्रहरी बनाकर इनके प्रान्तो मे वापिस भेजूगा

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

स्व० राजेश्वर जी के प्रति आत्मिक सन्देश

स्व० श्री राजेश्वर जी से मेरा सम्पर्क सर्वप्रथम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे ही हुआ था। पहली मुलाकात मे ही हमारा परस्पर स्नेह पिता पुत्र के तुल्य हो गया था। सभा के तत्कालीन प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने राजेश्वर जी के चले जाने के बाद मुझे उनके बारे मे बताते हुए कहा कि इस व्यक्ति को देखकर प्रत्यक्षत गऊमाता जैसा भोलापन दिखायी देता है और वार्तालाप से इनके अन्दर हर समय आर्यसमाज के कार्यो को फैलाने की एक विचित्र अग्नि प्रचण्ड रूप मे दिखाई देती है। पहली मुलाकात से उत्पन्न स्नेह निरन्तर बढता ही गया। यहा तक कि जब राजेश्वर जी ने अपने पारिवारिक सदस्यो को लेकर जब एक ट्रस्ट का गठन किया तो वे पुन सभा कार्यालय मे हमे मिलने आए। स्वामी जी से आग्रहपूर्वक उन्होने मेरे नाम की स्वीकृति मागी और मुझे अपने पारिवारिक सदस्यो के साथ उस ट्रस्ट की गतिविधियो की योजना बनाने मे भागीदार होने का सौभाग्य प्रदान किया।

स्व० राजेश्वर जी का सम्बन्ध आर्यसमाज के बहुत पुराने समर्पित आर्य नेताओ / प्रचारको से भी रहा विशेष रूप से पडित रामचन्द्र देहलवी जी एव बुद्धदेव विद्यालकार जी के गुण वे अकसर गाया करते थे। राजेश्वर जी कई अन्य हिन्दूवादी सगठनो से भी जुडे हुए थे वे विश्वहिन्दू परिषद के भी प्रमुख कर्णधार थे परन्तु उनके सात्विक हृदय में सदैव महर्षि दयानन्द सरस्वती और वैदिक सिद्धान्तों की प्रेरणा सर्वतोमुखी रहा करती थी।

जनसख्या नियन्त्रण आर शुद्धि आन्दोलन के तो वे विशेषज्ञ प्रतीत होते थे। उनकी अपेक्षा थी कि आर्यसमाज के साथ साथ समस्त राष्ट्रवादी सगठनो को एव बडे बडे नेताओ को जनसख्या नियन्त्रण के ठोस उपायो की तरफ ध्यान देना चाहिए। उन्होने १९७८ मे जनता पार्टी के शासन के दौरान लोकसभा के सदस्यो को इस मुद्दे पर एकजुट करने का तन मन धन से पुरजोर प्रयास किया। परन्तु राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव से उनके प्रयास आजतक भी सफलीभूत न हो सके।

स्व० राजेश्वर जी का समस्त आर्यों के लिए एक विशेष सन्देश था जोकि न तो अव्यवहारिक है और न ही इसमे किसी प्रकार की कठिनाई है। उनकी इच्छा थी कि समस्त आर्य पुरुषो को अपने वातावरण तथा स्थानीय क्षेत्रो के दायरे मे आने वाले दलित वर्गों के उत्थान के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसके लिए झुग्गी झोपडी बस्तिया तथा अन्य पिछडी कालोनियो को विशेष कार्यक्षेत्र बनाना चाहिए। इन क्षेत्रो मे यज्ञ प्रवचन आदि का आयोजन तथा प्रसाद वितरण और सामूहिक लगर द्वारा मेल मिलाप की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए।

राजेश्वर जी के भौतिक शरीरान्त के बावजूद भी उनकी पवित्र एव राष्ट्रवादी आत्मा हमें नियमित रूप से प्रेरित करती रहेगी। मुझे यह देखकर परम सन्तोष है कि उनके बनाए ट्रस्टों आदि का सचालन उनके बाद भी उसी भावना से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता पूर्ण निष्ठा एव लगन के साथ कर रही हैं। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि माता जी को पूर्ण स्वास्थ्य एव दीर्घायु प्राप्त हो।

स्व० राजेश्वर जी की पवित्रात्मा को हृदय की गहराई से नमन।

स्व० श्री राजेश्वर जी की स्मृति मे उनके जीवन पर एक सक्षिप्त लेख यहा प्रस्तुत किया जा रहा है जिसे श्रीमती शकुन्तला आर्या द्वारा लिखित एक पुस्तक से लिया गया है जो राजेश्वर जी के जीवन पर उनके जीवन काल मे ही लिखी गई थी।

विमल वधावन एडवोकेट

परावर्तन (शुद्धि) के महान प्रेरक

सक्षिप्त जीवन वृत

जिला जेहलम के अन्तर्गत तहसील पिण्ड दादन खा ज्वालापुर कीकना (अब पाकिस्तान मे) २५ फरवरी १९१६ को पिता लाला भगवान दास जी और

स्व० श्री राजेश्वर जी

> मै आपको कहीं शारीरिक बल प्रयोग के लिए नहीं कहता मै आपसे और कुछ नहीं मागता मै मागता हू परावर्तन कार्य करने के लिए केवल आपका गपशप का खाली समय बदले मे मै आश्वस्त करता हू आपकी स्पृहणीय मानसिक शान्ति आनन्द और आरोग्यता आपकी प्राकृतिक गति से अधिक द्रुत भौतिक उन्नति और भारत की अखण्डता
>
> — राजेश्वर

सौभाग्यशालिनी मा श्रीमती लाजवन्ती जी के गृह मे राजेश्वर जी का जन्म हुआ। राजेश्वर जी पाच भाई थे इनसे बडे लुभाया राम जी अग्रज बाकी इनके २ वर्ष छोटे बसी लाल जी उनसे ३ वर्ष छोटे सोहन लाल जी तथा उनसे ४ वर्ष छोटे वेद प्रकाश जी हैं।

विद्यार्थी जीवन

राजेश्वर जी प्राथमिक शिक्षा के दौरान अपने गाव मे हर कक्षा मे सदा ही प्रथम रहते थे। सन १९२८ मे राजेश्वर जी के बड भाई श्री लुभाया राम जी दिल्ली मे सर्विस करते थे सारे परिवार को दिल्ली ले आए। राजेश्वर जी ने १९३४ म दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कालेज से बी०एस०सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की और कालेज म प्रथम आए। सन १९३७ मे राजेश्वर जी रेलवे की अखिल भारतीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा म चौथे स्थान पर आए और १९३७ मे रेलवे मे लग गए। फिर १९३८ मे पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा देकर Director General of Supplies and Disposals मे नौकरी करने लगे।

गृहस्थाश्रम प्रवेश

राष्ट्र और समाज के समक्ष अनगिनत चुनौतियो को देखकर राजेश्वर जी विवाह के बन्धन मे नहीं आना चाहते थे। उन्होने सोचा कि गृहस्थ के जजालो मे फसे रहने से शुद्धि (परावर्तन) छुआछूत तथा जन्मना जातपात को समाप्त करके गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था को गतिशील करना सम्भव नहीं और इन तीनो श्रेष्ठ कार्यों के बिना हिन्दू जीवित नहीं रह सकते। उनका विचार था कि अविवाहित रह कर वह कुछ अधिक कार्य कर सकते है।

पूज्य पिता लाला भगवान दास जी ने एक अकाटय वाक्य समझाते हुए कह दिया कि जाति व धर्म के हितार्थ कार्य तुम्हारे विवाहोपरान्त भी किए जा सकते हैं। तुम्हे कोई रुकावट नहीं आएगी अत विवाह आवश्यक है। आखिरकार नवयुवक राजेश्वर को पिता के आदेश के आगे झुकना ही पडा। सौभाग्य से उन्हे सुशील और आज्ञाकारिणी पत्नि श्रीमती चन्द्रकान्ता के रूप में प्राप्त हुई।

श्रीमती चन्द्रकान्ता जी सेवा और कर्त्तव्य परायणता की प्रतिमूर्ति है। राजेश्वर जी क सभी सामाजिक कार्यो म सदा प्रेरिका और सहयोगी रही है और घर मे आन वाल अतिथिय का सदा सहृदयतापूर्वक सत्कार करती हैं। राजेश्वर जी के साथ उनक सुपुत्र राजकुमार जी तथा सुपुत्री सौ० ललिता जी भी सामाजिक सेवा कार्यो मे उन्ही का अनुकरण करन के लिए वचनबद्ध है। सभी धार्मिक और परोपकार वृत्ति वाले दानी है।

सेठ रामकृष्ण डालमिया जी से सम्पर्क

सन १९४६ म राजश्वर जी रामकृष्ण डालमिया जी की सर्विस म आ गए। सेठ जी उनकी कार्यकुशलता से इतने प्रभावित हुए कि उन्हे चीफ एग्जेक्टिव बना दिया। राजेश्वर जी १९८० तक सेठ जी के काम से जुडे रहे।

हिन्दू समाज की सेवा राजेश्वर जी के जीवन का उद्देश्य था। सेठ डालमिया जी क साथ रहते हुए वेतन तो बहुत अच्छा मिलता था परन्तु समयाभाव के कारण अपने उद्देश्य के प्रति अधिक ध्यान न दे पाते थे और इसी कारण सदा एक अपराध भाव इनके मन मे रहता था अन्तत १५ मार्च १९९६ को इन्होने डालमिया जी के कारोबार से अपने को मुक्त कर लिया। इस सेवाकाल के मध्य सेठ डालमिया जी ने एक प्रमाण पत्र दिनाक ४ ४ १९९६ और दूसरा डालमिया दादरी सीमेंट लिमिटेड ने एक प्रशसात्मक प्रमाण पत्र दिनाक ६ ४ १९९६ का दिया।

धार्मिक एव सामाजिक सस्थानो के पदाधिकारी इत्यादि

सन १९३७ मे जब राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ दिल्ली प्रान्त के प्रमुख प्रचारक बसन्त राव ओक जी ने हिन्दू महासभा भवन म सघ की शाखा प्रारम्भ की तो राजेश्वर जी अपन दो छोटे भाइयो सहित स्वय सेवक बन गए। सन १९७१ मे राजेश्वर जी वि०हि०प० के प्रन्यासी बन गए फिर १९७१ मे ही आप इन्द्रप्रस्थ वि०हि०प० के उपाध्यक्ष बने फिर कार्यकारी अध्यक्ष बने और १९७२ मे अध्यक्ष बने और १९९३ तक अध्यक्ष रहे। वे १९९३ से अखिल भारतीय जनसेवा सस्था के अध्यक्ष चले आ रहे थे। १८ वर्ष तक आर०एस०एस० के दक्षिण दिल्ली के विभाग सघचालक रहे।

— शेष भाग पृष्ठ १० पर

दीप से दीप जलाते चलो

– जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा

आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर मे रविवार की प्रात कालीन वेला म श्री विमल वधावन को आध्यात्मिक प्रवचनो के लिए आमन्त्रित किया गया। उनके साथ ही मुझे भी वहा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री विमल वधावन का उद्बोधन प्रारम्भ हुआ बीच मे सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा एव उप प्रधान श्री यशपाल एव हरिद्वार जिला उप सभा के मन्त्री श्री देवराज भी पधारे। यज्ञशाला की विशालता उसे प्रवचन हाल की तरह ही प्रस्तुत कर रही थी। वानप्रस्थ आश्रम के सब सदस्य प्रात साय नित्य यज्ञ प्रवचन आदि का लाभ उठाते है।

श्री विमल वधावन ने सर्वप्रथम इस आश्रम के सस्थापक महात्मा नारायण स्वामी जी तथा गुरुकुल कागडी के सस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी को अत्यन्त भावुक रूप मे स्मरण किया। ये दोनो महान आत्माए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित कर चुकी है।

शब्द ब्रह्म रूप है शब्द नष्ट नहीं होता। शब्दो का प्रभाव सदा सदा बना रहता है। इसीलिए जब हम महान पुरुषो की कर्म स्थली पर पहुचते है तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनके शब्द उनके सस्कार उनके विचार उनकी शक्ति आज भी हमे प्रेरित कर रही है। उन प्रेरणाओ को प्राप्त करने का एक साधारण नियम भी है। हम जब भी एसे स्थलो पर उपस्थित हो हमारे मन मे उच्च कोटि के श्रद्धा भाव होने चाहिए उन्होने कहा कि मै जब भी हरिद्वार आता हू, वानप्रस्थ आश्रम मे आए बिना मेरी यात्रा ही अधूरी सी लगती हे।

शब्द नष्ट नही होता इस का प्रमाण है टेपरिकार्ड जो शब्दो को भी कई वर्षो तक सुरक्षित रखने की एक वैज्ञानिक तकनीक है। यह तकनीक विगत कुछ दशको से ही अस्तित्व मे आई है। इससे बढकर एक ऐसी तकनीक की भी खोज चल रही है जो भूतकाल मे बोले गए शब्दो को भी रिकार्ड कर के प्रस्तुत कर सकेगी।

दुनिया मे जितनी भी वैज्ञानिक प्रगति है वह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक सिद्धान्तो पर आधारित है सिद्धान्त शब्द अपने आप म वैज्ञानिक कसौटी का रूप है सिद्ध+अन्त। सिद्ध से अभिप्राय है – वह विचार जो परखा जा चुका है प्रमाणो प्रयोगो से साबित हो चुका है (certain)। अन्त का अर्थ है अन्तिम (Final) जो विचार साबित होने के बाद अन्तिम रूप मे जनता के सामने आता है वैज्ञानिक लोग उसे ही सही प्रयोग मानते हे वैदिक सिद्धान्त इस प्रकार वैज्ञानिक तकनीके ही है।

हम जब भी वेदिक सिद्धान्तो की चर्चा सुनते पढते या चिन्तन करते है तो इसमे हर प्रकार का विचार शामिल नही होता। वैदिक सिद्धान्त वही है जो विज्ञान की दोनो कसौटियो – सिद्ध (Certain) और अन्त (Final) पर खरे उतरे। विज्ञान और आध्यात्म के सुन्दर समन्वय को प्रस्तुत करते हुए श्री वधावन ने अब श्रोताओ को प्रत्येक व्यक्ति के अपने अपने मूल कर्त्तव्यो का दर्शन कराने के उद्देश्य से एक प्रश्न रखा –

क्या वैदिक सिद्धान्त आध्यात्मिक तप ईश्वर सकीर्तन यज्ञ सत्सग स्वाध्याय आदि ऐसे कार्य है जिन्हे जीवन के उस भाग म ही किया जाता हे जिसे वृद्धावस्था या वानप्रस्थ अवस्था या सन्यास अवस्था कहत है ?

स्वय ही इस प्रश्न के उत्तर म उन्होने व्याख्यान को जारी रखते हुए कहा कि ये सब कार्य धर्म के मार्ग है जिनके मूल मे ईश्वर प्राणिधान अर्थात सब कुछ ईश्वर को समर्पित करने की भावना होती है सामान्यत विचार की इतनी उच्चता धर्म के प्रति युवावस्था मे नही आ पाती युवावस्था मे मनुष्य सत्यवादी होता है चरित्रवान होता है समाज सेवा के कार्यो मे भी बढ चढ कर हिस्सा लेता है परन्तु वह समस्त कार्य करते हुए मे अर्थात अह से जुडा रहता है। अह रूपी डाल से उड कर जब आत्मा रूपी पक्षी स्वय को ईश्वर अर्पित करके सब कार्य करता है तो वह सत्यवादी चरित्रवान सामाजिक आदि की श्रेष्ठ श्रेणियो से भी उच्च उठ कर धार्मिक श्रेणी मे आ बैठता है।

जो महानुभाव सदगुणी तो है परन्तु इश्वर प्राणिधान रूपी धार्मिकता के स्तर पर नही पहुच पाए उनकी अवस्था उस दीये के समान है जिसमे तेल भी भरा पडा है बाती भी तैयार है परन्तु लौ प्रज्ज्वलित करने की देर है। आयसमाज की हजारो शाखाए ऐसे दीये तैयार कर रही ह जिनमे सदगुणो चरित्र और सामाजिक तप का तल और बाती भरा पडा है। उस दीय की लौ जगाने का कार्य उन धार्मिक महानुभावो को ही करना है जिनके अन्दर धार्मिकता का दिया पहले से जल रहा है यह काय वानप्रस्थ आश्रम के सदस्य अच्छे प्रकार से कर सकते है परन्तु इसके लिए उन्हे स्वय उस तैयार दीये के पास जाना होगा जलता हुआ दिया अपने स्थान पर ही बैठा रहे तो वह कर्त्तव्य का पालन अधिक मात्रा मे नही कर पाएगा।

इस सैद्धान्तिक उदबोधन को सुनकर मन ऐसा महसूस कर रहा था जैसे ज्ञान की गगा मे स्नान हो रहा हो।

अन्त मे सार्वदेशिक सभा के समस्त अधिकारियो का पुष्प गुच्छ भट करक स्वागत किया गया। वानप्रस्थ आश्रम के प्रधान श्री आनन्द अभिलाषी (पूव नाम श्री सुभाष) तथा मन्त्री श्री यशवन्त मलिक न धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करत हुए अप्रैल २५ से २८ तक अन्तार्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मलन की सक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की और आश्रम की ओर से हर सम्भव सहयाग का आश्वासन दिया।

इस सत्सग के उपरान्त हम सब लोग श्री देवराज जी के साथ राधडवाला के लिए प्रस्थान कर गए जो हरिद्वार से लगभग ३० कि०मी० दूर है इस छोटे से गाव म हरिद्वार जिला उप सभा का सम्मलन चल रहा था।

दयानन्द मठ दीनानगर मे लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव सम्पन्न दिवस तथा चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ

दयानन्द मठ की पवित्र तप स्थली मे पूज्यपाद गुरुदेव १०१ वर्षीय सतशिरोमणी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सानिध्य मे २६ जनवरी सन २००२ सोमवार को पूज्यपाद आचार्य स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता मे लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिवस बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और उनकी पुण्य स्मृति पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ किया। इस यज्ञ मे शास्त्री यतीन्द्र कुमार (दयानन्द महाविद्यालय दीनानगर) की नियुक्ति ब्रह्मा के रूप मे की गई। इस यज्ञ का शुभारम्भ निम्न यज्ञमानो की उपस्थिति मे हुआ शास्त्री शेखर चन्द्र सह पत्नी मनोरजन सह पत्नी भारतेन्दू सहपत्नी तथा धर्मइन्दु गुप्ता सह पत्नी राधेश्याम सह पत्नी और डा० श्री हरिदास जी का परिवार और अरविन्द जी सह पत्नी।

यज्ञ के पश्चात स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन मे कहा –

ईश्वर ने सारा ससार यज्ञरूप बनाया है ससार की प्रत्येक वस्तु इस यज्ञ मे अपना भाग दे रही है। इस यज्ञ को हवा पानी आदि पच तत्व चला रहे है। वद म कहा है इजाना स्वर्गयन्ति लोकम अर्थात जो यज्ञ करते हैं वे स्वर्गलाक को प्राप्त करत है। यजुर्वेद मे एक मन्त्र मे कहा गया है – आयुर्यज्ञेन कल्पताम अथात यह जीवन यज्ञ के द्वारा सफल होता है यज्ञ स्वर्गस्य सोमपानम ससार मे स्वग जाने क जो उपाय हे वह केवल यज्ञ कर्म है इसे स्वग को प्राप्त करने की सीढी कहा गया है।

यह यज्ञ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की स्मृति मे आरम्भ किया गया है। स्वामी जी बडे कर्मठ थे। उनके कई शिष्य थे। प० रुचिराम जी को उन्होने प्रचार के लिए अरब भेजा और कईयो को वर्मा भेजा। इनका जन्म लुधियाना जिला के मोही ग्राम मे हुआ। इस जिले मे लाला लाजपतराय आदि अनेक आर्य नताओ ने जन्म लिया। इनके पिता जी का नाम श्री भगवान सिह और उनकी माता का नाम केरसिह था। आज ये सत स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के नाम से विख्यात हुए। हैदराबाद का सत्याग्रह भी इन्होने जीता था। स्वामी जी महाराज मारीशास अफ्रीका और कई मुल्को म गए। आज उनके जन्म दिवस पर सभी को बधाई। हम सब उनके पद चिन्हो पर चलकर धर्म के कार्य कर।

इसके पश्चात दीनानगर की सभी आर्य शिक्षा सस्थाओं न आए हुए छात्र छात्राओं द्वारा लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन पर अपन अपने विचारो से प्रकाश डाला गया अन्त मे आचार्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती न अपने सम्बोधन मे दूर दराज क्षत्रो स आए हुए अतिथियो का धन्यवाद किया और बच्चो को पुरस्कार वितरित किए।

अन्त मे सक्षप मे कहा कि यह चतुर्वेद पारायण यज्ञ अढाई महीने लगातार प्रात साय चलगा इसकी पूर्णाहुति वैशाखी के दिन गुरुदेव स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्म दिवस पर हागी तब तक इस यज्ञ मे भजनोपदेशक तथा विद्वाना द्वारा निरन्तर प्रवचन होत रहेगे। इसके बाद ऋषि लगर के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

– ब्र० रामदास आर्य दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब)

धर्म शहीद बाल हकीकत राय और बसन्त पंचमी

– प० नन्दलाल निर्भय पत्रकार

हमारा प्यारा आर्यवत (भारत वर्ष) ईश्वर भक्त धर्मात्माओ वीर शहीदो की पावन भूमि है। जिन वीरो न देश धर्म मानवता की रक्षा मे अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्ही वीरो मे से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मोहम्मद शाह रगीला के शासनकाल म बसन्त पचमी के दिन सन १७३४ ई० मे हुआ था। उसकी याद मे अभी भी आर्यसमाज तथा अन्य धर्मिक सस्थाए बसन्त पचमी क दिन शहीद दिवस धूमधाम स मनाती है।

हकीकत राय का जन्म सन १७१६ ई० मे सियालकोट पूर्व पजाब (पाकिस्तान) मे हुआ था। उसक पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कारा देवी था। बाल विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानता वश हकीकत राय का विवाह सन १७३२ ई० म बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया था। हकीकत राय क माता पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थ इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु मे सियालकोट के एक मदरसे मे (पाठशाला) मे प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उस स बेहद प्यार करते थ। यह दखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईर्ष्या करते थ।

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चो ने हुडदग मचाना शुरू कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हे ऐसा करने से रोका तो उन्होने हकीकत राय को गालिया दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकत राय ने उन्हे सारा किस्सा सुना दिया। मोलवी साहिब ने हकीकत राय को पुचकार कर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चो को दण्डित किया। मुसलमान बच्चो ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालिया देने और मौलवी साहिब पर हकीकत राय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनो की शिकायत की। उन दिनो काजियो का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घाषणा कर दी कि अगर हकीकत राय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौप दिया। अमीर बेग एक शरीफ आदमी था उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चो का झगडा है इसे ज्यादा बढाना समझदारी नही है किन्तु काजी नही माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीर बेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सफेद खान की अदालत मे भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओ को साथ लेकर लाहौर पहुचे ओर नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढा और सुना। दोनो पक्षो की बाते सुनकर तथा हकीकत राय की सुन्दरता कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा।

'बाल हकीकत राय ! मान तू, बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन, जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी, के सग निकाह करा दूगा।
अपनी सारी दौलत का मै, मालिक तुझे बना दूगा।।
रख मेरा विश्वास लाडले, बैठा मौज उडाएगा।
इस सूबे का हर नर नारी, तेरा हुक्म बजाएगा।।
सोच समझ ले बेटा मन मे, बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।"

नवाब की बाते सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता पूर्वक नवाब से पूछा – अय नवाब साहिब आप मुझे पहले एक बात बता दो यदि मै मुसलमान बन जाऊ तो मै क्भी मरूगा तो नही ? उन काजी और मौलवियो से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे ? नवाब ने सिर नीचा करके कहा – हकीकतराय ससार मे जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है मै भी मरूगा तू भी मरेगा और काजी मौलवी भी जरूर मरेगे। बटा मै पुत्रहीन हू अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जाएगा और जीवन भर मौज उडाएगा। अरे हकीकत राय अब तू ठीक तरह साच–समझकर उत्तर दे बेटा।

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकत राय मुस्कारते हुए बोला –

यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनिया में आता है।
वह कर्मो का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोरनर्क मे जाएगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मै राम कृष्ण का वशज हू, मै वेदिक धर्म निभाऊगा।
लालच के चक्कर में फसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊगा।।"

हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया। और हकीकत राय पर रौब जमाते हुए बोला –

'तू कान खोलकर सुन लडके, मैं अब जल्लाद बुलाऊगा।
मै तेग दुधारी के द्वारा तेरे सिर को कटवाऊगा।।
गुस्ताक बडा है तू लडके, मैने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा ले बात मान सुख पाएगा।
छोटी सी उम्र मे तू पगले, वृथा ही मारा जाएगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बाते सुनी तो गरजते हुए बोला –

'तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा तन नश्वर है, वेद, शास्त्र दर्शाते है।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग मे पूजे जाते है।।
मैं साफ बताता हू पापी, तू घोर नर्क मे जाएगा।
इस दुनिया का हर नर नारी, अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन, कभी न खाली जाएगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरो की गाथा गाएगा।।
धर्मवीर, बलवानो की गाथा नर नारी गाते है।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते है।।

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा – अर भाई जल्लाद ! तू अपना फर्ज पूराकर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कही मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए। जल्लाद ने अपने आसुओ को पोछकर तलवार को उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढक गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक ससार मे ऊचा कर दिया। जब तक सूरज चाद सितारे और पृथ्वी रहेगी यह ससार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनो ! कुछ लोगो का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहा के शासनकाल मे हुआ था तथा शाहजहा ने न्याय करते हुए नवाब और काजियो मौलवियो को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह कथन सत्य से कोसो दूर एवम निराधार है। शाहजहा के पुत्र औरगजेब की मृत्यु सन १७०७ ई० मे हुइ थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन १७३४ ई० मे हुआ था फिर उस समय शाहजहा कहा से आ गया ? वास्तव मे यह मुसलमान शासको की चाल है। हमे विधर्मी लोगो के षडयन्त्रो से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मौहम्मद शाह रगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतो के साथ दिल्ली के लालकिले मे नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पिये हुए जनाने कपडो मे गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारो स्त्रियो को अपने सैनिको मे बाट दिया था तथा तख्ते ताउस को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यो ! आज भारत मे छुआछात ऊँच नीच जाति पाति का बोलबाला है। उग्रवाद आतकवाद बढ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड मे लिप्त है। विधर्मी लोग रात दीन भारत की गरीब जनता को ईसाई मुसलमान बनाने मे लगे हुए है। धर्म के नाम पर पशु पक्षियो की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खडे है। ऐसे घोर सकट मे भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त धर्मात्मा देश भक्त युवक–युवतियो की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त मे यही प्रार्थना है –

हे भगवान दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत मा की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे, भारत मे पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी, आन बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा नगा आर्यवर्त्त मे, कोई कहीं नजर ना आए।।

– ग्राम व डाकघर बहीन, तहसील, हथीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

अफगानिस्तान भी कभी आर्याना था

– वेदप्रताप वैदिक

कुछ पश्चिमी विद्वानो ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि अफगान लोग यहूदियो की सतान है और मुस्लिम इतिहासकारो का कहना है कि अरब देशो से आकर वे इस इलाके मे बस गए। लेकिन प्राचीन ग्रन्थो मे मिलने वाले अन्तर्साक्ष्यो तथा शिलालेखो, मूर्तियो, सिक्को, खण्डहरो, बर्तनो, आभूषणो आदि के बहिर्साक्ष्य के आधार पर अकाट्य रूप से माना जा सकता है कि अफगान लोग मध्य एशिया के मूल निवासी है।

आज अफगानिस्तान और इस्लाम एक दूसरे के पर्याय बन गए है इसमे शक नही लेकिन यह भी सत्य है कि वह देश जितने समय से इस्लामी है उससे कई गुना समय तक वह गैर इस्लामी रह चुका है। इस्लाम तो अभी एक हजार साल पहले ही अफगानिस्तान पहुचा। उसके कई हजार साल पहले तक वह आर्यो बौद्धो और हिन्दुओ का देश रहा है। धृतराष्ट्र की पत्नी गाधारी महान सस्कृत वैयाकरण आचार्य पाणिनी और गुरु गोरखनाथ पठान ही थे। जब पहली बार मैने अफगान लडको के नाम कनिष्क और हुविष्क तथा लडकियो के नाम वेदा और अवेस्ता सुने तो मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। भारत के पजाबियो राजपूतो और अग्रवालो के गोत्र नाम अब भी अनेक पठान कबीलो मे ज्यो के त्यो मिल जाते है। मगल स्थानकजई कक्कर सीकरी सूरी बहल बामी उष्ट्राना खरोटी आदि गोत्र पठानो के नामो के साथ जुड देखकर कौन चकित नही रह जाएगा ? अफगानिस्तान की हवाई सवा का नाम आर्याना है और सरकारी होटलो की श्रृखला का नाम भी आर्याना है। अफगानिस्तान की इतिहास प्रसिद्ध की प्रतिष्ठ पत्रिका का नाम भी आर्याना था। गजनी और गर्देज के बीच एक गाव के हिन्दू से जब मैने पूछा कि आपके पूर्वज भारत से अफगानिस्तान कब आए तो उसने तमककर कहा जब से अफगानिस्तान जमीन पर आया। इस अफगान हिन्दू की बली न पश्तो थी न फारसी न पजाबी। वह शायद ब्राहुई थी जो वर्तमान अफगानिस्तान की सबसे पुरानी भाषा है और वेदो की भाषा के बहुत निकट है।

छठी शताब्दी के वराहमिहिर के ग्रन्थ वृहत सहिता मे पहली बार अवगाण शब्द का प्रयोग हुआ है। इसके पहले तीसरी शताब्दी के एक ईरानी शिलालेख मे अवगान शब्द का उल्लेख माना जाता है। फ्रासीसी विद्वान सॉ मार्टिन के अनुसार अफगान शब्द सस्कृत के अश्वक या अशक शब्द से निकला है जिसका अर्थ है – अश्वारोही या घुडसवार। सस्कृत साहित्य मे अफगानिस्तान के लिए अश्वकायन (घुडसवारो का मार्ग) शब्द भी मिलता है। वैसे अफगानिस्तान नाम का विशेष प्रचलन अहमद शाह दुर्रानी के शासनकाल (१७४७–१७७३) मे ही हुआ। इसके पूर्व अफगानिस्तान को आर्याना आर्यानुम वीजू, पख्तिया खुरासान पुश्तूनख्वाह रोह आदि नामो से पुकारा जाता था। पारसी मत के प्रवर्तक जरथुष्ट द्वारा रचित ग्रन्थ जिन्दावेस्ता मे इस भूखण्ड का ऐरीन वीजो या आर्यानुम वीजो कहा गया है। अफगान इतिहासकार फजले रबी पझवक के अनुसार ये शब्द सस्कृत के आर्यावर्त या आर्या वर्ष से मिलते जुलते है। उनकी राय मे आर्य का मतलब होता है – श्रेष्ठ या सम्माननीय और पश्तो भाषा म वर्ष का मतलब होता है – चर भूमि अर्थात आर्यानुम वीजो का मतलब है – आर्यो की भूमि। प्रसिद्ध अफगान इतिहासकार मोहम्मद अली और प्रो० पझवक का यह दावा है कि ऋग्वेद की रचना वर्तमान भारत की सीमाओ मे नही बल्कि आर्यो के आदिदेश मे हुई जिसे आज सारी दुनिया अफगानिस्तान के नाम से जानती है। कुछ पश्चिमी विद्वानो ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि अफगान लोग यहूदियो की सतान हैं और मुस्लिम इतिहासकारो का कहना है कि अरब देशो से आकर वे इस इलाके मे बस गए। लेकिन प्राचीन ग्रन्थो मे मिलने वाले अन्तर्साक्ष्यो तथा शिलालेखो मूर्तियो सिक्को खण्डहरो बर्तनो आभूषणो आदि के बहिर्साक्ष्य के आधार पर अकाटय रूप से माना जा सकता है कि अफगान लोग मध्य एशिया के मूल निवासी है। वे अरब भूमि योरप या उत्तरी ध्रुव से आए हुए लोग नही है। हा इतिहास मे हुए फेरबदल तथा उथल–पुथल के दौरान जिसे हम आज अफगानिस्तान कहते है उस क्षेत्र की सीमाए या सझाए हजार पाच सौ मील दाए बाए और ऊपर नीचे होती रही है तथा दुनिया के इस चौराहे से गुजरने वाले आक्राताओ व्यापारियो धर्मप्रचारको तथा यात्रियो के वशज स्थानीय लोगो मे घुलते मिलते रहे है।

विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद मे पख्तून लोगो और अफगान नदियो का उल्लेख है। दाशरज्ञ युद्ध मे पख्तुओ का उल्लेख पुरु कबीले के सहयोगियो के रूप मे हुआ है। जिन नदिया को आजकल हम आमू, काबुल कुर्रम रगा गोमल हरिरूद आदि नामो से जानते है उन्हे प्राचीन भारतीय लोग क्रमश वक्षु कुभा क्रुम रसा गोमती हर्यू या सयू के नाम से जानते थे। जिन स्थान्गे के नाम आजकल काबुल क्धार बल्ख वाखान बग्राम पामीर बदख्शा पेशावर स्वात चारसद्दा आदि है उन्हे सस्कृत और प्राकृत पालि साहित्य मे क्रमश कुभा या कुहका गधार बाल्हीक वोक्काण कपिशा मेरू कम्बोज पुरुषपुर सुवास्तु पुष्कलावती आदि के नाम से जाना जाता था। हेलमद नदी का नाम अवेस्ता के हायतुमन्त शब्द से निकला है जो सस्कृत के सतुमन्त का अपभ्रश है। इसी प्रकार प्रसिद्ध पठान कबीले मोहमद को पाणिनी ने 'मधुमन्त और अफरीदी को आप्रीता कहकर पुकारा है। महाभारत मे गाधारी के देश के अनेक सन्दर्भ मिलते है। छान्दोग्य उपनिषद मार्कण्डेय पुराण ब्राह्मण ग्रन्थो तथा बौद्ध साहित्य मे अफगानिस्तान के इतने अधिक और विविध सन्दर्भ उपलब्ध है कि उन्हे पढकर लगता है कि अफगानिस्तान तो भारत ही है अपने पूर्वजो का ही देश है। यदि अफगानिस्तान को अपने स्मृति पटल से हटा दिया जाए तो भारत का सास्कृतिक इतिहास लिखना असम्भव है।

लगभग डेढ करोड निवासियो के इस भू वेष्टित देश मे हिन्दुकुश पर्वत का वही महत्व है जो भारत मे हिमालय का है या मिस्र मे नील नदी का है। हिन्दुकुश शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानो मे मतभेद है। इब्न बतूता का कहना है कि इस पर्वत को हिन्दुकुश इसलिए कहते है कि हिन्दुस्तान से लाए जाने वाले गुलाम लडके और लडकिया इस क्षेत्र की भयानक ठण्ड के कारण मर जाते थे। हिन्दुकुश अर्थात हिन्दुओ को मारने वाला। लेकिन अफगान विद्वान फज्ल रबी पझवक की मान्यता है कि यदि हिन्दुकुश शब्द का अर्थ प्राचीन बख्तरी भाषा तथा पश्ता के आधार पर किया जाए तो हिन्दुकुश का मतलब हागा नदियो का उदगम। बख्तरी भाषा म स को ह कहन का रिवाज है। अत सिन्धु से हिन्दू बन गया। सिन्धु का मतलब होता है – नदी। वास्तव मे हिन्दुकुश पर्वत से जो हिमालय की एक पश्चिमी शाखा है अफगानिस्तान की कई महत्वपूर्ण नदियो का उदगम और सिचन होता ह। वक्षु काबुल हरिरूद और हेलमद आदि नदियो का पिता हिन्दुकुश ही है। वर्षा की कमी के कारण जब अफगानिस्तान की नदिया सूखन लगती है तो हिन्दुकुश की बर्फ पिघल पिघलकर उनकी प्यास बुझाती है।

ऋग्वेद और जिन्दावेस्ता दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रन्थ माने जाते है। दोनो की रचना अफगानिस्तान मे हुइ ऐसा बहुत से योरपीय विद्वान भी मानत है। उन्होने अनेक तर्क और प्रमाण भी दिए है। अवेस्ता क रचनाकार महर्षि जरथुष्ट का जन्म उत्तरी अफगानिस्तान मे बल्ख के आस पास हुआ और वही रहकर उन्होने पारसी धम का प्रचलन किया जो लगभग एक हजार साल तक ईरान का राष्ट्रीय धर्म बना रहा। वेदो और अवेस्ता की भाषा ही एक जैसी नही है बल्कि उनके देवताओ के नाम मित्र इन्द्र वरुण आदि भी एक जैसे है। देवासुर सग्रामो के वर्णन भी दोनो मे मिलते है। अब से लगभग २५०० साल पहले ईरानी राजाओ देरियस और सायरस ने अफगान क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया था। हिन्दुकुश क उत्तरी क्षत्र को उन्होने बेक्ट्रिया तथा दक्षिणी क्षेत्र को गाधार कहा। दो सो साल बाद यूनानी विजेता सिकन्दर इस क्षेत्र मे घुस आया। सिकन्दर के सेनापतियो ने इस क्षेत्र पर लगभग दो सौ साल तक अपना वर्चस्व बनाए रखा। उन्होने अपना साम्राज्य मध्य एशिया और पजाब के आगे तक फैलाया। आज भी अनेक अफगानो को देखते ही आप तुरन्त समझ सकते हैं कि वे यूनानियो की तरह क्यो लगते हैं। आमू दरिया और कोकचा नदी के किनारे बसे गाव आया खानुम' की खुदाई मे अभी कुछ वर्ष पहले ही गीक साम्राज्य के वैभव के प्रचुर प्रमाण मिले हैं।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

एक परिचय

भाग 2

मारिशस से प्राप्त महर्षि दयानन्द द्वारा उद्धृत फ्रैंच ग्रन्थ

भारत में बाइबिल

– डा० भवानीलाल भारतीय

गताक से आगे

वेदो की प्रामाणिकता विषयक इस लेखक के विचार आय परम्परा मे प्राप्त एतद विषयक विचारो से समानता रखते है व लिखते है प्रामाण्य की दृष्टि से यह निर्विवाद है कि वेद प्राचीनतम ग्रन्थो से भी पहले के है इन पवित्र पुस्तको मे इश्वरीय ज्ञान भरा पडा है इस बारे मे वह सर विलियम जोन्स के मत को प्रस्तुत करता है We can not refuse to the Vedas the honour of an antquity most distant हम वेदो को अतीव प्राचीन मानने से इन्कार नही कर सकते। कुछ वष पूव कलकत्ता मे सर विलियम जोन्स के द्वारा रायल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की गई थी इस सोसायटी ने चारो वेदो का अग्रेजी भाषान्तर कराने का सकल्प किया था यह तथ्य भी लेखक से छिपा नही था। पृ ६१ वैदिक दर्शनो की चचा के प्रसग मे यह लेखक पूव मीमासा तथा उत्तर मीमासा (वेदान्त) का सवाधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। उसके विचार मे जैमिनि तथा बदरायण ने भारत के पाण्डित्य पूर्ण दर्शन का समुचित विवेचन किया है उसकी दृष्टि मे पूव मीमासा मे धमाधर्म विवेक है तो बदरायण व्यास ने वेदान्त मे प्रकारान्तर से तर्कवाद से हवाद मनोविज्ञान आदि का इस रूप मे प्रस्तुत किया है जिससे कभी कभी लगता है कि क्या वह भौतिक जगत के अस्तित्व से इन्कार करने की सीमा तक तो नही पहुच गया है। पृ० ६७ निष्कषत जाक्योल्यो कहता है भारत ने सार ससार पर और खास तौर से प्राककाल पर अपनी भाषा अपनी व्यवस्था और अपने तत्वज्ञान के द्वारा जो अखण्डनीय प्रभाव डाला है उससे कोइ पूवाग्रह ग्रस्त व्यक्ति भी इन्कार नही कर सकता। पृ० १०१ उसकी तर्कसिद्ध मान्यता है कि रोम को यूनान ने सभ्यता सिखाई और यूनान को सिखाने वाले एशिया माइनर तथा मिस्र देश थे। इन दोनो स्थानो पर सभ्यता के कण भारत से गये थे अत हम भारत को प्राचीन जातियो का गुरु क्यो न स्वीकार करे। पृ १०२ इसी तथ्य का स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सस्करण (१८७५) मे स्वीकार करते है

आय जाति मे स्वीकृत चारो वर्णो की समाज व्यवस्था की झलक इस फ्रैंच विद्वान को रोमन सामाजिक विधान मे भी मिलती है। आर्य लोग जिन्हे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र कहते थे उनहे रोमन लोग Priest (धर्मयाजक या पुरहित) Senatar (ससद सदस्य जो शासक या क्षत्रिय कहलाते थे) Patrician (कुलीन वेश्य लोग) तथा Plebeion (साधारण निम्न श्रमिक) कहकर पुकारते थे। (पृ० १०६) सैमेटिक मत वालो का विचार है कि ईश्वर के एकत्व की धारणा का प्रतिपादन सवप्रथम मूसा (Moses) ने किया। किन्तु लेखक इससे सहमत नही है। इसके विपरीत जो वैदिक धर्म को विशुद्ध एकेश्वरवादी ठहरता है इसके साथ वह यह भी मानता है कि यहूदियो की दस गाथाए तथा कमकाण्ड भारत से लिए गए है। पुसव के समय आशौच की विधि की तुलनात्मक समीक्षा के पश्चात व यह निष्कर्ष निकालता है कि मनु कथित आशौच व्यवस्था तथा यहूदियो मे प्रचलित विधि मे पर्याप्त समानता है। इसी प्रकार वह हिन्दुओ के स्थापत्य और वास्तु शिल्प की उत्कृष्टता को भी सिद्ध करता है। प्राचीन हिन्दू धर्म एक परमेश्वर को मानता था यह जाक्योल्या की सुदृढ धारणा है। इसकी सिद्धि मे उसने वेदो मे आय स्वयभू (यजुर्वेद ४०। ८) शब्द को उद्धृत किया तथा एकेश्वरवाद की पुष्टि मे मनु तथा महाभारत के प्रमाण पेश किए। इस प्रसग मे उसने एक महत्वपूर्ण किन्तु गम्भीर बात लिखी है कितनी आश्चर्यजनक सच्चाई है कि आर्यो का ईश्वरीय ज्ञान ही लोको की क्रमिक रचना बताता है यही वह ईश्वरीय ज्ञान है कि जिसकी कल्पनाए (धारणाए और विचार) आधुनिक विज्ञान के साथ पूण रूप से मिलती है। The only revelation which is in complete harmony with modern Science कहना नही होगा कि इस युग मे स्वामी दयानन्द ही पहले महापुरुष थे जिन्होने धम और विज्ञान को अविरोधी बताया था तथा धार्मिक विश्वासो को विज्ञान और तक की कसौटी पर कस कर देखने के लिए कहा था।

यहूदी मत मे त्रित्व (Trinity)को अस्वीकार किया गया है जब कि ईसाई मत ने इसे पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के त्रैत के रूप मे मान्यता दी। त्रित की कल्पना भारतीय चिन्तन मे तो आरम्भ से ही रही है इसके विकृत रूप अन्यत्र किसी न किसी रूप मे पाए जाते है। वैदिक सस्कृति मे नारी के गौरव तथा उसके प्रति सम्मान के भाव को लेखक ने पुन उठाया तथा एतदविषयक अनेक शास्त्रीय प्रमाण तथा उद्धरण दिए। इसके विपरीत वह कहता है कि ईसाई मत मे नारी को कोई सम्मान नही दिया गया। जाक्योल्यो के शब्द है वेदो मे स्त्री पवित्र और पूजनीय है। बाइबिल की स्त्री एक दासी मात्र और किसी किसी सभ्य ता एक वेश्या मात्र है। पृ० १८५

ग्रन्थ के उपसहार मे लेखक कहता है कि भारतीय धम की वरिष्ठता श्रेष्ठता तथा उत्कृष्टता के रहते पादरियो द्वारा हिन्दुओ के मत परिवर्तन के लिए कहना दुस्साहस मात्र है। जब किसी पादरी ने एक ब्राह्मण को ईसाई मत के पाले मे आने के लिए कहा तो उसका दो टूक उत्तर था मै अपना धर्म क्यो बदलू। तुम अपने धर्म को केवल अठारह सौ वर्ष (अब दो हजार) का बताते हो परन्तु हमारा धर्म सृष्टि के आदि से निरन्तर चला आ रहा है। तुम्हार धर्म तो हमारे धर्म की तलछट है। फिर इसे मुझे ग्रहण करने के लिए क्यो कहते हो ? पृ० २१३

भारत मे ईसाइ मत का प्रचर करने के लिए आरम्भ काल के जेसुइट सम्प्रदाय के पादरियो ने यह अनुभव कर लिया था कि यहा उनके मत परिवतन के साधन काम मे नहीं आयेगे। यहा उनके सामने कोई भौंदू या असभ्य लोग नहीं हैं वरन एक सर्वथा सभ्य जाति है जो अपने धर्म तथा रीति नीति को उत्तम समझती है। पृ० २१७

बाइबिल इन इण्डिया के लेखक ने कतिपय क्षेत्रो मे प्रचलित इस धारणा को सत्य माना है कि ईसा अपने युवाकाल मे भारत आया था और यहा के तत्वज्ञानियो के चरणो मे बैठ कर उसने शिक्षा प्राप्त की थी। कालान्तर मे एक रूसी लेखक निकोलस नोटोविच ने तो इस कल्पना को सघन रूप से पल्लवित किया और ईसा के भारत मे आने तथा यहा अध्ययन करने के अनेक प्रसगो को रूपायित किया। इसा के मिस्र आने तथा अपने शिष्यो के साथ पूव (भारत ?) मे जाने की बात इस ग्रन्थकार ने भी लिखी है यद्यपि इसकी एतिहासिकता अभी सन्देह के घेरे मे ही है। जाक्योल्यो ने बाइबिल मे उल्लिखित इसा के जीवनचरित्र मे घटी घटनाओ तथा उनमे आए चमत्कारो की चर्चा करने के पश्चात लिखा है कि जनता को मुग्ध करने उन्हे ईसाई बनाने के प्रत्यक्ष उद्देश्य को लेकर चमत्कार युक्त ये आश्चर्यजनक प्रसग ईसा के साथ बाद मे जोडे गए है। इनकी निन्दा की जानी चाहिए। (पृ० २४१)

इस ग्रन्थ लेखक की दृष्टि मे ईसा के ये चरित्र लेखक वचक (ठग) मात्र हैं। वह लिखता है पूर्ववर्ती अवतारो के बनाये मार्ग का अनुगमन करते हुए इन लेखको (ईसा के चरित लेखक) ने चमत्कारो तथा लोकोत्तर बातो द्वारा ईसा की स्मृति को प्रतिष्ठित किया और इस न्याय परायण (ईसा) मनुष्य को परमेश्वर बना दिया। यद्यपि ईसा के स्वजीवन मे यह आकाक्षा कभी नहीं रही कि उसे ईश्वर बना दिया जाए। (पृ० २५५)

तुलनात्मक धर्म के कुछ अध्येताओ ने कृष्ण और क्राइस्ट के जीवन की कुछ घटनाओ मे पाए जाने वाले साम्य को लक्षित कर यह धारणा बनाई है कि पुराणो का कृष्ण ही बाइबिल का क्राइस्ट है। इस उपपत्ति पर कोई निर्णय देना हमारा प्रयोजन नहीं है किन्तु उपर्युक्त तुलना मे जाक्योल्यो ने भी रुचि दिखाई है। देवकी की मरियम से तुलना भी इस प्रसग मे की गई है। लेखक का ईसा के जीवन मे आए चमत्कारो को मिथ्या बताना एक साहसपूर्ण सच्चाई है। उसके उस स्पष्ट कथन को देखे – हम अब उस युग मे नही है जब लोकोत्तर बात भी सत्य समझी जाती थीं और बेसमझे लोग उनके सामने सिर झुका लेते थे। भला कोई मनुष्य हमारे सामने आए और बाइबिल के चमत्कार दिखाए। पानी की मदिरा बनाना पाच मछलियो और दो तीन रोटियो से दस पन्द्रह या बीस हजार व्यक्तियो की क्षुधा तृप्ति करना मृतको को जिलाना बहरो के कान तथा अधो को आखे देना क्या सब लाल बुझक्कड वाली बाते नहीं हैं ?

सामी मजहबो मे पाई जाने वाली शैतान की अवधारणा का भी लेखक उपहास करता है। ईसाई साधुओ के आचार व्यवहार तथा मनूक्त वानप्रस्थियो की आचरण सहिता मे लेखक को आश्चर्य जनक समानता दिखाई देती है। (पृ० २८२)

बाइबिल इन इण्डिया मे विवेचित प्रसगो की एक सक्षिप्त झलक हमने यहा दिखाई है। भारतीय धर्म विद्या बुद्धि सभ्यता तथा सस्कृति की उत्कृष्टता को सिद्ध करने का किसी यूरोपीय व्यक्ति का शायद यह पहला प्रयास था। कालान्तर मे इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए। दीवान बहादुर हर विलास शारदा रचित Hindu Superiority इसी श्रृखला की एक कडी थी। प० सन्तराम (अनुवादक) ने ग्रन्थ के परिशिष्ट मे कुछ ऐसे विदेशी विद्वानो के ग्रन्थो के उद्धरण दिए हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि ससार को धर्म सभ्यता और सस्कृति का प्रथम पाठ सिखाने वाले भारत के आर्य ही थे। इन विद्वानो मे कतिपय हैं एल्फ्रेड रसेल वालेस इमसन एच०वी० ब्लवस्की विक्टरकजिन शापनहार एडवर्ड कापटर मैक्समूलर मारिसफिलिप प्रो० हीरेन बार्नाफ पाल डयूसन ताल्सताय व्हीलर विलोक्स सर मोनियर विलियम्स सर जान वुडरफ डा० ऐनी बेसेन्ट डा० जेम्स कजिन्स रौमा रौला हेनरी वेलेन्टाइन बिल डुरेन्ट सी० एफ० एण्ड्रूज मारिस मैटरलिक बर्ट्रेण्ड रसेल प्रो० विलियम जेम्स सर चार्ल्स इलियट एच०जी० रालिन्सन विलियम बटलर पीटस एल०डी० बोर्नेट सर रोलडशे डा० मेकनिकल लुई रेनो जार्ज बर्नार्ड शा राल्फ थामस एच ग्रिफिथ ए०एल०बाशम तथा बिली ग्राहम। कुछ भारतीय मनीषियो के विचार भी यहा समाविष्ट किए गए हैं डा० राधाकृष्ण कवि रवि ठाकुर डा० राजेन्द्रलाल मिश्र लाला लाजपतराय डा० ताराचन्द गाजरा योगी अरविन्द तथा सरदार के०एम० पनिकर आदि।

ऋषि दयानन्द के १८७५ मे प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण मे इस पुस्तक के इस प्रकार उल्लेख किया था

एक गोल्डरटकर (वास्तव मे जाक्योल्यो) साहेब ने पहले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या वा मत फैले हैं भूगोल मे वे सब आर्यावर्त ही से लिए हैं। पृ० ३०६ इससे अनुमान होता है कि स्वामी जी ने १८७५ से पहले बाइबिल इन इण्डिया का परिचय प्राप्त कर लिया था।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

बसन्तोत्सव पर हंसते हंसते बलिदान
किशोर बालक हकीकतराय

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

अभी अभी एक माह पूर्व हम सभी ने मकर सक्रान्ति पर्व अत्यन्त उल्लास तथा उत्साह से मनाया। जिस प्रकार यह हमारी भौगोलिक प्राकृतिक तथा पवित्र पर्यावरण का उत्सव है ठीक इसी प्रकार माघ मास की पञ्चमी बसन्त पञ्चमी भी प्राकृतिक परिवेश से आबद्ध है। आर्यों का जीवन नगरो से सुदूर स्थित एकान्त वनो मे स्थापित 'गुरुकुलो से आरम्भ होकर आश्रम व्यवस्था के अनुसार वानप्रस्थ और फिर समस्त प्राणी मात्र की सेवा मे चल पडने का नाम सन्यास अर्थात अपना सब कुछ न्यस्त कर बाट कर शेष जीवनको सार्थक करने का सराहनीय प्रयास है। आर्यों का जीवन दर्शन न तो कभी निराशावादी रहा और न समाज से दूर रहकर एकागी वैयक्तिक मोक्ष प्राप्त करने का रहा है। परिवार मे जन्म लेकर समाज राष्ट्र तथा विश्व की सेवा मे जीवन समर्पित करना ही जीवन (जी+वन) है। वह जीवन ही क्या जिसमे वन पर्यावरण तथा प्रकति प्रेम न हो।

माघ माह के शुक्ल पक्ष की यह पञ्चमी बसन्तोत्सव के रूप मे विविध आयोजनो के माध्यम से मनाई जाती है। हमारे सभी पर्व प्रकृति परिवर्तन के आधार पर उससे सामञ्जस्य स्थापित करते हुए निश्चित किये गये है और उनके आधार पर ही हमारे सामाजिक धार्मिक तथा सास्कृतिक मूल्य किये गये हैं। हमारे समस्त पर्व जीवन की यथार्थता की भूमि पर आधारित है। हमारे जीवन दर्शन मे भावना तथा यथार्थ का बहुत ही सुन्दर ढग से समायोजन किया गया है। उनमे चर्चित हमारा वसन्त पञ्चमी पर्व है जिसे आर्य पर्वो मे बहुत ही महत्व दिया गया है।

सम्प्रति यह अनेक प्राकृतिक एव सामाजिक पर्वों का महान अनुष्ठान पूर्ण पर्व है। जन साधारण मे यह सरस्वती पूजन का पवित्र पर्व है। हमारा आस्तिक भारतीय अपनी मान्यता के अनुसार सरस्वती की पूजाकर ज्ञानार्जन का पवित्र सकल्प लेकर धनैश्वर्यो' का स्वामी बनाने की ओर अग्रसर होता है। पौराणिको की कथित सरस्वती के हाथो मे धारण किए सभी पदार्थ जीवनोद्देश्य की ओर सकेत है। वैदिक सस्कृति मे रयि और धन की बडी महिमा गाई गई है। जिस प्रकार ज्ञानहीन कर्म सदैव कष्ट प्रद होता है ठीक इसी प्रकार धन हीन ज्ञानी का जीवन कटकाकीर्ण एव दु खी होता है। वेदो मे धन हीनो को सम्मानित नहीं माना गया है। इसी सरस्वती अनुष्ठान के अन्तर्गत अक्षर शब्द अक लिपि एव लेखन तथा कालान्तर मे मुद्रण विज्ञान के विकास की चर्चा की गई है। हमारे यहा विद्या नौकरी के उददेश्य को लेकर जीवनोद्देश्य की समाप्ति नहीं माना गया है।

जैसा कि कहा गया है वसन्त पञ्चमी पर्वो का सगम है। यथा बगाल मे सरस्वती पूजन धार (म०प्र०) मे सरस्वती महोत्सव तथा राजा भोज का सस्कृत सस्कृति प्रेम एव उसका स्मृति पर्व पौराणिक मान्यतानुसार बगाल के गगासागर मे सामूहिक स्नान तथा कविवर निराला जयन्ती का महोत्सव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन सबके अतिरिक्त भारतीय रसिक समाज अर्थात रजोगुण प्रधान समाज मे बसन्त पञ्चमी पर्व को मदन महोत्सव के रूप मे उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। हमारी आर्य वैदिक सस्कृति मे पुरुषार्थ चतुष्टय मे धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष को स्वीकार किया है। मनुष्य तथा पशु पक्षियो मे कतिपय मौलिक गुणो मे का को समान स्थान मिला है। काम का तात्पर्य अपने समान सन्तति उत्पन्न कर वश वृद्धि की मूलभूत इच्छा है। प्रकृति तो फलो मे स्वमेव ही उसके बीज साथ मे रख देती है। मानव समाज मे काम को सामाजिक रूप देकर उसे सयमित एव सात्विक बना कर विवाह नामक सस्था को स्थापित किया गया है। वि+वाह अर्थात दम्पत्ति अपना विशेष दायित्व ग्रहण कर वश वृद्धि हेतु सन्तानो को जन्म देकर उन्हे सुसस्कृत कर समाजोपयोगी बनाने का वाह सकल्प व्रत लेते है। पाश्चात्य समाज की भाति विवाह एक ठेका (कान्ट्रैक्ट) न मानकर आजीवन सह सबध मधुर सबध माना गया है। यह काम का सामाजिक सस्कारित अथवा ऊर्ध्व मार्गान्तरीकरण है। द्वितीय आयुर्वेद के अनुसार ऋतभुक मित भुक्त और हितभुक मे जो सद्ग्रहस्थ स्वेच्छा से ऋतमुक होते है ऋतु काल तथा शारीरिक अवस्था को ध्यान मे रखकर समागम करते है उन्हे गृहस्थ मे रहते हुए भी 'ब्रह्मचारी कहा गया है। अर्थात काम के उद्वेग पर नियत्रण रख कर अपनी आन्तरिक ऊर्जा को बचाते रहते हैं ऐसे काम वीर सचमुच ऊर्ध्वरेता कहलाते है। इस प्रकार प्रकृति द्वारा उद्वेलित कामनाओ पर विवेक द्वारा नियन्त्रण रखने की प्रेरणा इस पवित्र पर्व से प्राप्त होती रहती है।

विद्वानो के मतानुसार बसन्तोत्सव पर हमारे देश मे सगीत का विशेष समारोह होता है। किन्तु सखेद कहना पडता है कि सगीत के नाम पर केवल श्रृगाररस से भरपूर गानो का प्रचारण प्रसारण होता है। सगीत परमात्मा की भक्ति का एक सात्विक साधन है इसमे गायक के साथ श्रोतागण भी भक्तिरस मे भाव विभोर हो उठते है। सम्प्रति सगीत के नाम पर आज देश मे निम्नस्तरीय हाव भाव वाले गीतो को प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि भारतीय जीवन पद्धति के पवित्र मूल्यो के बिल्कुल विरुद्ध है। इनके सुधार के लिए ज्यो ज्यो प्रयास किये गये मर्ज बढता ही गया ज्यो ज्यो दवा की। युवा वर्ग की भावनाओ के साथ जो खिलवाड किया जा रहा है उससे भविष्य अधकारमय प्रतीत होता है।

इस पर्व के साथ एक ऐसे वीर किशोर बालक के बलिदान (आत्मोत्सर्ग) की कहानी भी जुडी हुई हे जो बाल्यकाल से ही भारतीय जीवन पद्धति तथा वैदिक मूल्यो मे विश्वास करता था। वह गीता के स्वधर्म निधन श्रेय पर धर्मो भयावह मे अगाध श्रद्धा रखता था। उस वीर किशोर बालक का नाम हकीकत राय था।

बालक हकीकत राय के पिता का नाम भागमल तथा माता का नाम कौरा देवी था। उसका जन्म स्यालकोट (पजाब) मे हुआ था। तत्कालीन सामाजिक कुरीति के अनुसार हकीकत राय का १० ११ वर्ष की आयु मे ही विवाह कर दिया गया था। १७वीं शताब्दी का समय था उस समय मुहम्मद शाह रगीला वहा का शासक था। सन १६५० से ७५ तक घटी यह घटना इतिहास मे बहुत प्रसिद्ध है।

स्यालकोट के छोटे से मदरसे मे मुसलमान छात्रो के साथ बालक हकीकतराय भी पढने जाता था। शरीर से बहुत दुबला पतला किन्तु धार्मिक सस्कारो से भरपूर हकीकत अपने वैदिक (हिन्दू) धर्म से बहुत प्यार करता था। उसके माता पिता ने उसे बाल्यकाल मे भारतीय महापुरुषो राम कृष्ण हरिश्चन्द्र तथा माता सीता आदि के उज्ज्वल चरित्र की कथाए सुनाई थी।

एक दिन उस मदरसे के अध्यापक मौलवी किसी काम से कुछ समय के लिए गाव मे चले गए। अध्यापक की अनुपस्थिति मे बालकगण आपस मे झगड पडे और कुछ मुस्लिम छात्रो ने हकीकत राय के सम्मुख सीता जी के पवित्र चरित्र पर छीटा कसी करना शुरू कर दी। इस बालक से माता सीता का अपमान सहन नहीं हुआ। उसने भी मुहम्मद की पहली पत्नी खादिजा बेगम के सम्बन्ध मे सच्ची घटना कहना शुरू कर दी। बस फिर क्या था सभी मुस्लिम लडके उस कृशकाय बालक हकीकत पर टूट पड और बहुत मारा पीटा। इतने मे मदरसे के अध्यापक भी आ गए। मुस्लिम लडको ने इस हिन्दू आर्य बालक द्वारा खदीजा बेगम के अपमान की बाते उन्हे कह सुनाई। सकुचित सकीर्ण और साम्प्रदायिक बुद्धि वाले अध्यापक भी हकीकत राय पर खूब बिगडे। उन्होने उस बालक को शहर के मुख्य काजी के सम्मुख खडा कर दिया। साम्प्रदायिक और मतान्धता मे डूबे काजी ने बालक को अपराधी करार दे दिया। उस काजी ने बालक के सम्मुख २ खर्ते रखी। प्रथम वह अपने प्राण बचाने के लिए इस्लाम कबूल कर ले। द्वितीय उसे चौराहे पर खडा कर उसका खुले आम वध कर दिया जाएगा।

इसकी सूचना उसके माता पिता व उसकी पत्नी को दी गई। पहले तो उस काजी ने उसे बहुत लालच दिया। मुसलमान बनने पर ऊची नौकरी धनवान मुस्लिम घराने की लडकी से विवाह तथा खूब धन दौलत देने की बात कही। इधर उसे माता पिता ने मोहवश कहा चाहे तू मुसलमान हो जा पर तू जीवित तो रहेगा हम तुझे देखकर सन्तोष कर लेगे। परन्तु धीर वीर गीता के श्लोक स्वधर्मे निधन श्रेय के अनुसार उस वीर किशोर ने कहा चाहे मेरा वध अभी कर दिया जाय किन्तु मेरी आत्मा अमर रहेगी। कोई भी मेरी आत्मा को न तो काट सकता है न आग जला सकती है न पानी भिगा सकता है और न हवा इसे सुखा सकती है। आत्मा अजर और अमर है। मै मृत्यु से नही डरता। अन्त मे यह शरीर वृद्ध होकर यो भी नष्ट हो जाएगा। मै अपनी आत्मा की आवाज के विरूद्ध कोई कार्य नही करूगा। इसी बसन्त पञ्चमी के दिन इस वीर किशोर ने जल्लाद की पैनी तलवार के नीचे अपनी गर्दन झुका दी। जल्लाद की तलवार के एक ही झटके मे उसका सिर धड से अलग हो गया। उसका शरीर तो नष्ट हो गया किन्तु हकीकत राय धर्म पर बलिदान हो कर सदा के लिए अमर हो गया। भारतीय इतिहास मे उसका नाम स्वर्णाक्षरो मे सदैव ही चकमता रहेगा। आज देश को हकीकत राय के समान लाखो करोडो युवाओ की आवश्यकता है जो भारत की स्वतन्त्रता अखडता तथा सम्प्रभुता की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने को तैयार हो। हकीकत राय जिन्दाबाद अत्याचार अन्याय और शोषण मुर्दाबाद।

– सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर ४५२००६ (म०प्र०)

पृष्ठ ५ का शेष भाग

अफगानिस्तान भी कभी आर्याना था

ईसा के तीन सौ साल पहले जब अफगानिस्तान म यूनानी साम्राज्य दनदना रहा था भारत मे मौर्य साम्राज्य चन्द्रगुप्त बिन्दुसार और अशोक का उदय हो चुका था। अशोक ने बौद्ध धर्म को अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक फैला दिया। बौद्ध धर्म चीन जापान और कोरिया समुद्र के रास्तो से नही गया बल्कि अफगानिस्तान और मध्य एशिया के थलमार्गो से होकर गया। पालि साहित्य मे नग्नजित और पुक्कुसाति नामक दो अफगान राजाओ का उल्लेख भी आता है जो गाधार के स्वामी थे और बिन्दुसार के समकालीन थे। गधार राज्य की राजधानी तक्षशिला थी जिसके स्नातको मे जीवक जैसे वैद्य और कोसलराज प्रसेनजित जैसे राजकुमार भी थे। चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के बीच हुई सधि के कारण अनेक अफगान और बलूच क्षेत्र बौद्ध प्रभाव मे पहले ही आ चुके थे। ये सब क्षेत्र और इनके अलावा मध्य एशिया का लम्बा–चौडा भू भाग इसा की पहली सदी मे जिन राजाओ के वर्चस्व मे आया वे भी बौद्ध ही थे। कुषाण साम्राज्य के इन राजाओ कनिष्क हुविष्क वासुदेव आदि ने सम्पूर्ण अफगानिस्तान को तो बुद्ध का अनुयायी बनाया ही बौद्ध धर्म को दुनिया के कोने कोने तक पहुचा दिया। चीनी इतिहासकारो ने लिखा है कि सन ३८३ से लेकर ८१० तक अनेक बौद्ध ग्रन्थो का चीनी अनुवाद अफगानिस्तान मे ही हुआ। विश्व प्रसिद्ध गाधार कला का परिपाक कुषाण काल मे ही हुआ। आजकल हम जिस बगराम हवाई अडडे का नाम बहुत सुनते है वह कभी कुषाणो की राजधानी थी। उसका नाम था – कपीसी। पुले–खुमरी से १६ कि०मी० उत्तर मे सुर्ख कोतल नामक जगह मे कनिष्क–काल के भव्य खण्डहर अब भी देखे जा सकते है। इन्हे 'कुहना मस्जिद के नाम से जाना जाता है। पेशावर और लाहौर के सग्रहालयो मे इस काल की विलक्षण कलाकृतिया अब भी सुरक्षित है।

अफगानिस्तान के बामियान जलालाबाद बगराम काबुल बल्ख आदि स्थानो मे अनेक मूर्तियो स्तूपो सघारामो विश्वविद्यालयो और मन्दिरो के अवशेष मिलते है। काबुल के आसामाई मन्दिर को दो हजार साल पुराना बताया जाता है। आसामाई पहाड पर खडी पत्थर की दीवार को हिन्दुशाहो द्वारा निर्मित परकोटे के रूप मे देखा जाता है।

काबुल का सग्रहालय बौद्ध अवशेषो का खजाना रहा है। अफगान अतीत की इस धरोहर को पहले मुजाहिदीन और अब तालिबान ने लगभग नष्ट कर दिया है। बामियान की सबसे ऊची और विश्व प्रसिद्ध बुद्ध प्रतिमाओ को भी उन्होने नि शेष कर दिया है। फाह्यान और हेन साग ने अपने यात्रा वृत्तातो मे इन महान प्रतिमाओ अफगानो की बुद्ध भक्ति और बौद्ध धर्म केन्द्रो का अत्यन्त श्रद्धापूर्वक चित्रण किया है।

अब उनके खण्डहर भी स्मृति के विषय हो गए है। जलालाबाद के पास अवस्थित हद्दा मे मिटटी की दो हजार साल पुरानी जीवत मूर्तिया चीन मे सियान के मिटटी के सिपाहियो जैसी थी यानी उनकी गणना विश्व के आश्चर्यो मे की जा सकती थी। वे भी मुजाहिदीन हमलो मे नष्ट हो चुकी हैं। बुतपरस्ती का विरोध करने के नाम पर गुमराह इस्लामवादी तत्वो ने अपने बाप दादो के स्मृतिचिन्ह भी मिटा दिए।

इस्लाम के नौ सौ साल के हमलो के बावजूद अफगानिस्तान का एक इलाका १०० साल पहले तक अपनी प्राचीन सभ्यता को सुरक्षित रख पाया था। उसका नाम है – काफिरिस्तान। यह स्थान पाकिस्तान की सीमा पर स्थित चित्राल के निकट है। तैमूर लग बाबर तथा अन्य बादशाहो के हमलो का इन 'काफिरो ने सदा डटकर मुकाबला किया और अपना धर्म परिवर्तन नही होने दिया। अफगानिस्तान की कुणार और पजशीर घाटी के पास रहने वाले ये पर्वतीय लोग जो भाषा बोलते है उसके शब्द ज्यो के त्यो वेदो की सस्कृत मे पाए जाते है ये इन्द्र मित्र वरुण गविष सिह निर्मालनी आदि देवी देवताओ की पूजा करते थे। इनके देवताओ की काष्ठ प्रतिमाए मैने स्वय काबुल सग्रहालय मे देखी हैं। चग सराय नामक स्थान पर हजार–बारह सौ साल पुराने एक हिन्दू मन्दिर के खण्डहर भी मिले है। सन १८६५ मे अमीर अब्दुर रहमान ने इन काफिरो को तलवार के जोर पर मुसलमान बना लिया। कुछ पश्चिमी इतिहासकारो का मानना है कि ये काफिर लोग हिन्दुओ की तरह चोटी रखते थे और हवि आदि भी देते थे। अमीर अब्दुर रहमान को डर था कि ब्रिटिश शासन की मदद से इन लोगो को कही ईसाई न बना लिया जाए।

अफगानिस्तान मे इस्लाम के आगमन के पहले अनेक हिन्दू राजाओ का भी राज रहा। ऐसा नही है कि ये राजा काशी पाटलिपुत्र अयोध्या आदि से कधार या काबुल गए थे। ये एकदम स्थानीय अफगान या पठान या आर्यवशीय राजा थे। इनके राजवश को हिन्दूशाही के नाम से ही जाना जाता है। यह नाम उस समय के अरब इतिहासकारो ने ही दिया था। सन ८४३ मे कल्लार नामक राजा ने हिन्दूशाही की स्थापना की। तत्कालीन सिक्को से पता चलता है कि कल्लार के पहले भी रूतविल या रणथल स्पालपति और लगतुरमान नामक हिन्दू या बौद्ध राजाओ का गाधार प्रदेश मे राज था। ये राजा जाति से तुर्क थे लेकिन इनके जमाने की शिव दुर्गा और कार्तिकेय की मूर्तिया भी उपलब्ध हुई है। ये स्वय को कनिष्क क वशज भी मानते थे। अल बेरूनी के अनुसार हिन्दूशाही राजाओ मे कुछ तुर्क और कुछ हिन्दू थे। हिन्दू राजाओ को काबुलशाह या महाराज धर्मपति कहा जाता था। इन राजाओ मे कल्लार सामतदेव भीम अष्टपाल जयपाल आनन्दपाल त्रिलोचनपाल भीमपाल आदि उल्लेखनीय है। इन राजाओ ने लगभग साढे तीन सौ साल तक अरब आततायियो और लुटेरो को जबर्दस्त टक्कर दी और उन्हे सिन्धु नदी पार करके भारत मे नही घुसने दिया। लेकिन १०१६ मे महमूद गजनी से त्रिलोचनपाल की हार के साथ अफगानिस्तान का इतिहास पलटा खा गया। फिर भी अफगानिस्तान को मुसलमान बनने मे पैगम्बर मुहम्मद के बाद लगभग चार सौ साल लग गए। यह आश्चर्य की बात है कि इन हारते हुए हिन्दूशाही राजाओ के बारे मे अरबी और फारसी इतिहासकारो ने तारीफ के पुल बाधे हुए हैं। अल बेरूनी और अल'उतबी ने लिखा है कि हिन्दूशाहियो के राज मे मुसलमान यहूदी और बौद्ध लोग मिल जुलकर रहते थे। उनमे भेदभाव नहीं किया जाता था। शिक्षा कला व्यापार अत्यधिक उन्नत थे। इन राजाओ ने सोने के सिक्के तक चलाए। हिन्दूशाहो के सिक्के इतने अच्छे होते थे कि सन ९०८ मे बगदाद के अब्बासी खलीफा अल मुक्तदीर ने वैसे ही देवनागरी सिक्को पर अपना नाम अरबी मे खुदवाकर नए सिक्के जारी करवा दिए। मुस्लिम इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार हिन्दूशाही की लूट का माल जब गजनी मे प्रदर्शित किया गया तो पडोसी मुल्को के राजदूतो की आखे फटी की फटी रह गई। भीमनगर (नगरकोट) से लूटे गए माल को गजनी तक लाने के लिए ऊँटो की कमी पड गई।

तत्कालीन सिक्को से पता चलता है कि कल्लार के पहले भी रूतविल या रणथल, स्पालपति और लगतुरमान नामक हिन्दू या बौद्ध राजाओ का गाधार प्रदेश मे राज था। ये राजा जाति से तुर्क थे लेकिन इनके जमाने की शिव, दुर्गा और कार्तिकेय की मूर्तिया भी उपलब्ध हुई है। ये स्वय को कनिष्क का वशज भी मानते थे।

अल बेरूनी ने राजा आनन्दपाल के बडप्पन का जिक्र करते हुए लिखा है कि महमूद गजनी से सम्बन्ध खराब होने के बावजूद जब तुर्कों ने उस पर हमला किया जो आनन्दपाल ने महमूद की सहायता के लिए उसे पत्र लिखा था। हिन्दूशाही राजवश के राजा आर्याना के बाहर के सुलतानो को इस क्षेत्र मे घुसने नही देना चाहते थे। इसीलिए उन्होने महमूद गजनी ही नही अन्य स्थानीय हिन्दू और अ हिन्दू शासको से गठबन्धन करने की कोशिश की लेकिन महमूद गजनी को सत्ता ओर लूटपाट के अलावा इस्लाम का नशा भी सवार था। इसीलिए वह जीते हुए क्षेत्रो के मन्दिरो शिक्षा केन्द्रो मडियो ओर भवनो को नष्ट करता जाता था और स्थानीय लोगो को जबरन मुसलमान बनाता जाता था। यह बात अल बेरुनी अल उतबी अल मसूदी और अल मकदीसी जैसे मुस्लिम इतिहासकारो ने भी लिखी है।

समकालीन इतिहासकार अल बेरूनी ने तो यहा तक लिखा है कि जीते हुए क्षेत्रो के लोगो के साथ किए गए कठोर बर्ताव और सुलतानो की विध्वसात्मक नीतियों के कारण यह क्षेत्र (अफगानिस्तान) विद्वानो व्यापारियों योद्धाओं और राजकुमारो के रहने लायक नहीं रह गया है।

'यही कारण है कि जो जो क्षेत्र हमने जीते हैं वहा वहा से हिन्दू विद्याए इतनी दूर कश्मीर बनारस तथा अन्य स्थानो पर भाग खडी हुई कि हमारी पहुच के बाहर हो गई है। क्या खल्की परचमी मुजाहिदीन और तालिबान हुकूमतो के दौरान पिछले २३ साल मे एक–तिहाई अफगानिस्तान खाली नही हो गया ? क्या अफगानिस्तान के क्षेष्ठ विद्वान उत्तम कलाकार निपुण वैज्ञानिक कुशल राजनीतिज्ञ भद्रलोक के ज्यादातर सदस्य उस देश को छोडकर अमेरिका योरप और भारत मे नहीं बस गए है ? क्या अभागे अफगानिस्तान के इतिहास का चक्र उलटा घूमता हुआ एक हजार साल पीछे नहीं चला गया है ? क्या हम आज वही भयावह दृश्य नहीं देख रहे हैं जो अफगानिस्तान ने एक हजार साल पहले देखा था ?

आ रहा है फिर से 'संस्कृत' का युग !

– कु० राजू बसल शालू'

भारत को जगद्गुरु के ऊचे पद पर बैठाने वाली युगो पहले ज्ञान विज्ञान के भडार को अपने आचल मे समा लेने वाली सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र मे आबद्ध करने वाली ज्ञान गरिमा गाम्भीर्य और जीवन दर्शन की साक्षात प्रतिमास्वरूपा समस्त भाषाओ की जननी यदि कोई भाषा है तो वह है – सस्कृत।

यह सच है कि आजादी के पश्चात सस्कृत को जो गौरव और सम्मान प्राप्त होना चाहिए था वह नहीं हुआ इसके विपरीत कई राजनैतिक और सामाजिक कारणो से उसका ह्रास होता चला गया। स्थिति यह हो गई कि सस्कृत को केवल कर्म काड की और साहित्य की भाषा माना जाने लगा और यह धीरे धीरे लोक व्यवहार से हटती चली गई जबकि वास्तविकता यह है कि समूचे राष्ट्र को यदि कोई भाषा एकता के सूत्र मे बाध सकती है तो वह 'सस्कृत ही है। लेकिन सस्कृत को एक अत्यन्त कठिन और व्यवहार के लिए अनुपयोगी भाषा मानकर एक प्रकार से त्याग दिया गया। उसे 'देववाणी की सुन्दर उपमा देकर केवल देवताओ की भाषा मानते हुए पूजा की वस्तु बना दिया गया।

किन्तु ह्रास और उपेक्षा के दौर के पश्चात अब फिर से सस्कृत के विकास का दौर प्रारम्भ हो गया है। पिछले कुछ वर्षों मे सस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार बडे पैमाने पर प्रारम्भ हो गया है। न केवल देश मे बल्कि विदेशो मे भी सस्कृत पढने वालो और बोलने वालो की सख्या मे वृद्धि हुई है। आज यदि कोई यह समझता है कि सस्कृत के पढने वाले बहुत कम हैं या यह कहीं भी व्यवहार मे नहीं लाई जाती है या फिर सस्कृत केवल पूजा पाठ की ही भाषा है अथवा आज के आधुनिक कम्प्यूटर युग मे सस्कृत का कोई स्थान नही है और यह एक मृत भाषा है तो वे यह जान ले कि वे आने वाले युग की पदचाप को नही पहचान पा रहे हैं। कारण स्पष्ट हैं।

भारत मे छ राज्यों हिमाचल प्रदेश देहली उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश राजस्थान और गुजरात मे उच्च प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओ मे सस्कृत अनिवार्य रूप मे पढाई जाती है। विद्या भारती जैसे अखिल भारतीय शिक्षण सस्थान के सोलह हजार विद्यालयो मे दूसरी कक्षा से ही अनिवार्य विषय के रूप मे सस्कृत पढाई जाती है। भारत मे नौ सस्कृत विश्वविद्यालय है – जयपुर वाराणसी दरभगा पुरी तिरूपति कालडी नागपुर जबलपुर और देहली मे। सामान्यत पाच हजार सस्कृत विद्यालय और महाविद्यालय हैं। सात सस्कृत अकादमिया है। ६३ विश्वविद्यालयो मे सस्कृत स्नातकोत्तर केन्द्र है। सामान्यत १००० महाविद्यालयो मे सस्कृत बी० ए० की शिक्षण व्यवस्था है। सौ से भी अधिक सस्कृत प्रचार परिषदे हैं। सात सस्थाओ के द्वारा पत्राचार माध्यम से सस्कृत शिक्षण की योजना चलाई जा रही है। दूसरी कक्षा से लेकर शोधस्तर तक सस्कृत पढने वाले तीन करोड छात्र है। सामान्यत पाच लाख सस्कृत शिक्षक है। सस्कृत को ही प्रधान विषय के रूप मे लेकर पढने वाले छात्र तीन लाख हैं। तीस से अधिक पत्र पत्रिकाए सस्कृत मे प्रकाशित होती है। हमारे देश की वर्तमान लोकसभा के ३४ सासदो ने सस्कत मे शपथ ग्रहण किया और राज्य सभा के भी बहुत से सदस्यो ने सस्कृत मे शपथ ग्रहण किया। भारत की ससद मे सस्कृत के भी अनुवादक है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर सस्कृत माध्यम से समाचार प्रसारित होते है। जर्मन रेडियो भी सस्कृत मे कार्यक्रम प्रसारित करता है।

कम्प्यूटर के लिए सस्कृत को सर्वाधिक उपयुक्त भाषा घोषित किया गया है। इडियन इस्टिटयूट आफ इन्फॉरमेशन टेक्नोलोजी हैदराबाद मे सस्कृत कम्प्यूटर के सम्बन्ध मे शोधकार्य चल रहा है। सस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित सस्था सस्कृत भारती ने सस्कृत शिक्षण की दो CDROM बनाई है। इटरनेट पर भी सस्कृत का शिक्षण आरम्भ हो गया है। इटरनेट पर सस्कृत भारती का Homepage Address है – WWW samskritabharati org हाल ही मे सस्कृत भारती की अमेरिका स्थित शाखा ने अमेरिका मे प्रथम इटरनेट पत्रिका अपूर्ववाणी का लोकार्पण किया है। यह इन्टरनेट पत्रिका द्वैमासिकी है। अपूर्ववाणी पत्रिका को इटरनेट http \\www samskrita bharati org\apurvavani\sharat5103 pdf पर देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त हैदराबाद मे स्थित वेद भारती सस्था ने वेदो के तेईस CD ROMS निर्मित किए है। तिरूपति राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ मे सस्कृत साइस सेटर का शिलान्यास हो चुका है। विश्व के पैतीस देशो मे ४५० विश्वविद्यालयो मे सस्कृत का पठन पाठन होता है। सम्पूर्ण विश्व मे सर्वत्र वेद आयुर्वेद योग ध्यान गीता आदि भारतीय विद्याओ तथा विषयो का अध्ययन करने वाले छात्रो ने अब सस्कृत भाषा का अभ्यास शुरू कर दिया है ताकि वे उन विषयो के मूल ग्रन्थो को पढ सके। सम्पूर्ण भारत मे अनेक सस्कृत सम्भाषण शिविरो के द्वारा सरल सस्कृत बोलचाल का ज्ञान दिया जा रहा है। भारत से बाहर भी सस्कृत का प्रचार प्रसार हो रहा है। अमेरिका मे प्रतिवर्ष बहुत से सस्कृत सम्भाषण शिविर होत है। लदन मे 'सेन्ट जेम्स इडिपेन्डेट स्कूल मे पहली कक्षा से ही अनिवार्य भाषा के रूप मे सस्कृत भी पढाई जाती हे। नेपाल मे भी एक सस्कृत विश्वविद्यालय है एव दक्षिण अफ्रीका के सविधान म सस्कृत को भी मान्यता दी गई है।

अपने यहा महाराष्ट्र और कर्णाटक मे कुछ सस्कृत माध्यम क विद्यालय भी प्रारम्भ हो गए हैं जहा सभी विषय सस्कृत माध्यम से ही पढाए जाते है।

इन सब के अतिरिक्त प्रतिवर्ष सस्कृत की अनेक नई पुस्तके प्रकाशित होती हैं। सस्कृत गीतो की कुछ ऑडियो कैसेटस भी निर्मित की गई है जिनका सुमधुर सगीत किसी भी फिल्म एलबम या पाप एलबम से किसी भी दृष्टि से कम नही है। बच्चो की प्रसिद्ध बालपत्रिका चन्दामामा सस्कृत मे भी प्रकाशित होती है। सम्भाषण सन्देश सस्कृत की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका है।

भारत सरकार के मानव ससाधन विकास मन्त्रालय ने यू० जी० सी० द्वारा देश के सभी विश्वविद्यालयो और महाविद्यालयो मे सरल सस्कृत सम्भाषण केन्द्र प्रारम्भ किया है। इसके लिए प्रशिक्षक तैयार करने का कार्य सस्कृत भारती के द्वारा प्रशिक्षण शिविरो के माध्यम से किया जा रहा है।

सी०बी०एस०सी० पाठयक्रम म भी अनिवार्य रूप से सस्कृत को पढाने का कार्यक्रम लागू हो चुका है। इसी क्रम मे देश भर मे सीनियर हा सैकेण्डरी स्तर पर भी इस प्रकार का सस्कृत सम्भाषण पाठ्यक्रम लागू करने की योजना है। इसे क्रमश उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक विस्तार दिया जाएगा।

इस प्रकार देश भर मे लाखो विद्यालयो मे करोडो विद्यार्थियो को प्रारम्भिक समय मे ही सस्कृत वार्तालाप सस्कृत माध्यम से सिखाया जा सकेगा। इस महती कार्यक्रम के लिए लाखो सस्कृत सम्भाषण शिक्षको की आवश्यकता पडेगी। इस प्रकार सस्कृत भाषा रोजगार के नवीन द्वार खालने जा रही है। बस आवश्यकता इसी बात की है कि प्रत्येक भारतवासी आलस्य और शकाए त्याग कर इसके स्वागत और उत्थान के लिए उठ खडा हो।

इस प्रकार अगले पाच दस वर्षो मे भारत मे सस्कृत के चित्र मे गौरवपूर्ण परिवर्तन होगा। सस्कृत के विकास के इस क्रान्तिकारी अभियान के प्रारम्भ हो जाने से इसमे कोई सन्देह नहीं है कि सस्कृत का युग फिर से आ रहा है और यह २१वी सस्कृत शताब्दी होगी।

जयतु सस्कृतम। जयतु भारतम।।

सम्पर्क **द्वारा श्री प्रेम बसल**
२८ सी ब्लॉक श्रीगगानगर
३३५००१ (राज०)

पृ० २ का शेष भाग

स्व0 राजेश्वर जी के प्रति आत्मिक सन्देश

होनहार विरवान के होत चिकने पात

श्री राजेश्वर जी के बचपन मे ही उनक बहुआयामी व्यक्तित्व की नीव पड गइ थी। जहा पढाई मे प्राथमिक शिक्षा के दौरान हर कक्षा मे प्रथम आते थे वही उच्च शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कालेज मे बी०एस०सी० की परीक्षा मे उत्तीर्ण होकर कालेज मे भी प्रथम आए।

जहा पढाई मे तीव्र बुद्धि थी वहीं खेद कूद मे बढ चढ कर भाग लेते थे। देशभक्तिपूर्ण तथा धार्मिक साहित्य का अध्ययन नियमित रूप से करते थे। यही कारण था कि उन्होने स्वतन्त्रता आन्दोलन और गौरक्षा आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

गरीबी के अभिशाप से सत्रस्त बचपन का बदला उन्होने तरुणाई मे ही ले लिया। वय स्याम पतयोरयिनाम वेदानुसार अथाह धन सम्पति अर्जित की लेकिन उसका उपभोग केवल अपने लिए अथवा अपने परिवार के लिए नही किया। जीवन मे शत हस्त समाहर सहस्त्रहस्त सकिर के आदेश का भी पूर्णत पालन किया।

जीवन के अन्तिम कष्ट के क्षणो मे भी उनका चिन्तन केवल पारिवारिक न हाकर सामाजिक ही रहा। प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो के साथ ही उस महामानव ने इस नश्वर शरीर का परित्याग कर दिया।

परिवार वालो ने देखा अरे ! ये क्या हुआ ? जो अभी कुछ क्षण पूर्व सास ले रहे थे अब क्या हो गया है उन्हे ? अगले ही क्षणो मे न जाने कहा चले गए ? कौन ले गया उन्हे ? क्या ये बूढा काल ऐसे ही सबको ले जाएगा ?

ससीम से असीम की ओर

बृहस्पतिवार ११ फरवरी १९९९ किसी भयकर अनिष्ट की कल्पना सब कुछ सूना सूना दिन भर गजब की व्याकुलता दिन के ११ बजे आत्मा रूपी फडफडाता हुआ पक्षी ससीम से असीम की ओर उड गया। परिवार जन देखते ही रह गए। लोगो ने सुना पारिवारिक जनो एव साथियो का सामूहिक विलाप ! सब कुछ इतिहास हो गया।

चली गई वह मूर्ति न देती नहीं दिखाई।
निज सौरभ से दिशा दिशा जिसने महकाई।।

राजेश्वर जी न अपने परिवार जनो अपनी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकान्ता जी प्रिय पुत्री श्रीमती ललिता निझावन जी से कहा था – मेरे जाने पर आपने रोना नही। किन्तु यह कैसे हो सकता है कि कोई प्रियजन सदा सदा के लिए चला जाए और आखो मे आसू न आए। फलत ११ बजे राजश्वर जी ने गगा राम अस्पताल मे अन्तिम सास ली। लगभग २ बजे शव घर लाया गया। समाचार सुन कर बडी सख्या मे लोग उनके निवास मे अन्तिम दर्शन के लिए एकत्रित हो गए।

मोह मेरा तज दीजिए माटी हुआ शरीर।
मैं बन्धन से मुक्त हुआ आप भी धरिये धीर।।

उनके पुत्र श्री रामकुमार आर्य परिवारजनो और आर्यसमाज कोटला के मन्त्री श्री बालकृष्ण जी ने निश्चय किया कि अगले दिन उनकी वसीयत के अनुसार अन्तिम सस्कार किया जाएगा। अगले दिन उनकी शवयात्रा निकाली गई जिसमे हजारो लोगो ने भाग लिया और उन्हे श्रद्धाजलि दी। राजेश्वर जी का पार्थिव शरीर अन्तिम यात्रा के लिए तैयार कर अन्तिम दर्शन के लिए रखा गया। लोगो ने उन्हे श्रद्धाजलि दी। इस बीच शव ले जाने वाले वाहन को फूलो से सजाया गया। प्रात ११ बजे उनकी अन्तिम यात्रा शुरू हुई। यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय का मन्त्र ओ३म वायुरनिलम मृतमथेद भस्मान्त शरीरम गूज उठा। गुरुकुल गौतम नगर के वेदपाठी ब्रह्मचारी शव–वाहन मे वेद मन्त्रो का उच्चारण कर रहे थे। शव वाहन धीरे–धीरे चल रहा था। शव वाहन के साथ–साथ ३० स्वयसवेक पूरे गणवेश मे स्कूटरो पर ध्वज लगाए चल रहे थे। शव वाहन मे माइक लगा रखा था जिसमे वेदमन्त्रो की ध्वनि चारो ओर गूज रही थी। शवयात्रा कई जगह रुकी और धार्मिक सस्थाओ के पदाधिकारियो ने पुष्प अर्पित कर उन्हे श्रद्धाजलि दी।

डिफेस कालोनी पैट्रोल पम्प के पास 'एक प्रेरक व्यक्तित्व श्री राजेश्वर' पुस्तक की लेखिका श्रीमती शकुन्तला आर्या के साथ सैकडो लोग उस महामानव के अन्तिम दर्शनो के लिए लम्बे समय से खडे इन्तजार कर रहे थे अश्रुपूरित नयनो से श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए उन्होने अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

शवयात्रा आर्यसमाज लोधी रोड स्थित दयानन्द घाट पहुची। वहा शवदाह की वेदी निश्चित कर महर्षि दयानन्द कृत सस्कार विधि के अनुसार अन्तिम सस्कार किया गया।

इस प्रकार पचतत्व से बना शरीर पचतत्व मे विलीन हो गया।

अन्तिम सस्कार मे दिल्ली के अनेक प्रसिद्ध धार्मिक सामाजिक एव राजनीतिक नेताओ ने भाग लेकर दिवगत आत्मा को अन्तिम विदाई दी। लोधी रोड श्मशान घाट मे मन्त्र का यह सत्य स्पष्ट उजागर हो रहा था –

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम।
ओ क्रतो स्मर किलवे स्मर कृत स्मर।।

ऐ कर्मशील आत्मा ! तू ओ३म का स्मरण कर। आत्मा की सामर्थ्य को भी याद कर अपने स्वरूप को पहिचान और अपन विगत कर्मो को भी स्मरण रख क्योकि यह निश्चित है कि एक दिन यह प्राण वायु उस अविनाशी विशाल वायु मे विलीन हो जाएगा और यह शरीर मुटठी भर राख रह जाएगा।

पाकिस्तान बाज नहीं आया तो उसका नाम दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा
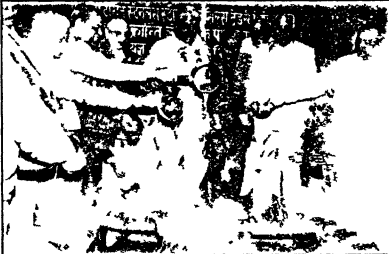
मकर सक्रान्ति के अवसर पर दिल्ली प्रदेश भाजपाध्यक्ष मागेराम गर्ग मनोहर लाल कुमार आर्यसमाज के महामन्त्री इन्द्रदेव सकल्प यज्ञ मे भारत की विजय की कामना करते हुए

आतकवाद के पोषक पाकिस्तान की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। वह दिन अब दूर नहीं जब पाकिस्तान का हश्र भी तालिबान जैसा होगा। भारत के शान्ति सन्देशो को कायरता समझने वाले आतकवादियो के दिन अब गिने चुने रह गए है। भारत शान्तिप्रिय देश है इसे कायरता समझने वाले बडी भूल कर रहे हैं।

उक्त विचार आज डिष्टिगज स्टेनलैस स्टील यूटेनसिल्स ट्रेडर्स ऐसोसिएशन द्वारा मकर सक्रान्ति पर आयोजित आतकवाद मुक्ति रक्षा सकल्प यज्ञ मे दिल्ली प्रदेश भाजपा के प्रधान श्री मागे राम गर्ग श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार ऐसोसिएशन के सरक्षक वैद्य इन्द्रदेव आदि न व्यक्त किए।

सैकडो लोगो ने यजमान बनकर आतकवाद के विनाश तथा राष्ट्र की रक्षा की कामना को लेकर आहुतिया डाली।

इस अवसर पर वक्ताओ ने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे भारत की विश्व मच पर विशेष पहचान बनी है जबकि पाकिस्तान को लोग आतकवाद के पोषक के रूप मे जानने लगे है। यदि पाकिस्तान बाज नहीं आया तो उसका नाम दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा।

आर्यसमाज के कार्य मानवता के प्रति प्रेम से परिपूर्ण

गांधीधाम (कच्छ) में आर्यसमाज द्वारा भूकम्प दिवंगतों को श्रद्धांजलि

दिनाक २६ जनवरी २००१ को आए महाविनाशकारी भूकम्प ने कच्छ क्षेत्र को चपेट में लिया जिसमे अत्यधिक जान-माल की हानि हुई।

भूकम्प को जब एक वर्ष पूर्ण हुआ तो इसकी पूर्व सध्या पर दिनाक २५/१/२००२ की शाम ५.३० बजे भूकम्प मे दिवगत आत्माओ की सद्गति एव चिर शाति के लिए आर्यसमाज द्वारा एक श्रद्धाजलि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप मे श्री धीरुभाई शाह (अध्यक्ष विधानसभा गुजरात) थे। विशिष्ट अतिथियो मे श्री डॉ० के० डी० जेस्वानीजी (अध्यक्ष गुजरात उर्वरक बोर्ड वडोदरा) श्री सी० एल० गुप्ता (वेद प्रचारमत्री अमेरिका) श्री कल्याणदेव आर्य (प्रधान गुजरात प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभा) प्रीति कोटवाल (समाजसेविका आरट्रेलिया) श्री मावजीभाई पटेल (भुज यूनिट डायरेक्टर जायन्टस इन्टरनेशनल) कडला पोर्ट के अध्यक्ष श्री ए० के० जोती साहब (आई० ए० एस०) डेप्युटी चेयरमेन श्री विपुल मित्रा साहब उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम आर्यसमाज सचालित जीवन प्रभात भूकम्प पीडित बालक एव बालिकाओ के द्वारा यज्ञ किया गया। उसके बाद श्री धीरुभाई शाह एव अतिथियो का स्वागत 'जीवन प्रभात की बालिकाओ द्वारा तिलक लगाकर किया गया। तत्पश्चात ज्ञानदेव शर्मा द्वारा भूकम्प की चुनौती भरी कविता कहकर श्रोताओ को प्रकृति के प्रकोप से लडने की सीख दी एव जीवन प्रभात के बच्चो द्वारा समर्पण गीत मारु जीवन अजलिथाजो' (गुजराती) प्रस्तुत किया गया तथा इन्ही बच्चो द्वारा पुष्पमालिका देकर अतिथियो का स्वागत किया गया।

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

श्रद्धाजलि सभा मे यज्ञ करते हुए जीवन प्रभात के बालक। श्री धीरु भाई शाह के हाथो स्मृति चिन्ह ग्रहण करते हुए कडला पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमेन श्री जोती एव डिप्टी चेयरमैन विपुल मित्रा जी। श्रद्धाजलि सभा का सचालन करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य मचस्थ महानुभावो मे विधान सभा अध्यक्ष श्री धीरु भाई शाह गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कल्याण देव तथा अन्य।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 10-2-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 7-8/2 /2002

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

के अवसर पर

मुख्य समारोह

८ मार्च, २००२ (शुक्रवार) फाल्गुन वदी दशमी २०५८

अध्यक्षता – **कैप्टन देवरत्न आर्य** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्थान महर्षि दयानन्द गौ सवर्धन केन्द्र गाजीपुर नई दिल्ली

प्रात ६ ०० बजे **यज्ञ**

प्रात १० ०० बजे से **जयन्ती समारोह**

विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम

एक निवेदन

इस समारोह मे महर्षि जन्मोत्सव को आर्यजनता अपनी अपनी आर्यसमाजो एव अन्य सस्थाओ मे समारोह पूर्वक मनाने के साथ साथ अपने अपने घरो मे परिजनो और बच्चो के बीच भी मनाए। यज्ञ करके प्रसाद रूप मे हलवा या अन्य मिष्ठान तथा विशेष पकवान बनाए जाए। परिजनो मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से सम्बन्धित दृष्टातो एव सिद्धान्तो पर चर्चा अवश्य की जाए। समाजो एव सस्थाओ द्वारा यह प्रयास किया जाए कि क्षेत्र के अधिक से अधिक लोगो को जोडकर सार्वजनिक स्थलो पर यज्ञ एव प्रसाद वितरण हो। विशिष्ट प्रशासनिक अथवा पुलिस अधिकारियो को आमन्त्रित किया जाए तथा उन्हे अधिकाधिक आर्य साहित्य वितरित किया जाए। मन्दिरो पर रोशनी का प्रबन्ध किया जाए। टेपरिकार्ड एव लाऊडस्पीकर से ऋषि गाथा का प्रसार हो। महर्षि के जन्म दिवस समारोह को स्वय अपने जन्मदिवस की तरह धूमधाम से मनाए।

नोट कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लगर अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा — मन्त्री

विमल वधावन — वरिष्ठ उप प्रधान

पृष्ठ ११ का शेष

आर्यसमाज के कार्य मानवता के प्रति ...

आर्यसमाज के नेतृत्व मे इस श्रद्धाजलि कार्यक्रम मे इफको एव कडला पोर्ट ट्रस्ट सहित ५७ सरकारी व गैर सरकारी सस्थाओ ने हिस्सा लिया। सभी सस्थाओ ने आर्यसमाज के नेतृत्व को स्वीकारा। दूरदर्शन स्थानीय टी०वी० चैनल कच्छ के प्रमुख पत्र पत्रिकाओ सूचना विभाग सहित सभी ने इस कार्यक्रम का कवरेज किया।

डॉ० के० डी० जेस्वानी जी ने भूकम्प के बाद कार्यरत रही सस्थाओ को वैदिक परम्परा मे जो मानव के प्रति प्रेम एव सहानुभूति दिखाने को कहा है उसकी मिसाल बताया। जो कार्य सरकार नही कर सकी वह कार्य स्थानीय सस्थाओ ने मिलकर कर दिखाया है। उनकी सराहना करते हुए डॉ० के० डी० जेस्वानी जी ने दिवगत आत्माओ को श्रद्धाजलि दी।

अमेरिका से पधारे श्री सी० एल० गुप्ता साहब ने आर्यसमाज गाधीधाम के कार्यो की सराहना करते हुए ११ लाख रुपये जीवन प्रभात के लिए देने की घोषणा की।

अत मे श्री धीरुभाई शाह (अध्यक्ष गुजरात विधान सभा) ने भूकम्प की दिल दहला देने वाली स्मृतियो को ताजा करते हुए बताया कि जो कार्य सरकार को करना चाहिए वो कार्य आर्यसमाज ने कर दिखाया है। आर्यसमाज के नेतृत्व मे सभी सस्थाओ का सगठन बना रहे तो हर कार्य बहुत आसान हो जावेगा।

उन्होने कहा कि जो महान नामी एव अनामी आत्माए जो हमारे बीच नहीं रही उनके विचार सस्कार एव कार्यो को हम अपने जीवन मे उतारे यही उनके प्रति सच्ची मूक श्रद्धाजलि है तथा इस समय दौरान २ मिनिट का मौन रखकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस पूरे कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज के महामत्री श्री वाचोनिधि ने किया। इस कार्यक्रम मे अतिरिक्त जिला अधीक्षक गाधीधाम–मामलतदार सहित शहर की सभी सस्थाओ के प्रमुख प्रतिनिधियो चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रधान सहित शहर के गणमान्य व्यक्तियो सहित विशाल सख्या मे नगरजन उपस्थित रहे।

दिनाक २६ जनवरी २००१ को आये भूकम्प के दौरान गिरे मकानो तथा एपार्टमेन्टो मे आर्यसमाज द्वारा दिवगतो की सद्गति एव शाति हेतु जगह जगह हवन किया गया था। २६ जनवरी २००२ के दिन सभी जगह जाकर यज्ञ करने मे सक्षम नहीं होने के कारण हमने चेम्बर ऑफ कॉमर्स के मैदान मे सुबह शाति यज्ञ करने के बाद यज्ञकुण्ड को ऊटगाडी मे लेकर जहा कहीं भी एपार्टमेन्ट व मकान गिरे थे वहा जाकर यज्ञकुण्ड उतारकर उसी स्थान पर ११–११ बार गायत्री मत्र की आहुति देकर दिलाकर दिवगतो की आत्मा की शाति व सद्गति हेतु प्रार्थना की। इसी तरह ऊटगाडी यात्रा पर पूरे शहर को कवर किया गया। सभी स्थानो पर बडी सख्या मे लोग श्रद्धाजलि देने उपस्थित रहे थे।

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है, कलि भी नही बिगाड़ सकता

प्रतिष्ठा मे

पृष्ठ ९ का शेष भाग

अन्त मे माता प्रेमलता ने उन बच्चो का परिचय देते हुए वहा की जनता को बताया कि ये बच्चे उन प्रान्तो से आए है जहा हिन्दी पढना तो क्या सस्कृति की बात करना भी पाप समझा जाता है। यहा के सचालक धन्यवाद के पात्र हैं जो प्रान्त प्रान्त के फूल इकटठे कर भारतीय सस्कृति का गुलदस्ता बनाना चाहते है। माता प्रेमलता ने बच्चो को आशीर्वाद देते हुए अपने सकल्प की भी घोषणा की और कहा कि सरकार ने 'नारी वर्ष मना लिया है अब अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ "महिला क्रान्ति वर्ष मना रहा है। इस घोषणा को सुनकर गुरुकुल की आचार्या कमला जी ने माता जी को अपने गुरुकुल मे आने का निमन्त्रण दिया। साढे पाच सौ कन्याओ के मध्य जब माता जी ने अपने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किये और कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी उत्थान के लिए बहुत प्रयास किये थे परन्तु इस भाषा की दृष्टि से गुलाम देश मे पाश्चात्य सभ्यता की गरिमा अधिक दिखाई देने लगी है। कहीं कही ऐसे गुरुकुल दिखाई देते हैं जहा वैदिक सस्कृति सास लेती दिखाई देती है। इस महिला क्रान्ति वर्ष का मुख्य उद्देश्य [illegible] म वैदिक सस्कति क लिए जागृति पैदा करना है। माताजी के जोशील विचारो को सुनकर सब कन्याए बडी भावुक हो उठीं। माता जी ने कहा कि अब मै बूढी हो गई हू, मेरा साथ सभी को देना होगा। सभी कन्याओ ने हाथ खडे करके माता जी के सकल्प को दोहराया और साथ देने का वचन दिया।

ततपश्चात दयानन्द कन्या विद्यालय सासनी के आचार्य माता जी को अपने स्कूल ले गए। वहा ३०० कन्याए थीं। वहा कन्याओ को सबोधित करते हुए माताजी ने कहा कि इस पुरुष प्रधान देश मे कन्याए अपनी रक्षा स्वय करना सीखे और कई प्रेरणादायक कहानिया और कविताए सुनाकर कन्याओ को उत्साहित किया और नारी की शक्ति का दिग्दर्शन कराया। इससे कन्याओ का मनोबल बढा और वे बहुत प्रसन्न हुई।

मातृछाया के सस्थापक प० प्रेम नारायण वैद्य जी हाथरस के सुजान ग्राम मे माताजी को ले गये जहा २५ मुस्लिम परिवारो को प० प्रेमनारायण द्वारा शुद्ध कर वैदिक धर्म मे परिवर्तित किया गया था। माताजी ने वहा यज्ञ करवाया उपदेश दिया तथा इस साहसिक कार्य के लिए इन परिवारो को सच्चे देशभक्त एव कर्मवीर की उपाधि प्रदान करते हुए कहा कि सदा अपने देश और सस्कृति की रक्षा करते हुए और भी परिवार जो हमसे बिछुड गए हैं उन्हे फिर से अपना अग बनाने का प्रयास करते रहे। 'मातृछाया' के मत्री श्री नवल सिह चौधरी ने माता जी को स्कूलो और कालेजो मे विचार देने के लिए पुन आने का निमन्त्रण दिया। माता जी ने साधन न होने के कारण असमर्थता व्यक्त की। मत्री जी ने कहा कि आपको लेने और छोडने का प्रबध हम स्वय करेगे।

माता जी का जब वापिस दिल्ली जाने का समय आया तो बच्चे बहुत उदास हो गए। माता जी ने जीप मे बैठे बैठे बच्चो से कहा कि प्रसन्न होकर मेरे साथ गाओ – सारे जहा स अच्छा गुरुकुल है ये हमारा – हम बुलबुल है इसके ये गुलिस्ता हमारा। इस प्रकार जय घोष करते हुए गुरुकुल वासियो एव अधिकारियो ने माताजी एव सभी अतिथियो को बिदाई दी।

– **ब्रह्मचारिणी रश्मि आर्य**
मातृछाया साधना केन्द्र, हाथरास-आगरा रोड

वर की आवश्यकता

विश्वकर्मा (काष्टकार) स्लिम आकर्षक कॉन्वेट शिक्षित एम०एस०सी० एल०एल०बी० दिल्ली मे कार्यरत जन्म अगस्त ७१ कद १५७ सी०एम० कन्या हेतु सुयोग्य समकक्ष शिक्षित वर चाहिए। कोई भाषा या जाति बन्धन नहीं। पिता सेवानिवृत्त नेत्र विशेषज्ञ (सार्वजनिक उपक्रम) बायोडाटा एव फोटो भेजे।

सम्पर्क – डॉ० बी० शर्मा
७०१ प्रो० बारी को० आपरेटीव कोलोनी पो० सिवन्डी बोकारो स्टील सिटी 827011
दूरभाष – 06542 58764 (झारखण्ड)

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत विधिवत रूप मे सार्वदेशिक धर्मार्य सभा गठित है जिसके अध्यक्ष पूज्य आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री जी है तथा सयोजक डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री हैं।

आर्यजनो को किसी भी धार्मिक आध्यात्मिक विषय पर सशय समाधान करना हो तो सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नाम निम्न पते पर पत्र व्यवहार किया जा सकता है –

१ **सार्वदेशिक धर्मार्य सभा**
३/५, दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली–२

२ **आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री**
प्रधान सार्वदेशिक धर्मार्य सभा
१०३/४६ सैक्टर–६
नवयुग अपार्टमेण्टस रोहिणी
दिल्ली ११००८५, दूरभाष ७५५२६३२

३ **डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री**
सयोजक धर्मार्य सभा
म० न० १३२ पुराना अस्पताल रोड
जम्मू – १८०००१ (जम्मू कश्मीर)
दूरभाष ५४८००६ (नि०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री**। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अंक ४३ | १७ फरवरी से २३ फरवरी, २००२ तक | दयानन्दाब्द १७८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ | सम्वत् २०५८ | मा० शु० ५

एक प्रति १ रुपया (भारत में) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

श्रद्धा, अनुशासन और कर्त्तव्य पालन की प्रेरणाओं से ओत-प्रोत होगा

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार

सार्वदेशिक सभा में विभिन्न समितियां गठित करने तथा सत्रों के निर्धारण की प्रक्रिया का शुभारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार मे चैत्र शुक्ल १३ से वैशाख कृष्ण २ २०५६ तदनुसार २५, २६ २७ और २८ अप्रैल २००२ को आयोजित किए जाने की घोषणा के बाद हरिद्वार और दिल्ली मे कार्यकर्ता बैठके आयोजित करके महासम्मेलन की तैयारियो का सिलसिला प्रारम्भ हो गया है। यह विशाल महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे होगा। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होगे। सभी प्रान्तीय सभाओ के प्रमुख पदाधिकारियो और विशिष्ट आर्य सस्थाओ के प्रमुख पदाधिकारियो सहित एक स्वागत समिति का गठन किया जा रहा है। हरिद्वार सम्मेलन अपने आप मे एक विशाल सम्मेलन होगा जो आर्यसमाज की सगठनात्मक एकता और वैदिक सस्कृति को उजागर करने मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

विगत २६ और २७ जनवरी को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय गुरुकुल विभाग तथा गुरुकुल फार्मेसी के अतिरिक्त दिल्ली हरयाणा और पजाब की प्रतिनिधि सभाओ के प्रमुख अधिकारियो ने भी इस विचार विमर्श बैठको मे भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने इस महासम्मेलन की विस्तृत जानकारी सदस्यो को दी और भोजन आवास पण्डाल मच तथा कार्यक्रमो के बारे मे सभी उपस्थित सदस्यो की शकाओ का समाधान किया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि किसी मार्ग पर चलते हुए समस्याएं छोटी हो या बडी परन्तु जब इच्छाशक्ति प्रबल होती है तो कोई भी समस्या टिक नहीं पाती और मजिल तक पहुचने का मार्ग प्रशस्त होता है। हाल ही मे गुरुकुल कागडी के भूमि विक्रय प्रकरण से जो क्षति हुई है उसकी भरपाई करने के लिए ही सार्वदेशिक सभा ने इस महासम्मेलन को हरिद्वार मे गुरुकुल के प्रागण मे ही करने का निश्चय किया है। इस महासम्मेलन के माध्यम से एक विशेष सन्देश दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जाएगा कि आर्यजन अपने कर्त्तव्यो के प्रति अब भी जागरूक हैं और दान मे मिली सम्पत्ति की किसी भी कीमत पर रक्षा करना भी जानते हैं।

उन्होंने कहा कि मुम्बई महासम्मेलन को श्रद्धा और अनुशासन का पर्व कहा गया था। आज इस हरिद्वार महासम्मेलन के माध्यम से उसी श्रद्धा और अनुशासन के आधार पर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के प्रति हमारे कर्त्तव्यो का क्रियान्वयन प्रारम्भ होगा।

श्री विमल वधावन ने इस महासम्मेलन मे होने वाले कार्यक्रमो और विभिन्न सत्रो की सक्षिप्त जानकारी उपस्थित सदस्यो को दी। सत्रो तथा वक्ताओ और अतिथियो के निर्धारण के लिए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे एक समिति भी गठित की गई है।

उन्होने बताया कि निम्न प्रमुख विषयो पर विभिन्न सत्रो के आयोजन पर विचार किया जाएगा।

१ गुरुकुल सस्कृति सत्र
२ नारी से मानव निर्माण
३ अधिकार बनाम कर्त्तव्य
४ आधुनिक युग मे धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप
५ समाज की मूल ईकाई – आर्य परिवार
६ राष्ट्र सेवा सत्र
७ इतिहास पुनर्लेखन
८ गृह वापसी

हरिद्वार महासम्मेलन के अवसर पर सभी पुराने स्नातको का पुनर्मिलन समारोह भी आयोजित होगा जो विगत सौ वर्षो मे इस गुरुकुल से दीक्षित होकर निकले हैं। इस कार्य के लिए भी गुरुकुल के वर्तमान अधिकारियो तथा कई पूर्व स्नातको सहित एक उपसमिति का गठन किया गया है जो डॉ० महेश विद्यालकार के सयोजकत्व मे कार्यक्रम का निर्धारण करेगी।

हरिद्वार महासम्मेलन के शुभावसर पर शोभायात्रा भी अपने आप मे अनूठी एव विहगम होगी। इस शोभा यात्रा को वेद की अनन्त यात्रा नाम दिया गया है। इस वेद यात्रा मे विभिन्न प्रान्तो से पधारे आर्य सगठनो तथा हरिद्वार की आर्य सस्थाओ के अतिरिक्त हरिद्वार की अन्य हिन्दू धार्मिक सस्थाओ की झाकिया भी शामिल की जाएगी क्योकि विगत कुछ समय से वेदो मे गोमास तथा अन्य अनर्गल बातो का प्रलाप किया जा रहा है। उनका जवाब केवल महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य ही है। अत समस्त हिन्दू सस्थाओ आदि से भी सम्पर्क करके इस वेद यात्रा मे शामिल होने का आग्रह किया जाएगा।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक की सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक अत्यावश्यक बैठक **३ मार्च, २००२ (रविवार)** को **प्रात ११ बजे से सार्वदेशिक सभा कार्यालय ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली** मे आयोजित की गई है। इस बैठक मे हरिद्वार महासम्मेलन के विशाल आयोजन पर विस्तारपूर्वक विचार विमर्श किया जाएगा। सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सदस्यो को भेजे बैठक आमन्त्रण मे सभी सदस्यो को इस बैठक मे विशेष रूप से उपस्थित रहने का निवेदन किया है।

२५, २६, २७ एवं २८ अप्रैल, २००२ की तिथियों में विशेष आयोजन न करें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार के आयोजन को देखते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सभी प्रान्तीय सभाओ आर्यसमाजो तथा अन्य सस्थाओ से साग्रह निवेदन किया है कि **२५ से २८ अप्रैल, २००२** की तिथियो मे स्थानीय या प्रान्तीय स्तर पर किसी प्रकार के विशेष कार्यक्रम आयोजित न करे और अधिक से अधिक सख्या मे आर्यजनो सहित हरिद्वार गुरुकुल कागडी महासम्मेलन मे चलने की तैयारी करे।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

'शिक्षा एवं भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन' विषय पर विद्वत विचार गोष्ठी सम्पन्न

कोलकाता ८ फरवरी। सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल द्वारा स्थानीय श्री शिक्षायतन हाल म विगत दिनो उपर्युक्त विषय पर बुलाई गयी एक विद्वत गोष्ठी मे आर्यसमाज से जुडे विद्वानो के साथ साथ पूरी स्वतत्रता पूर्वक अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार पत्रकार भी आमन्त्रित थे परन्तु पुनर्लेखन का विरोधी कोई भी विद्वान आर्य विद्वानो के सामने आने का साहस नहीं जुटा पाया। केन्द्रीय सरकार के मन्त्री माननीय श्री सत्यव्रत मुखर्जी ने आज क सन्दर्भो मे गोष्ठी के विषय को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुए इस प्रकार के प्रयास को आर्य समाज की सजगता का प्रमाण बताया तथा कहा कि अब वे दिन लद गये कि इस देश के युवक को विकृत इतिहास पढाया जाता रहेगा जिससे लाग अपनी महान सास्कृतिक विरासत एव उच्च जीवन मूल्यो को ही भूलते जा रहे है। प्रसिद्ध विद्वान प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ने दृष्टान्तो द्वारा बताया कि यद्यपि अनेकानक बुनियादी भूलो के कारण हमारे देश क इतिहास के पुनर्लेखन की ही आवश्यकता है तथापि सरकार एव सरकारी एजेसिया यथा राष्ट्रीय शिक्षा शोध एव प्रशिक्षण परिषद (एन०सी० ई०आर०टी०) द्वारा इस प्रकार की कोई इच्छा या सकल्प अब तक व्यक्त नहीं किया गया है जिसकी कि आवश्यकता है फिर भी शिक्षा मन्त्री ने अनेक झझावातो को झेलते हुए कुछ ऊल जलूल प्रसगो को इतिहास की पुस्तको से हटा दिये जाने के एन०सी०ई०आर०टी० के प्रस्तावो को स्वीकार किया है तदर्थ वे साधुवाद के पात्र है साथ ही आपने कहा कि यह आशा की जानी चाहिए कि शिक्षामन्त्री इस पर अधिक गहराई से ध्यान देगे। श्री उपध्याय जी न यह भी बताया कि इतिहास लेखन मे अग्रेजो के श्रम एव प्रयास की हम सराहना कर सकते हैं जिन्होने भारत का इतिहास जानने मे वेदो को मुख्य आधार माना परन्तु उनके सामने आचार्य सायण एव महीधर आदि की टीकाए थीं जिनमे अनेक स्थलो पर अर्थ का अनर्थ कर दिया गया है क्योकि दयानन्द का वेद भाष्य तथा दयानन्द द्वारा महामुनि यास्क के निरुक्त तथा निघन्टु की प्रक्रिया एव पद्धति से वेद मन्त्रो का अर्थ जानने की बात उनके सामने नहीं आयी थी। गोष्ठी मे बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एव प्रधान माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य ने बताया कि सभा की ओर से सरकार के समक्ष यह माग रख दी गयी है कि वह इतिहास की पुस्तको से आर्यों को विदेशी एव आक्रमणकारी व्यक्त करने जैसी झूठी एव निराधार बातो को अविलम्ब हटा कर इस तथ्य को दुनिया के सामने लाये कि आर्य इस देश के प्रथम निवासी थे तथा अन्यत्र दूर देशो मे वे यहा से गये। उन्होने कहा कि ऐसा न किये जाने पर आर्यसमाज की ओर से अन्य सस्थाओ का सहयोग लेकर प्रबल जनान्दोलन किया जाएगा। गोष्ठी मे मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए समाज सेवी श्री दयानन्द आर्य ने कहा कि एक सबल राष्ट्र का निर्माण तभी सम्भव है जब उसके देशवासी अपनी सस्कृति एव इतिहास के गौरवपूर्ण पहलुओ को अपनी दृष्टि से ओझल न होने दे अपितु उस पर गर्व करे उसके प्रति लगाव महसूस करे तभी राष्ट्र प्रेम राष्ट्रभक्ति की भावना देश मे कायम रह सकेगी अत इस दृष्टि से आज की यह गोष्ठी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। अधिवक्ता शम्भुनाथ राय ने भी गोष्ठी मे विचार रखे।

भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन विषय पर कोलकाता मे आयोजित सगोष्ठी मे बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य

प्रारम्भ मे सुश्री प्रेमलता अग्रवाल सगीता लाहोटी हर्षिता दम्मानी के समवेत वेद मन्त्रोच्चार ने श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध कर दिया। गोष्ठी का शुभोदघाटन विशिष्ट समाज सेवी परोपकारिणी सभा के प्रधान माननीय गजानन्द जी आर्य द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया एव सचालन कर रहे थे श्री चान्दरतन दम्मानी। आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के महामन्त्री एव सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान एव पूर्वाचल मे असम बगाल बिहार उडीसा के प्रभारी श्री आनन्द कुमार आर्य ने गोष्ठी के विचारकों का पुष्प गुच्छ भेट कर स्वागत किया तथा सभा प्रधान श्री मोहनलाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

– चान्दरतन दम्माणी
प्रवक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल कोलकाता

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के कार्यालय में आयोजित विशेष कार्यकर्ता सम्मेलन जिसे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री बगाल सभा के प्रधान श्री मोहन लाल आदि ने सम्बोधित किया। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने बैठक का सचालन किया जिसमें विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के स्नातक बन्धुओं तथा उनके परिवारों से विनम्र निवेदन

पर्याप्त समय से यह आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से विगत सौ वर्षों मे दीक्षित होकर निकले स्नातक बन्धुओ तथा उनके परिवारो का परस्पर मिलन समारोह आयोजित किया जाए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित यशस्वी आर्यनेताओ तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के अधिकारियो के शुभ प्रयासो से हरिद्वार महासम्मेलन का विशाल आयोजन होने जा रहा है। इस अवसर पर स्नातक बन्धुओ तथा उनके परिजनो का एक मार्मिक पुनर्मिलन समारोह भी सम्मेलन के दौरान ही आयोजित करने का विचार हुआ है।

सभी स्नातक बन्धुओ तथा उनके परिजनो से निवेदन है कि सक्षिप्त परिचय सहित अपना पूरा पता दूरभाष (एस०टी०डी० कोड सहित) निम्न पते पर प्रेषित करने का कष्ट करे।

– डॉ० महेश विद्यालकार,
सयोजक स्नातक पुनर्मिलन समिति, हरिद्वार,
सार्वदेशिक सभा, ३/५, दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

प्रान्तीय सभाओं का इतिहास तथा समस्त गुरुकुलों के नाम-पते शीघ्र भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार के शुभावसर पर एक भव्य स्मारिका प्रकाशित करने की योजना है। इस स्मारिका मे सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओ का सक्षिप्त इतिहास तथा उनके प्रान्त मे चल रहे गुरुकुलो तथा कन्या गुरुकुलो की सूचिया भी प्रकाशित की जाएगी। इस आशय का पत्र सभी प्रान्तीय सभाओ को भेजा जा रहा है जिससे वे उक्त जानकारी यथाशीघ्र सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे भिजवा सके। प्रान्तीय सभाओ के अधिकारियो से विशेष निवेदन है कि वे उपरोक्त सूचना का सकलन तत्काल प्रारम्भ करदे और यह सूचना ३ मार्च तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे पहुचनी अत्यन्त आवश्यक है। समस्त गुरुकुल सचालको से निवेदन है कि वे स्वय ही अपने गुरुकुल का नाम पता तथा अपनी जानकारी के अनुसार देश के अन्य गुरुकुलो का भी नाम व पता भिजवा दे।

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

ना काहू से दोसती, ना काहू से बैर

सार्वदेशिक सभा का चुनाव

– मुनि डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

सार्वदेशिक सभा के चुनाव के विषय मे कई पत्रिकाओ मे लेख निकाले जा रहे है। आर्य जगत की विभिन्न पत्रिकाए मेरे पास आई है। इन पत्रिकाओ मे श्री रामफल बसल जी द्वारा कराए गए चुनाव की आलोचनाए की गई हैं। दो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बन गई है एक सभा अदालत के द्वारा नियुक्त व्यक्ति के द्वारा विधिवत बनाई गई है और दूसरी स्वय बना ली गई है। दो सार्वदेशिक सभाओ का बनना आर्यसमाज के सगठन के लिए हानिकर है।

तीन वर्ष पहले भी ऐसा ही हुआ था। ऐसा क्यो हो रहा है इसके पीछे कौनसी भावना काम कर रही है यह एक विचारणीय विषय है। आर्यजनता के सामने दूध का दूध और पानी का पानी सामने आना चाहिए।

मै बीसियो वर्षो से सार्वदेशिक सभा की अन्तरग का सदस्य रहा हू। मै हमेशा निष्पक्ष रहा हू। आर्यसमाज का जिससे भला हा वही चिन्तन मेरा रहा है। बुद्धिजीवी हू अत देख सब कुछ रहा हू और समझ भी रहा हू। वर्तमान समय मे जो कुछ हो रहा है अच्छा नही हो रहा है। आर्यसमाजो मे प्रतिनिधि सभाओ मे और सार्वदेशिक सभा मे जो वर्तमान वातावरण बना हुआ है उसके मुख्य कारण वित्तैषणा और लोकैषणा ही है। ये इच्छाए व्यक्ति को गलत कार्य करने के लिए भी विवश कर देती है। सार्वदेशिक सभा मे भी मुख्य रूप से सघर्ष के कारण मे ये ही दोनो इच्छाए कार्य कर रही है। कोई अधिकारी लोकैषणा का अधिक महत्व देता है तो कोई वित्तैषणा को और कोई दोनो को ही एक साथ प्राप्त करना चाहता है। देखा जाए तो हम सब आर्यसमाजी ऐसे महान गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी हैं जिस महात्मा मे न वित्तैषणा थी और न लोकैषणा थी। उनमे तीनो ऐषणाए न थी वे अपने परिवार से भी सदा के लिए सम्बन्ध विच्छेद कर चुके थे अत पुत्रैषणा का तो प्रश्न ही नही था। ऐसी पवित्र एव सत्यप्राण सस्था का प्रभाव किसी समय जनमानस पर जादू की तरह पडा था। आर्यसमाज से जनता सच्चे दिल से जुड गई थी। परन्तु अब क्या हा रहा है ?

सार्वदेशिक सभा मे मुख्य सघर्ष का कारण गुरुकुल कागडी हरिद्वार है। इस सस्था को सर्वस्व त्याग करके स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बनाया था। यह सस्था देशभक्ति का भारतीय सस्कृति का मानव निर्माण का महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शो का आर्ष शिक्षा प्रणाली का सस्कृत भाषा के प्रचार का केन्द्र रही है। परन्तु कुछ समय से इस सस्था को नोच नोच कर खाने वाले गिद्ध दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति इसको किसी न किसी तरह से अपने अधिकार मे रखना चाहते है। तीनो सभाए विशष रूप से इस सस्था स जुडी हुई है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब। ये तीनो सभाए इस सस्था पर अधिकार रखने क लिए जोड तोड करती रहती है इन्ही तीनो सभाओ से जो व्यक्ति चुनकर इस गुरुकुल मे गए है उनमे से ही कुछ व्यक्तियो ने इस गुरुकुल मे घोटाले किए है। कभी इसकी फार्मेसी मे घोटाले हुए कभी इस की जमीन बेचने मे घोटाले हुए तथा अन्य भी। मै नाम किसी का नहीं लूगा आर्य जनता सबको जानती है।

गत दिनो मे जो गुरुकुल की जमीन को बेचने का घोटाला हुआ है वह सबको पता है। डा० महेश विद्यालकार ने अपने लेखो के द्वारा इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है और अपनी वेदना प्रकट की हे। दुख तो इस बात का है कि यह सब कुछ सार्वदेशिक सभा के त्यागी तपस्वी सन्यासी के प्रधानकाल मे हुआ हे। आश्चय की बात तो यह है कि सम्पूर्ण यति मण्डल ने इस काण्ड के विषय मे निन्दा प्रस्ताव भी पास नही किया। सबने चुप्पी साध रखी है। घोटाला करने वाले और कराने वाले स्वतन्त्र घूम रहे है सफेद वस्त्र पहन कर अब भी नेतागिरी मे लगे हुए है। ऐसे भ्रष्ट राजनीति मे चतुर बन्दर बाट करने वाले चतुर तथाकथित आर्यो ने ही सार्वदेशिक सभा पर पुन कब्जा करने की नीति बनाई। उनका उद्देश्य यही था कि पुन सार्वदेशिक सभा के अधिकारी बनकर गुरुकुल कागडी पर कब्जा किया जाए और सभी घोटालो पर पर्दा डाल दिया जाए। क्या यह प्रयत्न निन्दनीय नही है कहा गया सन्यासीवर्ग जो महर्षि के मार्ग पर चलने का दावा करते है उनकी छत्र छाया मे ऐसा क्यो हुआ और अब सभी चुप्पी साधे बैठे हुए है क्यो ? सार्वदेशिक सभा का चुनाव सर्वसम्मति से या बहु सम्मति से शान्तिपूर्वक निष्पक्ष होना चाहिए था सो हुआ परन्तु राजनीति निपुण व्यक्तिया ने जब जनबल डण्डाबल तथा अन्य राजनैतिक तरीको से पुन सभा पर कब्जा करना चाहा चुनाव हमारे पक्ष मे हो अन्यथा हम स्टे ले लेगे चुनाव नही होने देगे ऐसा क्यो सोचा जा रहा था ?

तीन वर्ष के लिए आर्यो ने यह सोचा था कि सभा को सन्यासियो के हाथ देकर देखे परन्तु उसका क्या परिणाम निकला न कुछ काम हुआ ओर न सभा आगे बढी और जो कुछ हुआ वह आर्य जगत के सामने उजागर हो रहा है।

अब शस्त्रो के बल पर भी गुरुकुल कागडी पर कब्जा करने की नीति अपनाई जा रही है जहा गुरुकुल की पवित्र स्थली पर वेद ध्वनि गूजनी चाहिए। यज्ञो की सुगन्धि फलनी चाहिए वहा गोलिया चली और रक्त बहाने क प्रयत्न हुए। यह सब कुछ कौन कर रहे हे या क्यो करा रहे हे ? यह सब कुछ आर्य जनता धीरे धीरे यथासमय जान जाएगी। समय बडा बलवान है।

ऐसे व्यक्तियो से आर्य प्रतिनिधि सभाए तथा सच्चे आर्य पुरुष महर्षि के अनन्य भक्त सावधान रहे तो अच्छा है। जोडने की विधि सोचे तोडने की नही। मुझे स्वामी धर्मानन्द जी के भी विचार पढने को मिले स्वामी जी भी सभा प्रधान बनने के प्रत्याशी थे। उन्होने इस चुनाव को धोखा कहा छल कहा परन्तु क्या स्वामी जी ने अब तक उन व्यक्तियो के प्रति भी एक शब्द निन्दा का कहा जिन्होने गुरुकुल कागडी के साथ छल किया और धोखा दिया। क्या श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज जो हृदय रोग से ग्रसित हैं अस्वस्थ है अधिक भागदौड नही कर सकते आप प्रधान बनकर गुरुकुल कागडी के साथ न्याय करने मे समर्थ हो सकते थे ? आपको तो अन्य व्यक्तियो के द्वारा रिमोट कण्ट्रोल से चलाया जाता। अस्वस्थता के कारण ही पूर्व प्रधान जी भी सक्रिय कार्य नहीं कर सके। स्वस्थ व्यक्ति ही सभा का प्रधान होना चाहिए कैप्टन देवरत्न जी यदि सभा के प्रधान बन भी गए है तो उन्हे एक अवसर देना चाहिए था। नवयुवक हैं कार्यकुशल हे याग्य है करोडो रुपये आर्यसमाज के लिए दान लकर उन्होन प्रशसनीय कार्य किए है। इन सन्यासियो को तीस तीस लाख की थैलिया भेट करा उनका हार्दिक सम्मान भी किया है। आज भी सन्यासियो के प्रति तथा विद्वानो के प्रति उनकी श्रद्धा यथावत बनी हुई है। उनके चरण छूकर प्रणाम करक नम्रता को प्रकट करते हे। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता को तो सन्यासियो क द्वारा आशीर्वाद मिलना चाहिए था परन्तु ऐसा न करक उनक विरुद्ध खड हो गए। दूसरी समकक्ष सभा खडी क दी इसकी क्या आवश्यकता थी यह सच हे कि जिस शान्त वातावरण म सार्वदेशिक सभा का चुनाव होना चाहिए था वह दुर्भाग्य स तथा किसी आशका से हा सका जिससे आर्येतर जनता को सडक पर तमाशा देखने का मिला।

आज आर्यसमाज सकट क दार स गुजर रहा हे। आज आर्यसमाज को त्यागी तपस्वी ईमानदार महर्षि दयानन्द सरस्वती की कीली से जुड रहने वाल सिद्धान्तप्रिय सत्यप्रिय और नैतिक चरित्रवान व्यक्तियो की आवश्यकता है। इतना बडा अन्तराष्ट्रीय सगठन कही बिखर कर न रह जाए। कहा आर्यसमाज की सम्पत्तियो को अन्य व्यक्ति खा न जाए। कही ये विशाल भवन सूने न हो जाए इनके लिए प्रयत्नशील होने की आवश्यकता हे सगठन मे यदि विघटन हो गया ह ता उसे पुन सगठित करने की परमावश्यकता है। पदलिप्सा स दूर पुत्रैषणा वित्तैषणा और लोकैषणा से ऊपर उठकर सभी सच्चे आर्यसमाजिय को आर्यबुद्धिजीवियो का सजग रहना पडेगा। मैने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए दिया है अत आज आर्यसमाज की वर्तमान परिस्थिति क देखकर पीडा का अनुभव कर रहा हू मे अब भी किसी पक्ष या विपक्ष मे नहीं हू। मैने सार्वदेशिक सभा म सत्य स ओर न्याय का साथ दिया हे असत्य और अन्याय का विरोध किया है। मै अब यही चाहता हू कि प० आर्यसमाज का सगठन फले फले और हम जैसे का शेष जीवन भी इसकी सेवा मे ही बीते। भगवान हम सब आर्यो क सद्बुद्धि प्रदान करे।

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर-बलिदानों का प्रतीक

'ऋतुराज बसन्त'

– सत्याबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दय एव मातृभूमि के गौरव सम्मान एव स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरो के अमर बलिदानो के महापव ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि मे हर्ष उल्लास उमग एव उत्साह का सागर हिलोरे लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण मे शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवो का हरित परिधान धारण किए नाना रग बिरगे कुसुमो के विविध आभूषणो से अलकृत सरसो के पीत वर्ण पुष्पो की बासन्ती साडी से आवेष्टित सोलह श्रृगार किए सजी सवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नही कल कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताए भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छो पर गुञ्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमर गण कलरव करते विविध विहग समूह आम्रकुञ्जो मे पचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानो बन्दी गणो के रूप मे ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए उस का प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक स्फूर्तिमय उत्साह वर्धक स्निग्ध मधुर सरस एव मनोहर बना देते है। जिस पादप समूह को आततायी पतझड पत्र पुष्प विहीन कर ठूठ सदृश जीर्ण शीर्ण एव जर्जर बना देता है बसन्त का आविर्भाव उन्हे पुन नव किसलय दल से सुसज्जित कर अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीडित एव त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड चेतन उसी प्रकार उल्लसित एव आनन्द मग्न हो उठते है जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा नव ज्योति नव छटा नव सौन्दर्य एव नव आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मद मन्द प्रवाहित शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव विकसित पुष्प दलो से अठखेलिया करने लगती है जिस के फलस्वरूप समस्त मानव समाज नाच रग गायन वादन आदि नाना आमोद प्रमोदो एव विविध मनोरजक क्रीडाओ मे मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व मे ऋतु राज बसन्त का अखण्ड-साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फल स्वरूप मानव-जीवन मे नहीं अपितु पशु पक्षियो तक के हृदयो मे भी नवोत्साह नव अभिलाषा नवआशा नव चेतना नव जागरण एव नव स्फूर्ति का सचार होने लगता है। समस्त सृष्टि मे विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी ज्योत्सनामय अपूर्व अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद-प्रमोद में रत हो; मनोरंजन ओर हास-विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव-जागरण, नवोत्साह, नव-चेतना, नव-प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थो में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन-जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील, और प्रगतिशील बन सके।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर सवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उस की सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनो न ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारो ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूडामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव मे बसन्त का इतना सरस सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढते पढते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव मैथिल कोकिल विद्यापति महाकवि केशव प्रभृति कवि जनो के काव्य मे तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती मे झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी राम चरित मानस मे बसन्त की बासन्तिक-शोभा का चित्राकन कर नव चेतना एव नव सकल्प का शुभ सन्देश दिया है। रीति कालीन कवियो को तो पग पग और डगर डगर मे बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगीराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रागण मे मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवो के विरुद्ध लोहा लेने के लिए नव साहस का सन्देश देते हुए उस मे दुष्ट दलन पौरुष वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ऋतुनाम कुसुमाकरा। छायावादी युग की प्रतिनिधि कवयित्री महादेवी वर्मा भी अनुपम यौवन मयी सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणो एव आभरणो से समअलकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती हैं धीरे धीरे उतर क्षितिज से ऐ। बसन्त रजनी। तारकमय नववेणी बन्धन इत्यादि। वस्तुत बसन्त रजनी के चेतन व्यापक मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्व व्यापी प्रभाव से तपावन भी अछूते नहीं रहते। जिस के फलस्वरूप तपोवनो की शान्त उन्मुक्त स्निग्ध ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियो के हृदयो मे भी अनन्तता के भाव जागृत करने मे समर्थ होती रही है। फलत वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन मे दत्तचित्त हो उस अनन्त सौन्दर्य शाली परम शक्ति समन्वित निराकार निर्विकार सर्वेश्वर सर्वान्तयामी प्रभु का साक्षात्कार करने मे भी सफल होते रहे है।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देश भक्त नौजवानो को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हसते हसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहा एक ओर यह महापर्व सहृदय रसोन्मत्त मानव हृदयो मे रणोल्लास एव आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हे आततायी देशद्रोही एव पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन वीररस मे उन्मत्त हो प्राणो का मोह त्याग रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पडते और उस से लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु शत्रु सैन्य का विध्वस कर विजयोल्लास मे मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वय जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सम्मान की रक्षा हेतु एक एक कर के वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखा कर कायरो की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा पुरजा कट मरे तऊ न छाडे खेत। दूसरी और वीरागना राजपूत ललनाए भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरो का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता मे कूद पडती थी। अत वीर हृदयो मे इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु – साहस अपूर्व वीरता अद्भुत शौर्य महान आत्म त्याग एव अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुत सत्यार्थों मे ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता वीरो का कैसा हो बसन्त मे भारतीय वीरो द्वारा सत्यार्थो मे बसन्त मनाने का चित्राकन किया है। जिस का साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल पानीपत कुरुक्षेत्र हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण प्रागण एव १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे झासी की रानी सम वीरागनाओ और मगले पाण्डे समान देशभक्तो समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरो की गथाए सुना रही है।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

"वैलेण्टाइन-दिवस"

सन्देश प्रेम का, या वासना का ?

– न्यायमूर्ति एम० रामाजोइस

जब अपने पास इतने उच्चकोटि के जीवन मूल्य हैं, तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन-दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड़ में वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन, स्वास्थ्य एवं चरित्र का क्षरण करते हैं।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वर्ग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेहपूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हैं तो वे अपनी गलती समझेंगे अैर वैलेण्टाइन दिवस मनाने की अवांछनीय प्रथा को तिलांजलि दे देंगे। इसलिए हमको अपने बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन-दिवस मनाना बेकार है।

वैलेण्टाइन दिवस पुन आनेवाला है १४ फरवरी को। भारत के अनेक तरुण तरुणिया भी इसे धूम धाम से मनाएगे। हमारे कुछ कथित बुद्धिजीवियो के द्वारा इसका खुला समर्थन महापुरुषो के द्वारा वर्णित हमारे श्रेष्ठ जीवन मूल्यो के क्षरण से सम्भावित विनाशकारी परिणामो की ओर स्पष्ट सकेत करता है। दुष्प्रभावी परिणाम न केवल दृष्टिगोचर हो रहे हैं वरन दावानल की भाति फैलते जा रहे ह। हमारे सास्कृतिक मूल्यो की परम्परा के अनुसार हर पुरुष स्त्री को एक दैवी सम्पदा के रूप मे न कि भाग विलास की एक सामग्री के रूप मे दखे ऐसी अपेक्षा रहती है। मानव प्रकृति का गहन अध्ययन करने के पश्चात हमारे पूर्वजो ने इस सास्कृतिक मूल्य को विकसित किया था कि प्रत्येक नर अपनी पत्नी के अतिरिक्त प्रत्येक नारी के प्रति अपनी माता बहन का भाव रखेगा। पुरुषो मे स्त्रियो पर यौन आक्रमण करने की निकृष्ट वृत्ति रूपी विष का प्रभाव दूर करने वाली अनिष्टरोधी औषधि के रूप मे इस सिद्धान्त का विकास हुआ था। सर्वेभवन्तु सुखिन सम्पूर्ण मानव समाज के लिए शान्ति एव सुख सुनिश्चित करने के लिए भारत तो उपर्युक्त एव अन्य सास्कृतिक जीवन मूल्यो की प्रतिमूर्ति ही है। यह दखकर कि इस प्रकार के श्रेष्ठ सिद्धान्तो पर पश्चिम का भौतिकवादी विषयभोग तथा वासना से प्रभावित चिन्तन कुठाराघात कर रहा है स्वामी विवेकानन्द ने नीचे लिखे अनुपम शब्दो के माध्यम से मानव जाति को चेतावनी दी थी क्या भारत समाप्त हो जाएगा ? तब विश्व से सारी आध्यात्मिकता समाप्त हो जाएगी। समस्त नैतिक पूर्णत्व समाप्त हो जाएगा। धर्म के प्रति समस्त माधुर्य एव सहानुभूति समाप्त हो जाएगी। आदर्शवादिता समाप्त हो जाएगी और इन के स्थान पर वासना एव कामुकता का साम्राज्य छा जाएगा। धन का वर्चस्व बढेगा। धोखाधडी छल बल तथ स्पर्धा आनन्द के विषय बनेगे अैर मनुष्य की अन्तरात्मा की बलि चढेगी'। कालान्तर से गाधी जी ने यह चेतावनी दी

यह मेरा दृढ मत है कि हमारी सास्कृतिक सम्पदा की सम्पन्नता अतुलनीय है। परन्तु हमने इसके महत्व को समझा नहीं है। यदि हम अपनी सस्कृति का अनुसरण नहीं करते है। तो एक कौम के नाते हम आत्महत्या करेगे।" (साबरमती आश्रम मे स्मृति पट पर अकित सन्देश)

इसी प्रकार हमारे सास्कृतिक जीवन मूल्य यह अपक्षा करते है कि हम अपने माता पिता को जीवनपर्यन्त नित्य प्रति प्रभु तुल्य प्रेम एव सेवा दे। वर्ष मे एक बार परित्यक्त माता या पिता के जन्म दिवस पर एक मात्र पुष्प गुच्छ देने की परम्परा हमारे सास्कृतिक मूल्यो की नही रही है। हमारी सस्कृति की नैतिक सहिता के अनुसार न केवल विवाहेतर सम्बन्ध वर्जित हे वरन किसी भी प्रकार के वासनामय भाव से अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य महिला को कोई सन्दश सुगधि पुष्पहार या वस्त्र भेजना भी एक प्रकार का व्यभिचार है जो अत्यन्त घातक एव अधर्म माना गया है।

जहा तक प्रेम प्रदर्शन की बात है तो हमारे अनेक श्रेष्ठ पर्व हैं। उनमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है रक्षाबन्धन। अपने भाई की कलाई मे राखी बाध कर बहन अपने उच्चकोटि के प्रेम का प्रदर्शन करती है। यह पर्व अब सामाजिक एव राष्ट्रीय स्तर पर भी मनाया जाने लगा है। कोई भी लडकी या महिला किसी भी पुरुष को जिसे वह भाई की तरह मानती है राखी बाधती है और बदले म वह व्यक्ति मिठाइया तथ वस्तुए उस मुह बोली बहन को देता है। इसी प्रकार शादी की सालगिरह पर या पति अथवा पत्नी जिसका भी हो के साठवें जन्म दिवस पर उत्सव का आनन्द लिया जा सकता है। हमारी सस्कृति मे पति या पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करने का वर्ष में केवल एक ही दिन विधान नहीं है। नित्यमेव इन शब्दो मे प्रेम प्रकट करने का विधान है 'पारस्परिक प्रेम निष्ठा एव विश्वसनीयता का धर्म पति एव पत्नी के द्वारा जीवनपर्यन्त निभाना होगा।

स्वतन्त्रता के पश्चात जब हमने अपने सास्कृतिक जीवन मूल्यो का पराभव होने दिया तो भयकर परिणाम सामने आने लगे। ऐसे कम ही लोग होते है। जो अपने जीवन साथी को विशुद्ध प्रेम वश वैलेण्टाइन कार्ड भेजते है। अधिकाश युवक युवतिया पति पत्नी या भावी पति पत्नी न होते हुए भी वासना भाव से न कि शुद्ध प्रेमवश १४ फरवरी को वैलेण्टाइन दिवस मनाते है और आपस मे वैलेण्टाइन कार्डो का आदान प्रदान करते है। १४ फरवरी सन्त वैलेण्टाइन का जन्म दिवस है। किसी ऐसे पुरुष या महिला को जो आपस मे पति पत्नी या भावी पति पत्नी न हो प्रेम के नाम पर वासनामय सन्देश देने का कोई महत्व नहीं होता। इस सन्दर्भ में 'दि न्यू इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' मे दिया गया वर्णन उल्लेखनीय है –

इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना का अन्तर्राष्ट्रीय सस्करण सकेत देता है कि युवक युवतियो की यौन प्रवृत्ति का नाजायज फायदा उठाकर ग्रीटिंग कार्ड बनाने वाला की पैसा कमाने की चाल का ही परिणाम होता है यह आदान प्रदान। ये कार्ड प्राय पद्यात्मक एव सुकोमल भाव वाले होत हैं – किन्तु कभी कभी ये हास्यास्पद और अभद्र भी होते है।

वस्तुत वैलेण्टाइन दिवस पर ग्रीटिंग कार्डो पर दिए गए सन्देशो क माध्यम से काम वासना परिलक्षित करना ही उद्देश्य होता है। पैसा कमाने के लालच के कारण ग्रीटिंग कार्ड बनाने वाले लोग अपने समाज के युवक युवतिया की भावनाओ का शोषण करते हुए कार्ड को लोकप्रिय बनाते हैं। इसके परिणामस्वरूप युवा वर्ग की नैतिक एव शारीरिक शक्ति के ह्रास की उन्हे कोई चिन्ता नही होती।

यह एक दुर्भाग्य का विषय है कि हमारी फिल्मे तथा टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक व्यावसायिक विज्ञापन फैशन प्रदर्शनिया एव अर्धनग्नता प्रदशन करने वाले लोग सौन्दर्य एव यौन सम्बन्धो का बडा ही भद्दा चित्रण प्रस्तुत करते हे। इस प्रकार के वृहद स्तर पर प्रचारित प्रसारित अश्लील और कामुक विषय वस्तु से युवा वर्ग यह समझने लगता है कि जीवन का उद्देश्य केवल यौन आनन्द प्राप्त करना ही है वह चाहे नैतिक हो या अनैतिक। उन व्यवसायी प्रचारको का इस बात की कोई चिन्ता नही रहती कि युवा वर्ग के ऊपर इसका क्या दुष्प्रभाव पडेगा। इस सम्बन्ध मे दैनिक हिन्दू के एक पाटक पोल्लूर के श्रीएम०के० नाम्बियार ने हिन्दू को पत्र लिखा था जिसमे इस दुश्चक्र की भर्त्सना करते हुए वैलेण्टाइन कार्डो मे छपे शब्दो चुम्बन का अभ्यास करो साथ साथ झूमते हुए स्नान करो। का उल्लेख किया गया है।

इस सन्दर्भ मे न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर का 'सत्यम शिवम सुन्दरम' नामक चलचित्र ('फिल्म) मे प्रदर्शित कामुक दृश्यो को लेकर चलाए गए राजकपूर बनाम दिल्ली प्रशासन (ए०आई०आर० १९८० एस०सी० २५८) मुकदमे मे कथन अति महत्वपूर्ण है। अश्लील फिल्मो के दुश्प्रभावो तथा सेसर बोर्ड की असफलता पर उनका कथन था –

यह एक अत्यन्त शोचनीय विषय है कि अच्छाई के प्रचार प्रसार का शक्तिशाली माध्यम सिनेमा आजकल फूहड प्रदशन की सूक्ष्म प्रक्रिया से लोक रुचि का अभद्रीकरण कर रहा है यह किशोर किशोरिया के दिमागो म लम्पटता की घुसपैठ करवाता है व्यावसायिक विधि स लोगो को विषयासक्त की ओर आकर्षित करन मे दलाली करता ह और उनकी कामुकता को इस हद तक बढावा देता है कि वे यौन सम्बन्धो के प्रलोभनो क आगे घुटन टक दते ह। **ऐसी फिल्म जो लोकाचरण को दूषित करती ह उन्हे उदारतापूर्वक प्रमाण पत्र मिल जाते है। ससद के द्वारा दिए गए विधानो का उद्देश्य होता है लोगो के सदाचार की रक्षा करना किन्तु व्यवस्था के अन्दर विद्यमान कानून के शत्रु उनका विध्वस करने पर तुले रहते हैं।**

यहा यह उल्लेख समीचीन होगा कि अमेरिका मे यौन सम्बन्धो को आवश्यकता से अधिक महत्व देन के कारण परिवार टूट रहे है वैवाहिक सम्बन्धो मे कमी आती जा रही है और लाखो बच्चे शारीरिक एव मानसिक यातनाओ का शिकार बन रहे है मैरिज इन अमेरिका – ए रिपार्ट टु दि नेशन शीर्षक से अध्ययन की एक रिपोर्ट जो १९६५ मे प्रकाशित हुई थी यह चेतावनी दती है –

यदि यही हालात चलत रहे ता इस का अर्थ सास्कृतिक आत्महत्या से बढकर कुछ नही होगा। (स्टेटसमैन बुधवार मई ३१ १९६५ पृष्ठ ६)

यह एक दयनीय स्थिति है कि हमारे समाज के कुछ कथित बुद्धिजीवी वैलेण्टाइन – दिवस का समर्थन करते हे जबकि इस दिन फैशन शो एव अर्द्धनग्न नृत्यो के माध्यम से कामुकता की नुमाइश लगाई जाती है। इन सभी के पीछे मशा होती है केवल वासना एव कामुकता। निश्चित रूप से इन का उद्देश्य वह शुद्ध प्रेम नही होता हे जो हमारी सस्कृति मे समझा एव आचरित किया जाता है।

जब अपने पास इतन उच्चकोटि के जीवन मूल्य है तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड मे वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन स्वास्थ्य एव चरित्र का क्षरण करते है।

यहा यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेहपूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हे तो वे अपनी गलती समझेग अैर वैलण्टाइन दिवस मनाने की अवाछनीय प्रथा को तिलाजलि दे दगे। इसलिए हमका अपने बच्चो को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन दिवस मनाना बेकार है।

(लेखक पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश है।)

(विसके से साभार)

महू में प्रदेश का अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक कार्यक्रम सम्पन्न

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के अन्तर्गत स्थित महू मे गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यह यज्ञ २५ से २६ दिसम्बर तक होना निश्चित था किन्तु भक्त जनता के आग्रह पर ३० दिसम्बर को प्रात पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। आयोजित कार्यक्रम आर्यसमाज महू के तत्वावधान मे नगर व ग्रामीण क्षेत्र

प्रात ७ से ८ बजे तक आयोजित योग शिविर मे आचार्य अमृतलजी शर्मा के सान्निध्य मै सैकडो व्यक्तियो द्वारा लाभ प्राप्त किया गया।

सायकाल प्रतिदिन व्याख्यान माला का अभूतपूर्व आयोजन भी किया गया था। इस व्याख्यान माला मे डा० वेदप्रताप वैदिक डा० सोमदेव शास्त्री

कसेट और सूचना प्रसारित करते रहे।

विश्व मे जनसख्या के अनुपात मे महू पहला शहर होगा जिसमे जनसख्या के अनुपात मे सबसे अधिक लोगो का गायत्री मन्त्र याद हो गया। सनातन धर्मी हिन्दुओ की तो बात छोडो गैर हिन्दू अन्य सम्प्रदाय के व्यक्ति भी गायत्री मन्त्र गुनगुनाने लगे है। ऐसा

कार्यक्रम एक छोटी सी समाज के प्रयास से इतनी भव्यता को प्राप्त कर लेगा यह एक सपना सा ही लग रहा है। किन्तु यह सत्य है। आग जो होगा। वह और उत्साह से होगा यह भी निश्चित हे।

– प्रकाश आर्य सयोजक गायत्री महायज्ञ समिति महू

वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्रोताओ को उपदेश देते हुए। गायत्री महायज्ञ का एक विहगम दृश्य

मे अनेक प्रतिष्ठित महानुभावो व हजारो सनातन धर्मी हिन्दू, जेन सिक्ख सभी के सहयोग से सम्पन्न हुआ कार्यक्रम १५ बीघा खुली भूमि म आयोजित था। जिसमे निर्मित यज्ञ वेदी अभूतपूर्व एव दर्शनीय थी। हजारो व्यक्तियो की सख्या मे प्रभावी नगर भ्रमण से पूरा शहर यज्ञमय हो गया था। विद्वानो का ऐतिहासिक स्वागत हुआ। यज्ञशाला पाण्डाल साहित्य विक्रय भोजनालय योग शिविर आदि अनेक कार्य एक स्थान पर ही आयोजित होने से कार्यक्रम स्थल अति भव्य व प्रभावी बन चुका था। हजारो दर्शक इस स्थल को देखने ही आते थे यज्ञ मे ४१८ दम्पतियो ने यजमान बनकर आहुति प्रदान की। पूर्णाहुति मे लगभग २५ हजार व्यक्ति उपस्थित थे। पूर्णाहुति का दृश्य अभूतपूर्व अत्यन्त मनोहर भव्य तथा आत्म विभोर करन वाला था।

यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती थे। सुमधुर सस्वर स्पष्ट उच्चारण युक्त मन्त्र पाठ गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राओ ने किया जिससे पूर्ण वातावरण यज्ञमय हो रहा था। पूज्य स्वामीजी के वचनामृतो से हजारो श्रोता धर्ममय हो रहे थे। भजनोपदेशक श्री प० नरेश दत्त आर्य बिजनौर हीरालाल आर्य मध्य प्रदेश तथा कुमारी भारती व कुमारी सन्तोष अलीगढ उत्तर प्रदेश से काशीराम अनल कानड से पधारे थे।

मुम्बई ब्रह्मचारी धर्म बन्धु सौराष्ट्र आचार्य आय नरेश जी हिमाचल डा० वागीश शर्मा डा० आशारानी कानपुर एव आचार्य सजय देव हरियाणा आदि विद्वान थे।

आर्य समाज की चारदिवारी से बाहर आयोजित यह धार्मिक आयोजन समाज व राष्ट्र के प्रति चेतना प्रदान करने वाला तथा सबके लिए नया था। नगर व ग्रामीण क्षेत्र से प्रतिदिन हजारो की सख्या मे उपस्थिति रहती थी और ६ दिनो मे लगभग ४ लाख व्यक्तियो ने इसमे भाग लिया। वैसे तो बडे बडे कार्यक्रम सम्पन्न हुए किन्तु महू मे आयोजित यह कार्यक्रम हर दृष्टि से सफलरहा और आर्यसमाज तथा वेदिक धर्म से हजारो व्यक्ति परिचित हो गए इससे अनेको व्यक्ति जुड गए यह एक विशेष बात रही जो कार्यक्रम की एक बहुत बडी उपलब्धी मानी जा रही है।

हजारो व्यक्ति पुन इस कार्यक्रम की अभी से जिज्ञासा प्रकट कर रहे है ऐसा प्रभाव आर्य जनता मे सम्भवतया पहली बार ही देखने व सुनने को मिल रहा है। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सहित आमन्त्रित सभी विद्वानो ने इसे अभूतपूर्व बताया क्षेत्रीय समाचार पत्रो ने टी०वी० प्रचारको ने इसे अदभुत अत्यन्त उपयोगी कार्यक्रम बताया है।

कार्यक्रम का प्रचार ६ माह से किया जा रहा था तीन वाहनो मे प्रात ५ बजे से गायत्री मन्त्र की धुन की

अवसर इतिहास मे शायद कभी पहल सुनने व देखने को आया हो। कार्यक्रम मे आगन्तुम महानुभावो क ठहरने हेतु नगर की सभी धर्मशालाए कुछ स्कूल व अन्य सस्थाए खाली रखे गए थे भोजन व आवास व्यवस्था बहुत सन्तोष जनक थी।

आयोजित कार्यक्रम के समापन पर हजारो व्यक्ति जीवन मे एक नई चेतना का अनुभव कर रहे है। सनातन धर्म समाज व राष्ट्र की पहचान हेतु ऐसे ही कार्यक्रम अपेक्षित है। हजारो ऐसे व्यक्ति जो आर्यसमाज के सम्पर्क मे नही थे व आर्यसमाज और वैदिक धर्म को समझकर सहयोगी बन रहे है

इस अवसर पर विदर्भ एव मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य जगतदेव नैष्ठिक सभा मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गौरीशकर जी कौशल सभा मन्त्री श्री भगवानदास जी अग्रवाल ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी श्री हरिशचन्द्र जी (हालेण्ड) श्री ओमप्रकाश जी सामवेदी जी के अतिरिक्त मध्य प्रदेश राजस्थान गुजरात उत्तरप्रदेश से भी अनेक श्रद्धालु पधारे थे।

कुल मिलाकर आयोजित कार्यक्रम एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बन गया। प्रयास किए जावे तो आर्यसमाज के कार्यक्रम विशाल हो सकते है। यह

जनता के दरबार

— डॉ० रघुवीर वेदालकार

जनता को जनार्दन भी कहा गया है। जनार्दन=परमेश्वर। पञ्च परमेश्वर भी सुप्रसिद्ध शब्द है। जहा सभी शक्तिया अशक्त या भ्रष्ट हो जाती है वहा जनता ही ठीक निर्णय देती है उचित प्रतिकार करती है तथा दोषियो को दण्ड भी दे देती है। व्यक्तिगत तो नही अपितु सामाजिक एव राष्ट्रीय सस्थाओ एव सम्पत्तियो की ओर जनता जनार्दन का ध्यान आकृष्ट होना ही चाहिए क्योकि उक्त सस्थाए जनता के लाभार्थ ही तो है। भले ही समय पाकर कुछ स्वार्थी लोग ऐसी सस्थाओ पर अपना आधिपत्य जमाने तथा अपने स्वार्थवश उनका दोहन करे तब भी जनता को ऐसी सस्थाओ के प्रति आत्मीयता बनाए रखनी चाहिए तथा उनकी रक्षा मे सन्नद्ध हो जाना चाहिए।

कुछ स्वार्थी तत्वो द्वारा गुरुकुल कागडी की भूमि बेचने का दुष्कृत्य समाचार पत्रो के माध्यम से समस्त आर्यजनता को विदित हो चुका है पुनरपि इसके विरोध मे जो स्वर उभरने चाहिए थे भूमि को बचाने का जो प्रयास होना चाहिए था उन स्वार्थी भूमाफियो को धिक्कारने की जो लहर चलनी चाहिए थी वह नहीं हो रहा है। इस विषय मे प्रयास तो किए गए। गुरुकुल कागडी मे भूमि रक्षक समिति भी बनी पजाब सभा की ओर से भी यत्न हो रहा है कुछ लेख भी लिखे गए। इन सबका ही सुपरिणाम है कि मामला प्रकाश मे आया तथा भूमि का हस्तान्तरण अभी नही हो सका। यह सब श्लाघनीय है किन्तु इस घोटाले का प्रतिरोध प्रतिकार समस्त आर्यजनता की ओर से किया जाना चाहिए था। मान्य विद्वज्जन स्नातक बन्धु एतदविषयक लेख लिखते वक्तागण जमकर इसका प्रतिरोध करते सक्रिय कार्यकर्ता धरना या आन्दोलन जैसा कुछ चलाने तथा सार्वदेशिक सभा सहित अन्य सभाओ के मान्य अधिकारी जन अपना सक्रिय योगदान देते।

अभी भी इन प्रयासो की महत्ती आवश्यकता है। अत समस्त आर्यजनता इस विषय मे कुछ सोचे तथा करे यह उसका पुनीत कर्तव्य है। प्रयत्न करने से बहुत कुछ हो जाता है। गुरुकुल कागडी वृन्दावन की भूमि को भी उ०प्र० की सभा बेचने वाली थी किन्तु जागरुक स्नातको ने उस योजना को विफल कर दिया। क्या यहा ऐसा नहीं हो सकता। हमारा स्नातक मण्डल कहा सो गया। गुरुकुल के पुराने सुयोग्यतम स्नातक हैं वे इस ओर से क्यो विरत है?

भूमि विक्रय के वर्तमान अभियुक्त कहते है कि इससे पहले भी गुरुकुल कागडी की भूमि बिकी है। पजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के समय ऐसा हुआ। यह शर्मनाक तर्क देकर वर्तमान विक्रेता अपन को निर्दोष सिद्ध नहीं कर सकते। कारण यह कि उस समय भी ये सभी लोग गुरुकुल कागडी तथा विभिन्न सभाओ मे प्रतिष्ठित थे। इन्हे तब भी उस दुष्कृत्य का विरध करना चाहिए। एक चोर चोरी कर रहा है तथा हम चुपचाप देख रहे हैं। साथ ही जब हमारा दाव लगता है तो हम उससे भी प्रबल डाका डाल देते हैं तो इससे क्या हम निर्दोष सिद्ध हो जाएगे?

सामान्य बुद्धि से भी यह जाना जा सकता है कि १४४ बीघा भूमि का मूल्य केवल ७५ लाख नही अपितु कई करोड रुपये है। खरीदार ने तो अभी भी करोडों रुपया ही दिया है। वह धन (Black Money) उसने किसे किसे दिया कितना दिया यह उससे पूछा जा सकता है। आर्यजनता इसे पूछे। जिस जिस पर भी वह धन गया है उनसे वापस लेकर क्रेता को वापस कर दिया जाए। यदि विक्रेताओ का हाजमा इतना दुरुस्त है कि वे इसे हजम कर गए तथा डकार लने का भी नाम नही ले रहे तो यह जनता जर्नादन इन स्वार्थियो का कोर्ट मार्शल करे। इनका सामाजिक बहिष्कार कर दे। आर्यसमाज तथा सभाओ मे उन्हे कोई स्थान न दे तब भी इन्हे अपने किए का दण्ड मिल जाएगा क्योकि सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का अपयश होना ही उसकी मृत्यु से भी बढकर है। यह भी इन भूमि विक्रताओ की जीवित मौत हो जाएगी। रही क्रेता को पैसा वापस करने की बात। जब आर्य जनता के दान द्वारा इतना बडा गुरुकुल बनाया जा सकता है तो क्या उस बचाया नहीं जा सकता। देने वाले तो लाखो भी देगे किन्तु प्रति व्यक्ति यथा सामथ्य इस भूरक्षण यज्ञ मे जो भी आहुति द उससे भी क्रेता का धन वापस किया जा सकता है

सभाओ के तो अपने अपने दाव पेच चलते रहते है। कभी पजाब सभा ने ऐसा किया तो अब हरियाणा सभा ने उससे भी बढकर कर दिया। दिल्ली सभा के अधिकारी भी उसमे स्वल्पाधिक रूप से सम्मिलित थे। यह दुर्भाग्य ही कहिए कि एक बेचारे गुरुकुल की स्वामिनी तीन सभाए है। इन सभाओ के माध्यम से ही तो ये लोग गुरुकुल के कुलपति कुलाधिपति तथा विजिटर जैसे महत्वपूर्ण पदो पर प्रतिष्ठित हो जाते है। विश्वविद्यालय के हित मे यही होगा कि वह इन सभाओ से मुक्ति पाकर शिक्षाविदो के सरक्षण मे रहे।

— बी० २६६ सरस्वती विहार दिल्ली

गो-रक्षा राष्ट्र रक्षा

— ब्रह्मानन्द जिज्ञासु आर्य कवि

वेद मे तीन माता शब्द आए हैं। प्रथम माता शब्द जिस मा के गर्भ से हम पैदा हुए हैं दूसरी माता गोमाता जिसके दुग्ध का पान कर हम बचपन से मृत्यु पर्यन्त स्वस्थ बने रहते हैं और तीसरी माता धरती मा जिससे हम अन्न जल ग्रहण कर जीवित रहते हैं। यहा हम दूसरी मा अर्थात गोमाता के सम्बन्ध मे चर्चा कर रहे है। वैदिक युग से लेकर आज तक जितने भी – भारत के ऋषि मुनि चिन्तक विचारक सन्त महात्मा फकीर एव राजा महाराजा हुए हैं सभी एक स्वर से गोरक्षा पर बल देते रहे है और गो हत्या को जघन्य अपराध बताते रहे। उन सभी गो भक्तो ने यथा सम्भव गो माता की सेवा भी की है। महर्षि वशिष्ठ महाराज दिलीप योगेश्वर श्रीकृष्ण मर्यादा पुरुषोत्तम राम महाराजा विक्रमादित्य तथा राजा भोज आदि ने गो सेवा कर भारत का गौरव बढाया है। मध्य युग मे तथा उससे पूर्व भी भारत के चिन्तको एव मनीषियो ने गो हत्या का विरोध किया है। तीर्थंकर महावीर स्वामी महात्मा बुद्ध गुरुनानक महाराणा सागा महाराणा प्रताप छत्रपति शिवाजी महाराज गुरुतेग बहादुर गुरुगोविन्द सिह वीर वन्दा वैरागी महाराजा रणजीत सिह महारानी लक्ष्मीबाई बीर तात्या टोपे नाना साहब महर्षि दयानन्द सरस्वती राव तुलाराम वीर कुवर सिह लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गाधी आदि ने भी गोहत्या का प्रबल विरोध किया था। मुस्लिम सत फकीर एव बादशाहो ने भी गोहत्या का विरोध किया था।

आखिर गाय से क्या लाभ है जिसके लिए भारतवासी गाय को इतना महत्व देते है ? प्रथमत गो से लाभ यह है कि गो दुध अमृत तुल्य होता है इसके नियमत सेवन से किसी भी व्यक्ति का शरीर स्वस्थ एव हृष्ट पुष्ट हो जाता है। तभी तो यहा के सत महात्मा दुग्धाहार पर बहुत ही बल देते रहते हैं। वे सिर्फ दुग्ध सेवन कर साधना करते रहे हैं और स्वस्थ रहते रहे हैं। किसी मुस्लिम फकीर ने ठीक ही कहा है कि गो का दूध दवा है और मॉस जख्म है। गो मॉस से कई प्रकार की बीमारी हो सकती है। यकृत का दोष अपैण्डी साइटीस गठिया रक्तवकिार कुपट एक्जीमा कैसर तथा उदर विकार आदि। यह सब जानकर भी लोग गो मास खाते हैं तथा गोहत्या करते हैं – यह कैसी विडम्बना हैं।

दूसरा लाभ कृषि से सम्बन्धित है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहा ८० प्रतिशत व्यक्ति कृषि पर ही निर्भर है। भारत जैसे देश म सब व्यक्ति ट्रैक्टर नहीं रख सकते हैं। वे बैलो के सहारे से ही खेती करते है। गाय बैल का गोबर कृषि की फसल बढाने मे अत्यन्त उपयोगी होता है। वर्तमान समय मे कृत्रिम खाद लोग उपयोग मे लाते हैं किन्तु इससे भी अधिक लाभकारी गाय बैल का गोबर ही होता है। इसके द्वारा फसल मे अच्छी वृद्धि होती है। इन्हीं सब कारणो से भारत के लोग प्राचीन समय से ही गोवश की रक्षा पर बल देते रहे है। किन्तु दुख की बात है कि हमारी भारत सरकार का निर्णय है कि जो गाय बैल बूढे हो जाए या काम के योग्य नहीं रहे तो उन्हे मार दिया जाना चाहिए। इस विषय मे मेरा कहना है कि यदि मा बाप बूढे हो जाए या काम के योग्य नहीं रहे तो क्या उन्हे भी मार दिया जाना चाहिए ? बूढे बैलो या बूढी गायो से गोबर तो हमे प्राप्त होगा ही आर्थिक लाभ देगा। दूसरा लाभ यह भी होगा कि गाय और बैल के गोबर स गोबर गैस प्लाट का भी आयोजन किया जा सकता है। अत बूढे बैलो एव बूढी गायो की रक्षा राष्ट्र रक्षा हित मे है।

कुछ सिरफिरे भाई बोलते है कि गो हत्या बन्द करने से हमारे मुस्लिम भाई नाराज हो जाएगे। मै इस बात को नही मानता। मैने कई मुस्लिम भाइयो से बाते की है वे स्वय नहीं चाहते कि गो हत्या हो किन्तु राजनैतिक नेतागण उन्हे बहकाते रहते हैं ताकि हिन्दू मुस्लिम लोगो मे प्रेम नही बढे और वे आपस मे लडते रहे ताकि उन्हे वोट बैक प्राप्त होता रहे। अत हिन्दू मुस्लिम भाइयो को आपस मे मिलकर इस विषय मे सम्मेलन कर गोहत्या बन्द करने मे अग्रणी होना चाहिए ताकि यह देश धन धान्य से सुखी सम्पन्न हो और पसी सौहार्द बढे। प्रभु से प्रार्थना है कि इस देश से शीघ्र गो हत्या बन्द हा।

ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति

— ३८६ एल्डिशो उद्यान २ रायबरेली रोड लखनऊ उ०प्र०

विलासिता को जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश

– प्रदीप कुमार राज

यह तो जगजाहिर है कि पश्चिमी सस्कृति के अन्धानुकरण से भारतीय सस्कृति की जितनी हानि हुई है उतनी किसी और कारण से नहीं हुई। सबसे ज्यादा दु ख की बात तो यह है कि पश्चिम की सस्कृति हमारे ऊपर विकसित एव सभ्य बनाने के नाम पर थोपी जा रही है आर हमारा समाज इसे अगीकार भी करता ज रहा है। इस सस्कृति के प्रबल प्रचारक का कार्य टेलीवीजन फिल्मे एव बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के विज्ञापन कर रह हे। पश्चिमी सस्कृति की वाहक इन कम्पनियो का धन्धा मात्र पेसा बनाने के लिए नही रहा बल्कि अपने देश की सस्कृति को भी पूरे विश्व मे फैलाना है। एक तरह से ये कम्पनिया अपनी सस्कृति का भूमण्डलीकरण करने का काम कर रही है। यह अपने नाम एव उत्पाद की बिक्री बढाने के लिए चर्चित रहने के लिए अक्सर कुछ न कुछ कारनामे करती रहती है। पश्चिमी देशो मे तो चर्चा मे रहने का ट्रेड ही बनता जा रहा है और इसके लिए वो कुछ भी करने को तैयार है।

ऐसा ही एक कारनामा मेलबार्न शहर के उद्योगपतियो ने किया है। इनकी कम्पनियो मे काम करने वाले कर्मचारियो को क्रिसमस के त्यौहार पर प्रतिवर्ष दिए जाने वाले बोनस को इस साल कुछ नए रूप में दिया जा रहा है। इन कर्मचारियों को बोनस के रूप मे चकलाघर (वेश्यालय)का आनन्द लेने का मुफ्त आफर दिया गया था जनवरी माह मे मलबोर्न शहर के सारे चकलाघर व्यस्त थे।

कल्पना करे ऐसा ही कुछ आपके साथ घटित हो और आपको किसी कम्पनी द्वारा ऐसा आनन्द प्राप्त करने का बोनस मिले तो आप एव आपके परिवार पर क्या गुजरेगी। आधुनिक समय मे न सिर्फ हमारे बाह्य जीवन पर बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपना शिकजा कस रही हैं बल्कि हमारे निजी जीवन मे भी उनका हस्तक्षेप अब शनै शनै बढता जा रहा है। यह कम्पनिया प्रचार पाने की लालसा के तहत किसी भी हद तक कोई भी घिनौना कुकृत्य कर सकती है। सम्भव है कि शीघ्र ही अपने उत्पाद के साथ आपको भी गिफ्ट के रूप मे चकलाघर के आनन्द का मुफ्त पास भी इनके द्वारा मिल जाए वो भी लकी ड्रा के जरिए। इसका मुख्य उद्देश्य मात्र हमारे जेब से पैसा निकालकर अपनी जेबे भरना ही नही बल्कि अब ये हमारे जीवन को सचालित करने का काम भी करने लगी है। हम क्या पहने क्या खाए से लेकर हमारी सुबह कैसे हो एव रात कैसे बिताए तक क निर्धारण भी करने लगी है। इन सब कुकृत्यो के द्वारा ये कम्पनिया प्रचार तो पा ही रही है साथ ही वो बाजार मे एक नया ट्रेड भी प्रचलन मे ला रही हैं। जो आम जीवन का एक अग जैसा बनता जा रहा है। ऐसी हालत मे कोई इसका विरोध नही कर पाता। ऐसी एक घटना जापान मे हुई है। जापान मे जगह जगह सेक्स केन्द्र बने है आम दुकानो की तरह बने इन सेक्स क्लबो मे जाना आम आदमी के जीवन का एक अग बन चुका है। वहा का साहित्य भी अब अश्लील पत्र पत्रिकाओ से भरा हुआ है वीडियो पार्लर मे ये सब चीजे आम हो गयी हैं जो सभ्य समाज देखना नही पसद करेगा। जिसके फलस्वरूप जनता मे विशेषकर युवा वर्ग मे भोगवाद आलस्य एव सेक्स की भावना मे लगातार वृद्धि होती जा रही है यह सब देखकर जब वहा की जापान सरकार को लगा कि समाज मे अपसस्कृति फैलती जा रही है और लोग विलासिता की ओर ज्यादा उन्मुख होते जा रहे हैं तो ऐसी स्थिति मे जब जापान सरकार ने अपसस्कृति को फैलने से रोकने के लिए कुछ कडे कदम उठाए तो वहा की जनता ही इसके विरोध मे खडी हो गयी। इस विरोध के तर्क पर ध्यान देना चाहिए जनता ने यह तर्क दिया कि ये सब हमारे जीवन का एक हिस्सा बन गया है और इस पर रोक लगाने से हमारा सामाजिक जीवन नहीं चल सकता। इस घटना से तो यही स्पष्ट होता है कि इस तरह के कार्य लोगो को विलासी बनाकर उनकी सोच को ही बदल देते हैं और उन्मुक्त सेक्स नशा जीवन का हिस्सा बन जाता है।

भारत के सन्दर्भ मे देखे तो आजकल बहुत कुछ इस तरह का प्रयोग यहा भी शुरू हो गया है। अपने उत्पादो की खरीद के साथ मुफ्त उपहार के रूप मे विभिन्न स्थानो के सैर सपाटे मुफ्त शराबखोरी एव आनन्द लेने का अवसर सुलभ कराया जा रहा है। इसमे ध्यान देने योग्य बात यह है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियो मे आम तौर पर युवाओ को १२ से १५ घण्टे तक काम करना पडता है। जो एक तरह से उनका शोषण किए जाने का ही एक रूप है। इतने अधिक परिश्रम के बाद साल के अन्त मे इन्हे कम्पनी द्वारा किसी देश विदेश के पर्यटन केन्द्र पर शराब एव सेक्स के उपभोग करने का अवसर बोनस के रूप मे दिया जाता है। युवाओ के मन मे इसी अवसर को पाने की लालसा बढी है और वो इसे ही अपना कैरियर बना रहे हैं। इससे युवाओ मे उनके जीवन का लक्ष्य मात्र यही बनता जा रहा है कि ज्यादा से ज्यादा धन कमाना और उस धन का उपयोग विलासितापूर्ण जीवन को बनाए रखने मे किया जाए। ऐसे मे देश का युवा न सिर्फ कुठित हो रहा है बल्कि उनम अपराधी प्रवृत्ति का भी विकास होता जा रहा है। आधुनिक सन्दर्भ मे साध्य मात्र उपभोग है साधन चाहे जो भी हो ऐसी ही भावना युवाओ के मन मे आरोपित की जा रही है।

इस प्रकार हम आर्थिक मानसिक एव सास्कृतिक दृष्टि से इन कम्पनियो के लूट ओर शोषण का शिकार हो रहे हैं। हमारे युवा वर्ग मे भोगवाद एव विलासिता पूर्ण जीवन जीने की विष बेल निरन्तर अपने पाव पसारती जा रही है जो वास्तव मे किसी भी दृष्टि से हमारे समाज एव देश के हित मे नहीं है।

(शोध प्रकोष्ठ आजादी बचाओ आन्दोलन से साभार)

आधुनिक समय मे न सिर्फ हमारे बाह्य जीवन पर बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपना शिकजा कस रही है बल्कि हमारे निजी जीवन मे भी उनका हस्तक्षेप अब शनै शनै बढता ज रहा है। यह कम्पनिया प्रचार पाने की लालसा के तहत किसी भी हद तक कोई भी घिनौना कुकृत्य कर सकती है। भारत के सन्दर्भ मे देखे तो आजकल बहुत कुछ इस तरह का प्रयोग यहा भी शुरू हो गया है। अपने उत्पादो की खरीद के साथ मुफ्त उपहार के रूप मे विभिन्न स्थानो के सैर सपाटे मुफ्त शराबखोरी एव आनन्द लेने का अवसर सुलभ कराया जा रहा है।

इससे युवाओ मे उनके जीवन का लक्ष्य मात्र यही बनता जा रहा है कि ज्यादा से ज्यादा धन कमाना और उस धन का उपयोग विलासितापूर्ण जीवन को बनाए रखने मे किया जाए। ऐसे मे देश का युवा न सिर्फ कुठित हो रहा है बल्कि उनमे अपराधी प्रवृत्ति का भी विकास होता जा रहा है। आधुनिक सन्दर्भ मे साध्य मात्र उपभोग है साधन चाहे जो भी हो ऐसी ही भावना युवाओ के मन मे आरोपित की जा रही है।

कलकत्ता मे श्री ओमप्रकाश मस्करा जी के कर्मठ प्रथा से वेद प्रचार वाहन द्वारा साहित्य विक्रय का यह प्रथम प्रयास है जिसमें कलकत्ता के बहुत से आर्यजनो ने अपना सात्विक दान देकर इस धर्म प्रचार अभियान को चलाया है। प्रात काल प्रात भ्रमण वाले पार्कों के सामने और सारा दिन व्यस्त बजारों मे यह वाहन माइक द्वारा वेद प्रचार की ध्वनि उत्पन्न करता है और वैदिक साहित्य का विक्रय भी। इस प्रयास के लिए सभी आर्यजनो का धन्यवाद।

ओ३म्

सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 2002

माघ शुक्ला चतुर्दशी से फाल्गुन कृष्णा प्रथमा वि.सि. २०५८

26 फरवरी मंगलवार से 28 फरवरी गुरुवार तक

स्थल : सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

निवेदन

मान्यवर आपको विदित ही है कि आर्यजनो द्वारा पुण्य स्थली नवलखा महल उदयपुर जहा महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढे छ मास विराज कर लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ रत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था तथा अपनी उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति मे एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था जहा से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर मे प्रचार प्रसार किया जावे।

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप मे ख्याति प्राप्त है। प्रतिदिन सैकडो की सख्या मे आने वाले दर्शनार्थीगण यहा से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर प्रेरणा ले रहे है।

इसी क्रम मे इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष २६ से २८ फरवरी मे सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन एक ऐसे स्थल पर जहा कभी ऋषिवर के चरण पडे थे उनकी वाणी ने लोगो के दिलो के तारो को झकृत किया था एकत्रित हो करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सके तथा विद्वानो के चरणो मे बैठ ऋषि मिशन के अग्र प्रसारण का सकल्प ले सके।

आये हम जीवन व्रत ले मानस बनावे सहयोग प्रारम्भ करे ताकि मा वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले सम्पूर्ण मानवता के हितैषी उस विषयायी देवता की स्मृति मे इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावे कि एक बार पुन यहा से विश्व वैदिक सस्कृति का पाठ पढ सके।

२६ फरवरी से २८ फरवरी, २००२ में आयोज्य महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

कृपया ध्यान दें :

(१) उदयपुर रमणीय स्थल है। आप एक दिन पूर्व पधार सकते है, ताकि उस दिन उदयपुर मे भ्रमण कर अन्य दिनो मे महोत्सव के पूरे कार्यक्रम का लाभ ले सके। (२) कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावे। (३) न्यास को दिया गया दान आय कर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत मुक्त है। (४) अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजे। ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके। (५) जो आर्य विद्वान, मनीषी, वानप्रस्थ या सन्यास लेना चाहे वे पूर्ण विवरण सहित अग्रिम आवेदन करने का श्रम करे। (६) जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हो वे हमे शीघ्र लिखे ताकि होटलो मे उनका आरक्षण कराया जा सके। यह व्यवस्था सशुल्क होगी। (७) अपनी आर्यसमाज, सस्था का बैनर साथ लावे।

कार्यक्रम
संक्षिप्त रूपरेखा

२६ से २८ फरवरी

प्रतिदिन यज्ञ भजन व प्रवचन	प्रात ७ ३० से ६ ३०

२६ फरवरी मंगलवार

ध्वजारोहण	प्रात ६ ३० बजे
वेद सम्मेलन एव	
कै० देवरत्न आर्य अभिनन्दन समारोह	प्रात १० से १२ ३० बजे
शोभायात्रा	दोपहर २ से ६
भजन सध्या	साय ७ ३० से १० बजे

२७ फरवरी बुधवार

महिला सम्मेलन	प्रात १० बजे से १२ ३०
महर्षि दयानन्द स्मृति	
समूहगान प्रतियोगिता	दोपहर २ से ५ बजे तक
महिला सम्मेलन	साय ७ ३० से १०

२८ फरवरी गुरुवार

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन	प्रात १० से १२ ३० तक

निवेदक

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती अध्यक्ष	**धर्मपाल आर्य** स्वागताध्यक्ष	**अशोक आर्य** सयोजक समारोह
लालचन्द मित्तल कोषाध्यक्ष	**गोपी लाल एरन** मत्री	**डॉ० अमृत लाल तापडिया** उपमत्री

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल, महर्षि दयानन्द मार्ग, गुलाब बाग, उदयपुर - ३१३००१ (राज०)

दूरभाष ०२९४ - ५२२८२२, ४१७६६४

पृ० ४ का शेष भाग

'ऋतुराज बसन्त'

भारत मा के वक्ष स्थल स्वरूप पचनद (पजाब) के वीर साहसी सपूतो ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एव शुभाशीष मागी है मेरा रग दे बासन्ती चोला माए री मेरा रग दे बासन्ती चोला और ऐसा ही अलौकिक बासन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिह और उनके साथी वीरो ने पराधीनता की बेडियो मे जकडी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हसते हसते फासी के फन्दा को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए है। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर दृढव्रती चतुर्दश वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणो का मोह त्याग अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय मे भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त के पावन पर्व को और भी अधिक महत्व पूर्ण गौरव शाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्‌भुत आत्म त्याग अपूर्व निर्भयता अदम्य साहस दृढ सकल्प एव अद्वितीय धार्मिक आस्था विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हो का अनुसरण करते हुए धम प्रधान भारत की भावी पीढिया चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हसते हसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत तत्पर रहेगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म स्वजाति एव स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी निर्भय शूरवीरो के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय अत्याचार उत्पीडन और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान त्यागी हृदयो का आदर्श है। वीर हकीकत पचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिस के साहसी वीर सपूतो को मातृ भूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृखलाओ मे आबद्ध करने वाले उसे पदाक्रान्त एव पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओ से सदैव लोहा लेने एव आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसी लिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रो के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय साहसी देशभक्त वीरो ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण साहस विहीन द ख दैन्य ग्रस्त अभाव पीडित परिस्थितियो मे पुन बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ सकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ व्रत के पालनार्थ उन्हे नाना यातनाए भी सहन करनी पडी आजन्म आपदविपदाओ की विशाल वाहिनी से जूझना पडा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पडे पर फिर भी उन्होने साहस नही छोडा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमे उन्ही भारत मा के सच्चे वीर सपूतो का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदो का अभिनन्दन करते हुए उन्हे अपनी भाव–भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करे। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद मे रत हो मनोरजन और हास–विलास के साधनो मे सलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव जागरण नवोत्साह नव चेतना नव प्रेरणा एव नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमे राष्ट्र के जीवन मे सत्यार्थो मे बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन जीवन पूर्णतया सुखी सम्पन्न समृद्ध उन्नतिशील विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृखलाओ से मुक्त हुए पचास वर्ष हो चुके है पर अभी तक इस अभागे देश के जन जीवन मे बसन्त का अवतरण नही हो सका। आज भी इस देश की पीडित शोषित अभाव ग्रस्त जनता निर्धनता एव भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश मे चतुर्दिक बेकारी महगाई रिश्वत खोरी लूट पाट हिसा प्राणहन अ याय अत्याचार शोषण उत्पीडन एव असन्तोष का अखण्ड साम्राज्य व्याप्त है। आज भी अलगाव वादी उग्रवादी तथा आतकवादी प्रवृत्तियो द्वारा चारो और निरीह निरपराध निर्दोष व्यक्तियो की हत्याए एव राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतकित और त्रस्त हो रहे है। समस्त जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। जहा एक ओर कतिपय प्रान्तो मे असुरक्षा अव्यवस्था एव आतक से हाहाकार मचा हुआ है वहा दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता कुर्सी की खीचतान शासन हथियाने साम्प्रदायिकता धर्मान्धता कटटरता क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त बना दिया है। वहा दूसरी ओर बाह्य आक्रामाक शक्तियो को इस देश की अखण्डता एकता सगठन समृद्धि और सुख शान्ति को मुह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देख कर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि पीडा और व्यथा से भर उठा है।

अत हार्दिक दुख से कहना पडता है कि समस्त विश्व को मैत्री बन्धुत्व प्रेम मानवता एव आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला धन धान्य समन्वित पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वय ही बल वैभवहीन मानसिक दासता मे आबद्ध घोर निराशा एव पतन के गर्त्त मे डूब रहा है। आन्तरिक और बाह्य सघर्षो ने इस की जडो को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इस की स्वतन्त्रता का पुन अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देश द्रोही जयचन्द देश मे उपद्रव और अशान्ति मचाकर उस के अनुशासन और व्यवस्था को भग कर इसे पुन विदेशी शक्तियो के हाथो मे सौप अपना उल्लू सीधा करना चाहते है।

अत ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एव दुर्दैव रूपी शीत से पीडित राष्ट्र मे अ‌ज्ञामय सुख सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेगे। यही नही प्रात स्मरणीय जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत मे सत्यार्थो मे राम राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने मे अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिजकिचाएगा। तभी हम वास्तव मे बसन्त मनाने के अधिकारी होगे।

राष्ट्र जीवन तरु के इस निराशा रूपी पतझड को समाप्तकर इसे पुन सुख शान्ति समृद्धि वैभव शक्ति एव आशा के नव पल्लवो और पुष्पाभरणो से समलकृत करने का बीडा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखो हितो सकीर्ण स्वार्थ वृत्तियो पद लालसा एव अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन मे बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर। समरसता समानता सहिष्णुता पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वो और नागरिक कर्त्तव्यो का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

डी ११३ शिवविहार रोहतक रोड
दिल्ली ११००८७

किसान और सैनिक धरती मां के प्यारे पुत्र हैं

हरिद्वार २७ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान विमल वधावन ने वेदो की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इसकी छाया मे आने से जीवन मे शीतलता शाति और सन्तोष की प्राप्ति होती है। उन्होने कहा कि इसमे जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त समस्त समस्याओ का समाधान मौजूद है। व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र आचार-विचार व्यवहार आदि समस्त विषयो का इसमे समावेश हैं। श्री वधावन ने कहा कि वेद के बिना धर्म नहीं हो सकता। वेद के बिना यज्ञ नहीं रह सकता और परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। वेदों का स्वाध्याय करने से मनुष्य का जीवन पवित्र श्रेष्ठ और महान बनाता है। वैदिक धर्म बडी से बडी विपत्ति आने पर हम सब की रक्षा करता है। उन्होने कहा कि देश की सुख-समृद्धि के लिए गायो का पालन और रक्षा की जानी चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे चिरस्मरणीय भूमिका निभायी थी। उन्होने गुरुकुल की स्थापना कर वैचारिक क्रान्ति पैदा की और गावो और शहरो को आर्यसमाज से जोडा। स्वामी जी का जीवन वैदिक शिक्षा प्रणाली के उद्धार के लिए हुआ था। गुरुकुल की स्थापना उन्होने नवयुवको को वर्चस्वी तथा ध्येयोन्मुख बनाकर राष्ट्रवादी पीढी तैयार करने के लिए की थी। स्वामी जी ने अपना जीवन देश धर्म और समाज के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होने अलग हुए भाईयो को वापिस हिन्दू समाज मे लाने का प्रयास किया। उन्होने इस अवसर पर गुरुकुल मे २५ से २८ अप्रैल तक आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी समारोह मे भाग लेने की अपील की।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री एव सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान यशपाल आर्य ने 'पच महायज्ञ' पर प्रकाश डालते कहा कि यज्ञ न सिर्फ मानव को दीर्घायु बनाता है बल्कि प्राणशक्ति अच्छे सस्कारो वाली सन्तान सुयश और ब्रह्मज्ञान प्रदान करता है। यज्ञ हमे सुपथ पर ले जाता है और घर मे सुख सौभाग्य और प्रसन्नता की वृद्धि करता है। उन्होने कहा कि प्रतिदिन पच महायज्ञ का पालन करके जीवन को याज्ञिक बनाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष जगदीश आर्य भी उपस्थित थे। इन से पूर्व २६ जनवरी को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री ने कहा है कि धरती माता के प्यारे पुत्र किसान और सैनिक है। किसान अन्न उगाता है और सैनिक देश की सीमाओ की रक्षा करता है।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज राघड-वाला मे आयोजित दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर उन्होने कहा कि धरती माता हम सबका पालन करती है। उसकी सेवा करने वाले अनेक पुत्र हैं। इनमे किसान और सैनिक (जवान) उसके दो प्यारे पुत्र है। ये दोनो आपातकाल के समय यथाशक्ति देश की रक्षा करते हैं। किसान देश की सूखी भूमि को सींचकर उसे हरा-भरा बनाता है और अन्न पैदा कर देश की आवश्यकताओ को पूरा करता है जबकि सैनिक देश पर आख उठाने वाले से इसकी रक्षा कर दुश्मनो को अगली सुबह देखने का अवसर नहीं देता। उन्होने कहा कि इसलिए पूर्व प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने जय जवान-जय किसान' का नारा दिया था।

इससे पूर्व प० कपिलदेव वेदालकार के ब्रह्मत्व मे बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। हृदयराम आर्य और माता लक्ष्मी आर्या ने मन्त्र पाठ किया। इसके यज्ञमान ईश्वर सिह रहती देवी राजकुमार मनीषा थे। विद्वानो और अतिथियो का स्वागत सस्था के प्रधान देवराज आर्य मन्त्री प्रकाश चन्द्र चौहान एड० स्वामी परसानन्द जयदेव शास्त्री आदि ने किया।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर महावीर ने इस अवसर पर कहा कि दुनिया का कोई भी प्रलोभन महर्षि दयानन्द को विचलित नहीं कर पाया। उनका सर्वस्व समर्पण देश और समाज के लिए था। जब महर्षि राजस्थान गए तो वहा भोग-विलास मे लिप्त राजा-महाराजाओ के जीवन को प्रकाश का मार्ग दिखाया। उन्होने कहा कि महर्षि विश्व मानव का कल्याण करना चाहते थे। इसलिए उन्होने एक श्रेष्ठ समाज आर्यसमाज की स्थापना की जो बाद मे राष्ट्र और समाजहित मे सोचने वालो का एक सशक्त सगठन बना। उन्होने कहा कि महर्षि ने अपना कोई नया सम्प्रदाय या विचारधारा नही चलायी बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियो की ही बातो को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

प्रो० महावीर ने आगे कहा कि आज देश पर सकट के बादल मण्डरा रहे है। राजनेताओ पर से देश की जनता का विश्वास उठ गया है। ये नेता सुख प्राप्त करने के लिए सक्षिप्त तामसी मार्ग अपनाकर पच सितारा सस्कृति की ओर भाग रहे है ये निश्चित रूप से देश की जनता और धरती माता को धोखा दे रहे हैं। ऐसे मे आर्यसमाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह आगे बढकर रचनात्मक भूमिका को अपनाए और देश को एकता के सूत्र मे पिरोने का समर्पित प्रयास करे।

इस सम्मेलन मे पूर्व जिला प्रधान सत्य प्रकाश गुप्त देवराज आर्य कपिलदेव वेदालकार लक्ष्मी आर्या पूर्व प्रधान हृदयराम आर्य जिला मन्त्री प्रकाश चन्द्र चौहान एडवोकेट स्वामी परसानन्द डॉ० श्याम सिह आर्य जयदेव शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। धर्म सिह आर्य और सुशीला आर्या तथा रामगोपाल ने भजन सुनाए। सम्मेलन की सत्रीय अध्यक्षता क्रमश सत्य प्रकाश गुप्त हृदयराम आर्य और स्वामी परसानन्द ने की। कार्यक्रम का सचालन प्रकाश चन्द्र चौहान और आभार देवराज ने व्यक्त किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 17 2-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 14-15/2 /2002

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे छपे लेखो तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो मे वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित दान आदि की अपीलो को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

ऋषि पर्व (महर्षि दयानन्द जयन्ती) (ऋषि बोधोत्सव) पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की अपील

समस्त आर्य बन्धुओ से सूचनार्थ निवेदन है कि इस बार **ऋषि पर्व** अर्थात **आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत २०५८** तदनुसार **८ मार्च २००२ (शुक्रवार)** एव **ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव)** अर्थात **महाशिवरात्रि फाल्गुन बदी १४ सम्वत २०५८** तदनुसार **१२ मार्च २००२ (मगलवार)** को है। अत इन पावन पर्वों **(ऋषि पर्व एव ज्योति पर्व)** को बडी धूमधाम से समारोहपूर्वक अपने अपने क्षेत्र मे मनाए।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगो की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारो के मार्गदर्शन के ही कारण है। स्वामीजी ने यह ज्ञान हम तक पहुचाया है इसके लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाकर अन्य बन्धुओ को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहे। आर्यसमाज की सदस्य सख्या बढाना हमारा लक्ष्य नही। हमारा एकमात्र उद्देश्य है अधिक से अधिक लोगो और अन्तत समूचे विश्व को **आर्य** अर्थात **श्रेष्ठ बनाना** – **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**

ऋषि पर्व (जन्मदिवस समारोह) एव ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) पर स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार एक या अधिक निम्न गतिविधियो का समावेश किया जा सकता है –

१ बृहद यज्ञो का आयोजन – (यदि सम्भव हो तो पार्को अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त जनसामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त **ऋषि लगर जलपान प्रसाद** आदि का वितरण भी अधिक-से अधिक लोगो मे करे।

२ प्रवचनो की व्यवस्था – यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन अवश्य आयोजित करे जिससे जन सामान्य को **वैदिक आध्यात्मिक** तथा **आर्य (श्रेष्ठ) विचारो** से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

३ गोष्ठियो का आयोजन – अपने अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गों जैसे युवाओ महिलाओ वृद्धो बच्चो आदि के लिए अलग अलग **विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम गोष्ठियो या लघु सम्मेलनो** अथवा **कार्यशालाओ** के रूप मे आयोजित करे। **सुखी परिवार कैसे रहे** इस विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ सत्यार्थ प्रकाश कथा – इस कथा का भी आयोजन करें जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारो का लाभ लोगो को **धार्मिक सामाजिक पारिवारिक राष्ट्रीय** तथा **राजनैतिक** उत्थान के लिए मिल सके।

५ दीपमाला अथवा रोशनी – आर्यसमाज भवनो पर **विशेष रोशनी का प्रबन्ध** सम्भव हो तो **ऋषि पर्व से ज्योति पर्व तक** सभी आर्यजन **अपने-अपने घरो** को भी **दीपावली** की तरह सजाए।

६ प्रभात फेरी – ऋषि पर्व से एक सप्ताह पूर्व **प्रभात फेरियो** के द्वारा **दयानन्द** एव **प्रभु भक्ति** के भजन गाते हुए भी प्रचार करे।

७ वाक एव भाषण प्रतियोगिताए – अपने अपने क्षेत्र मे **वाक/भाषण** या **चित्रकला प्रतियोगिताए** आयोजित करके बच्चो मे **सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार की तरह वितरित करें।** आर्य शिक्षण सस्थाओ को इस प्रकार के आयोजन अपने विद्यालय के बच्चो के मध्य अवश्य आयोजित करने चाहिए।

८ आर्य साहित्य – क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारो से परिचित कराने हेतु **अल्पमूल्य का लघु साहित्य स्वामी दयानन्द के चित्रो सहित कलेण्डर** आदि भी स्थानीय जनता मे मुफ्त वितरित करे।

९ आत्मावलोकन – आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक **विशेष बैठक** आयोजित करके **आत्मावलोकन** अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक हैं ? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ?

१० शुभकामना सन्देश – ऋषि पर्व एव ज्योति पर्व पर अपने अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिको राजनीतिक एव धार्मिक नेताओ तथा आपस मे शुभकामना सन्देश भी भेजे। इससे सम्बन्धित दीवार पोस्टर भी अपने अपने क्षेत्र मे चिपकवाए।

उपरोक्त के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार का कोई आयोजन आपके मस्तिष्क मे उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

कृपया अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट स्थानीय पत्र पत्रिकाओ तथा हमे अवश्य भेजे।

– निवेदक –

कै० देवरत्न आर्य सभा प्रधान — **वेदव्रत शर्मा** मन्त्री

✡✡✡

पृष्ठ १ का शेष भाग

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी महासम्मेलन

इस अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका का भी प्रकाशन किया जाएगा जिसमे सारे देश मे चल रहे विभिन्न गुरुकुलो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ की भी सूचना प्रतिनिधि सभाओ के माध्यम से हो जाएगी। इस स्मारिका मे प्रान्तीय सभाओ का सक्षिप्त इतिहास भी प्रकाशित किया जाएगा। स्मारिका मे विज्ञापन उपलब्ध कराने हेतु भी प्रान्तीय सभाओ और आर्यजनो का सहयोग अपेक्षित होगा।

यज्ञ प्रबन्ध आवास धन सग्रह जल प्रबन्ध पण्डाल प्रबन्ध स्वच्छता सत्रो के प्रस्ताव निर्धारण विक्रय केन्द्र प्रबन्ध जन सम्पर्क पुलिस एव सुरक्षा व्यवस्था चिकित्सा प्रतिनिधि पजीकरण यात्रा प्रबन्ध परिवहन स्मारिका भोजन पुनर्मिलन समारोह आदि विभिन्न कार्यों के लिए अलग अलग उपसमितिया भी गठित की जा रहीं हैं जिनकी सूचना यथा समय सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से ही प्रकाशित की जाती रहेगी।

अगली बैठक सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे १ फरवरी को सम्पन्न हुई जिसमे हरिद्वार से लगभग १५ २० विशेष पदाधिकारी तथा प्राध्यापक आदि शामिल हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की एक अन्तरग बैठक मे भी १० फरवरी को इस हरिद्वार महासम्मेलन को विशेष उत्साह के साथ विशाल स्तर पर सम्पन्न करने के लिए हर सम्भव सहयोग के सकल्प पारित किए गए। बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने हरिद्वार महासम्मेलन के अवसर पर दिल्ली की ओर से दिल्ली के आर्य परिवारों की एक आर्य गौरव गाथा निकालने की भी विस्तृत योजना प्रस्तुत की जिसे सुनकर आर्यजनता मे विशेष उत्साह का सचार हुआ।

मार्च और अप्रैल माह मे आयोजन को गति प्रदान करने के लिए इन उपसमितियो की बैठको का दिल्ली और हरिद्वार मे विशेष दौर प्रारम्भ होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ४४   २४ फरवरी से २ मार्च २००२ तक   दयानन्दाब्द १७८   सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२   सम्वत २०५८   माघ शु० १२

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्य महिलाओं की शक्ति को संगठित करने के विशेष प्रयास प्रारम्भ

नवसम्वत्सर से आर्य महिला शक्ति वर्ष मनाया जाए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने सभा के अन्तर्गत गठित उप समितियो को अपनी गतिविधिया तेज करने के लिए बैठके आयोजित करने तथा विशेष कार्यक्रमो के सुझावो के क्रियान्वयन हेतु विशेष प्रयास करने की प्रेरणाए दी हैं।

सभा प्रधान जी के निर्देशानुसार धर्म प्रचार समिति की बैठक तो दिसम्बर २००१ मे ही बुलाई गई थी। इस समिति के निर्देशानुसार देश विदेश से आर्यनेताओ के विशेष सुझाव प्राप्त हो रहे हैं। १८ फरवरी को सार्वदेशिक आर्यवीर दल की बैठक भी बुलाई गई जिसमे आर्यवीर दल के सगठनात्मक पक्षो तथा इसकी गतिविधियो को व्यापक बनाने पर विचार विमर्श हुआ। इस बैठक की अध्यक्षता कै० देवरत्न ने की तथा आचार्य देवव्रत श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा प्रि० जगदेव श्री एस०एन० गुप्ता तथा श्री विनय आर्य उपस्थित थे।

महिला समिति की सयोजिका श्रीमती शशि प्रभा आर्या श्रीमती प्रेमलता शास्त्री श्रीमती शकुन्तला आर्या तथा श्रीमती कृष्णा रसवन्त के साथ वार्तालाप मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि आगामी वर्ष को आर्य महिला शक्ति वर्ष के रूप मे मनाया जाना चाहिए जो नवसम्वत २०५६ से २०६० अर्थात ईस्वी सन २००२–२००३ की अवधि मे विशेष कार्यक्रमों और प्रयासों के साथ सम्पन्न हो। इस वर्ष में सार्वदेशिक स्तर पर सार्वदेशिक महिला दल की स्थापना की जाए और इसी प्रकार प्रत्येक प्रान्तीय सभा के साथ प्रान्तीय महिला दल और आर्यसमाजो के साथ महिला आर्यसमाज सम्बद्ध हो। इस सगठनात्मक प्रयास से आर्यसमाज मे महिलाओ की शक्ति को सुनियोजित ढग से राष्ट्रनिर्माण कार्यो मे लगाने मे विशेष सहायता मिलेगी।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि इस प्रकार महिलाओ का एक विशाल सगठन तैयार होगा तो आर्यसमाज के कार्यो मे भी एक नई चुस्ती आएगी। समाज मे महिलाओ के शोषण के विरूद्ध तथा महिलाओ से जुडे अन्य पहलुओ पर भी समय समय पर विचार व्यक्त किए जा सकते हैं।

माता प्रेमलता शास्त्री के कहा कि हरिद्वार मथुरा और काशी आदि क्षेत्रो मे बहुत भी विधवाओ को नारकीय दशा मे रखा जा रहा है जिनके बारे मे स्थानीय आर्यसमाजो से विस्तृत रिपोर्ट भी मगाई जा सकती है और उसके बाद उनकी मुक्ति का प्रयास किया जाना चाहिए इन महिलाओ को विशेष आर्यसमाजो या महिला आश्रमो आदि मे रखा जाए।

श्री विमल वधावन ने कहा कि सार्वदेशिक महिला दल की स्थापना के लिए पहले सभी प्रान्तो को लिखकर प्रान्तीय स्तर पर शीघ्र ही प्रान्तीय महिला दल स्थापित किए जाएगे। केवलमात्र दिल्ली मे आर्य महिला सभा का विधिवत कार्य और कार्यालय चल रहा है। दिल्ली प्रान्त को प्रेरणा समझकर अन्य प्रान्त भी अवश्य ही इस कार्य के लिए प्रेरित होगे

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि सार्वदेशिक सभा इस कार्य मे हर सम्भव सहयोग देगी। महिलाओ के लिए सार्वदेशिक साप्ताहिक मे एक विशेष पृष्ठ आरक्षित रखने का विचार भी सभा प्रधान जी ने दिया है हम इसके लिए भी आर्य महिला शक्ति का आह्वान करते है कि वे आर्य महिला दल से सम्बन्धित सभी गतिविधियो तथा महिलाओ के लिए रूचिकर सामग्री प्रकाशनार्थ भेजना प्रारम्भ करे।

श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि दिल्ली की हमारी महिला सदस्याए प्रत्येक कार्य मे हर सम्भव सहयोग बढ चढकर देगीं।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन मे पधारने वाले

आर्यजनों से विशेष निवेदन

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन का आयोजन २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे किया जा रहा है। यह महासम्मेलन गुरुकुल कागडी के विशाल प्रागण मे ही आयोजित होगा जिसका नाम श्रद्धानन्द नगर रखा गया है।

(१) इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओं को सार्वजनिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन मे बहुत भारी सख्या में आर्यजनो के पहुचने का अनुमान है। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आगन्तुको की पूर्व सूचना सभा कार्यालय मे दर्ज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप मे ५०/– रु० प्रति व्यक्ति भेजकर अपना अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे ३० मार्च तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण नहीं होगा उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

(२) सम्मेलन मे भाग लेने वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्यजनो से विशेष निवेदन है कि विभिन्न सत्रो मे प्रसारित उद्‌बोधनो के मुख्य विचार नोट करे तथा उन विचारो के अनुरूप आर्यसमाज की गतिविधियो को भविष्य मे अपने अपने स्थानीय क्षेत्रो के स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करे। ऐसा अभ्यास आर्यजनो को विशेष रूप से करना चाहिए क्योकि हमारे विद्वान वक्ताओ के बहुमूल्य विचारो को क्रियान्वित करने का यही एक मार्ग है कि हम उन्हे पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

(३) सम्मेलन के दिनो मे हरिद्वार मे ग्रीष्म ऋतु होगी अत उपयुक्त वस्त्र ही रखे।

(४) जो आर्य जन दलो मे पधार रहे हैं वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नामपट्ट बेनर तथा ओ३म ध्वज आदि अवश्य लाने की कृपा करे।

(४) सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के दौरान चल रहे विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप मे अथवा अन्य घोषणाओ के लिए कोई पर्ची आदि लिखकर सयोजन कार्य मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन के तहत हम सबको निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने मे प्राप्त होगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

स्वामी चेतनानन्द सरस्वती द्वारा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था व्यक्त

विगत माह श्री वेदाश्रयी स्वामी चेतनानन्द सरस्वती महाराज के नाम से चित्र सहित एक पत्रक आर्यजनता मे भेजा गया। जिसके शीर्षक के रूप मे वेदालोक समाज जगतपुर गौराग नगर कलकत्ता का पता दिया हुआ था। इस पत्रक मे यह प्रचारित करने का प्रयास किया गया था कि आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्दकृत सस्कार विधि अपूर्ण है वैदिक नहीं। जबकि वेदालोक समाज के सस्थापक श्री १००८ वेदाश्रयी स्वामी चेतनानन्द जी महाराज कृत वेदालोक सस्कार दर्पण ही पूर्ण एव वैदिक है। अत इससे सस्कार कराना ही धर्म है। विचित्र और भ्रम मे डालने वाली परिस्थितिया उत्पन्न करने के लिए इस पत्रक के नीचे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के लगभग सभी पदाधिकारियो के नाम भी प्रकाशित किए गए हैं। इस पत्रक को विशेष रूप से बगाल सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य द्वारा प्रकाशित होना बताया गया था।

इस पत्रक को तत्काल एव कडी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री विमल वधावन एडवोकेट ने इस पत्रक के विरूद्ध शास्त्रार्थ की चुनौती दी। दूसरी तरफ बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो को विस्तृत छानबीन और उक्त महाराज से सम्पर्क करने का निर्देश दिया। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान एव बगाल सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य तथा श्री चान्द रतन दम्माणी को विशेष रूप से तत्काल यह कार्य करने के लिए निर्देश दिया गया। श्री आनन्द कुमार आर्य ने पत्रक देखने के बाद अपने पत्र द्वारा विस्तृत और तथ्यात्मक जानकारी दी है जो स्पष्ट करती है कि यह पत्रक ईर्ष्यावश और आर्यनेताओ को भ्रम की स्थिति मे खडा करने के उद्देश्य से ही प्रकाशित किया गया था। बगाल मे कभी कभी यह पर्चे बाजी आर्यसमाज से बाहर के लोग भी करते हैं। उन्होने बताया कि स्वामी चेतनानन्द बगाल सभा के साथ सम्बद्ध विद्वान सन्यासी है और उनकी महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो मे दृढ आस्था है।

स्वामी चतनानन्द जी के द्वारा इस पत्रक के विरूद्ध जो स्पष्टीकरण अपने हाथ से लिखकर दिया गया है वह इस प्रकार है।

नितान्त दुख का विषय यह है जोकि दीर्घ ६० वर्षो से मै आर्यसमाजी बनकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारधाराओ से ओतप्रोत रहा और वेद का ही आश्रय लेकर दीर्घ ४५ वर्षों से वाल्य सन्यासी के रूप मे प्रचार करता रहा। १९७७ मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से वेदालकार तथा वेद से एम ए पढते समय मैं गुरुकुल कागडी मे पजाब सभा द्वारा इन्द्रवेश–अग्निवेश द्वारा अधिकार तथा पार्टी बाजी तथा झगडे के कारण विघ्न होने से पढाई छोडकर वेद प्रचार मे लग गया। उससे पहले १९६२ मे बिहार झज्जर रोहतक एटा चितौडगढ आदि विभिन्न गुरुकुल और पाणिनीय महा विद्यालय बनारस और सोनीपत भी पढता हुआ अन्त मे १९७७ मे कागडी से वेदालकार तथा एम०ए० करता हुआ अवस्था मे पश्चिम बगाल मे भी हर वर्ष आता रहा। दुर्भाग्य की बात है जोकि कुछ विशिष्ट नामधारी पण्डित और अधिकारियो के स्वार्थ भावना से पीडित होकर हमारे प्रति निष्ठुर व्यवहार किया और पश्चिम बग मे कही पर रह न सके तो ऐसा दुर्व्यवहार करता रहा। हमारा पाण्डित्य तथा वेद प्रचार के साधन केवल महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा तथा १६ न० विधान सारणी से जब हमारा सामान भी फैंक दिया तब बडा बाजार के विभिन्न स्थानो मे रहते हुए भी विरोध किया और तब मैं अनुपाय होकर स्वतत्र रूप मे वेद प्रचार करता रहा।

जब हमने महर्षि दयानन्द से एक ही ईश्वर का ज्ञान भण्डार वेद को पाया तब से वेद ज्ञान के श्रोत पथ के गुरु हमारा एक ही महर्षि दयानन्द को मानकर महर्षि दयानन्द के दस नियमो मे प्रतिज्ञाबद्ध होकर वेद का ही सहारा या आश्रय से अर्थात वेदज्ञान के आलोक से चलने के लिए बाध्य होकर वेदालोक समाज बनाया और एकनिष्ठ भाव र वेद का ही प्रचार करता रहा। जब दी २६ वर्षो से हमे आर्यसमाज से दूर रहन पडा।

इस अवस्था मे वर्तमान वैदिक ध की अवनति तथा दुरावस्था देखते हु प्रगतिशील वेद प्रचार के रचनात्मव कार्य के लिए आपके प्रतिनिधि सभा ः जब से बुलाया और हमारा सेवा सहयो का बीडा उठाया तो तभी से पुरा स्वार्थवादी लोगो ने चारो तरफ से पू रूप से विवाद उठाया परन्तु दुख कं बात है जो कि शास्त्रो को लेकर सिद्धान्त से लडने की बात नहीं कर रहे है जिसके लिए हम हमेशा तैयार रहे हैं

वर्तमान मे आपकी बातो से हम सभी के दुर्व्यवहारो के विवादो को भूलक महर्षि दयानन्द के मुख्य १० नियमो रहता हुआ ये ही प्रतिज्ञा करता हू जोवि महर्षि दयानन्द एव महर्षि कृत ग्रन् तथा उनके १० नियमो मे पूर्ण आस्थ रखता हुआ वेद को सब सत्य विद्या क ग्रन्थ मानकर चलता रहूगा। यदि मे लेखन तथा साहित्य ग्रन्थो मे कहीं प भी कोई वेद विरूद्ध बात और प्रचार क सिद्धान्त मिलता है तब विद्या तथा र्मार्य सभा के निर्णय से सभी विद्वानो व यथार्थ वैदिक सिद्धान्तो को स्वीका करूगा। वर्तमान मे हमारे प्रति अवै लाछन और १००८ महाराज तथा वेदालोव समाज के नाम से दुलेकशन और २५/३ व्यक्तियो के नाम से पेपरबाजी वैरि पत्र तथा विभिन्न प्रकार से हमारे ना से भारत मे सर्वत्र दुष्प्रचार करने व लिए स्वार्थी लोग माया जाल रच रहा सो उसका भी उपयुक्त प्रमाण के सा नया विचार का भी आवेदन करता हू

– स्वामी चेतनानन्द सरस्वत

सुभाष नगर आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश आर्य नहीं रहे

दिल्ली मे सुभाष नगर आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता तथा निष्ठावान आर्यसमाजी श्री ओमप्रकाश आर्य जी का निधन १४ २ २००२ को प्रात ४ बजे हो गया। वे ६८ वर्ष के थे।

१३ अप्रैल १९३४ को गुजरावाला (अब पाकिस्तान) मे जन्मे श्री ओमप्रकाश आर्य बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और उन्ही सस्कारो के चलते वे आर्यसमाज के लिए तन मन धन से समर्पित थे। अपने पीछे वे भरा पूरा परिवार छोड गए है। जिनमे उनकी पत्नी शीला दो पुत्र तथा ३ पुत्रिया है। सभी बच्चे विवाहित है तथा उच्च सेवाओ मे रत है।

१६ २ २००२ शनिवार को महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर स्वामी बोधगिरि आश्रम बेरी वाला बाग सुभाष नगर नई दिल्ली मे शोक सभा का आयोजन किया गया।

जिसमे अनको आर्य समाजो के पदाधिकारी गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य प्रि० चन्द देव आदि ने श्री ओम प्रकाश आर्य को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किया।

श्री हंसराज चोपड़ा को पत्नी शोक

आर्यसमाज हनुमान रोड के उप प्रधान तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य श्री हसराज चोपडा की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाशवती चोपडा का १५ २ २००२ को अकस्मात निधन हो गया। वे ८० वर्ष की थीं। श्रीमती कैलाशवती चोपडा तथा उनके पति श्री हसराज चोपडा ने अपने बच्चो को वैदिक सस्कारो से ओत–प्रोत कर पूर्ण रूप से आदर्श आर्य समाजी परिवार का निर्माण किया था। श्रीमती कैलाशवती चोपडा आर्यसमाज के कार्यों मे बढ–चढ कर हिस्सा लेती थी। वे अपने पीछे दो सुयोग्य पुत्रो तथा एक कन्या से युक्त भरा पूरा परिवार छोड गई हैं। उनके अन्तिम सस्कार म श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा तथा कई अन्य आर्य नेता शामिल हुए।

१८–२–२००२ को उनकी उठाला की क्रिया सम्पन्न हुई। इस अवसर [illegible] दिल्ली सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री [illegible] महेश विद्यालकार आर्यसमाज मालवीय नगर के प्रधान श्री भूप सिंह [illegible] कर्णदेव शास्त्री सहित विभिन्न सस्थाओ के अधिकारियो तथा [illegible] व्यक्तियो ने श्रीमती कैलाशवती चोपडा को भावभीनी श्रद्धाजलि [illegible] सार्वदेशिक परिवार इस दुख की घडी मे उनके साथ है।

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे छपे लेखो तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो मे वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित दान आदि की अपीलों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

– सम्पादक

संसद पर हुए हमले से गुस्साई हुई सरकार ने पर्वत हिला दिया लेकिन उसमें से चूहा भी नहीं निकला।

तने हुए मुक्के की थकान

डॉ० वेदप्रताप वैदिक

जनरल मुशर्रफ की वाशिगटन यात्रा से भारत सरकार ने क्या सबक सीखा ? शायद कुछ नहीं। वह अब भी पाकिस्तान पर मुक्का ताने हुए है और आस लगाए बैठी है कि अमेरिका उसकी गाडी पार लगा देगा। भारत सरकार खुश हो रही है कि अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल अभी तक पाकिस्तानी आतकवादियो के चगुल मे फसा हुआ है और मुशर्रफ की किरकिरी हो रही है। यह ठीक है कि अमेरिकी अखबार मुशर्रफ की अगवानी मे पलक पावडे नहीं बिछा रहे लेकिन वह यह भूल रही है कि राष्ट्रपति बुश राष्ट्रपति मुशर्रफ पर जिस तरह फिदा हो रहे है उस तरह कभी अयूब खान पर आइजनहावर और जिया उल हक पर जिमी कार्टर भी नहीं हुए। राष्ट्रपति बुश जनरल मुशर्रफ को जनरल नही बार बार राष्ट्रपति कह रहे है याने वे फौजी तानाशाही को मान्यता दे रहे है। उन्होने पत्रकारो के सामने कहा कि राष्ट्रपति मुशर्रफ मेरे महान मित्र हे और राष्ट्र के नाम सन्देश मे मैने विदेशी राष्ट्राध्यक्षो मे सिर्फ मुशर्रफ का नाम लिया इसी से समझ जाइए कि अमेरिका उनका कितना आभारी है। उन्होने यह भी कहा कि वे पाकिस्तान के स्थायित्व के लिए यथष्ट सहायता भी देगे ताकि मुशर्रफ की छवि भी चमके। उन्हाने मुशर्रफ की पाकिस्तानी समाज को बदलने की कोशिशो की भी तारीफ की खास तौर से मदरसो के ढर्रे को। ये सब मैत्री सकेत स्वाभाविक है क्योकि अगर मुशर्रफ हिम्मत नहीं दिखाते तो अमेरिका अफगान दलदल मे जरा लबा फस सकता था। अब जबकि तालिबान का सफाया हो गया है बुश जैसे मुश्किल से जीते हुए राष्ट्रपति का अमेरिका मे वास्तविक राज्याभिषेक हो गया है। गर्व और गौरव की इस वेला मे अगर मुशर्रफ की टोपी मे बुश ने कुछ ज्यादा रगीन पख खोस दिए हैं तो भारत को बिलबिलाने की जरूरत नहीं है लेकिन मुशर्रफ की इस वाशिगटन यात्रा का असली अभिप्राय क्या है अगर भारत सरकार यह नहीं समझेगी तो उसकी हालत अन्तर्राष्ट्रीय त्रिशुक की तरह हो जाएगी।

भारत सरकार यह गलतफहमी पाल बैठी हुई है कि अमेरिका कश्मीर के सवाल पर पाकिस्तान को दबाएगा। मुशर्रफ की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति बुश से लेकर किसी छोटे से छोटे अमेरिकी अधिकारी ने भी मुशर्रफ से यह नहीं कहा कि कश्मीर की आग लगाना बद करो या कश्मीर भारत का अटूट अग है। अमेरिका की सुई सिर्फ इसी मुद्दे पर अटकी हुई है कि वह आतकवाद का विरोधी है और कश्मीर का मसला बातचीत से सुलझाया जाना चाहिए। मुशर्रफ को अमेरिका साफ साफ यह क्यो नहीं करता कि आप जब तक सीमा पार आतकवाद नहीं रोकेगे आपका हुक्का पानी बद कर दिया जाएगा। यदि अमेरिका ऐसा कहता तो माना जाता कि वह भारत के पक्ष मे बोला। ऐसा बोलने की बजाए अमेरिका कहता है कि उसे सीमा पर तनाव पसद नहीं है याने भारत अपनी फौजे हटाए। क्या यह भारत का समर्थन है ? वह भारत को नाराज नहीं करना चाहता इसीलिए साफ–साफ नहीं बोलता लेकिन बुद्धिमान को तो इशारा ही काफी होना चाहिए। इसी प्रकार वह मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए भी मध्यस्थता को रद्द करता रहता है ताकि भारत की टेक बनी रहे। क्या दुनिया इस नाटक को समझती नहीं ? क्या भारत यह नही समझता कि अमेरिका के तात्कालिक हितो की पूर्ति के लिए पाकिस्तान की उपयागिता अब भी बनी हुई है ? अमेरिका ने अफगान कार्रवाई मे जो करोडो डालर खर्च किए है क्या उन्हे वह मध्य एशिया के तेल और गैस मे से नही निकालेगा ? पाकिस्तान की मदद के बिना तेल और गैस कराची के बदरगाह तक कैसे पहुचेगे ? अफगानिस्तान के भविष्य निर्धारण मे पाकिस्तान की क्या भूमिका होगी इसका सकेत अन्तरिम अफगान सरकार के मुखिया हामिद करजई की पाकिस्तान यात्रा से ही मिल जाता है। मुशरफ अमेरिका रवाना हो उसके पहले उनसे मिलना क्या इतना जरूरी था कि करजइ ने खुद की ओर अपने दर्जन भर मन्त्रियो की जान भी खतरे डाले दी खतरनाक मौसम मे भी जहाज से उडकर वे कुछ घण्टो के लिए इस्लामाबाद गए। शायद वे अमेरिका की इच्छा पूरी कर रहे है। अमेरिका अपने इतने महत्वपूर्ण मोहरे याने पाकिस्तान को अब अपने चगुल से निकलने नही देगा और यह भी देखेगा कि उसका बाल भी बाका न हो।

भारत सरकार सीमा पर फौजे डटाकर अपनी पीठ खुद ही थपथपा रही है। वह भारत के मतदाताओ को बता रही है कि उसके बहादुराना तेवर के कारण पाकिस्तान के पसीने छूट रहे है। मुशर्रफ को मुल्लाओ मदरसो और मस्जिदो की राजनीति के खिलाफ मैदान मे उतरना पडा रहा है। आतकवाद की भर्त्सना करनी पड रही है और डर के मारे वाशिगटन की परिक्रमा भी करनी पड रही है। दिल का बहलाने के लिए ये ख्याल बहुत अच्छे है लेकिन वास्तविकता क्या है ? वास्तविकता यह है कि भारत की फौजी कवायद पाकिस्तान की नजर मे सिर्फ गीदडभभकी है। मुशर्रफ ने बार बार कहा है कि पाकिस्तान मुहतोड जवाब देगा। भारत ब्लेकमेल करना बद करे। उधर आतकवाद मे क्या कमी आई है ? सयुक्त अरब अमीरात ने तो कलकत्ता काण्ड के कुख्यात अपराधी आफताब असारी को तुरन्त भारत भिजवा दिया लेकिन भारत द्वारा भेजी गई २० भयकर आतकवादियो की सूची को पाकिस्तान ने हवा मे लटका रखा है। यदि अमेरिका सचमुच आतकवाद का विरोध करता है तो पाकिस्तान को मजबूर क्यो नही करता कि वह उस सूची पर अमल करे। यह ठीक है कि अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल का बचाने के लिए मुशर्रफ सरकार जमीन आसमान एक कर देगी लेकिन हजारो कश्मीरियो बम्बईवासियो तथा अन्य भारतीयो के हत्यारो को पकडने के लिए वह क्या कर रही है सच्चाइ तो यह है कि वह उन पर हाथ डाले बैठी हुइ है। अगर उसे भारतीय फौज का डर होता तो वह उन २० अपराधियो को कभी का उगल देती। डेनियल पर्ल के अपहरणकर्ताओ को पकडकर पाकिस्तान सरकार एक तीर से दो शिकार करेगी तो वह अमरिका की सहानुभूति अर्जित करगी और दूसरा उसे वह यह भी बताएगी कि भारत पाकिस्तान के विरुद्ध फिजूल का प्रापेगण्डा करता रहता है। यदि उसके बस मे होता तो वह भारत के अपराधियो को भी पकड लेती। दूसरे शब्दो मे मुशर्रफ सरकार भले दिखाई पडने वाले जितने भी काम कर रही है वे सब अमेरिका की खुशामद के लिए है भारत से भयाक्रात होने के कारण नही।

इसीलिए अमेरिका मुशर्रफ से बेहद खुश है। इसका मतलब यह नही कि अमरिका उन पर कोइ भी दबाव नहीं डाल रहा है। वह दबाव जरूर डाल रहा है लेकिन उसका भारत से कोई सम्बन्ध नही है। वह तो केवल इतना चाहता है कि भारत पाक परमाणु युद्ध न छिड जाए। बाकी उसकी बला से। अगर दो एशियाई राष्ट्रो मे परमाणु युद्ध छिड गया तो उसकी लपटे सारे विश्व मे फैल सकती हैं और वे अमेरिका को भी आहत किए बिना नहीं रहगी। अमेरिका को अपनी पडी है उसे कश्मीर से क्या लेना देना ? कश्मीर मे जितने लोग मरे है उससे ज्यादा क्या ट्रेड टावर मे मरे थे ? नही लेकिन अमेरिका ने अफगानिस्तान मे बम का गलीचा बिछा दिया वह पाकिस्तान के खिलाफ कुछ कोइ कारवाइ क्यो करगा या भारत इस किसी देश को क्या करने देगा ? पाकिस्तान ने अमेरिका का कौन सा टावर गिराया है ? पाकिस्तान आतकवाद से असली नुकसान भारत का होता अमेरिका के सिर क्या धुन ? इसीलिए भारत को अपना मुह खुद धोना पडेगा अपने दात खुद मजबूत करने होगे अपनी तलवार खुद भाजनी होगी भारत के इस इराद मे खलल पड जाए यह सिहाब लगाकर ही मुशर्रफ ने वाशिगटन मे नया सुरा छोड दिया। सुरा यह कि भारत फिर से परमाणु विस्फाट करने वाला है। मुशर्रफ वही बात कहते हे जिसे सुनते ही अमेरिका के कान खडे हो जाते है गनीमत है कि मुशर्रफ की इस पतग को अमेरिकियो ने ज्यादा उडने नही दिया लेकिन वे मुशरफ को खाली हाथ भी नही लौटा रहे हैं मालामाल कर रहे है। जैसे नवाज शरीफ को क्लिंटन ने कान मरोडकर वापस भेजा था वैसे बुश मुशर्रफ की चिउटी भी नही काट रहे है। अमेरिका पलट मुशर्रफ अब भारत के मुकाबले जरा ज्यादा खमठोक मुद्रा मे होगे और भारत सरकार का डेढ मास से तना हुआ मुक्का पता नही कहा कहा से ढीला पडता चला जाएगा ? मुशरफ की वाशिगटन यात्रा का लक्ष्य माल मत्ता बटोरना तो है ही इस भारतीय मुक्के को थका डालना भी है।

१३ दिसम्बर को भारत सरकार ने बिजली नही कडकाई अब डेढ मास से वह युद्ध का बाजा बजा रही है। उस पर कौन ध्यान दे रहा है ? ससद पर हुए हमले से गुस्साई हुई सरकार ने पर्वत हिला दिया लेकिन उसमे से चूहा भी नहीं निकला सूली पर चढी सरकार को समझ नही पड रहा है कि वह अब नीचे कैसे उतरे ? आजादी के बाद फौज की इतनी बडी हलचल कभी नहीं हुई। अरबो रुपये खर्च हो गए। करोडो रोज खर्च हो रहे है लेकिन युद्ध के बाचे की धुन कोइ सुन ही नही रहा पाकिस्तान भी नही। शुरू मे पाकिस्तान थोडा सचेत तो हुआ था लेकिन डरा नही। वह इसे शुरू से ही ढोग बता रहा है। ढोग तो यह नही था लेकिन अब जबकि इसका परिणाम शून्य है इसे ढोग के अलावा क्या समझा जाए ? जानकारो को पता है कि अमेरिकियो की हरी झडी के बिना भारतीय फौज एक इच भी आगे नहीं बढ सकती। आतकवादियो को काबू करने के लिए लाखो फौजी सीमा पर जमा करने की क्या तुक है ? यह कौन से जमाने की रणनीति है ? आतकवादियो के अड्डो पर सीधे प्रहार के लिए कितने फौजियो कितने जहाजो कितनो तोपो की जरूरत है ? वे सब तो पहले से ही वहा विद्यमान थे। उनका उपयोग करने से यह सरकार डरती रही आतकवादियो का पीछा करने (हाट परस्यूट) की थोथी घुडकिया देती रही और अब उसने भारत पाक सीमात पर लाखो फौजी जमा कर लिए है जो मच्छर नहीं मार सकती वह शेर मारने की धमकिया दे रही है। उसका तना हुआ मुक्का ढीला पड रहा है। तना हुआ और बधा हुआ मुक्का एक लाख का दिखाई पड रहा था। अब ढीला हुआ और खुला हुआ मुक्का कैसा लगेगा ? जो लाख का था अब खाक का नहीं हो जाएगा ?

१३ दिसम्बर को भारत सरकार ने बिजली नहीं कडकाई। अब डेढ मास से वह युद्ध का बाजा बजा रही है। उस पर कौन ध्यान दे रहा है ? ससद पर हुए हमले से गुस्साई हुई सरकार ने पर्वत हिला दिया लेकिन उसमे से चूहा भी नहीं निकला। सूली पर चढी सरकार को समझ नहीं पड रहा है कि वह अब नीचे कैसे उतरे ? आजादी के बाद फौज की इतनी बडी हलचल कभी नहीं हुई। अरबो रुपये खर्च हो गए। करोडो रोज खर्च हो रहे है लेकिन युद्ध के बाचे की धुन कोई सुन ही नहीं रहा पाकिस्तान भी नहीं। शुरू मे पाकिस्तान थोडा सचेत तो हुआ था लेकिन डरा नहीं। वह इसे शुरू से ही ढोग बता रहा है। ढोग तो यह नहीं था लेकिन अब जबकि इसका परिणाम शून्य है इसे ढोग के अलावा क्या समझा जाए ? जानकारो को पता है कि अमेरिकियो की हरी झडी के बिना भारतीय फौज एक इच भी आगे नहीं बढ सकती।

मानव निर्माण की योजना

– आचार्य भगवान देव 'चैतन्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का एक सूत्रीय कार्यक्रम है – **कृण्वन्तो विश्वमार्यम**। अर्थात सारे ससार का आर्य बनाना। उनकी दृष्टि मे आर्य शब्द श्रेष्ठता का प्रतीक है। वे सारे ससार को श्रेष्ठ मानव बनाना चाहते थे। वास्तव मे श्रेष्ठता ही उन्नति का आधार है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ होगा वही जीवन मे चतुर्दिक उन्नति कर सकता है। जहा ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियो का समूह होगा वह परिवार समाज और देश अपने वास्तविक लक्ष्यो का प्राप्त कर सकने मे समर्थ हो सकेगा। बडी हैरानी की बात है कि व्यक्ति परिवार या देश और समाज की उन्नति के लिए अनेक प्रकार की योजनाए बनाता है मगर मानव को सही मानव बनाने की दिशा मे कोई प्रयास नही किया जाता है। यदि मानव को मानव बना दिया जाए तो समस्त समस्याओ का स्वत ही निवारण हो जाएगा। कुछ लोगो द्वारा रोटी कपडा और मकान की प्रतिपूर्ति का नारा लगाया जाता है मगर मानव को सुखी रखने के लिए कवल मात्र ये ही उपलब्धिया पयाप्त नही है। इन बाहरी उपलब्धियो से आज तक किसी को भी परम सुख प्राप्त करते हुए नही देखा गया। ये वस्तुए वास्तव मे सुख और शान्ति का आधार हे ही नहीं। मनु महाराज कहत है –सुखस्य मूलम धर्म। अथात सुख का मूल धर्म है। जब तक व्यक्ति का जीवन कार्यरूप मे धार्मिक नहीं बनेगा तब तक वह सुखी हो ही नही सकता है। भौतिक रूप से यदि कोई समाज या देश सम्पन्न हो भी जाए तो भी यदि देश के नागरिक भीतर से विकसित नहीं है तो वे साधनो का प्रयोग ठीक ढग से नहीं कर पाएगे। कहते हैं कि एक बार किसी ने महान वैज्ञानिक आइस्टीन से पूछा कि आपने इतने अदभुत आविष्कार किए हैं मगर क्या इससे मानव जाति पूरी तरह से सुखी हो सकेगी? तो आईस्टीन ने उत्तर दिया कि मेरा दावा नहीं है कि इन उपलब्धियो से व्यक्ति सुखी होगा ही। यह तो उन व्यक्तियो के मानसिक विकास पर निर्भर करता है कि वे इन आविष्कारो का प्रयोग किस प्रकार से करते है। जब उनसे पूछा गया कि व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए आपने क्या प्रयास किए हैं तो उनका कथन था कि यह काम धार्मिक लोगो का है।

आईस्टीन की बात अक्षरश सत्य है। आज हमने भौतिक रूप से भले ही बहुत उन्नति कर ली है मगर मानसिक रूप से विकसित न होने के कारण देश के बडे-बडे नेता भी कई प्रकार के घोटालो मे फसे हुए है। सम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद और जातिवाद आदि कुवृत्तियो के कारण देश रसातल मे जा रहा है। यदि यहा के नागरिको मे देशभक्ति की भावना नहीं है तो इन भौतिक उपलब्धियो का कोई मतलब नही रह जाता है। देश के लिए अपने स्वार्थो को त्यागने की प्रेरणा केवल धर्म ही दे सकता है। धर्म के तत्व ही नैतिकता का सृजन कर सकते है। व्यक्ति के भीतर छिपे काम क्रोध लोभ मोह और अहकार रूपी शत्रुओ का जब तक नाश नही होता तब तक मानव अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर कुछ भी नही सोच सकता है। उसके जो भी निर्णय होगे किसी न किसी

> **देश के लिए अपने स्वार्थो को त्यागने की प्रेरणा केवल धर्म ही दे सकता है। धर्म के तत्व ही नैतिकता का सृजन कर सकते है। व्यक्ति के भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार रूपी शत्रुओ का जब तक नाश नहीं होता तब तक मानव अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर कुछ भी नहीं सोच सकता है। उसके जो भी निर्णय होगे, किसी न किसी पूर्वाग्रह से ही ग्रसित होगे। इन वासनाओ से तभी मुक्ति मिल सकती है जब मानव को सतत् महान बनाने के प्रयास किए जाए। सस्कारो के माध्यम से यही प्रयास किए जाते हैं कि व्यक्ति की सब प्रकार की मलिनताओ को दूर कर दिया जाए। सस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणो को हटाकर उनकी जगह सद्गुणो का आधान कर देने का नाम हे। जब व्यक्ति के दुर्गुण दूर होंगे तभी वह शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर विकसित होकर पूर्ण मानव बन सकता है।**

मानसिक और आत्मिक स्तर पर विकसित होकर पूण मानव बन सकता है।

मानव के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक काल से प्रचलित सोलह सस्कारो का प्रबल समर्थन किया है। उन्होने आर्यो के लिए इन सस्कारो की अनिवार्यता पर बल दिया है। सोलह सस्कारो के प्रचलन के लिए उन्होने सस्कार विधि ग्रन्थ की भी रचना की है। सस्कार विधि मानव निर्माण की दिशा मे एक अद्भुत ग्रन्थ है। सोलह सस्कारो मे से लगभग ग्यारह सस्कार तो बालक की सात–आठ वर्ष की आयु तक ही हो जात है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानो का विचार है कि प्रथम के ७–८ वर्षो मे बच्चे मे जो सस्कार डाल दिए जाते हैं जीवन के शेष वर्षो मे उन्हीं सस्कारो का विकास होता है। बालक के तीन सस्कार तो उसकी गर्भावस्था मे ही कर दिए जाते हैं। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि गर्भ मे ही बालक पर अच्छे या बुरे सस्कार पडने आरम्भ हो जाते हैं। इतिहास मे भी इस बात के कुछ उदाहरण हमे मिलते हैं। कहते हैं कि अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेदन अपनी गर्भावस्था मे ही सीखा था। परम विदुषी मदालसा ने गर्भ मे ही अपने बच्चो पर सस्कार डालकर आठ को ब्रह्मज्ञानी और नवे को राजा बनाया था। निपोलियन गीटू और प्रिंस बिस्मार्क आदि कारे भी गर्भ मे ही वे सस्कार मिल गए थे जिनका विकास बाद के शेष जीवन मे हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने बालक के जन्म से पूर्व तीन सस्कारो का विधान किया है– गर्भाधान पुसवन और सीमन्तोनयन। इन तीनो ही सस्कारो का अपना विशेष महत्व है। आजकल विवाह के बाद हनीमून आदि के लिए नव दम्पति विभिन्न स्थानो मे जाकर पूर्णतया भोग मे डूब जाते हे और उनका गर्भाधान भी उसी काल मे आकस्मिक रूप से हो जाता है। इसीलिए सन्तान का निर्माण भली प्रकार से नहीं हो पा रहा है। हमारे ऋषि

गर्भाधान सस्कार किया था। गर्भाधान सस्कार वास्तव मे दिव्य आत्माओ के लिए जन्म लेन हेतु एक तरह से भूमि तयार करने जेसा है। इसीलिए इस पवित्रता के साथ जोडा गया है। मा बाप की वैचारिक श्रेष्ठता की पृष्ठभूमि ही सुसन्तान पेदा करने का उपाय है। यदि वैदिक रीति से गर्भाधान के समय मन–स्थिति बालक के भविष्य का निर्माण करने मे अपनी अहमभूमिका निभाती है। आर्य सस्थाओ को इस ओर गहन चिन्तन करके इसके प्रचलन कराने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए। प्रसन्नता की बात है कि दयानन्दमठ चम्बा के स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज इस दिशा मे अपने स्तर पर नव विवाहितो से सम्पर्क करके प्रयास रत हैं

दूसरा सस्कार है – पुसवन। गर्भस्थ बालक के शरीर का दूसरे तीसरे महीने मे निर्माण होना आरम्भ हो जाता है। महर्षि जी ने यह सस्कार चौथे महीने मे कराने का विधान किया है। इस सस्कार का उद्देश्य गर्भस्थ सन्तान मे निरोगता स्वरूपता सुन्दरता और तेजस्विता आदि का आधान करना है। इसी प्रकार के भावो से युक्त मन्त्रो की आहुतिया पति–पत्नी से दिलवाई जाती है। ऐसे ही खान–पान तथा रहन–सहन का विस्तृत निर्देश महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रस्तुत किया है। मा–बाप वीर और तेजस्वी सन्तान की कामना करते है – आ वीराजायता पुत्रस्ते दशमास्य । माता के गर्भ मे स्थिर बालक अपने पैदा होने तक सुरक्षित रहे इस प्रकार की कामना भी की जाती है। तीसरे सस्कार सीमन्तोनयन का भी अपना विशेष महत्व है। सीमन्त शब्द का अर्थ है मस्तिष्क और उन्नयन शब्द का अर्थ है विकास। अर्थात यह सस्कार सन्तान के मानसिक विकास का द्योतक है। यह सस्कार आठवे महीने मे किया जाता है। पुसवन सस्कार शारीरिक विकास हेतु और सीमन्तोनयन सस्कार सन्तान के मानसिक विकास के लिए है। इन दोनो सस्कारो का यही आशय है कि सन्तान का शारीरिक और मानसिक विकास भली प्रकार से हो।

बालक के जन्म के बाद के सस्कारो मे महर्षि जी ने पहला सस्कार जातकर्म सस्कार बताया हे। जातकर्म सस्कार के समय बहुत सी महत्वपूर्ण प्रक्रियाए की जाती है और वे बहुत ही सार्थक है। महर्षि जी ने अपने सस्कार विधि मे उनका विस्तृत उल्लेख किया है। बच्चे का मुख नाक आदि साफ करना नाडी छेदन स्नान कान के पास पत्थर बजाना सिर पर घी डुबोया फाया रखना सोने की शलाका से घी और मधु के साथ ओ३म लिखना और बालक के कानो मे त्व वेदोऽसि कहना। इन समस्त प्रक्रियाओ का अपना –अपना विशेष महत्व है और बच्चे के भावी जीवन पर इसका गहन प्रभाव पडता है। इस सस्कार के माध्यम से बालक मे आध्यात्मिकता का बीज भी बोया जाता है। तथा उसके शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास को बल मिलता है। इससे अगले सस्कार का नाम – नामकरण सस्कार है। यह सस्कार बालक के जन्म के ग्यारहवे या एक सौ एकवे दिन होता है जिसमे बालक का कोई सुन्दर और सार्थक नाम रखा जाता है तथा इसे निष्क्रमण सस्कार कहते हे। छठे महीने बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है तथा इस सस्कार को अन्नप्राशन सस्कार कहते है।। एक वर्ष पूरा हो जाने पर या तीसरे वर्ष बच्चे के बाल प्रथम बार उतारे जाते हैं तथा इस सस्कार को चूडाकर्म सस्कार कहते हैं और तीसरे अथवा पाचवे वर्ष कर्णवेध सस्कार किया जाता है। इन सब सस्कारो का अपना एक विशेष महत्व है। चार महीने से पूर्व बच्चे को बाहर की हवा से बचाना चाहिए। छठे महीने से पहले उसे अन्न नहीं खिलाना चाहिए क्योकि उस समय तक उसमे अन्न पचाने की शक्ति नहीं होती। चूडाकर्म द्वारा बच्चे के मलिन बालो को उतार दिया जाता है जिससे नए और सुन्दर बाल पैदा होते हैं। इसके साथ–साथ सिर भारी रहने से बच्चे की रक्षा होती है तथा सिर की खुजली एव दाद आदि से उसकी रक्षा होती है। कर्णवेध से हर्निया आदि रोगों से बालक की रक्षा होती है तथा स्वर्ण के आभूषण आदि डालने के लिए भी कानों को वेधा जाता है।

– शेष पृष्ठ ६ पर

मॉरिशस की हिन्दी पत्रकारिता जिसे आर्यसमाज ने बढ़ावा दिया

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

जिस देश की मानव बस्ती का समग्र इतिहास ही तीन सौ चार सौ वर्षो की समयावधि मे सिमटा हो उस देश से कला सस्कृति और साहित्य की दीर्घ परम्पराओ की अपेक्षा करना अनुचित है। हिन्द महासागर के लघुद्वीप मॉरिशस का मानवीय इतिहास भी चार सौ साल के लगभग का ही है। सर्वप्रथम अरबी नाविक उसके इर्द गिर्द घूम कर आत जाते रहे। पुर्तगाली भी आए और डच भी। किन्तु ये दोनो यूरोपीय जातिया स्थायी रूप से यहा नही रही। कालान्तर मे फ्रैंच लोगो ने इस देश पर १८१० तक शासन किया। राजनय कूटनीति तथा युद्ध कौशल मे दक्ष अग्रेजो ने १८१० मे सागर तथा धरती पर किए गए सक्षिप्त युद्ध मे फ्रैंच लोगो को पराजित कर उस द्वीप पर यूनियन जेक ध्वज लहराया। अन्तत १२ मार्च १८६६ को मॉरिशस स्वतन्त्रता प्राप्त कर स्वतन्त्र गणराज्य के रूप मे विश्व समुदाय का अभिन्न अग बना।

जिस देश की सम्पूर्ण बसावट ही तीन चार शताब्दियो मे सीमित रही वहा जन–चेतना तथा राष्ट्रीय अस्मिता का यकायक आविर्भाव ता सम्भव ही नही था किन्तु अच्छी वात यह थी कि यहा आकर मजदूर के रूप मे बसे भारतवासी चाहे भौगोलिक रूप से अपनी मातृभूमि से हजारो मील दूर थे किन्तु उनका मन और उनकी आत्मा निरन्तर भारत के धर्म सभ्यता सस्कृति और परम्परा से जुडे रहे। परिणाम यह हुआ कि ये प्रवासी भारतीय मॉरिशस चाहे अशिक्षित दरिद्र तथा शोषण से पीडित गुलामो की सी स्थिति मे रहे उन्होने मानसिक रूप से स्वय को भारत से जोडे रखा। दिन भर के कठोर परिश्रम से क्लान्त तथा त्रस्त होकर जब वे अपने गावो की बैठकाओ (मॉरिशस मे प्रचलित शब्द) मे साय समय एकत्र होते तो रामचरितमानस के पाठ तथा आल्हा के गान उनको नई स्फूर्ति तथा जीने की नवीन आशा प्रदान करते। परकीयो के दासत्व मे लगभग दो शताब्दियो तक रहने पर भी वे सास्कृतिक वैभव के धनी भारत से स्वय को जोडे रहे। धीरे धीरे उनमे भी सार्वजनिक चेतना का विकास हुआ वे अपने राजनैतिक अधिकारो के प्रति सजग हुए और उन्हे अपनी सामूहिक आशाओ आकाक्षाओ अभावो और अभियोगो की अभिव्यक्ति के लिए पत्र पत्रिकाओ का सहारा लेना पडा। देखा जाए तो मॉरिशस मे जन जागृति का इतिहास अधिक पुराना नही है। १६१० मे वहा आर्यसमाज की स्थापना हुई और इसके सस्थापन के साथ ही मॉरिशस मे हिन्दी के पठन पाठन साहित्य निर्माण तथा पत्रकारिता को विशेष प्रोत्साहन मिला। डॉ० मणिलाल भजबलाल डॉक्टर ने १५ मार्च १६०६ के दिन हिन्दुस्तानी नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। यह हिन्दी अग्रेजी तथा गुजराती तीनो भाषाओ मे छपता था। १६१० मे इसे दैनिक कर दिया गया।

१६११ मे मारिशस आर्य पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह हिन्दी तथा अग्रेजी मे छपने वाला द्विभाषी पत्र था। प्रारम्भ मे उसे मॉरिशस की आर्यसमाज ने निकाला किन्तु १६१६ मे भारत से पढ कर आए आर्य विद्वान प० काशीनाथ किष्टो इसके सम्पादक बने और यह कई वर्षों तक निकलता रहा। आर्यसमाज से सम्बद्ध होने के कारण इसमे वैदिक धर्म विषयक सामग्री की बहुलता रहती थी। श्री रामलाल ने ओरियण्टल गजट निकाला जिसमे भारतीय मूल के लोगो की समस्याओ की चर्चा रहती थी। १६२० मे इण्डो मॉरिशस सघ (मॉरिशस इण्डियन टाइम्स कम्पनी) के द्वारा मारिशस इण्डियन टाइम्स का प्रकाशन किया गया। यह दैनिक पत्र था। उसमे हिन्दी के अतिरिक्त फ्रैंच तथा अग्रेजी मे भी लेख छपते थे। इस पत्र मे समय समय पर जो हिन्दी कविताए छपी उनका एक सुन्दर सग्रह मॉरिशस के ख्यातनामा साहित्यकार प्रल्हाद रामशरण ने मॉरिशस का आदि काव्य कानन शीषक ग्रन्थ मे किया है। इसमे १६२१ स १६२४ तक की अवधि मे इस पत्र मे छपी कविताए सगृहीत की गई है। भारतीय हिन्दी साहित्य मे यह समय द्विवेदी काल कहलाता है। मॉरिशस इण्डियन टाइम्स मे छपी इन कविताओ मे भी द्विवेदी काल की इतिवृत्तात्मकता के साथ साथ सामाजिक धार्मिक जागरण के स्वर सुनाई पडते है। १६२४ मे राजकुमार गजाधर नामक एक प्रमुख प्रवासी भारतीय ने मॉरिशस मित्र दैनिक का आरम्भ किया। यह १६३२ तक निकलता रहा। मॉरिशस मित्र मे १६२५ १६३० की कालावधि मे छपी कुछ महत्वपूर्ण कविताओ को भी प्रल्हाद रामशरण द्वारा सम्पादित उक्त ग्रन्थ मे सकलित किया गया।

१६३२ मे आर्यवीर नाम का एक द्विभाषिक (हिन्दी तथा अग्रेजी) साप्ताहिक पत्र निकला। इसके प्रथम सम्पादक आर्य विद्वान प० काशीनाथ किष्टो थे। जैसा कि नाम से सूचित होता है इसमे आर्यसमाज विषयक सामग्री को प्रमुखता मिलती थी। आर्यसमाज की उन्नति तथा उसके व्यापक प्रचार ने सनातनी हिन्दुओ मे प्रतिक्रिया उत्पन्न की। वह युग भी धार्मिक वाद विवाद खण्डन मण्डन तथा शास्त्रार्थो का था। आर्यसमाज द्वारा प्रसारित प्रगति मूलक सामाजिक चेतना को रूढिवादी लोगो द्वारा ग्रहण करना कठिन था। फलत सनातन धर्मावलम्बी मॉरिशस क हिन्दुओ न १६३३ मे सनातन धर्मार्क नामक द्विमासिक पत्र निकाला। इसके सम्पादक तमिल मूल क रामासानी नरसीमुलु थे किन्तु वे अपने लखो मे स्वय के लिए नरसिहदास नाम का प्रयोग करते थे। सरस्वती प्रेस स छपने वाला यह पत्र १६४२ तक निकलता रहा। १६३६ मे इण्डियन कलचरल एसोसियेशन की स्थापना हुई। इसका मुखपत्र इण्डियन कल्चरल रिव्यू था जो सम्भवत अग्रेजी मे ही निकलता था। १६३६ मे ही रिव्यू का हिन्दी भाषियो के लिए अनुपयुक्त जानकर वसन्त नामक एक पत्र उक्त सस्था न निकाला जो कुछ वर्ष तक निकलता रहा। गिरिजानन्द उमाशकर इसक सम्पादक थे। १६४२ मे राजकीय जनसम्पर्क कार्यालय ने मासिक चिटठी नामक एक लघुकाय पत्र निकाला। यह राजकीय गजट के तुल्य था। अलमदीना प्रेस पोर्ट लुइस से छपने वाला यह पत्र मासिक १६४२ १६४४ की अवधि का था।

१६४४ मे मॉरिशस के प्रसिद्ध लेखक साहित्यकार तथा जन–जागृति क सूत्रधार प० वासुदेव विशुद्धपाल ने आर्यवीर जागृति नामक हिन्दी दैनिक निकाला। श्रद्धानन्द प्रिटिग प्रेस स छपने वाले इस पत्र के सम्पादको मे प० काशीनाथ १६५० तक होता रहा। १६४६–४७ मे सैनिक नामक एक मासिक पत्र के निकलते का भी उल्लेख मिलता है। उर्दू साप्ताहिक जनता का प्रकाशन १६४२ मे हुआ। इसके प्रथम सम्पादक इस देश के सुख्यात साहित्यकार जयनारायण राय थे। १६८२ तक इसका प्रकाशन होता रहा। १६४८ मे ही प० वासुदेव विशुद्धानन्द ने 'जमाना पक्षिक का प्रकाशन आरम्भ किया। प० वासुदेव हिन्दी भाषा के कटटर समर्थक थे और उन्होने अपने देश मे इस पत्र के माध्यम से हिन्दी साहित्य के प्रचार प्रसार को प्राथमिकता से किया। हिन्दू प्रेस से छपने वाला यह पत्र १६७७ तक निकलता रहा। मजदूर नामक एक हिन्दी पाक्षिक के प्रकाशन की भी सूचना मिलती है। इसकी अवधि १६४२ १६४८ तक की थी।

मॉरिशस मे हिन्दी पत्रकारिता की प्रगति मे आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आर्यसभा मॉरिशस ने आर्योदय प्रकाशन १६५० से आरम्भ किया और अब यह पत्र अपने जीवन के इक्यावन वर्ष पूरे कर रहा है। यह हिन्दी और अग्रेजी का द्विभाषी पत्र है। वर्तमान मे उसके सम्पादक श्री सत्यदेव प्रीतम हैं। आर्यसभा के अन्य अधिकारियो का भी सम्पादन मे निरन्तर सहयोग मिलता रहता है। आर्यसमाज के दो अन्य पत्रो का भी उल्लेख मिलता है आर्यसमाज (सम्पादक मोहनलाल मोहित तथा वैदिक जर्नल) शिक्षा और सस्कृति के विकास ने मारिशस मे हिन्दी साहित्य लेखन को प्रोत्साहित किया। कोई भी नव लेखन मे रत साहित्यकार अपनी कृति को मुद्रित रूप मे देखना पसन्द करता है। फलत साहित्यिक पत्र पत्रिकाओ का अधिसख्य प्रकाशित होना स्वाभाविक है। विगत तीन चार दशको मे मारिशस मे जो साहित्यिक पत्र पत्रिकाए निकली उनका सक्षिप्त विवरण देना आवश्यक है। १६५६ मे सूरज मजर भगत तथा रामलाल विक्रम के सयुक्त सम्पादन मे नवजीवन प्रकाशित हुआ। १६६० मे मारिशस हिन्दी साहित्य परिषद का त्रैमासिक पत्र अनुराग निकला। उसमे कविता कहानी नाटक सस्मरण आदि सभी विधाओ को स्थान मिलता था। इसके प्रथम सम्पादक प० दौलत शर्मा थे। कालान्तर मे इस द्वीप के प्रसिद्ध साहित्यकार सोमदत्त बाबोरी ने भी इसका सम्पादन किया। समाजवाद नामक एक अल्पकाल जीवित रहे पत्र का उल्लेख मिलता है। हिन्दू मॉरिशस काग्रेस ने काग्रेस नामक पत्र निकाला तथा राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय ने प्रकाश नाम के पत्र का प्रकाशन किया। भारत से मॉरिशस गए प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो रामप्रकाश इसक सम्पादक थे। १६६५ मे हिन्दी लेखक सघ के तत्वावधान मे बालोपयोगी पत्रिका बालसखा का प्रकाशन हुआ।

१६७४ मे त्रियोले से आभा तथा दर्पण नामक दो साहित्यिक पत्र निकले। ये मासिक थे। आभा के सम्पादक महेश रामजियावन उदीयमान कवि तथा लेखक है। दयानन्दलाल वसन्तराय ने धार्मिक पत्रिका शिवरात्रि निकाली १६७५ मे हिन्दी सरस्वती सघ त्रियोले ने त्रैमासिक पत्रिका रणभेरी आरम्भ की। मॉरिशस की प्रमुख हिन्दी सस्था हिन्दी प्रचारिणी सभा (मुख्यालय लाग माउन्टेन) है। यह सस्था १६८४ से पकज नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन सस्था के अध्यक्ष अजामिल माताबदल के सम्पादकत्व मे कर रही है। महात्मा गाधी सस्थान की मासिक पत्रिका वसन्त मॉरिशस के विख्यात लेखक उपन्यासकार तथा साहित्यकार अभिमन्यु अनत के सम्पादन मे निकलती है। यद्यपि मॉरिशस के अधिकाश समाचार पत्र तो फ्रैंच तथा अग्रेजी मे ही निकलते है किन्तु यहा की धार्मिक सास्कृतिक तथा साहित्यिक सस्थाओ ने हिन्दी पत्र पत्रिकाओ को निरन्तर प्रकाशित कर अपनी सास्कृतिक अस्मिता को जीवित रखा है।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

महर्षि का अद्भुत ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश'

– गजानन्द आर्य

गुरु उसे कहते हैं जो अन्धकार से छुडाकर सत्य मार्ग पर चलाए इस प्रकार से आदि गुरु परमेश्वर है और गुरु का ग्रन्थ है वेद। कोई माने चाहे न माने समस्त मानव जाति का एक ही गुरु है और एक ही ग्रन्थ है। संसार में फैले विभिन्न मत मतान्तरों की सत्य अच्छाइयो का आदि स्रोत वेद है। वेद की शिक्षाओ को अपनी अपनी मान्यताओ के आधार पर घोल घोलकर सब किसी ने अपने अपने घोल तैयार कर लिए है। मत मतान्तरो के तथाकथित धर्म ग्रन्थ और गुरुडम में पल रहे सिद्धान्त उसी घोल के परिणाम है। प्राय सारा विश्व अपने अपने घोल को अच्छी अच्छी बोतलो मे आकर्षक लेबल और नाम से जनता जनार्दन को देना चाहता है। सत्य के साथ असत्य इस प्रकार मिला दिया गया है कि हर किसी का विवेक और साहस काम नही देता कि क्षीर नीर को पृथक पृथक कर सके। देखा जाए तो पृथक पृथक लेबल ने संसार मे उपकार के मुकाबले अपकार अधिक किया है। असत्य मिश्रित सत्य से मानव निर्माण में सहयोग की अपेक्षा बाधा अधिक पहुची।

विश्व प्रकाशक दयानन्द

इस प्रकार के भटकाव मे युगो पश्चात कोई आत्मा इस धरती पर आती है जो अपने पूर्व कर्मो के आधार पर विश्व को एक नया प्रकाश और दिशा देने मे सक्षम हो जाती है। इसी सक्षमता का उदाहरण है महर्षि दयानन्द सरस्वती। साधारण से बालक मूलशंकर को शिवालय के छोटे से चूहे ने इस [illegible] दिया कि वह आन्दोलन समस्त धार्मिक जगत को प्र[illegible]। इस प्रकार की घटनाए हर किसी के जीवन में आती है। किन्तु जब विश्व का सौभाग्य उदय होता है तभी महात्मा बुद्ध न्यूटन और स्वामी दयानन्द विशेष घटनाओ के माध्यम से महापुरुष बनते है।

स्वामी दयानन्द इस युग के गुरु थे। गुरु के कार्यो पर विस्तार से विचार करते हुए सहसा मुह से निकल पडता है न भूतो न भविष्यति। किन्तु मेरे गुरु को इस वाक्य पर घोर आपत्ति है उनका कहना है कि जो एकदर्शी और अल्पज्ञ है वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ कभी नही हो सकता क्योकि जीव का स्वरूप एक देशी और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाला होता है वह सब विद्याओ मे सब प्रकार यथार्थ वक्ता नही हो सकता।

(सत्यार्थ प्रकाश १२वा समुल्लास)

सम्भवत धार्मिक जगत मे स्वामी दयानन्द ही ऐसे गुरु हुए है जो अपनी बात को ब्रह्म वाक्य नही कहते। उनका आग्रह किसी पर अपने विचारो को थोपने का कदाचित नही रहा।

सत्यार्थ प्रकाश मे वे लिखते है – इसमे जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो उसको सज्जन लोग विदित कर देवे तत्पश्चात जो उचित होगा तो माना जाएगा क्योकि यह लेख हठ दुराग्रह ईर्ष्या द्वेष वाद विवाद और विरोध मिटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढाने के लिए।

महर्षि के महत्वपूर्ण कार्यो मे उल्लेखनीय है वेद का गौरव स्थापित करना और वेदभाष्य आरम्भ करके भविष्य के भाष्यकारो को युक्तियुक्त दिशा देना। किन्तु वेद का यह कार्य अधूरा और अनसुना रह जाता यदि महर्षि आर्यसमाज की स्थापना न करते। वस्तुत आर्यसमाज के अथक प्रयास से वेद जन साधारण के लिए सुलभ हो सके वरना तथाकथित ब्राह्मणो के एकाधिकार से वेद अलमारियो मे बन्द का बन्द ही रहता।

आर्यसमाज और सत्यार्थ प्रकाश

आर्यसमाज की स्थापना महर्षि का बहुत गौरवपूर्ण कार्य है। किन्तु आर्यसमाज भी आर्यसमाज नही बन पाता यदि सत्यार्थ प्रकाश जैसा मार्गदर्शक ग्रन्थ आर्यसमाज को न मिलता। पौराणिक आस्थाओ मे पले संस्कारो का आग्रह है कि इस वरद ग्रन्थ पर मत्था टेकू, किन्तु नही। ग्रन्थ कहता है 'मूर्तिपूजा तो नही करते किन्तु उससे विशेष ग्रन्थ की पूजा करते हैं क्या यहा मूर्तिपूजा नही है ? किसी जड पदार्थ के सामने सिर झुकाना या उसकी पूजा करनी सब मूर्तिपूजा है।

एक सौ वर्षो के अन्तराल मे भी ग्रन्थ मे भूलचूक नही निकल पाने पर इसके लेखक का नियन्त्रण हमे सर्वांग पूर्ण ग्रन्थ कहने का अधिकार नहीं देता। लेखक ने भूमिका मे लिखा है कि – इस ग्रन्थ मे जो कहीं कही भूल चूक से अथवा शोधन व छापने मे भूल चूक रह जाए उसको जानने जनाने पर जैसा सत्य होगा वैसा ही कर दिया जाएगा।

सत्य तो यह है कि वेद के दीवाने ऋषि को सब ग्रन्थ वेदानुकूल बने रहने पर ही ग्राह्म है भले ही उनको ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त ऋषियो ने लिखा हो सत्यार्थ प्रकाश मे सत्य और असत्य के निर्णय की अनुपम कसौटी है। ग्रन्थ मे संसार के मत मतान्तरो पर की गई समीक्षा का उत्तर मतावलम्बियो के पास नही है। मानव का आदर्श मानव बनने का नुस्खा ग्रन्थ के प्रत्येक समुल्लास मे बहुत सुन्दर ढग से प्रस्तुत हुआ है। धर्म अर्थ काम ओर मोक्ष प्राप्ति के साधनो का सरल भाषा मे वर्णन इसी ग्रन्थ मे है। हिन्दी भाषा को ग्रन्थकार ने आर्यभाषा का नाम दिया है हिन्दी का यह गौरव है कि भाषा के इतिहास मे धर्म विषयक प्रथम ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है।

हमारे इस महान ग्रन्थ मे वेद से लेकर मनुस्मृति के श्लोक और मन्त्र बहुत अधिक सख्या मे लिखे गए हैं। ग्रन्थकार ने अपने बचपन के साथ चूहे और शिवालय का यद्यपि वर्णन नही लिखा किन्तु भारत देश के बडे बडे मन्दिरो मे हो रही अज्ञानता का वर्णन बहुत गहराई और शोधपूर्वक किया है। धर्म के नाम पर चल रही दुकानो का मठ और महन्तो के अनाचारो का दिग्दर्शन हमारे इस ग्रन्थ मे उपलब्ध है। स्वाभाविक है कि यह ग्रन्थ हर किसी को प्रिय नहीं लगता हो। इसी स्वभाव के अनुमान पर ग्रन्थकार ने लिखा है – यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेगे तथापि बुद्धिमान लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेगे इसलिए मै अपने परिश्रम को सफल समझता हू ओर अपना अभिप्राय सब सज्जनो के सामने धरता हू। इसको देख दिखलाकर मेरे श्रम को सफल करे।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा

हमारा यह ग्रन्थ किसी को यह नहीं कह रहा कि – सब धर्मो को छोडकर मेरी शरण मे आ जाओ। किन्तु सबके प्रति एक ही आह्वान और शिक्षा इस ग्रन्थ की है कि **वेद की ओर चलो।** वेद किसी एक मत मतान्तर – सम्प्रदाय ओर देश विशेष का नहीं है। मानव मात्र के कल्याण के लिए आदि गुरु परमेश्वर की ओर से दिया गया ज्ञान है। सत्यार्थ प्रकाश अपने आदि गुरुओ द्वारा प्रदत्त ग्रन्थो को अपनाने का निर्देश करता है।

सत्यार्थ प्रकाश मे क्या है ? यह सब बताने की क्षमता अथवा विद्वता मुझ मे नहीं। प० गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे विद्वान का कहना है कि – मैने सत्यार्थ प्रकाश को १७ बार पढा और प्रत्येक बार पढने पर बहुमूल्य मोती मिले। ऐसे ग्रन्थ का अधिकाधिक पढन घाटे का सौदा नही है। किन्तु शर्त यह है कि जो कोइ इसे ग्रन्थकर्ता के तात्पर्य से विरुद्ध मानसिकता से देखेगा उसको कुछ भी अभिप्राय विदित न होगा। यह शर्त मेरी नही अपितु सत्यार्थ प्रकाश के प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती की है।

कुछ उदाहरण

प्रसाद के रूप मे हमारे इस प्रेरक ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय से एक अमृतमय वाणी का रसास्वादन है –

जेसे पशु बलवान होकर निर्बलो को दुख देते और मार भी डालते है जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हें तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नही किन्तु पशुवत है। ओर जो बलवान होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर पर हानि मात्र करता रहता है वह जानो पशुओ का भी बडा भाई है। *– भूमिका*

स्तुति प्रार्थना उपासना श्रेष्ठ ही की जाती है। श्रेष्ठ उसका कहते है जो गुण कर्म स्वभाव और सत्य सत्य व्यवहारो मे सबसे अधिक हो। उन सब श्रेष्ठो मे भी जो अत्यन्त श्रेष्ठ हे उसका परमेश्वर कहते हैं। जिसके तुल्य कोई न हुआ है ओर न होगा। जब तुल्य नही तो उससे अधिक क्योकर हो सकता है ? जेसे परमेश्वर के सत्य न्याय दया सर्व सामर्थ्य ओर सर्वज्ञतादि गुण है वैसे अन्य किसी जड पदार्थ व जीव के नही है। जो पदार्थ सत्य है उसके गुण कर्म स्वभाव भी सत्य होते है। इसलिए सब मनुष्यो को योग्य है कि परमेश्वर ही की स्तुति प्रार्थना और उपासना करे उससे भिन्न की कभी न करे। *प्रथम समुल्लास*

माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यो को सदा सत्य उपदेश करे और यह भी कहे कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म है उन उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हो उनका त्याग कर दिया करो। जो जो सत्य जान उन उनका प्रकाश और प्रचार करो। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी मनुष्य पर विश्वास न करे और जिस जिस उत्तम कर्म के लिए माता पिता और आचार्य आज्ञा देव उस उसका यथेष्ट पालन करे। द्वितीय समुल्लास

राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पाचवे अथवा आठवे वर्ष से आगे अपने लडको और लडकियो को घर मे न रख सके। पाठशाला मे अवश्य भेज देवे जो न भेजे वह दण्डनीय हो। *तृतीय समुल्लास*

जब विवाह होवे तब स्त्री के साथ पुरुष और पुरुष के साथ स्त्री एकाकार हो जाते हे अर्थात जो स्त्री पुरुष के हाव भाव नख शिखाग्र पर्यन्त जो कुछ हे वह वीर्यादि एक दूसरे के अधीन हो जाता है। स्त्री वा पुरुष प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार न करे। इनमे बडे अप्रियकारक व्यभिचार वेश्या परपुरुषगमनादि काम है इनको छोड के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पुरुष सदा प्रसन्न रहे। चतुर्थ समुल्लास

क्रमश

यज्ञ से पूर्व सत्य-पालन का व्रत लें

– आदित्य मुसद्दीलाल वेदपाठी

शतपथकार ने यज्ञ से पूर्व सत्य पालन के व्रत को बहुत महत्वपूर्ण माना है और निर्देश दिया है कि यजुर्वेद के निम्न मन्त्र से सत्य पालन का व्रत ले –

ओं अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय तन्मेराध्यताम्।
इदमहमनृतात सत्यमुपैमि।। यजु० १/५

हे (व्रतपते) सत्य भाषण आदि धर्मो के पालन करने और (अग्ने) सत्य उपदेश करने वाले परमेश्वर ! मै (अनृतात) जो झूठ से अलग (सत्यम) वेद विद्या प्रत्यक्ष आदि प्रमाण सृष्टि क्रम विद्वानो का सग श्रेष्ठ विचार तथा आत्मा की शुद्धि आदि प्रकारो से जो निर्भ्रम सर्वहित तत्त्व अर्थात सिद्धान्त के प्रकाश करने वालो से सिद्ध हुआ अच्छी प्रकार परीक्षा किया गया (व्रतम) सत्य बोलना सत्य मानना और सत्य करना है उसका (उपैमि) अनुष्ठान अर्थात नियम से ग्रहण करने वा जानने और उसकी प्राप्ति की इच्छा करता हू। (मे) मेरे (तत) उस सत्यव्रत का आप (राध्यताम) अच्छी प्रकार सिद्ध कीजिए जिससे कि (अहम) मै उक्त सत्यव्रत नियम करने को (शकयम) समथ होऊ और मै इसी प्रत्यक्ष सत्यव्रत के आचरण का नियम (चरिष्यामि करूगा)।

शतपथकार आगे कहते है – मनुष्य झूठ बालता है ना अपवित्र हो जाता है। उसे पवित्र होने के लिए स य का व्रत लेना हाता है पवित्र होकर व्रत करू अथात यज्ञ से पूव पवित्र हो जाऊ। वह झूठ को त्यागता है – सत्य को ग्रहण करता है वस्तुत पवित्र हो जाता हे दो ही बाते है तीसरी नही। एक सत्य और दूसरी असत्य। देव स य है अत वह सोचता है देवो मे से एक हो जाऊ – देव हो जाऊ। जब देव हो जाएगा तब ही तो देवयज्ञ सम्भव हे अत सत्य पालन का व्रत लेता है।

महर्षि दयानन्द यजुर्वेद भाष्य मे उपरोक्त मन्त्र से पूर्व लिखते है – **उक्त वाणी का व्रत क्या है इस विषय का उपदेश अगले मन्त्र मे किया है । इसी मन्त्र के भावार्थ मे महर्षि आगे लिखते है**

इसी प्रकार हमका भी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हे परमेश्वर ! हम लोग वदो म आपके द्वारा प्रकाशित किए सत्य धर्म का ही ग्रहण करे तथा हे परमात्मन ! आप हम पर ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग उक्त सत्य धर्म का पालन करके अर्थ काम और मोक्ष रूप फलो का सुगमता से प्राप्त कर सके। जैसे सत्यव्रत क पालन से आप व्रतपति है वैसे ही हम लोग भी सत्यव्रत के पालन वाल हो।

सत्य का महत्व वैदिक वाडमय मे सर्वत्र है। ऋग्वेद के अनुसार – भूमि सत्य द्वारा प्रतिष्ठित हे

(सत्येनोत्तमिता भूमि – ऋग्वद १०/८५/१)

अथर्ववेद – सत्य से मनुष्य सबरो ऊपर तपता है (सत्येनोर्ध्वस्तपति – अथर्व १०/८/१९)

उपनिषदो की घोषणा भी इसी प्रकार है –

बृहदारण्यक – दीक्षा किसमे प्रतिष्ठित हे ? सत्य मे।

(कस्मिन्नुदीक्षा प्रतिष्ठितम सत्ये)

बृहद ३/६/२३

मुण्डकोपनिषद का कालजयी वाक्य 'सत्यमेव जयति नानृतम' तो हमारे राष्ट्र का गौरवमय लक्ष्य ही है – सत्यमेव जयते। जहा महाराज मनु ने सत्य को सनातन धर्म माना है –

सत्य ब्रूयात्प्रिय ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम।
प्रिय च नानृत ब्रूयादेष धर्म सनातन ।।

(मनु० ४/१३८)

वही महर्षि बाल्मीकि सत्य को ब्रह्म मानते हैं। वे कहते है – सत्य प्रणवरूप शब्द ब्रह्म है। सत्य मे ही धर्म प्रतिष्ठित है। सत्य ही अक्षय वेद हे और सत्य से ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

सत्यमेकपद ब्रह्म सत्ये धर्म प्रतिष्ठित ।
सत्यमेवाक्षया वे५। सत्येनावाप्यते परम।।

(वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड १४/७)

भगवान वेद व्यास कहते है – सत्य क समान कोई धर्म नही और झूठ से बढकर कोई पाप नही।

नास्ति सत्यसमो धर्मो न सत्याद विद्यते परम।
न हि तीव्रतर किंचिदनृतादिह विद्यते।।

(महाभारत आदिपर्व ७४/१०५)

अत सत्य पालन का व्रत ले। सत्य का व्रत क्या है – सत्य मानना सत्य करना और सत्य बोलना। सत्य को मानने स पूव इसकी अच्छी प्रकार परीक्षा कर ल। यह परीक्षा पाच प्रकार की होती है –

❖ जो जो इश्वर के गुण कर्म स्वभाव आर वेदो से अनुकूल हा वह वह स य और उससे विरुद्ध असत्य ह।

❖ जो जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह–वह सत्य ओर जो जो विरुद्ध है वह असत्य है। जो कोई कहे – बिना माता–पिता क योग से लडका उत्पन्न हुआ वह सृष्टिक्रम से विरुद्ध होन से असत्य है।

❖ आप्त अथात जो धार्मिक विद्वान सत्यवादी निष्कपटियो का सग उपदेश के अनुकूल है वह ग्राह्य और जो जा विरुद्ध हे वह वह अग्राह्य हे।

❖ अपने आत्मा की पवित्रता विद्या क अनुकूल अर्थात जैसा अपने को सुखप्रिय और दु ख अप्रिय है वेसे सर्वत्र समझ लना कि मै भी किसी को दु ख वा सुख दूगा तो वह भी अप्रसन्न वा प्रसन्न होगा।

❖ आठो प्रमाण अर्थात प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द एतिह्य अर्थापत्ति सम्भव ओर अभाव।

(१) प्रत्यक्ष – जो श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा ओर घ्राण का शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध के साथ आवरण रहित सम्बन्ध होता है इन्द्रियो के साथ मन का ओर मन के साथ आत्मा क सयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते है। जैसे किसी न कहा कि जल ले आ तब दूसरा जिस पदार्थ का नाम जल है वह लाके बोला कि यह जल हे।

(२) अनुमान – जो प्रत्यक्षपूर्वक अर्थात जिसका कोई एक देश वा सम्पूर्ण द्रव्य किसी स्थान या काल मे प्रत्यक्ष हुआ हो उसका दूर देश से सहचारी एक देश के प्रत्यक्ष होने से अदृष्ट अवयवी का ज्ञान हाने को अनुमान कहते हे। यह तीन प्रकार का है – एक पूववत जैसे बादलो को देखकर वर्षा का अनुमान। दूसरा शेषवत जेसे नदी मे बाढ को देखकर अन्य स्थान पर हुई वर्षा का अनुमान। तीसरा 'सामान्यतोदृष्ट जैसे कोई इस समय आपके सामन बेठा है वह किसी अन्य स्थान पर अभी नही हो सकता जब तक वह चलकर वहा न जाए।

(३) उपमान – जो प्रसिद्ध प्रत्यक्ष साधर्म्य से साध्य अथात सिद्ध करने योग्य ज्ञान की सिद्धि करने का साधन हो उसको उपमान कहते है। जसे किसी ने अपने पुत्र से कहा कि तू देवदत्त के जुडवा भाई विष्णु मित्र को बुला ला । उसने पिता से कहा कि उसने विष्णुमित्र को कभी नही दखा। तव पिता न कहा कि जेसा यह देवदत्त है वसा ही विष्णुमित्र है। उसने जान लिया आर विष्णुमित्र को ले आया।

(४) शब्द – जो आप्त अथात पूर्ण विद्वान धर्मात्मा परोपकारप्रिय सत्यवादी पुरुषार्थी जितन्द्रिय ऐस पुरुष के उपदेश ओर पूर्ण आप्त परमश्वर के उपदेश वेद है उन्ही को शब्द प्रमाण जानो।

(५) ऐतिह्य – जो सत्य इतिहास ओर जीवन चरित्र है उन्हे ऐतिह्य कहते हे।

(६) अर्थापत्ति – जैसे किसी न कहा – बादलो से वर्षा होती है और कारण होने से काय उत्पन्न होता हे। इससे बिना कहे यह दूसरी बात सिद्ध होती है कि बिना बादल वषा नही हा सकती आर बिना कारण कार्य नही हो सकता।

(७) सम्भव – जो बात सृष्टिक्रम के विरुद्ध हो वह असम्भव ओर जो अनुकूल हा वह सम्भव है। जेस कोई कहे मन बन्ध्या क पुत्र का विवाह देखा तो यह सृष्टिक्रम क विरुद्ध होन स असम्भव है

(८) अभाव – जस किसी ने किसी से कहा कि हाथी ले आ उसने वहा हाथी का अभाव देखकर जहा हाथी था वहा से ले आया।

ये आठ प्रमाण हे इनम से जा शब्द मे ऐतिह्य ओर अनुमान मे अर्थापति सम्भव और अभाव की गणना करे तो चार प्रमाण रह जाते है।

(सत्याथ–प्रकाश)

इस तरह पाच प्रकार की परीक्षा स सत्य वा असत्य का निर्णय करके मनुष्य को सत्य का व्रत लेना चाहिए (अथात सत्य मानना सत्य करना और सत्य बोलना चाहिए)

सत्य बालने के व्रत के विषय मे कइ बार यह शका की जाती है कि यदि सत्य के बोलन स अधर्म होना हो तो क्या सत्य बोलना चाहिए ? उदाहरण के लिए यदि कसाई गाय किधर गई हे पूछे तो झूठ बालकर गाय को बचा ले या सत्य की कीमत पर गोहत्या मे सहयोग का अधर्म कमाए ? इस विषय मे एक रोचक दृष्टान्त प्रस्तुत है –

किसी कसाई की गाय खो गइ थी। वह ढूढते ढूढते जा रहा था कि मार्ग म सत्यव्रत मिल गया यह सत्यव्रत कभी झूठ नही बोलता – गाय का सही मार्ग वता देगा एसा सोचकर मन ही मन प्रसन्न हुआ। प्रकट म पूछा सत्यव्रत मेरी काली गाय किधर गई है बता दो । सत्यव्रत ने कहा हे कसाइ ! जिन आखो ने गाय का देखा है वे बोल नही सकती और इस जिह्वा ने कुछ देखा नही। इसलिए स्वय ही ढूढ लो मुझे क्यो दुविधा मे डाल रहे हो।

– प्रधान आर्यसमाज कापसहेडा नई दिल्ली–३७

आर्यसमाज को सर्वात्मना समर्पित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता

– वेदव्रत शर्मा

श्री वेदप्रकाश आर्य का वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली ६२ के कर्मठ कार्यकर्ता एव भूतपूर्व प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य ने वसन्त पचमी के दिन वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश किया। वानप्रस्थ की दीक्षा दिल्ली सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने प्रदान की। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री ओमवीर शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया तथा वानप्रस्थाश्रम का सारगर्भित दिग्दर्शन कराया।

आर्यसमाज शकरपुर के सौजन्य से आयोजित इस समारोह मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा केन्द्रीय सभा के मन्त्री समर्पित होकर मान आपमान का ध्यान न रखते हुए समाज तथा देश की उन्नति के लिए आगे आना होगा। इस कसोटी पर खरे उतरते हुए आर्यसमाज की प्रगति मे आप सब अपना योगदान दे तथा अन्य व्यक्तियो को भी प्रोत्साहित करे। सभा मन्त्री ने २५ से २८ अप्रैल मे हरिद्वार मे होन वाले **अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन** की विस्तृत रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए इसमे तन मन धन से सहयोग कर इस सम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री बेचैन जी श्री देवानन्द जी स्वामी रामानन्द साध्वी सरस्वती देवकीनन्दन वानप्रस्थी वृन्दावन

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा का अभिनन्दन करते हुए श्री वेदप्रकाश वानप्रस्थी। वानप्रस्थाश्रम म प्रवेश के अवसर पर विशेष यज्ञ का दृश्य।

श्री सुरेन्द्र कुमार रेली क्षेत्रीय सभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी आर्यसमाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता मन्त्री श्री ओमप्रकाश रुहिल उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के श्री नन्दकुमार पाहवा श्री रविन्द्र मेहता सहित सैकडो व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने ओजस्वी उदबोधन मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने आयसमाज की वर्तमान गतिविधियो की चर्चा करते हुए आर्यजनो से समर्पित भाव के साथ सहयोग करने की अपील की। उन्होन कहा कि आर्यसमाज का श्री वेदप्रकाश जी जैसे कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है। वे आर्यसमाज की जिस रूप मे भी सेवा करना चाहे उन्हे पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाएगा। सभा मन्त्री ने कहा कि मानव बन जाना तो आसान है लेकिन आदर्श मानव बनना अत्यन्त कठिन है। बिरले ही लोग होते है जो सन्मार्ग को अपनाते है। आर्यसमाज मे काम करने के लिए पहली शर्त है चरित्रवान होना और इस शर्त के उपरान्त आर्यसमाज के हितार्थ अपने आप को समर्पित करना समाज को ऊपर उठाने के लिए कठिन परिश्रम करना वह भी प्रतिष्ठा पाने के लिए नहीं अपितु सर्वात्मना

सहित अनेक महात्मा तथा भजनोपदेशकों ने अपने भजनो तथा प्रवचनो से श्रोताओ को आर्यसमाज के सिद्धान्तो तथा मन्तव्यो को अपनाने पर बल दिया। श्री वेदप्रकाश जी के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने निम्न कविता के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए

धन धरा के बीच सारा ही धरा रह जाएगा।
पशु भी बंधे रह जाएगें जब कूच का दिन आएगा।।
नारी घर के द्वारा तक ही साथ देगी लोक में।
मित्र दल मरघट से आगे कदम नहीं बढ़ाएगा।।
देह भी तेरी चिता मे यों ही जल भुन जाएगी।
अन्त में एक धर्म ही सच्चा सखा बन जायेगा।।
धन धरा के बीच सारा ही धरा रह जायेगा।

श्री वेदप्रकाश जी के दामाद योगाचार्य श्री श्यामबाबू गुप्ता ने भी एक कविता प्रस्तुत की। समारोह के उपरान्त श्री वेदप्रकाश जी के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द जी के द्वारा दिए गए सहभोज मे लगभग ५०० व्यक्तियो ने भोजन ग्रहण किया। कार्यक्रम का संचालन श्री पतराम त्यागी ने किया। आर्यसमाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्री लाल गुप्ता मन्त्री श्री ओमप्रकाश रुहिल तथा अन्य सहयोगियो के सत्प्रयास से यह अनुकरणीय समरोह सफलता पूवक सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ ४ का शेष भाग

मानव निर्माण की योजना

इसके बाद बालक का उपनयन सस्कार कराया जाता है। बच्चो के निर्माण के लिए गुरुकुलो मे प्रवेश दिलाया जाता है। यह एक ऐसी परम्परा थी जिससे बालक का चतुर्दिक विकास होता था तथा यह भी सुनिश्चित हो जाता था कि वह किस वर्ण के योग्य है। अमीर गरीब सभी बच्चो को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाते थे। ब्राह्मण के बालक का आठवे वर्ष क्षत्रिय के बालक को ग्यारहवे वर्ष वैश्य के बालक का बारहवे वर्ष मे यज्ञोपवीत दिया जाता था यज्ञोपवीत एक ऐसा पवित्र चिन्ह होता है जिसके धारण करने पर बच्चे को ऋषिऋण पितृऋण और देवऋण से उऋण होने की प्रेरणा दी जाती थी। इस उपनयन सस्कार वाले दिन ही बालक का यज्ञोपवीत दिया जाता था और उससे अगले दिन से ही उसका वेदारम्भ सस्कार होता था। उसे गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया जाता था। आज स्थिति क्या है यह चिन्तनीय विषय है क्योकि आज जापान मे तो वेदो की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है मगर हमारे देश मे तो वैसे वेद या वैदिक धर्म की बात करना भी अपराध जैसा समझा जाता है गुरुकुल मे वैदिकशिक्षा ग्रहण करके बालक का शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास होता था और इस पूर्ण मानव बने युवक को समावर्तन सस्कार के रूप मे विदाई दी जाती थी और उससे आचार्य कहा करते थे कि बेटा अब समूचे जीवन सत्य बोलना धर्म का आचरण करना और स्वाध्याय तथा उसके आगे प्रवचन करने मे कभी भी प्रमाद मत करना।

सस्कारो के इस क्रम मे विवाह सस्कार तेरहवा सस्कार है। गुरुकुल मे समस्त ज्ञान विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके वह गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता था। विवाह सस्कार की समस्त प्रक्रियाए भी गृहस्थ के स्वर्ग बनाने से सम्बन्धित है। गृहस्थ के दायित्वो से निवृत्त होकर तथा पुत्र का भी पुत्र हो जाने पर उसे समाज तथा देश सेवा के लिए घर से निकल जाना चाहिए। गृहस्थ मे रहकर व्यक्ति जब प्रकार की एषणाओ मे डूबकर इन अनुभव से निकल जाता है कि इन एषणाओ का कही अन्त नही है इसलिए वह परमार्थ की ओर अपने जीवन को चलाने के लिए ५० वर्ष की आयु मे सन्यास वर परोपकार के कार्यो मे स्वय को लगा लेता था। इसी को वानप्रस्थ सस्कार कहते है। वानप्रस्थ [illegible] के बाद परोपकार आदि के कार्य को करता हुआ जब व्यक्ति पूर्णरूप से निष्काम भावना से परिपूर्ण हो जाता तो वह मन वचन कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित होकर मोक्ष की कामना लेकर सन्यासी बन जाता है। यही सन्यास सस्कार है। व्यक्ति का अन्तिम और सोलहवा सस्कार है अन्त्येष्टि सस्कार। यह सस्कार व्यक्ति के मरने पर होता है। इस सस्कार के बाद शरीर के लिए और कोई सस्कार नही रहता है मरने के बाद [illegible] शरीर का [illegible] चाहिए [illegible] सहजता से विलीन हो जाए य सोलह सस्कार व्यक्ति के जीवन की पूणता के लिए अनिवार्य बताए गए है। वास्तव मे सोलहवे सस्कार से पूर्व के सस्कारो के माध्यम से व्यक्ति के चरम विकास का मार्ग प्रशस्त किया गया है। ओर हमारे ऋषियो की यह एक अदभुद देन है। सस्कारो के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन मे और मरने के बाद भी पूर्णता प्राप्त कर सकता है। महर्षि दयानन्द जी की आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानव बनाने की यही योजना है तथा इसका क्रियान्वयन ही आज मानवता के लिए सजीवनी सिद्ध हो सकता है।

८१/एस० ४
सुन्दर नगर १७४४०२ (हि०प्र०)

आर्यसमाज नोएडा (पजीकृत) द्वारा आयोजित
अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता २००१ का परिणाम

१ **आर्य रामकवार दहिया (झज्जर)** प्रथम पुरस्कार रु० ३०००/–
२ **श्री लालचन्द आर्य (मदाना खुर्द हरियाणा)** द्वितीय पुरस्कार रु० २०००/
३ **श्री धर्मेन्द आर्य (सुनपेड हरियाणा)** तृतीय पुरस्कार रु० १०००/–

अन्य उत्तीर्ण प्रतियोगियो के नाम इस प्रकार हैं (उत्तरोत्तर)

सर्वश्री कुसुम अग्रवाल प्रेमचन्द अग्रवाल नन्द किशोर अवस्थी मालती छिब्बर मोहन कुमार शास्त्री द्वारका प्रसाद रावत आशाराम आर्य रामप्रवेश प्रसाद प्रकाश कथूरिया ब्रह्मदेव यादव अशोक कुमार ब्रह्मचारी अमित आर्य प० राजनारायण आर्य एव सुश्री प्रतिभा आर्या।

सभी उत्तीर्ण प्रतियोगियो को प्रशस्तिपत्र प्रेषित किए जा रहे हैं एव कुछेक को सात्वना पुरस्कार भी भेजे जाएगे।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह गाजीपुर दिल्ली मे दिनाक ८/३/२००२ को पुरस्कार वितरित किए जाएगे।

रवीन्द्र आर्य — मन्त्री
कार्यालय जी ६ सैक्टर १२ नौएडा
मुमुक्षु आर्य — प्रधान

स्वास्थ्य चर्चा

कृमि रोग के कारण और उपाय

– डॉ० एम० एस० अग्रवाल

आज के वैभवपूर्ण संसार का जीवन सादगी से हट गया है छोटे बच्चे एवं बड़े लोग विशाल होटलो और पार्टियो में अधिक रुचि लेने लगे है। घर का भोजन उन्हे पसंद नही आता। मीठे एवं मसालेदार आहार अधिक पसंद आते है। मुख के स्वाद का प्रभाव क्षणभंगुर होता है लेकिन खाद्य पदार्थो का प्रभाव पेट एवं अंतडियो में पहुचने पर अनुभव मे आता है। विश्व के लाखो बच्चे कृमि रोग से पीडित है दूषित भोजन व अतडिया मे छिपे कीटाणु विटामिन हारमोन एवं अन्य पदार्थो की शक्ति कम कर देते है। जिगर एवं गुर्दो द्वारा जो रक्त हृदय द्वारा सारे शरीर में संचारित होता है उसका प्रभाव सभी अंगो पर पडता है। रक्त विकार के साथ हडि्डयो की कमजोरी भूख का ठीक न लगना जी मिचलाना उल्टी होना नेत्र दोष त्वचा पर विचित्र प्रकार के चिहन खुजली एवं हृदय रोग आदि हो जाते है। ये कीटाणु आतो की दीवारो से चिपक कर अनेक घाव कर देते हैं जिसे इन्टसटिन्ल अलसर कहते हैं

यह रोग बहुत कष्टदायक होता है और उपचार मे समय लगता है कभी कभी रोगी को दस्त की शिकायत हो जाती है जिसके कारण शरीर मे पानी कम हो जाता है और अस्पताल की विशेष चिकित्सा पर ही लाभ होता है। अनेक बच्चो मे हल्का बुखार हकलाना एवं शरीर के किसी अंग मे पीडा अनुभव मे आती है। देखने मे आया है कि रात्रि के समय इनका प्रभाव गुदा मे खुजली या पीडा द्वारा पता चलता है।

बचाव के कुछ उपाय

- घर को स्वच्छ रखे भोजन सादा सात्विक एवं फल व हरी सब्जिया खाए। साथ ही पीने के लिए साफ जल का उपयोग करे।
- भोजन से पहले हाथो और मुख को अच्छी तरह धो ले।
- भोजन स्थल पर प्रदूषित वायु का प्रवेश नही होना चाहिए।
- गले सडे कच्चे या अधिक पके पदार्थ कीटाणु को जन्म देते है। बासी भोजन भी अनेक विकारयुक्त कीटाणुओ को जन्म देता है। बच्चो के नाखूनो पर विशेष ध्यान रखे। क्योकि अनेक कीटाणु इनमे छिपकर मुख के द्वारा शरीर मे प्रवेश कर जाते है
- मीठी गोलिया/टाफी चिंगम एवं मिठाइया का प्रयोग नही करे।
- शरीर के स्नान पर विशेष ध्यान रखे।
- पत्ते वाली हरी सब्जियो एवं फलो का शीतल स्थान मे रखे।

हानिकारक कीटाणुओ की पहचान

गोल कृमि (एस्कोरिकस)

यह कृमि गोलाकार दोनो सिरो से कुछ पतला तथा कई फुट लम्बा होता है। आतो मे अधिक सख्या मे गुच्छो का रूप लेकर छिपकर अवरोध उत्पन्न करता है। इसके प्रभाव से बच्चो को बहुत पीडा अनुभव होती है। इसकी मादा एक दिन मे लाखो की सख्या मे अडे देती है। इसका पता विशेष सयत्रो द्वारा ही चल पाता है।

सूत्र कृमि (थ्रेडवार्म)

ये आतो के निचले भाग मे छिपे रहते है और ठीक उपचार न होने पर तेजी से अपनी सख्या बढाते है। मल निकासन की अवस्था मे गुदा मार्ग पर जलन या खुजली पैदा करते है। धागेनुमा आकार मे इनकी सख्या हजारो मे पाई जाती है।

अकुश कृमि (हुकवार्म)

इस कृमि के मुख के पास अकुश होते है जो आतो मे चिपककर खाद्य शक्ति को चूस लेते है। भोजन की शक्ति चूसकर येक अपने को बलशाली बना लेते हैं। इस कृमि का ठीक ज्ञान सूक्ष्मदर्शी यन्त्रो की सहायता से होता है।

फीता कृमि (टेपवार्म)

अपने नाम के अनुसार ये चपटे और फीतानुमा आकार के होते है। इनका शरीर छोटे छोटे टुकडो मे विभक्त होजाता है और अधिक भोजन प्राप्त होने पर एक मीटर से भी लम्बे हो जाते है। मल के साथ कभी कभी खडो मे बाहर आ जाते है।

चिकित्सा

कृमि रोग की चिकित्सा एलोपैथी मे बहुत देखने मे आई है लेकिन कभी कभी रोगी अधिक औषधियो के सेवन से अन्य विकार अनुभव करने लगता है। होम्योपैथी चिकित्सा अधिक सरल और प्रभावशाली पाई गई है। साइना (३० या ३ एक्स) औषधि इस रोग मे लाभदायक है। इसे चिकित्सक के परामर्श से ही रोगी को लेना चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सा मे उचित आहार नीबू–पानी एवं एनीमा लाभदायक पाए गए है। टब स्नान से अतडियो को शक्ति प्राप्त होती है और किटाणुओ के निकलने मे सुगमता होती है।

सरल उपाय

कद्दू या सीताफल के बीजो को अच्छी तरह धोकर छाया मे सुखा ले। इसके ऊपर के खोल को निकालकर १०या १५ दिन तक दिन मे एक बार थोडे से दूध मे अच्छी तरह पीस कर ले। बच्चे की खुराक आधा चम्मच दे सकते है। देने वाले दिन रोगी को थोडा भोजन दे या निराहार रखे। दवाई लेने के कुछ देर बाद केस्टर ऑयल एक या दो चम्मच पिला दे। यह क्रिया कुछ दिन के बाद सप्ताह या मास मे एक बार की जा सकती है। कृमि रोगियो को वर्ष मे एक बार मल परीक्षा अवश्य कराकर उपचार कराना चाहिए।

युगवार्ता से साभार

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

आपको सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज मन्दिर ६ ब्लाक रमेश नगर नई दिल्ली मे रविवार दिनाक २४/०२/२००२ को प्रात ६.०० से १.०० बजे तक प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर मे विभिन्न रोगो मे विशेषज्ञ डाक्टर नि शुल्क चिकित्सा करेगे। शिविर मे डॉ० आर० के० त्रेहन डॉ० सजीव गुप्ता डॉ० मीनू ठाकुर डॉ० बिन्दर कौर डॉ० गोपाल शर्मा तथा अन्य सहयोगी पधार रहे है। जो रोगी काफी दवाईया ले चुके है तथा उनके दुष्परिणामो से परेशान है उन्हे इस बिना दवाई व हानि रहित प्राकृतिक चिकित्सा से काफी राहत मिलेगी। इस शिविर मे जोडो का दर्द शुगर ब्लड प्रेशर गर्दन दर्द (स्पोडिलाटिस) तथा त्वचा आदि रोगो मे चमत्कारिक लाभ होता है। इन रोगो का इलाज योगा रेकी सिद्वी एक्यूप्रेशर तथा खान पान मे सावधानी द्वारा किया जाएगा। शिविर मे इलाज करने का तरीका भी सिखाया जाएगा।

इस अवसर का अवश्य लाभ उठाए।

निवेदक

नरेन्द्र आर्य	सत्यपाल नारग	ओमप्रकाश
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

आजादी की नींव लाल, बाल तथा पाल ने रखी लाला लाजपत राय जयन्ती समारोह सम्पन्न

कानपुर। २८ जनवरी। देश की आजादी के लिए उत्तर मे लाला लाजपत राय दक्षिण में बाल गगाधर तिलक तथा पूर्व में विपिन चन्द्र पाल ने आजादी की जो मशाल जलाई उसके परिणामस्वरूप सन १९४७ में देश आजाद हो गया। वास्तव मे इस आजादी की नीव लाल बाल तथा पाल ने ही रखी थी।

उपरोक्त विचार आर्य नेता आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर तथा आर्यसमाज के प्रधान श्री शुभ कुमार वोहरा ने आर्यसमाज गोविन्द नगर के सभागार मे आयोजित लाला लाजपत राय जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

शुभ कुमार जी ने आगे कहा कि आज देश मे हर राजनैतिक दल का नेता चाटफकारो और अवसरवादी लोगो से घिरा रहता है जबकि देश की प्रगति के लिए शेरे पजाब लाला लाजपत राय जैसा निर्भीक तथा साहसी नेता की आवश्यकता है। जो हर मामले मे स्पष्ट रूप से निर्भीकता पूर्वक विचार व्यक्त कर सके। लाला लाजपत राय ने अपना समस्त जीवन देश को समर्पित कर दिया था और देश की सेवा मे ही उन्होने अपना जीवन बलिदान कर दिया। वे आर्यसमाज को अपनी मा तथा महर्षि दयानन्द को अपना पिता समझते थे।

धर्म रक्षा महाभियान के तहत... ६० ईसाई परिवारो के १५० से अधिक ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन मे चल रहे धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री पू० स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देशन मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निरन्तर पुनर्मिलन कार्यक्रम चल रहा है। इसी श्रृखला मे कन्धमाल जिले मे मध्यगिरी वेदभवन गुडिकिया मे १३ १४ जनवरी को होने वाले वार्षिक महोत्सव पर टिकाबाली और धरमपुर अचल के ६० परिवार के १५० से अधिक ईसाइयो ने उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे होने वाले यज्ञ मे अत्यन्त श्रद्धा भक्ति के साथ आहुति देकर ईसाई मत छोडकर वैदिक धर्म ग्रहण किया। यज्ञ का सारा कार्यक्रम सभा के उपप्रधान श्री प० विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। उत्सव के अन्तिम दिन क्षेत्र से ५ हजार से अधिक धर्मप्रेमी आर्य नर नारी दीक्षित बन्धुओ को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। इस आयोजन मे उस क्षेत्र के आर्य सगठन के प्रमुख श्री राधानाथ मल्लिक श्री दाशरथी प्रधान तथा सभा के प्रचारक श्री नारायण प्रधान तथा शिवराम प्रधान आदि का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा।

धर्म निरपेक्ष शासन में युवा पीढी को वैदिकसंस्कार हेतु आर्य वीर दल चुनौती के रूप में लें

आर्य वीर दल वाराणसी के तत्वावधान में दिनाक ३ फरवरी २००२ को काशी आर्यसमाज बुलानाला वाराणसी मे आर्य वीर पर्वोत्सव एव वैदिक ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ता श्री सीताराम गर्ग की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे आर्य उप–प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रावेन्द्र कुमार बेरी न उपर्युक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज का युवा सगठन आर्य वीर दल तथा अभिभावको का नयी पीढी को वैदिक सस्कृति से सस्कारित करने का प्रमुख दायित्व है क्योकि तथाकथित धर्म निरपेक्ष शासन एव पाश्चात्य व साम्यवादी दृष्टिकोण से लिखित विद्यालीय या विश्वविद्यालय पुस्तको से यह अपेक्षा असम्भव है। विशिष्ट वक्ता के रूप मे पधारें आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री दिनेश आर्य ने कार्यक्रम का शुभारम्भ ध्वजारोहण से किया। अपने व्याख्यान में श्री आर्य ने कहा कि आज देश को जातिवाद तथा सम्प्रदायवाद से बचाना होगा। इसके लिए आर्य वीरो को जाति बिरादरी के मोह को त्याग कर गुण कर्म स्वभावानुसार अन्तर्जातीय विवाह करना होगा।

डॉ० शम्भु नाथ शास्त्री पण्डित सत्यदेव शास्त्री श्री अवध बिहारी खन्ना अन्य वक्ताओ मे पूर्वी उत्तर प्रदेश के सचालक श्री प्रमोद आर्य काशी आर्य समाज के मन्त्री श्री प्रकाश नारायण शास्त्री का०हि०वि०वि० आर्य समाज की मन्त्राणि श्रीमती विद्योत्तमा प्रकाश ने अपने विचारो को व्यक्त किया। श्री रविप्रकाश आर्य द्वारा प्रस्तुत आर्य वीर गीत महर्षि दयानन्द जूनियर हाई स्कूल भोजूवीर की छात्रा कुमारी नीता यादव के महर्षि दयानन्द पर हुए व्याख्यान तथा खेजवा के कक्षा २ के छात्र सचित आर्य ने मन्त्र पाठ से श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर दिया। प्रतियोगिता मे सर्वाधिक स्थान आर्य वीर दल भोजूवीर के प्रतियोगियो ने प्राप्त किया।

ग्राम लाऊमुण्डा जिला बलागीर में ३८ परिवारों के सदस्य वैदिक धर्म में शामिल हुए

पुनर्मिलन (शुद्धि) की श्रृखला मे ही ३० दिसम्बर को बलागीर जिला के लाऊमुण्डा ग्राम के प्रभु भक्ति आश्रम के वार्षिक महोत्सव पर ३८ परिवारो को १२० ईसाइयो ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये सज्जन वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिए आस–पास के ५ ६ ग्रामो से आए थे। यह दीक्षा का कार्यक्रम सभा के उप प्रधान श्री प० विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। दीक्षितो को आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना के उपाचार्य ब्र० कुजदेव जी मनीषी परिव्राजक शुकदेव जी आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे। आश्रम के सचालक श्री स्वामी मुक्तानन्द जी का इसमे विशेष पुरुषार्थ रहा।

– सुदर्शनदेवार्य उपमन्त्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम आमसेना नवपारा, उडीसा

टकारा का ऋषि मेला

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टकारा मे १० ११ व १२ मार्च को ऋषि मेले का आयोजन किया गया है। जिसमे देश विदेश से हजारो नर नारी भाग लेने हेतु टकारा पहुच रहे हैं। आर्य परिवारो को बस द्वारा टकारा ले जाने के लिए आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से स्पेशल बस चलाई जा रही है। यह बस ०५–०३–२००२ प्रात ७ बजे चलेगी जो १५–०३–२००२ रात्रि वापिस देहली पहुचेगी। यात्री टकारा के अतिरिक्त मथुरा उदयपुर जोधपुर अजमेर के अतिरिक्त द्वारका, बेट द्वाराका पोरबन्दर सोमनाथ का मन्दिर माऊण्ट आबू, श्रीकृष्ण जन्म भूमि के साथ चित्तौड और पुस्कर भी देखेगे। किराया बस केवल २१६५/– प्रति यात्री होगा। निवास एव भोजन व्यवस्था आर्यसमाजों मे होगी यदि ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेगे।

– रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक, टकारा यात्रा

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी गुरुकुल आश्रम आमसेना के निर्देशन से एव चौधरी मित्रसेन आर्य के सहयोग से २३ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २००१ तक श्री जगन्नाथ उच्चतम माध्यमिक विद्यालय दलाऊधारा शक्ति जिला जाजमीर चौपा मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर छलागढ प्रान्तीय व आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे २०० आर्य वीरों ने भाग लिया। इस शिविर मे आर्य वीरो को लाठी भाला दण्ड बैठक कराटे योगासन एव मलखम्भ का प्रशिक्षण दिया गया तथा साधक अभयदेव जी के पौरोहित्य म आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण कर जीवन को शुद्ध एव पवित्र रखने का सकल्प लिया। शिविर मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के योग्य शिक्षक श्री हरिसिह आर्य श्री जनक आर्य श्री दीनदयाल आर्य श्री दिव्येश्वर शास्त्री आदि ने प्रशिक्षण दिया। ३१ दिसम्बर २००१ को शिविर का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप मे स्वामी व्रतानन्द सरस्वती आमसेना कर्नल मुशी जी कोरबा अध्यक्ष के रूप मे श्री देवेन्द्र नाथ अग्निहोत्री शामिल थे। शिविर मे आर्यवीरो को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री सुभाष जी ने आभार व्यक्त किया। मच का सचालन श्री जगवीर आर्य ने किया।

– जनक आर्य मुडागाव रावगढ

नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

मसौढी २८ जनवरी प्रखण्डान्तर्गत तिनेरी गाव स्थित विद्यालय प्रागण मे नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया उसमे ६० रोगि[illegible] [illegible] का सफल ऑपरेशन किया गया। डॉ० शशि भूषण प्रसाद सिह के सौजन्य से एव स्वतन्त्रता सेनानी शिवप्रसाद आर्य द्वारा व्यवस्थित नेत्र शिविर मे डॉ० उमेश प्रसाद भदानी सहित छह चिकित्सको ने सहयोग किया।

– शिवप्रसाद आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 24 02 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 21/22 -02 2002

आदर्श नगर, दिल्ली में 'पर्यावरण सुरक्षा रैली'

भौतिकवादी औद्यागिक प्रगति के परिणामस्वरूप व बढते हुए शहरीकरण से आज दिल्ली सर्वाधिक प्रदूषित शहरो मे गिना जाता है। दिल्ली सरकार स्कूल के विद्यार्थी द्वारा पर्यावरण के प्रति जनजागरण अभियान चला रही है। इसमे विद्यार्थियो के माध्यम से जनजागरण लाने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रधानाचार्या श्रीमती पुष्पलता मैंदीरत्ता जी ने बताया कि आदर्श नगर मे विद्यालय पिछले तीन वर्षों से पर्यावरण रैली निकालकर नागरिको को वृक्षारोपण की प्रेरणा तथा पोलीथीन प्रयोग के दुष्परिणामो से परिचित करवा रहा है।

इको क्लब आर्य मॉडल स्कूल ने पर्यावरण विभाग दिल्ली सरकार पर्यावरण एव वन मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली भारतीय पर्यावरण समिति दिल्ली अर्पण शिक्षा समिति दिल्ली व श्रेष्ठ महिला समिति दिल्ली के सहयोग से पर्यावरण सुरक्षा रैली का आयोजन किया जिसमे छात्र-छात्राए नारे लगा रहे थे –

पेड हमारी शान है जीवन की मुस्कान है। जन जन को बतलाना है पेड पौधे लगाना है।।

पेड पौधो से सदैव नाता जीवन के सरक्षण दाता।

रैली से पहले विद्यार्थियों ने सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किया जिसमे नाटक दोहे तथा गानो के माध्यम से यह बताने का प्रयत्न किया गया कि यदि वृक्ष इसी तरह कटते रहे तो मानव जीवन खतरे मे पड जाएगा। इसके साथ लेख प्रतियोगिता चित्रकला प्रतियोगिता नारे प्रतियोगिता तथा क्विज प्रतियोगिता मे प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयो को पुरस्कार भी वितरित किए गए।

निष्ठा और आस्था से ही सफलता

– वाचस्पति उपाध्याय

लाल बहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ के दीक्षान्त समारोह पर आयोजित व्याख्यानमाला मे कुलपति प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा – आज के कठिन वातावरण मे छात्र अपनी निष्ठा और सच्ची आस्था से ही सफल हो सकते हैं।

विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डॉ० के० पी० ए० मेनन ने आहवान किया कि हमे समस्याओ से भागना नहीं चाहिए प्रत्युत उनका समाधान खोजना चाहिए। व्याख्यानमाला के अध्यक्ष प्रो० रामलाल यादव ने घोषित किया कि विद्यापीठ के छात्र अपने सदगुणो के कारण जाने जाते है। *

शुभ विवाह

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के पूर्व प्रधान श्री जयसिह गायकवाड की सुपुत्री ज्योत्सना तथा आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के मन्त्री एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डॉ० सुग्रीव काले के सुपुत्र डॉ० प्रताप काले का शुभ विवाह परली वैजनाथ मे बडे उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। विवाह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न आर्य जी ने आशीर्वाद प्रेषित किया। शुभकामनाए एव आशीर्वाद प्रदान करने वालो मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा स्वामी तत्वबोध सरस्वती उदयपुर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती डॉ० धर्मवीर अजमेर श्री विठठलराव आर्य हैदराबाद श्री सुरेन्द्रपाल आर्य नागपुर आचार्य अमृतलाल जी शर्मा श्री रामनाथ जी सहगल मन्त्री आदि प्रमुख हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र तथा श्री लक्ष्मीनारायण आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ आदि ने विशेष रूप से उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान किया। सस्कार प० सोने राव जी लन्दन ने प्रभावशाली ढग से कराया। *– गायकवाडसदन गगासागर गठा जवलापुर*

...सह जी को भ्रातृ शोक
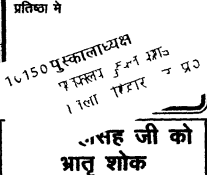
सार्वदेशिक सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री फतह सिह जी के बडे भाई जय किशोर जी का २ फरवरी २००२ को शाम ७०० बजे निधन हो गया। वे ६६ वर्ष के थे। श्री जय किशोर जी काफी दिनो से गम्भीर रूप से बीमार चल रहे थे उनका इलाज दिल्ली से भी चल रहा था। श्री जयकिशोर जी आर्य समाज के सिद्धान्तों मे पूर्ण निष्ठा रखते थे उन्होने अपने परिवार मे आर्य विचार धारा को पोषित किया। उनका अन्तिम सस्कार ३ फरवरी को उनके गाव बीछट सुजानपुर बुलन्दशहर मे पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। दिवगत आत्मा की सदगति तथा उनके परिवार को इस दारुण दुख को सहन करने की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। श्री फतह सिह जी के हम सब सहयोगी इस दुख की घडी मे उनके साथ है।

सार्वदेशिक परिवार

सस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षण शिविर

आर्यो को सूचित किया जाता है कि आर्य जगत के प्रसिद्ध तपस्वी विद्वान वेदव्रत मीमासक जी गुरुकुल वडलूर कामारेड्डी आन्ध्र प्रदेश द्वारा १/३/२००२ से १०/३/२००२ तक सस्कृत सम्भाषण शिविर लगाया जा रहा है। इस शिविर की विशेषता यह होगी की इसमे भाग लेने वाले मात्र दस दिनो मे सस्कृत बोलने लगेगे।

साथ ही ७ से १० मार्च तक गुरुकुल का उत्सव भी होगा। जिसमें दिल्ली से आचार्य सुखदेव जी आर्यतपस्वी हरियाणा से श्रीमती सन्तोष सैनी आर्या उत्तर प्रदेश से प्राची आर्या एव मुम्बई से श्री राजीव जी दीक्षित पधार रहे हैं।

आप महानुभावो से निवेदन है कि शिविर एव उत्सव मे भाग लेकर अपना जीवन सफल बनावे एव कार्यक्रम को सार्थक बनाए।

निवेदक

सुशील सचालक

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज टाण्डा अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)

प्रधान – श्री आनन्द कुमार आर्य
मन्त्री – श्री वीरेन्द्र कुमार मौर्य
कोषाध्यक्ष – श्री लक्ष्मी शकर आर्य

सपना रिजवी ने वैदिक धर्म अपनाया

कानपुर। २८ जनवरी। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर कानपुर मे समाज के प्रधान श्री शुभ कुमार वोहरा ने मजहर अब्बास रिजवी की पुत्री कु० सपना रिजवी की शुद्धि करवाकर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। इस अवसर पर वोहरा जी ने कु० सपना को सत्यार्थ प्रकाश का निरन्तर स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए सत्यार्थ प्रकाश भेट किया। शुद्धि के समय मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य सहित श्री त्रिलोक नाथ सूरी (उप प्रधान) श्री प्रकाश वीर आर्य (उप मन्त्री) श्री नन्दलाल सचदेवा (भण्डार अधिकारी) वीरेन्द्र मलहोत्रा (कोषाध्यक्ष) श्याम सुन्दर दुआ श्रीमती दर्शना कपूर चन्द्रकाता गेरा सतोष अरोडा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे अब तक ४००० से भी अधिक लोगो को शुद्ध कर राष्ट्र की मुख्य धारा मे जोडा जा चुका है।

सपना रिजवी का नाम परिवर्तित कर कु० सपना आर्या रखा गया है। सपना आर्या ने कहा कि मैंने काफी अध्ययन करने के बाद मुस्लिम धर्म को छोडकर हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) अपनाने का निर्णय लिया है। बाद मे उनका विवाह सरदार कल्याण सिह सघदेवा के सुपुत्र श्री हरमेन्द्र सिह सचदेवा से कर दिया गया। *– बाल गोविन्द आर्य* मन्त्री आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर

फैजावाद एव अम्बेडकर नगर की आर्य उप प्रतिनिधि सभा का गठन

आर्यसमाज टाण्डा के ११०वे वार्षिक उत्सव के अवसर पर पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य एव आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने फैजावाद आर्य उप प्रतिनिधि सभा के पुनर्गठन का दायित्व श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल एव अम्बेडकर नगर आर्य उप प्रतिनिधि सभा का दायित्व विज्ञमित्र शास्त्री को दिया। श्री आनन्द कुमार आर्य ने पूर्वाचल के सभी आर्य समाजों को पुन जागृत करने के लिए एक पूर्वांचल महासम्मेलन करने का निश्चय किया है। फैजावाद सुल्तानपुर तथा वाराणसी के आर्यों ने श्री आनन्द कुमार आर्य से अपने अपने जनपदों मे यह सम्मेलन कराने का आग्रह किया। स्थान निश्चित होते ही मई माह मे यह सम्मेलन विस्तार रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा।

– विज्ञमित्र शास्त्री पूर्व मन्त्री

विज्ञप्ति

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी एव स्वतन्त्रा सेनानी स्वर्गीय प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी की जीवनी का सम्पादन एव प्रकाशन पूर्व हैदराबाद राज्य आर्य स्वतन्त्रता सेनानी सघ की ओर से उनकी प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य मे स्मारिका के रूप मे प्रकाशन किया जाएगा। इसकी घोषणा सघ के अध्यक्ष श्री राजवीर आर्य ने की।

आर्य विद्वानो नेताओं एव भारतीय एव हैदराबाद राज्य में उनके साथी स्वतन्त्रता सैनिको से जीवनी सस्मरण चित्र आदि भिजवाने का अनुग्रह करे।

वि० सू० सम्बन्धित रचनाए आगामी जून मासान्त तक प्रेषित करने का कष्ट कीजिएगा।

सम्पर्क सूत्र राजवीर आर्य ११-२२-६० नरेन्द्र नगर वरगल २ (आ०प्र०) दूरभाष ०८७१२ ५६२८०२

धार्मिक, सामाजिक एवं वैचारिक क्रांति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८ सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाइट http //ww thereisgod

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४० अक ४५ ३ मार्च से ६ मार्च २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ फा० कृ० ५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

तन, मन, धन से धर्मान्तरण को रोकने का प्रयास करें

आदिवासी क्षेत्रों के लिए प्रचार वाहन रवाना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा खरीदे गए प्रचार वाहन को आदिवासी क्षेत्रो मे प्रचार कार्यों के लिए ओ३म ध्वज दिखाकर रवाना किया। कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ विगत लगभग ३० से भी अधिक वर्षो से महान राष्ट्र सेवा राष्ट्रीय एकता और आदिवासी क्षेत्रो के नागरिको की धार्मिक सुरक्षा के कार्य कर रहा है। धर्मान्तरण से देश को कई प्रकार के सकटो का सामना करना पडता है। दयानन्द सेवाश्रम सघ के कार्यकर्ता गरीब और पिछडे आदिवासी क्षेत्रो मे लोगो को राष्ट्रीय एकता का पाठ पढा कर इस प्रकार की प्रेरणाए देते है कि वे धर्मान्तरण के चक्रव्यूह मे न फसे।

इस प्रचार वाहन मे आने वाला खर्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ही वहन करेगी। इसके अतिरिक्त भी काफी धनराशि प्रतिमाह सभा द्वारा इन कार्यों के लिए खर्च की जाती है। कै० देवरत्न आर्य ने धन सम्पन्न राष्ट्रवादी आर्य जनता से आहवान किया कि धर्मान्तरण निरोधक इन कार्यो के लिए भी उदार मन से आर्थिक सहायता सभा को दे।

सभा प्रधान ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि आर्य समाज का एक गौरवशाली इतिहास है और हमारा प्रमुख उददेश्य ससार का उपकार करना है। धन सम्पन्न लोग धन की आपूर्ति स ज्ञान सम्पन्न लोग प्रचार कार्यो से सहयोग करके और श्रम सम्पन्न कार्यकर्ता अपने शारीरिक सहयोग से तन्मयता पूर्वक समाज सेवा के कार्यो मे जुटे। समाज सेवा के कार्यों मे यदि हम अनुशासित रहकर कार्य करते हैं तो इन कार्यों का प्रभाव लम्बे समय तक रहता है।

प्रचार वाहन को ओ३म ध्वज दिखाकर रवाना करने के अवसर पर श्री चमन लाल महेन्द्र, स्वामी शुभानन्द सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा जोगेन्द्र खटटर।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा स्वामी शुभानन्द माता प्रेमलता शास्त्री तथा दिल्ली के पूर्व विधायक श्री गौरीशकर भारद्वाज सहित रानी बाग आर्यसमाज के प्रधान श्री चमनलाल महेन्द्र मत्री श्री जोगेन्द्र खटटर आदि भी उपस्थित थे।

वाहन को ओ३म ध्वज दिखाकर विदाई दी गई तो उसमे माता प्रेमलता शास्त्री तथा कई अन्य आयजन आर प्रचारक कार्यकता मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रो के लिए रवाना हुए।

इस कार्यक्रम से पूर्व आर्यसमाज रानीबाग के तत्वावधान मे लगभग २ घण्टे से भी अधिक समय की प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमे सकडा नर नारियो और बच्चो ने भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर

गुरुकुल कागडी हरिद्वार म २५ से २८ अप्रैल २००२ को आयोजित होन वाले शताब्दी महासम्मेलन की तैयारिया जोर शोर से चल रही है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने भी हरिद्वार जाकर सम्मेलन की रूपरेखा महासम्मेलन स्थल तथा आवास हेतु विभिन्न धर्मशालाओ आदि का निरीक्षण किया। इस महासम्मेलन मे आर्यो के अप्रत्याशित समागम की सभावना को देखते हुए आवास और भोजन आदि का प्रबन्ध विशाल स्तर पर किया जा रहा है। सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी उनके साथ हरिद्वार गए।

महा सम्मेलन मे भाग लेने वाले आयजना के लिए समय समय पर विशेष निर्देश इस पत्र के माध्यम से प्रचारित किए जा रहे है। आर्य जनता से निवेदन है कि इन निर्देशो के अनुसार अधिक से अधिक सख्या मे हरिद्वार पहुचने का कार्यक्रम बनाए।

महासम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी कार्यो के लिए अलग अलग समितिया निर्धारित की गई हैं। ३ मार्च को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे भी शताब्दी महासम्मेलन की तैयारियो पर चर्चा होगी तथा इसके बाद सार्वदेशिक सभा के अधिकारी हरिद्वार भी जाएगे।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के वार्षिकोत्सव पर फिल्म कलाकार श्री धर्मेन्द्र सिह देयोल कैप्टन देवरत्न आर्य को सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनने पर बधाई देते हुए।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का 48वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक २४ जनवरी से २७ जनवरी २००२ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ४८वा वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा प्रो० धर्मवीर जी (अजमेर) एव वेदपाठी प० नामदेव आर्य प० विनोद शास्त्री आचार्य उमेश प० नरेन्द्र शास्त्री एव प० प्रभारजन पाठक जी थे।

इस अवसर पर प्रसिद्ध फिल्म कलाकार श्री धर्मेन्द्र सिह देयोल भी पधारे और उन्होने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चुने जाने पर कै० देवरत्न आर्य को हार्दिक शुभकामनाए दीं।

इस अवसर पर भजन प्रवचन वेद गोष्ठी अध्यात्म चर्चा (सर्व धर्म सम्मेलन) शास्त्र चर्चा (शास्त्रार्थ) फलित ज्योतिष पर विशेष चर्चा अन्धविश्वास निर्मूलन एव शका समाधान आर्य महिला सगठन सम्मेलन तथा आर्य कार्यकर्ता गोष्ठी के साथ साथ भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

रात्रि कालीन सत्र मे दिनाक २४ २५ २६ जनवरी २००२ को सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० वेगराज जी आर्य के राष्ट्रीयता और वीरता से ओत प्रोत भजनोपदेश हुए। इसी क्रम मे वैदिक प्रवक्ता प्रो० धर्मवीर जी (मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर) तथा आचार्य वेदव्रत मीमासक (सचालक आर्ष गुरुकुल कामारेड्डी आन्ध्र प्रदेश) के सारगर्भित प्रभावोत्पादक प्रवचन हुए।

इसी श्रृखला मे दिनाक २५ जनवरी को आर्य महिला सगठन सम्मेलन मे मुम्बई की सभी आर्य समाजो की प्रतिनिधि महिलाओ ने सहर्ष भाग लिया। श्रीमती जयाबेन (आर्य समाज घाटकोपर) की अध्यक्षता मे यह सम्मेलन हुआ। अनेक महिलाओ ने महिला सगठन के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

अन्धविश्वास निर्मूलन – इस सम्मेलन के अन्तर्गत समाज व देश मे व्याप्त अन्धविश्वास का खुलासा करते हुए अन्धविश्वास निर्मूलन समिति सदस्यो ने कई हाथ सफाई के कारनामे व प्रचलित आडम्बर जादू टोना आदि को मिथ्या साबित कर दिखाया जिससे अनेक प्रत्यक्ष दर्शियो का अन्धविश्वास दूर हुआ।

दिनाक २६ जनवरी २००२ को प्रात यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डा० सोमदेव शास्त्री ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात राष्ट्रगीत एव सास्कृतिक कार्यक्रम आर्य विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज की छात्राओ ने किया। इसके उपरान्त प्रात १० बजे से वेद गोष्ठी का आयोजन प्रो० धर्मवीर जी (मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर) की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। विषय वेदार्थ प्रक्रिया और वेदभाष्यकार पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य वेदव्रत मीमासक (वडलूर निजामाबाद) डॉ० भवानीलाल भारतीय (जोधपुर) डॉ० कमलेश कुमार शास्त्री (अहमदाबाद) प्रो० कुशलदेव शास्त्री (नादेड) प० नरेन्द्र वेदालकार प० महेन्द्र शास्त्री (मुम्बई) एव प्रो० धर्मवीर जी ने अपने शोध पूर्ण लेख प्रस्तुत करते हुए विस्तृत विवेचना की तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किए गए वेद भाष्य की प्रक्रिया को शास्त्र सम्मत एव समुचित ठहराया। गोष्ठी के सयोजक डा० सोमदेव जी शास्त्री ने कहा कि इस वेद गोष्ठी के विषय 'वेदार्थ प्रक्रिया और वेदभाष्यकार' की रूपरेखा महत्ता की आवश्यकता प्रस्तुत की तथा जो लेख आज पढे गए है उनको हम पुस्तक रूप मे आबद्ध करने का यत्न करेगे ऐसा कहा। इस वेद गोष्ठी में लगभग चार सौ से अधिक व्यक्तियो ने भाग लिया। तत्पश्चात मुम्बई महानगर के आर्य कार्यकर्ताओ ने एक लघु बैठक का आयोजन किया।

अध्यात्म चर्चा २६ जनवरी को साय ४ बजे प्रारम्भ हुई इसके अन्तर्गत हिन्दू धर्म के प्रतिष्ठित विद्वान आचार्य रामरूप मिश्रा (पूर्व प्राचार्य मुम्बादेवी सस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्या भवन मुम्बई) जैन धर्म के प्रखर वक्ता एव शोधकर्ता श्री रश्मिभाई झवेरी और ईसाई मतावलम्बी फादर एडवर्ड डिमेलो तथा वैदिक धर्म के मूर्धन्य विद्वान डॉ० भवानीलाल भारतीय ने ईश्वर और उसकी प्राप्ति के उपाय नामक विषय पर अपने अपने मन्तव्यो के अनुसार विचार प्रस्तुत किए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे यह चर्चा सम्पन्न हुई। इस चर्चा मे मुख्य अतिथि के रूप मे मुम्बई महानगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एव ख्याति प्राप्त समाज सेवी श्री सत्यप्रकाश आर्य उपस्थित थे। अपने अध्यक्षीय भाषण मे कैप्टन देवरत्न आर्य ने ईश्वर की अनुभूति कैसे की जाय इस विषय को उन्होने अनेक उदाहरणो से स्पष्ट किया। ईश्वर की सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता पर प्रकाश डाला।

दिनाक २७ जनवरी को प्रात ६ ३० बजे यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। प्रात १० बजे वार्षिकोत्सव समारोह आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान माननीय डा० सोमदेव जी शास्त्री की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। प० वेगराज जी ने भजनो के माध्यम से ईश वन्दना की तत्पश्चात आर्य समाज सान्ताक्रुज के धर्माचार्यो द्वारा "मूर्तिपूजा वेदानुकूल है अथवा नही इस विषय पर लगभग १३० घण्टे तक शास्त्रार्थ हुआ इस कार्यक्रम को तालियो की गडगडाहट के बीच मे पक्ष और विपक्ष का प्रस्तुतिकरण दोनो पक्षो (सनातनी व वैदिक विद्वानो) ने अपने अपने मत को बडे सशक्त ढग से श्रोताओ के समक्ष रखा श्रोता इससे बहुत लाभान्वित हुए। इसके पश्चात डा० भवानीलाल भारतीय ने शास्त्रार्थ की परम्परा कायम रहे इस विषय पर बोलते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द के जमाने में शास्त्रार्थ हुआ करते थे इससे सत्य असत्य का निर्णय होता था। मनुष्य को चाहिए कि सत्य को ग्रहण करे और असत्य को छोड देवें।

आचार्य वेदव्रत मीमासक ने ज्योतिष सम्बन्धी विचार अभिव्यक्त करते हुए गणित ज्योतिष को सत्य और फलित ज्योतिष को मिथ्या बतलाया। यज्ञ के ब्रह्मा एव वक्ता प्रो० धर्मवीर ने यज्ञीय भावना को सर्वश्रेष्ठ बतलाया आपने सत्य न्याय धर्म भद्राचरण ईमानदारी धर्म परायणता कर्त्तव्यनिष्ठा एव श्रद्धा तथा ईश्वर के प्रति दृढ विश्वास के ऊपर विशेष रूप से प्रकाश डाला।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पदाधिकारियो ने आमन्त्रित सन्यासियो विद्वानो एव मुख्य अतिथि विशेष अतिथि को शाल और मोती की माला भेट कर सम्मानित किया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री यशप्रिय आर्य ने प्रतिष्ठित सन्यासी वृन्द आमन्त्रित विद्वानो उपस्थित श्रोताओ सहयोगियो एव कार्यकर्त्ताओ का हृदय से धन्यवाद ज्ञापन किया। इस प्रकार यह वार्षिकोत्सव हर दृष्टिकोण से सफल रहा शान्तिपाठ जयघोष एव प्रीति भोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के लिए निर्देश

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन का आयोजन २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो में किया जा रहा है। यह महासम्मेलन गुरुकुल कागडी के विशाल प्रागण में ही आयोजित होगा जिसका नाम श्रद्धानन्द नगर रखा गया है।

(१) इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओ को सार्वजनिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन मे बहुत भारी सख्या मे आर्यजनो के पहुचने का अनुमान है। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आगन्तुका की पूर्व सूचना सभा कार्यालय मे दर्ज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप मे ५०/– रु० प्रति व्यक्ति भेजकर अपना अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे ३० मार्च तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण नहीं होगा उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी है।

(२) सम्मेलन मे भाग लेने वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्यजनो से विशेष निवेदन है कि विभिन्न सत्रो मे प्रसारित उद्‌बोधनो के मुख्य विचार नोट करे तथा उन विचारो के अनुरूप आर्यसमाज की गतिविधियो को भविष्य मे अपने अपने स्थानीय क्षेत्रो के स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करे। ऐसा अभ्यास आर्यजनो को विशेष रूप से करना चाहिए क्योकि हमारे विद्वान वक्ताओ के बहुमूल्य विचारो को क्रियान्वित करने का यही एक मार्ग है कि हम उन्हे पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

(३) सम्मेलन के दिनों में हरिद्वार में ग्रीष्म ऋतु होगी अत उपयुक्त वस्त्र ही रखें।

(४) जो आर्य जन दलो मे पधार रहे हैं वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नामपट्ट बैनर तथा ओ३म ध्वज आदि अवश्य लाने की कृपा करे।

(४) सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के दौरान चल रहे विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप मे अथवा अन्य घोषणाओ के लिए कोई पर्ची आदि लिखकर सयोजन कार्य मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन के तहत हम सबको निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने मे प्राप्त होगा।

सार्वदेशिक सभा का चुनाव

– *प्रकाश आर्य महू*

श्री कै० देवरत्न जी आर्य का निर्वाचन न्यायालय के आदेशानुसार तथा न्यायालय के निर्देशन मे विधिक प्रक्रिया को अपनाते हुए सम्पन्न हुआ है। इसलिए उक्त चुनाव वैधानिक है। यदि इस निर्वाचन से कोई असन्तुष्ट है तो उनके लिए व्यवस्था है कि वे इस वैधानिकता को अपनी आतरिक व्यवस्था के समक्ष तत्पश्चात न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर विरोध करे।

उक्त निर्वाचन के अतिरिक्त अन्य कोई निर्वाचन न तो हुआ है और यदि ऐसे किसी तथाकथित निर्वाचन को कोई मान्यता है यदि कोई देते भी है तो यह उनका असफल प्रयास होगा तथा यह पूर्ण रूप से असवैधानिक है क्योकि इन्हीं लोगो ने कै० देवरत्न जी के निर्वाचन को चुनौती दी है। इससे ही यह सिद्ध है कि निर्वाचन तो दीवान हाल मे हुआ और उसक विरुद्ध असन्तुष्ट व्यक्तिया ने अदालती कार्यवाही की हुई है। अदालती कार्यवाही का निर्णय क्या होगा इसका इन्तजार उन्हे करना चाहिए था। न कि स्वयभू एक पृथक समानान्तर सार्वदेशिक सभा का कोई निर्वाचन करके मन्त्री प्रधान पृथक से घोषित करे।

यदि न्यायालय मे जाते है और पृथक सभा भी बनाते हैं तो यह दोनो कार्य एक–दूसरे के परस्पर विपरीत हैं और ऐसे लोगो की स्थिति को स्पष्ट करते हैं कि उन्हे जनमत पर या न्यायिक व्यवस्था पर अविश्वास है और वे स्वयभू बनकर अपने लिए एक नए सविधान और सस्था की रचना कर रहे हैं।

श्री कै० देवरत्न जी जिस सभा द्वारा चुने गए उसमे आमन्त्रित प्रतिनिधि उपस्थित थे जिन्हे नियमानुसार चुनाव अधिकारी द्वारा विधिवत चुनाव मे भाग लेने की सूचना प्रदान की गई थी उसमे समय दिनाक और स्थान का उल्लेख था उन्हे चुनाव मे भाग लेने के पूर्व परिचय पत्र पजी रजिस्टर पर हस्ताक्षर करके प्रदान किए थे।

जबकि यह व्यवस्था अन्य किसी निर्वाचन पर नहीं हुई और ना ही ऐसी प्रक्रिया कहीं अपनाई गई। सडक पर बैठकर गिनती के १०–२० लोग यदि कोई निर्वाचन कर भी ले तो वह निर्वाचन की प्रक्रिया का मजाक ही होगा और ऐसा निर्वाचन निर्वाचन की श्रेणी मे नही आता।

निर्धारित समय पर जो व्यक्ति कक्ष मे प्रवेश कर गए थे उन्हे ही निर्वाचन मे भाग लेने की विधिवत् पात्रता प्रदान की गई और जो व्यक्ति समय पर मतदान कक्ष म नही पहुचे उन्हे चुनाव प्रक्रिया से वचित रहना पडा इसमे कोई पक्षपात या दुर्भावना नही रही।

मेरी दृष्टि मे जा ना। सगठन से खिलवाड कर रहे है और आर्य जनो को भ्रमित करने का दु सहस कर रहे है उन पर सभी को गम्भीरता से विचार करना चाहि ऐसे अनदेखा नही करना चाहिए अनदखा करने का ही परिणाम हे कि अ ज समाज मे अनक उपद्रवी त च । प्रकार की हिम्मत कर रहे ह इसलिए पूरे देश के आर्यबन्धुआ को गम्भी ता से इस पर विचार कर निर्णय लेना चाहिए।

मेरे कुछ सुझाव निम्नलिखित है –

१ सार्वदेशिक सभा एक ही है जिसके निर्वाचन न्याया ल के निर्देशन एव आदेशानुस र आर्यसमाज दीवानहाल म सम्पन्न हु हे जिसके प्रधान कै० देवरत्न आय है जिसका रजिस्टर्ड नम्बर हे तथा कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली है। इस कार्यालय से ही समस्त राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाजो की व्यवस्था व सचालन किया जाता है और इसी कार्यालय का उपयोग निर्वाचित मन्त्री/प्रधान व अन्य पदाधिकारी वैधानिक रूप से कर रहे है। इस सभा का इस कार्यालय के अतिरिक्त अन्य कोई कार्यालय नही है और न ही कोई सार्वदेशिक सभा। इस सभा के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति सार्वदेशिक सभा का उपयोग न करे व अपने को प्रधान या मन्त्री न कहे।

२ सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के अतिरिक्त देश की अन्य पत्र पत्रिकाओ के द्वारा प्रमुख व्यक्तियो प्रान्तीय सभाओ व समाजो को पत्र लिखकर यह जानकारी प्रदान करना आवश्यक है समाज के हित मे है कि समाज को और सगठन को जो लोग क्षति पहुचा रहे है उनके सम्बन्ध मे सचेत करते हुए ऐसे लोगो को किसी प्रकार का सहयोग न देवे उन्हे किसी भी प्रकार से सार्वदेशिक सभा के अधिकारी के रूप मे मान्यता न देवे।

३ मेरा यह भी एक सुझाव है कि इस सम्बन्ध मे शीघ्र ही देश के पमुख व्यक्तियो मन्त्री प्रधान अन्तरग सदस्यो की एक बैठक तत्काल आमन्त्रित करना उचित होगा। इस बैठक मे वास्तविकता की पूरी जानकारी प्रदान को उनके विचार प्राप्त किए जाए तथा सगठन को सुरक्षित और मजबूत बनाने के लिए उन्हे समुचित उपाय सुझाना और उनसे प्राप्त करना चाहिए। इससे सगठन मजबूत होगा शक्ति बढेगी एव विपक्षियो के हौसले पस्त होगे। उनके सहयोग मे कमी आएगी।

४ स्वामी नाम से ही अनेक व्यक्ति प्रभावित हो जाते है और उन्हे सत मानकर उनका सहयोग करते हैं। किन्तु ऐसे व्यक्ति जो सभा से अपने गलत कार्यकलापो के कारण निष्कासित हैं जिनके कारण सगठन की छवि को खतरा उत्पन्न हुआ है और आगे भी हो सकता है ऐसे लोगो का पर्दाफाश करना भी अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे लोग जो शिरोमणि सभा के सविधान से हटकर महर्षि के मन्तव्यो को नष्ट कर रहे है इसकी जानकारी भी जन–साधारण को देना अत्यन्त आवश्यक है और यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि ऐसे कुछ पदलोलुप तथा आर्यसमाज के पवित्र सगठन मे राजनीति फैला कर दूषित वातावरण निर्मित करने वाले व्यक्तियो ने अपनी इच्छापूर्ति के लिए एक पृथक से सार्वदेशिक सभा निर्मित कर ली है इन्ही कारणो से उन्हे व उनके सहयोगियो को निष्कासित कर रखा है। ऐसी सूचना के साथ सार्वदेशिक सभा के उस आदेश की छायाप्रति भी सलग्न करना चाहिए जिसके माध्यम से ऐसे लोगो का निष्कासन हुआ।

५ जन–जन तक यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि इस बात का भी प्रचार–प्रसार होना चाहिए कि एक ओर ऐसी प्रवृत्ति के लोग है जो महर्षि दयानन्द के आदर्शो को निरन्तर आगे बढाने मे प्रयत्नशील हैं अनेक सस्थानो मे अभूतपूर्व कार्य कर रहे है और जन–सहयोग से करवा रहे हैं। दूसरी ओर वह व्यक्ति है जो अपने स्वार्थ मे अन्धे होकर सैद्धान्तिक बन्धनो को तोडकर आर्यसमाज की मूलधारा से हटकर केवल अपने प्रचार–प्रसार और लौकेषणा वित्तेषणा से ग्रस्त हैं ऐसे लोगो को समाज मे येन केन प्रकारेण केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति ही दिखाई देती है। इसका भी प्रचार होना चाहिए।

६ इसके अतिरिक्त देश के प्रभावी विद्वान आचार्य उपदेशक सन्यासी वानप्रस्थियो को जिनका आर्यजगत पर अपना प्रभाव है उन्हे आमन्त्रित कर सगठन को ऐसे षडयन्त्र से बचाने की चर्चा करना चाहिए उनसे विचार विमर्श करना चाहिए और इस हेतु उन्हे पूर्ण शक्ति के साथ ऐसे लोगो के नाम एकत्रित कर उन्हे सही पते पर सूचना देकर समाचार पत्रो मे प्रकाशित कर बुलाना चाहिए। यह अतिशीघ्र होना चाहिए।

ऐसे लोगो की सयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित की जाए और उनसे आर्यजनो तक अपने निर्णय को पहुचाने हेतु निवेदन किया जाए। मेरी दृष्टि से हरियाणा के कुछ व्यक्तियो को छोडकर सारे देश के सत सन्यासी इस महत्वपूर्ण कार्य मे सहयोगी होगे और उनका लाभ सगठन को अवश्य ही प्राप्त होगा।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कुछ व्यक्ति जिन्होने सगठन सपत्ति और आर्यसमाज को अपने स्वार्थ के लिए चारागाह बना लिया था और ३–३ बार निर्वाचन होने पर भी उन्हे किसी प्रकार का प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का अवसर नही मिला लाखो का हिसाब जिनके पास है और लाखो रुपया उन्होने बरबाद कर दिया है ऐसे व्यक्ति तथाकथित बोगस सार्वदेशिक सभा से मिलकर कोई अव्यवस्था का कार्य मध्य प्रदेश मे करना चाहते है किन्तु वे यहा सफल नही होगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती और संगठन

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त वी०एस०एम०

महर्षि दयानन्द सरस्वती दूर तक भविष्य की बाते अपने तप और अनुभव के आधार पर देख सकते थे। क्रान्तदृष्टा थे। सामाजिक सगठन का भयकर शत्रु है कोर्ट कचेहरी मे मुकदमेबाजी। वहा मैत्री का अत है और जानलेवा शत्रुता का आरम्भ। अत यदि मतभेद उभरते है तो उन्हे आपसी विचार विमर्श से सुलझा लेना चाहिए।

आर्यसमाज किसी वर्ग या प्रान्त के लिए नहीं है अपितु मानवमात्र के हित के लिए है। ऋषिवर ने पूर्ण प्रयास करके आर्य समाज को सर्व हितकारी बनाया है। अत इस महान सगठन को सकुचित करना अहितकर होगा।

आर्यसमाज के बढते चरण से १६वीं शताब्दी का भारत नई स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। नई शिक्षा के रग मे रगे भारतीय "ब्राउन साहेब" बनते जा रहे थे। अग्रेजो से अधिक बढ चढ कर अग्रेजी सभ्यता और सस्कृति के पक्षधर बन रहे थे लार्ड मैकॉले के मानस पुत्र। पढे लिखे भारतीयो को दिशा भ्रम से बचाने के लिए ही और 'विशाल हिन्दू समाज के बीच रह कर धार्मिक सामाजिक सुधार का शखनाद किया था महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। अनेक मेधावी नवयुवक और प्रौढ बुद्धिजीवी कमर कस कर तैयार हुए आक्रमण का उत्तर प्रत्याक्रमण से देने के लिए। सामान्य हिन्दू समाज दोहरे आक्रमण की चपेट मे था एक ओर ईसाई और दूसरी ओर मुसलमान। उन दोनो विधर्मी वर्गो का विष वमन लेखन और भाषण माध्यम से भयकर रूप ले रहा था।

इन विषम परिस्थितियो मे लडखडाते समाज को एक ओर अध विश्वासो पोगा पन्थी पडितो के चगुल से छुडाने और कुरानी किरानी क्रिस्तानी द्वारा भय मिश्रित प्रलोभन से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने दोहरा प्रहार किया। वैदिक धर्म के मूल वेद को जन जन तक ले जाने के लिए हिन्दी भाषा मे अपना महान ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश सन १८७४ मे लिखा। इसका सशोधित सस्करण जो आज हमारे हाथो मे है सन १८८३ मे प्रकाशित हुआ। समाज को सगठित करने और नया नेतृत्व प्रदान करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की। विशाल भारत का वैदिक ब्रह्मास्त्र बना – आर्यसमाज। इसके मूल मे है वैदिक सगठन। इसी वैदिक सगठन से ही सबल होता है आर्यसमाज। जहा जहा सगठन का अभाव हुआ वहा वहा आर्यसमाज लडखडा गया भवन खडे रहे किन्तु वैदिक स्वरूप समाप्त हो गया।

आइये ऋषिवर के जीवन से कुछ ऐसी बाते देखते हैं जो उनके व्यक्तित्व के सगठन पक्ष पर प्रकाश डालती हैं और आर्यो को प्रोत्साहित करती हैं कि वे पुन सगठन पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करे। आज आर्यसमाज के साप्ताहिक वैदिक सत्सग के अत मे ऋग्वेद के १६१ वे एव अतिम सूक्त के चार मत्रो का सामूहिक पाठ होता है और सगठन सूक्त का हिन्दी रूपान्तर पढा जाता है। उद्देश्य है आर्यों मे परस्पर प्रीति हो मन वचन और कर्म आर्यो के बीच सगठन का परिचायक हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वय सगठन पक्ष पर बल दिया। उनके सच्चे अनुयायी सगठन पथ पर ही चले। यदि हम आर्यसमाज मे केवल रटटू तोते के समान सगठन सूक्त के चार मत्र पढे और फिर पदलोलुपता वश साथी आर्यों की पीठ मे पैना चाकू घोप दे तो यह गोघात और गुरुघात समान पाप से भी बढकर है। अस्तु।

महर्षि दयानन्द सरस्वती दूर तक भविष्य की बाते अपने तप और अनुभव के आधार पर देख सकते थे। क्रान्तद्रष्टा थे। सामाजिक सगठन का भयकर शत्रु है – कोर्ट कचेहरी मे मुकदमेबाजी। वहा मैत्री का अत है और जानलेवा शत्रुता का आरम्भ। अत यदि मतभेद उभरते हैं तो उन्हे आपसी विचार विमर्श से सुलझा लेना चाहिए। १६ अगस्त १८८० को मेरठ मे अपना प्रथम स्वीकार पत्र (वसीयतनामा) ऋषिवर ने स्वय हस्ताक्षर करके रजिस्ट्री कराया था और उसके १२वे अनुच्छेद मे स्पष्ट शब्दो मे लिखा

"इस स्वीकार पत्र सम्बन्धी कोई झगडा टटा सामयिक राज्याधिकारियो की कचेहरी मे निवेदन न किया जाय। यह सभा अपने आप न्याय व्यवस्था कर ले। परन्तु जो अपनी सामर्थ्य से बाहर हो तो राज्यगृह मे निवेदन करके अपना कार्य सिद्ध कर ले।"

यहा सभा के अर्थ है परोपकारिणी सभा जो ऋषिवर द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारिणी सभा है।

२७ फरवरी सन १८८३ को उदयपुर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना प्रथम स्वीकार पत्र (मेरठ वाला वसीयतनामा) रद् करके दूसरा और अतिम स्वीकार पत्र लिखा। इसमे अनेक परिवर्तन थे किन्तु कचेहरी मे निवेदन न किया जाय वाला १२ वा अनुच्छेद ज्यो का त्यो रखा। यदि आज के आर्य महर्षि के इस निर्देश को मान ले और पालन करे तो आर्यसमाज की गतिविधियो मे सगठन सूक्त चरितार्थ हो जाये। सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाय तो वह भूला नही कहलाता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह अटूट विश्वास था कि वेद अपौरुषेय है वेद ईश्वरीय ज्ञान है और मानव सृष्टि के आरम्भ मे परम पिता परमात्मा ने मनुष्य मात्र के मार्ग निर्देशन एव कल्याण के लिए वेद प्रकाशित किया। अत ऋषिवर सम्पूर्ण समाज को सगठित करना चाहते थे। यह सगठन सार्वभौमिक होता उद्देश्य चतुष्टय – धर्म अर्थ काम मोक्ष। ऐसी वैदिक व्यवस्था मे विवाद विषाद अर्थहीन हो जाते। वैदिक समाज सगठित करने के लिए ही आर्य समाज बना १८७५ ई० मे और मनुष्य मात्र के लिए बना न कि केवल भारतीय समाज हेतु। उस समय बनाये गये आर्यसमाज के २८ नियमों मे पहला नियम था

"सब मनुष्यो के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है"। २४ जून १८७७ को जब लाहौर (अब पाकिस्तान मे) पजाब मे ऋषिवर के सानिध्य मे आर्यसमाज की स्थापना डॉक्टर रहीम खा के बाग मे हुई तो बम्बई मे बने २८ नियमो का सशोधित रूप आया। वही है आर्यसमाज के दस नियम। आर्यसमाज पुन विश्व सगठन के रूप मे उभर कर ऊपर आया। आर्यसमाज का छठवा नियम है –

"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

आर्यसमाज किसी वर्ग या प्रान्त के लिए नहीं है अपितु मानवमात्र के हित के लिए है। ऋषिवर ने पूर्ण प्रयास करके आर्य समाज को सर्व हितकारी बनाया है। अत इस महान सगठन को सकुचित करना अहितकर होगा।

लार्ड लिटन का दिल्ली दरबार। सन १८७७ ई० भारत भर से राजे महाराजे सज धज कर आए हैं। महारानी विक्टोरिया बनी है – भारत की सम्राज्ञी। हीरे जवाहरात से लदे रजवाडो के बीच है एक आर्य सन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती। विभिन्न मत मतान्तरो के आचार्यो की सभा बुलाई है वेद भाष्यकार दयानन्द ने। उद्देश्य है मानव समाज का सगठन। मार्ग है वेदवाणी। बगाल के आचार्य केशव चन्द्र सेन पजाब के पण्डित अलखधारी अलीगढ के सर सय्यद अहमदखान और ईसाई प्रेस्बीटेरियन मेथोडिस्ट चर्च के हैं रेवरेन्ड स्कॉट। ऋषिवर के निमन्त्रण पर अनेक दिग्गज एकत्र हैं। सगठन सरल नहीं विघटन कठिन नहीं। बिना निर्णय के सगठन यान ठप्प हो जाता है और विधर्मी वेद से वचित रह जाते हैं। ऐसे ही एक बार पहले भी हो चुका था। प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने १८५७ को क्रान्ति के बाद वायसराय के राजपूताना दरबार' मे महाराजा जयपुर को धार्मिक एकता अभियान का नेतृत्व करने के लिए आमन्त्रित किया था। किन्तु काटो की सेज पर कौन सोना चाहता है?

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती सगठन से मुह नहीं मोड सके। उन्होंने बार बार राजपूताना की राह ली। उन्हें सच्चे शिष्य मिले यद्यपि वे गुरु शिष्य के झमेले से सदैव दूर रहे। मेवाड के महाराणा सज्जन सिह वेदमार्ग पर चलने के लिए आगे आये। स्वामी जी के निर्देशित पथ पर चले शाहपुराधीश सर नाहर सिह वर्मा और मसूदा के रावराजा। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने असख्य नर नारी सगठित करके एक और अभियान चलाया गोवश सवर्धन एव गोहत्या विरोध। विश्व के निर्माण मे एक इकाई है भारत। भारत की अर्थ व्यवस्था मे गोवश का योगदान अमूल्य है। स्मरण रहे कि गऊमाता से भारत वशियो का भावनात्मक सम्बन्ध है। अत गोहत्या पर प्रतिबन्ध की माग के औचित्य को देखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण समाज को सगठित करके ब्रिटिश सम्राज्ञी विक्टोरिया को एक करोड हस्ताक्षरो के साथ ज्ञापन देने की योजना बनाई। महर्षि ने अपने शिष्यो के माध्यम से जनता को जोडा। शाहपुराधीश सर नाहर सिह ने ४० ००० हस्ताक्षर कराये। फर्रुखाबाद के आर्य गोपालराव हरि ने ७२००० लोगो के हस्ताक्षर कराये कि गोवध बन्द हो। जयपुर नरेश ने अपने राज्य से गोवश को बाहर ले जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया ताकि अन्यत्र गोवध न हो। उदयपुर के महाराणा सज्जन सिह ने अन्य नरेशो को पत्र लिखकर इस गोवध निरोध के प्रति जागरूकता पैदा की जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिह ने पुष्टि की म्हारी प्रजा १४६११५६ हिन्दू ने १३७११६ मुसलमान या तीन पशु (गाय बैल और भैंस) नहीं मारिया " सगठन सशक्त हो रहा था किन्तु महर्षि के निधन से विराम लग गया।

आर्यसमाज कहीं अलग थलग न पड जाए और अतत बगाल के ब्रह्म समाज समान मूल स्रोत से कट कर निर्जीव न हो जाए इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्यो को विशाल समाज की मुख्य धारा मे रहकर सुधार कार्य करने को कहते थे। विभिन्न प्रान्तो का राजकार्य और शिक्षा माध्यम के बारे मे अग्रेज सरकार ने हन्टर कमीशन का गठन किया। महर्षि ने सभी आर्यसमाजो को पत्र लिखा कि "हिन्दी" भाषा लाने के लिए सगठित अभियान चलाया जाए। हण्टर आयोग को पत्र लिखे जाए और ज्ञापन दिये जाए। इस भाषा अभियान मे आशिक सफलता मिली वह भी सगठन के बल पर।

आर्यसमाज मुरादाबाद के प्रधान मुशी इन्द्रमणि पर इस्लाम पर खडनात्मक पुस्तक लिखने के लिए सरकार ने मुकदमा चलाया। महर्षि के आह्वान पर आर्यजन सगठित हो कर बचाव करने आगे आए। अतत सफलता मिली। हमारे ऋषिवर सामान्य जन की सगठित शक्ति पर भरोसा रखते थे। जब सरकार ने आपके वेदभाष्य को मान्यता नहीं दी तो भी जन जन ने अपनाया। कलकत्ता से लाहौर मुल्तान मुम्बई तक जन साधारण ने वेद भाष्य खरीदे। पुणे मे दलितो ने भी महर्षि को अपने यहा आमन्त्रित करके उन्हे सुना और प्रगति पथ पर चले। महर्षि की शक्ति का स्रोत था सगठन।

– 'उपवन' ६०६ सेक्टर २६, नोएडा – २०१३०३

आर्यसमाज की उपलब्धियां

– डॉ० अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज को यदि सुधार कल्पतरु कहा जाए तो अयथार्थ न होगा क्योकि जिस समय इस सस्था ने जन्म लिया तब देश न केवल परकियो की राजनीतिक दासता के शिकन्जो मे ही जकडा हुआ था अपितु इसकी समाज व्यवस्था अस्त–व्यस्त तो क्या पूर्णतया नष्ट ही हो चुकी थी। इसका स्थानापन्न बन रहीं थीं रूढिया और कुरीतिया। इस राष्ट्र की राष्ट्रीयता अर्थात वेद धर्म तो मानो पूर्णतया ही लुप्त हो चुका था। इतना ही नहीं हमारे धर्म ग्रन्थो के नाम पर मनमाने ढग से विभिन्न ग्रन्थो की रचना की जा रही थी। अत आओ हम महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व की एक–एक विकृति को क्रमश सामने लाते हुए आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात उसका परिवर्तित रूप देखे। इसके पश्चात हम बडी सरलता से यह निर्णय ले सकेंगे कि जो कुछ महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने किया है वह वास्तव मे यथार्थ है अथवा अयथार्थ ग्राह्य भी है अथवा नहीं। इसके साथ ही साथ महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज द्वारा निर्देशित मन्तव्यो को भी एतदर्थ समझना आवश्यक है जो कि इस प्रकार हैं –

१. त्रैतवाद :-

आर्यसमाज तीन सत्ताओ को अनादि मानता है –

(क) ईश्वर – सर्वप्रथम ईश्वर की सत्ता को अनादि सत्ता के रूप मे अगीकार किया गया है। इसके अनुसार सृष्टि की रचना हो अथवा प्रलय की अवस्था हो ईश्वर की सत्ता सदैव एक सी ही रहती है। ईश्वर का स्वरूप आर्यसमाज के दूसरे नियम मे वर्णित है। यह नियम हर ककर के शकर बनने का पर्दाफाश करते हुए यू कहता है ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और सृष्टि कर्ता है। उसी की ही उपासना करनी योग्य है। इससे मूर्तिपूजक भी यह स्वीकार करने लगे कि ईश्वर निर्विकार ही है।

(ख) जीव – इसके विषय मे वेद मे स्पष्ट आदेश है कि जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है किन्तु फल भोगने के लिए ईश्वर द्वारा बनाई गई व्यवस्था के पराधीन है। इसके पूर्व प्राय यह मान्यता थी कि जीव परमात्मा का ही अग है इसलिए वह जो कुछ भी करता है उसके लिए वह उत्तरदायी नहीं है क्योकि वह जो कुछ भी करता है ईश्वर का अग होने के कारण उसकी इच्छा से ही करता है।

(ग) प्रकृति – इसकी तीन अवस्थाए होती है। महा–प्रलय की समाप्ति पर सृष्टि का बनना आरम्भ होता है। इस अवस्था को कृति कहते हैं। ससार की तीनो अवस्थाए ही इसमें विद्यमान हैं। प्रकृति को अद्वैतवादी लोग माया कहते है।

बस यही आर्यों का त्रैतवाद है किन्तु विश्व का कोई भी कार्य इस त्रैतवाद के सिद्धान्त के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। प्रत्येक कार्य के लिए कार्य कारण और कर्ता का होना आवश्यक है इसी से त्रैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है।

(२) वेदज्ञान अपौरुषीय :-

वेदो का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ मे ईश्वर ने मानव–मात्र के लिए दिया जिसे बाद मे चार ऋषियो ने लिपिबद्ध करके ग्रन्थो के रूप मे परिणित किया। उसके अनुसार समूची सृष्टि का निर्माण एक ही समय हुआ। इस प्रकार विकासवाद का सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्तो के अनुरूप नहीं है। आज विदेशो मे भी इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए विकासवादियों का विरोध किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त वैदिक शिक्षा सार्वभौम होने के कारण सर्वत्र एव सदैव एक सी ही रहती है। यह विभिन्नकालो मे विभिन्न स्थानो पर एव विभिन्न दृष्टिकोणो मे भी सदैव एक सी ही रहती है।

आर्यसमाज के मन्तव्यो मे सदा सत्य बोलना बडो की आज्ञा का पालन करना गौ आदि पशुओ की रक्षा करना मास–मदिरा आदि का सेवन न करना आदि वर्णित हैं। यह तो हैं सक्षिप्त रूप मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्य। अब मै ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व की एक–एक परिस्थिति को क्रमश लेता हू और वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने उसके निराकरण के लिए जो कार्य किए उनका उस पर क्या प्रभाव रहा अर्थात आईए अब हम आर्यसमाज की उपलब्धियो से परिचय प्राप्त करे।

आर्यसमाज की उपलब्धियां

(१) स्त्रियों के अधिकार -

मनुस्मृति मे एक स्थान पर आता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमयन्ते तत्र देवता किन्तु महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व भारतीय नारी की अवस्था अत्यन्त हीन हो चुकी थी। इसे घर की दासी पर्दे की रानी पाव की जूती ताडना की अधिकारी आदि अनेको निकृष्टतम पर्यायवाची शब्दो से अलकृत किया जाता था। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने इसके विरुद्ध क्रान्तिकारी पग उठाए और नारी को इस कुटिलता पूर्ण विशेषणो से निकाल बाहर करने के लिए भीषण शखनाद किया। इसका यह परिणाम हुआ कि आज स्त्री को न केवल साधारण शिक्षा ही अपितु वेदादि ग्रन्थो तक की जैसा कि प्राचीन ग्रन्थो मे वर्णित है शिक्षा प्राप्ति के अधिकार प्राप्त हैं। भारतीय नारी पर्दे की ओट से बाहर निकल कर समाज के बडे महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो चुकी है। यहा तक की नारी को आज इतना सम्मान प्राप्त है कि आज किसी भी उत्सवादि के लिए आमन्त्रित करना हो श्रीमती जी के लिए विशेष रूप से स्थान दिया जाता है।

(२) दलितोद्धार :-

महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के आविर्भाव से पूर्व दलित वर्ग की अवस्था अति शोचनीय थी। उन्हे कुओ पर चढने का घुडसवारी करने का जूते पहनने का आदि इसी प्रकार के मानवीय अधिकार भी प्राप्त न थे। अन्य प्रमुख अधिकारो की तो बात ही क्या ? यही कारण था कि भारत को सदियो पर्यन्त पराधीनता की बेडिया पहननी पडी। यही वह कारण था कि हमारे अपने ही शत्रु बन गए। काला पहाड आदि अनेको नामो से हमारा अन्त करने को तत्पर हो उठे किन्तु आर्यसमाज ने उन्हे भीषण सघर्षमय जीवन से निकालते हुए यह घोषणा की कि हम सभी भाई हैं कोई छोटा नही कोई बडा नही। यदि दलित भी वेद पढे तो कर्म के कारण ब्राह्मण भी कहलाने लगेगे ऐसा उन्हे पूर्ण अधिकार होगा। इस प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था को पुन प्रतिष्ठित करने का ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने प्रयास किया। सभी दलित आर्य हो गए और अपने नाम के साथ आर्य शब्द प्रयुक्त करने लगे किन्तु स्वतन्त्र भारत में उन्हे अलग विशेष सुविधाए दी गई उस लालच से उन्हे पुन दलित होने पर बाध्य होना पडा। तो भी आज दलितो और स्वर्णो का सामन्जस्य होता निरन्तर दिखाई दे रहा है। अन्यथा यह रोग तो पूर्णतया नष्ट प्राय हो ही चुका था।

(३) प्राचीन संस्कृति -

इसके नाम से विदेशी लोग जो झूठे ग्रन्थों की रचना कर रहे थे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने उन पर साहित्यिक ढग से और अपनी व्याख्यानमाला के द्वारा ताबडतोड आक्रमण करते हुए उनके झूठ के पोलो का पर्दा जन–साधारण के सम्मुख खोल दिया। इस प्रकार भारतीयो मे जागृति लाकर उन्हे विदेशियो के इस कुचक्र से बचाया।

(४) भारतीय भाषा -

जब भारतीय भाषा अर्थात हिन्दी को फैशन के विरुद्ध मानने लगे थे अग्रेजी और उर्दू का प्रसार हो रहा था। हिन्दी गन्दी भाषा कहलाने लगी थी इसे सडी–गली भाषा कहकर अपमानित किया जाता था ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अथक प्रयास से हिन्दी के लिए किए गए तप और त्याग युक्त परिश्रम ने इसे पुन समृद्ध किया। इसी कारण ही आज हिन्दी के अनेको साहित्यकार प्राप्त हुए हैं जिनके कारण हिन्दी को पुन गौरवपूण स्थान प्राप्त हो सका है। प्रसिद्ध कहानीकार श्री सुदर्शन जी उपन्यासकार मुशी प्रेमचन्द महान कवि व नाटककार जयशकर प्रसाद आचार्य द्विवेदी जी सुमित्रानन्दन पन्त सेठ गोविन्द दास आदि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के कर्त्तव्य से इतना प्रभावित हुए कि प्रो०क्षेमचन्द्र सुमन जी के अनुसार इन्होने इसी समाज की ही प्रेरणा के कारण अपने साहित्य को रचनात्मक क्षेत्र की ओर मोड दिया। गोदान की एक–एक पक्ति ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्यो और सिद्धान्तो का प्रतिपादन करती हुई स्पष्ट करती दिखाई दे रही है। मैथिलीशरण गुप्त की कविताओ मे भारतीय वैभव भी ऋषि दयानन्द की धरोहर से ही प्राप्त हुआ दिखाई देता है। यशपाल आचार्य चतुरसेन प० गणेश विद्यार्थी जेसे हिन्दी साहित्य की महान धरोहर आर्यसमाज द्वारा प्राप्त हुए हैं। हिन्दी की ओर आर्यसमाज द्वारा त्यागपूर्ण सेवाओ के फलस्वरूप ही हिन्दी को भारतीय सविधान सभा ने राष्ट्र भाषा के रूप मे स्वीकार किया है। अब हिन्दी विश्व भाषा की ओर अग्रसर हो रही है। युनेस्को ने अपनी स्थापना के साथ ही इसे विश्व की तीसरी भाषा के रूप मे स्वीकार किया है। आज विश्व के अनेक देशो मे इसे पढने वालो की सख्या मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्रथम हिन्दी विश्व सम्मेलन नागपुर मे इसे विश्व भाषा के रूप मे मान्यता देने के लिए विश्व के अनेक देशो के प्रतिनिधियो ने अनुरोध किया ।

(५) सस्कृत भाषा -

आर्यो की आदि भाषा सस्कृत है। इनके सभी ग्रन्थ मुख्यत सस्कृत मे ही मिलते हैं। इतना ही नही हिन्दुओ का कोई भी ग्रन्थ सस्कृत के प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता। अत ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की सस्कृत साहित्य को देन के विषय मे भुलाया नहीं जा सकता। विश्व मे जितना भी आज सस्कृत का ज्ञान प्राप्त है सब आर्यसमाज के कारण ही जीवित है। अन्यथा सस्कृत भाषा आज लुप्त हो चुकी होती। वास्तव मे सस्कृत ज्ञान के बिना भारतीय सभ्यता और सस्कृति का अध्ययन किया ही नहीं जा सकता। विश्व हिन्दी सम्मेलन मे अनेको विदेशी प्रतिनिधियो ने भी अपने यही विचार व्यक्त किए कि 'हम भारतीय सस्कृति को जानने के लिए हिन्दी पढते हैं किन्तु भारतीय ग्रन्थो का आधिक्य सस्कृत मे होने के कारण सस्कृत का ज्ञानार्जन करना भी आवश्यक हो जाता है।

– शेष पृष्ठ ८ पर

आर्यसमाज एक आन्दोलन है पूजा पद्धति नहीं

– उर्मिला आर्य वानप्रस्थी

१ ७५ मे जब महर्षि दयानन्द ने आयसमाज की स्थापन की थी त आर्यसमाज का एक आन्दोलन क रूप मे स्थापित किया था आयसमाज के दस नियम इसके सक्षी हे कि आयसमाज को इन नियमो के अनुसार अपना अभियान चलाना चाहिए। श्रद्धेय महर्षि दयानन्द ने कोई मन्दिर मठ नहीं बनवाया था चाहते तो वह आर्यसमाज का बहुत बडा मन्दिर बनवा सकते थे ऋषि की एक प्रेरणा से लाखों रु० एकत्रित हो सकता था। दूर दृष्टा ऋषि ने ऐसा नही किया। परन्तु ऋषि के प्रचार–प्रसार से आनन फानन मे पूरे देश म आयसमाजो की स्थापना होती चली गई। ऋषि ने जो आर्यसमाज के दस नियम बनाए आर्यसमाज मे जो भी आया वह इन नियमो को अपनाकर सीधा आय बन गया इसके परिणाम स्वरूप आर्यसमाज ने देश को स्वामी श्रद्धानन्द जैसे कर्मठ सन्यासी प० गुरुदत्त जैसे होनहार युवक प० लेखराम विस्मिल और भगतसिह जैसे वेद भक्त देश भक्त वैदिक दिवाने दिए।

शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी कुवर सुखलाल स्वामी अमर जैसे शास्त्रार्थ महारथी विद्वान दिए जिसके युक्तियुक्त तर्कों से सन्त पोप पण्डित मौलवी पराजय का ही मुह देखते थे। दानवीरता मे भी आर्यसमाज पीछे न रहा। महात्मा हसराज और गगाराम जैसे देशधर्म पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले दानवीर दिए। वास्तव मे आज आर्यसमाज एक आन्दोलन न रह कर एक पूजा पद्धति सी बनकर रह गया है। मन्दिरों मे मूर्ति स्थापित करके अर्चना पूजा करते हैं तो आर्यसमाज मे हम यज्ञ तक सीमित हो गए हे यज्ञ की वही साकार पूजा की भाति आर्यसमाज सीमित बन कर रह गया हैं आर्यसमाज की आज छवि केवल यज्ञ कराने की रह गई है। मन्दिर मे मूर्ति स्थापित करके पूजा करत हैं तो आर्यसमाज मे केवल हम सब यज्ञ तक ही सीमित हा कर रह गए है। यज्ञ की परिपाटी साकार पूजा की भान्ति है यही से ही आयसमाज का उद्देश्य बिकुड गया। आर्यसमाज का उद्देश्य आन्दोलन रूप सर्वथा लुप्त हो गया। बडे–बडे आर्यसमाज के भवन बनाकर बाहर दुकाने कतिपय कई आर्यसमाजो मे बैंक बनाकर आर्यसमाज का उद्देश्य धन कमाना ही रह गया है। जिसमे बनवाने वाली पीढी तो उसका दुरुपयोग चाहे न भी करती हो परन्तु पश्चात आज की पश्चिम की भोगवादी प्रवृत्ति की आधी भ्रष्ट वातावरण वश नई पीढी तो आर्यसमाज की आय का दुरुपयोग ही कर रही है। न्यायालय से मुकदमे हार कर भी इसी आर्यसमाज की लाखों की आय का दुरुपयोग घूसखोरी और मुकदमो मे किया जा रहा है इस रिश्वत के युग मे सत्य स्थापित ही नहीं हाता। राजनियमो की आज्ञा और अवहेलना करके दुश्चरित्र तथाकथित नकली पदाधिकारी बन कर जम कर भवनो पर कब्जा करके बैठे हैं। सच्चे आर्य ऋषिभक्त आज भी हैं परन्तु लगता है इन दुर्दान्तो के आगे वह भी जैसे हार गए हैं। चाहे 'भ्रष्ट उपाय' से ही विपुल धन इकटठा किया हो वह हार कर भी विजयी है। मानवता रो रही है दानवता अटठाहस कर रही है। कब होगा दानवता का हास और मानवता का विकास ? जा धन वेद प्रचार में लगाना चाहिए था वह घूसखोरी मे ओर व्यक्तिगत स्वार्थो में लग रहा है। सर्वविदित है कि स्वामी अग्निवेश इन्द्रवेश और कैलाशनाथ सिह इसी कोटि मे आत हैं फिर भी कतिपय कई विद्वान अथवा सन्यासी भी उनके सहयोगी बने हुए है। क्यों नहीं महर्षि के इस वचन का पालन किया जाता कि 'बलवान अन्यायकारी से भी न डरो परन्तु निर्बल न्यायकारी से भी डरो। इसका हमें उस समय बडा आश्चर्य होता है कि आर्यजगत के अच्छे विद्वान जो साधक कोटि में भी गिने जाते हे ओर लेखनकार्य भी सुन्दर कर लेते हैं। परन्तु उनका भी समर्थन अनाचारी आर्य कहलाने वालो को भरपूर मिल रहा है। साधारण आर्यजन सत्य असत्य को समझ नहीं पाते किसी स्वाथवश या अज्ञानवश इनके सहयोगी बने हैं आज दूर सचार और मीडिया का युग है आज यही जो असत्य को सत्य करने मे धन का खुलकर अपव्यय हो रहा है वही धन विज्ञान के युग मे खर्च करके वैदिक धर्म का प्रबल प्रचार कर सकते हैं। बस आवश्यकता है आज आर्यसमाज को केवल पूजा पद्धति के रूप से हटाकर पहले जैसा आन्दोलन का रूप देने की।

आज के आर्यसमाज के सत्सग का स्वरूप केवल यज्ञ एक ईश्वर भक्ति भजन और प्रवचन आर्यजन स्वाध्यायशील नहीं रहे जैसा भी कोई बोल जाए धन्यवाद की परिपाटी निभाई जाती है।

कतिपय कोई स्वाध्यायशील बीच मे शका करे तो उसको हेय दृष्टि से देखा जाता है और वह प्राय सत्सगों में उपेक्षित भी रहता है। मैं अपनी पीडा आपके पत्र के माध्यम से आर्यजनता तक पहुचाना चाहती हू कि आर्यजन चेते आर्यसमाज को पुन समग्र एक आन्दोलन का रूप दे दे। देश के किसी भी कोने मे कोई अभाव अज्ञान अन्याय और आलस्य की पीडा उभरे सब आयसमाजों का धन और सेवा वहा मिलनी चाहिए। पूरे भारत मे विश्व मे भी सचार साधनो का भरपूर प्रयोग करके जिससे ऋषि के मिशन को वेदप्रचार को बढाया जा सके। यह बडी प्रसन्नता का विषय है कि पूरे भारत मे गुजरात की गाधीधाम की आर्यसमाज अपने इसी वेदप्रचार को आन्दोलन रूप में भरपूर काम कर रही है। वह ऋषि के सपनो की वास्तविक आर्यसमाज है। गाधीधाम के मन्त्री श्री वाचोनिधि जी और उनकी पूरी टीम बधाई की पात्र है। मैंने उनका एक वार्षिकोत्सव देखा है वह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन सा सम्मेलन लगता है। भगवान उन सबको दीर्घायु और सामर्थ्यवान बनावें उनके सुकार्यों का और भी सब अनुकरण करे। वह सब साधुवाद के पात्र हैं। प्रभुकृपा से इस बार सार्वदेशिक के प्रधान केप्टन देवरत्न आर्य बने है। वह सच्चे आर्य आचार्य भीमसेन जी के सुपुत्र हैं। उनके पदचिन्हों पर चलकर ऋषि के मिशन को बढाने में उनसे बहुत आशाए की जा रही हैं जहा भी आर्य नाम रखकर धूर्त अनर्थ का काम कर रहें हैं उनको सही मार्ग पर लावे।

ऋषि दयानन्द जी ने जब आर्यसमाज की स्थापना की थी तो उसके १० नियमों के अतिरिक्त आर्यसमाज रूपी आन्दोलन कैसे चलता रहे उसके नियम और उपनियम महर्षि ने बनाए थे। जब उन नियमो के अनुसार आर्यसमाज का आन्दोलन चलता रहा तब तब आर्यसमाज आगे बढता रहा और मानव जाति का उपकार करता रहा। अब वह ऋषि निर्मित नियम सब ताक मे रख दिए गए हैं। उनको कोई जानता भी नहीं। क्या सार्वदेशिक सभा कोई एसा कठोर प्रबन्ध कर सकती है जिससे भारत की समस्त आर्यसमाजे महर्षि के अनुसार काम करती हुई आर्यसमाज का जो पूजा पद्धति का रूप बन रहा है वह न होकर एक आन्दोलन बन जाए। जिससे आर्यसमाज के दस नियम आर्यो के आचरण मे उतर आए।

– सी० ६५८ सेक्टर बी
लखनऊ उत्तर प्रदेश

महर्षि का अद्भुत ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश'

गताक से आगे

– गजानन्द आर्य

जैसे शरीर मे सिर की आवश्यकता है वैसे ही आश्रम मे सन्यासाश्रम की आवश्यकता है क्योकि इसके बिना विद्या धर्म कभी नही बढ सकता और दूसरे आश्रमो को विद्याग्रहण गृहकृत्य और तपश्चर्यादि का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत कम मिलता है।पक्षपात छोडकर बर्तन्य दूसरे आश्रमो को दुष्कर है। जैसा सन्यासी सर्वतोमुख होकर जगत का उपकार करता है वैसा अन्य आश्रमी नही कर सकता। पचम समुल्लास

एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा सभाधीन राजा राजा और सभा प्रजा के आधीन रहे। षष्ट समुल्लास

जैसे वर्तमान समय मे हम लोग अध्यापको से पढ कर ही विद्वान होते है वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ मे उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियो का गुरु अर्थात पढाने हारा है। क्योकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय मे ज्ञान रहित हो जाते है वैसा परमेश्वर नही होता उसका ज्ञान नित्य है। सप्तम समुल्लास

जैसे दिन के पूर्व रात ओर रात के पूर्व दिन तथा दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन बराबर चला आता है इसी प्रकार सृष्टि के पूर्व प्रलय और प्रलय के पूर्व सृष्टि तथा सृष्टि के पीछे प्रलय और प्रलय के आगे सृष्टि अनादि काल से चक्र चला आ रहा है। इसका आदि व अन्त नही। किन्तु जैसे दिन वा रात का आरम्भ और अन्त देखने मे आता है उसी प्रकार सृष्टि और प्रलय का आदि अन्त होता रहता है। जैसे परमात्मा–जीव–जगत का कारण तीन स्वरूप से अनादि है वैसे जगत की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय प्रवाह अनादि है।" अष्टम समुल्लास

"पवित्र कर्म पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही मुक्ति और अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म पाषाण मूर्तियो आदि की उपासना और ज्ञान से रहित मुक्त नही होता। इसलिए धर्मयुक्त सत्य भाषणादि अधर्म को छोड देना ही मुक्ति का साधन है।" नवम समुल्लास

"धर्म हमारे आत्मा और कर्त्तव्य के साथ है। जब हम अच्छे काम करते है तो उसकी देशदेशान्तरो और द्वीप–द्वीपान्तरो तक जाने मे कुछ भी दोष नही लग सकता। दोष तो पाप के काम करने मे लगता है। हा इतना अवश्य चाहिए कि वेदोक्त धर्म का निश्चय और पाखण्डमत का खण्डन करना अवश्य सीख ले। जिससे कोई हमको झूठा निश्चय न करा सके। क्या बिन देश–देशान्तर और द्वीप–द्वीपान्तर मे राज्य का व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है। दशम समुल्लास

जो उन्नति करना चाहो तो "आर्यसामाज" के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना अब भी पालन हो रहा है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन–मन–धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यवर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवे तो बहुत अच्छी बात है। क्योकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नही। ग्यारहवा समुल्लास

ये पृथिव्यादि भूत जड है उनमे चेतना की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती जैसे माता–पिता के सयोग से देह की उत्पत्ति होती है वैसे ही आदि सृष्टि मे मनुष्यादि शरीरो की आकृति परमेश्वर कर्ता के बिना कभी नही हो सकती। मद के समान चेतना की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता क्योकि मद चेतन को होता है जड को नही। पदार्थ नष्ट अर्थात अदृश्य होने से जीव का भी अभाव नही मानना चाहिए। जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उसकी प्रकटता होती है। जब शरीर को छोड देता है तब यह जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है वह जैसा चेतनयुक्त पूर्व था वैसा नही हो सकता। १२वा समुल्लास

जो पाप क्षमा करने की बात है वह केवल भोले लोगो को प्रलोभन देकर फसाना है। जैसे दूसरे के लिए मद्य भाग और अफीम खाए का नशा दूसरे को प्राप्त नही हो सकता वैसे ही किसी का किया पाप किसी के पास नही जाता किन्तु जो करता है वही भोगता" है यही ईश्वर का न्याय है। यदि दूसरे का किया पाप–पुण्य दूसरे को प्राप्त होवे अथवा न्याया धीश स्वय ले ले वा कर्त्ताओ ही को यथायोग्य फल ईश्वर न देवे तो वह अन्यायकारी हो जावे। १३वा समुल्लास

"भला खुदा ने हुक्म दिया कि हो जा तो हुक्म किसने सुना ? और किसको सुनाया ? और कौन बन गया ? किस कारण से बनाया ? जब यह लिखते है कि सृष्टि के पूर्व सिवाय खुदा के कोई भी दूसरी वस्तु न थी तो यह ससार कहा से आया ? बिना कारण से कोई भी कार्य नही होता तो इतना बडा जगत कारण के बिना कहा से हुआ ? यह बात केवल लडकपन की है।" १४वा समुल्लास

जो मत–मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगडे है उनको मै प्रसन्द नही करता क्योकि इन्ही मत वालो ने अपने मतो का प्रचार कर मनुष्य को फसा के परस्पर शत्रु बना दिए है। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर सबसे सबको सुख लाभ पहुचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनो की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल मे शीघ्र प्रवृत्त हो जावे। जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके उन्नत और आनन्दित होते रहे। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश

– १६ बालीगज सर्कुलर रो कोलकाता – १

महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान का नामकरण सम्पन्न

सी०बी०डी० बेलापुर स्थानिक सेक्टर ५ मे एक उद्यान का नामकरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान के नामकरण के अवसर का एक दृश्य

दिनाक १/२/२००२ को प्रात काल के समय प० विजयपाल शास्त्री जी के मत्रोच्चार के साथ नवी मुम्बई के महापौर श्री सजीव नाईक एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नई मुम्बई के उपमहापौर श्री अनिल कौशिक मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य महामन्त्री श्री मिठाई लाल सिह स्थानिक नगर सेवक सर्वश्री डॉ० जयाजी नाथ अशोक गुरखे निलेश म्हात्रे शकुतला महाजन विट्ठल मोरे गुलजार सिह गोराया शिवनाथ बागले मदन विचारे टी० एम० थोमस लखानी ग्रुप के श्री विजय लखानी पजाब एसोसिएशन के चेयरमैन श्री सरोज शर्मा मत्री श्री शक्ति चद नागरिक सेवा समिति के केसर सिह आदि गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

धार्मिक, राजनीतिक एवं वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें

पृष्ठ ५ का शेष भाग

आर्यसमाज की उपलब्धियां

(६) बाल विवाह और बहु-विवाह -

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व बाल–विवाह व बहु–विवाह प्रथा अपने यौवन पर थी। मुस्लिम युगीन भयकर प्रताडना से प्रताडित हिन्दू समाज को बाल–विवाह प्रथा के लिए बाधित होना पडा पर्दा करना अगीकार करना पडा। यही प्रथाए बाद मे रूढियो के रूप मे परिणित हुई। बहु–विवाह भी समाज मे एक भयकर विषधर बनकर सामने आया। इससे न केवल जातीय नस्ल का ह्रास हुआ अपितु बाल–विधवाए भी जीवन पर्यन्त तडपती मिलती थीं। आर्यसमाज की गतिविधियो से ही आज बहु–विवाह की प्रथा राजकीय विधि द्वारा समाप्त हो चुकी है और बाल–विवाह भी आज लगभग समाप्त हो चुका है। दहेजादि की कुपरम्पराओं के विरुद्ध भी आज आर्यसमाज द्वारा लडाई लडी जा रही है।

(७) आर्थिक व्यवस्था का ह्रास -

कर्म के प्रति निरादरता के कारण भी अर्थ व्यवस्था नष्ट हो रही थी। अनाथ और विधवा समस्या भी जटिलतर हो रही थी। आर्यसमाज ने अनाथालयो के माध्यम से इन्हें विधर्मी होने से बचाया और कर्म के प्रति आदर भाव पैदा किया।

(८) विधवा उद्धार -

विधवा समस्या समाज के सर्वनाश का कारण बन रही थी। दो–दो और चार–चार वर्ष की विधवाए रोती फिरती थीं। आर्यसमाज ने जो बाल–विवाह के विरुद्ध और विधवा विवाह के पक्ष मे बिगुल बजाया इसे सुन कर बाल–विवाह बन्द होने से बाल विधवाए कम होने लगीं और पुनर्विवाह की प्रथा ने तो इस कोढ को समूल नष्ट ही कर दिया।

(९) स्त्री शिक्षा -

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व स्त्री की अवस्था का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। उन्हे शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से भी वचित कर दिया गया था। आर्यसमाज ने समाज के विरोध की चिन्ता किए बिना स्त्री शिक्षा के लिए भीषण नाद निनादित किया। इसी का ही परिणाम है कि आज स्त्री शिक्षा का समुचित प्रबन्ध है। विवाह सम्बन्ध स्थापित करते समय भी सर्वप्रथम शिक्षा की जानकारी ली जाती है।

(१०) शुद्धि -

हमारी जातीय त्रुटियो के कारण जो लोग विधर्मी हो गए थे उन्हे पुन अपने धर्म मे वापस लौटा लाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि चक्र चलाया उससे जाति को काफी बल मिला। नए लोगो को धर्म छोडने से रोका गया और विधर्मी हुए भाईयो को पुन आर्यत्व को दीक्षा मे दीक्षित किया जाने लगा। इसी दृष्टिकोण को आर्यों ने जीवन का सम्बल बनाकर काफी कार्य किया तथा आज भी इस क्षेत्र मे कार्य किया जा रहा है। पिछले दिनो आर्य युवक समाज अबोहर तथा आर्यसमाज गिदडबाहा द्वारा की गई शुद्धि भी इसी श्रृखला की एक कडी है। केरल वैदिक मिशन हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा भी काफी काम हो रहा है।

(११) स्वाधीनता का पक्ष -

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व देश पराधीनता की भयकर सीखचो से बुरी तरह जकडा हुआ था। किसी को भी स्वाधीनता पूर्वक विचरण करने का साहस नहीं हो पाता था। महर्षि दयानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी महामानव थे जिन्होने ऐसी विषम परिस्थिति मे भी यह सिहनाद किया कि "अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य एक गन्दे से गन्दे किन्तु स्वदेशी राज्य से भी गन्दा है।" इसी उद्देश्य को ही मध्यदृष्टि रखते हुए ऋषि दयानन्द उनके गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द एव उनके गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी ने स्वाधीनता सग्राम की बागडोर अपने हाथो मे ली और १८५७ के प्रथम स्वाधीनता सग्राम के लिए यह त्रिमूर्ति घूम–धूमकर सैनिक छावनियोऔर रजवाडो मे वातावरण तैयार करने लगी। इसके पश्चात भी शान्ति तथा क्रान्ति से स्वाधीनता सग्राम लडने वाले अर्थात गाधीवादी और क्रान्तिकारी दोनो प्रकार के ही स्वाधीनता सेनानियो मे ६५प्रतिशत से भी अधिक ऋषि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज से ही प्रेरित थे। अत इनकी इस देन को झुठलाया नहीं जा सकता। शहीद भगत सिह चन्द्रशेखर आजाद प० रामप्रसाद बिस्मिल ठाकुर रोशन सिह अशफाक उल्ला खा श्याम जी कृष्ण वर्मा लाला हरदयाल करतार सिह सारबा भाई परमानन्द आदि सभी के सभी लाला लाजपत राय महात्मा मुशीराम स्व० लाल बहादुर शास्त्री महात्मा गाधी आदि ये तो सीधे ही आर्यसमाजी थे या फिर आर्यासमाज से बल मिला था। इस प्रकार यह आन्दोलन ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की ही देन था।

अमृतसर मे गुरु के बाग के मोर्चे की विजय भी आर्यसमाज के ही कारण हुई क्योकि जब यह आन्दोलन असफल होता दिखाई दिया तो इसकी बागडोर आर्यसमाजी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने हाथो मे लेकर मोर्चे को सफल करने का श्रेय प्राप्त किया। इसी कारण ही अमृतसर गुरुद्वारे मे स्वामी जी का चित्र लगाया गया किन्तु अकालियो ने अपनी धर्मान्धता के कारण उनका चित्र हटवा दिया। तो भी ऐतिहासिक तथ्यो को झुठलापाना उनके लिए भी सम्भव न हो सका। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को कोई भुला नहीं सकता। सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन अपने प्रकार का अद्वितीय आन्दोलन था। मलेरकोटला मे सनातनी मन्दिर की रक्षा के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का पहुचना बिडला मन्दिर की रक्षा में आर्यसामज का सहयोग कोई भुला नहीं सकेगा। कश्मीर के भारत मे विलय का कारण भी वहीं के एक आर्य नेता श्री मेहरचन्द्र जी महाजन थे। गाधीजी के नाम के साथ महात्मा लगने का कारण भी स्वामी श्रद्धानन्द जी अर्थात आर्यसमाज ही था अन्यथा आज गाधी को महात्मा के रूप मे कोई न जानता।

(१२) गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार तथा डी ए वी सस्थाओ के माध्यम से एक मिश्रित शिक्षा पद्धति भी आर्यसमाज की एक महत्त्वपूर्ण तथा अनूठी देन है।

(१३) श्राद्ध–तर्पण आदि के विरोध द्वारा भी आर्यसमाज अधविश्वासी जनता के भ्रम का निवारण करने मे काफी सहयोगी सिद्ध हुआ। सभी समझने लगे हैं कि श्राद्ध–तर्पण के नाम पर जीवित माता–पिता की ही सेवा करनी चाहिए।

(१४) शराब मास आदि अभक्ष्य पदार्थो के सेवन का विरोध करते हुए उसके प्रयोग से होने वाली हानिया भी विश्व मच पर उभर रही है।

(१५) गो–रक्षा का अभियान तो आर्यसमाज का एक महत्वपूर्ण अभियान है। इसके लिए पराधीन युग मे भी महर्षि दयानन्द ने हस्ताक्षर अभियान चलाया था और लाखो की सख्या मे हस्ताक्षर भी करवाए थे।

(१६) आर्य समाज ने लोगो को अपनी प्राचीन गौरव–गरिमा का स्मरण दिलाया। सास्कृतिक सम्पदा से परिचय कराया। जाति मे आत्मविश्वास पैदा किया। स्वदेशी प्रयोग का उपदेश दिया। सगठित शक्ति का महत्व और प्रजातान्त्र पद्धति पर सगठन की शिक्षा दी।

(१७) सुराज्य ही स्वराज्य का विकल्प नहीं इसका उद्घोष सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने ही किया।

(१८) सभी क्षेत्रो के लोगो के लिए प्रचुर मात्रा मे साहित्यिक सामग्री प्रदान की।

(१९) आर्यसमाज ने इतने शहीदो और देश भक्तो को जन्म दिया कि इनका एक ताता सा ही लग गया। आर्य समाज के अतिरिक्त विश्व इतिहास मे इतनी सख्या मे शहीद पैदा करने वाली और किसी जाति का नाम ही नहीं मिलता। इसके जीवित शहीदो की भी गिनती कर पाना असम्भव सा ही है। यह आज आर्य समाज के सगठन की स्पर्धा का ही विषय बना हुआ है।

(२०) "भ्रमवश आर्य समाज को अनेकों राजकीय व अराजकीय परीक्षाओं मे से गुजरना पडा। इसकी नींव सत्य पर आधारित है। अत सभी मे विजयी रहा।" पटियाला का केस हैदराबाद का धर्मयुद्ध सिन्ध का सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, मलेरकोटले का आन्दोलन आदि इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

(२१) देश पर अनेक बार कई प्रकार की आपदाए आई। इन आपदाओ के समय आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने तन–मन–धन से सेवा की। पिछले दिनों उडिसा में आए भीषणतम तूफान व गुजरात मे आए भूकम्प के अवसर पर आर्यसमाज आर्यवीर दल व वैदिक सेवाश्रम के कार्यकर्ताओ ने दिन–रात एककर पीडितो की न केवल भोजन वस्त्र बिस्तरो व औषधियो से ही सेवा की अपितु गले–सडे दुर्गन्ध मारते शवो को भी ठिकाने लगाया। ऐसे सेवा कार्यो मे मेरा बेटा अरुणेश आर्य भी सम्मिलित था।

इन सबसे आर्यसमाज ने विभिन्न क्षेत्रो मे क्या किया आज क्या कर रहा है और इन सब कृतियो का क्या प्रभाव हुआ इन सबका निर्णय आप स्वय ही करे ? इस ग्रन्थ की समापन्नता से पूर्व आर्यसमाज के प्रति कुछ देशी व विदेशी लोगो के उद्गारो का वर्णन भी आवश्यक हो जाता है।

थियोसाफीकल न्यूज एण्ड नोटस जून १९५५ – "आर्यसमाज नैतिक मूल्यो शान्तिवाद शाकाहार और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य पर आश्रित समाज निर्माण का पोषक है।"

एनी बेसेन्ट "आर्यसमाज और थियोसाफिकल सोसायटी के प्रचार से श्वेत जाति की वरीयता के विश्वास का उन्मूलन हुआ।"

महात्मा गाधी "स्वामी दयानन्द जी ने तो मूल्यवान निधिया छोडी है अस्पृश्यता का स्पष्ट विरोध नि सन्देह उनमे एक निधि है।"

जवाहर लाल नेहरू "आर्यसमाज ने लडके और लडकियो की शिक्षा के प्रसार स्त्रियो की दशा के सुधार और दलितोद्धार का बहुत अच्छा कार्य किया है।"

लाला लाजपत राय "आर्यसमाज मेरी माता है।"

सर सीता राम "आर्यसमाज के कुछ अनुयायियो ने बाद मे जिस ढग को अपनाया उसके कुछ अश से हमारा मतभेद हो सकता है परन्तु समष्टिगत रूप मे आर्य समाज ने शिक्षा और समाज सुधार जनहित के लिए त्याग और बलिदान की दिशा मे अग्रणी के रूप में कार्य किया।"

मोहनलाल मेहता, उदयपुर "आर्यसमाज ने उस महान सुधार का मार्ग बनाया है जिसकी अपने नैतिक और आध्यात्मिक महत्ता के उच्च स्थानों की पुन प्राप्ति के लिए भारत प्रतीक्षा करता रहा था और उसके सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को आधुनिक भारत की अगली पक्ति में स्थान प्राप्त है।"

– आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली

(हरि०) - १२५१०४

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का "पुरस्कार समारोह सम्पन्न"

रविवार दिनाक १० फरवरी २००२ को आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह आर्यसमाज के विशाल सभागृह मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

प्रथम चित्र मे वेद वेदाग पुरस्कार प्राप्तकर्ता प० राजवीर जी शास्त्री मध्य मे दिखाई दे रहे श्री वेदप्रकाश जी गोयल (केन्द्रीय जहाज रानी मन्त्री भारत सरकार) स्वर्ण ट्राफी प्रदान करते हुए कैप्टन देवरत्न आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) एवम डॉ० भालचन्द्र मुणगेकर (कुलकुरु मुम्बई विद्यापीठ)। दूसरे चित्र मे श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार" प्राप्तकर्त्ता कुमारी सुनेश आर्या श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" से सम्मानित आचार्या कमला जी "वेदोपदेशक पुरस्कार" से सम्मानित प० उत्तम चन्द जी शरर (पानीपत हरियाणा) समारोह अध्यक्ष आर्य नेता कैप्टन देवरत्न जी आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) "बाल पुरस्कार" से पुरस्कृत ब्र० ऋषि कुमार शुक्ल "वेद वेदाग पुरस्कार" प्राप्तकर्ता प० राजवीर जी शास्त्री (दिल्ली) आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव जी शास्त्री श्री ओंकारनाथ जी आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई) एवम श्री यशप्रिय आर्य (महामन्त्री आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई)।

समारोह प्रात १० बजे माननीय कै० देवरत्न आर्य जी प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के विद्वान धर्माचार्यों द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ–साथ मच पर मुख्य अतिथि डॉ० भालचन्द्र मुणगेकर कुलगुरु मुम्बई विद्यापीठ श्री वेदप्रकाश जी गोयल केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री भारत सरकार विशिष्ट अतिथि श्री ओकारनाथ जी आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई का आगमन हुआ। पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्वद्जनो को पुष्प वृष्टि के साथ मच पर लाया गया। श्रीमती स्नेहपुरी जी के सुन्दर सुमधुर भजन हुए। आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव जी शास्त्री ने अभ्यागत महानुभावो का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए अतीव प्रसन्नता व्यक्त की। पुरस्कार परिचय महामन्त्री श्री यशप्रिय जी आर्य ने दिया।

सर्वप्रथम श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार" से ब्र० ऋषि कुमार शुक्ल गुरुकुल अयोध्या को प्रथम पुरस्कार स्वरूप रु० ५,००१/– तथा सुश्री सुनेश आर्या कन्या गुरुकुल चोटिपुरा को पुरस्कार स्वरूप रु० ५,००१/– शाल मोती माला ट्राफी भेट कर सम्मानित किया गया। इसी क्रम मे श्रीमती यशबाला गुप्ता ने आर्य विदुषी आचार्या कमला जी आर्या कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" से आचार्य कमला जी आर्या हाथरस को रु० ११००१/– की थैली स्वर्ण ट्राफी शाल श्रीफल एव मोती माला से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आचार्या कमला जी आर्या ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की महान कृपा है कि नारी आज शिक्षा के क्षेत्र मे प्रगति कर रही है। और एक नारी की शिक्षा एक परिवार की एक समाज एव एक राष्ट्र की शिक्षा है। आचार्या कमला जी ने अपनी पुरस्कार मे प्राप्त राशि को गुरुकुल मे दान देने की घोषणा करके अपने समर्पित जीवन को प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात श्री विश्वभूषण जी आर्य ने प० उत्तम चन्द जी शरर का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। वेदोपदेशक पुरस्कार" से प० उत्तम चन्द शरर को रु० १५,००१/– की थैली स्वर्ण ट्राफी शाल श्रीफल एव मोतियो की माला से सम्मानित किया गया।

इस उपलक्ष्य मे प० उत्तमचन्द्र शरर ने अपने वक्तव्य मे कहा कि – मै आभारी हू आप सभी का आप सभी ने मुझे सम्मानित कर महर्षि के आदर्श व सिद्धान्तो को सम्मानित किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनेक गुणो की छन्द बद्ध रूप मे किए हुए कविता पाठ को श्रोताओ को सुनाकर मन्त्र मुग्ध कर दिया। तत्पश्चात डॉ० सोमदेव शास्त्री प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने प० राजवीर जी शास्त्री (सम्पादक दयानन्द सन्देश दिल्ली) का जीवन परिचय दिया। वेद वेदाग पुरस्कार से प० राजवीर जी शास्त्री को रु० २५,००१/– की थैली स्वर्ण ट्राफी शाल श्रीफल एव हार से सम्मानित किया गया। इस सम्मान के अवसर पर प० राजवीर जी शास्त्री ने कहा कि मैं आर्यसमाज का प्रहरी हू व कलम का सिपाही हू। ऋषि के मिशन को आगे बढाते रहने की दृढ प्रतिज्ञा है। आपका ह्रदय से आभारी हू। आर्यसमाज सान्ताक्रुज का यश चारो ओर फैले इस प्रकार की कामना करता हू।

मुम्बई विद्यापीठ के कुलगुरु श्री डॉ० भालचन्द्र मुणगेकर जी का जीवन परिचय आर्यसमाज के मन्त्री श्री सगीत आर्य ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात डॉ० भालचन्द्र जी ने अपने भाषण मे कहा कि यह ऋषि दयानन्द की देन है कि आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के निमित्त गुरुकुलीय शिक्षा के अन्तर्गत कार्यकर रही किसी महिला को सम्मानित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी श्रृखला मे श्री मिठाईलाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने श्री वेदप्रकाश जी गोयल केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री भारत सरकार का जीवन परिचय दिया। तत्पश्चात माननीय श्री मन्त्री जी ने कहा कि परिवर्तन काल के सर्वश्रेष्ठ नेता स्वामी दयानन्द जी सरस्वती थे मेरा सौभाग्य है कि मैं आज आर्य समाज सान्ताक्रुज के पुरस्कार समारोह मे उपस्थित हू। आर्यसमाज देश के कोने–कोने मे है तथा श्रेष्ठ आर्य प्रतिनिधियो द्वारा राष्ट्र निर्माण का कार्य जारी है।

विशिष्ट अतिथि के पद से बोलते हुए माननीय श्री ओकारनाथ आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने कहा कि आर्य शिक्षण सस्थाए देश की उत्थान की दिशा मे सतत सक्रिय है। हमे अपने गुरुकुलो की ओर विशेष ध्यान देना होगा। तत्पश्चात श्री यशप्रिय आय ने समारोह के अध्यक्ष आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य का परिचय दिया। माननीय कै० देवरत्न जी आर्य ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे अनेक भावी कार्यक्रमो को उजागर करते हुए शास्त्र शस्त्र व शुद्धि के त्रिसूत्रिय कार्यक्रम को सफल बनाने का अपना सकल्प दुहराते हुए सभी से सहयोग की अपील की तथा आगामी होलिकोत्सव पर छुआछूत के भेदभाव को मिटाकर "मिलन पर्व" के रूप मे मनाने का आह्वान किया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पदाधिकारियो ने आमन्त्रित मुख्य अतिथि विशेष अतिथि एव प्रतिष्ठित विद्वानो को शाल श्रीफल से सम्मानित किया। विभिन्न आर्य सस्थाओ के द्वारा आए अनेकप्रतिनिधियो ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओ को फूलमाला से सम्मानित किया।

अन्त मे डॉ० सोमदेव जी शास्त्री प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। तत्पश्चात शान्तिपाठ एव जयघोष हुआ। प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

– यशप्रिय आर्य महामन्त्री

आर्यसमाज सरोजनी नगर, नई दिल्ली में
बसन्त मेला-धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के तत्वावधान मे आर्यसमाज सरोजनी नगर नई दिल्ली मे धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह तथा बसन्त मेला रविवार १७ फरवरी २००२ को बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रात काल ८ ३० से ६ ३० बजे गए जिसकी सयोजिक श्रीमती अनीता कपिला स्कूल की प्रिसीपल थी। सभी ने इस कार्यक्रम की बडी सराहना की। श्री अशोक सहदेव जी ने अपने पिता स्व० रतनलाल सहदेव की स्मृति मे प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी बच्चो को स्मृति चिन्ह पुस्तके व आर्या पूर्व महापौर श्री वेदव्रत शर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मन्त्री सार्वदेशिक सभा श्री बनारसी सिह पत्रकार श्री रामनाथ सहगल मन्त्री डी एवी प्रबन्धक समिति ने अपने विचार रखे और श्री सोहनलाल पथिक ने प्रभावशाली कविता प्रस्तुत की।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का स्वागत करते हुए श्री कृष्ण लाल सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली सभा तथा श्री देशराज बुद्धिराजा प्रधान आर्यसमाज सरोजनी नगर श्री रोशनलाल गुप्त महामन्त्री हकीकत राय समिति मचस्थ अन्य गणमान्य व्यक्ति।

तक श्री रामानन्द आर्य जी द्वारा बृहद् यज्ञ कराया गया। साढे नौ से दस बजे तक श्री सोहनलाल पथिक (पलवल वाले) के मनोहर भजन हुए। १० से १२ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिकस्कूल के बच्चो द्वारा हकीकत राय पर ड्रामा व बसन्तोत्सव के उपलक्ष्य मे बहुत सुन्दर सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए नकद ईनाम दिया। १२ बजे से १ ३० बजे तक श्रद्धाजलि सभा श्री कृष्णलाल सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजो के लोग व सरोजिनी नगर की जनता हजारो की सख्या मे सम्मिलित हुई। श्रद्धाजलि सभा मे श्रीमती शकुन्तला

अन्त मे श्री कृष्णलाल सिक्का प्रधान सभा ने सबका धन्यवाद किया। मच सचालन श्री रोशनलाल गुप्ता महामन्त्री अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति न किया। इसे कार्यक्रम पश्चात बहुत सुन्दर ऋषि लगर का प्रबन्ध किया गया।

– रोशन लाल गुप्ता उपप्रधान

एक ईसाई पास्टर (ईसाई प्रचारक) एव उसके साथ २५ ईसाइयो ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे धर्मरक्षा महाभियान को उस समय एक अच्छी सफलता मिली जब ३० जनवरी को नवापारा जिले के खरियार क्षेत्र के दो ग्रामो के ५ ईसाई परिवारो के २५ लोगो ने अपने मुखिया ईसाई प्रचारक व पास्टर श्री रथिराम बाग के साथ श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण कर यज्ञ मे आहुति देकर वैदिक धर्म को ग्रहण किया। इसके पहले इन्होने वैदिक धर्म ग्रहण करने की मजिस्ट्रेट से अनुमति भी ले ली थी। इस अवसर पर उस क्षेत्र के अनेक प्रभावशाली सज्जन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सचालन श्रीविशिकेसन जी शास्त्री ने किया। दीक्षा लेने वाले लोगो को आशीर्वाद देने के लिए श्री गुरदयाल जी साधक श्री ईश्वर चन्द्र जी पटेल श्री दाशरथी माझी श्री सुशात कुमार विशि आदि उपस्थित थे। इन्हे तैयार करने के लिए हेमराज जी शास्त्री व श्री पीताम्बर प्रसाद आर्य का विशेष पुरुषार्थ रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी भी उपस्थित थे। उन्होने दीक्षितो को सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तक भेट की।

– सुदर्शनाचार्य उपमन्त्री उ० आर्य प्रतिनिधि सभा

जन्मा एक बालक सुखदाई

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जब कदम कदम पर घोर अविद्या ने
डाला था डेरा–छाया चहु ओर अधेरा।
जब देश के कोने कोने मे करता
पाखण्ड बसेरा–छाया चहु ओर अधेरा।
भारत मे उस समय निरन्तर थी कुप्रथा जारी।
स्त्री और शूद्र नही थे विद्या पढने के अधिकारी।।
भेद भावनाओ ने सब आशाओ पर पानी फेरा।।१।।
छाया चहु ओर अधेरा।
बाल वृद्ध बहु विवाह सती प्रथा का चालो चलन था।
ऊच नीच और छुआछूत मे जकडा हुआ वतन था।।
२२ वर्ष की कन्या को व्याहे पचपन साल बुढेरा।।२।।
छाया चहु ओर अधेरा।
बनी हुई तिरस्कृत पशुसम जग मे नारी जाती।
पुन विवाह नहीं होते विधवा रोती चिल्लाती।।
विधवा दीन अनाथ रात–दिन पाते कष्ट घनेरा।।३।।
छाया चहु ओर अधेरा।
सम्वत अट्ठारह सौ इक्यासी फाल्गुन की दशमी आई।
टकारा गुजरात प्रान्त मे जन्मा एक बाल सुखदाई।
कर्षन जी के घर आगन खुशियो का रग बखेरा।।४।।
छाया चहु ओर अधेरा।
जन्मा मूल नक्षत्र मूल शकर शुभ नाम धराया।
यही मूलशकर बालक ऋषि दयानन्द कहलाया।
दूर अधेरा हुआ देश मे लाया सुखद सवेरा।।५।।
चहु ओर खुशियो का रग बखेरा।।

– १५, हनुमान रोड नई दिल्ली – ११०००१

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् सैक्टर-६ का ३३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम सैक्टर ६ का ३३वा वार्षिकोत्सव बडी धूम–धाम से १० फरवरी २००२ (रविवार) को ८ बजे से १ बजे तक सम्पन्न हुआ। प्रात ८ बजे से ६ बजे तक हवन के पश्चात श्री विजय भूषण जी का वाद्ययन्त्र पर भजनोपदेश हुआ। तत्पश्चात पाच (१५ से २० वर्षीय) बच्चो की आर्यसमाज के द्वितीय नियम ईश्वर के विभिन्न नामो की व्याख्या पर एक प्रतियोगिता श्रीमती अनिता चोपडा (मुख्याध्यापिका डी०ए०वी० स्कूल) की देखरेख में हुई। बाद में उन्ह श्रेणी के अनुसार उत्तम पुरस्कार भी वितरण किए गए।

मुख्य अतिथि व उच्च कोटि के विद्वान श्री सोमपाल(सदस्य योजना आयोग) के साथ डॉ० महेश विद्यालकार व आचार्य श्याम देव शास्त्री ने अपने-अपने विचार रखे।

आर्यसमाज के पदाधिकारियो ने आर०के० पुरम् के विभिन्न सैक्टरो के आसपास की कालोनियो जैसे सोमविहार आराधना कालोनी व निवेदिता कुन्ज आदि मे व्यक्तिगत रूप से जाकर व दूरभाष पर सम्पर्क स्थापित कर विभिन्न हिन्दु समुदायो के परिवारो को निमन्त्रित किया व एक बहुत बडे जनसमुदाय को एकत्र करने मे सफल हुए।

उच्च कोटि के वैदिक विद्वानों के विचार सुनकर पूरा जन समुदाय भाव विभोर हो उठा और उनमे से अधिकतर परिवार जो बिल्कुल आर्य विचारधारा से अनभिज्ञ थे विचार बनाकर गए कि वे आर्यसमाज द्वारा आयोजित प्रत्येक साप्ताहिक सत्सगो मे आएगे और अपने परिवारो मे भी सत्सग रखवाने का प्रयत्न करेगे।

अन्त मे बडी श्रद्धापूर्वक लगभग ५५० लोगो ने ऋषि लकर ग्रहण किया और पदाधिकारियो को भावी उत्सवो को और उत्कृष्टता पूर्वक मनाने की प्रेरणाए देकर व उत्साह वर्धन कर यह वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। — *रणबीर सिह प्रधान*

सत्यार्थ प्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता-2002 के परिणाम घोषित

उदयपुर श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता–२००२ के परिणाम आज न्यास अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने घोषित किए। प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमश रामकृष्ण आर्य कोटा प० राधेश्याम जागिड भीलवाडा व इन्द्रजीत देव यमुनानगर को प्राप्त हुए। उक्त प्रतियोगिता के सयोजक श्री अशोक आर्य ने बताया कि "ईश्वर व वेद विषय मे महर्षि दयानन्द द्वारा उदघाटित सत्य विषय पर आधारित इस अखिल भारतीय प्रतियोगिता मे देश के कोने–कोने से विद्वानो की ४५ प्रविष्टिया प्राप्त हुई। प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार विजेताओ को नवलखा महल उदयपुर २६ से २८ फरवरी मे आयोजित होने वाले सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर दिनाक २८ फरवरी को प्रात काल क्रमश ३१००/– २१००/– १५००/– रुपये व प्रमाणपत्र से पुरस्कृत किया जाएगा। श्री आर्य ने बताया कि उक्त तीनो पुरस्कारो के अतिरिक्त १००–१०० रुपये के सात सात्वना पुरस्कार भी दिए जाएगे। सात्वना पुरुस्कार विजेताओ के नाम क्रमश सर्वश्री मूलाराम आर्य (उदयपुर) मुनीन्द्र सिह भाटी (उदयपुर) आचार्य भगवानदेव चैतन्य (मण्डी) मोहन प्रसाद जी शास्त्री (बकरी दोआ) आचार्य अभय वेदार्य (आमसेना) सुश्री सुबोध बाला गुप्ता (बीकानेर) व श्री देवी (हरदोई) है।

— *अशोक आर्य*
सयोजक प्रतियोगिता

गायत्री मन्त्र प्रखर बुद्धि प्रदाता — तत्वबोध सरस्वती

हार्दिक भाव से गायत्री मन्त्र के जाप से मनुष्य की बुद्धि निर्मल और प्रखर होती है। यह बात श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा प्रतिमाह के प्रथम रविवार को आयोजित होने वाले वैदिक पारिवारिक सत्सग के अवसर पर दिनाक ३/२/२००२ को न्यास अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने मुख्य वक्ता के रूप मे कही। उन्होने कहा कि जिस मन्त्र को गायत्री मन्त्र कहा जाता है व गुरु मन्त्र है तथा चारो वेदो मे इस मन्त्र का समावेश है। आज गायत्री की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा अर्चना की जाने लगीहै। जो सर्वथा अनुचित है क्योकि गायत्री कोई देवी नहीं अपितु छन्द है जिसका प्रयोग इस मन्त्र मे किया गया है।

आर्यो के सभी कार्यक्रम वैदिक यज्ञ से आयोजित होते हैं। अत यज्ञ के उपरान्त डॉ० अमृतलाल तापडिया के सयोजन मे सत्सग का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर सर्व प्रथम वानप्रस्थी मुनि श्री नौबत राम जी ने प्रभु भजन के माध्यम से बताया कि भौतिक शरीर व सृष्टि नश्वर है अत प्रभु भक्ति ही उचित व आवश्यक है। नवोदित बाल कलाकार श्री वीरेन्द्र राठौर ने **उठो दयानन्द के सिपाहियो समय पुकार रहा है।** महर्षि महिमा का भजन प्रस्तुत किया इसके अतिरिक्त श्री भवानीदास आर्य ने आधुनिक दशा पर आधारित **भगवान बता इस भारत का भविष्य भला क्या होगा ?** काव्य पाठ प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर न्यास प्रवक्ता मुनीन्द्र सिह भाटी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "ईश्वर का प्रत्यक्ष न होने के कारण आज की युवा पीढी उसका अस्तित्व स्वीकार करने मे आपत्ति प्रकट करती है।" उन्होने कहा कि "ईश्वर कोई भौतिक वस्तु नहीं जिसका प्रत्यक्ष भौतिक इन्द्रियो द्वारा किया जा सके वह तो विभु (निराकार) रूप होने के कारण चिन्तनीय (ध्यानयोग्य) है। उसका केवल मानस (अन्त) प्रत्यक्ष ही सम्भव है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के दूसरे नियम मे ईश्वर के जिन विशेषताओ का उल्लेख किया है उन्हे स्वीकार कर लेने पर अनेक सामाजिक अपराधो व समस्याओ का समाधान स्वत सम्भव है।

अत मे विश्व शान्ति की कामना से शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम को विराम दिया गया।

— *मुनीन्द्र सिह भाटी न्यास प्रवक्ता*

आर्यवन में योग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन मे २ अप्रैल से ११ अप्रैल २००२ तदनुसार फाल्गुन कृष्ण ५ से १४ विक्रमाब्द २०५८ तक १० दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता मे किया जा रहा है जिसमे माताए भी भाग ले सकेगी। शिविरार्थी १ अप्रैल को सायकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुच जाए।

शिविर मे योगदर्शन के सूत्रो का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ–साथ यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि विवेक वैराग्य अभ्यास जप विधि ईश्वरसमर्पण स्वस्वामी सम्बन्ध ममत्व को हटाने जैसे अनेको सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयो पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

शिविर शुल्क रु० ३००/– निर्धारित किया गया है। कृपया शिविर शुल्क राशि का मनिआर्डर द्वारा व्यवस्थापक योग शिविर आर्यवन के नाम से भेजे। चैक ड्राफ्ट न भेजे। अपना लौटने का आरक्षण पूर्व ही करवा लेवे।

— *दर्शन योग महाविद्यालय*
आर्यवन रोजड पत्रालय – सागपुर
जिला– साबरकाठा
गुजरात– ३८३३०७

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

॥ ा रजिस्ट्रेशन ा डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 3 03 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 1 3 2002

ओ३म्

महर्षि दयानन्द जयन्ती

आगामी ८ मार्च २००२ (शुक्रवार) फाल्गुन कृष्ण दशमी २०५८ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस है जिसे पूर्व की भाति इस बार भी सभा के तत्वावधान में निम्न कार्यक्रमानुसार समारोहपूर्वक मनाया जाएगा

दिनाक ८ मार्च २००२ (शुक्रवार) स्थल महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर
यज्ञ प्रात ९ ०० बजे समारोह प्रात १० ०० बजे ऋषि लगर दोपहर १ ०० बजे
अध्यक्षता कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भजन सन्ध्या

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक के निश्चयानुसार एक भव्य भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया है जिसमे ईश्वर भक्ति ऋषि गुणगान राष्ट्रप्रेम को समर्पित भजन सगान एक अपूर्व व्यवस्था के अन्तर्गत प्रस्तुत किए जाएगे

दिनाक ९ मार्च २००२ (शनिवार) स्थल आर्यसमाज मिण्टो रोड दिल्ली
समय साय ६ बजे से प्रीतिभोज रात्रि ९ बजे
अध्यक्षता कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मुख्य अतिथि प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा सासद (लोक सभा)

ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव)

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में पूर्व की भाति ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित होगा

दिनाक १२ मार्च २००२ (मगलवार) स्थल रामलीला मैदान नई दिल्ली
यज्ञ एव प्रतियोगिताए प्रात ८ बजे विशेष सभा दोपहर २ बजे से
मुख्य वक्ता वैदिक विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय

निवेदन

आपसे विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में बसें कारें तथा अन्य वाहनों में धर्म प्रेमी जनों को साथ लेकर तीनों समारोहों में पहुचकर आयोजनों की शोभा बढाए वाहनों पर ओ३म् ध्वज तथा सुविधानुसार आर्यसमाजों के बैनर लगाए अल्प मूल्य का साहित्य (ट्रैक्ट) रास्ता प्रयाग कर मार्ग में जन सामान्य में वितरित करें इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त समय और दिनों में अपने अपने क्षेत्रों में भी विशेष आयोजन और जलपान प्रीतिभोज वितरण करें

निवेदक

विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष *सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा*
वेदव्रत शर्मा प्रधान वैद्य इन्द्र देव मन्त्री *दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा*
धर्मपाल आर्य प्रधान सुरेन्द्र कुमार रैली महामन्त्री *आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य*

ध्यान साधना शिविर

आर्यसमाज मन्दिर हा[illegible] १८ फरवरी २००२ से २४ रविवार तक ध्यान धारा[illegible] आयोजन प्रात साढे पा[illegible] बजे तक साध्वी सरस्वती कमलेश जी के सानिध्य मे आयोजित किया जा रहा है। जिसमें कुण्डली जागरण एव ध्यान धारणा एव समाधि का अभ्यास कराया जाएगा।

विजेन्द्र कुमार गर्ग
मन्त्री आर्यसमाज हापुड

वर की आवश्यकता

विश्वकर्मा (काष्टकार) स्लिम आकर्षक कान्वेट शिक्षित एम०एस० सी० एल० एल० बी० दिल्ली मे कार्यरत जन्म अगस्त ७१ कद १५७ सी०ए० कन्या हेतु सुयोग्य समकक्ष शिक्षित वर चाहिए। कोई भाषा या जाति बन्धन नही। पिता सेवानिवृत नेत्र विशेषज्ञ (सार्वजनिक उपक्रम) बायाडाटा एव फोटो भेजे।

सम्पर्क

डॉ० बी० शर्मा
७०१ प्रो० बारी को० आपरेटीव कालोनी पो० सिवडी बोकारो स्टील सिटी ८२७०११ झारखण्ड
दूरभाष ०६५४२ ५९७६४

श्रीमददयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गढपुरी का ६५वा वार्षिकोत्सव

श्रीमददयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गढपुरी त० पलवल जिला फरीदाबाद का ६५वा वार्षिकोत्सव १५, १६ १७ मार्च २००२ को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है। धार्मिक सास्कतिक व सामाजिक भजनोपदेश लाभ के लिए विभिन्न आयोजनो म भाग लेकर धर्म लाभ उठाए। *स्वामी विद्यानन्द*

धर्म

जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है जोकि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है उसको धर्म कहते है। ***महर्षि दयानन्द सरस्वती***

ज्योति पर्व है ज्योति जलाओ

– ओम प्रकाश शास्त्री

ज्योति पर्व हे ज्योति जलाओ अन्धकार को दूर भगाओ।
दयानन्द के वीर सैनिको जग मे फिर से कुछ नाम कमाओ।।

अपनी शिक्षा भूल रहे हो सस्कारो को भूल चुके हो।
पश्चिम की इस चकाचौध मे निज अस्तित्व भुलाय रहे हो।।
याज्ञवल्क्य मनु की शिक्षा घर घर मे फैलाओ।
वेदो के मारग पर चलकर वैदिक शख बजाओ।।

अपनी भाषा को पहिचानो राष्ट्र की भाषा को अपनाओ।
सब भाषाओ की जो जननी उस भाषा का ज्ञान बढाओ।।
यदि चहते उन्नति अपनी सुर भाषा का मान बढाओ।
वेदो का नित स्वाध्याय कर वेदो का जयघोष सुनाओ।।

विश्व विजय करके दिखलाई जग ने गौरव गाथा गाई।
निज पौरुष के बल पर हमने निज सस्कृति चमकाई।।
अपनी सस्कृति को अपनाकर स्वाभिमान जगाओ।
कैसे भारत वासी होते जग को पुन दिखाओ।।

प्रभु व्यापक घर–घर मे भाई विद्यमान सबके अन्तर मे।
नित्य चिरतन जो सुखदायी नही केवल पाषाण मूर्ति मे।।
सच्चे शकर की तलाश मे निर्गुण ब्रह्म मे ध्यान लगाओ।
दयानन्द से योगी बनकर त्याग तपस्या को अपनाओ।।

– यू–१२८ शकरपुर दिल्ली–९२

आवश्यक सूचना

अति प्राचीन शास्त्रार्थो का सग्रह **"निर्णय के तट पर** ग्रन्थ का पाचवा भाग प्रकाशित हो गया है जिसमे पूर्व छपे चार भागो की भाति ही अति दुर्लभ प्राचीन शास्त्रार्थो का समावेश है। प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करे –

लाजपत राय अग्रवाल [illegible]
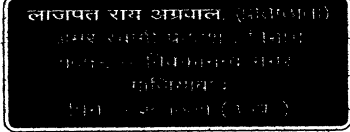
नोट –

पूरे भारतवर्ष मे इतना विशाल साहित्य का बिक्री केन्द्र नही है जहा से लगभग तीन हजार पुस्तके जो विभिन्न विषयो पर आधारित है एक साथ प्राप्त हो सके तथा उन पर छूट के साथ साथ पुस्तके भेजने का सारा खर्च पैकिंग सहित मुफ्त होता है। विशेष जानकारी के लिए सूची पत्र मगाये।

(यह सस्था व्यापारिक नही है। बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तो (हिन्दुत्व की विचारधारा) के प्रचार एव प्रसार का ही है)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२९६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाईट http //www whereisgod com

वर्ष ४० अक ४२ १० मार्च से १६ मार्च २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ फा० क० १२

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

दिल्ली हरिद्वार मार्ग पर

कै० देवरत्न आर्य एवं श्री वेदव्रत शर्मा का अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियो के सम्बन्ध मे विगत सप्ताह सडक ार्ग से दिल्ली से हरिद्वार जा रहे थे तो सभा कायालय से अल्प समय पूव ही सम्पर्क द्वारा जब गाजियाबाद मुरादनगर आर मोदीनगर आदि क्षेत्रा क आर्यो को इस कायक्रम का पता लगा तो उन्होने सभा कायालय से सम्पर्क करके कई स्थानो पर आर्य नताओ के स्वागत की योजना बनाई।

गाजियाबाद मे श्री श्रद्धानन्द जी क नेतृत्व मे आर्यजनो ने स्वागत किया तो कुछ ही दूर चलन के बाद मुरादनगर मे श्री दामोदर प्रसाद आय श्री माया प्रकाश त्यागी भुवनश्वर त्यागी राकेश माहन गोयल नरेश चन्द्र गोपी चन्द्र वर्मा तथा रियाराम आदि सहित कई आर्यजन उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देव रत्न आर्य ने कहा कि महिलाओ को वैदिक ज्ञान प्रदान कर ही परिवार को सुसस्कृत बनाने का पथ आगे बढ सकेगा। नारी शक्ति मे चेतना लाने की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला सभा के गठन का निर्णय लिया गया है।

शिव शक्ति ग्रामोद्योग सस्थान के कार्यालय मे पत्रकारो से वार्ता के दौरान उन्होने कहा कि नारी ही माता और निर्माता है। माता विदुषी होगी तभी बच्चे विद्वान और चरित्रवान बन सकेगे। इस प्रयाजन का सकारात्मक रूप देन के लिए २७ फरवरी को उदयपुर म अखिल भारतीय महिला सम्मेलन आयोजित किया गया उन्हाने कहा कि वैदिक सरकृति के प्रचार प्रसार क लिए शास्त्र शस्त्र शुद्धि नाम से तीन सूत्रीय कायक्रम तय किए गए शास्त्र के अन्तगत गुरुकुलो के माध्यम से विद्वान तैयार कर देश विदेश मे वैचारिक क्रान्ति को फैलाया जाएगा। शस्त्र कार्यक्रम के तहत युवा शक्ति को आर्यवीर दल से जोड कर सृजनात्मक दिशा मे बढाया जाएगा। शुद्धि नामक तीसरा सूत्र धर्मपरिवर्तन कर दूसरे धर्मो म चले गए परिवारो की गृह वापसी का मजबूत आन्दोलन होगा। साथ ही घर लौटे अपने भाइयो के साथ रोटी–बेटी का सम्बन्ध बना कर उन्हे आत्मसात करने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

जानकारी देत हुए सभा के प्रधान कै० देव रत्न आर्य न कहा कि आर्य समाज की विश्व मे ८ हजार शाखाए है। दश म एक हजार शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से नतिक सस्कार दिए जा रह हे। आगामी २६ अप्रेल को हरिद्वार म स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय म तीन दिवसीय शताब्दी समारोह एव महासम्मलन का आयोजन किया जाएगा। पत्रकारा स बातचीत करते हुए सभा क मन्त्री वेदव्रत शमा ने कहा कि हरिद्वार म सार्वदशिक सभा तथा गुरुकल क द्वारा आहूत महासम्मलन एव शताब्दी समारोह म एक लाख प्रतिनिधि भाग लगे देश क प्रमुख लोग इसमे शामिल होग।

इसके उपरान्त पुन कुछ ही दूरी के बाद मोदीनगर मे भी इसी प्रकार आर्यो के एक विशिष्ट दल ने सभा के अधिकारियो का स्वागत किया इन आय महानुभावा मे श्री विश्व वन्धु सचदेव तथा अनिल बजाज प्रमुख थे।

मुरादनगर में दिल्ली हरिद्वार मार्ग पर सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का स्वागत करते हुए आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी एव श्री विश्व बन्धु सचदेव।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

श्रद्धा, अनुशासन और कर्त्तव्यपालन की भविष्य रचना हेतु

आर्यों का विशाल समागम

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूरे होने के उलक्ष्य मे २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे आयोजित होने वाले सम्मेलन को सफल बनाने के लिए समस्त प्रान्तीय सभाओ एव विभिन्न प्रान्तो के आर्य नेताओ ने सकल्प व्यक्त किया है कि इस सम्मेलन को श्रद्धा प्रेम और अनुशासन के साथ साथ कर्त्तव्य पालन के आधार पर भविष्य की रचना के लिए आर्यो के एक महान समागम का रूप दिया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे हुई कार्यकारिणी की बैठक तथा अन्तरग बैठक मे आयोजन की विस्तृत रूपरेखा पर गहन विचार विमर्श किया गया। अन्तरग बैठक मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वेदप्रकाश शर्मा कुल सचिव डॉ महावीर डॉ० जयदेव डॉ० जोशी तथा कई अन्य विशिष्ट व्यक्तियो ने भी भाग लिया।

सत्र निर्धारण समिति द्वारा महासम्मेलन के चारो दिनो का जो विस्तृत कार्यक्रम तय किया गया है वह इस प्रकार है।

प्रथम दिवस २५ अप्रैल को प्रथम सत्र यज्ञ एव प्रवचन के उपरान्त प्रात १० बजे से १ बजे तक आयोजित होगा। इसमे दीक्षान्त समारोह तथा उदघाटन समारोह सयुक्त रूप से आयोजित किए गए हैं। दीक्षान्त समारोह मे नव स्नातको को डिगरिया प्रदान की जाएगी। इसी कार्यक्रम मे गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन का उदघाटन भी किया जाएगा।

२५ अप्रैल को दूसरे सत्र का आयोजन दोपहर तीन बजे से ६ बजे तक होगा। इस सत्र का नाम **'गुरुकुल सस्कृति'** सत्र रखा गया है। इसी सत्र मे गृह वापसी अर्थात शुद्धि आन्दोलन पर भी विचार सुनने को मिलेगे।

२५ अप्रैल तृतीय सत्र मे रात्रि ७ बजे स १० बजे तक **'पूर्व स्नातक पुनर्मिलन समारोह** एव **भजन सन्ध्या'** कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस विशेष सत्र मे कुछ विशिष्ट स्नातको को सम्मानित भी किया जाएगा।

महासम्मेलन के दूसरे दिन २६ अप्रैल को यज्ञोपरान्त प्रथम सत्र मे **'आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान'** से सम्बन्धित विषयो पर वैदिक विद्वानो के विचार सुनने को प्राप्त होगे।

२६ अप्रैल को दोपहर एक बजे से **'वेद की अनन्त यात्रा'** नाम से एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन होगा। जो गुरुकुल कागडी समारोह स्थल से प्रारम्भ होकर शहर से होती हुई हर की पौडी के सामने से निकल कर वैदिक मोहन आश्रम पहुचेगी जहा २५ अप्रैल के दिन ही स्वामी दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी।

२६ अप्रैल को तीसरे अर्थात रात्रि सत्र का नाम **'समाज की मूल इकाई आर्य परिवार सत्र'** रखा गया है। इस सत्र मे विशेष रूप से आर्यजनो को कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित करने तथा अधिकारवाद की होड से अलग रहने की प्रेरणा देने से सम्बन्धित उदबोधन होगे।

२७ अप्रैल को यज्ञोपरान्त प्रथम सत्र **'आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता'** के विचारो से सम्बन्धित होगा। दूसरे सत्र मे मातृ शक्ति से सम्बन्धित **'माता निर्माता भवति सत्र'** का आयोजन होगा जिसमे महिलाओ से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओ पर आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे विदुषी महिलाओ की विचार तरगे प्रवाहित होगी। इसी दिन रात्रि सत्र मे **'आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप'** सत्र का आयोजन होगा जिसमे युवको की विशेष भूमिका से सम्बन्धित उपदेश और निर्देश प्राप्त होगे।

२८ अप्रैल (रविवार) को प्रात यज्ञोपरान्त समापन समारोह होगा जिसका नाम **'राष्ट्र रक्षा सत्र'** रखा गया है। इस सत्र मे विशेष रूप से इतिहास पुनर्लेखन और शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण विषयो पर उदबोधन प्रस्तुत किए जाएगे।

इस महासम्मेलन के दौरान प्रतिदिन ६ से ७ बजे तक कार्यकर्ता सगोष्ठी एक अलग हाल मे आयोजित होगी जिसमे प्रान्तीय सभाओ तथा आर्यसमाजो के विशिष्ट कार्यकर्ताओ को विशेष रूप से सम्मिलित करके एक आत्म मथन कार्यशाला की भाति आयोजित किया जाएगा। इस सगोष्ठी का समन्वय सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य करेगे। अन्तिम दिन २८ अप्रैल को समापन सत्र के बाद ३ बजे से ५ बजे तक इस सगोष्ठी का समापन सत्र होगा।

इसी प्रकार २७ अप्रैल को जब मुख्य पण्डाल मे माता निर्माता भवति सत्र चल रहा होगा तो उस सत्र के समय मे ३ बजे से ६ बजे तक दो विशेष सगोष्ठिया अलग अलग केन्द्रो मे आयोजित की जाएगी। इन विशेष सगोष्ठियो मे एक सगोष्ठी स्नातको की वैदिक प्रचार मे भूमिका विषय पर आयोजित होगी और दूसरी विशेष सगोष्ठी सन्यासियो की वैदिक प्रचार मे भूमिका पर आयोजित होगी।

इस महासम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य करेगे और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष होगे। श्री विमल वधावन एव सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा इस महासम्मेलन के प्रमुख सयोजक होगे। अलग-अलग सत्रो की अध्यक्षता तथा सयोजन के लिए अलग अलग आर्य विद्वान महानुभावो को नामित किया गया है। केन्द्र तथा राज्य सरकारो के कई मन्त्रियो तथा अन्य सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्रो के विशिष्ट महानुभाव भी इस सम्मेलन मे आमन्त्रित है। प्रसिद्ध स्वतन्त्रता वीर शहीद अशफाक उल्ला खॉ के वशज तथा शहीदे आजम भगत सिह के कनिष्ठ भ्राता श्री कुलतार सिह जी को भी इस सम्मेलन मे आमन्त्रित करके विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा। प्रसिद्ध धारावाहिक महाभारत और रामायण के विशेष कलाकारो अथवा निर्देशक मण्डल आदि मे से कुछ विशिष्ट महानुभावो को भी आमन्त्रित करने ।। प्रयास किया जा रहा है।

आर्य नेता श्री वीरेश प्रताप चौधरी पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित

विगत माह गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य मे भारत सरकार ने देश के जिन महान विद्वानो और अपने अपने क्षेत्र मे विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले महानुभावो को विभिन्न पुरस्कारो एव उपाधियो से विभूषित किया उनमे प्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता एव आर्य नेता श्री वीरेश प्रताप चौधरी का नाम उल्लेखनीय है जिन्हे पदमश्री से सम्मानित किया गया।

पदमश्री वीरेश प्रताप चौधरी

श्री वीरेश प्रताप चौधरी वर्तमान मे आर्य अनाथालय पटौदी हाउस तथा अन्य सम्बद्ध सस्थाओ का कुशल सचालन कर रहे है।

दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यनेता एव यशस्वी स्वतन्त्रता सेनानी स्व० श्री देशराज चौधरी जी से वीरेश जी को समाज सेवा की परम्परा विरासत मे प्राप्त हुई है। विगत लगभग ५० वर्ष से वीरेश जी ने सामाजिक न्यायिक और राजनैतिक क्षेत्र मे अग्रणी एव विशिष्ट पहचान बनाई है।

समूचे आर्य जगत और सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री वीरेश प्रताप चौधरी को कोटिश बधाई।

श्री वीरेश प्रताप चौधरी का पता इस प्रकार है

– ४८४४/२४ असारी रोड, दरियागज, नई दिल्ली-२

फिर बोधरात्रि आ गई

– डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर

जहां अधिकारी पूण सम्मान के पात्र हैं वहीं पुरोहित और प्रचारक भी आर्यसमाज की आत्मा हैं, उन्हें भी सुरक्षा, सम्मान और पूर्ण सहयोग की अपेक्षा रहती है। कई आर्यसमाजें ही प्रचारकों और पुरोहितों को व्यवसायिक बनाने के लिए उत्तरदायी हैं क्योंकि बहुत बुरी तरह से शोषण भी होता है। यह तो वही जानते हैं जिनको भुगतना पड़ता है। प्रचार एक पवित्र कार्य है इसमें ऐसी स्थिति आने देना घोर अनर्थ है। समय की मांग है अपने पुरोहित एवं प्रचारक वर्ग को पूर्ण संरक्षण दीजिए। किसी भी विवशता का लाभ उठाने का प्रयास न करें। दूसरी ओर पुरोहित और प्रचारक वर्ग भी जो उनसे अपेक्षाएं हैं उसके अनुरूप अपने को सत्य सिद्ध करें। इसी में दोनों का लाभ है। आर्यसमाज की भलाई है।

जब तक सृष्टि का कालचक्र प्रवाहित है यह बोधरात्रि भी बार बार आएगी ही। आखिर कालचक्र को कौन रोक सका है ? व्रत भी उसी प्रकार लोग रखते ही रहगे क्योकि उनका विश्वास है शिवजी प्रसन्न होकर उन्हे वरदान देगे उनकी मनोकामनाए पूर्ण होगी। कइ लोटे पानी मिला दूध का अभिषेक भी रुकने वाला हो ऐसा अभी दिखाई नही देता। हा फिर कोई व्रत मे बैठा हो मूषक को पाषाण पर उछल कूद करता देख ले और मूलशकर सा जिज्ञासु बालक हो फिर वही प्रश्न लेकर सच्चे शिव की तलाश म निकले दया और आनन्द का सागर बनकर समाज की सारी पीडाओ को झेलता हुआ अनेक बार विष मिलने पर भी धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रो मे अपने ज्ञान तपस्या और घोर साधना के बल पर सब ओर से प्रहार करता हुआ अकेला ही आगे बढे और पाखण्डियो को धराशायी करके एक नए युग का सूत्रधार बने ऐसा मुझे तो अभी भी सम्भव सा लगता है। शायद आप इसका अर्थ यह ले कि मेरा अवतारवाद मे विश्वास है ऐसा नही है।

परन्तु मात्र इच्छा अवश्य है कि ऐसा फिर हो जाए तो क्या ही अच्छा हो। एसा सन्यासी पहला प्रहार इन आय समाजिया पर ही करेगा। इतना पाखण्ड तो ओरो न भी नही किया ह गा जितना आज आयसमाज जसी पवित्र आर महान सस्था से ऋषि के अनुयायी कर रहे है। कार्य ता ह' रहा ह कार्य के रूप सीमाए सधन भवन धन सब मे वृद्धि दिखाइ देती ह परन्तु यह सब होत हुए भी ऋषि की मान्यताओ का प्रभाव क्षेत्र कम हुआ है। अब ऋषि दयानन्द को उनकी मान्यताआ को विश्वासो को पीछ छोड दिया है उनक नाम का प्रयाग करके व्यक्ति स्वय आग निकल गए है। पीछ घूमकर देखने का समय ही किसके पास है कि खड हाकर शान्त मन से यह साच सक कि जिसके नाम से हम यहा पहुच गए है अगर अचानक प्रकट हो जाए यद्यपि वैदिक मान्यता इस तथ्य को स्वीकार ही नहीं करती तो क्या इस प्यारे ऋषि को अपना भौंडा और अपवित्र चेहरा दिखा पाने का साहस कर सकते हैं ? शायद यह विचार ही अपने मे कम्पायमान कर देने वाला है। परन्तु आप भले ही हमारी मान्यता से सहमत न हो है यह सत्य ही।

दूरवाणी से एक गीत सुना था 'हस चुनेगा दाना तिनका कौआ मोती खाएगा। रामचन्द्र कह गए सिया से ऐसा कलयुग आएगा।

और कहीं कलयुग आया या नही हम नहीं जानते आर्यसमाज के क्षेत्र मे अवश्य आया लगता है। एक उदाहरण जो अभी अभी एक अत्यन्त उत्तरदायी विदुषी बहिन ने जिनकी बात को हम बनावटी या सत्य से परे है ऐसा मान ही नहीं सकते सुनाया है। यहा लिख रहा हू। आर्यसमाज की एक सस्था के विद्यालय मे चौधरी अमन सिह के पुत्र क पौत्र को नर्सरी कक्षा मे प्रवेश के लिए ले गए तो केवल प्रवेश कराने का दस हजार रुपया देना पडा। यह वही चौधरी अमन सिह है जिन्होने अपना सारा कागडी गाव और हजारो रुपये का नकद दान स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणो मे गुरुकुल की शिक्षा के लिए अर्पित कर दिया था। अब आप ही विचार कर लीजिए आर्यसमाज के लोग इस पर कितना गर्व कर सकते है ? हमने सब मान्यताओ की ओर मूल्यो की ऐसी कब्र खोद दी है जिस पर रोने भी लगे तो आसू पोछने वाला नहीं मिलेगा।

बिल्कुल एक नइ राजनेतिक शैली मे एक दूसरे के गीत गाने मे जितना समय शक्ति तथा धन हम लगा रह है यदि इसका दसवा भाग भी इमानदारी से ऋषि क काय के लिए लगा दे ता शायद कायाकल्प हो जाए। परन्तु हर व्यक्ति जो मुह खोलता ह या अपनी कलम का प्रयोग करता है दुत्कार दिया जाता ह। क्योकि साम्राज्य ता सत्ता का स्वार्थ का ह। सत्य को कहा हे ? यही कारण हे कि नाईन की तरह बधाइ के ही मोके पर गीत गाने वाला की तलाश रहती ह। सत्य सुनने का साहस और कहन का साहस किस मे बाकी हे ?

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक।
खाक हो जाएगे हम तुमको खबर होने तक।।

सगठन पर सस्थावाद हावी हे

सगठन किसी भी सस्था की शक्ति और रीढ की हड्डी होता है परन्तु जब सब मान्यताओ और नियमो को तिलाजलि देकर कुछ छोटे छोटे प्रभावशाली समूह बन जाते हैं तो सस्था का सगठन उनके आगे बौना हो जाता है। बडे बडे पदो पर बैठे हुए लोग अपने चारो ओर इस प्रकार के व्यक्तियो को जोड लेते है जो उनकी हा मे हा मिलाते रहे और अपना छोटा मोटा स्वार्थ पूरा होता रहे इससे अधिक किसी को कोई रुचि नही रहती। चुनाव मात्र एक दिखावा और खानापूर्ति ही होता है। क्या कारण है कि वर्षो तक व्यक्ति अपने पद को नहीं छोडता जब तक मृत्यु आकर छुडवा न दे। बहुत आवश्यक है कि आर्यसमाज के पदो पर बैठे हुए लोग स्वेच्छा से अधिक से अधिक तीन वर्ष के बाद अपना पद छोड दे। नई पीढी पर विश्वास रखे उनको प्रोत्साहन दे और मार्गदर्शन करते हुए उनकी पीठ थपथपाए नए लोग आगे आएगे। युवको की रुचि बढेगी हमारा कार्य बढेगा। युवको को अधिक आर्यमसाज से जोडा जाए।

वेद प्रचार को मुख्यता दे

शक्ति को विद्यालयो और औषधालयो पर ही न लगाए वेद प्रचार को मुख्यता देनी चाहिए। वर्ष मे कम से कम चार बार एक एक सप्ताह का वेद प्रचार का कार्यक्रम हो ता इस प्रकार रविवारो के अतिरिक्त एक मास की लम्बी अवधि प्रचार कार्य के लिए रहेगी। इन कार्यक्रमो मे एक कार्यक्रम ऋतु का ध्यान रखते हुए खुले वातावरण मे पार्को म ही हो। यदि लोग आर्यसमाज म आने स हिचकिचात ह तो हमे उन तक पहुचना चाहिए। अब यह आवश्यक हे।

प्रचार सकारात्मक हो

प्राय देखा गया है कि उपदेशक या भजनोपदेशक वेद की मान्यताओ का सकारात्मक ढग से न कह कर नकारात्मक शेली अपनात हे इसका परिणाम यह होता हे कि कोइ नया व्यक्ति श्रद्धावश हमारे सत्सग म आ भी जाए तो अगली बार आने के लिए वह आकर्षित नही होता। दोष आने वाले श्रोता का नही ह हमारी प्रचार की शैली का ह। अपनी बात का कहन स पूर्व गम्भीरता से विचार लेना आवश्यक है। प्रत्येक प्रचारक को बदलती हुई परिस्थिति के अनुरूप अपनी शैली और विषय के तथ्यो तथा दिए जाने वाले दृष्टान्तो पर गम्भीर होना ही होगा। बहुत कडवी दवाई को भी आज के युग मे कैपसूल चढाकर दे दिया जाता है। मेरा अभिप्राय यह नही कि हम सिद्धान्तो से समझौतावादी प्रवृत्ति अपना ले। नही बिल्कुल नहीं अपने ही सिद्धान्त और मान्यता को दूसरो तक प्रकट करने की मात्र शैली को बदले।

पुरोहित और प्रचारको को उचित सम्मान और स्नेह दे

अन्य मत मतान्तरो मे सत्य और ज्ञान का अभाव होने पर भी वे तेजी से क्यो फैल रहे है ? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। भवन या मात्र अधिकारी ही आर्यसमाज नहीं है। यद्यपि दोनो के कार्य मे सामन्जस्य और सदभाव बहुत आवश्यक है। जहा अधिकारी पूण सम्मान के पात्र है वहीं पुरोहित और प्रचारक भी आर्यसमाज की आत्मा ह उन्हे भी सुरक्षा सम्मान और पूर्ण सहयोग की अपेक्षा रहती है। कई आयसमाजे ही प्रचारको ओर पुरोहितो को व्यवसायिक बनाने के लिए उत्तरदायी हैं क्योकि बहुत बुरी तरह स शोषण भी होता है। यह तो वही जानत है जिनको भुगतना पडता है। प्रचार एक पवित्र कार्य है इसमे ऐसी स्थिति आने देना घोर अनर्थ है। समय की माग हे अपने पुरोहित एव प्रचारक वर्ग को पूर्ण सरक्षण दीजिए। किसी भी विवशता का लाभ उठाने का प्रयास न करे। दूसरी ओर पुरोहित और प्रचारक वर्ग भी जो उनसे अपेक्षाए है उसक अनुरूप अपने को सत्य सिद्ध करे। इसी म दोनो का लाभ है। आर्यसमाज की भलाई है।

हिन्दू शक्ति को सगठित करे

अब पहले जैसी राजनैतिक सामाजिक परिस्थिति नहीं है। इस्लाम और ईसाइयत का एक सगठित आक्रमण धन की शक्ति स और अनेक छदमवेशी सस्थाओ के माध्यम से निरन्तर चल रहा है। आई०एस०आई० का इस समय पूरे देश मे जाल बिछ चुका हे। बहुराष्ट्रीय कम्पनिया आमन्त्रित हो चुकी हे। दूरदर्शन के द्वारा व्यापारिक दृष्टि से जो विक्रय वृद्धि के लिए कार्यक्रम आता है और अन्य कार्यक्रम आते है सब सुनियोजित सास्कृतिक आक्रमण ही है। वोट बटोरने की राजनीति ने शासक दल का एकदम अन्धा कर दिया है। तुष्टिकरण की नीति के कारण नदबा जैसी गम्भीर घटनाओ पर पद डाल दिया जाता हे। हिन्दू सस्थाओ पर बिना किसी कारण के राक लगाना। जातीयता ओर नग्न साम्प्रदायिकता के आधार पर समाज को कमजोर करने वाली शक्तिया के आगे घुटने टेकना नित्य की नीति बन गइ ह। हिन्दू शक्ति अपनी धामिक आस्था आर उपासना पद्धति की विभिन्नता के कारण बटी हुई ह। गोवध और मद्यपान को बढावा मिल रहा है। यह सारी परिस्थितिया आर्यसमाज क लिए परीक्षा की घडी हे। शासक दल घोर हिन्दू विरोधी हे एसा लगता है यह मुस्लिम लीग का ही दूसरा रूप है यदि ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज न हिन्दू समाज को सगठित करने के लिए ओर आर पार की लडाई के लिए सघष न किया तो आर्यसमाज की हत्या जैसी बात करेगा। अब सब भेदभाव भुलाकर अपने अपने स्वार्थो को फैक कर समग्र हिन्दू समाज का नेतृत्व करने के लिए सघष करने की बेला है। हिन्दू ही नही बचगा तो वेद की बात किसे सुनाओगे ? इसलिए ऋषि के बोधोत्सव को अपने बोधोत्सव के रूप मे मनाओ। यही समय की माग है।

वक्त पर कतरा है काफी अब्रे खुश अन्दाम का जल गया जब खेत मेह बरसा तो फिर किस काम का।

जब साधन ही साध्य बन जाए !

– त्रिलोक चन्द्र शास्त्री आर्योपदेशक

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक अथवा अनेक उपायो की आवश्यकता होती हे। प्रयोजन या उद्देश्य को साध्य कहा जाता है तथा उसे पूर्णता तक पहुचाने के लिए नानाविध उपायो का नाम ही साधन होता है। साध्य सदा एक होता है – साधन कई हो सकते है। यह तथ्य है कि साधनेन बिना साध्य न सिध्यति – साधन के बिना साध्य पूर्ण नही होता। धर्म अर्थ काम और मोक्ष रूपी साध्यो के लिए भी उनके अनुरूप आवश्यक साधन चाहिए।

प्रत्येक क्षेत्र मे यह नियम समानता से कार्य करता है। केन्द्र बिन्दु तो सदा एक होगा। यात्री की यात्रा की मजिल भी एक। शिक्षार्थी का शिक्षा बिन्दु भी एव धर्म प्रचार का साध्य भी नितरा एक ही होगा – इसम दो राय हो ही नहीं सकतीं। आर्यसमाज के विशाल आन्दोलन के सूत्रधार स्वामी दयानन्द के जीवन का भी केन्द्र बिन्दु एक ही था। गुरुवर विरजानन्द जी से विद्या प्राप्त करके जब वे कार्य क्षेत्र मे उतरे तो उनके सामने वेद प्रसार का ही महान लक्ष्य था।

टकारा के शिवमन्दिर मे शिवरात्रि के शान्त वातावरण मे एक दृश्य देखा – मन अशान्त हो गया। तब प्रश्न पैदा हुआ कि मन्दिर का यह पाषाण तो शिव नही हे। फिर **कोऽय नाम शिव** यह शिव है क्या ? अपनी प्यारी बहिन की एव चाचाजी की मृत्यु देखकर फिर सोचा – **कोऽय नाम शिव** – यहा शिव आत्मा की ओर सकेत करता है। शव तो जड शरीर है और शिव आत्मा हे। गुरु ने जब वेद प्रचार की दीक्षा दी तब उनके सामने एक ही लक्ष्य था – विश्व मे प्रभु की कल्याणी वाणी वेद का प्रचार किस प्रकार हो। वेद प्रभु का ज्ञान है और **सर्वत्र** इस की ज्योति प्रसारित होनी चाहिए। **अत्र वेद तत्र वेद सर्वत्र वेदप्रसार स्यात्** – सारे विश्व मे वेद प्रचार किया जाए इसी के लिए जीवन समर्पित कर दिया। उस देवता के लिए सब कुछ वेद ही था। इसी लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। अजमेर की भिनाय कोठी मे अन्तिम तीन सूत्रो मे दूसरा सूत्र भी यही कहा – आर्यो ! मेरे पीछे आ जाओ। अर्थात जिस वेद प्रसार के महान कार्य मे मैं लगा रहा हू – उसी वेद प्रसार के पथ पर निरन्तर आगे बढते जाना। वेद का प्रचार ही ऋषि के जीवन का महान लक्ष्य था। यही साध्य था – केन्द्र बिन्दु था – जिस की पूर्ति के लिए देवता ने प्रवचन भ्रमण शास्त्रार्थ लखन आदि कइ साधनो का प्रयोग किया। य सभी साधन थे। आर्यसमाज की स्थापना भी इसी वेद प्रचार कार्य का साधन था। साध्य या लक्ष्य केवल और कवल एक ही था – और वह था सार विश्व मे **वेद का प्रसार** ।

आर्यसमाज भी इसी साध्य को लेकर चला। वेदी और प्रैस दो विशेष साधन होते है। वेदी के साधन से तो सगीतादि के द्वारा सिद्धान्तो का प्रवचन होता है – और प्रैस के द्वारा प्रकाशन का कार्य अपनाया जाता है। इसमे पत्र भी होते है पुस्तके भी तथा समय–समय पर छोटे–बडे विज्ञापनादि भी।

शिक्षण सस्थाए तथा समाज मन्दिर भी साधन रूप ही हैं। मानव जीवन के समान किसी भी सस्था के भी बालपन प्रभावी वेदो तथा वेदो की प्रचारक सेना का मानसम्मान था। समाज केन्द्र की ओर बढता गया। गगा की धारा निर्मल व प्रभावी थी।

समय बदल गया। जिनको साधनो के रूप मे स्वीकारा था – वह स्वय साध्य बन गए। साधन ओझल हो गया। धर्म को धन ने दबा दिया। नेता समाज के नहीं रहे। समाज नेताओ का बन गया। वेद प्रसार सर्वथा गौण बन गया। केन्द्र बिन्दु रूपी सूर्य के सामने धन व विडम्बना

हे कालजयी ! हे ऋषि अमर !

– *लक्ष्मी मित्तल*

हे युगद्रष्टा, हे युग युगस्रष्टा, अर्पित करते हम आज नमन।
हे प्रभावान युगसूर्य तुम्हे, जन–मन का अर्पित आज नमन।।
अवतरित हुए तुम धरणी पर जगती की काली रात मिटी।
हस पडा सृजन का नवप्रभात, विध्वसो की हर बात मिटी।।
हे सत्यज्ञान के सवाहक हो गये कृतार्थ ये धरा गगन।
हे युगद्रष्टा, हे युगस्रष्टा अर्पित है शत–शत आज नमन।।
सम्मान बढाया जननी का, जगती को ज्ञान दिया पावन।
सन्देश सुना कर वेदो का युग सत्य बनाया मन भावन।।
सत्यार्थ–प्रकाश के हे स्रष्टा ! युग करे तुम्हारा आज मनन।
हे प्रभावान युग–सूर्य तुम्हे अर्पित करते हम आज नमन।।
गौ–रक्षा का उद्घोष किया दलितो के रक्षक सदा बने।
हे स्वाभिमान के सूर्य सजग जन–जन के रक्षक सदा बने।।
हे कालजयी, हे ऋषि अमर ! स्वीकारो सबका आज नमन।
हे सत्यज्ञान के सवाहक ! हो गये कृतार्थ ये धरा गगन।।
यह सूर्य तुम्हारा तेज बना शीतल यह चन्दा है तुमसे।
जग के प्रकाश के कारण तुम, सम्मान् जगत् का है तुमसे।।
हे बलिदानी, हे क्षमाशील ! तुम दिव्यज्ञान दाता भगवन्।
हे युगद्रष्टा, हे युगस्रष्टा, अर्पित करते हम आज नमन।

– रुडकी

यौवन प्रौढावस्था आदि विविध रूप होते हैं। इसके समान जीवन की दशा मे भी चढाव उतराव आता रहता है। आर्यसमाज ने अपने साध्य की पूर्ति के लिए साधनो का सुन्दरता से प्रयोग किया। प्रभाव भी बडा रहा। आर्यसमाज रूपी विष्णु के चारो आयुध शख चक्र गदा और कमल रूप साधन बनकर कार्य को प्रगतिपथ पर ले गए।

सारे नेता भी उसी महान लक्ष्य की ओर सब को अग्रसर कराते गये। उनके सामने समष्टि थी – व्यष्टि नही थी। समाज ही प्रमुख था – स्वार्थ था ही नहीं। चारो ओर आर्यसमाज की धूम थी – वह युग स्वर्णिम था – ज्ञान व अनुभव–वृद्ध लोग इसके साक्षी हैं। धर्म की अर्थ व काम पर प्रमुखता थी। प्रैस से भरी नेतागिरी का चन्द्रमा बीच मे आ गया। परिणाम – सूर्य को ग्रहण लग गया लक्ष्य से सर्वथा दूर चले गए। जब केन्द्र का ध्यान न रहे प्रत्येक प्रान्त व नगर अलग–अलग होकर स्वय ही केन्द्र बनने लगे तो देश दुर्बल होकर कहीं का नहीं रहता। यही दशा आर्यसमाज की हो गई। प्रत्येक साधन स्वय साध्य बन बैठा।

आर्यसमाज का शरीर विशाल हो गया है – हाथ पाव आदि बडे है – बडा मोटा ताजा है – परन्तु दिल अतीव निर्बल है। आज वेद प्रचार की क्या अवस्था है। जिस देश की सेना सर्वथा प्रसन्न सन्तुष्ट रहती है – वह देश बलवान है। जहा पर असन्तोष होता है वहा पर गडबड रहती है। आर्यसमाज की सैनिक शक्ति उस का प्रचारक वर्ग है। इसी के द्वारा वेदप्रचार का मिशन नगर–नगर ग्राम ग्राम मे पहुचता है। आज भारत मे जहा–जहा भी समाज की आवाज है – उसका लगभग सारा श्रेय तपस्वी प्रचारक – वर्ग को जाता है। आखो से बहुत कुछ देखा अनुभव किया तथा सुना। कितना आकाश पाताल का अन्तर। यह एक सच्चाई है कि आर्यसमाज के महान शास्त्रार्थ महारथी हो या सगीताचार्य दिग्गज विद्वान हो या कालेज तथा गुरुकुल के बडे–बडे स्कालर प्रचारक हो या जीवनदानी – किसी ने भी अपने परिवार मे अपने एक भी बेटे को इस प्रचार क्षेत्र मे नहीं आने दिया। सभी उनको ऊची शिक्षा देकर प्राय सरकारी सर्विस मे भेजने का प्रयत्न करते हैं। क्या कारण है – क्या कभी किसी ने सोचा ?

आज का युग त्याग का नहीं। अथवा यह त्याग भी एकाशी नही हो सकता। प्रत्येक के पास आखे है और सोचने के लिए दिल भी है। भविष्य का चित्र भी है। वे सभी धर्म पर धन का ही पजा देखते है। धर्म सर्वथा दब कर रह गया है। जब न वाचिक सम्मान मिलता हो और न जीवन निर्वाह का पूरा प्रबन्ध हो तो फिर समाज की सेना की क्या स्थिति हो ? इस पर किसी ने विचार तक नहीं किया। सभी ढोल ढमाको मे मस्त है। समय–समय पर प्राध्यापक व अध्यापकगण भाषण दे आते है। यह तो उनका दोहरा कार्य है। अपनी जीविका के लिए वे निश्चिन्त है भविष्य भी सुखी। पर केवल प्रचारक ? इस क्षेत्र का जिन को अनुभव है उनकी सम्मति की भी किसी को भी आवश्यकता नहीं।

आज का यह ज्वलन्त प्रश्न है। इस समय तो धन ही धर्म है धन ही शासन है धन ही नेता है और धन ही पूजा का परम देवता है। सभा के मान्य अधिकारियो से पूछे तो वेद प्रचार के लिए धन नहीं। दयानन्द के जीवनलक्ष्य वेदप्रचार के लिए पात्र खाली है – पर सस्थाओ के पात्र तो ऊपर तक भरपूर हैं। उनके पात्रो मे तो उफान आ रहा है। वेदप्रचार का भण्डार खाली है। ये सारी सस्थाए भी तो उसी साध्य की पूर्ति के लिए बनी थीं। पर अब सभी साधन स्वय अपने मे साध्य बन गए है। फिर वेदप्रचार कैसे होगा ?

शिवरात्रि पर उद्बोधन की आवश्यकता है। सडक से नीचे उतरी हुई गाडी को फिर लीक पर लाया जाए। जो वेदप्रसार का परम एव चरम लक्ष्य है साध्य है – उसे प्रमुखता देनी होगी अन्यथा व्यासमुनि ने महाभारत मे जैसा उस अवस्था को देखकर कहा था वही दुहराना पर्याप्त होगा –

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न चकश्चिच्छृणोति माम्।
धर्मादर्थश्च कामश्च कथ न परिसेव्यते।।

महर्षि दयानन्द का बोध

– प्रा० हीरा लाल औलक एम०ए०

शिवरात्रि के अनुभव स दयानन्द को जो बोध हुआ वह यह थ कि मूर्ति पूजा एक पाखण्ड है। उसी दिन से उन्होने सत्य की खोज शुरू की और अपने स्वाध्याय और तप के बल पर भारतवासियो को जगाने का प्रयत्न किया।

उन से पहले भी बहुत लोगो ने ऐसे प्रयत्न किए थे परन्तु मर्ज बढता गया ज्यो ज्यो दवा की। दयानन्द के समय तो भारतीय समाज मृतप्राय था। दयानन्द ने समझा कि समाज पर ब्राह्मणो से अपनी बात मनवा ले तो समाज मे नया जीवन आ सकता है। उन्होने ब्राह्मणो की पोपलीला और पाखड का पर्दाफाश किया काशी मे जा कर शास्त्रार्थ किए और वेद पढने का अधिकार नारी तथा शूद्र सब को दिया।

वस्तुत नई शिक्षा प्रणाली और अग्रेजी राज के आगमन ने भारतीय समाज और अर्थ व्यवस्था को जड से हिला दिया था और धीरे धीरे लोग ब्राह्मणो के अन्याय पूर्ण प्रभुत्व का समझ रह थ। दयानन्द जन्म से ही सामवेदी ब्राह्मण थे फिर भी उन्होने अपने ही लोगो के विरोध मे एक जबरदस्त आन्दालन खडा किया। इससे सारे भारतवर्ष मे ब्राह्मणेतर जातियो को अपने स्वभिमान की रक्षा करने मे मदद मिली। महाराष्ट्र म महात्मा ज्योतिबा फुले को मान्यता इस बात का सबल प्रमाण है।

पजाब तथा उत्तर प्रदेश म भी ब्राह्मणेतर जातियो मे ही आय समाज का प्रचार हुआ। परन्तु इस सब क बावजूद ब्राह्मणा का वचस्व कायम रहा। मूर्ति पूजा अस्पृश्यता जन्म से जाति प्रथा फलित ज्योतिष मृतक श्राद्ध इत्यादि सभी प्रकार के आडबर भारतीय जीवन पर अब भी हावी है। हा इतना जरूर है कि अब सती प्रथा बद है लडकियो को जन्मते ही नही मारा जाता विधवा विवाह हाते है बाल विवाह और अलमेल विवाह अब प्राय नहीं होते।

ब्राह्मणो से निराश होकर दयानन्द का ध्यान देशी रजवाडो की ओर गया। वे उनमे देश भक्ति जगाना चाहते थे और मनुस्मृति और महाभारत के अनुसार प्रथा के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की भावना पेदा करना चाहते थे। उन्हे शीघ्र ही पता लग गया कि कलियुग के ये राजे रजवाडे क्षात्र तेज से रहित हैं। ये भी साधारण प्रजा की तरह अग्रेजो के गुलाम हैं। ये बेचारे अपना ही उद्धार नहीं कर सकते औरो का क्या उद्धार करेगे। दयानन्द को लगा कि विद्या नीति और ब्रह्मचर्य से शून्य ये लोग किसी काम के नहीं। इन्हीं के उद्धार मे उन्हे अपने जीवन से भी हाथ धोन पडे।

मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व आय समाज की स्थापना के समय दयानन्द ने अपने सामने एक नए भारत का रूप उभरते देखा। नए युग मे प्रचार की नई भाषा उभर रही थी। रेल डाक तार प्रेस इत्यादि प्रचार के नए साधन पनप रहे थे। वे हिन्दी की ओर मुड। उनके समथका न उन्हे प्रस खरीदन के लिए धन दिया। दयानन्द तो टका धर्म के बडे विराधी थ परन्तु उन्हे नया बोध हुआ कि लोकतत्र मे मध्यम वर्ग के व्यापारी लोग ही उभरती हुई नई शक्ति हे और सब प्रकार कीशक्ति का स्रात ये साधारण लोग ही है।

स्वामी दयानन्द बन जाओ

– प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

जगत गुरु ऋषि दयानन्द जी का फिर बोध दिवस है आया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया ।
शिवरात्रि को देव पुरुष ने शिवलिग पर चूहो को देखा।
शिव मदिर मे देख नजारा बदल गई थी जीवन रेखा।।
सोचा बाल मूल शकर ने सच्चा शिव यह नजर न आता।
क्षुद्र मूषको को जो अपने ऊपर से अब नही भगाता।।
अपने पिता अम्बा शकर से सहज भव से प्रश्न उठाया।
टकारे वाल स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।।
पूज्य पिता जी ! कपा करके मेरी शका आप मिटाओ।
दैत्य दलन हे महादव जी ठीक तरह अब समझाओ।।
देखो नन्हे नन्हे चूहे शिवलिग पर हुडदग मचाते
बडे ढीठ हे ये चूहे जो शिव का मधुर चढावा खात।।
अचरज है त्रिशूल उठाकर शिव न इनको नही भगाया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया ।
बाले अम्बा शकर बेटा असली शिव ता हे कैलाशी।
कलियुग मे शिवलिग पूजता हे भोला शकर है सुखराशि।।
कहा मूल शकर ने मैं तो सच्चे शिवकी खोज करूगा।
धर्म की खातिर जीऊगा मै धर्म की खातिर सुनो मरूगा।।
इतना कहकर बाल मूल शकर फिर अपने घर का छाया।
टकारे वाल स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।।
सजे सजाए घर को छोडा बना मूल शकर बैरागी।
जीवन के सार सुख त्याग एस बना तपस्वी त्यागी।।
स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से श्रद्धा से सन्यास लिया था।
वेद पढ गुरु बिरजानन्द से मथुरा पुरी निवास किया था।।
करो वद प्रचार जगत म गुरुवर ने ऋषि का समझाया।
टकारे वाले स्वमी न साया कुल ससार जगाया।
धन्य धन्य थ दव दयानन्द पर हित म थ कष्ट उठाए।
भूखे प्यासे फिर रात दिन कभी न जीवन म घबराए।।
छुआछात के ऊच नीच के वेद विरोधी बधन तोडे।
मुल्ला पोप पुजारी पण्डो के योगी ने मुख थे मोडे।।
कर्म प्रधान बताया जग म जन्म जाति का रोग मिटाया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।।
निराकार सर्वान्तर्यामी अजर अमर बतलाया इश्वर।
पवित्र अजन्मा नित्य अनादि दयावान न्यायकारी सुखकर
प्यारे ऋषि ने साफ कहा था यदि खुश करना है प्रभु प्यारा।
सब जीवो पर दया करो तुम दुखियो का दो सदा सहारा।।
पराधीनता नर्क जगत मे स्वतत्रता का पाठ पढाया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।।
माता निर्माता भवती का ऋषिवर ने उदघोष किया था।
गऊ माता है मोक्ष की दाता जग को शुभ सदेश दिया था।
सच कहता हू देव दयानन्द अगर नहीं दुनिया मे आते।
राम कृष्ण ऋषियो के वशज जग मे ढूडे से ना पाते।।
सत्रह बार विष पिया हलाहल जग को वेदामृत पिलाया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।।
सुनो आर्यो ! कान खोलकर तुम भी वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का यह वक्त नही है करके उत्तम कर्म दिखाओ।।
धन पद का तुम लालच त्यागो अपना जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
करो वेद प्रचार जगत मे स्वामी दयानन्द बन जाओ।।
नदलाल निर्भय अब जागो जीवन क्यो बेकार गवाया।
टकारे वाले स्वामी ने सोया कुल ससार जगाया।

– गाव व डाक बहीन तहसील हथीन जिला फरीदाबाद (हरि०)

उन्होने हिन्दू धर्म को सगठित करने के लिए बहु देवतावाद का खण्डन करके एकेश्वरवाद का अद्वैत की जगह त्रैतवाद का मूर्तिपूजा की बजाय पचमहायज्ञ और वर्णाश्रम धर्म का प्रचार किया।

दयानन्द का उददेश्य सराहनीय था परन्तु जजरित समाज ने उनको पर्याप्त सहयोग न दिया। दयानन्द ने सस्कृत प्रचार के लिए पाठशालाए भी खाली परन्तु उन्हे जल्दी ही बोध हुआ कि इनके लिए न ता योग्य विद्यार्थी मिलते ह और न योग्य आचाय। उन्हे यह भी बोध हुआ कि उन के भक्त केवल नाम मात्र के भक्त है वे प्रजा का उद्धार तो चाहते हे परन्तु स्वय या अपने परिवार के लोगो के लिए दयानन्द के मार्ग को खतरनाक समझते अथात वे जिस बात का उपदेश दूसरो को देत हैं उसका पालन खुद नहीं करते।

दयानन्द को नया बोध हुआ कि यद्यपि सस्कृत विश्वभर की सबसे समृद्ध भाषा है परन्तु उनके भक्तो म बहुत से ऐसे सोचते मालूम पडते हे कि क्या कोई सस्कृत पढ कर कोई इजीनियर डाक्टर वकील जज उद्योगपति या पूजीपति बन सकता है ? यदि नही बन सकता तो सस्कृत बडे लोगो के किस काम की। दयानन्द की मृत्यु के बाद आय समाज मे मतभेद का यह भी एक मुख्य कारण रहा।

दयानन्द ने वेदो के प्रचार के लिए एक मजदूर के बेटे श्यामजी कृष्ण वर्मा को सस्कृत पढा कर इग्लेण्ड भेजा पर वहा जाकर वह क्रातिकारी बन गए। दयानन्द का बोध हुआ कि लोग क्राति की ओर झुक रहे है। योरूप मे यह क्रान्तिकारी विचारो के प्रसार का था क्राति की ज्वालाए धधक रही थी सारी दुनिया मे फैलना चाहती थी महाभारत का युग पुन लौट रहा था लोग धर्म और मोक्ष का प्राथमिकता देकर अर्थ और काम मे सुख की खोज कर रहे थे। दयानन्द को लगा कि वह वेदव्यास की तरह घोषणा करे – दोनो हाथ ऊपर उठा कर पुकार पुकार कर कह रहा हू पर मेरी बात कोई नहीं सुनता। धर्म मे मोक्ष तो सिद्ध होता ही है अर्थ और काम भी सिद्ध होते है तो लोग उसका सेवन क्यो नही करते।

ऊर्ध्वबाहु र्विरौम्येष नैव कश्चिच्छृणोति
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्म कि न सेव्यते

क्या हम ऋषि के इस बोध की अब भी ध्यान न देगे ?

ए–४३ डी डी डी ए फ्लैट
मुनीरका नई दिल्ली

वेद प्रचार हो चारों ओर

डॉ० विजेन्द्र पाल सिह चौहान

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्व [illegible] पाखण्ड आडम्बरो पर [illegible] ही अनक कष्ट सह। महर्षि ने आज हमे श्रेष्ठ जीवन जीने का मार्ग बता दिया ओर वह वेद मार्ग है। जिस पर चलकर श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण होता हे। वेद मार्ग पर चलकर ही महाराजा दिलीप मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम याज्ञवल्क्य पातजलि भर्तहरि योगेश्वर श्री कृष्ण अर्जुन व भीम जेसे महापुरूष हुए। वेद मार्ग का ज्ञान व अनुसरण न करने से ही आज समाज व राजनीति मे पाखण्ड अन्याय भ्रष्टाचार बढ रहे है अपराधो की बाढ सी आ गई है। आज ऐसे मे अधिक से अधिक जन समुदाय को वेद ज्ञान कराना आवश्यक हे आज भी बहुत से अज्ञानी पुरुष स्त्रिया वेद को नहीं जानते। हमे चाहिए कि हम इस कमी को पूरा कर महर्षि के स्वप्न को पूर्ण करे।

वेद प्रचार आर्यसमाजो की चार दिवारी मे ही होते हे। जहा केवल आर्यजन ही उपस्थित होते है। और कुछ ही नए सदस्य माह अथवा वर्ष मे जुडते ह परन्तु इससे कार्य नही चलने वाला। चारदिवारी मे प्रचार से तो वही लोग [illegible] उपदेशो का श्रवण [illegible] इससे वचित रह जाते ह। उसमे [illegible] लोगो का व्यावसायिक [illegible] यह कहकर भ्रमित कर दते कि आर्यसमाज के जलसो मे [illegible] नास्तिक होते है यह [illegible] आर्यसमाज का अपनी पाखण्ड व अन्याय पूर्ण सस्कार आदि करने से चलने वाली आजीविका पर कुठाराघात मानते है। इसलिए लोगो को भ्रमित करते है कि यह तो राम को नही मानते श्रीकृष्ण को नही मानते वेदो का अनर्थ करते है। इसलिए आर्यसमाज व वेदप्रचार के कार्यक्रम आर्यसमाज से बाहर करने व कराने चाहिए। दूसरा एक और कारण भी है आर्यसमाज को कहीं–कहीं आय समाज बना लिया है कार्यक्रमो की खानापूर्ति की जाती है। यदि दो चार आर्यसमाजी कहीं मिल जाए तो वेद प्रचार का कार्यक्रम कही भी आयोजित कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द पैदल चलकर मौलवी फक्कडो से मिलते थे। गरीबो की कुटियाओ मे भी जाते थे राजा महाराजाओ के पास जाते अनेक मुस्लिम अग्रेज तथा अन्य लोग भी उनके सत्यज्ञान युक्त तर्क के आगे सिर झुकाते थे महर्षि दयानन्द ने जीवन मे कभी हार नही मानी। सदेव अकेले चलते रहे निर्भीक होकर उपदेश करते थे। आज हमे भी यदि हो सके ते ऋषि का वह मार्ग चुन लेना चाहिए।

आज इलेक्ट्रानिक तकनीक का समय है। कम्प्यूटर आडियो विडियो रेल बस सीडी कुछ सुविधाए है। हमे इन सबका भरपूर प्रयोग करना चाहिए। महर्षि की जीवनी कार्यप्रणाली महर्षि के कार्य आदि का वीडियो फिल्म सी डी आदि से प्रचारित व प्रसारित करे। वेद की ऋचाओ के अर्थ व व्याख्याए तथा विद्वानो के उपदेश तथा भजनो को जनसमुदाय के सामने प्रस्तुत करे। इससे भी प्रचार कार्य हो सकता है।

जो आर्यजन समय दे सके तो सप्ताह मे एक या दो दिन जो अवकाश के होते है। उन दिनो मे दो–चार आर्यसमाजियो को लेकर रिश्तेदार भाई भतीजा मित्रो अथवा आस पडौस मे हवन (अग्निहोत्र)का कार्यक्रम रखे और उपदेश आदि करे। उन्हे सध्या हवन व वेदज्ञान के महत्व को बताए भारतीय प्राचीन सस्कृति गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था [illegible] महत्व पर प्रकाश डाले। उन्हे बताए कि आर्य किसे कहते हे। राम कृष्ण कौन थे ? केसे थे ? महापुरुषो व वीरागनाओ के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाले। आस्तिक नास्तिक कौन हे ? मूर्ति पूजा क्या ह? एसे अनेक विषय ह जिन पर उपदेश आवश्यक है धीरे धीरे वेदार्थ ज्ञान पर भी प्रकाश डाले। इससे उनके मन मे सत्य ज्ञान का अकुर अवश्य स्फुटित होगा और कुछ नहीं तो विचार करने को अवश्य बाधित होगे।

विवाह आदि अनेक पारिवारिक समारोहो मे जाकर वेदिक ज्ञान के प्रचार से सम्बन्धित साहित्य भी बाटे। उनको पढने का देवे। सत्यार्थ प्रकाश इस हेतु अत्यन्त श्रेष्ठ पुस्तक है। कहीं पारितोषिक देना है या कोई भेट देनी है तो वैदिक साहित्य अवश्य देवे। और हो सके तो सस्कारो के विषय मे पुस्तक बाटकर प्रचार करे। लोगो को यह ज्ञान देने का प्रयत्न करे कि हमे जन्म से पूर्व से लेकर मृत्युपर्यन्त वैदिक विधि से ही सस्कार कराने आवश्यक हैं।

प्रचार कार्य यात्रा के समय भी किया जा सकता है। अकेले हैं तो वार्ता द्वारा दो चार आर्यसमाजी हैं तो भजनादि द्वारा प्रचार कर सकते ह। आजकल रेल बस आदि मे बहुत से यात्री ऊबने लगते हे। वहा प्राय कोई न कोई राजनैतिक सामाजिक बात छिड ही जाती है। बस इसका ही लाभ उठाकर उनका ध्यान वैदिक ज्ञान युक्त वार्ता की ओर कर लेना चाहिए ओर धीरे धीरे बुद्धि चातुर्य व युक्ति द्वारा आडम्बर पाखण्डो के खण्डन वेद का ज्ञान सस्कारो का महत्व विषय पर वार्ता छेड देनी चाहिए।

वेद प्रचार अपने नित्य प्रति के व्यवसाय कृषि व किसी भी कार्य के स्थान पर भी कर सकते हे। हम कारखाने मे कार्यरत है अथवा राजकीय सेवा मे या चिकित्सा हो या कृषक हो थोडा बहुत अवकाश तो हर जगह मिल ही जाता है ऐसे मे उस वार्ता मे वेद प्रचार पाखण्डो का खण्डन हो तथा बुद्धियुक्त सत्य असत्य ज्ञान पर प्रकाश डाले हम चाहे किसी भी व्यवसाय व सेवा मे हो वैदिक नियमो का स्वय भी पालन करे तथा अन्य को सत्य मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करे।

गाव नगर मुहल्ले मे कही धमशाला आदि स्थानो पर हो सके तो माह मे एक–दो बार सत्सग अथवा पारिवारिक सत्सग आयोजित [illegible] पडोस वालो को बुलाए जिससे अधिकाश लोगो का वेद का ज्ञान हो सक।

दुकान या अपने व्यवसाय मे लगे हुए भी हम प्रतिदिन एक या दो लोगो को जो इस योग्य हो वार्ता करना चाहते हो वेद का ज्ञान कराए। वार्ता की वार्ता समय का सदुपयोग होगा। सत्य ज्ञान का प्रचार भी होगा। जहा भी समय मिले हम वेद का प्रचार करते चले।

लगभग सभी हिन्दू परिवारो मे हवन तो होता ही है जिसका रूप चाहे विकृत ही होता है उन्हे हवन करने का लाभ व विधि को समझाए। देनिक यज्ञ विधि की पुस्तक देवे और हो सके तो स्वय उनके घर व परिवारीजनो के मध्य हवन करे। ओर इस हवन का लाभ यह होगा कि वेद का उपदेश भी हो जाएगा। उन्हे यह ज्ञान भी होगा कि वेद सत्यज्ञान का भण्डार है। और स्त्री पुरुष इधर उधर के आडम्बरो मे न फसे। गुरुडम मे न जाकर सत्यमार्ग का अनुसरण करे।

अधिकाशत गावो मे महिलाए उपला जला कर उस पर लौग घृत डालकर चारो और जल प्रसेचन हाथ द्वारा करती हे। और हाथ जोडकर इसे पूजा समझ लेती हे। यह कुछ ओर नही अग्निहोत्र का विकृत रूप ही ह। गावो म जाकर समझाए कि इस कार्य को विधिवत करे। अग्निहोत्र कैसे किया जाता है वह करके समझावो। प्राचीनकाल मे कोई भी परिवार ऐसा न था जहा नित्य सध्या हवन न होता हो। सभी जन परिवारो मे इस पवित्र कर्म को अवश्य करते थे ओर वैदिक मन्त्रो के उच्चारण के साथ ही करते थे। धीरे धीरे अन्य कारणो से यह प्रथा लुप्तप्राय हो गई। ओर धर्म के ठेकेदार पाखण्डियो ने भी इसको अपने हाथ मे ले लिया। उसमे भी वह अज्ञानी होने से अवैदिक विधि से हवन करने लगे। जन्मोत्सव विवाह आदि अवसरो पर केवल ऐसे ही पडित ही सस्कार आदि कराने लगे। घरो मे महिलाए वेदमन्त्र की विधि का ज्ञान न होने से इस रूप मे हवन को सूक्ष्म व विकृत क्रिया को करती आ रही है। हमे उनमे अग्निहोत्र के प्रति जागृति लाने की आवश्यकता है। अपने अमूल्य समय मे से थोडा समय भी हम वेद प्रचार हेतु दिया करे तो यह अत्यन्त परोपकार होगा। यदि कोई तर्क करता है तो यह ओर अच्छी बात है उसे धेर्य व शालीनता पूर्वक समझाए।

वर्ष म एक या दो बडे जलसे करने से ही काम नही चल सकता। आज विश्व भर मे अन्य मत मतान्तर पाखण्ड अन्याय की वृद्धि तीव्रतर होती जा रही है। जनता मे पाश्चात्यता हिसक प्रवृत्ति अनाचारो की दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही हे। ऐसे मे स्कूल विद्यालयो आदि मे भी वहा के प्राचार्य व अध्यक्ष आदि से बातकर वहा छात्र छात्राओ मे प्रचार कार्य करना चाहिए। यदि ऐसे छोटे छोटे सगठन बना लिए जाए तो अत्यन्त अच्छा रहेगा। जो आर्यजन अथवा धर्मप्रेमी वेद प्रचार हेतु गाव नगर कालोनी मे जाने की इच्छा रखते है अवकाश लेकर अपना कार्यक्रम बना लिया करे, गावो नगरो व महानगरो मे इस प्रकार छोटी बडी टोलिया (सगठन) बना लेनी चाहिए। यदि आर्यजन महर्षि दयानन्द के कार्य को बढावा देना चाहे वेद प्रचार कार्य करना चाहे तो उपने अन्दर स्थित सकीर्ण भावनाओ को त्याग मैदान मे आए और इस कुरुक्षेत्र रूपी मैदान मे वेदप्रचार हेतु आगे बढे। वैदिक धर्म की जय "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का उदघोष तभी सफल हो सकेगा।

– चन्द्रलोक कालोनी, खुरजा

ऋषि बोधोत्सव और हमारा दायित्व

डॉ० महेश विद्यालकार

आर्यसमाज के जन्म निमाण आर इतिहास मे शिवरात्रि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी पावन पर्व पर आर्यसमाज का उदय का बीजाकुर हुआ था। इसी दिन देवात्मा दयानन्द को आत्मबोध हुआ था। विचारो मे भयकर झझावतआया था। शिव और अशिव का धर्म और अधर्म का जड और चेतन का सत्य और असत्य का द्वन्द्व चला था। हृदय मे बोध हुआ। एक रात जगने के बाद जीवन भर नहीं सोया। उसी ऋषि के बोध और स्मृति का प्रेरक पर्व है शिवरात्रि। इसीलिए आर्यसमाज का शिवरात्रि के साथ गहरा एव विशेष सम्बन्ध है। आर्यसमाज के इतिहास मे यह पर्व सदैव स्मरणीय एव वन्दनीय रहेगा। ऋषि भक्तो के लिए यह पर्व बोधोत्सव है। ज्ञान पर्व है। ज्योति और प्रकाश का महोत्सव है। जड पूजा से चेतन पूजा की ओर आने का शुभमुहूर्त है निर्माण और चेतना की मगल वेला है।

सच्चे शिव की प्राप्ति

इसी पुण्य तिथि पर मूलशकर के हृदय मे सत्य का तूफान उठा था। सारी रात श्रद्धा आस्था और निष्ठा से भरा हुआ सच्चे शिव के दर्शन के लिए एकटक लगाए हुए जगता रहा। जबकि सारा मन्दिर निन्द्रा तन्द्रा की गोद मे था। विचित्र घटना घटित हुई। चूहा शिवजी के नैवेध को निडर होकर खा रहा है। मूलशकर की आस्था श्रद्धा एव विश्वास खण्डित हो उठे। मन मे अनेक सकल्प विकल्पो म डूब गया व्रत तोड दिया। शकर के मूल को जानने क लिए मूलशकर घर से बडी तीव्रता से निकल पडे। अन्तत सच्चे शिव को स्वय जाना ओर ससार को जनाया। इसी घटना न मूलशकर को दयानन्द के नाम से इतिहास और ससार मे प्रसिद्ध किया।

इतिहास साक्षी है कि छोटी छोटी बातो घटनाओ और उपदेशो ने लोगो के जीवन बदल दिए। पतित जीवन से पवित्र जीवन बन गए। पापात्मा से पुण्यात्मा हो गए। भोगी विलासी दुर्व्यसनी जीवन ने ऐसा काटा बदला कि जीवन तपस्वी त्यागी परोपकारी एव धर्मात्मा बन गया। नास्तिक से आस्तिक बन गए। एक वाक्य ने कीचड मे फसे हीरे को अपनी पहचान करा दी। ये तब होता है जब हृदय मे ज्ञान विवेक व श्रद्धा की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही हो।

हृदय सप्त धर्म जानने के लिए अधीर हो रहा हो आत्म बोध जागा हुआ हो। सकल्प मे तीव्रता आतुरता तथा वेदना भरी हो अन्दर की ज्ञानाग्नि प्रज्ज्वलित हो तभी कोई घटना दृश्य और शब्द जीवन विधापक बनते हैं। आज हम सब अन्दर से सोते जा रहे हैं। बाहर से जाग रहे हैं। पर्व आते हैं चले जाते हैं। उत्सव वेद कथाए जलसे जलूस और सम्मेलन होते हैं किन्तु हमारे जीवन मे कहीं भी आत्म-चिन्तन आत्म सुधार परमार्थभावना और प्रभु भक्ति की भावना नहीं जगती। बाहर की दुनिया मे धूमधाम टीमटास व प्रदर्शन हो रहे है अन्दर की दुनिया सोई व खोई है। सब कुछ धर्म कर्म पूजा पाठ दिखावटी और बनावटी होते जा रहे हैं। जितने सुख शान्ति प्रसन्नता व आनन्द को पाने के लिए दौडते जा रहे हैं उतने ही हमसे ये दूर हो रहे है। आज आवश्यकता है बाहर की दुनिया से बाहर अन्दर की दुनिया मे आने की। अन्दर छिपे हुए सुख शान्ति प्रसन्नता एव आनन्द के स्रोत तक पहुचने की। अपने जीवन को सच्चे शिव के साथ जोडने की। तभी जीवन सार्थक कहलाएगा।

आत्मबोध का पर्व

शिवरात्रि आत्मबोध का पर्व हैं जडता से जीवन चेतना की ओर आने का महोत्सव है। भौतिकता से आध्यात्मिकता शरीर से आत्मा प्रकृति से परमात्मा की ओर चलने की स्मृति तिथि है। आज आर्यसमाज और ऋषि भक्तो को आवश्यकता है आत्मनिरीक्षण आत्म चिन्तन एव आत्म विश्लेषण करने की। क्या खोया ? क्या पाया ? क्या कर रहे है ? किधर जा रहे है ? जो आजीवन विषपायी गुरुवर देव दयानन्द ने हमे सिद्धान्त विचार जीवन दर्शन पहचान विश्वसनीयता जागरुकता आदि विशेषताए दी थीं। क्या हम उनके अनुकूल जीवन सभा सगठन व सस्थाए चला रहे हैं ? या मात्र जबानी जमा खर्च हो रहा है ? कहीं ऐसा तो नहीं हो रहा है हमारा स्वार्थ पदलिप्सा आचरणहीनता निष्क्रियता व नि[illegible] के नाम काम व आर्यसमाज को पीछे धकेल रहो हो ? कहीं हम भी औरो की तरह स्कूल दुकान ट्रेक्ट जलसे जलूस आदि में उलझकर आर्यसमाज ओर ऋषि के बताए उद्दश्यो स भटक रहे हो ?

आपने कभी सोचा ?

बडी अन्तर्वेदना से लिखना पड रहा है कि ससार की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज व्यक्ति निर्माण आदर्शों सिद्धान्तो सगठनशक्ति प्रभाव तथा अनुयायियो की दृष्टि से सिकुड व सीमित हो रहा है ? पुराने बडी तेजी से चले जा रहे हैं ? नए बन नहीं पा रहे हैं ? न जुड पा रहे हैं। परिणाम सामने है हमारे सत्सगों की उपस्थित क्षीण हो रही है। ऋषि के नाम और काम का जो मूल्याकन होना था वह नहीं हो रहा है। समाज और तत्र मे जो देव दयानन्द को स्थान मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। लोग विवेकानन्द को कन्धों पर उठा उनके गीत गा रहे हैं। ऋषि दयानन्द के तप त्याग निर्माण एव बलिदान की चर्चा तक नहीं होती। जबकि दयानन्द का प्रत्येक क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। उनकी ससार को देन अविस्मरणीय है। उनका चिन्तन एव जीवन अपने में वैज्ञानिक व्यवहारिक व सर्वांगीण है।

आर्यसमाज 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लेकर चला था। व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य इसके मन्तव्यो मे रहा है। इस विचारधारा का आविर्भाव जागरूक प्रहरी राष्ट्र चिन्तक वेद धर्म सस्कृति रक्षक के रूप मे हुआ है। इसकी विराट चेतना और जीवन दर्शन मे सर्वे भवन्तु सुखिन वसुधैव कुटुम्बकम सर्व आशा मम मित्र भवन्तु आदि भावनाए विद्यमान हैं। इसका आधार वेद और सत्य पर है। इसका प्रवर्तक सत्य के लिए जिया और सत्य के लिए ही शहीद हो गया। उस महापुरुष ने आने नाम यश परम्परा और सुविधा के लिए जीवन भर न कुछ लिया न कुछ दिया।

हम भी मूल से हट रहे हैं

ऐसी जीवन्त विचारधारा के धनी आर्यसमाज की आन्तरिक एव बाह्य नीति कैसी है? हम पिछडते क्यो जा रहे हैं ? अपने और सगठन के पुनर्मूल्याकन की सोच का सन्देश देने आती है हर साल शिवरात्रि। प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव उतिष्ठत जाग्रत की भावना देता है किन्तु हम लोग खान-पान मिलना-जुलना मेले और वाचिक श्रद्धाजलि मे ही कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। कहीं निर्माण की ललक आत्मोत्थान की आतुरता ओर सुधार की चतना नजर नहीं आती है। इसीलिए वहीं के वहीं खडे हैं? जब तक अन्दर का ज्ञान विवेक जाग्रत नहीं होगा तब तक उत्थान निर्माण और कल्याण असम्भव होता हे

आर्यसमाज का चिन्तन विचार प्रधान व क्रियात्मक है। आज ससार मे उथल पुथल मार-काट भागदौड ईर्ष्या द्वेष तनाव-चिन्ता रोग आदि फैल रहे हैं। उसके मूल मे महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि आज का मानव मूल से हट रहा है। जो विचार मूल्य आदर्श व सोच मानव को प्रसन्न सुखी शान्त और आनन्दित करते हैं उनका सर्वत्र तेजी से अभाव होता जा रहा है। यह ससार विचारो के कारण दु खी है। अच्छे विचार अच्छी प्रेरणाए व सन्देश दुर्लभ ही मिलते हैं।

आर्यसमाज के पास वैदिक सम्पदा का अक्षय भण्डार है। आज के मानव समाज व जगत को आर्यसमाज प्रत्येक दिशा मे बहुत कुछ दे सकता है। इसके पास सीधा सच्चा व सरल दिशा बोध है। किन्तु पीडा और विडम्बना तो यह है —

बडे शौक से सुन रहा था जमाना।
हमीं सो रहे हैं अपनी दास्ता कहते-कहते।।

पर्व का सन्देश सुनो

आर्यसमाज और ऋषि का जो उद्देश्य था उसे हम भूलते जा रहे हैं। हम भी ओरो की तरह ईंट पत्थर भवन सस्थाए फिक्स डिपोजिट पद चुनाव आदि म उलझ रहे है। वेद प्रचार शान्तिपाठ की ओर बढ रहा है। दयानन्द के नाम और काम को कैश करने मे होड लग रही है। जिन बातो का ऋषि ने विरोध किया था हम उन्हीं बातो को कर रहे हैं। आर्यसमाज मे भी गुरुडम पाखण्ड व्यक्तिपूजा कुर्सीवाद और धडेबाजी तेजी से फैल रही है। कोई किसी की सुनता नहीं। अनुशासन व विश्वसनीयता टूट रही है।

शिवरात्रि पर्व हमें जगाने के लिए आता है। आर्यो ! स्वय जागो और दूसरो को ज्ञान विचार व आचरण से जगाओ। ऋषि ने हमे वेद सस्कृत सस्कृति तथा सस्कारों की धरोहर सौंपी है। इसे जन-जन तक पहुचाना है। ऋषि के ऋण से उऋण होने का सच्चा मार्ग है। यही उनका तर्पण है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है। उठो ! जागो ! अपने कर्त्तव्य का बोध करो ! सगठित होकर आगे बढो ! ससार में व्याप्त जडता अज्ञानता अन्धविश्वास पशुता पाखण्ड गुरुडम तेजी मे फैल रहे हैं। जैसे ऋषि ने इनका डटकर मुकाबला किया था आर्यसमाज को भी इनका डटकर विरोध करना चाहिए। यही इस पर्व का सन्देश है।

— बी० जे०/२६ पूर्वी शालीमार बाग
दिल्ली ५२

बोध रात्रि पर आर्यो से निवेदन

— राजेन्द्र कुमार आर्य

ऐ आर्यो कुछ करके दिखाओ तो बात है।
इस बोध रात्रि पर जाग जाओ तो बात है।।

ऋषि ने कहा था मूर्ति पूजा बडी है बुराई।
तुम कहने लगे इससे समझौता करो भाई।
इस बुराई को छोडकर मैदा में आओ तो बात है

दयानन्द ने बताया जाति गुण कर्म के अनुसार।
पर क्या अपना पाए इसे कुछ तो करो विचार।
गुण कर्मानुसार विवाह बच्चों के करवाओं तो बात है

ऋषि ने पुन दिलाई याद चारो आश्रमो की।
हम भूल बैठे थे जिसे केवल गृहस्थ मे।
आश्रमो को जीवन मे अपनाओ तो बात है

तुमने लिया था ठेका विधवा उद्धार का।
ऋषि ने बनाया वारिस तुम्हे वेद प्रचार का।
वेदो को पुन प्रतिष्ठित कराओ तो बात है

तुमको तो बनाना था वैदि धर्मी यह ससार।
पर तुम स्वय हिन्दू बने कुछ तो करो विचार।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' को जीवन में लाओ तो बात है

तुमने बहुत ही खोले कालेज व गुरुकुल।
पर उनको देख ऋषि की आत्मा तो है व्याकुल।
उनको ऋषि के अनुसार चलाओ तो बात है

आज आर्यावत समस्याओ से जूझ रहा।
पजाब असम कश्मीर मे ये क्या है हो रहा।
ऐसे मे देश को राह दिखाओ तो बात है

प्रतिनिधि सभाओ मे देखो कितने है झगडे।
अब सार्वदेशिक भी दो बनाने पर है अडे।
इन स्वार्थी लोगों से, आर्यसमाज को बचाओ तो बात है

माइक्रोवेव टावर कोटा राजस्थान

शिवरात्रि संदेश

— रुद्रदत्त शर्मा

यो जागार त ऋच कामयन्ते
यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकत ।।

इस मन्त्र मे भगवान अपने अमृत पुत्रो को उपदेश देते है कि जो जागता है वही ज्ञान विाान को तथा भगवान द्वारा दिए गए ऐश्वर्यो को प्राप्त करता है। दूसरे शब्दो मे सोया पडा व्यक्ति इन सभी पदार्थो से वचित रहता है।

आज कितने व्यक्ति वेद का अध्ययन करते है और उनमे से कितने वेद मन्त्रो के अर्थो को जानते मनन करते और उनके अन्दर छिपे रहस्य तक पहुचने का यत्न करते हैं। उपरोक्त मन्त्र मे भगवान ने हमे जागते रहने का आदेश दिया है परन्तु आज समस्त ससार सो रहा है। जैसे सोये व्यक्ति को अपने भूत भविष्य हानि लाभ और उत्थान पतन का कोई होश नहीं होता ठीक उसी तरह हम अपने भविष्य और हानि लाभ से बेखबर तीव्र गति से मानवता के उच्च स्तर से गिर कर दानवता की ओर भागे जा रहे हैं। भौतिक सुखो की अस्थिरता और कटु परिणाम को देखते हुए भी उनकी उपलब्धि और उपार्जन मे जीवन खपा रहे हे। खान पान और भोग विलास के दावानल मे दग्ध हो रहे है। हालाकि अमरीका और यूरोप के देश जिनके अन्धाधुन्ध अनुकरण मे हम पागल हो रहे है इस विनाशकारी मार्ग से तौबा कर रहे है।

दूसरी ओर धर्म के नाम पर जगह जगह अधर्म के अडडे बन रहे हैं। और पत्थर पीतल और चान्दी की मूर्तियो से सतुष्ट न हो कर पीपल बेरियो मकबरो और मजारो की पूजा कर रहे हैं। सैंकडो दम्भी और पाखण्डी साक्षात भगवान बने दनदना रहे हैं। यह है वेद और उसके आदेश से विमुख होने का परिणाम।

शिवरात्रि प्रतिवर्ष जागते रहने के प्रभु आदेश की याद दिलाने के लिए आती है। एक शताब्दी पूर्व भी आई थीं जब मूल शकर को पिता द्वारा जागते रहने का आदेश मिला। आज्ञाकारी पुत्र ने जागते रहने के कारण अपनी अदभुत ग्रह्य शक्ति से रात ही रात मे उस सार गर्भित रहस्य को प्राप्त किया जो सहस्रो वर्षों से पार्थिव शिव की पूजा करने वाले करोडो भक्त न पा सके। उनकी आखो के सामने भी कई बार शिव और दूसरे देवताओ की मूर्तियो पर चूहो के नाचने के दृश्य आये होगे परन्तु वे जागत हुए भी साये पडे रह और देखते हुए भी अन्धे बने पत्थर पूजा मे सर पटकते रहे।

महर्षि दयानन्द ने बहिन और चाचा की मृत्यु से शिक्षा प्राप्त की परन्तु प्रतिदिन अपने सगे सम्बन्धियो और मित्रो को परलोक जाते देख कर हमारे कान पर जू तक नहीं रेगती।

महर्षि दयानन्द प्रभु आदेशानुसार स्वय जागे और उन्होने अपने अपूर्व तप त्याग से ससार को झकझोर कर जगाया। उनके महान प्रयास और प्रताप से हम भी जागे और उनके मार्ग पर चलते हुए ससार को अविद्या और अन्धकार की निद्रा से जगाने का प्रयत्न कर रहे है। महर्षि के शिष्यो ने स्थान स्थान पर आर्य समाजो तथा शिक्षणालय (स्कूल कालेज और गुरुकुल) स्थापित करके धर्म प्रचार एव सेवा का जितना महान कार्य किया उसका उदाहरण मिलना कठिन है। स्वदेशी तथा विदेशी मत मतान्तरो पर महर्षि और उसके शिष्यो की तपस्या और बलिदानो का आश्चर्यजनक प्रभाव पडा। वेदो को गडरियो के गीत कहने वाले पश्चिमी विद्वान वेदो को ससार भर से सर्वोत्तम सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ मानने लगे। डी ए वी कालेजो और गुरुकुलो के सुयोग्य और तपस्वी अध्यापको एव विद्यार्थियो ने देश विदेश मे भारत और भारतीय सस्कृति का डका बजा कर सबको वद का शैदा बनाया।

आर्यसमाज ने थोडे समय मे ही न केवल देश मे अपितु ससार भर मे जो महान जागृति एव क्रान्ति उत्पन्न कर दी उसे देखकर जितनी खुशी होती है उससे अधिक दुख यह देख कर होता है कि अब हमारे काम मे पहले की सी प्रगति दिखाई नहीं देती। प्रचार कार्य मे न वह जान और न शुद्धि सगठन और शास्त्रार्थो की गूज सुनाई देती है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारा पहले किया कराया भी मिट सा रहा है।

दूसरी ओर हमारी सस्थाओ ने भी आर्य समाज का साथ छोडकर धर्मशिक्षा के अत्यावश्यक और मौलिक लक्ष्य से मुह फेर कर पश्चिमी सभ्यता के प्रचारक उन्ही विद्यालयो का रूप धारण कर लिया है जिन्हे देश और जाति के लिए घातक समझ कर उनका मुकाबिला करने के लिए हमारे दूरदर्शी नेताओ ने इनकी नींव रखी थी।

शिवरात्रि के पवित्र पर्व पर आर्यसमाज के नेताओ और कर्णधारो को मिल कर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि आर्यसमाज का विस्तार और शान्ति पहले से कहीं अधिक होने के बावजूद हमारे प्रचार की गाडी क्यो रूकी पडी है ? अपनी भूत और वर्तमान दशा का निरीक्षण करने से हम अपने भविष्य को पहले से भी अधिक उज्ज्वल बना सकते है। यही इन पर्वो का वास्तविक उद्देश्य होता है।

पहुच जाय उन तक मेरा नालाये दिल
यही तुझ से वादे सबा चाहता हू।।

— आर्य समाज लक्ष्मणसर
अमृतसर (पजाब)

ऋषि सन्देश

सकलन — ब्र० इन्दु

१ सत्य पुरुषो को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे के दोष कहना और अपना दोष सुनना। परोक्ष मे दूसरो के गुण सदा कहना। और दुष्टो की यह रीति है कि सम्मुख मे गुण कहना और परोक्ष मे दोष का प्रकाश करना। जब मनुष्य दूसरे से अपने दोष नही कहता तब तक मनुष्य दोषो से छूटकर सुखी नहीं हो सकता। (जो मीठी–मीठी बात सुनने के आदि हो जाते हैं उन्हे कडवी बात कभी–कभी सुननी चाहिए।)

२ एक तो मेरा लक्ष्य सार्वजनिक है उसे सकुचित नही किया जा सकता। दूसरे भारतवासी लम्बी तानकर ऐसी गहरी नीद सो रहे हैं कि मीठे शब्दो से तो आख तक खोलने के लिए तैयार नहीं। सुधार का तो नाम तक नहीं लेते। कुरीतियो और कुनीतियो के खण्डन रूप कडे–कोडे की तडातड ध्वनि से यदि जाग जाए तो ईश्वर का कोटि–कोटि धन्यवाद ।

३ धर्म गुरुओ और सामाजिक नेताओ की असावधानी प्रमाद और आलस्य से भावना भाव और भाषा की एकता के चिन्ह वदल जाते है।

४ विद्या का यही फल हे जिसमे मनुष्या को धार्मिक होना आवश्यक है। जिसन विद्या के प्रकाश से जानकर अच्छा न किया और बुरा जान बुरा करना न छोडा तो क्या वह चोर समान नही है ? क्योकि जैसे चोर चोरी की आदत को बुरा नही मानता हुआ (भी) करता है और साहूकारी को अच्छी जानकर भी नही करता। वैसे ही पढकर भी अधर्म को नही छोडने हारा और धर्म नही करने हारा क्या मनुष्य है ?

५ जो मनुष्य नित्य प्रात और सायम सध्योपासना को नहीं करता उनको शूद्रके समान समझकर द्विजकुल से अलग करके शूद्र कुल मे रख देना चाहिए।

६ चाहे कोई हो जब तक मैं उसमे न्यायचरण देखता हू। तबतक उसके साथ मेल रखता हू। और जब अन्यायाचरण प्रकट होता है फिर उससे मैं मेल नहीं करता। इसमे कोई (राजा) हरिश्चन्द्र व अन्य कोई हो। (व्यक्ति को देखकर नियम लगाना ओर तोडना हमारा स्वभाव बन गया है।)

७ वेदादि सत्य शास्त्रो का पढना पढाना धार्मिक विद्वानो का सग परोपकार धमानुष्ठान योगाभ्यास निवेर निष्कपट सत्यभाषण सत्य का मानना सत्य करना ब्रह्मचर्य आचार्य अतिथि माता पिता की सेवा ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना शान्ति जितेन्द्रियता सुशीलता धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान विज्ञानादि शुभ गुण कर्म दुख से त्यागने वाले होने से तीर्थ है।

८ जो मुक्ति चाहे वह जीवन मुक्त अर्थात् जिस मिथ्या भाषण आदि पापकर्मों का फल दुख है उनको छोडकर सुखस्वरूप फल देने वाले सत्य भाषण आदि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुख को छोडना और सुख को पाप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड धर्म अवश्य करे। क्योकि दुख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

आर्यो ! जागो और विश्व को जगाओ

(तब, अब और फिर कब)

— आचार्य आर्य नरेश, वैदिक गवेषक

महर्षि देव दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश महाभारत रामायण मनुस्मृति तथा शतपथादि ब्राह्मण ग्रन्थो के प्रमाणो से यही सिद्ध होता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर कभी वैदिक आर्यो का राज्य था। सम्पूर्ण विश्व के लोग कभी एक धर्म एक भाषा एक पूजा पद्धति और एक ही वैदिक सस्कृति मे विश्वास करते थे। जन्म से नहीं अपितु कर्मों से प्रत्येक को महान और ज्ञानयुक्त सुसस्कारो से ही किसी को श्रेष्ठ समझा जाता था। लोभ द्वेष वासना तथा हिसा का प्राय धरती पर नामो निशान भी न था।

तथाकथित जाति तथा प्रान्तवाद व भेद के बिना सारा विश्व एक परिवार के रूप मे पृथ्वी पर वास करता था। ईश्वर के प्रति विश्वास व श्रद्धा के कारण कही पर कोई चोर रिश्वतखोर मासखोर सुरा सेवी या लोभी व दुखी न था। प्रत्येक मानव दूसरे मानव को प्रभु का जाया समझ कर भाई भाई की तरह यहा व्यवहार करता था। बच्चो को प्यार माताओ बहनो को सत्कार तथा अनाथो गरीबो व वृद्धो को सदा सेवा के भाव से देखा जाता था। तब धरती पर न कोई भूखा था न अनपढ था और न ही कोई अपमानित था। किसी को किसी का यहा कोई भय नहीं था। घरो मे ताले न थे ओर बाजारो मे शराब व मास बेचने वाले न थे। अहिसा धर्म के पालन व वैदिक यज्ञो के प्रचलन के कारण अतिवृष्टि अनावृष्टि अकाल तूफान तथा भूकम्प आदि प्राय नहीं आते थे। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक यहा शिक्षा व राज व्यवस्था वेदो के अनुसार चलती रही।

मानव का दुर्भाग्य उदय हुआ उसने चेतन निराकार सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान भगवान ओ३म तथा उसके सर्वहितकारी वेदज्ञान को छोडकर अज्ञान आलस्य ईर्ष्या–द्वेष व अभिमान के कारण व्यक्तिगत मनमाने मतो व पथो पर विश्वास करके व्यक्तियो को या उनकी जड मूर्तियो को पूजना व पुजाना प्रारम्भ किया। इस अज्ञान की प्रतिस्पर्धा से सम्पूर्ण विश्व अनेको जातियो व सम्प्रदायो मे बट कर खण्डित हो गया और सर्वश्रेष्ठ कहलाने वाला इसान एक दूसरे के प्राणो का शत्रु व दूसरे के धन तथा यौवन का लोभी हो गया। वैदिक यज्ञो का स्थान तथाकथित देवी देवताओ और पशुबलि ने ले लिया।

अपने अपने सम्प्रदायो के पृथक पृथक नेता या सरदार बन जाने से एक दूसरे से अधिक महान सम्पन्न व शक्तिशाली कहलाने हेतु एक सम्प्रदायवालो ने यथेच्छा बल व अन्यायपूर्वक दूसरो को गुलाम बनाना कतल करना व उनका शासक बन जाना प्रारम्भ कर दिया। प्रभु की प्रकृति मे सर्वश्रेष्ठ कहलाने वाला इसान नास्तिक अभिमानी व शोषक बनकर अन्य प्राणियो की मनमानी से हत्या करके खून बहाने लगा।

इस विकट स्थिति मे गुजरात के टकारा ग्राम मे एक दिव्य विभूति ने जन्म लिया जो आगे चलकर योगाभ्यास व वेदो के पाण्डित्य से देव दयानन्द कहलाये। उन्होने घोर परिश्रम करते हुए विश्व के मानव को पुन एकता भाईचारा तथा श्रेष्ठता की डोर मे पिरोने हेतु लगभग सत्तरह बार विष पीकर आर्यसमाज रूपी सस्था को स्थापित किया। जिसका मुख्य उद्देश्य ससार का उपकार करना निश्चित किया। ऋषि दयानन्द के ज्ञान एव बलिदान से प्रभावित होकर उनके अनेक शिष्यो ने उनके पावन वैदिक मार्ग का अनुसरण करते हुए विश्वमैत्री तथा विश्वशान्ति हेतु अपना बलिदान कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द प० लेखराम प० गुरुदत्त आदि अनेको धर्म दीवाने तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा लाला लाजपतराय प० रामप्रसाद बिस्मिल व सरदार भगतसिह जैसे अनेको देश दीवानो ने विश्वगुरु भारत से सम्पूर्ण विश्व को स्वतन्त्रता तथा शान्ति का पथ दिखलाने हेतु बलिदान का मार्ग अपनाया। महर्षि देव दयानन्द ने जो सर्वप्रथम स्वराज्य का मार्ग दिखाया था उसी अनुसार इन्होने भारत को स्वतन्त्र करवाने का प्रयास किया।

महर्षि देव दयानन्द के कार्यो को व्यवस्थित ढग से पूर्ण करने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य पाखण्ड अज्ञान हिसा तथा शत्रुता से धरती के मानवो को मुक्त करके उन्हे वेदामृत पिलाकर पुन मैत्री व जीवन की सच्ची उन्नति व शान्ति का मार्ग दिखाना था। आज इस अवसर पर विचारना यह है कि हम ऋषि देव दयानन्द के कितने कार्यो को पूर्ण कर सके। दुःख से लिखना आज पाखण्ड शत्रुता हिसा घमण्ड व मतान्धता घटने के स्थान पर कई गुना अधिक बढे हैं ? निश्चित पर यदि हम ईमानदारी से देव दयानन्द के सच्चे भक्त बनकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ व लोभ को छोडकर बिना घमण्ड के सत्यार्थप्रकाश के अनुसार नि स्वार्थ सेवा मे लग जाए।

कुछ मूल्यवान सुझाव

१ स्थानीय समाज से लेकर प्रतिनिधि व प्रादेशिक सभा स्कूल या महाविद्यालय अथवा सार्वदेशिक सभा मे गुण कर्म व स्वभाव से विद्वान तथा समय देने वाले अधिकारियो को ही चुने और कार्यकारी प्रधान या कार्यकारी मन्त्री बनने के उत्साहहीन व निराशापूर्ण फैशन पर किसी विशेष दुर्घटना की स्थति को छोडकर रोक लगा दी जाए। कार्यकारी प्रधान या कार्यकारी मन्त्री का कार्यकाल निश्चित हो। चुनाव मे जाति व प्रान्तवाद को दूर रखा जाए।

२ अयोग्य अधिकारियो को सिद्धान्त विरूद्ध कार्य करने अथवा वर्ष भर का उचित निर्धारित कार्य न करने पर पद से प्रेमपूर्वक हटा दिया जाए। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को ध्यान मे रखते हुए अधिकारी वे ही बने जो प्रचार की गति कार्यालय की व्यवस्था तथा अधिक से अधिक नए लोगो को जोड पाने मे सक्षम हो। ५५ से ऊपर का व्यक्ति तभी किसी समाज का अधिकारी बनाया जाये जबकि वह विधिवत वानप्रस्थ लेकर विरक्त हो और अपना सम्पूर्ण समय केवल समाजहित मे त्याग करने को तैयार हो।

३ पाखण्डो व नए पनप रहे सम्प्रदायों को रोकने हेतु वेद प्रचार को नवीनतम साधना द्वारा शीघ्रता से जन जन तक पहुचाने का मुख्य माध्यम प्रचार मीडिया अपनाया जाए। प्रत्येक समाज सभा व सार्वदेशिक का एक अधिकारी केवल दैनिक समाचार पत्रो पाक्षिक पत्रिकाओ तथा दूर दर्शन से सीधा सम्बन्धित हो।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

टंकारा की किरण–सुबोध

— देवनारायण भारद्वाज

टकारा की किरण–सुबोध शान्त कर गई तम का क्रोध।
पाया किसने ऐसा बोध हारे जिससे सब अवरोध।।

अन्तरिक्ष मे असख्य सूरज उनमे एक हमारा सूरज।
सूरज कुल के नक्षत्रो मे यह पृथ्वी रही हमारी सज।
पृथ्वी के सब देश–देश मे एक हमारा भारत प्यारा।
भारत के गुजरात प्रान्त मे बसता एक ग्राम टकारा।।

टकारा का एक अबोध नया दे गया सूरज शोध।
पाया किसने ऐसा बोध हारे जिससे सब अवरोध।।

कर्षण जी उत्तम अधिकारी जिनकी रही प्रतिष्ठा भारी।
उनके घर सन्तान पधारी अमृता यशोदा महतारी।
वे बालक धन्य मूल शकर जिनमे जगे ज्ञान के अकुर।
यजुर्वेद शिव शास्त्र शुभकर पढने लगे मूलजी सुखकर।

पाया नित्य शैव सम्बोध पूजा शिव को बिना विरोध।
पाया किसने ऐसा बोध हारे जिससे सब अवरोध।।

चौदह वर्ष अवस्था आई शिव की महिमा बहुत सुहाई।
निशा–जागरण व्रत धारण मे अपनी निष्ठा खूब दिखाई।
पिता–पुजारी सोए सारे मूल रहे निज नयन पसारे।
आएगे शिव आज हमारे पाएगे हम दर्शन प्यारे।

किया पिता ने था अनुबोध, किया मूषको ने गतिरोध।
पाया किसने ऐसा बोध हारे जिससे सब अवरोध।।

सोई अग्नि बनी अगारा जग मे चमका रवि टकारा।
हो गई यात्रा अब आरम्भ गिरने लगे अवैदिक खम्भ।
सच्चे शिव का मान हो गया सुरभित यज्ञ विधान हो गया।
वेदो का उत्थान हो गया दयानन्द का गान हो गया।

गुजित हुआ धर्म उद्‌बोध करने लगा विश्व अनुरोध।
पाया किसने ऐसा बोध हारे जिससे सब अवरोध।।

— 'वरेण्यम्' एम०आई० जी० ४५ पी०, अवन्तिका कालोनी (प्रथम), रामघाट मार्ग, अलीगढ उ० प्र०

पृष्ठ ६ का शेष भाग

आर्यो ! जागो और विश्व को जगाओ

किसी वेदिक सिद्धान्त का खण्डन हान पर तुरन्त मीडिया से उत्तर दिया जाए। इस काय हेतु खर्च किये जाने वाल धन को व्यर्थ न समझकर सर्वाधिक उपयोगी माना जाए। महर्षि दयानन्द के वेदिक कार्यो का जन जन तक पहुचाने हतु शीघ्र ही उनक सेद्धान्तिक आकषक व प्रभावशाली सीरियल तथा भाषण दूरदर्शन से प्रसारित हो। वर्तमान मे दूरदर्शन दैनिक पत्रो या पत्रिकाओ आदि मे आर्यसमाज वैदिक धर्म अथवा दयानन्द को प्राय कोई स्थान न मिलने के दोषी कौन हैं ? कितने आश्चर्य की बात है कि समाजो व सभाओ मे स्थिर निधिया बढ रहीं हैं हमारे लोगो के व्यापार भी खूब बढ रहे है हमारे व्यक्तिगत नाम अथवा *व्यापारिक वस्तुओ के नामो का भी खूब* प्रचार मीडिया से बढ रहा है पर देव दयानन्द और उसके वैदिक धर्म की छाप निरन्तर मीडिया के बिना घट रही है ? नए लोग बहुत कम आ रहे हैं।

४ आर्यो मे कर्मकाण्ड की एकता हेतु पुन सार्वदेशिक धर्मार्यसभा की ओर से एक सभी विद्वाना अथवा अनुभवी प्रचारको की सभा बुलाई जाए।

५ प्रचार तन्त्र को तीव्र करने हेतु आर्यसमाजो सभाओ व सार्वदेशिक के कार्यालय सभी प्रकार के सैद्धान्तिक आकडो से युक्त हो। आयसमाज का इतिहास प्रचारको क पते उनके विवरण सचिका तथा सभी विशिष्ट विद्वानो द्वारा की गई गवेषणाये वहा जानकारी हतु अकित हो। सम्पूर्ण विश्व के आर्यसमाज अनाथालयो विकलाग गृहो विद्यालयो तथा गवेषणा केन्द्रो का पूर्ण विवरण खाके सहित कार्यालयो मे उपलब्ध हो।

६ वैदिक धर्म व आर्य सिद्धान्तो को प्रभावशाली बनाने हेतु लडके व लडकियो के पृथक पृथक आवासीय सर्व सुविधा कला व खेलादि युक्त अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्यालय खोले जाये। जिससे हमारे बच्चे सस्कृत हिन्दी व अग्रेजी के माध्यम तथा यज्ञ वैदिक विज्ञान तथा योग व वैदिक इतिहास से प्रभावित होकर शासन को प्रभावित कर सके। इसके साथ साथ आर्य सिद्धान्तो मे दृढ ऋषि भक्तो को किसी भी प्रकार से राजनीति मे भेजा जाये और राजनीति की बागडोर के द्वारा वेदधर्म की रक्षा की जाये। क्योकि इसमे दो मत नहीं कि धर्म उसी का सुरक्षित रहता है जिसका राज होता है। विश्व मे ईसाई मुसलमान यहूदी या अन्य भारतीय आतकी मत के फैलने के यही कारण हैं।

७ वैदिक धर्म के विरुद्ध उन्नत होने वाले वातावरण तथा विदेशी मौलवी व पादरियो को रोकने हेतु और देश की सरकार तथा समाज पर अपना दबदबा बनाने हेतु नित्य चलाये जाने वाले आन्दोलन ही हो सकते है। पर ध्यान मे रखा जाये कि ये आन्दोलन पढने वाले विद्यार्थिया या बच्चो के पालन मे व्यस्त रहने वाले गृहस्थो द्वारा सफल न होकर कवल दयानन्द के सच्चे दीवाने वानप्रस्थियो द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता हे। कोई भी विचारधारा आन्दोलन से ही जिन्दा रहती हे कहते हे कि आर्यसमाज का अतीत बहुत अच्छा व प्रभावशाली था क्योकि वह नित्य निजाम हैदराबाद के विरूद्ध व गोरक्षा तथा हिन्दी रक्षा हेतु आन्दोलन करता रहता था और आन्दोलन ही किसी सस्था के प्राण होते हैं।

८ क्योकि वैदिक सस्कृति तथा ऋषि ज्ञान के अनुसार ज्ञान व समय का त्याग धन के त्याग से कहीं श्रेष्ठ माना जाता है पहले ब्रह्म ज्ञान तप पश्चात क्षत्रिय त्याग तप पश्चात तीसरे क्रम पर धन का त्याग करने वाला वेश्य होता है। यदि आयसमाज म हम पुन जीवन देखना चाहते हैं तो त्यागी तपस्वी विद्वानो तथा समय व जीवन दानियो का सर्वोपरि आदर करे। इससे प्रेरणा पाकर आर्यसमाज को अधिक श्रेष्ठ व सेवाभावी कार्यकर्ता मिलेगे। यह समाज का अटूट नियम है कि जिसकी ज्यादा पूजा होगी वही अधिक बढेगा। खेद है कि आज आर्यसमाज के मचो पर नेता अधिक बढ रहे है और श्रोता तथा कार्यकर्ता कही और जा रहे हैं। आर्यसमाज को उठाना या गिराना आज के नेताओ के ही हाथ है गभीरता से विचार करो। धन से या गठजोड की चतुराई से मात्र नाम कमाने वालो की अपेक्षा काम से नाम कमाने वाले लोगो का नाम लेने से ही आर्यसमाज का बिगडा हुआ काम बनेगा।

९ वैदिक विज्ञान विषयो पर गवेषणा करने वाले विद्यार्थियो को प्रोत्साहित किया जाए। गवेषणा करने वालो को अनुदान या उचित छात्रवृत्तिया दी जाए। उनके लिए पुस्तकालयो की अच्छी व्यवस्था हो। विद्यार्थी समय पर सहायता प्राप्त कर सके व प्रेरणा भी ले सके इसके लिए दैनिक पत्रो या दूरदर्शन के माध्यम से उन्हे समय समय पर सूचना दी जाये। युवाओ को प्रभावित करने हेतु आर्य विद्वानो द्वारा विद्यालयो व विश्वविद्यालयो मे नियमित रूप से व्याख्यान व साहित्य दिया जाए और सुदर स्थानो पर उचित व्यवस्था से युक्त आर्यवीर व आर्य वीरागना शिविर लगाये जाये।

१० सार्वदेशिक सभा का कार्यालय व पत्र ऐसा विशिष्ट हो कि सम्पूर्ण विश्व के समाजो आर्यो व आर्य विद्वानो तथा प्रचारको की गतिविधियो का पता चलता रहे। सभाओ या सार्वदेशिक स्तर पर आर्यवीर दल के शिक्षक वैदिक कर्मकाण्ड के शिक्षक विभिन्न मतवादियो का शास्त्रार्थ से उत्तर देने वाले तथा विदेश प्रचार हेतु विभिन्न भाषाओ के विद्वानो का त। करने की योजना हो।

११ क्या दूरदर्शन या अन्य प्रचार माध्यम मात्र राजनेताओ या अभिनेताओ की ही बपौती है ? सार्वदेशिक या अन्य सभाओं को बिना डर के आगे आना चाहिए और डके की शक्ति से अपना अधिकार मागना चाहिए। कितने आश्चर्य तथा शर्म का विषय है कि आज दूरदर्शन (प्रसार भारती) का लगभग ६० प्रतिशत समय राजनेताओ के ही उठने बैठने खाने पीने या मरने अथवा विदेश जाने का गीत अलापता रहता है। गत दिनो बगलोर के एक डाकू वीरप्पन को दूरदर्शन पर इतना अधिक समय दिया गया कि उसको देखकर देश के कई नौजवान डाकू ही बनने की सोचने लगे।

आर्यो ! जागो सरकारी प्रचार माध्यम कोई व्यक्तिगत सस्था नहीं अपितु देश के नागरिको की सेवा करने वाली अन्य रेलगाडी बस या सडको के समान एक राष्ट्रीय सस्था है। भारत के नागरिक ही नही अपितु सेवाभावी ज्ञानवान देशभक्त सर्वश्रेष्ठ नागरिक होने के नाते आर्यों का उस पर प्रथम और अधिक अधिकार होना चाहिए। सभाए चेते और अपने अधिकार को प्राप्त करने हेतु आन्दोलन चलाये।

— उदगीथ स्पधना स्थली हिमाचल
आर्य शिखर ओमवन वैदिक सदन
महर्षि दयानन्द मार्ग डोहर (राजगढ)
सिरमौर—१७३१०१

तुम ही खोज सके पतवार

— स्नेहलता, वा०आ० ज्वालापुर

आदि मनुज सम सुन्दरतम तुम, आदि 'प्राण' सम सुन्दर प्राण ।
तुम मानव क्या, युग मानव थे, या मानवता के ही अभिमान ।

तुम अदभुत थे कवि की मजुल, शाश्वत वीणा के अनुरूप ।
तुम में झाक रहा था, ऋषिवर सतयुग का अभिनव प्रारूप ।

हे युग द्रष्टा ! हे युग स्रष्टा !! हे युग गोरव, युगाधार !!!
बीच भवर जब पडी नाव थी, तुम ही खोज सके पतवार ।।

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र सुदी १३, १४, १५, वैशाख वदी १-२ सम्वत् २०५९ तदनुसार
२५, २६, २७ एव २८ अप्रैल, २००२
(गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार)

अपील

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में एक विशाल गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 25 से 28 अप्रैल, 2002 में गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्रागण, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार में आयोजित किया जा रहा है। इस विशाल आयोजन में देश विदेश से आर्य सन्यासी वैदिक विद्वान्, विदुषी मातृ शक्ति एव आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं।

इस महासम्मेलन में आर्यों का समागम बहुत बडी सख्या में होगा। समस्त धर्मप्रेमी आर्यों के आवास, भोजन तथा अन्य सुविधाओं की व्यवस्था के लिए अपार धन व सहयोग की आवश्यकता है जिसका सम्पूर्ण भार आप आर्यजनों पर ही निर्भर है। [illegible] आयोजन को श्रद्धा, प्रेम, अनुशासन और सबसे अधिक कर्तव्यपालन से [illegible] की रचना करने के उत्सव रूप में आयोजित करने का सकल्प लिया है। यह पावन उत्सव आपके सक्रिय सहयोग व उत्साह के साथ ही सफल हो सकता है।

अत आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि इस महान् यज्ञ में तन-मन-धन से अपने सहयोग की आहुति प्रदान करने की कृपा करें। इस निमित्त आपके सहयोग की हम आशा करते हैं। धन राशि का चैक अथवा ड्रॉफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर निम्न पते पर भेजें।

निवेदक

कै० देवरत्न आर्य	प० हरवशलाल शर्मा	वेदव्रत शर्मा
प्रधान	स्वागताध्यक्ष	मन्त्री

विमल वधावन	सुदर्शन शर्मा	आचार्य यशपाल	जगदीश आर्य
महासम्मेलन सयोजक	उप प्रधान	उप-प्रधान	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
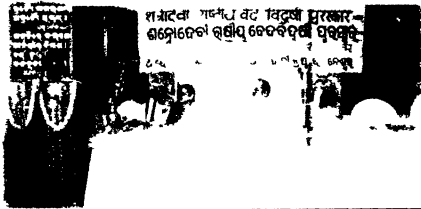
पुरस्कार वितरण समारोह का एक चित्र

आचार्या प्रियवंदा वेदभारती को शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार

उडीसा के वैदिक मिशनरी स्वर्गीय पडित लिगराज अग्निहोत्री की स्मृति मे स्थापित ट्रस्ट की ओर से नजीबाबाद कन्या गुरुकुल की आचार्या प्रियवदा वेद भारती को शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह आर्यसमाज भुवनेश्वर के श्रद्धानन्द भवन मे आयोजित हुआ था। सुप्रसिद्ध समाज सेविका डॉ० अन्नपूर्णा महाराणा के पौरोहित्य मे अनुष्ठित सभा मे राज्य के वरिष्ठ मन्त्री श्री विश्वभूषण हरिचन्दन, वैदिक विद्वान् डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कृत अध्यापक शान्तनु आचार्य तथा श्रीमती शन्नोदेवी का भाषण हुआ। पुरस्कार स्वरूप ११०००/- रु० स्मृति चिन्ह अभिनन्दन पत्र आदि आर्पण किया गया। सभा मे उडीसा के अनेक लब्ध प्रतिष्ठ लेखिक अध्यापिका आर्यसमाज के सदस्य-सदस्या तथा वेदप्रेमी सज्जन उपस्थित थे। भुवनेश्वर आर्यसमाज के उप-प्रधान इ० व्रजबधु पडा ने सभा का सचालन किया।

— व्रजबधु पडा, उप-प्रधान, आर्यसमाज, भुवनेश्वर

श्री मन्त्री जी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, 3/5 रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-110002

महोदय,

विषय **गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन स्मारिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन**

कृपया निम्नलिखित में से (✓) चिन्ह के अनुरूप उपरोक्त स्मारिका में हमारा विज्ञापन प्रकाशनार्थ स्वीकार करें।

	साइज	दर रु०
अन्तिम कवर पृष्ठ	१८ से०मी० x २४ से०मी०	५१ ००० ००
अन्दर प्रथम कवर पृष्ठ		२५ ००० ००
अन्दर द्वितीय कवर पृष्ठ	"	२५,००० ००
पूरा पृष्ठ (रगीन)	"	११,००० ००
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	"	६,००० ००

इस आवदेन के साथ रु० का चक/ड्राफ्ट सख्या बैक का नाम दिनाक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के नाम से भिजवाया जा रहा है।

भवदीय

नाम पता

दूरभाष (एस०टी०डी० कोड सहित)

ई० मेल

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार

पंजीकरण फार्म

इस पत्र के साथ 50/ रु० प्रति व्यक्ति की दर से व्यवस्था अनुमान एव साहित्य शुल्क निमित्त धनराशि का ड्रॉफ्ट सलग्न है। कृपया निम्न विवरण रिकार्ड में अकित कर लें।

प्रमुख व्यक्ति का नाम

पता

दूरभाष कुल सदस्यों की सख्या

चैक / ड्रॉफ्ट राशि

कन्याओं के प्रवेश हेतु
फार्म उपलब्ध

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६० मे आगामी सत्र २००२-२००३ के लिए कन्याओ को प्रवेश कराने के लिए १ मार्च से गुरुकुल से प्रवेश फार्म प्राप्त किए जा सकते है। अन्य जानकारी के लिए आचार्या जी से सम्पर्क करे।

फोन : ५७८८५१८

पोरटल रजिस्ट्रेशन व ०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 10 3-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 7 8/3/2002

ऋषि पर्व एवं ज्योति पर्व की देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

भारत के उपराष्ट्रपति जी की सहधर्मिणी श्रीमती सुमन कृष्णकान्त मुख्य अतिथि के रूप मे तथा श्रीमती शन्नो देवी उद्बोधन देती हुए।

उत्कल : आर्य विदुषी स—

भारत के मान्यवर उपराष्ट्रपति की सहधर्मिणी श्रीमती सुमन कृष्णकान्त तथा उडीसा के मान्यवर राज्यपाल की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला राजेन्द्रन की उपस्थिति मे आयोजित उत्कल गृहिणी समाज के साधारण अधिवेशन मे उडीसा की आर्य विदुषी श्रीमती शन्नोदेवी को सम्मानित किया गया। इस सभा मे उडीसा के सब प्रान्तो से सहस्र गृहिणी उपस्थित थी। श्रीमती शन्नोदेवी ने गृहिणी गृहमुच्यते शीषक से एक सारगर्भित भाषण दिया। उनके द्वारा लिखित वैदिक कर्मकाण्ड का वेदपाठ रे नारीर अधिकार वेदरे नारी आदे उडिया पुस्तको पर उनका अभिनन्दन किया गया। वे नियमित रूपेण उडीसा के प्रमुख दैनिक समाचार पत्र तथा दूरदर्शन मे वैदिक धर्म के विषयो पर आर्यसमाजिक विचार प्रसारण करती है। सभा मे श्रीमती सुमन कृष्णकान्त ने नारी सशक्तिकरण विषय पर भाषण दिया। समाज सेविका श्रीमती शान्ति दास ने सभा को सम्बोधित किया।

— व्रजवध पडा उप प्रधान
आर्यसमाज भुवनेश्व(

✡✡✡

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के लिए निर्देश

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य म सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकल ात ी ा ि ीय १ सम्मेलन का आयाजन २५ से २८ अप्रल २००२ की तिथिया म किया जा रहा हे। यह महासम्मेलन गुरुकुल कागडी क विशाल प्रागण मे ही आयोजित होगा जिसका नाम श्रद्धानन्द नगर रखा गया है।

(१) इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओ को सार्वजनिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन मे बहुत भारी सख्या मे आर्यजनो के पहुचने का अनुमान है। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक हे कि आगन्तुको की पूव सूचना सभा कार्यालय मे दज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप मे ५०/– रु० प्रति व्यक्ति भेजकर अपना अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे ३० मार्च तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण नहीं होगा उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

(२) सम्मलन मे भाग लन वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्यजना से विशेष निवेदन हे कि विभिन्न सत्रा म प्रसारित उदबोधना क मुख्य विचार नाट करे तथा उ ा िारा के अनुरूप आयसमाज की गतिविधियो को भविष्य म अपने अपन स्था ीय क्षेत्रो के स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करे। एसा अभ्यास आर्यजनो को विशष रूप स करना चाहिए क्योकि हमारे विद्वान वक्ताओ के बहुमूल्य विचारा को क्रियान्वित करने का यही एक मार्ग है कि हम उन्हे पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

(३) सम्मेलन के दिनो मे हरिद्वार मे ग्रीष्म ऋतु होगी अत उपयुक्त वस्त्र ही रखें।

(४) जो आर्य जन दलो मे पधार रहे है वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नामपट्ट बैनर तथा ओ३म ध्वज आदि अवश्य लाने की कृपा करे।

(४) सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप मे अथवा अन्य घोषणाओ के लिए कोई पर्ची आदि लिखकर सयोजन कार्य मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन के तहत हम सबको निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने मे प्राप्त होगा।

धर्म

जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय, सर्वहित करना है, जोकि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानना योग्य है, उसको धर्म कहते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) **फैक्स** ३२७०५०७ से मुद्रित **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)।
सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सभा मन्त्री। **ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा **वेबसाईट http://www.whereisgod.com**

१३ मार्च ७६वें जन्मदिवस पर विशेष

'चरैवेति' के पर्याय बने कर्मठ जनसेवी श्री रामनाथ सहगल

दत्तात्रेय तिवारी

जिला सरगोधा के भियांवाला ग्राम अब पाकिस्तान मे १३ मार्च को जन्मे श्री रामनाथ सहगल की प्रारम्भिक शिक्षा कृपाराम गंगा संस्कृत हाई स्कूल [illegible] मे हुई। कालान्तर मे वह [illegible] के रावलपिंडी मे कार्यरत हो गए और वही रहने लगे।

रावलपिंडी मे श्री सहगल भारत विभाजन के उपरान्त दगशाई (रेणुका सिरमौर) मे प्रतिष्ठित हुए वही श्री पिशौरी लाल प्रेम के सम्पर्क मे आए वह उन्हे रावलपिंडी आर्यसमाज मे ले गए। श्री प्रेम की प्रेरणा से सहगल आर्यवीर दल के सदस्य बने। कुछ दिनो बाद ही वह नगर नायक और समय समय पर गुरुकुल रावलपिंडी मे लगने वाले आर्यवीर दल के शिविरो का सयोजक बना दिया गया। रावलपिंडी आर्यसमाज मे स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के उपदेशो का उन पर बडा प्रभाव पडा। कालान्तर मे वह आर्यसमाज रावलपिंडी के मन्त्री बन गए।

पिछले चार दशको से आर्यसमाज के कार्यक्रमो एव समारोहो मे मच पर अपनी उपस्थिति की विशेष छाप देने वाले निष्ठावान आर्यसमाजी एव समाजसेवी श्री रामनाथ सहगल ने १२ मार्च को ऋषिबोधोत्सव के बाद १३ मार्च को अपने जीवन के ७६ वे वर्ष मे प्रवेश कर गए है। इस अवसर पर यही आकाक्षा है कि वह इसी प्रकार सामाजिक कार्य करते हुए अपने व्यस्त और कर्मठ जीवन के शत वर्ष पूर्ण करे। **जीवेम शरद शतम।**

जुझारू व्यक्तित्व – श्री रामनाथ सहगल का नाम लेते ही एक अग्रणी कर्मठ ध्येयनिष्ठ एव जुझारू व्यक्ति का चित्र उभरता है। ७५ वर्ष की परिपक्व आयु पार करने के बाद भी श्री सहगल की व्यस्तता एव स्फूर्ति मे कोई कमी नहीं। उनकी दिनचर्या मे विराम या विश्राम के लिए कोई स्थान नहीं। आर्यसमाज से या शिक्षण सस्थाओ से सम्बद्ध कोई भी कार्यक्रम समारोह या सभा हो अथवा किसी सस्था की कोइ बेठक हो श्री सहगल वहा दिखाई देगे। विभिन्न उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए प्रतिदिन १०० १५० किलोमीटर की यात्रा उनके लिए सामान्य बात है। कमर मे भारी पीडा होने पर भी डाक्टर के पूर्ण विश्राम के परामर्श के बाद भी श्री सहगल की कार के पहियो की गति मे कोई कमी नहीं आई। ६० के दशक के सशक्त उच्च कद दबग और धकड श्री सहगल मे ४५ वर्ष के बाद भी कोई अन्तर नही आया। आयु के कारण होने वाले स्वाभाविक परिवर्तन के कारण यद्यपि उनके घने काले बाल सफेद हो गए वह श्वेतकेतु अवश्य हो गए है पर ओ३म का गेरु ध्वज उन्होने बडी मजबूती से थाम रखा है। उनके यौवन की उद्दाम भावना और कार्य उनके वार्धक्य से कभी परास्त नहीं हुए।

कार्य की नई दिशा – १९५८ मे आर्यसमाज के नेता श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने गुडगाव क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुनाव लडा था। सारा आर्यसमाज उनकी विजय के लिए कार्य कर रहा था। इसी सिलसिले मे श्री सहगल ने चुनाव प्रचार मे रात दिन काम किया। इसी अभियान मे उनका श्री प्रकाशवीर शास्त्री से सीधा सम्पर्क हुआ। यह एक मणि काचन सयोग था। इस भेट ने श्रमिक के लिए कार्य करने वाले श्री सहगल के कार्यक्षेत्र की दिशा ही बदल दी और श्री सहगल ने अपने आपको सवतोभावेन आर्यसमाज वेदो के प्रचार प्रसार तथा वैदिक सस्कृति और सभ्यता के सरक्षण एव सवर्धन के लिए समर्पित कर दिया। एक चतुर पारखी के रूप मे श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने युवक श्री सहगल की क्षमता उग्रता और आस्था की टीक पहचान की। इसके बाद १९७६ मे शास्त्री की मृत्युपर्यन्त इस जोडी ने २० वर्षो तक आर्यसमाज के लिए जो कार्य किए वे आर्यसमाज के इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ है। इस अवधि मे आर्यसमाज एक बार पुन सामाजिक कार्यो मे प्रमुख हुआ। इन्ही वर्षो मे मथुरा मे दीक्षा शताब्दी हुई विरजानन्द अनुसधान भवन का उदघाटन हुआ काशी शास्त्रार्थ का शिला लेख स्थापित हुआ मेरठ कानपुर वाराणसी नैनीताल यमुना नगर बम्बई अम्बाला और दिल्ली मे आर्यसमाज शताब्दी समारोहो की एक लम्बी श्रृखला चली। इसके अतिरिक्त १९८३ मे अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का भी कुशल सयोजन उन्ही के बस का था। सम्मेलन का उदघाटन तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने किया था। उसमे लगभग पाच लाख ऋषि भक्तो ने भाग लिया। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद और डा० राधाकृष्णन ने आर्यसमाज के विभिन्न समारोहो मे उपस्थित होकर उनकी कार्य कुशलता की सराहना की। सन १९७५ मे वाराणसी मे आर्यसमाज शताब्दी समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति श्री फखरुददीन अली अहमद तथा उपराष्ट्रपति श्री बी०डी० जत्ती ने भी उनकी सराहना की। परोपकारिणी सभा के प्रधान ने श्री सहगल को आर्यसमाज के क्षेत्र मे की गई उनकी सेवाओ के लिए पदक प्रदान किया गया। डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के शताब्दी समारोह मे रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने उन्हे सम्मानित किया।

सम्मान व प्रशसा – श्री सहगल ने १९७८ मे नेरोबी मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे तथा १९८० मे लन्दन मे हुए सार्वभौम आर्य महासम्मेलन मे भारत से जाने वाले एक सौ प्रतिनिधियो का नेतृत्व किया। अप्रैल १९७८ मे चण्डीगढ की डी०ए०वी० सस्थाओ की ओर से चमनलाल डी०ए०वी० सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पचकुला के वार्षिक समाराह मे उन्हे स्थानीय डी०ए०वी० के नेता जस्टिस पी०सी० पण्डित द्वारा स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया। श्री सहगल ने पिछले ५१ वर्षो मे जो आर्यसमाज का कार्य किया है उसके लिए श्री जस्टिस पी० सी० पण्डित ने उनकी भूरि भूरि प्रशसा की। श्री सहगल वर्षो तक आर्य सम्मेलनो के अवसर पर निकाले जाने वाले जुलूसो की व्यवस्था सम्भालते रहे। इसी प्रवृत्ति के कारण शास्त्री जी के निधन के बाद भी उदयपुर और अजमेर के सम्मेलनो मे भी श्री सहगल ने जुलूसो का नेतृत्व किया। श्री शिवकुमार शास्त्री इस युगलबन्दी के लिए कहा करते थे कि श्री प्रकाशवीर जी को श्री सहगल के रूप मे एक हनुमान मिल गया है।

नेतृत्व का गुण – श्री सहगल नेता होने का दावा नहीं करते वह अपने को कार्यकर्ता ही मानते हैं। भाषणो की बजाए कार्य करने मे विश्वास के कारण श्री सहगल वस्तुत कर्मठ कार्यकर्ता ही है परन्तु जनसमूह मे उन्हे सबके साथ पीछे नहीं अपितु जनता जनार्दन के आगे चलते हुए देखा जा सकता है। अपनी कर्मठता और सब कामो मे आगे रहने की अपनी प्रवृत्ति के कारण वह जहा भी व्यवस्था मे त्रुटि अथवा कार्यक्रमो मे तालमेल की शिथिलता देखते हैं वहा वह उसे व्यवस्थित कर देते हैं। उनका नेतृत्व का गुण उनकी वाकशूरता के कारण नही अपितु उनकी कार्यकुशलता के कारण है।

लोक सग्राहकता – सस्कृत मे एक शब्द 'लोक सग्रह' है जिसका व्यापक अर्थ है गीता मे जहा इसका अर्थ लोक कल्याण है वहा कालिदास ने इसका अर्थ अधिक से अधिक लोगो द्वारा प्रशसित होना एव उनसे सम्पर्क के रूप मे किया है। श्री सहगल मे लोक सग्राहकता का निराला गुण है। अधिक से अधिक लोगो के साथ पत्र व्यवहार से निरन्तर सम्पर्क रखना ही श्री सहगल की लोक सग्राहकता है। अनुमानत औसतन श्री सहगल प्रतिदिन १०० से भी अधिक पत्र लिखते है। प्रतिदिन प्रात साय दो दो लिपिक उनके पत्रो के लिखने मे व्यस्त रहते है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री के स्मृतिग्रन्थो के प्रकाशन की अवधि मे श्री सहगल ने एक वर्ष की अवधि मे ही लोगो को अपने लेख या विचार भेजने के लिए तथा ग्रन्थो की प्रगति की सूचना देते हुए ५००० से भी अधिक पत्र लिखे।

सस्थाओ के लिए सजीवनी – श्री सहगल ५० से भी अधिक सस्थाओ सगठनो ट्रस्टो गुरुकुलो और विद्यालयो आदि के प्रबन्धक प्रधान उपप्रधान मन्त्री ट्रस्टी या सदस्य के रूप मे सक्रिय है। अनेक सस्थाए व सगठन जो निष्प्राण थी श्री सहगल ने उनको सजीवनी बूटी दी है। अलवर जिले मे स्थित कन्या गुरुकुल दाधिया के सचालन की सारी आर्थिक व्यवस्था का दायित्व श्री सहगल पर है। इसी प्रकार गुरुकुल गौतम नगर के लिए भी धन सग्रह करने मे श्री सहगल की प्रमुख भूमिका है। वह इस गुरुकुल के प्रबन्धक हैं। श्री सहगल की योजना है कि सारे देश मे लडको और लडकियो के जितने भी गुरुकुल हैं उन सबका एक शीर्ष सगठन बने जिससे सब मे एकरूपता रहे और अपने आदर्शों के अनुरूप आधुनिकतम शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाए। आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एव डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव एव डी०ए०वी० द्वारा सचालित अनेक विद्यालयो के अवैतनिक प्रबन्धक के रूप मे वह कई वर्षो से कार्यरत हैं।

उनका वैयक्तिक जीवन सादा और सरल है। प्रात काल ब्रह्ममुहूर्त मे निद्रा त्यागने रात्रि मे निद्रा की गोद मे जाने तक उनका प्रत्येक क्षण समयबद्ध कार्यक्रम मे बन्धा रहता है।

वेद प्रतिष्ठान और टकारा ट्रस्ट – श्री सहगल ने अपने जीवन मे अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं परन्तु वेद प्रतिष्ठान और टकारा ट्रस्ट के मन्त्री के रूप मे उन्होने जो दो महत्वपूर्ण कार्य किए हैं उनके लिए श्री सहगल सदा स्मरण किए जाएगे।

वेद प्रतिष्ठान की स्थापना महर्षि के वेदो के प्रचार कार्य को आगे बढाने के उद्देश्य से १९७३ १९७४ मे की गई थी। श्री प्रकाशवीर शास्त्री उसके पहले महामन्त्री थे। १९७६ मे शास्त्री जी की मृत्यु के बाद श्री सहगल उसके महामन्त्री बने। स्वामी सत्यप्रकाश के नेतृत्व मे तीन वैदिक विद्वानो के सहयोग से प्रतिष्ठान ने २२ खण्डो मे चारो वेदो के अग्रेजी अनुवाद प्रकाशन का प्रशसनीय कार्य किया। श्री सहगल के मन्त्रित्व काल मे उसके २० खण्ड प्रकाशित हुए। अनुवाद तथा प्रकाशन के कार्य मे तालमेल बिठाना तथा निरन्तर कार्य की प्रगति पर निगरानी श्री सहगल ने पूरी निष्ठा से प्रस्तुत की। इस कार्य मे १५ वर्ष लग गए। वेद प्रतिष्ठान के प्रेरणास्रोत श्री प्रकाशवीर शास्त्री की स्मृति मे तीन खण्डो को प्रकाशित कर एक स्मरणीय कार्य किया।

महर्षि दयानन्द टकारा स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री के रूप मे ऋषि जन्म स्थली का पुनरुद्धार एव उसका कायाकल्प करना श्री सहगल का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने जब १९५६ मे टकारा स्मारक ट्रस्ट का कार्य सम्भाला तभी से उन्होने श्री सहगल को अपने साथ लेकर उन्हे ट्रस्ट का मन्त्री बना दिया। १ ७५ मे जब भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी टकारा गई तब इन्दिरा जी के विमान मे श्री शास्त्री जी और सहगल साथ गए थे। इन्दिरा जी की इस यात्रा के बाद टकारा ट्रस्ट की गतिविधियो मे तेजी आई तथा पिछले २५ वर्षो मे टकारा ट्रस्ट परिसर का रूप ही बदल गया।

टकारा ट्रस्ट का गठन जिन परिस्थितियो मे हुआ था और आज उसका जो स्वरूप है उसमे आकाश पाताल का अन्तर है। आज लगभग पाच करोड रुपये से भी अधिक व्यय कर कई दुमजिला और कई इक मजिली इमारते खडी है। ब्रह्मचारियो के लिए छात्रावास विद्यालय सभा भवन कई अतिथि शालाए सभागार नवीन ढग की सुन्दर यज्ञशाला बन कर तैयार है। ट्रस्ट की एक बहुत बडी उपलब्धि दो वर्ष पूर्व उस स्थल की उपलब्धि है जहा महर्षि का जन्म हुआ था। टकारा मे शिवरात्री पर बोधोत्सव प्रतिवर्ष अधिकाधिक आकर्षण का केन्द्र हैं। ट्रस्ट के मासिक पत्र टकारा समाचार की लोकप्रियता भी बढी हैं।

इतने विशाल भवनो के निर्माण मे आने वाली इतनी विपुल धनराशि को जुटाना श्री सहगल के ही सामर्थ्य से सम्भव हुआ है। टकारा गाव के निवासियो के लिए भी टकारा ट्रस्ट परिसर एक आकर्षण और प्रेरक केन्द्र बन गया है।

किसी भी सगठन को श्री सहगल जैसे निष्ठावान सेवाभावी कार्यकर्ता या सचालक सौभाग्य से मिलते है श्री सहगल चिरजीवी हो तथा महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के कार्य इसी प्रकार करते रहे यही हार्दिक आकाक्षा हैं।

– टी ८ ग्रीन पार्क नई दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००२ सम्पन्न

भारतवर्ष की आन, बान व शान राजस्थान की अरावली पर्वत माला से सुरक्षित भक्ति व शक्ति के केन्द्र उदयपुर नगर के शान्त व सुरम्य गुलाब बाग के मध्य स्थित तत्कालीन महाराणा सज्जनसिंह जी की तथाकथित राजकीय अतिथि शाला तथा वर्तमान में नवलखा महल के नाम से प्रसिद्ध, जहा लगभग साढे छ माह निवास करते हुए मार्ग विचलित समाज के मार्गदर्शक आर्यसमाज के सस्थापक व युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन का कार्य पूर्ण किया था, इसी ऐतिहासिक पुण्य स्थली पर श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्वावधान मे प्रति वर्ष आयोजित होने वाले सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों की श्रृंखला में दिनाक २६ फरवरी से आयोजित होने वाले त्रिदिवसीय सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टिन देवरत्न आर्य व अन्य आर्य विद्वानों व विदुषियों का दिनांक २५–२–२००० को प्रात चेतक ऐक्सप्रेस से शुभागमन हुआ। जहा हाथों में ओम पताकाए व पुष्प मालाएं लिए पूर्व प्रतीक्षारत नगर के आर्यो ने 'जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय' व 'आर्य समाज अमर रहे' के घोषपूर्वक माल्यार्पण सहित स्वागत किया। तदुपरान्त यहा से शोभा यात्रा के रूप में ओम पताकाओ व पुष्प मालाओं से सुसज्जित पक्तिबद्ध वाहनो के द्वारा समस्त आर्य सज्जनो व सन्यासियो ने उदियापोल, सुरजपोल, टाउनहाल रोड, देहली गेट, बापूबाजार व पुलिस कन्ट्रोल रूम होते हुए सुसज्जित स्थल में प्रवेश किया। हर्षोल्लास से परिपूर्ण आर्यो की चहल पहल से युक्त सम्पूर्ण महोत्सव स्थल की शोभा देखते ही बनती थी।

दैनिक यज्ञ भजन व आध्यात्मिक प्रवचन

आर्यो के सभी आयोजन यज्ञ के अभाव में अधूरे ही रहते है। अत समारोह के इस परम् पुनीत अवसर पर दैनिक रूप से न्यास की यज्ञशाला मे प्रात. ७ ३० बजे मनुष्य जीवन के श्रेष्ठतम कर्म वैदिक यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसकी सम्पूर्ण व्यवस्था न्यास के पण्डित गंगाधर आर्य व आर्यसमाज हिरण मगरी उदयपुर के पण्डित पन्नालाल आर्य ने की। दैनिक रूप से ब्रह्मा के पद पर आर्य कन्या गुरुकुल दाधियां की प्राचार्या श्रीमती सुशीला जी आसीन रहीं तो यजमान बनने का परम् सौभाग्य सर्वश्री रघुनाथ गुप्ता, ओंकार नाथ, योगेन्द्र गुप्ता, डॉ० एस०एस० गुप्ता, रघुनन्दन धर, रघुनाथ गुप्ता, विनोद जी सूद, शान्ति लाल आर्य, गोपीकिशन सक्सेना, किशन लाल मल्होत्रा, कान्ति प्रकाश व महाशय राम खुराणा को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सुसज्जित यज्ञशाला में यज्ञ वेदी के चारों और पीत, वर्ण अगवस्त्र धारण किए यज्ञरत यजमानो की विद्यमानता, वृद्ध धारिणियों द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चार जन्य कर्ण प्रिय स्वर लहरी यज्ञाहुति जन्य वायु मण्डल में व्याप्त सुगन्धि से प्राचीन वैदिक युग की पुनरावृत्ति का आभास हो रहा था। यज्ञ के उपरान्त सौभाग्यशाली यजमानों को आशीर्वाद भी आवश्यक है अतः यज्ञ की ब्रह्मा के द्वारा यजमानों की समस्त शुभ इच्छाओं की पूर्ति, स्वस्थ व दीर्घ जीवन हेतु दैनिक रूप से आशीर्वाद प्रदान किया गया। यज्ञ प्रार्थना व भजन क्रमश श्रीमती शिवराज वती जी, श्री प्रकाश आर्य व श्रीमती उज्ज्वला वर्मा द्वारा प्रस्तुत किए गए। यज्ञोपरान्त पू० गोपाल स्वामी सरस्वती व आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय के आध्यात्मिक प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आध्यात्मिक प्रवचन की इस श्रृखला में पूज्य गोपाल स्वामी सरस्वती ने कहा कि "जिस वस्तु का हम निर्माण नहीं करते उसे नष्ट करने का हमे कोई अधिकार नहीं है।" इस आधार पर स्वार्थवश किसी भी प्राणी का वध उचित नहीं है तथा क्योंकि वृक्षो मे भी विज्ञान द्वारा जीवन प्रमाणित किया जा चुका है। अत हरे वृक्षा को भी नहीं काटना चाहिए इसकी अनुपालना मे हमे ईश्वर की प्राप्ति होती है तथा ईश्वर की अनुकम्पा से सब कुछ सम्भव है। इस प्रवचन के द्वारा सम्भवत मासाहार निषेध व वन सरक्षण का भाव निहित था। श्री आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने प्रवचन मे कहा कि 'जिस प्रकार चन्दन की सुगन्धित लकडी को जला का वैदूर्य मणि की भगौनी मे लहसुन की सब्जी बनाना समझदारी नहीं है तथा जिस प्रकार आक की रूई प्राप्ति हेतु सोने के हल से खेत को जोतना समझदारी नहीं है ठीक उसी प्रकार इस अनमोल रतन को प्राप्त कर उसका सदुपयोग न करना भी कोई समझदारी नहीं है। यह मनुष्य देह ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना है। वृक्षो का मूल भूमि के अन्दर नीचे की ओर होता है किन्तु मनुष्य का मूल केन्द्र कपाल स्थान जिसे वृह्मरन्ध्र कहा जाता है, में होता है। जहा से शरीर की समस्त क्रियाओं का सचालन व नियन्त्रण होता है। जिस प्रकार मनुष्य शरीर का सचालक व नियन्त्रक शरीर में ऊपर की ओर है यही कारण है कि इसे उर्ध्व मूलमध शाख कहा गया है। जिस प्रकार इस मनुष्य शरीर का सचालक व नियन्त्रक है। उसी प्रकार इस सृष्टि का सचालक व नियन्त्रक ईश्वर भी इस ससार का मूल है। जब सोने के पिजरे में बद तोता भी मुक्ति चाहता है तो मनुष्य शरीर रूपी इस पिजरे से जीवात्मा भी मुक्त होना चाहता है। जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति हेतु हमें उसी की उपासना करनी चाहिए। यही इस मनुष्य जीवन का सदुपयोग है।

ध्वजारोहण

दिनाक २६–२–२००२ को आध्यात्मिक प्रवचन के उपरान्त प्रात ६ ३० बजे न्यास के मुख्यद्वार पर श्री जितेन्द्र पाल जी शर्मा के सयोजन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर महू, मध्य प्रदेश के श्री प्रकाश आर्य द्वारा वैदिक ध्वज गीत 'जयति ओम ध्वज व्योम विहारी' का सुमधुर सगीत प्रस्तुत किया गया तथा सुव्यवस्थित रूप से तन्मय खड़े आर्य नर नारियों ने स्वर मिला कर ध्वजाभिवादन के रूप मे 'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' की पालनार्थ वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का संकल्प लिया। 'जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय' 'आर्यसमाज अमर रहे' 'ओम का झण्डा ऊचा रहे' के नारों से वातावरण गुजायमान हो उठा।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मे ध्वजारोहण के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य, महात्मा गोपाल स्वामी, स्वामी तत्वबोध सरस्वती

वेद सम्मेलन व अभिनन्दन समारोह

प्रात १० बजे मुख्य पाण्डाल मे श्री वाचानिधि आर्य व श्री गोपीलाल ऐरन के सयोजन तथा न्यास अध्यक्ष स्वामी तत्वबोधा सरस्वती की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन व कै० देवरत्न आर्य के अभिनन्दन समारोह का प्रारम्भ हुआ। प्रभु भजन के उपरान्त आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया की ब्रह्मचारिणी सुश्री सूर्या आर्या १२ वर्ष द्वारा किए गए साम्वेद के मन्त्रो का सस्वर मौखिक पाठ विशेष आकर्षण का केन्द्र था। तदुपरान्त डॉ० वागीश शर्मा ने अपने प्रवचन में बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसे दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि आज वेदोक्त शब्दों की गलत परिभाषा व अर्थ करके आर्य सस्कृति पर प्रहार किया जा रहा है। डॉ० भवानीलाल भारतीय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आधुनिक शिक्षा में इतिहास के माध्यम से आर्यो को बाहर से आए हुए आक्रमणकारी बताकर मूल निवासी नहीं कहा जाता जो असत्य व निराधार है। श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि अभाव से भाव की उत्पति नहीं हो सकती। मनुष्य का ज्ञान वेद के रूप में सृष्टि के आर्यकाल से प्राप्त हुआ है। वेद विरुद्ध भ्रामक प्रचार करने वालों पर शस्त्र से नहीं अपितु शास्त्र से प्रहार की आवश्यकता है।

कन्या विद्यालय आबू रोड की छात्राओं द्वारा कै० देवरत्न आर्य के अभिनन्दन मे स्वागत गीत प्रस्तुत किए जाने के उपरान्त स्वागताध्यक्ष श्री धर्मपाल जी आर्य ने कहा कि जहा अपूजनीय की पूजा हो तथा पूजनीय की उपेक्षा हो वह समाज कष्ट पाता है अत योग्य व सम्मान योग्य को सम्मान देना सर्वथा उचित है इस हेतु आयोजन के सयोजक बधाई के पात्र है। श्री अशोक आर्य द्वारा अभिनन्दन पत्र वाचन, श्री गोपीलाल ऐरन द्वारा तथ अन्य लगभग समस्त भारत व प्रतिनिधियो द्वारा माल्यार्पण, न्यास अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती द्वारा शॉल डॉ० अमृतलाल तापडिया द्वारा श्रीफल श्री ओकारनाथ द्वारा स्मृति चिन्ह भेट क श्री आर्य को सम्मानित किया गया। अप अभिनन्दन के प्रतिउत्तर मे क० दवरत आर्य ने इस कार्यक्रम हेतु सयोजको क धन्यवाद व आभार व्यक्त करते हुए अप अग्रजो के निर्देशित मार्ग पर अनुसरण करने का आश्वासन दिया।

शोभायात्रा

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मध्यान २ बजे महोत्सव स्थल नवलखा महल स श्री रविन्द्र वर्मा के सयोजन में एक शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई। जिसमे सर्वप्रथम एक बैण्ड प्रभु भक्ति के भजन का कर्णप्रिय मधुर ध्वनि की स्वर लहरी बिखेर रहा था तो ऊट गाडियो व ट्रेक्टर ट्रालियो म भजनोपदशको द्वारा ऋषि महिमा व आर भजनो का सुमधुर कर्णप्रिय सगीत वातावरण को गुजित कर रहा थ शोभायात्रा मे सम्मिलित आर्यवीरो द्वार स्थान-स्थान पर व्यायाम प्रदर्शन क रूप मे अपने करतवो का प्रदर्शन आकर्षण क केन्द्र बन रहा था। इस यात्रा म विभिन्न आर्य समाजो के नर नारी अपने बेनर व ओ३म ध्वज लिए हुए सुव्यवस्थित उत्साहपूर्वक वेदिक नारा स वातावरण का गुजायमान कर रहे थे। नवयुवका व नवयुवतिय के अतिरिक्त कुछ वयोवृद्ध आर्यो का उत्साह वास्तव में देखते ही बनता था। एक हाथी पाच घाड तीन ऊट गाडिया, २ बग्गी व अन्य लगभग ५ जीपो व वेद प्रचार वाहन स युक्त उक्त वाहनो के अतिरिक्त अन्त मे वेद प्रचार वाहन कार्यक्रमों की जानकारी देता चल रहा था। नवलखा महल पुलिस कन्ट्रोल रूम बापूबाजार, देहली गेट अश्वर्न बाजार हाथीपोल मोती चौहट्टा बडाबाजार तीज का चौक, आर०एम०वी० रोड होते हुए यह यात्रा पुन समारोह स्थल तक पहुची। लगभग ६ किलोमीटर की इस यात्रा में मेसर्स मित्तल बधु अश्वर्न बाजार उदयपुर के द्वारा फल वितरित किये गये जो बधाई व धन्यवाद के पात्र है।

भजन सन्ध्या

ज्ञान के साथ मनोरजन भी परम आवश्यक होता है। अत दिनाक २६–०२–२००२ को रात्रि ७ ३० बजे मुख्य पाण्डाल मे एक भव्य भजन सन्ध्या का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री धर्मपाल जी आर्य ने की तो सयोजन श्रीमती शारदा गुप्ता ने किया। इस अवसर पर युधिष्ठिर कुमावत सभापति नगर परिषद उदयपुर मुख्य अतिथि थे तो विशिष्ट अतिथि प्राचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय थे। आर्यों के सभी कार्यक्रम प्रभु स्मरण के अभाव में अधूरे होते है अत सर्वप्रथम डी०ए०वी० स्कूल जयपुर के बच्चो द्वारा 'ओम बोल मेरी रसना घडी घडी' अति सुन्दर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। जिसकी सभी दर्शको ने करतल ध्वनि से भूरि भूरि प्रशसा की। तदुपरान्त कलाकारो के परिचय के सहित महू मध्य प्रदेश के श्री प्रकाश आर्य द्वारा प्रस्तुत भव्य भजन सन्ध्या का शुभारम्भ राष्ट्रीय प्रार्थना व गायत्री मन्त्र सहित हुआ। साथ ही आर्य सिद्धान्तों पर आधारित कई सुमधुर भजन सुनने का सौभाग्य श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल :

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**पं० हरबंस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष, कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मत्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कुल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभा उप प्रधान

कार्यालय : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002

दूरभाष : (011) 3274771, 3260985 E-mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय : **महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तराचल)**

दूरभाष : (0133) 414392, 416811, फैक्स : 415265

पृ० ५ का शेष भाग

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००२ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द समूह गान प्रतियोगिता

आर्यसमाज के समारोहो मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मरण न किया जाए तो समारोह की पूर्ण सार्थकता नहीं होती। अत मध्यान दो बजे मुख्य पाडाल म श्रीमती नीता गर्ग प्राचार्य डी०ए०वी० विद्यालय उदयपुर के सयोजन मे व श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द स्मृति समूहगान प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसमे निर्णय का उत्तरदायित्व डा० निर्मला सनाढय श्रीमति विजयलक्ष्मी भटनागर व श्री अशोक भटट ने वहन किया। इस प्रतियोगिता मे ११ समूहो ने भाग लिया। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन मे श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्य विचारधारा के प्रचार प्रसार हेतु बच्चो के इस प्रकार के आयोजनो का होना सर्वथा उचित व आवश्यक है। इस आयोजन हेतु उन्होने न्यास को धन्यवाद दिया तथा पुरुस्कारो की घोषणा की। इस प्रतियोगिता मे आर्य बाल विद्या मन्दिर भीलवाडा को प्रथम महर्षि दयानन्द उच्च प्राथमिक विद्यालय फतहनगर को द्वितीय व डी ए०वी० स्कूल जयपुर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार श्रीमती शारदा जी गुप्ता की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के द्वारा वितरित किए गए। इन पुरस्कारो के साथ विजताआ का उदयपुर के स्व० पन्ना लाल पियूष की स्मृति मे उनक परिवारजनो द्वारा विशेष पुरस्कार भी प्रदान किए गए। निर्णायक मण्डल को स्मृति स्वरूप वेद मजरी नामक पुस्तक भट की गइ तथा शान्ति पाठ के उपरान्त कार्यक्रम को विराम दिया गया।

महिला सम्मेलन

परिवार व समाज मे महिला की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अत महिला सशक्तिकरण वर्ष के अन्तर्गत इस अवसर पर दिनाक २७–०२–२००२ को मुख्य पाण्डाल मे महिला सम्मेलन के दो सत्र सम्पन्न हुए। प्रात १० बजे मुख्य पाण्डाल मे महिला सम्मेलन का प्रथम सत्र श्रीमती शारदा जी गुप्ता के सयोजन मे प्रारम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती शिवराजवती मुम्बई ने की। सर्वप्रथम सम्मेलन सयोजिका ने कहा कि वह स्थान जहा आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन का कार्य सम्पूर्ण किया था उस स्थान पर हम एकत्रित है वह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। माल्यार्पण द्वारा स्वागत की औपचारिकता के बाद सम्मेलन के प्रारम्भ मे सर्वप्रथम अध्यक्ष श्रीमती शिवराजवती जी द्वारा गायत्री मन्त्र व इसके भाव से युक्त भजन प्रस्तुत किया गया। श्रीमती पुष्पा शास्त्री रेवाडी ने आनन्द श्रोत बह रहा है फिर भी उदास है भजन के माध्यम से यह बताया कि ईश्वर सर्वव्यापक है इसे ढूढने की आवश्यकता नहीं। इस सम्बन्ध मे बोलते हुए उन्होने कहा कि सामान्य रूप से जिस कार्य मे भय लज्जा व शका हो वह धर्म विरुद्ध है तथा जिस कार्य को करने हेतु उत्साह बना रहे वह धर्म है। मनुस्मृति मे दस विंद् सामान्य धर्म कहे गए है तथा सक्षेप मे जो व्यक्ति पर नारी को माता के समान पराये धन को तिनके के समान तथा सभी प्राणियो को अपने समान समझता है वही धामिक है। मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए श्रीमती पुष्पा शर्मा दिल्ली ने कहा कि रोम ईरान व मिस्र आदि देशो का जो पतन हुआ था उसका मुख्य कारण यही था कि वहा नारी जाति को सम्मान प्राप्त नही था जहा नारी का सम्मान होता है वहा सुख शान्ति व उन्नति के रूप मे देवताओ का निवास होता है तथा जहा इनका सम्मान न होकर उपेक्षा की जाती है वहा स्वत पतन की स्थिति पैदा हो जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्त्री शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। आज नारी देश के उच्च पदो पर पदासीन है यह उनका ही वरदान है। उन्होने कहा कि आज अवाछित गर्भस्थशिशु की हत्या कर दी जाती है जिस पर चिन्ता व दुख प्रकट करना स्वाभाविक है। राम कृष्ण शिवाजी तथा प्रताप आदि महापुरुषो को नारी जाति ने ही जन्म दिया था किन्तु आज सोनोग्राफी के माध्यम से अवाछित गर्भ की हत्या कर दी जाती हे वह दुर्भाग्य नहीं तो क्या है। श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने कहा कि शकराचार्य ने नारी नर्कस्य द्वारम' कहकर तो तुलसी दास ने ढोल गवार शूद्र पशु नारी कहकर कबीर ने नारी छाया पढत ही अन्धा होता भ्रुग कहकर नारी के प्रति हीनभावना प्रदर्शित की है किन्तु महर्षि दयानन्द नारी सम्मान के प्रबल समर्थक थे। मुख्य अतिथि श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा कि भारत मे लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा का उल्लेख है भारत मे नारी का सदा सम्मान हुआ है यह हमारे लिए गौरव की बात है उन्होने महिला शब्द का विश्लेषण करते हुए कहा कि महिला शब्द मे म से ममता हि से हिम्म्त व 'ला से लज्जा निहित है। जिनका होना नारी मे आवश्यक है तथा भारतीय नारी उपरोक्त गुणों से सदैव सम्पन्न रही है। श्रीमती शिवराजवती ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कविता के माध्यम से महर्षि को स्मरण करने के उपरान्त आमन्त्रण हेतु न्यास के पदाधिकारियो के प्रति आभार व धन्यवाद व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र सायकाल ७ ३० बजे श्रीमती शारदा गुप्ता के सयोजन व प्रो० सुशीला तापडिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। महिला सम्मेलन के द्वितीय सत्र मे डी०ए०वी० स्कूल जयपुर की बालिकाओ द्वारा महर्षि जीवन पर आधारित जब भारत की फुलबारी पर तुफानी बादल छाया था तब दयानन्द स्वामी ने सत का अमर दीप चमकाया था नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जिसकी दर्शको ने कर्तल ध्वनि से प्रशसा की। प्रस्तुति के उपरान्त मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए दिल्ली की प्रो० सुषमा शर्मा ने कहा कि आज केवल डाक्टर इजीनियर या वकील बनना मात्र ही पर्याप्त नहीं अपितु वेद के निर्देश की अनुपालना मे सर्वप्रथम मानवता के सद्‌गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक है। इस प्रथम आवश्यकता की पूर्ति माता के रूप मे होती है। शुभ – अशुभ उचित – अनुचित कर्त्तव्य – अकर्तव्य का ज्ञान केवल माता ही प्रदान करती है। आज माता – पिता अपने बच्चो के अनुपयुक्त व्यवहार हेतु समाज व समय को ही दोषी मानते है तथा अपने उत्तरदायित्व से मुक्ति पाना चाहते है। आज के इस सास्कृतिक आक्रमण जन्य विकट परिस्थिति पर दु ख व्यक्त करते हुए उन्होने कहा कि इस स्थिति पर हसा जाए या रोया जाए समझ मे नहीं आता। एक शिक्षित नारी ही अपनी सतान को सन्मार्ग गामी बना सकती है। ईश्वरवादी होने के कारण आर्य सदा आशावादी होते है। अत मुम्बई की श्रीमती शिवराजवती ने आयेगा ऋषिया का जमाना आयेगा' सुमधुर सगीत के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की कामना की। दिल्ली की श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने देश प्रेम पर आधारित 'यह धरा चाहिए यह गगन चाहिए' मधुर सगीत प्रस्तुत किया साथ ही दयानन्द के सपनो को हमे पूरा करना है। सुमधुर सगीत के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मरण किया। डॉ० भारती वाजपेयी उपाचार्य कन्या महाविद्यालय उदयपुर ने कहा कि सतान को सुधारने का उत्तरदायित्व मात्र नारी का ही नहीं अपितु पुरुषो का भी है। अत दोनो को शिक्षित होना चाहिए। शहरो मे तो इस प्रकार के आयोजन होते है किन्तु सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो मे भी जन जागरण की भावना से इस प्रकार के आयोजनो की आवश्यकता है। अपने अध्यक्षीय उदबोधन मे प्रो० सुशीला तापडिया ने कहा कि नारी के ममत्व हिम्मत व लज्जा क जो गुण हे यह विशेषता अन्यत्र उपलब्ध नही होती। सम्मेलन के अन्त मे सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि 'वर्तमान युग मे आज की नारी अपनी विलक्षण प्रतिभा से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे आकाश की असीम ऊचाईयो को छूते हुए समाज व राष्ट्र के सर्वागीण विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

ऐसी दिव्य सौन्दर्य युक्त अद्‌भुत नारी के मीडिया तथा विज्ञापनो द्वारा अशोभनीय एव अश्लील प्रदर्शन का हम सर्वसम्मति से कडा विरोध करते है। इस सन्दर्भ में प्रशासन से हमारा अनुरोध है कि नारी का शोषण करने वाले विज्ञापनो तथा कार्यक्रमो पर तुरन्त प्रभाव से रोक लगाई जाए।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन एव समापन समारोह

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश की विवेचना न करना उचित नहीं है अत दिनाक २८–०२–२००२ को प्रात १० बजे मुख्य पाण्डाल में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसका सयोजन श्री आनन्द कुमार शार्य व अध्यक्षता श्री गोपाल स्वामी सरस्वती ने की। इस सम्मेलन में सर्वप्रथम आर्यसमाज जोधपुर के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का अभिनन्दन किया गया तथा अभिनन्दन पत्र शॉल व २१०००/– रुपये की राशि भेट की गई। वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली के श्री आमोद शास्त्री ने कहा कि जिसके हाथ मे सत्यार्थ प्रकाश होता है वह बडे से बडे सकट की परिस्थिति में भी विचलित नहीं होता। आज सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर निर्धारित धर्म से मजबूत बनाकर राष्ट्रीयता को जगाना आवश्यक है। श्री सुखदेव शास्त्री ने कहा कि आज हमे चिन्तन के द्वारा आत्मनिरीक्षण कर ईश्वर से सम्बन्ध जोडने तथा अपने परिवार व ससार का कल्याण करने की आवश्यकता है। दिल्ली की श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने अपने देश के प्रति प्राणो की आहूति देने वाले शहीदो का स्मरण कर मधुर सगीत के माध्यम से शहीदो की कुर्बानिया याद दिलाई तथा वर्तमान मे आडम्बर युक्त शहीद दिवस गाधी जयन्ति पर होने वाले पशु हिसा और बाल दिवस के नाम पर बच्चो के शोषण गाधी सुभाष व नेहरू के नाम पर दी जाने वाली आडम्बर युक्त दुहाई आज की वर्तमान दुर्दशा का वर्णन करने के बाद भारत के उज्ज्वल भविष्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

न्यास के अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती ने न्यास के कार्यकलापो उपलब्धियों व भावी योजनाओ का उल्लेख किया साथ ही लाभार्थियो का आह्‌वान करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया साथ ही घोषणा की कि 'मेरे बाद इस न्यास के अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य होगे। मुख्य अतिथि आर०एन० मित्तल ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश मे सभी विषयो का उल्लेख है तथा आज तदनुरूप बच्चों को चरित्रवान बनाने की आवश्यकता है। आचार्य श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश ऐसा सूर्य है जिससे अज्ञान रूपी अधकार नष्ट हो जाता है इसमे सर्व विध ज्ञान का उल्लेख है इसकी भाषा सर्व विद्या से युक्त है। जिस प्रकार कामधेनु को छोड्कर बकरी को दूहना समझदारी नहीं है उसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश से ज्ञान प्राप्त न कर इधर उधर भटकना भी समझदारी नहीं है। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गोपाल स्वामी सरस्वती ने कहा कि महर्षि की जीवनी मे उल्लेख है कि उनकी शव यात्रा मे गोपाल गिरि नामे का एक व्यक्ति था सम्भवता मैं ही पूर्व जन्म मे गोपाल गिरि के नाम से जाना जाता होऊ अत मैं उन्हें अपना गुरु मानता हू। महर्षि ने आर्य जति का ही नहीं अपितु मानव मात्र का चिन्तन किया था तथा सत्यार्थ प्रकाश भी मानव मात्र के लिए है। कार्यक्रम के अनुसार न्यास द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले सत्यार्थ प्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओ को राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के कर कमलो द्वारा दी गई।

अन्त मे समारोह के सयोजक श्री अशोक आर्य द्वारा अपना अमूल्य समय व सहयोग प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं व विभागो को हार्दिक धन्यवाद की औपचारिकता पूर्ण की जाने के बाद दिनाक २७–०२–२००२ को अयोध्या से लौटते हुए गोदरा स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस के अन्दर कार सेवको पर हमला व निर्मम हत्या द्वारा दिवगत नागरिकों के प्रति शोक प्रस्ताव पारित कर दो मिनट का मौन रखकर शोक व्यक्त किया गया तथा उनके परिवारजनों के प्रति सवेदना प्रकट की गई। अन्त में दिल्ली के चि० अथर्व भारत आयु मात्र तीन वर्ष द्वारा शान्ति पाठ किए जाने के उपरान्त कार्यक्रम को विराम दिया गया।

क्या महर्षि दयानन्द भारत के मार्टिन ल्यूथर थे ?

– मनुदेव अभय विद्या वाचस्पति इन्दौर

१६ वीं शताब्दी के महान क्रान्तिकारी तथा भारतीय स्वतन्त्रता हेतु सर्वप्रथम शख–नाद करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत के इतिहास मे अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अब तो यह मानसिकता तेयार हो रही है कि यदि विश्ववद्या महात्मा मोहनदास करमचन्द गाधी राष्ट्रपिता है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के राष्ट्र पितामह है। महर्षि दयानन्द ने न केवल धार्मिक जगत मे अपितु राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र जैसे राजनैतिक सामाजिक शैक्षिक आर्थिक तथा नारी उद्धार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। जो इतिहास उन्हे केवल धर्मिक–क्षेत्र का सुधारक कहता है मानो उनका ज्ञान बहुत ही सीमित तथा पूर्वाग्रह पूर्ण है। ऋषि के कार्य गहन चिन्तन के विषय है।

इन पक्तियो का लेखक जब माध्यमिक स्तर की कक्षा का विद्यार्थी था उन दिनो भारत अग्रेजो का पराधीन था। तत्कालीन पाठयक्रम मे इतिहास के अन्तर्गत भारत तथा इग्लैण्ड का इतिहास पढाया जाता था। उस समय श्री ईश्वरी प्रसाद भारतीय इतिहास के तथा श्री बेनीराम जी इग्लैण्ड के इतिहास के प्रामाणिक लेखक माने जाते थे। इग्लैण्ड के इतिहास मे मार्टिन ल्यूथर को महान क्रातिकारी निरूपित किया है। मार्टिन ल्यूथर को ईसाई सम्प्रदाय का महान सुधारक माना गया है। उसने यूरोप मे विशेषकर जर्मनी मे पोपवाद के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा लहरा दिया था। यहा सामान्यत मन मे विचार उठता है कि यह पोपवाद क्या है और इसके विरुद्ध बगावत क्यो हुई। इसका सक्षेप मे यह उत्तर है कि ईसाइयो के पादरी अपने अनुयायियो को यह शिक्षा देते थे कि तुम यहा चाहे कितने ही पाप जघन्य कार्य हिंसा अत्याचार कर लो किन्तु यदि मरते समय निश्चित धनराशि तथा वस्तुए हमे भेट (दान) कर दोगे तो तुम्हारे सभी पाप क्षमा हो जाएगे। प्रभु यीशु तुम्हारी सस्तुति (सिफारिश) कर तुम्हे खुदा के स्वर्ग भेज देंगे। इसी प्रकार का अन्ध विश्वास भारत में प्रचलित पौराणिक मत मे भी मृतक श्राद्ध तथा तर्पण मे भेट आदि देने की अन्ध परम्परा है। मार्टिन ल्यूथर के समय यह पोपवाद उग्र रूप में था।

मार्टिन ल्यूथर जर्मन प्रोफेसर था। यह अति बुद्धिजीवी था। यद्यपि वह मेधावी था तार्किक था किन्तु वह 'बाइबिल' पर बहुत ही श्रद्धा रखता था। उसका चिन्तन दोहरा था। वह एक ओर ईसाई पादरियों के द्वारा धर्म के नाम पर लूट खसोट अन्धविश्वास तथा दान-दक्षिणा का घोर विरोधी था तो दूसरी ओर बाइबिल में वर्णित विज्ञान-विरोधी तथ्यो को सिर झुका कर मानता था।

प्रसगवश यहा अति सक्षिप्त रूप मे बाइबिल में वर्णित अन्धविश्वास तथा पाखण्डों का वर्णन किया जाता है। जिन्होंने तटस्थ भाव से रोमन कैथोलिक ईसाईयो की बाइबिल (ओल्डटेस्टामेन्ट) का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि बाइबिल मे दो परस्पर विरोधी विचार धाराए विद्यमान है। सत्कर्म और मुक्ति के सम्बन्ध मे सन्त का स्पष्ट मनतव्य है कि मुक्ति के लिए मनुष्य को अच्छे कर्म करने की आवश्यकता नही। केवल ईसा मे विश्वास मात्र करना ही पर्याप्त है। (रोमनो का पत्र ३–२८)। इसके ठीक विपरीत प्रेरित जेम्स का मत था कि मनुष्य को उसका दर्जा या श्रेणी उसके कर्म से बनती है। केवल विश्वास या अन्ध श्रद्धा से वह ऊचा नहीं उठ सकता। (दखे जेम्स २–२४) बस इन्हीं मत भिन्नताओ को लेकर ल्यूथर ने इन सिद्धान्तो पर जमकर प्रहार करना शुरु किया। मार्टिन ल्यूथर का कथन है कि – वह मनुष्य जो यह कहता है कि बाइबिल के अनुसार मोक्ष के लिए अच्छे कर्म करना आवश्यक है यह पूर्णत असत्य और झूठा है। यदि मनुष्य ईसा मसीह मे दृढ विश्वास रखे तो उसका मोक्ष सुनिश्चित है उसको कोइ खतरा नही। चाहे वह व्यभिचार करे और दिन–रात हजार हत्याए भी कर दे। 'मार्टिन ल्यूथर के इन विचारो को पढकर तथा बाइबिल के प्रति अगाध श्रद्धा और अन्धविश्वास को जानकर उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि पर आकलन किया जा सकता है।

प्रसगवश मार्टिन ल्यूथर जिस बाइबिल पर घोर श्रद्धा और विश्वास रखता था उसमे वर्णित बुद्धि विरुद्ध कुछ बातो पर थोडा प्रकाश डालना आवश्यक है।

भलाई–बुराई धर्म–अधर्म कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य के ज्ञान के वृक्ष का फल किसी को भी न चखना चाहिए। अज्ञानी अन्धविश्वासी बने रहना बाइबिल को अभिप्रेत है। (उत्पत्ति की पुस्तक २–१७) 'इस ससार की विद्या ज्ञान आदि परमात्मा के दरबार मे मूर्खता है। अर्थात विद्या विरोधी मूर्ख बने रहना ही बाइबिल को अभीष्ट है। (कोरट ३–१६) इन तथ्यो को प्रस्तुत करने का एक मात्र तात्पर्य यह है कि मार्टिन ल्यूथर एक ओर बुद्धिजीवी होने का ढोग कर 'पोपवाद' का विरोध करता है तो दूसरी ओर ज्ञान विज्ञान तथा बौद्धिक विकास का विरोध करने वाली बाइबिल को श्रेष्ठ मानकर वह उसे सिर पर रखकर चौराहो पर नाचता था। ऐसी स्थिति मे उसे बुद्धिजीवी प्रोफेसर (प्राध्यापक) कौन कहेगा ? उसे तो अर्द्धविक्षिप्त ही कहा जाएगा।

मार्टिन ल्यूथर नारी जाति के प्रति कितने हीन विचार रखता था उसका एक उदाहरण प्रस्तुत करना पर्याप्त होगा। जिन लोगो ने बाइबिल की शिक्षा पर आधारित उसका रक्त रजित इतिहास पढा है वे भली भाति जानत हैं उन्हे स्मरण होगा कि अपने से भिन्न विचार रखने वाले गैर ईसाईयो को जिनकी सख्या ३ लाख से भी अधिक मानी गइ है जिन्होनेवपस्तिमा लेने से इकार कर दिया था उन्हे जीते जी (जीवित) ही जला दिया गया। ईसाइयो के द्वारा गत ३०० वर्षो तक भली महिलाओ को जादूगरनी कहकर उन्हे जिन्दा ही जीवित जलाया जाता रहा। बाईबिल के अनुसार – किसी जादूगरनी (भद्र महिला) को जिन्दा मत छोडो। (एक्सोउस २२ १) इसके अतिरिक्त अन्य स्थलो पर ऐसे ही घृणित विचार व्यक्त किए गए हैं। इन्हीं जादूगरनी (भद्र महिलाओ) के प्रसग मे मार्टिन ल्यूथर कहता है – मुझे जादूगरो पर जरा भी दया नहीं मैं चाहता हू इन सबको जला दिया जाए। जो ईसाईमत प्राणी मात्र पर दया का दिखावा करता है वह कई दशाब्दियो तक नारी मे आत्मा नामक तत्व की विद्यमानता स्वीकार नही करता था। यही कारण है कि ईसाईयो मे कोई भी नारी पादरी या धर्मोपदेशिका नही बन पाई। वे नारी को पाप का मूल कारण मानते है उनका तिरस्कार करते है।

इतना ही नही मार्टिन ल्यूथर बहु विवाह का समर्थक था। इतिहास के अनुसार हेनरी अष्टम को इसी ने बहु विवाह का परामर्श दिया था।

इन विचारो के सन्दभ म महर्षि दयानन्द को मार्टिन ल्यूथर से साम्य स्थापित करने के प्रयास को क्या उचित कहा जा सकता है ? मध्ययुग मे पौराणिक पण्डितो द्वारा धर्मशास्त्रो मे मिलावट मूर्तिपूजा यज्ञो मे हिंसा आदि अन्धविश्वासो को महत्व दिया गया। इसी पौराणिक धर्म के विरुद्ध महर्षि दयानन्द ने आजीवन सघर्ष किया। सम्भवत वे सघर्ष मे ही उत्पन्न हुए आजीवन सघर्ष किया और अन्त मे सघर्ष को ही समर्पित हो गए। धर्म के नाम पर बेचारे श्रद्धालुओ को ठगने वाले पण्डे–पुजारियो को महर्षि दयानन्द द्वारा 'पोपजी' कहा गया है। उनके द्वारा लिखित कालजयी सत्यार्थ प्रकाश के ११ वे समुल्लास मे इन पोपो के विरुद्ध व्यक्त विचार पढने को मिलते हैं। इस ग्रन्थ का १३ वा समुल्लास भी पढना चाहिए।

देश को स्वतन्त्र हुए अर्द्ध–शती हो गई है किन्तु हमारे यहा के मूर्धन्य विद्वान अपने विचारो की पुष्टि पाश्चात्य–विद्वानो के उद्धरण देकर करते हैं। भारतीय विद्वान स्वाभिमान पूर्वक यह नहीं लिखते है कि शताब्दियो पूर्व भारत मे इन तथ्यो पर वैज्ञानिक ढग से विचार कर उच्च कोटि का निर्णय दे रखा है जिसका अनुकरण अब पाश्चात्य विद्वान कर रहे हैं। अथात पश्चिम की मुहर लगाने के लिए आधुनिक भारतीय विद्वान उधार खाये बैठे रहते है। इसी मानसिक परतन्त्रता अस्मिता रहित स्वाभिमान को छोडकर कुछ लोग महर्षि दयानन्द की महिमा और विशेषताए जर्मनी के प्राध्यापक मार्टिन ल्यूथर से करने का दुस्साहस करते है। इस लेख के प्रारम्भ मे मार्टिन ल्यूथर के अनेक अन्धविश्वासो पूर्वाग्रहो तथा अमानवीय विचारो का प्रस्तुति करण सप्रमाण कर दिया गया है। इस पर विचार करे।

इन पक्तियो का लेखक बुद्धिजीवी तथा वरिष्ठ पत्रकार होने के कारण अनेक अग्रेजी तथा पाश्चात्य शिक्षा म शिक्षित विद्वानो की गोष्ठियो मे जाने का अवसर प्राप्त कर चुका है। जब इन इग्लिश भाषी विद्वानो के मुख से प्रसगवश महर्षि दयानन्द को भारतीय इतिहास म भारत का मार्टिन ल्यूथर कहकर सम्बोधित किया जाता है तब उनके सतही ज्ञान को सुनकर सहसा हसी आने लगती है। मार्टिन ल्यूथर ज्योतिष शास्त्र का घोर विरोधी रहा है। इतिहास इसका प्रमाण है कि गैलीलियो जैसे विद्वान को अपना बुढापा जेल की कोठरियो मे व्यतीत करना पडा। प्रसिद्ध वैज्ञानिक कापरनिकस अपने जीवन मे ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ प्रकाशित न कर सका। उल्लेखनीय है कि वह प्रथम ज्योतिषी था जिसने पश्चिमी ससार का यह बताया कि सूर्य नहीं अपितु पृथ्वी घूमती है। कोपर निकस के सम्बन्ध म मार्टिन ल्यूथर कहता है कि – वह महामूर्ख है क्योकि हमारी बाईबिल मे सूर्य को घूमता हुआ कहा गया है और पृथ्वी का स्थिर कहा गया है। पृथ्वी चटाई की तरह है। (जीशुवा १०–१२–१३)। इसकी तुलना मे महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका इतनी महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसे आज का आधुनिक वैज्ञानिक भी भारतीय ज्योतिष की गहराई के सम्मुख नत मस्तक होता है। यह ग्रन्थ बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार भावुकतावश महर्षि दयानन्द को भारतीय मार्टिन ल्यूथर कहकर जहा अपनी अज्ञानता प्रकट करना है वहीं इस ऋषि के प्रति अपनी कृतघ्नता प्रकट करना है। एक ओर पूर्वाग्रही अन्धविश्वासी बाईबिल को ही सब कुछ मानने वाला नारी जाति का विद्रोही और विनाशक तो दूसरी ओर वेदो के महान ज्ञाता स्वाराज्य के प्रथम उद्घोषक तथा आधुनिक वैज्ञानिको को दिशा–दर्शन देने वाला महान दयानन्द इन दोनो की तुलना ही असम्भव है। इसलिए महर्षि दयानन्द भारत के मार्टिन ल्यूथर नहीं अपितु आधुनिक युग के महान मार्ग–प्रदर्शक विश्व मानवता को स्वस्ति और शाति का सन्देश देने वाला महान दयानन्द है। इसलिए बोलो – महर्षि दयानन्द की जय।

– सुकिरण

स्वास्थ्य चर्चा

हम कैसे सहन करते हैं गर्मी

– डॉ० श्रीमती स्वराजगुप्ता एमए (द्वय) नई दिल्ली

प्रचण्ड गर्मी मे प्राय एक सवाल परेशान करता है – मौसम का पारा ४५–४६ डिग्री से तक पहुचन के बावजूद भी हमारे शरीर का तापमान ३७ डिग्री से या ६८ ४ डिग्री फारेनहाइट पर ही केसे बना रहता है ? दरअसल कुदरत ने हमारे शरीर मे कुछ ऐसा बदोबस्त कर रखा है कि शरीर को जितनी गर्मी बाहरी वातावरण से मिलती है ठीक उतनी ही गर्मी शरीर बाहर भी छोड दता है। इसके अलावा शरीर मे चल रही विभिन्न शारीरिक क्रियाओ जैसे भोजन का पचना सास लेना आदि से भी गर्मी पैदा होती है। आमतौर पर हमारे शरीर म हर घट ७० से ७५ किलो कैलोरी ऊष्मा बनती रहती है। हल्की फुल्की कसरत या चलने से इसकी मात्रा बढकर १५० से २०० किलो कैलोरी तक हो सकती है। बोझा ढोने फावडा चलाने जैसे शारीरिक कार्य करने से शरीर मे ६०० किलो कैलोरी तक गर्मी उत्पन्न हो सकती है। गर्मी के मौसम मे शरीर को धूप और बढे हुए तापमान के कारण बाहरी वातावरण से अधिक मात्रा मे ऊष्मा मिलने लगती है। इसको जल्दी से जल्दी शरीर से बाहर निकालना अत्यन्त आवश्यक होता है।

शरीर मे जरूरत से ज्यादा गर्मी इकटठा होने की खबर फटाफट दिमाग तक पहुचाई जाती है। दिमाग के हाइपोथैलेमस नामक हिस्से मे ही वह केन्द्र है जो शरीर को **गर्मी बाहर निकालो** का हुक्म देकर आपातकालीन प्रणाली चालू करवाता है। इस केन्द्र को शरीर के गर्माने की सूचना दो रास्तो से मिलती है। पहला रास्ता हमारी चमडी के रोम रोम म बिखरी असख्य सवेदी तत्रिकाए हैं। ये तुरन्त बिजली की रफ्तार से दिमाग को खबरदार करती है। दूसरा रास्ता शरीर मे निरन्तर प्रवाहित होता रक्त है जो दिमाग मे ही पहुचता है। परन्तु यह रास्ता पहले रास्ते की तुलना मे काफी सुस्त है। शरीर के भीतरी अग भी इन्ही दोनो रास्ता से दिमाग को सन्देश भेजते हैं। गर्मी की खबर मिलते ही दिमाग द्वारा शरीर को गर्मी से लडने का आदेश प्रसारित कर दिया जाता है शरीर के पास गर्मी से लडने के दो मुख्य हथियार हैं। पहल अस्त्र के रूप मे चमडी मे रक्त का प्रवाह अधिक तेज कर दिया जाता है। इससे रक्त के साथ साथ शरीर के भीतरी अगो की गर्मी भी त्वचा के पास आ जाती है।

हमारी चमडी पर तकरीबन बीस लाख स्वेद ग्रन्थिया किसी सिपाही की तरह तैनात रहती है। हर समय पसीना बनाने के लिए तैयार इन ग्रन्थियो को बस दिमाग से हुक्म मिलने का इन्तजार रहता है। खास बात यह है कि जितनी गर्मी होती है ये उतना ही पसीना बहाती है। न कम न ज्यादा। आमतौर पर अधिक गर्मी की दशा मे एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर मे हर घण्टे कोई सवा से डेढ लीटर पसीना बहता है। जैसे ही शरीर से पसीना बाहर आता है इसका वाष्पीकरण शुरू हो जाता है। जितनी ज्यादा गर्मी और तेज हवाए होगी पसीना भी उतनी ही जल्दी सूखेगा। पसीना सूखने मे ही गर्मी को हराने का राज छिपा है। एक लीटर पसीना सूखने से शरीर की ५४० केलारी ऊष्मा का नाश होता है। इस तरह शरीर को जल्दी ही गर्मी स राहत मिलने लगती है। पसीने का जल्दी या देर से सूखना हवा के बहाव की रफ्तार और हवा मे मौजूद नमी की मात्रा पर निभर करता है। तेज हवा मे पसीना जल्दी सूखता है परन्तु नमी अधिक हान पर पसीना सूखन मे काफी देर लगती है। यदि नमी ५८ अधिक हो ता पसीना सूखने मे नाम ही नही लेता पर शरीर मे गर्मी के कारण पसीना बह बह कर यू ही बर्बाद होता रहता है। यदि मनुष्य ऐसी दशा मे अधिक समय तक बैठा रह जाए तो उसे अधिक गर्मी से होने वाले रोग विकार जकड सकते हैं। इसीलिए मई जून की सूखी गर्मी की तुलना मे जुलाई अगस्त की नम गर्मी अधिक भयानक मानी जाती है।

जिस तरह लम्बे समय तक ढीला छोड देने पर सिपाही सुस्त पड जाते है ठीक उसी प्रकार हमशा ठण्डे वातावरण मे रहने वालो की स्वेद ग्रन्थिया भी सुस्त पड जाती है। उनकी पसीना बनाने की क्षमता घट जाती है। यही वजह है कि पहाडो से गर्म मैदानी इलाको मे जाने वालो को गर्मी ज्यादा परेशान करती है। परन्तु वैज्ञानिक बताते है कि लगातार सात से दस दिनो तक गर्म मौसम मे रहने और काम करने से स्वेद ग्रन्थिया फिर से काम करने लगती हैं। इस प्रक्रिया को शरीर का अनुकूलन कहते हैं। ज्यादा पसीना बहन के कारण ही गर्मियो मे मूत्र कम बनता है। बच्चो मे स्वद ग्रन्थियो की सख्या कम होती है इसलिए उन्हे गर्मी अधिक परेशान करती है। इसी तरह बूढा मे भी स्वेद ग्रथियो की कार्यकुशलता काफी कम होन के कारण गर्मी का सामना करने मे दिक्कत पेश आ।

तक्र (छाछ) के गुण

– बशीलाल गोदान

तक्र को सस्कृत मे दण्डाहत कलिशव अरिष्ठ गोरस एव हिन्दी म छाछ मटठा मही आदि नामो से पुकारते है। क्रिया भद से वह पाच प्रकार का होता है। यथा (१) घाल (२) मथित (३) तक्र (४) छाछ (५) उदश्वित।

१ **घोल** – बिना जल डाले मलाई सहित जो दही बिलाया जाए उसे घाल कहते है। इसमे शक्कर डाल कर पीन से यह वात पित्त नाशक है।

२ **मथित** – मलाई उतार कर अनोदक मथन किए हुए दधि का मथित कहते हैं। यह कफ पित्त को दूर करता है।

३ **तक्र** – दधि मे चतुथ भाग जल मिलाकर बिलोये हुए मे मक्खन निकाले हुए को तक्र कहते हैं इसमे बहुत से गुण है।

यथा – **तक्र ग्राही कषायाम्ल स्वादु पाक रस लघु।**

वीर्योष्ण दीपन वृष्य प्राणिना वातनाशनम।। *निघटु*

अर्थ – तक्र ग्राही कषैला खटटा पाक और रसमे स्वादु तथा हल्का उष्ण वीर्य दीपन वीर्यवर्धक वात नाशक तथा ग्रहणी रोग मे हितकारक है। तक्र मे अम्ल रस होने से वात को नाश करता है। मधुर रस होने से पित्त को और कषाय रस से कफ को दूर करता है और भी अनेक रागो का शमन करता है। यथा प्रमाण देखिये –

शोफोदरार्शो ग्रहणी दोष गृहारुचि।

प्लीहागुल्म घृत व्यापद् गरपाडवा भयाज्जयेत।। *वाग्भट*

शोथ उदर रोग अर्श (बवासीर) ग्रहणी मूत्र रोग अरुचि प्लीहा (तिल्ली) गुल्म छर्दि (उबकाई) पाण्डु, आमरोग अतिसार प्रवाहिका (पेचिश) विशूचिका शूल मदात्यय पीडिका गलगण्ड अर्बुद दद्रु प्रदर तथा वात पित्त कफादि समस्त रोगो का नाश करता है।

४ **छच्छिका** (छाछ) – मलाई रहित दधि मे सममाग पानी मिलाकर मथ गये को छच्छ कहते हैं। यह शीतल हल्की दीपन और लवण रस युक्त स्वादु तथा कफकारक वातपित्त तृषा श्रमादि रोगो को दूर करती है।

५ **उदश्वित** – आधा जल मिलाकर जिस दही को बिलोया जावे उसे उदश्वित कहते हैं। यह कफकारक भारी तथा आम नाशक है।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

महासम्मेलन मे यजमान बनने के लिए आर्य दम्पत्तियो को आमन्त्रण

गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन के अवसर पर २५ से २८ अप्रैल तक चारो दिन राष्ट्रभृत यज्ञ प्रात ८ बजे से ६ बजे तक होगा। जिसमे २५ यज्ञ कुण्डो पर १०० यजमान प्रतिदिन आहुतिया देगे। जिसके उपरान्त प्रवचन और भजनोपदेश हुआ करगे। इस राष्ट्रभृत यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति और वैदिक विद्वान परम आदरणीय आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री होगे। यज्ञ के तीनो पहलुओ दवपूजा सगतिकरण और दान के लिए यथायोग्य आहुति देने मे जो आर्य दम्पति यजमान बनने के इच्छुक हो वे तत्काल अपना नाम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से यज्ञ समिति के सयोजक पा० भारत भूषण को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे भजे। महासम्मेलन के चारो दिवस पर आयोजित यज्ञ मे कुल ४०० यजमान बैठ पाएगे। अत प्रथम प्राप्त सूचना के आधार पर सम्पर्क करने वाले दम्पत्तियो को यजमान के रूप मे यज्ञवेदी पर बैठने के लिए अधिकत किया जाएगा।

आर्यसमाज नैनी का बाइसवा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नैनी के बाइसवे वार्षिकोत्सव पर विशाल सत्सग समारोह का आयोजन दिनाक २५, २६ एव २७ फरवरी २००२ को नैनी बाजार मे किया गया। तीनो दिन वाराणसी से प्यारी बहन प्रीति जी ने यज्ञ कराया और कहा यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। महिला सत्सग मे ब्रह्मचारियो ने वेद पाठ किया। बहन प्रीति जी ने नारी शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि शिक्षित नारी ही उत्थान का आधार है। बलिया से आए कुवर महिपाल सिह ने देश भक्ति भरे गीत प्रस्तुत किए। युवाओ को अच्छे चरित्र का निर्माण करने का कहा। तीनो दिन कार्यक्रम मे प मूल चन्द अवस्थी प० राधे मोहन एव प० परमाथ मुनि जी ने भी सम्बोधित किया प्रधान श्री चमन लाल खुराना जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

तक्र (छाछ) के गुण

अब विभिन्न रोगो म तक्र (मटठे) के विविध योगो का अवलोकन करिये।

१ वातरोगो मे खटटे–मटठे का सोठ व सैधव लवण के साथ मिला कर लेवे।

२ पित्त रोग मे मधुर तक्र बूरा मिलाकर सेवन करे।

३ कफ रोगो म छाछ को त्रिकुटा मिला पीना चाहिए। त्रिकुटा सोठ पीपल और मिर्च इन तीनो औषधियो को कहते हैं

४ अतिसार के भयकर उपद्रव म मही को आमकी गुठली और मिश्री डालकर पीना चाहिए।

५ सग्रहणी रोग म विशेषत मटठे का उपयोग खाने पीने म किया जाने पर आशुफल प्रद सिद्ध हुआ है।

६ बवासीर रोग मे मही को सैधानमक मिलाकर पीना चाहिए।

७ अजीर्ण रोग मे तक्र को सोठ मिर्च और सैधानमक मिला पीना चाहिए।

शूल मे लाल मिर्च और पीपलामूल मिला हुआ तक्र पीना चाहिए।

६ हैजे मे छाछ को जौ के आटे और यवक्षार के बराबर चूर्ण सहित पीना चाहिए।

१० पाण्डु रोग म मटठे के चित्रक डालकर पीना चाहिए।

११ अरुचि रोग मे तक्र मे सोठ राइ जीरा और भूनी हिग का चूर्ण सैधानमक के साथ मिलाकर पीना चाहिए।

१२ गदात्यय रोग म मटठ को मिश्री क साथ पीना चाहिए।

१३ गुल्म रोग मे मटठे का अजयावन नमक और गुड समभाग मिलाकर पीने से शीघ्र ही मल मूत्र का क्षरण होगा

१४ मूत्र की रुकावट मे तक्र को जवाखार मिला कर पीने से पशाब का निस्सरण शीघ्र होगा व पथरी रोग भी दूर होगा।

१५ पीडिका रोग वाल का मटठ मे तुलसी के पत्तो का मिलाकर सेवन करना चाहिए।

१६ प्लीहा (तिल्ली) रोग मे मही को राई व सभर हल्दी डालकर पीने से शीघ्र दूर होगी

१७ प्रदर रोग मे तक्र को सैधानमक और पीपल मिलाकर पीना चाहिए।

१८ प्रतिश्याय (जुकाम) पीनस मे गरम दूध की छाछ को जीरा नमक और अदरख मिलाक पीना चाहिए।

जो मनुष्य भोजन करने के पश्चात नित्य तक्र का सवन करता है। उस कोई रोग नहीं होता। प्रमाण देखिए

न तक्र सेवी व्यथत कदाचि छतक्रदग्धा प्रभवति रोगा।

यथा सुराणममृतहिताय तथा नराणा भुवि तक्रमाह ।।

अर्थ तक्र का सवन करने वाला मनुष्य कभी रोगी नही होता और तक्र से नष्ट किए हुए रोग फिर नहीं आते। स्वर्ग के सदृश ही मनुष्य का तक्र पृथ्वी पर उपलब्ध है।

किन्तु उष्ण क्षत गर्मी के समय दुबल श्रमित मूर्छा भ्रम दाह रक्तपित्त और ज्वर वाले रोगी का तक्र अहित कर हे देखिये

तक्र नैवक्षते दद्यान्नोष्ण काले न दुर्बले। न मूर्छा भ्रमदाहे च न रोगे रक्त पित्तके।।२।।

न डे ल 11049 2002 नवैदिक साप्ताहिक 24 3 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2002
R N No 626 57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 21/22-3 2002

नवसंस्येष्टि (होली) की हार्दिक शुभकामनाएं

जिसके हृदय मे दया है जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है जिसका शरीर पर्रा हुआ है कलि भी उ नहीं बिगाड सकता।

प्रतिष्ठा मे
437 श्री उपकुलपति महोदय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
कांगडी हरिद्वार (उ०प्र०)

ओ३म
कृण्वन्तो विश्वमार्यम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चेत्र शुक्ल १३ से वैशाख कृष्ण १२ सम्वत २०५६
२५ २६ २७ २८ अप्रैल २००२
सक्षिप्त कार्यक्रम विभिन्न सत्र एव विषय

(देहली कार्यालय)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन ३/५ रामलीला मैदान नई दिल्ली २
फोन ३२३४७७१ ३२६ ६८५ फैक्स ३ ७
I l l d da s l s l १ ०

(हरिद्वार कार्यालय)

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय श्रद्धानन्द नगरी हरिद्वार (उत्तराचल)
४१ ४ ३६२ टेली फैक्स ४

गुरुकुल शताब्दी

संक्षिप्त कार्यक्रम - विभिन्न सत्र व विषय

बृहस्पतिवार चैत्र शुक्ल १३ २०५६ (२५ अप्रैल २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ६
ब्रह्मा — आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
ध्वजारोहण — प्रात १० बजे
उदघाटन महासम्मेलन एव दीक्षान्त समारोह — प्रात १० ३० से १ ००
गुरुकल सस्कृति (शिक्षा के खुले द्वार) — अपराह्न ३ से ६
उदबोधन विषय
१ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और शुद्धि यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी श्रद्धानन्द २ वैदिक परम्परा और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ३ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और आर्यसमाज ४ आधुनिक जीवन मे गुरुकुल की प्रासंगिकता ५ गुरुकुल शिक्षा प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय ६ सस्कृत सरक्षण राष्ट्रीय आवश्यकता ७ राष्ट्रीय एकता और शुद्धि
पूर्व स्नातक पुनर्मिलन समारोह एव भजन सन्ध्या — साय ७ से १०

शुक्रवार चैत्र शुक्ल १४ २०५६ (२६ अप्रैल २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ६
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान — प्रात १० ३० से १ ००
उदबोधन विषय
१ वेद मे आध्यात्मिकता और विज्ञान का समन्वय २ वेद मे विज्ञान का व्यावहारिक स्वरूप ३ विज्ञान और वैदिक जीवन ४ वेद ईश्वरीय ज्ञान वैज्ञानिक चिन्तन ५ वेद और विश्व शान्ति ६ वेद मे यज्ञ और पर्यावरण ७ वैदिक योग और आधुनिक चिकित्सा पद्धति

शोभा यात्रा — अपराह्न १ से साय ६
महासम्मेलन स्थल से प्रारम्भ — वैदिक मोहन आश्रम
...
महर्षि दयानन्द सरस्वती पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई गई
सम्मेलन — साय ७ से १०
उदबोधन विषय
१ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् स्वमायम
२ आर्यसमाज और परिवार निर्माण
३ कर्त्तव्य बनाम अधिकार
४ वैदिक परिवारवाद
५ हम इस समाज के माली है मालिक नहीं
६ सामाजिक व्यवस्थाओ का सरक्षण हमारा प्रथम कर्त्तव्य
७ वैदिक परम्परा भोगवाद और त्यागवाद

शनिवार चैत्र शुक्ल १५ २०५६ (२७ अप्रल २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ६
वेदपाठी — ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
आस्तिकता तथा आध्यात्मिकता — प्रात १० ३० से १ ००
उदबोधन विषय
१ धर्म बनाम सम्प्रदाय
२ आध्यात्मिकता और आधुनिक जीवन
३ अध्यात्मवाद उदगम और विकास
४ धर्म अर्थ काम और मोक्ष
५ आत्मानम विद्धि (आत्मा को भी जानो)
६ सुख शान्ति का मार्ग अध्यात्म
मातृ निर्माता भवति — अपराह्न ३ से साय ६
उदबोधन विषय
१ नारी मानव निर्माण
२ धर्म का मूलाधार नारी
३ महर्षि दयानन्द नारी उत्थान
४ वैदिक नारी और आधुनिक नारी
५ सुखी गृहस्थ और नारी
६ गृहस्थ जीवन की ब्रह्मा नारी
७ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और मानव निर्माण
आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप — साय ७ से १०
उदबोधन विषय
१ धर्म प्रचार मे युवाओ की भूमिका
२ शिक्षण सस्थाए और धर्म प्रचार
३ धर्म प्रचार मे नारी
४ धर्म प्रचार मे आधुनिक साधन ५ भारतीय सस्कृति और वैदिक कर्म काण्ड ६ वैदिक जीवन का आकर्षण ७ वैदिक मान्यताए

रविवार चैत्र वैशाख कृष्ण १२ २०५६ (२८ अप्रैल २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ६
वेदपाठी — ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
राष्ट्र रक्षा तथा समापन समारोह — प्रात १० ३० से १ ००
उदबोधन विषय — १ आर्यसमाज की राष्ट्र सेवा योजना २ राष्ट्र निर्माण और गुरुकल ३ आर्य राष्ट्र श्रेष्ठता का सिद्धान्त ४ आर्य शब्द का उदगम और वर्तमान ५ आर्य राष्ट्र सास्कृतिक एव भोगोलिक ६ समाज सुधार से राजनीतिक सुधार
घोषणा पत्र प्रस्तुति

कार्यकर्ता सगोष्ठी

दिनाक — २५ अप्रैल २००२ समय दोपहर १ ३० से ३ ००
विषय आर्यसमाज और हिन्दी सस्कृत सरक्षण
दिनाक — २६ अप्रैल २००२ समय दोपहर २ से ६ ००
विषय आर्यसमाज की गतिविधिया नई दिशाए

गुरुकुल स्नातक सगोष्ठी

दिनाक — २७ अप्रैल २००२ समय अपराह्न ३ से ६
विषय धर्मप्रचार मे गुरुकुलो के स्नातको की भूमिका

यति सगोष्ठी

दिनाक — २७ अप्रैल २००२ समय दोपहर ३ से ६ ००
विषय वानप्रस्थ और सन्यास नई दिशाए

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य	प० हरबस लाल शर्मा	विमल वधावन
महासम्मेलन अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री	सुदर्शन शर्मा
सभा मन्त्री	कुलपति	सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य	डॉ० महावीर	आचार्य यशपाल
सभा कोषाध्यक्ष	कुल सचिव	सभा उप प्रधान

टिप्पणी १ प्रत्येक सत्र के अध्यक्ष सयोजक मुख्य अतिथि विशेष अतिथि तथा विद्वान वक्ताओ आदि के नाम विस्तृत कार्यक्रम मे दिए जाएगे
२ कार्यक्रम मे परिवर्तन का अधिकार सयोजको मे सुरक्षित है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फेक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाइट http //www whereisgod com

वर्ष ४० अक ४६ ३१ मार्च से ६ अप्रैल २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ चै० कृ० .

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

हरिद्वार में आर्यों का महाकुम्भ

देश धर्म की रक्षा के लिए एक बार फिर आर्यो की तैयारी
अनुशासन और कर्त्तव्यवाद के ध्वज फहराए जाएंगे

देश और धर्म की रक्षा के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० मे आर्यसमाज नामक सगठन की स्थापना उन परिस्थितियो मे की जब भारत के कोने कोने पर ब्रिटिश साम्राज्य की हकूमत चल रही थी। एक तरफ विदेशियो के अत्याचार थे तो दूसरी तरफ जाति व्यवस्था के कर्म पर आधारित सिद्धान्तो को तिलाजलि देते हुए उसे जन्म पर आधारित मान लिया गया और जन्मजात जातिवाद ने समाज मे भेदभाव और अत्याचार का विष फैलाना प्रारम्भ कर दिया था।

इन दोनो अव्यवस्थाओ से निपटने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज नामक सगठन की स्थापना करके अपने अनुयायियो को प्रेरित किया कि एक तरफ विदेशी दासता स मुक्ति पाने क लिए हर सम्भव प्रयास करे और साथ ही यह मार्ग भी बताया कि बाहर वाला से लडाई लडने के लिए आन्तरिक भेदभाव को भी मिटाना पडेगा

इन निर्देशो प आधारित महर्षि दयानन्द के प्रवचनो का सु कर बरेली मे एक युवक मुशीराम उनकी ओर आकर्षित हो गया। इस युवक की पृष्ठभूमि पजाब की थी। पेशा वकालत का था। पहले यह युवक वानप्रस्थ लेकर महा मा मुशीराम बना और बाद मे सन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आर्यसमाज के क्षेत्र मे सगठनात्मक रूप मे भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहकर कार्य किया।

वर्ष १६०२ मे महात्मा मु राम हरिद्वार मे लगभग २ हजार बीघा जमीन दान म प्राप्त करके आर्यो के धन सहयाग स गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की। ज अब केन्द्र रकार के यू०जी०सी स मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय के रूप मे कार कर रहा हे। जिसमे केवल वेद उपनिषद और अन्य धर्म शास्त्रो की शिक्षा दी जाती है बल्कि विज्ञान प्रबन्धन इजीनियरिंग आदि जैसे आधुनिक विषय भी शामिल है पहली कक्षा से लेकर डाक्टरेट तक की पूरी शिक्षा व्यवस्था इस विश्वविद्यालय मे उपलब्ध है

यह विश्वविद्यालय देश और धर्म की सेवा मे १० वर्ष पूरे कर रहे है गुरुकुल शताब्दी वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा २५ से २८ अप्रैल २० २ की तिथियो मे हरिद्वार मे है आयोजित कर रही है यह महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा क प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे होगा। गुरुकल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प० हरबशलाल शर्मा जो पजाब सभा के प्रधान भी हैं इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होगे।

गुरुकुल शताब्दी अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन क सयोजक श्री विमल वधावन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना को केवल मात्र एक सस्था की स्थापना नहीं मानते बल्कि वे इसे एक सिद्धान्त की स्थापना मानते हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

गुरुकुल कागडी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के लिए

रेल किराए मे ५० प्रतिशत की छूट

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिगविजय सिंह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आन्नद ने अपने पत्र द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है की २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियो मे द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर के किराये मे ५० प्रतिशत छूट के अधिकारी होगे। यह छूट केवल ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ किन्हीं ३० दिनो मे उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२५ से २८ अप्रैल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०६८५) सार्वदेशिक प्रैस (फोन न० ३२७०५०७ ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६० ७२१४०६० मो० ६८११२२१०८३)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित करे कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है। यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे। — **विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक

आर्यसमाज का प्रधानमन्त्री को पत्र
मन्दिर तोडको का इलाज करो हिन्दुत्व की खिल्ली मत उडाओ

आर्य समाज की सर्वोच्च विश्व स्तरीय सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान विमल वधावन एडवोकेट तथा सभा मन्त्री वेदव्रत शर्मा ने आज प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को पत्र भेजकर सुझाव दिया है कि वे मन्दिर तोडक केन्द्रीय मन्त्री श्री जगमोहन जैसे आर्यसमाज विरोधी सहयोगी को तुरन्त मन्त्रिमण्डल से अलग करके आर्यजगत के प्रकोप से भाजपा को बचाए।

उन्होने कहा है कि हाल ही के चुनावो मे उ०प्र० उत्तराचल और पजाब के अतिरिक्त दिल्ली मे जो चुनाव परिणाम आए हैं उस खतरे की घटी को भापकर माननीय प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री को तुरन्त अपने कार्यो का आत्ममथन करना चाहिए। आर्य जगत और हिन्दुत्व की खिल्ली उडाने से इस देश के बहुसख्यक समाज को भावनात्मक आघात पहुचा है उससे आपके वोट बैक का ग्राफ निरन्तर गिर रहा है।

अपने पत्र मे आर्य नेताओ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के बाद आर्यसमाज के अधिकतर अनुयायियों ने आपकी पार्टी को पूर्ववत समर्थन जारी रखा जैसा जनसघ काल मे था। उसका बडा स्पष्ट कारण था कि आपकी पार्टी का राजनीतिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण स्व० श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सिद्धान्तों और विचारो पर आधारित था। आपने एव श्री लालकृष्ण आडवाणी ने जिस प्रकार उन सिद्धान्तो को आगे बढाया उसी से आकर्षित होकर आर्यसमाज का समर्थन आपको मिलता रहा। यह सिद्धान्त जवाहर लाल नेहरू के राष्ट्रवाद से भिन्न था जो गाधी जी के तुष्टिकरण सिद्धान्तों पर आधारित थे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

गुरुकुल महासम्मेलन में ग्रन्थों तथा प्रचार सामग्री का विमोचन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार (२५ से २८ अप्रैल २००२) के विशाल आयोजन के अवसर पर जो विद्वान् लेखक या प्रकाशक अपने नए प्रकाशित ग्रन्थों या अन्य प्रचार सामग्री का विमोचन कराना चाहते हो तो उसके ५ सेट विमोचन से एक दिन पूर्व गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे स्थित महासम्मेलन कार्यालय मे अवश्य दे दे। सामग्री का वैदिक सिद्धान्तों के आलोक मे अवलोकन करने के बाद ही यह निश्चय किया जाएगा कि विमोचन किस समय और किस अतिथि के द्वारा करवाया जाएगा।

— **(विमल वधावन)**
महासम्मेलन सयोजक

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में आयोजित होंगी महत्वपूर्ण एवं दूरगामी प्रभाव वाली संगोष्ठियां

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे जहा एक तरफ मुख्य पण्डाल मे विभिन्न सत्रो के अन्तर्गत वैदिक विद्वानो आर्य नेताओ एव राजनीतिक महानुभावो के विचार सुनने को मिलेगे वही कुछ महत्वपूर्ण गोष्ठियो का भी आयोजन किया जा रहा है ये गोष्ठिया अपने आप मे विशेष और महत्वपूर्ण होगी

आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी

देश विदेश के भिन्न क्षेत्रो से पधारे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो की दो विशेष गोष्ठिया आयोजित की जाएगी। प्रथम सगोष्ठी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन मे २५ अप्रैल २००२ दोपहर १३० बजे से ३ बजे तक आयोजित होगी जिसका विषय है **आर्यसमाज और हिन्दी सस्कृत सरक्षण**

इसी प्रकार की दूसरी सगोष्ठी भी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन मे २७ अप्रैल २००२ को दोपहर २०० बजे से साय ६ ०० बजे तक आयोजित होगी जिसका विषय है

आर्यसमाज की गतिविधिया नई दिशाए

गुरुकुल आचार्य एव पूर्व स्नातक सगोष्ठी

यह विशेष सगोष्ठी विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के हाल मे २७ अप्रैल २००२ (शनिवार) को दोपहर बाद ३ से ६ बजे तक आयोजित होगी जिसकी अध्यक्षता डा० निरुपण विद्यालकार करेगे।

इस विशेष सगोष्ठी मे धर्म प्रचार मे गुरुकुल स्नातको की भूमिका तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति की एकरूपता पर विचार विमर्श होगा। इसके सयोजक आचार्य यशपाल जी होगे

यति सगोष्ठी

आर्यसमाज की परम्परा और वैदिक सिद्धान्तो से ओत प्रोत वानप्रस्थी ओर सन्यासी महानात्माओ की भी एक विशेष सगोष्ठी २७ अप्रैल २००२ को दोपहर बाद ३ बजे से ६ बजे तक विश्व विद्यालय के प्रबन्धन हाल मे आयोजित होगी। इसकी अध्यक्षता स्वामी आत्मबोध सरस्वती (पूर्वनाम महात्मा आर्यभिक्षु जी) करेगे और सयोजन स्वामी सदानन्द जी दीनानगर करेगे। इस सगोष्ठी मे वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की भूमिका पर चर्चा होगी

महिला सगोष्ठी

यह विशेष सगोष्ठी २७ अप्रैल २००२ (शनिवार) को साय ७ बजे से ८ ३० बजे तक आयोजित होगी जिसकी अध्यक्षता श्रीमती राजेश शर्मा करेगी। श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (दिल्ली) इस सगोष्ठी की सयोजिका होगी।

उत्तराचल, छत्तीसगढ एव झारखण्ड के लिए पृथक आर्य प्रतिनिधि सभाओ के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत अतरग बैठक मे उत्तराचल छत्तीसगढ तथा झारखण्ड नामक नए राज्यो के गठन के बाद इन राज्यो मे पृथक प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ के गठन को सैद्धान्तिक रूप मे स्वीकार किया गया है। इन नए राज्यो की आर्यसमाजे क्रमश उत्तर प्रदेश मध्य विदर्भ एव बिहार की आर्य प्रतिनिधि सभाओ से सम्बन्धित है। अन्तरग सभा के निश्चय के आधार पर इन प्रान्तो को पत्र लिखे जा रहे है कि वे नई आर्य प्रतिनिधि सभाओ के गठन के प्रस्ताव अपनी अपनी अन्तरग सभाओ से पारित करवाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली पर स्थित कार्यालय को भिजवाए। इन राज्यो से प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद नई प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ के गठन का विधिवत अन्तिम रूप दिया जाएगा।

स्टालों की बुकिंग प्रारम्भ

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल के विशाल आयोजन मे पुस्तको तथा अन्य धार्मिक वस्तुओ एव अल्पाहार के स्टलो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अनुमानत यह स्टाल १०x१० फुट के होगे। इन स्टालो का चारो दिनो का शुल्क २५०० रु० निर्धारित किया गया है। जो महानुभाव अथवा प्रतिष्ठान अपने स्टाल इस सम्मेलन मे लेना चाहे वे २५०० रु० का ड्राफ्ट **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २** के पते पर १० अप्रैल से पूर्व भिजवा दे। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहे वे ५००० रु० का ड्राफ्ट भेजे जिससे उन्हे दोनो स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

आगामी सम्मेलन अपने आप मे एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमे बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचे। आपकी राशि एव आवेदन १० अप्रैल से पहले सभा कार्यालय मे अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रैल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

इन स्टालो मे दो बडी मेज दो कुर्सिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध होगा। तीन तरफ की दीवारे और छत टीन की बनी होगी। स्टाल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डॉ० महावीर जी से सम्पर्क करे।

— विमल वधावन महासम्मेलन सयोजक

पृष्ठ १ का शेष भाग

हरिद्वार में आर्यों का महाकुम्भ

महर्षि दयानन्द के आहान से पूर्व गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्राचीन वैदिक कालीन भारत का एक स्थापित सिद्धान्त था। परन्तु इस्लाम और ब्रिटिश युग मे यह पद्धति लुप्त सी हो गई थी १९०२ मे स्थापित यह गुरुकुल आर्यसमाज का पहला गुरुकुल था जिसने आधुनिक युग मे गुरु के सिद्धान्त का पुनर्स्थापित किया। यह सिलसिला ऐसा चला कि आज भारत के लगभग हर प्रान्त मे कुल मिलाकर २०० से भी अधिक गुरुकुल स्थापित हैं।

देश भक्ति अच्छा चरित्र और भेदभाव रहित शिक्षा व्यवस्था इन गुरुकुलो के लक्षण हैं। सहशिक्षा गुरुकुल पद्धति मे मान्य नहीं है।

श्री विमल वधावन ने बताया कि इस महासम्मेलन मे इस बार एक लाख से भी अधिक सख्या मे धर्मप्रेमी जनता के पहुचने की उम्मीद है। प्रतिदिन प्रात १० बजे दोपहर बाद तीन बजे और साय ७ बजे ३ ३ घण्टे के तीन सत्र आयोजित हुआ करेगे। इन सत्रो मे देश भर से लगभग ६० से भी अधिक वैदिक विद्वान उद्बोधन देने के लिए आमन्त्रित किए गए हैं। निम्न सत्रो का निर्धारण स्वय मे ही विशाल प्ररणाओ को समाहित करता है

१ **गुरुकुल सस्कृति सत्र**
२ **आधुनिक युग में वेद और विज्ञान सत्र**
३ **आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता सत्र**
४ **आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप सत्र**
५ **आर्य परिवार सत्र (कर्त्तव्यवाद)**
६ **माता निर्माता भवति सत्र**
७ **राष्ट्र रक्षा सत्र**
८ **आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन सगोष्ठी**
९ **आर्य सन्यासी सम्मेलन सगोष्ठी**
१० **पूर्व स्नातक सगोष्ठी**
११ **आर्य महिला सगोष्ठी।**

इस महासम्मेलन के आयोजन के पीछे सार्वदेशिक सभा का प्रमुख उद्देश्य आर्यसमाज की विशाल ताकत को अनुशासन और कर्त्तव्य पालन के सूत्र मे बाधना है आर्यसमाज का विगत १२५ वर्षो का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस महान सगठन के कर्णधारो ने देश और धर्म की रक्षा के लिए किसी भी बलिदान का बडा नही समझा।

वर्तमान भौतिकवादी युग मे कुछ अकमण्यता और सिद्धान्त विरोधी भटकाव आर्यसमाज के सगठन मे भी आया है। कुछ स्वार्थी लोग इस विशाल सगठन मे घुसकर इसके उद्देश्यो के विरुद्ध काम करते नजर आ रहे है।

यह सम्मेलन अनुशासन और कर्त्तव्यवाद की स्थापना किस हद तक कर पाएगा यह तो आने वाला समय ही बताएगा। परन्तु जिस प्रकार सत्रो तथा उनमे दिए जाने वाले उदबोधनो और पारित प्रस्तावो की तैयारी डा० महेश विद्यालकार आर्य तपस्वी सुखदेव कुलपति आचार्य वेदप्रकाश कुलसचिव डा० महावीर तथा सभा के प्रधान कं० देवरत्न आर्य और मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की देख रेख मे जोर शोर से चल रही है उसे देखते हुए इस बात मे कोई सन्देह नजर नही आता कि इस महासम्मेलन के पीछे वैदिक विद्वानो की एक विशाल ताकत देश और धर्म रक्षा के लिए एक बार फिर महर्षि दयानन्द के विचारो को लेकर भारत को एक नई दिशा देने के लिए प्रयासरत है। दूसरी तरफ आयोजको की देख रेख मे दो दर्जन समितिया भाग लेने वाली धार्मिक जनता के लिए आवास परिवहन भोजन जल स्वच्छता चिकित्सा आदि की सुविधाए विशाल स्तर पर उपलब्ध कराने के लिए दिल्ली और हरिद्वार मे कार्य कर रही है क्यो न हो यह महासम्मेलन आर्यो का एक कुम्भ ही तो है।

पृष्ठ १ का शेष भाग

आर्यसमाज का प्रधानमन्त्री को पत्र

राजनीतिक विकास की दौड मे आपको चाहे अनचाहे कई प्रकार के विचारो वाले व्यक्तियो का समर्थन लेना पडा। इसी प्रक्रिया मे एक नाम था श्री जगमोहन का। जिन्होने बेशक अपनी प्रशासनिक कुशलता से कुछ अच्छे कार्य किए परन्तु मिण्टो रोड स्थित ५० वर्ष से अधिक पुराने आर्यसमाज मन्दिर को पार्क के सौन्दर्यीकरण के नाम पर गिराना एक भारी भूल थी। आपके तथा श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के स्पष्ट आदेशो के बावजूद भी उन्होने अपनी भूल स्वीकार करके आर्यसमाज के आन्दोलन को तो स्थगित करने मे सफलता प्राप्त कर ली परन्तु भूमि का आबटन अभी तक भी सार्वदेशिक सभा के नाम नहीं हो पाया। जिसके कारण आन्दोलन स्थगित अवश्य है परन्तु समाप्त नहीं हुआ।

दिल्ली के नगर निगम चुनाव से पूर्व यदि भूमि का आबटन भी कर दिया जाता तो भी आन्दोलनात्मक स्वरो और भावनाओ को समर्थन मे बदला जा सकता था। जिसका परिणाम सामने है।

दिल्ली के स्तम्भ नेतृत्व की लागत पर श्री जगमोहन को प्रोत्साहन दिया गया। आप यह न भूले कि आपकी पार्टी को अभी कई और लक्ष्य प्राप्त करने हैं। इस प्रत्र के माध्यम से हमारा केवल एक ही निवेदन है कि अभी भी आर्यजनता की भावनाए आपके पक्ष मे परिवर्तित हो सकती हैं यदि आप वर्तमान शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार को अविलम्ब आर्यसमाज मन्दिर मिन्टोरोड के लिए भूमि का आबटन उसी स्थल पर करने के लिए निर्देश जारी करे।

आर्यनेताओ ने यह अपील भी की है कि आगामी २५ से २८ अप्रैल तक हरिद्वार मे आयोजित आर्यो के कुम्भ मे प्रधानमन्त्री एव गृहमन्त्री स्वय पधारकर आर्यजगत् की भावनाओ का आदर करे।

(साभार पजाब केसरी)

नारी का कर्मक्षेत्र

– सत्यबाला देवी एमए बीटी

त्यागमयी प्रेममयी वात्सल्यमयी कर्त्तव्यपालन की प्रतिमूर्ति समस्त मानव जाति को शक्ति प्रेरणा कर्त्तव्य पथ की ओर उन्मुख करने वाली नारी का कर्म क्षेत्र उस के दैवीय गुणो के विकास और प्रसार का उपयुक्त स्थान वस्तुत गृह ही है। नारी जीवन की चरम सार्थकता गृह लक्ष्मी और मातृत्व के गौरव पूर्ण महिमा मय पद पर आसीन होकर पतिदेव एव सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्वो का सम्यभाव से निर्वाह करने मे ही है। दया क्षमा स्नेह शील ममता मधुरिमा प्रेम सहानुभूति आत्म–त्याग आत्म बलिदान नि स्वार्थ सेवा और अगाध विश्वास की प्रतिमूर्ति नारी के उपरोक्त उदात्त गुणो का विकास पारिवारिक क्षेत्र मे ही सम्भव हे। शैशवावस्था से ही वह आत्म त्याग ओर आत्म विस्तार का पाठ सीखती है और आजन्म अपनी मूक सेवाओ द्वारा अपने समस्त परिवार को कृतकृत्य करती रहती है। अपनी स्नेहसिक्त मगल कामनाओ ओर नि स्वार्थ सेवाओ की शीतल पावन मधुर स्निग्ध पयस्विनी प्रवाहित कर वह समस्त पारिवारिक वातावरण का आप्लावित करती रहती हे। माता पत्नी भगनि पुत्री सहचरी सहगामिनी एव सह धर्मिणी आदि विभिन्न रूपो म अवतरित हो वह अपने मृदु स्निग्ध तथा प्रेममयव्यवहार द्वारा समस्त पारिवारिक अशान्ति रुक्षता उदासीनता जटिलता आपाद विपदो समस्यओ एव कष्टा का निराकरण कर उस स्वर्ग सम सुखद शान्त मधुर और सन्तोष प्रद बनाना ही उसके जीवन का प्रमुख ध्यय हे। नारी की गरिमा शाभा और महत्व ता अपन पारिवारिक हित साधन हेतु अपना जीवन तक उत्सर्ग कर दने मे ही है। अत परम पावन महिमा मय गौरवमय मातृत्व को प्राप्त कर वह अपने गार्हस्थ्य जीवन को जितना सुखमय शान्ति प्रद और सार्थक बना सकती है किसी परिषद की सचालिका और किसी क्लब की अध्यक्ष बन कर उसे उसके शताश की भी उपलब्धि नही हो सकती।

पुरुष की प्रेरक शक्ति उसके निरानन्द एकाकी अभावमय स्नेह शून्य शुष्क जीवन मे स्वर्गीय स्नेह की अमृत धारा प्रवाहित करने वाली एक मात्र अवलम्ब स्वरूप आशामयी नारी न केवल उसके भौतिक जीवन की ही सहचरी है प्रत्युत लौकिक जीवन की सीमा को पारकर महाकवि प्रसाद द्वारा रचित कामायनी की नायिका श्रद्धा सरिस उस की आध्यात्मिक उन्नति एव पारलौकिक साधना मे भी सहायक उसकी चिर सहचरी जीवन सगिनी की भी साकार प्रतिभा है। जीवन की कटुतिक्त विभीषिकाओ को अपने स्वर्गीय स्नेहसिचित व्यवहार द्वारा सरस मधुरमय कोमल सुकुमार नवविकसित पुष्पसमूह मे परिणित कर देने वाली यह अमूल्य स्वर्गीय निधि वस्तुत पुरुषजाति क हित साधन हेतु ईश्वर प्रदत्त वरदान स्वरूप ही सिद्ध होती ह।

अत सुयोग्य गृहणिया ओर स्नेहमयी वात्सल्यमयी बुद्धिमती माताए ही परिवार समाज जाति और राष्ट्र की उन्नति विकास प्रगति और अभ्युदय और सुख समृद्धि की वृद्धि मे सहायक सिद्ध हो सकती है। अतीत कालीन युग मे ऐसी ही गरिमा सम्पन्न माताओ ने महाराज युधिष्टिर और महाराज हरिश्चन्द्र सम सत्यवादी अस्त्र शस्त्र विद्या मे पारगत अर्जुन भीम तथा कर्ण तुल्य बलशाली महामना भीष्म पितामह सम और महर्षि दयानन्द सम आदित्य ब्रह्मचारी शक्तिशील और सौन्दय के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम दुष्ट भजन और साधुजनो के रक्षक भगवानराम अत्याचार ओर अन्याय के निमम विरोधी भगवदगीता सम महान ग्रन्थ के प्रणेता योगीराज श्री कष्ण सरिस लाक व्यवस्थापक निर्वाण पथ के पथिक विश्व का राग बृद्धावस्था ओर मृत्यु के भय व आतक स मुक्त करन हतु सवस्व त्यागी महात्माबुद्ध महावीर स्वामी और सत्य अहिसा प्रेम और मानवतावाद क पृष्टपोषक महात्मा गाधी सम महान व्यक्तिया के आविभाव म सहायक सिद्ध हुइ। एसी ही महामहिममयी माताओ ने सती साध्वी सीता दमयन्ती सावित्री तुल्य पतिव्रता नारियो तथा राजपूतान की वीर ललनाओ एव वीरागना महारानी लक्ष्मीबाइ वत शत्रु को लोहे के चने चबवा देन वाली वीरनारियो स्वाभिमानिनी पदिमनी के समान अपनी सतीत्व रक्षा हेतु हसते हसते प्रज्ज्वलित चिता मे कूदकर जौहर व्रत करने वाली साहसी आत्मगौरव विभूषिता पत्नियो के रूप मे अवतरित हो देश जाति तथा समाज का मुख उज्ज्लव करती रही ह। वीर प्रसु माताए ही स्वस्थ वीर निर्भय शक्तिशाली सदाचारी एव साहसी वीर रत्नो को जन्म देकर देश के भावी निर्माण तथा उज्ज्वल भविष्य स्वरूप स्वर्ण युग के अवतरण मे सहायक सिद्ध हो सकती है।

यद्यपि अतीत युगीन नारिया अपने कर्त्तव्या का यथोचित पालन करती हुइ गृहकार्यो मे ही अधिक व्यस्त तथा सलग्न रहती थी और सार्वजनिक कार्यो मे भाग नही ले सकती थी फिर भी वे पूर्ण शिक्षित होती थी। वेद वेदाग की प्रकाण्ड पण्डिता विदुषी बुद्धिमती वे नारिया जहा एक ओर गार्गी और मैत्रेयी की तरह दिग्गज निष्णात पडित वर्ग को भी अपनी विद्वत्ता द्वारा शास्त्रार्थो मे पराजित कर समस्त उपस्थित जनसमूह का आश्चर्य चकित और पराभूत कर सकती थी वहा दूसरी ओर वीर राजपूत ललनाए महारानी दुर्गावती और झासी की महारानी क समान अपनी अपूर्व वीरता ओर अदम्य साहस का प्रदर्शन कर शक्तिशाली विशाल शत्रु सैन्य से लोहा लेती हुइ उस के छक्के छुडा सकती थीं। पर उपर्युक्त महत काय सम्पन्न करने के साथ साथ वे अपने पारिवारिक कतव्यो का पालन करने से भी कभी विमुख नही हाती थी।

पर आधुनिक भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता स अतिरजित युग मे पुरुष के कन्धे से कन्धा भिडा कर सावजनिक क्षेत्रा म भाग लने वाली स्वतन्त्रता प्रिय शिक्षित सभ्यनारी अपने वास्तविक उत्तरदायित्वो को सर्वथा विस्मृत कर समानाधिकार प्राप्ति की स्पर्धा मे पागल हो उठी है। बालको का पालन पोषण पति सवा तथा घर गृहस्थी के समस्त कार्यो की देख रेख का समस्त भार वेतन भागी उत्तरदायित्व हीन अशिक्षित असुसस्कत सवका पर लाद कर वह एकदम मुक्त तटस्थ कत्तव्यहीन और स्वच्छन्द हो बेठी ह। दवी लक्ष्मी एव माता क समान पूर्ण श्रद्धा सम्पन्न महिमामय गौरवपूर्ण पद से पतित हो वह केवल सहगामिनी और रमणीमात्र ही रह गई ह। पर अपने इस दायित्वहीन आचरण और निकष्ट चुनाव द्वारा उसने खोया अधिक पर पाया कम हे। जिसके फलस्वरूप आज राष्ट्र के भावी भाग्य निर्माता और कणधार जाति और समाज क निमाण प्रगति ओर विकास के आधार स्तम्भ कुसुमवत सुकुमार कामल भाले भाले बालक माता क स्नेहमय स्वास्थ्य प्रद स्फूर्ति और प्रेरणादायक अक से वचित हो चिररुग्ण दुर्बल शक्तिहीन तेज रहित दयनीय कातर तथा परम दु खी दृष्टिगोचर हो रहे ह। आदर्शहीन चरित्रहीन अशिक्षित नाना दुर्गुणा ओर कुटेवो मे ग्रस्त सेवको के निरन्तर निकट सम्पर्क मे रहना उन (बालका) क चरित्र निमाण हेतु भी घातक विनाशकारी तथा विषाक्त सिद्ध होता है। यही नही देश समाज और जाति की यह अमूल्य निधि माता की सन्निकटता और समुचित देखभाल के अभाव मे प्राय अकाल मे ही काल कवलित हो जाती है।

गृहिणी द्वारा गृहस्थी के प्रमुख कर्त्तव्यो की अवहेलना एव सेवको द्वारा गृह सचालन होने से घरेलु शान्ति सामूहिक पारिवारिक भावना सुव्यवस्था तथा प्रसन्नता की भी इतिश्री हो जाती है। इसके अतिरिक्त दिनभर अत्यधिक परिश्रम करने के उपरान्त थके मादे पतिदेव के गृह प्रवेश के उपरान्त स्नेहमयी कर्त्तव्य परायण पत्नी की मधुर मुस्कान द्वारा स्वागत के स्थान पर वेतनभागी सवको का कत्रि आत्मीयता रहित स्नेह शून्य रूक्ष सत्कार प्राप्त कर वह ओर भी अधिक खिन्न उदासीन विक्षुब्ध तथा उत्साह हीन हा अपने जीवन का अभाव पूण एव एकाकी अनुभव करने लगते हे। पर नारी की शोभा गरिमा आर महत्व ता अपन परिवार हेतु अपना जीवन तक उत्सग कर देने मे ही है पर यदि वह अपने उपरोक्त चरमलक्ष्य एव उत्तरदायित्व का परित्याग कर सार्वजनिक क्षेत्रा सामाजिक राजनीतिक तथा अर्थोपार्जन आदि म प्रवेश करती हे तो उसका पारिवारिक जीवन सर्वथा अशान्त अव्यवस्थित विच्छखल एव नरक सम दु खद हो उठता हे क्योकि वाह्य समस्याओ को सुलझाते सुलझाते ओर कठिनाइया का सामना करते करते उस की समस्त शक्ति स्वास्थ्य आर पारिवारिक स्नेह रस शुष्क हो उस के नारी सुलभ कोमल सुकुमार ममतामय हृदय को मरूस्थलवत नीरस तथा रूक्ष बना देते है। यह सत्य ह कि सामूहिक हित साधना और सार्वजनिक सवा कार्यो म सलग्न रहने स उसकी बुद्धि योग्यता एव कार्यदक्षता अधिक विकसित आर परिपक्व हा सकती है पर उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य उपेक्षित ही रह जाता है। पर आधुनिक युगीन शिक्षिता नाना उच्च पदो को अधिकृत करने वाली नारी अपन वास्तविक कत्तव्य पथ स विमुख हा अपनी समस्त महानता समग्रगौरव और सम्पूण गरिमा को खाकर केवल उस महिमामय पद की छाया मात्र प्राणहीन पाषाण प्रतिमा क रूप म ही रह गई जिसकी समस्त कोमल वृत्तिया ममता स्नेह सेवा सहानुभूति आदि तिरोहित हा गई है। आज वह कर्त्तव्य विमुखता को जागरण पति सेवा और सन्तान क लालन पालन को दासता प्रतिव्रतधर्म पालना का थोथी रूढिवादिता अपन घरेलू जीवन को सुव्यवस्थित रूप से सचालित करते हुए सावजनिक जीवन के सम्पर्क से दूर रहने का कूप मण्डूकता समझन लगी है और उस दासता की कठोर अभग्न श्रृखलाओ को भग्न कर मुक्त एव स्वतन्त्र जीवनयापन हेतु छटपटा रही हे। नि सन्देह वह उस प्रयत्न मै बहुत कुछ सफल भी हुई है। पाश्चात्य सभ्यता और आचार विचार का अनुगमन कर वह गृहस्थी या परिवार के सकुचित सीमित वातावरण मे दम घुटने का सा अनुभव कर विस्तृत विशाल सार्वजनिक क्षेत्र मे पदार्पण कर स्वतन्त्रता पूवक खुलकर सास तो ल सकी है पर उसका पारिवारिक जीवन सर्वथा असन्तुष्ट अभावमय स्नेह शून्य और कण्टकाकीर्ण हो उठा है।

क्रमश

कैसे जाना जाता है, आचार्यों का अभिप्राय ?

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

ऋषि दयानन्द ने मानव के उत्थान एव उसको सुख समृद्ध बनाने कि लिए १८७५ म आयसमाज की स्थापना की थी और इसी का उन्होने विश्व कल्याण का दायित्व सोपा था। समाज को ही धार्मिक सामाजिक आत्मिक उन्नति क लिए आधारभूत निर्देश दिये थे जिसका आधार उन्होन वेद को बनाया। वेदानुकूल शास्त्रो की प्रामाणिकता ही उनका स्वीकार थी। उनकी सबसे बडी विशेषता रही कि अपन (वैदिक) दृष्टिकोणो और कार्यपद्धतियो का स्पष्ट निर्देश करने के लिए उन्होने तत्सम्बन्धी ग्रन्थो का निर्माण किया जिनके आधार पर ही धार्मिक कार्य सस्कार सामाजिक व्यवस्था आदि भी करने का निर्देश दिया। अपने यजुर्वेद ऋग्वेद भाष्यो मे भी उन्होने यत्र तत्र उन्हीं का निर्देश किया। इतना होने पर भी उनके पश्चात उन्ही के द्वारा स्थापित आर्यसमाज मे घास पार्टी एव मासपार्टी के नाम से दो दल बन गये। विश्व का यह एक महान आश्चर्य है कि जिस आचार्य ने स्पष्ट रूप से मास खाने का निषेध किया हो उसके द्वारा स्थापित आयसमाज मे भी मास खानेवाले और मास न खानेवाले दो दलो का निर्माण कैसे हो गया ? इसके आगे कालिज पार्टी और गुरुकुल पार्टी के रूप म भी दो दल विभक्त हो गए। प्राय कालिज पार्टी वाले मासपार्टी के भी सदस्य थ और गुरुकुल पार्टी वाले घास पार्टी के सदस्य थे। उसी प्रकार आज भी यज्ञीय एव सस्कारो के कर्मकाण्डो के विषय मे आर्य विद्वानो मे मतभेद होने के कारण विषमता की भरमार है।

हम यहा स्थालीपुलाक न्याय से कुछ सन्दर्भो की चर्चा करेगे और उनमे भी बहुकुण्डीय यज्ञ की प्रासगकिता शास्त्रीयता एव औचित्य पर प्रथम चर्चा करेगे। आर्य जगत के कुछ विद्वानो का कहना है कि बहुकुण्डीय यज्ञ अकारणीय अशास्त्रीय है। क्योकि ऋषि देव दयानन्द ने इसका कहीं पर भी उल्लेख नहीं किया है। इस आक्षेप के सम्बन्ध मे हम केवल दो स्थलो को प्रस्तुत करेगे जिससे स्पष्ट हो जाता है कि ऋषि बहुकुण्डीय यज्ञो के विरोधी नहीं थे। सस्कार विधि के गृहाश्रम (शालाप्रवेश) प्रकरण मे उन्होने पाच यज्ञवेदियो का स्पष्ट ही उल्लेख किया है। ऋषि का भाव उन्हीं के शब्दो मे –

"जब घर बन चुके तब उसकी शुद्धि अच्छी प्रकार करो। चारो दिशाओ मे बाहर के द्वारो मे चार वेदि और एक वेदि घर के मध्य बनावे"।

दूसरा स्थल उनके जीवन से सम्बन्धित है। कार्यक्रम के आयोजक ऋषि स्वय थे – "कुल दस ग्यारह ब्राह्मण थे। स्वामी जी ने स्वय वेदि की विधि बतलायी। तीन वेदि एक ओर तीन दूसरी ओर। बीच मे कुण्ड खोदा"।

महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र, लेखराम

पाठक वृन्द ध्यान दे कि यहा पाच और सात यज्ञवेदियो का उल्लेख है। पाच और सात कुण्डीय यज्ञ बहुकुण्डीय यज्ञ के अन्तर्गत आते है या नहीं ? यदि नही आते है तो बहुकुण्डीय यज्ञ विरोधियो को यज्ञ की व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए कि वे बहुकुण्डीय यज्ञ किसको मानते है ?

कई विद्वानो का यह भी आरोप रहता है कि यज्ञवेदि के चारो ओर आहुति देने वाले यजमान नहीं बैठने चाहिए। केवल पश्चिम दिशा मे पति पत्नी पूर्वाभिमुख बैठे अर्थात केवल एक ही यजमान हो। इस विषय मे भी महर्षि का जीवन वृत्त हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है। घटना भरतपुर की १ अगस्त सन १८८१ की है –

"यज्ञशाला पत्रो और पुष्पो से सजायी गयी। एक ओर तख्त बिछाकर उस पर स्वामी जी के लिए आसन सजाया गया। कुण्ड के एक ओर श्री राव साहब के लिए आसन बिछाया गया और उसके शेष तीनो ओर अन्य यज्ञोपवीत लेने वालो के लिए आसन बिछाये गये। ठीक आठ बजे स्वामी जी महाराज वेद पुस्तक लेकर आसन पर विराजमान हुए और सब यज्ञोपवीत लेने वाले अपने अपने आसन पर बैठे गए जब स्वामी जी वेद मन्त्र पढकर स्वाहा शब्द उच्चारण करते थे तब समस्त यज्ञकर्ता लोग आहुतिया देते थे। दो घण्टे तक निरन्तर वेद मन्त्रो से आहुतिया देते रहे। पश्चात यज्ञोपवीत लेने वाला को यज्ञापवीत देकर गायत्री मन्त्र का उपदश दकर एक एक के हाथ से पृथक – पृथक आहुतिया दिलायी गयी। उस दिन समस्त हवनकर्ता ४० के लगभग और यज्ञोपवीत लेने वाले ३२ थे"।

दूसरा प्रकरण – १४ अगस्त सन १८८१ –

"रविवार का दिन निश्चित होकर सबको पूर्ववत सूचना दी गयी और नियत दिवस पर प्रात काल से सामग्री इकटठी होकर ६ बजे स्वामी जी के विराजमान होने पर और यज्ञोपवीत लेने वालो को यज्ञकुण्ड के आसपास बिठाकर वेदोक्त मन्त्रो से आहुतिया दिलाकर यज्ञोपवीत धारण करा दिया और गायत्री मन्त्र का उपदेश देकर फिर एक एक से पृथक पृथक आहुतिया दिलायी गयी।

पुस्तक – वहीं पृष्ठ – ५८४ – ५८५।

इन दोनो सन्दर्भो से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि अधिक सख्या होने पर एकाधिक यजमान बन सकते हैं और सन्यासी यज्ञ करवा सकता है। अन्यथा आक्षेपकर्ता यह प्रतिपादित करे कि महर्षि दयानन्द सन्यासी नहीं थे। यदि थे तो आक्षेपकर्ता के शास्त्रानुसार स्वामी दयानन्द ने शास्त्रविरूद्ध कार्य क्यो किया ? क्या उस समय जब वे यज्ञ करा रहे थे तो ब्रह्मा के पद पर आसीन होकर नहीं करा रहे थे ? तो फिर वे किस आसान पर आसीन होकर यज्ञ करा रहे थे या इस प्रकार से यज्ञ कराने वालो को ब्रह्मा या ऋत्विक न कह करके क्या कहा जाएगा? दूसरी बात यह है कि कुछ विद्वानो को पुरोहित एव ब्रह्मा मे भेद का ही ज्ञान नहीं है। वे पुरोहित और ब्रह्मा को एकार्थक समझते हैं या जानते हुए भी छल करते हैं। अन्यथा जातकर्म सस्कार के पुरोहित के लक्षण को ब्रह्मा के साथ कैसे घटाते जोडते। वेद मे तथा ब्राह्मण ग्रन्थो मे ब्रह्मा पुरोहित नही होता। ब्रह्मा एक शास्त्रज्ञ पुरोहित से पृथक ऋत्विक और उसका आसन भी पुरोहित से पृथक है। ब्रह्मा यज्ञ कर्मकाण्ड नही कराता है या स्वय नहीं करता है। ब्रह्मा तो मौन होकर देखता है यज्ञ का निरीक्षण करता है अर्थात यज्ञ पर्यवेक्षक तथा परिद्रष्टा होता है। यज्ञ तो होता उदगाता अध्वर्यु सम्पादित करते कराते हैं। इनके अभाव मे वह स्वय यज्ञ का सचालन एव निर्देश करता है जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने किया है। अन्यथा ब्रह्मा तो बस मौन होकर यज्ञीय कर्मकाण्डो का अवलोकन करता है। यज्ञ मे किसी प्रकार की त्रुटि होने पर वह स्फाय्य खडाकर यज्ञकर्ताओ को उनकी त्रुटि का बोध मात्र कराता है –

ऋचा त्व पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्र त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्या यज्ञस्य मात्रा वि विमीत उ त्व ।।

ऋग्वेद – १०/७१/११

जब ब्रह्मा पुरोहित से पृथक हो तो जातकर्म के पुरोहित के लक्षण से उसका कोई सम्बन्ध नही रह । यदि पुरोहित का लक्षण ही घटाना है ता ऋषि दयानन्द ने जो स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश म पुरोहित का लक्षण किया है वह सवमान्य तथा निर्भ्रान्त है। वह है –

"जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।"

सस्कार विधि मे भी सामान्य प्रकरण मे पुरोहित के लक्षण मे गृहस्थ अनुबन्ध नही लगाया है। उसमे मुख्य कारण यही है कि सस्कार विशेष को छोडकर कोई भी इन लक्षणो से युक्त व्यक्ति यज्ञ का सम्पादन करा सकता है। हॉ लोकमर्यादा के अनुसार जो सस्कार गृहस्थ धर्म से साक्षात सम्बन्ध रखते हैं जैसे – पुसवन सीमन्तोन्नयन विवाह आदि सस्कार केवल गृहस्थ ऋत्विक के द्वारा ही सम्पन्न कराये जाने चाहिए। किन्तु उससे भिन्न जहा सार्वजनिक यज्ञ हो रहा हो विशेषकर समारोहो मे वहा यह गृहस्थ अनुबन्ध क्योकर उचित हो सकता है कि गृहस्थ ही ब्रह्मा बन सकता है।

एक बार मेरठ मे आर्य समाज के समारोह मे ब्रह्मा बनाने का आग्रह मेरठ के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता जो उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव मन्त्री रहे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य भी रहे प० इन्द्रराज जी ने मुझसे किया। मैने उनसे कहा कि आप किसी गृहस्थ आर्य विद्वान को इस कार्य के लिए कहे। सन्यासी को यज्ञ का ब्रह्मा नहीं बनना चाहिए। उन्होने मुझसे कहा कि कहा लिखा है कि सन्यासी को ब्रह्मा नहीं बनना चाहिए। मुझे कोई प्रमाण नहीं मिला। पुरोहित की परिभाषा जो सस्कार विधि मे सस्कार विशेष पर टिप्पणी के रूप मे दी गयी है उसे उन्होंने एकदेशी माना और सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण और स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश की ओर उन्होने सकेत किया। मेरे पास इसका कोई उत्तर न उस समय था न आज है – सन्यासी ब्रह्मा नहीं बन सकता। इसका प्रमाण अब तक नहीं प्राप्त हुआ। यह बात उन लोगा की ऐसी है जैसे पौराणिको मे यह प्रचलित मान्यता है कि सन्यासी को अग्निस्पर्श नहीं करना चाहिए। वैसे व्यक्तिगत रूप से समयाभाव के कारण मैं यज्ञो मे ब्रह्मा बनने से बचना चाहता हू किन्तु अपने आर्य लोगो के विशेष आग्रह के कारण प्रमाणाभाव से विवशतावश स्वीकार करता हू। श्री प० इन्द्रराज जी ने यह भी कहा कि पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज एव पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज ने भी यज्ञो मे ब्रह्मा बनकर अनेक यज्ञ सम्पादित कराये थे और आज भी स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी एटा वाले सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आयोजित होने वाले यज्ञो मे ब्रह्मा बनते है। मैं निरूत्तर रहा क्योकि उपरोक्त व्यक्तियो के चरित्र एव उनकी वृत्ति के विषय मे सन्देह का कोई अवकाश ही नहीं है। जो लोग ऐसे व्यक्तियो को भी पण्डा वृत्तिवाले कह सकते है उन्हे तो अतिसाहसी ही कहा जा सकता है या विशिष्ट प्रतिभा व विद्यासम्पन्न पुरुष।

अनेक विद्वानो का यह दुराग्रह रहता है कि सत्याथ प्रकाश मे पुष्प तोडने के लिए ऋषि दयानन्द ने मना किया है अथात उनका तोडना उन्होने उचित नही माना है। अत पुष्पमाला पहनना उचित नहीं है। वे इस विषय को बडे ही प्रचण्ड रूप से प्रस्तुत करते हैं तथा पुष्पमाला के प्रयोग को ऋषिमत विरुद्ध तथा अनैतिक बताते हैं। यहा यह ध्यातव्य है कि सस्कार विधि के समावर्तन सस्कार मे मनुस्मृति का प्रमाण देकर ऋषि दयानन्द ने स्वय पुष्पमाला का विधान किया है –

त प्रतीत स्वधर्मेण धर्मदायहर पितु ।
स्रग्विण तल्प आसीनमर्हयेत् प्रथम गवा।।

मनुस्मृति – ३/३

अर्थात जो विद्वान माता पिता का पुत्र शिष्य ब्रह्मचारी हो वह स्वधर्म से यथावत युक्त पितृस्थानी उस आचार्य को उत्तम आसन पर बैठा पुष्पमाला पहनाकर प्रथम गौदान देवे। यथाशक्ति वस्त्र धनादि भी देकर सत्कार करे। इसी प्रकरण मे पुन लिखते हैं –

"आचार्य को उत्तम आसन पर बैठा पूर्वोक्त प्रकार मधुपर्क कर सुन्दर पुष्पमाला वस्त्र गौदान धनादि की दक्षिणा यथाशक्ति देके सबके सामने —— "

इसके अतिरिक्त उनके जीवनवृत्त मे भी स्वय माला धारण करने कराने की चर्चा आती है। उदाहरणार्थ –

"तत्पश्चात सेठ बेचरदास ने स्वामी जी को फूलों का हार पहनाया और आठ दस साथियों और वेदपाठी ब्रह्मचारियों को दक्षिणा आदि देकर सभा विसर्जित की गई"।

(महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र लेखराम)

क्रमश

३ अप्रेल, बलिदान दिवस पर विशेष

साहस और कर्मठता के प्रतीक – स्वामी स्वतन्त्रानन्द

– आचार्य भगवान देव चैतन्य

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज अपनी अद्भुत कर्मठता और अनेक साहसिक कार्यों के लिए आर्यजगत मे सदा सर्वदा स्मरण किए जाते रहेगे। लौहपुरुष स्वामी जी का जन्म सम्वत १६३४ की (सन १८७७) पौष मास की पूर्णिमा को पजाब प्रान्त के लुधियाना नगर से कुछ मील की दूरी पर स्थित मोही नामक ग्राम के एक जाट सिक्ख परिवार मे हुआ था। इनके पिता सरदार भगवानसिह जी सेना मे अधिकारी थे तथा बाद मे बडोदा रियासत की सेना के प्रमुख बने। पिता अपने इस पुत्र केहरसिह को सेना मे ही जनरल या कर्नल बनाना चाहते थे। यह बात उन्होने उस समय प्रकट की थी जब उन्होने अपने पुत्र को नासिक मे कुछ साधुओं के साथ नगे पाव देखा था। उस समय उनके शब्द थे – मै तुझे कर्नल और जनरल बनाना चाहता था पर दु ख की बात है कि तू साधु बन गया। केहरसिह की माता का देहान्त बचपन मे ही हो गया था। उस समय उनके छोटे भाई की आयु मात्र आठ दिन की थी। अत इनका पालन पोषण इनके ननिहाल लताला मे हुआ। वहा केहरसिह जी का सम्पर्क एक उदासी पन्थ के डेरे के महन्त बिशनदास जी से हुआ जो आर्यसमाज के सम्पर्क मे आकर वैदिक विचारधारा के बन गए थे। इनका केहरसिह के जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव रहा। केहरसिह जी ने प्राथमिक शिक्षा मोही और लताला मे प्राप्त की तथा बाद मे पिता जी के साथ रहकर जालन्धर और पेशावर मे अध्ययन करते हुए उन्होने मिडल की परीक्षा पास की। उस समय के रिवाज के अनुसार इनका विवाह अल्पायु में ही कर दिया गया मगर कुछ ही काल के बाद इनकी पत्नी का देहान्त हो गया तथा ये अखण्ड ब्रह्मचारी ही बने रहे।

धीरे धीरे इनके हृदय मे वैराग्य की भावना तीव्र से तीव्रतर होती चली गई तथा मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु मे ही ये एक दिन चुपचाप घर से निकल गए। वर्षो तक मलाया और ब्रह्मा आदि देशो मे भ्रमण करते रहे और फिर भारत वापस आकर फिरोजपुर जिला के परवरनड गाव में स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती से २३ वर्ष की आयु मे सन्यास की दीक्षा लेकर प्राणपुरी बन गए। सन्यासी बनने के बाद लताला वाले महन्त जी की प्रेरणा से आपने अमृतसर के उदासी सन्त प० स्वरूपदास जी से वेद दर्शन और व्याकरण आदि का अध्ययन किया। इसके साथ साथ आयुर्वैदिक और युनानी चिकित्सा पद्धतियो का अध्ययन करके इनका असाधारण ज्ञान प्राप्त किया। अमृतसर से आप सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरूक्षेत्र आए और पूर्ण वैरागी बनकर समस्त वस्त्रो का भी त्याग करके मात्र एक कौपिन ही अपने पास रखा। अब आपका अधिकतम समय साधना मे ही व्यतीत होने लगा। आने वाले श्रद्धालुओ को गीता का उपदेश देते थे। वहा से कुछ विरक्त साधुओं के साथ आप भारत भ्रमण के लिए निकल पडे। भिक्षा के लिए आप तुम्बा के स्थान पर एक बाल्टी रखते थे इसलिए आपका नाम 'बाल्टी वाला बाबा पड गया था। आप साधुओ की टोली मे रहकर भी वैदिक धर्म के स्वतन्त्र उपदेश दिया करते थे इसलिए धीरे धीरे आपका नाम ही स्वतन्त्रानन्द पड गया। भारत भ्रमण करने के बाद आप पुन पजाब लौट आए।

लताला मे प० बिशनदास जी से पुन मुलाकात हुई तो उन्होने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के इस प्रकार के भ्रमण को निष्प्रयोजन बताया और आर्यसमाज के साथ जुडकर देश व धर्म के लिए सक्रियता के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। उनके आदेश को मानकर आपने अपने आप को पूर्णरूप से आर्यसमाज क लिए आहुत कर दिया और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थो का गहन अध्ययन किया। आपने आर्यसमाज का प्रचार सवप्रथम रामामण्डी जिला भटिण्डा से आरम्भ किया। आप जैसे त्यागी और तपस्वी सन्यासी का आर्यसमाज मे आना अपने आप मे एक ऐतिहासिक घटना थी। आपने हिसार जिले के समीपवर्ती गाव कुथरावा मे एक हिन्दी पाठशाला की स्थापना की। उसके बाद आप लुधियाना आ गए तथा वहा आकर वेद प्रचारिणी सभा तथा हिन्दी पाठशाला की स्थापना की। लुधियाना की सुप्रसिद्ध आर्यसमाज दाल बाजार की स्थापना भी पूज्य स्वामी जी के करकमलो द्वारा ही ६ सितम्बर १६२५ को हुई थी। स्वामी जी महाराज ने १६२० से १६२३ तक जावा सुमात्रा मलाया सिगापुर फिलीपिन्स ब्रम्हा मॉरीशस व अफ्रीका आदि देशो मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। वहा से लौटने पर लताला मे एक वर्ष रूक कर योग की सिद्धिया प्राप्त की तथा बाद मे पुन वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करते रहे और १६४८ मे पुन अफ्रीका और मॉरिशस मे प्रचारार्थ गए। तत्कालीन पजाब के आर्य नेता महाशय कृष्ण जी के आग्रह पर पजाब भर के प्रान्तो मे जाकर विशेष प्रचार कार्य किया। सन १६२५ द्वारा आर्यो ने मथुरा मे महर्षि दयानन्द की जन्मशताब्दी बडे ही उत्साह के साथ मनाई गई। वहा पर स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी अभूतपूर्व निष्ठा व्यक्त करते हुए आर्यो को प्रेरणा देते हुए ये सारगर्भित शब्द कहे थे – 'यदि हम पेट के बल रेग रेगकर चलें हमारा रोम रोम नोच लिया जाए तो भी हम महर्षि के ऋण से उऋण नहीं हो सकते। इसी सम्मेलन मे पजाब सभा ने लाहौर मे दयानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार किया। सभा के आग्रह पर आपने इस विद्यालय के प्राचार्य पद को दस वर्ष तक सुशोभित किया। इस विद्यालय मे स्वामी जी महाराज ने अनेक विभूतिया आर्यसमाज को दी जिनमे से स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सर्वानन्द जी आदि प्रमुख है। विद्यालय के आचार्यपद के साथ–साथ आप महाशय कृष्ण जी के आग्रह पर पजाब सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता के रूप मे भी कार्य करते रहे मगर आपने वेतन के रूप मे किसी प्रकार भी सहायता ग्रहण नहीं की।

वैदिक धर्म के विधिवत अनवरत प्रचार कार्य को दृष्टिगत रखते हुए तथा रोगग्रस्त या किसी प्रकार से असहाय सन्यासियो तथा वानप्रस्थियो आदि के आश्रय हेतु आपके मस्तिष्क मे दयानन्द मठो की स्थापना करने की योजना आई और उसे तुरन्त कार्यान्वित करते हुए पजाब मे दीनानगर और रोहतक मे दयानन्द मठो की स्थापना की। आज य दोनो ही सस्थाए आर्यसमाज का बहुत कार्य कर रही है और इसी परम्परा को आगे बढाते हुए अब जालन्धर चम्बा और घण्डरा आदि मे भी मठ स्थापित हो चुके है। सन १६३८–३६ मे आर्यसमाज ने धार्मिक एव सास्कृतिक अधिकारो की रक्षा के लिए हैदराबाद के निजाम से टक्कर लेने का निर्णय लेकर एक बहुत बडा कार्य अपने हाथ मे ले लिया और आर्यसमाज के लिए यह एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। तत्कालीन सार्वदेशिक के प्रधान नारायण स्वामी जी के नेतृत्व मे सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन मे आर्यसमाज ने अपनी पूरी शक्ति झोक दी और अपने कुशल नेतृत्व समर्पण तथा धर्म एव सस्कृति पर आहुत होने की सामर्थ्य को ससार के सामने प्रमाणित कर दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी इस आन्दोलन के फील्डमार्शल थे। अनेक आर्य महाशयो ने अपने प्राणो की आहुति दे दी और उन वीरो के उत्सर्ग के कारण आर्यसमाज की ऐतिहासिक विजय हुई। वास्तव मे यह आन्दोलन स्वतन्त्रता सग्राम का ही एक हिस्सा रहा है और इसीलिए आज उस आन्दोलन मे भाग लेने वाले समस्त आर्यो को स्वतन्त्रता सेनानी माना गया है। सरदार पटेल जी ने इस आन्दोलन के बारे मे कहा था कि – यदि आर्यसमाज सन १६३८–३६ मे निजाम हैदराबाद में सत्याग्रह न करता तो हैदराबाद स्वतन्त्र भारत का अग कदापि न बन पाता। 'सरदार पटेल जी का यह वाक्य आर्यसमाज के लिए अत्यधिक गौरव की बात है तथा इसका श्रेय फील्डमार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को भी जाता है। हैदराबाद सत्याग्रह के इतिहासकार का कथन है – 'सबसे पहला नाम इस सूची मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उस समय के उप प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का लिया जाना चाहिए जो इस मोर्चे के फील्ड मार्शल थे।

वर्तमान हरियाण' प्रदेश के जिला भिवानी मे लोहारू नाम की एक छोटी सी रियासत थी। इसका नबाब भी हैदराबाद के निजाम की तरह ही क्रूर और अत्याचारी था। उसके राज्य मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की सख्त मनाही थी तथा हिन्दुओ का धर्मान्तरण जोरो से किया जाता था मगर आर्यसमाजी बन्धुओ ने जैसे कैसे सन १६४० मे वहा आर्यसमाज की स्थापना कर दी तथा २६ ३० मार्च १६४१ को आर्यसमाज का प्रथम वार्षिक उत्सव रखा तथा भवन की आधारशिला रखने का कार्यक्रम भी बनाया। इस उत्सव मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। मार्च २६ को सायकाल शोभायात्रा एव नगरकीर्तन के अवसर पर नवाब की पुलिस और कुछ असामाजिक तत्वो ने बिल्कुल थाने के ही सामने शोभायात्रा पर पीछे से लाठियो बर्छियो और कुल्हाडियो से आक्रमण कर दिया। स्वामी जी महाराज भी विशेष रूप से उनका निशाना थे। स्वामी जी को बचाने के लिए भक्त फलसिह चौधरी नौनन्दसिह आदि सज्जन लहुलुहान होकर मूर्छित होकर नीचे गिर गए। लगभग साठ लोगो को गम्भीर चोटे आई। उन दरिन्दो ने स्वामी जी महाराज पर लाठियो कुल्हाडियो और बर्छियो से अन्धाधुन्ध चोटे की मगर वे अन्त तक भूमि पर नहीं गिरे। स्वामी जी के सिर पर तीन ईच का निशान तो अन्त समय तक रहा। स्वामी जी के शिष्य स्वामी ईशानन्द जी के बाद मे सन १६४५ मे लोहारू मे आर्यसमाज का भवन बनवाया। फरवरी १६४७ मे आर्यसमाज के उत्सव पर स्वामी जी पुन लोहारू पधारे मगर नवाब ने कर्फ्यु लगा दिया तथा उत्सव स्थगित कर देना पडा। सन १६४८ मे पुन आर्यसमाज का उत्सव रखा गया और इसमे स्वामी जी महाराज पधारे तथा २८ मार्च को लोहारू मे विशाल शोभायात्रा निकाली गई। यही नहीं २६ मार्च को नवाब ने स्वय आर्यसमाज भवन मे आकर स्वामी जी महाराज से क्षमायाचना की और आर्यसमाज के लिए कुछ धन भी दान दिया। स्वामी जी ने आर्य साहित्य नवाब को भेट किया।

– शेष भाग पृष्ठ १० पर

आर्यों का मूल निवास स्थान

– डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

ऋग्वेद के आठव मण्डल के ९१ वे सूक्त मे इन्द्र शब्द और अपाला शब्द आये है। वहा इन्द्र का अर्थ सूर्य है और अपाला का अर्थ भूमि है। यह भूमि सूर्य से उत्पन्न होन के कारण उसकी पुत्री है। इस सूक्त का प्रारम्भ कन्या शब्द से हुआ है –

कन्यावारवायती सोममपि स्रुता विदत्।

कृ० ८/९१/१

सूर्य पुत्री कन्या ने (भूमि ने) जल की इच्छा करत हुए साम के विषय मे भी जाना।

उसने सूर्य से प्रार्थना की कि मेरे इस शरीर को उपजाऊ बना दो –

असौ चया न उर्वराद् इमा तन्व मम।

यह सुनकर इन्द्र सूर्य ने अपाला पृथिवी को हरा भरा बना दिया

अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्व्यकृणो सूर्यत्वचम्।

एत० ब्रा० २४/२२ मे लिखा है –

इय वा अलोमिकेवाग्र आसीत्।

अर्थात यह पृथिवी पहले रोमरहित थी। ऋग्वेद मे वैज्ञानिक वर्णन के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि भूमि सूर्य का एक अश है। वह प्रारम्भ मे आग का एक गोला था इसके बाद हवाए चली मानसून बने वर्षा हुई पृथिवी ठण्डी हुई। इस पर सागर बने उसके बाद पर्वत उभरे उन पर लताए वनस्पतिया उगने लगी। उसके बाद प्राणियो की सृष्टि हुई। इस क्रम को तैत्तिरीय उपनिषद मे इस प्रकार व्यक्त किया गया है –

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश सम्भूत। आकाशाद्वायु। वायोरग्नि अग्नेराप। अदभ्य पृथिवी। पृथिव्या ओषधय। औषधिभ्योऽन्नम्। अन्नादेत। रेतस पुरुष।

अर्थात उस परमेश्वर और प्रकृति से जो कारण रूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उसको इकट्ठा करने से अवकाश (आकाश) उत्पन्न सा होता है। आकाश के पश्चात वायु, वायु के बाद अग्नि उसके बाद जल उसके बाद पृथिवी उसके ऊपर औषधिया अन्न आदि उसके बाद वीर्य शरीर उसके बाद उत्पन्न होते हैं।

इस सम्पूर्ण वैदिक वैज्ञानिक क्रम को दिखाने का तात्पर्य यह है कि मानवो की सृष्टि सर्वप्रथम सर्वोच्च हिमालय पर्वत पर ही हुई होगी वहा से इनका विस्तार हुआ होगा।

डार्विन का सिद्धान्त और जलीय सृष्टि

डार्विन के सिद्धान्त मे जल से अमीबा नामक कीट उत्पन्न हुआ और उससे क्रमश मछली मगरमच्छ छिपकली डायनासोर बन्दर वनमानुष और उनसे मनुष्य उत्पन्न हुआ। यह डार्विन का विकासवाद आज तक खोज का विषय बना हुआ है और अभी तक वैज्ञानिक इस कडी को जोडने मे असफल ही रहे है। जबकि सृष्टि मे एक सिद्धान्त स्पष्ट है कि प्रत्येक वनस्पति लता वृक्ष अन्न के बीज एक नही है सबक बीज पृथक पृथक है। धान के बीज से गेहू उत्पन्न नहीं होता और बबूल या पीपल के बीज से आम का वृक्ष उत्पन्न नही होता यह भारतीय दर्शन है। इसी प्रकार सृष्टि के आदि मे जब ऊचे पर्वतो पर भिन्न भिन्न लताए और वनस्पतिया भिन्न भिन्न बीजो से उत्पन्न हुई उसी प्रकार प्राणियो के शरीरो मे भी उनके बीजो की भिन्नता के कारण अर्थात कारण शरीर (सत्व रज तम) तथा सूक्ष्म शरीर एव पूर्व सृष्टि के जन्मो के कर्मो की भिन्नता के कारण पृथक पृथक शरीर के प्राणी उत्पन्न हुए। उनमे मानव सृष्टि भी उत्पन्न हुई। मानव किसी मछली के शरीर का विकास नही है। न मानव का पूर्वज बन्दर है। डार्विन का सिद्धान्त नास्तिक है यह भारतीय आस्तिक दर्शन के बिलकुल विपरीत दर्शन है।

मानवो की सृष्टि मे ही सस्कारो की भिन्नता के अनुसार आर्य और दस्यु बने।

अत आर्यो की सृष्टि सबसे पहले हिमालय पर्वत पर त्रिविष्टय तिब्बत नामक स्थान पर मानसरोवर झील के आस पास हुई। वहा से आर्य लेह और उसके आसपास वसे। वहा से उत्तर कर सिन्धु घाटी मे बसे। वहा पर आर्यों के चिन्ह मिलते हैं। इसके बाद उन्होने अपने प्रदेश का नाम आर्यावर्त रखा और उसका विस्तार प्रारम्भ हुआ। पक्ष और विपक्ष के रूप मे विचारो की भिन्नता के कारण उन्ही मे देव और असुर विचारो के ग्रुप बने जिनम सघर्ष भी हुए। देवो की (आर्यों की) विजय होती गई। उनके राज्य का विस्तार ईरान तक हुआ। अत यह मान्यता सही है कि आर्य बाहर से यहा नहीं आये अपितु यहा से बाहर गये। यहीं उनका मूल निवास स्थान है। तिब्बत भी आर्यों के अधीन था। लेह के कुछ ग्रामो मे आज भी आर्यों की मूल नस्ल विद्यमान है। काश्मीरी पडित मूल आर्यों की सन्तान हैं।

मानसरोवर लेह लद्दाख से उतर कर आर्य झेलम नदी के उद्भव स्थान वेरी नाग के आस पास बसे। कष्यप ऋषि भी आर्यों की सन्तान थे उन्होने काश्मीर बसाया। कष्यप मेर शब्द से काश्मीर बना। काश्मीर सिन्धुघाटी सरस्वती नदी के आस पास ही वैदिक साहित्य की रचना हुई। ऋषियो को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। विदेशी इतिहासकारो को अनुसार आर्य जगली थे गडरिये थे उन्हे अग्नि का ज्ञान वाद मे हुआ। पशुओ का मास खाते थे यह सब कुछ असत्य है। आर्य मनीषी प्रबुद्ध आस्तिक अहिसक और शाकाहारी थे उन्होने वैदिक ज्ञान श्रुति को पुस्तकाकार रूप दिया।

महाभारत मे प्रमाण मिलता है कि आर्यो की उत्पत्ति इन नदियो के किनारो पर या उत्पत्ति स्थानो पर हुई –

ईरावती वितस्ता च देविका, विशाल कुहू श्रयते यत्र विप्राणामुत्पत्तिर्भरतर्षभ।।

रावी झेलम व्यास या सिन्ध देविका नदी (यह जम्मू के परिमण्डल स्थान पर बहती है जो अब सूख गई है) इन निदयो से आर्यो के मूल स्थान का गहरा सम्बन्ध है।

काश्मीर कारगिल और अफगानिस्तान का इलाका आर्यो के राज्य मे था आर्य राजा अश्वपति भी इधर ही हुए है जिसके राज्य मे घर–घर मे प्रतिदिन यज्ञ होता था। वैदिक ध्वनिया गूजती थी। काश्मीर सस्कृति का जब मैने गहराई से अध्ययन किया और उनमे आने जाने का अवसर मिला तो पाया कि वे वैदिक सस्कृति से युक्त आर्यों की सन्तान है।

काश्मीरी भाषा मे वेदो के शब्द मिलते है उनकी भाषा मे पश्ता एव अरबी के शब्द मुसलमानो से आए। आज भी काश्मीरी भाषा मे अस्सी प्रतिशताब्द सस्कृत के हैं। मैंने काश्मीरी माताओ के द्वारा शादी के अवसर पर तथा मुण्डन सस्कार के अवसरो पर देवगान सुना है जो सामवेद के मगलगान से मिलता है। वेदो मे भैंस का नाम नहीं आया है गाय का नाम आता है। गाय की हत्या का वेदो मे निषेध भी है। आर्य गोपालक थे। आज भी श्रीनगर मे गाय ही पाली जा सकती है भैंस नहीं। भोज पत्र जिनपर प्राचीन पुस्तके लिखी जाती थी वह भी काश्मीर के ऊपर के इलाके मे ही होता है यहा के अवन्ती वर्मा जैसे राजा आर्य थे। कामीरियो का सबसे बडा उत्सव यज्ञोपवीत सस्कार है उसके बाद उनका वेदारम्भ सस्कार होता है। इस सस्कार को प्रत्येक काश्मीरी पण्डित करता है। इन आर्यों पर औरगजेब ने भी अत्याचार किया इनके जनेऊ उतार–उतार कर अग्नि मे जलाए गए। इन्हे बलात मुसलमान बनाया गया और आज तो उन्हे अपने पैतृक स्थान से भी भाग दिया गया यह इन आर्यों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। इन काश्मीरियो का रूप रग बनावट सस्कृति सब कुछ आर्यों की है। अत आर्य कहीं बाहर से नहीं आये इसी आर्यावर्त देश के मूल निवासी थे और है। काश्मीर के विद्वान मम्मट कैयट जैयट अभिनवगुप्त आदि आर्य विद्वान थे। श्रीनगर मे आर्य सस्कृति के अवशेष अभी तक विद्यमान हैं।

अग्रेजों की गहरी चाल

हमारे देश के इतिहास को इन विदेशियो ने इसलिए बिगाडा था कि ये भारतीय भी विदेशी सिद्ध हो जावे। और हम अग्रेज भी कह सके कि जब तुम आर्य लोग बाहर से आकर इस भू भाग पर राज्य कर सकते हो तो हम विदेशी क्यो नहीं राज्य कर सकते। यह तुम्हारी भी मूलभूमि नहीं है और हमारी भी नहीं हैं यह उन विदेशी इतिहासकारो की गहरी चाल थी। लार्ड मैकाले के समय से ही भारतीय शिक्षा पद्धति मे भारतीय इतिहास को तोड मरोड कर प्रस्तुत किया गया। आर्यों और वेदो के प्रति जनता मे घृणा उत्पन्न की गई। मैकाले भारतीयो को विदेशी सस्कृति मे रगना चाहता था जिसमे उसे सफलता मिली।

महर्षि स्वामी दयानन्द और आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद और आर्य शब्द को विशेष रूप से पकडा और नियम बनाया "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।"

महर्षि ने यह मान्यता ससार के सामने रखी कि आर्य बाहर से नही आये उनका मूल निवास स्थान यही देश है। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के ८वे समुल्लास मे लिखा है –

प्रश्न मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल मे हुई ?

उत्तर – त्रिविष्टय अर्थात जिसको तिब्बत कहते है।

प्रश्न आदि सृष्टि में एक जाति थी या अनेक ?

उत्तर – एक मनुष्य जाति थी। पश्चात विजानीत्यार्य्यन्ये च दस्यव यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठो का नाम आर्य विद्वान देव और दुष्टो के दस्यु अर्थात डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए।

महर्षि लिखते हैं – किसी सस्कृति ग्रन्थ मे नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहा से जगलियो से लडकर विजय पाके निकाल के इस देश के राजा हुए। पुन विदेशियो का लेख माननीय कैसे हो सकता है ?

महर्षि की यह मान्यता दसवीं मे पढाये जाने वाले भारतवर्ष के इतिहास मे कुछ पक्तियो मे जोडी गई हैं।

आज सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति को वैदिक आर्य भारतीय सस्कृति के अनुसार ढालना होगा और सही इतिहास और दर्शन विद्यार्थियो को पढाना होगा।

– म० न० १३२, पुराना हस्पताल जम्मू - १८०००१

रण दुन्दुभि कब बजेगी

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, वी०एस०एम०

भारत और पाकिस्तान की सशस्त्र सेनाए अब काफी समय से आमने सामने खडी हैं। यह स्थिति न युद्ध की है और न शान्ति की है। जम्मू व काश्मीर की नियन्त्रण रेखा का अतिक्रमण पाकिस्तानी भाडे के आतकवादी कर रहे हैं और भारतीय सैनिक उन्हे बडी सख्या मे मौत के घाट उतार रहे हैं। फिर भी पाकिस्तान परोक्ष युद्ध को आगे बढाने से बाज नहीं आ रहा है। वायु सेना हमारी और उनकी अपनी अपनी युद्धक्षमता का आत्म आकलन करने मे लगी है। क्या पता कब युद्ध रत हो जाए। दोनो ही नौ सेनाए अपने अपने हिस्से का अरब सागर छान रही हैं। भारतीय नौ सेना का दावा है कि पाकिस्तानी नौ सेना को जो करारी मात ४ दिसम्बर १६७१ को दी गई थी उसी की पुनरावृत्ति मे किसी को कोई सन्देह नहीं हैं।

पाकिस्तानी वायु सेना ने अपने युद्ध अभ्यास को नया आयाम उस समय दिया जब उसने राजधानी इस्लामाबाद की चौडी सडको पर युद्ध विमानो को उतरने और पुन उडान भरने का प्रशिक्षण बार बार दिया। भारतीय वायु सेना के वरिष्ठ एयर मार्शलो के अनुसार यह तो दूसरे विश्व युद्ध मे कोलकाता मे किया गया था। भारतीय [illegible] सेना को काश्मीर मे नियन्त्रण रेखा' पर पाकिस्तानी और अन्य इस्लामी आतकवादियो की घुसपैठ रोकने के लिए ऐसे उपकरण की आवश्यकता थी जो घुसपैठियो का चोरी छिपे आना दिन और रात बर्फानी अन्धड और चादनी रात मे समान रूप से जान कर जवानो को बता सके। अमरीकी वैज्ञानिकों ने ऐसा उपकरण बनाया है। नाम है सेन्सर्स। ये सशक्त सेन्सर्स सेना की उपरोक्त आवश्यकताओ को तो पूरा करते ही हैं और साथ मे एक और भी विशेष गुण रखते है। सेन्सर्स यह भी बता सकते हैं कि सीमा-अतिक्रमण कर रहा जीव मनुष्य है या पशु। यह मार्के की बात है। यदि पशु दल आ रहा है तो उसे मार गिराने के लिए अपना गोला बारुद क्यों नष्ट किया जाए। यदि प्रतिद्वन्दी मनुष्य दल है तो उससे सेन्सर्स की चेतावनी के अनुसार भलीभाति निपटा जा सकता है।

मनुष्य और पशु के बीच का अन्तर सेन्सर्स को मुख्यत इसलिए पता चल जाता है क्योंकि मनुष्य की सास मे 'एमोनिया है और उसकी स्पष्ट मात्रा मशीन मे प्रतिबिम्बित हो जाती है। पशु की सास मे एमोनिया नहीं है। काली से काली भयानक रात क्यो न हो सास रहस्य खोल देती है।

भारतीय थल सेना के अधिकारी और जवान जब नियन्त्रण रेखा और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी घुसपैठियो के आने की पूर्व सूचना पाकर उन पर घात लगा कर निरन्तर निरन्तर आक्रमण करके उन्हें परलोक पहुचाते रहेगे तो क्या पाकिस्तान परोक्ष रूप से लड रहे छद्म युद्ध को तिलाजलि देकर प्रत्यक्ष और घोषित युद्ध करेगा। इसकी चर्चा इसी लेख मे अन्यत्र करेगे कि प्रत्यक्ष युद्ध निकट भविष्य मे होगा या नहीं। फिर भी यह मानकर चलिए कि निकट भविष्य मे पाकिस्तान स्वय घोषणा करके युद्ध नहीं करेगा। इतिहास साक्षी है कि १६४७-४८ का काश्मीर आक्रमण १६६५ में कच्छ एव काश्मीर १६७१ का भारत पाक युद्ध की – यह सभी पाकिस्तान की पहल पर शुरू हुए और सभी अघोषित थे। यह एक सामान्य सी बात है कि जब चोर किसी साहु के घर मे सेंध लगाता है तो दुन्दुभि बजा कर श्रीगणेश नहीं करता है। इस भौगोलिक व्यावहारिक नियम का क्या पाकिस्तान अपवाद है ? कदापि नहीं।

सम्भावित युद्ध को ध्यान मे रखते हुए भारतीय नौ सेना ने इतिहास और अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध परम्परा के अनुसार अपनी कमर कस ली है। किसी भी नौ सेना को अपने समुद्र सतह पर तैर रहे युद्ध पोतो की रक्षा शत्रु की पनडुब्बियो से करनी होती है। युद्ध योजना मे इस सक्रिया को महत्व एव प्राथमिकता दी जाती है। १६७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध मे यद्यपि हमारी नौ सेना ने कराची बन्दरगाह जैसी सुरक्षित जगह मे पाकिस्तानी पोतो को रसातल पहुचाया था फिर भी एक अन्य समुद्री भिडन्त मे शत्रु की पनडुब्बी ने हमारे भारतीय नौसेना पोत खुखरी को समुद्र समाधि दे दी थी। अनेक नौसैनिक कैप्टन आनन्द नारायण मुल्ला महावीर चक्र विजेता सहित वीर गति को प्राप्त हुए थे। कौन सी पनडुब्बी समुद्र सतह के नीचे कहा छिपी है इसका पता लगाने के लिए समुद्र सतह पर तैर रहे युद्ध पोत आगे बढन से पहले डेप्थ चार्ज डालते हैं। यह विस्फोटक लहरो तले दूर जा कर धमाका करता है और अपनी परिधि के अन्दर जड चेतन को समान रूप से नष्ट कर नेस्तनाबूद कर देता है। १६७१ के युद्ध मे विमान वाहक पोत विक्रान्त जब विशाखापटनम बन्दरगाह से बाहर आने लगा तो 'डेप्थ चार्ज फेका। पाकिस्तानी पनडुब्बी 'गाजी जो लुक छिप कर वहा पहुच चुकी थी और 'विक्रान्त को टारपीडो द्वारा डुबाना चाहती थी स्वय शिकार हो गयी और चिर निद्रा मे समुद्री सेज पर सो गई। आने वाले कल मे इतिहास अपने को फिर न दोहराए अत उभय पक्ष तत्परता से तैयारी कर रहे हैं।

फरवरी २००२ मे चेन्नई मे हुई भारत अमेरीका कार्यकारी सचालक समूह (इक्जीक्युटिव स्टीयरिग ग्रुप) मे वरिष्ठ नौसैनिक अधिकारियो ने सक्रिय भूमिका निभाई। भारतीय नौसेना के वाइस एडमिरल गोपालाचारी और अमरीका के प्रशान्त महासागर स्थित सातवे बेडे के सर सेनापति बाइस एडमिरल जनरल ने आतकवाद के विरुद्ध सयुक्त सैन्य अभियान चलाने का सकल्प लिया। अमेरिका ऐसे नये सैन्य साजो सामान भारत को देगा जो सुरक्षात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं किन्तु मुहिम पर उनका आक्रामक उपयोग नही हो सकेगा। उदाहरण के लिए अमरीका ने लम्बी परिधि प्रभावी सर्वेक्षण विमान पी ३ सी ओरियौन' भारत के हाथ बेचने की पहल की है। आपसी सैन्य सहयोग मे यह एक महत्वपूर्ण कदम है। यह विमान बिना दुबारा ईंधन भरे १४ घण्टो की लगातार उडान भर सकता है और पाकिस्तान ने अभी तक इसका मुह नहीं देखा है। भारतीय नौ सेना के पास पी३ सी ओरियॉन विमान आ जाने से दक्षिण एशिया के सैन्य समीकरण में परिवर्तन अवश्य आएगा।

नौ सेना के पनडुब्बी स्कन्ध में स्वेच्छा से जाने वाले सैनिको की सख्या बढाने के लिए उन्हे दुर्घटना के दौरान जीवन रक्षा के बारे मे आश्वस्त करना होगा। अब भारतीय नौ सेना की पनडुब्बियो द्वारा विषम परिस्थितियो मे जल समाधि लेने पर भी नाविको की जीवन रक्षा सम्भव होगी। पनडुब्बी के ऊपरी कोने मे एक छोटी नौका मे नाविक एक ट्रिगर दबाते ही लघु मोहरबन्द नौका पनडुब्बी के ऊपरी छोर को चीरती हुई समुद्र सतह पर पहुच कर लहरो पर हिलोरे लेती रहेगी और बचाव दल का ध्यान आकर्षित करेगी। इस प्रकार पनडुब्बी के डूबने पर भी नाविक दल सुरक्षित रहेगा।

११ सितम्बर २००१ को न्युयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र पर इस्लामी आतकादियो के आक्रमण से बदलते दृश्य मे भारतीय वायु सेना को भी नये विमान और विमान के इजन मिलेगे। अमरीकी सी १३० विमान अभी भी श्रेष्ठ यात्री व सैन्य वाहक विमान है जिसमे आधुनिक यत्र रडार एव उपकरण के साथ–साथ शत्रु द्वारा दागी गई मिसाइल या प्रक्षेपास्त्र को नकार देने और उससे बचाव करने की क्षमता है। इसीलिए ब्रिटिश प्रधानमन्त्री टोनी ब्लेयर भारत से पाकिस्तान और फिर अफगानिस्तान जाते समय सी–१३० विमान मे बैठकर गए थे। पूर्व आपत्तियो के बावजूद अब अमरीका यह विमान भारत को देगा। साथ ही साथ भारतीय हल्के युद्धक विमानो के लिए अब अमरीकी कम्पनी जनरल इलेक्ट्रिक द्वारा निर्मित गुणवत्ता वाले इजन भी उपलब्ध होगे।

प्रश्न उठता है कि प्रथम श्रेणी के और प्रथम पक्ति के युद्धक विमानो से क्या भारतीय वायु सेना सतुष्ट है। उत्तर है सन्तुष्ट ही नहीं अपितु प्रसन्न है। गणतन्त्र दिवस परेड २००२ मे सलामी उडान भरते हुए सुखोय – एस०यु० ३० – विमानो ने सभी दर्शको का मन मोह लिया था। ये आधुनिकतम युद्धक विमान हैं और प्रहार क्षमता विलक्षण है। रूस द्वारा निर्मित सुखोय अब अमरीकी युद्धक विमान श्रृखला के नवीनतम विमान से लोहा लेने की क्षमता रखते हैं। फाइटर श्रृखला रूस आधारित है और अचानक परिवर्तन हितकर न होगा। पाकिस्तान के पास चीन निर्मित युद्धक विमान है – उनका मूल रूसी है और आधुनीकरण चीनी है। पाकिस्तानी एफ श्रृखला के विमान भारतीय युद्धक विमानो से टक्कर नहीं ले सकते। सबसे बडी बात यह है कि भारतीय फाइटर पायलटस का प्रशिक्षण मनोबल और युद्ध क्षमता शत्रुओ की अपेक्षा कहीं अधिक ऊची है। १६७१ का युद्ध इतिहास साक्षी है। फिर हाथ कगन को आरसी क्या ? सम्भावित युद्ध में परख हो जाएगी।

चलिए चलें कारगिल । समय मई से जुलाई १६६६ पाकिस्तानी थल सेना के घुसपैठिये भारतीय पहाडो पर तोप रायफलो सहित जमे हुए हैं। भारतीय सेना के जवानो मे अदम्य उत्साह है किन्तु शत्रु की आग उगलती तोपो का फौरन पता लगाने वाला सयत्र वेपन लोकेटिग रडार (डब्लू०एल०आर०) उनके पास नहीं है। मन मलिन हो जाता है। बलिदान देते हैं जवान और दिखाते हैं जौहर। शौर्य गाथा अगणित है। विजयश्री भारत को मिलती है। किन्तु नहीं मिला शत्रु की तोपो का पता लगाने वाला सयत्र। अब वह मनोकामना पूरी हो रही है। भारतीय सेना का मनोबल और ऊचा होगा।

भारत की तीनो सशस्त्र सेनाओ के शस्त्रो और उपकरणो मे आधुनिकता अब सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। पाकिस्तान भी इसी पथ का पथिक है। अनुगामी न होते हुए भी पीछे पीछे चलने का प्रयास कर रहा है। ऐसा न हो पीछे से आकर पीठ मे छुरा घोप दे। यो उसकी आदत तो ऐसी ही है किन्तु इस समय वह अमरीका से अपनी दोस्ती के बावजूद आतकवाद के पाप का फल पा रहा है और राजनयिक जगत मे पिट रहा है। यहा तक कि सउदी अरब और ईरान जैसे कटटर इस्लामी देश पाकिस्तान को नि शुल्क तेल देने को तैयार नही हो रहे है। इन परिस्थितियो मे क्या सीमा पर भारत पाकिस्तान युद्ध छिड सकता हैं ? दिन व दिन सम्भावनाए कम होती जा रही हैं। जनवरी २००२ मे भारतीय रक्षा मन्त्री जॉर्ज फर्नान्डिज की अमरीका यात्रा के दौरान अन्य बातो के अतिरिक्त जीसोमिया (जनरल सेक्योरिटी ऑफ मिलिट्री इनफ्रॉरमेशन एग्रीमेन्ट) पर हस्ताक्षर हुए। सैन्य सूचना का आदान प्रदान होगा भारत और अमरीका के बीच। ऐसी आसूचना (इन्टेलिजेन्स) होते हुए भारत की पीठ मे पाकिस्तान छुरा नहीं भोक सकता।

पाकिस्तान के कई मुख्य हवाई अडडो पर अमरीकी वायुसेना और मेरीन्स है। क्या उनके वहा रहते हुए पाकिस्तान युद्ध छेडने का दुसाहस कर सकता है ? हा मिया मुशर्रफ पुराना कश्मीरी राग पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर जाकर अलापते रहेगे। वे वहा सैन्य सक्रिया भी अवश्य करेगे। किन्तु कश्मीरी कहवा भी उनके नसीब मे नहीं है तो कश्मीर घाटी की कौन कहे ?

भारत और पाकिस्तान की सेनाए सीमा पर आमने सामने खडी है कहीं ऐसा न हो कि बिना रण दुन्दुभि बजाए ही वे दो दो हाथ कर ले। छोटे स्तर पर ऐसा सम्भव है किन्तु बिना केन्द्र सरकार के आदेश के बडे पैमाने पर युद्ध नहीं हो सकता। दोनो ही देशो ने अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को आश्वासन दिया है कि वे युद्ध के लिए पहल नहीं करेगे। ऐसी स्थिति मे क्या सीमा पर दोनो तरफ की सैनाए वहीं बनी रहेगी ? जवानो का मनोबल बहुत समय तक 'न युद्ध न शन्ति' की स्थिति मे ऊचा नहीं रह सकता। या तो युद्ध हो या फिर सैनिको को वापस छावनियों मे भेज दिया जाए। ऐसी स्थिति मे आर्थिक रूप से परेशान पाकिस्तान को चाहिए कि भारत द्वारा वापस मागे गए २० आतकवादियो को धीरे धीरे भारत को वापस कर दे। पाकिस्तान लडाई का आर्थिक बोझ नहीं उठा सकेगा। अन्त मे पाकिस्तान के लिए जो युद्ध के कगार पर पहुच चुका है भारत की शर्तों को मानने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। अमरीका के दबाव मे और भारतीय सेना की तैयारी को देखते हुए पाकिस्तान को युद्ध से मुह मोडना ही पडेगा।

– 'उपवन', ६०६, सैक्टर २६
नोएडा

वेदों में वेदाध्ययन का फल

– स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती

वेद किसी व्यक्ति-विशेष की सम्पत्ति नही वेद तो सार्वभौम और मानवमात्र के लिए हैं। प्रभु उपदेश देते हैं कि इस वेदरूपी कोश को सकुचित मत करो अपितु जैसे मै मनुष्य मात्र के लिए इसका उपदेश देता हू इसी प्रकार तुम भी मनुष्य मात्र के लिए इसका उपदेश करो। ब्राह्मण और क्षत्रिय वैश्य और शूद्र मित्र और शत्रु अपना और पराया, कोई भी वेद-ज्ञान से वचित नहीं रहे। जो मनुष्य वेद का प्रचार करते हैं वे विद्वानो के प्रिय है दानशील मनुष्यो के प्रिय है और उनकी सभी कामनाए पूर्ण होती है। वेद की शिक्षाए अत्यन्त गहन गम्भीर और उदात्त हैं। वेदाध्ययन करने वाले का जीवन वेद के अनुकूल हो। कैसा हो वह जीवन ? १ वेदाध्ययन करने वाले किसी की हिसा नहीं करते। मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना नहीं रखते। २ वैदिकधर्मी फूट नहीं डालते और न ही किसी व्यक्ति को मोहित कर प्रलोभनो मे फसाते हैं। ३ वेदभक्त मन्त्रो के अनुसार वैदिक शिक्षाओ के अनुसार अपना जीवन बनाते हैं। वेद की विधि और निषेधो का पालन करते है। ४ वेदभक्त सहायको के साथ भी प्रेम और समता का व्यवहार करते हैं। ५ वैदिकधर्मी आलसी नहीं होता, अपितु वह सदा उद्योग करता है। वेद का आदेश है हमारे पुत्र वेद सुने –

उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृळीका भवन्तु न.।।

(यजु० ३३ / ७७)

अर्थ – (ये) जो (न) हमारे (सूनव) पुत्र हैं वे (अमृतस्य) अमर, अखण्ड अविनाशी प्रभु की (गिर) वेदवाणिया (श्रृण्वन्तु) सुने और उन्हे सुनकर (न) हमारे लिए (सुमृळीका) उत्तम सुखकारी (भवन्तु) हो।

शिक्षा यह है कि प्रत्येक घर मे प्रतिदिन वेद-पाठ हो। जब हमारे घरो मे यज्ञ और हवन होगे, स्वाहा और स्वधाकार की ध्वनि उठेगी, वेदो का उद्घोष होगा तभी हमारे पुत्र वेद-ज्ञान को सुनेगे। वेद सभी ज्ञान और विज्ञान का मूल है और अखिल शिक्षाओ का भण्डार है। जब हमारे पुत्र वेद के इस प्रकार के मन्त्रो सुनेगे –

अनुव्रतः पितु. पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।

(अथर्व० ३ / ३० / २)

'पुत्र पिता के अनुकूल चले और माता के साथ समान मनवाला हो। तो यह शिक्षा उनके जीवन मे आएगी। इन वैदिक शिक्षाओ पर आचरण करते हुए वे अपने माता-पिता के लिए परिवार समाज और राष्ट्र के लिए सुख, शान्ति मगल और कल्याण दे सकेगे।

वेदाध्ययन का फल –

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।।

(ऋग्वेद ९ / ६७ / ३२)

अर्थ : – (य) जो व्यक्ति, उपासक (ऋषिभि) ऋषियो द्वारा (सम्, भृतम्) धारण की गई (पावमानी) अन्त करण को पवित्र करने वाली (रसम) वेद की ज्ञानमयी ऋचाए (अध्येति) अध्ययन करता है (सरस्वती) वेदवाणी (तस्मै) उस मनुष्य के लिए (क्षीरम्) दूध (सर्पि) घी (मधु उदकम्) मधुर जल आदि (दुहे) देती है।

वेदाध्ययन का फल – मन्त्र मे वेदाध्ययन से मिलने वाले फलो का वर्णन है। वेद का अध्ययन और उसके अनुकूल आचरण करने से मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए सभी उपयोगी वस्तुए मिलती है। जो व्यक्ति वेद का स्वाध्याय करते हैं उन्हे दूध और घी आदि शरीर के पोषक तत्वो की कमी नहीं रहती। वैदिक विद्वान् जहा जाते है वही घी, दुग्ध और शर्बत आदि से उनका स्वागत और सत्कार होता है। जीवन की आवश्यकताओ के लिए प्रत्येक व्यक्ति वेद का अध्ययन करे –

वेद-मन्त्रो पर आचरण करे –

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः। गाय गायत्रमुक्थ्यम्।।

(ऋग्वेद १ / ३८ / १४)

अर्थ – हे विद्वन ! तू (श्लोकम्) वेदवाणी (आस्ये) अपने मुख मे (मिमीहि) भर ले फिर वह वेदवाणी (पर्जन्य इव ततन) मेघ=बादल के समान गर्जता हुआ दूर-दूर तक विस्तीर्ण कर उसका सर्वत्र उपदेश कर। (गायत्रम्) प्राणो की रक्षा करने वाले (उक्थ्यम्) वेद-मन्त्र (गाय) स्वय गाओ स्वय पढो और दूसरो को पढाओ।

प्रस्तुत मन्त्र मे मनुष्यमात्र के लिए अनेक सुन्दर शिक्षाए हैं। १ प्रत्येक मनुष्य वेद-मन्त्रो से अपना जीवन सुधारे। मन्त्रो को पढ-पढकर उन्हे कण्ठस्थ करे। २ वेद पढकर जो ज्ञानामृत मिले उसे अपने तक ही सीमित न रखे। अपितु जैसे बादल समुद्र से जल लेकर उसे गम्भीर गर्जन के साथ सर्वत्र बरसता है उसी प्रकार मनुष्य भी वेदरूपी समुद्र के रत्नो और मोतियो का लेखन और वाणी से प्रचार करे। ३ वेद मे आयुवृद्धि, स्वास्थ्यरक्षा और प्राणशक्ति बनाने के सहस्रो मन्त्र हैं, शरीर-रक्षा के ऐसे मन्त्र स्वय पढे और दूसरो को पढाए।

महर्षि दयानन्द ने इसी मन्त्र के आधार पर आर्यसमाज के तृतीय नियम की प्रस्तुति इस प्रकार की है – **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"**

– आर्य गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द (हरियाणा)

हरिद्वार में पहुंचो सब नर-नारी

– पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक

वैदिक धर्म निभाओ मित्रो ! सुन लो विनय हमारी।
सज-धज कर के हरिद्वार में, पहुंचो सब नर-नारी।।
स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल है कागडी प्यारा।
पावन तीर्थ मानता है इस गुरुकुल को जग सारा।।
विद्या का है केन्द्र निराला करता ज्ञान उजाला।
जिसमे पढने वाला बनता है विद्वान निराला।।

देव धाम के गुण गाते है, दुनिया के तपधारी।
सज-धज कर के हरिद्वार में, पहुंचो सब नर नारी।।
अब तक इस गुरुकुल ने लाखो जन विद्वान बनाए।
ईश्वर भक्त महानतपस्वी काम जगत के आए।।
चरित्रवान ईमानदार जो कभी नही दहलाए।
धर्मपाल अरूबुद्ध देव ने ढोगी सभी हराए।।
जिनके आगे टिक ना पाए, जालिम अत्याचारी।
सज धज कर के हरिद्वार में, पहुचो सब नर-नारी।।
सौ वर्षों के बाद वहा, होगा शताब्दी सम्मेलन।
देश-विदेश से लाखो, पहुचेगे जिसमे आर्यजन।।
साधु सन्तो, विद्वानो के होगे वहा पर प्रवचन।
जो जाएँगे वे पाएँगे, वेद ज्ञान रूपी धन।।
स्वामी दीक्षानन्द, यज्ञ करवाएँगे न्यायकारी।
सज-धज कर के हरिद्वार में, पहुंचो सब नर-नारी।।
स्वाध्याय, सत्सग जगत मे, जो नर-नारी करते।
ईश्वर भक्त महान कभी वे, दुष्टो से ना डरते।।
बडे भाग्यशाली है वे, जन-जन की पीडा हरते।
हो जाते है अमर आर्यजन, कभी नही वे मरते।।
करती है यशगान रात दिन, उनका दुनिया सारी।
सज-धज कर के हरिद्वार में, पहुंचो सब नर-नारी।।
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द का, मित्रो ! कर्ज चुकाओ।
स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा, करके काम दिखाओ।।
धन दौलत अरु कोठी-बगले, साथ नही जाएगे।
नदलाल 'निर्भय केवल, शुभ कर्म काम आऐगे।।
पं० लेखराम जी जैसे, बनो वेद प्रचारी।
सज-धज कर के हरिद्वार में, पहुंचो सब नर-नारी।।

– ग्राम पत्रालय - बहीन, जनपद - फरीदाबाद (हरियाणा) - १२११०५

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें

स्वास्थ्य चर्चा

वृद्धावस्था और श्वांस रोग

– डॉ० ए० के० सिह

वृद्धावस्था जीवन की एक वास्तविकता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे यह अवस्था आती है। वृद्धावस्था के कारणो के विषय मे बहुत सी भ्रान्तिया प्रचलित है। पुराणो मे इसके अनेक कारण बताए गए हैं परन्तु विज्ञान के अनुसार कोशिकाओ की आयु इसका मुख्य कारण है। जेसे जैसे समय व्यतीत होता है कोशिकाओ के कार्य करने एव विभाजन होने की क्षमता कम होती जाती है। मानव शरीर मे कोशिका ही विभिन्न अगो की इकाई है। कोशिका के वृद्ध होने से शरीर के अगो की क्षमता भी कम होती रहती है जो वृद्धावस्था की शुरुआत है। कोशिका एव शरीर के यह परिवर्तन विभिन्न कारणो पर निर्भर करते है जैसे कि सम्बन्धित वातावरण खान पान व्यक्तिगत आदते एव अनुवाशिकता। वृद्धावस्था मे सामान्य रूप से शरीर मे होने वाले परिवर्तन निम्न प्रकार से है जैसे कि पानी की कमी वसा की वृद्धि ब्लडप्रैशर का बढना गुर्दा फेफडा हृदय मस्तिष्क की कार्यक्षमता मे कमी निद्रा एव याददाश्त मे कमी होती है।

इसी तरह से श्वसन तन्त्र की कार्यक्षमता भी धीरे धीरे कम होती रहती है क्योकि समय के साथ फेफडे की सकुचन शक्ति तथा प्रतिरक्षा कम होने लगती है जिसके कारण अनेक बार सक्रमण तथा विभिन्न श्वास रोग होते हैं।

वृद्धावस्था के श्वास रोग

क्रोनिक ब्रोंकाइटिस – इस बीमारी का कारण श्वास नली मे सूजन तथा म्यूकस ग्लैण्ड की अधिकता है। श्वास नली मे सूजन का मुख्य कारण धूम्रपान धूल धुआ एव नाक और गले मे इन्फेक्शन का होना है। अपने देश मे गाव मे खाना सामान्यतया लकडी एव कण्डे से चूल्हें पर बनाया जाता है। जिससे निकलने वाला धुआ महिलाओ मे क्रोनिक ब्रोकाइटिस का मुख्य कारण होता है। क्रोनिक ब्रोकाइटिस के मुख्य लक्षण हैं – बार बार खासी आना तथा बलगम आना चलने पर श्वास फूलना कभी कभी तो खासी मे खून भी आने लगता है। अगर सही समय पर उपचार नहीं किया गया तो बाद मे मरीज मे हार्टफेलीयर हो जाता है। यह सभी लक्षण वैसे तो कभी भी हो सकते हैं लेकिन आमतौर पर मौसम परिवर्तन के समय होते हैं। यदि बीमारी का इलाज सही समय पर किया जाए तथा होने वाले कारणो से बचा जाए तो फेफडो मे होने वाले स्थानीय नुकसान को बचाया जा सकता है।

सीनाइल एमफायसीमा – उम्र बढने के साथ–साथ फेफडे की सकुचन एव कार्य करने की शक्ति धीरे–धीरे क्षीण होने लगती है। इसी तरह का परिवर्तन सभी मनुष्या मे होता है। लेकिन जो लोग धूम्रपान करते है या धूम्रपान करने वालो के साथ ही रहते है या जहा पर धूल एव धुआ से वातावरण प्रदूषित होता है उसमे यह परिवर्तन कम उम्र मे ही आने लगते है। जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य मे कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है तथा चलने पर या सीढिया चढने पर सास फूलने लगती है। इस समस्या से बचने का एक ही तरीका है धूम्रपान न करे पैसिव स्मोकिंग एव वायु प्रदूषण से बचे।

फेफडे का कैंसर – वैसे तो सभी कैसर वृद्धावस्था मे अधिक होते है। फेफडे का कैंसर मुख्यतया ४० ५० वर्ष की आयु के बाद ही पाया जाता है। लेकिन कभी कभी इससे कम उम्र मे भी हो सकता है। ६० प्रतिशत मरीजो मे फेफडे के कैसर का मुख्य कारण धूम्रपान ही होता है। धूम्रपान की अवधि एव सख्या का सीधा सम्बन्ध कैंसर से होता है। ज्यादा समय तक अधिक धूम्रपान करने वालो मे कैंसर का खतरा निरन्तर बढता रहता है। फेफडे के कैसर के मुख्य लक्षण हैं खासी बलगम मे खून आना भूख कम लगना वजन कम होना छाती मे दर्द आवाज मे परिवर्तन गला तथा चेहरे मे सूजन आना चलने पर श्वास फूलना आदि। कभी कभी इनमे से कोई लक्षण नहीं होता है लेकिन एक्सरे में कैंसर की गाठ हो सकती है। क्योकि हमारे देश मे टी०बी० की बीमारी अधिकता मे पाई जाती है और कैंसर के लक्षण भी टी०बी० के जैसे ही होते है यही कारण है कि फेफडे का कैसर अन्तिम अवस्था मे ही पता चल पाता है।

वृद्धावस्था मे दमा वृद्धावस्था मे सास फूलने के बहुत से कारण होते है। इसका एक कारण दमा भी है। सामान्यतया दमा जीवन के शुरूआत मे ही हो जाता है लेकिन कभी–कभी वृद्धावस्था मे प्रारम्भ होता है। दमे की बीमारी मे श्वास नली सिकुड जाती है तथा अन्दर सूजन भी हो जाती है। जिसके कारण मरीज को सास लेने मे कठिनाई होती है। दमे का मुख्य कारण भोजन धूल धुआ सक्रमण पराग कण से सम्बन्धित एलर्जी होती है। वृद्धावस्था मे दमे के उपचार मे कुछ कठिनाइया आती हैं क्योकि साथ मे और बहुत सी बीमारिया भी होती हैं जैसे हृदय रोग मोटापा स्लीपएपनिया मधुमेह हाइपरटेन्शन पारकिनसन एलाजइमर्ज आदि। इनहेलर्स के आने से काफी हद तक इस समस्या का समाधान हो गया है।

वृद्धावस्था मे टी०बी० – टी०बी० की बीमारी माइकोबैक्टीरिया नामक जीवाणु से होती है। हमारे देश मे लगभग सभी लोग इस जीवाणु के सम्पर्क मे जीवन मे कभी न कभी आते हैं लेकिन टी०बी० की बीमारी १०–१२ प्रतिशत लोगो मे ही होती है। बाकी लोगो मे शारीरिक प्रतिरक्षा के कारण बीमारी नही होती है। वृद्धावस्था मे शारीरिक प्रतिरक्षा कम होने के कारण बीमारी होने की सम्भावना अधिक होती है। यदि साथ मे अन्य रोग जैसे मधुमेह मोटापा धूम्रपान कैसर है तो रोग होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। वृद्धावस्था मे फेफडे की टी०बी० के साथ साथ अन्य अगो मे इन्फेक्शन की सम्भावना अधिक होती है। जैसे – मस्तिष्क आतो की टी०वी० हड्डी एव गुर्दे की टी०बी०। सामान्यत टी०बी० के मुख्य लक्षण होते है – बुखार आना भूख कम लगना वजन मे कमी खासी बलगम खासी मे खून आना लेकिन हमेशा यह सभी लक्षण मौजूद नही होते है। ऐसे मे टी०बी० का पता लगना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। मुख्यतया जब साथ मे अन्य रोग भी होते है।

– **श्वास रोग विशेषज्ञ रीजेन्सी अस्पताल कानपुर (उ०प्र०)**

शताब्दी महासम्मेलन मनाएं

– **स्वामी स्वरुपानन्द सरस्वती**

गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे श्रद्धानन्द नगरी बसाए।
गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मनाए।।

अति पुनीत धरती भारत की गगाजी के तट पर आए।
पूर्ण हुए शत वर्ष चलो हरिद्वार शताब्दी पर्व मनाए।।

पातक कष्ट विनष्ट करे वसुधा पर सुख शान्ति लाए।
यत्र तत्र सर्वत्र सनातन वैदिक धर्म ध्वजा फैराए।।

तन मन धन से सभी भाति महासम्मेलन सफल बनाए।
ज्ञान की ज्योति जलाए वेदामृत पीए पिलाए।।

हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो दिग दिगन्त सन्देश सुनाए।
पुन स्वरूपानन्द ऋषि की आकर जै जै कार गुजाए।।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

साहस और कर्मठता के प्रतीक – स्वामी स्वतन्त्रानन्द

लोहपुरुष स्वामी जी महाराज ने अपने जीवन मे अन्य अनेक साहसिक कार्य किए। मलरकोटला के नवाब के साथ सघर्ष करके उन्हेने अपने सनातन धर्मी भाईयो के लिए मन्दिर का ताला खुलवाया। लाहौर पठानकोट और सम्भालका के तीन बूचडखाने आन्दोलन करके बन्द करवाए। स्वतन्त्रता सग्राम मे भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आप पर पजाब के गर्वनर की हत्या करने का षडयन्त्र रचाने का आरोप लगाया गया और इसके लिए आपको लाहौर मे बन्दी बना लिया गया। आपकी कलाई इतनी मोटी थी कि सिपाहियो को कोतवाली ले जाने के लिए आपको दो हथकडिया लगानी पडी। स्वामी जी महाराज के शरीर का भार तीन मन से भी अधिक था तथा लम्बाई छ फुट एक इच थी। पाव के लिए जूते का नाप एक फुट का था। सन १९३० मे महात्मा गाधी जी ने डाण्डी यात्रा के रूप मे एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का शुभारम्भ किया। इस आन्दोलन मे काग्रेस के समस्त बडे–बडे नेता सरकार द्वारा पकड लिए गए तो आन्दोलन का पूरा नेतृत्व स्वामी जी महाराज जी ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया। जेलो मे जब सत्याग्रहियो पर अत्याचार किए जाने लगे तो जनता मे अपार असन्तोष फैला तथा लाहौर मे गोल बाग मोरी द्वार के बाहर एक विशाल सभा की गई जिसकी अध्यक्षता स्वामी जी महाराज ने की थी। स्वामी जी ने अपने भाषण मे सरकार को साफ शब्दो मे कहा था – हम विदेशी सरकार से ये अत्याचार बन्द करने की माग करते है। हमारे सत्याग्रहियो के साथ वही व्यवहार किया जाए जो अन्तर्राष्ट्रीय नियमो के अनुसार एक सरकार को दूसरी सरकार के बन्दी बनाए गए सैनिको से करना चाहिए। ये सत्याग्रही जनता की सरकार के सैनिक है अत इनके साथ इनकी प्रतिष्ठा के अनुसार ही व्यवहार होना चाहिए। स्वामी जी के इस भाषण के बाद अगले ही रविवार को आर्यसमाज से आती बार उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ समय के बाद आपको रिहा कर दिया गया मगर भारत छोडो आन्दोलन मे आप पर सेना मे विद्रोह फैलाने का झूठा आरोप लगाकर १९४२ मे पुन गिरफ्तार कर लिया। लाहौर के किले मे स्वामी जी को खूखार डाकुओ की कोठरी मे रखा गया। जनवरी ६ १९४४ मे उन्हे रिहा तो किया गया मगर दीनानगर मठ मे नजरबन्द कर दिया।

सन १९५३ मे हैदराबाद मे आठवा आर्य महासम्मेलन' का आयोजन किया गया ओर इस अवसर पर आर्य जनता ने विदशी ईसाई मशनरियो की गतिविधियो पर रोक लगाने तथा शुद्धि आन्दोलन और गोहत्या बन्द कराने के लिए कोई ठोस कदम उठाने का निर्णय लिया। स्वामी जी महाराज की आयु अब ७६ वर्ष की हो गई थी मगर आर्य जनता को उनकी कार्यकुशलता पर ही भरोसा था इसलिए इसका नेतृत्व भी स्वामी जी महाराज को ही सौंपा गया। स्वामी जी महाराज भी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य क्षेत्र मे उतर गए। इस कार्य के लिए उन्हे अत्यधिक परिश्रम करना पडा। अत्यधिक पत्र व्यवहार आदि के अतिरिक्त जन जागरण के लिए बहुत लम्बी लम्बी यात्राए करनी पडी। इस दौरान उन्हे भूखे–प्यासे ही नही रहना पडा बल्कि अन्य भी अनेक कष्ट सहने पडे। इसका कुप्रभाव स्वास्थ्य पर पडना स्वाभाविक ही था। आप पेट के असाध्य रोग जिगर कैंसर से पीडित हो गए। बहुत समय तक डाक्टर पीलिया ही समझते रहे। बाद मे रोग का असली पता चलने पर स्वामी जी महाराज का बहुत उपचार कराया गया। आप्रेशन भी किया गया मगर स्वास्थ्य मे सुधार नहीं हो सका। आर्यजनता अपने इस लौहपुरुष को किसी भी कीमत पर ठीक करना चाहती थी मगर हजारो रुपये पानी की तरह बहाने के बावजूद भी इस युग पुरुष को रोग मुक्त नहीं किया जा सका। अन्तत लगभग अठहत्तर वर्ष की आयु मे ३ अप्रैल १९५५ को स्वामी जी महाराज परलोक सिधार गए।

स्वामी जी महाराज एक कुशल वक्ता योग्य प्रशासक साहस की प्रतिमूर्ति सहनशील क्रान्तिकारी निर्भीक नेता वेद निष्ठ अदभुत ब्रह्मचारी महान तपस्वी वीतराग सन्यासी होने के साथ साथ अच्छे लेखक भी थे। उन्होने धनको सारगर्भित लेख लिखे और पुस्तक रूप मे कुछ साहित्य आर्यजगत के लिए दे गए है। महर्षि के ऋण से उऋण होने की प्रेरणा देते हुए उन्होने अपने एक लेख मे लिखा था – 'इस समय ससार सम्प्रदायो से डूब रहा है। वह धर्म का इच्छुक है। विज्ञान के सम्मुख और पन्थो का ठहरना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है। केवल वैदिक धर्म ही है जो विज्ञान से टक्कर लेकर उसे पराजित कर सकता है अत आर्यसमाजों प्रतिनिधि सभाओ का कर्त्तव्य है कि वह देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रबन्ध करें। यदि ऐसा न करेगे तो हम ऋषि ऋण से उऋण न होगें। आज हमें उन्हे स्मरण करते हुए आत्मावलोकन करना चाहिए ओर तन मन धन स वैदिक धर्म के प्रति सत्यनिष्ठा के साथ आहुत होने का व्रत लेना चाहिए। एसी दिव्य विभूतियो का स्मरण करने का इससे अच्छा और कोई अन्य ढग नहीं हो सकता है।

– ८१/एस४, सुन्दरनगर - १७४४०२ (हि०प्र०)

दारेसलाम, पूर्वी अफ्रीका में ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव

आर्यसमाज के भव्य सत्सग गृह मे रविवार १० मार्च २००२ को प्रात ऋषि जन्म एव बोधोत्सव सम्पन्न हुआ। स्थानीय विभिन्न सस्थाओ के पदाधिकारी गण तथा नगर के गण मान्य लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

टकारा उपदेशक विद्यालय के यशस्वी स्नातक प० श्री रमेश चन्द्र मेहता के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद के चुने हुए मन्त्रो से यज्ञ किया गया। मुख्य यजमान थे टॉझानिया मे भारतीय उच्चायुक्त कार्यालय मे प्रथम सचिव श्री देवेन्द्र कुमार जी जो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक स्वर्गीय महामन्त्री जी के परिवार से सम्बन्ध रखते है।

यज्ञ क पश्चात ऋषि गुण गाथा से सम्बन्धित भजनो का गान हुआ। तदनन्तर विशेष प्रवचन मे प० श्री रमेश चन्द्र मेहता ने कहा कि किसी भी महापुरुष को बोध हाने के पश्चात उनके द्वारा समाज क लिए किए गए कार्य कलापो से ही उनका मूल्याकन हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी के कार्यो की विशिष्टता यह है कि उन्होने जन्म एव गुण कम स्वभाव से ब्राह्मण होते हुए भी समाज मे फैले धार्मिक पाखण्डों के विरुद्ध सिंह गर्जना की तो उसमें क्षत्रियोचित वीरता के दर्शन भी होते है।

श्री देवेन्द्र कुमार जी ने आर्यसमाज को सदस्यो को प्रमाद का त्याग कर ऋषि के स्वप्नो के अनुरूप आर्यसमाज को गति देने का आह्वान किया।

आज के इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण था स्थानी हिन्दू मण्डल द्वारा आयोजित वाग्वर्धिनी कार्यक्रम मे भाग लेने वाली दो कन्याओ का बहुमान करना। दोनो कन्याओ ने आर्यसमाज के वेदोपदेशक प० श्री रमेश चन्द्र मेहता के मार्ग दर्शन मे वेद शाश्वत सत्य विषय पर अपना वक्तव्य दिया था। दोनो कन्याओ को अभिनन्दन पत्र एव पुरस्कार दिए गए।

ऋषि बोधोत्सव के दिवस साय वेला मे आर्य बहन कुमारी प्रतिभा के निवास स्थान पर प० श्री रमेश चन्द्र जी के पौरोहित्य मे विशेष यज्ञ का आयाजन किया गया जिसम अनेक बहनो ने भाग लिया।

– काकू भाई सवजाणी
ट्रस्टी आर्य प्रतिनिधि सभा
टाझानिया

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1 2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मत्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभा उप प्रधान

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002
दूरभाष (011) 3274771 3260985 E-mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com
हरिद्वार कार्यालय महासम्मेलन सयोजक, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तराचल)
दूरभाष (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 31 3 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 28/29-3 2002

आर्यसमाजों की गतिविधियां

दिल्ली यजुर्वेदीय यज्ञ

आर्यसमाज अशोक विहार फेस–१ दिल्ली मे दिनाक ५ अप्रैल से ७ अप्रैल तक ग्रीष्मकालीन वेद प्रचार कार्यक्रम तथा यजुर्वेदीय यज्ञ का त्रिदिवसीय आयोजन किया जा रहा है। स्वामी जीवनानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न होगा। समारोह मे श्रीमती उज्ज्वला वर्मा श्रीमती आशा भटनागर एव पार्टी श्री सत्यप्रकाश जी मित्तल सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे है। कार्यक्रम को तन–मन–धन से सफल बनाने की कृपा करे।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली – ५३ का २०वा वार्षिकोत्सव तथा सामवेद पारायण यज्ञ १ अप्रैल से ७ अप्रैल तक सम्पन्न होने जा रहा है। सामवेद पारायण यज्ञ की ब्रह्मा आर्य विदुषी बहन सविता आर्या होगी। इस अवसर पर युवा सम्मेलन तथा आर्यवीर दल द्वारा व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम भी होगा। ७ अप्रैल को मुख्य समारोह मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती डॉ० महेश विद्यालकार आचार्या सविता सहित अनेकों विद्वान तथा गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

भजन सन्ध्या तथा ध्यान योग शिविर

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे ४६वे वार्षिकोत्सव एव ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे भजन सन्ध्या ध्यान योग शिविर ऋग्वेदीय यज्ञ तथा वेद प्रवचन का आयोजन २३ मार्च से ३१ मार्च तक किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ५ ३० से ६ ३० तक प्रभात फेरी निकाली जाएगी समारोह मे श्री विजय आनन्द श्री नरेन्द्र आर्य श्री राजू वैज्ञानिक प० सत्यपाल पथिक डॉ० महेश विद्यालकार सहित अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। कार्यक्रम की सफलता आपकी उपस्थित पर निर्भर है।

आर्यसमाज मयूर विहार दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज मयूर विहार–१ का वार्षिक निर्वाचन २४–२–२००२ को सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से हुए इस चुनाव मे श्री महेन्द्र कुमार चाठली प्रधान श्री अमीर चन्द रखेजा मन्त्री श्री कृष्णलाल बुद्धिराजा कोषाध्यक्ष चुने गए।

राजस्थान ऋग्वेद पारायण यज्ञ एव आर्य सम्मेलन

ग्राम चापानेरी तहसील भिनाय जिला अजमेर मे ५ अप्रैल से १२ अप्रैल २००२ तक विश्व शान्ति विश्व कल्याणार्थ और पर्यावरण प्रदूषण निवारणार्थ ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा सुप्रसिद्ध विद्वान भरतलाल जी शास्त्री (हासी) होगे। इस अवसर पर आर्यजगत के मूर्धन्य सन्यासी विद्वान भजनोपदेशक एव नेतागण पधार रहे हैं। श्री रासासिह जी सासद के ओजस्वी भाषण व विचार सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारे। दिनाक ५ अप्रैल २००२ को प्रात ८ से १२ बजे तक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया है।

बिहार आर्यसमाज छपरा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज छपरा के ११७वे एव महिला आर्यसमाज छपरा के ४४वे एव गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्यानगर मेहिया के ५७वे सम्मिलित वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित बृहद यज्ञ नगर कीर्तन धर्मोपदेशादि विभिन्न कार्यक्रमो मे आप सपरिवार बन्धु बान्धवो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर देवयज्ञ भजन प्रवचन महिला सम्मेलन आस्तिक सम्मेलन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मानव धर्म शिक्षा सम्मेलन सहित अनेको अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होगे। समारोह मे स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती प० भानुप्रकाश आर्य प० सियाराम निर्भय श्रीमती प्रभा आर्या तथा स्वामी इन्द्र जी सहित अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का बदला हुआ दूरभाष

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी का दूरभाष नम्बर बदल गया है। कृपया सम्पर्क के लिए – २३७१६९१५ का प्रयोग करे।

निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली जिला सीकर (राज०) मे भारत सरकार द्वारा सचालित राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान जयपुर के सौजन्य से दिनाक २ फरवरी २००२ को नि शुल्क आयुर्वेद जाच एव चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान के सुयोग्य वैद्यो द्वारा ५७२ रोगियो की जाच व चिकित्सा की गई। सस्थान की ओर से लगभग एक लाख रुपये की औषधिया नि शुल्क वितरित की गई। रोगियो की जाच व चिकित्सा करने के लिए सस्थान क सुप्रसिद्ध वैद्य डॉ सहदेव आर्य एम डी वैद्य डा० प्रदीप कुमार प्रजापति वैद्य डा० कमलेश कुमार शर्मा तथा उनके साथ अन्य सहयोगियो का दल पहुचा। शिविर की स्थानीय व्यवस्था एव प्रबन्ध वैदिक आश्रम की ओर से किया गया।

– ब्र० हरिबन्धु आर्य कार्यालय सचिव

उत्तरांचल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का वार्षिक महोत्सव १३ से १४ अप्रैल २००२ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद राष्ट्ररक्षा शिक्षा एव कवि सम्मेलनो का आयोजन किया जा रहा है। इन सम्मेलनो मे अनेक मूर्धन्य विद्वानो मनीषियो राजनीतिज्ञो एव आर्यसन्यासियो के भाग लेने की आशा है। ब्रह्मचारी छात्रो द्वारा प्रस्तुत आकर्षक व्यायाम एव भाषण आदि के कार्यक्रम भी यहा आपको देखने को मिलेगे। इस अवसर पर बृहद यज्ञ का भी आयोजन किया जा रहा है। हम आपसे अपेक्षा करते है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएगे।

हरियाणा लाला रत्न प्रकाश आर्य का निधन

श्री रत्नप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज महम का निधन दिनाक २४–१–२००२ को उनके निवास स्थान पर हो गया है। वे ७२ वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार ग्यारह वैदिक विद्वानो द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उन्होंने सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा मे लगाया। शान्ति यज्ञ एव शोक सभा ३–२–२००२ को उनके निवास आर्यभवन महम मे आयोजित की गयी। जिसमें अनेक विद्वानों एव स्थानीय सज्जनों ने स्व० श्री रत्नप्रकाश जी आर्य के जीवन मे प्रकाश डालते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की तथा विभिन्न सस्थाओ के शोक समाचार भेजे। जिन्हे पढकर सुनाया गया।

– रामसुफल शास्त्री, हासी

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'हिन्दी' की महान् सेवा की

– डॉ० वेद प्रताप वैदिक

महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण भारत को हिन्दी के माध्यम से एकता के सूत्र मे बाधना चाहते थे। उनके कार्यकाल मे लगभग २०० हिन्दी पत्र निकलते थे हिन्दी पत्रकारिता महर्षि दयानन्द की देन है – ये विचार डॉ० वेदप्रताप वैदिक ने हिन्दी अकादमी एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में 'स्वामी दयानन्द जयन्ती' पर आयोजित सगोष्ठी में राजेन्द्र भवन नई दिल्ली की एक सभा मे व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा डॉ० शशि प्रभा कुमार डॉ० कृष्ण लाल स्वामी सत्यपति डॉ० परमानन्द पाचाल सुरेन्द्र कुमार रैली ने भी हिन्दी अकादमी व आर्य केन्द्रीय सभा की गोष्ठी मे भाग लिया।

महिला आर्यसमाज का गठन

आर्यसमाज रजौली नवादा के वार्षिकोत्सव में महिला सम्मेलन के उपलक्ष्य मे आर्यजगत की परम विदुषी डॉ० निष्ठा विद्यालकार के निर्देशन मे महिला आर्यसमाज का गठन किया गया। उन्होने कहा कि महिलाओ को बडे उत्साह के साथ आर्यसमाज की गतिविधियो में भाग लेना चाहिए। इस अवसर पर होने वाले यजुर्वेद पारायण यज्ञ का ब्रह्मत्व डॉ० निष्ठा विद्यालकार ने किया। समारोह मे श्री सियाराम जी निर्भय आचार्य जयराम शास्त्री तथा दयानन्द सत्यार्थी ने भी अपने विचारो से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

वधु चाहिए

एक सुन्दर सुशील सात्विक कुलीन आर्य युवक (जाट) आयु ३५ वर्ष कद ५ ६" शिक्षा एम०ए० (सस्कृत अर्थशास्त्र) एल०एल०बी० पत्रकारिता (स्नातकोत्तर उपाधि) आयुर्वेदरत्न सम्पादक एव मालिक एक स्थानीय दैनिक एव एक कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेन्टर के स्वामी गाव मे दो एकड भूमि एव भव्य मकान भी है के लिए एक कुलीन आर्य परिवार की सुशील कन्या की आवश्यकता है जो गुरुकुल की स्नातिका स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त हो। आयुवर्ग २२ से २६ वर्ष एव कद ५ २" से कम न हो। व्याकरणाचार्या एव आयुर्वेद की स्नातिका को वरीयता। जातिबन्धन नहीं।

सम्पर्क का पता -
डॉ० दिवाकर आचार्य
प्रबन्ध सम्पादक 'बेचैन भारत दैनिक' गन्ना मार्किट – तिबडारोड मोदीनगर २०१२०४ (उ०प्र०) फोन न० ०१२३२-४५६५६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ५० ७ अप्रैल से १३ अप्रैल २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०२ सम्वत २०५८ चै० कृ० १०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में ही देश का भविष्य निहित है – कैप्टन देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने समूची आर्य जनता को अधिक से अधिक सख्या म गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए २५ से २८ अप्रैल को हरिद्वार चलने का मार्मिक आह्वान करत हुए कहा है कि जिस प्रकार विगत १०० वर्षो मे महर्षि दयानन्द एव स्वामी श्रद्धानन्द के अनुयायियो ने लगभग २०० से अधिक गुरुकुलो की देश के विभिन्न भागो मे स्थापना की है उससे गुरुकुल शिक्षा पद्धति आर्यसमाज का पर्याय बनकर प्रदर्शित हुई है। इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति रूपी सिद्धान्त को अब आने वाले समय मे और अधिक तेजी से प्रचारित प्रसारित एव स्थापित करने के लिए आर्यजनो का नए सकल्प लेने होगे।

कैप्टन आर्य ने कहा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष १९०२ मे बेशक एक सस्था के रूप मे ही मानी गई हो परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग तपस्या कर्मठता और उनकी दार्शनिकता ने इसे एक सस्था के बजाय एक सिद्धान्त के रूप मे स्थापित किया। आज इसी सिद्धान्त को प्रभावशाली ढग से अधिकाधिक गति के साथ समाज मे लागू करने की आवश्यकता है।

सभा प्रधान ने कहा कि अब तक स्थापित सभी गुरुकुलो को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त श्रेणी मे लाकर अधिक से अधिक सुविधाए दिलाने का भी प्रयास किया जाएगा। साथ ही साथ पाठयक्रम की एकरूपता भी सम्भव हो सकेगी। उन्होने विभिन्न गुरुकुलो के आचार्य और पूर्व स्नातको को आह्वान किया है कि अधिक से अधिक सख्या मे इस महासम्मेलन मे पहुचे और गुरुकुलो की विशेष सगोष्ठी म भाग लेकर मार्गदर्शन दे तथा ले। उन्होने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे ही देश का भविष्य निहित है और इसीके द्वारा सबसे अधिक राष्ट्र सेवा सुनिश्चित की जा सकती है।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा है कि इस महासम्मेलन क अन्तर्गत २७ अप्रैल को विभिन्न गुरुकुलो के आचार्यो एव पूर्व स्नातको की एक विशष सगाष्ठी भी आयोजित की गई है जिसमे एकीकरण ओर एकरूपता तथा गुरुकुलो के माध्यम स वैदिक धर्म प्रचार प्रसार की काफी योजनाओ का क्रियान्वयन करने पर विचार किया जाएगा।

श्री विमल वधावन ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य एव विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश इस सम्बन्ध मे शिक्षाविदो से विचार विमर्श कर रहे है।

उन्होने बताया कि इस महासम्मेलन मे यह प्रस्ताव पारित किए जाएगे कि देश के विभिन्न प्रान्तो मे अधिकाधिक गुरुकुलो की स्थापना योजनाबद्ध तरीके से की जाए।

गत वर्ष केन्द्रीय मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने ससद मे शिक्षा बजट पर चर्चा के दौरान फरीदाबाद के सासद श्री रामचन्द्र बैदा के एक प्रश्न के उत्तर मे स्वीकार किया था कि आज तक सरकार ने सारे देश मे किसी गुरुकुल पर एक रुपया भी खर्च नही किया परन्तु साथ ही उन्होने यह भी माना कि इस प्रकार की योजना बननी चाहिए।

महासम्मेलन मे एक लाख से भी अधिक आर्यजनो के सम्मिलित होने की सम्भावना है देश विदेश से पधारन वाले आर्य समाज के पदाधिकारियो को इस बात के लिए प्रेरित किया जाएगा कि वे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त गुरुकुलो को स्थापित करन क प्रयास शुरू करे जिससे राष्ट्रसेवा के इस महान काय म सरकारी सहयोग भी प्राप्त किया जा सके।

श्री वधावन के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के ही नही अपितु आधुनिक युग म गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जनक थ जिन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश म दिए गए निर्देशा के अनुसार प्रथम गुरुकुल आज स १० वर्ष पूव कागडी ग्राम हरिद्वार म स्थापित किया था जिसकी नींव केवल गुरु शिष्य परम्परा पर ही नहीं अपितु पिता पुत्र तुल्य सम्बन्ध के आधार पर रखी गइ थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी के अपन दोना पुत्र इन्द्र एव हरिश्चन्द्र भी स्थापना काल से ही ब्रह्मचारी (शिक्षार्थी) रूप मे शामिल थ।

विगत १०० वर्षो म गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने अनेकानक वैदिक विद्वान शिक्षाविद उच्च राजनीतिज्ञ दार्शनिक भाषा विद वैज्ञानिक अर्थशास्त्री चिकित्सक अधिवक्ता तथा उच्चकोटि क व्यापारी देश को अर्पित किए हे। जब तक गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देश का भविष्य नही समझा जाएगा तब तक उच्च चरित्र ईमानदारी देशभक्ति और राष्टसवा के सिद्धान्त लडखडाते रहगे।

महासम्मेलन मे पधारने की पूर्व सूचना अवश्य दे

गुरुकुल शताब्दी अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओ को सार्वजनिक रूप स आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन म बहुत भारी सख्या मे आयजनो के पहुचने का अनुमान हे। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटान के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आगन्तुको की पूर्व सूचना सभा कार्यालय म दर्ज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप म ५०/ रु० प्रति व्यक्ति भजकर अपना अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय म अप्रैल तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण ही होगा उन्ह यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी है।

गुरुकुल कागडी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए

रेल किराए में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र क फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र क्रमाक TCII/2066/98/6 दिनाक २५–३–२००२ के द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है की २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियों मे द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर क किराये मे ५० प्रतिशत छूट के अधिकारी होगे। यह छूट केवल ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ किन्हीं ३० दिनो म उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२५ स २८ अपैल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०६८५) सार्वदेशिक प्रेस (फोन न० ३२७०५०७ ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६० ७२१४०६० मो० ६८११२२१०८३ ४०५६५७०)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित करे कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है।। यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर उसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे।

विमल वधावन महासम्मेलन सयोजक

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

वेदों को प्रासंगिक बनाने से वेद प्रचार असम्भव

स्वामी अग्निवेश के मन्तव्य वैदिक सिद्धान्तों से विपरीत

– डॉ० सु०ब०काळे

लातूर मे सम्पन्न वदिक सम्मेलन मे स्वामी अग्निवेश न वदो को प्रासगिक बनाने और आयसमाज का प्रचार प्रसार जनशक्ति आधार (मास बेस) पर करने पर बल दिया।

ये दोना बात पत्यक्ष मे परमात्मा की व्यवस्था एव उद्देश्या के विरुद्ध है। वेद का ज्ञान यह हर हालत म मानव मात्र के कल्याण हतु ह उसम त्रिकालाबाधित शाश्वत जीवन–मूल्य एव शाश्वत तत्वज्ञान ह आर वह भी कल्याण के लिए हे। आज मानव मात्र इनसे भटक गया हे। इसलिए वह दुखी है। दुखी तो है पर दुख का रास्ता वह छोडना नही चाहता ह। अब ईमानदारी की बात यह है कि आज भी वह यदि वेद के मार्ग पर चले तो सुख शाति एव आनन्द प्राप्त कर सकता है परन्तु स्वामी अग्निवेश लोगो का यह सही रास्ता न बताते हुए वेद को ही प्रासगिक बनाना चाहते है। वेद के शाश्वत तत्वो को छोडकर इन गलती करन वालो को भी वैदिक कहोगे ता कल्याण होगा ही नही इसके विपरीत वेद का ज्ञान भी दूषित होगा। एकाएक सर्वसाधारण लोगो को स्वामीजी की यह बात बहुत अच्छी लगती है किन्तु ऐसे प्रयोग पौराणिक लोगो ने भी किए और कर रहे है। यज्ञ कर्मकाण्ड इश्वर भक्ति सभी को गलत ढग से करते हुए तथा वेद को ही प्रासगिक बनाते बनाते आज वे जड पूजा जातिवाद मे फसे हैं। दुनिया मे वे धर्म के नाम पर कुकर्म कर रहे है तथा वेदमन्त्रो का उच्चारण करके स्वय को वैदिक बताते है तो क्या इससे कल्याण हुआ है ? कभी नहीं।

सावधान ! यदि ऋषि दयानन्द के अनुयायी भी वैसा ही करना चाहेगे तो निश्चित विनाश होगा। दयानन्द अकेले थे परन्तु ईश्वर की व्यवस्था के विपरीत उन्होने कुछ भी नही कहा और किया। ईश्वर के उद्देश्यो के साथ उनकी यह प्रामाणिकता थी।

आर्यसमाज को जनशक्ति के आधार पर आन्दोलन करना चाहिए ऐसा सुनते सुनाते ही हम बूढे हो गए। ये भी विचार मानव जीवन के कल्याण के उद्देश्यो से प्रामाणिक नही है। ये तो वोट की नीति से सभी से प्रशसा कर लेना है। सवाल है सत्यज्ञान और कल्याण का। जब तक सत्य को इन्सान जानेगा नहीं स्वीकारेगा नही तथा आचरण मे उतारेगा नही तब तक कल्याण होगा ही नही। यह है परमात्मा की व्यवस्था और फिर इसमे भी आत्मा की स्वतन्त्रता है। मनुष्य की प्रवृत्तियो मे सुधार जादू की काण्डी के समान सम्भव नही। प्रवृत्ति के सुधार के लिए तो अनेको जन्मो तक तप एव साधना करनी पडती है। जन्म जन्मान्तार की प्रवृत्तिया साथ रहती है। कर्मफल सिद्धान्त भी सुख–दुखो के कारण है। घोडे को पानी तक ले जा सकते हैं किन्तु पानी पीने के लिए उसे मजबूर तो नही कर सकते। वैसे ही मनुष्य सत्य ग्रहण करेगा या न करेगा इसमे उसकी स्वतन्त्रता है।

अब आर्यसमाज के द्वार सबके लिए खुले रखो ऐसा कहना व सुनना बहुत अच्छा लगता है पर द्वार बद कब थे ? सत्य को स्वीकारने की तैयारी ही नहीं और द्वार बन्द है ऐसा कहना बहुत ही गलत है। मुसलमान क्रिश्चयन पारसी जैन बौद्ध पौराणिक लोगों के विचार आचार वैसे के वैसे रखकर यदि उन्हे आर्यसमाज मे प्रवेश देकर अग्निवेशजी

दिया। इन सब का पालन ईमानदारी से करे अन्यथा क्षमा नहीं होगी।

दलितो के मन्दिर प्रवेश के बारे मे स्वामी अग्निवेश ने नेतृत्व किया। क्या यह वेद का प्रासगिकरण था ? जातीयवादी लोगो को खुश करने के लिए मनु का विरोध किया क्या ये प्रासगिकरण था ? यदि दलितो को उस समय सही ईश्वर कहा है यह बताते और उस परमात्मा के मिलने के लिए यह शरीर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर मिला है इसी माध्यम से भगवान के दर्शन करे आपको रोकने की किसी की ताकत नहीं होती यह सत्य बताते तो पौराणिको की पोल खुलती और दलितो की भी पोल खुलती तथा सभी को सही का पता चलता और वेद एव आर्यसमाज ही सही मर्ग है इसका ज्ञान होता। किन्तु मतलब रख के काम करना विद्वान तपस्वी लाग अकेले चलते है और अकेले चलकर ही योग्य व श्रेष्ठ बनकर सभी समाज मे वास्तव्य करेगे तब समाज का भला होगा। इसलिए महर्षि दयानन्द ने 'ससार का उपकार करना इतना बडा उद्देश्य तो रखा पर शुरूआत शारीरिक और आत्मिक उन्नति से की। व्यक्ति के बनने से ही समाज बनेगा। व्यक्ति को बनाए बिना कुछ बनेगा नही। गदगी करने वालो से गदगी साफ करने वाला ठीक तो होता है। पर गदगी ही न करने वाला इन दोनो से श्रेष्ठ ह यह बताने की आज आवश्यकता है। स्वामीजी ! आप जीवन भर इस प्रकार लोगो को कब तक भटकाते रहोगे ? वाणी अच्छी तभी होती है जब यह सत्य बोलेगी तथा कल्याण का बोलेगी। वक्तृत्व वही अच्छा है जिससे सत्य और कल्याण का रास्ता बताया जाए।

उनका और आर्यसमाज का हित करना चाहते हो ना ये कोई सत्य चिन्तन नहीं है। रोगी को रोगी रखोगे और केवन जगह या नाम बदलोगे तो वह स्वस्थ कभी हागा नहीं। स्वस्थ होना ही हा तो रोगो के कारणो का निवारण चाहिए। रोग का मूल कारण है अज्ञान और उसका उपाय ह सत्यज्ञान एव विवेक। यह सब ज्ञान महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर बता दिया और आपको आगे भी यही करने का आदेश आर्यसमाज इस सस्था के माध्यम से चूकि दलित भी सत्य को नहीं मानेगे फिर नेतृत्व कैसे होगा ? यह सोच के ऐसा करना ये पाप है तथा दुनिया को भटकाना है। स्वामी जी केवल सभी सत्य ही बतावे ! सत्याचरण ही करने हेतु कहे उसी मे कल्याण है। पहले से अच्छे लोग कभी भी जनशक्ति एव सख्यात्मक आधार पर अधिक नही होते। सूरज अकला है प्रकाश सबको देता हे। दयानन्द अकेला हुआ था जिसने सत्य का जानकर कल्याण का रास्ता बताया। वेद स्वय कहते है कि आर्यो ! चिन्तन करो। थोडा करो पर ठीक करो। थोडा बोलो ! पर ठीक बोलो ! समय एव समाज के विद्वान तथा जिज्ञासु लोग तथा आपका मूल्यमापन क्या करेगे यह देखो ! ईश्वर की व्यवस्था मे आत्मा का कल्याण सर्वोपरि है उसमे शरीर मन बुद्धि सभी का कल्याण है पर आज विश्व मे इसके विपरीत प्रयास चल रहे हैं वे यह है कि लोग आत्मा का छोडकर केवल शरीर एव बुद्धि का कल्याण करना चाहते है। व्यक्ति का कल्याण करना छोडकर समाज एव विश्व का कल्याण चाहते है। इसके पीछे ज्यादा लोग दौड रहे हैं। पर जो कल्याण होगा वह नहीं होगा। वेद कहता है 'नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय'। वेदो को कल्याण मार्ग मे ही रखो प्रासगिक मत बनावो कर्मफल देने वाला ईश्वर है। असत्य यह असत्य ही होगा। बहुमत से असत्य को सत्य कल्याणकारी बनाया नही जा सकता। ईश्वर की व्यवस्था का विस्मरण न करे।

– मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली के अतिरिक्त गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, अमरोहा आदि क्षेत्रों में महासम्मेलन तथा हरिद्वार यात्राओं की विशेष तैयारियां

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्म स्थली तलवन मे एक विशाल आय यात्रा अम्बाला और सहारनपुर होती हुई हरिद्वार पहुचेगी। सहारनपुर के आर्यजनो ने सर्वश्री राजाराम शास्त्री विद्यासागर बी०डी० गौतम राकेश शर्मा सारस्वत विनोद गुप्ता तथा कई अन्य महानुभावो की स्वागत समिति बनाई है जो इस यात्रा का सहारनपुर पहुचने पर स्वागत करेगी।

दूसरी यात्रा बरेली से प्रारम्भ होगी जहा महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन पहली बार स्वामी श्रद्धानन्द जी को हुए थे। यह यात्रा उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण के नेतृत्व मे प्रारम्भ होगी। इस यात्रा के सयोजक डॉ० अशोक आर्य है।

यह यात्रा बरेली से हरिद्वार पेसेन्जर रेल द्वारा होगी जिसमे हजारो आर्य नर नारी अपने अपने स्टेशनो से शामिल होगे और आर्यसमाज का उल्लेखनीय प्रचार होगा।

तीसरी यात्रा दिल्ली स्थित बलिदान भवन से प्रारम्भ होगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस यात्रा का सयोजक श्री सोमदत्त महाजन को बनाया है जिनके साथ श्री पुरुषोत्तम गुप्ता जगदीश आर्य गोपाल आर्य राजीव भाटिया पतराम त्यागी विनय आर्य दयानन्द मदान बलदेव राज आदि को सहसयोजक बनाया गया है। इस यात्रा का मार्ग मे गाजियाबाद मुरादनगर मोदीनगर मेरठ तथा मुजफ्फरनगर आदि क्षेत्रो मे पहुचने पर भव्य स्वागत होगा।

यह यात्रा बहुत सारी बसो मे २४ अप्रैल २००२ को प्रात काल दिल्ली से रवाना होगी और सारा दिन प्रचार करते करते रात्रि मे हरिद्वार पहुचेगी।

गाजियाबाद क्षेत्र मे सर्वश्री श्रद्धानन्द शर्मा हरप्रसाद पथिक जयपाल सिह आर्य सुभाष चन्द्र सिघल सुरेश चन्द्र गुप्ता चतरसिह माया प्रकाश दामोदर दास आर्य अनिल बजाज एव विश्वबन्धु आर्य आदि के नेतृत्व मे इस यात्रा मे शामिल आर्यो का स्वागत होगा।

मेरठ मे सर्वश्री स्वराज चन्द्र अशोक सुधाकर हरवीर सिह सुमन सुनील आर्य आदि सहित कई अन्य आर्यनेता इस यात्रा का स्वागत करेगे।

मुजफ्फरनगर मे श्री अरविन्द के नेतृत्व मे सर्वश्री रोशन लाल बत्रा सजीव चतरथ कृष्ण गोपाल सुभाष चन्द्र गुप्ता हरदत्त सतवीर आर्य सोराम सिह आर्य धर्मवीर वर्मा ऋषिपाल आर्य धर्मपाल सिह जगदीश सिह महेश सिघल आदि सहित कई आर्यनेता इस यात्रा का मुजफ्फरनगर मे स्वागत करेगे।

स्टालों की बुकिंग प्रारम्भ

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल के विशाल आयोजन मे पुस्तको तथा अन्य धार्मिक वस्तुओ एव अल्पाहार के स्टलो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अनुमानत यह स्टाल १०x१० फुट के होगे। इन स्टालो का चारो दिनो का शुल्क २५०० रु० निर्धारित किया गया है। जो महानुभाव अथवा प्रतिष्ठान अपना स्टाल इस सम्मेलन मे लेना चाहे व २५०० रु० का ड्राफ्ट **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २** के पते पर १५ अप्रैल से पूर्व भिजवा दे। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहे वे ५००० रु० का ड्राफ्ट भेजे जिससे उन्हे दोनो स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

आगामी सम्मेलन अपने आप मे एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमे बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचे। आपकी राशि एव आवेदन १५ अप्रैल से पहले सभा कार्यालय मे अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रैल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

इन स्टॉलो मे दो बडी मेज दो कुर्सिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध होगा। तीन तरफ की दीवारे और छत टीन की बनी होगी। स्टॉल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डॉ० महावीर जी से सम्पर्क करे।

– विमल वधावन, महासम्मेलन सयोजक

आर्यसमाज की उपलब्धियां और अपेक्षाएं

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति एम०ए०

इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा। क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवे तो बहुत अच्छी बात है क्योकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नहीं। महर्षि दयानन्द (सत्यार्थ प्रकाश एकादशम समुल्लास पृष्ठ ३६१)

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने अन्त करण से निकले उद्गार तत्कालीन ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाज के गुण दाष कथन करते हुए व्यक्त किए थे। उपरोक्त अभिव्यक्ति के पूर्व इन दोनो सस्थाओ की १६ बिन्दुओ वाली सुन्दरतम समीक्षा की। इस समीक्षा का ध्यानपूर्वक पढने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि दयानन्द को आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात बहुत आत्मसन्तोष होकर अनेक अपेक्षाए थीं। इन १६ बिन्दुओ मे उन्होने व्यष्टि से लेकर समष्टि तक आस्तिको को नई प्रेरणा दते हुए धार्मिक दृष्टि से भी देशोन्नति करने की सुन्दर विवेचना की थी। इस शताब्दी म महर्षि दयानन्द ही ऐसे महान पुरुष हुए है जिन्होने व्यक्ति समाज राष्ट्र तथा विश्व को वेद की ओर लौट चलने की प्रेरणा दी थी। भारतीय राष्ट्र के पुनर्जागरण काल मे महर्षि दयानन्द का सर्वोच्च स्थान योगिराज अरविन्द घोष ने इस प्रकार निर्धारित किया था – **यदि वन प्रान्तर मे पहाडियो की अनेक चोटिया दिखाई पड रही हो तो उनमे एक सर्वोच्च हरा भरा शिखर भी दिखाई देगा। यह सर्वोच्च हरा भरा शिखर दयानन्द ही दिखाई देता है जिसे विश्व अचलो मे गर्व से अपना मस्तक ऊचा दिखाई पडता है। दयानन्द विश्व सन्तो मे जाज्वल्यमान नक्षत्र दिखाई देते है। उस विश्व शिखर को मेरा शत शत प्रणाम।** ठीक भी हे एक यागी ही अपन से अन्य किसी यागी का ठीक ठीक मूल्याकन कर सकता है। यह सम्मति उनके यशोगान के लिए पर्याप्त है।

इन्हीं विचारो से अनुप्राणित होकर सुदूर स्थित अमेरिका के एक दार्शनिक डा० एन्ड्रन्यू जैक्सन डेविस न आर्यसमाज और आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध म यह कहा था –

मैं एक ऐसी अग्नि देखता हू जो सर्वव्यापक है यह अप्रमेय–प्रेम की अग्नि है जो सर्वविन्द्वेष को भस्मसात करने के लिए प्रज्ज्वलित हो रही है ओर सर्ववस्तुजात को पवित्र बनाने के लिए पिघला रही है। अमरीका के प्रशस्त क्षेत्रो अमरीका के बडे स्थलो एशिया के शाश्वतिक पर्वतो यूरोप के विशाल राज्यो और राष्ट्रो मे सर्वनाशन सर्वपावन इस पावक की प्रज्ज्वलित ज्वालाए मुझे दिखाई दे रही है। हिन्दू और मुसलमान मिलकर इस अग्नि को बुझाने दौडे और वे ईसाइ भी जिनकी वेदियो की अग्निया और पवित्र बत्तिया प्रारम्भ मे भावुक (ध्यानी) पूर्व एशिया मे ही प्रकाशित हुई थी। एशिया के इस प्रकाश को बुझाने के प्रयत्न मे हिन्दू और मुसलमानो के साथ मिल गए – सम्मिलित हो गए किन्तु वह स्वर्गीय अग्नि बढती और फैलती गई।

आर्यसमाज की स्थापना शनिवार ७ अप्रैल १८७५ मे चैत्र सुदी प्रतिपदा सवत १८३२ विक्रमीय शाक १८८५ मे मुम्बई गिरगाव क्षेत्र के काकडवाडी मे महर्षि दयानन्द द्वारा अपराह्न ११ बजे मे हुई। इसमे पहला मुसलमान दाता सेठ रहमतअली थे। आर्यसमाज कोई नया धर्म पथ या मत या सम्प्रदाय नहीं है। यह वेद प्रचार वेदानुकूल आचरण ही मनुष्य पितर ऋषि दवता बनाकर श्रेष्ठ बनाता है। यही इसकी धारणा है। वैदिक धर्म वेदिक सस्कृति यज्ञादि पुण्यकर्म आर्य ग्रन्थो का अध्ययन अध्यापन राष्ट्रप्रेम सत्यग्रहण और असत्य त्याग नारी सम्मान गौ रक्षा योगविद्या एव शुद्धि (घर वापस लौटना) सिद्धान्त इसमे है। आयसमाज गत १२७ वर्षो से निरन्तर ये कार्य कर रहा हे जिसका फल निम्न उपलब्धियो से अवगत होगा। यह अद्यतन माहिती क आधार पर हे –

१ विश्व म प्राय ५००० आय समाज ह। जिसमे से केवल ४००० भारत म है।

२ २०० के लगभग प्रान्तीय व जिला उप सभाए हे।

३ भारत नेपाल अफ्रीका ट्रिनीडाड मौरीशस गुयाना फीजी सुरीनाम ब्रिटिश गणराज्य अम्रीका तथा कनाडा आदि देशो मे आर्यवीर दल की ५०० से अधिक शाखाए हैं।

४ २०० से अधिक आर्य कुमार सभाये हैं।

५ प्राय १००० कालेज तथा हाईस्कूल है। बालक बालिकाआ के लिए २००० से अधिक प्राथमिक एव माध्यमिक विद्यालय है।

६ सैकडो गुरुकुल बालक बालिकाओ के चल रहे है।

७ ३०० से अधिक सस्कृत विद्यालय और धर्मार्थ औषधालय हैं।

८ १५ से अधिक टेक्निकल शिक्षणालय विद्यमान हैं।

९ २०० से अधिक अनाथालय वृद्ध आश्रम और सुदर गौशालाये है।

१० ५०० से अधिक अतिथि भवन छात्रावास और व्यायाम शालाये है।

११ ३०० से अधिक मुद्रणालय (प्रिटिग प्रेस) पत्र पत्रिकाए वाचनालय और ग्रथालय हैं।

१२ प्राय २००० आर्य सन्यासी व्याख्याता उपदेशक भजनोपदेशक प्रचार कार्य मे सलग्न है।

१३ आर्यसमाजो मे पजीकृत सदस्यो की सख्या २० लाख है। परन्तु आर्यसमाज की विचारधारा स प्रभावित लोगो की सख्या १० कराड से कम नही है।

१४ आयसमाज की शिक्षा सस्थाओ मे प्राय १० लाख छात्र छात्राये शिक्षा प्राप्त करते है। इन शिक्षा सस्थाआ पर प्रतिवष १ अरब २० करोड रूपय स अधिक व्यय होता है। इस व्यय मे डी०ए०वी० सस्थाय भी है।

१५ विश्व के समस्त आर्यो की एक मात्र शिरामणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। इसका पता – महर्षि दयानन्द भवन ३/५ रामलीला मेदान नई दिल्ली–२ है।

१६ ४ विश्व विद्यालयो मे दयानन्द पीठ स्थापित हुए है। खेद हे कि पाकिस्तान म इस विशाल सस्था का प्राय ८८ कराड से भी अधिक सम्पत्ति छाडनी पडी। इतने महान और सुन्दर सञ्जाल (नेटवर्क) से सुसज्जित आर्यसमाज का सगठन कार्यरत है। किसी भी राष्ट्र को ऐसी महान सस्था पर गर्व होना स्वाभाविक है।

आयसमाज ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (१६३६ ई० मे) सतत आठ मास तक विशुद्ध अहिसात्मक ढग से चलाकर तत्कालीन निजाम की सरकार को झुका दिया। इस सत्याग्रह मे आर्यसमाज के ३१ वीरो का बलिदान हुआ। इस आर्यसत्याग्रह का यह सुपरिणाम निकला कि स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात निजाम द्वारा विद्रोह करने पर २१ दिन के भीतर तत्कालीन गृहमत्री सरदार वल्लभ भाई पटल के पेरो मे निजाम को अपना सिर झुकाना पडा और हैदराबाद रियासत को भारतीय सघ मे मिला लिया गया। स्वतत्रता सग्राम के प्रसिद्ध लेखक श्री सीतारमैय्या ने स्पष्ट लिखा है – **भारतीय स्वतत्रता सग्राम के दिनो मे ८८ प्रतिशत आर्यसमाजी पहली पक्ति मे खडे हुए दिखाई देते थे। अग्रेज इतिहास के लेखक मि० हर्टन ने लिखा है आर्यसमाजियो की चमडियो के नीचे नसो मे बहने वाले लाल रक्त मे देशभक्ति तथा बलिदान के कीटाणु पाये जाते है। यही कारण है कि अनेको विद्वान महात्मा गाधी को राष्ट्र पिता कहते हैं तो आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह कहते हुए श्रद्धा से नत मस्तक होते है।** वतमान म भी अनेक आर्य विद्वान विधान सभाओ तथा देश की ससद म शाभा बढा रह हे। यह सब उनकी त्याग तपस्या और सेवा का फल हे। किसी कवि का कथन सत्य ही है कि – जैस बाआग वेसी फसल काटाग।

यहा तक आर्यसमाज की सस्तुति करने के पश्चात आत्मावलोकन करने का प्रसग का उल्लेख करना नितान्त आवश्यक है। प्रतीत हाता है कि जिस प्रकार चौड मैदान मे आकर तीव्र बहने वाली नदी की जल धारा थोडी धीमी हा जाती है इसी प्रकार आर्यसमाज क कणधारा की अति व्यस्तता के कारण आयसमाज के प्रचार की गति कुछ कम पड गइ है। इसक अनेक कारण भी हा सकते हे किन्तु समष्टिगत हित की दृष्टि से उनका सार्वजनिक उल्लख करना शाभा नही देता। यह विषय प्रत्यक आर्यसमाज के अनुयायी क व्यक्तिगत विवाद चिन्तन मनन और आत्मावलोकन हे

तटस्थ भाव स यह कहन म काइ हानि नही हे कि देश मे एस अनक कार्य ह जिन्हे आर्यसमाज क समान सम्पन्न एव सुसगठित सस्थाए ही कर सकती है।

स्वतत्रता प्राप्ति क पश्चात आज भी वगवाद जातीयवाद प्रान्तीयतावाद तथा भाषावाद का विष राष्ट्र का खोखला कर रहा हे। जिस जातिवाद को आयसमाज न अपने जन्मकाल से ही उखाड फेकने का ध्यय मत्र बना रखा था आज क्या स्थिति हे ? दश क सविधान म जाति भद वर्ग–भेद रग भेद समाप्त कर एक विशुद्ध समाजवादी समाज की रचना की बात कही गई है। किन्तु ६ के दशक क पश्चात चतुर तथा पद लोलुप राजनयिको ने आर्यमसमाज क द्वारा किए कराये पर सब ओर पानी फर दिया।

इस देश मे मैक्समूलर वादी भक्तिवादी तथा मुल्ला मदरसावादी पुन अपना सिर उठा रह है। आज दश के सर्वोच्च पदो तथा समाचार पत्रो व मीडिया के शिखरो पर मार्क्सवादी (नास्तिक) साम्यवादी नीति क अनुसार इस राष्ट्र को छिन्न भिन्न कर रहे हे। इन मैक्समूलर वादियो मैकाले वादिया तथा मुल्ला मदरसावादियो से कवल आर्यसमाज ही टक्कर ले सकता है। यह इनकी दुरगी नीतियो को असफल कर वह भारत को एक श्रेष्ठ समाज दे सकता है।

यह चिन्ता का विषय है कि आज 'प्रहरी ही सो गया है और भवन के दरवाजे खुले हैं। नीतिकार ने ठीक ही कहा – दरवाजो को खुला रखने पर तीसरे का प्रवेश हो जाना स्वाभाविक है। आर्यसमाज की इस समय सदा की भाति बहुत आवश्यकता है। यदि आर्यसमाज अभी भी सजग नही हुआ तो भावी पीढी इसे सदैव उपेक्षा का पात्र बनाकर उपेक्षा कर देगी।

आज आत्म चिन्तन तथा विश्लेषण करने की आवश्यकता हे। ओ३म शम।

– सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर म०प्र०

आर्यसमाज का अविस्मरणीय योगदान

१ समाज सुधार के कार्य द्वारा आर्यसमाज ने भारतीय समाज के ढाचे को लोकतत्र के अनुकूल बनान का प्रयत्न किया।

२ धार्मिक सुधार के द्वारा आर्यसमाज ने राष्ट्रीय धर्म की पुनर्स्थापना करने का जोरदार प्रयत्न किया जिससे भारतवासियो मे स्वाभिमान की जागृति हुई।

३ गुरुकुल पद्धति पर शिक्षा का सगठन करके आर्यसमाज न भारत को स्वदेशी आधार पर आधुनिक ज्ञान विज्ञान के स्तर पर पहुचाने का प्रयत्न किया।

४ वेद मनुस्मृति व महाभारत के राजनेतिक विचारो की पुनर्भिव्यक्ति करके आर्यसमाज ने भारतवासिया मे स्वदशी राजनीतिक दर्शन के प्रति चतना उत्पन्न की।

५ स्वय आयसमाज लोकतत्रात्मक ढग पर गठित हुआ।

६ आयसमाज न ५श न प्रथम ार एक राष्ट्रभाषा हिन्दी का समथन किया और राष्ट्रीय एकता के विचार का प्रतिपादन किया।

७ महर्षि दयानन्द न भारत की राजनेतिक स्वतत्रता का शक्तिशाली पक्ष लिया।

आर्यसमाज एक सांस्कृतिक चेतना है

– डॉ० योगेश्वर देव

सास्कृतिक क्रान्ति

मानव चेतना ससार का वह सुन्दरतम वरदान है जिसने पट की क्षुधा पर विजय प्राप्त कर सत्य की ज्योति से सस्कृति का निर्माण किया है। मानव सान्दर्य आत्मिक सान्दर्य का नाम है न कि शारीरिक सौन्दर्य का। यही कारण है कि सिन्धु और गगा की फनिल लहरा वेदो की ऋचाओ का जो उदघाष हुआ था वह मानव की सास्कृतिक क्रान्ति थी जिसकी प्रतिध्वनि स्वामी दयानन्द की वाणी से मुखरित हो आयसमाज मे गूजी थी। वह नैतिकता और धम की अवहलना करन वाले पश्चिम के भौतिकवाद तथा रूस के साम्यवाद स सवथा भिन्न आत्मा का स्वर था। यह भारतीय शरीर म यूरोपीय आत्मा डाल कर अवतारवाद तीर्थ मन्दिर और मूर्तिपूजा से युक्त हाने का ब्रह्मसमाजी प्रयत्न भी नहीं था और न ही तत्कालीन सामाजिक कुरीतियो को दूर करने वाला रानाडे का प्रार्थना समाज जेसा दुर्बल प्रयत्न। आर्यसमाज एक सास्कृतिक क्रान्ति है एक आत्मिक चेतना है। डा० राधाकृष्णन का कथन है कि भौतिकता द्वारा मानवता की पराजय मानव का सबसे बडा दुर्भाग्य है। आर्यसमाज ने इस दुर्बलता को पहिचाना और उनका निराकरण का सास्कृतिक प्रयत्न किया।

दलितोद्धार आर्यसमाज की पहल

प० विनायकराव विद्यालकार ने आर्यसमाज को उस बैक के समान कहा है जिसने मानव निर्माण का कार्य किया हे और जिसस निकली मानव पूजी से सामाजिक व राजनीतिक सस्थाओ ने अपन कारखान चलाए है। स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय केवल आर्यसमाज की निधि नही है अपितु इतिहास के अमर सेनानियो म से हे जिन्होने अपने चरित्र से काग्रेस इतिहास को उज्ज्वल किया है। हरिजन व दलितोद्धार काग्रेस का स्वर नही है अपितु आर्यसमाज का स्वर है जिसन सबसे पूर्व दलितोद्धार सभा बनाई जो स्वामी श्रद्धानन्द के काग्रेस मे पदार्पण के पश्चात आरम्भ हुआ। स्त्री शिक्षा के प्रसार का श्रेय पाश्चात्य सभ्यता को नही है अपितु आर्यसमाज को है जिसने प्राचीन सस्कृति पर पडी स्त्री शूद्रौ नाधीयताम् की गर्द झाड कर मानवीय सन्देश सुनाया। इसमे कोई सन्देह नहीं कि महात्मा गाधी भारतीय धमनियो मे प्रविष्ट अग्रेजियत के विष से बेचैन थे पर क्या यह सत्य नही कि उनसे वर्षो पूर्व गुजरात के ही एक महामना ने इस राग को पहिचान लिया था। आर्यसमाज ने देश को आत्मिक दासता से मुक्त करने के लिए जगह–जगह गुरुकुल जैसी शिक्षण सस्थाए चलाई। सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर प्राचीन कुरीतियो और रूढिवादियो से मुक्त करने के लिए कहीं अधिक ज्वलन्त रूप मे स्वामी दयानन्द की वाणी स आर्यसमाज इस क्षेत्र मे उतरा। यह बात क्या किसी से छिपी हुई है कि ईसाइयत और इस्लाम के धार्मिक इतिहास का एक–एक पृष्ठ असहिष्णुता घृणा और मानव रक्त स रजित है। किसी ने तलवार की नाक स अपना कलाम लिखा और किसी ने अपने कलाम द्वारा मानव रक्त से अजलि भरी है। आर्यसमाज को छोड कर ऐसी कौन सी सस्था है जिसने धर्म की वेदी पर सैकडा पुत्र चढा दिए हो लेकिन जिसके हाथो पर मानव रक्त की एक बूद भी न लगी हो।

सबकी उन्नति

आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य किसी एक जाति या विचारधारा की उन्नति नही है। वेद किसी एक जाति की सम्पत्ति नही है अपितु मनुष्य मात्र की सम्पत्ति है। मैक्समूलर के शब्दो म प्राचीन वैदिक ज्ञान मे मानव जाति की शिक्षा का सम्पूर्ण रहस्य निहित है। उन्होने केम्ब्रिज यूनिवसिटी म भाषण देते हुए ऋषियो के चरणो मे श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था जैसे हम ऐवरैस्ट की ऊचाइ को नाप कर हिमालय की ऊचाई का अनुमान लगाते हैं वैसे ही हमे भारत का अनुमान वैदिक गायका के माध्यम से ही लगाना होगा उपनिषदो के सत ही हमारा पथ प्रदर्शन करेगे वेदान्त और साख्य दर्शनो के प्रचारक ही हमे भारत विषयक ज्ञान देगे और प्राचीन स्मृतियो के प्रणताओ के माध्यम से ही हमे तत्कालीन भारत का ज्ञान होगा।

आर्यसमाज पृथक पन्थ नहीं

आर्यसमाज कोई एक पृथक पन्थ नहीं है अपितु सत्यासत्य की खोज करने वाला समाज हे। न्यायपूर्वक आचरण करना सौन्दर्य से प्रेम करना और सत्य की भावना के साथ विनम्रता पूर्वक व्यवहार करना यही सबसे ऊचा धर्म है। इस कसौटी पर कसने पर स्वामी दयानन्द विश्व मानवता के नेता दीखते हैं। उन्होने स्वय लिखा है मेने जो जो सब मतो मे सत्य बाते हैं वे वे सबमे अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो जो मत मतान्तरो मे मिथ्या बाते हैं उन सबका खण्डन किया है। इस प्रकार जिस वैदिक सत्यज्ञान पर आर्यसमाज की आधारशिला स्थापित की गई है वह किसी विशेष सम्प्रदाय व धर्म व जनसमुदाय से सम्बन्धित नहीं है अपितु सार्वभौम है। ऋग्वेद तो कहता ही यह है सत्येनोतमिता भूमि। इसीलिए आर्यसमाज के नियमो मे एक नियम यह भी है – सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वथा उद्यत रहना चाहिए। वैदिक साहित्य मानव की परिमार्जित रुचियो की सबसे सुन्दर अभिव्यजना है। श्रीमती ऐनी बेसेट ने अपने एक भाषण मे कहा था चालीस वर्षो के सुगम्भीर चिन्तन के बाद मै यह कह रही हू कि विश्व के सभी धर्मो मे हिन्दू धर्म से बढ कर पूण वैज्ञानिक दार्शनिक एव आध्यात्मिकता से परिपूर्ण धर्म दूसरा नही है। उस हिन्दू धर्म पर पडी रूढिवादिताओ की राख को झाड कर आर्यसमाज ने मानव कल्याण का भव्य मार्ग प्रशस्त किया है।

तर्क की कसौटी

आर्यसमाज की सबसे बडी देन यह है कि उसने तर्क की कसौटी स ईश्वर के सच्चिदानन्द रूप की प्रतिष्ठा की। एसा नही है कि इसके पूर्व समाज मे ईश्वर के रूप को स्थापित करने का प्रयत्न नही किया गया। कबीर दादू गुरुनानक आदि सतो की तीर्थाटन मूर्तिपूजा अवतारवाद की प्रबल खण्डनात्मक वाणी के पीछे भावना तो एकेश्वरवाद की थी लेकिन शास्त्रीय प्रामाणिकता तथा प्रबल तर्क के आदि मे उनका मण्डनात्मक पक्ष अति दुर्बल रहा। परिणामत उनके सत्य के ज्ञान का दीपक टिमटिमाता ही रहा। उसमे सूर्य सा प्रखर तेज नहीं आ सका। पाखण्ड के महावन को जला कर राख करने की क्षमता उसमे नही थी। वह समाज को झकझोर नहीं सका।

बौद्धो का कच्चा विद्रोह

वैदिक यज्ञो मे प्रचलित हिसा तथा ब्राह्मणो के बाह्य कर्मकाण्ड को देखकर बौद्ध धर्म वेदो और ईश्वर की सत्ता को ही अस्वीकार कर बैठा। उसमे यह साहस नहीं था कि वह अपनी स्थापना को तर्क की कसौटी से स्थापित करता। स्वामी दयानन्द पलायनवादी व्यक्ति नहीं थे अत उन्होने और उनकी सस्था ने सामाजिक कुरीतियो को तर्क के बाण से काटा। उसने स्त्री शिक्षा अस्पृश्यता निवारण दलितोद्धार अछूतोद्धार विधवा विवाह गोवध निषेध आदि की उपादेयता सामाजिक स्तर पर वेदो के आधार पर सिद्ध की। उन्होने वर्तमान को वैदिक काल से तर्क की डोर से बाध दिया। मनु ने कहा है यस्तर्केणानुसन्धते स धर्म वेद नेतर अर्थात् जो व्यक्ति तर्क द्वारा खोज करता है धर्म के स्वरूप को वही जान सकता है अन्य नही। तर्क तो ऋषि है जिसकी सहायता से आर्यसमाज आगे बढा है। जो तर्क को सुने ही नहीं वह कटटर हे ? जो तर्क कर ही न सके वह मूर्ख हे जो तर्क करने का साहस ही न कर सके वह गुलाम है।

आर्यसमाज के सिद्धान्त स्थिर है

स्वामी विवेकानन्द उन सन्यासियो मे से थे जिनकी भारतीय सस्कृति के रग मे रगी सशक्त वाणी ने देश के युवको मे नवरक्त का सचार किया और भारतीय आत्मा के सुप्त स्वाभिमान को जगाने का प्रयत्न किया। परन्तु वे भी आर्यसमाज जैसी सस्था नहीं दे पाए जिसकी वाणी नगरो से खलिहानो तक अमीर से गरीब तक महलो से झोपडियो तक पहुचती। इन्ही कारणो से हर्बर्ट रिस्ले ने प्यूपिल आफ इण्डिया मे लिखा है कि आर्यसमाज के विस्तार का कारण यह है कि इसके सिद्धान्त स्थिर है।

बाह्य कानून व नियम मनुष्य से काम तो करवा सकते हैं लेकिन मनुष्य नही बना सकते। आत्मा का निर्माण नहीं कर सकते। देवता पद प्राप्त करना सरल है पर मनुष्य बनना कठिन है। क्या मानव निर्माण स्त्री शिक्षा के बिना भी सम्भव हे ? महर्षि रमण के शब्दा मे पति के लिए चरित्र सन्तान के लिए ममता समाज के लिए शील विश्व के लिए दया और जीवन मात्र के लिए अपने हृदय मे करुणा सजो कर रखने वाले प्राणी का नाम ही नारी है। भारत के अध पतन की कहानी उस दिन आरम्भ हो गई थी जिस दिन हम भूल गए कि नारी मात्र स्त्री ही नही वह मा भी है। आर्यसमाज ने शिक्षण सस्थाए खोली। क्या आर्यसमाज को छोड कर उस काल मे किसी सस्था को विचार आया कि जानसार बाबर जैसे पिछले प्रदेश मे भी सरस्वती का प्रसाद बाटना चाहिए ? उसमे मेघ और ओड जाति को अपने मे मिला कर उनकी शिक्षा का प्रबन्ध १८६६ मे उस समय आरम्भ कर दिया था जबकि अभी समाज ने शिक्षा के विषय मे सोचना भी शुरू नहीं किया था।

लार्ड मैकाले की सूझ

लार्ड मैकाले ने कल्पना की थी कि भारत मे ईसाइयत के प्रचार के लिए शिक्षण सस्थाओ मे केवल अग्रेजी पढाना ही काफी है मिशनरियो की आवश्यकता नही। उसकी यह कल्पना कितनी सत्य निकली ! पर्सिवल ने अपनी लैण्ड ऑव द वेदाज नामक पुस्तक मे एक समाचार का उद्धरण देते हुए लिखा है एक हिन्दू कालेज से समाज की भावनाओ को जैसी गहरी ठेस पहुची है क्या उसका शताश भी मिशनरियो के आन्दोलन से पहुची थी ? और आज भी एक हिन्दू कालेज नहीं सैकडो हिन्दू कालेज यही कार्य कर रहे हैं।

सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर प्राचीन कुरीतियो और रूढिवादियो से मुक्त करने के लिए कहीं अधिक ज्वलन्त रूप मे स्वामी दयानन्द की वाणी से आर्यसमाज इस क्षेत्र मे उतरा। यह बात क्या किसी से छिपी हुई है कि ईसाइयत और इस्लाम के धार्मिक इतिहास का एक एक पृष्ठ असहिष्णुता घृणा और मानव रक्त से रजित है। किसी ने तलवार की नोक से अपना कलाम लिखा और किसी ने अपने कलाम द्वारा मानव रक्त से अजलि भरी है। आर्यसमाज को छोड कर ऐसी कौन सी सस्था है जिसने धर्म की वेदी पर सैकडो पुत्र चढा दिए हो लेकिन जिसके हाथो पर मानव रक्त की एक बूद भी न लगी हो।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

टंकारा यात्रा के संस्मरण

मैं भी टंकारा गया

– कैप्टन देवरत्न आर्य

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एव महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री मान्यवर श्री रामनाथ जी सहगल के निमन्त्रण पर इस बार मुझे भी महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व भी मै टकारा गया था ऋषिबोधोत्सव पर। उस समय मै एक सामान्य आर्य होने के नाते गया था परन्तु इस बार आमन्त्रित अतिथि के रूप मे गया।

१० मार्च को मै उत्तराचल एक्सप्रेस द्वारा दिल्ली से रवाना हुआ। मेरे साथ अनेक आर्यजन इस गाडी से यात्रा कर रहे थे। अधिकाश जाने वाले व्यक्ति एव परिवार सहमे हुए थे – गुजरात मे हुए भयकर दगो के कारण। लगभग २०० व्यक्तियो ने अपने टिकट रद्द करा दिए ऐसी जानकारी मुझे दी गई परन्तु जो दयानन्द के भक्त थे वे किसी भी दशा मे टकारा जाने को आतुर थे। इसी ट्रेन मे पू० स्वामी आत्मबोध जी (पूर्व नाम महात्मा आर्य भिक्षु जी) भी यात्रा कर रहे थ। उनकी प्रतिज्ञा है कि मै हर ऋषिबोधोत्सव पर टकारा जाऊगा और जिस वर्ष नहीं गया मेरी मृत्यु का तार जाएगा। महर्षि जन्मभूमि क प्रति उनकी अटूट श्रद्धा है।

११ मार्च को मध्याह्न हम राजकोट पहुचे। स्टेशन महर्षि की जय जय कार से गूज उठा। हाथो मे ओ३म का झण्डा लिए व भगवा टोपी या साफा पहनने के कारण रेलवे पुलिस ने रोका कि कही ये दगा फसाद करने वाली टोली तो नही है पर वास्तविकता जानने के पश्चात उन्होने राहत की सास ली। स्टेशन पर इस तीर्थ की यात्रा करने वालो के लिए कार व बस खडी थी जिसमे बैठकर हम टकारा तक गये। महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के नारे गूजते रहे।

११ मार्च को लगभग तीन बजे मैं टकारा पहुचा। ५ वर्ष पूर्व का टकारा वहा नही था। यह सोच सोच कर कि मै उस भूमि पर खडा हू जहा जगद्गुरु महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया था रोमाचित होता रहा। अपने पूर्व निश्चित निवास पर गुरुकुल के ब्रह्मचारी मुझे ले गए और साथ के कमरो मे थे ट्रस्ट के प्रधान माननीय श्री ओकारनाथ जी श्रीमती शिवराजवती जी श्री धर्मवीर जी खन्ना एव उनकी सहधर्मिणी एव दूसरी मन्जिल पर श्री एव श्रीमती अरुण अबरोल।

स्नान भोजन आदि करके जब मै बाहर निकला तो सबसे पूर्व मेरी दृष्टि गई नवनिर्मित विशाल यज्ञ शाला पर। गुजरात मे आए भूकम्प से क्षतिग्रस्त यज्ञशाला को पूरी तरह हटा कर एक नवीन यज्ञशाला का निर्माण किया गया जिसमे ५०० व्यक्ति बैठ सकते है। वास्तुकार जिसने एक नवीन व सुन्दर रचना की इस यज्ञशाला की वे वस्तुत धन्यवाद व बधाई के पात्र है। लगभग २० लाख की लागत से यह यज्ञशाला बनकर तैयार हुई। मै इस यज्ञशाला के निर्माण से इतना प्रभावित हुआ कि श्री एस०के० दुआ जी जिनके सरक्षण मे इस यज्ञशाला का निर्माण हुआ है उनसे मैने नक्शा मागा है ताकि करजत मे जो वैदिक अनुसधान केन्द्र निर्माणाधीन है वहा पर भी इसी वास्तुकला की यज्ञशाला बन सके।

यज्ञशाला के अतिरिक्त वहा दो नये भवनो का निमाण हुआ है। जिस भवन मे म ठहरा हुआ था उस भवन के समस्त कमरे शोचालय स्नानागार और रसोई के साथ जुडे हुए थ। तीन मजिल की इमारत थी। दूसरे भवन मे भी बडे–बडे कमरे इन्ही सुविधाओ के साथ बने हुए थे जिसमे लगभग २०० व्यक्ति आराम के साथ रह सकते है। ट्रस्ट के प्रागण म विशाल स्कूल का भवन बना हुआ था जिसमे एक विशाल हॉल बना हुआ था जिस पर लिखा था ओकारनाथ शिवराजवती समिति कक्ष।

सबसे महत्वपूर्ण स्थान था महर्षि दयानन्द जन्म गृह। ५ वर्ष पूर्व वहा कुछ नहीं था। जिस कक्ष मे मूलशकर ने जन्म लिया था वह स्थान हमे नही मिल रहा था। पर वहा दो विशाल हाल बने थे। जिस कमरे मे मूलशकर का जन्म हुआ था वह छोटा सा कमरा बन्द था – शीशे लगे होने के कारण उसे बाहर से देखा जा सकता था। कमरे मे महर्षि का बडा चित्र रखा हुआ था। बाहर हाल मे यज्ञ हो रहा था। उस कमरे को देखकर एक बार बडी तीव्र इच्छा हुई कि श्रद्धा के वशीभूत उस कमरे को साष्टाग नमन करू परन्तु इस भय से कि कही मूर्तिपूजा करने की आलोचना का पात्र न बन जाऊ अपने को रोक लिया।

१२ मार्च को प्रात १० बजे ध्वजारोहण हुआ। श्री रामनाथ जी सहगल ने अपने स्वभावानुसार ध्वजारोहण से पूर्व पचासो मालाओ से सम्मान किया। प्रधान पद पर आने के साथ ही मेने घोषणा की थी कि मै मालाए नही पहनूगा पर श्री सहगल जी के आग्रह को नही टाल सका। ध्वजारोहण के पश्चात शोभा यात्रा निकली। एक विशाल शोभायात्रा जिसका नेतृत्व मुझे व श्री ओकारनाथ जी को करना था। जगह जगह पर शरबत पिलाया गाव वालो ने। वह भी महर्षि क प्रति नतमस्तक थे। ऊपर घरो से पुष्पो की बौछार होती रही – मिश्री आदि शोभा यात्रा मे सम्मिलित आर्यो को खूब बाटी मुझे बडा अच्छा लगा जब बैड की आवाज पर महर्षि के दीवाने श्री सोमदत्त जी महाजन श्री बलदेव जी व अन्य कई व्यक्ति महर्षि क गानो के साथ थिरकन लग। ऐसा लगता था वह महर्षि के दीवाने हो गए और खूब नोटो की वर्षा करने लग गए।

श्री सामदत्त जी महाजन जो ७५ वर्ष के हे उनके बच्चे कहा करते हे कि आप आर्यसमाज मे जाकर अपनी उम्र को भूल जाते हो – मैन उनका सच्चा स्वरूप टकारा मे देखा कि महर्षि के गुणगान मे वह ऐसे थिरके कि ऐसे लगता था कि कोई २०-२५ वर्ष का नवयुवक झूम रहा हो।

मध्याह्न ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। गुजरात राज्य के ग्रामीण विकास मन्त्री व टकारा क्षेत्र क विधायक श्री मोहन जी मोरवी के श्री पटेल जी जन्म स्थान को दिलाने मे मुख्य भूमिका निभाने वाले श्री कानजी भाई दिल्ली के नवयुवक भजनोपदेशक श्री नरेन्द्र अमृतसर के श्री सत्यपाल जी पथिक श्री आचार्य राजसिह जी मच को शोभायमान कर रहे थे। उस समारोह के मुख्य वक्ता के रूप मे मुझे भी बोलने का सौभाग्य मिला। मै भाव विभोर था ऋषि की जन्मभूमि पर बोलने का अवसर मिलने से।

साय टकारा आर्यसमाज मे कार्यक्रम था। यज्ञ हुआ नियन्त्रण कर रहे थे पूज्य स्वामी आत्मबोध जी – एक यजमान के रूप मे मै भी बैठा था। पूर्णाहुति से पूर्व उन्होने घोषणा की कि मेरा पुत्र कैप्टन देवरत्न ६३ वर्ष का सबसे कम आयु का सार्वदेशिक सभा का प्रधान बना है अत उसके स्वास्थ्य एव दीर्घायु की प्रार्थना हेतु ६३ गायत्री मन्त्र की आहुति दी जाएगी। उनक इस भावना क प्रति मेरी आखे नम ह गई। सभी बुजुर्गो को यज्ञ वेदी प बुलाकर मुझे आशीर्वाद की प्रक्रिया क पूरा किया। पू० पिता आचार्य भद्रसे जी को भी याद किया और मुझे उन्व बताए हुए सन्माग पर चलने के लि प्रेरित किया गया। मेर पास धन्यवा के शब्द नही थ पूजनीय स्वाम आत्मबोध जी के लिए।

रात्रि को व १३ मार्च को प्रात पू नियोजित कार्यक्रम चलते रहे। सबर अच्छी बात थी श्री रामनाथ जी सहग का अपने सुपुत्र श्री अजय सहगल क ऋषि दयानन्द की सेवा मे समर्पि करना। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सयोज श्री अजय सहगल ने बडी कुशलता योग्यता के साथ किया। ऐसा लगत था समारोह का सयोजन कोई इर व्यवसाय से जुडा व्यक्ति कर रहा था उपदेशक महाविद्यालय क आचार्य श्र विद्यादव जी व उपाचार्य श्री रामद जी बधाई के पात्र है जो बडी योग्यत के साथ इस महाविद्यालय का सचाल कर रहे है। इस विद्यालय म लगभ १२५ ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हे और विद्यालय से निकल स्नातक आ देश विदेश मे आर्यसमाज का का कर रहे हे। समाराह के मध्य आचार उपाचार्य एव ब्रह्मचारी समर्पण भाव र आगन्तुको की सवा म लगे रहे।

स्वामी आत्मबोध जी से उपस्थि जनसमुदाय विशेषकर मु ने यह आहा किया कि प्रतिवर्ष टकारा मे आकर इर धरती को नमन करो जहा महर्षि जन्म लेकर ससार का उद्धार किर और हमे वेदो के मार्ग पर चलने क रास्ता दिखाया।

टकारा मे ऋषि जन्म भूमि पर ज सम्मान प्यार और स्नेह मिला म जीवन की एक यादगार बनी रहेगी। प्रयत्न करूगा प्रतिवर्ष टकारा जाक ऋषि कोअपनी श्रद्धाजलि भेट करू। ट्रस्ट का हृदय से धन्यवाद करता

– प्रध
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभ

महर्षि की ज्योति आर्यसमाज

मानवता की सामाजिक और आध्यात्मिक जागृति के लिए महर्षि दयानन्द ने जो ज्योति जगाई थी आर्यसमाज उसी का प्रतिदान है। महर्षि की कामना मजहबी मान्यताओ जातिगत भेदभाव से मुक्त रहकर मानवता का कल्याण करने की ही थी।

ताक से आगे

नारी का कर्मक्षेत्र

– सत्यबाला देवी एमए बीटी

घर म रहकर भी पतिव्रत धर्म का ालन करती हुई एव सन्तान की सुख पुविधा आर लालन पालन का ध्यान खती हुइ नारी जिस स्वर्गीय सुख ात्मसन्तोष तथा गर्व की अनुभूति करती ' और परलाक मे भी बिना किसी तप ाधना के ही स्वर्ग प्राप्ति की धिकारिणी बनती है महत्वाकाक्षा पूर्ण ादा पर प्रतिष्ठित होकर वह उसका गताश भी प्राप्त नही कर सकती।

परन्तु आधुनिक स्वतन्त्रता–प्रिय पमानाधिकारेच्छुक पाश्चात्य सभ्यता की अतिशयता से आक्रान्त नारी की स प्रवृत्ति की निन्दा करने का यह र्थ नही है कि उसे सर्वथा अशिक्षित सूयपश्या अथवा समस्त बाह्य जगत के वातावरण समाचारो तथा घटनाओ प अज्ञात एव अपरिचित रखते हुए र्वथा कूप मण्डूक बना दिया जाए त्युत इसके ठीक विपरीत नारी को ालपन से ही उचित शिक्षा दीक्षा ारा नारी सुलभ समस्त चारित्रिक दगुणो से समलकृत करना व्यवहारिक ान की शिक्षा प्रदान करना विश्व म नित्यप्रति घटित होने वाली नवीन महत्वपूर्ण घटनाओ तथा राजनीतिक सामाजिक एव आर्थिक समस्याओ से परिचित कराने शैशवावस्था से ही उसे सुयोग्य सभ्य बनाना तथा कुशल गृहिणी और मातृत्व के सम्पूर्ण दायित्वो और सद्गुणो से विभूषित करना माता पिता एव समाज का प्रमुख कर्त्तव्य है। पर कतिपय कटटर पथी रूढिवादी व्यक्तियो की धारणा है कि स्त्रियो के शिक्षा प्राप्त करने से उन मे नाना अवगुणो का समावेश हो जाता है और वे पारिवारिक जीवन के लिए सर्वथा अयोग्य सिद्ध होती है। परन्तु उक्त दोष पूर्ण स्थिति का उत्तरदायित्व शिक्षा नही प्रत्युत आधुनिक पाश्चात्य शिक्षण पद्धति पर ही है जिसके दुष्प्रभाव और दुष्परिणाम आधुनिक शिक्षित नारिया पाश्चात्य ना रीति रिवाज वेशभूषा रहन की चकाचौध से अभिभूत हो।

ो महिलाओ की वेशभूषा हावभाव ार चाल ढाल की नकल करना अपने कान्तिहीन अस्वस्थ सौन्दर्य विहीन पीतवर्ण मुखमण्डल को नाना कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनो द्वारा आकर्षक बना सार्वजनिक क्षेत्रो मे भाग लेना पतिदेव और सेवक वर्ग पर अधिकार प्रदर्शनकरने को ही अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य समझ बैठी है। पत्नी और माता के गौरव पूर्णपद का त्यागकर आज की नारी रमणी के मोहक तथा आकर्षक पद की प्राप्ति हेतु अत्यधिक उत्सुक और लालायित रहती है। पर यदि नारी को प्रारम्भ से ही तप त्याग और नि स्वार्थ सेवा का अभ्यासी बना भारतीय आदर्शों के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाए तो वह अपन पारिवारिक जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है।

अत नारी का वास्तविक कर्म क्षेत्र उस का घर ही है। उसी स्वर्ग सम सुखद शान्तिदायक और परम सन्तोषप्रद वातावरण मे रहते हुए वह अपने घरेलू जीवन क साथ साथ समाज जाति और देश क भविष्य को भी स्वर्णिम और उज्ज्वल बना सकती है। उसके जीवन की पूर्ण सार्थकता और महिमा पत्नीत्व और मातृत्व के महिमामयपदो पर आसीन होने से ही है। घर मे रहकर ही वह अपने गृहस्थाश्रम का सुव्यवस्थित रूप से सचालन कर सकती है। नियमित रूप से समस्त गृह कार्यो को निपटा कर अपनी सन्तान को स्वस्थ सुन्दर बलिष्ठ एव उच्च मानवीय चारित्रिक सदगणो से विभूषित कर सकती है क्योकि माता ही बालक की सर्वप्रथम शिक्षिका होती है। जो गर्भावस्था से लेकर समस्त शैशवकाल तक अपनी इच्छानुसार विशेष साचे मे ढाल कर उसके जीवन का निर्माण कर सकती है क्योकि शैशवावस्था के सस्कार और प्रभाव आजीवन चिरस्थायी और अमिट रहते है। अत बालको को सभ्य शिक्षित धीर वीर बनाना बहुत कुछ माता पर ही निर्भर होता है। इसके अतिरिक्त वह अपने स्नेहमय व्यवहार त्यागवृत्ति और नि स्वार्थ सेवाद्वार अपने पतिदेव के समस्तश्रम अभाव कष्टो का हरणकर उसके जीवन का भी सुखमय शान्ति मय और कर्मण्य बना सकती है। इस प्रकार अपने कर्त्तव्यो और उत्तरदायित्वो का यथोचित निर्वाह करती हुई नारी न केवल अपने लौकिक जीवन मे ही सुखी सम्पन्न शान्त एव सन्तुष्ट रह सकती है प्रत्युत परलोक मे भी चिर शान्ति एव स्वर्ग सुख की अधिकारिणी बन सकती है। अत नारी जीवन का एक ही व्रत है एक ही तप है एक ही नियम और एक ही लक्ष्य है अपनी मूक और नि स्वार्थ सेवाओ द्वारा अपने पारिवारिक जीवन को स्वर्ग सम सुखद शान्तिप्रद पावन और कल्याणप्रद बनाना और यही भारतीय नारी के जीवन का सर्वोच्च आदर्श और लक्ष्य है और उसी के द्वारा वह गौरवान्वित हो सकती है।

– डी०/११३, शिव विहार, रोहतक रोड, दिल्ली ११००८७

७७ वें जन्म दिवस पर

श्री रामनाथ सहगल को सिक्कों से तोला गया

१२ मार्च २००२ को ऋषिबोधोत्सव क अवसर पर रात्रि सत्र मे दिल्ली से पधारे श्री सोमदत्त महाजन एव जामनगर से पधारे श्री धर्मवीर खन्ना जी द्वारा मच के बीचोबीच एक बडी तराजू रख दी गई जिसे देख सभी व्यक्ति चकित रह गए। मच सचालक से पाच मिनट का समय माग कर जब उन्होने अपनी बात कही कि मध्यरात्रि होने जा रही है और श्री रामनाथ सहगल का जन्मदिवस जो कि १३ मार्च को पडता है कुछ ही क्षणो मे आने वाला है हमारी ऐसी इच्छा है कि हम सभी आयजन इस समय पर उनके जन्म दिवस को सम्मिलित रूप से मनावे। और श्री खन्ना जी जामनगर से एक बहुत बडे ट्रक मे सिक्के लाए हुए थे जिसे कि चार व्यक्ति उठाए हुए थे और वह सहगल साहब के वजन के बराबर थे। और उन्होने यह घोषणा की कि सहगल साहब को इस अवसर पर सिक्को से तोला जाएगा यह सुनकर उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि कर इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति दी।

श्री सहगल जी ने यह सुनते ही अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि मेरे लिए यह विचित्र घडी है क्योकि मैं कार्यकर्ता होने के नाते कुछ ऐसा नही कर पाया हू कि मुझे इस रूप मे तौला जाए और मै तो निरन्तर लोगो को सम्मानित करने के लिए प्रख्यात हू। मुझे स्वय इस प्रकार से तोला जाना आपत्तिजनक लग रहा है। इसलिए अगर यह कार्यक्रम न किया जाए तो अधिक उपयुक्त होगा लेकिन जनसमूह के आग्रह पर एव परिवार वालो के समझाने पर वह इस कार्य के लिए तैयार हुए और उन्होने घोषणा की कि जितनी भी राशि इस तराजू मे रखी जाएगी वह टकारा ट्रस्ट के कार्यो एव प्रचार प्रसार हेतु दे दी जावे।

कार्यक्रम के अन्त मे श्री सोमदत्त जी महाजन ने सहगल साहब के विषय मे बताते हुए उनसे अपनी ३५ साल की घनिष्ठता एव सम्बन्ध के विषय मे बताया और कहा कि वह सहगल जी को अपने बडे भाई के रूप मे मानते हैं और निरन्तर उनसे प्रतिदिन किसी न किसी नये विषय मे प्रेरणा प्राप्त करते है। और यह आदरणीय सहगल जी का ही उत्साह एव सहयोग है जिसके कारण मैं निरन्तर आर्यसमाज के क्षेत्र मे कार्य कर रहा हू।

इसी अवसर पर उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि सहगल साहब का जन्मोत्सव इस प्रकार से मनाना और उन्हे सम्मानित करना यह उनका निजी सम्मान नहीं है बल्कि उस देव दयानन्द के एक ऐसे अनुयायी का सम्मान है जिसने अपना पूरा युवा काल और उसके उपरान्त अभी तक पूरा जीवन दयानन्द और समाज के नाम से अर्पित किया हुआ है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए उनकी १०० वर्ष से भी अधिक आयु की कामना की और माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। इसके उपरान्त लगभग सभी उपस्थित जनसमूह ने सहगल साहब को घेर लिया और सभी शुभकामनाए देने लगे एव माल्यार्पण करने लगे।

मध्यरात्रि उपरान्त शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर

आर्यसमाज के मूल स्वरूप को जीवंत बनाए रखें

– राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

आर्यसमाज क्या है ?

आर्यसमाज सस्कृत भाषा के दो शब्दो आर्य+समाज से मिलकर बना है। आर्य शब्द सस्कृत की ऋ गतौ धातु से बना है – अर्थात जिसमे गति करने की शक्ति हो जो प्रगति के लिए प्रयत्नशील हो जिसके विचार भाव एव क्रिया श्रेष्ठ हो दैनिक जीवन–व्यवहार श्रेष्ठ अनुकरणीय एव उर्ध्वगामी हो वह आर्य है।

समाज का अर्थ है – सगठन या समुदाय। समान आचार विचार वाले ऐसे अनेक प्राणियो यथा पशु, पक्षी दानवादि का सगठन हो सकता है। किन्तु आर्यसमाज जिसकी स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सन १८७५ ई० मे की वह उन विश्वव्यापी श्रेष्ठ गुण सम्पन्न व्यक्तियो का समुदाय है जो अपने और दूसरे मनुष्यो की भलाई के लिए कार्य करे। इस विषय मे आर्यसमाज का छठा नियम ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात उन समस्त श्रेष्ठ शुभ गुण सम्पन्न व्यक्तियो को चाहे वे किसी देश जाति (वर्ग) सम्प्रदाय के हो सगठित कर एक मणिमुक्ता की माला मे पिरोकर मानव मानव के बीच पनप रहे सकीर्ण विचारो आपसी मतभेदो एव मनभेदो को दूर कर सुख शान्ति एव समृद्धि प्राप्त करना था। वे समस्त मनुष्य जिनके अन्दर आर्योचित गुण विद्यमान है – आर्य है। ऐसे ही मनुष्यो के समुदाय का नाम आर्यसमाज है।

इस प्रकार आर्यसमाज वह कारखाना है जिसमे मनुष्य मनुष्य बनता है। देशकाल जाति वर्ग पथ मत सम्प्रदाय विशेष से आर्यसमाज को बाधना वास्तविक रूप मे उसके लक्ष्य उद्देश्य और सस्थापक की पवित्र भावना के विपरीत है। पशुता की वृत्तिया समाप्त कर मानव को मानव बनने की प्रेरणा देना और उसको मोक्षानन्द प्राप्त कराना महर्षि जी का मुख्य उद्देश्य एव लक्ष्य था। यदि किसी भी पद पर कार्य करे मान सम्मान पद प्रतिष्ठा मिले अथवा अपमान के घूट पीना पडे वह पशु नहीं बन सकता। अनार्य नहीं बन सकता।

आर्यसमाज ने क्या किया ?

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन की बलि देकर आर्यसमाज के भव्य भवन को महिमा मण्डित किया। विष के प्याले पिये। तिल तिल जले। मानापमान सहे। परन्तु एक अखण्ड प्रचण्ड ज्वाला को प्रदीप्त कर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि देव दयानन्द जी ने राम और श्रीकृष्ण की परम्परा को बचाया। यवना को ललकारा। ईसाइयो को फटकारा विदेशियो को चेतावनी दी। स्वदेशियो को वैदिक जीवन निष्ठा का पाठ पढाया। धर्म की रक्षा की। गौवश के प्राण बचाए। निर्बल निस्तेज आर्य भक्ति को तेजस्विता एव कर्त्तव्यपरायणता के रास्ते पुनर्स्थापित किया। अन्धविश्वास पाखण्ड एव अनार्ष ग्रन्थो एव मतो का खण्डन कर आर्ष वैदिक ग्रन्थो के पठन पाठन की प्रेरणा दी। कुरीतियो कुप्रथाओ पर प्रबल प्रहार कराया। नारी पर किए जा रहे अत्याचार की भर्त्सना कर वेदादि के पठन पाठन की पूर्ण अधिकारिणी मानते हुए उन्हे सम्मानित एव पूज्या माना।

इन्हीं ऋषिवर से प्रेरणा प्राप्त कर देश समाज हित अपने प्राणो की आहुति देने की परम्परा मे आर्यसमाजियो का विश्व इतिहास मे सर्वोत्कृष्ट एव अद्वितीय स्थान रहा है। अमर शहीद प० लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द रामचन्द्र राजपाल तुलसीराम कल्याणानन्द वेदप्रकाश धर्मप्रकाश भगत सिह प० रामप्रसाद बिस्मिल सरीखी अनेकानेक वीर आत्माओ ने धर्म की वेदी पर अपने आपको न्यौछावर कर दिया। देश की स्वतन्त्रता के इतिहास मे हजारो अमर आर्यवीर शहीद हो गए। फिर क्या था ? भारतीयो की प्रसुप्त चेतना जागृत हो गई। भारत का भाग्य जाग गया। इस्लाम का वेग रूक गया। ईसाइयत का बुना जा रहा ताना–बाना खण्डित हो गया। स्वदेशी उठ खडा हुआ। विदेशियो को भागना पडा। लेकिन तब आर्यसमाजियो मे क्या था ? हर एक आर्यसमाजी अपने आप मे उपदेशक था। हर एक आर्यसमाजी हर व्यक्ति को अपना भाई समझता था। अपने को दूसरो का सहायक अबलाओ का रक्षक अन्याय अत्याचार के प्रतिकार मे आत्माहुति तक दे देता था। खान पान की मर्यादा थी। शिक्षा दीक्षा मे आचरण मे अपने को अपने परिवार को आदर्श की कसौटी पर कसता था। मन वाणी और कर्म से सत्य का पालन करता था। न्यायालयो तक मे उसे बडा आदर प्राप्त था। अज्ञान अन्याय अभाव से सदैव मोर्चा लेकर आत्म गौरव प्राप्त किया।

आर्यसमाज को क्या करना चाहिए ?

आज की पहली आवश्यकता तो यह है कि आर्यो मे आपसी फूट ईर्ष्या द्वेष लडाई झगडे नही होने चाहिए। शका समाधान एव मतभेदो को पूज्य साधु सन्यासियो एव विद्वत्वर्ग की सहायता से दूर करना चाहिए। अज्ञान अन्याय अभाव एव आलस्य प्रमाद के विरुद्ध लडने एव उसे मिटाने का व्रत लेना चाहिए। नित्य नियमित स्वाध्याय करना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश एव वेद का प्रचार करना अपना जीवनोद्देश्य बनाना चाहिए। दुर्जन को सज्जन बनाने अधर्म के नाश और धर्म की रक्षा का सकल्प लेना चाहिए। अपने परिवार नगर देश को आयत्व के रग मे सराबोर करने के लिए अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्यो मे लगाना चाहिए। आत्मप्रशसा की दूषित प्रवृत्ति को एव देश तथा समाज का अपने निहित स्वार्थो के लिए लूटने खसोटने हडपने एव बर्बाद करने की घातक क्रिया को तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए।

आर्य विद्वानो उपदेशको को धन लोलुप न बनकर निःस्वार्थ निरपेक्ष एव सेवाभावना से कार्य करना चाहिए। आजीविका हेतु दान मे प्राप्त धन को ईश्वर का प्रसाद समझकर सतोष करना चाहिए। आर्यसमाज के पदाधिकारियो को चाहिए कि किसी भी ऐसे विद्वान उपदेशक को अपने कार्यक्रम मे न बुलाए जो लोभवृत्ति का परिचय देते हुए प्रतिदिन प्रचार कार्य के हिसाब से निश्चित धनराशि की माग सहित सशर्त स्वीकृति देते हैं। भले ही कार्यक्रम मे गतिरोध हो। कार्यक्रम निरस्त कर देना पडे। इसके विपरीत प्रचार कार्य को समाजसेवा को अपना धर्म समझकर बिना शर्त स्वीकृति देने वाले प्रखर प्रतिभासम्पन्न निर्लोभी विद्वान उपदेशको/भजनोपदेशको को अपनी सामर्थ्य से भी अधिक दक्षिणा देनी चाहिए।

प्रत्येक आर्यसमाजी को अपने परिवार मे नित्य नियमित सन्ध्या–हवन करना चाहिए। अपने जीवन को आदर्श यज्ञमय बनाना चाहिए। अपनी हीन भावना और हृदय की दुर्बलता को योगेश्वर श्रीकृष्ण के निम्न उपदेश को ध्यान मे रखकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हो जाना चाहिए। क्षुद्रं हृदय दौर्बल्य व्यक्तोत्तिष्ठपरतप। तभी हमारा अपना व सबका कल्याण सम्भव है।

– मन्त्री आर्यसमाज बीसलपुर पीलीभीत उ०प्र०

विदेश समाचार

आर्यसमाज नैरोबी ने जन्मोत्सव एव बोधोत्सव हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया

१० मार्च रविवार को आर्यसमाज नैरोबी ने ऋषि जन्मोत्सव एव ऋषि बोधोत्सव का पर्व अत्यन्त ही हर्ष एव उल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का आरम्भ प्रात काल उस समय हुआ जब प० राम कृष्ण शर्मा ने इस्ट एफ०एम० रेडियो से ऋषि बोधत्सव पर अपना प्रवचन दिया। उसके बाद महर्षि दयानन्द भवन मे निर्मित विशाल यज्ञशाला मे यज्ञ हुआ यज्ञ प० रामकृष्ण शर्मा ने सम्पन्न करवाया तथा सभी को अपना आशीर्वाद दिया। मुख्य यजमान के रूप मे बिट्रेन से आए हुए श्री सत एव श्रीमती विमला खोसला जी थे जो कि आर्यसमाज नैरोबी के पूर्व प्रधान स्वर्गीय यश जी खोसला के बडे भाई हैं। इस अवसर पर श्री सत जी खोसला ने अपने स्वर्गीय पिता श्री दुर्गा दास जी खोसला की पुण्य पावन स्मृति मे यज्ञशाला के लिए एक लाख शिलिग का दान भी दिया।

शेष कार्यक्रम महर्षि दयानन्द भवन में हुआ। राष्ट्रगान के बाद श्री ध्रुव जी ने महर्षि दयानन्द जी के प्रति अपने मधुर भजनो द्वारा भावभीनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत की। इनके बाद आर्य बाल सभा के बच्चो ने धन्य है तुझको ऐ ऋषि भजन गाकर सबका मन मोह लिया। इस कार्यक्रम के बाद श्रीमती उर्मिला वेदी जी ने ऋषि की अमर कथा अत्यन्त करुणा भरे स्वर से प्रस्तुत की जिसको सुनकर सभी आर्यजन रोमाचित हो गए। इसके बाद आर्य गर्ल्स सेकेण्डरी स्कूल की छात्राओ ने शिवरात्रि तथा महर्षि दयानन्द के विषय में तीन कोरस गान प्रस्तुत किए जिसको प० रामकृष्ण जी ने तैयार करवाया था।

प० जी के बाद नैरोबी की प्रसिद्ध गायिका श्रीमती मीरा वशिष्ठ ने तीन भजन प्रस्तुत किए जिसमे उन्होने ऋषि दयानन्द के द्वारा किए कार्यो का ब्योरा प्रस्तुत किया। इसके बाद धर्मार्य सभा के सयोजक श्री शीलकात वेदालकार ने ऋषि दयानन्द को यह कहते हुए श्रद्धाजलि प्रस्तुत की कि हमे जीवन मे क्षमा का गुण अपनाना चाहिए।

तत्पश्चात प० राम कृष्ण शर्मा ने ऋषि के जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव के विषय मे अपने विचार रखते हुए कहा – कि छोटी छोटी घटनाए ही परिवर्तन का कारण बन जाती है। शाक्य राजकुमार बुद्ध का रोगी वृद्ध एव सन्यासी का देखना ही उनके जीवन मे परिवर्तन ले आया जिसका प्रभाव आज भी दुनिया पर है। इसी प्रकार मूलशकर को जो बोध हुआ उसका प्रभाव भी भारत मे ही नही अपितु विश्व पर पडा।

इस अवसर पर वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री राम लाल शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री प्रीतम जी सैनी श्री सत जी खोसला तथा कार्यवाहक प्रधान श्री जोगिन्दर पाल गजरी ने कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले कलाकारों को पुरस्कार प्रस्तुत किए। आर्यसमाज नैरोबी की ओर से श्री प्रीतम जी सैनी ने श्री सत जी खोसला को प्रशसा पुरस्कार भेट किया। श्री सत जी खोसला ने आर्यसमाज नैरोबी का धन्यवाद किया जिन्होने उनको तथा उनके परिवार को सम्मानित किया। सब के अन्त मे श्री रामलाल जी शर्मा ने भी ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत की।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द भवन श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। श्री सत जी खोसला तथा उनके परिवार के सौजन्य से सबको ऋषि लगर परोसा गया।

कैसे जाना जाता है, आचार्यों का अभिप्राय ?

गताक से आगे

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

दूसरा स्थल –

एक माला फूलो की उन्होने स्वामी जी के गले मे डाली और एक माला फूलो की स्वामी जी ने राव साहब के गले मे डाली

महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र लेखराम पृष्ठ ५८६

वास्तविकता यह है कि पुष्प तोडना उचित नहीं है यह बात ऋषि ने मूर्तिपूजा के दोषो का परिगणन करते हुए लिखी है और यह उचित भी है क्योकि जब मूर्तिपूजा ही वेदविरूद्ध है तो उसके निमित्त पुष्प तोडना कैसे उचित हो सकता है ? किन्तु इस प्रसग को प्रमाण मानकर सर्वत्र पुष्पमाला के प्रयोग का विरोध करना तो ऐसे ही है जैसे – चरक मे या आयुर्वेद के ग्रन्थो मे ज्वरग्रस्त व्यक्ति के लिए भोजन और घृत वर्जित है। विशेषकर घृत तो ज्वरावस्था मे विष का कार्य करता है। आयुर्वेद के इस प्रसग को लेकर यदि कोई मन्दबुद्धि व्यक्ति स्वस्थ व्यक्ति के लिए भी घृत भोजन का निषेध समझने लगे तो विद्वान बुद्धिमानो की दृष्टि मे वह कैसा समझा जाएगा और समाज मे कितना उपहास का पात्र बनेगा यह स्वत ही समझा जा सकता है।

तात्कालिक परिस्थितियो को देखकर यदि कोई विद्वान यज्ञ को आकर्षक व प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से आसन वसन आदि मे कुछ परिष्कार कर कर्मकाण्ड मे सम्मिलित कर देता है तो वह न नयी विधि होती है न यज्ञविकृति। किन्तु यह उस यज्ञकर्ता की कुशलता है और यही ऊहा कहलाती है। इस ऊहा के कारण से मनुष्य सामान्य से विशेष बनता है। जिस प्रकार प्रात काल शीतल जल के पान का विधान है किन्तु किसी कारणवश किसी व्यक्ति को यदि शीतल जल अनुकूल नहीं पडता है तो कवोष्ण जल के पान करने से आयुर्वेद शास्त्र की विकृति नहीं मानी जाएगी। इस विषय मे अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट सकेत किया है –

एव प्रणीताया रक्षिताया पुण्य स्यादिति एव पापमिति यदुच्यते तत पापनिमित्ताभावात सा कल्पना मिथ्यैवास्ति"।

कहने का आशय यह है कि इस प्रकार प्रणीता पात्र मे रखने से पुण्य होता है और इस प्रकार रखने से पाप होता है यह कल्पना मिथ्या है क्योकि इसमे किसी प्रकार के पाप का कोई कारण नहीं। इसके विपरीत जिस प्रकार से करने मे यज्ञ का कार्य अच्छी प्रकार हो सके वह कार्य अवश्य करना चाहिए अन्य नहीं।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

ऋषि दयानन्द के इस सन्दर्भ मे यह वाक्य विशेष रूप से ध्यातव्य है कि जिस प्रकार से यज्ञ करने मे यज्ञ का कार्य अच्छी प्रकार से हो सके वह अवश्य करना चाहिए।

दूसरा सस्कार विधि का वह स्थल जहा ऋषि ने लिखा है –

'नित्य मार्जन तथा गोमय से लेपन करे और कुकम हल्दी मैदा की रेखाओ से सुभूषित किया करे ।

इस वाक्य मे सुभूषित शब्द ने चमत्कार उत्पन्न कर दिया है और वह चमत्कार है – ऋषि सत्य शिव को जितना महत्व देते हैं उतना ही सुन्दर को भी महत्व देते हैं। कोई वस्तु सत्य है शिव है कल्याणकारी है किन्तु वह सुन्दर नही है तो वह पूर्ण नही क्योकि सामान्य जन उसके प्रति आकृष्ट नहीं हो पाएगे और आकर्षण के बिना उनकी अच्छे कार्य मे प्रवृत्ति भी नहीं होगी। इसीलिए मन्त्र पाठ के विषय मे भी उन्होने लिखा है –

सस्वर मधुर मन्त्रपाठ हो

यहा यज्ञ कराने वाले ब्रह्म की ऊहा की ओर ऋषि सकेत है कि वह किस प्रकार यज्ञ को आकर्षक एव सुन्दर बनाए।

यदि किसी यज्ञ मे मन्त्रान्त मे ओ३म स्वाहा बोलकर आहुति दिलायी जाती हे या दी जाती है और साथ मे ओ३म स्वाहा बोलने के सम्बन्ध म ब्रह्मा द्वारा यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि यहा ओ३म स्वाहा हम इस कारण से बुलवा रहे हैं तो ब्रह्मा का यह कार्य ऋषि दयानन्द के अनुसार युक्ति सिद्ध है और ऐसा करने से यज्ञ कार्य ठीक प्रकार से सम्पन्न होता है। अब जो लोग मन्त्रान्त मे ओ३म स्वाहा न बोलने के सम्बन्ध मे नूतन तर्क प्रस्तुत करने लगे है। वे तर्क शिरोमणि कहते हैं कि मन्त्रान्त मे ओ३म स्वाहा बोलना अटपटा लगता है। उनके इस अटपटा तर्क को सुनकर हसी भी आती है और रोना भी। हसी तो इसलिए आती है कि एक विद्वान बालको जैसी बात करता है और रोना इसलिए आता है कि इतना अच्छा ब्रह्मास्त्र तर्क गौतम कपिल कणाद पतजलि शकर दयानन्द को क्यो नहीं सूझा ? अब हम सब इस युग के लोग सौभाग्यशाली हैं कि हमे यह अटपटा तर्क भी एक मूर्धन्य विद्वान के द्वारा सुनने को मिला क्योंकि 'नमस्ते' अभिवादन आज भी बहुत से लोगो को अटपटा लगता है। उनको भी नमस्ते के विरोध मे महास्त्र तो आपने दे ही दिया और वह है महास्त्र आपका अटपटा।

भारत मे कुछ लोगो को जो अपने को नये प्रकाश मे गया मानते हैं उन्हे शाकाहार दुग्धाहार सदाचार अटपटा लगता है। परिधान मे धोती कुर्ता शिखा सूत्र अटपटा लगता है और उनको सटपटा लगता है – मास मदिरा पैंट कोट टाई। जब प्रारम्भ मे बालक पढता है तो उसे खेल छोडकर पढना अटपटा लगता है। तो क्या अटपटा लगने के कारण से अब बालको को नही पढाना चाहिए ? अनियमित दिनचर्या वाले को दिनचर्या – सन्ध्या हवन भी अटपटा लगता है तो सन्ध्या हवन भी छोड दे ? क्या करे ?

"नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति

यदि अन्धा न देखते हुए ठूठ स्थाणु से टकरा जाये तो इसमे स्थाणु का तो कोई अपराध नहीं। क्या कभी इन अटपटा महाशयो ने ओ३म स्वाहा' उच्चारण करने वालो से भी पूछा ? कि भाई ! हमे तो ओ३म स्वाहा उच्चारण अटपटा लगता है तुम अपनी सुनाओ। क्या कभी किसी ने उन्हे यह उत्तर दिया ? कि हमे भी यह आपकी भाति अटपटा ही लगता है। कदापि नहीं क्योकि एक तो यज्ञ का सात्विक वातावरण। दूसरा ओ३म' प्रभु का सर्वश्रेष्ठ नाम। फिर इसके सम्भूय उच्चारण से उस समय आनन्द प्राप्त होता है। मन एकाग्र होता है। ध्यान इधर उधर न जाकर ओ स्वाहा की ओर लगा रहता है और यज्ञ प्रदेश का सारा वातावरण ओ३म स्वाहा से गूज उठता है जा विपरीत ध्वनियो का बाधक होता है और उनके सुनने से हमे बचाता भी है। देखा आप लोगो ने ओ३म स्वाहा के उच्चारण का लाभ। अरे भाई ! यदि कुछ हानि होगी तो अटपटे व चटपटे लोगो को जिनके विषय मे महाराज भर्तृहरि ने भी उन्हे कुछ न कह करके अस्त्र डाल कर लिख दिया ते के न जानी गहे ।

रही बात श्री विश्वश्रवा व्यास जी की वे तो एक निराले व्यक्तित्व के धनी थे। सन १९५१ मे मेरठ के नौचन्दी मैदान मे सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हो रहा था। उस महासम्मेलन मे वेद सम्मेलन का भी आयोजन था। आयोजको ने वेद सम्मेलन के अध्यक्ष पद के रूप मे श्री प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी का नाम मनोनीत किया था और पत्र विज्ञापनो मे उन्हीं का नाम प्रकाशित था। श्री जिज्ञासु जी वेद सम्मेलन के अवसर पर मच पर विराजमान थे। श्री विश्वश्रवा व्यास जी खडे हो गए और ध्वनिविस्तारक यन्त्र पकडकर कहने लगे कि इस मूर्ख जिज्ञासु को किसने वेद सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया है ? इसको वेद के सम्बन्ध मे कुछ भी नही आता। यह महामूर्ख है। श्री विश्वश्रवा जी इतना कहकर भी शान्त नही हुए। उन्होने श्री जिज्ञासु जी को पकड लिया और पकडकर यू ही नहीं छोड दिया अपितु उनका कुर्ता भी फाड डाला। स्वागताध्यक्ष ने जाकर बलात श्री विश्वश्रवा जी के हाथ से ध्वनि विस्तारक यन्त्र छीना और कहा – हमने बनाया है श्री जिज्ञासु जी को वेद सम्मेलन का अध्यक्ष। श्री जिज्ञासु जी शान्त रहे। स्वागताध्यक्ष की तर्जना के पश्चात किसी प्रकार वातावरण शान्त हुआ और प्रारम्भ हुआ पुन वेद सम्मेलन। ऐसे थे आप लोगो के आप्त पुरुष विश्वश्रवा जी व्यास।

जिस वेद पारायण यज्ञ को कुछ लोग उचित मानते हैं उसके विरोध मे भी तो कुछ विशिष्ट शास्त्र मर्मज्ञ विद्वानो ने पूरा झण्डा ही उठा लिया है। उनका कहना है कि वेद पारायण यज्ञ सर्वथा शास्त्रविरुद्ध अवैदिक मूर्खतापूर्ण कार्य है। इसके विधान का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। जो इसके समर्थक हैं वे आकर खुला शास्त्रार्थ करे आदि आदि। समर्थको का कहना है कि महर्षि दयानन्द ने यज्ञो मे मन्त्रो के उच्चारण का प्रयोजन मन्त्रो की आवृत्ति एव वेदरक्षा बताया है। आचार्य प्रवर का यह कथन तर्क सगत युक्तियुक्त तथा बुद्धिगम्य प्रतीत होता है। पुनरपि वेदपारायण यज्ञविरोधी ऋषि के सकेत की अवहेलना कर अपनी ही हाकने मे तल्लीन हैं। ऋषि का वाक्य –

मन्त्रो की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहे। वेद पुस्तको का पठन पाठन और रक्षा भी हो।

– सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे भी वे यही प्रयोजन लिखत है

तत्पाठानुवृत्या वेदमन्त्राणा रक्षणम ।

महर्षि की इस प्रबल युक्ति के पश्चात भी जो लोग वेद पारायण यज्ञो का विरोध करते हैं उनको क्या कहा जा सकता है इसके अतिरिक्त कि वे अपने को श्रेष्ठ विद्वान सिद्ध करने मे सलग्न हैं।

क्रमश

आर्यसमाज : एक क्रान्तिकारी संस्था

– मा० पूर्ण सिह आर्य

एक व्यक्ति के रूप मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत मे फैली मिथ्या धारणाओ पाखण्डो तथा सामाजिक कुरीतियो के विरोध मे अनुपम सघर्ष किया। किसी भी प्रकार के भय से आतकित नहीं हुए कोई भी प्रलोभन उन्हे सत्य कथन एव सत्याचरण से रोक नही पाया। किन्तु उन्होने यह अनुभव किया कि बिना किसी सगठन के वह अपने सत्य सदेश को समग्र भारत अथवा विश्व मे विस्तार से नही दोहरा पाएगे। अत उन्होने चैत्र प्रतिपदा सम्वत १६३१ को मुम्बई नगर मे एक सस्था की स्थापना की जिसका नामकरण किया गया आर्यसमाज'। आर्यसमाज के प्रमुख दस नियम निर्धारित किए गए जो आर्यसमाज के लक्ष्य भी हैं और उनकी प्राप्ति के उपाय भी। वे साधन भी हैं तथा साध्य भी। ये नियमोपनियम ही अपने आप मे क्रान्ति का बिगुल हैं।

कुछ व्यक्ति नियमोंपनियमो का अवलोकन करके ही पीछे हट जाते हैं। किन्तु आर्यसमाज पिछले १२५ वर्ष से अधिक समय से इन्ही लक्ष्यों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यरत है।

आर्यसमाज अपनी शक्ति सामर्थ्य और साधनो का उपयोग करते हुए आगे बढ रहा है वैचारिक क्रान्ति सारे ससार मे लाने का प्रयास कर रहा है प्रभु शक्ति देवे।

१ आर्य महर्षि दयानन्द जी के उपदेश व सदेशानुसार सबसे पहले उदघोषित किया कि हम सब भारतीय आर्य हैं हिन्दु नाम तो विदेशी लोगो ने चिडके रूप में हमे दिया है हमारे सभी ग्रन्थो मे हमारा या हमारे पूर्वज भी श्री राम श्री कृष्ण आदि सभी आर्य है और इस देश का सबसे प्राचीन ऐतिहासिक नाम आर्यव्रत है बाद मे भारतवर्ष है।

२ वेदो की ओर लौटो आर्यसमाज का आधार और मुख्य कार्य वेद और वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार है। वेद के आधार पर प्रभु का मुख्य नाम ओ३म है। प्रभु निराकार सर्वव्यापक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान हे अपने सभी कार्य प्रभु अपने सामर्थ्य से ही करने मे सफल है। वह कभी अवतार बन कर जन्म मरण के बन्धन और सीमाओ मे नही बधता।

भगवान की काल्पनिक (झूठी) मूर्ति बनाना और मोक्ष के लिए उसको पूजना प्रार्थना करना अवैदिक है अज्ञान है क्योकि मूर्ति तो जड पदार्थों से बनी है जो न तो सुन सकती है न चल सकती है। देखना और बाते करना तो दूर। इसका प्रभाव है कि अब मूर्ति पूजक पौराणिक भी वह आस्था व श्रद्धा नही रखते है औपचारिकता है।

३ यज्ञ आर्यसमाज मानव मात्र ही नहीं प्राणी मात्र की भलाई के लिए पवित्र वेद की ऋचाओ (मन्त्रो) द्वारा शुद्ध सामग्री घी व सामग्री के द्वारा प्राण के आधार वायु को शुद्ध करता है इसलिए 'यज्ञेवै श्रेष्ठतम कर्म अयम या भवन्सयमाभि वेद का आदर्श है "आयुर्यज्ञेन कल्पताम" जिससे ससार मे फेले हुए प्रदूषण को घटाया जा सकता है। सर्वेभवन्तु सुखिना आर्यसमाज का ध्येय है।

४ शिक्षा सभी प्रकार के धार्मिक पारिवारिक सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यो के सम्पादन के लिए सदज्ञान आवश्यक है। अत आर्यसमाज ने सभी के लिए शिक्षा हेतु रात्रि पाठशालाए स्कूल गुरुकुल व कालेज तथा विश्वविद्यालय तक का सचालन किया है।

५ महिला जागरण स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है क्योकि पौराणिक जगत मे आज भी स्त्रीशूद्रोनाधीयताम अर्थात शूद्रो व स्त्रियो को वेद ज्ञान और साधारण ज्ञान भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं वहीं आर्यसमाज की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रभु की दी गई सभी वस्तुए सूर्य हवा पानी अन्न फल फूल आदि सभी के लिए है इसी प्रकार प्रभु का वेद ज्ञान भी सभी के लिए है।

६ जन्मगत जातिवाद का विरोधी आर्यसमाज जन्म के आधार पर जाति–पाति को नहीं मानता और शायद ससार मे सब से पहली सस्था आर्यसमाज ही है जो कि जन्म को जात का आधार नहीं मानती बल्कि गुण कर्म व स्वभाव को जाति का वर्ग का आधार मानती है क्योकि वेद मे कहा है – जन्मनाजायते शूद्रो जन्म से सभी शूद्र हैं अज्ञानी हैं मूर्ख है एक डॉक्टर व इजिनियर का लडका अध्यापक व डाक्टर बिना पढे नही बन सकता इसी प्रकार ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदि केवल जन्म से नही अपितु तदानुसार शिक्षा दीक्षा गुण व कर्म करने पर ही ब्राह्मण आदि वर्ग मे आ सकते है।

७ छूआछूत विरोध जिस समय आर्यसमाज का सगठन बना तब वेद की सच्ची शिक्षा न होने के कारण ओर धम के नाम पर भ्रम व पाखण्ड फैलाने के कारण छुआछूत की भयकर बीमारी फैली हुई थी। इसका विरोध आर्यसमाज और महात्मा गाधी जी व काग्रेस ने बडे ही वेग से किया। इस छुआछूत की बीमारी ने देश की बडी हानि की है। अत इसका उन्मूलन होना चाहिए।

८ राष्ट्रप्रेम तथा स्वाधीनता का सन्देश आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम राष्ट्रप्रेम व स्वाधीनता का सदेश दिया। जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है का सदेश देने वाला आर्यसमाज ही है।

९ कुरीतियो का निवारण देश मे फेली सैकडों कुरीतियो जैसे बाल विवाह स्त्री पुनर्विवाह को न होना छुआछूत अन्ध विश्वास भूत प्रेत आदि अनेक बुराइयो का आर्यसमाज ने निराकरण किया है और अब भी कर रहा है।

१० वर्तमान सघर्ष अतीत मे आर्यसमाज ने काफी समाज सुधार के कार्य कर जन साधारण को बचाया है अब इस वैज्ञानिक प्रचार व प्रसार के युग मे आर्यसमाज को एक बार फिर सगठित होकर रोज नए–२ पैदा होन वाले भगवानो (गुरुवरो) दूरदर्शन और सरकार द्वारा लोगो की धार्मिक भावनाओ को भडकाने वाले व भ्रमित करने ओ३म नम शिवाय महाभारत आदि के द्वारा आर्य के नाम पर भ्रम और नगे तथा गन्दे नाचो द्वारा भारतीय सभ्यता व सस्कृति को विकृत करने वाले कदमो का घोर विरोध करके अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। आर्यसमाज एक सस्था ही नही अपितु एक वैचारिक क्रान्ति है आन्दोलन है। इसको अपनी पूरी शक्ति लगा कर आगे बढाए यही इच्छा व प्रार्थना है।

'बढ़े प्रगति-पथ आर्य समाज'

पुनर्जागरण का स्वराष्ट्र मे जिसने फूका था नव मत्र।
जिसकी ललकारो के सम्मुख कम्पित हुए विदेशी तन्त्र।।
हुआ अग्रसर अवनति पथ पर–क्यो ऋषिवर का श्रेष्ठ समाज।
बढे प्रगति–पथ आर्य समाज।।

महा यशस्वी व तेजस्वी – जिसके सस्थापक थे ऋषिवर।
जागृति के अप्रतिम पुरोधा थे अतिशय विद्वान प्रवर।।
जिनके सद्यत्नो से अनुपम – मिला हमे यह सौम्य समाज।
बढे प्रगति पथ आर्य समाज।।

वेद भानु की प्रखर रश्मिया – फैलायी इसने ही भू पर।
ढोग ठगी व पाखण्डो का – किया विरोध इसी ने सत्वर।।
त्याग तथा बलिदान भावना – से थी सजी वतन की साज।
बढे प्रगति पथ आर्य समाज।।

वेदों के ही दिव्य पथो का आओ ! हम अनुसरण करे।
जो आलोक दिखाया ऋषि ने उस का हम सब वरण करे।
फैल रहीं जो असुर वृत्तिया – गिरे ज्ञान की उन पर गाज।
बढे प्रगति पथ आर्य समाज।।

आर्य बने हम सारे जग को दिव्य ज्ञान दे आर्य बनाए।
सत्य धर्म से समरसता से सुन्दर सा ससार सजाए।।
उठो उठो हे ! ऋषि के सैनिक – निर्मित कर दे सुखद सुराज।
बढे प्रगति पथ आर्य समाज।।

दयानन्द सार

जिस क्षण देह मे दुर्बलता प्रतीत हो उसी क्षण
एक महान विशालकाय व्यक्तित्व को याद करो।
जब तुम्हारे मन मे शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो,
उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओत प्रोत उस तेजस्वी
देश भक्त का स्मरण करो।
जिस क्षण तुम्हारे हृदय मे मोह और विलास का साम्राज्य प्रवेश हो,
उसी क्षण धन को ठोकर मारने वाले उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी को याद करो।
अपमान से आहत होकर जिस क्षण
तुम अपनी नजर ऊँची न उठा सको,
उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के
मुख को अपनी कल्पना मे उपस्थित करो।
मृत्यु वरण करते हुए डर लगे तो
उस निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो।
द्वेष भाव से उत्तप्त होकर जब तुम अपने विरोधी को क्षमा करने में हिचकिचाहट का अनुभव करो तो
उसी क्षण विष पिलाने वाले को आशीर्वाद देते हुए एक राग द्वेष
से विमुक्त सन्यासी को याद करो।
वह महान व्यक्ति 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' है और यह गौरवशाली पूर्ण भारतीय महापुरुषों में अग्रणी स्थान पर विराजमान है।

– *श्री रमण लाल देसाई (गुजराती उपन्यासकार)*

पृष्ठ ४ का शेष भाग

आर्यसमाज एक सांस्कृतिक चेतना है

यह वह मर्मस्थल था जिसके प्रति ऋषि विहल थे। वे हमारी आर्थिक दासता स व्याकुल नहीं थे अपितु मानसिक दासता स व्याकुल थे। देश का निर्माता मानव है मानव की निमात्री आत्मा है अत आत्मा को सुसस्कृत करना ही वास्तविक शिक्षा है। आर्यसमाज ने इस सत्य को पहिचाना और उसने पुत्री पाठशालाए कन्या विद्यालय महाविद्यालय स्कूल कालेज गुरुकुल आदि खोल कर शिक्षा मे जो क्रान्ति की है उस सबने एकमत से स्वीकार किया हे। गुरुकुल की आदर्श शिक्षा प्रणाली को देखकर रैम्जे मैकडानल्ड ने मुक्त कण्ठ से प्रशसा करते हुए कहा था कि इस सस्था से सरकार भी पर्याप्त शिक्षा ले सकती है।

शिक्षा विचार कम आचार अधिक

शिक्षा का केन्द्र आचारशक्ति है विचार शक्ति नहीं। आर्यसमाज जानता था कि यदि काष्ठ उत्तम होगा तो उसमे मेज कुर्सी अलमारी आदि कुछ भी क्यो न बनाया जाए उत्तम ही बनेगा। वह जनाता था कि मानव निर्मित होने पर उससे प्रोफेसर इजीनियर डाक्टर पुरोहित कुछ भी क्यो न बने उत्तम ही बनेगा। यही कारण था कि आर्यसमाज ने अपनी शिक्षण सस्थाओ मे धर्मशिक्षा पर बल दिया। ओर उसका यह परीक्षण असफल नही रहा। बनारस मे आल एजुकेशनल कान्फ्रेन्स के आयोजन मे जिसमे हिन्दू मुसलमान अग्रेज सब सम्मिलित थे यह प्रस्ताव पास किया गया था कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली समस्त एशिया मे प्रचलित की जाए।

प्रेम और सत्य एक ही सिक्के के दो पहलू है। प्रेम परमात्मा का रूप है प्रेम जगत की ज्योति है प्रेम मनुष्यता का ही दूसरा नाम है परमात्मा पूजा का नही प्रेम का भूखा है। इस पारमात्मिक सत्य को आर्यसमाज के अतिरिक्त जीवन मे किसने घटाया ?

ऐसा कौन सा मन्दिर है जिसके कपाट अस्पृश्य हरिजनो के लिए खुले रहे हो दलितो और शोषितो के लिए बन्द नही रहत अनाथो और विधवाओ को आमन्त्रण दते हो ? महोबे मे बाढ आ गइ। हरिजनो के मकान बह गए। किसी ने शरण नहीं दी तो आर्यसमाज के मन्त्री न समाज मन्दिर का दरवाजा खोल दिया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि अब से पहिली पूजा विराट की होनी चाहिए उन असख्य मानवो की जो तुम्हारे चारो और फैले हुए है।

स्वतन्त्रता का मूल राजनीति नहीं धर्म

आर्यसमाज की स्वतन्त्रता की ज्योति राजनीति मे से नहीं अपितु धर्म के मन्दिर से निकली है। स्वराज्य का सबसे प्रथम दीप जलाने वाले व्यक्ति थे स्वामी दयानन्द। परन्तु उनकी स्वतन्त्रता का अर्थ मात्र भौगोलिक आजादी नही है अपितु आत्मिक स्वतन्त्रता है। इसीलिए राजधर्म पर लिखते हुए उन्होने राजनीति मे धर्म की प्रधानता घोषित की। महात्मा गाधी का कहना था कि मेरे लिए धर्म से रहित राजनीति की कोई सत्ता नही। राजनीति धर्म का साधन मात्र हे। पर आज के राजनीतिज्ञो ने असाम्प्रदायिकता का एसा मकड जाल बुना है कि धर्म को ही तिलाजलि दे दी।

महात्मा गाधी इसी धर्म और सस्कृति से भावी राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे और काग्रेस ने उन्हे ही निकाल बाहर फैक दिया। यह समाज आर्यसमाज का है। वह इधर घूमे और राष्ट्र मे नई चेतना फूक क्योकि आर्यसमाज एक क्रान्ति है एक सास्कृतिक चेतना है। सत्य उसका सम्बल है अहिसा उसका शास्त्र वेद उसकी वाणी है तर्क उसका अस्त्र। समाज उसका मार्ग है। समाज के मार्ग से ही उसे आत्मा की ज्योति दीप्त करनी है।

– माडल टाउन पानीपत

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का बदला हुआ दूरभाष

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री **श्री वेदव्रत शर्मा** जी का दूरभाष नम्बर बदल गया है। कृपया सम्पर्क के लिए – **२३७१६९१५** का प्रयोग करे।

मानव जाति की आशाओ का उज्ज्वल केन्द्र बिन्दु

आर्यसमाज

१ आर्यसमाज ने १८५७ के पश्चात सर्वप्रथम सर्वत्र जागरण का शखनाद किया।
२ ईश्वर से मिलने का सच्चा मार्ग बताकर अज्ञान दूर किया।
३ पाखण्डो पर प्रबल प्रहार कर धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रचार किया।
४ यवन ईसाईयो के षडयन्त्रो से आर्य हिन्दू जाति की रक्षा की।
५ परमपिता परमात्मा की अमृत वाणी वेद ज्ञान का उद्धार कर उसका प्रचार किया।
६ आत्महीनता की भावना से छुटकारा दिला आर्य (हिन्दू) जाति को सगठित किया।
७ पराधीनता के पाश तोडने के लिए निरन्तर प्रेरणा कर स्वतन्त्रता सग्राम का नेतृत्व किया।
८ मनुष्य और मनुष्य के मध्य खडी भेदभाव की दीवार गिरा कर मानव की एकता समानता का मार्गदर्शन किया।
९ नारी जाति का उत्थान कर उसे समाज मे सम्मानपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित कराया।
१० सत्य धर्म और मानवता का प्रसारक आर्यसमाज मानव जाति की आशाओ का उज्ज्वल केन्द्र बिन्दु है।

आर्यावर्त केसरी हिन्दी पाक्षिक समाचार का विमोचन

आपको यह सूचित करते हुए हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं कि नव सवत्सर एव आर्यसमाज स्थापना दिवस की पुनीत वेला मे मिति चैत्र सुदी १ सम्वत २०५९ विक्रमी तदनुसार शानिवार दिनाक १३ अप्रैल २००२ को आर्यावर्त केसरी हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र का विमोचन रात्रि ८.०० बजे आर्यसमाज मन्दिर अमरोहा मे भव्यतापूर्वक किया जा रहा है।

अत आपसे अनुरोध है कि आर्य जगत के समाचार आर्ष सामग्री आलेख कविता गीत छन्द मुक्तक तथा विज्ञापन आदि नियमित रूप से जो भी आपको सुविधाजनक हो यथा सामर्थ्य प्रकाशनार्थ प्रेषित कर अनुग्रहीत करते रहे।

कृपया नव सवत्सर एव आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे मगल कामनाए स्वीकार करे।

॥ ओ

सार्वदेशिक आर्य

के तत्वा

गुरुकुल कामडी विश्वविद्यालय की स्थापना के

गुरुकुल शताब्दी अन्त

चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	प० हरबंस लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	विमल वधावन महासम्मेलन संयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मंत्री	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री कुलपति	सुदर्शन शर्मा सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	डॉ० महावीर कुल सचिव	आचार्य यशपाल सभा उप प्रधान

कार्यालय · सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002
दूरभाष (011) 3274771 3260985 E mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com
हरिद्वार कार्यालय महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404 (उत्तरांचल)
दूरभाष (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 4/5 4-2002

ष्ट्रीय सामाजिक एव धार्मिक विचारो के लिए
सार्वदेशिक साप्ताहिक
वार्षिक सदस्यता शुल्क ५० रुपये
आजीवन सदस्यता शुल्क ५०० रुपये
नोट - यह दरें केवल भारत में ही लागू

प्रतिष्ठा मे

महासम्मेलन ... ने के लिए आर्य ... आमन्त्रण

गुरुकुल शताब्दी आर्य म... के अवसर पर २५ से २८ अप्रैल ... चारो दिन राष्ट्रभृत यज्ञ प्रात ८ बजे से ६ बजे तक होगा। जिसमे २५ यज्ञ कुण्डो पर १०० यजमान प्रतिदिन आहुतिया देगे। जिसके उपरान्त प्रवचन और भजनोपदश हुआ करेगे। इस राष्ट्रभृत यज्ञ क ब्रह्मा गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति ओर वैदिक विद्वान परम आदरणीय आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री होगे। यज्ञ के तीनो पहलुओ – दवपूजा सगतिकरण और दान के लिए यथायोग्य आहुति देने मे जो आर्य दम्पति यजमान बनने के इच्छुक हो वे तत्काल अपना नाम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से यज्ञ समिति के सयोजक प्रा० भारत भूषण को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे भेजे। महासम्मेलन के चारो दिवस पर आयोजित यज्ञ मे कुल ४०० यजमान बैठ पाएगे। अत प्रथम प्राप्त सूचना के आधार पर सम्पर्क करन वाले दम्पतियो को यजमान के रूप मे यज्ञवेदी पर बेठने के लिए अधिकृत किया जाएगा।

श्र...

सार्वदेशिक ... न
सदस्य श्री अरूण ...
दु खद देहावसान २ ... लिए
बजे मन्दिर माग स्थित ... ... आयोज ५ अप्रैल गय'। वे ८२ वष क थे। विगत कई वर्षो से राग पीडित हेने पर भी सदैव हसमुख रहकर परिजनो को सुख प्रदान करत थे। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पचकुइया रोड स्थित श्मशान घाट पर हुआ।

सार्वदेशिक सभा की तरफ से श्री विमल वधावन ने उनके निवास पर जाकर ... को आर्यसमाज मन्दिर मार्ग पर हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण आर्यजगत की ओर से श्री अरूण आर्य को सान्त्वना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान हो और परिजनो को इस वियोग का दारूण दु ख सहन करने का सामर्थ्य प्राप्त हो।

गुरुकुल महासम्मेलन में ग्रन्थों तथा प्रचार सामग्री का विमोचन

गुरुकुल शताब्दी अ तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार (२५ से २८ अप्रैल २००२) के विशाल आयोजन के अवसर पर जो विद्वान लेखक या प्रकाशक अपने नए प्रकाशित ग्रन्थो या अन्य प्रचार सामग्री का विमोचन कराना चाहते हो तो उसके ५ सेट विमोचन से एक दिन पूर्व गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे स्थित महासम्मेलन कार्यालय मे अवश्य दे दे। सामग्री का वैदिक सिद्धान्तो के आलोक मे अवलोकन करन के बाद ही यह निश्चय किया जाएगा कि विमोचन किस समय ओर किस अतिथि के द्वारा करवाया जाएगा।

– (विमल वधावन)
महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार महासम्मेलन के बाद
भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयाजन का समापन २८ अप्रैल को होगा। अगल दिन २६ अप्रैल सोमवार को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनो के लिए हरिद्वार तथा आस पास के स्थलो को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक हागे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल महासम्मेलन स्थल से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापिस स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि मे देर रात तक वापिस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा हरिद्वार ऋषिकेश देहरादून और मसूरी के दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त मे से जिस यात्रा मे पजीकरण कराना चाहेगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग पूछताछ केन्द्र स्थापित होगा।

हासी हल्का के हर गाव मे आर्यवीर दल का गठन होगा – शास्त्री

आर्यवीर दल हासी के सक्रिय कार्यकर्ता एव वैदिक विद्वान आचार्यप्रवर प० रामसुफल शास्त्री ने आर्यवीर दल हासी के दसवे वार्षिक उत्सव के दौरान बोलते हुए घोषणा की कि हासी हल्के के हर गाव मे आर्यवीर दल की इकाई का गठन किया जाएगा। जिसका मुख्यालय हासी होगा। श्री शास्त्री जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आज की युवा पीढी दिशाहीन व पथभ्रष्ट के कगार पर खडी है और पुराने आर्यसमाजी धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे है। यदि आर्य वीरो को आगे नहीं लाया जाएगा तो आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल नही बन सकता। यह विज्ञप्ति जारी करते हुए दल के प्रेस सचिव राजेश शर्मा ने बताया कि श्री शास्त्री जी के प्रयास से खाण्डा सीसर खरबला मिलकपुर सिसाय रोहनात आदि कई गाव मे आर्य वीर दल का गठन किया जा चुका है। उन्होने सम्बोधित करते हुए कहा कि अधिक से अधिक आर्य वीर तैयार करके अगले वर्ष आर्य वीर दल का प्रान्तीय सम्मेलन हासी मे करने का प्रयास किया जाएगा।

– मन्त्री आर्यवीर दल हासी

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ५१ १४ अप्रैल से २० अप्रैल २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ चै० शु० २

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अग्निवेश के नेतृत्व में सद्भावना यात्रियों ने आर्यसमाज के प्रधान पर हमला किया !!!

स्वामी अग्निवेश की सदभावना यात्रा गाधरा गुजरात के लिए आज प्रात अमृतसर बम्बई ट्रेन से प्रात ७५५ को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से प्रस्थान कर रही थी तब गुजरात के दगो के लिए गुजरात आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट की प्रतिया बाट रहे अहमदाबाद आर्यसमाज क प्रधान श्री मित्रमेहश आर्य व ओमश कुमार पर स्वामी अग्निवेश के सचिव श्योताज तथा शमसुद इस्लाम व मामचन्द रिवारिया ने बडी निर्ममता पूर्वक हमला बाल दिया। दोनो कार्यकर्ताओ के कपडे फाड डाल गए थप्पड तथा धक्के मारमार कर अपमानित किया गया। स्वामी अग्निवेश ने बडी जोर से चीखे मार कर कहा ये लाग आर०एस०एस० के कार्यकर्ता ह। आर०एस०एस० ने हमारे खिलाफ साजिश की है। अहमदाबाद के कार्यकर्ताओ न बताया कि हमने रिपोर्ट मे अग्निवाण्ड करने वाले मुस्लिमो की निन्दा की एवम उन्हे आई०एस०आई के पाकिस्तानी एजेन्टस बताया उसमे बुरा क्या है ? फिर भी दोनो कार्यकर्ताओ को खूब पीटा गया। प्लेटफार्म पर भगदड मच गई। रेलगाडी क अन्य यात्रिया द्वारा सद्भावना यात्रियो की कडी आलोचना करने पर हमलावर शर्मिन्दा हुए। अनिल आर्य तथा अन्य उपस्थित दिल्ली के आर्यसमाजी लीडरो ने कार्यकर्ताओ को हमलावरो से बचाया तथा पुलिस फरियाद करने से भी रोका।

सदभावना के नाम पर हमला यात्रा कर रह अग्निवेश के इस दल की हम कडी आलोचना कर भत्सना करते हे।

– मित्रमहेश आर्य प्रधान आर्यसमाज अहमदाबाद

महासम्मेलन हेतु स्टाल बुकिंग में परिवर्तन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार म २५ से २८ अप्रैल २००२ क विशाल आयोजन मे पुस्तको तथ धामिक वस्तुआ एव अल्पाहार क स्टालो के बुकिग शुल्क मे निम्न परिवतन किया गया है –

(१) १० x १० क स्टाल का शुल्क २५००/– रु० स घटाकर २०००/– रु० कर दिया गया है।

(२) दो स्टाल लेने वाले प्रतिष्ठानो से ३५००/– रु० शुल्क लिया जाएगा।

जो महानुभाव स्टाल बुक करवाना चाहे वे निर्धारित राशि नकद अथवा ड्राफ्ट द्वारा **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २** के पते पर २० अप्रैल से पूर्व भिजवा दें। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाह वे ३५००/– रु० का ड्राफ्ट भेजे जिसस उन्हे दोना स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

आगामी सम्मेलन अपने आप मे एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमे बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ क आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपन स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बच। आपकी राशि एव आवदन २० अप्रैल स पहले सभा कार्यालय म अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रेल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

इन स्टालो म दो बडी मज दा कुसिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध हागा। तीन तरफ की दीवारे ओर छत टीन की बनी होगी। स्टाल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली म सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डा० महावीर जी से सम्पर्क कर।

– विमल वधावन
महासम्मेलन सयोजक

वानप्रस्थ और सन्यास की दीक्षा लेने वाले महानुभाव सम्पर्क करें

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के विशाल आयोजन के अवसर पर जो महानुभाव वानप्रस्थ अथवा सन्यास आश्रम मे प्रविष्ट होना चाहे वे यथाशीघ्र महासम्मेलन के अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन सयोजक श्री विमल वधावन अथवा यज्ञ समिति के सयोजक डॉ० भारत भूषण से सम्पर्क करे। इस विशाल आयोजन के अवसर पर आश्रम । क कार्यक्रम का ऐतिहासिक महत्व होगा। समूचे विश्व के आर्यो को इससे महान प्रेरणाए मिलेगी। अत [illegible] भावा ने आश्रम परिवर्तन का मन बनाया हो वे इस महासम्मेलन का लाभ उठाते हुए अपने जीवन मे गुर [illegible] ।ब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को इतिहास के रूप मे स्थापित करे।

गुरुकुल कागडी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए रेल किराए में ५० प्रतिशत की छूट

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शमा द्वारा रल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह का लिख पत्र के फलस्वरूप रलव बाड के डायरक्टर श्रीमती मणि आनन्द न अपन पत्र क्रमाक TCII/2066/98/6 दिन क २५ ३ २००२ क द्वारा मुम्बइ कलकत्ता नइ दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चन्नइ सिकन्दराबाद भुवनश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपु बगलार तथ जबलपुर कायालय का सूचित किया ह की २५ स २८ अप्रल २० २ की तिथियो मे गुरुकुल शताब्दी अन्तराष्ट्रीय महासम्मलन हरिद्वार मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियों म द्वितीय श्रणी साधारण आर स्लीपर के किराये मे ५० प्रतिशत छूट के अधिकारी होगे। यह छूट केवल ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध हागी। इस छूट का लाभ किन्हीं ३० दिनो म उठाया जा सकेगा जिसम महासम्मेलन की तिथिया (२५ से २८ अप्रल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०९८५) सार्वदेशिक प्रैस (फोन न० ३२७०५०७ ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६० ७२१४०६० मो० ९८११२२१०८३ ४०५६५७०)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित कर कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है। यह सूचना मिलने पर तत्काल आय यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे।

– विमल वधावन महासम्मेलन सयोजक

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियां अपनी चरम सीमा पर

महासम्मेलन का पूर्व मूल्यांकन

विगत लगभग २ माह से हमार साथ बहुत से आर्य बन्धु कार्यकर्ता पदाधिकारी विद्वान वानप्रस्थी और सन्यासी महानुभाव गुरुकुल कागडी के अतिरिक्त हरिद्वार की अ य सभी सस्थाआ के अधिकारी कमचारी सभी लाग जी जान से जुटे हुए हे। देश के कोन कोने से बडे उत्साह पूवक लागो के हरिद्वार पहुचन की पूर्व सूचनाए प्राप्त हो रही हे। भारत सरकार के रल विभाग से रेल भाडे मे ५० प्रतिशत की छूट का आदेश प्राप्त करने के लिए बहुत कष्टदायक भागदौड करनी पडी। सफलता मिलने पर कष्टो का स्मरण भी नही रहता। गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के आयोजन के पीछे भी कुछ महान ओर पवित्र सकल्प निर्धारित किए गए है जिनकी पूर्ति बशक ईश्वर इच्छा पर ही निभर करती है परन्तु कर्मनिष्ठा की भावना से हमने जो प्रयास प्रारम्भ करने का विचार किया है ओर सार्वदेशिक सभा के निणया के अनुसार उस कर्म क्षेत्र मे कूद पडे हे तो एक शरीरधारी ह न क न न इतनी इच्छा ता अवश्य हे कि य ास प्रिय वयन क पथ पर ना चनत हुए नजर आन लग।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने ४ मार्च १६०२ को गुरुकुल कागडी की स्थापना करते समय हो सकता हो कि यह साचा भी न हो कि यह सस्था अगल १०० वर्षो मे एक सिद्धान्त की तरह प्रसिद्ध हो जाएगी। १६२६ मे स्वामी जी का बलिदान इस सस्था की सवा के लिए उन्हे केवल २४ वर्ष ही दे पाया। भावनाए पवित्र थीं सकल्प पवित्र थे पथ पवित्र था मजिल पवित्र थी और राह पर चलने वाला राहगीर भी शत प्रतिशत पवित्र था। शत प्रतिशत का एक गणित पर आधारित सिद्धान्त है कि यदि भावनाए ओर साधन शत प्रतिशत शुद्ध हो तो सफलता क प्रतिशत मे दुनिया की कोई ताकत एक अक भी कम नही कर सकती। यही सिद्धान्त साक्षात इस गुरुकुल कागडी म हमे देखने को मिला। केवल एक सस्था ही नहीं अपितु सैकडो सस्थाए खडी कर गया वह शुद्धता का सिद्धान्त। १०० वर्षो म लगभग २०० गुरुकुलो की स्थापना सतोषजनक तो है परन्तु देश की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए पर्याप्त नही। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की कन्द्रीय भावना थी शास्त्र म विद्वता शस्त्र म निपुण्ता ईमानदारी सदचरित्र ओर दशभक्ति। गुरुकुल शिक्षा पद्धति इन सब बातो पर ध्यान केन्द्रित करती है परन्तु कहीं न कही ऐसे प्रयास की भी गुजाइश है जो इन गुरुकुलो की अर्थ व्यवस्था को मजबूती दे सके। जैसे आज के युग मे अधिकतर आर्यसमाजे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं उसी प्रकार यदि यही आर्यसमाजे गुरुकुलो की ओर भी अपना ध्यान केन्द्रित कर ता इससे गुरुकुल व्यवस्था को बहुत बडा लाभ पहुचगा। यही सूत्र है जिसने हम इस विशाल आयोजन को आधार बनाकर आर्यसमाज के सगठनात्मक ढाचे की दशा ओर दिशा मे सुधार लाने के लिए प्रेरित किया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि गुरुकुल भक्ति की लौ आर्यो क मन मे और अधिक तीव्र हो।

चार दिन का यह महासम्मेलन हो सकता है आपको कही किसी वक्त कष्टदायक लगे। दिन मे गर्मी का कष्ट रात का मच्छरो का कभी आवास या भोजन की प्राप्ति मे कुछ क्षणो का विलम्ब। परन्तु मन मे प्रेरणाओ के आदान प्रदान का लक्ष्य स्थापित हो तो छाटे मोटे कष्ट स्मरण ही नहीं रहगे। प्रत्यक कष्ट अस्थाई होता है परन्तु प्रेरणाए बहुत बडे काल तक चलती रहती हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी को जितने कष्ट हुए होगे उनका कहीं भी उल्लेख किसी पुस्तक या लेख मे नही मिलता। परन्तु उनकी प्रेरणाए आज सर्व विद्यमान हे।

सम्मेलन के आयोजन मे आयोजको को यदि कोई कष्ट हो तो आयोजन की सफलता को देखकर वे कष्ट भूल जाते हैं। इसी प्रकार महासम्मेलन मे पधारने वाले महानुभावो को यदि कोइ कष्ट हो तो उन्हे भी विस्मृत कर देना चाहिए। क्योकि स्मृति तो शुभ प्रेरणाओ की रखनी है। आपको कोई भी कष्ट हो उससे पूर्व हमारी ईश्वर से प्रार्थना है और प्रयास भी है कि वही कष्ट सर्व प्रथम हमारे शरीर पर आए। पहले हमे उसका अनुभव हो तभी हम प्रयास कर पाएगे कि आपको उस कष्ट का अनुभव न्यून हो। विगत सप्ताह हरिद्वार मे मैंने पैदल १० कि०मी० की यात्रा की। उददेश्य केवल अनुभव प्राप्त करने का था। पौने दो घण्टे का समय लगा। शोभायात्रा मे अनुमान है साढे ४ घण्टे का समय लगेगा। अधिक से अधिक लोगो के लिए विशेष रूप से वृद्ध महानुभावो के लिए वाहनो का प्रबन्ध भी होगा। युवा और उत्साही व्यक्ति पैदल भी नाचते गाते जाएगे। पैदल चलने वाले यात्री चप्पले डालकर न चल जुराब के साथ जूता पहने तो अच्छा होगा।

भाजन की बहुत बडी व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया है। यदि सब लोग स्वअनुशासन और सयम के बधन मे चलेगे तो किसी प्रकार के कष्ट का स्थान नही होगा। प्रात ८.३० बजे से खाना पीना प्रारम्भ होगा और रात्रि के ११ बजे तक चलता रहेगा। भोजन की व्यवस्था बेशक निशुल्क है परन्तु उसके मूल मे आपके द्वारा पूर्व मे दिया गया या भविष्य मे दिया जाने वाल' दान ही नीव की तरह काम करेगा। दान राशि स्वीकार करने का प्रबन्ध भोजनालय मे ही रहेगा। भोजन की व्यवस्था मे मु०नगर के आय नेता श्री अरविन्द कुमार और उनके सहयोग के लिए आयवीरो की टोली बडे प्रेम और श्रद्धा से आपकी सेवा मे जुटेगी ऐसा प्रयास किया गया है।

आवास को लेकर भी एक बात विनम्र निवेदन के साथ स्पष्ट करना चाहता हू कि हर व्यक्ति को पलग चारपाई बिस्तर नही मिलेगा। इसीलिए इस कष्ट का अनुभव भी पहले स्वय ही लने का प्रयास कर रहा हू। महासम्मेलन से लगभग एक माह पूर्व ही हरिद्वार मे रहू या दिल्ली मे रहू मेने स्वय ही जमीन पर दरी डालकर सोना प्रारम्भ कर दिया है। वैसे भी इस सम्मेलन को एक विशाल यज्ञ की भावना से आयोजित किया जा रहा है जिसकी प्रेरणाओ की सुगध लम्बे समय तक व्याप्त रहे ऐसी अभिलाषा है। इस विशाल यज्ञ के प्रमुख सेवक को तो जमीन पर सोना ही उचित है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी आर्यजनो की विशेष श्रद्धा के पात्र हे। चारो दिनो मे चलने वाले प्रातकालीन यज्ञ के वे ब्रह्मा भी है। इस नाते उन्होने भी एक दिन अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आज से मैं भी पलग छोड कर चटाई पर सोया करूगा।

मेरी बारम्बार आप सब लोगो से यही विनती है कि अधिक स अधिक सख्या मे इस महासम्मेलन मे तीर्थ की भावना से पधारे। मन मे देश और धर्म के लिए कुछ विशेष प्रयास करने के उत्साह का निर्माण करे। अनुशासन मे बधे रहकर आर्यसमाज की एकता का ध्वज ऊचा करने का प्रयास करे। जो महानुभाव सम्मेलन मे न भी पधार सके तो वे प्रस्तावो ओर उदबोधनो के आधार पर स्वय ही अपने लिए दिशा का निर्धारण करे और आर्यसमाज की दशा मे सुधार लाने के लिए प्रयास करे।

— *विमल वधावन*, महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार पहुंचने वाले यात्री

अपने वाहनों पर बैनर आदि अवश्य लगाएं

सुजानगढ राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री सत्यनारायण लाहोटी जी ने बडी सख्या म आर्यजनो को हरिद्वार मे आयोजित गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे चलने के लिए प्रेरित किया है सुजानगढ मे आर्य महानुभाव समूह बनाकर धर्मयात्रा के रूप म हरिद्वार पहुचगे इसी प्रकार से तमिलनाडु, महाराष्ट्र गुजरात मध्य प्रदेश उडीसा आदि क्षेत्रो से भी भारी सख्या मे आर्यजनो के झुण्ड के झुण्ड हरिद्वार पहुचने की सूचनाए प्राप्त हो रही है। इस प्रकार समूहो के रूप मे आने वाले आर्य महानुभावो से हमारा विशेष निवेदन है कि चाहे ५-१० व्यक्तियो का ही समूह क्यो न हो अपने लिए एक बैनर

गरा मर नगर अमराहा पटना कालकत्ता हदराबाद कनाटक अवश्य बनवाए जिसका प्रारूप निम्न प्रकार हो -

हरिद्वार चलो — हरिद्वार चलो

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

२५ से २८ अप्रैल, २००२

निवेदक आर्यसमाज — — — — — — —

— — — — — — —

इस प्रकार के बैनर अपनी बसो या रेलो के बाहर टाग कर रखे यह प्रचार का अपना एक माध्यम है जो दूरगामी प्रभाव डालता है।

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

श्रीरांम का बहुआयामी व्यक्तित्व

मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का स्मरण आते ही त्रैतायुग की विशेषताओ का ध्यान आ जाता है। काल चक्र का इतिहास सदा से चलता आया है सम्प्रति चल रहा है और प्रलय आने तक चलता रहेगा। प्रामाणिक तथ्यो के अनुसार रामचन्द्र जी को आज से ८६०००० लाख वर्ष हो चुके हैं। हमारी कालगणना सतयुग (१७ २८००० वर्ष) त्रैतायुग (१२ ६६००० वर्ष) द्वापर युग (८६४ ००० वर्ष) तथा कलियुग (८ ३२ ००० वर्ष) कुलयोग ४३ २० ००० वर्ष माने गए हैं। पश्चिमी विद्वानो ने अपने भौतिकी ज्ञान के अनुसार काल का वर्गीकरण इस प्रकार किया है – १ पाषाणकाल २० ००० ई०पूर्व (घुमन्नू, शिकारी जीवन) २ नव पाषाण काल ८ ००० वर्ष ई० पूर्व ३ ताम्रयुग ४ ००० ई०पूर्व (धातु की खोज कृषि आधारित नगरो की बसाहट ४ कास्ययुग ३ ००० ई० पूर्व (भारतीय सभ्यता का विकास) तथा अतिम लौह युग – १८०० ई० पूर्व (आवागमन व्यापारिक क्रान्ति तथा पुराने युग की समाप्ति।

पश्चिमी सम्यता के नापने का मानदड ईसा की जन्म तिथि है जब कि वैदिकी वर्षो को जानने का मापदण्ड सृष्टि उत्पत्ति से माना गया है। भारतीय गणित ज्योतिष के अनुसार – सावन – १६८४४५६००३ कल्प – १६७२६४६१०४ मानव १६५५८८५,१०४ तथा कलि ५१०४ वर्ष है। इन तथ्यो से स्पष्ट हो जाता है कि पश्चिमी जगत के विद्वानो का कालगणना का मापदण्ड हम वेदिको से कितना पिछडा हुआ है। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि – जिन दिनो हमारे यहा उपनिशदकाल मे ऋषि मुनिगण उच्चकोटि का चिन्तन कर रहे थे उन दिनो पश्चिमी जगत के विद्वानो के पूर्वज जगली अवस्था मे बन्दरो के समान वृक्षो की डालियो पर उछल कूद रहे थे। भारतीय आर्य ऋषिगण जब यूरोप आदि होते हुए वहा पहुचे तब वहा सभ्यता और सस्कृति सम्बन्धी किरणों का आभास उन्हे जगलियो को हुआ था। हमारे आर्यपूर्वज वहीं बस गये और वही रहकर ज्ञान का प्रचार प्रसार किया। विश्व को सस्कृति और सम्यता का ज्ञान देने वाला भारत (भा=प्रकाश रत=प्रसारक) ही है।

जयशकर प्रसाद के शब्दो मे – हम कहीं बाहर से नहीं आये थे अर्थात भारतीय आर्य ही अपने नाम के अनुसार ज्ञान भक्ति और गमन निरन्तर आगे बढते गए। हमारे यहा ही नालन्दा और तक्षशिला के महान शिक्षालयो मे पश्चिमी जगत के देशो के लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

इन तीनो प्रकारो की कालगणना प्रस्तुत करने का एकमात्र कारण यह है कि अनेक इतिहासकार या तो राम के जन्म को मानते ही नही है यदि स्वीकार करते हैं तो उन्हे ६ या ७ हजार वर्ष पूर्व का ही मानते हैं। कतिपय विद्वान राम रावण का युद्ध को अदयतन रागात्मक प्रवृत्तियो का सघर्ष मानकर सन्तोष कर लेते है। ऐसे विद्वान हीन भावनाओ से ग्रसित दिखाई देते है।

हा तो चर्चा चल रही थी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की हमने उन्हे भगवान कहा है परन्तु भगवान की यह परिभाषा है –

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसा श्रिय।

ज्ञान वैराग्य योश्चैव षण्णा भग इतिरणा अर्थात ऐश्वर्य वीर्य (पराक्रम) यश श्री ज्ञान तथा वैराग्य इन ६ गुणो से युक्त (अलकृत) मनुष्य ही भग+वान कहलाता है। यह पद स्थापना ऐस गुण धारियो को समाज प्रदान करता हे। परमात्मा और भगवान इन दो शब्दो मे आकाश – पाताल का अन्तर होता हे। परमात्मा सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान तथा न्यायकारी और दयालु होता है। जबकि भगवान जीवात्मा होने क कारण अल्पज्ञ अल्पसामर्थ्यवाला रज–वीय उत्पन्न जरामरण वाला तथा एक वेशीय होता है।

हमारे आराध्य मर्यादा पुरुषात्तम भगवान राम अनेक लोकिक गुणा से परिपूर्ण थे। उनके सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने पर निम्न लिखित विशषताए इस प्रकार हे।

१ छोटो का प्रोत्साहन – बाल्यकाल मे एक बार राम और भरत कन्दुक क्रीडा कर रहे थे। खेल अन्तिमदोर मे था विजय श्री राम के पक्ष मे थी। गेद राम क पाले मे थी किन्तु जीतने की स्थिति मे भी राम ने गेद भरत की ओर फैक कर उन्हे विजयी घोषित करा दिया। यह थी अपने अनुजो के प्रति उदार भावनाए।

२ किशोरावस्था – रामसदैव खतरा को जानबूझ कर लेते थ। विश्वामित्र जी ने जब राजा दशरथ से अपने किशोर बालको को वन मे यज्ञो की रक्षा के लिए तथा राक्षसो के हनन के लिए मागा तो बूढे दशरथ का अपनी सन्तानो क प्रति माह उमड आया। पहले तो उन्होने बहुत सकोच किया किन्तु राम के आग्रह पर बच्चो को विश्वामित्र के साथ कर दिये। बाल्मीकि रामायण तथा रामचरित मानस के बाल्यकाण्ड मे उन किशोरो के द्वारा आश्चर्य मे डाल देने वाले कार्य इसके लिए पर्याप्त प्रमाण है कि राम लक्ष्मण न किशोरावस्था मे ही जानबूझ कर अनेक खतर (चैलेन्ज) मोल लिये और उन पर विजय श्री प्राप्त की। यह उनके चरित्र की विशेषता थी।

३ यद्यपि बहु विवाह प्रथा परिवार मे बडे बडे कलह उत्पन्न कर देती है परन्तु राम ने अपनी मेधावृत्ति के अनुसार दूरगामी परिणामो को देखते हुए अत्यन्त दूरदर्शितता का परिचय दिया। वे अपनी विमाता कैकेयी का सम्मान जन्मदायी माता कौशल्या से भी अधिक करते थे।

शेष भाग पृष्ठ १० प

वैदिक सिद्धान्तानुसार आर्यसमाज 'मूर्तिपूजा' को बिल्कुल नहीं मानता किन्तु अपने पूर्वज महापुरुषो तथा उनके स्थानो को प्रेरणा केन्द्र मानता है। कृष्ण की मथुरा और दयानन्द का टकारा यदि हमारी श्रद्धा का केन्द्र है तो राम की 'अयोध्या' हमारी पूज्य एव श्रेष्ठ नगरी है। इसकी स्मृति को बनाये रखना हम एक अरब भारतीयो का पुनीत कर्त्तव्य है। यह पुनीतता अभी भी अति प्रासगिक है, किन्तु ध्यान रहे अयोध्या की राम जन्मभूमि की रक्षा इतनी अधिक महगी न पड जाये कि देश की सम्प्रभुता, अखण्डता और स्वतत्रता ही विपत्तियो से घिर जाये।

मर्यादित आचरण तुम्हारे ....

– राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

सूर्य वश के प्रखर सूर्य बन बिसराया तुमने आलोक
ज्योतित हुई धरणि यह सारी वसुन्धरा हो उठी विशोक
दैहिक दैविक भौतिक तापो से यह जगती मुक्त हुई
दिव्य तुम्हारे सत्कर्मो से मानवता हो उठी अशोक।

वैदिक पथ पर तुमन रघुपति ! सारा यह ससार चलाया
अपन शुचि उत्कृष्ट गुणो से आर्य बने जग आय बनाया
श्रुति पथ पर तुमने हे राघव ! खीची मर्यादा की रेखा
वेदो की पावन गरिमा से सारा महिमण्डल सरसाया।

बढे सुपथ पर वे सारे जन जो थे अब तक अति अभिशप्त
सुखी हुए वे सारे प्राणी जो थे अब तक अति सतप्त
निर्मलता की समरसता की पावन धार बहायी तुमने
अभिषिक्त हो गए अवनि कण जो थे यहा अभी भी तप्त।

दहल उठी सब वृत्ति दानवी दख तुम्हारा शर सधान
जन जन के हित ही सारा था वेदाधारित अनुसधान
डूबे अति हर्षातिरेक मे कण कण इस पृथ्वी तल का
किया बिनिर्मित तुमन अनुपम मगलकारी भव्य विधान।

रावण सहित सभी असुरो का वध करके भू किया पुनीत
मिटा कटुक क्रन्दन मानव का जगा जनो मे भाव विनीत
असुर विहीन मही करने का लिया तुम्ही ने सत्सकल्प
अपराजेय बने तुम निर्भय लिए स्वमन को भी तुम जीत।

मर्यादित आचरण तुम्हारे बने धरा के है शुचि गौरव
त्याग तपो से ज्ञान शक्ति से बने यशस्वी तेजस्वी नव
अनय अभाव तथा अज्ञानो को जड से ही नष्ट किया
बिखरायी थी रश्मि मनुजता की धरती पर तुमने अभिनव।।

– मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

कैसे जाना जाता है – आचार्यों का अभिप्राय ?

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

गताक से आगे

ऋत्विक क सम्बन्ध मे भी कुछ लोगो को आपत्ति हे कि ऋत्विक वरण करते समय रक्षा बाध कर तिलक लगाकर पुरोहित वरण करना पौराणिक विधि है। अब प्रश्न हे कि रक्षा कलावा क्यो बाधा जाता है ? और तिलक क्यो किया जाता है ? ऋषि दयानन्द ने यज्ञोपवीत को विद्या धर्म आर्यो की सस्कृति का चिह्न माना है। क्या इस चिह्न के बिना कोई विद्या नही पढ सकता या नही पढनी चाहिए ? ता ऋषि ने लिखा कि यज्ञोपवीत सस्कार अवश्य करना चाहिए। जिन विद्वानो ने वरण के समय रक्षा कलावा के बधन का यज्ञ मे अपनाया उनका भी उददेश्य ऋषि के प्रतिकूल नहीं है। क्योकि वरण करने वाला यजमान ऋत्विक का यज्ञ सम्पादनार्थ ब्रह्मबन्ध करता है कि आप मेरा यज्ञ सम्पन्न कराये। ऋत्विक भी यजमान को यज्ञ करने हेतु व्रतबन्ध करता है। तिलक भी एक दूसरे का अपना दायित्व निभाने (निर्वाह) करन के लिए सकेत करता हे। राजाओ का राजतिलक राज्य के दायित्व को चलान के लिए ही तो किया जाता है कि उनको इसके चलाने के दायित्व का बोध रहे। इसी प्रकार वरण क समय भी रक्षा सूत्र का बाधना तिलक का करना सम्मान एव दायित्व बोध का बोधक है पौराणिकता का नहीं। यदि इस क्रिया को पोराण्कि भी करते है तो क्या यह क्रिया उनके करन मात्र से दूषित है ? यदि यही हेतु है फिर तो वेद भी दूषित हो गए क्योकि पौराणिक उसे पढते है। यही क्यो ? आचमनादि भी विकृत हुए क्योकि पौराणिक भी उन्हे करते है। इस प्रकार का विचार कितना हास्यास्पद है यह स्वय विज्ञजन समझते होगे। अरे ! पौराणिक अपनी सन्ध्या मे केशवाय नम माधवाय नम नारायणाय नम आदि से आचमन करते हैं। ऋषि ने शन्नो देवी से इसका विधान किया। पौराणिक – येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबल। तेन त्वा प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल – से रक्षाबन्धन करते हैं। आर्य विद्वन –

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

यजुर्वेद – १६/३०

वेदमन्त्र बोलकर व्रत ग्रहण करने के प्रतीक रूप मे रक्षा बधवाते हैं। भावनाओ और अर्थो मे मौलिक भेद है। ऋषि गगा को श्रेष्ठ मानते हैं शुद्ध निर्मल जल की दृष्टि से पौराणिक गगा को श्रेष्ठ मानते है पापनाशिनी की दृष्टि से। यह दृष्टिभेद ही तो वैदिक और पौराणिक धर्म मे वैशिष्टय उत्पन्न करता है अन्यथा क्रियाओ मे कुछ विशिष्ट स्थला को छोडकर कोइ मौलिक भेद नही।

ऋषि यज्ञ हवन स जल वायु वृष्टि वातावरण की शुद्धि मानते है ओर पौराणिक अदृष्टोत्पत्ति। करते दोनो ही यज्ञ है किन्तु यज्ञ मे भेद है। वह भेद है – दृष्टिकोण का उददश्य का। विधिपूर्वक लोकाचार एव शिष्ट परम्परा के अनुसार शिष्ट कर्म करना सम्मान एव आदर का सूचक है पौराणिकता का नही। अन्यथा यज्ञवेदी को सुभूषित करना पल्लव तोरण पुष्प से यज्ञशाला को सजाना सब कुछ पौराणिक हो जाएगा क्योकि पौराणिक यह सब कुछ आर्यसमाज की स्थापना के पहले से ही करते आ रहे हैं। क्या यह सब छोड देना चाहिए ? यह स्थालीपुलाक न्याय से मैने कुछ विषयो पर ऋषि के अभिप्राय के अनुकूल विचार प्रस्तुत किए।

अब हम कुछ दूसरे विषय की ओर पाठको का ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं जिसकी ओर अपने सेवानिवृत्त विद्वानो का ध्यान नहीं जाता। ऋषि दयानन्द ने सस्कार विधि के वानप्रस्थाश्रम सस्कार मे लिखा –

"इसलिए श्रद्धापूर्वक ब्रह्मचर्य गृहाश्रम का अनुष्ठान करक वानप्रस्थाश्रम अवश्य करना चाहिए।

अपन आर्य विद्वानो का ध्यान ऋषि के इस स्पष्ट आदेश की आर क्यो नहीं जाता ये तो वे ही जाने किन्तु मेरी दृष्टि मे यदि चला जाता तो आर्यसमाज का ही क्यो भारत का भाग्य बदल जाता। लोग एक नए युग की स्थिति मे होते। वानप्रस्थाश्रम का लाभ एव उसके महत्व का बोध ऋषि के जीवन की एक घटना से परिलक्षित होता है –

एक दिन एक मनुष्य स्वामी जी के दर्शनो के लिए आया। स्वामी जी ने पूछा कि तुम कौन हो ? उत्तर दिया – ब्राह्मण। स्वामी जी ने पूछा – क्या काम करते हो? कहा कि पहले मै सरकारी नौकर था अब पेशन पाता हू। स्वामी जी ने कहा कि कुछ सस्कृत भी जानते हो ? उसने कहा कि अपना साधारण क्रियाकलाप जानता हू। तब ऋषि ने कहा – तुम उपदेश क्यो नहीं करते ? उसने कहा – उपदेश क्योकर करू ? यहा दिन रात लडके–बालो की चिन्ता मे पडा रहता हू। स्वामी जी ने कहा – अब तुम्हारी चिन्ता करना सर्वथा मूर्खता है। तुम्हे पेशन मिलती है वह तुम्हारे घर के पालन के लिए पर्याप्त है। बस अब तुम ब्राह्मण देश मे उत्पन्न हुए हो तुम्हारे पूर्वज जगद्गुरु कहलाते थे। तुम्हे उचित है कि अब तुम जगत के उपकार के लिए कमर कस लो। तुम कोल भीलो के देश में चले जाओ और उनको ईसाई होने से रोको। किसी प्रकार से जेसे तुम्हारा चित्त चाहे उनको तुम एक ईश्वर की पूजा सिखलाओ या कोई जाप बताओ। उन्हे क्रीस्तान (क्रिश्चियन) होने से बचाओ।"

महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र लेखराम

आज आर्यसमाज मे सैकडो नही सहस्रो पेशनर सुयोग्य विद्वान और कर्तव्यनिष्ठ धर्मपरायण व्यक्ति है। यदि पूर्व समय मे उस ब्राह्मण ने ऋषि की बात अनसुनी कर दी तो क्या बात है ? यदि ये वर्तमान ऋषिभक्त विद्वान ऋषि की बात पर आचरण करे तो अनेक सस्थाओ के साथ साथ ही आर्यसमाज का पूर्णरूपेण कायाकल्प हो जाएगा। किन्तु हमारे इन विद्वानो का ध्यान उस ओर नहीं जाता। ध्यान तो ब्रह्मा बनने की ओर या स्विष्टकृत आहुति की ओर जाता है कि यह भात धृत की हो या अन्य किसी और की ? ये विद्वान यह भी नही सोचते कि जब हिन्दू (आर्य) नहीं रहेगे तो ये सप्तपदी प्रदक्षिणा कहा रहेगी ? यहा अनेक आर्य विद्वानो की महती ऊर्जा वरवधू को वाम दक्षिण बैठाने जल छिडकाने ब्रह्म–विष्णु के बनने बनाने के निर्णय मे विनष्ट हो रही है। उस तेजस्विनी ऊजा का सदुपयोग यदि समाज एव राष्ट्र के निर्माण मे किया जाता तो विश्व का कितना कल्याण होता। हमारे इन विद्वानो को इतना सोचने विचारने का समय ही कहा ? यहा – घट भित्वा पट छित्वा – की स्पर्धा लगी हुई है। इससे मुक्त हो तो कुछ समाज राष्ट्र के बारे मे सोचे। किसी विद्वान ने ऐसे ही विद्वान रूपी मणियो के सम्बन्ध मे कितना सुन्दर लिखा है –

कनकभूषणसग्रहपोचितो यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते।
स विरोति न चापि न शोभते भवति योजयितुर्वचनीयता।।

यदि सुवर्णाभूषण मे जडी जाने वाली मणि को कोई रागे के आभूषण में जड दे तो वह मणि न शब्द करती है न शोभा हीं प्राप्त करती है। इससे रागे मे जडने वाले की निन्दा ही प्रकट होती है। परन्तु यहा तो बात ही विचित्र हे – मणिया स्वय स्वर्णाभूषण को छोड रागे के आभूषण मे जाकर विराजमान हो जाती है। विद्वदवृन्द इस पर विचार करे। समय समय पर कुछ इसी प्रकार के लोग नयी नयी बातें सोचते रहते हैं।

एक बार आर्यसमाज मे विशेष समूह के लोगो ने शोर मचाया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान सन्यासी ही होना चाहिए। क्यों ? इसका कोई समुचित उत्तर शोरकर्ताओ के पास नहीं था। बस उस समय जो विरोध करने का अनुकूल उपाय सूझा उसी को लेकर शोर मचाना शुरू कर दिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की अर्हता के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सविधान मे अवश्य उल्लेख होगा। जो व्यक्ति उस सविधान की कसौटी पर सन्यासी गृहस्थ वानप्रस्थी ब्रह्मचारी कोई भी हो प्रधान बन सकता हे। जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया होगा। जैसा कि ज्ञात होता है कि १६०८ मे उसका गठन किया गया था उस समय अनेक बुद्धिमान मनीषी इस सगठन को खडा करने मे लगे हुए थे। उन्होने इसके प्रधान पद की अर्हता के बारे मे भी बहुत छानबीन की होगी। उसके पश्चात ही इसका सविधान बनाया होगा। उन्होने यह ध्यान रखा होगा कि सर्वथा सुयोग्य व्यक्ति ही इस शिरोमणि सभा का प्रधान बने जिससे इसकी गरिमा एव महिमा सुरक्षित रहे। परन्तु विघ्न–सन्तोषी लोगो को विघ्न उत्पन्न करना ही है। उन्हे समाज की लाभ हानि से कोई सम्बन्ध नहीं क्योकि अर्थी दोष न पश्यति"।

सन १६३५ मे ६ जुलाई को हैदराबाद मे मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हो रहा था। आर्यसमाज की ओर से थे – प० बुद्धदेव विद्यालकार एव उनके सहयोगी। पौराणिक पक्ष से थे – प० माधवाचार्य एव उनके सहयोगी। शास्त्रार्थ के समय माधवाचार्य ने एक पुस्तक निकाली जिसमे ऋषि दयानन्द का लघु चित्र था। उन्होने कहा कि आप इस पर पाव धरे तो हम जाने कि आर्यसमाजी मूर्तिपजा नहीं करते। प० बुद्धदेव जी ने कहा – यह मेरे गुरुदेव का चित्र है। मैं इसका सम्मान करता हू, पूजा अर्चना नहीं। माधवाचार्य ने कहा – यदि आप चित्र पर लात मारे तो मैं एक रूपया आपको दूगा और उन्होने रूपया निकाला। प० बुद्धदेव जी ने कहा – मैं उस रूपये पर लात मारता हू। माधवाचार्य ने दस रूपये और निकाल कर कहा – लीजिए मैं अब दस रूपये और दे रहा हू, ग्यारह रूपये हो गये। प० बुद्धदेव ने कहा कि ११ की सख्या तो आप पौराणिको को ही मुबारक हो। इस प्रकार बात चलती रही और माधवाचार्य का २० कला का समय समाप्त हो गया। वहा प्रत्येक व्यक्ति को अपना पक्ष रखने के लिए २० कला (मिनट) मिलते थे।

प० बुद्धदेव जी अपने समय में चित्र सहित पुस्तक पर खडे होकर बीस कला तक मूर्तिपूजा के विरोध में बोलते रहे। पौराणिक इस घटना से अवाक एव हतप्रद होकर अपने को पराजित अनुभव करने लगे। उन्होंने अपने पराजय को छिपाने के लिए सामान्य जनता को भडकाने हेतु शोर मचाना शुरू कर दिया कि प० बुद्धदेव ने ऋषि दयानन्द के चित्र के ऊपर जूता मारा है।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

रामनवमी पर विशेष

भारतीय साहित्य में रामकथा की व्यापकता

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय सस्कृति के प्राण तत्व है। शताब्दियो से वे इस देश के जन जीवन एव मन प्राणो मे इस प्रकार घुल मिल गए हैं कि लाख चेष्टा करने पर भी उन्हे भारतीय मानस से पृथक नहीं किया जा सकता। राम के जीवन की ही भाति राम की कथा भी इस देश के एक किनारे से दूसरे तक सर्वत्र प्रसरित है। यो तो वेदो मे राम सीता तथा दशरथ आदि शब्द यत्र तत्र आये हैं किन्तु प्रसिद्ध राम कथा के पात्रो से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। वेदो मे 'सीता शब्द हल की फाल के लिए प्रयुक्त हुआ है और अथर्ववेद के एक मत्र मे आया अयोध्या शब्द मानव शरीर का ही वाचक है जिसे देवताओ की अजेयपुरी कहा गया है। राम कथा का प्रथम लेखन करने वाले महर्षि वाल्मीकि ही थे जिन्होने आर्य जाति के लोकोत्तर आदर्श का चित्रण करने के लिए इस महाकाव्य रामायण की रचना की और स्वय रामकथा के बारे मे लिखा –

यावत् स्थास्यन्ति गिरय सरितश्च महीतले।
तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

अर्थात जब तक इस धरती पर पर्वत और नदिया रहेगी तब तक राम की कथा का भी लोक मे प्रचार रहेगा। रामायण सस्कृत का वह महाकाव्य है जिसके आधार पर अगे चल कर साहित्य शास्त्रियो ने महाकाव्य के लक्षणो का निर्धारण किया। रामायण मे श्रृगार वीर करूण आदि सभी रस यथाप्रसग आये हैं। इस काव्य की उत्पत्ति के मूल मे एक हृदयदावक घटना है जिसने कवि के हृदय मे अनायास करूणा के भाव को जन्म दिया था।

एक दिन जनशून्य अरण्य के एकान्त मे विचरण करते हुए महर्षि बाल्मीकि ने एक वृक्ष पर क्रौंच पक्षी के एक जोडे को प्रणय क्रीडा मे रत देखा। उसी क्षण एक बहेलिये ने तीर चलाकर जोडे मे से एक पक्षी को बींध कर धरती पर गिरा दिया तो इस दृश्य को देखकर महाकवि बाल्मीकि की करुणा विचलित वाणी निम्न श्लोक मे प्रकट हुई –

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगम शाश्वती समा।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।।

हे निष्ठुर व्याध ! इस ससार मे तुम्हे कभी शाश्वत प्रतिष्ठा नही मिलेगी क्योकि तुमने काममोहित क्रौंच को इस निष्ठुरता से मार डाला है। ऋषि के मुह से यह श्लोक तो बिना प्रयास के ही फूट पडा था। तत्काल बाद ही उन्हे यह आभास हुआ कि उनके मुख से निकली यह वाक्य रचना विशिष्ट पाद व्यवस्था लिए है जिसे आगे चलकर साहित्य शास्त्रियो ने अनुष्टय छद का नाम दिया। वस्तुत कवि के मन की पीडा (शोक) ही श्लोक का रूप लेकर अभिव्यक्त हुआ था – शोक श्लोकत्वमागत ।

आगे चलकर वाल्मीकि को रामकथा का विस्तृत परिचय तमसा नदी के किनारे विचरण करते समय महर्षि नारद ने दिया तथा उन्हें लोकोत्तर महापुरुष राम की गौरव गाथा को काव्य बद्ध करने की प्रेरणा भी दी फलत सप्तकाण्डात्मक आदि काव्य (रामायण) का जन्म हुआ। अनेक विद्वानो के अनुसार रामायण की समाप्ति तो युद्ध काण्ड पर ही हो गई है तथा उत्तर काण्ड बाद मे जोडा गया है। उसमे एक प्रमुख हेतु यह है कि युद्धकाण्ड के अन्त मे ही ग्रन्थ की महिमासूचक फलश्रुति कही गई है। रामायण के विशिष्ट अध्येता जर्मन विद्वान हर्मन जाकोबी का भी यही मत है। इस कथन को यदि स्वीकार कर लिया जाये तो सीता को पुन वन मे भेजने तथा राम द्वारा तपस्या रत शूद्र तपस्वी शम्बूक को मारने जैसी घटनाओ की अविश्वसनीयता सिद्ध हो जाती है। रामायण के अद्भुत लोकप्रियता मिली। इस पर लिखी गई टीकाओ की सख्या लगभग ३० है। इसी कथा के आधार पर अद्वैत वेदान्त का ग्रन्थ योगवासिष्ठ लिखा गया। यह राम और महर्षि वसिष्ठ के सवाद के रूप मे है जिसमे अद्वैतवाद की पुष्टि की गई है। ब्रह्माण्ड पुराण मे अध्यात्म रामायण एक पृथक प्रकरण है जिसमे राम कथा की आध्यात्मिक व्याख्या तथा अद्वैतवादी दर्शन को पुष्ट किया गया है। रामचरितमानस पर भी अध्यात्म रामायण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

रामायण की सहज स्वाभाविक तथा इतिहास सम्मत कथा मे अदभुत रस का समावेश करने के विचार से अद्भुत रामायण लिखी गई। आनन्द रामायण मे राम को परात्पर ब्रह्म मान कर उनकी उपासना पर बल दिया गया। भुशुण्डि रामायण की रचना उस काल मे हुइ जब राधाकृष्ण के परकीय प्रेम सम्बन्धो न रामभक्ति धारा के कवियो को भी प्रभावित किया तथा रामकथा को अधिकाधिक श्रृगार पूर्ण बनाया गया। इसी रामायण मे चित्रकूट निवास के समय राम का गोपियो से क्रीडा विलास चित्रित किया गया है। आगे चलकर हिन्दी के रामकाव्य मे भी रसिक भक्ति का समावेश हुआ जिसकी तीखी आलोचना प० रामचन्द्र शुक्ल ने की है तथा सीता जी की सपत्नियो की कल्पना करने वाले इन कवियो को आडे हाथो लिया है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है राम दशरथ सीता अयोध्या आदि पद वेदो मे यत्र तत्र आये है किन्तु ये प्रसिद्ध रामकथा से सम्बन्ध नहीं रखते। सीता शब्द कृषि विधायक मत्रो मे आता है जब कि अयोध्या इक्ष्वाकु राजधानी के रूप मे वर्णित न होकर आठ चक्रो और नव द्वारो वाला यह मानव शरीर ही है जिसमे जीवात्मा तथा परमात्मा का निवास है। किन्तु कालान्तर मे वेदो मे रामकथा के पात्रो के नामो को देखकर शब्द साम्य के आधार पर नीलकण्ठ ने मत्र रामायण की रचना की और ऋग्वेद के मत्रो को क्रमबद्ध कर उनके आधार पर वेद मत्रो से रामकथा को सिद्ध किया। यह प्रयास तो दूर की कौडी लाने के समान ही था क्योकि इससे न तो वेदो की गौरव वृद्धि ही होती है और न रामकथा का यश बढता है। यह तो वैसा ही प्रयास है जैसे ईशावास्यम इस मत्र मे ईशा शब्द को कोई ईसा मसीह के अर्थ मे ले। नीलकण्ठ का यह विचित्र प्रयास मत्र भागवत नामक ग्रन्थ की रचना मे भी दिखाई देता है जहा उसने वेद मत्रो को लेकर भागवत वर्णित कृष्णकथा के सूत्रो की तलाश की। वेदो मे कतिपय स्थानो पर कृष्ण अर्जुन राधा रेवती आदि शब्द तो आये हैं किन्तु ये कृष्ण कथा के पौराणिक पात्रो के वाचक नहीं है।

रामायण की कथा ने न केवल आर्य धर्मावलम्बी धर्मप्राण लोगो के जीवन तथा आदर्शों को ही प्रभावित किया वेदो मे आस्था न रखने वाले जैन तथा बौद्ध आदि श्रमण परम्परा वाले धर्मो मे भी इस कथा को मान्यता मिली। हिन्दू धर्म मे प्रचलित अठारह पुराणो की भाति जैनाचार्यो ने भी पुराणो की रचना की जिनमे ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त तीर्थकरो के लोकोत्तर जीवन प्रसगो का चित्रण हुआ हैं इन जैन पुराणो मे यत्र तत्र राम तथा कृष्ण की कथाए भी आई हैं। जैन परम्परा मे नेमिनाथ को कृष्ण का चचेरा भाई बतलाया गया है और अपने जीवन से अन्तिम क्षणो मे कृष्ण द्वारा जैन धर्म को स्वीकार करने की बात कही गई है। विमलसूरि काव्य पत्रम चरित्र बाल्मीकीय रामायण की कथा का ही अनुसरण करता है जबकि गुणभद्र लिखित उत्तर पुराण मे वर्णित रामकथा उससे भिन्न हे। सस्कृत व्याकरण शास्त्र सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन के प्रणेता हेमचन्द्र सूरि ने जैन रामायण लिखी। इसमे रामकथा के प्रकृत रूप को इतना विकृत कर दिया गया जिससे राम के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले लोगो को सदा शिकायत रही। जैन परम्परा मे प्रचलित रामकथा मे सीता को रावण की पुत्री बताया गया है जो उसकी पत्नी मन्दोदरी से पैदा हुई थी। इस रामकथा को परिवर्तित और विकृत करने वाले प्रयासो से दोनो समुदायो के बीच विग्रह का वातावरण बना। कई वर्ष पूर्व जैनाचार्य स्व० आचार्य तुलसी ने अग्नि परीक्षा नामक एक काव्य लिखा जिसमे सीता के चरित्र पर कुछ क्षोभदायक आक्षेप किए गए थे। इसके विरोध मे प्रचण्ड आन्दोलन खडा हुआ तथा जिसके समाधान के लिए लोकनायक जयप्रकाशनारायण को आगे आना पडा था। बौद्धो के जातक ग्रनथो मे भी रामकथा को विकृत किया गया है। यहा राम और सीता को भाई बहिन बताया गया है। दशरथ जातक के आधार पर जब तथाकथित वामपन्थियो ने एक कलाप्रदर्शनी मे इस प्रकार के चित्र लगाये गये थे तो इसके सयोजको को प्रबल विरोध का सामना करना पडा था।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

क्या युद्ध टल सकता है ?

११ सितम्बर २००१ ससार के इतिहास मे अविस्मरणीय है और रहेगा। उस दिन ससार के सबसे ताकतवर देश सयुक्त राज्य अमेरिका ने आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और ससार के सभी देशो से अपने आतकवाद विरोधी गठजोड मे शामिल होने की अपील की। उस समय अमेरिका का मुख्य निशाना ओसामा बिन लादेन उसका अलकायदा सगठन और उसको सरक्षण देने वाली अफगानिस्तान की तालिबान सरकार थी। क्योकि पाकिस्तान की सीमा अफगानिस्तान के साथ लगती है और तालिबान सरकार पर सबसे अधिक प्रभाव पाकिस्तान का था इसलिए अमेरिका के राष्ट्रपति ने पाक के तानाशाह मुशर्रफ से सम्पर्क कर आतकवाद विरोधी गठजोड मे शामिल होने के लिए दबाव डाला।

जनरल मुशर्रफ ने इस बारे मे जो फैसला किया उसकी घोषणा उसने पाकिस्तानी आवाम को सम्बोधित अपने विशेष भाषण मे की। भारत–पाक युद्ध होगा या नही उस भाषण को पढने/सुनने से इस प्रश्न का सही उत्तर मिल जाता है। मुशर्रफ ने कहा कि पाके के सामने दो रास्ते है अगर अमेरिका का साथ नहीं देता है तो वो हिन्दुस्तान का सहयोग लेगे और इस तरह पाक भी उनके निशाने पर आ जाएगा। फलस्वरूप पाकिस्तान का येन–केन प्रकारेण कश्मीर को हथियाना मुश्किल हो जाएगा। इतना ही नहीं उसके अणु शस्त्र भी नष्ट कर दिए जाएगे और यदि पाकिस्तान अमेरिका का साथ देता है तो उसे तालिबान के विरुद्ध कार्यवाही करनी ही होगी।

अपनी इस उलझन को दूर करने के लिए मुशर्रफ ने इस्लाम के प्रवर्तक मोहम्मद साहब की एक उलझन का उल्लेख किया। मोहम्मद साहब के मदीना पर अधिकार करने और वहा के राजनैतिक और मजहबी प्रमुख बन जाने के बाद उनके सामने दो शत्रु थे। एक था मक्का का वह बुत परस्त अरब जिसने उनके मजहब को मानने से इन्कार कर दिया और उनको मक्का छोडकर मदीना जाने को बाध्य कर दिया था। दूसरे थे यहूदी जो मुस्लिम बनने को तैयार नहीं थे। मोहम्मद साहब ने तब मक्का के काफिरो को खत्म करने के लिए यहूदियो से दोस्ती की और काफिरो को परास्त किया। बाद मे उन्होने यहूदियो के साथ अलबदर का युद्ध लडा और उन्हे परास्त कर जो मुसलमान नहीं बने उनको मौत के घाट उतार दिया।

मुशर्रफ ने अलबदर युद्ध का उल्लेख कर कहा कि पाकिस्तान का हित इसी मे है कि वह अमेरिका का साथ दे जिससे कि वह अपने परमाणु हथियार

– प्रो० बलराज मधोक, पूर्व सासद

बचा सके और कश्मीर हडपने मे सहयोग ले सके। इसीलिए आतकवादियो और सेना के कुछ अधिकारियो के विरोध के बावजूद पाकिस्तान द्वारा अमेरिका का साथ दिया गया। उसे उम्मीद थी कि तालिबान के विरुद्ध लडाई लम्बी चलेगी और अमेरिका की पाकिस्तान पर निर्भरता बढती जाएगी। इसीलिए उसने दोहरी नीति अपनाई एक ओर यह अमेरिका का साथ देता रहा जबकि दूसरी तरफ सेना के अधिकारी एव आई०एस०आई० तालिबान को सहयोग एव हथियार देते रहे। इस प्रकार वह अमेरिका के शिकारी कुत्तो के साथ शिकार करने का स्वाग भी करता रहा और तालिबान से सहयोग भी करता रहा।

परन्तु तालिबान के जल्दी परास्त होने तथा उसकी दोगली नीति शीघ्र बेनकाब हो जाने से स्थिति बिगड गयी है। मुशर्रफ की निर्भरता अपनी आतकवाद समर्थक नीति एव सेना पर बढ गई है। दूसरी और १३ दिसम्बर को पाक आतकवादियो द्वारा ससद पर हमला करने पर भारत के सब्र का बाध टूट रहा है। भारत सरकार के सख्त रवैये की उसे अपेक्षा नही थी। उसने पाकिस्तान के लोगो को विश्वास दिलाया है कि भारत की सेना और जनता को वह अमेरिका के सहयोग से दबा लेगा। परन्तु ऐसा होता नहीं लगता क्योकि मुशर्रफ की दोगली नीति ने अमेरिका के नीति–निर्धारको को भी सकते मे डाल दिया है। इसलिए अमेरिका अब भारत की पहले जैसी उपेक्षा नहींकर सकता। यही कारण है कि वे मुशर्रफ पर दबावडालने लगे हैं कि वो पाक के कब्जे के कश्मीर तथा भारत के अन्य स्थानो पर कार्यरत आतकवादियो पर नकेल डाले।

परन्तु मुशर्रफ न ऐसा करना चाहता है और न कर सकता है क्योकि आज भी आतकवादियो को बहुतायत मे पाकिस्तानियो एव पाक सेना का समर्थन प्राप्त है। उसके मन मे ये बात भी बैठी हुई है कि भारत का नेतृत्व कमजोर एव दब्बू है। वह ये भी जानता है कि भारत के अधिकाधिक नेता एव बुद्धिजीवी न इस्लाम और आतकवाद के सम्बन्ध को जानते हैं और न जानना चाहते हैं और जो जानते हैं वो वोट की राजनीति

युद्ध मे जीत के लिए शत्रु के चरित्र को समझना अत्यावश्यक होता है। इस दृष्टि से जनरल मुशर्रफ के चरित्र को समझने की विशेष आवश्यकता है। मुशर्रफ दोगला है और दोहरी बोली बोलता है। वह क्या कहता है उस पर विश्वास करना भूल होगी। वह विदेशी मूल का भारत मे जन्मा मुस्लिम है। उस जैसे विदेशी उर्दू को अपनी मातृ भाषा मानते है। ऐसे मुसलमानों ने ही विभाजन के समय सबसे ज्यादा घृणित भूमिका अदा की थी। क्योकि उनकी जडे हिन्दुस्तान मे नहीं थीं इसलिए वे अपने लिए अलग इस्लामी देश चाहते थे।

के कारण सच बोलना नहीं चाहते। इसलिए पाकिस्तान एव भारत से जुडे उनके लोगो के मन मे यह धारणा बैठ गई है कि भारत युद्ध नही करेगा। पाकिस्तान के तानाशाह को यह भी गुमान है कि पाकिस्तान के पास बेहतर अणुशस्त्र है और वह भारत को अधिक नुकसान पहुचा सकता है। भारत मे आई०एस०आई० और पाक एजेन्टो का फैला जाल भी उसे युद्ध करने से रोकने को मजबूर करता है।

इसलिए मुझे लगता है दोनो तरफ की लामबन्दी के बावजूद युद्ध कुछ समय के लिए टल सकता है मगर उसका होना अपरिहार्य है। इसके पुख्ता कारण भी है। पहला कारण है इस्लाम के मौलिक स्वरूप मे इस्लाम के फैलाव के लिए जेहाद के नाम पर आतकवाद का प्रतिपादित होना। इसमे सुधार की सम्भावना कतई नहीं है क्योकि इस्लाम का आधार कुरान है जिसके एक शब्द को भी बदलना सबसे बडा गुनाह है। इसलिए इस्लाम मे सुधार आन्दोलन की कोई गुजाईश ही नही है। जो लोग कहते हैं कि इस्लाम मजहब प्रेम करना सिखाते है वे लोगो को भी और अपने आपको भी धोखा देते है।

इस्लाम के मिल्लत और कुफ्र तथा दार–उल–इस्लाम और दार उल हरब के सिद्धान्त मुसलमनो को गैर मुस्लिमो के साथ सह–अस्तित्व की भावना की अनुमति नहीं देते हैं। ईसाईयत के अनुयायी इस बात को जानते हैं परन्तु 'सर्वपथ समभाव को मानने वाला हिन्दू शताब्दियो से कडवे अनुभवो के बावजूद इस कटु सत्य को स्वीकार करने से हिचकिचाता है।

दूसरा कारण है यूरोप के शक्तिशाली देशो मे समृद्धि के कारण वहा के लोगो का शान्तिप्रिय बन जाना। सामाजिक स्वतन्त्रता और मानवीय अधिकारो के प्रति आदर के कारण उनको इस्लामी कटटरवाद समझने मे और उनकी सोच बदलने मे कुछ समय और लग सकता है। तीसरा कारण यह है कि इस्लामी दस्ते जन्नत की नेहमतो के लालच मे आत्मघाती दस्तों में शामिल होकर जन्नत पाने के लिए उतावले हो रहे हैं। उनमे हाल ही मे अमेरिकी एव अग्रेज भी शामिल हुए है। इस वास्तविकता को स्वीकारने और इसकी काट मे कुछ समय और भी लग सकता है।

अत युद्ध कुछ समय के लिए टल तो सकता है परन्तु होगा अवश्य। इसे विश्वव्यापी रूप लेने मे कुछ समय लगेगा। इसके मुख्य केन्द्र एशिया विशेषकर हिन्दुस्तान और फिलिस्तीन होगे। इस समय इस्लमाबाद के प्रमुख निशाने भारत और इजराईल हैं। इन दोनो मे मार–काट भी अधिक होगी। उस युद्ध मे अन्ततोगत्वा जीत मानवतावाद एव लोकतन्त्र की ही होगी। परन्तु विजय की प्राप्ति के लिए भारत की जनता और नेतृत्व को दो बाते पल्ले बाधनी होगी।

युद्ध मे जीत के लिए शत्रु के चरित्र को समझना अत्यावश्यक होता है। इस दृष्टि से जनरल मुशर्रफ के चरित्र को समझने की विशेष आवश्यकता है। मुशर्रफ दोगला है और दोहरी बोली बोलता है। वह क्या कहता है उस पर विश्वास करना भूल होगी। वह विदेशी मूल का भारत मे जन्मा मुस्लिम है। उस जैसे विदेशी उर्दू को अपनी मातृ भाषा मानते है। ऐसे मुसलमानो ने ही विभाजन के समय सबसे ज्यादा घृणित भूमिका अदा की थी। क्योकि उनकी जडे हिन्दुस्तान मे नहीं थीं इसलिए वे अपने लिए अलग इस्लामी देश चाहते थे। पिछले ५० वर्षों के घटनाक्रम से सिद्ध हो चुका है कि पजाबी और सिधी भाषा–भाषी अब तक पाकिस्तान मे अपनी जडे नहीं जमा पाए है न ही वे एक रूप हो सके हैं। इसलिए वहा भी वे धरती एव सस्कृति पर आधारित राष्ट्रीयता के स्थान पर इस्लामी राष्ट्रीयता 'मिल्लत पर अधिक बल देते हैं।

हिन्दुस्तान के लिए यह इतिहास की सबसे बडी चुनौती है। ये आर–पार की लडाई होगी। इससे जीतने के लिए भारत मे सेना को ही नहीं बल्कि आम जनता को भी बहुत बडी कुर्बानी देनी होगी। इसके लिए जरूरी है कि राष्ट्रवाद की भावना को दलगत एव जातिवादी भावना से ऊपर उठकर बलवती बनाया जाए। दूसरे देश मे ऐसा नेतृत्व हो जो दल जाति सम्प्रदाय से ऊपर उठकर देश को कुशल और जुझारू नेतृत्व दे सके उसे आगे लाया जाए। कुछ महीनो बाद होने वाला राष्ट्रपति का चुनाव इस दृष्टि से सभी राष्ट्रवादियो के लिए चुनौती भी है और अवसर भी है।

मुझे आशा और विश्वास है कि भावी सघर्ष मे हिन्दुस्तान की जीत होगी और यह विश्व शक्ति ही नहीं अपितु जगत गुरु बनेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सबको मिलकर काम करना होगा। ✡✡✡

कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें (यजुर्वेद)

— प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य

जीवन बडा मूल्यवान है। ससार मे प्रत्येक प्राणी जीना चाहता है मरना कोई नहीं चाहता। चींटी को भी हाथ लगाओ तो वह भी अपने प्राण बचाकर भागती है। महाभारत मे यक्ष ने युधिष्टिर से पूछा कि ससार मे सबसे बडा आश्चर्य क्या है ? तो युधिष्टर ने कहा कि प्रतिदिन प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता हैं किन्तु फिर भी बाकी जीना चाहते हैं इससे बडा आश्चर्य और क्या हो सकता है ?

'शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत परम्।'

अत जीवन एक अनुपम वरदान है। कालिदास रघुवश (८/८७) मे लिखते हैं कि मरना प्राणियों का स्वभाव है प्राणी यदि क्षणभर भी जीता है तो यह बडे सौभाग्य की बात है —

मरण प्रकृतिर्शरीरिणाम्
विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधै ।
क्षणमपि अवतिष्ठते
श्वसन्यदिजन्तुर्नु लाभवानसौ।।

(रघुवश ८/८७)

जबकि वेद तो बार—बार कहता है कि हम सौ वर्ष जीए सौ वर्ष देखे सौ वर्ष सुने और उससे भी अधिक सौ वर्ष से भी अधिक जीये —

पश्येम शरद शतम्, जीवेम शरद शतम् श्रृणुयाम शरद शतम् प्रब्रवाम शरद शतमदीना स्याम शरद शत भूयश्च शरद शतात्

(यजु० ३६/२४)

परन्तु साथ मे वेद यह भी कहता है कि कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करे किन्तु कर्म मे लिप्त न हो। इससे भिन्न जीवन जीने का अन्य मार्ग नहीं है —

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

(यजु ४०/२)

ससार मे सब कुछ कर्म के अधीन है। धर्म, अर्थ काम मोक्ष ये चार पुरुषार्थ कहलाते हैं। इनमे मानव जीवन में प्राप्त करने योग्य सभी कुछ आ जाता है किन्तु इनकी प्राप्ति कर्म से ही सम्भव है। फिर मनुष्य जीवन तो कर्म करने के लिए है। गीता कहती है कि कर्म किए बिना कोई रह ही नहीं सकता —

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश कर्म सर्व प्रकृतिजैर्गुणै।।

(गीता ३/५)

मध्यकाल मे कुछ लोगो ने कहा कि कर्म करने की आवश्यकता नहीं भगवान सबको देता है जैसे पछी/पक्षी कोई काम नहीं करते —

अजगर करे न चाकरी पछी करे ना काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।
अनहोनी होनी नहीं होनी होये सो होय।
रामभरोसे बैठ कर रहो खाट पर सोय।।

किन्तु ऐसी बाते आलसी या भाग्यवादी किया करते है। कर्म प्रधान कर्मशील व्यक्ति ससार मे सब कुछ प्राप्त कर सकता है। जैसे मिटटी के ढेले से कुम्हार घडा सुराही दीया आदि जो वस्तु बनाना चाहता है बना सकता है इसी प्रकार मनुष्य अपने किए गए कर्म से इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकता है। हितोपदेश (श्लोक ३४) मे कहा है —

यथा मृत्पिण्डत कर्त्ता कुरुते यद् यद् इच्छति।
एवम् आत्मकृत कर्म मानव प्रतिपद्यते।।

भाग्य या किस्मत की बात तो कायर पुरुष करते हैं। कर्म करने मे भी असफलता रह गई तो यह देखना चाहिए कि उसमें कोई दोष या त्रुटि तो नहीं रह गई। इसलिए भाग्य का सहारा छोडकर मनुष्य को अपने पुरुषार्थ से कर्म करना चाहिए —

उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी ।
दैवेनहि दैवमिति का पुरुषा वदन्ति।।
दैव निहत्य कुरु पौरुष स्वशक्त्या।
यत्नेकृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष ।।

आज मनुष्य धरती समुद्र तथा आकाश पर विजय प्राप्त कर रहा है। धरती का उसने नक्शा ही बदल दिया है समुद्रो को चीर कर वहा के खजानो को बाहर लाने में लगा हुआ है। आकाश पर उसका अभियान जारी है। मगल ग्रह पर जाने के लिए दिन रात लगा हुआ है। अगले २०—२५ वर्षों मे मगल ग्रह पर बस्तिया बसाने मे लगा होगा।यह सब कर्म/उद्यम की महिमा है। इसीलिए कवि दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र मे कहा है —

नर समाज का भाग्य एक है। वह श्रम वह भुजबल है।

जिसके सम्मुख झुकी हुई प्रथ्वी विनीत नभतल है।।

गीता मे कर्म की महिमा भरी पडी है। लोकमान्य तिलक ने गीता पर लिखे अपने ग्रन्थ गीता रहस्य का दूसरा नाम 'कर्म योगशास्त्र रखा है। गीता (२/४७) कहती है कि कर्म करने मे ही मनुष्य का अधिकार है फल की इच्छा मे नहीं। कर्म किए बिना ससार मे जीवन यात्रा भी नहीं चल सकती। जनक आदि बडे—बडे राजा महाराजा भी कर्म करते आए हैं। ससार मे कर्म का ही प्रसार दिखाई देता है —

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन

(गीता ३/४७)

कर्मणैव ससिद्धिमास्थिता जनकादय ।
लोक सग्रहमेवापि सपश्यन्कर्तुमर्हति।।

(गीता ३/२०)

किन्तु कर्म मे लिप्त नहीं होना चाहिए। कर्म मे लिप्त होना उसके प्रति आसक्ति फल के बन्धन मे बधना यही सब अनर्थों का मूल है। आसक्ति या लिप्तता के कारण मनुष्य जीवन पर्यन्त ससार के बन्धनो मे बधा रहता है। कर्म का अनुकूल फल मिलने पर मनुष्य प्रसन्न होता है और प्रतिकूल फल मिलने पर उद्विग्न होता है निराश हताश हो जाता है आत्महत्या तक कर लेता है या फिर दूसरो की हत्या कर डालता है। जीवन के हर क्षेत्र मे हम आसक्ति या लिप्तता की डोर से बधे हुए हैं। इसी कारण ससार मे धर्म समाज और राजनीति मे बडे—बडे बखेडे एव उत्पात होते हैं। इसीलिए वेद ने कहा कि कर्म मे लिप्त नहीं होना चाहिए — 'न कर्म लिप्यते नरे। गीता (२/४७) ने कहा "मा कर्मफल हेतुर्भू।" गीता फिर कहती है कि सिद्धि असिद्धि सफलता असफलता जय पराजय मे सम होकर आसक्ति रहित होकर कर्म करना चाहिए —

योगस्थ कुरुकर्माणि सग त्यक्त्वा धनजय।
सिध्यसिध्यो समो भूत्वा समत्व योग उच्यते।।

(गीता २/४८)

परन्तु फल की इच्छा को त्याग कर हम कर्म क्यो करे ? ससार मे मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के किसी कार्य मे नहीं लगता किसी कर्म को नहीं करता। फिर आसक्ति रहित होकर या सग त्यागकर कर्म करने से क्या मिलता है ? इसका उत्तर (गीता ३/२०) देती है कि जो व्यक्ति अनासक्त होकर सग या आसक्ति को त्यागकर कर्म करता है वह भगवान को प्राप्त कर लेता है —

तस्मादसक्त सतत कार्य कर्म समस्चर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष ।।

(गीता ३/२०)

वेद का उपर्युक्त मत्र आगे कहता है कि इससे भिन्न ससार मे जीने को अन्य कोई मार्ग नही है — नान्यथेतोऽस्ति वेद के इस मत्र से निम्न बाते स्पष्ट होती है —

१ मनुष्य को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।

२ किन्तु कार्य करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए निष्कर्म होकर नहीं।

३ कर्म मे आसक्ति या सग रहित होकर या निर्लिप्त होकर कर्म करने चाहिये।

४ सग या लेप/आसक्ति ही सब दुखो का मूल है।

५ अनासक्त होकर/निर्लिप्त होकर जो मनुष्य कर्म करता है वह परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

६ इससे भिन्न ससार मे जीवन जीने का अन्य रास्ता नहीं है अर्थात् अनासक्ति से कर्म करते हुए जीवन जीने का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। अत हमे श्रेष्ठतम कर्म करते हुए जीवन जीना चाहिए।

— अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिह कालेज करनाल

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे छपे लेखो तथा विचारों से सम्पादक मण्डल या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो में वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित दान आदि की अपीलो को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

— सम्पादक

पृष्ठ ५ का शेष भाग

भारतीय साहित्य में रामकथा की व्यापकता

सस्कृत मे तो रामकथा को आधार बनाकर प्रचुर साहित्य लिखा ही गया अन्य भारतीय भाषाओ पर रामायण आधारित काव्य नाटक तथा गद्य के अनेक ग्रन्थ लिखे गए। तमिल मे कम्ब रामायण तथा बगला मे कृतिवास की रामायण अत्यन्त प्रसद्धि है। रामायण की लोकप्रियता का पता इस बात से भी चलता है कि इस कथा ने इस देश की सीमाओ को पार कर सुदूरवर्ती समुद्रपार के देशो की सस्कृति तथा जन जीवन को प्रभावित किया है। चीन और तिब्बत मे रामकथा का प्रवेश बौद्ध परम्परा से हुआ तुर्किस्तान इण्डोचायना स्याम (वर्तमान थाईलैण्ड) तथा म्यामार (बर्मा) मे रामकथा का प्रचार हुआ। इण्डोनेशिया मे रामायण तथा महाभारत की कथाओ को अत्यन्त लोकप्रियता मिली। ससार के सबसे बडे मुसलमान देश इण्डोनेशिया मे रामायण तथा महाभारत के पात्र तथा घटनाए वहा के सास्कृतिक जीवन के अभिन्न अग बन गए हैं। यहा इनके कथानको को लेकर नाटक मचित किये जाते हैं तथा गायन एव नृत्य आदि के कार्यक्रम रक्खे राते हैं। इण्डोनेशिया के जावा द्वीप मे रामकथा को प्रस्तर शिलाओ पर अकित किया गया था। वर्षो पूर्व जब एक वैदिक धर्म प्रचारक जैमिनि मेहता उस देश मे गए थे तब उन्हे इस पाषाणचित्र लिपि रामायण का पता चला था। उन्होने उसकी प्रतिलिपि प्राप्त कर पुस्तक रूप मे प्रकाशित की थी।

रामकथा का आधार लेकर लिखे गए भारतीय वाडमय का समग्र विवेचन तो बडे ग्रन्थ की अपेक्षा रखता है। अकेले सस्कृत मे ही रामायण को उपजीव्य बनाकर लिखे गये गद्य पद्य नाटक चम्पू आदि विविध शैलियो मे प्रणीत राम काव्यो का प्रचुर भण्डार है। महाकवि कालिदास ने सूर्यवशी राजाओ का चित्रण अपने महाकाव्य रघुवश मे किया जिसमे राम का लोकपावन जीवन विस्तृत रूप से वर्णित हुआ हैं। कवि कालिदास के अनुसार रघुवशी राजाओ की जीवनचर्या जिन आदर्शो को लेकर व्यतीत होती थी उनका उल्लेख निम्न श्लोक मे पाया जाता है –

शशेवऽभ्यस्त विधाना यौवने निपयेषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीना योगेनान्ते तनूत्यजाम्।।

रघुवश मे जन्म लेने वाले ये राजा अपने शैशव काल मे विभिन्न विद्याओ का अभ्यास करते हैं। यौवनकाल मे गृहस्थाश्रम का पालन करते हैं। जब वृद्ध हो जाते है तो मुनिवृत्ति धारण कर वानप्रस्थ आश्रम मे चले जाते हैं। यहा तक कि इनकी मृत्यु भी योगजन्य समाधि अवस्था मे होती हैं महाकवि भट्टि ने रावण महि नामक काव्य लिखा जो भट्टि काव्य के नाम से प्रसिद्ध है। इसे कवि ने मुख्यत व्याकरण तथा अलकार शास्त्र का बोध कराने के लिए लिखा था। कुमारदास कृत जानकी हरण काव्य भी सस्कृत की एक विशिष्ट कृति है जिसके बारे मे निम्न चमत्कार पूर्ण उक्ति प्रसिद्ध है –

जानकीहरण कर्तुं रघुवशे स्थिते सति।
कवि कुमारदासश्च रावणस्य यदि क्षमौ।।

अर्थात रघुवश जैसे काव्य के रहते जानकी हरण जैसा श्रेष्ठ काव्य लिखा जाना कवि कुमारदास के लिए ही शक्य था। अन्य अर्थ – रघुवशी राम जैसे की पुरुष के रहते सीता का हरण करना रावण जैसे पराक्रमी पुरुष के लिए वीर सम्भव था। प्राकृत भाषा मे प्रवरसेना ने सेतुबध काव्य लिखा। आचार्य क्षेमेन्द्र ने वाल्मीकीय रामायण का सक्षिप्तीकरण रामायण मजरी शीर्षक से किया। श्रव्य काव्यो की भाति अनेक दृश्यकाव्य (नाटक) भी रामकथा का आधार लेकर लिखे गये। महाकवि भवभूति लिखित उत्तर रामचरित तथा महावीर चरित रामकथा के प्रसगो को लेकर लिखे गये। महावीर चरित वीररस प्रधान है जब कि उत्तर रामचरित मे करूण रस की धारा प्रवाहित हुई है। कवि की दृष्टि मे अकेला करूण रस ही रससझा का अधिकारी है। अन्य रस तो तरगो से उत्पन्न बुदबुद तुल्य ही है। उत्तर रामचरित के प्रमुख पात्र राम सीता तथा लक्ष्मण है जिनके चरित्र को नाटककार ने उदात्त रूप मे प्रस्तुत किया है। लोकाराधन के लिए राम स्नेह दया सौख्य यहा तक कि अपनी प्राणाधिका जानकी तक का त्याग करने के लिए तत्पर हैं –

स्नेह दया च सौख्य च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुचते नास्ति मे व्यथा।।

उत्तरे रामचरितेभर्वभूतिविशिष्टते की उक्ति यथार्थ ही है।

रामकथा को लेकर लिखे गए सस्कृत के नाटको मे मुरारि का अनर्घ राघव जयदेव का प्रसन्न राघव राजशेखर का बाल रामायण तथा दामोदर मिश्र का हनुमन्नाटक प्रसिद्ध है।

हिन्दी साहित्य मे रामकथा पर आधारित कृतियो की सुदीर्घ परम्परा रही है। तुलसी का रामचरित मानस केशव की रामचन्द्रिका तथा मैथलीशरण गुप्त का साकेत एक ही कथा को भिन्न भिन्न भगिमाओ मे प्रस्तुत करते हैं। मानसकार की दृष्टि मे राम परमात्मा के अवतार हैं तो गुप्तजी उन्हे अवतारी मानते हुए भी उनके पुरुषोत्तम रूप को वरीयता देते हैं। केशव का प्रयास रामकथा के माध्यम से रस अलकार तथा छद आदि काव्यागो की प्रस्तुति करने का है। रामचन्द्रिका मे अलकारो तथा उक्ति वैचित्र्य के अतिरिक्त छदो की विविधता तथा वाग्विदग्धता हैं महाकवि हरिऔध ने वैदेही वनवास में सीता को निर्वासित करने की कथा लिखी तो बगाल के महाकवि मधुसूदन दत्त ने अपने मेघनाद बध मे खलनायक (मेघनाथ) के चारित्रिक उत्कर्ष को दिखाया। बाल्मीकि ने तो राम को धर्म का साक्षात विग्रह ही कहा है – रामो विग्रहवान धर्म। अत मैथिलीशरण की यह उक्ति भी सर्वथा सार्थक है –

राम तुम्हारा वृत्त स्वय ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

अनुकरणीय दुनिया में रहना किस तरह ?

एक मधुमक्खी और तितली – दोनो एक गुलाब के फूल पर बैठा करते। तितली अपने लिए पराग इकटठा करती और म्धु मक्खी अपने लिए। इसी तरह कुछ दिन बीत गए। दोनो अपना भोज्य स्वीकार करते और चले जाते। कुछ दिन बाद आधिपत्य की लडाई शुरू हो गई। तितली ने कहा इस फूल पर मेरा अधिकार है मधुमक्खी ने कहा मेरा। 'तू तू मैं मैं 'वाद विवाद बढता चला गया। जीवन मे भी जितनी लडाइया हैं सब की सब वर्चस्व और अधिकार की लडाइया हैं। मक्खी या तितली – कभी किसी को पराग की कमी नहीं हुई सबका पेट भरता था। किंतु अधिकार और वर्चस्व की चाह तो विवेक को समाप्त कर देती है। जब दोनो 'तू तू 'मैं मैं से थक गए तो दोनो ने फैसला किया कि चलो फूल से ही पूछ लेते हैं। दोनो फूल के पास पहुचे। दोनो अहकार मे फूले थे। तितली अपने रूप रग मे इतरा रही थी तो मक्खी को अपने डक का गुमान था। फूल ने दोनों की बात सुनी। फैसला मधुमक्खी के पक्ष में सुनाया। तितली क्रुद्ध हो गयी। कहने लगी मधु मक्खी मुझसे श्रेष्ठ कैसे हो सकती है। मैं सुन्दर हू मेरे रूप रग को देख सभी ललचाते हैं। सभी के आकर्षण का केन्द्र हू। मधुमक्खी कुरूप है डक से पीडा भी पहुचाती है फिर भी ।

फूल शात भाव से उनकी बाते सुन रहा था। उसने कहा – **जीवन में जो लोग अपने रूप रग से ससार को अपना करना चाहते हैं वे चूक जाते हैं। समाज रूप की नहीं, गुणों की पूजा करता है।** शक्तिहीन होना डक विहीन होना भी कोई विशेषता नहीं है सभी को समर्थ होने का प्रयास करना चाहिए। ससार मे रूप नहीं गुण बडा है मधुमक्खी कुरूप तो है किन्तु देखो – तुम दोनो यहा से पराग अपना भोज्य ले जाते हो। तुम केवल अपना पेट भरती हो। मधुमक्खी अपना भी पेट भरती है और दूसरो का भी। वह समाज के लिए 'मधु एकत्र करती है। समाज को मिठास देती है। अपना पेट तो सभी भरते हैं बडप्पन उनका है जो समाज को कुछ देने का प्रयत्न करते हैं। मधुमक्खी केवल इसलिए बडी है कि उसने समाज को 'कुछ दिया है।

दुनिया मे भी वे लोग ही पूजे जाते हैं जो समाज को देने का प्रयत्न करते हैं। कई बार हम रूप रग या धन दौलत से दुनिया को अपना करना चाहते हैं किन्त याद रखो दुनिया केवल उनकी होगी जो समाजहित की चेष्टा करेंगे। बडे-बडे सम्राट यहा आए और चले गए – कौन किसको याद करता है। सिर्फ वे चद नाम याद है जो सेवा परोपकार ज्ञान और सहयोग के साथ जीये। हम फकीरो सतो को याद करते हैं और धनपति सम्राटो को भूला देते हैं। सत ज्ञानेश्वर नानक कबीर शकर और स्वामी दयानन्द सरीखे कुछ नाम आज भी हमारी जबान पर है इसलिए नहीं कि धन और भक्तो की कतार इनके पास थी किन्तु इसलिए कि इनका जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित था।

ससार मे जो लोग तितली की भाति जीएगे वे चूक जाएगे जो मधुमक्खी की भाति जीएगे वे सफल होगे। हमारी सस्कृति अथवा परम्परा मे जब धन की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है तो – हम धनलक्ष्मी की पूजा श्री रूप मे करते हैं यह श्री रूप क्या है ? श्री मे आश्रय 'सहारा शरण और सहयोग छिपा है। वही धन सार्थक होता है जो स्वय और दूसरो को आश्रय दे सके। मुझे वह समाचार पढकर बडी हसी आयी जिसमे किसी करोडपति भिखारी की चर्चा थी। पूरे जीवन वह भिखारी की भाति जीया। गदे मैंले कुचैले कपडे भूखा प्यासा उसने जीवन पूरा किया। मरा तो लाखो रुपयो का बैंक बैलेस छोड गया। शायद आपको भी हसी आ' रही है किन्तु आत्मनिरीक्षण कीजिए कहीं न कहीं हमारी भी' स्थिति उस 'लखपति भिखारी जैसी है सम्पदा हमारे पास है किन्तु हमने उसे कैद कर रखा है – किसी ने बैंक मे तो किसी ने तिजोरी मे। याद रखो वही धन सार्थक है – जो अपनी 'समाज और जरूरतमन्दो की सेवा मे लग सके। जिस धन का उपयोग न किया जा सके उस 'धन' और 'मिटटी' मे बहुत ज्यादा फर्क नहीं होता। हमेंयाद रखना चाहिए जब हम आते हैं तो नगे होते हैं जब जाते हैं तब हमारी मुटठी खाली होती है।

आज मैं सभी को यही सदेश देना चाहूगा कि हम मधुमक्खी की भाति जीये अपना धन अपनी शक्ति अपने सामर्थ्य को समाज के सृजन और सहयोग मे लगायें।

सकलनकर्ता –
आचार्य अजय आर्य

पृष्ठ ४ का शेष भाग

कैसे जाना जाता है – आचार्यों का अभिप्राय ?

भारी कोलाहल प्रारम्भ हो गया। उसके पश्चात माधवाचार्य आदि पौराणिक विद्वानो ने यह दुष्प्रचार करना प्रारम्भ किया कि प० बुद्धदेव विद्यालकार ने स्वामी दयानन्द के चित्र के ऊपर जूता मारा था। समाचार पत्रो में यही प्रकाशित कराया गया। आर्यसमाज मे भी जो लोग गुरुकुल पार्टी एव मासपार्टी दो भागो मे विभक्त थे और स्वामी श्रद्धानन्द के घोर विरोधी थे जिन्होने ही स्वामी श्रद्धानन्द जी को गबन तथा अन्य मिथ्या आरोपों मे गुरुकुल कागडी से निकलवाया था उन्हे स्वामी श्रद्धानन्द के अनन्य शिष्य प० बुद्धदेव जी को नीचा दिखाने का अच्छा अवसर मेला। वे अपने समाचार पत्रो मे प० बुद्धदेव जी को जान से मारने के लिए भी लोगो को प्रोत्साहित करने लगे किन्तु इसमे सफल नहीं हुए। कुछ दिनो मे पण्डित जी के विरोधी दुर्बल पडे और बात समाप्त हुई।

अब ऊपर की घटना के औचित्य और अनौचित्य के विषय मे ऋषि दयानन्द के जीवन की दो घटनाओ को प्रस्तुत करता हू। पहली –

"एक बार स्वामी जी अजमेर से प्रचारार्थ कहीं बाहर जा रहे थे उनके साथ मे नयी पुरानी बहुत सी पुस्तको के बण्डल थे जिनमे वेद की पुस्तको की अधिकता थी। अजमेर सस्थान पर पहुचने पर ज्ञात हुआ कि गाडी के आने मे विलम्ब है। महर्षि कुछ देर तो इधर उधर भ्रमण करते रहे किन्तु बाद मे पडे बण्डलों मे से किसी एक पर बैठ गए। साथ जाने वाले सेवकों में से किसी एक ने कहा – महाराज इस बण्डल मे तो वेद है। ऋषि ने उत्तर दिया – वेद ज्ञान उत्कृष्ट है। यह तो कागज है इस पर बैठने से वेद का न किसी प्रकार अपमान है न कोई हानि। गाडी के आने तक वे उसी पर बैठे रहे"। दूसरी घटना २८ अगस्त सन १८८१ की है –

"जब कुछ मुसलमान काजी जी को साथ लेकर शास्त्रार्थ के लिए ऋषि दयानन्द के पास पहुचे तो स्वामी जी ने उनको बताया कि तुम दासीपुत्र इसलिए हो कि इब्राहीम की दो पत्निया थीं। एक ब्याही हुई सारा और दूसरी दासी हाजरा। सारा से ईसाई और यहूदी लोग उत्पन्न हुए और हाजरा से मुसलमान। फिर तुम्हारे दासीपुत्र होने में क्या सन्देह है ? काजी ने कहा कि कुरान में ऐसा नहीं लिखा है। स्वामी जी ने कुरान मंगवाकर काजी जी को दिखलाया। उसी वर्ष इस्माइल को हाजरा ने उत्पन्न किया, जो सारा खातून की दासी थी। सन्दर्भ – कुराने सूरे अनकबूत खण्ड–दो, पृष्ठ–१६६।

काजी जी ने कहा कि दासी तो थी परन्तु विवाह कर लिया था। फिर स्वामी जी ने कहा कि वास्तव में तो वह दासी ही थी। आपके दासीपुत्र होने मे क्या सन्देह है ? काजी जी निरुत्तर हो गए और सभी मुसलमान अवाक होकर देखते रह गए। उसी समय कुरान को स्वामी जी ने कुर्सी के नीचे रख दिया। काजी जी ने कहा – आपने यह क्या किया ? कुरान को पाव मे रख दिया। अब स्वामी जी ने कहा – काजी साहब तनिक विचार करो क्या काजी नाम ही से कहलाते हो? कागज और स्याही कैसे बनते है और छापा खाने मे कागज किस प्रकार छपते हैं ? कलम क्या चीज है और कहा उत्पन्न होती है ? इस पर सभी मुसलमान निरुत्तर होकर काजी जी के साथ चले गए।"

इन दो सन्दर्भों से स्पष्ट विदित होता है कि प० बुद्धदेव जी ने चित्र सहित पुस्तक पर पैर रखकर मूर्तिपूजा के विरोध मे जो हैदराबाद मे व्याख्यान दिया वह न तो कुकृत्य ही था न ही अनुचित। एक बार मैंने इस सन्दर्भ मे उनसे पूछा भी था तो वे बोले कि मैंने तो ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो की रक्षा के लिए ऐसा किया। आवेश मे नहीं किन्तु विचारपूर्वक किया था। यदि इस प्रकार से अपमान होता तो लाखो पत्रो के टिकटो पर जिन पर प्रत्येक राष्ट्रो के मूर्धन्य लोगो के चित्र छपे रहते हैं उनके विधान की रक्षा के लिए ही उनके चित्रो के ऊपर मुद्रा लगाकर उनका मुख काला किया जाता है। उस समय भारत मे महारानी विक्टोरिया का चित्र था। वर्तमान मे गाधी जी का चित्र है। प्रतिदिन इनके मुख काले किए जाते है। क्या इससे गाधी जी का अपमान हो गया ? कुछ नासमझ लोग, जो पजाब मे मासाहारी दल के नेता थे उन्होने मुझसे व्यक्तिगत द्वेष के कारण मिथ्या प्रचार करने मे पौराणिको की सहायता की जिससे हतप्रभ पौराणिक पडित गर्जने लगे। विजय पराजय मे परिणत सी हो गयी।

क्या उपर्युदधृत सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य मे विचार करने से यह सिद्ध होता है कि प० बुद्धदेव जी ने ऋषि दयानन्द के चित्र का अपमान किया था ? कदापि नहीं। उन्होंने तो एक प्रकार से मूर्तिपूजा विरोधी सिद्धान्त ही की रक्षा की थी।

योग के सम्बन्ध मे भी ऋषि दयानन्द के विचार महर्षि पतजलि का अनुमोदन करते हैं। उनके वेदभाष्यो और जीवन की विभिन्न घटनाओ से यह सिद्ध होता है कि महर्षि पातजल योग के पूर्ण समर्थक थे विभूति पाद हो या और कोई। वे किसी को अमान्य नहीं मानते थे। वर्तमान मे कुछ लोग ऋषि दयानन्द की ही ओट मे उसको प्रक्षिप्त या विचारणीय कहने लगे हैं। इसमे मुख्य कारण उनकी अपने को योगी कहलाने की महत्वाकाक्षा है किन्तु विभूतियो के अभाव मे सामान्य जन उनको योगी मानने से सहमत नहीं। यद्यपि विभूतिया ही योगी की कसौटिया नहीं हैं किन्तु उन सज्ज्नो की दुर्बलताए इस प्रकार की निराधार बातो को करने के लिए उन्हे बाध्य करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त एव उनकी मान्यताए केवल एक स्थल को देखने पढने से निश्चित नहीं होतीं। महर्षि पतजलि ने आचार्य पाणिनि के व्याकरण सिद्धान्तो के सम्बन्ध मे एक वाक्य लिखा है –

"इहेगितेन चेष्टितेन निमिषितेन महता वा सूत्रनिबन्धनेन आचार्याणामभिप्रायो लक्ष्यते"।

महाभाष्य – ८/२/३

अर्थात इशारे से चेष्टा से अक्षि–आख सकोचन से या दीर्घ सूत्रो के निर्माण से आचार्य का अभिप्राय जाना जाता है। ठीक यही बात ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे है। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थो व्याख्यानो व्यवहारो एव वार्तालापो से उनके सिद्धान्तो का पूर्ण ज्ञान होता है। किसी एक स्थल को देखकर पूर्वापर प्रकरण और अन्य स्थलो को देखे बिना उनके सिद्धान्तो का निर्णय करना उचित नहीं।

जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा और अब तो दिल्ली आर्य पुरोहित सभा भी बन चुकी है तो वे ही इन छोटी मोटी बातो का निर्णय करने मे समर्थ है। कुछ अनधिकृत लोगो को इस विषय मे चचुपात करने का अधिकार ही कहा है ? परन्तु ठीक कहा है – 'स्वभावो दुर्निवार'।

महर्षि पतजलि ने आचार्य पाणिनि के शास्त्रो मे आपाततः विरोध दृष्टिगोचर होने पर इसके समाधान के लिए कहा है – "व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम"। शास्त्रो मे जहा कुछ परस्पर विरोध दिखाई देता हो वहा विशेष व्याख्यान कर लेना चाहिए विषय को अन्यथा नहीं समझना चाहिए। एक दूसरे स्थल पर भी महर्षि पतजलि लिखते हैं – **"आचारात्। किमिदमाचारादिति ? आचार्याणामुपचारात्"** महाभाष्य – हयवरट

अर्थात आचार्य के व्यवहार से भी उनके सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है।

यज्ञो मे सकल्प का पाठ भी विद्वानो द्वारा जो कराया जाता है इसका यज्ञ विधि मे साक्षात निर्देश न होने पर भी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे इसके महत्व का प्रतिपादन किया गया है वही विद्वानो को सकल्प पाठ के लिए सकेत करता है। इस प्रकार के अनेक ऐसे स्थल है जो आचार्य के अभिप्राय को अभिव्यक्त करते है। आशा है आर्य जगत के विद्वान इस पर विचार करेगे। अलमिति विस्तरेण।

– गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ

पृष्ठ ३ का शेष भाग

श्रीराम का बहुआयामी व्यक्तित्व

लक्ष्मण को अनेक बार उन्होने समझाया कि माता कैकेई मे हम तीनो भाईया के प्रति कोई द्वेष नही है। राम ने वन गमन करते समय अत्यन्त श्रद्धा से माता कौशल्या के पहले विमाता कैकेई के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद मागा था। भरत जब चित्रकूट मे अपनी जन्मदायी माता कैकेई की आलोचना करने लगे तब राम ने उन्हे तत्काल आगे बोलने से रोक दिया। उन्होने वहा भी माता कैकेई की भूरि भूरि प्रशसा की। इस प्रकार परिवार को कलह से बचा लिया। **सहो असि सहोमहिधेहि** चित्रकूट मे राम सीता और लक्ष्मण यदि चाहते तो उन्ह अनेक लौकिक सुविधाये प्राप्त हो सकती थी। किन्तु राम के सम्मुख एक आदर्श था महान उददेश्य की पूर्ति के लिए यदि घोर से घोर कष्ट उठाने पडे तो भी सहो असि की भावना के अनुसार कष्ट सहन करने के लिए सदा तैयार रहो यह आदर्श उनके सामने था। उन्होने वहा अनेकानेक कष्ठ उठाये परन्तु वहा के वनवासियो से कुछ भी सहायता कभी नही मागी। रामायण इस बात का प्रमाण है कि यही से राम के जीवन का सबसे अधिक कष्ट पूर्ण जीवन और घटनाए प्रारम्भ हुई। किन्तु वे तनिक भी टस से मस नही हुए।

५ सामाजिक न्याय के समर्थक – वनवास के समय जब उन्हे 'शबरी से भेट हुई तो वे उसके निश्चल व्यवहार पर मुग्ध हो गये। शबरी द्वारा दिए गए खटटे मिटठे बेर उन्होने प्रसन्नतापूर्वक खा लिये। यह बात निराधार है कि शबरी उन बेरो को मुख से चख कर देती थी और राम उन झूठे बेरो को खाने लगे थे। हमारे यहा झूठा भोजन न करना तथा किसी अन्य को झूठा भोजन फिर चाहे वह फल ही क्यो न हो भेट न करने की वैदिक प्रथा है। राम तो भीलनी के स्नेह और सेवा भाव पर अत्यन्त मुग्ध थे। उन्होने उसके साथ उदारतापूर्ण व्यवहार किया।

६ नारीजाति के उद्धारक – वनवासी जीवन मे अहिल्या से भेट होने पर जब उसके साथ यौन शोषण की बात सुनी तब उन्होने उसे धैर्य बधाया। उसके पति गौतम को समझाया तथा यौन शोषक इन्द्र को दण्ड देने का आश्वासन दिया। राम के द्वारा यह कृत्य भारतीय इतिहास मे बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

७ एक पत्नीव्रतधारी – एक अवसर पर शूर्पनखा उनके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखती है। राम ने कहा – पर नारी पैनी छुरी तीन ठोर ते खाय। धन हरे यौवन हरे मरे नरक ले जाय। कहते है इस ससार मे तीन प्रकार के अधे होते है। यथा – धनान्ध कामान्ध और मदान्ध। शूर्पनखा कामान्ध थी इस कारण उसे विवेक से काम करने का मार्ग नही सूझता था। वह राज परिवार की स्त्री थी। उसके आत्मसमर्पण का अस्वीकार कर राम ने उसकी प्रतिष्ठा रूपी नाक काट कर रख दी। नीतिकार ने ठीक ही कहा कि – प्रतिकार करने वाली स्त्री क्या नही कर सकती ? शूर्पनखा ने ही अपनी प्रतिक्रियास्वरूप अपने अग्रज रावण को मन गढन्त बाते कह कर उसे राम के विरूद्ध कर दिया। इस प्रकार उसने अपने भाई का परिवार व राज्य बरबाद करा दिया। यह घटना कामान्ध लोगो को अनेक शिक्षाए देती है।

८ सन्देह बुरी बला – चित्रकूट मे भरत अपने अग्रज राम से मिलने आ रहे थे। किन्तु लक्ष्मण को सन्देह हो गया और वे भरत पर कुपित हो गए। उन्होने राम को अपना सन्देह कहा। राम ने उन्हे धैर्य बधाते हुए विवेक से काम लेन की बात समझाई। उन्होने कह – भरत कृतघ्न नही हो सकता। वह हमारा भाई है। तुम उसके साथ कुछ अनिष्ट मत कर बैठना। लक्ष्मण पहले तो माने नही परन्तु अन्त मे चुप हो गए। राम भरत का यह मिलन ससार के इतिहास मे अपना विशेष स्थान रखता है। यह घटना आज भी प्रेरणादायी है।

९ हताश सुग्रीव को जीवनदान – बेचारा सुग्रीव हर दृष्टि से निराश बैठा था। पत्नी गई राज्य गया और जीवन भीखतरे मे पड गया। पत्नी हरण की पीडा का अनुभव राम को भी था। दोनो एक ही नाव के सवार थे। उन्होने उसे नीति का वचन कहा –

"अनुज सुता भगिनी सुतनारी इन्हे विलोक पातकभारी और उसे धैर्य बधाते हुए कहा –ऐसे पतित को मारने मे पाप नही अपितु धर्म है। बालि ने भी मरते समय एक व्यग्य कसा था –

मै बैरी सुग्रीव पियारा कारण कौन नाथ मोहि मारा अरे राम। मेने तो तुम्हारी कोई हानि नही की थी। मै समय पर तुम्हारी सहायता कर सकता था किन्तु अब मै तुम्हारे मारने पर अपने आपको भाग्यशाली समझता हू।

१० नारी स्मिता का रक्षक जटायु – वनवासी जटायु के जीवन का एक ध्येय मन्त्र था जीवित रहते किसी की बहु बेटी का अपमान न होने दूगा। बलवान दुष्ट से कभी न डरना चाहे प्राण भले ही जाये। जटायु ने यह चरितार्थ कर दिखाया। राम ने भी कृतज्ञता के साथ उसकी आदर सहित अन्त्येष्टि कर दी।

११ विभीषण को राज तिलक – भारतीय सस्कृति कभी भी विस्तारवादी और साम्राज्यवादी नहीं रही। राम ने रावण की मृत्यु के पश्चात उसके अनुज विभीषण को लका का राज्य सोप दिया। योगिराज श्रीकृष्ण चन्द्र ने भी अनेक अत्याचारी राजाओ को मारकर उनके पिता या पुत्रो को राज्य सोप दिया। किंतु वे स्वय राजा नहीं बने।

१२ हनुमान के प्रति अखण्ड प्रेम – हनुमान जी आदर्श सेवक त्यागी और सहिष्णु थे। राम ने भी अपने अन्तिम समय तक हनुमान को अपने सानिध्य मे रखा। इससे हनुमान आज भी आदर्श महापुरुष माने जाते है।

इस प्रकार पारिवारिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम का पवित्र जीवन आज भी प्रासगिक है। आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का उनके जीवन के सदगुणो को धारण करने की बडी आवश्यकता है। यही कारण है कि महात्मा गाधी राम के अनन्य भक्त और रामराज्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नरत थे। उनके मुख से अन्त मे हे राम ! ही निकला था। हे राम ! हे राम !! हे राम !!!

– सुकिरण अ/१३
सुदामानगर इन्दौर – ४५२००६ (म०प्र०)

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	प० हरबस लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	विमल वधावन महासम्मेलन संयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मंत्री	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री कुलपति	सुदर्शन शर्मा सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	डॉ० महावीर कुल सचिव	आचार्य यशपाल सभा उप प्रधान

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002

दूरभाष (011) 3274771 3260985 E mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तराचल)

दूरभाष · (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

पोस्ट 1 रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14 4 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 11/12 4 2002

विगत माह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल शहीदे आजम भगतसिह जी के छोटे भाई श्री कुलतार सिह जी से मिलने उनके सहारनपुर निवास पर पहुचा। शिष्टमण्डल मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सभा के उपमन्त्री श्री जयनारायण अरुण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द श्री रवि वहल श्री राजीव भाटिया श्री रोशन लाल गुप्ता प० राजाराम आर्य श्री आदित्य आदि आर्य जन थे। चित्र मे श्री कुलतार सिह कुर्सी पर विराजमान है।

आर्य वीरागना दल दिल्ली प्रदेश
प्रान्तीय आर्य कन्या प्रशिक्षण शिविर
१६ मई से २६ मई २००२
आर्यसमाज सरिता विहार नई दिल्ली
निकट अपोलो हास्पीटल
अभी से कन्याओ के आवेदन भेजे
उज्ज्वला वर्मा (५५२४२५४) **विभा आर्या** (७१६१२ ७)
सचालिका महासचिव

आर्य नेता पं० झाऊलाल जी श

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्यसमाज आर्यसमाज मुम्बई काकडवाणी गिरगाव के प्रधान माननीय श्री झाऊलाल जी शर्मा का निधन दिनाक ६ अप्रैल २००२ को साय ६ बजे दिल्ली मे हो गया। श्री झाऊलाल जी अनेक वर्षो से इस आर्यसमाज के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

श्री झाऊलाल जी गुरुकुल शिक्षा पद्धति के दृढ समर्थक थे। उनका मत था कि महर्षि के मिशन को गुरुकुल से निकले छात्र व छात्राए ही पूरा कर सकते है। गुरुकुलो की नियमित सहायता करने के लिए उन्होने विभिन्न समाजो मे कोष बनाए। अनेक गुरुकुलो की वे मुक्तहस्त स प्रतिवर्ष सह ५ । आयसमाज काकडवाडी के माध्यम से इस आयसमाज की आय का ६० प्रतिशत गुरुकुल छात्रवृत्तियो के रूप मे दिया जाता रहा। वे शिक्षा-प्रेमी थे। उन्होने अपन पैतृक स्थान पर इजिनियरिंग कालेज की स्थापना की जिसम गरीब मेधावी छात्रो को अध्ययन की पूर्ण सुविधा प्रदान की जाती है।

आर्यसमाज मुम्बई ने स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का अभिनन्दन किया तथा ११ लाख की राशि एकत्र कर उससे 'स्वामी ओमानन्द गुरुकुल स्कालरशिप कोष की स्थापना की। इस कोष से प्रतिवर्ष विभिन्न गुरुकुलो को १ लाख की धन राशि सहायता के रूप म भजी जाती रही ह।

उनके निधन से आर्यसमाज की महान क्षति हुई है। हम उनकी आत्मा की सदगति की प्रार्थना करते है।

वैदिक विद्वानो को पुरस्कृत करने के लिए स्थिर निधि

ऋषि निर्वाण उत्सव तथा महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर एक एक विद्वान को सम्मानित करन क लिए डा० मुमुक्षु आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे ५० हजार रुपये की राशि स एक स्थिर निधि स्थापित की है जिसके ब्याज से विद्वान महानुभावो को प० गुरुदत्त विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। डा० मुमुक्षु आय ने २००२ को आयोजित होने वाले ऋषि निर्वाण उत्सव पर आचार्य आनन्द मुनि वानप्रस्थ तथा वर्ष २००३ के महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर डा० महेश वेदालकार का सम्मानित करने का प्रस्ताव किया है।

श्रीमती लाजवन्ती गिरधर का देहावसान

आयसमाज पजाबीबाग विस्तार के कर्मठ कार्यकता श्री रामदास जी गिरधर की धर्मपत्नी श्रीमती लाजवन्ती गिरधर का २१ माच २००२ को निधन हो गया।

स्वर्गीय श्रीमती लाजवती गिरधर जी का जन्म एक अक्तूबर सन १६३२ को सराये सिद्धू (जिला मुल्तान – पाकिस्तान) मे एक आय परिवार मे हुआ था। उनके पिता श्री हरिराम जी दुआ व माता श्रीमती लक्ष्मीबाई दुआ दोनो अध्यापक थे। श्रीमती लाजवती जी पर बचपन से ही आर्य सस्कारो का प्रभाव था। वे अपने माता पिता की तरह यज्ञ किए बिना अन्न ग्रहण नहीं करती थीं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र थी। कुशाग्र बुद्धि की धनी श्रीमती लाजवन्ती सौम्य व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं।

विवाह के उपरान्त उन्होने भी अध्यापन का उत्तरदायित्व सम्भाला। १६६२ मे वे मुख्याध्यापिका के पद से सेवानिवृत्त हुई। उनके पतिश्री रामदास जी गिरधर अधिकाशत दौरे पर रहते थे। उन्होने बडी कुशलता से घर ओर बाहर दोनो की जिम्मेदारियो को सम्भाला ओर अपनी चारो पुत्रियो को उच्च शिक्षा दिलाई ओर अपने पैरो पर खडा किया। आज उनकी चारो पुत्रिया भी अध्यापन कार्य करते हुए उनके द्वारा दिए गए सुसस्कारो की सुगन्धि चारो ओर फैला रही हैं।

अपने जीवन के अतिम दिनो म उनकी स्मरण शक्ति का उत्तरोत्तर ह्रास होता गया और उन्हे असाध्य कष्ट सहना पडा। २१ मार्च २००२ को उनका देहावसान हो गया। २३ मार्च को आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार मे श्रद्धाजलि सभा हुई।

– श्री नन्दलाल दुआ (चाचा)
आर्य केन्द्रीय सभा

श्रीमती जनक दुलारी नैय्यर पंचतत्व में विलीन

बडे दुख से सूचित किया जाता है कि हमारे सरक्षक सदस्य श्री चिरजन दास नैय्यर की धर्मपत्नी श्रीमती जनक दुलारी नैय्यर १४/३ पजाबी बाग (एक्सटेशन) का आकस्मिक निधन हो गया है।

श्रीमती नैय्यर स्त्री आर्यसमाज की प्रमुख आधार स्तम्भ रही है और समाज की स्थापना मे उनका अमूल्य योगदान रहा है। उनके द्वारा किए गए कार्यो को हमशा याद किया जाएगा।

नैय्यर परिवार को परमात्मा इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। दिवगत सदस्य की आत्मा को शाति देने की प्रभु से मंगल कामना करते हुए उनके सम्मान मे सभी कार्यक्रम स्थगित किए गए तथा साप्ताहिक सत्सग भी नहीं हुआ। उनकी अन्त्येष्टि १०३२००२ रविवार को वैदिक रीति से सम्पन्न हुई।

नवनीत मन्त्री पजाबी बाग एक्स

अनोखा आर्यसमाज स्थापना दिवस

मध्य प्रदेश व भोपाल जिल की बैरसिया तहसील म आर्यसमाज ललरिया मे इस वर्ष १६ २० २१ अप्रैल को आसपास के लगभग १५ गावो को साथ लेकर आर्यसमाज स्थापना दिवस एव श्रीराम नवमी का पर्व मनाया जा रहा है जिसमे ओलावृष्टि पीडित क्षेत्र मे सुख–शान्ति समृद्धि हतु स्वस्ति शान्ति गायत्री महायज्ञ भी किया जा रहा है। इस आयोजन के सूत्रधार गुरुकुल होशगाबाद तथा गौतमनगर नई दिल्ली के स्नातकगण तथा ओमप्रकाश सामवेदी श्री जीवन प्रकाश शास्त्री अशोक कुमार शास्त्री विजय कुमार शास्त्री हेमराज शास्त्री सजय शास्त्री तथा श्री चन्द्रदेव शास्त्री आदि हैं जो कि उसी क्षेत्र के मूलनिवासी है। कार्यक्रम का उद्देश्य नये-लोगो के मनो मे आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा जगाना प्रमुख है। भविष्य की रूपरेखा मे इस अवसर पर ललरिया मे सस्कृत विद्यापीठ की भी स्थापना की जाएगी। गुरुकुल होशगाबाद के प्राचार्य एव आय प्रतिनिधि सभा विदर्भ व छत्तीसगढ के प्रधान श्री जगदेव नैष्ठिक जी यज्ञ के ब्रह्मा होग और विद्यापीठ का शिलान्यास भी करेगे। विदित हो कि ललरिया म ८० प्रतिशत मुस्लिम आबादी है ओर जहा के आर्यसमाज का इतिहास अत्यन्त ही कठिन परिस्थितियो से गुजरा है श्री गौरी शकर जी कोशल जो कि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान है उनका भी पूरा आशीर्वाद योगदान इस क्षेत्र को (कार्यक्रम को) हे कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रचार–सामग्री आदि से सहायता आप भी कर सकते है तथा सब इष्ट–मित्र परिवार सहित पधारकर आयोजन को सफल बनाएगे ऐसी आशा है।

– हरिराम आय
वेद मन्दिर ललरिया
तहसील बैरसिया जिला भोपाल म०प्र०

विनम्र निवेदन

किसी भी पत्र पत्रिका मे प्रकाशनार्थ भेजी जाने वाली सामग्री को लेखक अथवा प्रेषक जब तक उसका पुनर्निरीक्षण न कर ले तब तक उसे प्रकाशनार्थ न भेजे अन्यथा उसमे त्रुटिया रह जाने की सम्भावना होती है। दुरुह शब्दो ओर वाक्यो की लिपि पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। लेखक के मन मे जो है उस प्रकार वह अपना लेख दिख देते हैं किन्तु कम्पोज करने वाले को उनकी मनस्थिति का ज्ञान होना सम्भव नहीं। अत यदि आप चाहते है कि आपकी सामग्री सर्वथा त्रुटि रहित और शुद्ध रूप से मुद्रित हो तो कृपया भेजने से पूर्व उस सामग्री को एक बार पुन पढकर एव साफ सुन्दर लेखनी मे ही भेजने की कृपा करे। **– सम्पादक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ५२ — २१ अप्रैल से २७ अप्रैल २००२ तक — दयानन्दाब्द १७६ — सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ — सम्वत २०५६ — चै० शु० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

महासम्मेलन रुपी महायज्ञ मे अपनी अमूल्य आहुति प्रदान करे

हरिद्वार चलो का वातावरण सारे देश में आर्यो को प्रेरित कर रहा है

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन मे भाग लेने के लिए आर्यजनो मे विशेष उत्साह का सचार दिखाई दे रहा है। देश के सभी हिस्सो से छोटे–बडे समूहो मे पहुच रहे लगभग २० हजार से अधिक रेलवे छूट के फार्म सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी के हस्ताक्षरो से देश के विभिन्न भागो मे भेजे गए हैं। यह फार्म हरिद्वार से ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वाले यात्रियो के लिए ही हैं। ३०० कि०मी० के दायरे मे हरिद्वार का एक तरफ का किराया लगभग १५०/ रुपये है अत ३०० कि०मी० की दूरी तक रहने वाले आर्य जन तो केवल मात्र तीन चार सौ रुपये प्रति व्यक्ति खर्च करके इस ऐतिहासिक महासम्मेलन मे भागीदार बन सकते हैं। ऐसा सुअवसर जीवन मे फिर कब मिलेगा।

३०० कि०मी के दायरे मे गाजियाबाद मेरठ मुजफर नगर सहारनपुर अम्बाला राजपुरा फगवाडा मुरादाबाद बरेली अलीगढ बुलन्दशहर अल्मोडा नैनीताल आदि जिले शामिल हैं। इन क्षेत्रो से पधारने वाले आर्य जन अधिक से अधिक सख्या मे पहुचे। और अपने साथ गेर आर्यसमाजी जनता को भी चलने क लिए प्रेरित करे।

अपने साथ इस आयोजन के लिए विशेष रूप से तैयार बैनर आदि अवश्य रखे और इन्हे अपने वाहनो के बाहर प्रदर्शित भी करे। बेशक ये वाहन रोडवेज की बसे अथवा रेलगाडिया ही क्यो न हो।

आर्यजन अपने साथ एक लम्बी चेन ताला चाबी तथा टार्च अवश्य रखे तो अच्छा रहेगा।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि इस आयोजन के प्रबन्ध मे लगे समस्त आर्य महानुभावो को चाहे कितने ही कष्ट आए परन्तु वे कष्ट इस आयोजन मे बाधा न बने और सब आर्यजन मिलकर आगन्तुक आर्यजनो की हर सम्भव सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहे। ईश्वर हम सबको सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करे।

इसी प्रकार की प्रार्थना मै आगन्तुक आर्य बन्धुओ से करना चाहता हू कि इस महासम्मेलन को एक विशाल यज्ञ समझकर उसमे अपनी उपस्थिति और सहयोग रुपी आहुति प्रदान करन की नीयत से पधार।

यज्ञ के दौरान कभी कभी ६ थ भी जलते हे और अग्नि का ताप भी कष्ट देता है

परमपिता परमात्मा सारे कष्ट सहने की शक्ति और सामर्थ्य हमे प्रदान करे। इन्हीं भावनाओ के साथ इस महायज्ञ का आयोजन गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के नाम से किया जा रहा है।

आपके सेवक

कैप्टन देयरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयाजक
वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभ' उप प्रधान

यजमानों से निवेदन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के चारो दिन की दिनचर्या प्रात ७ ३० बजे से यज्ञ द्वारा प्रारम्भ की जाएगी। जिसके ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश जी होगे। यज्ञ के लिए २५ हवनकुण्डो का प्रबन्ध किया जाएगा। जिन पर प्रतिदिन १०० यजमान बैठेगे।

यजमानो से निवेदन है कि न्यूनतम ११००/– रुपये की राशि दान मे अवश्य प्रदान करे इससे अधिक भी यदि सामर्थ्य हो तो उनका स्वागत हे। यह राशि भी महासम्मेलन रूपी इस विशाल महायज्ञ मे एक अमूल्य आहुति साबित होगी। – डॉ० भारतभूषण सयोजक यज्ञ-समिति

असामाजिक तत्वों के भ्रामक प्रचार से सावधान रहें

कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के विरुद्ध अनर्गल बातों एव धमकियों से भरे पत्र अनाम भेजे जा रहे है। आर्यजनता ऐसे भ्रामक प्रचार को महत्व न दे।

यदि किसी व्यक्ति को कोई तथ्य व्यक्त करना ही हो तो उसे स्पष्ट रूप में अपने नाम से पते सहित पत्र व्यवहार करना चाहिए। सार्वदेशिक सभा में सदैव आर्यजनों के सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

विमल वधावन

पाठ्य पुस्तको के कानूनी सग्राम मे सार्वदेशिक सभा ने भी याचिका प्रस्तुत की

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा स्कूली पुस्तको मे कुछ परिवर्तनो के विरोध मे उच्चतम न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत याचिका मे आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल श्री विमल वधावन तथा एम० ए० चिन्ना स्वामी आदि ने भी दखल याचिका प्रस्तुत करते हुए सुनवाई की माग की। यह याचिका सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की ओर से प्रस्तुत की गई थी।

श्री रामफल बसल वरिष्ठ अधिवक्ता ने अदालत के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा कि आर्यसमाज के हजारो स्कूल कालेज और गुरुकुल चल रहे हैं जो केन्द्र सरकार की शिक्षा नीति से सम्बन्धित हैं। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नई पुस्तको की बिक्री पर रोक लगाए जाने से सारे देश मे इस वक्त माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था मे एक शून्यता सी आ गई है। अत सर्वोच्च न्यायालय मे चल रही याचिका मे आर्यसमाज के पक्ष को भी सुना जाना चाहिए।

खण्डपीठ के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति भरुचा ने आदेश दिया कि इस याचिका की सुनवाई निकट भविष्य मे कोई अन्य पीठ करेगी और यह दखल याचिकाए उसी अदालत के समक्ष प्रस्तुत की जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान एव अधिवक्ता श्री विमल वधावन ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से उत्पन्न स्थिति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि विद्यार्थियो का नया शैक्षणिक सत्र १ अप्रैल से प्रारम्भ हो चुका है और इस प्रकार पुस्तको के अदालती लडाई मे फस जाने से शिक्षा व्यवस्था को व्यापक क्षति पहुचेगी। अत उन्होने सर्वोच्च न्यायालय से शीघ्र निर्णय की प्रार्थना की है।

उन्होने कहा कि विगत ५० वर्षो मे सरकारो ने शिक्षा के मूल मे कभी गहन विचार नहीं किया। इतिहास की पुस्तके लिखने वाले वेद मन्त्रो की व्याख्या नहीं कर सकते। उन्हे वद पढने और समझने की योग्यता ही नहीं। ऐसे व्यक्तियो द्वारा वेद मे गौ मास लिखे जाने की बाते करना हास्यास्पद है। ऐसे ही लोगो ने सारी शिक्षा व्यवस्था को अदालत मे फसा दिया है। ऐसे मे अदालतो को सामान्य प्रक्रिया के आधार पर धीमी गति से कार्य नहीं करना चाहिए। शिक्षा मे यदि केन्द्रीय सरकार ने कोई परिवर्तन किया है तो समूचे बहुसख्यक समाज की भावनाओ का सम्मान करने के लिए। सर्वोच्च न्यायालय को प्रक्रियावादी न बनकर सच्चा न्यायवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

जन सम्पर्क अधिकारी

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन का है नारा। प्रत्येक जिले में कम से कम एक गुरुकुल हो प्यारा।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारिया दिल्ली और हरिद्वार मे जोर शोर से चल रही है। १० अप्रैल से पण्डाल आदि की व्यवस्था स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

भोजन व्यवस्था की पूर्ण योजना बन चुकी है। चारो दिन प्रातराश तथा दोनो समय के भोजन मे बनने वाली सामग्री निर्धारित कर ली गई है। प्रात ८ ३० बजे से रात्रि ११ ०० बजे तक ऋषिलगर का कार्य लगभग लगातार ही चलता रहेगा। बीच मे एक या दो घटे के लिए दो बार भोजनशाला को सफाई आदि के लिए बन्द किया जाएगा।

आवास के लिए बहुत सी धर्मशालाओ , शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य भवनो मे आवास व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया है। वक्ताओ तथा अन्य विशिष्ट अतिथियो के लिए भी अलग अलग आवास व्यवस्था का प्रबन्ध है। आवास समिति २३ अप्रैल को सायकाल तक ही निर्धारित कर पाएगी कि किस प्रान्त के कौन से आर्य बन्धु कहा पर रहने के लिए अधिकृत होगे।

२६ अप्रैल को शोभायात्रा १२ बजे प्रारम्भ होगी और महासम्मेलन स्थल से सिहद्वार (स्वामी श्रद्धानन्द चौक) से पुल पार कर शकर आश्रम की तरफ से सीधा बस अडडा, रेलवे स्टेशन , हरकी पौडी होती हुई , वैदिक मोहन आश्रम पहुचेगी। वैदिक मोहन आश्रम डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति के सदस्यो के नियन्त्रण मे चल रहा है। यह वही पवित्र स्थान है जहा २५ अप्रैल, १८६६ ई० मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी। इसकी वर्तमान प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी तथा नवीन सूरी जी, श्री देशराज गुप्ता, प्रि० मोहन लाल, श्री टी० आर० गुप्ता तथा अन्य समस्त विशिष्ट पदाधिकारी इस यात्रा मे आर्यजनो का स्वागत करने के लिए कृतसकल्पित है।

आर्य तपस्वी सुखदेव जी, स्वामी दिव्यानन्द तथा स्वामी शुभानन्द जी कई मठो और आश्रमो से सम्पर्क करके उन्हे वेद की इस अनन्त यात्रा मे शामिल होने के लिए प्रेरित कर रहे है।

८ कि०मी० की इस यात्रा मे आर्यजनो के साथ आए सभी प्रकार के वाहन शामिल होगे, जिन्हे महासम्मेलन स्थान के निकट ही कतारबद्ध कर दिया जाएगा। इन वाहनो के प्रबन्धक अपने पराए का भेदभाव भूलकर जहा जिसको व्यवस्था मिले उन्हे बैठने दे। इस यात्रा के लिए बहुत सी ट्रैक्टर ट्रालियो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है जिससे अधिकाधिक लोग वाहनो पर सवार होकर ही इस यात्रा का आनन्द प्राप्त करे। वैसे त्याग, तपस्या के प्रेमी महानुभावो को ८ कि०मी० पैदल चलकर बहुत सारा पसीना बहाना प्रिय लगेगा। विशेष रूप से युवको और युवा हृदयो को। परन्तु एक निवेदन पुन करना चाहता हू कि पैदल चलने वाले यात्री पैरो मे चप्पल के स्थान पर जूते पहने।

श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी तथा वैदिक मोहन आश्रम के अन्य न्यासी, यात्रा का स्वागत हरि की पौडी पर करेगे।

इस महासम्मेलन मे बहुत से अन्य आकर्षण भी है।

स्वामी श्रद्धानन्द सग्रहालय को महासम्मेलन के चारो दिन प्रात ६ बजे से साय ६ बजे तक खुला रखने के निदेश दिए गए है। इस सग्रहालय मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा प्रयोग मे लाई जाने वाली कई वस्तुए रखी गई है। स्वामी जी पर महात्मा गाधी द्वारा लिखे गए लेख विशाल आकार मे आकर्षण के केन्द्र है। अस्त्र शस्त्रो के प्राचीन भण्डार यहा एकत्रित हैं। श्री हरिहर जी के नाम से हरिद्वार शहर का नाम रखा गया था। उनकी एक मात्र अनुपलब्ध मूर्ति भी इसी सग्रहालय की मूर्ति है। इस सग्रहालय मे एक इतिहास का पुस्तकालय भी है।

अक्सर सग्रहालयो मे विशिष्ट अतिथियो की टिप्पणिया एव विचार रजिस्टरो पर लिखवाए जाते है। परन्तु इस सग्रहालय मे ऐसी टिप्पणिया माईक से रिकार्ड करवाकर अतिविशिष्ट अतिथियो के चित्र सहित कम्प्यूटर मे दर्ज हो जाती हैं।

इसी प्रकार गुरुकुल कागडी का पुस्तकालय भी वैदिक ग्रन्थो की दृष्टि से समूचे विश्व का सबसे समृद्ध पुरतकालय है। इस पुस्तकालय को भी चारो दिन प्रात ६ बजे से साय ६ बजे तक खुला रखा जाएगा। इसमे गुरुकुल कागडी के प्रकाशनो की एक प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

वेद मन्दिर की चित्रावलिया अपने आप मे दर्शनीय है। आर्य जनता इनका भी आनन्द उठाएगी।

एक निर्दिष्ट स्थान पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित एक वृत्तचित्र भी प्रदर्शित होगा जिसे हाल ही मे सुभाष अग्रवाल जी द्वारा निर्मित किया गया है, और जिसका विमोचन इसी महासम्मेलन मे होगा।

एक दिन गुरुकुल महाविद्यालय कण्व आश्रम के ब्र० जयन्त जी अपनी यौगिक एव शारीरिक शक्तियो का प्रदर्शन करेगे। जैसे लोहे के सरिए को मोडना, चेन तोडना, प्राणायाम द्वारा अपने शरीर को इस प्रकार बना लेना कि उनके कुछ साथी उनके शरीर पर ईट से प्रहार करे तो भी शरीर को कोई क्षति नहीं होती अपितु ईट टूट जाएगी। इसी प्रकार किसी वाहन को पीछे से ब्रह्मचारी जी पकडेगे तो स्टार्ट करने और गियर मे लाने के बावजूद भी कोई ड्राइवर उसे चला नहीं पाएगा।

दो आर्य कार्यकर्त्ता सगोष्ठिया, गुरुकुल आचार्य एव स्नातक सगोष्ठी, गीत सगोष्ठी और महिला सगोष्ठी भी विशिष्ट आकर्षक गतिविधिया होगी।

इस प्रकार के विशिष्ट आकर्षणो से सुसज्जित इस महासम्मेलन का वास्तविक आकर्षण तो वैदिक विद्वानो के तेजस्वी ओजस्वी और सारगर्भित उद्बोधन होगे। जिन्हे हर वक्ता पूर्व तैयारी के साथ प्रस्तुत करेगे। महासम्मेलन मे कई सत्रो का आयोजन किया गया है, प्रत्येक सत्र मे ६ या ७ अलग अलग विषय रखे गए है और प्रत्येक बक्ता को एक एक विषय लिखकर भेजा गया है। विद्वान् वक्ताओ ये यह अपेक्षा की गई है कि वे अति सक्षिप्त रूप मे १५ मिनट के अन्दर अपने विषय को आर्यजनता के समक्ष स्पष्ट करने का प्रयास करे। आर्यजनता भी प्रत्येक वक्ता के खडे होते ही निर्धारित विषय पर प्रवचन सुनने का मन बनाकर बैठी होगी।

इस प्रकार के आयोजन के माध्यम से हम यह प्रेरणा समस्त आर्य बन्धुओ तक पहुचाना चाहते है कि कार्यक्रमो का प्रबन्ध करते समय प्रत्येक वक्ता के लिए कोई न कोई विषय निर्धारित करके ही उनसे उद्बोधन की प्रार्थना करे। इस प्रकार वक्ताओ और श्रोताओ दोनो मे स्वाध्याय की आदत का विकास हो सकेगा। निर्धारित विषय पर विद्वान् वक्ता अवश्य ही पूरी तैयारी के साथ आएगे और इसी प्रकार किसी निर्धारित विषय को सुनने के लिए गम्भीर श्रोता भी तैयारी के साथ पधारते है और मानसिक रूप से प्रवचन सुनने के लिए तैयार रहते है

अन्त मे इस महासम्मेलन के उद्देश्य के रूप मे आपसे निवेदन करना चाहता हू

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन का है नारा।
प्रत्येक जिले मे कम से कम एक गुरुकुल हो प्यारा।

ओ३म् शम्।

विमल वधावन, महासम्मेलन सयोजक

आर्यो ! उठो, जागो, लक्ष्य की ओर बढ़ चलो

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

देश धर्म की सेवा मे जिसका जीवन व्यतीत होता है वह धन्य है। समग्रक्रान्ति के अग्रदूत दयानन्द ने अज्ञान अन्याय अभाव रूपी कालिमा को दूर करने के लिए श्रुतिरूपी सूर्य के द्वारा भूमण्डल को आलोकित करने के लिए 'परोपकारार्थमिद शरीर' के सिद्धान्त को अपने जीवन मे ढाला था।

जिस देश के लिए देव दयानन्द ने विष के प्याले पीये तथा अपने आपको मिटा दिया। वही देश आज विधर्मियो से आक्रान्त हो रहा है। जहा कभी दूध घी की नदिया बहती थी आज वहा शराब अण्डे मास का बाजार गर्म हो रहा है। चारो ओर अशान्तता के बादल मण्डरा रहे हैं।

आज हम ऐसे दौर से गुजर रहे है जिससे हमारी तनिक भी उदासीनता हमारे पतन का कारण बनेगी। केवल वेद के जयघोष से ही काम नहीं चलेगा आज आवश्यकता आचरण की है।

आर्यो ! तर्क तलवार चलाना सीखो।
बात जो मुह से कहे करके दिखाना सीखो।
बहरे जजबात मे तूफान उठाना सीखो।
अपनी तदबीर से तकदीर बनाना सीखो।
रखता कोई नहीं आज नसल की खूबी।
देखी जाती है जमाने में अमल की खूबी।

इतिहास साक्षी है जब शाहजहा की बेटी बीमार हुई तब अनेको वैद्य हकीमो को बुलाकर इलाज करवाया गया परन्तु बीमारी ठीक नहीं हुई। किसी ने कहा डाक्टर बाटन से इलाज कराए। डा० बाटन अग्रेज डाक्टर था। सयोगवश बाटन की दवाई से शाहजहा की बेटी ठीक हो गई। बादशाह ने कहा मागिये आप क्या चाहते हैं ? शाहजहा का विचार था कि बाटन बीस तीस हजार रुपये मागगा या भूमि। परन्तु बाटन के स्वाथत्याग को देखिए। उस व्यक्ति ने अपने लिए कुछ नहीं मागा अपितु बाटन कहता हे कि अग्रेज जो यहा व्यापार करने आए है उन्हे तग न किया जाए। बिना रोक–टोक के प्रत्येक स्थान पर बिजनेस करने की आज्ञा दी जाए। उस समय यह बात साधारण सी लगी परन्तु थोडे स्वार्थत्याग के फलस्वरूप इस देश मे अग्रजो का राज्य हो गया।

स्वार्थ के बजाए परार्थ के लिए जीओ।

अहकार भाव न रखू
न ही किसी पर क्रोध करू।
देख दूसरे की उन्नति को
कभी न ईर्ष्याभाव धरू।
रहे भावना ऐसी मेरी
सरल सत्य व्यवहार करू।

आज भवन तो बन गए परन्तु भावना नहीं बन पायी। त्यागमूर्ति की जगह राममूर्ति की पूजा हो रही है। चरित्र के स्थान पर चातुर्य का साम्राज्य दृष्टिगोचर हो रहा है। जातिवाद प्रान्तीयवाद छुआछूत भेदभाव एव आपसी कलह के कारण देश की अवनति हो रही है। आर्यो की इतनी शक्ति है कि ये सारे देश का नेतृत्व कर सकते हैं परन्तु आपसी लडाई झगडे के कारण आर्यो की शक्ति क्षीण हो रही है। आज स्थिति यह हे

सूक्त सगठन के पढके बिखरते रहे।
पाठ शाति का पढ के झगडते रहे।
गैर को न अपना बना ही सके।
अपनो से बिछुडने से क्या फायदा ?

ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद जो दीप जले उनमे आर्यसमाज के प्रति बहुत तडप थी आज वह भावना नही अतएव आर्यसमाज अग्रगनति के शिखर पर आरुढ नही हो रहा है। आज आर्यसमाज अपने पुण्यप्रताप से जीवित है। महर्षि दयानन्द जी का त्याग व बलिदान अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का सगठन व परिश्रम प० लखराम जी की लखनी एव कठिन तपस्या महात्मा हसराज जी के आदर्श लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व एव दृढ लगन वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी का प्रचार प्रसार गुरुदत्त विद्यार्थी एव भाइ परमानन्द जी के आदर्श कार्य तथा कुछ लेखको एव कवियो की कृति व अपने पिछले गौरव से आज आर्यसमाज जीवित दीख रहा है अन्यथा आज इसकी स्थिति शोचनीय है।

आर्यवीर राष्ट्र की मशाल
को सम्भाल चलो
एक दीप बुझ चुके तो
दूसरो को बार चलो
यह दयानन्द की कसम
यह श्रद्धानन्द की कसम
वन्दनीय मातृभूमि बोल
विश्वमातरम।

प्रिय पाठकवृन्द आज का युग प्रचार का युग है। जिन्होने प्रचार साधना का उपयाग नही किया वह पिछड गया। जो कोम गाती नही वह मिट जाती है। वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन केवल चार दीवारी तक सीमित रहता है जरूरत ह पार्को मे वद कथा का आयोजन हो कुरान का लोगो ने अफ्रीका के जगलो तक पहुचा दिया परन्तु वेद को हम पूरे भारत मे नहीं पहुचा पाए।

जब कोई व्यक्ति शास्त्रार्थ करने के लिए ऋषि दयानन्द के पास आता था तब ऋषि कहते थे कि मुझे केवल वद का प्रमाण चाहिए दूसरे किसी अन्य ग्रन्थ का नही।

शास्त्रार्थ करन क लिए आए हुए पण्डित कहने लगे हमने तो वेद को देखा ही नही। वेद को तो शखासुर ले गया। ऋषि दयानन्द न उन पण्डितो को ललकारते हुए कहा ये तुम्हारे प्रमाद के कारण ह। तुम्हार प्रमादरूपी शखासुर का वध करके वद लाया हू। आयवीरो आर्यराष्ट्र के निर्माण मे प्राणपण से जुट स्वय जग दूसरो को जगाए। सच को सच कहे

मगर चुप न रहे।
जो भी है सूरते हालात
कहो चुप न रहो
रात अगर है तो उसे रात
कहो चुप न रहो
घेर लाया है अन्धेरे मे
हमे कौन ? हफीज
आओ कहने की जो है बात
कहो चुप न रहो।

कर्मफल पर सशय समाधान

स्वाध्यायशील प्रबुद्ध महानुभावो से निवेदन किया जाता है कि श्री ज्ञानेश्वरार्य दर्शनाचार्य द्वारा 'कर्मफल विवेचन' नाम्क एक पुस्तक का लेखन किया गया है। जिसमे जन सामान्य के मनोमस्तिष्क म उठन वाली कर्मविषयक लगभग १०० शकाओ तथा उनके यथायोग्य समाधान का सकलन किया जा रहा है। कोई महानुभाव कर्म विषयक किसी जिज्ञासा/प्रश्न का समाधान करवाना चाहते हो या इस सम्बन्ध मे कोई प्रमाण कोई विशेष घटना पाद टिप्पणी सुझाव उद्धरण देना उचित समझते हो तो हमे शीघ्र (लौटती डाक से) लिखकर भिजवाए। पुस्तक की पृष्ठभूमि का स्पर्श करता हुआ अब तक सकलित प्रश्नो स भिन्न कोई नया महत्वपूर्ण प्रश्न होगा तो हम उसे पुस्तक मे सम्मिलित करने का प्रयत्न करेगे व आपके आभारी होगे।

जो महानुभाव पत्र व्यवहार करे वे साफ अक्षरो म अपना पूरा पता पत्रालय क्रमाक (पिन काड सहित) अवश्य लिखे (जिससे प्रकाशन के उपरान्त हम उन्हे उपहार प्रति प्रेषित कर सके।

पत्र व्यवहार का पता
सम्पादक कर्मफल विवेचन दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड जिला साबरकाठा (गुजरात) ३८३३०७
दूरभाष फैक्स ०२७७४ ७७२१७

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ व छत्तीसगढ द्वारा निर्मित वेद रथ का उद्घाटन किया जो प्रान्त के सभी हिस्सो मे घूम घूम कर वेद ज्ञान की अलख जगायेगा। चित्र में दाए से सभा प्रधान जी रथ के द्वार का उदघाटन करते हुए बाई ओर वेद रथ का बाहरी दृश्य।

स्वामी श्रद्धानन्द के उपदेश

आओ सुख की अभिलाषा करने वालो! परमात्मा की आज्ञा मानते हुए शुभ कर्म मे प्रवृत्त हो ओ। सदा भले पुरुषो की सगत करते हुए ईश्वरीय प्रेरणा से प्रवृत्त होकर अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करो ताकि परमानन्द की प्राप्ति हो। – धर्मोपदश

शरीर को स्नान से शुद्ध करने के बाद सत्य से मन को शुद्ध करो विद्या और तप से आत्मा को शुद्ध करके ज्ञान द्वारा बुद्धि को दिन रात माजते रहो।

– *नित्य कर्म*

किये कर्म का फल भोगना ही पडेगा। कटौती का कोई काम नहीं। बुरे का बुरा और अच्छे का अच्छा फल भोगना ही पडेगा। – *मुक्ति सोपान*

मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए परमात्मा पर दृढ विश्वास रखना चाहिए।

– *मुक्ति सोपान*

* सत्सग की महिमा कौन वर्णन कर सकता है। इसके बिना ब्रह्म प्राप्ति का कोई साधन नहीं। ससार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए सत्सग नौका के समान है। – *मुक्ति सोपान*

* माता विदुषी हो तो पहला उत्तम सत्सग होता है जो बहुत से गुणो का बीज बालक के हृदय मे बो देती है। फिर सदाचारी पिता का सत्सग बालक के अन्दर शुभ आचार का पौधा उगाता है, जिसकी श्रेष्ठ आचार्य मिलने पर पूर्ण रक्षा होती है।

– *मुक्ति सोपान*

* अनुभवी पुरुषो ने परीक्षा करके देखा है कि जहा अपने आपको रोगी मानने वाला भला चगा मनुष्य रोग मे ग्रस्त हो जाता है वहा मानसिक बल को उपयोग मे लाकर अभ्यासी पुरुष साधारण जुकाम ज्वरादि तो क्या बडे विकट रोगो को भी दूर भगा देता है। – *मुक्ति सोपान*

* ससार मे आधे से ज्यादा दुखो का कारण झूठी आशा है। टूटी खटिया पर लेटे अफीमची की तरह कितने ही युवक हवाई किले खडे करते और उन्हे टूटा हुआ देखते है। – *मुक्ति सोपान*

* चाहे कितनी बार स्नान करना पडे, स्नान ठण्डे पानी से ही करना चाहिए। शरीर को दृढ एव शक्तिशाली बनाने का इससे बढकर अन्य कोई उपाय नहीं। जो लोग बच्चो को गरम पानी से स्नान कराते है वे उन बच्चो के लिए सहस्त्रो रोगो के बीज बोते हैं। ठण्डे पानी से नहलाने पर बच्चो को सिर पीडा, जुकाम और खासी आदि रोग कुछ नहीं होते।

– *नित्य कर्म*

* इस अभागे देश के अतिरिक्त सभ्य ससार मे और कोई देश भी है जहा शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा के अतिरिक्त कोई विदेशी भाषा हो ? जब हमारे बालक पढते अग्रेजी मे, सोचते अग्रेजी मे, गणित, पदार्थ विद्या सीखते विदेशी भाषा मे तो उनमे मौलिक विचार की शक्ति कैसे जीवित रह सकती है ?

– *हिन्दी सा०स० के अध्यक्षीय भाषण से*

* जहा खाने की सब वस्तुए सात्विक होनी चाहिए वहा पीने के लिए तामस वस्तुओ का प्रयोग कभी न करना चाहिए। सबसे उत्तम अमृत पान स्वच्छ जल है।

– *नित्य कर्म*

* इस जन्म भूमि के लिए कष्ट सहन करना, इसी की सेवा मे सारा पुरुषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्यौछावर करना यदि एक एक भारतवासी अपना धर्म समझ ले तो परमात्मा की भी उन पर कृपा हो जाए।

– *सद्धर्म प्रचारक*

– ***वीर बन्धु दिल्ली***

चलो आर्य हरिद्वार !

शखनाद किया देवरत्नजी हो जाओ तैयार।
विश्व महासम्मेलन मे, चलो आर्य हरिद्वार।।
चलो आर्य हरिद्वार ।।

तपोभूमि साधनारथली योगी ऋषि मुनि का
विचरण करते ध्यान लगाये परम पुरुष दर्शन का।
सुरसरि की शीतल धारा मे करता शात तपन का
प्रकृति के दृश्य मनोरम हरता चित्त जन–जन का।।

यज्ञमण्डप मे होता नित दिन 'स्वाहा' मन्त्रोच्चार।
विश्व महासम्मेलन मे चलो आर्य हरिद्वार।।

स्वामी श्रद्धानन्द इसे चयन कर अपना कर्म क्षेत्र बनाया
कर भिक्षाटन गुरुकुल खोला वेदज्ञान का दीप जलाया।
तन–मन–धन अर्पण कर सारा विश्वविद्यालय दिव्य सजाया
ब्रिटिश शासक देख प्रगति मन ही मन इससे घबराया।।

धर्म सस्कृति राष्ट्र रक्षा का माना इसे आधार।
विश्व महासम्मेलन मे चलो आर्य हरिद्वार।।

चेतो आर्यो! कुल मण्डल मे काला बादल छाया है
लोभ मोह के वशीभूत नर दस्यू रूप बनाया है।
विक्रय कर गुरुकुल भूखण्ड को अधम कर्म अपनाया है
लाज लजाती जिसकी कृति से पर स्वय नहीं शरमाया है।।

खोटे कर्म के इस नायक को, बार बार धिक्कार।
विश्व महासम्मेलन मे, चलो आर्य हरिद्वार।।

देवरत्न की अध्यक्षता मे सम्मेलन को सफल बनाये।
विमल वेदव्रत हरवशलाल का मिलजुल कर हौसला बढाये।
गुरुकुल कि इस बलिवेदी पर हम अपना सर्वस्व लुटाये
भावना नेक है सभी एक है यह सच्चा सन्देश सुनाए।।

ऋषि दयानन्द की जय बोलो, करो वेद प्रचार।
विश्व महासम्मेलन मे चलो आर्य हरिद्वार।।

– **प्रो० ब्रह्मदेव आर्य, चेवारा, शेखपुरा (बिहार)**

आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित स्वामी सर्वानन्द

रविवार दिनाक २४ मार्च २००२ को दोपहर १०० बजे डॉ० वसन्तराव देशपाण्डे सास्कृतिक सभा गृह सिविल लाइन्स नागपुर मे राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान मे प्रथम आर्य रत्न सम्मान' समर्पण समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह सम्मान समारोह सुपुर्द किया।

तत्पश्चात अपने गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का सन्देश प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि स्वामी जी की इच्छा है कि सम्मान स्वरूप प्राप्त धन राशि का उपयोग दयानन्द मठ के कार्य मे नहीं बल्कि उनके आदेशानुसार वेद प्रचार के कार्यो मे किया जाए।

अपने उदबोधन मे कैप्टन आर्य ने आगे कहा कि राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ने आज आर्यसमाज के इतिहास मे एक ही व्यक्ति द्वारा विद्वान को एक लाख रुपये की थेली से सम्मानित कर नया पृष्ठ एव नई परम्परा को जन्म दिया है। वे स्वय उनका परिवार अनेकानेक बधाई के पात्र है। श्रीमान भार्गव जी पूर्व प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव पूव मन्त्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री एव उनके परिजन एव नागरिक गण व आर्य नर–नारी आदि विभूतिया बडी सख्या मे उपस्थित थी।

आचार्य वागीश शर्मा ने अपने भाषण मे कहा कि जनसमाज मे सत्य को प्रकट करने की परम्परा समाप्त हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य से स्वामी सर्वानन्द जी के प्रतिनिधि स्वामी सदानन्द स्मृति चिन्ह आदि प्राप्त करते हुए। साथ मे श्री राव हरिशचन्द जी उनकी धर्मपत्नी तथा स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए कै० देवरत्न आर्य।

पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (झज्जर) की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। प्रमुख अतिथि समर्पण शोध सस्थान के सस्थापक पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य भी इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित थे।

वयोवृद्ध आर्य जगत के मूर्धन्य वीतराग सन्यासी तथा पजाब राज्य के दीनानगर स्थित दयानन्द मठ के सचालक एक सौ दो वर्षीय पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती को प्रथम आर्य रत्न मम्मान राव हरिश्चन्द्र चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से प्रदान किया गया। स्वामी सर्वानन्द जी के उत्तराधिकारी स्वामी सदानन्द जी ने उनकी ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया। वृद्धावस्था के कारण स्वामी सर्वानन्द जी उक्त समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके।

प्रथम आर्य रत्न सम्मान स्वरूप स्वामी जी को राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से हरिश्चन्द्र आर्य एवम उनकी धर्मपत्नी शान्तिदेवी आर्या तथा कैप्टन देवरत्न आर्य ने रुपये एक लाख का ड्राफ्ट शाल श्रीफल स्मृतिचिन्ह एव अभिनन्दन पत्र स्वामी सर्वानन्द जी के शिष्य एव उत्तराधिकारी स्वामी सदानन्द जी को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने प्रारम्भिक उदबोधन मे कहा कि स्वामी सवानन्द जी का जन्म हरियाणा के रोहतक जिले मे १६०१ को हुआ। श्री रामचन्द्र उनका पहले का नाम था। सस्कृत भाषा पर अपनी पकड जमाकर प्राध्यापक के रूप मे उन्होने काम शुरू किया।

दिल्ली के परेड मैदान मे सम्पन्न होने वाले आर्य महासम्मेलन मे उनकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से अचानक भेट होने पर स्वामी जी ने रामचन्द्र को अपना शिष्य चुना और १६५५ मे मुम्बई अस्पताल मे उपचार के दौरान दयानन्द मठ दीनानगर के उत्तराधिकारी के रूप मे नियुक्त कर उनका नाम सर्वानन्द रखा गया। तत्पश्चात उन्होने स्वामी वेदानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ली एव स्वामी सर्वानन्द जी के नाम से विख्यात हुए। सन १६६२ मे आर्यसमाजी बन्धुओ ने कैप्टन देवरत्न जी आर्य के अथक परिश्रम एव सयोजकत्व मे रुपये ३१ लाख की थैली से स्वामी जी को सम्मानित किया गया। इस राशि को उन्होने उसी समय श्रीमती परोपकारिणी सभा को समर्पित कर दिया। उन्होने स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाओ पर भी प्रकाश डाला।

इस भव्य समारोह का सयोजन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (पिपराली राजस्थान) ने किया। नगर के सभी आर्य समाजी सस्थानो एव प्रतिनिधि सभाओ की ओर से अतिथियो को पुष्पगुच्छ एव पुष्पहार देकर सम्मानित किया गया।

समारोह का उदघाटन कैप्टन देवरत्न आय ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० वागीश शर्मा (आचार्य आर्ष गुरुकुल एटा) श्रीमती पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) वानप्रस्थी श्री प्रद्युम्न शास्त्री गौतम नगर गुरुकुल के आचार्य श्री हरिदेव जी वैद्य शिवकरण शर्मा छगाणी स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती श्री अमृत आचार्य उमरेड के विधायक श्री वसन्तराव इटकेलवार श्री उमेश शर्मा नागपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री हरिभाऊ केदार सहित अनेक विद्वान व आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ एव मध्य भारत के प्रधान नैष्ठिक जगतदेव जी मन्त्री

रही थी। ऐसे समय मे स्वामी सर्वानन्द जी जैसे दार्शनिका ने सत्य के सू पर चलकर एक नई आशा का सचार किया। मुख्य अतिथि पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने कहा कि दुनिया का सबसे कठिन कार्य सन्यास आश्रम के नियमो पर चलना है जिस स्वामी सर्वानन्द जी ने कुशलता और सरलता से निभाया है वह अनुकरणीय है। अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी ओमानन्द जी ने स्वामी सर्वानन्द सरस्वती से जुडे सस्मरणो का उल्लेख किया

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ व छत्तीसगढ द्वारा लगभग सा लाख से निर्मित वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए वेद रथ नाम प्रचार वाहन का लोकार्पण आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य के करकमल द्वारा किया गया।

अन्त मे राव हरिश्चन्द्र जी आ प्रधान ट्रस्टी राव हरिश्चन्द्र चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से सभी आगन्तु महानुभावो का स्वागत किया गया।

विनम्र निवेदन

किसी भी पत्र पत्रिका मे प्रकाशनार्थ भेजी जाने वाली सामग्री को लेखक अथवा प्रेषक जब तक उसका पुनर्निरीक्षण न कर ले तब तक उसे प्रकाशनार्थ न भेजे अन्यथा उसमे त्रुटिया रह जाने की सम्भावना होती है। दुरुह शब्दो और वाक्यो की लिपि पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। लेखक के मन मे जो है उस प्रकार वह अपना लेख दिख देते हैं किन्तु कम्पोज करने वाले को उनकी मनस्थिति का ज्ञान होना सम्भव नही। अत यदि आप चाहते हैं कि आपकी सामग्री सवथा त्रुटि रहित और शुद्ध रूप से मुद्रित हो तो कृपया भेजने से पूर्व उस सामग्री को एक बार पुन पढकर एव साफ सुन्दर लेखनी मे ही भेजने की कृपा करे। — सम्पादक

मानव जीवन की सफलता के सूत्र

— आचार्य भगवानदेव वेदालकार

१ मानव जीवन का महत्त्व

ससार म अनेक बहुमूल्य पदार्थ है। उनमे मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है अनेक जन्मो के पश्चात दुलभ मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तुलसीदास जी ने इसकी श्रेष्ठता व महिमा इन शब्दो मे कही है

बडे भाग मनुष्य तन पावा।
सुर दुर्लभ सदग्रन्थहि गावा।।

भाग्यशाली को यह जीवन प्राप्त होता है। आत्मज्ञान एव आत्मदर्शन इसी मे सम्भव है। यही जीवन परमार्थ धर्मार्थ व पुण्य कर्म करने का आधार है। मनुष्य शरीर मे ही भक्ति पूजा प्राथना साधना सेवा शुभ काय आदि हो सकते है। इसी जन्म की सफलता के द्वारा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुचा जा सकता है। इस जीवन की प्राप्ति एक स्वर्णिम अवसर है ऐसा सुनहरा मोका बार बार नही मिलता। किसी कवि का यह कहना उचित ही है —

रात गवाई सोयकर दिवस गवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था कौडी बदले जाय।।

२ आज के मानव की स्थति

आम आदमी दुलभ मानव जीवन का खाने पीने साने और विषय भागो म ही गुजार देता है। जीवन को सीधा करते करते ही जीवन खत्म हो जाता है। जीवन की सफलता की तैयारी करते करते ही जीवन निकल जाता ह। आज के इन्सान ने जीवन का अर्थ समझा ही नही जीवन को सफल बनाया ही नही। फिर भी हम देखते है कि जीवन के दो मुख्य पहलू है एक सफल जीवन और दूसरा निष्फलता का जीवन। कुछ व्यक्ति अपने जीवन मे सफल हो जाते है किन्तु कुछ व्यक्ति अपने मानवोचित कमजोरी के कारण दूसरे की सफलताओ से दु खी होते है। यो तो सुख और दु ख मानव जीवन के साथ साथ जुडे रहते है।

३ सफलता के रहस्य और दु ख का कारण

जहा सफलता है आत्म सन्तोष है शान्ति है खुशी है प्रसन्नता है सुख समृद्धि है। वहा सुख है आनन्द है। जहा निष्फलता है कमजोरी है ईर्ष्या है द्वेष है असन्तोष है अभाव है अन्याय है अत्याचार है वही परेशानी है दु ख है अशान्ति है। मानव मे कमजोरी है कि वह जीवन की सफलता के लिए इतना श्रम नही करता जितना उसे करना चाहिए। वह जहा दूसरे व्यक्ति को सफलता की ओर बढता हुआ देखता है वही वह अपनी अन्दर की छिपी हुइ कमजोरी ईर्ष्या और द्वेष के कारण दु खी होने लगता है। वह अपनी मन की सकल्प शक्ति को भुला देता है। जल्दी निराशा के वशीभूत हो जाता ह। मनुष्य को आशावादी होना चाहिए। निराशावादी नही। वेद म कहा है तन्मे मनः शिव सकल्पम अस्तु अर्थात हमारा यह मन उत्तम और श्रेष्ठ विचारो वाला हो। कोई हमसे द्वेष न करे और हम भी किसी से द्वेष न कर।

४ सफलता के सूत्र एव कलाये

इसम कोई सन्देह नही ह कि मानव जीवन विशेष जीवनयापन का एक उत्तम पहलू है। सभी मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो युवा अथवा वृद्ध हो कही न कही रहकर अपनी जीवन यात्रा को चलाने के लिए कुछ न कुछ करते है। किन्तु जीवन को सुखपूर्वक जीन की कला को शायद बहुत कम लोग जानते होगे। हमारी इस वार्ता के माध्यम स जीवन मे निराशा स आशा की ओर असफलता स सफलता की ओर अग्रसर होने किसी भी काय का शीघ्र और कुशलता से करन के सरल तरीके एव अनुभूत उपायो पर प्रकाश डाला जा रहा है। जेसे

(क) आज का कार्य कल पर न छोडे— प्रतिदिन का काय प्रतिदिन निपटा देन से ही जीवन म सफलता मिल सकती है। जिसने भी आज का काम कल पर टाला समझो वह एक महत्वपूण समय को खो चुका है। हम किसी चीज का मूल्याकन तब करते है जब वह हमारे हाथो से निकल जाती है। माता पिता की कीमत तब पता चलती है जब वे हमसे विदा हो जाते है। ऐसे ही जब जीवन खत्म हो जाता है तब हमे जीवन की कीमत पता चलती है। और जीने का ढग आता है। इसीलिए कहा है कि —

काल करे से आज कर आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी बहुरि करेगा कब।।

अर्थात कल कल की बात मत करो। मनुष्य के कल को कौन जानता है ? कवि के शब्दो मे — **आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं। सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।।** अर्थात जीवन की सफलता के लिए समय का पालन करो। जीवन का एक एक क्षण अमूल्य है। दुनिया मे सबसे कीमती चीज समय है जो समय को पहचानते और उसकी कीमत करते हैं वे जीवन मे आगे बढ जाते है।

(ख) सफल व्यक्तियो का अनुसरण करे — सफलता सिर्फ एक सयोग नही है। एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है जबकि दूसरे लोग सिफ तैयारिया मे ही लगे रहते है। सफलता और असफलता के विषय पर बहुत खोज हुई है। जब हम सफल व्यक्तियो की जीवनियो पर नजर डालते हे तो पता चलता हे कि सभी म निसन्देह मिलते जुलते कुछ खास गुण है। सफलता हमेशा अपने निशान छोड जाती है और अगर हम इन निशानो को पहचान ले ओर सफल व्यक्तियो के गुणो को अपने जीवन मे अपना ले तो हम भी सफल हो जाएगे। फिर हमे दूसरो की सफलता से दु खी होन की आवश्यकता नही पडेगी। असफलता सही मायनो म कुछ गलतियो को लगातार दोहराने का नतीजा हे।

(ग) अपनी कमजोरी को दूर कर मनुष्य दूसरो की सफलता स दु खी क्यो होता हे ? व्यक्ति मे कुछ कमजोरिया बेठ जाती हे। जेसे मिथ्या अहकार स्वाभिमान की कमी सफलता असफलता का डर विचारपूर्वक भावी योजना का न होना अपने मुख्य लक्ष्यो अथवा उददेश्यो का न होना समय के अनुसार जिन्दगी मे बदलाव न लाना समय पर कार्य न करना अथवा टालमटोल निकम्मापन उचित श्रम न करना पारिवारिक जिम्मेदारियो का पालन न करना आर्थिक असुरक्षा धन की कमी दिशाहीनता रूपये पैसो के लालच की वजह से दूर की न सोचना सारा बोझ खुद उठाना क्षमता से ज्यादा अपने आपको बाधना वचनबद्धता का न होना उचित अनुभव प्रशिक्षण की कमी का होना दृढता की कमी आत्मविश्वास का न होना इत्यादि कमजोरिया के कारण मनुष्य दूसरो की सफलता से दु खी होता देखा गया है।

५ जीवन की सफलता के तीन तत्व

यद्यपि जीवन को सफल बनाने के लिए अनेक सहायक तत्वो की आवश्यकता है जैसे शरीर को धारण करने वाला और पालन पोषण करने वाला महत्वपूर्ण तत्व धन है। धन के अभाव मे जीवन की गाडी चल नही सकती। धनोपार्जन मनुष्य का धर्म है। आचार्य चाणक्य के अनुसार **सुखस्य मूलम धनम** धन को सुख का मूल माना गया है। श्री भर्तृहरि ने तो यहा तक घोषणा कर दी थी कि धनवान ही कुलीन है धन सम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है विद्वान है गुणज्ञ और वक्ता है एव रूपवान है महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने तो यहा तक कह दिया — पुरुषाऽधनम वध धन का न होना मनुष्य की मृत्यु है। धन जीवन विकास का साधन है साध्य नही। धन से श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण जो जवीन का धारण करता है वह है — **स्वास्थ्य अर्थात निरोगिता** — जीवन मे स्वास्थ्य के महत्व को कौन नही अनुभव करता। छोटे से छोटा बडे से बडा क्या अमीर क्या गरीब क्या स्वामी क्या सेवक क्या विद्वान क्या मूर्ख को रोग का अहसास होने पर स्वास्थ्य के महत्व की अनुभूति होती है किन्तु मनुष्य धन एश्वर्य विद्वता एव बल आदि के मिथ्या अभिमान के नशे मे स्वास्थ्य की अवहेलना करने मे कोई कोर कसर नही छोडता। आयुर्वेद के महान आचार्य महर्षि चरक का कथन है — **धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन सबका मूल उत्तम स्वास्थ्य है।**

अतएव जहा जीवन मे धन का बडा महत्व ह वहा स्वास्थ्य के अभाव मे धन का महत्व भी नगण्य सा प्रतीत होन लगता है। जिस प्रकार धन जीवन के विकास को कायम रखने के एव उपभाग के लिए साधन सामग्री जुटाता है। वही जीवन विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण एक ओर तत्व है।

जिसे आचरण या चरित्र कहा जाता ह। इसका सीधा सम्बन्ध मन ओर आत्मा से है। प्राय देखा गया है कि चरित्र के अभाव मे बडे बडे धनधारी समय आने पर विनाश के गर्त मे गिरकर नरक भोगने लगते है। जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम आचरण होना आवश्यक है उत्तम आचरण से मानव दु ख दाई पाप से बचा रहता है और वह जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है। जीवन मे सफलता के लिए जरूरी है — श्रेष्ठता — सफलता की राह म कामयाबी हासिल करने के लिए हमे श्रेष्ठता हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। श्रेष्ठ होने की कोशिश करना ही तरक्की है। प्रकाशकवि का यह कथन उचित ही है —

बैठा क्यों हाथ पै हाथ धरे मुखडे पर छायी क्यो घोर उदासी शक्ति निधान महान है तू, यह जान करा न जहान मे हासी।
अन्तर तेरे प्रवाहित है सुख स्रोत निरन्तर बारह मासी।
व्याकुल तू फिर भी है प्रकाश अचम्भा ये पानी में मीन है प्यासी।।

— ६४ विकासनगर फैस ३ निकट बाला जी मन्दिर (हस्तसाल एरिया) नई दिल्ली ५६

आर्यसमाज, भविष्य की रणनीति

– जयसिह गायकवाड

१० अप्रैल १८७५ का दिवस न केवल भारतवर्ष के अपितु ससार के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण दिवस बन चुका है। स्मरणीय है कि इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने मुम्बई जैसे महत्वपूर्ण नगर मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज एक सो पच्चीस वर्ष की आयु को प्राप्त हो चुका है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज रूपी नन्हे शिशु को ६ वर्ष तक दुलारते पुचकारते हुए सस्कारित किया। इसके लिए वे अहर्निश प्रयास करते रहे। सारे उत्तर भारत मे उन्होने आर्यसमाज के ओ३म ध्वज को फहराया। महर्षि के निर्वाण हाने के पश्चात महर्षि से प्रेरणा प्राप्त स्वामी श्रद्धानन्द जी प० लखराम जी लाला लाजपत राय जी महात्मा हसराज जी प० गुरुदत्त जी आदि महानुभावो ने आर्यसमाज का डका भारत मे बजाया। इसकी ध्वनि विदेशो मे भी पहुची।

आर्यसमाज अभी १२५ वर्ष की आयु की ही सस्था हुई है। सस्थाआ की आयु की दृष्टि से यह बहुत लम्बी नही है। हम देखते है कि ससार पटल पर अनेक सस्थाए अनक विचारधाराए प्रगट हुई और झझावातो मे उनका अन्त भी हो गया। महर्षि दयानन्द ने अपनी इस सस्था को एक सुदृढ आधार पर अर्थात नियमो से बाध कर ओज पूर्ण विचार धारा पर उस खडा किया। धार्मिक सस्थाओ के इतिहास मे प्रजातन्त्रात्मक सस्था बनाना महर्षि दयानन्द जैसे विलक्षण गुण वाले व्यक्ति का ही अनुपम कार्य है। आर्यसमाज ससार की महत्वपूर्ण सस्थाओ मे अपना गरिमा पूर्ण स्थान रखता है।

भारत भ्रमण पर आए सर एडवर्ड डगलस मलेवाकन ने कहा – **जितनी समाजे हैं उनमे आर्यसमाज सर्वोत्कृष्ट है। आर्यसमाज का सामाजिक कार्यक्रम स्वतन्त्र और लोकप्रिय है आर्यसमाज का सगठन बहुत ही उत्तम है।** भारतवर्ष के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री जत्ती ने माना है **'आर्यसमाज ने सौ वर्ष में समाज सुधार, शिक्षा विस्तार महिला जागृति के क्षेत्र मे जो योगदान दिया है वह निश्चित ही प्रशसनीय है।'** श्री भीमसेन सच्चर द्वारा माना गया है **'गत एक सौ वर्षो से से आर्यसमाज भारत को महान शौर्य सम्पन्न, तथा प्रभु के प्रति आस्थावान लोगों का देश बनाने के लिए सघर्षरत शक्तियो मे अगुआ रहा है।'** युवक हृदय सम्राट श्री सुभाष चन्द्र बोस ने तो कहा **'सगठित कार्य दृढता उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता है।** इन उद्धरणो को देखने से ज्ञात होता है कि विचारको नेताआ विद्वानो ने आर्यसमाज के भूतकाल का समुचित मूल्याकन किया है। इससे हम यह निष्कर्ष भी निकाल सकते है कि भविष्य के मूल्याकन का आधार भी इन्ही प्रवृत्तियो पर होगा।

आर्यसमाज के भविष्य के निमाण के लिए गहन चिन्तन की आवश्यकता हे। सस्थाओ के निर्माण और विकास के लिए सुदृढ आधारभूत ससाधना की आवश्यकता पडती हे। अत हमे उस आर ध्यान देना होगा। यह दृष्टव्य है कि सस्थाना की स्थापना अपने आप मे उद्देश्य नही हे। वे उद्देश्य की पूर्ति के साधन हें। हमे इस बात का ध्यान रखना होगा। आर्यसमाजा सभाओ का निर्माण व सचालन हम कर रहे है। आइए हम विचार कर कि क्या हमारे उद्देश्यो की पूर्ति हो रही है। प्रश्न का उत्तर सकारात्मक हो सकता ह परन्तु हमे स्वीकार करना हागा कि आशिक सत्य है। आज युग कितना आगे बढ गया है ओर हम कहा हे ? हमारी सस्थाए कितनी स्क्षम है हमारे उद्देश्यो की पूर्ति के लिए ?

आर्थिक पहलू ही सबसे पहले लेवे। शिरोमणी सार्वदेशिक सभा की स्थिर निधियो को देखे तो वे लगभग ८६ लाख रुपयो की है। प्रतिनिधि प्रदेशीय सभाओ के बारे मे आकडे नजर मे नही आए हैं परन्तु उनकी स्थिति भी इसी प्रकार की होने का अन्दाज लगाया जा सकता है। इन निधियो से हम किस प्रकार के विकास की आशा कर सकते हैं। विभिन्न सभाओ को और सार्वदेशिक सभा को गणमान्य तथा सम्पन्न लोगो से सम्पर्क करके एक बडा वेद प्रचार फण्ड बनाना होगा। सम्मेलन व महासम्मेलन मे हम काफी पैसा सामूहिक रूप से एकत्र करके सर्वसाधारण आर्यो से तथा देश विदेश के धर्म एव कल्याणकारी सस्थाओ आदि के द्वारा सहयोग लेना होगा। इसके लिए सक्षम लोगो की समिति बनानी होगी। उपलब्ध तथा भविष्य मे सग्रह की गई राशि को किस प्रकार इन्वैस्ट किया जाए जिससे कि उसे अधिक लाभ मिल सके। इस सम्बन्ध मे विशेषज्ञो की राय ली जाए। कहावत है 'मनी मेक्स द मेयर गो इसलिए सर्वदिशाओ मे कार्य करना होगा।

महर्षि दयानन्द द्वारा आर्यसमाज का सगठन लोकतन्त्र आधार पर खडा किया गया था। उनकी आशा के अनुरूप यह त्रिस्तरीय सगठन हो गया। इस प्रजातात्रिक सगठन ने जा कार्य किया वह हमारे सामने है। यह निसन्देह रूप से कहा जा सकता हे कि हमारी अपेक्षाए पूण नही हुई है। हम सगठन का विकास तो करना है परन्तु विकास गणनात्मक होने के साथ गुणात्मक भी हो यह ध्यान रखना होगा। सस्थाओ को सक्रिय ऊर्जावान और समय के अनुकूल बनाना होगा। उसे भविष्य की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए तयार करने की आवश्यकता है। लाकतन्त्र के उजले पार्श्व को तो हम जानत हैं परन्तु कुछ सीमाओ की ओर भी ध्यान देना होगा।

पिछली दशाब्दी मे हमारी विकास की जो दौड रही उसमे जो व्यवधान मुकदमे बाजी आदि कारण हुए हे वे हमारी प्रतिष्ठा को धक्का देने वाले रह है। मिल बैठकर इस कमजारी से अलग करना होगा।

आयसमाज के क्षेत्र म नीचे से लेकर शीर्ष सम्था तक निर्वाचनो को लेकर विवाद चलत रहत है। ये कहने मे सकोच नही हे कि प्रचार न होने की चिन्ता कम होती है। हमारा अधिकाश समय शक्ति व धन निर्वाचनो के विवादो को निपटाने मे ही लगा रहता है। इसके लिए आर्यसमाज के उपनियमो का गहन विवेचन व पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है। समय के अनुसार परिवर्धन परिवर्तन करना होगा। यहा एक–दो उदाहरण दिए जा रहे है –

१ उपनियम ४० को स्पष्ट करना।

२ एक आवश्यक सशोधन उपनियम ८ मे करना होगा। ऐसा लगता है कि यह उपनियम सरल व साधारण परिस्थितियो के लिए बनाया गया प्रतीत होता है। आज भी जटिल (कॉप्लक्स) परिस्थितियो मे विस्तृत प्रावधान करना होगा। इसमे अभी उपधाराए है। छठवी उपधारा निम्नानुसार जोडी जा सकती है –

मतदाता सूची निर्वाचन कार्यक्रम निर्वाचन प्रक्रिया का निर्धारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा द्वारा इस सम्बन्ध मे बनाई गई उपविधियो (रूल्स) के अनुसार होगा।

इस प्रकार की उपविधिया सार्वदेशिक सभा द्वारा बनाने व उनको लागू करने से बहुत से विवादो का आधार ही समाप्त हो जाएगा।

३ आर्यसमाजो के सत्सगो मे उपस्थिति प्राय बहुत कम होती है। परन्तु उपनियम ३ के अनुसार आय सभासदो की सूची बहुत बडी बन जाती है। इस विसगति की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। सदस्यो की उपनीति की अनिर्वायता की ओर यदि ध्यान दिया गया तो सत्सगा की उपस्थिति मे स्वयमेव बढोत्तरी हो जाएगी।

यह लिखने की आवश्यकता नही कि कार्यरत एव गतिशील सस्थाओ मे नियमो म लोच होना आवश्यक हे साथ ही समयानुकूल परिवर्तन परिवर्धन म सकोच नही होना चाहिए।

शोध साहित्य निर्माण व प्रकाशन

डा० श्री भवानीलाल जी भारतीय कृत आर्य लेखक काष तथा अन्य स्त्रोतो से अभी तक हुए शोध रचित एव प्रकाशित साहित्य का परिचय प्राप्त होता है। प्रकाशित साहित्य की सूची के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अनेक महत्वपूर्ण पुस्तको का प्रकाशन वाछित होगा। उच्चतम स्तर पर इस बारे मे विचारशील होकर कार्य करना चाहिए।

कुछ शोध आवश्यक हे। इसी प्रकार नवीन साहित्य निर्माण भी आवश्यक है सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के उपरान्त कुछ मत तथा सम्प्रदायो का जन्म हो गया है। इन समुदायो के ग्रन्थो आदि की आलोचनाए तैयार कर प्रकाशित करना आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश मे जो आलोचना हुई है वे सक्षेप मे है या उन्हे प्रतिकात्मक (टोकन) माना जा सकता है। इनके बारे मे भी गहराई मे जाना आवश्यक है। इन सबकी योजना बनाना चाहिए। पिछले दिनो आर्य लेखक परिषद का गठन हुआ है। उसके द्वारा बैठके आदि की जा रही है। परिषद् से परामर्श करके आगे बढा जा सकता है। आर्यसमाज के पास गुरुकुल विश्वविद्यालय अन्य गुरुकुल शोध सस्थान आदि है। विचार विमर्श करके लेखक मण्डलो का गठन करके साहित्य सृजन किया जा सकता है। आर्यसमाज पुस्तक नाम से एक स्वय पूर्ण ग्रन्थ की आवश्यकता है। इसी प्रकार युवकोचित साहित्य का निर्माण भी आवश्यक है। इसमे युवको को ज्यादा लाभ होगा वहा हमे युवक प्राप्त होगे। यहा ध्यान रहे कि प्रकाशन मे विषय वस्तु उच्चस्तर की होना चाहिए वही उन्का कलेवर भी आकर्षक होना चाहिए। इस मे ग्रन्थ ये भी ध्यान रखना होगा कि लागत एव स्वल्प मूल्य मे उपलब्ध होवे।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

पृ० ७ का शेष भाग

आर्यसमाज भविष्य की रणनीति

हमारी शिक्षा सस्थाए

आर्यसमाज का गौरव था कि वह मात्र विभिन्न प्रकार की व उच्च स्तरीय शैक्षणिक सस्थाओ की सचालक रही है तथा उसके द्वारा मार्गदर्शीय (पाइलर) कार्य हुआ है परन्तु बदली हुई परिस्थितियो एव आवश्यकताओ के अनुरूप अब वह किस स्थिति मे है यह एक विचारणीय प्रश्न है। आर्य जगत मे शैक्षणिक सस्थाओ को लेकर बडी आलोचना हुई है। प्रश्न यह है कि जो जनशक्ति एव धनशक्ति इस मे लगी हुई है उससे हमे क्या प्राप्त हो रहा है ? क्या इन सस्थाओ से निकले हुए विद्यार्थी भले ही आर्यसमाजी न बने परन्तु क्या जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बदला है ? आर्य शिक्षण सस्थाओ के सचालको को रचनात्मक रूख अपनाना होगा। शिक्षण सस्थाओ के सचालको को सबसे पहले जो ध्यान देने की बात यह है कि आर्य विचारधारा वाले शिक्षक शिक्षिकाओ की नियुक्ति की जाए। यदि आर्य शिक्षक प्राप्त नही होते हो तो ऐसे व्यक्तियो के मस्तिष्क का परिष्कार करना होगा। शिक्षक शिक्षिकाओ के लिए प्रत्यास्मरण शिविरो का आयोजन विशेषज्ञ विद्वानो के सानिध्य मे किया जाए।

डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा धार्मिक शिक्षको के प्रशिक्षण के लिए प्रशसनीय कार्य किया गया है। इसका अनुसरण अन्य सस्थाओ को करना चाहिए या योजना का लाभ उठाना चाहिए। इस सम्बन्ध मे एक बात और ध्यान देने योग्य है। विभिन्न प्रान्त मे या डी०ए०वी० समिति द्वारा धार्मिक शिक्षा की अपनी अपनी पुस्तक छापी गई है। यदि सब के बीच समन्वय लाकर पुस्तको का पुनर्लेखन किया जाए यह उच्च स्तरीय तो होगा साथ ही कम मूल्य पर विद्यार्थियो को उपलब्ध हो सकेगा।

परीक्षण सस्थाओ के माध्यम से हमारे पास जो जनशक्ति कर्मचारियो एव विद्यार्थियो की उपलब्ध होती है। उसका उचित ढग से दोहन किए जाने की आवश्यकता है।

युवको की सस्थाए

आर्य वीर दल आदि युवको की सस्थाए कार्यरत हैं। युवको के लिए स्थानीय प्रादेशिक व राष्ट्र स्तरीय शिविरो का आयोजन होता है। इसमे सन्देह नही कि शिविरो मे युवको को दिशा निर्देश प्राप्त होते है। प्रशिक्षित युवको को आर्यसमाजे आकर्षित नही कर पा रही हे या युवक ही उधर क्यो नही जा रहे है यह विचारणीय प्रश्न है। शिविरो के मानसिक रूप से सुसज्जित करने के लिए पाठयक्रमो का पुनरावलोकन किया जाना चाहिए। शारीरिक अभ्यासा क अतिरिक्त वक्तृत्वशैली व नेतृत्व विकास के लिए ध्यान दिया जाना आवश्यक है। शिविर मे प्रशिक्षित युवक वेतन भोगी कार्यकर्ता के स्थान पर सगठन के लिए समय देने वाले कार्यकर्ता तैयार होना चाहिए। अधिक शिविरो के द्वारा अधिक से अधिक अधकचरे वीर तैयार करने के स्थान पर पूर्व प्रशिक्षितो को पुन पुन प्रशिक्षण देकर पूर्ण सक्षम कार्यकर्ता बनाना आवश्यक हे। अग्रजी मे जिस फॉलोअप रूप कहा हे वह किया जाना उचित होगा। पूर्व प्रशिक्षित युवक यदि शाखाओ मे जाने लगे शाखा सचालन करे एव आगे सभाओ मे योगदान दने लगे तो आयोजनो की सफलता होगी। सार्वदेशिक सभा द्वारा समुचित रूप से निर्देश दिए गए है। अपेक्षा है कि प्रतिनिधि सभाए तथा आर्य समाजे इस कार्य की प्राथमिकता को अनुभव करे और आर्यसमाज के पुनरोदय मे युवको की भूमिका को सुनिश्चित करे। इसके अलावा और कोई मार्ग नही हे।

देश देशान्तर प्रचार

आर्यसमाज का स्वर्णयुग था जब हर आर्यसमाजी चाहे महिला हो या पुरुष अपने आप मे प्रचार करता था। बदली हुई परिस्थितियो मे वैसी आशा नही की जा सकती है परन्तु यह तो अपेक्षा की ही जा सकती है कि आर्य लोग सवध्यायशील और मुखर होवे। उनमे अन्य लोगो को प्रभावित करने की प्रवृत्ति का विकास हो।

उपदेशको प्रचारको के द्वारा जो कार्य किया जा रहा है वह स्वागतेय है परन्तु उनके लिए भी समय समय पर प्रत्यास्मरण शिविरो के लगाए जाने की आवश्यकता है जिससे उनमे आत्मविश्वास का विकास होवे।

एक बात की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि ऐसे सुयोग्य विद्वान जो लेखक है उन्हे प्रचारार्थ नगर ग्रामो मे लगातार भ्रमण न करवाया जाए। इससे उनकी योग्यता का पूरा लाभ नही मिलता है। ऐसा करके पहले आर्यसमाज हानि कर चुका है।

उपदेशक विद्यालय व गुरुकुलो से निकले हुए कुछ विद्वान भी इस क्षेत्र मे कार्य करते है। इस बडी सस्था मे उपलब्ध उपदेशको का समुचित उपयोग करने की व्यवस्था होनी चाहिए। इन विद्वानो उपदेशको आदि को मिल कर एक आचर सहिता बनाना चाहिए जिससे वे किसी अनावश्यक चर्चा मे न आ सके। युग बदल चुका है सूचना प्रौद्योगिकी के युग मे हम चल रहे है अत दृश्य श्राव्य माध्यम से अपना प्रचार कार्य करने की तैयारी करनी होगी।

विगत मुम्बई महा सम्मेलन मे कैप्टन देवरत्न जी ने अन्तर्राष्ट्रीय अनुसधान केन्द्र के निर्माण की योजना प्रस्तुत की थी। यह एक बहुउद्देशीय कम्पनी है। इस योजना से बहुत आशाए की जा सकती है। इसे हमे एक मार्गदर्शी योजना मानना होगा। ऐसी एकाधिक योजना हो तभी सारे देश मे प्रचार कार्य हो सकता है।

केप्टन श्री देवरत्न जी न आस्था चैनल पर कार्य प्रारम्भ करवाया हे अनुभवो के आधार पर इसका विस्तार करना होगा। उसमे सन्देह नही हे कि यह कार्य काफी खर्चीला है। परन्तु इसके अलावा कोई और रास्ता भी नही है और इस क्षेत्र मे आर्यसमाज काफी पिछड गया था। पर देर आयद पर दुरुसत आयद।

इन्टरनेट वेब साईट आदि मे हमारे कदम बढ रहे है। स्वागतेय है तथा अनुसरणीय भी।

कुछ छोटी मोटी पर आवश्यक बातो की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है कर्म काण्डो की ओर ही देखे। सार्वदेशिक धर्माय सभा द्वारा निर्धारित प्रणाली का अनुसरण नहीं हो रहा है। इस ओर ध्यान देना होगा। इसलिए जहा एकरूपता हागी वही अनुशासन का पालन भी होगा।

आर्यसमाजो आदि द्वारा विशाल यज्ञो का आयोजन किया जाता है। इसका कोई आधार नही है। अच्छा हो कि धमार्य सभा चारो वेदो से यज्ञ तथा यज्ञ मे आहुति देने योग्य मन्त्रो को छाट कर ग्रन्थ तैयार कराए। छपाने के व्यवस्था भी की जाए। ऐसा करते ही जहा एकरुपता होगी वही तार्किकता भी होगी तथा आध्यात्मिक क्षुधा की तृप्ति हो सकेगी।

आर्यसमाज या महर्षि दयानन्द के नाम पर अनेक सस्थाए सचालित है धन सग्रह करने के लिए आर्यसमाज व महर्षि का नाम लिया जाता है परन्तु कुछ सस्थाए व्यक्तिगत लाभ उठा रही हैं। ऐसी सस्थाओ पर आर्यसमाज के नियन्त्रण के लिए रास्ते तलाशने होगे।

विस्तार भय से यहीं विराम दिया जाता है। अन्त मे यह कहना होगा कि आर्य समाज बडे से बडे नेताओ से लेकर साधारण कार्यकर्ता सबकी साझा सस्था है। सबको जागरूक होकर तृतीय सहस्त्राब्दि के लिए कार्य करना होगा।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है।।

कृष्णनगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव

कृष्णनगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव २२ अप्रैल २००२ से २८ अप्रैल २००२ तक धूमधाम से मनाया जा रहा हे। २१ अप्रैल २००२ को प्रात प्रभात फेरी भी निकाली जाएगी। २२ अप्रैल से २७ अप्रैल तक रात्रि ८ से ६ भजन श्री दिनेश दत्त जी तथा ६ से १० बजे तक वेदोपदेश वेदरत्न डॉ० सत्यव्रत राजेश हरिद्वार वाले द्वारा होगा। पूर्णाहुति २८ अप्रैल रविवार को होगी। उस दिन यज्ञ भजन उपदेश ऋषिलगर का कार्यक्रम प्रात ७ ३० से २ ३० बजे तक चलेगा। सभीधर्मप्रेमी भाई बहिनो से प्रार्थना है यज्ञ सत्सग मे पधार कर धर्म लाभ उठाए। यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रात ६ ३० से ८ ०० बजे तक चल रहा है।

— हरभगवान, मन्त्री
आर्यसमाज, कृष्ण नगर, दिल्ली ५१

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद का वार्षिक निर्वाचन आर्यसमाज गाजियाबाद के सभागार मे सम्पन्न हुआ जिसमे श्री श्रद्धानन्द शर्मा प्रधान श्री हरप्रसाद पथिक मन्त्री एव श्री जयपाल सिह आर्य – कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। शेष पदाधिकारियों तथा अतरग सभासदो को मनोनीत करने का अधिकार श्री सभा ने इन्हीं तीनो अधिकारियो को दिया।

— तेजपाल सिह, प्रचारमन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

ग्रीष्म ऋतु में पेट के मुख्य रोग

– डॉ० बी०डी० अग्रवाल

आजकल गरमी के मौसम मे पीने के स्वच्छ जल की कमी मक्खी मच्छरो की बढत तेजी से उडती धूल जीवाणुओ तथा अमीबा जैसे परजीवी का आसानी से पनपना पेट के विभिन्न रोगो के लिए जिम्मेदार होते है। इन कारणो से होने वाले पेट के विभिन्न रोग तथा उनसे बचने के उपाय इस प्रकार हैं।

डायरिया पतले दस्तो का बार–बार होना जीवाणु, वायरस तथा अमीबा एव जियारडिया परजीवी के सक्रमण से मुख्यत होता हैं। रोगी को केवल पतले दस्त हो सकते हैं या साथ मे रक्त म्यूकस या आव भी आ सकता है तब इसे डीसेन्ट्री या पेचिश कहते हैं। पतले दस्तो के साथ उल्टिया होने पर इसे गेस्ट्रो ऐटेराइटिस कहते हैं। जीवाणुओ तथा परजीवी के सक्रमण से बडी आत मे उत्पन्न सूजन को कोलाइटिस कहते है। छोटी आत मे खास प्रकार के जीवाणु कोलेरा विब्रियो के सक्रमण से पानी जैसे पतले दस्तो की बीमारी को कोलेरा कहते है। गेस्ट्र–एटराइटिस आत्रशोथ मे आमाशय एव आत की म्यूकस झिल्ली मे जीवाणु अथवा वायरस के सक्रमण से सूजन हो जाती है। यह रोग किसी भी उम्र मे हो सकता है लेकिन बच्चो को आसानी से प्रभावित कर देता है जिनमे बहुत थोडे ही समय मे पानी तथा खनिज लवणो की खतरनाक रूप से कमी हो जाती है जो जानलेवा भी सिद्ध हो सकती है। खानपान मे स्वच्छता रखने से तथा त्वरित और प्रभावी उपचार से इससे बचा जा सकता है। प्रदूषित जल एव भोजन ग्रहण कर लेने से यह रोग फैलता है। प्रदूषित जल एव भोजन के शरीर मे पहुचने के कुछ घण्टो बाद ही रोगी को उल्टी पतले दस्त और पेट दर्द शुरू हो जाता है। दस्तो की सख्या एक दिन मे लगभग ५ से ५० तक हो सकती है। कुछ रोगी बुखार सिरदर्द तथा चक्कर आने की भी शिकायत करते है। उल्टी और दस्तो मे शरीर का जल तथा खनिज लवण बहुत अधिक मात्रा मे निकल जाने से अनेक जटिलताए उत्पन्न हो सकती है। यदि रोगी को लगातार उल्टिया न हो रही हो तो पानी तथा खनिज लवणो की पूर्ति के लिए मुह से स्वच्छ पानी खनिज लवणो (नमक इत्यादि) तथा ग्लूकोस का मिश्रण बहुत लाभदायक माना जाता है। दूरदराज के गावो मे यह उपलब्ध न हो तो चीनी तथा नमक का घोल उबले पानी मे तैयार करके नींबू के रस की कुछ बूदे मिलाकर रोगी को दे सकते हैं। यदि पतले दस्तो के प्रारम्भ होते ही यह घोल दे दिया जाए तो शरीर मे जल तथा खनिज लवणो की विशेष कमी नहीं होगी।

पेचिश डीसेन्ट्री शिगेला जीवाणु अथवा अमीबा परजीवी से बडी आत मे सक्रमण सूजन व घाव बनने से होती है। जिसके मुख्य लक्षण बार–बार पहले दस्त आना पाखाने मे आव खून व मवाद निकलना पेट मे मरोड के साथ दर्द होना हैं। कुछ रोगी बुखार जी मिचलाना चक्कर सिरदर्द जोडो मे दर्द कमजोरी घबडाहट की भी शिकायत करते है। शरीर मे जल खनिज लवणो व खून की कमी हो जाने पर कुछ रोगी अत्यधिक कमजोरी भी बताते है जिनमे नाडी की गति तेज तथा ब्लड प्रेशर कम मिलता है। ऐसी दशा मे चिकित्सक से तुरन्त परामर्श करे। इस रोग की पहचान अल्सरेटिव कीलाइटिस आत की टी०बी० तथा कैसर से करना जरूरी होता है चूकि कुछ रोगी कैसर होते हुए भी डीसेन्ट्री समझ कर कई माह तक दवा लेते रहते है जबकि कैसर तेजी से बढकर लाइलाज हो जाता है। **टॉयफायड ज्वर** यह भी छोटी आत का एक सक्रामक रोग है जिसमे आत मे घाव बन जाते है। बुखार चढने के साथ रोगी पहले कब्ज तथा बाद मे पतले दस्तो की शिकायत करते है। निदान व उपकार के अभाव मे घाव फट जाने से मल के रास्ते अत्यधिक मात्रा मे ब्लीडिग होने लगती है। कुछ रोगी बेहोश भी हो जाते है। जीभ पर सफेद गाढी पर्त एकत्र हो जाती है। **कोलेरा** विब्रियो नामक जीवाणु से प्रदूषित जल के ग्रहण कर लेने से छोटी आत मे सूजन वाले रोगी कुछ ही घण्टो मे अत्यधिक पतले चावल के मॉड जैसे दस्त अत्यधिक कमजोरी तथा पैरो मे दर्द की शिकायत करते है। मल के रास्ते जल तथा नमक व अन्य खनिज लवण अत्यधिक मात्रा मे निकल जाते है जबकि मल की मात्रा बहुत कम होती है। इसीलिए इस रोग के उपचार मे जल तथा नमक की पूर्ति त्वरित रूप से अत्यावश्यक होती है। **अमीबिक कोलाइटिस** अमीबा या ई०एच० नामक परजीवी जिसे सूक्ष्मदर्शी यत्र से ही देखा जा सकता है से प्रदूषित जल या भोज्य पदार्थ ग्रहण करने पर ये बडी आत मे पहुच कर तथा पनपकर अपनी सख्या मे वृद्धि करके अत मे सूजन घाव (अल्सर) सकरापन गाठ (अमीबोमा) उत्पन्न कर देते है। तीव्र कोलाइटिस के रोगी पतले दस्तो का बार बार होना ब्लड तथा म्यूकस या आव पाखाने के रास्ते निकलना तथा मरोड के साथ पेट के निचले भाग मे दर्द रहना गैस का अधिक बनना बताते हैं। **हिपेटाइटिस पीलिया** हिपेटाइटिस (लीवर मे सूजन) उत्पन्न करने वाले वायरस (बहुत सूक्ष्म जीव) कई प्रकार की होती है जिनमे से मुख्य वायरस 'ए तथा 'बी है। वायरस ए मुख्यत रोगी के मल से फैलती है। इस वायरस से प्रदूषित जल अन्य खाद्य पदार्थ ग्रहण कर लेने से स्वस्थ व्यक्ति भी रोगी हो सकता है। वायरल हिपेटाइटिस के मुख्य लक्षण अचानक भूख खत्म हो जाना जी मिचलाना उल्टिया होना थकावट कमजोरी बुखार हाथ पैरो मे दर्द मूत्र आखो तथा त्वचा का रग पीला हो जाना है। बहुत से रोगी पेट के दाये ऊपरी लिवर वाले स्थान मे दर्द भी बताते है। बचाव पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करके तथा खानपान मे स्वच्छता के नियमो का कडाई से पालन करके उपरोक्त सक्रामक रोगो से बचा भी जा सकता है। कुछ उपयोगी सुझाव इस प्रकार है पानी सदैव स्वच्छ ही पिये। पेट के उल्लिखित रोग यदि व्यापक रूप से फैले हो और यदि पानी की स्वच्छता के बारे मे सन्देह हो तो पानी उबाल कर पिये तो अधिक उत्तम होगा। भोजन सुपाच्य एव ताजा ले। खाने–पीने की सभी वस्तुओ को धूल मक्खी काकरोच चूहो से बचाए। फलो को सदैव घर पर लेकर धोकर ही खाए। तरकारी पानी से भलीभाति धोए।

– सीनियर चिकित्सा विशेषज्ञ मेडिकल कालेज कानपुर

टकारा में ऋषिबोध उत्सव के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ध्वजारोहण करने के बाद अन्य आर्यजनो के साथ। सभा प्रधान जी के साथ मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री अरुण अवरोल अपनी धर्म पत्नी के साथ यज्ञ करते हुए।

विश्व को आर्य कैसे बनाएं

ईश्वराज्ञा पालन के २१ सूत्र

हम व्यक्तिगत रूप से ईश्वर जगत–पिता ओ३म की आज्ञा का पालन निम्न तरीको से कर सकते है –

१ अपने आर्य उत्तम गुण कर्म स्वभावो को बढाकर।
२ वेद और आर्य ग्रन्थो का स्वाध्याय करके।
३ वेद ज्ञान रहित लोगो मे प्रचारार्थ प्रतिदिन कुछ घण्टे लगाकर।
४ अपनी आय का एक प्रतिशत प्रचार कार्य मे दान देकर।
५ अपनी सन्तानो को वैदिक शिक्षा देकर।
६ अपने मित्रो को वैदिक मार्ग दिखलाकर।
७ अपने घर मे हवन सत्सग का आयोजन कर।
८ अपने मित्रो सहयोगियो मे वैदिक साहित्य बाट कर।
९ अपने सन्तानो का यथा समय वैदिक सस्कार करवा कर।
१० अल्प मूल्य पर प्रचार साहित्य बाटकर।
११ अपने सन्तानो को गुरुकुल मे पढवा कर।
१२ वैदिक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रो को छात्रवृत्ति देकर।
१३ वैदिक शिक्षण सस्थाओ को धन आदि से सहयोग करके।
१४ अपनी योग्यतानुसार अशिक्षितो और अन्धविश्वासो के मध्य प्रवचन करके।
१५ वैदिक सिद्धान्तो पर वाद–विवाद परिचर्चा व सगोष्ठी आयोजित करके।
१६ भजन एव प्रवचन दृश्य–श्रव्य कैसेट तैयार कर बेच कर भेट कर।
१७ पुस्तक प्रदर्शनी लगवाकर।
१८ छोटी–छोटी पुस्तके लिखकर।
१९ दुर्लभ और सस्ते साहित्य छपवा कर।
२० वैदिक पर्वो को पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर विधि पूर्वक मनाकर।
२१ स्वय एक कुशल सदाचारी कर्मचारी अधिकारी बनकर हम विश्व के प्रत्येक मानव को आर्य बना सकते है।

तत्पश्चात ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के यर्थाथ स्वरूप की जानकारी देकर आर्यसमाज के नियमो के पालन का दिग्दर्शन उपरियुक्त तरीको से कराकर। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज नामक सस्था की स्थापना की उन्होने अपने स्वानुभव वेदानुकूल प्रमाणो तर्को एव युक्तियो से ईश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना का स्वरूप निम्न प्रकार रखा।

१ **स्तुति** – जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण ज्ञान कथन श्रवण ओर सत्य भाषण करना है वह स्तुति कहलाती है।

२ **प्रार्थना** – अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कार्यो की सिद्धि के लिए परमेश्वर का सहारा लेने को प्रार्थना कहते है।

३ **उपासना** – उपासना का अर्थ समीपस्थ होना आत्मा का परमात्मा से मेल होना।

– दशरथ प्र० मेहता विज्ञान शिक्षक ग्राम पो कमलपुर वाया कुणौली बाजार जिला सुपौल

जिला कोरापुट मे १६८ परिवारो के ७५० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म मे दीक्षित

उडीसा के कोरापुट जिले के पटागी ब्लाक के धवानामक ग्राम सार्वदेषिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एव देखरेख मे चल रहे धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत वैदिक धर्म की दीक्षा एव पुनर्मिलन का एव विशाल कार्यक्रम २५,२६ मार्च को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इसमे १६८ परिवारो के ७५० से अधिक इसाई वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए। कार्यक्रम का सचालन सभा के उपप्रधान श्री प० विशिकेसन जी शास्त्री एव आदिम गुरुकुल आश्रम कुडुली के आचाय ब्र० विनय कुमार जी ने किया। यह आयोजन सभा के प्रचारक श्री ब्र० करुणाकर जी के अनथक परिश्रम से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आसपास के २० ग्राम के ५ हजार से अधिक नरनारी यज्ञ और दीक्षा कार्यक्रम को देखने के लिए उपस्थित थे। दोनो दिन निरन्तर ऋषि लगर भी चलता रहा। इस अवसर पर अनेक वक्ताओ ने वैदिक धम की विशेषता बतलायी।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	प० हरबस लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	विमल वधावन महासम्मेलन संयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मंत्री	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री कुलपति	सुदर्शन शर्मा सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	डॉ० महावीर कुल सचिव	आचार्य यशपाल सभा उप प्रधान

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002

दूरभाष (011) 3274771 3260985 E mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तरांचल)

दूरभाष (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का नया प्रवेश

(१० जून २००२ सोमवार को प्रात·)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जिला जालन्धर) पजाब मे कक्षा छठी से कक्षा नावी तक मे प्रवेश के इच्छुक छात्रो की प्रवश परीक्षा १० जून २००२ सोमवार को प्रात १० बजे ली जाएगी। कक्षा छठी के प्रवेशार्थियो को केवल गणित हिन्दी अग्रेजी मे तथा शेष तीन कक्षाओ के प्रवेशार्थियो की गणित हिन्दी सस्कृत तथा अग्रेजी विषयो की स्तरानुकूल परीक्षा ली जाएगी। अधिक अक पाने वाले छात्र नियत सख्या मे ही प्रवेश पा सकेगे।

ऊपर की कक्षाओ (विद्याविनोद अर्थात १०+१ तथा अलकार अर्थात बी०ए०) मे प्रवेश के इच्छुक नये छात्रो को जुलाई के पूर्वार्द्ध मे प्रमाण पत्रो सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रो को प्रवेश नहीं मिलेगा।

गुरुकुल करतारपुर का पाठयक्रम कक्षा–८ तक सी०बी०एस०सी० (एन०सी०आर०टी०) से तथा ऊपर की कक्षाआ का गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित हे। छात्रो को आवास शिक्षा एव भोजन की सुविधा नि शुल्क है। पुस्तको वस्त्रादि फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा छठी से कक्षा नौवी तक के प्रवेशार्थियो को ६ जून–२००२ रविवार शाम तक गुरुकुल मे पहुच जाना चाहिए।

– आचार्य सुखदेव राज शास्त्री
गुरुकुल करतारपुर
जिला जालन्धर (पजाब)
१४४८०१

प्रतिष्ठा मे

श्री प्रहलाद प्रसाद आर्य को मातृ शोक

प्रहलाद प्रसाद आर्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० विदर्भ व छत्तीसगढ की पूज्या माता श्रीमति फूलमती (उम्र ७६ वर्ष) की आर्यसमाज राजगाव पो० कुर्रा जिला रायगढ छत्तीसगढ मे दिनाक १६–१–२००२ को दिवगत हुई। पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार अत्येष्टि सस्कार किया गया। दिनाक १८–१–२००२ से २६–१–२००२ तक शाति यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री सेवकराम आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० विदर्भ व छत्तीसगढ एव ब्र० बैकुण्ठ आर्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के पौरोहित्य मे शाति यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिवगत माता जी रूपधर आर्य प्रहलाद प्रसाद आर्य विशम्भर आर्य भरत लाल आर्य पाण्डेलाल आर्य पाच पुत्र एव तीन पुत्रियो सहित भरा पूरा परिवार छोड गई है। श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए हजारो की सख्या मे गणमान्य आर्य परिवारो से पहुचे थे। आर्यसमाज राजगाव की ओर से दिवगत आत्मा की शाति हेतु प्रार्थना की गई।

आर्यसमाज राजगाव
पो० चोरगा जिला रायगढ
(मध्य प्रदेश)

हरिद्वार महासम्मेलन के बाद

भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का समापन २८ अप्रैल को होगा। अगले दिन २९ अप्रैल सोमवार को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनों के लिए हरिद्वार तथा आस पास के स्थलो को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक होगे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल महासम्मेलन स्थल से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापिस स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मंसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि मे देर रात तक वापिस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा हरिद्वार ऋषिकेश देहरादून और मसूरी के दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त मे से जिस यात्रा मे पजीकरण कराना चाहेगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग पूछताछ केन्द्र स्थापित होगा।

।। ओ३म।।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी

एव

शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी जी

के

जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर

रविवार २१ अप्रैल, २००२ प्रात ८ ०० बजे से १२ ०० बजे तक
आर्यसमाज दीवान हाल मे

श्री रामनवमी पर्व पर विशेष समारोह

अध्यक्षता	वैद्य इन्द्रदेव जी महामन्त्री दिल्ली सभा
मुख्य अतिथि	श्री विजय गोयल जी केन्द्रीय राज्य मन्त्री
मुख्य वक्ता	श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री सार्वदेशिक सभा
	डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री
	प० महेन्द्र कुमार शास्त्री
	श्री राज सिह भल्ला प्रधान आर्यसमाज एजूकेशनल ट्रस्ट
भजन	श्रीमती शशि आर्या

आप से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठाए।

निवेदक

कृष्ण गोपाल दीवान — प्रधान
(मेजर) डॉ० रविकात (सेवा निवृत) — मन्त्री

कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि

कारगिल मे शहीद नौजवानो देश को तुम पे नाज है।
कौमे जिससे रहती है जिदा बलिदान मे छुपा वह राज है।

मरना तो है हर इक को लाजम है जिन्दगी मे एकबार।
मरे तो मातृ भूमि के लिए इससे ऊचा न कोई काज है।

बलिदान से अपने छेडा तुमने जो साज है दर्द भरी उसमे आवाज है।
याद बनी रहेगी युगो तक उसकी ऐसा निराला ये साज है।

टाइगर हिल पर तिरगा फहराने के लिए शेर का दिल चाहिए।
जिन्दगी का उपहार भेट कर तुमने किया माता का सत्कार है।

रक्त से अपने तुमने किया माता का तिलक माता को अनोखा उपहार है।
देश वासियो का तुमको आदर भरा नमस्कार है।

– ऋतम्भरा भाटिया, डी १ सी ८५, जनकपुरी, नई दिल्ली

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक १ ५ मई से ११ मई २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ वै० कृ० ६
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह

राष्ट्र धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं

— नरेन्द्र मोहन

दैनिक जागरण समूह के सम्पादक व राज्यसभा सदस्य नरेन्द्र मोहन ने आज यहा कहा कि आर्यसमाज की नजर मे राष्ट्र धर्म से बडा कोई धर्म नही है। उन्होने जोर देकर कहा आज समाज मे आर्य चरित्र की आवश्यकता है। राजनीति की मौजूदा अवधारणा पर कटाक्ष करते हुए उन्होने बेहद तल्ख शब्दो मे कहा कि आज राजनीति मे सिद्धात की नहीं अहकार की लडाई लडी जा रही है। राजनेता नही बल्कि आम आदमी देश को बचाएगे। सासद नरेन्द्र मोहन स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सौ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित गुरुकुल शताब्दी दीक्षात समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे दीक्षात भाषण दे रहे थे।

दीक्षात भाषण की शुरूआत मे सासद नरेन्द्र मोहन ने कहा यह एक महान क्षण है अत्यत महान। उन्होने इसे उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु का उदाहरण देकर स्पष्ट भी किया। दीक्षात सबोधन मे सासद नरेन्द्र मोहन ने कहा ब्राह्मण बनने के लिए सघर्ष तप समर्पण ब्रह्मचेतना मे निवास करना पडता है। उन्होने ब्रह्मचारियो से कहा ब्राह्मण बनना आसान नही है। ब्राह्मण बना जा सकता है तप से श्रम से दम से व सत्यनिष्ठा से। सासद नरेन्द्र मोहन ने स्वाध्याय पर बोलते हुए कहा स्वाध्याय पुस्तको का पठन पाठन नहीं है जो स्वय का अध्ययन स्वय के मन के कलुष को निहार सके वह मार्ग ही स्वाध्याय का माग है। उन्होने समारोह मे मौजूद लोगो से अनुरोध किया कि समस्त ऊर्जा प्रमाद मे नष्ट न करे। जीवन मे ऐसा कुछ भी नही है, जिसे प्राप्त नही किया जा सकता। उन्होने ब्रह्मचारियो स कहा शीघ्र ही आपका गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश हो रहा है। समस्याओ से जूझना पडेगा। उन्होने ब्रह्मचारियो का आह्वान किया कि अपनी चेतना का ऊर्ध्वारोहण करो चतना को जगाओ। उन्होने कहा आप आर्य परिवार के हो। आर्यत्व ही हमारी शक्ति है लक्ष्य है व ऊर्जा है।

उन्होन आर्य व दस्यु की परिभाषा देते हुए कहा जो दूसरे के अधिकारो का हरण करे उसे प्राप्त करने की चेष्टा करे दूसरे के अधिकार पर गिद्ध दृष्टि जमाए वही दस्यु है। दैनिक जागरण समूह के सम्पादक व राज्यसभा सदस्य नरेन्द्र मोहन न कहा हर सकल्प प्रारम्भ मे बडा कठिन लगता है लेकिन निश्चित सफल हाता है।

शेष पृष्ठ २ पर

ब्रह्मचारियो का आह्वान करते हुए कहा धर्म की दीक्षा के दौरान कुलपति के प्रथम उपदेश को अगर हम जीवन मे उतार सके तो जीवन सफल हो जाएगा।

उन्होने कहा ब्रह्मचारियो को दीक्षा के महत्व को समझना होगा। उन्होने कहा मेरे गुरुदेव स्वामी राम ने मुझे दीक्षित किया। दोष मेरा गुण उनका है। उन्होने कहा ब्राह्मण कोई जन्म से नही होता। यही वैदिक दर्शन है। उन्होने

सासद नरेन्द्र मोहन गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि 'विद्या मार्तण्ड' से विभूषित

हरिद्वार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के मुख्य अतिथि दैनिक जागरण के सपादक और सासद नरेन्द्र मोहन को आज गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि विद्या मार्तण्ड की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। नरेन्द्र मोहन सहित सस्कृत के प्रकाड विद्वान सत्यव्रत शास्त्री और केद्रीय राज्य मन्त्री विजय गोयल को भी विश्वविद्यालय की मानद उपाधि विद्या मार्तण्ड से नवाजा गया।

महासम्मेलन के प्रत्यक्षदर्शियो से सुझाव आमन्त्रित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विशाल आयोजन सफल हुआ। इस आयोजन मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले महान आत्माओ का हार्दिक साधुवाद। इस महासम्मेलन मे छोटी बडी किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए सयोजक के नाते मै सार्वजनिक रूप से क्षमा प्रार्थी हू।

इस ऐतिहासिक आयोजन को जिन महानुभावो ने स्वय देखा और अनुभव किया वे यदि किसी प्रकार के सुझाव देना चाहे तो उनका स्वागत है जिससे इस प्रकार के आगामी आयोजनो मे हमारे बाद जो महानुभाव इस दायित्व को निभाएगे उनका समुचित मार्गदर्शन सम्भव होगा।

— *विमल वधावन*

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विस्तृत विवरण आगामी अंको में

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे तथा महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के निर्देशन और सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की देखरेख के साथ साथ हजारो की सख्या मे आर्य बन्धुओ की सहभागिता से आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए देश विदेश के विभिन्न हिस्सो से ५० हजार से अधिक आर्यजन हरिद्वार पहुचे। जो आर्य महानुभाव भाग नही ले सके उनकी शुभकामनाए हमारे साथ थी। ईश्वर का आशीर्वाद सर्वोपरि प्रदर्शित हो रहा था।

जिन उद्देश्यो को लेकर यह महासम्मेलन आयोजित किया गया उन उद्देश्यो मे भी सफलता मिली। भविष्य मे अधिक से अधिक गुरुकुलो की स्थापना देश और विदेश मे हो ऐसी प्रेरणाओ का सचार सफलता पूर्वक नजर आ रहा था।

अगामी अको मे महासम्मेलन के विभिन्न सत्रो के विवरण यथासम्भव प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। यह महासम्मेलन एक महायज्ञ की भाति आयोजित किया गया था। प्रकाशित होने वाले विवरणो को यज्ञशेष की भाति हमारे विद्वान पाठक वृन्द स्वीकार करे और गुरुकुल शिक्षण पद्धति को अधिकाधिक मजबूत बनाने के लिए यथासम्भव सहयोग करे।

सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष भाग

राष्ट्र धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं

उन्होने जार दते हुए कहा आर्यजीवन के रहस्य को समझे अन्यथा चूक हो जाएगी। उन्होने कहा अपन कलुष का निहारने की दुरिता को समझन का सकल्प तो स्वय ही लना ह्गा। हम विश्व को आर्य बनाने की बात करत हे लेकिन खुद को तो पहल आर्य बनाये। उन्हाने कहा जो भद्र ह जिसको गुरु मान लिया हो उसी क बताये मार्ग पर चले।

सासद श्री मोहन ने कहा आर्यसमाज न राष्ट्र धर्म से बडा कोई धम नही माना। उन्होने कहा गुरुकुल म क्राति भूमि का सृजन करो आज देश को इसी की जरूरत हे। सासद नरेन्द्र माहन न राष्ट्र चितन करते हुए गुजरात का उदाहरण देते हुए कहा कि यह दुख का विषय हे कि भारत की राजनीति सिद्धाता और आदर्शो स भटक कर अपने व्यक्तिगत स्वार्थोमे निहित हो गयी हे। सासद ने कहा कि गुजरात मे स्वार्थी तत्वा द्वारा जान बूझकर दग कराए जा रह है। अन्तर्राष्ट्रीय मच पर भारत का बदनाम क रन के लिए ऐसा किया जा रहा हे। उन्होने कहा आर्यसमाज ने कभी मुसलमानो का विरोध नही किया। सिर्फ खडन किया हे पाखण्ड का अविद्या का तथा उन वृत्तियो का जो मानव का हिसक बनाती हे। उन्हाने कहा प्रेम से बडी कोइ शक्ति नही हे।

इससे पूर्व कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री ने आचार्य उपदेश देते हुए कहा कि २०वी सदी के शुरू मे स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने मा गगा के पावन तट पर कागडी ग्राम मे ४ मार्च १६०२ को राष्ट्र निर्माण की ऐसी सुदृढ आधारशिला रखी थी जो गुरुकलीय शिक्षा पद्धति के भव्य प्रसाद की प्रथम सोपान बनी। कुलपति प्रतिवेदन मे श्री शास्त्री ने कहा पराधीनता के कालखण्डो मे लार्ड मैकाले द्वारा भारत मे चलाई गई शिक्षा पद्धति राष्ट्र के स्वाभिमान और गौरव को नष्ट कर रही थी। दशभक्त चरित्रवान विद्वान युवको के स्थान पर केवल बाबू बनाने का अग्रेजो का षडयत्र अपना प्रभाव दिखाने लगा था। ऐसे समय मे महान शिक्षा शास्त्री स्वामी श्रद्धानन्द ने प्राचीन व अर्वाचीन विषया की शिक्षा के साथ साथ ब्रह्मचारियो मे चरित्र बल व राष्ट्र प्रेम की भावना प्रसारित करने के लिए इस पवित्र सस्था का शुभारम्भ किया। उन्होने कहा स्वामी श्रद्धानन्द दश मे ब्रह्मचर्य पर आधारित गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना चाहत थे। कुलसचिव प्रो० महावीर अग्रवाल के सचालन मे आयोजित समारोह मे उदघाटन भाषण देते हुए सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान केप्टन देवरत्न आर्य न कहा सो वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द न गुरुकुल के रूप मे जिस प्रणाली का सूत्रपात किया था आज वही गुरुकुल विश्वविद्यालय बनकर विद्या के अनेक क्षेत्रो म जनता का मार्ग दर्शन कर रहा है।

उन्होन कहा स्वामी जी ने अनेक महान कार्य किए किन्तु जीवन क अतिम दिनो मे उनका ध्यान गुरुकुल मे शुद्धि की ओर ही केन्द्रित हो गया था। आज से १०० वर्ष पूर्व जिस मनीषी ने गुरुकुल क रूप म विद्या का जो दीपक जलाया था हम सबका कर्तव्य हे कि हम उसके प्रकाश को मद न होन दे। समारोह म पजाब आय प्रतिनिधि सभा क रामनाथ वदालकार आर्य सस्कृति के प्राण विवेकानन्द महाराज आदि न भी अपने विचार रखे।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन सासद राज्यसभा आर्य मनीषी विशुद्धानन्द तथा कई काव्यो क प्रणता सत्यव्रत आर्य तथा भारत सरकार क राज्यमत्री विजय गोयल को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानद उपाधि विद्या मार्तण्ड से विभूषित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ समारोह स्थल से कुछ दूर स्थित यज्ञशाला म राष्ट्र भृत यज्ञ एव ओ३म ध्वज व कुल ध्वज के ध्वजारोहण के साथ किया गया। ओ३म ध्वज का ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा तथा कुल ध्वज का ध्वजारोहण कुलाधिपति प० हरवश लाल शर्मा द्वारा किया गया। ध्वज गान मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओ व गुरुकुल विश्वविद्यालय के छात्रो ने किया।

इसके बाद ध्वज स्थल से मुख्य मच तक मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथियो विश्वविद्यालय के अधिकारियो तथा उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रो को पारम्परिक गाउन पहना कर दीक्षात यात्रा के रूप मे मच तक ओ३म ध्वज के साथ लाया गया। दीक्षात कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री के द्वारा आचार्य उपदेश से किया गया तथा पूर्व स्नातको की ओर से पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रामनाथ वेदालकार ने स्वागत भाषण दिया। कुलाधिपति प० हरवश लाल शर्मा ने नव स्नातको को आशीर्वाद प्रदान किया।

इसी अवसर पर जयदव वेदालकार द्वारा विरचित दीक्षा लोक पुस्तक जिसमे अभी तक के दीक्षात समारोहो मे दीक्षात भाषण देने वालो के दीक्षात भाषणो का सकलन किया गया है। इस पुस्तक का विमोचन राज्यमत्री विजय गोयल द्वारा किया गया तथा एक अन्य पुस्तक गुरुकुल विद्यालयीय तथा गुरुकुल का इतिहास पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मच सचालन डॉ० महावीर द्वारा किया गया। दीक्षात समारोह का समापन डॉ० अबुज के नेतृत्व मे कुल वदना गीत के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मच पर कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक सभा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री वेदव्रत शर्मा कार्यक्रम के सयोजक विमल वधावन तथा विभिन्न प्रातो से आये प्रातीय पदाधिकारियो व स्वामी विवेकानन्द महाराज व हिन्दी विद्वान डॉ० विष्णु दत्त राकेश भी उपस्थित थे। पडाल मे विभिन्न राज्यो व जनपदो से आए हजारो आर्य प्रतिनिधि महिला पुरुष उपस्थित थे।

इस समारोह के तुरन्त बाद गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का उदघाटन कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया जिसकी विस्तृत सूचना अगले अक मे प्रकाशित होगी।

आर्यनेता श्री जगदेव नहीं रहे

दिल्ली के प्रमुख आर्य नेता एव विद्वान तथा आय राष्ट्रीय मच के मन्त्री प्रि० जगदव जी का दु खद दहावसान १ मइ को प्रात हो गया। वे ७४ वर्ष के थे।

उनके पीछे उनकी पत्नी तथा तीन सुपुत्रो एव एक सुपुत्री का परिवार है।

उनके देहावसान का समाचार आर्यजनो मे एक दु ख की लहर छोड गया। पजाबी बाग श्मशान घाट मे उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्य विद्वानो तथा वद पाठियो के द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन श्री जगदीश आर्य श्री सोमदत्त महाजन श्री नवनीत अग्रवाल श्री विनय आर्य श्री अरूण वर्मा श्री मदन मोहन सलूजा श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा श्री सुरेन्द्र रैली श्री राजेन्द्र दुर्गा स्वामी धर्ममुनि आचार्य हरिदेव जी प० सुधाकर जी तथा अन्य आर्य महानुभाव उपस्थित थे।

उनकी स्मृति मे शोक सभा ३ मई को आर्यसमाज मन्दिर डी ब्लाक जनकपुरी मे सम्पन्न हुई।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन पर २८ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

घोषणा-पत्र

– विमल वधावन, सयोजक महासम्मेलन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के माध्यम से हम अपने मन मे सर्वप्रथम आर्यसमाज रूपी विशाल सगठन के मूल अस्तित्व को समझने का प्रयास करे। आर्यसमाज का जन्म वैदिक सस्कृति के सरक्षण और पोषण के लिए हुआ था। आज का यह विशाल महासगठन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गूढ चिन्तन और गम्भीर प्रयासो का ही फल है। महर्षि के प्रत्येक विचार का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध वेद की सस्कृति पर जाकर मिलता है।

इसी सस्कृति का सचार हमारी जीवनचर्या मे ठीक वैसे ही होता है जैसे किसी शरीर मे रक्त का हो। इस सस्कृति पर आधारित सिद्धान्त ही हमारे जीवन का मूल आधार है। यहा तक कि हमारी राष्ट्रवाद की कल्पना भी भौगोलिक सीमाओ पर नही अपितु इस भूमण्डलीय सस्कृति पर टिकी है।

हमे इस बात को भी मन मे धारण कर लेना चाहिए कि इस सास्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार का सर्वोत्तम माध्यम गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही है। विगत सौ वर्षो कि दौरान हमारे गुरुकुलो ने वेदिक सस्कृति क सरक्षण और पोषण मे मूल केन्द्रो की भूमिका निभाई है। गुरुकुल आर्य समाज के प्राण है – ऐसा कहना किसी प्रकार से भी अतिशयोक्ति नहीं है।

आने वाले भविष्य मे गुरुकुलो के सरक्षण पोषण और इन पवित्र सस्थाओ की सख्या की वृद्धि को हमने अपना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस कार्य मे किसी भी आर्य पुरुष का सहयोग लेने और देने म कोई सकोच नही करेगी ओर योजनाबद्ध तरीके से इन महान सस्थाओ की वृद्धि के लिए ठोस उपाय किए जाएगे। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यो पर आधारित गुरुकुल शिक्षा पद्धति के केन्द्रो मे शैक्षणिक एकरूपता का प्रयास भी हमारा गम्भीर लक्ष्य है। समस्त गुरुकुलो को सगठनात्मक एकता रूपी माला मे पिरोना भी उसी लक्ष्य का अग है।

सौ वर्ष पूर्व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम से ही वैदिक परम्पराओ वैदिक जीवन के अनुशासन शुद्धि कार्यो के द्वारा राष्ट्रीय एकता की स्थापना सस्कृत-हिन्दी के सरक्षण गो-रक्षा तथा आर्यसमाज के बहुमुखी विकास कार्यक्रमो को क्रियान्वित किया। हमने भी उन्हीं कार्यो को अपनी प्रेरणा का स्रोत समझा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद विगत सौ वर्षो मे जिन महान आत्माओ ने इस पद्धति में अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया है उनके चरणो मे श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए आज समूचा आर्यजगत गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने कथनी से अधिक करनी के सिद्धान्त की स्थापना की है। उपदेश से अधिक अपने निज आचरण और व्यवहार को परिलक्षित किया है। केवल मात्र यही पद्धति आज के व्यक्ति को प्राचीनता के मूल से जोडकर आधुनिकता के लक्ष्य की ओर बढने का मार्गदर्शन और माध्यम उपलब्ध करा सकती है। वेद के सिद्धान्तो और मान्यताओ को आज के मानव के समक्ष वर्तमान युग की बुद्धि भाषा और दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना भी आर्यसमाज का दायित्व है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद मे परा और अपरा लौकिक और पारलौकिक आध्यात्मिक और वैज्ञानिक सिद्धान्तो का समावेश स्वीकार करते है। अपने जीवनकाल मे वेद के सिद्धान्तो की व्याख्या वे केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कर पाए। वेद के वेज्ञानिक पक्ष का मार्गदर्शन उन्होने अवश्य ही हम इगित ता किया है परन्तु इस माग पर चलन का माध्यम हमारे विद्वानो को स्वय ही तेयार करना होगा। वेद के मन्त्रो मे ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान अर्थात ज्ञान के क्रियान्वयन का भी समावेश है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम वेद पढने और समझने वाले आय पुरुषो को वैज्ञानिक बनाने की दिशा मेकार्य करे या वैज्ञानिको को वेद पढाने एव समझान क अवसर उत्पन्न करे।

वेद और विज्ञान का समन्वय ही विश्व-शान्ति, विश्व-बन्धुता तथा हर प्रकार की भौतिक एव आध्यात्मिक शुद्धि का मार्ग बनेगा। शरीर और आत्मा दोना के समन्वय मे भी यही प्रयास सहायक सिद्ध हागे। यज्ञा को उनका निर्दिष्ट महत्व दिलाने मे भी यही प्रयास सहायक सिद्ध होगे। आत्मा से परमात्मा को मिलाने क लिए वेद ओर विज्ञान का मेल ही सहायता करेगा। वर्तमान युग को अब हमे नये रूप मे आह्वान करना होगा – वेद पर आधारित वैज्ञानिक जीवन को अपना लक्ष्य बनाए। आज सारे विश्व के समक्ष हमे यह स्पष्ट करने का प्रयास करना होगा कि वेद की यात्रा अनन्त है और इस यात्रा क यात्री ज्ञान की पराकाष्ठा के साथ-साथ कर्म को भी सर्वोच्च मानते है मानते ही नहीं अपितु व्यष्टि से समष्टि तक के उत्थान को अपना लक्ष्य मानते है।

वेद के नाम पर ही यदि कोई शिक्षित व्यक्ति अनर्गल अथवा पक्षपातपूर्ण बातो को कहने का प्रयास करते हैं तो उसका स्पष्ट और तार्किक उत्तर केवल महर्षि दयानन्द के उपरोक्त दृष्टिकोण ही दे सकते हैं और उन निन्दात्मक प्रहारो से वेद ज्ञान की रक्षा कर सकते है।

इन सब कार्यो के लिए सगठन का सुदृढ होना उसी प्रकार आवश्यक है जैसे आत्मा को अपने कार्य सम्पन्न करने के लिए एक निरोगी शरीर की आवश्यकता होती है। शरीर की समस्त इन्द्रिया समन्वयपूर्वक एव पुष्ट रूप मे कार्य करे तभी शरीर को सुदृढ माना जा सकता है।

हमारे परिवार के सदस्य हमारी इन्द्रिया है। आर्य समाज के सगठन से हमे पूर्ण इन्द्रियो सहित जुडकर रहना चाहिए तभी हमारा परिवार आर्य परिवार की परिभाषा मे खरा उतरेगा। एक व्यक्ति से प्रारम्भ हुआ आर्यत्व का यह वेग परिवार को प्रभावित करने का बाद ही समाज को नतृत्व दे सकता है।

नेतृत्व से अभिप्राय अधिकारो की लूट-खसोट नही अपितु कर्त्तव्यवाद की स्थापना है। नेतृत्व का कर्त्तव्यपालन मे जुटा देखकर ही समाज के अन्य बन्धु भी कत्तव्यो के पालन के लिए प्रेरित होते है। समाज की प्रत्येक व्यवस्था चाहे व अनुशासनात्मक सिद्धान्त हा या भातिक सम्पत्तिया इनका सरक्षण हमारा कत्तव्य है। हम इन व्यवस्थाओ के माली की तरह कार्य कर मालिक की तरह नही।

जिस प्रकार स्वस्थ शरीर क लिए विषेले कीटाणुओ का उसमे प्रवेश हर सम्भव उपाय के द्वारा रोका जाता है और यदि ऐसे कीटाणु प्रविष्ट हो जाए तो उनकी समाप्ति के उपाय किए जाते है। उसी प्रकार आर्यसमाज के इस विशाल सगठन की भी विषाक्त कीटाणुओ से रक्षा के लिए हमे बहुत बडे पैमाने पर एकजुट प्रयास करने की नितान्त आवश्यकता हे।

राजनीति मे अपराधियो का प्रवेश विगत तीन दशको मे जिस गति से हुआ है उसका परिणाम आज हमार सामने है। राजनीति मे बहुसख्यक लोग आपराधिक पृष्ठभूमि से जुडकर सारे देश मे अधिकारो की लूट व्यवस्थाओ के शोषण और इस महान देश के विनाश मे लगे हुए है। आर्यसमाज अपने पवित्र दायित्व का तभी निर्वहन कर पायेगा जब हम सब लोग मिलकर सकल्प व्यक्त करे कि स्वार्थी भावनाओ का इस सगठन मे कोई स्थान नहीं बनने देगे। हमे प्रतिक्षण यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारी वैदिक सस्कृति और परम्पराए त्यागवाद मे निहित है भोगवाद मे नहीं।

विभिन्न सम्प्रदायो और सकीर्णताओ मे बटे वर्तमान समाज को आत्मा की शक्तियो एव विशेषताओ से साक्षात्कार करवाकर ही हम समाज को इस आध्यात्मिकता की ओर ले जा पाएगे जो सुख और शान्ति का पावन मार्ग है।

इस सारे महान कार्यो मे हमारी समाज की मातृ-शक्ति की विशेष भूमिका हे। यह मातृ-शक्ति हमारी कन्याओ मे निहित है। कन्याओ को वैदिक विचारा की क्रान्ति के साथ विशेष रूप से जोडा जाना चाहिए। अस्थायी रूप म शिविरा क माध्यम से तथा स्थायी रूप मे कन्या गुरुकुलो अथवा पाठशालाओ की स्थापना के द्वारा। यह सत्य है कि राम कृष्ण ओर दयानन्द के निर्माण मे आज भी हमारी कन्याए ही एक मात्र माध्यम हे। इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए हमारी माताओ को विशेष प्रयास करने होगे।

कहा हमे नारी जाति से इतनी महान अपेक्षाए है और कहा वही नारी जाति असख्य स्थलो पर प्रतिदिन अपमानित और लज्जित हा रही है। व्यक्तिगत रूप मे भी ओर सगठनात्मक रूप मे भी नारी जाति के उत्थान क लिए हमे सर्वथा बलिदान क लिए भी तयार रहना चाहिए।

आर्यसमाज क कार्यो का अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त हो इसक लिए हमे आधुनिक युग मे उपलब्ध हर प्रकार क साधनो का सयमपूवक प्रयोग करने मे सकाच नही करना चाहिए। प्रचार कार्यो म तन मन और धन का सहयोग आहूत करने के लिए भी हमें सकाच नही करना चाहिए। प्रचार कार्यो म हमे एसा भी सकाच नही करना चाहिए कि हमारा व्यक्तिगत सहयोग ही पर्याप्त हे अपितु परिवार के सभी सदस्या का यथायाग्य इन कार्यों मे शामिल करना ही वाछनीय एव श्रेयस्कर है।

हमे अपने मन मे अपने परिवारो एव पूरे समाज के समक्ष इस सिद्धान्त को स्थापित करना चाहिए कि राष्ट्रवासियो की सवा ही राष्ट्र सवा है।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को हम श्रद्धा प्रेम और अनुशासन के साथ-साथ कर्त्तव्यपालन के एक महान पर्व के रूप मे आयोजित कर पाए है। इस आयोजन मे आई कष्ट और बाधाओ का भूलते हुए हम उन सब आत्माओ के प्रति नतमस्तक है जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष अधिक या न्यून जैसा भी सहयोग अथवा आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

आइए ! हम सब मिलकर इस घाषणा को अपने भविष्य का एक महान लक्ष्य बनाए कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार रूपी महायज्ञ मे अपनी ओर से हर सम्भव आहुति क लिए तैयार रहे।

धन्यवाद

लो, सीना खुला है, हिम्मत हो तो गोली चला दो – स्वामी श्रद्धानन्द

– मनुदेव अभय विद्या वाचस्पति

वे दिन खिलाफत आन्दोलन के थे। सुदूर अफगानिस्तान में मुसलमानो की व्यवस्था मे तत्कालीन शासक ने कुछ परिवर्तन कर दिया। भारत के लाखो मुसलमानो ने उस इस्लाम मे हस्तक्षेप घोषित कर उसका विरोध करना शुरू कर दिया। उन दिनो भारतीय राजनीति में एक छोर पर महात्मा गाधी ओर दूसरे छोर पर स्वामी श्रद्धानन्द थे। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि उन दिनो दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा मुन्शीराम का वर्चस्व था व हिन्दु मुस्लिम एकता की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व भी अन्यो की अपेक्षा अत्यधिक प्रभावशाली था। डा० अजमल खा से उनकी घनिष्ठ मैत्री थी। स्वामी श्रद्धानन्द उन दिनो नया बाजार (सम्प्रति– श्रद्धानन्द बाजार) मे रहते थे।

वस्तुतः टर्की के खलीफा का प्रभाव इस्लामी जगत मे बहुत हो गया था। अंग्रेजो की कूटनीति के कारण खलीफा को अपदस्थ होना पडा जिसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण इस्लाम जगत मे बहुत प्रतिक्रिया रही। दिल्ली के मुसलमानो ने इसका विरोध विशाल रूप मे करने का निश्चय किया। उन्होने तत्कालीन अपने एक मात्र नेता स्वामी श्रद्धानन्द से उनका नेतृत्व करने के लिए निवेदन किया। स्वामी श्रद्धानन्द जो कि आर्यसमाज के भी एक छत्र नेता थे मुसलमानो के अनुरोध पर विचारकर इसकी अध्यक्षता करना स्वीकार कर लिया। बस फिर क्या था पूरी दिल्ली में एक विशेष हलचल मच गई। मुसलमानो के निर्णय के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द का एक विशाल जुलूस निकाला गया जो चादनी चौक होता हुआ नगर की जामा मस्जिद की ओर चलकर समाप्त हुआ। स्वामी जी को बहुत ही आदर और श्रद्धा के साथ जामा मस्जिद के अन्दर जाकर ऊचे आसन पर बैठाया गया। इस अवसर पर दिल्ली के सभी क्षेत्रो से असख्य मुसलमान उस साहसी और वीर सन्यासी की वक्तृता सुनने के लिए एकत्रित हुए थे। इतनी भारी भीड उसके पहले कभी भी नही देखी गई थी।

जामा मस्जिद के मिम्बर से स्वामी श्रद्धानन्द ने मानव कल्याण तथा विश्व मानवता का उपदेश देने वाला यह मन्त्र उच्चारित किया –

त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो वभूविथ। अधा ते सुम्नमी महे।।

– ऋग्वेद ८–९८–११

अर्थात हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप ही हमारे पिता तथा माता हो। तुम्हीं ने कृपा करके इस सृष्टि की रचना की है। आपने ही विश्व के सभी प्राणियो की भलाई के लिए अनेक वस्तुओ का सृजन किया है। हम सब आपकी कृपा और अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आपसे प्रार्थना करते है। विश्व के सभी मनुष्य परस्पर एक ही कुटुम्ब के सदस्य है। हम सभी पर आप अपनी कृपा की अमृत वर्षा सदैव किया करें।

स्वामी जी की इस प्रार्थना समाप्त होते ही मानव समुदाय मे ऐसी शाति छा गई कि सभी मन्त्र–मुग्ध होकर स्वामी जी का व्याख्यान सुनते रहे। कहते है दिल्ली मे ऐसी विशाल सभा और आज तक

30 मार्च 1919 का वह दृश्य जब वीर सन्यासी श्रद्धानन्द ने कहा था सीना खुला है हिम्मत हो तो गोली चला दो।

भाषण इससे पहले कभी भी नही हुआ था। इसके पश्चात दिल्ली का सामाजिक और राजनैतिक वातावरण ही एकदम बदल गया। सभी नागरिक अपने सभी धार्मिक तथा साम्प्रदायिक मतभेद भुलाकर बडे ही सौहार्द पूर्ण वातावरण मे रहने लगे। स्वामी जी को अनेक मुस्लिम महिलाए अपना दरवेश मानने लगी थीं। कई महिलाए अपनी कई मनोती मनाने इनके निकट बडी श्रद्धा से आती रहती थी। यहा तक कि कई मुस्लिम परिवारो के परिवारिक झगडे आदि सुलझाने के लिए कुछ मुसलमान उनके पास आने लगे। उन दिनो स्वामी श्रद्धानन्द बिना ताज के बादशाह माने जाते थे।

तत्कालीन ब्रिटिश सरकार स्वामी श्रद्धानन्द के इस प्रभाव को देखकर चिन्तित हो उठी। उस हिन्दु मुस्लिम एकता की अपेक्षा स्वामी जी की लोकप्रियता से अत्यधिक भय लगने लगा। विशेषकर दिल्ली के अनेक अंग्रेज राज्याधिकारी इस सामाजिक एकता तथा सौहार्द को बिगाडने का अन्दर ही अन्दर षडयन्त्र करने लगे। चादनी चौक की ऐतिहासिक घटना के कारण स्वामी श्रद्धानन्द की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर हो गई। स्वामीजी को ज्ञात हुआ कि कुछ अंग्रेज अधिकारियो ने लाल किले के मैदान मे कुछ निहत्थे नागरिको को अपनी गोली का निशाना बना दिया। इस खबर से पूरी दिल्ली मे हलचल मच गई। फिर क्या था एक विशाल जुलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धाननद कर रहे थे। यह जूलूस वर्तमान नगर पालिका निगम (तत्कालीन म्युनिसिपल कारपोरेशन) चादनी चौक होता हुआ लाल किले की ओर जाने वाला था। अब यह विशाल जुलूस चादनी चौक के मध्य मे पहुचा तब अनेक अंग्रेज सिपाही अपनी भरी हुई बन्दूके तथा उन पर जहरीली सगीने लगाए जुलूस के सामने आकर खडे हो गए। वे जुलूस को वहा से एक इंच भी आगे बढने देना नही चाहते थे। ऐसे मे उन अंग्रेज सिपाहियो ने स्वामी श्रद्धानन्द को यह धमकी दी थी यदि तनिक भी आगे बढे तो सगीने भोक दी जाएगी और गोलियो से जनता भून दी जाएगी। जो आर्य सन्यासी आत्मा की अमरता मे तथा इश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था रखता हो उसे बन्दूक की गोलियो का भय कदापि डरा नही सकता था। उस निर्भीक आर्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने सीने पर पडे हुए भगवे आचल को हटाकर अत्यन्त जोशीली आवाज मे कहा –लो मै यहा खडा हू। यदि तुम्हारी सरकार मे शक्ति हो तो मेरे सीने पर पहले गोली चलाओ और फिर इस निहत्थी जनता पर अपनी कायरतापूर्ण हरकत से गोली चलाना। उस निर्भीक सन्यासी की यह दहाड सुनकर सिपाही पीछे हट गए ओर अपनी सगीन वापस ज्यो की त्यो कर ली। असख्य जन मे दिनी का नेतृत्व करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जुलूस को आगे ले गए और फिर वह जुलूस एक विशाल सभा के रूप मे बदल गया। उस सभा मे स्वामी श्रद्धानन्द की अध्यक्षता मे अनेक राष्ट्रवादी हिन्दू मुस्लिम नेताओ के जोरदार व्याख्यान हुए।

उल्लेखनीय है कि तत्कालीन म्युनिसिपल कारपोरेशन (नगर निगम) के सम्मुख जिस स्थान पर गोरे सिपाहियो के सम्मुख स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सीना तान कर गोली चलाने की गम्भीर गर्जना की थी आज उसी स्थान पर स्वामी श्रद्धानन्द की मानव कद कास्य प्रतिमा उक्त ऐतिहासिक स्थल की शोभा बढा रही है। इस प्रतिमा को देखकर वह पुरानी स्मृति पुन साकार हो उठती है।

भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का इतिहास जब पूर्वाग्रह रहित होकर लिखा जाएगा उस समय दिल्ली मे घटित उक्त ऐतिहासिक घटना का अवश्य ही उल्लेख किया जाएगा। साम्प्रदायिक सौहार्द की झलक देने वाली यह महत्वपूर्ण घटना वर्तमान सन्दर्भो मे और भी अधिक मूल्यवान हो उठती है। आशा है कि हम पीछे मुडकर अपने अतीत मे झाककर अपना वर्तमान और भविष्य सुधारने का प्रयास करेगे।

अन्त मे ऐसे महान त्यागी एव वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द के पवित्र चरणो मे बारम्बार प्रणाम। जो बोले सो अभय।

मोहनदास गाधी महात्मा कैसे बने ?

यह कहा जाता है कि मोहनदास करमचन्द गाधी को महात्मा शब्द की उपाधि कवीन्द्र रवीन्द्र द्वारा उनके शाति निकेतन मे पधारने पर दी गई थी। वस्तुत यह बहुत ही भ्रामक तथ्य है। सन १९१३ मे मोहनदास गाधी गुरुकुल कागडी हरिद्वार उसके वार्षिकोत्सव पर आमन्त्रित थे। गुरुकुल सस्थापक महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने गाधी जी को अपना छोटा भाई मानकर अपना महात्मा शब्द आदर सहित प्रदान किया था। तभी से मि० मोहनदास गाधी महात्मा गाधी के नाम से सर्वत्र सम्बोधित किए जाने लगे। मि० शब्द सदा के लिए छूट गया।

इस्लाम के इतिहास मे सम्भवत यह पहला अवसर था जब किसी विशेष जामा मस्जिद के मिम्बर से एक वैदिक (हिन्दू) सन्यासी को तकरीर (व्याख्यान) देने के लिए मुसलमानो द्वारा आदर तथा श्रद्धा सहित आमन्त्रित किया गया हो। यह अवसर मानो स्वय इस्लाम के पुरोधाओ के लिए बहुत ही गौरव और मानवीय मूल्यो को निश्चित करने वाला सिद्ध हुआ। इससे न केवल स्वामी श्रद्धानन्द अपितु इस्लाम भी गौरवान्वित हुआ।

धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का प्रश्न

– वेदाचार्य डॉ० रघुवीर वेदालकार

भारत को धर्म एव अध्यात्म प्रधान देश कहा जाता हैं। प्राचीन समय मे भारत ने समस्त विश्व को धर्म–संस्कृति–अध्यात्म एव चरित्र की शिक्षा दी थी। इस विषय मे महर्षि मनु का यह श्लोक अभी भी सर्वप्रचलित है – एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन। स्व स्व चरित्र शिक्षेरन पृथिव्या सर्वमानवा। यह विडम्बना ही है कि इसी विश्व गुरु भारत मे आज धर्म एव संस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया है। इस विषय मे कुछ उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। आज भारत मे धर्म एव सस्कृति का खतरा है क्योकि यहा कश्मीर से हिन्दु ब्राह्मणो को पलायन करना पडा जो आज भी निर्वासित जीवन ही जी रहे हैं। यही भारत मे पश्चिम बगाल मे यज्ञकर्ताओ पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया। यही भारत मे गुजरात मे निर्दोष लोगो स्त्रियो बच्चो को ट्रेन मे इसलिए जलाकर मार डाला गया क्योकि वे रामजन्म भूमि के प्रति सहानुभूति रखते थे। उन निरीह आत्माओ की बर्बरता पूर्ण हत्या पर किसी को भी शोक नहीं है किन्तु इसके परिणाम स्वरूप घटने वाली गुजरात की हिसा पर सबका ध्यान केन्द्रित हो गया। इसी भारत की राजधानी दिल्ली मे आर्यसमाज मिण्टो रोड को दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा धराशायी कर दिया जाता है जबकि सडको यहा तक कि रेलवे वाहनो के बीचो–बीच पीर की तथाकथित समाधियो को हटाने की तो क्या छूने की भी कोई हिम्मत नही करता। ये सब कारनामे हैदराबाद के निजाम की याद दिलाते हे जहा हिन्दुओ तथा उनके कार्य एव सस्कृति को रौंद दिया जाता था। क्या भारत की यही धर्मनिरपेक्षता है कि जिसमे भारतीय अथवा वैदिक सस्कृति एव धर्म पर प्रहार होते रहे उनके अनुयायियो को प्रताडित किया जाए तथा अल्पसख्यक के रूप मे एक समुदाय को कुछ भी कहने तथा करने की छूट दी जाती रहे। यदि ऐसा न होता तो दिल्ली की जामा मस्जिद का इमाम अब्दुल्ला बुखारी घोषणा पूर्वक न कहता कि मैं तालिबान का एजेण्ट हू। इतना होने पर भी उनके ऊपर कोई कार्यवाही इसलिए नहीं की जाती क्योकि उससे मुस्लिम समुदाय के रुष्ट तथा उत्तेजित होने का खतरा है जो किसी भी सरकार के लिए कठिनाई उपस्थित कर सकता है। इसीलिए सब मौन है। इसीलिए कहता हू कि भारत मे वैदिक धर्म एव सस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया है।

भारत का धर्म एव सस्कृति केवल उसके अपने लिए नहीं है। न ही वह मानवता विरोधी एव विश्व विरोधी है। वह तो सार्वजनीन तथा सार्वकालिक हैं। विश्व के मानव मात्र के लिए वह लाभकारी है। भारत का धर्म तथा संस्कृति वेद पर आधारित है यही वैदिक सस्कृति सर्वकालीन तथा विश्व के लिए लाभकारिणी है। प्रश्न है कि इस उदघोष को विश्व के कितने देश स्वीकार कर रहे है। जिन लोगो का उद्देश्य ही यह है कि समस्त विश्व मे इस्लाम फैलाना है। जो इस्लाम को स्वीकार नहीं करते वे काफिर है तथा उन्हे कत्ल कर देना चाहिए क्योकि यह उनके अल्लाह की आज्ञा है। यही उनका धर्म तथा यही उनकी सस्कृति है। आतकवाद इसी धर्म की ओट मे पल रहा है जो छिपे रूप मे नही अपितु मुस्लिम देशो के खुले समर्थन एव वित्तीय सहायता से जीवित है। दूसरी ओर पोप पाल भारत मे आकर भी विश्व को ईसाई बनाने का सन्देश यहा के पादरियो को देकर जाते हैं। पादरी लोग उनके अशीर्वाद से सदियो से विदेशी धन के आधार पर यहा के अशिक्षित तथा निर्धन जन समुदाय को ईसा मसीह का भक्त बना रहे है।

धर्म एव सस्कृति का प्रश्न आज आध्यात्मिक न रह कर राजनीति स जुड गया है। सबको पता हे कि जनसख्या जिसकी भी अधिक होगी सरकार उसी की। उसी का धम तथा सस्कृति पनपेगी। यही कारण है कि नागालैण्ड तथा मिजोरम जैसे प्रदेश आज पूर्णत ईसाई बन चुके हे। काश्मीर मे यही हो रहा है। धर्म सस्कृति के आधार पर ही आज भारत के एक अन्य विभाजन की तेयारिया हो रही है। ऐसे मे वैदिक धर्म तथा सस्कृति को मानकर उन लोगो को क्या मिलेगा। इसीलिए वे तो इसे मिटाने के लिए तथा इस सस्कृति क उपासको को कत्ल करने के लिए तैयार बैठे हैं। इसी लिए कहता हू कि आज स्वतन्त्र भारत मे वैदिक धर्म तथा सस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया है।

मुसलमानो तथा ईसाइयो की ओर से केवल हिन्दुआ का धर्मान्तरण ही नहीं किया जा रहा अपितु वैदिक धर्म तथा सस्कृति पर तरह–तरह के आक्षेप भी किये जा रहे है। मुसलमानो की 'क्रान्ति' नामक पत्रिका मे वे आक्षेप आपको पढने को मिल जाएगे। वैदक धर्मियो की ओर से इनके उत्तर दने मे जो शिथिलता बरती रही है वह चिन्ता का विषय है। वैदिक धर्म विरोधियो के इसी अभियान का एक अग यह भी कि उनके द्वारा अभी भी यह सिद्ध करने के लिए समाचार पत्रो मे लेख तथा पुस्तके लिखी जा रही है कि भारत मे गोवध होता था यहा के लोग गोमास तथा सुरा का प्रयोग करते थे। आर्य भारत मे बाहर से आकर बसे इत्यादि। जब इस प्रकार के प्रसगो को पाठय पुस्तको से निकालने का यत्न किया गया तो इन लोगो ने पर्याप्त हगामा खडा किया तथा मामले को न्यायालय मे भी ले गये। परिणाम स्वरूप कुत्सित एव विकृत इतिहास का सशोधन नही हो सका। आज जो पाश्चात्य सस्कृति की आधी तथा भोगवाद की जो ललक विश्व मे व्याप्त है उससे भी आज वैदिक धर्म तथा सस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया है। आज त्याग का स्थान भोग ने तथा धर्म का स्थान धन ने ले लिया है। किसी भी प्रकार से धन कमाना तथा उसक आधार पर मौज उडाना आज के मानव का लक्ष्य बन गया हे जबकि वैदिक सस्कृति 'तेन त्यक्तने भुञ्जीथा' का उपदेश देती थीं

कोई भी धर्म कोई भी सस्कृति तभी बचेगी जबकि उसका सरक्षण अगली पीढी मे होगा। हम ऐसा नहीं कर रहे है। हमारे बच्चो मे विदेशी सस्कृति भूत की तरह चिपटती जा रही है क्योकि हम उनके अन्दर वैदिक धर्म एव सस्कृति का सरक्षण नही कर रहे है। इसलिए भी आज धर्म एव सस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया है। धर्म एव सस्कृति की रक्षा के लिए आवश्यक है कि १ धर्म एव सस्कृति से सम्बन्धित कुछ रचनात्मक कार्य किए जाए। २ उस धर्म एव सस्कृति पर विधर्मियो द्वारा किए गए आक्षेपो का समाधान किया जाए। ३ तथा अपसस्कृतिया अवैदिक मत–मतान्तरो की समालाचना भी की जाए। महर्षि दयानन्द ने तीना ही कार्य साथ–साथ किए थ। आज हम इन सभी क्षेत्रा मे शिथिल पड गए। इसलिए भी धम एव सस्कृति की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया हे। चुनौतियो का सामना करना आर्यसमाज का स्वभाव रहा है किन्तु आज उसका वह तेजस्वी स्वरूप उसे ओझल होता नजर आ रह है। क्या आर्यसमाज इस सामयिक चुनोती का सामना करन के कटिबद्ध होगा ?

– उपाचाय रामजस कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

पढ़ाई ने छीन लिया बच्चों का बचपन

भारतवष का यह बहुत बडा दुर्भाग्य हे कि स्वतन्त्रता के बाद भी हम गुलामी (परतन्त्रता) का विष घोल घोल कर पी रहे हे। किसी भी राष्ट्र का भविष्य यदि अच्छा हे या खराब प्रकाशमय है या अन्धकारमय अमृतमय है या विषमय यह उस राष्ट्र के भावी सन्तान को देखकर अन्दाजा लगाया जा सकता है। इसम भी मुख्य बात है शिक्षा। क्या आप यह देखकर–जानकर हैरान नही होते कि जो आजादी के बाद से लेकर आज तक पढाया जा रहा है उससे आपको नही लगता कि कल ये बच्चे गूगे बहरे भी हो सकते हे जो भारत की वास्तविक धरोहर हे वैदिक सस्कृति जो भारतीय सस्कृति कहलाती है वह एकदम अतीत का इतिहास मात्र बनकर रह जाएगा ओर हमारी भावी सन्तान इससे गूगी तथा बहरी हो जाएगी। भले ही वह गणित का सवाल हल कर लेगी अग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर लेगी चाहे शारूखान के माता–पिता दादा दादी तथा उसने किस किस फिल्म मे नकली करतब दिखाए थे विश्वसुन्दरी का इतिहास रट लिया हो चाह ग से गणेश की जगह ग से गधा पढकर उच्च डिग्री हासिल कर ली हो परन्तु वह वास्तविक जीवन से सदा गूगे व बहरे ही रहेगे।

बच्चा तीन वर्ष की अपनी तोतली बोली जिसको सुनकर हृदय मे बच्चे के प्रति एक गुदगुदी सी तथा उसकी हरकतो से एक अनोखा प्यार महसूस होता है। मा बाप उसकी पढाई से चिन्तित होते है कोई कोई तो बच्चे को बोझ ही समझते हैं और उसको तीन या साढे तीन वर्ष मे ही अपने से दूर रखना चाहते है और उसे स्कूल भेजने मे ही अपना मा बाप का होना महत्त्व तथा बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की लम्बी आकाक्षा रखते है। इस समय बच्चे का बचपन माता–पिता के साथ व अधीन रहकर अधिकतर बीतना चाहिए था खासकर मा के साथ जिसका पल्लू पकडकर कभी इधर कभी उधर चलना कभी रोना कभी हस देना कभी किसी चीज के लिए जिद करना उसकी जिद पूरी न करने पर नाराज होकर जमीन पर लेट जाना कभी कुछ खाने के लिए जिद करना कभी बाहर जाने की जिद तो कभी दूर तक जाने की जिद। यह सब क्या उसका केवल बचपना है ? नही बचपना ही नहीं अपितु यह उसके खेलने कूदने के दिन हैं जिनसे उसकी शारीरिक व मानसिक वृद्धि होती हे। मा उसको कभी डाटती है तो कभी मारने की धमकी देती है उसको हर चीज से खेलने नही देती। उसका हर चीज मुह मे नही डालने देती कपड गीले करने पर उसको झट से बदल देती है। हाथ गन्दे हुए तो उसे मा एकदम धो डालती है। उसको गलत जगह जान से रोकती है इसलिए नहीं कि वह उससे नाराज हे कोई घर पर आता हे तो मा कहती है हाथ जोडकर नमस्ते करो या योग्यतानुसार चरण छूने को कहती हे वह तो उसको हर पल शिक्षा देती रहती है। यही लम्बी अवधि तक जो प्यार से स्नेहभरी ममता से बच्चे को दिया गया क्रियात्मक ज्ञान है वह उसका भविष्य बनाती है तथा वह मा को देखता रहता है कि वह क्या क्या कर रही है। घर को सजाते हुए देखता हे अतिथि का आदर सत्कार करते हुए देखता है इत्यादि अनक व्यवहारिक बाते सीखता रहता है ओर उसकी अन्दर मृदुलता स्नेह ममता व्यवहारिक इत्यादि अनुशासन के गुण भर जाता है। बाते भले ही छोटी सी लगती हैं परन्तु बडे काम की है। इसीलिए तो कहा है माता निर्माता भवति। हमारे ऋषियो ने हमे बताया है कि आठ वर्ष से अपने बच्चो का स्कूल भेजे। यह भी उपदश दिया है कि पाच वर्ष तक बच्चा मा के अधीन तथा पाच वर्ष से आठ वर्ष तक पिता के अधीन बच्चा रहे उसके बाद उसे गुरुकुल म भेज देव। इस उम्र मे उसकी बुद्धि का विकास समझने योग्य हो जाता है। देखिए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे क्या लिखते है – जब पाच–पाच वर्ष के लडका–लडकी हो जावे तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावे अन्य देशीय भाषाओ के अक्षरो का भी। उसके पश्चात जिनसे विद्या धर्म परमेश्वर सम्बन्धी अच्छी शिक्षा मिले उनके साथ तथा माता पिता आचार्य विद्वान अतिथि राजा प्रजा कुटुम्ब बन्धु भगिनी भृत्य आदि से कैसे–कैसे वर्तना चाहिए इन बातो के मन्त्र श्लोक सूत्र गद्य पद्य भी अर्थसहित कण्ठस्थ करावे जिनसे सन्तान किसी धूर्त के बहकावे मे न आवे। यह शिक्षा माता–पिता के अधीन रहकर ही होना है।

आठ वर्ष से पूर्व स्कूल भेजने से बच्चे का शारीरिक व मानसिक विकास नहीं हो पाता। जो आजकल स्पष्ट देखने मे आ रहा है। यह हमारे ऋषियो की स्पष्ट घोषणा है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे विस्तृत विवेचना की है जो बहुत अनुकरणीय सम्बोधनो से युक्त है। परन्तु वर्तमान मे बच्चो को छोटी सी उम्र मे ही स्कूल भेजकर मा बाप उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है परन्तु यह उनके ख्याली पुलाव के अलावा कुछ नही है अपित उसका तो बचपन ही छीन लिया जाता हे। उसे मा से दूर रखकर उसक विकास मे बाधा डालने का क्रूर प्रयास है। पराधीनता मे किसी का भी विकास सम्भव नही हे चाहे वह बडा हो या छोटा। यही परतन्त्रता विकास मे बाधक होती है तथा सारी उम्र उसे विकसित नही होने देती है। जो प्यार जो ममता इत्यादि मा के द्वारा उसमे भरा जाना था वह तो उसे मिला ही नही इसलिए आज का बच्चा चिडचिडे स्वभाव का किसी भी बात को सहन न करने वाला अपने से बडो का आदर न करने वाला अच्छे बुरे की पहचान न करने वाला बन जाता है तथा इस प्रकार के अनेक अवगुण उस बालक मे रह जाते हैं क्योकि मा को उसके साथ अपना कर्त्तव्य पालन करने का समय ही नहीं मिल पाता है ओर बच्चा कुछ सीख नही पाता।

ज्यो ज्यो बच्चा बडा होता जाता है कक्षाए भी बढती चली जाती हे तथा किताबो के बोझ तले उस बच्चो का कधा झुका रहता है उन किताबो का बोझ मात्र कन्धो पर ही नही अपितु उन किताबो के शब्दो व अका का बोझ उसके मन और मस्तिष्क म हमेशा बना रहता हे। स्कूल मे यदि उसको अध्यापक ठीक मिल गया तो पढाई ठीक होगी मन मस्तिष्क मे तनाव नही होगा अन्यथा यदि अध्यापक कक्षा मे डीग हाक रहा हो अपना व बच्चो का वक्त बरबाद कर रहा हो या कोई कह रहा हो कि किताब से नकल कर अपनी कापी भर लेना तो बच्चे के मन व मस्तिष्क मे कई गुना बोझा बढ जाता है। गृह कार्य (होम वर्क) सब अपने–अपने विषय का इतने दे देते है कि वह घर आकर अफरा तफरी मे जल्दी–जल्दी मे भोजन करता हे वह भोजन भी उसका अग नही बन पाता क्योकि भोजन करने के भी कुछ नियम है फिर एकदम भोजन के पश्चात कभी पढना नही चाहिए। परन्तु उसे इतना अवकाश ही कहा। उसे तो गृह कार्य अभी पूरा करना है। उसे टयूशन भी जाना है। वह खेलने भी जाना चाहता है। गृह कार्य व टयूशन से वह साय पाच–छ बजे निपट पाता है और खेलने की चाह पूरा करना चाहता है खेलने भी जाय तो साय यदि वह घर समय पर नही पहुचा तो घर वालो की डाट डपट सुनने को मिलती है। साय भोजन करने के बाद फिर पढना है परन्तु दिन भर की पढाई डाट डपट इत्यादि से वह इतना चूर हो जाता है कि वह पढ नही पाता और सो जाता है। अगले दिन भी उसकी वही क्रियाए फिर शुरू होती हैं एक और चिन्ता लेकर। हो सकता है उसका कुछ गृह कार्य छूट गया हो उसके लिए स्कूल मे डाट ओर सजा। बताए इस पर बच्चो का विकास होगा या ह्रास। इस पढाई ने तो बच्चो का बचपन छीन ही लिया।

माता पिता पर भी पढाई के खर्च का बोझ इतना बढ गया हे कि बच्चे पर ही सबकी गाज गिरती है। माता पिता के लिए बच्चो को पढाना लोहे के चन चबाना जैसा है। फीस अधिक किताबो की कीमत बढ चढकर। कभी–कभी तो ऐसी पुस्तक तक स्कूल वाले दे देते है जिस पुस्तक का उस कक्षा से सम्बन्ध ही नहीं होता है। परन्तु क्या करे लेनी पडेगी अन्यथा उस बच्चे के साथ स्कूल वालो का व्यवहार उपेक्षा का हो जाएगा। बीच–बीच मे कुछ न कुछ राशि स्कूल वाले लेते रहते है। टयूशन भी पढाना जरूरी है क्योकि स्कूल की पढाई से तो शिक्षा पूरी हो नही पाती। इस महगी शिक्षा से परेशान मा बाप आखिर बच्चे पर ही टूट पडते है कैसे पैसा मागता रहता है ? कहा से आएगे इतने रुपये ? बच्चा कभी कभी तो इतना परेशान हो जाता हे कि वह कभी कभी भोजन ओर कभी सुबह का नाश्ता ही छोडकर स्कूल चला जाता है। इतना पढाई मे खर्च करने के बाद यदि दुर्भाग्य से कक्षा मे असफल हो जाय ता उस बच्चे पर तथा मा बाप पर क्या बीतेगी। कई बच्चे तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। यदि स्कूल वालो से कुछ कह दोगे तो फिर तो ओर भी वेदना हो जाएगी और उसके माता पिता तथा स्वय बच्चे के प्रति क्या होगा कहा नही जा सकता।

इस पर कैसे होगा इन बच्चो का विकास ? जरा सोचे ये उच्च पद पर विराजमान अधिकारी गण। अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करे क्या आजादी की अर्द्धशताब्दी के बीत जाने पर भी शिक्षा अपनी शिक्षा नहीं हो सकी जिस विद्या का प्रकाश सा भूमण्डल मे फैला था और इसी ज्ञान के कारण भारत को विश्वगुरू कहा गया हो उसका तो कही नामोनिशान तक नहीं दीखता इन वर्तमान पुस्तको की पढाई मे तो बताईए क्या लाभ हुआ इस स्वतन्त्रता का ? जो शिक्षा की मूलभूत आवश्यकता है उसका भी व्यापारीकरण हो गया। पढाई भले ही जाय भाड मे परन्तु फीस पूरी चाहिए। किताबो से कमीशन चाहिए। सब कुछ ज्ञात होते हुए भी हमारी सरकारे मुफ्त की शिक्षा तो क्या ही दिलाएगी परन्तु इस पढाई के बढते बोझ को भी यदि सामान्य कर पाने मे सक्षम होती तो कुछ राहत तो मिलती ही। परन्तु हे ईश्वर ! कब इनको सद्बुद्धि आएगी ?

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

समृद्धि का आधार 'अग्निहोत्र'

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

प्राचीन काल से आर्यजन अग्नि होत्र को करते आए हैं। जब तक इस पवित्र कर्म को आर्य विधिवत करते रहे परिवार व पूरे समाज मे सुख समृद्धि बनी रही पृथ्वी पर आर्यो का एक छत्र राज्य रहा। महाभारत के युद्ध के पश्चात श्रीकृष्ण व अर्जुन दोनो रथ द्वारा पाताल लोक गए थे महाराजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ मे महर्षि व्यास को वहा से बुलाया था। आर्यो का दूर देशो मे आना जाना था और ऋषि महर्षि भी दूर दूर ज्ञान व सत्योपदेश हेतु अन्य देश देशान्तरो मे जाते थे। अत वैदिक पताका दूर दूर तक फैली थी।

अग्नि होत्र जल वायु, शरीर आत्मा तथा मन की पवित्रता शुद्धता तथा ज्ञान के सचार का माध्यम तो था ही अपितु आर्य जानो के एक स्थान पर बैठने का भी श्रेष्ठ कर्म था। अग्नि होत्र के समय आर्यजन सभी कार्य छोड कर वहा बैठते थे। वेद की ऋचाओ को सस्वर बोलते थे तथा आहुतिया देते थे। वद की ऋचाए कण्ठस्थ रहती थी। प्रात अग्निहोत्र कर साय तक आत्मा व शरीर पवित्र बने रहते थे। वातावरण भी सुगन्धित बना रहता था तथा यहा ज्ञानार्जन करके कोई भी दुष्कर्म करने की सोचता भी न था। अत सभी सत्य मार्ग पर चलते थे यदि कोई पारिवारिक सामाजिक राज्य सम्बन्धी कोई सकट आता भी था तो निर्णय लेकर समस्या का समाधान करते थे। प्राचीन काल मे कोई विशेष न्यायालय न थे अपितु विद्वानो अतिथियो आचार्यो ऋषियो की सभा मे न्यायपूर्वक समस्याओ अपराध व अपराधियो पर विचार किया जाता था और राजा भी वेदादि शास्त्रो का ज्ञाता ईश्वरीय मार्ग पर चलने वाला सत्य व न्याय युक्त मार्गानुगामी होता था। प्रजा को पुत्रवत समझता था। वेद व ज्ञान के प्रचार को महत्व देता था। विद्वानो का सम्मान करने वाला होता था। विद्वज्जनो की सभा के निर्णय को स्वीकार करता था।

अग्निहोत्र की प्रथा समाप्त होने से ही आर्यो मे वेद ज्ञान का अभाव होने लगा और तत्पश्चात आडम्बर अधविश्वास तथा अज्ञान बढने लगे और सामाजिक तथा राज्य व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई नैतिकता समाप्त हो गई वेद ज्ञान का प्रचार प्रवाह भी अवरुद्ध हो गया फलस्वरूप चारो ओर राज्य छोटे छोटे राज्यो रियासतो मे बट गए। आपसी झगडे बढ गए। आज अग्निहोत्र की भावना न होने से ही वेदज्ञान के प्रचार की व्यवस्था समाप्त हो गई और समाज मे निरन्तर हिसा पाप व जघन्य अपराध उत्तरोत्तर बढते जा रहे है।

यह बहुत महत्वपूर्ण बात थी कि अग्निहोत्र के समय दिन मे कम से कम दो बार रात्रि के पश्चात सूर्योदय के समय एव रात्रि पूर्व सूर्यास्त के समय सभी जन एक स्थान पर एक साथ मिल कर बैठ लेते थे और समस्याओ पर विचार मथन भी हो जाता था। आज भी दिन भर की भागदौड व कडी मेहनत के पश्चात सर्व जन प्रात व साय एक साथ बेठ कर अग्निहोत्र करे तो दिन भर की शारीरिक थकान व मानसिक परेशानी चिन्ता बेचैनी से बचा जा सकता है। अग्निहोत्र से हर प्रकार से शान्ति मिलती है।

आज मनुष्य की व्यस्तता इतनी बढ गई है कि उसे भोजन करने तथा अन्य से बात करने तक का समय नही है महानगरो मे बहुत से व्यक्ति दिन भर और बहुत से रात भर जीविकोपार्जन मे व्यस्त रहते है। घर व बाहर की समस्याओ से घिरे रहते है। मानसिक थकान उन्हे प्राय बेचैन व अशान्ति बनाए रहती है। ऐसे मे जहा भी रास्ते मे अथवा घर पर अग्निहोत्र की व्यवस्था हो सन्ध्या हवन करने से मानसिक शान्ति प्राप्त की जा सकती है। प्रदूषण भी बढता जा रहा है कोलाहल व जल तथा वायु प्रदूषण से अनेक प्रकार के स्वास्थ्य पर गभीर दुष्प्रभाव होने लगे है। हृदय मस्तिष्क श्वास त्वचा यकृत तथा मूत्र रोगो मे वृद्धि हो रही है इनके लिए भी अग्निहोत्र उपयुक्त है।

आज मानव एकाकी बन कर रह गया है घरो मे टीवी डिश चेनल आदि उसको पर्याप्त लगते हैं। बहुत से नगरो मे तो यहा तक स्थिति पहुच गई है कि पडौसी पडौसी को नहीं जानता मकान सख्या व सेक्टर का पूरा पता फोन न० आदि से ही गन्तव्य स्थान तक पहुचा जा सकता है। ऐसे स्थानो या कालोनियो मे भी बैठने व मिलने का एक स्थान व माध्यम होना आवश्यक है और वह अग्निहोत्र है जहा पवित्रता व ज्ञान की प्राप्ति तो होती ही है सभी से परिचय होता है मित्रवत सम्बन्ध बनते है। अग्निहोत्र मे बैठने से दूरिया घटती व निकटता बनती है। दिन भर की दौड धूप मे जहा कोई किसी से बात तक नही कर सकता यहा बैठकर शान्ति मिलती व समस्याओ व अन्य विषयो पर वार्ता हो जाती है। बाधाओ का समाधान हो जाता है।

हमारे पूर्वज वेद मार्गानुगामी थे। वेद मार्ग पर चलकर जीवन को यशस्वी व श्रेष्ठ पवित्र बनाते थे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व योगेश्वर कृष्ण वेद ज्ञान व अन्य सत्य ज्ञान के शास्त्र ज्ञाता थ और जीवन वेद हेतु अर्पित किया। नित्य सध्या हवन करते कराते थे। ऋषि महर्षियो ने भी जीवन मे अग्निहोत्र को नित्य प्रति किया। जब हमारे पूर्वज इस पवित्र कर्म को करते थे तो क्यो न हम भी नित्य प्रति हवन किया करे। जन सम्प्रदाय को इसकी उपयोगिता समझाए आज भी बहुत से व्यक्ति उपला जलाकर उस पर लौग घृत आदि डालकर चारो ओर हाथ से जल डालते व हाथ जोडकर ईश्वर का स्मरण करते हैं यह और कुछ नहीं प्राचीन काल से चले आ रहे अग्निहोत्र का ही विकृत रूप है। हम उन को यह समझाए कि इस कर्म को विधिवत करे जैसा कि आर्यजन करते है। ऐसे ही विकृत प्रकार के यज्ञकर्म और भी किए जाते हैं जहा न तो वेद मत्र बोले जाते है न वैदिक विधि से यज्ञ होता है और वेदमत्रो के स्थान पर काल्पनिक व अन्य कुछ के कुछ नाम लेकर स्वाहा बोल दिया जाता है उन्हे अग्निहोत्र की शुद्ध विधि का ज्ञान ही नही होता हमे उनको भी समझाना चाहिए। ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना के स्थान पर आज लोगो ने शेरोवाली वैष्णो देवी भगवती काली दुर्गा सन्तोषी और अनेको देवी देवताओ के मनगढन्त नाम लेकर देवी जागरण करने आरम्भ कर लिए है। यह कोलाहल मात्र है हवन भी करते है तो अशुद्ध प्रकार से करते है। अत आवश्यकता है अग्निहोत्र को करने कराने की यदि एक स्थान पर बैठे तो वेदानुसार ही विचार कर्म व साधन होना चाहिए और बैठने का स्थान अग्निहोत्र से अच्छा कुछ नही।

सभी जीवन के शुभ कर्मो मे यज्ञ आवयश्क था सभी एक स्थान पर बैठ ईश्वर की उपासना करते हवन करते थे। हृदय पवित्र बने रहते थे और सगठन भी दृढ बना रहता था विश्व भर के आर्यों की आवाज एक व बुलन्द होती थी।

आज लोग बैठते तो है और बडी सख्या मे भी बैठते हैं परन्तु वहा जहा बैठते है धार्मिक भावना सत्यकर्म व पवित्र विचार न होकर बुराइयो की ओर बढते है। इन्द्रियो को वासनाओ मे लिप्त कर व्यक्तिगत व सामाजिक दोष बढते ही जाते है। आज अग्निहोत्र हेतु यज्ञशालाए व आश्रम तो बनवाए नही जाते सरकारो द्वारा पचसितारा होटल बनवाए जाते है जहा आधुनिक केबरे नृत्य अर्धनग्न नृत्य चलते है। मद्यशालए खुलवाई जाती हैं जहा सहस्रो मद्यपानी अटटाहास करते खाया पिया मुह से उल्टा निकालते रहते हैं। बारातो काकटेल पार्टी आदि ऐसे अवसरो पर अधिकाशत मद्य आदि का पान करते धूम्रपान करते हाथ पकडकर स्त्री पुरुष कामुकता पूर्ण नृत्य करते ऐसे दुष्कर्म व कुकृत्यो से ही सामाजिक प्रदूषण होता और अपराध वृद्धि होती है इसी कारण वेद विरुद्ध होने से वैदिक पवित्र सस्कृति नष्ट हो ई।

आज हमे सध्या हवन जैसे पवित्र कर्म व वेदप्रचार को पुन जन मानस मे स्थापित कर चहु ओर सुख व शान्ति व समृद्धि बढानी चाहिए तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम का उद्घोष सफल हो सकेगा।

– चन्द्रलोक खुर्जा – २०३१३१
(उ०प्र०)

✡✡✡

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

पृष्ठ ६ का शेष

पढ़ाई ने छीन लिया बच्चों का बचपन

शिक्षा विद्या से सम्बन्धित है। विदया किसको कहते है इस पर ऋषिवर दयानन्द लिखते हैं – 'विद्या उसको कहते हैं जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थो का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है इसका नाम विद्या है। अविद्या उसको कहते है जो विद्या से विपरीत है भ्रम अन्धकार और अज्ञान रूप है उसको अविद्या कहते हैं। परन्तु वर्तमान की पढाई केवल नौकरी करने के उद्देश्य मात्र से है क्योकि आज की शिक्षा अग्रेजो की देन है यह मैकाले द्वारा प्रदत्त भारतीय सस्कृति पर कुठाराघात है। इसीलिए चाहे वह नेता हो अभिनेता हो डिग्री धारी क्यो न हो वह अपनी मूल सस्कृति से दूर बहुत दूर है। इसीलिए यदि कोई अपनी प्राचीन सस्कृति की बात करता भी है तो उस पर कोई विश्वास ही नहीं करता अपनाना तो दूर की बात है। इसका परिणाम आप देख रहे हैं। वर्तमान नरक–समान भयकारक वातावरण।

प्रत्येक वर्ष आजादी का जश्न मनाया जाता है। जगह–जगह रैलिया निकाली जाती हैं। सबको आजादी का गरुर है। नेताओ का उच्चतम भाषण हमने आपके लिए ये किया वो किया। हम बच्चो के वस्ते का बोझ कम कर रहे है। गरीबी रेखा से नीचे जीने वालो के लिए हमने कई योजनाए बनाई हैं। अब इस देश मे पाच साल बाद दस साल के बाद कोई गरीब नही होगा। परन्तु दुख का विषय है कि आज अर्द्धशताब्दी से यही सुनते आ रहे हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि गरीबी पहले से बढी है घटी नहीं। इस पर नेतागण एक और दलील देते हैं कि जनसख्या के बढने से गरीबी भी तो बढेगी ही। धन्य हो इस आजाद भारत के आजाद नेताओ। अब कितना डुबाओगे हमे। अपना तो इतना भर लिया कि गददे भी रुई की जगह नोटो से और सिराहना भी सोने चादी से भर लिया। पशुओ का चारा तक हजम कर गए। पर गरीब तो दो समय की रोटी के लिए तरस रहा है। शिक्षा इतनी महगी कि गरीबो के बच्चे सडक पर पढ रहे हैं न तन पर कपडा न भर पेट भोजन। पर आजादी का सुख कौन भोग रहा है वही जिन लोगो के पास अपार धन दौलत है। जिनका इस देश मे एक छत्र राज्य है जिन लोगो को अग्रेजो द्वारा विरासत मे रियासते मिली हैं जिन्होने छल बल के जोर पर अपार धन एकत्र किया है। जो अपने अलावा किसी का इस देश की सम्पत्ति पर अधिकार ही नहीं समझते और आज सर्वत्र भ्रष्टाचार यौनाचार व्यभिचार चोरी डाका हत्याए बलात्कार इत्यादि अनेक अमानुषी कर्म हो रहे हैं। यह कटु सत्य है कि यह सब आज की शिक्षा का ही दुष्परिणाम है। हम पेड के पत्तो टहनियो उसके फलो और फूलो के इलाज की बात तो करते हैं परन्तु उसके भूल को सुधारने की बात नही करते यही कारण कि हम आज भी उतने ही पीछे है जितने इस देश को आजादी मिलने से पहले थे। हम वहीं के वही है। हम एक कदम भी आगे नहीं बढे है। मै तो यह कहना चाहता हू कि हम कई हजार साल पीछे रह गए है। भौतिक उन्नति भले ही हो गयी हो परन्तु किसी भी राष्ट्र की उन्नति तथा उसकी गौरव गरिमा उस राष्ट्र के निवासियो का आध्यात्मिक चिन्तन और चरित्र कितना ऊचा है इस पर होती है। इसीलिए इस भारत का मस्तक विश्व मे सर्वथा ऊचा ही ऊचा रहा। यही कारण है कि इसे मात्र भारत न पुकार कर भारत माता कहकर आदर दिया जाता है। बडे दुख से लिखना पड रहा है कि हमने अपने प्राचीन गौरव को धूमिल कर दिया है और आगे की रणनीति भी तो यही है। क्योकि यदि कोई अपने पूर्व गौरव की बात करता है तो उसकी कोई बात सुनी नही जाती। भारत माता के हत्यारे अभी सुधार नहीं चाहते है। वे अग्रेजो के मनसूबे पूर्ण करने मे लगे हैं। अपनी सस्कृति अपनी भाषा अपनी शिक्षा से उनको न प्यार है न कोई सरोकार। वे विधर्मी हमारे बच्चो को वास्तविक शिक्षा से दूर रखना चाहते हैं ताकि कहीं यह भारत मा की भावी सन्तान फिर न कोई चमत्कार कर बैठे। कही फिर से इस देश मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम योगीराज श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष माता द्रौपदी माता गार्गी माता मदालसा इत्यादि जैसी पवित्र नारिया जन्म न ले ले। कहीं यह हिन्दुस्तान फिर आर्यावर्त देश न बन जाए।

इसलिए हमारा बुद्धिजीवियो राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री देश हितैषी नेताओ तथा देशभक्तो से निवेदन है कि बच्चो पर शिक्षा का यह बोझ कम किया जाए ताकि शिक्षा के नाम पर जो लूट ओर दुकानदारी चल रही है उस पर पूण नियन्त्रण लगाया जाए। शिक्षा पाठयक्रम पर एक आचार सहिता बनायी जावे और उस आचार सहिता का पालन न करने वाले को दण्ड देने का प्राविधान भी हा। ऐसा पाठयक्रम तैयार किया जाए जिससे बालको और युवको को प्राचीन भारतीय सस्कृति के दिग्दर्शन हो सके।

मै यही पूछना चाहता हू कि है कोई माई का लाल है कोई देश भक्त है कोई ईश्वर भक्त जो इस पूरी अव्यवस्था को व्यवस्थित कर दे। बच्चो का बचपना लौटा दे। हसता खेलता बचपन दे दे। इनके बस्तो का बोझ हल्का कर दे ताकि इनके कोमल से कन्धे आसानी से ढो सके। इन बस्तो मे रखी पुस्तको के अको और शब्दो का बोझ कम कर दे ताकि इनके कोमल से शरीर और मन–मस्तिष्क के तनाव दूर कहीं अधिक दूर चला जाए और कभी भी इन मासूम बच्चो के पास तक आने की हिम्मत न कर सके ताकि इनका बचपन हसता–मुस्कराता बीतते हुए एक स्वस्थ सुन्दर दीर्घ सुदीर्घ यौवन लेकर आए और इस देश की बागडोर इनके हाथ हो। ये देश के कुशल नागरिक बने और देश का दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करे। जीवेम शरद शतात होकर स्वय आर्य श्रेष्ठ बनकर देश को फिर से आर्यावर्त्त बना दे तभी हमारी आत्मा आनन्दित होगी। तभी भारत मा की गोद मे लिया यह जन्म सफल होगा।

इत्योम शम।

– अम्बाराम आर्य भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड कोटद्वार उत्तराचल

आओ झांकी तुम्हें दिखाये

कविराज छाजूराम शर्मा वैद्य शास्त्री

आओ झाकी तुम्हे दिखाये पापी पापिस्तान की।
चार बार हो चुकी लडाई जिससे हिन्दुस्तान की।
पूर्वी पापिस्तान मे याह्या ने अति पाप कमाया था।
बम वर्षा कर लाखो का जिसने सहार कराया था।
बहू बेटिया वस्त्रहीन कर बाजारो मे घुमाया था।
इन्दिरा गाधी ने जा कर वह पापाचार मिटाया था।
टूटा पापिस्तान हुई बदनामी याह्याखान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

कर न सकेगा कभी सामना पापी हिन्दुस्तान का।
बदला लेना चाहे जो अपने पिछले अपमान का।
छिपकर हमले करता निर्दोषो का खून बहाता है।
कायर बन कर जग मे अपने को बलवान बताता है।
कई बार पिटकर भी पापी बात करे अभिमान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

पाक कर्म होते हो जहा वह पाकिस्तान कहाता है।
निस दिन नरसहार करे वह पापिस्तान कहाता है।
दो दशको से खेला जिसने यहा पर खूनी खेल है।
मानवता के शत्रु देश से हो सकता क्यो मेल है।
युद्ध पाचवा करे बचे ना बाकी बाकिस्तान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

हर मुस्लिम की रग रग मे कश्मीर समाया कहते है।
पापिस्तान से अधिक यहा भारत मे मुस्लिम रहते है।
इनकी रग रग मे भी है कश्मीर कहो फिर किसका है।
विलय हो चुका जिसमे पहले यह कश्मीर तो उसका है।
यह धरती है सबकी हिन्दू ईसाई मुसमलमान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

खून के गारे पर रखी है नीव जो पापिस्तान की।
कभी एकता हो न सकेगी उससे हिन्दुस्तान की।
चीन और अमरीका दोनो जिसके बने सहाई है।
मिले स्वार्थ के कारण चीनी मुस्लिम भाई भाई है।
धोखा देकर काटी जिसने जड अफगानिस्तान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

कपट युद्ध मिथ्या भाषण मे पापिस्तान बडा माहिर है।
रहा नहीं विश्वास योग्य यह बात सभी जग जाहिर है।
गोधरा हत्याकाड मे आई०एस०आई० का काम है।
बहुविधि अपराधो के कारण जगभर मे बदनाम है।
आतकवादी देश है यह अब तो सबने पहचान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखाये

सर्वे भवन्तु सुखिन वाला यह सिद्धान्त हमारा है।
जिओ और जीने दो इसको भी हमने स्वीकारा है।
जीने का अधिकार सभी को वेदो का उपदेश यही।
सार यही सुखमय जीवन का ऋषियो का सन्देश यही।
छाजूराम नहीं चले सदा यहा अन्यायी बलवान की।
आओ झाकी तुम्हे दिखायें पापी पापिस्तान की।।

१२६ जनता डी०डी०ए० फ्लैट पावर हाउस बदरपुर नई दिल्ली-४४

ईसाइयत से बचकर रहने के विशाल संकल्प

ग्राम–काकमबानी तह० थादला जिला – झाबुआ मध्य प्रदेश

महासम्मेलन मे मध्य प्रदेश राजस्थान एव गुजरात के ईसाई बहुल क्षेत्र झाबुआ पार रतलाम बाराबाडा एव दाहोद से आए १५ हजार से अधिक आदिवासी नर नारियो ने इसाईयत से बचने एव बने हुए ईसाइया को वापस आर्य बनाने का सकल्पादि लिया।

यह आयोजन अखिल भारतीय सेवाश्रम सघ दिल्ली शाखा – थादला एव मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा व भगत समाज के सयुक्त तत्वावधान मे किया गया था।

इस महासम्मेलन मे समाज सुधार की भावना से वैदिक धर्म परिचय सम्मेलन धर्मरक्षा सम्मेलन नशामुक्ति सम्मेलन बाल विवाह बहु विवाह अनमेल विवाह उन्मूलन सम्मेलन दहेज प्रथा बन्द करो सम्मेलन तथा आर्य वीर शक्ति सम्मेलन के रूप म अत्यत उत्साह पूण वातावरण म महर्षि दयानन्द की जय आर्यसमाज अमर रहे न ारो क बीच आदिवा ी भाइयो न इस क्षत्र मे एक ऐतिहासिक महासम्मेलन को सफल बनाया।

इस समारोह म प्रमुख वक्ता के रूप मे उपस्थित ब्रह्मचारी धर्म बन्धु जी आई पी एस के व्याख्यानो का विशेष प्रभाव पडा – ब्रह्मचारी धर्म बन्धु ने अपने उदबोधन मे ऐतिहासिक एव प्रमाणिक तत्वो को उजागर करते हुए कहा कि इस धर्म की इस राष्ट्र की तथा आदिवासियो की रक्षा करने के लिए कोई कहीं से नही आयेगा आप स्वय ही अपनी तलवार की धार को तेज कीजिए तथा बन्दूक की नाली को साफ कर लीजिए आज भारत कर्जे मे है – क्यो ? क्योकि यहा के नेताओ ने अपना धन विदेशो मे जमा कर रखा है। यदि नेता अपना धन जो विदेशो मे जमा किए हुए है यदि वो भारत मे ले आए तो भारत कर्ज मुक्त हो सकता है।

अपने प्रभावशाली एव ओजस्वी वक्तृत्वकला से सभी श्रोता प्रामाणिक तथ्यो को श्रवण कर आश्चर्य चकित एव मन्त्रमुग्ध हो गए। विद्वानो का व्याख्यान तो लोगो ने बहुत सुन रखा है – पर धर्म बन्धु से कर्मठ कार्यकर्ता का नही।

ब्रह्मचारी धर्म बन्धु जी ने यहा की स्थिति को देखते हुए कहा कि इस क्षेत्र मे दयानन्द के कार्यो की आवश्यकता अधिक है अत सारे राष्ट्र का ध्यान इस ओर लगाना चाहिए। दयानन्द सेवाश्रम के कार्यो की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए ब्रह्मचारी जी ने कहा मै भी दयानन्द का सिपाही हू। मै भी अज्ञानी था भगवान की खोज मे मैने भी बहुत चक्कर लगाए है परन्तु भगवान कही मिला नही परन्तु जब सत्यार्थ प्रकाश मिला तो उस पढकर मुझे जो ज्ञान मिला उसी का मै प्रचार कर रहा हू।

अपने आप का दयानन्द सेवाश्रम के साथ जोडते हुए कहा कि अगल वर्ष मे मै झाबुआ क्षेत्र मे एक आश्रम विद्यालय एव बालवाडी सचालित करन हेतु पूरा प्रयास करूगा तथा आर्थिक सहयोग प्रदान कराऊगा।

इस समारोह मे आदिवासी वनवासियो को पूज्य माता प्रेमलता जी एव ईश्वरदेवी माता जी का विशष सहयोग रहा। कायक्रम मे उद्बोधन हतु प्रचारको मे से श्री विजयसिह जी विजय मथुरा श्री काशीराम आर्य अनल शाजापुर तथा यज्ञीय ब्रह्मा के क्रम मे श्री हरीसिह आर्य दिल्ली विशेष रुप स आमन्त्रित थ। आदिवासी प्रचारको मे श्री देवीदास जी महाराज श्री जनक रामायणी हगजी भाई डामोर विजयसिह देवडा ने भी कहा कि इस क्षेत्र मे यदि दयानन्द सेवाश्रम मे समाज सेवा के हित म कार्य प्रारम्भ न किया होता ता अधिकतर आदिवासी विधर्मियो के षडयन्त्र मे फस जाते। दयानन्द सेवाश्रम आदिवासियो के उत्थान हेतु जो कार्य कर रहा है वह कार्य और कोई दूसरा सगठन नही कर सकता।

समारोह मे स्थानीय सासद विधायक एव महात्मा गाधी सस्थान के अध्यक्ष एव सस्था के सहयोगी श्री महेश जोशी विशेष अतिथि के रूप मे आमन्त्रित थे। जन नेताओ ने उपस्थित आदिवासी जन सैलाब को देखते हुए गदगद होते हुए कहा कि यदि आर्य समाज ने शिक्षा एव सस्कार पर हमारे प्रति ध्यान न दिया होता तो आज हम विधायक एव सासद नहीं बन पाते। सरकार की ओर से पूरा सहयोग प्रदान करने का आश्वासन सासद एव विधायक ने दिया।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की महामत्री माता प्रेमलता एव ईश्वरदेवी ने सभी आदिवासी नर नारियो से सकल्प करवाया हजारो आदिवासियो ने दारू बीडी गुटखा भाग छोडने का सकल्प लिया तथा अपने को एव अपने बच्चो को दयानन्द सेवाश्रम मे भेजने हेतु बचन दिया। विदित हो की माताजी इस वृद्धावस्था मैं इस क्षेत्र मे समाज सेवा के रूप मे जो कार्य कर रही है ऐसा और कोई दूसरा उदाहरण पूरे देश मे ढूढने से भी नहीं मिलेगा।

शाजापुर के आयवीरो ने विविध व्यायाम प्रदर्शन किया तथा होशगाबाद से पधारे ब्र० रूपसिह आर्य व्यायाम शिक्षक न चमत्कारिक एव प्रभावशाली करतब दिखाए आदिवासी नर नारियो म विशेष उत्साह का वातावरण बना तथा हजारो नोजवाना ने धम रक्षा का सकल्प लिया।

महासम्मेलन मे रतलाम धार भापाल नागपुर रायपुर भिलाई दुर्ग दिल्ली इन्दौर के आर्यो का विशेष सहयाग रहा। मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा क महामत्री श्री भगवानदास अग्रवाल तथा कई सभासद विशष रूप से उपस्थित थ। सभा के प्रचारक श्री खेमचन्द आर्य तथा बरलिग भगत का इस सम्मेलन की सफलता हतु विशेष सहयोग रहा।

कर्मठ कार्यकर्ता आय धर्म प्रचारक पूर्व सरपच श्री आकारसिह आय वनवासी आर्य भगत महासम्मेलन के अध्यक्षीय पद की गरिमा के अनुरूप इस सम्मेलन को सफल करने मे कोई कसर नहीं छोडी। कधे से कधा मिलाकर कार्य करने वाले आर्य भगत समारोह सयोजक श्री बिजिया बारिया मनसुख भगत भागचन्द भगत कमल डामोर थानसिह आर्य रमेश भगत राजेन्द्र कुशलपुरा भीमाभाई सरपच भमसिह आर्य अमृत कटारा मागीलाल पाचाल डॉ० प्रजापत डाडम सेठ शाति भाई पचाल कसलाभाई धिराभाई मागलिया भगत अनिल वर्मा मोहन धामनिया मलिक चौहान सुरेशचन्द्र शुक्ला दयालसिह मलसिह भगत जोसफ भगत हवसिह हुरसिह खडिया डॉ० ओम बजाज होमजी बादिया धर्मेन्द्र आर्य महेश वर्मा सभी आर्य कार्यकर्ताओ ने घर के सभी कार्यों को छोडकर जगह जगह धूम घूम कर दयानन्द के सदेश को सुनाने के लिए हजारो लोगो से सम्पर्क कर कार्य को सफल बनाया।

इस कार्यक्रम के साथ यह वचन सत्य सिद्ध हो रहा था –

मगर दुनिया उन्ही की रागनी पर झूमती है

जो जलती चिता पर बैठकर वीणा बजाते है।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली शाखा थान्दला सचालक – आर्य दयासागर कोषाध्यक्ष – प० जीववर्धन शास्त्री लखाकार – बसत भारद्वाज के प्रयासो से आदिवासियो मे धर्म रक्षा के प्रति विशेष उत्साह का वातावरण इस क्षेत्र मे बनता जा रहा है। आशा की जा रही है कि ऐसा कार्य प्रचार यदि जारी रहा तो झाबुआ क्षेत्र का एक भी व्यक्ति कभी भी इसाई नही बन सकता तथा जो बने हुए है वो भी आर्य बन जायेगे। विदित हो कि दयाननद सेवाश्रम के द्वारा जो शुद्धि का कार्य किया जाता है वह निराला ही है कुछ सगठन पानी छिटकर ईसाई शुद्धि का डिडोरा पीटते हैं अखबारा मे छापते हे तथा आर्यो से धन लने मे कसर नहीं छोडते। कुछ लाग चक्कर मे आ जाते है भीड दखकर अपनी झोली खोल देत है पर परिणाम कुछ भी नहीं होता है। दयानन्द सेवाश्रम समाज सेवा का एसा कार्य करती ह कि कोई आदिवासी इसाई बन ही नही सकता हे आर्यो यदि आपके पास पैसा है और राष्ट्र रक्षा मे अपना धन लगाना चाहते हो तो अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ का सहयोग करे यह सेवाश्रम आप को वैसा कार्य दिखायेगा जैसा आप आप चाहते है। अब तक किए गए कार्यो को देखना ।

झाबुआ जिले का थादला ब्लाक ही एक ऐसा ब्लॉक है जहा का आम आदमी दयानन्द व आर्यसमाज को जानता है तथा जुडकर कार्य करना चाहता है। परन्तु हमारे पास साधनो का अभाव है आर्यजन इस ओर ध्यान दे तो आप जैसा चाहे वैसा कार्य करके दिखा सकते हैं। शहरो मे कार्य करना बडा आसान है लोगो के पास पैसा है साधन है लोग है – परन्तु झाबुआ क्षेत्र मे पाच वर्षो से लोग अकाल ग्रस्त है। ईसाई मिशनरिया अपना षडयन्त्र फैला रही है। यदि आपने सेवा करनी है तो अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली शाखा थान्दला जिला झाबुआ म०प्र० के साथ अपना आत्मीय सबध बनाये तथा तन मन धन से सहयोग प्रदान करे।

– आचार्य दयासागर सचालक
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली
शखा थान्दला।

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के दुष्प्रभाव और बचाव

– डॉ० जे० एल० अग्रवाल

स्वस्थ मनुष्य का तापमान विभिन्न मौसम मे एक समान बना रहता है। गर्मी के मौसम मे जब वातावरण का तापमान बढने लगता है तो शरीर के अन्दर तेजी से बाह्य गर्मी जज्व होने लगती है। गर्मी के मौसम मे त्वचा की रक्त वाहिनिया चौडी हो जाती हैं जिससे त्वचा का रक्तप्रवाह बढ जाता है और शरीर की गर्मी ज्यदा मात्रा मे बाहर निकल सकती है। पसीना आता है जिससे भी शरीर की गर्मी तेजी से निकल सकती हे। इस समय शरीर की शारीरिक क्रियाए मद गति से होती है जिससे शरीर का ऊर्जा उत्पादन घट जाता है। असावधानी के कारण गर्म मौसम मे अनेक गम्भीर समस्याए भी हो सकती है।

पैरो मे ऐठन – यदि गर्मी के मौसम मे पसीना ज्यादा आता है जिसके कारण शरीर मे नमक की कमी हो सकती है मरीज की मासपेशियो विशेषकर पिण्डलियो की मासपेशियो मे तीव्र ऐठन होने लग सकती है। मरीज बेचैन परेशान रहते हैं। गर्मी मे ऐठन होने पर चिकित्सक के परामर्श से भोजन मे नमक की मात्रा बढा द। नमक की ठण्डी शिकजी का सेवन करे।

ज्वर (हीट पायरेक्शिया) कुछ व्यक्तियो को गर्म मोसम म गर्मी के प्रभाव से तेज (बुखार) ज्वर आ जाता है साथ ही पसीना भी निकलता है। यह समस्या मस्तिष्क मे तापमान नियन्त्रक केन्द्र के असतुलन के कारण हो सकती है। गर्मी के कारण ज्वर होने पर मरीज को ठण्डे हवादार स्थान पर लिटाए पर्याप्त मात्रा मे ठण्डे पेय पदार्थ दे। बदन को ठण्डे पानी या बर्फ की पटिटयो से पोछे। ध्यान रखे गर्मी मे ज्वर सक्रमण रोग के कारण भी आ सकता है यदि मरीज का बुखार कुछ घण्टो मे नहीं उतरता तो चिकित्सक से परामर्श लेकर उपचार करवाना आवश्यक है।

थकावट (हीट एक्जासन) – अत्यधिक गर्मी मे शारीरिक क्षमता घट जाती है। गर्मी के मौसम की थकावट चक्कर कमजोरी सिरदर्द पेट मे मरोड इत्यादि आम समस्या है। पर कभी–कभी गर्मी के मौसम मे विशेषकर मेहनत करने या खेलने से अचानक शरीर निढाल हो जाता है। यह समस्या गर्मी के कारण धमनियो के फैलने शरीर मे खनिज लवणो की कमी रक्तचाप घटने के कारण हो सकती है। किसी भी व्यक्ति को गर्मी के मौसम मे खाली पेट घूमना खेलना श्रम नहीं करना चाहिए। घर से बहार धूप मे जाते समय पर्याप्त मात्रा मे जल शर्बत का सेवन करे। धूप से बचाव के लिए छाते धूप के चश्मे का प्रयोग करना चाहिए। यदि थकावट महसूस होती है तो तुरन्त आराम करे जिससे समस्या गम्भीर न होने पाये।

लू लगना (हीट स्ट्रोक) – अत्यधिक गर्मी के मौसम मे कभी–कभी जब शरीर का तापमान सामान्य रखने की प्रक्रिया पूरी तरह निष्क्रिय हो जाती है तब मरीज के शरीर का तापमान वातावरण के तापमान के बढने के साथ साथ तेजी स बढने लगता है। मरीज को अति तेज ज्वर (बुखार) हो जाता है। उनके शरीर का तापमान १०८ डिग्री फा० से ज्यादा हो सकता है। तेज ज्वर के दुष्प्रभाव मस्तिष्क और शरीर के अन्य अगो पर पडते है। मरीज अर्ध मूर्छित या अचेत हो जाते है। गुर्दे व यकृत कार्य करना बद कर सकते है। मरीज की त्वचा लाल सूखी व गर्म हो जाती है। पसीना नहीं निकलता। नाडी तेज गति से चलने लगती है हार्ट अटैक हो सकता है। हीट स्ट्रोक अति गम्भीर स्थिति है।

गर्मी के दुष्प्रभावो से बचाव – गर्मी के मौसम मे स्वस्थ रहने के लिए विशेष सावधानी की जरूरत होती है। गर्मी के दुष्प्रभाव के अतिरिक्त यह मौसम रोगो का मौसम माना जाता है क्योकि इस समय सुप्तावस्था मे पडे जीवाडु, मच्छर मक्खिया सक्रिय हो जाते हैं जिनसे सक्रामक रोग फैलने का डर भी रहता है।

धूप मे ज्यादा देर तक रहना उचित नहीं है। गर्मी के मौसम मे जल और नमक की शरीर को जरूरत बढ जाती है इनका पर्याप्त मात्रा मे सेवन करे। गर्मियो मे भोजन सादा सुपाच्य करे। भोजन मे कच्चे प्याज जलजीरा कच्चे आम का पना का सेवन करने से शरीर को खनिज लवणो जल की पूर्ति होती है तथा गर्मी के दुष्प्रभावो से बचाव होता है।

गर्मी के मौसम मे दोपहर को धूप के समय घर से बाहर जाते समय भरपूर मात्रा मे ठण्डे जल या शीतल पेय का सेवन करे। छाते धूप के चश्मे का प्रयोग करे। सिर पर तौलिये का प्रयोग भी किया जा सकता हे।

गर्म स्थान पर ज्यादा देर तक क्षमता से ज्यादा श्रम न करे। धूप मे बच्चो को खेलने से रोके।

स्वस्थ रहने के लिए स्नान आवश्यक है। गर्मी के मौसम मे सुबह शाम ठण्डे जल से स्नान करे।

यदि गर्मी के कारण कोई समस्या है तो मरीज को ठण्डे पानी से नहलाए हवादार स्थान पर लिटाए। पखा कूलर पूरी गति से चलाए। मरीज के कपडे ढीले कर दे। बर्फ की थैली या गीले तौलिये से पूरा बदन पोछे।

इन मरीजो को ज्यादा से ज्यादा मात्रा मे ठण्डा जल या शीतल पेय पिलाए। यदि उपलब्ध है तो ओ०आर०एस० का घोल पिलाए या फिर ठण्डे जल मे चीनी नमक नींबू का शर्बत पिलाए।

गर्मी के मौसम मे प्रत्येक व्यक्ति को भूख से थोडी कम मात्रा मे ताजा भोजन करना चाहिए। बासी खुला रखा भोजन कतई न करे। द्रव पदार्थो का सेवन ज्यादा मात्रा मे करे। महिलाओ को गर्मी मे हल्का मेकअप करना चाहिए आभूषण कम पहने बाल बाध कर रखे। गर्मी के मौसम मे स्वय घर आस पडोस की स्वच्छता पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है। घर से मच्छर कीडे मक्खिया काकरोच चूहो को दूर रखने के लिए प्रयास करे। बालो व नाखून को छोटा तथा स्वच्छ रखे। सूती वस्त्र हल्के रग के पहने। अ तर्वस्त्र रोजाना बदले।

गुरुकुल मे प्रवेश आरम्भ

उत्तराचल वेद–विद्या सभा द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल (सस्कृत विद्यालय) शौले पो० ज्वोली जिला अल्मोडा मे नवीन छात्रो का प्रवेश आरम्भ हो गया है। कक्षा पाच और कक्षा आठ उत्तीर्ण मेधावी छात्रो से ३१ मई २००२ तक आवेदन आमन्त्रित है। आधुनिक विषयो के साथ–साथ सस्कृत तथा वेद–वेदागो के अध्ययन का यह स्वर्णिम अवसर है जिसका लाभ इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्र उठावे। स्थान सीमित है। आवेदन प्रपत्रो तथा अधिक जानकारी के लिए यथाशीघ्र आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल शोले से गुरुकुल मे अपना स्वस्त्ययन तल्ला थपलिया अल्मोडा – २६३६०१ के पते पर सम्पर्क करे।

गुरुकुल के लिए एक गुरुकुलीय व स्नातक अथवा प्राचीन व्याकरण विषय मे शास्त्री या आचार्य योग्यताधारी वैदिक सस्कारो वाले अध्यापक की आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्र गुरुकुल के आचार्य से सम्पर्क करे।

– डॉ० जयदत्त उप्रेती आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल शौले पो० ज्वोली अल्मोडा

असम आर्य प्रतिनिधि सभा की यज्ञशाला एवं सभागृह का शिलान्यास सम्पन्न

असम प्रान्त के वृहत्तर गुवाहाटी महानगर मे प्रान्तीय स्तर पर वैदिक धर्म के बहुल प्रचार–प्रसार के लिए सन १९८७ म असम आय प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गयी थी। स्वकीय भूखण्ड तथा भवन के अभाव मे अब तक यह सस्था आर्यसमाज मन्दिर गुवाहाटी म अस्थायी रूप से कार्य कर रही है। सभा एव समाज के अधिकारियो के अथक प्रयास से गुवाहाटी महानगर के गरचुक स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग पर सभा के नाम से जमीन खरीद कर १३ जनवरी २००१ को भूमि–पूजन का कार्य सम्पन्न हुआ था। इस शुभ कार्य को मूर्त रूप देने मे सभा प्रधान डॉ० नारायणदास कोषाध्यक्ष श्री हसराज आर्य और उपप्रधान श्री लोकेश आर्य जी एव प्रान्त की आर्यसमाजो का योगदान उल्लेखनीय है।

भव्य यज्ञशाला एव असम आर्य प्रतिनिधि सभा का शिलान्यास करते हुए सभा उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य।

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० नारायणदास के अनुरोध पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपप्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जो असम प्रान्त सहित पूर्वाचल के चार प्रान्तो के प्रभारी है गुवाहाटी पधारे। डी०ए०वी० स्कूल के छात्रो को प्रेरणादायक शब्दो मे आनन्द जी ने सम्बोधित किया। १३ अप्रैल आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह मे सभा उप–प्रधान जी ने झण्डोतोलन किया तथा उनका उद्बोधन आर्यो के लिए अनुकरणीय एव प्रशसनीय रहा। चैत्र शुक्ला द्वितीय तदनुसार १४ अप्रैल २००२ को प्रात १० बजे भव्य यज्ञशाला एव असम आर्य प्रतिनिधि सभा भवन का शिलान्यास यज्ञोपरान्त मन्त्रोच्चारण से श्री आनन्द कुमार आर्य के करकमलो से सम्पन्न हुआ। इस ऐतिहासिक परीक्षित कार्य का सकल्प असम के आर्य बन्धुओ का पूर्ण हुआ। सभी आर्यो मे उत्साह एव हर्ष व्याप्त था। उक्त अवसर पर श्री आनन्द जी ने अपने व्यक्तिगत आय से ११००० ग्यारह हजार की राशि प्रदान करने की घोषणा की असम सभा की तरफ से सभा प्रधान जी ने आभार प्रकट किया। आनन्द जी ने सार्वदेशिक सभा एव बगाल प्रान्तीय सभा से सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली में

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी एवं पं० रामचन्द्र देहलवी जन्मोत्सव सम्पन्न हुआ

आर्यसमाज ने हमारे देश को नई दिशा प्रदान करते हुए देश को कई महापुरुष दिए है। ये बात केन्द्रीय मन्त्री श्री विजय गोयल ने चादनी चौक स्थित दीवान हाल मे आयोजित भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव पर कही।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव ने की। इस अवसर पर डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य धर्मपाल पूर्व प्रधानाचार्य चन्द्रदेव सहित सैकडो आर्य प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस अवसर पर धन्यवाद प्रस्ताव श्री मूलचन्द गुप्त ने पढा और मच का सचालन डॉ० रविकान्त ने किया। इस कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था का कार्यभार चौ० लक्ष्मी चन्द पर था जिन्होने अपने कार्य का जिम्मेदारी से निर्वाह किया। इस अवसर पर केन्द्रीय मन्त्री श्री विजय गोयल ने कहा कि हमे भगवान श्रीराम के आदर्शो पर चलना चाहिए और उनके प्रत्येक वचन का तन–मन से पालन करना चाहिए। श्रीराम ने हर वर्ग के व्यक्ति की रक्षा की और उसके सम्मान को ठेस नही पहुचने दी।

इस अवसर पर डॉ० रविकान्त ने समाज के सुधार मे आर्यसमाज की भूमिका पर रोशनी डाली और आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के बताए मार्ग पर चलने का आग्रह किया। डॉ० रविकान्त ने कहा कि आज हम अपनी मर्यादाओ से भटक रहे हैं इसलिए समाज में गिरावट आ रही है। हमे अपनी सस्कृति को नहीं भूलना चाहिए और उसकी रक्षार्थ कुछ भी करने को तैयार रहना चाहिए। इस अवसर पर आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री कृष्णगोपाल दीवान जी ने आये हुए अतिथियों का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया।

– (मेजर) डॉ० रविकान्त, सेवा निवृत, मन्त्री, आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

गृहस्थी - जो तप और त्याग में संन्यासी से भी बढ गया - डॉ० अशोक आर्य

यद्यपि गृहस्थ व सन्यास आश्रम के मध्य आश्रम व्यवस्था के अनुसार एक और आश्रम आता है जिसे वानप्रस्थ कहते है यह वह समय होता है जिसमे अपने शरीर को तपा कर कुन्दन बनाना होता है किन्तु जब त्याग मूर्ति महात्मा हसराज के जीवन को देखते है तो ऐसा लगता है कि मानो आश्रम व्यवस्था उलट गयी हो तथा गृहस्थाश्रम ही तप और त्याग के पश्चात बनने वाला कुन्दन स्वरूप सन्यास आश्रम हो।

यद्यपि वह भी कमिश्नर या इसी प्रकार के किसी उच्च पद पर आसीन हो सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे किन्तु ऐसी अवस्था मे उन्हे याद करने वाला आज कौन होता। वास्तव मे उनका इतने योग्य होते हुए भी निर्धन अवस्था मे बिताया गया त्यागमय जीवन ही तो हमारे लिए न केवल प्रेरणा–स्रोत ही बना अपितु गृहस्थी होते हुए भी उन्हे सन्यासी का सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

क्या यह कोई कम त्याग है कि अपने जीवन का छब्बीस वर्ष का अमूल्य समय डी०ए०वी० महाविद्यालय के अवैतनिक प्राचार्य के रूप मे कार्य करना और अपने भोजन के लिए भाई पर आश्रित रहना ? वे अवैतनिक प्रिन्सीपल थे। यदि इस पद का वेतन लिया होता तो आज क हिसाब से वह लाखो की राशि बनती। कालेज के पैन व कागज का व्यक्तिगत कार्य के लिए उपयोग न करना उन के तप व त्याग का और भी अधिक ज्वलन्त उदाहरण है। किन्तु इसमे भी आत्म गौरव व अभिमान के स्थान पर अपनी सेवा को मैनेजिग कमेटी की दया बताना जैसे कि उन्होने अपने त्याग–पत्र मे स्पष्ट किया है तथा दूसरे के लिए पद रिक्त करना उनकी महानता का अन्यतम परिचायक है।

महात्मा जी ने अपने बच्चो को दो पैसे देकर बहलाने को फिजूल खर्ची समझकर कभी ऐसा न किया कि बच्चो को कुछ पैसे देवे। किन्तु तो भी बच्चो से अगाध प्रेम रखने का दृश्य है – कि हार्डिग बन केस मे अभियुक्त बने अपने पुत्र बलराज से जब मिलने गए ता ईश्वर के प्रसाद स्वरूप कुछ फल साथ ले गए।

महात्मा जी के शिष्यो ने पराधीन भारत की सरकार से ऊचे–ऊचे पद भी प्राप्त किए किन्तु वह महात्मा जी के आदर्शो को नहीं भूले। यही कारण है कि पद की गरिमा को उन्होने चार चाद लगा दिए। कभी रिश्वत इत्यादि लेने को तैयार नहीं हुए। यह भी तो एक आश्चर्य है।

महात्मा जी सादगी मे भी अद्वितीय थे। अपना काम अपने हाथो से करना वह पसद करते थे। इसी कारण कई बार उन्हे पहिचानने मे भूल हो जाती थी। एक बार महात्मा जी अपनी बगीची ठीक कर रहे थे कि कोई सज्जन आकर महात्मा जी के बारे मे पूछने लगे। महात्मा जी ने उनको बैठने को कहा। थोडी देर बाद उस सज्जन ने पुन महात्मा जी क बार मे जानकारी चाही तो महात्मा जी ने कहा कहिए। मैं आपके सामने खडा हू। यह सुनकर वह सज्जन अवाक हो महात्मा जी की सादगी को देखने लगे।

शिक्षा के तीन गुण

महात्मा जी शिक्षार्थ तीन आवश्यक बाते आदर्श अध्यापक क गुण परिश्रम तथा प्रत्येक छोटी बात को समझने के महत्व को जानते थे। इन्हीं का साक्षात्कार करते हुए जा उत्तमोत्तम शिक्षा का प्रचार व प्रसार वह कर पाए ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है वह जानते थे कि प्रत्येक शिक्षा सस्था की आत्मा विद्यार्थी होते हैं। अत विद्यार्थी का सम्मान करते हुए उनका सर्वागीण विकास करना तथा उनका उचित सम्मान देना प्रत्येक अध्यापक का आवश्यक कर्त्तव्य होता है। महात्मा जी ने जीवन पर्यन्त इस कर्तव्य का पालन करते हुए समाज व राष्ट्र के लिए कर्तव्यनिष्ठ नागरिक तैयार करने के लिए विद्यार्थियो मे तप त्याग कर्तव्य पारायणता स्वावलम्बन मितव्ययिता इत्यादि के गुण पैदा किए।

महात्मा जी के इस त्यागमय तपस्वी जीवन को देखते हुए वह प्रश्न मन मे उठता है कि यदि महात्मा जी गृहस्थी थे तो फिर सन्यासी किसे कहा जए ? अत चाहे महात्मा जी ने व्यवहारिक रूप से सन्यास दीक्षा लेने की रूढि को पूर्ण नही किया था किन्तु वास्तव मे वह सच्चे अर्थो मे सन्यासी थी।

– आर्य कुटीर ११६ मित्र विहार मण्डी डबवाली हरियाणा १२५१०४

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 5-5-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 2/3

जन्म दायिनी मां के अतिरिक्त तीन मां और हैं

– स्वामी तत्व बोध सरस्वती

श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास नवलखा महल उदयपुर के अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध स्वामी ने कहा कि 'जन्म दायिनी मा के अतिरिक्त तीन मा और होती है इनके उपकारो को भूलना ठीक नहीं है। यह विचार उन्होने न्यास के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा प्रतिमाह के प्रथम रविवार ७ ४ ३००२ को साय ५ ३० बजे आयोजित होने वाले पारिवारिक सत्सग के अवसर पर अपने अध्यक्षीय उदबोधन के रूप मे प्रकट किए। उन्होने कहा कि माता निर्माता भवति के अनुसार मनुष्य के शारीरिक चारित्रिक व बौद्धिक विकास माता के द्वारा ही सम्भव है। सर्वप्रथम जन्म दायिनी मा गर्भावस्था से अन्न भक्षी होने पर्यन्त बच्चो को अपने स्तन पान के द्वारा करती है। तीन वर्ष की आयु प्राप्त होने पर व मा के स्तन्य का अभाव होने पर गो दुग्ध बच्चे का आहार होता है। जन्म दायिनी मा के पश्चात गौ का दूसरा स्थान है। प्राणान्त होने के बाद जब सभी परिजन साथ छोड देते है तब यह शरीर जिस धरती की गोद मे सोता है वह तीसरी मा हैं तथा प्राणी मात्र के कल्याणार्थ ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे वेद माता चौथी माता है। इन माताओ के मातृ ऋण से मुक्ति हेतु जन्म दायिनी मा की तन मन व धन से सेवा सुश्रुषा तो गो माता के ऋण से मुक्त होने हेतु इसके वश की रक्षा धरती माता के ऋण से मुक्त होने हेतु इसकी उर्वरा शक्ति का विकास करना तथा वेद माता के ऋण से मुक्ति हेतु इस ज्ञान का प्रचार प्रसार व अनुशीलन आवश्यक है।

श्री अशोक आर्य के सयोजन में सम्पन्न इस सत्सग मे श्री पूर्ण चन्द्र ने कायम रहेगी जब तक गगा यमुना की धारा ऋषि वर रहेगा तब तक जगती मे जस तुम्हारा भजन के माध्यम से महर्षि द्वारा समाज पर किए गए अनगिनत उपकारो का स्मरण किया गया तो बहिन श्रीमती अनुपम मित्तल ने भजन के माध्यम से स्पष्ट किया कि ईश्वर सर्वव्यापक है तथापि अल्प ज्ञान व अज्ञानवश मनुष्य उससे अनभिज्ञ है प्रमाद वश यह ज्ञान चक्षु का उपयोग नहीं कर रहा है। साथ ही श्री विनोद राठौड ने बताए तुम्हे हम दयानन्द क्या थे। भजन के माध्यम से स्पष्ट किया कि नादान जमाना महर्षि का वास्तविक मूल्याकन नही कर पाया। इसके अतिरिक्त गुरुकुल एटा के पण्डित आर्येन्द्र कुमार ने भी भजन के माध्यम से देश की सुख शान्ति समृद्धि व स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु सुयोग्य कर्मठ व बलवान आर्य वीरो की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

आर्यो के सभी आयोजन यज्ञ के अभाव मे अपूर्ण होते है। अत इस अवसर पर न्यास की यज्ञ शाला मे वैदिक यज्ञ का आयाजन हुआ।

कार्यक्रम के अन्त मे जिस शान्ति प्राप्ति हेतु समस्त विश्व सतत प्रयत्नशील है उस शान्ति प्राप्ति हेतु शान्ति प्रदाता परमेश्वर से शान्ति पाठ के रूप मे प्रार्थना की गई तथा क्यो कि अच्छे कार्यक्रम कभी समाप्त नहीं होते। अत प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम को विराम दिया गया।

– मुनीन्द्र सिह भाटी न्यास प्रवक्ता

जिसके हृदय में दया है जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है जिसका शरीर परहित मे लगा हुआ है कलि मी उसका कुछ नही बिगाड सक

प्रतिष्ठा मे

राष्ट्रीय, सामाजिक एवं ... विचारों के लिए

सार्वदेशिक साप्ताहिक

वार्षिक सदस्यता शुल्क	*५० रुपये*
आजीवन सदस्यता शुल्क	*५०० रुपये*

नोट :- यह दरें केवल भारत में ही लागू हैं

।। ओ३म्।।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली

के तत्वावधान मे

आर्य वीरांगना व्यक्तित्व विकास तथा आत्मरक्षण शिविर

दिनांक १९ मई २००२ से २६ मई २००२ तक

स्थान . आर्यसमाज, जी-ब्लाक, सरिता विहार, नई दिल्ली

प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी कन्याओ मे शारीरिक आत्मिक नैतिक बल एव वैदिक सिद्धान्तो व सस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हे समाज व परिवार के निर्माण में एक अहम भूमिका निभाने हेतु आर्य कन्या प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है।

इस शिविर मे कन्याओ मे शारीरिक एव बौद्धिक विकास राष्ट्रीय चेतना अनुशासित जीवन आत्मरक्षण शस्त्र प्रशिक्षण हस्तकला प्रशिक्षण तथा आर्य सस्कृति की भावनाए जागृत करना हमारा मुख्य उद्देश्य है।

उद्घाटन	१९ मई २००२ रविवार साय ५ ०० बजे
समापन	२६ मई २००२ रविवार प्रात १० ०० बजे

नियम:

१ शिविर शुल्क १०० रुपये प्रति शिविरार्थी रहेगा।
२ सभी शिविरार्थी १९ मई प्रात १० ०० बजे शिविर स्थल पर पहुच जाए। अपना दोपहर का भोजन साथ लाए।
३ कापी पेन दरी चादर यज्ञ की पुस्तक टार्च लाठी मग भोजन के बर्तन साथ लाए।
४ सफेद सलवार कुर्ता तथा केसरिया चुन्नी २ जोडी सफेद पी०टी० शूज सफेद मोजे।
५ कोई कीमती वस्तु या आभूषण साथ न लाए।
६ क्राफ्ट की कक्षा हेतु छोटी कागज काटने वाली कैंची फेविकोल कुछ रगीन क्रेप पेपर अवश्य लाए।
७ अपने नाम शीघ्र शिविर सचालिका या महासचिव को लिखा दे या सम्पर्क करे।
८ शिविर मे १२ वर्ष व उससे बडी आयु की कन्याए भाग ले सकती हैं।

सभी आर्य सज्जनो व दान दाताओ से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य के लिए धन व खाद्यान्न सामग्री द्वारा हमे सहयोग प्रदान करे तथा अपनी कन्याओ को शिविर मे भेजकर उन्हे आर्य वीरागना बनाए।

सम्पर्क उज्ज्वला वर्मा व विमा आर्या

निवेदक

उज्ज्वला वर्मा	कान्ता जी अरोडा	विमा आर्या
सचालिका	शिविराध्यक्षा	महासचिव
दूरभाष 5524254	दूर० 6944506	दूर० 7161247

श्री ओम प्रकाश अरोडा	श्री जगदीश चन्द्र मल्होत्रा
प्रधान आर्यसमाज सरिता विहार दिल्ली	मन्त्री आर्यसमाज सरिता विहार दिल्ली
दूरभाष 6944506	दूर० 6940601

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक २ | १२ मई से १८ मई २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ | सम्वत २०५६ | वै० क० १५

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार

ऐतिहासिक संस्मरणों के साथ सम्पन्न

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हरिद्वार का विशाल आयोजन **२५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियों** मे अपार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन का केन्द्रीय उद्देश्य आर्यों मे कर्त्तव्य परायणता के साथ साथ श्रद्धा प्रेम और अनुशासन के सिद्धान्तो को अधिकाधिक मजबूत बनाना था **सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आय** ़ी **अध्यक्षता** तथ महासम्मेलन के **सयोजक श्री विमल वधावन के निर्देशन** एव सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की देख रेख कुलपति श्री वेदप्रकाश एव कुलसचिव डॉ० महावीर के कर्मठ सहयोग तथा सैंकडो अन्य कर्मठ आर्य नेताओ के सहयोग से सम्पन्न इस चार दिवसीय महासम्मेलन मे लगभग ५० हजार से अधिक आर्यजन बाल और वृद्ध सहभागी बने।

हरिद्वार का यह सम्मलन निम्न कारणों से [illegible] ऐतिहासिक सम्मेलन [illegible]

महासम्मेलन की ऐतिहासिकताएं

१ यह पहली बार ही सम्भव हो सका है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** की देखरेख और नियन्त्रण मे **गुरुकुल कागडी हरिद्वार** की धरती पर कोई सम्मेलन आयोजित किया गया

२ **गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय** [illegible] स्थापना के विग १ [illegible]

यह दृश्य भी पहली बार प्रस्तुत हुआ कि जब **ओ३म ध्वज पताका** और **कुल ध्वजपताका** दोनो इकटठे पाच छै फुट की दूरी पर साथ साथ फहराई गइ सार्वदेशिक सभा क प्रधान केप्टन देवरत्न आर्य ने **ओ३म ध्वज पताका** फहराई और गुरुकल विश्वविद्यालय के कलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा ने **कुल ध्वज पताका** फहरा

अगले पृष्ट पर जारी

(१) महात्मा मुन्शीराम जी का युवावस्था के चित्र से तैयार किया गया तैलचित्र जो स्वामी श्रद्धानन्द सग्रहालय मे विशेष आकर्षण का केन्द्र है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ओ३म ध्वज पताका पहराते हुए पीछे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा भवनो की छतो पर खडे हुए आर्यजन। कुल ध्वज फहराते हुए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा तथा उनके पीछे कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी तथा कुल सचिव डॉ० महावीर जी।

महासम्मेलन के चित्र आगामी अक मे

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत चित्रावली आगामी अक मे प्रकाशित की जाएगी।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार ऐतिहासिक संस्मरणों के साथ सम्पन्न

३ इस महासम्मेलन म देश के विभिन्न हिस्सा स ही नही अपितु विदश से भी प्रतिनिधियो के रूप म कई देशा क आर्य नता सम्मिलित हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी क जीवनकाल मे गुरुकुल की इस धरती पर एस मेल लगा करत थे। पुरानी पीढी क लागा का मानना है कि लगभग आठ दश्क के बाद इस महासम्मलन रूपी मल को दखकर पुन वह दृश्य याद आ रहा था जा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन काल से सम्बन्धित इतिहास म पढा जाता है। विगत कई दशको के बाद आज फिर दीक्षान्त समारोह खुले प्र ाग म आयोजित हुआ

रहती थी। इस भोजनालय मे समूचा भोजन शुद्ध घी से तैयार कराया गया। सारी भोजन व्यवस्था मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार जी न केन्द्रीय भूमिका निभाई। दिल्ली के आर्यवीरो का चारो दिन यथाशक्ति सहयोग प्राप्त होता रहा। जबकि श्री अरविन्द जी के साथ २०० व्यक्तियो का एक दल कार्यरत था।

आध्यात्मिक वातावरण

७ इस महासम्मेलन के दौरान दो बार इन्द्र और वरुण देवता ने तेज वेग की आधी आर वर्षा के साथ पूरे पण्डाल को अस्त व्यस्त कर दिया। परन्तु जिस कार्य यमुनानगर दूसरे दिन श्री कुवर महिपाल सिह तीसरे दिन श्री नरेश निर्मल तथा चौथे दिन श्री सत्यपाल पथिक जी ने भजन एव उपदेश प्रस्तुत किए।

चारो दिन प्रवचनो से आर्यजनता ने भरपूर आध्यात्मिक लाभ उठाया।यज्ञो मे कई प्रसिद्ध आर्यनेता ससद तथा सरकारी उच्च अधिकारी भी शामिल हुए।

यात्राओ से प्रचार

६ इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए भारत के लगभग सभी प्रान्तो से जत्थो के जत्थे ऐसे निकल पडे जैसे विभिन्न प्रान्तो से दर्जनो शोभा यात्राए हरिद्वार के लिए निकाली गई हो। शामिल करते हुए तथा प्रचार सामग्री बाटते हुए हरिद्वार पहुची।

दीक्षान्त समारोह

१० गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष मे आयोजित दीक्षान्त समारोह अर्थात शताब्दी दीक्षात का ऐतिहासिक सम्बोधन राज्य सभा के सदस्य एव दैनिक जागरण के मुख्य सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन ने किया। इस ऐतिहासिक दीक्षात के लिए पहले प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वीकृति दे दी थी परन्तु दुर्भाग्यावश वे नहीं आ सके। उनके स्थानापन्न रूप मे प्रधानमन्त्री कार्यालय मे राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल

ध्वजारोहण कार्यक्रम का सचालन करते हुए महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन। ध्वजारोहण के बाद सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा सभा मत्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री प्रेम भारद्वाज आचार्य यशपाल श्री देवेन्द्र शर्मा श्री सुदर्शन शर्मा तथा श्री विमल वधावन मच की तरफ अग्रसर होते हुए।

दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन जी को विद्यामार्तण्ड की उपाधि तथा अन्य स्मृति चिह्न भेट करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन आचार्य वेदप्रकाश जी प० हरवश लाल शर्मा कै० देवरत्न आर्य श्री सदानन्द श्री स्वतन्त्रकुमार तथा श्री देवेन्द्र शर्मा।

उदघाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय राज्यमत्री श्री विजय गोयल।

वैदिक विद्वानो और आर्यो का महान समागम

४ वैदिक विद्वानो के उदबोधन की श्रृखला तो अपने आप मे ऐतिहासिक थी। सारे महासम्मेलन के दौरान अनुमानत लगभग १०० वैदिक विद्वानो और उच्च कोटि के आर्य सन्यासियो एव कर्मठ आर्य नेताओ ने अपने उद्‌बोधन प्रस्तुत करके आर्यजनता को सोद्देश्य मार्गदर्शन दिया।

५ चार सौ शामियानो से बना विशाल पण्डाल जिसमे ३० हजार से अधिक व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था थी और यह पण्डाल प्रात से रात्रि काल तक लगातार आर्यजनो की उपस्थिति से आर्यसमाज की विशालता का प्रमाण प्रस्तुत करता रहता था।

६ कई प्रान्तो से तो आर्यजन २०-२१ तारीख को ही पहुचना प्रारम्भ हो गए थे। उनके भोजन की व्यवस्था पहले तो गुरुकुल ब्रह्मचर्य आश्रम मे ही की जाती रही परन्तु जब सख्या बढनी प्रारम्भ हो गई तो २३ अप्रैल से ही पण्डाल के निकट बना विशाल भोजनालय विधिवत चालू करना पड़ा। महासम्मेलन के इस विशाल भोजनालय मे प्रात ८ बजे से लेकर रात्रि १ बजे तक भोजन व्यवस्था लगातार चलती

मे ईश्वर का आशीर्वाद सम्मिलित होता है वह कार्य स्वत ही सफल होते जाते है। परिणामत दोनो बार की अस्त-व्यस्तता के बावजूद अगला सत्र सुचारू रूप से चलता रहा। केवल मात्र प्रथम दिन के रात्रिकालीन भजन सन्ध्या सत्र का कार्यक्रम रद्द करना पडा।

८ महासम्मेलन के चारो दिन २५ कुण्डीय यज्ञ और प्राचीन यज्ञशाला स्वय मे एक आकर्षण का केन्द्र था। जिसमे १०० यज्ञमान प्रतिदिन बैठते थे। इस यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी थे और सयोजक डा० भारत भूषण जी थे। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारी तथा गुरुकुल चोटिपुरा की ब्रह्मचारिणी वेदपाठी के रूप मे चारो दिन वेद मन्त्रो की छटा बखेरते रहे। यज्ञ के उपरान्त पहले दिन स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी दूसरे दिन आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी के प्रवचन यज्ञ वेदी पर ही हुए। तीसरे दिन स्वामी सुमेधानन्द (चम्बा) एव चौथे दिन स्वामी सत्यपति जी (रोजड) के प्रवचनो की व्यवस्था मुख्यमच से ही की गई। चारो दिन यज्ञ के उपरान्त भजनोपदेश का भी आयोजन होता रहा। प्रथम दिवस पर श्री ओमप्रकाश वर्मा

महासम्मेलन के एक दिन पूर्व २४ तारीख की प्रात तीन प्रमुख यात्राए हरिद्वार के लिए अलग-अलग क्षेत्रो से निर्धारित योजना के अनुसार रवाना हुई। (क) जालन्धर से दर्जनो बसों और कारो मे भरकर आर्ययात्री हरिद्वार के लिए निकले। मार्ग मे इस यात्रा का भव्य स्वागत अम्बाला यमुनानगर तथा सहारनपुर में हुआ। इस यात्रा के सयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा थे।

(ख) दूसरी यात्रा श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली से प्रारम्भ हुई जिसका स्वागत दिल्ली की कई आर्य समाजो के अतिरिक्त मार्ग में गाजियाबाद मुरादनगर मोदी नगर मेरठ और मुजफ्फरनगर मे हुआ। मुजफ्फरनगर मे तो यात्रियो को लगभग दो-तीन किलोमीटर की एक वास्तविक शोभा यात्रा के रूप मे शामिल किया गया जिसमे बैंड और बग्घियो का भी प्रबन्ध मुजफ्फर नगर के आर्य नेताओं द्वारा किया गया। इस यात्रा के सयोजक श्री सोमदत्त महाजन थे। और दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा इसका नेतृत्व कर रहे थे।

(ग) तीसरी यात्रा बरेली से उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण जी के नेतृत्व मे रेलगाडी से रवाना हुई और सभी स्टेशनो से आर्यजनो को

महासम्मेलन के उदघाटन समारोह मे मुख्य अतिथि थे।

सत्रो का निर्धारण एक नया चिन्तन

११ इस महासम्मेलन मे सभी सत्रो को पूर्ण विद्वता और गम्भीरता के साथ निर्धारित किया गया था। प्रत्येक सत्र का जहा एक अलग वातावरण था वहीं उस सत्र मे उद्‌बोधन देने वाले वक्ताओ के लिए भी उनके उद्‌बोधनो के अलग-अलग विषय भी निर्धारित थे। जिन्हे देखकर कुछ महानुभावो ने तो सभा के अधिकारियो को यह कहकर धन्यवाद दिया कि प्रकाशित कार्यक्रम स्वय मे ही स्वाध्याय एव चिन्तन की एक अच्छी सामग्री उपलब्ध कराता है।

उद्‌घाटन भाषण - नई योजनाए

१२ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अपने उद्‌घाटन भाषण के माध्यम से कई भावी योजनाए आर्यजनो के समक्ष प्रस्तुत की।

गुरुकुल सस्कृति

१३ २५ अप्रैल को गुरुकुल सस्कृति सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

हिन्दी के साथ बलात्कार क्यों ?

– डॉ० कृष्णलाल

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा ता है ही विश्वभाषा बनने की योग्यता भी रखती है। यह ससार मे सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है (देखिए भारत–सरकार के राजभाषा–विभाग की पत्रिका राजभाषा भारती अक्तूबर/दिसम्बर १९९७ अक मे प्रकाशित डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल का लेख)। यह पूर्णतया विकसित वैज्ञानिक सरल सुबोध समर्थ और सक्षम है। यह भारत के बाहर भी विश्व के १३० विश्वविद्यालयो मे उच्च स्तर तक पढाई जाती है।

हिन्दी का मूल प्रेरणा–स्रोत्र विश्व की सभी सभ्य भाषाओ की जननी देवभाषा सस्कृत है। वह अपनी शब्दावली मुख्य रूप से सस्कृत से अथवा अन्य भारतीय भाषाआ से लेती है (क्योकि सबकी मूल प्रकृति अभिन्न है) ऐसा प्रावधान सविधान मे भी राजभाषा हिन्दी के लि‹ निर्दिष्ट ह क्योकि सविधान निमाता मनीषी हिन्दी की इस मूल प्रकृति को समझते और स्वीकारते थे। किन्तु आजकल अज्ञानवश नही जान बूझकर हिन्दी के साथ बलात्कार किया जा रहा है।

उर्दू तो हिन्दी की ही एक विशेष शैली है जिसका मुख्य भेद यही है कि उदू का मुख्य प्रेरणा स्रोत्र अरबी फारसी है। परन्तु स्थिति यह हो गई है कि विशेष रूप से हिन्दी क समाचारपत्रो तथा आकाशवाणी दूरदर्शन मे अनावश्यक रूप से विपरीत प्रकृति वाली भाषाओ (मुख्य रूप से अग्रेजी अरबी फारसी) शब्द बलपूर्वक ठूसकर राजभाषा को विकृत किया जा रहा है उसका स्वरूप बिगाडा जा रहा है। शासकीय नरमी के कारण राजभाषा पर गरीब की जोरू सबकी भाभी वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

क्या अग्रेजी मे कभी प्रधानमन्त्री शब्द का प्रयोग देखा है ? परन्तु हिन्दी के समाचार लेखक/वाचक इतने ढीठ हो गए है कि धडल्ले से पी०एम० और पी०एम०ओ० का प्रयोग किए जा रहे हैं हिन्दी के जिन पाठको के हाथ में समाचार पत्र जाता है उनकी भाषा का उनके भाषा–ज्ञान का और उनकी भावनाओ का ध्यान रखे बिना समाचरपत्रो के अधिकारी ऐसे शब्द जान–बूझकर घुसेडे जा रह है।

जहा हिन्दी के सरल सुललित और प्रचलित शब्दो का प्रयोग सुविधापूर्वक हो सकता है वहा भी ये अधिकारी बेमेल खिचडी भाषा का ही प्रयोग करते है जिससे राजभाषा का स्वरूप बिगडता हे। उदाहरण के लिए एक दैनिक समाचारपत्र मे प्रकाशित एक समाचार का एक वाक्य उदधृत है – इस मौके पर पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने उन्हे अपनी खिराजे अकीदत पेश करते हुए कहा। इसी समाचारपत्र मे प्रकाशित एक अन्य वाक्याश है मिशन की बजाए प्रोफेशनलिज्म। पाठक स्वय निश्चय कर सकते हे कि यह कौन सी कहा की हिन्दी है। कही सरलीकरण अपेक्षित हो भी तो इसका अर्थ यह नही कि दूसरी भाषाओ के अनावश्यक शब्द घुसेडकर दुर्बोध बना दिया जाए।

हमे बचपन मे अपनी अग्रेजी सुधारने के लिए समाचारपत्र पढने को कहा जाता था। किन्तु हि दी समाचारपत्र तो केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक हिन्दी का उपहास ही करते प्रतीत होते है। क्या हिन्दी समाचारपत्रो को छोडकर अन्य भाषाओ के समाचारपत्र भी एसी घटिया स्तरहीन खिचडी भाषा का प्रयोग करते है ?

एक और दुर्भाग्यपूण प्रवृत्ति भी समाचारपत्रो मे प्रकाशित विज्ञापनो मे देखने मे आ रही है। वे विज्ञापनो मे हिन्दी के शब्द और वाक्याश या वाक्य रोमन लिपि मे लिखते है मानो हिन्दी की अपनी कोई लिपि ही न हो अथवा हिन्दी भाषी उस लिपि मे पढ ही न पाते हो। हमार व्यापारियो और विज्ञापनदाताओ को यह बात भली प्रकार शान्त मन से सोचनी चाहिए कि वे जिन कराडो उपभोक्ताओ के लिए विज्ञापनो का प्रसारण करावाते है उनकी भाषा केसी है ?

हिन्दी न दूसरी भाषाओ क हजारो शब्द लिए ह परन्तु समाचारपत्रा मे प्रयुक्त विराधी प्रकृति वाले कुछ थोडे ऐसे शब्द नीच दिए जा रहे हे जिनके स्थान पर प्रयोजनीय (कोष्ठक) मे दिए हुए) शब्द हिन्दी मे है। पाठक स्वय इनकी हिन्दी–प्रकृति सुबोधता और ग्राह्यता व‹ बोध कर सकगे –

महज (कवल) तहत (अन्तर्गत) फख (गव) ‹मजोशी (भावपूण) पेशकश (प्रस्ताव) तलब (माग) हेरत अगेज (आश्चर्यजनक) पेशेनजर (दृष्टिगत) करार (प्रतिज्ञा) गुजारिश (प्राथना) अहम (मुख्य) निजात (छुटका‹) मुद्दा (विषय ज्वलन्त समस्या) सूबा (प्रदेश) मोकामुआयना (जाच स्थल) मोजूदगी (उपस्थिति) शिरकत (सहभागिता) स्वण हर्फो म (स्वर्ण अक्षरा मे) सदर मुल्क (राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्रपति) इल्म (ज्ञान) इजहार (प्रकट होना) वजीरे आजम (प्रधानम‹ी) मसला (समस्या) नतीजतन (परिणाम स्वरूप) बरकरार (यथावत विद्यमान)।

इस प्रव‹र स बलपूर्वक हिन्दी म प्रयुक्त किए जा रहे अनावश्यक फारसी अरबी के शब्दा की एक लम्बी सूची दी जा सकती हे जिनके द्वारा जान बूझकर हिन्दी का स्वरूप बिगाडा जा रहा है। यह अनुचित प्रवृत्ति ‹ की जानी चाहिए।

इ‹ी प्रकार हिन्दी म अनावश्यक रूप स प्रयुक्त किए जा रह कुछ अग्रजी शब्द नीचे दिए जा रह हे

सुप्रीम काट (उच्चतम न्यायालय) वाकआउट (बहिगमन) मैच ड्रा (मेच अनिर्णीत) फायरिग (गोलीबारी) ट्रेन (रेलगाडी) पज (पृष्ठ) गेटर केल‹श भाग वन (भाग एक) सी०बी०आइ० (केन्द्रीय जाच ब्यूरो) हेलो दिल्ली एक्जाम गाइड (परीक्षा निर्देशिक) डिस्प्ले (प्रदशन)।

यह सूची भी बहुत लम्बी हो सकती है।

हिन्दी के स्वरूप को शब्दो के अशुद्ध रूप लिख कर भी बिगाडा जा रहा है जेसे व्यवसायिक (व्यावसायिक–शुद्ध) सहस्राब्दि (सहस्राब्दी–शुद्ध) मनाचिकित्सा (मन चिकित्सा शुद्ध) पुनर्स्थापना (पुन स्थापना–शुद्ध) इत्यादि।

शीर्षस्थ महानुभावो का इस विषय मे जागरूक होना बहुत आवश्यक है। भारत–सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा हिन्दी का मानक स्वरूप और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा अग्रजी मे प्रकाशित आधुनिक हिन्दी के मौलिक व्याकरण की पुस्तक 'ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी हिन्दी मे प्रकाशित करके उसका व्यापक प्रच‹र अपेक्षित है।

निशवनीड ई० ६३७ सरस्वती विहार दिल्ली ११००३४

हिन्दी ने दूसरी भाषाओ के हजारो शब्द लिए है परन्तु समाचारपत्रो म प्रयुक्त विरोधी प्रकृति वाले कुछ थोडे ऐसे शब्द नीचे दिए जा रहे हे जिनके स्थान पर प्रयोजनीय (कोष्ठक मे दिए हुए) शब्द हिन्दी मे है। पाठक स्वय इनकी हिन्दी प्रकृति सुबोधता और ग्राह्यता का बोध कर सकेगे

महज (केवल) तहत (अन्तर्गत) फख (गर्व) गर्मजोशी (भावपूर्ण) पेशकश (प्रस्ताव) तलब (माग) हैरत अगेज (आश्चर्यजनक) पेशेनजर (दृष्टिगत) करार (प्रतिज्ञा) गुजारिश (प्रार्थना) अहम (मुख्य) निजात (छुटकारा) मुद्दा (विषय ज्वलन्त समस्या) सूबा (प्रदेश) मौकामुआयना (जाच स्थल) मौजूदगी (उपस्थिति) शिरकत (सहभागिता) स्वर्ण हर्फो मे (स्वर्ण अक्षरो मे) सदरे मुल्क (राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्रपति) इल्म (ज्ञान) इजहार (प्रकट होना) वजीरे आजम (प्रधानमन्त्री) मसला (समस्या) नतीजतन (परिणाम स्वरूप) बरकरार (यथावत विद्यमान)।

इस प्रकार से बलपूर्वक हिन्दी मे प्रयुक्त किए जा रहे अनावश्यक फारसी अरबी के शब्दो की एक लम्बी सूची दी जा सकती है जिनके द्वारा जान बूझकर हिन्दी का स्वरूप बिगाडा जा रहा है। यह अनुचित प्रवृत्ति रोकी जानी चाहिए।

इसी प्रकार हिन्दी मे अनावश्यक रूप से प्रयुक्त किए जा रहे कुछ अग्रेजी शब्द नीचे दिए जा रहे है

सुप्रीम कोट (उच्चतम न्यायालय) वाकआउट (बहिर्गमन) मैच ड्रा (मैच अनिर्णीत) फायरिग (गोलीबारी) ट्रेन (रेलगाडी) पेज (पृष्ठ) गेटर कैलाश भाग वन (भाग एक) सी०बी०आई० (केन्द्रीय जाच ब्यूरो) हैलो दिल्ली एक्जाम गाइड (परीक्षा निर्देशिका) डिस्प्ले (प्रदर्शन)।

यह सूची भी बहुत लम्बी हो सकती है।

संस्कार एवं शिव संकल्प से ही राष्ट्रोन्नति

– आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री

शिक्षा उसे कहते है जिससे मानव कुछ सीख कर वैयक्तिक पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय तथा विश्वराष्ट्रीय प्रगति कर इस ससार को स्वर्गीय रूप प्रदान कर सके। वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ गर्भाधान सस्कार से होता है। वीर अभिमन्यु ने माता के पेट मे रहकर अर्जुन से सुनकर चक्रव्यूह मे घुसने का तरीका सीखा था। अष्टावक्र ऋषि ने गर्भावस्था मे वेदान्त की शिक्षा ग्रहण की थी। माता मदालसा की आठो सन्ताने गर्भावस्था मे ही **शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि ससारमाया परिवर्जितोऽसि** इस लोरी को सुनकर ब्रह्मर्षि बनी थी।

यज्ञोपवीत सस्कार के द्वारा बालक को शिक्षा दी जाती है – हे बालक तुम ऋषि ऋण देव ऋण तथा मातृपितृ ऋण से ऋणी हो। वेदादि ग्रन्थ का पाठ तथा आचरण के द्वारा ऋषिऋण और अग्निहोत्र अतिथि यज्ञ बलिवैश्य देव यज्ञ आदि द्वारा देवऋण से एव जीवित माता पिता और पितरो की सेवा सत्कार करके पितृ ऋण से उऋण होने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मानव कृति शुद्ध चेतन्य कृति ह। इस शुद्ध चैतन्य कृति का अच्छे व सच्च स्वरूप से सुस्थिर रखने के लिए मनीषियो ने सस्कार का निर्माण किया। इस उपादेयता को सस्कार विधि के रूप मे प्रस्तुत करके महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ससार के समक्ष बडा उपयोगी व अनिवार्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। शूद्र से वैश्य क्षत्रिय व ब्राह्मण बनने का यह राज मार्ग है। आइये 'सस्कार शब्द का अर्थ जानने के लिए आज हम इस शब्द का चिन्तन करेगे। सस्कार शब्द सम उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से बनता है। जिसका अर्थ है – सस्क्रियते अलक्रियते अनेन इति सस्कार अर्थात जिससे शरीर मन और आत्मा अलकृत परिष्कृत होते हैं श्रेष्ठ व उत्तम बनते हैं उसे सस्कार कहते हैं। सस्कार करने से शरीर व आत्मा सुसस्कृत होते हैं वे पुरुषार्थ चतुष्ट की प्राप्ति करते हैं। मनुष्य जो कर्म करता है उसका सर्वप्रथम प्रभाव आत्मा व मन पर पडता है। कर्म आत्मा व मन पर अपना सस्कार अकित करके समाप्त हो जाता है। यह अकन सूक्ष्म रूप मे होता है। ये सस्कार जन्म जन्मान्तरो तक चलते हैं। शुभ अशुभ कर्मो के सस्कार प्रत्येक जीव अपने साथ ले जाकर नये जन्म को प्राप्त करता है। मोक्ष प्राप्त न होने तक यह क्रम चलता रहता है।

शास्त्रो मे आया है – जन्मना जायते शूद्र सस्काराद् द्विज उच्यते अर्थात – हम सब जन्म स शूद्र उत्पन्न होते हैं परन्तु सस्कारो के माध्यम से धीरे धीरे हम द्विज क्षत्रिय वैश्य बन सकते हैं। सस्कारो से क्या लाभ है। जैसे बिना छौक के दाल या सब्जी हमे बकबके स्वाद वाली प्रतीत होती है व हम खाना भी पसन्द नहीं करते परन्तु जब उसी का सस्कार कर दिया जाता है तो हम भूख से अधिक खा जाते हैं। मैला कपडा कोई पहनना पसन्द नहीं करता है। परन्तु उजला व साफ शुद्ध वस्त्र पहनकर हम फूले नहीं समाते है। भौतिक पदार्थो के सस्कार करने के ये लाभ हैं तो चेतन जगत अर्थात आत्मा का उत्थान सस्कारित करना लाभदायक क्यो न होगा ? यदि हम यह चाहते हैं तो हमे सर्वप्रथम सस्कारवान बनना होगा तभी हम अपनी योग्य सन्तानो को सस्कारित कर सकते है। यदि हम चाहते हैं कि ससार मे सुख शान्ति हो आदर्शो व नैतिकता की स्थापना हो तो इसके लिए हमे अपने कर्मो को सुधारना होगा क्योकि कर्म से अधिक महत्वपूर्ण है उसको करने का विचार या सस्कार। सस्कार वीजवत होते है। बीज अनुकूल धरती जल वायु व खाद पाकर एक बडा पेड बन जाता है व फल देता है। इसी प्रकार सस्कार भी आरम्भिक चीज है। जिन्हे आज के वैज्ञानिक युग ने महत्वहीन कर दिया गया है। परिणाम आपके सामने है। समस्त ससार मे राजनैतिक सामाजिक शैक्षणिक पारिवारिक शारीरिक एव भावनात्मक एकता दुर्लभ है। परस्पर प्रेम व विश्वास का नितान्त अभाव है। स्वार्थ व छीना झपटी का चहुदिशि साम्राज्य है। भले ही हमने भौतिक उन्नति प्राप्त कर ली है परन्तु स्थिति यह है कि –

इस दौर ए तरक्की के अन्दाज निराले हैं।
दिमागों में अन्धेरे हैं सडकों पर उजाले हैं।।

इस दुनिया की चकाचौध के आधुनिक काल मे भौतिक उन्नति को श्रेष्ठ मानकर हम अपनी आत्मा पर कुठाराघात लगातार कर रहे हैं। आज हम देखते हैं कि हमारे पास सब कुछ होते हुए भी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। हमारा मन अशान्त है आखिर क्यो ? क्योकि हमारे और हमारे बच्चो के सस्कार उत्तम नहीं है। आइये हम अपने आत्मा को उन्नत बनाने के लिए सुसकल्पों पर चिन्तन करेगे।

१ प्रेम तथा माधुर्य प्रेम मानवता की पहली सुगन्ध है। प्रेम जगत का सार है। जो पृथिवी को स्वर्ग मे बदल सकता है। प्रेम वह सुनहरी कुन्जी है जो मानवता के ह्रदय को खोलती हे। यजुर्वेद मे **मार्हिभूर्मा पृदाकु** १६/१२ अर्थात हे मानव तू सर्प और भेडिया मत बन आदि सुन्दर उपदेश दिया है।

२ विद्या विद्या को कामधेनु कहा गया है। विद्या की प्राप्ति के लिए ईश्वर जीव प्रकृति के स्वरूप को जानना आवश्यक है। विद्या दो प्रकार की होती है (१) भौतिक विद्या (२) अध्यात्म विद्या। **अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते** यजुर्वेद ४०/१४ अर्थात भौतिक विद्या स सासारिक दु ख दूर होते है और अध्यात्म विद्या से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

३ शिव सकल्प बच्चो ! हमे अपने जीवन उन्नति के लिए और सस्कारित करने के लिए शिव सकल्प (सुविचार) धारण करने होगे। हमारे जीवन पर विचारो का गहरा प्रभाव पडता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

गिरते हैं जब खयाल तो गिरता हे आदमी।
जिसने इन्हें समाल लिया वह सभल गया।।

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। एक बार अमेरिका के माध्यमिक विद्यालय के एक अध्यापक अपने विद्यार्थियो को राष्ट्रपति भवन दिखाने ले गए। जब बच्चे बाहर आये तो भवन के सम्बन्ध मे अपनी अपनी सम्मति लिखने के लिए बच्चो के सामने एक रजिस्टर रखा गया। एक बच्चे ने लिखा मैं अपने भावी भवन को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हू। इस बालक का नाम रूजवेल्ट था जो आगे चलकर अमेरिका का राष्ट्रपति बना। आप भी अपने विचारो को महान बनाइए। किसी ने लिखा है – Bad thoughts are worse enemies the lions and tigers हम अच्छे विचार के लिए धार्मिक व श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन करे। इसलिए वेद से प्रार्थना की गई है – **मे मन शिवसकल्पमस्त।** अर्थात मेरा मन शुभ उत्तम सकल्पो वाला हो।

सत्सग सत्सग उसे कहते है जिससे मनुष्य सद् पुरुषो के साथ बैठकर सद्विचार और सतकर्म करता है। इससे विद्या मे शुचिता आती है और मनुष्य का अभिमान दूर होता है। सत्सग द्वारा ज्ञान कर्म मे बदला जाता है।

जाडय धियो हरति सिचति वाचिसत्य।
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेत प्रसायति दिक्षु तनोति कीर्ति।
सत्सगति कथय किमन करोति पुसाम।।
भर्तहरि

अर्थात सज्जनो की सगति बुद्धि की जडता को हर लेती है। वाणी को सत्य से सींचती है सम्मान को बनाती है। पाप को दूर करती है। चित्त को प्रसन्न रखती है यश कीर्ति को दिशाओ मे फैलाती है। कहो ! यह मनुष्य के लिए क्या नहीं करती ? **जानता स गमे महि।** ऋग० ५/५/१५ अर्थात हम ज्ञानी लोगा का सत्सग करे। एक युवक थे मुशीराम। कुसग के कारण शराब आदि बुरे व्यसन की लत पड गई। महर्षि दयानन्द का थोडा सा सत्सग मिला तो मुशीराम का काया पलट गई। आगे चलकर ये स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए यह सत्सग का प्रभाव है।

चरित्र निर्माण

चरित्र मानव जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है। ठीक कहा है – चरित्र है मूल्य जीवन का चरित्रवान व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर आदर ओर सम्मान पाता है। एक बार स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागा क किसी मार्ग पर भ्रमण कर रहे चलते चलते उन्होने अपने पीछे चलने वाल दम्पत्ति को अपन वस्त्रो के सम्बन्ध मे यू कहते सुना Look at this gentle man स्वामी जी समझ गए कि अमेरिका निवासी मेरी भारतीय वेश भूषा को हीन दृष्टि से देखकर इसका मजाक उडा रहा है। अत वे रूके और उस महिला को सम्बोधित करते हुए बोले प्रिय बहन ! इन कपडो को देखकर आश्चर्य मत करो देखो इस देश के पुरुषो को तो कपडे ही सज्जन बनाते हैं। परन्तु जिस देश का मैं निवासी हू वहा चरित्र ही मनुष्य को सज्जन बनाता है। इस बात को सुनकर वह दम्पत्ति विवेकानन्द जी के चरणो मे झुक गए। यह है चरित्र का प्रभाव।

मैं अन्त मे यही लिखना चाहूगा कि पाठकवृन्द अपनी आध्यात्मिक सामाजिक व राष्ट्रोन्नति के लिए स्वाध्याय तथा आत्ममथन करे। आप पास के किसी आर्यसमाज मन्दिर या धार्मिक सस्था मे जाकर अच्छे सत्सग का लाभ उठा सकते हैं। किसी विद्वान या सज्जन को बुलाकर सत्सग का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योकि सत्सग से विचारो का परिवर्तन होता है और विचारो का प्रभाव मन आत्मा पर पडता है। यही विचार हमारे व्यवहार का अग बन जाता है।

वर्तमान लोकतान्त्रिक एवं सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की आवश्यकता

— प० अखिलेश आर्येन्दु

आज देश सकट के जिस दौर से गुजर रहा है उसका समाधान वर्तमान शासन (सत्ता) और लोकतान्त्रिक व्यवस्था के तहत सभव नहीं दीख पडता। जिस लोकतान्त्रिक व्यवस्था एव प्रणाली के हम गुणगान गाते नहीं थकते उसी व्यवस्था ने ऐसे अनगिनत सकट और समस्याए देश मे खडी कर दी है जिसका हल इस व्यवस्था के चलते सभव नहीं दिखता।

वर्तमान मे भारत का सविधान देश मे खुशहाली विकास कल्याण और प्रगति मे सहायक नहीं दिखता। जनता के लिए जरूरी सुरक्षा न्याय (समय के साथ) आहार वस्त्र मकान और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत जरूरते भी पूरी नहीं हो पायी है। वर्तमान सविधान मे अग्रेजो ने अपने हित एव शासन सत्ता को दीर्घकाल तक निष्कटक चलाने के लिए बनाए थे। इसी को सशोधित रूप मे अपना लिया गया। नए सविधान निर्माण की बाते महज प्रोप्रोगण्डा के अलावा कुछ भी नहीं है। भारतीय ससद ने २६ जनवरी १९५० को लागू करते समय इसे देश के समग्र विकास के लिए हितकारी बताया था और जनता मे जा प्रचारित प्रसारित किया गया वह जनता को गुमराह करने की सोची समझी नीति ही थी।

आजादी के इन ५४ वर्षो के दरम्यान ७० से ज्यादा सशोधन किए जा चुके है और आगे कितने किए जाएगे एक चिन्तन का विषय है। इससे यह भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान सविधान किस तरह अप्रासगिक है। सविधान को भारतीय समाज एव जीवन के अनुरूप बनाने के लिए सविधान सशोधन आयोग का गठन करना भी सविधान की खामियो को ही उजागर करता है। देश के तमाम देशभक्त लेखक पत्रकार वकील शिक्षक समाजकर्मी अर्थशास्त्री समाजशास्त्री एव चिन्तकों का मत है कि बिना नए सविधान निर्माण के सही अर्थो मे देश मे पूर्ण खुशहाली नहीं लायी जा सकती है।

अब सवाल उठता है कि अग्रेजो द्वारा निर्मित इस सविधान को किस मजबूरी के तहत ढोया जा रहा है ? सविधान मे वर्णित धाराओ उपधाराओ की समीक्षा से जो तथ्य निकलते हैं वे यह बताते हैं कि अग्रेजो ने यह सविधान जनता को गुलाम बनाए रखने के लिए बनाया था न कि जनता के हित मे। यह सविधान पहले अग्रेजो का पोषण करता था आज वर्तमान काले अग्रेजो (सत्ताधीशो) का हित साधन कर रहा है। इसकी जगह नए सिरे से विद्वान एव ऋषि सदृश्य व्यक्तियो के द्वारा नए सविधान बनाने की आवश्यकता है। बिना नए बदलाव एव निर्माण के सविधान व्यवस्था शासन व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को पूरी तौर पर नहीं बदला जा सकता। तभी सही अर्थों मे लोकतत्र की स्थापना की जा सकती है।

आज विश्व मे सारी समस्याओ की जड सरकार गुरुडम और नई बाजार व्यवस्था है। यदि कहा जाय कि विषमता शोषण हिसा अत्याचार और पशुता की जन्मदाता और पोषणकर्ता यही तीनो चीजे है तो अतिश्योक्ति न होगी। भूमण्डलीकरण उदारीकरण और निजीकरण इन्हीं तीनो के सरक्षण मे बढने वाले नए शोषण के औजार हैं। जब तक सरकार गुरुडम और बाजार का तत्र जिन्दा है दुनिया मे खुशहाली आ ही नहीं सकती।

ये तीनो खुशहाली लाने के ढोग करते हैं जनता के लिए। वास्तव मे इनका मकसद अपने इर्द गिर्द सम्बन्धो को हर तरह से खुशहाल करने का होता है। जिन देशो मे खुशहाली की बात की जाती है वहा भी बडे स्तर पर विषमता एव दूसरी अनेक समस्याए है।

आम नागरिक आज जितना त्रस्त और शोषित हे उतना कभी नहीं रहा। जनता द्वारा जनता के लिए जनता से बनने वाली लोकतत्र की राजव्यवस्था हर स्तर पर विफल साबित हुई है। हर तरफ हाहाकार भ्रष्टाचार दुराचार अपराध कुपोषण भुखमरी बेरोजगारी अशिक्षा मानवीय मूल्यो का पतन जुल्म शोषण और अनगिनत परेशानिया। आजादी के बाद अमीरी/गरीबी का अन्तर कई फीसदी बढा है।

कागजो मे दिखाने के लिए सरकार जरूर गरीबी मिटाने मे सफल हुई है लेकिन जमीनी हकीकत इसके विपरीत है। भ्रष्टाचार का आलम यह है कि विश्व के भ्रष्टतम देशो मे भारत का स्थान तीसरे नम्बर पर और विकास के स्तर पर १६८ वे स्थान पर। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है। कि आजादी के ५४ वर्षो बाद देश की हालत किस कदर खराब हो चुकी है। इस बदतर स्थिति के लिए राजनेता और नौकरशाह प्रमुख रूप से जिम्मेदार है और राजनेताओ और नौकरशाहो को भ्रष्ट बनाने के लिए जिम्मेदार हैं।

भारतीय सविधान और वर्तमान व्यवस्था।

इस व्यवस्था को अमूल चूल परिवर्तित किए बगैर न लोकतान्त्रिक व्यवस्था को ठीक किया जा सकता है और न ही सामाजिक व्यवस्था को ही दुरुस्त किया जा सकता है।

वर्तमान शासन व्यस्था केन्द्रीयकृतकरण अधिकार प्रणाली पर आधारित है। यानी सारे अधिकार शासन के हाथो मे निहित है और खुशहाली लाने की जिम्मेदारी भी शासन के हाथो मे है। जनता अपने मन मुताबिक न रह सकती है और न कानून ही बना सकती है। केन्द्रीयकृत शासन प्रणाली (व्यवस्था) अग्रेजो ने अपने शासन को दीर्घकाल सुरक्षित रहे इसलिए बनाई थी। उन्होने सारे अधिकार योजनाए बनाने की जिम्मेदारी अपने हाथ मे रखी। जिससे जनता विद्रोह न कर सके और वे जनता का मनमाना शोषण कर सके।

महर्षि दयानन्द और गाधी जी ने स्वराज्य की कल्पना की थी। वह विकेन्द्रीयकृत व्यवस्था को बनाने वाली थी। यानी जनता के हाथो मे अधिकतम अधिकार रहे और जनता जो कार्य न कर सके सरकार तब वहा हस्तक्षेप करे। स्वदेशी स्वराज्य व्यवस्था का यही मूलाधार है।

अग्रेजो के जने के बाद सत्ता काग्रेस के हाथो मे आई। तब लोगा को इससे बहुत सी अपेक्षाए थीं। पर गाधी जी के करीबी और गाधी के नक्से ए कदम पर चलन का वादा करने वाले जवाहर लाल नेहरू ने सत्ता का विकेन्द्रीयकरण करने के स्थान पर कन्द्रीय कृत शासन प्रणाली को अपनाया। काग्रस ने अपन ४५ वष क शासनकाल मे गाधी के विकेन्द्रीयकरण लोकतत्र सत्ता की जगह केन्द्रीयकत प्रणाली को ही अपनाए रखा। परिणाम स्वरूप जनता मे खुशहाली तो नही आ पाई लेकिन एक विशेष वर्ग मे खुशहाली उनके मन मुताबिक जरूर आई। तमाम सविधान सशोधन के बावजूद तमाम वादो एव भाषणो के लुभावने नारो के बाद भी आम आदमी की समस्याए हल होने की जगह बढती रही।

सरकार के अलावा गाधी जी के नाम पर चलने वाली गाधीवादी सस्थाए भी राष्ट्रीय स्वराज्य को ही स्वराज्य मानकर चरित्र निर्माण के काम मे लग गयीं। यानी वर्तमान शासनतत्र के अधीन या स्वीकार कर स्वराज्य निर्माण के लिए कार्य करती आ रही है। परिणाम सामने है इन पचास वर्षो मे तमाम प्रयासा के बावजूद कोई अपेक्षित सार्थक परिणाम नहीं आए।

आज भी आम जनता छोटे से छोटे कार्य के लिए शासन पर निर्भर है। आम नागरिक का चरित्र दिनोदिन गिरता जा रहा है। जाहिर तौर पर चरित्र निर्माण शिक्षा सस्कार बनाने की जिम्मेदारी शासन के हाथो मे हैं। शासन का ही मूल चरित्र भ्रष्टाचार व अपराध मे डूब चुका है। ऐसे मे आम नागरिक का चरित्र कैसे सुधर सकता है।

मानव प्रकृति का एक सीधा सा सिद्धान्त है कि किसी भी कार्य को करने वाला उस कार्य के परिणाम से जितना अधिक सबद्ध होगा उस कार्य की गुणवत्ता भी उतनी ही अधिक होगी। इसका अर्थ हुआ कि दूसरो की समस्याओ के समाधान का दायित्व दूसरो पर विशेष परिस्थिति मे ही होना चाहिए। लेकिन भारत मे तो आम नागरिको की अधिकाश समस्याओ के समाधान का दायित्व शासन ने उठा रखा है।

भारत का आम नागरिक आमतौर पर दो भागो मे विभाजित है। ये हैं शासक और शासित। शासित पक्ष को आम नागरिक कहा जाता है। शासक पक्ष आम नागरिक को अक्षम अयोग्य और अपढ घोषित करके उनकी समस्याओ के समाधान मे अपनी भूमिका आवश्यक मानता है ओर दूसरी तरफ आम नागरिक स्वय को अक्षम अयोग्य और अनपढ मानकर अपनी समस्याओ के समाधान मे उनकी भूमिका जरूरी मानता है। इस वजह से शासक वर्ग मनमान ढग से शासित की खुशहाली के लिए याजनाए बनाता है।

भारत मे अनेक बुद्धिजीवी चुनाव सुधारो के साथ देश की बेहतरी की बात करते ह। इनके अनुसार चुनावे मे अच्छे लोगो क चुनकर जाने स समस्याए सुलट जाएगी। लेकिन सच्चाई कुछ ओर है। सन १९४७ मे तो आज की अपक्षा बहुत अधिक ईमानदार और अच्छे लोग शासन मे थे। फिर भी परिणाम अपेक्षा के अनुरूप नही मिले। एक बिल्कुल ही रददी गाडी मे अच्छा सा अच्छा सुधारक सीमा स अधिक सुधार नही कर सकता या यो कहे रददी गाडी को उसकी सीमा से ज्यादा तेज नहीं चलाया जा सकता। गाडी को ठीक से चलाने के लिए दुरस्त गाडी और अच्छे चालक दोनो की जरूरत होती है। वर्तमान समय मे जो भी दुष्परिणाम सामने दिख रहे हैं वे शासन पर नागरिको की अधिक निर्भरता रूपी प्रणाली का ही दोष है। इस प्रणाली की वजह से सारी समस्याए पैदा हुई हैं। कुछ लोग कहते है यदि अच्छे लोग ज्यादा तादाद मे चुनकर सत्ता मे आ जाए तो अनेक समस्याए हल हो सकती है। लेकिन आज के वातावरण व प्रणाली मे योग्य व ईमानदार व्यक्ति चुनकर आ नहीं सकता। यदि कुछ प्रतिशत लोग आ भी गए तो क्या जरूरी है वे चुने जाने के बाद ईमानदार और अच्छे रह जाएगे ? इस प्रकार देखा जाय तो वर्तमान सुराज्य प्रणाली को बदलकर स्वराज्य यानी आम आदमी के अधिकारो की प्रणाली को अपनाया जाए। तभी देश मे पूर्ण सुधार आ सकता है। नही तो समाज से भ्रष्टाचार हिसा दुराचार अपराध अश्लीलता मिट नहीं सकती।

— ६/६० पश्चिम फ्रेन्डस इन्क्लेव सुल्तानपुरी मार्ग नागलोई नई दिल्ली ४१

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर २५ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

उद्घाटन भाषण

– कैप्टन देवरत्न आर्य, *प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली–२*

आज से १०० वर्ष पूर्व महामनीषी स्वामी श्रद्धानन्द ने पुण्य सलिला भगीरथी के सुरम्य तट पर गुरुकुल के रूप मे जिस प्रणाली का सूत्रपात किया था आज वही गुरुकुल विश्वविद्यालय बनकर विद्या के अनेक क्षेत्रो मे जनता का मार्गदर्शन कर रहा है। **उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदीनाम धिया विप्रो अजायत** । इस पावमानी ऋचा से स्फूर्ति प्राप्त करके स्वामीजी ने गुरुकुल की स्थापना का महान एव दुस्साध्य सकल्प लिया था। महामना मदनमोहन मालवीय जी जैसे विचारको ने भी जिसे असम्भव बतलाते हुए स्वामीजी का उपहास किया था। स्वामीजी का वह सकल्प इसलिए पूर्ण हुआ क्योकि स्वामी श्रद्धानन्द स्वय सकल्प की मूर्ति थे। ऐसे अग्नि पुरुषो के लिए ही शास्त्रो मे कहा गया है

सकल्पमयोऽय पुरुष ।

किसी भी सकल्प की पूर्ति के लिए श्रद्धा का होना अति अनिवार्य है। महात्मा मुशीराम की महर्षि दयानन्द मे उनके सिद्धान्तो मे तथा उनके द्वारा प्रणीत पाठविधि मे गहरी श्रद्धा थी। इसीलिए उन्होने इसे क्रियात्मक रूप देने का सकल्प लिया। स्वामी श्रद्धानन्द सामान्य मानव नहीं अपितु श्रद्धामयोऽम पुरुष को जीवन मे चरितार्थ करने वाले महामानव थे। वे महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य तथा सच्चे उत्तराधिकारी थे।

महर्षि दयानन्द को तो हमने देखा नहीं किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द के दर्शन करने वाले उनसे प्रेरणा लेने वाले अनेक आर्यजन तथा गुरुकुल के पुराने स्नातक अभी भी हमारे मध्य विद्यमान हैं। हम सभी उस महा मनीषी के उत्तराधिकारी है। आज गुरुकुल शताब्दी के सुअवसर पर हमे सोचना होगा कि जिस श्रद्धा से जिस पवित्र सकल्प से स्वामी जी ने इस गुरुकुल की स्थापना की थी क्या आज भी हमारे मन मे इसके प्रति वही श्रद्धा एव सकल्प विद्यमान है? कहीं आज हम सेवक बनने के स्थान पर इसके स्वामी बनकर स्वार्थ सिद्धि मे तो नहीं लग गए? आज हमे यह भी सोचना है कि जिस महान उद्देश्य के लिए स्वामीजी ने इस ऐतिहासिक एव गौरवशालिनी सस्था की स्थापना की थी उसकी पूर्ति मे यह कितनी सफल रही है। इस महनीय सस्था की भ्रमवृत्तिवारण एव यशोवृद्धि के लिए अभी कौन कौन से कार्य करने हैं यह भी हमे इस अवसर पर सोचना चाहिए।

गगा के उस पार बीहड प्रदेश मे गुरुकुल रूपी वृक्ष का बीजारोपण करके स्वामीजी ने इसे अपने समय मे ही एक छायादार वृक्ष का रूप प्रदान किया। उन्होने अपने खून पसीने से सींचकर इसे पल्लवित किया पुष्पित किया। परिणामस्वरूप इसकी सुगन्ध न केवल भारत मे अपितु सात समुद्र पार ब्रिटेन मे भी पहुची। वहा के शासन को इसने आकृष्ट भी किया तथा आतकित भी किया।

बचपन मे हम सुना करते थे आएगे खत अरब से जिनमे लिखा ये होगा गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है। यह कल्पनामात्र नहीं थी अपितु गुरुकुल के सुयोग्य स्नातको ने इसे चरितार्थ किया। गुरुकुल के उन स्नातको की एक लम्बी परम्परा है जिन्होने प्रत्येक क्षेत्र मे अपने कीर्तिमान स्थापित किए। चाहे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन हो चाहे देश विदेश मे प्रचार का क्षेत्र हो चाहे विद्वता प्राच्यविद्या इतिहास पत्रकारिता तथा आध्यात्मिकता का कोई भी क्षेत्र क्यो न हो गुरुकुल के स्नातको ने सभी क्षेत्रो मे अपना अमूल्य योगदान दिया है।

स्वामीजी के द्वारा रोपित यह गुरुकुल रूपी वृक्ष आज एक विस्तृत उपवन का रूप ले चुका है। ऐसा उपवन जिसकी शीतल छाया मे अनेक प्राणी आनन्द लाभ कर रहे हैं तथा अधिकार युक्त पदो पर प्रतिष्ठित होकर कीर्ति का अर्जन कर रहे हैं। प्राच्य विद्या के केन्द्र इस उपवन के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है आज हमे यह सोचना है। क्या हम इसके स्वादिष्ट फलो का ही आस्वादन करते रहें अथवा इसकी रक्षा सवृद्धि एव अभिवृद्धि का भी यत्न करे यह हमे इस अवसर पर विचारना चाहिए।

आर्यो के इस महाकुम्भ मे यहा पर सभी प्रकार के मान्य जन उपस्थित है। आर्य समाज के शुभचिन्तक गुरुकुलो के सचालक तथा आचार्यगण सभाओ तथा समाजो के अधिकारीगण यहा विद्यमान हैं। इसलिए आप लोगो के सामने मैं कुछ कार्यो का उल्लेख करना चाहता हू, जिनमे गुरुकुल एव आर्यसमाज की कीर्ति मे अभिवृद्धि हो सके। ये कार्य इस प्रकार हैं –

१ आज भारत के विभिन्न प्रान्तो मे हमारे गुरुकुल सस्कृत शिक्षण के प्रयास मे रत हे इनमे से कुछ तो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित हैं तथा कुछ सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की परीक्षा दिला रहे हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय इन गुरुकुलो को अपने अन्तर्गत लेकर एक ऐसी पाठय विधि का निर्माण करे जिनमे सभी विषयो की शिक्षा का प्रबन्ध हो तथा जो सभी को स्वीकार्य हो। गुरुकुल की अलकार परीक्षा मान्यता प्राप्त उपाधि है। इसके साथ ही शास्त्री तथा आचार्य आदि परीक्षाए भी चलाई जा सकती है। पजाब विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ऐसा कर रहे हैं। ऐसा होने से विश्वविद्यालय का कार्य तो बढेगा ही किन्तु इससे क्षेत्र भी पर्याप्त विकसित हो जाएगा। विकास के लिए श्रम तो करना ही पडता ह कार्याधिक्य हाने पर तद्नुसार नियुक्तिया भी की जा सकती हैं।

२ आज गुरुकुल विश्वविद्यालय मे सस्कृत के साथ साथ एम०बी०ए० इजीनीयरिंग आदि आधुनिक विषयो की शिक्षा भी दी जा रही है। यह युग की माग है तथा इससे अनेक छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। इसके साथ ही हमे यह भी यत्न करना चाहिए कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ख्याति वेद दर्शन सस्कृत तथा प्राच्य विद्या के एक ऐसे केन्द्र के रूप मे हो जहा इनकी सर्वांगीण शिक्षा छात्रो को दी जाती हो तथा वेदादि सम्पूर्ण साहित्य के विषय मे यहा मान्यतापूर्ण शोध हो रहे हो। यद्यपि यहा के सभी विभाग अपने अपने क्षेत्रो मे शोध कार्य कराते हैं किन्तु यह केवल पी०एच०डी० उपाधि के लिए ही कराया जाता है। मेरा अभिप्राय ५क ऐसे शोध सस्थान से है जैसा कि भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीटयूट पूना तथा विश्वेश्वर वैदिक शोध सस्थान होशियारपुर मे है। ये सस्थान सरकार से मान्यताप्राप्त तथा अनुदानप्राप्त सस्थान हैं। यहा पर भी ऐसा किया जा सकता है। इससे जहा एक ओर हमारे अनेक विद्वानो को कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा वहीं दूसरी ओर उनके शोधपूर्ण कार्यों से गुरुकुल की ख्याति मे भी अभिवृद्धि होगी। इस कार्य के लिए यहा पर विश्वविद्यालय मे दयानन्द पीठ की स्थापना का सकल्प हमे इस अवसर पर लेना चाहिए। अनेक विश्वविद्यालयो मे इस प्रकार की पीठ विद्यमान है। कुछ समय पूर्व यहा गुरु गोबिन्द सिह पीठ का यत्न किया जा रहा था जिसके लिए सरकार अनुदान देने को तैयार थी। यदि गुरु गोबिन्द सिह पीठ के लिए ऐसा हो सकता है तो दयानन्द पीठ के लिए क्यो नही किया जा सकता? हमारा सकल्प चाहिए सरकार इसके लिए भी सब कुछ देगी।

३ गुरुकुल प्रणाली के शुभचिन्तको को इस दिशा मे भी सोचना होगा कि गुरुकुल कागडी के उपरान्त अनेक गुरुकुल खुले। इनमे से कई तो स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महात्मा नारायण स्वामी जैसे तपोभूतियो द्वारा स्थापित थे। लम्बे समय तक इन गुरुकुलों ने प्रशसनीय कार्य किया तथा अनेक सुयोग्य विद्वान् समाज को दिए किन्तु वर्तमान काल मे कई गुरुकुल या तो बन्द हो गए या पब्लिक स्कूल मे परिवर्तित कर दिए गए या भ्रमावस्था मे किसी न किसी प्रकार बस जीवित मात्र हैं। क्या इसे गुरुकुल प्रणाली की असफलता माना जाए ? मैं ऐसा नहीं समझता। क्योकि यदि ऐसा होता तो अन्य नए नए गुरुकुल क्यो खुलते? अभी भी नए गुरुकुल खोले जा रहे हैं तथा सफलतापूर्वक चल भी रहे हैं। जहा जो गुरुकुल बन्द हुआ या मृतप्राय हुआ वहा उसका कारण अधिकारियो की

पृष्ठ ६ का शेष भाग

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर २५ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

उद्घाटन भाषण

अकर्मण्यता तथा स्वार्थ आदि कुछ भी हो सकता है। ऐसे गुरुकुलों के इतिहास को देखने से हमे इस प्रश्न का उत्तर स्वत ही मिल जाएगा।

इस स्वार्थ का एक ज्वलन्त प्रमाण यह भी है कि ऐसे अनेक गुरुकुलो की भूमि को बेचा गया। जिस गुरुकुल कागडी की शताब्दी हम आज मना रहे हैं यहा भी ऐसा प्रयास हुआ। यह सब क्षोभनीय एव गुरुकुल के हित मे नहीं है। इस गुरुकुल के लिए दो हजार बीघा भूमि दान मे दी गई थी। उन लोगो की पवित्र भावना तथा पुण्य सकल्प को आप स्मरण करे जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व तथा त्याग तपस्या से प्रभावित होकर यह पुण्य कार्य किया था। क्या हमारा यही कर्त्तव्य है कि वेद विद्या के प्रचार–प्रसार के लिए अर्पित इस भूमि का हम अपने स्वार्थवश विक्रय करने पर उतारु हो जाए ? मेरी दृष्टि मे इससे अधिक जघन्य एव कृतघ्नतापूर्ण कार्य दूसरा नहीं हो सकता। इस महासगम के अवसर पर मैं सभी शिक्षाविदो गुरुकुल के मान्य आचार्यो आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा आर्यजनता से विनम्र किन्तु सुदृढ प्रार्थना करना चाहता हू कि एक ऐसा सार्वजनिक तथा सार्वकालिक नियम बना दिया जाए कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा की अनुमति के बिना किसी भी आर्य सस्था या गुरुकुल के अधिकारी इस प्रकार दान मे प्राप्त भूमि को न बेच सके तथा न ही सार्वदेशिक सभा अपने प्रयोजनवश उसे बेच सके। यदि हम पूर्वजो के श्रम से अर्जित सम्पत्ति मे वृद्धि नहीं कर सकते तो कम–से–कम उसे अपने स्वार्थवश नष्ट तो न करे।

४ आर्यसमाज एक सार्वजनिक एव सर्वहितैषी सस्था है। ऐसे मे कार्य करते–करते कभी परस्पर वैमनस्य भी उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि यह शुभ लक्षण नहीं है। वेद हमे **'समान मन सह चित्तमेषाम'** का उपदेश देता है। इसलिए अच्छा तो यही है कि हमारे समाज तथा सभाए विवादरहित स्थिति मे रहे। सभी आर्यजन मिलकर परस्पर सहयोग की भावना से ऋषि के कार्य को आगे बढाए। तथापि यदि कभी विरोध वैमनस्य पनप भी जाता है तो इतना तो हम कर ही सकते है कि परस्पर निन्दा से बचे। एक दूसरे पर कीचड उछालने से न तो समस्याओ का समाधान होता है न तो सगठन को बल मिलता है साथ ही आर्यसमाज की अप्रतिष्ठा भी इससे होती है। इसके लिए परस्पर निन्दा करने के स्थान पर हम एक प्रेमभाव से एक जगह बैठकर आपसी विवाद सुलझा लिया करे। चाहे वे विवाद आर्यसमाज के स्तर पर हो या सभा स्तर पर। वेद भी ऐसा ही कह रहा है – **एत सध्रीचीनान् व सम्मनस स्कृणोमि'** आओ! मैं तुम्हे एक गति वाला तथा एक मन वाला करता हू। क्या हम वेद के इस आदेश को अपने जीवन मे उतार सकेगे ?

५ यह एक सुप्रसिद्ध तथ्य है कि आपस मे कलह तथा फूट होने पर विरोधी लोग हावी होते हैं जो न केवल हमारे सगठन को ही शिथिल एव छिन्न–भिन्न करते हैं अपितु हमारे सिद्धान्तो पर भी आक्षेप करते है। आज यही हो रहा है। विरोधियो की ओर से वैदिक सिद्धान्तो पर आक्षेप किए जा रहे हैं। पुस्तके लिखी जा रही हैं। हमारा ध्यान उधर नहीं जाता। यदि जाता भी है तो हम उनका उत्तर नहीं दे पाते क्योकि हमारी शक्ति आपसी विवादो मे ही कम होती रहती है। महर्षि दयानन्द ने अकेले ही वैदिक सिद्धान्तो का मण्डन तथा अवैदिक कार्य का खण्डन किया किन्तु हम सख्या मे अनेक होने पर भी उस कार्य को नहीं कर पा रहे हैं यह स्थिति चिन्तनीय है। इसके लिए हमे अपने विद्वतवर्ग को आगे लाना होगा जो वैदिक सिद्धान्तो पर किए जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर दे सके। यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है जिस पर अभी तक हमारा समुचित ध्यान नहीं गया है।

आप लोगो को स्मरण होगा कि जब आपने सार्वदेशिक जैसी गौरवशालिनी सस्था का कार्यभार मुझे सौंपा था तब मैंने कुछ घोषणाए आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिए की थी। स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्थली मे यहा पर मैं आज पुन उनकी ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। शास्त्र शस्त्र तथा शुद्धि के रूप मे तीन शकारो की ओर हमे ध्यान देना चाहिए। इन तीनो की प्रेरणा भी मैंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से ही ग्रहण की है।

स्वामी जी ने अनेक महान कार्य किए किन्तु जीवन के अन्तिम दिनो मे उनका ध्यान गुरुकुल मे शुद्धि की ओर ही केन्द्रित हो गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी शुद्धि के कार्य को इतना महत्वपूर्ण मानते थे कि इस विषय पर महात्मा गाधी तथा अन्य नेताओ से मतभेद होने पर उन्होंने काग्रेस छोड दी थी किन्तु शुद्धि कार्य को नहीं छोडा। आज भी यह कार्य उतना ही महत्वपूर्ण है। शुद्धि का कार्य राष्ट्रीयता से जुडा हुआ है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि विदेशी धन के आधार पर ईसाई तथा मुसलमान व्यापक स्तर पर इस कार्य मे सलग्न हैं। इस विषय मे हमे वीर सावरकर के शब्द स्मरण कर लेने चाहिए। वे कहते थे – धर्मान्तरण माने राष्ट्रान्तरण। प्रजातन्त्र के युग मे राष्ट्र पर अधिकार उसी का होगा जिसकी जनसख्या अधिक होगी। इसलिए आर्यसमाज को शुद्धि के कार्य को वरीयता प्रदान करनी चाहिए।

दूसरे शकार से मेरा अभिप्राय शास्त्र से है। इसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हू। सक्षेप मे पुन इतना ही कहना चाहूगा कि वेदादि शास्त्रो का प्रचार–प्रसार उन पर किए गए आक्षेपो का समाधान तथा शोध की ओर भी हमे यत्नशील होना चाहिए। दूसरे सम्प्रदायो को सिद्धान्तो के मर्मज्ञ विद्वान आज हमारे बीच से उठते जा रहे हैं। उनके स्थान की पूर्ति करना भी अति आवश्यक कार्य है।

मेरा तीसरा शकार है – शास्त्र। यह अति आवश्यक तत्व है क्योकि शक्ति की दृष्टि से सुदृढ तथा किसी से भी न झुकने वाले समाज तथा राष्ट्र मे ही शास्त्र की चर्चा की जा सकती है। शस्त्रेण राक्षेते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते। क्षात्र धर्म के रूप मे आर्यसमाज के पास आर्यवीर दल जैसा सगठन है। हमे इसे इतना सुदृढ एव सगठित बनाना चाहिए कि जहा एक ओर यह आर्य युवको तथा युवतियो को आर्य धर्म मे दीक्षित करके सभी प्रकार के शस्त्र सचालन की शिक्षा दे सके वही दूसरी ओर आपत्ति तथा उपद्रवो के समय विधर्मियो के प्रहारो से आर्यजनता की रक्षा भी कर सके। स्वामी श्रद्धानन्द जी इस दिशा मे भी सचेष्ट थे। वे पहलवानो के अखाडे चलवाते थे जो कि समय पडने पर गुण्डो तथा समाज विरोधी तत्वो से जनता की रक्षा कर सके। इस प्रकार शास्त्र शस्त्र तथा शुद्धि ये तीनो की शकार आज अति अनिवार्य है।

बन्धुओ ! आर्यसमाज सेवा की सस्था है। इसके सस्थापक ने ससार का उपकार करना इसके मूल मे ही समाहित कर दिया गया है। आर्यसमाज के एक सेवक के रूप मे आप सबसे यह विनम्र प्रार्थना इस सुअवसर पर करना चाहता हू कि हम आपसी मन भेद भुलाकर पद प्रतिष्ठा का लोभ छोडकर तथा अकर्मण्यता एव निराशा को त्यागकर महर्षि के मिशन को पूरा करने मे अपने सच्चे मन से लग जाए तो निश्चय ही यह ससार आर्यसमाज की ओर उन्मुख होगा।

आज से १०० वर्ष पूर्व जिस महामनीषी ने गुरुकुल के रूप मे विद्या का यह दीपक जलाया था हम सबका कर्त्तव्य है कि हम इसमे अपना स्नेह (प्रेम–तेल) उडेलकर इसके प्रकाश को मन्द न होने दे। एक यही नहीं अपितु सभी गुरुकुलो की रक्षा एव अभिवृद्धि करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। विद्या के ये केन्द्र जनता को प्रकाश देते रहे उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे ऐसा प्रयास हमे करना चाहिए। वेद का आदेश है– **ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान्।** अर्थात बुद्धिमानो के द्वारा बनाए गए ज्योतिस्तम्भो की प्रकाश के मार्गों की हम रक्षा करे। गुरुकुल कागडी ऐसा ही एक उच्चतम ज्योतिस्तम्भ बने यह सकल्प लेकर हम यहा से जाए। तभी यह शताब्दी मनानी सार्थक होगी।

इस सीमित समय मे जो भी निवेदन मैंने आप लोगो के सामने किया है उस पर आप ध्यान देगे तथा आर्य समाज एव गुरुकुल की यशोवृद्धि के लिए अवश्य ही कुछ न कुछ करने का सकल्प लेकर यहा से जाएगे इसी आशा के साथ मैं सबको धन्यवाद देता हुआ विराम लेता हू।

शिक्षा का वास्तविक ध्येय

– सत्यबाला देवी

शिक्षा का प्रमुख ध्येय मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है अर्थात मानव की शारीरिक मानसिक और बौद्धिक शक्तियो का विकास। मनुष्य का व्यक्तित्व ही उसके वास्तविक विचारो भावो अनुभूतियो तथा सकल्पो का परिचायक है। उस का व्यक्तित्व ही उसका चरित्र है। जीवन की महान उपलब्धियो मे चरित्र का सर्वोपरि महत्व पूर्ण स्थान है। शिक्षा द्वारा ही मानव चरित्र का विकास होता है। Man is semi God and semi beast. चरित्र का विकास होता है।

अर्थात पशुत्व और देवत्व का समन्वय ही मानव चरित्र का निर्मायक है। पर शिक्षा मानव की पाशविक प्रवृत्तियो का दमन कर उसके चरित्र मे उदात्त दैवीय गुणो की प्रतिष्ठा करती है। महात्मा गाधी जी के मतानुसार Education is drawing out the best in man, woman and child

अत शिक्षा ही मानवता का विकास कर मानव को वास्तविक मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनाती है। शिक्षा द्वारा ही सदगुणो की वृद्धि एव दुर्गुणो का ह्रास होता है। शिक्षा ही मानव मे मानवोचित सद्गुणो का समावेश कर उसके चरित्र को अग्नि मे तप्त स्वर्ण सम उज्ज्वल पाप–कालिमारहित विशाल उदार शुभ मधुर और पावन बनाती है। गुणो की अभिवृद्धि द्वारा ही मानव की पाशविक वृत्तियो कुमति तथा अन्य अवगुणो पर विजय प्राप्त की जा सकती हे सुमति और कुमति नामक मानसिक शक्तियो के सघर्ष का निपटारा भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा ही मानव को सद्–असद् का विवेक प्रदान करती है। शिक्षा ही मानव के भाव विचार तथा सकल्प मे सुखद साम्य स्थापित कर उसकी शारीरिक मानसिक बौद्धिक एव आध्यात्मिक शक्तियो की उन्नति एव विकास मे सहायक सिद्ध होती है। शिक्षा द्वारा ही धर्म अर्थ काम एव मोक्ष को उचित ढग से उपार्जन करने की योग्यता शक्ति और क्षमता प्राप्त होती है। शिक्षा ही मानवचरित्र मे प्रेम दया क्षमा सहानुभूति अहिसा आदि दैवीय गुणो की प्रतिष्ठा कर उसे देवत्व के पद पर भी आसीन करने मे समर्थ होती है। मानव–चरित्र मे उपरोक्त उदात्त अलौकिक सद्गुणो की निहिति के फलस्वरूप ही मानवता का विकास विस्तार और प्रसार होता है और वह मानव कल्याण की उच्चभावभूमि पर प्रतिष्ठित हो विश्व–प्रेम विश्वबन्धुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम सम उच्चादर्शों का पालन करता हुआ प्राणीमात्र के प्रति सौहार्द भ्रातृभाव मित्रता प्रेम सद्भावना तथा सवेदना प्रदर्शित करता हुआ परम आत्मसन्तोष एव अलौकिक आत्मानन्द की अनुभूति करता है। शिक्षा ही मानव को आत्म साक्षात्कार आत्मदर्शन एव आत्मविकास हेतु प्रेरित तथा उत्साहित कर उसके समस्त चारित्रिक दूषणो का उन्मूलन कर उसके चरित्र को अत्यधिक गम्भीर पावन उज्ज्वल उन्नत भव्य एव अनुकरणीय बनाती है। पर चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के विकास हेतु महान साधना कठोर तप एव महत त्याग अपेक्षित है। अत मानव को शैशवावस्था से ही तपोत्याग और कष्ट सहन का अभ्यासी होना चाहिए। स्वार्थ को परमार्थ के सन्मुख तुच्छ समझना धर्म को अर्थ तथा काम की अपेक्षा महत्वपूर्ण स्थान देना सर्वहित साधन और मानव मात्र के कल्याण हेतु निजी हितो और स्वार्थों का बलिदान करना अपने जीवन को यथा शक्य परसेवा मे सलग्न कर निज और पर के भाव को विस्मृत करते हुए आत्मवत सर्वभूतेषु के सिद्धान्त का पालन करना पर दुख कातरता एव सवेदना से द्रवित होना स्वयश्रेष्ठ कर्मों मे उत्सहित होना और दूसरो को उत्साहित करना दुष्कर्म दुर्भावना और अन्याय का दृढतापूर्वक विरोध और प्रतिकार करते हुए भी अनिष्टकर्ता के प्रति रच मात्र भी दुर्भावना न रखते हुए अहिसाव्रत का पालन आदि सद्गुण एव कृत्य उत्कृष्ट चरित्र निर्माण मे सहायक सिद्ध होते हैं पर उपरोक्त आदर्शों को आत्मसात कर अपने चरित्र मे ढालना हसी खेल नहीं क्योकि मानव चरित्र मे पशुत्व की मात्रा अधिक होने से वह स्वभावत ही बुराई की ओर शीघ्र आकृष्ट होता है। पर जो शिक्षा उसे उन्मार्ग से विरत कर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती है कुमार्ग से विमुख कर सुमार्ग या सन्मार्ग की ओर उन्मुख करती है वही शिक्षा मानववादमा का पूर्ण विकास विस्तार एव परिष्कार कर आत्मसाक्षात्कार के मार्ग को प्रशस्त करती हुई शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को सत्यार्थों मे चरितार्थ करती है।

शिक्षा द्वारा ही मानव अपने स्व की झलक पाकर कृतकृत्य हो उठता है। वह मैं और तू के कृत्रिम भेदो से परे अपने सर्वात्मक शुद्ध स्वरूप का परिचय अथवा ज्ञान प्राप्तकर परमानन्द की प्राप्ति करता है। अत जहा ज्ञान है वहा शक्ति है और ज्ञान एव शक्ति का समन्वय परमानन्द प्राप्ति का आधार है तभी मानव ह्रदय की तीन प्रमुख शक्तियो इच्छा ज्ञान और क्रिया मे एकरसता समन्वय और समरसता स्थापित होती है। शिक्षा द्वारा ही उच्च विचारों के उदय होने चरित्र–निर्माण और उच्चादर्शो के पालन की प्रवृत्ति और भावना उत्पन्न होने से मानसिक पवित्रता के साथ साथ नीर क्षीर विवेकिनी सूक्ष्म बुद्धि का उदय होता है। शिक्षा ही मानव के ज्ञान चक्षुओ का उन्मूलन उसके अज्ञान तमसावृत्त ह्रदय को चिरन्तन सत्यालोक के दर्शन कराकर ज्योतिर्मय बनाती है।

शिक्षा का महत् उद्देश्य मानव के मन से पार्थक्य को तिरोहित कर एकत्व और सम्पूर्णता की ओर उन्मुख करना है तब मानवात्मा मे स्थित उस विराट शक्ति अनन्त सौन्दर्य एव अनुपम ज्योति की अनुभूति और दर्शन द्वारा मानवात्मा उस परम ज्योतिर्मय–दिव्य प्रकाश से आलोकित हो उठता है और उसके ह्रदय पर आच्छादित अज्ञान तिमिर तिरोहित हो जाता है। उसके समस्त आधिभौतिक आधिदैविक तथा आत्मिक तापो का शमन हो जाता है। तब मानव को नानात्व की यार्थक्य की प्रतीति नहीं होती और वह अपने ह्रदय जीवन और समस्त वातावरण मे एकत्व के दर्शन करता है और तभी समस्त विरोधो सघर्षो तथा असामञ्जस्य का उन्मूलन होने से वह मानव–मिलन की उच्चभाव भूमि पर प्रतिष्ठित होता है जहा वह व्यक्तिगत स्वार्थो हानि–लाभ सुख–दुख ईर्ष्या–द्वेष राग–विराग घृणा–प्रेम आदि से ऊपर उठ कर निज और पर के भाव को विस्मृत कर प्राणि मात्र से अपने ह्रदय का रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है।

– क्रमश

वेद पथिक बनाना है

– कविवर अखिलेश आर्येन्दु

दयानन्द के उद्देश्यों को जग मे फैलाना है।
फिर से, सारे जग को वेद पथिक बनाना है।।
निहित स्वार्थ को छोड हम, बने जग हितकारी।
तभी मिटेगी वसुधा की, सब काली विषकारी।।
वेदो के सन्मार्ग पर चल साधना बढाना है।
सदाचरण, व्यवहार सुभग देखो टूट रहे।।
तथा कथित विकास नाम पर देश को लूट रहे।
सादगी, स्वदेशी, सदाचार का पाठ पढाना है।।
स्वसंस्कृति, स्वभाषा, स्वराज्य का नाम मिट रहा है।
ऋषियों की गौरव गरिमा का सम्मान मिट रहा है।।
नई क्रान्ति की लेकर मशाल अलख जगाना है।
नए नए पाखण्ड कुरीतियो से भ्रान्ति फैल रही।।
पाश्चात्य संस्कृति के मकड जाल में अशान्ति फैल रही।
दयानन्द के संदेशों को घर घर पहुंचाना है।।

– युवा केन्द्र (कवि केन्द्र), ६/६०
पश्चिम फ्रैन्ड्स इन्क्लेव, सुल्तानपुरी-४१

मानव-मूल्यों का ह्रास एवं साहित्यकारों का दायित्व

– डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

देहधारी मानव ने 'मनुर्भव (मानव बनो) वैदिक सकल्प से जिस यात्रा का शुभारम्भ किया था वह सहस्राब्दियो तक निरन्तर चलती रही। इस यात्रा के दौरान उसे ईश्वर–अश एवम अविनाशी जीव के रूप मे पहचाना गया। बाद मे विदेशी प्रभाव से उसे सामाजिक या विवेकशील प्राणी के रूप मे पहचाना गया। दोनो अवस्थाओ मे वह सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बना रहा है। आत्म–तत्व की स्वीकृति उस के जीवन–चक्र की धुरी बनी रही। इस काल मे उसने अपने जीवन–मूल्यो को बनाए रखने के लिए कभी शिथिलता नहीं दिखाई।

देश मे पाश्चात्य विचारधारा ने बल पकडा है। वैज्ञानिक विकास से बौद्धिकता की जडे जम गई और मानव मे तर्क एव सशय को पोषण मिला। इससे जो कुछ प्रत्यक्ष है और प्रयोग द्वारा सिद्ध किया जा सकता है उसे स्वीकार्य समझा जाने लगा और शेष सभी अस्वीकार्य बना। अत सुस्थापित भारतीय जीवन–दृष्टि पर प्रश्न–चिह्न लगा दिया गया और आत्मतत्व की स्वीकृति भी प्रश्न–चिह्न के घेरे मे आ गई।

प्रत्यक्ष भौतिक–जगत को सर्वस्व माना जाने लगा और उस की अधिकाधिक प्राप्ति के लिए घुडदौड आरम्भ हुई। धर्म अर्थ काम और मोक्ष–जैसे जीवन–मूल्यो मे से अर्थ एव काम ने प्रधानता ग्रहण की। मोक्ष एव धर्म की चर्चा मानव की रूढिग्रस्तता का पर्याय कहीं जाने लगी। उससे स्वेच्छाचारिता पनपी और पराई आखो मे धूल झोक कर स्वार्थ सिद्धि की ओर वह अग्रसर हुआ।

आधुनिक औद्योगीकरण ने अर्थव्यवस्था को ऐसी दिशा प्रदान की कि मानव को उसकी मशीन का एक पुर्जा बन जाना पडा। एक ओर तो उसकी उपलब्धियो की ओर वह ललचाया और दूसरी ओर उन से लाभान्वित होने के लिए पैसे की होड मे वह बेतहाशा दौड लगाने लगा। इससे वह भीतर से सूख गया और धन सचय की अन्धी दौड मे उसने समस्त पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धो का निर्धारण अर्थ द्वारा करना आरम्भ कर दिया। अर्थ को सिर चढा लेने के असह्य बोझ को ढोता–ढोता वह टूटा–टूटा–सा मानव देहधारी प्राणी बन कर रह गया।

भौतिकवादी जीवन–दृष्टि के साथ–साथ अनेक पाश्चात्य विचारधाराओ से भारतीय मानव प्रभावित हुआ। वहा की व्यक्तिवादी जीवन–पद्धति उसे रुचिकर प्रतीत होने लगी। वहा का परिवार–समाज ढाचा भी उसके लिए आदर्श बना और उनकी चमक–दमकमयी जीवन–शैली उसने अपना ली।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोकतान्त्रिक राजनीति ने मानव–मूल्यो को सर्वाधिक प्रभावित किया। चुनाव की राजनीति मे जातिवाद प्रान्तवाद मायावाद बोतलवाद आदि के विकट ताण्डव नृत्य मानव–मन को विकृततर बनाते चले गए। विकृततर होती हुई राजनीति ने हमारे पारिवारिक सामाजिक धार्मिक एव सास्कृतिक जीवन को चरमरा दिया है और मानव को इस अवस्था पर ला खडा कर दिया है कि उसका विकृतरूप जिन पशुओ को उपमान रूप मे प्रस्तुत कर समझाया जाता रहा है वे सभी उपमेय श्रेणी मे आ गए है और मानव उपमान मे।

समाज मे सत्य के स्थान पर असत्य ने प्रतिष्ठा पा ली है अहिंसा के स्थान पर आतकवाद हत्या व छुरेबाजी ने अपना दबदबा स्थापित कर लिया है अपरिग्रह के स्थान पर धन–सग्रह की अन्धी दौड लगी हुई है ब्रह्मचर्य के स्थान पर बलात्कार व्यभिचार बढे हैं अस्तेय के स्थान पर चोरी जेबकटी रिश्वतखोरी कालाबाजारी आदि का जाल बिछता जा रहा है।

मानव चोर वचक स्वार्थी अपराधी दम्भी बनते जा रहे हैं। मूल्य–समर्पित व्यक्तियो का जीना दूभर होता जा रहा है। पूजा स्थल बन रहे हैं पर काले धन से सन्त महात्मा मुनिजनो का सम्मान हो रहा है पर काले धन से। काले धन से सम्मान खरीदा जा रहा है और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त की जा रही है। परम्परागत परिवार टूट रहे है समाज–व्यवस्था ध्वस्त हो रही है राष्ट्रीय स्वाभिमान भाषणो मे सिमट गया है और श्रेष्ठ जनो को अपमानपूर्ण जीवन जीना पड रहा है।

आज समाज व राष्ट्र को मूल्य–समर्पित नेतृत्व की आवश्यकता है पर उसका अभाव सा दिखाई दे रहा है। अब उनकी दृष्टि साहित्यकार की ओर लगी है। उसको यह अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है।

अमरीका यूरोप के साहित्यकार समाज मे जो कुछ घटित हो रहा है उसके ,चित्रण से ऊबने लगे है। साहित्य–क्षेत्र मे उछाले गए नारे और वाद उन्हें अहसास दिलाने लगे हैं कि वे दिग्भ्रमित हैं। अत वे आधुनिकता की चर्चा करने लगे हैं और मानवता को सही दिशा देने की सोच उभरी है।

भारतीय साहित्यकारो के सृजन का वास्तविक चित्र तब उभरता है जब हम किसी बुक–स्टाल की पुस्तको पत्र–पत्रिकाओ पर दृष्टि डालते हैं। अधिकाश साहित्य सृजन एक ही दिशा मे हो रहा है। पूजीवाद व्यवस्था के इशारो पर लिखा गया यह साहित्य अपने सही उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पा रहा है।

साहित्य को 'समाज का दर्पण या 'जीवन की व्याख्या बताने के नाम पर समाज या जीवन की हूबहू नकल कर देना फोटोग्राफी जैसा कौशल तो प्रदर्शित करता है पर वह साहित्यकार को गुरुतर दायित्व के निर्वाह के प्रति उसकी उदासीनता का परिचय भी देता है।

साहित्यकार सत्य शिव एव सुन्दर का उपासक कहा जाता है। इनकी उपासना की योग्यता अर्जन करने के लिए उससे धर्म दर्शन साहित्य इतिहास भूगोल मनोविज्ञान आदि के अध्ययन की अपेक्षा की गई है। श्रेष्ठ साहित्यकार बनने के लिए उसे जीवन का अध्ययन व्यापक सृजन उसे मनीषी द्रष्टा एव स्रष्टा रूप मे स्थापित करता है और तभी वह सत्य शिव व सुन्दर की स्थापना करता है। आज के साहित्यकार का दायित्व है कि वह जीवन को समग्रता मे अपने युग की आवश्यकता को ध्यान मे रखकर देखे व समझे और उसे इस रूप मे चित्रित करे कि वह मानव–मूल्यो को स्थापित करने मे सहायक बने।

यहा आकर दो विचारधाराए परस्पर विरोधी सी प्रतीत होती हैं। एक के अनुसार जीवन जैसा है उसे ठीक उसी रूप मे चित्रित करने तक ही साहित्यकार का दायित्व है और दूसरी के अनुसार साहित्यकार का दायित्व मानव को दिशा–बोध कराना उसमे सत–असत का बोध जगा कर सत की ओर अभिप्रेरित करना है। इसके लिए वह सुन्दरम का उपयोग करता हे और अपने कथ्य को सुग्राह्य एव सुपाच्य बनाता है।

थोथे वादो के कुचक्र मे न पड कर उसको अपना लक्ष्य निर्धारित करके अपनी समस्त कलाकारिता के साथ उसकी ललक जगाने मे सक्रिय योगदान करना चाहिए। उसका साहित्य मीठी कुनैन के सदृश बन कर ही मानवता को रोग–रहित कर सकता है और स्वास्थ्य–बोध करा सकता है।

आज के साहित्यकार को उसका युग पुकार रहा है मानो वह कह रहा हो–मानव को निज स्वरूप म प्रतिष्ठित करो। वह सूखता जा रहा है उसे हरा करो पल्लवित–पुष्पित करो। मानव–मानव के बीच उठ रही असख्य दीवारो को गिराओ। उसमे राष्ट्र–प्रेम जागृत करो। उसे इस योग्य बनाओ कि परिवार एव समाज का अभिन्न अग बन कर जिए। उसे पशु बनने से रोको।

वह मानवता का पुजारी बने। कभी देवता मानव–देह धारण करने के लिए ललचाते थे उसी देव–दुर्लभ मानव–देह को जीवन–मूल्यो से सजाओ। उसकी धमनियो मे विष घुल गया है उसे अमृत पिलाओ। उसे अपनी सामान्य भाव–भूमि पर प्रतिष्ठित करो।

यह कल्पना–विलास का युग नहीं है और न कला के नाम पर पच्चीकारी का युग है। यह तो पुनर्निर्माण का युग है और मानव को सम्पूर्ण विनाश से बचाने का युग है।

– १० प्रोफेसर कालोनी कोटा

स्वास्थ्य चर्चा

मानसिक विकारों से बचिए

– डॉ० गोपालजी मिश्र

किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य कैसा है ? ठीक है या नहीं वह मानसिक रूप से स्वस्थ है या अस्वस्थ है ?

यदि हमे इन प्रश्नो का उत्तर जानना है तो हमे मानसिक स्वास्थ्य के लक्षणो पर विचार करना होगा। आइए देखे कि एक मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के क्या लक्षण होते है।

पहली बात तो यही है कि जो व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होगा वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर पूरा–पूरा ध्यान देता होगा। उक्ति भी है – स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मन का वास। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति का जीवन नियमित होता है। उसका सारा काम–रहन–सहन खान–पान सोना–जागना श्रम–विश्राम घर–बाहर का कार्य सब कुछ एक सुनिश्चित ढग से नियमित और ठीक समय पर हागे। मानसिक – स्वस्थ व्यक्ति का दूसरा लक्षण या विशेषता है कि उसका दूसरो के साथ समायोजन ठीक प्रकार से होगा। जिस–जिस भी प्रकार की परिस्थिति हो वह उसक साथ अपना समायोजन बना लेगा। दूसरा क्या सोचता है उसके क्या विचार हे वह क्या चाहता है उसके साथ कैसा व्यवहार करना उचित होगा – इन तमाम बातो को वह शीघ्र ही समझ लेगा और उसी के अनुरूप व्यवहार कर अपना समायोजन बना लेगा। एक और विशेषता है कि व्यक्ति सवेगात्मक रूप से परिपक्व होगा। बात–बात मे झगडा कर लेना मारपीठ पर आमादा हो जाना हर्ष–विषाद की अति आदि सवेगो के वशीभूत नहीं रहता बल्कि उन पर नियन्त्रण रखता है। भय क्रोध लोभ शोक घृणा ईर्ष्या अहकार आदि पर उसका नियन्त्रण रहता है। सवेगो की अभिव्यक्ति की आवश्यकता होने पर वह उपयुक्त ढग से उनका प्रकटीकरण भी करेगा। फलत उसके सभी कार्य प्रसन्नता एव सफलतापूर्वक सम्पन्न होगे। ऐसे व्यक्तियो से लोग सम्पर्क रखना पसन्द करते है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति मे धैर्य होता है इस धैर्य के कारण उसका मानसिक सतुलन ठीक बना रहता है। कैसी भी निराशाजनक विषय या प्रतिकूल परिस्थिति क्यो न हो वह उनका सामना करने और उनसे पार पाने मे विशेष कष्ट का अनुभव नहीं करता। समाज मे दूसरो के साथ उसका समायोजन या अनुकूलीकरण उत्तम ढग का होता है। वह लागो के साथ अपने सम्बन्धो का सतुलित बनाए रखता है। सामाजिक क्रिया कलापो मे प्रसन्नतापूर्वक भाग लेने मे उसका उत्साह बना रहता है। उसे अपने कार्यो मे रुचि रहती है। सार कार्य ध्यानपूर्वक करता है। काम करने मे उसे आनन्द प्राप्त होता है। अपने कार्यो से वह सन्तोष की अनुभूति करता है। उसकी क्षमता कार्य करते रहने से निरन्तर बढती जाती है। अपने कार्यों द्वारा सूझ–बूझ से काम करने के कारण वह अपने लक्ष्य को सटीक ढग से प्राप्त कर लेता है। शारीरिक स्वास्थ्य बिगडता है तो व्यक्ति रोगी हो जाता है। द्वन्द्व सघर्ष तनाव भावना–ग्रन्थिया चिन्ता आदि ऐसे ही मानसिक विकार हैं जो मानसिक स्वास्थ्य की चौपट कर देते है। एक और प्रकार का मानसिक विकार है जिसे द्वन्द्व या सघर्ष कहते है। व्यक्ति की जो रुचि है इच्छा हे पसन्द है अभीष्ट हे यदि उनके प्रतिकूल स्थितियो या विराधी शक्तियो का उसे सामना करना पड जाए तो उसमे मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता हे। द्वन्द्व तीव्र हो ओर अनसुलझा रह जाए तो यह मानसिक विकार का रूप लेकर व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य रुग्ण कर देता है। चिन्ता एक ऐसा मानसिक विकार है जिसका अनुभव लोगो को प्राय होता रहता है। सीमित चिन्ता चिन्ता का कारण दूर कर देने के लिए व्यक्ति को प्रेरित करती है किन्तु यदि चिन्ता बढ जाए और उसी बढी हुई स्थिति बहुत दिना तक बनी रहे तो यह अचेतन मे अपना स्थान बना लेती है व्यवहार प्रभावित कर देती है और कालान्तर मे व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड देती है। मानसिक स्वास्थ्य बिगाडने वाले कारको की कोई निश्चित सख्या नहीं है। ऐसा भी नही है कि कारक जो एक व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड देता है वह सभी का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड देने मे सक्षम हो। व्यक्तिगत भेद होते हैं अलग–अलग व्यक्तियो की अलग–अलग क्षमताए होती है और अलग–व्यक्तियो के निबटन के अलग–अलग ढग होते है। फिर भी मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव डालने वाल कारको को मनोवैज्ञानिको ने चिन्हित किया है। वशानुक्रम शारीरिक स्वास्थ्य शारीरिक दोष परिवार मानसिक अस्वास्थ्य मानसिक सघर्ष थकान कलह लडाई–झगडे चोरी झूठ बेईमानी सवेगात्मक अस्थिरता ईर्ष्या द्वेष आचरणहीनता असहयोग अपौष्टिक आहार नशे का सेवन मस्तिष्क मे चोट सहकर्मियो का बुरा व्यवहार सामाजिक प्रतिमान स्वय पर नियन्त्रण का अभाव अशिक्षा आदि ऐसे अनक कारक है जो अपनी विकृतियो से लोगो का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड देते है। स्वस्थ मनारजन मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए आवश्यक है। कितना भी गम्भीर कार्य हो मनोरजन का बीच–बीच मे पुट देने से कार्य क्षमता म निखार आता हे बोझ हल्का मालूम पडता है आर अच्छे परिणाम आते हे।

सामूहिक भावना किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक हे। अलग थलग एकाकी जीवन व्यतीत करना अपने मे ही गुमसुम बने घुलते रहना मानसिक अस्वास्थ्य को आमन्त्रण देना है। अत अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे उच्चकोटि के विचारवान अनुभवी योग्य एव सहृदय व्यक्तियो के साथ मित्रता रखना लाभप्रद है। हमारे विचार हमारे सबसे बडे सहायक है। सदविचार सच्चा धन है। विचारो का प्रभाव मन पर पडता है। अत स्वस्थ विचार मन को स्वस्थ बनाए रखकर मानसिक स्वास्थ्य को उत्तमता प्रदान करते है। अच्छे विचार अच्छे ग्रन्थो से एव अच्छे व्यक्तियो से प्राप्त होते है। आत्म–चिन्तन से अच्छे विचार उदभूत होते है। अत प्रतिदिन अच्छा हो कि ब्रह्म मुहूर्त मे थोडे समय तक अकेले एकान्त म आत्मचिन्तन किया जाए। इससे मानसिक स्वास्थ्य उत्तम बनेगा। सवेगो पर जितना ही अधिक नियन्त्रण होगा मानसिक स्वास्थ्य उतना ही उत्तम हागा। काम क्रोध घृणा ईर्ष्या द्वेष लोभ अहकार आदि मानसिक स्वास्थ्य बिगाड सकते है यदि वे अत्यन्त तीव्र हे एव इनका दुरुपयोग किया जा रहा हे पर यदि ये सतुलित और नियन्त्रित हो ओर उपयुक्त बातो मे सघानित हो ता इनके दुष्प्रभावो से बचा जा सकता है।

पृष्ठ २ का शेष

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार

कुछ समय के लिए आचार्य यशपाल (हरियाणा) तथा बाद मे डॉ० रामनाथ वेदालकार ने की। सासद श्री रामचन्द्र बेन्दा तथा डॉ० अशोक कुमार चौहान चेयरमेन एमिटी शिक्षण सस्थान इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ० रघुवीर वेदालकार ने इस सत्र का सयोजन किया जिसमे आचार्य चन्द्र देव शास्त्री डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री राममेहर एडवोकेट स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती डॉ० वीरपाल विद्यालकार तथा श्री कन्हैयालाल तनेजा आदि विद्वान वक्ता थे।

वेद की अनन्त यात्रा एक नया इतिहास

१४ प्रशासन के विरोधी व्यवहार ने भी बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया लेकिन आयोजन के पीछे निहित पवित्र भावनाओ के सामने प्रशासनिक बाधाए भी आर्यो से टकराकर चूर–चूर हो गई। शोभा यात्रा के लिए जिलाधिकारी ने आदेश दिया कि यह यात्रा हर की पौडी स आगे वैदिक मोहन आश्रम तक नहीं जाने दी जाएगी। सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की ललकार सयोजक श्री विमल वधावन की चुनौती और सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की व्यवस्था के आगे जिलाधिकारी का अनुमति देने वाला आदेश कवल मात्र एक कागज का टुकडा साबित हुआ जिसकी होली आर्यो ने जलाई।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने तो जिलाधिकारी को यहा तक कह डाला कि इस आदेश पर हस्ताक्षर करके ही आपने शोभायात्रा की शोभा मे विघ्न डालने का प्रयास किया है वेद की अनन्त यात्रा का अन्त करने का प्रयास किया है। अत उनकी उलटी गिनती का प्रारम्भ होना स्वाभाविक है। कै० देवरत्न आर्य जी के नेतृत्व मे दृढता के साथ बढते हुए आर्यों की यह यात्रा हर की पौडी को पार कर अपने गन्तव्य स्थान तक पहुचकर ही शान्त हुई। परन्तु सयोगवश आर्यो की इस चुनौती को ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त हुआ और वह जिलाधिकारी २६ अप्रैल को इस ऐतिहासिक यात्रा के दिन सायकाल को ही स्थानान्तरित हो गया। इस अवसर पर कै० देवरत्न आर्य की सिह गर्जना ने तो स्वामी श्रद्धानन्द की याद तरोताजा कर दी।

अगले दिन मच पर केन्द्रीय मन्त्री श्री वेद प्रकाश गोयल के सामने ही सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्यसमाज से टकराव मोल लेने वाला कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सकता चाहे वह डी०एम० हो या पी०एम०।

इसी सत्र मे स्वामी दीक्षानन्द जी ने भी इन्हीं विचारो का समर्थन करते हुए कहा कि गुरुकुल मे न पधार कर प्रधानमन्त्री ने अपनी आर्यसमाजी होने की पात्रता समाप्त कर दी है।

उन्होने स्पष्ट कहा कि आर्यसमाज किसी पार्टी के साथ बधा हुआ नहीं है परन्तु जो लोग गुरुकुल की इस पुण्य भूमि पर पधारे हैं और आर्यसमाज को सदैव सहयोग देते हैं उनका भविष्य अवश्य ही उज्ज्वल होगा और उनकी कीर्ति बढेगी।

१५ वेद की अनन्त यात्रा के वैदिक मोहन आश्रम पहुचने पर आर्य जनता वैदिक जयघोष के साथ झूम उठी।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने इस ऐतिहासिक स्थल पर आज २६ अप्रैल २००२ को ध्वजारोहण किया जिस स्थल पर २५ अप्रैल १८६७ के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी। वैदिक मोहन आश्रम के समर्थन मे एक विशेष प्रस्ताव इस सम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसका समर्थन वैदिक जय घोष के साथ हुआ। यह प्रस्ताव इस प्रकार है –

प्रस्ताव

आज दिनाक २६ अप्रैल, २००२ को देश विदेश से गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे पधारी आर्य जनता वेद की अनन्त यात्रा मे भाग लेते हुए वैदिक मोहन आश्रम तक दर्शनार्थ पहुची। यह वह पावन स्थल है जहा २५ अप्रैल, १८६७ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी। आर्य जनता की भावनाए इस स्थल से गहरे रूप मे जुडी है। आर्य जनता इस स्थल पर आकर भाव विह्वल हो गई

वैदिक मोहन आश्रम का सचालन एक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है, जिसके प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश जी चौपडा एव मन्त्री श्री टी०आर० गुप्ता है, इस पवित्र स्थल पर कुछ स्वार्थी तत्वों की स्वार्थपूर्ण निगाहे सम्पत्तियो की लूट मचाने के उद्देश्य से लगी हुई है। आज समूचा आर्य जगत् यह सकल्प व्यक्त करता है कि यदि प्रशासन की किसी लापरवाही या मिलीभगत के कारण इस पवित्र स्थल पर कोई भी आच आई तो समूचे आर्य जन एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस आश्रम के ट्रस्ट का हर सम्भव सहयोग देने के लिए कृतसकल्प है।

इस प्रस्ताव के द्वारा हम कडे शब्दो मे प्रशासन को चेतावनी देना चाहते है कि आर्यो के परीक्षण का दुस्साहस कभी न करे। अपनी गौरव पूर्ण वैदिक सस्कृति एव पवित्र स्थलो के रक्षार्थ हम किसी भी बलिदान को बडा नहीं समझते।

यतिमण्डल का आशीर्वाद

१६ वैदिक धर्म और आर्यसमाज से जुडे समस्त सन्यासियो के सगठन यति मण्डल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य को भेजे एक विशेष सन्देश मे अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह शताब्दी आर्यसमाज के लिए बल देने वाली शक्ति देने वाली सगठन देने वाली तथा आर्यसमाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने वाली हो। स्वामी जी का यह सन्देश मच से प्रसारित भी किया गया। इस महासम्मेलन मे लगभग ६० से अधिक आर्य सन्यासी उपस्थित रहकर अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहे।

पूर्व स्नातकों की उपस्थिति

१७ इस महासम्मेलन मे बहुत से पूर्व स्नातको ने भी अपनी उपस्थिति से महासम्मेलन की शोभा बढाई। गुरुकुलो के आचार्यो एव पूर्व स्नातको की प्रस्ताविक सगोष्ठी आयोजित नहीं की जा सकी। सार्वदेशिक सभा के अधिकारी निकट भविष्य मे इस सगोष्ठी को आयोजित करने पर विचार करेगे।

महान पिता की महान पुत्रियां

१८ माता निर्माता भवति सत्र मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के समकालीन वैदिक विद्वान आचार्य रामदेव तह कह सुपुत्री श्रीमती दमयन्ती कपूर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री श्रीमती शाशि प्रभा आर्या स्वामी विशुद्धानन्द जी की सुपुत्री श्रीमती सुषमा शर्मा तथा आचार्य भद्रसेन जी की सुपुत्री कै० देवरत्न जी की वहन श्रीमती उज्ज्वला वर्मा को महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने महान पिता की महान सुपुत्रिया कहकर सम्बोधित किया तो समूचा पण्डाल वैदिक घोष के साथ गूज उठा। इस सत्र मे सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज मुख्य अतिथि थी। इनके अतिरिक्त माता प्रेमलता डॉ० आशारानी राय श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती शन्नो देवी डॉ० इन्दु, कुमारी प्रज्ञा आदि ने भी अपने विचार पुस्तुत किए।

१६ इसी प्रकार सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज वैदिक विभूतियो का उदबोधन सुनते सुनते इतनी भाव विभोर हो गई कि उन्होने इच्छा व्यक्त कि की मेरे से पूर्व सभी विदुषिया उदबोधन प्रस्तुत कर ले जिससे वे उन सबका लाभ उठा सके। परन्तु उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई माता प्रेमलता शास्त्री श्रीमती सुषमा शर्मा ब्र० इन्दु तथा डॉ० आशा रानी राय तथा श्रीमती शशि प्रभा आर्या के उदबोधनो के बाद ही उन्हे अपना उदबोधन प्रस्तुत करना पडा।

आर्यो का अथाह उत्साह

२० २६–२७ अप्रैल के दोनो दिन रात्रि के कार्यक्रम रात के १२ बजे तक चलते रहे।

२७ अप्रैल को तो तीनो सत्रा के बीच मे दो अवकाश की सुविधा लेना भी आर्यजनता ने उचित नहीं समझा। १–२ हजार व्यक्ति भोजन करने के लिए उठते थे तो अन्य हजासे व्यक्ति जो भोजन कर चुके होते थे वे उनके स्थान पर बैठ जाते थे। इस प्रकार प्रथम अवकाश का सदुपयोग कार्यकर्ताओ के खुले अधिवेशन के रूप मे किया गया और सायकालीन अवकाश ने कण्व आश्रम गुरुकुल से पधारे ब्रह्मचारी जयन्त तथा उनके अन्य ब्रह्मचारी साथियो द्वारा शारीरिक शक्ति और प्राणायाम के बल पर कई प्रकार के प्रदर्शन किए गए। दूसरे अवकाश मे ही स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर निर्मित वृत चित्र पुन प्रदर्शित किया गया।

२१ ५० हजार से अधिक सख्या मे पधारे आर्यजनो के लिए हरिद्वार के दर्जनो मठो आश्रमो और धर्मशालाओ मे आवास की व्यवस्था की गई थी। अकेले विश्वविद्यालय परिसर मे ही लगभग १०००० से अधिक व्यक्तियो के ठहरने की व्यवस्था थी। इसके अतिरिक्त गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम तथा प्रेमनगर आश्रम मे बहुत बडी सख्या मे आर्यजन ठहरे।

व्यायाम प्रशिक्षण

२२ विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग की आधुनिक मशीनो पर लगभग २०० आर्यजनो को शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण भी दिया। और इसमे भाग लेने वाले व्यक्तियो को एक विशेष प्रमाण पत्र भी दिया गया।

ऐतिहासिक स्मारिका

२३ इस महासम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित एक भव्य स्मारिका का भी विमोचन किया गया जिसमे भारत के अधिकतर गुरुकुलो की सूची तथा सक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया गया है। यह स्मारिका सार्वदेशिक सभा कार्यालय से ५० रुपये मे प्राप्त की जा सकती है।

महासम्मेलन का केन्द्रीय उद्देश्य

२४ इस महासम्मेलन मे एक केन्द्रीय विचार प्रस्ताव रूप मे पारित हुआ कि विगत १०० वर्षो मे लगभग २०० गुरुकुलो की स्थापना देश के विभिन्न हिस्सो मे हुई है परन्तु अगले पाच वर्षो मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह प्रयास करेगी कि भारत का कोई जिला गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अछूता न रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द पर वृत्तचित्र

२५ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी की प्रेरणा पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन और कार्यो पर तैयार कराए गए एक वृतचित्र का विमोचन भी इसी महासम्मेलन मे किया गया। यह फिल्म लगभग ४५ मिनट की है जिसके निर्देशक श्री सुभाष अग्रवाल हैं।

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 12-5-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 9/10-5-2002

महासम्मेलन के प्रत्यक्षदर्शियों से सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आमन्त्रित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विशाल आयोजन सफल हुआ। इस आयोजन मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले महान आत्माओ का हार्दिक साधुवाद। इस महासम्मेलन में छोटी बडी किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए सयोजक के नाते मैं सार्वजनिक रूप से क्षमा प्रार्थी हू।

इस ऐतिहासिक आयोजन को जिन महानुभावो ने स्वय देखा और अनुभव किया वे यदि किसी प्रकार के सुझाव देना चाहे तो उनका स्वागत है जिससे इस प्रकार के आगामी आयोजनो मे हमारे बाद जो महानुभाव इस दायित्व को निभाएगें उनका समुचित मार्गदर्शन सम्भव होगा। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्षदर्शी महानुभाव इस विशाल आयोजन पर अपनी प्रतिक्रियाओ से भी हमे अवश्य अवगत कराए।

– *विमल वधावन*

प्रतिष्ठा मे

अध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ०प्र०)

पृष्ठ ११ का शेष भाग
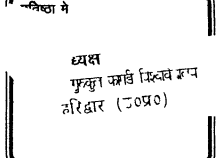
गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार

गम्भीर सैद्धान्तिक चिन्तन

२६ महासम्मेलन की मुक्तकण्ठ से हर व्यक्ति ने प्रशसा की विशेष रूप से आध्यात्मिक वातावरण की। केन्द्रीय जहाज रानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल ने भी भाव विभोर होकर यहा तक कहा कि आमतौर पर धार्मिक सम्मेलनो मे कहानिया सुनाई जाती है जबकि इस महासम्मेलन के प्रत्येक सत्र मे अति गम्भीर और सैद्धान्तिक विषयो पर गहरी चर्चा प्रस्तुत की जा रही है और उतनी ही गम्भीरता से आर्य जनता को ग्रहण करते हुए देखा जा रहा है।

आधुनिक युग में वेद और विज्ञान

२७ २६ अप्रैल को आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता आचार्य वेद प्रकाश जी ने तथा सयोजन डॉ० भारत भूषण ने किया। गुरुकुल कागडी के परिदृष्टा श्री सदानन्द तथा पूर्व सासद डॉ० सजय सिह एव सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुन्शीराम सेठी इस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। इस समारोह को स्वामी विवेकानन्द सरस्वती श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय डॉ० सत्यपाल सिह महात्मा गोपाल स्वामी डॉ० रामप्रकश तथा श्री के०एस० शेषाद्रि आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया। कर्नाटक से पधारे श्री शेषाद्रि ने अपना पूरा भाषण अग्रेजी मे प्रस्तुत किया जिसका सक्षिप्त हिन्दी अनुवाद महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने आर्य जनता के सामने रखा।

आर्य परिवार सत्र

२८ २६ अप्रैल को ही रात्रि कालीन आर्यपरिवार सत्र की अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने की और सयोजन श्री देवेन्द्र शर्मा ने किया। इस सत्र मे सर्वश्री रासासिह रावत जयसिह राव गायकवाड पाटील दोनो आर्य सासद तथा श्री रामनाथ सहगल विशिष्ट अतिथि थे। इसी सत्र मे श्री मोहन लाल मोहित जी का सम्मान किया गया। इस सत्र को आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आचार्य भगवान देव चैतन्य डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री स्वामी दिव्यानन्द आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

आधुनिक युग में धर्म और आध्यात्मिकता

२६ २७ अप्रैल प्रात काल आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता सत्र की अध्यक्षता पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी ने की। केन्द्रीय जहाज रानी मत्री श्री वेदप्रकाश गोयल इस सत्र मे मुख्य अतिथि थे तथा श्री धर्मपाल आर्य विशिष्ट अतिथि थे। इस सत्र के सयोजक डॉ० महेश विद्यालकार थे। इस सत्र को श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री डॉ० प्रियव्रत दास प्रो० उमाकान्त उपाध्याय आचार्य रामानन्द आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

आधुनिक युग में धर्म प्रचार का स्वरूप

३० २७ अप्रैल को रात्रिकालीन सत्र का विषय था आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप जिसकी अध्यक्षता कनाडा आर्य समाज के प्रधान श्री अमर ऐरी न तथा सयोजन श्री विमल वधावन ने किया क्योकि इस सत्र के पूर्व निर्धारित सयोजक श्री स्वतन्त्र कुमार को किसी कारणवश समारोह छोडकर वापस पठानकोट जाना पडा। इस सत्र मे डॉ० उदय नारायण गगू (मारीशस) मुख्य अतिथि थे। इस सत्र को डॉ० सत्यपाल सिह ब्रह्मचारिणी प्राची ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री डॉ० कृष्ण चोपडा तथा प्रो० राजेन्द्र विद्यालकार आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

समापन सत्र में राष्ट्रभक्ति

३१ २८ अप्रैल २००२ का समापन सत्र जिसे राष्ट्र सेवा सत्र कहा गया था आर्यजनो के दिल और दिमाग पर देश भक्ति की एक अमिट छाप छोड गया। इस सत्र मे अमर शहीद भगत सिह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिह तथा भतीजे किरणजीत सिह की उपस्थिति ने आर्यजनो को आनन्द प्रदान किया। श्री राम प्रसाद बिस्मिल के घनिष्ट मित्र एव स्वातन्त्र्य वीर अश्फाक उल्ला खा के पोते की उपस्थिति भी आर्य जनता के हर्ष और उमग का आधार थी। इस अतिथि का नाम भी अश्फाक उल्ला खा ही है जिनकी आयु लगभग ३५ वर्ष है। अश्फाक उल्ला खा २७ और २८ अप्रैल दोनो दिन मच पर उपस्थित रहकर मच की शोभा बढाते रहे। इन तीनो महानुभावो का भरपूर सम्मान किया गया।

कई महत्वपूर्ण विमोचन

३२ प्रत्येक सत्र मे बहुत सी पुस्तको और प्रचार सामग्री का विमोचन मच से किया जाता था।

विद्वानों और आर्यनेताओं का चिरस्मरणीय सम्मान

३३ प्रत्येक वक्ता एव अतिथि को सम्मानित करने के लिए मोतियो की माला विशेष छोटे और बडे स्मृति चिन्ह तथा कमीज पर लगाने वाले स्मृति बैज प्रदान किए जाते थे। पुष्पमालाओ का प्रयोग केवल दो बार ही किया गया। स्वागत मे प्रदान की जाने वाली यह अभिनन्दन सामग्री प्रत्यक अतिथि एव वक्ता के साथ स्थाइ रूप मे एक स्मृति बनी रहती हे।

आयोजन की रूप रेखा

३४ महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने इस महासम्मेलन को एक महायज्ञ के रूप मे सम्पन्न कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के साथ विगत तीन महीने से लगभग प्रति सप्ताह अथवा दस दिन के बाद हरिद्वार व्यवस्थाओ के प्रबन्ध के उद्देश्य से आते–जाते रहे। इस महासम्मेलन के घोषणा पत्र के माध्यम से सभी सत्रो की विचारधाराओ को पिरोकर एक चिन्तन सामग्री का प्रस्तुतिकरण श्री विमल वधावन ने करने का प्रयास किया। यह घोषणा पत्र सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समापन समारोह के सत्र मे पढकर सुनाया।

३५ इस महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के अनुसार दिल्ली हरियाणा पजाब उत्तर प्रदेश और विशेष रूप से हरिद्वार के लगभग २०० से अधिक महानुभावो के एक व्यापक समूह ने इस समूचे महासम्मेलन मे अपना प्रत्यक्ष सहयोग दिया हे उन्होने इनके अतिरिक्त अन्य सभी अत्माओ का भी साधुवाद किया है जिनका बेशक अप्रत्यक्ष सहयोग मात्र ही इस आयोजन मे प्राप्त हुआ। इस आयोजन के लिए लगभग दो दर्जन विशेष समितियो का गठन किया गया था। आर्य तपस्वी श्री सुखदेव मध्य प्रदेश के श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव स्वामी सकल्पानन्द स्वामी शुभानन्द श्री अमन बजाज श्री इन्द्र कुमार मेहता आदि ने तो श्री विमल वधावन के साथ समारोह से लगभग १० दिन पूर्व ही २४ घण्टे के लिए स्वय को समर्पित कर दिया था। आयोजन मे किसी प्रकार की त्रुटि के लिए श्री विमल वधावन ने स्वय को जिम्मेवार ठहराते हुए क्षमा याचना की है।

विशिष्ट आर्य नेताओं का सम्मान

३६ इस महासम्मेलन के अवसर पर मॉरिशस से पधारे आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित का भी अभिनन्दन किया गया जो २२ सितम्बर २००२ को १०० वर्ष के हो जाएगे। इसी प्रकार स्वामी आत्मबोध जी तथा श्री रामनाथ सहगल का भी अभिनन्दन किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने इन महानुभावो जीवन के बारे म विस्तृत विचार किया।

राजनैतिक नेता

३७ इस महासम्मेलन मे ३ केन्द्रीय मन्त्री तथा चार सासदो की उपस्थिति भी आर्यजनो के लिए उत्साहवर्धक रही।

सत्रों की विस्तृत रिपोर्ट

३८ इस महासम्मेलन के विभिन्न सत्रो मे प्रस्तुत उदबोधनो तथा अन्य कार्यवाहियो की रोचक प्रस्तुति आगामी अक से प्रारम्भ करने का प्रयास किया जाएगा। ✡

श्री धर्मवीर खन्ना के युवा दामाद दिवंगत

जामनगर आर्यसमाज जामनगर (सौराष्ट्र) गुजरात के प्रधान एव टकारा ट्रस्ट के माननीय ट्रस्टी श्री धर्मवीर खन्ना के युवा दामाद का देहावसान हो गया।

सार्वदेशिक परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति और उनके परिवार तथा सगे सम्बन्धियो को धैर्य एव सान्त्वना प्रदान करे।

– **वेदव्रत शर्मा**, *मन्त्री*
सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) **फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री।** ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ३ १६ मई से २५ मई २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ वै० शु० ७

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य दक्षिण अफ्रीका में धर्म प्रचार अभियान पर

तीन सप्ताह की इस विदेश यात्रा में संगठनात्मक सुदृढ़ता के कई पहलुओं पर विचार होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तीन सप्ताह के धर्मप्रचार अभियान एव सगठनात्मक सुदृढता के उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर रवाना हो गए हैं। उन्होने मुम्बई से १६ मई को यह यात्रा प्रारम्भ की उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई है। यह विशेष यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के निमन्त्रण पर आयोजित की गई है।

सभा प्रधान जी अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दोरान आर्य बैनीवोलैण्ड होम (अनाथालय) का दौरा करेगे। अप्रवासी भारतीयो विशेष रूप से उद्यागपतियो और युवाओ की राष्ट्र निर्माण म भूमिका पर कई सगोष्ठियो का आयोजन किया गया है। एक विशेष सगोष्ठी मे तो दक्षिण अफ्रीका मे रहने वाले भारतीयो को पश्चिमी प्रभावो से मुक्त रहते हुए भारतीय सस्कृति के आधार पर जीवनयापन करने जेसे सिद्धान्तो पर विचार विमर्श होगा। एक अन्य सगोष्ठी मे महिलाओ की भूमिका पर भी चर्चा की जाएगी। कैप्टन आर्य इस यात्रा के दौरान डरबन तथा दक्षिण अफ्रीका की अन्य आर्य समाजो का भी दोरा करेगे।

आर्यसमाजो के अतिरिक्त साउथ अफ्रीका हिन्दू महासभा वेद धर्म सभा तथा कई अन्य सस्थाओ के पदाधिकारियो से भी मिलने का कार्यक्रम है सभा प्रधान जी दक्षिण अफ्रीका के कई राष्ट्रवादी नेताओ से भी भेट करेगे। दक्षिण अफ्रीका मे भारत के राजदूत से भी विशेष मुलाकात का कायक्रम निश्चित हे।

दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के वयोवृद्ध नेता एव महान प्रेरक डा० शिशुपाल राम भरोस जी तथा सभा के अन्य पदाधिकारी भी इस प्रचार अभियान मे कैप्टन देवरत्न आर्य के साथ रहेगे।

परोपकारी कार्य राष्ट्र समृद्धि का आधार हैं

आर्य समाज सरस्वती विहार का २४ वा वार्षिकोत्सव ६ मई से १२ मई तक वेद प्रचार सप्ताह के रूप मे मनाया गया जिसका समापन १२ मई को राष्ट्र समृद्धि सम्मेलन के रूप मे हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य अखिलेश्वर जी ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति के उप–प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार वेदानुरागी आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी तथा उत्तरी पश्चिमी वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री राजेन्द्र आनन्द ने इस सम्मेलन मे अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओ के उद्बोधन आर्यत्व के निर्माण के आधार पर सगठनात्मक एकता के माध्यम से राष्ट्र के सेवा कार्यों पर केन्द्रित थे।

श्री वधावन ने कहा कि किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति शून्यता से प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार राष्ट्र की समृद्धि भी व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने के सिद्धान्त पर टिकी है। राष्ट्र समृद्धि का मूलाधार है परोपकार की भावना। यह भावना यज्ञ का प्रतिफल हे। जिस व्यक्ति के दिल और दिमाग याज्ञिक बन चुके हो वह व्यक्ति समाज को देने वाला बन जाता हे लेने वाला नही। यज्ञ आर्यसमाज की एक मुख्य पहचान है। इसका अभिप्राय यही है कि परोपकार आर्यसमाज की पहचान है। जिस प्रकार व्यापारी अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले दिन ही सम्पूर्ण लक्ष्य प्राप्त नही कर लेता बल्कि कदम कदम आगे बढता हुआ वह अपने लक्ष्य तक पहुचता है। उसी प्रकार राष्ट्र की समृद्धि भी किसी एक या दो कार्यो से नही होती। परोपकारी भावना वाला व्यक्ति जब समाज मे बैठकर कोई कार्य करता है तो उसके कार्यो से समाज के अन्य व्यक्तियो को लाभ मिलता है। इस प्रक्रिया मे परोपकार के केन्द्र उस व्यक्ति के कार्यों का जैसे–जैसे विस्तार होता जाता है उसके परोपकार का दायरा बढता जाता है। जैसे–जैसे दायरा बढता है वैसे–वैसे उस परोपकार रूपी यज्ञ से लाभ उठाने वालो की सख्या मे भी वृद्धि होती जाती है। इस प्रक्रिया के चलते कुछ व्यक्ति अपने जीवन मे अपने कार्यों का लाभ १००० व्यक्तियो तक पहुचा पाते हैं कुछ अन्य व्यक्ति १०००० दस लाख या दस दस करोड व्यक्तियो के दायरो को अपना लाभ दे पाते हैं। और इस प्रचार के जितने भी अधिक से अधिक परोपकार के यज्ञ होते है उतना ही अधिक राष्ट्र समृद्ध होता हे।

उन्होने राष्ट्र समृद्धि की इस सैद्धान्तिक व्याख्या के बाद यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि इन परोपकारी यज्ञो के विपरीत यदि हम समाज से लेने के कार्य प्रारम्भ कर दे अर्थात स्वार्थी कार्यो मे लिप्त रहे तो उन सारे कार्यो का प्रभाव नकारात्मक होता है स्वार्थ की लडाई परस्पर द्वेष पाप अपराध और अन्य सभी विध्वसात्मक परिणाम स्वार्थी कार्यो से उत्पन्न होते हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता के लिए क्षेत्रीय अभियान चलाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सत्यार्थप्रकाश प्रतियोगिताए दो वर्गो मे पुन प्रारम्भ की गई हैं। इस निमित्त विस्तृत विज्ञापन का अवलोकन इसी अक के अन्तिम पृष्ठ पर करे।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने समूचे विश्व के आर्यजनो से निवेदन करते हुए कहा है कि प्रत्येक आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण सस्था को अपने–अपने क्षेत्रो मे निर्धारित आयु के प्रतियोगियो का पजीकरण इस कार्यक्रम मे करवाना चाहिए। अपने अपने क्षेत्रो मे सब आर्यजन इस आशय का अभियान चलाए कि युवक–युवतियो तथा प्रचारको से सम्पर्क करके यदि आवश्यक हो तो उन्हे सत्यार्थ प्रकाश भेट करे और उनका ५० रुपये शुल्क भी यदि आवश्यक हो तो अपनी ओर से दे।

साधारण जनता मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार का यह एक सुलभ माध्यम होगा। इस प्रतियोगिता के बहाने प्रतियोगी न केवल सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओ से अवगत होगा अपितु नए आर्यो का निर्माण भी सम्भव होगा।

–सम्पादक

महासम्मेलन नहीं, महायज्ञ था गुरुकुल शताब्दी समारोह

गुरुकुल शताब्दी अ तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता पर लोग हमे अपन बधाई सन्देश भेज रहे हैं। परन्तु वास्तव मे इन सभी आर्य पुरुषो और मातृशक्ति को बधाई के साथ साथ हार्दिक धन्यवाद भी देना चाहता हू, जिनकी उपस्थिती से इस कार्यक्रम की विशालता ने अपना रूप प्रस्तुत किया।

विगत २३ दिसम्बर २००१ का वह दिन इस सारे कार्यक्रम की योजना और आयोजन के शुभारम्भ का प्रथम दिन माना जाएगा जिस दिन गुरुकुल कागडी में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस आयोजित किया गया उसी दिन सायकाल दिल्ली पजाब और हरियाणा सभा के कुछ अधिकारियो ने परस्पर मिल बैठकर इस विचार का समर्थन किया कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के १०० वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मे शताब्दी समारोह का आयोजन एक विशाल आर्य महासम्मेलन के रूप मे किया जाए। इस विचार को भी सबने स्वीकार किया कि यह आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित हो जिसमे देश विदेश के आर्यजनो को इसमे आमन्त्रित किया जाए। सिद्धान्तत इन विचारो को मिले समर्थन से प्रेरित होकर देर रात तक जागकर इस शताब्दी महासम्मेलन की एक विस्तृत रूप रेखा और प्रथम से अन्तिम चरण की सारी योजना बना दी। २४ दिसम्बर को हम दिल्ली आ गए। २५ दिसम्बर को दिल्ली मे भी प्रतिवर्ष की भाति विशाल स्तर पर बलिदान दिवस आयोजित हुआ जिसका नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने किया। २६ दिसम्बर को सभा प्रधान जी के समक्ष शताब्दी महासम्मेलन की सारी योजना रखी गई तो उन्होने तत्काल इस पर कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति दे दी। बस फिर क्या था पीछे मुडकर देखने की कमी न तो आवश्यकता महसूस हुई और न ही इसका अवकाश था। समय बहुत कम था फिर भी योजनाबद्ध और लक्ष्यबद्ध करके एक एक काम को करते चल पडे। कोई काम किसी की जिम्मेदारी पर तो कोई किसी और पर। आर्यजनो ने भी खूब साथ निभाया दिल्ली पजाब हरियाणा यू०पी० और उत्तराचल के आर्यजनो के अतिरिक्त गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शिक्षक और शिक्षकेत्तर महानुभावो ने प्रारम्भिक काल मे अवश्य ही कुछ सकोच व्यक्त किया परन्तु जब उन्हे यह विश्वास हो गया कि शताब्दी का यह अवसर एक ऐतिहासिक रूप मे सारे विश्व के सामने स्थापित होना चाहिए और इस महासम्मेलन के माध्यम से गुरुकुल कागडी एक बार फिर हजारो हजार आर्यजनो की उपस्थिति से गौरवान्वित होगा तो गुरुकुल कागडी का प्रत्येक व्यक्ति अपना सहयोग देने के लिए इस प्रकार सामने आया जैसे किसी विशाल प्रतियोगिता का आयोजन हो। वास्तव मे यह महासम्मेलन एक महायज्ञ के रूप मे परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से आयाजित एक प्रतियोगिता ही थी।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी और कुलसचिव डॉ० महावीर जी के नेतृत्व मे डॉ० भारतभूषण डॉ० रूप किशोर शास्त्री डॉ० कश्मीर सिह श्री करतार सिह डॉ० श्रवण कुमार शर्मा डॉ० आर० जी० कौशिक डॉ० श्रीकृष्ण डॉ० कौशल कुमार श्री कौस्तुभ पाण्डे डॉ० दीनानाथ डॉ० जयदेव वेदालकार डॉ० जगदीश विद्यालकार श्री बलजीत सिह श्री कमल कान्त बुधकर श्री प्रदीप जोशी श्री आर०डी० शर्मा श्री डॉ० ईश्वर भारद्वाज डॉ० राजकुमार रावत डॉ० बी०डी० जोशी डॉ० यू०एस० विष्ट आदि महानुभावो के नेतृत्व मे इनके सम्बन्धित विभागो के दर्जनो अन्य महानुभावो ने मिलकर इस महासम्मेलन के प्रत्येक कठिन से कठिन कार्य को भी सुगम बना दिया। अनुमानत १०० से अधिक गुरुकुल के इन महानुभावो के अतिरिक्त हरिद्वार के कई अन्य आर्यजनो ने भी हर सभव सहयोग हर समय देने मे तत्परता दिखाई। आर्यनेता श्री देवराज वानप्रस्थाश्रम के प्रधान डॉ० सुभाष एव मन्त्री श्री यशवन्त मुनि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के डॉ० हरिगोपाल श्री नरेश बब्बर एडवोकेट श्री अतुल मगन श्रीमती मनुहारी पाठक श्री राजकुमार चौहान तथा वैदिक मोहन आश्रम के श्री रामस्नेही श्री यशवीर एव श्री दिनेश आदि महानुभावो की नेतृत्व क्षमता और अन्य योग्यताओ का पूरा लाभ इस महासम्मेलन को प्राप्त हुआ।

दिल्ली पजाब हरियाणा और उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय सभाओ ने जहा इस आयोजन मे अपना हर सम्भव सहयोग दिया वहीं देश विदेश की समस्त सभाओ और आर्य समाजों ने सैकडो हजारो व्यक्तियों को समूहो के रूप मे इस महासम्मेलन मे जाने के लिए प्रेरित ही नहीं किया अपितु समस्त यात्रियो के हरिद्वार पहुचने के प्रबन्ध मे भी भागीदारी की। देश की कोई भी प्रान्तीय सभा ऐसी नहीं थी जिसने न्यून या अधिक आर्थिक आहुति इस महासम्मेलन मे न प्रदान की हो।

बगाल सभा के प्रधान श्री मोहन लाल जी एव मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने तो लाखो रुपयो से सहयोग के अतिरिक्त बहुत बडी सख्या मे आर्यजनो के हरिद्वार पहुचने का प्रबन्ध किया। इसी प्रकार आसाम बिहार उडीसा तमिलनाडु कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र गुजरात मुम्बई मध्य विदर्भ मध्य प्रदेश राजस्थान हिमाचल प्रदेश और जम्मू कशमीर आदि सभी प्रान्तो से आगन्तुको का ताता बधा रहा।

इस आयोजन मे पजाब क आर्यजनो ने भी इस बार श्री हरबश लाल शर्मा श्री सुदर्शन शर्मा श्री देवेंन्द्र शर्मा श्री स्वतन्त्र कुमार और श्री प्रेम मारद्वाज आदि के नेतृत्व मे इस महासम्मेलन के लिए अप्रत्याशित योगदान दिया।

हरियाणा सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी के नेतृत्व ने भी हर सम्भव योगदान इस महासम्मेलन को प्रदान किया।

दिल्ली से हरिद्वार के बीच गाजियाबाद मुरादनगर मोदीनगर मेरठ मुजफ्फर नगर और सहारनपुरके आर्यनेताओ ने तो जब–जब भी आवश्यकता पडी और विशेष रूप से पजाब और दिल्ली से चलने वाली यात्राओ का स्वागत करके अपनी विशाल हृदयता का परिचय दिया।

दिल्ली के आर्यजनो मे सर्वश्री जगदीश आर्य महाशय धर्मपाल मुशीराम सेठी वैद्य इन्द्र देव सोमदत्त महाजन राजीव भाटिया रवि बहल पतराम त्यागी पुरुषोत्तम लाल गुप्ता बलदेव राज तथा विनय आर्य आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

दिल्ली के आर्यजनो माताओ और आर्यवीरो ने तो इस महासम्मेलन रूपी महायज्ञ मे अपनी आहुतिया एक याज्ञिक की तरह प्रदान कीं।

आयोजन के लम्बे चौडे कार्यक्रम पर जब एक दृष्टि वापस मुडकर डालता हू तो कुछ खटटी–मीठी या कडवी यादे भी मस्तिष्क मे उभरने लगती हैं। यज्ञ मे कभी किसी का हाथ जल जाता है तो किसी की अगुली मे समिधा के एक कोने से एक काटा चुभ जाता है। परन्तु फिर भी धन्य हैं वे सब आत्माए जो यज्ञ के दौरान आने वाले इन छोटे–मोटे कष्टो को जिन्दगी मे कभी स्मरण नहीं रखते।

यज्ञ मे आहुति देने वाले यजमान का भी उतना ही महत्व है जितना गोदाम से समिधा लाकर देने वाले सेवक का और इस यज्ञ मे सयोजक के रूप मे मैंने सदैव अपने आप को केवल मात्र एक महत्वपूर्ण सेवक ही समझा है। इससे अधिक कुछ भी नहीं। जिन उद्देश्यो और सकल्पो को लेकर यह महायज्ञ आयोजित हुआ था वे सकल्प बहुत से आर्यजनो के मन मे स्थापित हो चुके हैं। आगे इन सकल्पो के क्रियान्वयन का कार्य चलता रहेगा। ईश्वर हमे और समस्त आर्यजनो को सामर्थ्य प्रदान करे कि गुरुकुलो की सख्या वृद्धि वाले सकल्प को हम यथा सम्भव पूरा कर पाए। शताब्दी महासम्मेलन की सफलता केवल इस आयोजन से ही सिद्ध नहीं होगी बल्कि आने वाला भविष्य बताएगा कि यह सकल्प कितने पूर्ण हुए।

– विमल वधावन

पं० बटेश्वर दयाल शर्मा की प्रथम पुण्य तिथि

आर्यसमाज दीवान हाल के पूर्व प्रधान स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय पडित बटेश्वरदयाल शर्मा का पहला पुण्यस्मृति दिवस दिनाक २ जून २००२ (रविवार) को प्रात ८ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल मे मनाया जाएगा। सभी से प्रार्थना है कि समय पर पधारकर श्रद्धासुमन अर्पित करे।

– डॉ० मेजर रविकान्त, मन्त्री

पृष्ठ १ का शेष भाग

परोपकारी कार्य ......

समाज मे बढती अपराधी वृत्ति की ओर सकेत करते हुए श्री वधावन ने कहा कि यह परोपकारी कार्यो के अभाव का ही फल है। जब हम आर्यसमाज को सबसे बडी परोपकारी सस्था मानते है और स्वय को परोपकारी मानव मानते है तो समाज मे अपराधो मे वृद्धि का दायित्व भी हमे स्वीकार करना पडेगा। इस पाप की समाप्ति का एक ही उपाय है कि हम गरीब और पिछडे लोगो मे जा–जाकर अपने परोपकारी कार्यो के द्वारा उन निर्धनो, उन अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित व्यक्तियों को पाप और अपराध से मुक्त करें।

राष्ट्र समृद्धि का कोई भौगोलिक दायरा नहीं हो सकता क्योकि हमारा राष्ट्र सस्कृति के सिद्धान्त पर स्थापित है। यह सस्कृति वेद और आर्यत्व की सस्कृति है। इसी सस्कृति की सारे विश्व मे समृद्धि का लक्ष्य हमारे लिए महर्षि दयानन्द जी ने स्थापित किया था। जिसे एक नारे के रूप मे हम क्षण प्रतिक्षण स्मरण रखते है **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** लेकिन यह निश्चित है कि कृण्वन्तो स्वआर्यम के बिना उस लक्ष्य तक पहुचना भी असम्भव काम है।

राष्ट्र स्मृद्धि सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने भी आत्मा की पवित्रता और शुद्धता को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताया। उन्होने कहा कि मुझे यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता होती है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अधिकारी इस सिद्धान्त की स्थापना के लिए अत्यधिक प्रयासरत नजर आते हैं। उन्होंने गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन की सफलता का आधार भी इन्हीं भावनाओ को बताया।

इस कार्यक्रम का सचालन आर्य समाज सरस्वती विहार के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य ने किया। श्रीमती सुदेश आर्या ने विगत एक सप्ताह मे भजनों के माध्यम से आर्यजनता को धर्म की प्रेरणाए दीं। प्रतिदिन आचार्य अखिलेश्वर जी के वेदप्रवचन तथा ८ मई को आयोजित आर्य महिला सम्मेलन और ११ मई को आयोजित बच्चो की भाषण प्रतियोगिताए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

गुरुभूमि, पुण्य भूमि को अब फिर से क्रान्ति भूमि बनाओ

- नरेन्द्र मोहन

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के विशेष सवाददाता द्वारा)

गुरुकुल शताब्दी अ तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन बेशक चार दिनो के लिए आयोजित था परन्तु इसकी तैयारी मे लगभग पूरे चार माह का समय लगा। जिस कुशलता कर्मठता और तन्मयता के साथ सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने सैकडो अन्य नेताओ और कार्यकर्ताओ के साथ इस महासम्मेलन के आयोजन की योजनाए तैयार की उनके क्रियान्वयन के लिए विभिन्न योग्यताओ वाले महानुभावो को नियुक्त किया आर्य जनो की यथा योग्य सेवाये ली गई उसी से महासम्मेलन की सफलता तो पहले से ही झलकने लगी थी।

दिल्ली और हरिद्वार के अतिरिक्त अन्य भी कई स्थानो पर बेठके आयोजित करके कभी सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी ता कभी सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी और इनके साथ महासम्मेलन क सयोजक श्री विमल वधावन महासम्मेलन की योजनाओ कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते और आर्यजनो से यथासम्भव सहयोग की कामना करते।

इन दर्जनो बैठको से तथा सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रचार स देश विदेश के आर्यजनो मे बडी बेसब्री से इस ऐतिहासिक समारोह को देखने और सुनने की उत्कठ अभिलाषा जागृत हो गई थी। देश के प्रत्येक प्रान्त से हजारो लोग टोलिया बनाकर प्रचार के इस महायज्ञ मे भाग लेने के लिए तैयार हो चुके थे। महासम्मेलन २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे आयोजित होना था परन्तु आर्यजन २० – २१ तारीख को ही गुरुकुल कागडी पहुचना प्रारम्भ हो गये थे जबकि अभी तक आवास की व्यवस्था को अन्तिम रूप भी नहीं दिया गया था।

भोजन व्यवस्था २४ अप्रैल को सायकाल से प्रारम्भ होनी थी परन्तु आर्यजनो के पधारने की गति और उत्साह को देखते हुए महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने तुरन्त भोजन व्यवस्था के प्रबन्धक उत्तर प्रदेश सभा के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द से विचार विमर्श करके भोजन व्यवस्था २३ अप्रैल को दोपहर से ही प्रारम्भ करा दी। इससे पूर्व भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल के ब्रह्मचर्य आश्रम मे रखा जाता था।

२४ अप्रैल साय लगभग ५ बजे का समय था कि महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन कुलसचिव डॉ० महावीर तथा कुछ अन्य आर्य नेता गुरुकुल कागडी के दयानन्द द्वार पर आकर खडे हो गए। उन्हे प्रतीक्षा थी प्रथम दिवस पर आयोजित होने वाले दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन की जो कुछ ही क्षणो म पहुचने वाले थे। मोबाइल सम्पर्क से प्रतिक्षण की जानकारी प्राप्त हो रही थी। इस प्रतीक्षा के दौरान मन प्रफुल्लित हा उठा जब दिल्ली से प्रात काल ७ बजे से चले हुए यात्री मार्ग मे गाजियाबाद मुरादनगर मोदीनगर मेरठ और मुजफ्फरनगर अपना स्वागत कराते ओर प्रचार करते हुए अब हरिद्वार पहुचना प्रारम्भ हो गए। लगभग इसी समय जालन्धर से चलने वाले यात्री भी इसी मार्ग पर पहुच रहे थे। वे भी प्रात लगभग ७ बजे जालन्धर से निकले थे। जिनका स्वागत अम्बाला यमुनानगर ओर सहारनपुर मे किया गया।

दूर से काले रग की एक लम्बी गाडी आती नजर आई अनुमान ठीक निकला इसी मे श्री नरेन्द्र मोहन जी थे। सडक पर ही मालाओ द्वारा स्वागत करने क बाद मुख्य अतिथि को सीनेट हाल ले जाया गया जो इस महासम्मेलन के मुख्य कार्यालय के रूप मे विगत ३–४ महीने से गतिविधियो का केन्द्र बना था।

दूसरी तरफ साय लगभग ७ बज आचार्य रामदेव द्वार पर दिल्ली और पजाव के यात्रियो का स्वागत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी कर रहे थे।

कार्यकर्ताओ को इस पहली रात मुश्किल से दो तीन घण्टे का आराम मिला होगा कि घडी की सुइया यह सूचना दे रही थी कि वह समय आ पहुचा हे जिसकी कई महीनो से प्रतीक्षा थी। महासम्मलन के कार्यालय सीनेट हाल मे भी विगत कई महीनो से प्रतिदिन प्रात ५ बजे यज्ञ होता चला आ रहा था। आज का दिन भी उसी प्रकार प्रारम्भ हुआ। महासम्मेलन के सयोजक ने इस कार्यालय यज्ञ को सम्पन्न किया और कार्यालय मे सम्पर्क करने वाले महानुभावो की सेवा मे सभा के सभी अधिकारी जुट जाते थे।

प्रात ७ ३० बजे से यज्ञ का समय निर्धारित था। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी यज्ञ के ब्रह्मा थे। गुरुकुल कागडी के ब्रह्मचारी और कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणिया वेदपाठी के रूप मे आमने सामने मचो पर विराजमान थे। नियत समय से कुछ क्षणो पश्चात यज्ञ प्रारम्भ हो गया यज्ञ के सयोजक डा० भारत भूषण जी ब्रह्मा के एक कर्तव्यनिष्ठ सहयोगी के रूप मे अपनी भूमिका कुशलता पूर्वक निभा रहे थे। इस यज्ञ के लिए २५ यज्ञकुण्ड सजाये गए थे। यज्ञशाला अपने प्राचीन रूप के बावजूद भी आर्यजना के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी। आचार्य वेद प्रकाश जी ने बीच बीच मे यज्ञ और इसकी प्रक्रियाओ पर अपना उदबाधन जारी रखा। इस यज्ञ मे आयसमाज के कई कमठ आर्य नेता अपनी पत्नियो सहित दिखाइ दे रहे थे। कई आर्यनेता अकेले भी बैठे थे। आर्यजनो का उत्साह समुद्र की लहरो की तरह नजर आ रहा था। यज्ञ समाप्त होने पर कुछ हलचल प्रारम्भ हुई लाग अपनी कमर और टागे सीधी करने लगे माइक अब यमुना नगर से पधारे श्री आमप्रकाश वमा जी को दे दिया गया जिन्हाने अपनी पूर्व परिचित हास्य शैली मे इश्वर भक्ति ओर अवैदिक मत के खण्डन और वदिक मत क मण्डन को लेकर आर्यजनो की बुद्धि को नाश्ता देना प्रारम्भ कर दिया।

यज्ञशाला क पीछ ही भोजनालय का प्रबन्ध किया गया था जा अब कुछ हद तक गलत निर्णय लगने लगा। वहा स सचमुच नाश्ता प्राप्त होने की सूचनाए मिल रही थी। सेकडो आदमी उठकर भाजनालय मे जाने लगे यज्ञवेदी क चारो ओर खडे महानुभावो को उनका जाना अच्छा लगा क्योकि उन्हे बेठने का स्थान मिल रहा था। व्यवस्था और अव्यवस्था दोनो ही कायक्रम को सफल बनाने मे लगी हुई थी।

वर्मा जी के भजनोपदेश क बाद पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी ने प्रवचन प्रारम्भ करना स्वीकार किया। उनके सुरील स्वर को सुनते ही आर्यजनता की आध्यात्मिक लहरे हिलोरे मारने लगी। पूज्य स्वामी जी की प्रवचन शैली का विश्वविख्यात आर्य जनो ने एकाग्रचित्त होकर लाभ उठाया।

प्रवचन की समाप्ति पर कुछ लोग स्टालो की ओर चल दिये कुल ६० स्टाल लगाये गये थे। जो मुख्यत एक पुस्तक मेले की तरह लग रहे थे। यह आर्यसमाज की पुरानी पहचान है।

उधर मुख्य पण्डाल के बाहर लगभग ६ बजकर ५० मिनट पर महासम्मेलन सयोजक श्री विमल वधावन की घोषणा प्रारम्भ हो गई जहा ध्वजारोहण होना निर्धारित था। चक्राकार मे कुछ पोल बाधकर रस्सिया का एक घेरा बनाया गया था। अग्रजी के एल अक्षर की तरह उस चक्र से दो सडक निकल रही थी एक सडक का मुह यज्ञवेदी की तरफ था तो दूसरी सडक का मूह सीधा मच की तरफ था।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० दवरत्न आर्य सभामन्त्री श्री वदव्रत शमा सभा क उप प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा श्री यशपाल श्री आनन्द कुमार तथा उपमन्त्री श्री दवेन्द्र शर्मा आदि को उस वृत मे आमन्त्रित किया गया। वृत के अन्दर कुछ चुने हुए लागो को ही आने की अनुमति दी जा रही थी। ध्वजारोहण के लिए दा पोल लगाये गए थे। जिसक विषय म लोग आपस म चर्चा कर रहे थे कि दो ध्वजाराहण पोल क्यो लगाये गय है। इतने मे सयोजक जी न दोनो स्तम्भो की ऐतिहासिकता को बताते हुए कहा कि विगत १० वर्षो क इतिहास मे आज पहला ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा जिसमे ओ३म ध्वज को सभा प्रधान कै० दवरत्न आर्य फहरायेगे और कुल पताका को कुलाधिपति श्री हरवशलाल शर्मा फहरायेगे जो इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष भी ह

स्वागताध्यक्ष जी दीक्षान्त के मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन परिदृष्टा श्री श्रद्धानन्द तथा कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी कुल सचिव डा० महावीर जी लाल रग क गाउन पहन कर इस कायक्रम के लिए उपस्थित हुए। दूसरी तरफ सभा क अधिकारियो ने कै० दरत्न आर्य की तरह गायत्री मन्त्रा स सुसज्जित अग वस्त्र धारण किए हुए थ।

स्थल के पीछे गुरुकुल कागडी का ब्रह्मचर्य आश्रम था जिसकी छत पर कइ हजार लोग चढकर अपनी आखो से इस दोहरे ध्वजारोहण की ऐतिहासिकता को देखना चाहते थ। दर्जनो आर्यजन अपने कैमर लेकर इस एतिहासिक क्षण का केमरे मे केद करना चाहते थे। उन सबको वृत के भीतर आने की अनुमति दी जा रही थी। सवप्रथम कै० दवरत्न आय को ओ३म ध्वज फहराने के लिए आमन्त्रित किया गया उनक साथ थे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा। गुरुकुल की धरती पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने जब ओ३म ध्वज फहराया तो समूचा वायुमण्डल **जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय** के उदघोष से गूज उठा। ध्वजारोहण के साथ ही मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाडा स पधारी छात्राओ ने ध्वजगान प्रारम्भ कर दिया जिनके बारे मे सयोजक जी ने पहले ही सूचित कर दिया था कि इस विद्यालय मे हिन्दू और मुसलमान छात्राए बिना भेद भाव के शिक्षा ग्रहण करती हे।

जारी पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

गुरुभूमि, पुण्य भूमि को अब फिर से क्रान्ति भूमि बनाओ

आज भी एक सयुक्त दल इन कन्याओ का उपस्थित था जिनके ध्वजगान के बाद कुल पताका फहरान के लिए कुलाधिपति श्री हरवश्लाल शर्मा को आमन्त्रित किया गया उनके साथ कुलपति कुलसचिव तथा मुख्य सुरक्षाधिकारी श्री करतार सिह आगे बढे। इस दूसरे ध्वजारोहण के साथ फिर से स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय–जयकार स वातावरण गूज उठा।

इस ध्वजारोहण के बाद भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा ध्वजगान प्रस्तुत हुआ।

ध्वजारोहण के इस कार्यक्रम म लगभग २० मिनट लगे और शोभायात्रा के रूप म सर्वप्रथम महासम्मेलन के अध्यक्ष के० देवरत्न आर्य तथा स्वागताध्यक्ष श्री हरवश लाल शर्मा तथा उनके पीछे अन्य महानुभाव मच की ओर अग्रसर हुए।

कुलाधिपति जी की आज्ञा से कुलसचिव डॉ० महावीर जी ने दीक्षान्त समारोह प्रारम्भ किया ओर सर्वप्रथम कुलवन्दना प्रस्तुत की गई।

"जय जय जननी कुल देवी,
तुझको बार बार प्रणाम है।"

कुछ विशिष्ट स्नातको के नाम पुकारे जान लग उन्हे मच पर आमन्त्रित करके उन्हे डिग्रिया प्रदान की जाने लगी। शेष नव स्नातको को गुरुकुल के अधिकारी नीचे कुर्सियो पर ही यह उपाधिया प्रदान करने लग। सभी नव स्नातका न लाल और पीले रग के गाउन धारण कर रखे थ। इतन म मच क निकट कुछ ऐसे छात्र जो या तो उत्तीर्ण नही हो सके थ या उन्हे किसी अन्य कारणो से उकसाया गया था वे नारे लगाते हुए दिखाई दिये। सुरक्षाधिकारी उन्हे नियन्त्रित करने मे जुट गए। षडयन्त्रकारी लोगो द्वारा शरारत का यह प्रयास विफल हो गया। मच पर तथा नीचे डिग्रिया प्रदान करने के बाद कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी ने नव स्नातको को आशीर्वाद दिया तथा निम्न प्रतिज्ञाये करवाई

१ क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि इस विश्वविद्यालय मे जो सत्य विद्या तुमने प्राप्त की है, उसका मन, वचन और कर्म द्वारा पालन करने मे सदैव तत्पर रहोगे ?

सभी नव स्नातको ने सिर झुकाकर स्वीकृति के रूप मे इसका उत्तर दिया।

२ क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि जीवन मे कोई ऐसा कार्य न करोगे जो इस विश्वविद्यालय के नाम को कलकित करे ?

३ क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि विद्या के प्रसार, समाज सेवा और प्राणीमात्र की सेवा मे तत्पर रहोगे और किसी भी प्रलोभन के सामने इन प्रतिज्ञाओ को नहीं भूलोगे ?

प्रत्येक प्रतिज्ञा की स्वीकृति के बाद आचार्य वेद प्रकाश जी ने नव स्नातको को कहा कि इस विशाल महासम्मेलन के अवसर पर आर्य जनता के बीच मे आपने यह प्रतिज्ञा की है इसलिए तुम्हे इसका पालन अवश्य करना होगा। उन्होने नव स्नातको को इस बात के लिए भी चेतावनी दी कि इन प्रतिज्ञाओ को तोडने का प्रकरण भविष्य म कभी सामने आया तो इन प्रमाणपत्रो को वापस भी लौटाया जा सकता है।

आचार्य वेद प्रकाश जी ने नव स्नातको को सदा सत्य बोलने धर्म की रक्षा करने और किसी भी शुभ कार्य मे प्रमाद न करने स्वाध्याय शील बनकर प्रवचन करने अतिथियो और देवो के पूजक तथा श्रेष्ठ पुरुषो का आदर करने श्रद्धा से चाहे अश्रद्धा से शोभा स अथवा लज्जा से दान अवश्य करने की प्रेरणाए दी।

अपने आचरण व्यवहार से कोई ऐसा कार्य न करे जिससे इस गुरुकुल के नाम पर धब्बा लगे बल्कि सदैव गुरुकुल का नाम रोशन करने का प्रयास करते रहे।

इस बीच महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानमन्त्री कार्यालय के राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल मच पर पधारे तथा उन्होने प्रधानमन्त्री

माननीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का सन्देश

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि गुरूकुल कागड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) दिनाक 25 से 28 अप्रैल 2002 तक अपना शताब्दी समारोह मना रहा है।

स्वामी श्रद्धानद जी द्वारा स्थापित गुरूकुल कागड़ी विश्वविद्यालय का विशेष स्थान है और यह भारत के प्राचीनतम् शिक्षा सस्थानो मे से एक है। अतीत से प्रेरित होकर आज की बदलती हुई परिस्थितयो मे भी यह विश्वविद्यालय छात्र-छात्राओं को समग्र ज्ञान प्रदान करता आया है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य हमारे युवाओं के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है जो हमारे महान देश की सामाजिक सास्कृतिक तथा आर्थिक समृद्धि हेतु महत्वपूर्ण है। मै आशा करता हू कि आने वाले समय मे यह विश्वविद्यालय हमारी युवा पीढी को उसकी समृद्ध सास्कृतिक परम्पराओं पर समुचित बल देते हुए आधुनिक शिक्षा प्रदान करने मे सक्षम होगा।

मै इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह की सफलता की कामना करता हू तथा इसके आयोजको को अपनी हार्दिक शुभकामनाए देता हू।

(अटल बिहारी वाजपेयी)

नई दिल्ली
24 अप्रैल 2002

जी द्वारा हस्ताक्षरित सदेश कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी को प्रदान किया। यह सदेश मच से पढकर सुनाया गया।

इसके पश्चात प्रभात आश्रम मेरठ से पधारे स्वामी विवेकानन्द जी ने नव स्नातको को आशीर्वाद दिया।

स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने नवस्नातको को आशीर्वाद देते हुए अपने उदबोधन मे कहा कि आज बडे ही सौभाग्य का दिन है कभी जब ये सख्या एक से प्रारम्भ हुई थी आज वह शतक पूरा हुआ। जिन्होने पहले उपाधि धारण की जितना गौरवान्वित वे समझते थे मैं समझता हू कि जिन्होने आज उपाधि धारण की है उनका भी कम महत्व नहीं है। बीच–बीच मे लोग उपाधिया लेते रहे है इस विश्वविद्यालय ने जिस आस्था के साथ विभिन्न विषयों मे छात्रों को प्रमाणपत्र दिया है जो प्रमाणित करता है कि अमुक हमारा छात्र इस विषय मे योग्यता रखता है और यह प्रमाणपत्र विश्व मे झूठा सिद्ध न हो अर्थात आप यदि वेद से एम०ए० है तो वेद के बारे मे बातचीत करने वाला व्यक्ति यह अनुभव करे कि गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय ने जो प्रमाणपत्र दिया है यह छात्र उससे कहीं अधिक योग्य है। इस प्रकार की आस्था और विश्वास हमारे गुरुकुल के कुलपति कुलाधिपति और कुलसचिव ने आप पर प्रकट किया है। मै परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि उनकी आस्था उनका विश्वास कभी कम न हो। परमात्मा से पुन प्रार्थना करता हू कि जितने स्नातको का आज उपाधि दे गई है उनके अन्दर ये क्षमता आए कि सारे विश्व मे फैल कर वे अपनी योग्यता प्रमाणित कराए।

उन्होने नव स्नातको को कहा कि जब कभी भी किसी विषय पर शका प्रकट हो तब विद्वानो के व्यवहार की तरफ देखना चाहिए। इस सिद्धान्त को सदैव अपने मन मे धारण करना चाहिए। जैसा व्यवहार हम अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार हम दूसरो के साथ करे।

गुरुकुल कागडी के पूर्व स्नातक पूर्व आचार्य एव पूर्व कुलपति तथा दयानन्द पीठ चण्डीगढ के प्रथम अध्यक्ष डॉ० रामनाथ वेदालकार जी ने नव स्नातको को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह दीक्षान्त शताब्दी के महासम्मेलन के साथ मनाया जा रहा है। अत यह आपका सौभाग्य है।

पुराने स्नातको की ओर से नव स्नातको को आशीर्वाद देने की इस प्राचीन परम्परा का निर्वहन करत हुए उन्होने कहा कि जीवन मे जब कभी भी कठिनाई आये तब उसे हमारे समक्ष प्रस्तुत करे।

श्री नरेन्द्र मोहन को विद्यामार्तण्ड उपाधि से विभूषित किया गया जिसमे समस्त अधिकारी एव मच पर उपस्थित सभी आर्यजन उनके साथ उपस्थित हुए।

पदमश्री सत्यव्रत शास्त्री जिनको सारा विश्व नमन करता है अनेक महाकाव्यो के प्रणेता जिनके महाकाव्यो पर शोध करके अनेक पी०एच०डी० की उपाधिया प्राप्त कर चुके है उन्हे भी विद्यामार्तण्ड उपाधि से अलकृत किया गया।

इस अवसर पर आर्य जगत क गौरव सस्कृत के महामनीषी आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्रा को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि विद्यामार्तण्ड उपाधि से अलकृत किया गया। श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के परिवार के सारे सदस्य सस्कृत ही बोलते है।

गुरुकुल कागडी के यशस्वी आचार्य आचार्य रामप्रसाद वेदालकार न्यास की आर से प्रति वर्ष एक वैदिक विद्वान को जिन्होने आर्यसमाज और वेद के प्रचार मे जीवन लगाया हो का सम्मान किया जाता है। यह सम्मान आचार्य रामप्रसाद जी वदालकार जी के बाल सखा आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री जिन्होने सारा जीवन वेद प्रचार मे लगाया है उन्हे आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज आर्य ने मच पर आकर पाच हजार एक रुपये की छोटी सी राशि से सम्मानित किया।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी ने दूर दूर से इस पवित्र धरती पर स्वामी श्रद्धानन्द के स्मारक के दर्शन करने के लिए उनकी इस यज्ञ स्थली मे अहुति प्रदान करने के लिए पधारे आर्यजनो का स्वागत करते हुए कहा कि आज एक अदभुत दृश्य है सौ वर्ष पूर्ण कर रहा है यह विश्वविद्यालय। जिस समय गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कर कमलो में इसकी स्थापना को समर्पित किया। लोगो ने दिल खोलकर गुरुकुल की सहायता करने के लिए दान दिया उन्होंने कहा कि यहा की धरती इस धरती पर बना हुआ एक एक भवन उस भवन की एक एक ईट तथा स्वामी जी के उन बलिदानो का और पजाब की समग्र धरती के उन दानियो का गुणगान कर रही है।

जारी पृष्ठ ६ पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से

पृष्ठ ४ का शेष

गुरुभूमि, पुण्य भूमि को अब फिर से क्रान्ति भूमि बनाओ

जिस समय यह गुरुकुल स्थापित हुआ उस समय इसके साथ भौतिक और आध्यात्मिक विद्या का सगम गुरुकुलीय परम्परा मे मानव को प्राप्त हुआ। उन्हे जीवन की प्रत्येक स्थिति मे अडिग रहने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ।

जिस समय विज्ञान की पुस्तको का हिन्दी मे रूपान्तरण होना कठिन था तब इसी विश्वविद्यलाय के उपाध्यायो ने हिन्दी मे उसका अनुवाद किया। पत्रकारिता के क्षेत्र मे जहा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अग्रणी हाकर कार्य किया था वहीं इन्द्र जी ओर गुरुकुल के अन्य स्नातको ने कीर्तिमान स्थापित किया। अध्यापन क्षेत्र मे और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर देश के लिए समर्पित स्नातको ने इस सस्था को भरपूर योगदान दिया। सस्कृत के क्षेत्र मे यहा के महामनीषियो ने जो कार्य किए वह चिरस्मरणीय रहेगे। वह चिरन्तन ज्ञान धारा धीरे–धीरे बढती रही। उन्होने बताया १९६२ मे इस विश्वविद्यालय को मानद उपाधि मान्यता प्राप्त हुई। सूक्ष्म रूप मे हम कह सकते है कि वेद और कला महाविद्यालय मे ६ विमाग कार्य कर रहे है जिनको दो सकायो मे प्राच्य विद्या और मानविकी मे विभक्त किया गया है। विज्ञान प्रौद्योगिकी सकाय भौतिक विज्ञान सकाय। रसायन विज्ञान सकाय इस प्रकार तीन सकायो मे विभक्त किया गया है। जिस समग यह अवधारणा बनी कि इस विश्वविद्यालय मे प्रबन्ध विद्या का भी आविर्भाव हो उसी समय प्रबन्धन सकाय की स्थापना हुई। जब आवश्यकता हुई कि अभियान्त्रिकी महाविद्यालय की स्थापना हो तो उसकी स्थापना की गई। हम यह कह सकते है कि प्राचीन से प्राचीन और नवीन से नवीन अध्ययन-अध्यापन इस विश्वविद्यालय मे हो रहा है। विश्वविद्यालय मे जो पाठयक्रम चलाए जाते हैं उसकी विशेषता यह है कि प्रत्येक ज्ञान–विज्ञान को वैदिक दृष्टि से देखना आरम्भ किया जाता है जैसा कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमो मे यह स्पष्ट किया कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है विज्ञान भी सत्य है अत विज्ञान की धारा जहा से प्रारम्भ होती है। उन वेदो का ईक्षण किया जाए उसका निरीक्षण किया जाए। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि माइक्रो बायलोजी जीवविज्ञान जैसे सूक्ष्म विज्ञान का पठन-पाठन कराया जाता है। गणित भी इस विश्वविद्यालय मे पढाया जाता है। बीजगणित हो या रेखागणित चाहे अकगणित हो तीनो प्रकार कि ही गणित विधियों को वैदिक मन्त्रों के आधार पर पढाया जाता है। इसी प्रकार से रसायन शास्त्र पढाया जाता है यहा पर वैदिक रसायन शास्त्र का पठन पाठन कराया जाता है। यह एक मात्र सस्था है जो यह उद्घोष भी करती है कि वेदो मे सारी सत्य विद्या निदित है और वेदो मे ईक्षण भी करती है और शोध भी करती है शोध को प्रकाशित भी करती है। मैं समझता हू कि आर्यजगत् के पास महर्षि दयानन्द की ख्याति को आगे बढाने का इस प्रकार से प्रकरण चलता है और उदघोष करके यह कहता है कि वेदो मे समस्त विद्याए है। मन्त्रो के माध्यम से ओर प्रमाणो से यह सिद्ध करने का साहस एकमात्र इसी सस्था को है। उन्होने कहा कि यह सस्था उस अमर हुतात्मा की है जिसने ब्रिटिश शासन काल मे अपने पुत्रो का इसमे स्थापित किया। अपनी सम्पत्ति को इसमे लगाया अपनी जमीन को आर्यसमाज को दे दिया और अन्त मे इसके लिए अपने शरीर को भी दे दिया। यह सस्था अमर हुतात्मा की है इसलिए यह सस्था अमर है। यह देश की सस्था है राष्ट्रभक्ति की सस्था है यह जीवनदात्री सस्था है। उन्होने कहा कि इसके आज १०० वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसमे पधारे सभी आर्यजनो को गुरुकुल की ओर से हार्दिक अभिनन्दन।

केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्री विजय गोयल विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानद उपाधि विद्या मार्तण्ड से सम्मानित किए गए। सभी शिष्ट परिषद के सदस्य तथा मचस्थ महानुभाव उपाधि प्रदान करने के लिए शामिल हुए।

दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन ने अपन ऐतिहासिक टीक्षान्त भाषण को प्रारम्भ करते हुए नव स्नातको से कहा मैंने आपको प्रणाम किया मेने ब्रह्मचारियो को प्रणाम किया मेने प्रणाम इसलिए किया कि कुलपति जी ने बताया कि मैने आपको सत्य की शिक्षा दी हे, धर्म की शिक्षा दी है कुलपति के उपदेश का प्रथम वाक्य था सत्य वद धर्मम चर। अगर हम इसे जीवन मे उतार सके तो आप सब ब्रह्म रूप हो जाएगे प्रिय ब्रह्मचारियो मै देख रहा हू कि आप बाते कर रहे है आपका चित चचल है।

उन्होने कहा कि यह एक महान क्षण है मेरे लिए तो अत्यन्त महान बुन्देलखण्ड के पिछडे गाव मे उत्पन्न हुआ यह व्यक्ति आर्य सस्कारो से दीक्षित हुआ १९३४ मे। उस परिवार का सदस्य बना जिसने अपने को १९वीं शताब्दी से आर्यसमाज के लिए पूर्ण समर्पित किया हुआ था यानि आर्यसमाज की स्थापना से। मैं सोच भी नहीं सकता कि गुरुकुल कागडी अपने १००वे दीक्षान्त मे मुझे आमन्त्रित करेगा।

मैं धन्यवाद करना चाहूगा कुलाधिपति जी का तथा अन्य सभी अधिकारियो का जिन्होंने मुझे इस समारोह में आमन्त्रित किया।

उन्होने ब्रह्मचारियो को सम्बोधित करत हुए कहा कि ध्यान रखना दीक्षा का बडा महत्व है दीक्षा देने का अधिकार सभी को नही दीक्षा वही प्रदान कर सकता है जो स्वय दीक्षित हुआ हो। मेरे गुरुदेव स्वामी रामदेव ने मुझे दीक्षित किया। महान् सन्त उनकी कृपा से मुझे जितना प्राप्त हुआ मैं आपको उतना ही बताऊगा। गुण उनके दोष मेरे। ज्ञान उनका अज्ञान मेरा जो कुछ श्रेष्ठ है वह उनके द्वारा प्राप्त जो भूले है वह मेरी।

उन्होने ब्राह्मण का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ब्राह्मण कोई जन्म से नही होता। महर्षि की यही शिक्षा है यही वैदिक शिक्षा है।

उन्होने उदाहरण देते हुए कहा कि उद्दालक का पुत्र श्वतकेतु शिक्षा प्राप्त करने के बाद लौटता है वे उन्हे देखते है। पुत्र का मन विषाद स भरा होता है। पिता ने सोचा कि मेरे पुत्र को इतना दर्प इतनी अकड श्वते केतु ने अपने पिता उद्दालक को प्रणाम किया। पिता ने श्वेत केतु से पूछा क्या तुम विद्या ग्रहण करके आ गए ? क्या तुम्हारे गुरु ने तुम्हे सब कुछ प्रदान कर दिया ? श्वेत केतु ने कहा हा मैने वेद दर्शन कुरान उपनिषद सब कुछ पढ लिए ओर मै योग मे भी परागत हू मैने सब ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उद्दालक ने कहा नहीं श्वेतकेतु तुमने कुछ भी प्राप्त नही किया उद्दालक ने श्वेतकेतु से यह भी कहा कि मेरे कुल मे ब्राह्मण जन्म से नही होता मेरे कुल मे ब्राह्मण केवल पठन पाठन से भी नही होता कि वेद पढ लिए ब्राह्मण हा गए मेरे कुल मै ऐसा नही होता इसे तो अर्जित करना पडता है जीवन मे उतारना पडता हे । ब्रह्मत्व को तो आत्मसात करना होगा ब्राह्मण बनने के लिए सघर्ष तप सर्म्पण करना होता हे ब्रह्मचेतना मे निवास करना पडता हे द्वेष से मुक्ति पानी होती है इसके लिए अपने मन का एक एक क्षण उस अनुभूति मे प्रवेश करन के लिए समर्पित करना होता है।

श्री नरेन्द्र मोहन जी ने ब्रह्मचारियो से कहा कि यदि तुम मे से कोई ब्राह्मण बनना चाहे तो यही मेरा उपदेश है। मैं जानता हू ब्राह्मण बनना असान नहीं ऋषि के शब्दो मे हर कोई ब्राह्मण नही बन सकता लेकिन ब्राह्मण बना जा सकता है अपने तप अपने श्रम अपने दम और सत्यनिष्ठा से तभी तो कुलपति जी ने उपदेश दिया सत्यम वद धर्मम चर।

उन्होने स्वाध्याय के विषय मे कहा कि जो व्यक्ति स्वय का अध्ययन कर सके स्वय के मन के कलुष को निहार सके कहा से यह वृत्तिया उत्पन्न होती है उसे जान सके वही मार्ग ही स्वाध्याय का मार्ग है।

उन्होने प्रमाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि प्रमाद शब्द का बडा महत्व है उपनिषद मे ऋषि ने इस शब्द का प्रयोग बडा सोच समझकर किया होगा। प्रमाद शब्द का अर्थ है मूर्छित तो नहीं हो फिर भी मुर्छा भाव आ जाना। अहकारवश जब व्यक्ति का विवेक मूर्छित हो जाता है स्वार्थ वश जब विवेक घट जाता है रागवश जब विवेक परिछिन्न हो जाता है उस पर पर्दा पड जाता है तो उसे प्रमाद कहते है।

उन्होने कहा कि स्वाध्याय मे प्रमाद नहीं करना चाहिए। अगर इसे जीवन मे थोडा भी उतारा जा सके तो अनन्त उपलब्धिया प्राप्त हो सकती है।

उन्होने ब्रह्मचारियो से कहा कि अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा अपनी समस्त शक्ति ओर अपनी समस्त विवेक को प्रमाद को नष्ट करने मे लगा दो। जीवन मे कुछ भी ऐसा नही है जो तुम प्राप्त न कर सको। उन्होने आगे कहा कि ब्रह्मचारियो आज से तुम नये जीवन मे प्रवेश कर रहे हो शीघ्र ही तुम गहस्थ आश्रम मे प्रवेश करोगें। गृहस्थ आश्रम की अनेक समस्याए है उनसे जूझेगे। लेकिन अगर आपकी ऊर्जा केन्द्रीयभूत हो आपके सकल्पो के साथ जुड जाएगी एसा कुछ भी नही हे जो प्राप्त न हो ।

उतिष्ठत जागृत

उठो ऐसे नही कि खडे हा जाआ बल्कि अपनी चेतना को जगाओ।

उन्होने कहा कि आप सब आर्य परिवार के हो आर्यत्व ही हमारी शक्ति है यही हमारी ऊर्जा है यही हमारा गुण धर्म हे। आर्य भी जन्म से नही होता आर्यत्व भी अर्जित करना होता है । जो ऋषि क बताए मार्ग पर चला वही आर्य है। जो विरक्त हुआ पथभ्रष्ट हुआ जो गिर गया जिसने प्रमाद कर लिया वह आर्यवश मे उत्पन्न होने के बाद भी आर्य कहलाने के लायक नहीं। उन्होने स्पष्ट किया कि दो ही प्रकार के मनुष्य है एक आर्य दूसरा दस्यु । वेदो मे अनार्य का प्रयोग कम है। या तो आर्य है या दस्यु। दस्यु कोन हे जो दूसरो के भाग का अपहरण कर लेता है जो दूसरो के अधिकारो का हनन करता हे जो उसका स्वय का नही हे उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है। दूसरो क धन पर अधिकारो पर गिद्द दृष्टि रखता हे। यही तो है दस्यु का प्रथम लक्षण। दस्यु ता दूसरे के अधिकारो का अपहरण करने के लिए आता हे। आर्य अपहरण नहीं करता।

उन्होने ब्रह्मचारियो को समझाते हुए कहा कि जीवन मे कभी दूसरो के अधिकारो का अपहरण नहीं करना। दूसरो के अधिकारो को छीनना नहीं। देवा भागम यथा पूर्वे सजनाना उपासते अर्थात पर्वत को पर्वत का भाग मिले मित्र को मित्र का पत्नी को पत्नी का पिता को पिता का ऐसा भाग समाज मे सभी को मिले।

उन्होने कहा ब्रह्मचारियो इस महामन्त्र को जीवन मे अपना लो यह कठिन नही है और कठिन भी है। हर सकल्प प्रारम्भ मे कठिन होता है।

मै चाहता हू कि जो लाग बैठे ब्रह्मचारियो के अलावा भी है मैं उनसे अनुरोध करता हू कि आर्यत्व को समझे। आर्य जीवन सरल है अगर हमने इसके रहस्य को न समझा तो दुविधा हो जाएगी। ईश्वरोपासना का प्रथम मन्त्र है विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यद भद्रम तन्न आसुव अर्थात समस्त विश्व के प्रकाशक समस्त शक्तियो के प्रदाता आप सूर्य के समान शक्तिमान हो हममे प्रत्येक मे कभी न कभी किसी न किसी प्रकार का दुरित प्रवेश करता है हम इस दुरित से बच नहीं पाते। रहस्य यह है कि आर्य बनने के लिए अपने कलुष को निहारो अपनी शकि। अर्जित करके अपने दुरित को त्याग कर बोध प्राप्त करे। अगर हम अपने दुरित को समझ न सके तो यह दूर कैसे होगा। इसे दूर करने क लिए सकल्प तो स्वय ही लेना होगा।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

पृष्ठ ६ का शेष

गुरुभूमि, पुण्य भूमि को अब फिर से क्रान्ति भूमि बनाओ

उन्होने कहा कि हम विश्व को तो आर्य बनाने की बात करते है किन्तु स्वय अपने को आर्य नहीं बनाते आर्यसमाज का रहस्य यह हे कि हम पहले अपने को आर्य बनाए। बुझा दीपक दूसरो को प्रकाश नहीं देता दीप तो वह प्रकाशित करेगा जिसकी ज्योति जल रही हो। उन्होने उपस्थित आर्यजनो और ब्रह्मचारियो को आह्वान करते हुए कहा कि हमे अपन अन्त करण के दीप को जलाने का प्रयास करना होगा। उन्होने कहा अपने अपने अन्धकार की ओर निहार लो कहा से कलुष उठता है कहा से राग आता है कहा से मोह आता है उस पर विजय प्राप्त करो। यही तो है आर्य बनने का रहस्य।

उन्होने कहा कि यह निर्णय कौन करे कि भद्र क्या है अभद्र क्या में कहता हू कि यह श्रेष्ठ है। तो क्या यह श्रेष्ठ हे इस पर कोई निश्चित मत नहीं जिस पर व्यक्ति की श्रद्धा हो जिसे अपना गुरु मान लिया हो उसी के बताए मार्ग पर चलो। जब से मनुष्य का जन्म हुआ सारी लडाई इस बात पर हुई कि क्या है श्रेष्ठ क्या है अश्रेष्ठ ? मुसलमान कहता है इस्लाम श्रेष्ठ है इस्लाम कहता हे जो भी काफिर तुम्हे मिले उसे मार दो उसको कत्ल कर दा कुरान शरीफ मे है और कुछ कहते है कि जो कुरान शरीफ मे है वही सही है। मदरसो मे इसे ही पढाते है तो क्या यह श्रेष्ठ हुआ ? नहीं क्योकि कुरान मे यह भी है तुमको तुम्हारा दीन मुबारक हमे हमारा दीन मुबारक। यह विरोधाभास होते हुए भी इसे समझने का एक ही उपाय है – महागतौ महागत। इस्लाम के अनुयायी मसूर की ओर नहीं देखते मसूर की ओर देखते तो उनसे यह भूल नहीं होती जो हो रही है। उन्हे ऐसे ऋषि पुरुष की हत्या करने मैं आनन्द आता है वह चाहते है कि हम वैदिक धर्म को नष्ट कर दे। यही उनका लक्ष्य है। उन्होने ब्रह्मचारियो से कहा कि यह पूण्य भूमि है मातृ भूमि है यह पितृ भूमि है इसे अपने तप से अपने शौर्य से क्रान्ति भूमि बना लीजिए। सकल्प ले परमात्मा आपके साथ है ऋषि का सकल्प आपके साथ है ऋषि की ऊर्जा आपके साथ है इस पुण्य भूमि की ऊर्जा आपके साथ है। उन्होने समस्त आर्यजनो को आह्वान करते हुए कहा कि हे महान राष्ट्र के नागरिको पुण्यभूमि के उपासको ! आर्यसमाज ने राष्ट्र धर्म से बढा कोई धर्म नहीं माना स्वाधीन भारत की स्वाधीन ललकार देने वाले ऋषि दयानन्द के उपासको मैं तुम्हे ललकराता हू कि आगे बढो और क्रान्ति भूमि का सृजन करो। यह समय अब सोने का नही बाते करने का नहीं राजनेताओ से अब कुछ नहीं होगा इस युग मे अब चरित्र की आवश्यकता है आर्य चरित्र की आवश्यकता है। आज की राजनीति सिद्धान्तो की नहीं अहकारो की लडाई हो गई। झूठ और मक्कारी की लडाई हो गई है।

गुजरात मे जानबूझकर दगे कराए जा रहे है कि जैसे भी हो केन्द्र सरकार बदनाम हो जाए लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय मच पर भारत को अपने ही राष्ट्र को कुख्यात करने के लिए ऐसा षडयन्त्र मात्र अहकार की लडाई नही तो और क्या है। ऋषि ने तो कभी नहीं कहा उनकी लडाई मुसलमानो से है उन्होने तो खण्डन किया है पाखण्ड का अविद्या का उन वृतियो का जो व्यक्तियो को हिसक बनाती है। हिन्दुत्व तो एक भू सास्कृतिक अवधारणा है। यह वह सस्कृति है जिसमे सभी उपासना पद्धतिया है सभी के लिए सम्मान है। यह वह सस्कृति है जिसमे वसुधैव कटुम्बकम की अवधारणा है।

उन्होने आगे कहा कि आर्यसमाज पुन अपने अलोक से सारे राष्ट्र के अहित को खत्म कर हित करे। राष्ट्र के समक्ष ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे कि कोई समस्याओ से पीडित न हो। बडा कष्ट होता है कि आर्यसमाज हमे राह नहीं दिखा रहा है।

उन्होने सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य से अनुरोध किया कि कुछ करे और गुरुकुल से तो ऐसी मशाल जलाए कि अन्धकार दूर हो जाए।

दीक्षान्त उदबोधन के बीच मे ही वायु बडे वेग से चलने लगी जो बडी तेज आधी मे परिवर्तित होती चली गइ। दीक्षान्त उदबोधन के बीच मे ही हल्की बौछार भी पडने लगी। पण्डाल की छत बडे सुन्दर कपडे से बनाई गइ थी। इस आधी के सामने वह भी टिक नही पाई और कपडा फट कर नीचे गिरकर परदे के रूप मे आर्यजनो की आखो केसामने बाधा बनने लगा। जिसके हाथ मे यह कपडा आता वह उसे नजदीक के खम्बे मे बाध देता। हल्की बूदा–बादी की आर्यजनता ने परवाह भी नही की।

दीक्षान्त समारोह लगभग १२ बजे के कुछ देर बाद समाप्त हो गया। और इसके साथ ही महासम्मेलन समारोह का उदघाटन प्रारम्भ हुआ। इस समारोह का सचालन सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने अपने हाथ मे लिया और सभी प्रतिनिधि सभाओ ? पदाधिकारियो को मच प. आमन्त्रित किया। उन्होने इस उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता के लिए सभा प्रधान कै० देवरत्न जी के नाम का प्रस्ताव किया। वैदिक जयघोष के साथ समूचे आर्यजनो ने इसका समर्थन एव स्वागत किया।

उद्धाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विजय गोयल का भव्य स्वागत किया गया।

महासम्मेलन के अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य ने अपना उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। इस उदघाटन भाषण को ट्रेक्ट के रूप मे छपवाकर हजारो की सख्या मे इसकी प्रतिया बटवाई गई। यह उदघाटन भाषण सार्वदेशिक साप्ताहिक के गत अक मे तथा स्मारिका मे भी प्रकाशित है।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने इसके उपरान्त श्री विजय गोयल को उदबोधन के लिए आमन्त्रित किया ओर समूची आर्य जनताको अवगत कराया कि चादनी चौक क्षेत्र के प्रतिनिधि होने के नाते उस बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कराने हेतु आप प्रयासरत हैं जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द जी शहीद हुए थे।

उदघाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए श्री विजय गोयल ने कहा कि महान पुरुषो के बारे मे कुछ भी कह दना सरल होता है किन्तु उन जेसा महान बनना एक दुष्कर कार्य होता है। उन्होने कहा कि बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कराने के लिए मै काफी समय से प्रयास कर रहा हू और आगे भी लक्ष्यवद्ध प्रयास जारी रखूगा।

श्री विजय गोयल ने कहा कि समाज सेवा के कार्यो की प्ररणा वास्तव मे उन्हे महर्षि दयानन्द जी के जीवन को सुनकर ही मिली है। उनके अतिरिक्त कबीर व नानक से भी में प्रभावित रहा हू। उन्होने कहा कि सामाजिक बुराइयो से सघष सरल कार्य नही होता परन्तु जो व्यक्ति इसमे जुट जाते हे उन्हे सफलता अवश्य ही मिलती है। उन्होने कहा कि दिल्ली से लाटरी जैसी बुराई को उखाड फैकने मे मुझे इन्हीं महान व्यक्तियो के सिद्धान्त न सफलता दिलाई।

उन्होने यह कामना की कि राजनेता यदि बुराइयो के विरूद्ध सघर्ष का सकल्प ले ले तो समाज का कायापलट हो सकता है।

इसके पश्चात जैसे जैसे समय बीत रहा था आधी ओर वायु का वेग आसमान से पूरी तरह धरती पर उतरता प्रतीत हो रहा था अत स्वागताध्यक्ष प० हरबशलाल शर्मा ने अत्यन्त सक्षिप्त रूप मे सभी आगन्तुक आयजनो का आभार व्यक्त किया ओर उन्हे शुभ कामनाए दी।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने इस वायु के वेग और आधी को ईश्वरीय आशीर्वाद बताते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी किसी कार्य को हाथ मे लेते थे और जब भी उनके कदम किसी मिशन पर आगे बढते थे तो ऐसा लगता था कि तेज हवाये और आधी चल रही हो। आज इस महासम्मेलन के दौरान इस परिदृष्य को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मा भी इस सम्मेलन मे किसी न किसी रूप मे उपस्थित है।

पूरा पण्डाल बिना छत के दिखाई दे रहा था। वर्षा से बैठने की व्यवस्था भी खराब हो चुकी थी अत महासम्मेलन सयोजक ने यह सूचना दी कि अगले सत्र का आयोजन दीक्षान्त भवन हाल मे अपने निर्धारित समय पर होगा। इस प्रकार ईश्वर लीला के साथ सम्पन्न हुए इस सत्र का समूच देश विदेश के आर्यजनो ने आनन्द उठाया।

(क्रमश)

गताक से आगे

शिक्षा का वास्तविक ध्येय

– सत्यबाला देवी

उत्तम शिक्षा ही मानसिक द्वद्वो जीवन सघर्षो एव भौतिक परपीडन का शमन कर मानव जीवन मे एकात्मकता सामञ्जस्य एव समरसता की स्थापना करती है। समरसता का अर्थ है विरोधी भावो विपरीत परिस्थितियो विश्रृखलवृत्तियो असगठित विचारधाराओ अव्यवस्थित सामाजिक अवस्थाओ मे सन्तुलन स्थापित करना। इसी सन्तुलन और समन्वय के अभाव मै मानव की पाशविक प्रवृत्तिया और कुमति प्रबलता प्राप्त कर मानव को पतनोन्मुख बनाती है और वह पशु से भी अधिक बर्बर दानव से भी अधिक दुर्दान्त समस्तमानव जाति के प्रति निरपेक्ष निर्मम बज्रवत कठोर हृदय करुणा और दया के स्निग्ध अक से वचित प्रेम और क्षमा से निखकाश हृदय वाला नृशस तथा हिसक बन जाता है जिसके फल स्वरूप समस्त वातावरण अशान्त विक्षुब्ध नीरस निरानन्द और विद्रोही हो उठता है। पर शिक्षा उपरोक्त अव्यवस्था असाम्य तथा असन्तुलन का निराकरण और परिहार कर मानव की मानसिक वृत्तियो उसके जीवन व्यक्ति और समाज तथा पुरुष और प्रकृति मे सामन्जस्य स्थापित कर उसे समदर्शी दूरदर्शी एव सूक्ष्मदर्शी बनाती है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त वातावरण अत्यन्त मधुर स्निग्ध उज्ज्वल पावन शान्त सौन्दर्यमय तथा आलोकमय हो उठता है। चतुर्दिक प्रेम आनन्द शान्ति सौहार्द और सदभावना का उदय होता है। तभी मानवात्मा इन नाना रूपात्मक जगत मे एकात्मकता समरसता और सामजस्य के दर्शनकर कृत कृत्य हो उठता है। शिक्षा द्वारा सृजित उपराक्त ज्योतिर्मय स्निग्ध भव्य स्वर्गीय आलोक से अतिरजित मानवात्मा अशी और अश जीव और ब्रह्म के अन्तर मे ऊपर उठकर समरसता और समानता के दिव्य लोक मे विचरण करता हुआ अनुपम शान्ति अलौकिक सुख तथा स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति करता हुआ न केवल इहलाक को ही सार्थक और सफल बनाता है प्रत्युत जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हाकर परम पद की प्राप्ति का अधिकारी भी बन जाता है क्योकि आध्यात्मवादी भारतीय जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक उन्नति तथा इहलोक मे सुख प्राप्ति नही प्रत्युत इस माया मय जगत मे अवतरित होकर सर्वथा निर्लिप्त निरपेक्ष और निर्लेप भाव से समस्त मानवोचित कर्त्तव्यो का पालन और उत्तरदायित्वो का यथा सम्भव निर्वाह करते हुए आध्यात्म साधन द्वारा भौतिक जगत की सीमा पार कर आध्यात्मिक लोक मे विचरण कर परलोक की प्राप्ति मे हे। इसी उद्दश्य को सन्मुख रखते हुए हमारे अतीत युगीन धर्माचार्यो ने मानव जीवन को चार भागो मे विभाजित कर वर्णाश्रम धर्म की स्थापना की थी। जीवन के प्रथम प्रहर मे पच्चीस वर्ष की आयु तक तपोवनो के शान्त उन्मुक्त स्निग्ध उज्ज्वल पावन प्राकृतिक छटा पूर्ण वातावरण मे ब्रह्मवेत्ता गुरुजनो के चरणो मे अवस्थित हो तपोत्याग एव मनोयोग पूर्वक आतप शीत और वात के असह्य कष्टा को सहन करत हुए विद्याध्ययन करना प्रत्येक धनी निर्धन राजा रक ऊच नीच राजकुमार नागरिक आदि सभी के लिए अनिवार्य था। ऐसे ही वातावरण मे शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र परम मेघावी आत्म–सयमी प्रखर बुद्धि विद्या प्रेमी दृढवती धर्मपालन मे दृढ आस्था रखन वाल सत्य और अहिसा के निर्वाध पक्षपाषक शीलवान ज्ञान पिपासु नम्र जिज्ञासु प्राणी मात्र के प्रति सौहार्द ओर सदभावना रखने वाल तपोधनी सेवा त्याग एव दया की प्रतिमूर्ति शक्ति शील आदि सदगुणा से समलकृत अथक परिश्रमी अन्याय अत्याचार उत्पीडन और शोषण के निर्मम विरोधी अहिसा प्रेम और क्षमा के समर्थक समस्त परा और अपराविद्याओ मे पारगत समस्त मानवोचित सदगुणो स विभूषित शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियो से समन्वित दृढ चरित्र और दृढ प्रतिज्ञ अपनी स्वभाविक प्रवृत्तियो प्रतिभा ओर सस्कारो को विकसित करते हुए श्रष्ठ नागरिको के रूप मे जीवन के व्यापक– विस्तृत और विशाल प्रागण मे पदार्पण करते थे। एसे ही शिक्षित उन्नत विचार उदारहृदय उच्चाज्ञय स्नातक गृहस्थाश्रम मे प्रवेश कर तत्सम्बन्धी समस्त यज्ञो समग्र कर्त्तव्यो एव उत्तरदायित्वो का यथोचित पालन करते हुए तथा श्रेष्ठ नागरिक के कर्त्तव्यो और अधिकारा और उत्तरदायित्वो का उचित उपयोग करते हुए जीवन के स्वर्णिम गृहस्थ आश्रम का पूर्ण लाभ उठाते हुए न केवल इहलोक मे ही सुख शान्ति और सन्तोष की अनुभूति नहीं करते थे वरन जीवन के तृतीय और चतुर्थ प्रहरो मे ससार त्यागी बन वानप्रस्थ ओर सन्यासाश्रम में दीक्षित होकर आध्यात्म साधन के साथ–साथ कल्याण प्रद पारलोकिक जीवन मे विचरण करते हुए सर्व सासारिक बन्धनो स मुक्त हो परम ब्रह्म मे लीन हो जाते थे।

पर बालको को उपरोक्त शारीरिक मानसिक एव आध्यात्मिक शक्तियो से अलकृत करने वाली शिक्षा प्रदान करने हेतु माता पिता का समाज का राष्ट्र का ओर अध्यापक वर्ग का सहयोग परमावश्यक है। पर जिस आधुनिक समाज की नीव इष्या–द्वेष कलह–स्वाथपरता घृणा अन्याय शाषण उत्पीडन भेद–भाव भ्रष्टाचार असमानता असहयोग छुआ छूत की निकृष्ट प्रवृत्ति रुढिवादिता और अन्धविश्वासा पर आधारित हो जिस समाज मे अनगिनत व्यक्ति अन्न–वस्त्र एव स्वास्थ्यदायक आवासा के अभाव स पीडित रोग शाक ताप से जजरित सभ्यता सस्कृति से निर्वासित जीवन की अन्य आधारभूत आवश्यकताओ की पूर्ति से वचित अशिक्षा पक मे पालित जीवन की विभीषिकाओ से प्रताडित ककाल के रूप मे अस्थिपजर मे परिणित हो गए हो जहा दरिद्रता का नग्न ताण्डव नृत्य समाज जाति और राष्ट्र के विनाश का पूवाभास दे रहा हो उस समाज के ऐस अस्वस्थ अशान्त अनुपयुक्त वायुमण्डल मे उपरोक्त उच्चादर्शो से परिपूर्ण शिक्षा के भव्य सोच का निर्माण करने की आशा तो दुराशामात्र ही है। उस के अतिरिक्त आधुनिक भौतिकवादी युग म पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा के प्रभाव से बालको को अध्यात्मिक जन्म देन वाले सुयोग्य पाण्डित्यपूण गुरुजनो के अभाव वश शिक्षा का उद्दश्य बालका को केवल कतिपय विषयो की अधूरी शिक्षा प्रदान कर अन्त मे परीक्षा के पावन उद्देश का तिरस्कार करते हुए आधुनिक वेतन भोगी अध्यापक उन्हे परीक्षा मे नकल करवा कर उत्तीर्ण करवा देने मे ही अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। आधुनिक युग मे विद्यर्थी गण भी शिक्षा मे अरुचि रखत हुए न तो गुरुजनो के प्रति श्रद्धा आदर ओर सवा भावना ही प्रदर्शित करत है और न अध्यापक ही अपने शिष्यो को पुत्रवत स्नेह प्रदान करते हुए उन्ह शिक्षा दान करने के इच्छुक होते है। उसके अतिरिक्त आधुनिक शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य बालको का धनोपाजन हेतु उच्च शिक्षा प्रदान करन का ही प्रावधान है उनके चरित्र का सर्वागीण विकास करना नही हैं। अत शिक्षक और शिष्य समाज ओर राष्ट्र माता पिता आदि सभी के सम्मिलित सहयोग द्वारा ही देश ओर समाज क भाग्य विधाता उचित शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज के विकास उन्नति प्रगति और अभ्युदय म सहयक सिद्ध हा सकते हैं।

– डी ११३ शिवविहार रोहतक रोड दिल्ली ८७

आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री सुभाषचन्द्र सभ्रवाल का आकस्मिक निधन
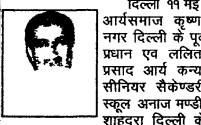
दिल्ली ११ मई। आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली के पूर्व प्रधान एव ललिता प्रसाद आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली के प्रबन्धक श्री सुभाष सभ्रवाल का शनिवार ११ मई २००२ को प्रात ११३० बजे हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति के साथ आर्यसमाज के धर्माचार्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री ने की। उनकी चिता को अग्नि उनके भतीजे श्री मुकेश सभ्रवाल के सुपुत्र श्री हर्ष सभ्रवाल ने दी। इस अवसर पर आर्यसमाज कृष्णनगर के प्रधान श्री विशम्भरनाथ अरोड़ा मन्त्री डॉ० हरभगवान मलिक एव उपप्रधान श्री जगदीश्वरनाथ कठपालिया के साथ साथ सैकडो आर्यजन स्त्री समाज की सदस्याए सगे सम्बन्धी एव इष्ट मित्र उपस्थित थे।

उनकी आयु ६२ वर्ष की थी। उनके परिवार मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा सभ्रवाल सुपुत्र श्री सुनील सभ्रवाल एव सुपुत्रिया श्रीमती सगीता चडढा एव श्रीमती मिन्नी बत्ता हैं। ये तीनो बच्चे विवाहित है। मृत्यु के समय श्री सुनील सभ्रवाल एव श्रीमती सगीता चडढा अमेरिका मे थे।

श्री सुभाष जी आर्यसमाज कृष्णनगर के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ मे थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तो एव यज्ञ मे उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे आर्यसमाज के माली थे जो हर समय आर्यसमाज की प्रतिष्ठा और उसके प्रचार प्रसार मे सलग्न रहे। अपने पवित्र दान के माध्यम से आर्यसमाज की गतिविधियो को सक्रिय बनाए रखने मे उनकी रुचि सदा बनी रही।

उनकी स्मृति मे अन्तिम शोक एव श्रद्धाजलि सभा १७ मई २००२ (शुक्रवार) साय ४ से ५ बजे तक आर्यसमाज कृष्णनगर शाहदरा मे सम्पन्न हुई जिसमे विभिन्न आर्यप्रतिनिधि सभाओ आर्य शिक्षण सस्थाओ आर्यसमाजो महिला आर्यसमाजो व्यापारिक सस्थाओ से प्राप्त शोक सन्देश पढकर सुनाए गए तथा आर्य नेताओ ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री सुभाष जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार जनो सगे सम्बन्धियो एव सहयोगियो को इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

– वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री

कैप्टन देवरत्न जी आर्य

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

डा० अन्नपूर्णा जी

मानव कल्याण केन्द्र

द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय किशनपुर देहरादून का वर्ष २००२ का वार्षिकोत्सव २४, २५ २६ मई २००२

मुख्य अतिथि	–	**कैप्टन देवरत्न जी आर्य** अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
सरक्षक	–	**स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक**
ब्रह्मा	–	**डॉ० अन्नपूर्णा** आचार्या कन्या गुरुकुल
मुख्य वक्ता	–	**श्री सोमनाथ जी शास्त्री** मुम्बई वाले
भजनीक	–	**श्री विजय आनन्द** (फिरोजपुर) **पदम भूषण सूचित नारग**

योग साधना शिविर

निवेदक

डॉ० वेद प्रकाश	**डॉ० अन्नपूर्णा**	**चमनलाल रामपाल**	**गुरु नारायण दुबे**
सस्थापक	आचार्या	उप–प्रधान	मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 19 5 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 16/17 5 2002

आर्यसमाज का सदस्य (सभासद्) होने के लिए निम्न नियमो का पालन करना आवश्यक है –

१ वेद व वेदो पर आधारित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थो मे वर्णित सिद्धान्तो का जानना मानना व प्रचार करना।
२ अपनी आय का शताश मासिक चन्दे के रुप मे या १००० रुपये या इससे अधिक वार्षिक चन्दा
३ साप्ताहिक सत्सगो मे कम से कम २५ प्रतिशत उपस्थिति होना।
४ दैनिक सन्ध्या हवन करना। मास अण्डे बीडी शराब आदि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन न करना।
५ जन्मगत जात पात को न मानना।
६ मूर्तिपूजा मृतक श्राद्ध फलित ज्योतिष तीर्थ स्थान टेवा जन्मपत्री आदि अन्धविश्वासों व पाखण्डों को छोडना व छुडवाना

प्रतिष्ठा मे
10150 पुस्तकालाध्यक्ष
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

॥ ओ३म॥

अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश
पत्राचार प्रतियोगिताएं

(वर्ग क) स्कूल, कालिज, गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं आम जनता के लिए :–

प्रत्येक प्रतियोगी को महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। ३०–११–२००२ तक इस प्रश्न पत्र के प्रश्नो के उत्तर लिख कर भेजने होगे। **प्रथम पुरस्कार ३००० रुपये तथा द्वितीय २००० रुपये तृतीय १००० रुपये प्रशस्ति पत्र एव कुछ सान्त्वना पुरस्कार** भी दिए जाने की योजना है। इस प्रतियोगिता के लिए आयु लिग मजहब योग्यता आदि का कोई बन्धन नही। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी।

(वर्ग ख) स्कूल, कालेज गुरुकुल के आचार्यो एवं वैदिक विद्वानों आदि के लिए :–

सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक **सम्मुलास** पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखकर **सभा कार्यालय** मे भेजना होगा।
माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी **अन्तिम तिथि ३० ११ २००२ पुरस्कार प्रथम ५००० रुपये** तथा **द्वितीय ४००० रुपये तृतीय २००० रुपये** तथा कुछ सान्त्वना पुरस्कार।

(वर्ग ग) १८ वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए :–

सत्यार्थप्रकाश मे कुछ रोचक व शिक्षाप्रद कहानियो सवादो एव दृष्टातो का वर्णन किया गया है। प्रतियोगियो को उन्हे ध्यानपूर्वक पढकर उनका सार व उनसे मिलने वाली शिक्षाओ को अपने शब्दो मे लिखकर भेजना होगा। प्रतियोगियो की सुविधा के लिए सत्यार्थप्रकाश पर आधारित आर्य भाषा मे एक लघु पुस्तिका नि शुल्क भेजी जाएगी। अन्तिम तिथि ३०–११–२००२ माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी पुरस्कार प्रथम २००० रुपये द्वितीय १००० रुपये तृतीय ५०० रुपये कुछ सान्तवना पुरस्कार।

नोट – जो महानुभाव किसी एक प्रतियोगिता मे भाग लेना चाहे वे मात्र ५० रुपये प्रवेश शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश अथवा ड्राफ्ट के द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करे। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयो पुस्तक विक्रेताओ आर्यसमाज कार्यालयो आदि से उपलब्ध न हो तो अतिरिक्त ५० रुपये हिन्दी सस्करण के लिए १५० रुपये अग्रेजी सस्करण के लिए धनादेश अथवा ड्राफ्ट द्वारा भेज कर मगवाई जा सकती है।

प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर ही पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र अनुक्रमाक एव अन्य निर्देश आदि प्रेषित किए जाएगे। पता – **डॉ० मुमुक्षु आर्य (रजिस्ट्रार), सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली २,** विजेताओ को **महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह, महर्षि दयानन्द गौ सम्बर्धन दुग्ध केन्द्र, गाजीपुर, नई दिल्ली** मे सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। **वर्ग ख के विजेताओ को सत्यार्थ रत्न की उपाधि से भी अलकृत किया जाएगा।** उत्तर पुस्तिकाओ का निरीक्षण उच्च कोटि के विद्वान द्वारा करवाया जाएगा। **धनादेश के नीचे अथवा ड्राफ्ट के पीछे प्रतियोगिता का वर्ग, माध्यम एव अपना पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखे।**

कैप्टन देवरत्न आर्य	**विमल आर्य (वधावन)**	**वेदव्रत शर्मा**	**डॉ० मुमुक्षु आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री	रजिस्ट्रार

निवेदन – समस्त समाजो सभाओ एव आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि इस प्रतियोगिता का स्थानीय स्कूलो कालिजो व आम जनता मे प्रचार करने मे सहयोग करे। दैनिक समाचार पत्रो मे इस सम्बन्धी विज्ञापन अथवा प्रेस विज्ञप्तियो के द्वारा भी प्रचार मे सहयोग अभीनन्दनीय होगा ताकि आम जनता एव बुद्धिजीवी इसमे भाग ले सके और महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार हो सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)।
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ६ ६ जून से १५ जून २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ ज्ये० कृ० १४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

२१वां वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

धर्मान्तरण को काबू करने के लिए सारा देश दयानन्द सेवाश्रम संघ को सहयोग करे

– मनीन्द्रजीत सिंह बिट्टा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्थापित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा सचालित २१वा वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर २ जून को सम्पन्न हुआ। इस समापन समारोह मे ससद सदस्य श्री मनीद्र जीत सिह बिटटा मुख्य अतिथि थे। समापन समारोह की अध्यक्षता दयानन्द सेवाश्रम सघ क प्रधान श्री वदव्रत मेहता ने की ओर मच सचालन सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एव माता प्रेमलता शास्त्री ने किया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि दयानन्द सेवाश्रम सघ की गतिविधिया समाज की रक्षा का मूल कार्य है। समूचे आर्यजगत को इस कार्य मे नियमित सहयोग देना चाहिए। उन्होने कहा कि आर्यसमाजो और सभाओ को दयानन्द सेवाश्रम सघ के लिए विशेष बजट बनाने चाहिए।

मच सचालन करते हुए श्री विमल वधावन ने मुख्य अतिथि श्री बिटटा के समक्ष आर्यसमाज और काग्रेस की स्थापनाकाल से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्यसमाज के लोगो ने अपनी साधु प्रवृत्ति का परिचय देते हुए देश के सत्ता सचालन से स्वय को दूर ही रखा। हालाकि कभी कभी ऐसा विचार उठता है कि यदि सत्ता सचालन से दूर न रहते तो अच्छा था। विगत ५० वर्षो के दौरान जिस प्रकार से देश का सचालन किया गया है उसे देखकर आर्यसमाज के लोग दर्द महसूस करते है। आज धर्मान्तरण जेसी समस्या का इलाज भी आर्यसमाज व्यक्तिगत स्तर से ही कर रहा है। बीमारी बहुत विशाल है जबकि इलाज के साधन बहुत कम।

उन्होने कहा कि पजाब प्रान्त मे ही नही अपितु सारे देश मे देश भक्ति के आन्दोलन को महर्षि दयानन्द जी ने खडा किया था। शहीद भगत सिह स्वय ही क्या उसका दो पीढी पूर्व का वश ही आर्यसमाज के प्रभाव मे था।

उन्होने श्री बिटटा के समाने यह विचार रखा कि वे काग्रेस के कर्णधार होने के नाते आज फिर काग्रेस को राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर लाने का प्रयास करे।

मुख्य अतिथि श्री मनीन्द्रजीत सिह बिटटा ने कहा कि मैं आतकवाद से तो लड सकता हू, कई बार गोलियो और बमो का सामना कर चुका हू आगे भी कर सकता हू परन्तु राजनीतिज्ञो से लडना मेरे बस की बात नहीं। भारत के राजनेता वैसे तो बाहर के आक्रमण को भी झेल नहीं पा रहे परन्तु अन्दर से जो सस्कृति पर आक्रमण हो रहा है उसे तो वे समझ ही नहीं पा रहे।

उन्होने कहा कि सारी दुनिया मे एक ही ऐसा देश हे जिसके नाम के साथ माता कहकर सम्बोधित किया जाता है।

उन्हाने कहा कि जनता इतिहास को जिन्दा रखना चाहती है परन्तु देश की राजनीति इसमे बाधक है। भगत सिह को फासी पर चढने से पहले यही चिन्ता थी कि गोरे अग्रेजो से मुल्क आजाद हो जाएगा परन्तु काले अग्रेजो के हाथ फिर से कही गुलाम न बन जाए। उसे ईश्वर ने भेजा था इसलिए उसके विचार मे सच्चाई थी।

आज लोगो मे अपनी अपनी पहचान प्राथमिक हो गई है जबकि मेरे विचार मे हमारी सबकी पहचान एक भारतीय के रूप मे होनी अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होने कहा कि यह धरती स्वामी दयानन्द गुरु गोबिन्द सिह भगत सिह आदि महान सपूतो की धरती है अगर कोई व्यक्ति उसके साथ खिलवाड करने का प्रयास करेगा तो हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। इन देशभक्तो ने भारत मा की रक्षा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। मा को कहकर जाते थे –

गोली सीने पर खाएगे
भारत माता को आजाद कराएगे।

आजकल क राजनीतिज्ञ कहत ह –

गोली सीने पर नहीं खाएगे
भारतमाता को नोच नोच कर खाएगे।

आज जिस तरह आयसमाज अपन कत्तव्य का पालन क रहा हे। सार देश को इस कार्य म सहयोग करना चाहिए। अगर सार दश ने आयसमाज का साथ न दिया तो धमान्तरण अवश्य हागा। उन्होन कहा कि मुझे तो डर है कहीं सार देश क ही धर्मान्तरण न हा जाए।

श्री बिटटा ने कहा कि इस देश का तो भगवान ही चला रहा है क्याकि ताकतवर राजनीतिज्ञ तो इस हर प्रकार से तोडने मे लगे है। उन्होने कहा कि आज तो देश भक्ति के नारे लगाने से पहले नता की शक्ल दखनी पडती है।

उन्हाने कहा कि मुझे तो इस देश से इतना प्रेम है कि मै इस दश की एक एक इच भूमि को अपना समझता हू। इस देश की रक्षा मे मरना मेरे लिए गर्व की बात होगी। मै बीमार होकर नही मरना चाहता मेरी इच्छा है कि गोलिया खाकर मरू मुझ पर पहला बम्ब १५ अगस्त के दिन अमृतसर मे मेरे घर पर फैका गया। बम्ब फैकने वाले आतकवादी अपना कार्य करके हरमिन्दर साहब गुरुद्वारे मे छिपे रहे। सुबह ११ बजे जलियावाला बाग मे हमने ध्वज फहराया और साय पाच बजे मेरे घर पर हमला हुआ।

अगले पृष्ठ पर जारी

सभा के प्रकाशनों मे हुई त्रुटिया बताए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य म जहा कही भी कोई त्रुटि दिखाई द तो पाठकवृन्द उस त्रुटि की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का कष्ट करे जिसस भविष्य मे प्रकाशित हान वाल सस्करणो मे उन त्रुटियो का सशोधन किया जा सके।

– विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हेतु
पाठकों की प्रतिक्रियाएं

अब आर्यसमाज मे अनेको श्रद्धानन्द पैदा होगे

आदरणीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य

सादर नमस्ते

गुरुकुल कागडी की शताब्दी के भव्य आयोजन को सफल करवाने मे जो सहयोग किया गया उसकी प्रशसा म कछ कहा नही जा सकता। समारोह मे आगत विद्वानो क प्रवचन मार्गदर्शक थे आपके व्याख्यान मे आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति का दर्शन कराते हुए आगामी कार्यक्रम की झलक दिखती है। आज आर्यसमाज के पास अरबो की सम्पत्ति है। उसका उपयोग अगर समुचित हो तो विश्व म वेदिक धर्म का प्रचार सारी लोक भावना मे उतर सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद उनके समान ओजस्वी नेता मार्गदर्शक आर्य समाज को नहीं मिला है जिसका राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव हो यह समाज को विचार करना चाहिए। ऐसे समारोह प्रेरणादायी होते है। ऐसे प्रयास स्तुत्य है। अब तो आर्यसमाज पुन युग बना रहा है। ऐसी मान्यता है कि १०२ वर्ष की आयु पूर्ण होने पर शरीर का काया कल्प होता है दात नये आते है सब कुछ नया होता है आज की स्थिति मे अब आर्यसमाजो मे अनक श्रद्धानन्द होगे ऐसी मेरी मान्यता है।

कभी दौरे के समय या दिल्ली जाते समय उज्जैन पधारे तो बडी प्रसन्नता होगी और उज्जैन की जनता भी आर्यसमाज के सार्वदेशिक अन्तर्राष्ट्रीय नेता से परिचित हो सकेगी

धन्यवाद

आपका **सुखदेव व्यास**
आर्यसमाज उज्जैन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार की सफलता हेतु

श्री विमल वधावन जी को
'भाव भरा सादर शुभ कामना पत्र'

श्री — श्रीमुख से सदा उच्चारण हो परमात्मा का पवित्र नाम ओ३म।
वि — विजय सदा चरण चूमे कैप्टन देवरत्न आर्य के करों में है चारों धाम।।
म — मन तन धन से की सेवा प० श्री हरवंस लाल शर्मा प्रो० श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी ने।
ल — लगन दिखाई डॉ० श्री महावीर श्री वेदव्रत शर्मा श्री जगदीश आर्य श्री सुदर्शन शर्मा जी ने।।
व — वसु आठ सम सेवाधारी बने सभी और साथ रहे आचार्य श्री यशपाल जी।
धा — धार्मिक कार्य गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सफल सम्पन्न किया जी।।
व — वंश कुटुम्ब परिवार समाज राष्ट्र विश्व का इससे निश्चय होगा उत्थान।
न — नमन कोटि आप सबको महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द की बढाई शान।।

आपका
सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
अधीक्षक पो० मै० अनु० जा० छात्रावास बुरहानपुर
पूर्व निमाड (म०प्र०) ४५०३३१

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन आशातीत सफल हुआ

हम लोग सम्मेलन सम्पन्न होने के बाद अपने यहा सकुशल लौट आए हैं इस सफल आयोजन के लिए सार्वदेशिक सभ के सभी पदाधिकारियो को सधन्यवाद देता हू।

श्री विमल वधावन जी का कार्य सराहनीय रहा। वर्षा तूफान के बाद भी सारा कायक्रम समय पर चलता रहा।

हमारी समाज के सभी आर्य बन्धु इस महासम्मेलन की सराहना कर रहे हें। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का प्रचार प्रसार हो यही कामना है। जिस जोश के साथ शोभा यात्रा निकाली गयी वह एक ऐतिहासिक कार्य था। गुरुकुल ब्रह्मचारियो का सारा कार्य सराहनीय रहा।

इस अवसर पर स्मारिका भी प्रकाशित की गई होती तो सफलता मे चार चाद लग जाते।

महासम्मेलन की आशातीत सफलता के लिए आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद। नमस्ते।

दामोदरप्रसाद आर्य मन्त्री
आर्यसमाज चन्दौरी झारखण्ड

नैतिक शिक्षा शिविर का आयोजन

महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर ६ ब्लाक रमेश नगर नई दिल्ली मे झुग्गी झोपडी म रहने वाले स्कूली छात्रो के लिए दिनाक १६ से २६ मई २००२ तक आठ दिनो के लिए नैतिक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उदघाटन श्री मुन्शीराम सेठी फरन्टीयर बिस्कुट वालो के कर कमलो द्वारा हुआ। आठ दिनो मे बच्चो ने बौद्धिक प्रशिक्षण के माध्यम से भारतीय सस्कृति के उच्च मानवीय मूल्यो का बोध प्राप्त किया। राष्ट्रीय महापुरुषो के जीवन आदर्शो का परिचय प्राप्त किया। सगीत चित्रकला भाषण आदि का उत्तम प्रदर्शन किया। आचार्य विष्णुदत्त ने शारीरिक एव योगासन शिक्षा प्रदान की। आचार्य ब्र० शिवमुनि श्री चावला जी प० श्यामदेव शास्त्री आदि ने बच्चो को प्रशिक्षण दिया। आर्यसमाज रमेश नगर के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य श्री भीम सेन गुलाटी जी एव श्रीमती कान्ता हसीजा तथा अन्य सभी अधिकारियो का भरपूर सहयोग शिविर के सचालन हेतु मिलता रहा।

शनिवार दिनाक २५ ५-२००२ को प्रात ६ बजे से ७ ३० बजे तक रमेश नगर क्षेत्र मे प्रभात फेरी निकाली गई। इस प्रभात फेरी मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य पुस्ताकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन श्री रामभज मदान श्री रमेश चन्द्र तथा पश्चिमी दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजो के पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रभात फेरी का स्वागत प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी श्री हीरा लाल चावला तथा उनकी धर्मपत्नी प्रधानाचार्या सावित्री चावला ने किया। प्रभात फेरी मे शिविर मे आए बच्चो ने तथा उपस्थित सभी लोगो ने भजन गाए।

२६ मई रविवार को समापन समारोह के अवसर पर महाशय धर्मपाल जी एम०डी०एच० वालो ने बच्चो को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुन्शी राम सेठी उपस्थित थे। श्री बलदेव जिन्दल ने बच्चो को आशीर्वाद दिया तथा शिविर आयोजन के लिए श्री नरेन्द्र आर्य तथा महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट को बधाई दी। आचार्य द्विजेन्द्र शास्त्री ने मच सचालन किया। पश्चिम दिल्ली की सभी आर्यसमाजो से पदाधिकारी व सदस्य गण इस सुअवसर पर आए। उन्होने बच्चो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की मुक्त कठ से सराहना की। आचार्य प्रकाशचन्द शास्त्री ने दरिद्र नारायण की सेवा ही भगवत सेवा है कहते हुए सभी आर्यजनो व सस्थाओ से इस प्रकार के शिविरो का आयोजन करने हेतु आह्वान किया। श्री प्रकाश चन्द शास्त्री जी ने आर्यसमाज रमेश नगर के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य की प्रशसा की कि उन्होने शिविर के आयोजन मे हर प्रकार का सहयोग दिया। अन्त मे श्री नरेन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज ने उन सभी का धन्यवाद किया जिन्होंने इस शिविर मे तन मन धन से सहयोग किया। शान्ति पाठ के पश्चात सभी ने ऋषि लगर ग्रहण किया।

पृष्ठ १ का शेष

धर्मान्तरण को काबू करने के लिए .....

मै अपने दादाजी के साथ जलियावाला बाग जाया करता था। तभी से मेरे मन मे देशभक्ति का सचार हुआ। आज मेरा बेटा मेरे पिताजी के साथ वहा जाता है। खालिस्तान से सम्बन्धित आतकी नारो को मिटाकर हम देश भक्ति के नारे दीवारो पर लिखा करते थे।

उन्होने कहा कि भगवान इस देश की रक्षा तो कर रहे है परन्तु मुझे डर है कि भारतवासियो को निकम्मा बैठा देखकर भगवान का सहारा भी उठ गया तो इस देश का क्या होगा। आर्यसमाज के यह प्रचार कार्य गम्भीर हैं। दयानन्द सेवाश्रम सघ को मजबूती मिलनी ही चाहिए।

श्री बिटटा के उदबोधन के उपरान्त माता प्रेमलता शास्त्री ने कहा कि बिटटा को देश भक्त बनाने का सारा श्रेय उस मा को जाता है जिसने इसे जन्म दिया। हम भी यही प्रयास कर रहे है कि कन्याओ मे वैचारिक क्रान्ति हो जिससे हजारो बिटटे पैदा हो सके।

वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार एव डा० कृष्ण लाल जी ने भी अपने विचार इस अवसर पर प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय पजाबी सभा के सचिव श्री उमेश खोसला ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

शिविर के इस सारे कार्यक्रम में आर्यसमाज रानीबाग के पदाधिकारियों श्री चमनलाल महेन्द्रू श्री जोगिन्दर खटटर श्री रामलाल आहूजा श्री सुदर्शन नारग श्री अरुण आर्य, श्री धर्मपाल गुप्ता श्री कृष्ण कुमार आदि का विशेष योगदान रहा।

अन्त मे श्री वेदव्रत मेहता ने समस्त उपस्थित आर्यजनो एव सहयोगियो का धन्यवाद किया और दयानन्द सेवाश्रम सघ की गतिविधियो का भावी स्वरूप प्रस्तुत किया।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

धार्मिक संस्थाओं का धन खाने वाले निकृष्ट योनि में जाएंगे — रामफल बंसल

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के विशेष सवाददाता द्वारा)

२६ अप्रैल की सायकाल वेद और विज्ञान के विषय मे आयोजित सत्र कुछ विलम्ब से खत्म हुआ। परिणामत रात्रिकालीन सत्र जिसका नाम "समाज की मूल ईकाई आर्य परिवार" रखा गया था वह लगभग ८ बजे शुरू हो पाया। वक्ताओ का समय निर्धारित करने के बावजूद भी प्रत्येक विद्वान वक्ता का सम्बोधन अवश्य ही कुछ लम्बा खिच जाता है। विषय भी रुचिकर थे। अत आर्य जनता भी मन्त्र मुग्ध होकर सुनती थी। प्रत्येक सत्र मे हजारो की सख्या मे उपस्थित आर्य जनता वक्ताओ को और अधिक बोलने की प्रेरणा करती थी और वक्ताओ के विविधता पूर्ण उद्बोधनो ने आर्य जनता की रूचि को बनाये रखा।

दोनो सत्रो के बीच कुछ समय अवकाश का रखा गया परन्तु महू से पधारे श्री प्रकाश आर्य ने अपने भजनो से आर्य जनता का मन मोह लिया।

रात्रिकालीन सत्र के सयोजक श्री देवेन्द्र शर्मा ने मच सभाल लिया अध्यक्षता के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री ओकार नाथ आर्य जी का नाम निर्धारित था परन्तु वह किसी कारणवश उपस्थित न हो सके। अत उनके स्थान पर सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी को अध्यक्षता करने के लिए निवेदन किया गया। जिसे उन्होने सहर्ष स्वीकार किया।

इसके पश्चात अध्यक्ष महोदय तथा अन्य वक्ताओ का अभिनन्दन किया गया।

बच्चो के निर्माण से माता पिता के समस्त कर्तव्य पूर्ण हो जाते है

सत्र के सयोजक श्री देवेन्द्र शर्मा ने सत्र की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि अमरशहीद सरदार भगत सिह को जब फासी लगने वाली थी तो उनसे उनकी अन्तिम इच्छा पूछी गई उन्होने बडे गर्व से कहा कि मेरी अन्तिम इच्छा केवल अपनी मा के दर्शन करना है। जब इस इच्छा का कारण पूछा गया तो उन्होने कहा कि जिस मा ने मुझे देश की सेवा के योग्य बनाया मैं चाहता हू कि वह मरने के पूर्व मेरा माथा अवश्य चूमे उन्होन कहा कि बच्चो के निर्माण से माता पिता के समस्त कर्तव्य पूर्ण हो जाते हैं। यदि हम बच्चो मे आर्य सस्कार और वैदिक सस्कृति के लक्षण उतार पाये तो हम अपने परिवार को आर्य परिवार कह सकेगे और तभी हमारा कर्तव्य पूर्ण हो सकेगा।

इस भूमिका के साथ उन्होंने हिमाचल प्रदेश से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य भगवान देव चैतन्य जी को उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया। आचार्य भगवान देव जी ने जो उद्बोधन दिया वह हमे लिखित रूप मे भी प्राप्त हो गया था जिसे अगले अक मे प्रकाशित किया जाएगा।

इसके पश्चात महा सम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने स्वामी आत्मबोध जी को अतिरिक्त वक्ता के रूप मे प्रस्तुत किया। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के समय मे स्वामी आत्मबोध जी (पूर्व नाम श्री आर्यभिक्षु जी) दक्षिणा के रूप मे प्राप्त राशियो का सचय करते रहते थे और जैसे ही ५०००/– रु० इकटठे होते वे तत्काल उन्हे सौप देते थे। वर्तमान मे जब भी स्वामी आत्मबोध जी के पास ५०,०००/– रुपये का सचय होता है वे सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी को सौप देते है। हालाकि स्वामी जी ने प्रतिदिन ६ बजे सोने का नियम बनाया है परन्तु आज हमारे निवेदन पर उन्होने उसे आज के लिए शिथिल करने की उदारता दिखाई अत उनका स्वागत और उदबोधन पहले ही करवाना आवश्यक है।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी का अभिनन्दन

श्री विमल वधावन जी ने स्वामी जी का अभिनन्दन करने के लिए श्री रामफल बसल कै० देवरत्न आर्य श्री रामनाथ सहगल और श्री आनन्द कुमार जी को आमन्त्रित किया। इस अभिनन्दन के पश्चात स्वामी जी को अपने प्रवचन करने के लिए आमन्त्रित किया गया।

आश्रम व्यवस्था का पुनरुद्धार करो

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी ने कहा कि आर्य समाज का अतीत उज्ज्वल रहा है और भविष्य भी उज्ज्वल रहेगा। परन्तु वर्तमान मे सन्देह करने वाले लोगो के मस्तिष्क मे विकार हे जिसका उन्ह चिकित्सा से इलाज करना चाहिए। उन्होने कहा कि आर्य पुरुष हताश निराश और उदास नहीं है। इस समय आर्यसमाज की बागडोर एक नवयुवक के हाथ मे है। वैसे हमे यह जान लेना चाहिए कि पतझड और बहार दोनो साथ साथ चलते है। धीरे धीरे वृद्ध लोग प्रस्थान कर रहे हे और युवक आ रहे हैं। देवरत्न के पिताजी की साधना का यह परिणाम है कि छोटी सी आयु मे इन्हे आर्यसमाज की सर्वोच्च सस्था का प्रधान चुना गया है। जिसके माता और पिता दोनो धर्मात्मा हो उसका यश अवश्य बढता है।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज का कार्य करते समय मतभेद का स्वागत करना चाहिए परन्तु मनभेद कभी नहीं करना चाहिए। मतभेद हमारा सौन्दर्य है मूर्खों मे मतभेद नहीं होता। उन्होने कहा कि सौ मूर्खों को एक कमरे मे बन्द करके किसी विषय पर चर्चा करवालो कोई मतभेद नही होगा परन्तु जहा दो विद्वान बैठे हो वहा पर प्रत्येक व्यक्ति का अलग दृष्टिकोण होगा।

हमे समालोचना नही करनी चाहिए। निन्दक को हमेशा साथ रखना चाहिए।

उन्होने कहा कि चरित्र का सदेव सम्मान किया जाना चाहिए। निर्धन धनवान से डरता है निबल बलवान से डरता है मूर्ख विद्वान से डरता है परन्तु चरित्रवान से तीनो डरते है।

उन्होने आर्यो से आह्वान किया कि आश्रम व्यवस्था का पुनरुद्धार अवश्य ही किया जाना चाहिए। रामराज्य कोई गुलाब जामुन नहीं है उसे लाने के लिए प्रयास करने पडेगे। २५ वर्ष की आयु मे विवाह अवश्य ही हो जाना चाहिए और ५० वर्ष की आयु म व्यक्ति को घर से निकाल बाहर करना चाहिए। तभी समाज की व्यवस्थाए ठीक चलेगी। उन्होने कामना की कि हमारे पुत्र राम हो और हमारी बेटिया सीता के समान हो।

भूमि बेचने वालो को धिक्कार है

इसके पश्चात सत्र के सयोजक श्री देवेन्द्र शर्मा ने वक्ता के रूप मे जम्मू से पधारे वेदिक विद्वान एव धर्मार्य सभा के सयोजक डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री को "कर्तव्य बनाम अधिकार" विषय पर बालने क लिए आमन्त्रित किया। डॉ० यागेन्द्र कुमार शास्त्री ने अपना लिखित उदबोधन पहले भिजवा दिया था।

अत उसे सार्वदेशिक के अगले अक म प्रकाशित किया जाएगा। इस लिखित उदबोधन के अतिरिक्त डॉ० योगेन्द्र जी ने गुरुकुल की भूमि विक्रय मे शामिल सभी लोगो को कडे शब्दो मे धिक्कारा और आर्यो को कर्तव्य पालन के लिए बडे प्रेरक शब्दो मे प्रेरित किया।

जो कर्तव्य का पालन करे, वह मरता नहीं।
जो अधिकार का पालन करे, वह डरता नहीं।
हम सब आर्य हैं और आर्य ही रहेंगे।
आर्यसमाज से जुडे है, और जुडे ही रहेंगे।
कठिनाइयों को पार किया है, करते ही रहेंगे।
ओ३म् का ध्वज ऊचा है और ऊचा ही रहेगा।
आर्यसमाज अमर है और अमर ही रहेगा।।

डॉ० योगेन्द ने कहा कि गुरुकुल भूमि विक्रय मे शामिल लोगो ने न केवल अपने कर्तव्य पालन मे लापरवाही की है अपितु षडयन्त्र किया है इसलिए आज वे इस मच पर बैठने के योग्य भी नहीं रहे।

वैदिक परिवारवाद विषय पर उद्बोधन के लिए स्वामी दिव्यानन्द जी को आमन्त्रित किया गया। स्वामी जी का भी लिखित उद्बोधन लेख रूप मे अगले अक मे प्रकाशित किया जाएगा।

सत्र के सयोजक श्री देवेन्द्र शर्मा ने कहा कि भूमि बेचने वाले लोग तो इस सम्मेलन मे नीचे बैठने के भी योग्य नहीं रहे। उन्हे अधिक से अधिक सजा मिलनी चाहिए और उन्हे यह समझ लेना चाहिए कि वे गुरुकुल रूपी इस वाटिका के केवल माली थे मालिक नहीं।

उद्यान उजाडने वालो ! सावधान

"हम इस समाज के माली है मालिक नहीं।"

इस विषय पर उदबोधन देन के लिए सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के अध्यक्ष आचार्य विशुद्धानन्द जी को आमन्त्रित किया गया। उन्हाने कहा कि हरिद्वार की इस पवित्र धरती पर जब भ्रष्टाचार बहुत बढ गया था तो महर्षि दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराइ थी। आज जिस भूमि पर हम बैठ है वह पवित्र भूमि हमारी मातृभूमि है। हम इसे मा कहकर पुकारते हे। वेद मे कहा गया है माता मै तुम्हारा पुत्र हू। इस मातृभूमि पर सबसे पहले ऊषा देवी हिमालय रूपी सुनहरे मुकुट का चूमती हे। यह सारा समाज ओर राष्ट्र एक बगीचे की तरह है हम इसके माली हैं। माली सरक्षण और विकास करता ह जबकि मालिक सम्भक्षण ओर विनाश करता ह। हे उद्यानपालो ! इस समय विकास का उपयुक्त समय हे इस उद्यान के उजाडने वाले दुर्जनो से स्वामी विशुद्धानन्द जी ने काव्यात्मक शब्दो मे निवेदन किया कि –

उजाडे है गुलिस्ता तुमने इन हाथों से दीवानों।
अगर तुम चाहते तो वीराने सवर जाते।।

आचार्य जी न कहा कि हम प्रतिदिन कहते है – ह अग्नि ! जाग। जिनके मन म यह अग्नि जागी उन्होन विश्व का मार्गदर्शन किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन आज भी मार्गदर्शन दे रहा है। उन्होन इस उद्यान को अपने खून पसीने से सींचा।

उन्हाने आर्यो से आह्वान किया कि जीवन का समझना चाहिए –

जिन्दगी जलता हुआ अगार है।
जिन्दगी तलवार की एक धार है।
जिन्दगी को समझो न फूलो की डगर।
जिन्दगी बलिदान का व्यापार है।।

उन्होने कहा कि हमने अपने बलिदानो से राष्ट्र को बचाया है इसलिए अब भी राष्ट्ररक्षा का दायित्व हम पर हे। उन्होन पुन काव्यात्मक शैली मे कहा कि –

राष्ट्र के नीचे अभी भी एक चिन्गारी है
वह लपट उठे न उठे किन्तु तैयारी तो हे।

आचार्य जी ने कहा कि जब हम भारतीय सस्कृति की ओर देखते हैं तो ठडी हवा आती है। **गुरुकुलो के दीपक जलते रहेगे, जब तक गीत पूरा न हो। यह केवल टिमटिमाएगे नहीं बल्कि पूर्ण प्रकाश देगे। सोना कहता है कि मै अग्नि से नहीं घबराता, मै तपने से नहीं घबराता और न मैं हथौडी की मार से घबराता हू। मुझे दु ख तब लगता है कि जब लोग मुझे तराजू मे तोलते है।**

उन्होने आर्यो को चेतावनी देते हुए कहा–

अब हवाए ही करेंगी रोशनी का फैसला।
जिस जिस मे जान होगी वह दीया रह जाएगा।

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ ३ का शेष

धार्मिक संस्थाओं का धन खाने वाले निकृष्ट योनि में जाएंगे

प्रदूषण मुक्ति आर्यसमाज का कार्य है

इसके बाद पूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा आर्य सासद श्री जयसिगराव गायकवाड का अभिनन्दन करके उन्हे उदबोधन के लिए आमन्त्रित किया गया।

श्री पाटील ने कहा कि आज हम उस व्यक्ति के परिवार की चर्चा कर रहे है जिसका अपना कोई परिवार नही था। फिर भी उसका यह आर्य परिवार आज देश विदेश तक फैला है। इस परिवार के कुटुम्ब प्रमुख थे – महर्षि दयानन्द सरस्वती।

आज हम इस सत्र मे इस बात पर चिन्तन कर रहे है कि क्या यह परिवार ठीक चल रहा है। उन्होने कहा कि पहले हमे अपने घर मे सबको आर्य बनाना चाहिए यह परिवार देश विदेश मे तो फैला है परन्तु इतना सक्षम नही हो पा रहा है कि प्रदूषण से स्वय भी बच सके और बाकी समाज को भी बचा ले। पश्चिमी सस्कृति के रहन सहन और विचारो का प्रभाव बढ रहा है। हमारे सस्कार फैल नही पा रहे। अत्याचारी भ्रष्टाचारी बलात्कारी पैदा हो रहे है। आर्यसमाज मे इन सबके रोकथाम की क्षमता है। परन्तु आज हमारे पास कोई कार्यक्रम नही। हमारे गुरुकुल के ब्रह्मचारी आचार्य ओर देश भक्त आर्य यह सारा कार्य कर सकत हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी को इस कार्य की आवश्यकता महसूस हुई तो उन्होने गुरुकुल खोला उन्हे इस प्रदूषण का आभास था। वे इसका इलाज करना चाहते थे। यह इलाज लगातार सौ वर्ष से चल रहा है। आज का आधुनिक स्नातक मात्र पढ सकता है परन्तु उसमे सस्कार नहीं। मानव परिपूर्ण होना चाहता है परन्तु उसे सत्सग की सगत चाहिए। जैसो के साथ रहेगा वैसा बनेगा अच्छो के साथ अच्छा बनेगा बुरो के साथ बुरा बनेगा। दूसरा नियम सदग्रन्थ वाचन का है। मेरे दुर्भाग्य से मुझे शिरडी की एक सभा मे बोलने का अवसर मिला मैने पूछा कि वेद पढने तो छोडो किसी व्यक्ति ने वेद देखे है ? इस प्रश्न पर एक भी हाथ खडा नहीं हुआ। परन्तु मेरा सौभाग्य है कि आर्यो की इस सभा मे ऐसा नहीं होगा। यहा उल्टा प्रश्न पूछेगे कि किसने वेद नहीं पढे और न देखे तो भी शायद एक भी हाथ नहीं उठेगा। आज के मानव को वेद पढने चाहिए। ज्ञानेश्वर और सत तुकाराम को पढना चाहिए। आज का नवयुवक झूठी कहानिया छिप–छिपकर पढ रहा है। उन्हे यह जानना चाहिए कि छुपकर पढने वाले ग्रन्थ अच्छे नही हो सकते। सत्सग से बुद्धि बढती है। अधिक से अधिक तीर्थाटन करना चाहिए। अलग–अलग स्थानो के लोगो से मिलने से भी ज्ञान बढता है। अक्सर लोग कहते हे कि बुजुग अवस्था मे समाज और धर्म का काम करना चाहिए। मे उनसे निवेदन करता हू कि यह सब काय नोजवानी की मस्ती म ही करन चाहिए। जिन कार्यो से आर्थिक शारीरिक आध्यात्मिक बौद्धिक ओर मानसिक विकास होता हो वही अच्छी शिक्षा मानी जा सकती है। यदि व्यक्ति अच्छा है तो समष्टि अच्छी है और तभी सृष्टि अच्छी होगी। जब गुण बढत हे तो देवत्व प्राप्त होता है जबकि दुर्गण बढने से दानवत्व बढता है। युवावस्था इन दोनो की जननी है। यह उपजाऊ भूमि है इसमे जेसा बोएगे वैसी ही फसल मिलेगी। क्या हमने देश द्रोही ओर आतकवादी बोए थे ? जो हम आज यह फसल मिल रही है। परन्तु इतना अवश्य ह कि अच्छे बीज नही बोए गए। जापान की एक व्यापारिक तकनीक है प्रयोग करो और फेंको हमने इसे युवाओ पर लागू कर दिखाया। यदि हम प० विद्वान अचार्य ओर देशभक्त बोते तो सारे राष्ट्र को वही प्राप्त होत। यह काय आर्यसमाज न किया परन्तु उसकी मात्रा बहुत कम थी। इस मात्रा को बढाया जा सकता हे।

श्री जयसिगराव गायकवाड जी ने उपस्थित आर्यबन्धुओ से निवेदन किया कि वे केवल इस कार्यक्रम मे उपस्थित होने तक ही अपने आप को आर्यसमाजी न समझे बल्कि देश–देश शहर–शहर और गाव–गाव जा जाकर अपने सिद्धान्तो का प्रचार करे। उन्होन कहा कि समस्त सदग्रन्थो का निचोड यह है कि इन्सान का इन्सान से व्यवहार कैसा हो। केवल कर्मकाण्ड धर्म नही। वह तो धर्म का हजारवा हिस्सा है। धर्म तो व्यवहार के नियमो का समुच्चय है। हम जहा भी जाए वहा हमारी छाप पडनी चाहिए। हम पर वहा का प्रभाव नही पडना चाहिए। हमारा सस्कार हमारा अस्तित्व नौ के पहाडे की तरह हाना चाहिए जो अपना अस्तित्व नही खोता उसे कितनी ही बडी रकम से गुणा कर लो परिणाम के समस्त अशो का अन्तिम योग ६ ही रहेगा। इस महासम्मलन मे हमे प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम अपना अस्तित्व सुदृढ रखेगे।

मनन पूर्वक कर्त्तव्यों का पालन करो

इसके बाद विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित आर्य सासद श्री रासा सिह रावत जी का अभिनन्दन करके उन्हे उदबोधन के लिए आमन्त्रित किया गया।

प्रो० रासा सिह रावत ने अपनी चिर–परिचित शैली म गरजते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्म स्थली पर एकत्रित होना आज हमारे लिए सौभाग्य की बात है। उन्होने शहादत का रास्ता अपनाया था क्योकि बहादुर जो ठान लेते हे उसे करके दिखाते हे। महात्मा गाधी उन्हे अपना बडा भाई मानते थे। जलियावाला काण्ड के बाद होने वाले सम्मेलन मे कोई व्यक्ति अध्यक्षता की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द ने उस सम्मेलन की अध्यक्षता की।

गाधी जी को महात्मा की उपाधि से अलकृत करने का श्रेय भी स्वामी श्रद्धानन्द को ही ह। उन्होने चादनी चौक पर ब्रिटिश फोजो के सामने अपना सीना तान दिया जामा मस्जिद की मिम्बर से प्रवचन देने वाले वे पहले हिन्दू थे। वे एक सन्त थे जो एक विधर्मी के हाथो मारे गए।

इन प्रेरणाओ के साथ उन्होने आर्यो को आह्वान किया कि अपने मन को टटोलो क्या आप स्वय आर्य बन सके ? उन्होने कहा कि के० देवरत्न जी के पिता आचार्य भद्रसन जी हमे पढाया करते थे कि आर्य वह हे जो सदाचारी परोपकारी और धर्मात्मा हो। एक आर्यसमाजी का जीवन चलता फिरता आर्यसमाज होना चाहिए। उन्होने स्वामी जी के उपदेशो का सार प्रस्तुत करते हुए कहा –

जैसा खाएगे अन्न वैसा बनेगा मन।
जैसा पीएगे पानी, वैसी बोलेगे वाणी।
जैसा करेगे सग वैसा चढेगा रग।
जैसा होगा विचार, वैसा होगा आचार।
जैसी होगी दृष्टि, वैसी होगी सृष्टि।
जैसी मिलेगी शिक्षा, वैसी प्राप्त होगी दीक्षा।
जितना जानेगे धर्म, उतना होगा कर्म।
जितना करेंगे योग, उतना दूर होगा रोग।
जैसी होगी मति, वैसी होगी जीवन की गति।
जितनी करेंगे भक्ति, उतनी आएगी शक्ति।
जैसी हमारी करनी, वैसी हमारी पार उतरनी।

इन प्रेरणाओ के साथ प्रो० रावत ने जोरदार शब्दो मे आह्वान किया कि खाली सम्मेलनो से काम नहीं चलेगा। अपने आचरण मे सुधार का कार्य अपने घर से ही प्रारम्भ करो।

इसके अतिरिक्त प्रभु के प्रति भी हमारा विशाल कर्त्तव्य है कि पाचो यज्ञ और १६ सस्कार ही हमे पूर्ण बना सकते है। हम विगत १०० वर्षो के इतिहास का अवलोकन करे मनन पूर्वक अपने कर्त्तव्यो का पालन करे। सच्चे ऋषि भक्त स्वय भी बने और परिवार को भी बनाए। सदग्रन्थो को पढो और बच्चो को भी पढाओ। आर्यसमाज मे जाओ और बच्चो को भी ले जाओ।

इस अन्तिम उदबोधन के बाद लगभग ११ बजे महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने आर्यजनो को सूचित किया कि इस सत्र के बाद यदि आप अनुमति दे तो लगभग एक घण्टे की फिल्म दिखाने का प्रबन्ध किया जाए जो कि श्री सुभाष अग्रवाल ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर तैयार की है। समस्त आर्यजनो ने हर्षपूर्वक इसकी स्वीकृति प्रदान की।

धार्मिक संस्थाओं का धन खाने वाले कुत्ते की योनि में जाएंगे

सत्र अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने कहा कि चरित्रवान व्यक्ति ही चरित्र का निर्माण कर सकता है। आर्यसमाज चरित्र निर्माण का कारखाना है अत इसमे रहने का अधिकारी वही व्यक्ति है जो स्वय चरित्रवान हो। स्वामी श्रद्धानन्द जी जब मुशीराम थे तो मास और शराब आदि का भी सेवन करते थे। परन्तु स्वामी दयानन्द जी के सम्पर्क से उनमे सुधार का क्रम शुरू हुआ। क्योकि महर्षि के चरित्र का एक आकर्षण था। गुरुकुल की स्थापना के समय लगभग दो हजार बीघे जमीन थी आज बिकते बिकाते यह केवल एक हजार बीघे रह गई हे। जो बेईमानी करते है उन्हे परिणाम अवश्य ही भुगतना पडेगा।

उन्होने रामायण के अत मे कुत्ते की उस कहानी का उल्लेख किया जिसका सार यह था कि धार्मिक सस्थाओ का धन खानेवाला व्यक्ति कुत्ते की योनि को प्राप्त करता है।

उन्होने कहा कि मेरे जीवन की युवावस्था मे मेरे पिता ने मुझे प्रेरित किया कि तुम वकील बनो। जिससे बदमाशो का इलाज किया जा सके और शरीफो की मदद की जा सके।

श्री रामफल बसल ने कहा कि गुरुकुल कागडी के भूमि विक्रय के सम्बन्ध मे मैं हर प्रकार की सहायता देने को तैयार हू। इसी प्रकार उन्होने वैदिक मोहन आश्रम के विवाद का भी उल्लेख किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि शीघ्र ही आर्यसमाज की सम्पत्तियो पर गिद्ध दृष्टि रखने वालो का नाश हो।

इस अध्यक्षीय भाषण के बाद सत्र की समाप्ति शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुई तो के० देवरत्न आर्य ने सुभाष अग्रवाल द्वारा निर्मित वृत्त चित्र का परिचय दिया।

रात्रि मे लगभग ११३० बजे यह वृत्तचित्र प्रारम्भ हुआ और लगभग १२३० बजे तक आर्यजनता एकाग्र होकर इस वृत्त चित्र का आनन्द लेती रही।

(क्रमशः)

आर्यसमाज क्यों ?

– डॉ० गजानन्द आर्य

आर्यसमाज की स्थापना सन १८७५ मे हुई। किसी भी कार्य के पीछे कारण अवश्य होता है और कारण से ही कार्य होता है। सूत्र रूप मे कहे तो आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आयसमाज के छठे नियम की पृष्ठभूमि मे ऐसे बहुत से कारण हैं जिनके लिए मुख्य उददेश्य बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती को समाज का निर्माण करना पडा। २१ वर्ष का युवक मूलशकर शिव की खोज मे घर से भागा। निरन्तर ३० वर्षो तक की खोज मे उनको देश की विपन्नता के दर्शन हुए। धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्डो को निकट से देखा। बाल विवाह मद्यमास का प्रचार और वाममार्गी विचारो मे फसी युवा शक्ति का ह्रास उन्होने देखा। सामाजिक व्यवस्था के नाम पर चौके – चूल्हे का धर्म अछूत कहकर मानव मानव से घृणा स्त्री जाति पर मनमाने प्रतिबन्ध लगते उन्होने देखे। कृषि प्रधान देश का विनाश होते देखा। ब्रह्मचर्य के प्रति उदासीनता वेद के प्रति उपेक्षा और भिन्न भिन्न मतमतान्तरो मे बटे हुए देशवासियो की अन्ध परम्पराये उनको सहन नही हुईं। प्रवचनो और उपदेशो द्वारा समझाने के प्रयत्न विशेष सफल नही हुए।

ऐसी परिस्थितियो म शिव को खोजने वाले ने स्वय शिव (तथाकथित पौराणिक आख्यान का शिव) बनने और बनान का निश्चय कर लिया। स्वय गरल पीकर शिव का अमृतपान कर उन्होने अपना उत्तराधिकारी आर्यसमाज को बनाया और उसका आदेश दिया **"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।"**

ऋषि को आर्यसमाज स क्या आशाये थीं इसके विषय मे उनके एक लेख और एक प्रवचन के कुछ अश उदधृत करना उनकी भावना को स्पष्ट करता हे – **"जो उन्नति करना चाहे तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।'**

(सत्यार्थ प्रकाश – ११वा समुल्लास)

"ईश्वर से यह प्रार्थना करता हू कि सर्वत्र आर्यसमाज कायम होकर मूर्तिपूजादि दुराचार दूर हो जावे। वेद शास्त्रो का सच्चा अर्थ सबकी समझ मे आवे और उन्हीं के अनुसार लोगो का आचरण होकर देश की उन्नति हो जावे। पूरी आशा है कि आप सब सज्जनो की सहायता से मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।" *(पूना प्रवचन)*

नियम मे **"उपकार"** शब्द का प्रयोग एक महत्व रखता है। **"उपकार"** का पर्यायवाची **"सेवा"** शब्द है आजकल **"सेवा"** शब्द अधिक प्रचलित है किन्तु दोनो मे एक मौलिक अन्तर हे सेवा के साथ प्रतिफल की भावना छिपी है। ऐसा करने वाला नि शुल्क सेवा करता हे अथवा सशुल्क यह प्रश्न बना रहता है। माता–पिता के प्रति की गई सेवा सेवा कहलाती है क्योकि सतान इससे उऋण होती है। किन्तु दीन दुखियो व अनाथो की सेवा नि शुल्क हो सकती है अत इस सेवा को उपकार भी कहा जा सकता है। 'उपकार इसक साथ न प्रतिफल की आशा ह ओर न ही किसी प्रकार के शुल्क की। आर्यसमाज का यह उपकार इसी स्तर का है। गीता की भाषा मे इसे निष्काम सेवा कह सकते है। आर्यसमाज के नाम पर इस उपकार मे कोई सोदेबाजी करता हे तो निश्चय ही वह नियम का अपमान करता हे।

आर्यसमाज सारे विश्व को आर्य बनाने का सकल्प लेकर चलता है अत उपकार के क्षेत्र मे सारा ससार इसकी कर्मभूमि है। आर्यसमाज की परिधि मे विश्व की समस्त मानव जाति आ सकती है रगभेद नस्ल भेद भाषा भेद और क्षेत्रीय भेद आर्यसमाजी बनने मे रूकावट नहीं हैं उद्देश्य के पालन मे आर्यसमाज की जितनी क्षमता है उतनी सेवा करता हुआ भी विश्व के हित की चिन्ता करता है यही इसका सार्वभौम रूप है। सभी समाजो का एक ही उददेश्य है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उददेश्य है।

ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है इसको हम ऐसा कहे कि ससार का उपकार करना प्रत्येक आर्य का मुख्य धर्म हे तब हमारा सकेत अपने अग्निहोत्र की ओर है। अग्निहात्र के माध्यम से वायु शुद्धि होती है। वायु शुद्धि से वर्षा का जल और जल की पवित्रता से वनस्पति – औषधि एव अन्न आदि की पैदावार शुद्ध होन से समस्त प्राणी जगत को उपकार पहुचता है। यह ऐसा उपकार – जिसमे किसी से भेदभाव नहीं रहता। आज का वातावरण प्रदूषण से बहुत विषाक्त हे। विविध प्रकार के प्रयोग और योजनाए इस प्रदूषण का घटान मे सक्रिय हैं। किन्तु वायु शुद्धि का उपचार केवल मात्र हवन है। पच महायज्ञो मे देवयज्ञ आता है। देवयज्ञ मे अग्निहात्र अनिवार्य अग हे। आर्यो को यह दवयज्ञ प्रतिदिन करना ही चाहिए।

मुख्य उददेश्य की सक्षिप्त परिभाषा मे नियम के साथ अथत शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना वाक्य जुडा हुआ है। उद्देश्य पालन का पूरा पुरोगम अन्य नियमो मे निहित है। यदि शेष सभी नियमो क' छठे नियम का पूरक कह दे तो अतिशयाक्ति नही हागी। आर्यसमाज का यह नियम जहा क्षेत्रातीत हे वहा कालातीत भी ह। मानव केशत्रु अविद्या अन्याय और अभाव हमशा स रहे है ओर ऐसे शत्रुओ स लोहा लने वाल श्रेष्ठजनो की आवश्यकता भी सदव रही है। वैसे ही श्रेष्ठजनो की कोटि मे आयसमाज अपने आपको लाना चाहता है और वैसा ही मानता भी है।

– १६ बालीगज सर्कुलररोड कलकत्ता

धूम मचा दी हरिद्वार में !

प्रो० ब्रह्मदेव आर्य

धूम मचा दी हरिद्वार मे ऋषिवर की टोली ने जाकर के।
वैदिक नाद बजा करके ! ऋषि के सन्देश सुना करके।।

धन्यभूमि ! जहा स्वामी श्रद्धानन्द ने ज्ञान का दीप जलाया था,
ब्रिटिश शिक्षा के खोल पोल, वैदिक पीयूष पिलाया था।
देश, धर्म, सस्कृति की रक्षा का पाठ पढाया था,
'वेदोऽहि अखिलो धर्ममूलम्' का सन्देश सुनाया था।।

बोया बीज अक्षयबट का अपना सर्वस्व लुटाकरके।
वैदिक नाद बजा करके ! ऋषि के सन्देश सुना करके।।

गुरुकुल शताब्दी सम्मेलन का यह अद्भुत रूप निराला था,
रथ पे रथी अग्रदूत बने, देवरत्न की शोभा आला था।
विमल वधावन पैदल पाव, आर्यो के दिल की ज्वाला था,
सिर पे पगडी, कर ओ३म् ध्वज, मुख मे ऋषि वेदो वाला था।।

हर की पौढी का तोडा बाध, पाखण्ड खण्डनी फहरा करके।
वैदिक नाद बजा करके, ऋषि के सन्देश सुना करके।।

कुलपति वेदप्रकाश के ब्रह्मत्व मे हुआ यज्ञ का अनुष्ठान,
स्वामी दीक्षानन्द, आर्य तपस्वी सत्यपति थे विराजमान।
सुमेधानन्द, दिव्यानन्द स्वामी, दिये वेद का अमृत ज्ञान,
आत्मबोध सरस्वती कर प्रबोध, आर्यो मे फूक दिया नव प्राण।।

वर्मा, महिपाल, निर्मल, पथिक, ने मनमुग्ध किया गा गाकर के।
वैदिक नाद बजा करके, ऋषि के सन्देश सुना करके।।

चेवारा, शेखपुरा, बिहार,

आर्यसमाज को निष्ठावान, समर्पित राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता

भारत की सुरक्षा एव एकता के लिए एक बार पुन आर्यसमाज को आगे आना है और उसके लिए निष्ठावान समर्पित राष्ट्रवादी स्वतन्त्रता सेनानी प० बटेश्वर दयाल (पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली) जैसे आर्य कार्यकर्त्ताओ की महति आवश्यकता है। उक्त विचार आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे आयोजित प० बटेश्वर दयाल की प्रथम पुण्य तिथि पर आयोजित विशेष समारोह के अध्यक्ष पद से श्री राजसिह भल्ला जी ने कहे।

समारोह मे दिल्ली की आर्यसमाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य सस्थाओ के अधिकारी एव कार्यकर्ता भारी सख्या मे उपस्थित हुए।

समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री – डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदव जी दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री प्रिसिपल चन्द्रदेव जी आदि अनेक नेताओ ने प० बटेश्वर दयाल जी के जीवनवृत पर प्रकाश डालते हुए नवयुवको का आर्यसमाज मे आह्वान किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज दीवान हाल की ओर प० बटेश्वर दयाल जी की स्मृति मे वैदिक सन्ध्या तथा यज्ञ पर एक सुन्दर पुस्तक प्रकाशित कर वितरित की गई।

दैनिक यज्ञ पद्धति का सम्पादन श्री मूल चन्द गुप्त पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवान हाल ने किया। समारोह का सचालन डॉ० रविकान्त मत्री आर्यसमाज दीवान हाल ने किया।

स्वामी अग्निवेश को नेक सलाह

रूपसियों और विधर्मियों का साथ छोड़कर सत्य का अपनाएं मार्ग

– बीरबल आर्य

प्रिय स्वामी अग्निवेश जी

नमस्ते।

वैदिक परम्परा के अनुरूप अभिवादन सभी को किया जाता है चाहे वह सम्मान या आदर के योग्य हो या न हो अत मै विवश हू। आपने महर्षि दयानन्द महात्मा गाधी ओर सत आसाराम जी की आराधना स्थली गुजरात की पावन धरती की सदभावना यात्रा की शान्ति रैली या वार्ता द्वारा साम्प्रदायिक हिसा पर अकुश लगाने का प्रयास किया जिसमे जमायते इस्लामी हिन्द और उल्लेमा के रफीक कासमी एव अब्दुल हमीद जैन सत अमरेन्द्र मुनि बौद्ध भिक्षु भन्ते राहुल सिक्ख ग्रथी राजेन्द्र सिह ईसाई मिशनरी के फादर डामनिक एव निर्मला देशपाण्डे इत्यादि ने भाग लिया और निष्कर्ष स्वरूप आपने भाजपा की मान्यता खत्म करके हसीन नफीसा अली और निर्मला देशपाण्डे के साथ मिलकर मुकदमा ठोका है। आपकी आर्य नीति के उद्देश्य से यह सम्प्रदायो का नही है यह टकराहट है दो सस्कृतियो की और दो विश्वासो की एक पूर्व को जाता है तो दूसरा पश्चिम को। स्वामीजी आप के कई लेख और टी०वी० पर व्याख्यान पढने और देखन का अवसर सेवक को प्राप्त है जिसमे धर्म का सच्चा स्वरूप एव ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध मे तत्वज्ञान प्राप्त करने का आह्वान आपने किया है। आतकवादियो की समाप्ति ओर सतप्त व्यक्तियो या परिवारो की सहानुभूति हेतू आपने जम्मू काश्मीर या अन्य प्रभावित प्रान्तो की कितनी यात्राए की है या कार्यक्रम चलाए है ? विपक्ष की कार्यनीति तो स्पष्ट है वोट बैक की खातिर सत्य को असत्य या देखी अनदेखी करना उनकी राजनीति मे सम्मिलित है मगर आप जैसे ब्रह्मचारी सन्यासी को स्त्रियो को साथ लेकर मुकदमेबाजी करना कौन सी आर्यनीति के अन्तर्गत आता है स्पष्ट करने की कृपा करे। महर्षि मूर्ति के अस्तित्व को स्वीकार कर कोई अन्तर नहीं छोडा। आप प्राणिमात्र के कल्याण की रूपरेखा तैयार कर आर्य सन्यासी ही बनकर अपना महत्व इतना महान करे कि ससार आपको स्मरण करता रहे। बाकी रही माया की वात तो वह आपके पास पर्याप्त है भगवान का भजन कर आनन्दपूर्वक रहिय। स्वामी दयानन्द रामतीर्थ ओर विवकानन्द से आप ज्यादा आयु पाये हो। बस सयमपूर्वक कीर्ति बढाओ और छलकपट का रास्ता त्याग दो।

आज झगडा हिन्दू, मुसलमान सिक्ख या ईसाई का नही है विवाद का मुख्य कारण मानवता की हत्या का है जो इसान होकर हैवानियत का रास्ता अपनाएगा उसे कहीं कोई सहन न करेगा। गुजरात मे मानवता का खून हुआ। विपक्ष ने मौन धारण कर लिया जम्मू काश्मीर मे भी सब मौन धारण किए है जबकि हैवानियत की निन्दा ही नही प्रतिकार किया जाना चाहिए था। जब हैवान को मारने का गुजरात ने सगठित प्रयास किया तो विपक्ष जागृत हो गया और भूल गया कि जब आग लगती है तो धुआ पैदा होगा ओर जब धुआ खूब घना हो जावेगा तो अच्छा बुरा कुछ दिखाई नही पडता। सिद्धान्त यह है – आप सन्यासी हैं और सन्यासियो का तपोमय जीवन व आभामण्डल बडा तेजयुक्त होता है। आप रूपसियो और विधर्मियों का साथ छोडकर सत्य का रास्ता अपनाए। आपका एव भारत का कल्याण होगा। ईश्वर आपका कल्याण करे।

– गौरव स्पोर्टस छिन्दवाडा

स्वाभाविक और गरिमामय भी था। अभिनेता राजबब्बर और विपक्ष की महान विभूतियो ने पूर्व मे गुजरात भ्रमण कर कुछ ऐसा ही नाटक खेला था। गोधरा काण्ड के काग्रेसी महानायको कलोटा और बिलाल इत्यादि ने विश्वशान्ति के लिए चलाए जा रहे विश्वव्यापी आन्दोलन मे ५६ लोगो की आहूति देकर जो महायज्ञ प्रारम्भ किया जिसकी प्रशसा या भेटवार्ता किसी ने नहीं की केवल प्रतिक्रिया मात्र निरूपित किया जो कारसेवको ने साबरमती एक्सप्रेस के गोधरा स्टेशन के तीन मिनट के स्टापेज मे अभद्र व्यवहार स्टेशन पर किया है। जब महायज्ञ प्रारम्भ हो ही गया तो आहूतियो का क्रम लगना क्यो स्वाभाविक नही है ? पूण आहूति तक यज्ञ से उठना क्या न्यायसगत प्रतीत होता है। क्या आप की आर्यनीति मे यज्ञ पूर्ण कराना या होने देना न्यायसगत नही है ?

विगत बारह वर्षो मे जम्मू काश्मीर मे आतकी हिसा मे कुल १२७७१ नागरिक मारे गए है और एक लाख से भी ज्यादा बेघरबार हो गए है अथवा पलायन कर गए है और आजतक आतक समाप्ति का कोई समाधान नही निकला है न निकलने की सम्भावना प्रतीत होती है। इसका कारण विवाद दो समुदायो या दयानन्द ने साफ साफ लेख किया है कि दुष्टो का उनकी दुष्टता का दण्ड देना ही न्यायोचित है। पादुका सौप कर रामराज्य स्थापित करने भरत को निर्देशित कर श्री राम ने भी असुरो की समाप्ति का प्रण किया था और वनवासी होकर मर्यादा का पालन किया था। अच्छा होता गुजरात जाने पर आप टकारा महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली जाते और आर्यसमाज के दस नियमो का पालन करने और कृण्वन्तो विश्वमार्यम विश्व को श्रेष्ठ बनाने का सकल्प करते। अपने साथ लाए महानुभावो का भी महर्षि के सत्य से परिचय कराते। गोधरा काण्ड की पुनरावृत्ति न हो और देश का हर नागरिक सच्चा देशभक्त बनकर अपने अपने ढग से पूजा या इबादत करे। मुसलमान और ईसाई तो आत्मा को मानते नही परन्तु एक सच्चे इन्सान बनकर भगवान खुदा या अल्लाह की बनाई हुई मिल्कियत की देखरेख भलाई तो कर सकते है। किसी को किसी का खून बहाने की इजाजत हरगिज नही दी जा सकती है। पद और कुर्सी के वास्ते सगठन को तोडना बखेडा खडा करना या जगहसाई का अवसर आप को नही देना चाहिए। एक ने मूर्ति पर माल्यार्पण किया दूसरे ने माला उतार कर फेक दी तो दोनो ने

२१वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर में

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार

दिनाक २६ ५ २००२ को प्रात काल विशेष यज्ञ का आयोजन आचार्य बसत कुमार के ब्रह्मत्व मे किया गया जिसमे मुख्य यजमान के रूप मे श्रीमती पुष्पा जी मदान एव समस्त शिविरार्थी भाई बहन यज्ञमान बने। इस अवसर पर लगभग ६० ७० शिविरार्थियो का यज्ञोपवीत सस्कार किया गया। यज्ञोपवीत का अर्थ बताते हुए आचार्य बसत जी ने कहा कि यह यज्ञोपवीत परम पवित्र एव आयु बल तेज को बढाने वाला है। माता प्रेमलता शास्त्री महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली ने कहा कि यह यज्ञोपवीत हमारा हिन्दुओ का आर्यो का परिचय पत्र है। मध्य काल मे जब इस पवित्र धरा पर मुसलमानो का शासन आया तो मुस्लिम शासको ने हमारा जनेऊ और चोटी बलपूर्वक उतरवाया। अनको हिन्दुओ वैदिक धर्मियो ने अपने धर्म की रक्षा हेतु अपनी गर्दन उतरवा दी किन्तु चोटी व जनेऊ नही उतरवाया। अब जब देश पुन प्रलोभन देकर धर्मान्तरण करने हेतु विवश किया जा रहा है ऐसे समय मे प्रत्येक आर्यसमाजियो का कर्त्तव्य है कि भोले–भाले आदिवासी ग्रामीण लोगो के बीच मे जाकर पुन उनका परिचय पत्र जनेऊ देकर बताए कि हम आर्यावर्त देश के रहने वाले वैदिक हिन्दू धर्म को मानने वाले है। चोटी व जनेऊ हमारी पहचान है। कोई भी कितना प्रलोभन क्यो न दे हमे अपना धर्म परिवर्तन नही करना चाहिए चाहे हमे अपनी गर्दन कटवानी पडे तो भी चोटी व जनेऊ की रक्षा करना है। यज्ञोपवीत सस्कार मे श्री विमल वधावन वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी पधारने वाले है थे परन्तु अपरिहार्य कारणो से नहीं पहुच सके। रात्रिकालीन सत्र मे पधारकर उन्होने शिविरार्थियो को यज्ञोपवीत का महत्व बताया तथा अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज रानी बाग के उपस्थित अधिकारी एव सदस्यो ने दीक्षित शिविरार्थियो को आशीर्वाद प्रदान किया। शान्ति पाठ एव प्रसाद वितरण पश्चात आर्यसमाज रानी बाग के मन्त्री जोगेन्द्र खटटर ने सबका आभार प्रदर्शन किया।

– वसन्त कुमार शिविर सयोजक वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर रानी बाग

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता हेतु
आर्यों को धन्यवाद्

– अम्बाराम आर्य

मेरा आर्यो के महासम्मेलन मे जाने का प्रथम सुअवसर था। इस महासम्मेलन को देखकर अपार हर्ष हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष कैप्टन श्री देवरत्न जी आर्य के दर्शन प्रथम बार हुए परन्तु दुख हुआ कि उनसे नमस्ते व धन्यवाद कहने का सुअवसर प्राप्त न हो सका। उनकी सादगी उच्च विचार उत्कृष्ट व्यवहार वृद्धों बडो सन्यासियो तथा विद्वानो का आदर सत्कार करना त्याग की मूर्ति आर्यसमाज के प्रति एक विशेष दर्द दयानन्द के मिशन को उच्चतम शिखर तक पहुचाने हेतु सकल्प वर्तमान मे कुछ स्वार्थी लोगो द्वारा आर्यसमाज व दयानन्द के सकल्पो को दूषित करने वालो से अति दुखी तथा पूरे आर्यों को सावधान रहने की अपील वाणी प्रखर ओजपूर्ण पूरे दिनो समरस न हारे से और न जीते से शान्त परन्तु गम्भीर। इस महात्मा को देखकर श्रद्धा से दिल भर आता था। ऐसा व्यक्तित्व का धनी यदि आर्यसमाज की सर्वोच्च सस्था के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहा हो तो इसमे कोई हैरानी की बात नही। यह तो परमात्मा की अनुकम्पा ही है तथा महर्षि दयानन्द का सकल्प व आर्यसमाज के बढते कदम।

श्री विमल वधावन उप–प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जो महासम्मेलन के महासचालक थे। आपने बडे ही धैर्य निष्ठा पूरे समय उपस्थित रहकर ऐसा अनोखा सचालन किया कि कही कोई गतिरोध देखने को नही मिला। सत्रो का चयन इतना सुव्यवस्थित लगा कि मन प्रसन्न हो गया। आपके मृदुल स्वभाव ने तो सम्मेलन को सवार ही दिया। मै यह सोचने पर मजबूर हो गया कि कब तो आप लोग भोजन करते होगे कब नींद से पलको की थकान मिटाते होगे। एक वे लोग भी होते है जो भोजन न मिले थोडा आराम न मिले तो हाय तौबा मचा देते है। यदि इतने बडे सम्मेलन मे कोई त्रुटि हो गयी तो आसमान सर पर उठा लेते है। सारे कार्यक्रम मे आपको देखकर आश्चर्य हुआ। एक बार एक बृद्धा को कुछ कहना था तो आपने उनको एक किनारे पर आने का इशारा किया वे आइ आपने अपना कान उनके मुख पर लगाकर उनकी बाते बडे धैर्य से सुनी। आपके चेहरे पर किसी भी प्रकार की न सिकुडन और न नाराजगी ही प्रकट हुई। सगीत का कार्यक्रम था तो आपने तबला स्वय लेकर उनके पास रख दिया। किसी और से नहीं कहा। आपका सरल स्वभाव आकर्षित कर रहा था। आर्यसमाज के प्रति आपकी कृतज्ञता दृढ सकल्प एक सिपाही बनकर महर्षि के सकल्पो को पूर्ण करने का व्रत और आर्यो का आवाहन आपकी पहचान हो गयी है।

मै अपनी ओर से आप महाशयो का हार्दिक धन्यवाद् करता हू तथा उन सभी महानुभावो को धन्यवाद देता हू जिन्होने सम्मेलन की सफलता हेतु अपने तन मन धन से रात दिन एक करके व्यवस्था को बनाए रखा तथा अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया। आपने महर्षि दयानन्द के सकल्पो को पूर्ण करने का जो बीडा उठाया है उसकी प्रगति ओर पूर्णता की ओर ले जाने मे परमपिता परमात्मा सदा साथ दे। परमपिता परमात्मा आप सभी को दीर्घ सुदीर्घ स्वस्थ सुन्दर आयु प्रदान करे। यही शुभकामना है।

मेरी आर से एक निवेदन है कि

१ आर्यो की दैनिक पद्धति मे सन्ध्या एव यज्ञ करना परम कर्त्तव्य है। यदि सायकालीन सत्र चल रहा हो तो कुछ समय निकाल कर वही पर यथा समय सध्या का कार्यक्रम अवश्य हो। इससे काफी प्रभाव भी पडेगा।

२ दुकाने आगमन (गेट) वाले स्थान पर न हो इससे बाधा उत्पन्न होती है।

३ आदर प्रदर्शित करने के उद्देश्य से यदि मच पर सभी सन्यासियो के लिए स्थान उपलब्ध न हो सके तो एक अलग स्थान केवल वानप्रस्थियो तथा सन्यासियो हेतु नियुक्ति किया जावे ताकि उनकी भावनाओ को ठेस न पहुचे।

४ सगीत का कार्यक्रम प्रत्येक सत्र के आरम्भ मे सत्रानुसार होना ठीक होगा।

५ सत्र सचालक केवल वक्ता के वक्तव्य पर टिप्पणी दे अथवा सत्र की समाप्ति पर सक्षिप्त विवेचना न कि भाषण इससे समय की बचत होगी।

६ शौचालय इगित हो ताकि महिलाओ वृद्धो को परेशानी न हो।

कृपया उपर्युक्त को अन्यथा न ले यह मेरा केवल एक अनुरोध मात्र है। अभी की व्यवस्था बहुत अच्छी और पूर्ण रूपेण व्यवस्थित थी।

कृपया श्रीमान शेशाद्रि जी का अग्रेजी मे दिया गया वक्तव्य सार्वदेशिक साप्ताहिक मे छपवाने की कृपा करे। धन्यवाद।

– भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लि०
कोटद्वार २४६१४६ पौढी गढवाल उत्तराचल

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन - एक रिपोर्ट

– उर्मिला आर्या (वानप्रस्थी)

गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विशाल आयोजन मेरी दृष्टि मे तो अत्यन्त सफल रहा। मुम्बई की आर्यसमाज स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण होने मे जो महासम्मेलन हुआ था उसमे भी मैं सम्मिलित थी। इतनी अपार भीड को सुचारू रूप से व्यवस्थित करना कोई साधारण काम नहीं। हम गृहणियो को अच्छा अनुभव है कि घर मे चार अतिथि आने पर भी सुचारू रूप से उनके ठहरने खाने पीने की व्यवस्था करना कठिन लगता है। परन्तु हजारो की भीड जुटाकर लगातार गर्मागर्म खाना परोसना भी इस महासम्मेलन की उपलब्धि थी। मुम्बई के सम्मेलन से लौटने पर भी मैंने आर्ष लोक वार्ता के सम्पादक की प्रेरणा से सम्मेलन का वृतान्त पत्रिका मे दिया था। जहा सार्वदेशिक के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता हो तथा महासम्मेलन के आयोजक विमल वधावन के निर्देशन और सभामन्त्री वेदव्रत शर्मा की देखरेख मे गुरुकुल शताब्दी का महासम्मेलन हो वह क्यो न सफल हो। वे सब बधाई के पात्र [illegible] सरल है परन्तु उसको सुधारना परिश्रम और लग्न का काम है। गुरुकुल का दीक्षान्त समारोह बडा भव्य दृश्य उपस्थित कर रहा था। जैसे हम आज के युग मे नहीं पीछे वैदिक स्वर्णिम काल मे बैठे है। सासद श्री नरेन्द्र मोहन जी ने भी अपने प्रवचन मे हिला दिया। विस्तारभय से अधिक लिखना अनुचित होगा। मै स्वय मनसा वाचा कर्मणा से पूर्णतय वेदभक्त और ऋषिभक्त हू जहा ऐसा वातावरण मिले मेरी अन्तरात्म आनन्दित होती है। जब घर से गई थी तो कुछ अस्वस्थ थीं। पति भी किसी कारणवश दो दिन पश्चात आए। परन्तु मुझे पता था अधिक रोग वातावरण की प्रतिकूलता स्वरूप उद्विग्न होने से होते है। जहा वैदिक सस्कृति वेदनाद के नारे गूजते हो प्रत्येक वक्ता वैदिक सस्कृति और अपने भारत की देशभक्ति से ओत–प्रोत भाषण दे रहे थे। यह सब सुनकर मन्त्रमुग्ध थे। ऐसा वातावरण पाकर मेरा स्वास्थ्य भी सुधर गया केवल दो और दो चार के सत्य सिद्धान्त को सुन सुन कर।

महिला सम्मेलन मे भी माता निर्माता भवति शीर्षक से सभी बहनो ने अच्छा सारगर्भित बोला। श्रीमती सुषमा स्वराज का साक्षात किया। वह भी ओजपूर्ण भाषा मे माता निर्माता भवति शीर्षक को सार्थक कर रही थीं। स्वामी श्रद्धानन्द का वृतचित्त भी हृदय को रोमाचित करने वाला था। दिन के पूरे चार सत्र नहीं देख पाई। अन्तिम दिन सार्वदेशिक के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का भाषण पूरा सुना। शान्तिपाठ के बाद उनसे मिली जिसपर उन्होने मीठा उलहाना भी दिया कि अभी तक कहा छुपी थी।

मुम्बई मे तो बडी दूर–दूर लोग ठहराए थे इसलिए सम्मेलन के आयोजको ने सब के लिए बसे निर्धारित की थी। इसलिए हम प्रात यज्ञ से रात्रि के १० बजे तक पूरा कार्यक्रम देखते थे। हरिद्वार चाहे मुम्बई की अपेक्षा बहुत छोटा नगर है इसलिए यहा के सयोजको ने यह प्रबन्ध करना ठीक नहीं समझा होगा इसलिए काफी जनता ने प्रात से रात्रि तक पूरा कार्यक्रम नहीं देखा। सवारी न मिलने के भय से काफी जनता शाम के सत्र के बाद चली जाती थी। इसी कठिनाई के कारण मैंने भी रात्रि का कोई कार्यक्रम नहीं देखा। आगे से आर्यों के लिए ठहरने और सवारी का समुचित प्रबन्ध अवश्य करने का प्रयास करे।

इसके लिए मेरे विचार मे सम्मेलन से प्रर्याप्त समय पूर्व आर्य पत्र पत्रिकाओ और समाचार पत्रो मे भी सम्मेलन के लिए खूब प्रचार हो जिससे आने वाले आर्यजन समय से आपको अपने आने की सूचना दे सके। आप इसी हिसाब से प्रबन्ध अच्छा कर सकेगे।

वर्षा और तूफान भी आप सब के उत्साह को न डिगा सके। प्रभु की इस परीक्षा मे भी आप सब सफल रहे। आप सब साधुवाद और बधाई के पात्र हैं सम्मेलन से आर्य जगत मे प्राणो का सचार हुआ लगता है। ऐसे सम्मेलन होते रहने चाहिए और सचार माध्यम मे खूब प्रचारित होने चाहिए।

सेवक एण्ड क० हजरत गज
लखनऊ

जड़ चेतन सबका इलाज अग्निहोत्र में

– सत्येन्द्र शास्त्री

विश्व का अद्वितीय ग्रन्थ वेद है जिसमे यज्ञ अग्निहोत्र महिमा मन्त्रो द्वारा अवर्णनीय है। यज्ञ मात्र श्रद्धा नही अदभुत विज्ञान भी हे। यज्ञ बहुत व्यापक शब्द है। आचार्य पाणिनि वैयाकरणज्ञ ने यज्ञ देवपूजा सगति करणदानेषु धातु का अर्थ देवताओ की पूजा परस्पर सगतिकरण दान यह अग्निहोत्र अथवा हवन क्रिया है। यज्ञवेदी मे विधि के अनुसार मन्त्र उच्चारण के साथ समिधा सामग्री आदि द्वारा हवन किया जाता है। इन्सान चाहे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वर्णाश्रम वाला कोई भी यज्ञ कर सकता है। यज्ञ की भावना सबसे पहले परमात्मा से मिली क्योकि ऋग्वेद के पुरुष सूक्त मे मन्त्र उल्लिखित है।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।

वसन्तो स्यासीदाज्य ग्रीष्म इध्म शरद हवि।।

अर्थात जिस पुरुष के साथ देवताओ ने हवि के द्वारा यज्ञ का विस्तार किया वह वसन्त ऋतु है घी आहुति है ग्रीष्मऋतु समिधा की और शरदऋतु सामग्री की हवि है।

शतपथ ब्राह्मण ११८८ यज्ञो वै विष्णु अर्थात यज्ञ को विष्णु कहकर सबसे अच्छा काम घोषित किया है। यज्ञ के विशिष्ट प्रसाधन के रूप मे अग्नि का प्रमुख महत्व है अग्नि सर्वाधिक प्रसिद्ध देवो मे से एक और देवताओ का मुख है यह शोधक वर्षा कारक वायुप्रद बुद्धि का उत्पादक तथा मन का प्रेरक है।

मेधाकार विदथस्य प्रसाधनमग्नि होतारणरि भूतममतिय।। *सामवेद ६८४*

भौतिक ससार मे ऋतुओ के परिवर्तन मे व्याधिया बढती है।

अत भैषज्य यज्ञ द्वारा उसकी चिकित्सा करे। रामायण एव महाभारत काल मे यज्ञो का प्रचलन सर्वविदित है। चीन और जापान मे यज्ञ को धोम कहते है वहा मन्दिरो मे आज भी धूप जलाने की प्रथा है। ईरान के यहूदियो मे यज्ञो का बहुत प्रचलन था वे यज्ञकुण्ड को केर कहते हैं। आयरलैण्ड तथा दक्षिणी अमरीका मे महामारी की रोकथाम के लिए अग्नि जलाई जाती थी। यह अग्नि आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक मय से रक्षा करती है। यज्ञ आन्तरिक प्रदूषण से मुक्ति का मजबूत माध्यम है। सोने चादी ताम्बे या मिटटी के हवन कुण्ड मे अग्निहोत्र करना सबसे उत्तम है। घी को जलाने से वायु का जहर समाप्त होता हे। अगरबत्ती एव धूपबत्ती जलाने से वातावरण सुगधित होता है। नारियल के गोले के धूम्र से वायु क सर्व प्रकार क विषो की तुरन्त नष्टता होती है। गिलोय नीम के पत्ते घी गुगुल शकस को अगारो पर जलाकर धूनी देने से मलेरिया जुकाम आदि ठीक होते है। अपने घर मे रोज नियमित अग्निहोत्र करना ही सबसे बडी दवाई है। जड चेतन एव सबका इलाज अग्निहोत्र ही है। स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज के प्रवर्तक ने लिखा दैनिक पच महायज्ञो को आपत्ति और कष्ट आने पर भी नही छोडना चाहिए। ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ अतिथियज्ञ बलिवेश्वदेवयज्ञ हर स्त्री पुरुषो को विधि अनुसार करना चाहिए। भारतीय सस्कृति मे अज्ञात हिसा से बचाव के लिए ५ यज्ञो का विधान है।

प्रतिदिन अग्निहोत्र करने से लाभ

* **यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध पुष्ट एव सुगन्धित होता है।**
* **यज्ञ से रोग दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है।**
* **यज्ञ से दु ख एव दारिद्रता का नाश होता है।**
* **यज्ञ से मानसिक शान्ति प्राप्त होकर आनन्द की वृद्धि होती है।**
* **यज्ञ से उत्तम विचारो का प्रादुर्भाव होकर बुद्धि का विकास होता है।**
* **यज्ञ से ससार मे शान्ति एव सद्भाव प्रसारित होकर पृथिवी स्वर्ग बनती है।**
* **स्वर्ग की प्राप्ति की कामना वाले को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए।**

यज्ञ का मुख्य उद्देश्य वायु शुद्धि होता हे। वस्तुत प्रतिदिन अग्निहोत्र करने से अनेको लाभ है। पार्थिव लोक लोकान्तरो तक सुगन्धि अग्नि फैलाता है अत इसे अग्निदूत कहते है। यज्ञो भवनस्यनाभि यज्ञ भवन की नाभि है। प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञीय जीवन बनाना चाहिए।

यज्ञीय प्रेरणाए जो कुछ हम बहुमूल्य पदार्थ हवन यज्ञ मे आर्पित करते है उसे अग्नि वह अपने पास सग्रह करके नही रखती वरन उसे सर्वसाधारण के उपयोग के लिए वायुमण्डल मे बिखेर देती हे जो वस्तु अग्नि के सम्पर्क मे आती है उसे वह दूर नहीं करती वरन अपने मे आत्मसात करके अपने समान ही बना लेती है। अग्नि की लौ कितना ही दबाव पडने पर भी नीचे की ओर नही होती वरन अपने उठने की दिशा ऊपर को ही रखती है। प्रलोभन भय कितना ही सामने क्यो न हो हम अपने विचारो और कार्यो की अधोगति न होने से विषम स्थितियो मे अपना सकल्प और मनोबल अग्नि शिखा की तरह ऊचा ही रखे। अग्नि जब तक जीवित है उष्णता एव प्रकाश की अपनी विशेषताए छोडती नही। उसी प्रकार हमे भी अपनी गतिशीलता की गर्मी और धर्म परायणता की रोशनी घटने नहीं देनी चाहिए। जीवन भर पुरुषार्थ और कर्त्तव्यनिष्ठ रहना चाहिए। यज्ञ सामुहिकता का प्रतीक है। अन्य उपासनाए या धर्म प्रक्रियाए ऐसी है जिन्हे कोई अकेला कर या करा सकता है पर यज्ञ ऐसा कार्य है जिसमे अधिक से सहयोग की जरूरत है। यज्ञ सहकारिता एकता सामूहिकता की भावनाए विकसित करता है।

यज्ञ की भी आश्रम व्यवस्था के अनुसार पात्रता मान्य की गई है जो निम्नानुसार है –

ब्रह्मचारी के लिए सन्ध्या एव दैनिक अग्निहोत्र आवश्यक है।

गृहस्थ के लिए पच महायज्ञ सस्कार आदि कराना आवश्यक है। गृहस्थ ही सब प्रकार के यज्ञो का अधिकारी है।

वानप्रस्थ के लिए सन्ध्या हवनादि पच महायज्ञ तथा पर्वादियज्ञ है।

सन्यासी के लिए केवल ब्रह्मयज्ञ है अर्थात सन्ध्योपासना योगाभ्यास स्वाध्याय प्रवचन आदि ही उसके यज्ञ हैं।

विप्रोयज्ञस्य साधन

सामवेद १४७८

यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए विप्र ही प्रमुख रूप से साधन है। विद्वान वेदवित धार्मिक कुलीन ब्रह्मवेत्ता जितेन्द्रिय व्यक्ति को ही विप्र कहा जाता है। सन्यासी यज्ञ कराने का अधिकारी नहीं होता है क्योकि वह यज्ञोपवित एव शिखा रहित होता है। यज्ञोपवीत एव याजयेत – 'ऐतरेय ब्राह्मण यज्ञोपवित पहनने वाला ही यज्ञ कराने का अधिकार प्राप्त करता है। (इस विषय मे विद्वानो मे सशय है)

अन्तत विवेचनीय है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सभी स्त्री पुरुष यज्ञ करने के योग्य हैं। शास्त्र विधि अनुसार यज्ञ करना उत्तम माना गया है। अत जड चेतन सबके इलाज के लिए अग्निहोत्र करना चाहिए।

— (प्रेमनगर मकान न० ४ वार्ड न० ४ पूर्व लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश)

गुजरात के कौमी फसाद पर गुजरात आर्यसमाज की रिपोर्ट

गुजरात के कौमी फसाद की वास्तविकता क्या है ?

— शरदचन्द्र

यह कौमी फसाद नहीं लेकिन भारत राष्ट्र के विरुद्ध पाकिस्तान एव पश्चिमी राष्ट्रो द्वारा चलाया जा रहा गृह युद्ध है। पाकिस्तानी आई०एस०आई० के मुस्लिम एजेन्टस गुजरात के गाव गाव मे फैल चुके है।

दिनाक २७ फरवरी २००२ के दिन गुजरात के गोधरा शहर रेलवे स्टेशन से सटी मुस्लिम बस्ती मे छिपे आई०एस०आई० के मुस्लिम एजेन्टस के नेतृत्व मे हजारो पाकिस्तान समर्थक मुस्लिमो ने अयोध्या से आ रही साबरमती एक्सप्रेस रेलवे गाडी के डिब्बो मे बैठे दर्जनो रामभक्त हिन्दुओ की नृशस हत्या कर सारे राष्ट्र व दुनिया को हिला दिया है। यह हत्याकाण्ड सारे राष्ट्र व समस्त दुनिया के देशो मे हिन्दू—मुस्लिम कौमी—धार्मिक फसाद के रूप मे प्रसारित किया जा रहा है तथा बाद की घटनाओ को हिन्दुओ द्वारा बैर लिए जाने के रूप मे देखा जा रहा है परन्तु सच्ची वास्तविकता यह है कि यह कोई कौमी व धार्मिक फसाद नहीं है परन्तु यह मात्र ओर मात्र भारत मे खडा किया गया गृह युद्ध है और पाकिस्तान द्वारा इसका सचालन होता है।

गाधरा गृह युद्ध हत्याकाण्ड की शुरूआत होकर इसके तुरन्त बाद अहमदाबाद बडौदा एव अन्य बडे शहरो मे पाकिस्तानी आई०एस०आई० के एजेन्टस बस्तिओ से हजारो व्यक्तियो के खूनी टोले लेकर निकल पडे और उसके तुरन्त बाद हिन्दु बस्तिओ से भी स्थानिक बस्तिओ मे से अनजान चेहरे वाले कुछ हथियारबन्द लोगो के उकसाये टोले निकल पडे। हमने दगे ग्रस्त प्रत्येक शहरो तथा गावो का निरीक्षण व अभ्यास किया। सभी स्थान पर यह वास्तविकता प्रकाश मे आयी है। देश के केन्द्रिय गृह मन्त्री व विरोधपक्ष के प्रमुख नेताओ ने भी आई०एस०आई० के पाकिस्तानी एजेन्टस द्वारा दगे भडकाए जाने की बात का समर्थन किया है। हमने अपनी जाच मे अहमदाबाद के मेघनीनगर नरोडा शाहपुर दरियापुर कालुपुर जमालपुर बहेरामपुरा माधवपुरा तथा वटवा की घटनाओं मे पाकिस्तानी आई०एस०आई० एजेन्टस द्वारा तूफान भडकाने की जानकारी प्राप्त की है। बडौदा के वनवासी क्षेत्रो मे भी यह जानकारी मिली कि बाहर के कुछ लोगो ने उन्हे मुस्लिमो पर हमले के लिए उकसाया था। उकसाने वाले लोग हिन्दु नही थे। उकसाने वाले लोग अपने को काग्रेसी व नक्सली कहलाते थे तथा काग्रेस के पूर्वनेता झीणाभाई दरजी के के०एच०ए०एम० अर्थात क्षत्रिय हरिजन आदिवासी तथा मुस्लिमवाद के समर्थक बताते थे परन्तु अब तुम्हे भीलीस्तान बनाना है ओर मुस्लिम तुम्हारे दुश्मन है इसी बात पर वनवासी लोगो को उकसाया गया था। अहमदाबाद के शाहपुर क्षेत्र मे काग्रेसी सासद प्रवीण राष्ट्रपाल के बडे भाई तथा भतीजो को मुस्लिमो ने लक्ष्याक बनाया और हमले मे सासद के बडे भाई के पुत्र की हत्या की गई। यह लोग मुस्लिम समर्थक थे फिर भी मुस्लिमो ने उन्हे मारा था। यहा के दलित लोग उच्च हिन्दु वर्ण के विरोधी और मुस्लिम नीति के समर्थक है फिर भी दलितो की चार बडी बस्ती मोटोवास महेसानियावास मिरझापुर मटन मार्केट तथा खानपुर के दलितो को अपने घर खुले छोडकर भागना पडा है। उनके ६५ प्रतिशत घर मुस्लिमो के कब्जे मे है। दलितो द्वारा बेचे गये घरो मे अनजान मुस्लिम लोग रहते है। स्थानिक मुसलमान भी उनके बारे मे अधिक कुछ जानकारी नहीं रखते है और चुप्पी साधे हुए है।

मुस्लिम कार्यकर्ताओ के साथ हमने लम्बी चर्चाए की उन्होने बताया कि माधवसिह सोलकी तथा अमरसिह चौधरी के कार्यकाल मे गुजरात मे हुए कौमी फसादो से हिन्दुओ के खिलाफ खूब लडकर हजारो छुरेबाजी तथा हत्याकाण्डो से उन्हे खूब अनुभव मिला है। पुरानी व नयी पीढी लडने मे माहिर हो गयी है। नकली व असली पासपोर्ट का सहारा लेकर उनके कई नवयुवक पिछले २० साल मे पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रो मे जाकर भयकर युद्ध की ट्रेनिंग तथा प्रत्येक हथियार चलाने का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर चुके है। मौका प्राप्त होने पर विमान व हेलीकोप्टर चलाने का अनुभव भी प्राप्त कर चुके है। सीमी के कुछ नेताओ ने हमे बताया की किसी भी हिन्दु बहुल क्षेत्र मे गोलीबारी करना व बम डालकर आतक फैलाकर हिन्दुक्षेत्र को कब्जे मे करना हमारा मुख्य लक्ष्य है। आज अहमदाबाद पुरानी दिल्ली तथा हैदराबाद अज्मेर आदि इसके उदाहरण के लिए देख सकते हैं। जमात ए मुस्लिम तथा तबलीगी प्रचार का कार्य कर रहे लोगो ने बताया की हिन्दुओ को अपने धर्म के बारे मे कुछ भी जानकारी नही है। हम अपने धर्म की पूरी जानकारी व मदरसाओ द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। साधारण हिन्दु हमारे द्वारा हिन्दुधर्म के विरुद्ध उठाये गये तर्को का कोई जवाब नही दे सकते। हम अपने पैगम्बर और खुदा के नाम पर लड सकते है। सभी को तबलीग कर सकते हैं परन्तु हिन्दुओ की रथयात्रा निकालने वाला अडवाणी भी हिन्दुओ को जाति—जाति प्रान्त और अनेक प्रकार के भेद पर बटे हुए बतलाते है। इससे हमारे खुदा के पगाम को ही बढावा मिलता है। हिन्दु तो हमारा कभी कुछ भी नही बिगाड सकते। देखिए महात्मा गाधी भी हिन्दु—मुस्लिम एकता नही कर पाए। देश का बटवारा उन्हे भी मानना पडा। महात्मा गाधी भी सफल नही हुए तो ओर कौन सफल हो सकता है ? हमतो कायरो के देश मे लडकर भी रहते है और लतीफ जेसे गुण्डे ही हमारे रक्षक ओर राहबर रहेगे। कोई हमारा कुछ नही बिगाड सकता। हसके लिया पाकिस्तान और लडकर लेगे हिन्दुस्तान का नारा भी अब बहुत कुछ बदल चुका है।

हमने हिन्दुओ से भी सम्पर्क किया मुस्लिमो द्वारा छुरेबाजी और खून कर देने के अज्ञात भय से सभी थर थर काप रहे है। अहमदाबाद मे दिन दहाडे रास्ते सुमसान पडे है। कहीं छुरेबाजी की घटना हुई अथवा मियाओ का टोला आ रहा है यह सुनकर ही व्यापारी दुकान खुली छोडकर भाग जाते है तथा ट्राफिक वनवे हिन्दु ट्राफिक बन जाता है। मुस्लिमो के भय ने हिन्दुओ के समस्त भेदभाव मिटा दिए है परन्तु राम और कृष्ण के जन्म स्थान और शिवजी की काशी की मुक्ति का युद्ध हिन्दुस्तान के मुस्लिमो के लिए मक्का मदिना का युद्ध हो चुका हे ओर पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे इस गृह युद्ध का अन्त कोन करेगा ? यह रिहर्सल सच बनता जा रहा है।

वास्तविकता यह है कि

गुजरात के प्रत्येक हाईवे के नजदीक पाकिस्तानी एजेन्टस की नई बस्तिया पनप चुकी है। बडी बडी इमारते विशाल हॉल और अत्याधुनिक सुविधाओ सहित गुप्त कमरो वाली हजारो नयी मस्जिदे बन चुकी है। गाव गाव तक मुस्लिम गुण्डो का त्रास तथा क्रिमीनल्स टोलियो का जमावडा आतक मचा रहा है। हजारो हिन्दू लडकियो का अपहरण प्रेम सम्बन्ध द्वारा विवाह और धर्म परिवर्तन अब साधारण बात बन चुकी है। आतक फैलाकर हिन्दु बस्तियो को खाली करवाया जा रहा है। मूल्यवान सम्पत्ति पानी के दाम मुस्लिमो को बची जा रही है। अहमदाबाद कोट क्षेत्र मुस्लिम बहुल बन चुका है। अगले दस साल बाद आषाढी दूज की रथयात्रा का मार्ग बदलना पडेगा। एक दो साल के लिए लगाया गया डिस्टरबन्सीस एरिया एक्ट १९८५ से अब तक चालू है। मुस्लिम आक्रमण से सैकडो स्कूल स्थानातरित हो चुके है अहमदाबाद रेलवे स्टेशन तथा सेन्ट्रल बस अडडा मुस्लिम भय से भयाक्रात है।

हिन्दुओ के लिए मार्केट चलाना तथा व्यापार करना असम्भव हो चुका है। मुस्लिम बस्तिओ के मध्य मे किसी भी प्रकार की पुलिस व्यवस्था नहीं होने से मुस्लिम लोगो को आक्रमण करना सरल हो चुका है। कोग्रेसवाले भी मुस्लिम समर्थक भाजपा सहित सभी राजनैतिक पार्टिया मुस्लिम परस्त है। यह कडुवी वास्तविकता है जो बदलने से भी नही बदल सकती है। यह वास्तविक गुजरात है जिसका कोई हल नहीं है। आज सोमनाथ का महादेव और द्वारिका का कृष्ण मन्दिर और डाकोर का डाकोरनाथ भी लोहे की जालियो मे पुलिस की सुरक्षा मे सुरक्षित है परन्तु गुजरात की मुस्लिम मस्जिदे अपने आप सुरक्षित है।

मित्र महेश आर्य — प्रधान
शरदचन्द आर्य — मन्त्री

— आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन
निकट ओत्तमपोल शाहपुर
अहमदाबाद ३८०००१

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

पिछले दस दिन से चल रहा आर्यवीर दल का शिविर आज सम्पन्न हुआ। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल दयानन्द विहार के विशाल प्रागण मे आयोजित विराट शिविर म लगातार शारीरिक बौद्धिक प्रशिक्षण के लिए श्री विनय आर्य के नेतृत्व मे सर्वश्री अरुण कुमार जगवीर सिह डॉ० नरेन्द्र वेदालकार आचार्य भूदेव शास्त्री आचार्य यशपाल शास्त्री आचार्य कर्णसिह आचाय हुक्मचन्द वेदालकार आदि विद्वानो और पवन आर्य वीरेश आर्य और सुन्दर आर्य आदि प्रशिक्षको ने नव युवको को धार्मिक नैतिक शारीरिक चारित्रिक और सास्कृतिक शिक्षा प्रदान की।

इसी बीच मे यज्ञोपवीत सस्कार का विशष आयोजन किया गया। इसमे ५०० नौजवानो ने जनेऊ धारण कर भारतीय सस्कति सभ्यता आदर्श और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का सकल्प लिया। इस अवसर पर वेदिक प्रवक्ता ब्र० राजसिह ने कहा कि जनेऊ भारतीय सस्कृति का प्रतीक चिह्न है। हमारे सभी महापुरुष श्री परशुराम मर्यादा पुरुषोत्तम योगेश्वर श्री कष्ण वीर हनुमान आदि सभी महापुरुष जनेऊ धारण करते थे। जब तक देश मे शिखा सूत्र यज्ञ और वेद के प्रति आस्था रही तब तक सारा विश्व भारत का अनुगामी रहा तथा हमारे देश के महापुरुष गर्व के साथ घोषणा किया करते थ कि ... अमर चरित्र ... सभ्यता की शिक्षा लेनी है तो हमारे देश मे आओ। हमारे देश के राजा गर्व से कहा करते थे – मेरे राज्य मे कोई चोर नही है लुटेरा हत्यारा और जुआरी नहीं है कोई शराबी कबाबी नही है कोई अनपढ और गवार नही है। इस प्रकार की उद्दाम घोषणा का नैतिक साहस जनेऊ के आदर्शो का पालन करने से ही आया था। इसलिए आज आवश्यकता है कि प्रत्येक नौजवान यज्ञोपवीत धारण करके मातृमान पितृमान आचार्यवान के आदर्श को अपनाए माता पिता गुरु आचार्य और अपने राष्ट्र की सेवा का व्रत लेकर आदर्श जीवन अपनाए।

मशाल शोभायात्रा के माध्यम से आर्यवीर दल ने अज्ञान अविद्या अन्याय और अभाव के अन्धेरे को दूर करने का सन्देश देते हुए आतकवाद के अन्तर्राष्ट्रीय निर्यातक परवेज मुशर्रफ का पुतला फूक कर भारत सरकार से आतकवादी चूहो का सिर कुचलने का आह्वान किया।

इस कार्यक्रम की स्थानीय जनता ने अत्यन्त सराहना की।

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल सुदेश सेखरी ने मशाल शोभायात्रा और यज्ञापवीत सस्कार के विराट आयोजन की भूरि भूरि प्रशसा की।

आर्यवीर दल राष्ट्रीय आपदाओ व सवा कार्यो म सदा अगणी रहा हे। युवा ...

... सफल हो। सह सयोजक

पुस्तक समीक्षा: 'मन' का विवेचन

लेखिका डॉ० ऊषा अग्रवाल कीमत ३५ रुपये

प्राप्ति स्थान सुल्तान चन्द्र द्रोपदी देवी एजूकेशन फाऊडेशन २३ दरियागज नई दिल्ली–२

मनुष्य मे शक्ति का केन्द्र 'मन' ही हैं किसी भी कार्य को करने से पूर्व विचार करते हुए यदि सर्वप्रथम हम अपने मन को एकाग्र करले तो निश्चय ही सफलता मिलती है। मनन करने का सम्बन्ध भी मन से ही हैं। योग मे भी जो ध्यान से होकर गुजरने वाली प्रक्रिया समाधि की ओर ले जाती है उसका उददेश्य चित्त की वृत्तियो को रोकना है अर्थात एकाग्रता पूर्वक मनन करना है। योग सारे जीवन की व्यापक प्रक्रिया है जिसका सक्षिप्त भाग है नित्य प्रति अपने मन को एकाग्र करना।

मन की एकाग्रता क्या है ? इसे कैसे किया जा सकता है ? इसका उद्देश्य क्या है ? मन का स्वभाव क्या है ? इसकी प्रवृत्तियो को कैसे नियन्त्रित किया जा सकता है ? मन का स्वरूप कैसा है ? मन की गति से क्या अभिप्राय है ? मन की उत्पत्ति ? मन का क्या कार्य है ? मन केसे कार्य सम्पन्न करता है ? मन की तीन अवस्थाए जाग्रत स्वप्न सुशुप्ति क्या है ? मन के गुण और दोष क्या है ? मन के स्वभाव मे परिवर्तन कैसे किया जा सकता है ?

मन से सम्बन्धित इन समस्त प्रश्नो के साथ साथ अन्य कई पहलुओ पर भी इस पुस्तक मे प्रकाश डाला गया है। १२२ पृष्ठ की पुस्तक में जिसका शीर्षक मन है। इसकी लेखिका डॉ० ऊषा अग्रवाल ने 'तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु' का क्रियात्मक पक्ष प्रस्तुत करने का महान प्रयास इस पुस्तक के माध्यम से किया है। पाठक इसे पढकर लाभान्वित हो तभी लेखिका का प्रयास सफल होगा। – **विमल वधावन** वरिष्ठ उप प्रधान

जानी चाहिए – ये विचार वेदव्रत शर्मा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने वार्षिक शिविर व समापन समारोह मे कहे।

आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने कहा धर्म की रक्षा के लिए आर्यवीरो को क्षत्रिय बनना होगा। अज्ञान अन्याय अभाव की समाप्ति के लिए नौजवान आगे आये।

आर्यवीर दल दिल्ली के सचालक विनय आर्य ने बताया आतकवाद की समस्या को जड से उखाड फैकने के लिए आर्यसमाज सदैव कार्यरत रहा है आज आर्यसमाज का युवा विग आर्यवीर दल सैनिक प्रशिक्षण देकर जुझारू कार्यकर्ता तैयार करेगा।

इस अवसर पर सत्यपाल आर्य स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती विधायक नसीब सिह पुरुषोत्तम गुप्ता धर्मपाल आर्य सुरेन्द्र कुमार रैली वेदपाल विद्यालकार दुर्गाप्रसाद कालरा कष्णचन्द पाहूजा आदि आर्य नेताओ ने प्रेरक उदबोधन दिये। अभिमन्यु चावना वृजश आर्य वीरेन्द्र आर्य प्रि० सुरेश सखरी के सहयोग से दस दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर अत्यन्त सफल हा।

११ जून जन्म दिवस पर विशेष

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी

अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल

– जगतराम आर्य

१६ दिसबर सन १९२७ ई० सोमवार प्रात काल साढे छ बजे गोरखपुर जेल से फासी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठा

"मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे
बाकी न मै रहू न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।"

तत्पश्चात शहीद ने अपनी अतिम इच्छा प्रकट की – **"मै ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।"**

इसी प्रकार १६ दिसबर १९२७ को उन्होने लिखा

'हे ईश ! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

यह शहीद थे **प० रामप्रसाद बिस्मिल**। वे इन्हीं शब्दो को गुनगुनाते हुए फासी पर चढ गए देश के चरणो पर उत्सर्ग हो गए। वे सच्चे देशभक्त थे साहसीं थे आर्यवीर थे। वे देश के चरणो पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भाति उदित हुए थे। एक तारे की भाति ही वे टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मत्र की तरह प्रेरक है शक्तिदायक है। युग आएगे और चले जाएगे पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी सदा एक पवित्र मत्र की तरह रगो मे शक्ति का सचार करती रहेगी।

प० रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ११ जून सन १८९७ ई० को प० मुरलीधर तिवारी (शाहजहापुर निवासी) के यहा हुआ था। मुरलीधर ऊचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बडे साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का सचालन करते थे।

बिस्मिल जी की प्रारभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हे एक मौलवी साहब पढाया करते थे। पर उनका मन पढने लिखने मे बिलकुल नहीं लगता था। वे बडे उद्दड थे। न स्वय पढते थे न दूसरो लडको को पढने देते थे। ज्यो ज्यो वे बडे होते गए उनकी उद्दडता बढती ही गई। कभी कभी अपनी बुरी आदतो के कारण उन्हे अपने पिता के द्वारा अधिक दडित भी होना पडता था।

पर सयोग की बात एक दिन बिस्मिल जी के गाव मे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क मे आए उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन की कायापलट हो गई। वे बुरी आदतो को छोडकर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाजी नेताओं के उपदेश सुनने लगे। आर्यसमाज मदिर मे जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय दोनो मे अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अग अग मे स्फूर्ति का सागर उमडने लगा। उन्होने घुडसवारी तैराकी और साइकिल चलाने म अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौडने और पैदल चलने मे वे बडे तेज थे। साठ साठ मील तक पैदल चले जाते थे पर उनमे नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भाति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। वे देश की बाते सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय मे भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तो के चरित्र पढने लगे देश प्रेम से भरी हुई कविताआ का पाठ करन लग। व जब कविताओ का सस्वर पाठ करन लगते तो वातावरण मे एक रस सा पैदा हो जाता था।

बिस्मिल जी को ऊची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नही प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होने सामान्य रूप से उर्दू और अग्रेजी पढी थी। उन्होने एन्ट्रेन्स की परीक्षा तो नहीं पास की थी पर एन्ट्रेन्स तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होने स्वतत्र रूप से पढकर बाद मे उर्दू और अग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताए बडी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थीं। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होने कई पुस्तको की रचना भी की है। उर्दू और अग्रेजी के अतिरिक्त उन्हे बाग्ला और हिदी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय मे देश प्रेम का अकुर फूटा। जिन दिनो वे नवीं कक्षा मे पढ रहे थे उन्हे स्वयसेवक के रूप मे सेवा समिति मे काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति का कार्य करते हुए उनकी दृष्टि पर सेवा की ओर आकर्षित हुई। पर सेवा से और भी अधिक आगे बढकर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय मे दर्द पैदा होने लगा। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दु ख देश का दु ख अग्रेज सरकार के कारण है। फलत वे अग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध मे सोच विचार करने लगे।

इन्हीं दिनो बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेदालाल दीक्षित से क्रातिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मेनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिना केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल मे पढ रहे थे पर वे इसी कच्ची उम्र मे ही दीक्षित जी क दल मे सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोडे ही दिनो मे दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यो मे से बन गए। बगाल के क्रातिकारियो से भी उन्होने सपर्क स्थापित किया। वे बडी लगन से अपन दल के लिए अपने दल के साथियो के लिए अस्त्र शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र शस्त्र ओर धन सग्रह के सबध मे कई रोचक ओर साहसपूर्ण कहानिया कही जाती ह।

बिस्मिल जी डकतिया के द्वारा भी दल के लिए धन एकत्र किया करत थ। व सरकारी खजानो डाकखानो ओर बको को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन सग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होने १९२५ ई० म ९ अगस्त को काकोरी मे ट्रेन डकेती करके अपने अद्भुत साहस का परिचय दिया था।

काकोरी लखनऊ के पास एक स्टेशन है। १९२५ ई० की ९ अगस्त का दिन था। सध्या के लगभग ८ बज रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही अपने साथियो से विचार–विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी।

यद्यपि यह सारा काम बडी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारिया की जाने लगीं। एक एक करके ट्रेन डकैती मे सम्मिलित क्रान्तिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी २५ दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथिया पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फासी की सजा सुनाई गई। फासी के पहले बिस्मिल जी के माता पिता जेल मे उनसे मिलने के लिए गए। माता पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मा को देखा तो उनकी आखे डबडबा गई। अश्रु बूदे रह–रहकर आखो से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आखो मे अश्रु बूदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं – "मै समझती थी तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है किन्तु यहा तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आसू बहाकर अब अन्तिम समय मे मेरे लिए रोने बेठे हो! इस कायरता से क्या होगा? तुम्हे वीर की तरह हसते हुए प्राण देते देखकर मै अपने आपको धन्य समझूगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने म मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा ह। मेरा काम तुम्हे पाल पलोसकर बडा करना था। उसकबाद तुम देश की चीज बन गए थे सो उसके काम आ गए। मुझ जरा भी दु ख नही हे।

बिस्मिल जी अपनी मा के ओजस्वी शब्दो का सुनकर चुप न रह सके। वे आसू पोछते हुए बोल उठे मा तुम मेरी मा हा। तुम मेरी जननी होकर भी नही समझ सकी। मा मे मृत्यु से भयभीत होकर नही रो रहा हू। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है उसी प्रकार मा तुम्हे देखकर मेरीआखो से कुछ अश्रुबूदे निकल पडी। विश्वास रखो मा मैं मृत्यु से सतुष्ट हू, पूर्णरूप से सन्तुष्ट हू।

गोरखपुर जेल मे १९२७ई० की १६ दिसम्बर का प्रात काल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पडे। उन्होने शौचादि से निवृत्त होकर सध्या की हवनयज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फासी के तख्ते की ओर चल पडे। वे गुनगुनाते हुए ही फासी के फन्दे पर चढ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होने फासी के तख्ते पर चढकर जोर से आवाज ऊची की – **"अग्रेज सरकार का नाश हो अग्रेज सरकार का नाश हो !"**

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व पी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 9 6 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U— 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 6/7 6-2002
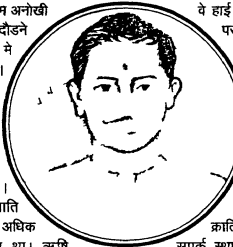
स्वामी दयानन्द के सन्यास लेने का वर्णन

ऋषि दयानन्द का प्रथम नाम शुद्ध चैतन्य था। अपनी ब्रह्मचर्य की पद्धति अनुसार शुद्ध चैतन्य जी अपने हाथ का पका ही खाना खाते थे। इसीलिए उनके विद्याध्ययन मे बाधा पडती थी। सासारिक वासनाओ से पहले ही विमुक्त हो चुके थे। परन्तु फिर भी आश्रम शैली से यथाविधि सन्यास लेने मे दो लाभ दीखे। एक तो भोजन बनाने के बखेडे से बच जायेगे और दूसरे चतुर्थाश्रम करने से नाम और आकति आदि मे परिवर्तन हो जाने पर कोई पहचान नहीं सकेगा। इस प्रकार पिता आदि द्वारा पकडे जाने का भय भी जाता रहेगा।

उन्होने अपने एक मित्र दक्षिणी पण्डित द्वारा स्वामी श्री चिदाश्रम जी को कहलाया कि आप शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी को सन्यास दीक्षा देना स्वीकार कर लीजिये। परन्तु स्वामी जी ने अस्वीकार कर दिया कि ब्रह्मचारी अभी युवक है।

श्री चिदाश्रम के सन्यास न देने से शुद्ध चैतन्य का उत्साह भग नही हुआ। वे विद्याध्ययन मे योग साधना मे स्वसमय यापन करते और किसी अन्य महाभाग सन्यासी का प्रतिक्षण करते। सन्तो के सत्सग मे विद्या विनोद मे शास्त्र चर्चा मे आत्मिक अराधना चिन्तन और ध्यान मे शुद्ध चैतन्य जी ने नर्मदा तट पर डेढ वर्ष व्यतीत किया। इस समय उनकी आयु २४ वर्ष २ मास को हो गई थी।

एक दिन शुद्ध चैतन्य जी ने किसी से सुना कि चाणोद मे डेढ कोस के अन्तर पर जगल मे एक दक्षिणात्य दण्डी स्वामी आकर विराज है। वे बडे विद्वान उत्तम सन्यासी है। तब शुद्ध चैतन्य जी अपने दक्षिणी मित्र पण्डित को साथ लेकर प्रशसित दण्डी जी की सेवा मे उपस्थित हुए और समादर नमस्कार करने के पश्चात पास बैठ कर वार्तालाप आरम्भ कर दिया। ब्रह्म विद्या सम्बन्धी अनेक विषयो पर बातचीत होती रही। दण्डी जी का शुभ नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। तब उन्होने अपने मित्र पण्डित जी को सकेत किया कि दण्डी जी के सन्मुख उनके सन्यास का प्रस्ताव करे। तब पण्डित जी ने निवेदन करते हुए कहा "दण्डी जी यह विद्यार्थी ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य अति सुशील और विनीत है। इसकी कामना के अनुसार आप कपा करके इस चतुर्थ प्रकार का सन्यास दे दीजिए।

यह प्रार्थना सुन कर उक्त स्वामी जी ने शुद्ध चैतन्य जी को भरपूर युवास्था के कारण उन्हे सन्यास देने से एक बार तो मन हटा लिया पर पण्डित जी के अधिक अग्रह से सन्यास की अनुमति द दी। दो दिन तक जपादि साधनो को यथाविधि कर के तीसरे दिन ब्रह्मचारी जी दण्डी जी की सेवा मे उपस्थित हुए। उनसे उसी दिन श्रादध कराके दण्डी स्वामी जी ने विधिपूर्वक सन्यास धारण कराया। हाथ मे दण्ड अवलम्बन करा कर उनका नाम दयानन्द सरस्वती उद्घोषित किया। विनय से नम्र शिर नव शिष्य को स्वामी पूर्णानन्द जी ने यतियो के धर्म बताये। आश्रम मर्यादा और विद्योपार्जन जप तप आदि के करने की शिक्षा की। इस प्रकार स्वामी जी ने दण्डी स्वामी जी से सन्यास की दीक्षा ली और शुद्धचैतन्य से स्वामी दयानन्द नाम उद्घोषित किया।

— सीता आर्या वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रेवाडी उत्तर प्रदेश

प्रधान	कै० रघुवीर सिह यादव
मन्त्री	श्री परमानन्द वसु (वानप्रस्थी)
कोषाध्यक्ष	श्री मनोहर लाल जी

आर्यसमाज सगरुर पजाब

प्रधान	श्री वीरेन्द्र कुमार
मन्त्री	श्री राजेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री शिवराम महाजन

आर्यसमाज पश्चिम विहार, ब्लाक ए ३, दिल्ली ३

प्रधान	श्री रामचन्द्र वर्मा एडवोकेट
मन्त्री	श्री राजेन्द्र कुमार लाम्बा
कोषाध्यक्ष	श्री यशपाल शर्मा

आर्यसमाज किशन गज (मिल एरिया), दिल्ली ६

प्रधान	श्री ओमप्रकाश नरूला
मन्त्री	श्री धर्मवीर सिह
कोषाध्यक्ष	प्रो० रामचन्द्र आमेटा

आर्यसमाज मदनगज किशनगढ़, राजस्थान

प्रधान	डा० वीररहन आर्य
मन्त्री	श्री दुष्यन्त अत्रे
कोषाध्यक्ष	श्री मुकेश गोयल

आर्यसमाज मन्दिर चोपन, उ०प्र०

प्रधान	श्री महेश नारायण आर्य
मन्त्री	श्री महेन्द्र सिह
कोषाध्यक्ष	श्री दिलीप कुमार सिह

गृह माता की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन निराश्रित बाल गृह अजमेर के लिए आर्य विचार युक्त सुशिक्षित सेवा भावी ४५—५० वर्षीया एक गृह माता की आवश्यकता है। नि शुल्क आवास भोजन के अतिरिक्त योग्यतानुसार वेतन। इच्छुक महिला १५ दिन के अन्दर मत्री *दयानन्द बाल सदन अजमेर चाद बावडी रोड केसरगज अजमेर—३०५००१* के नाम से आवेदन करे।

आर्य गुरुकुल ऐक्षा कटरा (औरैया) उ

प्रवेश सूचना

प्राकृतिक सुरम्य वातावरण इस गुरुकुल मे नवीन छात्रो प्रवेश १ जून से प्रारम्भ हो गया है। यह विद्यालय उत्तर प्रदेश सस्कृत माध्यामिक शिक्षा परिषद लखनऊ से मन्यता प्राप्त है। गणित अग्रेजी विज्ञान आदि आधुनिक विषयो सहित सस्कृत साहित्य सस्कृत व्याकरण वेद दर्शन के पठन पाठन की समुचित व्यवस्था है। उत्तम अनुशासन एव योगमय दिनचर्या यहा की एक प्रमुख विशेषता है।

विशेष — परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत।

इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्रता करे। स्थान सीमित है। विशेष जानकारी के लिए नियमावली मगाए।

-- आचार्य राजदेव शास्त्री, प्रधानाचार्य, दूरभाष : (०५६८३) ३[illegible]

थाईलैड के राज परिवार मे आज भी वैदिक पद्धति से धार्मिक कार्यक्रमो का आयोजन

थाईलैंड के राजगुरु वामदेव मुनि हाल मे ही एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ भारत आए। उनका यहा आने का मुख्य उद्देश्य थाईलैंड मे वैदिक रीति के अनुसार कर्मकाण्ड करवाने के प्रसार मे भारत का सहयोग लेना था।

आर्यसमाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने उनके विभिन्न कार्यक्रमो का सयोजन किया तथा राजगुरु वामदेव के साथ मिलकर भारत — थाई वेद प्रसार परिषद की स्थापना का निश्चय किया। प्रतिनिधि मण्डल भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी मानव ससाधन मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी एव सास्कृतिक मन्त्री श्री जगमोहन से मिला।

गुरुकुल गौतम नगर मे उनके स्वागत मे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे प्रसिद्ध आर्यनेताओं एव बिद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर थाईलैंड के राज ज्योतिषी डा० चिरापात पाण्डविद्या ने बताया कि १०० वर्ष पूर्व भारत से कुछ ब्राह्मण परिवार वेद एव हिन्दू धार्मिक पद्धति के प्रचार एव प्रसार हेतु थाईलैंड गए थे। आम जनता के अतिरिक्त राजघराने ने वैदिक हिन्द पद्धति को स्वीकार किया जो आज तक राजपरिवार मे होने वाले विभिन्न सस्कारों के लिए अपनाया जाता है। और ये कार्यक्रम राजगुरु वामदेव की ही देखरेख मे सम्पन्न होते है।

— कीर्ति शर्मा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (दूरभाष ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक ७ १६ जून से २२ जून २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ ज्ये० शु० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

युवा शक्ति के निर्माण एवं धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए सभी आर्य संस्थाएं अपनी आहुति अवश्य दें

दिल्ली २ जून। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल दयानन्द विहार नई दिल्ली म सम्पन्न हुआ।

आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा आर्यजनो तथा प्रशिक्षणार्थियो को सम्बोधित करते हुए। दूसरे चित्र मे आर्यवीर कमाण्डो रस्से पर चलते हुए तथा तीसरे चित्र मे सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती कर्मठ कार्यकर्ता श्री अभिमन्यु चावला को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

इस प्रशिक्षण शिविर मे दिल्ली की विभिन्न शाखाओ के १७३ आर्य वीरो व्यायाम शिक्षको तथा कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

शिविर के समापन समारोह मे बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यवीर दल आर्यसमाज का एक सशक्त अग है जिसके माध्यम से बच्चो और युवकों में नैतिकता और सामाजिकता के साथ साथ धार्मिक आध्यात्मिक वैदिक चिन्तन के बीज भी बोये जाते हैं और यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जैसा हम बोये वैसा काटे। आज हम आर्यवीर दल के माध्यम से जितने अधिक से अधिक बच्चो को आकर्षित कर पायेगे उतना अधिक सुदृढ हमारा भावी समाज होगा।

उन्होने कहा कि आर्यवीर दल कोई अलग सगठन नही है बल्कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्थापित एक अग है जिसके प्रान्तीय स्तर पर सचालक नियुक्त किए जाते हैं ओर आर्य समाज के स्तर पर शाखाओ के आयोजन करके प्रशिक्षक नामित होते हैं। आर्यवीर दल से प्रशिक्षित युवक ही आगे चलकर इसकी गतिविधियों को सचालित करते हैं। उन्होंने कहा कि सभी आर्यसमाजो और सभाओ को आर्यवीर दल की गतिविधिया तेज करनी चाहिए। जब आर्यसमाजे वेद प्रचार आदि गतिविधियो के लिए अपना बजट निर्धारित करती है। उस समय उन्हे युवा निर्माण के नाम पर आर्यवीर दल तथा धर्मान्तरण शुद्धि या राष्ट्ररक्षा के नाम पर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के लिए अलग से राशिया निर्धारित करनी चाहिए और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से अपनी आहुतिया इन कार्यों के लिए प्रदान करनी चाहिए।

शिविर का उद्घाटन दिनाक २५ मई को साय ५.०० बजे यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण द्वारा हुआ।

शिविर मे इस वर्ष देश की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए नौजवानो के लिए मुख्य रूप से कमाण्डो ट्रेनिग की व्यवस्था की गई थी। जो आर्य काफी लम्बे समय से आर्य वीर दल से जुडे हुए थे उन्हे ही इस उद्देश्य के लिए चुना गया था। स्मरण रहे ये वे ही आर्य वीर थे जिन्होने मुम्बइ गुजरात तथा हाल ही मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे व्यवस्था एव सेवा कार्य किए थे। दीवारो पर चढना ७–८ फुट ऊची दीवारो को बिना सहारे पार करना आग से निकलना कोहनियो के बल चलना तथा रस्से के माध्यम से बडी खाईयो को पार करना ये सब बहुत परिश्रम से सीखा तथा सिखाया गया। इसके अतिरिक्त लाठी भाला कराटे आसन दण्ड बैठक सूर्य नमस्कार आदि का शिक्षण तो दिया ही गया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक

महाराणा प्रताप जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में
"इतिहास का स्वर्णपृष्ठ"

दिनाक १३ जून सन २००२ तदनुसार ज्येष्ठ शुक्ला ३ तृतीया गुरुवार सवत २०५८ को महाराणा प्रताप जयन्ती महोत्सव भारत वर्ष मे सार्वजनिक रूप मे मनाया जा रहा है। महाराणा प्रताप के विषय मे किसी आत्मघाती स्वाभिमान शून्य पामर ने यह अफवाह फेलाई कि महाराणा प्रताप भी दिल्ली यवन पति अकबर के दरबार मे जाकर उसकी अधीनता स्वीकार रहे है।

यह बात बीकानेर के महाराजा पृथ्वीसिह को ज्ञात हुई तो एक पत्र सन्देश द्वारा पूछा कि हे महाराणा प्रताप हिन्दुओ के सूर्य यह वार्ता सच है या झूठ कृपया इसका शीघ्रतया समाधान करे। कारण वर्तमान मे राजस्थान के अधिकतम राजे महाराजे अम्बराधीश (जयपुर) के राजा मानसिह का अनुकरण कर रहे है सम्पूर्ण राजस्थान के राजपूतो का मान गौरव आपने रखा है।

क्या वर्तमान सकटकाल मे आप भी अपने महाराणा वश पूर्वजो के नाम को कलकित करने का महापाप करने जा रहे हैं ? साधारण मनुष्य तो अपने मे हिम्मत न होने से यह सिद्धान्त बाध लिया करता है कि जमाना मुश्किल है पर वाणी के रहस्य को महाराणा सागा और प्रताप ने ही समझा था। हे महाराणा प्रताप ! अब तक सब की यही आशा रही है कि महाराणा प्रताप अपने शिशोदिया वश की रीति मर्यादा को सुरक्षित रखेगे सुखराशि भगवान एकलिग आप की सहायता करे। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा मे आतुर एक स्वाभिमानी राजपूत। *(बीकानेर नरेश)*

महाराणा प्रताप का आत्मबल भरा सन्देश

शेर भूखा हो मगर, घास खा सकता नही।
राणा प्रताप, अकबर को कभी सर झुका सकता नहीं।।
आन पर मरते रहे, पुरखा उसी पर मे मरू।
सूर्यगढ चित्तौड का हरगिज झुका सकता नहीं।।
चाहे 'सुधाकर उत्तर दिशा मे, अग्नि बरसाते रहे।
चाहे दिवाकर' शीत हो, निशि सौम्य सरसाने लगे।।
चाहे मही को दे डूबा, सिन्धू निज मर्यादा को।
चाहे भले ही भूल जाये, सिह भीषण नाद को।।
चाहे गगन मे सुमन सुन्दर, सुरभित खिलने लगे।
चाहे मयुरो से उरगगण, प्रेम युत मिलने लगे।।
किन्तु झुक सकता नहीं, यह शीश इस प्रताप का।
होने न दूगा मै कलकित नाम बापारावल का।।
धर्म के खातिर जिऊ, धर्म के खातिर मरूगा।
धर्म रक्षा के लिये ही, केवल सर्वस्व त्याग दू।।

उपरोक्त स्वाभिमान भरे शब्दो मे सन्देश महाराणा प्रताप का श्री बीकानेर नरेश को मिला तो अति हर्ष भरे शब्दो मे धन्यवाद दिया। हे आर्य क्षत्रिय कुल दिवाकर महाराणा प्रताप तुम धन्य हो तुम्हारा शौर्य आत्मबल धन्य है। तुम्हारा अतुल साहस धैर्य और दृढ विश्वास चहुदिशी भेद कर चहु ओर प्रकाश फैला रहा है। भारतीय विद्यार्थियो के हृदयपटल पर अकित है और सगर्व प्रेरणा दे रहा है। भारतीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठो पर महाराणा प्रताप एव उन्ही के वश परम्परा के तेजस्वी नक्षत्र छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवन गाथा सदैव प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।

सग्रहकर्ता

– स्वामी केवलानन्द सरस्वती

पृष्ट १ का शेष

युवा शक्ति के निर्माण एवं धर्मान्तरण की .....

इस कार्य मे मुख्य रूप से श्री हरि सिह आर्य ब्र० अरूण कुमार 'आर्य वीर अतुल आर्य वीरेश आर्य धमेन्द्र आर्य श्री राजबीर आर्य आदि शिक्षको का महत्वपूर्ण योगदान रहा। श्री रोहताश आर्य जी ने जिस प्रकार से अपने गीतो बौद्धिक आदि से युवको को जोडा वह अपने आप मे स्मरणीय रहेगा। प्रात काल यज्ञ तथा दो प्रवचन कक्षाए नित्य प्रति चलती थी उनमे समय समय पर श्री भूदेव शास्त्री जी आचार्य यशपाल जी आचार्य सुनहरी लाल यादव डॉ० ब्रह्मदेव जी ने भी आर्यवीरो से चर्चाए रखी।

शिविर के अवसर पर सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आचार्य ब्र० राजसिह जी ने यज्ञ तथा सस्कार कराया। ७२ आर्य वीरो ने पहली बार यज्ञोपवीत धारण किया तथा अन्यो ने अपने यज्ञोपवीत परिवर्तित किए। आर्यसमाज गोबिन्दपुरी के उत्साही कार्यकर्ता श्री सत्येन्द्र मिश्रा जी ने अपने दोनो सुपुत्रो का यज्ञोपवीत सस्कार यही कराया तथा दोपहर का भोज अपनी ओर से दिया। सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशसा की। इस अवसर पर यमुनापार क्षेत्र की अनेक आर्यसमाजो के अधिकारीगण उपस्थित थे श्री सुखदेव आर्य तपस्वी तथा श्री ओमप्रकाश कपूर जी ने आशीर्वचन दिए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने सम्मिलित होकर बच्चो को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

शुक्रवार ३१ मई को साय काल विश्व मे बढते आतकवाद के विरोध मे आर्यवीरो ने विशाल मशाल जलूस का आयोजन किया।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री नसीब सिह विधायक ने इस अवसर पर नौजवानो के इस निर्माण कार्यो की प्रशसा की। श्री धर्मपाल जी आर्य ने इन कार्यो को ठोस बताते हुए इन्हे बढाने की अपील भी की। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी श्री शान्ती लाल सूरी जी श्री सुरेन्द्र रैली जी तथा श्रीमती सुदेश सेखरी जी ने भी सभा को सम्बोधित किया। अन्त मे जिसका सभी को इन्तजार था कमाण्डो का प्रदर्शन आरम्भ हुआ। प्रदर्शन आरम्भ होते ही पूरे माहौल मे बदलाव आ गया। कहीं बम्ब की आवाजे कही नारे कहीं देशभक्ति के गीत तो कहीं आग की तेज लपटे यह दृश्य देखकर उपस्थित लोग आश्चर्य चकित रह गए तथा आर्यवीर कमाण्डो की ड्रैस मे पलक झपकते ही पच्चीस फुट ऊची दीवार पर चढ गए तथा टायर के बीच से निकल कर ८ फूट ऊची दीवार पार कर भयकर आग से निकलकर कोहनिया के बल चलकर सुरग म से निकलकर तथा रस्से के सहारे २४ फूट ऊपर चढकर मच के आगे से रस्से पर उल्टा लटककर ८० फूट पारकर के ज्यू ही मच पर पहुचे सभी ने अपने दातो तले उगलिया दबा ली। उपस्थित आर्यजनो ने इस सारे कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशसा की।

इस सभा के अध्यक्ष आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी ने सारे कार्यक्रम को देखा तथा अन्त मे अपने वक्तव्य मे उन्होने क्षात्रबल की उन्नति की कामना के साथ आर्यवीर दल की उन्नति को आवश्यक बताकर सभी आर्यवीरो को आशीर्वाद दिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....
व्यष्टि से समष्टि की ओर ....
गृहस्थ से वानप्रस्थ एवं संन्यास की ओर ...

– स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, चम्बा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का तीसरा दिन २७ अप्रैल के रूप मे आयोजको की चेतना को कुछ देर विश्राम देने के बाद पुन दरवाजा खटखटाने लगा।हजारो की सख्या मे उपस्थित आर्य नर नारी अपने अपने अस्थाई आवास स्थलो पर नित्यकर्मो से निवृत्त होने के बाद महासम्मेलन मे शामिल होने की तैयारिया करने लगे। यथापूर्व प्रात ५ बजे सीनेट हाल कार्यालय मे महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन जी ने यज्ञ किया और उसके उपरान्त अपने साथियो सहित व्यवस्थाओ के निरीक्षण मे जुट गए।

दूसरी तरफ विशाल सामूहिक यज्ञ अपने निर्धारित समय पर प्रात ७ बजे ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश जी एव सयोजक डॉ० भारतभूषण जी की देखरेख मे सम्पन्न हुआ। पहले दोनो दिन की ईश्वरीय परीक्षाओ मे आयोजक खरे उतरे थे।

यज्ञ का प्रारम्भ हुआ सभी श्रद्धालुजन यज्ञ मे प्रेमपूर्वक शामिल थे और ईश्वरीय तरगो का आनन्द ले रहे थे कि शान्ति का प्रतीक कबूतर कहीं से उडता हुआ आया और एक श्रद्धालु के कन्धे पर बैठ गया। अचानक सामना होने के कारण उस श्रद्धालु ने कबूतर को हाथ से परे किया तो वह कबूतर हवनकुण्ड के पास जाकर एक झटके से गिरा। उसके लिए भी यह अप्रत्याशित रहा होगा। वह कबूतर ऐसा लग रहा था जैसे नई–नई उडान करना सीख रहा हो। फिल्म उद्योग से जुडे आर्य कार्यकर्ता श्री इन्द्र कुमार मेहता ने एकदम शान्ति के प्रतीक इस कबूतर को अग्नि के ताप से बचाने के लिए अपने हाथ मे ले लिया जिसे वह बाद मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के एक ऐसे अध्यापक के यहा छोड आए जिनके निवास पर पहले से ही एक कबूतर पल रहा था। शान्ति के दूत की रक्षा अपने आप मे एक शुभ सकेत है।

२७ अप्रैल २००२ को प्रात यज्ञोपरान्त प्रवचन की व्यवस्था बदल कर यज्ञ वेदी स्थल के स्थान पर मुख्य मच से ही प्रसारित करने का निवेदन चम्बा से पधारे स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के समक्ष किया गया। मुख्य मच से होने वाले प्रसारणों को रिकार्ड करने की व्यवस्था उपलब्ध थी। ऐसी व्यवस्था यज्ञ वेदी पर लगे माईक के साथ उपलब्ध नहीं थी। इसी कारण २५ व २६ अप्रैल को स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी एव आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी के प्रवचनो को रिकार्ड नहीं किया जा सका।

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ अपने प्रवचनो की वर्षा प्रारम्भ की।

ओ३म भूर्भुव स्व ततसवितुर्वरेण्य।
भर्गो देवस्य धी महि धियो यो न प्रचोदयात।।

मच पर उपस्थित सार्वदेशिक सभा के प्रधान वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन जी सभी उपस्थित महानुभाव पूजा के योग्य माताओ और बहनो। यह प्रवचन यज्ञ वेदी पर होना था लेकिन श्री विमल वधावन का आदेश हुआ कि मच से ही इस प्रवचन का प्रारम्भ किया जाए आदेश का पालन करना है अत अब मै यहा से जो भी कहना है उसे कहूगा यज्ञ वेदी पर कुछ और तरगे होती है यहा पर कुछ और तरगे होती है लेकिन फिर भी यज्ञ को ही लक्ष्य करके मै कुछ बोलूगा।

यज्ञ क्या है ? इसके सम्बन्ध मे कल भी आपने कुछ सुना। अधिकारी विद्वान बोल रहे थे मै भी यज्ञ के सम्बन्ध मे आपसे कुछ कहना चाहता हू, कुछ निवेदन करना चाहता हू। जो कहूगा उसे आत्मसात करने का प्रयास करे। हम लोग आर्यसमाज के मच से प्राय एक वाक्य बोला करते है यज्ञो वै श्रेष्ठतमम कर्म तस्मात मनुष्य भू यज्ञम मनुष्यो को ही यज्ञ करने की बात कहीं गई है क्योकि इससे श्रेष्ठ कर्म दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। ये बात आर्यो के मन मे इतनी घर कर गई कि बहुत से लोग ट्रेनो मे यज्ञ करने लग गए। पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी ससद मे यज्ञ करने की जिद पकड बैठे।

यज्ञ मे हमारी आस्था तो बनी घर घर मे यज्ञ भी हुए परन्तु जब तक हम यज्ञ की मूल भावना को हृदयगम नहीं करेंगे यज्ञ से वो अपेक्षित लाभ नहीं होगा। हम लोग यज्ञ करने से पूर्व आचमन करते हैं अग स्पर्श करते है प्रार्थना मन्त्र बोलते है बृहद् यज्ञ हो तो स्वस्तिवाचन और शान्तिप्रकरण के मन्त्रो का पाठ करते है दैनिक यज्ञ हो तो हम प्रार्थना मन्त्रों को बोलकर यज्ञ की अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं।

जीवन को यज्ञमय बनाना है तो ये अत्यावश्यक है। पहले हम अग स्पर्श करते है कि हमारे अगो की शुद्धि हो। ईश्वर से यह विनय करना कि हमारे अग प्रत्यग सुदृढ रहे। (मैं श्री विमल वधावन जी से प्रार्थना करूगा कि (कितनी देर बोलना है) उत्तर प्राप्त हुआ ३० मिनट और।)

इसलिए एक बात देखिए – हम लाग कहा भटक रहे है प्रात काल उठना स्नान करना शरीर स्वस्थ रहे हमारी याचना है कि प्रभू हमे बल देना सामर्थ्य देना लेकिन उसके लिए प्रयास नही करते। महर्षि दयानन्द जी कहते है प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ भी होना चाहिए।

मुझे यह कहने मे सकोच नही हो रहा है कि आर्य परिवारो के अन्दर नई पीढी ने प्रात काल जल्दी उठना त्याग दिया है। जब प्रात काल नहीं उठेगे स्नान नही करेगे तो यज्ञ कैसे करेगे। कितने भाग्यशाली वो लोग है जो प्रात काल उठ जाते है और नहा धोकर यज्ञ वेदी पर बैठकर प्रार्थना करते है। केवल पहला और अन्तिम मन्त्र ही ले प्राथना मन्त्रो का। विश्वानि देव सवितु हे प्रभु ! सम्पूर्ण दुर्गणो को दूर कर दो दुख और दुव्यसनो को दूर कर दो उत्तम गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ है वो हमको प्राप्त करवाओ।

हम ये प्रार्थना करते है और इस पर कुछ चिन्तन करेगे तब हम विवश हो जाते है कि मेरे अन्दर है कौन सी कमी अखिर। तब मै उसको दूर करने का भी प्रयत्न करने लग जाता हू। मेरा जीवन यज्ञ के लिए तैयार रहे ये यज्ञ की दीक्षा है। जब तक दुर्गणो का त्याग नहीं हुआ सदगुणो का धारण नहीं हुआ तब तक यज्ञ कैसे करेगे ?

एक आदमी के मन मे सकल्प उठा कि अमुक स्थान पर बाढ आ गई भूकम्प आ गया ओलावृष्टि हो गई, बहुत बडा नुकसान हो गया। एक आवाज उठी कि वहा सहायता करनी चाहिए एक व्यक्ति शुद्ध मन से तैयार होता है घर–घर घूमता है कि पैसा दो चन्दा दो वहा भेजना हैं लोग दुखी है लेकिन क्योकि वह दीक्षित नहीं था अत जबरन पाच सात हजार आ जाता है तो वह सोचता है कि कौन जानता है रुपया कितना इकटठा किया और कितना भेजा। कुछ अपने पास रख लू। अत यज्ञ करने के लिए दीक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है और यज्ञ की दीक्षा यही है कि हम लोग अपने अन्दर से दुर्गुणो को दूर करे। ये दूर कैसे हो।

हम लोग प्राय यज्ञ धातु का अर्थ करते है – देवपूजा सगतीकरण और दान। मै प्राय बाला करता हू, सक्षेप म इसे यहा भी समझा देता हू फिर विषय को आगे बढाऊगा

आपके घर मे कोई विद्वान आया अथवा नगर मे आया। आप उसे आग्रह पूर्वक घर म आमन्त्रित करे अथवा स्वत ही आ गया हो तो उसका सत्कार करे अच्छा आसन देकर अपने से ऊचा आसन दे ये देव पूजा है। हमारे शास्त्रो मे कहा गया कि जल से उसका स्वागत करो। जल तो हर व्यक्ति दे सकता है आप जल दीजिए उसके बाद कुछ दूध फल आदि हा तो दीजिए ये दवपूजा हो गई। व्यक्ति प्रसन्न हो जाएगा। गाय को चारा खिलाते है तो गाय प्रसन्न होकर दूध देगी। भूखी गाय दूध कैसी देगी। विहान का सत्कार हो जाता है विद्वान का सत्कार अत्यन्त आवश्यक है। विद्वान की पूजी तो उसके शिष्य है। इसलिए वह एक ही हवन करता हे अपने गुरुकुल मे बैठकर वो उन शिष्या की कामना करता है जो सुशील सदाचारी विनम्र और सभ्य हो।

आप जब उसका सत्कार कर लेते है तो उसके अन्दर भी एक दूध प्रसवित होने लगता है वह है ज्ञान रूपी दूध। अब सगतिकरण का अर्थ देखिए आप स्वय नीचे बैठकर उन्हे कहिए कि हमारे कल्याण के लिए कुछ कहिए जिससे मेरा और मेरे परिवार का कल्याण हो उसको ध्यान से सुने। दुर्गुण कैसे दूर होगे ? जब तक किसी के श्रीमुख से हम नहीं सुनते तब तक आदमी दुर्गुण दूर करने का सकल्प नहीं लेगा इसलिए देवपूजा और सगतिकरण अर्थात जब उस का उपदेश हो जाए उस पर आचरण करने का प्रयास करे चिन्तन करे मनन करे और फिर जो कुछ आपकी श्रद्धा है उनको भेट करके विदा कर दे। यही था देव पूजा सगतिकरण और दान।

हमारे यहा गुरुजनो की बात को कितना महत्व दिया जाता था एक दृष्टान्त मुझे अभी स्मरण हो रहा है। दशरथ अपने सिहासन पर बैठे हुए है। कुलगुरु वशिष्ठ आदि बैठे हुए है तब तक विश्वामित्र आते है – जटा जूट सन्यासी खडे होकर उनका स्वागत करते है अर्ध देते है महाराज दशरथ तुरन्त बोल पडते है – आप का कौन सा प्रिय कार्य करू ?

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....

उन्होने अपना प्रयोजन कह दिया – राक्षस यज्ञो का विध्वस कर रहे है राम और लक्ष्मण की जोडी मुझे चाहिए। राजा को मूर्छा आ गई उसके बाद बहुत बाते बोलता है – मुझे ले जाओ सारी फौज जाएगी हम आपके आदेश मे प्राणो की बाजी लगा देगे। इन अबोध बच्चो को न ले जाइए जब मोह मे पड गया तो कुलगुरु ने क्या कहा –

रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाए पर वचन न जाई।।

ये रघुवशियो की रीत रही है तुमने कहा क्यो था तुमने कह दिया तो इसका पालन करो। इस ऋषि के साथ तुम्हारे बच्चो का भी कल्याण हो जाएगा ये भी अमर हो जाएगे। तुम भी अमर हो जाओगे।

इतिहास साक्षी है कि राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ चल दिए। ये परम्पराए उच्च परम्पराए हैं।

ये ज्ञान यज्ञ जब तक नहीं चलेगे तब तक यज्ञ हमारे अधूरे रह जाएगे। इसलिए जीवन को यज्ञमय बनाओ। जैसे यज्ञ के पश्चात यज्ञ से सुगन्धि उठती है अगर जीवन से सुगन्धि नहीं उठती तो कितने ही ऊचे पद पर बैठे हो कितने ही विद्वान हो कितने बुद्धिमान हो यश नहीं प्रवाहित होगा। यश तो प्रवाहित उसी का होगा जिसका जीवन यज्ञमय है। यज्ञ हम करते है जीवनभर करते रहते है। सामग्री का प्रयोग करते है जीवन भर करते रहते है। सामग्री का प्रयोग करते है बाजार से भाव पूछते है। मै एक समाज मे गया। सामग्री को बिक्री के लिए उपलब्ध करते है। मैने कहा कैसे सामग्री देते हो ? वो कहते है – बीस रुपये किलो। मैने कहा इसमे कुछ मुनाफा भी रखा होगा। वो कहते हैं – हा दो तीन रुपये मुनाफा है। १६–१७ की तुमने ली जिसने बेची उसने भी कुछ कमाना है। इसका मतलब १४–१५ रुपये किलो सामग्री हुई। इससे क्या पर्यावरण की शुद्धि होगी महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट उल्लेख किया है चार प्रकार की सामग्रिया है – सुगन्धि वाले पदार्थ रोगो को दूर करने वाले पदार्थ मिठास देने वाले पदार्थ। हम लोग बाजार से क्यो नहीं इन चीजो को ले आते और स्वय सामग्री बनाते।

मैं अपनी बात कर रहा हू, हमने डेढ वर्ष तक यज्ञ किया। बहुत सामग्री प्रयोग हुई उसमे। एक सौ दस क्विन्टल सामग्री लगी थी। सारी सामग्री अपने हाथो से तैयार की। अब भी हम अपने हाथो से तैयार करते है। मिठास वाले पदार्थ डालो क्योकि हम चाहते है मिठास हो वातावरण मे रोग न हो इसलिए रोगो को दूर करने वाले जिस–जिस को जो रोग है वह उसी प्रकार की ओषधिया डाले किसी वैद्य को पूछो हमने पीछे दिया था यह प्रयोग क्योकि फार्मेसी भी हम चलाते है इसलिए जो रोग लोगो को प्राय होते है दर्द वगैरा घुटनो मे होती है तो हमने दशमूल गोकशूल लोगो को जिनको निकट बिठाया उन्हे रोगो से मुक्ति मिली।

यदि किसी ने एक भी यज्ञ न किया हो परन्तु आर्यसमाज का व्यक्ति बीडी सिगरेट मास शराब आदि से दूर है यह भी एक बडा कारण है कि लोग आर्यसमाज को हमेशा–हमेशा याद रखेगे।

इस वायुमण्डल को आप लोग उत्तम बनाए बढिया चाहते है वायुमण्डल सुगन्धि चाहते है कहा से सुगन्धि आएगी ? परमात्मा हमारा दास तो नहीं जो हमे अच्छी वायु देगा। प्राण वायु तो सबसे महत्वपूर्ण है। इसके शोधन के लिए यदि हम पुरुषार्थ नही करते तो क्या हम पाप के भागी नहीं है।

स्वामी दयानन्द जी कहते है जितनी वायु हम दूषित करते है उतनी तो शुद्ध करने का प्रयास हम सब को करना ही चाहिए। आप स्वय शुद्ध सामग्री बनाए समिधाए आप के पास है उससे यज्ञ करे। शुद्ध धृत ले। यज्ञ करे। यज्ञ करना अत्यन्त आवश्यक कार्य है।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे लिखा है। उनसे पूछा गया कि क्या यज्ञ करने से मनुष्य की कामनाए पूर्ण होती है ?

उन्होने कहा हा इसमे कोई सशय नहीं। क्योकि परमेश्वर की सृष्टि मे इस ससार को शुद्ध और पवित्र बनाने मे जो व्यक्ति जितना योगदान देगा उतनी मात्रा मे उसको फलो की प्राप्ति होगी।

बस यही हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस वायुमण्डल को शुद्ध और पवित्र बनाए। श्रद्धा से आप यज्ञ करे। मैं यज्ञ की एक भावना शेष समय मे आपके सामने रखना चाहता हू। यज्ञ हमको एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण देता है और वो है – स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलना। हमने सामग्री डाली – स्थूल पदार्थ था। हमने धृत डाला – स्थूल पदार्थ था। लेकिन अग्नि के साथ आकर के वो सूक्ष्म बन गया। जैसे महर्षि दयानन्द ने उदाहरण दिया – थोडा सा हींग का छौंक जब आप लगाते हैं पडी हुई हींग इतनी सुगन्धि नहीं फैलाती परन्तु छौंक लगने से उसकी सुगन्धि दूर दूर तक फैल जाती है। आप मिर्च डाल दे – दूर दूर तक बैठे लोगो को पता लग जाएगा कि अब अग्नि मे मिर्च पड गई है क्योकि वो सूक्ष्म बन करके कई गुणा बढकर के वायुमण्डल मे फैल जाती हैं।

इसलिए आप लोग ध्यान दें कि यज्ञ हमे स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाना चाहता है। हम लोगो को एक प्रेरणा दी जाती है एक शिक्षा दी जाती है – आचार्यो गुरुओ के द्वारा कि तुम इस शरीर मे रमण मत करो। शरीर को धीरे धीरे त्यागना शुरू करो। अन्दर बैठना शुरू करो। स्थूल से सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश करो। सूक्ष्म शरीर के साथ फिर आत्मतत्व को जानो। ये आत्मा जब मुक्ति को जाता है तब तो सूक्ष्म शरीर भी साथ नहीं होता।

कितनी लम्बी अवधि है – ३१ नील वर्ष की ३६ सहस्र बार ससार का प्रलय होगा ३६ सहस्र बार ससार का उदय होगा। इतनी लम्बी अवधि मोक्ष की है जिसमे आनन्द ही आनन्द भोगना है इसलिए उस मुक्ति के आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम लोगो को शरीरो की इच्छाओ से ऊपर उठाना होगा। शरीर की रक्षा तो अवश्य करो क्योकि यह रथ है लेकिन शरीर के भोगो मे ही जिस व्यक्ति की अन्तिम समय तक आस्था बनी रही वो मुक्ति की बात कैसे सोचेगा। ये इसलिए होता है कि स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलने की बात अभी तक आपको समझ नहीं आई।

मैंने देखा है बडे बूढे व्यक्ति पोते और पोतियो को गोद मे बिठाकर टी०वी० के आगे बैठ जाते हैं। कैसे वातावरण बनेगा।

आज आर्यसमाज के सामने बडी भारी चुनौती है कि हम जनता को सावधान करे जागरूक करे कि वे स्थूल से सूक्ष्म की ओर व्यष्टि से समष्टि की ओर बढे। यज्ञ हमको यही सिखाता है। जब तक सामग्री अपने बाहरी स्थूल रूप को नही मिटाती सुगन्धि नहीं आएगी। घी जब तक अपने स्थूल रूप को नहीं मिटाता तब तक उसकी शक्ति नहीं बढती है।

स्थूल रूप की और ज्यादा ध्यान नहीं देना। व्यष्टि से समष्टि की ओर बढना है। छान्दोग्य मे बहुत बढिया प्रकरण है। आप लोग वहा पढ ले। मैं एक छोटी सी बात सुना रहा हू।

सनद कुमार नारद को उपदेश करते है स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढना ही असली सुख है। कैसे – जब तक आप यह सोचते है – चुनाव हुआ मैं तो पीछे रह गया नौकरी का इन्टरव्यू हुआ मैं रह गया यह छोटी दृष्टि है बडी क्या है ? सारा ससार मेरा है हम यह क्यो नहीं सोचते कि सारा ससार जब मेरा है इसलिए ईश्वर मेरा पिता है सारा ससार मेरा परिवार है तो सारे ससार के कल्याण की बात मे क्यो न सोचू।

विघटन मित्रो मे परिवार मे सस्थाओ मे राष्ट्र मे तब आता है जब सभी अपने बारे मे सोच रहे होते हैं। राष्ट्र के बारे मे कोई नहीं सोचता। सस्थाओ मे विघटन तब आता है जब मेरा कौन है उसका कौन है अपने को शामिल कर लिया पराए को परे धकेल दिया।

दृष्टि होनी चाहिए कि सब मेरे है कोई दुष्ट आचरण वाला व्यक्ति है तो उसको दूर करो ये तो अच्छी बात है लेकिन अच्छे सच्चे लोगो को सबको साथ लेकर चलना चाहिए।

इसी विशाल दृष्टि की पुष्टि की है हमारी आश्रम व्यवस्था ने। आर्यसमाज को ऐसे अवसरो पर प्रेरणा करनी चाहिए कि वानप्रस्थ और सन्यास की दीक्षा ले। क्योकि जब तक आप घर मे बन्धे हुए है। ये कैसा अन्धेर आया कि कोई व्यक्ति अच्छी पोस्ट से रिटायर होता है फिर कहीं नौकरी कर लेता है। अब तो सरकार बहुत पेशन देती है बहुत सुविधाए हैं। अगर वो लोग अपने जीवन को समाज के लिए अर्पण कर दे। गुरुकुलो से पूछे बडी बडी सस्थाओ से पूछे – हमारी सेवा लीजिए। बहुत बडी आवश्यकता है ऐसे लोगो की जिनकी सारी सोच समाज के लिए हो। व्यक्ति कितना ही निष्ठावान हो विद्वान हो किन्तु यदि वो ग्रहस्थ की चार दिवारी के अन्दर है तो लाजमी है कि उनके बारे मे ही सोचेगा पहले वो अपनी पत्नी के बारे मे सोचेगा अपने माता पिता के बारे मे सोचेगा ये सोचना गलत नहीं है। परन्तु बेटे का भी बेटा हो जाता है वह अपने पैर पर खडा हो जाता है तब तो घर को त्यागो। ससार के उद्धार का लक्ष्य – कृण्वन्तो विश्वमार्यम – कैसे पूरा होगा।

इसलिए यज्ञ की एक भावना ये है – इसलिए हम यह सीख कर जावे कि हम अपना जीवन समाज के लिए अर्पण करते है। अपने जीवन को पूरी तरह समर्पित कर दे। आपके जीवन के अन्दर सबसे बडी खूबी या गुण हो सकता है वो है समर्पण का। हे परमेश्वर ! आपने बहुत दिया विशाल परिवार दिया परिवार फल फूल रहा है। अब मुझे शक्ति दो मेरा परिवार तो अपने पैर पर खडा हो गया अब मैं समाज के उद्धार के लिए अपने आप को समर्पित कर दू।

आज आर्यसमाज के सामने बहुत बडी आवश्यकता है ऐसे समर्पित लोगो की। बहुत बडी चुनौती है आर्यसमाज के सामने राष्ट्रीय समाज जर्जर हो रहा है।

मै हिमाचल के एक आर्यसमाज मे बोल रहा था। हिमाचल के मन्त्री आए हुए थे। रक्षामन्त्री गुजरात दौरे पर गए हुए थे। बहुत दिनो से वक्तव्य आ रहे थे कि शान्ति बनी हुई है। रक्षामन्त्री के वहा जाने से फिर दगे भडके। हल्ला गुल्ला हुआ। ये कैसे रक्षा मन्त्री देश के। सेनाए बैठी है रक्षामन्त्री बैठे हैं परन्तु फिर भी हाथ बन्धे हुए हैं। रक्षामन्त्री तो होता ही इसलिए है उसके पास फौज इसीलिए है कि वो इसका प्रयोग दुष्टो के ऊपर करें।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-स्वमार्यम्

– आचार्य भगवान देव चैतन्य

श्री आचार्य भगवान देव 'चैतन्य' जी के द्वारा २६ अप्रैल, २००२ को "आर्य परिवार सत्र" मे दिया गया उद्बोधन लिखित रूप मे प्राप्त हो गया था जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है। इस सत्र की विस्तृत रिपोर्ट विगत अक मे प्रकाशित हो चुकी है। – *विमल वधावन*

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का लक्ष्य व्यक्ति को किसी सम्प्रदाय या मजहब विशेष के साथ जोडने का बिल्कुल भी नहीं था बल्कि उन्होने पुरातन वैदिक परम्परा को ही हमारे समक्ष रखते हुए बडी ही शालीनता के साथ कहा कि ब्रह्मा से जैमिनी मुनि तक के ऋषियो महर्षियो का जो मत है वहीं मेरा मत है। उन्होने वेद को इसलिए महत्व दिया क्योकि वेद मे किसी प्रकार के सम्प्रदाय या मजहब का उल्लेख नही है बल्कि उसमे ऐसे सार्वभौमिक एव सार्वकालिक धर्म का उल्लेख है जो हमे अपने जीवन को मानवीय गुणो से परिपूर्ण करने की प्रेरणा देता हे। मानवता वह गुण है जो व्यक्ति को मनन और चिन्तन की शक्ति देता है करणीय और अकरणीय कार्यो का बोध कराता है। वास्तव मे यह गुण ही व्यक्ति का धर्म है। यह धर्म हमे विवेक प्रदान करके स्वय को नैतिकता से परिपूर्ण करने की प्रेरणा देता है। महर्षि दयानन्द जी आधुनिक युग मे पहले ऐसे व्यक्ति हुए ह जिन्होने मनु महाराज जी के स्वर मे स्वर मिलाते हुए कहा – न लिगम धर्मकारणम अर्थात बाहरी चिन्ह धारण कर लेना धर्म नहीं हे। हुआ यह कि लोगो ने अपने अपने लिए भिन्न भिन्न प्रकार के बाहरी चिन्ह धारण करके साम्प्रदायिकता की काराओ म बन्द कर लिया जिससे धर्म की गुणवत्ता समाप्त हो गई तथा मात्र बाहरी दिखावा ही रह गया। इसी से पाखण्ड और आडम्बर पैदा होकर धर्म का वास्तविक स्वरूप ही बिगड गया। महर्षि जी ने धर्म को बाहरी पहरावे आदि तथा दिखावे से मुक्त किया और उसे व्यवहारिकता के साथ जोडा। उनका लक्ष्य सारे ससार को आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानव बनाना था। वेद हमे यही प्रेरणा देते हुए कहता है –

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तोऽरावण । *(ऋ० ६–६३–५)*

अर्थात परम एश्वर्यशालियो और सत्कर्मों मे निपुण लोगो को बढाओ तथा पापियो कृपणो और ईर्ष्यालुओ का नाश करो। समाज मे तो इस भावना को कार्यान्वित करना ही है मगर इसी भावना को हमे अपने स्वय के जीवन मे भी चरितार्थ करने की आवश्यकता है। आर्यत्व श्रेष्ठता का प्रतीक है। श्रेष्ठ आचरण वाले व्यक्ति को ही हम आर्य कह सकते हैं। आर्यत्व के भाव व्यक्ति को अपने चरित्र के साथ जोडने की आवश्यकता है। इसे श्रेष्ठ शील के साथ जोडते हुए महाभारतकार का कथन है –

न वैरमुद्दीपयति प्रशान्त न दर्पमारोहति नास्तमेति।
न दुर्गतोऽस्मीति करोत्यकार्य तमार्यशील परमाहुरार्या ।।
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्ष चान्यस्य दु खे भवित विषादी।
दत्वा न पश्चात्कुरुतेऽनुताप स कथ्यते सत्पुरुषार्यशील ।।

अर्थात जो शान्त हुए वैर को फिर नहीं भडकाता जो गर्व नहीं करता जो अपने को हीन भी नहीं जताता मैं विपत्ति मे पडा हू ऐसा कहकर जो अधर्म कार्य नही करता उसे आर्यजन अत्यन्त आर्यशील श्रेष्ठ आचरण वाला कहते हें जो अपने सुख मे फूलकर कुप्पा नही हो जाता जो दूसरे के दु ख मे दु खी हो जाता है जो दान देकर बाद मे पश्चाताप नही करता वह सत्पुरुष आर्यशील कहलाता है।

देश तथा समाज के लिए अपने स्वार्थों को त्यागने की प्रेरणा केवल धर्म ही दे सकता है। धर्म के तत्व ही नैतिकता का सृजन कर सकते है। व्यक्ति के भीतर छुपे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार रूपी शत्रुओ का जब तक नाश नहीं होता है तब तक मानव अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर कुछ भी नहीं सोच सकता है। उसके जो भी निर्णय होगे, किसी न किसी पूर्वाग्रह से ही ग्रसित होगे। इन वासनाओ और पूर्वाग्रहो से तभी मुक्ति मिल सकती है जब मानव को सतत महान बनाने के प्रयास किए जाए। सस्कारो के माध्यम से यही प्रयास किए जाते है कि व्यक्ति की सब प्रकार की मलिनताओ को दूर कर दिया जाए। सस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणो को हटाकर उनकी जगह सदगुणो का आधार कर देने का नाम है। जब व्यक्ति के दुर्गुण दूर होगे तभी वह शारीरिक, मानसिक ओर आत्मिक स्तर पर विकसित होकर पूर्ण मानव बन सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का एक सूत्रीय कार्यक्रम है – कृण्वन्तो विश्वमार्यम। अर्थात सारे ससार को आर्य बनाना। उनकी दृष्टि मे भी आर्य शब्द श्रेष्ठता का प्रतीक है। वे सारे ससार को श्रेष्ठ मानव बनाना चाहते थे। वास्तव मे श्रेष्ठता ही उन्नति का आधार है। जो व्यक्ति श्रेष्ठ होगा वही जीवन मे चतुर्दिक उन्नति कर सकता है। जहा ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियो का समूह होगा वह परिवार समाज ओर देश अपने वास्तविक लक्ष्यो को प्राप्त कर सकने मे समर्थ हो सकेगा। इसलिए हमे ससार को आर्य बनाने से पूर्व स्वय अपने आप को आर्य बनाना होगा। बडी हैरानी की बात है कि व्यक्ति परिवार या देश और समाज की उन्नति के लिए अनेक प्रकार की योजनाए बनाता है मगर मानव को सही मानव बनाने की दिशा मे कोई प्रयास नहीं किया जाता हैं यदि मानव को मानव बना दिया जाए तो समस्त समस्याओं का स्वत ही निवारण हो जाएगा। कुछ लोगो द्वारा रोटी कपडा और मकान की प्रतिपूर्ति का नारा लगाया जाता है मगर मानव को सुखी रखने के लिए केवल मात्र ये ही उपलब्धिया पर्याप्त नहीं है। इन बाहरी उपलब्धियों से आज तक किसी को भी परम सुख प्राप्त करते हुए नहीं देखा गया है। ये वस्तुए वास्तव में सुख और शान्ति का आधार है ही नहीं। मनु महाराज कहते हें – सुखस्य मूलम धर्म । अर्थात सुख का मूल धर्म है। जब तक व्यक्ति का जीवन कार्यरूप मे धार्मिक नहीं होगा तब तक वह सुखी हो ही नही सकता है। भौतिक रूप से यदि कोई समाज या देश सम्पन्न हो भी जाए तो भी यदि देश के नागरिक भीतर से विकसित नहीं हें तो वे उन साधनो का प्रयोग भी ठीक ढग से नही कर पाएगे। कहते है कि एक बार किसी ने महान वेज्ञानिक आईस्टीन से पूछा कि आपन इतने अदभुत आविष्कार किए है मगर क्या इससे मानव जाति पूरी तरह से सुखी हो सकेगी ? तो आइस्टीन ने उत्तर दिया कि मेरा यह दावा नहीं है कि इन उपलब्धियो से व्यक्ति सुखी होगा ही। यह तो उन व्यक्तियो के मानसिक विकास पर निर्भर करता है कि वे इन आविष्कारो का प्रयोग किस प्रकार से करते हैं। जब उनसे पूछा गया कि व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए आपने क्या प्रयास किए है तो उनका कथन था कि यह काम धार्मिक लोगो का है।

आईस्टीन की बात अक्षरश सत्य है। आज हमने भौतिक रूप से भले ही बहुत उन्नति कर ली है मगर मानसिक रूप से विकसित न होने के कारण देश के बडे बडे नेता भी कई प्रकार के घोटालो मे फसे हुए हैं। सप्रदायवाद क्षेत्रवाद और जातिवाद आदि की कुवृत्तियो के कारण देश रसातल मे जा रहा है। यदि यहा के नागरिको मे देश भक्ति की भावना नहीं है तो इन भौतिक उपलब्धियों का कोई मतलब नहीं रह जाता है। देश तथा समाज के लिए अपने स्वार्थों को त्यागने की प्रेरणा केवल धर्म ही दे सकता है। धर्म के तत्व ही नैतिकता का सृजन कर सकते हैं। व्यक्ति के भीतर छुपे काम क्रोध लोभ मोह और अहकार रूपी शत्रुो का जब तक नाश नहीं होता है तब तक मानव अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर कुछ भी नहीं सोच सकता है। उसके जो भी निर्णय होगे किसी न किसी पूर्वाग्रह से ही ग्रसित होगे। इन वासनाओ और पूर्वाग्रहो से तभी मुक्ति मिल सकती है जब मानव को सतत महान बनाने के प्रयास किए जाए। सस्कारो क माध्यम स यही प्रयास किए जाते है कि व्यक्ति की सब प्रकार की मलिनताआ को दूर कर दिया जाए। सस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणो का हटाकर उनकी जगह सदगुणो का आधार कर दन का नाम हे। जब व्यक्ति के दुर्गुण दूर हागे तभी वह शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्तर पर विकसित होकर पूर्ण मानव बन सकता हे।

मानव निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदिक काल से प्रचलित सोलह सस्कारो का प्रबल समर्थन किया है। उन्होने आर्यो के लिए इन सस्कारो की अनिवार्यता पर बल दिया ह। सालह सस्कारो के प्रचलन क लिए उन्हाने सस्कार विधि ग्रन्थ की भी रचना की हे। सस्कार विधि मानव निर्माण की दिशा मे एक अदभुत ग्रन्थ है। सोलह सस्कारो मे से लगभग ग्यारह सस्कार ता बालक की सात आठ वर्ष की आयु तक ही हा जाते है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानो का विचार हे कि प्रथम के सान आठ वर्षो म बच्चे मे जो सस्कार डाल दिए जात ह जीवन के शेष वर्षो मे उन्ही सस्कारो का विकास होता है। बालक के तीन सस्कार ता उसकी गर्भावस्था मे ही कर दिए जाते हे। यह बात सिद्ध हा चुकी है कि गभ म ही बालक पर अच्छे या बुरे सस्कार पडने आरम्भ हो जाते है। इतिहास म भी इस बात क कुछ उदाहरण हमे मिलते है। कहते है कि अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेदन अपनी गर्भावस्था मे ही सीख लिया था। परम विदुषी मदालसा ने गर्भ मे ही अपन बच्चा पर सस्कार डालकर आठ को ब्रह्मज्ञानी और नवे को राजा बनाया था। निपोलियन गीटू और प्रिंस बिस्माकै आदि को भी गर्भ मे ही वे सस्कार मिल गए थे जिनका विकास बाद के शेष जीवन मे हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने बालक के जन्म से पूर्व तीन सस्कारो का विधान किया है – गर्भाधान पुसवन और सीमन्तोनयन। इन तीनो ही सस्कारो का अपना विशेष महत्व है। आजकल विवाह के बाद हनीमून आदि के लिए नव दम्पत्ति विभिन्न स्थानो मे जाकर पूर्णतया भोग मे डूब जाते है और उनका गर्भाधान भी उसी काल मे आकस्मिक रूप से हो जाता है। इसीलिए सन्तान का निर्माण भली प्रकार से नहीं हो पा रहा है। हमारे ऋषि मुनियो ने तो गर्भाधान को भी एक पवित्र कार्य मानकर धार्मिक स्वरूप प्रदान किया था। आज इस बात का रोना तो सभी रोते हैं कि हमारी सन्ताने बिगड रही है मगर इस बात की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता है कि हम उन्हे अच्छा बनाने के लिए कितना प्रयास करते है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

कर्त्तव्य बनाम अधिकार

– मुनि डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

मुनि डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी (जम्मू) के द्वारा २६ अप्रैल २००२ को आर्य परिवार सत्र मे दिया गया उद्बोधन लिखित रूप मे प्राप्त हो गया था जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है। इस सत्र की विस्तृत रिपोर्ट विगत अक मे प्रकाशित हो चुकी है। – ***विमल वधावन***

जैसे ज्ञान भार क्रिया बिना कर्म के बिना ज्ञान भार है वैसे ही कर्त्तव्य पालन के बिना अधिकार भी भार है। अधिकार शब्द का अर्थ है निर्धारित कर्त्तव्य का पालन। जब व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करता हे तब वह अधिकारी बन जाता है। अत कर्त्तव्य अधिकार और अधिकारी एक दूसरे के पूरक हैं। जीवात्मा स्वरूप से अनादि चेतन अविनाशी और क्रियाशील है। अत सातव्य गमने धातु से आत्मा शब्द बनता है। जो तत्त्व सतत क्रियाशक्ति युक्त है और उसके ससर्ग से अन्य जड तत्वो म भी क्रिया उत्पन्न हो जाती हैं वह आत्मा (जीवात्मा) तत्त्व है। सम्पूर्ण सृष्टि की क्रिया का कारण तो परमात्मा है। परन्तु देहस्थ कुछ क्रियाओ का कारण जीवात्मा है। ऐसी जीवात्मा के लिए विशेष रूप से मानव शरीरस्थ जीवात्मा के लिए यजुर्वेद कहता है –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।
यजु० ४०/२

अरे मानव तू कर्म करते हुए ही ससार मे सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इसके अतिरिक्त तेरे लिए जीने का और कोई रास्ता नहीं है। हा इतना ध्यान रखो कि कर्म स्वय आकर मानव से लिप्त नही होता है। कर्म मे तो मानव ही लिप्त होता है। अर्थात कर्म तो मानव का स्वय करना होता हे। वेद मे एक सकेत और हे कि कर्म स्वतन्त्र नहीं है वह परतन्त्र है। वह किसी को अपने मे नहीं लपेटता हे परन्तु मानव आसक्ति की भावना से उसमे लिपट जाता है जो व्यक्ति को परेशान करता है। अनासक्त भावना से किया हुआ कर्म ही कर्त्तव्य कर्म कहलाता है और कर्त्तव्य की भावना से किया हुआ कर्म ही सन्तुष्टि और शान्ति प्रदान करता है। गीता मे भी अनासक्त कर्म योगी श्रीकृष्ण का यही सन्देश है। जो व्यक्ति अधिकार को पाकर अपने कर्त्तव्य का पालन नि स्वार्थ भावना से नहीं करता ऐसा व्यक्ति न कर्म मे सुख शान्ति सन्तोष को प्राप्त करता है और न फल से सन्तुष्ट होता है। स्वार्थी व्यक्ति सही कर्त्तव्य का पालन न करके भटक जाता है। क्योकि स्वार्थ की कोई सीमा नहीं हे। ऐसे व्यक्ति के लिए गीता मे कहा है – काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भव । महाशना महापाप्मा विद्धि एन हि काभ वैरिणम राजसिक काम असीमित इच्छा शक्ति जिसमे शीघ्र प्राप्ति की भावना निहित है वह रजोगुणी काम मानव का शत्रु बन जाता है। ऐसा व्यक्ति पाप और अन्याय के कर्म भी करने लगता है – वहीं गीता मे लिखा है

आशापाश शतैर्बद्धा काम क्रोध परायणा ।
ईहन्ते काम भोगार्थम न्यायेनार्थ सचयान।।
।। गीता ।।

अनेक आशाओ के जाल मे फसा हुआ व्यक्ति कामी और क्रोधी बन कर अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अन्याय से अर्थ सचय मे लग जाता है।

यह अधिकार और कर्त्तव्य की भावना परिवार की इकाई से प्रारम्भ होती है। एक परिवार मे सबका सबके प्रति अधिकार और कर्त्तव्य जुड जाता है। सामाजिक क्षेत्र मे भी अधिकार और कर्त्तव्य की भावना काम करती है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अधिकार और कर्त्तव्य की भावना जुडी हुई है। अधिकार प्राप्त करके अधिकारी के दो ही मानदण्ड बनते हैं। प्रथम तो वह व्यक्ति अधिकारी बनकर अपना भी त्याग करके अपने कर्त्तव्य का नि स्वार्थ भावना से पालन करके अपने उन्नत लक्ष्य को और उन्नति के शिखर पर पहुचा देता है जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती एव उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी। ऐसा व्यक्ति पुत्रैषणा वित्तैषणा ओर लोकेषणा से ऊपर उठ कर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है और जन जन के मानस का आदर्श बन जाता है। इस मार्ग मे कठिनाईया भी आती हैं उन्हे वह सहन करता रहता है ऐसी कठिन परिस्थितियो मे भी ईश्वर विश्वासी बनकर सदैव मुस्कराता रहता है।

इसके विपरीत स्वार्थी व्यक्ति अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अपने अधिकारो का दुरुपयोग करता है और वह लक्ष्य का भी विनाश करता है और अपना भी विनाश कर लेता है।

किसी नीतिकार ने कहा है –

आरोप्यते शिला शैले महता यत्नेन यथा।
निपात्यते क्षणेनाधस तथात्मा गुण दोषयो ।।

जैसे किसी पत्थर को बडे प्रयत्न से पर्वत के ऊपर चढाया जाता है परन्तु पर्वत से पत्थर को गिराने मे कोई देर नही लगती उसी प्रकार आत्मा को ऊपर उठाने मे परिश्रम करना पडता है परन्तु उसे पतन की तरफ ले जाने मे कोई देर नहीं लगती।

आर्यपरिवार मे माता पिता बच्चो के प्रति अपना कर्त्तव्य साधिकार पूरा निभाते हैं। उसी प्रकार बच्चो को अपने माता पिता के प्रति वृद्धावस्था मे जो कर्त्तव्य है उसे पूरी तरह से निभाना चाहिए अपना अधिकार दूसरो को नहीं देना चाहिए। वृद्धावस्था मे निष्काम सेवा ही पुत्र का प्रमुख कर्त्तव्य है।

इसी प्रकार सामाजिक जीवन मे किसी सस्था की या समाज की सेवा का व्रत लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह जब अधिकारी बने तो सस्था को उच्च शिखर तक पहुचाने का महान व्रत धारण करे। अधिकारी बन कर ईमानदारी से तथा नि स्वार्थ भावना से अपने कर्त्तव्य का पालन करे।

यदि माली ही बगीचे को उजाडने लगे तो बगीचा कब तक सुरक्षित रह सकता है। इस गुरुकुल को पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना सर्वस्व त्याग करके बनाया था। अपने शिष्यो के प्रति पितातुल्य गुरु बनकर साधिकार अपने कर्त्तव्य का पालन किया। और एक छोटे से पौधे को विशाल वटवृक्ष का रूप दिया। सच्चे माली बनकर अपने पसीने से इस गुरुकुल की वाटिका को सीचा। कुछ ऐसे अनधिकारी भी इस सस्था मे घुस गए जिन्होने कर्त्तव्य का पालन न करके इसे उजाडने मे कोई कसर नहीं छोडी। धिक्कार है ऐसे तथाकथित आर्य नामधारियो को । वर्तमान मे इस गुरुकुल कागडी की शताब्दी के अवसर पर इस महान सस्था को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और महान बनाने का सभी व्रत धारण करे – किसी कवि ने कहा है –

मेरा आशिया उजडता है तो उजडा करे
मुझे कोई परवाह नही
लेकिन रोको उन आधियो को
क्योकि यह प्रश्न चमन का है।

यही कर्त्तव्य की भावना राष्ट्र से जुडी हुई है। राष्ट्र का अधिकारी नेता भी कर्त्तव्य पालन की दीक्षा धारण करे।

अथर्ववेद १६ ।४३ ।१। मे लिखा है –

भद्र मिच्छन्त ऋषय स्वर्विदस्तपोदीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्र बलमोजश्च जात तदस्मै देवा उपस नमन्तु।।

जो युग द्रष्टा नेता राष्ट्र का कल्याण चाहते हैं वे पहले राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पालन की दीक्षा लेवे तब अधिकारी बने। ऐसे राष्ट्र मे इतना बल और ओज पैदा हो जाता है कि उसके सामने बडी से बडी शक्तिया अपना सर झुका देती हैं।

अधिकार लेकर अधिकारी बन कर जो राष्ट्र को धोखा देते हैं इसे लूटते हैं गद्दारी करते हैं लालच मे इसकी अस्मिता को बेच देते है। ऐसे भ्रष्ट नेता राष्ट्र को ही समाप्त कर देते हैं।

राष्ट्र के प्रति निष्काम भावना से कर्त्तव्य का पालन करना ही देश प्रेम कहलाता है।

जो व्यक्ति साधक होता है वह साधना मे बैठकर परमेश्वर की निष्काम भावना से अपना कर्त्तव्य समझ कर उपासना करता है और आनन्द की अनुभूति करता है। वह परमात्मा से मागता नहीं है अपितु परमात्मा को ही अपना बना लेता है। उसकी प्रेरणा को सुनता हे। उस पर चलता है। अपने पिता परमेश्वर को स्मरण करना अपना कर्त्तव्य समझता है ऐसा ही साधक जब समाधि से उठकर कर्मक्षेत्र मे प्रवृत्त होता है तब निष्काम भावना से अपने कर्त्तव्य का पालन करके सच्चा कर्म योगी बन जाता है इस कर्म क्षेत्र मे भी वह सुख और शान्ति का अनुभव करता है।

जा व्यक्ति कर्म से पहले ही फल की इच्छा निर्धारित कर लेता है वह व्यक्ति मन से किसी की सेवा नही करता है। ओर जब वाद मे उतना फल नही मिलता हे तो दुखी हो जाता है।

जीवात्मा का वेद मे एक नाम क्रतु हे **क्रतुमयोऽय पुरुष** यह जीवात्मा कर्म कर्ता है यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय मे जीवात्मा को परमेश्वर ने एक आदेश तो यह दिया है कि **ओ३म क्रतो स्मर** हे कर्म शील जीवात्मा तू ओ३म को सदा याद रखा। दूसरा आदेश सुकर्म करने का है। ऋग्वेद (१–६१–२) मे कहा है – **क्रतुभि सुक्रतुर्भू** अर्थात यज्ञादि कर्मो को त्याग भावना से तथा इद न मम की भावना करते हुए तुम सुक्रतु बनो। सुक्रतु वही होता है जो प्रत्येक क्षेत्र मे निष्काम भावना से अपने कर्त्तव्य का पालन करता है। अधिकार प्राप्त करके सही अधिकारी बन जाता है और अपना जीवन सफल कर लेता है। नीतिकारो ने कहा है –

'महाजनो येन गत स पन्था महापुरुष जिस मार्ग पर चले हैं उसी पर तुम चलो।

यजुर्वेद मे कहा है – **अनुल्वण वयत जोगुयाम यो** महापुरुषो के उलझन रहित कर्मो को करते रहो। ऋग्वेद (५–५१–१५) मे कहा है – स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्र मसाविव जैसे सूर्य और चन्द्रमा निष्काम भाव से पर सेवा मे लगे रहते है इसी प्रकार – तुम ससार मे कर्म करो। कसी कवि ने कहा है – **वृक्ष कबहु नहिं फल भखे नदी न सचय नीर परमारथ के कारणे सन्तन धरयो शरीर।।**

तथा – **सन्त स्वय परहिते विहिताभियोग ।।**

सज्जन स्वय बिना किसी स्वार्थ के पर सेवा मे लगे रहते हैं।

अधिकार पद पर जब ऐसे देवता पुरुष बैठते हैं तव वे अपना सर्वस्व दान कर देते हैं। वे लेते नहीं देते हैं और ऐसे पुरुष ही सही अर्थो मे आर्य कहलाते हैं।

मकान न० १३२ पुराना हस्पताल जम्मू-१

अधिकार और कर्त्तव्य की भावना परिवार की इकाई से प्रारम्भ होती है। एक परिवार मे सबका सबके प्रति अधिकार और कर्त्तव्य जुड जाता है। सामाजिक क्षेत्र मे भी अधिकार और कर्त्तव्य की भावना काम करती है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अधिकार और कर्त्तव्य की भावना जुडी हुई है। अधिकार प्राप्त करके अधिकारी के दो ही मानदण्ड बनते है। प्रथम तो वह व्यक्ति अधिकारी बनकर अपना भी त्याग करके अपने कर्त्तव्य का नि स्वार्थ भावना से पालन करके अपने उन्नत लक्ष्य को और उन्नति के शिखर पर पहुचा देता है जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती एव उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी। ऐसा व्यक्ति पुत्रैषणा वित्तैषणा और लोकेषणा से ऊपर उठ कर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है और जन जन के मानस का आदर्श बन जाता है। इस मार्ग मे कठिनाईया भी आती है उन्हे वह सहन करता रहता है ऐसी कठिन परिस्थितियो मे भी ईश्वर विश्वासी बनकर सदैव मुस्कराता रहता है।

इसके विपरीत स्वार्थी व्यक्ति अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अपने अधिकारो का दुरुपयोग करता है और वह लक्ष्य का भी विनाश करता है और अपना भी विनाश कर लेता है।

वैदिक परिवारवाद

– स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के द्वारा २६ अप्रैल २००२ को "आर्य परिवार सत्र मे दिया गया उद्बोधन लिखित रूप मे प्राप्त हो गया था जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है। इस सत्र की विस्तृत रिपोर्ट विगत अक मे प्रकाशित हो चुकी है। *– विमल वधावन*

वेदो मे ससार को एक परिवार का रूप दिया गया है। शासन प्रशासन सरक्षा सुरक्षा तथा व्यवस्था की दृष्टि से ससार को अनेक भागो मे विभाजित किया गया है। विभाजित करने वाली इकाईया प्रमुख रूप से इस प्रकार हे।

१ देश २ प्रान्त ३ मण्डल ४ जनपद ५ तहसील ६ थाना ७ विकास खण्ड ८ नगर निगम ६ नगर पालिका १० कालोनी ११ सेक्टर १२ ग्राम पचायत १३ मोहल्ला १४ गली १५ घर।

घर एक परिवार है। परिवार मे दादा दादी माता पिता पुत्र पुत्री भाई बहन ताऊ चाचा चाची आदि सदस्य है। इन सब के सर्वागीण विकास के लिए मकान वस्त्र तथा भोजन विश्राम शिक्षा तथा सुरक्षा की व्यवस्था की जाती है उसको परिवार करते है।

परिवार शब्द के शब्दिक अर्थ का प्रयाजन हे कि जहा परित चारो ओर से वृत्र वरणे अर्थात वरण किया जाए उसका तात्पर्य है परिवार सगठन की दृष्टि से परिवार ससार की सबसे छोटी प्रथम इकाई है कि जिसमे प्रत्येक सदस्य एक दूसरे को वरण करता है। स्वीकार करता है। इसके अतिरिक्त परिवार वह इकाई है जिसमे प्रयेक सदस्य एक दूसरे को आच्छादित करते है सुरक्षा करते है। सम्पोषित करते है।

वैदिक परिवार की पहिचान

वैसे तो ससार मे ईसाई मुसलमान सिक्ख जैन बौद्ध आदि मत पन्थो की मान्यताओ के अनुसार परिवार चल रहे है। परन्तु जहा वेद की शिक्षाओ के अनुसार परिवार मे व्यवहार तथा परस्पर सहयोग किया जाता है उसे वैदिक परिवार कहा जाता है।

वेदो मे मानव जाति को दो भागो मे विभाजित किया गया है। १ आर्य २ दस्यु।

प्रथम आर्य – श्रेष्ठ सज्जन पुरुष परिश्रमी परोपकारी अहिसावादी।

दस्यु – राक्षस हिसक (आतकवादी उग्रवादी) स्वार्थी कर्महीन लुटेरे।

यज्ञीय परिवार की विशेषताए

वैदिक परिवारो मे नित्य यज्ञीय जीवन का पालन किया जाता है। यज्ञीय जीवन की प्रमुख विशेषताए तीन है –

१ बडो का आदर सत्कार करना बडो से परामर्श लेना उनकी आज्ञाओ का पालन करना। ऐसे सद गृहस्थ कितनी भी हानि क्यो न होती हो परन्तु अपने बडो का निरादर तिरस्कार तथा आज्ञा का उल्लघन नही करते।

परस्पर का सगठन रखना सहयोग करना एक दूसरे की भूलो को सहन करना आपसी तालमेल रखना विचार भेद होने पर भी मन भेद न करना। वाणी से मधुर ही बोलना। कटु वचनो से दूसरो के हृदयो को न तोडना।

३ परिवार मे उदारता का समावेश रखना। दान पुण्य की वृत्ति रखना भोजन वस्त्र आभूषण या जीवन की सुविधाओ का समान अधिकार होना। प्रत्येक अपनी इच्छानुसार बल विद्या शक्ति या धन का दान कर सके। जिस परिवार मे याचक खाली न लौटाया जाए अर्थात उसकी पात्रता के अनुसार अन्न धन तथा वस्त्रादि से स्वागत किया जाए। यह देव पूजा सगतिकरण तथा दान की व्यवहारिक याज्ञिक भावना जिस परिवार मे रहे उसे यज्ञीय परिवार कहा जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती सस्कार विधि ग्रन्थ के अन्दर गृहस्थाश्रम विधि मे मन्त्रो के निर्देशन से परिवारो की उत्तम मयादा का निबन्धन करते है।

सहृदय सामनस्यम विद्वेष कृणोमि व । अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सजात मिवाघ्न्या।।

अथर्व० १४/२/७५

अर्थात हे ग्रहस्थों। मै ईश्वर तुमको ऐसी आज्ञा देता हू, वैसा ही व्यवहार करो जिससे तुमको अक्षय सुख हो अर्थात जैसे अपने लिए सुख की इच्छा करते हो और दुख नही चाहते हो वैसे ही माता पिता सन्तान स्त्री पुरुष भृत्य मित्र पडोसी आदि अन्य सब के समान हृदय रहो। मन मे सम्यक प्रसन्नता और वैर विरोध रहित व्यवहार को तुम्हारे लिए स्थिर करता हू जैसे हिसा न करने योग्य गाय उत्पन्न हुए अपने बछडे के साथ वात्सल्य भाव प्रकट करती है। वैसे एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्वक वर्ताव करो।

अनुव्रत पितु पुत्रो भवतु समन्ना । जायापत्ये मधु मती वाच वदतुशान्तिवान।।

अथर्व० ३/३०/२

हे सद गृहस्थो। तुम्हारा पुत्र माता के साथ प्रीति युक्त मन वाला अनुकूल आचरण युक्त और पिता के सम्बन्ध मे भी इसी प्रकार का प्रेम वाला होवे वैसे तुम भी पुत्रो के साथ सदा वर्ता कर'। जेसे स्त्री पति की प्रसन्नता के लिए माधुर्य युक्त वाणी को कहे ऐसे पति भी शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया करे।

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्सारमुत स्वसा। सम्यच्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया।।

अथर्व० ३/३०/३४

हे गृहस्थो । तुम्हारे ये भाई भाई के साथ द्वेष कभी न करे तथा भाई बहिन भी परस्पर द्वेष मत करो। सम्यक प्रेमादि गुणो से युक्त समान गुण कर्म स्वभाव वाले होकर मगल कारक रीति से एक दूसरे के साथ सुख दायक वाणी को बोला करो।

प्रिय श्रोताओ। इन मन्त्रो मे वैदिक परिवारवाद के प्रमुख सिद्धान्तो का मूलाधार प्राप्त होता है। जिसके अनुसार वैदिक परिवार की प्रमुख विशेषताए इस प्रकार स्वीकार की गई है।

१ परिवार के सभी सदस्यो मे सहृदयता और प्रेम का व्यवहार हो।

२ पुत्र पिता का अनुवर्त्ती तथा माता के मन वाला हो।

३ पति पत्नी परस्पर मधुर वाणी से व्यवहार करने वाले हो

४ भाई भाई आपस मे द्वेष न करे। बहिन बहिन भी आपस मे द्वेष न करे।

५ परिवार के सभी सदस्य समान गुण कर्म स्वभाव वाले हो।

पातजल योगधाम आर्य नगर (हरिद्वार)

स्वस्थ रहने के लिए जीवन शैली बदलें : शीला दीक्षित

दवाओ के सहारे वक्त काटने का जमाना गया। अब जीवन शैली बदलने का वक्त आ गया हे ताकि जान लेवा बीमारियो से स्थायी निजात मिल सके। दिल्ली की मुख्यमन्त्री शीला दीक्षित ने यह बात कल शाम सम्भ्रात नागरिको के एक समारोह मे कही। उन्होने कहा कि हमे आत्मनिन्दा से बचकर योग और प्राकृतिक चिकित्सा की अपनी कीमती धरोहर का महत्व समझना चाहिए जिसकी ओर कातर मानवता आज आशा भरी निगाह से देख रही है।

अवसर था स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय का विस्तारित परिसर कृष्णदत्त स्वास्थ्य केन्द्र मे आधुनिक सुविधाओ से सज्जित रोग निदान प्रयोगशाला की स्थापना का और स्थान था दक्षिण पूर्वी दिल्ली का सुरम्य देसराज परिसर जिसे मुख्यमन्त्री ने कीचड मे कमल की सज्ञा दी। प्रयोगशाला के उपकरण रोटरी क्लब दिल्ली नार्थ ने प्रदान किए हैं।

श्रीमती शीला दीक्षित ने देसराज परिसर मे योग व प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के सफल सचालन पर सतोष व्यक्त करते हुए कामना की कि यह विश्व विद्यालय का आकर ग्रहण कर अन्धेरे मे रोशनी दिखाने का काम करे

दिल्ली की आबादी हर साल साढे तीन लाख बढ जाती है इस ओर ध्यान दिलाते हुए मुख्यमन्त्री ने कहा कि इससे राजधानी के सामने समस्याओ का अम्बार लगता जा रहा है। उन्होने कहा कि हम जनता की साझेदारी से दिल्ली को दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह बनाने की कोशिश करेगे।
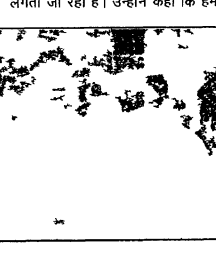
शीला दीक्षित ने कहा कि यहा आते हुए रास्ते मे अतिक्रमण और मलिनता देखकर मुझे तकलीफ पहुची। पर इस सुरम्य परिसर के इन्तजाम यहा के माहौल से राहत मिली प्रेरणा जगी। यह अनुभूति कीचड मे कमल खिला होने जैसी है

दिल्ली के स्वास्थ्य मन्त्री डा० अशोक कुमार वालिया ने देसराज परिसर मे चल रही सस्थाओ से अपने पुराने जुडाव की चर्चा की और कहा कि इनसे दिल्ली की जनता को बहुत मदद पहुच रही है।

कृष्णदत्त स्वास्थ्य केन्द्र की सचालक डा मधु गुप्ता ने बताया कि यह स्थान जीवन से निराश हो चुके रोगियो के लिए आशा की अन्तिम किरण है। यहा वही रोगी आते हैं जो अन्य चिकित्सा प्रणालियो से निराश हो चुके है। यह प्रभु की कृपा है कि वे यहा से स्वस्थ होकर जाते है।

रोटरी क्लब दिल्ली नार्थ के प्रमुख के जी रत्नम ने सभा की अध्यक्षता की। देसराज परिसर सस्थाकुल के मुख्य अधिष्ठाता वीरेश प्रताप चौधरी चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के प्रधान सुशील प्रकाश आर्य बल गृह के प्रधान महेन्द्र कुमार शास्त्री शतायु होने की ओर अग्रसर समाज सेविका शारदा नारग अधिष्ठाता श्री हमीर सिह रघुवशी सहित गणमान्य नागरिक इस अवसर पर उपस्थित थे।

हमीर सिह रघुवशी अधिष्ठाता

पृष्ठ ५ का शेष भाग

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-स्वमार्यम्

कहते है कि श्रीकृष्ण महाराज जी का जब रूक्मणी जी से विवाह हुआ तो उन्होने बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के बाद ही गर्भाधान सस्कार किया था। गर्भाधान सस्कार वास्तव मे दिव्य आत्माओ के लिए जन्म लेने हेतु एक तरह से भूमि तैयार करने जैसा है। इसीलिए इसे पवित्रता के साथ जोडा गया है। मा बाप की वैचारिक श्रेष्ठता की पृष्ठभूमि ही सुसन्तान पैदा करने का उपाय है। यदि वैदिक रीति से गर्भाधान करने कराने का सिलसिला चल पडे तो स्वाभाविक रूप से सन्तान श्रेष्ठ ही पैदा होगी क्योकि गर्भाधान के समय की मन स्थति बालक के भविष्य का निर्माण करने मे अपनी अहम भूमिका निभाती है। आर्य सस्थाओ को इस ओर गहन चिन्तन करके इसके प्रचलन कराने की दिशा मे ठोस कदम उठाने चाहिए। प्रसन्नता की बात है कि दयानन्द मठ चम्बा के सस्थापक स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज इस दिशा मे अपने सतर पर नव विवाहितो से सम्पर्क करके प्रयासरत हे।

दूसरा सस्कार है – पुसवन। गर्भस्थ बालक के शरीर का दूसर तीसरे महीने म निर्माण होना आरम्भ हा जाता ह। महर्पि जी ने यह सस्कार चौथे मही‍न करान का विधान किया है। इस सस्कार का उददेश्य गर्भस्थ सन्तान मे निरोगता स्वरूपता सुन्दरता और तेजस्विता आदि का आधान करना है। इसी प्रकार के भावो स युक्त मन्त्रो की आहुतिया पति पत्नी से दिलवाई जाती है। एसे ही खान पान तथा रहन सहन का विस्तृत निर्देश महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रस्तुत किया है। मा बाप वीर और तेजस्वी सन्तान की कामना करते हैं – आ वीराजायता पुत्रस्ये दशमास्य । माता के गर्भ मे स्थित बालक अपने पैदा होने तक सुरक्षित रहे इस प्रकार की कामना भी की जाती है। तीसरे सस्कार सीमन्तोनयन का भी अपना विशेष महत्व है। सीमन्त शब्द का अर्थ है मस्तिष्क और उन्नयन शब्द का अर्थ है विकास। अर्थात यह सस्कार सन्तान के मानसिक विकास का द्योतक है। यह सस्कार आठवे महीने मे किया जाता है। पुसवन सस्कार शारीरिक विकास हेतु और सीमन्तोनयन सस्कार सन्तान के मानसिक विकास के लिए है। इन दोनो सस्कारो का यही आशय है कि सन्तान का शारीरिक और मानसिक विकास भली प्रकार से हो।

बालक के जन्म के बाद के सस्कारो मे महर्षि जी ने पहला सस्कार जातकर्म सस्कार बताया है। जातकर्म सस्कार के समय बहुत सी महत्वपूर्ण प्रक्रियाए की जाती हैं ओर वे बहुत ही सार्थक हैं। महर्षि जी ने अपने ग्रन्थ सस्कार विधि मे उनका विस्तृत उल्लेख किया है। बच्चे का मुख नाक आदि साफ करना नाडी छेदन स्नान कान के पास पत्थर बजाना सिर पर घी डुबोया फाया रखना सोना की शलाका से घी और मधु क साथ ओ३म लिखना और बालक के कानो मे त्व वेदोऽसि कहना। इन समस्त प्रक्रियाओ का अपना अपना विशेष महत्व है और बच्चे के भावी जीवन पर इसका गहन प्रभाव पडता है। इस सस्कार के माध्यम से बालक मे आध्यात्मिकता का बीज भी बोया जाता है तथा उसके शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास को बल मिलता है। इससे अगले सस्कार का नाम नामकरण सस्कार है। यह सस्कार बालक के जन्म के ग्यारहवे या एक सौ एक वे दिन होता है जिसमे बालक का कोई सुन्दर और सार्थक नाम रखा जाता है। बालक के चार महीन पूरे हो जाने पर उसे प्रथम बार घर से बाहर निकाला जाता है तथा इसे निष्क्रमण सस्कार कहते हैं। छठे महीने बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता हे तथा इस सस्कार को अन्न प्राशन सस्कार कहते हें। एक वर्ष पूरा हो जाने पर या तीसर वष बच्च क वाल प्रथम बार उतारे जात हे तथा इन सस्कार का चूडाकम सस्कार कहत हें ओर तीसरे अथवा पाचव वर्ष कर्ण वेध सस्कार किया जाता है। इस सस्कारो का अपना अपना विशेष महत्व हे। चार महीने से पूर्व बच्चे को बाहर की हवा से बचाना चाहिए। छठे महीने से पहले उसे अन्न नही खिलाना चाहिये क्योकि उस समय तक उसमे अन्न पचाने की शक्ति नहीं होती है। चूडाकर्म द्वारा बच्चे के मलिन बालो को उतार दिया जाता है जिससे नए और सुन्दर बाल पैदा होते है। इसके साथ साथ सिर भारी रहने से भी बच्चे की रक्षा होती है तथा सिर की खुजली एव दाद आदि से उसकी रक्षा होती है। कर्णवेध से हर्निया आदि रोगो से बालक की रक्षा होती है तथा स्वर्ण के आभूषण आदि डालने के लिए भी कानो को वेधा जाता है।

इसके बाद बालक का उपनयन सस्कार कराया जाता है। बच्चो के निर्माण के लिए गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया जाता है। यह एक ऐसी परम्परा थी जिससे बालक का चतुर्दिक विकास होता था तथा यह भी सुनिश्चित हो जाता था कि वह किस वर्ण के योग्य है। अमीर गरीब सभी बच्चो को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाते थे। ब्राह्मण के बालक को आठवे वर्ष क्षत्रिय के बालक को ग्यारहवे वेश्य के बालक को बारहवें वर्ष मे यज्ञोपवीत दिया जाता था। यज्ञोपवीत एक ऐसा पवित्र चिन्ह होता है जिसके धारण कराने पर बच्चे को ऋषिऋण पितृऋण और देव ऋण से उऋण होने की प्रेरणा दी जाती थी। इस उपनयन सस्कार वाले दिन ही बालक को यज्ञोपवीत दिया जाता था ओर उससे अगले दिन ही उसका वेदारम्भ सस्कार होता था और उसे गुरुकुल मे प्रवेश दिलाया जाता था। आज स्थिति क्या है यह चिन्तनीय विषय है क्योकि आज जापान मे तो वेद की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है मगर हमारे यहा तो जैसे वेद या वैदिक धर्म की बात करना भी अपराध जैसा समझा जाता है। गुरुकुल मे वैदिक शिक्षा ग्रहण करके बालक का शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास होता था और इस पूर्ण मानव बने युवक को समावर्तन सस्कार के रूप मे विदाई दी जाती थी और उससे आचार्य कहा करते थे कि बेटा अब समूचे जीवन मे सत्य बोलना धर्म का आचरण करना और स्वाध्याय तथा उसके आगे प्रवचन करने मे कभी भी प्रमाद मत करना।

सस्कारा के इस क्रम मे विवाह सस्कार तरहवा सस्कार है। गुरुकुल मे समस्त ज्ञान विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके वह गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता था। विवाह सस्कार की समस्त प्रक्रियाए गृहस्थ को स्वर्ग बनाने से सम्बन्धित है। गृहस्थ के दायित्वो से निवृत्त होकर तथा पुत्र का भी पुत्र हो जाने पर उसे समाज और देश सेवा के लिए घर से निकल जान चाहिए। गृहस्थ मे रहकर व्यक्ति सब प्रकार की एषणाओ मे डूबकर इस अनुभव से निकल जाता है कि इन एषणाओ का कहीं अन्त नहीं है इसलिए वह परमार्थ की ओर अपने जीवन को चलाने के लिए पचास वर्ष की आयु मे गृह त्याग कर परोपकार के कार्यों मे स्वय को लगा लेता था। इसी को वानप्रस्थ सस्कार कहते हैं। वानप्रस्थी होने के बाद परोपकार आदि के कार्यों को करता हुआ जब व्यक्ति पूर्णरूप से निष्काम भावना से परिपूर्ण हो जाए तो वह मन वचन कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित होकर मोक्ष की कामना लेकर सन्यासी बन जाता है। यही सन्यास सस्कार है। व्यक्ति का अन्तिम और सोलहवा सस्कार है – अन्त्येष्टि सस्कार। यह सस्कार व्यक्ति के मरने पर होता है। अर्थात उसकी देह को अग्नि मे जला दिया जाता है तथा आत्मा अपने कर्मानुसार गति को प्राप्त हो जाता है। इस सस्कार के बाद शरीर के लिए और कोई सस्कार नहीं रहता है। मरने के बाद व्यक्ति के शरीर को जलाना चाहिए जिससे पाच भूत सहजता से विलीन हो जाए। ये सोलह सस्कार व्यक्ति के जीवन की पूर्णता के लिए अनिवार्य बताए गए हैं। वास्तव मे सोलहवे सस्कार से पूर्व के सस्कारो के माध्यम से व्यक्ति के चरम विकास का मार्ग प्रशस्त किया गया है और हमारे ऋषियो की यह एक अदभुत देन है। सस्कारो के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन मे और मरने के बाद भी पूर्णता प्राप्त कर सकता है। महर्षि दयानन्द जी की आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानव बनाने की यही योजना है तथा इसका कार्यान्वयन ही आज मानवता क लिए सजीवनी सिद्ध हो सकता है।

– ८१/एस ४ सुन्दरनगर २ (हि०प्र०)

गुरुकुल पौन्धा (देहरादून) मे वार्षिकोत्सव पर यजुर्वेदीय पारायण यज्ञ, आर्यवीर दल शिविर एवं विशाल सत्संग आयोजित

देहरादून २७ मई। श्री मद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल देहरादून अपने वार्षिकोत्सव पर उत्तराचल मे प्रथम बार आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर ४ जून से १६ जून तक आयोजित कर रहा है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति डॉ० देवव्रत आचार्य के निर्देशन एव सान्निध्य मे इस शिविर में १५ से २५ वर्ष तक की आयु के युवको को शारीरिक एव बौद्धिक विकास तथा चरित्र निर्माण के व्यवहारिक प्रशिक्षण के साथ उन्हे वैदिक धर्म व सस्कृति की सार्वभौमिक मान्यताओ व विचारधारा से भी परिचित कराया जायेगा। यह जानकारी गुरुकुल के आचार्य श्री धनजय शास्त्री ने देते हुए कहा कि आर्यवीर दल का ध्येय वाक्य 'सेवा – शक्ति व सस्कृति' है। युवको को गुरुकुलो के अनेक विद्वान एव योग के आचार्य प्रशिक्षण प्रदान करेगे। अनेक गुरुकुलो के सस्थापक आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान एव नेता आचार्य हरिदेवजी भी युवको को प्रशिक्षण एव दीक्षा प्रदान करेंगे।

श्री धनजय शास्त्री ने जानकारी देते हुए कहा कि १६ जून को शिविर का समापन तीन दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति से होगा। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान साधु सन्यासी सन्त एव भजनोपदेशक अपने प्रेरक उपदेशो से आर्यवीरो एव स्थानीय एव दिल्ली सहित देश के दूरस्थ स्थानो से आयी आर्य जनता को विशाल सत्सग के माध्यम से उपदेश एव दिशा बोध प्रदान करेगे। श्री धनजय शास्त्री ने बताया कि गुरुकुल पौन्धा साल के वनों से घिरा हुआ पर्वत साम्राज्ञी मसूरी की उपत्यका मे स्थित है जहा आगन्तुकों के स्वागत के लिए जल पान भोजन सहित जल विद्युत दूरभाष आदि की सुविधाये उपलब्ध हैं। शुद्ध वायुमण्डल से आवेष्टित इस गुरुकुल में यज्ञशाला गोशाला सत्सग भवन आवासीय कमरे आदि निर्मित हो चुके हैं तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी पूर्ण मनोयोग से अध्ययन कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द की पाठविधि से नि शुल्क अध्ययन इस गुरुकुल की विशेषता है।

पृष्ठ ४ का शेष

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....

अत्याचार अन्याय को स्वीकार न करे।

राष्ट्रीयता यदि जर्जर होती है तो वेद की शिक्षा मनु का उपदेश कौन सिखाएगा कि राजा के क्या कर्त्तव्य है ? ये आर्यसमाज का काम है।

आज पाच हजार साल पूर्व काला युग नहीं है। कितना भयकर था। जब श्री कृष्ण जन्मे थे – जेल के अन्दर उनके सब भाई बहन मार दिए गए। उन्होने ऐसी युक्ति की कि दुष्ट राजाओ को दण्डित किया। आर्य राज्य की स्थापना की। क्या बढिया सकल्प था।

परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्क्रताम। महर्षि ने आर्यो का समाज इसलिए बनाया था कि हम अन्याय को नहीं पनपने देगे अधर्म को नहीं पनपने देगे। सत्ता के शीर्ष पर गुण्डे और बदमाश पहुच गए हैं। हमने प्रतिज्ञा कर ली कि हम उनकी तरफ देखेगे भी नहीं। यह अज्ञान है। राष्ट्र हमारा है। इसलिए हमको राष्ट्रीय चिन्तन अवश्य अपनाना पडेगा। वेद की शिक्षा को सबको सुनाना पडेगा। लोग परेशान हो गए है – आतकवाद उग्रवाद ये कैसे वाद हैं। एक देश दुनिया मे उभरता है। उसके हाथ मे बम्ब पड गए। बडी घटना घट गई। बम्ब बरसा दिए। कोई माई का लाल उसका विरोध नहीं कर पाया – अमरीका का कि तुमने मानवाधिकारो का हनन किया है।

जब आतकवाद होता है तो हमको आवाज उठानी चाहिए। हमे सोचना चाहिए।

प्रधान जी का आदेश हो मया है कि मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करु। अत मैं विराम दे रहा हू। परन्तु फिर कह रहा हू कि हम लोगो को राष्ट्रीय चिन्तन अवश्य अपनाना चाहिए राष्ट्र को मजबूत बनाने का सकल्प करना चाहिए। जब शताब्दी समारोह होते है तो बहुत बडी सख्या के अन्दर वानप्रस्थ सन्यास की दीक्षाए आयोजित होनी चाहिए। आर्य समाज एक नए तेज के साथ राष्ट्र के अन्दर उभरेगा। यदि हम जागरूक हो गए तो आने वाला समय हमारा होगा निश्चय ही हमारा होगा। यह शोक दूर हो जाएगा और राष्ट्र का अभ्युदय होगा परमात्मा आर्यो को ऐसी चेतना दें।

महासम्मेलन के अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य ने स्वामी जी का धन्यवाद किया कि उन्होने प्रात कालीन यज्ञ बेला मे अपने प्रवचन प्रस्तुत किए। स्वामी जी ने एक बार तीन वर्ष तक यज्ञ का सकल्प लिया था परन्तु उनके स्वास्थ्य के कारण वह यज्ञ बीच मे रोकना पडा। हिमाचल की घाटियो मे आपने यज्ञ के नाम पर लहर पैदा की है।

धर्म और आध्यात्मिकता

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती चम्बा के प्रवचनो के उपरान्त प्रात कालीन सत्र का शुभारम्भ हुआ जिसका नाम था "आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता"। महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने इस सत्र की अध्यक्षता के लिए पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी को मध्य मे आसन ग्रहण करने के लिए निवेदन किया। वैदिक जयघोष के साथ उनकी अध्यक्षता का समर्थन हुआ। सत्र के सयोजक डॉ० महेश विद्यालकार सभा के उपप्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य एव श्री विनय विद्यालकार के हाथो सत्र के अध्यक्ष पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का माल्यार्पण एव स्मृतिचिन्ह प्रदान करके स्वागत किया गया। अन्य सभी विद्वान वक्ता जिनके नाम इस सत्र के लिए निर्धारित थे उन्हे प्रथम पक्ति मे आसन ग्रहण करने के लिए निवेदन किया गया। इस कार्यवाही के बाद सत्र सचालन हेतु डॉ० महेश विद्यालकार जी को आमन्त्रित किया गया।

डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि सारे देश और विदेशो से भी आर्य भाई बहन स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि देने के लिए उपस्थित हुए हैं।

उन्होने कहा कि आप सब पर ईश्वर की बहुत बडी कृपा हुई है जो अपने जीवन का अमूल्य समय निकालकर कष्ट उठाकर इस महासम्मेलन मे सम्मिलित हुए हैं। ऐसा अवसर सबको प्राप्त नही होता है। उन्होने कहा कि आप सबका यहा पधारना गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एव वैदिक विचारधारा को बल देगा। उन्होने समस्त आगन्तुक महानुभावो का अभिनन्दन और अभिवादन करते हुए यह आह्वान किया कि हम सब परमपिता परमात्मा को स्मरण करे कि हमारी निष्ठा सदा बनी रहे और हम इस विरासत को सदैव सभाले रह सके।

ओ३म् भूर्भुव स्व , ततसवितुर्वरेण्य।
भर्गो देवस्य धी महि धियो यो न. प्रचोदयात्।।

गायत्री मन्त्र के उच्चारण के बाद इन सकल्पो के साथ उन्होंने कहा कि बडे–बडे सम्मेलन कुछ विशेष प्रकार की समस्याओ कठिनाइयो और विपत्तियो के निराकरण के लिए आयोजित किए जाते हैं। गुरुकुल की भूमि पर यह सम्मेलन शताब्दी के समारोह के रूप मे मनाया जा रहा है। गुरुकुल इस समय कठिन दौर से गुजर रहा है। यह एक प्रकार का गुरुकुल रक्षा सम्मेलन है। गुरुकुल आर्यसमाज की पनीरी है। यहा विद्वान प्रचारक और उपदेशक तैयार किए जाते हैं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के साथ यदि डी०ए०वी० मिलकर कार्य करे तो बडा व्यापक कार्य हो सकता है।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज मे धन–जन और विचारो की कमी नहीं है। परन्तु समस्याओ पर मिलबैठकर चिन्तन करना चाहिए। हमारी विचारधारा जागरुक एव प्रगतिशील है। अत हमारा चिन्तन भी क्रियात्मक होना चाहिए। आर्यसमाज ने राष्ट्र की समस्याओ पर भी सदैव अपना चिन्तन प्रकट किया है। आज धर्म और समुदाय पर भी समाज मे बहुत बडी जागरूकता की आवश्यकता है। उन्होने इस सत्र की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्प्रदाय व्यक्तियो द्वारा चलाए जाते हैं जबकि धर्म का सम्बन्ध ईश्वर से होता है। सम्प्रदाय तोडता है और धर्म जोडता है। धर्म का अर्थ है कर्त्तव्य। अच्छे विचार जब कर्म मे परिणित होते है तो धर्म बनता है। महर्षि दयानन्द का भी यही सन्देश था – सम्प्रदायो को छोडो धर्म को पकडो। आज झगडे खुदा के नहीं पैगम्बरो के हैं।

यूरोप का चिन्तन हर पृष्ठ पर लाभ की तलाश करता है जबकि भारतीय चिन्तन हर समस्या और हर कार्य के पीछे सोचता है कि क्या उससे मोक्ष प्राप्त होगा ? आत्मिक उन्नति कितनी होगी ?

उन्होने कहा कि इस सत्र मे विद्वान वक्ता अपना विशाल स्वाध्याय तथा असख्य पुस्तको के ज्ञान को बहुत ही अल्प समय मे आपके समक्ष प्रस्तुत करेग। अत आप सब लोग एकाग्रचित्त होकर इन उद्बोधनो का लाभ उठाए।

वेद को न मानने वाला नास्तिक है

प्रथम वक्ता के रूप मे बनारस से शिक्षित और आर्यसमाज के लिए समर्पित श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री को आमन्त्रित किया गया जो रायबरेली से पधारे थे।

प्रशस्य मित्र शास्त्री ने कहा कि धर्म की परिभाषा मे कही भगवान का नाम नहीं आता। समस्त स्मृतिकार पुराण उपनिषद् तथा सभी धर्म ग्रन्थो मे धर्म की अलग–अलग व्याख्याए की गई हैं परन्तु समाज मे सारे विवाद भगवान के नाम पर ही हैं। कौन सा भगवान बडा है मन्दिर वाला या मस्जिद वाला। इस बात का निर्णय तो यह तथाकथित सम्प्रदायवादी कभी नहीं कर पाएगे। मनुस्मृति धर्म की व्याख्या करती हुई कहती है जैसा अपने साथ व्यवहार चाहते हो वैसा ही व्यवहार दूसरो के साथ करो। धर्म के १० लक्षण बताए गए हैं। धृति क्षमा दम अस्थ आदि। इनमे भी भगवान का नाम कहीं नहीं मिलता। स्वामी दयानन्द जी समझते थे कि धर्म का अर्थ भगवान नहीं है। तो क्या धर्म की परिभाषाओ पर जीवनयापन करने वाले व्यक्ति को नास्तिक समझ लिया जाए।

उन्होने कहा कि वेद को न मानने वाले को नास्तिक कहा जाता है और वेद धर्म की परिभाषा मे आता है। नास्तिक वह है जो वेद को नहीं मानता जो अपने जन्म को नहीं मानता वेद मे भगवान है परन्तु वेद का भगवान जन्म नहीं लेता न वह गोरा है और न वह काला न लम्बा है और न छोटा। उन्होने एक वैष्णव पुजारी का उल्लेख करते हुए कहा कि जब शराब पीनी होती है तो मूर्तियो के आगे परदा कर देते हैं जिससे भगवान देख न सके भगवान की मूर्ति के नाम पर इतना आडम्बर खडा कर रखा है कि उनके लिए चादी का गिलास मच्छरदानिया और रजाइया तक बनवाकर रखी गई हैं। उन्होने कहा कि भगवान को धर्म की परिभाषा मे शामिल करने से समस्त विवाद और झगडे प्रारम्भ हो गए। ईश्वर को अवतारवाद मे डालकर सारी व्यवस्था दूषित कर दी गई।

उन्होने कहा कि धर्म का अभिप्राय नैतिकता सेवा और आस्था एव समस्त अच्छे कार्यो से है। सत्यार्थ प्रकाश मे कहा गया है कि धर्म वह है जिसका कोई विरोध न हो। उन्होने कहा कि इस ग्रन्थ को मै जितना पढता गया उतना आगे बढता गया और वेद का धर्म समझ मे आता चला गया। सम्प्रदायो में अवतारवाद ही लडाई की जड है। जबकि ईश्वर जन्म नहीं लेता। स्वामी दयानन्द जी ने इसे सारी समस्या का समुचित उपाय उपलब्ध कराया है।

उन्होने कहा कि एक पौराणिक पण्डित ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के देहावसान के बाद सस्कृत के श्लोक के माध्यम से पाच प्रश्न रखे हैं उनमे से प्रथम चार प्रश्नो के उत्तर जो हैं उन्हे मिलाकर पाचवे का उत्तर बनता है –

– स्वामी दयानन्द सरस्वती।

१ सूरज कमल का क्या है ? — स्वामी
२ सबसे बडा धर्म क्या है ? — दया
३ कवियों की वाणी में क्या है ? — आनन्द
४ कण्ठ का सबसे बडा आभूषण क्या है ? — सरस्वती
५ कौन सा ऐसा व्यक्ति है जो यम से नहीं डरता ? — स्वामी दयानन्द सरस्वती।

अपने उद्बोधन को समाप्त करते हुए श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री ने कहा कि धर्म के नाम पर आज दया समाप्त हो रही है और चारो तरफ धर्म के नाम पर हिसा हो रही है। आज धर्म को समझना हो तो स्वामी दयानन्द को समझो।

डॉ० महेश विद्यालकार ने विद्वान वक्ता का धन्यवाद करते हुए कहा कि धर्म अध्यात्म पाप और पुण्य भोग और रोग का सत्य स्वरूप जानना हो तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के नजदीक आ जाओ।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

पृष्ठ ६ का शेष

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....

इसके साथ ही उन्होने अगले वक्ता के रूप मे उडीसा से पधारे वैदिक विद्वान डा० प्रियव्रत दास को आमन्त्रित किया जिनके ४० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए है। उडिया भाषा मे डा० प्रियव्रतदास ने बहुत प्रचार कार्य सम्पन्न किए। इनकी सेवाओ के कारण ही उन्हे राजकीय सम्मान से भी विभूषित किया गया।

आत्मशक्ति प्रमुख है शारीरिक शक्ति गौण

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने डा० प्रियव्रतदास का भी मोतियो की माला तथा स्मृति चिन्ह तथा बैच लगाकर अभिनन्दन किया।

डा० प्रियव्रतदास ने कहा कि मेरी मातृभाषा हिन्दी नही है और मेरा अधिकतम समय भी विदेशो मे बीता है। फिर भी मुझे आध्यात्मिकता और आधुनिक जीवन जैसा विषय दिया गया है यह मेरा सौभाग्य है और आप सब आर्यो के लिए विडम्बना। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पढने के लिए मैने हिन्दी सीखी थी इसलिए मै धीरे धीरे ही हिन्दी मे बोल पाऊगा। उन्होने कहा कि यदि मेरा विषय आत्मा और जीवन होता तो एक वाक्य मे कहा जा सकता था कि जीवन आत्मा पर आधारित है परन्तु मेरा विषय है आध्यात्मिक जीवन और आधुनिक जीवन। असख्य देह धारण और देह त्याग के बाद यह मानव जीवन हमे प्राप्त हुआ आत्मा का शरीर से सम्बन्ध का नाम जन्म और अलग होने का नाम मृत्यु है। हमारा अधिकार न तो जन्म पर होता है और न मृत्यु पर। परन्तु इन दोनो के बीच की अवधि जिसे जीवन कहा जाता है उस पर हमारा पूर्ण अधिकार है। पशु पक्षियो का अधिकार जीवन पर भी नहीं होता है। हमारा अधिकार इसलिए है क्योकि हम मनुष्य बनने के लिए आए हैं इससे साबित होता है कि जीवन जड नहीं है।

उन्होने कहा कि आध्यात्मिक जीवन मे आत्मा शरीर को खींचता है और भौतिक जीवन मे शरीर आत्मा को खींचता है। परन्तु दोनो ही जीवन आवश्यक है। आध्यात्मिक जीवन से हमे अमृत्व मिलता है इसलिए भौतिक जीवन मे लिप्त होना गलत है। शरीर का उपयोग करते हुए शरीर मे भी लिप्त नहीं होना चाहिए क्रोध लोभ मोह और अहकार से मुक्त होकर जीव दृष्टा बन सकता है। प्रकति का जितना उपभोग आवश्यक हे केवल उतना करना आध्यात्मिकता है और प्रकृति मे लिप्त हो जाना भौतिकता हे।

उन्होने कहा कि आध्यात्मिक व्यक्ति पहले अपने को खोजता है फिर ईश्वर को खोजता है। स्वय को आत्मा और शरीर को मात्र साधन समझना चाहिए। आध्यात्मिक व्यक्ति इसी मार्ग को चुनते हैं जो पहले बेशक कष्टदायक हो परन्तु बाद मे सुखदायक हो जाता है। जबकि भौतिकवादी जीवन पहले सुख को अपनाता है जोकि बाद मे कष्टदायक हो जाता है।

उन्होंने कहा कि आज वर्ण और आश्रम भी अव्यवस्थित हो चुके हैं। आज की दुनिया मे आश्रम व्यवस्था के नाम पर बहुत बडी सख्या गृहस्थियो की है जो कमाने–खाने धन सचय और विषयो की पूर्ति मे लगे हैं। इसी प्रकार आज की वर्ण व्यवस्था मे अधिकतर लोग वैश्य वर्ग के है जिनका कार्य मात्र धन कमाना है। उन्होने आज के वैज्ञानिक युग को दुखदायी सिद्ध करते हुए कहा कि मानव क्लोनिग जैसे व्यर्थ के विकास केवल समाज मे अव्यवस्थाए ही उत्पन्न करते है। इस मानव क्लोनिग के द्वारा एक व्यक्ति के समरूप १०–१५ और व्यक्ति समाज मे घूमने लगेगे तो यह सुखकारक कैसे हो सकता है।

उन्होने कहा कि आध्यात्मिक जीवन ब्रह्मचर्य की रक्षा करने का आह्वान करता है। भौतिकवादी इस निर्देश का पालन नहीं करता और (AIDS) की बीमारी का सामना करना पडता है। इसी प्रकार जो मासाहार ज्यादा करता है उसे कैंसर होता है।

उन्होनें विश्व स्वास्थ्य सगठन (WHO) द्वारा स्वास्थ्य की नई परिभाषा का उल्लेख किया

Health is the total mental Physical Ethical Spiritual and Social development of man and not merely the absence of diseases

अर्थात स्वास्थ्य का अभिप्राय व्यक्ति का पूर्ण मानसिक शारीरिक नैतिक आध्यात्मिक और सामाजिक विकास है केवल बीमारियो से मुक्ति मात्र नहीं।

उन्होने कहा कि व्यक्ति को आत्मा के अन्दर रहना चाहिए। शरीर का उपभोग भी आत्मा के लिए होना चाहिए। आध्यात्मवादी भी जीवित है और भौतिकवादी भी जीवित है परन्तु भौतिकवादी व्यक्ति अपने लिए दूसरो का जीवन ले लेता है। नचिकेता भी आध्यात्मवाद की तडप लेकर यमाचार्य के पास गया था। उसे सारा ज्ञान मिला किन्तु वह आत्मविद होना चाहता था। राजा जनक के साथ वार्ता का यही परिणाम निकला कि यदि देखने के लिए कुछ न हो तो आत्म शक्ति से ही देखा जाता है। आत्मशक्ति प्रमुख है शारीरिक शक्ति गौण।

उन्होने आत्मशक्ति को सत्य स्थापित करने के लिए आर्य जनता से पूछा कि दुनिया मे कोई व्यक्ति सारा दिन झूठ बोल सकता है यदि नही तो यह आत्मशक्ति की विजय है। क्योकि आत्मा सत्य है। उन्होने सेमेटिक मतो के बारे मे कहा कि इनमे प्रवाह नही है क्योकि यह लोग न तो जन्म से पहले और न मृत्यु के आगे के बारे मे न कुछ जानते हैं और न जानने का प्रयास करते हैं।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

पृष्ठ १० का शेष

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....

दुनिया के तीन सौ करोड लोग इसी जीवन को सब कुछ मानते है।

वैदिक आध्यात्मवाद यह मानता है कि शरीर भी आवश्यक है और आत्मा भी आवश्यक है। आत्मा के लिए शरीर है शरीर के लिए आत्मा नहीं। जीवन के अन्त मे भ्रष्टाचारी व्यक्ति भी अपने कार्यों पर पछताता है। यही तो सत्य की जय है आत्मा की जय है और आत्मशक्ति की जय है।

इस उद्बोधन के पश्चात पुन डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि जहा यूरोप की विचारधारा प्रारम्भ होती है वहा भारत का चिन्तन प्रारम्भ होता है। यह निर्देश देता है कि भोग से योग की ओर चलो और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलो। ऋषि दयानन्द ने कहा था – भागो नही जागो जीवात्मा जब तक परमात्मा की निकटता महसूस नही करता तब तक आनन्द अलब्ध है। इसी प्रकार लाला लाजपत राय ने कहा था कि आर्यसमाज से झगडे विवाद आदि दूर रखने के लिए अधिकारियो मे धार्मिकता और आध्यात्मिकता अवश्य होनी चाहिए। यह समस्त दुर्गुणा स बचा लेती है। इस पुण्य स्थली से धार्मिकता आध्यात्मिकता और जीवन मे स्वच्छन्दता का विचार बने तभी इस महासम्मेलन का उद्देश्य पूर्ण होगा।

इस उदबोधन के पश्चात मच व्यवस्था पुन महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन जी ने सभाल ली क्योकि मुख्य अतिथि केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल जी मच पर पधार चुके थे। उनका स्वागत भी मोतियो की माला तथा स्मृति चिन्ह आदि से करवाने के लिए कै० देवरत्न आर्य श्री प्रकाश आर्य श्री वाचोनिधि आर्य आदि को आमन्त्रित किया गया।

श्री वेदप्रकाश गोयल जी के अभिनन्दन मे बोलते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि श्री गोयल जी आर्यसमाज की परम्परा पर आधारित राष्ट्रवादी चिन्तक एव विचारक है जो राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ एव भाजपा के राष्ट्रीय नेता के रूप मे प्रतिष्ठित है। आपकी शिक्षा डी०ए०वी० कालेज लाहौर मे हुई।

उन्होने कहा कि वर्तमान भाजपा के कुछ लोगो का राष्ट्रवादी चिन्तन सदिग्ध है। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण उन्हे सन्देह की दृष्टि से देखता है। परन्तु इन परिस्थितियो मे भी श्री गोयल जी का राष्ट्रवादी चिन्तन सुदृढ एव असदिग्ध है इसके लिए ऋषि दयानन्द जी का धन्यवाद।

उन्होने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के गुरुदेव जी के शब्दो का उल्लख करते हुए कहा कि एक उदबोधन मे उन्होने कहा था कि राजनीति के गन्दे नाले को साफ करने के लिए हमने कुछ व्यक्तियो को भेजा था परन्तु दु ख की बात है कि वे उसमे ही स्नान करने लग गए परन्तु श्री गोयल जी ने इन परिस्थितियो के बावजूद स्वय को बेदाग रखा।

श्री वेद प्रकाश गोयल जी के स्वागत के बाद पुन सत्र सयोजक डॉ० महेश विद्यालकार जी ने अगला उदबोधन प्रस्तुत करने के लिए कलकत्ता से पधारे वैदिक विद्वान प्रो० उमाकान्त उपाध्याय को आमन्त्रित किया। श्री उपाध्याय जी कलकत्ता कालेज मे प्राध्यापक रहे हैं कई महत्वपूर्ण पुस्तको के लेखक एव आर्यससार मासिक पत्रिका के सम्पादक के रूप मे आर्यसमाज को समर्पित रहे जिनकी वाणी और लेखनी ने आर्यसमाज मे शक्ति बल और प्रेरणा का सचार किया ह। सारे गुण उनकी पुरानी विरासत है।

ऊर्ध्वगामी बनो ऊपर उठो

प्रा० उमाकान्त उपाध्याय ने आध्यात्मवाद का उदगम ओर विकास के विषय पर अपना उदबोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि जीवात्मा का प्राण के साथ मिलना ही आध्यात्म प्रसग को प्रारम्भ कर देता हे। कुछ जीवात्मा इसे सोच समझ नही पाते।

उन्होने कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि छुईमुई के पोधे के पास हाथ ले जाने से वह मुरझा जाता है अत यह समझना स्वाभाविक है कि उस पौधे मे कुछ तो है जो स्पष्ट महसूस कर रहा है। बन्दर फल खा जाता है परन्तु सन्तरे से घबरा जाता है। वह समझता है कि उसके छिलके की एक बूद यदि आख मे चली गई तो कष्ट होगा। बैल जहा कहीं भी हराभरा खेत देखता है उसमे मुह मारना चाहता है। इन सब प्रवृत्तियो को पशु प्रवृत्ति कहा जाता है। हमे इन प्रवृत्तियो से ऊपर उठकर अपनी आत्मा का विकास करने का प्रयास करना चाहिए इसी प्रकार से हम परमात्मा के पास पहुच सकेगे और यहीं से आध्यात्म का विकास होता है।

उन्होने कहा कि हमारा जीवन तीन आयामी है इसमे सत रज और तम तीनो है। कुछ लोग भौतिकता की ओर जाना चाहते है तो कुछ लोग बौद्धिकता की ओर तो कुछ अन्य लोग सत्य की ओर जाते है। सात्विक प्रवृत्ति से ही अधिक से अधिक आध्यात्मिक विकास सम्भव है। ओर आध्यात्मिकता का यह मार्ग केवल मनुष्य के लिए हे।

उन्होने कहा आप बैल के चित्र की कल्पना कीजिए वह आगे से पीछे तक एक लाईन मे चलता है जबकि मनुष्य म गोलाकार सहस्रधार चक्र लम्बाई मे है और उर्ध्वागामी है। नाभी के नीचे के भाग को हम पृथ्वी लोक मान सकते है। नाभि से कण्ठ तक द्यूलोक माना जा सकता है और कण्ठ के ऊपर ब्रह्म लोक।

इन चक्रो को समझकर जितना हम ऊपर उठते जाएगे उतना ही हमारी आध्यात्मिकता का विकास होता जाएगा। जब हमारी चेतना अधोमुखी होती है तो वह काम केन्द्रो की ओर जाती है इसके विपरीत जब हमारी चेतना उर्ध्वमुखी होती है तो यह आज्ञाचक्र की ओर चलती हे और सहस्रधार चक्र की ओर चलती हे। एक गिरा हुआ आदमी काम इर्ष्या द्वेष मे फसता हे यही सार दुष्ट ससार का लक्षण हे। इसके विपरीत आगे पहुचे हुए लोग बुद्धि ओर चित्त की बात करते है वह सुसस्कारित होते है।

उन्होने कहा कि आध्यात्म से चेहरे के रग बदल जाते है प्रवृत्तिया और सस्कार बदल जाते ह। इसलिए आर्यजनो अपने प्राणो का निग्रह करो। प्राणो का निग्रह प्राणायाम का नाटक बनाकर नही होगा बल्कि इसे प्रवृत्ति बनाना होगा। इससे साधक को जहा अपने स्वरूप का दर्शन होगा वही उसे परमात्मा मे भी एक विशेष स्थान मिलेगा।

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ने महासम्मेलन के अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य जी का विशेष धन्यवाद किया कि उन्होने समर्पित भावना से स्वय उठकर मेरे लिए कुर्सी का प्रबन्ध किया।

पुरुषार्थ चतुष्टय

धर्म अर्थ काम और मोक्ष

इसके बाद श्री विनय विद्यालकार को विशिष्ट आमन्त्रित वक्ता के रूप मे सम्मानित किया गया। उन्होने अपने उदबोधन का केन्द्र पुरुषार्थ को बनाया और कहा कि धर्म का सम्बन्ध आत्मा के साथ है। परन्तु आज का व्यक्ति इस सिद्धान्त को न समझकर धर्म का सम्बन्ध शारीरिक और सामाजिक समझ रहा है। जो विचार समाज के विरुद्ध है वह अधर्म है। अत धर्म का आचरण करते हुए अर्थ को उपार्जित करते रहना चाहिए धर्म और अर्थ के बाद काम क विषय मे भी सावधान रहना चाहिए। काम का तात्पर्य इच्छाओ से है परन्तु आज के समाज मे तो हमारी इच्छाए अन्दर से उत्पन्न नही हो रही है इन्हे बाहर से विज्ञापन द्वारा उत्पन्न किया जा रहा है। हमारा धर्म मुक्ति का मार्ग बताता है जबकि इस मुक्ति को कुछ लोग कल्पनाओ पर आधारित मानते है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन्ही चारो लक्ष्यो का नाम पुरुषार्थ चतुष्टय है।

इस उदबोधन के बाद सत्र सयोजक डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि वेद वैदिक विद्वान और कार्यकर्ता आर्यसमाज की विरासत हे। वेद की रक्षा के लिए ही विद्वानो और कार्यकर्ताओ को तैयार किया जाना चाहिए। उन्हाने कहा कि गुरुकुलो के हम सदा ऋणी रहेगे क्याकि इन्ही परम्पराओ ने सदा हमे पाप स बचाया है। अन्य धार्मिक स्थलो म धर्म के नाम पर कई प्रक्रियाए करवाइ जाती हे। जैसे माला फेरना पानी चढाना आदि परन्तु आयसमाज धर्म क नाम पर केवल विचार मात्र दे सकता हे प्रेरणाओ के द्वारा अतीत को देखने की कला सिखाता है उन्होने बताया कि ऐसे ही एक सम्मेलन मे स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रेरणाए देते हुए दान की अपील कर रहे थे तो एक ब्रह्मचारी के दान पात्र से २०००/– रुपये और कुछ सोने के आभूषण निकले। जब ब्रह्मचारी ने दान देने वाले की ओर इशारा किया तो पता लगा कि वह महिला प० लेखराम की पत्नी थी।

लोग ऐसे सम्मेलनो को तीर्थ समझकर आते है उन्होने कहा कि आर्यजनो को इस सिद्धान्त का कडाई से पालन करना चाहिए कि जब तक हममे दम है तब तक बेदम न हो।

अपने ऋषि को पहचानो

अगले वक्ता के रूप मे शिमला से पधारे आचार्य रामानन्द जी को आमन्त्रित किया गया। उन्होने कहा कि हर व्यक्ति धर्म की व्याख्या अपने हिसाब से करता है। महर्षि दयानन्द ने धर्म की व्याख्या वेद के दृष्टिकोण से की है। उनका कहना हे कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। शेष भाग पृष्ठ १२ पर

पृष्ठ ११ का शेष

स्थूल से सूक्ष्म की ओर....

वेद का पढना पढाना सुनना सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है। उन्होने कहा कि शरीर के माध्यम से आत्मा और परमात्मा का मेल होन पर ही आध्यात्म का अर्थ पूरा होता है। और यही सुख शान्ति को प्राप्त करने का मार्ग है। इस शरीर के लिए हमे परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए परन्तु इस बात को महसूस करना चाहिए कि जब तक हमारी आत्मा महर्षि दयानन्द जी को नहीं जानेगी तब तक कल्याण नही होगा।

उन्होने साइमनस्टोक्स नामक एक अग्रेज ईसाई का उल्लेख किया जो अग्रेजो के कहने पर भारतीयो को ईसाई बनाने की योजनाए लेकर भारत आया था। उनका सम्पर्क महर्षि दयानन्द जी से हुआ और उसका प्रतिफल यह निकला कि वह व्यक्ति बाद मे भारतीयो से अपील करने लगा कि अपने को पहचानो और इस ऋषि को पहचानो। उन्होने बडे गर्व से स्वीकार किया कि मैं भारतीयो को ईसाई बनाने आया था परन्तु खुद आर्य बन गया हू। यह इतिहास कही छपा तो नही परन्तु आज भी उस व्यक्ति का परिवार शिमला मे रहता है।

महर्षि दयानन्द जी से सम्पर्क के बाद उस व्यक्ति ने अपना नाम बदलकर रखा सत्यानन्द स्टोक्स। उनका कहना था कि महर्षि द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से उन्होने सत्य शब्द लिया और महर्षि के नाम से आनन्द लेकर अपना नाम सत्यानन्द रखा। आज भी यह परिवार प्रतिदिन यज्ञ करने वाला परिवार है।

विमोचन

इस उदबोधन के उपरान्त महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने महासम्मेलन के लिए विशेष रूप से तैयार स्टीकर का विमोचन करने के लिए मुख्य अतिथि केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल जी से निवेदन किया। इस विमोचन में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी ने भी भाग लिया।

आर्य प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित मेरे पिता पुस्तक का विमोचन श्री अमर ऐरी द्वारा तथा लाला लाजपत राय द्वारा लिखित पुस्तक आर्यसमाज का विमोचन श्री वेदप्रकाश गोयल जी द्वारा करवाया गया।

श्री रवीन्द्र मेहता द्वारा प्रकाशित एक अन्य पुस्तक जगमगाते हीरे का विमोचन किया गया। जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द एव महात्मा हसराज जी का सक्षिप्त जीवन प्रस्तुत किया गया। यह विमोचन प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा किया गया। इसी प्रकार उत्तराचल के श्री यशपाल आर्य द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन डॉ० महेश विद्यालकार द्वारा किया गया।

विमोचन कार्यक्रम के उपरान्त विशेष अतिथियो श्री धर्मपाल आर्य एव श्री रामनाथ सहगल का अभिनन्दन किया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने श्री रामनाथ सहगल को एक सघर्षशील कर्मठ आर्यनेता बताते हुए कहा कि हमे उनके जीवन से बहुत प्रेरणा मिलती है। उन्होने कामना करते हुए कहा कि ऐसे उत्साह का सचार हमारे अन्दर भी हो। उन्होने कहा कि लोग अक्सर कहा करते हैं कि वृद्ध होने पर भी कोई व्यक्ति पद नही छोडना चाहता है परन्तु सहगल जी ने अपने जीवन काल मे अपने साथ साथ अपने सुपुत्र को है जो उनके सामने तथा अन्य गतिविधिय उनकी देखरेख मे कर

स्वामी श्रद्धानन्द ज तैयार की गई कैसेट के बारे मे बताते हुए कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि श्री सुभाष अग्रवाल ने इस कैसेट के निर्माण मे अपना तन मन और धन समर्पित किया है। उन्होने इस वृत्तचित्र मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे मे ऐसे पहलुओ पर भी प्रकाश डाला है जिसकी जानकारी हमे भी नही थी। दक्षिण भारत के कुछ स्थलो को भी इसमे चित्रित किया गया है जहा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोद्धार के सिलसिले मे गए थे। उन्होने कहा कि ऐसे बृहद चित्र आर्यसमाज के अन्य नेताओ के जीवन पर भी बनने चाहिए। इस वृहद चित्र के निर्माण के लिए उन्होने श्री सुभाष अग्रवाल का अभिनन्दन किया और स्वामी दीक्षानन्द जी के कर कमलो से इसका विमोचन सम्पन्न किया गया।

कै० देवरत्न आर्य ने अहमदाबाद

प्रतिष्ठा मे

शेत

...नक दस पुस्तको के सैट का परिचय दिया जो वैदिक सिद्धान्त के प्रचार प्रसार मे विशेष भूमिका निभाती है।

(क्रमश)

जनकपुरी, दिल्ली में संस्कार सम्प्रेषण शिविर

आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी मे छात्र/छात्राओ का ग्रीष्मऋतु अवकाश मे सस्कार सम्प्रेषण शिविर लगाया गया। उपरोक्त शिविर ३ जून से ८ जून तक प्रतिदिन प्रात ७ से ६ बजे तक लगाया गया जिसमे ५४ छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। गायत्री मन्त्र अर्थ सहित से प्रारम्भ करवाकर योगासन अभ्यास स्तुति प्रार्थना उपासना के एक दो मन्त्रो का गान एव अर्थ ऋषि जीवन की मुख्य घटनाए आर्यसमाज के नियम शिक्षाप्रद चुटकले भजन एव मनोरजक खेल करवाए जाते थे।

समापन समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव ने अध्यक्षता की। उन्होने समाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन एव सब आयोजकों की प्रशसा की और बच्चो को आशीर्वाद दिया और आशा प्रगट की कि दिल्ली की अन्य समाजें भी इस प्रकार के शिविर लगाकर आने वाली पीढी को सुशिक्षित एव सुसस्कृत करेंगी। अभिभावकों ने भी कार्यक्रम की बहुत सराहना की।

सस्कार सम्प्रेषण शिविर में भाग लेने वाले बच्चों का एक दृश्य

महाशय रामविलास खुराना को भ्रातृ शोक

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मडल के प्रधान महाशय राम विलास खुराना के लघु भ्राता कृष्णलाल खुराना (६८) का अकस्मात निधन हो गया। वह अपने पीछे पत्नी सहित दो पुत्र एक पुत्री छोड गए हैं। ६ जून को उनकी शोकसभा ५, अरोज फार्म श्री राममदिर मार्ग वसत कुज मे साय ४ से ५ बजे तक हुई।

जनकपुरी सी०ब्लॉक मे पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी ने पारिवारिक सत्सगो को स्थायी रूप देना प्रारम्भ कर दिया है।

इन सत्सगो का लक्ष्य परिवारो को विशेष कर बच्चो और युवको को वेदिक सस्कृति से सुसस्कृत करना है। मध्यम वर्ग के लोगो मे बहुत उत्साह है क्योकि पाश्चात्य सभ्यता से जो पारिवारिक जीवन भ्रष्ट हो रहे है उनसे सब चिन्तित हैं। ८ जून के पारिवारिक सत्सग मे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता अध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव भी सम्मिलित हुए। उनके लघु प्रवचनो को सुनकर मोहल्ले के लोग आनन्दित हुए। महामन्त्री ने आशा प्रकट की कि भारतवर्ष की सब समाजे पारिवारिक सत्सग प्रारम्भ करेगी।

ईसाई परिवार की जनकपुरी में शुद्धि

आज दिनाक ६-६-२००२ तदनुसार रविवार साय ६ बजे श्रीमती सीसी मधु पत्नी श्री आर० मधु कुमार सुपुत्री श्री वर्गीस सी० ६बी/१६ जनकपुरी नई दिल्ली - ८ ने वैदिक धर्म की दीक्षा स्वेच्छा से प्राप्त की। उनके सुपुत्र कुमार हन्द्री मधुकुमार सुपुत्र श्री आर० मधु कुमार और सुपुत्री कुमारी जसमीन मधुकुमार सुपुत्री श्री आर० मधुकुमार ने भी वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ८ | २३ जून से २६ जून २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ | सम्वत २०५६ | ज्ये० शु० १४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

समूचे विश्व में आर्यसमाज संगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार करेगा

– कै० देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य लगभग २८ दिन की दक्षिण अफ्रीका यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न करके दिल्ली लौटे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी विदेश यात्रा पर गई थी।

१५ जून की मध्य रात्रि को लगभग २ ३० बजे इन्दिरा गाधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उनका स्वागत करने के लिए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन जनकपुरी सी० ब्लॉक आर्यसमाज के मन्त्री श्री रमेश तथा अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों की आर्यसमाजों के दर्जनो आर्यजन उपस्थित थे। स्वागतकर्ताओं ने भगवा पगडी और पटके धारण किए हुए थे जिससे हवाई अड्डे का वातावरण आर्यसमाज के रग में रगा प्रतीत हो रहा था।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी के दृस्यमान होते ही सारा वातावरण वैदिक जयघोष के साथ गूज उठा। श्री सोमदत्त महाजन ने बडे उत्साहपूर्वक जयघोष करवाया।

१६ जून को प्रात काल ही सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य की अध्यक्षता मे आर्यसमाज राजौरी गार्डन मे कै० देवरत्न आर्य जी के विदेश प्रचार से पधारने पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर आयोजित हुआ। यह आयोजन पश्चिमी दिल्ली के युवा कार्यकर्ताओ द्वारा किया गया। सभा का सचालन दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। इस अभिनन्दन समारोह मे सर्वश्री विमल वधावन वेदव्रत शर्मा सोमदत्त महाजन चन्द्रदेव प्रसिद्ध उद्योगपति मुशीराम सेठी आदि उपस्थित थे। श्रीमती शशि प्रभा आर्या श्रीमती उज्ज्वला वर्मा माता रामचमेली श्रीमती राज पाण्डेय श्रीमती कृष्णा रसवन्त आदि ने श्रीमती सुनीता श्री आर्या को पुष्प गुच्छ भेट किए तथा पुष्पमालाओ के द्वारा अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान तथा अन्तरग सदस्य इस लक्ष्य के लिए सकल्पबद्ध हैं कि आर्यसमाज के सगठन को एक महान शक्ति के रूप मे सारे विश्व के स्तर पर प्रतिष्ठित किया जाए। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए कै० देवरत्न आर्य जी के प्रधान बनने के बाद उनकी यह पहली विदेश यात्रा थी। उन्होने कहा कि आगामी कुछ महीनो मे विश्व के अन्य हिस्सो मे भी ये यात्राए आयोजित होगी।

श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यसमाज की विशाल शक्ति को राष्ट्र सेवा के महान कार्यो मे लगाने का आह्वान किया।

सभामन्त्री ने कहा कि दिल्ली की काग्रेस सरकार ने नई आबकारी नीति के माध्यम से शराब की बिक्री को प्रोत्साहन देने के लिए जो विशेष प्रयास और नीतिया लागू करने की योजना बनाई है उसका आर्यसमाज डटकर विरोध करता है।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अपनी विदेश यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि दक्षिण अफ्रीका मे एक माह के प्रवास के दौरान मैने कई बार महसूस किया कि भौतिक दृष्टि से बेशक वे उन्नति के शिखर पर हैं सुख सुविधाओ के अपार साधन उनके पास उपलब्ध हैं परन्तु इनके साथ ही वैदिक धर्म के प्रचार की अपार सभावनाए भी वहा मौजूद है।

उन्होने बताया कि दक्षिण अफ्रीका के आर्यजनो ने मानवीय सेवा के बल पर वहा के एक एक व्यक्ति के मन मे आर्यसमाज की छवि का निर्माण किया है। यदि कोई बच्चा भी किसी परिवार मे दुख महसूस करता है तो वह भागता हुआ आर्य सरक्षण गृह मे आर्य नेताओ की शरण मे जाना श्रेयस्कर समझता है।

कै० देवरत्न जी ने बताया कि आर्यसमाज के पूर्वजो ने दक्षिण अफ्रीका मे आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व से महान प्रयास प्रारम्भ किए थे जिनका फल आज देखने को मिल रहा है। उन्होने बताया कि मेरे वहा जाने का सर्वाधिक लाभ सगठनात्मक दृष्टि से निकट भविष्य मे ही दिखाई देगा। विदेशो मे अग्रेजी भाषा के प्रचारको की भी बहुत आवश्यकता है जिसके लिए उन्हे भारत मे रहकर ही प्रयास करना होगा जिससे विदेशो मे भी आर्यसमाज सामान्य हिन्दू समाज का मार्ग दर्शन कर सके।

इस सभा की अध्यक्षता करते हुए श्री जगदीश आर्य ने कै० देवरत्न आर्य तथा सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया।

ऋषि लगर की व्यवस्था आर्य युवा सभा के सौजन्य से की गई। ✡

दिल्ली सरकार की नई आबकारी (शराब) नीति के विरोध में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में

आर्यसमाज द्वारा
प्रचण्ड विरोध प्रदर्शन

23 जून 2002 रविवार साय 4 00 बजे

सारे देश से पधारे हजारों आर्यसमाज के प्रतिनिधि एव दिल्ली के कार्यकर्ता दिल्ली सरकार की इस नई आबकारी (शराब) नीति के विरोध में दिल्ली की महिला मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित के आवास पर विशाल धरना एव प्रदर्शन करेंगे। सरकार को इस जन-विरोधी नीति को वापस लेने को बाध्य करेंगे।

शीला सरकार नई (आबकारी) शराब नीति को वापस ले

नई नीति के कुछ बिन्दु

- प्रत्येक डिपार्टमैण्टल स्टोर्स पर मिल सकेगी शराब
- टेलीफोन से आर्डर पर घर पर शराब उपलब्ध
- बैंकट हॉल तथा फार्म-हाऊस में शराब पिलाने की खुली छूट
- शराब की दुकानों में 100 प्रतिशत की वृद्धि
- दुकान खोलने हेतु विधायक की अनुमति का नियम समाप्त

हजारों की सख्या में भगत सिह 'शहीद पार्क' फिरोजशाह कोटला मैदान (निकट इन्डियन एक्सप्रैस बिल्डिग) साय 4 बजे एकत्र होकर इस समाज एव राष्ट्र विरोधी नीति का डटकर विरोध करें।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा, प्रधान | **वैद्य इन्द्रदेव, महामन्त्री**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

आर्यवीर, आर्यसमाज एवं राष्ट्र की सेवा के लिए तप एवं साधना करें

— विमल वधावन

सार्वदशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर देहरादून के निकट श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल पौन्धा म आयोजित हुआ। १५ दिन के इस शिविर मे देश के विमिन्न हिस्सो से पधारे लगभग १२० शाखा नायको तथा व्यायाम शिक्षको ने भाग लिया।

देहरादू की रमणीय घाटियो मे गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के आचार्य हरिदेव द्वारा स्थापित इस गुरुकुल को देखने मात्र से ही अहसास होने लगता है कि शिक्षा के क्षेत्र मे जिस एकाग्रता और ध्यान की कल्पना महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे की है वह इस गुरुकुल मे परिपूर्ण होती नजर आती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान एव आर्यवीर दल के रक्षा सचिव श्री विमल वधावन इस शिविर मे भाग लेने के लिए हरिद्वार होते हुए देहरादून पहुचे। उनके साथ आचार्य हरिदेव भी थे। आर्यवीर दल के प्रधान सचालक जून मे भी देहरादून के इस ठण्डे वातावरण मे अपने इन वैदिक धर्मी सेनानियो को सुदृढ करने के लिए गम्भीर प्रयास कर रहे है। एक भव्य और विशाल यज्ञशाला मे पूर्ण वेश धारण किए आय वीर पक्तिबद्ध हाकर उसी यज्ञशाला के भीतर दक्षिण की ओर बने मच की ओर मुह करके बैठे हुए है। मच के मध्य मे आचर्य देवव्रत विराजमान है। सचालन डा० राजेन्द्र विद्यालकार कर रहे हैं। मच पर अनेक प्रान्तो के सचालक तथा मन्त्री उपस्थित हैं। मुख्य अतिथि के पहुचते ही उनके स्वागत मे आर्यवीर दल की परम्परानुसार आर्य वीरो ने वीर ताली से स्वागत किया। अतिथियो को मचासीन कराया गया। ब्र० ओमप्रकाश का गर्जनास्वरूप भजन के रूप मे उपदेश प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर आचार्य हरिदेव ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि मैं तो आखो का आप्रेशन कराने हेतु दिल्ली जा रहा था परन्तु हरिद्वार मे कुछ घण्टे आपके साथ बिताने पर मुझे इनके अन्दर आर्यसमाज के कार्यो के प्रति एक तडप महसूस हुई और मैने इनके साथ ही पुन देहरादून आने का निश्चय किया। उन्होने आशा व्यक्त की कि आप अपनी भावनाओं के अनुरूप जीवन मे आर्यसमाज की महान सेवा कर पाएगे।

उन्होने शब्दो के रूप मे एक स्वागत माला प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज समूचा विश्व भारत की ओर देख रहा है। सारा भारत हिन्दू समाज की ओर देख रहा है और हिन्दू समाज आर्यसमाज की ओर देख रहा है और समूचा आर्यसमाज सार्वदेशिक सभा की ओर देख रहा है।

उन्होने आचार्य देवव्रत का भी धन्यवाद किया कि इस शिविर का आयोजन गुरुकुल मे करवाकर उन्होने मुझे भी सेवा का अवसर दिया।

मुख्य अतिथि के रूप मे इस बौद्धिक चर्चा सत्र को सम्बोधित करते हुए रक्षा सचिव के नाते मैंने कहा कि आर्यवीर दल का मुख्य उद्देश्य समाज की युवा शक्ति के मन मे वैदिक सस्कार डालना और राष्ट्र भक्ति का सचार करना है।

उन्होने कहा कि केवल चरित्र निर्माण से बीडी सिगरेट मास अण्डा शराब आदि व्यसनो से बचाकर आप की रक्षा तो आर्यसमाज ने कर दी परन्तु इससे आपके राष्ट्रीय कर्तव्यो का पालन पूर्ण हुआ नहीं माना जाएगा।

उन्होने आर्यवीर दल के प्रशिक्षणार्थियों को समझाते हुए कहा कि आपको अपनी सोच अपने चिन्तन और अपनी कार्यविधि मे मौलिक परिवर्तन करना पडेगा। आपकी बुद्धि हर समय यह विचार करे कि देश के लिए आप क्या कर सकते है ?

आर्य वीरो का ध्यान ईसाइयो और मुसलमानो द्वारा की जा रही आतकवादी तथा धर्मान्तरण रूपी अन्य सामाजिक अव्यवस्थाओ की ओर आकृष्ट करते हुए उन्होने कहा कि इनकी रोकथाम का यही इलाज है कि आप एक तो इन क्षेत्रो पर अपनी पैनी दृष्टि रखे और दूसरा जिन क्षेत्रो मे धर्मान्तरण की सम्भावनाए हैं उन क्षेत्रो में सेवा और परोपकार के कार्य सदैव जारी रखे। उन्होने आर्यवीरो से यह भी कहा कि श्रद्धा और प्रेम से किए गए कार्यो को समाज पहचानता है तथा आगे कार्य करते रहने की जिम्मेदारिया भी देता है पर शर्त यह होनी चाहिए कि वह व्यक्ति पद की इच्छा के लिए कार्य न करे और यह माने कि मेरे काम की पूर्णता तथा सफलता ही मेरे लिए मुख्य है। आर्यवीर दल के कार्यकर्ता अधिकारियो में श्रद्धा रखे तथा आर्यवीरो से प्रेम रखे तो सगठन का बहुत उज्ज्वल रूप निखर कर सामने आ सकता है।

उन्होने आचार्य देवव्रत के जीवन को आर्यवीर दल के लिए अति महत्वपूर्ण बताया तथा कहा कि हम प्रार्थना करते है कि आप अनेक जन्मो तक आर्यवीर दल के कार्यों को करते रहे।

आर्यवीर दल का सगठन आर्यसमाज के लिए और अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगा इस आशा को व्यक्त करते हुए उन्होने अपनी शुभकामनाए सभी आर्यवीरो को तथा अधिकारिया को दीं।

श्री विमल वधावन की उपस्थिति पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आचार्य देवव्रत ने उन्हे विश्वास दिलाया कि आर्यवीर दल सार्वदेशिक सभा के निर्णयो के अनुसार कार्य करता रहा है तथा आगे भी इसी प्रकार कार्य करता रहेगा तथा उन्होंने कहा कि आपका मार्ग निर्देश हमे समय समय पर मिलता रहे उसका प्रयास आप अवश्य करे। आचार्य देवव्रत ने मुझे आर्यवीर दल की वर्तमान की गतिविधियो से परिचित कराया तथा सारे भारत के १५० शिविरो का सक्षिप्त विवरण भी दिया।

अन्त मे डा० राजेन्द्र विद्यालकार ने दल के महामन्त्री होने के नाते शिविर मे पधारने पर धन्यवाद किया।

मैंने आर्यवीरो के व्यायाम प्रदर्शन को रुचि से देखा एव उस पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा सैनिक अभिवादन स्वीकार कर प्रान्तो के सचालको की अनौपचारिक बैठक कर हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया।

पाकिस्तान में हो रही है गरीब लडकियों की बिक्री

नई दिल्ली (विसके) अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार प्रहरी एमनेस्टी इन्टरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत बाग्लादेश नेपाल और अफगानिस्तान से गरीब लडकियो को पाकिस्तान मे बेचकर वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जा रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के विभिन्न इलाको विशेष रूप मे सिंध और बलूचिस्तान में लडकियो की खुलेआम खरीद फरोख्त होती है। विगत दिनो एक स्थानीय फाउण्डेशन ने ३६ महिलाओ के मामले का अध्ययन करके वर्ष २००० मे जारी अपनी रपट मे कहा था कि उत्तर पश्चिमी फ्रटियर प्रान्त मे कम उम्र की लडकियों को निकाह के लिए बाध्य किया जाता है या फिर उन्हे बेच दिया जाता है। यदि लडकिया वेश्यावृत्ति करने से इन्कार करती है तो उन्हे मार भी दिया जाता है। कई मामलों मे उनके पति ही धधा करवाते हैं। एमनेस्टी की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान मे रोजाना तीन महिलाए अपनी अस्मत बचाने के लिए जान गवाती है।

जम्मू कश्मीर के ६१ प्रतिशत लोग भारत के साथ रहना चाहते हैं

लदन (विसके)। अधिकतर कश्मीरी कश्मीर–विवाद का अत भारत–पाक युद्ध से नहीं चाहते हैं। उनका मानना है कि आतकी हिंसा का मार्ग छोड़कर चुनाव प्रक्रिया के द्वारा ही इस क्षेत्र मे शान्ति स्थापित हो सकती है।

स्वयसेवी मार्केट रिसर्च कम्पनी मोरी इन्टरनेशनल द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण से पाकिस्तान द्वारा कश्मीर के सम्बन्ध मे किए जा रहे दुष्प्रचार को करारा झटका लगा है। राज्य के ६१ फीसदी लोग भारत के साथ बने रहने के पक्ष मे हैं। मात्र ६ फीसदी लोगों ने ही पाकिस्तान की नागरिकता के पक्ष मे अपना समर्थन जताया है। सर्वेक्षण के अनुसार दो तिहाई लोग मानते हैं कि इस क्षेत्र मे पिछले दस वर्षों से जारी पाकिस्तान के हस्तक्षेप की नीति अनुचित है। वे मानते हैं कि विदेशी उग्रवादियों की वजह से ही कश्मीर की सुरक्षा एव विकास प्रभावित हुआ है। यह सब जम्मू एव उसके ग्रामीण क्षेत्रो श्रीनगर और उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी समुदाय एव लिग के लोगों से पूछे गये सवालों के जवाबो पर आधारित है।

स्थानीय लोगों में ६५ प्रतिशत लोग यह मानते हैं कि उग्रवादियो की वजह से ही कश्मीर की स्थिति खराब हुई है। ६१ प्रतिशत नागरिक राजनीतिक एव आर्थिक दृष्टि से भारत मे रहना अधिक पसन्द करते हैं। ८० प्रतिशत लोगो का मानना है कि विस्थापित कश्मीरी पण्डितो को उनक घर सुरक्षित वापस होने चाहिए। इससे राज्य में अमन बहाल करने मे मदद मिलेगी। लोगो का यह भी कहना है कि जम्मू–कश्मीर की विशिष्ठ सास्कृतिक पहचान अक्षुण्ण रहनी चाहए। ६३ प्रतिशत लोग मानते हैं कि आर्थिक विकास ही यहा की समस्या का हल है। राज्य मे ८६ प्रतिशत लोग स्वतन्त्र एव निष्पक्ष चुनाव चाहते हैं जबकि ८१ प्रतिशत लोगो का मानना है कि भारत सरकार को कश्मीर से सीधे बात करना चाहिए। राज्य को स्वायत्तता देने के मुद्दे पर राज्य के लोगो की राय बटी हुई नजर आई। जम्मू एव लेह मे किसी ने भी यह बात स्वीकार नही कि कि सुरक्षाबल मानवाधिकारो का जनन कर रहे हैं। जबकि जम्मू के ६६ प्रतिशत लोगो ने स्वीकार किया है कि आतकवादी व्यापक पैमाने पर हिसक कार्रवाइया कर रहे हैं। यह सर्वेक्षण निष्कर्ष जम्मू कश्मीर की ५५ बस्तियों के ८५० लोगो से बातचीत कर निकाला गया।

गतांक से आगे

गुरुकुल अन्धेरे को चीरते हुए दीपक के समान

— वेदप्रकाश गोयल

गुरुकुल आर्यसमाज की विरासत है

इन कार्यक्रमो के उपरान्त मुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश गोयल जी को उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया।

उन्होने कहा कि इस महासम्मेलन का यह कार्यक्रम वास्तव में बहुत प्रेरणादायी लग रहा है। इसमे आर्यसमाज का मार्गदर्शन करने वाले देशभर से ही नहीं पूरे ससार के नेता विद्यमान है। आप आर्यसमाज के सन्देशवाहक है मैं किसी विषय का विशेषज्ञ नहीं हू, परन्तु जैसा आप सबसे सुना और जैसा बचपन मे आर्यसमाज से सुना उस सब के आधार पर मैं आपसे कुछ कहने का प्रयास करूगा।

प्राथमिक शिक्षा के बाद मै ओर मेरा एक मित्र अलग अलग दिशाआ मे चले गए। वे गुरुकुल शिक्षा म चले गए और मै अपने सामान्य कार्यक्षेत्र मे जुटगया। यह लगभग १६३६ का समय था जब हम काफी वर्ष बाद मिले तो में कल्पना कर रहा था कि वह धर्म कर्म मात्र जानता होगा क्योकि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के बारे मे कुछ लोग यही कल्पना करते हैं कि किसी मन्दिर मे पुरोहित बनेगा मै भी यही सोच रहा था कि विज्ञान तथा अन्य विषयो का इस गुरुकुल के स्नातक को क्या ज्ञान होगा। परन्तु मुझे आश्चर्य हुआ कि जो कुछ मैंने सीखा था वह सब तो उन्होने सीखा ही परन्तु इन्होने मुझसे भी ऊपर ऐसी बहुत सी बाते सीखीं जो मै विद्यालय व्यवस्था मे नहीं सीख पाया। इसलिए गुरुकुल मे मेरी श्रद्धा है। इस गुरुकुल मे महात्मा गाधी विनोबा भावे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आदि जैसे कई नेता पधारे वे यहा कुछ देकर नहीं अपितु लेकर गए। अकसर लोगो मे जानने का कुछ अहमभाव हो जाता है वास्तव मे वे महान लोग थे और बहुत कुछ जानते थे परन्तु डॉ० राधाकृष्णन के मुह से मैंने स्वय सुना कि जहा मनीषी लोग कई वर्षों तक साधना कर रहे हो उनसे कुछ पाना हमारा गौरव है।

उन्होने कहा कि इस महासम्मेलन की एक विशेषता यह है कि धार्मिक कार्य मे लाखो लोग इतनी देर तक बैठे हैं कथा कहानिया आदि रोचक होते हैं परन्तु यहा युवक युवतिया भी बैठे है जहा सिद्धान्तो पर गम्भीर चर्चाए चल रही हैं।

उन्होने कहा कि असन्तोष मनुष्यो को परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है परन्तु इस परिवर्तन से पूर्व चिन्तन अत्यन्त आवश्यक है और यह महासम्मेलन हमे चिन्तन का एक साधन उपलब्ध करा रहा है।

आज का समाज भौतिक वस्तुओ को जीवन निर्धारक मानता है जबकि आध्यात्मवादी जीवन दिव्यता को और श्रेष्ठता को जीवन निर्धारक मानता है। आत्मा के बारे मे चिन्तन और मनन ही आध्यात्म है आज के युग मे दोनो का समन्वय और सन्तुलन करना चाहिए नही तो यहा से जाने के बाद सब लोग फिर से सासारिकता मे फस जाएगे और हमे आत्मग्लानि होगी।

उन्होने कहा कि ३०० वर्ष पूर्व जो बाते हमें मालूम नहीं थी आज हम उनको जान गए है। चन्द्रमा पर व्यक्ति पहुच गया है परन्तु चारो ओर उदासीनता और निराशा है। परन्तु आप लोग ऐसे नहीं हैं जो क्षणिक वातावरण को देखकर निराश होने लगे। जीवन एक चलती धारा है रोडे पत्थर से ऊपर उठकर चलना चाहिए। इस अन्धकार के काल मे भी गुरुकुल अधेरे को चीरते हुए एक दीपक के समान है एक दीपक दूसरे दीपक को जलाता है। जब उसमे तेल डालते रहे तो बाती छोटी नहीं पडती। जीवन का परम लक्ष्य आध्यात्म ही है। जीवन मे शान्तिपूर्वक हम धर्म का पालन कर सके यह तभी सम्भव है जब हम भूत और भविष्य का विचार करते रहे। जैसे जैसे जीवन मे भौतिकवादी वातावरण बढता जाता है असन्तोष और निराशा भी बढती जाती है। इसीलिए अमरीका जैसे देश भी भारत के ऋषियो का आदर करते है। आज हर क्षेत्र मे स्वार्थ से प्रेरित आचरण बढता जाता है उसका निदान भी आध्यात्मिकता से सम्भव है।

उन्होने कहा कि श्रीकृष्ण ने भी यही सन्देश दिया था कि जो सम्पूर्ण प्राणियो मे अपने जैसा देखता है उसी का जीवन सफल होता है और यही आध्यात्ममार्ग है और इसी पर मानव जीवन की सफलता निर्भर करती है।

उन्होने मूल्योन्मुखी शिक्षा का उल्लेख करते हुए कहा कि इस बात मे कोई विवाद नहीं होना चाहिए कि गुरुकुल ठीक है कि डी०ए०वी० पहले पहल इसका नाम घासपार्टी और मासपार्टी भी रखा गया। कुछ लोगो ने यह महसूस किया कि जो लोग मास नहीं छोडते क्या उनके लिए धर्ममार्ग बन्द कर देना चाहिए यही सोचकर महात्मा हसराज ने डी०ए०वी० आन्दोलन शुरू किया जो बच्चे गुरुकुलो मे कठिन तपस्या सहन न कर सके वे कम से कम ईसाई मिशन के स्कूलो मे तो न जा पाये जहा वेद नैतिकता धार्मिकता का स्पर्श भी न हो।

उन्होने बाल्यकाल का उल्लेख करते हुए कहा कि हम आर्यसमाज मे दो प्रमुख कारणो से आकर्षित हुए। प्रथम तर्क शुद्धता के कारण और दूसरा प्रवाह के विरोध मे खडे होने के कारण। आजका समय विशेष रूप से तर्क का समय है। इसमे जितना सम्भव हो गहरा उतरा जा सकता है सारा विज्ञान इसी पर आधारित है। यदि हमने अनवेक्षण छोड दिया तो हमे विदेश के सहारे चलना पडेगा। दूसरा जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुराण पथियो पर प्रहार किए और दूसरा मैकाले की शिक्षा पद्धति पर प्रहार किए महर्षि दयानन्द जी ने १८–१८ घण्टे की समाधि के बल पर यह साहस जुटाया था। हवन तो पहले भी होते थे। परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने उनके अर्थ खोलकर रखे उन्होने महिलाओ और शूद्रो के लिए रास्ता खोला उस समय के शास्त्रार्थों मे भी इतनी भीड हुआ करती थी। शुद्धि के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बलिदान दिया परन्तु आज कोई यह सुनने को तैयार नही कि वह अशुद्ध है और आप उसे शुद्ध करना चाहते है। इसलिए इसके रूप को बदलने की आवश्यकता है।

उन्होने कहा कि गुरुकुल के तपस्वियो ने समाज की दिशा बदली। मुझे यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि आज भारत मे २०० से अधिक गुरुकुल चलते हैं। यह एक प्रकार से हिन्दू मदरसे हैं परन्तु सम्पूर्ण भारतीय समाज को मालूम ही नही कि आर्यसमाज के पास यह शक्ति है। समय की माग है कि इस तरफ विशेष ध्यान दिया जाये इसमे मेरी तरफ से जो भी सेवा सम्भव होगी मैं सदैव तत्पर रहूगा।

डी०एम० हो या पी०एम० जो भी इस पुण्य भूमि से टकरायेगा चूर-चूर हो जाएगा

इस उदबोधन के बाद महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन जी ने कहा कि इस सत्र के मुख्य अतिथि श्री वेद प्रकाश जी गोयल अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद इस ऋषिकुल मे पधारे है इसके लिए उन्हे उन त्यागी तपस्वी महान आत्माओ का आशीवाद अवश्य मिलेगा। उन्होने कहा कि बडी परिस्थितियो से सघर्ष के बाद भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इस शताब्दी समारोह मे भाग लेने के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी है और मैने उन्हे कहा भी था कि इस सम्मेलन मे पधारना भाग्य की बात होगी और २५ अप्रैल के बाद आपकी राजनीति का भी उज्ज्वल भविष्य होगा परन्तु दुर्भाग्य है कि प्रधानमन्त्री जी ने उस सौभाग्य को और उज्ज्वल भविष्य की भावना को स्वीकार नहीं किया उससे भी दुर्भाग्य है कि आज हमारे देश का लोकतन्त्र ही लोगो को तन्त्र से जुडने नहीं दे रहा। विगत कुछ दिनो मे यहा इस धरती पर बैठकर हमे यह अहसास हुआ है कि किसने प्रधानमन्त्री जी को इस आशीर्वाद से वचित किया है। हरिद्वार के जिला अधिकारी (डी०एम०) ने प्रधानमन्त्री को रिपोर्ट भेजी कि यहा झगडे हैं जिसके कारण प्रधानमन्त्री जी ने कार्यक्रम स्थगित किया।

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

गुरुकुल अन्धेरे को चीरते हुए दीपक के समान

– वेदप्रकाश गोयल

उसके बाद कुछ अनुत्तीर्ण बच्चो को नारे बाजी और आन्दोलन के लिए उकसाया गया और पुलिस ने बिना किसी उत्तेजना के हवा मे एक गोली चलाई जिससे उनके लिए यह कहना सुगम हो गया कि उनकी भेजी रिपोर्ट सही थी। इस महासम्मेलन मे भाजपा के कई केन्द्रीय मन्त्री और सासद आदि उन सबको ऋषि कुल का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त होगा परन्तु जिसने भी इस यात्रा मे बाधक बनने का प्रयास किया उसे प्रकोप भी भुगतना पडा। इसी डी०एम० ने अगले दिन वेद की अनन्त यात्रा को रोकने का प्रयास किया। इस पुण्य भूमि का प्रताप देखिये कि आज वह डी०एम० हरिद्वार का डी०एम० भी नहीं है। डी०एम० हो या पी०एम० जो भी इस पुण्य भूमि से टकरायेगा वह चूर चूर हो जायेगा और जो व्यक्ति इस पुण्यभूमि पर श्रद्धा से आयेगा उसे इसका पुण्य फल अवश्य मिलेगा।

उन्होने मुख्य अतिथि से निवेदन किया कि राजकोट हवाई अडडे का नाम महर्षि दयानन्द हवाई अडडा रखवाने म अपने प्रभाव का हमारे प्रयासो मे सहयोग करे क्योकि जहा जहा महर्षि दयानन्द जी का नाम स्थापित होगा वहा राष्ट्रभक्ति और नैतिकता का प्रभाव बना रहेगा।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन जी ने १ बजे से ३ बजे तक कार्यकर्ता सगोष्ठी के आयोजन की सूचना दी जिसके सयोजक बगाल सभा के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य एव गुजरात सभा के मन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य थे। इस सगोष्ठी मे वक्ताओ से आशा की गई कि वे ५ मिनट मे अपने ऐसे कार्यों का उल्लेख करे जो उन्होने स्वय उत्पन्न किया और जिसका प्रतिफल उन्हे सुखद लगा हो।

इसके पश्चात ६ बजे ब्र० जयन्त जी के योग प्रदर्शन तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी की नव निर्मित फिल्म के विमोचन की भी सूचना दी गई।

अशफाक उल्ला खां का स्वागत

श्री विमल वधावन ने बताया कि अमर शहीद प० रामप्रसाद बिस्मिल का एक एक मित्र था अशफाक उल्ला खा। फासी से कुछ दिन पूर्व जब उनकी मा से मुलाकात हुई तो मा के आसू देखकर उन्होने कहा कि कुछ समय बाद जब भाई का लडका हो तो उसका नाम अशफाक उल्ला खा रख देना जिससे मेरी याद बनी रहे परन्तु बाद मे मा ने ऐसा करने से इकार कर दिया। कई वर्ष बाद जब अश्फाक उल्ला खा के भतीजे का बेटा हुआ तो उस वक्त उसका नाम अश्फाक उल्ला खा रखा गया जो आज लगभग ३५ वर्ष का है और मेरा सौभाग्य है कि शहीद अश्फाक उल्ला खा का पोता भाई अश्फाक उल्ला आज हमारा मित्र है।

इस परिचय के बाद डॉ० महेश विद्यालकार ने अश्फाक उल्ला खा को सभी सन्यासियो से आशीर्वाद प्राप्त करने का निवेदन किया। इसके अतिरिक्त ब्र० आर्य नरेश ब्र० राजसिह डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री तथा श्री विमल वधावन ने अश्फाक उल्ला खा का पुष्पमालाओ से स्वागत किया।

धर्म की प्रतिष्ठा वेद से है

अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करने से पूर्व पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी ने मन्त्रो द्वारा अपनी मगल कामना प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस महासम्मेलन मे विशाल जनसमूह को देखकर मेरे मन मे हर्ष हो रहा है। उन्होने प्रबन्धक मण्डल का धन्यवाद किया और कहा कि इस आयोजन ने तो गत वर्ष मुम्बई महासम्मेलन को भी भुला दिया है। यधपि मण्डल के सदस्यो की अच्छी खासी ७० ८० की सख्या है।

उन्होने उपनिषद कथन धर्मो विश्वस्य जगत प्रतिष्ठा" से अपना उदबोधन प्रारम्भ करते हुए कहा कि धर्म से सारे जगत की प्रतिष्ठा है। भगवान मनु मे कहा कि धर्म की प्रतिष्ठा वेद से है। वेदो अखिलो धर्म मूलम। वेद का कोई मन्त्र कोई शब्द उठाकर देख लो उसमें धर्म का मूल मिलेगा लेकिन वेद का मूल ओ३म अर्थात परमात्मा मे प्रतिष्ठित है। ऋषि दयानन्द ने भी इसी सिद्धान्त का समर्थन किया यह कहकर कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वेद की इस चर्चा के साथ मेरा कहने का अभिप्राय यह था कि हम सब लोग ईशोक्त वैदिक धर्म के मानने वाले है।

उन्होने कहा कि बच्चे का जब जन्म होता है तो उसके कान मे बोला जाता है – वेदोअसि और जीभ पर लिखा जाता है ओ३म। लगभग दो वर्ष पूर्व कै० देवरत्न आर्य जी के पोते के जन्म के समय मुम्बई मे मुझे बुलाया गया। मैने सोना शहद और घी के मिश्रण से तीन मसालो का मिश्रण किया और बच्चे की जीभ पर तीन ही अक्षर लिखे ओ३म। इस सस्कार मे भी भावना है क्योकि वेदो का सार ओ३म है। बच्चे को आशीर्वाद दिया जाता है कि बडे होकर वेद सुनना और वाणी से अन्यो को सुनाना अर्थात वेद का सुनना सुनाना अपना परम धर्म मानना।

महर्षि दयानन्द जी ने भी इसी को अपना परम धर्म माना। वेद का अर्थ है लाभ या वेद का अर्थ है ज्ञान विचार सत्य या सत्ता इसका एक अन्य अर्थ भी है – एक ही निवास पर दो चेतन सत्ताओ के बीच जो विमर्श हो रहा हैं। मनुष्य शरीर एक वृक्ष रूप है। इसके हृदय रूपी पत्ते के उपर दो चेतन सत्ताए – आत्मा और परमात्मा बैठकर विचार करती है तो उसका नाम वेद है।

सृष्टि के प्रारम्भ मे जितने भी लोग पैदा हुए वे सब सनातन थे और उनके विचार परमात्मा थे। पिता पुत्र की भाति परमात्मा ने भी उन ऋषियो के हृदय मे कहा वेदोअसि तू ज्ञान है तू लाभ है तू विचार है तू विचार है। यदि ऋषि न होते तो वेद भी न होते अर्थात वेद और आत्मा पर्याय हो गये नास्तिक वेद निन्दक से भी यही अभिप्राय निकलता है कि नास्तिक वह व्यक्ति है जो वेद को नही मानता अर्थात जो अपनी आत्मा के तुल्य दूसरे की आत्मा को नही मानता।

उन्होने कहा कि पिता पुत्र को जब वेदोअसि कहता है तो उसके पीछे यही होता है कि तू लाभ है। तेरे रूप मे मेरा अपनापन पुन अवतरित हो गया यही बात परमात्मा ने उन ऋषियो से कही थी कि यदि तुम न आते तो वेद नही आ सकते थे जब हम अपने पुत्र को अपना लाभ मानते है तो क्या हम अन्य बच्चो को लाभ मानते है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मे तो ऐसा ही होता है आचार्य अपने हर शिष्य को कहता है वेदोअसि। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने न जाने कितने बच्चो को वेदोअसि कहा होगा। कितने सुन्दर शब्दो मे वर्णन किया है –

बसा कहा कागडी में,
घास फूस की कुटी में।
बालकों की चुलबुली मे,
एक ग्राम श्रद्धानन्द का।

आप सबको यह आत्म चिन्तन करना चाहिए कि विद्वान वक्ता या अधिकारी अपने बच्चों को क्या गुरुकुल मे पढा रहे है।

उन्होने कहा कि धर्म वह होता है जो तोलता है परन्तु जो सन्तुलन बिगाड देता है वह धर्म नही है। उन्होने कहा कि ६० वर्ष के ऊपर जो वानप्रस्थ लेते हैं केवल उन्हीं को आर्यसमाजो सैभाओ मे अन्तरग सदस्य बनने का अधिकार है अन्यो को नहीं। अन्य लोग सदस्य तो बन सकते है परन्तु उनसे वोट और परामर्श नहीं लेना चाहिए। ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ दोनो आश्रम अनिवार्य हैं इसी से वह ऋणमुक्त हो सकता है और ब्राह्मण बन सकता है ब्राह्मण जाति ही सन्यासी बनने की अधिकारी है।

हम शरीर मन आत्मा और बुद्धि से मिलकर बने हैं। शरीर को अर्थ की जरूरत है और मन को काम की आत्मा को सत्य की और बुद्धि को मोक्ष की इन्हीं को पुरुषार्थ कहते है। पहली चार चीजो को पुरुष कहते है। इसीलिए खाने मे नहीं खिलाने मे खुशी होती है। क्योकि इससे आत्मा मे खुशी मिलती है। शरीर की खुशी बेशक खाने मे हो यहा के प्रबन्धक यहा के दानी खिला रहे हैं। देखो इनको कितनी प्रसन्नता है। खिलाने के बाद खाने मे मजा आता है। पकडा जाता है छोडने के लिए। अध्यात्म वह है जो आत्मा के अधीन है।

उन्होने कहा कि श्री अटल बिहारी जी यहा नही आये यह उनका दुर्भाग्य है वे बडे अभिमान से कहते थे कि में आर्यसमाजी हू। मुझे तो आज पता चला कि वह आर्यसमाजी नही हैं। वे कहते थे कि मेरा आर्यसमाज से नाम क्यो काट दिया परन्तु आज वे यहा नही आये। यहा किसी प्रकार का झगडा था तो उसे समाप्त करना था। प० बुद्धदेव जी से जब किसी ने कहा कि आर्यसमाज मे झगडे हैं तो उसे छोड क्यो नहीं देते उन्होने कहा कि मैं आर्यसमाजी होता तो कबका छोड देता मैं तो खुद आर्यसमाज हू।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यहा न आकर के अपना नाम खुद आर्यसमाज से कटवा लिया है।

मनुष्य पूर्ण जब होता है जब उसमे सोलह कलाए हो वाक वाक से लेकर करतल कर पृष्ठे तक की यात्रा हमे १६ कलाए सम्पन्न करा सकती हैं यही अध्यात्म है।

उन्होने कहा कि हमें प्रसन्नता है कि सभी गुरुकुलों को एक प्रणाली में बाधने का प्रयास किया जा रहा है। यह अत्यन्त आवश्यक है परन्तु यह कार्य कै० देवरत्न आर्य को अत्यन्त तन्मयता से करना होगा। आर्ष प्रणाली अत्यन्त आवश्यक है। कैप्टन साहब को हर प्रकार से समन्वय करना है।

– क्रमश

गोधरा का षडयन्त्र और शिलादान का दिखावा

– धर्मवीर

आज गुजरात देश का नहीं विश्व राजनीति मे चर्चा का विषय बना हुआ है। गोधरा स्टेशन पर कई हजार मुसलमानो ने इकटठे होकर जिस प्रकार रेल बोगियो को जलाया यात्रियो को जीवित जला कर मार दिया। इस देश के नेताओ मे जैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी नहीं हुई। यहा के पत्रकारों को जो प्रकाशित करना था नहीं किया। परन्तु जनता ने प्रतिक्रिया की तो हमारी नींद खुली तब हत्या लूटपाट आतक की पीडा समझ मे आने लगी विपक्षी नेताओ का चीखना–चिल्लाना शुरू हो गया। अखबार दूरदर्शन के चैनल उस पीडा और व्यथा की कराहट सुनाने लगे। उन्होन जो किया हो सकता है उनकी रीति–नीति से वह शत प्रतिशत सही हो परन्तु एक प्राकृतिक नियम हमे याद रखना चाहिए पीडा दुख कष्ट एव शोषण के अनुभव किसी वर्ग जाति क्षेत्र आदि के कारण भिन्न या कम ज्यादा नहीं होते। पीडा और दुख को पीडा के भाव से देखना और अनुभव करना ही मनुष्यता है। सम्भवत नेता मनुष्य नहीं होते तभी तो गोधरा काण्ड पर नेताओ की जबान नहीं खुली वे चाहे कम्युनिस्ट थे या काग्रेसी अल्पसख्यक थे या सत्ताधारी। इतना ही नहीं ससद सदस्यो की आपसी चर्चा मे इसमे मौन रहकर अवसर पर अपने अनुकूल टिप्पणी की योजना भी इन नेताओ की बातचीत से सचार माध्यमो के माध्यम से जनता के सामने आई। जब पत्रकारो एव अन्य लोगो द्वारा इसका कारण पूछा गया तो इन नेताओ के पास बगले झाकने और बौखलाने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था।

आज भी गुजरात पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनमे वास्तविकता बताने की हिम्मत नहीं है। वे गोधरा को एक आवेग कहकर टालने की कोशिश करते हैं वे इसके मूल तक नहीं जाना चाहते क्योकि ऐसा करना उनके उद्देश्य के विपरीत पडता है। सोचने की बात है क्या कारसेवको द्वारा उत्तेजक नारे लगाने से इतनी भीड एकत्रित हो जाएगी। उनके पास पेट्रोल आग हत्या के साधन क्या क्षणिक आवेश ने पैदा कर दिए। हमे इस षडयन्त्र की वास्तविकता तक जाना चाहिए। चार दिन पहले जिस पाकिस्तान को हम विश्व के सामने कटघरे में खडा कर प्रसन्न हो रहे थे गुजरात के नाम पर वही पाकिस्तान हमे विश्व के सामने केन्द्र और गुजरात की सरकार को अल्पसख्यको का योजनाबद्ध तरीके से हत्या कराने वाला साबित करने मे लगा है। उसे अमेरिका का यह विचार सही लग रहा है – वह भारतीय लोकतन्त्र को खोखला और दिखावे वाला बता रहा है। इसकी दृष्टि में यह कटटरपन्थी हिन्दुओ द्वारा मुसलमानो का नरसहार है। उसने अमेरिकी अखबार का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया जिसमें कहा गया है – भारत के कई–कई टुकडे कर देने चाहिए ताकि यहा के अल्पसख्यक अपनी हिफाजत करने के लिए यहा अपनी सरकार बना सकेगे। पाकिस्तान के विचार से भारत के मुसलमानो के लिए भारत मे एक और मुस्लिम देश की आवश्यकता है। इस सारे वातावरण को बनाने मे हमारे उन लोगो का प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से योगदान है जो इस देश के बारे मे न सोचकर अपनी कुर्सी के बारे मे सोचते हैं कुर्सी के लिए अपने वोट बैंक के बारे मे सोचते हैं।

यदि हमारे पास राष्ट्र हित मे सोचने की परम्परा होती तो आज की स्थिति कभी नहीं आती। अग्रेज तो धूर्त था हिन्दू मुसलमान को लडाना उसका उद्देश्य था इस भेद के बिना उसका अस्तित्व ही सम्भव नहीं था। उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही पाकिस्तान का निर्माण कराया था। परन्तु स्वतन्त्रता के समय यदि ये स्थान हिन्दुओ को दे दिए जाते तो कोई समस्या नहीं आती। सरदार पटेल ने बिना किसी शोर शराबे के सोमनाथ मन्दिर का पुनरुद्धार कर हिन्दुओ को सौप दिया। उसी प्रकार यदि अयोध्या का मन्दिर भी हिन्दुओ को सौंपा जाता तो कोई कठिनाई आने वाली नही थी। उस समय तो मुसलमानो को अयोध्या मे किसी मस्जिद होने का ज्ञान भी नही था अयोध्या का राम के साथ सम्बन्ध होने के कारण उस समय मुसलमान भी सहज रूप से यह स्थान हिन्दुओ को सौंपने के लिए तैयार हो जाते। परन्तु धर्म निरपेक्षता के भूत ने ऐसा नहीं होने दिया जिसका परिणाम आज पूरा देश दगो की आग मे झुलस रहा है और इसको केवल मूल समस्या का समाधान किए बिना शान्त करना सम्भव नहीं है। आज जब धर्म निरपेक्षता का अर्थ अल्पसख्यको के प्रति तुष्टीकरण की नीति हो गई है तब सत्य को उजागर करना ही अपराध है उनसे स्वीकार करने की आशा तो दूर की बात है। बात कितनी भी अच्छी हो जब उसे राजनीति का हथियार बनाया जाता है तो उससे बुरा कुछ नहीं हो सकता। अयोध्या के राम मन्दिर के विषय मे भी या कुछ नहीं। राम मन्दिर की वास्तविक लडाई तो गत ५० वर्ष से परमहस महन्त रामचन्द्र दास लड रहे हैं। उनकी लडाई समझ मे आने वाली है। यहा आस्था और आत्म सम्मान का सम्बन्ध है। न्यायालय मे मूलवाद भी महन्त रामचन्द्रदास और गोपालशरण विशारद के नाम से ही जाना जाता है परन्तु राजनीति के लोगो को मुद्दो की तलाश रहती है। बस राजनीतिज्ञो ने इसे मुद्दा बना लिया और भुनाना शुरू कर दिया विश्व हिन्दू परिषद् और भाजपा का दृष्टिकोण राजनीतिक है अत वे इस समस्या का हल करने के स्थान पर इसे लाभदायक बनाने का प्रयास करे तो इसमे आश्चर्य क्या है ? एक बार पत्रकारो ने श्री रामचन्द्रदास महन्त से पूछा क्या परिषद् के लोग अयोध्या मुद्दे को लेकर राजनीति नही कर रह है तब उन्होने बडा सटीक उत्तर दिया था बोले नहीं ये बनिये है राजनीति नहीं व्यापार कर रहे हैं। आज भी अशोक सिहल का अनशन महन्त रामचन्द्रदास के महत्व को कम करने का प्रयास माना जा रहा है क्योकि कही ऐसा न हो कि मुद्दा हाथ से निकल जाए। वहीं सत्ता मे बैठे लोग भी आज तक समस्या का हल करने मे ठोस प्रयास क्यो नहीं कर पाए क्योकि उनकी रुचि भी मन्दिर बनाने मे नहीं मन्दिर भुनाने मे है। इसी कारण रामभक्तो को अपनी सरकार और अपने प्रधानमन्त्री को खरी खोटी सुनानी पडी।

राजनीति करने वाला चाहे मन्दिर विरोधी है या मन्दिर समर्थक उसका उद्देश्य न मन्दिर बनाने मे है न मस्जिद बनाने मे। उसका उद्देश्य मुसलमान और हिन्दू को परस्पर लडाने मे है। हमारी राजनीति कितनी अन्धी हो गई है उसका उदाहरण कलकत्ते की सरकार की करतूतो से लगाया जा सकता है। बगाल मे सम्भवत हिन्दू होना ही अपराध है। जब सारी दुनिया मदरसो को राष्ट्रविरोधी गतिविधियो का केन्द्र मानती है तब भी बगाल सरकार व उनकी पार्टी उसे अपना गोद लिया बच्चा समझते है। उन्हे इस बात पर भी आपत्ति है कि कारसवक सभा करते है वे यज्ञ करते है। क्या वे अपने को रावण और राक्षसो का वशज समझते है जो यज्ञ कर रहे लोगो पर लाठी और गोली चलाते है पुलिस की गोली चलाने मे एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई और बत्तीस लोग घायल हो गये। विश्व हिन्दू परिषद के अधिकारियो के अनुसार सभा करने की प्रशासन से पूर्वानुमति ली गई थी परन्तु पुलिस कहती है सभा करने की तो अनुमति ली गई थी परन्तु यज्ञ करने की अनुमति नहीं ली गई क्या इस देश के हिन्दू को यज्ञ करने के लिए भी अनुमति लेनी पडेगी। क्या यह रावण राज्य नहीं है। बगाल की कम्युनिस्ट सरकार मे मुस्लिम समाज के राष्ट्र विरोधी कार्य करने वालो के विरुद्ध तो कार्य करने की हिम्मत और बुद्धि तो नहीं है परन्तु कलकत्ते के सम्मेलन मे पुस्तक विक्रेता से सत्यार्थ प्रकाश की प्रति उठा ले जाने का मूर्खतापूर्ण दुस्साहस अवश्य है। आज धर्मनिरपेक्षता के नाम पर गुजरात सरकार भग करने राष्ट्रपति शासन लगाने गुजरात को सेना को सौंपने जैसी माग करने वाले पाखण्डी भूल जाते हैं यह कोई समस्या का समाधान नहीं है। जनता समभाव से रहना चाहती है समभाव से रहना ही वास्तविक धर्म निरपेक्षता है परन्तु जनता का धर्म निरपेक्षता के पाखण्ड से मोह भग हो चुका है। गत बीस वर्षो मे जो कुछ इस देश की जनता ने देखा और भोगा है उसका धर्मनिरपेक्षता से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है अल्पसख्यको का तुष्टीकरण और देश के बहुसख्यक समाज का अनादर धर्म निरपेक्षता नहीं कहलाता शाहबानो के मामले मे सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को बदलना बनारस मे जबरन कब्जाये गए कब्रिस्तान को सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद भी खाली न करना परिवार नियोजन का विरोध करना मैचो पर पाकिस्तान की जीत पर खुशी मनाना भारत की जीत पर दुखी होना होना सडको का घेर कर नमाज पढना मस्जिद के सामने दशहरा जुलूसो पर पथराव करना हिन्दुओ के भजन कीर्तन पर पाबन्दी लगाना। हिन्दुओ को अपमानित करने के लिए गाहत्या करना चिढाने के लिए गोमास खाना हिन्दुओ के पवित्र स्थलो को लाछित करना जहा वे कम सख्या मे है वहा से उनको भागने पर विवश करना उनकी वेशभूषा व्यवहार आदि पर सामाजिक प्रतिबन्ध लगाना ये इस प्रकार के प्रसग हैं जिनसे धर्मनिरपेक्षता पाखण्ड का पर्याय बन जाती है। इसलिए इस देश का बहुसख्यक हिन्दू तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियो से नाराज हो गया है। यदि वे चाहते है समाज मे उनकी बात सुनी जाए तो उन्हे न्याय सगत और राष्ट्रहित की बात कहने का साहस करना होगा। अन्यथा इन मगरमच्छी आसुओ से इस देश का भला होने वाला नहीं है। इन धर्म निरपेक्षतावादियो को चाहिए वे केवल मन्दिर नही सडक रेलवेलाइन फैक्ट्री महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानो के बीचो बीच बनने वाले कब्र मस्जिद चर्च गुरुद्वारा आदि को भी हटाने के लिए समान कानून बनवाए तब इनकी धर्मनिरपेक्षता इस देश के लिए स्वीकार्य हो सकती है।

आज मन्दिर मुद्दे पर गरमाये वातावरण ने देश को आशकित और भयभीत करके रख दिया था परन्तु जो कुछ हुआ अच्छा हुआ कोई भी नहीं कह सकता कि वह जीत मे है परन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने सबको अपने बचाव करने का रास्ता दिया। न्यायालय के सामने सीधा प्रश्न था क्या वह पूजा करने की अनुमति दे तो उसे स्वाभाविक रूप से नमाज पढने की भी अनुमति देनी होती। ऐसा करना न देश के हित मे होता न ही दोनो पक्षो के। अत यह किसी की जीत या हार नहीं परन्तु उनको जरूर निराशा हाथ लगी होगी जो अपनी राजनीति के लिए किसी दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे। न्यायालय का निर्णय परिसर के सात मन्दिर और उनके पुजारियो के कष्ट नहीं हर सका सकट जरूर बढा दिए। प्रतिदिन होने वाली पूजा भी भक्तो बिना नहीं हो सकी परन्तु देश के दिल की धडकन को बन्द होने से बचा दिया। अब सरकार का कर्त्तव्य है वह मामले को फिर गरमाने से पहले समस्या का हल निकालने का प्रयास करे। क्योकि प्रजा की रक्षा और सुख राजा का परम धर्म है –

प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेताचेत साधु पश्यति

(मनु)

परोपकारी अप्रैल २००२ से साभार

क्या शहीदे आजम सरदार भगतसिंह की कोई प्रेमिका थी ?

— राममेहर एडवोकेट

सुना है आजकल शहीद ए आजम सरदार भगतसिह पर अलग अलग शीर्षको से लगभग ६ फिल्मे बन रही है जैसे २३ मार्च १६३१ शहीद दी लीजेण्ड आफ भगतसिह शहीद–ए–आजम भगतसिह शहीद भगतसिह तथा शहीद। मुझे भगतसिह के जीवन के बारे मे बहुत ही कम जानकारी है किन्तु है ठोस। उसी के आधार पर कुछ हिचकते व झिझकते हुए इतने बडे फिल्म निर्माताओ से कुछ कहने का साहस कर रहा हू। जिन्होने भगतसिह के जीवन का पता नही कितनी बार बारीकियो से अध्ययन किया होगा। ठीक से तो याद नही किन्तु बात निश्चित रूप से १६५६ १६६० या १६६१ की होगी। उन दिनो मै लॉ कॉलेज जालन्धर मे पढता था तब भगतसिह की माता स्वर्गीय विद्यावती जी जालन्धर से कुछ दूरी पर खटकड कला गाव मे रहती थी। मैने पत्र लिखकर माता जी से मिलने की स्वीकृति चाही जो मुझे अतिशीघ्र मिल गई ओर मे उनसे मिलने के लिए उनके घर गया। मेने उनसे भगतसिह व उसके परिवार के बारे मे जी खोलकर खुले समय मे जानकारिया प्राप्त की। माता जी के अनुसार ये उनके जीवन का सबसे कष्ट का समय था। कुछ बातो से वह बहुत दु खी थी। उन बातो को यहा लिखकर मै नये विवादो को जन्म देना नही चाहता तथा अपने लिए भी नई समस्याओ को आमन्त्रित नही करना चाहता तथा कुछ जानकारियो की यादे भी धूमिल पड चुकी हैं किन्तु एक बात जिसको लिखे बिना ठीक नहीं रहेगा जो अत्यन्त आवश्यक है और जिस कारण मै लेख लिख रहा हू वो मै आवश्य लिखना चाहूगा मुझे नही पता इसकी प्रतिक्रिया मीठी होगी या कडवी। उन दिनो जालन्धर के एक सिनेमा हाल मे शहीद भगतसिह के जीवन पर एक फिल्म चली थी। नाम याद नही जिसको माता जी ने स्वय देखा था। उस फिल्म के कुछ दृश्यो के बारे मे उनको कडी आपत्तिया थीं। बाकी तो याद नही किन्तु एक बात जो उन्होने कही निश्चित रूप से याद है। उन्होने बताया था कि उस फिल्म मे किसी लडकी को भगतसिह की प्रेमिका दिखाया गया और भगतसिह के साथ कुछ बात ठीक से याद नही सगाई सम्बन्धी भी दिखाई गई थी। माता जी ने बताया कि रिश्ते सम्बन्धी कोई बात भी कहीं स थोडी आगे नहीं चली थी। हा जैसे गाव मे बच्चो के लिए रिश्ते आते है वैसे ही भगतसिह के लिए भी आते थे। किन्तु जब भगतसिह ने रिश्ते के बारे मे परिवार के सामने कडे शब्दो मे दो टूक इन्कार कर रखा था तो आगे बात चलाने की कोई नौबत ही नही आयी। ये बात मै माता जी की जानकारी के आधार पर लिख रहा हू। यदि उनकी जानकारी के बाहर कोई बात हो तो कुछ कह नही सकता हू। साडर्स वध के पश्चात मौत की दाढ से कभी कोई निकल आए किन्तु भगतसिह का लाहौर से निकलना अति कठिन था। किन्तु एक नकली नाम से फर्स्ट क्लास का छोटा डिब्बा कूपे लाहौर से कलकत्ता के लिए रिजर्व था। तारे आसमान मे हल्के–हल्के झमझमा रहे थे। सुबह पाच बजे की बात है कि नौजवान भगतसिह सिर पर तिरछा फैल्ट लगाए ऊचे उठे कालर का ओवर कोट पहने बायी तरफ श्री भगवतीचरण के बेटे शची जो आजकल गाजियाबाद मे रह रहे है को इस तरह गोद मे सम्भाले कि उधर से चेहरा ढक जाए दाया हाथ ओवर कोट की जेब मे डाल पिस्तौल के घोडे पर उगली रखकर ओर अपनी बायी तरफ श्री भगवतीचरण की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी को लिए शान्त धीरे गति से प्लेटफार्म पार कर अपने रिजर्व डिब्बे मे आ बैठे। इन दिनो दुर्गा भाभी से मै तीन बार आचार्य सुरेश जी श्री सुखदेव जी शास्त्री के साथ गाजियाबाद मे मिला और भगतसिह के बारे मे बहुत जानकारिया प्राप्त की। उन्होने लाहौर से गाडी तक पहुचने लाहौर से कलकत्ता पहुचने तथा वहा पर निवास सेठ छज्जुराम की कोठी के बारे मे जो जानकारिया दी वह किसी पुस्तक मे नहीं मिलती किन्तु आज का ये विषय नही है। मैं तो इस प्रकरण मे जो बताना चाहता हू वह यह है कि दुर्गा भाभी से मैने विशेष तौर पर पूछा था कि क्या भगतसिह की कोई प्रेमिका थी ? उन्होने जरा गर्म होकर कहा वकील साहब क्या पूछ रहे हो ? उन दिनो ये बाते तो दिमाग मे नही आ सकती थीं देश को स्वतन्त्र कराना ही हमारा उद्देश्य था। भगतसिह के जीवन की जानकारी जितनी आर्यसमाज से मिल सकती है उतनी और कही से शायद नही मिल सकती है। इस देश मे और विदेश मे आर्यसमाज का कोई भी एक घर या कोई भी ऐसी सस्था नही होगी जिसमे भगतसिह का चित्र न हो। भगतसिह के दादा जी सरदार अर्जुनसिह ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किए तो मुग्ध हो गए और उनका भाषण सुना तो नवजागरण की सामाजिक सेना मे भर्ती होकर आर्यसमाजी बन गए। वे उन थोडे से लोगो मे से थे जिन्हे स्वय ऋषि दयानन्द ने दीक्षा दी थी। यज्ञोपवीत अपने हाथ से पहनाया था वह सरदार अर्जुनसिह का सास्कृतिक पुनर्जन्म था। मास खाना उन्होने छोड दिया शराब की बोतले नाली मे फेक दी हवनकुण्ड उनका साथी हो गया ओर सन्ध्या प्रार्थना सहचरी।

उनका जीवन पूरी तरह बदल गया था और यह एक क्रान्तिकारी छलाग थी। वे पहले जाट सिख थे जिन्होने ऋषि दयानन्द के हाथ से यज्ञोपवीत लिया था बडे और मझले बेटे किशनसिह अजीतसिह तथा अपने पोते भगतसिह को डी०ए०वी० सस्थाओ मे शिक्षा दिलवाई। स्वय भी आर्यसमाज के उत्सवो मे भाषण देने जाते थे। वे अपने क्षेत्र के प्रमुख आर्यसमाजी नेताओ मे गिने जाते थे। भगतसिह व उनका परिवार आर्यसमाजी था।

भगतसिह के बारे मे हरयाणा मे आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला रोहतक खाण्डा खेडी मे उन्हीं के सिन्धु गोत्र के चौ० शीशराम जी आर्यसमाजी के पास जाट स्कूल रोहतक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा अन्य स्थानो पर आने की जानकारी मिलती है। फिल्म निर्माताओ को किसी ऐसे स्थान पर भी शूटिग करनी चाहिए। वे गुरुकुल कागडी मे आचार्य अभयदेव से योग सीखने भी गए थे।

शहीद भगतसिह ने कलकत्ता के कार्नवालिस स्ट्रीट आर्यसमाज मन्दिर मे कुछ समय तक निवास किया। वे वहा क्रान्ति का कार्य करते थे। जब भगतसिह वहा से आए तब तुलसीराम चपरासी को अपनी थाली लोटा देकर आए और कहा कि कोई आवे तो उसको इनमे भोजन करना देना और कहना कि भगतसिह के थाली और लोटे मे भोजन कर रहे हो। देश का ध्यान रखना। शहीद भगतसिह का यज्ञोपवीत सस्कार आर्यसमाज के महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी प० लोकनाथ तर्कवाचस्पति द्वारा हुआ था।

फिल्म निर्माताओ से प्रार्थना है कि वे ऐसी फिल्म बनाए जिससे ये देश जाग उठे और आर्यसमाज का प्रभाव जो इस परिवार मर था वह भी दिखाई दे।

इसी योद्धा वश की एक बेटी विरेन्द्र सिन्धु ने 'युगदृष्टा भगतसिह और उनके मृत्युजय पुरखे' जो किताब लिखी उससे भी जानकारी ले और यदि सौभाग्य से विरेन्द्र सिन्धु जीवित हो तो उनसे भी जानकारी प्राप्त करे तथा हरयाणा के भजनोपदेशको ने विशेषकर पृथ्वीसिह बेधडक ने भगतसिह की कथा पर भजन बनाए उनमे से भी एक भजन अपनी फिल्म मे अवश्य रखे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा राजेन्द्र जिज्ञासु जी से भगतसिह के जीवन के बारे मे जानकारिया प्राप्त करनी चाहिए। आर्यसमाज को भी चाहिए कि वे भी एक कमेटी बनाए और यदि इन फिल्मो मे कोई गलत तथ्य हो तो उसका विरोध करे।

रोहतक

आर्य नेता
श्री होतूराम आर्य दिवंगत

आर्य नेता श्री होतूराम आर्य लम्बरदार निवासी पिनगवा (हरयाणा) का ८२ वर्ष की दीर्घायु मे दिनाक १५–५–२००२ को स्वर्गवास हो गया जिनकी रस्म पगडी मे दिनाक २–७–२००२ को अनेक आर्य नेता एव साधु सन्यासी सम्मलित हुए तथा श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री होतूराम का जन्म डेरा गाजीखा पूर्व पजाब में हुआ था। उनके माता पिता दोनो ही आर्य थे इसलिए श्री होतूराम आर्य ने मेवात राजस्थान के गावो मे आर्यसमाजो की स्थापना करके वैदिक धर्म का पालन किया। वे अतिथि सत्कार करना अपना परम कर्त्तव्य समझते थे।

श्री आर्य ग्राम पिनगवा मेवात के दो बार सरपच बने तथा एक बार खण्ड पूनाहाना गुडगाव की उपाध्यक्ष रहे तथा ईमानदारी से जनता की सेवा की।

श्री होतूराम जी के चार पुत्र श्री सुरेश कुमार आर्य श्री सत्यपाल आर्य श्री रामपाल आर्य श्री प्रदीप कुमार आर्य हैं। उनकी तीन पुत्रिया श्रीमती सावित्री देवी आर्या श्री सरला देवी आर्या व श्रीमती सरोज कुमारी आर्या हैं जो रात दिन मानवता की सेवा कर रहे हैं। श्री रामपाल आर्य इस समय आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के महामन्त्री हैं।

श्री होतूराम आर्य के निधन से आर्यसमाज की भारी क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा उन्हे सद्गति प्रदान करें।

— प० नन्दलाल निर्भय आर्यसमाज बहीन, फरीदाबाद

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय चार सितारों से अलंकृत

– डॉ० प्रदीपकुमार जोशी

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी **विश्वविद्यालय हरिद्वार को गत ११ १२ मार्च २००२ मे निरीक्षण हेतु आई राष्ट्रीय पुनर्मूल्याकन एव प्रत्यायन परिषद् (NAAC) की सस्तुति पर भारत सरकार/विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने चार सितारो (Four Star) से अलकृत किया है। कमेटी के सदस्यो ने विश्वविद्यालय की सस्तुति यहा के परिवेश शैक्षिक वातावरण शुद्ध पर्यावरण** वृहत पुस्तकालय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सग्रहालय आदि को देखकर की। कमैटी ने महात्मा गाधी मैक्सिको के विद्वान डॉ० जुआन मिगल आदि विद्वानो द्वारा विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे की गई टिप्पणियो का उल्लेख भी अपनी सस्तुति मे किया है।

मानव का सर्वांगीण विकास चरित्र निर्माण सादा जीवन उच्च विचार शिक्षा के सबको समान अवसर मूल्याधारित शिक्षा प्राचीन भारतीय सस्कृति एव वैदिक ज्ञान के प्रति प्रेम तथा प्राचीन एव आधुनिक शिक्षा का समसमायोजन के साथ अध्ययन–अध्यापन ये कुछ मूल सिद्धान्त गुरुकुलीय शिक्षा क उदधृत किए गए हैं। समिति मे आए चेयरमेन प्रो० के मल्ला रेडडी प्रो० सिद्धेश्वर भटट प्रो० के०एस० आर्य आदि ने सामूहिक रूप से एक मत होकर अपनी रिपोर्ट मे कहा कि गुरुकुल विश्वविद्यालय अपनी तरह की एक अकेली सस्था है। जहा विभिन्न क्षेत्रो मे चाहे वे साहित्य के हो अथवा विज्ञान के विश्वविद्यालय के प्राध्यापको ने उपयोगी शोध कराए हैं। समिति ने यहा दी जा रही शिक्षा के स्तर खेलो के विकास तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए शोध कार्यों को खुले मन से सराहा है।

विश्वविद्यालय के अध्यापको की योग्यता विश्वविद्यालय मे हुई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सेमीनार/कान्फ्रेस अध्यापको छात्रो द्वारा अर्जित राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारो का भी रिपोर्ट मे जिक्र किया गया है। विश्वविद्यालय के मुख्य पुस्तकालय की पुस्तक सम्पन्नता रख–रखाव तथा सग्रहालय का विशेष उल्लेख रिपोर्ट मे किया गया है।

विश्वविद्यालय मे गर्भस्थ छात्र प्रणाली को भी उन्होने सराहा जो हमारी प्राचीन सस्कृति का द्योतक है।

श्रद्धानन्द वैदिक शोध सस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्य प्रकाशन की सराहना भी रपट मे की गई है। विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे योग केन्द्र जिसमे कि दैनिक योगाभ्यास कराया जाता है को समिति ने अत्यन्त उपयोगी बताया।

विश्वविद्यालय की प्रशासनिक *आर्थिक शैक्षिक व्यवस्थाओ के अतिरिक्त* जो महत्वपूर्ण बात समिति की रिपोर्ट मे है वह है विश्वविद्यालय द्वारा किए गए देशहित मे कार्य। समिति ने विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने भारत की स्वतन्त्रता मे अविस्मरणीय योगदान दिया है। पत्रकारिता आध्यात्मिकता समाजसेवा ग्रामोत्थान तथा पर्यावरण के प्रति सचेतना के क्षेत्र मे यह विश्वविद्यालय अग्रणी रहा है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे प्राचीन भारतीय सस्कृति साहित्य की स्थापना विश्वविद्यालय मे चल रहे सभी विषयो मे वेद के सम्बन्धो को लेकर प्रश्न पत्र यथा वैदिक गणित वैदिक फिजिक्स वैदिक इजीनियरिंग आदि धर्म दर्शन सस्कृति नित्य हवन परम्परा आदि का उल्लेख भी रिपोर्ट मे किया गया है। अन्त मे समिति ने प्रमाणित किया है कि अनासक्ति भाव की सस्कृति का पाठ पढाने वाला यह अकेला सस्थान है जहा आध्यात्मिक वातावरण गगा की पवित्रता को लपटे हुए है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के शिष्य श्रद्धानन्द द्वारा १९०२ मे स्थपित विश्वविद्यालय के स्नातक विभिन्न देशो मे आज भी यहा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय से प्रकाशित हो रही आर्यभटट वैदिक पथ हिमालय जर्नल गुरुकुल पत्रिका आदि को भी अपनी रिपोर्ट मे सराहा है। यह भी लिखा है कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय की लगभग डेढ लाख पुस्तके इस हिन्दुस्तान की धरोहर है। विश्वविद्यालय मे चल रहे शोध प्राचीन सस्कृति की रक्षा वैदिक इण्डोलोजी के अध्ययन को श्रेष्ठ मानते हुए समिति ने सबल सस्तुति की कि इस विश्वविद्यालय को और अधिक अनुदान तो दिया ही जाए तथा कम से कम चार सितारो से अलकृत किया जाए।

विश्वविद्यालय के शिक्षक एव शिक्षकेतर कर्मचारी सघो के पदाधिकारियो ने इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वेदप्रकाश तथा कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल को बधाई दी। साथ ही कुलपति एव कुलसचिव ने इसे विश्वविद्यालय कर्मचारियो द्वारा एकजुट होकर किए गए प्रयास की परिणति बताया।

– **जन सम्पर्क अधिकारी**

आर्यसमाज हावड़ा का वार्षिकोत्सव एवं सर्व धर्म सम्मेलन

हालाकि आर्यसमाज का गठन **वैदिक व्यवस्था वाले कुरीति मुक्त मानव समाज के निर्माण हेतु हुआ किन्तु महज वैदिक व्यवस्था तक अपने को सीमित नहीं रखते हुए आर्यसमाज की हावडा शाखा निरन्तर समाज सेवा मे जुटी है। दैनिक हवन साप्ताहिक सत्सग प्राकृतिक चिकित्सा केन्द महर्षि दयानन्द होमियो दातव्य औषधालय आर्य विद्यालय वैदिकोपदेशक विद्यालय वैदिक पुस्तकालय सस्कार भवन वेद प्रचार सप्ताह विविध प्रकाशनो (वैदिक ज्ञान गगा हिन्दी बगला) वस्तु भण्डार गगासागर तीर्थयात्री सेवा सत्कार तथा महिला समाज के विभिन्न नियमित कार्यक्रमो द्वारा गतिशील आर्यसमाज हावडा एक ऐसा सजग सस्थान है जो इन सास्कृतिक सरोकार के साथ–साथ अपने सामाजिक दायित्वबोध का भी पालन करती है। लातूर के भूकम्प तथा उडीसा एव दातन के चक्रवाती तूफान मे आर्यसमाज हावडा के द्वारा किए गए कार्य प्रशसनीय रहे हैं।**

हावडा के इस सस्थान ने विगत तीन से सात अप्रैल तक अपना अस्सीवा (८०वा) वार्षिकोत्सव सलकिया सघश्री मैदान मे मनाया। प्रधान जगदीश नारायण आर्य मन्त्री प्रमोद अग्रवाल महिला समाज प्रधान सुदर्शना कपूर एव मन्त्री ब्रह्मरानी पाठक तथा कार्यकारिणी के सदस्यो की अहर्निश मेहनत से पाच दिनो तक कार्यक्रम स्थल मे आध्यात्मिक गगा बहती रही। ऋग्वेद परायण पचकुण्डीय महायज्ञ सन्ध्या भजन योगासन जैसे कार्यक्रमो के बीच प० ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति डॉ० सामदेव जी शास्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती अपने प्रवचनो द्वारा श्रोताओ को अभिभूत करते रहे। इस दौरान आर्य विद्यालय का कार्यक्रम सोमदेव अग्रवाल तथा आर्यमहिला सम्मेलन का कार्यक्रम श्रीमती प्रमिला सैव के सयोजन मे सम्पन्न हुआ।

पाच दिवसीय इस वृहत्त कार्यक्रम की सर्वाधिक उपलब्धि रही छह अप्रैल को आयोजित सर्वधर्म सभा। उद्योगपति समाजसेवी रमेश नागलिया तथा सयोजक नारद पण्डित के विशिष्ट योगदान के कारण यह सम्मेलन उपस्थित सैकडो प्रशासनिक अधिकारियो बुद्धिजीवियो और हजारो आम श्रोताओ के मन मे अपनी छाप छोड गया। सर्वाधिक चर्चा इस बात की थी कि आमतौर पर वैदिक व्यवस्था की बात करने वाली यह सस्था वर्तमान साम्प्रदायिक नफरत हिसा के दौर मे एक सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन कर रही है जो युग की नितात आवश्यकता है।

सभा को सम्बोधित करते हुए पारसी फायर टेपल के सचिव एस०आर० कोतवाल ने कहा कि समस्त भारत आर्य एव पारसी समुदाय अग्निपूजक है। सनातन धर्म जहा नश्वर शरीर को पचतत्व मे विलीन करने हेतु अग्नि को समर्पित करता हे वही पारसी समुदाय अगियारी के माध्यम से वायु को।

टीपू सुल्तान मस्जिद के शाही इमाम मौलाना ओआरी मुफ्ती अलहज सेय्यद मोहम्मद नुरूर रहमान बरकतो मोजेदादी ने कहा कि जिसका ईमान पाक है वही सच्चा हिन्दू या मुसलमान है। अगर कोई मुसलमान नापाक है तो वह इसानियत के नाम पर बदनुमा दाग है। तथा अमन–चैन के लिए काम करना ही सही मायने मे इस्लाम है। आर्यसमाज साताक्रुज मुम्बई के अध्यक्ष डॉ० सोमदेव शास्त्री ने कहा कि वेदो मे स्पष्टत विश्वधर्म के लिए कहा गया है – सर्वम – सुखमशान्ति अर्थात सब के सुख मे शान्ति निहित है और शान्ति ही सब का धर्म तथा कर्म है।

कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० शम्भुनाथ ने कहा मानवता ही सभी धर्मो का मर्म है तथा अपने को सुधारना ही सबसे बडा धम है।

तेरापथी सम्प्रदाय के आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्या साधिका कुसुम प्रज्ञा ने कहा कि त्याग तपस्या सेवा तथा अनुग्रह का पालन करने से मानव का जीवन सफल होता है तथा सभी धर्मो का मूल सार तत्व भी यही है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

महान् आर्यों के महान् कार्य

कर्मठ एवं आदर्श सेनानी : चरणजीत राय साहनी

– सीमा घई

स्व० चरणजीत राय साहनी

१९४७ के देश विभाजन मे आतकवाद के हाथो अपने युवा भाई श्री ओम प्रकाश साहनी के बलिदान की आहुति देकर रावल पिण्डी (पाकिस्तान) से दिल्ली पधारे चरणजीत राय साहनी। आते ही आर्यसमाज करौलबाग से ऐसे जुडे कि अपनी जीवन लीला की समाप्ति तक यह सस्था उनके सामाजिक कार्य क्षेत्र की आधार शिला बनी रही।

आर्यसमाज के प्रति अटूट लगन कर्त्तव्य परायणता सौम्य स्वभाव के फल स्वरूप जनता ने उन्हे पूरी दिल्ली की आर्यसमाज की गतिविधियो का अभिन्न अग बना दिया। १९५२ स १९६४ तक आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री सत्भावा आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रबन्धक कई साल रहे। १९६१ मे सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती तथा नवम महासम्मेलन की विशाल शोभा यात्रा के प्रधान सयोजक रहे। महात्मा आनन्द स्वामी के कथनानुसार आर्य समाज करोलबाग ईट पत्थर का भवन ही नही परन्तु वह चलता फिरता व्यक्ति था जिसे चरणजीत राय साहनी के नाम से जाना जाता है।

श्री साहनी का जन्म ८ फरवरी १९०१ को रावलपिण्डी मे हुआ। बाल्यकाल मे स्वामी विशुदानन्द की शिक्षाओ ने उन पर गहरी छाप छोडी। बाद मे आचार्य प० मुक्तिराम जी के सम्पर्क मे आए और चुम्बक की भाति उनके अनन्य भक्त ही नहीं अपितु सहायक बन गए। दृढता और आदर्श उनके चरित्र के प्रमुख अग बन गए। १५ फरवरी १९२५ को उन्हीं आचार्य जी के वरद हस्त से युवा चरणजीत का पाणिग्रहण सस्कार श्री गणपत राय सभरवाल की सुपुत्री लाजवती से कराया। इस विवाह मे दो महत्वपूर्ण बाते देखी गयी – प्रथम कन्या पक्ष के घर के भवन के साथ ही विशाल यज्ञशाला निर्मित की गई थी दूसरे दहेज मे गाय का दान।

१९३८–३९ के हैदराबाद सत्याग्रह मे श्री साहनी ने सक्रिय योगदान दिया – स्वय सेवी जत्थो को भिजवाने अथवा घर–घर से भारी रकमो के दान को एकत्रित करवाना आचार्य मुक्तिराम जी (भावी स्वामी आत्मानन्द जी) द्वारा रावल पिडी से बाहर एक नये गुरुकुल रावल के लिए भव्य विशाल भवनो के निर्माण गुरुकुल के लिए दान सस्था के सचालन मे सहयोग लगातार देते रहे। स्वामी आत्मानन्द जी के अधीन श्री चरणजीत द्वारा की गई सेवाओ का विवरण आत्मानन्द जीवन ज्योति ग्रन्थ मे मिलता है।

१९२२ मे रावल पिण्डी मे प्लेग की महामारी फैली तो सेवा समिति के मन्त्री होने के नाते कई बार युवा चरणजीत को मुर्दाखाने से मृतक शव श्मशान घाट तक पहुचवाने पडते थे। एक बार सूरज ढले ऐसे ही एक कार्य मे पर्याप्त श्रमिक सहायता न मिल सकी। उन दिनो आजकल की तरह शववाहन नही होते थे अतएव हथरेडियो से ही यह काम होना था। ऐसी विकट समस्या मे अपनी जान की परवाह न करके इस कर्त्तव्य को बखूबी निभाया।

स्वतन्त्रता सग्राम मे एक बार वन्देमातरम गाते एक टोली मे वह पुलिस की धरपकड मे आ गए। न्यायधीश ने क्षमायाचना की शर्त पर रिहा करने का आदेश सुनाया देशप्रेमी चरणजीत भला ऐसी शर्त कैसे मानता जेल जाने का विकल्प ही सही माना।

देश विभाजन के बाद शरणार्थी भाइयो की सेवा के लिए अखिल भारतीय स्थापना मण्डल के पुन अध्यक्ष बने। नि सहाय महिलाओ को सिलाई मशीने अथवा मासिक भत्ता सरकार की ओर से लगवा दिया।

और कहानी खत्म हो गयी

६ मार्च १९६४ को साय ५ बजे सतभ्रावा विद्यालय से घर आए तो चाय बनने से पूर्व ही ह्रदय गति के अचानक रूक जाने से यह हसमुख चेहरा सदा के लिए सो गया। रातो रात श्री रामनाथ सहगल जी ने केन्द्रीय सभा की ओर से विराट शोकसभा का आयोजन करवाया जिसमे आर्य नेता गण – लाला रामगोपाल शालवाले (स्व० स्वामी अनन्दबोध जी) महापौर श्री हसराज गुप्त प्रो० रामसिह डॉ० युद्धवीर सिह ने दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि दी।

देनिक प्रताप के सम्पादकीय मे श्री नरेन्द्र ने लिखा 'एक और सज्जन चल बसा दैनिक मिलाप दैनिक तेज वीर अर्जुन तथा 'सार्वदेशिक ने अपने–अपने ढग से श्रद्धा सुमन उनकी स्मृति मे व्यक्त किए। श्री प्रकाश वीर शास्त्री ने लिखा कि वह आर्यसमाज के ऐसे दीवाने थे जिन्होंने अपने स्वास्थ्य और परिवार की परवाह किए बिना वेदिक ध र्म के प्रचार मे अपना जीवन लगा दिया।

महान् आर्यों के महान् कार्य

इस स्तम्भ मे आप भी अपने परिवार के वृद्ध (जीवित अथवा दिवंगत) आर्य महापुरुषों के अनुकरणीय कार्यों का उल्लेख करते हुए लेख [illegible] प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं।

श्री साहनी के बडे सुपुत्र कुलभूषण साहनी भी उनके पद चिन्हो का अनुकरण करने मे प्रयत्नशील है। आर्यसमाज करौल बाग तथा बाद मे आर्यसमाज अशोक विहार–१ के मन्त्री के रूप मे कार्यरत रह चुके हैं।

इस लेख का उद्देश्य युवा पीढी को पुरानी पीढी की लगन तडप व उत्साहवर्धक कार्यशैली से अवगत कराना है इस आशय से ताकि सम्भवत किसी के लिए आदर्श व प्रेरणा स्रोत बन सके।

– बी ६८, फेज १, अशोक विहार, दिल्ली ५२

– पृष्ठ ७ का शेष भाग

आर्यसमाज हावड़ा का वार्षिकोत्सव एवं सर्वधर्म सम्मेलन

आर्यसमाज कोलकाता के प्रोफेसर उमाकान्त उपाध्याय ने कहा – वेद विश्व का पुरातन धर्म ग्रन्थ है जिसमे हर प्रकार से जीवन मे शान्ति कैसे मिले इसका स्पष्ट उदाहरण प्रमाण सहित मिलता है आवश्यकता इसे समझने एव परायण की है। असेबली ऑफ गाड चर्च के पूर्व पास्टर रेवरेड अमिताभ सिह ने कहा कि विश्व के सभी धर्मों का एक ही निष्कर्ष है शाति के लिए बलिदान देना जीसस ने ऐसा ही किया था। बलिदान के बिना सर्वधर्म का औचित्य नहीं है।

निरकारी गुरु अर्जुन सिह ने कहा – ईश्वर की निरकारी सत्ता की सर्वव्यापकता को जब तक हम स्वीकार कर धर्मानुरूप जीवनयापन नहीं करते हैं तब तक जीवन असफल है। सयोजक नारद पण्डित के अनुसार सत्य अहिंसा सदाचार सैवा यही ईश्वर की सच्ची पूजा है तथा मानवता ही ईश्वर का आदिकाल से पहचान हैं। उपर्युक्त आधार को माना जाए तो यही ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग है।

'ईश्वर प्राप्ति का उपाय' विषय पर आयोजित इस सर्वधर्म सम्मेलन की अध्यक्षता गजानन्द आर्य ने की तथा सभा का सुचारू सचालन चन्द रमण दम्माणी ने किया।

पाच दिनो तक चलने वाले आर्यसमाज के इस वार्षिकोत्सव मे प्रतिदिन उत्साह के साथ विभिन्न भाषा सम्प्रदाय के श्रोता कार्यक्रम स्थल में उपस्थित होते रहे।

अनास्था साम्प्रदायिक विद्वेष के माहौल में सर्वधर्म सम्मेलन जैसा आयोजन करने वाले आर्यसमाज हावडा तथा इसके पदाधिकारी सदस्य तथा आयोजक को साधुवाद।

आतंकवाद का समाधान

भारत की सच्ची नागरिकता से न कि कुरान की वफादारी से

– आचार्य आर्यनरेश

देश में गत ५४ वर्षों से चल रहे आतक को समाप्त करने हेतु अब यह आवश्यक हो गया है कि यहा के मुसलमान यह निर्णय करे कि वे यहा के सविधान के वफादार रहना चाहते हैं अथवा कुरान के ? क्योकि यदि वे सविधान भारत के वफादार बनना चाहते है तो वे काफिर कहलाए जाते हैं और यदि वे कुरान के के वफादार बनते हैं तो वे जेहादी आतकवादी बन जाते हैं।

मजहबी आधार पर आर्यावर्त का बटवारा करवा कर पाकिस्तान इसलिए बनाया गया था कि इससे भारत मे जातीय दगो व आतकवाद की समाप्ति होकर शान्ति होगी पर इस बटवारे के पश्चात भी इस तथाकथित स्वतन्त्र भारत मे कभी स्थायी शान्ति न हो सकी। बटवारा चाहने वालो ने अपने मजहब मुसलमान तथा ईमान 'कुरान के अनुसार पाकिस्तान की नींव रखी पर वे सबके सब वहा नहीं गए। अत हमारे देश के कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी एव अदूरदर्शी नेताओ की गलतियो के कारण जहा कश्मीर का विवाद नासूर बन गया वहा मजहब के नाम पर अलग पाकिस्तान की माग मनवाने वाले वे मजहबी मुसलमान भी यहीं रखे गए। जिन्ना का यह स्पष्ट कथन था कि एक गिरे से गिरा हुआ मुसलमान भी हिन्दू गाधी से अधिक अच्छा है इसीलिए हमने स्वय देखा कि आज किसी भी कश्मीरी मुसलमान के घर पर कहीं भी नेहरू या गाधी की फोटो नहीं मिलती पर अली या जिन्ना की मिल सकती है। भारत के नादान नेताओ द्वारा अनेक गरीबों का पेट काटकर कश्मीर को दिया गया अरबो रुपयो का मुफ्त राशन भी उन्हे भारत का वफादार नहीं बना सका। गत दिनो कश्मीर से उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल आए कश्मीर के एक मन्त्री के मुख्य सचिव ने मेरी ही बात की पुष्टि करते हुए कहा कि आज वहा के सब ६५ प्रतिशत मुसलमान ही भारत विरोधी हैं। आखिर ऐसा क्या कारण है कि भारत के मुसलमानो को भारत देश मे राष्ट्रपति उच्च न्यायाधीश मन्त्री मुख्यमन्त्री विशेष सेना अधिकारी तथा अनेक राज्यपाल एव उच्च सम्मानयुक्त पद दिए जाने पर भी यहा की आम मुसलमान जनता भारत के स्थान पर पाकिस्तान या तालिबान की वफादार बनकर आतकवादियों की सहयोगी क्यो बनी ? यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि इतना प्यार व इतने अधिकार पाकर एक खूखार जगली जानवर शेर भी अपने पैर से काटा निकालने वाले एक आर्य साधु के पैर चाटने लगा गया था प्रेम से समझाने पर उदगीथ आश्रम का कुत्ता और बिल्ली एक थाली मे दूध पीने लगे थे। फिर क्या मौलिक कारण है कि भारत के इतने अधिकार व प्यार पाकर भी यहा के बहुत से मुसलमान सच्चे भारतीय नहीं बने।

जब तक भारत के तथाकथित नागरिक मुस्लिम नेता और उनके पीछे चलनेवाली जनता कुरान से काफिरो को कत्लेआम करने वाली कुशिक्षाओ को अल्लाह का आदेश समझती रहेगी तब तक भारत मे दिल्ली स्थित लालकिला ससद भवन व कश्मीर आदि मे हत्याओ का ताडव नृत्य और आतकवादी सिलसिला चलता रहेगा। मुसीबत यह भी है कि यदि कोई सच्चा बुद्धिजीवी छागला जैसा ईमानदार मुसलमान एक सच्चे भारतीय की तरह बनना चाहता है तो यहा के इमाम बुखारी जैसे अनेक भारत विरोधी नेता उन्हे कुरान व शरियत का हत्यारा कहकर काफिर करार देते हैं।

जब तक भारत के तथाकथित नागरिक मुस्लिम नेता और उनके पीछे चलनेवाली जनता कुरान से काफिरो को कत्लेआम करने वाली कुशिक्षाओ को अल्लाह का आदेश समझती रहेगी तब तक भारत मे दिल्ली स्थित लालकिला ससद भवन व कश्मीर आदि मे हत्याओ का ताडव नृत्य और आतकवादी सिलसिला चलता रहेगा। मुसीबत यह भी है कि यदि कोई सच्चा बुद्धिजीवी छागला जैसा ईमानदार मुसलमान एक सच्चे भारतीय की तरह बनना चाहता है तो यहा के इमाम बुखारी जैसे अनेक भारत विरोधी नेता उन्हे कुरान व शरियत का हत्यारा कहकर काफिर करार देते है।

गत दिनो अमेरिका के सी०एन०एन० चैनल पर तालिबान सेना के मुखिया मिया उमर के प्रवक्ता मु० सैयद आगा ने अमेरिका इजराइल व कश्मीर पर हो रहे आतकवादी हमलो को उचित ठहराते हुए कहा था। हम जो कुछ भी कर रहे है वह सब कुछ अल्लाह ताला के आदेश कुरानपाक के अनुसार कर रहे हैं। वही हम से यह सब कुछ करवा रहा है। जब तक हमारा अपना पूरा मकसद (उद्देश्य) सिद्ध नहीं हो जाता अर्थात सम्पूर्ण ससार पर इस्लाम का राज्य नहीं हो जाता तब तक हम जेहाद करते रहेगे कुछ समय पूर्व यही बात मुस्लिम उग्रवादी नेता मुशर्रफ ने कही थी कि कश्मीर का विवाद हल हो जाने पर भी हमारी भारत के साथ लडाई चलती रहेगी। आतकवादियो या कुरानवादियो का समर्थन करने वाले नादान नेता विचार करे। यह कौन नही जानता कि जिन भारतवासी जवानो ने अपनी जान देकर बगलादेश के आजाद करवाया था आज वही बगलादेशी मुस्लिम नागरिक भारत के सीमारक्षको व हिन्दू लोगो को मार रहे हैं।

क्या यह सत्य है कि तथाकथित मजहब व ईमान के नाम पर लिखा गया कुरान ही मुसलमानो को ईमानदार बनने से रोकता है ? यदि विश्वास न हो तो कुरान की निम्न आयते पढकर देखे जो कि भारत के सविधान से भी विरुद्ध है।

कुरान पारा १ सूरा १ आयत

५ – गैर मुसलमानो को जहा पाओ वहा कत्ल करो और उन्हे पकडो व घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक मे बैठो। यदि वे तोबा कर ले नमाज किया करे (मुसलमान बन जाए) और जकात (जीने का टैक्स) दे तो उनका मार्ग छोड दे अन्यथा कभी मत छोडो और कत्ल कर दो। निसन्देह ऐसा करने वाले मुसलमानो का अल्लाह बडा क्षमाशील और दया करने वाला है।

कुरान पारा ६ सूरा ५ आयत

५७ – हे ईमानवालो (मुसलमान लोगो) तुम काफिरो को अपना मित्र न बनाओ।

कुरान पारा ५ सूरा ४ आयत

१० – निसन्देह काफिर (गैर मुसलमान) लोग तुम्हारे दुश्मन है। उनके खिलाफ जेहाद करो।

विशेष जानकारी हेतु महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश का १४वा समुल्लास पढे। १३ १४ ३३ मे लिखा है कि सूर्य चन्द तारे फिरते हैं और पृथ्वी खडी है। जो गैर मुसलमानो से झगडा करता या उन्हे जान से मार डालता है उन्हे पाप नहीं लगता अपितु बहिश्त मिलता है। अपने बेटे की पत्नी के साथ भी मुहम्मद ने विवाह किया – कुरान मे गाय जैसे सर्वोपयोगी प्राणी की सुरक्षा की बात न करके मुसलमानो द्वारा हलाल बताई जाती तथा काटी जाती है।

कुरान की उपर्युक्त मान्यताओ से ठीक विपरीत भारत के सविधान की धारा ५१ (स) मे कहा गया है कि भारत का प्रत्येक नागरिक परस्पर प्रेम शन्ति भाईचारा तथा सौहार्द के भाव से रहे महिलाओ का सत्कार करे अन्यत्र भी स्थान स्थान पर सविधान मे कहा है कि भारत की प्राचीन सस्कृति व गाय की रक्षा की जाए।

भारत का सविधान जहा प्राचीन वैदिक सस्कृति की रक्षा की बात करते हुए सयम और सदाचार पर बल देता है। वहीं ठीक इससे विपरीत कुरान के बहिश्त मे शराब की नदियो लौडो और भोग हेतु अनेक औरतो की सुविधा है।

क्या भारत के सविधान के विरुद्ध अत्याचार अशान्ति तथा गैर मुसलमानो से दगे करने या जेहाद करने की कुशिक्षा से युक्त 'कुरान' के प्रचार रहते कभी भारत मे शान्ति सम्भव है ? क्या ऐसी अश्लील विज्ञान व मानवता विरुद्ध दगे करवाने वाली पुस्तक के आदेशो को मानने वाले मुसलमान कभी सच्चे भारत देशभक्त बन सकते है ?

अत मे सविधान की अन्य धाराओ पर विचार करते हुए हम कहना चाहते हैं कि सविधान की धारा २५(१) के अन्तर्गत व्यक्तिगत मत मजहब आदि के पालने की स्वतन्त्र छूट या अधिकार एक सर्वथा यथाइच्छा सम्पूर्ण अथवा असीमित (सीमा रहित) नहीं है। १९५२ मे मुम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मुहम्मद करीम छागला और न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्र गडकर ने उपर्युक्त मौलिक अधिकार पर निर्णय देते हुए फैसला दिया था कि यह अधिकार २५ (३) के अन्य प्रावधानो पर निर्भर है।

अत इससे स्पष्ट सिद्ध है कि भारत के रहने वाले किसी भी मुसलमान या अन्य मतावलम्बियो को बहुत विवाह से बहुत बच्चे पैदा करने गोहत्या करने या अन्य बलि करने, धर्म परिवर्तन करने अथवा मजहब के नाम पर लोगो को परेशान करने व जेहाद करने की छूट नहीं है।

भारत सरकार को चाहिए कि भारत मे पूर्ण शान्ति हेतु यहा रहने वाले सभी मुसलमानो को यह सूचित कर दे कि या तो वे यहा रहकर भारत की नागरिकता वोट का अधिकार भारत के नेता बनने की सुविधा तथा भारत सरकार को सब प्रकार की नौकरिया ही प्राप्त कर ले अथवा कुरान की वफादारी और उसकी मनमानी सुविधाए ? सविधान मे वर्णित भारत की प्राचीन वैदिक सस्कृति के अनुसार यत्र ब्रह्म च क्षत्र च वेद मन्त्र यही उपदेश देता है कि राष्ट्र को पुण्यलोक बनाने हेतु बाल्यकाल से प्रत्येक नागरिक को यहा का सच्चा नागरिक बनने हेतु सविधान के मुख्य नियमो का पूर्ण ज्ञान करवा दिया जाए। यदि फिर भी कोई नियमो को तोडे तो उसके विरुद्ध देशद्रोह की कार्रवाई की जाए।

– उदगीथ साधना स्थली (हिमाचल)

स्वास्थ्य चर्चा

हार्ट अटैक से बचाव

– डॉ० सन्तोष कुमार

रामसिह जिनकी आयु ४५ वर्ष की थी इन्हे अचानक एक दिन दिल का दोरा पडा। इन्हे अस्पताल मे भर्ती किया गया जहा डाक्टरो की सारी कोशिशो के बावजूद कुछ घण्टो मे ही इन्होने दम तोड दिया। ऐसी कई घटनाए हमारे आसपास घटती रहती है जोकि हमे विवश करती हे कि हम इस बात पर विचार करे कि क्या हम हार्ट अटैक और इससे होने वाली मृत्यु पर विजय पा सकते है ?

असमय होने वाले हार्ट अटैक को रोकना बहुत हद तक सम्भव है। असमय का तात्पर्य कम आयु मे होने वाले हार्ट अटैक से है। कम आयु मे हुए हार्ट अटैक से पीडित मरीजो का विश्लेषण करे तो पाएगे कि ऐसे अधिकाशत लोगो मे कोरोनरी हृदय रोग से सम्बन्धित खतरे के कारण जिनमे डायबिटीज उच्च रक्तचाप रक्त मे कोलेस्ट्रॉल बढा होना मोटापा धूम्रपान शिथिल जीवनचर्या या अत्यधिक तनावग्रस्त प्रवृत्ति का होना पाया जाता है। हमारा यह सोचना बिल्कुल गलत है कि डायबिटीज उच्च रक्तचाप और हाई कोलेस्ट्रॉल वाले व्यक्तियो मे साधारणत कोई लक्षण नहीं होते और जब कोई परेशानी हो जाती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसलिए अगर हम हार्ट अटैक से बचना चाहते हैं तो हमे निम्नलिखित जाचे करानी चाहिए। अपने दैनिक जीवनचर्या मे कुछ बदलाव लाने चाहिए एव कुछ परिस्थितियो मे हृदय रोग विशेषज्ञ की सलाह भी लेनी चाहिए।

ब्लडशुगर प्रत्येक वयस्क को अपने ब्लड शुगर की जाच करानी चाहिए। खाली पेट मे शुगर की मात्रा ११ मि०ग्रा० प्रतिशत से कम होना चाहिए तथा ७५ ग्राम ग्लूकोज पीने के २ घण्टे बाद १४० मि०ग्रा० प्रतिशत से कम होना चाहिए। एक डायबिटीज के मरीज मे खाली पेट ब्लडशुगर की मात्रा १२६ मि०ग्रा० प्रतिशत या ज्यादा तथा ७५ ग्राम ग्लूकोज के २ घण्टे के बाद २०० मि०ग्रा० प्रतिशत या ज्यादा होता है। कई अध्ययनो ने अब यह प्रमाणित किया है कि डायबिटीज के मरीज मे ब्लडशुगर के नियन्त्रण से चाहे वह परहज और व्यायाम द्वारा हो या फिर इन्सुलिन या ग्लूकोज कम करने वाली टेबलेट द्वारा हृदय रोग तथा अन्य जटिलताओ मे कमी आती है।

कोलेस्ट्रॉल की जाच कराना डायबिटीज की तरह ही कोलेस्ट्राल भी हृदय रोग के होने तथा इससे सम्बन्धित जटिलताओ के लिए कई महत्वपूर्ण कारण है। कोलेस्ट्राल के कई प्रकार होते है जिनका हमे लिपिड प्रोफाइल (खून की जाच) द्वारा पता चलता है। हृदय रोग के सन्दर्भ मे सबसे महत्वपूर्ण एल०डी०एल० कोलेस्ट्रॉल है। एल०डी०एल० कोलेस्ट्रॉल की सामान्य मात्रा १३० मि०ग्रा० प्रतिशत या इससे कम होनी चाहिए। लेकिन ऐसे व्यक्तियों मे जो पहले से ही एन्जाइना या हार्टअटैक से पीडित है या उन्हे डायबिटीज है इनमे एल०डी०एल० कोलेस्ट्राल १०० मि०ग्रा० से कम होना चाहिए।

उच्च रक्तचाप हृदय रोगों के लिए उच्च रक्तचाप भी काफी हद तक जिम्मेदार है। इसका पता सहज ही लग सकता है। उच्च रक्तचाप के इलाज मे भी काफी परिवर्तन हुए हैं। किस व्यक्ति म रक्तचाप कितना कम किया जाए कौन से मरीज मे किस दवा से सबसे ज्यादा फायदा होगा या कौन सी दवाए नुकसान पहुचाएगी इसका निर्णय महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए एक सामान्य व्यक्ति का रक्तचाप १४० सिस्टोलिक तथा ६० डायस्टोलिक से कम होना चाहिए। लेकिन डायबिटीज के मरीजो म सिस्टोलिक १३० मि०मि० से कम तथा डायस्टोलिक ८५ मि०मि० से कम होना चाहिए।

दिनचर्या मे बदलाव करे धूम्रपान का त्याग धूम्रपान कोरोनरी धमनी मे सिकुडन होने का एक प्रमुख कारण है तथा धूम्रपान करने से धमनी के अन्दर रक्त का थक्का जमने की प्रवृत्ति बढती है जोकि हार्टअटैक की वजह है।

भोजन मे परिवर्तन हमे उन खाद्य पदार्थो का सेवन कम करना चाहिए जिनमें कोलेस्ट्राल तथा सैचुरेटेड फैट मे जैसे अण्डे की जर्दी गोश्त तथा इसकी चर्बी एव मलाई घी और मक्खन। अनसैचुरेटेड फैट जोकि वनस्पति तेल (रिफाईन्ड आयल) मे पाया जाता है इनसे कोलेस्ट्राल की मात्रा या तो कम होती है या प्रभावित नहीं होती। इसलिए उचित मात्रा मे इनका प्रयोग किया जा सकता हैं।

व्यायाम ऐरोबिक व्यायाम हम सभी के लिए लाभदायक है। व्यायाम से कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटती है। डायबिटीज और उच्चरक्तचाप के नियन्त्रण मे भी मदद मिलती है तथा कोरोनरी धमनियो मे रक्त का थक्का जमने की प्रवृत्ति भी कम हाती है जोकि हार्टअटैक की वजह है। हृदय रोग से पीडित मरीजो मे व्यायाम की शुरुआत हृदयरोग विशेषज्ञ की सलाह से ही करनी चाहिए।

निम्न परिस्थितियो मे हृदयरोग विशेषज्ञ से सलाह लें

सीने मे दर्द हो अगर आप वयस्क है और अचानक आपके सीने मे तेज दर्द की शिकायत हो तो इस परिस्थिति मे हृदयरोग विशेषज्ञ से सलाह तथा ई०सी०जी० कराना अनिवार्य है। क्यो अगर ये दर्द हार्ट अटैक का है जो समय मे किए गए इलाज द्वारा आपकी जान बचा सकता है। सीने मे दर्द होने के कारण हो सकते हैं लेकिन हार्ट अटैक की सम्भावना उस समय बढ जाती है जब आपमे कोरोनरी हृदयरोग से सम्बन्धित खतरे के कारण मौजूद हो प्रमुखत – डायबिटीज उच्च रक्तचाप हाई कोलेस्ट्रॉल तथा अधिक उम्र होना।

अगर आप डायबिटीज से पीडित हो प्रत्येक डायबिटीज के मरीज मे प्राइमरी हार्ट चेकअप अनिवार्य है। अगर आपकी सास फूलती हो सास फूलना भी एन्जाइना अथवा हार्ट अटैक का एक प्रमुख लक्षण है। अगर आप वयस्क हैं और सास फूलने की बीमारी पहली बार इस उम्र मे हुई है या फिर डायबिटीज और उच्च रक्तचाप से पीडित है और सास फूलती है अथवा हार्ट अटैक हो चुका है और सास फूलने की परेशानी इसके बाद शुरू हुई है तो आपको हृदय रोग विशेषज्ञ के सलाह की आवश्यकता है।

– श्वास रोग विशेषज्ञ रीजन्सी अस्पातल कानपुर (उ०प्र)

आर्यसमाज ईंट पत्थरों का नाम नहीं

इस धारावाहिक मे कुछ महान महानतर और महानतम आर्य पुरुषो की जीवन झाकी प्रस्तुत की जाती है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो को अपने खून पसीने से सीचने का हर सम्भव प्रयास किया और एक अनुशासित नागरिक के नाते सत्य सनातन वैदिक धर्म का अपना जीवन अर्पित किया। परन्तु नाम और प्रसिद्धि आदि के चक्रव्यूह मे फसने का कभी प्रयास नहीं किया। अन्धेरा उन्हें रास नहीं आया परन्तु यदि उनके कार्य आगे भी अधेरे मे रहे तो हमारा भविष्य भी अन्धकारमय हो सकता है। इसीलिए भविष्य को प्रेरणास्पद बनाने के उददेश्य से हमारा निवेदन है

अंधेरे में जो बैठे हैं नजर उन पर भी डालो

– सम्पादक

नररत्न पं० अमरनाथ जी 'प्रेमी'

(२८ जून पुण्यतिथि पर विशेष)

सामाजिक सगठन बलिदान की नींव पर खडे होते हैं। त्याग व तपस्या के बिना कोई भी सस्था या सगठन अत्यधिक उन्नति कर सके यह कदापि सम्भव नहीं। आर्यसमाज का गोरवशाली सूर्य के समान देदीप्यमान सुनहरा अतीत ऐसे ही तपोमूर्तियो की देन है।

आज मैं ऐसे ही मनीषी की सक्षिप्त जीवन गाथा की चर्चा करके अपनी लेखनी को पवित्र कर रहा हू। ये यशस्वी विभूति हैं स्व० पण्डित श्री अमरनाथ जी 'प्रेमी'।

पण्डित अमरनाथ जी प्रेमी आर्यसमाज के दिव्य रत्न थे और मनसा वाचा कर्मणा धर्मनिष्ठ कर्त्तव्य परायण आर्यसमाजी थे। उन्होने अपना सर्वस्व आर्यसमाज को समर्पित कर दिया और अन्तिम क्षण तक मा आर्यसमाज की सर्वात्मना सेवा मे समर्पित रहे।

पण्डित जी को ईश्वर ने दिव्य कण्ठ और स्तरीय काव्य लेखन की विलक्षण प्रतिभा प्रदान की जिसके द्वारा वे अकूत धन–सम्पत् अर्जित कर सकते थे। पर वे तो तपोमूर्ति थे नररत्न थे और थे आर्यसमाज के सच्चे सपूत। उन्होने अपनी सम्पूर्ण क्षमता को आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित कर दिया।

प्रेमी जी की कवित्व क्षमता को देखते हुए उन्हे भारी सख्या मे निमन्त्रण मिलने लगे। मुम्बई के एक फिल्म निर्देशक ने उन्हें सादर आमन्त्रित किया और कहा आप फिल्म में तर्जकार का कार्य आरम्भ कर दे – आपको इसके लिए एक बडी राशि समर्पित की जाएगी और आपका जीवन सवर जाएगा। इसके लिए पण्डित जी ने जो उत्तर दिया वह किसी भी सगठन के लिए अनुकरणीय है और विशेषत आर्यसमाज के क्रियाकलापो के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में उल्लेखनीय है। प्रेमी जी ने कहा कि यद्यपि इस कार्य में मेरा व मेरे परिवार का भविष्य सुधर जाएगा परन्तु मैं भारतीय सस्कृति को अवश्य भूल जाऊगा और वैदिक धर्म का प्रचार भी छूट जाएगा अत मैं ऐसा नहीं कर सकता।

प्रेमी जी! धन्य है आपका यह विलक्षण त्याग! आर्यसमाज की भावी पीढी शताब्दियो तक आप के इस त्याग पूर्ण जीवन से प्रेरणा लेती रहेगी। किसी ने ठीक ही कहा है –

उन्हीं की रागिनी पर झूमती है दुनिया
जो जलती चिता में बैठ के वीणा बजाते हैं।

प्रेमी जी को श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु लिखते हैं – प्रेमी जी अपने समय के आर्यसमाज के सबसे लोकप्रिय भजनोपदेशको मे थे। वह बहुत स्वाभिमानी उपदेशक थे परन्तु बडे विनम्र थे। उनका कण्ठ अच्छा ही नहीं बहुत अच्छा था। उनके व्याख्यान मे निरर्थक चुटकुले भी नही सुने थे। उनमे एक बडा गुण यह भी था कि वे आर्यवीरो और और आर्यकुमारो से बडा स्नेह करते थे और उन्हे बडा प्रोत्साहन देते थे।

प० बुद्धदेव जी विद्यालकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व अन्य अनेक दिग्गज महापुरुषो के साथ प्रचार व सेवा का अवसर उन्हे मिला। उनकी रचनाए आज भी उतनी ही सजीव व लोकप्रिय हैं। उनका यह गीत आज भी आर्यसमाज का कण्ठहार बना हुआ है –

बीहड वन मे विचर रहा था
सच्चे शिव का मतवाला।
छोड दिया था टकारा।

प्रेमी जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राजेश जी अमर प्रेमी भी युवा गायक हैं। उनकी आर्यसमाज के प्रति निष्ठा प्रशस्य है। भाई राजेश जी व्यापारिक कार्यो मे व्यस्त रहते हुए भी यत्र–तत्र आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे सगीत गगा प्रवाहित करते रहते हैं।

प्रेमी जी वैदिक सस्कारो का मूर्त रूप थे। वे २० वर्ष पक्षाघात से पीडित रहे। जब उन्हे कहा गया कि वे कबूतर का सेवन करेगे तो उन्हे लाभ पहुचेगा। परन्तु उन्होने इसे स्वीकार नहीं किया और २८ जून १९६० को ब्रह्ममुहुर्त मे ओइम् का उच्चारण करते हुए नश्वर शरीर को त्याग दिया।

जो जाति अपने पूर्वजो के आदर्श चरित्र को स्मरण नहीं करती वह निश्चित रूप से धूल मे मिल जाने योग्य हैं। इस लेख के कारण इन दिव्य मनीषी का स्मरण कर हम अपने कर्त्तव्य का ही पालन कर रहे है।

– रामचन्द्र शास्त्री
गुरुकुल तिलोरा अजमेर

हांसी में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

स्थानीय आर्यवीर दल ने हरियाणा प्रदेश आर्य वीर दल के तत्वाधान मे डी०ए०वी० स्कूल लाल सडक हासी मे ८ दिवसीय आर्यवीर चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर २६ मई से २ जून २००२ तक वैदिक विद्वान आचार्य रामसुफल शास्त्री लाल सडक हासी के नेतृत्व मे लगाया गया।

शिविर का उदघाटन श्री मामन राम सैनी पूर्व प्रधान नगर परिषद् हासी ने किया तथा अध्यक्षता मा० भगवान दास प्रधान आर्य वीर दल खाण्डाखेडी ने की जिसके विशिष्ट अतिथि प्रो० कवल नैन थे।

शिविर मे कुल ५२ छात्रो ने भाग लिया। जिनकी भोजन व आवास व्यवस्था गुरुकुलीय वातावरण मे एक समान की गई। शिविर के दौरान स्वामी कीर्ति देव प० भरत लाल शास्त्री प्रिसिपल भगवान दास कैप्टन चौ० प्रताप सिह आर्य प० ओमकार नाथ शास्त्री भिवानी मा० जगदीश सैनी श्री देसराज आर्य रोहतक व श्री सोहन लाल भयाणा उप–प्रधान आर्यसमाज हासी आदि विद्वानो ने बौद्धिक कक्षाओ द्वारा बच्चो को वैदिक सिद्धान्त की जानकारी दी।

२ जून को शिविर का भव्य समापन समारोह आर्य कन्या विद्यालय हासी म किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि चौ० हरि सिह सैनी पूर्व मन्त्री हरियाणा सरकार अध्यक्षता श्री अमीर चन्द मक्कड पूर्व विधायक हासी विशिष्ट अतिथि डा० रमेश कुमार लीखा उप–प्रधान आर्यसमाज हिसार तथा प्रमुख वक्ता श्री वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री आर्यवीर दल हरियाणा व आचार्य विश्वमित्र शास्त्री हिसार थे। बच्चे को शिविर मे सिखाए गए करामात का विशाल प्रदर्शन दिखाया जिसे दर्शक टकटकी बाधकर देखते रहे।

वार्षिकोत्सव एव गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज भीमनगर गुडगाव हरियाणा का वार्षिकोत्सव एव गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनाक ६ मई से लेकर १२ मई तक अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्या डॉ० निष्ठा विद्यालकार के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रात एव साय दोनो सत्रो मे उनके प्रभावशाली एव मार्मिक प्रवचन हुए जिनको सुनने के लिए हजारो श्रोतागण उपस्थित हुए।

इसके अतिरिक्त स्वर सम्राट श्री वेगराज जी श्री योगेशदत्तार्य के भी सुन्दर सुमधुर भजनोपदेश हुए।

देश में एक धर्म, एक भाषा तथा एक शिक्षा की आवश्यकता

मधुपुर आर्यसमाज का ५२वा वार्षिकोत्सव जो दिनाक २३ मई से २६ मई तक मनाया गया। जिसमे वैदिक धर्म की आवश्यकता अन्धविश्वास धर्म एव सम्प्रदाय शिक्षा एव सस्कार तथा राष्ट्र–निर्माण से महत्वपूर्ण विषयो पर प्रकाश डाला गया तथा प्रचार–प्रसार हेतु उत्तर प्रदेश से कुवर महिपाल सिह भोजपुर से सियाराम निर्भय मुरादाबाद से प० ज्ञान प्रकाश शर्मा मुगेर से श्रीमती विजयावती आर्या तथा खगडिया से सुश्री ऋचायोगमयी एव योगाचार्य श्री नरेन्द्र जी ने वैदिक धर्म के आधार पर अपने प्रवचनो के माध्यम से मधुपुर के लोगो को चार दिनो तक सुबह यज्ञ तथा कीर्तन शाम मे उपदेश देकर भारत के स्वर्णिम भविष्य के लिए मधुपुर वासियो को धर्म एव शिक्षा तथा सस्कार की बात बताई।

विद्वानो ने कहा कि अगर भारतवासी सचमुच मे देशप्रेमी है तो वैदिक धर्म के सिद्धान्तो को अपनाना होगा क्योकि जबतक देश मे एक धर्म एक भाषा तथा एक शिक्षा नहीं हो जाती तब तक देश की एकता तथा अखण्डता स्वप्न मात्र होगा।

उपदेशको का यह भी कहना था कि कश्मीर से कन्याकुमारी को सगठित रखने के लिए लोगो को जाति और सम्प्रदाय की कलुषित भावना से ऊपर उठकर सोचना होगा तथा बच्चो मे शिक्षा एव सस्कार वैदिक धर्म के सिद्धान्तो के अनुरूप ढालना होगा।

– मन्त्री आर्यसमाज मधुपुर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 23 6 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C 3/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 20/21 6 2002

दिल्ली

जीवन में शक्ति पाने के लिए वाणी और हाथों के साथ मन की शुद्धि जरूरी

नई दिल्ली २६ ५ २००२ आर्यसमाज बी–ब्लाक जनकपुरी के वार्षिकोत्सव मे समापन–समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी ने कहा कि जीवन मे शाति पाने के लिए वाणी और हाथो के साथ मन की शुद्धि जरूरी है। सच्चे मन से निकली हुई मधुर वाणी आनन्द की अनुभूति कराती है और बिना विचारे बोली हुई कडवी बात झगडे का कारण बनती है। इसी प्रकार मनुष्य अपने हाथो से किसी का भला भी कर सकता है और शत्रुता भी मोल ले सकता है।

इस सत्सग मे स्वामी जीवनानन्द जी ने कहा कि मनुष्य जीवन की सार्थकता ईश्वर की भक्ति मे है। दान से भोग और सेवा से आयु की वृद्धि होती है। अच्छे कर्मों और शुद्ध आचरण से ही मन की शाति प्राप्त की जा सकती है।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बेगराज जी ने अपने सुमधुर गीतो से जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर आर्यसमाज बी–ब्लाक जनकपुरी द्वारा प्रकाशित एव डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया द्वारा सवादित पुस्तक 'मानव–निर्माण और आर्यसमाज का लोकार्पण स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। आर्यसमाज के विकास मे योगदान के लिए श्री विमल वर्मा श्री यशपाल श्रीमती वीरबाला एव श्रीमती सुभाष बत्रा का माल्यार्पण शाल और सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेट कर सम्मानित किया गया। स्वामी जीवनानन्द जी को भी स्त्री समाज की ओर से टेप रिकार्ड भेट किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप मे विधानसभा मे प्रतिपक्ष के नेता प्रो० जगदीश मुखी और निगम पार्षद् श्रीमती मीना ठाकुर उपस्थित थी। कार्यक्रम का सफल सयोजन सचालन आर्यसमाज के प्रधान प्रो० सुन्दरलाल कथूरिया ने तथा धन्यवाद समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

वार्षिकोत्सव एव वेद प्रचार समारोह २२ मई से २६ मई तक चला। १६ मई से २१ मई तक प्रभात फेरी का भी आयोजन किया गया। २३ मई को महिला सत्सग एव आर्य वीर सम्मेलन का भी अत्यन्त सफल आयोजन हुआ।

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें

प्रतिष्ठा मे
कुलाध्यक्ष
कुलय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ०प्र०)

उत्तर प्रदेश

वेद माता मनुष्यों को ऊपर उठने का उपदेश देती है

देहरादून २७ मई। मानव कल्याण केन्द्र राजपुर रोड देहरादून के वार्षिकोत्सव मे वेदोपदेश करते हुए आर्य जगत के वयोवृद्ध एव विख्यात सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि वेदमाता सभी मनुष्यो को ऊपर उठने का सन्देश देती है। उन्होने कहा कि आज का युग कम्प्यूटर का युग है जिसकी क्षमता एव स्मृति आश्चर्यजनक है परन्तु हमारे मस्तिष्क मे कम्प्यूटर से कहीं अधिक १२ अरब सैल है जिसके ५ से ६ प्रतिशत भाग का ही हम उपयोग करते है। उन्होने कहा कि मस्तिष्क के शेष भाग का प्रयोग नहीं हो पाता जबकि प्रयास कर हम अपनी बौद्धिक क्षमता को कहीं अधिक विकसित कर सकते हैं। स्वामी जगदीश्वरानन्द ने श्रोताओ को अपनी अदृश्य शक्तियो को जगाने का सकल्प लेने का आह्वान किया और कहा कि हर व्यक्ति कुछ करके तथा कुछ बन कर दिखाए। स्वामी जी ने आगे कहा कि सस्कृत से सरल ससार मे कोई भाषा नही है। अनेक उदाहरण देकर स्वामीजी ने सिद्ध किया कि सस्कृत अग्रेजी व ससार की अन्य सभी भाषाओ से समृद्ध है। आर्यसन्यासी ने बताया कि सस्कृत मे जल के ही १२६ पर्यायवाची शब्द है जबकि अग्रेजी मे मात्र एक या दो। इस विषय मे स्वामी जी ने अनेक प्रमाण देकर सस्कृत को ससार की सबसे समृद्ध भाषा सिद्ध किया।

आयोजन मे आर्यजगत् के विख्यात सन्यासी एव योगाचार्य स्वामी सत्यपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री डॉ० सुश्री अन्नपूर्णा डॉ० वेद प्रकाश गुप्ता भजनोपदेशक मच पर शोभायमान थे एव इन्हे सुनने हेतु स्थानीय आर्यजन एव देश के दूरस्थ स्थानो से अनेक आर्य नर–नारी पधारे थे।

– मनमोहन कुमार आर्य
सचालक

नैतिक शिक्षा शिविर एवं मन्त्रपाठ प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

बच्चो को होनहार अनुशासित वीर देशभक्त चरित्रवान तथा वैदिक सिद्धान्तो व सस्कारो का प्रशिक्षण देने हेतु आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान मे ७ वर्ष से १६ वर्ष की आयु के छात्रो के लिए नैतिक शिक्षा शिविर मन्त्रपाठ चित्रकला भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन दिनाक १६–६–२००२ से २३–६–२००२ तक किया जा रहा है।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे १६ जून को प्रात राष्ट्रकल्याण यज्ञ एव श्री विजयगुप्त जी द्वारा बच्चो के चहुमुखी विकास के लिए प्रेरक प्रवचन होगा। २३ जून को समापन समारोह एव पुरस्कार वितरण होगा। विभिन्न प्रतियोगिताओ मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रो को सुन्दर प्रमाण पत्र एव पुरस्कार दिया जाएगा। कार्यक्रम के अन्त मे ऋषिलगर का आयोजन किया गया है। समाज प्रधान डॉ० पुष्पलताजी के सानिध्य एव श्रीमती सरोजिनी सचदेव श्रीमती जनक चौधरी के सयोजकत्व में यह कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

– वेदव्रत शर्मा

श्री सुभाष गुप्त स्मृति तीरन्दाजी प्रतियोगिता एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का श्रेष्ठ प्रदर्शन

गुरुकुल प्रभाताश्रम मे गुरुकुल धनुर्विद्या सस्थान के प्रतिष्ठापक श्री सुभाष गुप्त का गतवर्ष जून को असामयिक निधन हो गया था। इस घटना के एक वर्ष पश्चात उनकी पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी स्मृति मे सुभाष गुप्त स्मृति तीरन्दाजी प्रतियोगिता का अभूतपूर्व विशाल भव्य आयोजन ४ व ५ जून को कैलाश प्रकाश क्रीडा प्रागण मेरठ मे किया गया।

इस प्रतियोगिता मे भाग लेने हेतु भारत के सभी मूर्धन्य तीरन्दाजो को आमन्त्रित किया गया था। इसमे पुरुष वर्ग तथा महिला वर्ग दोनो के ही तीरन्दाजो ने सहर्ष भाग लिया। प्रतियोगिता मे प्रथम द्वितीय तृतीय पुरस्कार दोनो वर्गों के लिए निर्धारित थे। प्रथम पुरस्कार ११ हजार द्वितीय ५ हजार तथा तृतीय पुरस्कार ३१ सौ रुपये के थे। पुरुष वर्ग के तीनो पुरस्कार गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी सत्यदेव प्रभात कैलाश ने जीते। पुरस्कार वितरण उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री के करकमलो द्वारा ६ जून को सायं ५ बजे किया गया। इस अवसर पर 'भारतीय तीरन्दाजी सघ' के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा एव 'उत्तर प्रदेश तीन्दाजी सघ के अध्यक्ष श्री कलराज मिश्र उपस्थित थे।

श्री महामहिम राज्यपाल ने भारत मे तीरन्दाजी की प्राचीनता पर प्रकाश डालते हुए भारत मे उत्तर प्रदेश को तीरन्दाजी के क्षेत्र मे शीर्ष स्थान पर पहुचाने के लिए सुभाष गुप्त के अमूल्य देन की प्रशसा की एव अनेक अन्तर्राष्ट्रीय क्रीडको के निर्माण मे उनकी महत्वपूर्ण भूमिका बतलायी और आशा व्यक्त की कि भविष्य मे ये खिलाडी ओलम्पिक में भारत को स्वर्ण पदक दिलाकर श्री सुभाष गुप्त को सच्ची श्रद्धाजलि समर्पित करेंगे। ✡

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का साकार रूप गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ मे इस वर्ष नव ब्रह्मचारियो के प्रवेशार्थ २६ ३० जून के दिनाको मे प्रात नौ बजे प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। प्रवेश–परीक्षा मे भाग लेने हेतु बालक की निम्न अल्पतम योग्यताओ की आवश्यकता होगी –

१ बालक की आयु ६–१० वर्ष हो।
२ पाचवीं कक्षा उत्तीर्ण हो।
३ शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो।

पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी (पूर्व प० बुद्धदेव विद्यालकार) द्वारा स्थापित गुरुकुल प्रभात आश्रम मे पूर्ण आर्ष पद्धति से वैदिक दिनचर्या का पालन होता है एव मानव की सर्वतोन्मुखी उन्नति मे सहायक शिक्षा नि शुल्क प्रदान की जाती है। गुरुकुल के नियमानुसार एक निश्चित योग्यता प्राप्त करने के उपरान्त ही विद्यार्थियो द्वारा उत्तर प्रदेश के सस्कृत परिषद् एव सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से परीक्षाए दिलायी जाती हैं। ✡

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ६ | ३० जून से ६ जुलाई २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ | सम्वत २०५६ | आ० कृ० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

नई शराब नीति के विरुद्ध प्रचण्ड प्रदर्शन

दिल्ली की काग्रेस सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति मे शराब की बिक्री को प्रोत्साहन देते हुए कई नई योजनाए प्रारम्भ करने की घोषणा से समूचे आर्यजगत मे रोष व्याप्त हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने तत्काल इस समस्या पर दिल्ली सभा तथा सार्वदेशिक सभा के अन्य अधिकारियो से विचार विमर्श करके २३ जून साय ४ बजे नई शराब नीति के विरोध मे व्यापक प्रदर्शन करने का निर्णय लिया।

२३ जून को प्रात ११ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक प्रारम्भ हुई जिसमे विभिन्न प्रान्तो से पधार आय नेताओ को भी इस प्रदशन मे भाग लने के लिए आमन्त्रित किया गया।

इससे पूर्व २१ जून को सायकाल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली राज्य की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित से मिला और उन्हे सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक विस्तृत ज्ञापन भी दिया। इस प्रतिनिधि मण्डल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शमा दिल्ली सभा के महामन्त्री वद्य इन्द्रदव श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजन्द्र दुर्गा श्री पतराम ागी श्री रवि बहल आदि शामिल थे। इस ज्ञापन पत्र मे उनसे इस शराब नीति को पूर्णत वापस लेने की माग की गई। इस बैठक मे काग्रेस के दो प्रमुख विधायक भी उपस्थित थे जो व्यक्तिश शराब की इस नई नीति क विरोधी माने जाते है। पूवमन्त्री डा० योगानन्द शास्त्री जो विशुद्व आर्य समाजी पृष्ठभूमि के है तथा मुख्यमन्त्री क ससदीय सचिव आर सनातन धमसभा पजाब क प्रमुख नत श्री रमाकान्त गोस्वामी भी उपस्थित थ।

शराब विरोधी आर्यसमाज के प्रचण्ड प्रदशन को बरियर लगाकर रोकने की कोशिश मे लगे पुलिस अधिकारी। उत्साहित आर्यजन बरियर का पार करते हुए।

आर्यजनता का नेतृत्व करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान क० देवरत्न आर्य। साथ म बाए से श्री वेदव्रत शर्मा आर्यतपस्वी सुखदेव श्री विमल वधावन श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव श्री वाचोनिधि आर्य आदि। प्रचण्ड प्रदर्शन मे अग्रसर होती आर्य महिलाए।

इस बैठक मे मुख्यमन्त्री ने कइ बिन्दुओ पर विस्तृत चर्चा आर्यनेताओ से की और कहा कि वे शीघ्र ही अपनी कैबिनेट बैठक मे इस पर पुन विचार विमर्श करवाएगी।

शेष पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

नई शराब नीति के विरुद्ध प्रचण्ड प्रदर्शन

अगले दिन २२ जून २००२ को साय काल मुख्य मन्त्री के हस्ताक्षरो से युक्त एक पत्र सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी को भेजा गया जिसम उन्होने कहा कि नई आबकारी नीति पर सहानुभूति पूवक गम्भीरता स विचार कर रही हे।

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार २३ जून को साय ४ बजे आई०टी०ओ० के निकट शहीद भगत सिह पार्क पर हजारा की सख्या मे दिल्ली के आर्यजन एकत्र हुए ओर कै० देवरत्न आर्य जी के नेतृत्व मे मुख्य मन्त्री निवास की ओर अग्रसर होने लगे तो ५० कदम की दूरी पर पुलिस ने बडे जबरदस्त बैरियर लगाकर प्रदर्शन यात्रा को रोका। परन्तु शराब विरोधी आर्यो का उत्साह रुकने वाला नही था। बैरियर को जबरदस्ती पार करके आर्यजन आगे बढे तो आधा कि०मी० चलने के बाद पुन बैरियर लगाकर आर्यजनो को रोकने का प्रयास किया गया। परन्तु यह दूसरा प्रयास भी विफल रहा। आर्यजन शराब विरोधी नारे लगाते हुए तपती गर्मी मे मुख्यमन्त्री निवास की ओर बढते रहे।

मुख्यमन्त्री निवास के समक्ष पहुचते ही सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यजनो को नईशराब नीति के विस्तृत और आपत्तिजनक पहलुओ की जानकारी दी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि शराब की बिक्री को प्रोत्साहन दना एक महिला मुख्यमन्त्री को शोभा नही देता। उन्होने आर्यजनो को मुख्यमन्त्री के साथ हुई बेठक क ब्योरे से अवगत कराया। उन्होने कहा कि मुख्यमन्त्री द्वारा नई आबकारी नीति पर पुनर्विचार का आश्वासन स्वागत योग्य है।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने जनसभा के समक्ष वह सारा ज्ञापन पत्र पढकर सुनाया जो उन्होने सार्वदेशिक सभा की तरफ से तैयार करके मुख्यमन्त्री को दिया था। उन्होने कहा कि मुख्यमन्त्री का पत्र मिलने से बेशक आर्यजनो को कुछ सन्तोष हुआ है परन्तु यदि मुख्यमन्त्री ने अपने इस आश्वासन का पालन नही किया तो आर्यजन इस शराब नीति क विरुद्ध और भी अधिक प्रचण्ड प्रदर्शन करेगे और यह विरोध गली गली और शहर शहर मे गूजेगा।

प्रदर्शन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान ओर हरियाणा सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा श्री वाचोनिधि आर्य श्री आनन्दकुमार आर्य श्री द।ल। । आर्य तपस्वी श्री सुखदेव तथा कइ अन्य अधिकारी सर्वश्री राव हरिश्चन्द्र कल्याण देव सु०ब० काल (महा०) गुरुकुल कागडी के नए कुलपति प्रि० स्वतन्त्रकुमार आचार्य वेदप्रकाश जी डॉ० राजकुमार रावत रामनाथ सहगल श्रीमती शकुन्तला आर्या श्री सोमदत्त महाजन श्री धर्मपाल आय श्री विनय आर्य आदि सहित कई अन्य आर्यजन भी उपस्थित थे।

प्रदर्शन मे शामिल आर्यजनो को सम्बाधित करते हुए क० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा। आयजनो मे नारो के माध्यम से सचार करते श्री इन्द कुमार महता।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव ने दिल्ली के विभिन्न हिस्सो से पधारे आर्यजनो के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस प्रदर्शन मे विकास पुरी क्षेत्र से श्री रामजीलाल गोयल बी० ब्लाक जनक पुरी से श्रीमती विमला मलिक सागरपुर से श्री सुखवीर एव प० विजय गुप्ता श्री सतेन्द्र मिश्र श्री नरेन्द्र आर्य श्री रैली जी श्री शान्तिलाल पश्चिम बिहार से श्री लाम्बा जी आदि अन्य आर्यजनो सहित विशेष रूप से पधारे।

आर्यवीर दल तथा गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भी बहुत बडी सख्या मे इस प्रदर्शन मे शामिल हुए।

जनजागरण द्वारा ही नशे से मुक्ति संभव

नयी दिल्ली ११ जून (स स)। केन्द्रीय मत्री विजय गोयल ने आज अपने निवास पर आयोजित समारोह मे नशा विरोधी कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होने कहा कि लॉटरी शराब व गुटखा आदि समाजिक बुराइयो से देश को मुक्त कराने के लिए युवा पीढी आगे आये। उन्होने कहा कि जन जागरण अभियान चलाकर ही नशे व सामाजिक बुराइयो पर अकुश लगाया जा सकता है।

श्री गोयल ने पत्रकार चद्रमोहन आर्य की 'मानव ! तू दानव मत बन तथा आजादी के दीवाने सचित्र पुस्तको का लोकार्पण भी किया।

नशा विरोधी कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल मानव ! तू दानव मत बन व आजादी के दीवाने पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए। उनके साथ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजन

कार्यक्रम आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा नागरिक युवा सघर्ष मोर्चा ने मिलकर किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन आर्य सन्यासी स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती भी मौजूद थे।

आर्यसमाज बाकनेर दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान – श्री मागेराम आर्य
मन्त्री – श्री मेहरलाल पवार
कोषाध्यक्ष – श्री हवा सिह

शराब नीति के विरुद्ध मुख्यमन्त्री को दिया गया ज्ञापन-पत्र

माननीया श्रीमती शीला दीक्षित जी
मुख्यमन्त्री, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र,
दिल्ली सरकार

सादर नमस्ते।

यह ज्ञापन-पत्र आर्यसमाजो की सर्वोच्च विश्व स्तरीय सस्था **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** की ओर से आपकी सेवा मे इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है कि आप अपने नेतृत्व मे चल रही दिल्ली राज्य की सरकार की ओर से शराब बिक्री मे वृद्धि के लिए घोषित नई शराब नीति को लागू न करने की घोषणा करके भारत की समूची जनता के मान–सम्मान की पात्र बनेगी।

नई आबकारी नीति –

दिल्ली की समूची धर्मप्रेमी जनता को एक महिला मुख्यमन्त्री के नेतृत्व मे चल रही सरकार द्वारा घोषित नीति के कुछ विशेष पहलुओ को सुनकर रोष व्याप्त हुआ है। इस नई आबकारी नीति मे निम्न मुख्य बिन्दु विशेषरूप से ये धर्मप्रेमी जनता के विरोध का कारण हैं–

१. प्रत्येक डिपार्टमेण्टल स्टोर पर भी मिल सकेगी शराब;
२. टेलीफोन से आर्डर पर भी उपलब्ध हो सकेगी शराब;
३. बैंकट हाल तथा फार्म-हाउस में शराब पिलाने की खुली छूट;
४. शराब की दुकानों में एक सौ प्रतिशत वृद्धि;
५. शराब की दुकान खोलने हेतु क्षेत्रीय विधायक की अनुमति का नियम समाप्त;
६. अधिक शराब खरीदने पर आकर्षक उपहार।

संवैधानिक स्थिति –

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद ४७** का उल्लेख इस प्रकार है –

"पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा लोक स्वास्थ्य का सुधार करने का राज्य का कर्तव्य – राज्य, अपने लोगों के पोषाहार, स्तर और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों में मानेगा और राज्य, विशिष्टतया, मादक पेयों, और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के, औषधीय प्रयोजनों से भिन्न, उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।"

इस प्रावधान का **राज्य के नीति निर्देशक तत्वों** मे उल्लेख किया गया है। राज्य के नीति निर्देशक तत्वो के पीछे सविधान निर्माताओ की भावना यह थी कि प्रत्येक राज्य अपनी नीतियो का निर्माण करते समय इन निर्देशो का विशेष रूप से ध्यान रखे। इन्हे समाज मे सुख–समृद्धि और शान्ति की स्थापना के लिए परमावश्यक समझा गया था।

नई शराब नीति के दुष्परिणाम –

भारतीय सविधान के तहत व्यक्त किए गए उपरोक्त नीति निर्देशक तत्वो की अवहेलना करके आपकी सरकार ने जिस प्रकार यह नई शराब नीति घोषित की है उसके निम्न दुष्परिणाम समाज के सामने आएगे –

१. शराब की बिक्री को बढ़ाने से भारत की मूल सभ्यता और संस्कृति को विनाश की ओर ले जाना साबित होगा। एक महिला मुख्यमन्त्री होने के नाते इस विनाश लीला की आप मुखिया न बनें।

२. शराब की बिक्री बढ़ने से समाज में अपराध की दर बढ़ेगी और सामाजिक अशान्ति का माहौल उत्पन्न होगा। इसकी जिम्मेवारी एक महिला मुख्यमन्त्री की हो, ऐसा भारतीय इतिहास में शोभाजनक नहीं होगा।

३. शराब की बिक्री बढने से केवल छोटे-मोटे अपराध ही नहीं, बल्कि हत्याओं का प्रतिशत भी बढेगा। महिलाओ के सुहाग उजडने का महापाप एक महिला मुख्यमन्त्री को अपने सिर पर नहीं लेना चाहिए।

४. शराब की बिक्री बढने से और विशेष रूप से डिपार्टमेण्टल दुकानों पर उपलब्ध होने से इसका प्रयोग कम उम्र के नवयुवको में भी सुगम होगा। परिणामतः शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट का श्रेय माता के तुल्य महिला मुख्यमन्त्री के रूप में आपको नहीं लेना चाहिए।

५. जब व्यक्ति शराब का प्रयोग अधिक करने लगता है तो परस्त्रियो के साथ योनाचार तथा अपनी स्त्रियों पर अत्याचार के मामलों में भी अनुपातिक वृद्धि होती है, जितनी राशि शराब की बिक्री से प्राप्त होगी, उससे अधिक राशि का व्यय सरकार को प्रशासन पुलिस, न्याय व्यवस्था और चिकित्सा पर करना पडेगा। क्या सरकार के इन तथाकथित विशेषज्ञों ने यह सारे आंकलन सामूहिक रूप में स्वयं विचार कर किए हैं, या उनसे आपको अवगत कराया है ?

६. शराब की बिक्री बढाने के पीछे जो लोग राजस्व में वृद्धि के तथ्य और आंकडे बनाकर प्रस्तुत कर रहे हैं, वे भविष्य में इसी प्रकार के नए तथ्य और आंकडे प्रस्तुत करते हुए सैक्स व्यापार (व्यभिचार) को अधिकृत करने के प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे, तो ऐसी प्रवृत्तियों को किस प्रकार रोका जाएगा ?

७. आप मुख्यमन्त्री के रूप में सरकार चलाने के अतिरिक्त, उस अखिल भारतीय कांग्रेस की भी राष्ट्रीय नेता हैं, जिसका नेतृत्व वर्तमान समय में श्रीमती सोनिया गांधी कर रही हैं, जिनकी महात्मा गांधी के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था एव अटूट विश्वास है। क्या आपकी कांग्रेस पार्टी एक राजनीतिक दल के रूप में आपके इस प्रकार शराब बिक्री में वृद्धि के प्रयासों को मान्यता देगी ? क्या इस प्रकार शराब बिक्री में वृद्धि और अन्य सुविधाओं का आश्वासन आपकी पार्टी ने कभी भी अपने चुनाव घोषणा-पत्रों के द्वारा प्रचार में अपने मतदाताओं को दिया है ?

८. शराब की इस प्रकार खुली बिक्री और वृद्धि की बात की नीति को लेकर व्यापक हिन्दू जनता ही नहीं अपितु जैन, बौद्ध, सिख और यहां तक कि मुसलमानों में भी रोष व्याप्त है। क्या आपकी सरकार के नीतिकारों ने प्रजातन्त्र के मुख्य आधार वोट के आंकडों को भी आपके समक्ष प्रस्तुत किया है ?

निष्कर्ष एवं निवदेन –

आपकी सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति का निष्कर्ष दिल्ली की समूची धर्मप्रेमी जनता ने उपरोक्त आपत्तियो और सुझावो के रूप मे व्यक्त करते हुए यह सकल्प किया है कि इस शराब नीति के विरोध मे कैसा भी बलिदान क्यो न देना पडे परन्तु भारत के भविष्य को शराब की आग मे जलने नहीं दिया जा सकता। समूची धर्मप्रेमी जनता इस बात पर अडिग है कि यदि सरकार इस शराब नीति को तत्काल वापस नही लेती तो दिल्ली मे इसके विरुद्ध व्यापक एव प्रचण्ड आन्दोलन प्रारम्भ किया जाएगा। उस अवस्था मे समाज की रचनात्मक शक्ति को इस प्रकार के आन्दोलन मे झोकने की जिम्मेवारी आप पर ही होगी। जिसका परिणाम अनचाहे आपकी राजनीतिक पार्टी **अखिल भारतीय कांग्रेस** को भी भुगतना पडेगा।

उपरोक्त के सन्दर्भ मे आपसे समूचा आर्य जगत साग्रह यह प्रार्थना करता है कि अपनी सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति को तुरन्त रद्द करके सारे दिल्लीवासियो के शुभाशीर्वाद की पात्र बने।

निवेदक

कै० देवरत्न आर्य	**विमल वधावन**	**जगदीश आर्य**	**वैद्य इन्द्रदेव**	**वेदव्रत शर्मा**
सभा प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	महामन्त्री – दिल्ली सभा	सभा मन्त्री

आइए ! प्रसन्नतापूर्वक आर्यसमाज की सेवा में जुटें

यह पढकर प्रसन्नता और सतोष हुआ कि गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन सफल हुआ। गुरुकुल कागडी की जमीन बेचने न किसी को अधिकार है और न किसी भी दशा मे एक सच्चा आर्यसमाजी और ऋषि दयानन्द का भक्त इसे स्वीकार कर सकता है। आर्यसमाज मे खराबी आ गयी है ओर इसे जितना जल्दी दूर किया जाए समाज की उन्नति के लिए अच्छा है। आर्यसमाज की नींव त्याग पर खडी है ओर स्वार्थ समाज का सब से बडा शत्रु है। आर्यसमाज की उन्नति महात्मा मुशीराम हसराज लाजपतराय प० लेखराम महाशय राजपाल आदि त्यागी महापुरुषो के त्याग से हुई है। महात्मा नारायण स्वामी जी के समय तक आयसमाज भारत मे एक शक्ति थी। इसके बाद आर्यसमाज मे कुछ शिथिलता आने लगी। श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने आर्यसमाज की गिरती अवस्था को थामने की कोशिश की पर उन्हे भी हटाने के लिए बदनाम किया गया। इस दुख से कुछ दिनो के बाद स्वामी आनन्दबोध का देहान्त हो गया। जब पूछा गया कि किसने और क्यो इस त्यागी पुरुष को बदनाम किया ? तो सार्वदेशिक सभा के मन्त्री ने कहा कि छोटे लोगो की सख्या आर्यसमाज मे अधिक है इसलिए उनका कहना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा की बागडोर उनके हाथ मे होनी चाहिए। यही आर्यसमाज की सब से बडी कमजोरी है – 'पदलोलुपता'।

इसका मुख्य कारण है कि हमने लोगो को आर्यसमाज का सदस्य तो बनाया परन्तु उनको पक्का नहीं बनाया। ईसाई मुसलमान बचपन ही मे अनिवार्य रूप से हर एक बच्चे के दिमाग मे रटा रटा कर अपनी मजहबी शिक्षा भर कर पक्का इसाई मुसलमान बना देते हैं। यही कारण है कि मोक्षमूलर आइन्सटाइन सर सय्यद अबुल कलाम आजाद आदि समझदार लोग यह जानते हुए कि उनका मजहब विज्ञान के विरुद्ध है पर इसका मोह न छोड सके। हम यह नहीं कहते कि अपने धर्म की बाते रटाकर अपने बच्चों को पक्का आर्यसमाजी बनाना चाहिए। प्रश्नोत्तर द्वारा बच्चो को शिक्षा देकर उन्हें सत्य असत्य सम्भव असम्भव और भले बुरे का ज्ञान कराना चाहिए ताकि कोई विधर्मी उन्हें स्वर्ग जन्नत हूरे गिलमन आदि का प्रलोभन देकर धर्म भ्रष्ट न कर सके। महर्षि दयानन्द ने प्रश्नोत्तर द्वारा शिक्षा देने की एक झलक भी दी है। प्रश्नो द्वारा बच्चों को जिज्ञासा जगा कर उनमे विवेक बुद्धि भी पैदा करनी चाहिए। इसके लिए योजना बनाकर काम आरम्भ करना चाहिए। यदि गाव या नगर के मुहल्ले मे कोई त्यागी श्रद्धालु आर्य बच्चों को शिक्षित करने के लिए तैयार हो जाएगा तो यह काम तुरन्त समाज भवन गाव के किसी खाली घर या अपने ही घरके एक कमरे मे शाम को बच्चो को इकटठा करके किया जा सकता है। तभी हमारे बच्चे अच्छे मनुष्य और सच्चे आर्य समाजी बन सकगे। एस दखन मे यह साधारण काम लगता है परन्तु इससे देश जाति धर्म और हमारी भावी पीढी के लिए बहुत लाभ होगा। घर घर मे सध्या हवन होने से वातावरण वेदमत्रो और यज्ञ के धुए से पवित्र होगा। मा बाप भी आर्यसमाज की ओर आकर्षित होंगे और लोक सग्रह से आर्यसमाज की शक्ति बढेगी। पढने की आदत पढने से हमारे युवक युवतिया दुर्व्यसन मे नहीं पडेगे और सिगरेट सिनेमा और शराब में पैसा खर्च करने के बदले पुस्तक खरीद कर स्वाध्याय करने लग जाएगे। स्वाध्याय करने से उनका लोक और परलोक दोनों बन जाएगे। इन बालकों ही में से मुशीराम हसराज आदि जैसे महात्मा खडे हो सकते हैं।

अब रही आर्यसमाज में फूट की बीमारी यदि किसी को आर्यसमाजी बनाने से पहले उसे सध्या हवन के मत्रो के साथ आर्यसमाज के नियमो को ठीक से सिखा कर उससे इनके अनुसार बर्ताव करने की प्रतिज्ञा करवायी जाय तो कभी फूट पैदा होने की सम्भावना ही नहीं। फूट का कारण है – राग द्वेष लोभ ईर्ष्या अहकार आदि। एक सच्चे आर्य को किसी से द्वेष करने का अधिकार नहीं क्योकि सध्या करते समय हम बोलते हैं – **योस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म '।**

यदि आर्यसमाज के नियमों पर ध्यान दिया जाय तो न केवल आर्यसमाज का बल्कि ससार मे सब झगडे समाप्त हो कर ससार का उद्धार हो जाएगा। ससार मे हमला लडाई झगड के दो मुख्य कारण हे एक स्वार्थ के लिए हमला कर के दूसरे का धन जमीन आदि पर अधिकार करने के लिए और दूसरा मजहब के कारण।

शेष पृष्ठ ११ पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता हेतु आर्यो को धन्यवाद

मेरा आर्यो क महासम्मेलन मे जाने का प्रथम सुअवसर था। उस महासम्मेलन को देखकर अपार हर्ष हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रातनिधि सभा के अध्यक्ष केप्टन श्री देवरत्न जी आर्य के दर्शन प्रथम बार हुए परन्तु दुख हुआ कि उनस नमस्ते व [illegible]यवाद कहने का सुअवसर प्राप्त न हो सका। उनकी सादगी उच्च विचार [illegible]कृष्ट व्यवहार वृद्धो बडो सन्यासियो तथा विद्वानो का आदर सत्कार करना त्याग की मूर्ति आयसमाज के प्रति एक विशेष दर्द दयानन्द के मिशन का उच्चतम शिखर तक पहुचाने हेतु दृढ सकल्प वर्तमान म कुछ स्वार्थी लागो द्वारा आर्यसमाज व दयानन्द के सकल्पो को दूषित करने वालो से आते दुखी तथा पूरे आर्यो का सावधान रहने की अपील वाणी प्रखर ओजपूर्ण पूरे दिनो म समरस न हार म और न जीते से शान्त परन्तु गम्भीर। इस महात्मा को देखकर कभी कभी श्रद्धा से दिल भर आता था। ऐसे [illegible] के धनी यदि आर्यसमाज की सर्वोच्च सरणी के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं तो इसम कोई हैरानी की बात नहीं। यह तो परमात्मा की अनुकम्पा [illegible] र्षि दयानन्द का सकल्प व [illegible] न कदम।

[illegible] उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के जो [illegible] सम्मेलन के महासचालक थ। आपने बढ ही [illegible] निष्ठा पूरे समय उपस्थित रहकर ऐसा अनुशासन सचालन किया कि कोई गतिरोध देखने को नहीं मिला। [illegible] इतना सुव्यवस्थित [illegible] के मन प्रसन्न हो गया। आपके मृदुल [illegible] ता सचालन को सवार ही [illegible] पर मगरूर हो गया कि कब तो आप लोग भोजन करते होगे कब नींद से पलको की थकान मिटाते होगे। एक वे लोग भी होते हैं जो भोजन न मिले थाडा आराम न मिले तो हाय तोबा मचा देते हैं। यदि इतने बडे सम्मेलन म काइ त्रुटि हो गयी ता आसमान सर पर उठा लेते ह। सारे कार्यक्रम म आपको दखकर आश्चय हुआ। एक बार एक वृद्धा को कुछ कहना था ता आपने उनको एक किनारे पर आने का इशारा किया वे आइ आपने अपना कान उनके मुख पर लगाकर उनकी बाते बडे धैय से सुनी। आपके चेहर पर किसी भी प्रकार की न सिकुडन ओर न नाराजी ही प्रकट हुई। सगीत का कार्यक्रम था तो आपने तबला स्वय लाकर उनके पास रख दिया। किसी और स नहीं कहा। आपका सरल स्वभाव आकर्षित कर रहा था। आर्यसमाज के प्रति आपकी कृतज्ञता दृढ सकल्प एक सिपाही बनकर महर्षि के सकल्पो को पूर्ण करने का व्रत और आर्यो का आवाहन आपकी पहचान हो गयी है।

मै अपनी ओर से आप महाशयो का हार्दिक धन्यवाद करता हू तथा उन सभी महानुभावो को धन्यवाद दता हू जिन्होने सम्मलन की सफलता हतु अपने तन मन धन से रात दिन एक करके व्यवस्था को बनाये रखा तथा अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। आपन महर्षि दयानन्द के सकल्पो को पूर्ण करन का जो बीडा उठाया है उसको प्रगति और पूणता की ओर ले जाने मे परमपिता परमात्मा सदा साथ दे। परमपिता परमात्मा आप सभी को दीर्घ सुदीर्घ स्वस्थ सुन्दर आयु प्रदान करे। यही शुभ कामना है।

अम्बाराम आर्य
पौढी गढवाल (उत्तराचल)

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एक शिक्षा और प्रेरणा

आदरणीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य हम आपको ओर सार्वदेशिक सभा के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हें कि इस गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने म आपने जो तन मन धन और सुन्दर सुझावो प्रदान किए। यह आय महासम्मेलन हमारे लिए नई व त्यागमयी प्रेरणाओ की मशाल बनी ओर यह मशाल समस्त भारत वष क आर्यो के लिए प्रकाशित होगी ऐसी भावना है। श्रद्धेय श्री कैप्टन साहब आपके इस कर्तव्य कर्म को और ऋषि के स्वप्न को पूरा करने की लगन को देखकर ऐसा अनुभव होता है कि –

सूर्य की शोभा आसमान से नहीं
उसके प्रकाश से होती है।
पुष्प की प्रतिष्ठा उद्यान से नहीं
उसके व्यवहार से होती है।
मानव की महिमा उसके चेहरे से नहीं
उसके प्रयास से होती है।

माननीय कैप्टन जी आप समस्त आर्य जगत के लिए एक सूर्य रूपी आशा की किरण हैं।

उद्यम, साहस, धेर्यम, शक्ति विद्या पराक्रम एते, शत यत्र देव सहायक

मेहनत साहस धैर्य, शक्ति विद्या ओर पराक्रम यह छे जहा होते हैं। वहा देवता भी सहायक होते हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि देवता ही नहीं सर्वेश्वर परमात्मा का भी आशीर्वाद आपके साथ है।

कैप्टन साहब आपके योजनाबद्ध कार्यो से हम आर्यवीर दल को भी शिक्षा एव प्रेरणा मिली। आदरणीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य आपसे अनुरोध है कि कभी भ्रमण विचार से दवास अवश्य पधारे बडी प्रसन्नता होगी। दवास की जनता भी आर्यसमाज के सार्वदेशिक अन्तर्राष्ट्रीय नेता से परिचित हो सकेगी आगे हमारा सौभाग्य।

धन्यवाद।

आपका सुनील आर्य
आर्यसमाज देवास, मध्य प्रदेश

नमस्ते जी ! नमस्ते जी !!

– देव नारायण भारद्वाज

अभिवादन नमस्ते करने की विधि का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इस सम्बन्ध मे विष्णुस्मृतिकार लिखते है मनुष्य जन्मभर मनसा वाचा कर्मणा जो धर्माचरण करता है एक हाथ से अभिवादन नमस्ते करने से यह सब निष्फल हो जाता है। इस कथन मे भले अतिशयोक्ति हो किन्तु इससे उचित विधि से नमस्ते करने की प्रेरणा तो मिलती ही है। स्मृतिकार का अभिप्राय है कि सर्वदा दोनो हाथ जोड कर किंचित नतमस्तक होकर नमस्ते करनी चाहिए। एक हाथ उठाकर नहीं। इसका भाव यह है कि आप अपनी बुद्धि युक्ति से हाथो की शक्ति से एव हृदय की अनुरक्ति से दूसरे के प्रति स्वागत सत्कार आदर शुभकामना या आशीर्वाद प्रकट कर रहे है।

आप कह सकते हैं कि अभिवादन नमस्ते को कौन नहीं जानता है यह तो सर्वत्र प्रचलित है। मिलते बिछुडते सभी नमस्ते कहकर एक दूसरे के प्रति सम्मान एव शुभ कामना प्रकट करते हैं। पहले भी इस पर बहुत लिखा जा चुका है। फिर आपको लिखने की आवश्यकता क्यो पड गई है ? आप का कहना सही है। मैं भी इस पर लिखना नही चाहता था पर क्या करे ? हमारे महानगर मे एक सिद्धहस्त भागवत–रामायण के कथावाचक मित्र रामायणी जी हैं जो धार्मिक पुस्तको एव वस्तुओ का व्यवसाय भी करते हैं। एक दिन मैं यात्रा प्रयोजनार्थ ताम्र यज्ञकुण्ड लेने उनके पास पहुचा। उनको मैंने नमस्ते निवेदित किया उन्होने भी नमस्ते कहकर उत्तर दिया आगे जय जय श्रीराधे भी बोल दिया। प्रेमपूर्वक वार्ता के बाद यज्ञकुण्ड मैंने क्रय कर लिया तभी उन्होने मेरे समक्ष एक पुस्तक और बढा दी – 'हिन्दू मान्यताओ का वैज्ञानिक आधार (सस्करण २००२)। मैंने उसके पृष्ठो को यत्रतत्र उलट पलट कर देखा और वापस कर दिया। घर आकर उस पुस्तक का एक विषय मुझे रह रह कर कचोटने लगा। रात्रि मे भी मै उसी विषय पर सोचता रहा और प्रात काल को जब मै उसे भुला नहीं सका तो दुबारा जाकर मुझे वह पुस्तक क्रय करके लानी ही पडी। इस पुस्तक के लेखक – दैवज्ञ शिरोमणि डा० भोजराज द्विवेदी एम०ए० पी०एच०डी० डीलिट हैं।

ग्रन्थकार ने पुस्तक का अत्यन्त श्रम एव योग्यता के साथ प्रणयन किया है जो प्रशसनीय एव ज्ञानवर्द्धक है। ये यद्यपि आर्यसमाजियो का सही स्वरूप तो प्रस्तुत नहीं कर सके हैं किन्तु कोई दुर्भावना भी प्रकट नहीं की है। हा उन्होने पुस्तक के पृष्ठ स० ७६ एव ८० पर नमस्ते के विषय मे दो प्रश्न उठा कर जो समाधान किए हैं वे अपूर्ण व अनावश्यक अवश्य प्रतीत होते हैं। उन्होने प्रश्न सख्या २४० नमस्ते कहना भी व्यावहारिक नहीं ? का उत्तर इस प्रकार दिया है। आर्यसमाजियो ने एक दूसरे का अभिवादन करने हेतु 'नमस्ते शब्द का प्रचलन प्रारम्भ किया। सस्कृत के व्यावहारिक ज्ञान की अनभिज्ञता के कारण ही ऐसा हुआ है। 'नमस्ते नम और 'ते' इन दो शब्दों के योग से बना है। नम का अर्थ है नमना–झुकना सिर नीचे करना और 'ते' का अर्थ है तेरे लिए। 'ते युष्मत शब्द की चुतर्थी का एक वचन है। जिसका हिन्दी में अर्थ होता है 'तू'। वास्तव मे पुत्र के सामने माता–पिता शिष्य के सामने गुरु और पत्नी के सामने पति का सिर झुकाना व्यवहार के विपरीत एव अशुभ माना जाता है। फिर भारतीय सस्कृति मे वृद्ध को 'तू' कहना उसे जीवित मार डालने के समान अक्षम्य अपराध है। आगे प्रश्न सख्या २४१ यदि ऐसा है तो वेद एव सस्कृत साहित्य मे अनेक जगह नमस्ते शब्द का प्रयोग क्यो हुआ ? उनके द्वारा लिखित उत्तर दृष्टव्य है – 'उपरोक्त लोक व्यवहार मे केवल ईश्वर इसका अपवाद है। आप अत्यधिक आत्मीयता के कारण ईश्वर को तू कह सकते है। कहा भी है – बाल्यावस्था मे अबोध पुत्रो द्वारा प्रेम–प्रणय काल मे प्रियतमा के द्वारा स्तुतिपाठ मे कवियो द्वारा और रणागण मे योद्धाओ द्वारा तू कहा जाना ही प्रशस्त है।

आइए ! इन प्रश्नोत्तरो की समीक्षा कर ले। पहले तो प्रथम प्रश्नोत्तर मे उठी समस्या का समाधान दूसरे प्रश्नोत्तर से ही हो जाता है। जैसे अग्रेजी के यू एव योयर्स शब्दो का हिन्दी मे रूपान्तर करते समय छोटे–बडे का ध्यान रखते हुए हम तू एव तेरा तथा आप एव आपका प्रयोग करते हैं वैसे ही सस्कृत के 'ते शब्द का प्रसगानुसार 'तेरे लिए तथा आप के लिए प्रयोग करते हैं। अभिवादन के समय छोटे–बडे दोनो को ही अपने सिर को स्वामाविक रूप से झुकाना पडता है। यदि कोई किसी बडे के सामने झुका खडा होगा तो उसके सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखने के लिए बडे को भी किंचित झुकना ही पडेगा वह और अधिक तन के तो खडा हो नहीं सकता। ऐसा करना सामान्य सौजन्य के अनुकूल भी नहीं है। 'ते – तेरे लिए अपने से छोटे के प्रति प्रयोग मे यदि कोई कठिनाई नहीं है तथा ते ऊचे से ऊचे परमात्मा के लिए प्रयोग कर सकते हैं तो अपने से बडे के प्रति क्यो नहीं कर सकते हैं ? वहा पर 'ते हिन्दी मे 'तेरे लिए नहीं आपके लिए व्यवहृत होगा। विश्व के देश–देशान्तर मे भारत के प्रान्त–प्रान्तर मे भाषा के भेदभाव बिना धर्म–सम्प्रदाय की सीमा रेखाओ को लाघकर अब अभिवादन के रूप मे सर्वत्र नमस्ते का प्रयोग होता है। इस उपलब्धि के लिए ग्रन्थकार ने जो आर्यसमाजियो को श्रेय दिया है एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं किन्तु आर्यसमाजियो ने इसका श्रेय स्वय न लेकर भारत के प्राचीन वेद–शास्त्र एव ऋषि–मुनियो को ही दिया है। अब नमस्ते की चर्चा छिड गई है तो आर्यजगत के तपोनिष्ठ सन्यासी पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती से इस विषय मे कुछ और ज्ञान लाभ करते हैं। उन्होने तो अभिवादन नमस्ते ही क्यो पुस्तक लिखकर हम लोगो का स्थायी मार्गदर्शन कर दिया है। आगे की पक्तियो मे इसी पुस्तक के सार का उपहार आप को समर्पित है।

देखिए ! नमस्ते न तो अकेले आर्यसमाज का है और न ही आज तक किसी आर्यसमाजी ने ऐसा कहा। हम तो डके की चोट पर कहते है बलपूर्वक यह घोषणा करते है कि जैसे सूर्य चन्द्र अग्नि जल वायु पृथ्वी औषधि वनस्पति आदि प्रभु रचित पदार्थ सबके लिए है वैसे ही ब्रह्म–उपदिष्ट अभिवादन प्रत्यभिवादन के लिए वेद प्रतिपादित नमस्ते भी सबके लिए है। इसका ससार के किसी सम्प्रदाय से कोई सम्बन्ध न कभी था और न अब है। कुछ वर्ष पूर्व अमेरिका के प्रसिद्ध नगर सानफ्रासिस्को मे हुए अन्तर्राष्ट्रीय सर्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर सर्वप्रथम हुए बात पर विचार किया गया कि सम्मेलन के दिनो मे परस्पर सर्वसम्मत अभिवादन का प्रयोग किया जाए। सब धर्मों के प्रतिनिधियो ने अपने अपने अभिवादन पदो की प्रशसा एवं विशेषताओ पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज के प्रतिनिधि श्री प० अयोध्या प्रसादजी के द्वारा प्रस्तुत व्याख्या को सुनकर लोगो को नमस्ते इतना प्रिय लगा कि सर्वसम्मति से इसे परस्पर अभिवादन के लिए अपनाया गया। अमेरिका यात्रा के मध्य नेहरू जी एक विद्यालय मे गए तो बालको ने उनका अभिवादन नमस्ते कहकर किया। बच्चो के इस अभिवादन से स्वय नेहरू जी भी प्रभावित हुए और स्वदेश लौटने पर मुम्बई हवाई अड्डे पर स्वागतार्थ उपस्थित जन समूह का उन्होने नमस्ते के द्वारा ही अभिवादन किया। जब प० नेहरु रूस की यात्रा पर गए थे ता वहा स्थान स्थान पर नमस्ते एव स्वागतम की पटिटकाए लगाकर उनका स्वागत किया गया था। रूस के प्रधानमन्त्री खुश्चेव व प्रधान बुलगानिन चीन के प्रधान मन्त्री चाउ एन लाई ने भारत यात्रा के समय नमस्ते अभिवादन का प्रयोग किया था। व्यावहारिक रूप से भारतीय राजदूत विदेशो मे विशेष अवसरो पर नमस्ते का ही प्रयोग करते हैं।

स्वामी जी ने विस्तार पूर्वक बताया है कि ब्रह्मा विष्णु शिव राम कृष्ण हनुमान याज्ञवल्क्य गार्गी महर्षि गौतम सावित्री प्रभृति अभिवादन मे नमस्ते का प्रयोग करते थे। स्वामी जी ने यह भी बताया है कि क्षत्रिय–ब्राह्मणो को ओर ब्राह्मण क्षत्रियो को अभिवादन हेतु नमस्ते कहते थे उन्होने गणना करके बताया है कि वेद पुराणो एव अन्यान्य सनातन शास्त्रो मे सहस्रो बार अभिवादन मे नमस्ते का ही प्रयोग किया गया है। नमस्कार व प्रणाम अभिवादन करने का सकेत तो देते है किन्तु यह पूर्ण वाक्य न होने से अधूरे हैं। बिना पता लिखे लिफाफे के सदृश्य हैं। स्वामीजी ने भली भाति समझाया है कि नमस्ते के नम तथा ते तराजू के पदार्थ एव बाट के समान है। ते रूप मे जैसा बाट होगा – वैसा ही नम पदार्थ तुल कर सामने आ जाएगा। नमस्ते मे नम विधेय है और 'ते उद्देश्य है। नम का अर्थ झुकना या सत्कार करना ही मात्र नहीं है। इस का एक अर्थ अन्न है जो दूध दही घी मक्खन मधु फलादि व्यजन का रूप भी धारण कर लेता है। यज्ञ (देवपूजा सगतिकरण दान) भी इसका अर्थ है। इसका एक अर्थ वज्र अर्थात दण्डित करने के सब साधन भी है। निरुक्त अध्याय ३ खण्ड ६ मे अन्न के नामो मे नम आयु सुनृता ब्रह्मचर्य यश नाम भी पढे गए हैं। इस प्रकार पुत्र आदि अपने से छोटो को नमस्ते करने का अर्थ है कि उन्हे दीर्घायु, सत्य एव मधुरभाषी ब्रह्मोपासक वर्चस्वी और यशस्वी होने का आशीर्वाद देना। छोटे ने बडे को नमस्ते किया बडे ने छोटे को नमस्ते कहकर उपरोक्त आशीर्वाद का वरदहस्त बढा दिया। अत नमस्ते के उत्तर मे नमस्ते कहने मे कोई दोष की बात नही है। अश्वलायन गृह्य सूत्र १/१/५ मे वर्णित ('यज्ञो वै नम इति ब्राह्मण भवति) अर्थात नम निश्चय ही यज्ञ है। यज धातु के पाणिनीय धातु पाठ मे तीन अर्थ दिए गए हैं १ देव पूजा २ सगतिकरण और ३ दान।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

आर्यसमाज और समाजोत्थान

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि आर्यसमाज है क्या ? आर्य शब्द का अर्थ है उत्तम श्रेष्ठ एव उदात्त भावनाओ का समुच्चय और समाज से तात्पर्य सघ से सभा से एव सगठन से है। इसलिए आर्यसमाज श्रेष्ठ व्यक्तियो के सगठन को कहते है। तभी तो आर्यसमाज का सर्वोच्च लक्ष्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम' अर्थात विश्व क सभी व्यक्तियो को श्रेष्ठ व्यक्ति बनाना निहित है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम मुम्बई नगर मे आर्यसमाज का प्रादुर्भाव किया था और अपनी विभिन्न क्षेत्रो की देनो मे आर्य समाज के अकाटय दस नियम देकर एक प्रकृष्ट मार्ग प्रशस्त किया। विशिष्ट बात यह है कि व्यक्ति श्रेष्ठ तभी बन सकता है जब वह सत्य के मार्ग को अपनाए। इन दस नियमो मे भी प्रथम पाच नियम सत्य पर आधारित हैं। जैसे–१ सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उनका आदि मूल परमेश्वर हैं। २ ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी आदि परमेश्वर के २० गुणो का विवेचन कर उसी परमात्मा की उपासना का आदेश दिया है। ३ वेद को ही सत्य विद्याओ की पुस्तक माना है और इसका पढना पढाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म माना है। ४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे प्रत्येक व्यक्ति को उद्यत रहना चाहिए। ५ सब काम सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। स्पष्ट है कि लक्ष्य 'सत्य है जिस धुरी पर सम्पूर्ण आर्यसमाज को एव ससार को चुम्बकीय ऊर्जा के साथ जीवन व्यतीत करना है।

शेष पाच नियम आत्मा समाज और विश्व के उत्थान के लिए प्रेरित करते हैं। जैसे ६ शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करके ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। ७ पारस्परिक व्यवहार प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य हो। ८ अविद्या का लोप और विद्या की वृद्धि लक्ष्य हो। ६ सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी आवश्यक है। १० अपने व्यक्तित्व को उठाने के लिए हितकारी नियम का पालन करने मे व्यक्ति स्वतन्त्र हैं परन्तु सामाजिक एव सर्व हितकारी नियम पालने मे उसे परतन्त्र रहना होगा।

इस समाज के सगठन मे नियमदाता ने कितने उदात्त विचार दिए हैं। जिनमे हर प्रकार की सकीर्णता वैमनस्य दुर्व्यवहार ईर्ष्या द्वेष आदि का परित्याग है और समाज के आध्यात्मिक पारस्परिक सम्भाव प्रशासन मे स्वच्छता सरल जीवन और उच्च विचार विश्व–प्रेम आदि का समुचित प्रकार मिलता है जो समाज को उन्नत एव सगठित करने मे सहायक हैं। इनके ऊपर चलने से ही मनुष्य मात्र का कल्याण हो जाता है।

इन नियमो से कुछ महत्वपूर्ण तथ्य परिलक्षित होते है जैसे – ईश्वर एक है अनेको ईश्वर के नाम पर पूजा वास्तविक ईश्वर की पूजा नही है वेद ईश्वरीय ज्ञान है पक्षपात का कहीं नाम नहीं है। सत्य मे दृढता समाज के उत्थान के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सर्वदा उद्यत रहना चाहिए और अन्त मे सद्व्यवहार का आदेश दिया है।

अब आइए देखे कि १८७५ से लेकर अब तक किस–किस क्षेत्र मे आर्यसमाज ने समाज को उज्ज्वल स्वरूप प्रदान करने के लिए कार्य किया है –

१ धर्मिक क्षेत्र – इसके अन्तर्गत धर्म की यही परिभाषा देकर इसे रूढीवादिता से अलग किया मतमतान्तरो से अलग हटकर धर्म की परिभाषा मे सत्याचरण पक्षपात रहित न्याय कर्त्तव्यपालन तथा सदव्यवहार को बल दिया गया है। आधुनिक मत मतान्तरो मे मूर्ति पूजा आदि आडम्बर को धर्म नहीं कहा जा सकता। परिणामत भारत वर्ष मे आज जो विद्वेष हिसा अकर्मण्यता स्वार्थ धन लिप्सा भेदभाव अनैतिकता आदि यह धर्म की असत्य परिभाषा के परिणाम है। विवश होकर राजनीतिज्ञा को यह कहना पड रहा है कि राजनीति को तथाकथित इस धर्म से अलग ही रहना चाहिए वरना सही धर्म तो राजनीति का आधार बन सकता है।

२ शिक्षा का क्षेत्र – सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट आदेश है कि शिक्षा के समान अवसर प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान किए जाने चाहिए। ऊँच–नीच का भेद न हो नारियो की शिक्षा पर बल दिया और बडे–बडे डी०ए०वी० कालेज गुरुकुल खोले गए जिनमे लाहौर रावलपिण्डी कानपुर इलाहाबाद जालन्धर देहरादून शोलापुर अजमेर बनारस आदि मे स्थित डी०ए०वी० कालेज तथा गुरुकुल कागडी गुरुकुल वृन्दावन कन्या महाविद्यालय जालन्धर कन्या गुरुकुल देहरादून बनारस एटा आदि की सस्थाए तो प्रसिद्ध हैं ही साथ ही उत्तर एव मध्य भारत मे विद्यालयो के प्रादुर्भाव की बाढ सी आ गई। इन सभी विद्यालयो मे महिलाओ दलितो हरिजनो और पिछडी जाति के सभी लोगो को समान शिक्षा दी जाती है।

३ देश मे आर्यसमाज ने अनेक अनाथालय खोल कर उनकी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की।

४ बाल विवाह सती प्रथा बहु विवाह आदि का उन्मूलन करने का प्रयास किया तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित कर उनके जीवन के नारकीय कष्टो के निवारण का निरन्तर प्रयास करता रहा है और कर रहा है। इन प्रयासो का प्रतिफल भारतवर्ष के जनमानस के समक्ष हैं।

५ अछूतो और दलितो के प्रति उच्च जाति की उदासीनता को दूर कर इस स्थिति पर ला खडा किया है जिसमे वह शिक्षा राजकीय सेवाओ में प्रदेश में बडे–बडे उद्यमो को लगाने मे सक्षम बनाया है एव समानता के धरातल पर लाकर खडा किया है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इस महान सस्था की आज समाजोत्थान के लिए कितनी सार्थकता है ? इससे पूर्व कि इस विषय मे कहा जाए यह देखना होगा कि समाज की और विशेष रूप से भारत की वर्तमान परिस्थितिया क्या हैं ? पूरा का पूरा देश भौतिकवादी बन गया है जिसके फलस्वरूप वैदिक परम्पराओ को भुलाकर मानव स्वार्थपरता धन लोलुपता नैतिक व्यवहारो की उपेक्षा वैमनस्य और स्वार्थ की पैदा की हुई आपाधापी मे पड गया है। इसी के कारण देश मे चहु ओर से व्यभिचार छीनाझपटी कुर्सी का मोह व्याप्त हो गया है। परिणामत देश मे अराजकता हिसा तथा राजनीति और अपराधीकरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध उत्पन्न हो गया है।

इन परिस्थितियो का निराकरण आर्यसमाज द्वारा दिए गए सिद्धान्तो पर ही सम्भव है क्योकि आर्यसमाज वेद के इस मन्त्र का प्रचार करता है –

ईशावास्यम् इदम् सर्वम् यत्किन्च जगत्याम् जगत्।
तेन त्यक्तने कुन्जीथा, मा गृध कस्य स्विद्धनम्।।

जिसकी दूसरी पक्ति स्पष्ट आदेश देती है कि परमात्मा का दिया हुआ सब कुछ तेरे लिए है परन्तु त्याग की भावना से इसका भोग करो और दूसरे के धन को लालच की दृष्टि से मत देखो। आज का मानव और विशेष रूप से युवक यह मन बनाए हुए है कि प्रभु स्मरण एव नैतिक व्यवहार के लिए वृद्धावस्था मे पर्याप्त समय मिल जाएगा। मनुष्य को सदा रहने वाला ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सदा बनाए रखने से ही मनुष्य पूर्ण सुखी हो सकता है। इस सत्य शाश्वत सिद्धान्त को प्राय मनुष्य भुला देता है। जो मनुष्य भौतिकवाद की दल दल मे फसा हुआ विषय भोगो मे आसक्त है तथा धन की प्राप्ति मे अन्धा हो गया है ऐसे अज्ञानी व्यक्ति को आत्मा–परमात्मा यम–नियम–ध्यान समाधि आदि विषय अच्छे नहीं लगते। वह तो मानने लगा है कि यही प्रथम व अन्तिम जन्म है। आर्यसमाज ने वेदों के शाश्वत एव सब कालो में प्रमाणित सिद्धान्तो व आदेशों का मार्ग प्रशस्त किया है। सादा जीवन एव उच्च विचार को प्रतिपादित किया है।

स्थायी सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए आज के मनुष्य ने सारी पृथिवी का स्वरूप बदला है पर्वतो को मैदानो मे बदला है नदियों के प्रवाह मोड दिए हैं बाधो का जाल बिछा दिया है भूमि से खनिज पदार्थों को निकाला है सडकें वाहन, सचार निरीक्षण करने पर पता चलता है कि इन सब कार्यों के होने पर भी जीवन पहले की अपेक्षा अधिक अशान्त भयभीत तथा दुखी बन गया। इसलिए इस दिशा मे परिवर्तन करना होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस प्रकार प्राकृतिक अनुसधान न हो अपितु आर्यसमाज इस चीज पर बल देता है कि सग्रह प्रवृत्ति को छोडकर अपरिग्रह की भावना यदि व्याप्त हो जाए तो चिरन्तर सुख का आभास हो सकता है। मानव को इन उपलब्धियो से उस परम सत्ता को भुला देना अभीष्ट नहीं है।

ईश्वर चिन्तन ब्रह्म विद्या के पठन पाठन तथा उदारता आत्मिक विचारो की ओर आर्यसमाज ने समाज का पथ प्रशस्त किया है। तभी मनुष्य परिवार समाज राष्ट्र तथा विश्व की दुरावस्था को बचाया जा सकता है। इस ज्ञान का अभाव ही समस्त बुराइयो का मूल कारण है। आर्यसमाज के इन सिद्धान्तो पर चलकर ही मानव समाज पुन सुख शान्ति तथा निर्भयता एव आत्मबल को प्राप्त करने मे समर्थ हो सकता है। यही आर्यसमाज के आदेश एव परामर्श ही इस युग को उच्चता की ओर ले जा सकती हैं। आर्यसमाज वेद के इस मन्त्र से मानव को सलाह देता है कि इस मन्त्र मे दिए गए शाश्वत नियमों का पालन करन से ही उत्थान हो सकता है।

ओजश्च, तेजश्च सहश्च बल च वाकम् च इन्द्रियश्च।
श्रीश्च धर्मश्च। *(अर्थ० १२/५/७)*

अर्थात मानव को ओज तेज बल सहिष्णुता वाणी पर सयम इन्द्रियो का निग्रह तथा ऐश्वर्य जैसे उदात्त एव कार्यान्वित करने योग्य गुणो को धारण कर अपना एव समाज का उत्थान करना चाहिए।

जहा धर्म है वहीं ओज है। अन्त स्फुरण प्रेरणा उमग उत्साह तथा मन्यु है वही तेज है सहनशीलता है धैर्य है और यही सहनशीलता तथा धैर्य नागरिको को भयकर आपदाओ मे भी विचलित नहीं करता। उत्तम आचरण से शरीर मन बुद्धि हृदय और आत्मा का बल बढता है। वाणी सुतीक्ष्ण और प्रभाववती होती है। इस प्रकार की वाणी व्यक्तित्व के उत्थान मे योगदान देती है। उदात्त व्यवहार और उत्तम चरित्र जहा पर हैं वहीं जितेन्द्रियता है। इसी से सच्चा ऐश्वर्य मिलता है वहा धन का कहीं अभाव नहीं होता। इन्हीं ऐश्वर्यों के द्वारा परिवार समाज, राष्ट्र तथा विश्व का उत्थान निश्चित है। आर्यसमाज इन्हीं ऐश्वर्यों की उपलब्धि की ओर दिशा निर्देश करता है। ससार के वैभव को प्राप्त करने का यही मार्ग है। इसी से ही समाज को स्थायी और चिरतन उत्थान की प्राप्ति होगी।

– स्वर्गीया माता प्रकाशवती रत्ना की पूर्व मे आकाशवाणी से प्रकाशित वार्ता

एक सामाजिक परिस्थितिकीय अध्ययन

समाज और पर्यावरण

– डॉ० आर्येन्दु द्विवेदी

पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण मे अनेक प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुए – जल वायु आकाश पृथ्वी तथा अनेक सामाजिक नियम आते हैं जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण उन सभी दशाओ का योग है जिन्होने प्राणी के जीवन को प्रभावित किया है और कर रहे है। पर्यावरण शब्द परि और आवरण से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ **चारो ओर** और आवरण का अर्थ **ढके हुए**। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ उन सभी दशाओ और परिस्थितियो से है जो एक प्राणी के जीवन को चारो ओर से घेरे हुए है। इस दृष्टिकोण से किसी भी जीवित वस्तु के अस्तित्व पर जितनी दशाओ का प्रभाव पडता है वह सब पर्यावरण है। मानव अपनी विभिन्न क्रियाओ द्वारा अपनी सुख सुविधाओ के लिए आधुनिक औद्योगिक वातावरण का सृजन करके अपने विकास का मापदण्ड प्रस्तुत कर रहा है। विश्व मे पर्यावरण क्रान्ति सयुक्त राष्ट्रसघ द्वारा स्टॉक होम मे सन १६७२ मे आयोजित मानव पर्यावरण विषय पर किए गए सम्मेलन की सस्तुति से सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा शुरू की गई।

पर्यावरण दिवस की महत्ता

भारत सरकार ने १६७२ मे राष्ट्रीय पर्यावरण समिति का गठन किया तथा १ नवम्बर १६८० मे पर्यावरण विभाग की आधारशिला रखी। सन १६८१ के मध्य विश्व मे पर्यावरण नीति शुरू की गई। पर्यावरण की सुरक्षा की तरफ जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए सारे विश्व मे ५ जून का दिन पर्यावरण दिवस के रूप मे मनाया जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्याए

जहा आज मानव ने अपने आसपास फैले प्राकृतिक पर्यावरण को तोडा है वहा पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओ ने जन्म लिया है। पर्यावरण प्रदूषण का विस्तृत अर्थ दूषित हो रही हवा पानी मिटटी दलदल रेगिस्तान या बीहडो का बढना नदियो का बरसात मे उफनकर बहना और गर्मी मे सूख जाना जगलो को ध्वस्त करने से लेकर पेयजल का सकट गन्दे पानी का निकास जैसी सारी चीजे सम्मिलित हैं। तेजी से बढती हुई आबादी एव उपभोग प्रधान सस्कृति की भूख ने प्राकृतिक सम्पदा का अन्धाधुन्ध दोहन किया है। जो अभी भी जारी है। अब प्रकृति ने भी इसका परिणाम बताना शुरू कर दिया है। जनसख्या मे वृद्धि के साथ साथ स्वच्छता की समस्या भी पैदा हुई है। बडे बडे शहरो मे मल मूत्र कूडा कचरा कारखानो की राख व रासायनिक गैसे तेजी से निकली हैं। जिससे जल वायु पृथ्वी सभी प्रदूषण से खराब होने लगे हैं। पर्यावरण जल वायु ध्वनी तथा भूमि प्रदूषण को देखते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति ने विश्व २००० नामक एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था जिसमे कहा गया था कि यदि पर्यावरण प्रदूषण नियन्त्रित नही किया गया तो सन २०३० तक तेजाबी वर्षा भुखमरी और प्रदूषण का ताण्डव होगा और मानव का भविष्य खतरे मे पड जाएगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी का कथन है कि प्रकृति हम सबकी आवश्यकता तो पूर्ण कर सकती है परन्तु किसी का लालच नही यह चेतावनी की ओर इगित करता है। हमारे मानव जीवन को प्रभावित करने वाले चारो ओर उपस्थित जड और चेतन पदार्थ का सामूहिक नाम ही 'पर्यावरण है। जिस हवा मे हम सास लेते है जिस जल का हम सेवन करते है जिस भूमि पर हमारा आवास है वे सभी पर्यावरण के अभिन्न अग हैं। वस्तुत स्वस्थ पर्यावरण प्राणीमात्र को स्वस्थ एव खुशहाल रखने मे सहायक होता है। जब हम प्राकृतिक नियमो का उल्लघन तात्कालिक लाभ जैसे – औद्योगीकरण परमाणु ऊर्जा के विकास आदि द्वारा करते हैं। तब इन लाभो के साथ पर्यावरण सन्तुलन नष्ट करते है। जिस पर हमारा जीवन एव सृष्टि का अस्तित्व निर्भर है। सभी राष्ट्र ससाधनों का अपव्यय कर पर्यावरणीय प्रदूषण को प्रोत्साहन दे रहे हैं।

पृथ्वी के ताप वायुमण्डलीय गैसीय तत्वो को प्रकृति स्वय सन्तुलित करती है। इस सन्तुलन की सीमा का उल्लघन होने से मानव जीवन दूषित हो जाता है। यह सबसे दुखद बात है कि मानवजाति ने स्वय प्राकृतिक विकृतियो को निमन्त्रित किया है। प्राकृतिक विभीषिका का अनुमान भोपाल गैस त्रासदी रूस मे चर्नोबिल काण्ड व इथोपिया मे भीषण अकाल परमाणु सम्पन्न राष्ट्रो द्वारा समय समय पर परमाणु परीक्षण रेडियोधर्मिता उत्सर्जन आदि से लगाया जा सकता है।

प्रकृति के प्रमुख घटको मानव वनस्पति एव मानवोत्तर प्राणी मे सन्तुलन रहना ही पर्यावरण सरक्षण है। हमे वायु प्रदूषण जल प्रदूषण स्थलीय प्रदूषण रेडियोधर्मी प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण मुख्य रूप से मिलते है।

वायु जल मृदा ध्वनि व रेडियोधर्मी प्रदूषणो द्वारा गम्भीर पर्यावरणीय समस्याए जन्म ले रही हैं। एक सामान्य व्यक्ति को दिन भर मे सास लेने के लिए १४ हजार लीटर ताजी शुद्ध आक्सीजन वाली हवा चाहिए। जबकि एक हजार किलोमीटर चलने के लिए एक मोटर कार को उतनी ही आक्सीजन की आवश्यकता होती है। स्वच्छ वायु को वायुमण्डल मे अवाछित तत्वो व विषाक्त गैसो का प्रवश उसे बुरी तरह दूषित कर रहा है। लगभग ६० प्रतिशत वायु प्रदूषण केवल स्वचालित वाहनो के धुए एव १० से १५ प्रतिशत ईधन के धुए के कारण होता है। सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण यातायात उद्योग से फैला है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज ससार मे लगभग ४० करोड मोटर वाहन सडको पर हैं जो लगातार नगरो का वातावरण दूषित कर रहे है। मोटर कारे कार्बन डाइ आक्साइड तथा अन्य अपशिष्ट की विशाल मात्रा लाखो टन नाइट्रोजन आक्साइड तथा हाइड्रोकार्बनो और सीसे को वायुमण्डल मे विसर्जित करती है। पेट्रोल मे शीशा डाला जाता है वह विषैला होता है। जर्मन विशेषज्ञ डा० एच० के० हावडे का कथन है कि – वातावरण मे सीसा जितना ज्यादा वैढता है उसका मानव पशु शरीर पर असर उतना ही गहरा होता है।

हमारे देश मे औद्योगीकरण और शहरीकरण से वायुमण्डल मे विद्यमान हवा की गुणवत्ता मे भारी गिरावट आई है। डीजल व पेट्रोल से मनुष्य के स्वास्थ्य को खतरा और भी बढ जाता है। विश्व मे हर साल ३० लाख असामयिक मौते घर के भीतर या घर के बाहर वायु प्रदूषण के कारण होती है और ऐसी मौतो मे सबसे अधिक मामले भारत मे ही हैं। विश्व स्वास्थ्य सगठन की रिपोर्ट के अनुसार देश की राजधानी नई दिल्ली विश्व के सबसे अधिक १० प्रदूषित शहरो मे एक है। विभिन्न सर्वेक्षणो एव रिपोर्टो से पता चला है कि नई दिल्ली मे वायु प्रदूषण के कारण सास सम्बन्धी रोगो मे होने वाली मौतो की सख्या इन्ही वजह से होने वाली मौतो के राष्ट्रीय औसत से १२ गुना अधिक है। एक अन्य अध्ययन के अनुसार पिछले दो दशको मे भारत का सकल घरेलू उत्पाद ढाई गुना बढ गया है। इसी तरह कल कारखानो से हाने वाले प्रदूषण मे भी चार गुना वृद्धि हुई है। सर्वाधिक जानलेवा वायु प्रदूषण साबित हुआ है।

अन्तर्राष्ट्रीय शोध सस्थान की रिपोर्ट पर नजर डाले तो पता चलता है कि प्रदूषण से उत्पन्न श्वास सम्बन्धी बीमारियो की चपेट मे आकर कई लाख बच्चे मौत के मुह मे चले जाते हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड ने नई दिल्ली कानपुर को प्रदूषित शहर माना है। वायु प्रदूषण बढाने मे औद्योगिक प्रक्रियाओ का बहुत बडा योगदान है। कारखानो से प्रदूषण फैलाने वाले विभिन्न पदार्थ निकलते है। उदाहरण के लिए एल्यूमीनियम उत्पाद करने वाले कारखानो से धूल जैसे कण निकलते हैं। तेल शोधक कारखानो से अमोनिया हाइड्रोकार्बन कार्बन अम्ल और सल्फर डाई आक्साइड पदार्थ निकलकर पर्यावरण मे पहुच रहे हे। इसके अतिरिक्त कूडे कचरे से जो काला धुआ निकलता है उससे प्रदूषण फैलता है। वैज्ञानिको ने बार बार चेतावनी दी है कि प्रदूषण के कारण पृथ्वी का वायुमण्डल गरम होता जा रहा है। यह बढोत्तरी एक डिग्री सेन्टीग्रेट तक हो चुकी है। यदि यह बढोत्तरी साढे तीन डिग्री सेन्टीग्रेट तक पहुच गई तो उत्तरी एव दक्षिणी ध्रुवो की बर्फ पिघलने लगेगी और जल प्रलय हो जाएगी। इससे धरती मे ऋतुए बदल जाएगी। महामारिया फैल जाएगी। त्वचा कैंसर फसल उत्पादन कम हो सकता है तथा नवजात शिशुओ के पगु होने का खतरा हो सकता है। वैज्ञानिको का अनुमान है कि बढती कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा इस तरह बढती रही तो ३० वर्षों मे धरती के तापमान मैं ३ से ५ डिग्री सेन्टीग्रेट तक की वृद्धि होगी। शीतोष्ण क्षेत्र मरूभूमि मे परिवर्तित होकर ध्रुवो की बर्फ पिघलकर जलप्लावन की भीषण समस्या उत्पन्न कर सकते है।

विभिन्न उद्योगो से मुक्त विषैले रसायनो द्वारा आगामी ४० वर्षो मे कम से कम २५ से ३० प्रतिशत ओजोन परत मे क्षति की सम्भावना व्यक्त की गई है। मनुष्य पर्यावरण औद्योगिक व घरेलू अपशिष्टो की विराट मात्रा मे विसर्जन कर रहा है। दुनिया मे प्रतिवर्ष ४ अरब टन तेल और गैस का २ अरब टन से ज्यादा कोयला लगभग २० अरब टन खनिज व चटटानो का दूषित पदार्थ निकलता है। यह वायु, मिटटी व पानी मे प्रविष्ट हो जाता है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार हम जो रासायनिक पदार्थ इस्तेमाल करते है उनमे से ४० हजार मनुष्य के लिए हानिकारक है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

नमस्ते जी ! नमस्ते जी !!

इन तीनो अर्थो की छाया मे नमस्ते का आशीर्वादात्मक अर्थ होगा छोटे अपने पूज्यजनो विद्वानो के आदर–सत्कार करने वाले एव ईश्वरोपासक बने। उन्हे सदा सज्जन–सत्पुरुषो का सग प्राप्त होता रहे। वे लोग सदा श्रद्धापूर्वक आप पूज्यो का आदर–सत्कार करते रहे। हमे सर्वदा आप लोगो का सत्सग शुभ सम्मति व आशीर्वाद मिलता रहे। नम का अर्थ वज्र अर्थात दण्ड भी हैं। नमस्ते यातुधानेम्य (अथर्ववेद) इसका अर्थ है राक्षस अर्थात रहजन बटमार चोर उचक्के जेबकटो समाजविरोधियो को दण्ड देना चाहिए। इस कारण शत्रु को नमस्ते करना उसके लिए दण्ड देने की भावना प्रकट करना है। अस्तु चार वर्णों के स्त्री–पुरुष आबाल–वृद्ध पूज्य–अपूज्य प्रिय–अप्रिय शत्रु–मित्र सभी के साथ प्रथम मिलते व पृथक होते समय परस्पर अभिवादनार्थ नमस्ते करना ही समीचीन है।

उपरोक्त तथ्यो को न समझने के कारण अनेक लोग अपने नये–नये सगठन सम्प्रदाय खडे करके नये–नये अभिवादन प्रयोग करने लगते है। देश व महापुरुषो के नाम से अभिवादन करते है किन्तु वे सब इतने सीमित व सकुचित होते है जिनके कारण उनके सगठन भी बृहत्तर रूप न धारण करके लघु रूप मे सिमटे प्रतीत होते हैं जबकि नमस्ते के व्यवहार से वे परिवेश की मुख्यधारा से जुड जाते है। एक उपाख्यान बहुश्रुत है। प्रजापति की देव मानव एव दानव तीनो सन्ताने पृथक–पृथक वरदान लेने गयी। प्रजापति ने तीनो से 'द 'द 'द कह दिया। तीनो वर्गों ने अपने स्वभाव के अनुसार इस 'द का अर्थ क्रमश दमन दान और दया समझ लिया। इसी प्रकार नम शब्द इतना व्यापक है कि वह सभी वर्गो की माग तो पूरी करता ही है साथ ही अपने मूल से भी जोडे रखता है। स्वामी जी ने अभिवादन पद की पात्रता के लिए कुछ आवश्यक बिन्दुओ का उल्लेख किया है यथा – **१ बोलने पर सुननेवाले को सहज रूप मे लगे कि उसका अभिवादन किया जा रहा है। २ उसे विश्व का प्रत्येक मनुष्य बिना किसी सकोच एव भेदभाव के प्रयोग कर सके। ३ उसमें बड़ो के प्रति सम्मान एव पूजा की भावना हो, समवयस्को के लिए स्वागत की भावना हो, छोटो के लिए अशीर्वाद की भावना हो और दुष्ट के लिए दण्ड की भावना समाहित हो। ४ अभिवादन स्वरूप क्या कहा जा रहा है और किसे कहा जा रहा है, यह दोनो बाते अवश्य हो। ५ किसी मत मजहब या सम्प्रदाय से सम्बद्ध न हो। ६ ईश्वरोपदिष्ट व सबके लिए समान हो, ७ सृष्टि के आरम्भ से ही जिस की प्रवृत्ति हो। ८ यह पद इतना सूक्ष्म, सरल व एक हो जिसे सम्पूर्ण विश्व के आबाल वृद्ध, स्त्री पुरुष समान रूप से व्यवहार कर सके। ९ जो माला के मणको की भाति सबको एकता के सूत्र मे पिरो सके।**

यजुर्वेद के अध्याय १६ के मन्त्र सख्या ३० एव ३२ मे विशद रूप से नमस्ते का निर्देश किया गया है। यथा –

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च,
नमो बृहते च वर्षीयसे च।
नमो वृद्धाय च सवृधे च,
नमोऽग्रयाय च प्रथमाय च।।
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च
नम पूर्वजाय च परजाय च।
नमो मध्यमाय च चापगल्भाय च ,
नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।

अर्थात शिशु, बालक बडे विद्यावृद्ध आयु मे बडे साथबालो सत्कर्म मे अग्रणी प्रसिद्ध पुरुष बडे छोटे सभी के लिए नमस्ते करो। इस अध्याय के अन्य मन्त्रो मे भी नमस्ते का निरूपण का निर्देश मिलता है। उपरोक्तानुसार ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे सकेत किया हैं कि दिन–रात मे जब भी प्रथम मिले या पृथक हो तब तब प्रीति पूर्वक नमस्ते एक दूसरे से करे। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास मे बाल शिक्षा प्रकरण मे लिखा है कि बडो को मान्य दे उनके सामने जा के ला उत्तम आसन पर बैठावे। प्रथम उनको नमस्ते करे। उनके सामने उच्चासन पर न बैठे। सस्कारविधि व्यवहारभानु तथा पत्राचार मे भी महर्षि ने नमस्ते करने का निर्देश दिया है। उन्होने आर्योद्देश्यरत्नमाला के अन्तिम १०० वे बिन्दु पर नमस्ते का अर्थ बताया है – 'मै तुम्हारा मान्य करता हू। मान्य शब्द को ७३ वे बिन्दु मे समझा दिया है – जो बडे और छोटो से यथायोग्य परस्पर मान्य करना है उसको कनिष्ठ व्यवहार करते हैं महर्षि दयानन्द महाराज ने तो वेद–शास्त्रो के इस शाश्वत अभिवादन को सर्वसुलभ बनाया। पौराणिक जनो ने इसे ऋषि दयानन्द एव आर्यसमाज का अविष्कार समझ कर द्वेषवश भाति भौतिक के आक्षेपो से इसका विरोध किया। उन्होने नमस्ते को (न+मस्ते) अर्थात मस्तक (भाग्य) मे कुछ नहीं का बोधक बताया अथवा 'नमस्ते नाश कर देगी' के कर्कश गीत गाए पर उनको सुना किसी ने नहीं। नमस्ते सूर्य पर छाये मेघ उसकी किरणों से स्वय छटते चले गए। भार्गव हिन्दी शब्द कोश में नमस्ते को 'एक वाक्य जिसका अर्थ है आपको नमस्कार' कहा गया है।

अभिवादन नमस्ते करने की विधि का अपना विशिष्ट महत्त्व है। इस सम्बन्ध मे विष्णुस्मृतिकार लिखते हैं मनुष्य जन्मभर मनसा वाचा कर्मणा जो धर्माचरण करता है एक हाथ से अभिवादन–नमस्ते करने से यह सब निष्फल हो जाता है। इस कथन मे भले अतिशयोक्ति हो किन्तु इससे उचित विधि से नमस्ते करने की प्रेरणा तो मिलती ही है। स्मृतिकार का अभिप्राय है कि सर्वदा दोनो हाथ जोड कर किंचित नतमस्तक होकर नमस्ते करनी चाहिए। एक हाथ उठाकर नहीं। इसका भाव यह है कि आप अपनी बुद्धि–युक्ति से हाथो की शक्ति से एव हृदय की अनुरक्ति से दूसरे के प्रति स्वागत सत्कार आदर शुभकामना या आशीर्वाद प्रकट कर रहे है। डॉ० भोजराज द्विवेदी जी ! आपको नमस्ते जो आपने अपने ग्रन्थ मे यह प्रश्न उठाए। पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी ! आपको नमस्ते जो आपने मार्गदर्शन किया। सम्पादक जी ! आपको नमस्ते जो इस लेख का प्रकाशन किया और पाठकजी आपको भी नमस्ते जो आपने इसका वाचन कर लेखक के श्रम को सार्थक कर दिया। धन्यवाद !

— 'वरेण्यम्' एम०आई०जी० भूखण्ड स० ४५, अवन्तिका कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ उत्तर प्रदेश

— पृष्ठ ७ का शेष भाग

समाज और पर्यावरण

निर्मल एव स्वच्छ जल अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के प्रतिवदेन के अनुसार ५ लाख बच्चे प्रतिवर्ष प्रदूषित जल के कारण अकाल मृत्यु के शिकार होते हैं। भारत की पुण्य सलिल व पापहारिणी पवित्र नदिया हजारो टन खतरनाक रसायन पदार्थ दिन रात समुद्र मे डालती हैं जो जीव जन्तुओ के लिए खतरा बन जाता है। अकेले गगा क्षेत्र मे लगभग ४ करोड ५० लाख एकड मिटटी का ह्रास प्रतिवर्ष हो रहा है जिससे भूमि को उर्वर बनाने वाले स्थल और सूक्ष्म तत्व समुद्र में विलीन हो रहे हैं।

वैज्ञानिको के अनुसार यदि भूभाग पर ३३ प्रतिशत वन हो तो वायु प्रदूषण दुष्प्रभावी नहीं होता। वृक्षारोपण से न केवल पर्यावरण सन्तुलन वरन भूस्खलन बाढ जैसी जानलेवा विभीषिका को नियन्त्रित करने मे मदद मिलेगी।

वायु प्रदूषण की भयावह तस्वीर कह रही है कि भविष्य मे ५ वर्ष पूरा करते करते पाच बच्चो मे एक की मृत्यु हो जाएगी। विश्व स्वास्थ्य सगठन की रिपोर्ट के अनुसार ८० प्रतिशत बीमारिया दूषित जल टाइफाइड हैजे पेचिश आदि कीटाणु के कारण होती हैं। भारत में जल प्रदूषण से ५० से ६० प्रतिशत लोग प्रभावित हैं प्रतिवर्ष ४२ अरब गैलन मलबा व डेढ टन से अधिक डिटरजैंट समुद्र में जल प्रदूषित कर रहे हैं।

केन्द्रीय गगा प्राधिकरण का गठन गगा जैसी बृहद् जलवाहिनी नदी में जल प्रदूषण की समस्या के निदानार्थ एक सकारात्मक एव सरचनात्मक कदम है। क्योंकि गगा एव सहायक नदिया भारत के ३० प्रतिशत क्षेत्र को जल ससाधन प्रदान करती हैं। जिस पर देश की ३५ प्रतिशत जनसख्या निर्भर है।

इसके अतिरिक्त परमाणु परीक्षणो मे जो रेडियोधर्मी विष फैलता है उससे वर्तमान मानव ही नहीं भावी पीढिया भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकतीं। नाभिकीय विस्फोट द्वारा इलेक्ट्रान प्रोटान न्यूट्रान एल्फा बीटा गामा किरणे प्रभावित होती है इसके कारण कभी कभी जीन्स तक मे परिवर्तन आ जाते है और अनुवाशिक प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण बुरा अभिशाप है। ध्वनि प्रदूषण ने मनुष्य को चिडचिडा मानसिक रोगग्रस्त एव बहरा बना दिया है। ८५ डेसीबल से अधिक ध्वनि होने पर बी०पी० (रक्तचाप) का बढना थकान बहरापन नींद न आना हो सकता है। सरकार को कडे जुर्माने की व्यवस्था करनी चाहिए।

अत पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है। आवश्यकता वैज्ञानिक व उद्योगो के विकास को रोकना नहीं है अपितु, निकलने वाले दूषित पदार्थों को ठिकाने लगाने की है। पर्यावरण के प्रति जन-चेतना जगानी होगी। इसके लिए स्वय सेवी सगठनों सामाजिक कार्यकर्ताओ सरकारी अधिकारियो आदि की पर्यावरण प्रदूषण समितिया गाव से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर गठित किए जाने की आवश्यकता है। यदि पर्यावरण मे सुधार की ओर ध्यान न दिया गया तो कोई भी शक्ति सृष्टि को विनाश से नहीं बचा सकेगी।

अत सभी नागरिकों का कर्त्तव्य है कि वे इस से उत्पन्न भयावह दुष्परिणामो को समझें और इसके निराकरण हेतु अपने दायित्व को पूरा करने का सकल्प ले।

— प्रवक्ता समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, जालौन (उ०प्र०)

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के बाद

हरयाणा प्रान्त में तीन गुरुकुलों की स्थापना

११ जून को जिला कुरुक्षेत्र के बवगाव (गामटी) गाव में कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ किया गया। समाज के प्रतिष्ठित लोगो ने वैदिक यज्ञ से इस महोत्सव का श्रीगणेश किया। कन्या गुरुकुल महोत्सव के मुख्य अतिथि आचार्य यशपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने आर्यसमाज के समाज सुधार कार्यों पर प्रकाश डालते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्त्व बताया। इस अवसर पर हरयाणा सरकार के शिक्षा मन्त्री चौ० बहादुर सिह ने गुरुकुल के भवन की आधारशिला रखी। परिवहन मन्त्री श्री अशोक अरोडा ने कन्या गुरुकुल सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा श्री बलवन्त सिह नेहरा ने कन्या गुरुकुल के लिए चार एकड भूमि तथा ५० हजार रुपये नकद दान स्वरूप भेट किए। यमुनानगर की सभी आर्यसमाजो और सस्थाओ ने श्री जयपाल आर्य के निर्देशन मे सराहनीय सहयोग प्रदान किया। इसी श्रृखला मे हरयाणा प्रान्त मे दूसरे गुरुकुल का शुभारम्भ जिला सोनीपत के गाव अगवान पुर मे हुआ इस गुरुकुल के उदघाटन समारोह के अवसर पर आचार्य यशपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के निर्देशन मे यज्ञ का कार्यक्रम तथा आशीर्वाद उदबोधन सम्पन्न हुआ। मच सचालन स्वामी धर्मानन्द जी ने किया आधारशिला परम तपस्वी आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालवा ने रखी समारोह की अध्यक्षता श्री वेदसिह जी मलिक पूर्व मन्त्री ने की। आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर श्री महेन्द्र सिह शास्त्री वरिष्ठ उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा महात्मा सत्यदेव चेतन्य महात्मा वेदमित्र महात्मा ब्रह्मपुत्र श्री यशवीर आर्य आदि ने भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डाला। इसी श्रृखला मे जिला रोहतक के कलानोर कस्बे मे चार एकड भूमि पर गुरुकुल की स्थापना की गई है जिसमे पन्द्रह कमरे बनकर तैयार हो चुके है साथ मे गोशाला का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है। यह सस्था स्वामी दयामुनि विद्यापीठ गुरुकुल कलानोर जिला रोहतक के नाम से है। इसका निर्माण आचार्य यशपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने चार एकड भूमि मे चार दीवारी पन्द्रह कमरे निर्माण कराकर समाज के लिए दान स्वरूप भेट कर दिया है। वर्तमान मे ब्रह्मचारी विनोद कुमार जी गुरुकुल की देखभाल कर रहे हैं।

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी सभा को सम्बोधित करते हुए।

ईश्वर उपासना एवं आयुर्वेद चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली मे

२८ जून से ३० जून तक

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान एव आयुर्वेदज्ञ आचार्य डॉ० वेदप्रकाश (प्रो० हिन्दी विभाग मेरठ कालेज मेरठ) के निर्देशन मे ईश्वर उपासना एव आयुर्वेद चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

अत आप सपरिवार इष्ट मित्रो सहित अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर धर्म एव स्वास्थ्य लाभ उठावे। इस सम्बन्ध मे अन्य जानकारी के लिए आर्यसमाज जनकपुरी के निम्न दूरभाष पर सम्पर्क करे *५५२७००३७*

– वीरेन्द्र सरदाना, मन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

मोटापा जनित श्वास रोग

– डॉ० ए०के० सिंह

मोटापा भी एक तरह का कुपोषण है जिसमे मानव शरीर मे वसा अधिकता मे सचय हो जाती है। इस कारण मनुष्य की कार्यक्षमता भी कम हो जाती है बहुत से रोग होने की सम्भावना भी अधिक होती है। वयस्को मे यदि शरीर का वजन अनुमानित वजन से २० प्रतिशत अधिक होता है तो उसे मोटापा कहते हैं। लगभग ६०प्रतिशत मनुष्यो मे मोटापे का मुख्य कारण खानपान का गलत तरीका तथा आवश्यकता से अधिक खाने की प्रवृत्ति एव व्यायाम की कमी है। मात्र १० प्रतिशत मनुष्यो में कुछ बीमारिया तथा पैतृक कारण मोटापा पैदा करते।

मोटापे से होने वाले रोग –

सम्पूर्ण विश्व मे मोटापा अकेला एक ऐसा कारण है जो बहुत सी खतरनाक बीमारियो को जन्म देता है। जब कभी मोटापा अन्य रोगो से सम्बन्धित होता है तब इसके दुष्प्रभाव से जीवन शैली खराब हो जाती है। मोटापे से होने वाली बहुत सी बीमारिया है जैसे – ह्रदयरोग उच्च रक्तचाप आस्टियो आर्थराइटिस डायबिटीज बाझपन। इसके अलावा श्वास रोग भी मोटापे से उत्पन्न होते हैं ऐसी स्थिति मे उनका उपचार करना कठिन होता है।

मोटापे से होने वाले श्वास रोग

सास के सभी रोग मोटे मनुष्यो मे अधिक होते है क्योकि अधिक वजन के कारण फेफडे की कार्यक्षमता एव सकुचन क्षमता कम हो जाती है।

स्लीप एपनिया –

यह बीमारी सामान्यतया वयस्को मे ३० से ६० वर्ष के मध्य मे उत्पन्न होती है। मोटे लोगो मे जैसे शरीर के बाहरी अगो मे वसा का सचय होता है उसी तरह से श्वास नली मे अधिक मात्रा मे वसा के जमा हो जाने से श्वास नली आशिक रूप से बाधित हो जाती है और सोते समय यह पूर्ण रूप से बाधित हो जाती है इसी कारण इन मरीजो मे सोते समय बहुत तेज–तेज खर्राटे आते हैं तथा बीच–बीच मे श्वास रुक जाती है जिसे स्लीप एपनिया कहते हैं। स्लीप एपनिया के दौरान शरीर के महत्वपूर्ण अगो जैसे ह्रदय दिमाग गुर्दे एव फेफडो मे आक्सीजन का अभाव हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप बार–बार दम घुटने का अहसास नीद खुल जाना रात मे आराम का अभाव आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस बीमारी से मरीज के साथ–साथ परिवार के अन्य सदस्यो को भी परेशानी का सामना करना पडता है। स्लीप एपनिया' के मुख्य लक्षण है सोते समय तेज खर्राटे श्वास लेने मे परेशानी सिरदर्द थकावट चिडचिडापन एकाग्रता मे कमी तथा दिन के समय नींद आना। बहुत से शोधो द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि ऐसे मरीजो मे सोते समय आक्सीजन की कमी के कारण दिल का दौरा पडना ह्रदय गति की अनियमितताए उच्च रक्तचाप लकवा होने की सम्भावना अधिक होती है। उपचार के तौर पर वजन मे कमी करना मरीजो को बीमारी सम्बन्धी शिक्षा देना बीमारी के कारणो से बचना दवाओ का प्रयोग और कभी–कभी शल्य चिकित्सा का भी प्रयोग किया जाता है।

पिकविकियन सिन्ड्रोम

इस बीमारी से पीडित लोग बहुत अधिक मोटे होते हैं। वे अपनी दिनचर्या के कार्य भी ठीक से नहीं कर पाते हैं। अधिक मोटे होने के कारण शारीरिक कार्यक्षमता बहुत कम हो जाती है जिसके कारण वे सदैव बैठे एव सोते रहते हैं। खाना एव निन्द्रा ही उनकी दिनचर्या बन जाती है। धीरे–धीरे बीमारी बढती रहती है और उनका अधिकतर समय कष्ट मे ही गुजरता है। वे ठीक से लेट भी नहीं पाते हैं और बैठे–बैठेही सोते रहते हैं। अगर समय रहते उपचार नहीं किया जाता तो धीरे धीरे ह्रदय एव फेफडे दोनो ही खराब हो सकते हैं।

न्यूमोनिया –

वैसे तो मोटापे के साथ न्यूमोनिया का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। चूकि मोटे लोगो के फेफडे के कार्य करने की क्षमता कम होती है जब कभी ये न्यूमोनिया से ग्रसित होते हैं तब इन लोगो को ठीक होने मे अधिक समय लगता है तथा अधिक जटिलताओ का सामना करना पडता है।

दमा एव ब्रोंकाइटिस –

मोटापा दमा के मरीजो के लिए एक नकारात्मक कारण है। ऐसे मरीज जिनको दमा तथा मोटापा दोनो बीमारिया होती हैं इनमे दमा के लक्षणो मे कमी करने के लिए अधिक दवा का प्रयोग करना पडता है। साथ ही श्वसन तन्त्र की कार्यक्षमता भी धीरे धीरे कम हो जाती है जो बाद मे बहुत कष्टदायक होती है।

बचाव एव उपचार –

यदि किसी व्यक्ति मे मोटापा एव श्वास रोग दोनो बीमारिया एक साथ है तो उसे हमेशा अपने वजन तथा श्वास लक्षणो पर नजर रखना चाहिए। वजन कम करने के लिए दृढ इच्छाशक्ति खानपान के तौर–तरीके मे बदलाव तथा नियमित व्यायाम से ही काफी हद तक नियन्त्रण किया जा सकता है।

अस्पताल कानपुर श्वास रोग विशेषज्ञ रीजेन्सी

उड़ीसा में आर्यसमाज की गतिविधियां

स्वामी सत्यप्रकाश विज्ञान समारोह

आर्यसमाज भुवनेश्वर (उडीसा) विगत तीन वर्षो से प्रतिवर्ष पूज्यपाद स्वामी जी की स्मृति मे एक उडिया वैज्ञानिक को सम्मानित करता है। इस वर्ष अपने रजत जयन्ती समारोह मे आर्यसमाज भुवनेश्वर ने उत्कल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति तथा प्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ० गोकुलानन्द दास को स्वामी सत्यप्रकाश विज्ञान सम्मान से सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता उडिया विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डा० देवकान्त मिश्र ने की। स्वामी जी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर आर्यसमाज भुवनेश्वर के सस्थापक प० प्रियव्रत दास प्रसिद्ध आर्यविद्वान डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री केन्द्रीय धान अनुसन्धान प्रतिष्ठान के निदेशक डा० वैजनाथ सिह ने विस्तार से प्रकाश डाला। आर्यसमाज भुवनेश्वर का विशाल सभाकक्ष वेज्ञानिको आर्यसमाज के अधिकारियो तथा सदस्यो एव वेदप्रेमी महानुभावो से भरा हुआ था। ज्ञातव्य है कि स्वामी जी सन्यास के बाद आर्यसमाज भुवनेश्वर मे ८ आठ बार पधारे थे और यही रहकर उन्होने अथर्ववेद का अग्रेजी मे अनुवाद किया था। स्वामी जी ने भुवनेश्वर प्रवास के विभिन्न समयो मे यहा के वैज्ञानिको डाक्टरो तथा शि[illegible] मे [illegible]पने वैज्ञानिक वैदिक तथा दार्शनिक व्या[illegible]ानो से गहरी छाप छोडी थी।

शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार

भुवनेश्वर आर्यसमाज के सस्थापक तथा उडिया भाषा मे आर्य साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प० प्रियव्रत दास ने उडीसा मे आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अपने स्व० पिता प० लिग राज अग्निहोत्री जी की स्मृति मे लिगराज अग्निहोत्री ट्रस्ट की स्थापना की है। उडियाभाषी महिलाओ मे वेद धर्म सस्कार तथा यज्ञो की प्रचारिका श्रीमती माता शन्नोदवी का प्रमुख स्थान है माता शन्नोदेवी स्व० प० लिगराज अग्निहोत्री की पुत्रवधू तथा प्रसिद्ध आर्यविद्वान प० प्रियव्रत दास की धर्मपत्नी हैं।

ट्रस्ट ने इस रजत जयन्ती वर्ष से प्रतिवर्ष शन्नो देवी राष्ट्रीय पुरस्कार देने का निर्णय किया है। ट्रस्ट के अधिकारियो ने अपनी परामर्शदात्री विद्वत्समिति के निर्णयानुसार आर्यजगत की प्रख्यात वेदविदुषी आचार्या डॉ० प्रियम्वदा वेदभारती को प्रथम शन्नोदवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार के लिए चयन किया। इस निमित्त उन्हे पुरस्कार स्वरूप ११०००/- ग्यारह हजार रुपये की राशि स्मृति चिन्ह शाल तथा प्रशस्ति पत्र भेट किया गया। पुरस्कार समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध गाधीवादी श्रीमती अन्नपूर्णा महाराणा ने की। राजस्वमन्त्री श्री विश्वभूषण हरिचन्दन माता श्रीमती शन्नो देवी उडिया साहित्यकार श्री शान्तनु आचार्य आर्यविद्वान डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री और पुरस्कृत डॉ० प्रियम्वदा वेदभारती ने अपने अपने विचारो से जनता को उपकृत किया। महात्मा गाधी और आचार्य विनोबा भावे के विचारो से आप्लवित समारोह की अध्यक्षा अन्नपूर्णा महाराणा ने कहा कि मेरी आखे वह दिन देखना चाहती थीं जब कि किसी नारी को वेद पण्डिता के रूप मे सम्मान प्राप्त हो।

ज्ञातव्य है कि डॉ० प्रियम्वदा वेदभारती ने पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी मे वेद वेदाग का अध्ययन करके व्याकरणाचार्य तथा वेदनिरूक्ताचार्य की उपाधिया स्वर्णपदक सहित प्राप्त की हैं तथा पाणिनीयव्याकरणे यज्ञियमीमासा विषय पर विद्वत्तापूर्ण शोधग्रथ लिखकर पी०एच०डी० (विद्यावारिधि) की उपाधि प्राप्त की है। आप इस समय गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की सस्थापिका तथा आचार्या है।

उपनिषदों के उडिया अनुवाद का प्रकाशन

उडीसा के प्रसिद्ध आर्यसमाज भुवनेश्वर के रजतजयन्ती समारोह के अवसर पर दो ग्रथो का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। उडिया भाषा के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आर्यनेता प० प्रियव्रत दास द्वारा उपनिषदो के इस उडिया अनुवाद उपनिषद प्रकाश (द्वितीय खण्ड) मे मुण्डक माण्डूक्य ऐतरेय तैत्तिरीय तथा श्वेताश्वतर उपनिषदो की व्याख्या की गई है। इसके पूर्व उपनिषद् प्रकाश (प्रथम खण्ड) का विमोचन हो चुका है। उपनिषद् प्रकाश का विमोचन गजपति महाराजा श्री दिव्य सिह देव के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। सभा मे उपनिषदो के अध्यात्म ज्ञान पर डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री स्वामी सुखानन्द सरस्वती आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती प० प्रियव्रत दास तथा महाराजा श्री दिव्य सिह देव के अनुसन्धानपूर्ण गम्भीर प्रवचन हुए।

इस रजत जयन्ती समारोह के शुभावसर पर आर्य समाज भुवनेश्वर का २५ वर्षीय इतिहास भी प्रकाशित किया गया है। इस इतिहास ग्रथ का लोकार्पण प्रसिद्ध उडिया लेखक एव भूतपूर्व डी०जी० श्री शरतचन्द्र मिश्र के करकमलो से सम्पन्न हुआ।

रजतजयन्ती समारोह की सफलता मे आर्यसमाज भुवनेश्वर के प्रधान श्री रामचन्द्र हस स्वामी सुधानन्द जी श्री वीरेन्द्र कर श्री ब्रजबधु पडा श्री भगवान आचार्य श्री दुर्गाचरण महाति श्री सुरेन्द्र मिश्र श्री वानप्रस्थी जी आदि ने अथक प्रयत्न किया।

वार्षिकोत्सव, वेद मेला तथा आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आजमगढ १ जून आर्यसमाज आजमगढ का १०८वा वार्षिकोत्सव एव आश्रम के चतुर्थ वेद मेला के साथ आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर ३१ मई को सकुशल सम्पन्न हो गया। इस कार्यक्रम का सचालन ब्र० नरेन्द्र ने किया।

२६ मई से चल रहे इस कार्यक्रम को मुख्य रूप से आचार्य विष्वड जी (अजमेर) का आशीर्वचन प्राप्त हुआ।

आश्रम की आधारशिला रखने वाले परमपूज्य स्वामी केवलानन्द जी (अलीगढ) ने अनवरत इस प्रकार के कार्यक्रमो का सचालन भविष्य मे किए जाने पर विचार दिया। नरसिह आचार्य जी ने यज्ञ का सफल सचालन किया साथ मे पण्डित वागीश मिश्र लालमणि शर्मा परमानन्द प्रेमी जी के हृदय स्पर्शी भजन से लोग मत्र मुग्ध हो गए। आर्यवीर दल के कमलासिह ने वर्तमान मे आर्यसमाज की सैन्य शक्ति को बढाने के लिए प्रशिक्षण शिविर के समापन पर आर्यवीरो को सम्बोधित किया। आर्यवीर दल उ०प्र० के मत्री प्रमोद आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्यो को सदाचारी नेताओ का ही सम्मान करना चाहिए

– प० नन्दलाल निर्भय

बहीन (मेवात) आर्यो को सदाचारी ईमानदार देशभक्त नेताओ का सम्मान करना चाहिए ओर भ्रष्ट लोगो को फटकार लगानी चाहिए। ये शब्द आर्य नेता प० नन्दलाल निर्भय पत्रकार ने आर्ययुवक परिषद शिविर के उदघाटन के अवसर पर आर्यसमाज होडल के प्रागण मे कहे। श्री निर्भय ने बताया कि पहले आर्यजन भ्रष्ट राजनीतिज्ञो को कभी मुह नहीं लगाते थे इसलिए सर्वत्र उनका सम्मान होता था। वस्तुत आर्य वही है जिसका आचार व्यवहार विचार आहार उत्तम है। आजकल धन की आड मे भ्रष्ट व्यक्तियो को आगे बढाया जा रहा है। हमे इस गन्दी दौड को रोकना होगा तभी आर्यसमाज बच सकेगा। आर्यवीरो ! अब जाग जाओ।

श्री उदयभान विधायक ने कहा कि आर्यसमाज ईश्वर भक्तो एव चरित्रवान लोगो का सगठन है इसलिए आर्यो को वेद प्रचार बढ चढकर करना चाहिए। इस अवसर पर चौधरी गयालाल पूर्व विधायक श्री शिवराम आर्य श्री जगवीर सिह आर्य श्री जयदेव आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री हेतराम गर्ग ने सभी वक्ताओ व श्रोताओ का समारोह मे पधारने पर आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ ४ का शेष

आइए ! प्रसन्नतापूर्वक आर्यसमाज की सेवा में जुटे

आर्यसमाज के प्रथम नियम मे कहा गया है सब सत्य विद्याओ का आदि मूल परमेश्वर है तो दूसरे मे कहा गया है वही सच्चिदानन्द परमेश्वर सर्वव्यापक है उसी की उपासना करनी चाहिए। इससे सभी मजहबी झगडे समाप्त हो जाते हैं। पादरी मौलवी और पुजारी सभी जानते हैं कि एक ही ईश्वर है पर पेट और अधिकार के लिए ये अपना व्यापार बन्द नहीं करना चाहते। यदि ईश्वर सभी सत्य विद्याओ का मूल है तो उसका दिया वेद सब सत्य विद्याओ के ग्रथ है। यदि सभी लोग सत्य ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाएगे तो वैर ईर्ष्या द्वेष आदि और शत्रुता बन्द हो जाएगी। यदि सभी धर्मानुसार सब काम करके ससार का उपकार करना अपना उददेश्य बना लेगे फिर झगडा कह[illegible] यदि प्रीतिपूर्वक सब केसाथ बर्ताव क[illegible] अविद्या का नाश करने के लिए विद्या[illegible] प्रचार करेगे तो ससार स्वर्ग बन [illegible]। मजहब की अविद्या के कारण ही ससार नरक बन गया है। यदि आर्यसमाज के दस नियम सभी आर्यसमाजी ध्यान मे रख कर आचरण करेगे तो आर्यसमाज मे वैरभाव फूट आदि पैदा ही न होगा।

– खेमराज लीला

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 30 6 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/200
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 27/2002

आर्यसमाज का सदस्य (सभासद्) होने के लिए निम्न नियमों का पालन करना आवश्यक है :-

१ वेद व वेदो पर आधारित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थो मे वर्णित सिद्धान्तो का जानना मानना व प्रचार करना।
२ अपनी आय का शतांश मासिक चन्दे के रूप मे या १००० रुपये या इससे अधिक वार्षिक चन्दा देना।
३ साप्ताहिक सत्सगो मे कम से कम २५ प्रतिशत उपस्थिति होना।
४ दैनिक सन्ध्या हवन करना। मास अण्डे बीडी शराब आदि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन न करना।
५ जन्मगत जात पात को न मानना।
६ मूर्तिपूजा मृतक श्राद्ध फलित ज्योतिष तीर्थ स्थान टेवा जन्मपत्री आदि अन्धविश्वासो व पाखण्डो को छोडना व छुडवाना

प्रतिष्ठा मे

।। ओ३म।।

अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताएं

(वर्ग क) स्कूल, कालिज, गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं आम जनता के लिए :-

प्रत्येक प्रतियोगी को महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। ३०-११-२००२ तक इस प्रश्न पत्र के प्रश्नो के उत्तर लिख कर भेजने होगे। **प्रथम पुरस्कार ३००० रुपये तथा द्वितीय २००० रुपये, तृतीय १००० रुपये प्रशस्ति-पत्र एव कुछ सान्त्वना पुरस्कार** भी दिए जाने की योजना है। इस प्रतियोगिता के लिए आयु लिग मजहब योग्यता आदि का कोई बन्धन नही। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी।

(वर्ग ख) स्कूल, कालेज गुरुकुल के आचार्यो एवं वैदिक विद्वानों आदि के लिए :-

सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक **सम्मुलास** पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखकर **सभा कार्यालय** मे भेजना होगा।
माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी **अन्तिम तिथि ३० ११ २००२, पुरस्कार प्रथम ५००० रुपये** तथा **द्वितीय ४००० रुपये, तृतीय २००० रुपये** तथा कुछ सान्त्वना पुरस्कार।

(वर्ग ग) १८ वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए :-

सत्यार्थप्रकाश मे कुछ रोचक व शिक्षाप्रद कहानियो सवादो एव दृष्टातो का वर्णन किया गया है। प्रतियोगियो को उन्हे ध्यानपूर्वक पढकर उनका सार व उनसे मिलने वाली शिक्षाओ को अपने शब्दो मे लिखकर भेजना होगा। प्रतियोगियो की सुविधा के लिए सत्यार्थप्रकाश पर आधारित आर्य भाषा मे एक लघु पुस्तिका नि शुल्क भेजी जाएगी। अन्तिम तिथि ३०-११-२००२ माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी पुरस्कार प्रथम २००० रुपये द्वितीय १००० रुपये तृतीय ५०० रुपये कुछ सान्तवना पुरस्कार।

नोट – जो महानुभाव किसी एक प्रतियोगिता मे भाग लेना चाहे वे मात्र ५० रुपये प्रवेश शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश अथवा ड्राफ्ट के द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करे। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयो पुस्तक विक्रेताओ आर्यसमाज कार्यालयो आदि से उपलब्ध न हो तो अतिरिक्त ५० रुपये हिन्दी सस्करण के लिए १५० रुपये अग्रेजी सस्करण के लिए धनादेश अथवा ड्राफ्ट द्वारा भेज कर मगवाई जा सकती है।

प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर ही पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र अनुक्रमाक एव अन्य निर्देश आदि प्रेषित किए जाएगे। पता – **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २,** विजेताओ को **महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह, महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र, गाजीपुर, नई दिल्ली** मे सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। **वर्ग ख के विजेताओ को सत्यार्थ रत्न की उपाधि से भी अलकृत किया जाएगा।** उत्तर पुस्तिकाओ का निरीक्षण उच्च कोटि के विद्वान द्वारा करवाया जाएगा। **धनादेश के नीचे अथवा ड्राफ्ट के पीछे प्रतियोगिता का वर्ग, माध्यम एव अपना पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखे।**

कैप्टन देवरत्न आर्य	**विमल आर्य (वधावन)**	**वेदव्रत शर्मा**	**डॉ० मुमुक्षु आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री	रजिस्ट्रार

निवेदन – समस्त समाजो सभाओ एव आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि इस प्रतियोगिता का स्थानीय स्कूलो कालिजो व आम जनता मे प्रचार करने मे सहयोग करे। दैनिक समाचार पत्रो मे इस सम्बन्धी विज्ञापन अथवा प्रेस विज्ञप्तियो के द्वारा भी प्रचार मे सहयोग अभीनन्दनीय होगा ताकि आम जनता एव बुद्धिजीवी इसमे भाग ले सके और महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार हो सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)
सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक १० | ७ जुलाई से १३ जुलाई २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ | सम्वत २०५९ | आ० कृ० १२

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रताप भाई का सभा कार्यालय में स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रतापसिह शूरजी बल्लभदास का २८ जून को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे पधारने पर भव्य अभिनन्दन किया गया। श्री प्रताप भाई अपने सुपौत्र के विवाह सस्कार को सम्पन्न कराने के लिए विगत माह दिल्ली आये थे। विवाह सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ जिसमे प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उप प्रधानमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी सहित कई अन्य सभासद नेता उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा सभा के पूर्व मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी शामिल हुए।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभदास १९६३ स १९७ तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। सार्वदेशिक सभा काया म कई अधिकारियो की उपस्थिति म भव्य स्वागत किया गया।

सभा के वरिष्ठ उपप्रधान वधावन ने कहा कि श्री प्रता का कायकाल प्ररणाआ ३ गतिविधियो से परिपूण रहा कायकाल म ही लाल बहा जब प्रधानमन्त्री थे ता अखिल दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना इ थी। आपातकाल मे आपका आपके परिवार को गम्भीर यातना गई थी। आपके परिवार गौरवशाली इतिहास की भी अन क दी गई जब आपक परिव स्वतन्त्रता आन्दोलन म लाखो रुपय सहायता व गस का उपलब्ध करा इ

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभ दास का सभा कार्यालय मे भव्य स्वागत किया गया। स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा एव श्री विमल वधावन। पुरानी स्मृतियो को सुनते अन्य अधिकारीगण।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता संगोष्ठी सम्पन्न

आत्मीयता के साथ आयोजित आत्मावलोकन सम्मेलन संगठनात्मक एकता को बढ़ाने में सक्षम

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गत बुधवार दिनाक १६ जून २००२ को प्रात १० ३० बजे प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी का आयोजन आर्यसमाज परली बैजनाथ जिला बीड (महाराष्ट्र) मे किया गया। प्रस्तुत सगोष्ठी मे प्रमुख मार्गदर्शक के रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन उपस्थित थे। सगोष्ठी की अध्यक्षता महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने की।

प्रान्तीय सभा के इतिहास मे शायद पहली बार ही इस प्रकार की सगोष्ठी का आयोजन किया गया होगा। इसमे भाग लेने हेतु सभान्तर्गत सभी आर्य समाजो के प्रतिनिधि उत्साह के साथ पधारे थे।

• विश्व का मार्गदर्शक आयसमाज एव उसके कार्यकर्ताओ का समरस त होना

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष

आत्मावलोकन सम्मेलन संगठनात्मक एकता को बढ़ाने में सक्षम

आर्यसमाज के विषय मे समाज मे गलत धारणाओ का फैलना आपसी मतभेद एव सघर्ष वैदिक सिद्धान्तो के सरक्षण मे हमारी कमजोरिया आर्ष ग्रन्थो का प्रचार एव प्रसार हमारी बढती निष्क्रियताए नेताओ एव कार्यकर्ताओ का आर्यसमाज से हटकर काम करना अन्य मत सम्प्रदायो के साथ बढते समझोते वर्ण एव आश्रमव्यवस्था के पालन मे आर्यो की अकार्यक्षमता वर्तमान बढती सभी समस्याओ मे हमारी कर्महीनता अनुशासनहीनता पाश्चात्य कुप्रवाह को राकने मे असमर्थता आदि विषयो पर रखे गये बिन्दुओ पर प्रतिनिधियो ने उपायात्मक विचार रखे। साथ ही आर्यसमाज अधिक गतिशील एव सक्रिय कैसे बने इस पर भी विचारमन्थन हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा प्रस्तुत मन्त्रपाठ एव स्वागत गीतिका से सगोष्ठी की शुरुआत हुई। आर्यसमाज परली के प्रधान श्री रामपालजी लोहिया तथा आर्यसमाज औराद (उमरगा) के प्रधान श्री प्रा० शिवाजीराव गायकवाड ने प्रतिनिधि के रुप मे प्रमुख मार्गदर्शक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान विमलजी वधावन एव अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती का स्वागत किया। तत्पश्चात प्रान्तीय सभा मन्त्री डा० सुग्रीव काले ने प्रस्तावना शब्द रखते हुए सगोष्ठी के आयोजन का उददेश्य स्पष्ट किया। उन्होन कहा कि आज वातावरण मे आचारो विचारो का प्रदूषण बढ रहा है तथा मनुष्यता लुप्तप्राय दिखाई दे रही है। आयसमाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगने का समय आया है अत हमे आत्मपरीक्षण करने की आवश्यकता है।

सगोष्ठी मे उपस्थित मुख्य अतिथि एव मार्गदर्शक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज दुनिया की सबस बडी माग आर्यसमाज ही है अत हम बार बार एकत्र होकर आत्मचिन्तन करना होगा। ग्राम तहसील जिला एव प्रान्तीय स्तरो पर विचार विमर्श हेतु सगोष्ठियो का आयोजन करना होगा। आर्यसमाज भवनो के दुरुपयोग पर प्रतिबन्ध लगाकर उनका उपयोग सस्कार एव मार्गदर्शक केन्द्र के रुप मे करना चाहिए। उन्होने आगे कहा कि किसी भी शराबी व कबाबी व्यक्ति को आर्यसमाजो मे प्रवेश न दिया जाए तथा अन्य अवैदिक मान्यताओ पर रोक लगायी जाए।

प्रसार माध्यमो के विषय मे श्री वधावन ने कहा कि आर्यसमाजो के कार्यक्रमो के वृत्तान्त सैद्धान्तिक लेख तथा अन्य महत्वपूर्ण बातो की जानकारी कार्यकर्त्ता सदैव समाचार पत्रो मे देते रहे। अखबारो से जुडे रहना यह समय की पुकार है। प्रसिद्धी करने मे ही समय गवाना ठीक नहीं किन्तु अपनी गतिविधियो की यथार्थ जानकारी जनसामान्य तक पहुचाना यह भी एक प्रचार का माध्यम है। आर्यसमाज के उपक्रमो के बारे मे उन्होने कहा कि सत्सगो के कार्यक्रमो की रुपरेखा सुधारात्मक रुप से बननी चाहिए। आर्यसमाज का हर सदस्य वक्ता बने इसलिए व्यक्ति तैयारी कर व्याख्यानो की श्रृखला बनाये रखे। हमारा आर्यसगठन रचनात्मक कार्यो पर बल देने वाला बने। आश्रम व्यवस्था का पालन भी दृढता के साथ होना चाहिए। आर्यसमाज राजनीति का अडडा न बने। आर्य कार्यकर्ताओ के आचरणात्मक जीवन का समाज के सामान्य घटक वर्गो के साथ राजनेताओ पर भी प्रभाव पडे।

आर्यसमाज की सदस्यता व्यक्ति पर नही बल्कि पारिवारिक स्तर पर आधारित होनी चाहिए। सारा परिवार आर्यसमाज का सदस्य बने। आर्य परिवार एक दूसरे के साथ जुडे रहेगे तो आपसी प्रेम व स्नेह बढता रहेगा और आत्मचिन्तन करने तथा कमियो को दूर करने का मौका मिलेगा।

अन्त मे विमल वधावन ने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों की प्रशसा करते हुए प्रान्तीय स्तर पर आयोजित की गयी प्रस्तुत सगोष्ठी हेतु पदाधिकारियो का अभिनन्दन किया। गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे विशिष्ट सहयोग के लिए उन्होने सभा प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी उपप्रधान श्री जयराम जी बसैये तथा १०० वर्ष से अधिक आयु के श्री नन्दलाल जी को विशेष स्मृति चिन्ह प्रदान करके उनका अभिनन्दन किया। सगोष्ठी मे सर्वश्री ओमप्रकाश पाराशर (लातूर) साहेबराव मागले (घाट पिपरीवाशी) इद्रजीत गिरी आर्य (मोगरगा–औसा) गोपाल भुरेवाल (जालना) प्रा० देवदत्त तुगार (नादेड) भगवन्त कपूर (नाशिक) विजयकुमार वाघमारे (निलगा) वशिष्ट आर्य (अबाजोगाई) माधव देशपाडे (नाशिक) शकरराव बिराजदार (सोलापुर) बेधडक आर्य (गुजोटी–उमरगा) श्रीमती इन्दुमती सावन्त (लातूर) श्रीमती वीरश्री आर्या (परली) विजयकुमार शेटकार (निलगा) प्रकाश कच्छेवार (औरादशहाजानी) चन्द्रकान्त वेदालकार आदि ने भी विचार व्यक्त किये। सगोष्ठी मे सभा के अन्तर्गत आनेवाली अनेको आर्यसमाजो के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सगोष्ठी का सूत्रसचालन डॉ० नयनकुमार विशारद ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव प्रातीय सभा के उपप्रधान एव सभाजीनगर आर्यसमाज के मन्त्री श्री दयाराम बसैये ने रखा।

(प्रस्तुति डॉ० नयनकुमार विशारद)

कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन (बाए) तथा महाराष्ट्र सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी उप प्रधान श्री दयाराम बसैये तथा मन्त्री श्री सुग्रीव काले को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए। (दाए)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रिय पाठको से निवेदन है कि रजिस्ट्री लिफाफा आदि के अन्दर कोई नकद धनराशि रख कर न भेजे। गुम हो जाने पर सभा इसकी जिम्मेदार नही होगी। कोई भी धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर द्वारा ही भेजे जिससे कि सभा कार्यालय मे सुरक्षित प्राप्त हो सके। पत्र व्यवहार एव मनिआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता साफ साफ लिखे जिससे कि उचित कार्यवाही की जा सके।

सार्वदेशिक पत्र का वार्षिक शुल्क पचास रुपये अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क पाच सौ रुपये सहयोग राशि भेजकर सभा का सहयोग करे।

सधन्यवाद।

— सम्पादक

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

गताक से आगे

दूरदर्शन के कार्यक्रमों को अश्लीलता मुक्त किया जाए

६ भव्य ग्रन्थो का विमोचन

२७ अप्रैल २००२ का प्रात कालीन सत्र स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के अध्यक्षीय भाषण के साथ औपचारिक रूप से सम्पन्न हो गया। परन्तु इसके बाद स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के प्रयासो से प्रकाशित ६ भव्य ग्रन्थो का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने ग्रन्थो का परिचय देते हुए इनका विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न करवाया। वेद गीताजली नामक ग्रन्थ का विमोचन श्रीप्रकाश आर्य ने किया। वेदार्थ वाङ्मय का इतिहास नामक ग्रन्थ का विमोचन श्री धर्मपाल आर्य ने किया। समाज निर्माण मे वर्ण व्यवस्था का योगदान नामक ग्रन्थ का विमोचन रामनाथ सहगल न किया। डा० तुलसी द्वारा लिखित अग्रेजी पुस्तक Swami Dayananda s Vision of Truth का विमोचन कनाडा आर्यसमाज के प्रधान श्री अमर ऐरी ने किया शतपथ ब्राह्मण के प्रतीक ग्रन्थ का विमोचन स्वामी विवेकानन्द ने कि

निर्माता नामक बृहत ग्रन्थ का विमोचन सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री यानन्द मुजाल ने किया। इसी भारत निर्माता ग्रन्थ के लेखक डा० कृष्ण वल्लभ का इस महासम्मेलन म स्वागत सम्पन्न किया जाना था परन्तु व अस्वस्थता के कारण सम्मेलन मे नही आ सके स्वामी दीक्षानन्द जी न बताया कि भारत निर्माता ग्रन्थ म मनु स लेकर महर्षि दयानन्द तक उन समस्त महान विभूतिया का उल्लख किया गया हे जिनकी भारत के निर्माण म विशेष भूमिका रही है।

इस कार्यक्रम क बाद महासम्मलन क सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि दोपहर बाद तीन बजे से माता निर्माता भवति सत्र की मुख्य अतिथि सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज हरिद्वार मे पधार चुकी हे और व वानप्रस्थ आश्रम म दर्शनार्थ गई हुइ है।

कार्यकर्ता सम्मेलन

सम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने दोपहर के अवकाश की अवधि को कार्यकर्ता सम्मेलन घोषित करते हुए श्री आनन्द कुमार आर्य एव श्री वाचोनिधि आर्य को सचालन के लिए आमन्त्रित किया और कनाडा आर्यसमाज के प्रधान श्री अमर ऐरी का नाम इस विशेष सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए प्रस्तावित किया।

इस विशेष सम्मलन को श्री व्यास नन्दन शास्त्री श्री खुशहाल चन्द्र आर्य श्रीप्रकाश आर्य श्रीमती नन्दिता शास्त्री श्री अबोध शास्त्री श्री अशोक आर्य तथा अन्त मे अध्यक्ष श्री अमर ऐरी ने सम्बोधित किया।

इस कार्यकर्ता सम्मेलन मे वक्ताओ के उदबोधन का केन्द्र बिन्दु वैदिक सिद्धान्तो का अधिकाधिक प्रचार प्रसार करना था। श्री अमर ऐरी ने कहा कि इस महासम्मेलन मे उमड रहे उत्साह को देखकर वे गद्गद है और इन्ही प्रेरणाओ को वे अपने साथ सदेव बनाए रखेगे। उन्होने कहा कि हम व्यक्तिगत रूप से अपने आप मे आर्यसमाज की क्या छवि प्रस्तुत कर पाते है यह हमारी अपनी छवि पर निर्भर करता हे। हमारे अन्दर प्रचारक की भावना होनी चाहिए।

माता निर्माता भवति

दोपहर तीन बजे माता निर्माता भवति सत्र का शुभारम्भ करते हुए महासम्मेलन क सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मलन मे आर्यो की उपस्थिति विशाल समुद्र की तरह लग रही है जिसमे ज्ञान की लहरा क हिलारे वातावरण का चार चाद लगा रह है।

सत्र क अध्यक्ष श्रीमती दमयन्ती कपूर का परिचय दत हुए उन्हाने कहा कि जन्म काल स ही आप गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सेवा कर रही ह। आप आचार्य रामदव जी की सुपुत्री ह जिन्हाने १९२३ मे कन्या गुरुकल की स्थापना की थी आचार्य रामदव जी अग्रेजी भाषा के विद्वान थ इग्लिश विदशो मे उनका काफी सम्मान था दक्षिणा क रूप म प्राप्त धनराशि स ही उन्होने कन्या गुरुकुल दहरादून की स्थापना की थी

इस सत्र की सयोजिका श्रीमती शशिप्रभा आर्या का परिचय दत हुए उन्होने बताया कि आप सार्वदेशिक सभा के विश्वविख्यात पूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री हैं

वक्ताओ म माता प्रेमलता शास्त्री (स्व० श्री पृथ्वीराज शास्त्री जी की पत्नी) ब्र० इन्दु (वानप्रस्थ आश्रम मे साधनालीन) डा० आशारानी राय (कानपुर महाविद्यालय की प्रधानाचार्य) डा० सुषमा शर्मा (स्वामी विद्यानन्द जी की सुपुत्री) श्रीमती शकुन्तला आया (पूर्व महापौर दिल्ली) श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (आचार्य भद्रसेन जी की सुपुत्री और कै० देवरत्न आर्य जी की बहन।) श्रीमती शन्नो देवी (डा० प्रियव्रत दास जी की धर्मपत्नी) का परिचय श्री विमल वधावन ने प्रस्तुत किया।

सत्र की सयोजिका श्रीमती शशि प्रभा आर्या ने मच की व्यवस्था को सम्भालते हुए एक तरफ विशाल सख्या मे उपस्थित आर्यजनो का स्वागत किया ता दूसरी तरफ सम्मेलन क आयोजको का भी धन्यवाद किया जिन्हाने पूरी कर्मठता के साथ इस विशाल आयोजन के दायित्व को निभाया।

श्रीमती शशि प्रभा आया न कहा कि उस समय की कल्पना करो जब नारी का नरक का द्वार कहा जाता था ओर उसे वेद पढने क अधिकार से भी वचित रखा गया था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुत दूरदर्शी थे। वे यह अहसास कर चुक थ कि नारी की इस अवस्था स देश का कल्याण सम्भव नही। अरस्तु न भी इस प्रकार क विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि किसी भी देश की सभ्यता और सस्कृति का आकलन उस देश की महिलाओ की अवस्था स होता ह। धार्मिक हाते हुए भी उन्होने देश की राजनीतिक अवस्था पर अपना पूरा मार्गदर्शन प्रस्तुत किया। विरक्त सन्यासी हात हुए भी उन्हाने गृहस्थ व्यवस्था क बारे म सवात्तम उपदश दिए अखण्ड ब्रह्मचारी होने क बावजूद भी उन्हाने नारी जाति क उत्थान क लिए महान प्रयास किए

सत्र की [illegible] भूमिका क स [illegible] सयोजिका न सत्र की अध्यक्षा श्रीमती दमयन्ती कपूर स उदबोधन श्रृखला प्रारम्भ करने की आज्ञा ली और [illegible] न मा[illegible] निम[illegible] नामक विषय [illegible] उदबोधन प्रस्तुत करने क लिए माता प्रेमलता शास्त्री का आमन्त्रित किया

बेटो से पहले आर्य मा बलिदान देती है

माता प्रेमलता शास्त्री न अपने उदबोधन क प्रारम्भ मे विषय [illegible] २[illegible] अप्रल की शोभा यात्रा म प्रशासन व्यवधानो का उल्लेख करत हुए कहा कि कल की शोभा यात्रा म पूरी तरह एक धार्मिक वातावरण था और प्रशासन क लोग इतना भी याद न रख सक कि ये आर्य उस श्रद्धानन्द क अनुयायी है जिनके सामने अग्रेजो की बन्दूके भी नही टिक सकी उन्होन कहा कि केप्टन देवरत्न आर्य ने कल यह घोषणा की थी कि सबसे पहले मै गिरफ्तारी दूगा तो मुझे मच पर आकर कहना पडा की सार्वदेशिक सभा के प्रधान की यह अनाधिकार चेष्टा है क्योकि बेटो से पहले गिरफ्तारी और बलिदान का अधिकार मा का होता है उन्होन कहा कि हम तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मारक पर जा रहे थे हमार प्रधान मे उत्साह था इसलिए कोई ताकत हम नहीं रोक सकती थी

माता प्रेमलता शास्त्री जी क विस्तृत उदबोधन इसी अक म प्रकाशित किया जा रहा है। कृपया उस लख को अवश्य पढे

महर्षि दयानन्द ओर नारी उत्थान नामक विषय पर अपना उदबोधन प्रस्तुत करन के लिए ब्रह्मचारिणी इन्दू को आमन्त्रित किया गया

नारी निर्माण से ही आदर्श समाज का निर्माण

ब्र० इन्दू ने कहा कि आज विश्व म चारा तरफ तरह तरह के अन्वेषण ओर अनुसधान हो रहे हे परन्तु मानव निर्माण के लिए कोई प्रयास नही हो रहा ह उन्हान कहा कि मानव निर्माण से पूर्व बाल निर्माण करना पडता ह आर बाल निर्माण स पूर्व नारी निर्माण सुनिश्चित करना भी अत्यन्त आवश्यक ह

सृष्टि निर्माण रूपी यज्ञ म प्रथम आहुति नारी ही दती ह वद म नारी का सावित्री अर्धांगिनी उषा अज्ञान क नाश करन वाली आदि नाम दिए [illegible]

नारी क [illegible] म पूर्ण [illegible] हाता नारी का धर्म [illegible] हुए कहा गया [illegible] की [illegible]

[illegible]

दती [illegible] नारी [illegible] नारी क [illegible] उपाधि दी [illegible] नारी [illegible] जा[illegible] क्या पुरुष का [illegible] हनी ह धर्म [illegible] दी [illegible] मातृस्वरूपिणी मा[illegible] [illegible] का [illegible] बलिदान [illegible]

पूर्व वक्ता [illegible] श्री श्रीमती सुषमा स्वराज [illegible] दूरदर्शन [illegible] कार्यक्रम [illegible] भ्रष्ट कर रहे हे [illegible] रोक लगानी चाहिए

इसक पश्चात [illegible] सुषमा [illegible] क उदबोधन प्रारम्भ हुए श्रीमती शकुन्तला आर्या एव श्रीमती शन्नो देवी के प्रवचन हुए उनका साराश भी स्पष्ट रूप म इसी अक म प्रकाशित है निक अवलोकन पाठकवृन्द अवश्य कर

इस सत्र मे अन्य विदुषी वक्ता श्रीमती आशा रानी राय श्रीमती उज्ज्वला वर्मा कुमारी प्रभा अग्रवाल तथा मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा स्वराज के वक्तव्य का उल्लेख आगामी अक मे किया जाएगा। नए

वैदिक नारी

– डॉ० सुषमा शर्मा

विश्व की प्राचीन सस्कतियो और सभ्यताओ का तुलनात्मक दृष्टि से आकलन करन पर हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि जैसी गौरवास्पद स्थिति नारी की वैदिककाल मे थी वैसी अन्यत्र कही नही थी। जिस समय हमारे देश मे महिलाए ऋचाओ का प्रणयन कर रही थी। ब्राह्मण ग्रन्थो और आख्यको पर व्याख्या ग्रन्थ लिख रही थी गणित आदि वैज्ञानिक विषयो पर अनुसन्धान कर रही थी। उस समय आधुनिक सभ्यता और सस्कृति का दम भरने वाले राष्ट्रो म नारी की दशा अत्यन्त दीन एव हीन थी।

वेद मे नारी की छवि स्पष्ट है उनकी स्थिति अत्यन्त उच्च सम्मानित तथा गौरवमयी हे। ऋग्वेद मे पत्नी को ही घर माना जाता है। (जाया इद अस्तम – ऋग-३-५३-४) पति और पत्नी दोनो का समान अधिकार देते हुए दोनो को दम्पत्ति (दम–पती) घर का स्वामी कहा गया है। पुरुष ओर स्त्री परिवार रूप समाज रूप और राष्ट्ररूप रथ के दो चक्र है जिनमे से किसी एक के बिना अथवा उनमे बराबरी के बिना रथ सम्यकरुपेण गति नहीं कर सकता। स्त्री को गौरव प्रदान करते हुए वेद कहता है कि पुरुष साम है तो स्त्री ऋग है पुरुष द्यौलोक है तो स्त्री पृथिवी है। (सामाहमास्मि ऋक्त्वम धौरह पृथिवी त्वम) विवाह के अवसर पर पति पत्नी कामना करते हुए कहते हैं कि हम दोनो के हृदय जल मे मिले हुए जल की भाति एक हो जाए। (समानो हृदयानि नौ। ऋग १०–८५–४७) परस्पर सामन्जस्य का कितना सुन्दर उदाहरण है। वेद के अनुसार नारी पतिगृह मे दासी बनकर नहीं अपितु सम्राज्ञी बनकर आती है। पति ही नहीं अपितु परिवार के अन्य सदस्यो को भी उसे वही सम्मान देना होता है जिसकी वह अधिकारिणी है।

वैदिक नारी को पुरुष के ही समान शिक्षा का पूर्ण अधिकार था। विवाह भी वह ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति के उपरान्त ही करती है। (ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम। अथर्व ११–५–१८) यजुर्वेद की प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रार्थना मे जहा राष्ट्र मे विजयशील सभ्य और वीर युवको की कामना की गई है वहीं बुद्धिमती नारियो (पुरन्धिर्योषा) के उत्पन्न होने की भी प्रार्थना की गई है।

यजुर्वेद मे स्त्री को यज्ञिया कहा गया है। (शुद्रा पूता योषितो यज्ञिया इमा।) वैदिक नारी स्तुतियोग्या रमणीया कमनीय है। (इदेरन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे जयाते अदिते सरस्वती मही विश्रुति। यजुर्वेद।)

वैदिक नारी न केवल अपनी गृहस्थी का सुचारु रूप से सचालन करती थी अपितु समय पर ब्रह्म के कर्त्तव्य का निर्वहण भी कुशलता से करती थी। "स्त्री हि ब्रह्म बवूविथ । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे ऊचाइयो को छूने वाली इस वैदिक नारी के विषय मे अथर्ववेद कहता है 'एषा ते कुलपातराजन – यह नारी तेरे कुल को चलाने वाली है।

वैदिक नारी विधवा का अभिषप्त जीवन जीने के लिए बाध्य नहीं है। वह चाहे तो पुनर्विवाह करके सुख सुविधा पूर्ण सम्मानित जीवन व्यतीत कर सकती है अन्यथा पति गृह मे सन्तान के साथ सम्पति की अधिकारिणी बनकर सार्थक जीवन बिता सकती है।

वस्तुत वैदिक नारी पुत्री बहन पत्नी तथा माता के कर्त्तव्यो के लिए समुज्ज्वल आदर्श उपस्थित करती है।

– आर ३६८ विजय रत्न विहार सै १५ बी० गुडगाव (हरियाणा)

वेद-उपवेद और आज का आयुर्वेद

यह प्रश्न प्राय पूछा जाता ह कि आयुर्वेद वेदा का अग होत हुए भी वह चारो वेदा का सारभूत है या किसी एक का। हर एक वेद का एक उपवेद होता है। महात्मा वद व्यास अपने चरणव्यूह मे कहते है कि सब वेदो के उपवेद होते हैं। ऋग्वद का आयुर्वेद यजुर्वेद का धनुर्वेद सामवेद का गधववेद उपवेद है। इसके बिल्कुल विपरीत पालकाप्य मुनि कहते हे कि आयुर्वेद अथववेद का उपवेद है।

आचाय चरक कहते हैं कि वैद्यो को कहना चाहिए कि ऋग यजु, साम और अथववेद पर हमारी विशष श्रद्धा है क्योकि अथर्ववेद स्वस्ति बलि मगल होम नियम प्रायश्चित उपवास आदि के द्वारा चिकित्सा का वर्णन करता है। आचाय सुश्रुत भी आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद मानत हैं।

तब हमे कहना चाहिए कि आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद ह क्योकि आचार्य वाग्भट भी अथववेद को ही आयुर्वेद का मुख्य वद मानते हैं। परन्तु महात्मा वेदव्यास इस ऋग्वेद का उपवेद मानते हैं। तब हमे यह समझना चाहिए कि वेदो मे ऋग्वेद का नाम सबसे ऊपर आता है और आयुर्वेद की चर्चा भी सब वेदो मे है और आयुर्वेद का अधिक भाग अथर्ववेद है अत आचार्यो ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना है।

यह तो थी आचार्यो की बात अब तनिक आज की आयुर्वेदिक चिकित्सा पर भी दृष्टिपात करना चाहिए। आज कल जो हमारे लडके-लडकिया जो बी०ए एम०एस० आदि करके आ रहे है। वे र ब धडल्ले से एलोपैथिक चिकित्सा कर हे है जबकि ये सब डिग्रिया आयुर्वे क है। इनको थोडा सा एलोपेथिक प्रशि ण द दिया जाता है और वे दोनो आयुर्वेद ओर एलोपैथिक साथ साथ करते है। इसके ठीक विपरीत एक होम्योपैथिक डाक्टर को चाहे उसके पास दोनो रजिस्ट्रेशन हो दोनो मे चिकित्सा नही कर सकता यह भेदभाव क्यो ?

आयुर्वेदिक कालेजो (महाविद्यालयो) मे जो पाठयक्रम पढाया जाता हे उसमे चरक ही मूल रूप मे पढाया जाता है सुश्रुत भी कम पढाया जाता है। कहीं कहीं वेद की एक ऋचा का अर्थ कर दिया जाता है। जब वेदो को बिना पढे आयुर्वेद की सन्नद मिल जाए तो कोई वेद मे माथा क्यो मारे। चादी कूटने का प्रमाणपत्र तो मिल ही गया है।

सरकार ने जो पिछले दरवाजे से डाक्टर बनाने का रास्ता अपनाया है इससे यदि किसी को हानि होती है तो केवल आर्यसमाज की। कैसे निम्नांकित है –

१ जितने भी सगठन है आर्यसमाज को छोडकर कोइ भी वेद का प्रचार नहीं करता और न ही किसी को वेद से लेना देना है। नाम जरूर वेद का लेते हैं।

२ सस्कृत के पठन पाठन को ठेस लगेगी। कोई सस्कृत पढने पर ध्यान नहीं देगा। सस्कृत पढकर उसे कोई लाभ दिखाई नहीं देता अत जनता मे सस्कृत के प्रति कोई रूचि न होगी। जबकि आर्यसमाज इसे प्राथमिकता के रूप मे लेता है।

३ सस्कृत के विद्वानो का अभाव हो जाएगा तो वेद कौन पढेगा और वेदो मे से आयुर्वेद को कौन निकालकर लाएगा। जबकि आर्यसमाज आयुर्वेद को उतना ही आवश्यक मानता है जितना वेद को। जब वेद ही नहीं होगा तो आयुर्वेद कहा होगा।

अब आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह इस एक आन्दोलन के रूप म ले ओर निम्न बिन्दुआ पर ध्यान द –

१ जितने भी आयुर्वेदिक कालेज है उनमे पाठयक्रम बिल्कुल बदला जाए। उनम चारो वेद पढाए जाए।

२ आयुर्वेदिक कालेजो मे केवल एक ही चिकित्सा का पाठयक्रम पढाया जाए आयुर्वेद न कि एलोपैथिक।

३ आर्यो को अपने क्षुद्र स्वार्थ छोडकर इस आन्दोलन मे कूद जाना है। आन्दोलन का चलाने के लिए हमारे पास क्रान्तिकारी सन्यासियो की कमी नही है।

इससे सस्कृत के पठन पाठन को बढावा मिलेगा वेद पढने के लिए रूचि पैदा होगी और आयुर्वेद का एक नया अध्याय शुरू होगा।

यह एक छोटा सा सुझाव है जिससे वेद प्रचार को बल मिलेगा।

डॉ० कुन्दन लाल पाल आर्यसमाज सरहन्दी गेट पटियाला १४७००१

त्रिवेदीय पारायण महायज्ञ सम्पन्न

श्रीमती मोहन देवी एव श्रीमती अन्नपूर्णा भारद्वाज के द्वारा आयसमाज शाहपुरा (भीलवाडा) के तत्वावधान मे दिनाक २७ मई २००२ से दिनाक २ जून २००२ तक अथर्ववेद पारायण तथा दिनाक ३ जून २००२ से ऋग्वेद प्रारम्भ होकर दिनाक १४ जून २००२ को सम्पूर्ण हो गया तथा दिनाक १५ जून २००२ से सामवेद प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति दिनाक १७ जून २००२ को हुई। यह पारायण क्रमश अथर्ववेद का वेद विदुषी सुश्री निष्ठा विद्यालकार (कानपुर) एव ऋग्वेद का वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री वेदप्रिय शास्त्री सीताबाडी (बारा) तथा सामवेद का सुश्री पदीत्रा शर्मा गुरुकुल हाथरस के ब्रह्मा ने पद को धारण करने से सम्पन्न हो सका। विद्वानो द्वारा हृदय स्पर्शी एव मर्मज्ञ प्रवचन हुए। श्रोताओ ने जिनकी खूब सराहना की।

इस अवसर पर डा० धर्मवीर शास्त्री मत्री परोपकारिणी सभा अजमेर एव श्री ओमप्रकाश झवर सयुक्त मत्री के प्रवचनो का भी श्रोताओ ने लाभ लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मे क्रमश श्री इन्द्रदेव पीयूष (उदयपुर) श्री भूपेन्द्रसिह (अलीगढ) एव श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा (गाजियाबाद) के भजन व उपदेश लगातार २२ दिनो तक इस आर्यनगरी मे वेद की ऋचाओं की गूज रही।

श्रीमती मोहनदेवी व श्रीमती अन्नपूर्णा ने अक्टूबर २००० मे यजुर्वेद का पारायण कराया था। इस प्रकार शहर मे चारो वेदो का पारायण यज्ञ कराने वाली पहली महिला होने का गौरव प्रदान किया है।

पूर्णाहुति के अवसर पर श्री रतनलाल जी ताम्बी राज्य मत्री खादी तथा ग्रामोद्योग ने श्रीमती मोहनदेवी व अन्नपूर्णा देवी को श्रीफल व शॉल ओढाकर सम्मान प्रकट किया। श्री बशीलाल सोनी प्रधान ने आभार व्यक्त किया। श्री रामकृष्ण छाता मत्री ने प्रशस्ति पत्र भेट किया। श्री कन्हैयालाल आर्य प्रचार मत्री ने यज्ञ की सक्षेप मे रिपोर्ट प्रस्तुत की।

– रामकृष्ण छाता मत्री आर्यसमाज शाहपुरा

भारतीय नारी को अपने अतीत की ओर झांकना होगा

– श्रीमती दमयन्ती कपूर

श्री माननीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारीगण एव सभा मण्डप मे उपस्थित महानुभाव एव महिला मण्डल।

आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के शुभावसर पर होने वाले 'माता निर्माता भवति सत्र की अध्यक्षता करने हेतु आपने मुझे आमन्त्रित किया है। उसके लिए आप सबका हार्दिक धन्यवाद एव अभिनन्दन करती हू। अगणित ऋषि मुनियो की तपश्चर्या से पवित्रीकृत इस तीर्थस्थली हरिद्वार मे पतित पावनी गगा के तट पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ४ मार्च १६०२ मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की। जिसका यह शतवार्षिकी समारोह है जिसको आर्यो के महाकुम्भ की सज्ञा दी गई है। जो काल के ताड पत्र पर आर्यसमाज के अध्यवसाय का एक जीवन्त एव सशक्त हस्ताक्षर है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मस्तक पर विजय का कुकुम तिलक है।

गुरुकुल एव गगा का पारस्परिक अटूट सम्बन्ध है। गगा एक जल प्रवाह है धारा है हिमालय से समुद्र को जोडने वाला एक तरल–प्रवाह है। परन्तु इसके साथ ही गगा एक विचार है सस्कृति है मिथक है। अपनी सम्पूर्ण विशालता पवित्रता के साथ ही जाति से स्त्री है फिर भी सर्वाधिक पूज्य है। ब्रह्म लोक से शिवलोक तक यह गगा देवनदी के रूप में प्रणम्य है। जलपूजा मे वरूण देवता से भी अधिक वन्दनीय है। भगीरथ के प्रयत्नो एव तपस्या के मिथक रूप मे यह भागीरथी है। महाभारत के सबसे बडे चरित्र नायक भीष्म पितामह की यह माता है। गगा धर्म है आयुर्वेद के अनुसार औषधी भी है। इसके अवतरण से समर्पण तक बीच के प्रत्येक स्थान तीर्थ बन गए। यह गगा अनेक ऋषियो की तपस्या स्थली है। सम्भवत गगा के इन सब गुणों को आधार बनाकर ही अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द जी ने इस तत्व को हृदयगम करके ही इसके तट पर गुरुकुल को स्थापित किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी की इस दिव्य दृष्टि के लिए मैं उनके इस ऋषि रूप को प्रणाम करती हू। ऋषि का अर्थ केवल वेदो का साक्षात्कार करना ही नहीं अपितु भविष्य–दर्शन भी है गुरुकुल एव गगा दोनो की पवित्रता कर्मठता समर्पण विरामहीन यात्रा आदर्शों के सर्वोच्च शिखर की प्राप्ति ही उद्देश्य है – जैसे सब नदियो मे गगा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है उसी प्रकार यह गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय भारत के सम्पूर्ण विश्वविद्यालयो मे सर्वोच्च शिखर पर आसीन रहे। सम्पूर्ण आर्य जाति को इस दिशा मे सक्रिय कदम उठाने चाहिए।

विश्व के इतिहास पटल पर विभिन्न देशो की विविध सस्कृतियो के नाम अकित है परन्तु उनमे सबसे प्राचीन सस्कृति है भारतीय सस्कृति और इसका जन्म हुआ विश्व के आदि ग्रन्थ वेद से –

स्वाधीन भारत के निर्माता युग दृष्टा भारतीय मनीषा के अग्रदूत कालजयी महर्षि दयानन्द ने वैदिक साहित्य सभ्यता एव सस्कृति की जो त्रिवेणी प्रवाहित की थी वह अनन्त काल तक विश्व को प्रेरणा देती रहेगी।

यह भारतीय सस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एव परिपुष्ट सस्कृति है। विश्व की समस्त सस्कृतिया भारतीय सस्कृति के समक्ष बौनी प्रतीत होती है। भारतीय सभ्यता एव सस्कृति मे अनादि काल से किसी धर्म एव वर्ग विशेष के लिए नहीं अपितु ससार मे प्राणि मात्र की भलाई के लिए चिन्तन किया गया है।

सर्वे भवन्तु सुखिन , सर्वे सन्तु निरामया की अवधारणा केवल भारतीय सस्कृति मे ही की गयी है। धर्म केवल दिखावा नहीं है यह व्यक्ति की आस्था एव विश्वास के साथ जुडा हुआ है।

प्राचीन काल से ही भारत शिक्षा एव सस्कृति के क्षेत्र मे एक विकसित सभ्य एव सुसमृद्ध राष्ट्र रहा है। प्राचीन वेदो शास्त्रो उपनिषदो पुराणो ज्योतिष के साथ–साथ नीति धर्म दर्शन इतिहास भूगोल इत्यादि विविध विषयो मे रचित ग्रन्थो द्वारा भारत शैक्षणिक विकास की स्थिति एक प्रकाश स्तम्भ के रूप मे आलोकित हो रही थी। नालन्दा तक्षशिला अवन्तिका जैसे विशाल गुरुकुलो एव विश्वविद्यालयो तथा ऋषि मुनियो के आश्रमो मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिष्य आते थे। प्रत्येक दृष्टि से विकसित एव समृद्ध भारत विश्व मे सोने की चिडिया के नाम से जाना जाता था। इसी सन्दर्भ मे निवेदन है कि प्राचीन भारत मे महिलाओ की स्थिति भी बहुत अच्छी थी। इस देश की गौरवशाली परम्परा का सुचारू रूप से सचालन के लिए नारी का उत्तरदायित्व अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

भारतीय नारी के व्यक्तित्व मे चाद जैसी शीतलता शैलमाला जैसी दृढता पृथ्वी जैसी क्षमाशीलता ही उसके जीवन का आदर्श है।

वैदिक काल मे नारी

वेदो मे नारी का स्थान बहुत महनीय एव प्रेरणादायक है। देवताओ मे ऊषा वाक आपाला घोषा आदि ब्रह्मवादिनी ऋषिकाओ की यशोगाथा से सम्पूर्ण वैदिक वाडमय देदीप्यमान है। ऋग्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नारी के बिना समाज एव घर की कल्पना भी नहीं हो सकती। वैदिक काल मे नारी जहा एक ओर ऋषिका थी वहा दूसरी ओर परिवार म प्रेयसी और सरक्षिका भी थी। यजुर्वेद मे कहा गया है कि कन्या का उपनयन सस्कार भी होता था। कन्याये वेदो और शास्त्रो का अध्ययन भी करती थी और कविता भी रचती थी। विदुषी बनकर अध्यापन कार्य भी करती थी। ब्रह्मवाहिनी घोषा ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के ३६वे ४०वे सूक्त का आविष्कार किया था। अपने पति अगस्त्य के साथ लोपामुद्रा ने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १७६ वे सूक्त का दर्शन किया था। आपाला एव रोमशा के साथ सूर्या ने भी ऋषिका का स्थान प्राप्त किया था। वैदिक काल मे परदे की प्रथा नहीं थी। स्त्रिया सार्वजनिक समारोहो मे भी भाग लेती थी। भारतीय साहित्य नारी जीवन के कर्त्तव्य की महनीय गाथा है। वेद हो या परवर्ती साहित्य सर्वत्र अधिष्ठात्री के रूप मे प्रतिष्ठित थी। अथर्व सहिता मे वर्णित मन्त्र इसका प्रमाण है।

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्त मया पत्या जरदष्टिर्यथा स ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मध्य त्वादुर्गार्हपत्याय देवा ।।

अर्थात हे प्रिय ! ऐश्वर्य रूप तुम्हारे हाथ को मैं ग्रहण करता हू। हम दोनो मिलकर गृह का सम्पादन कर सहिताओ मे भी नारी को साम्राज्ञी महिषी आदि नामो से पुकारा गया है नारी के इस प्रकार के सम्मान की उपलब्धि विश्व के किसी भी ग्रन्थ म नही पायी गयी। बाद मे शनै शनै नारी अनादर ही राष्ट्र की हानि क कारण बनता गया।

नारी ही है जो अपने विनय सन्तोष धीरता गभीरता और सहनशीलता रो समस्त परिवार को एक सूत्र मे बाध रखने की शक्ति रखती है। वैदिक साहित्य मे भारतीय नारी को धर्म काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की साधिका कहा गया है।

प्रत्येक क्षेत्र मे नारिया पुरुषो से कदम से कदम मिलाकर चलती रही है। शिक्षा के क्षेत्र मे नारियो ने ब्रह्म ज्ञान की आधारशिला का कार्य किया। वेदो के दार्शनिक अर्थो को समझकर ऋषिकाओ के पद को प्राप्त किया था। लोपामुद्रा घोषा आपाला विश्ववारा इसके उदाहरण है – बृहदारण्यक उपनिषद मे गार्गी एव याज्ञवाल्क्य के शास्त्रार्थ का उल्लेख है। मण्डन मिश्र की विदुषी पत्नी भारती ने शास्त्राथ मे शकराचार्य को पराजित कर के अपनी विजय पताका फहराई।

साहित्य के क्षेत्र मे भारतीय नारियो ने काव्य रचना करके नामार्जित किया था जिसमे शीला विज्जिका आदि नारिया प्रमुख थी। मुनस्मृति मे मनु महाराज ने लिखा है कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

वैदिक युग मे नारियो को भी पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त थे। स्त्रियो को प्रमुख रूप से लक्षी साम्राज्ञी एव गृहिणी आदि नामो से भी सुशोभित किया गया। प्रमुख रूप से अर्धागिनी सखा जाया दम्पति आदि शब्द इसके प्रमाण है। नारी एक महती शक्ति है एक ऊर्जा है माधुर्य की एक सरिता है जिसमे गृहस्थ जीवन मे सुख एव उल्लास का वास रहता है। वह पुरुष की पूरक है। मनुष्य की जीवन यात्रा मे माता का स्थान सबकी अपेक्षा ऊचा है – शतपथ ब्राह्मण का वचन है – **मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद** – के आधार पर बच्चो का प्रथम गुरु माता ही है।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर

ष्ठ ५ का शेष भाग

भारतीय नारी को अपने अतीत की ओर झांकना होगा

– श्रीमती दमयन्ती कपूर

पतिव्रता नारियो मे सतीत्व धर्म पालन एव मातृत्व के गुणो के कारण ही भारत भूमि अपनी गरीयसी की प्रतिष्ठा स्थापित कर सकी है – माता निर्माता भवति यह कथन कितना सत्य है। मनु महाराज ने उद्घोषणा भी की –

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मन ।
स्व स्व चरित शिक्षेरन पृथिव्या सर्वमानवा ।।

भारत देश मे जन्म लेने वाले ब्राह्मणो से पृथिवी के समस्त मानव अपने–अपने चरित्र को शिक्षित करते थे तथा श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा ।

रामायण के विषय मे वर्णित है कि –

कृत्स्न रामायणम प्रोक्त सीताया चरित महत

नारीत्व के चरम बिन्दु पर अडिग भाव से विराजमान सती सीता जिसने अग्नि परीक्षा के समय अडिग विश्वास के साथ जयघोष किया था कि –

मनसि वचसि काये जागरे स्वप्न सगे
यदि मम पति भावो राघवादन्यपुसि।
तदित दहतु ममाग पावन पावकेदम
सुकृतदुरित भाजाम। त्वम हि कर्मक साक्षी।।

महाभारत मे उपदिष्ट है कि गान्धारी की धर्मशीलता कुन्ती की धीरता द्रौपदी की क्षमाशीलता ओर विदुर की प्रेरणा ही व्यास का महाभारत है। क्षमा नीतिशास्त्र का वह स्वर्णिम अध्याय है जहा द्वैतभाव सदा के लिए समाप्त होकर एकत्व स्थापित हो जाता है तभी तो कहा गया है कि क्षमावीरस्य भूषणम।

महाभारत का बडा ही कारुणिक प्रसग है – अश्वत्थामा पाण्डव समझकर द्रौपदी के सोये हुए सभी पाचो पुत्रो को मौत के घाट उतार देता है। पुत्र शोक से विह्वल भीम अश्वत्थामा को मारने के लिए उद्यत होते है द्रौपदी के अन्त करण मे विराजित क्षमाभाव स्वरूप ईश्वर मुखरित होते है –

मा रोदीदस्य जननी गौतमी पतिदेवता।
यथाह मृतवत्साऽऽर्ता रोदिम्यश्रुमुखी मुहु ।।

गुरुवर द्रोणाचार्य की पतिव्रता पत्नी देवी गौतमी भी तो मेरी तरह माता है यदि ये (अश्वत्थामा) मर जाएगे तो वह मा भी रोयेगी। मेरे पुत्र मारे गए तो मैं आसू बहा रही हू ऐसे ही वह मा भी न रोये – ऐसाकहते हुए द्रौपदी फूफकार उठती हैं – छोड दो छोड दो इन्हे – मुच्यताम एष ।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति रूपेण सस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ।।

मे क्षान्ति (क्षमा) रूप से स्थित है उस देवी को नमस्कार है नमस्कार है बारम्बार नमस्कार है। यही है नारी की वसुन्धरा के समान सहिष्णुता एव क्षमाभाव का सदा स्मरणीय उदाहरण।

मध्यकाल एव आधुनिक काल

मध्यकाल मे मुस्लिम प्रभाव के कारण नारी के रूप मे परिवर्तन आना प्रारम्भ हो गया और परदे की प्रथा ने जन्म लिया। बाल विवाह सती प्रथा का भी आरम्भ हो गया। समय ने करवट ली नारी उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओ को समान अधिकार दिए जाने पर बल दिया। स्वामी दयानन्द जी के प्रयत्न स्वरूप नारी शिक्षा के लिए भारत मे कई विद्यालय महाविद्यालय एव गुरुकुल स्थापित किए गए जिनमे नारी शिक्षा के क्षेत्र मे स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी (जिनका गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के निर्माण मे भी महत्वपूर्ण स्थान है) द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का एक अगभूत महाविद्यालय है। आज इस कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून ने शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

महिला उत्थान के क्षेत्र मे महर्षि दयानन्द जी के बाद राजा राममोहन राय आदि महापुरुषो ने भी प्रशसनीय योगदान दिया तथा सती प्रथा का अन्त किया। आधुनिक काल मे स्वाधीनता आन्दोलन के साथ ही नारी उत्थान भी प्रारम्भ हो गया जिसके फलस्वरूप कस्तूरबा गाधी विजयलक्ष्मी पण्डित सरोजनी नायडू, ऐनी बेसेन्ट आदि नारियो ने स्वाधीनता आन्दोलन मे सक्रिय भूमिका निभाई जिसके फलस्वरूप श्रीमती इन्दिरा गाधी ने भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री के पद को अलकृत किया।

महिला कल्याण की परम्परा मे गतिशीलता का प्रारम्भ हुआ। महिलाओ ने प्रशासनिक व्यवसायिक राजनैतिक क्रीडा विभाग तथा एवरेस्ट शिखर तक पहुचकर न जाने कितने ही कीर्तिमान स्थापित किए। श्रीमती किरण बेदी बैछेन्द्री पाल श्रीमती सुषमा स्वराज मोहिनी गिरि लता मगेशकर अरुन्धती राय ममता बैनर्जी सोनिया गाधी आदि इस नारी उत्थान मे ज्वलन्त प्रमाण है। बने बनाए रास्ते पर तो सभी चलते है परन्तु अन्धविश्वासो व्यर्थ की परम्पराओं के छोटे–छोटे पत्थरो को तोडकर रूढियो के काटे बीनते हुए नयी पगडण्डी तैयार बहुत ही बडे साहस का परिचय देना है। भारतीय नारी की मुक्ति और इस वर्तमान स्तर पर लाने के लिए न जाने कितनी नारियो ने योगदान दिया। उन्नति के विभिन्न क्षेत्रो मे पदार्पण के लिए एक–एक पगडण्डी तैयार करने मे वर्षो का समय लगा। परिश्रम रग लाया नारी स्वाधीनता एव समान अधिकार की मजिल पास आती गई पगडण्डियो ने राजमार्ग का स्थान ले लिया। विदशो की भी कई महिलाओ ने उल्लेखनीय प्रशस्ति पत्र प्राप्त किए। श्रीलका की राष्ट्रपति भण्डार नायके बगला देश की खालिदा जिया अमेरिका की क्लिटन हिलेरी पाकिस्तान की बेनजीर भुटटो इसके साक्षात उदाहरण है।

आधुनिक युग मे भी नारी उच्चतम शिक्षा प्राप्त करके चाहे वह राजनैतिक हो या प्रशासनिक जीवन के हर क्षेत्र मे अग्रणी सिद्ध हो रही है परन्तु आधुनिक नारी प्राचीन नारी की महिमा को विस्मृत करती जा रही है। विदेशी सस्कारो एव विचारो का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। दिन प्रतिदिन बढती हुई पाच सितारा सस्कृति नारीत्व के गौरव को धूमिल करती जा रही है। आतकवाद का दानव चारो और अपने पजे गडा रहा है दहेज का लोभी मानव महिलाओ को आग मे जला जलाकर मौत के घाट उतार रहा है दिन पर दिन बढती हुई फैशन परस्ती प्राचीन सस्कारो को नष्ट करती जा रही है।

आधुनिक युग की उपरोक्त बुराईयो से तभी त्रास मिल सकता है जब भारतीय नारी माता के रूप मे बच्चो को ऐसी शिक्षा दे कि वे घर मे साम्राज्ञी के पद को प्राप्त करे। भविष्य की नारी राम कृष्ण गौतम पातञ्जलि दयानन्द विवेकानन्द गाधी सुभाषचन्द्र बोस राणा प्रताप और शिवाजी जैसे वीरो की भी जननी बने।

कुल एव समाज की मर्यादा की रक्षा का भार सदा से ही नारियो पर रहा है। भारतीय नारी को आज भी सती सीता सावित्री अनुसूया अरुन्धती के आदर्श अपने सामने रखने होगे। त्याग एव तपस्या नारी के सहजगुण है इनका परित्याग किसी भी अवस्था मे उचित नहीं है उन्हे भारत को समृद्ध एव बलवान बनाने मे योगदान करना है। सन्तान को ऐसी शिक्षा देना है कि वह इस तथ्य को भली–भाति समझ सके कि **त्याग एव तपस्या का स्थान भौतिक विभूतियो से ऊचा है।** भौतिक उन्नति वहीं तक प्रशसनीय है जहा तक धर्म के प्रतिकूल न हो। कन्याओ की शिक्षा मे धर्म का स्थान सर्वोपरि रहता आया है। किसी भी देश का वर्तमान एव भविष्य वहा की नारियो की शिक्षा जागरुकता एव कर्त्तव्य परायणता पर ही निर्भर करता है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि अपनी सस्कृति की प्राथमिक शिक्षा तो मा के रूप मे स्त्री ही दे सकती है वही शिशु की प्रथम गुरु होती है। अत भारतीय नारी को अपने अतीत की ओर झाकना होगा कि जिस अतीत की गोद मे उस महती सस्कृति ने जन्म लिया था जिसने मानव जाति को गौरव प्रदान किया था सत्य शिव सुन्दरम का पाठ पढाया था। साथ ही चिन्मयी एव सन्मयी प्रवृत्तियो को जागृत किया था उसी का अनुसरण करके हम शिक्षा–पद्धति का विकास करने मे सक्षम होगे।

आज भारत एक निर्णायक मोड पर खडा है परन्तु यदि हमारी आत्मा चेतन है तो एक दृढ विश्वास के साथ वर्तमान समस्याओ पर विजय प्राप्त होगी। आज की नारिया चरित्रवान हो साहसी हो विवेकशील हो सेवा परायण हो तभी हमारे राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा। आज विश्व के पटल पर भारत सभी क्षेत्रो मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। विज्ञान टैक्नोलॉजी व्यापार शिक्षा खेलकूद आदि सभी स्तरो पर निरन्तर प्रगति पथ पर है। हमारी सस्कृति के पास विश्व को देने के लिए आज भी अक्षय भण्डार है परन्तु सस्कृति के पुराने नैतिक मूल्यो की सुरक्षा आधुनिक युग मे आवश्यक ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य भी होनी चाहिए और –

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतगमय का निनाद **बारम्बार गूजता रहे।**

सत्य क्या है ? – 'सत्य ज्ञानमनन्त ब्रह्म अर्थात सदा सर्वदा त्रिकाल मे अनन्तज्ञान है वही सत्य है वही ब्रह्म है।

धर्म क्या है ? – कणाद ऋषि की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा के अनुसार –

यतोऽभ्युदय नि श्रेयस सिद्धि स धर्म अर्थात जिस साधन से भौतिक उन्नति एव पारलौकिक उन्नति दोनो की सिद्धि होती है वही धर्म हैं

आधुनिक युग मे आज की नारी तभी ऐसे महापुरुषो की जन्मदात्री बनने का सुयश एव गौरव प्राप्त करेगी जहा द्वेष के स्थान पर प्रेम होगा भूख और दरिद्रता के स्थान पर समृद्धि एव शान्ति होगी दुख के स्थान पर सुख होगा तभी आतकवाद समाप्त होने की आशा है।

यह पहले भी लिखा जा चुका है कि वैदिक काल मे दहेज प्रथा बाल विवाह एव सती प्रथा का आस्तित्व नहीं था नारी शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था और एक पत्नीव्रत धर्म को ही श्रेष्ठ माना जाता था न कि बहुपत्नी प्रथा को। 'ऋचा' श्रुति' ये स्त्रीलिग वाची शब्द हैं। मा सरस्वती दुर्गा लक्ष्मी भी नारी के रूप मे प्रतिष्ठित है।

अन्त मे ऋग्वेद मे वर्णित मा सरस्वती की वन्दना करते हुए आर्त ह्रदय से याचना करते हैं कि –

महो अर्ण सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति।।

अर्थात् वैदिक काल की तरह आज की नारी भी विदुषी हो सुमगली हो घर एव समाज दोनों में सामजस्य रखने मे समर्थ हो तभी भारत वर्ष अपने प्राचीन गौरव को पुन प्राप्त कर सकेगा और माता निर्माता भवति यह वाक्य सार्थक होगा –

अनुव्रत पितु पुत्रो माता भवतु सम्मना।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शान्तिवाम्।।

माता निर्माता भवति

— माता प्रेमलता शास्त्री

देव दयानन्द जी महाराज को सम्पूर्ण नारी जाति की ओर से शत-शत प्रणाम, जिन्होंने हमें नेत्र प्रदान कर जीवन दान दिया। स्वामी जी ने हमें स्मरण कराया कि हे माता ! आप का स्थान तो बहुत ऊचा है, आप तो जननी हो, प्रजा की निर्मात्री हो। ये मैं नहीं कहती कि देव दयानन्द के आने से पूर्व ऋषियों ने नारी जाति का सम्मान ही नहीं किया। वह भी समय था, जब गार्गी, मैत्रेयी, जीजाबाई जैसी अनेकों वैदिक नारियां थीं, जिन्होंने अपनी सन्तानों का ऐसा निर्माण किया कि जिससे आर्यावर्त्त गौरवान्वित हुआ। "माता निर्माता भवति" उनके नाम के साथ जोडा जाता था। स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित एक बहुत ही प्यारी एवं सत्य घटना है कि उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक अमेरिकी महिला ने उनसे पूछा कि आपने किस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है। स्वामी जी एक क्षण के लिए मौन हो गए फिर विचार कर बोले कि हे देवी वह विद्यालय अब टूट चुका है, क्योंकि मेरा प्रथम विद्यालय मेरी माता ही थी जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया। "माता निर्माता भवति"।

एक युग ऐसा भी आया कि इतनी गौरवशालिनी माता अपमान एव तिरस्कार का पात्र बन गयी। महाभारत काल से पूर्व ही नारी जाति के प्रति हीन भावना प्रारम्भ हो चुकी थी। परन्तु द्रौपदी के चीरहरण के बाद, ५ हजार वर्षों में नारी की क्या स्थिति हुई, यह किसी से छिपी हुई बात नहीं है। किसी पर क्या दोष लगाएं, अपनों ने ही बहुत अपमानित किया। अपमानित नारी ने गुरु शंकराचार्य से पूछा — महाराज, मेरी स्थिति क्या है ? उन्होंने कहा — 'नर्क का द्वार'। नारी तुलसीदास जी के पास गयी, उन्होने यह कहकर कि, 'ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी — ये सब ताड़न के अधिकारी", नारी जाति की प्रतारणा की। बाइबिल ने नारी को आत्माविहीन कहा। कुरान ने इसे अर्ध–आत्मा कहा। किसी ने इसे पैर की जूती कहकर अपमानित किया। इन सब स्थितियों को सहते–सहते और पार करते–करते नारी जाति क्या करती।

> ## नारी
>
> बुनियाद है, चट्टान है मीनार है नारी,
> हर देश की सभ्यता की आधार है नारी।
> मानव की उन्नति की ये छत जिसपे रखी है,
> उस छत को सम्भाले हुए दीवार है नारी।।
>
> जबरन जिसे गुम कर दिया नैपथ्य मे,
> होना जिसे मच पर, वह किरदार है नारी।
> डर है अधिकारो को छीनने की जग न छिड जाए
> इस पार पुरुष है — तो उस पार है नारी।।
>
> इसे लोग मां कहते हैं इसे देखकर ईश्वर से पहचान होती है।
> जबरन जिसे अबोध बना दिया —
> धरती मां की असली पहचान है नारी।।
>
> डरो, कही इसके आसू न गिर जाए,
> कहीं इसके अभिषाप से कहर न गिर जाए,
> भारत की मूल सस्कृति की पहचान है नारी।।
>
> नारी के उत्थान मे हम प्राण खपा देगे,
> अपने इस भारत को राम, कृष्ण दयानन्द का देश बना देगे,
> यही जन्मी सीता, गार्गी, बस अब देर नही करेगे।
> इस देश की कन्याओ को महारानी लक्ष्मीबाई बना देगे।

वेद के अमूल्य कथन कि 'माता निर्माता भवति" वेदों में ही निहित रह गए और अशिक्षित नारी मुंह ढक कर अन्दर हो गयी।

देश पहले ८ सौ वर्ष मुगलो का और फिर २०० वर्ष फिरंगियो का गुलाम रहा। गुलाम देश सस्कृत एव संस्कृति विहीन हो गया। नारी का स्थान केवल बच्चे पैदा करना, चूल्हा–चौका सम्भालना और पति परिवार द्वारा अपमानित होने तक रह गया। देश की स्थिति बिगडती गयी। निर्माण कार्य मूलत: बन्द ही हो गया। न कोई पाठशाला थी, न कोई आचार्य। देश अन्धकार में ठोकरें खाता–खाता गुलामी भोग रहा था कि सहसा टंकारा से सूर्य की किरण फूट पडी, और 'यदा–यदा हि धर्मस्य. . ." वाली बात चरितार्थ होने लगी। गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त कर स्वामी जी ने सबसे पहले देश की स्थिति को देखा। दूरदर्शी ऋषि दयानन्द समझ गए कि कहीं निर्माण कार्य रूका हुआ है। अंग्रेजों ने बालकों के लिए तो कुछ–एक स्कूल खोल रखे थे, किन्तु कन्याओं के लिए कोई विद्यालय न था। ऋषि दयानन्द चाहते थे कि कन्या पाठशालाए खोली जाए। जनता ने बहुत विरोध किया, परन्तु राष्ट्र रक्षक दयानन्द, नारी सुधारक दयानन्द, वेद उद्धारक दयानन्द के अनुयायियो ने अनेकों कन्या विद्यालय खोल कर उनकी प्रेरणा को कार्य रूप दिया। इस कार्य को पूर्ण करने हेतु सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जालन्धर शहर में कन्या विद्यालय खोला। मुझे भी गौरव प्राप्त है कि मै स्वयं भी उसी जालन्धर कन्या विद्यालय द्वारा विद्या प्राप्त की हुई प्रथम अध्यापिका 'रामरखी" जी की शिष्या हूं। अशिक्षा के साथ–साथ देश मे कुरीतिया भी बहुत थीं। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने यही हरिद्वार मे मोहन आश्रम मे पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरा दी और वहीं कुटिया मे निवास करने लगे। यहा की एक विशेष घटना की ओर मैं आप सबका ध्यान आकर्षित करना चाहूगी। कुम्भ का मेला लगा हुआ था, चार व्यक्ति मोहन–आश्रम के सामने खडे होकर विचार कर रहे थे कि यदि वे चारों एक ही ओर चले जाएंगे तो कुछ विशेष नहीं देख पाएंगे, यदि वे चारो अलग–अलग दिशाओं से होकर जाएं तो अधिक देख पाएंगे। और अन्त में पुनः यहीं वापिस आकर अपनी–अपनी बात एक दूसरे को बताएगें। सायं काल सब इकट्ठे हुए, एक दूसरे से पूछा कि क्या देखा ? किसी ने कहा बहुत साधु थे, नागा साधु भी थे, सोने के छत्र झूल रहे थे, और भी बहुत कुछ बताया। चौथा कुछ नहीं बोला। किसी ने पूछा कि तुमने क्या देखा, तो नहीं बोला फिर किसी ने कहा कुछ तो बोलो। उसने स्वामी जी की कुटिया की ओर सकेत करके कहा कि 'या कुटिया योगी की'। सबने कहा कि उस कुटिया मे क्या है। वह बोला — एक योगी है जो देश की स्थिति पर रोता है, अशिक्षित नारी के पिछडेपन पर रोता है, विधवाओं की दुर्दशा पर रोता है, मन्दिरो मे देवदासियो के रूप मे नारी के अपमान पर रोता है, पाखण्डियो का सत्य के आधार पर खण्डन करता है, सब माताओ को 'माता निर्माता भवति' कहता है। यह स्थिति थी जगत् गुरु देवदयानन्द की नारी जाति के प्रति। गुरु का प्रभाव धीरे–धीरे देश भर में दिखाई देने लगा। नारिया शिक्षित होने लगीं। देवियो ने पूछा कि महाराज 'माता निर्माता भवति' इतना ऊंचा सम्मान तो आपने दिया, कुछ वेद–ज्ञान भी दीजिए। स्वामी जी का भी यही लक्ष्य था कि वैदिक नारी निर्मात्री कैसे बने। वेद मन्त्रो के आधार पर शिक्षा देने लगे। और कहा कि हे नारी — तू राष्ट्र के वीरो की जननी है, राष्ट्र के उत्थान की प्रेरणा देने वाले सर्वस्व–त्यागी ब्राह्मणो की भी जननी है, राष्ट्र रक्षा के लिए स्वय को बलिदान कर देने वालो और क्षत्रियो की भी जननी है। राष्ट्र को समृद्धि के शिखर पर पहुचाने वाले उद्योगपतियो की भी जननी है। तेरे जनन–रूप को हम प्रणाम करते है। क्योंकि वेदों में राष्ट्र के लिए जिस दिव्य सन्तान की कामना की गई है, वह सन्तान तेरी ही कुक्षी से जन्म लेती है। इस महान नमन के साथ उन माताओ का स्मरण हो आता है जिनके आगे पूरा ससार नत–मस्तक होता है। माता कौशल्या, जिसने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को जन्म दिया और निर्माण किया माता सुमित्रा जिसने लक्ष्मण जैसा आज्ञाकारी भाई श्री राम को दिया। माता सीता जिसने विषम परिस्थितियो मे भी लव–कुश का ऐसा निर्माण किया कि श्री राम जी उन्हे देखकर स्तब्ध रह गए। यह हमारी परम्परा थी, जो कई कारणो से टूट सी गई थी। परन्तु स्वामी जी ने आकर नारी को उसके उच्च सिहासन पर बिठा कर सम्मान दिलाया और कहा, कि तू जैसी प्रजा चाहे वैसी दे सकती है। इतिहास मे एक अत्यन्त ही सुन्दर एव महत्वपूर्ण घटना भी है जिससे माता का निर्मात्री रूप प्रखर हो जाता है।

— शेष भाग पृष्ठ ८ पर

महर्षि दयानन्द और नारी उत्थान

– श्रीमती शन्नो देवी

१. महषि दयानन्द मानवत के उद्धारक और उन्नायक थे। मानवता की भित्ति नारी उत्थान पर आधारित है। अत अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे ईश्वरनाम व्याख्या के बाद महर्षि ने द्वितीय समुल्लास मे माता को सम्मानित किया है – 'जितना माता सन्तानो पर प्रेम उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं कर सकता। 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान' – धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तक तक सुशीलता का उपदेश करे।

ऋग्वेद मे उपदेश दिया गया है –

वस्या इन्द्रासि मे पितुऋत भ्रातुरभजित माता च मे छन्दयथ समावसो वसुत्वनाय राधसे

(ऋ० ८ ९ १ ६)

हे प्रभो ! सर्वदा और सर्वत्र मेर पालन मे समर्थ पिता और भ्राता से तुम कहीं अधिक पालक हो परन्तु हे वसो ! तुम मेर जन्मदात्री माता के समान मुझे शरण प्रदान करते हो।

२ पूना प्रवचन मे महर्षि ने कहा था – आजकल स्त्री को विद्या पढने का अधिकार नहीं वह शूद्र के समान है। फिर कहा था – ईश्वर के समीप स्त्री–पुरुष दोनो बराबर है क्योकि वह न्यायकारी हैं। आगे चलकर उन्होने कहा – 'जब सब स्त्री पुरुष वेदो का अवलोकन करेगे तब सम्प्रदायियो का पाखण्ड बद होगा।

३ वेदभाष्य मे महर्षि ने जगह–जगह पर नारी शिक्षा के लिए प्रेरणा दी हैं यथा (यजु ६ ३४) मे – 'हे विद्याशील स्त्रियो ! तुम अच्छे गुणो से युक्त होकर याज्ञिक कार्यो मे अपने विद्वान पतियो को सहायता करो। (यजुर्वेद ८ ४३) मन्त्र की व्याख्या मे लिखे है – हे नारी ! तुम अनन्त गुणो की अधिकारिणी हो। तुम इडा हो अर्थात सुन्दर वाणी के द्वारा लोगो को मुग्ध कर सकती हो। तुम रन्ता हो अर्थात रमणीया हो। तुम 'हव्या – दूसरो के उपकार के लिए अपने जीवन को बलिदान करती हो। 'काम्या' – तुम कामना योग्या हो। ज्योते – तुम ज्योतिर्मयी हो इत्यादि।

४ उस समय कुछ विदुषी नारियो को महर्षि ने वेदाध्ययन तथा वेदप्रचार हेतु प्रेरित किया था। सर्वप्रथम पजाब की पुण्यशीला भगवती जी सत्यार्थ प्रकाश पाठ करने के वाद अपने भाई के साथ महर्षि के दर्शन हेतु बम्बई आई। महर्षि ने उनको उपदेश दिया – यदि आप पुण्य उपार्जन करना चाहती हो तो अपने प्रान्त मे जाकर अपनी बहिनो मे विद्या का प्रचार करो। जो कुछ जानती हो वही उन्हे सिखाने लग जाओ। इसी प्रकार विदुषी रमावाई को प्रेरणा दी थी – आप सस्कृत की अद्वितीय विदुषी हैं। लोक कल्याण मे तत्पर हो और स्त्री जाति जो अति शोचनीय दशा मे है उसको शिक्षादान कर उद्धार करो।

५ महर्षि के समय बाल विवाह के समर्थन मे कल्पित श्लोक प्रचलित थे – अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी । महर्षि ने उसके खण्डन मे वेदमन्त्र उद्धार किया – 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवाना विन्दते पति। जब पुराण के ठेकेदारो ने 'स्त्री शूद्र नाधीयताम कह कर नारी को विद्याध्ययन से सर्वथा वचित किया था तो महर्षि ने 'यथेमा वाच कल्याणी । (यजु० २६ २) मन्त्र का उपदेश देकर बताया कि परमात्मा ने स्त्री–पुरुष सबको वेद पढने का अधिकार दिया है।

६ ऐतिहासिक के०पी० जायस्वाल ने ठीक कहा था – 'बुद्ध से लेकर राजा राममोहन राय तक समाज सुधार मे जो कार्य नहीं कर सके अकेले स्वामी दयानन्द ने उसको करके दिखाया। इसका कारण यह है कि उनका सारा प्रचार कार्यक्रम वेद के आधार पर किया गया था। अत नारी समेत समग्र मानवता के उत्थान हेतु वेद का प्रचार और तदनुकूल आचरण सर्वथा आवश्यक है।

पृष्ठ ७ का शेष भाग

माता मदालसा ने अपने पुत्रो का जैसा निर्माण करना चाहा वैसा ही किया क्षत्रिय चाहा तो क्षत्रिय बनाया ओर यदि ब्राह्मण चाहा तो ब्राह्मण ही बना दिया।

मदालसा अपने पुत्र को लोरिया देती हुई कहा करती थी –

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि ससार माया परिवर्जितोऽसि। ससार स्वप्न त्याज मोहनिद्रा मदालसा वाचमुवाच पुत्रम।।

अर्थात – हे पुत्र ! तुम शुद्ध हो बुद्ध हो निर्विकार हो अर्थात निर्दोष हो। यह माया का ससार है यह त्यागने योग्य है। इस ससार से पृथक तुम केवल जीवमात्र ही हो। इसलिए पुत्र ! इस ससार को त्यागकर आलस्य और माह को छोडकर आत्मचिन्तन मे सलग्न हो जाओ। परिणाम स्वरूप वह पुत्र युवावस्था मे ही ईश्वरभक्त सन्यासी हो गया।

इसी प्रकार मदालसा अपने एक पुत्र को क्षात्र धर्म की लोरिया देती हुई कहा करती थी –

धीरोऽसि वीरोऽसि वृहत्तरोऽसि, ससार युद्धस्थलमेव पुत्र। जित्वा समस्ता निज शत्रु जातान भूमण्डले वादय कीर्ति शखम्।।

अर्थात – हे पुत्र तुम धीर हो वीर हो और महान हो। यह ससार तो युद्धस्थल है। इस युद्धभूमि पर समस्त शत्रुओ को जीतना है और सम्पूर्ण पृथ्वी पर यश और विजय का डका बजाना है।

परिणामस्वरूप वह पुत्र बडा होकर राज्य का उत्तराधिकारी बना और पृथ्वी का सबसे प्रसिद्ध राजा बना और राज अलर्क के नाम से विख्यात हुआ।

माता निर्माता भवति

अब देखना यह है कि स्वामी जी ने पैरो की जूती कहाने वाली नारी को पूर्ण सम्मानित करके उचित स्थान तो दिला दिया – कहीं हमे अपना ऋणि तो नहीं बना दिया। स्वामी जी को यदि विष देकर हमसे छीन न लिया गया होता तो वे भारत के कोने कोने मे जाकर नारी जागरण का शख फूकते। परन्तु दुर्भाग्य ! परिणामत देश का बहुत बडा भू–भाग उनके क्रान्तिकारी विचारो से वचित रह गया। स्वामी दयानन्द जी के विचारो से प्रेरणा प्राप्त किए हुए प० लेखराम जी ने जब कलम उठाई तो सबसे पहले 'कुमारी भूषण नामक एक पुस्तक लिखी जिसमे वे बडे दर्द से लिखते हैं कि हे उपदेशको और विदुषि माताओ ! यदि तुम स्वामी दयानन्द जी के ऋण से उऋण होना चाहते हो तो ग्रामीण क्षेत्रो मे जाओ जहा अशिक्षा का बोल–बाला है। इतने जोर से नाद बजाओ कि बहरे कान भी खुल जाए और वे आपसे पूछे कि यह नाद कैसा है तब आप कहो कि 'कन्याए पढाओ – देश बचाओ। आगे लिखते हैं कि उपदेशको साहस करो साहस करो साहस करो। तन–मन–धन से अस्पताल खोलो जिसमें कन्या रोगियो को प्रविष्ट करो और उसका नाम 'कन्या महा–विद्यालय' रखो। उन्होने शिक्षित देवियो से विशेष प्रार्थना की थी।। देवियो – मैं भी आपसे प्रार्थना कर रही हू कि मेरा साथ दो। मैने तीन वर्षो का कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर लगाने का सकल्प ले रखा है। एक वर्ष तो विशेषकर सार्वदेशिक ने भी महिला उत्थान वर्ष घोषित किया है। तीन वर्षो मे अगर हम कुछ सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो कुछ ऋण अवश्य उतरेगा। देश की पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी जब अजमेर मे आई थी तो उन्होने भी कहा था कि आप सब माताए देव दयानन्द की ऋणी हो। अपने लिए उन्होने कहा था कि यदि स्वामी दयानन्द न आए होते तो मै भी इस रूप मे आपके समक्ष न होती। इस विषय मे उपन्यास सम्राट लेखक मुशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं कि 'नारी जाति को ऋषि दयानन्द का कृतज्ञ रहना चाहिए कि उन्होने नारी को इसका उचित स्थान तथा सम्मान प्राप्त कराया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के इतने विशाल गुरुकुल और इतने विशाल सम्मेलन मे आकर हमे कुछ सकल्प लेकर जाना चाहिए पहले भी मैंने आपसे प्रार्थना की है कि 'कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर' बडे उत्साह से लगाने चाहिए। आप कहेगे कि महिला वैचारिक शिविर न कहकर 'कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर पर मैं क्यों बल देती हू। एक ग्राम मे मैंने लिखकर भेजा कि कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर लगाना है उन्होने महिला क्रान्ति शिविर का बोर्ड लगवा दिया। मैंने उन्हे कहा कि बोर्ड बदलकर 'कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर' ही लिखे। सब पूछने लगे कि इसमें क्या अन्तर है। बूढ़ी माता भी शिविर में आई हुई थीं। मैंने उन्हें कहा कि माताओ कल से आप भी आओ तो स्वागत है न आओ तो कन्याओ को तो अवश्य ही भेज देना। मैंने कहा कि मेरे सहित इन बूढी माताओं ने जो राष्ट्र को देना था दे दिया है। राष्ट्र की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। गली–गली रावण कस दुर्योधन दुशासन घूम रहे हैं। इनका तोड हम माताओ के पास नहीं है। इनका तोड कन्याओ के पास है इसलिए वेद के आधार पर 'वैदिक कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर हमे लगाने हैं और इन कन्याओ को प्रोत्साहन देना है। रावण के तोड के लिए यदि राम को जन्म लेना है तो इन्हीं कन्याओ को प्रोत्साहन देना है। रावण के तोड के लिए यदि राम को जन्म लेना है तो इन्हीं कन्याओ की कुक्षी से कस का तोड कृष्ण भी इन्हीं कन्याओ की कुक्षी से ही प्राप्त हो सकता है। अशिक्षा को पूर्ण रूपेण जड से उखाड फैंक देने के लिए यदि देव दयानन्द पुन जन्म लेगे तो भी इन्हीं कन्याओ की कुक्षी से ही लेंगे। इसलिए इस महिला वर्ष मे स्थान–स्थान पर 'वैदिक कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर' लगाने चाहिए। 'वैदिक' शब्द मैं बार–बार इसलिए प्रयोग कर रही हू कि हमारी कन्याए शिक्षित तो हो रहीं हैं परन्तु भय है और देखने मे भी आ रहा है कि इनमें वैदिक सस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य सभ्यता का चलन अधिक प्रबल हो रहा है। समय रहते अगर हम न चेते तो बहुत बडी हानि हो जाएगी। विदुषी आर्य बहिनों को यहा से सकल्प लेकर जाना चाहिए कि अधिक से अधिक स्कूलो और कालेजों मे जा जाकर वैदिक सस्कृति का प्रचार करें। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार करे। ये उत्तरदायित्व पूर्ण रूपेण विदुषी माताओं का ही है। कन्याओं मे वैदिक नारी का क्या अस्तित्व है यह बार–बार दोहराने की आवश्यकता है। केवल इसी प्रकार वेदों में निहित कथन – 'माता निर्माता भवति' आज के युग में सफलीभूत हो सकेगा। ❑

सुखी गृहस्थ और नारी

- शकुन्तला आर्या

नारी एक महान शक्ति है। माता भगिनी भार्या एव पुत्री अपने इन चारो रूपो मे वे अदभुत कार्य सम्पादन करती है। वास्तव मे नारी वह है जिसके चारो ओर गृहस्थ रूपी पहिया घूमता रहता है। यदि धुरी सही नहीं होगी तो भला पहिया चल सकता है ?

नारी पति के लिए चरित्र और सतान को भरपूर ममता प्रदान करती है। वे अपने स्नेह बलिदान त्याग और सहनशीलता से अपने जीवन का सुखद सितार बेहतरीन ढग से सजाती हुई अपने गृहस्थ को सुखी बनाने का प्रयास करती है। "श्रेष्ठतम सखा भार्या" महर्षि गर्ग ने कहा है – पत्नी से बढकर पति का कोई सच्चा मित्र नहीं हो सकता।

यद्गृहे रमते नारी लक्ष्मी स्तद गृहवासिनी
देवता कोटिशो वत्स न व्यज्यति गृहहितत।

जिस घर में सद्गुण सम्पन्ना नारी सुखपूर्वक निवास करती है। हे वत्स करोड़े देवता भी उस घर को नही छोड़ते है।

स्त्री गृहस्थ की एक पवित्र ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव प्रदान करना उसका धर्म सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। नारी का जीवन सेवाभाव सहिष्णुता दया और प्रेम उसका मिश्रण है। गृहस्थ मे पुरुष को यदि सारे ससार का राज्य मिल जाए और नारी न मिले तो पुरुष कगाल है और यदि पुरुष को सदगुणो वाली नारी मिल जाए तो व्यक्ति अपने घर मे ही महाराजा है। नारी शबनम की वह बूद है जिससे गृहस्थ का काटो भरा कलेवर भी मोतियों के ताज के रूप मे परिवर्तित हो जाता है।

नारी कन्या के रूप मे सुकन्या पत्नी के रूप मे सुगहिणी मा के रूप मे सुमाता बनकर गृहस्थ के विशाल कार्य क्षेत्र को सजाने और सवारने का प्रयास करती है। हमारी सस्कृति मे कन्या को तुच्छ अभिशाप न मानकर उसे लक्ष्मी का नाम देकर सम्मानित किया है। कन्या सुकन्या के रूप मे अपने व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार करती हुई ममता का केन्द्र होने के साथ साथ प्रेरणा का केन्द्र भी बन जाती है। वे अपने भाई और पिता को भी गलत काम के लिए टोक देती है। यह सर्वमान्य धारणा है कि पुत्री माता पिता की अधिक हितैषी होती है। पुत्री साधना की भटटी मे जलकर कुदन बनना चाहती है। उसे अपने से अधिक परिवार के कल्याण की भावना अपनी मा से धरोहर के रूप मे प्राप्त होती है।

कन्या सुकन्या बनकर पूर्ण शिक्षित होकर परिपक्व बुद्धि और सतुलित दृष्टिकोण को लेकर जब नये घर मे प्रवेश करती है तो मगल कामनाओ से उसका स्वागत किया जाता है।

कन्या गृहस्थ की वाटिका का वह सक्षिप्त रूप है जो नन्ही कली के रूप मे माता पिता के आगन मे विकसित होकर पुष्प रूप मे एक नये परिवार मे खिलता है। जो उसकी ससुराल कहलाती है। वही कन्या पत्नी रूप मे सुगृहिणी बनकर नये परिवार की बागडोर सभाल लेती है। वह बल के स्थान पर बुद्धि और स्वार्थ के स्थान पर त्याग को अपनाकर गृहिणी सुगृहिणी बन जाती है। तब वे केवल घर ही नहीं अपितु समूचे परिवार के सदस्यो को एक कडी मे जोडकर उचित दिशा प्रदान करती है। नारी पत्नी रूप मे पुरुष की अर्द्धागिनी है मत्रिणी है विद्यात्री है गृहलक्ष्मी है घर के मदिर को सजा कर उसमे निवास करती हुई अपने देवता की आराधना करती है।

वही गृहिणी रुपी पुष्प सन्तानरुपी अपनी सुगन्ध का प्रसार करते हुए अपने को धन्य मानती है। हमारे धर्म ग्रन्थो मे नारी को रमणी पत्नी रुप से माता का रुप महान गिना गया है। माता निर्माता भवति मातृत्व मे ही स्त्री पूज्य मानी गयी है इसी मे उसका आदर्श पूरा होता है। माता आत्म विसर्जन की प्रतिमा दया की मूर्ति कल्याण की उषा तथा जीवन की पवित्र स्मृतियो का एक जीवित स्मारक है।

माता करुणा का भडार त्याग की आशा तथा जीवन का स्नेह है। जो छिपकर गुप्त रहकर जलकर मिटकर सबको प्रकाश देता है। सन्तान के रुप मे राष्ट्र को देती है। लोरिया देकर सुलाने वाले और झूला झुलाने वाले हाथ ही वसुन्धरा मे राज्य करते है।

दुर्भाग्य से आधुनिक मा जन्म देने के बाद पालन पोषण का भार नौकरानी को सौंप निश्चित हो जाती हैं शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य विद्यालयो के जिम्मे डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेती है। परिणामत बच्चो मे उददण्डता उच्छृखलता अनुशासन हीनता एव चारित्र्य गुणो की कमी आ जाती है।

इस प्रवृत्ति द्वारा सन्तान के भविष्य निर्माण की स्वस्थ परम्परा को तोडा जा रहा है। हमे इससे बचना होगा और भारतीय सस्कृति के अनुरूप ढालना होगा और जननी के रूप को निर्मात्री के साथ जोडकर गृहस्थ को सुखी बनाना होगा। समाज मे माधुर्य और ममता का सचार करने वाली माताए ही राष्ट्र की तेजस्वी पीढी का निर्माण करन की सामर्थ्य रख सकती है।

भावनाओ के कारण हृदयगति रक्तचाप आतो की गति बढघट सकती है। इनका सम्बन्ध भूख पेशाब मल त्याग की हालत को विचारो दुष्प्रभावो का अहसास नहीं होता अत भावनाओ विचारो को स्वस्थ बनाने के प्रयास भावनाओ के स्वास्थ्य पर स्फूर्ति ताजगी आती है थकान दूर हो जाती हे दिन भर तरोताजा रहते है सकारात्मक विचार व भावनाए स्पन्न स्वय के जीवन को सुखमय स्वस्थ बना सकत ह साथ ही दूसरा के जीवन को भी सरल बना सकते है। ✡✡✡

स्वास्थ्य चर्चा

स्वस्थ रहने के लिए भावनाओं को संतुलित रखें

– डॉ० जे०एल० अग्रवाल

मन और शरीर का अभिन्न अटूट सम्बन्ध है। शरीर मे कष्ट होने से मानसिक तनाव हो सकता है। जबकि मानसिक तनाव के कारण अनेक शारीरिक रोग हो सकते हैं। मानव बौद्धिक प्राणी है। सोच वातावरण मे बदलाव दूसरो के विचार व्यवहार के कारण उनमे विभिन्न प्रतिक्रियाए होती हैं। स्वस्थ निरोगी सफल होने के लिए भावनाओ विचारो का स्वस्थ सन्तुलित होना भी आवश्यक है। सुख दुख प्यार नफरत दया सन्तुष्टि–असतुष्टि स्वय पर दया स्वय को दीन–हीन समझना बेइज्जत होने पर पीडा प्रियजन की मृत्यु बीमारी नुकसान होने पर दुख इत्यादि नाना प्रकार की भावनाओ के रग विचार मनुष्य मे उत्पन्न हो सकते हैं।

भावनाए व विचार सकारात्मक हो सकते हैं। जिनसे खुशी मिलती है या फिर नकारात्मक हो सकते है जिनसे दु ख क्लेश या मानसिक समस्याओ की उत्पत्ति हो सकती है। यदि मन मे नकारात्मक विचार या भावनाए जैसे – बीमारी मृत्यु का भय स्वय से नफरत हीन भावना दूसरो की गलती मीनमेख निकालना इत्यादि के कारण अनेक शारीरिक मानसिक रोग ग्रसित होने का डर रहता है।

भावनाओ विचारो के कारण प्राय शारीरिक परिवर्तन भी होते है। विभिन्न से भी होता है। आखो की पुतलियो मे परिवर्तन हो सकता है पसीना आ सकता है। विचारो–भावनाओ के कारण शरीर मे विभिन्न अगो की हरकते जैसे सिर हिलाना हाथ अगुलिया हिलाना इत्यादि हो सकती है। भावनाओ की उत्पत्ति अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है इनकी उत्पत्ति मे पुराने सुखद–दुखद अच्छे बुरे अनुभवो तथा वर्तमान व भविष्य में होने वाले प्रभावों परिणामो के अनुसार ही भावनाओ विचारो की उत्पत्ति होती है। दुखद नकारात्मक भावनाओं के कारण मानसिक क्लेष हो सकता है अनेक शारीरिक रोग जैसे एन्जाइना हार्ट अटैक स्ट्रोक (फालिज) उच्च रक्तचाप मधुमेह दमा एलर्जी कुछ अंगों के कैंसर पेप्टिक अल्सर इत्यादि बीमारियों की चपेट में आने का भय रहता है।

यदि भावनाओ विचारो को सतुलित या सकारात्मक रखा जाए तो जीवन सुखमय हो जाता है। कार्य क्षमता बढती है दूसरो से सौहार्द्रपूर्ण मधुर सम्बन्ध बनते हैं जीवन मे सफलता मिलती है रोग ग्रस्त होने का डर कम हो जाता है। रोगग्रस्त होने पर सकारात्मक विचार रखने पर स्वास्थ्य लाभ शीघ्र और तेजी से होता है। विचार–भावनाओ का शरीर से अन्तरग सम्बन्ध हे। ज्यादातर व्यक्तियो नहीं करते।

भावात्मक समस्याओ से बचाव समस्याए होने पर उपचार एव सकरात्मक भावनाओं का विकास द्वारा जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है। निम्न सिद्धान्तों के पालन करने से भावनात्मक सतुलन तथा सकारात्मक भावनाए बनाए रखी जा सकती है। जिससे जीवन स्वस्थ सुखमय व सफल हो सकता है।

जीवन को व्यवस्थित रखे। बिना सोचे समझे अव्यवस्थित होने से हर स्तर पर अस्त व्यस्त हो जाते हैं। हडबडी मे कार्य करने मे भावात्मक समस्याए होने का डर बढ जाता है।

आरामदायक पर्याप्त समय के लिए नींद जरूरी है। नींद न आने आवश्यकता से कम समय सोने से बेचैनी झुझलाहट होती है गुस्सा जल्दी आता है जिससे बेवजह बहस नोकझोक झगडे हो सकते हैं।

यदि कब्ज रहता है तो बेचैनी एकाग्रता मे कमी कार्य मे मन न लगना बातचीत मे कडुवाहट क्षमता मे कमी हो सकती है जिसके कारण घर ऑफिस मे अशान्त वातावरण उत्पन्न हो सकता है। अत यदि कब्ज रहता है तो रेशे युक्त भोज्य पदार्थो का सेवन प्रचुर मात्रा मे करे।

नियमित रूप से स्नान करे। इससे होती है। घर एव आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखे। सही नाप के स्वच्छ वस्त्र पहने। ढीले–ढाले कपडे जूते चश्मा पहनने से बेचैनी रहती है मन अशात रहता है। परिवारजनो नाते–रिश्तेदार पडोसियो दोस्तो सहकर्मियो आदि से मधुर सम्बन्ध बनाए। छोटी छोटी गलतियो को नजरअन्दाज करे। मन के विचार खुलकर व्यक्त करे। जीवन मे प्रसन्नता खुशी के लिए भी समय निकाले। नशीले पदार्थो का सेवन मस्तिक का मानसिक भावानात्मक रूप पे कमजोर बना देता है। अत इनका सेवन न करे। नियमित व्यायाम करें स्वास्थ्य बेहतर होता है तो मानसिक शान्ति मिलती है। स्वस्थ शरीर और तनाव मुक्त मन से ही स्वस्थ भावनाए आ सकती हैं। हर व्यक्ति के कुछ अन्तरग विश्वासी मित्र होना आवश्यक है जिनसे आप अपनी भावनाए विचार निसकोच कह सके जिससे तनाव कम होता है।

यदि पुस्तको को पढने के शौकीन हैं तो अच्छी पुस्तको का अध्ययन करे। इनके मनन से जीवन मे विचार दृष्टिकोण बदल जाएगे। सदैव शुभ सकारात्मक विचार मन मे आने दे। जिससे सकारात्मक अनुभव हागे जीवन सुखद सफल होगा। जीवन की अधिकाश समस्याओ का कारण भायनाए व विचार है। भावनाओ विचारो को सतुलित व्यवस्थित स्वस्थ बनाकर

लोक परलोक

पृष्ठ - ३०४, मूल्य - ३० रु०

लेखक - पं० वेदप्रकाश शास्त्री, फाजिलका, पंजाब

प्रकाशक तथा प्राप्ति स्थान · गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सडक, दिल्ली-६, फोन : ३६१४६४५

महाभारत मे यक्ष प्रश्नो के अन्तर्गत एक प्रश्न है – सबसे बडा आश्चर्य क्या है ? प्रतिदिन व्यक्ति अपने सामने कई जीवो को मृत्यु का शिकार होते हुए देख रहा है परन्तु फिर भी अपने लिए कभी मृत्यु की कल्पना तक को स्वीकार नही करता।

किसी परिचित की मृत्यु होने पर हम सब लोग क्षणिक रूप मे मृत्यु के प्रभाव से प्रभावित होकर यह सोचते [illegible] अवश्य है कि हमारे शरीर का भी यही परिणाम निश्चित है परन्तु कुछ ही पल मे यह सारे विचार मनुष्य से कोसो दूर नजर आते है जब वह पुन अपनी दिनचर्या मे लिप्त होकर झूठ पाखण्ड पाप द्रोह और विषयपूर्ती मे फसा नजर आता है।

'वायु अनिलम अमृत अथ इदम भस्मातम् शरीर'

ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर क्रतम स्मर।

यजुर्वेद के ४०वे अध्याय का यह मन्त्र श्मशान घाटो पर तो लिखा मिलता है परन्तु कितने लोग है जिन्होने इस मन्त्र को अर्थ सहित अपने घरो मे सजा रखा है या यह मन्त्र उनके प्रतिक्षण चिन्तन का विषय है।

त्रैतवाद – ईश्वर जीव और प्रकृति की अवधारणा की जानकारी तो सबको होगी परन्तु इसके आधार पर जीवनयापन कौन कर रहा है। जन्म मरण और पुनर्जन्म के सिद्धान्तो से अवगत तो सभी हैं परन्तु अपनी कार्य प्रणाली का सिद्धान्त इन्हे किसने बनाया।

आज तो हर व्यक्ति तत्काल बडे से बडा सुखी साधनसम्पन्न बनना चाहता है परन्तु यह नही समझ पाता कि तत्काल सुख का अर्थ है बाद मे लम्बा दुख इसके विपरीत कष्ट त्याग तपस्या रूपी दुखो का अर्थ है बाद मे चिरस्थाई सुख।

आज हमारे बन्धु भोग और कर्म मे [illegible] हुआ है कर्म कम है। मानव जीवन मे भोग बढने का अर्थ है पशु प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होना। कर्म की अधिकता का अर्थ मानव से देवत्व की ओर बढना होता है।

लोक परलोक पुस्तक के निरन्तर स्वाध्याय तथा इन सिद्धान्तो के क्रियान्वयन से मनुष्य अवश्य ही सन्मार्ग का पथिक बन सकता है।

आर्य समाज के अनुयायी कम से कम मृत्यु उपरान्त कई अनावश्यक क्रियाओ से तो बचे हुए है लेकिन गैर आर्यसमाजी भाई बन्धु आज के वैज्ञानिक युग मे भी बुरी तरह फसे नजर आते है। इन सब निरर्थक क्रियाओ की ओर ही लेखक ने अच्छा मार्गदर्शन करने का प्रयास किया है।

स्वाध्याय प्रेमियो के लिए यह पुस्तक सग्रहणीय सामग्री देती है तो वैदिक विद्वानो को मृत्यु विषय पर उद्‌बोधन के लिए भी लक्ष्यबद्ध विचार उपलब्ध कराती है।

– विमल वधावन

स्वतन्त्रता सेनानी तथा पुराने आर्य कार्यकर्त्ता

पूज्य त्यागमुनि जी (महादेव अप्पा ढेपे) दिवंगत

जाने माने स्वतन्त्रता सैनिक एव आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ता तथा बीड (महाराष्ट्र) शहर के वयोवृद्ध सामाजिक प्रेरणास्त्रोत पूज्य श्री त्यागमुनि जी पूर्व नाम महादेव अप्पा ढेपे का गत शुक्रवार दिनाक २१ जून को ह्रदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हुआ। अपनी आयु के ६० वर्षों मे अन्त तक वे स्वस्थ थे। पूज्य मुनिजी के दु खद निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके निधन का समाचार सुनते ही बीड शहर एव परिसर मे सर्वत्र शोकग्रस्त वातावरण हुआ।

बीड शहर मे आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द व्यायामशाला की स्थापना तथा अन्य सामाजिक कार्यों की प्रगति आदि उपक्रमो के क्रियान्वयन का सारा श्रेय स्व० त्यागमुनिजी को जाता है।

पूज्य मुनिजी शनिवार दिनाक २२ जून को पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम सस्कार उनकी जन्मस्थली नालवडी ग्राम मे सम्पन्न हुआ। आचार्य शिवमुनिजी विद्वान मुनिजी प० मनोहर शास्त्री गुरुकुल एडसी के ब्रह्मचारियो ने सस्कार किया।

इससे पूर्व बीड शहर के मुख्य मार्गों से उनके पार्थिव देह की अन्तयात्रा निकाली गयी। अन्तिम सस्कार मे महाराष्ट्र के [illegible] महिला पुरुष तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। अनेको ने अपनी भावभिनी श्रद्धाजलिया अर्पित की। मुनिजी के पश्चात ३ पुत्र ३ बहुए तथा पौत्र पौत्रिया विद्यमान है।

वैदिक धर्म अपनाया

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे दिनाक २० मई २००२ को श्री ए०इ० अब्राहम सुपुत्र श्री एन० अब्राहम निवासी – २७/७ दक्ष रोड विश्वास नगर शाहदरा का शुद्धि सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। श्रीए०इ० अब्राहम ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण कर अपना नाम आशुतोष आर्य रख लिया है। यह शुद्धि सस्कार डॉ० कर्णदेव शास्त्री द्वारा कराया गया।

– अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

अस्पताल में ईसाइयत का प्रचार

काशी (विसके)। काशी से प्राप्त एक समाचार के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित सर सुन्दरलाल चिकित्सालय मे ईसाइयत का प्रचार जोरो से किया जा रहा है।

सर सुन्दरलाल चिकित्सालय मे इलाज हेतु आने वाले बिहार एव पूर्वाचल के गरीब मरीजो को दवाइयो व् रुपयो का लालच देकर ईसाइयत की ओर प्रेरित किया जा रहा है। इन मरीजो मे प्रभु ईसु के सदेशो से युक्त साहित्यिक पुस्तको का भी वितरण किया जाता है।

इन कार्यों मे अस्पताल मे कार्यरत कुछ नर्से सक्रिय भागीदारी निभा रही है। स्थानीय चर्चा के अनुसार विश्वविद्यालय परिसर के आसपास के इलाके धर्म प्रचारको के लिए सर्वाधिक उत्तम स्थान बन चुके हैं। नर्सों के आवास भी सदेह के घेरे मे आ चुके हैं। आवासो के आसपास रहने वालो के अनुसार प्रत्येक बृहस्पतिवार को इन आवासो मे प्रभु ईसु के सदेशो को ढोल मजीरा केसाथ गाया बजाया जाता है।

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर - शाहजहांपुर

प्रवेश - सूचना

विगत वर्षों की श्लाधनीय उपलब्धियो के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" का नवीन शैक्षिक सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ होने जा रहा है। अध्यापन सौविध्य को दृष्टिगत करते हुए शिक्षणादि क्रम तीन वर्गों मे विभक्त है।

प्रवेशिका विभाग प्रथम से पञ्चम तक वेसिक शिक्षा परिषद के निर्धारित पाठ्यक्रम के साथ धार्मिक नैतिक योगासन पी०टी० आदि के प्रशिक्षण की विशिष्ट सुविधा है।

मध्यमा विभाग षष्ठ से द्वादश तक उत्तर प्रदेश माध्यमिक सस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ के निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी गणित विज्ञानादि) के अध्यापन का सुचारु प्रबन्ध है।

स्नातक विभाग सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध शास्त्री आचार्य के पाठयक्रमानुसार प्राचीन तथा सभी आधुनिक विषयो के अध्यापन के साथ एन०सी०सी० एन०एस०एस० प्रशिक्षण की विशिष्ट सुविधा उपलब्ध है।

भारतीय परिवेश मे आवासीय पद्धति पर आधारित व्यक्तित्व का समग्र विकास सतत अध्यवसाय स्वावलम्बन एव सह अस्तित्व की भावना उद्‌दीप्त करना गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मौलिक विशेषता है।

दूरभाष विद्युच्चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिये नितान्त उपयोगी है।

प्रवेश हेतु

शीघ्र सम्पर्क स्थापित करे।

– डॉ० सूर्यदेव शास्त्री प्राचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर तिलहर शाहजहापुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज मन्दिर गाधीनगर

जम्मू का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर के तत्वावधान मे आर्यसमाज गान्धी नगर जम्मू की ओर से पिछले ३ से ५ मई २००२ को वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर गान्धीनगर मे बडी धूमधाम और पूरे उत्साह से मनाया गया।

कार्यक्रम सुबह ७ बजे से पवित्र यज्ञ अथर्ववेद के पाठ से शुरु होकर १० बजे तक विद्वानो के भजन एव प्रवचन तथा शाम को ५ से ७ बजे तक पुन बाहर से आये हुए विद्वानो के उच्चकोटि के प्रवचनो और वैदिक धर्म पर आधारित भजन आदि से पूर्ण होता रहा तथा अन्त मे ऋषि लगर की विशाल व्यवस्था के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 7 7-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 4/5-7-2002

महाराष्ट्र में पं० लेखराम उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना

महर्षि दयानन्द प्रणीत वैदिक सिद्धान्तो का दक्षिण भारत मे प्रचार एव प्रसार हो इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प० लेखराम वैदिक उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की गयी है। आगामी जुलाई मास से शुरु होने वाले प्रस्तावित उपदेशक महाविद्यालय का विधिवत उद्घाटन गत १६ जून को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल जी वधावन के शुभ करकमलो से परली बैजनाथ जिला बीड मे हुआ। उदघाटन समारोह मे प्रमुख अतिथि के रुप मे भूतपूर्व केन्द्रीय इस्पात एव खान राज्यमन्त्री मा श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील उपस्थित थे।

परली आर्य समाज के सहयोग से यह महाविद्यालय स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम मे चलाया जाएगा। बर्मिगहम (लन्दन) स्थित आर्यसमाज के कटटर कार्यकर्त्ता एव महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी श्री कृष्ण जी चौपडा एव उनकी सहधर्मचारिणी श्रीमती सुरक्षाजी चौपडा इस आर्य दम्पती ने इस महाविद्यालय के क्रियान्वयन हेतु २ लाख रुपयो की अनुदान राशि भेजने की घोषणा की है। श्री चोपडा जी स्वय ही दयानन्द ब्राह्म उपदेशक महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) के पूर्वस्नातक है। दक्षिण भारत मे गुरुकुल एव अन्य आश्रम तो खोले जा रहे है किन्तु उपदेशक महाविद्यालय का अभाव था अत स्वय श्री चोपडा जी ने दक्षिण भारत मे उपदेशक महाविद्यालय खोलने की अपनी इच्छा को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डॉ० सुग्रीव काले के समक्ष अभिव्यक्त किया। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी श्री चौपडाजी के प्रस्ताव को मान्यता देकर प० लेखराम जी के नाम से प्रस्तुत उपदेशक विद्यालय खोलने का निर्णय लिया और अपनी गतिविधियां क्रियान्वित की। प्रधानाचार्य के पद पर जाने माने वैदिक विद्वान एव तपस्वी सन्यासी स्वामी सकल्पानन्द जी सरस्वती (उदयपुर राजस्थान) को नियुक्त किया गया है। इस वर्ष केवल पाच ही सुयोग्य होनहार तथा वैदिक सिद्धान्तो के प्रति आस्था एव श्रद्धा रखने वाले छात्रो को ही प्रवेश दिया जाएगा।

श्री विमल वधावन ने एक विशेष पत्र लिखकर श्री कृष्ण चौपडा जी का इस विशाल सहयोग के लिए धन्यवाद करते हुए कहा है कि महाराष्ट्र सभा के कर्मठ एव निष्ठावान अधिकारी एक एक पाई का सदुपयोग आर्यसमाज के निर्माण मे ही करेगे।

इस उपदेशक महाविद्यालय मे छात्रो को वैदिक तत्वज्ञान कर्मकाण्ड अध्यात्म अष्टागयोग प्राकृतिक एव आयुर्वेद चिकित्सा स्वास्थ्य निर्माण पर्यावरण सादगीपूर्ण जीवन आदि विषयो मे समन्वित रुप से प्रशिक्षित किया जाएगा। सद्यस्थिति मे उत्पनन विभिन्न समस्याओ को लक्ष्यकर आदर्श उपदेशको के निर्माण करने का इस नूतन उपदेशक महाविद्यालय का सकल्प है। प्रवेशार्थियो से अनुरोध है कि वे अधिक जानकारी के लिए मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज परली बैजनाथ जिला बीड (महाराष्ट्र) ४३१५१५ इस पते पर सम्पर्क करे।

ग्य ।। बाल शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए०सी०ब्लॉक) नई दिल्ली–२७ द्वारा ११वा बाल शिविर १२ मई से २६ मई २००२ तक आयोजित किया गया। शिविर का उदघाटन १२ मई को यज्ञ हवन के उपरान्त डॉ० अभयदेव शर्मा अध्यक्ष वैद संस्थान' ने किया। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री सुरेन्द्र कुमार भाटिया ने की।

१५ दिनो तक चलने वाले शिविर मे चौथी कक्षा से लेकर दसवी कक्षा तक के लगभग १२० बच्चो ने बौद्धिक प्रशिक्षण के माध्यम से भारतीय वैदिक सस्कृति के महान जीवन मूल्यो का ज्ञान प्राप्त किया। सगीत शिक्षण क माध्यम स ईश्वर भक्ति–देश भक्ति की भावनाआ को आत्मसात किया। हस्तकला चित्रकला योगासन सिखाए श्रीमती गीता शर्मा सेवा निवृ। प्रधानाचार्या श्रीमती सुमन गुप्ता एव श्रीमती प्रतिभा मल्होत्रा ने नैतिक प्रशिक्षण दिया। श्रीमती अनुराधा नन्दा ने हस्तकला चित्रकला मे और श्री राज मल्होत्रा ने सगीत म मार्गदर्शन दिया।

दिनाक २६–५–२००२ को समापन समारोह श्री रामजीलाल गोयल प्रधान आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य क्षेत्रीय विधायक श्री जसपाल सिह निगम पार्षद श्री अशोक वोहरा शिक्षा शास्त्री श्रीमती शशिप्रभा गोयल ने बच्चो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से प्रशसा करते हुए बच्चो को आशीर्वाद दिया और आर्य समाज टैगोर गार्डन को शिविर आयोजित करने के लिए बधाई दी। पूरे शिविर मे उत्तम प्रदर्शन करने वाले बच्चो को शील्ड और कप प्रदान करके प्ररस्कृत किया गया।

रमेश चन्द्र गुप्त प्रचार मन्त्री
आर्यसमाज टैगोर गार्डन
(ए०सी० ब्लॉक) नई दिल्ली २७

पृष्ठ १ का शेष

श्री प्रताप भाई का सभा कार्यालय मे स्वागत

१६७५ म आर्यसमाज शताब्दी महासम्मेलन मे श्री प्रताप भाई स्वागताध्यक्ष थ और कुछ दिन पूर्व उन्हे जेल मे बन्द कर दिया गया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने जब श्रीमती इन्दिरा गाधी जी से मिलकर उन्हे वस्तुस्थिति से अवगत कराया तो उनकी रिहाई सम्भव हुई।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा कि आपातकाल मे श्री प्रताप भाई की गिरफ्तारी के कारण मुम्बई मे आयोजित किया जाने वाला शताब्दी सम्मेलन मुम्बई के स्थान पर दिल्ली मे आयोजित करना पडा उस वक्त दिल्ली वासियो ने अपार उत्साह का परिचय देते हुए उस सम्मेलन को सफल किया।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि श्री प्रताप भाई का ७ वर्ष का प्रधान का कार्यकाल बडी सुखद स्मृतियो से भरा हुआ है। उन्होने कुछ पुरानी स्मृतियो का उल्लेख करके सबके सामने श्री प्रताप भाई के सार्वदेशिक सभा के प्रधान काल की तस्वीर प्रस्तुत की।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभ दास ने कहा कि मैं अपने जीवन मे आर्यसमाज की जितनी भी सेवा कर पाया हू वह केवल श्रद्धाभावना का ही परिणाम था। आयसमाज जैसी पवित्र सस्था मे हमे अपन कतव्य पालन की ओर ध्यान देना चाहिए। परन्तु पिछले कुछ वर्षो से मै महसूस कर रहा हू कि कुछ अधिकारवादी लोगो ने इस सगठन के वातावरण को दूषित करने का प्रयास किया है हालाकि वे अभी तक सफल नही हुए परन्तु ऐसे लोगो का मुकाबला करने के लिए समूचे आर्यजगत से श्रद्धाभाव वाले व्यक्तियो को सुदृढ सगठन के रूप मे कार्य करना चाहिए।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभ दास का मोतियो की माला श्रीफल स्मृति चिन्ह तथा पुष्पमालाओ से सभा कार्यालय मे स्वागत किया गया। इस स्वागत समारोह मे श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजसिह भल्ला श्री सोमदत्त महाजन श्री इन्द्रदेव श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री पुरुषोत्तमदास गुप्ता श्री रोशनलाल गुप्ता तथा श्री विनय आर्य उपस्थित थे।

सिन्धुफार्म (शिवपुरी) गिरवानी मे आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

गत १ जून स ७ जून तक सिन्धुफार्म शिवपुरी (रायगढ) मे विशाल आयवीर दल शिविर चौ० चित्रसेन जी आर्य ओर उनके सुपुत्र श्री के० रूद्रसेन जी सिन्धु आदि के प्रेरणा व सहयोग से गुरुकुल आमसेना के उपाचार्य श्री कुजदेव जी मनीषी व उत्कल आर्यवीर दल के मत्री श्री आनन्द कुमार जी के देखरेख मे सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे ८ जिलो के १२५ नवयुवको ने श्रद्धापूर्वक भाग लेकर जीवन मे नई दिशा प्राप्त की। शिविर का समापन पूज्य स्वामी श्री धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यवीरो को उद्बोधन देने के लिए मध्य प्रदेश एव विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आचार्य जगददेव जी मत्री श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री सुद्युम्न जी श्री सहदेव जी बेधडक आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे। बौद्धिक शिक्षण श्री गुरदयाल जी साधव व श्री जैमिनी शर्मा जी का प्रेरणाप्रद रहा। शिविर की सारी व्यवस्था श्री आचाय सुभाषचन्द्र जी डॉ० मलिक जी ने बडी तन्मयता से की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ११ | १४ जुलाई से २० जुलाई २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ | सम्वत २०५६ | आ० शु० ४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान अमरीका यात्रा पर

कुछ सप्ताह अमरीका रूकने के बाद कै० देवरत्न आर्य, कनाडा, इंग्लैण्ड तथा हालैण्ड देशों में भी जाएंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अफ्रीका की यात्रा पूर्ण करके दो सप्ताह बाद ६ जुलाई की मध्य रात्रि अमेरिका के लिए प्रस्थान कर गए उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई है।

के० देवरत्न आर्य की विदेश प्रचार यात्रा का विदाई समारोह ८ जुलाई को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य आर्य सस्थाओ को तत्वावधान मे आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी के सभागार मे आयोजित किया गया। इस विदाई समारोह का सयोजन श्री सोमदत्त महाजन जी ने किया।

विदाई समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री रामनाथ सहगल दिल्ली के पूर्व मन्त्री डा० योगानन्द शास्त्री श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजसिह भल्ला श्री धर्मपाल प्रि चन्द्रदेव आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्रीमती उज्ज्वला वर्मा श्री सत्यानन्द आर्य श्री अशोक शर्मा विनय आय आदि उपस्थिति थे। इस विदाइ समारोह की अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव जी ने की।

उपस्थित महानुभावो मे अपन अपने उदबाधन मे के० देवरत्न आर्य स यह आशा व्यक्त की कि उनकी इस विदेश प्रचार यात्रा से वैदिक धम का डका घर घर बजन लगगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न आर्य विदाई से पूर्व यज्ञ करते हुए। विदाई समारोह के अवसर पर मचस्थ कै० देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या अध्यक्षता करते हुए वैद्य इन्दद्रेव जी तथा अन्य महानुभाव। कै० देवरत्न आर्य जी का स्वागत करते हुए डॉ० योगानन्द शास्त्री तथा अन्य आर्यजन।

वैदिक धर्म प्रचार कार्यो का भाग्योदय

पूर्वी प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा

गुरुकुलों के व्यवस्थापक उदारता पूर्वक सहयोग करें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक अभिन्न अग अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ आदिवासी क्षेत्रों में धर्मान्तरण के कुचक्र को रोकने एव आदिवासी नागरिको को अपने मूल वैदिक धर्म से जोड़े रखने के लिए स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की प्रेरणा पर सभा के तत्कालीन नेताओ लाला रामगोपाल शालवाले और ओमप्रकाश त्यागी सेठ प्रतापसिह शूर जी वल्लभ दास आदि के प्रयासो से की गई थी। तबसे दयानन्द सेवाश्रम सघ अपने सीमित साधनो से इस विशाल दायित्व का निर्वहन करता रहा है। स्वर्गीय श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी माता प्रेमलता शास्त्री ने बडी श्रद्धा और प्रेम से इन कार्यो को अपनाया। शास्त्री जी के देहावसान के बाद माता प्रेमलता शास्त्री जी ने इन कार्यो को निर्वाध रूप से जारी रखा।

प्रतिवर्ष वैचारिक क्रान्ति शिविर मई माह मे आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरो मे युवको और बच्चो को शामिल करने के लिए सुदूर प्रान्तो मे स्थित हमारे आश्रमो के कार्यकर्ता स्थानीय लोगो को प्रेरित करते हैं। जो युवक युवतिया और बच्चे इन शिविरो मे भाग लेते हैं उन्हीं मे से कुछ महानुभावो को बालवाडिया गठित करके गाव गाव मे धर्म प्रचार अभियान के लिए प्रेरित किया जाता है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष भाग

पूर्वी प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा

विगत मई माह मे ही प्रतिवर्ष की भाति इस बार भी यह शिविर सम्पन्न हुआ। इस बार बच्चो मे उत्साह कुछ अधिक ही नजर आ रहा था। अपने अपने क्षेत्रो मे वापिस जाने पर सभी शिविरार्थी अपने जीवन मे एक शुभ परिवर्तन का प्रदर्शन करते हैं। इस शुभ परिवर्तन का अन्य स्थानीय लोगो मे एक स्वाभाविक आकर्षण बनता है जिससे वे भी यह कल्पना करने लगते हैं कि उनके बच्चे भी जवान होने पर बुराइयो की ओर आकर्षित न हो और पवित्र बुद्धि के मालिक बने। यही आकर्षण उन्हे भी प्रेरित करता है कि अगले शिविर मे उनके बच्चे भी दिल्ली जाये। इसके अतिरिक्त दयानन्द सेवाश्रम सघ के आसाम स्थित आश्रमो मे दाखिला लेने के लिए भी होड सी बनी रहती है। आसाम मे ही कई स्थानो पर सघ के स्थायी आश्रम भी चल रहे है। किसी मे ५० बच्चो की क्षमता है किसी मे १०० की परन्तु इस बार इन आश्रमो मे प्रवेश की होड बढती ही जा रही है।

आश्रम के स्थानीय प्रबन्धको ने विगत माह दिल्ली के अधिकारियो से सम्पर्क किया तो माता प्रेमलता जी शास्त्री की विशाल हृदयता के कारण उन्हे प्रवश निषेध कहने को तैयार नही हुई और उन्होने दिल्ली के आस पास स्थित गुरुकुलो से सम्पर्क किया ताकि वे नि शुल्क इन आदिवासी और पूर्वी प्रान्तो के बच्चो को रखने के लिए तैयार हो। गुरुकुल खेडा खुर्द के आचार्य सुधाशु जी ने अपने प्रबन्धको की अनुमति से २०–२५ बच्चो को स्वीकार करने की स्वीकृति दी। १० जुलाई को आसाम से २२ बालक सर्वश्री होली आर्य मुनीष सिह आचार्य मनीष बर्णी और शम्भु शरण के साथ दिल्ली पहुचे। इन बच्चो को लेने के लिए आचार्य सुधाशु जी गुरुकुल खेडा खुर्द से आर्यसमाज मन्दिर रानी बाग आये जहा सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन जी की उपस्थिति मे बच्चो का स्वागत ओर उन्हे विदाई दी गई।

आसाम से आए बच्चों का आर्यसमाज रानीबाग में स्वागत एवं उन्हें गुरुकुल खेडाखुर्द भेजने का विदाई समारोह बच्चो के मध्य माता प्रेमलता शास्त्री श्री विमल वधावन श्रीमती ईश्वररानी महता श्री सूर्य प्रकाश आदि।

श्री विमल वधावन ने गुरुकुल खेडा खुर्द के अधिकारियो से निवेदन किया कि यह बच्चे उनके पास हमारी अमानत के रूप मे हैं। उन्होने गुरुकुल के अधिकारियो और आचार्यो की इस उदारता के लिए उनका धन्यवाद किया। श्री विमल वधावन ने कहा कि वैदिक विचारधारा की ओर आकर्षित होती हुई इस भीड को देखकर ऐसा लगता है कि भाग्योदय का समय निकट है। आसाम के सुदूरवर्ती क्षेत्रो मे भी अब वैदिक धर्म के प्रति एक आकर्षण प्रारम्भ हो गया है जिसकी हलचल भी नजर आने लगी है।

लगभग एक सप्ताह बाद ही ४५ बच्चो की एक और टोली दिल्ली पहुच रही है। आसाम के स्थानीय कार्यकर्ताओ ने बताया कि अब तो कई ईसाई परिवारो के लोग भी यह इच्छा व्यक्त करने लगे हैं कि हमारे बच्चो का पालन पोषण भी वैदिक धर्म के आश्रमो और गुरुकुलो मे किया जाए।

श्री विमल वधावन ने समूचे विश्व की जनता को आह्वान किया है कि राष्ट्ररक्षा और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे चल रहे इन कार्यो के महत्व को समझे। उन्होने दानी महानुभावो से विशेष सहयोग की अपील की है।

श्री वधावन ने समस्त गुरुकुलो के प्रबन्धको और आचार्यो से भी आग्रह किया है कि वे सार्वदशिक सभा को सूचित करे कि वे ऐसी परिस्थितियो मे ऐसे कितने बच्चो को नि शुल्क व्यवस्था अपने गुरुकुलो मे कर पाने मे सक्षम हैं। गुरुकुलो के व्यवस्थापको और सचालको का उदारता पूर्वक सहयोग इस महान कार्य को और भी आगे बढायेगा।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने कहा कि यदि आर्यजगत अपने मस्तिष्क मे और अपने हृदय मे इन कार्यो की ज्योति जलाये तो मै मदर टेरेसा से भी कई गुना कार्य करके दिखा सकती हू। उन्होने कहा कि साधनो की कमी सदैव हमारे सामने बाधा बनकर खडी रहती है। जितना भी हम कार्य कर पाते हैं वह भी उन आर्य पुरुषो के सहयोग का परिणाम है जो इन कार्यो के महत्व को हमारे निकट बैठकर देखते हैं और समझते हैं।

उन्होने बताया कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध उद्योगपति फ्रन्टीयर बिस्कुट के स्वामी श्री मुन्शीराम सेठी विगत माह आर्यसमाज रानीबाग दिल्ली मे चल रहे शिविर के दौरान अचानक आये उन्होने बच्चो का कार्यक्रम देखा तो उन्हे ५ छोटे छोट आश्रमनुमा स्कूलो मे किसी व्यवस्था की परेशानी बतायी गयी तो उन्हाने तत्काल बिना मागे ४० हजार रुपये का चैक प्रदान किया। ओर शिविरार्थियो के खाने पीने का सहयोग भी प्रदान किया।

इसी प्रकार अमेरिका मे प्रवास कर रहे श्री नरेन्द्र नाथ भी अक्सर अमेरिका के अन्य महानुभावो को प्रेरित करके यथासम्भव राशि के डालर भिजवाते रहते हैं। स्वय दानशील श्री नरेन्द्रनाथ जी अपनी तरफ से भी काफी सहयोग करते है। उनके नाम पर तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा के नाम पर पहले से ही अलग अलग बालवाडिया चल रही है।

बच्चों को इस विदाई समारोह मे श्री सूर्यप्रकाश जी श्रीमती ईश्वररानी महता तथा आर्यसमाज के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। आर्यसमाज रानीबाग मे भी कुछ बच्चो की व्यवस्था की गई है। ✡

आर्यसमाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहूंगा – साहिब सिंह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्ट मण्डल दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के नेतृत्व मे नवनियुक्त केन्द्रीय श्रममन्त्री श्री साहिबसिह वर्मा के निवास पर उनसे मिला और उन्हे मन्त्री बनने पर आर्यसमाज की ओर से बधाई दी गई।

उस शिष्ट मण्डल मे श्री रामविलास खुराना राजसिह भल्ला श्री चन्द्रदेव श्री वैद्यइन्द्रदेव श्री चमनलाल माता प्रेमलता शास्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा चौ० लक्ष्मी चन्द्र श्री अरुण वर्मा श्री रविकान्त श्री रामलाल आहूजा श्री रोशनलाल श्री आदित्य श्री धर्मपाल श्री जोगिन्दर खटटर श्री रवि बहल आदि उपस्थित थे।

श्री साहिबसिह वर्मा ने शिष्टमण्डल का धन्यवाद करते हुए कहा कि मै आर्यसमाज का सदैव ऋणी रहूगा और आर्यसमाज की सेवा के लिए जब कभी भी मेरी आवश्यकता पडेगी मैं तत्परता से अपना कर्तव्य निभाऊगा।

आर्यसमाज के अधिकारियो के साथ श्री साहिब सिह वर्मा।

शुभ कामना पत्रम्

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ज्ञानगुण सागर सुनागर प्रसन्न मन धृतिधारक गुण गरिमा निधान हैं।
अनवरत कार्यरत सच्चे दयानन्द भक्त वैदिक विवेकी सत्य वक्ता चरित्रवान हैं।।

दिशा भ्रान्त यात्रियों के सुपथ प्रेरक यह वैदिक सद मार्ग का करते रहे ज्ञान हैं।
वैदिक धर्म प्रचार प्रसार हेतु अब आज अमरीका को कर रहे प्रस्थान है।।

शुभमगल कामना देने को विदाई यह आये आर्य जन यहा उत्साही इन्सान हैं।
आचार्य भद्रसेन के सुपुत्र उज्ज्वला के भ्राता सुनीता के प्राणपति श्रेष्ठ कुल महान हैं।।

कैप्टन देवरत्न जन जन के प्रिय नेता शिरोमणि सभा सार्वदेशिक के प्रधान हैं।
अभिलाषा है यह स्वरूपानन्द सन्त की दिग-दिगन्त यशगान पाओ सम्मान हैं।।

– १५ हनुमान रोड नई दिल्ली

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

गताक से आगे

माता ही शरीर का, भाषा का और चरित्र का निर्माण कर सकती है

– सुषमा स्वराज

२७ अप्रैल को सम्पन्न हुए माता निर्माता भवति सत्र का कुछ वृत्तान्त विगत अक मे प्रकाशित हो चुका है। माता प्रेमलता शास्त्री और ब्र० इन्दु के उद्‌बोधन पाठको ने पढ लिए होंगे इनके अतिरिक्त डॉ० सुषमा शर्मा श्रीमती शन्नोदेवी श्रीमती शकुन्तला आर्या तथा सत्र की अध्यक्षा श्रीमती दमयन्ती कपूर के उद्‌बोधन लेखबद्ध रुप में प्रकाशित हो चुके हैं।

डॉ० सुषमा शर्मा ने अपने उद्‌बोधन का केन्द्र इस सिद्धान्त को रखा कि वैदिक नारी सर्वोच्चता पवित्रता और उज्ज्वलता की वह मूल स्तम्भ है जिनके कारण उसे परिवार मे साम्राज्ञी का स्थान दिया गया है। दूसरी तरफ मध्यकाल की परिस्थितियो मे यदि महर्षि दयानन्द के विशेष प्रयास न होते तो आज के इस मच पर न सुषमा शर्मा होती और न सुषमा स्वराज। उन्होने अपने उद्‌बोधन का समापन इस आशा और विश्वास के साथ किया कि भारतीय नारी का भविष्य उज्ज्वल ही होगा क्योकि उसका अतीत अच्छा ही था।

इसके उपरान्त वैदिक नारी ओर आधुनिक नारी विषय पर उदबोधन देने के लिए डॉ० आशारानी राय को आमत्रित किया गया जो कानपुर के एक महाविद्यालय मे प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत है।

उन्होने कहा कि पृथ्वी की तुलना पत्नी से की गई है और द्यौ की तुलना पति से की गई है। उन्होने कहा कि १९वीं शताब्दी महिलाओ के पुनर्जन्म का काल था उसका परिणाम यह निकला कि आज महिलाओ के हर प्रकार का सामर्थ्य प्राप्त है। आज महिलाए कमजोर नहीं हैं। उन्होने पी० टी० उषा तथा सुषमा स्वराज आदि के उदाहरण देकर बताया कि महिलाओ ने अपने अपने क्षेत्र मे अपार विशेषताए अर्जित की है। लेकिन इन प्रगतियो के रुप मे वैदिक नारी को परिभाषित करना पर्याप्त नहीं है।

उन्होने कहा कि भारत मे प्रत्येक मिनट मे एक कलाकार होता है। नारी की सुरक्षा के समस्त कानून विद्यमान होने के बावजूद भी यह अत्याचार जारी है। अनैतिक व्यापार बाल विवाह दहेज प्रताडना सती प्रथा आदि बुराईयों को रोकने के लिए तथा पुरुषों के समान व्रेतन दिलाने के लिए हर प्रकार के कानून विद्यमान हैं। इन सबको लेकर जागृति उत्पन्न की जानी चाहिए। अत्याचार सहने की प्रवृत्ति से महिला का सुधार नहीं होगा।

उन्होंने कहा कि पाश्चात्य सभ्यता और सस्कृति का रोना रोने से काम नहीं चल सकता। अन्धकार प्रकाश को नही निगल सकता अत पाश्चात्य सभ्यता वैदिक सस्कृति का अनिष्ट नहीं कर पाएगी। स प्रथमा विश्ववारा अर्थात वैदिक सस्कृति विश्व की सर्वप्रथम सस्कृति है अत इसे हम स्वय जाने स्वय को प्रकाशित करे और अन्यो को भी। हमे सस्कारवान बनने और बनाने पर जोर देना चाहिए। सभी सस्कार बडे जोश और उत्साह के साथ सम्पन्न कराने चाहिए। मैने महाविद्यालय की लडकियो के यज्ञोपवीत सस्कार कराए उन्हे महत्व बताया गया तो उनके मन मे सकल्प जाग्रत हुआ कि हमारा भी इस पर अधिकार है। मेरे विद्यालय की लडकिया सस्कार करती हैं करवाती हैं। कानपुर विश्वविद्यालय सारे हिन्दुस्तान मे अकेला ऐसा विश्वविद्यालय है जहा सस्कारविधि और पच महायज्ञ विधि विधिवत पाठयक्रम मे जोडी गई है।

सत्र की सयोजिका श्रीमती शशिप्रभा आर्या ने ससद सदस्य श्री रासासिह रावत को आमन्त्रित किया कि वे श्रीमती सुषमा स्वराज के समक्ष आर्यसमाज का और इस महान सस्था के महान नेताओ के कार्यो का परिचय प्रस्तुत करे।

श्री रासासिह रावत ने कहा कि श्रीमती सुषमा स्वराज राष्ट्रवाद की प्रबल पोषिका एव भारतीय सस्कृति की ध्वजवाहिका है। इन्हे जब हम इस कार्यक्रम मे आमन्त्रण देने के लिए सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो के साथ मिले तो आपने इसे सहर्श स्वीकार कर लिया।

उन्होने कहा कि इस गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रवाद के पोषक पैदा किए। क्योकि इसकी स्थापना एक महान राष्ट्रवादी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा की गई थी जिन्हे महात्मा गाधी अपना बडा भाई मानते थे। उनके बलिदान पर महात्मा गाधी ने कहा था कि काश! मुझे भी ऐसी मृत्यु प्राप्त हो। अफ्रीका से आने पर महात्मा गाधी को गुरुकल कागडी मे आमन्त्रित किया गया था जहा उन्हे मि० गाधी के स्थान पर महात्मा गाधी कहकर पहलीबार सम्बोधित किया गया।

श्री रावत ने कहा कि विगत वर्ष मुम्बई सम्मेलन के दौरान महर्षि दयानन्द जी के जीवन और कार्यो पर आधारित एक धारावाहिक के निर्माण की योजना स्वीकार की गई थी जिसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। इस धारावाहिक को दूरदर्शन द्वारा स्वीकार किया जाना है इस कार्य के लिए जब हम सुषमा स्वराज जी से मिले तो उन्होने कहा कि दूरदर्शन से मैंने हाल ही मे वीर सावरकर शिवाजी महाराणा प्रताप और विवेकानन्द पर धारावाहिक बनाने की मजूरी दी है। महर्षि दयानन्द के सीरियल के बारे मे उन्होने कहा कि यह धारावाहिक यदि मेरे कार्यकाल मे नहीं होगा तो कब होगा।

श्री रासासिह ने कहा कि हम मुख्य अतिथि जी से प्रार्थना करते है कि इस सीरियल को अनुमति दिलाने की प्रक्रिया को यथाशीघ्र पूरा करे जिससे घर घर महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुच सके।

इसके पश्चात महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने सचालन की कार्यवाही को आगे बढाते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज जी से निवेदन किया कि वे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर विशेष रूप से तैयार की गई स्मारिका का विमोचन करे।

इस कार्य के लिए महासम्मेलन के अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य श्री वेदव्रत शर्मा तथा सासद श्री रासासिह रावत को आमन्त्रित किया गया।

स्मारिका के विमोचन के बाद गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ० महावीर जी के द्वारा लिखित वैदिक अर्थ व्यवस्था नामक ग्रन्थ तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्मारिका एव गुरुकुल फार्मेसी की स्मारिका का भी विमोचन भी श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा किया गया। जिसमे स्वय डा० महावीर कुलपति आचार्य वेदप्रकाश शर्मा तथा डॉ० राजकुमार रावत ने भाग लिया।

योगी फार्मेसी की वरिष्ठ प्रबन्धिका माता पुष्पावती वैद्य का अभिनन्दन भी श्रीमती सुषमा स्वराज के हाथ से करवाया गया। उन्हे विशेष प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। माता पुष्पावती वैद्य अत्यन्त वृद्धावस्था मे भी फार्मेसी के कार्यो का नियमित एव कर्मठता पूर्वक सचालन करती हैं।

इस कार्यवाही के बाद सत्र की अध्यक्षा श्रीमती दमयन्ती कपूर एव सयोजिका श्रीमती शशि प्रभा ने शाल ओढाकर श्रीमती सुषमा स्वराज कों अभिनन्दन किया। इनके अतिरिक्त माता प्रेमलता श्रीमती शकुन्तला दीक्षित सुदर्शन शर्मा देवेन्द्र शर्मा श्रीमती वेदकुमारी (जम्मू) श्रीमती सुनृता वेदालकार श्रीमती गुलशन शर्मा सुनीता आर्य शोभा शर्मा तथा विश्वविद्यालय के परिदृष्टा श्री सदानन्द के अतिरिक्त मच पर उपस्थित समस्त विदुषी वक्ताओ ने श्रीमती सुषमा स्वराज का विभिन्न तरीकों से अभिनन्दन किया।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के अनुसार इस महासम्मेलन के अन्य सभी सत्रो मे से यह सत्र सर्वोत्तम सफल रहा था।

इसके पश्चात मैनपुरी से पधारे डा० वेदप्रकाश वैदिक ने स्वरचित एक कविता श्रीमती सुषमा स्वराज के अभिनन्दन मे पढकर सुनाई जिसे उन्हे ससम्मान भेट किया गया। इस अभिनन्दन कार्यवाही के बाद श्रीमती सुषमा स्वराज को उदबोधन के लिए आमन्त्रित किया गया। श्रीमती सुषमा स्वराज ने इस महासम्मेलन मे आमन्त्रित करने के लिए आयाजको का हार्दिक धन्यवाद किया।

उन्होने कहा कि मै प्रवचन या उदबोधन देने के उददेश्य से नही आई बल्कि मै तो अपनी जिन्दगी के अनुभव साझे करने आई हू। आने से पूर्व मैं सोच रही थी कि मुझे आर्य बहनो से बात चीत का अवसर मिलेगा परन्तु यहा आकर अनक विदुषी बहनो के विद्वतापूण भाषण सुनने को मिले। प्रत्येक विदुषी बहन अपने उदबोधन को अपने विषय तक सीमित रखा परन्तु हर उदबाधन क आर मे छोर से या मध्य मे कही न कही एक साझा सूत्र अवश्य था और वह था माता निर्माता भवति।

इस सत्र विषय का सरल हिन्दी अर्थ प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि माता निर्माण करती है या इस इस तरह से समझे वो कहा जा सकता है कि जो निर्माण करती है वो मां ही हाती है। शारीरिक रूप से तो मा निर्माण करती ही है क्योकि ब्रह्मा ने यह शक्ति केवल स्त्री को ही दी है। इसी से इस सत्र का शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। दुनिया मे कोई भी रिश्ता झूठा हो सकता है परन्तु मा का नही।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि एक हमारा दृष्टिकोण भी है – भाषा का। हम जहा कहीं भी कार्य करते है वहा हमे मातृभाषा पढनी पडती है पजाबी मे इसे मा बोली कहा जाता है अगेजी मे इसे Mothor Tongue कहा जाता है। कहीं पितृ भाषा का उल्लेख नही है। क्योकि जो भाषा मा बोलती है उसकी शिक्षा बच्चो को गर्भ मे ही मिल जाती है। इसलिए वही मातृभाषा कहलाती है।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि तीसरे दृष्टिकोण से देखो तो मा वह सत्ता नजर आती है जो बच्चे के सरकार गढती है जो व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यही मानव निर्माण का सूत्र है।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष भाग

माता ही शरीर का, भाषा का और चरित्र का निर्माण कर सकती है

उन्हाने कहा कि हमने तो राष्ट्र को भी मा की सज्ञा दी है। अपने देश का नाम यदि केवल हम भारत पुकारते तो उसका पुलिग अर्थ निकलता इसलिए हम इसे भारत माता कहते हे और यही हमारे दश का स्वरूप है।

उन्होने कहा कि ईश्वर को भी जब हम त्वमेव माता च पिता त्वमेव कहकर सम्बोधित करते है तो उसमे ईश्वर भी मा के रुप मे नजर आता है। मा मे वात्सल्यता है दोष छिपाने की शक्ति है तो दोष दूर करने की शक्ति भी है।

उन्होने कहा कि जब कभी भी हम निर्माण की बात सुनते है तो हमारे मन मे यह कल्पना आने लगती है कि यह बात कुछ बनने से सम्बन्धित है कुछ पदार्थो को मिलाकर कुछ नए पदार्थ बन रहे हैं। जेसे भवन निर्माण वस्तु निर्माण आदि। परन्तु मानव निर्माण उस प्रकार का बेजान निर्माण नहीं है।

उन्होने कहा कि भवन निर्माण करनेवाला मजदूर रात को कैसा भी आचरण करता हो परन्तु वह एक अच्दे भवन का निर्माण कर सकता है। इसी प्रकार कारखानो के मजदूर रात को चाहे शराब पीए मास खाए परन्तु अगन्ल दिन वह अच्छी वस्तुआ का निर्माण अवश्य ही कर सकते है। जबकि अच्छे सस्कारो के लिए मा को स्वय अच्छ सस्कारा वाला बनना ही पडता हे। सदा झूठ बालने वाली मा अपने बच्चो को सच बोलना नहीं सिखा सकती। भ्रष्ट आचरण वाली मा अपने बच्चो मे सदचरित्र पैदा नही कर सकती।

वह स्वय अच्छी होगी तो बच्चे मे अच्छे सस्कार स्वाभाविक रुप से आ जाएगे। मा अपने अन्दर के सस्करो को घुटटी मे अपने बच्चो को पिला देती है। घुटटी का अर्थ है दूध के द्वारा यह सस्कार मा से बच्चे मे जाते है।

श्रीमती सुषमा ने कहा कि मा राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत होती है तभी वह जीजाबाई के रुप मे शिवाजी पैदा कर सकती है। मा के गर्भ मे जो कुछ सुना और समझा उसी के आधार पर अभिमन्यु चक्रमेदन मे कुशल बन पाया। जीन्स वहीं गर्भ के सस्कार हैं। हम अक्सर परिवारो मे बहुओ को यह निर्देश देते सुनते है कि बहू गुस्सा मत कर नहीं तो बच्चा गुस्सेवाला होगा उसका भी अभिप्राय यही है कि जैसी मा की प्रवृति होगी वैसी ही बच्चे की भी प्रकृति होगी। गर्भवती स्त्रिया अपने कमरो मे हसते खेलते बच्चो का चित्र लगाती है। मक्खन खाते हुए श्रीकृष्ण का चित्र लगाती है जिससे उनका बच्चा भी वेसा ही हसता खेलता हे।

उन्होने कहा कि जिस प्रकार चित्रकार चित्र बनान स पूर्व किसी विचार को तयार करता ह उसी प्रकार गभवती मा भी बच्चे क निर्माण का पूरा विचार और उसकी योजना भी मन मे तैयार करती है और परवरिश के बाद वह नापतोल भी करती है कि वह अपनी योजना मे कितनी सफल हुई। महिलाआ के राजनीति मे आने पर टिप्पणी करते हुए उन्होने कहा कि राजनीति मे केवल वहीं महिलाए प्रवेश करे जिनकी हडिडयो म दोहरा काम करने की शक्ति है। उन्होने कहा कि भारत के सामाजिक परिवेश मे हम परिवार की अनदेखी नही कर सकते। परिवार सुखी होगा तभी राजनीतिक गतिविधिया भी सफल होगी। जो महिलाए राजनीतिक या अन्य गतिविधियो के कारण परिवार की उपेक्षा करती है वे घर के अन्दर और बाहर सदा तनावग्रस्त रहती हैं। वे स्वय भी टूट जाती हैं और परिवार को भी तोड देती है।

उन्होने अपने राजनीतिक जीवन के अनुभव बताते हुए कहा कि २५ वर्ष मे मैंने हरियाणा मे पहला चुनाव लडा और केबीनेट मन्त्री भी बनीं। मा बनने का अवसर मुझे बाद मे मिला लेकिन इस व्यस्त राजनीतिक जीवन के बावजूद भी अपनी बच्ची को पालने के लिए कभी आया नहीं रखी। डेढ वर्ष तक उसे अपना दूध पिलाकर उसका पालनपोषण किया है। छह महीने की बच्ची और उसके लिए जरूरी सामान लेकर मै चुनाव प्रचार मे निकल जाया करती थी। टेम्पू पर भाषण देने के लिए जब चढती थी तो केवल १०–१५ मिनट के लिए बच्ची को किसी महिला कार्यकर्ता के हाथ देती थी। मेरी बेटी जब २ वर्ष की हुई तभी से उसने भाषण देने की कला भी सीख ली। हर व्यक्ति से मिलने मे उसे कोई सकोच नहीं होता और दूसरी तरफ मैंने भी अपनी पारिवारिक जिम्मेवारियो का भी उल्लघन नहीं किया। कीमत इसबात की नहीं है कि आप कितना समय बच्चो को देती है बल्कि महत्व इस बात का है कि आप बच्चो के साथ किस प्रकार का समय व्यतीत करती हैं। मैं प्रात काल के कुछ घण्टे पूरी तरह से अपने बच्चो के साथ व्यतीत करती है। उन्हे खुद उठाना दूध पिलाना और नियमित उनकी देखभाल करना। यह दिनचर्या भी एक प्रकार का तप है। परिवार को कभी मैंने अपनी कमी महसूस नहीं होने दी। इस लिए यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि सस्कार का निर्माण हम तभी कर सकते है जब हम स्वय सस्कारित हो।

उन्होने कुछ विदुषी वक्ताओ द्वारा दूरदर्शन पर अश्लीलता का उल्लेख करते हुए कहा कि मैं स्वय इन सबसे बहुत चिन्तित हू परन्तु हमे यह निश्चित मानना चाहिए कि अपने सद्चरित्र के माध्यम से सस्कार निर्माण का कार्य बन्द न हा। यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है यदि कार्य चलता रहा तो कई सस्कृतियो का आक्रमण भी हमारा कुछ बिगाड नहीं पाएगा। महिलाओ को सस्कार निर्माण का कार्य जारी रखना चाहिए।

प्रो० रासासिह जी ने महर्षि दयानन्द जी के धारावाहिक का उल्लेख किया है यह धारावाहिक मेरे कार्यकाल मे बने ऐसा मैंने इसलिए नहीं कहा कि मै सूचना प्रसारण मन्त्री हू परन्तु मैंने महर्षि दयानन्द की ऋणी एक नारी के नाते यह बात कही। और मुझे ऐसा लगता है कि शायद ईश्वर को भी यही मजूर होगा कि महर्षि दयानन्द जी का धारावाहिक तभी बने जब एक नारी सूचना प्रसारण मन्त्री हो।

यह कहकर माननीय मुख्यातिथि ने अपना उद्बोधन समाप्त किया तो महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने मुख्य अतिथि को सम्बोधित करते हुए कहा कि बहन जी यदि यह धारावाहिक आपके कार्यकाल मे बन गया तो आर्यजनता सदा आपकी आभारी रहेगी और समूचे भारतवर्ष की धर्मप्रेमी जनता इस बात की प्रतीक्षा मे है कि दूसरी महिला प्रधानमन्त्री सुषमा स्वराज कब बनेगी। हम परमपिता परमात्मा से भी यही प्रार्थना करते हैं।

महासम्मेलन की सयोजिका ने मच सचालन की कार्यवाही को पुन सभाला और अगली वक्ता के रूप मे दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या को उदबोधन के लिए आमन्त्रित किया।

श्रीमती शकुन्तला आर्या ने नारी को सत्य शिवम सुन्दरम की सज्ञा दी और कहा कि नारी कन्या के रूप मे सत्य है माता के रूप मे शिवम है और पत्नी के रूप मे सुन्दर है। श्रीमती शकुन्तला आर्या का विस्तृत उद्बोधन विशेष लेख के रूप मे विगत अक मे अलग से प्रकाशित किया जा चुका है।

इसके बाद श्रीमती उज्ज्वला वर्मा को उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया उन्होने एक विशेष वेदमन्त्र को प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसमे वीर पुत्र और बहादुर नारियो की कल्पना की गई है। आज मोटर कारो से लेकर किसी भी अच्छी से अच्छी वस्तु का निर्माण तो हो सकता है लेकिन वीर पुरुषो और वीरागनाओ का निर्माण करने के लिए आज तक कोई फैक्ट्री नहीं बनी। परन्तु मेरी वीरागनाए यह कार्य कर सकती हैं। जीजाबाई ने बचपन मे ही शिवाजी को वह किला दिखाकर प्रेरित किया था जिसे वह बडे होकर मुसलमानो से वापस ले सका।

उन्होन महारानी मदालसा का उल्लेख करते हुए कहा कि उसने सात पुत्रो का निर्माण इस प्रकार किया कि वे सस्कार से ऋषि बन गए जब राजा ने इस पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि राजकार्ग कौन करेगा तो महारानी ने तत्काल उत्तर दिया कि मैं जैसा चाहू वैसा पुत्र पैदा कर सकती हू और उसने आठवा पुत्र राज कार्य से परिपूर्ण सस्कारो वाला उत्पन्न किया।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिकन ने भी कृषक के घर मे पैदा होकर अपने राष्ट्रपति बनने के पीछे अपनी मा को ही सारा श्रेय दिया।

रामप्रसाद बिस्मिल, फासी से पूर्व मा से मिले उन्हे देखकर मा रोने लगी पूछने पर उसने बताया कि मैं इसलिए नहीं रो रही कि मेरा पुत्र अलग हो जाएगा और आज के बाद नजर नहीं आएगा बल्कि मैं इसलिए रो रही हू कि यदि मेरे दो पुत्र और होते तो उन्हे भी मै इसी काम मे लगाती।

उन्होने कहा कि मा के रूप मे महिला चाहे तो सब कुछ कर सकती है। कुछ लोग ऐसे विशेष कार्य कर सकते हैं उन्हे देखकर हमारे अन्दर उत्साह पैदा होना चाहिए। वेद ने इसीलिए निर्देश दिया मनुर्भव। क्या आप जानते हैं राम को राम किसने बनाया ? वनवास जाने से पूर्व कौशल्या ने राम को आदेश दिया कि पहले कैकेई के चरण स्पर्श करके आओ यदि और कोई मा होती तो ईर्ष्या द्वेष की कोई और शिक्षा देती। सुमित्रा ने लक्ष्मण को भी यह निर्देश दिया कि जहा राम हैं वहीं तेरी अयोध्या है।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

सांसद श्रेष्ठ सुवक्ता - सुषमा

तत्त्वमसि" सुषमा स्वराज्य श्री।
तत्त्वमसि" स्वराज्य श्री सुषमा।।
तत्त्वमसि" विक्रान्त यशोदा।
तत्त्वमसि" वैदिक सुषमा।।
सिही सदृश क्षत्रियाणी तुम।
लोकसभा गौरव सुषमा।
सत्य शिव सुनीति सुवीरा।
वैदिक देशरत्न सुषमा।।
सारस्वत सुषमा, सुभाषिणी।
राष्ट्र विधर्तृ ऋजु सुषमा।।
सासद श्रेष्ठ सुवक्ता नेतृ।
दिव्यादिव्या द्युति सुषमा।।
नारी धर्म ध्वजा, स्वस्त्ययनी।
राष्ट्रधर्म व्रती सुषमा।
तत्त्वमसि" आदर्श श्रेयसी।
वैदिक शशीयसी सुषमा।
दूरदर्शिनी, तर्क शिरोमणी।
जन नायिका, शुभे सुषमा।
भद्र भारती, कठ कोकिला।
ज्योतिष्मती उषे, सुषमा।।
वैदिक महीयसी सुषमा।।

– वेद प्रकाश वैदिक

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शताब्दी महासम्मेलन दिनाक २७–४–२००२ को सूचना एव प्रसारण मत्री श्रीमती सुषमा स्वराज्य जी को सादर भेट

एक सामयिक चेतावनी

अज्ञानी लेखक आर्यसमाज में बुद्धिभेद पैदा न करें

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

गीता मे भगवान कृष्ण ने बुद्धिमान ज्ञानीजनो को चेतावनी देते हुए कहा है – न बुद्धिभेद जनयेदज्ञाना (३।२६) ज्ञानी को चाहिए कि वह कम बुद्धि वाले अज्ञानी जनो मे बुद्धिभेद पैदा न करे। पूर्वकाल के आर्य पुरुष सिद्धस्तनिष्ठ अपने विश्वासो क प्रति प्रबल आग्रह रखने वाले तथा ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो मे अटूट श्रद्धा रखने वाले होते थे जब कि आज के अधिकाश आर्यसमाजी सर्वथा सिद्धान्त ज्ञान शू य तथा वैदिक सिद्धान्तो मे अनास्थावान हो गए है कि उन्हे सामने आई विपत्ति का भी आभास नही होता। पहले तो यदि किसी अस्य मतावलम्बी की पुस्तक या पत्र मे आर्यसमाज के मन्तव्यो के विरुद्ध कुछ छप जाता तो उसका तीव्र प्रतिवाद तथा प्रतिकार फौरन किया जाता किन्तु अब तो स्थिति यह हो गई है कि अन्य पत्रो और पुस्तको मे तो आर्यसमाज के बारे मे विषय वमन होता ही है हमारी सस्थाओ के पत्र भी समय समय पर आर्य मन्तव्यो तथा ऋषि दयानन्द क सिद्धान्तो के प्रतिकूल लेख छापने मे सन्नद्ध रहते हैं। सम्पादक जी क्षमा करे आर्य जगत इसमे अग्रणी है।

२ जून के आर्यजगत मे डा० वन्दिता अरोडा का एक लेख छपा है – शुद्ध आर्यसमाज और प्रबुद्ध आर्यसमाज इसम लेखिका ने दयानन्द से लेकर लाला रामगोपाल शालवाले पर्यन्त आर्य नेताओ विद्वानो तथा कार्यकर्ताओं को प्रबुद्ध आर्य तथा शुद्ध (puritan) आर्य के दो खेमो मे बाटने की धृष्टता तथा दुस्साहस किया है। इस लेखिका ने अपने वक्तव्य का आरम्भ श्री गजानन्द जी आर्य (प्रधान परोपकारिणी सभा) के एक लेखाश से किया है जिसमे श्री आर्य ने इस बात पर खेद प्रकट किया था कि आज के आर्यसमाजी स्वय को दयानन्द का दृढ अनुयायी कहलाने मे सकोच करते हैं। लेखिका का कहना है कि खुद स्वामी दयानन्द ने यह कभी नहीं चाहा था कि उनके अनुयायी स्वय को 'दयानन्दी' कहे उसी प्रकार जैसे कबीर के अनुयायी खुद को कबीरपथी कहते हैं। निश्चय ही स्वामी दयानन्द यह कदापि नहीं चाहते थे कि उनके नाम पर कोई व्यक्ति निष्ठ समुदाय बन जाए किन्तु उनका यह अभिप्राय तो था कि जिन वेदो तथा आर्ष शास्त्रो के सिद्धान्तो का वे प्रचार कर रहे हैं उनके अनुयायी भी इन सिद्धान्तो पर दृढ रहे। सवाल दयानन्दी या किसी अन्य शब्द के प्रयोग का नही है इतना ही है कि क्या हम स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो मे वैसी ही आस्था रखते हे जेसी विगत काल के आर्यो मे थी।

शायद लेखिका को पता नही जब कोई व्यक्ति आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण करता हे तो उसे जिस प्रार्थना पत्र पर हस्ताक्षर करने पडते है उसमे लिखा होता है – "मैं प्रसन्नतापूर्वक आर्यसमाज के उद्देश्यो को (जैसा कि नियमो मे वर्णन किए गए हैं) तथा मन्तव्यो और सिद्धान्तो को (जो वेदो के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो मे लिखे गए हैं) मानता और उनके अनुकूल आचरण स्वीकार करता हू। (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित *आर्यसमाज के नियम–उपनियम* १९७१ का ११ वा सस्करण) स्पष्ट हुआ कि आर्यसमाज के सदस्य के लिए मात्र दस नियमो को मानना ही आवश्यक नही है उसके लिए यह भी अनिवार्य है कि वह ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो मे विवेचित वैदिक सिद्धान्तो पर पूरी आस्था रखे। लेखिका का आर्य समाज के इतिहास का पता नही है। विगत मे राय मूलराज ने यह आन्दोलन चलाया था कि वह व्यक्ति आर्यसमाज का सदस्य बन सकता है जो दस नियमो को मानता है। ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो और सिद्धान्तो को मानना उसके लिए अनिवार्य नही है। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य आर्य नेताओ ने राय मूलराज की इस अशुद्ध धारणा का प्रबल प्रतिवाद किया था तथा आर्यसमाज की सदस्यता के लिए दयानन्दीय विचारो मे आस्था रखने को अनिवार्य बताया था। यह न तो गुरुडम है और न व्यक्तिपूजा क्योकि दयानन्द के मन्तव्य वेद तथा आर्ष शास्त्रानुमोदित होने के साथ–साथ युक्ति तर्क तथा विज्ञान से सर्वथा अनुकूल है।

ऋषि की वाणी मे भ्रान्ति या प्रमाद की कोई गुजाइश नही होती। यह कथन भी पूर्णतया सत्य और युक्तिसिद्ध है। कारण कि हमारे यहा ऋषि को धर्म का साक्षात कर्ता तथा मन्त्र दृष्टा व्यक्ति कहा गया है। जिसने धर्म के तत्त्व को हस्तामलकवत देख लिया जो परमात्मा प्रदत्त वेद मन्त्रो के तात्विक रहस्यो का द्रष्टा है उसकी वाणी अमोघ होती है। आर्यसमाज की यह दृढ धारणा है (चाहे वदिता अरोडा की न हो) कि महाभारत काल के पश्चात दयानन्द ही वह महापुरुष था जो ऋषियो की विमल प्रज्ञा स सम्पन्न था तथा जिसने वेद और धर्म का साक्षातकार किया था। हमने यह कभी नही कहा कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन पर सारे ज्ञान विज्ञान शाध अनुसधान की समाप्ति हो जाती है और न हमने ईसाई या मुसलमानो की भाति सत्यार्थप्रकाश को आखरी किताब का दर्जा दिया। हमारे लिए अन्तिम प्रमाण तो परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान है न कि कोई अ य पुस्तक। अत सत्यार्थप्रकाश से आगे शोध और अनुसध ान समाप्त हा जाता है यह आर्यसमाज का मन्तव्य कभी नहीं रहा। सत्यार्थप्काश मे भी ग्यारहवे समुल्लास के अन्त मे उद्धृत राजाओ की वशावलियो तथा राजत्व काल गणना मे काइ ऐतिहासिक भूल हो सकती है। (ऋषि ने तो उस प्रकरण को मोहन चन्द्रिका नामक पत्रिका से उद्धृत मात्र किया है) इसी प्रकार गायो के रक्षण के लाभो क वर्णन मे एक गाय को बचान से कितन लोगो का उपकार हो सकता हे इस प्रकार के गणितीय हिसाब किताब मे भूल हो सकती है किन्तु जहा तक वद और ध र्म के निरूपण का प्रश्न है दयानन्द का विवेचन सौ प्रतिशत सही है उसमे शका के लिए कोई अवकाश नहीं है। अत यदि किसी प्रश्न या शका के समाधान के लिए आर्यसमाज दयानन्दीय ग्रन्थो से प्रमाणो की तलाश करते हैं तो यह सर्वथा उचित ही है। इसमे अन्धश्रद्धा जैसी कोई बात नही है। वेद की व्याख्या के लिए स्मृति ग्रन्थो की सहायता अपेक्षित होती है। दयानन्द के ग्रन्थ भी किसी आर्ष स्मृति से कम नहीं हैं।

आर्य प्रादेशिक सभा की १०७वीं रिपोर्ट के आधार पर लेखिका लिखती है कि आज ससार मे करा ऐसे लोग है जा आयसमाज की विचा ारा से शतप्रतिशत सहमत है किन्तु न तो आर्यसमाज से जुडना चाहत ओर न स्वय को आर्यसमाजी कहला चाहते है। यह खबर है तो अच्छ किन्तु हम उन लागो की सोच तरस आता ह जो आर्यसमाज के विचा से सहमत होत हुए भी आर्यसमा बनने या कहलान मे सकाच करत ह भगवान उन्हे सदबुद्धि दे और आर्यसमाजी बन। विगत मे ला लाजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण कर समय गौरव का अनुभव किया थ आगे चलकर यह लेखिका आर्यसमाजियो म भेद करती हुई उ प्रबुद्ध तथा शुद्ध आयसमाजियो मे बाट है। यद्यपि उसने नाम तो नही गिन थ किन्तु उसकी दृष्टि म अतीत सार आर्यसन्यासी विद्वान लेखक ने उपदशक शुद्ध (कटटर) आर्यसमा थ जिन्हे लेखिका हय समझती हे उ वह बि दुवार प्रबुद्ध ओर शुद्ध सैद्धान्तिक भेद को उजागर करती

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

वह आर्य श्रेष्ठ पुरुष है, वह वन्दनीय है

ओमप्रकाश शास्त्री

धर्म मे पक्की लगन वाणी मे मधुर वचन
बडो से सदा नमन चित मे चिन्तन गहन।
दान मे नीचे नयन प्रसन्न हो सदा वदन
व्यवहार मे निश्छल कथन गुणो का सदा ग्रहण।
दुख मे ना हो रुदन सुख मे भी सरल रहन
मित्र से सहज मिलन शत्रु का पूर्ण दमन।
दूर हो दुर्व्यसन सुधारे अपना जीवन
यम नियमो का पालन कभी न होवे पतन।
नित्य हो सन्ध्या हवन अतिथियो का पूजन
स्थूल से सूक्ष्म गमन शुद्ध हो अन्तर्मन।
सुखी हो हमारा वतन शुद्ध हो पर्यावरण
वेदो का गहन पठन वैसा हो आचरण।
देश सेवा की लगन समर्पित हो जीवन
बढे वैदिक चिन्तन सुखी सब के तन मन।
ओ३म का नित्य जपन सतत मन मे सुमिरन
निष्क्रिय होवे मन समाधि मे हो मगन।
कहते है आर्य उसे सन्त विबुध श्रेष्ठ जन
नि स्वार्थ त्याग भाव से पर उपकार मे लगे।
निज देश धर्म जाति के उत्थान मे लगे
मद मोह लोभ छल कपट जिससे सदा भगे।
वह आर्य श्रेष्ठ पुरुष है वह वन्दनीय है

– यू १२८ शकरपुर दिल्ली

आर्यसमाजें श्रावणी (वेदप्रचार समारोह) पर्व धूमधाम से मनाएं

वैदिक धर्म मे स्वाध्याय को प्रत्येक [व]र्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और [आ]वश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। [ब्र]ह्मचर्य आश्रम और ब्राह्मण वर्ग की [क]ल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुडी है [अ]र्थात विद्यार्थियो का स्वाध्याय से विमुख [र]हना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी [हि]तकर नही हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात देश की रक्षा करने [वा]ले पुलिस और सैन्य बल तथा शासन [च]लाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहे तो देश की आन्तरिक [औ]र बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन [स्]थापित करने मे अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ग यदि स्वाध्याशील [र]हता है तो देश की व्यापारिक [ग]तिविधियो को सात्विक उन्नति प्राप्त [हो]गी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय [के] सहारे केवल अपना ही नही अपितु [अ]पने आस-पास के समाजो को भी [स]द्व्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर [स]कता है।

इस वर्ष रक्षाबन्धन २२ अगस्त २००२ (बृहस्पतिवार) को तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी [३]१ अगस्त २००२ (शनिवार) को है। दोनो [प]र्वो के बीच का सप्ताह वेदप्रचार समारोह [के] रूप मे मनाया जाता है।

वेदप्रचार समारोह को केवल [प]ारम्परिक रूप मे औपचारिकता पूर्ति हेतु [म]नाने से कोई विशेष लाभ नही होता। [य]दि वेदप्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक [अ]धिकाधिक लोगो को सम्मिलित करके [म]नाया जाए तो ज्ञान गगा घर–घर मे [प]हुचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित [म]ुख लक्ष्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** [अ]र्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद [प्र]चार समारोह का भी प्रयोजन बनना [च]ाहिए।

वेदप्रचार समारोह को सफल बनाने [के] लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायो मे से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते है –

१. **बृहद यज्ञो का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्को अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) जिसमे आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाए, सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।**
२. **यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें, जिससे जन सामान्य को वैदिक, आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।**
३. **अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गो जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धो, बच्चो आदि के लिए अलग अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघुसम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं के रूप में आयोजित करे। "सुखी परिवार कैसे रहे ?" विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।**
४ **वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथा का भी आयोजन करें जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारियारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकें।**
५. **क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघुसाहित्य वितरित करें। स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलैण्डर आदि भी स्थानीय जनता मे मुफ्त वितरित करें।**
६. **आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके "आत्मावलोकन" अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नहीं ! तो उसके कारण व समाधान पर चर्चा करें।**
७. **उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यो को भी उससे अवगत कराया जा सके।**
८. **आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद जयन्ती समारोह की तिथियां निश्चित कर लें और आर्यसन्यासियों से सम्पर्क करके स्वीकृति ले लें। वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करें।**
६ **आर्यसमाज के अधिकारियो से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी २५ अगस्त रविवार को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस के रूप मे धूमधाम से मनाएं।**

अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ अवश्य भेजे।

– ***वेदव्रत शर्मा***, सभामन्त्री

स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द में अन्तर

मुझे बडा आश्चर्य होता है जब अनेको शिक्षित भाई बहन स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द मे अन्तर नहीं जानते। आपकी जानकारी के लिए दोनो का सक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया है।

स्वामी दयानन्द

१ **जन्म** · गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट के ग्राम टकारा मे सन १८२४ मे हुआ। इनके पिता श्री कृष्ण जी बडे जमीदार थे। इनका पूर्व नाम मूलशकर था।
२ **शिक्षा :** बचपन से ही घर पर सस्कृत शिक्षा शास्त्रो का ज्ञान कराया गया।
३ **गुरु :** मथुरा मे गुरु विरजानन्द जी से वेदों का ज्ञान प्राप्त किया।
४ **प्रचार :** वेदो का प्रचार किया और मूर्ति पूजा अवतारवाद का खण्डन किया।
५ मास मछली खाना पाप है। अभय पदार्थ है। स्वामीजी ने स्पष्ट बताया है।
६ भारत की आजादी के लिए विदेशी शासन के विरुद्ध तीखा प्रहार किया।
७ देहान्त सन् १८८३ मे कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली के दिन अजमेर मे प्राण त्याग दिए।

स्वामी विवेकानन्द

१ **जन्म :** सन् १८६३ मे कलकत्ता मे हुआ। इनके पिता श्री विश्वनाथ जी वकील थे। इनके शैशव का नाम नरेन्द्र दत्त था।
२ **शिक्षा** · इन्होने कालेज मे बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की।
३ **गुरु :** श्री रामकृष्ण परम हस जो काली मा के भक्त थे, से प्रभावित होकर अद्वैतवाद को स्वीकार किया।
४ **प्रचार :** नवीन वेदान्त अद्वैतवाद का प्रचार किया और मूर्ति पूजा के पक्ष मे समर्थन किया।
५ इन्होने मास खाने के लिए मना नहीं किया है क्योकि स्वय भी खाया है।
६ देश की स्वतन्त्रता के लिए कुछ नहीं किया।
७ चार जुलाई सन् १६०२ को शरीर मे काफी थकावट हो रही थी। उसी दिन–रात को लगभग ४ बजे हमेशा के लिए चिर निद्रा मे सो गए।

– **देवराज आर्य मित्र आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१**

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का प्रवेश

(२० जुलाई २००२ शनिवार को प्रात:)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि० जालन्धर) पजाब मे कक्षा–नौंवी मे प्रवेश के इच्छुक छात्रो की प्रवेश परीक्षा २० जुलाई २००२ शनिवार को प्रात १० बजे ली जाएगी। इन प्रवेशार्थियो की केवल गणित हिन्दी अग्रेजी विषयो मे आठवीं के स्तर की परीक्षा ली जाएगी। अधिक अक पाने वाले छात्र नियत सख्या मे ही प्रवेश पा सकेगे।

विद्याविनोद अर्थात् १०+१ तथा अलकार अर्थात् बी०ए० मे प्रवेश के इच्छुक नये छात्रो को २० जुलाई तक प्रमाण-पत्रो सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रो को प्रवेश नहीं मिलेगा।

कक्षा ८ तक सी०बी०एस०सी० (एन०सी०आर०टी०) से तथा कक्षा–६ से अलकार (बी०ए०) तक का पाठ्यक्रम गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। छात्रो की आवास शिक्षा एव भोजन की सुविधा नि शुल्क है। पुस्तक–वस्त्रादि, फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा नौंवी के प्रवेशार्थियो को १६ जुलाई २००२ शुक्रवार शाम तक गुरुकुल में पहुच जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि छात्रो के अभिभावक स्वेच्छा से कुछ न कुछ मासिक सहायता भेजते रहने का भी आश्वासन दें।

– **आचार्य यशपाल वर्मा, गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर, पंजाब-१४४८०१**

पृष्ठ ५ का शेष भाग

अज्ञानी लेखक आर्यसमाज में बुद्धिभेद पैदा न करें

१ हिन्दू और आर्य

डा० वदिता की दृष्टि मे हिन्दू शब्द का तिरस्कार करने वाले ऋषि दयानन्द शुद्ध आर्यसमाजी कट्टर रूढिवादी असहिष्णु हैं। सवाल हिन्दू, हिन्द और हिन्दी की ग्राह्यता तथा तिरस्कार का उतना नहीं है जितना स्वामी जी का इस बात पर जोर देना कि क्यो नहीं हम अपने देश भाषा और स्वय को उनके पुराने गौरवपूर्ण नामो से पुकारे। इसी प्रयोजन से उन्होने आर्य आर्य भाषा और आर्यावर्त का नारा दिया। उसमे अधिक बहस की गुजाइश नहीं है।

२ शूद्र नीच नहीं

वदिता अरोडा को यह गलतफहमी है कि आर्यसमाजी लोग सत्यार्थप्रकाश को वेद का दर्जा देते हैं। वह सत्यार्थप्रकाश मे पाई जाने वाली त्रुटियो की चर्चा करती है किन्तु उसका सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कितना छिछला है यह इसी से ज्ञात होता है कि उसे सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण और द्वितीय सस्करणो के अन्तर दोनो सस्करणो मे विद्यमान मुद्रण जन्य त्रुटियो हस्तलेख तैयार करने वाले पण्डितो द्वारा किए गए प्रक्षेपो आदि का कोई ज्ञान नही है। स्वामीजी ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने स्त्रियो और शूद्रो को वेद के पढने का अधिकार दिया था किसी ग्रन्थ मे प्रतीयमान अन्तर्विरोधो का समाधान किस प्रकार किया जाता है इसे जाने बिना ऐसी शकाओ का निवारण नहीं हो सकता। डॉ० अरोडा को यह पता होना चाहिए कि स्वामी जी ने अपने ग्रन्थो मे विभिन्न ग्रन्थो और आचार्यो के मतो को तो उद्धृत किया है किन्तु उन्हे अनिवार्यत स्वमत नहीं माना। यह पता तभी चलेगा यदि हम उनके ग्रन्थो को सावधानी से पढेगे। वे अनेकत्र लिखते हैं 'यह अमुक आचार्य (स्मृतिकार) का मत है। यह अनिवार्य नहीं कि यह उनका निज का मत हो। एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास मे स्वामी जी ने मनु के वचन गुरो प्रेतस्य शिष्यस्तु (५।६५) को उद्धृत किया है। इस श्लोक मे दो बाते कही गई है – (१) मृतक शरीर की प्रेत सज्ञा है। (२) मृतक को उठाने वाले दसवें दिन शुद्ध होते हैं। श्लोकगत एक बात को ही स्वामी जी मानते हैं। प्रेत नाम मुर्दे का हैं। दूसरी इस बात को नहीं मानते कि मुर्दे की अर्थी उठाने वाले की शुद्धि दसवें दिन होती है। इस तथ्य के आलोक मे स्वामी जी के ग्रन्थों में प्रयुक्त शूद्र अनार्य अनाडी आदि शब्दो की मीमासा की जानी चाहिए। ऐसा करने के लिए शास्त्रो का समुचित अनुशीलन और दयानन्दीय ग्रन्थो की गहरी पकड जरूरी है जिसका सम्प्रति अभाव दिखाई दे रहा है।

३ मूर्तिपूजा सर्वथा हेय तथा दुराचार है

लेखिका डा० अरोडा कितनी मासूमियत से लिखती है कि यदि स्वामी दयानन्द के वचनो को ही परम प्रमाण माना जाए तो मूर्तिपूजा घोर पाप है। डा० महोदया आपको इसमे शका क्यो हुई ? ऋषि दयानन्द की सम्मति मे तो मूर्तिपूजा न केवल पाप और दुराचार (द्रष्टव्य उपदेश मजरी का अन्तिम व्याख्यान) है अपितु वह तो ऐसी गहरी खाई है जिसमे गिरने वाले मूर्तिपूजक का पता तक नहीं लगता। उलटा चोर कोतवाल को डाटे वाली उक्ति का सहारा लेकर वह हमसे पूछती है कि किस वेद मन्त्र मे मूर्तिपूजा को पाप लिखा है इस स्वाध्याय शून्य नारी को क्या उन मन्त्रो के प्रमाण देने पडगे जहा सच्चिदानन्द परमात्मा को छोडकर किसी जड वस्तु की पूजा का निषेध किया गया है खेद और क्रोध होता है जब हम आर्य पत्र मे वेदो पर बहुदेववादी होने तथा सूर्य चन्द्र आदि जड वस्तुओ की पूजा की विद्यमानता का आक्षेप पढते है। डा० अरोडा की जड बुद्धि वहा सीमा को लाघ जाती है जब वह कहती है कि आर्यसमाज ने (दयानन्द ने) एक ईश्वर की पूजा तथा मूर्तिपूजा का विरोध यहूदी ईसाई और इस्लाम से लिया। डा० वदिता की बुद्धि पर खेद होता है जब वह लिखती है कि स्वामी जी ने मूर्तिपूजा में जो दोष गिनाए है वे मूर्तिपूजा के दोष नही है अपितु ईश्वर पर अत्यधिक निर्भरता के दोष है। इस पर तो कोई टिप्पणी करना ही व्यर्थ है हैरानी तो आर्यजगत की सम्पादकीय नीति पर होती है। उसने आर्यसमाज की सस्था के पत्र को प्रतिपक्षियो (ईसाई मुसलमान आदि) का पत्र बना दिया। और ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के सिद्धान्त निष्ठ अनुयायियो को अपराधी बनाकर कटघरे मे खडा कर दिया।

४ आर्यसमाजी मूर्तिभजक तो नहीं है किन्तु मूर्तिपूजा के प्रति नरम रूख नहीं रखता

वदिता अरोडा को यह किसने कह दिया कि आर्यसमाजी मूर्तिभजक होता है। यद्यपि अज्ञानी पाश्चात्य लेखको ने स्वामी दयानन्द के लिए अग्रेजी शब्द (1conoclast) मूर्ति भजक का प्रयोग किया है। किन्तु स्वामी जी ने मूर्तियो के तोडने का कहीं समर्थन नहीं किया। किन्तु वे मूर्तिपूजा को निर्दोष नहीं मानते और न वदिता के स्वर मे स्वर मिला कर यह युक्तिहीन हीं नहीं मूर्खतापूर्ण बात कहते हैं कि 'जिन्हे मूर्तिपूजा मे आनन्द आता है वे मूर्ति मे भगवान की कल्पना कर उसकी पूजा करे। स्वामी दयानन्द और उनके सिद्धान्तनिष्ठ अनुयायियो की दृष्टि मे मूर्तिपूजा नास्तिकता पाप तथा दुराचरण है। सच्चा आर्यसमाजी मूर्तिपूजा से कभी समझौता नही करेगा यदि आर्यसमाज (ऐसा न हो) मूर्तिपूजा के खण्डन से विरत हो जाएगा तो वह आर्यसमाज ही नहीं रहेगा। मूर्तिपूजा परम निन्दनीय हेय तिरस्करणीय तथा त्याज्य है। यही स्थिति अवतारवाद मृतकश्राद्ध आदि की भी है।

५ आर्यसमाजी किसी से द्वेष नहीं करता।

वदिता अरोडा को किसने बताया कि आर्यसमाजी हिन्दुओ या इतर सम्प्रदाय वालो से द्वेष रखता है या उसका तिरस्कार करता है। जिन्होने स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र ध्यान से नहीं वे ही ऐसी अज्ञानता की बात करेंगे। मन्दिरो मे रहकर पुजारियो का आतिथ्य स्वीकार करने वाला डा० रहीम खा के घर पर लाहौर आर्यसमाज की स्थापना करने वाला तथा बरेली के चर्च मे भक्त स्काट के समक्ष ईश्वर के लाशदीक (उसका) कोई इकलौता पुत्र या दूत नहीं) होने का प्रवचन करने वाला दयानन्द मानव मात्र का हितेच्छु था।

६ आर्य अल्पसख्यक है या बहुसख्यक ?

भारत की प्रचलित दूषित राजनीति मे प्रयुक्त अल्पमत और बहुमत की विचारधारा से आर्यसमाज सहमत नहीं है। एक राष्ट्रीय सविधान तथा एक सी न्याय पद्धति से शासित देशवासियो मे अल्पमत और बहुमत का विचार ही दोष पूर्ण है। जैसे अमेरिका के सभी नागरिक अमेरिकन हैं तथा ब्रिटेन के निवासी वहा के नागरिक हैं उसी प्रकार भारत के सभी निवासी भारतीय हैं। पूजा–उपासना का भेद समान नागरिकता का बाधक नहीं है।

७ आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा सर्वोपरि है

पता नहीं लेखिका ने यह भ्रम क्यो पाल लिया कि आर्ष ग्रन्थो की शिक्षा के प्रबल समर्थक दयानन्द लौकिक विद्याओ पदार्थ विद्या कला कौशल तथा विदेशी भाषाओ को सिखाए जाने के विरोधी थे। यद्यपि जहा तक शास्त्रीय शिक्षा का सवाल है स्वामीजी ऋषि प्रणीत ग्रन्थो को पढाए जाने के हिमायती थे तथा अनार्ष ग्रन्थो के अध्ययन को निरुत्साहित करना चाहते थे किन्तु परम्परा की ही भाति प्रगति पर अत्यधिक बल देने वाले दयानन्द ने पदे–पदे यह माना है कि भारतवासियो का सर्वांगीण कल्याण तभी सम्भव है जब हम पश्चिम मे पनपने वाले नवीन विज्ञान तकनीक तथा नाना पदार्थ विद्याओ को सीखे। उन्होने यथा सुविधा तत्कालीन शासकीय भाषा अग्रेजी को सीखने की पुरजोर हिमायत की थी।

८ आर्यसमाजी सदा प्रगतिशील रहा है

लेखिका की यह स्थापना नितान्त दोषपूर्ण है कि आर्यसमाजी समय के साथ आगे नहीं बढना चाहते। यदि आर्यसमाज मे समय के साथ चलने की कूवत नही होती तो उसका अस्तित्व उसी भाति मिट जाता जैसा ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाज के साथ हुआ। निश्चय ही अटलबिहारी वाजपेयी आर्यसमाज की चाहे जितनी प्रशसा करे यदि उनका भोजन दूषित है तो वे यह गिला क्यो करते हैं कि आर्यसमाज से उनका नाम क्यो काट दिया गया। आमिष भोजी आर्यसमाजी नहीं होता।

९ अन्तिम बात मासाहार की

वदिता अरोडा को यह किसने बता दिया कि आहार का सम्बन्ध धर्म से नही है। वेदो उपनिषदो रामायण महाभारत गीता मनु स्मृति आदि सभी वैदिक ग्रन्थ आहार शुद्धता की बात कहते है तथा जीव हत्या से प्राप्त मासाहार को अनुचित मानते हैं। घोर आश्चर्य होता है कि वदिता अराडा को मासाहार का समर्थन अथर्ववेद मे मिला और आर्य जगत के सम्पादक ने इसे निर्बाध छाप दिया। अथर्ववेद के जिस प्रसग (काण्ड ६५ सूक्त ६ पर्याय ३४) को लेखिका ने यहा उछाला है उसमे मास भक्षण का कहीं विधान नहीं है। पर्याय २ के सभी मत्र इस बात पर जोर देते हैं कि अतिथि को खिलाने के पहले गृहस्थी को भोजन नहीं करना चाहिए। यद्यपि ६।६।३६ तथा ६।४।४३ मे मास शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु इसे Flesh का वाचक मानना उचित नहीं। अथर्ववेद भाष्यकार प० विश्वनाथ विद्यालकार ने अपनी पुस्तक वैदिक पशुयज्ञ मीमासा मे वेदो मे मासाहार के विधान को मानने वालो के पक्ष का समुचित समाधान किया है। सस्कृत के प्रसिद्ध शब्दकोश (वामन शिवराम आप्टे लिखित) को यदि देखे तो उसमे मास का एक अर्थ फल का गूदा (The Flesy part of a fruit) किया है। अत यह लेखिका का दुराग्रह है कि वेद मे मासाहार का विधान है और सबसे बडा दुराग्रह यह है कि मासाहार या शाकाहार का सवाल केवल वैद्यक से सम्बन्ध रखता है धर्म से नहीं। वैदिक धर्म मे मासाहार को पाप कहा गया। अधिक विस्तार से क्या ? डॉ० अरोडा का यह लेख आद्यन्त मिथ्या है तथा धिक्कार के योग्य है।

– ८। ४२३ नन्दन वन जोधपुर

हरे पत्तेदार साग-सब्जियों से फेफड़े मजबूत होते हैं

– सावित्री सिघल

शरीर को स्वस्थ सुडौल सुन्दर निरोग व ताजगी के लिए ताजी सब्जिया हरे पत्तेदार साग व मौसमी फलो का उपयोग भी आवश्यक है। और इससे बढकर आश्चर्य जनक है कि कफ–पित्त–वायु ये तीन ही हमारे शरीर की स्वस्थता के आधार है इनके कम ज्यादा होने पर ही रोग पैदा होते है और इन पर सन्तुलन बनाए रखने मे सक्षम है। हरे पत्तेदार साग–सब्जिया खाने से ही फेफडो मे श्वास–प्रश्वास की क्षमता बढती है। चेहरे पर चमक शालीनता लाली व आखो की रोशनी भी बढती है। मानसिक स्वस्थता व सन्तुलन बना रहता है। पाचन क्रिया सुचारू रूप से सही रहती है और कब्जी जैसी भयानक बीमारिया भी पास नहीं आ सकती। पहिले हमारे भोजन मे हरे साग सब्जियो की ही प्रचुरता थी और आज हमारा जीवन दुर्भर–निकृष्ट रोगो का भण्डार बनता जा रहा है। विशेषकर सर्दियो के मौसम मे सभी घरो मे हरी साग–सब्जियो का ही प्रयोग आवश्यक था जोकि आज भी उतना आवश्यक और लाभदायक है। पत्तेदार साग व मौसमी फल न खाने से शरीर मे विटामिनो की कमी भी हो जाती है साथ ही कार्य–क्षमता स्वस्थता भी घटती है।

राष्ट्रीय पौष्टिक प्राकृत अनुसधान केन्द्र इण्डिया के डायरेक्टर डॉ० सी० गोपालन का कहना है कि हरे–पत्तेदार साग–सब्जी व फलो से हमे बहुत सारे तत्त्व मिलते है। विटामिन ए बी सी डी प्रोटीन क्षार लोहा कैल्शियम पोटेशियम कडवा व कसैला भी प्राप्त होता है। आवश्यक तत्त्व विशेषकर हरे साग की डण्डियो मे सबसे ज्यादा पौष्टिक तत्व मिलते है जोकि कमजोरी व शिथिलताओ व बीमारियो से लडने की क्षमता प्रदान करती है इनका सबसे बडा गुण है कि शरीर मे रोग निरोधक शक्तियो को बढा देती है तथा रक्त प्रवाह भी सही व सन्तुलित रहता है। पत्तो की डण्डिया तोडकर रखने पर एक दो घण्टे मे ही कुम्हला जाती हैं उनकी ताजगी खत्म हो जाती है पर डण्डियो सहित रखे साग–व सब्जिया दो तीन दिन तक भी गिरती नहीं कुम्हलाती भी नहीं है ना ही स्वाद बदलता है।

आज सब्जी वाले से सब्जिया–साग लेते हैं तो उनकी जड डण्डिया–पत्ते वहीं तोडकर फेक आते हैं और केवल घर मे फूल पत्तिया ही लाते हैं या ले जाते हैं। मुझे देखकर बडा ही दुख होता है पौष्टिकता तो यहीं फेक गए जबकि हमारे समय मे ४०–५० साल पहिले व चवन्नी की धडी ५ सेर मूली अठन्नी की धडी गाजर पालक और रुपये की धडी (५सेर) मटर–गोभी। परन्तु फिर भी कोई डण्डिया पत्ते न फेकते थे जो डण्डिया पत्ते पके या खराब होते थे फेके जाते थे परन्तु आज एक रुपये की मूली है फिर भी पत्ते वही पर फेक दिए जाते है। जबकि मूली की तो एक विशेषता कि पत्ते खाएगे तो हज्म हो जाएगी बगैर पत्तो के खाओगे तो बार बार मूली की डकार आती रहेगी जबकि पत्ते के खाते ही मूली की डकार भी बन्द हो जाती है। मूली वैसे भी भारी रहती है। परन्तु पत्ते सहित खाने से हाई बी०पी० को भी कन्ट्रोल करती है। इसी प्रकार से गोभी भी बादी करती है यदि केवल फूल–फूल ही परन्तु जब उसमे उसकी डण्डी भी छील कर डालने पर वायु गेस नही पैदा करती है। और उसके दो चार कोमल कोमल पत्ते डालने पर तो स्वादिष्ट तो बनती है व हाज्मे वाली हो जाती है। मूली बथुआ पालन गोभी मेथी चुकन्दर आदि की डण्डिया ही नही मोटे छिलके भी जोकि अद्वितीय पौष्टिकता से भरपूर व हरापन नेत्र की ज्योति और पौष्टिकता से भरी है हरा धनिया पोदीना जोकि कैल्शियम से भरपूर और हमारी पाचन शक्ति की गिरावट व निम्नता को दूर करने पर उनकी डण्डिया ही अति लाभदायक हैं और क्षुधा को भी तीव्र करती हैं। पोदीना ऐसे भी लोहा व खनिज तत्वो से भरा है तथा कफ–पित्त वायु–तीनो पर भी नियन्त्रक है।

अभी तक यही जाना जाता था कि हरे साग व पत्तेदार साग सब्जिया खाने से हाजमा शीघ्र होता है कब्जी नहीं होती और शरीर में स्फूर्ति भी बढती है तथा शरीर भी कम रोगी होता है। परन्तु अब नई–नई खोजो द्वारा यह बात भी सामने आई है कि ताजे मौसमी फल व हरे पत्तेदार साग सब्जिया खाने से कैन्सर व दिल की बीमारिया दूर होती हैं। अधिक सब्जिया केवल कैन्सर व दिल की बीमारियों को दूर नहीं करती बल्कि इनसे फेफडों की भी शक्ति व काम करने की क्षमता बढती है और श्वास–दमा का भी प्रकोप रुकता है। अध्ययन के अनुसार जो लोग ज्यादा मात्रा में हरे साग सब्जिया और फल खाते हैं उनके फेफडों की कार्य क्षमता औरों से (जो कम खाते हैं) अधिक होती है।

आज हमे और हमारे बच्चो के लिए अच्छा व पौष्टिक व रोगनाशक भोजन करवाना एक मुख्य समस्या है। बढती हुई महगाई व अत्यन्त बढती जनसख्या के कारण ही बच्चो के लिए आवश्यक व उपयुक्त भोजन प्राप्त करना दिनो–दिन कठिन होता जा रहा है हम सभी के लिए यह चिन्ता का विषय है। पिछले–अभी कुछ वर्षो मे आधुनिक–विज्ञान ने यह खोज निकाला है कि हरे पत्तेदार–साग–सब्जियो से ही प्राप्त होता है। साग–सब्जिया खरीदने से तो कतराते है परन्तु वे मौसम की महगी से महगी साग–सब्जी अथवा फल खरीदने मे ही अपनी शान समझते है। चाहे वह लाभ करे अथवा पेट भरने मात्र की साधन बने।

अत हमे सदा ध्यान रखना चाहिए कि हमारा खान–पान भोजन मौसम अनुसार हो उचित हो उचित मौसमानुसार भोजन हमे उबार भी सकता है और विना मौसम का अनुचित मार भी सकता है। नियमित भोजन औषधि का काम करता हे और अनुचित व असमय का भोजन विष बनकर रोगो को उत्पन्न करता है। आहार सादा सात्विक शाकाहारी व सतुलित हो।

ससार भर मे किसी देश को यह सोभाग्य प्राप्त नही है। हमारे देश पर प्रकृति की बडी अनुकम्पा है हम भाग्यशाली है कि भारत मे ही ६ ऋतुए होती है उनमे भी मुख्य सर्दी–गर्मी–बरसात। अत स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए आवश्यक है कि ताजी हरे पत्तेदार साग सब्जियो का व फलो का उपयोग करे। हमारे यहा तो प्राकृति की बडी देन है कि किस मौसम मे क्या खाया जाना चाहिए और जो स्वास्थ्य के लिए क्या–क्या लाभदायक है वही पैदा होता है। आलू, गाजर बथुआ मूली सरसो मेथी गोभी मटर शलजम–चुकन्दर अदरक नीबू आदि–आदि इनको गरीब अमीर बालक बूढे सभी को उपलब्ध हैं और खा सकते हैं। खजूर अजीर–मूगफली सेब सन्तरा अनार जिमिकन्द भी सभी को प्रदान किया है। गर्मियो मे तोरी–टिन्डा–घिया–लौकी भिण्डी खीरा ककडी आम खरबूजा और अमृत रस से भरा 'तरबूज' आदि सभी को सुलभ है। वर्षा ऋतु मे जड सब्जिया हरे पत्तेदार साग नहीं खाने चाहिए पत्तेदार मे कीडे–मकोडे का होना तथा जड व भारी चीजे मुश्किल से हजम होती हैं और प्रभु की कृपा देखो इस मौसम मे पैदा भी नही होती हैं।

डॉ० कमला कृ० स्वामी अध्यक्ष राष्ट्रीय पौष्टिक अनुसन्धान–प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा कहा गया है ये पत्तेदार वृक्ष हरे–भरे फलदार आम जामुन पपीता कटहल बेलगिरी–मीठा नीम व नीम ये पौष्टिकता से तो देश मे मिलने वाले भोजन के तो आधार हैं ही तथा पर्यावरण से भी सुरक्षा करते है जिसकी आज अति आवश्यकता है। कुछ दिन पहिले पेपर मे निकला था कि अमेरिका क० ने हमारे यहा की बीमारियो को दूर करने मे सक्षम बैंगुन करेला व जामुन को पेटेन्ट करा लिया है जो तीनो ही शुगर को कम करने व कन्ट्रोल करने मे समर्थ है। ऐसी ही तुलसी पर रूस की नजर है जोकि हृदय रोग व कैन्सर की अचूक औषधि है। सन्तरे के छिलके जिनको हम बेकार समझकर फेक रहे हैं। याद रखिए खासी–जुकाम व नजले मे सन्तरा खाओगे तो नुकसान होगा नमुनिया भी होने का डर है। परन्तु इसके विपरीत सन्तरे के छिलके को चाय के पानी मे कुछ देर उबालो और उबलने पर उसमे चीनी चाय पत्ती व दूध डालकर गर्म–गर्म पियेगे तो यह नजला–जुकाम खासी आखो से व नाक से बहना पानी भी तुरन्त समाप्त कर देता है २–३ बार पीते ही आशातीत लाभ होता है फिर बार–बार सर्दी का असर भी नही होगा।

परम–पिता परमात्मा ने अपनी इतनी बडी विशाल सृष्टि मे सबसे सर्वोत्तम कोई वस्तु बनाई है तो वह मानव शरीर। इससे बढकर इससे उत्तम उसकी सृष्टि मे और कुछ नहीं है। इस मानव चोले को स्वस्थ सुन्दर व रोग रहित रखना मानव मात्र का कर्त्तव्य है इसे चलाने–रखने मे क्या–क्या सहायक व आवश्यक है यही आपके सामने रखने का प्रयत्न किया कि किस प्रकार हम रोग रहित दीर्घायु सुडौल जीवन जी सके। आज विश्वभर की प्रयोगशालाओ मे नाना प्रकार मे अनेको खोजो परीक्षणो–अन्वेषणो मे लगे हैं और कर रहे। परन्तु हम अज्ञानी आलस्य प्रमाद वश अपनी इन अमूल्य सम्पदाओ पौष्टिकता प्रदान करने वाले हरे पत्तेदार साग पत्र फल–फूलो को भूलते जा रहे हैं अथवा अज्ञानता वश छोडते भी जा रहे हैं। यदि कुछ जानते भी है तो भी उस पर हमें विश्वास ही नहीं इससे बड़ी नासमझी या मूर्खता क्या हो सकती है।

— आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

प्राकृतिक-आपदाएं एवं प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों का रहस्य

– ज्ञान चन्द्र

वेदकाल मानव सृष्टि का आरम्भिक काल माना जाता है। वेद काल एक ऐसा काल था जिसमे भूमि सागरो वनो व पर्वतों की स्थिति इस प्रकार थी कि तब प्राकृतिक परिवर्तन बहुत अधिक होते थे। वेदो के सुप्रसिद्ध समीक्षा व विश्लेषण ग्रथ ब्राह्मणो व आरण्यको मे ऐसी घटनाओ के प्रसग मिलते हैं।

प्रकृति के सूक्ष्म नियम व आन्तरिक व्यवस्थाए मानव जीवन के आन्तरिक क्षेत्र व्यवस्थाए मानव के आसपास के विशाल पर्यावरण वनों व प्राणी समुदायो की जितनी गहन समझ व अन्तर्दृष्टि वैदिक ऋषियो को थी वह आज के महान टैक्नोलाजी युग मे भी अकल्पनीय आश्चर्य का कारण बनता है। इस समझ व अन्तर्दृष्टि को यदि आज भी जाग्रत किया जा सके तो मानव समाज का बहुत लाभ होगा।

बाह्य आपदाओ के रूप मे अतिवृष्टि अल्पवृष्टि उल्कापात हिमपात भूकम्प भूस्खलन व महामारी प्राय सभी सकटो और प्राकृतिक विकृतियो के पूरे विश्लेषण कारण तथा साथ ही निवारण की विद्याए और विज्ञान वेदकाल के ऋषियो को ज्ञात थे। वेदादि ग्रन्थो मे इस प्रकार के प्रसग और प्रमाण बहुतायत से प्राप्त होते हैं। प्राकृतिक सकटों और पचतत्त्वो महाभूतों के रौद्र रूप धारण करके विनाश लीला करने के कारणो उपचारादि का विषय बहुत ही सूक्ष्म जटिल व गहन है जिसे अन्तर्दृष्टि और चेतना–विज्ञान–दृष्टि सम्पन्न लोग ही ठीक से समझते हैं। यहा पर सामान्य जन को समझ में आने लायक भाषा मे वेदार्थो के आधार पर इस प्राकृतिक आपदा विषय को समझाने का प्रयत्न किया गया है।

वेदविज्ञान के अनुसार ससार के निर्माण और विनाश का मूल कारण मन तत्त्व ही है। मन से ही आकाशादि पचतत्त्वो का उदगम होता है। मन स्वय अव्यक्त तत्त्व से उत्पन्न एक निर्माणक विनाशक तत्त्व है। यह मन वैश्व मन या जागतिक 'मन' है। हम मानवो के व्यक्तिगत मन उसी जागतिक मन की विभिन्न लहरे हैं जो सम्पूर्णतय विलग भिन्न और स्वतन्त्र रूप से जुदा नहीं हैं चाहे जुदा और विलग महसूस होती हैं। इस एकत्व का ज्ञान होना शोक व मोह से अलग व मुक्त हो जाना है।

प्रकृति की विकास लीला व विनाश लीला मे जागतिक मन एव अव्यक्त–अज्ञेय तत्त्व सर्वोपरि कारण है। पर इस कारण को जानना ब्लैक–होल के भीतर जाकर उसका नाप ले आने जैसा असम्भव कार्य है। पर मानवीय व्यक्तिमन एव उस पर आधारित मानव के सामुदायिक मन को जानना सम्भव है तथा वेदादि ग्रन्थो ने बहुत तार्किक व मनोगम्य रूप मे उसका वर्णन भी किया है।

मानव मन की एक प्रमुख वृत्ति भाव तथा उसका प्राणिक इमोशन है भय। इस भय की वृत्ति की विशाल शक्ति का आकलन साधारण मानव के लिए असम्भव है या असम्भव के जितना ही कठिन है। भय का यह स्वभाव होता है कि वह अपने साधन या उस तत्त्व के प्रघटन को जिससे कि भय बनता है आकर्षित करने की प्रवृत्ति रखता है। जिस वस्तु या परिस्थिति से भय होता है वह वस्तु या परिस्थिति भयभीत व्यक्ति के पास आने की प्रवृत्ति रखती है।

प्राकृतिक आपदाओ के भूगर्भ स्थित व पर्यावरण जनित कारण भी जागतिक मन की वृत्तियो की अभिव्यक्तिया हैं। परन्तु इनमे मानव–समुदाय के मनस्थित कारण भी कम नहीं है। भूगर्भ स्थित पर्यावरण जनित कारणो पर भू–विज्ञानी कार्य करे परन्तु मनो आध्यात्मिक विशेषज्ञो को मानवीय मन के अन्धक्षेत्रा मे भी कार्य करना होगा। आपदाओ से मुक्ति का यह द्विधारी पथ ही हमे आपदाओ से बचा सकेगा

वैदिक योग प्रणाली का सबसे प्रमुख एव सूक्ष्मतम तत्त्व है अभीप्सा विशिष्ट एव एकाग्र ईप्सा (अभि=विशिष्ट ईप्सा=कामना)। अभीप्सा एस्पिरेशन अर्थात दृढ सकल्पयुक्त कामना मजबूत इरादे से भरी हुई भावना या प्रार्थना इसे वेद मे अनेक स्थानो पर अग्नि तथा कई स्थानो पर आकूति कहा गया है अग्नि व आकूति मे सूक्ष्म अन्तर है पर दोनो ही इच्छित व काम्य परिस्थिति पैदा करने की सामर्थ्य रखते हैं। अभीप्सा या शुद्ध व तीव्र कामना मे इच्छित परिणाम उत्पन्न करने की सामर्थ्य है। अभीप्सा की इस अपरिमेय शक्ति को वैदिक ऋषिगण बखूबी जानते थे। वेद सहिताए अभीप्साओ भाति–भाति की मानव जीवनोपयोगी विशुद्ध कामनाओ से भरी पडी हैं। ये अभीप्साए यदि शुद्ध समर्पित और स्वस्थ मन से अविरल व अभग रूप से की जाए और अहर्निश की जाती रहे तो वे अपना परिणाम सुनिश्चित रूप से उत्पन्न करती हैं। इसे वैदिक मनोविज्ञान ने बहुत विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है

– शेष भाग पृष्ठ १० पर

पृष्ठ ६ का शेष भाग

प्राकृतिक-आपदाएं एवं प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों का रहस्य

भय एक ऐसा भाव है जो अभीप्सा का उल्टा है। उलटा होने पर भी शक्तिशाली उतना ही है और भय के कारण को उत्पन्न करता रहता है। अभीप्सा मे जहा हम सोचते हैं कि ऐसा होना चाहिए या ऐसा हो जाए वही भय मे हम सोचते हैं ऐसा न हो जाए या ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा। और यह मूढ भाव उलटी श्रद्धा विकृत और विपरीत श्रद्धा का कारण बनता है और हमे मुसीबतो मे डालता है। भय अनेक अनिष्ट परिणाम उत्पन्न करता है।

आज के जडवादी भौतिकवाद ग्रस्त अचेतना को सृष्टि मूल मानने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्तो ने तथा मौज मजे व भोगवाद के समर्थक मीडिया ने मानवीय मन को भयोत्पादक दुराशाओ आशकाओ और भयो से कोष प्रतिकोष भर दिया है। आज के वातावरण मे भद्र व कल्याण की आस्था विश्वास समर्पण प्रार्थना तथा ईश्वरीय प्रेरणाओ को बिल्कुल समाप्त प्राय कर दिया है। ईश्वर तथा सृष्टि हेतुवाद पूरी तरह अप्रासगिक बना दिए गए हैं। कर्त्तव्य और जनहितकारी अभीप्साओ का स्थान नहीं के बराबर रह गया है। परन्तु मानव अपने नैसर्गिक अभ्यास के कारण तटस्थ और सम्पूर्ण निष्क्रिय हो ही नहीं सकता। वह सद्भाव मे नहीं होगा तो दुर्भाव उसके मन मे शून्य को घेर लेगे। भद्र को मन से निकालते ही 'दुरित वहा आसन जमा लेते हैं। या तो मानव अभीप्सा की स्थिति मे रहेगा या उसे आशकाए और भय सतत सताएगे। तटस्थता अनासक्ति और निष्कामता अत्य त ही दु साध्य भावात्मकता है जो पूर्ण-परिपूर्ण ईश्वरीय समर्पण मे ही उपजते हैं स्वय विकसित हात है। वे प्रयास गम्य नहीं है।

भय का वातावरण आशकाओ का धूम्र तरह तरह की आपत्ति और आपदाओ के लिए सूक्ष्म साधन व क्षेत्र तैयार करते रहते है। जागतिक मन व्यक्ति के मन पर और व्यक्तिगत मन जागतिक मन पर परस्पर प्रभाव उत्पन्न करते रहते हैं। जागतिक मन मे अह न होने से उसका प्रभाव प्रकृति पर हल्का पडता है जबकि व्यक्तिगत मन का अह' सकेन्द्रित और पुष्ट होने से उसका प्रभाव बाह्य प्रकृति पर तीक्ष्ण होता है। अत्यन्त तीव्र सामूहिक व सतत रहने से मानवीय भय बहुत प्रभावी होकर पृथ्वी तल पृथ्वी गर्भ एव वायुमण्डल के सूक्ष्म तत्त्वो को आन्दोलित विचलित और उद्वेलित करता है जो भयानक आपदाओ का कारण बनते हैं। मन से आकाश तत्त्व प्रभावित होता है आकाश से वायु, वायु से अग्नि अग्नि से जल और जल से पृथ्वी तथा पृथ्वी से व्याप्त होकर ये तत्त्व वनस्पति भोजन जल व पर्यावरण मे दुष्प्रभाव उत्पन्न करते रहते हैं। ये दुष्प्रभाव ऐसे दुष्परिणाम उत्पन्न करते हैं कि अतिवृष्टि अनावृष्टि बाढ सूखा दावानल भूकम्प रोग-महामारी युद्ध व अन्य दुर्भाग्य निर्मित होने लगते हैं। आज विज्ञान विकृत 'मन और प्राकृतिक आपदाओ के अन्यो यश्रय या परस्पर सम्बन्ध को जाने न जाने समझे या न समझे परन्तु भारतीय अमर ग्रन्थ वेद और वेदाधारित समस्त ग्रन्थ इसमे पूर्ण रूप से बौद्धिक भी और आध्यात्मिक भी आस्था रखते हैं जो टैक्नोलोजी स जाने जाए या न जाने जाए परन्तु यागशुद्ध आत्मप्रेरणा अन्तर्भास व दार्शनिक विवेचनो से पूरी तरह समझाए जा सकते हैं।

वैदिक काल भारतीय परम्परा का हीरक काल एक अत्यन्त उच्च काल था जो सचेतना विज्ञान का सर्वोत्कृष्ट काल था। वेदो के काल मे इन बातो का गहन अध्ययन व प्रयोगाधारित प्रशिक्षण भी होता था। उस काल मे इन आपदाओ के स्वरूप स्वभाव व प्रघटन को जान सकने का भी श्रेष्ठ विज्ञान प्रचलित था जिसे 'ज्योति-शास्त्र या 'ज्योतिष' नाम से सम्बोधित किया जाता था। आज का ज्योतिष उसी पुरानी उच्च विद्या का व विज्ञानवृत्ति का अत्यन्त निकृष्ट विकृत विभ्रम युत्त और अज्ञानाधारित अवशेष है। क्योकि २०-२५ वर्षो तक अत्यन्त कठोर सयम अटूट आस्था तीक्ष्ण परिश्रम के साथ निरहकार पूर्ण समर्पण के साथ सीख सकने की रूचि क्षमता और समय आज किसके पास है।

वेदो मे अनावृष्टि अग्नि विकार अतिवर्षा भूस्खलन व महामारियो से मुक्ति के बहुत मन्त्र है। सही व्यक्ति सही विधि सही अभ्यास व सही वृत्ति से उनका यौगिक प्रयोग अपने स्पष्ट परिणाम दे सकता है। यह मनो-आध्यात्मिक विज्ञान गणितीय शुद्धता और वैज्ञानिक प्रिसीजन के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है बशर्ते कि वैज्ञानिक जन तनिक सा आस्था व न्याय-तर्क का भाव लाकर परिश्रम पूर्वक सूक्ष्म भौतिक के व अपराप्रकृति के क्रिया-कलापो को निश्चयपूर्वक जानने का प्रयास करे। वैदिको की आस्था व अभीप्सा तथा वैज्ञानिको के सन्देह युक्त प्रयोगशैली का यह सुखद मेल कब होगा मालूम नहीं पर जब भी होगा उससे ससार का विशेषकर मानव जाति का बहुत भला होगा। हम आस्थावानो को इसकी तीव्र प्रतीक्षा रहेगी।

— श्री अरविन्द चेतना समाज
६५६२/६ चमेलियान रोड
दिल्ली ११०००६

आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की ओर से शिविर का सफल आयोजन

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ की अध्यक्षता मे आर्यवीर दल महेन्द्रगढ के प्रधान महन्त आनन्दस्वरूप दास सन्त कबीरमठ सोहला की असीम कृपा से यदुवशी शिक्षा निकेतन मे आर्यवीर दल का शिविर सफलता पूर्व सम्पन्न हुआ। शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियो तन मन धन से सहयोग दिया।

राव बहादर सिह चेयरमैन यदुवशी शिक्षा निकेतन की ओर से बिजली-भवन-पानी-फर्नीचर आदि का विशेष सहयोग मिला साथ-साथ मे आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ। शिविर का शुभारम्भ रावदान सिह जी विधायक महेन्द्रगढ ने झण्डा लहराकर किया। तथा आर्थिक सहयोग भी दिया।

इस शिविर मे ७५ नवयुवको ने प्रशिक्षण लेकर प्रशसा पत्र प्राप्त किए। यदुवशी शिक्षा निकेतन के डायरैक्टर श्री राजेन्द्र सिह जी का भी विशेष योगदान रहा है।

डा० श्री देवव्रत जी प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने पूरा समय देकर शिविर को सफल बनाया तथा डा० श्री ओमप्रकाश जी योगाचार्य श्री देवी सिह जी योगीराज श्री चान्द सिह जी उपप्रधान आर्यवीर दल हरियाणा श्री सत्यबीर शास्त्री श्री कर्णदेव शास्त्री श्री सुरेन्द्र सिह श्री देवेन्द्र आदि शिक्षको ने अपने कठिन परिश्रम से शिविर को सफल बनाया।

✡✡✡

१० लाख रुपयों की सांसद अनुदान राशि से

परली गुरुकुल में सांस्कृतिक सभागृह का शिलान्यास

संसार के समस्त रोगों की आर्यसमाज ही एकमेव सक्षम औषधि

आर्यसमाज परली बैजनाथ जिला बीड महाराष्ट्र) द्वारा सचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में गत बुधवार दिनाक १६ जून को विशाल सांस्कृतिक भवन एव कमरों का शिलान्यास भूतपूर्व केन्द्रीय इस्पात एव खान राज्यमन्त्री मा सासद श्री जयसिगराव जी गायकवाड पाटील के शुभ करकमलो से सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के विशुद्ध तत्वज्ञान एव वैदिक सिद्धान्तों से जिनके जीवन का निर्माण हुआ तथा जिनपर ऋषि दयानन्द की अमिट छाप है ऐसे बीड (महाराष्ट्र) लोकसभा ससदीय चुनाव क्षेत्र के सासद श्री गायकवाड पाटील की सासद अनुदान निधि द्वारा मजूर १० लाख रुपयों की राशि से गुरुकुलाश्रम मे उपरोक्त उद्घाटित सांस्कृतिक भवन का निर्माण होने जा रहा है।

प्रस्तुत शिलान्यास समारोह मे मुख्य अतिथि के रुप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान विमल वधावन जी उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने की।

इस अवसर पर मा सासद श्री गायकवाड पाटील ने अपने विस्तृत भाषण में महर्षि दयानन्द के अनत उपकारो का वर्णन दिलाकर उनका यथोचित सम्मान किया। ईश्वर एव धर्म के नाम पर चलने वाले पाखण्ड को समाप्त किया। यदि दयानन्द न होते तो देश और समाज की स्थिति विकराल बनती। आर्यसमाज की कार्यशैली पर प्रकाश डालते हुए श्री गायकवाड पाटील ने कहा कि आर्यसमाज एक प्रबल सगठन है किन्तु जी वधावन ने अपने भाषण मे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्यसमाज परली के कार्यों तथा गतिविधियो की प्रशसा करते हुए इसे कार्यकर्त्ताओ के समर्पण एव त्याग भावनाओ की फलश्रुति बताया। उन्होने कहा कि समाज एव देश की आवश्यकताओं के अनुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

गुरुकुल परली मे श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील के द्वारा १० लाख रुपये का सासद राशि सहयोग सास्कृतिक सभाग्रह के निर्माणार्थ दिया गया। शिलान्यास समारोह के अवसर पर महाराष्ट्र सभा के अधिकारी तथा सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन श्री जयसिगराव गायकवाड के साथ।

करत हुए आर्यसमाज के सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला। अपनी ओजपूर्ण शैली मे मार्गदर्शन करते हुए भूतपूर्व राज्यमन्त्री श्री गायकवाड पाटील ने कहा कि आज विश्व मे फैले हुए अनेकविध प्रदूषणो पर एकमात्र उपाय केवल आर्यसमाज ही है। आर्यसमाज की बदौलत ही देश आजाद हुआ। यदि आर्यो ने निजाम के अत्याचारो के विरुद्ध बिगुल न बजाया होता तो शायद हैदराबाद एव मराठावाड की जनता स्वतन्त्रता का आस्वादन न करती। शारीरिक आत्मिक सामाजिक राष्ट्रीय धार्मिक सुधारो का मूल आर्यसमाज ही है। ऐसी विश्वकल्याणकारी महान सस्था का मुझसे सम्पर्क न होता तो मैं आज इस स्थिति में न रहता। ऋषि दयानन्द के प्रभाव तथा वेदज्ञान के सस्पर्श से मानव का अपूर्व कायाकल्प होता है अत मुझे आर्यसमाजी होने पर गर्व है।

आज ससार मे नानाविध कुरीतिया अनाचार भ्रष्टाचार दुराचार आदि बुरी बाते फैली है। धनदौलत के पीछे पडा आदमी धर्म कर्म को विस्मृत कर दु खो के सागर मे पतित हो रहा है। ऐसी कठिन परिस्थिति मे सभी विद्वानो को एकत्र मिलकर विचारो का मन्थन करना चाहिए। यदि ऐसा होगा तो निश्चित रुपेण इससे आर्यसमाजरुप नवनीत उत्पन्न होगा। सारी बीमारियों पर साईड इफेक्ट न होने वाली औषधि आर्यसमाज ही है। इस सस्था मे देश की नवयुवक पीढी के नस नस से उष्ण रक्त प्रवाहित कराने की प्रबल शक्ति है।

महर्षि स्वामी दयानन्द के महत्तम ऋणों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने धर्म पर चढे घृणित दुर्गन्धयुक्त वलय को दूर हटाकर धर्म का वास्तविक रूप बता दिया तथा मानवता की परिभाषा सिखायी। दलितों एव नारी जाति को वेदाधिकार अपनी जगहपर खडा रहकर ही कदमचाल कर रहा है। अब आर्यसमाज को दौड के चलो के अनुसार अपनी रणनीति बनानी पडेगी। भाषण के अन्त मे उन्होने गर्व से कहा हम आर्य है का नारा लगाया और गुरुकुल की सर्व प्रकार की उन्नति हेतु कामना की।

प्रमुख अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल अपनी रणनीतिया तय करेगी।

श्री वधावन ने आगे कहा कि कुछ राजनीतिक दल आर्यसमाज में दखलअदाजी देकर इस सस्था को दूषित करने का प्रयत्न कर रहे है उनसे हमारा निवेदन है कि कृपया वे आर्यसमाज के मन्तव्यो को तोड मरोडने का प्रयत्न न करे। श्री जयसिहराव पाटील केवल राजनीतिक दलो के नहीं बल्कि आर्यसमाज के मन्त्री रहे है क्योकि वे सच्चे आर्यसमाजी कार्यकर्ता हैं। उनका आयसमाज एव उससे सलग्न सस्थाओ को सदैव सहयोग मिलता रहा है।

इस अवसर पर प्रान्तीय सभा के उपप्रधान श्री दयाराम बसैये ने प्रास्ताविक भाषण दिया। सभामन्त्री डॉ० सुग्रीवजी काले ने अपने भाषण मे प्रातीय सभा की विविध समाजोपयोगी गतिविधियों पर प्रकाश डालकर गुरुकुल के सेवाभावी कार्यों का वर्णन किया।

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल की पावन भूमि मे सासद महोदय एव कार्यकर्ताओ का आगमन होते ही गुरुकुल के आचार्य श्री शिवमुनि जी के ब्रह्मत्व मे तथा प० प्रशातकुमार शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात सासद महोदय के करकमलो से उनकी सासदनिधि द्वारा मजूर १० लाख रुपयो के माध्यम से बनाए जाने वाले भव्य सास्कृतिक भवन एव कमरो का शिलान्यास सम्पन्न हुआ और साथ ही कुछ पौधे भी लगाए गए।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। उपस्थित गणमान्य अतिथियो का फूलमाला एव श्रीफल द्वारा सर्वश्री आर्यसमाज परली के प्रधान रामपाल लोहिया आचार्य शिवमुनि जी सभामन्त्री डॉ० सु०ब० काले अतरग सदस्य श्री गिरिधरीलालजी गटटानी व्यायामशाला प्रमुख देविदासरावजी कावरे, कोषाध्यक्ष प्रभुलालजी गोहिल प० वीरेन्द्र शास्त्री एव तानाजी शास्त्री आदि ने स्वागत किया। समारोह का सूत्रसचालन डॉ० नयनकुमार विशारद ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव आचार्य शिवमुनिजी ने रखा। कार्यक्रम के लिए महाराष्ट्र के अनेकों आर्यसमाजों से कार्यकर्ता एव प्रतिनिधि उपस्थित थे।

प्रस्तुति डॉ० नयनकुमार विशारद परली बैजनाथ

पृष्ठ ४ का शेष भाग

माता ही शरीर का, भाषा का और चरित्र का निर्माण कर सकती है

इसलिए कहा जाता है कि मानव निर्माण केवल नारिया ही कर सकती है। तन्मयता के साथ मानव निर्माण मे लगी नारियो के लिए एक विशेष कविता श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने प्रस्तुत की।

जब शिल्पी की तन्मयता से
तू मानव मूरत गढती है।
फिर समाज कीसोई हुई
तसवीर स्वय बदलती है।।
इक मूरत गढी दयानन्द की
जिसने वेदो का ज्ञान दिया।
इक मूरत गढी श्रद्धानन्द की,
जिसने बिछुडो को मिला दिया।।
उठो देश की नारी जागो,
ऐसे मानव फिर गढ डालो।
अपनी सन्तानो को फिर तुम
राम और कृष्ण बना डालो।।
दयानन्द दे डालो,
श्रद्धानन्द दे डालो।।

इस उद्बोधन के पश्चात विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० महावीर जी की सुपुत्री कु० प्रज्ञा अग्रवाल जी को विशेष रूप से अपना अत्यन्त सक्षिप्त उद्बोधन प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया गया। कु० प्रज्ञा अग्रवाल ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली पर आयोजित इस गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के ऐतिहासिक अवसर पर उद्बोधन देना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

उन्होने कहा कि नारी के बारे मे विचार करते ही महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति मन मे आने लगती है। उन्ही के द्वारा उत्पन्न जागृति का यह परिणाम है कि आज ज्ञान विज्ञान प्रशासनिक इजीनियरिंग जैसे क्षेत्रो मे ही नहीं अपितु फौज के क्षेत्र मे भी बन्दूक हाथ मे लेकर सर्वत्र अग्रसर है। हमारे परीक्षा परिणाम भी इसी तरफ इशारा करते है कि नारी मे विशाल शक्ति है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने समाज को बहुत सी विदुषी नारिया दी है। आगे भी यह परम्परा चलती रहे ऐसा हम सबको प्रयास करना चाहिए।

इसी प्रकार बिहार से पधारी कु० ऋचा को भी विशेष सक्षिप्त उद्बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया। कु० ऋचा कहा कि महिलाओ ने ही इतिहास की रचना की है। आज यदि समाज में भ्रष्टाचार व्याप्त है तो उसका दोष भी महिलाओ को ही स्वीकार करना चाहिए। पद्मावती की गौरव गाथा राजस्थान मे आज भी सुनाई जाती है परन्तु धिक्कार है उन अज्ञानी महिलाओ को जो बिल क्लिटन से हाथ मिलाकर राजस्थान की मिटटी को भी गौरवहीन बनाती हैं। अश्लीलता के खिलाफ व्यापक सघर्ष का ऐलान करते हुए उन्होने कहा कि उनके एक हाथ मे चूडिया हैं तो दूसरे हाथ मे छुरी भी विद्यमान है।

इसके पश्चात पुन कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित वक्ता श्रीमती शन्नोदेवी (उडीसा) को आमन्त्रित किया गया। उनका उद्बोधन भी लेखबद्ध रूप से सार्वदेशिक के विगत अक मे प्रकाशित किया जा चुका है।

समारोह को समापन की ओर ले जाते हुए सत्र की सयोजिका ने सत्र की अध्यक्षा श्रीमती दमियन्ती कपूर से निवेदन किया कि वे अपना अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करे। श्रीमती दमयन्ती कपूर का विस्तृत अध्यक्षीय भाषण सार्वदेशिक के विगत अको मे प्रकाशित हो चुका है। (क्रमश)

सार्वदेशिक आर्य वीरागना दल का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत अन्तरग बैठक दिनाक २३ जून २००२ मे सार्वदेशिक आर्य वीरागना दल का गठन किया गया। जिसकी सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा है जो कुछ विगत वर्षों से दिल्ली मे आर्य वीरागना दल की गतिविधियो का सचालन कर रही है।

पो०र० ग रजिस्ट्रेशन न ०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14 7 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 2 7 2002

शोक समाचार

आर्यसमाज डाकपत्थर (देहरादून) के मन्त्री श्री नसवीर सिह तोमर जी के पिता चौधरी महावीर सिह तोमर ग्राम एव डाकखाना बावली जिला बागपत का अनायास हृदय गति रुकने के कारण दिनाक २५ ६ २००२ दिन मगलवार को देहावसान हो गया है। इस शोक समाचार को सुनकर आर्यसमाज डाकपत्थर के सभी सदस्यो को अत्यन्त दु ख हुआ। आर्यसमाज मदिर डाकपत्थर मे दिनाक २८ ६ २००२ को साय ६ ३० बजे एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमे परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सदगति एव शान्ति प्रदान करने तथा शोक सतृप्त परिवार को इस दु ख को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

— अशोक ठाकुर प्रधान

पशु-पक्षियों की बलि देना महापाप है – उदयभान विधायक

होडल (फरीदाबाद) जन कल्याण समिति करमन के तत्वावधान मे जीव कल्याण समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रख्यात नेता प० नन्दलाल निर्भय पत्रकार ने की तथा मच सचालन श्री रामकिशन वैनीवाल ने किया।

मुख्य अतिथि श्री उदयभान विधायक ने इस अवसर पर अपने उदघाटन भाषण मे देवी देवताओ को खुश करने के लिए पशु पक्षियो की बलि (हत्या) देना महापाप बताया। श्री उदयभान ने कहा कि मनुष्य को परमात्मा ने सभी जीवधारियो का नेता बनाकर इस ससार मे भेजा है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को दयालु धर्मात्मा बनकर सबकी भलाई

आर्य नेता प्र० पत्रकार ने कहा कि हमा ऋषि मुनियो की धरती को देवधाम मानता आया है किन्तु अब भारतवासी अपनी वैदिक मर्यादाओ को छोडते जा रहे है। इसलिए भारत नर्कधाम बनता जा रहा है। श्रीराम श्रीकृष्ण गुरुनानक देव बाल गगाधर तिलक महर्षि दयानन्द सरस्वती महात्मा गाधी सभी महान पुरुषो ने हमे जीवो पर दया करने का पाठ पढाया है इसलिए हमे परोपकारी बनना चाहिए। श्री निर्भय ने भारत सरकार से एक प्रस्ताव पास कराकर पशु पक्षियो की हत्या करने वालो को सख्त सजा दिलाने की माग की जिसका उपस्थित जनसमूह ने समर्थन किया।

इस समारोह मे ब्रह्मचारी जयदेव आर्य श्री राजेन्द्र लम्बरदार व श्री उदयसिह सौरोत वकील ने भी अपने विचार व्यक्त किए। शान्तिपाठ एव प्रसाद वितरण के पश्चात समारोह का समापन हुआ।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज मार्ग सी–ब्लाक प्रीत विहार दिल्ली–९२ के चुनाव रविवार दिनाक ३० जून २००२ को प्रात ६ बजे बडे सौहार्दपूर्ण वातावरण मे आर्यसमाज परिसर मे ही सम्पन्न हुए निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए –

प्रधान – श्री सुरेन्द्र कुमार रैली
मन्त्री – श्री कृष्ण कुमार ढींगरा
कोषाध्यक्ष – श्री आर०एस० शर्मा

स्त्री आर्यसमाज

स्त्री आर्यसमाज सी–ब्लाक प्रीत विहार दिल्ली–९२ का चुनाव निम्न प्रकार हुआ –

प्रधाना – श्रीमती सावित्री रानी कपूर
मन्त्रिणी – श्रीमती सुन्दर शान्ता चडढा
कोषाध्यक्षा – श्रीमती अमरलता शर्मा

उपासना का फल सुख नहीं, आनन्द है

हमारे शास्त्री निवास के सामने वाले मकान मे एक दिन प्रात काल एक कैसेट चल रही थी। उसी समय मै अपने स्नान घर मे नहाने के लिए प्रवेश हुआ तो राशनदान से आवाज सुनाई दी। कैसेट के बाल थे कि राम राम जपियो ते सदा सुखी रहियो। मेरे मन मे एक विचार आया कि किसी नाम का जपन मात्र से तो कोई भी सुखी नही हो सकता ? हा यदि थोडी दर के लिए राम को ईश्वर मान कर भी राम नाम जपने की बात कही जाये तो ईश्वर की उपासना से सुख नहीं आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे तीन अलभ्य अनुभूतिया है जो बहुत कठिनता से प्राप्त हाती है। किन्तु जो व्यक्ति उक्त तीनो विषयो को भली प्रकार समझ लेता है उसे ये तीनो ! सुख शान्ति एव आनन्द सहज व सरलता से ही प्राप्त हो सकते है।

बात राम नाम जपियो ते सदा सुखी रहियो की चल रही थी। अस्तु शरीर का विषय सुख है जो भौतिक साधन सम्पन्नता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सु + ख = सु का अर्थ अच्छा – ख का अर्थ इन्द्रिय अर्थात जो इन्द्रियो को अच्छा लगे उसे सुख कहते है। शान्ति मन का विषय है। जब तक मन मे सन्तुष्टि नहीं है तब तक सब कुछ व्यर्थ है किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि –

गोधन गजधन वाजधन और रतन धन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान।

ससार का बहुत सारा धन वैभव प्राप्त करने के बाद भी जब तक मन मे शान्ति न हो तो धन वैभव का कोई लाभ नहीं है। एक बहुत सुन्दर कहावत है कि – "मन चन्गा तो कठौती मे गगा अर्थात मन मे शान्ति है तो सब ठीक है।

रही बात आनन्द की जो केवल मात्र आत्मा का विषय है। इस लेख का भी मुख्य बिन्दु है। जिसे परमात्मा की उपासना भक्ति चिन्तन मनन व सन्ध्या आदि से ही प्राप्त किया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि उपासना का फल सुख शान्ति से ऊपर परम आनन्द की अनुभूति ही होता है। अत उपासना से सुख नही आनन्द मिलता है।

– आचार्य रामसुफल शास्त्री
(वैदिक प्रवक्ता)
शास्त्री निवास लाल सडक हासी

आर्यवीरो का एक साहसी दल, सियाचिन ग्लेशियर की ओर रवाना हुआ

दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल के प्रचारक श्री विनय आर्य के नेतृत्व मे आर्य वीरो का एक २८ सदस्यीय साहसी दल बस द्वारा सियाचिन ग्लेशियर की दुर्गम यात्रा पर रवाना हुआ। इस साहसी दल को सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा अन्य महानुभावों ने आशीवाद देकर रवाना किया। ८ जुलाई को रवाना हुआ यह दल १७ जुलाई को वापस दिल्ली लोटेगा। यह साहसी दल अपने साथ ताबे की प्लेट पर दिल्ली सभा और आर्यवीर दल आदि के नाम से कुछ स्मृति वाक्य लिखवाकर ले गया है जिसे उस दुर्गम चोटी पर स्थित एक मन्दिर मे स्थापित किया जाएगा।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि हम इस साहसी दल के दिल्ली वापस आने पर उनका इसी प्रकार स्वागत करेगे।

साहसी दल को विदाई देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री सोमदत्त महाजन तथा अन्य महानुभाव।

बारहकुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन

आर्यसमाज हाथी खाना राजकोट गुजरात दिनाक ९–६ २००२ रविवार को विश्वनगर शेरी न० २ भवडी रोड राजकोट मे १२कुडीय यज्ञ का भव्य कार्यक्रम आयाजित किया गया।

इस कार्यक्रम मे ६६ यजमान भाईबहनो ने हर्षोल्लास से भाग लिया। प० वीर बहादुर शास्त्री ने ब्रह्मा स्थान ग्रहण करके यज्ञ कार्य सम्पन्न किया तथा प० विजय आर्य ने ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ के सम्बन्ध म स्वामी दयानन्द के मन्तव्यो पर प्रकाश डाला। बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री हसमुख भाई परमार जी ने पञ्चमहायज्ञ पर अपना प्रवचन देते हुए लोगो को प्रभावित किया तथा आर्यसमाज के प्रति लोगो को श्रद्धावनत किया।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री रणजीत सिह परमार जी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का सचालन करते हुए आर्यसमाज की गतिविधियो की चर्चा की तथा प्रधान श्री पोपट भाई चौहाण जी न अन्त मे सबका आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम मे उपस्थित मुख्य अतिथि श्री धनसुख भाई भडेरी (म्यु० कार्पो के सदस्य) तथा श्री जनकभाई हरसोरा (चीफ आफिसर म्यु० कार्पो) प्रभावित होकर ऐसे कार्यक्रम को बार बार करने तथा सहयोग देने का वचन दिया।

आर्यसमाज के पदाधिकारियो तथा सभासदो ने अमूल्य योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया। श्री नटवर सिह श्री मानसिह जी श्रीमति ललिता बेन कुसम बेन हिना बेन पुष्पा बेन ने कई दिन पहले से घर घर जाकर लोगो को यजमान बनने के लिए तैयार किया तथा वैदिक सिद्धान्तो से युक्त छोटी छोटी पत्रिकाओं का वितरण किया जिनके प्रयास से पाच सौ से अधिक नगरवासी उपस्थित होकर आर्यसमाज के सिद्धान्तो से अवगत हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक १२ — २१ जुलाई से २७ जुलाई २००२ तक — दयानन्दाब्द १७६ — सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ — सम्वत २०५९ — आ० शु० १२

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सांप्रदायिक सौहार्द का प्रयास १९वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था

अल्पसंख्यक आयोग ने की नई शुरुआत

नई दिल्ली राष्ट्रीय अल्पसख्यक आयोग के तत्वावधान मे साम्प्रदायिक सौहार्द को बढावा दने के उददेश्य से हिन्दू, मुसलमान सिक्ख और इसाई मतो से सम्बन्धित धार्मिक सगठनो के प्रतिनिधियो की एक बैठक १५ जुलाई का लोकनायक भवन कार्यालय मे बुलाई गइ। जिसम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा मन्त्री श्री वदव्रत शर्मा उपस्थित थे। इस बेठक की अध्यक्षता अल्पसख्यक आयोग के चेयरमैन न्यायमूर्ति श्री मोहम्मद शमीम ने की और सचालन उपाध्यक्ष श्री त्रिलोचन सिह ने किया।

इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की ओर से मदनदास देवी श्री तरुण विजय श्री सत्यनारायण बसल श्रीराम बग्गो वि० हि० प० की ओर से आचार्य गिरिराज किशोर श्री सुरेन्द्र जैन प्रवीण तोगडिया के अतिरिक्त सनातन धर्म के प्रतिनिधि मुस्लिम समुदाय से मोलाना वहीरुददीन फिल्म निर्माता श्री मुजफ्फर अली इमाम सगठन के प्रधान मौलाना जमीर अहमद इलियासी मौ० मुफ्ती इकराम आदि सहित कई अन्य मुस्लिम नेता भी उपस्थित थे। बैठक मे स्वामी चिन्मयानन्द तथा प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

आर्यसमाज की ओर से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि इस प्रकार की साम्प्रदायिक सौहार्द बैठक १९वी शताब्दी मे ब्रिटिश शासन के दौरान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दिल्ली मे आयोजित की थी। उनका यह स्पष्ट विश्वास था कि यदि सभी मता के विद्वानजन परस्पर विराध की भावना त्याग दे और बुद्धिमत्ता स जीवन के सर्वमान्य सिद्धान्तो को निष्पक्ष होकर स्वीकार करे तो साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना कोई कठिन कार्य नही होगा।

श्री विमल वधावन ने अल्पसख्यक आयोग का साधुवाद व्यक्त करते हुए कहा कि ऐस प्रयास दश के हर हिस्से मे और विशष रूप से जनता के बीच होन चाहिए। उन्हाने इस बेठक म मुस्लिम नताओ द्वारा राष्ट्रवादी भावनाए व्यक्त करने पर सतोष व्यक्त करते हुए कहा कि यदि यही भावनाए साधारण जनता के बीच भी प्रचारित की जाए तो साम्प्रदायिक तनाव कभी उत्पन्न ही नही हा सकता।

उन्होन कहा कि जब कही भी हिन्दुआ मुसलमानो या अन्य मजहबा म तनाव की कोई भी बात उत्पन्न हाती नजर आए तो तत्काल सभी मजहबा का उसका विरोध करना चाहिए। इसी क्रम मे यदि गाधरा मे हिन्दुआ का रेलगाडी म जलाए जान की निन्दा मुस्लिम समाज के द्वारा सच्च मन स अर तुरन्त की जाती ता गुजरात के अन्य हिस्सा मे सम्भवत हिसा न भडकती।

उन्हाने कहा कि इस बेठक मे मुस्लिम नेता कुरान को एक श्रेष्ठ मानवतावादी ग्रन्थ क रूप म प्रस्तुत कर रह है। एस विद्वानो को अपन यह विचार अधिक से अधिक प्रचारित करने चाहिए। ओर यह मुस्लिम विद्वान स्वय ही कुरान के उन उपदेशा का खण्डन करे जा सामान्य जनता को विध्वसात्मक और घृणा फेलाने वाले लगते हा।

श्री विमल वधावन न न्यायमूर्ति मो० शमीम से कहा कि आप अल्पसख्यक आयोग की तरफ स सरकार को अपनी सस्तुति भजे कि सविधान मे वणित नागरिका क मूल कर्तव्या का देश म लागू करने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

शेष पृष्ठ २ पर

श्री मोहनलाल मोहित जी के १०० वे जन्म दिवस पर

मारिशस में ऐतिहासिक महासम्मेलन

आर्यसभा मारिशस के तत्वावधान मे वयोवृद्ध आयरत्न श्री माहनलाल मोहित जी का १००वा जन्म दिवस एक ऐतिहासिक समारोह के रूप मे विशाल स्तर पर मनाया जाएगा। श्री मोहनलाल मोहित आगामी २२ सितम्बर का अपनी आयु के १०० वर्ष पूर्ण करेगे। वैदिक जीवन पद्धति के प्रतीक श्री मोहनलाल मोहित का मारिशस राष्ट्र के उत्थान तथा आर्य समाज की प्रगति मे गम्भीर एव चिरस्मरणीय योगदान है

यह समारोह मारिशस मे १८ से २४ सितम्बर की तिथियो मे एक महायज्ञ के रूप मे आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम मे भाग लेने वाले आर्यजनो को १७ सितम्बर को प्रात काल की उडान से दिल्ली से रवाना होना होगा।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आय ने आर्यजनो का आह्वान किया है कि वे अधिक स अधिक सख्या मे इस ऐतिहासिक समारोह म भाग लने के लिए मारिशस भ्रमण का कायक्रम बनाए। इस हेतु १७ हजार रूपये हवाइ जहाज से आने जाने का व्यय तथा ५०००रुपये आवास आदि क प्रबन्ध हेतु कुल राशि २२००० रुपये का ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम बनाकर भेजे। इसके साथ ३ पासपोर्ट साईज के फोटो भी भेज। मारिशस जान के इच्छुक यात्रियो के पास वैध पासपोर्ट भी होना चाहिए जो अगले ६ माह तक वैध हो।

पाखण्ड खण्डिनी पताका

वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार पर भूमाफिया की कुदृष्टि

२५ अप्रैल १८६७ के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार मे जिस स्थल पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी वह स्थल वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट के द्वारा सचालित एव नियन्त्रित किया जा रहा है। जिसके वर्तमान अध्यक्ष डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी हैं। गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे एक विशाल शेभा यात्रा आर्यो के इस ऐतिहासिक स्थल वेदिक मोहन आश्रम तक आयोजित की गइ।

वेदिक मोहन आश्रम विगत कुछ वर्षो से हरिद्वार के भूमाफिया आर अपराधी तत्वा का लक्ष्य बना हुआ है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की दूसरी शताब्दी का प्रथम सत्र प्रारम्भ

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नए सत्र का शुभारम्भ नवनियुक्त कुलपति श्री स्वतत्र कुमार तथा अन्य आर्य नेताओ ने यज्ञ से किया। यज्ञ करते हुए आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री डॉ० भारत भूषण श्री वेदव्रत शर्मा श्री देवेन्द्र शर्मा आचार्य यशपाल श्री प्रेम भारद्वाज आदि। यज्ञ के उपरान्त बैठक को सम्बोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।

पृष्ठ १ का शेष

वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार पर

इस सारे कार्य मे वीरन्द्र कुमार नामक एक व्यक्ति मुख्य भूमिका निभा रहा है। इस सम्बन्ध म वैदिक मोहन आश्रम न्यास द्वारा सारे तथ्यो को पिराते हुए जो श्वेत पत्र रूपी पुस्तिका प्रकाशित की गई है उसकी एक विस्तृत रिपोर्ट वैदिक आहान क नाम से इसी अक मे प्रकाशित की जा रही है।

वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आय को लिखे एक पत्र मे सभी तथ्यो से अवगत कराते हुए निवेदन किया है कि वह समूचे विश्व की आर्यसमाजो को इस कार्य मे यथासम्भव सहयोग का आहान करे।

इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी से भी गहन विचार विमर्श किया गया। जिसके उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की ओर से देश विदेश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ आर्यसमाजो तथा अन्य आर्य सस्थाओ को विशेष आहान किया गया है कि वे रिपोर्ट का अध्ययन करने के उपरान्त अपनी ओर से तथा अपनी सस्थाआ की ओर से कडे शब्दो मे प्रतिक्रिया व्यक्त करत हुए निम्न महानुभावो को टेलीग्राम अथवा पत्र भेजे।

१ **श्री नारायणदत्त तिवारी जी**
मुख्यमन्त्री उत्तराचल देहरादून
२ **श्री सुरजीत सिह बरनाला जी**
राज्यपाल उत्तराचल देहरादून
३ **श्री जिलाधिकारी जी**
हरिद्वार (उत्तराचल)
४ **श्री वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जी**
हरिद्वार (उत्तराचल)

इन पत्रो अथवा टेलीग्रामो मे उन्हे चेतावनी दे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित यह ऐतिहासिक स्थल लाखो करोडो आर्यो की श्रद्धा का प्रतीक है इसके विरुद्ध किसी प्रकार का षडयन्त्र सफल न होने दे अन्यथा आर्यजनता को आन्दोलन के लिए बाध्य होना पडेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऐतिहासिक कार्यो से सम्बन्धित होने के कारण वैदिक मोहन आश्रम हमारा एक पवित्र स्मारक है। इस नाते इसकी सुरक्षा और मजबूती के लिए हर प्रकार का सहयोग प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।

स्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधाना	श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा
मन्त्रिणी	श्रीमती पूनम मनोचा
कोषाध्यक्षा	श्रीमती पुष्पलता शास्त्री

पृष्ठ १ का शेष

अल्प संख्यक आयोग ने की नई शुरुआत

इस बैठक मे परस्पर भाईचारा आर राष्ट्रवादी भावनाओ को लागू करने के दृष्टिकोण से लगभग सभी प्रतिनिधियो मे एक मत था। बैठक मे यह चर्चा भी सामने आई कि साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होने की स्थिति मे सभी मतो के प्रमुख अधिकारी सयुक्त दौरे आयोजित करे।

बेठक क अन्त मे अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री मो० शमीम द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव मे कहा गया कि इस प्रकार की बैठके समाज की एकता के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। ऐसी बैठको का आयोजन प्रान्तीय और जिला स्तर पर भी किया जाएगा। केवल बातचीत के द्वारा ही आपसी मतभेदो को दूर किया जा सकता है। साम्प्रदायिक तनाव का आभास होते ही तुरन्त ऐसे प्रयास आरम्भ कर दिए जाने चाहिए। इस प्रस्ताव को सभी सदस्यो ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

परन्तु बैठक समाप्ति के बाद दर्जनो पत्रकार फोटोग्राफर तथा विभिन्न चैनलो के रिपोर्टरो ने जब सघ एव वि०हि०प० प्रतिनिधियो से प्रतिक्रिया जाननी चाही तो आचार्य गिरिराज किशोर जी ने धार्मिक पुस्तको मे से विवादित अश हटाने की बात तथा रामजन्मभूमि विवाद की बात छेड दी। इस पर कुछ मुस्लिम ... ओर लगभग सभी समाचार पत्रो ने यह समझा कि सारी बैठक मे इसी प्रकार के विवाद चलते रहे। परिणामत समस्त समाचार पत्रो ने इस बैठकको असफल घोषित किया। वास्तव मे यह बैठक सभ्य तरीके से बातचीत के मार्ग खोलने का एक सुप्रयास था। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती हे कि उपस्थित प्रतिनिधियो मे कितने लोग अपने अपने अनुयायियो को इन भावनाओ से अवगत करा पाते है। और साम्प्रदायिक तनाव के मूल मे जाकर अपने अपने अनुयायियो को एक दूसरे के लिए त्याग और सहिष्णुता अपनाने के लिए तेयार कर पाते है।

दूसरी तरफ **आज तक** तथा कुछ अन्य चैनल रिपोर्टरो ने आर्यसमाज के प्रतिनिधियो से प्रतिक्रिया मागी तो सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने इसे एक अच्छी शुरुआत की शुरुआत बताया। श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज इस कार्य को खुले हृदय से स्वीकार करेगा और हम इस प्रकार की बैठके आर्यसमाज के मचो से भी आयोजित करने को तैयार है बशर्ते मुसलमान नेता भी अपनी मस्जिदो तथा अन्य मचो से उदबोधन के लिए हिन्दू

पाखण्ड खण्डिनी पताका

वैदिक आहवान

– वैदिक मोहन आश्रम न्यास भूपतवाला हरिद्वार

स्वामी दयानन्द सरस्वती १६वीं सदी के सबसे महान सुधारक थे। उन्होने अन्धविश्वासो सती प्रथा मिथ्या धार्मिक मान्यताओं निरक्षरता और जाति एव नस्ल के झगडो जैसी सामाजिक बुराईयो के विरुद्ध सघर्ष की शुरुआत की। इसके लिए उन्होने सारे देश का दौरा किया। १८६७ मे वह कुम्भ मेले के अवसर पर हरिद्वार आए। आज जहा वैदिक मोहन आश्रम स्थित है वहा उन्होने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर सामाजिक एव धार्मिक बुराईयो के हिमायतियो को चुनौती दी। वस्तुत उन्होने इस स्थल से सामाजिक बुराईयो के विरुद्ध सघर्ष की घोषणा की थी इसलिए देश और दुनिया के आर्यसमाजियो के लिए इसका भावनात्मक महत्व है। वे दूर–दूर से यहा आते है। स्वामी जी की स्मृति को स्थाई बनाने के उद्देश्य से १६१२ म भूपतवाला हरिद्वार मे वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट की स्थापना की गइ थी। आर्यसमाज एव डी०ए०वी० सगठन के सुप्रसिद्ध व्यक्ति प्रारम्भ से ही इस ट्रस्ट के सदस्य रहे है। महात्मा हसराज जी बक्शी टेक चन्द जी, राय बहादुर बक्शी सोहन लाल जी, लाला दुर्गादास जी पण्डित शिवदत्त राम जी स्वामी अचुतानन्द जी प० जगतसिह जी इस ट्रस्ट के सस्थापक सदस्यो मे थे। इस ट्रस्ट के वर्तमान सदस्य भी देश के प्रति अपनी विशिष्ट सेवाओ के कारण चर्चित व्यक्ति है।

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद एव देश–विदेश के लगभग ७०० शैक्षणिक सस्थानो का सचालन करने वाली डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष हैं। श्री चोपडा देश और देश से बाहर सैकडो आर्य समाजो के सगठन आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान भी हैं।

पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री आर०एन० मित्तल ट्रस्ट के सदस्य हैं। वह डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धक समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के भी उप प्रधान हैं।

दिल्ली के भूतपूर्व उपराज्यपाल एयर वाईस मार्शल श्री एच०के० एल० कपूर ट्रस्ट के सदस्य हैं। श्री कपूर राजीव गाधी कैंसर इस्टीटयूट रोहिणी दिल्ली के प्रधान हैं तथा देहरादून मे रहते है।

सुप्रसिद्ध प्रकाशक एव भारतीय प्रकाशन जगत की सेवाओ के कारण लाइफ टाइम अचीवमेट अवार्ड से सम्मानित श्री विश्वनाथ ट्रस्ट के सदस्य हैं। श्री विश्वनाथ डी०ए०वी० कालेज, प्रबन्धकर्तृ समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान भी है। उनके पिता श्री राजपाल एक सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी थे। एक धर्मान्ध व्यक्ति ने उनकी लाहौर मे हत्या कर दी थी। गृह मन्त्रालय भारत सरकार ने उन्हे मरणोपरान्त अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पुरस्कार से सम्मानित किया है।

देहरादून के भूतपूर्व महापौर सामाजिक सेवा को समर्पित तथा देहरादून के सुप्रसिद्ध नागरिक कुवर ब्रजभूषण भी ट्रस्ट के सदस्य है। आज जिस भूमि पर वैदिक मोहन आश्रम स्थित है वह १६०८ मे उनके पूर्वजो ने दान म दी थी। सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी आत्मबोध सरस्वती पूर्व मे आर्य भिक्षु जी भी इस ट्रस्ट के सदस्य है। शिक्षा के क्षेत्र मे विशिष्ट योगदान देने के लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय पुरसकार से सम्मानित एक विख्यात शैक्षणिक सस्थान के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री टी० आर गुप्ता वर्तमान मे ट्रस्ट के सचिव है आजकल न्यूक्लीयर मेडिसन एण्ड बोन डेनसिटोमीटरी सेण्टर गगाराम अस्पताल दिल्ली के प्रधान है।

ट्रस्ट के अन्य सदस्य भी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति है समाज के लिए की गई अपनी सेवाओ के कारण उनका एक विशिष्ट स्थान है। वे सब आश्रम के लक्ष्यो और उद्देश्यो के प्रति समर्पित हैं। वैदिक मूल्यो की मशाल तथा स्वामी दयानन्द द्वारा शुरु किए गए आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के कार्य को आगे बढाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहे है

१६१२ मे स्थापित ट्रस्ट प्रारम्भ से ही भारतीयो के प्रिय वैदिक मूल्यो के प्रचार प्रसार के काम मे सलग्न है। देश के विभिन्न भागो के डी०ए०वी० स्कूलो एव कालेजों के हजारो विद्यार्थी आठ दिवसीय चरित्रनिर्माण शिविरो तथा तीन दिवसीय वैदिक चेतना शिविरो मे नियमित रूप से भाग लेते रहे हैं। १८–२५ अक्तूबर २००१ तक आयोजित शिविर की अध्यक्षता उत्तराचल के तत्कालीन खेल मन्त्री श्री नारायणसिह राणा ने की थी। हमारी मान्यता है कि डी०ए०वी० सस्थानो मे अपनी पढाई पूरी करके जाने के बाद ये विद्यार्थी समाज की बेहतरी के लिए प्रयत्न करेगे। आश्रम के स्थापना काल से ही हजारो आर्यसमाजी एव सामान्यगण आश्रम मे आते है तथा यहा धार्मिक प्रवचन विचार विमर्श इत्यादि मे भाग लेते है।

कुछ समय पहले तक आश्रम की गतिविधिया बिना किसी व्यवधान के ठीक ढग से चल रही थी। आश्रम के भूतपूर्व प्रबन्धक श्री वीरेन्द्र कुमार के साथ कुछ व्यक्तियो ने मिलकर आश्रम तथा इसकी जमीन पर कब्जा करने की साजिश की। श्री वीरेन्द्र कुमार की घिनौनी हरकतो तथा अपराधिक गतिविधियो का सक्षिप्त ब्यौरा यहा सक्षेप मे नीचे दिया गया है।

श्री वीरेन्द्र कुमार को सन १६८३ मे २००/– रुपये प्रतिमाह के वेतन पर आश्रम मे रसोईया नियुक्त किया गया था। धीरे धीरे वह १६६१ म आश्रम का वैतनिक प्रबन्धक हो गया। १६६८ मे उसके द्वारा आश्रम के कोष मे की गई धाधलियो और जाली खातो का मामला सामने आया। उसे चार्जशीट दी गई और आवश्यक जाच के बाद उसकी सेवाए समाप्त कर दी गई। इसके परिणामस्वरूप उसने आश्रम के कुछ ट्रस्टियो के विरुद्ध झूठे मामले दर्ज कराने शुरु कर दिए और एक जाली ट्रस्ट बनाया गया।

श्री वीरेन्द्र कुमार ट्रस्ट के सम्मानित एव सुप्रसिद्ध सदस्यो के विरुद्ध झूठे और घिनौने मामले दर्ज कर रहा है। उदाहरणतया ट्रस्ट ने भूमि के एक टुकडे को बेचने का निर्णय लिया यह टुकडा न तो आश्रम की मुख्य भूमि से सटा हुआ था न ही बहुत उपयोगी।

ट्रस्ट की ११ ४ १६६५ की बैठक मे प्रस्ताव सख्या ११ द्वारा कार्यकारी प्रधान कुवर ब्रजभूषण कोषाध्यक्ष श्रीदेश कुमार तथा प्रबन्धक श्री वीरेन्द्र कुमार को बातचीत के लिए तथा इस भूखण्ड को बेचन के लिए अधिकृत किया गया। इन तीनो व्यक्तियो ने इस भूखण्ड को १२ लाख रुपय मे बेचन का एक अनुबन्ध किया। यह अनुबन्ध नही हो सका था क्योकि श्री वीरन्द्रकुमार ने सूचित किया कि खरीददार भूखण्ड खरीदने का इच्छुक नही है तथा बयाना राशि वापस माग रहा है। श्री वीरेन्द्र कुमार की इस सूचना पर बयाना राशि लौटा दी गई। आश्रम के सम्मानित ट्रस्टी सुप्रसिद्ध उद्योगपति हीरो साइकिल्स के मालिक तथा डी०ए०वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उप प्रधान श्री सत्यानन्द मुजाल के अनुरोध पर यह भूखण्ड एक अन्य आश्रम श्री अनन्त प्रम आश्रम भूपतवाला हरिद्वार को ४ लाख नब्बे हजार रुपये मे बेच दिया गया। श्री मुजाल न सलाह दी कि एक आश्रम द्वारा दूसरे आश्रम की सहायता करना बेहतर होगा क्योकि दोनो आश्रम जन धमार्थ एव धार्मिक ट्रस्ट है दोनो के लक्ष्य तथा उद्देश्य भी मिलते जुलते है। इसलिए कोइ आर्थिक हानि हो तो भी अनुचित नही है। इसके अलावा धन कमाना वैदिक मोहन आश्रम का मकसद भी नही हे। ४ ६० लाख रुपये के बिक्री अनुबन्ध पत्र पर उपर्युक्त तीनो व्यक्तियो के हस्ताक्षर है। श्री वीरेन्द्र कुमार आराप लगा रहा है कि ट्रस्टियो ने धन की धाखाधडी की है जबकि आश्रम क प्रबन्धक के रूप म वह दोनो अनुबन्धो का हस्ताक्षरकर्ता हे। यहा यह गोरतलब है कि उसने ट्रस्ट के प्रधान पदमश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा तथा सचिव श्री टी०आर० गुप्त जैसे सुप्रसिद्ध व्यक्तियो के विरुद्ध झूठे आरोप लगाए है। ये दोनो मे से किसी भी अनुबन्ध मे शामिल नहीं थे। बाद मे श्री वीरेन्द्र कुमार के उकसाने पर छह व्यक्तियो ने न्यायालय मे एक याचिका (एक प्रकार की जनहित याचिका) दायर की ओर कहा कि ट्रस्टियो ने धनराशि की धोखाधडी की है इसलिए आश्रम का प्रबन्धक श्री वीरेन्द्र कुमार द्वारा गुप्त ढग से बनाए गए नए ट्रस्ट को सौप दिया जाए।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष भाग

वैदिक आहवान

जब इन व्यक्तियो को मामले की जानकारी दी गई तो पाच व्यक्ति पीछे हट गए क्योकि पहले इन्हे सच्चाई नही बताई गई थी।

इन घिनौनी हरकतो के कारण श्री वीरेन्द्र को आश्रम खाली करने का निर्देश दिया गया। पदमश्री श्रीयुत ज्ञान प्रकाश चापडा दिल्ली के भूतपूर्व उपराज्यपाल श्री एच०के०एल० कपूर तथा अन्य ट्रस्टियो की मौजूदगी मे उसने एक सप्ताह मे आश्रम खाली करने का वायदा किया। उसने वायदा खिलाफी की तथा उस द्वारा दायर याचिका पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय स एक अन्तरिम आदेश ले लिया कि दो कमरे के उसके आवास पर अगले आदेशो तक उसका कब्जा सुरक्षित रहेगा। उच्च न्यायालय का नोटिस प्राप्त होने पर ट्रस्ट ने जवाब दायर किया और मुकदमा लडा। माननीय उच्च न्यायालय ने अन्तरिम आदश रद्द कर दिया।

श्री वीरेन्द्र कुमार का यह दावा कि वह १९७८ से वैदिक मोहन आश्रम से सम्बद्ध है बेबुनियाद और झूठा है क्योकि वह १९८३ मे रसाइए क रूप मे आश्रम म आया था तथा आश्रम से नियमित वेतन ले रहा था। वैदिक मोहन आश्रम मे आन से पहल वह निकट क जयराम आश्रम मे रसोइया था। ट्रस्ट के सविधान के अनुसार ट्रस्ट का कोई सदस्य कोई वेतन नकद या अन्य किसी रूप मे ट्रस्ट से लाभ नही ले सकता। समस्त ट्रस्टी एक समान है। ट्रस्टी आजीवन सदस्य रहता है या तब तक सदस्य रहता है जब तक वह इस्तीफा नही देता।

शेष ट्रस्टी ही दूसरो को आमन्त्रित करके रिक्त स्थान भर सकते है। ट्रस्ट के कागजातो म मेनजिग ट्रस्टी के लिए कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए श्री वीरेन्द्र कुमार का यह दावा कि वह मेनेजिग ट्रस्टी है शरारतपूर्ण और झूठा है। वह तो कभी ट्रस्टी था ही नही। श्री वीरेन्द्र कुमार जो स्वय को मैनेजिग ट्रस्टी कहता है ट्रस्ट के सविधान म जिसका कोई प्रावधान नही है एक धोखेबाज हे वह झूठे और फर्जी दस्तावेजो के बूते पर घिनौने आरोप लगा रहा है बदनाम कर रहा है तथा झूठे मुकदमे दायर कर रहा है।

अपनी आपराधिक गतिविधियो के तहत उसने भूमि माफिया की मदद से आश्रम की करोडो रुपये की भूमि ~डपन की घिनानी हरकत की। २४ दिसम्बर की रात को श्री वीरेन्द्र कुमार ने लगभग ५० हथियार बन्द गुण्डो की सहायता से आश्रम पर हमला कर दिया। उसने चौकीदार के सिर पर प्रहार किया। चौकीदार बेहोश हो गया। वीरेन्द्र कुमार ने द्वार खोल दिया। लाठियो और बन्दूको से लैस इन गुण्डो को वीरेन्द्र कुमार आश्रम के विभिन्न कमरो मे ले गया। आश्रम मे रहने वाले व्यक्तियो पर घातक प्रहार किए। इन प्रहारो से श्री सतपाल सूद (७० वर्ष से अधिक आयु) भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री जसाराम श्री सुशील कुमार दीवान और आश्रम के प्रबन्धक श्री रामस्नेही आर्य को गम्भीर चोटे आई। श्री रामस्नेही आर्य और श्री सतपाल सूद की पत्नी के साथ भी हाथापाई एव मारपीट की। घायल श्री रामस्नेही आर्य और उनकी पत्नी का बन्दूक की नोक पर अपहरण करके आश्रम से लगभग ३० किलोमीटर दूर अज्ञात तथा सुनसान स्थान पर ले गए और वहा यह धमकी दते हुए छोड दिया कि आश्रम वापस आओगे तो मार दिए जाओगे। यह भी पता चला कि उन्हाने आश्रम आफिस के सारे रिकार्ड को भी तहस–नहस कर दिया वहा रख धन कम्प्यूटर तथा फैक्स मशीन को भी उठा ले गए। ट्रस्ट के प्रधान पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा न ट्रस्ट के अन्य सदस्यो क साथ उत्तराचल के मुख्यमन्त्री तथा पुलिस महानिदेशक से सम्पर्क करके देश तथा विदेश मे रहने वाले लाखा व्यक्तियो के लिए पवित्र आश्रम की भूमि पर कब्जा करने की भूमि माफिया की हरकत की जानकारी दी। २१–१२–२००१ को इस सारे मामले की पुलिस मे एफ०आई०आर० दर्ज कराई गई जा यहा नीचे प्रस्तुत है–

सवा मे

श्रीमान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जी हरिद्वार

मै रामस्नही आर्य प्रबन्धक वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला आपको सूचित करता हू कि रात्रि ११ बजे दिनाक २४–१२–२००१ को ५०–५५ बदमाश आश्रम के गेट पर आए और उन्होने चौकीदार से कहा कि गेट खोलो। चोकीदार गेट नही खोल रहा था। तब तक वीरेन्द्र शास्त्री ने अपने कमरे से आकर चौकीदार से चाबी लेकर दरवाजा खोल दिया। उसके बाद वीरेन्द्र शास्त्री ने चौकीदार के सिर पर लाठी से वार किया चौकीदार वही पर ही गिर गया। वीरेन्द्र शास्त्री के साथ सभी बदमाश अन्दर आ गए। वीरेन्द्र शास्त्री ने कुछ बदमाशो के साथ मिलकर कुटिया न० ५० का दरवाजा तोडकर अन्दर घुस गए और वहा पर बैठे सतपाल सूद तथा उनकी पत्नी को गालिया देते हुए पीटा और उन्हे खीचते हुए बाहर ले आए और कुछ बदमाश कुटिया न० ८ मे घुस कर यशराम को मारते हुए बाहर ले आए। फिर वीरेन्द्रशास्त्री ने कुटिया न० ४६ से सुशील कुमार दीवान को बाहर निकाला और बोला कि जल्द से जल्द आश्रम छोडकर चले जाओ उसके बाद कुटिया न० ४५ मे वीरेन्द्र शास्त्री ने बन्दूक ओर पिस्ताल के साथ जाली तोडकर मेरी कुटिया म घुसा आर मुझ अभद्र गाली दी और मेरी कनपटी पर पिस्तौल लगा दिया ओर बदमाशो से बोला कि इसके पैरो पर मारा। तभी बदमाश मेरे दाहिने पैर पर लाठी से वार करने लगे और मेरा पाव लहु लुहान हो गया। तब तक मेरी पत्नी इस आवाज को सुनकर अन्दर के कमरे से आई उसे देखकर वीरेन्द्र शास्त्री ने उसके मुह पर थप्पड मारे और उसकी गर्दन पर पिस्तौल लगा दिया और गाली देते हुए बोला कि तुम दोनो जल्द से जल्द इस आश्रम को छोडकर चले जाओ नही तो जान से मार दूगा मना करने पर उसने मुझे गाली दी और घूसो से वार किया। ओर मेरी जेब से मोबाइल फोन निकाल कर तोड दिया और स्थानीय फान की तार काट दी। वहा पडे फैक्स कम्प्यूटर आश्रम के सभी कागजात एव कैश ले लिया और दो मिनट के अन्दर आश्रम छोड कर निकल जाओ वरना जान से मार दूगा। बार बार जान से मारने की धमकी से डरा हुआ मै बाहर आ गया। मुझे और मेरी पत्नी को गाडी मे बिठा दिया और आश्रम के पीछे वाले गेट से बाहर ले गए। और वीरेन्द्र शास्त्री मेरी गाडी के पीछे अपनी गाडी जिसका न० यू०ए० ०८२१०२ बदमाशो के साथ बैठे हुए था। वह खडखडी से होते हुए बाईपास ले आए और वहा आकर सलाह किया और फिर बहादुरा बाद निकलते हुए गाडी रोक ली और जान से मारने की धमकी देते हुए कहा कि तुम पानीपत चले जाओ अगर कही पुलिस को रिपोर्ट किया तो तुम्हे और बच्चो को जान से मार देगे। इस सारी घटना की मौखिक सूचना वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को दे दी गई थी। आपसे निवेदन है कि सारी घटना की जाच करके वीरेन्द्र शास्त्री तथा उनके सशस्त्र बदमाशो को दण्डित किया जाए तथा इस घटना की एफ० आई०आर० दर्ज की जाए।

भवदीय

रामस्नेही आर्य प्रबन्धक वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला हरिद्वार

दिनाक २५ १२ २००१

यह बेहद अफसोस जनक है कि ऐसे गम्भीर अपराध के लिए श्री वीरेन्द्र कुमार को जेल के सीखचो मे बन्द रखने की बजाय शीघ्र ही जमानत पर छोड दिया गया। देश और विदेश मे रहने वाले आर्यसमाजियो मे इस बात पर रोष है कि आश्रम जिस पर नौ दशको से ट्रस्ट का निर्विवादित कब्जा रहा है वह वीरेन्द्र कुमार उसके गुण्डे साथिया और भूमि माफिया के कारण विवादित स्थल हो गया है।

एफ०आई०आर० दर्ज कराने के बावजूद पुलिस द्वारा समुचित कार्यवाही न करने के कारण न्याय और व्यवस्था लागू करने वाली मशीनरी पर आर्यसमाजियो के विश्वास को गहरी ठस पहुची है। हम आशा करते है कि ऐसी स्थिति नही उत्पन्न होगी कि जब हजारो आर्य समाजी और देशभर के सैकडो डी०ए०वी० सस्थान लाखो लोगो के लिए पवित्र तथा न्यायसगत कार्य हेतु देशव्यापी आन्दोलन करने पर विवश होगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरांचल का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत अन्तरग बैठक दिनाक २३ जून २००२ मे पारित एक विशेष प्रस्ताव के द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के गठन को स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री यशपाल आर्य मन्त्री श्री देवराज आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार रस्तोगी है।

छत्तीसगढ और झारखण्ड राज्यो के लिए अलग प्रतिनिधि सभाओ के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है आशा है निकट भविष्य मे ही इनके गठन की प्रक्रिया भी पूर्ण हो जाएगी।

– *सम्पादक*

२३ जुलाई जयन्ती पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष - चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ५५६ देशी रियासतो मे से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र मे अलीराजपूर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले मे एक छोटा सा ग्राम था भाबरा। इसी गाव मे प० सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं प० सीताराम जी तिवारी के यहा जुलाई २३ शुक्रबार सन १९०६ को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओ के अनुसार इस बालक का नाम चन्द्रशेखर रखा गया। ५ वर्ष की आयु के पश्चात स्थानीय पाठशाला मे इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण–परिवार के सात्विक सस्कारो के कारण इस बालक मे सस्कृत पढने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिताजी ने उन्हे काशी भेजने मे अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ–निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुच गया। वहा एक गुरुवास मे रहकर वे सस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन छेड दिया था। यह १५ वर्षीय बालक इस आधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था ? काशी मे छिडे आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिस कर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड नहीं सके किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान मे आ गए। उन्हे पकडकर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है ? युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम ? स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता ? मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरो को सुनकर मजिस्ट्रेट को प्रथमत आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को १५ बेतो की सजा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी मे भीगी बेत पडती थी तब प्रत्येक बेत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद महात्मा गाधी की जय। यह देखकर पुलिस कर्मी भी बेत मारते हुए थोडा ठिठक जाते थे। वहा से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियो का हम सामना करेगे। आजाद ही रहे है आजाद ही रहेगे।।

इधर कतिपय हिसक घटनाओ क कारण गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन एकाएक बन्द कर दिया। इसस युवा आन्दोलनकारिया को बहुत ठेस पहुची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय मे अग्रेजो क विरुद्ध आग भडक रही थी। सयोगवश उनकी भेट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी मे हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल मे जो कि अहिसा मे तनिक भी विश्वास नही करता था सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश मे जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य मे एक बडी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रो मे ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। यह दल क्रान्तिकारियो के लिए अस्त्र–शस्त्रो को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते है एक बार चन्द्रशेखर ने बैक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होने काशी मे एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानो पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषो मे कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते है। हमारे चरित नायक चन्द्रशेखर आजाद गोली चलाने मे सिद्धहस्त थे। अपने मित्रो के अनुरोध पर उन्होने पेड की टहनी के एक बडे पत्ते मे पाच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियो के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) मे उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था म दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला तब उन्हान कुछ रुपये आजाद को उनक माता पिता को भेजन के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था ओर क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियो के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–मा के पुत्रो की अधिक चिन्ता थी। उन्होने यह राशि राष्ट्र देवो भव कहकर इदम न मम के भाव के अनुसार क्रान्तिकारिया पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल चन्द्रशेखर आजाद अशफाक उल्ला खा अन्य क्रान्तिकारियो के सहयोग से ६ अगस्त १९२५ को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ०प्र०) मे रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अग्रेजो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड मे अनेक क्रान्तिकारी पकडे गए। परिणामत रामप्रसाद जी 'बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खा को फासी की सजा सुना दी गई। किन्तु सोभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद व पुलिस न पकड सकी। इस भयक काण्ड एवम परिणाम के कार क्रान्तिकारी दल छिन–भिन्न हो गय

इतन पर भी चन्द्रशेखर आजा तनिक भी निराश नही हुए वे महा क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनाय दामोदर सावरकर के निकट उचि परामर्श लेने गए। वीर सावरकर उन्हे ढाढस बधाया तथा क्रान्तिका दल को पुनगठित करन का पराम। दिया। वे अब पुन सगठन मे ७ गए। प्रसगवशात झासी मे उनकी भ भगतसिह तथा राजगुरु से हुइ। इत ही नही कुछ समय पश्चात उन बटेश्वर दत्त और अन्य अन क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्ह नये दल का नाम हिन्दुस्त सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रर इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि म सावरकर की ही प्ररणा कार्य कर थी।

अक्तूबर १९२८ म साइम कमीशन भारत आया। इस कमी के सारे सदस्य अग्रेज ही थे इ एक भी भारतीय को नही रखा ग था। यह भारत का बडा भारी अपम था। यह कमीशन बम्बई क पश्च जब लाहौर आया तब रेलवे स्टे पर ही इसका विरोध करने के लि शेरे पजाब लाला लाजपतराय ग अग्रेज पुलिस ने लालाजी प्राणघातक आक्रमण किया। ल की गम्भीर चोटो के कारण लाला की मृत्यु हो गई। विरोध कर जुलूस मे भगतसिह और राजगुरु थे। उन्होने यह काण्ड स्वय अ आखो से देखा था।

भगतसिह तथा राजगुरु ने यह व्रत लिया कि लालाजी के हत पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला ले लेगे तब तक चैन नही लेगे। फिर क्या था योजनानुसार इन द वीरो ने 'खून का बदला खून से लि भगतसिह को पकडने के लिए पुि ने बडा प्रयत्न किया किन्तु उसे निर हाथ लगी। भगतसिह वेश बदल कलकत्ते चले गए। आजाद साधु वेश मे अलख निरजन का नाद व हुए लाहौर से गायब हो गए।

– शेष भाग पृष्ठ ६

पृष्ट ५ का शेष भाग

अग्निशलाका पुरुष - चन्द्रशेखर आजाद

६ अप्रल १९२९ इ० को असम्बली ह पब्लिक सफ्टी बिल प्रस्तुत हाने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरा की हडतालो पर स्थायी रोक लगाना थी। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करन के लिए भगतसिह और बटश्वर दत्त दिल्ली जा पहुचे। यद्यपि इसमे आजाद भी सम्मिलित होना चाहत थे किन्तु नीति के अनुसार उन्हे अलग रखकर सगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दानो वीरो ने असेम्बली की दशकदीर्घा स अग्रेजा की दमन नीति का भण्डा फाडने वाले पर्चे फके तथा खाली बचो पर बम फेक। ये लोग असेम्बली से बाहर ही आत हुए पकड लिए गए। इसके बाद राजगुरु सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर रहे। इधर भगवती चरण वमा की बम फटने से अकाल मृत्यु हा गई थी। इन क्रान्तिकारिया पर मुकदमा चला अन्त म भगत सिह सुखदव तथा राजगुरु को २३ मार्च १९३७ को फासी द दी गई। लार्ड डरविन ने गाधी जी को इसमे हस्तक्षेप कर उन्हे आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गाधी जी ने इस ओर ध्यान ही नही दिया। लार्ड डरविन भी गाधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिसा पर घृणा से उनकी आर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गाधी जी इसमे हस्तक्षेप करते तो इन वीरो को फासी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नही गाधी जी ने काग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर २२ मार्च को ही समाप्त करवा दिया था ताकि काग्रेस मे विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात क्रान्तिकारी दल पुन छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहा रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय मे उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी सकट मे फस गए। बिससर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहा का पुलिस अधीक्षक था को सूचना दे दी कि आज अल्फ्रड पार्क मे आजाद अपने मित्र के साथ वहा मिलेगे। बस सूचना मिलते ही नाट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहा स चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हा गए। फिर क्या था धाय–धाय कर दोनो ओर से गोलिया चलने लगी। आजाद ने अपनी अचूक निशाने बाजी से अनेक पुलिस वालो को ढेर कर लिया। इधर उन्होने भी एक वट वृक्ष की आड ले ली। फिर भी उन्हे चार गोलिया लग गई। पुलिस उन्हे जीवित पकडना चाहती थी। उन्हाने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड मे नही आएगे। जब उनकी पिस्तौल मे अन्तिम गोली रह गई तब उन्होने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी मे मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस २७ फरवरी १९३१ का प्रात साढे दस बजे का था। अग्रेज आजाद से इतने डर हुए थे कि उन्हे पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर मे हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान बलिदान हुआ था उसे आज भी वहा की महिलाए हल्दी ककू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती है। इन पक्तियो के लेखक को भी उस वृट वृक्ष के नीचे पडी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र हे। उन्हे बारम्बार प्रणाम।

२४ जुलाई गुरुपूर्णिमा पर विशेष

गुरुपूर्णिमा : गुरुपूजा का महान पर्व

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

संसार की सभी सभ्य जातियो मे चाहे वे पोवार्त्य देश अथवा पाश्चात्य की हो गुरु को अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसा गुरु एक देशीय अल्पज्ञ अल्प सामर्थ्यवान तथा सीमित क्षेत्र वाला होता है। भारतीय वैदिक वाडमय मे वेद (ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद) मे वैदिक ऋषियो तथा आचार्यो गुरुओ के सम्बन्ध मे अनेक स्थानो मे वर्णन आया है। यद्यपि वैदिक ऋषि मन्त्र दृष्टा थे मन्त्र सृष्टा नही थे इसी कारण ऋषियो ने गुरु के आदि गुरु परमात्मा (ईश्वर) को ही अपना गुरु और आचार्य माना है। यजुर्वेद मे कहा गया है –

ओ३मस नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।

यजुर्वेद अ० ३२। म० १०।

अर्थात – ह मनुष्यो ! वह परमात्मा अपने लोगो का भ्राता के समान सुखदायक सकल जग्त का उत्पादक वह सब कामो का पूर्ण करने हारा सम्पूर्ण लोक ओर नाम स्थान जन्मा को जानता है और जिस सासारिक सुख–दुख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्ष स्वरूप धारण करने हार परमात्मा मे मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते है वही परमात्मा अपना गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करे। इस प्रकार वैदिक ऋषियो न सृष्टि के आदि मे साधारण तथा नैमत्तिक ज्ञान देने के कारण 'परमात्मा को ही आदि गुरु प्रथम गुरु तथा आचाय स्वीकार किया है।

यह भी सत्य है कि सामान्य स मामान्य व्यक्ति को भी ज्ञान की आवश्यकता होती है। अर्थात जीवन के वेकास मे ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु की शरण गृहण करनी पडती है। मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद (शतपथ) के अनुसार ससार मे सर्वप्रथम हमारी जन्मदात्री माता ही हमारा प्रथम गुरु है। गर्भावस्था से लेकर प्राय ५ ६ वर्ष तक बालक/बालिका अपनी माता से ही प्रारम्भिक किन्तु अनिवार्य जो शिक्षा सकेत और सस्कार सीखता है सन्तति पर उसका आजीवन प्रभाव रहता है। इसके पश्चात घुटनो के बल चलना छोडकर जब सन्तान अपने पिता की अगुली पकडकर घर से बाहर देहलीपार कर आगे बढता है तब पिता ही उसका द्वितीय गुरु होता है। परन्तु सन्तान के आग के आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन की उन्नति क लिए तीसरे गुरु आचार्य की आवश्यकता पडती है। आचार्य की विशेषताओ के सम्बन्ध मे कहा गया है – जिसका स्वय का आचार व्यवहार खान–पान तथा उच्चकोटि का पवित्र जीवन हो वही आचार्य कहलाने योग्य होता है। आचार्य के निकट आने के पूर्व उसे गुरु के रूप मे ही स्वीकार करना होता है। आधुनिक शिक्षक शिक्षाकर्मी वेतन भोगी अध्यापक आदि आचार्य काटि मे नही आते है। गुरु–आचार्य ता वह श्रेष्ठ और उच्च कोटि का आचारवान व्यक्ति है जो अपने शिष्य को अपने हृदयरूपी गभ मे रखकर माता के समान गम्भीर तथा सतर्क रहकर तथा पिता क रूप म सासारिक ज्ञान प्रदान करने वाला सदाशयी व्यक्ति होता हे। शिष्य का ऐसी शिक्षा प्रदान करता हे जो स्वय क प्रति सावधान होकर परिवार समाज राष्ट्र तथा विश्व के लिए अत्यन्त उपयोग नागरिक होत' ह। वेदिक सस्कृति मे सर्वागीण उन्नति क पात्र बालक ओर बालिका दोनो समान रूप माने ग्ए हे। बालिका को धार्मिक सुसस्कृत या शिक्षित बनाकर योग्य पुत्री पत्नी माता भगिनी सहयोगिनी के रूप मे देखा जाता है। कहते है – यदि एक बालिका सुशिक्षित एव सुसस्कारवान बन जाती हे तो माना आगमी पीढिया सुधर जाती हे। समाज के विकास और निर्माण म स्त्री शिक्षा की अहम भूमिका है।

इस सम्बन्ध मे इतिहास के परिप्रेक्ष्य मे देखा जाए तो महानपुरुषो के निर्माण मे माता का ही महान योगदान रहा है। गर्भस्थ शिशुओ जैसे अभिमन्यु को चक्रव्यूह की शिक्षा अष्टवक्राचार्य को वेदान्त की शिक्षा माता मदालसा द्वारा अपनी श्रेष्ठ सन्तानो को शुद्धो असि बुद्धो असि निरन्जनो असि की शिक्षा देकर ब्रह्मऋषि बनाने वाली माताए ही है। ससार माया परिवर्जितो असि की शिक्षा देकर माता मदालसा ने ससार मे नारी जाति का मस्तक सदा के लिए ऊचा कर दिया है। इतना ही नही विदेशो मे नेपोलियन गीटू, प्रिन्स बिस्मार्क को ऊचा और वीर बनाने मे उनकी माताओ का ही हाथ रहा हे।

दूसरी ओर आधुनिक युग के महान क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द स्वामी विवेकानन्द के गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहस वीर सावरकर के गुरु स्वामी अच्युतानन्द तथा हिन्दूजाति की रक्षा पक्ति बनाने वाले गुरु नानक देश के जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र है। इनके अतिरिक्त वीर शिवाजी का निर्माण माता जीजाबाई ओर समर्थ स्वामी रामदास ने किया। इन महान विभूतियो को गुरु कहा जाता है जिन्के शिष्यो ने परिवार समाज राष्ट्र धर्म और ससार का मस्तक ऊचा कर दिया।

विगत ७५० वर्ष की मुस्लिम तथा २५० वर्ष की अग्रेजो की परतन्त्रता अर्थात विगत एक हजार वर्ष की राजनीति मानसिक तथा आर्थिक परतन्त्रता के कारण इस दश को बहुत कुछ गवाना पडा। मैकाल मेक्समूलर तथा कार्ल मार्क्स ने भारत की अस्मिता को ही जडमूल से नष्ट करने म कोइ कसर नही छाडी। इतनी लम्बी दासता के बाद भी इस देश मे गुरु तथा गुरुत्व का महत्व कम नही हुआ। आज भी प्रत्येक आषाढ मास की पूर्णिमा का गुरु पूणिमा क पवित्र अवसर पर गुरु को श्रद्धपूवक स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा आर कृतज्ञता प्रकट की जाती है। इनकी स्तुति करते हुए

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवा महेश्वरा । गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मे गुरुवे नम ।।

उपरोक्त पक्तिया सस्कृत क एक महान कवि द्वारा रची गई ह। इसका सामान्य सा यह अर्थ है कि इस विश्व का उत्पादक ब्रह्मा पालन पोषण करने वाला विष्णु तथा प्रलय लाने वाला महेश है। वही एक मात्र स्तुति तथा उपासना करने योग्य है। वही प्रभु गुरुओ का गुरु है। उसे हम सब श्रद्धापूर्वक नमन करते है।

समय परिवर्तनशील है। इस परिवर्तनीयता का प्रभाव उपरोक्त श्लोक पर भी पडा। इस अर्थगार पर आरोपित कर गुरु की महिमा–मण्डन की गई है। वस्तुत गुरु अत्यन्त पूज्यनीय श्रद्धा के योग्य तथा मार्गदर्शक होता है। ऐसे गुरु का अत्यधिक सम्मान होना चाहिए। श्रद्धा क योग्य गुरु की वन्दना न केवल गुर पूणिमा अपितु प्रत्येक दिन प्रात ओर साय होना चाहिए। पूज्यनीय और श्रद्धय गुरु वे हाते है जो अपन श्रद्धालुओ शिष्यो तथा भक्तो को धर्म अर्थ काम ओर मोक्ष का तथा यम–नियम सयम का मार्ग बताकर परमात्मा का भक्त वनाव। जब तक इस प्रकार क उच्च काटि क गुरु रहे तब तक यह देश विश्व का गुरु बना रहा।

दुर्दैव से जब कथित गुरुओ ने सर्वप्रथम अपनी पूजा प्रारम्भ कर अपने वचनो को ही ब्रह्म वाक्य कहना शुरु कर दिया तथा भक्त और परमात्मा के बीच मे बिचौलिया बनना प्रारम्भ कर दिया तब से मानव जाति का आध्यात्मिक–पतन प्रारम्भ हो गया। सम्प्रति हमारे देश मे आज गुरुओ की भरमार है। कहते है इस समय देश मे प्राय ८०० से भी अधिक तथा कथित गुरु हे। ये चमत्कार अपनी पूजा तथा ऐश्वर्य इकटठा करने मे एक दूसरे से आगे जान की होड मे है।

किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है – जब किसी समाज और राष्ट्र मे व्यक्ति पूजा का ज्वार चढने लगता है तब समाज जहरील साप के समान अनक कुरीतिया अन्धविश्वासो तथा रूढिया से जकड जाता है। य रूढिया अन्धविश्वास तथा सामाजिक कुरीतिया न केवल व्यक्ति अपितु परिवार समाज ओर कालान्तर मे राष्ट्र की स्वतन्त्रत' ओर अखण्डता को भी छिन्न भिन्न कर दती है। इस जहरीले साप को मार देना ही श्रेयस्कर ह'गा।

सम्प्रति स्वत त्रता प्राप्ति के अर्द्धशतक के पश्चात भी हमार यहा कथित गुरुओ की सख्या बढती ज' रही है। बिचौलिये अपना काम कर रहे है ओर समाज की उन्नति म रोडे अटका रहे है। यदि इन तथा कथित भगवानो तथा बिचौलियो की बाढ को न रोका गया तो भविष्य कैसा होगा इसका स्वय अनुमान लगाया जा सकता हे।

अतएव इस पवित्र गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हम उच्च काटि के ऐसे गुरु का चयन करे उनका पूजन कर तथा अभिवन्दना करे जो हमे परमात्मा का सच्चा भक्त बनाकर उच्च कोटि का आध्यात्मिक ज्ञान देने मे सक्षम हो। वस्तुत ऐसे महानयोगी आध्यात्मिक तथा सन्त पूज्यनीय है जो 'गुरु के नाम पर 'गुरुडम' से दूर रहकर मानव जाति की सेवा का उपदेश करते हैं। इस पुनीत अवसर पर विश्व के सभी महानगुरुआ ऋ 'ुनिय की अभिवन्दना के साथ उन गुरुओ के गुरु महान परमात्मा का हमारा सादर प्रणाम है।

– सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर इन्दौर ८ (मध्य प्रदेश)

स्वास्थ्य चर्चा

गम्भीर रोगों का लक्षण है पीलिया

– डॉ० जे०एल० अग्रवाल

पीलिया रोग आम समस्या है। पर वास्तव मे यह स्वय रोग नहीं बल्कि रक्त यकृत पित्त नली पित्ताशय के रोगो का लक्षण होता है। रक्त मे लाल रक्त कोशिकाओ का निरन्तर निर्माण होता रहता है और पुरानी टूटती रहती हैं। इनमे मौजूद हीमोग्लोबिन के टूटने से बिल्यूरुबिन रसायन का निर्माण होता है। यह प्रक्रिया मुख्यत तिल्ली मे मैक्रोफोन कोशिकाओ द्वारा की जाती है। बिलिरुबिन रक्त से लिवर कोशिकाओ द्वारा ले लिया जाता है जहा पर इसका युग्मन होता है। लिवर से युग्मित बिलिरुबिन निकल कर पित्त नली द्वारा पित्त लवण खनिज इत्यादि से मिलकर पित्ताशय मे इकटठा हो जाता है। भोजन जब छोटी आत मे पहुचता है तब पित्त आत मे पहुचता है।

कुछ मात्रा मे युग्मित बिलिरुबिन मल के साथ शरीर से बाहर निकल जाता है मल का रग मुख्यत इसी कारण मटमैला भूरा होता है। काफी मात्रा मे बिलिरुबिन पुन अवशोषित होकर रक्त मे मिल जाता है फिर मूत्र द्वारा असर्जित कर दिया जाता है मूत्र का हल्का पीला सा रग भी इसी की उपस्थिति के कारण होता है। सामान्यता रक्त मे बिलिरुबिन की मात्रा ०८ मि०ग्रा० प्रति १०० मि० ली० से कम होती है जब यह मात्रा बढ जाती है तो पीलिया कहलाती है। पर आखो त्वचा का पीला रग रक्त मे इसके स्तर के २ स २५ मि०ग्रा० होने पर ही स्पष्ट होती है। पीलिया अनेक रोगो का लक्षण होता है अत पीलिया मरीजो मे जाचो द्वारा कारण जानकर उपचार करवाने से ही रोग का स्थायी उपचार सम्भव है।

हीमोलिटिक पीलिया किसी भी कारण से यदि लाल रक्त कोशिकाये तेजी से टूटने लगती हैं तो पीलिया हो जाता है। रक्त कोशिकाओ हिमोग्लोबिन मे असामान्यत या इनके वातावरण मे बदलाव रसायन जहरीले तत्वो जीवाणु के दुष्प्रभाव से इस तरह की पीलिया मे मूत्र का रग सामान्य पर मल का रग गहरा भूरा होता है। जाचो से लिवर स्वस्थ पाए जाते है।

हिपेटिक पीलिया यकृत की बीमारियो – वायरस हिपेटाइटिस सिरहोसिस सक्रमण जहरीले तत्वो के कारण यकृत के क्षतिग्रस्त होने लिवर कैसर लिवर फेलेयर इत्यादि कारणो से बिलिरुबिन का युग्मन नहीं हो पाता इस दशा मे होने वाले पीलिया को हिपेटिक पीलिया कहते हैं। इस रोग मे पेशाब का रग गहरा पीला और मल चिकना होता है। यकृत की कार्य क्षमता जाचो द्वारा कम पायी जाती है।

आबस्ट्रक्टिव पीलिया यह पीलिया यकृत से पित्ताशय या पित्ताशय से आतो तक की नली मे पथरी सक्रमण कैंसर इत्यादि कारणो से रूकावट आने के कारण होती है। इस दशा मे मूत्र का रग गहरा पीला मल का रग सफेद या मिटटी के रग जैसा और चिकना होता है। रोग की शुरूआत मे लिवर की कार्यक्षमता सामान्य होती है।

नवजात शिशुओ मे पीलिया
नवजात शिशुओ मे मुख्य रूप से जो समय पूर्व कम वजन के अपरिपक्व जन्मे है तो जन्म के २–३ दिन बाद हल्का पीलिया ग्रसित हो सकते है। वैज्ञानिको के मतानुसार यह पीलिया शिशुओ मे यकृत के अपरिपक्व होने के कारण होती है। यह ७ से १० दिन मे स्वत ही या शिशुओ को अल्ट्रावायलेट रश्मियो की सिकाई देने से लुप्त हो जाती है।

पीलिया के सामान्य कारण पीलिया लक्षण है स्वय रोग नही जोकि अनेक रोगो के कारण हो सकता है। सबसे सामान्य कारण हिपेटाइटिस–ए वायरस के सक्रमण का कारण पीलिया रोग है। यह प्रदूषित भोजन पेयजल दूध सेवन से होता है तथा स्वत ही अधिकाश मरीज स्वस्थ हो जाते है। हिपेटाइटिस बी०डी० इत्यादि वायरस से सक्रमण ज्यादा गम्भीर रोग करता है वह प्रदूषित सीरिज मे इजेक्शन लगने प्रदूषित रक्त चढने सक्रमित मा से गर्भस्थ शिशु सक्रमित व्यक्ति से यौन सम्बन्ध बनाने से फैलता है। मलेरिया रोग मे भी रक्त कणिकाए तेजी से टूटने लगती हैं और मरीज पीलिया ग्रस्त हो सकते है।

लम्बे समय तक शराब पीने से लिवर क्षतिग्रस्त हो सकते है। जिससे मरीजो को फैटीलिवर सिरहोसिस लिवर फेलेयर होने से पीलिया हो जाता है।

बचाव के उपाय

- पीलिया ज्यादातर गम्भीर रोग का सकेत हैं अत मरीजो को लापरवाही नही करनी चाहिए।
- अचानक पीलिया होने का सबसे प्रमुख कारण वायरल हिपेटाइटिस ए से सक्रमण है। यह रोग सक्रमित भोजन जल पेय दूध के सेवन से होता है। अत भोजन जल दूध को मक्खी धूल मल चूहो कॉकरोचो से प्रदूषित होने से बचाए।
- हिपेटाइटिस बी गम्भीर रोग है। इसका प्रकोप बढ रहा है अब हर व्यक्ति को इसके टीका लगवाने का परामर्श दिया जाता है।
- शराब न पिये। शराब सेवन करने वालो को नियमित अन्तराल मे लिवर के कार्यो का परीक्षण कराना चाहिए।
- कोई भी दवा चिकित्सक के परामर्श बगैर उपयोग न करे।
- पित्ताशय मे पथरी सक्रमण मोटापा अत्यधिक कोलस्ट्राल वसा के सेवन से पीलिया होने का ज्यादा भय रहता है अत सतुलित स्वच्छ भोजन का सेवन करे।
- कुछ पीलिया जैसे वायरल हिपेटाइटिस के कारण होने वाला पीलिया ज्यादातर मरीजो मे बिना उपचार के कुछ दिनो मे स्वत ठीक हो जाता हे।

कन्या-महिला वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न

उदयपुर। आर्यसमाज हिरण मगरी उदयपुर की ओर से महाराष्ट्र के विद्वान स्वामी सकल्पानद सरस्वती के सान्निध्य मे १२ जून से १८ जून २००२ तक सात दिवसीय कन्या महिला वेदिक सस्कार शिविर का आयोजन किया गया। आवासीय इस सात दिवसीय शिविर म स्वामी जी ने वेद–उपनिषद गायत्री महामन्त्र ईश्वर ईश्वर के अनेक नाम और मुख्य निज नाम ओ३म की व्याख्या जीवन निर्माण ईश्वरीय ज्ञान वेद वेद एव शास्त्र सोलह सैस्कार एव महत्व अन्ध श्रद्धा निर्मूलन वैदिक यज्ञ वैदिक धर्म एव सस्कृति वेद मे नारी आर्यसमाज वैदिक मर्यादा व्यक्तित्व विकास स्वाध्याय क्यो दिनचर्या कैसी सस्कार–सस्कृति एव सभ्यता आदि गूढ विषयो को सरल ढग से व्याख्यायित किया।

स्वामी सकल्पानन्द जी के साथ ही अन्य सत्रो मे दर्शन योग महाविद्यालय रोझड (गुजरात) के आचार्य विवेक भूषण जी ने अविद्या दुखो का मूल कारण पर व्याख्यान दिए। श्री प्रमोद जी झवर न उपभोक्ता सरक्षण पर डा० अजीत ने परिवार का सुसगठित रखने पर बल दिया वही श्रीमती सुषमा कुमावत ने टूटते परिवार को रोकने की बात कही। श्री अशोक आर्य ने खाद्य पदार्थों मे मिलावट से सावधान किया। राजकुमारी आसवानी ने प्राथमिक स्वास्थ्य की जानकारी दी। समापन समारोह के मुख्य अतिथि पश्चिम क्षेत्र सास्कृतिक केन्द्र के निर्देशक श्री विश्वास मेहता ने भारतीय गरिमामय सस्कृति को उजागर किया। आरम्भ मे आर्यसमाज के प्रधान जितेन्द्र पाल शर्मा एव मन्त्री डॉ० अमृतलाल तापडिया ने स्वागत किया। इस अवसर पर डॉ० प्रेमचन्द्र गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सचालन श्रीमती शारदा गुप्ता ने किया। अन्त मे वरिष्ठ उप प्रधान डॉ० रवीन्द्र वर्मा ने धन्यवाद किया।

गुरु विरजानन्द दिवस "गुरु पूर्णिमा"

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर जि० जालन्धर २४ जुलाई २००२ बुधवार को गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर मे गुरु विरजानन्द दिवस (गुरु पूर्णिमा) का आयोजन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति **श्री स्वतन्त्र कुमार** जी की अध्यक्षता मे कर रहा है। मुख्यवक्ता **श्री वेद प्रकाश श्रोत्रीय** (दिल्ली) होगे तथा मुख्य अतिथि जालन्धर के प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री रमेश चन्द एव श्री बी०एम० टण्डन होगे।** यज्ञ एव पूर्णाहुति प्रात ८ बजे ध्वजारोहण ६ ३० बजे एव गुरु दक्षिणा सम्मेलन प्रात १० बजे से १ बजे तक होगा। एक बजे ऋषि लगर की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालु आर्यजन अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर सत्सग का लाभ उठाए।

निवेदक

प्रधान	महामन्त्री	आचार्य
हरबस लाल शर्मा	**चतुर्भुज मित्तल**	**यशपाल वर्मा**

पुस्तक समीक्षा

सन्ध्या–प्रवचन

पृष्ठ १२० मूल्य ७५ रु०

लेखक **आचार्य धर्मवीर शास्त्री**
प्राचार्य डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

प्रकाशक **सरस्वती साहित्य सस्थान**
२८५ जागृति इन्क्लेव विकास मार्ग दिल्ली–९२

आचार्य प० धर्मवीर शास्त्री ने सन्ध्या प्रवचन विषयक मानव की जिज्ञासा को तृप्त करने का जो युक्तिपूर्ण विवेचन किया है वह सराहनीय है। प्रस्तुत पुस्तक मे सन्ध्या समय मे अगस्पर्श मे प्राण –प्राण चक्षु–चक्षु श्रोत्र–श्रोत्र ऐसे विचारणीय प्रसगो पर सतर्क गम्भीर विवेचन किया है जो स्तुत्य है।

आचार्य धर्मवीर दर्शन सस्कृत साहित्य के विद्वान है। लेखन शैली गम्भीर है प्रभु–भक्ति का लाभ यह है कि हम अपने को पर्वत के समान विपत्ति आने पर – साहय युक्त पाते हैं कि कमी भी विचलित न होकर –प्रभू को स्मरण करते रहे।

लेखक विचारक विद्वान है आज उनके लेखन विषयक ग्रन्थ भी यादगार में हैं।

प्रस्तुत पुस्तक मे – इन्द्रिय स्पर्श अर्जन मन्त्रो मे ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो में बल की प्रार्थना–प्राणायाम से अमयान्तर व बाह्य वृद्धि के साधन की चर्चा है।

प्रस्तुत पुस्तक पठनीय है। प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं वह ऐसी पुस्तको का प्रकाशन कर जनता का ज्ञानवर्धन करते हैं। आर्यजन पढे और ज्ञानवर्धन करे।

– डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी (जम्मू), श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत

३० जून को आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री कै० देवरत्न जी की अध्यक्षता मे पुरस्कार समारोह सम्पन्न किया। पुरस्कार स्वरूप शास्त्री जी को जीवन पर्यन्त आर्य साहित्य के सृजन हेतु समर्पित जीवन के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हुए स्वर्ण ट्राफी १५००१/– रुपये की थैली शाल एव श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी का सक्षिप्त जीवन परिचय

शास्त्री जी का जन्म १५ सितम्बर १६३८ को उत्तर प्रदेश के अरनिया ग्राम मे सम्पन्न जमीदार परिवार मे हुआ। इनके दादा श्री बलवन्त सिह महर्षि दयानन्द सरस्वती के समकालीन आर्यसमाजी थे। छलेसर गाव मे महर्षि दयानन्द आये थे वहा के ठाकुरो को उन्होने आर्यसमाजी बनाया। वहा से अरनिया गाव मे आर्यसमाज आया। बाद मे शास्त्री जी के पिता जी व श्री कर्णवीर सिह सच्चे आर्यसमाजी बने। उन्होने वानप्रस्थ के बाद सन्यास आश्रम मे प्रवेश किया। स्वामी सर्वानन्द जी से दीक्षा लेकर स्वामी सुकर्मानन्द बने तथा कई प्रदेशो मे आर्यसमाज का प्रचार कार्य किया। पिता श्री ने आर्यसमाज का विद्वान बनाने के उददेश्य से शास्त्री जी को गुरुकुलो मे पढाया। गुरुकुल महाविद्यालय सूर्यकुण्ड बदायू से व्याकरण वाचस्पति एव बनारस से नव्य व्याकरण शास्त्री पास की। गुरुकुल महाविद्यालय से विद्याभास्कर करके सस्कृत एव हिन्दी से एम०ए० की परीक्षाए उत्तीर्ण कीं। उन्होने महत्वपूर्ण कार्य त्रैतवाद दर्शन पर शोधग्रन्थ लिखकर किया जिसपर उन्हे पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई। अब तक शास्त्री जी की १२ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। ३ पुस्तके अप्रकाशित है।

डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री ने अपने जीवन के ४५ वर्ष आर्यसमाज के प्रचार प्रसार एव आयसाहित्य लेखन मे लगाये है। सैकडो लेख आर्य पत्र पत्रिकाओ के लिए लिखे हैं। उन्होने जम्मू मे रहकर भी सम्पूर्ण भारत मे जा जाकर प्रचार कार्य किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की स्थापना करके वे इस सभा के कई वर्षो तक मन्त्री एव प्रधान बनते रहे। उन्होने वही से गोरक्षा के लिये जेल यात्रा भी की। जम्मू काश्मीर मे सत्यार्थ प्रकाश पर लगी पाबन्दी को हटाने मे वे अग्रणी रहे। शास्त्री जी को – सार्वदेशिक सभा ने त्रैतवाद का उद्‌भव और विकास इस शोधग्रन्थ पर दयानन्द पुरस्कार प्रदान किया। सान्दिपनी राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठानम उज्जैन ने जम्मू काश्मीर के सवश्रेष्ठ वैदिक विद्वान के रूप मे सम्मानित किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न जी डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी को श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार की स्वर्ण ट्राफी भेट करते हुए। साथ मे खडे है श्री कनक भाई जी आसर।

शास्त्री जी वर्तमान मे सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सदस्य तथा सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के मन्त्री है। शास्त्री जी अध्यापक योगशिक्षक साधक कवि वैदिक एव दार्शनिक प्रवक्ता एव आर्य सिद्धान्त मर्मज्ञ है। उनकी पाच पीढियो मे आर्यसमाज रहा है। उनके दोनो भाई दोनो सुपुत्र एव पौत्र आर्यसमाज से जुडे हुए हैं। उनकी धर्म पत्नी शान्ति देवी स्त्री आर्यसमाज दयानन्द मार्ग जम्मू की प्रधाना है। शास्त्री जी का दुर्गुण और दुर्व्यसनो से रहित प्रेरणादायक जीवन है।

– डॉ० सोमनाथ शास्त्री प्रधान
यशप्रिय आर्य महामन्त्री
आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई।

धर्मरक्षा महाभियान पुनर्मिलन (शुद्धि) के लिए अपील

हमारे राष्ट्रीय राजनेताओ की अदूरदर्शिता ओर पदलोलुपता से विदशीमत इसाइ मुसलमान बढते जा रहे है। इसी के फलस्वरूप पाकिस्तान और बगलादेश बने। देश मे जहा–जहा इन विदेशी मतोका बहुमत है वहा–वहा पृथकता की माग हो रही है और आतकवाद फैल रहा है। नागालैण्ड मिजोरम त्रिपुरा आदि मे तो उनका पूर्ण बहुमत हो ही गया है। देश के अन्य कई प्रान्तो मे भी जैसे आसाम बिहार झारखण्ड उडीसा छत्तीसगढ आदि अनेक प्रान्तो मे भी ये मौलवी और पादरी विदेशी पैट्रोडालर के बल पर गरीब लोगो के धर्म को खरीदकर अपने मतो को फैलाने के लिए पूरी शक्ति से लगे हुए हैं। ऐसे समय मे हमे भी सक्रिय होना चाहिए। यदि देश की एकता प्रेमी जनता हमे कुछ सहयोग दे तो हम इस बढते तूफान को कुछ रोकने का प्रयत्न करेगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उत्कल वैदिक यतिमण्डल गुरुकुल आमसेना के द्वारा धर्मरक्षा महाभियान (शुद्धि) कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम को तीव्र गति देने के लिए इस वर्ष के लिए हमे निम्न सामग्री तथा आपका भरपूर सहयोग चाहिए –

वाहन व्यवस्था – इसमे एक यूटीलिटी गाडी एक मार्शल महिन्द्रा जीप और तीन मोटर साईकल। इनका लागत मूल्य लगभग १ ,०००० ०० इन ने जीपो का इन्धन तथा मरम्मत ड्राईवर के वेतन आदि हेतु २५,०००० ०० १० प्रचारको का वेतन ओर माग व्यय आदि का वार्षिक खर्च ३०००० ०० पुनर्मिलन (शुद्धि) सस्कार पर प्रति व्यक्ति एक नया वस्त्र तथा भोजन आदि पर १०० व्यक्ति की दर स १० हजार व्यक्तियो के शुद्धि सस्कार पर १०००००० ०० शुद्धि क्षेत्र मे आगनबाडी खोलने के लिए तथा स्टेशनरी आदि विविध व्यय १५,०००० ०० कुल राशि २७००००० ०० ।

निवेदक

अनादि वेदसेवक मन्त्री
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती प्रधान
स्वामी धर्मानन्द सरस्वती सचालक
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

सामाजिक कुरीतियों व अपसंस्कृति के निवारणार्थ विचार संगोष्ठी

आर्यसमाज चौक अर्जुनपुरा डीगगेट मथुरा के सभा भवन मे डॉ० चद्रकिशोर पाठक की अध्यक्षता मे सामाजिक कुरीतियों एव अपसस्कृति के निवारणार्थ आर्य समाज की भूमिका विषयक विचार सगोष्ठी वैदिक यज्ञ के उपरान्त आयोजित की गई जिसमे मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार श्री मुरारी लाल अग्रवाल ने समाज मे अमरबेल की भाति बढती नित नवीन बुराइयो की ओर ध्यान आकर्षित कराया और कहा कि मात्र कथन या विचार विमर्श से ही नहीं अपितु रचनात्मक ढग से इनके निवारण का प्रयास किया जाये। आर्यसमाज कृष्णानगर के मन्त्री श्री भजनसिह सिसौदिया ने स्व० दिनकर और गुप्त जी की काव्य रचनाओ की प्रेरक पक्तियो को उद्धृत कर आर्यसमाज के शानदार अतीत का स्मरण दिलाया और विश्वास व्यक्त किया कि दृढ सकल्पित होकर ही हम अपने उददेश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर योगशिक्षक डॉ० रमाशकर शिरोमणि मन्त्री डॉ० सत्यदेव आजाद डॉ० श्याम श्रोत्रीय युवा शिक्षक श्री के०सी० यादव आर्य प्रचारक श्री ओमप्रकाश त्यागी डॉ० रामसिह शास्त्री पथिक आर्यसमाज के प्रधान श्री रमेश चद्र आर्य ने भी अपने उद्बोधनों से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

अध्यक्षीय सम्बोधन मे डॉ० चन्द्रकिशोर पाठक ने कहा कि सामाजिक कुरीतियो एव अपसस्कृति के विरुद्ध एक जुट होकर सघर्ष करना अपेक्षित हैं डॉ० पाठक ने आगामी सतति के उत्तम सस्कारो हेतु गुरुकुलीय शिक्षा पर बल दिया। विचार गोष्ठी मे प्रकृति चिकित्सक श्री जोगेन्द्र सिह और ब्रजमोहन लाल माथुर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा के आरम्भ मे सरक्षक श्री पूरनचन्द अग्रवाल ने सभी अभ्यागतो का स्वागत किया। इस सगोष्ठी सभा मे सर्वश्री विश्वनाथ आर्य प्रेमसिह सोमवशी विजय गुप्ता डॉ० दीपक शर्मा एस०एन० अग्रवाल लक्ष्मी नारयण ओमप्रकाश कानोडिया यशपाल सूद शिम्भूनाथ वर्मा पकज सोमवशी व श्रीमती मनोरमा अग्रवाल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। शातिपाठ के पूर्व उपमन्त्री श्री महावीर आर्य ने सभी आगन्तुको के प्रति आभार व्यक्त किया। विचार सगोष्ठी का सचालन मन्त्री डॉ० सत्यदेव आजाद ने किया।

हासी हल्का के हर गाव मे आर्यवीर दल का गठन होगा – शास्त्री

आर्यवीर दल हासी के सक्रिय कार्यकर्त्ता एव वैदिक विद्वान आचार्यप्रवर प० रामसुफल शास्त्री ने आर्यवीर दल हासी के दसवे वार्षिक उत्सव के दौरान बोलते हुए घोषणा की कि हासी हल्के के हर गाव मे आर्यवीर दल की इकाई का गठन किया जाएगा। जिसका मुख्यालय हासी होगा। श्री शास्त्री जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आज की युवा पीढी दिशाहीन व पथभ्रष्टता के कगार पर खडी है और पुराने आर्यसमाजी धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे है। यदि आर्य वीरो को आगे नहीं लाया जाएगा ता आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल नही बन सकता। यह विज्ञप्ति जारी करते हुए दल के प्रेस सचिव राजेश शर्मा ने बताया कि श्री शास्त्री जी के प्रयास से खाण्डा सीसर खरबला मिलकपुर सिसाय रोहनात आदि कई गाव मे आर्य वीर दल का गठन किया जा चुका है। उन्होने सम्बोधित करते हुए कहा कि अधिक से अधिक आर्य वीर तैयार करके अगले वर्ष आर्य वीर दल का प्रान्तीय सम्मेलन हासी मे करने का प्रयास किया जाएगा।

– मन्त्री
आर्यवीर दल हासी

'गुजरात में साम्प्रदायिक तनाव पर 'आर्य नीति' एवं अग्निवेश के विचार उचित नहीं

घर के झगड़े को विदेशियों के हाथ सौंपना देशद्रोह है

श्री सत्यव्रत जी सामवेदी,
सम्पादक आय नीति
आर्यसमाज राजा पार्क
जयपुर (राजस्थान)

सप्रेम नमस्ते

आपका आय नीति का अक ३३ दिनाक २१–५–२००२ का प्राप्त हुआ। जिसमे स्वामी अग्निवेश जी के अग्रेजी मे छपे पत्र को पढा वे इस विषय को यू०एन०ओ० तक ले जाना चाहते हे। यह अच्छा नही है। घर के झगडे को विदेशियो के हाथ सौपना देशद्रोह है।

मुझे दुख होता है कि दिनाक २७–२–२००२ के गोधरा प्रकरण के बाद आपने गुजरात और उसकी सरकार को बदनाम करने का एक दृढ सकल्प कर लिया है।

मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना हे कि आप टी०वी० आर विदेशी मीडिया के प्रभाव मे आए बगेर पूरे मामले के पहलुआ के पीछे छिपी हुई सच्चाई पर गौर करे ओर महर्षि दयानन्दजी के प्रबाधित सिद्धान्तो का पूर्णत पालन करके एक सच्चे आर्य समाजी का उत्तरदायित्व निर्वहन करने की कृपा करे।

आर्यसमाज का नियम है सत्य को ग्रहण करना ओर असत्य को छोड देना। परन्तु आपकी वाणी और लिखावट इस सिद्धान्त के विपरीत है। आप सत्य को ग्रहण करने से डरते है ओर असत्य को ग्रहण करते है। यह मुझे आर्यनीति का २१ ५ २००२ का पहला और दूसरा पन्ना पढकर लगा।

आर्यसमाज का एक और सिद्धान्त यह है कि सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। गुजरात के दगो के बारे मे क्या आपका लेखन एवम सपादन इस सिद्धान्त के अनुरूप है ? सिर्फ एक पहलू को उजागर करके सरकार की हिन्दू समाज की निन्दा करना कितना उचित है ? जिस प्रकार की तालीम और मजहबी जहर शस्त्रो एव विस्फोटक पदार्थो की जानकारी एवम उपयोग की तालीम सरहदी राज्यो के कई मदरसो मे दी जाती है इस प्रकार के तथ्यो का राज्य एवम केन्द्र सरकार के गुप्तचर तन्त्रो द्वारा पर्दाफाश किया गया है। जिस तरह मोदी सरकार की निन्दा करना आपने अच्छा समझा क्या इस तरह उक्त बात निन्दापूर्ण नहीं है ? हिन्दू समाज सदियो से सहिष्णुता के लिए दुनिया भर मे मशहूर है और उसका नाजायज फायदा निन्दा के याग्य नही ह ?

आप तो सम्पादक हे ओर आपसे समदृष्टि की अपेक्षा समाज को रहती हे। मे सक्षिप्त मे उदाहरण सहित कुछ किस्स लिखता हू, जिसक लिए आपकी समदृष्टि की अपेक्षा हे।

यह सच हे कि गोधरा काण्ड के बाद सामूहिक हिसा की जो दो चार छोटी बडी वारदाते घटी वो बिल्कुल स्वाभाविक प्रतिशोध और प्रतिकार था और वो निन्दनीय था। परन्तु गुजरात सरकार ने दगे दबाने की जो कार्यवाही दृढतापूर्वक की वह भी प्रशसनीय थी।

मैने आपको पहले पत्र लिखा था उसके बाद राजकोट जिले की वाकानेर तहसील (जो महर्षि दयानन्दजी की जन्म स्थली टकारा के पास हे) मे मुसलमान समाज ने एक सम्मेलन के मुख्यप्रधान के सम्मान मे रखा था। उसकी अध्यक्षता करने वाले वाकानेर तहसील के काग्रेसी विधायक श्री खुर्शीद पीरजादा तहसील पचायत के अध्यक्ष फतेह मुहम्मद तहसील पचायत के सदस्य कीरफाण पीरजादा राजकोट जिला पचायत के सदरय जावेद पीरजादा को पक्ष विरोधी प्रवृत्ति के लिए काग्रेस से निकाला गया। (गुजरात मित्र दैनिक दिनाक ५ जून पृष्ठ ६)

क्या यह न्यायिक कदम है ? वास्तव मे काग्रेस ने मुसलमानो को अपना वोट बैक बना रखा है ओर इसे टूटता देखकर वह बौखला रही है।

मेरा आपसे प्रश्न है अगर नरेन्द्र मोदी से मुसलमान समाज इतना खफा होता तो वो इस प्रकार उनका सम्मान क्यो करता।

हकीकत यह है कि जब से गुजरात मे श्री नरेन्द्र मोदी ने लगाम कसी है उसके कारण सरकारी तन्त्र मे इतनी प्रामाणिकता पैदा हुई है कि आज सरकारी खजाने का शत प्रतिशत पैसा योग्य व्यक्ति तक प्रमाणिकता से पहुचता है। जबकि काग्रेस के राज्य मे उस समय के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने स्वय स्वीकार किया था कि सरकारी खजाने से दिए गए एक रुपये मे से केवल १५ पैसे ही सहायता के तौर पर व्यक्ति तक पहुचते हैं बाकी ८५ प्रतिशत बीच मे दलाल तथा राजनेता खा जाते हैं।

भूकम्प पीडित कच्छ के लोगो का पुर्नवास का कार्य पुरजोश से चल रहा है।

सौराष्ट्र प्रदेश मे पीने के पानी की पानी को सोराष्ट्र म दूर–दूर नक पहुचाने म सरकार सफल रही है। क्या यह मोदी सरकार की उपलब्धी नही हे ?

गुजरात के युवक भी इतने उत्साहित हुए हे कि सरदार पटेल के जाने के बाद अब नरेन्द्र मादी का छाटे सरदार कहकर सम्बोधित करते है।

मेरी आपसे नम्र विनती है कि आप गुजरात सरकार की आलोचना करना बन्द करे और सच्चाई को लोगो तक आर्य नीति क माध्यम से पहुचाने का प्रयत्न कर। आय नीति मे स्वामी अग्निवश जी ने आर०एस०एस० की आलाचना भी की हे।

अन्त मे मेरी आपसे एक प्रार्थना है कि आप आय नीति के प्रकाशन मे सकारात्मक लेख लिख यही उचित हे। नकारात्मक अथवा आलोचनायुक्त लेख लिखना मेरे ख्याल से उचित नही है। आगे आपको जो ठीक लगे वही करे।

– मगलसेन चोपडा प्रधान
आर्यसमाज सूरत

सत्यार्थ प्रकाश पढने वाले का कोई भी धर्म परिवर्तन नही कर सकता

– दिलीप सिह जूदेव सासद (राज्य सभा)

छत्तीसगढ की औद्यौगिक महानगरी कोरवा म राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रथम एव द्वितीय वर्ष क सघ शिक्षा वर्ग के समापन समाराह म ११ जून को अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री दिलीप सिह जू देव सासद राज्य सभा ने कहा कि हमार देश मे हिन्दुओ का धम परिवर्तन कर ईसाई बनाने की बहुत बडी समस्या है। श्री जू देव मध्य प्रदेश मे घर वापसी आन्दोलन के सूत्रधार है। जिन आदिवासियो तथा अन्य लोगो को प्रलोभन द्वारा ईसाई बना लिया गया था वे प्रायश्चित करके पुन हिन्दू धर्म मे वापस आना चाहते है उन्हे श्री जूदेव ससम्मान समारोहपूर्वक हिन्दू धर्म मे वापिस लाते है इसी को घर वापसी आन्दोलन कहते है। उन्होने बोलते हुए आगे कहा कि जो महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखित सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर लेगा उसे कोई भी विधर्मी उससे धर्म परिवर्तन नही करा सकता क्योकि वह धर्म के रहस्य को अच्छी तरह समझ लेता है।

आर्यसमाज कोरवा क्षेत्र का एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमे श्रीपाल सिह आर्य डॉ० लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता राम अचल शर्मा व नागेश तौराहा सम्मलित थे श्री जूदेव से मिला तथा उन्हे सत्यार्थ प्रकाश का महत्व बताने के लिए धन्यवाद दिया। श्री जूदेव को उनके कार्यो के लिए साधुवाद दिया उनकी दीर्घायु की कामना की तथा सत्यार्थ प्रकाश व अन्य लघु पुस्तिकाए भेट की। आर्यसमाज के उपरोक्त पदाधिकारी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के मध्य क्षेत्र के क्षेत्र प्रचारक श्री नरमोहन मान्यताओ तथा इस दिशा मे किए जा रहे शुद्धि कार्यक्रम की भी सक्षिप्त मे उन्हे जानकारी दी। उनस यह भी आग्रह किया गया कि श्री जूदेव जी की भाति वे भी सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करे तथा अपने प्रचार के दौरान हिन्दुत्व की रक्षा के लिए लोगो को इस महान ग्रन्थ क स्वाध्याय की प्रेरणा दिया कर। श्री नरमोहन जी ने मिल कर प्रसन्नता प्रकट की तथा अपनी सहमति भी व्यक्त की और आर्यसमाज के कार्यो की प्रशशा भी की।

आवश्यक सूचना

आप सभी को सूचित किया जाता है कि १३ जनवरी १९८२ मे बिहार के ६ बालको को असहाय अवस्था मे आश्रम मे शरण दी गई थी अब वे सभी शास्त्री आचार्य कर चुके है। उन ६ बालको मे से एक आत्मदेव भी है। जिसका नाम विज्ञापनादि आश्रम से छपने वाले प्रचार पत्रको मे व्यवस्थापक आत्मदेव प्रकाशित होता रहा है। अब आत्मदेव को ट्रस्ट एव प्रबन्ध समिति द्वारा अर्थ की हेराफेरी एव अनुशासन हीनता के कारण दिनाक २७ जून बृहस्पतिवार २००२ को आत्मशुद्धि आश्रम से निष्कासित कर दिया गया है।

अत आप सभी से निवेदन है कि आत्मदेव का आश्रम से अब कोई सम्बन्ध नही है। सावधान रहे आत्मशुद्धि आश्रम के नाम से उसको किसी प्रकार का सहयोग देने का कष्ट न करे। आश्रम की कोई जिम्मेवारी नही है।

सधन्यवाद

– जनता सेवक, स्वामी धर्ममुनि

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 21 7 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 18/19 7 2002

वर्ण व्यवस्था बनाम जाति व्यवस्था ?

जेसा कि आप जानते ह कि जातिवाद तथा वणव्यवस्था जाति व्यवस्था के विरोध के नाम पर महर्षि मनु और उनके अमर ग्रन्थ मनु स्मृति का विरोध व अपमान करने क प्रयत्न निरतर जारी हे। ऐसे कृत्यो से राष्ट्र मे विघटनकारी शक्तिया को बढावा मिलता है और राष्ट्र गौरव को भी ठेस पहुचती है। वर्ण व्यवस्था मनु और मनुस्मृति के सबन्ध म फैलाई जा रही भ्रातियो को दूर करने सत्यान्वेषी मानसिकता तथा सत्य को स्थापित करने के लिए इस जनरूचि जनहित से जडे ज्वलत विषय पर १५ सितम्बर २००२ को १ बजे एक सावजनिक राष्ट्रीय सगाष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

वर्णव्यवस्था जाति व्यवस्था जातिवाद मनु व मनुस्मृति आदि के विषय मे जन सामान्य मे जो विभिन्न धारणाय है उनकी समीक्षा समालोचना तथा मूल्याकन विचार विमश तथा परिसवाद आदि के माध्यम से किया जाएगा जिससे कि सगोष्ठी के निष्कर्षो स सभी मतावलबियो मे सहिष्णुता व बधुत्व भाव जगे जिससे लाभावित हो कर राष्ट्रीयता राष्ट्रीय सदभाव शान्ति व राष्ट्र गौरव को बढावा मिल सके।

इस अवसर पर देश भर के प्रसिद्ध विद्वानो वक्ताओ एव विचारको को आमत्रित किया गया है।

इसी अवसर पर सगोष्ठी के उद्देश्यो को व्यापकता व सार्थकता प्रदान करने के लिए सबधित विषय पर एक महत्वपूर्ण स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। अत आपसे सगोष्ठी के उद्देश्य को सार्थक बनाने मे सहयोग देने के लिए अनुरोध है। विषय चयन के लिए निम्न पते पर सम्पर्क कर –

– उमेश राठी सचिव
वेद प्रचारिणी सभा नागपुर (रजि०)
द्वारा आर्यसमाज हसापुरी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग नागपुर ४४०००१८

जिसके हृदय मे दया है, जिसकी वाणी सत्य से सुशोभित है, जिसका शरीर पर लगा हुआ है, कलि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता

आर्यसमाज हसापुरी द्वारा २४ घण्टे १२ महीने वाले प्याऊ का उदघाटन

पिछले दिनो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य ने आर्यसमाज हसापुरी सेन्ट्रल एवन्यू रोड पर राव हरिश्चन्द्र जी आर्य व स्वामी सुमेधानन्द जी सुरेन्द्रपाल जी आर्य की प्रमुख उपस्थिती मे राहगीरो के लिए ठण्डे जल के प्याऊ का उदघाटन किया। समाज के मत्री श्री अशोक यादव ने इस अवसर पर कहा कि यह प्याऊ २४ घण्टे १२ महीने चालू रहेगा इसकी विशेषता यह है कि रोड पर अतिक्रमण नही किया गया है। भवन के ऊपर से ठण्डा पानी पाईप द्वारा निचे आयेगा जिस वजह से जगह भी निचे नही रोकी जाएगी।

कै० देवरत्न जी ने इस अवसर पर कहा कि पानी पिलाना पुण्य का कार्य है लेकिन यह प्याऊ सिर्फ उद्घाटन तक ही सिमित न रहे यह सतत रूप स जनहित मे लोगो की सेवा करता है। समाज क कोषाध्यक्ष श्री सतोष गुप्ता व प्रवक्ता प्रा० अनिल शर्मा ने उपस्थित पदाधिकारियो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम की सफलता मे सर्वश्री ललीत गौर कृष्णकुमार शास्त्री घनश्याम शैलेश श्रीवास सौ तारदेवी यादव आर्य विठ्ठल जी ओमप्रकाश गगोत्री आदि उपस्थित थे।

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

अमृत लाल आर्य नहीं रहे

मण्डी डबवाली – आर्यसमाज मण्डी डबवाली के आधार व कर्मठ कार्यकर्ता तथा यहा की आर्यसमाज के सस्थापको मे से एक स्व० श्री रामअवतार आर्य के सुपुत्र श्री अमृतलाल आर्य का दिनाक १६ जून को आकस्मिक निधन हो गया। उनका दाह सस्कार केरल वैदिक मिशन क महामन्त्री डॉ० अशोक आय ने पूर्ण वैदिक रीति से करवाया। अन्तिम शोक दिवस पर भी डॉ० अशोक आर्य ने हवन यज्ञ सम्पन्न किया तथा स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री श्री भारत मित्र आर्य ने दोनो सस्कारो मे सहयोग दिया।

अन्तिम शोक दिवस पर बोलते हुए डॉ० अशोक आर्य ने प्रभु से उनकी आत्मिक शान्ति की प्रार्थना करते हुए बताया कि अवतार प्रेस के मालिक श्री अमृतलाल जी व उनका परिवार महर्षि दयानन्द सरस्वती के रग म इतना रग गया था कि अपना जाति मूलक नाम ही भूल चुका था। उनके देहावसान पर जब परम्परागत ब्राह्मण ने परिवार के सदस्यो से उनका गोत्र पूछा तो परिवार मे किसी से भी उनके गोत्र का पता नही मिल सका। वह सच्चे अर्थों मे आर्य पिता के आर्य पुत्र थे। आर्य समाज की प्रत्येक गतिविधि मे वह परिवार सहित बढ चढकर भाग लेते थे। आर्यसमाज की सेवा तथा विस्तार की उन्हे सच्चे शब्दो मे लगन थी। आर्यसमाज की क्षेत्रिय गतिविधियो की उन्हे विस्तार पूर्वक जानकारी थी।

हवन यज्ञ के पश्चात उनके बडे बेट ने उत्तराधिकार स्वरूप पगडी पहनी तथा पाचो अविवाहित भाईयो व दोनो बहिनो का भार अपने कन्धो पर उठाने का सकल्प लिया।

– अशोक कुमार आर्य महामन्त्री

एक ईश्वर की उपासना श्रेष्ठ है – स्वामी तत्वबोध

सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी एक ही ईश्वर है तथा हमे उसकी ही उपासना करनी चाहिए। यह बात श्रीमददयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने कही। वे दिनाक ७–७–२००२ को न्यास के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा आयोजित मासिक पारिवारिक सत्सग के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोल रहे थे। उन्होने कहा कि बहु देवतावाद के आधार पर ईश्वर की विविध प्रकार से उपासना की जाती है किन्तु लक्ष्य सबका एक ही है। इस सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी एक ईश्वर है तथा एकेश्वरवाद के आधार पर हमे उसकी ही उपासना करनी चाहिए।

इस अवसर पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न होने के उपरान्त न्यास के सभागार मे पारिवारिक सत्सग प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने तथा सयोजन हुकमचन्द शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम न्यास के भजनोपदेशक श्री कृष्ण कुमार आर्य ने वैदिक विचारो का उदयन होगा सुन्दर हमारा जीवन होगा सुमधुर भजन के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए स्पष्ट किया कि वैदिक सस्कृति की अनुपालना किए जाने पर यज्ञ से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का समाधान सभव हो सकेगा तथा जीवन सुखमय होगा। श्री पूर्णचन्द आर्य ने शरीर मे पच महाभूतो की विद्यमानता व महत्व का वर्णन करने के उपरान्त भजन के माध्यम से स्पष्ट किया कि ईश्वर ने ही सम्पूर्ण सृष्टि की सरचना की है तथा वही हमारा पिता रक्षक व पालनकर्ता है। सुश्री मोदिका शर्मा ने समाज मे नारी के महत्व को प्रतिपादित करने हुए कहा कि वैदिक काल मे नारी को समुचित सम्मान प्राप्त था किन्तु मध्य काल मे नारी के प्रति हीन भावना जागृत हो गई। आज महिलाओ को जो सम्मान व उचित स्थान दिया जा रहा है यह महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज की ही देन हे। श्री विनाद राठोड ने कमाले धर्म धन प्यारे सफर मे काम आयेगा भजन के माध्यम से जीवन मे धर्मोपार्जन के महत्व को प्रतिपादित करने के उपरान्त महर्षि द्वारा समाज पर किए गए उपकारो का स्मरण किया।

सत्सग के सयोजक श्री हुकम चन्द शास्त्री ने कहा कि हम सभी महर्षि दयानन्द के सिपाही है तथा जिस प्रकार प्रबल विरोध के उपरान्त भी महर्षि अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहे हमे भी उनके बताये मार्ग पर चलत रहने की आवश्यकता है। अत मे शाति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम को विराम दिया गया।

– मुनीन्द्र सिह भाटी न्यास प्रवक्ता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)।
ई-मेल aryasabha@vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक १३ २८ जुलाई से ३ अगस्त, २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ श्रा० कृ० १२
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

लोगों के मनों को संगठित करने का प्रयास करें - अब्दुल कलाम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की भारत के 12वें राष्ट्रपति से शिष्टाचार भेंट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल भारतीय गणतन्त्र के १२वे नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम स शिष्टाचार भेट एव शुभकामनाओ के आदान प्रदान के लिए राष्ट्रपति आवास पर पहुचा। इस शिष्टमण्डल मे सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की मन्त्रिणी माता प्रेमलता शास्त्री आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्री इन्द्र कुमार मेहता श्री चमनलाल महेन्द्रू, श्री जोगेन्द्र खटटर श्री रामलाल आहूजा श्रीमती आरती खटटर श्री शशि जेटली एव श्री निरजन सिह चावला शामिल थे।

शिष्टमण्डल की ओर से राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम को अग्रेजी भाषा मे वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश भेट किया गया। भेट करते समय श्री विमल वधावन ने राष्ट्रपति जी से कहा कि विश्व मे विकसित हर प्रकार के ज्ञान विज्ञान का मूल सूत्र वैदिक ऋचाओ मे निहित है। सत्यार्थ प्रकाश के बारे मे सुनते ही राष्ट्रपति जी ने कहा कि मैने इसे अच्छी तरह से और बारीकी से पढा है। समाज मे सत्य–असत्य का निर्णय करने के उद्देश्य से इस ग्रन्थ की रचना हुई है।

राष्ट्रपति जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज के लिए जो कुछ भी किया उसके बदले मे उन्होने कभी किसी प्रतिफल की इच्छा नहीं की। धन पद और यहा तक कि प्रसिद्धी को भी उन्होने कभी अपना लक्ष्य नही बनाया। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए दूरगामी प्रभाव वाले सिद्धान्तो की स्थापना की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल भारत गणराज्य के १२वे नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम को शुभकामना देने के लिए मिला। चित्र मे राष्ट्रपति जी से चर्चा करते हुए श्री विमल वधावन। माल्यार्पण द्वारा राष्ट्रपति जी का स्वागत करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा। शिष्टमण्डल का सामूहिक चित्र जिसमे बाए से आर्य तपस्वी श्री सुखदेव माता प्रेमलता शास्त्री श्री विमल वधावन श्री इन्द्र कुमार मेहता श्री जोगेन्द्र खट्टर, वैद्य इन्द्रदेव, श्री निरजन सिह चावला श्री वेदव्रत शर्मा श्री चमनलाल महेन्द्रू, श्रीमती आरती खटटर श्री शशि जेटली।

श्री विमल वधावन ने राष्ट्रपति जी को बताया कि हजारो की सख्या मे आर्यसमाज मन्दिर तथा आर्य शिक्षण सस्थाए महर्षि दयानन्द जी के मिशन को आगे बढाने के लिए कार्य कर रही हैं।

उन्होने राष्ट्रपति जी से आग्रह किया कि देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर आप देश मे ज्ञान विज्ञान की वृद्धि को भारतीय सस्कृति और विशेष रूप से वैदिक ज्ञान के साथ जोडे रखने क लिए विचार की प्रक्रिया चालू करे।

देश की वर्तमान परिस्थितिया मे आर्यसमाज के लिए किसी विशेष सन्देश की प्रार्थना पर राष्ट्रपति जी ने कहा कि आज हमारा समाज अलग–अलग सोच को लेकर अलग–अलग दिशाओ मे जाता हुआ नजर आ रहा है ऐसे मे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को लोगो के मनो को प्रेम पूर्वक सगठित करने का प्रयास करना चाहिए।

Unite the minds of the people — इस सन्देश को दोहराते हुए राष्ट्रपति जी न कहा कि महर्षि दयानन्द जी न भी इसी को अपना लक्ष्य बनाया था।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के विशेष कार्यकर्ता दिल्ली में सम्मानित

आर्यसमाज की संगठनात्मक सुदृढ़ता के कारण सफल हुआ हरिद्वार महासम्मेलन

गुरुकुल कागडी हरिद्वार के सहयोगी आर्य नेताओ और कार्यकर्ताओ के सम्मान समारोह पर लिए गए चित्र बाए से वैद्य इन्द्रदेव जी को सम्मानित करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन आचार्य यशपाल जी श्री वेदव्रत शर्मा समारोह मे आशीर्वाद देते हुए आर्य तपस्वी सुखदेव श्री सोमदत्त महाजन। ग्लेशियर साहसी दल से वापिस लौटे आर्यवीर दल के सचालक श्री विनय आर्य सम्मान सामग्री प्राप्त करते हुए।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन को सफल करने म सहयोग करने वाले समस्त आय नेत'ओ और कायकताओ का सम्मानित करन की श्रृखला म एक सम्मान समाराह सार्वदशिक सभा कार्यालय के सभागार मे आयाजित किया गया। इस समारोह की अध यक्षता सभा के वरिष्ठ उप्रप्रधान श्री विमल वधावन ने की तथा सचालन सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी भी उपस्थिति थ।

श्री विमल वधावन ने कहा कि किसी भी कार्य के सफल होने का श्रय किसी एक व्यक्ति या कुछ गिने चुने व्यक्तियो को नही जाता बल्कि इसक पीछे आयसमाज रूपी व्यापक सगठन के हर उस सदस्य का भाग होता है जिसने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप म किसी भी प्रकार से स्वय सहयोग दिया हो या दूर बैठकर सफल आयोजन की कामना की हो। प्रत्यक्ष रूप मे कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ को सम्मानित करने के पीछे एक तरफ उनके सहयोग की प्रशसा का उद्देश्य होता है तो दूसरी ओर अन्य महानुभावो को प्रेरणा प्राप्त होती हे कि सामूहिक और सगठनात्मक कार्यक्रम मे हर व्यक्ति को अपने सहयोग की अधिकाधिक आहुति देनी चाहिए।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज के सामने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए महान लक्ष्य है स्वदेश और स्वधर्म के सरक्षण और पोषण के लिए हम अपन प्रत्येक कार्य की योजना बनानी चाहिए। व्यापक प्रचार क इस युग मे हर प्रकार के आधुनिक सचार माध्यमा का प्रयोग करके हमे सदैव आयसमाज की सेवा मे लगे रहना चाहिए।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन मे सहयोग देन वाले आर्य पुरुषो के विशिष्ट कार्यो का उल्लेख करते हुए बारी–बारी से सबको सम्मान स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया। इसी श्रृखला मे निम्न महानुभावो को सम्मानित किया गया।

सर्व श्री सोमदत्त महाजन पतराम त्यागी विनय आर्य राजीव भाटिया सत्येन्द्र मिश्र रोशनलाल गुप्त प्राणनाथ धई सुरेन्द्र रैली शान्ति लाल आर्य महा० रामविलास खुराना बलदेव राज राजेन्द्र दुर्गा राजेन्द्र लाम्बा वैद्य इन्द्रदेव चमनलाल महेन्द्र, जोगेन्द्र खटटर ओ०पी० भटनागर एस०के० भटनागर श्रीमती भटनागर श्रीमती कृष्णा शर्मा डॉ० माहेश्वरी कृष्ण कुमार ढीगरा आजाद सिह एव आर्यवीर दल के श्री वीरेन्द्र आर्य मनोज आर्य अश्विनी आर्य विजय चतुर्वेदी हरिओम आर्य बृहस्पति आर्य नरेन्द्र आर्य सजय आर्य कमल आर्य आदि।

इसी समारोह मे सियाचिन ग्लेशियर की यात्रा से वापस लौटे साहसी दल के कार्यकर्ताओ को भी सम्मानित किया गया। यह कार्यकर्ता १० दिन की यात्रा पर श्री विनय आर्य के नेतृत्व मे गए थे। इस यात्रा की एक विस्तृत रिपोर्ट अगले अक मे प्रकाशित की जाएगी। इस साहसी दल मे निम्न युवक शामिल थे सर्वश्री अश्विनी आर्य वृहस्पति आर्य मनोज आर्य कमल आर्य विवेक गुप्ता प्रेम भाटिया शैलेन्द्र आर्य आदि।

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव तथा आचार्य यशपाल जी ने भी सम्मानित हाने वाले महानुभावो का शुभकामनाए दी। अन्त मे दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हमारे प्रेरणा स्रोत

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा समाज सेवक

स्व० श्री कृष्ण चन्द्र गुप्त

स्व० श्री किशन चन्द गुप्त

आदरणीय श्री कृष्ण चन्द्र गुप्ता जी बहुत ही शान्त स्वभाव सौम्य सात्विक व सादा जीवन वाले व्यक्ति थे। वे समाज सुधारक तो थे ही पर धर्म प्रचार में भी उनकी प्रबल रुचि थी। वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान उपदेशक थे। नित्य प्रति सध्या हवन करते थे।

आखे खराब होने के कारण १९७६ में रेलवे से स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण कर लिया व पूर्ण रूप से आर्यसमाज के कार्यो मे लग गए। अवकाश ग्रहण करने के पश्चात शकूर बस्ती रेलवे कालोनी से सैनिक विहार आ गए। उन्होने सबसे प्रथम कार्य आर्यसमाज सैनिक विहार की स्थापना कर सभा से सम्बन्धित किया व कोई पद न लेकर आजीवन कार्य करते रहे।

सैनिक विहार मे आने से पूर्व वे रानी बाग आर्यसमाज म जाते थे और वनवासी छात्र छात्राओ मे धार्मिक विचार भरकर सस्कारित करने मे तन मन धन से सहयोग करते थे।

उन्होने तिहाड जेल के कैदियो मे सुधार के लिए बहुत धर्म प्रचार किया था। उनके सुपुत्र श्री सुनील गुप्ता तिहाड जेल के सुपरिन्टेण्डेण्ट हैं। उनसे प्रेरणा पाकर व सुश्री किरन बेदी जी के नेतृत्व तथा श्री सुनील गुप्ता के सहयोग से हमने हजारो कैदियो के सुधार हेतु वैदिक सन्यासी व विद्वान भिजवा कर उपदेश करवाए। अन्तिम समय मे भी उन्होने आर्यसमाज के भवन निर्माण के लिए अपने सुपुत्र श्री सुनील गुप्ता जी से आर्थिक सहायता का आश्वासन दिलाया।

वह मेरे प्रेरणा स्रोत थे। मैं अपने परिवार व सम्बन्धियो एवम् दिल्ली की समस्त समाजो की ओर से उस पुण्यात्मा को भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

– राजेन्द्र प्र० दुर्गा

दक्षिण अफ्रीका और आर्यसमाज

– कै० देवरत्न आर्य, *प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली*

१९वीं सदी के प्रारम्भ मे भारतीयो की स्थिति द० अफ्रीका मे ठीक नहीं थी। उस समय भारत से सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी शकरानन्द जी सरस्वती एव भाई परमानन्द जी दक्षिण अफ्रीका गए और हिन्दुओं को सगठित करने के लिए अनेक स्थानो पर आर्यसमाज की स्थापना की। आज वहा के प्राय हर शहर मे आर्यसमाज के भवन हैं और डरबन मे शहर के मध्य में तीन मजिल का शानदार भवन है जो द० अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा का है। साथ ही भव्य इमारत खडी है जिसे वेद मन्दिर के नाम से जाना जाता है। आजकल इस सभा के प्रधान डॉ० रामविलास हैं।

लगभग ६० वर्ष पूर्व डरबन मे स्वामी जी ने आर्य युवक सभा की स्थापना की जिसके अन्तर्गत एक सस्था **"आर्यन बेनेवलेण्ट होम"** (Aryan Benevolent Home) कार्यरत है। आजकल इस सस्था के सचालक सुप्रसिद्ध आर्यनेता माननीय डॉ० रामभरोस हैं।

आर्य युवक सभा के वर्तमान प्रधान श्री पोलटन जी व श्री रामभरोस जी के आमन्त्रण पर मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता के साथ डरबन के लिए दिनाक १८ मई २००२ को एयर मॉरिशस के विमान द्वारा रवाना हुआ। मेरे साथ मेरे छोटे भाई श्री सोम रत्न आर्य की सुपुत्री कुमारी श्वेता भी थी। १६ मई की प्रात हम मॉरिशस पहुचे और लगभग १० बजे जोहन्सबर्ग (द० अफ्रीका की राजधानी) के लिए रवाना हुए। मध्याह्न ३ बजे वहा पहुचकर नेशनल वाईड एयरवेज द्वारा साय ७ बजे डरबन पहुचे। मॉरिशस एयरपोर्ट पर श्री मगरु डॉ० उदयनारायण गगू, डॉ० न्योर श्री राजेन्द्र मोहित आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

डरबन एयरपोर्ट पर अनेक आर्यजन विशेषकर डॉ० रामभरोस जी अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। **हमारे स्वागत के पश्चात हम डरबन स्थित आर्यन बेनेवलेण्ट होम के लिए रवाना हुए। हम वहीं पर २४ दिन तक रहे। अलग फ्लैट में निवास हेतु सुन्दर व्यवस्था थी। डरबन में स्थित आर्य युवक सभा द्वारा सचालित आर्यन होम आर्यसमाज की गौरवमयी सस्था है। आर्य अनाथालय के रूप में उसका प्रारम्भ हुआ। आज उसकी अनेक शाखाए द० अफ्रीका के विभिन्न नगरो मे कार्यरत हैं। डरबन मे लगभग ४ एकड मे स्थित भव्य भवन है। अनेक वार्ड हैं– जिसमे वृद्ध पुरुष व महिलाए विकृत मस्तिष्क के रोगी विकलाग आदि लगभग ४०० व्यक्ति रहते हैं। उनकी देखभाल के लिए ३५० व्यक्तियो का स्टाफ है बहुत बडी धोबीशाला तरणताल खेलो के मैदान फिजियोथैरेपी सेण्टर आदि सारी सुविधाए वहा मौजूद हैं। निवासियो की देखभाल के लिए वहा बडी सख्या में नर्सिंग स्टाफ कार्यरत् है। किसी बडे अस्पताल की सफाई बडे स्नेह व प्यार से वहा रहने वालों की देखभाल बडे–बडे मनोरजन समागृह– आफिस कार्यालय जिसमें लगभग ५० व्यक्ति विभिन्न कार्यों की देखभाल करते हैं। सालाना बजट दो करोड के आसपास है। वहा के चीफ एक्ज्यूकेटिव आफिसर श्री राजेश लक्ष्मण सारे कार्यों को सभालते हैं।** हमारी पूरी द० अफ्रीका की यात्रा मे प्राय सभी स्थानो पर कार के साथ वही हमारे साथ रहे। उन्होने भी इस कार्य हेतु बडी समर्पित भावना से जीवन दिया हुआ है।

एक निश्चित कौंसिल इस अनाथालय के कार्य को देखती है। जिसकी नियुक्ति आर्य युवक सभा करती है। आर्य नेता श्री रामभरोस जी इसके मुख्य सचालक हैं। चौरासी वर्षीय श्री रामभरोस जी वहीं रहते हैं– नियमित जीवन के साथ इस सस्था के लिए समर्पित हैं। ठीक प्रात ८.३० बजे वह कार्यालय पहुच जाते है। साय ६ बजे तक वहीं काम करते हैं। इस व्यक्तित्व के आगे द० अफ्रीका का हर नागरिक नतमस्तक है। इस विशिष्ट सम्मानित व्यक्ति को अनाथालय और उसके बाहर प्रत्येक व्यक्ति सामान्य मनुष्य नहीं वरन देवता के रूप मे देखता है। आपके द्वारा सचालित इस सस्था को देखने के लिए नेल्सन मण्डेला जैसे व्यक्ति भी आते रहे हैं। एक बार सुप्रसिद्ध सिने अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन वहा धन सग्रह अभियान मे शामिल हुए थे। इस सस्था के कार्यों एव रहने वालो की सुव्यवस्था को देखकर उन्होने अपनी ओर से २५ हजार डालर का योगदान दिया। अभी हाल ही मे अपनी एक फिल्म के प्रीमियम पर वे पुन डरबन गए और बिना आमन्त्रण के स्वत ही इस सस्था मे पहुच गए। वहा के निवासियो से मिले। इस सस्था ने उनके लिए अपने ही मैदान मे अब एक हैलीपेड बनाया हुआ है।

एक दिन हम श्री रामभरोस जी व श्री राजेश लक्ष्मण डरबन स्थित भारतीय उच्चायुक्त के कार्यालय मे उनके आमन्त्रण पर जलपान के लिए गए। श्री अजीत कुमार उच्चायुक्त ने अपनी बात करते हुए मुझसे कहा –Capt Arya if you wish to see real contribution of Indians to South Africa you must visit Aryan Benevolent Home उन्हे पता नहीं था मैं वहीं ठहरा हुआ हू।

लगभग ५० वर्ष पूर्व डरबन मे एक होटल था। **श्री रामभरोस जी के प्रयत्न से इस सस्था ने यह होटल खरीद लिया और वहा भी अब इसी प्रकार का मानव कल्याण केन्द्र चल रहा है। हम ६०० कि०मी० दूर जोहनसबर्ग मे गए वहा भी सुन्दर भवनो मे दो शाखाए कार्यरत हैं। डरबन से ३०० किलोमीटर दूर स्थित 'ग्लेनको शहर मे भी बहुत बडी शाखा इस नाम से कार्यरत है। सब कुछ देखने के पश्चात मैंने अपने भाषणो मे कई बार इस बात को दोहराया कि आर्यसमाज के छठे नियम "ससार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।"** इसका व्यावहारिक स्वरूप किसी को देखना हो तो वे डरबन स्थित आर्यन बेनेवेलेण्ट होम की गतिविधियो को देखकर आए। इसमे रहने वाले लगभग ८० प्रतिशत व्यक्ति द० अफ्रिकन्स हैं।

२ जून २००२ को आर्य युवक सभा ने अपनी ६०वीं वर्षगाठ और आर्यन बेनेवेलेण्ट होम की ८१ वीं वर्षगाठ समारोह मनाया गया। इसी समारोह के मुख्य अतिथि के रूप मे मुझे आमन्त्रित किया गया था। समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। ६० कुण्डीय यज्ञ का आयोजन था और लगभग सारे पुरोहित उसमे उपस्थित थे। लोग जोहनसबर्ग आदि स्थानो से भी आए थे।

समारोह के प्रारम्भ मे मैंने दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रीय झण्डा और बाद मे ओ३म ध्वजारोहण किया। पश्चात मुझे मुख्य यजमान के रूप मे यज्ञ पर बिठाया गया।

यज्ञ के उपरान्त डॉ० रामभरोस जी ने स्वागत भाषण दिया। साथ ही उपस्थित भजन मण्डली ने भजन प्रस्तुत किया। समारोह का सयोजन डॉ० हेमराज कर रहे थे। भजनो के पश्चात मैंने ३५ मिनट का भाषण दिया जिसमे आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य की ओर सबका ध्यान आकर्षित कर ए०बी०एच० के अधिकारियो को बधाई दी विशेषकर आर्य युवक सभा के प्रधान श्री प्रेम पोलटन जी व डॉ० रामभरोस जी के कार्यों की प्रशसा की। इसी कार्यक्रम मे प्रसिद्ध प्रवासी सन्यासी भवानी दयाल जी की पौत्री श्रीमती सुधा रामनुथन से भी मिलना हुआ। इस समारोह मे मुख्य–मुख्य व्यक्तियो को मैने गायत्री मन्त्र के पटके – हरिद्वार सम्मेलन के बैज स्वामी श्रद्धानन्द पर बनी वृत्तचित्र की कम्प्यूटर डिस्क आदि से उनका सम्मान किया।

मध्याह्न आर्य युवक लीग के नव युवको के साथ एक मीटिंग की। उन्हे आर्यसमाज मे सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वे बहुत खुश थे। साय ४ बजे मेरा रेडियो सेण्टर पर जीवित कार्यक्रम था। लगभग ३० मिनट का मेरा साक्षात्कार प्रसारित किया गया जिसमे मैंने आर्यसमाज के सगठन पर अपनी वार्ता दी। पूरे द० अफ्रीका मे यह वार्ता प्रसारित की गई।

मेरी यात्रा के दौरान अनेक हिन्दू सगठनो ने हमे अपनी सभाओ मे आमन्त्रित किया। हिन्दू महासभा हिन्दी शिक्षा सभा रामकृष्ण मिशन लक्ष्मी नारायण मन्दिर द० अफ्रीका हिन्दू ऐसोसिएशन (SAHA) आदि सस्थाओ मे जाने का अवसर मिला। हमे हिन्दू धर्म प्रचार ट्रस्ट के कार्यों को भी देखने का अवसर मिला।

५ जून २००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा द० अफ्रीका ने अपने विशाल भवन मे सम्मान समारोह व भोज रखा। ७६ वर्षीय सुप्रसिद्ध सगीतकार श्री हरिसिह जी ने सगीत प्रस्तुत किया – छोटी बालिकाओ ने नृत्य प्रदर्शन किया– मेरा भाषण हुआ। जिसमे मैने आर्यसमाज के विशाल सगठन पर अपने विचार दिए। डा० राम विलास प्रधान ने अपना स्वागत भाषण दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका द्वारा प्रकाशित लगभग ४० पुस्तके उन्होने मुझे भेट कीं। उनकी गतिविधियो से मैं बहुत प्रभावित हुआ। सभा के मन्त्री श्री जे० बलवन्त ने समारोह का सचालन किया व धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

अपनी यात्रा के दौरान मै विभिन्न आर्यसमाजो के सत्सगो मे गया। सभी स्थानो पर उनके प्रोग्रामो मे एकरूपता देखने को मिली। सभी सत्सगो मे एक भजन मण्डली अपने निश्चित स्थान पर बैठी होती थी। समय का अनुशासन होता था। निश्चित समय पर यज्ञ प्रारम्भ हो जाता था। सभी उपस्थित समुदाय यज्ञ की समाप्ति पर खडे होकर यज्ञ की आरती गाते थे। तत्पश्चात दो मधुर गीत – एक भाषण पुन दो गीत– धन्यवाद और सत्सग समाप्त। उसके बाद भोजन। यह कार्यक्रम दो घण्टे से अधिक नही होता था। अपनी यात्रा के दौरान मैं आर्यसमाज सिल्वर ग्लेन शेपस्टोन ग्लेनको लेडी स्मिथ पीटर मेरित्सबर्ग आर्यमित्र मण्डल रिजर्ववोयर हिल स्थानो पर सत्सग व भाषण के लिए गय। सभी स्थान डरबन से ८० से १५० किलोमीटर दूर थे। आर्यसमाज के कार्यक्रम को देखकर बडी प्रसन्नता हुइ।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

दक्षिण अफ्रीका र

१ सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क प्रधान कै० दवरत्न आर्य का दक्षिण अफ्रीका मे भव्य स्वागत किया गया।चित्र म सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य आयजना का सम्बोधित करत हुए।
२ आय बेनीवालैण्ट होम (दक्षिण अफ्रीका का सुप्रसिद्ध अनाथालय) म बच्चो क साथ सभा प्रधान कै० दवरत्न आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा भतीजी कु० श्वेता
३ अनाथालय के बच्चो का प्रसन्न मुद्रा मे एक अन्य चित्र

१ दक्षिण अफ्रीका क सुप्रसिद्ध आयनेता श्री शिशुपाल राम भरोस जी के साथ यज्ञ करते हुए
२ इस शिशुगृह से सम्बन्धित अन्य आयजनो एव बालक बालिकाओ द्वारा किए जा रहे यज्ञ का विहगम दृश्य।
३ कै देवरत्न श्री की धर्मपत्नी तथा दक्षिण अफ्रीका के अन्य नर नारिया यज्ञ करत हुए।
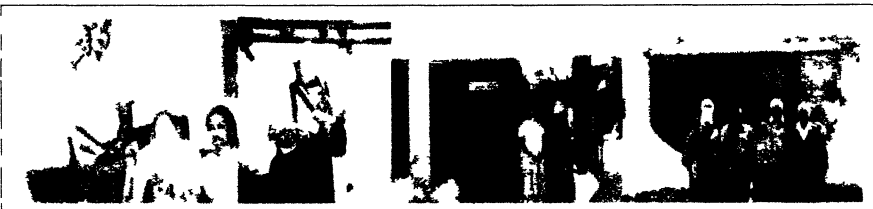
दक्षिण अफ्रीका की सुप्रसिद्ध महिला स्वतत्रता सनानी श्रीमती फतिमा मीर का अभिनन्दन करन के लिए सार्वदेशिक सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी धमपत्नी श्रीमती सुनीता आया तथा अय नता श्री शिशुपाल राम भरास उनके निवास पर गए।
[illegible] श्रीमती सुनीता आया क लिया गया एक चित्र।
[illegible] होम म एक अपग महिला के साथ श्रीमती सुनीता आर्या।
[illegible] देवरत्न आर्य श्रीमती सुनीता आयो कुमारी श्वेता आया तथा अन्य आय नेना।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

धर्म प्रचार कार्यों में सत्य की स्थापना मुख्य उद्देश्य

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का एक के बाद एक कार्यक्रमो से सुसज्जित विशाल पण्डाल जो सदैव आर्यजनों की अपार उपस्थिति से शोभा बढाता रहता था उसका मच आर्य नेताओं और विद्वानों की उपस्थिति से आर्यसमाज के सुदृढ सगठन का परिचय दे रहा था। एक कार्यक्रम खत्म होने के उपरान्त दूसरे कार्यक्रम के बीच में थोडा बहुत जो भी अवकाश का समय मिलता था उस समय भी माइक से वैदिक विचारों और सगठन शक्ति की प्रेरणाओं का प्रवाह जारी रहता था।

माता निर्माता भवति सत्र समाप्त होने पर भी सध्याकाल में ऐसा ही हुआ। लगभग एक घटे के अवकाश के बाद आयोजक जब मच पर अगला सत्र आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप' प्रारम्भ करने पहुचे तो उस समय अवकाश का लाभ उठाकर आर्यनरेश जी का दिव्य व्यक्तित्व और वाणी उपस्थित आर्यजनों को यह कहकर झकझोर रही थी कि स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा स्थापित जिस सिद्धान्त की हम सब शताब्दी मना रहे हैं क्या हमने कभी चिन्तन किया है कि हम इन सौ वर्षों में कहा पहुचे हैं ? और हमारी क्या उपलब्धिया रही है ? महर्षि दयानन्द जी के सपनो को साकार करने के लिए श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल स्थापित किया था। उनके इस कार्य से प्रेरणा लेकर लोगो ने अनेको गुरुकुल चलाए। अब सारी दुनिया यह समझने लगी है कि यदि बच्चो को चरित्रवान बनाना है और उनके ब्रह्मचर्य को बनाए रखना है तो उन्हे सहशिक्षा पद्धति से हटाकर गुरुकुल से ही शिक्षा देनी पडेगी।

शताब्दी पर्व पुकार पुकार कर कह रहा है कि स्वामी श्रद्धानन्द के आदेशों का पालन करो। इन गुरुकुलों के माध्यमों से हमे हर प्रकार की विद्या का प्रसार करना चाहिए। गुरुकुल के सचालन में आज भी हम स्वामी जी की इच्छाओं के अनुसार व्यवस्था नहीं बना सके। उस वक्त की कल्पना करें जहा एक तरफ धोती पहन कर यज्ञ कर रहे है और दूसरी तरफ पैंट पहनकर घोड़ा भी चला रहे हैं। यहा से ऐसे ब्रह्मचारी पैदा हो सकते हैं जो एक हाथ में वेद पकडकर शास्त्रार्थ कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर बन्दूक पकड़कर देशद्रोहियों के सीने भी छलनी कर सकें। आतकवाद का मुकाबला करने का यही एक रास्ता है। आज के पण्डे बाबा महाराज और सतो को गौरक्षा या कश्मीर से कोई लेना देना नहीं है उनका उद्देश्य केवल भीड जुटाना है। इसी प्रकार राजनेताओ को भी वोटो की भीड के अलावा और किसी से कोई लेना देना नहीं।

उन्होंने कहा के कि अच्छे गुरुकुलो की स्थापना आपके अपने ही हाथ में हैं। जब तक आयोजक और सचालक अच्छे नहीं होंगे तब तक ऐसी कल्पना व्यर्थ है।

महात्मा मुशीराम जी ने तन मन धन ही नहीं अपितु अपनी सन्तान का भी बलिदान कर दिया। आप विचार करो कि अब तक आपने क्या किया।

श्री आर्यनरेश ने आहवान किया कि ६० वर्ष से अधिक आयु के लोग मेरे साथ आए और राष्ट्र की सेवा करे। वानप्रस्थ लेकर अधिक से अधिक सख्या मे लोग अपनी इन आर्य सस्थाओ मे आकर बैठे तो यही सस्थाए समाज मे प्रकाशबीम बन जाएगी जो वैदिक राष्ट्र की स्थापना मे सहायक होगी। इसके लिए बलिदान करना होगा। आज जिस तरह से कै० देवरत्न जी ने अपनी नौकरी अपना व्यापार छोडकर अपना समय आर्यसमाज के लिए देने का सकल्प किया है तो कोई काम कठिन नहीं।

भारत हमारी माता है। अन्य किसी देश को माता या पिता का दर्जा नही दिया गया। हमे अपनी मा की सेवा करनी होगी। शिक्षा के क्षेत्र मे सुधार करना है तो स्वामी श्रद्धानन्द जी का पक्का अनुयायी बनना ही पडेगा। कहीं ऐसा न हो कि आप पीछे हट जाए और महर्षि दयानन्द जी की इस बाटिका मे इसे मिटाने के पौधे स्थापित कर दिए जाए। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को इस्लामी आतकवाद का परिणाम बताया।

उन्होंने गलत इतिहास पढाए जाने पर भी आर्यजनो को आगाह किया और आशा व्यक्त की कि इस विषय पर भी जागृति उत्पन्न की जाएगी। उन्होने कहा कि शिक्षा के अभाव से ही आतकवाद की समस्या पैदा हो रही है। आतकवाद का मुकाबला शक्ति से किया जाना चाहिए। इस विषय पर उन्होने कहा कि गिलानी जैसे आतकवादियो को गोलियों से भून दिया जाना चाहिए। आज हम कटते भी है तो कोई आवाज उठाने वाला नहीं। आज तक भारत मे जितने भी दगे हुए हैं उनकी शुरुआत मुसलमानों द्वारा हुई है।

भारत के मुसलमानो को भी यह निर्णय करना होगा कि उन्हे कुरान का वफादार बनना है या भारत के सविधान का। देशद्रोहियो को सब सुविधाओ से वचित कर दिया जाए। सब आर्यों को एक झण्डे के नीचे एकत्र होकर वैदिक धर्म और राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए यदि किसी को भारत की व्यवस्थाए पसन्द नहीं तो उसे भारत से बाहर भेज दिया जाना चाहिए। हमे शिक्षा के माध्यम से राजनीति से प्रभावित करना चाहिए। यही शताब्दी पर्व मनाने की सार्थकता होगी। इस सम्बन्ध मे श्री आर्यनरेश ने एक पुस्तिका का भी निर्माण किया। "स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलि कैसे दे उन्होने आहवान किया कि घर घर और गली गली मे गोपालन हो आर्यवीर दल कुमार सभाए स्थापित हो। ओ३म का ध्यान वेद का ज्ञान यज्ञ का अनुष्ठान और सस्कारी सन्तान इन कार्यो के करने से ही स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

इस उदबोधन के बाद महासम्मेलन के सयाजक श्री विमल वधावन ने नय सत्र का प्रारम्भ करत हुए कनाडा आर्यसमाज के प्रधान श्री अमर ऐरी को अध्यक्षता के लिए आमन्त्रित किया और कै० देवरत्न आर्य तथा श्री सत्यपाल सिह तथा श्री जितेन्द्र जी ने अध्यक्ष जी का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर मारिशस के आर्यनेता श्री उदय नारायण गगू जी मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि का भी अभिनन्दन किया गया।

उन्होने आर्यनरेश जी द्वारा के उद्बोधन पर उपस्थित आर्यजनो उत्तेजित प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर आर्यजनो से कहा कि और बुलवाओ के नारे लगाकर मच के अनुशासन को भग न करे। वक्ताओ के बोलते समय यह ठीक है कि आप उत्साहित महसूस करते है इसलिए तालियो से उसका स्वागत करते है। परन्तु तालिया ही उस वक्तव्य की सार्थकता नही है। कोई भी वक्तव्य तभी सार्थक होता है जब उसके अनुरूप आप कर्म प्रारम्भ कर देते हैं।

श्री वधावन ने कहा कि धैर्यपूर्वक उद्बोधनो को सुने और अपने मन मे उनका क्रियान्वयन करने के सकल्प तैयार करे। तालिया बजाने के साथ साथ अपने मन को भी हिलाए।

इसके उपरान्त श्री आर्यनरेश जी का भी स्वागत किया गया। साथ ही सभी विद्वान वक्ताओ का भी स्वागत किया गया।

वक्ता के रूप मे उदबोधन देते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री सत्य पाल सिह ने कहा कि महात्मा मुशीराम के जीवन से बढकर और कोई ऐसा उदाहरण नही हो सकता जिसके आधार पर धर्म प्रचार किया जाए। उन्होने प० चामूपति का हवाला देते हुए कहा —

ऐ दुनिया तू ही बता
अब और हकीकत क्या होगी
जान दे दी तलाशे हक के लिए
अब और इबादत क्या होगी।

बलिदान के बल पर ही वे मुशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने।

दुनिया मे सबसे पहला धर्म प्रचारक स्वय भगवान था। उन्होने सबसे पहला उपदेश युवाओ को दिया। वे चार युवा ऋषि थे जिन्हे वद का ज्ञान दिया गया।

उन्होने कहा कि इस दुनिया की नाभी क्या ह ? उत्तर मे हमे निर्देश मिलता है कि यज्ञ ही इस दुनिया का केन्द्र हे। यज्ञ अर्थात दूसरे के लिए बलिदान की भावना दूसरा के साथ बाटकर खाने की भावना। यदि यज्ञ की यह भावना हमारे अन्दर नही है तो हम धर्म का प्रचार नही कर सकते। धार्मिक स्थला की सख्या बढती जा रही हे परन्तु साथ ही दुनिया मे भ्रष्टाचार आदि भी बढते जा रह है। क्योकि धर्म की भावना समाप्त हो रही है। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए ही आर्यसमाज का जन्म हुआ था। क्या हम अपेक्षित गति से चल पाए।

दुनिया से कई सस्कृतियो क लुप्त होने का मूल कारण यह है कि उन्होने सृजनशीलता समाप्त कर दी। आज हमारे अन्दर से भी नया चिन्तन नया लेखन और नए कार्य बन्द हो गए है। इस सम्मेलन मे जिस प्रकार से विषय निर्धारित किए गए है वह एक नई सोचे का उदाहरण है।

आज खडन का युग समाप्त होता नजर आ रहा है। आज व्यापार का युग है आज हमे मडन करना आना चाहिए हमे यह बताने की कला विकसित करनी होगी कि हमारी बात सर्वोत्तम है। आज इस बाजार वस्था मे अपने आपको स्थापित कर के लिए कुछ चीजो की आवश्यकता है। कीमत वस्तु बृद्धि स्थान और व्यक्ति इन्हे अग्रेजी मे पाच पी कहा जाता है।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

धर्म प्रचार कार्यों में सत्य की स्थापना मुख्य उद्देश्य

Price Product, Promotion, Place and Pirson हमारे पास बेशक साने की पैदावार हो परन्तु हमे उसे बेचना आना चाहिए।

जिस स्थान पर आर्यसमाज नही है वहा हमे आर्यसमाज को लेकर जाना चाहिए।

यह सम्भव नही है कि आज सारी दुनिया एक जैसी हो जाए। एक जैसा खान पान पहनावा और यहा तक कि पूजा पद्धति भी एक नहीं हो सकती। दुनिया मे जितने व्यक्ति होगे उनकी उगलिया और निशान अलग अलग ही होगे।

आज हम बडे बडे इतिहासज्ञ भाषा विद्वान पैदा करने की ओर ध्यान दे। इसके लिए गोष्ठिया आयोजित करे छात्रवृत्तिया दे अपने बच्चो को प्रेरित करे जो आगे चलकर वैदिक धर्म के प्रचार मे अपनी भूमिका बना पाए।

उन्होने विभिन्न उदाहरणो से यह प्रमाणित किया कि खडन की अपेक्षा मण्डन शैली अधिक कारगर होती है तुर्की का प्रधान मन्त्री जब बुर्का प्रथा हटवाना चाहता था तो उसने एक आदश की जारी किया कि सभी वेश्याओ क लिए बुर्का पहनना अनिवार्य है। इसे सुनकर सामान्य महिलाओ ने बुर्का पहनना बन्द कर दिया

उन्होने आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे सगीत कार्यक्रमो को सम्मिलित करने का आग्रह किया।

अगर सदचरित्र मा बाप होगे तो बच्चे भी अच्छे ही होगे। इस सिद्धान्त की पुष्टि मे उन्होने रामायण का उदाहरण प्रस्तुत किया जिसमे लक्ष्मण ने सीता के गहने पहचानने से इन्कार कर दिया था क्योकि उन्होने सीता के चरण तो सदा देखे परन्तु मुह की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। श्री रामचन्द्र के सशय का समाधान करते हुए लक्ष्मण ने कहा कि जिसकी माता पतिव्रता होती है और पिता धार्मिक होता है उसकी सन्तान दुष्चरित्र हो ही नही सकती।

अपने कार्यों के द्वारा ही हमे अपने माता पिता के ऋण को उतारना चाहिए। धर्म प्रचार अपने परिवार से ही प्रारम्भ होगा।

बौद्ध धर्म ससार मे क्यो फैला इसके पीछे महात्मा बुद्ध का यह उपदेश था कि पवित्रता और पूर्णता को लेकर समाज की सेवा करो परन्तु उन्होने स्पष्ट निर्देश किया कि एक दिशा मे दो व्यक्ति मत जाना अलग अलग दिशाओ मे जाना। उनके शिष्य धन सम्पत्ति लेकर नही गए बल्कि महात्मा बुद्ध की शिक्षाए लेकर गए। हमे भी महर्षि दयानन्द और वेद की शिक्षाओ को लेकर समाज मे निकल पडना चाहिए हमारे धर्म का प्रचार रोशनी फैलाने के समान है। जो जीवन के अधियारो से लडते है। दुनिया उनके चरणो मे फूल बिछाती है।

कै० देवरत्न जी ने डॉ० सत्यपाल जी की पुस्तक इन्सान की तलाश मे का परिचय दिया। इसके साथ ही उन्होने मच से घोषणा की कि कनाडा से पधारे श्री अमर ऐरी जी इस महासम्मेलन के लिए एक लाख रुपये प्रदान करना चाहते हैं।

इसके बाद उद्‌बोधन के लिए ब्र० प्राची को आमन्त्रित किया गया और महासम्मेलन का स्मृति चिन्ह प्रदान करके उनका स्वागत किया गया।

उन्होने अपने उदबोधन मे कहा कि यदि ससार के नक्शे से अमेरिका को हटा दिया जाए तो ससार से टेक्नोलोजी समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार यदि जापान को हटा दिया जाए तो ससार से देशभक्ति समाप्त हो जाएगी यदि पाकिस्तान को हटा दिया जाए तो ससार से बदमाशी और दादागिरी समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार यदि ससार के नक्शे से भारत को हटा दिया तो ससार से मानवता नैतिकता धर्म और आध्यात्मिकता समाप्त हो जाएगी।

इस देश ने सारे ससार को यह उपदेश प्रदान किया है। इसी कारण इसकी हस्ती मिट नहीं सकती। हमारा इतिहास अलौकिक रहा है। इस देश के ब्राह्मणो ने सदैव ससार को दिशा निर्देश देने का कार्य किया है। धर्म जीवन को व्यवस्थित बनाता है शिष्टाचार सिखाता है।

आज मानव आशा और निराशा के झूले पर झूल रहा है यह दुखदायी है। चारो और दुख ही दुख है। यह सब धर्म के अभाव के कारण हो रहा है। इसी के कारण नैतिकता और मानवता का भी अभाव हो रहा है।

नैतिकता के साथ ही उन्नति उन्नति मानी जाती है अन्यथा वह अवन्नति का बनती है। सच्ची शान्ति आध्यात्मिकता से ही प्राप्त हो सकती है।

उन्होने शिकागो मे सर्वधर्म सम्मेलन के सस्मरण सुनाते हुए कहा कि वहा हर व्यक्ति धर्म की परिभाषा निर्धारित करने का प्रयास कर रहा था। उन्होने कहा कि जो धारण करके आचरण मे लाया जाता है वह धर्म है। उन्होने कहा कि कृष्ण के नाम पर अवाछनीय बातो का उन्होने इस सम्मेलन मे विरोध किया।

यहा विदुषी माताओ ने अपनी सन्तानो का निर्माण किया पत्नी बनकर पति को प्रेरित किया और बहन बनकर भाई को सन्मार्ग पर चलाया। यह सब कार्य केवल धर्म के आधार पर ही सम्पन्न हुए।

उन्होने आर्यजनो को प्रेरित करते हुए कहा कि अपने बच्चो को सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित करे।

इसके उपरान्त ब्रि० चितरजन सावत जी को उद्‌बोधन के लिए आमन्त्रित किया गया और उन्हे स्मृति चिन्ह आदि प्रदान करके उनका स्वागत किया गया।

ब्रि० चितरजन सावत जी ने वैदिक धर्म प्रचार कब कैसे और कहा किया जाना चाहिए इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनके द्वारा व्यक्त विचारो के आधार पर एक विस्तृत लेख इसी अक मे अलग स प्रकाशित किया जा रहा है।

लन्दन से पधारे वैदिक विद्वान डॉ० कृष्ण चोपडा जी ने भी इस सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि धर्मप्रचार मे हमे अपने आप को भूल जाना चाहिए। हमे लोभ लालच से ऊपर उठकर कार्य करना चाहिए। यह लोभ लालच न तो पैसे का हो और न पदो का। उन्होने कहा कि मुझे बडी हैरानी होती है कि जो व्यक्ति किसी पद पर आसीन होता है तो लोग उनके नाम की अपेक्षा उसे पद से ही सम्बोधित करना शुरू कर देते है। परिणाम स्वरूप वह व्यक्ति स्वय भी उस पद के साथ अपने अस्तित्व को जोड लेता है और सारी उम्र पद छोडने का नाम तक नहीं लेता। उन्होने कहा कि लन्दन मे तो हमने एक निश्चित अवधि से आगे पदाधिकारी बने रहने का नियम ही समाप्त कर दिया है। इससे दूसरों को आगे बढकर कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है और सामाजिक कार्यों में वृद्धि भी तभी होती है। उन्होंने कहा कि वैदिक जीवन का आकर्षण भी इसी मे है कि हम सभी कार्य त्याग भावना से करें।

भारतीय सस्कृति और वैदिक कर्मकाण्ड विषय पर अमेठी से पधारे डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने भी अपने विचार प्रकट किए परन्तु उनके उद्‌बोधन की रिकार्डिंग किसी तकनीकी खराबी के कारण लुप्त हो गई। अत उनके उद्‌बोधन का आलेख करना सम्भव नही हो रहा है।

इस सत्र के मुख्य अतिथि श्री उदय नारायण गगू का अभिनन्दन किया गया और उन्होने अपने उद्‌बोधन मे कहा कि दुनिया का नियम है कि विनाश करने वाले का विनाश अवश्य होता है जबकि वैदिक धर्म शारीरिक वैज्ञानिक और मानसिक उन्नति का आह्वान करता है। उसका लक्ष्य है सर्वांगीण विकास। हमारे धर्म अर्थ काम मोक्ष मे मोक्ष हमारा अन्तिम लक्ष्य होता है। मॉरिशस मे प्रतिदिन वैदिक वाणी नामक कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। जिसमे विभिन्न विषयो पर प्रचार कार्यक्रम चलता है। इससे सारे मॉरिशस मे वैदिक धर्म का प्रचार होता है। इसका श्रेय उन साधु और सन्तो को है जो यहा से मॉरिशस गए और प्रचार मे जुट गये।

आज बच्चे और युवक इस विचार धारा से कुछ विमुख हो रहे है मॉरिशस मे हिन्दी अनिवार्य तो नहीं है परन्तु लोग व्यक्तिगत स्तर पर केवल प्राथमिक स्तर पर ही हिन्दी भाषा पढ पाते है। परन्तु बडे होने पर केवल फ्रेंच और अग्रेजी का ही प्रभाव दिखाई पडता है इसलिए बच्चे विमुख होते जा रहे हैं। हमारे ग्रन्थो का अग्रेजी और फ्रेंच मे अनुवाद कार्य बढना चाहिए। मॉरिशस मे हम यही प्रयास कर रहे है ताकि नई पीढी के लोग अपने धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए प्रेरित होते रहे। मॉरिशस की पत्र पत्रिकाए मे भी हम लोग अग्रेजी और फ्रेंच भाषा मे लेख प्रकाशित करवाते रहते है। सारे ससार मे हमे इस शैली को अपनाना होगा। इसी प्रकार टेलिवीजन पर इस विषय मे अमृत वाणी नामक कार्यक्रम प्रस्तुत होता है। आज शास्त्रार्थ का युग तो समाप्त हो चुका है परन्तु स्वय तो धार्मिक चर्चा कर ही सकते है। और यह धर्म का अमृत बच्चो मे बाटा जा सकता है।

सत्र को समापन की ओर ले जाते हुए श्री अमर ऐरी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि यह शताब्दी समारोह हम सब के लिए अवश्य ही एक नया मार्ग और दिशा निर्देशन उपलब्ध कराएगा। ईश्वर हमे सद्‌बुद्धि निष्ठा भक्ति और शक्ति दे जिससे हम महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य कर पाए।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ८ का शेष भाग

यात्रा के सुखद क्षणो का वर्णन किया। ए०बी०एच० जैसी समाज कल्याण करने वाली सस्था का अनुसरण सारे विश्व को करना चाहिए ऐसे विचार व्यक्त किए। मेरी यात्रा से सभी अत्यन्त प्रसन्न थे। तत्पश्चात भोज हुआ और द्वार पर खडे होकर सभी से नमस्ते कर व गले मिलकर मैंने विदा ली। कईयो की आखों में नमी देखकर मेरा भी दिल भर आया।

१४ जून को प्रात के विमान से मुझे मारिशस के लिए रवाना होना था। १३ तारीख को प्रात श्री मून राम लखन जी का स्टेनगर शहर से जो ८० किलोमीटर दूर था टेलिफोन आया कि आज साय यहा पर कार्यक्रम रखा है जिसमे कैप्टन आर्य को अवश्य आना है। कार्यक्रम साय ६ बजे से प्रारम्भ था पर उनका आग्रह था कि दो घटे पूर्व उनके निवास पर आए। हमारे पहुचने पर उन्होने हृदय से स्वागत किया। वहा जाकर पता चला कि श्रीमून रामलखन मेरे निवास मुम्बई मे ४ दिन रहे। उन्होने मेरी पत्नी का अपनी बेटी की तरह स्वागत किया और कहा तुम आज अपने पिता के घर आई हो उसे विदा मे ५०० रेन्ड दिए। बढिया भोजन कराया। श्री रामभरोस जी के वे परममित्र थे कहने लगे कि यह तो देवता पुरुष है इनसे मुझ जैसा साधारण व्यक्ति क्या बात करेगा।

अपनी यात्रा के दौरान हम अनेक परिवारो मे गए। जिनमे विशेष उल्लेखनीय है– पण्डिता नानक चन्द्र श्रीमती पण्डिता आनन्दी देवी श्री रेशमा (पुत्री श्री रामभरोस जी) श्री प्रेम जी पोलटन डॉ० रामविलास पण्डित बेहादर श्रीमान रामलखन जी श्री मन सुखैये श्री पतनदीन श्री शिवगुलाम पण्डित आत्मदेव जी श्री महेन्द्र दयाल (प्रवासी जी के पौत्र) पण्डित एन० रामनूथ प० बेचान श्री लक्ष्मण गनपत (प्रसिद्ध सगीतकार) श्रीमती सुधा रामनुथन श्री भूषण डॉ० सी० मोहन श्री राम बटोही प० तुलसी राम महाजन।

हमारे निवास के दौरान जहा आदरणीय राम भरोस जी व श्री राजेश लक्ष्मण ने हमारा पूरा ध्यान रखा वहा ए०बी०एच० के स्टाफ श्रीमती नायक श्रीमती नायडू, श्रीमती सरीना कुमारी सुहाना श्रीमती टाईनी श्रीमती सायरा श्रीमती नमसी श्रीमती फौजिया आदि ने भी हमारा ध्यान रखनेमे कोई कसर बाकी नही रखी। मैं सभी का हृदय से आभारी हू।

सायकाल आर्य समाज मे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उनका आग्रह था यज्ञ मैं कराऊ। मैंने यज्ञ कराया भजन हुए मेरा भाषण हुआ और अन्त मे भोज। वहा से रवाना होकर रात्रि को १० बजे हम घर पहुचे प्रात ८ बजे हमें विमान स्थल पर पहुचना था।

१४ जून को प्रात काल हम प्रात १० बजे एयर मारिशस के विमान से रवाना हो गए। डरबन एयरपोर्ट पर आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी आर्ययुवक सघ के प्रधान श्री पोलटन जी डॉ० रामभरोस जी श्री राजेश लक्ष्मण श्री सुखैय जी आदि के अतिरिक्त श्री हरिसिह जी सगीतकार अपनी धर्मपत्नी के साथ उपस्थित थे। उन्होने बडी भावभीनी विदाई दी। कुछ की आखो मे प्रसन्नता और विदा के आसू थे और अपने जीवन के सुखद क्षणो की स्मृति लेकर वहा से चल दिए।

शाम को लगभग ७.३० बजे हम मारिशस पहुच गए। भारत के लिए हमारा विमान अगले दिन प्रात १० बजे दिल्ली के लिए रवाना होना था। विमानतल पर आर्य सभा मारिशस के मन्त्री डॉ० उदयनारायण गगू, प्रधान डॉ० न्योर श्री मगरु जी आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे। हमे डॉ० मगरु अपने ब्लूय बीच बगले पर ले गए। वहा आने व्यक्ति मिलने के लिए बैठे थे। रात के १२ बजे तक आर्यसमाज पर चर्चा चलती रही। भोजन करके हम आराम करने चले गए। प्रात काल पता चला कि विमान की उडान ८ घटा विलम्ब से है। श्वेता व सुनीता मारिशस घूमने चले गए। मैं आर्यसभा के कार्यालय। वहा एक मीटिग थी। २४ जून को शराब बन्दी आन्दोलन की। उपस्थित लोगो मे जोश और उत्साह था। इस नए आन्दोलन को प्रारम्भ करने हेतु मीटिग के दौरान उपस्थित आर्यजनो ने अपने अपने क्षेत्रों से लगभग ५०० कारे लाने का आश्वासन दिया ताकि उस दिन एक बडी रैली निकाली जा सके।

मध्याह्न आर्यसभा मारिशस की अन्तरग सभा की बैठक थी। मुझे उदबोधन करने का अवसर मिला। मैने सगठन को मजबूत बनाने की अपील की।

रात्रि ८ बजे हम मारिशस से रवाना होकर प्रात २ बजे १६ जून को इन्दिरा गाधी हवाई अड्डे दिल्ली पहुचे। बाहर आते ही वैदिक धर्म की जय आर्यसमाज अमर रहे के नारो से विमान स्थल गूजने लगा। आर्यसमाज जनकपुरी के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन के नेतृत्व मे अनेक आर्यजन ओ३म का झण्डा भगवा टोपी व पगडी पहने हमारे आगमन पर स्वागत के लिए मौजूद थे। साथ थे हमारे वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन और मेरी पत्नी सुनीता के भाई। उसी दिन रविवार को प्रात १० बजे आर्य युवक दल व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से राजौरी गार्डन आर्यसमाज मे स्वागत समारोह था। मैं आर्ययुवक सभा के मन्त्री जा सभा के सयोजक थे व श्री जगदीश आर्य (कोषाध्यक्ष) श्री वेदव्रत शर्मा (मन्त्री) वैद्य हरिदत्त जी प्रि० चन्द्रदेव जी व उन सभी आर्यसमाजो के प्रधान मन्त्री व प्रतिनिधि उपस्थित थे का आभारी हू।

पृष्ठ ४ का शेष

धर्म प्रचार कार्यो में सत्य की...

उन्होने बताया कि कनाडा मे विश्व के समस्त देशो के लोग रहते हैं। क्रिसमस के अवसर पर कनाडा के ईसाई सगठन १६६ भाषाओ मे क्रिसमस की बधाई प्रकाशित करवाते है।

कनाडा के आर्यसमाज मन्दिर का वैदिक सास्कृतिक केन्द्र है। हमने इसका निर्माण पूरी तरह से नए रूप म किया है। जिस पर लगभग १२ करोड ६० लाख रुपये खर्च कर चुके है। इसमे लगभग ३ करोड रुपये सरकारी सहायता के रूप मे मिला था। इस मायने मे अपने आप मे यह एक ऐतिहासिक कार्य है।

कनाडा का हमारा मन्दिर प्रचार कार्यो मे भी हर दृष्टि से अग्रणीय है। रविवार के दिन हमारे दो सत्सग लगते है। एक हिन्दी मे और दूसरा अग्रेजी मे। हर सत्सग के बाद अच्छे भोजन का भी प्रबन्ध रहता है।

हमने यह भी प्रयास किया है कि बच्चे के सभी सस्कार वैदिक रीति से ही हुआ करे।

आर्यसमाज अपने रूप मे बहुत बडी भूमिका निभा रहा है। हम आर्यसमाज के मच पर अन्य सभी हिन्दू सस्थाओ को भी आमन्त्रित करते है।

पिछले २४ वर्षो से मै भारत मे तो नहीं आया परन्तु सार्वदेशिक और वैदिक लाईट के माध्यम से मुझे सदैव आर्यसमाज की गतिविधियो की समस्त जानकारी प्राप्त होती रहती है। वैदिक चिन्तन पूर्ण सात्विक और वैज्ञानिक है जिसे प्रेम पूर्वक अन्य लोगो को भी बताया जाना चाहिए।

उन्होने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हर प्रकार का साहित्य अग्रेजी मे छपवाने की व्यवस्था करे। अपने लक्ष्य को व्यापकता के साथ हम तभी प्राप्त कर सकेगे। सारा विश्व सिकुडता जा रहा है अत इन बदलती परिस्थितियो के अनुसार विदेशी भाषाओ को भी अपनाना चाहिए। विदेशो मे बैठे लोग इस कार्य को करने मे हर प्रकार का सहयोग देने को तैयार है। प्रचार कार्यो के साथ–साथ हम तो हर प्रकार की विपत्ति मे भी भारत की सहायता करने को तैयार है। उडीसा और गुजरात मे आई विपत्तिओ के समय भी हमने भरपूर सहायता भेजी।

श्री अमर ऐरी के इस उदबोधन के बाद यह सत्र समाप्त हुआ। अन्त मे महासम्मलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि इस सत्र का और विशेष रूप से अध्यक्षीय उदबोधन कर भाव यह था कि प्रचार का दृष्टिकोण सदैव सत्य की स्थापना ही होना चाहिए। उन्हाने कहा कि श्री अमर एरी जी ने इतना गम्भीर और व्यापक प्रभाव वाला उदबोधन हमे दिया है कि उसे सुनकर हमे वास्तव मे बडा अच्छा मार्गदर्शन मिला है। उन्होने कहा कि कहीं ऐसा न हो कि भविष्य मे हम इतने बडे–बडे सम्मेलनो का आयोजन केवल विदेशो से आए आर्य नेताओ से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए ही करे। रात्रि १२ बजे से भी अधिक समय तक चले इस सत्र का समापन शान्ति पाठ के साथ किया गया। ✡

ऋषि जन्मभूमि टकारा मे आर्यवीर दल के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट एव सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सयुक्त तत्वावधान मे दिनाक ८ जुलाई से १७ जुलाई २००२ की तिथियो मे राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे शारीरिक मानसिक आत्मिक एव राष्ट्रीय उन्नति पर विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था थी। प्रशिक्षण मे उत्तीण प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को उपदेशक विद्यालय की ओर से प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। ✡

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन पर दिए गए उदबोधन पर आधारित

वैदिक धर्म प्रचार : कब कैसे कहां ?

– ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त वी०एस०एम०

हरिद्वार सन् १८६७ का महाकुम्भ। एक आकर्षक चितवन गौर वर्ण अदम्य उत्साह से भरपूर बयालिस वर्षीय वैदिक सन्यासी ने पाखण्ड–खण्डिनी पताका फहराई। वैदिक धर्म का शुद्ध सनातन स्वरूप सामान्य जन के सामने रखा। वे थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। एक बार पहले दो वर्ष हिमालय भ्रमण के समय भी वे हरिद्वार गए थे। पताका फहराने के १२ वर्ष बाद के महाकुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार के लिए ऋषिवर फिर हरिद्वार मे थे। अपने असमय निधन से मात्र चार वर्ष पूर्व पचपन वर्षीय देव दयानन्द में धर्म प्रचार के लिए अनुपम उत्साह था अप्रतिम उमग। वैदिक धर्म प्रचार के लिए महर्षि दयानन्द ने नई दिशा दी हमे राह दिखायी प्रचार कब करो कैसे करो और कहा करो।

उस ऐतिहासिक धर्म प्रचार को एक सौ पैंतिस वर्ष बीत चले। वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार मे वह पाखण्ड खण्डिनी पताका स्थल हम आर्य प्रचारको के लिए एक अदभुत प्रेरणा स्रोत है। काली रात और तूफानी समुद्र में एक असहाय नाविक के लिए वह प्रकाशपुज है गगनचुम्बी दीपस्तम्भ है। आज भी हर मेला स्थल क्या महाकुम्भ और क्या मुम्बई का 'गणपति बप्पा मोरया मेला एक वैदिक धर्म के प्रचारक का आदर्श आगन है। आइए ऋषि के मेला–मार्ग पर चलते रहे नयी नवीनताआ' क साथ नये साधनो के साथ सफलता चरण चूमेगी। गति मन्द है चिन्ता न कीजिए किन्तु थम न जाइए स्व–निर्मित विवादो मे उलझकर चीनी भाषा की एक कहावत कहती है 'चरैवेति चरैवेति । 'पु फा मौन चर फा चान अर्थात् न डरो मन्द गति से भयभीत हो थम जाने से।

वैदिक धर्म प्रचार का लक्ष्य है कृण्वन्तो विश्वमार्यम। विश्व को आर्य बनाने के लिए नर–नारी बाल–वृद्ध को श्रेष्ठ मानव बनाने के लिए हमे कई सोपान निर्धारित करने होगे। एकाएक लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है। धीरे धीरे आगे बढना है। कहा से आरम्भ करे ? अपने से। हम सुधरेगे तो जग सुधरेगा हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। फिर परिवार जन आर्य बने। आर्यसमाज के सत्सगो मे उपस्थिति कम होने का एक कारण यह भी है कि आर्य सभासद अकेले ही आते हैं और परिवार के सदस्यो को घर पर ही टी०वी० देखने के लिए छोड आते हैं। इस समस्या का क्या समाधान है इसकी चर्चा फिर कभी और करेगे। आर्य बनाने के अभियान मे अब और आगे बढते हैं। चलते हैं देश–विदेश भ्रमण के लिए। पहले देश फिर विदेश। लक्ष्य को देखते रहिए अर्जुन समान चिडिया की आख ही देखिए वृक्ष नहीं। बस।

स्वदेश मे पहले अपने कार्य क्षेत्र का चयन कर लेते हे। धर्म प्रचार के लिए पहले उन क्षेत्रो को लेते हैं जहा की भाषा समझने, बोलने वाले प्रचारक या तो हमारे पास उपलब्ध हैं या सरलता से तैयार किए जा सकते हैं। पहले चरण में हिन्दी गुजराती मराठी और तेलुगू भाषी क्षेत्रो पर विशेष ध्यान दिया जाना अस्वाभाविक नहीं होगा। फिर हम पजाबी बगाली उडिया तमिल मलयाली कन्नड आदि भाषाओ की ओर बढ सकते हैं। उर्दू भाषा में आर्ष साहित्य सत्यार्थ प्रकाश सहित अभी भी उपलब्ध है। उर्दू भाषी लोगो के बीच विशेषकर इस्लाम मतावलम्बियो मे वैदिक धर्म प्रचार की आवश्यकता पर जितना अधिक बल दिया जाए उतना ही कम होगा।

विदेश मे धर्म प्रचार के लिए प्रथम चरण मे अग्रेजी नेपाली सिधी फारसी रूसी और चीनी का चयन किया जा सकता है। मुझे यह जानकर सुख आश्चर्य हुआ कि चीनी भाषा मे भी सत्यार्थ प्रकाश है। अग्रेजी भाषा मे तो है ही। पडोसी देश नेपाल की भाषा सीखनी सरल है। लिपि देवनागरी है। अब समय आ गया है कि हम नेपाली भाषा मे आर्ष साहित्य प्रकाशित करके नेपाल में वितरित करें। चीनी भाषा वाला सत्यार्थ प्रकाश भाषा की दृष्टि से पुराना पड गया है। नयी भाषा 'फुतुग हवा' मे अब सरल सस्करण छापना चाहिए।

वैदिक धर्म प्रचार के लिए प्रचारकों को स्थानीय समाज का सक्रिय सहयोग चाहिए। नर नारी बाल-वृद्ध और युवा वर्ग के लिए रोचक कार्यक्रम चाहिए, मात्र मनोरजन के लिए नहीं अपितु उनका दुख दर्द बाटने के लिए। युवक युवतियों को धर्म प्रचारक 'एड्स' महारोग की विभीषिका से सचेत कर सकता है। इसके लिए सरल व सस्ता साहित्य का बाटना नुक्कड नाटक करना छोटी गोष्ठिया करना एक-एक से अनौपचारिक मुखामुख बातचीत द्वारा हम युवा वर्ग का मन टटोल कर उनका हृदय छू सकते हैं। नशा-विरोध अभियान भी इसी माध्यम से चलाया जा सकता है। यह सभी को भली भाति मालूम है कि 'इस्कान' के सस्थापक प्रभुपाद जी ने न्यूयार्क अमेरिका में कृष्ण भक्ति का सचार नशेडी–गजेडी हिप्पियों के बीच रहकर किया। प्रभुपाद जी ने दानव को मानव बना लिया। 'इस्कॉन' आज एक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सगठन है जो विश्व मे पनप रहा है। जन-जन से जुडने का प्रयास करते हैं प्रचारक। 'नशा निमन्त्रण' कौ अस्वीकार करते हुए, हम आर्य समाजियो को स्थानीय गोरे काले हब्शी चीनी जापानी रूसी आदि को मिलाना चाहिए। हम आर्यों के बीच भाषाविद हैं उनका उपयोग अब हम करेंगे। भाषा के आधार पर होगा मन मिलन फिर साथ चलेगे वैदिक धर्म पथ पर।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

दक्षिण अफ्रीका यात्रा की झलकियां

१ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का दक्षिण अफ्रीका मे भव्य स्वागत किया गया।चित्र मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए।

२ आर्य बेनीवोलैण्ट होम (दक्षिण अफ्रीका का सुप्रसिद्ध अनाथालय) मे बच्चो के साथ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा भतीजी कु० श्वेता।

३ अनाथालय के बच्चो का प्रसन्न मुद्रा मे एक अन्य चित्र।

१ दक्षिण अफ्रीका के सुप्रसिद्ध आर्यनेता श्री शिशुपाल राम भरोस जी के साथ यज्ञ करते हुए।

२ इस शिशुगृह से सम्बन्धित अन्य आर्यजनो एव बालक बालिकाओ द्वारा किए जा रहे यज्ञ का विहगम दृश्य।

३ कै० देवरत्न जी की धर्मपत्नी तथा दक्षिण अफ्रीका के अन्य नर नारियां यज्ञ करते हुए।

१ दक्षिण अफ्रीका की सुप्रसिद्ध महिला स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती फतिमा मीर का अभिनन्दन करने के लिए सार्वदेशिक सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा आर्य नेता श्री शिशुपाल राम भरोस उनके निवास पर गए।

२ सोने की खानो के अन्दर श्रीमती सुनीता आर्या का लिया गया एक चित्र।

३ आर्य बेनीवोलेण्ट होम मे एक अपग महिला के साथ श्रीमती सुनीता आर्या।

४ विद्युत शवदाह गृह के बाहर कै० देवरत्न आर्य श्रीमती सुनीता आर्या कुमारी श्वेता आर्या तथा अन्य आर्य नेता।

१ सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का रेडियो पर एक घण्टे की अवधि का साक्षात्कार लिया गया जिसका सीधा प्रसारण किया गया।

२ आर्य युवक परिषद् की ६०वी जयन्ती के अवसर पर सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

३ आर्य बेनीवोलैण्ट होम की ६१वीं वर्षगाठ पर दक्षिण अफ्रीका का ध्वज फहराते हुए कै० देवरत्न आर्य।

१ दक्षिण अफ्रीका मे भारतीय उच्चायोग के उच्चायुक्त श्री अजीत कुमार के साथ कै० देवरत्न आर्य श्री शिशुपाल राम भरोस तथा श्रीमती सुनीता आर्या एव कु० श्वेता।

२ दक्षिण अफ्रीका के आर्यसमाज मन्दिर डरबन के द्वार का चित्र।

३ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य पीटर मैरिटजबर्ग नामक उस रेलवे स्टेशन को भी देखने गए जहा विदेशी शासन के समय महात्मा गाधी को गोरे काले भेद के कारण रेलगाडी से उतार दिया गया था।

४ इसी शहर के उपमहापौर के निमन्त्रण पर कै० देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या उनके निवास पर

१ विदाई समारोह मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य का सम्मान करते हुए सुप्रसिद्ध सगीतकार श्री हरिसिह जी।

२ आर्य सस्थाओ की बालिकाए दक्षिण अफ्रीका का पारम्परिक नृत्यगान प्रस्तुत करते हुए।

३ विदाई समारोह का सदेश प्रसारित करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

दक्षिण अफ्रीका और आर्यसमाज

इस यात्रा के दौरान हमे यह ज्ञात हुआ कि हमारी क्या-क्या कमिया है। जिसके कारण विदेशी आर्यसमाज सगठन हमारे साथ सक्रिय रूप से नहीं जुडे हुए है। उनके कार्यालय विशाल, वातानूकुलित एव सुसज्जित हैं। आधुनिक युग के समस्त इलेक्ट्रोनिक साधन उसमे लगे हुए हैं। वे चाहते हैं कि सार्वदेशिक का कार्यालय भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का होना चाहिए। उसमे कम्प्यूटर आदि लगे हो, ई-मेल, फैक्स की सुविधा हो। आगन्तुको के लिए बढिया व्यवस्था हो आदि-आदि। वे चाहते है कि यदि हम ई-मेल से कोई जानकारी जानना चाहें तो १ घण्टे मे उसका उत्तर मिलना चाहिए। मैंने उन्हे आश्वासन दिया कि आने वाले समय मे सारी व्यवस्था आज दिल्ली कार्यालय की स्थिति बिलकुल अलग है और आने वाले समय में और भी ठीक हो जाएगी।

यहा के सारे सत्सग अग्रेजी भाषा में होते हैं। सिर्फ यज्ञ मन्त्रो के साथ होता है बीच-बीच मे पुरोहित जो निर्देश देते हैं वह भी अग्रेजी में। पुरोहित भी सूट और टाई में होते है। आर्य प्रतिनिधि सभा पुरोहितो के प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है और जो पुरोहित उसमे उत्तीर्ण होते हैं उन्हे एक डिजायन का गाउन दिया जाता है जिसे वे पुरोहित का कार्य करते समय पहन लेते हैं ताकि सामान्य जन यह जान सके कि ये आर्यसमाज के पुरोहित हैं। सभी पुरोहितो के अपने-अपने बगले हैं- अपनी अपनी कारे हैं। वे सम्पन्न है और बडी श्रद्धा से आर्यसमाज के कार्य को कर रहे हैं। इसका श्रेय स्वर्गीय श्री नरदेव जी स्नातक को जाता है। हिन्दू धर्म को सगठित करने का अद्वितीय कार्य उन्होंने किया। लगभग २० से अधिक पुस्तकें उन्होंने लिखी व वहा प्रकाशित कीं। वहा के लोगों मे उनके प्रति इतनी श्रद्धा है कि अनेक परिवारो मे जहां हम भोजन करने गए वहा उनका चित्र लगा देखा।

आर्यसमाज के कार्यों के अतिरिक्त, उन्होने सभी पर्यटन स्थल दिखाने की व्यवस्था भी की थी। हमने वहां डोलफिन शो, चिडिया पार्क, क्रोकोडाइल वर्ल्ड (जिसमे १०,६०० घडियाल हैं), रेडियो स्टेशन, महात्मा गाधी सेटिमेण्टल केन्द्र, वेली ऑफ थाउजेण्ड्स हिल्स आदि अनेक दर्शनीय स्थानों को भी देखा।

दिनांक २७ मई, २००२ को हमें विशेष रूप से एक सार्वजनिक कार्यक्रम में आमन्त्रित किया गया। डरबन में द० अफ्रीका को स्वतन्त्र कराने में जिन भारतीयो ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था, जिसमे महात्मा गांधी के साथ लगभग १०,००० व्यक्ति सक्रिय थे उनकी स्मृति मे एक स्मारक का निर्माण किया गया था जिसका नाम "Resistance Park" था, उसका उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति श्री नेल्सन मण्डेला के हाथो हुआ। डरबन के महापौर, गृह विभाग के मन्त्री श्री बुधदेशी भी उपस्थित थे। मै श्री रामभरोस जी के साथ परिवार सहित उपस्थित था। इस स्मारक निर्माण की प्रेरणा श्रीमती फातिमा मीर थी, जिन्होने सक्रिय योगदान स्वतन्त्रता के लिए दिया था। वे अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकी। हम दिनाक २६ मई को श्री रामभरोस जी के साथ श्रीमती फातिमा मीर के निवास पर गए। अस्वस्थ होने पर भी उन्होंने बडी गर्मजोशी से स्वागत किया। मेरा परिचय श्री रामभरोस जी ने दिया। उन्होंने मेरी पत्नी सुनीती और भतीजी श्वेता को बडे प्यार से अपने पास बिठाया। मैंने सम्मान से उन्हें ओ३म् व गायत्री मन्त्र का भगवा पटका पहनाया। और उनके पैर छुए। उन्होने पटका सिर पर ओढ लिया दोनो हाथो मे मेरा सिर लेकर आशीर्वाद दिया। उनके व्यवहार में कहीं इस्लाम की बू नहीं दिखाई दी। उन्होंने श्री नेल्सन मडेला की जीवनी लिखी। मैंने उनसे कहा कि रसिसटेन्स पार्क के उद्घाटन पर श्री मण्डेला ने अपने भाषण मे आपको कई बार याद किया तो बोली - He is suppose to remember us. Because when he was in jail for 27 years, we were the persons who kept him alive out side the jail.

दिनाक २४ मई को हम "महात्मा गांधी सेटिलमेण्ट" फिनिक्स देखने गए। यहा रहकर महात्मा गाधी ने द० अफ्रीका की स्वतन्त्रता का युद्ध लडा था। एक बडे भवन मे उनका प्रिंटिग प्रेस, एक बगला जिसमे उनकी पौत्री को हाउस एरेस्ट करके रखा गया था। वह मकान जिसमे महात्मा गाधी रहते थे, देखने को मिला। अब उस स्थान को सरकार ने एक स्मारक के रूप मे परिवर्तित कर दिया है यह स्थान डरबन से लगभग ३० किलोमीटर दूर है व अफ्रिकन्स के निवासो के मध्य में स्थित है।

१ जून, २००२ को हम श्री राजेश लक्ष्मण के साथ पीटर मेरित्सबर्ग गए जो डरबन से १०० किमी दूर था, आर्यसमाज के कार्यक्रम में गए। प्रात. १० बजे से वहा के अधिकारी हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। यहीं पर स्वामी शकरानन्द ने अपना डेरा डाला था व आर्यसमाज के कार्यो को प्रारम्भ किया। यहां आर्यसमाज के अनेक भवन व स्कूल चल रहे हैं। ४ वेद भवन 'वेद धर्म सभा' के नाम से स्थापित हैं। श्री बन्धु वहां के वरिष्ठ अधिकारी हैं। आर्यसमाज के भवनों को दिखाने के पश्चात् हमे आर्यसमाज द्वारा निर्मित शमशान गृह दिखाया जहा शव गैस के बने चैम्बर या डीजल से जलाए जाते हैं। इतनी सफाई कि विश्वास नहीं होता- बडे हाल कुर्सियो से सुसज्जित जहा प्रार्थना सभा होती है। ऐसा ही एक शमशान स्थल हमें लेडी स्मिथ शहर मे देखने को मिला। जिसके सामने आर्यसमाज का बोर्ड लगा था। इतने सुन्दर ढंग से निर्मित था कि वहा जाकर बैठने में भी किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। दो बड़े चैम्बर बने थे। शव को गैस से नष्ट करने की व्यवस्था। अनेक गोरे लोगों को भी वहां लाया जाता है। जो अपने शव दफनाने के स्थान पर जलाना पसन्द करते हैं। है तो शमशान गृह पर दर्शनीय।

मध्याह्न में एक आर्य परिवार जो अग्रेजों के बनाए "विक्टोरिया क्लब" के मालिक हैं, उन्हेंने सम्मान भोज दिया। लगभग ५० व्यक्ति उपस्थित थे। विशुद्ध भारतीय भोजन, उनकी पत्नी देहरादून की हैं।

मध्याह्न ३ बजे पीटर मेरित्सबर्ग की डिप्टी मेयर कुमारी लेटश्वायो ने चाय पर आमन्त्रित किया हुआ था। म्यूनिसिपल भवन के सामने महात्मा गाधी का भव्य पुतला बना हुआ था। जिसका अनावरण श्री मण्डेला ने किया। चारो ओर महात्मा गाधी के वाक्य लिखे थे। वहा से हम पीटर मेरित्सबर्ग रेलवे स्टेशन देखने गए। वह स्थान व प्रतीक्षालय देखा जहा गोरों ने बैरिस्टर मोहन लाल गाधी को बाहर निकाल दिया था यह कहकर यहा कोई काले नही आ सकते और उसी स्थान से द० अफ्रीका की स्वतन्त्रता का अभियान प्रारम्भ हुआ।

साय एक बडा समारोह आर्य भवन में रखा गया। सबका सम्मान किया। अनेक विविध मनोरजक कार्यक्रम हुए। मेरा भाषण हुआ उपस्थित जन समुदाय अपने भारतीय अतिथियों का दिल से स्वागत कर रहा था। हर व्यक्ति मेरे साथ फोटो खिचवाना चाह रहा था। लगभग ४५ मिनट तक फोटो सेशन चलता रहा। यह स्थिति प्राय सभी स्थानों व समारोहो में बनी रही।

डरबन से प्रकाशित वहा का सुप्रसिद्ध समाचार 'दी लीडर' में मेरा इण्टरव्यू प्रकाशित हुआ। अन्य समाचार पत्रो मे भी समाचार प्रकाशित हुए।

७ जून, २००२ को हम जोहन्सबर्ग के लिए रवाना हुए। डरबन से ६०० किमी० दूर। हम वहा ३ दिन रहे। ए० बी० एच० के वहां दो बडे केन्द्र हैं। साय का भोजन हमनें वहीं किया। हम उनके आयुर्वेद सैण्टर में रुके। कड़ाके की सर्दी पड रही थी। ए०बी०एच० कौंसिल की मिटिग में मैंने भाग लिया उनके कार्यक्रमों की प्रशसा की। ८ जून को दमसन सिटी देखने गए। १० जून को प्रात १० बजे East Wave Radio पर मेरा एक घण्टे का इण्टरव्यू प्रसारित किया गया। इस कार्यक्रम के पश्चात् हम ग्लेनको शहर के लिए रवाना हो गए। वहा भी ए०बी०एच० की बहुत बडी शाखा कार्य कर रही है। शाम को वहां बहुत बड़ा आयोजन रखा गया था। यह स्थान जोहन्सबर्ग से ३०० किमी० दूर था।

इस भव्य कार्यक्रम में लगभग २५० व्यक्ति उपस्थित थे। सांई संस्थान ने भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गायत्री मन्त्र पर डाडी टेम्पल सोसायटी की बालिकाओ ने नृत्य प्रस्तुत किया। श्री राजेश लक्ष्मणं ने मेरा परिचय दिया। उसके पश्चात् लगभग ३५ मिनट तक मेरा भाषण हुआ।

ए०बी०एच० की इस शाखा में लगभग २० कमरे और दो बड़े हाल हैं। व्यक्ति स्वय की देखभाल स्वयं ही कर सकते हैं वे कमरों में व शेष हाल में रहते हैं। सबकी देखभाल की सुन्दर व्यवस्था है। यहा के इन्चार्ज हैं- डॉ० आई वेदझी। उनकी पत्नी ने समारोह का सचालन किया। इस समारोह में श्री टी०पी० दया, पण्डिता ज्ञानवती राम प्रताप और श्री विजय जगन से भी मिलना हुआ।

श्री हरिसिंह जी द० अफ्रीका के सुप्रसिद्ध सगीतकार हैं । वे फिल्मी गाने नहीं गाते। शास्त्रीय सगीत के विद्वान हैं। ७६ वर्ष की उनकी आयु है। आर्य प्रतिनिधि सभा के समारोह मे उन्होंने अपना गायन प्रस्तुत किया था। मेरे भाषण से उनके मन मे मेरे प्रति स्नेह की भावना बनी। ए०बी०एच० मे उनका टेलिफोन आया मैं कैप्टन आर्य के सम्मान मे २ घटे का सगीत कार्यक्रम देना चाहता हू। ११ जून को उन्होने सगीत सध्या का कार्यक्रम ए०बी०एच० में रखा, जिसमे कुछ गण्मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुझे दो अर्धनिर्मित आर्यसमाजो मे विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। ताकि मैं उन्हे सलाह दे सकूं यदि उसमें कुछ कमी हो। एक आर्यसमाज पीटर मेरित्सबर्ग से ६० किमी० दूर हाविक्स पश्चिम में बन रही है। बडा सुन्दर भवन तैयार हो रहा है। अक्तूबर में उसका उद्घाटन है। दूसरी आर्यसमाज डरबन से २५ किमी० दूर दूरचेरी रोड डरबन में बन रही है। विशाल भवन, यज्ञशाला, पुरोहित का निवास, रसोईघर एव हिन्दी कक्षाओ को चलाने के लिए कमरे आदि। उसे देखकर बडी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अग्रेजी बोलने वाले पुरोहित की भी माग की। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज विकास के पथ पर अग्रसर है।

१२ जून को हमारा विदाई समारोह आयोजित किया गया। समारोह ए०बी०एच० के हाल में था। द० अफ्रीका के आर्य दूर-दूर से आए थे। कुछ हिन्दू संगठनों के व्यक्ति भी थे। डॉ० राम विलास, डॉ० रामभरोस जी आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। ए०बी०एच० में रहने वाले अफ्रिकन बच्चों ने नृत्य द्वारा स्वागत गान अपनी भाषा में गाया। श्री राजेश लक्ष्मण ने समारोह का संयोजन किया। आर्य युवक सभा के प्रधान श्री प्रेम पोलटन जी ने मेरी यात्रा पर अपने विचार व्यक्त किए। लगभग २०० विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। मैंने अपनी

पृष्ठ १० का शेष

वैदिक धर्म प्रचार : कब, कैसे, कहां ?

आज २१वीं शताब्दी मे वैदिक धर्म प्रचार के लिये जन सम्पर्क के सामूहिक साधन हैं। सबसे पुराने साधना मे से आज आधुनिक और प्रभावी है रेडियो। आकाशवाणी या आल इण्डिया रेडिया का वर्चस्व भारत और आस पास के देशो मे आज भी हे और कल भी रहेगा। इग्लेंड के बी०बी०सी० रेडियो सेवा का वर्चस्व विश्व भर मे है। विभिन्न भाषाये माध्यम हे। हिन्दी मे प्रसारित कार्यक्रम बुद्धिजीवी एव श्रमजीवी समान रूप से सुनते है। पाश्चात्य देशो मे टी०वी० घर घर पर हावी हे फिर भी रेडियो परित्यक्ता पत्नी नहीं है। घर से कार्यालय जात समय और वापसी म नर नारी रेडियो ही सुनत ह। इस प्राइम टाइम प्रसारण समय को हम वैदिक धर्म प्रचार के लिय खरीद सकते है। महगा हुआ तो क्या हुआ फल तो मीठा लगा। सस्ता रोव बार बार महगा रोवे एक बार यह कहावत आज भी लागू है।

आय समाज बरमिंघम इग्लेड क निमत्रण पर मैने स्थानीय आर्यो क साथ रेडियो पर वैदिक धर्म का प्रचार किया था। अत्यन्त प्रभावशाली रहा वह प्रचार। अपने पिछले वर्ष के इस सुखद अनुभव से प्रोत्साहित होकर वहा के प्रधान डाक्टर नरेन्द्र कुमार और अतरग सभा के सहयोगी उस इतिहास को दोहरा रहे है।

केबिल टी वी नेटवर्क है सस्ता सुन्दर और टिकाऊ। स्थानीय सम्पर्क से कम सम्पन्न आर्यसमाजे अपन क्षेत्र की समस्याओ का समाधान ढूढते हुए दस से पद्रह मिनट के अनेक कार्यक्रम वी०एच०एस० कैमरा से जो अपेक्षाकृत सस्ता ह बना कर और बीच बीच म मीठी गोली म कड़वी दवा समान वैदिक सिद्धान्त डाल कर अपने टोले मुहल्ले म प्रभावी प्रचार कर सकती है। स्थानीय नेतृत्व के संवाद माध्यम से मिल कर सप्रम अग बढ। उनसे दो एक मिनट का साक्षात्कार करन से धन सग्रह म साथी बन जाएगे वे। प्रचार क सभी माध्यमो म सुगम सगीत भजन जो सिद्धान्त मे सही हो और सिनेमा क गान की धुन पर न आधारित हो का पुट हो।

आर्य सगीत आरम्भ म था किन्तु अब उसका लाप हा गया है। आयसमाज के आदिकाल के सगीतज्ञ महाशय अमीचद जी जिनके लिये ऋषि दयानन्द ने कहा था हो तो हीरा किन्तु कीचड मे फस हो के भजन आज भी अमृतमय है। उनका लिखा हुआ भजन – जय जय पिता परम आनन्द दाता जगदादिकारण मुक्ति प्रदाता अमी रस पिलाओ कृपा करके मुझको रहू सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता हम सभी सुनने वालो को तृप्त कर देता है। विदशो मे रह रहे आय आज भी वदो का डका आलम मे बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने गाकर और सुनकर निहाल हो जाते है अब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य सगीत की रचना की ओर विशेष ध्यान दे ताकि सिनेमा की धुनो पर बनाये गये भजनो का तिलाजलि दी जा सके।

आज क युग मे इटरनेट प्रभावशाली प्रचार माध्यम है। समृद्ध आयसमाजो को कम्प्यूटर खरीद कर इटरनेट क [illegible] शन ले लेना चाहिए। आर्यसमाजो और अन्य आर्य सस्थाओ के ई मेल पता की सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सकलित करके प्रकाशित करे ताकि आर्य जगत मे आपसी सम्पर्क स्थापित करने म सुविधा हो। वेबसाइट के सम्पादक लेखो और चित्रो मे विविधता लाने का प्रयास करे।

टी०वी० पर प्रचार महगा है परन्तु दूरगामी है। टी०वी० माध्यम से हम वेदवाणी घर घर तक पहूचा सकते है। हा टी०वी० पर वेदप्रचार की धारा बढती रहे और पाखण्ड के मरु मे विलीन न हो। चरैवेति चरैवेति।

उपवन ६०६
सेक्टर २६ नोयडा २०१३०३
फोन व फैक्स ०१२० ४४५४५११

आर्यसमाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली मे
धर्मवीर पं० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन

नई दिल्ली १४ जुलाई आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी नई दिल्ली मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी तथा सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री विद्यासागर नागिया जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके धर्मवीर प० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

उद्घाटन से पूर्व आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे राष्ट्रकल्याण का आयोजन किया गया जिसमे माता श्रीमती ज्ञानदेवी गुप्ता के परिवार के सदस्यो ने यजमान बनकर घृत सामग्री की आहुतिया प्रदान कीं। श्रीमती स्वर्णकान्ता जी ने २५ हजार रुपये का चैक आर्यसमाज की प्रधाना डॉ० पुष्पलता वर्मा को पुस्तकालय के लिए प्रदान किया। विशाल जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम को देखकर मुझ आत्मिक बल मिला है।

आचार्य चन्द्रशेखर जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि खाया हुआ अपना नहीं होता अपितु पचाया हुआ अपना होता है। इसी प्रकार कमाया हुआ धन अपना नहीं होता अपितु परोपकार मे लगाया हुआ धन अपना होता है।

आर्यसमाज की प्रधाना डा० पुष्पलता वर्मा जी ने समस्त अतिथियो को स्मृतिचिन्ह एव वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया। पडित लेखराम जी का आदेश है कि आर्यसमाज मे लेखनी एव वाणी का काम बन्द नहीं होना चाहिए। श्री विद्यासागर नागिया परिवार के सहयोग से प्रकाशित तथा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा सम्पादित 'वैदिक सध्या नामक पुस्तक का

आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड विकासपुरी नई दिल्ली मे धर्मवीर प० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी समाज सेवी श्री दर्शनलाल जी एव वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर जी।

अध्यक्षीय उद्बोधन से पूर्व वैद्य श्री इन्द्रदेव जी का पुष्पमाला से स्वागत समाज के सरक्षक श्री चन्द्रभान चौधरी श्री जी०डी० गुलाटी आदि महानुभावो ने किया। अपने उद्बोधन मे वैद्य इन्द्रदेव जी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम स्वाभिमानी बनें अभिमानी नहीं। जीना है तो आर्यसमाज में आ इस भजन को जब दिल्ली सभा के मत्री ने गाया तब सारी जनता मत्रमुग्ध हो गई। दिल्ली सभा के मत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के आर्य सामाजिक गतिविधियो तथा रचनात्मक कार्यक्रमों एव विशाल जनसमूह की श्रद्धा को देखकर भूरि भूरि प्रशसा लोकार्पण श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने किया। श्री नरेद्र आर्य जी के सुमधुर भजन हुए।

इस अवसर पर विशेष रूप से श्री अश्विनी कुमार नागिया श्री यशपाल आर्य (प्रदेशमत्री भाजपा) श्री कुलभूषण कपूर (नेशनल बुक ट्रस्ट) श्री चेतन दास श्रीमती स्वर्णकान्ता श्री दर्शनलाल श्रीमती सुदर्शन गुप्ता श्री के०के० गुप्ता डा० सतोष गुप्ता तथा अनेक समाजो एव सस्थाओ के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

समाज मत्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार चौधरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त मे पुस्तक वितरण एव जलपान की व्यवस्था की गई।

– पुष्पलता वर्मा प्रधाना

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डा०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 28-7-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2002 in NDPSo on 25/26-7-2002

ओ३म् दूरभाष : ६४१४३५९ (कार्या०)
६९३३९४९ (निवास)

भगवती लेज़र प्रिंट्स

४६/५, कम्युनिटि सेण्टर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-११० ०६५

प्रतिष्ठा में,

मान्यवर महोदय!

सप्रेम नमस्ते।

जैसा कि वैदिक साहित्य के पाठको और विक्रेताओं, सभी को ज्ञात है कि '**भगवती लेज़र प्रिंट्स**' गत १८ वर्षो से महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यो (जैसे पुस्तकें छपवाना, विविध धूमिल चित्रों को पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत करके उनमें सजीवता लाना आदि कार्यो) में संलग्न है। इस संस्थान की विश्व में सर्वप्रथम चारों वेदों को स्वर सहित कम्प्यूटरीकृत करने और छपवाने का गौरव भी प्राप्त है। **अब इसी संस्थान के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का स्थूलाक्षर संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।** वैसे तो स्थूलाक्षर संस्करण और भी विभिन्न संस्थानों ने छाप रखे हैं, परन्तु इस दिशा मे विगत १८ वर्षो के अनुभव से युक्त इस सस्थान द्वारा सज्जित और मुद्रित यह ग्रन्थ अपने में अनेक विशेषताओं को धारण किये हुए है। इस ग्रन्थ को आर्यजन अपने घर में रखकर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेंगे।

स्वामी श्री दीक्षानन्द सरस्वती (समर्पण शोध सस्थान, साहिबाबाद), **स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती** (मन्त्री, वेद-मन्दिर, हरिद्वार), **कै० देवरत्न आर्य** (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), **प्रो० धर्मवीर** (मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर), **आचार्य हरिदेव** (आचार्य, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), **आचार्य विशुद्धानन्द** (आचार्य, वेद मन्दिर, बदायूँ), **श्री रामनाथ सहगल** (प्रबन्धक, डी ए वी समिति, दिल्ली), **स्वामी श्री ओमानन्द सरस्वती** (आचार्य, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा), **श्री अजयकुमार आर्य** (अधिपति, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली), **श्री प्रभाकरदेव आर्य** (अधिपति, श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, हिण्डौन सिटी), **श्री मनोहर विद्यालंकार** (सदस्य, गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार), **डॉ० महेश विद्यालंकार** (अन्तरंग सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), **डॉ० वेदप्रकाश** (प्रो० मेरठ कॉलेज, मेरठ), **श्री विजयकुमार झा** (सूत्रधार, सत्-साहित्य प्रकाशन, दिल्ली) आदि आर्य-विद्वान् और सुप्रतिष्ठित भद्रजनों के विचारों से अनुमोदन प्राप्त करके यह ग्रन्थ और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इनके शब्दों में ***"ऐसा महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्य बार-बार नहीं होता, अतः प्रत्येक आर्य, आर्यसमाज, गुरुकुल, डी०ए०वी० स्कूल-कॉलिज और धार्मिक संस्थाओं को ऐसे ग्रन्थरत्न की कम-से-कम एक प्रति अपने लिए सुरक्षित कराने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ है, उसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। यह एक अभूतपूर्व कार्य है, जिसका ऐसा भव्य और दिव्य प्रकाशन अभी तक तो नहीं हुआ। ग्रन्थ के अवलोकन के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होगी कि इसकी एक प्रति प्रत्येक आर्यसमाज और आर्यगृह में होनी ही चाहिए। जिस प्रकार प्रत्येक गुरुद्वारों में 'गुरुग्रन्थ साहिब' आदि ग्रन्थ; मन्दिरों में 'रामायण, महाभारत, पुराण' आदि ग्रन्थ, मस्जिदों में 'कुरान' आदि ग्रन्थ और चर्चों में 'बाइबिल' आदि ग्रन्थ शोभा देते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक आर्यसमाज और आर्यगृह में भी सत्यार्थप्रकाश का यह विशिष्ट संस्करण अवश्य सुशोभित होना ही चाहिए। यही हम आर्यजनों की महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।"***

ग्रन्थ का नमूना भद्रजन निम्नलिखित किसी भी संस्थान के कार्यालय में देख सकते हैं। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में विगत डेढ़ महीने से '**सार्वदेशिक**' साप्ताहिक, '**वेदप्रकाश**' मासिक और '**वैदिक-पथ**' द्विमासिक पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर विज्ञापन आ रहे हैं, अतः विशेष जानकारी वहाँ से प्राप्त कर सकते हैं।

अपनी प्रति १५ अगस्त से पहले सुरक्षित करके १५० रुपये की बचत तो कर ही सकते हैं, साथ ही इसी प्रक्रिया में आर्यजगत् में सत्-साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने के लिए जो अभूतपूर्व **"साहित्य-प्रोत्साहन-पुरस्कार-योजना"** का शुभारम्भ किया गया है, उसके अन्तर्गत इस ग्रन्थ के अग्रिम क्रेता को प्रत्येक ग्रन्थ के अन्दर एक पुरस्कार कूपन प्राप्त होगा, जिसके आधार पर वे १०० रुपये से लेकर १०,००० रुपये तक का अपना मनपसन्द वैदिक-साहित्य निम्नलिखित किसी भी स्थान से पूर्णतः निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। अतः जो भी सज्जन किसी भी प्रकार का वैदिक-साहित्य क्रय करने के उद्देश्य से निकले हों, वे सर्वप्रथम इस ग्रन्थ को क्रय करें, और जितनी भी राशि का कूपन निकले, उतने का इच्छित साहित्य पूर्णतः निःशुल्क ले जाएँ। यह ध्यान रहे कि जो व्यक्ति या संस्था १५ अगस्त से पहले स्थूलाक्षर सस्करण की प्रति/प्रतियाँ सुरक्षित कराएँगे, कूपन केवल उसी में होगा। उनके प्रत्येक पुस्तक में कम-से-कम १०० रुपये का कूपन तो होगा ही, साथ में ५००, १,०००, २,५००, ५,००० और १०,००० रुपये के कूपन भी डाले गये हैं। **प्रति १००० ग्रन्थों में १,५०,००० रुपये के कूपन अनुपाततः डाले जाएँगे। "साहित्य-प्रोत्साहन-पुरस्कार-योजना" का शुभारम्भ कुछ प्रतिष्ठित संस्थाओं के नकद अनुदान से इसलिए किया गया है, जिससे वैदिक-साहित्य के प्रति आर्यजनों की रुचि निरन्तर बनी रहे।**

—:: इस संस्करण की विशेषताएँ ::—

● पुस्तक में प्रयुक्त टाइपों का आकार इतना बड़ा है कि कम दृष्टिवाला व्यक्ति भी सरलता से पढ़ने में सक्षम हो सके। ● प्रयुक्त कागज बहुत उत्कृष्ट कोटि का है। ● पूरी पुस्तक की छपाई दो रंगों में बार्डर सहित एवं प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठभूमि में ऋषि दयानन्द का विविध चित्र। ● सम्पूर्ण जिल्द पक्की बाईंडिंग के साथ दो रंगों में। ● यह सत्यार्थप्रकाश पढ़ने के लिए लकड़ी का एक सुदृढ़ एवं आकर्षक स्टैंड (रहल) और ये दोनों गत्ते के एक सुन्दर एवं सुरक्षित बक्से में बन्द।

इतनी विशेषताओं से युक्त सत्यार्थप्रकाश क्रमशः दो आकारों में प्रकाशित किये जा रहे हैं —

प्रथम आकार— ११"×१८", मूल्य ६५१/- रुपये [रहल (स्टैंड) सहित] है। दिनांक १५ अगस्त तक अपनी प्रति सुरक्षित करानेवालों को यह पुस्तक केवल लागत मूल्य ५०१/- रुपये में ३० अगस्त तक प्राप्त कराई जाएगी। द्वितीय आकार—७.५"×१०", मूल्य १५१/- रुपये [रहल (स्टैंड) रहित] है। यह पुस्तक भी उक्त तिथि के अन्दर ही उपलब्ध होगी एवं इसका अग्रिम सुरक्षित मूल्य १०१/- रुपये होगा। रहल के साथ ग्रन्थ का भार ७ किलो ६५० ग्राम हो जाता है, जिससे इसे डॉक द्वारा भेजना असम्भव है। अतः आपात् स्थिति में केवल ट्रांसपोर्ट अथवा कुरियर द्वारा ही भेजा जा सकेगा और उसमें आनेवाला व्यय क्रेता को वहन करना होगा।

आप अपनी प्रतियाँ अग्रिम राशि भेजकर निम्न किसी भी स्थानों से सुरक्षित करवा सकते हैं —

१. **भगवती लेज़र प्रिंट्स**, ४६/५, कम्यूनीटि सेंटर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५, दूरभाष : ६९३३९४९, ६४१४३५९
२. **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११० ००६, दूरभाष: ०११-३९७७२१६, ३९१४९४५
३. **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**, ३/५, रामलीला मैदान, दिल्ली-११० ००२, दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५
४. **श्रीमती परोपकारिणी सभा**, केसरगंज, अजमेर (राज०), दूरभाष: ०१४५-४६१६३७
५. **भगवती प्रकाशन**, एच-१/२, मॉडल टाउन, भाग-३, दिल्ली-११० ००९, दूरभाष : ०११-७२०२२४९, ७२०३००१
६. **समर्पण शोध संस्थान**, ४/४२, राजेन्द्रनगर, साहिबाबाद, (उ०प्र०), दूरभाष : ४६२३०२६
७. **आर्ष साहित्य संस्थान**, ११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-११० ०४९, दूरभाष : ०११-६५२५६६३, ६६११२५४
८. **श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट**, ब्यानिया पाड़ा, हिण्डौन सिटी, राज०-३०, दूरभाष : ०७४६९-३४६२४, ३२६२४
९. **डॉ० वेदप्रकाश**, वैदिक प्रकाशन, एन.एच.-१७, पल्लवपुरम-२, मेरठ-२५०११० (उ०प्र०), दूरभाष : ०१२१-५७०६५७
१०. **आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल**, आर्यपुरम्, दूनवाटिका-२, पौन्धा, देहरादून (उ०प्र०) दूरभाष : ०१३५-७७३३२०

—:: निवेदक ::—

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	**स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**	**कै० देवरत्न आर्य**	**प्रो० धर्मवीर**	**आचार्य हरिदेव**
समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद	*मन्त्री, वेद-मन्दिर, हरिद्वार*	*प्रधान, सा०आ०प्र० सभा*	*मन्त्री, परोपकारिणी सभा*	*आचार्य, गुरुकुल गौतमनगर*
आचार्य विशुद्धानन्द	**रामनाथ सहगल**	**स्वामी ओमानन्द सरस्वती**	**श्री प्रभाकरदेव आर्य**	**श्री अजयकुमार आर्य**
आचार्य, वेद मन्दिर, बदायूँ	*प्रबन्धक, डी०ए०वी० समिति*	*आचार्य, गुरुकुल झज्जर*	*अधिपति, श्री घू.प्र.आ.ध.ट्रस्ट*	*अधिपति, गोविन्दराम हासानन्द*
मनोहर विद्यालंकार	**डॉ० महेश विद्यालंकार**	**डॉ० वेदप्रकाश**	**ब्र० नन्दकिशोर**	**विजयकुमार झा**
सदस्य, गुरुकुल काँगड़ी	*अन्तरंग सदस्य, सा०आ०प्र० सभा*	*प्रो० मेरठ कॉलिज, मेरठ*	*अधिष्ठाता, आर्यसमाज काठमाण्डो*	*सूत्रधार, सत्-साहित्य-प्रकाशन*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक** प्रेस द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-२ (फोन : ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स : ३२७०५०७ से मुद्रित, **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**, दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५)।
सम्पादक : **वेदव्रत शर्मा**, सभा मन्त्री। **E-mail : vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा **Website : http://www.whereisgod.com**

आ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

वेद

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक १४ ४ अगस्त से १० अगस्त २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ श्रा० कृ० १०

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

बृहद् वृष्टि महायज्ञ के सफल होने के शुभ संकेत

उत्तर और मध्य भारत में मानसून की कमजोर स्थिति से उत्पन्न सूखे की परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने राष्ट्र की सेवा में अपना सहयोग प्रस्तुत करते हुए विशाल स्तर पर बृहद वृष्टि महायज्ञ अर्थात वर्षा की उत्पत्ति के लिए सात-दिवसीय यज्ञ का आयोजन २९ जुलाइ (सोमवार) प्रात सूर्योदय वला मेंआयसमाज मन्दिर मिण्टो रोड पर प्रारम्भ कर दिया है। यह महायज्ञ सात दिना तक चलगा ओर **४ अगस्त (रविवार) को इस वृष्टि महायज्ञ की पूर्णाहुति प्रात कालीन सत्र के यज्ञ की १० बजे समाप्ति पर होगी। उसके उपरान्त प्रवचन उदबोधन आदि का आयोजन १२ बजे तक होगा तदुपरान्त ऋषिलगर वितरित्त किया जाएगा।**

प्रतिदिन **प्रात ६ बजे से ६ बजे तक** ओर **साय ४ बजे से ७ बजे तक** चलने वाले इस महायज्ञ मलाख रुपय मूल्य की अमूल्य जडी—बूटिया से तयार की गइ **विशेष सामगी** तथा **गाय के शुद्ध घी** की आहुतिया दी जा रही हे

सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा क वरिष्ट उप प्रधान श्री विमल वधावन ने बताया कि सुप्रसिद्ध वदिक विद्वान स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में यह महायज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसमे श्री भद्रकाम वर्णी श्री महन्द्र कुमार शास्त्री श्री नत्रपाल शास्त्री आयतपस्वी श्री सुखदेव तथा गुरुकुल गौतमनगर और अन्य गुरुकुलों के ब्रह्मचारी यज्ञ क सहायक हैं।

वृष्टि महायज्ञ का प्रारम्भ करवात हुए स्वामी दीक्षानन्द जी न कहा कि वृष्टि महायज्ञ म प्रयाग किए जान वाल कीमती पदार्थ इतनी क्षमता वाले ह कि आकाश क वायुमण्डल को भदकर वषा करवा सकत ह उन्हान कहा कि यज्ञ के साथ साथ पवित्र आ[illegible] सकल्प का भी महत्व हाता है आर्यसमाज की सर्वोच्च सस्था क वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन न प्रथम दिन यजमान बन कर अपन उसी पवित्र सकल्प का परिचय दत हुए राष्ट्रीय हित मे इस विशाल वृष्टि महायज्ञ मे अपनी आहुतिया प्रदान करने के लिए आमन्त्रित किया।

यह वृष्टि महायज्ञ पहले दिन से ही अपना प्रभाव दिखाने लगा ह। २९ जुलाई का ६ घण्टे क दा यज्ञ [illegible] क बाद यज्ञ क ५—७ किमी० क दायर म [illegible] क बाद [illegible] १ २ मिनट क लिए ही [illegible] दिल्ली म [illegible] की [illegible]

यज्ञ क ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती न कहा ह कि यदि दिल्लीवासी श्रद्धा और विश्वास क साथ महायज्ञ म भाग ल तो यह महायज्ञ अवश्य ही सफल हगा। उन्होन कहा ह कि इश्वर म विश्वास [illegible]

बारिश से दिल्लीवासियो को कुछ राहत

नई दिल्ली (वार्ता दिनेश शर्मा) राजधानी के अधिकतर हिस्सा मे आज बारिश हाने से दिल्लीवासियो को भीषण गर्मी से कुछ राहत मिली है। भारतीय मोसम विभाग ने सफदरजग वेधशाला मे १५ मि०मी० वर्षा दर्ज की। लोधी कालोनी आर०के० पुरम बसन्त विहार शख सराय चाणक्यपुरी ओर अशोक रोड स्थित राजधानी के कई इलाको मे बारिश हुई। निकटवर्ती नोएडा (उत्तर प्रदेश) मे भी बारिश होने की खबर मिली। हालाकि अधिकतम तापमान सामान्य से ४ डिग्री अधिक ३८४ डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। कल का अधिकतम तापमान ३९८ डिग्री था। न्यूनतम तापमान २७ डिग्री रहा। मौसम विभाग का मानना है कि देरी स आया मानसून सभवत जार पकड कर आगामी २४ घटो म दिल्ली म भारी बौछार बरसाएगा।

वृष्टि महायज्ञ ने जोर पकडा

दिल्ली मे कई स्थानो पर बादल बरसे मेघ आखिर पिघल गए और दोपहर बाद इन्द्रदेवता ने प्रसन्न होकर वर्षा रूपी आशीवाद दे दिया। मोसम खुशगवार हा गया। मिण्टो रोड स्थित आर्यसमाज मन्दिर के प्रागण मे वर्षा हेतु किया जा रहा महायज्ञ आज तीसरे दिन मे प्रवेश कर गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन क अनुसार महायज्ञ ७ दिन तक चलता रहेगा और परमात्मा दिल्ली को जल के अभाव से मुक्त अवश्य करेग।

(साभार पजाब केसरी)

[illegible]

श्री विमल वधावन न यह दावा किया ह कि परमात्मा आयसमाजियो की नि स्वाथ मन स की गइ प्राथना का अवश्य स्वीकार करगे ओर धरती माता की गाद वषा के जल से भरेग।

श्री वधावन न विज्ञान ओर तकनीकि मन्त्री ड०ं मुरली मनाहर जोशी तथा कषि मन्त्री श्री अजीत सिह से निवेदन किया है कि वे स्वय भी इस वैज्ञानिक मान्यता वाले वृष्टि महायज्ञ म भाग ले तथा अपने वैज्ञानिको का दल नियुक्त करके इस यज्ञ से उत्पन्न गैसो के वायुमण्डल पर पडने वाले प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करवाए।

आयसमाज स जुडे वेद के वेज्ञानिको और विद्वानो क अनुसार एक सप्ताह के अन्दर इस महायज्ञ का परिणाम अवश्य नजर आएगा और दिल्लीवासियो का तापमान से राहत मिलगी।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्लीवासियो को अधिक स अधिक सख्या मे इस महान महायज्ञ [illegible]

[illegible] इस यज्ञ से निकलन वाली गसो [illegible] विद्यमान होत ह इसलिए यह प्रक्रिया पूर्ण वैज्ञानिक ह [illegible] कारो को भी इस [illegible] चाहिए

सभामन्त्री श्री वदव्रत शर्मा के अनुसार [illegible] वृष्टि महायज्ञ की वज्ञानिकता [illegible] वाली जडी बूटियो स ही सिद्ध हो जाती हे बृहद वृष्टि महायज्ञ क लिए विशेष सामग्री क अतिरिक्त पीली सरसो तिल [illegible] हल्दी जटामासी सुगन्धबाला कपूर [illegible] उडद नारियल गिरी नागरमोथा किशमिश छुआरा गाय क दूध की दही गाय का दूध गुड (देशी शक्कर) [illegible] इलायची गुग्गल दशी घी [illegible] आदि का विशेष अनुपात मे मिश्रण करके लगभग [illegible] की सामग्री तेयार करवाई गइ हे [illegible] क अतिरिक्त बहुत कम [illegible] समिधाए मगवाइ गइ ह

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों की देख रेख में

उप-राष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलीन

अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न

श्री कृष्णकान्त जी

भारत के उप राष्ट्रपति श्री कष्णकान्त का देहावसान २७ जुलाई की प्रात वेला मे शयनकाल के दौरान हो गया परिजनो द्वारा प्रात उन्हे नि चेष्ट पाए जाने के बाद अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान ल जाया गया तो डाक्टरो ने उन्हे मृत घोषित कर दिया

उनके देहावसान की सूचना जैसे ही सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन को मिली तो वे तत्काल श्री लक्ष्मीचन्द क साथ उप राष्ट्रपति निव स पहुचे वे अपने साथ गुरुकल गोतमनगर के ४ युवा ब्रह्मचारी भी ले गए जिन्होने उप राष्ट्रपति जी के शव के निकट बैठकर वेदमन्त्रो का पाठ प्रारम्भ कर दिया

श्री विमल वधावन ने उप राष्ट्रपति जी की सत्तान्वे वर्षीय माता श्रीमती स यावती जी को सान्त्वना और शोक प्रकट करने के बाद अतिम सस्कार का कार्यक्रम पूछा और कहा कि आर्यसमाजी परिवारो के सदस्यो के सभी सस्कार विशुद्ध वैदिक रीति से ही होने चाहिए इस पर माता जी ने तुरन्त उप राष्ट्रपति भवन के अधिकारियो का निर्देश करवाया कि सस्कार की सारी रूपरेखा श्री वधावन जी के निर्देशानुसार वैदिक पद्धति से ही करवाई जाए

इसके बाद उप राष्ट्रपति भवन के अधिकारियो ने श्री विमल वधावन से समन्वय करके अगले दिन अतिम सस्कार की तैयारिया प्रारम्भ कर दीं

२ जुलाई को प्रात ही श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा प० नेत्रपाल शास्त्री ड ० रविक न्त ट१ चो० लक्ष्मीच द उप र ष्ट्रपति भवन पहुचे गुरुकल गोतमनगर के आचाय हरिदव तथा प्रियव्रत भी अन्य ब्रह्मच रियो के साथ उप राष्ट्रपति निवास पहुच गए जहा प्रात काल से ही उन्होने वेदमन्त्रो का पाठ प्रारम्भ करा दिया

दापहर ३ बजे दिवगत उप राष्ट्रपति श्री कष्णकान्त जी के पार्थिव शरीर को लेकर उनकी अतिम यात्रा निगम बोध घाट की ओर रवाना हुई जहा पहुचने पर भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी उपप्रधानमन्त्री श्री लाल कष्ण आडवाणी सहित कइ केन्द्रीय मत्रियो र ्यो के मुख्यमत्रिया रा यपालो सहित सेना के तीनो अगो के अध्यक्षो ने उन्हे श्रद्धाजलि अपिर्त की

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो के निर्देशानुसार गुरुकल गोतमनगर के ब्रह्मचारियो तथा आर्यसमाज मदिर दीवानहाल के पुरोहितो सर्वश्री विद्युत वेदालकार एव प्रकाशमित्र शास्त्री के सहयोग से आचार्य हरिदेव जी ने उप राष्ट्रपति जी का सस्कार पूर्ण वेदिक रीति से सम्पन्न कराया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे राष्ट्रीय पुरुष श्री कष्णकान्त जी के वैदिक अन्तिम सस्कार का दूरदर्शन तथा अन्य सभी टी०वी० चेनलो पर सीधा प्रसारण किया गया जिसकी देश विदेश मे सराहना की गई

उप राष्ट्रपति जी के अन्तिम सस्कार के उपरान्त श्री विमल वधावन ने सार्वदेशिक सभा की ओर से एक शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमे कहा गया कि उप राष्ट्रपति श्री कष्णकान्त जी ने अपना सारा जीवन पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी के साथ देश की सेवा मे अर्पित किया। वे महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी ओर कर्मठ वैदिकधर्मी साबित हुए जिनके निधन से समूचा राष्ट्र शोक निमग्न है

शोक प्रस्ताव मे कहा गया कि हम भारत के वासी श्री कष्णकान्त जी के देहावसान पर उनके जीवन कार्यो से प्रेरण ग्रहण करते हे ओर परमपिता परमा मा से प्राथना करते हे कि उनकी आ मा को सद्गति प्रदान कर

वदिक रीति से सम्पन्न इस सस्कार क ाय मे श्री वधावन के अतिरिक्त सभामन्त्री श्री वदव्रत शर्मा श्री लक्ष्मी चन्द एव रविकान्त आदि का पर्याप्त सहयोग रहा

उप राष्ट्रपति जी के अतिम सस्कार क बाद चौथे दिन अस्थिचयन के बाद उनक पारिवारिक सदस्यो के बीच एक भव्य यज्ञ का आयोजन हुआ इस यज्ञ को आचार्य प्रियव्रत ने सम्पन्न कराया और उनके परिजनो को आशीर्वाद दिया

इस अवसर पर परिजनो को सम्बोधित करते हुए श्री वधावन ने कहा कि उप राष्ट्रपति श्री कष्णकान्त जी आर्यसमाज की गतिविधियो को बहुत रूचि से सुनते थे आज समूचा देश वैदिक रीति से सम्पन्न हुए इस सस्कार को देखकर यह कह रहा हे कि श्री कष्णकान्त जी ईमानदार चरित्रवान और र ष्ट्रवादी नेता थे क्योकि वे पक्के अ र्यसमाजी थे यज्ञोपरान्त प्रवचन मे अ र्यस यासी श्री सुखदेव ने कहा कि श्री कृष्णकान्त जी की आत्मा इस भोतिक देह को छोडकर परमात्मा की गोद मे जा बैठी हे इसलिए उन्हे श न्त और गम्भीर मन से ही स्मरण करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धा यक्त करनी चाहिए श्रद्धा व्यक्त करने का सर्वोत्तम तरीक यह हे कि उनके कार्यो ओर कत्तव्या को हम सब अपना ले
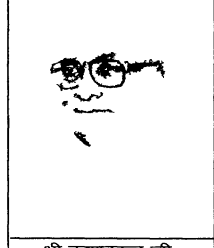
पृष्ठ १ का शेष
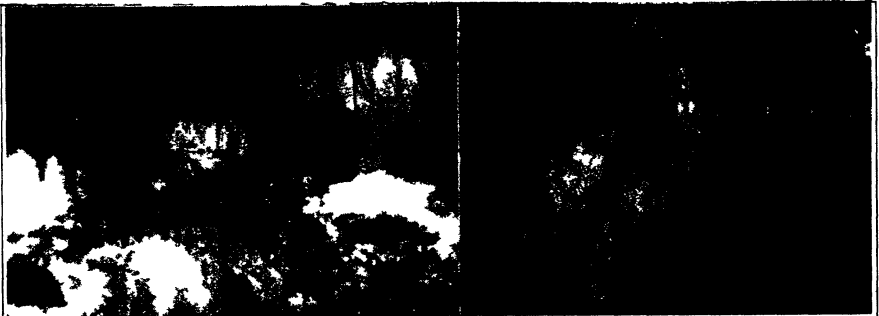
बृहद् वृष्टि महायज्ञ के सफल ....

कोई भी वैज्ञानिक इन पदार्थों की वैज्ञानिक दृष्टि से जाच पड़ताल कर सकता है।

महायज्ञ के तीसरे दिन भी दिल्ली मे कई स्थानों पर वर्षा हुई। महायज्ञ के आयोजको का यह विश्वास है कि वृष्टि महायज्ञ का यह सप्ताह दिल्लीवासियो के लिए अवश्य ही राहत प्रदान करने वाला होगा।

महायज्ञ के प्रात सत्र में मगलवार को प्रसिद्ध आर्य विद्वान प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने भी वृष्टि यज्ञों को लेकर आर्यसमाज के इतिहास से कई घटनाओं का उल्लेख किया।

इस वृष्टि महायज्ञ की पूर्णाहुति ४ अगस्त को यज्ञ एवं तत्पश्चात प्रवचनों एवं उदबोधनो के द्वारा हागी यह कायक्रम दोपहर तक चलेगा जिसके उपरान्त ऋषि लगर का भी आयोजन होगा।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने इस महायज्ञ मे सहयोग करने वाले सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं विशेषरूप से सर्वश्री विनय आर्य, अरुण वर्मा रवि बहल रोशनलाल गुप्त प्राणनाथ घई सत्येन्द्र मिश्र मनवीर राणा जोगिन्द्र खटटर सुरेन्द्र रैली फत्तराम तयागी सजीव कोहली एस०पी० सिह मदनमोहन सलूजा वैद्य इन्द्रदेव जगदीश आर्य सोमदत्त महाजन भजन प्रकाश ओ०पी० भटनागर हरीश बत्रा बाबूराम आर्य धर्मपाल आर्य अजय भल्ला गजेन्द्र सक्सेना माता प्रेमलता शास्त्री आदि का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए उनके लिए ईश्वर के आशीर्वाद की कामना की।
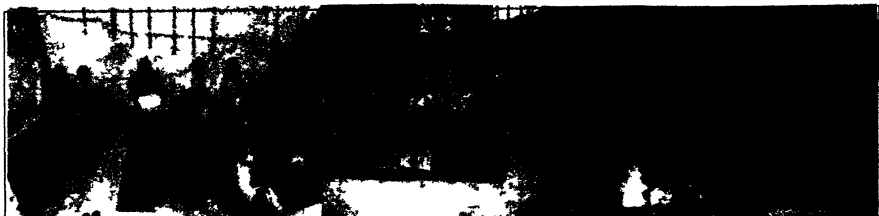
सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर

महाराष्ट्र में प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता संगोष्ठी सम्पन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज परली मे आयोजित महाराष्ट्र प्रातीय आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी बुधवार दिनाक १६ जून २००२ को सम्पन्न हुई। प्रस्ताविक भाषण मे सभा मन्त्री प्रा० (डा०) सुग्रीवजी काळे ने सभा की गतिविधियो का परिचय देते हुए कहा कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से सुसचालित करने के लिए विविध आर्य महापुरुषो की स्मृति मुख-पत्र वैदिक गर्जना को बिना टिकट लगाए भेजने हेतु लाइसेस प्राप्त किया जा रहा है। ध्यान योग शिविर पुरोहित प्रशिक्षण-शिविर आर्यवीर दल श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम जिला राज्य स्तरीय महनवेघाल मीन वक्तृत्व स्पर्धा बिराजदार राज्यस्तरीय विद्यालय वक्तृत्व स्पर्धा आदि गतिविधिया चालू हैं। आर्य कन्या सस्कार शिविर के लिए भी पाच लाख की स्थिर निधि जमा की जा रही है। राज्य स्तरीय काळे निबन्ध स्पर्धा भी इस वर्ष से प्रारम्भ होने जा रही है। आयकर मुक्ति के प्रमाणपत्र भी सभा द्वारा प्राप्त कर लिया गया है। इन गतिविधिया के माध्यम से सभा आर्य विचारो के निर्माण सम्वर्धन और सरक्षण मे सलग्न है। लेकिन ये सब कार्य तभी सफल होगे जब इसमे समस्त पदाधिकारियो के साथ कार्यकर्ताओ का भी सहयोग मिलगा। आज तन-मन-धन स वर्ण व्यवस्था आदि वैदिक सिद्धान्तो का अपने क्रियात्मक जीवन मे चरितार्थ करने की आवश्यकता है। अनेक स्तरो पर प्रदूषण बढ जाने के कारण उसके शुद्धीकरण के लिए सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है। समर्पित भाव से कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ की सभा प्रतीक्षा मे है। वह निष्काम भाव से मनसा-वाचा कर्त्तव्य सहयोग देने वाले कार्यकर्त्ताओ का अत करणपूवक स्वागत करती है। समय देने वाले कार्यकर्त्ता आगे आए और सुझावो से इस सगोष्ठी को सफल बनाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ता सगोष्ठी के उदघाटन भाषण मे सम्बोधित करते हुए कहा कि चौकी पर बैठने वाला चौकीदार और जमीन पर बैठने वाला जमींदार होता है। सम्प्रति मच पर बैठे सब चौकीदार और जमीन पर बैठे सब श्रोता जमींदार हैं। दोनो का उद्देश्य आर्यसमाज की चौकीदारी करते हुए उसका सरक्षण करना है। कार्यकर्ता सगोष्ठी का यह उपक्रम हम सबको आत्ममथन करने का शुभावसर प्रदान करता है। हर महीने हमारी कार्यशालाए होनी चाहिए। हमारी प्रवचन श्रृखला विषय पर आधारित होनी चाहिए जिसकी घोषणा या सूचना एक सप्ताह पूर्व ही सचार माध्यमो के द्वारा श्रोताओ तक पहुच जानी चाहिए। आर्यसमाज जालना की तरह हमारा प्रचार विभाग सक्रिय होना चाहिए। सगठन को मजबूत करने की दृष्टि से आपका अधिकाधिक सहयोग आर्यसमाज प्रान्तीय सभा और सार्वदेशिक सभा को ही प्राप्त होना चाहिए। स्वतन्त्र व्यक्तियो को दिए गए सहयोग की अपेक्षा सार्वजनिक सस्थानो को दिया सहयोग अधिक लाभप्रद होता है। आर्यसमाज को राजनीति से मुक्त रखे। राजनीतिज्ञो को आप सहयोग करने मे स्वतन्त्र है पर सार्वजनिक आर्य सस्थाओ का उन्हे पदाधिकारी न बनाए। सत्सगो मे पूरे परिवार के साथ उपस्थित रहे। समाजो मे आप पूरे परिवार के साथ जाएगे तो निरर्थक झगडो से अपने आप मुक्ति मिल जाएगी। हमे अपने भवनो का सदुपयोग करना चाहिए। अवैदिक पद्धति से समाजो मे विवाह न होने दे। जो व्यक्ति आर्यसमाज को साल भर मे कम से कम एक हजार रुपया सदस्यता शुल्क के रूप मे देगा आगे से वही आयसमाज का पदाधिकारी बन सकेगा।

सावदेशिक सभा के उपप्रधान श्री विमल वधावन जी के उपरोक्त उदबोधन के बाद आय कार्यकर्ताओ ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। सर्वप्रथम आर्यसमाज गाधी चौक लहूर के मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी पराशर ने अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा – वाचनालय औषधालय पारिवारिक यज्ञ वार्षिकोत्सव आदि के माध्यम से हमारी आर्यसमाज इतनी अधिक सक्रिय ओर सुपरिचित होनी चाहिए कि – सामान्य व्यक्ति भी नवागतुक को आर्यसमाज का अच्छी तरह से अता पता बता सक। आर्यसमाज के कार्यक्रमो का अधिक व्यापक बनाने के लिए अन्य सावजनिक स्थलो पर भी हमारे कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। आय विचारधारा के धारावाहिको का भी निर्माण और प्रसार होना चाहिए। वार्षिकोत्सवो पर श्रोताओ की सख्या दिन प्रतिदिन घट रही है। इस चिता को दूर करने का एक मात्र उपाय मेरी दृष्टि मे पारिवारिक यज्ञ है। हमारे पण्डितो का आचरण ऐसा नही होना चाहिए कि जिससे सामान्य जनता मे मतभेद उत्पन्न हो। गाव मोगरगा तहसील – औसा जनपद लातूर क मराठी काव्य (अभग) निर्माता श्री इन्द्रजीत गिरी जी ने – प्रत्येक आर्यसमाज मे गायन कीर्तन मण्डली की आवश्यकता पर बल दिया।

जालना आर्यसमाज के युवा इजीनियर श्री गोपाल भूरेवार ने सामूहिक आत्म चिन्तन पर मतभेद मिटाने पर जोर दिया। समाज के वृद्ध पदाधिकारियो से उन्होने नवयुवको को पदाधिकारी बनाने की अपील की। आर्यसमाज का कार्य और कार्यक्षेत्र अत्याधिक व्यापक होने के बावजूद भी केवल पदलिप्सा और लोकेषणा हेतु अन्य मचो से कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ के कारण आर्यसमाज को जो क्षति पहुच रही है उस ओर भी उन्होने इशारा किया। सत्य और वेदपथानुगामी होने के बावजूद भी आर्यसमाज के पिछडने पर उन्होने चिन्ता व्यक्त की। प्रकाशन पत्रकारिता सचार – नेटवर्क से दूर रहने की धारणा को उन्होने आर्यसमाज के लिए घातक बतलाया साथ ही उन्होने आर्यसमाज जालना द्वारा मराठी लेखो और समाचारो के माध्यम से जो जन-जागरण करने का प्रयास किया गया है उसकी एक फाइल भी उन्होने सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री विमल वधावन जी को प्रस्तुत की और कार्यकर्ताओ तथा समाजो से यह अपेक्षा व्यक्त की कि – इस प्रकार हर जिले की गतिविधि की फाइल प्रान्तीय सभा के कार्यालय मे पहुचनी चाहिए।

तत्पश्चात श्री भूरेवार जी ने मेरे घर पर आर्यसमाज की दस पत्रिकाए आती है की सूचना देते हुए सभी कार्यकर्ताओ से आर्य पत्र पत्रिकाओ को अपनाने पर बल दिया। नये-नये व्यक्तियो ओर उच्च पदाधिकारियो को यज्ञ का यजमान बनाने पर जोर देते हुए कहा कि आयसमाज जालना के माननीय श्री फूलचन्द जी अग्रवाल पुलिस अधीक्षक आर जिलाधीश आदि को भी यज्ञ का यजमान बनाकर आर्यसमाज की गतिविधियो की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट कर रहे है। जालना आयसमाज अपनी सक्रियता के कारण सुपरिचित है। नवागतुक को जालना आर्यसमाज पहुचने मे किसी प्रकार की कठिनाइ नहीं होगी क्योकि वहा का सामान्य व्यक्ति भी आर्यसमाज के भवन और उसकी गतिविधियो से परिचित है।

नादेड आर्यसमाज के प्रधान और युगमथन के सम्पादक प्रा० देवत्त जी तुगार ने प्रत्येक समाज मे एक अन्तजातीय विवाह विभाग होने की आवश्यकता प्रतिपादित की। दो दो समाजे ओर दो-दो सभाओ का आर्य सगठन के लिए विघातक बतलाया। आय कायकर्ताओ और समाजो के विद्यालय-महाविद्यालय के प्राध्यापको से जनभाषाओ मे वैदिक सिद्धान्तो पर लेख लिखवाने हेतु योजनाबद्ध रूपरखा बनाने की प्रेरणा दी। अपने सुझावो के अन्त मे उन्होने साप्ताहिक सत्सगो के चिन्तन प्रधान ओर सिद्धान्त और आचरण के बीच स्थित वैचारिक विरोधाभास का दूर करने पर जोर दिया एक वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री कधारेजी पाटिल ने अन्तरजातीय विवाह शब्द के प्रयोग को ही अनुचित बताते हुए गुणकर्म स्वभाव के माध्यम से जाति निर्मूलन पर बल दिया।

इस अवसर पर आर्यसमाज नासिक के श्री भगवतसिह जी कपूर ने कार्यकर्त्ताओ का हक के साथ कर्त्तव्य पर ध्यान रखने का अनुरोध किया। सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री शेषराव जी वाघमारे के सुपुत्र निलगा आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता एव विधिज्ञ श्री विजयकुमार जी वाघमारे ने महर्षि दयानन्द की गोकरुणानिधि का आधार लेकर विदेशी गैट करार से सघर्ष करने का अहवान किया।

नासिक के श्री माधवराव देशपाडे ने बिल्ली की आख और कुत्ते की नाक लेकर समाज का सतर्क प्रहरी बनने की प्रेरणा दी। पत्र पत्रिकाओ मे हो रहे अवैदिक दुष्प्रचार का विरोध करने और प्रत्युत्तर देने के लिए हर समाज मे उन्होने एक पत्रकार विभाग खोलने पर बल दिया। महाराष्ट्र टाइम्स दिसम्बर २००१ मे वान्द्रा – मुम्बई के सदानन्द वर्दे द्वारा लिखित पुलिस की इस मूर्खता को क्या कहे नामक पत्र प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि जिला रायगढ के नेरल गाव मे रहने वाले ज्येष्ठ स्वाधीनता सैनिक श्री केशवराव जोशी निष्ठापूर्वक समाज सुधार और प्रबोधन का कार्य करते है। पत्थर की प्रतिमा को लड्डू, नारियल आदि देने की अपेक्षा से सब भोज्य पदार्थ भूखे इन्सान को दो इस आशय का दसवीं की पुस्तक का उदाहरण उन्होने २९ नवम्बर २००१ को नेरल गाव के शिवाजी चौक मे श्यामपटट पर अकित कर दिया इस कारण हमारी धार्मिक भावनाओ को आघात पहुचा है कहते हुए स्थानीय भारतीय जनता पार्टी और काग्रेस के अनुयायियो ने पुलिस पर जोर डाला तत्पश्चात नेरल पुलिस ने भारतीय दण्ड विधान की १४१वी धारा के अन्तगत केशवराव जोशी को नोटिस देते हुए यह पूछा कि ऐसी स्थिति मे आप पर कठोर कार्यवाही क्यो न की जाए ? इस पर उपरोक्त पत्र लेखक श्री सदानन्द वर्दे ने टिप्पणी करते हुए लिखा है पुलिस की इस मूर्खता को क्या कहे ? उन्होने अपने खुले पत्र मे पूछा है। क्या सम्बन्धित व्यक्तियो ने महाराष्ट्र राज्य पाठय पुस्तक मण्डल को धार्मिक भावनाओ को आघात पहुचाने वाला यह उदाहरण पाठय पुस्तक मे समाविष्ट करने का कारण जानने हेतु नोटिस दिया है ? भारतीय सविधान ने नागरिको के मूलभूत कर्त्तव्यो मे विज्ञाननिष्ठ दृष्टिकोण मानवतावाद अनुसधानात्मक बुद्धि ओर सुधारात्मक प्रवृत्ति का विकास करने का निर्देश नही दिया है ? छात्रो को मानवता सिखाने और विज्ञान निष्ठ बनाने वाले इस उदाहरण मे आखिर आक्षेप योग्य ऐसी कौन सी बात है। देव पत्थर की मूर्ति मे नही इसान अपितु मे है ? ऐसा कहने पर आखिर तनाव निर्माण कैसे क्या होता है ? पत्र के अन्त मे श्री सदानन्द वर्दे ने लिखा है मुख्यमन्त्री व उपमुख्यमन्त्री ने एक दूसरे को चेतावनी देने की अपेक्षा नेरल पुलिस को एक स्वाधीनता सैनिक के साथ धृष्टता पूर्वक ओर अपमान जनक व्यवहार करने के कारण चेतावनी देते हुए नोटिस वापिस लेने का आदेश देना चाहिए इस पूरे पत्र को प्रस्तुत करते हुए श्री देशपाण्डेजी ने कहा सम सामयिक समस्याओ और आह्वान से अपने को जोडते हुए सामाजिक कार्यकर्ताओ ने अपने सिद्धान्तो का प्रचार करना चाहिए।

इसी प्रकार श्री माधवरावजी देशपाण्डे ने मगलवार ११ जून २००१ के गावकरी दैनिक मे प्रकाशित एक समाचार के कुछ अश प्रस्तुत किए जिसमे लिखा था। भारत मे मूर्तिकला ऋग्वेद काल के पूर्व चली आ रही है। वैदिक सस्कृति से भी पहले की सिधु सस्कृति थी जिसकेमोहनजोदडो और हडप्पा केन्द्रो के उत्खनन से असख्य मूर्तिया प्राप्त हुई हैं। मूर्तिपूजा वैदिक ऋषियो से प्राप्त एक अनुपम भेट है और चित्त की एकाग्रता के लिए वह अत्यावश्यक है। इस प्रकार के अनर्गल प्रचार के विरोध में श्री देशपाण्डेजी ने आर्य कार्यकर्ताओ को सतर्क और तत्काल प्रतिखण्डन के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा दी।

शेष भाग पृष्ठ १६ पर

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के नींव धारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– आचार्य भगवानदेव चैतन्य

आर्यसमाज एक अमर क्रान्ति का नाम है। एक ऐसी क्रान्ति जिसने अपने परिवतनशील प्रवाह से एक ाई चतना आर दिव्य आलाक बिखेर दिया। यह एक ऐसी ाग ह जिसमे किसी प्रकार की जलन आर तपन नहीं ल्कि उत्साह उमग एव अविरल गतिशीलता है। उसके सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मजात क्रान्तिकारी । उनकी क्रान्ति सकुचित नहीं बल्कि अपने भीतर बहुआयामा ा समाविष्ट किए हुए थी। उनकी क्रान्ति क स्रोत्र बहुमुखी । उनका ओज तज और ज्ञान स्वय उसकी महत्ता का साक्षी था। उन्होने बचपन स ही झूठ छल कपट और समाज की जर्जर मान्यनाओ स सघष किया। जडता स चेतनता की ओर उनका अभियान उसी समय आरम्भ हो गया था जब वह अभी मात्र बारह वर्ष के ही थे। वह उसी अल्पवय से समाज की सब गली–सडी परम्पराओ के प्रति विद्रोही हा उठ थ। झूठे शिव को त्यागकर सच्चे शिव का प्राप्त करन का सकल्प भी उनकी क्रान्ति का ही एक हिस्सा था। आजीवन कठिन स कठिन बाधाओ और मुसीबतो से जूझकर अन्तत मृत्यु का अगूठा दिखाकर अमरत्व का आलिगन करने वाला यह अदभुत महामानव अपनी मिसाल आप ही थे। सामाजिक कुरीतियो धार्मिक आडम्बरो पागापन्थिया स जिस साहस और दृढता से यह सत्य के उपासक जा टकराए वह अद्वितीय ओर अभूतपूर्व ह ही। यही नहीं प्यार राष्ट को परतन्त्रता की कठोर बडिया से जकडा हुआ देखकर तो दयानन्द माना क्रान्ति के एक दहकते अगारे ही बन गए। राष्ट्रप्रेम की यह अप्रतिम भावना ग्रन्थ मे दिए गए प्रवचना स स्वत ही प्रकट हा जाती ह सन १ ५७ के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम की नींव इसी क्रान्तिकारी ने अपन उत्कट साहस स रखी थी। यही नहीं उसे सफलता तक ले जान क लिए अपनी सक्रिय भूमिका भी निभाई थी मगर निश्चित तिथि स पूव ही प्रस्फुटित हा जाने ओर अपने ही देश क कुछ गददारो के विश्वासघात क कारण यह सग्राम सफलता का मस्तक नहीं चूम पाया फिर भी दयानन्द इससे हताश और निराश नहीं हुए बल्कि स्वतन्त्रता की लडाइ की नींव और भी अधिक गहरी रखन क प्रयास म जुट गए। उन्होने गहराइ से उन कारणा पर मनन ओर चिन्तन किया जिसके कारण यह सग्राम अपना लभ्य प्राप्त नहीं कर सका ओर उन कारणो को दूर करने के लिए कार्यक्षेत्र मे दुगने उत्साह स उतर गए।

स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम

उनके हृदय म राष्ट्र क प्रति अथाह प्रम था तभी तो सन १८७२ म भारत के तत्कालीन वायसराय नार्थ ब्रुक के मुह पर ही इस फकीर न कह दिया था म नित्य प्रात साय परमेश्वर स प्रार्थना करता हू कि मेरा दश पराई दासता से मुक्त हो। अपने विश्वविख्यात ग्रन्थ **सत्यार्थप्रकाश** के **आठवे समुल्लास** मे उन्होने लिखा **कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।** इसी ग्रन्थ मे वह कहते हे **माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।** उन्होने अपने ग्रन्थ **आर्याभिविनय** मे वेदमन्त्रो के माध्यम से स्थान–स्थान पर प्रभु प्रार्थनाए की जो उनकी देशभक्ति की उत्कट भावनाए प्रकट करती हैं। कहते हैं कि चन्द्रशेखर आजाद तब तक अन्न ग्रहण नहीं करते थे जब तक इस ग्रन्थ के किसी एक मन्त्र का स्वाध्याय नहीं कर लेते थे। उनका यह ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से भी पहले की रचना हे। इसी ग्रन्थ मे वह एक स्थान पर कहते हैं – **विदेशी राज्य हमारे देश पर कभी शासन न करे।** लोकमान्य जी का कथन है – **दयानन्द स्वराज्य शब्द के प्रथम सन्देशवाहक थे।** मदनमोहन मालवीय जी का कथन है – **वह भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे।** इसी स्वतन्त्रता और दिव्यता की विधिवत प्राप्ति के लिए उन्हाने १८७५ मैं आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने चारो ओर चेतनता और नवजागरण की ऐसी धूम मचाइ कि एक अमेरिकी विद्वान कह उठा – **मैं एक धधकती ज्वाला को देख रहा हू। अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला जो समस्त द्वेष दावानल को भस्मसात कर देगी।** इस धधकती ज्वाला का नाम है **आर्यसमाज।** महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उस समय स्वतन्त्रता प्राप्ति की सिह गर्जना की थी जब समस्त भारतीय समुदाय आलस्य और भय की गहरी नींद मे सोया हुआ था।

जजीरो से जकडे देश को राह दिखाई थी तूने
जिसको न काल भी बुझा सके वह शमा जलाई थी तूने।
घनघोर तिमिर के आगन मे तू बीज उषा के बोता था
आवाज लगाई थी तूने जब सारा भारत सोता था।।

सच्चे आर्यसमाजी को तो दशभक्त की भावना मानो घुटटी मे ही मिल जाती थी इसलिए आर्यसमाज क्रान्तिकारियो का पर्यायवाची बन गया। अग्रेज सरकार के तत्कालीन (१८११) जनसख्या अध्यक्ष मिस्टर ब्लण्ट ने आर्यसमाज पर टिप्पणी करते हुए लिखा था – **आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे देशभक्ति की प्रेरणा है। आर्यसिद्धान्त और आर्यशिक्षा समानरूप से प्राचीन भारत के गीत गाते है और ऐसा करके अपने अनुयायिओ मे राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना जगाते है।** एक अन्य अग्रेज क शब्दो मे **किसी भी आर्यसमाजी की खाल को खुरचकर देखो तो अन्दर छिपा हुआ क्रान्तिकारी देशभक्त दयानन्द दिखाई देगा।** सचमुच मे ही आर्यसमाज क्रान्तिकारियो का स्रोत बन गया। **श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा बाल गगाधर तिलक लाला लाजपतराय लाला हरदयाल भाई परमानन्द भाई बालमुकुन्द स्वामी श्रद्धानन्द वीर सावरकर मदन लाल ढींगरा सरदार भगतसिह पण्डित काशीराम रामप्रसाद बिस्मिल इशफाकउल्ला खा रोशनसिह लाहडी तथा चन्द्रशेखर आजाद** जैसे सैकडो वीर भारत मा की बेडियो को छिन्न भिन्न करने के लिए अपन प्राण हथेली पर लेकर निकल पडे। इन सभी क्रान्तिकारियो का प्रेरणास्रोत मूलत आर्यसमाज ही था। इसलिए आर्यसमाज पर अग्रेज प्रशासन की हमेशा कुदृष्टि बनी रहती थी। यहा तक कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो मे अग्रेज गुप्तचर बैठे रहते थे। आर्यसमाज को अनेक प्रकार की यातनाए सहनी पडी मगर नर्म और गर्म दोनो ही दलो मे यह अपनी सक्रिय भूमिका निभाता रहा। काग्रेस के इतिहास मे डा० पटटभि सीतारामैया लिखते है – **स्वतन्त्रता सग्राम मे अस्सी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाज के लोगों का सहयोग रहा है।**

आज हम स्वतन्त्र तो हो गए है मगर जिस स्वतन्त्र भारत की कल्पना हमारे वीर शहीदा ने की थी उसका निर्माण हम आज तक नहीं कर पाए हैं क्योंकि कुछ गददीधारी स्वार्थियो ने स्वतन्त्रता का प्रसाद जन साधारण तक नहीं पहुचने दिया बल्कि अपनी मुटिठयो में बन्द कर दिया –

वो कफन चुराकर बैठ गए जा महलो मे
देखो गान्धी की अर्थी नगी जाती है
इस राम राज्य के सुघर रेशमी दामन मे
देखो सीताओं की लाज उतारी जाती है।

आर्यसमाज ने अपने बलिदान की कीमत नहीं मागी अन्यथा वह भी अपनी रोटिया सेकने क लिए आगे बढ सकता था। अपने तप और त्याग का ढिढोरा नहीं पीटा जबकि स्वतन्त्रता प्राप्ति मे उसका सबसे अधिक सहयोग रहा। सुप्रसिद्ध नेताओ के ये हार्दिक उदगार आर्यसमाज के कार्य की मुह बालती तस्वीर है। श्रीमती एनीबेसेन्ट ने लिखा है **महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत भारतीयो के लिए का नारा लगाया।** राजा महेन्द्रप्रताप कहते हैं – **आर्यसमाज क्रान्तिकारियों की सस्था है। इसके सदस्यो में देशप्रेम की भावना है।** सर्वपल्ली डाक्टर राधाकृष्णन का कथन है – **स्वामी जी ने स्वराज्य का सबसे पहले सन्देश दिया था।** लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा – **महर्षि दयानन्द महान राष्ट्रनायक नेता और क्रान्तिकारी महापुरुष थे और उन्होने राजनीतिक क्षेत्र मे अभूतपूर्वकार्य किया।** दादाभाई नौरोजी कहते है – **मुझे स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों से स्वराज्य की लडाई में बडी प्रेरणा मिली।** महाराष्ट्र के नेता एन०वी०गाडगिल का कहना है – **महाराष्ट्र में जो स्थान छत्रपति शिवाजी अथवा समर्थ गुरु रामदास का है वही स्थान भारत के राष्ट्रीय उत्थान में महर्षि दयानन्द का है।**

वास्तव मैं काग्रेस ने भी कालान्तर मे जिन कार्यो को स्वतन्त्रता सग्राम का आधार बनाया उनकी घोषणा महर्षि दयानन्द जी पहले ही कर चुके थे। सरदार बल्लभभाई पटेल के शब्दो मे – **मेरी दृष्टि मे वह सच्चे राजनीतिज्ञ थे। चालीस वर्षो में काग्रेस का जो कार्यक्रम रहा है वे सब कार्य साठ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के लिए रखे थे। सारे देश में एक भाषा खादी दलितोद्धार स्वराज्य की घोषणा आदि सब** दयानन्द ने देश को दिए वास्तव मे वह ही भारत की स्वाधीनता की नींव रखने वाले थे। तभी तो भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष अनन्त शयनम आयगर ने कहा था कि **गाधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे।** महर्षि हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आद्यप्रर्वतक थे। महर्षि जी के अप्रतिम योगदान का देखते हुए डाक्टर ऐनी बेसेंट ने तो यहा तक कहा **जब स्वाधीन भारत का मन्दिर बनेगा तो उसमें स्वामी दयानन्द की मूर्ति की वेदी सबसे ऊची होगी।**

आज जबकि समूचा राष्ट्र पुन बिखरने के कगार पर खडा है। जातिवाद और सम्प्रदायवाद का जहर गाव गाव तक पहुच गया है। मजहबी कोढ ने गली–गली को अपनी सडान्ध से दूषित कर दिया है हमे पुन राष्ट्रीय प्रवृत्तियो और स्वतन्त्रता के आद्यप्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज की शिक्षाओ की ओर लौटना पडेगा। यही असम्प्रदायिक विचारधारा हमे आज इस सकट से उबार सकती है। मार–काट ओर खून–खराबे के राक्षसी बादल पुन मण्डरा रहे हैं। स्वार्थी जनून का काला आवरण हमे अपनी चपेट मे लेने के लिए आगे बढ रहा है। इसे महर्षि जी की मानवतावादी विचारधारा से विदीर्ण करना होगा तभी राष्ट्रीय अस्मिता ओर हमारी सस्कृति एव स्वतन्त्रता सुरक्षित रह सकती है अन्यथा अपनी इस गफलत का हमे बहुत बडा मूल्य चुकाना पडेगा –

वक्त की फिक्र कर नादान मुसीबत आने वाली है
तेरी बर्बादियो के मशविरे है आसमानो मे।
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ता वालो
तुम्हारी दास्ता तक भी नहीं होगी दास्तानों मे।।

– ८१/एस ४ सुन्दरनगर कालोनी जिला मण्डी
हिमाचल प्रदेश १७४४०२७

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की मान्यताओं पर आपत्तियों का उत्तर

– डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू)

दिल्ली से प्रकाशित हस पत्रिका के अप्रेल २००२ मे प्रकाशित एक लेख मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओ पर कुछ आपत्तिया व्यक्त की गई है उनका उत्तर इस लेख मे दे रहा हू।

प्रश्न १ क्या आर्यसमाज साम्प्रदायिक तथा फासिस्ट प्रवृत्ति का सगठन है ?

उत्तर – (क) ऐसा जो मानते हैं उन्होने महर्षि को समझा ही नहीं है। महर्षि ने स्वय अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है – "मै अपना मन्तव्य उसी को जानता हू कि जो तीन काल मे सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। यदि मै पक्षपात करता तो आर्यावर्त मे प्रचलित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता। (देखिए सत्यार्थ प्रकाश मे स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश)

वहीं महर्षि लिखते है – अब जो वेदादि सत्यशास्त्र ओर ब्रह्मा से लकर जैमिनी मुनि पर्यन्तो के माने हुए इश्वरादि पदार्थ है जिनको कि मे भी मानता हू, सब सज्जन महाशयो के सामने प्रकाशित करता हू। वेद साम्प्रदायिक नही ह। ये सार्वभौमिक सबसे प्राचीन तथा सर्वहितकारी ग्रन्थ हे। य केवल महर्षि दयानन्द के या आयसमाज के ही ग्रन्थ नही है। यूरोपियन विद्वानो न भी इनको सर्वप्राचीन होने की मान्यता द रखी ह। इन ग्रन्थो म किसी एक व्यक्ति की जीवन कथा नही है जैसा कि कुरान मे तथा बाईबिल म हे।

कुरान मे से मुहम्मद साहिब को और बाइबिल मे से इसामसीह को अलग कर द तो उन ग्रन्थो मे कुछ नहीं बचगा। परन्तु वेदो मे से सभी ऋषियो के नाम को निकाल दीजिए तब भी वेद ही वेद रहेग। क्योकि व सार्वभौमिक कल्याणाथ ज्ञान का अथाह सागर है। वेद साम्प्रदायिक ग्रन्थ नही हे। ऐसे वेदो का मानने वाले तथा वेदानुकूल सभी ग्रन्थो का मानने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती को साम्प्रदायिक कहना महामूर्खता है।

सम्प्रदाय किसी एक व्यक्ति की मान्यताओ के आधार पर चलता है। उसमे गुरुडम की परम्परा चलती ह। गद्दी निर्धारित हो जाती है। महर्षि ने स्पष्ट कर दिया है कि मै किसी व्यक्तिगत मतो को चलाना नहीं चाहता। हमारे देश मे ही श्री रामानुज सम्प्रदाय जो भगवान राम को ही भगवान का अवतार मानते है।

श्री वल्लभाचार्य का कृष्ण सम्प्रदाय जा श्री कृष्ण को ही ईश्वर का अवतार मानते है।

श्री शकराचार्य का अद्वैत सम्प्रदाय जिसमे एक ही ब्रह्म की सत्ता का कल्पित किया गया हे। राधास्वामी सम्प्रदाय जिसम राधा और स्वामी जो पति और पत्नी के नाम पर चला ऐसे अनेक सम्प्रदाय इस देश मे चल रहे हैं जिनकी गदिया पर उनके शिष्य चुने नही जात बल्कि बैठा दिए जाते हे। ऐसा सम्प्रदाय आर्य समाज नही है। इसकी कोई ऐसी गद्दी नहीं है जिस पर महर्षि क बाद उनके शिष्य बैठते चले आ रहे हो।

आर्यसमाज (श्रेष्ठ पुरुषो का समाज)

महर्षि के द्वारा मान्य वैदिक धर्म का तथ्य सत्य तथा बौद्धिक तार्किक वैज्ञानिक मान्यताओ का प्रचार करने वाली सस्था है। जिसका उद्देश्य देश भक्ति और मानव मात्र का भला सोचना हे। महर्षि ने स्वय दस उद्देश्यो मे छठा आर्यसमाज का उद्देश्य लिखाहे – ससार का उपकार करना इस समाज (आर्यसमाज) का मुख्य उद्देश्य हे अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

इन विचारो के सन्दभ मे निसन्देह कहा जा सकता हे कि आयसमाज साम्प्रदायिक सस्था नही ह।

(ख) क्या आर्यसमाज एक फासिष्ट प्रवृत्ति का सगठन हे ?

इसक उत्तर म यही कहा जा सकता है कि नही। क्योकि महर्षि के विचार अधिनायकवादी नही हे उन्हान कही नही लिखा कि जो मे कह रहा हू वही अन्तिम सत्य है उसे ही मानो। अन्य की बात बिल्कुल मत सुनो। महर्षि के विचारो पर ध्यान दवे। पहले तो उन्होने कहा कि मे अपना कोई नया मत चलाना नही चाहता। जो मान्यताए वदानुकूल पहल स ही निर्धारित थी उन्ही का उन्होंने माना। जैसे धम के नाम पर सध्या देवयज्ञ पितृयज्ञ अतिथि यज्ञ बलिवेश्व यज्ञ। य पहल से ही चले आ रहे थे। इनम जो विकृतिया आ गइ थी उनका महर्षि ने सुधार किया है। सोलह सस्कार पहले से ही चले आ रहे थे। उनको सप्रमाण व्यवस्थित रूप मे सस्कार विधि मे सगृहीत करके महर्षि ने महान उपकार किया है। वेदो की मान्यता निराकार एक सर्वव्यापक सर्व शक्तिमान सर्वज्ञ परमेश्वर की मान्यता जीवित माता पिता की सेवा निरपराध प्रणियो की हिसा न करना आदि मान्यनाए पहले से ही चली आ रही थी। ये मान्यताए पहले से ही सिद्ध है अत इन्हे सिद्धान्त कहते है।

हा वेद विरुद्ध पुराणादि ग्रन्थ जैसे शिवपुराण देवी भागवत पुराण श्रीमद भागवत पुराण गरुण पुराण आदि। और भी कोई अवैज्ञानिक या काल्पनिक ग्रन्थ मान्य हो सकता हे या नही। इसक लिए उन्होने शास्त्राथ का प्रश्नोत्तर का मार्ग प्रशस्त किया जिससे सत्य असत्य का निणय हो सके। सभी ग्रन्थो म जो एक जैसा सत्य हे उस महर्षि मानने को तेयार हें। देखिए महर्षि सत्याथ प्रकाश की भूमिका म लिखते हे–

यद्यपि आजकल बहुत स विद्वान प्रत्यक मतो मह। व पक्षपात छाडकर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अथात जाजो बात सबक अनुकूल सब मे सत्य हे उनका ग्रहण और जा एक दूसरे क विरुद्ध बाते हे उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से बर्ते वर्ताब तो जगत का पूर्ण हित हावे। क्याकि विद्वानो के विरोध स अविद्वाना म विराध बढकर अनेकविध दु ख की वृद्धि ओर सुख की हानि होती हे य विचार किसी भी फासिस्ट व्यक्ति क नहीं हो सकते।

महर्षि न सत्याथ प्रकाश की भूमिका मे लिखा ह इस ग्रन्थ म जा कहीं भूलचूक स अथवा शाधन तथा छापन मे भूलचूक रह जाए उसको जानन जनाने पर जसा वह सत्य हागा वसा ही कर दिया जाएगा ओर जो कोइ पक्षपात स अन्यथा शका वा खण्डन मण्डन करगा उस पर ध्यान न दिया जाएगा। हा जो वह मनुष्यमात्र का हितेषी हाकर कुछ जनावेगा उसका सत्य–सत्य समझन पर उसका मत सगहीत होगा। एस उदार विचारो क महापुरुष द्वारा चलाइ गइ सस्था को फासिस्टवादी सगठन कहना अज्ञता का द्योतक ह। हा जा बाते असम्भव हे काल्पनिक ह पाखण्ड स युक्त हे धोखेबाजी स भरी हुइ ह जिनम छलकपट है जो अविद्या स युक्त है अवैज्ञानिक है सृष्टिक्रम के विरुद्ध हे मानवता विरोधी हे उन बाता को न मानना और उनका खण्डन करना आयसमाज का काम है। आयसमाज का एक नियम यह ह कि –

सत्य का ग्रहण करन म और असत्य को त्यागन म सवदा उद्यत रहना चाहिए। इन विचारो के सन्दर्भ मे कह सकते हे कि आर्यसमाजी सगठन फासिस्टवादी नही है। यह सस्था साधारण सदस्या आर चुने हुए प्रतिनिधियो द्वारा निवाचित प्रणाली के द्वारा चलती है। सर्वसम्मति से या बहु सम्मति से इसके अधिकारी चुने जात है।

प्रश्न २ क्या स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा ने वैदिक विचारधारा और पुरानी परम्पराओ को अनुलघनीय बताकर कोई पाप किया है ?

उत्तर– वैदिक विचारधारा विश्व का कल्याण करने वाली विचारधारा हे जिसम यह कहा गया हे कि

मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणिभूतानिसमीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

यजु ३५ ०

अर्थात सभी प्राणिया का म मित्र की आखा स दखू। हम सब एक दूसर का मित्र की आखो स दखे।

सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।

अथर्व० १९ १५ ६

सारी दिशाओ मे रहने वाले मेरे मित्र बन जाव।

वदा म व सभी बाते विद्यमान ह जिनम मानवमात्र का हित होता हे एव वदो का उल्लघन करना मानव जाति और प्राणिजाति क हित म नहीं हे। वदो को त्यागकर जितने भी मत चले ह उनम व्यसनो की प्रवृत्ति जेसे चार्वाक मत म (मद्य मास मीन मथुन) धम ह। बौद्ध जैन मत म नास्तिकता अन्य सम्प्रदायो म असम्भव बाते धम के द्वारा धन की धारणा ईश्वर की दड भ्रष्टाचार पाखण्ड। इस्लाम म कुफ्र क नाम पर अन्य धम के मानने वालो की हिसा आदि विचार प्रवृत्त हुए। अत महर्षि न दयारीय ज्ञान वेद को अनुलघनीय माना।

प्राचीन परम्पराए जितनी उस समय उपयोगी थी उतनी ही आज भी ह प्राचीन काल ... अध्यात्मिक प्रवृत्ति का युग ... । प्राचीन काल म गुरु और शिष्य का ... रहा ... मात पिता ... प्रति दवत्व की भावना रही ह। आत्मदशन और परमात्मानन्द की प्राप्ति का लक्ष्य रहा ह। जीओ और जीने दो की भावना रही ह। परोपकार का सन्देश हे। ये सभी बातें अनुलघनीय ही ह।

आज समाज म और धम म कितनी विकृतिया आ गइ हे। बडो क प्रति आदर नहीं रहा। धम के प्रति श्रद्धा घट रही ह। स्वाथ बढ रहा हे। भोगवाद का युग चल रहा हे विनाश के साधन इकट्ठे किए जा रहे हे। मानव आज बारूद के ढेर पर बैठा ह। एसे युग म प्राचीन परम्पराओ की परमावश्यकता हे। अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचय और अपरिग्रह आज अत्यन्त उपयोगी हे। अत प्राचीन परम्पराओ को महर्षि न अनुलघनीय बताकर विश्व का हित ही किया हे

प्रश्न ३ क्या शूद्रो के बारे मे स्वामी जी के विचार पहले आपत्तिजनक थे और बाद मे उनका परिवर्तन हुआ या सत्यार्थ प्रकाश मे सशोधन प्रकाशक अथवा लेखक की त्रुटि को सशोधित करने के समान था?

उत्तर पहली बात तो यह हे कि सत्याथ प्रकाश म सशोधन स्वय महर्षि दयानन्द सरस्वती न ही किया ह और लेखक को अपने ग्रन्थ मे सशोधन करने का पूर्ण अधिकार है। महर्षि ने स्वय सत्याथ प्रकाश की भूमिका मे इस बात का स्वीकार किया ह दखिए

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की मान्यताओं पर आपत्तियों का उत्तर

जिस समय मेने यह ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश बनाया था उस समय आर उससे पूव सस्कत भषण करने पठन–पाठन म सस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती हान क कारण से मुझको इस भषा का विशेष परिज्ञान न था इससे भाषा अशुद्ध बन गई। अब भाषा बोलने अ्र लिखने का अभ्यास हा गया हे इसलिए इस ग्र थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करक दूसरी बार छपवाया है। कही–कहीं शब्द वाक्य रचना का भद हुआ हे सो करना उचित था क्योकि इसक भेद किए बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी। परन्तु अर्थ का भद नही किया गया है प्रत्युत विशेष तो लिखा हे। हा जा प्रथम छपने मे कही–कही भूल रह गइ थी वह निकाल शोधकर ठीक कर दी गइ है।

बाद मे महर्षि के ग्रन्थो म विचारो को सशोधित करन का अधिकार किसी को नही दिया गया हे ओर न ऐसा करना चाहिए। अब रहा शूद्रो के विषय मे महर्षि के विचार।

शिक्षा के क्षत्र मे महर्षि ने सब जातियो क बच्चो को एकत्र गुरुकुल मे पढने का निर्देश किया हे। देखिए सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे शिक्षा प्रकरण मे

शूद्रादि वर्ण उपनयन किए बिना विद्याभ्यास कि लिए गुरुकुल मे भेज दव। उनका उपनयन घर मे न हुआ हो ता भी गुरुकुल म भेज दवे वहा आचार्य उनका उपनयन कर लगे। आज आयसमाज क गुरुकुलो मे सभी जातियो क बच्चे बिना भदभाव के पढते हे ओर उनका वहा यज्ञापवीत सस्कार भी होता है। महर्षि न शूद्र शब्द का प्रयोग उनके लिए किया हे जो प्रयत्न करने पर भी न पढ। महर्षि न सस्कार विधि म लिखा है परन्तु वर्ण व्यवस्था गुण कर्मो के अनुसार होनी चाहिए जन्ममात्र से नही। और जो विद्याहीन मूर्ख हो वह शूद्र शूद्रा कहावे। देखे सस्कार विधि मे विवाह प्रकरण।

वहा आपस्तम्ब २/५/११/१०/११ का प्रमाण देते हुए लिखा है –

धर्मचर्यया जघन्यो वर्ण पूर्व पूर्व वर्णमापद्यते अधमचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्य जघन्य वर्णमापद्यते।।

धर्माचरण से नीच बर्ण भी उच्च वर्ण को प्राप्त होता हे ओर अधमाचरण से उच्च वर्ण भी नीच वर्ण का प्राप्त हा जाता है।

शूद्रो ब्राह्मणता मेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।

मनु० १०/६५

गुण कर्म स्वभाव स । शूद्र ब्राह्मण बन सकता है। सस्कार विधि महर्षि का वाद का ग्रन्थ है। ये विचार स्वय महर्षि के है इन विचारा को किसी ने भी सशोधित नही किया है।

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे महर्षि के विचार देखिए –

मातग ऋषि चाडाल कुल से ब्राह्मण हा गए थे। अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला हे वही ब्राह्मण के योग्य ओर मूर्ख शूद्र के योग्य हाता है।

महर्षि के जीवन चरित म एक घटना आती है कि कोइ नाइ स्वामी जी के लिए रोटी खान के लिए लाया। किसी ने कहा स्वामी जी ये रोटी तो नाइ की हे। स्वामी जी न कहा कि नाई की कहा है यह तो गेहू की हे। यह कहकर रोटी खा ली। इस घटना से महर्षि के विचारो का पता चल जाता हे। हा जिसके जरासीन गन्दे हो जो स्वच्छ न रहता हो उसके हाथ की राटी मत खाओ। बीमारी लगने का डर रहता है।

प्रश्न ४ नियोग प्रथा के औचित्य की व्याख्या।

उत्तर– नियोग के विषय मे महर्षि के मुख्य विचार सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे पुनर्विवाह प्रकरण मे इस प्रकार है –

नही–नही क्योकि जो स्त्री पुरुष ब्रह्मचर्य मे स्थित रहना चाहे तो कोई उपद्रव न होगा। ओर जो कुल की परम्परा रखने के लिए किसी अपने स्वजाति का लडका गोद ले लेगे उससे कुल चलेगा ओर व्यभिचार भी न होगा और जो ब्रह्मचर्य न रख सके तो नियोग करके सन्तानोत्पत्ति कर ले। महर्षि का पहला पक्ष है कि पति और पत्नी का वियोग यदि एक दूसरे की मृत्यु से हो जाए तब पहला उत्तम पक्ष जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करे। और कुल चलाने के लिए स्वजाति के बच्चे को गोद ले लेवे हा ब्रह्मचर्य का पालन नही कर सकते तो छिप–छिपकर व्यभिचार करने स तो अच्छा है कि सामाजिक स्वीकृति से नियोग का समझौता अर्थात कुछ समय के लिए विवाह जैसा समझौता कर लेवे। यही महर्षि का तात्पय है। इन विचारो से ही नियोग का औचित्य समझ मे आ जाना चहिए। आज भी एक व्यक्ति का वीर्य दूसरी स्त्री के गर्भ मे स्थापित किया जा रहा है और उससे सन्तान पैदा की जा रही है बस प्रक्रिया मे ही अन्तर है। यह ठीक है कि समाज मे यह व्यवहारिक नही है परन्तु सामाजिक अनुमति से आपद्धर्म तो है ही। यह कोई अनिवार्य नही है।

प्रश्न ५ पुनर्जन्म और कर्मफल का औचित्य।

उत्तर – पुनर्जन्म की मान्यता पोराणिक न होकर वेदिक है। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे पुनर्जन्म प्रकरण मे ऋग्वेद ८/१/२३/१ का प्रमाण देते हुए लिखा है – असुनीते पुनरस्मासु चक्षु पुन प्राणमिह नो धेहिभोगम।

हे प्राणो को मृत्यु के समय लेने वाले ईश्वर ! हमे पुनर्जन्म में फिर प्राण प्रदान करे। पुनर्जन्म के विषय मे गीता मे लिखा है –

देहिनोऽस्मिन यथा देहे कौमार यौवन जरा। तथा देहान्तर प्राप्तिर्धीरस्तत्र मुह्यति।।

गीता २/१३

इस शरीर मे जैसे कुमार यौवन और जरावस्था आती हे उसी प्रकार मृत्यु के बाद देहान्तर प्राप्ति हो जाती है। क्योकि यह जीवात्मा अमर है। अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणोन हन्यते हन्यमाने शरीरे। गीता २/२०

पुनर्जन्म भारतीय सस्कृति का अटूट अग हे इससे मानव जीवन मे बहुत अधिक सान्त्वना मिलती है और जीवन मे निराशा नहीं आती। वह पुनर्जन्म मे सुख शान्ति के साधन पाने के लिए शुभ कर्म करता है। बुराईयो से बचता है। पुनर्जन्म को न मानने वाले चार्वाको की तरह ऋण लेकर घी पी जाने वाली बात मन मे उत्पन्न नहीं होती है। जब पुनर्जन्म है जो कि कई घटनाओ से भी सिद्ध हो चुका है तो कर्म और कर्मफल का भी औचित्य है ही। इस मान्यता मे दण्ड के भय से जैसे सामाजिक जीवन मे बुराई से बचा जाता है उसी प्रकार सम्पूर्ण जीवन मे पापकर्म के फलरूप दण्ड से बचने का प्रयत्न मानव करता है और अच्छे कर्मो मे प्रवृत्त होता है जिससे वह स्वय सुखी रहता हे और उसके व्यवहार से समाज भी सुखी रहता है। यही इनका औचित्य है।

प्रश्न ७ क्या महर्षि दयानन्द पूजीपति और शहरी भद्र वर्ग के प्रवक्ता मात्र थे ?

उत्तर – यह कहना सही नही है। क्योकि महर्षि प्रारम्भ मे गगा पर आम जनता के बीच मे रहा करते थे। शहरो मे जाकर किसी के घर मे नही रुकते थे बगीचो मे रुकते थे। उनके प्रवचन सुनने के लिए आम जनता आया करती थी अन्य धर्मी भी आते थे। बाद मे शहरो मे भी उनकी प्रसिद्धि हुई राजा–महाराजाओ ने भी उनको अपनाया। कुम्भ के मेले मे वे आम जनता के बीच गए। अछूतोद्धार के लिए उनके विचार अमूल्य है। महात्मा गाधी ने भी इस कार्य के लिए बाद मे प्रयत्न किया और महर्षि के विषय म लिखा कि – महर्षि दयानन्द भारत के आधुनिक ऋषियो मे सुधारको मे श्रेष्ठ पुरूषो म एक थे। उनका सबके प्रति प्रेम इत्यादि गुण सबको मोहित करत थे।

माता कस्तूरबाई ने कहा था – **स्वामी दयानन्द केवल आर्यसमाजियो के लिए ही नहीं वरन सारी दुनिया के लिए पूज्य है।**

आज सम्पूर्ण भारत मे जहा शहरो मे हजारो आर्यसमाज मन्दिर है वहा गाव–गाव मे भी आर्यसमाज का प्रभाव है। महर्षि छोटे–बडे सभी के प्रवक्ता थे।

प्रश्न ८ क्या आर्यसमाज की विचार धारा अपना ऐतिहासिक प्रभाव छोडकर अब वर्तमान मे कहीं सनातन हिन्दू धर्म के समुद्र मे विलीन तो नहीं हो रही ?

उत्तर – प्रथम तो हिन्दू धर्म एक खिचडी धर्म है इसमे सब प्रकार के सम्प्रदाय सम्मिलित किए जा रहे हैं। विश्व हिन्दू परिषद भी सम्पूर्ण भारतीय सम्प्रदायो का प्रतिनिधित्व नहीं करती उसका उद्देश्य राजनैतिक अधिक है। हिन्दू शब्द भी बहुत पुराना नही है। इसलिए इसे सनातन भी नहीं कहा जा सकता। सनातन तो परमेश्वर है। वेद मे कहा है – "सनातन मेनमाहु" मनु जी के विचारो मे वेदश्चक्षु सनातनम" वेद ही सनातन चक्षु है। अत सनातन तो वैदिक धर्म ही है। जिसे आर्यसमाज मानता है और उस पर चलता भी है। आज आर्यसमाज की जडे इतनी गहरी है कि जिन्हे सागर भी अपने मे विलीन नहीं कर सकता। तथाकथित धर्म के ठेकेदारो की तो हिम्मत ही क्या है।

वैदिक धर्म अमर है और अमर ही रहेगा ओर उसे मानने वाला आर्यसमाज भी अमर है अमर ही रहेगा।

– म०न० १३२ पुराना हस्पताल जम्मू १८०००१ (ज०क०)

'परितप्त व्याकुल संसार जल रहा है'

धर्म पुकार रहा है

(अथर्ववेद ७/७३/७)

सातवा कान्डम तेहत्तरवा सूक्तम सातवा मन्त्र

इस बार का ग्रीष्मकाल प्रचण्डता से तप रहा है। प्रत्येक पदार्थ जल रहे है। सभी जीव प्राणी वनस्पतिया वर्षा के बिना सूख रहे है। हर प्राणी इस जलन तपन और प्यास से बचने के लिए इन्द देवता को पुकार रहा है। कामना कर रहा हे कि वर्षा रूपी इन्द्र देवता जल रूपी दूध पिला कर इस ससार मे प्रत्येक झुलसे हुए पदार्थो द्रव्यो वस्तुओ जीवो वनस्पतियो और भूमियो को तृप्त कर दे। लेकिन हे प्रभु ! आपकी प्रेरणा के बिना ये सभी झुलस रहे पदार्थ केसे तृप्त हो सकते है ? यह तृप्ति शान्ति तो केवल आपके आशीर्वाद से ही सम्भव हे। आज परितप्त व्याकुल ससार वर्षा की माग कर रहा है।

हे परम पिता परमात्मा परमेश्वर ! मै भी बहुत तप चुका हू। भीतर से बाहर से जल रहा हू। नाना प्रकार के क्लेश उठा चुका हू। सम्पूर्ण दुरित (दुष्ट) गुण कर्म स्वभाव आदि कुसस्कारो वाली वृत्तिया मुझे अन्दर से और बाहर से जला रहे हैं। इन सभी से मुझे बचने के लिए वर्षा रूपी ज्ञान-पिपासा की आवश्यकता हे जो दुख देने वाले कुसस्कारो को दुह लेवे। हे प्रभु ! मै इसलिए पुकार रहा हू। मेरे भीतर ज्ञान पिपासा की प्रचण्ड अग्नि जो प्रति क्षण धधक रही है और ज्ञान अमृत न मिला तो मैं जल जाऊगा और प्राप्त कर लिया तो दुर्गुण वृत्तियों को दग्ध बीज करके तृप्त हो जाऊगा।

आज लौकिक और अध्यात्मिक ससार मे इस जलन तपन कष्ट व व्याकुलता से बचने के लिए आप ही एकमात्र हम सबके सहारा हो रक्षक हो।

– आचाय आर्य तपस्वी (सुखदेव) डी–११/११८
सैक्टर–८ रोहिणी दिल्ली–११००८५ दूरभाष ७६४२६१७

गुरुकुल कांगड़ी का महासम्मेलन अनावश्यक नही था

आर्यजनों में जागृति एवं उत्साह भरने का एक सार्थक प्रयास

– डॉ० प्रशस्य मित्र शास्त्री (महोपदेशक)

विगत दो मास से सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र तथा अन्य अनेक आर्य पत्र पत्रिकाओ मे भी गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे हुए आर्य महासम्मेलन पर चर्चा एव रिपोर्ट पढने को मिल रही है। कुछ लोगो ने इसकी सराहना करते हुए सम्मेलन को जहा सफल बताया है वही कुछ ऐसे लोग भी है जिन्होने इसकी कमियो की ओर भी सकेत किया है।

कुछ भी हो परन्तु इस सम्मेलन का आयोजन गुरुकुल भूमि मे करके सार्वदेशिक सभा ने इसकी प्रासगिकता जहा सिद्ध की है वही शताब्दी के अवसर पर भी कोई कार्यक्रम आयोजित न करने के कारण अकर्मण्यता के दोष से भी अपने को बरी करते हुए आलोचना का पात्र नही बनाया है। कार्यक्रम म कमियो एव अव्यवस्थाओ की चर्चा होना पृथक बात है परन्तु कुछ भी न करना तथ ऐसे एतिहासिक समय मे चुप बैठना भी ठीक नही था। इस दृष्टिकोण से सम्मेलन की सफलता असन्दिग्ध रूप स सिद्ध है।

नश्यन्ति बहुनायका

आर्यसम्मेलन से पूर्व और सम्मेलन के काल मे भी गुरुकुल कागडी की भूमि विषयक विवाद बहुत चर्चा मे रहा है। वास्तव मे साधारण आय कार्यकर्ता इस विवाद की पूरी स्थिति से परिचित भी नहीं है। इस विवाद का सबसे बडा कारण गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्रबधन मे अनेक सभाओ का होना भी एक प्रमुख कारण है। पजाब के बटवारे के बाद जहा पजाब और हरयाणा की दो पृथक प्रतिनिधि सभाए बनी वही दिल्ली प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के साथ ही गुरुकुल की भूमि का कुछ अश विद्यालय के नाम कुछ अश पर विश्वविद्यालय की स्थापना और उसकी मान्यता तथा कुछ गुरुकुल की भूमि को विश्वविद्यालय के नाम दिखाकर उसके एवज मे विश्वविद्यालय के अनुदान एव विकास के लिए धन लेना तथा आयुर्वेदिक विभाग को विश्व विद्यालय से पृथक रूप मे सचालित होना आदि विभिन्न कानूनी एव प्रबन्धकीय वैविध्यता का कारण ही विवाद का मुख्य विषय है।

इस बीच सार्वदेशिक सभा के विवादो ने भी आग मे घी का काम किया। सस्कृत मे एक कहावत है अनायका विनश्यन्ति नश्यन्ति बहुनायका अर्थात जब किसी सस्था या राष्ट्र का नेता नही होता है तब उसका क्षरण होता है अथवा जब बहुत नेता होते है तब भी क्षरण होता है। यही स्थिति हमारे सस्थाओ और विश्वविद्यालय का भी हो गया है। इसका ही लाभ अवसरवादी तत्व उठाते रहते हे। यही कारण हे कि एक समय सार्वदेशिक के प्रधान पद पर अभिषिक्त एव गुरुकुल कागडी के हितचिन्तक माने जाने वाले स्वामी आमानन्द जी तथा शेरसिह जी धर्मपाल जी आदि अपने को विवादास्पद बनाकर अब आर्यजनता के आदर के पात्र नही बने रह सके।

सार्वदेशिक का विवाद समाप्त

पिछले निर्वाचन के बाद कैप्टन दवरत्न जी आर्य के नेतृत्व मे जिस समिति ने सार्वदेशिक का कार्यभार सभाला है वह वास्तव मे प्रशसनीय है तथा उसे सभी आर्यजनो का सहयोग प्राप्त होगा यह विश्वास है। इस चुनाव को भी जो लोग विवादास्पद बनाकर व्यर्थ का झगडा पैदा करते रहना चाहते है वे निन्दनीय है। आर्यसमाज के इस उच्चस्तरीय नेतृत्व के विवाद या फूट ने आर्यसमाज के आन्दोलन को बडी हानि पहुचायी हे। अब यह सब बन्द होना चाहिए। चुके हुए तथा वर्षो से सार्वदेशिक पर सत्तासीन लोगा को चाहिए कि अब वे कर्मठ एव सक्रिय व्यक्तित्व को आगे आने तथा उसे कार्य करने दे।

गुरुकुल कागडी मे किया जाने वाला सम्मेलन वास्तव मे इस नेतृत्व की प्रथम परीक्षा थी। यह ठीक है कि सार्वदेशिक सभा ने बाहर से आकर पडाल गाडकर विश्वविद्यालय प्रागण मे यह सम्मेलन कर दिखाया तथा स्थानीय स्तर पर विश्व विद्यालय के स्थानीय छात्रो तथा अध्यापको का उसमे आशानुकूल योगदान मे यदि कोई कमी रह गई हो परन्तु इसमे सार्वदेशिक सभा का क्या दोष है ?

इस तथ्य से अपरिचित व्यक्ति ही जब गुरुकुल मे सम्पन्न इस सम्मेलन मे आम गुरुकुलीय अध्यापको तथा छात्रा का अनुपस्थित पाता ह तो वह समझ नही पाता तथा यह शिकायत करता हे कि गुरुकुल के सम्मेलन मे केवल सार्वदेशिक सभा वाले बाहर से आकर डुगडुगी बजाकर चले गए तथा इस कार्यक्रम से गुरुकुल को क्या लाभ हुआ इत्यादि।

सम्मेलन आर्यो की जागृति का प्रतीक

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एव बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बाबू आनन्द कुमार जी के व्यक्तिगत आग्रह पर मै भी इस सम्मेलन के एक सत्र मे भाषण देने पहुचा। प्रथमदिन मे उपस्थित नही था परन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि भीषण आधी तूफान वर्षा आदि से प्रभावित आयोजन स्थल को बडी तत्परता से अगले दिन तैयार करके यथासमय कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया। बाहर से लगभग पच्चीस हजार व्यक्ति इस सम्मेलन मे भाग लेने पधारे थे जिनके ठहरने एव भोजन की व्यवस्था करना कोई साधारण कार्य नही था। वैसे भी गुरुकुल मे पहले से चल रहे भूमि विवाद के कारण सामान्य आर्यजनो मे एक विचित्र भाव मन मे जागृत हो रहा था कि हम किस नेतृत्व पर विश्वास करे ? दो तीन वर्ष पूर्व जिन लोगो के हाथो मे आर्यसमाज का नेतृत्व था उन लोगा ने किस कारण से अपने को विवादास्पद बना लिया ? ऐसी मन स्थिति केवल मेरी ही नही अपितु साधारण आर्यजनो को भी जो दूर देशो से अपने नेताओ के एक आवहन मात्र पर स्वामी दयानन्द की जय तथा आर्य समाज अमर रहे के नारो का उच्चारण करते हुए चल आते हे। इन लोगो के लिए एसे सम्मेलन प्राणवायु का काम करते है। लगता है कि आर्यसमाज आज भी जीवित हे।

कुछ लोग कहते है कि इन सम्मेलनो पर भारी धन खर्च होता है तथा समय ओर पेसा दोनो ही बर्बाद होता है अत ऐसे तमाशो पर वे लोग प्रश्नवाचक चिह्न लगाते हुए उसकी आलोचना करत है। परन्तु यह बात ठीक नहीं। आज भी सामान्य आर्यजन वैचारिक क्रान्ति और सगठन के प्रति बहुत सचेष्ट हैं। इन लोगो की भावनाओ को जागृत करने एव इनमे प्राण तथा स्फूर्ति भरने के लिए इस प्रकार क सम्मेलन अत्यत आवश्यक हे। आजकल प्रचार एव सचार मीडिया का युग है। इसके माध्यम से हम अपनी बात जनता तक सत्ता तक तथा कार्यकर्ता तक भी पहुचाकर उनमे जीवन्तता का सचार करते रहते है। ये सम्मेलन अनावश्यक एव बेकार तो कतई नहीं है। भारत वर्ष स दूर दूर से कोने कोने से आकर इकटठे हुए लोगा का यह समागम हमे सक्रिय रहन की प्रेरणा दता है। आर्यसमाज का आम कार्यकर्ता आज भी अत्यन्त निष्ठावान है। परन्तु दु ख इसी बात का है कि नेतृवर्ग इसको सदा धोखा देता रहता है। उच्च स्तरीय सगठन के झगडा ने कही न कही हताशा का भाव हमारे अन्दर भर दिया है।

हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सार्वदेशिक सभा का वर्तमान नेतृत्व अब आर्यसमाज को दिशा दिखाएगा तथा आम कार्यकर्त्ताओ के आशा के अनुकूल कार्य करेगा। कागडी का आर्य महासम्मेलन तो एक प्रारम्भ है हमे अभी और भी चुनौतियो का सामना करना हे। इश्वर सबको सदबुद्धि दे रि ससे कि स्वामी दयानन्द का मिशन पूरा हो सक।

बी० २६ आनन्द नगर
जेलरोड रायबरेली

नि:शुल्क सहयोग

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल के अन्तर्गत आर्यसमाज मन्दिर मोर सराय रेलवे कालोनी मे निगम बोध घाट पर वैदिक रीति के अनुसार अन्त्येष्टि कराने के लिए श्री रघुनन्दन जी गुप्ता पूर्व मत्री आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–२ के आर्थिक सहयोग से श्री प्रकाश मित्र शास्त्री को रखा गया है। जिनकी सेवाए नि शुल्क हर समय उपलब्ध रहेगी। श्री शास्त्री जी से आर्यसमाज दीवान हाल व आर्यसमाज मन्दिर मोर सराय रेलवे कालोनी टेलीफोन न० ३८६७४४० पर सम्पर्क करे।

– डॉ० (मेजर) रविकान्त मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

आर्यवीर दल असम का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज का युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल का असम प्रभाग आर्य वीर दल असम का वर्ष २००२ का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर गत दिनाक २३ जून २००२ से ३० जून २००२ तक दरग जिले के डिमाकुची बरगा जुली स्थित डी०ए०वी० उच्च विद्यालय मे सम्पन्न हो गया। २३ जून को आरम्भ हुए इस शिविर मे प्रशिक्षण लेने हेतु असम के विभिन्न जिलो के लगभग १०० आर्य वीर आए हुए थे। जिसको प्रशिक्षण देने के लिए प० गगा काश्यप जी शिलोग प० अविकेशर शर्मा जी असम आचार्य राजेन्द्र आर्य जी उडीसा श्री दीपक वेदालकार जी हरिद्वार आचार्य ह्रषिकेश जी उडीसा सुश्री कल्पना धर जी गुवाहाटी श्री आनन्दप्रकाश आर्य गुवाहाटी एव श्री सहदेव गौतम उदाल गुडी आए हुए थे।

शिविर का उदघाटन २३ जून २००२ को प्रात वैदिक यज्ञ एव ध्वजारोहण के पश्चात प० गगा काश्यप जी ने किया। आठ दिनो तक चले इस शिविर मे दैनिक यज्ञ एव सन्ध्या नैतिक एव बौद्धिक शिक्षा सस्कृत सम्भाषण वर्ग योगासन यौगिक क्रियाए रर्वाग सुन्दर व्यायाम जूडो–कराटे दण्ड–बैठक लाठी भाला चाकू सेवा अनुशासन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। प्रात चार बजे से रात्रि दस बजे तक अतिशिष्ट एव अनुशासनमय दिनचर्या का पालन करते हुए छात्रो को आज के युग मे भी भारतीय वैदिक आदर्शो को ग्रहण करते हुए किस भाति हमे जीना है प्रशिक्षण के दौरान यह बताया एव सिखाया गया।

दिनाक २६ जून २००२ को अपराह्न ४ बजे से ६ बजे तक आचलिक क्षेत्र मे एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया था। जिसमे आर्यवीरो एव क्षेत्र के आर्य सज्जनो ने बढचढ कर हिस्सा लिया। शोभा यात्रा मे प्रशिक्षणर्थियो ने वैदिक नारो एव भजन–गीत से सारा अचल गुजा दिया था। सैनिक एव सुसज्जित गणवेश मे आर्यवीरो को कतार मे नारे भजन गीत गाता देखकर दशक मण्डल आनन्द विभोर हो गए थे।

आर्य वीर दल असम द्वारा आयाजित शिविर के दौरान शोभायात्रा का विहगम दृश्य

दिनाक ३० जून २००२ को प्रात आठ बजे वैदिक यज्ञोपरान्त शपथ ग्रहण कार्यक्रम मे आर्यवीरो ने स्वय को सच्चा आर्य (श्रेष्ठ) बनाने एव समाज धर्म तथा राष्ट्र के प्रति अपनी सच्ची भावनाओ को समर्पित करने का सकल्प लिया साथ ही हमारा उद्देश्य शक्ति सेवा सस्कृति के मार्ग पर चलकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम करने का सकल्प लिया। ?

प्रात दस बजे से खुले प्रागण मे समापन समारोह प्रारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्र शिवकोटी जी कर रहे थे। मुख्य अतिथि के रूप मे श्री रविराम बोडो जी आमन्त्रित थे। साथ ही स्थानीय आर्य नेता एव बाहर से भी आर्य सज्जन अतिथि रूप मे पधारे हुए थे। समापन समारोह प्रारम्भ होते ही अतिही शिष्ट ढग से आर्यवीरो ने सैनिक परेड करते हुए अतिथियो को सैनिक सलामी दी। उसके बाद सगीत म सर्वाग सुन्दर व्यायाम जुडो–कराटे दण्ड बेठक लाठी भाला एव द्वन्द आदि का भी प्रदर्शन अति सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया जिसे देखकर दर्शको ने आर्य वीरो की सराहना की। समय–समय पर आर्य वीरो ने राष्ट्रीय भाव से ओत–प्रोत गीत–भजन भी प्रस्तुत किया। समारोह मे पधारे सभाध्यक्ष मुख्य अतिथि एव आगन्तुक अतिथियो ने इस शिविर की भूरि–भूरि प्रशसा की। छात्र निर्माण के लिए बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न आर्य वीर दल की आज के छात्रो के लिए अति आवश्यकता पर अतिथियो ने विचार प्रकट किए।

अन्त मे शिविर के दौरान प्रतियोगिता मे प्रथम द्वितीय तृतीय तथा विशिष्ट पुरस्कार पाने वाले आर्य वीरो को पुरस्कृत भी किया गया। उसके बाद शिविर के लिए सहयोग करने वाले सभी सहयोगियो दानी महानुभावो को गुरु मण्डली एव प्रशिक्षार्थियो को आर्य वीर दल असम के सचालक आनन्द प्रकाश आर्य ने धन्यवाद प्रदान किया। साथ ही शाति पाठ के साथ सभा विसर्जन हुआ और लगर का आनन्द लिया।

शाम को आर्यवीरो का भ्रमण कार्यक्रम था। अगले दिन प्रात काल विदाई की घडी मे सभी शिविरार्थियो की आखे आसुओ से नम थी। आठ दिन का यह आर्यवीर परिवार जहा अनेक क्षेत्र के मित्रो से प्यार भरा वातावरण था आज उस स्थान को छाडते हुए साथ ही नवीन मित्र मण्डली को छोडकर जाते हुए आर्य वीरो ने इस प्रकार विदा लिया मानो बेटी ससुराल के लिए प्रस्थान कर रही हो।

आनन्द प्रकाश आर्य
सचालक आर्य वीर दल असम

गुरुकुल महासम्मेलन में पिछले युग की क्रान्ति नजर आई

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल उत्तराचल से हम कुछ सभासद २५ अप्रैल से २८ अप्रैल २००२ के गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे सम्मिलित हुए थे। देश विदेश की महर्षि दयानन्द के सेवको की लम्बी कतार शोभा यात्रा जो उत्तराचल की प्रसिद्ध आर्य भूमि हरिद्वार जिसमे मोहन आश्रम स्वामी दयानन्द सरस्वती के पाखण्ड खण्डनी पताका के रूप मे विद्यमान है के दर्शन कर मन अत्यन्त आनन्दित हो गया था। इतनी विशाल भीड को सुचारू रूप से व्यवस्थित करना कोई साधारण कार्य नही था। सचमुच देश विदेश के आर्यजनो का यह समागम आर्यसमाज के लिए गौरवपूर्ण बात है। इसके लिए आप वधावन साहब सयोजक श्री दवरत्न आर्य प्रधान एव श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री बधाई के पात्र है।

मै विशेष रूप से वधावन साहब आपके सयोजन कार्य से प्रभावित हुआ हू। क्योकि आपका काम लेने का तरीका अपने ढग का था उस समय जब आप दर्शक दीर्घा की अस्त व्यस्त कुर्सियो को ठीक तरतीदवार लगा रहे थे तो मैने आपको पहचान कर कहा था कि वधावन जी यह कार्य आप कर रहे है ? आप व्यस्त थे अत आपने मुझे देखे बिना कहा था आप भी लग जाइए। आपके मोबाईल की घण्टी बज रही थी फिर भी एक हाथ से आप कुर्सियो को ठीक कर रहे थे और दूसरे हाथ से मोबाईल पर बात कर रहे थ आपने मुझे बुजुर्ग को कुर्सिया लगाते हुए देखकर कहा। वास्तव मे चार बार मैने आपके सामने माइक पर अनाउन्स आर्यवीर दल वालो को किया किन्तु कोई नही पहुचा। सभा का कार्य प्रारम्भ होने वाला है अत यह कार्य भी जरूरी था। इसी प्रकार मे देख रहा था कि आप सफाई कर्मचारी के अभाव मे खुद ही झाडू पकडकर सफाई करने लग जाते थे। यो तो कुछ समय बाद आर्यवीर दल वाले आ गए थे किन्तु काम लेने का तरीका एवम इतने बड अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का सयोजक का कार्य निभाना हो तो आपसे सीखा जाए। विश्व स्तर के समारोह को पूर्ण रूप से निर्विघ्न सम्पन्न करना आपकी स्फूर्ति एवम् साहस की जितनी प्रशसा की जाए बहुत कम है।

इसी प्रकार त्याग की मूर्ति दृढ सकल्प महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन का दर्द जिनके सीने मे छिपा है अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य उनके सद–विचार समानता का व्यवहार विद्वान एव सन्यासी जो आर्यसमाज को समर्पित हो गए है उनको गन्तव्य स्थानो मे श्रद्धापूर्वक बिठाना अपनी जिम्मेवारी निभा रहे थे। उनके बोलने की शैली सभी आर्यजनो के मनो को छू रही थी। ऐसा लग रहा था मानो पिछले युग की आर्यसमाज की क्रान्ति उभरने लगी है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम का उद्घोष गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे जो दिया गया है अवश्य ही सफल होकर रहेगा। अत आप सभी सयोजको को अनेक धन्यवाद।

–विश्व बन्धु भास्कर, आर्यसमाज सावली आदि, पचुपरी, उत्तराचल गढवाल

आर्य वीरों की लेह-लद्दाख यात्रा

आर्य वीर दल की नियमावली के अनुसार प्रत्येक वर्ष प्रान्त के बाहर भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। इसी कडी मे इस वर्ष साहसी एव कठिन यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा का उद्देश्य निर्धारित किया गया दुनिया की सबसे ऊची सडक पर पहुचकर ओ३म ध्वज फहराना तथा वहा यज्ञ करना।

दिल्ली से १२०० कि०मी० दूर जम्मू काशमीर के लद्दाख क्षेत्र मे स्थित 'खरदुगला पाल' पर पहुचने के लिए हमने मिनी बस से ८ जुलाई की रात को विदाई समारोह के पश्चात यात्रा आरम्भ की। २० यात्रियो के दल का विदाई समारोह आर्यसमाज सी–ब्लाक जनकपुरी मे आयोजित किया गया था जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उपस्थित थे। श्री सोमदत्त महाजन जी ने कार्यक्रम का सचालन किया तथा आशीर्वाद लेकर सभी साथियो ने यात्रा आरम्भ की।

हमारा पहला पडाव आर्यसमाज सुन्दर नगर था जहा पर वहा के अधिकारियो ने बडी सुन्दर व्यवस्था की थी। स्नान तथा यज्ञ के पश्चात भोजन किया तथा मनाली की ओर बढे। व्यास नदी के किनारे सन्ध्या तथा भोजन किया। भोजन हमने स्वय तैयार किया था। रात्री होटल मे विश्राम किया। १० जुलाई को विशेष यात्रा हेतु प्रात काल ६ बजे ही हम लोग चल दिए यात्रा अत्यन्त रोमाचकारी तथा कठिन थी। सुन्दर रास्तो से होकर हम १३३०० फुट ऊचे दर्रे रोहताग पाल पर पहुचे यहा से ब्यास नदी आरम्भ होती है। यहा ... तथा प्रात राश किया गया तथा ... के ... भी बना लिया गया। यहा से हम सभी ने आक्सीजन की कमी को महसूस करना शुरू कर दिया ओर आगे की यात्रा मे यह बढती गई।

काकसर केलाग डार्चा होते हुए हम जैसे ही आगे बढे तो देखा कि एकाएक हरियाली समाप्त हो गई है तथा आक्सीजन की दिक्कत के कारण हमारे सिर मे दर्द होना आरम्भ हो गया। हालाकि इस समस्या स हम परिचित थे पर फिर भी अचानक समस्या आ जाने पर सबके चेहरे पर घबराहट सी आ जानी स्वाभाविक थी पर पानी और जूस आदि पीने से कुछ राहत महसूस हुई तथा कुछ आर्यवीरो ने दवाई लेकर भी राहत ली। मार्ग के दृश्यो को देखकर थकावट सिरदर्द गायव सा हो जाता था तथा इस समस्या के बावजूद उन मनोहारी दृश्यो को कैमरे मे कैद करना आर्यवीर नहीं भूले।

सायकाल एक स्थान पर मिलिट्री के जवानो ने माग बन्द होने की सूचना दी तो लगा कि रात फौज की छावनी मे ही गुजारनी पडेगी। वहा तेज शीतल हवाए चल रही थी तथा अन्धेरा होने को था किन्तु अफसरो ने वहा स्थान न होने की बात कहकर हमे आगे के स्थान जिगजिग बार भेज दिया। जिगजिग बार पहुचने पर वहा पर भी हमे रहने की कोई व्यवस्था नहीं मिली तो सबके चेहरे पर निराशा सी छा गई। अन्धेरा हो चला था समझ नहीं आ रहा था आगे दूसरे दर्रे बारालाचा की चढाई थी। समय न खोकर हमने इसी अवस्था मे आगे बढना आरम्भ किया। रात्री मे इतनी कठिन व खतरनाक चढाई चढना पूरी तरह से उचित नहीं था पर रात्री विश्राम की जगह पर पहुचने के लिए यह आवश्यक था। चीटी की चाल से बस का चलना। थकान सिरदर्द डर अन्धेरा बाहर की खामोशी को चीरती बस की आवाज एक ऐसा माहौल बना रही थी मानो परमात्मा की गोदी मे खेलते हुए लोरी की आवाज। इसी माहाल मे लगभग तीन घण्टे चलकर हम भरतपुर नामक जगह पर रात्री १० बजे पहुच गए वहा एक विशाल तलहटी मे आठ टेण्ट लगे हुए थे। उनमे हमे कुछ जगह रहने हेतु मिल गइ। रात्री मे उस स्थान पर आक्सीजन और भी कम हो गई थी। भोजन की आवश्यकता तो थी पर भूख नहीं थी। इसलिए एक या दो रोटी खाकर ही विश्राम किया किन्तु भय तथा सिरभारी होने के कारण नीद न आना स्वाभाविक था ऊपर से भयकर शीत लहर का प्रकोप वह रात हमारे बहुत ही कठिनाईयो से काटी।

प्रात काल वहा के प्राकृतिक दृश्य देखते ही सारी समस्या जाती रही आर सन्ध्या के पश्चात हमने आगे की यात्रा आरम्भ की तथा सभी साथी प्राकृतिक दृश्यो मे खाते चले गए इतनी ऊचाई पर (१४०००फुट) पर विशाल मैदान उसमे बहती गहरी नदी तथा दोनो ओर के घाटो पर मिटटी के कटाव द्वारा बने सुन्दर प्राकृतिक दृश्य तथा भरमोट (मोट चूहे) हमने देखे। दोपहर पाग पहुचने पर हमने देखा कि नदी का पुल टूटा हुआ है और ट्रको की लाईन लगी है। तभी वैकल्पिक किन्तु खतरनाक मार्ग तैयार व चालू किया गया। पहले नदी मे नीचे उतरना तथा नदी के बहाव को पार करके उपर सडक पर चढना अपने आप मे अत्यन्त कठिन था पर हमने दृढता से उसे पार कर लिया तथा दोपहर का भोजन लेने का कार्यक्रम बनाया किन्तु यहा हमे फिर आक्सीजन की समस्या ने आ घेरा तथा भोजन भूलकर हम सब टैन्टो मे जाकर सो गए ... दवाइ माग रहा था तो कोई पानी जूस ... चाय। जानने पर मालूम हुआ कि नदी के ... टूटने से जो हम सबने पैदल नदी पार की है वहा पर मेहनत से हमारे सास फूले है हमे आराम चाहिए था। कुछ साथी आर्मी वालो ... दवाइया मागने भी गए तथा दवाईया लाए। हमे ... के रूप से ना सही पर उन दवाइ ... के खाने से मानसिक रूप से हम स्वस्थ हो गए और न चाहते हुए भी थोडा थोडा भोजन किया तथा आगे की यात्रा आरम्भ की।

हमे बताया गया कि आगे तीखी चढाई है तथा दुनिया के दूसरे सबसे ऊचे दर्रे से हमे गुजरना है उसका नाम था 'तगलागला पाल'। जब हम चले तो पहले तो बहुत बडा मैदान आया जिसका नाम 'चूहा ग्राउड' था लगभग २२ कि०मी० लम्बे विशाल समतल मैदान को देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा था कि हमे १५००० फुट की ऊचाई पर है। परमात्मा की इतनी सुन्दर सृष्टी देखकर हम वास्तव मे गीत गाने लगे दुनिया बनाने वाले कैसी तैरी माया है'। मैदान समाप्त होते ही चढाई आरम्भ हो गई तथा फिर वही चाल खामोशी मन सहमा सा खासकर जब नीचे की खाईया दिखती थी। कई साथी आख बन्दकर के बैठे थे। कई साथी लेटे हुए थे। आहिस्ता–आहिस्ता हम जब काली मिटटी की धूल और कीचड को पार करके दुनिया की दूसरी सबसे ऊची सडक पर पहुचे तो सारी परेशानी मानो चेहरे से जाती रही। सभी ने वहा पर चित्र खिचाए। वहा पर एक छोटा मन्दिर है तथा बर्फ को काटने वाली मशीन हमेशा वहा रहती है तथा हमारे जवान वहा से दुश्मनो पर नजर रखने हेतु हमेशा वहा रहते है वहा से ढलान चालू था तथा हमने वही सन्ध्या की तथा आगे प्रस्थान किया तथा 'रमसे' पहुचे। भारत की सीमाओ के मार्ग बनाने वाले सगठन 'सीमा सडक सगठन' का भारत का सबसे ऊचाई पर स्थित कार्यालय यही पर स्थापित है वहा से कगला जल होते हुए हमने कठिन यात्रा का तीसरा दिन पूरा किया तथा लेह से पचास कि०मी० पहले उपशी पहुचे तथा रात्री विश्राम तथा भोजन किया।

१२ जुलाई की प्रात हम वहा के प्राकृतिक दृश्यो को देखकर अभिभूत हो गए हमारे आवास के पीछे सिन्धु नदी का बहाव था तथा सामने ऊची चोटिया। उस सुन्दर वातावरण मे दो दिन पश्चात हमने स्नान किया तथा यज्ञ व प्रात राश करके हम लेह की ओर बढे जो भारत का सबसे ऊचा शहर है तथा सबसे बडा जिला है। दो घण्टे की यात्रा के पश्चात हम अपनी पहली महत्वपूण मजिल लेह पहुच गए जो सदियो के इतिहास का गवाह है कभी यहा मध्य एशिया की ऐतिहासिक मण्डी हुआ करती थी यहीं से व्यापारी माल को मारकन्द ले जाते थे तथा रेशम लाते थे। बौद्ध धर्म को मानने वालो की सख्या हमेशा से अधिक रही है मुस्लिम भी लगभग २० प्रतिशत है तथा अन्य समुदायो मे पजाबी हिन्दू सिक्ख तथा कश्मीरी पण्डित लोग हैं। अधिकाश स्थान फौज तथा सरकारी कार्यालयो ने घेर रखी है। दुनिया का सबसे ऊचाई पर स्थित पट्रोल पम्प यहीं है विशाल एयरपोर्ट भी है तथा सूखे पत्थरो के पहाडो के बीच हरियाली देखकर कुछ मन का सतोष होता है यहा वर्षा नहीं होती अधिकाश घर मिटटी के बने हुए है। गरीबी का आलम है। उद्योग नहीं है। खेती अपने मतलब की होती है महिलाए कार्य मे अधिक रुची लेती है। पुरुष वर्ग काफी हद तक नशे का आदि है। काफी पहले तो वहा पढाई ओर स्नान आदि का रिवाज ही नहीं था पर अब तो साक्षरता भी बढी है तथा लोगो ने साफ–सथुरा रहना सीखा है। बोद्ध धर्म का अनुयायी होने के बाव भी भोजन मे मासाहार होना साधारण बात है।

आर्यसमाज के सम्बन्ध मे मैं कहूगा कि कुछ परिवार वहा थे जो मूल पजाब के थे उन्होने आर्यसमाज चलाया किन्तु अगली पीढी मे यह सस्कार नहीं आ पाए। नोकरी पर जाने वाले कुछ परिवार आर्यसमाजी है किन्तु माहौल न मिल पाने के कारण वे गतिविधिया नहीं चला पाते। आवश्यकता है वहा पर कोई प्रकल्प तथा डी०ए०वी० विद्यालय खोलने की यदि इस दिशा मे प्रयास किया जाए तो अवश्य ही अच्छे परिणाम सामने आ सकते है।

खेर हम लेह पहुचने के पश्चात समय बेकार करना नहीं चाहते थे। हमने भोजन किया तथा जिप्सी गाडी द्वारा ऐसा स्थान देखने चल पडे जिसकी कल्पना भी अस्वभाविक थी। लेह से तीस कि०मी० दूर श्रीनगर मार्ग पर एक स्थान है वहा पर जब कोई गाडी चढाई की ओर करके बद कर दी जाती है तो वह रुकती नहीं वरन पहाडिया मे व्याप्त चुम्बकीय शक्ति द्वारा आगे बढती है तथा अच्छी गति पकड लेती है यह देखकर सबने खूब तालिया बजाइ तथा परमात्मा की सृष्टी मे ऐसी अदभुत विशेषताए मोजूद हे सभी ऐसी चर्चाए कर रहे थे।

इसके पश्चात हम गुरुद्वारा परपर साहब गए। गुरुनानक देव जी से जुडी एक घटना के आधार पर इस गुरुद्वारे का निमाण हुआ था।

तत्पश्चात लद्दाखी नाक नायु का कार्यक्रम देखने हम फ्याग के गोम्पा गए। वहा पर लद्दाखी लोक गीता के आधार पर वहा की वेशभूषा मे एक नाटक का मचन हो रहा था। तथा बडी सख्या मे विदेशी पयटक वहा मोजूद थे। वहा से हम हाल आफ सेम देखने गए जहा हमारे वीर जवानो के बहादुरी के चित्र तथा सामान मौजूद था। हम बहुत खुशी हुइ यह देखकर कि कारगिल युद्ध मे पाकिस्तान से छीने गए हथियारो का वहा ... गया है सियाचिन ग्लेशियर मे हमारे जवान ... है तथा ... डयूटी देते है इनका ... चित्रण वहा पर था।

तत्पश्चात लेह के बाजार को देखकर सभी ... गए क्योकि अगले दिन दुनिया की सबसे ऊची सडक पर जो जाना था।

इस मार्ग पर जाने के लिए विशेष अनुमति की आवश्यकता होती है वह हमे कुछ देर से मिल पाई तथा हम सब तैयारी करके आगे चले भीषण चढाइ ४५ कि०मी० बाद लगभग ५५ ... फुट की ऊचाइ पर पहुचना कितना कठिन होगा इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हम मात्र ४५ कि०मी० पार करने मे लगभग ३ घण्टे २० मिनट लगे। मार्ग मे अनेक बाधाओ नाला टूटे पत्थरो सकरी सडक स पहाडो से निकलकर हम खरदुगला पास पहुच जा दुनिया की सबसे ऊची सडक हे तथा वहा पहुचकर हम जिस प्रसन्नता का अहसास हुआ उसका वर्णन कर पाना भी कठिन है। हालाकि सायकाल का समय हो चुका था तेज हवाए चल रही थी शीत का प्रकोप था फिर भी सभी ने पूरे उत्साह से उस अवसर पर नारे ने नारे लगाए भारत माता की जय वैदिक धर्म की जय आदि तथा ओ३म का ध्वज जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने दिल्ली से देकर भेजा था उसे फहराया तथा दुनिया के सबसे ऊचे मन्दिर के ऊपर लगा दिया। उसके पश्चात मन्दिर के अन्दर सभी ने बडे प्रेम व श्रद्धा से यज्ञ का आयोजन किया। वहा मोजूद आर्मी अफसरो को सत्यार्थ प्रकाश भी दिया तथा मन्दिर मे स्थापित किया गया। काफी देर वहा रुककर हम आगे बढे वहा हमने विश्व के सबसे ठण्डे तथा सबसे ऊचे रेगिस्तान पर जाना था रात्री मे हम लोग नुबरा वैली के मुख्यालय डिस्किट पहुच गए

अगले दिन प्रात काल ही हम उस रेगिस्तान की आर चल दिए जिसके हमेशा सुनते आए थे ओर सात कि०मी० चलने पर हमने उस रेगिस्तान को देखा और देखते ही उछल पडे। सामने ऊचे पहाड उस पर बर्फ तथा नीचे साफ रेत के ऊचे टीले तथा केक्टस ओर टीले भी सुबह–सुबह की गर्म हो चले थे रेत उड भी रही थी। सभी इतनी ऊचाइ पर आकर (१६००० फुट इस विशाल रेगिस्तान को देखकर अचम्भित थे। काफी देर हमने उस रेगिस्तान मे गुजारी। तथा उसमे आर्यवीर घूमे भी

उस रेगिस्तान से भी अधिक हेरानी हम तब हुइ जब हमने वहा के ऊटो को देखा उनकी विशेषता थी उनका छोटे कद का होना था दो कूबड होना रेगिस्तान मे इस प्रकार के अदभुत ऊट देखकर वास्तव मे हमे अपनी यात्रा का आनन्द आ रहा था। मन ही मन ईश्वर का भी धन्यवाद दे रहे थे की हमारी यात्रा का अन्तिम चरण आज पूरा हो गया था

आगे की यात्रा वापसी की ... आर्य वीरो का कुछ शारीरिक परेशानी आई व आर्यवीर लेह से वायुयान से वापिस लाए तथा बाकी सभी साथी यज्ञ सन्ध्या भजन करते उसी रास्ते से वापिस मनाली होते हुए दिल्ली पहुचे तथा ईश कृपा से तथा बुजुर्गो के आशीर्वाद से हमारी यात्रा सफल हुइ।

हम इतना जरूर कहेगे कि एक बार भारत भूमि के इस हिस्से का भ्रमण करना अवश्य करना चाहिए। जिससे देश ... विद्यमान इन विशेषताओ का स्व... ... सके

विनय आर्य

महासम्मेलनों का आयोजन प्रतिवर्ष होना चाहिए

सम्पादक महोदय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली
नमस्ते

प्रभु की असीम अनुकम्पा से मै भी मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल की टीम के साथ दिनाक २३ अप्रेल को हरिद्वार जाने के लिए तैयार होकर आर्यसमाज मंदिर टी०टी० नगर पहुचा वहा पर अन्य सदस्य व कुछ समाज अधिकारी मोजूद थे। वहा से हम लोग महर्षि दयाननद जी की जय आर्यसमाज अमर रहे के जय घोष के साथ रेलवे स्टेशन पर पहुचे गाडी समय पर आ गई और हम लोग सामान लेकर अपने आरक्षित डिब्बे मे बैठ गये। उस डिब्बे मे अन्य समाजो के सदस्य भी यात्रा कर रहे थे। सब के मन मे बडा उत्साह था। रास्ते मे भजन और गीत की तरगे भी हिलोरे ले रही थी। आर्यसमाज के पुरोहित पडित भद्रपाल जी का उत्साह देखने लायक था। वे डिब्बे मे घूम घूम कर सभी भाइयो बहिनो की सुधि लेते रहते थे। भोजन आदि की व्यवस्था तो लोग घर से ही करके आये थे। सब लोग मिल बाटकर खा रहे थे प्रात गाडी दिल्ली पहुची। डी ए०वी हा०स० स्कूल के प्रिसपल आदरणीय शर्मा जी तथा कुछ अध्यापक भी साथ मे थे। प्रिसपल साहब के एक सम्बन्धी के यहा हम लोग पहुच वहा नहाने धोने तथा उनकी तरफ से चाय नाश्ता व भोजन का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। रात्रि मे शिमला एक्सप्रेस से हम लोग हरिद्वार के लिए रवाना हुए। गुरुकुल पहुचने पर हमे बताया गया कि ठहरने का प्रबन्ध सत हसा आश्रम मे किया गया है। यह आश्रम नहर के किनारे बहुत बडे क्षेत्र मे बना हुआ है। इसमे हजारो आर्य समाजी ठहरे थे। नहाने धोने शौच आदि का सुन्दर प्रबन्ध था। मेरे ख्याल से इस आश्रम मे दस हजार से अधिक यात्रियो के ठहरने की व्यवस्था है। विश्व का सबसे बडा व विशाल शौचालय व स्नानघर जिसमे एक हजार व्यक्ति एक साथ निवृत्त हो सकते है बना हुआ है। यह आश्रम गगा नहर के तट पर बने होने से बहुत रमणीय दिखता है।

हम लोग प्रात नहा धोकर गुरुकुल पडाल मे समय पर उपस्थित हो जाते थे। मै जिन लोगो के सार्वदेशिक पत्रिका मे उनके छायाचित्र व धार्मिक लेख पढा करता था उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभा प्रधान आदरणीय श्री देवरत्न जी आर्य न थकने वाले श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा डा० मुमुक्षु आर्य तथा महान आर्य सन्यासियो विद्वानो एवम साधू सतो के दर्शन पाकर निहाल हो गया। सेना का उच्च अधिकारी और आर्यसमाजी यह आश्चर्य का विषय है। परन्तु माता पिता के द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सस्कार व विचारो का वृक्ष इतना विशाल व शक्तिशाली हो गया था कि एक सैनिक अधिकारी को वैदिक मार्ग से विचलित न कर सका। उनके द्वारा किये जा रहे समाज के कार्यो को आगे बढाने मे अपना योगदान देते रहे।

श्री विमल जी वधावन न थकने वाले आर्यसमाजी नेता प्रातकाल से ११ बजे रात्रि तक निरतर कार्य मे व्यस्त रहना मानो काम ही उनसे घबरा जाये चेहरे पर उत्साह वाणी मे ओज सभी अतिथियो तथा बाहर से आने वालो का ध्यान रखना व मच का सुचारु रूप से सचालन करना अति सराहनीय उत्साहवर्धक रहा है। उन्हे मै हार्दिक धन्यवाद देता हू।

प्रातकाल कलेवे व भोजन की व्यवस्था सुचारु रुप मे थी उससे आर्यवीरो ने अपना अमूल्य सहयोग दिया। मेरा सुझाव है कि भविष्य मे भोजन व्यवस्था को दो भागो मे होना चाहिए। स्त्रियो और बच्चो के लिये अलग व पुरुषो के लिए अलग इससे भीड को नियत्रित किया जा सकता है एवम वितरण भी सुचारु रुप से किया जा सकता है।

कभी कभी आर्यसमाज के भविष्य को लेकर बडी चिन्ता होती थी कि आगे क्या होगा। परन्तु गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे आयोजित इस विशाल जन समूह को देखकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई। वेदिक धर्मियो व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रज्ज्वलित वेद ज्योति सारे विश्व मे प्रकाशित हो रही है। भारत तथा राजस्थान गुजरात उत्तराचल तथा अन्य भागो से पधारे भाई बहिनो को देखा। जिन्हे देखकर कोई विश्वास नही कर सकता था कि ये लोग भी आर्यसमाजी व वैदिक धर्मी हैं। वे लोग अपने परम्परागत वेशभूषा मे थे। ओम का बिल्ला लगाये हाथ मे ओम ध्वज गले मे भगवा दुपटटा वेद मत्रो के साथ तथा सिर पर गायत्री मच की टोपी लगाए सुन्दर छठा बिखेर रही थी। पजाब व हरियाणा की महिलाए प्राय सभी ने टोपी व बिल्ले लगा रखे थे। यह दृश्य बहुत मनमोहक लग रहा था। ऐसे आयोजन के लिए सभी आर्य बन्धुओ को साधुवाद। इस आशा के साथ कि प्रत्येक वर्ष इस प्रकार का आयोजन कही न कहीं होते रहना चाहिये।

हरिनाथ वर्मा एस ३५४ नेहरुनगर भोपाल

छद्म ज्योतिषशास्त्र, टोने टोटके अन्धविश्वास

– धर्मसिंह शास्त्री

आजकल छद्म ज्योतिषशास्त्र का एव टोने टोटके आदि व्यर्थ की बातो का प्रचार विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे विज्ञापन देकर तथा टेलीविजन के आस्था चैनल पर जार शोर से हो रहा है। भारतीय सस्कृति को ही नहीं बल्कि मानव जाति के साथ धोखा हो रहा है। चाहे ज्योतिषी सडक छाप तोता मेना वाला हो या कम्प्यूटर से हाल बताने वाला आधुनिक भाग्यविधाता ज्योतिष लोगो को मूर्ख बनाने की एक विद्या है। अक्सर यह प्रचार होता है कि ज्योतिष एक विज्ञान है लेकिन विज्ञान द्वारा प्रदत्त तथ्य सार्वभौमिक होते है तथा उनकी सत्यता की जाच प्रयोगो के द्वारा की जाती है। विभिन्न सिद्धान्तो के आधार पर बार बार प्रयोग करने पर एक जैसे ही परिणाम प्राप्त होते हैं तो क्या इस आधार पर ज्योतिष को विज्ञान कहा जा सकता है ? नही। एक ही जन्मकुण्डली आदि के आधार पर अलग अलग ज्योतिष अलग अलग भविष्यवाणिया करते हैं किसी भी ज्योतिषी द्वारा लगाए गए अनुमान कभी भी शत प्रतिशत सही नहीं पाए गए थोडे अनुमान ठीक होते है तो आधे से अधिक अनुमान गलत यदि ज्योतिष विज्ञान है तो ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि ज्योतिष विज्ञान होता तो उसे स्कूलो कालेजो के विज्ञान के अन्य विषयो के साथ पढाया जाता। दरअसल सच्चाई तो यह है कि ज्योतिषी केवल लोगो को मूर्ख बनाने के लिए विज्ञान का सहारा लेते है। हर व्यक्ति के जीवन मे विभिन्न उतार–चढाव आते है। कई बार ऐसा होता है कि भरसक प्रयत्न के बावजूद हमे बार–बार असफलता का सामना करना पडता है और परिस्थितिया विपरीत हो जाती है और ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति और वस्तु हमारे खिलाफ होती जा रही है। दूसरी ओर कई बार बिना किसी विशेष प्रयत्न के व्यक्ति को सफलताए प्राप्त होती है। हर ओर से सहायता प्राप्त होने लगती है तथा इच्छित कार्य सम्पन्न होने लगते हैं। व्यक्ति यह मानकर चलता है कि उसके अच्छे दिन चल रहे है। ज्योतिष के आधार पर कहा जाता है कि ग्रहदशा व्यक्ति के अनुकूल है। दूसरी ओर यदि जीवन मे असफलता मिल रही है तो माना जाता है कि बुरे ग्रहो की दशा चल रही है। ज्योतिष मे व्यक्ति को ग्रहो के हाथ की मात्र एक कठपुतली मानकर चला जाता है अच्छे बुरे दिनो के लिए परिस्थितिया और व्यक्ति स्वय जिम्मेदार न होकर ग्रह जिम्मेदार हो यह बात जचती नहीं। कहावत है कि जैसा बोओगे वैसा काटोगे। व्यक्ति द्वारा किए गए कर्म ही भविष्य मे अच्छे बुरे दिन दिखाते हैं। यदि किसी योग्य व्यक्ति को कठोर परिश्रम करने के बाद भी सफलता नही मिलती और दूसरी ओर एक कम योग्य व्यक्ति बिना विशेष परिश्रम के सफलता पा जाता है तो उसके पीछे सामाजिक व आर्थिक स्थितिया पारिवारिक पृष्ठभूमि अवसरो की उपलब्धता ओर भ्रष्टाचार जैसे कारक भी होते हैं।

जीवन के वास्तविक उतार–चढाव को ग्रहो का प्रभाव मानना युक्ति सगत नहीं है। शास्त्रो मे लिखा है कि जो पुरुष सिहो के समान उद्योग करते हैं उन्हे खूब धन प्राप्त होता है ओर जो पुरुष यह कहते हैं कि भाग्य ही सब कुछ देता है तो वे कायर हें। इसलिए अच्छे–बुरे दिनो के लिए कुछहद तक परिस्थितिया ओर काफी हद तक व्यक्ति स्वय ही जिम्मेदार होता है न कि ग्रहदशा। फिर भी अधिकतर लोग ज्योतिष मे विश्वास रखते हें ओर अपना जीवन अन्धकार की ओर ले जाते हैं।

ज्योतिष मे विभिन्न कीमती पत्थरा वाली अगूठिया धारण करने की भी छदम मान्यता है। अनेक लोग यह कहते सुने गए हे कि फला पत्थर को अगूठी मे धारण करन स उनका जीवन ही बदल गया अचानक लाभ होने लगे बिगडे कार्य बनने लगे इत्यादि। होता क्या है कि पत्थर को अगूठी मे धारण करने से व्यक्ति के मन मे सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास जन्म लेता है। इसके बाद जो भी अच्छा कार्य होता हे वह उसका श्रेय अगूठी को देता जाता हे ओर ज्योतिष पर उसका विश्वास पक्का हो जाता है जबकि यह केवल सयोग की ही बात होती है। यह मानना कि पत्थर को धारण करने से विभिन्न रोगो से मुक्ति मिल सकती है पूरे चिकित्साविज्ञान को नकार देना है। पत्थर धारण करने से व्यक्ति के मानस पर पडने वाले प्रभाव का कारण पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक ही होता है जो लोग पत्थरो पर विश्वास नहीं करते उन पर इनका कोई प्रभाव नही पडता।

ज्योतिष धन कमाने का एक अच्छा साधन बन चुकी है इसलिए ज्योतिषी इस का खूब प्रचार करते हैं। अखबारो ओर पत्रिकाओ मे विज्ञापन दिए जाते है। भविष्य बताने की ऊची फीस वसूल कर ज्योतिषी खूब धन ऐठते हैं। ज्योतिष को विज्ञान के साथ जोडकर पढे–लिखे लोगो को भी इसकी ओर भ्रमित कर आकर्षित किया जाता है ताकि ज्योतिष के दायरे मे अधिक स अधिक लोग आ सके। ज्योतिषियो द्वारा प्रयत्न किया जाता है कि उलटे सीधे तर्कों मे न [illegible] के मन मे यह बैठाने का प्रयास किया जाए कि ज्योतिष प्राचीन मनीषियो द्वारा विकसित एक ऐसी वेज्ञानिक विद्या हे जिस का सही मूल्याकन करने मे आधुनिक विज्ञान असमर्थ रहा है। इन तर्को का असली मकसद यही होता है कि ज्योतिष के नाम पर चलती हुई दुकानदारी बन्द न हो और कमाई का वह बडा स्त्रोत बना रहे। मानव समाज मे कितना घोर अन्याय व धोखा है यह ?

दूसरी बात ग्रहो के पास कौन सा ऐसा तन्त्र हे जिससे वे पृथ्वी पर दूर बैठे हर व्यक्ति के भाग्य को सचालित करते है ? इस प्रश्न का ज्योतिष के पास कोई उत्तर नही है। अक विद्या और हस्तरेखा विज्ञान भी विज्ञान की आड मे रूढियो का पोषण करने वाली विद्याओ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। नियतिवाद का पोषण करने वाली इन विद्याओ की बजाए अपने गुण कम ओर स्वभाव पर ही विश्वास रखना हर मनुष्य के हित मे है। हर माता–पिता को चाहिए कि वे अपन बच्चा मे आरम्भ से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर ताकि वे बडे होकर समाज को रूढिवादिता से मुक्त करन मे मदद करे। विज्ञान का कार्य सत्य की खोज करना हे न कि किसी रूढि का पोषण करना। इसलिए ज्योतिष को किसी भी हालत मे विज्ञान न मानते हुए उससे दूर रहकर जीवन मे कर्मठ बनकर कर्म करते चलिए परिश्रम करते चलिए क्योकि इसी मे सुख ओर सम्पन्नता का रहस्य निहित है।

एक अन्य बात जो हृदय मे पीडा हे व्यक्त करना चाहता हू कि वास्तव मे लोगो की बुद्धि धर्म के ठेकेदारो के पास गिरवी रखी हुई होती है और यही कारण है कि सदियो से लोग अन्धविश्वास का बोझा अपने कन्धो पर ढोते चले आ रहे है। एक वर्ग विशेष मे साधु सन्तो को भगवान का दूसरा रूप माना जाता है और इसी वर्ग के अज्ञानी लोग नक्षत्रो की दिशा–दशा को अपने हित मे कराने के लिए अपने खून–पसीने की कमाई ढोगी साधु–सन्तो पडे–पुजारियो या ओझाओ आदि के हाथो मे सोप देते है। आज का युग चमत्कारो और अन्धविश्वासो का युग नही वैज्ञानिक युग है जिसमे मानव को मानव ही समझा जाता है उसकी पहचान ज्योतिषियो की तरह सिह तुला आदि की तरह नही की जाती। इन विषमताओ को समाप्त करने के लिए सर्वप्रथम राजनीतिज्ञो और पढे–लिखे लोगो को अपनी सोच बदलनी होगी और अपनी राजनीतिज्ञ गुरुओ की शरण म जाना बन्द करना होगा तभी आम व्यक्ति उनकी नकल करते हुए अन्धविश्वास व तथाकथित चमत्कारी किन्तु घातक मकडजाल से निकल सकेगा। हम सभी का कर्त्तव्य हे कि राष्ट्र और समाज के लिए घातक इन कुरीतियो ओर अन्धविश्वासा को मिटाए अन्यथा मानव कल्याण का रास्ता अवरूद्ध रहेगा ओर देश का भविष्य अन्धकारमय बना रहेगा। इन कुरीतियो को जड से समाप्त करने के लिए देश के आर्य नेताओ को सदैव सफलता मिलती रही हे ओरवे पुण्य के भागीदार भी बने। अत समस्त आर्य विद्वानो वेदिक धर्म के पथ–प्रदर्शको आचार्यो समस्त आर्य समाजो तथा समस्त आर्य जगत के आर्यो को ऐस रूढिवादिताओ अन्धविश्वासो की ओर मानवसमाज को भ्रमित कर धकेलने के विरोध मे समस्त पत्र पत्रिकाओ के सम्पादको तथा आस्था चैनलो पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमो का घोर विरोध करना होगा तभी सम्पूर्ण राष्ट्र की रक्षा होगी।

पृष्ठ ३ का शेष भाग

महाराष्ट्र मे प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी सम्पन्न

सोलापुर के श्री शकररावजी बिराजदार ने कहा कि हमारी समाज मे अधिकतम युवा वर्ग है। उन्होने कायकर्ताओ से दो अपेक्षाए व्यक्त की – एक – सभी कार्यकर्ता आर्यसमाज मे भारतीय वेशभूषा मे सम्मिलित हो और दूसरी सक्षम कार्यकर्ता ओर आर्य विद्वान बिना मार्गव्यव और दक्षिणा के आर्य समाज का प्रचार–प्रसार करे।

परली वैजनाथ जिला बीड की श्रीमती वीरश्री शास्त्री ने ईसाई मुस्लिम बाद्धो की तरह वैदिक साहित्य नि शुल्क बाटने तथा आर्यसमाज मे सपरिवार आने की प्रेरणा दी। रामनगर – लातूर की ज्येष्ठ कार्यकर्ती श्रीमती इन्दुमती सावत ने मराठी कविता मे अपने उदात्त आशय ओर मन्तव्य को व्यक्त किया और तन–मन–धन से समाज – सेवा की प्रेरणा दी। उनकी मराठी कविता का अन्तिम अश था – वैदिक धर्माचा प्रचार करावाट हस्ते–पर हस्ते नमस्ते नमस्ते।

हुतात्मा वेदप्रकाश की बलिदान – भूमि गुजोरी। (तहसील उमरगा जिला धाराशिव) के श्री बोधडकजी ने हाथ जोडकर प्रार्थना की कि – ध्यान रहे यह आर्यराष्ट्र श्मशान मे परिवर्तित न हो उन्होने मराठी कविता मे दुर्व्यसनो से सबको दूर रखने की प्रेरणा दी। निलगा के श्री शेटकरजी ने 'उत्तर भारत के भजनो पदो शक्लो का समय समय पर महाराष्ट्र दौरा आयोजित करने का सुझाव प्रान्तीय सभा को प्रदान किया।

बिहार से महाराष्ट्र आए श्री चन्द्रकान्तजी वेदालकार ने कहा कि 'मै अपने माता–पिता से यह कहकर आया हू, मेरी अर्थी महाराष्ट्र से उठे या उत्तरप्रदेश से मेरी चिन्ता न करना क्योकि मैं आर्यसमाज के मिशन पर जा रहा हू। तत्पश्चात उन्होने कहा कि नि स्वार्थ भाव से हीआर्यसमाज का प्रचार होगा पदो के पीछे लगने से नहीं। प्रान्तीय आर्यसमाज कार्यकर्ता सगोष्ठी मे वक्ता दो–तीन मिनट मे अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर सकते उसके लिए तो प्रति वक्त आधे–आधे घण्टे का समय सुरक्षित रखना चाहिए। ओरास शहाजानी तहसील–निलगा जिला लातूर के श्री प्रकाश कछवाह ने जोर देकर कहा कि सामाजिक सघर्ष मे आर्यसमाज जब तक उतरेगा नहीं तब तक उसका प्रचार प्रसार नहीं होगा। इस अवसर पर घाटपिपरी जिला धाराशिव के स्वधीनता सैनिक श्री साहेबरावजी मागले आदि ने भी अपनेअनमोल सुझाव दिए।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री दयाराम जी बसैये ने कार्यकर्ता को कतिपय अत्यावश्यक सूचनाए प्रदान कीं। प्रतिनिधि सभा के प्रधान और कार्यकर्ता सगोष्ठी के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती ने कार्यकर्ताओ को यह कहकर आश्वस्त किया कि आप द्वारा प्रदत्त सभी उपयुक्त सूचनाओ और सूझावो को सभा एक साथ तो नहीं पर उनका समय और क्रम निर्धारित कर क्रमश उन सबको उत्तरोत्तर क्रियान्वित करेगी। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री विमल जी वधावन ने सभी कार्यकर्ताओ को धन्यवाद प्रदान किया। शान्तिपाठ के साथ सगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस सगोष्ठी का सयोजन व सचालन वैदिक गर्जना के कार्यकारी सम्पादक प्रा० डॉ० नयनकुमार जी विशार ने सुचारू रूप स सम्पन्न किया।

– प्रा० कुशलदेव नेताजी सुभाष चन्द बोस महाविद्यालय नादेड ४३१६०२

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 4-8-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 1/2-8-2002

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र सभी ग्राहको को नियमित भेजा जा रहा है - डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण कुछ सदस्यो को कभी कभी पत्र न मिलने की शिकायत भी आती ह। ऐसे सदस्य अपने पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करने की कृपा कर तथा अपना वार्षिक शुल्क ५०/- रुपये अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ५००/- रुपय शीघ्र भिजवा कर सभा का सहयोग करे।

नीचे दी गयी ग्राहक सख्या वाले सदस्यो पर तीन वर्ष का वार्षिक शुल्क शेष हे कृपया अपनी ग्राहक सख्या देख कर १५०/- रुपये का मनिआर्डर शीघ्र (१५ दिन क अन्दर) भिजवाने की कृपा करे। और मनिआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता (ग्राहक सख्या सहित) अवश्य लिखे।

ग्राहक सख्या ११९६१, ११६२३, ११७६६, ११७६६, ११७८२, ११६५७, १२०८४, १२०६८, १२१६६, १२२७३, १२३०८, १२३८५, १२५०५, १२५०६, १२५४५, १२७१३, १२७१४, १२७२७, १२६३६, १२६५६, १२६७५, १२६८२, १२६८३, १३०००, ३१३००५, १३०५१, १३०७४, १३०६७, १३३७२, १३४६०, १३४३८, १३४३६, १३४७७, १३४६०, १३५२३, १३५३१, १३५७४, १३६०६, १३७७६, १३८८७, १३८८८, १४३५६, १४३६४, १४३६८, १४३७०, १४३७७, १४३६३, १४३६७, १४३६८, १४३६६, १४४०१, १४४०२, १४४०५, १४४०६, १४४२७, १४४६०, १४४३७, १४४४१, १४४४७, १४४४६, १४४५४, १४४५६, १४४६१, १४४६२, १४४६३, १४४६४, १४४६५, १४४६६, १४४६७, १४४८०, १४४६१, १४४६२, १४४६६, १४७४५, १४८८१, १४६२४, १५१६२, १५३१५, १५३२०, १५३७१, १५५३७, १५६४६,१५६६६, १५७००, १५८२७, १५८३६, १५८७०, १५६८४, १५६८५, १५६८६, १७१२२, १७५७८, १७५८०, १८३१३, १८३१४, १८३१५, १८३४१। *(क्रमशः)*

आर्यसमाज विवेक विहार का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान	श्री गजेन्द्र सिह सक्सेना
मन्त्रिणी	श्रीमती राजकुमारी शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री यशपाल जी

धार्मिक, सामाजिक तथा वैचारिक क्रांति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

सम्पूर्ण वेद भाष्य

६ जिल्द, १० खण्ड

कीमत = १६५०/- रुपये

ऋग्वेद भाष्य – १ = २००/- रुपये
ऋग्वेद भाष्य – २ = १७५/- रुपये
ऋग्वेद भाष्य – ३ = १७५/- रुपये
ऋग्वेद भाष्य – ४ = १७५/- रुपये
ऋग्वेद भाष्य – ५ = २००/- रुपये
यजुर्वेद भाष्य – ६ = १७५/- रुपये
सामवेद भाष्य – ७ = १७५/- रुपये
अथर्ववेद भाष्य – ८ = १५०/- रुपये
अथर्ववेद भाष्य – ६ १० = २२५/- रुपये
कुलयोग = १६५०/- रुपये

पूरा वेद भाष्य लेने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
[illegible]

प्रतिष्ठा मे

10150 पुस्तकालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ि [illegible]
जिला हरिद्वार (उ० [illegible])

सन् १६०६ मे स्थापित भारत का सर्वप्रथम कन्या गुरुकुल। शिशु (नर्सरी) से अलकार (बी०ए०) तक की निशुल्क शिक्षा एव अनिवार्य आश्रमवास। ब्रह्मचर्य जीवन। प्रारम्भ से उच्च स्तर तक हिन्दी सस्कृत, अग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा। वेद दर्शन सस्कृत नैतिक शिक्षा के साथ साथ गणित, विज्ञान गृहविज्ञान, सामाजिक विज्ञान मनोविज्ञान, सगीत गायन, वादन, कम्प्यूटर की भी शिक्षा। नगर से दूर उत्तम स्वास्थ्यप्रद जलवायु। देशी घी दूधादि जलपान सहित भोजन व्यय सहायतार्थ शिशु से पचम श्रेणी तक २८० रुपये तथा षष्ठ (६) से अलकार (१५) तक ३०० रुपये मासिक। प्रवेश हेतु ६० रुपये भेजकर नियमावली मगवाये।

– कमला स्नातिका, मुख्याधिष्ठात्री, आचार्या

'सत्यार्थप्रकाश' स्थूलाक्षर संस्करण के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

मान्यवर महोदय, सप्रेम नमस्ते।

जैसा कि आर्य-जगत् में सभी को ज्ञात है कि '**भगवती लेज़र प्रिंट्स**' गत १८ वर्षों से महर्षि दयानन्द सरस्वती व वैदिक-साहित्य से सम्बन्धित कार्यों में निरन्तर संलग्न है। इस संस्थान को विश्व में सर्वप्रथम चारों वेदों को स्वरसहित कम्प्यूटरीकृत करने और छपवाने का गौरव भी प्राप्त है। **अब इसी के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" का स्थूलाक्षर संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। वैसे तो स्थूलाक्षर संस्करण और भी विभिन्न संस्थानों ने छाप रखे हैं, परन्तु इस दिशा में विगत १८ वर्षों के अनुभव से युक्त इस संस्थान द्वारा सज्जित और मुद्रित यह ग्रन्थ अपने आप में अनेक विशेषताओं को धारण किये हुए है, जिसे आर्यजन अपने घर में रखकर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेंगे।**

आर्यजगत् के लगभग सभी विद्वान्, संन्यासीवर्ग, भद्रजन व विदुषियो के सुमधुर विचारों से अनुमोदन प्राप्त करके यह ग्रन्थ और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इनके शब्दों में *"ऐसा महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्य बार-बार नहीं होता, अत: प्रत्येक आर्य, आर्यसमाज, गुरुकुल, डी०ए०वी० स्कूल-कॉलिज और धार्मिक संस्थाओं को ऐसे ग्रन्थरत्न की कम-से-कम एक प्रति अपने लिए सुरक्षित कराने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ है, उसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। यह एक अभूतपूर्व कार्य है, जिसका ऐसा भव्य और दिव्य प्रकाशन अभी तक तो नहीं हुआ। जिस प्रकार प्रत्येक गुरुद्वारों में 'गुरुग्रन्थसाहिब' आदि ग्रन्थ, मन्दिरो में 'रामायण, महाभारत, पुराण' आदि ग्रन्थ; मस्जिदों में 'कुरान' आदि ग्रन्थ और चर्चों में 'बाइबिल' आदि ग्रन्थ शोभा देते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक आर्यसमाज और आर्यगृह में भी चारों वेदों के साथ सत्यार्थप्रकाश का यह विशिष्ट संस्करण अवश्य सुशोभित होना ही चाहिए। यही हम आर्यजनों की महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।"* इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में विगत दो महीनों से **विभिन्न आर्य** पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर विज्ञापन आ रहे हैं, अत: अधिक जानकारी वहाँ से प्राप्त कर सकते हैं।

आप अपनी प्रति १५ अगस्त से पहले सुरक्षित करके १५० रुपये की बचत तो कर ही सकते हैं, साथ ही इसी प्रक्रिया में आर्यजगत् में सत्-साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने के लिए जो अभूतपूर्व "**साहित्य-प्रोत्साहन-पुरस्कार-योजना**" का शुभारम्भ किया गया है, उसके अन्तर्गत इस ग्रन्थ के अग्रिम क्रेता को प्रत्येक ग्रन्थ के अन्दर एक पुरस्कार कूपन प्राप्त होगा, जिसके आधार पर वे १०० रुपये से लेकर १०,००० रुपये तक का अपना मनपसन्द वैदिक-साहित्य निम्नलिखित स्थानों से पूर्णत: नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं, अत: जो भी सज्जन किसी भी प्रकार का वैदिक-साहित्य क्रय करने के उद्देश्य से निकले हों, वे सर्वप्रथम इस ग्रन्थ को क्रय करें, और जितनी भी राशि का कूपन निकले, उतने का इच्छित साहित्य पूर्णत: नि:शुल्क ले जाएँ। यह ध्यान रहे कि जो व्यक्ति या संस्था १५ अगस्त से पहले स्थूलाक्षर संस्करण की प्रति/प्रतियाँ सुरक्षित कराएँगे, उनके प्रत्येक ग्रन्थ में कम-से-कम १०० रुपये के कूपन तो होंगे ही, साथ में ५००, १,०००, २,५००, ५,००० और १०,००० रुपये के कूपन भी डाले गये हैं। **प्रत्येक १००० ग्रन्थों में १,५०,००० रुपये के कूपन अनुपातत: डाले जाएँगे। "साहित्य-प्रोत्साहन-पुरस्कार-योजना" का शुभारम्भ कुछ प्रतिष्ठित संस्थाओं के नकद अनुदान से इसलिए किया गया है, जिससे वैदिक-साहित्य के प्रति आर्यजनों की रुचि निरन्तर बनी रहे।**

—— :: इस संस्करण की विशेषताएँ :: ——

❁ पुस्तक में प्रयुक्त टाइपो का आकार इतना बड़ा है कि कम दृष्टिवाला व्यक्ति भी सरलता से पढ़ने में सक्षम हो सके। ❁ प्रयुक्त कागज बहुत उत्कृष्ट कोटि का है। ❁ पूरी पुस्तक की छपाई दो रंगों में एवं प्रत्येक पृष्ठ की पृष्ठभूमि पर महर्षि का विविध चित्र। ❁ सम्पूर्ण जिल्द पक्की बाईंडिंग के साथ दो रंगों में। ❁ इस ग्रन्थ को पढ़ने के लिए लकड़ी का एक सुदृढ़ एवं आकर्षक स्टैंड (रहल) और ये दोनों गत्ते के एक सुन्दर एवं सुरक्षित बक्से में बन्द।

ऐसा सत्यार्थप्रकाश निम्नलिखित दो आकारों में प्रकाशित हो रहा है :—

प्रथम आकार— ११"×१८", मूल्य ६५१/- रुपये [रहल व कूपन सहित] है। दिनांक १५ अगस्त तक अपनी प्रति सुरक्षित करानेवालों को यह पुस्तक केवल लागत मूल्य ५०१/- रुपये में ३० अगस्त तक प्राप्त कराई जाएगी। द्वितीय आकार—७.५"×१०", मूल्य १५१/- रुपये [रहल व कूपन रहित] है। यह पुस्तक भी उक्त तिथि के अन्दर ही उपलब्ध होगी एवं इसका अग्रिम सुरक्षित मूल्य १०१/- रुपये होगा।

अपनी प्रतियाँ अग्रिम राशि भेजकर इन स्थानों से सुरक्षित करवाएँ —
१. **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६, दूरभाष : ३९७७२१६, ३९१४९४५**
२. **भगवती लेज़र प्रिंट्स, ४६/५, कम्यूनीटि सेंटर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५, दूरभाष : ६९३३९४९, ६४१४३५९**

अत्यन्त आवश्यक सूचना!!

आर्यसमाज के सन्यासी, वानप्रस्थ, आचार्य, पुरोहित, शास्त्री, कर्मठ और ईमानदार व्यक्ति जो समाज के लिए कुछ करना चाहते हों, उनको "मैसर्स भगवती लेज़र प्रिंट्स" आह्वान करता है। आर्यसमाज की विचार धारा वाले व्यक्तियों को प्रधानता दी जाएगी। जो व्यक्ति दिल्ली अथवा दिल्ली के [illegible] में रहते हों, वे [illegible] पर [illegible], वे निम्नलिखित पते पर पत्राचार के माध्यम से २० अगस्त से पहले प्रात: १० बजे से सायं ५ बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं। पत्र व्यवहार करनेवाले सज्जन अपना पूरा पता साफ अक्षरों में लिखें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट - http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक ९५ | ११ अगस्त से १७ अगस्त २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ | सम्वत २०५९ | श्रा० शु० ३

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

यज्ञ मनुष्य को आध्यात्मिक और भौतिक कष्टों से छुटकारा दिलाने में सक्षम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सात दिवसीय वृहद वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति ४ अगस्त (रविवार) को आर्यसमाज मिण्टो रोड के प्रांगण मे सम्पन्न हुई। सात दिन तक चले इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी तथा उनके सहायक के रूप मे आर्य तपस्वी सुखदेव तथा आचार्य भद्रकाम वर्णी ने यज्ञ के प्रबन्धन तथा सचालन में हर प्रकार का सहयोग दिया। गुरुकुल गौतमनगर के ६ ब्रह्मचारी विशेष रूप से मन्त्र पाठ के लिए आमत्रित थे।

पूर्णाहुति के पश्चात प्रवचन सभा का सचालन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि वर्तमान युग मे सारा ससार पेट्रोलियम पदार्थो का ईधन के रूप में भारी मात्रा मे प्रयोग कर रहा है। स्कूटर से लेकर हवाई जहाज और राकेट तक तथा छोटे से बल्ब से लेकर बडी बडी मशीनो तक जिस मात्रा मे पेट्रोलियम ईधन तथा बिजली का प्रयोग हो रहा है उससे पर्यावरण सतुलन पूरी तरह से बिगड चुका है।

प्राचीन काल मे जब यह सब आधुनिक साधन नही थे उस समय के व्यक्ति यज्ञ किया करते थे और वे यज्ञ प्रभावशाली होते थे परन्तु आज के मनुष्य को यज्ञ की वैज्ञानिकता का ज्ञान ही नहीं है आज के युग म दैनिक यज्ञ करने वाले लोग उगलियो पर गिन जाने योग्य हैं। आर्यसमाजियो मे भी यह परम्परा समाप्त होती जा रही है

श्री विमल वधावन ने उपस्थित जन समुदाय को प्रतिदिन यज्ञ करने का सकल्प लेने के लिए प्रेरित किया

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी ने सम की उपासना पर बल देते हुए कहा कि श्रेष्ठ समाज के निर्माण का केवल यही एकमात्र उपाय है कि प्रत्यक व्यक्ति यज्ञ के द्वारा अपना भी उत्थान करे और समाज की रक्षा भी करे उन्ह न आयजनता को १ कलाओ से परिपूर्ण होने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि शरीर की इन्द्रियो को पवित्र रखना ही इसका एकमात्र ... ह

आर्य तपस्वी श्री सुखदव ने कहा कि यज्ञ के द्वारा हम परमात्मा क सृष्टि सचालन मे सहयोगी बनते हैं ... न केवल पर्यावरण रूपी भौतिक सुधार होता है अपितु यह व्यक्ति का आध्यात्मिक उत्थान भी करते है

अगले पृष्ठ पर जारी

वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद सभा का सचालन करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन मचस्थ श्री भद्रकाम वर्णी श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री आर्य तपस्वी सुखदेव स्वामी दीक्षानन्द जी तथा मन्त्रमुग्ध होकर सुनते श्रोता गण

वृष्टि यज्ञ मे यजमान बनकर आहुतिया अर्पित करते हुए अ... ।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष भाग

यज्ञ मनुष्य को आध्यात्मिक और भौतिक कष्टो से छुटकारा दिलाने मे सक्षम

आचाय भद्रकाम वर्णी ने कहा कि जीवात्मा किसी भी जन्म मे इतना श्रेष्ठ कर्म नहीं कर सकता जितना मनुष्य यानि मे रहकर कर सकता है। यज्ञ ही वह श्रेष्ठतम कर्म है जिसके द्वारा पृथ्वी जल अग्नि वायु से सम्बन्धित हर प्रकार के ऋण को चुकाया जा सकता है।

इस सभा का श्री महन्द्र कुमार शास्त्री तथा प० नेत्रपाल शास्त्री ने भी सम्बोधित किया सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने यज्ञ का सचालन करने वाले विद्वानो एव ... की। इस सात दिवसीय यज्ञ मे कई विशिष्ट अतिथियो सहित महाशय धर्मपाल मुंशीराम सेठी श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन वैद्य इन्द्रदेव श्री जगदीश आर्य गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार वैदिक विद्वान् डा० रामप्रकाश कुरुक्षेत्र डा० महेश विद्यालकार श्री सुरेन्द्र रली श्री अरुण वर्मा श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती उज्ज्वला वर्मा श्री विनय आर्य श्री रोशनलाल गुप्ता श्री रामविलास खुराना श्री दयानन्द मदान ... श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता श्री बलदेव आर्य श्री हरीश बत्रा चौ० लक्ष्मीचन्द श्री हसराज चोपडा स्व० श्री चमनलाल ग्रोवर की धर्मपत्नी श्रीमती शीला ग्रोवर सुजानगढ के श्री लखोटिया जी श्री राजसिह भल्ला श्री राजेन्द्र लाम्बा माता प्रेमलता शास्त्री चमनलाल महेन्द्रु, श्री आहूजा जी श्री ओमप्रकाश रुहिल डा० आर्य जीवन स्वामी केवलानन्द ब्र० नन्दकिशोर श्री राजीव भाटिया श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री प्राणनाथ घई श्री मनवीर सिह राणा श्री दिनेश शर्मा आदि ने अपनी आहुतिया अर्पित कीं।

यज्ञ के कार्यों मे स्वश्री विनय आर्य सत्येन्द्र मिश्रा भारतेन्द्र ओमप्रकाश भटनागर सजीव कोहली अरुण वर्मा आदि का भी अथक सहयोग प्राप्त हुआ।

इस यज्ञ के अवसर पर श्री जगदीश आर्य राजौरी गार्डन श्री बाबूराम आर्य सीताराम बाजार तथा दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने स्व व्यय से प्रसाद वितरित किया तथा ऋषि लगर का समस्त व्यय दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने वहन किया। ✡

वृष्टि यज्ञ म मिश्रित की जान वाली विशष सामग्री का चित्र तथा आहुतिया अर्पित करते हुए आय नता श्री वैद्य इन्द्रदव श्री दिनश शर्मा श्री स्वतन्त्र कुमार।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

ऐरवा कटरा स्थानीय आर्ष गुरुकुल क प्रागण मे पूर्वी उत्तर प्रदेश का आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर बडे ही उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे हरदाइ फरुखाबाद कन्नौज कानपुर इलाहाबाद मैनपुरी इटावा औरैया सहित अनेक जिलो के लगभग ७५ आर्यवीरो ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्य श्री हरिसिह आय एव कष्णपाल अर्य व्यायाम शिक्षको द्वारा सम्पन्न कराया गया।

इस शिविर मे आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री दिनेश आर्य एव सचालक श्री प्रमोद आर्य तथा सह सचालक डा० सर्वेश आय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ८ दिन के प्रशिक्षण कार्य से बालको को बहुत लाभ हुआ। सभी ने आर्य सस्कति के आधार पर चलने का व्रत लिया। सभी शिविरार्थियो के यज्ञोपवीत आदि कराये गये। समापन अवसर पर श्री सत्यवीर शास्त्री डा० ऋतबोध एव श्री एस०पी० कुमार प्रधान जिला सभा आगरा एव अनेक गणमान्य महानुभावो की उपस्थिति रही। शिविर के सचालन मे गुरुकुल के सभी महानुभावो ने सोत्साह भाग लिया।

शिविर की अध्यक्षता गुरुकुल के आचार्य श्री राजदेव शास्त्री ने की।

सहारनपुर में भी सफल वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर द्वारा सचालित खेडा अफगान (सहारनपुर) मे राष्ट्र की सेवा मे अपना सहयोग प्रस्तुत करते एक वृष्टि महायज्ञ का आयोजन ३० जुलाई से २ अगस्त तक किया गया। इस वृष्टि महायज्ञ के ब्रह्मा आचाय सत्यव्रत जी राजेश ब्रह्मचारी अरुण देव शर्मा और राजेश कुमार जी ने मधुर भजन सुनाये और श्री राजाराम शास्त्री जी ने यज्ञोपवीत और यज्ञ के विषय मे विस्तार पूर्वक बताया। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अजब सिह आर्य सभा के मन्त्री
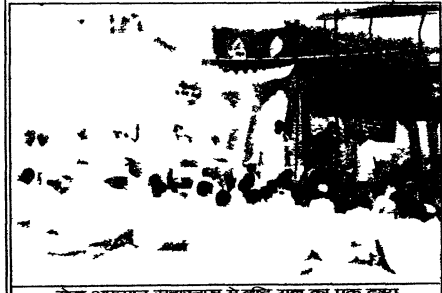
खेडा अफगान सहारनपुर मे वृष्टि यज्ञ का एक दृश्य

ज्वालापुर (हरिद्वार) थे। २ अगस्त को ११ बजे यज्ञ का समापन किया गया।

यज्ञ का कार्य ३० और ३१ जुलाई को दोनो समय चला। तीसरे दिन दोपहर में आधे घण्टे की अच्छी वर्षा हुई। प्रचण्ड गर्मी से लोगो को शान्ति मिली।

२ अगस्त को यज्ञ के समापन पर आचार्य सत्यव्रत जी राजेश ने कहा कि यदि इस क्षेत्र के निवासी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ आहुति देवे तो यह यज्ञ अवश्य सफल होगा। इस अवसर पर आदित्य प्रकाश गुप्त ने परमेश्वर की असीम शक्तियो का बखान करते हुए विश्वास पूर्वक कहा कि हमारा प्रयास सफल होगा और वर्षा अवश्य ही होगी। अगले दिन अर्थात ४ अगस्त को रात्रि में भारी वर्षा हुई। यज्ञ सफल हुआ। सभी ने गर्मी से शान्ति पाई और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति आस्था मे वृद्धि हुई। सभी ने परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया। मन्त्री जी ने यज्ञकार्य मे सलग्न समस्त सहयोगियो को हार्दिक धन्यवाद दिया।

भारत में गाय को माता क्यों माना जाता है

जब से मुसलमान शासक भारत मे आए तब से गो–वश की हत्या होनी शुरू हुई। हिन्दू लाख समझाते रहे कि गौ माता सारे ससार की जननी के समान है उसके शरीर के हर अश मे लोक कल्याण छिपा है और तो ओर उसका मूत्र और गोबर तक औषधियुक्त है। इसलिए उसकी हत्या नहीं उसका पूजन किया जाना चाहिए। पर यवनो पर कोई असर नहीं पडा। अक्सर यह दोनो धर्मो के बीच विवाद का विषय रहता है।

अग्रेज जब भारत मे आए तो उन्होने हिन्दुओ का मजाक उडाया। वे अपने सीमित ज्ञान के कारण यह समझने मे असमर्थ थे कि हिन्दू गो–वश का इतना सम्मान क्यो करते है। आजादी के बाद धर्मनिपेक्षता की राजनीति करने वालो ने भी हिन्दुआ की इस मान्यता पर ध्यान नही दिया। आश्चय तो इस बात का है कि भाजपा और शिव सेना की साझी सरकार महाराष्ट्र के थाणे क्षेत्र म स्थित पशु वध शाला को बन्द नहीं कर पाई जबकि वर्षो से स्थनीय नागरिक उसका विरोध करते आए थे।

गो मूत्र का पेटेट

पिछले दिनो कन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री डा० मुरली मनोहर जाशी ने यह सूचना दकर कि गो मू का ओषधि के रूप मे अमरीका मे पेटट करवा लिया गया है सारे देश मे सनसनी पेदा कर दी। इस समाचार से निश्चय ही सनातन धर्मियो क बीच हप क लहर दौड गई। यह तो मात्र आरम्भ ह। याग अ र आयुर्वेद की तरह अब पूरी दुनिया जल्दी ही गामाता के महत्व दो स्वीकारन लगगी शा की नरह हम अपनी ही धरोहर क विदशी पकज म कइ गुन ज्यादा दाम म खरीदने पर मजबू हागे। जिस तरह पेप्सी कम्पनी हमार बाजारा स दा रुपये किलो आलू खरीद क २५ रुपय वि ग्राम चिप्स बचनी है वस ही आने वाल दि म गोमूत्र स ग स दा पक जग अ कर्षक वि पन क नहर सेकडे रुपय कोमत पर बिकगा। आवश्यकता इस बात की कि हम गोमाता के महत्व का समय रहते पहचान। शास्त्री और वेज्ञानिक आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि गामाता के शरीर के हर हिस्से से हम पर कृपा बरसती है।

गो दूध व घृत का वैज्ञानिक महत्व

इन्टरनेशनल कार्डियोलाजी कान्फ्रैस के अध्यक्ष डा० शान्तिलाल शाह के मत से हृदय रोगियो के लिए गाय का दूध विशेष रूप से उपयोगी ह। गाय के दूध के कण सूक्ष्म और सुपाच्य होते है – अत व मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाडियो म पहुच कर मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते है। गाय के दूध मे केरोटीन (विटामिन–ए) नाम का पीला पदार्थ रहता है जो आखो की ज्योति बढाता है। चरक सूत्रस्थान १/१८ के अनुसार गाय का दूध जीवन शक्ति प्रदान करने वाले द्रव्यो मे सर्वश्रेष्ठ है। गाय के दूध मे ८ प्रतिशत प्रोटीन ८ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और ०७ प्रतिशत मिनरलज (१०० आईoयूo) विटामिन ए और विटामिन बी सी डी एव ई होता है। निघण्टु के अनुसार गाय का दूध रसायन पथ्य बलवर्धक हृदय के लिए हितकारी बुद्धिवर्धक आयुप्रद पुसत्वकारक तथा त्रिदोष (वात पित्त कफ) नाशक है।

गाय का घी खाने स कोलेस्ट्रोल नहीं बढता। इसके सेवन से हृदय पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पडता। रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के शोधानुसार गाय के घी मे मनुष्य शरीर मे पहुचे रेडियोधर्मी–कणा का प्रभाव नष्ट करने की असीम शक्ति है। गोघृत से यज्ञ करने से आक्सीजन बनती है। (?–स०) गाय के घी को चावल के साथ मिला कर जलाने से (यज्ञ) ईथीलीन आक्साइड प्रोपीलीन आक्साइड आर फोरमलडीहाइड नाम की गैस पेदा होती ह। ईथीलीन आक्साइड और फोरमालाडीहाइड जीवाणुरोधक है जिनका उपयोग आप्रेशन थिएटर को कीटाणु रहित करने मे आज भी होता है। प्रोपीलीन आक्साइड वर्षा करने के उपयोग मे आती है अथात गाघृत द्वारा किए गए यज्ञ के वातावरण की शुद्धि और वर्षा होना दोनो स्वाभाविक परिणाम है। भाव प्रकाश निघण्टु के अनुसार गोघृत नेत्रो के लिए हितकारी अग्निप्रदीपक त्रिदोष नाशक बलवद्धक रसायन सुगधयुक्त मधुर शीतल सुन्दर ओर सब घृतो मे उत्तम होता है। गो–नवनीत (मक्खन) हितकारी कान्तिवर्द्धक अग्निप्रदीप महाबलकारी वात पित्तनाशक रक्त शोधक क्षय बवासीर लकवा एव श्वास रोगो को दूर करने वाला होता है।

गोमूत्र का वैज्ञानिक महत्व

गोमूत्र मे ताम्र होता है जो मानव शरीर मे स्वर्ण के रूप मे परिवर्तित हो जाता है। स्वर्ण सर्व रोग नाशक शक्ति रखता है। स्वर्ण सभी प्रकार का विषनाशक हे। गोमूत्र मे ताम्र के अतिरिक्त लोहे कैल्शियम फासफोरस और अन्य प्रकार के क्षार (मिनरल्ज) कार्बोनिक एसिड पोटाश ओर लेक्टोज नाम के तत्व मिलते है। गोमूत्र मे २४ प्रकार के लवण होते है जिनके कारण गोमूत्र से निर्मित विविध प्रकार की औषधिया कई रोगो के निवारण मे उपयोगी हैं। गोमूत्र कीटनाशक होने से वातावरण को शुद्ध करता हे और जमीन की उर्वराशक्ति को बढाता है। गोमूत्र त्रिदाष नाशक हे किन्तु पित्त निर्माण करता ह लेकिन काली गाय का मूत्र पित्तनाशक होता हे। नवयुवका के लिए गोमूत्र शीघ्रपतन धातु का पतलापन कमजोरी सुस्ती आलस्य सिरदर्द क्षीण स्मरण शक्ति मे बहुत उपयागी है। पचगव्य घृत गोदधि गोदुग्ध गोमूत्र आदि से मिलकर बनता है। उसका सेवन मिर्गी दिमागी कमजोरी पागलपन भयकर पीलिया बवासीर आदि मे बहुत उपयागी ह। कैंसर जेसे दुस्साध्य और उच्च रक्तचाप दमा जेसे रोगो मे भी गामूत्र सेवन अत्यधिक उपयागी सिद्ध हुआ ह।

गोबर का महत्व

इटली क प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० जी० ई० बीगड ने गोबर क अनक प्रयागा द्वारा सिद्ध किया हे कि गाय क ताजे गोबर स टी०वी० तथा मलेरिया के कीटाणु मर जात हे। आणविक विकिरण से मुक्ति पाने क लिए जापान के लागा ने गोबर को अपनाया है। गोबर हमारी त्वचा के दाद खाज एग्जिमा ओर घाव आदि के लिए लाभदायक हाता है। सिर्फ एक गाय के गोबर से प्रतिवर्ष ४५०० लीटर बायोगेस मिलती हे। बायोगैस के उपयोग करने से ६८० करोड टन लकडी बच सकती ह जो आज जलाई जाती है जिससे १४ करोड वृक्ष कटने से बचेगे और देश के पयावरण का सरक्षण होगा। गोबर की खाद सर्वोत्तम खाद है जबकि फर्टिलाइजर से पैदा अनाज हमारी प्रतिरोधक क्षमता को लगातार कम करता जा रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था मे गोमाता का योगदान

राष्ट्रीय आय मे १५००० करोड रुपये की राशि प्रतिवर्ष गो–वश से प्राप्त होती है। ३० हजार मेगावाट अश्वशक्ति गो–वश से प्राप्त होती है। गाय–भैस से ५ करोड टन से अधिक मूल्य का दूध हमे आज प्राप्त होता है। पशुओ से ५५ कराड रुपये का २२ लाख टन गोबर हमे प्रतिदिन प्राप्त होता हे। एक गाय अथवा बैल के गाबर स एक वर्ष मे ३६ बोरी यूरिया १८ बोरी सुपर फास्फेट तथा ५४ बोरी पोटाश प्राप्त होता ह। सूखी गायो एव बूढे बैलो के गाबर से गैस प्लाट लगा कर ग्रामीण एव पिछडे क्षत्रो के निर्धन परिवारो को १८५०० रुपये वार्षिक की आय हो सकती हे।

वर्ष १९९२ मे लगभग ६०० करोड रुपये मूल्य की ७७६ मिलियन टन खली निर्यात की गई जबकि दुधारू पशुआ को यही खली खिलाने पर ३८ हजार करोड रुपये के मूल्य का (खली से प्राप्त मूल्य का ४२ गुना अधिक) ३८८ मिलियन टन दूध देश को प्राप्त हो सकता था। गो वश से लाखो गेलन गोमूत्र (स्वदेशी प्राकृतिक कीटनाशक प्रतिवर्ष प्राप्त होता हे जो फसला के लिए सर्वश्रेष्ठ कीटनाशक ओर अनक रोगा म आषधि हे। भारत म कृषिकार्य हेतु पशु शक्ति का सर्वाधिक ६६ प्रतिशत मनुष्य शक्ति का २० प्रतिशत एव जीवाश्म शक्ति का १४ प्रतिशत सहभाग ह। कृषि क्षेत्र म गाय व गो वश भारतीय कृषि की रीढ ह। वजिटेरियन म सर्वाधिक भाप र ओड ... अनुसार देश का मास क निर्यात स प्राप्त होने वाल प्रति करोड रुपये क लिए १५ करोड रुपये की हानि उठानी पडती ह

ऐसी तमाम जानकारियो का सचय कर उसका व्यापक प्रचार प्रसार म लगे युवा वज्ञानिक श्री ... ह कि विदशी इतिहासकारो ... चिन्तको न ... का सतही अ निवचन क ... फैलाइ ह इन ... ग म स ... दत ह गायो ... कर दिया गया श्री ... सस्कृ म प्रयुक्त एक ही ... हात ह जिन्हे उनक ... समझन ह ... विदशी ... न वदिक सस्कत ... ऐसी भूल की

आई०आई०टी० से ... एम०टेक० करने वाल श्री ... सबसे बडा धन मानत ह ... गुजरात म धर्मबन्धु स्वामी ८ हजार गायो की व्यवस्था मे जुट रहते हे ऐसे तमाम सत ... आर भारत के करोडो आम लोग गोमाता की तन मन ओर धन से सेवा करते हे अब समय आ गया हे कि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारे गो वश की हत्या पर कडा प्रतिबन्ध लगाए और इनके सम्बर्द्धन क लिए उत्साह स ठास प्रयास करे शहरी जनता को भी अपनी बुद्धि शुद्ध करनी चाहिए। भेस का दूध भारी ही नही दिमाग के लिए हानिकारक भी होता हे केवल दक्षिण एशिया के देशो मे ही भस का दूध पिया जाता है। शेष दुनिया मे आज भी केवल गाय का दूध पिया जाता है। गो वश की सेवा हमारी परम्परा तो है ही आज क प्रदूषित वातावरण मे स्वस्थ रहने क लिए यह हमारी आवश्यकता भी है। हम जितना गामाता के निकट रहेगे उतने स्वस्थ और प्रसन्न रहेगे।

(पजाब केसरी स साभार)

भारत के करोड़ों आम लोग गोमाता की तन, मन, और धन से सेवा करते हैं। अब समय आ गया है कि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारें गो-वंश की हत्या पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाएं और इनके सम्वर्द्धन के लिए उत्साह से ठोस प्रयास करें। शहरी जनता को भी अपनी बुद्धि शुद्ध करनी चाहिए। भैंस का दूध भारी ही नहीं, दिमाग के लिए हानिकारक भी होता है। केवल दक्षिण एशिया के देशों में ही भैंस का दूध पिया जाता है। शेष दुनिया में आज भी केवल गाय का दूध पिया जाता है। गो-वंश की सेवा हमारी परम्परा तो है ही आज के प्रदूषित वातावरण में स्वस्थ रहने के लिए यह हमारी आवश्यकता भी है। हम जितना गोमाता के निकट रहेंगे उतने स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम-इतिहास का अनखुला पृष्ठ

अंग्रेजों की दमन नीति और काले भारतीय सैनिक

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

आज अर्द्धशताब्दी पूण हो गई किन्तु किसी विद्वान या समिति सगठन का ध्यान 'भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का वास्तविक और सत्य इतिहास लिखने की ओर नही गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व जो कुछ लिखा गया उसमे इतिहासकार' की दो मनोवृत्तिया स्पष्ट दिखाई दती हैं। प्रथम कोटि क वे चाटुकार इतिहासकार जो अपने वरिष्ठ अंग्रेज आश्रय दाताओ के सकेता पर उन्हे प्रसन्न करन तथा मोटी–मोटी रकम और अलकार प्राप्त करने के भूखे रहते थे। दूसर वे इतिहासकार है जिन्होने इतिहास को यहा स्वाभिमान को नष्ट करने के लिए अपनी जनवादी मनावृत्ति रूपी दृष्टि या प्रतिक्रियावादी वृत्ति के आधार पर भारतीय जीवन क मूल्यो को नष्ट कर भारत को कबीलो का देश कहने म गर्वोक्ति अनुभव करते थ। इन्ही द्वन्द्वो के कारण आज तक न तो इस देश का अद्यातन इतिहास लिखा जा सका और न भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का वास्तविक सत्य ओर शुद्ध इतिहास ही लिखा जा सका इसे भारत का दुदव ही कहा जा सकता ह।

स्वतन्त्रता सग्राम के प्रारम्भिक प्रयासो का ध्यान बहुत ही कम इतिहासकारो को रहा ह। उनकी अभिरुचि न जाने क्यो न रही। प्रामाणिक आलेखो क अनुसार इस देश म अग्रेज सेनिको न भारतीयो पर नेक निमम अत्याचार किए। इसके फलस्वरूप ही भारतीय सशस्त्र राष्ट्रीय आन्दोलन म भयकर हिसा भडक उठी। कतिपय लखक का ही कथन हे कि विद्राही सेनिको न भयानक वीभत्स और घोर अत्याचार किए हे। बचारे अग्रेज इन भारतीय सेनिका क अत्याचारा से बहुत पीडित थे। इस देश क प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू ने लिखा – कुछ विद्राहियो ने अग्रेजा को बरहमी से कत्ल करक भी अपने काम पर धब्बा लगा लिया था। इस पाशविक बताव ने ही सम्भवत हिन्दुस्तान के अग्रेजा को कमर कसन के लिए जोश दिलाया। उन्होन उसी पाशविक ढग से बल्कि उससे सैकडो हजारो गुना ज्यादा बदला ले लिया था।

अगर नानासाहब का बताव वहशियाना ओर धाखबाजी का था ता कितने ही अग्रेज अफसर भी बहशीपन मे उससे सेकडो गुना कही अधिक आगे बढ गए थ। (देखें – प० जवाहरलाल नेहरू विश्व इतिहास की झलक पृष्ठ ५७०) इस उद्धरण का यही तात्पर्य है कि भारतीय सैनिको ने अग्रजो पर अकथनीय अत्याचार किए। और अग्रेजो ने उन अत्याचारो का सैकडो–हजारो गुना ज्यादा भारतीयो से बदला लिया।

हमारी सम्मति मे उपरोक्त दानो कथनो मे सच्चाई नही है अपितु वस्तुस्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। इस प्रकार के अत्याचार तो प्राय विदभवकारी युद्धो मे राष्ट्रो और जातियो की ओर सबसे अधिक सम्प्रदायिक मजहबो (कथित धर्म) के नामपर की जाने वाली लडाइयो मे देखने और पढने को मिलती है। इस प्रकार के अत्याचार होना तो सहज अर स्वाभाविक बात हे। हमारा तो यही अभिमत हे कि इन सब बातो के लिए स्वय अग्रेज सैनिक अफसर ओर उनका इस सम्बन्ध मे किसी निष्कष पर पहुचने के लिए अग्रेजो की कार्यप्रणाली तथा उनकी शासन प्रणाली पर पक्षपात रहित विचार कर लेना आवश्यक हे। डार्विनवाद क प्रणेता तथा प्रसिद्ध विकासवादी विद्वान कार्लमार्क्स अग्रेजो की शासन प्रणाली का विश्लेषण करते हुए दिनाक १६ सितम्बर १८५७ के न्यूयार्क दैनिक ट्रिबून समाचार पत्र मे प्रकाशित अपने एक लेख मे लिखते हैं –

अग्रेजो के शासन की विशेषता इस बात से ही समझी जा सकती है कि शारीरिक यत्रणा पहुचाना अग्रेजो की वित्तीय नीति का अभिन्न अग रहा है। मानव इतिहास मे प्रतिशोध नाम की भी कोई चीज होती है और ऐतिहासिक प्रतिशोध का यह नियम हैकि उसके साधन को अत्याचार पीडित नहीं बल्कि स्वय अत्याचार करने वाला बनाता है। इसके आगे भारतीय सनिको के व्यवहार के सम्बन्ध मे वे आगे कहते हैं – **भारतीय सिपाहियो का व्यवहार चाहे कितना ही निदनीय रहा हो वह भारत मे अग्रेजो के अपने व्यवहार का ही प्रतिरूप था।** (कार्लमार्क्स) उपनिवेशवाद के बारे मे पृ० १६४–१६५ तथा फ्रेडिरिक एगेल्स)

इस सन्दर्भ म कार्लमार्क्स आगे लिखते हें – चीन की लडाई मे ब्रिटिश सेनिक अफसरो ने जो बहिशयाना अत्याचार किए थे उसके उदाहरण विश्व के इतिहास मे अन्यत्र नही मिलते। उन दिनो अग्रेज फौजियो द्वारा केवल अत्याचार करन का लुफ्त उठाने के लिए चीनियो पर घोर जुल्म किए गए। औरतो की अस्मत लूटी गई और यह सब दिखाव के लिए नहीं अपितु उनके जिन्दा बच्चो के शरीर मे सगीन भोके गए गाव के गाव भून डाले गए और यह सब केवल मनोरजन के लिए किया गया था। (सन्दर्भ पूववत) 'इस पर भी यह समझना कि अग्रेज तो त्याग की मूर्ति थे और सभी जुल्म केवल भारतीय सिपाहियो ने किए थे बिलकुल गलत होगा।

सन १८५७ की सेनिक क्रान्ति से पहले अग्रेज सैनिक अफसरो के निर्मम अत्याचारो की पृष्ठभूमि मे उसी मनोरजन की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। सन १८५७ की सैनिक क्राति से पहले अग्रेज सैनिक अफसरो के निर्मम अत्याचारो की पृष्ठभूमि मे उसी मनोरजन की प्रवृत्ति देखने को मिलती हे। कार्ल मार्क्स के लेख १६ सितम्बर १८५७ न्यूयार्क डेली ट्रिबून के अनुसार –

इलाहाबाद से सिविल सर्विस का एक अफसर लिखता है जिन्दगी और मोत का फेसला करना हमारे हाथ मे है और सच मानिए हम किसी का लिहाज नही करते। एक दूसरा अफसर लिखता है कोई दिन खाली नही जाता जब हम १०–१५ आदमियो (असैनिक व्यक्तियो) को सूली पर नही चढा देते। एक अन्य अफसर रस लेकर लिखता है होलम्स उन्हे दर्जनो के हिसाब से फासी पर लटका रहा है। आदमी हो तो ऐसा हो। एक तीसरा अफसर लिखता हे हम घोडो पर बेठे–बेठे कोर्ट मार्शल करते ह जहा कहीं भी कोई काला आदमी नजर आ जाए उसे या तो सूली पर चढा देते हैं या गाली का निशाना बना दते हैं। बहुत स भारतीयो को बिना मुकदमा चलाए फासी की सजा दी गई इसकी चर्चा करते हुए एक अफसर लिखता हे और फिर मजा आने लगा एक अन्य अफसर लिखता हे कि एक दिन रात को पशावर मे बारुद फटने का धमाका हुआ। कही पर शादी हो रही थी ओर राष्ट्रीय प्रथा के अनुसार छोटे–छोटे पटाखे छाडे जा रहे थे। लेकिन धमाका सुनकर खतरे का भ्रम पैदा हो गया और दूसरे दिन पटाखे छोडने वालो के हाथ–पाव बाधकर कोडो से ऐसी मरम्मत की गई कि ये उम्र भर याद रखेगे। बनारस के एक अन्य अफसर के पत्र म जो उन्हीं दिनो 'द लन्दन टाइम्स' मे प्रकाशित हुआ था लिखा है देशी लोगो के साथ यूरोपीय सैनिक भयकर राक्षसो का सा सुलूक कर रहे हैं।

इन उद्धरणो को देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अग्रेज सैनिको की निर्दयता एव बर्बरता अपनी चरम सीमा पर पहुच चुकी थी। किन्तु लन्दन के पत्रो मे ये अत्याचार भारतीय सैनिको के अत्याचार कहकर छापा करते थे। इतना ही नहीं उन्हे बढा–चढा कर अतिरजित रूप मे छापा जाता ताकि बदला लेने केलिए अग्रेजो को उकसाया जा सके।

इस सम्बन्ध मे कार्लमार्क्स ने अपने एक लेख मे जो १६ सितम्बर १८५७ को 'न्यूयार्क डेली ट्रिबून मे प्रकाशित हुआ था लिखा है भारतीयों द्वारा किए गए जुल्मो को यद्यपि वे स्वय बडे भयानक हैं जान बूझकर और खूब मिर्च मसाला लगाकर बयान किया जाता है। उदाहरण के तौर पर आप दिल्ली और मेरठ मे किए गए जुल्मो के बारे मे उस विस्तृत विवरण को लीजिए जो पहले 'द टाइम्स मे और बाद मे लन्दन के सभी अखबारो और पत्रिकाओ मे छपे थे यह विवरण कहा से आया था ? यह विवरण एक डरपोक पादरी ने बेगलौर से भेजा था। इससे यह सिद्ध होता है कि अग्रेज पादरी की कल्पना एक हिन्दू विद्रोही की उन्मत्त कल्पना से भी ज्यादा दूर की उडान भरती है। भारतीय सिपाहियो द्वारा नाक और स्तनो आदि का काटा जाना आदि घटनाए।

एक ओर अग्रेज सैनिको द्वारा निर्मम अत्याचार हो रहे थे और दूसरी ओर करो की उगाही मे पुलिस वालो के द्वारा शारीरिक यन्त्रणा दी जा रही थी। उन दिनो करो की उगाही पुलिस करती थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारतीयो पर किए जाने वाले अत्याचारो की जाच के लिए ब्रिटिश सरकार ने सन १८५५ मे अनेक जाच कमीशन नियुक्त किए थे। समिति की रिपोर्ट के अनुसार जितने लोगो को करो का भुगतान न करने पर हर साल शारीरिक दण्ड दिया जाता है उतनी ही सख्या मे फोजदारी के अपराधियो का दण्ड दिया जाता हे। समिति को यह भी एक भारतीय इसाई ने बताया जब कभी काई यूरोपियन या देशी रजीमेंट गाव क रास्त गुजरती हे तो खाने पीने का सामान आदि जुटाने के लिए किसानो पर दबाव डाला जाता हे और बदले मे उन्हे कुछ भी नहीं दिया जाता। अगर कोई किसान कीमत माग बेठे तो उसे बुरी तरह यन्त्रणाए दी जाती है। (कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एकल्स उपनिवेश वाद के बारे मे पृष्ठ २००–२०५, २०२–२०८)

भारत के तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी (१८४८–१८५६) ने सितम्बर १८५५ मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरो के नाम पत्र मे लिखा 'किसी न किसी रूप मे प्रत्येक ब्रिटिश प्रान्त मे छोटे से अधिकारियो द्वारा भारतीयो को शारीरिक यन्त्रणा दी जाती है इस बात को मैं निश्चित तौर पर मुद्दत से जानता हू।

उपरोक्त तथ्यो के परिप्रेक्ष्य मे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीयो को शारीरिक यन्त्रणाए देना अग्रेजो की शासन प्रणाली की वित्त नीति थी। इसी नीति के आधार पर उन्होने भारत की सारी सम्पदा को लूटा भारतीयो पर अनेक निर्मम अत्याचार किए असख्य लोगो की हत्या कर दी और भारतीय समाज के ढाचे को पूरी तरह तहस–नहस कर दिया। वस्तुत अग्रेज शासक सभ्य समाज की चादर ओढे खूखार भेडिये थे। उन्होने तत्कालीन भारतीय उद्योग धन्धो को हर प्रकार से नष्ट कर देश को कगाली अवस्था मे ला दिया।

– सुकिरण ३/१३, सुदामा नगर, इन्दौर ८ म०प्र०

गांधी जी ने देश के सामने 'धर्म निरपेक्षता' की विचारधारा रखी थी, वह बहुत अपूर्ण एक देशीय और पूर्वापर सम्बन्ध नहीं थी कि वह असफल हो गई। धर्म निरपेक्षता का यह अर्थ लिया गया कि 'तोषण' करते जाओ और सब ठीक हो जाएगा। पर यह बात ऐतिहासिक रूप से गलत थी। जैसा कि हम देख रहे हं। जरूरत इस बात की थी कि जितने भी धर्म हं, उनके सारे जहीरे (विषैले) दांत तोड दिए जाते। परन्तु व्यावहारिक जगत में ऐसा न करके हम ढोंग भरी परस्पर प्रशंसा में लगे रहे।

– मन्मथ नाथ गुप्त, वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी

हंस के लेख में भ्रान्त विचार

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

हंस के अप्रैल के अक मे डॉ० धर्मवीर जी का एक लेख वीरभारत तलवार की पुस्तक 'हिन्दू नवजागरण की विचारधारा सत्यार्थप्रकाश समालोचना का एक प्रयास प्रकाशित हुआ है। लेख का शीर्षक है – 'महर्षि दयानन्द सरस्वती (लुप्त) है। लेख मे कई बिन्दु ऐसे उठाए गए है जो तथ्यात्मकता की दृष्टि से चिन्त्य एव समालोचनीय हैं। लेख और लेख मे दिए गए उद्धरण यह बता रहे हैं कि पुस्तक के लेखक और समालोचक दोनो ही पुस्तक अध्ययन–ज्ञान–निष्कर्ष मे दयनीय रूप से भ्रान्ति के शिकार हो गए है जो सम्भवत गम्भीर अध्ययन के अभाव का ही परिणाम लगता है।

शीर्षक

लेख का शीर्षक है – महर्षि दयानन्द सरस्वती (लुप्त)। ये व्यजना और विन्यास दोनो ही किसी कुठित और क्षुब्ध मानसिकता के परिचायक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की सरस्वती का प्रबल प्रवाह उनके वेदज्ञान के उद्धार मे लहरा रहा है। इस प्रो० मैक्समूलर से लेकर योगी अरविन्द तक सभी वेदज्ञ स्वीकार कर रहे है। महर्षि ने वेदो को विद्याओ का ग्रन्थ बताया और पिछले शताधिक वर्षों मे वेदो पर कार्य भी बहुत हुआ हे एव यह सब बहुलाश मे वेदविद्या के विभिन्न पक्षो पर हुआ है। अब किसी अहम्मन्य को वेद–सरस्वती लुप्त जान पडे तो यह उसके ज्ञान चक्षुओ की ही करामात होगी। स्वामी दयानन्द की सरस्वती तो सदानीरा अभग तरगा लहरा रही है।

कबीर की तीखी आलोचना

डॉ० धर्मवीर जी ने लिखा है – 'क्योकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कबीर की कडे शब्दो मे तीखी आलोचना की है। लगता है डॉ० धर्मवीर ने बिना पढे ही सुनी–सुनाई बात लिख दी। सन्त कबीरदास ने मूर्तिपूजा का कठोर खण्डन किया है। स्वामी दयानन्द लिखते हैं – 'पाषाणादि को छोड पलग गद्दी तकिये खडाऊ ज्योतिदीप आदि का पूजना पाषाण मूर्ति से न्यून नही। कबीरदास से सम्बन्धित घटना को लक्ष्य करके स्वामी दयानन्द ने लिखा है 'क्या कबीर साहब कोई भुनुगा था वा कलिया था जो फूलो से उत्पन्न हुआ और अन्त मे फूल हो गया ? यह डॉ० धर्मवीर जी को कडे शब्दो मे तीखी आलोचना लगती है – निगाह अपनी–अपनी। सम्भव है कि इन लेखको का कबीरदास के प्रति श्रद्धा का अतिरेक ही इस सीधी सी समालोचना को भी तीखा और कटु लिख रहे है।

वेद का खूटा

वेद के सम्बन्ध मे स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की मान्यताओ से पूर्णरूप से परिचित न होने का ही फल है कि ये डॉ० न्याय के सिहासन पर स्वय आरूढ होकर निर्णय की घोषणा कर रहे हैं – फण्डामेण्टलिस्ट फासिस्ट और भी क्या–क्या बिना तर्क–प्रमाण ही लिख दिया है। केवल एक ही तर्क दिया है कि पुराणो के जगल से बाहर निकाल कर भी वेद के खूटे से बाध दिया। इसी के साथ आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द प्रगतिशीलता के साथ शुद्धता–साम्प्रदायिकता की प्रवृत्ति रखतेहै। इस प्रकार की आलोचना का कारण स्वामी जी के सिद्धान्तो से अपरिचय ही जान पडता है। डा० जी ! स्वामीजी की मान्यता है – वेद मे बुद्धिपूर्वावाक्यकृतिर्वेदे । (वैशषिक दर्शन) वद मे बुद्धि तर्क के आधार पर विचार है। आयसमाज और महर्षि दयान द की मा यता है – यस्तर्केणानुसन्धते स धर्म वेद नेतर और भी तर्क ऋषि ऋषय मन्त्रद्रष्टार साथ ही आप्तस्तु यथार्थ वक्ता आदि अनेक वेदार्थ के निर्देशक तत्व है। इसमे खूटे मे बाधने जेसी रूढिवादिता आदि कहा है।

वेद को खूटे से बाधने की बात तो तब समझ मे आती यदि लेखक स्वामी जी के वेद भाष्य से दो–चार रूढिवादी अर्थ उद्धत कर देते। केवल इतना लिखना साथ ही एक पुरानी परम्परा को अनुल्लघनीय बताकर उनके चिन्तन की स्वतन्त्रता को छीन भी लिया। स्वामी जी मनुष्य की वैचारिक स्वतन्त्रता के इतने बलवान समर्थक हैं कि अनेकत्र उन्होने विचार स्वतन्त्रता का उग्रसमर्थन किया है। वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका मे ही लिखते हैं मनुष्य का आत्म सत्यासत्य का जाननेवाला होता है। आगे लिखते है कि मनुष्य अपने स्वार्थ हठ दुराग्रह के कारण सत्य को त्याग असत्य को ग्रहण करता है। स्वामी दयानन्द ने ही सत्यार्थ प्रकाश मे यह भी लिखा है कि विद्वानो का कर्त्तव्य है कि वे सम्पूर्ण कथ्य को जनता के सम्मुख प्रस्तुत कर दे और जनता सत्यासत्य और उचित अनुचित का निर्णय स्वय कर ले। वे स्वय ही लिखते हैं कि मेरा कोई मत पन्थ सम्प्रदाय चलाने का किचित मात्र भी अभिप्राय नहीं है। स्वामी जी साम्प्रदायिकता के इतने विरोधी थे कि अपने नाम के साथ उन्होने काई पन्थ नहीचलाया। दादूपन्थी नानकपन्थी कबीरपन्थी की तरह दयानन्दपन्थी या चौरा पलग चवर गद्दी आदि का पूजन या किसी साम्प्रदायिक तर्क विरुद्ध बात को प्रश्रय नहीं दिया। ऐसे सम्प्रदाय विरोधी को लिखना कि किसी खूटे से बाध दिया सचमुच वैचारिक स्तर पर किसी कुण्ठा का ही फल हो सकता है। महर्षि दयानन्द विचार स्वतन्त्रता के समर्थको मे अग्रगण्य हैं।

ब्राह्मणवाद का गोरख धन्धा

महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज मे ब्राह्मणवाद जैसा कुछ है ही नही। ये दोनो डाक्टर बन्धु न वर्णव्यवस्था (स्वामी दयानन्द और वेदानुसारी) को समझ पाए है और नही ही ब्राह्मण साहित्य और स्मृति साहित्य का आरम्भिक परिचय पा सके है। ब्राह्मण ग्रन्थ वेदो की व्याख्या के ग्रन्थ है और स्मृति ग्रन्थ विभिन्न प्रकार के नियम व्यवहार के ग्रन्थ हैं। सो भी स्वामी दयानन्द इन ग्रन्थो को पूर्णत प्रमाण मानते भी नही। ये ग्र थ उतनी दूर तक ही प्रमाण है जहा तक न्याय सत्य वेद–बुद्धि के अनुकूल है। रही बात 'रिडिल्स इन हिन्दुइज्म की सो हमारा यह विचार है कि बाबा साहब को भी मनुस्मृति का न ठीक अनुवाद मिला और न वे स्वय अपने पूर्वाग्रह विचारो से ऊपर उठ सके। सम्भव है कि ये रिडिल्स बाबा साहब की स्वय की रही हो।

शूद्रो के सम्बन्ध मे अन्तर्विरोध

सत्यार्थ प्रकाश के अन्तर्विरोध को लेकर जो उद्धरण दिया गया है उसके अन्तिम शब्द हैं 'यह मत अनेक आचार्यो का है। अब इसे अन्तर्विरोध कैसे कह सकते है। स्वामी दयानन्द के अपने मन्तव्य तो बहुत सुस्पष्ट है। वे मनुष्यमात्र को वेद पढने का अधिकार देते है। महर्षि ने पूर्व पक्ष के रूप मे स्वय यह प्रश्न उठाया है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तो द्विज है उन्हे वेद पढने का अधिकार है किन्तु स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम यह श्रुति का वचन है अर्थात स्त्रिया और शूद्र वेद न पढे। इस पूर्व पक्ष के उत्तर मे ऋषि ने वेदमन्त्र का प्रमाण देकर लिखा कि शूद्र अतिशूद्र सबको वेद पढने का अधिकार है। स्वामी जी लिखते है – 'सब स्त्री और पुरुष अर्थात मनुष्यमात्र को पढने का अधिकार है। और तुम कुआ मे पडो और यह श्रुति तुम्हारी कल्पना से हुई है किसी वेद आदि प्रामाणिक ग्रन्थ का नहीं।

ऋषि यजुर्वेद के मन्त्र का उद्धरण देकर लिखते है –

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य ।
ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्रायचार्याय च स्वाय चारणाय।।

यजु० २६–२

देखो ! परमेश्वर स्वय कहते है कि हमने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र भृत्य वा स्त्रियादि और अति शूद्रादि के लिए वेदो का प्रकाश किया है। अथात सब मनुष्य वेदो को पढ–पढा सुन–सुनाकर विज्ञान को बढाकर अच्छी बातो का ग्रहण और बुरी बातो को छोड के दुखो से छूटकर आनन्द को प्राप्त है।

स्वामी जी ने निशुल्क अनिवार्य आवासीय शिक्षा सब के लिए राज परिवारो से लेकर सेवक पर्यन्त सबके लिए समान सुख–सुविधा खान–पान की व्यवस्था और सेवको के लिए भी सम्पूर्ण व्यय को प्राप्त करने का विधान किया है। ऐसी उदार व्यवस्था कही भी चाहे कल्याण राज्य हो या साम्यवादी दिखाई नही देती। इस व्यवस्था को बलात मध्य काल की पुरानी व्यवस्था बताना चिन्तन की दयनीयता ही लगता है। बच्चो का अनिवार्य रूप से पाठशाला भेजना आवासीय निशुल्क शिक्षा खान–पान रहन सहन सब सभी बच्चो का समान काम करने वालो का खाने पहनने औषध उपचार विवाह आदि के सभी खर्चो की व्यवस्था नय पुरान जनतन्त्र गणतन्त्र या कल्याण राज्य मे तो दिखाई नही पडती। इस सन्दर्भ मे कोन सा ब्राह्मणवादी किला डाक्टर तलवार और डाक्टर महावीर को बन्द किए खडा है समझ से बाहर की चीज है।

नियोग क्या जार कर्म है ?

नियोग विवाह से भी अधिक उच्च पवित्र और आदर्श व्यवस्था है। हम यौन स्वच्छन्द देशो के विवाह की बात नही कर रहे है वहा विवाह की मर्यादा को मर्यादा कहना भी लज्जास्पद हे। जहा विवाह एक पत्नी और एक पति का व्रत है उन विवाहो से भी नियोग का आदर्श उच्च है। नियोग आपत्काल का विधान है और दो सन्तान स्त्री के लिए और दो सन्तान पुरुष के लिए ही विहित है। इसमे मात्र वीर्यदान और गर्भधारण रूप मिथुनकर्म विहित है न कामुकता न विलासिता न स्वच्छन्द विलासी जीवन। जहा तक दस सन्तानो की बात है वह एक स्त्री या एक पुरुष के लिए नहीं है। यह सीमा तो अनेक व्यक्तियो की अभीष्ट सिद्धि के उद्देश्य से है। इसमे जारकर्म की गन्ध भी कहीं से भी नही सम्भव है। सवर्ण लोगो मे विधवा विवाह का प्रचार आर्यसमाज से अधिक किसी ने नही किया है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

उड़ीसा में आर्यसमाज के समर्पणशील प्रचारक पं० लिंगराज अग्निहोत्री

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

पातञ्जलि योग शास्त्र के प्रवक्ता समाज सुधारक उत्कल प्रदेश के आर्यो मे अग्रगण्य प० लिगराज अग्निहोत्री का जन्म १६०० ई० म उडीसा प्रान्त के गजाम जिले के एक गाव बुधाईसुनी मे हुआ था। आज उडीसा म आर्यसमाज की जागृति दिखाई द रही है इसका मुख्य श्रेय इसी समर्पणशील प्रचारक को है जिसने गजाम जिले के पोलासरा नाम के स्थान मे सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। डेढ वर्ष की आयु मे वे यहा के वृद्ध दम्पति के दत्तक पुत्र रूप म आए थे। प्राथमिक शिक्षा के लिए भी इस बालक को बडा सघर्ष करना पडा था। ब्राह्मण पुत्र होने के कारण उन्ह एक पौराणिक प० ईश्वर मिश्र के यहा पोराणिक कर्मकाण्ड का अध्ययन करने के लिए भेजा गया। यह वह समय था जब दक्षिण उडीसा के कुलीन ब्राह्मणो को परम्परा से बहुत बडी सख्या मे ब्राह्मण परिवार प्राप्त थे। ये शिष्य अपने गुरुओ को प्रतिवर्ष नियमित रूप से दक्षिणा प्रदान करते उनक चरणा मे सिर झुकाते तथा उनके खाए भोजन को प्रसाद रूप मे गहण करते। उन्ह भगवान का साक्षात प्रतिनिधि माना था। जब लिगराज बड हुए तो उन्ह भी कहा गया कि वे गावो म जाकर वहा रह रह अपने पुराने शिष्यो को शिक्षित करे तथा नए शिष्य बनाए। लिगराज को गुरुडम के इस पाखण्ड पूर्ण नियम से घृणा हो गई। किन्तु जिस माता ने उन्हे दत्तक पुत्र बनाया था वह उन्हे इस कार्य के लिए विवश करने लगी। लिगराज ने अपने गुरु के समक्ष इस कार्य के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया।

उनक गुरु प० ईश्वर मिश्र ने उन्हे मनुस्मृति के कुछ अध्याय पढाए थे। इस ग्रन्थ का एक श्लोक उनके मन मे प्राय कौधता रहता। वह था –

घृत शरीर मृतसृज्य काष्ठलोष्त सम क्षितो।
विमुखा बाधवा यान्ति धर्मस्तमयुगच्छति।।
४–२१६

अर्थात मृतक के बन्धु जन तो उसके शरीर को लकडी और पत्थर तुल्य समझकर धरती पर छोडकर चले जाते है। अकेला धर्म ही उसका अनुगमन करता है।

लिगराज उस धर्म को साक्षात देखना चाहते थे जिसके बारे मे शास्त्र का कहना है कि वह व्यक्ति के साथ जाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे मृतको की अन्त्येष्टि यात्राओ मे बराबर जाते रहे। वे दाह स्थल पर घण्टो खडे रहते। जबकि अन्य लोग स्वगृहो की ओर प्रस्थान कर जाते। उन्हे जब वहा धर्म के दर्शन नहीं होते तो वे निराश हो जाते। उनकी आकाक्षाओ का कोई समाधान नही कर सका उनका अध्यापक भी नहीं एक दिन वे अपने माता–पिता को बिना सूचना दिए कलकत्ता चले गए। वहा वह अनेक मत–सम्प्रदायो के आस्था स्थलो पर भटकने के पश्चात १६ कार्नवालिस स्ट्रीट (अब विधानसरणी) के आर्यसमाज मे पहुच गए। अब वे यहा नियमित रूप से आने लगे। यही पर उनकी धर्म जिज्ञासा शान्त हुई उनकी शकाओ का उत्तर मिला और उन्होने अपने भावी मार्ग का निर्धारण कर लिया। अब उन्होने कलकत्ता के उडीसा निवासियो के बीच धर्म प्रचार करना आरम्भ किया।

इसके पश्चात वे अपने ग्राम मे आए। अब उनके पास स्वामी दयानन्द सरस्वती श्रद्धानन्द तथास्वामी दर्शनानन्द के कुछ ग्रन्थ थे। उन दिनो उडीसा के भीतरी भागो मे हिन्दी एक विदेशी भाषा क तुल्य थी। प० लिगराज को हिन्दी सीखने तथा उपर्युक्त लेखा की पुस्तको के अभिप्राय को जानने के लि[illegible] श्रम करना पडा। शीघ्र ही उनका घर हिन्दी सीखने योगसन का प्रशिक्षण देने तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो का ज्ञान कराने का केन्द्र बिन्दु बन गया।

कलकत्ता छोडने के पहले वे अपन कुछ युवा मित्रो के साथ देश के स्वाधीनता आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए। अब वे चरखा कातते गाधी टोपी पहनते तथा देश भक्तो के जुलूसो मे भाग लेते। कलकत्ता से उडीसा लौट कर उन्होने अपनी पूर्व प्रवृत्तियो को जारी रखा साथ ही अपने मित्रो को हिन्दी सीखने उसका प्रचार करने बालको का चरित्र निर्माण करने तथा बाल विवाह उन्मूलन अछूतोद्धार पर्दा निवारण तथा जन्माधारित जाति व्यवस्था के उन्मूलन जैसे सामाजिक सुधारो का महत्व बतलाते।

यह उनका सौभाग्य था कि उडीसा के प्रथम आर्यसमाजी महान समाज सुधारक तथा सत्यार्थ प्रकाश के उडीसा अनुवादक श्रीवत्स पण्डा उनके बहनोई थे और उनके गाव से मात्र पचास मील की दूरी पर रहते थे। दोनो का आर्यसमाज से सम्पर्क भिन्न साधनो और परिस्थितियो मे हुआ था। श्रीवत्स पण्डा का पत्र व्यवहार लाहौर के तत्कालीन आर्य नेताओ से रहा जबकि लिगराज कलकत्ता के आर्यों के सम्पर्क मे आ चुके थे। अब दोनो ने मिलकर उडीसा मे आर्यसमाज के कार्य को बढाया। पण्डा जी ने अपने लेखन के द्वारा अन्धविश्वासो के विरोध मे अपना अभियान चलाया जब कि लिगराज वैदिक सोलह सस्कारो के प्रचार योग प्रशिक्षण तथा आध्यात्मिक साधना पर बल देते थे।

उनकी माता ने (पिता दिवगत हो चुके थे) अब उनका विवाह कर दिया। पत्नी उमा देवी उस समय उन्नीस वर्ष की थी जब कि लिगराज की आयु छब्बीस वर्ष की थी। पत्नी ही उनकी प्रथम शिष्या बनी जिसने देवप्रतिमाओ को कुए मे डाल दिया और नियमित रूप से सन्ध्या करने लगी। उसने वैदिक उपासना प्रणाली को अपना लिया। उनके दो पुत्र हुए जिनके आरम्भ से ही वैदिक सस्कार कराए गए। जब लिगराज हरिजन बस्ती के निकट के घर मे रहने लगे तो पौराणिक समुदाय ने उन्हे नाना कष्ट दिए तथा उत्पीडित किया। जब वे कथित अछूतो को अपने कुए से पानी भरने देते उन्हे गायत्री मन्त्र सिखाते तो लोग उनको तग करते उनका उपहास करने लगते। लिगराज स लागो की नाराजगी इसलिए थी कि स्थानीय जना का हिन्दी सिखाते थे। जब वे इधर उधर व्यर्थ भटकने वाल साधुआ और बाबाओ को सुधारने की कोशिश करत ता यही लोग उनके विरुद्ध हो जाते।

१६४० मे अपने परिजनो के कहर विरोध के उपरान्त उन्हाने अपने दोनो पुत्रो प्रियव्रत तथा देवदत्त का आर्यसमाज की विधि से उपनयन (यज्ञोपवीत) कराया। जब उनकी माता की मृत्यु हुई तो वैदिक रीति से उसका अन्त्येष्टि सस्कार किया। इस कारण गाव वालो तथा परिवार के लोगो द्वारा उनका विरोध चरम सीमापर पहुच गया। अपने गाव मे उन्होने एक हाई स्कूल की स्थापना की जो जिले का एक विशिष्ट स्कूल था। इसे उसी स्थान पर स्थापित किया गया जहा उडीसा के गाधी गोप बन्धु दास ने अपना व्याख्यान दिया था। उन्होने गोपबन्धु की यादगार मे एक पुस्तकालय भी स्थापित किया। उनके अन्य सेवा कार्यों मे कन्या पाठशाला की स्थापना कुए और तालाब खुदवाना तथा उन्हे स्वच्छ रखने की स्थायी व्यवस्था करना आदि मुख्य हैं। इस लोकोपकारी कार्यों मे वे स्वय मजदूरो के काम का निरीक्षण करते और भवन निर्माण कार्य की पूर्ण चौकसी रखते। उन्होने मजदूरो से कहा कि वो अपना पारिश्रमिक उन लोगो से ले जिन्होने इन कामो मे अपना सहयोग करने का वचन दिया है। सेवाभारती लिगराज उस घर मे तुरन्त पहुचते जहा किसी की मृत्यु का समाचार उन्हे मिलता। वे मृत व्यक्ति की अन्त्येष्टि मे शरीक होते और वैदिक विधि से सस्कार करते।

१६४३ मे उडीसा मे भयकर अकाल पडा। उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपने दो प्रचारको को अकाल पीडित सहायता कार्य के लिए लिगराज के गाव पोलासारा भेजा। पजाब से आए प० वेदव्रत शास्त्री और प० अमरनाथ लिगराज की देखरेख मे राहत कार्यो मे जुट गए।

इस समय एक महत्वपूर्ण कदम उठा कर प० लिगराज ने स्वग्राम पोलासरा मे आर्यसमाज की स्थापना कर दी। सम्भवत यह उडीसा की प्रथम आर्यसमाज थी। ६४ वर्षीय प० वेदव्रत शास्त्री आज भी इसी आर्यसमाज मे रहते हैं। प० लिगराज ने ही इन्हे लाहौर के दयानन्द उपदेशक विद्यालय मे अध्ययन के लिए भेजा था।

लिगराज अग्निहोत्री कहलाते थे क्योकि कलकत्ता से लौटने के बाद उन्होने नियमित रूप से यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया था। यदि वे रेल मे यात्रा करते तब भी यज्ञ नियमित रूप से करते। वे प्रात तीन बजे उठ जाते और सन्ध्योपासना तथा स्वाध्याय मे लग जात। जब अग्निहोत्र का समय आता तो अन्य जिज्ञासुगण भी उसमे सम्मिलित होते। १६६२ मे उन्होने सन्यास ल लिया तथा उडीसा के वनवासी प्रधान जिलो–कोरापुर तथा कालाहाण्डी मे रहने लगे। उनके अथक प्रयत्न का ही परिणाम था कि अनेक आदिवासियो ने मासाहार का त्याग कर दिया मद्यपान तथा तलाक आदि बुराईयो को छोड दिया। वनवासियो का अध्ययन करने के लिए जब आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इग्लैण्ड के प्रो० टी० बरुआ उडीसा के कोरापुर जिले मेआए तो उन्हे इस महान समाज सेवक से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। अब वे एक दुभाषिये के माध्यम से उनसे वार्तालाप करते। डॉ० बरुआ ने इन चर्चाओ का साराश इग्लैण्ड के अनेक पत्रो मे प्रकाशित करवाया था। प० लिगराज ने उन्हे बताया कि प्राचीन ऋषियो की ही आदिवासी सज्ञा थी न कि आज के इन तथाकथित आदिवासियो की जो सामाजिक दृष्टि से सम्पूर्णतया उपेक्षा से जी रहे है और जगलो मे दयनीय जीवन बिताते हैं। इन वनवासियो तथा पाश्चात्य देशो के लोगो मै अनेक समानताए हैं यथा भोजन पान तथा तलाक आदि। दोनो के लोक गीतो मे तो अद्भुत समानता दिखाई देती है। जब प्रो० बरुआ ने प्राचीन आर्यों द्वारा भारत पर आक्रमण की बात कही तो प लिगराज ने उसका तीव्र प्रतिवाद किया।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

गुरुकुल शिक्षा

– रामस्वरूप पर्यावरण सुख थावला

भिन्न भिन्न समय पर ऋषि दयानन्द ने अलग–अलग शास्त्र सीखे थे अनेक गुरुओ से। जैसे योग के ही उनके गुरु कई थे। सामवेद पाठ तो टकारा (मौरवी क्षेत्र) (ई० २००० में राजकोट जिला) पितृगृह मे ही सीखा तथा निघण्टु (वेद शब्दो का सग्रह) व निरुक्त (धातुज अर्थ) और पूर्वमीमासा भी। दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी प्रज्ञाचक्षु थे। ऋषि दयानन्द को उन्होने वेद एव आर्ष ग्रन्थो के प्रति एकनिष्ठ बना दिया था। (ऋषि कृत यानी) आर्ष ग्रन्थो का उद्धार करो ऐसा सकल्प कराया था साथ मे तीन सकल्प और भी थे। अधकार (गु) नाशक (रु) ही थे दण्डी स्वामी ने शिष्य दयानन्द जी के प्रज्ञा रूप चक्षु खोल दिए थे अज्ञान रूप अन्धकार का नाश हो चुका था।

आर्ष ग्रन्थो के उद्धार के लिए ऋषि ने गुरुकुल या वैदिक पाठशाला सबसे पहले फर्रुखाबाद क्षेत्र मे खोली। (ईस्वी १८६६) (वि० १९२६) फिर मिर्जापुर/कासगज (एटा क्षेत्र)/सलेसर (अलीगढ क्षेत्र) मे खुलवाई। काशी (वाराणसी यानी बनारस) मे जब गुरुकुल खोला गया तो ऋषि ने उसका नाम सत्य शास्त्र पाठशाला रखवाया था। सत्य के लिए ऋषि के हृदय मे जो समर्पण भाव था उसका बीज इस नाम मैं ही झलकता है। बाद मे सन १८७७ म लाहार म आर्यसमाज स्थापित किया गया था प्रधान बनाए गए सरदार रोशनसिह जी (जिनके पोते थे शहीदे आजम भगतसिह) ने मुम्बई वाले सम्मिलित २८ नियमो को १० नियम व ४४ उपनियम मे बदला था। ऋषि दयानन्द ने चौथे नियम मे सत्य के ग्रहण के लिए सर्वदा उद्यत रहने की प्ररणा दी पाचवे मे सब काम सत्य का विचार के लिए की प्रेरणा दी। लखनऊ मे भी स्थापित किया था गुरुकुल यानी वैदिक पाठशाला।

गुरुकुल फर्रुखाबाद के लिए व्यय रईस पन्नीलाल करते थे। छात्र ५० थे। एक छात्र के धोती लोटा चोरी हो गए शिकायत की छात्र ने। चुराने वाले दुष्ट ने छात्र को पीटा व छात्र को न्याय न मिला रईस से। ऋषि दयानन्द को पता चला छात्र के प्रति अन्याय का गुरुकुल बन्द कर दिया (वि० १९३३ यानी ई० १८७६) मे। पण्डित की दक्षिणा ३०/– मासिक थी।

गुरुकुल मिर्जापुर जनवरी १९७० मे खुला था। ३० छात्रों ने प्रवेश लिया था। कुछ शरारती छात्र थे उस कारण गुरुकुल ई० १८७३ मे बद किया गया।

गुरुकुल कासगज अप्रैल १८७० ई० मे खुला था। पण्डित का मानदेय १५/– मासिक था। प्रवेश के लिए 'सन्ध्या' सुनी जाती थी। सूर्योदय के पहले प्रात सन्ध्या करनी होती थी अन्यथा भोजन न मिलता। साय भोजन भी सन्ध्या के बाद ही मिलता था। छात्र बस्ती (यानी नगर) में जाकर भोजन नहीं कर सकते थे। उद्यमी व बुद्धिमान छात्रो के लिए विशेष भोजन का प्रबन्ध भी था। हवनकुण्ड खुदवाकर बनवा दिया गया था। दान से यह गुरुकुल चलता था। प० रामप्रसाद के नाम से आम उठा लिया था ऋषि ने अर्थ दण्ड करवाया। वेद की पुस्तक हाथ मे ले केवल आर्ष ग्रन्थ ही पढने का सकल्प कराया जाता था छात्रो से। ऋषि ने कहा कि सकल्प कराने पर वेद पुस्तक से शपथ न दिलवाई जावे। इस गुरुकुल मे २२ छात्र थे। कुछ छात्र चले गए ऋषि ने इसे पण्डितो को निर्योग्यता माना। पण्डितो का मानदेय २०/– मासिक था। ऋषि ब्राह्मी व मालकागनी छात्रो को खिलाए जावे यह सकेत करते थे। जून १८७४ मे अध्यापकों के दोष से यह गुरुकुल बद हुआ।

गुरुकुल छलेसर नवम्बर १८७० मे आरम्भ हुआ बीस छात्र हो गए थे। सन्ध्या आदि के नियम कासगज जैसे ही थे। व्यय उठाते थे ठाकुर मुकुटसिह। प्रबन्ध न्यूनता के कारण दिसम्बर १८७७ मे यह गुरुकुल बन्द किया गया।

गुरुकुल काशी (बनारस) दिसम्बर १७७३ से आरम्भ हुआ। पण्डित को मानदेय २५/– था। स्थान का किराया ३ रु० १२ आने मासिक था। एक पण्डित के जाने पर अन्य जो आया उन्हे १५/– मासिक दिया जाता था। गुरुकुल के लिए बिहार बन्धु/कवि वचन सुधा आदि पत्रो मे विज्ञापन भी दिया गया था। प्रात ७ से १० फिर १ से ५ तक पठन पाठन होता था। इसका नाम सत्य शास्त्र पाठशाला था आय विद्यालय भी था। कलकत्ता की 'तत्वबोधिनी पत्रिका ने इसका नाम 'वेदिक सर्वधर्म पाठशाला माना था। फरवरी १८७५ मे यह गुरुकुल बद हुआ।

ई० १८८३ अक्तूबर ३० दीपावली को ऋषि का निर्वाण हुआ। बाद मे म० मुशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द) ने गुरुकुल कागडी (जो अब विश्वविद्यालय है) कन्या गुरुकुल देहरादून आदि खुलवाए। म० कृपाराम जी (स्वामी दर्शनानन्द) ने ज्वालापुर वृन्दावन (जो विश्वविद्यालय है अब) गुरुकुल खुलवाए तथा ब्रह्मदत्त जिज्ञासु स्वामी सर्वानन्द जी आदि ने खुलवाए गुरुकुल। ब्र० भगवानदेव जी (स्वामी ओमानन्द) ने आर्ष गुरुकुल झज्झर (अब मान्य विश्वविद्यालय) खोला व आपकी प्रेरणा से भारत के वनवासी क्षेत्रो मे भी गुरुकुल खुले। कई सौ गुरुकुल भारत मे हैं। आर्षग्रन्थो के अलावा यूरोपीय विद्याओ को भी पढाया जाता है। राजस्थान के अलवर (दाधिया) चित्तौडगढ सिरोही (आबू पहाडी व शिवगज) अजमेर (पुष्कर समीप तिलोरा ग्राम मे पाणिनिधाम – स्व० प० वेदपाल सुनीथ द्वारा स्थापित) मे है गुरुकुल।

लखनऊ से प्रकाशित आर्यमित्र (दिनाक १४ मई २०००) मे बताया है कि सन १८६८ मे फर्रुखाबाद मे जो गुरुकुल खुला था उसे मुरासन के राजा महेन्द्रप्रताप जी ने ४५ एकड जमीन वृन्दावन मे दी थी। यहा विश्वविद्यालय जो चल रहा है उसे व्यापक (ओपन) शैली का बना दिया जावे जो राष्ट्रीय स्तर का हो। ऋषि ने आर्ष पाठविधि मे कोई पचास से अधिक ग्रन्थो के लिए सकेत किया है। इस ग्रन्थो की शिक्षा वाणी सग्राहिका (ऑडियो कैसेट) द्वारा आकाशवाणी सहयोग से प्रसारित की जाए। रूपवाणी सग्राहिका (वीडियो कैसेट) द्वारा दूरदर्शन के सहयोग से होती रहे प्रसारित। आर्ष ग्रन्थ विशेष की आद्योपात सग्राहिका तो बने ही साथ साथ ही जनोपयोगी सग्राहिका भी बने जैसे ऋग्वेद अनुसार 'बोध यजुर्वेद अनुसार शक्ति सामवेद अनुसार श्रद्धा – अथर्ववेद अनुसार आनन्द विषय पर। दर्शनो मे योग अनुसार व्यक्तित्व/स्मृति/आरोग्य/प्रसाद (प्रसन्नता) पर बने वैद्यक शास्त्र (उपवेद) अनुसार स्वास्थ्य ज्ञान तथा भोजनोपचार एव पचकर्म पर बने कल्प (वेदाग) अनुसार सुगधित पर्यावरण/सामाजिक समता/दाम्पत्य सन्तोष आदि पर बने। अन्य शास्त्रो के अनुसार जनोपयोगी विषय निर्णीत किए जा सकते हैं।

गुरुकुल छात्रो को अनौपचारिक शोध तथा परामर्श कार्य भी सिखाए जाए परामर्श सेवा एक प्रकार से प्रसार शिक्षा हो जाएगी गुरुकुलो द्वारा। स्वाध्याय सुख (बिजली घर सामने हाथीभाटा अजमेर) व पर्यावरण सुख (गोलाई रातरणा मार्ग थावला बरास्ता पादू नागौर) मे अनौपचारिक रूप से यदा कदा शिक्षाक्रम चलता है। अनेक स्थानो पर व्यक्ति विशेष गुरुकुल चलाते हैं जैसे तिलोरा (पाणिनिधाम) इस प्रकार के गुरुकुलो कि सम्बद्धता व्यापक गुरुकुल विश्वविद्यलाय से होने का प्रावधान करा दिया जावे। सब गुरुकुलो को जोडने वाला आर्ष गुरुकुल सगठन बनवा दिया जाए। सार्वदेशिक सभा (दयानन्द भवन रामलीला मैदान के सामने नई दिल्ली) ने अप्रैल १९८४ मे गोष्ठी बुलवाई थी पुन प्रयास हो गुरुकुल सगठन का जुडाव रहे विद्यार्थ सभा से तथा द०आ०वै० (डी०ए०वी०) सगठन का भी।

परोपकारिणी सभा ऋषि उदयान अजमेर मे गुरुकुल चला रही है। सस्कार विधि/सत्यार्थ प्रकाश/ऋग्वेद आदि भाष्यभूमिका के क्रम मे कुछ अन्तर है। अत तीन स्थानो पर एक एक ग्रन्थ क्रम से चलवाया जाए कई साल बाद उसका परिणाम सामने आवेगा। जो खण्डित भारत है उसके कश्मीर की राजधानी श्रीनगर मे डल झील पर बट मजार है वहा हो गुरुकुल तथा काश्यप सागर (केस्पियन सी) समीप भी चलवाया जावे आर्ष गुरुकुल जम्बू द्वीप (एशिया) के अरब क्षेत्रो मे तथा अन्य द्वीपो/देशो मे भी चले तब विश्व शान्ति के लिए भी आर्ष गुरुकुल उपयोगी सिद्ध होगे।

गुरुकुल कागडी के शताब्दी समारोह के आयोजन २५ अप्रैल २००२ ई० के उपलक्ष्य में भारत व बाहर के विश्वविद्यालयो के लिए कुछ नए शैक्षिक अभिक्रम आरम्भ कराए जा सकते हैं। ऋषि ने सस्कारविधि। सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेद आदि भाष्यभूमिका मे विभिन्न वैदिक शास्त्रो से जो आर्ष ग्रन्थ सम्बन्धित है उनके नाम दिए है। शास्त्रो के अध्ययन के लिए अवधि भी बताई है। भारत व अन्य देशो के विश्वविद्यालयो तथा शिक्षा मण्डलो मे अनेक विषय पढाए जाते है। उनमे सम्बन्धित आर्ष ग्रन्था को पाठयक्रम मे लगवाया जाए। भौतिकीय विज्ञानो मे गणित ज्योतिष के सूर्यसिद्धान्त तथा सिद्धान्तशिरोमणि को लगवाया जावे। पर्यावरण विज्ञान मे कल्प शास्त्र के आश्वलायन कृत श्रौतयाग (वर्षाइष्टि आदि अकाल निरोधी) शास्त्र रखवाया जाए। दाम्पत्य विज्ञान (फेमिली–होम साइस) मे आश्वलायन गृह्यसूत्र व सस्कारविधि। एलोपेथी (दमन चिकित्सा) मे वैद्यक का स्वास्थ्य ज्ञान पचकर्म भोजनोपचार पचभूत उपचार चरक सुश्रुत सहिताओ के अनुसार हो। भवन प्रविधि मे वास्तुशिल्पाशास्त्र के विश्वकर्मा–मय–त्वष्टा–दैवज्ञ सहिताए लगवाई जाए। मनोविज्ञान मे योग सूत्र का व्यास भाष्य हो। तर्क (लोजिक) व न्यायतत्व (ज्यूरिस्प्रडेस) मे न्यायसूत्र का वात्स्यायन भाष्य हो इसी प्रकार और भी शास्त्रो के लिए आर्ष पाठ विधि मे जानकारी है।

अनेक दूरदर्शन श्रृखलाए हैं जिन पर शास्त्रो के अनुसार जनोपयोगी विचार आते रहे जैसे शिल्प अनुसार पारिहितैषी उद्यम गणित ज्योतिष के अनुसार वर्षानुमान (भूकप आदि) आपदा आकलन नक्षत्र अनुसार बीज वपन। साख्य अनुसार दुख निरोध चेतना जागृति। आर्ष ग्रन्थो के अनुसार जनोपयोगी शोध कराए जावे जैसे नाटयशास्त्र अनुसार शील प्रेरक मनोरजन पूर्वमीमासा अनुसार सवेदना या सहृदयता याग से आतक निरोध आदि। जो जो आर्ष ग्रन्थ सुझाए गए है पाठ विधि म उनकी शिक्षण सदर्शिकाए (टीचिग गाइड बुक) बनवायी जाए सस्कृत व हिन्दी व पहले बन जावे अन्य भाषाओ मे आगे बनती रहे सदर्शिकाए। सम्बन्धित यूरोपीय विद्या और आर्ष शास्त्र के त्रिभाषी कोष बनवा दिए जाए जैसे भाषा विवेचन (एटिमोलाजी) व निरुक्त का रक्षा विज्ञान और धनुर्वेद का।

आर्ष पाठविधि पर पाचो आयाम के उदाहरण रख दिए हैं। सम्मेलन मे विचार सभी गुरुकुलीय आर्ष विद्वान करे व बीज रूप रेखा बन जावे। योग–अहिसा प्रसार सम्प्रदाय सद्भाव सर्वज्ञातीय स्नेह राष्ट्र रक्षक युवा महिला स्वरक्षा (नेसर्गिक ससाधन) गो कृषि आदि रक्षा पारिहतैषी सर्व व्यवसाय आदि को ग्राम नगर प्रदेश राष्ट्र–विश्व स्तर पर व्यवहारिक बनाया जावे आर्ष गुरुकुलो द्वारा। आतक अत्याचार कपट दुष्प्रचार प्रदूषण भ्रष्टाचार अश्लीलता बलात्कार अपव्यय दुर्व्यहार के कारण का निरोध (निशेष) कराना होगा। गुरुकुल इतर (द०आ०वै०–डी०ए०वी०) सस्थाओ मे गुरुकुलीय आचार प्रवेश कराना होगा तब जाकर भारत (व विश्व) के अभिभावको को सन्तोष मिलेगा सतानो या छात्रो का व्यक्तित्व खिलेगा। विश्व के सारे ही द्वीपो व देशो मे आर्ष गुरुकुल खुलने की माग होने लगगी। जो गुरुकुल इतर विद्यालय है उन्हे भी गुरुकुल शैली पर सरकारे लाना चाहेगी फिर होगे विश्वविद्यालय मे कुलपिता।

सौजन्य से आचार्य धर्मवीर प्राच्यविद्यानुसन्धान केन्द्र न्यास बी ८२ आवास विकास कॉलोनी बदायू उ०प्र०

पृष्ठ ५ का शेष भाग

हंस के लेख में भ्रान्त विचार

नियोग मे उच्चवर्ण का पुरुष

यह मनुष्य की सन्तानो को उत्तम बनाने का एक विज्ञान है। उच्चवर्ग के पुरुष साथ विवाह अनुलोम और हीन वर्ण के पुरुष से विवाह प्रतिलोम कहा जाता है। रज पक्ष से वीर्य पक्ष अधिक उच्च हो – शरीर बल बुद्धि सब प्रकार से पुरुष को उच्च होना चाहिए। यह नृवश के उत्थान का बुद्धि सगत सिद्धान्त है।

आजकल पशु प्रजातियो को उत्तम बनाने के लिए ऊची नस्ल के नर से मादा पशु का सम्पर्क कराया जा रहा है। गायो को उच्च नस्ल के साडो के सयोग से गायो का स्वास्थ्य दूध शिशु सभी उत्तम श्रेणी के पाए गए। यही विज्ञान उच्चवर्णस्थ पुरुष के साथ नियोग की व्यवस्था मे प्राचीनकाल मे था। इसमे जार कर्म या उपहास देखना बौद्धिक धरातल पर दयनीय है।

रही सन्तानवृद्धि की बात

सो कोई शास्त्रीय सन्दर्भ का निर्देश न होने के कारण यज्ञ कर्म मे बच्चे उत्पन्न करने की पद्धति कहा तक शास्त्रीय व्यवस्था की बात है समीक्षा की चीज नही हो पाती। कभी–कभी अधिक सन्तान को उत्पन्न करना भी राष्ट्रीय–जातीय हित मे ही देखा गया है। अभी कुछ ही वर्ष पहले की बात है जब हमारे यहा 'हम दो हमारे दो' का नारा लगाया जा रहा था विदेश मे बाहर किसी देश मे अधिक सन्तान पैदा करने वाली स्त्री को राष्ट्र की ओर से पुरस्कार दिया जा रहा था। डॉ० तुलसी रामजी डॉ० रामविलास शर्मा जी किस यज्ञ की बात कर रहे है ? यह सब बडा भ्रामक है। जिस देश मे वाममार्गी अघोडी चारवाक जैसी सस्कृतियो का उदय अस्त हुआ हो वहा कब क्या था इससे कोई सास्कृतिक धारा को जोडना अनुसन्धान की गरिमा नही है। हमारे डाक्टरो के अनुसन्धान मूलग्रन्थो के आधार पर होते हो तो ठीक है नही तो प्राय अनुवादो के आधार पर निकाले गए निष्कर्षो पर निर्भरयोग्य निर्णय तो नही हो सकेगा। पर ज्ञानोपजीवी डाक्टरो के इतर क्षेत्र मे बडे नाम के कारण वेद और सस्कृति मे अनुसन्धान डॉ० अम्बेडकर की रिडिल्स जैसे उपहसनीय परिणाम ही निकाल सकते है वे न निर्णायक हैं न निर्भरयोग्य।

दलित सस्कृति का भ्रम

स्वामी दयानन्द या आर्यसमाज कभी भी अपनी चिन्तन धारा मे दो सस्कृति द्विज ओर दलित सस्कृति जैसी भावना को प्रश्रय नही देते। लेखक की राय मे स्वामी दयानन्द व्यवहार मे दो तरह की सस्कृतियो का जो पहले से मौजूद थीं समर्थन करते हैं – एक द्विज सस्कृति और दूसरी शूद्र सस्कृति। दयानन्द साहित्य मे ऐसा वर्णन कहीं भी नहीं है। हा यह तो उन्होने लिखा है कि अपने गुण कर्म स्वभाव को सुधारकर शूद्र भी ब्राह्मण हो जाता है और अपने गुणकर्म स्वभाव को बिगाड कर द्विज–ब्राह्मण क्षत्रिय–वैश्य भी शूद्र हो जाते हैं। स्वामी जी प्रमाण देते हैं –

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्या द्वैश्यात्तथैव च।।

मनु० १०–६५

इतनी सुस्पष्ट समानता और वर्ण वरण मे स्वतन्त्रता रहने पर भी दो सस्कृतियो की बात स्वामी दयानन्द पर थोपना वैचारिक अन्याय है। ऊची सस्कृति और दलित सस्कृति जैसी शब्दावली स्वामी दयानन्द के साहित्य मे ही नही है। ऊची–दलित–जार आदि सस्कृतिया आज के समाज शास्त्रियो की स्वोपज्ञता है। सम्भव है ये अनुसन्धान प्रिय विद्वान उसी के शिकार हो गए है।

क्या कर्मफल प्रतिक्रियावादी दर्शन है ?

क्रिया की प्रतिक्रिया कार्य का कारण कर्म का फल परिस्थिति अन्त स्थिति कर्म और उनके फल इनमे किसी को नकारना वास्तविकता से मुह मोडना है। कम्यूनिज्म के नास्तिक देशो मे जहा तथाकथित प्रतिक्रियावादी चिन्तन और व्यवहार का अभाव रहा है वहा क्या सम्पन्न विपन्न तीक्ष्णबुद्धि और मन्द बुद्धि सफल असफल सफलता की श्रेणिया बौद्धिक कार्य और उपलब्धि चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी आदि विषमताए समाप्त हो सकी ? फिर कर्मफल के सिद्धान्तो को दोष देना केवल समस्या से मुख मोडना है ? रही बात कर्मफल की पुराण गाथा का वर्णन सो वह तीन और पाच आठ होते है या हाइड्रोजन और आक्सीजन पानी बनाते है जैसा यह यही है का वर्णन नही है। हा कर्मफल की प्रकृति का वर्णन अवश्य है। वे केवल कर्मफल की दिशा बता रहे है।

सम्पूर्ण नास्तिक दर्शन साम्यवादी–समाजवादी दर्शन समान परिस्थितियो और सुविधाओ मे विषम परिणामो की व्याख्या आज तक तो कर नहीं पाए हैं। जो भी दिखाई पडे उसी की आलोचना विद्वता का प्रमाण नहीं हो सकता।

पृष्ठ ६ का शेष भाग

उड़ीसा में आर्यसमाज के समर्पणशील प्रचारक पं० लिंगराज अग्निहोत्री

प० लिगराज ने स्त्री शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया था। उनकी बडी पुत्र वधू श्रीमती शन्नो देवी ने उनके जीवन एव शिक्षाओ से प्रेरणा ली और वैदिक उपदेशिका के रूप मे कार्य किया। अब तक उन्होने अनेक सस्कार कराए है विविध ग्रन्थो की रचना की है तथा अमेरिका मोरिशस व इग्लैण्ड मे वेद प्रचारार्थ जा चुकी है। उन्होने अपनी उडियापुस्तक 'वेदपाठ और वैदिक कर्मकाण्डरे नारीर अधिकार' मे लिखा – चालीस वर्ष पूर्व मै आपके (अपने श्वसुर प० लिगराज) घर मे पुत्रवधु के रूप मे प्रविष्ट हुई थी और यहा मेरे नेत्रो को नया वातावरण मिला था। यहा का दिन उषाकाल की सन्ध्या प्रार्थना यौगिक व्यायाम अग्निहोत्र ध्यान स्वावलम्बन दानशीलता अध्ययन तथा सादगीपूर्ण जीवनादर्श से आरम्भ होता है। यहा यह सब होता है जो व्यक्ति को कर्त्तव्य पारायण तथा दिव्य जीवन युक्त बनाता है। आपने मुझे यज्ञोपवीत की दीक्षा देकर वैदिक विचार प्रदान किए। मै आपकी अन्त्येष्टि मे वेद मन्त्रो का उच्चारण करते हुए सम्मिलित हुई। यह दृश्य राजधानी के इस भाग के निवासियो के लिए आश्चर्यप्रद था। यह सब आपके आदेश के अनुसार ही किया गया था। पिता जी! आज तो मिटटी की बनी दुर्गा प्रतिमाए आडम्बर और शान से पूजी जाती हैं जब कि जीवित देवियो का अपमान किया जाता है। उन्हे जलाया जाता है। एक विनम्र भेट के रूप मे यह पुस्तक आपकी पावन स्मृति मे भेट करती हू।

पण्डित जी के दोनो पुत्र उडीसा के आर्यसमाजी क्षेत्र मे अत्यन्त सक्रिय है। उनके बडे पुत्र प्रियव्रत दास ने बचपन से ही एक लेखक तथा वक्ता के रूप मे चमकना आरम्भ किया। वैदिक साहित्य पर उन्होने लगभग ३० ग्रन्थो की रचना की है और अपनी साहित्यिक उपलब्धियो के लिए भारत तथा विदेशो मे सम्मानित हुए है। भुवनेश्वर मे आर्यसमाज तथा वैदिक अनुसधान परिषद की स्थापना प० लिगराज के स्वप्नो को साकार करना ही है। यह पुरुषार्थ प० प्रियव्रत ने किया जिनकी उडीसा मे वेद प्रचार मे प्रमुख भूमिका रही और जो इसी कारण घर–घर मे जाने गए। उडीसा राज्य के सार्व निर्माण विभाग के चीफ इजीनियर के पद से वे १६८६ मे अवकाश ले चुके हैं और अब आर्यसमाज के पूर्णकालिक कार्यकर्ता है। उनके अनुज देवदत्त एक उद्योगपति तथा दानी हैं। अग्निहोत्री के पौत्र दृढ आर्यसमाजी हैं। यज्ञ प्रकाश और ओम प्रकाश (प० प्रियव्रत के पुत्र) दोनो इजीनियर हैं साथ ही आर्य साहित्य के प्रणेता तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ता है।

अग्निहोत्री जी की पत्नी उमादेवी की इक्यासी वर्ष की आयु मे १६६४ मे मृत्यु हुई। उन्होने छब्बीस वर्षो का वैधव्य भोगा। जीवन के अन्त तक सन्ध्योपासना करती आर्यसमाज के उत्सवो मे जाती तथा घर आए वैदिक विद्वानो तथा सन्यासियो का आतिथ्य सत्कार करती।

प० लिगराज की जन्म शताब्दी के वर्ष मे उनकी स्मृति मे अनेक कार्यक्रम किए जा रहे है। उनकी उडिया जीवनी का जो एक यशस्वी पुत्र प० प्रियव्रत ने लिखी है। भुवनेश्वर मे एक भव्य समारोह मे लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। इसमे अनेक विद्वान तथा शिक्षा शास्त्री सम्मिलित हुए थे। जीवनी का शीर्षक मोर पिता मोर गुरु है। उनकी स्मृति मे शमशान बन्धु तथा वेद पथिक की उपाधिया आरम्भ कीगई हैं। लाजपत राय युवा मण्डल ने श्रेष्ठ निबन्ध लेखन के लिए पुरस्कार घोषित किए हैं। उडीसा के युवको के लिए प० लिगराज अग्निहोत्री का नाम उच्च आदर्श वाले पुरुष के रूप मे चिर स्थाई रहेगा जो यह बताता है कि किस प्रकार एक अनाथ जैसे युवक ने सत्य की खोज के द्वारा एक आदर्श घर का निर्माण किया और उडीसा जैसे पिछडे राज्य में आर्य प्रचारको का एक सुदृढ सगठन बनाया।

इस्लाम का सच

– शिव प्रकाश गुप्ता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सार्वदेशिक साप्ताहिक के १७ मार्च २००२ के अक मे आदरणीय प्रो० ब्रज भूषण वार्ष्णेय का उपरोक्त शीर्षक के अन्तर्गत एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमे बताया गया है कि कुरान में मुस्लिमेत्तर समाज के विरुद्ध एक अन्तहीन जिहाद है और जिसका उद्देश्य तलवार के बल पर इस्लाम को स्वीकार करा लेना ही है। कुरान मे एक भी आयत ऐसी नहीं है जो पथिक सौहार्द या आदर प्रस्तुत करती हो। इस कथन के साक्ष्य मे कुरान की कुछ आयतो और हदीसो के उदाहरण भी प्रस्तुत किए गए हैं।

इस सम्बन्ध मे पाठको की जानकारी के लिए यह बताना चाहूगा कि इस्लामिक इस्टीटयूट द्वारा प्रकाशित कुरान के हिन्दी सस्करण (टीकाकार – सैयद अबुद आला मौददी तथा अनुवादक – श्री मोहम्मद फारूख खा) के आधार पर विकल्प प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तिका काश। गाधी जी ने कुरान पढी होती। तो मे कुछ और उदाहरण प्रस्तुत किए गए है (जा उपुर्यक्त विचार की पुष्टि करते हैं) वे सक्षिप्त मे इस प्रकार है

सूरा २ अलबकरा पारा १ की आयत सख्या ६७ ६८ ६६

जो कुरान और उसके अल्लाह पर ईमान नहीं लाते अर्थात मुसलमान नहीं बनते और जो उसक फरिश्ता जिब्रील मीकाइल से बैर रखता है वह काफिर है ओर कुरान का अल्लाह भी उनका बैरी है।

सूरा २ अलबकरा पारा १ की आयत सख्या १६० १६१ १६२

तुम अल्लाह के मार्ग मे उनसे लडा जो तुमसे लडते हैं। तुम उनसे लडते रहो यहा तक कि ये शेष न रहे या वे अल्लाह की आज्ञा का पालन करे अर्थात वे जब तक मुसलमान बनने के लिए राजी न हो जाए।

सूरा ५ अलमाइद पारा ६ की आयत सख्या ३२

जो लोग मुस्लिम प्रणाली पर आधारित इस्लामी हुकूमत को नही मानते उनका वध किया जाए सूली पर चढा दिया जाए या उनके हाथ–पाव विपरीत दिशाओ से काट दिए जाए।

सूरा ५ अलमाइद पारा ६ की आयत सख्या ५१

हे लोगो जा ईमान लाए हो अर्थात मुसलमान बन गए हो यहूदियो ईसाइयो ओर बहुदेव वादिया का अपना साथी ओर मित्र न बनाओ। ये आपस मे एक दूसर के मित्र है। अगर तुममे से काइ इनका अपना मित्र बनाता हे तो उसकी गिनती भी इन्ही काफिरो मे होगी

सूरा ८ अलअनफाल पारा ६ की आयत सख्या ३८ ३६

हे लोगो जो मुसलमान बन गए हो इन काफिरो से अर्थात जो गैर मुस्लिम है युद्ध करो यहा तक कि कोई गैर मुस्लिम न रहे और सारी दुनिया मुसलमान होकर अल्लाह पर ईमान ले आए।

सूरा ६ अलतौबा पारा १० की आयत सख्या ६

मुशरिको यानी बहुदेवो को मानने वालो गैर मुस्लिमा कुफ्र के ध्वजवाहको से युद्ध करो ये तलवारो के जोर से ही बाज आएग।

सूरा ६ अलपौना पारा १० की आयत सख्या ३८

हे लोगो जो मुसलमान बन गए हो मुशरिको या बहुदेवो को मानन वाले गैर मुस्लिम अपवित्र है। अत इन्हे प्रतिष्ठित मस्जिद काबा के पास न फटकने दे।

सूरा ४७ मुहम्मद पारा २६

जब मुसलमान बनने से इन्कार करने वाला स तुम्हारी मुठभेड हो ता तुम्हारा पहला काम गदने मारना ह। जब तुम उनका अच्छी तरह कुचल दो तब कैदियो को मजबूती से बाधो इसके बाद तुम्ह अधिकार हे एहसान करो या अर्थदण्ड यानी फिदया का मामला करो। यहा तक कि व लडाइ मे अपने हथियार डाल द यह ह तुम्हारे करने के काम।

इन सब आयतो के अतिरिक्त कुरान के अधिकाश सूरो और आयतो मे मुसलमान के अनिरिक्त सभी गैर मुस्लिमो को काफिर बताया गया है और काफिरो को यातनाए देने तथा उनसे युद्ध करके उन्हे समाप्त करन या मुसलमान बनाए जाने के लिए ही आदेश दिए गए है।

इस प्रकार कुरान और अल्लाह दोनो ही सभी गेर मुस्लिमो के प्रति नफरत और घृणा पेदा करते है। एसी स्थिति मे जो मजहब नफरत की नीव और घृणा की दीवार पर खडा हो वह मजहब या उसक अनुयायी किसी दूसरे मजहब जाति या सम्प्रदाय क साथ किस प्रकार प्रेम से रह सकते हे क्योकि उनका मजहब मुसलमानेतर स नफरत करने ओर उन्हे मार देने की बात ही सिखाता है।

इन हालात मे कोई भी मुसलमान किसी गैर मुसलमान के साथ बराबरी क आधार पर किस तरह रह सकता हैं। इन्हीं कारणो से जहा ये मुकाबला करन की स्थिति मे हात हे वहा मार काट दगा फसाद आरम्भ कर दते हैं।

मुझ आशा ह कि इस्लाम मजहब क मूल 'सिद्धान्त' की जानकारी प्राप्त करने आर वतमान राजनीतिक स्थिति के सन्दर्भ म मुस्लिम आतकवाद यानी जिहाद क मूल पर विवचन करन म यह पूरक जानकारी सहायक होगी।

स्वास्थ्य चर्चा

पाइल्स के उपचार की नयी विधियां

हमारे देश मे बवासीर भगदर और मलद्वार से रक्तस्राव अत्यन्त सामान्य बीमारी है जिससे हर दो मे एक व्यक्ति किसी न किसी रूप मे पीडित है। बवासीर मे गुदा या मल द्वार की दीवार की रक्त नलिकाओ मे सूजन आ जाती है। मल त्यागते वक्त जोर लगाने से यह कडे मल की रगड से इन रक्त नलिकाओ से रक्तस्राव हो सकता है। हालाकि रक्तस्राव के दौरान दर्द नहीं होता है। भगदर मे गुदा मार्ग और त्वचा के बीच सक सुरग जैसी सरचना बन जाती है जिससे गुदा के पास एक असामान्य फोडा या नासूर हो जाता है जिसे भगदरी फोडा या फिस्टुला कहा जाता है फिशर मे गुदा क किनारे क म्यूकोसा कट जाते हैं जिससे मरीज को काफी दर्द के साथ रक्तस्राव हाता है।

बवासीर का सम्पूर्ण इलाज शल्य किया है। हालाकि आधुनिक समय मे बवासीर एव भगदर का इलाज लजर किरणो एव रेडियो थिरेपी से भी होने लगा हे। इसक अलाव इजेक्शन क्लराथेरेपी क्रायाथरपी रबर बेड लिगेशन इफ्रारेड कोएगुलेशन रेडियोफ्रीक्वेंसी कोएगुलेशन एव एनल स्ट्रेच जस कम कष्टदायक विकल्प भी [illegible] अपनी सीमाए [illegible] [illegible] अवस्था म [illegible] इफ्रारेड कोएगुलेशन रबर बैंड बधन एव बर्फ की सेक जैसी विधिया फायदेमद हो सकती हैं।

• रबर बैंड से बवासीर को बाधने की विधि कम खर्चीली है तथा इसकाव्यापक इस्तेमाल होता है लेकिन अगर रबर बैंड गलत स्थान पर अथवा गलत तरीके से बध जाए तो मरीज को भयानक दर्द का सामना करना पड सकता है। इफ्रारेड कोएगुलेशन विधि पहले एव दूसरे चरण की अन्दरूनी बवासीर के इलाज के लिए लोकप्रिय हो रही है। कई मामले में तीसरे चरण के बवासीर मे भी इसका इस्तेमाल होता है। इसमे एक विशेष बल्व से उच्च तीव्रता की इफ्रारेड रोशनी पैदा की जाती है जिससे रक्त नलिया स्कदित हो जाती है तथा सबक्युटेनियश ऊतको की परते जुड जाती है। रेडियोफ्रीक्वेसी कोएगुलेशन विधि मे विद्युत तरगो से सचालित डिस्पोजेबल प्रोब का इस्तेमाल किया जाता है। इसके शीर्ष पर दो इलक्ट्रोड लगे होते है। इस प्रणाली को सक्रिय करने पर दो से तीन सेकेण्ड मे बवासीर से प्रभावित बडे क्षेत्र के ऊतक जुड जाते हे। इसके अलाव डायरेक्ट करट कोएगुलेशन की भी विधि है जिसके बार मे कहा जाता ह कि इस विधि से सभी तरह के बवासीर का इलाज किया जा सकता है लेकिन [illegible] मिया हे। इस विधि से इलाज म [illegible] विधि तथा इफ्रारेड कोएगुलेशन की तुलना म अधिक समय लगता ह।

इसके अलावा अगर चिकित्सक पूरी तरह से प्रशिक्षितनहीं हो तो प्रोब त्वचा मे काफी अन्दर तक घुस सकते हैं। जिन मरीजो मे बवासीर से रक्तस्रात अधिक होता है उनके लिए एनल स्ट्रेच भी उपयोगी विधि है। लेकिन उक्त सभी विधियो की तुलना में सर्जरी अधिक कारगर एव स्थायी विधि है। नॉन सर्जिकल तरीको मे बवासी के दोबारा होने की आशका २५–३० फीसदी तक हो सकती है जबकि सर्जरी के बाद इसके दोबारा होने की सम्भावना लगभग एक प्रतिशत ही होती है। लेकिन इसके लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि कब्ज न हो। आजकल दुनिया भर मे लेजर सर्जरी तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसके तहत लेजर ऊर्जा के जरिए ऊतको के भीतर के पानी को वाष्पित कर दिया जाता है। इसके लिए कार्बन डाइआक्साईड लेजर का प्रयोग किया जाता है। इसके कई फायदे हैं। इसमे रक्तस्राव नहीं होता हे दर्द बहुत कम होता हे तथा जख्म बहुत जल्द भर जाता है।

सामान्य सर्जरी बवासीर का स्थायी एव कारगर इलाज हे। इसके लिए मरीज का अस्पताल म भर्ती करन की जरूरत हाती ह। सर्जरी या ता मरीज का बेहोश कर या रीढ की हडडी म सुइ लगाकर [illegible] की जाती है इसक तहत [illegible] बिजली अथवा [illegible] जाता ह। जख्म म [illegible] तक दर्द रहता है और जख्म को भरने मे ७–१० दिन तक लग सकते हैं।

अमेरिकन सोसायटी ऑफ कोलोन एण्ड रेक्टल सर्जन्स की एक विशेष समिति का कहना है कि यह सर्जरी वैसे मरीजो के लिए उपयोगी है जो तीसरे या चौथे चरण के बवासीर से ग्रस्त हैं तथा जिन्हे काफी तकलीफ है। बवासीर की आरम्भिक अवस्था मे इन्जेक्शन एव गम्भीर अवस्था मे सर्जरी बाकी सभी विधियो से बेहतर है।

बवासीर से बचाव के उपाय

कब्ज से बचें। मल त्याग को नियमित रखें। पर्याप्त मात्रा में पानी एवं तरल पेय का सेवन करें। रात को सोते समय एक गिलास गुनगुने पानी मे [illegible] मलद्वार की सफाई का विशेष ध्यान रखें ताकि खुजली, जलन, [illegible] दुर्गंध से बचाव हो सके।

आहार में रेशा [illegible] का भरपूर इस्तेमाल करें। खासतौर पर हरी पत्तेदार सब्जियों, फलों, चोकर सहित आटे की रोटियों, साबुत, अंकुर दाल का भरपूर सेवन करें। तेल, घी और अधिक मसाले से परहेज करें।

(मेट्रो मीडिया)

डा० अनिल जैन वरिष्ठ लपरोस्कोपिक सर्जन इन्द्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल नई दिल्ली

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष

राष्ट्र चेतना का सिंहनाद

(न दैन्यं न पलायनम्)

स्व० आचार्य राजेन्द्र शर्मा

५ मई १८५७ को अमर शहीद मगल पाण्डे के बलिदान से लेकर ३० जनवरी १९४८ को राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के अमर बलिदान तक असख्य देशभक्तो ने अपने रक्त की ऊष्मा से राष्ट्र को अनुप्राणित किया है जिसके परिणाम स्वरूप दास्ता के अन्धकार को विदीर्ण कर १५ अगस्त १९४७ को भारतीय स्वतन्त्रता का उदय हुआ। एक हजार वर्ष की दारुण दासता ने राष्ट्रीय गौरव को धूल धूसरित कर दिया था। राष्ट्र ने करवट ली और नये स्वप्न नयी उमगे और नया उत्साह जाग उठा।

देश को स्वतन्त्र हुए ५५ वर्ष व्यतीत हो गए। देश के मजदूरों ने देश के किसानो ने देश के सर्वहारा वर्ग ने जो आशाए सजोई थी सब वैसी की वैसी रह गई। सामान्य जन हताशा और अवसाद से ग्रस्त हे। भय और आतक का वातावरण चारो ओर दिखाई दे रहा है। प्रतिदिन बम फूट रहे है बरबरता पूर्ण नरसहार किया जा रहा है। देश के प्राय प्रत्येक भाग मे विघटनकारी प्रवृत्तिया पनप रही है। उपभोक्ता वादी सस्कृति ने राष्ट्रीय चेतना को दबा लिया है। पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्तिया राष्ट्र को खोखला कर रही है। देश का प्रबुद्ध वर्ग यह सब देखकर विचलित हो रहा है परन्तु हताशा और निराशा उसको घेरे हुए है।

निसन्देह देश ने भौतिक प्रगति की है। उपग्रह आकाश मे विचरण कर रहे है। खाद्यान्न में हम आत्म निर्भर हुए है। वस्त्र आदि का निर्यात भी कर रहे है। विद्यालयो के जाल बिछ गए है। नगर और महानगर बन गए हैं। वाणिज्य उद्योग व्यापार कृषि आदि क्षेत्रो मे देश ने प्रगति की है। परन्तु यह समस्त प्रगति हृदय को उल्लासित नहीं कर पाती है। मन मे सन्तोष नहीं पैदा कर पाती है। खोखला पन चारो ओर खोखला पन ही अनुभव होता है। जो भी प्रगति राष्ट्र ने की है इससे आम जनता का भला नहीं हुआ। कुछ परिवारों तक राष्ट्रीय लाभ सिमट कर रह गया है। भ्रष्टाचार नैतिकता का ह्रास त्याग और बलिदान की भावनाओ के अभाव ने देश को खोखला बना दिया है। देश के नेता सासद विधायक अधिकारी सब के सब लोभ लाभ मे फसे हैं। भारत मा का जयघोष तो करते है परन्तु मात्र वाणी से और माल के लिए समस्त प्रयास चलते हैं। प्रतिदिन सामान की चोरी घटिया माल का लगाना, किसी भी तरह पैसा बनाना हमारा ध्येय रह गया। ऐसी अवस्था मे यदि देश की तेजस्विता समाप्त हो गई तो आश्चर्य ही क्या ?

देशवासियो मे हमे स्वतन्त्रता के पूर्व की भावनाओं को भरना होगा। राष्ट्र को झकझोरना होगा और उसमे देशभक्ति को लाना होगा।

> देश के उत्थान के लिए आवश्यक है कि देशवासियों में तप और दीक्षा की भावना विद्यमान हो। राष्ट्र-चेतना के जागरण मे उसमें शक्ति सम्पन्नता लाने में और ओजस्विता भरने के लिए देशवासियों में तप और दीक्षा लानी ही होगी। तप और दीक्षा से सम्पन्न जब हमारे राष्ट्र नेता होंगे, सांसद होंगे, विधायक होंगे और प्रत्येक देश का नागरिक होगा तभी देश का कल्याण होगा इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयासशील होना पडेगा। एक संकल्पलेना होगा कि हमें देश में कल्याणकारी परिवर्तन लाना है।
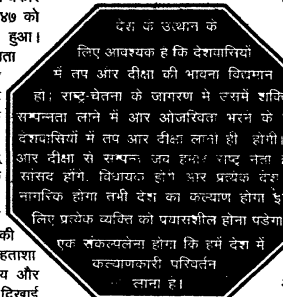
राष्ट्र बना बनाया नही मिलता हे। राष्ट्र बनाना पडता है। राष्ट्र–राष्ट्र कब बनता है और उसमे बल तथा आज केस आता हे वेद माता बताती हे –

भद्र इच्छन्त ऋषय स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे। ततो राष्ट्र बल ओजश्च जातम ।

देश के उत्थान के लिए आवश्य क है कि देशवासियो मे तप और दीक्षा की भावना विद्यमान हो। तप का अर्थ है 'तपो द्वन्द्व सहिष्णुत्वम । लक्ष्य की पूर्ति मे हानि लाभ सुख दुख की चिन्ता न करते हुए धैर्य पूर्वक बढत जाना' यक्ष 'युधिष्ठिर सवाद मे यक्ष के प्रश्न करने पर युधिष्ठिर ने कहा – तप स्वकर्मवर्तित्वम। अपने कर्त्तव्य का एक निष्ठ होकर पालन करना तप है। राजनीति के कुशल खिलाडी आचार्य चाणक्य ने कहा – 'तप सार इन्द्रिय निग्रह ।। तप का सार इन्द्रिय निग्रह है। दीक्षा नाम है कटिवद्धता का। राष्ट्र–चेतना के जागरण मे उसमे शक्ति सम्पन्नता लाने मे और ओजस्विता भरने के लिए देश वासियों मे तप और दीक्षा लानी ही होगी। इन्हीं के अभावमे आज देश रसातल को जा रहा है। तप और दीक्षा से सम्पन्न जब हमारे राष्ट्र नेता होगे सासद होगे विधायक होगे और प्रत्येक देश का नागरिक होगा तभी देश का नागरिक होगी इस के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयासशील होना पडेगा। एक सकल्प लेना होगा कि हमे देश मे कल्याणकारी परिवर्तन लाना है। देश की दुरवस्था को देखकर केवल हम मौखिक आलोचना ही नहीं करेगे अपितु जन-चेतना को जगाकर हम सघर्ष करगे। सघर्ष के माध्यम से हम राष्ट्र को खोखला करने वाले भीड तन्त्र जाति तन्त्र कनुवा तन्त्र परिवार तन्त्र क्षेत्र तन्त्र सम्प्रदाय तन्त्र लाभ और लिप्सा तन्त्र को कुचल कर विनष्ट कर सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना करेगे नैतिकता की स्थापना करेगे और मानवीय मूल्यो पर आधारित निर्दोष राजनीति को बनायगे।

महान सकल्प हे। कठिनाइया आएगी विघ्न बाधाए पडगी प्राणो का सकट भी उपस्थित होगा परन्तु जाग्रत जन चेतना वह आधी होती है जिसके समक्ष सब तिनके के समान उड जाते है। सुरक्षा सुव्यवस्था कल्याणकारी राज्य देन मे असफल देश क नेताओ से कहना होगा कि तुम हटो और तुमका हटना होगा।

आज हमारी भारत माता का अग अग कोढ से ग्रस्त है कुरूप और बडाल हो रही है। हमे इसका कायाकल्प करना है। उन सब सत्ता लोभियो को भगाना है जिन्हाने अपनी माता के साथ भयकर विश्वासघात किया है। कार्य कठिन ह परन्तु असाध्य नही। इन्डोनेशिया का उदाहरण हमारे समक्ष है। दशाब्दियो का शासक गददी छोडकर भाग गया। जन चतना के जागरण की आवश्यकता है। नई क्रान्ति लाने की आवश्यकता हे। **आज प्रत्येक जन सकल्प ले न दैन्य न पलायनम और कार्य वा साधयेय देह वा पातयेयम्। करो मरो की प्रबुद्ध भावनापूर्वक देश के कायाकल्प करने के लिए जुट जाना है। सफलता निश्चित है।**

– अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य
आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली–९२

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज बडा बाजार सोनीपत

प्रधान – श्री सत्यप्रकाश सुखीजा
मन्त्री – सुदर्शन आर्य
कोषाध्यक्ष – कवरभान बत्रा

आर्यसमाज, गांधी कालोनी मुजफ्फर नगर

प्रधान – श्री रोशन लाल बत्रा
मन्त्री – श्री देवेन्द्र सिह राणा
कोषाध्यक्ष – श्री सन्तोष कुमार सूद

आर्यसमाज सज्जन नगर, ए ब्लॉक, स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग, उदयपुर (राज०)

प्रधान – स्वामी सकल्पानन्द जी सरस्वती
मन्त्री – श्री हुकमचन्द जी शास्त्री
कोषाध्यक्ष – श्री जगदीश चन्द्र शर्मा

आर्यसमाज, खेडा अफगान, (सहारनपुर) उत्तर प्रदेश

प्रधान – आदित्य प्रकाश गुप्त
मन्त्री – राजेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष – सतपाल गुप्ता

आर्यसमाज जालोरिया का बास जोधपुर

प्रधान – रामस्वरूप आय
मन्त्री श्याम आर्य
कोषाध्यक्ष – दीपक कुमार साखला

आर्यसमाज कटरा प्रयाग

प्रधान – श्री त्रिलोकी नाथ सक्सेना
मन्त्री – श्री घनश्याम चन्द्र
कोषाध्यक्ष – श्री हरीशकर श्रीवास्तव

आर्यसमाज, जहांगीर पुरी, दिल्ली-३३

प्रधान – श्री दिनेश चन्द्र शर्मा
मन्त्री – श्री गजेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री रामभरोसे

आर्यसमाज चण्डीगढ, सैक्टर ३५ एव ४३

प्रधाना – श्रीमती सुदेश जी गुप्ता
मन्त्री – श्री सुरेश चन्द जी गुप्ता
कोषाध्यक्ष – श्री मदन मोहन जी छाबडा

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 11 8 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 8/9-8-2002

राष्ट्रपति जी के नाम
खुला पत्र

महामहिम राष्ट्रपति जी

जयहिन्द

ससार के सबसे बडे गणतन्त्र भारतवर्ष के राष्ट्रपति पद पर आपका चुना जाना फिरकापरस्ती व अलगाववाद की ऐतिहासिक पराजय हैं। आपकी इस विजय पर हृदय से अपनी ओर से आर्यसमाज न्यू मोती नगर की ओर से युग परिवर्तक महर्षि दयानन्द के नाम पर चलाए जा रहे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल की ओर से कोटिश बधाई स्वीकार करे। मैं बहुत बडी आशा करता हू कि आपके कार्यकाल मे भारत सर्वतोमुखी उन्नति अमन तथा भाईचारे की मजिले तय करता हुआ ससार भर को शान्ति का सन्देश देगा। आप मजहब इस्लाम और वाहिद उल शरीक एक अल्लाह की ही इबादत करते हैं उसके साथ साथ भारत के महान दार्शनिक योगीराज भगवान श्रीकृष्ण जी द्वारा ससार के मानव मात्र के भल के लिए युद्ध स्थल मे अजुन को सुनाई गई गीता का भी आप अध्ययन करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता म कहा हे अर्जुन यज्ञ करने स वर्षा होती हे वषा से अनाज उत्पन्न हाता हे। भनाज स मानव व प्राणियो का पालन हाता हे। आप राष्ट्र की प्रथम श्रेणी के राष्ट्रनायक है। आपके कर कमला द्वारा पवित्र भावना से किया यज्ञ प्रथम (अग्निहोत्र) इस सूखी धरती को लहलहाती खेतियो मे बदल दगा। यज्ञ कराने के लिए शीघ्र आपका सन्देश हमे मिलेगा ऐसी पूर्ण आशा हे। उत्तराकाक्षी

भवदीय

नीरथराम आय (टण्डन) प्रधान
आर्यसमाज न्यू मोती नगर
नई दिल्ली ११००१५

वेद मनीषा न्यास की राष्ट्रपति डॉ० कलाम को बधाई

वेद मनीषा न्यास क सदस्यो ने डा० ए०पी० जे० अब्दुल कलाम जो एक श ऋहर स ल अपरिग्रही सयमी धमभीरु वैज्ञानिक दार्शनिक पुरष हे के राष्ट्रपति पद पर चुन जाने का स्वागत किया हे। जब उन्हे सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने सत्यार्थ प्रकाश एव वेद ग्रन्थ भेट किए त उन्होने सत्याथ प्रकाश पूव मे ही पढने आर उसस प्रेरणा लेने की चर्चा करके सभी को इसे पढन हेतु प्रोत्साहित किया है। विकसित भारत के स्वप्न दृष्टा राष्ट्रपति का न्यास की हार्दिक बधाई।

सुप्रसिद्ध आर्यनेता श्री सत्य नारायण लाहोटी, राजस्थान सरकार के द्वारा
भामाशाह सम्मान से विभूषित

श्री सत्यनारायण लाहोटी एक ऐसे समाजसेवी पुरुष है जिनका मन आदर्श परम्पराओ की स्थापना कुरीतियो के उन्मूलन एव शिक्षा के प्रचार–प्रसार की दिशा मे सदैव चिन्तनशील रहता है। आपने अनेक शालाओ के भवन निर्माण व अन्य ससाधनों को जुटाने मे अप्रितम सहयोग भामाशाहो से दिलवाया है। आपकी सद्प्रेरणा भामाशाह श्री नेमीचन्द ने लगमग अठारह लाख रुपये लगा राजकीय सीतादेवी तोषनीवाल कन्या सस्कृत विद्यालय के भवन निर्मित करवाए ये विद्यालय नागौर व चुरु जिलो मे क्रमश जसवन्त गढ व गोपालपुरा मे स्थित

राजधानी की आर्यसमाजों में वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, नई दिल्ली- 7

स्थान	आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर दिल्ली ११०००७
दिनाक	सोमवार ५–८–२००२ से रविवार ११–८–२००२ तक
समय	प्रात ७ बजे से ६ बजे तक (वृष्टि महायज्ञ)
भजन तथा वेद कथा	रात्रि ७ ३० से ६ ३० बजे तक
ब्रह्मा	स्वामी श्रेयोनन्द विदेह यति
भजन सगीत	प० दिनेश दत्त आर्य भजनोपदेशक द्वारा

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली

दिनाक	सोमवार १६–८ २००२ से शनिवार २४–८–२००२ तक
समय	प्रात ६ ३० से ८ १५ बजे तक (यजुर्वेद यज्ञ)
ब्रह्मा	प० श्री मेघश्याम जी वेदालकार
वेद कथा	श्री प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री द्वारा (रात्रि ६ से ६ ४५ बजे तक)
भजन	श्रीमती सुदेश जी आर्या द्वारा (रात्रि ८ से ६ बजे तक)

२५ अगस्त को प्रात ८ बजे से १० ३० बजे तक विशेष कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज नांगलराय नई दिल्ली-४६

समय	सोमवार १२–८–२००२ से रविवार १८–८–२००२ तक
यज्ञ	प्रात ६ बजे स ७ बजे तक श्री यज्ञ मुनि जी के ब्रह्मत्व मे
भजन तथा प्रवचन	प्रात ७ बजे स ८ बजे तक प० महेन्द्रपाल आर्य तथा सहदव जी होगे

१५ अगस्त को विशेष कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली १५

दिनाक	सोमवार १६ ८ २००२ से २५–८–२००२ तक
ऋग्वेदीय यज्ञ	(सोमवार १६ ८–२००२ से शानिवार २४ ८–२००२ तक)
ब्रह्मा	प्रो० रत्न सिह जी
सहयोग	पूज्य वेदप्रकाश शास्त्री प० ऋषिपाल शास्त्री
भजन	महाशय जर्नादन जी (रात्रि ८ बजे से ८ ३० बजे तक)
वेद प्रवचन	प्रो० रत्न सिह जी (रात्रि ८ बज से ६ ३० बजे तक)
	रविवार दिनाक २५ अगस्त २००२
यज्ञ पूर्णाहुति	प्रात ८ बजे से ६ ४५ बजे तक
भजन	प्रात ६ ४५ से १० ००
प्रवचन एव अभिनन्दन	प्रात १० ०० बजे से ११ ३० बजे तक
मुख्य वक्ता	प्रो० रत्न सिह जी डॉ० महेश विद्यालकार
मुख्य अतिथि	कै० देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा
अभिनन्दन	अमरीका आरयूरोप के आयसमाजो क सफल दौरे के उपलक्ष्य म
विशिष्ट अतिथि	श्री विमल वधावन (उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
	श्री वेदव्रत शर्मा (मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
	श्री रामनाथ सहगल (मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा)
	श्री जगदीश आर्य (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
	श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान आय कन्द्रीय सभा दिल्ली)
	श्री सोमदत्त महाजन (प्रधान आयसमाज सी ब्लाक जनकपुरी)

ध्यान योग शिविर (स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा)

सोमवार १४ अक्तूबर से रविवार २० अक्तूबर २००२ तक

ध्यान योग यज्ञ	प्रात ५ ३० से ८ बजे
	सोमवार १४ अक्तूबर से शनिवार १६ अक्तूबर २००२
ध्यान योग	साय ६ बजे से ७ बजे तक
प्रवचन साय	८ ३० से ६ ३० बजे तक

प्रतिष्ठा मे

बहान । ~ आर्या स्वतन्त्रता सेनानी के दिवगत होने पर शान्ति यज्ञ समारोह मे आर्य नेता प० नन्दलाल निर्भय पत्रकार ने अपने प्रवचन मे बताया कि मृत्यु ससार मे सबसे बडा आश्चर्य है जिसे देखते हुए भी नर नारी समझ नहीं पाते। परम पिता परमात्मा ने हमे यह मानव चोला बडे शुभ कर्मो से प्रदान किया है जिसे वेदो मे सर्वश्रेष्ठ योनि बताया गया है। यह कर्म योनि है। शेष योनिया भोग योनिया हैं। परम पिता परमात्मा न्यायकारी दयालु है इसलिए हमे भी न्यायकारी दयालु बनना चाहिए। माता चमेली देवी सच्ची ईश्वर भक्त धर्मात्मा व सामजसेविका थी इसलिए हमे भी माता की तरह धर्म का पालन करके मानव तन सफल करना चाहिए। इस समारोह मे ब्रह्मचारी जयदेव आय ने इश्वर भक्ति के भजन सुनाए इस अवसर पर चौ० सोहन लाल क्रान्तिकारी भगवान देव आर्य टेकचन्द शर्मा श्री रग लाल आर्य आदि महानुभाव उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात यज्ञ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुदित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अंक ९६ १८ अगस्त से २४ अगस्त २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५६ श्रा० शु० ११
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

भारत छोडो आन्दोलन एवं स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गोष्ठी
'महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत'
'आजादी के दीवाने' नामक कैसेट जारी

नई दिल्ली ८ अगस्त। आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे भारत छोडो आन्दोलन और स्वतन्त्रता दिवस की वर्षगाठ का भय आयोजन कास्टीटयूशन क्लब मे किया गया जिसकी अध्यक्षता दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता एव सार्वदेशिक न्यास सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने की और सचालन सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने किया।

इस कार्यक्रम मे ४० पृष्ठ की एक लघु पुस्तिका का विमोचन किया गया है जिसमे आत्मकथा रूप मे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित १८५४ ई० की उस अवधि का उल्लेख है जिसमे उन्होने १८५७ की क्रान्ति और स्वतन्त्रता की प्रथम लडाई के लिए बालाजी पेशवा तात्या टोपे अजीमुल्ला खा और झासी की रानी लक्ष्मी बाई को यह कहत हुए प्रेरित किया था कि विदेशी राहु के ग्रास स स्वदेश की रक्षा करो। इस लघु पुस्तक का मूल्य ८/ रुपये है जो सावदेशिक सभा के विक्रय केन्द्र म उपलब्ध हे। शेष भाग पृष्ठ २ पर

भारत छोडो आन्दोलन और स्वतन्त्रता दिवस की वर्षगाठ के अवसर पर आयोजित विशेष गोष्ठी मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन स सम्बन्धित १८५४ ५५ ई० स सम्बन्धित कार्यो का लघु पुस्तिका के रूप में विमोचन समारोह का दृश्य – बाए से श्री देवव्रत शर्मा, शहीद भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह मौलाना वहीदुद्दीन श्री रामफल बसल पूर्व राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ससद सदस्य श्री रासासिह रावत तथा शहीद अशफाक उल्ला खा के भतीजे श्री अशफाक। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री रासा सिह रावत मच सचालक श्री विमल वधावन श्री रामचन्द्र वीरप्पा ससद सदस्य को आमन्त्रित करते हुए। वक्ता के रूप मे ससद सदस्य श्री जगजीत सिंह बरार राष्ट्रवादी मुस्लिम नेता मौलाना वहीदुद्दीन।

प्रेम और श्रद्धा की मूर्ति
श्री ओंकार नाथ जी नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ सदस्य मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के प्रबन्धक न्यासी श्री ओंकारनाथ जी का ७ अगस्त २००२ को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन टकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य उनकी शोक सभा में भाग लेने के लिए मुम्बई पहुचे।

स्व० श्री ओंकार नाथ आर्य जी

श्री ओंकारनाथ आर्य अपने पीछे अपनी धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती शिवराजवती विवाहित पुत्री बहन सविता भसीन तथा दो विवाहित पुत्र श्री सुधीर एव श्री सुनील तथा उनका सुखी सम्पन्न परिवार छोड गए हैं।

१९२१ ई० मे जन्मे श्री ओंकार नाथ जी ने ८२ वर्ष की आयु मे देह त्याग किया। उनकी प्राणवायु ने ब्रह्मरन्ध्र से प्रस्थान किया। चिकित्सको तथा प्रत्यक्ष दर्शियो के अनुसार दहावसान के समय उनके मस्तिष्क मे दरार आ गई।

उनकी स्मृति मे शोक सभा का आयोजन १० अगस्त को आर्य विद्या मन्दिर तथा ११ अगस्त को आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे किया गया। जिसका सचालन क्रमश श्री सोमदेव शास्त्री तथा श्री सगीत आर्य ने किया।

मारीशस आर्य सम्मेलन के सम्बन्ध में
परिवर्तित सूचना

मारीशस आर्य सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए जाने वाले आर्य महानुभावों की सूचनार्थ है कि सार्वदेशिक में पूर्व प्रकाशित सूचना को निम्न सशोधन सहित अन्तिम समझा जाए।

1 मारीशस यात्रा दिल्ली से 18 सितम्बर 2002 (बुधवार) दोपहर 2 बजे की हवाई उडान से प्रारम्भ होगी और वापसी 25 सितम्बर 2002 (बुधवार) को दोपहर तक दिल्ली पहुचेगी।

2 उडान हवाई जहाज टिकट का खर्च पहले 17 हजार रुपये घोषित किया गया था परन्तु उसमें एयरपोर्ट के कई प्रकार के टैक्स तथा वीजा बनवाने का खर्च तथा वापसी का एयर पोर्ट टैक्स इसमे सम्मिलित नहीं थे जो कि लगभग 2500/ रुपये बनते हैं।

इस प्रकार मार्ग व्यय का कुल खर्च 19500/ रुपये होगा।

3 आवास भोजन तथा अन्य प्रबन्ध आदि का खर्च 5 हजार रुपये घोषित किया गया था परन्तु बाद में इस भूल का अहसास हुआ कि मारीशस मे 5000/ रुपये खर्च करने का अर्थ होगा भारत के 9000/ रुपये।

अत 19500/ रुपये मे 9000/ रुपये जोडकर कुल 28 500/ रुपये का बैक ड्राफ्ट (कृपया चैक न भेजे) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 5 सितम्बर से पूर्व अवश्य भिजवाएं

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

"महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत"

८ अगस्त, २००२ (गुरुवार) को आयोजित विशेष संगोष्ठी में पारित प्रस्ताव

हम भारत के नागरिक महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तो एव निर्देशों म पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए यह सकल्प लेते है कि भारत की प्राचीन विरासत गौरव पूर्ण वैदिक सस्कृति के सच्चे अनुयायी बनते हुए सदचरित्र ओर ईमानदारी के बल पर समाज को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने का हर प्रयास करेंगे। भारत राष्ट्र को विदेशी व्यवस्थाओ के हस्तक्षेप से मुक्त कराने मे भी हम हर सम्भव प्रयास करेंगे।

विदेशी के स्थान पर स्वदेशी हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा

स्वधर्म की स्थापना

स्वधर्म की स्थापना से हमारा अभिप्राय वैदिक सिद्धान्तों के उस विशाल रूप से है जो सामाजिक एकता के लक्ष्य से सहनशीलता और उदारता के साथ साथ यथायोग्य व्यवहार का उपदेश करते हैं। धर्म शब्द का प्रयोग मतो या मजहबों के सन्दर्भ म नहीं किया जाना चाहिए। लोगों के मजहब तो अलग–अलग हो सकते हैं परन्तु धर्म नहीं। मनुष्य जाति का धर्म केवल धारण करने योग्य वे नियम हैं जो उसे श्रेष्ठ बनाने में सहायक हो। इसलिए अपने उत्थान के साथ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" अर्थात विश्व को श्रेष्ठ बनाना भी हमारा सामूहिक लक्ष्य है।

सामाजिक कार्यों को करते समय किसी भी प्रकार के लोभ लालच आलस्य में न फसकर त्याग तपस्या कर्मठता और बुद्धिमत्ता से कार्य करना, व्यक्तिगत स्वार्थ के स्थान पर परोपकार की भावनाओं को स्वय धारण करना तथा भारतवासियों को इसके लिए प्रेरित करना हमारे जीवन का सकल्प होना चाहिए।

आर्यसमाज से सम्बन्धित सस्थाओं गुरुकुलों और विद्यालयो आदि को हम देशभक्त ईश्वरभक्त तथा सामाजिक शक्ति का केन्द्र बनाने में सफल हो पाए इसके लिए हमे किसी भी व्यक्ति का सहयोग प्राप्त करने मे सकोच नहीं करना चाहिए।

हमें भारत के नागरिकों के मन में इस सिद्धान्त को भी स्थापित करने का सत्व प्रयास करते रहना चाहिए कि देश वासियों की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा है। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास है।

हमारा इतिहास ही हमारा भविष्य है।

अत भारत के उज्ज्वल भविष्य की स्थापना के लिए आर्यसमाज को अपन गौरवपूर्ण इतिहास को दोहराना हागा।

हम सकल्प करते है कि आर्यसमाज के राष्ट्रवादी एव मानवतावादी कार्यों मे एक अनुशासनबद्ध एव कर्मठ सिपाही की तरह हर सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे जिससे इस जीवन का सदुपयोग हम इस देश और धर्म की रक्षा के लिए कर पाए।

प्रस्तावक **विमल वधावन** वरिष्ठ उप प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ १ का शेष भाग

भारत छोडो आन्दोलन एव स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे आयोजित गोष्ठी

अमर शहीद भगत सिह के भतीजे श्री किरणजीत सिह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देशभक्ति और आत्म बलिदान की जो भावना प्रज्ज्वलित करने का सकल्प लिया था वह ज्वाला बनकर समूचे विश्व मे फैल गई। उन्हीं की प्रेरणा पर सरदार अर्जुन सिह जी का जागृति प्राप्त हुई जिनके पोते शहीद भगतसिह जी ने देश पर बलिदान होना स्वीकार किया स्वामी दयानन्द जी के शब्दा से अधिक उनके प्रेरक चरित्र ने जनता को अधिक आकर्षित किया।

अमर शहीद अश्फाक उल्ला खा के पोते श्री अशफाक ने कह कि आर्यसमाज दश के स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रमुख कन्द्र रहा। महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायिया के चरित्र के कारण हिन्दू मुस्लिम एकता का भी सूत्रपात आ।

मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता मौलाना वहीदुदीन ने कहा कि भारत देश क ... और राष्ट्रीय कार्यों के लिए फिर से कमर कसनी पडेगी। उन्होने महिलाओ से आग्रह किया कि भावी पीढी को सस्कारित करने की पूरी जिम्मेदारी उन पर है। उन्होने कहा कि धन से सुख सुविधाए खरीदी जा सकती हैं और यहा तक कि मनुष्य तक भी खरीदे जा सकते हैं परन्तु श्रेष्ठ आत्माए केवल अच्छे सस्कारो से ही तैयार हा सकती है।

उन्होने मातृशक्ति से आग्रह किया कि आपने पहले भी राष्ट्र को अमर शहीद भगतसिह रामप्रसाद बिस्मिल तथा अश्फाक उल्ला खा जैसे पुत्ररत्न दिए हैं। आशा है भविष्य मे भी राष्ट्र का समुन्नत एव स्वतन्त्र रखने के लिए एस ही रत्न दगी।

सबसे बडा क्षेत्र पजाब रहा। उन्होने कहा कि आज देश मे पुनर्जागरण की आवश्यकता है। काग्रेस और आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता की लडाई कन्धे से कन्धा मिलाकर लडी और महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार किया। उन्होने प्रार्थना करते हुए कहा कि ऐसी देशभक्ति की भावनाए राजनीतिज्ञो मे भी पैदा हा। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ने अपने स्थापना काल से ही मानवतावादी कार्यों के द्वारा राष्ट्र सेवा की है

उन्हाने कहा कि १९२१ म ब्रिटिश शासन के दौरान जब सर्वे किया गया था तो आर्यसमाजियो की कुल जनसख्या चार लाख इकसठ हजार बताई गई थी जिनमे से दो लाख साठ हजार आर्यसमाजी पजाब क निवासी बताए गए थ इससे यह पता लगता है कि पजाब आर्य समाज का ... कि त्याग और तपस्या के आधार पर ही सस्थाओ का भविष्य उज्ज्वल होता है।

श्री बरार ने कहा कि भारत की सभी समस्याओ का समाधान नागरिको की एकता मे है और यही महर्षि दयानन्द सरस्वती का भी सन्देश था।

मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए पूर्व राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ने कहा कि स्वतन्त्रता सेनानियो की समूची फौज के पीछे स्वामी दयानन्द की ही प्रेरणा थी।

उन्होने कहा कि ९ अगस्त १९४२ को महात्मा गाधी जी ने भारत छोडा आन्दालन का आह्वान किया। उन्होने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह हमेशा देश की सामाजिक बुराइया और भ्रष्टाचार क विरोध म आवाज उठाई।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रदेव जी सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी आजादी के दीवाने पोस्टर का विमोचन करते हुए श्री विमल वधावन श्री विद्यार्णव शर्मा श्री किरणजीत सिह अशफाक उल्ला खा तथा मौलाना वहीदुदीन।
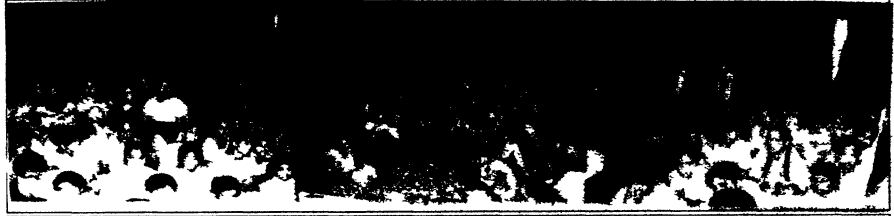
भारी सख्या मे आर्य नर नारियों तथा विभिन्न विद्यालयों के छात्रो से खचाखच भरा सभागार। जिन्होंने देश भक्ति और ऋषि भक्ति की भावनाओं को दत्तचित्त एव प्रसन्न चित्त होकर स्वीकार किया।

भाजपा सासद प्रो० रासासिह रावत कहा कि समूच दश की शिक्षण सस्थाआ का राष्ट्रभक्ति की भावना विद्यार्थियो म भरने का प्रयास करना चाहिए और इस मामले म आर्यसमाज क विद्यालया ओर ... आर्यसमाज क इतिहास की पुनरावृत्ति करनी चाहिए

वरिष्ठतम सासद श्री रामचन्द्र वीरप्पा ने कहा कि आज फिर देश म ऐसा वातावरण बन चुका है कि महर्षि दयानन्द ... अनुयायिया को सामाजिक महान नागरिको को भारत की प्राचीन सस्कृति को अवश्य ही धारण करना चाहिए जिसमे पवित्र आचरण मानवतावाद और दशभक्ति की शिक्षा दी गई है। उन्होने कहा कि इस मार्ग पर कष्ट अवश्य ही हात ह परन्तु हम यह याद रखना चाहिए कि घास खाकर दूध दने वाली गाय की ही हमारे देश मे पूजा होती हे।

सासद श्री जगमीत सिह बरार न कहा कि आर्यसमाज की स्थापना बशक मुम्बई मे हुई थी परन्तु उसके कार्यों का की गतिविधियो का मुख्य केन्द्र रहा हे।

उन्होने कहा कि एक बार सर सैयद अहमद खा ने लाहौर के आर्यसमाज के विद्यालय मे वहा के अधिकारियो से एक बार कहा था कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का भवन आपक भवन से सुन्दर है वहा की प्रयोगशाला (लबोरेटरी) तथा अन्य व्यवस्थाए आपस अच्छी हैं परन्तु आपके पास महात्मा हसराज जैसे त्यागी तपस्वी की उपस्थिति हमारी सस्था मे नहीं है। यह घटना साबित करती है

वेदव्रत शर्मा ने इस सम्मलन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमे यह सकल्प व्यक्त किया गया है कि स्वदेशी और स्वधर्म की स्थापना के लिए समूचे भारतवर्ष में किसी भी बलिदान को बड़ा न समझते हुए राष्ट्र सेवा क कार्यों में सहयोग करे।

सार्वदेशिक सभा क वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन द्वारा तैयार प्रस्ताव को अलग स पृष्ठ २ पर (ऊपर) प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रेम और श्रद्धा के प्रतीक श्री ओंकारनाथ आर्य

– विमल वधावन *वरिष्ठ उप प्रधान सार्वदेशिक सभा*

व्यतीत का यश ही वास्तव मे व्यक्ति का सुखद इतिहास माना जा सकता है। जब किसी ऐसे सुख का दाता व्यक्ति आत्मा की अनन्त यात्रा पर एक शरीर को त्याग कर ईश्वर की व्यवस्था अनुसार दूसरा शरीर धारण करने की आज्ञा का पालन शान्त स्वभाव से करता है तो स्वाभाविक है कि जिस किसी को भी उससे सुख की प्राप्ति हुई होती है उसका शोक मे डूबना लगभग स्वाभाविक सा ही हो जाता है। जीवन मे एक सच्चा आर्य आत्मा सर्वप्रथम अपने माता पिता भाई बहनो मे सुख और प्रेम की गगा बहाने के बाद पारिवारिक जीवन को आगे बढाता हुआ पत्नी और बच्चों को केवल सुख शान्ति ही नहीं अपितु एक मार्ग दर्शक एक आचार्य एक मित्र सहचर आदि के रूप मे अपनी विशालता प्रस्तुत कर पाने के योग्य हो जाता है। बहुदा आत्माए अपने आप को इन रिश्तो नातो के सामने विशाल और खुली हृदयता से स्थापित नहीं कर पाते। बहुत कम लोग होते हैं जो परिवार मे अथाह प्रेम बाटते हैं और अपनी आत्मा को उस ऊचाई तक उठा लेते हैं कि उसी स्तर का व्यवहार वे परिवार के बाहर भी समाज मे प्रदर्शित करने मे सफल हो जाते हैं।

ऐसे ही एक व्यक्तित्व श्री ओंकार नाथ जी आर्य का वियोग आर्य जगत को अनुभव हुआ। ७ अगस्त के दिन जब उन्होने आत्मा की यात्रा का अगला दौर प्रारम्भ करने के लिए ओकार नाथ स्टेशन को छोडा तो उनके परिवार के सदस्य (विशेष रूप से उनकी सच्ची सहधर्मिणी माता शिवराज वती) ही अवाक नही रह गए बल्कि आर्य समाज के पुरोहितो सदस्यो पदाधिकारियो की आखो में भी आसुओ की धारा प्रवाहित होती देखी गई।

उनके देहावसान का दृश्य भी साधुत्व के लक्षणो से युक्त था। गायत्री मन्त्र का उच्चारण स्वय किया उपस्थित परिजनों से करवाया और बडे शान्त भाव से प्राण त्याग दिए। चेहरे पर मुस्कान थी किसी भी प्रकार के विरोध की या दुख की रेखाए तक नजर नहीं आई। सिर में आई एक छोटी सी दरार ने यह साबित कर दिया कि आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से प्रस्थान कर गई है। ऋषि दयानन्द का सच्चा भक्त शब्दों में न सही परन्तु भावनाओं से यही कहता लग रहा था – हे प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।

श्री ओंकारनाथ जी का सामाजिक जीवन बाल्यकाल से ही एक समान स्तर पर चलता आया। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जो उनके जीवन मे से किसी नकारात्मक पहलू को खोज सके। इसके विपरीत हर व्यक्ति की जुबान पर उनकी सकारात्मकता सरलता उदारता और प्रेम की चर्चा है।

१९२१ में जन्मे श्री ओकार नाथ जी को युवा अवस्था मे १९४७ जैसे विभाजन की मार झेलनी पडी जब उन्हे स्थापित व्यवसाय और निवास पाकिस्तान छोडकर दिल्ली आना पडा। उसी क्रूर वर्ष मे उनको एक सुखद साथी मिला – धर्मपत्नी के रूप मे श्रीमती शिवराजवती। दोनो सहधर्मी महर्षि दयानन्द के भक्त थे। मुम्बई मे नए सिरे से व्यापार और समाज मे अपना स्थान बनाना प्रारम्भ किया और प्रत्येक क्षेत्र मे ऊचाईयो को छूने की हिम्मत जुटाई। धर्मपत्नी शिवराजवती पुत्री सविता दामाद ललित मोहन साहनी (उनकी बच्चिया अमृता और अदिति) ज्येष्ठ पुत्र सुधीर पुत्रवधु नलिनि (सुपौत्र आदित्य और ऋषभ) छोटे सुपुत्र सुनील पुत्रवधु रीटा (सुपौत्री गायत्री और सुपौत्र अक्षय) बहुत बडे और सभ्य सुशील परिवार के अतिरिक्त समूचे आर्य जगत का हैरत मे पड जाना स्वाभाविक ही था।

स्व० श्री ओंकारनाथ आर्य जी

वर्ष २००१ मे जब कुछ लोगो ने आर्यसमाज के १२५ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को स्थगित करने की अनाधिकार घोषणा कर दी तो ओकार नाथ जी के चेहरे पर उस अवस्था मे भी चिता या अस्थिरता के लक्षण देखने को नही मिले। बडे शान्त स्वभाव से उन्होने कै० देवरत्न आर्य जी को एक बडे भाई की तरह हिम्मत का आशीर्वाद और सहयोग दिया।

सगठनात्मक स्तर पर आप मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सान्ताक्रुज आर्यसमाज और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी निष्ठावान सहयोगी होने के अतिरिक्त टकारा ट्रस्ट के प्रबन्धक न्यासी के गौरवशाली पद को शोभा प्रदान कर रहे थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान होने के नाते अनायास ही मेरे मुह से नहीं निकला कि श्री ओकार नाथ जी आर्य समाज के एक इतिहास पुरुष साबित होगे बल्कि यह शब्द काफी देर तक उनके बारे मे चिन्तन करने के बाद उभरे।

उनके द्वारा प्रदर्शित लक्षणो म से यदि हम केवल मात्र प्रेम स्वभाव को ही आर्यसमाज के पदाधिकारियो और सदस्यो मे आपसी व्यवहार के समय धारण करवा पाए तो श्री ओकार नाथ जी के नाम मे जो आध्यात्मिक गूज छिपी है वह समूचे समाज मे प्रसारित हाने लगेगी। यह आध्यात्मिक गूज ओकार की है।

उन्होने सदैव छोटो के प्रति प्रेम और बडो के प्रति आदर को बाल्यकाल की पुस्तको मे पढकर वही नही छोड दिया बल्कि ७ अगस्त २००२ तक उसे अपने साथ रखा।

देहावसान के उपरान्त जब हम व्यक्ति के अन्तिम क्रिया कर्म के विभिन्न अवसरो पर उसका स्मरण करते हैं तो उनके जीवन के सभी कर्म और व्यवहार हमारे सामने आने लगते हैं। उन कार्यो और व्यवहारो को भविष्य की क्रिया (कार्य) बनाना ही सच्चा क्रिया कर्म होता है। इन अवसरो पर व्यक्ति के बडे सुपुत्र को पगडी धारण करवाई जाती है जो कि क्रियाकर्म सस्कार का प्रदर्शित रूप है। वास्तव मे सस्कार प्रेरणा व्यवहार रूपी पगडी को तो कोई भी व्यक्ति स्वय को उस आत्मा का पुत्र मानकर धारण कर सकता है। सुधीर और सुनील तो पुत्र परम्परा के साक्षात प्रतिनिधि है ही परन्तु स्वय को ऐसी आत्माओ का पुत्र मानने वालो की सख्या असीमित हुआ करती है। ऐसी आत्माओ के वियोग का दुख तो स्वाभाविक रूप मे असख्य लोगो को होगा ही परन्तु प्रतिक्षण का दुख सहभागिनी सहधर्मिणी के रूप मे माता शिवराजवती जी को होना अस्वाभाविक नहीं है।

मोह मनुष्य मात्र की कमजोरी नही अपितु लक्षण है। मोह के दृष्टिकोण अलग अलग हो सकते है

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

हमारे बाबूजी
श्री ओंकारनाथ आर्य जी को श्रद्धांजलि

– ललित मोहन साहनी

ओंकारनाथ सा सूर्य यज्ञमय उद्भासित हुआ हृदय गगनो में।
तेजोमय वो प्रखर चमक दे अस्त हुआ प्रभु चरणो मे।
ओकार नाथ सा

पूर्ण चन्द्र सा खिला हृदय था परोपकार से निर्मित तन मन
सोमशात अमृतमय जीवन हृदयी प्रीत सी हर धडकन
जन गण के रहे सदा हितैषी जिये जीवन सत्य नियमो मे।।
ओकार नाथ सा

आज्ञानुग पुत्र पुत्री पौत्र सब उनका सौम्य अनुशासन वरते
धर्म पत्नी के शिव सहयोग से आर्यसमाजो मे थे निखरते
प्यार सम्मान की पाई धरोहर ऐसे एक वो अरबो मे।।
ओकार नाथ सा

ध्यान न केवल निज परिवार का कई परिवारो मे सुख बाटे
दुखी जनो के आसू पोछे उन सबके घर घर जाके
भौतिक आध्यात्मिक याज्ञिक वो शुद्ध रहे आचरणो मे।
ओकार नाथ सा

कभी धैर्य ना त्यागा विपद मे पूर्ण किये सकल्प सभी
पूत प्रभूत पुरुषार्थ थे उनके ना सयम की कोई कमी
जीवन भर ऐश्वर्य कमाकर उसे बहाया शुभ कर्मों मे।।
ओकार नाथ सा

कितने आते इस ससार मे कितने पूर्ण प्रकाशित होते ?
स्वार्थ भरे चहु ओर हैं जीवन विरले प्रभु अनुशासित होते
विरलो मे बाबूजी हमारे समा गये बन प्रीत मनो मे।
ओकार नाथ सा

कर्म किये सब प्रभु समर्पित आज स्वय को किया समर्पण
किया प्रयाण प्रभु दर्शन हेतु सग लिया निज उजला दर्पण
देखा शुद्ध उन्हे ईश्वर ने मन वचनो और कर्मों मे।
ओकार नाथ सा

बाबू जी तुम गये कहा हो ? तुम तो बसे हो हृदयो मे
करेगे हम अनुकरण तुम्हारा धर्म कर्म के कृत्यो मे
सदा याद आओगे होगा नाम तुम्हारा अधरो पे।।
ओकार नाथ सा

– २ पाम ब्यू सरोजनी रोड सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई ४०००५४

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

योग न जानने वालों ने ही विश्व व्यवस्था बिगाड़ी है

योग मोक्ष मुक्ति का साधन है

चित्त की निवृत्ति को योग कहते है स्मरण रखना योग का जैसा वास्तविक स्वरूप वैदिक धर्म मे है वैसा अन्य धर्मो मे नहीं। ये दिमाग से निकाल दो कि अन्य सम्प्रदायो मे अनेक योगी हैं और आर्यसमाज मे ऐसा कोई योगी नहीं है। ऐसा दिमाग से निकाल दो मेरी दृष्टि मे जो आर्यसमाज के १० नियम और ५१ मन्तव्यो को नहीं जानता नहीं मानता तदनुरूप आचरण नहीं करता वह योगी नहीं बन सकता।

मैने देखा है – दूसरे लोगों के आश्रमो में भीड बहुत होती है परन्तु मेरी दृष्टि मे वैदिक परम्परा अनुसार ईश्वर को जानने मानने वाला व्यक्ति किसी अन्य सम्प्रदाय के पास नहीं मिलेगा। जिस वृत्ति निरोध से हम ईश्वर तक पहुचते हैं जिसके आचरण से हम ईश्वर तक पहुच जाए उसका नाम है योग। जिस अनुष्ठान से व्यक्ति ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है उनका नाम योग है और जिस अनुष्ठान से ऐसा नही होता उसका नाम योग नहीं ह। आप ये जानना चाहेगे कि वैदिक परम्परा वाले ही योगी बनते हैं अन्य नहीं बन सकते इसमे कारण क्या है। वैदिक परम्परा मे जो व्यक्ति इन तीन तत्वो इश्वर जीवन प्रकृति को जानता और मानता है तदनुरूप निष्काम कर्म करता है ओर विधिपूर्वक योगाभ्यास करता है। ज्ञान–कर्म–उपासना जिसके तीनो शुद्ध हैं वह योगी बनता है और अन्य कोई योगी नही बनता।

अन्य सम्प्रदायो मे तीनो तत्व इस रूप मे स्वीकार नही किए गए। इसलिए ऐसा कहा गया है। कि वैदिक परम्परा मे जीव ब्रह्मचर्य से ईश्वर तक पहुचेगा ओर उसमे नहीं हुआ तो गृहस्थ से सीधा ईश्वर तक पहुचेगा और उसमे भी नहीं हुआ तो वानप्रस्थ से पहुचेगा। और जो तीनो मे भी वहा नहीं पहुच पाता वह व्यक्ति बेकार है। तीनो आश्रम हमारे श्रेष्ठ है यदि किसी के दिमाग मे यह बात आए कि यह पक्षपात हो रहा है वे ध्यान देना तीन तत्व है ज्ञान विज्ञान के विषय को जानने के लिए – एक ईश्वर दूसरा जीवात्मा ओर तीसरा प्रकृति। मूल भूल मे यहीं होगी। विश्व मे जो विषय योग से विमुख हो गए उनकी जो स्थिति बिगडी है वह योग को न जानने न मानने से हुई है। हम आर्य लोगो को यह याद रखना चाहिए कि चाहे गुरुकुल हो या डी०ए०वी० कालेज या विद्यालय हो जब तक पूरा जोर और बल योग पर नहीं दिया जाएगा तब तक सुधार की सम्भावना कभी नहीं हो सकती। अन्य सम्प्रदायो की बात मैं सुना रहा था ईश्वर जीवन प्रकृति – तीन ज्ञान के विषय हैं। यदि तीनो मे यदि कोई भूल हो गई तो वह भूल होती होती सारे मानव समाज को भी वहा ले जाएगी जहा उसे नहीं जाना चाहिए। आज भारत में करोड़ो लोग हैं जो अपने-अपने ढग से योग सिखाते हैं।

जो सत्य है वह सत्य है। योग का जितना प्रशिक्षण है उसमे उन तीन तत्वो का ज्ञान निहित होता है – ईश्वर जीव

गुरुकुल शताब्दी अर्न्तराष्ट्रीय महासम्मेलन का चौथा और अन्तिम दिन
२८ अप्रैल २००२ (रविवार)

हर व्यक्ति आज गौरवान्वित महसूस कर रहा था कि गुरुकुल कागडी शताब्दी मे भाग लेकर वह इतिहास का आखो देखा गवाह बन गया। आर्य जनता के सैलाब और उमगो को देखकर हम सब आयोजक भी चैन महसूस कर रहे थे कि ईश्वर की कृपा से समस्त मानवीय तथा प्राकृतिक बाधाओ और विघ्नो पर विजय पाने के बाद शायद आज दोपहर का भोजन फिर रात की नींद कितना आत्मीय सुख प्रदान करेगी।

दिन की शुरुआत प्रतिदिन की भाति प्रात ५ बजे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे यज्ञ के कार्यक्रम से हुई। उसके बाद ७ बजे ब्रह्मा श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी ने सामूहिक यज्ञ प्रारम्भ करवाया। श्री सत्यपाल पथिक के मधुर भजन आर्य जनता को सुनने को मिले। यज्ञोपरान्त उपदेश के लिए योग के विशेषज्ञ स्वामी सत्यपति जी आमन्त्रित थे। परन्तु उदबोधन के लिए उनसे भी निवेदन किया गया कि मुख्य पण्डाल से ही प्रवचन प्रारम्भ करे। जिसे उन्होने यहा स्वीकार किया और योग विषय से सम्बन्धित उनका प्रवचन प्रारम्भ हुआ। जो यहा प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रकृति। यहीं से भूल होती है क्योकि हम हैं तीन तत्वो को मानने वाले। कुछ भाई है दो तत्वो को मानने बाले कुछ है एक तत्व को मानने वाले और आगे बढते चले जाओ। ऐसी ही मान्यताओ से मूल मे भूल हो गई। यदि मूल मे भूल हो गई तो सब भूल होती चली जाएगी। शुद्ध ज्ञान शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना योग के रु[illegible] है। [illegible] योग ऐसा नहीं है कि [illegible] जगल मे जाकर बैठ गए गुफा मे बठ गए और समाज जहा जाता है जाने दो। जो व्यक्ति योग अभ्यास की प्रगति' कर लेता है उसकी प्रगति हो जाती है समाधि लग जाती है। वह गुफाओ मे जाकर नहीं बैठता। जिसे योग का विषय हाथ लग गया जिसकी उपलब्धी हो गई और अवस्था पक्की हो गई कच्ची अवस्था की बात मैं सुनाना चाहता हू – महर्षि ने एक बार अनुभव किया था कि मेरा प्रभाव नहीं पड रहा है उन्होने अनुभव किया कि मेरे तपोबल और योग मे कुछ कमी है तो उन्होने पाच वर्ष तक योगाभ्यास किया। जब उनका विश्वास दृढ हो गया कि मेरी स्थिति सुदृढ हो चुकी है। प्राय लोग ऐसे कहते है कि स्वामीजी ने १८ घण्टे की समाधि को ठोकर मार दी और परोपकार मे उतर गए ऐसी भूल मत कर देना कभी। ध्यान देना योग का और परोपकार का विरोध नहीं है परन्तु परोपकार साधन है और योग उसका साध्य है। योग साध्य है – ईश्वर प्राप्ति का और साधन है – परोपकार। ईश्वर की प्राप्ति के लिए जो महान कार्य किए जाते है उनको निष्काम कर्म कहते हैं। लौकिक सुखप्राप्ति के लिए जो किए जाते हैं उन्हे सकाम कर्म कहते हैं। जहा ईश्वर प्राप्ति का प्रश्न उठेगा वहा व्यक्ति को निष्काम कर्म करना ही पडेगा। यदि हम समाजो मे निष्काम कर्म करते हैं तो कोई फसाद कोई लडाई झगडा नहीं हो सकता। सकाम कर्मो को लेकर ही ये झगडे वाद विवाद होते है। निष्काम कर्म करने से जातिवाद आडे नहीं आता।

ये हमारा वैदिक विज्ञान है। यह और किसी के पास नहीं है। हम वैज्ञानिक लोगो को सुनाते हैं पर वे सुनने के लिए तैयार नहीं है। आज वैज्ञानिको की स्थिति इतनी उल्टी हो गई है कि जिन तीन विषयो का ज्ञान ईश्वर जीव प्रकृति उन्हे करना था परन्तु वे तीन मे से ढाई जानते ही नहीं केवल आधा जानते हैं। तब समाधि की परिपक्व अवस्था आती है जब प्रात काल से लेकर सोने तक व्यक्ति आनन्द का उपभोग करता है और सायकाल सोने तक आनन्द मे रहता है यह इस योग का फल है। तीन–चार बजे उठकर व्यक्ति ईश्वर से आबद्ध हो जाता हे व्यक्ति और समाज के कार्य को करता हुआ पढता पढाता हुआ व्यक्ति दिनभर आनन्द का उपभोग करता है। यह अनुभूत विषय हे कल्पना नहीं। अरबो खरबो लोक लाकान्तर जहा है वहा ईश्वर है जहा कुछ नहीं है वहा भी ईश्वर है जीवात्मा जहा है वहा ईश्वर है। यदि हम समाधि लगाना जानते है तो इसका केन्द्र मस्तक होगा। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि कठ के नीचे दोनो स्तनो के बीच मे पेट के ऊपर जो क्षेत्र है इसका नाम ह्रदय है।

समाधि के माध्यम से इस ह्रदय मे ईश्वर का अनुभव होता है। हमारे चित्त की पाच अवस्थाए है।

मन को यदि जड मानते है तो वह वश मे आ सकता है किन्तु यदि उसे चेतन मानोगे तो वह वश मे नहीं आएगा। यह पाठ ही उल्टा ही पढाया जाता है कि मन जा रहा है मन चला गया। तीसरी अवस्था में मन समाधि को छूता है पर वह डिग जाती हैं। फिर छूता है फिर डिग जाती है। यह विक्षिप्त अवस्था होती है। चौथी अवस्था में जीवात्मा मन पर पूरा अधिकार कर लेता है। मन पर उसका आधिपत्य होता है। जहा चाहे उसे जमा सकता है उस पर कोई बाधा आने वाली नहीं।

इस अवस्था में व्यक्ति मानसिक स्तर पर ऐसी स्थिति मे घूमता है जैसे कि वह आकाश में घूम रहा हो। विवेक ज्ञान के आधार पर योगी पूरी सृष्टि को प्रलय मे बदल देता है। योगी उत्पत्ति या प्रलय नहीं कर सकता यह भ्रान्ति है कि योगी सृष्टि को बना सकता है मिटा सकता है। कुछ कहते है कि योगी शरीर और इन्द्रियो को भी बना लेता है मेरा कहना है कि वह बनी बनाई इन्द्रियो से ही काम लेता है। जिस समय समाधि आरम्भ होती है उस समय हमारे शरीर और मन दोनों पर प्रभाव पडता है। हमारा मस्तक समाधि लगते ही प्रभावित होता है जैसे यहा कोई वस्तु चिपका दी गई हो। जैसे ही सामधि टूटेगी यह प्रभाव समाप्त हो जाएगा। समाधि मे योगी पर ऋतु का प्रभाव नहीं पडता। शारीरिक सहन शक्ति की सीमा एक सीमा है परन्तु मानसिक अज्ञान कुसस्कार काम क्रोध मोह मे समाधि को उखाड कर फेक देते है इनकी कोई सीमा नहीं है।

पाचवी अवस्था में चित्त की सारी वृति का निरोध कर दिया जाता है। हम अपने अन्दर जीव का साक्षत्कार कर लेगे परन्तु जब ईश्वर का साक्षात्कर करेगे तो ये वृति समाप्त कर दी जाएगी और पाचो वृत्तिया रोक दी जाएगी तब ईश्वर का साक्षात्कार होगा। ससार के अन्दर वेदो और दर्शनो के आधार पर मैं ये कह सकता हू कि मानव जीवन का जो प्रयोजन समस्त दुखो से छूट जाना और नित्यानन्द जी प्राप्ति होना है। सुख दो प्रकार का हे लौकिक और पारलौकिक। प्राकृतिक प्रदार्थों से जो सुख मिलता है वह लौकिक है और जो पारलौकिक सुख हे वह समाधि से मिलता हे। सासारिक सुख क्षणिक है। परन्तु परमात्मा मे जो आनन्द है वह नित्य है। महर्षि दयानन्द मे ये उपलब्धिया थी। उन्होने वेदो का अध्ययन किया। इस परम्परा का लोप हो जाने के बाद महर्षि ने इसे हमारे समक्ष रखा। आज वैज्ञानिक चाहे आकाश पताल एक कर दे पर उन्हे शान्ति मिलने वाली नहीं है। यदि वैज्ञानिक भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान को साथ जोड दे तो उन्हे शान्ति अवश्य मिलेगी। भौतिक विज्ञान को आत्मा की प्राप्ति का साधन माना गया है। वैदिक ज्ञान अपरा विद्या (भौतिक विज्ञान) है। परा विद्या ब्रह्म ज्ञान का साधन है उन्होंने परा विद्या को बिलकुल ही भुला दिया यह विनाश का कारण बन गया है।

थोडी विद्या वाला भी समाधि को प्राप्त कर सकता है परन्तु निष्काम कर्म करने होगे। जो राष्ट्र के लिए समाज के लिए निष्काम कर्म नहीं करता वह समाधि को प्राप्त नहीं कर पाता। जो व्यक्ति समाज मे परिवार मे यम–नियमों का पालन नहीं करता वह भी समाधि को प्राप्त नहीं कर सकता।

जो इस शरीर में ईश्वर का साक्षात्कार करता है वही मुक्ति का भागी होता है। यदि शरीर मे ईश्वर का साक्षात्कार नहीं हुआ मुक्ति का अधिकारी नहीं बना तो मरने के पीछे कोई मुक्ति नहीं पा सकता।

अब अन्त मे मैं यही कहना चाहूगा कि सबको योग सीखना चाहिए और गुरुकुलों और विद्यालयो मे भी योग सम्मिलित किया जाना चाहिए। हमारी सारी समस्याओ का इससे समाधान हो जाएगा। इससे हम व्यक्ति पारिवार और पूरे राष्ट्र को हम एक बना सकते हैं।

– स्वामी सत्यपति

श्रावणी पर्व की सार्थकता

– आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुखो का कारण माना गया है इसलिए जो भी जीवन मे सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ है क्योकि वेद स्वय परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव मे अन्धकार मे डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव मे व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतणलि जी ने अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशो का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुखो का कारण है। व्यक्ति समाज परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगो को एक ही सत परामर्श दिया कि वेदो की ओर लौटो। वेद स्वय ही ज्ञान का पर्याय है अत अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वदो का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन–चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियो क यहा जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तर मे लुप्तप्राय होती चली गई मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट सस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण मे जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्यसमाज सस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत–मजहब को लेकर व्यक्तियो को बाटने का कार्य नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र मे बान्धकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगो मे न केवल रुचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बडे–बडे पारायण यज्ञो का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन सस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायो मे बटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त वनाते चले आ रहे हैं।

वेद हमे भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकतावाद मे इतना अधिक सलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख–सुविधाओं को जुटाने मे लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे है। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्तत तृप्ति देने वाले नहीं है इस सत्य का भी उसे पग–पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव मे वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सासारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हें कि हम मे तुम्हे तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार–बार भोगो मे डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहा वह हे ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खडा है अतृप्त है रो भी रहा है तडप भी रहा हे मगर पुन पुन भोतिक भोगो की आग मे स्वय को झोकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानो कोई अपनी हथेली पर आग का अगारा लेकर खडा हुआ हो उसे छोडने के लिए भी तेयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तडप भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नही रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वय ही पकड रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगो को सम्बोधित करते हुए मानो वेद कहता है –

अन्ति सन्त न जहाति अन्ति सन्त न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीर्यति।।

अथर्व० १० ८ ३२

अर्थात पास बैठे हुए को छोडता नहीं पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परम पिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है।

इस मन्त्र के भावो का यदि हम गहराई से मनन करे तो हमारे जीवन का काटा ही बदल सकता है। सक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा क काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान ले कि इस प्रकृति मे सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो शारीरिक एव भौतिक सृष्टि मे उसकी तलाश छोडकर उसे आध्यात्मिकता मे खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमे चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमो का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोडना होगा। परमात्मा के सान्निध्य मे जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

श्रावणी पर्व को तो एक राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि यह पर्व किसी प्रकार के सम्प्रदाय की बात नहीं करता है बल्कि इसका लक्ष्य है कि हम परमात्मा की वेद वाणी का मनन चिन्तन करे और तद्वत् अपने अपने जीवन का निर्माण करे। वेद स्वय ज्ञान का प्रतीक है और ज्ञान रूपी आख हम जब तक अपने भीतर पैदा नहीं करेगे। तब तक निश्चित रूप से अज्ञानान्धकार में भटक कर अनेक प्रकार के दुख और कष्ट भोगते रहेगे। केवल वेद का सन्देश ही सार्वभौमिक ओर सार्वकालिक हे इसलिए इसी को आधार मानकर आज के विषासक्त वातावरण से निजात पाई जा सकती हे अन्य कोई मार्ग नहीं है। सत्य से बढकर और कोई धर्म नहीं है और वेद ही सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है अत आज की प्रत्येक समस्या का समाधान हमे वेद में ही ढूढना होगा। वेद ही समूची मानवता को एक सूत्र मे पिरोने की सजीवनी देने वाला ज्ञान है। असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना ही व्यक्ति के विकास का आधार है इसलिए आज वेद के सत्य को हृदय से स्वीकारने की जरूरत है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते–चलते अचानक जिन झाड–झखाडो मे उलझ गए है उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता मे लाए। आज समाज राष्ट्र और समूचा विश्व आतक और भय क वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सोहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हा गया है कि जहा उस दूसरो का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद मजहबवाद जातिवाद क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारो ओर मण्डरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओ का समाधान खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढता गया ज्यो–ज्यो दवा की। हम अपने ही देश को ले। यहा पर प्रत्येक नेता या दल अपनी अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नही है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारे खडी कर दी है जो दिन–प्रतिदिन और भी अधिक ऊची होती चली जा रही है। चाहे व्यक्तिगत हो परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओ का समाधान हमे वेद मे मिल सकता है क्योकि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमे सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हें। इस प्रकार इन झूठो के अम्बार तले हम दब गए है। हमे इस बात को गाठ बान्ध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र मे उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कडवी दवाई खाने मे तो अच्छी नही लगती हे मगर उसका परिणाम सुखद होता है ठीक इसी प्रकार वेद क सत्य पर चलना हम पहले तो वहुत अटपटा और अव्यवहारिक लग सकता हे क्योकि हमें अपने–अपने स्वार्थ के दायरो म सिमट कर जीने की आदत पड गई है मगर वास्तविकता यह है कि हमे अपने–अपने सकुचित दायरो स बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योकि सत्य की सोच ही अन्तत ठीक होती हे। वेद हमे सत्य के साथ जुडने की ही प्ररणा देता है।

सवप्रथम हम इसी बात पर चिन्तन करते है कि मानव–मानव के भीतर ये दूरिया क्यो बढती चली जा रही हैं। होता यह है कि अपने तप त्याग ओर साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरा को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं मगर ये अनुयायी उन आदर्शो पर ता चल नही पाते है मगर मात्र लकीर के फकीर दन जाते हैं। उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊचाइयो का छूआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके उस महापुरुष की ही पूजा–अर्चना शुरू कर दी जाती हे। आज हमारे समाज मे एसे पैगम्बरो अवतारो ओर गुरुओ की माना बाढ सी आ गइ है। गुरु होना तो बुरी बात नही मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बडा धक्का लगा हे तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियो की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियो को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियो द्वारा बनाए गए अलग–अलग ग्रन्थो ओर उपदेशो को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग–अलग नामो आर पूजा पद्धतियो ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायो म बाट दिया है। यह एक अटल सत्य हे कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वार दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतय सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे माने अन्धे ही अन्धो को रास्ता दिखा रहे है इसलिए अज्ञानता के गढढे मे गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा हे। तथाकथित इन भगवानो की भीड मे परमात्मा कहीं खो गया लगता है ओर मत–मजहब एव सम्प्रदायो की अज्ञानता मे मानवीय गुण का हास हुआ हे एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति [illegible] पशस्त होना था विलुप्त हो गइ है।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष भाग

श्रावणी पर्व की सार्थकता

आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यो की पुन स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योकि वेद पूर्णतय सार्वभौमिक ओर परमात्मा की सत्य वाणी है। जिस परमात्मा को लोगो ने व्यक्तिवाद ...वी देवतावाद तथा स्थान विशेष की कारा‍ओ मे कैद कर दिया हे उसके बारे मे वेद कहता हे –

ईशा वास्यमिद सर्व यत्कि च जगत्या जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

(यजु० ४० १)

मन्त्र मे आदेश दिया गया है कि हमे उस एक परम पिता की उपासना करनी चाहिए जो सृष्टि के कण–कण मे विद्यमान है। वही इस ससार का सृजनकर्त्ता और सचालक हे। वही समस्त सम्पदाओ का स्वामी भी है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओ का अनासक्ति अर्थात त्याग भाव से भोग करना अपेक्षित हे क्योकि अन्तत यह सब कुछ उसी पिता का है।

मन्त्र मे बहुत ही व्यवहारिक बात कह दी गई है। परमात्मा किसी स्थान विशेष मे नहीं हे बल्कि वह सर्वव्यापक है और समस्त सम्पदा का मालिक भी वही है। यह सब कुछ तो हमे मात्र प्रयाग मेरा सम्प्रदाय या मेरा गुरु ही सबसे बडा है इसके स्थान पर वह वास्तविक आध्यात्म की ऊचाईयो को छूकर श्रेष्ठ मानव बनकर अपना और समूची मानवता का हित करने की दिशा मे स्वाभाविक रूप स अग्रसर हो सकेगा। वह परमात्मा की वास्तव मे सृष्टि का सृजन करने वाला और मालिक हे वेद मे अन्य अनेक ऐसे बहुत से मन्त्र है यथा –

भूतस्य जात पतिरेक आसीत।

अन्धी दौड से मुक्त होकर उस आनन्दमयी गोद में बैठकर चिर तृप्ति को प्राप्त करेगें। ऐसा होने से ही व्यक्ति के भीतर **वसुधैव कुटुम्बकम** की भावना पैदा हो सकेगी तथा मानववाद की स्थापना होकर प्रेम और सौहार्द की पवित्र गगा बहेगी। जिस दिन ससार के सभी व्यक्ति अपने उस एक असली बाप को पहचान जाएगे उसी दिन व्यक्ति मजहबवाद से मुक्त होकर एक वैदिक धर्म की शरण मे आकर सुन्दर वातावरण बन सकता है। यह मन्त्र परिवार समाज राष्ट्र और समूचे विश्व को एकता का महान सन्देश दे रहा है। यदि हम मिलकर चलेगे मिल बैठकर विचार करेगे हमारी वाणी मे एकता अर्थात कथनी और करनी समान होगी तो हमारे मन भी निश्चित रूप से मिलेगे। जब तक न तो हमारे मन मिले न हमारी आवाज ओर विचार मिले तब तक एकता की बात करना मात्र दिवा स्वप्न ही है। जो लोग अनेकता मे एकता का नारा लगाते है उनसे कदापि एकता स्थापित नहीं हो सकेगी। ऐसे लोग स्वय धोखे में रहकर औरो को भी धोखा दे रहे है। हम तो एकता मे ही एकता के स्थापन की व्यवहारिक बात करने वालो मे हैं।

यदि मात्र औपचारिकता भर निभाने के लिए न मनाया जाए तो हमारे यहा का प्रत्येक पर्व एक दिव्य सन्देश देता है और में समझता हू कि श्रावणी पर्व को तो एक राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाना चाहिए क्योकि यह पर्व किसी प्रकार के सम्प्रदाय की बात नहीं करता है बल्कि इसका लक्ष्य हे कि हम परमात्मा की वेद वाणी का मनन–चिन्तन करे और तदवत अपने–अपने जीवन का निर्माण करे। वेद स्वय ज्ञान का प्रतीक ह भार ज्ञान रूपी

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते चलते अचानक जिन झाड झखाडों मे उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लाए। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना ह्रदयहीन हो गया है कि जहा उसे दूसरो का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है।

चाहे व्यक्तिगत हो परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओ का समाधान हमे वेद मे मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमे सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है।

आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यो की पुन स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योकि वेद पूर्णतय:सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

महाराजा हरिसिंह ने भारत मे विलय किया था हिन्दुस्तान के लगभग ५५० ऐसी राज्या म सब से बडा और सामरिक दृष्टि स सब से अधिक महत्वपूर्ण था। तब उसका क्षेत्रफल ८४४७१ वर्गमील था।

विलय क बाद इस की सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत सरकार पर आ गई। दुर्भाग्य से स्वतन्त्र भारत की सरकार ने इस ओर उचित ध्यान नही दिया। प्रधानमन्त्री श्री नेहरु कश्मीर घाटी के नेता शेख अब्दुल्ला के हाथ मे खेलते रहे। शेख अब्दुल्ला की रुची केवल कश्मीर घाटी मे थी। रियासत के अन्य भागो के लोगो पर न उसका कोई प्रभाव था और न पकड। उसन योजनाबद्ध ढग से राज्य के अन्य मुस्लिम बहुल क्षेत्रो को पाकिस्तान मे जाने दिया। १६५० मे प्रकाशित अपनी पुस्तक K ıshmır devıded खण्डित कश्मीर । मैने उस घटना चक्र की विस्तार से तथ्यात्मक जानकारी दी थी। शेख अब्दुल्ला के दबाव मे ही प० नेहरू ने ६ जनवरी १६४६ को जब भारतीय सेनाए पाकिस्तान द्वारा हडपे गए क्षेत्र को वापिस लेने के लिए बढ रही थी युद्धबन्दी की घोषणा कर दी। फलस्वरूप राज्य का तीस हजार वर्गमील के लगभग क्षेत्र जिस मे सारा गिलगित कारगिल को छोड कर सारा बलतिस्तान और पाकिस्तान के रावलपिण्डी विभाग के साथ लगने वाला है। यह पहले एक बडी झील थी। हजारो वर्ष पूर्व कश्यप ऋषि ने इस के चारो ओर की पर्वतीय दीवार मे छेद करके इसक पानी को निकालने की और इसे रहने योग्य समतल भूमि के रूप मे ऊपर लाने की व्यवस्था की थी। तब इस का नाम कश्यप मर्ग या कश्यप ऋषि का स्थान पडा। कश्मीर नाम कश्यपमर्ग से ही निकला हे।

जिस स्थान पर पर्वत को काट कर बतिस्ता नदी घाटी से निकाली गई थी उस का पुराना नाम वराहमूल था जिसे अब बारामूला कहा जाता है।

चहु ओर से १० हजार से १५ हजार फुट ऊचाई वाली हिमालय की पर्वत श्रृखला से घिरी होने के कारण कश्मीर घाटी अनादिकाल से भारत का अलग राज्य अथवा जनपद रही हैं। जब कभी अशोक अथवा रणजीत सिह जैसे सम्राटो ने इसे अपने साम्राज्यो मे शामिल किया तब भी उन्होने इसे अलग सूबा या प्रान्त के रूप मे रखा। इस प्रकार भारत के अन्तर्गत इसकी सदा अलग भौगोलिक और राजनैतिक पहचान रही है। पीरपचाल श्रृखला इसे जम्मूक्षेत्र से अलग करती है। यह १० से १४ हजार फुट ऊची है। इसमे तीन दर्रे बनिहाल सिथल और नदीमार्ग है। तीनो समुद्र से १० हजार फुट से अधिक ऊचे है और वर्ष मे कुछ महीने तक बद रहते है। हिमालय की एक

लद्दाख के लोग बोद्ध हैं और तिब्बत के बाद यह लामावादी बुद्ध मत का सब स बडा केन्द्र हे। ससार भर स बोद्ध यात्री तथा पर्यटक यहा आत हे। अब्दुल्ला वश के राज्यकाल मे घाटी के कश्मीरी मुसलमान योजनाबद्ध ढग से बडी सख्या मे लद्दाख मे बसाए गए हैं। जिस कारण लद्दाख की शिष्ट सास्कृतिक ओर भाषाई पहचान खतरे म पड गई है। यही कारण है कि लद्दाख के लाग गत ५० वर्ष से लद्दाख को भारत का अलग केन्द्र शासित राज्य बनाने की माग कर रहे हैं।

कश्मीर घाटी के दक्षिण और लद्दाख के पूर्व मे पीरपचाल पर्वत से पजाब तक फैला हुआ पहाडी क्षेत्र जम्मू कहलाता है। इस के अधिकतर लोग डोगरी भाषा भाषी हिन्दू है। यह जम्मू कश्मीर राज्य के निर्माता गुलाबसिह का मूल स्थान है। इसकी जनसख्या लगभग ५० लाख और क्षेत्रफल लगभग १० हजार वर्गमीलें है। चन्द्रभागा या चिनाब नदी इसके बीचो बीच बहती है। आर्थिक दृष्टि से यह हिमाचल प्रदेश और उत्तराचल प्रदेश से बेहतर स्थिति मे है ओर आत्मनिर्भर है। इसी मे वैष्णो देवी का विख्यात धाम पडता है।

ऊपर दिए गए तथ्यो से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह तीनो क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से सर्वथा अलग है और इस का आपस मे कोई तालमेल नही।

फारुक अ्दुल्लो ... नक आधार पर पुनर्गठन के बजाए मजहबी आधार पर पुनर्गठन करना चाहता है ओर जम्मू के मुस्लिम बहुल जिलो का अलग क्षेत्र बनाना चाहता है। उसकी सोच और याजना न केवल साम्प्रदायिक और सेक्युलरवाद विरोधी है अपितु राष्ट्रविरोधी भी है।

कश्मीर घाटी के कुछ लोग इसके लिए विशेष अधिकारो की बात करते है। वे चाहते हैं कि वहा १६५३ के पूर्व की स्थिति कायम की जाए। तब रियासत भारत के सर्वोच्च न्यायालय चुनाव आयोग और लेखाआयोग के अधिकार क्षेत्र से बहार थी और वहा का झण्डा भी अलग था। वह स्थिति न देशहित मे है और न कश्मीरियो के हित मे। फिर भी कश्मीर घाटी के चुनाव होने के बाद उसके चुने हुए प्रतिनिधियो से इस विषय पर भारत के सविधान के दायरे मे बातचीत की जा सकती है और उसे जम्मू और लद्दाख से कुछ अधिक अधिकार दिए जा सकते हैं। परन्तु कश्मीर घाटी को भारत से अलग करने का प्रश्न नहीं उठता।

आवश्यकता है कि भारत के नेता राजनैतिक दल और मीडिया के बन्धु जम्मू कश्मीर के पुनर्गठन को साम्प्रदायिक दृष्टि से देखना बन्द करे। भौगोलिक आधार पर इसका पुनर्गठन तर्कसगत व्यवहारिक यथार्थवादी और राष्ट्रहित मे है। इस मामले मे दलगत राजनीति का राष्ट्रहित पर बरीयता देना हर दृष्टि से गलत है।

– जे० ३६४, शकर रोड, नई दिल्ली

जम्मू कश्मीर राज्य का पुनर्गठन : तथ्य और भ्रान्तियां

– बलराज मधोक, भूतपूर्व सासद

जम्मू–कश्मीर राज्य का पुनर्गठन करके उसे दो राज्यो 'कश्मीर' और 'जम्मू' तथा एक केन्द्र शासित प्रदेश 'लद्दाख' मे बाटने के सम्बन्ध मे आज तक राजनैतिक दलो और मीडिया मे बहस छिडी हुई है। किसी विषय अथवा समस्या के सम्बन्ध मे ठीक जानकारी और उस जानकारी का वस्तुपरक विश्लेषण तथा मूल्याकन उसके सम्बन्ध मे सही नीति के निर्धारण क दो प्रथम और आवश्यक अग माने जाते हैं। यदि जानकारी गलत हो तो उसके आधार पर किया गया मूल्याकन भी गलत होगा और उस गलत मूल्याकन के आधार पर बनाई गई नीति भी गलत सिद्ध होगी। इसलिए सही जानकारी के अभाव और तथ्यो के सम्बन्ध मे अनभिज्ञता किसी समस्या के सही हल के रास्ते मे सब से बडी रूकावट बन जाती है। जम्मू कश्मीर की वर्तमान समस्या और पुनर्गठन के विषय मे विवाद और उसके सम्बन्ध मे फैली हुई भ्रान्तिया इसी का परिणाम हैं।

जम्मू कश्मीर राज्य जिस का अक्तूबर १९४७ मे उसके शासक

पोठोहार क्षेत्र पडता है पाकिस्तान के अधिकार मे रह गया।

१९५८–१९५९ मे चीन ने लद्दाख के उत्तरी भाग जिसे लद्दाखी चाग पाग कहते है को अपने अधिकार मे कर लिया। तब से लगभग १५ हजार वर्गमील का वह क्षेत्र चीन के अधिकार मे चला आ रहा है। इस प्रकार जम्मू कश्मीर राज्य व्यवहारिक रूप मे तीन भागो मे बट गया है। इस का तीस हजार वर्गमील क्षेत्र पाकिस्तान क अधिकार मे है। अब भारत के पास इस विशाल राज्य का केवल तीस हजार वर्गमील क्षेत्र ही रह गया है।

भारत के अधिकार वाले जम्मू कश्मीर रियासत का भूभाग भौगोलिक दृष्टि से तीन भागो कश्मीर घाटी 'जम्मू और लद्दाख मे बटा हुआ है। इसमे सबसे छोटा परन्तु सुन्दरता की दृष्टि से विश्वविख्यात क्षेत्र कश्मीर घाटी है। बतिस्ता (जेहलम) नदी की इस घाटी की अधिकतम लम्बाई ८० मील ओर अधिकतम चोडाई ४० मील

दूसरी श्रृखला इसे पूर्व मे लद्दाख से काटती है। यह १२ से १७ हजार फुट ऊची हे। इसे लद्दाख से मिलाने वाला दर्रा योरिला लगभग १३ हजार फुट ऊचा हे। इस प्रकार प्रकृति परमात्मा और भुगोल ने कश्मीर घटी को अनादि काल से जम्मू और लद्दाख से अलग रखा है। श्री अमरनाथ की गुफा इसी मे पडती है और सारे देश से लाखो यात्री हर वर्ष उसके दर्शन के लिए यहा आते है।

पूर्व मे लद्दाख क्षेत्र जो कश्मीर घाटी और जम्मू के साथ लगता है मानसरोवर झील और तिब्बत तक फैला हुआ है। मानसरोवर से निकल कर सिन्धु नदी पहले लगभग तीन सौ मील तक लद्दाख मे बहती है फिर बलतिस्तान ओर गिलगित मे से गुजरती हुई दक्षिण की ओर बढती है और हिमालय को काटकर पजाब मे प्रवेश करती है। पजाब और अफगानिस्तान की नदियो का पानी समेटते हुए हिन्द महासागर मे जा मिलती ह।

जम्मू और लद्दाख को अलग राज्य बनाने से न केवल उनका आर्थिक विकास द्रुतगति से होगा अपितु इनमे स्थित सास्कृतिक और पर्यटक स्थलो पर अधिक यात्री और पर्यटक आने लगेगे। इस का सबसे अधिक लाभ कश्मीर को होगा। यदि तीनो राज्यो मे शान्ति रहे तो जो पर्यटक और अन्य यात्री लद्दाख और जम्मू आएगे वे कश्मीर भी अवश्य जाना चाहेगे।

कश्मीर घाटी से बलात निकाले गए लगभग चार लाख कश्मीरी हिन्दुओ के पुनर्वास की समस्या के समाधान के लिए कश्मीर घाटी के दक्षिण भाग मे श्री अमरनाथ की गुफा से लेकर बनहाल सुरग को जोडने वाली सडक के दक्षिण के भाग को पण्डितो के पुनर्वास का सुरक्षित क्षेत्र बनाने की माग तर्कसगत ओर न्यायोचित है। इसके मानने से एक तो श्री अमरनाथ की वार्षिक यात्रा न केवल सुरक्षित हो जाएगी अपितु यात्रियो ओर पर्यटको की सख्या भी बढ जाएगी। साथ ही इस सुरक्षित क्षेत्र के विकास की गति भी तेज हो जाएगी। इस का लाभ सारी कश्मीर घाटी को होगा।

करने के लिए दिया गया है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सके। मन्त्र के भावो को आत्मसात करने से जहा एक परमात्मा की अराधना का प्रचलन होकर मानवीय एकता को आधार मिलेगा वहीं दूसरी ओर आज मेरी–मेरी का जो वातावरण बना है उससे भी समाज को मुक्ति मिल सकती है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे की वस्तु को चुराने का प्रयास करता है। इसी लोभ के कारण वह सासारिक वस्तुओं के साथ अपनी आसक्ति भी जोड देता है जो व्यक्ति के दुख का मुख्य कारण है। जब व्यक्ति मन्त्र के तथ्य को आधार मानकर अनासक्त भाव से समस्त वस्तुओं का प्रयोग करेगा तो यह अनासक्ति ही उसे आनन्द और वास्तविक सुख तक पहुचा सकेगी। त्याग और अलोभ की वृत्ति पैदा होने पर ही व्यक्ति परोपकारी बन सकता है। जो परोपकारी होगा उसका चिन्तन वयष्टि से समष्टि की ओर उन्मुख हो जाएगा। तथा उसके ह्रदय में ही समूची मानवता के हित की बात आ सकेगी। फिर उसके हाथ किसी की सम्पति चुराने या उसे मारने के लिए नहीं उठेंगे बल्कि सहयोग के लिए ही उसके हाथ आगे बढेगे। इस प्रकार की समस्त एषणाओ से ऊपर उठकर जब वह एक परमपिता की उपासना करेगा तो उसके भीतर इस सत्य का उदय भी होगा कि परमात्मा के नाम पर मैंने जो दीवारे खडी कर दी थी वे वास्तव मे कितनी बचकानी और अहितकारी थी। वह इस सकीर्णता से ऊपर उठेगा कि मेरा मजहब मेरी जाति

(यजु० १३ ४)

अथात समस्त प्राणीमत्र का पति (स्वामी) वह परमपिता परमात्मा ही है और वह अनेक नही बल्कि एक है ओर एक ही रहेगा वेद की यह शिक्षा हमे एकता के सूत्र मे बाध सकती है ओर भगवानो के नाम पर बटने की कुप्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकती है। भगवानों का भगवान और गुरुओ का गुरु वह परमात्मा ही है। एक वहीं उपास्य है और उसी की उपासना करनी चाहिए। लोक–परलोक की उन्नति का आधार यही है व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र की सुख–शान्ति एव समृद्धि का यही मूल मन्त्र है। हम सभी एक ही जाति अर्थात मनुष्य जाति के है और वही परमात्मा हमारा पिता है। हम कैसे पुत्र है जो पिता को भी भूलते जा रहे हैं। वेद मे बहुत ही सुन्दर शब्दो मे कहा गया है –

त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।।

(सा० ४–२–१३–२)

स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा न स्वस्तये।।

(ऋ० १–१–६)

अर्थात वह परमात्मा ही हमारा माता–पिता और सुख शान्ति तथा प्रसन्नता देने वाला है। वह हमारा ऐसा पिता है जिसकी पावन गोद हमें सहजता से उपलब्ध है। वह निरन्तर अपने स्नेह की हम पर वर्षा कर रहा है मात्र उसे पहचानकर उसकी गोद मे बैठ जाने की जरूरत है मगर पता नहीं हमारे भीतर कब विवेक पैदा होगा हम भौतिकतावाद की इस

आनन्दित हो सकेगा। जब तक हम इस अनुभूति से नहीं गुजरेगे तब तक भला एक कुटुम्ब की भावना कैसे पेदा हो सकेगी ? जिस राष्ट्र के लोग एक राष्ट्रपति को मान्यता देकर उसके नियमानुसार चलते हे वही पर अच्छी व्यवस्था और शान्ति बनी रह सकती है उसी प्रकार यदि हम सुख–शान्ति और भाइचारा चाहते है तो इस ससार का भी हमे एक ही पति मानना अनिवार्य है। एक ही राष्ट्र मे जहा दो राष्ट्रपति बन जाए वहा पर सघर्ष तो अनिवार्य रूप से हो ही जाता है। समूचे विश्व या देश मे केवल बैठको या नारो से एकता स्थापित नहीं हो सकती हे। इसके लिए तो ठोस प्रयास करने होगे। वोट की गोटिया खेलने वालो द्वारा भी एकता और भाईचारा स्थापित नहीं हो सकता है। यदि वास्तव मे ही हम एकता स्थापित करना चाहते है तो वेद की शरण मे ही जाना होगा। जहा कहा गया है –

स गच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम। देवा भाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।।

ऋ० १०–१९–२

अर्थात हम सभी मिलकर चले मिलकर बोले हमारे मन एक हो और जिस प्रकार हमारे पूर्वज देवत्व से परिपूर्ण होकर अपने–अपने अधिकार क्षेत्र मे रहकर जीते थे हम भी उन्हीं का अनुसरण करे। यह ऋग्वेद के सगठन सूक्त का मात्र एक मन्त्र दिया गया। वास्तव मे यह पूरा सूक्त हमे प्रेम और सौहार्द के साथ मिलजुलकर रहने की शिक्षा देता है। इन भावो को यदि सभी लोग आत्मसात कर ले तो आज की आपाधापी मे भी स्वर्ग सा

आख हम जब तक अपने भीतर पैदा नहीं करेगे। तब तक निश्चित रूप से अज्ञानान्धकार मे भटक कर अनेक प्रकार के दुख और कष्ट भोगते रहेगे। केवल वेद का सन्देश, ही सार्वभौमिक और सार्वकालिक है इसलिए इसी को आधार मानकर आज के विषासक्त वातावरण से निजात पाई जा सकती है अन्य कोई मार्ग नहीं है। सत्य से बढकर और कोई धर्म नही है और वेद ही सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है अत आज की प्रत्येक समस्या का समाधान हमे वेद मे ही ढूढना होगा। वेद ही समूची मानवता को एक सूत्र मे पिरोने की सजीवनी देने वाला ज्ञान है। असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना ही व्यक्ति के विकास का आधार है इसलिए आज वेद के सत्य को ह्रदय से स्वीकारने की जरूरत है। श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी मे है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सत्य के पक्ष मे करके आध्यात्मिकता की ऊचाईयो को छूकर अपना और समूचे विश्व के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करे। हम वेद के आधार पर आज की दिशाहीन मानवता की कुछ स्वर्णिम आयामो तक पहुचाने की दिशा मे कुछ सार्थक कार्य करके पुण्य के भागी बन सकते है। बस इसी भावना को आत्मसात करना ही इस पर्व का दिव्य सन्देश है।

✿✿✿

वेदप्रचार आर्यसमाज का मुख्य कार्य है

— डॉ० महेश विद्यालकार

सृष्टि के आरम्भ मे परमपिता ने प्राणी मात्र के कल्याण व उत्थान के लिए वेदो का ज्ञान प्रदान किया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद ज्ञान परमेश्वर का जगत को आदेश उपदेश और सन्देश है। इसलिए वेद सबके सबके लिए तथा सबको पढने एव सुनने का अधिकार हे। वेदो का चिन्तन मानवता का चिन्तन है। वेद सृष्टि की आचार सहिता है। वेद पुकार पुकार कर कह रहे हैं – श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतपुत्रा। वेदो की विचारधारा मे क्षेत्र जाति वर्ग देश आदि का भेदभाव नहीं है। वेद ज्ञान सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेदो का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत को सत्य धर्म न्याय सुख शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है।

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' ऐसी धारणा और मान्यता केवल आर्यसमाज ही रखता है। आर्यसमाज तथा उसकी विचारधारा की अनुयायी सस्थाओ मे ही प्रातकाल पवित्र वद मन्त्रो से यज्ञ होता है। वेद सम्मेलन व वेद कथाए यही सगठन आयोजित कराता है। वेद मन्दिर तथा वेद की ज्याति जलती रहे आर्यसमाज नारा देता है। वेदो की रक्षा परम्परा स्वरूप पठन–पाठन को जीवित रखने ओर प्रचारित एव प्रसारित करने की वसीयत एव विरासत आर्यसमाज को मिली हे। दूसरे पथ सम्प्रदाय और विचारधारा वाले नाम तो वेदो का लेते है। मगर वेदो को महत्व नही देते हे। वदो के पुनाद्धार तथा प्रचार–प्रसार मे ऋषिवर देव दयानन्द का योगदान स्मरणीय एव वन्दनीय है। उन्होने वेदो का यथार्थ स्वरूप जनमानस को बताया। उन्होने नारा दिया वेदो की ओर लौटो। वेदो की मानो। वेदज्ञान ही विश्वशन्ति और विश्व बन्धुत्व का सच्चा मार्ग दिखा सकता है। दुनिया मे वेदज्ञान से बढकर और कोई श्रेष्ठज्ञान नहीं है।

आर्यसमाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा है – वेदिक धर्म का पुनाद्धार वेद प्रचार। मूर्तिपूजा अवतारवाद ढोग पाखण्ड गुरुडम आदि से जनता का बचाना। अतीत का इतिहास साक्षी है – कि आर्यसमाज वैचारिक क्रान्ति की जीवन्त चेतना थी। इसकी भूमिका रही है जागत रहो। वेद परम्परा का जीवित रखने और आगे बढाने मे आर्यसमाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा हे। इसी का परिणाम हे कि आज तक वेदो के मन्त्रा म एक अक्षर की भी मिलावट नही हा सकी है। वेद मन्त्रो क अर्थो म मिलावट के कारण ही अर्थ का अनर्थ हुआ हे। इसीलिए लोग वेदो के भाष्यो को पढकर उल्टे सीधे अर्थ लगाकर वेदो के बारे मे अनर्गल निराधार तथा घृणित आरोप लगा रहे हैं। जो कि निन्दनीय हैं। आर्यसमाज ने वेद के बारे मे अनर्गल आरोपो के लिए सदा चेलेज किया और आज भी चैलेज करने की शक्ति व क्षमता रखता है।

आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार था। वेदो की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र निर्माण होता है। वेदज्ञान जीवन तथा जगत को सच्चामार्ग बताता है। आज वेद प्रचार की बहुत जरूरत है। वेद प्रचार की कमी के कारण ही रोज नये नये पन्थ सम्प्रदाय गुरु महन्त महाराज आदि बन ओर फेल रहे हे। इसीलिए ढोग पाखण्ड गुरुडम अन्धविश्वास अन्धश्रद्धा जडपूजा आदि पहले से ज्यादा बढ रही है। यदि वेद प्रचार होता तो धर्म भक्ति ओर परमात्मा के नाम पर गुरुओ व महाराजो के इतने लम्बे–चाडे पाखण्ड भरे व्यापार न फेलते। लोग मुर्दो से मुरादे न मागते। पढ लिखे जिम्मेदार लाग निर्दोष जीवा की बलिया न चढाते ? धम क नाम पर इतने झगडे विवाद न हात ? वद ज्ञान का प्रचार एव प्रसार हाता तो इतना पाप अधर्म भ्रष्टाचार पतन अनेतिकता आदि न होती ?

दु खद पीडा ह कि आज का आर्यसमाज अपने मूल उद्देश्या आदर्शो सिद्धान्तो आदि से हट रहा हे जो मुख्य कार्य वेद प्रचार था जिससे व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र ओर विश्व को आर्य बनाना था जिसके लिए ऋषिवर ने सम्पूर्ण जीवन आहुत कर दिया जिस वेद प्रचार के लिए अनेक तपस्वी त्यागी महापुरुषा ने अपना तन–मन और धन लगा दिया जो वेद ज्ञान आर्यसमाज की पहिचान और जान थी वह वेद प्रचार घट रहा है। वेद प्रचार की जगह स्कूल औषधालय बारात घर दुकान मैरिज ब्यूरो आदि ले रहे है। इन चीजो से आर्यसमाज की साख सात्विकता धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही हे ? स्वार्थ विवाद पदलोलुपता व अहकार बढ रहा है। मूल छूट रहा है। जहा समाज मन्दिरो मे वेदाध्ययन शालाए होनी चाहिए थी ? वहा स्कूल और दुकाने हैं। उसे स्वार्थी और अधार्मिक लोगा ने अपनी आमदनी का साधन बना लिया। अब दान चन्दा धर्मप्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पाप बोध अपराध बोध तथा आत्मग्लानि नही हो रही है ? यह हमारे नेतिक मूल्यो के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन बातो से सगठन व सस्थाओ मे गिरावट आती है। विवाद बढते हैं। प्रभाव घटता है। जनता दूर हटती जाती है। नये जुडते नही पुराने चले जाते हैं। जितना आर्यसमाज का प्रभाव अनुयायी तथा प्रचार प्रसार होना चाहिए था। उतना हो नहीं रहा है। रचनात्मक सुधारात्मक क्रियात्मक योजनाबद्ध कार्यक्रम हम जनता को नहीं दे पा रहे है ? हम जनता से जुड नही पा रहे हैं। केवल जलसा लगर फोटो और माला वेद प्रचार नहीं है ? आज हम इन्हीं बातो को उपलब्धि मान रहे हैं ?

यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से वेद प्रचार चाहते हैं तो उसके लिए मिल बैठकर गम्भीरता और ईमानदारी से सोचना होगा। पहले वेद प्रचार अपने से आरम्भ करना होगा ? अपने कार्यकर्त्ताओ सन्यासियो विद्वानो उपदेशको धमाचार्यो आदि को सम्भालना होगा। उन्हे प्रोत्साहन सहयोग महत्व तथा वरीयता देनी होगी। अपनी पत्र–पत्रिकाआ को वेद प्रचार के रास्ते पर लाना होगा। जो आज मूल उद्देश्य से दूर ही रही हे। स्थानीय समाज मन्दिरो व सस्थाआ को वेदप्रचार पर बल देने की जरूरत है। समाजो मे उपस्थिति क्यो नहीं हो रही है ? लोग हमसे क्यों नहीं जुड रहे हैं ? क्यों का जवाब ईमानदारी से खोजना होगा ? दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनीआर्यसमाज है। उसके सबसे बडे हाल मे सात आदमी बैठे हों ? कहा है वेदप्रचार ? जबकि वेदज्ञान से बढकर और कोई चिन्तन नहीं है। अखबार दूरदर्शन मीडिया आदि में हम कहा हैं ? राजनीति में हम पिछलग्गू बने घूम रहे हैं।

वेदप्रचार सप्ताह आता है परम्परा निर्वाह हो जाती है ? अपनी पीड़ा छोड जाता है। वेद प्रचार की दिशा और दशा पर सम्पूर्ण आर्यजगत को तत्काल गम्भीरता तथा पीडा से सोचने और करने की जरूरत है। वेद प्रचार आर्यसमाज की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्व नहीं होता है। समय की माग है – वेदप्रचार की सोचो ? इसे आगे बढाओ इसे जनता तक ले जाओ। जनता को जीवन और जगत की सही दिशा नहीं मिल पा रही है। भटक रही है। आपकी ओर देख रही है। ✿✿✿

उठो जागो

वेद ज्ञान के दीप जलाकर आलोकित फिर जनमन कर दो।
दयानन्द के वीर सिपाही जगती मे नवजीवन भर दो।।
पाखण्डो की त्याग अधेरी सब माया अज्ञान की
सब मिलकर गुणगान करो अब वेदो के भगवान की
सत्य ब्रह्म जगदीश्वर है वह उसके ही अब दर्शन कर लो।
दयानन्द के वीर सिपाही, जगती मे नव जीवन भर दो।।
एक ब्रह्म के नाम अनेको एक सृष्टि का निर्माता
उसकी सब सतान है हम सब वही पिता और है माता
कण कण मे है वह अविनाशी उसका ही अभ्यर्चन कर लो
दयानन्द के वीर सिपाही जगती में नव जीवन भर दो।।
सब मानव का धर्म एक है सदाचार का अनुपालन
वेद धर्म का उद्बोधक है वेद ज्ञान का सचालन
सत्य धर्म को धारण करके वेदामृत का पान कर लो
दयानन्द के वीर सिपाही जगती मे नव जीवन भर दो
यज्ञ करो, नित ध्यान लगाओ योग साधना अपनाओ
भारत के हे आर्य वीर तुम आर्य धर्म को फैलाओ
ऋषिवर के स्वर्णिम सपना का नव भारत निर्माण कर दो।।
दयानन्द के वीर सिपाही जगती में नव जीवन भर दो।
भाषा सस्कृति और राष्ट्र का सवर्द्धन करने वाली
वेदाऽमृत है शाश्वत सुख के जीवन को देने वाली
ज्ञान और विज्ञान प्रकाशक वेदो का सम्मान कर लो
दयानन्द के वीर सिपाही जगती में नव जीवन भर दो।।
वेदज्ञान ही पावन पथ है सत्य सुखद मगलकारी
जीवन के सताप मिटालो भारत के सब नरनारी
वेद पथिक के साथ चलो अब दयानन्द का नाम कर लो।।
दयानन्द के वीर सिपाही जगती में नव जीवन भर दो।

— शिव करण दुबे 'वेदराही',
वेदोपदेशक एव कवि (ओज), शक्तिनगर सोनभद्र (उ०प्र०)

कच्छ के भूकम्प में असहाय तथा माता पिता विहीन हुए बच्चों के प्रकल्प 'जीवन प्रभात' का कार्य प्रगति पर

कच्छ मे २६ जनवरी २००१ को आये विनाशकारी भूकम्प ने जहा गाँव के गाव ध्वस्त कर दिये वहीं सैंकड़ो परिवारों के सुहाग छीन लिये सैंकड़ो बच्चों को माता पिता विहीन कर दिया।

आर्यसमाज की हमेशा प्राकृतिक आपदा मे सहत व बचाव कार्य करने की परम्परा रही है। भूकम्प आते ही भारत भर से आर्यसमाज के महानुभाव राहतसामग्री व आर्यवीर दलों के साथ कच्छ में पधारे। करीब ११२ ट्रक भारत भर से राहत सामग्री लेकर आये जो पूरे कच्छ क्षेत्र मे बटी। विदेशो से भी ३२ कन्टेनर राहत सामग्री आर्यसमाज को भेजी गयी। करीब १००० शवो को मलबे से आर्यवीरो ने निकाला और उनका घी व हवन सामग्री से मत्र पाठ सहित अतिम सस्कार किया। इस कारण भूकम्प के बाद महामारी फ़ैलने नहीं पायी। सार्वदेशिक सभा ने तुरन्त भूकम्प मे माता पिता विहीन बालको को आश्रय देने हेतु एक योजना बनायी व उसे कार्यान्वित करने के लिए आर्यसमाज गाधीधाम (कच्छ) को माध्यम बनाया तथा सार्वदेशिक सभा ने तत्कालीन केन्द्रीय कानून व जहाजरानी मन्त्री श्री अरुण जेटली से मिलकर इस योजना की जानकारी दी व लाखा की कीमत की करीब १०००० वर्ग गज जमीन १ रुपये टोकन पर प्राप्त की। इस बीच भूकम्प के तुरन्त बाद २६/१/२००१ को 'जीवन प्रभात' नाम से भूकम्प से असहाय हुए माता पिता विहीन बालको को विधवा हुई बहनो को आश्रय देना शुरु कर दिया गया। यदि इन बच्चो को आर्यसमाज न सभालता तो विदेशी सस्थाए इन्हे अपनाकर धर्म परिवर्तन करने को तैयार बैठी थी।

इस प्रकल्प के अतर्गत आज ३ वर्ष से ११ वर्ष उम्र के ७१ बालक बालिकाए व ८ विधवा बहने आश्रय ले रही हैं। 'जीवन प्रभात प्रकल्प में बालको की कम से कम १८ वर्ष तक एव बालिकाओ की विवाह कराने तक नि शुल्क जिम्मेदारी आर्यसमाज उठावेगा। बिना जातिगत भैदभाव के सभी बच्चे एक साथ वैदिक परम्परा मे ढले गये है। आर्यसमाज गाधीधाम के पदाधिकारी उन्हे अपने बच्चो जैसा ही रख रहे हैं – वे भूकम्प मे तो अनाथ हो गये थे लेकिन आर्यसमाज ने उन्हे सनाथ कर दिया है। बालको पर अपने बच्चो से भी ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। कुछ बच्चे तो अपनी कक्षा म प्रथम श्रेणी प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए हैं। बच्चो के लिए गौशाला बनायी गयी है और बच्चो को शुद्ध गौदुग्ध प्राप्त हो रहा है। उन्हे दयनीय अवस्था मे न दिखाकर उन्हे स्वामिमानी दिखाकर लोगों का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है।

इन बच्चो को अस्थायी रुप से आर्यसमाज मे रखा गया है। इन बच्चो हेतु स्थायी भवन सरकार द्वारा प्राप्त दो एकड जमीन में ३ करोड रुपये के खर्च से बन रहा है जिस हेतु करीब एक करोड रुपया सार्वदेशिक सभा सहित देश विदेश के दाताओ से प्राप्त हुआ है। जीवन प्रभात भवन एक आधुनिक सकुल होगा जिसके ६ विभाग होंगे। एक विभाग बालिका सदन दूसरा विभाग बाल सदन होगा तीसरा विभाग विधवा सदन चौथा विभाग रसोई व बाल कक्षा सदन पाचवा विभाग सत्सग भवन एव छठा विभाग प्रशासनिक भवन होगा। सभी विभाग तिमजिले होगे एव करीब ६५ हजार फुट निर्माण होगा। इस समय तल मजिल का कार्य चल रहा है। पूरा सकुल १८ माह मे तैयार हो जावेगा एव उसमे २५० बच्चे व ५० विधवा बहने आश्रय ले पावेगी। ६ मे से किसी भी १ विभाग की हर मजिल पर ११ लाख रुपये देकर दानदाता अपने स्वजन के नाम पर मजिल बुक करा सकते हैं। १ घर का १ लाख रुपये दान दे सकते हैं। इससे भी कम रकम के दान स्वीकार्य होगे जिनका शिलालेख लगाया जावेगा। १ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से भी कई लोग दान दे रहे हैं।

निर्माणाधीन 'जीवन प्रभात' भवन का दृश्य तथा वर्तमान मे आर्यसमाज गाधीधाम के भवन मे सचालित अनाथ व विधवा आश्रम मे बच्चो को प्रेरणाए देती बहने।

इन बच्चो के माता पिता नहीं रहे। हमे उनका बचपन लौटाना है इनके माता पिता हम सब है। कृपया अपनी आहुति अवश्य आर्यसमाज गाधीधाम महर्षि दयानन्द मार्ग गाधीधाम कच्छ पिन – ३७०२०१ के पते पर चैक/ड्राफ्ट या मनीआर्डर से भेजने की कृपा करे।

किसी आर्यसमाज के पास भूकम्प हेतु दान मिजवाना बाकी रहा हो वो भी हमे भिजवा दे। आर्यसमाज गाधीधाम भारत की आदर्श व नवयुवको द्वारा सचालित आधुनिक आर्यसमाज है। कभी व्यक्तिगत रूप से भी मुलाकात लेने की प्रार्थना है।

– वाचोनिधि आर्य महामन्त्री
आर्यसमाज गाधीधाम

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र सभी ग्राहकों को नियमित भेजा जा रहा है डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण कुछ सदस्यो को कभी कभी पत्र न मिलने की शिकायत भी आती है। ऐसे सदस्य अपने पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करने की कृपा करे तथा अपना वार्षिक शुल्क ५०/– रुपये अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ५००/ रुपये शीघ्र मिजवा कर सभा का सहयोग करे।

नीचे दी गयी ग्राहक सख्या वाले सदस्यो पर तीन वर्ष का वार्षिक शुल्क शेष है कृपया अपनी ग्राहक सख्या देख कर १५०/– रुपये का मनिआर्डर शीघ्र (१५ दिन के अन्दर) भिजवाने की कृपा करे। और मनिआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता (ग्राहक सख्या सहित) अवश्य लिखे।

ग्राहक सख्या १८३८८, १८३८६, १८४६२, १८४६५, १८४६६, १८५००, १८५२६, १८५३२, १८५३६, १८५३६, १८५४२, १८५४६, १८५४८, १८५४६, १८५५१, १८५५४, १८५५६, १८५५८, १८५६३, १८५६६, १८५६७ १८५७१, १८५७२, १८५७४, १८५७८, १८५७६, १८५८१, १८५८२, १८५८४, १८५८६, १८५८८, १८५६१, १८५६२, १८५६३, १८५६८, १८६०१, १८६०५, १८६०७, १८६१०, १८६१३, १८६१६, १८६१६, १८६२०, १८६२१, १८६२२, १८६२३, १८६२५, १८६२६, १८६३०, १८६३१, १८६३३, १८६३५, १८६३६, १८६३८, १८६३६, १८६४०, १८६४१, १८६४२, १८६४३, १८६४४, १८६७७, १८६५२, १८६५३, १८६५४, १८६५५, १८६५६, १८६५८, १८६५६, १८६६०, १८६६१, १८६६३, १८६६५, १८६६६, १८६६८, १८६६६,१८६७०, १८६७१, १८६७२, १८६७४, १८६७५, १८६७६, १८६७७, १८६७६, १८६८१, १८६८२, १८६८४, १८६८५, १८६८७, १८६८६, १८६६१, १८६६३, १८६६४, १८६६५, १८६६६, १८६६६, १८७००, १८७०२, १८७०३, १८७०६, १८७०७, १८७०८, १८७०६, १८७११, १८७१२, १८७१४, १८७१५, १८७१६, १८७१६, १८७२०, १८७२२ १८७२४, १८७२५, १८७२६, १८७२८, १८७३२, १८७३४, १८७३८। (क्रमश)

पृष्ठ ३ का शेष भाग

प्रेम और श्रद्धा के प्रतीक श्री ओंकारनाथ आर्य

सकुचित या विशाल स्वार्थी या परमार्थी लौकिक या पारलौकिक हो सकते हैं परन्तु मोह से सर्वथा मुक्त सम्भवत कोई प्राणी न होगा।

जो लोग प्रस्थान करने वाली आत्मा के जितना अधिक निकट होते है उन्हे उतना अधिक दुखी होना ही पडता है। इस श्रृखला मे पत्नी बच्चो आदि का नम्बर तो प्रथम रहेगा ही परन्तु क्रियाकर्म सस्कार की मूल भावना को अपनाते हुए उन्हें केवल दुख की अभिव्यक्ति – विलाप आदि से दुख के निवारण का मार्ग न अपनाकर उस पवित्र आत्मा के पूरे चरित्र के सम्पूर्ण समुदाय को क्रियाकर्म में शामिल करना चाहिए जिससे उनके कर्मो को क्रियान्वित किया जा सके। यह तभी सम्भव है जब पारिवारिक सदस्य अपनी मार्गदर्शक आत्मा की तरह ही सामाजिक कार्यो मे उन्हीं सस्कारो के साथ शामिल रहे।

वे सच्चे मायने मे प्रेम और श्रद्धा के प्रतीक बनकर समाज मे अपने दायित्वो को निभाते रहे। परिवार के प्रति भी उन्होने न तो कभी कोई लापरवाही दिखाई और न कभी दमनकारी पिता बनने का प्रयास किया।

उनके दोनो पुत्रो बेटी तथा दामाद से मिलकर यह एहसास हुआ कि वे पिता की अपेक्षा एक मित्र की तरह व्यवहार करते हैं। क्या करो क्या न करो का सीधा उपदेश देने का प्रयास उन्होने बहुत कम किया। जब भी प्रेरणा देनी होती थी तो वे स्वय अपना कर्म उपस्थित करते थे और फिर भी अन्तिम निर्णय बच्चो का अधिकार होता था। आर्यसमाज मे मेरे उदबोधन के बाद शायद इसीलिए उनकी बेटी (बहन सविता) ने मुझे कहा कि इन विचारो से उन्हे बहुत बल मिला है नहीं तो वे माता जी से अधिक दुखी महसूस कर रही थी। भाई सुधीर ने भी आश्वस्त किया कि वे पिता के दायित्वो को उन्हीं के रूप मे निभाने का प्रयास करेगे।

श्री ओकार नाथ जी के बाद उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य को उस दिन आर्यसमाज मे यज्ञ मे भाग लेते हुए तथा उसके उपरान्त सत्सग और स्मृति सभा की कार्यवाही मे भाग लेते देख कर मन को सन्तोष हुआ कि श्री ओकार नाथ आर्य जी का परिवार उन्हीं के अनुरूप इस पवित्र सगठन से जुडा रहेगा। माता जी ने इस स्मृति सभा की शुरुआत मे दो भजन प्रस्तुत करके यह साबित कर दिया कि वैदिक धर्म का बौद्धिक बल उनमें विद्यमान है। उनके बाद उनकी दोहत्री श्रीमती अदिति साहनी तथा दामाद श्री ललित मोहन साहनी ने भी भजन कविता श्री ओकार नाथ जी की स्मृति में प्रस्तुत किए।

परम पिता परमात्मा के समक्ष प्रार्थना है कि श्री ओकार नाथ आर्य जी की पवित्र आत्मा को श्रेष्ठ लक्ष्य तक पहुचाए और उनके सस्कारो की स्थापना अधिकाधिक महानुभावो मे प्रसाद रूप मे बटे।

आर्यसमाज रैमा (मधुबनी बिहार) का

वार्षिक उत्सव एवं वैचारिक क्रान्ति शिविर

आर्यसमाज रैमा का वार्षिक उत्सव एव "कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर दिनाक १३ १४ १५ से १६ जून २००२ तक मनाया गया। कन्याओ को शिक्षित बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए माता प्रेमलता खन्ना शास्त्री जी ने कहा कि जब तक कन्याओ को पढाया नहीं जाएगा तब तक देश का कल्याण समव नहीं है। माता प्रेमलता ने आगे कहा कि देविया अज्ञान रूपी अधकार मे सोयी हुई हैं उन्हे पुन जगाने की जरूरत है। इसी विचार को पुष्ट करते हुए माता सरला आर्या जी ने कहा कि

देविया देश की जाग जाए अगर
युग स्वय ही बदलता चला जाएगा।
पत्निया सादगी साध पाए अगर
पति स्वय ही बदलता चला जाएगा।।

इस गीत के माध्यम से सभी आत्म विभोर हो गए। जब प्रथम दिन का कार्यक्रम आरम्भ हआ तो यहा महिलाओ की उपस्थिति बहुत ही कम थी परन्तु माता प्रेमलता जी के क्रान्तिकारी एव जादुई प्रवचनो ने पूरे ग्राम मे जैसे एक लहर सी पैदा कर दी और उनका प्रवचन चर्चा का विषय बन गया।

एक दिन माता प्रेमलता ने अपने उपदेश मे श्राद्ध के विषय मे कहा कि हमे जीवित माता पिता की सेवा करनी चाहिए। माता जी ने सभी को यज्ञ म बैठाकर यज्ञोपवीत पहनाया और यज्ञ वेदी पर ही बोलते हुए भूत प्रेत और इससे जुडे अन्य पाखण्डो का खण्डन किया जिससे वहा के स्थानीय लोग बहुत प्रभावित हुए। माता प्रेमलता जी ने भूमि पर पडे एक जख्मी सैनिक और उसे अपने परिवार में भेजे जाने वाली मार्मिक कविता सुनाई तो सभी उपस्थित स्त्री पुरुष की आखों मे आसू बहने लगे। इसके तुरन्त बाद माता सरला आर्या ने स्थिति के अनुसार गीत गाया कि

"जिसके लिए इस देश की माँए गोद में लाल खिलाए समय वो आ गया है "

इस कार्यक्रम मे शिवनारायण आर्य एव सतोष कुमार शास्त्री ने अपने भजनोपदेश द्वारा चार चाद लगा दिए।

रैमा ग्राम के इस उत्सव मे आचार्य चन्द्रदेव जी ने भी पधारना था सबकी दृष्टि उन्हीं की ओर लगी हुई थी। जैसे ही उनका पदार्पण हुआ पण्डाल मे जय जयकार हो उठी। एक उच्च कोटि के विद्वान हैं जनता के उत्साह को देखकर उन्होने अपने प्रवचन शैली मे परिवर्तन कर सार गर्भित कहानियो के माध्यम से सरल शब्दो मे अपने सबोधन किए। इससे जनता पर बहुत ही अनुकूल प्रभाव पडा।

१६ जून को पास ही एक ग्राम मे माता प्रेमलता जी की अध्यक्षता मे आचार्य चन्द्रदव जी के कर कमलो द्वारा सुरेश यज्ञदत्त बालबाडी" एव "चन्द्रसीमा सिलाई केन्द्र का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर हजारो की सख्या की उपस्थिति देखकर आचार्य जी चकित रह गए और कहा कि आर्यसमाज का मुख्य कार्य यही होना चाहिए कि गरीब जनता की अधिक से अधिक सेवा की जाए।

उदघाटन के इस कार्यक्रम के बाद जब माता प्रेमलता यहा से चलने लगीं तो वहा की महिलाओ ने प्यार जताते हुए माता जी को इस प्रकार घेर लिया कि माताजी का वहा से निकलना कठिन हो गया।

इसी ग्राम के एक युवा निवासी अरुण कुमार जी माता जी से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने वहा की एक बालबाडी के पूरे खर्च को वहन करने की घोषणा कर दी।

इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग योगेन्द्र प्रसाद यादव श्याम देव यादव राजेन्द्र साह भाग्यवान आर्य रामदेव यादव हरिहर यादव उमा भगत जी नन्नू ठाकुर एव समस्त ग्राम वासी थे। मच सचालन का कार्य श्री अरुण कुमार जी ने बडी ही कुशलता से किया।

भारत मे फिर आजइयो, मोहन कृष्ण कन्हैया।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पुण्यमयी ब्रज भूमि निहारो चक्र सुदर्शन कर में धारो।
कसासुर बढ रहे जगत मे इनका वश मिटा जइयो मोहन कृष्ण कन्हैया।।

तुझ को छलिया चोर बतावै राधा के सग ब्याह रचावै।
रुकमणि पति यति योगेश्वर इनको ज्ञान करा जइयो मोहन कृष्ण कन्हैया।।

स्वार्थी जनो ने झण्डा गाडा सौख्य शान्ति बाग उजाडा।
मधुसूदन बगिया को आकर हरा भरा कहरा जइयो मोहन कृष्ण कन्हैया।।

माखन मिसरी यहा न पाओ बिस्कुट खाओ चाय उडाओ।
महाभारत मे बाजी ऐसी बशी मधुर बजा जइयो मोहन कृष्ण कन्हैया।।

दीन सुदाना तेरे द्वारे आय कर स्वागत सव कप्ट मिटाया
पुन स्वरूपानन्द सभी भगतो का कप्ट मिटा ज"यो मोहन कृष्ण कन्हया।।

भारत मे फिर आजइयो मोहन कृष्ण कन्हया।।

आर्यत्व के परिचायक : हमारे पिता श्री ओंकारनाथ आर्य

अखण्ड भारत के प्रसिद्ध आर्य नगर लाहौर के आर्य परिवार मे मरे दादा जी श्री रामरत्न मानकटाला और दादी श्रीमती सुभद्रा देवी क घर में मेरे पिताजी श्री ओंकारनाथ मानकटाला का जन्म दिनाक १४–०३–१६२१ में हुआ था। मेरे दादा जी ने डी०ए०वी० कालेज लाहौर से बी०ए० किया। उस समय महात्मा हसराज जी बी०ए० की कक्षा को स्वय धर्म शिक्षा पढाते थे। मेरे दादाजी का जन्म १८६० मे हुआ था। प्रपितामह परदादाजी श्री धनैयामल जी ने लाहौर मे १८७७ में स्वामी दयानन्द जी का भाषण सुना था। मेरे पिता श्री ओकार नाथ आर्य ने १८ वर्ष की आयु मे ही अपनी पढाई के साथ–साथ कारोबार भी करना आरम्भ कर दिया था। १४ १५ अगस्त १६४७ रात्रि के १२ बजे जब दिल्ली मे यूनियन जैक उतारा जा रहा था और तिरगा झण्डा लहराया जा रहा था उस समय मेरे पिता जी अगली पक्ति मे खडे थे जहा लार्ड और लेडी माउण्ट बेटेन प० जवाहरलाल नेहरू सरदार वल्लभभाई पटेल राज गोपालाचार्य सरदार बलदेव सिह मौलाना आजाद आदि सब मौजूद थे। दिनाक २५ अक्तूबर १६४७ को काश्मीर का युद्ध आरम्भ हो गया उस समय मेरे पिताजी दिल्ली आए और लगभग सारा पजाब देखने के पश्चात मुम्बई आकर हर चीज अनुकूल पाकर मुम्बई को ही अपना स्थाई ठिकाना बना लिया। दिनाक १४–०२–१६४८ को पिताजी ने हमारी माता शिवराजवती जी से दिल्ली मे वैदिक रीति से विवाह किया था। बिना दहेज और बडी सादगी से यह सारा कार्य सम्पन्न हुआ था। विवाह के पश्चात माता जी का जीवन आर्यसमाज से जुड गया। मार्च १६४८ को आर्यसमाज माटुगा के आप पति–पत्नी सदस्य बने। पिता जी श्री ओकारनाथ आर्यसमाज माटुगा के बारह वर्ष तक महामन्त्री के पद को सुशोभित करते रहे बाद मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज के सदस्य बने और मृत्यु पर्यन्त तक इसी समाज के माध्यम से सेवा कार्य करते रहे। आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा विद्वानो को सम्मानित करने का जो कार्यक्रम आयोजित किया जाता है वह आपकी और कैप्टन देवरत्न आर्य के मस्तिष्क की ही उपज थी। और ये सम्मान करने का कार्यक्रम सारे विश्व में सराहा गया और आज तक निरन्तर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टकारा गुजरात मे स्थापित महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के आप मैनेजिग ट्रस्टी रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान पद पर सेवारत रहे। हमारी माता श्रीमती शिवराजवती पिताजी के साथ आर्यसमाज की सभी गतिविधियो मे कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ रहती थीं। सन १६३८ से मृत्युपर्यन्त तक आर्यसमाज का कहीं भी उत्सव हो देश–विदेश मे दोनो साथ ही जाया करते थे। सन १६७३ मे मारिशस सन १६७६ मे नैरोबी सन १६८० मे लन्दन इसके अलावा ब्रडफोर्ड हरगरजफील्ड अमेरिका न्यूजर्सी केनेडा एव टोरन्टो मे हुए उत्सवो पर आप सम्मिलित हुए थे। देश में भी सन १६७५ में आर्यसमाज शताब्दी दिल्ली हैदराबाद नैनीताल श्रीनगर काश्मीर मसूरी राजकोट टकारा पोरबन्दर बडौदा सूरत सोलापुर अजमेर अलवर मद्रास कलकत्ता मुम्बई आदि महानगरो मे भजन सगीत द्वारा आर्यसमाज और वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार माताजी पिताजी करते रहे।

पिताजी जहा देश विदेश मे वैदिक प्रचार प्रसार मे लगे रहे वहीं उन्होने बचपन से ही हमे वैदिक मान्यताओं की घुटटी पिला दी थी। हमारे घर में यज्ञशाला है और परिवार के सभी सदस्य यज्ञ में भाग लेते हें ओर प्रतिदिन वेद और सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय होता है। यह सौभाग्य ईश्वर की कृपा से हमे प्राप्त है कि ऐसे आर्य परिवार मे हमारा जन्म हुआ जहा प्रतिदिन यज्ञ होता है। ऐसे आदर्श माता पिता की सन्तान होना हमारे लिए गर्व का विषय है।

ईश्वर हमे शक्ति दे ताकि हम अपने माता–पिता के आदर्शो का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करते हुए आत्म कल्याण रूपी दीपक अपने व्यवहारिक जीवन मे प्रज्ज्वलित रख सके।

आज्ञा परायण पुत्र – सुधीर सुनील

पृष्ठ १ का शेष भाग

मारीशस आर्य सम्मेलन के सम्बन्ध मे परिवर्तित सूचना

4 जिन महानुभावों के साथ परिवार के बच्चे जाना चाहें उन्हें 2 वर्ष से कम आयु के बच्चो के लिए 4000/ रुपये केवल हवाई जहाज के टिकट के देने होंगे। 2 वर्ष से बडे और 12 वर्ष तक की आयु के बच्चो के लिए 13500/ रुपये हवाई जहाज टिकट तथा 6000 / रुपये आवास भोजन तथा अन्य खर्च के निमित्त कुल 19 500/ रुपये देने होंगे।

5 पासपोर्ट साईज के तीन फोटो भी भिजवादें।

6 जाने वाले महानुभावो का पासपोर्ट 31 मार्च 2003 से अधिक की अवधि तक वैध होना चाहिए।

7 मारीशस जाने के इच्छुक महानुभाव तत्काल टेलिफोन से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को अपना नाम पता लिखवाए जिस पर उन्हें वीजा फार्म भेजा जा सके जिसे वे हस्ताक्षर करके 5 सितम्बर से पूर्व सभा कार्यालय में भेज सकें।

8 एक बार धनराशि जमा होने के बाद यात्री अपना कार्यक्रम रद्द करेंगे तो उनकी राशि में से केवल 1500/ रुपये काटकर बाकी राशि उन्हें वापस लौटा दी जाएगी।

9 विशेष जानकारी के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में टेलिफोन न0 3274771 3260985 पर अथवा श्री विजय सचदेवा को उनके दूरभाष 3626128 9811171166 पर सम्पर्क करें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 18-8-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस 10 U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No. U (C) 93/2002 in NDPSo on 15/16-8-2002

ऋषि ऋण चुकाने का शुभ अवसर

श्रावणी उपाकर्म तथा वेदप्रचार सप्ताह के पावन पर्व पर

चारों वेदों के पूर्ण सैट पर

भारी छूट

श्रावणी उपाकर्म तथा वेदप्रचार सप्ताह के पावन अवसर पर अधिक से अधिक वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार हो। महर्षि दयानन्द का घर घर गुणगान हो आर्य सस्कारो से बच्चा-बच्चा अभिभूत होकर आर्य बने। इस विशाल गुरुतर दायित्व को निभाने के लिए सैकडो वार जन्म लेना पडे तो भी कम है। तो फिर इस जन्म को व्यर्थ क्यो गवाया जाए। इस सूक्ष्म और मूल भावना के साथ **सार्वदेशिक सभा** ने निम्न **विशेष छूट** वेदो के सैट पर देना घोषित किया है।

छूट ३१ अगस्त, २००२ तक उपलब्ध

वास्तविक मूल्य १६५० /- रुपये

विशेष छूट के बाद केवल १२००/- रुपये में उपलब्ध

तथा

साथ में निःशुल्क हिन्दी तथा संस्कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक-एक प्रति दी जाएगी।

समय रहते इस विशष छूट का स्वय लाभ उठाए तथा अन्य व्यक्तियो को भी प्रेरित करे।

प्राप्ति स्थान :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

– वेदव्रत शर्मा, *सभामन्त्री*

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

प्रतिष्ठा में

सार्वदेशिक [illegible]

घर-घर में देश-भक्ति और [illegible] उद्देश्य की पूर्ति हेतु

"आजादी व[illegible]वाने" कैसेट

केवल १५ रुपये में प्राप्त करें

इस कैसेट का निर्माण उ०प्र० के पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा तथा उनके ज्येष्ठ भ्राता पदमश्री भारत भूषण योगाचार्य जी के विशेष प्रयासो से करवाया गया है। इस कैसेट मे देश भक्ति और समाज सुधार की भावनाओ का समावेश किया गया है। स्वामी दयानन्द घर घर अलख जगाय गयो रे' गीत ने तो स्वामी जी के देशभक्त अनुयायिया ने गुणगान करके श्रोताओं का राम रोम पुलकित करने का सफल प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त रामप्रसाद बिस्मिल एव अशफाक उल्ला द्वारा फासी से पूर्व लिखे गये गीतो का भी इसमे समावेश किया गया है।

इस कैसेट का प्रकाशित मूल्य ३०/– रुपये है। परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश भक्ति की भावनाओ और ऋषि के गुणगान का अधिकाधिक प्रचार करने के उद्देश्य से इस कैसेट के मूल्य मे अपना आर्थिक सहयोग प्रस्तुत किया है।

यह कैसेट केवल १५ रुपये मे सार्वदेशिक सभा कार्यालय में उपलब्ध होगी। पैकिंग तथा डाक व्यय अलग होगा।

आर्य जनता से यह अपेक्षा की जाती है कि अधिक से अधिक सख्या मे इन कैसेटो को प्राप्त कर के घर घर पहुचाए ओर ऋषि भक्ति का परिचय दे।

– **विमल वधावन**, *वरिष्ठ उप-प्रधान*

'सत्यार्थप्रकाश' स्थूलाक्षर संस्करण के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

मैसर्स 'भगवती लेज़र प्रिंट्स' का अनोखा व सराहनीय प्रयास!

उपर्युक्त सम्स्थान के अधिपति श्री विजयकुमारजी झा ने सत्यार्थप्रकाश के इस विशिष्ट व ऐतिहासिक संस्करण को दिसम्बर से पहले प्रत्येक आर्यसमाज और प्रत्येक आर्यगृह में पहुँचाने का बीड़ा उठाकर जो अनोखा एवं सराहनीय प्रयास किया है, इसके लिए वे सम्मान के पात्र हैं। इस कार्य में वे विगत छह महिनों से निरन्तर कार्यरत हैं और अपनी आकर्षक योजनाओं द्वारा आर्य पत्र-पत्रिका तथा डॉक सूचनाओं के माध्यम से प्रत्येक आर्यजनों के सम्पर्क में हैं। महर्षि दयानन्द के मार्ग पर चलनेवाले इस व्यक्ति को ईश्वर और अधिक शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करे, हम सभी मिलकर यही प्रार्थना करते हैं।

—: निवेदक :—

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	**स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**	**कै० देवरल आर्य**
समर्पण शोध सस्थान, साहिबाबाद	*मन्त्री, वेद-मन्दिर, हरिद्वार*	*प्रधान, सा०आ०प्र० सभा*
प्रो० धर्मवीर	**रामनाथ सहगल**	**स्वामी ओमानन्द सरस्वती**
मन्त्री, परोपकारिणी सभा	*प्रबन्धक, डी०ए०वी० समिति*	*आचार्य, गुरुकुल झज्जर*
आचार्य हरिदेव	**मनोहर विद्यालंकार**	**विजयकुमार झा**
आचार्य, गुरुकुल गौतमनगर	*सदस्य, गुरुकुल काँगड़ी*	*सूत्रधार, सत्-साहित्य-प्रकाशन*

'सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व आपने वेद से भी ऊँचा कर दिया है" (ये वचन आर्यजगत् के वरिष्ठ सन्यासी स्वामी श्री दीक्षानन्दजी के है।) इसपर मेरा उत्तर था–"स्वामीजी! वेद तो वेद ही है, परन्तु आर्यसमाज का मूलमन्त्र तो सत्यार्थप्रकाश मे ही है। सम्पूर्ण आर्यजगत् सत्यार्थप्रकाश के आदर्शों पर ही आधारित है।" तो स्वामीजी हँस पडे, बोले–"बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!"

भद्रजनो! जैसाकि आप सभी को ज्ञात है कि यह जो सत्यार्थप्रकाश के (कथित) ऐतिहासिक संस्करण की बात हो रही है, वह महत्वपूर्ण (यह भी कथित) इसलिए है कि हम आर्यजन अपनी मूलता को (शायद) भूलते जा रहे हैं। विभिन्न संस्थानों ने सत्याथप्रकाश छापा हुआ है, परन्तु यह सत्यार्थप्रकाश विशुद्ध है या फिर ऐसा कह सकते हैं कि जो हस्तलिखित सत्यार्थप्रकाश में है वही यह भी है। ऐसा इसलिए किया गया है कि मूल को नहीं भूलना चाहिए। टीका-टिप्पणियोंवाली सत्यार्थप्रकाश(शो) का अपना अलग ही स्थान है, परन्तु ऐतिहासिक तो ऐतिहासिक ही होता है, जो जन्म-जन्म तक पीछा नहीं छोडनेवाली होती हैं। कुछ आर्यमहानुभावों के अनुरोध पर, जो अभी तक ग्रन्थ सुरक्षित नहीं करवा पाये हैं, उनके लिए साहित्य-पुरस्कार-योजना की तिथि २५ दिनों के लिए अग्रसारित की जाती है, अत: इसके आधार पर वे अपनी प्रति अब १० सितम्बर तक सुरक्षित करवा सकते हैं। ***अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करवाने के लिए निम्नलिखित मुख्य कार्यालयों से सम्पर्क कर सकते हैं—***

१. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११० ००६, दूरभाष : ०११-३९७७२१६, ३९१४९४५

२. भगवती लेज़र प्रिंट्स, ४६/५, कम्यूनीटि सेंटर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-६५, दूरभाष : ०११-६९३३९४९, ६४१४३५९

अत्यन्त आवश्यक सूचना!!

आर्यसमाज के संन्यासी, वानप्रस्थी, आचार्य, पुरोहित, शास्त्री, कर्मठ और ईमानदार व्यक्ति जो अपने महित समाज के कल्याणार्थ कुछ करना चाहते हों, उनका "मैसर्स भगवती लेज़र प्रिंट्स" आह्वान करता है। आर्यसमाज की [illegible] प्रधानता का आग्रह। इच्छुक व्यक्ति इस विषय में आवश्यक जानकारी [illegible] पत्र या दूरभाष पर [illegible] कर सकते हैं। पत्र व्यवहार करनेवाले सज्जन कृपया अपना पूरा पता साफ अक्षरों में लिखें।

भगवती लेज़र प्रिंट्स [illegible]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १०८८ [illegible] दरियागंज [illegible] दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन [illegible], ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereisgod.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक १७ | २५ अगस्त से ३१ अगस्त २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ | सम्वत २०५६ | भा० कृ० २

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रवादी आर्यनेताओं का सम्मान समारोह सम्पन्न

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए धन और श्रम की आहुतियां देने वाले आगे आएं

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज मन्दिर राजोरी गार्डन मे एक विशेष समारोह के अन्तर्गत चार प्रमुख राष्ट्रवादी महानुभावो को उनकी राष्ट्रसेवा [illegible] लिए सम्मानित किया गया। [illegible] श्रीमती [illegible] रानी सम्मान राशि को आर्यसमाज राजोरी गार्डन की गतिविधियो के लिए प्रदान कर दिया।

श्री विमल वधावन ने सम्मानित महानुभावो का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि आपके कार्यो से समूची आर्यजनता ही नहीं अपितु सारा देश परिचित है। इस सम्मान समारोह का आयोजन जहा आपके कार्यो को सार्वजनिक रूप से सम्मान प्रदान करना है वही समाज के अन्य नागरिको को भी इन शुभ कार्यों की प्रेरणा देना है।

उन्होने दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से चल रहे कार्यों की सूचना देते हुए कहा कि धर्मान्तरण की गतिविधिया बहुत तेजी से बढ रही है और धर्मान्तरण विरोधी कार्यों मे जनता दिन [illegible] सहयोग [illegible] रही। [illegible] म [illegible] की गतिविधियो [illegible]

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सैठी ५०,०००/ रुपये की राशि एव श्रीफल राष्ट्रवादी नेता श्री बलराज मधोक सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री के० नरेन्द्र समाज सेविका माता प्रेमलता शास्त्री एव समाज सेवी श्रीमती राकेश रानी को प्रदान करते हुए।

श्री बलराज मधोक तथा श्री के० नरेन्द्र को सम्मानित करते हुए उन्हे ५०-५० हजार रुपये की नकद राशि तथा श्रीफल प्रदान करते हुए उन्हे इस मार्ग पर आगे बढते रहने की प्रेरणा दी गई। यह सम्मान राशि सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सेठी की ओर से प्रदान की गई। श्री मुशीराम सेठी जी ने इस अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता की और सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने किया। इस अवसर पर सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने भी सम्मानित महानुभावो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

माता प्रेमलता शास्त्री ने यह सम्मान राशि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के कार्यो के निमित्त देने की घोषणा की। दूसरी तरफ श्री के० नरेन्द्र ने इस एक आवश्यक सूचना और अपील आर्यजनो मे वितरित की जो अलग से इसी अक मे प्रकाशित की जा रही है।

श्रीमती राकेश रानी ने कहा कि नारी जाति का आज जहा कही भी सम्मान होता है वह वास्तव मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्मान है क्योकि उन्ही के कारण नारिया कुछ भी कर पाने मे सक्षम हो पाई है। महर्षि दयानन्द ने तो बडी विकट परिस्थितियो मे उन बडी बडी ताकतो को चुनोती दी थी जिन्होने इस देश को मुस्लिमस्थान और इसाईस्थान बनाने की योजनाए तैयार कर रखी थी। उन्होने भारतीयता और राष्ट्रीयता की रक्षा का आह्वान किया और इसके लिए उन्होने हमारी अमूल्य धरोहर वेद की ओर ध्यान आकृष्ट किया

शेष भाग पृष्ठ २ पर

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए आवश्यक सूचना एवं अपील

क्या आप जानते है कि ईसाई मिशनरी करोडो अरबो रुपया अपने विदेशी दान दाताओ सरकारो और अन्य ईसाई सगठनो से भारत मे प्राप्त करके उसका भारत के गरीब पिछडे और विशेष रूप से दलितो और हरिजनो को ईसाई बनाने के लिए प्रयोग करते है।

इसके लिए भारत मे ईसाइयो का सगठन २४ बडे क्षेत्रो मे बटा हुआ है। जिन्हे आर्च डायसिस कहते है। इन आर्च डायसिसो मे लगभग १४६ बिशप कार्य कर रहे है। एक डायसिस के अधीन लगभग पचास हजार ईसाई आते है। इसके अतिरिक्त लगभग २००० से अधिक की सख्या मे विभिन्न प्रकार के सस्थान ईसाइयो द्वारा भारत मे चलाए जा रहे है।

लोभ लालच और दबाव के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के हथकडे अपनाकर धर्मान्तरण की गतिविधिया चलाई जाती है। धर्मान्तरण के साथ साथ जहा सख्या पर्याप्त हो जाती है वहा राजनीतिक नियन्त्रण के भी प्रयास प्रारम्भ होते है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष भाग

आवश्यक सूचना एवं अपील

इस विशाल व्यवस्था वाले धमान्तरण के प्रयासो का विराध करन क लिए और वेदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हमार पास साधनो का नितान्त अभाव रहता हे। हालाकि हमारे प्रयास इन धर्मान्तरण विराधी कार्यो का लेकर निरन्तर चरवति चरेवेति के सिद्धान्त पर अग्रसर ह परन्तु लक्ष्य स अभी बहुत दूर हे।

सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अभिन्न अग अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान म आदिवासी तथा उत्तर पूर्वी राज्यो मे विशष आश्रमो की स्थापना की गई हे जिनके माध्यम से वहा के क्षत्रो से आदिवासी युवक युवतियो को प्रतिवष दिल्ली मे वचारिक क्रान्ति शिविर मे भाग लेन क लिए आमन्त्रित किया जाता हे। यह शिविर प्रतिवर्ष मई मास मे आयसमाज मन्दिर रानी बाग दिल्ली मे आयोजित किए जात हे। इन शिविरा म जो शिविरार्थी अत्यधिक उत्सुकता वाल प्रतीत हात ह उन्ह वापस अपने क्षत्रो म जाकर बालवाडिया खोलने के लिए नियुक्त किया जाता ह। एक बालवाडी खालन वाल को ५००/ रुपये प्रतिमाह सहायता दी जाती ह। इस बालवाडी क माध्यम स उस क्षत्र म वदिक धर्म प्रचार के कार्य नियमित चलाए जाते हैं। यह बालवाडिया अपने क्षेत्रों में धर्मान्तरण की गतिविधियो को पाव नही जमाने देती हैं। यह बालवाडिया एक प्रकार से वैदिक धर्मरक्षा की चौकी का काम करती है। इस वर्ष बालवाडियों की सख्या म वृद्धि की गई है।

आपसे यह अपेक्षा की जाती हे कि कम स कम एक बालवाडी का खर्च ५००/– रुपये प्रतिमाह की दर से (छ हजार रुपय प्रतिवर्ष) अनुदान राशि अपनी तरफ से भिजवाकर कृतार्थ करे।

आपको विदित होगा कि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का ही एक अग हे। अनुदान राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के नाम से दी जा सकती हे। इस प्रकार के सहयोग के लिए अन्य आर्य महानुभावो को भी विशेष रूप से प्रेरित करे ओर यदि आवश्यक हा तो हमसे सम्पर्क करवा दे। आशा हे इस काय म आपका तथा आपकी आर्यसमाज का सहयाग अवश्य प्राप्त हागा।

निवेदक
विमल वधावन
वरिष्ठ उप प्रधान सार्वदेशिक सभा

पृष्ठ १ का शेष भाग

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए ....

ईश्वर और सत्य उनक साथ था इसलिए अपार जन समूह न उनका साथ दिया।

श्रीमती राकेश रानी ने कहा कि कवल नारो से काम नही चलेगा बल्कि किसी भी उद्दश्य की पूर्ति के लिए हर व्यक्ति को यत्न करना पडता ह। हम सबके घरो म वद न कवल उपस्थित हा बल्कि उनका स्वाध्याय भी हो। रोजमरा के जीवन म हम विदशी सभ्यता क नाम पर अपनी मूल परम्पराआ को महत्व द

माता प्रेमलता शास्त्री ने कहा कि इसाई धर्मान्तरण जैसा पाप करते ह हम उसकी राकथाम का प्रयास करते ह। दूसरी तरफ उनके पास धन की बाहुल्यता ह ओर हम अभी तक धन की अपीले ही जारी कर रहे ह। यह बात सत्य हे कि हम ईसाइयो की तरह धन अनाज या नौकरियो जैसे लालच दुनिया को नही दे सकत हमारे कार्य तो वैचारिक क्रान्ति का काय है। उन्होने कहा कि पूर्वी प्रान्तो मे हम ३० वर्षो से काय कर रह है। परन्तु धनाभाव के कारण हम अपने लक्ष्य का नही प्राप्त कर पाए।

माता प्रेमलता शास्त्री न कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी कहा करते थे भाडे के टटटुआ से प्रचार नहीं होगा। इसक लिए वानप्रस्थी लागो को त्यागी तपस्वी बनकर समाज सेवा के कार्यो मे आग आना होगा। उन्होने कहा कि आसाम स १०० स अधिक बच्चो का आगमन पूर्वी क्षेत्रो मे वदिक धर्म का भाग्योदय माना जा सकता है। परन्तु भाग्य क इस वृक्ष पर फल तभी लगेगे जब हर व्यक्ति धन और श्रम का सहयोग करेगा नही तो भाग्य का यह वृक्ष भी कही सूख न जाए।

प्रो० बलराज मधोक ने इस सम्मान का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह सम्मान राशि हमारे हिन्दू विश्व न्यास के कार्यो मे लगेगी जो सारे विश्व मे हिन्दुओ की रक्षार्थ कार्य करता है।

उन्होने १६४७ के विभाजन को कृत्रिम विभाजन कहते हुए कहा कि यह विभाजन किसी मायने मे भी सफल नही रहा। भविष्य की घटनाओ की सम्भावना की ओर सकत करते हुए उन्होने कहा कि आने वाला समय ईसाइयत और इस्लाम के टकराव का भारी समय होगा।

उन्होने भारत के राजनेताओ को चतावनी दत हुए कहा कि वे भारतीय मुसलमानो का तुष्टिकरण छोडकर उनका राष्ट्रीयकरण करन पर विचार कर।

श्री क० नरेन्द्र ने कहा कि पथ निरपेक्षता इस देश मे असफल रही है उन्होने अहिसा के नारे का मजाक उडाते हुए कहा कि इससे राष्ट्रीय समस्याओ का समाधान नहीं होगा।

उन्होने आर्यसमाजियो को समाज की बुराइया दूर करने के लिए प्रेरित किया।

श्री विमल वधावन ने इस अवसर पर परमपिता से प्रार्थना करत हुए कहा कि राष्ट्रभक्ति और वेदिक धर्म की समस्त प्रेरणाए हमारे मन बुद्धि और आत्मा का सस्कार सदा सदा बनी रहे। हमारे पूर्वजो ने अपना सर्वस्व बलिदान करके जिन परम्पराआ को सुरक्षित रूप से हम तक पहुचाया हम उन्हे उसी रूप मे बिना किसी मिलावट के आने वाली पीढियो के लिए सुरक्षित रखे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा स्थापित सिद्धान्तो का अधिक से अधिक क्रियान्वयन सुनिश्चित करना हमारा नित्य कर्म बने। इस राष्ट्र की भौतिक उन्नति के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए हम सदा स्वाध्याय शील रहे।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य न समस्त महानुभावो का धन्यवाद किया।

समारोह के अध्यक्ष श्री मुशीराम सेठी ने कहा कि इन राष्ट्रवादी महान आत्माओ का सम्मान करके हमे आत्म सन्तोष होता है क्योकि जो लोग अपना सर्वस्व आहुत करके समाज सेवा करते हे उनका सम्मान अवश्य हाना चाहिए।

वयोवृद्ध राजनेता श्री भैरोसिंह शेखावत भारत के १२ वें उप-राष्ट्रपति

वयोवृद्ध राजस्थानी नता तथा पूर्व मुख्यमन्त्री श्री भैरो सिह शेखावत भारत के १२वे उपराष्ट्रपति निर्वाचित घोषित हुए। श्री भैरो सिह शेखावत से भैंट करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल उनसे राजस्थान भवन मे मिला। इस शिष्टमण्डल मे ससद सदस्य श्री रासासिह रावत के अतिरिक्त सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा आर्यतपस्वी श्री सुखदेव श्री इन्द्रदेव श्री राजेन्द्र दुगा आदि उपस्थित थे।

श्री भैरो सिह शेखावत ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री पद पर रहते हुए नवलखा महल उदयपुर की वह भूमि सत्यार्थ प्रकाश न्यास को आवटित की थी जहा बैठकर महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

श्री भैरो सिह शेखावत को ओ३म का एक भव्य चित्र वृहद सत्यार्थ प्रकाश तथा देशभक्ति के कुछ कैसेट प्रदान किए गए।

वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ १२वे उपराष्ट्रपति के पद पर कार्य प्रारम्भ करने हेतु उन्हे कल्याणकारी शुभकामनाए प्रदान की गई।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी कर्नाटक के राज्यपाल नियुक्त

भारत के राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने राज्यसभा सदस्य राष्ट्रवादी विद्वान ओर ईमानदारी क लिए सुप्रसिद्ध श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी को कर्नाटक राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया ह। श्री चतुर्वेदी आर्यसमाज क सिद्धान्तो ओर मन्तव्यो म गहरी रुचि लेत ह। पुस्तको क प्रेमी श्री चतुर्वेदी सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन के साथ पहल भी सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे स्वय पधार कर कई सैद्धान्तिक चर्चाए करते रहे हैं। प्रसिद्ध वदिक लेखक डॉ० भवानी लाल भारतीय के भी आप बडे प्रशसक हैं।

श्री चतुर्वेदी के राज्यपाल बनने की सूचना मिलते ही श्री वधावन ने उन्हे टेलीफोन पर बधाई दी ओर तत्पश्चात सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल उन्हे शुभकामनाए देने उनक निवास पर पहुचा। इस शिष्ट मण्डल मे श्री रासासिह रावत श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्री इन्द्रदेव श्री राजेन्द्र दुर्गा आदि शामिल थे।

श्री चतुर्वेदी से सम्बन्धित एक विशेष लेख डा० भवानीलाल भारतीय जी ने लिखा है जिसे सार्वदेशिक के अगले अक म प्रकाशित किया जाएगा।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट

राष्ट्र सेवा के लिए त्याग, तपस्या का मार्ग न छोड़ें

आर्यसमाज की छवि को सुधारने के आह्वान के साथ महासम्मेलन सम्पन्न

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अन्तिम दिन प्रात यज्ञ के उपरान्त अपने जीवन को योगमय बनाने के विचारो से ओत प्रोत करते हुए पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने अपने प्रवचन प्रस्तुत किए। प्रवचन के उपरान्त महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने ज्ञान रुपी गगा का उदगम इस समारोह मे स्थापित करने के लिए स्वामी जी का धन्यवाद किया ओर अन्तिम सत्र की अध्यक्षता के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी के नाम का प्रस्ताव किया। वैदिक जयघोष के साथ उपस्थित जन समुदाय ने इसका समर्थन किया। अध्यक्ष जी का स्वागत सम्पन्न कराने के बाद श्री विमल वधावन ने सत्र विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि राष्ट्र सेवा सत्र का उद्देश्य राष्ट्रभक्ति की परम्पराओ को स्थापित करना है। उन्होने राष्ट्रवासियो की सेवा को भी सच्ची राष्ट्रसवा ओर राष्ट्र भक्ति बताया। उन्होन कहा कि आयसमाज की स्थापना काल आज तक आर्यसमाज ने जितने भी सवा कार्य किए ह वही हमारा इतिहास हमारे भविष्य की प्ररणा हागा।

श्री वधावन न कहा कि दश पर मर मिटने वाल शहीदो के कछ स्वप्न थे उनकी आत्माओ व कुछ सन्देश थ उन्हे एक भजन क रूप म श्रीमती उज्ज्वला वर्मा प्रस्तुत करगी। इस भजन का नाम है शहीदो की पाती अर्थात शहीदो क पत्र। उन शहीदो म से कुछ शहीदो क परिजन डाकिए क रूप म उस सन्देश को लेकर हमारे सामन उपस्थित है। श्री रामप्रसाद बिस्मिल जी क घनिष्ठ मित्र अश्फाक उल्ला खा क पोत श्री अश्फाक का करतल ध्वनि और जयघोष क साथ स्वागत कराया गया। श्री अश्फाक न खडे हाकर हाथ जोडते हुए आर्यजनता का अभिनन्दन स्वीकार किया।

श्री विमल वधावन न कहा कि एक और शहीद का परिवार हमारे बीच मे है जिसका नाम जबान पर आने से पूर्व ही मन दहलना प्रारम्भ हा जाता है। जिस युवक के विवाह का रिश्ता पक्का करने की बात चल रही हा वह युवक उन्हे ठुकराय आर्यसमाज क उन सेवको की शरण म चला जाए जो राष्ट्र सेवा का सकल्प लेकर बठ हा उसे राष्ट्र की गगा मे कूदन के समान ही माना जाएगा। उन्होने कहा की शहीद भगत सिह को श्रद्धाजलि कभी पूर्ण नहीं हो सकती। उनक छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह जी का परिचय करवात हुए आर्यजनता ने पुन वैदिक जयघाष के साथ उनका अभिनन्दन किया जिन्होने दाना हाथ उठाकर आर्शीवाद देते हुए उस अभिनन्दन को स्वीकार किया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि इन परिवारो के साथ सम्बन्ध स्थापित होने पर ऐसा लगने लगा है जैसे कई जन्मो का टूटा हुआ सम्पर्क सूत्र स्थापित हो गया हो। इनके परिवार मे जाकर अमर शहीद भगत सिह जी के बाल्यकाल की तस्वीरे देखकर मन मे एक विचित्र सी हलचल पेदा होगी। शहीद भगत सिह जी के भतीजे श्री किरण जीत सिह का भी इसी प्रकार अभिनन्दन सम्पन्न कराया गया।

उन्होने कहा कि शहीदो के यही परिजन आज आपके बीच वो सन्दश प्रस्तुत करेगे जिसे सर्वप्रथम एक भजन के रूप मे श्रीमती उज्ज्वला वर्मा प्रस्तुत कर रही हैं। इसके उपरान्त श्रीमती उज्ज्वला वर्मा ने शहीदो की पाती भजन प्रस्तुत किया। जिसके बोल इस प्रकार हैं –

लिखी लहू से गई शहीदों ने भिजवाई है
देशवासियों नाम तुम्हारे पाती आई है।

इस भव्य भजन क उपरान्त विगत चारों दिनो मे प्रातकाल यज्ञ क बाद प्रवचन करने वाले मूर्धन्य सन्यासियो का अभिनन्दन किया गया।

सर्वप्रथम आर्य तपस्वी श्री सुखदव जी का परिचय प्रस्तुत करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि देखन म बेशक आर्य तपस्वी जी बापू आशाराम लगते हो परन्तु इनम और बापू आशाराम म मालिक अन्तर ह। य वो बापू आशाराम नहीं है जिनके प्रवचन की शर्त बडी स बडी राशि तय की जाती ह।

आर्य तपस्वी जी ने यह महान सकल्प लिया ह कि प्रवचन आदि कार्यो क लिए व किसी प्रकार की दक्षिणा स्वीकार नही करेगे। यहा तक कि वे कही भी किसी भी माध्यम स प्रवचन के लिए जान हतु मार्ग व्यय तक भी नहीं लगे। आप न केवल अच्छे प्रवचनकर्ता हे बल्कि एक कर्मठ कार्यकता भी हे। इस महासम्मेलन के अयाजन म भी कदम कदम पर उनका सहयाग एक साधारण कार्यकर्ता क रूप मे बडी सरलता स प्राप्त होता रहा। राष्ट्र सवा के इस कार्य मे उनका सहयोग भी एक प्रकार की आहुति और एक महान प्रेरणा माना जाएगा।

यह परिचय प्राप्त होने पर उपस्थित आर्य जनता ने उनके पते की माग की ता महासम्मलन क सयाजक श्री विमल वधावन ने कहा कि उनका पता सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित किया जाएगा। उनका पता इस प्रकार ह –

आचार्य आर्य तपस्वी सुखदेव जी
डी-११/११८, सैक्टर-८, रोहिणी दिल्ली-८५
दूरभाष ७६४२६१७ ७६४७७२२

इस परिचय के बाद आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी का स्वागत और अभिनन्दन सम्पन्न किया गया।

तीसरे दिन के प्रवचन करने के लिए स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी (चम्बा) का परिचय देते हुए श्री वधावन ने कहा कि निर्मल और मधुर शैली मे प्रवचन करने के लिए प्रसिद्ध स्वामी सुमेधानन्द जी समूचे आर्यजगत म बहुत बडे बडे यज्ञ करने के लिए प्रसिद्ध है। कभी एक एक करोड गायत्री मन्त्रो के यज्ञ तो कभी तीन तीन वर्ष के यज्ञ सम्पन्न करान का सौभाग्य प्राप्त हे स्वामी सुमेधानन्द को। आप स्वामी सर्वानन्द जी के परम शिष्य है और दयानन्द मठी दीनानगर की तरह आपने हिमाचल प्रदेश के चम्बा क्षेत्र मे भी दयानन्द मठ की स्थापना की है। स्वामी सुमेधानन्द जी का माल्यार्पण तथा स्मृति चिह्न भेट करके स्वागत तथा अभिनन्दन किया गया।

अन्तिम दिन का प्रवचन करने के लिए स्वामी सत्यपति जी का स्वागत और अभिनन्दन किया गया जिन्होने गुजरात के रोजड क्षेत्र मे दर्शनयोग महाविद्यालय की स्थापना करके आध्यात्मिकता के प्रचार प्रसार का मार्ग तैयार किया है।

इसके उपरान्त शहीद परिवारो के सदस्यो सर्वश्री कुलतार सिह अश्फाक उल्ला खा तथा किरणजीत सिह का पुष्पमालाओ द्वारा अपार स्वागत और अभिनन्दन कराया गया। मच पर उपस्थित लगभग प्रत्येक महानुभाव न इनका स्वागत किया। सन्यासियो द्वारा इन्हे आशीर्वाद दिए गए हर व्यक्ति इनके स्वागत और अभिनन्दन क लिए लालायित था। स्वागत समारोह सम्पन्न हान क बाद श्री अश्फाक उल्ला खा का उदबोधन क लिए आमन्त्रित किया गया।

श्री अश्फाक न कहा कि गुरुकुल की स्थापना स आर्यसमाज आदर्शो और धार्मिक सिद्धान्तो का ही आग बढान का माग नहीं मिला अपितु मुख्यत इससे देश का आजाद करान क लिए सहायता मिली। हरिद्वार मे ही नहीं अपितु दश क सभी भागा मे स्वामी जी का रास्ता धर्म की स्थापना के साथ साथ लोगो की भावनाओ को मातृभूमि क साथ जाडता गया। इस मार्ग मे धर्म का मतलब जगल म बेठकर तपस्या करना नही था अपितु समाज म रहकर समाज का उत्थान किया जाए यही आयसमाज का विधान ओर सिद्धान्त था।

उन्हाने कहा कि देश की आजादी का दीवाना और फासी को चूमने वाला राम प्रसाद बिस्मिल जब हवन करने बैठता था ता अश्फाक उल्ला खा भी उनके साथ हात थ। आज जब म हवन करन बैठता हू तो मेर अन्दर भी वही धारा प्रवाहित हाने लगती ह।

शाहजहापुर आर्यसमाज के खिलाफ एक बार कुछ तत्वा न भ्रान्ति का प्रचार करके आक्रमण की याजना बनाई तो उस वक्त अश्फाक उल्ला खा अपनी रिवाल्वर लेकर द्वार पर डटे रहे और राम प्रसाद बिस्मिल को आयसमाज का कार्यक्रम चलाए रखने के लिए प्रेरित किया। उस समय अश्फाक ने कहा था कि मेरी लाश पर पैर रखकर ही आर्यसमाज का कुछ भी बिगाडने की हिम्मत आप जुटा पाओगे।

उसी अश्फाक उल्ला खा क पोते न आज कहा कि आयसमाज ने भारत भूमि पर शान्ति की स्थापना क उद्देश्य से एक नई सोच दिखाई थी जा रामप्रसाद बिस्मिल और अश्फाक उल्ला खा की दोस्ती की सोच थी।

कल वधावन जी न बताया कि अश्फाक जी अपने दोस्त को राम कहकर पुकारा करते थ जिसे देखकर लोग अलग अलग मायने लगाते और उन्हे गुमराह करने का प्रयास करते। परन्तु उनका विचार एक था इसलिए कोई भद पेदा न हो सका। उन्होन कहा मुझे इस कार्यक्रम म आज ही आना था परन्तु मै श्री वधावन जी का आदेश मना नहीं कर सका ओर एक दिन पूर्व ही यहा आ गया। जो मेरे लिए सौभाग्य का विषय बना।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देशभक्ति की धारा का मजबूत किया। हमे भी ऐसा प्रयास करना चाहिए कि आगे आने वाली पीढिया उसी मार्ग की अनुगामी बने।

प्रजातन्त्र म विद्वानो का हाना आवश्यक है क्योकि एक विद्वान की सोच और सो मूर्खो की राय म बडा फर्क होता है। रामप्रसाद और अश्फाक के उस सयुक्त प्रयास को यदि मै आगे बढाने म सक्षम हो सका तो यह मेरा सौभाग्य हागा ओर इसी आशीर्वाद की मे आप सब आर्यजना से कामना करता हू।

उन्हो अश्फाक उल्ला खा की अन्तिम पंक्तिया दाहराते हुए कहा

कुछ आरजू नहीं है है आरजू तो ये है।
कोई रख दे जरा सी खाके वतन कफन में।।

इस उदबोधन के उपरान्त सरदार कुलतार सिह जी का अपना उदबोधन प्रस्तुत करन के लिए आमन्त्रित करते हुए श्री विमल वधावन न कहा कि इन्होन भगत सिह को छाट भाई की निगाह से दखा ह और उन घटनाओ को सदा मन के साथ जाडकर रखा है। हमारा सारा आर्य कुटुम्ब इस बात क लिए कृतसकल्पित है कि किसी भी अमर शहीद की इच्छा का पूरा करन के लिए हम किसी भी बलिदान को बडा नही समझग इन भावनाओ ओर आशीर्वाद की कामना करते हुए उन्होन सरदार कुलतार सिह जी स निवेदन किया कि वे बैठकर ही अपना उदबाधन प्रस्तुत करे।

सरदार कुलतार सिह जी न आर्य परिवार क बीच मे आन पर प्रसन्नता व्यक्त करत हुए कहा कि ऋषि दयानन्द कवल एक ऋषि ही नही थ बल्कि सच्चे अर्थो म एक क्रान्तिकारी थ जिन्होने गाव गाव शहर शहर पैदल जा जाकर अपने सिद्धान्तो का प्रचार किया। व जहा जहा भी गए वहा पर आयसमाज स्थापित हा जाती थी। उसका असर हमार दादा सरदार अर्जुन सिह जी पर भी पडा जिन्हाने स्वामी जी क दर्शन जालन्धर म किए। उन्होने स्वामी जी क विचारो का ग्रहण किया अपने जीवन म इन विचारा का उतारा और परिवार म भी। सरदार भगत सिह उन्ही विचारो की दन है। हमार दादा जी ने छूआछूत का घार विराध किया और स्वामी जी क विचारो को क्रियान्वित किया। उनक तीनो बेटे सरदार किशन सिह अजीत सिह और स्व स्वर्ण सिंह ने भी उन्ही क द्वारा स्थापित परम्परा का आगे बढाया।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष भाग

राष्ट्र सेवा के लिए त्याग, तपस्या का मार्ग न छोड़ें

हमारे पिता सरदार किशन सिह जी ता लाला लाजपत राय के साथ भूकम्प पीडित क्षत्रो मे जा जाकर अनाथो को लाते थ ओर फिर अनाथालय खोलकर उनका पालन पाषण किया जाता था। सरदार किशन सिह जी ता आर्यसमाज के प्रचारक ही बन गए।

किशन सिह प्रचारक के रूप मे हस्ताक्षरित एक पुस्तक तो मै स्वय टकारा देकर आया था। हमारे चाचा सरदार अजीत सिह तो लाला लाजपतराय के साथ जिलावदर होकर कई वर्षों वर्मा मे रहे। सरदार स्वर्ण सिह जी १६१० मे लाहौर मे शहीद हुए। सरदार कुलतार सिह ने बताया कि उनके पिता सरदार किशन सिह पर ४२ मुकदमे चलाए गए सारी उम्र उन्होने कभी जेल मे तो कभी बाहर बिता दी। हम भी पिताजी के साथ आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे जाया करते थे। वे सारी उम्र स्वामी जी द्वारा स्थापित परम्पराओ के प्रचार म लगे रहे।

भगत सिह जी का जब यज्ञोपवीत सस्कार हुआ ता हमारी दादी जी ने कहा कि केश नहीं कटवाए जाएगे। परिणामत केश कटवाए बिना ही यज्ञोपवीत सस्कार सम्पन्न हुआ। इसी सस्कार समारोह मे हमारे दादा सरदार अर्जुन सिह ने यह घोषणा की थी कि मै अपने पोतो को भी देश सेवा के लिए अर्पण करता हू।

भगत सिह जी के लिए विवाह के रिश्ते की बात जब चल रही थी तो उन्होने पिताजी को एक पत्र लिखकर पूज्य दादाजी की प्रतिज्ञा स्मरण कराते हुए कहा कि उन्होने मुझे देश सेवा के लिए अर्पित किया था और मै स्वय भी भौतिकवादी और दुनियावी सुखा को नही चाहता। इन्ही सस्कारो का परिणाम था कि उन्हाने भी ऋषि दयानन्द की तरह जगह जगह घूमकर अपना जीवन क्रान्तिकारी कार्यों मे बिता दिया। हर प्रान्त मे घूम घूम कर वे अपने क्रान्तिकारी मित्रो को ढूढा करते थे।

भगतसिह केवल अग्रेजो से ही आजादी नही चहाते थे बल्कि वे इस बात के लिए भी पूरी तैयारी करते थे कि व्यवस्था मे सुधार किस प्रकार किया जाए।

उन्होने बताया कि भगत सिह जी की कार्य करने की शैली थी कि साहसी कार्य करो और अदालतो के माध्यम से बयान दो। उन्होने जहा कहीं भी बम फेके तो वो निर्दोष व्यक्तियो की हत्या के लिए नहीं थे उनका मानना था कि हम तो सब की जान बचाने आए है। बम फैक कर तो वे हुकूमत को सुनाना चाहते थे। उनका यह भी मानना था कि केवल जेल जाकर हमारा कर्तव्य पूरा नही हो जाता। जेल मे कैदियो के साथ अच्छे सलूक की माग को लेकर उन्होने भूख हडताल प्रारम्भ कर दी और देखते ही देखते सारे देश की जेलो मे भूख हडताले प्रारम्भ हो गई। यह एक नया कोहराम मच गया। भगत सिह की हडताल १२० दिन चली और अग्रेज सरकार को झुकना पडा।

जब उन पर मुकदमा चला तो उन्होने कहा कि हम अपनी सफाई मे कोई गवाह पेश नही करेगे। अदालतो मे आते जाते वे जोर जोर से नारे लगाते थे और अदालतो मे काफी देर तक गीत गाते रहते थे। सरफराशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है। उन्होने अदालत को भी प्रचार का माध्यम बना रखा था। उनके मुकदमे मे ९०० के करीब गवाह थे जज जल्दी मे फेसला करना चाहते थे। उन्होने गीत गान पर पाबन्दी भी लगाने का प्रयास किया। इन्होन अदालतो का बहिष्कार किया। न वकील पेश हुए न खुद पेश हुए न गवाहिया दी गई।

पिताजी ने अदालत मे एक दरखास्त लगा दी कि हम सफाई के गवाह पेश करेगे। इस पर भगत सिह जी न पिताजी का एक कडा विरोध पत्र लिखा ओर कहा कि हमारा देशभक्त परिवार है। आज यदि कोई ओर ऐसा करता तो मे यह कहता कि तुमने मेरी पीठ मे छुरा घोपा है। मे अपने आदर्शो पर जीवन कुर्बान करना चाहता हू। परन्तु आपने यह बहुत बडी कमजोरी दिखाई है।

जेल मे से एक अकाली सरदार सन्त रिहा होने वाले थे तो भगत सिह ने उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की। उन्होने पहले तो यह कहत हुए इन्कार कर दिया कि इसने बाल कटवा लिए है मैं इससे नही मिलूगा। परन्तु पुन आग्रह करने पर वे भगत सिह से मिलने के लिए तैयार हो गए। भगत सिह ने उनसे कहा कि गुरुओ ने देश की रक्षा के लिए सिर कटाने का निर्देश दिया था। अभी तो मैंने बाल कटवाए हैं मैं तो देश की रक्षा के लिए शरीर के टुकडे टुकडे भी करवाने के लिए तैयार हू।

वास्तव मे अगेजो ने फासी के बाद भगत सिह के टुकडे टुकडे करके या तो बहा दिए या जला दिए। फासी से पूर्व उन्हे किसी ने गुटका देते हुए कहा कि इसे पढकर भगवान से प्रार्थना कर लो। परन्तु उन्होने कहा मै नास्तिक कहलाना पसन्द करूगा परन्तु अपनी जिदगी के लिए प्रार्थना नहीं करूगा। जेल से ही उन्होने बटुकृष्ण दत्त को एक पत्र लिखा और कहा कि यह निश्चित हा चुका हे कि मुझे फासी का हुकुम सुनाया जाएगा। मैं बेसब्री से उस घडी का इन्तजार कर रहा हू कि कब मुझे देश पर कुर्बान होने का अवसर मिले। उन्हाने यह भी लिखा कि सभी क्रान्तिकारी भाई अपने आदर्शों पर कायम रहे क्योकि देश धर्म के लिए कोई भी कुर्बानी बडी नहीं होती। यह सब विचार ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो पर ही आधारित थे।

सरदार कुलतार सिह जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिस शिक्षा पद्धति की स्थापना की और उनके अतिरिक्त अन्य शिक्षण सस्थाओ ने ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो को आगे बढाया। इसी कारण जेल जाने वालो मे लगभग ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे।

उन्होने कहा कि हमारा देश अब त्याग तपस्या का मार्ग छोड चुका प्रतीत होता है। यह आजादी बडी मुश्किल से मिली थी इसे न बचाया गया तो देश रसातल मे चला जाएगा। धन के लालच की भी हद होती है। आज देश पर फिर खतरे हैं। सीमाओ पर खतरा है। ऐसी परिस्थितयो मे विदेशी ताकते अन्दर भी तनाव और झगडे उत्पन्न कर देती हैं। देश के अन्दर रामप्रसाद ओर अश्फाक फिर से एक होकर रहे। अश्फाक उल्ला को भी गुमराह किया गया कि अग्रेज चले गए तो यहा हिन्दुओ का राज होगा परन्तु अश्फाक ने कहा कि अग्रेज से अच्छा होगा हिन्दू राज। उन्होने कहा कि मैं तो सदा भगत सिह जी के रास्ते पर चलता रहा। उनका सदेश था कि आजादी को बनाए रखो।

सरदार कुलतार सिह जी के उदबोधन के उपरान्त पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवस लाल जी का स्वागत किया गया। उन्होने इस आयोजन के लिए आयोजका का धन्यवाद करते हुए उन्हे अपना अशीर्वाद प्रदान किया।

चारो दिन यज्ञ मे वेदपाठ करने वाल गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय क ब्रह्मचारियो तथा चोटीपुरा कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो को सम्मानित किया गया।

इसके उपरान्त सभी सत्रा क सयोजको का भी स्वागत ओर अभिनन्दन किया गया।

इस गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के विशाल आयोजन पर सभा की ओर से सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने जो घोषणा पत्र तेयार किया था उसे पढकर सुनान के लिए सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी को आमन्त्रित किया गया। यह घोषणा पत्र पूर्व मे प्रकाशित हो चुका है।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मेलन मे सहयोग देने वाले समस्त महानुभावो को अलग अलग स्थानो पर विशेष समारोह आयोजित करके सम्मानित किया जाएगा।

यह रिपोर्ट प्रकाशित होने तक दिल्ली और हरिद्वार मे दो विशेष समारोह आयोजित करके इस महासम्मेलन के समस्त सहयोगी महानुभावो का सम्मानित किया गया है।

अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करने के लिए कै० देवरत्न आर्य जी को आमन्त्रित किया गया। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा की ओर स हमने कई प्रकार की योजनाए तैयार करने का सकल्प लिया है। जिसका उल्लेख प्रथम दिन के उदघाटन भाषण म भी किया गया था। (यह उदघाटन भाषण भी पूर्व मे प्रकाशित हो चुका है)।

उन्होने कहा कि इन महासम्मेलना के आयोजन से आर्यसमाज की शक्ति का परिचय होता है। विगत वर्ष मुम्बई म सफल सम्मेलन करके हमने एक नया इतिहास बनाया था। मेरे मन मे यह सशय था कि शायद यह सम्मेलन सफल न हो पाए। परन्तु सयोजक श्री विमल वधावन की मेहनत तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के साथ साथ दिल्ली पजाब और अन्य प्रान्तो के आर्य महानुभावो के सहयोग से आपकी विशाल उपस्थिति ने इस सम्मेलन को भरपूर सफलता प्रदान की है।

कल जब श्रीमती सुषमा स्वराज उदबोधन दे रही थीं तो उस समय लगभग ७० से ८० हजार की सख्या मे उपस्थिति थी। इस महासम्मेलन मे शायद कुछ कमिया भी रही होगी। आगे अक्टूबर २००४ मे हम इससे भी बडा सम्मेलन करने का प्रयास करेगे। कै० आर्य ने मॉरिशस मे आर्यसमाज की सुदृढता का परिचय देते हुए कहा कि हमे भारत मे भी ऐसी स्थिति बनानी चाहिए। आज भी आर्यसमाज को एक देशभक्त सस्था माना जाता है।

उन्होने कहा कि हमारे इतिहास को अग्रेजो ने बदलने का प्रयास किया परन्तु अब सार्वदेशिक सभा की ओर से हमने यह सकल्प लिया है कि सही इतिहास की स्थापना के लिए एक आन्दोलन चलाया जाएगा। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा द्वारा किए गए प्रयासो का भी उन्होने उल्लख किया।

उन्होंने कहा कि आर्यवीर दल का मुख्य दायित्व आर्यसमाज की सम्पत्ति की रक्षा होना चाहिए। जहा कही भी इसे खराब करने का प्रयास हो वहा आर्यवीर दल मजबूती से खडा हो। आर्यवीर दल की ही तरह हम सार्वदेशिक आर्य महिला दल की स्थापना करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि कुछ प्रान्तों में लोगो ने अपने स्वार्थों के कारण अलग से प्रान्तीय सभाओ का गठन किया है परन्तु आप प्रान्त क उसी सगठन को मान्यता दे जो सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्यता प्राप्त हो।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति आपनी वृद्धावस्था मे अपनी सम्पत्तिया अपने बच्चो को दे देता हे उसी प्रकार ६० वर्ष की आयु के बाद आपको आर्यसमाजो मे पदाधिकारी नहीं बनना चाहिए। अपितु द्वितीय पक्ति तैयार करते हुए युवको को आगे लाना चाहिए।

उन्होन कहा कि श्री विमल वधावन ने बडी मेहनत से एक ऐसा फार्म तैयार करने का प्रयास किया है जिसे प्रचारित करके हम आपसे सूचनाए एकत्र करेगे और यह सूचनाए आर्यसमाज क विशाल सगठन को एकता के सूत्र मे पिरोने का कार्य करेगी।

उन्होने कहा कि हम कुछ विद्वानो और मूर्धन्य सन्यासियो की एक परामर्श समिति भी बनाएगे और वह समिति हमे जो निर्देश देगी हम उसके अनुरूप ही कार्य करेगे।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि हमे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के कुछ षडयन्त्रो का भी आभास हुआ हे उनकी दृष्टि आर्यसमाज के लिए उचित नहीं है। दूसरी तरफ हमे अपने आर्य भाइयों को इस बात से अवगत कराना चाहिए कि सम्पत्तिया को वेचना हमारा अधिकार नहीं हे। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सब कुछ दान देकर सगठन को मजबूत बनाने का प्रयास किया परन्तु जिन लागा ने स्वामी जी के त्याग को अर्थात गुरुकुल कागडी की जमीन को बेचने का प्रयास किया है वे पापी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी यह विचार कर रहा है कि यदि भूमि विक्रय को रद्द नही किया जाता तो विश्वविद्यालय की मान्यता रद्द कर दी जाएगी। वहीं भूमि बेचने वाले लोग मनगढन्त पत्र जारी कर रहे हैं और गलत बयान के द्वारा यह साबित करने का प्रयास कर रहे है कि इस भूमि का कब्जा दिया जा चुका था और यह बिक्री १० वर्ष पूर्व हो गई थी। बल्कि उन्होने अहसान करते हुए ३० लाख के स्थान पर ७० लाख रुपया दिलवाया है। आज भी यह वास्तविक तथ्य आपके सामने है जो यहा बैठकर भी देख सकते हैं कि भूमि का कब्जा आज भी गुरुकुल के अधीन है एक इच भी कब्जा किसी को नहीं दिया गया। स्वामी जी का कहना था कि असत्य की नींव पर सत्य का भवन खडा नहीं किया जा सकता। सार्वदेशिक सभा की सूचनाए सत्य पर आधारित होती हैं।

उन्होने कहा कि ३१ मार्च से मैंने नौकरी को भी त्याग दिया है और मैं पूरी तनमयता के साथ अब आर्यसमाज की सेवा मे लगूगा। उन्होने आर्यजनता को अह्वान किया कि आइए सकल्प करे कि आर्यसमाज की छवि को बनाए अपने बच्चो को आर्यसमाजी बनाए और सारे समाज को आर्यसमाजी बनाए।

इसके उपरान्त अन्त में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने समस्त सहयोगी महानुभावों तथा सम्मेलन में आगन्तुक महानुभावो का धन्यवाद प्रस्तुत किया।

अन्त मे शान्तिपाठ तथा जय घोष के बाद समूचा सम्मेलन समाप्त घोषित किया गया। ✡

वैदिक शिक्षा ही रोक सकती है भारत के पतन को

महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाञ्जलि कैसे दें ?

– आचार्य आर्यनरेश *वैदिक गवेषक*

यदि सभी न सही कुछ सुपठित आर्यविद्वान व आर्यसभासद सेवानिवृत्त होने पर भी अपने घरों या प्रवचन देने के कार्य को गौण और वानप्रस्थ लेकर (अपने लगभग ३० वर्षों के अनुभव के साथ) मुख्य रूप से स्वामी श्रद्धानन्द की तरह गुरुकुल की आश्रम व्यवस्था व शिक्षण व्यवस्था को सभाल ले तो वास्तव मे दयानन्द के सपनों का आर्यसमाज अर्थात समाज का प्रत्येक वर्ग व व्यक्ति आर्य बन जाए। स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न साकार हो जाये। इससे जहा उनके आश्रम धर्म की रक्षा होगी वहा राष्ट्र हेतु अच्छे सस्कारी सेवाभावी व परोपकारी धर्म व देशभक्ति युक्त शिक्षित नागरिकों के निर्माण से देश की भी रक्षा होगी।

आतकवाद व पाश्चात्यवाद से पीडित भारत को मानवतावाद से युक्त आर्यराज्य बनाने हेतु गुरुकुल प्रणाली ही एक मूल मन्त्र है। राष्ट्र से पाखण्ड देशद्रोह नास्तिकता व चरित्रहीनता मिटाने हेतु महर्षि दयानन्द द्वारा परिभाषित व स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सचालित सर्वोपयोगी विषयों वाली विद्या सभ्यता धर्मात्मा व जितेन्द्रियता आदि से युक्त आश्रम शिक्षा प्रणाली ही एक रामबाण औषध है।

परिवार समाज राष्ट्र व राज तथा उसके सदस्य ठीक वैसे ही होगे जैसी वहा की शिक्षा प्रणाली होगी। 'जैसी शिक्षा वैसा समाज अथवा 'जैसे विद्यार्थी वैसे राज अधिकारी या कर्मचारी। क्योकि आज शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य धन है। अधिकतर नागरिक देश पूजा के स्थान पर पेट पूजा ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते है। अत प्राय पढा लिखा व्यक्ति अधिकारी या नेता अपने ज्ञान का प्रयोग समाज सेवा या देश सेवा मे नहीं करता। वह केवल कामचोरी हेरा फेरी व रिश्वत खोरी से टैक्स बचाकर धन या वोटो को बटोरने मे ही बुद्धि को लगाना जीवन का मुख्य लक्ष्य समझता है क्योकि इसे बाल्यकाल से युवाकाल तक मिली शिक्षा प्रणाली मे कही भी ठोस रूप से विज्ञानवादी सेवाभावी मानवतावादी या राष्ट्रवादी होने के सस्कार नहीं मिले। **घर में बच्चो पर देश धर्म के सस्कार डालने हेतु या तो मात पिता* को समय नहीं मिलता अथवा वे अपने सुख के छिन जाने के भय से ऐसा करना नहीं चाहते और स्कूलों के अधिकतर अध्यापको के पढाने का उद्देश्य धन होता है। अत गुरुकुल ही इस कार्य हेतु बचता है। पर वहा हम जाते नहीं अत वह हिंसा व्यभिचार भ्रष्टाचार स्मगलिग देशद्रोह व धन के लोभ मे आतकवादी तक बनना भी बुरा नहीं समझता। इसी कारण से आज उचित आश्रमयुक्त गुरुकुलीय शिक्षा के अभाव में सम्पूर्ण राष्ट्र मे लोभवाद, कामुकतावाद हिंसावाद आतकवाद व राष्ट्रद्रोहवाद का बाजार गर्म है।**

महर्षि दयानन्द के व स्वामी श्रद्धानन्द के कुछ सच्चे अनुयायियों ने थोडा सा ध्यान देकर व वर्तमान की राष्ट्रीय स्थिति को समझकर यदि (सभी आवश्यक विषयों से युक्त) आश्रम व्यवस्था से युक्त गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का प्रचार व विस्तार किया होता तो आज भारत मे इस तरह से धर्म व राजनीति के नाम पर पाखण्ड भ्रष्टाचार व आतकवाद का बाजार गर्म नही होता। क्योकि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदत्त वैदिक शिक्षाप्रणाली मे शिक्षा उसे ही कहा गया है जिससे पाखण्ड के स्थान पर वास्तविक तार्किकज्ञान राष्ट्रद्रोह अनुशासनहीनता व मनमानी के स्थान पर 'सभ्यता नास्तिकता व तथाकथित धर्म के नाम पर चल रहे महन्तो के मनमाने मन्त्रो जडपूजा बलि व पाखण्ड युक्त पूजापाठ के स्थान पर एक निराकार चेतन शक्तिरुप सर्वव्यापक निराकार व आनन्ददायक भगवान की पूजा हो। उद्दडता नपुसकता कामुकता अश्लीलता व नशो से युक्त कल्चरर प्रोगराम के स्थान पर जितेन्द्रियता सादगी सयम व तेजस्विता का वातावरण हो।

राष्ट्र मे बढते हुए आतकवाद हिसा कामुकता व अनुशासन हीनता तथा घटते हुए देश प्रेम धर्म प्रेम और सयम के वातावरण मे 'गुरुकुलीय सस्कारी शिक्षा ही सब समस्याओ के समाधान का मूलमत्र हो सकती है। इसमे दोम नहीं कि राष्ट्र के भावी नागरिको अर्थात विद्यार्थियो को यदि उनके प्रारम्भिक शिक्षणकाल से ही सच्चे सर्वव्यापक चेतन ईश्वर चरित्र राष्ट्रहित बलिदान व राष्ट्र सस्कृति के प्रति प्रेम के सस्कार दिए जाते तो आज कश्मीर गोहाटी या नागालैण्ड मे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र मे आतकवाद व राष्ट्रद्रोह की आग न भडकती।

मात्र पेटपूजा व सुखसाधनो के स्वार्थपूर्ण स्वछन्द वातावरण मे पल रहे आज के विद्यार्थी व कल के भावी नागरिको ने इस देश को गुलामी से भी बदतर स्थिति मे लाकर खडा कर दिया है। दिशाहीन व सस्कार हीन मैकाले की शिक्षा प्रणाली से और आशा भी क्या की जा सकती थी ? अर्जुन आरुणी शिवा व गुरुभक्त दयानन्द से महापुरुषों के देश में शकुनि जैसे विदेशियों धूर्त दुर्योधनों व गौहत्यारे दानवो का दबदबा निरन्तर बढ रहा है।

आज भारत की आजादी के ५५ वर्ष व वैदिक गुरुकुल प्रणाली के सौ वर्ष पश्चात भी एक छोटे से ग्राम के विद्यालय से लेकर राजधानी दिल्ली के विश्वविद्यालय तक यह पढाया जा रहा है कि (हम) आर्य इस देश के मूल निवासी बाहर से आए हैं। यह हमारा मूल देश ही नही है। हमारे पूर्वज महर्षि याज्ञवल्क्य आदि गाय का मास खाया करते थे। हमारे पूर्वज आर्य लोग हमलावर व लुटेरे थे। जब राष्ट्र के भावी नागरिक ये विद्यार्थी अपनी कच्ची उमर से ही ऐसी भारत विरोधी भ्रान्त शिक्षा को ग्रहण करेगे तब क्या कभी वे भारत के प्रति श्रद्धा व देशभक्ति के भाव रख सकते हैं ? पुन पूर्ण स्वतन्त्र होने व पूर्व की भान्ति सुख व शान्ति स युक्त वैदिक आर्य राज्य होने की कभी कामना भी नहीं की जा सकती है। जब देश के मूल नागरिको को ही पाठयक्रम मे बाहर से आया हुआ बताया जाएगा तो फिर यह निश्चित है कि परदेशी समझकर सदा उन पर अत्याचार होते रहेगे। जब हमारी प्राचीन सास्कृतिक धरोहर 'वैदिककाल' को अग्रेजी कूटनीति के कारण चोरो लुटेरो व असभ्यो का काल पढाया जाता रहेगा तो फिर भारत मे सस्कृतज्ञ शान्त व सुसभ्य समाज व श्रेष्ठ वातावरण की आशा रखना तो मात्र दिवास्वप्न देखना ही होगा।

गत पचास वर्षों मे हमारे आवासीय विद्यालयो (वैदिक गुरुकुलो) की व्यवस्था (भोजन खेल कूद रहन सहन व पठन पाठन का वातावरण इतना अच्छा होना चाहिए था कि प्रत्येक 'सम्प्रदाय का व्यक्ति अनायास ही इस ओर खिचा चला आकर अपने बच्चो का प्रवेश करवाने का इच्छुक होता। इसमे दो मत नहीं कि गुरुकुल कागडी फार्मेसी द्वारा सर्वप्रथम प्रारम्भ किए गए वैदिक च्यवनप्राश रसायन की तरह ही प्रत्येक प्रान्त जाति या पथ के लोग गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा प्रणाली को भी अपने बच्चो व राष्ट्रहित 'रसायन' मानकर अवश्य ही अपना लेते। क्योकि जैसे सच्चे भगवान का सच्चा वैदिक रसायन च्यवनप्राश सबके लिए अमृत है ठीक वैसे ही उसी भगवान का दिया हुआ वैदिक शिक्षाज्ञान।

परन्तु खेद का विषय है कि अर्थवाद जातिवाद प्रान्तवाद व लोकेषणावाद से युक्त अनार्यो की घुसपैठ के कारण महर्षि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास के अनुसार ज्ञान बल व राष्ट्रप्रेम वृद्धि हेतु यह गुरुकुलीय शिक्षा देने का कार्यक्रम इतना ढीला रहा कि हम मे घुसे कुछ अनार्य लोग ईसाईयो मुसलमानो व मत पथाइयो को आर्य बनाने की अपेक्षा विद्यालया मे जड पूजा अण्डे मास व सिगरट सुरा का सेवन करते सस्कृत सिखाने व यज्ञोपवीत रखने के स्थान पर अग्रेजियत मे ढलते टाई बाधकर माता पिता के स्थान पर मम्मी डैडी बोलने वाल ईसाई पैदा करने लगे। दुख से लिखना पडता है कि ईसाईयत को दूर करने की भावना से बने हमारे ही विद्यालयो मे कहीं कहीं तो कुछ मूर्ख प्रबन्धको ने दयानन्द के पेड पर ईसाइयत की कलम लगा दी। हमारे अपने विद्यार्थी व लक्ष्य हीन अध्यापक शिखा यज्ञोपवीत यज्ञ व धोती के प्रेमी न बनाकर मुसलमानो की सलवार व अग्रेजो की टाई के प्रेमी बन गए। समाज मे आर्यसमाज वैदिक शिक्षा प्रणाली के प्रति प्रेम न उत्पन्न होकर (उचित व्यवस्था के अभाव मे) घृणा पैदा हो गई।

इस मे रत्तिभर भी सदेह नहीं कि हमारे उचित व्यवस्था के अभाव मे आजकल के अच्छी व्यवस्था वाले गुरुकुल भी मात्र बिगडे हुए घरो से भागे हुए उदण्ड बच्चो का ही एक कारागार समझे जाते हैं। इसके सत्य सिद्ध होने का यही ठोस प्रमाण है कि आज सम्पूर्ण देश मे कोई भी विशेष ज्ञान व धन से युक्त उच्चवर्गीय आर्य व्यक्ति अपने बच्चे या उसके बच्चो को गुरुकुल मे पढाना अच्छा नहीं समझता। इसीलिए सम्भवत व्यवस्था भी सुधारी नहीं जाती क्योकि उन अच्छे कहलाने वालो के बच्चे वहा नहीं पढते। पर किसी आर्यसमाज या गुरुकुल अथवा आर्यआश्रम की बिगडी हुई व्यवस्था का कारण भी तो स्वय आर्य लोग ही हैं। क्योकि हमारे अधिकारी नेता इन गुरुकलो मे यज्ञ योग ब्रह्मचर्य वैदिक धर्म सस्कृत की जानकारी व सस्कारो के साथ साथ राज्य के सम्भालने वाले अन्य विषयो को नहीं पढाते।

क्रमश:

वेद और मानवतावाद

– प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार जब से यह सृष्टि बनी तभी से वेदो का प्रादुर्भाव चला आता है। वेदान्त दर्शन के पहले अध्याय के प्रथम चार सूत्रो मे कहा गया है कि इस सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय उस ब्रह्म से है और उसी ब्रह्म से वेदरूपी शास्त्र की उत्पत्ति हुई है।

महर्षि दयानन्द ने भी अपनी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे वेदोत्पत्ति प्रकरण मे इस बारे मे विस्तार से विचार किया गया है। वेदो की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ? इस पर प्रकाश डाला है। नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर मे लिखा है कि वेदो का स्थान ससार के प्राचीनतम साहित्य मे बहुत ऊचा है। भारतीय आर्य लोग इन्हे अपौरुषेय और ईश्वरकृत मानते हैं। वे ऋषि उन मन्त्रो के द्रष्टा हैं। प्राय सभी सम्प्रदायो के लोग वेदो का परम प्रामाण्य मानते हैं। स्मृतियो और पुराणो आदि मे वेद नित्य अपौरुषय और अप्रमेय कहे गए हैं। ब्राह्मणो और उपनिषदो मे कहा गया है कि वेद सृष्टि से भी पहले के है। नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा ही प्रकाशित हिन्दी विश्वकोश मे लिखा हे कि ऋग्वद सहिता आर्य जाति की सम्पूर्ण ग्रन्थराशि मे प्राचीनतम ग्रन्थ हे। समस्त विश्व वाडमय का यह सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रन्थ है। ऋग्वेद सहिता सम्पूर्ण विश्व–वाडमय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विरासत हे। पाश्चात्य विद्वानो मे मैक्समूलर ने लिखा है कि वेद मानव जाति के पुस्तकालय मे सदा सर्वदा के लिए प्राचीनतम पुस्तक रहेगे – "The Vedas I feel convinced will ocupying the scholars for centuries to come and take and maintain for ever its position as the most ancient of books in the library of mankind " सन १६०१ मे प्रकाशित चैम्बर एनसाइक्लोपिडिया मे लिखा है कि ऋग्वेद धरती पर विद्यमान सबसे प्राचीन दस्तावेज है।

वेदो का महत्त्व केवल विश्व का प्राचीनतम साहित्य होने के नाते नहीं है अपितु इसलिए भी है कि वेद समस्त विश्व के लिए हैं। मानव मात्र के लिए हैं। देश और काल की सीमाओ से परे है। ससार का कोई भी मानव वेद से लाभ उठा सकता है। मनु ने सदियो पहले अपनी मनुस्मृति मे कहा था कि वेद पितृजनो देवो तथा मनुष्यो सबके लिए स्थायी सनातन ज्ञान की आखे हैं –

पितृदेवमनुष्याणा वेदश्चक्षु सनातनम्। यदशक्य चाप्रमेय च वेदशास्त्रमिति स्थिति ।।

मनु फिर कहते है वेद–रूपी शास्त्र सब प्राणियो के कल्याण के लिए है –

बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रसनातनम्। तस्मादेतत्पर मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्।।

स्वय वेद कहते हैं कि वेदवाणी सबके लिए है। यजुर्वेद कहता है कि वेद की कल्याणी वाणी सब जनो के लिए है चाहे वह ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र आर्य अर्य अथवा चारण कोई भी क्यो न हो ? किसी भी वर्ग का क्यो न हो ?

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य । ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

वेद सबके लिए कल्याण की बात करते है। जिस अथर्ववेद के बारे मे यह कहकर मिथ्या प्रचार किया गया कि यह जादू टोने का वेद है इसमे मारण मोहन उच्चाटन के मन्त्र हैं वह अथर्ववेद सबकी कल्याण कामना करते हुए कहता है कि माता पिता का कल्याण हो गायो के लिए कल्याण हो। ससार भर के पुरुषो के लिए कल्याण हो। समस्त विश्व हमारे लिए सुभूत और सुविज्ञात हो –

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।

विश्व सुभूत सुविदत्र नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम।।

अथर्ववेद आगे कहता है कि यह पृथ्वी द्युलोक हमारे लिए कल्याण कारण हो। हम दैवी/ईश्वरीय नाव पर सवार होकर कल्याण के लिए आगे बढे –

सुत्रामाण पृथिवी द्यामनेहस सुशर्माणमदिति सुप्रणीतिम। दैवी नाव स्वरित्रामनाग सोऽस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये।।

यही नहीं वेद कहता है कि धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं –

माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या । पर्जन्य पिता न उ न पिपर्तु।।

इससे आगे बढकर वेद कहता है कि यह धरती सब मानवो के लिए है। अथर्ववेद कहता है कि यह पृथ्वी भिन्न–भिन्न भाषाओ को बोलने वाले लोगो को धारण करती है। यह भिन्न–भिन्न धर्मों मतो को मानने वाले लोगो को शरण देती है। यह धरती धेनु/गाय की तरह हमारे लिए कल्याण की हजारो अजस्त्र/अबाध धाराए बहाए –

जन बिभ्रति बहुधा विवाचस नानाधर्माण पृथिवी यथौकसम्।

सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहा ध्रुवेण धेनुरनपस्फुरन्ती।।

वेदो के इसी विश्वव्यापी समस्त मानव–कल्याणवादी दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए बर्तानियाविश्वकोश मे लिखा है कि वेदों के इसी दृष्टिकोण के कारण यूरोपीय एव अमरीकी विद्वानो ने इनके अध्ययन मे गहरी रुचि ली – Interest in these ancient text were intense among Europeans and Americans in that earlier reports had suggested that Vedas represented a world outlook from the drawn of humanity

वैसे तो समस्त वेद मानव समाज के कल्याण के लिए है फिर भी कुछ मन्त्र द्रष्टव्य हैं। इस बारे मे ऋग्वेद के निम्न मन्त्र जगत्प्रसिद्ध हो गए हैं।

ऋग्वेद कहता है कि हे मनुष्य लोगो! तुम परस्पर मिलकर चलो। परस्पर मिलकर सवाद करो। तुम्हारे मन एक ज्ञान वाले हो। वेद आगे कहता है कि (तुम) सब मनुष्यों के लिए विचार समान हो। तुम्हारे हृदय एक समान हो। तुम्हारे मन एक समान हो। तुम्हारा चिन्तन एक हो। तीसरा मन्त्र कहता है कि हे मनुष्यो ! (तुम) सबका सकल्प एक जैसा हो। तुम्हारे हृदय एक जैसे हो सबके मन एक जैसे हो अर्थात सबके हृदय और मन मे उठने वाले भाव समान हो जिससे मनुष्यो का सगठन अच्छा हो। मानव जाति अच्छी तरह रह सके।

सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्। देवाभाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।।

समानो मन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्।

समान मन्त्रमभिमन्त्रये व समानेन हविषा जुहोमि।।

समानी व आकूति समाना हृदयानि व । समानमस्तु वो मनो यथा व सु सहासति।।

अर्थात कहने का भाव यह है कि सब मनुष्यो के सकल्प प्रयत्न एव व्यवहार समान हो। सब मनुष्यो के हृदय सममावना वाले हर्षशोकादि रहित रहे। सब मानवो का मन भी एक प्रकार के सद्भाव वाला रहे। सब मनुष्यो के हृदय और मन इस प्रकार हो कि सब मे सुभाव सहभाव सम्पादित हो।

यही नहीं अथर्ववेद कहता है कि हे मनुष्यो ! तुम सबके लिए पेयजल की व्यवस्था समान हो। तुम सब मानवो के लिए अन्न का विभाजन भी समान हो। तुम सब मानव एक ही जुए की भाति जुडकर हो जैसे रथ की नाभि मे स्थित और परस्पर जुडकर रहते हैं। ऐसे ही तुम सब मानव परस्पर मिलकर एक दूसरे से जुडकर रहो –

समानी प्रपा सहवोऽन्नभाग समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। समञ्चो ग्नि सपर्यतारा नाभिमिवाभित ।।

वेद के इन मन्त्रों में विचारों की कितनी ऊची उडान है। वेद समस्त मानव जाति के कल्याण की बात करते हैं। समस्त मानव समाज में परस्पर मेल सहयोग सवाद की बात करते हैं। सब मनुष्यो के मन की एकता हृदय की समानता विचारो की समानता की बात करते हैं। सब मनुष्यो के हृदय मन विचार और सकल्प एक हो जाए तो मानवजाति का कल्याण न हो जाए ? किन्तु आज मानव समाज मे परस्पर एकता हृदय और मन की समानता तथा विचारो की एकता कहा है ? और इसी कारण विश्व मे अशान्ति घृणा वैर विरोध एव हिसा एव युद्ध का वातावरण है। आज मानव समाज परस्पर वैर विरोध घृणा एव हिसा की अग्नि मे जल रहा है। समूचा विश्व इसी विद्वेष एव घृणाजन्य आतकवाद से पीडित है। एशिया अफ्रीका यूरोप और अमेरिका सभी जगह आतकवाद का साया मण्डरा रहा है।

भारत एक लम्बे समय से आतकवाद की त्रासदी से पीडित हैं। कई हजार लोग इस कारण से मारे जा चुके हैं। अफगानिस्तान पिछले दो–दशको से इस आतकवाद से ग्रस्त है। उधर श्रीलका और नेपाल अन्य किस्म के आतकवाद से पीडित हैं। चीन और रूस भी इससे नहीं बच सके। चीन का सिक्याग प्रदेश और रूस का चेचन्या इसी बीमारी से पीडित है। अफ्रीका मे अमरीकी दूतावासों पर आतकवादी हमले हुए। सैंकडो निर्दोष लोग मारे गए। ११ सितम्बर २००१ को अमरीका के न्यूर्याक मे आतकवादी आक्रमण हुआ और कई हजार निरपराध लोग मारे गए। १३ दिसम्बर २००१ को भारत की ससद पर हमला हुआ। इस प्रकार पूरा विश्व या अन्तर्राष्ट्रीय मानव समुदाय आतकवाद की लपेट मे है। इसी कारण आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतकवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणाए हो रही हैं। कारण इसके पीछे विचारो की असमानता है। विश्व के विभिन्न मानव समुदायों में हृदय और मन की असमानता है। उनके सकल्प उनके भाव अलग–अलग हैं। इस्लामी कट्टरपथी विश्व के अन्य धार्मिक सगठनों को पसन्द नहीं करते। इसलिए उन्होंने विश्वव्यापी जेहाद छेड़ा हुआ है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

आर्यसमाज का विजय पर्व

भारतीय संघ में

हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्यसमाज की भूमिका

– मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

वेद के अनुयायी और उसके प्रचारको को सदैव ही सघर्ष करना पडा। इसी सघर्ष की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कडी हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (१६३६) है। कतिपय विद्वान इस महान एव सफल सत्याग्रह को हैदराबाद में धर्मयुद्ध नामक सज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं। वस्तुत यह हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का अति महत्वपूर्ण अध्याय है जिसे पढकर हमारी आने वाली पीढी गर्व से आत्माभिमान अनुभव करेगी।

हैदराबाद (तत्कालीनदक्षिण) आर्य सत्याग्रह वस्तुत एक युद्ध था जिसे हैदराबाद राज्य मे आर्यसमाज के अधिकारो और वैदिक धर्म के प्रचार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लडा गया था। प्रामाणिक तथ्यो के अनुसार आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा निरन्तर छ वर्ष तक वैध उपायो से इस समस्या के हल का प्रयत्न किया था किन्तु जब ये सारे उपाय निष्फल हो गए तब निजाम सरकार ने आर्यसमाज को सत्याग्रह करने के लिए बाध्य कर दिया।

आर्यसमाज के इस निर्णय से अन्य राजनैतिक दलो तथा साम्प्रदायिक सस्थाओ को बहुत पीडा हुई। इन्हे अपना नेतृत्व छिन जाने की वेदना सताने लगीं। इस कारण आर्यसमाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिकता का आवरण देने का असफल प्रयास किया। यह कुट सत्य है कि तुष्टीकरण ही इस देश के विभाजन का एक मात्र कारण सिद्ध हो चुका है। 'सत्यमेव जयते नानृतम और असत्यमेव न जयते के मूल सिद्धान्त को मानने वाले उस आर्यसमाज के सम्मुख न तो तुष्टीकरण रूपी नाग अपना फन ऊचा कर पाया और न गिरगिट की तरह रग बदलने वाली कुटिल चाल ही सफल हुई। इतना ही नहीं इन्हीं तत्वो के कारण आर्यसमाज के प्रति लोगो की सहानुभूति को घटाने के स्थान पर बढाया ही। आर्यसमाज के नेताओ ने प्रारम्भ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि यदि किसी हिन्दू राज्य मे आर्यसमाज पर इसी प्रकार की आपत्ति आती है जिस प्रकार की निजाम राज्य में आई थी तो वे वहा भी इसी उपाय अर्थात् सत्याग्रह धर्म युद्ध का आश्रय लेते। आर्यसमाज की घोषणा ने समाज और राष्ट्र के सम्मुख एक स्पष्ट और स्वच्छ विशाल मार्ग प्रस्तुत कर दिया। आर्यसमाज ने दाहिने हाथ से कर्म किया और बाए हाथ मे विजय श्री अपनी शोभा बढाने लगी।

हा जब आर्यसमाज की सामनीति जब छ वर्ष पश्चात भी सफल न हुई तब भी आर्यसमाज निराश न हुआ। उन्होने सर्वप्रथम समस्त आर्यजगत की सम्मति ज्ञान करने के लिए दिसम्बर सन १६३८ के अन्तिम सप्ताह मे शोलापुर मे आर्यमहासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन इस 'नीति के अनुसार था कि सम्भवत निजाम सरकार के रवैए से आर्यसमाज को सत्याग्रह न करना पडे किन्तु ऐसा कुछ नही हुआ और उस निजाम की पूछ पूर्ववत टेढी ही रही। अन्तत आर्य सम्मेलन शोलापुर को अपने समस्त निश्चयो के अनुसार सत्याग्रह की घोषणा करना पडी। इसके सर्वप्रथम सर्वाधिकारी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी बनाए गए। इन समस्त निश्चयो मे निश्चय क्र० ३ मे स्पष्ट कहा गया था – 'राज्य अथवा कर्मचारियो को न तो तबलीग शुद्धि मतान्तरण मे भाग चाहिए न उसे प्रोत्साहन करना चाहिए। न जेलो मे हिन्दू कैदियो तथा स्कूलो मे हिन्दू बच्चो को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ मुसलमानो के सुपुर्द किए जाने चाहिए। (सन्दर्भ – आर्य डायरेक्टरी सन १६४२ प्र० २१३)

इस विशाल सत्याग्रह को सचालन हेतु 'सत्याग्रह समिति नियत की गई। चूकि इस आन्दोलन के सम्बन्ध मे मिथ्या और भ्रमपूर्ण बाते फैलाई जा रही थीं इसलिए उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यावश्यक कहा गया।

धर्म युद्ध की प्रथम आहुति – निश्चयानुसार पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने दिनाक ३६–८–३६ को कतिपय सत्याग्रहियो के साथ हैदराबाद राज्य मे प्रवेश किया। उन्हे प्रथमत पकडकर पुलिस निजाम राज्य के बाहर कर गई। किन्तु जब स्वामी जी ने पुन वहा जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया तब उन्हे पकड कर एक साल का कारावास दण्ड दिया गया। बस फिर क्या था दावानल की भाति पूरे देश मे जोश फैल गया और जनता बडे से बडे त्याग के लिए तैयार हो गई। आर्यसमाज भी अगडाई लेकर युद्ध के लिए ताल ठोककर तैयार हो गया। सत्याग्रह के रहस्य को समझकर मार्च १६३६ मे निजाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा प्रारम्भ हुई किन्तु ६–४–३६ मे शोलापुर मे अन्तरग सभा की आवश्यक बैठक हुई। इधर निजाम सरकार पीछे हट गई इस कारण इसमे कोई विशेष गति नहीं आई।

उधर निजाम सरकार का दमन चक्र प्रबलता से घूमने लगा। ज्यो–ज्यो दमन चक्र बढने लगा त्यो–त्यो सत्याग्रह मे उग्रता और तीव्रता बढने लगी। इधर तुष्टीकरण की नीति वाले दलो ने इसके सम्बन्ध मे अनेक भ्रातिया फैलाना शुरू कर दी। किन्तु जनता ने आर्यसमाज की न्याय-प्रियता सत्यतापरक अहिसा का मूल्य का आकलन करना शुरू किया इस कारण तुष्टीकरण की कुचाले निष्प्रभावी हो गई। अब इस धर्म युद्ध ने और भी व्यापकता प्रकट कर ली। कहते है – यह युद्ध इतना व्यापक और इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उन दिनो देश की सार्वजनिक हलचलो मे इसके सिवा और कोई हलचल सर्वोपरि न थी। सभी भाषायी तथा आग्ल–पत्रो मे इस युद्ध के अतिरिक्त कोई चर्चा न थी। यह ध्यान रखने का तथ्य है कि देश के अग्रणियो की चिन्ता का कोई विषय था तो केवल यह युद्ध था। यह युद्ध और इसकी चर्चा भारत की सीमा तक ही समिति न रही वरन् समुद्र पार पार्लियामेण्ट के भवनो तक जा पहुची। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञाओ और निर्देशो को आर्यजनता ने बडी तत्परता और सम्मान के साथ ग्रहण किया। यह एक ऐतिहासिक वस्तु बन गई। जब युद्ध अपने चरम पर था उस समय २००० सत्याग्रही शिविरो मे पडे हुए आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमे हिन्दू, सिक्ख मुसलमान तथा ईसाई बन्धु थे। हमारे अनुशासन एव सयम की सभी आग्ल–पत्र तथा भाषायी पत्र भूरि भूरि प्रशसा कर रहे थे। विशेषकर हिन्दू जनता ने आर्यसमाज की विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और उसका निवारण उन्होने आर्यसमाज तथा आर्यसमाजियो के साथ कन्धे से कन्धा भिडाया और ऐसा कौन सा त्याग था जो उसने इस अवसर पर न किया हो।

असत्यमेव न जयते के अनुसार आर्यसमाज रूपी श्रीकृष्ण का पाचजन्य शख एक बार पुन ध्वनित हो उठा और उसने विजय की घोषणा की। निजाम सरकार ने आर्यसमाज के इस सत्याग्रह के सम्मुख घुटने टेक दिए और उसने सुधारो की घोषणा की। यह घोषणा २० जुलाई सन १६३६ को की थी। इसके पूर्व दिनाक १७ जुलाई १६३६ को निजाम सरकार ने अपना निर्णय प्रकट कर दिया था। इधर सभा और निजाम सरकार के अधिकारिया के मध्य पर्याप्त पत्राचार और बातचीत हुई। अन्त मे ८ अगस्त १६३६ को निजाम सरकार ने यह वक्तव्य जारी किया – 'निजाम सरकार ने अपने १७–७–३६ के वक्तव्य मे कुछ मामलो की बाबत अपनी आम स्थिति स्पष्ट की थी जिसके सम्बन्ध मे भ्रम फैला हुआ था। इसके बाद सुधार योजना प्रकाशित हुई थी। इन वक्तव्यो के कुछ अशो का कई जगहो से स्पष्टीकरण चाहा गया है। इसलिए सर्वसाधारण की सूचना के लिए स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने नागपुर की अपनी ऐतिहासिक बैठक मे निजाम सरकार के उपर्युक्त वक्तव्य पर विचार करके सत्याग्रह बन्द करने की घोषणा की। (द्र० आर्य डायरेक्ट्री पृ० २२१)। निजाम सरकार ने १७ अगस्त ३६ निजाम महोदय के वर्षगाठ के उपलक्ष्य मे समस्त सत्याग्रहियो को मुक्त किया और उनका मार्ग व्यय भी दिया। इस सफलता के लिए श्री घनश्यामसिह गुप्त और श्री देश बन्धु गुप्त द्वारा की गई मूल्यवान सेवाओ की सराहना करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

कोई चाहे माने या न माने आर्यसमाज का जन्म अज्ञान अन्याय तथा अभाव इन तीन शत्रुओ से सतत युद्ध करने के लिए हुआ है। दुरितानि परासुव से भद्रम आसुव इसकी केन्द्रीय मूल भावना है। जब तत्कालीन निजाम हैदराबाद मे अज्ञान को बनाए रखने तथा अन्याय अभाव के विस्तार की अति हो गई तब आर्यसमाज को वहा धार्मिक तथा सास्कृतिक अधिकारो की रक्षा के लिए विशुद्ध सत्य अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह सन १६३६ मे करना पडा। अनृत न जयते के शाश्वत सिद्धान्त के अनुसार सत्य की विजय हुई और असत्य पराजित हो गया। आर्यसमाज विजयी भव

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

पृष्ठ ७ का शेष भाग

हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्यसमाज की भूमिका

इस धर्मयुद्ध के मुख्य नायक स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रहे। कुल आठ सर्वाधिकारियो ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया। उनके नाम ये हैं – १ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी २ कु० चादकरण जी शारदा ३ लाला खुशहालचन्द खुर्सद (बाद मे आनन्द स्वामी) ४ श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री ५ प० वेदव्रत (बिहार) ६ महाशय कृष्ण जी ७ प० ज्ञानेन्द्र जी (गुजरात) और ८ श्री विनायक राव जी बार–एट–लॉ।

इस सत्याग्रह मे कुल १० ५७६ सत्याग्रही जेल गए थे। इसके अतिरिक्त २००० सत्याग्रही वे थे जो ८–८–३६ से पूर्व केन्द्रो में पहुच गए थे और आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस धर्मयुद्ध मे आर्य जगत का लगभग ११ लाख रुपया (तत्कालीन मूल्य के अनुसार – १६३६) व्यय हुआ। इस थोडे से समय में २८ व्यक्तियों ने जेल यातनाओ के कारण परलोक की यात्रा की। इस प्रकार आर्यसमाज द्वारा छेडा गया यह धर्म युद्ध जो कि अज्ञान अन्याय और अभाव के विरुद्ध प्रारम्भ हुआ था परमात्मा की कृपा सत्याग्रहियो के तप–त्याग तथा महान बलिदानियो के कारण सुखद अन्त के रूप मे विजय श्री को प्राप्त कर सका। इन सभी श्रेष्ठ आत्माओ के प्रति आभार तथा प्रणाम।

आर्यसमाज की यह विजयश्री सन १६४७ में प्राप्त स्वतन्त्रता के पश्चात देश की ५५६ रियासतो के एकीकरण में अमृत सिद्ध हुई। सरदार बल्लभभाई पटेल ने जब देश की रियासतो के भारतीय सघ मे विलीन करने की योजना बनाई, तब निजाम सरकार ने अपनी वही टेढी पूछ और भी टेढी करना शुरू कर दी। फिर क्या था

१३ सितम्बर १६४८ को रजाकार सरगना कासिम रिजवी ने रियासत मे कत्ले आम को 'जिहाद का नाम दे दिया। इसके पूर्व १३ मार्च ४८ को उसने कहा – 'मुसलमानों ! जिहाद शुरू करो। सभी हिन्दुस्तानी मुस्लिम हमारे लिए फिस्थ कालमिस्ट (पचमार्गीय) का काम करेंगे। यदि हिन्दुस्तान ने हैदराबाद पर हमला किया तो उसे डेढ करोड हिन्दुओ की हडिडया ही मिलेगी इधर ११ सितम्बर १६४८ को मिया जिन्ना अल्ला को प्यारे हो गए। इधर कासिम रिजवी ने २ लाख ५२ हजार सशस्त्र सैनिको के साथ युद्ध छेड दिया। उसके साथ आस्ट्रेलियाई हवाबाज सिटनी कॉटन तथा ब्रिटिश लेफ्टिनेंट टी०टी० मूर मेजर जनरल एल० एड्रूज निजाम के पक्ष मे मुस्लिम सेना की ओर से युद्धरत् थे।

भारतीय सेना का नेतृत्व लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्रसिह तथा मेजर जनरल मि० चौधरी कर रहे थे। १३ सितम्बर १६४८ को भारतीय सेना ने अपने ५ दिवसीय 'पोलो ऑपरेशन' के अन्तर्गत कार्य प्रारम्भ कर दिया। उसी दिन जलदुर्ग पुल को जीतकर टी०टी० मूर को गिरफ्तार कर लिया। उसके ६३२ सैनिक मारे गए। भारतीय सेना के मेवाड के राजपूत सैनिको ने तुलजापुर जीत लिया यहा एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी।

तुलजापुर मोर्चे पर रजाकारों के साथ पठान सैनिक तथा ४ रजाकार स्त्रिया भी लडाई मे भाग ले रहीं थीं। इन भारतीय सैनिको ने तुलजापुर जीत लेने के बाद इन चार स्त्रियो पर न तो हाथ उठाया और न उनका अपमान किया और न उन्हे गिरफ्तार किया। तब वे सशस्त्र रजाकार स्त्रिया स्वय ही चकित–स्तम्भित होती हुई अपने पडाव (कैम्प) पर लौट गईं। (शत्रु की स्त्रियो पर हथियार न उठाना यह हिन्दुत्व की ही विशेषता है जो हैदराबाद के युद्ध (१६४८) मे भी व्यक्त हुई।)

आततायी रजाकारो ने भारतीय एजेंट जनरल के०एम० मुशी को कैद कर रखा था। भारतीय सेना ने अपने पाचों मोर्चे जीतकर तत्काल श्री के०एम० मुशी को कैद से छुडाया। १८ सितम्बर ४८ को मेजर जनरल एड्रूज ने हैदराबादी फौजो का बिना शर्त समर्पण कर भारत में हैदराबाद के पूर्णविलय को स्वीकार किया।

इस विलय का श्रेय सरदार वल्लभभाई पटेल को ही था। विलय के पश्चात् श्री वल्लभ भाई पटेल ने ठीक ही कहा था –

'यदि आर्यसमाज १६३६ मे निजाम पर विजय प्राप्त नहीं करता तो बडा कठिन हो जाता। आर्यसमाज के उस सफल आर्य सत्याग्रह का ही सुपरिणाम निकला कि हमने निजाम राज्य पर इतनी जल्दी विजय प्राप्त की।

आर्यसमाज के समस्त आत्म बलिदानियो तथा सन १६४८ में हैदराबाद युद्ध के समस्त वीर सैनिको को हमारा बारम्बार प्रणाम।

– सुकिरण अ १६३ सुदामा नग इन्दौर (मध्य प्रदेश)

पृष्ठ ५ का शेष भाग

वेद और मानवतावाद

इसलिए वेद ने कहा था सब मनुष्य परस्पर मिलकर चले। परस्पर मिलकर सवाद करे। सबके विचार समान हो। सब मनुष्य के चिन्तन–सोच मे समानता हो। इसके साथ सबका हृदय एक समान हो सबका मन एक समान हो। जब सबके हृदय और मन एक समान होगे तभी मनुष्यो मानव समुदाय का विश्व स्तर पर सगठन अच्छा होगा। सयुक्त राष्ट्र सघ यह कार्य कर सकता है। जी–८ तथा यूरोपीय सघ यह काम कर सकते हैं। यही नहीं वेद के मन्त्रों में यह भी कहा गया है कि सब मनुष्यो के लिए अन्न जल की व्यवस्था समान हो –

समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग

किन्तु इस दृष्टि से विश्व मे भारी असमानता है। सयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP 1999) की एक रिपोर्ट के अनुसार १६८० के दशक मे विश्व मे गरीबो की सख्या मे कोई कमी नहीं आई और १६६० के दशक में भी अर्थात सन् २००० तक भी विश्व मे गरीबी की सख्या मे कोई कमी नहीं आई। आज विश्व मे २अरब लोग गरीब है। एक ओर सूडान तथा सोमालिया जैसे देशो मे कई लाख लोग भूख एव गरीबी से मर चुके हैं तो दूसरी और ससार के कुछ लोग आर्थिक साधनों का दुरुप्रयोग कर रहे हैं। राष्ट्र सघ (UNPD) की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के ८०प्रतिशत उत्पादन साधनो पर २० प्रतिशत अमीरो का कब्जा है। यही नहीं सयुक्त राष्ट्र सघ की उक्त रिपोर्ट के अनुसार ससार के सबसे निर्धन ४८ देशो मे मूल विकास उत्पादन (GDP) से भी अधिक पूजी ससार के ३ सर्वाधिक धनी व्यक्तियो के पास है। इतनी भयानक सामाजिक आर्थिक विषमता !! क्योकि इन देशो एव उन व्यक्तियो के पास दूसरो के लिए ससार के अन्य लोगो के लिए उनके हित एव कल्याण के लिए सह्रदयता सौमनस्य सौहार्द मन की हृदय की समानता नहीं है। उनमे मानव समाज हेतु परस्पर मिलकर जुडकर एक होकर चलने की भावना नहीं है। उल्टा इसके विपरीत सयुक्त राष्ट्र सघ मानव विकास रिपोर्ट (UNHDR 1998) के अनुसार यूरोप के देश प्रतिवर्ष ११५ बिलियन डालर शराब तथा सिगरेट पर ही खर्च कर डालते हैं किन्तु यही धन यदि मानव कल्याण कार्यों पर खर्च किया जाए तो विश्व के लाखो अनपढ बच्चो को पढाया जा सकता है तथा हजारो गर्भवती महिलाओ को स्वास्थ्य सेवाए प्रदान की जा सकती है किन्तु सवाल तो मन की एकता हृदय की समानता का है ? परस्पर सवाद एव सहयोग तथा एकता का है ?

स्वय भारत मे भी अन्न जल का विभाजन समान नहीं है। सबको पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। सबको भरपेट भोजन उपलब्ध नहीं है ? पचवर्षीय योजनाओ का लाभ सब तक नहीं पहुच पाया। देश की एक तिहाई आबादी भूख और गरीबी का जीवन बिता रही है। जबकि देश के खाद्यान्न भण्डार केन्द्रीय कृषि मन्त्री के अनुसार भरे पडे है। उन भण्डारो से आबटित अन्न (खाद्यान्न) के भाग को राज्यो द्वारा उठाने की उचित व्यवस्था नहीं की जा रही। देश के राजनेता सरकारे तथा शासन तन्त्र इसके लिए जिम्मेवार हैं। उन्होने एक होकर एक मन से समान विचार से इस ओर ध्यान नहीं दिया ? उनके मन मे हृदय मे भिन्नता थी। उनके चिन्तन मे एकरूपता समानता नहीं रही ? सबके अपने–अपने स्वार्थ तथा हित प्रमुख रहे। जैसे आज आतकवाद के विरुद्ध पूरे देश मे देश की राजनीतिक पार्टियो मे एकमत समान विचार दिखाई देते हैं। इसी प्रकार की विचारो की समानरूपता समान सकल्प राष्ट्र के १०० करोड मानवो के हितो के लिए आवश्यक है।

विश्व मे आज जितना धन युद्ध और अस्त्र शस्त्रों के लिए तथा परमाणु हथियारो पर खर्च हो रहा है। उसका आधा या एक तिहाई भाग भी मानव कल्याण पर खर्च किया जाए तो ससार के करोडो लोगों की गरीबी भुखमरी और निरक्षरता दूर हो सकती है किन्तु प्रश्न तो मन की एकता हृदय की समानता और चिन्तन की समानता का है। जब तक मनुष्यों के हृदय और मन नहीं मिलेंगे मानव समुदायों मे विचारों सकल्पो की एकरूपता समानता नही आएगी तब तक मानव समाज की राजनीतिक धार्मिक सामाजिक एव आर्थिक समस्याए हल नहीं हो सकती। इसलिए वेद के उपर्युक्त मन्त्रो पर वेद की इस विचारधारा पर बार–बार विचार करने की आवश्यकता है। मानव मात्र का कल्याण–मानव समाज मे सब प्रकार की समानता वैचारिक समानता राजनीतिक एव आर्थिक स्तर पर समानता तथा सामाजिक स्तर पर समानता समस्त मानव समाज का सब प्रकार से कल्याण–यही वेद का मानवतावाद है और यही वेदो का मानवतावादी सन्देश है। आज स्थान और देश की दीवारों से रहित विश्व की बात की जा रही है सबके लिए विश्व को एक घर केरूप मे बनाने की बात की जा रही है। २१ वीं सदी के नए भविष्य की कामना है। स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गाधी के सन्दर्भ में मानवतावाद और मानव जाति के कल्याण की बात की जा रही है। आज ससार मे विश्व के विभिन्न देशो में मानवाधिकारों की बात की जा रही है। उन्हे लागू करने की आवश्यकता है। यह शुभ सकेत है किन्तु वेद ने हजारो साल पहले इस मानवतावाद का इस समस्त मानव समाज की एकता और समानता का सन्देश दिया था।

– अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग पूर्वाध्यक्ष हिन्दी-संस्कृत विभाग [illegible] सिंह कालेज करनाल-१३२००१, हरियाणा

श्रावण मास में वेद का श्रवण और श्रावण

– डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री

समस्त विश्व के आर्यसमाज मन्दिरो मे श्रावण मास की पूर्णिमा के आस पास वेद प्रचार सप्ताह मनाने की परम्परा है। आर्यसमाज के नियम में लिखा भी है – **"वेद का पढना और पढाना सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"**

श्रवण नक्षत्र से युक्त काल या मास का नाम ही श्रावण मास होता है। इन दिनो वर्षा का तेज प्रभाव होता है तथा आवागमन अस्त व्यस्त हो जाता है। प्राचीन काल मे भी वर्षा के इन तीन–चार मासो मे उपदेशक विद्वान ऋषि मुनि आदि गावो मे जाकर अपने उपदेशो से गृहस्थी जना को धर्म वेद सत्य नैतिकता आदि की शिक्षा दिया करते थे तथा एक ही जगह रूककर परिव्राजक भी चौमासा व्यतीत करते थे।

श्रावण शब्द का दूसरा अर्थ होता है – सुनाना। श्रु धातु सुनने अर्थ मे है। इसी से श्रवण शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है सुनना अथवा श्रवणेन्द्रिय या कान। इसी श्रु धातु से श्रावण शब्द भी निष्पन्न होता है जिसका अर्थ होता हे सुनाना या उपदेश देना।

वेद का एक नाम 'श्रुति'

वेद के लिए पर्यायवाचक शब्दा म श्रुति शब्द अति प्रसिद्ध है। कानो का भी श्रुति कहते है। कानो की सार्थकता इसी मे है कि वह श्रुति अर्थात वेद के उपदशो का श्रवण करे।

मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय मे स्पष्ट रूप मे लिखा है –

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृति ।
(मनु० २।१०)

अर्थात श्रुति वेद का ही नाम है तथा धर्म शास्त्रो की स्मृति सज्ञा है। प्राचीन काल से ही वेदो को कण्ठस्थ करने तथा सुनने सुनाने की भारतीय परम्परा रही है इसी कारण वेदो को श्रुति नाम से अभिहित किया जाता है।

ब्राह्मणत्व की प्राप्ति वेदाध्ययन के बिना नहीं

महाभाष्यकार महर्षि पतजलि ने अपने भाष्य के प्रारम्भ मे ही लिखा है – **"ब्राह्मणेन निष्कायो। षडगो वेदोऽध्येयो श्रेयश्च।"** अर्थात ब्राह्मण को चाहिए कि वह स्वभाव से ही बिना प्रयोजन के अपनी सहज धर्म मानकर छ अगो सहित वेद का अध्ययन और मनन करे। मनुस्मृति मे भी लिखा है –

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ।।
(मनु० २। १६८)

अर्थात जो व्यक्ति वेद को छोडकर अन्यत्र परिश्रम करता है वह सपरिवार शूद्रत्व को प्राप्त करता है।

वास्तव मे प्राचीन धर्मशास्त्रो ने वेदो के स्वाध्याय करने पर इसीलिए इतना बल दिया कि इसके अध्ययन से हमें मानव जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति का जहा सहज ज्ञान होता है वही जीवन को सार्थक बनाने तथा उसके सर्वांगीण विकास मे सहायता प्राप्त होती है।

स्वामी दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के वेदो के महत्व को तथा उसकी प्राचीनता उसकी पवित्रता तथा मानव जीवन मे उसकी उपयोगिता को अच्छी तरह समझा तथा यह भी जाना कि यह वेद ही समस्त ज्ञान विज्ञान की मूल निधि ह – सर्वज्ञानमयोहिस

स्वाध्याय की प्रेरणा

श्रावण का महीना तथा इस मास में आयोजित होने वाला वेद प्रचार प्रसार हमे स्वाध्याय के लिए प्रेरित करता हे। तैत्तिरीय उपनिषद मे लिखा हुआ है –

स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्।
(तै० उप० १।११।१)

अर्थात मनुष्य को कभी भी वेद के अध्ययन ओर प्रवचन मे प्रमाद नहीं करना चाहिए। आर्यसमाज के नियम के अनुसार यही वेद का सुनना और सुनाना है।

तैत्तिरीय आरण्यक मे एक और रोचक बात लिखी है। उसके अनुसार तपस्वी एव विद्वान व्यक्ति की परिभाषा यही है कि वह चाहे दिन हो या रात्रि गाव हो या अरण्य उठते–बेठते चलते–फिरते जागते–सोते वेद का मनन चिन्तन तथा उस पर अमल करने वाला स्वाध्याय शील व्यक्ति ही विद्वान एव तपस्वी पद से वाच्य हो सकता है। प्रमाण स्वरूप तैत्तिरीय अराण्यक का यह वाक्य द्रष्टव्य है –

ग्रामे मनसा स्वाध्यायमधीथीत। दिवा वा नक्त वा उत अरण्ये उत तिष्ठन् उत व्रजन् उत आसीन उत शयानोऽधीयीत स्वाध्याय तपस्वी पुण्यो भवति य एव विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते।
(तैत्तिरीय आरण्यक २।१२।१–३)

विद्या प्राप्ति के चार प्रकार

वेद के अध्ययन मनन स्वाध्याय आदि के पश्चात वास्तव मे उसमे उपदेशो को व्यवहार रूप मे उतारने पर ही विद्या प्राप्ति की सार्थकता सिद्ध होती है। केवल अध्ययन मनन एव प्रवचन से ही विद्या की पूर्ण उपयोगिता सम्भव नही है।

महाभाष्यकार पतजलि ने अपने भाष्य ने स्पष्ट लिखा हे कि –

'चतुर्भि प्रकारैर्विया उपयुक्ता भवति। आगम कालेन, स्वाध्याय कालेन, प्रवचन कालेन व्यवहार कालेन च।।'

अर्थात विद्या की उपयुक्तता चार प्रकार से होती है। प्रथम तो हे आगम काल जिसमे गुरुकुल मे जाकर गुरुओ क माध्यम से विद्या को प्राप्त किया जाता है। यह प्रथम काल है।

दूसरा है स्वाध्याय काल जिसमे पढने के बाद उन उपदेशो का एकान्त मे चिन्तन–मनन आदि किया जाता है।

तीसरा है प्रवचन काल जिसमे अध्ययन एव मनन के बाद उन उपदेशो को प्रवचन के माध्यम से अन्य लोगो को स्थानान्तरित किया जाता है या अपन ज्ञान को अन्यत्र लोकहित मे फैलाया जाता है।

विद्या का चौथा उपयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा कठिन है और वह यह है कि उसका उपयोग हम व्यावहारिक रूप मे अपने जीवन मे करे। इसी को महर्षि पतजलि ने व्यवहार काल माना है।

वेद प्रचार का यह श्रावण मास का सप्ताह हमे न केवल पढने ओर पढाने को ही प्रेरित करता है अपितु यह भी सन्देश देता है कि हम वेद के ज्ञान को अपने अन्दर आत्मसात करे तथा उसे व्यवहार मे लाकर जीवन सार्थक बनाए। आर्यसमाज मन्दिरो द्वारा आयोजित होने वाले वेदप्रचार कार्यक्रमा की सार्थकता भी इसी मे है कि हम पूर्वोक्त चारो प्रकारो स इस भूमण्डल मे वेद के प्रचार प्रसार के लिए सकल्पबद्ध होकर इसे उपयोगी बनाव। तभी हमारे सघटन की सार्थकता होगी तथा वेद–प्रचार का कार्य पूर्णता को प्राप्त होगा। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा एव भावना को सार्थक बनाने के हमारे सकल्पो को यह श्रावण मास प्रेरित करता है तथा वेद–प्रचार सप्ताह हमारे ज्ञानयज्ञ को तीव्र करने की प्रेरणा देता है। हम समस्त आर्यजन उत्साह पूर्वक इसे मनाने का सकल्प ले यही कामना है।

– बी २८ आनन्द नगर रायबरेली

संस्कारित युवक प्रगति और विकास का तेजोपुंज

किसी भी राष्ट्र का उज्ज्वल स्वर्णमय भविष्य युवका द्वारा ही सभव होता है। जिस दश का युवा वग जितना परिश्रमी पुरुषार्थी तथा सस्कारित होगा उस देश का विकसित होने स काई राक नही सकता। भारत का विकसित बनाने के कार्य म हमे हर उम्र हर वर्ग क व्यक्ति की आवश्यकता है। भारत का जन जन इस गौरवमय कार्य मे अपना योगदान दे सकता है। बालक हमारी भावी आशा है युवक विकास के काय को गति देता है तो वृद्ध इस विकास कार्य को दिशा देने का काम करत है। जहा गति और दिशा इन दोना का सही समन्वय होता है वहा समृद्धि और वैभव का निवास होना क्रमप्राप्त है। भारत के विकास के कार्य मे हर व्यक्ति का यागदान महत्वपूर्ण है उसके महत्व को नकारा नही जा सकता।

युवको के निर्माण के बिना समृद्ध भारत का सपना देखना कपोल कल्पना की भाति होगा। अगर हमे भारत को यश के शिखर पर ले जाना है तो युवको के निर्माण कार्य को सबसे अधिक प्राथमिकता देनी होगी। युवका क तन ओर मन का आदश वर्णन किसी कवि ने बडा सुदर किया है।

पत्थर सी हो मासपेशिया लोहे से भुजदड अभय
मन मे अग्नि देश धर्म की तभी जवानी पाती है जय

परमपिता परमात्मा न अपन सारे महत्वपूर्ण वरदाना स युवक को सवारा है। अब यह सब उस युवक की मनावृत्ति पर निर्भर करता है कि वह उन वरदानो का उत्थान के लिए प्रयोग करे या पतित हो। युवको के मनो को सस्कारित करना और ऊचे मनोबल से युक्त करना बहुत जरूरी है। ऊचा मनोबल एव प्रगाढ आत्मविश्वास द्वारा यह जीवन मे आनेवाली हर चुनौतियों पर विजय प्राप्त करगा। बडी से बडी विपत्ति उसके आत्मविश्वास के सामन नतमस्तक होगी। जीवन की विफलता और निराशाओ से जूझने के लिए वह कटिबद्ध हागा। विपत्ति और बाधाओ की अग्नि म उसका मन कुदन की तरह और भी निखरगा। मुझे यहा पर कवि राजनेता ओर हमारे प्रधानमत्री अटल बिहारी जी की ये पक्तिया प्रासगिक लगती हैं —

हार नहीं मानूगा रार नहीं ठानूगा
काल के कपाल पर लिखता हू मिटाता हू, गीत नया गाता हूँ।"

इस तरह का प्रगाढ आत्मविश्वास और ऊचे मनोबल द्वारा युवक स्वय ता सफल हागा ही किंतु औरो को सफल करने म सहायक होगा। उसके पराक्रम और पुरुषार्थ से समाज और राष्ट्र मे नवचतना का सचार होगा। उसके तेजोमय व्यक्तित्व स समाज की बुराइयो का अत होगा। आओ हम सब नयी आशा और प्रेरणा लेकर उठे। जीवनदाता ने हम यह जीवन पतित होने के लिए नहीं बल्कि ऊपर उठन के लिए दिया है।

भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने युवको के निर्माण कार्य को सर्वोच्च प्राधान्य दिया है। उन्होने हर भारतीय को समृद्ध भारत का सपना साकार करने का आवाहन किया। वे भावी भारत का सपना युवका की आशाओ मे देखते है। आज हमें एसे युवको की बहुत आवश्यकता है जिनका मन ओर बुद्धि राष्ट्रविकास क लिए समर्पित हा। हमारे हर प्रयत्न और हर कार्य का अतिम कद्रबिन्दु राष्ट्रहित म होना चाहिए। हम व्यक्तिगत स्वार्थ स ऊपर उठकर यह सोचना हागा कि जा काय म करन जा रहा हू वह मेरे दशहित म बाधक ता नही होगा ? जब तक हम अपने विचारो का इस प्रकार सुनियत्रित नही करते तब तक हम अपना तथा समाज का भला नही कर सकते। कुछ आत्मकेद्रीय स्वार्थी तत्व हमेशा कहत है कि हम दश क बारे मे क्या साचे ? हमारे देश न हमार लिए क्या किया है ? मै उन लोगो को अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन० एफ० कनेडी की बात सुनाना चाहूगा। वे कहते हे — Ask not what your country can do for you ask what you can do for your country (हमारे देश ने हम क्या दिया हे यह पूछन के बजाय आप अपन दश के लिए क्या कर सकत हा यह बताओ।)

अगर इस प्रकार की विचारधारा से हम चले ता भारत का हर व्यक्ति इसस लाभान्वित होगा। किंतु हम अपनी स्वार्थबुद्धि से ऊपर नही उठ पात इसलिए पतित हो रह हे। जब तक हम अपनी विचारा की कक्षाओ का और मानसिक सीमाओ का विस्तृत नही करते तब तक हमारा कल्याण सभव नही। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी न कहा कि ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उददेश्य है अर्थात शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना। महर्षि दयानन्द युगपुरुष थे इसलिए उन्होने समूचे विश्व के कल्याण की कामना की है। उन्होने अपने कल्याण की भावना देश की सीमा तक मर्यादित नहीं रखी। महापुरुषो की महानता का प्रत्यय हम उनक उदार अत करण से हाता है। जितना हम अपने हृदय का विशाल बनाते जायेंगे उतना हमारा विकास सुनिश्चित है। सकीर्णता तो मृत्यु के समान हे ओर उदारता जीवन है। हम अपनी उदारता की भावना का अभ्यास हमारी सामाजिक व राष्ट्रीय उपलब्धियो द्वारा करना चाहिये। जिस दिन हमारी उपलब्धिया महत्वपूर्ण बन जायेगी तब आप राष्ट्र क लिए महत्त्वपूर्ण बन जायगे।

— *सुमत्र चन्द्रशेखर लोखण्डे*
सीताराम नगर लातूर महाराष्ट्र

सार्वदेशिक सभा का स्तुत्य प्रयास

घर-घर में देश-भक्ति और ऋषि-भक्ति पहुंचाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु

"आजादी के दीवाने" कैसेट

केवल १५ रुपये में प्राप्त करें

इस कैसट का निर्माण उ०प्र० के पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा तथा उनके ज्येष्ठ भ्राता पदमश्री भारत भूषण योगाचार्य जी के विशेष प्रयासों से करवाया गया है। इस कैसेट मे देश भक्ति ओर समाज सुधार की भावनाओ का समावेश किया गया है। "स्वामी दयानन्द घर घर अलख जगाय गयो रे" गीत ने तो स्वामी जी के देशभक्त अनुयायियो ने गुणगान करके श्रोताओं का रोम रोम पुलकित करने का सफल प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त रामप्रसाद बिस्मिल एव अशफाक उल्ला द्वारा फासी से पूर्व लिखे गये गीतो का भी इसमे समावेश किया गया है।

इस कैसेट का प्रकाशित मूल्य ३०/— रुपये है। परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश भक्ति की भावनाओ और ऋषि के गुणगान का अधिकाधिक प्रचार करने के उद्देश्य से इस कैसेट के मूल्य मे अपना आर्थिक सहयोग प्रस्तुत किया है।

यह कैसेट केवल १५ रुपये में सार्वदेशिक सभा कार्यालय में उपलब्ध होगी। पैकिंग तथा डाक व्यय अलग होगा।

आर्य जनता से यह अपेक्षा की जाती है कि अधिक से अधिक सख्या मे इन कैसेटो को प्राप्त कर के घर घर पहुचाए और ऋषि भक्ति का परिचय दे।

— **विमल वधावन,** *वरिष्ठ उप प्रधान*

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

वेदों की ज्योति जलाएं

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।

आज धरा पर वृत्ति आसुरी पलती तथा बिहसती
मानवता है आहे भर कर व्यथा कथा निज कहती
धरती मा है अनाचार व अनय अतुल अब सहती
गगा की पावन धारा प्रतिकूल दिशा मे बहती

बिखरा किरणे वेद ज्ञान की स्वर्ण सबेरा लाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदों की ज्योति जलाए।।

फैल रहा अज्ञान अधेरा शिक्षा पद्धति है दूषित
पर्यावरण तथा जल थल नभ होता आज प्रदूषित
विस्तृत है इस पुण्य भूमि पर अनय तथा अन्याय असित
भ्रष्ट बनी है आज व्यवस्था जन जन को है कष्ट अमित

निरत सभी हो श्रुति के पथ पर अपना धर्म निभाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदों की ज्योति जलाए।।

आलोकित हो वेद ज्ञान से मानव का अन्तर्मन
ऋषियो मुनियों मनीषियो की इच्छा का हो प्रणयन
वेदाधारित हो शिक्षा सब खुले ज्ञान के दिव्य नयन
बने प्रफुल्लित इस धरती के सभी मानवो का अभिमन

वेद मार्ग पर जगती तल के सब जन कदम बढाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।।

मुसाफिर खाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली मे

वेद प्रचार समारोह

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

(२२ अगस्त २००२ से ३१ अगस्त २००२ तक)

स्थान आर्यसमाज मन्दिर १५, हनुमान रोड नई दिल्ली १ **श्रावणी पर्व प्रतिदिन** अथर्ववेद पारायण यज्ञ सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार सगीत एव प्रवचन के कार्यक्रम **ब्रह्मा एव प्रवक्ता** आचार्य राजू वैज्ञानिक **सहयोगी** डा० कर्णदेव शास्त्री **भजन** श्री वेद व्यास ३१ अगस्त प्रात ६ ३० पर छात्र छात्राओ तथा गुरुकुलो के ब्रह्मचारियों द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन होगा। सभी भाई बहिनो से अनुरोध है कि प्रतिदिन प्रात तथा साय समस्त कार्यक्रमों मे इष्टमित्रो सहित सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाए एव कार्यक्रमो को सफल बनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

ऋषि ऋण चुकाने का शुभ अवसर

श्रावणी उपाकर्म तथा वेदप्रचार सप्ताह के पावन पर्व पर

चारों वेदों के पूर्ण सैट पर

भारी छूट

श्रावणी उपाकर्म तथा वेदप्रचार सप्ताह के पावन अवसर पर अधिक से अधिक वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार हो। महर्षि दयानन्द का घर घर गुणगान हो आर्य सस्कारो से बच्चा बच्चा अभिभूत होकर आर्य बने। इस विशाल गुरुतर दायित्व को निभाने के लिए सैकडो बार जन्म लेना पडे तो भी कम है। तो फिर इस जन्म को व्यर्थ क्यो गवाया जाए। इस सूक्ष्म और मूल भावना के साथ **सार्वदेशिक सभा** ने निम्न **विशेष छूट** वेदो के सैट पर देना घोषित किया है।

छूट ३१ अगस्त, २००२ तक उपलब्ध

वास्तविक मूल्य १६५० / रुपये
विशेष छूट के बाद केवल १२००/ रुपये मे उपलब्ध
तथा
साथ मे नि शुल्क हिन्दी तथा सस्कृत सत्यार्थ प्रकाश की एक एक प्रति दी जाएगी।

समय रहते इस विशेष छूट का स्वय लाभ उठाए तथा अन्य व्यक्तियो को भी प्रेरित करे।

प्राप्ति स्थान :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २

वेदव्रत शर्मा *सभामन्त्री*

पुस्तक समीक्षा

सन्ध्या–भास्कर

पृष्ठ २१६ मूल्य ५०/ रुपये

लेखक धर्मविज्ञानमुनि (पूर्व नाम आचार्य धर्मवीर विद्यालकार)

प्रकाशक आध्यात्मिक शोध सस्थान इ ३०६ इस्ट आफ कलाश नई दिल्ली ६५

प्रस्तुत सन्ध्या भास्कर ग्रथ म वदिक सन्ध्या क मन्त्रो का व्याख्यान अनेक दृष्टियो से उत्तम हे इसकी शैली नवीन है। इसमे विद्वान आचार्य ने आचमन अघमर्षण मनसा परिक्रमा तथा उपस्थान मत्रो से निहित शरीर शुद्धि मन शुद्धि व्यवहार शुद्धि आत्म शुद्धि आदि क रूप मे सर्वागीण शुद्धि की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया हे।

इसमे उपस्थान मत्रो तक पहुचने के बाद प्रभु मिलन होगा ही। इसी प्रकार प्रत्येक मत्र का अपने अगले मत्र से सम्बन्ध और प्रत्येक मन्त्र का सम्बन्ध ज्ञात होने से पूर्वापर सम्बन्ध का ज्ञान हो जाता है।

अघमर्षण और मनसा परिक्रमा के मन्त्रो से आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक तीनो अर्थो का प्रतिपादन किया है।

सन्ध्या से किस प्रकार योग का सप्तम अग ध्यान सरलता से हृदय ग्राही हो सकता ह अ यन्त प्रभावी ढग से समझाया ह भषा सरल शली सुगम्य है।

व्याख्यान का लाभ अर्थ की हृदय म दृढता से पेठ है। अर्थ का स्वाभाविक ग्रहण तदजपस्तदर्थ भावनम से सरल हाने से ईश्वर का साक्षात्कार होने से पुस्तक की भूमिका का सविस्तार प्रतिपादन किया है।

इश्वर का स्मरण स्तुति प्रार्थना उपासना के लिए सन्ध्या का विधान किया है।

विद्वान लेखक आचार्य धर्मवीर विद्यालकार ने सन्ध्या पद्धति के महत्व को मन्त्रो की विधि प्रेरणादायी उपयोगी बनाया है।

प्रभु से सामीप्य सन्ध्या की सर्वोत्कष्ट उपलब्धि है। वैदिक सन्ध्या पद्धति व ब्रह्मयज्ञ का विधान महर्षि ने विभिन्न मत्रो को सकलित कर किया है।

प्रस्तुत पुस्तक ग्राहय और सराहनीय है।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज पखा रोड सी ब्लाक (पजीकृत) सी ३ पार्क जनकपुरी नई दिल्ली द्वारा

श्रावणी पर्व/वेद प्रचार पर्व

२२ अगस्त (बृहस्पतिवार) से ३१ अगस्त (शनिवार) २००२ तक

इस अवसर पर यजुर्वेद यज्ञ श्रावणी उपाकर्म (यज्ञोपवीत परिवतन एव धारण) दर्शनाचार्य श्री विवेक भूषण द्वारा वेद प्रवचन भजन दर्शन/उपनिषद कक्षाए हैदराबाद विजयोत्सव आर्य महिला सम्मेलन बाल सम्मलन योगीराज श्रीकष्ण जन्माष्टमी तथा ऋषि लगर के कार्यक्रम आयोजित किए जाएगे।

आपसे सानुरोध प्राथना है कि कार्यक्रम मे परिवार एव इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित हो और तन मन धन से सहयोग देकर धर्म लाभ प्राप्त करे।

हैदराबाद के आर्य शहीदों को

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।

परिवारों के सुख को त्यागा, देश के अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किए, पर धर्म न छोड़ा वीरों ने।।

ऐसे सभी धर्मवीरों के आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुणगान को, हम निज जीवन में लाते हैं।।

अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर वीर जाति को निश्चय से।।

करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जोकि खुशी से प्राणों की आहुति दें वीर।।

जगदीश को साक्षी जान कर यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर चलने का व्रत करते हैं।।

सर्व शक्ति दे बल ऐसा, धीर-वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुणकारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधवराव विष्णु भगवन्ता श्री स्वामी कल्याणानन्द।।

स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पांडुरंग श्री शान्ति प्रकाश।।

पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनेहरा वैंकटराव।
भक्त अरुणाराम जी नन्हूं सिंह जी गोविन्द राव।।

बदन सिंह जी रतिराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।

राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरो का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही वीरों धीरों का।।

मातृ छाया साधना केन्द्र हाथरस का पंचम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

मातृ छाया साधना केन्द्र हाथरस का पचम वार्षिक महोत्सव दिनाक २६ जुलाई २००२ को उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ किया गया। यज्ञ मे मुख्य यजमान श्री रामवीर जी उपाध्याय ऊर्जा एव मेडीकल शिक्षा मन्त्री उत्तर प्रदेश शासन ने भाग लिया। यज्ञ का सम्पूर्ण कार्य मातृ छाया के छात्रो द्वारा सम्पन्न किया गया। यजमान को आशीर्वाद सुश्री कमला जी स्नातिका अध्याधिष्ठात्री कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस द्वारा प्रदान किया गया। ऊर्जा मन्त्री महोदय द्वारा बच्चो को आशीर्वाद देया गया। बच्चो के कार्यक्रम को अत्यनत सराहनीय बताया। उन्होने कहा कि इन छोटे छोटे बच्चो द्वारा वेदमन्त्रो का शुद्ध उच्चारण एव धारावाहिक सस्वर पाठ मेरे जीवन की स्मरणीय घटना रहेगी। यह सब महर्षि देव दयानन्द की अनुकम्पा है जिसने राष्ट्र को वैदिक सस्कृति की सही दिशा दी और यही एक सत्य मार्ग है। मैं केन्द्र के अभिभावको से प्रार्थना करना चाहूगा कि वे इन्हे पूर्ण राष्ट्र पुत्रो के रूप मे विकसित कर राष्ट्र को समर्पित करे। इस अवसर पर उन्होने केन्द्र के सहयोग के लिए पच्चीस हजार रुपये विधायक निधि से देने की घोषणा की तथा भविष्य मे भी सहयोग देते रहने का आश्वासन दिया।

शोक समाचार

सौ० मधुमती पुरुषोत्तम आर्य का दिनाक ४–७–२००२ को अल्पकालीन बीमारी के कारण हैदराबाद के मेडिसिटी अस्पताल मे दोपहर ३ बजे निधन हो गया। वे ४३ वर्ष की थी। जाते समय अपने पश्चात अपने पति दो पुत्र और दो पुत्रियो को छोड गई। वह आर्यसमाज पुर्णा जिला परभणी के मत्री पुरुषोत्तम आर्य की धर्मपत्नी थी।

उन्होने आर्यसमाज की तन-मन और धन से भरपूर सेवा की। उनका अतिम सस्कार वैदिक पद्धति से किया गया।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने शोक सन्देश मे सहानुभूति व्यक्त करते हुए श्रद्धाजलि दी।

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान - श्री राम किशन जी अग्रवाल
मन्त्री - श्री बाबूराम आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री अरुण जी गुप्ता

कु० अंजुम वाशा से कु० अंजू श्रीवास्तव बनी

आर्य समाज गोविन्द नगर के पुरोहित प० सत्य केतु शास्त्री जी ने कु० अजुम वाशा पुत्री श्री अकबर वाशा म०न० १७ सी बगलौर निवासिनी को शुद्ध उसका नाम कु० अजू श्रीवास्तव रखा उसका विवाह सस्कार नवीन कुमार श्रीवास्तव पुत्र श्री प्रेम शकर श्रीवास्तव मकान न० १०२ फ्लैट आर०आई० सेन्ट्रल एक्साइज कालोनी, बान्द्रा मुम्बई निवासी से सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्री शुभ कुमार बौहरा एव मत्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने नव दम्पत्ति को प्रमाण पत्र जारी कर आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर नवीन कुमार श्रीवास्तव का सारा परिवार उपस्थित हुआ औरवधु को स्वीकार कर घर ले गए। – *पं० सत्य केतु शास्त्री*

व्यवस्थित समाज हेतु सत्य पालना आवश्यक है – तत्वबोध

"व्यवस्थित समाज हेतु सभी द्वारा सत्य पालन नितान्त आवश्यक है।" यह बात श्रीमददयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा न्यास के सभागार मे श्री अशोक आर्य के सयोजन मे आयाजित पारिवारिक सत्सग के अवसर पर स्वामी तत्वबाध सरस्वती न अपने अध्यक्षीय उदबोधन मे कहीं। उन्होने कहा कि व्यस्थित समाज उचित न्याय पर तथा उचित न्याय सत्य पर आधारित हे आज देश मे नि स्वार्थ व सत्यवादियो की नितान्त आवश्यकता है।

इससे पूर्व मुख्य वक्ता के रूप मे डॉ० रवीन्द्र वर्मा ने "आर्यावर्त और प्राचीन विश्व विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

आर्यो के सभी कार्यक्रम प्रभु भक्ति व ऋषि महिमा के भजन के अभाव मे अधूरे ही समझे जाते हैं अत न्यास के भजनोपदेशक श्री कृष्णकुमार जी द्वारा "नर नारी सब एक समान, भजलो प्यारे ओम का नाम" व "भारत के इक सन्यासी की हम कथा सुनाते हैं" सुमधुर भजन प्रस्तुत किए गए। तबले पर सगत आर्यवीर दल देवास के सचालक श्री सुनील फतरोड ने की।

इस अवसर पर सर्वप्रथम वेदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमे प्रचुर वर्षा की कामना से वृष्टियज्ञ की विशेष आहुतिया भी दी गई, तथा आज जिसशाति प्राप्ति के लिए समस्त विश्व लालायित है उसकी याचना हेतु शाति पाठ किया गया।

प्रतिष्ठा मे

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा

दिनांक २२ अगस्त से ३१ अगस्त तक

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

प्रतिदिन : प्रातः ७.३० से यजुर्वेदीय यज्ञ

इस अवसर पर श्रावणी उपाकर्म एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा तथा हैदराबाद सत्याग्रहियो का सम्मान किया जाएगा। ३१ अगस्त को यजुर्वेदीय वृहद यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगीराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

आर्यसमाज नोएडा में श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेद प्रवचनों का आयोजन

दिनांक २६ से ३१ अगस्त २००२

स्थान : आर्यसमाज मंदिर, सैक्टर-२३, नोएडा

दुखा एव पापो से मुक्त होने प्रायश्चित करन तथा ज्ञान की साधना म तत्पर होने का पर्व श्रावणी पूर्णिमा वेदिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। श्रावणी महापर्व की सार्थकता को समझते हुए **आर्यसमाज नोएडा ने इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया है।** इस महायज्ञ मे वेदो की मार्मिक व्यवहारिक व्याख्या एव मधुर सगीत सुनने का अवसर प्राप्त होगा। **यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जयेन्द्र कुमार होंगे।** मुख्य ऋत्विक श्रीमती गायत्री मीना, आचार्य श्री मोहन प्रसाद, श्री सोमनाथ शास्त्री होगे।

आर्य जगत के ख्याति प्राप्ति **वैदिक विद्वान श्री सत्यानन्द वेदवागीश जी की विशेष प्रवचन माला होगी। महात्मा गोपाल स्वामी जी के विचार तथा आर्य भजनोपदेशक श्री उमेश आर्य जी के भजन सुनने का अवसर भी प्राप्त होगा। कृपया भारी संख्या में पहुंचकर धर्म लाभ उठायें।**

भूल-सुधार

दिनाक १८ से २४ अगस्त के सार्वदेशिक साप्ताहिक मे पृष्ठ सख्या ६ तथा ७ पर प्रेस की भूल के कारण गलत ढग से पेज छप गए हैं। कृपया पृष्ठ ६ का नीचे का आधा भाग, पृष्ठ ७ पर नीचे देखे तथा पृष्ठ ७ का नीचे का आधा भाग पृष्ठ ६ पर नीचे पढे। असुविधा के लिए खेद है। – **सम्पादक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से **सार्वदेशिक प्रेस** द्वारा १४८८, पटौदी हाउस, दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ **से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ **से प्रकाशित** (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक **वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री।** ई-मेल नम्बर **vedicgod@nda.vsnl.net.in** तथा वेबसाईट - **http://www.whereisgod.com**

वर्ष ४१ अक १८   १ सितम्बर से ७ सितम्बर २००२ तक   दयानन्दाब्द १७६   सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३   सम्वत २०५९   भा० कृ० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

मेवात में पूरे परिवार का जबरन धर्मान्तरण

मदुरै में २५० बच्चों को गुमराह करके ईसाई बनाया

विगत् माह मे धर्मान्तरण रूपी राष्ट्रद्रोही षडयन्त्र के काले बादल अधिक तीव्रता के साथ दिखाई दिए हैं। लगातार दो बडी घटनाओ ने राष्ट्रवादी जनता को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि धर्मान्तरण से निपटने के लिए यदि कोई ठोस कार्यक्रम अभी भी न बनाया गया तो अगले कुछ वर्षों मे धर्मान्तरण की गतिविधिया बहुत बडे पैमाने पर पहुच सकती है।

विगत माह हरियाणा मे एक बाल्मीकि हिन्दू परिवार के लगभग तीन दर्जन सदस्यो को कुछ लालच देकर और डरा धमका कर इस्लाम धर्म कबूल करवा दिया गया था। उनमे से एक सदस्य २१ वर्षीय वीरसिह किसी प्रकार निकल भागा तो उसने प्रशासन के सामने अपना बयान देकर यह रहस्योद्घाटन किया कि गाव के कुछ मुस्लिम परिवारो ने परिवार की महिलाओ और बच्चो के विरोध के बावजूद जबर्दस्ती यह धर्मान्तरण करवाया है। परिवार के कुछ बुजुर्ग सदस्य अवश्य ही किसी लालच की वजह से धर्मान्तरित होना चाहते थे। अपनी मा कमलेश की मदद से वीरसिह किसी तरह घर छोड कर भाग निकला।

धर्मान्तरण के बाद इस परिवार के सदस्यो को मुसलमानो ने पूरी तरह से कैद करके रखा है।

इस घटना की सूचना जैसे ही समाचार पत्रो के माध्यम से सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुई तो सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी से सम्पर्क किया और गुडगाव की समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो की एक बैठक मे भाग लेने वहा पहुचे।

इस बैठक मे गुडगाव के आर्यजनो को इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि हमे हर हालत मे वीरसिह का साथ देना चाहिए और जबरदस्ती किए गए इस धर्मान्तरण के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। विडम्बना यह है कि इस परिवार के दो चार बुजुर्ग पुरुषो की जिद और मनमानी के कारण इस परिवार की महिलाओ और बच्चो को भी इस राष्ट्र विरोधी षडयन्त्र का शिकार होना पडा है।

इस बैठक मे उपस्थित आर्य नेता श्री कन्हैया लाल तथा श्री पदमचन्द्र जी ने बताया कि आज भी इस परिवार के लोग कुछ असामाजिक तत्वो की अघोषित कैद मे है। उन्होने बताया कि आर्यसमाज इस घटना को लेकर एक व्यापक जन जागृति अभियान चलाना चाहता है। जिसमे अन्य राष्ट्रवादी वर्गो को भी साथ लिया जाएगा।

गुडगाव मे श्री विमल वधावन तथा आचार्य यशपाल जी अन्य आर्यनेताओ के साथ सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध सन्यासी श्री भक्तिस्वरूपानन्द जी से भी मिले और आगे के कार्यक्रम पर विचार किया गया।

अगले दिन सार्वदेशिक सभा का एक शिष्ट मण्डल गृह मन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी की अनुपलब्धता के कारण गृह मन्त्रालय के उच्च अधिकारियो से मिला और बाद मे गृह राज्यमन्त्री श्री आई०डी० स्वामी से भेट की।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

धर्मान्तरण रुपी विषलता आपके सहयोग से रुक सकती है

अन्तर्वेदना को अंगीकार करें

धर्मान्तरण करने के लिए ईसाइयत और इस्लाम को करोडो अरबो रुपये की विदेशी सहायता मिल रही है आदिवासी ग्रामीण और गरीबी से ग्रस्त अचलों मे इनके मिशनरियो ने चप्पे चप्पे पर समाज कल्याण के कई कार्यक्रम चलाकर जनता को अपनी ओर आकर्षित करने का हर प्रयास किया है। इस प्रयास के अतिरिक्त झूठे लोभ लालच छल कपट और गैर कानूनी दबाव का प्रयोग करने मे भी यह लोग किसी प्रकार का सकोच नहीं करते।

इस देश का दुर्भाग्य है कि भारत के सविधान द्वारा प्रदत्त धर्म की स्वतन्त्रता के अधिकार रूपी कवच का इस्तेमाल करते हुए यह सारे धर्मान्तरण रूपी षडयन्त्र इस देश की सामाजिक व्यवस्था को आमूल चूल परिवर्तित करने के उद्देश्य से किए जा रहे हैं। इन्हीं षडयन्त्रो के माध्यम से इस देश के मजबूत राष्ट्रवाद को भी दफन करने की योजना को लागू किया जा रहा है। जबकि भारत का सर्वोच्च न्यायालय कई फैसलो मे यह व्यवस्था जारी कर चुका है कि लोभ लालच या दबाव के द्वारा किया गया धर्मान्तरण धर्म स्वतन्त्रता मे शामिल नहीं माना जा सकता। इसके बावजूद हमारी सरकारे लोभ लालच और दबाव से हुए धर्मान्तरण को प्रतिबन्धित करने मे हमेशा सकोच करती रही है परिणामत आज तक ऐसा कोई कानून हमारे देश मे नहीं बन पाया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

मॉरीशस जाने के इच्छुक महानुभाव ५ सितम्बर, २००२ तक सम्पर्क करे

मॉरीशस आर्यसभा द्वारा आयोजित महासम्मेलन में प्रमुख कार्यक्रम वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मोहनलाल मोहित जी का १००वा जन्मदिवस मनाया जाना है। श्री मोहित जी के सुपुत्र श्री सज्जन मोहित ने सार्वदेशिक सभा को सूचित किया है कि भारत से आने वाले उन महानुभावों के लिए जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित भ्रमण दल में शामिल होंगे, भोजन तथा मॉरीशस के स्थानीय भ्रमण की व्यवस्था वे व्यक्तिगत रूप से उपलब्ध कराएगे। इससे लगभग ३५००/– प्रति व्यक्ति खर्च कम हो जाएगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी ने कहा है कि पूर्व घोषित २८५००/– रुपये के स्थान पर केवल २५०००/– रुपये ही प्रत्येक यात्री से लिए जाएगे। अत समस्त इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि २५०००/– रुपये की राशि का बैंक ड्राफ्ट (कृपया चैक न भेजें) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ५ सितम्बर से पूर्व अवश्य सभा कार्यालय में पहुचा दें। इसके बाद आने वाले नामों को यात्रा में शामिल करना कठिन होगा।

1 मॉरीशस यात्रा दिल्ली से 18 सितम्बर 2002 (बुधवार) दोपहर 2 बजे की हवाई उड़ान से प्रारम्भ होगी और वापसी 25 सितम्बर 2002 (बुधवार) को दोपहर तक दिल्ली पहुचेगी।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष भाग

मेवात में पूरे परिवार का जबरन धर्मान्तरण

गृह राज्य मन्त्री ने गुडगाव के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री सिहाग को न्यायोचित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस शिष्ट मण्डल मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैo देवरत्न आर्य वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री कन्हैया लाल तलरेजा आदि शामिल थे।

दूसरी तरफ मदुरै मे २५० स्कूली बच्चो का छल कपट से धर्मान्तरण कराने की सूचना भी प्राप्त हुई है। इस घटना मे १५ से २० वर्ष की आयु के बच्चो को यह कहकर धर्मान्तरित किया गया कि ईसाई धर्म ग्रहण करने से उन्हे जीवन मे कभी आर्थिक कठिनाइयो का सामना नहीं करना पडेगा और उनके जीवन मे धन की कमी कभी नहीं रहेगी।

इस घटना की सूचना मिलते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन ने तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबोध चन्द्र जी से सम्पर्क किया और मदुरै के कलेक्टर वीoरामचन्द्र से टेलीफोन पर बात की। उन्होने यह आश्वासन दिया कि वे इसकी छानबीन करेगे।

श्री वधावन ने सभा के अधिकारियो को निर्देश दिया है कि वे तत्काल इन धर्मान्तरित बच्चो की सूची तैयार करवाने का प्रयास करे और इनके परिजनो के साथ एक एक करके सम्पर्क किया जाए।

मदुरै क्षेत्र में शुद्धि का कार्यक्रम चलाने मे अग्रणी वीo नारायण स्वामी जी विगत कुछ दिनो से अस्वस्थ हैं परन्तु श्री सुबोध जी ने बताया कि अस्वस्थता के बावजूद भी स्वामी जी ने यह निर्णय लिया है कि वे तत्काल धर्मान्तरण का शिकार हुए बच्चो के माता पिता से सम्पर्क करेगे और उन्हे अपने धर्म पर अडिग रहने की प्रेरणा दी जायेगी।

पृष्ठ १ का शेष भाग

मॉरीशस जाने के इच्छुक महानुभाव ....

2 जिन महानुभावों के साथ परिवार के बच्चे जाना चाहें उन्हें 2 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए 4000/- रुपये केवल हवाई जहाज के टिकट के देने होंगे।

2 वर्ष से बडे और 12 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए 13500/- रुपये हवाई जहाज टिकट तथा 6000 /- रुपये आवास, भोजन तथा अन्य खर्च के निमित्त कुल 19,500/- रुपये देने होंगे।

5 पासपोर्ट साईज के तीन फोटो भी भिजवाईं।

6 जाने वाले महानुभावो का पासपोर्ट 31 मार्च, 2003 से अधिक की अवधि तक वैध होना चाहिए।

7 मारीशस जाने के इच्छुक महानुभाव तत्काल टेलिफोन से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को अपना नाम, पता लिखवाए जिस पर उन्हें वीजा फार्म भेजा जा सके जिसे वे हस्ताक्षर करके 5 सितम्बर से पूर्व सभा कार्यालय में भेज सकें।

8 एक बार धनराशि जमा होने के बाद यात्री अपना कार्यक्रम रद्द करेंगे तो उनकी राशि में से केवल 1500/- रुपये काटकर बाकी राशि उन्हें वापस लौटा दी जाएगी।

9 विशेष जानकारी के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में टेलिफोन नo 3274771, 3260985, 3248086, 3248087 पर सम्पर्क करें।

शोक प्रस्ताव

श्री ओकारनाथ जी के निधन का समाचार पढकर अपार दुख हुआ। मैं व्यक्तिगत रुप से मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन से उनके सानिध्य मे आया और जोधपुर सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन २००२ मे निकट से उन्हे देखा। सौम्य स्वभाव के धनी श्री ओकारनाथ जी की आत्मीयता धैर्य उत्साह कार्य करने की शैली का में कायल हो गया। उनसे बहुत कुछ सीखने योजनाबद्ध ढग से कार्य करने की कला को अपने मे आत्मसात करने के निश्चय से एकाएक वचित हो गया।

श्री ओकारनाथजी आर्यसमाज साताक्रुज (मुम्बई) के प्राण थे और कई वर्षो तक उसके पथ प्रदर्शक रहे। ऋषि जन्मभूमि टकारा के तो पिछले चार दशको से सेवक और उसके मैनेजिग ट्रस्टी के रुप में कार्यरत थे। आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान पदको सुशोभित करते हुए और वर्तमान में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के सम्माननीय अन्तरग सदस्य थे। गतवर्ष मार्च में मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफल सयोजन आर्य प्रतिमिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान मे श्री ओकारनाथ जी के ही प्रधानत्व में और कैप्टन देवरत्न जी आर्य के सयोजकत्व मे सम्पन्न हुआ था जो कि अपने मे अद्वितीय एव अनुकरणीय रहा। ऐसे श्री ओकारनाथ जी के आकस्मिक निधन से आर्यजगत के एक वैभवशाली पुरुषार्थी कर्मवीर का स्थान रिक्त हो गया है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य मे होना कठिन है।

आज सभा कार्यालय मे श्री ओकारनाथ जी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गयी कि उनकी आत्मा को सद्गति प्राप्त हो तथा परिवार एव स्वजनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान हो।

भवदीय

आनन्द कुमार आर्य, सभामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल

पृष्ठ १ का शेष भाग

धर्मान्तरण रुपी विषलता आपके सहयोग से रुक सकती है
अन्तर्वेदना को अंगीकार करें

कानूनी व्यवस्था की इन कमजोरियो का लाभ उठाते हुए विदेशो मे बैठे मिश्नरी लोग अपने अपने धर्मो का प्रचार करने के लिए करोडो अरबो रुपया फेकते रहते हैं जबकि धन सम्पन्न हिन्दुओं के सामने हमारी सामाजिक सस्थाओ को एक याचक की तरह धन का सहयोग मागना पडता है।

ऐसे महानुभावों से मेरा विनम्र निवेदन है कि अपनी तिजोरियो और बैंको मे जमा धन को केवल मात्र अपनी व्यक्तिगत शोभा ही न बनें रहने दे अपितु उस धन के कुछ भाग को वैदिक धर्म के अधिकाधिक प्रचार प्रसार मे प्रयोग करने का पवित्र सकल्प ले। विदेशी मिश्नरी अपने अवैज्ञानिक सिद्धान्तो के प्रचार के लिए जहा लाखो रुपया बहा देते है वहा हम ५००/– रुपये प्रतिमाह (६०००/– रुपये वार्षिक) की दर से एक बालवाडी खोलकर प्रचार प्रसार मे भी अपेक्षित मात्रा मे सक्षम नहीं हो पा रहे है। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि यदि लाखो करोडो रूपये का सहयोग एकत्रित करके हिन्दूजाति मूर्तिया स्थापित करने के बजाय भारत के प्रत्येक गाव मे एक एक विद्यालय या धर्मशिक्षा केन्द्र स्थापित कर दे प्रत्येक जिले मे एक एक अनाथालय खोला जाए अधिक से अधिक गुरुकुल स्थापित किए जाए तो वैदिक धर्म की सुरक्षा और प्रचार प्रसार के लिए कुछ ठोस कार्यवाही सम्भव होगी।

आशा है सुधीजन इस अतर्वेदना को अंगीकार करते हुए अपना अधिकाधिक सहयोग धर्मान्तरण रुपी विषलता की रोकथाम के लिए अर्पित करेंगे।

निवेदक – विमल वधावन,
वरिष्ठ उप–प्रधान

हमारी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान संस्कारित जीवन

आर्यसमाज बीo ब्लॉक जनकपुरी के मच से बोलते हुए प्रसिद्ध आर्य विदुषी डॉo रमा जी ने कहा कि आज का युवा व किशोर वर्ग अपने बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते। और परिवार के सदस्यो मे प्यार भावना एव सामजस्य भावना का अभाव है। अपने जीवन मे हमें आज जिन ज्वलन्त समस्याओ का सामना करना पड रहा है। उसका एकमात्र कारण यही है कि हमने अपने बच्चो को अच्छे सस्कार नहीं दिए। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने बच्चों को आर्यसमाज मे आने की प्रेरणा दे क्योकि यहा की हवा बच्चो को सस्कारित कर सकती है। कार्यक्रम का सयोजन मन्त्री श्री जगदीश चन्द गुलाटी ने किया।

आदर्श समाज सेवी श्री मंगतराम जी वर्मा का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी भारत माता मन्दिर सरस्वती नगर हरदासपुरा के सस्थापक धर्म प्रेमी दयानन्द मठ चम्बा के प्रबल सहयोगी आदर्श समाज सेवी अनेक सस्थाओ के सगठनकर्ता आर्यसमाज चम्बा के भूतपूर्व प्रधान श्री मास्टर मगतराम जी वर्मा ३१-७-२००२ को ह्रदयगति के रुकने के कारण इस असार ससार को छोडकर परमतत्व में लीन हो गए। इनका पूर्ण वैदिक रीति से सस्कार किया गया इस अवसर पर हजारों लोगों ने भावपूर्ण विदाई दी। १२-८-२००२ को भारतमाता मन्दिर में रस्मपगडी सम्पन्न हुई।

– स्वामी सुमेधानन्द

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

अखण्ड भारत—सम्भावना और स्वरूप

– बलराज मधोक पूर्व सासद

१५ अगस्त १९४७ को ब्रिटिश गवर्नमैंट के दबाव और काग्रेस तथा मुस्लिम लीग की सहमति से भारत के खण्डित होने और पाकिस्तान बनने के समय से ही भारत के पुन अखण्ड होने की बात कहीं जा रही है। मैं उस समय श्रीनगर कश्मीर मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का प्रमुख और डी०ए०वी० कॉलेज मे इतिहास का प्राध्यापक था। विद्यार्थियों के आग्रह पर मेरा उस दिन का लैक्चर इसी विषय पर था। मैंने तब कहा था कि प्रकृति और परमात्मा ने भारत को सुनिश्चित सीमाओ वाला एक देश बनाया है। आज हुआ विभाजन कृत्रिम है। यह स्थायी नहीं हो सकता। परन्तु पाकिस्तान जब तक कायम रहेगा भारत का शत्रु रहेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध अनिवार्य है। उसके बाद पाकिस्तान का विघटन होगा और भारत पुन अखण्ड होगा परन्तु उसका स्वरूप क्या होगा यह कहना अभी कठिन है। बाद मे मिली जानकारी के अनुसार उसी दिन पाण्डिचेरी के सत महर्षि अरविन्द ने इसी प्रकार की बात कही थी।

गत ५५ वर्ष मे भारत ओर पाकिस्तान के बीच तीन युद्ध हो चुके हे ओर चौथा चल रहा है। १९७१ के युद्ध से पाकिस्तान के विघटन की प्रक्रिया शुरू हुई थी। इसका पूर्वी भाग इससे कटकर बगलादेश नाम से अलग देश बन गया था। तब पश्चिमी पाकिस्तान का भी विघटन हो सकता था परन्तु सोवियत रूस के दबाव के कारण पहले भारत द्वारा युद्ध बदी की घोषणा करने और बाद मे शिमला सधि के द्वारा युद्ध की जीत को कूटनीतिक हार मे बदल देने से वैसा नही हुआ। पाकिस्तान सतर्क हो गया और उसने अपनी सैन्य शक्ति बढाने और अणुबम बनाने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

बगलादेश के पाकिस्तान से कट जाने से यह स्पष्ट हो गया कि इस्लाम की अपील नकारात्मक है। यह काफिरो के विरोध मे मुसलमानो को अस्थायी रूप से भले जोड दे परन्तु इसके बल पर स्थायी सकारात्मक एकता और राष्ट्रीय भावना पैदा नहीं की जा सकती

वर्तमान पाकिस्तान चार अलग—अलग इकाईयों का समूह है। वे हैं सिन्ध पजाब पख्तुनिस्तान (सीमा प्रात) और बलुचिस्तान। विभाजन के बाद भारत से गए विदेशी मूल के उर्दू भाषा—भाषी मुसलमान जिनकी सख्या अब लगभग एक करोड हो चुकी है वह वहा भी उसी प्रकार शेष पाकिस्तानियो से कटे हुए हैं जैसे वे भारत में शेष भारतीयों से कटे हुए थे। मुस्लिम राज्यकाल मे वे शासक वर्ग के अग थे। उन्होने ही भारत विभाजन के लिए सबसे अधिक हो—हल्ला मचाया था। वे सोचते थे कि पाकिस्तान बनने पर वे उसके शासक बन जाएगे। कुछ समय के लिए ऐसा हुआ भी। वे पाकिस्तान के शासन पर छा गए। परन्तु जिन्ना की मृत्यु और लियाकत अली की हत्या के बाद उनके पाव उखडने लगे। अब वे सिन्ध के कराची ओर हैदराबाद जैसे बडे नगरो मे केन्द्रित है। वे उन्हे सिन्ध से काटकर अलग उर्दू भाषा—भाषी प्रदेश बनाना चाहते है। इस प्रकार वे एक प्रकार से पाकिस्तान की पाचवीं भाषायी इकाई बन चुके हैं।

इस समय पाकिस्तान की सबसे बडी इकाई पजाब है। पाकिस्तान की कुल जनसख्या मे वे लगभग ६० प्रतिशत हैं सिन्धी लगभग २० प्रतिशत पख्तून लगभग १० प्रतिशत बलोच लगभग ५ प्रतिशत और उर्दू भाषा भाषी मुहाजर लगभग ७ प्रतिशत हैं।

पाकिस्तान के शासन और सेना पर इस समय पजाबियो का वर्चस्व है। सेना और उच्च प्रशासनिक सेवाओ मे उनका अनुपात ८० प्रतिशत से अधिक है। वे सारे पाकिस्तान पर छा चुके है और पाकिस्तान के अन्य तीनो क्षेत्र और भारत से गए हुए मुहाजर उनके साम्राज्ञी व्यवहार से तग है और पजाब से अलग होना चाहते हे।

सिन्ध के लोग पजाबियो से भी पिट रह हैं और मुहाजरो से भी। उनमे पाकिस्तान से अलग होकर बगलादेश की तरह अपना सिन्धु देश बनाने की इच्छा प्रबल है। जिये सिन्ध और जिये हिन्द आन्दोलन इसी भावना की अभिव्यक्ति करता है। मुहाजरो मे भी अब यह अहसास पैदा होने लगा है कि पजाबियो के वर्चस्व से बचने के लिए उन्हे सिन्धियो के साथ मिलजुल कर रहना होगा और उनके प्रति आत्मीयता का भाव पैदा करना होगा।

बलुचिस्तान एक अलग देश हुआ करता था। इतिहास के थपेडो ने इसे इरान और ब्रिटिश इण्डिया में बाट दिया। विभाजन के बाद ब्रिटिश बलुचिस्तान पाकिस्तान का अग बन गया। परन्तु बलुचियो मे अपनी अलग राष्ट्रीय पहचान का भाव कायम है। वे पाकिस्तान से स्वतन्त्र होने के लिए दशको से सघर्ष कर रहे हैं। पाकिस्तान ने उन्हे पजाबी सेना के बल पर दबा रखा है परन्तु बलूचियो की राष्ट्र भावना को दबाया नही जा सकता। अरब सागर पर पडने वाला बलुचिस्तान के समुद्री तट मकरान तट का सैनिक महत्व बहुत बढ चुका है। पहले सोवियत रूस अफगानिस्तान से होता हुआ इस तट पर पहुचना चाहता था। अब सयुक्त राज्य अमेरिका की आखे इस पर लगी हुई है। देर या सवेर बलुचिस्तान अमेरिका के सरक्षण मे एक अलग राष्ट्र राज्य बनेगा। ऐसा मुझे लगता है।

पख्तूनिस्तान जिसे पाकिस्तान सीमा प्रात कहता है भाषायी और सास्कृतिक दृष्टि से अफगानिस्तान का अग है। १८८५ मे रूस के साथ पजदेह सधि के आधार पर सारा अफगानिस्तान ब्रिटिश सरकार के प्रभाव क्षेत्र मे आ गया। ब्रिटिश सरकार ने रूसी साम्राज्य को अपने भारतीय साम्राज्य से दूर रखने के लिए हिन्दूकोह जो हिमालय की पश्चिमी शाखा है और जिसे पार करते हुए तैमूर द्वारा भारत से १३९८ मे ले जाए जाने वाले १ लाख हिन्दू गुलामो मे से अधिकाश के सर्दी से मर जाने के कारण हिन्दूकुश यानि हिन्दू घातक पर्वत कहा जाने लगा था और जा तब तक अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा था के पार का कुछ ताजिक और उजवक भाषी क्षेत्र भी अफगानिस्तान मे मिला दिया। उसके बदले मे उहोने अफगानिस्तान का पजाब के साथ लगने वाला पूर्वी भाग अफगानिस्तान स काटकर ब्रिटिश साम्राज्य मे मिला दिया। यह काम १८९३ मे कर्नल डयूरैंड द्वारा अफगानिस्तान के साथ की गई डयूरेड सधि के द्वारा सम्पन्न किया गया था। यह सधि १० वर्ष तक लागू रहनी थी। वह अवधि पूरी हो चुकी हे। इसलिए पाकिस्तान का उस क्षेत्र पर अब कोई वैध अधिकार नही हे। वह सारा क्षेत्र कभी भी अफगानिस्तान वापस माग सकता है। हो सकता है कि अफगानिस्तान इस क्षेत्र के अतिरिक्त पेशावर पर जिसे महाराजा रणजीत सिह ने सदियो के बाद अफगानिस्तान से छीनकर अपने साम्राज्य मे मिलाया था की भी माग करे।

ऊपर दिए गए विवेचन से यह स्पष्ट है कि बलुचिस्तान और पख्तुनिस्तान की पाकिस्तान के कायम रहने मे कोई रुचि नही। यही बात बहुत कुछ सिन्ध और सिन्धियो पर भी लागू होती है। पाकिस्तान को बनाए रखने मे विशेष रुचि और निहित स्वार्थ अब केवल पश्चिमी पजाब का है। पजाब के सिविल तथा फौजी नेता और जनरल मुशर्रफ इस स्थिति को समझते हैं। इसलिए वह यथास्थिति को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

पाकिस्तान का विघटन होना तो अवश्यमभावी है परन्तु वह होगा निर्णायक युद्ध के बाद ही युद्ध होगा अवश्य। अब पाकिस्तान अलकायदा और इस्लामी आतकवादियो का केन्द्र बन चुका है। अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश भी इस बात को समझने लगे है। यदि अमेरिका को लगा कि मुशर्रफ की पकड कमजोर हो गई है और पाकिस्तान की बागडोर अतिवादी सेनापतियो और जेहादियो के हाथ मे जाने लगी है तो वह इसक अणु अस्त्रो के भण्डार को उनके हाथो मे पडने स रोकने के लिए स्वय भी पाकिस्तान को खत्म करने की पहल कर सकता है या इसम सहायक हो सकता है। भारत के लोगो को इस स्थिति का ज्ञान हाना चाहिए।

सैनिक मामलो के विशेषज्ञो के अनुसार युद्ध जीतने के लिए सैनिक शक्ति शस्त्र सेना के मनाबल और देश की जनता मे राष्ट्रवाद की प्रखर भावना के अतिरिक्त शत्रु के चरित्र की सही जानकारी और अपने लक्ष्य की स्पष्ट कल्पना होनी चाहिए। इस मामले मे भारत के नेतृत्व ने अभी तक आवश्यक जागरूकता नहीं दिखाई है।

भारत के अखण्ड होने की प्रक्रिया निर्णायक युद्ध और पाकिस्तान के विघटन के बाद शुरू होगी। वर्तमान रूप मे पाकिस्तान किसी हालत मे भारत के साथ नही मिलेगा। इसलिए भारत और पाकिस्तान का परिसघ बनाने की बात मे दम नही है। भारत के नेतृत्व को यह मानकर चलना चाहिए कि पख्तुनिस्तान अफगानिस्तान का हे और अततागत्वा उसके साथ मिलेगा। बलुचिस्तान को दर या सवेर अलग स्वतन्त्र राष्ट्र राज्य बनना है पश्चिमी पजाब की पूर्वी पजाब के साथ लगने वाली सीमा म कछ बदल करना होगा। लाहौर रावी नदी क पूव म है और रेडक्लिफ आयाग का दिए गए मार्गदर्शक नियमो के अनुसार यह १९४७ मे ही भारत को मिलना चाहिए था उस पर अधिकार करना भारत का एक लक्ष्य हाना चाहिए। इसे पूर्वी पजाब की राजधानी बनाना होगा। पश्चिमी पजाब की भावी राजधानी इस्लामाबाद होगी। पाकिस्तान के विघटन के बाद सिन्ध और पश्चिमी पजाब निश्चित रूप मे भारत के निकट आएगे परन्तु उनका भारत मे पूर्ण विलय होने की सम्भावना कम है। परन्तु यूरोपियन यूनियन की तरह भारत सिन्ध और पजाब का एक महासघ बन सकता है। इसमे बगलादेश भी शामिल हो सकता है। इस महासघ का निश्चित स्वरूप क्या होगा इसके सम्बन्ध मे कुछ कहना या लिखना अभी ठीक नही होगा।

भारत की जनता और शासको को पडित नेहरू की कल्पना की दुनिया मे रहने की प्रवृत्ति को त्यागना होगा। राजनीति रणनीति और विदेश नीति का आपस मे गहरा सम्बन्ध है। कुर्सी की राजनीति ओर राष्ट्रहित की राजनीति मे बडा अन्तर होता ह। राष्ट्रहित और जनहित की राजनीति के लिए निर्मल चरित्र और दूरदृष्टि वाले यथार्थवादी और राष्ट्रवादी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। गत ५५ वर्षों मे भारत इस मामले मे अभागा रहा है।

जे० ३६४ शकर मार्ग न्यू दिल्ली ११००६०

उत्तरांचल में अभी भी बलि-प्रथा — कारण एवं निवारण

— धर्मसिह शास्त्री डबल एम०ए०

उत्तराचल राज्य के हिन्दू समाज मे धर्म के नाम पर कई प्रकार की बलि प्रथाओ का प्रचलन सेकडो वर्षो से चल रहा है। आर्यसमाज किसी भी दृष्टिकोण से किसी भी जीवमात्र की हत्या को उचित नहीं मानता बल्कि उसका घोर विरोध करता रहा है। इस पाप कार्य के विरुद्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायी आर्य नेताओ द्वारा समय समय पर आवाज उठाते हुए इस विरोध को आगे बढाया गया है। गढवाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा बलि की प्रथाओ के विरूद्ध कुछ क्षेत्रो मे कार्य तो किया गया है किन्तु उत्तराचल के कई पिछडे क्षेत्रो मे अभी भी यह बलि प्रथा छुटपुट घटनाओ के रूप मे चाहे वह घटना पशुवध मेला (जतोडा) के रूप मे चल रही हो या गाव गाव मे चोरी छिपे चल रही हो मगर पशुबलि चल ही रही है जबकि इन क्षेत्रो म आर्यसमाजे है। इन क्षेत्रो म आर्यसमाज के प्रतिनिधि सदैव अपने सीमित साधनो स इसे समाप्त करवाने की ओर अग्रसर रहे तो ह मगर विफल रह है क्योकि उत्तराचल मे स्पृश्यता व सामाजिक विषमताए तो हे ही यह अन्धविश्वास क दल दल मे पूणत फसा हुआ है

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने अपनी विगत अन्तरग सभा दिनाक २३ जून २००२ मे पारित एक प्रस्ताव के द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के गठन को स्वीकति दे दी है इसक लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बहुत बहुत ध यवाद। अब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल को विशेष प्रचार प्रसार आदि योजना के द्वारा समस्त उत्तराचल के आर्य समाजो को बलि प्रथाओ के विरूद्ध कार्य करने तथा इसे जड से समाप्त करने हेतु विशेष अभियान चलाने की आवश्यकता होगी। उत्तराचल मे बलि प्रथा के मुख्य कारणो एव उनके निवारण पर पत्रकार श्री वी०सी० जुगराण ने भी निम्न रिपोर्ट प्रस्तुत की है —

नई दिल्ली। जीव सरक्षण के नाम पर मदारियो और कलदरो की रोजी तक पर हमला बोलने वाले कथित पशुप्रेमियो के लिए उत्तराखड मे नर भैसे की बलि का मामला आज तक मुद्दा नहीं बन पाया। हालाकि पिछले कुछ सालो मे इस क्षेत्र के गावो मे जीव हत्या की इन घटनाओ मे कमी जरूर आई है परन्तु अभी भी यहा हर साल एक हजार से अधिक भैसे अधविश्वास ओर अतिधार्मिकता के उन्माद म निर्मम मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। पशु बलि का यह चलन जहा एक ओर धार्मिकता की ओट मे गावो की आपसी होड ओर एक दूसरे से शक्तिशाली दिखने का कोतुक बना हुआ है वही एक प्रकृतिप्रेमी ओर कमोबेश शातचित्त समाज की क्रूर मनोदशा का भी द्योतक है। समस्या का चिताजनक पहलू यह भी है कि शिक्षा के प्रसार और आधुनिकता के सारे तर्को को ढेर करता यह चलन थम नही पाया है।

गढवाल मे मुडणेश्वर (खैरालिग) काडा (मजीन) बूखाल (कालिका) और कालिका वीरोखाल इत्यादि देवस्थानो पर जुटने वाले सालाना मेलो मे बडी सख्या मे नर भैसे बलि चढा दिए जाते हैं। वीरोखाल ओर बूखाल के कालिका मदिरो मे तो यह सख्या पाच सौ तक पहुच जाती है। ज्यादातर मामलो मे इस बलि का कारण मनोतिया होती हैं और मनौतियो का यह अधविवास महिलाओ मे ज्यादा देखा गया है। कभी वे सीमा पर गए फौजी पति की सकुशल वापसी कभी पुत्र प्राप्ति की कामना ओर कभी बेटे के नोकरी लग जाने की मनौतिया मागते हुए बलि देती हे।

भेसे की बलि की परम्परा पहाडा मे करीब तीन सौ साल पुरानी बताई जाती है। इसके पीछे इस जानवर की यहा के भौगोलिक स्वरूप की दृष्टि से अनुपयोगिता एक बडा कारण जरूर है परन्तु इन वध मेलो का मौजूदा स्वरूप बताता है कि इनके पीछे कोतुक भी कम बडी वहस नहीं रही। आचलिक बोलचाल मे ऐसे मेलो को कोतीक कहा जाता है और भेसे की बलि अठवाड कहलाती हे। भैसे जैसे शक्तिशाली जानवर को काबू मे करने का पराक्रम इन मेलो की कौतुकता को और बढा देता है क्योकि कई मामलो मे यह देखने को मिला है कि बलि के लिए ले जाने से पूर्व भैसे को शराब मिलाकर दौडाया जाता हे ताकि वह उन्मत्त और बेकाबू हो जाए वैसे भी नर भैंसे का प्रचलित नाम इस क्षेत्र मे बागी है।

बलि की प्रक्रिया धार्मिकता के पूरे छद्म के साथ प्रारम्भ होती है। किसी परिवार द्वारा मनौती के एवज मे खूटे पर बाधा गया बागी पूरे गाव की सम्पत्ति माना जाता है उसकी जौ तिल से पूजा की जाती है। यहा तक कि जिस खूटे पर वह बधा होता है उसे भी पूजा जाता है। बलि की निर्धारित तिथि से पूर्व गाव मे रोड मडाण (ढोल दमाऊ के साथ नृत्य) लगते है। बागी को अभ्यास के लिए दौडाया भी जाता है। निर्धारित तिथि को एक ऊची ध्वजा और ढोल दमाऊ के साथ उसे दिशाबधन के लिए गाव के चारो ओर घुमाया जाता है। गाव मे देवी के नाम पर सामूहिक भोज होता है। बलि से पूर्व बागी को मदिर की परिक्रमा कराई जाती है। उस पर पहला घाव गाव का प्रधान (ग्राम प्रधान नहीं) लगाता है। इसे चक्रकोट कहते है। आज भी माना जाता है कि निर्ममता से मारा जा रहा भैसा यदि वध के दौरान रभाता हे तो मान लिया जाता है कि देवी खुश नहीं हुई और फिर अगले वर्ष के लिए नए सिरे से बलि की मनौती माग ली जाती है। भेसे की मौत आमतौर पर ३५ ३६ चोटो के बाद ही हो पाती है। बलि के बाद हजारो की भीड के बीच से ध्वजा को पूरे आवेग के साथ मदिर परिसर से बाहर भगा ले जाना पडता है। मेले की यही कौतुकता होती है। इस कौतुकता मे एक छौंक ऐसे भी लगाई जाती है कि एक गाव के बागी को दूसरे गाव के लाग मारने की फिराक मे रहते हें। पराक्रम दिखाने की इस आपसी होड मे कई बार उन्मत्त जानवर रस्सियो से छूटकर भीड को रोंद डालता है। ऐसे हादसे अक्सर हो जाते हे। मृत भैसे को चील कौवो के लिए वहीं पहाडी पर फैक दिया जाता हे।

बलि के इस घिनौने रूप के खिलाफ पहाडो मे कोई हरकत नहीं हुई हो ऐसा नहीं है। सन १६७१ मे टिहरी जिले के चद्रबदनी मदिर मे जहा भारी सख्या मे भेसे बलि चढा दिए जाते थे यह प्रथा बिल्कुल बन्द करा दी गई। इस काम मे केरलवासी स्वामी मनमथ ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। इस तरह आर्यसमाजियो व अन्य सगठनो की बदौलत कालीमठ समेत गढवाल के कुछ मदिरो मे पशु बलि पर रोक लगा दी है। गढवाल सास्कृतिक सस्थान भी सन ६१ से मुडणेश्वर मे अठवाड रुकवाने की दिशा में सक्रिय है। इस सगठन के प्रवक्ता आर०पी० चदोला और सस्कृतिकर्मी गणेश खुगशाल गणि ने बताया कि वे १०—१२ जून को होने वाले मुडणेश्वर कौतीक मे पशुबलि के खिलाफ लोगो को जागरूक करने के उददेश्य से सास्कृतिक उत्सव करने जा रहे हैं। फिर भी कहना चाहिए कि इन इक्का दुक्का कोशिशो को छोडकर उत्तराखड मे भैंसे की बलि के खिलाफ पशु प्रेमियो और पर्यावरणवादियो ने कोई सशक्त पहल आज तक नहीं की पशु बलि का मामला चूकि धार्मिकता से जुडा है इसलिए प्रशासन भी हाथ बाधे हुए है। यह भी सच है कि पहाडी समाज ने इस जानवर को बिल्कुल ही अनुपयोगी मानकर एक बोझ समझ लिया है जिससे वह बलि की गाज का शिकार होकर रह गया हे। लेकिन इस एकमात्र वजह से पर धार्मिक उन्माद के साथ उसका वध कितना तर्कसगत ठहराया जा सकता है ? दूसरे कोण स देखे तो ऊचाई पर स्थित देवस्थाने मे बलि के बाद भैसे को वहीं पहाडी पर फैक देने से पानी के स्रोत अक्सर प्रदूषित हो जाते हैं क्योकि गावो मे पानी का उदगम प्राय ऊचाई पर ही होता है। इसलिए इस कुप्रथा पर रोक जीव रक्षा की दृष्टि से ही नहीं पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक है।

(नवभारत टाइम्स ७ जून १६६७ से साभार)

कर्नाटक के नव-नियुक्त स्वाध्यायशील राज्यपाल श्री टी० एन० चतुर्वेदी

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य सामाजिक परिवेश मे पले–बढे श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (सदस्य राज्य सभा) को भारत के राष्ट्रपति ने कर्नाटक का राज्यपाल नियुक्त किया है। श्री चतुर्वेदी अवकाश प्राप्त आई०ए०एस० तो हैं ही उन्होने चण्डीगढ के आयुक्त लोक प्रशासन सस्थान (Institute of Public Administration) के निदेशक भारत सरकार मे शिक्षा सचिव तथा गृह सचिव और नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक जैसे उच्च एव दायित्वपूर्ण पदो पर कार्य किया है। १९९० मे सरकारी सेवा से अवकाश लेने के पश्चात वे राजनीति मे आए तथा दो बार राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। गम्भीर एव अध्ययनशील प्रवृत्ति के श्री चतुर्वेदी का सम्बन्ध फर्रूखाबाद जिले के एक आर्य परिवार से रहा है। उनके चाचा श्री जगदीश प्रसा चतुर्वे ‍ी की आर्यसमाज मे अनन्य आ‍ ‍था तथा उनक निजी पुस्तक सग्रह मे आ ‍ ‍समाज विषयक ग्रन्था ‍ी सख्या थी। इस बहुमूल्य पुस्तक सग्रह का प्रत्यक्ष लाभ श्री चतुर्वेदी को मिला। फलत स्वामी दयानन्द एव नवजागरण के अन्य महापुरुषो के जीवनचरितो का अध्ययन करने मे उनकी अनन्य रुचि रही।

१९२९ मे जन्मे श्री चतुर्वेदी का उच्च अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे हुआ जहा से उन्होने अर्थशास्त्र मे एम०ए० किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा मे निर्वाचित होने के पश्चात उनकी प्रथम नियुक्ति राजस्थान मे हुई। वे तत्कालीन मुख्यमन्त्री स्व० मोहनलाल सुखाडिया के सचिव रहे तथा अजमेर के जिलाधीश के पद का निर्वहन किया। जिन दिनो वे अजमेर मे थे (साठ के दशक मे) दीपावली के पश्चात् आयोजित ऋषि मेले मे उनकी नियमित उपस्थिति रहती थी। चण्डीगढ के चीफ कमिश्नर के पद पर रहते समय उन्होंने इस नगर की भव्यता और सौन्दर्य बढाने मे सराहनीय योगदान दिया। प्रसिद्ध उद्यान रॉक गार्डन की आधारशिला उन्हीं के कर कमलो से रखी गई जो आगे चलकर प्रसिद्ध कलाविद् नेकचन्द की प्रतिभा का चमत्कार बना। आर्यसमाज सैक्टर १६ के भव्य सभागार की नींव भी उन्होने ही रखी। वे यहा आर्यसमाज की गतिविधियों मे रुचि लेते रहे।

प्रशासन एव राजनीति के दायित्वो को निभाते हुए भी उन्होने अध्ययन एव अनुशीलन को सदा वरीयता दी। यह देखकर आश्चर्य होता था कि भारत के गृह सचिव तथा महालेखाकार जेसे दायित्वपूर्ण पदो पर रहकर भी वे अपने अध्ययन के लिए पर्याप्त समय निकाल लेते थे। चण्डीगढ की द्वारकादास लाइब्रेरी से उनका पर्याप्त सम्पर्क रहा। यह वह ऐतिहासिक पुस्तकालय है जिसकी स्थापना लाहौर मे लाला लाजपतराय ने अपने आर्यसमाजी मित्र लाला द्वारकादास की स्मृति मे की थी और देश विभाजन के पश्चात जिस चण्डीगढ मे लाया गया था। लालाजी के स्वय के ग्रन्थो तथा उनके द्वारा सम्पादित पत्रो का यहा मूल्यवान सग्रह है। मै स्वय यहा का सदस्य रह चुका हू।

मै इसे अपना व्यक्तिगत सौभाग्य मानता हू कि चतुर्वेदी जी ने मेरे लेखन मे निरन्तर रुचि ली है। अजमेर मे सत्तर के दशक मे जब एक बार उनका आगमन हुआ उस समय वे राजस्थान उद्योग निगम के अध्यक्ष थे। सर्किट हाउस मे उनसे मेरा विस्तृत वार्तालाप हुआ ओर स्वामी दयानन्द के साहित्य पर व्यापक चर्चा हुई। वे मेरे निवास पर मेरा निजी पुस्तक सग्रह देखने आए और वहा सगृहीत अनेक दुर्लभ ग्रन्थो को रुचि पूर्वक देखा। १९८० मे जब पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष पद पर मेरी नियुक्ति हुई तो उन्होने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की तथा आशा जताई कि यहा रहकर शोध एव अनुसधान के मुझे प्रचुर अवसर मिलेगे। १९८१ मे जब वे शिक्षा सचिव थे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर उन्हे आमन्त्रित किया गया। मैने देखा कि वे समारोह की समाप्ति पर वहा लगी पुस्तको की दूकानो पर खडे हैं तथा स्वरुचि के ग्रन्थ क्रय कर रहे हैं। भारत के गृह सचिव का पद तो अधिक चुनौतियो भरा तथा दायित्व का था। वे दिन पजाब मे आतकवाद जन्य अशान्ति के थे। उन्हें यदा कदा स्थिति का जायजा लेने के लिए प्रधानमन्त्री के विशेष आदेश से चण्डीगढ आना पडता था उस समय वे मुझे स्मरण करते तथा घण्टो तक दयानन्द एव आर्यसमाज विषयक नये पुराने साहित्य पर व्यापक चर्चा करते। उस समय वे मेरे विभाग मे भी आए और मेरे निजी पुस्तकालय मे विशेष रुचि ली। आश्चर्य होता था कि उनका ६ अशोक रोड स्थित सरकारी निवास का अध्ययन कक्ष नव प्रकाशित ग्रन्था से परिपूर्ण है तथा प्रत्येक ग्रन्थ पर वे अधिकारपूर्वक वार्तालाप करने की शक्यता रखते हैं। मैंने उनसे प० सत्यदेव विद्यालकार लिखित स्वामी श्रद्धानन्द की वृहत जीवनी भेट रूप मे प्राप्त की। उनकी एक अन्य विशेषता मेरे लिए निजी वरदान रूप मे रही। अनेक अधिक मूल्य की पुस्तको को स्वय क्रय करके उन्हाने मुझे भेट किया ताकि मै उनका अध्ययन कर सकू। इनम डॉ० जॉर्डन्स के स्वामी दयानन्द विषयक शोध निबन्ध तथा उमा चक्रवर्ती लिखित प० रमाबाई विषयक ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

१९८७ मे श्री चतुर्वेदी जी को कुछ निजी कठिनाइयो का सामना करना पडा। उनके पाव की हडडी टूट जाने के कारण कई महीनो तक उन्हे शैयासीन होना पडा। उधर श्रीमती चतुर्वेदी की रुग्णता तथा मार्च १९८९ मे उनका निधन एक अपूरणीय क्षति थी। तथापि कर्तव्यनिष्ठ चतुर्वेदी जी इनस विचलित नही हुए। चतुवेदी जी जहा अध्ययनशील वृत्ति के हे वे एक प्रगल्भ वक्ता भी है। हिन्दी तथा अग्रेजी दोनो भाषाओ पर उनका समान अधिकार है। चण्डीगढ के रामकृष्ण मिशन मे जब उनका भाषण हुआ तो प्रसगोपात्त दयानन्द सरस्वती के अवदान का उल्लेख किया तथा मेरे ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधा की चर्चा की। पुस्तको के प्रति उनके अनन्य प्रेम का एक उदाहरण देना आवश्यक है। यह घटना १९९० की है। वे उस समय भारत के नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक के पद पर आसीन थे। साहित्य अकादमी ने वृन्दावनलाल वर्मा पर एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमे ऐतिहासिक उपन्यासो पर अनेक शोध पत्र पढे जाने थे। वृन्दावनलाल वर्मा के बुन्देलखण्ड पर आधारित उपन्यासो पर मेरा शोध पत्र भी पढा जाना था। चतुर्वेदी जी ने सगोष्ठी मे एक साधारण श्रोता के रूप मे भाग लिया तथा शोध विद्वानो के वक्तव्यो को तल्लीनता से सुना।

इसी अवसर पर उन्होने अपनी इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि क्यो नहीं राजधानी के प्रमुख आर्य साहित्य प्रकाशको के यहा हम जाए तथा नवीनतम आर्य साहित्य का परिचय प्राप्त करे। मैने इस साहित्य यात्रा मे उनका सहकार किया फलत मै और मेरी पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय आय साहित्य प्रकाशको के यहा की इस सारस्वत यात्रा मे श्री चतुर्वेदी जी के साक्षी बने। सर्वप्रथम हम प्रसिद्ध आर्य साहित्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द के असारी राड स्थित कार्यालय गए आर इस सस्थान के सचालक श्री विजयकुमार से मुलाकात की। यहा से दो वर्ष पूर्व ही मेरे द्वारा ग्यारह खण्डो म स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सम्पादित सस्करण छप चुका था। इसी क्रम मे हम सार्वदेशिक सभा कार्यालय तथा अजमेरी गेट स्थित आर्य प्रकाशन की दूकान पर गए तथा नव प्रकाशित साहित्य की जानकारी प्राप्त की। किसी उच्च सरकारी अधिकारी की अध्ययन मे रुचि का यह एक प्रमाण था। उस समय भी चतुर्वेदी जी पाव के कष्ट से पीडित थे।

कुख्यात बोफोर्स तोप सौदे मे उनके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट न सारे देश को हिला दिया। सकीर्ण मनावृत्ति के अनेक सासदो ने ससद मे उन पर व्यक्तिगत आक्षेप किय (जिसके लिए बाद मे उन्हे माफी मागनी पडी) किन्तु चतुर्वेदी जी इससे विचलित नही हुए। उन्होने जयपुर म पत्रकारो के समक्ष स्पष्ट किया कि उनकी रिपार्ट तथ्याधारित हे और किसी व्यक्ति या दल के दबाब मे आकर नही लिखी गई हे। उन्होने यह भी साफ किया कि उनका सम्पूण प्रशासनिक सेवा काल एक खुली पुस्तक हे जिस पर कही कोई दाग नही है। सेवा से अवकाश लेने के बाद उन्होने भारतीय जनता पार्टी को अपनी गतिविधियो के लिए चुना। वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित होने के साथ–साथ इस दल की कार्यकारिणी के भी सदस्य है। राज्य सभा मे अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्दो पर वे प्रभावशाली ढग से अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई तथा उससे पहले स्वामी दयानन्द के शेखावाटी निवासी भक्त शिष्य महात्मा कालूराम जी की निर्वाण शताब्दी मे उनका रायगढ मे आगमन वैदिक धर्म के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा का द्योतक हैं। गत जनवरी मे जब चतुर्वेदी जी का जोधपुर आगमन हुआ तो पर्याप्त समय तक उन्होने मेरे पुस्तक सग्रह को अवधानपूर्वक देखा। यहा सत्यार्थप्रकाश के विभि न सस्करणो विभिन्न भाषाओ मे इसके अनुवादो तथा ऋषि दयानन्द के लगभग डेढ सौ जीवन चरित्रो का अदभुत सग्रह देखकर उन्होने प्रसन्नता व्यक्त की। ऐसे मनस्वी पुरुष का कर्नाटक के राज्यपाल पद पर प्रतिष्ठित होना इस पद को ही गौरव प्रदान करता है।

– ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर

स्वाध्याय परम तप है

– ओम प्रकाश आर्य

जीवन मे स्वाध्याय का बहुत महत्त्व है। इससे व्यक्ति प्रकाश की ओर बढता है। उसे अपार आत्मिक आनन्द व शान्ति की प्राप्ति होती है। स्वाध्याय करते–करते बहुत–सी अनसुलझी गुत्थिया सुलझ जाती है। उपनिषदकार ने स्वाध्याय पर कितना बल दिया हे –

ऋत च स्वाध्याय प्रवचने च।
सत्य च स्वाध्यायप्रवचने च।
तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
अग्निहोत्र च स्वाध्याय प्रवचने च।
अतिथियश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
मानुष स्वाध्याय प्रवचने च।
प्रजा च स्वाध्याय प्रवचने च।
प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवने च।
स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम।
तैत्तिरी०।।

अथात ऋत सत्य तप दम शम अग्न्याधान अग्निहोत्र अतिथिसवा मनुष्य सवा प्रजापालन सन्तानोत्पत्ति पुत्र पात्र का पालन आदि सब कुछ करत हुए भी स्वाध्याय ओर प्रवचन मे कभी आलस्य नही करना चाहिए।

स्वाध्याय पर इतना बल क्या दिया गया है ? इससे क्या लाभ हैं ? यह विचारणीय है।

स्वाध्याय का अर्थ – इसके दो अर्थ है – पहला अर्थ है – स्व+अध्याय अर्थात स्वय का अध्ययन करना अपने जीवन का अध्ययन करना। अपने जीवन का अध्ययन करने से मनुष्य सच्चे अर्थो मे मनुष्य बनता है क्योकि अपना अध्ययन करने से अपनी कमियो का पता चलता है अपने दुर्गुणो दोषो का पता चलता है। उन दुर्गुणो दोषो को दूर कर लेने से मनुष्य परम कल्याण को प्राप्त करता है। अपना सुधार कर लेना दुनिया का सबसे बडा सुधारकार्य है। यदि हर व्यक्ति अपना सुधार कर ले तो यह धरती स्वर्ग बन जाए। कबीर दास जी ने ठीक ही कहा है –

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल देखू आपुने मुझसे बुरा न कोय।।

वास्तव मे अपनी बुराई को दूर करने के लिए स्वाध्याय सबसे सशक्त माध्यम है। महर्षि दयानन्द ने आत्मा को दुर्गुणो दोषो बुराइयो से बचाने के लिए प्रात जागरण से लेकर रात्रि शयन काल तक की दिनचर्या निर्धारित की है। प्रातकाल उठते ही प्रातकालीन मन्त्र प्रातरग्नि प्रातरिन्द्र आदि पाच मन्त्रो का पाठ कीजिए तत्पश्चात नित्यकर्म से निवृत्त होकर आसन प्राणायाम सन्ध्या हवन कीजिए सद्ग्रन्थो को पढिये। सायकाल सन्ध्या हवन और रात मे सोते समय यज्जाग्रतो दूरमुदैति आदि छह मन्त्रो को बोलकर सोइए इस प्रकारकी दिनचर्या अपनाने से आनन्द ही आनन्द है शान्ति ही शान्ति है। हमे अपने जीवन मे इनको प्रमुख स्थान देना चाहिए।

कहते है मानव का जीवन बडे पुण्य से मिलता है मानव का जीवन अमूल्य हे पर देखा जाए तो मानव ही सारे उत्पातो की जड है। उसे सुधारने के लिए कितने प्रयत्न किए जाते है फिर भी वह नहीं सुधरता है। मानव का जीवन मिलन से क्या लाभ हुआ। मानव को मानव बने रहने क लिए स्वाध्याय परमावश्यक है। जो अपने जीवन का अध्ययन नही करता वह मनुष्य मनुष्य नही रह जाता। मनुष्य न बन रहने के कारण उसे नाना प्रकार क शारीरिक आर मानसिक दुख भोगने पडते ह क्योकि उसके जीवन मे तमाम दुगुण आ जाते है। इसलिए हमे प्रतिदिन अपने जीवन का अध्ययन करना चाहिए। स्वय का अध्ययन करने से अपना परम कल्याण हो जाता है।

स्वाध्याय का दूसरा अर्थ – स्वाध्याय का दूसरा अर्थ है – सद्ग्रन्थो का अध्ययन करना। वेद शास्त्र उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थ आदि विविध वैदिक साहित्य सद्ग्रन्थ है जिनका नियमित अध्ययन करने से आत्मा का कल्याण होता है। श्रेष्ठ ग्रन्थो का अध्ययन करने से आनन्द व शान्ति की प्राप्ति होती है मन के कल्मष दूर हो जाते हैं आत्मा आलोकित हो उठता है स्मरणशक्ति चिन्तनशक्ति तर्कशक्ति विचार–शक्ति बढती है। व्यक्ति ऋषियों मुनियो व महापुरुषो के ससर्ग मे रहता है। उसे अच्छे मित्रो की कमी नहीं रहती।

स्वाध्याय से प्रतिभा चमक उठती है – स्वाध्याय की महिमा अपरम्पार है। यही वह साधन है जिससे मानव अपनी प्रतिभा को चमका सकता है अनेक रहस्यो को जान सकता है विद्यालयी शिक्षा कम होने पर भी नियमित स्वाध्याय के द्वारा अपार ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि बहुत कम पढे–लिखे व्यक्ति स्वाध्याय करते करते विद्वान बन गए हैं। प० क्षेमकरण त्रिवेदी जिन्होने अथर्ववेद का भाष्य लिखा है बहुत कम पढे–लिखे थे वे पान बेचते थे। प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशकर प्रसाद जिन्होने 'कामायनी जैसा महाकाव्य लिखा कक्षा ८ पास थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जिन्होने साकेत जैसा महाकाव्य लिखा कक्षा ८पास थे। गुजरात के पन्नालाल पटेल जिन्हे १६८५ ई० का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला कक्षा ८ पास है। हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल १२ वी पास थे। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री जीन जैक रूसो की विद्यालयी शिक्षा बहुत कम थी वह पालकी ढोने का काम करता था महान शिक्षा शास्त्री था। सवाई माधोपुर के बद्रीलाल कक्षा पाच पास थे वे भैंस चराया करते थे उन्होने पूरा रामचरितमानस व गीता कठस्थ कर ली। इन सबने स्वाध्याय के बल पर अपनी प्रतिभा से सबको चकित कर दिया। इस प्रकार के तमाम उदाहरण आपको मिल जाएग। स्वाध्याय का जितना गुणगान किया जाए कम ह।

स्वाध्याय अनिवार्य कर्म – स्वाध्याय एक अनिवार्य कर्म है। यह गृहस्थी वानप्रस्थी सन्यासी सबके लिए आवश्यक है। इसीलिए तैत्तिरीयोपनिषद मे सत्य तप दम शम अग्न्याधान अतिथि सेवा प्रजा पालन आदि सब कुछ करते हुए भी स्वाध्याय और प्रवचन को कभी भी न त्यागने पर बल दिया है। सब छूट जाए पर स्वाध्याय न छूटने पाए। भगवान मनु लिखते है –

वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके।
नानुरोधेऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि।।
मनुस्मृति।।

अर्थात 'शिक्षादि के पढने और नित्य के स्वाध्याय और होम मन्त्रो मे अनध्याय के दिन भी मनाही नही है। ब्रह्मयज्ञ नैत्यिक कर्म है। नित्य के कर्म मे अनध्याय नहीं होता। स्वाध्याय नित्य का कर्म है। यह किसी भी स्थिति में छोडने योग्य नहीं है।

स्वाध्याय क्रियायोग है – स्वाध्याय करना क्रिया योग है। महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन में लिखते हैं – तप स्वाध्याये श्वरप्राणिधानानि क्रियायोग.। अर्थात तप स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान क्रियायोग हैं। स्वाध्याय से चित्त स्थिर होता है। मन की दुर्वासनाए दूर होती हैं। आत्मा कल्याण को प्राप्त करता है। स्वाध्याय करते–करते कठिन अर्थ भी सरल हो जाते है अर्थात उनके अर्थ स्पष्ट हो जाते हैं। महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं – स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोग। अर्थात स्वाध्याय से अभिलषित देवता की प्राप्ति होती है। तात्पर्य यह है कि इससे कठिन विषय समझ मे आने लगते हैं जैसे कि उन अर्थों को किसी ने मन–मस्तिष्क मे बता दिया हो।

स्वाध्याय से ऋषियों का सत्कार होता है – स्वाध्याय के द्वारा जहा हमारा आत्मिक कल्याण होता है वहीं इसके द्वारा उन ऋषियो का सत्कार होता है जिन्होंने हमे वेद शास्त्र उपनिषद् आदि जैसे अक्षय ज्ञान का भण्डार प्रदान किया है। भगवान मनु लिखते हैं – स्वाध्यायेदार्चयेतर्षी अर्थात 'स्वाध्याय के द्वारा ऋषियो को सत्कृत करे। नित्यप्रति स्वाध्याय करने से हम ऋषियो का सत्कार करते हैं।

स्वाध्याय परम तप है – स्वाध्याय परमतप है। यह चाहे कष्ट उठाकर किया जाए चाहे पुष्पमाला धारणकर सुखपूर्ण स्थिति मे। यह दोनो ही स्थितियो मे तप हे। भगवान मनु लिखते हैं –

आ हैव स नखाग्रेभ्य परम तप्यते तप.।
य स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्याय
शक्तितोऽन्वहम।। यजु०

अर्थात 'जो द्विज पुष्प मालाओ को भी धारण करके (ब्रह्मचर्य समाप्त करके भी) प्रतिदिन यथाशक्ति वेदाध्ययन करता है। वह निश्चय नख-शिख तक परम तप करता है (अर्थात इससे अधिक कोई तप नही है।) अत स्वाध्याय परम तप है।

स्वाध्याय का फल – नियमपूर्वक स्वाध्याय करने का फल बताते हुए भगवान मनु लिखते हैं –

य स्वाध्यायमधीतेऽब्द विधिना नियत शुचि।
तस्य नित्य क्षरत्येषु पयोदधि घृत मधु।।
मनुस्मृति

अर्थात जो पुरुष एक वर्ष पर्यन्त विधियुक्त नियम से पवित्र होकर स्वाध्याय करता है उसके लिए वह स्वाध्याय दूध दही घृत मधु को वर्षाता है।

अत नियमपूर्वक स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति को दूध दही घृत मधु रूपी अमृतरस की प्राप्ति होती है जिसे पीकर आत्मा तृप्त हो जाता है।

हमे दोनो प्रकार का स्वाध्याय करना चाहिए अर्थात् अपने जीवन का और सद्ग्रन्थों का। तभी हम ऋषियो के ऋण के उऋण हो सकते हैं और हमारा कल्याण हो सकता है।

– आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा राजस्थान, ३२३३०५

आर्य हिन्दू जाति को एक चेतावनी

— स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

प्रिय आर्य हिन्दू भाइयो मैं आपके सामने देश की दशा का वर्णन करता हू चूकि मैं एक भ्रमणशील सन्यासी हू इसलिए देश की दशा को कुछ ठीक प्रकार से बता सकता हू। हिन्दू जाति के भूतकाल का तो आप सब को ज्ञान है ही कि किस प्रकार सन् ११६४ ई० मे दिल्ली का राजा पृथ्वीराज चौहान और उसकी सेना अपने मद्यपान के कारण अफगानिस्तान गजनी के मुस्लिम शासक मुहम्मद गौरी द्वारा पराजित हुए। पृथ्वीराज की सारी सेना काट दी गई और पृथ्वीराज चौहान को जजीरो मे बाध कर अफगानिस्तान ले जाया गया वहा पृथ्वीराज चौहान की आखे फोड दी गई थीं। उसके पश्चात सारा भारत मुस्लिम शासन के अत्याचारो से पीड़ित हुआ भारत मे गौहत्या प्रारम्भ हुई वेद शास्त्र ब्राह्मणो से छीनकर अग्नि की भेंट किए गए मन्दिरों को तोडकर उनपर मस्जिदे बनाई गई आदि आदि। भारत मे ६०० वर्ष मुस्लिमो का शासन रहने के पश्चात अंग्रेजी शासन आया जौकि २०० वर्ष तक चलता रहा सन १९४७ई० मे स्वराज्य कहा जाने वाला शासन आया और सुराज्य के स्थान पर कुराज्य आया आर इस कुराज्य होने से राज्य का न होना। आचार्य चाणक्य ने अच्छा कहा है वर न राज्य न कुराजराज्यम । गाधी जी कहा करते थे कि देश स्वतन्त्र होने पर देश मे रामराज्य लाएगे सो देश में रामराज्य के स्थान पर रावण राज्य आ चुका है गाधी जी कहा करते थे कि गौरक्षा स्वराज्य से भी बढकर है आज गाधी के चेले देश के गायो भैसो और बैलो को कटवा कर विदेशो को मास और चमडा जूते भेज रहे है। ऋषि दयानन्द जी ने जिस स्वराज्य को सर्वश्रेष्ठ बताया था अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में। वह स्वराज्य आज तक भारतीय हिन्दुओ को प्राप्त नहीं हुआ है। सन ४७ से पहले सयुक्त भारत के सारे मुस्लिम मुस्लिम लीग के साथ थे और सारे हिन्दू काग्रेस के साथ थे। काग्रेस ने भारतीय हिन्दुओ को स्वराज्य देने का वचन दिया था परन्तु सन ४७ में काग्रेस के मुखिया जवाहर लाल नेहरू ने हिन्दुओ को स्वराज्य न देकर अपना व्यक्तिगत राज्य भारत मे बनाया। पाकिस्तान जाने वाले ३ करोड ५४ लाख मुस्लिमो को भारत मे रोक लिया कि भारतीय मुस्लिमो के वोटो से जवाहर लाल स्वय को प्रधानमन्त्री बनाते रहे थे। जवाहरलाल नेहरू को विश्वास था कि यदि भारत मे मुस्लिम न रहेगे तो भारतीय हिन्दू मुझको वोट न देकर हिन्दी के पक्षपाती पुरुषोत्तमदास टण्डन को ही वोट देकर भारत का प्रधानमन्त्री बना देगे। इसके साथ ही जवाहरलाल ने भारत का जो सविधान बनाया उसमें भारत को हिन्दुओ का देश नहीं माना है और सविधान मे धारा २८ बना दी जिसके अनुसार हिन्दू विद्यालयो मे हिन्दू बच्चो को वेद धर्म ग्रन्थ की शिक्षा नहीं दी जा सकती है। ईश्वर ओर धर्म की शिक्षा के अभाव मे सारी हिन्दू जाति नास्तिक अपराधी और अधार्मिक हो चुकी है। जवाहरलाल ने हिन्दुओ के लिए तो हिन्दू कोड बिल बना दिया जिसके अनुसार भारतीय हिन्दू केवल एक पत्नी रख सकता है। हिन्दू कोड बिल बनने से पहले बलवान और धनवान हिन्दू एक से अधिक पत्नियो का सरक्षण करते थे। हिन्दू कोड बिल बनने से लाखों हिन्दू नारिया बेसहारा होकर देशी व विदेशी मुस्लिमो ईसाइयो के घरो मे जा चुकी हैं जा रही हैं। गर्भपात जैसे महापाप को भी वैध मान लिया है भारत सरकार ने। अब तक लाखो गर्भस्थ हिन्दू बच्चो को मारकर कुत्तो को खिलवा दिया भारत सरकार ने। हिन्दुओं की महिला और पुरुष नसबन्दी भी सरकार ने कराई है करा रही है। भारतीय मुस्लिमो ने परिवार नियोजन बिल्कुल नहीं किया। धनवान भारतीय मुस्लिम एक से अधिक पत्निया रखकर दर्जनो मुस्लिमो को जन्म देते रहे हैं। और सारे ही निर्धन मुस्लिम भी निर्धन होते हुए भी अधिकाधिक सतानो को जन्म देने को अल्लाह का हुकुम मानते हैं। सन १९४७ मे भारतीय नागरिकता मिलने पर वोट का अधिकार मिलते ही भारतीय मुस्लिमों ने सोचा है कि अपनी जनसख्या बढाकर अपने वोटरो की सख्या बढने से वे भारतीय राजनीति और राज्य पर अपना अधिकार कर सकते हैं। आज भले ही भारतीय मुस्लिम अल्पसख्यक हैं परन्तु परिवार नियोजन न अपना कर अपनी सख्या बढाकर किसी दिन भारत मे वे बहुसख्यक हो जाएगे और भारतीय राज्य के स्वामी मुस्लिम होगे। और हिन्दू अल्पसख्यक होने से राज्याधिकारी न रहेगे। उस सिथति मे हिन्दू जाति का विनाश सर्वनाश सुनिश्चित है। अब मैं आपके सामने सन १९८१ और सन १९९१ई० के हिन्दू और मुस्लिम जनसख्या के सरकारी आकडे प्रस्तुत करता हू। सन ८१ से सन ९१ तक मुस्लिम भारत मे १०० के १३२७६ हुए हैं। और हिन्दू केवल १०० के १२२७८ ही हुए हैं। यदि भविष्य मे इसी चाल से भारत मे मुस्लिमो और हिन्दुओ की सख्या बढी तो केवल दो सौ या ढाई सौ वर्ष मे मुस्लिम हिन्दुओ की तुलना मे सैकडो करोड अधिक हो जावेगे। और केवल मुस्लिमो को ही जीवित रखने के लिए तत्कालीन मुस्लिम सरकार और मुस्लिम सेना भारतीय हिन्दुओ की सारी धन सम्पत्ति अधिकार छीनकर उनका कत्लेआम करेगे कि जैसे जर्मनी मे ६० लाख यहूदियो को गैस चेम्बरो मे भरकर मार दिया गया था। मेरे द्वारा कम्प्यूटर से बनाई हुई तालिका मे आप देखेगे कि सन ८१ से सन ९१ तक की मुस्लिम बढोतरी के अनुसार सन २००१ मे मुस्लिम १२ करोड ६४ लाख के लगभग होवेगे तथा सन २०५१ मे मुस्लिम ५२ करोड के लगभग हो जाएगे उस समय भारत के मुस्लिम दूसरे पाकिस्तान की माग करके उसे प्राप्त कर सकते हैं तब तो हिन्दू क्षेत्र और हिन्दू राज्य बनने से हिन्दुओ का नाम चिन्ह गुण कर्म स्वभाव बच सकता है यदि सन २०५१ मे मुस्लिमो ने दूसरे पाकिस्तान की माग नहीं की और नया पाकिस्तान नहीं बना या तो केवल दो सौ वर्ष मे ही वे मुस्लिम हिन्दुओ की तुलना मे बहुसख्यक हो जाएगे तब मुस्लिम राज्य तथा मुस्लिम सेना अपने आप बन जावेगे। तब केवल मुस्लिमो को ही जीवित रखने के लिए मुस्लिम शासन व सेना हिन्दुओ की धन सम्पत्ति छीनकर कत्लेआम करेंगे।

यदि हिन्दुओं को हिन्दू धर्म गाय और ब्राह्मण वेद शास्त्र बचाने की इच्छा है तो भारत मे प्रथम हिन्दू क्षेत्र (हिन्दू राष्ट्र) और हिन्दू स्वराज्य की माग उन्होने अभी से करनी चाहिए। हिन्दू जाति मे सगठन मेल मिलाप भी होना चाहिए। सवर्ण हिन्दू असवर्ण हिन्दुओ को घृणा की दृष्टि से न देखे। तथा उनके साथ सहयोग सहानुभूति करे। हिन्दुओ ने अपना प्रथम हिन्दू देश प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। मुस्लिम ईसाइयो के साझे वाले देश मे हिन्दुओ का अस्तित्व ही मिट जाएगा। मुस्लिम भारत मे ८०० वर्ष से आए है तब से लेकर आज तक मुस्लिमो ने भारत की गायों भैसो भेड और बकरियों को प्रतिदिन और बकरीद के अवसर पर लाखो की सख्या में काट कर पशुओ का बीज ही समाप्त कर दिया है। जिस भारत मे घी और दूध की नदिया बहती थी वहा आज करोडो हिन्दू और मुस्लिम बिना दूध की चाय पीने को विवश हैं। बच्चे भी चाय का पानी पी रहे हैं।

— गवाँ जिला बदायू, उत्तर प्रदेश

भारत की भावी जनसंख्या का एक गणितीय अनुमान

वर्ष	हिन्दू जनसंख्या वृद्धि	मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि
सन् १९८१	५४,७७,६४,२६६	७,१७,२८,०६३
सन् १९९१	६७,२५,६६,४२८	९,५२,२२,८५३
सन् २००१	८२,५८,१७,५[illegible]	१२,६४,१७,८५६
सन् २०५१	२,३०,४२,९१,११८	५२,१३,६८,३३५
सन् २१०१	६,४२,६२,५१,३०४	२,१५,०२,०६,६६६
सन् २१५१	१,[illegible]३,६०,९३,५६७	८,८६,१८,२४,४६१
सन् २२०१	५०,०५,३७,५६,६१२	३६,५७,२३,८७,०६१
सन् २२५१	१,३४,६६,०६,०३६८०	१,५०,८३,०६,२३,५५०

गताक से आगे

महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाञ्जलि कैसे दें ?

किसी आर्यसमाज या गुरुकुल अथवा आर्यआश्रम की बिगडी हुई व्यवस्था का कारण भी तो स्वय आर्य लोग ही हैं। क्योकि हमारे अधिकारी नेता इन गुरुकलो मे यज्ञ योग ब्रह्मचर्य वैदिक धर्म सस्कृत की जानकारी व सस्कारों के साथ साथ राज्य के सम्भालने वाले अन्य विषयों को नहीं पढाते। अथवा स्वय वानप्रस्थ की अवस्था वाले होकर भी श्रद्धा व विरक्त भाव से वहा रहकर आश्रम की व्यवस्था को नहीं सुधारते। यदि सभी न सही कुछ सुपठित आर्यविद्वान व आर्यसभासद सेवानिवृत्त होने पर भी अपने घरो या प्रवचन देने के कार्य को गौण और वानप्रस्थ लेकर (अपने लगभग ३० वर्षो के अनुभव के साथ) मुख्य रूप से स्वामी श्रद्धानन्द की तरह गुरुकुल की आश्रम व्यवस्था व शिक्षण व्यवस्था को सभाल ले तो वास्तव मे दयानन्द के सपनो का आर्यसमाज' अर्थात समाज का प्रत्येक वर्ग व व्यक्ति आर्य बन जाए। स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न साकार हो जाये। इससे जहा उनके आश्रम धर्म की रक्षा होगी वहा राष्ट्र हेतु अच्छे सस्कारी सेवाभावी व परोपकारी धर्म व देशभक्ति युक्त शिक्षित नागरिकों के निर्माण से देश की भी रक्षा होगी।

योग्य विद्यार्थियो को आत्महत्या से रोकने हेतु अथवा और अधिक पढने से न रोकने हेतु आरक्षण प्रणाली का सगठित रूप से खुल कर विरोध किया जाए। वोट के लोभी राष्ट्रद्रोही व स्वार्थी नेताओ द्वारा नकल की छूट देने का कठोर शब्दो मे आन्दोलन पूर्वक विरोध किया जाए। इन्हीं दो मुख्य कारणो से पुरुषार्थ व तप के अभाव मे राष्ट्र का भावी नागरिक अर्थात आज का यह विद्यार्थी आलसी प्रमादी आवारा गुण्डा व आतकवादी बन रहा है। क्योकि उसे आरक्षण व नकल की सुविधा के रहते पढने मे पुरुषार्थ व ध्यान करने की आवश्यकता नहीं पडती। इससे वह अपना समय शक्ति व बुद्धि फालतू कामो मे लगाता है। अल्पसख्यक होने से दी जाने वाली सुविधा भी अलीगढ विश्वविद्यालय व मदरसो की तरज से विद्यार्थियो को देशद्रोही ही बना रही है।

केवल नौकरी प्राप्त कराने वाले शिक्षा के उद्देश्य ने भी विद्यार्थियो को मात्र पेटपुजारी या रिश्वतखोर ही बनाया है या फिर नौकरी के अभाव में अडरवर्ड व आतकवादियो का पिछलग्गू ही बनाया है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती आज से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व ही गुरुकुल प्रणाली के साथ साथ तकनीकी शिक्षा देने की भी योजना बना रहे थे। जिससे कि विद्यार्थी जहा गुरुकुल में रहकर अपने सब कार्यो को स्वय करने के स्वभाव वाला बनकर राष्ट्र का पुरुषार्थी नागरिक बने वहा अपने ज्ञान विज्ञान को मात्र नौकरी हेतु ही न समझकर गुरुकुल में सीखे गये कार्यो के अनुभव के आधार पर अपने पैरो पर खडा हो सके। वैसे भी इसमे दो मत नही कि गुरुकुल के अधिकतर विद्यार्थी कही भी बेकार नहीं दिखाई देते। नौकरी के अभाव मे वे समय का सदप्रयोग पत्र पत्रिकाओ मे लेख देकर विभिन्न सस्थानो मे प्रवचन देकर विभिन्न अवसरो पर वैदिक सस्कार करवाकर आयुर्वैदिक फार्मेसी चलाकर गोशाला दुग्ध डेरी या फार्म चलाकर सुख शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

गुरुकुल प्रणाली को उत्कृष्ट बनाने हेतु यह आवश्यक है कि वहा की व्यवस्था करने वाले किसी आर्यविद्वान या अधिकारी को एक साथ दो दो पद न दिए जाए। गुरुकुल के सभी अधिकारी पूर्ण कालिक हो। गुरुकुल से ही पढे लिख योग्य व्यक्तियो को उसका अधिकारी बनाया जाए। ६० वर्ष से ऊपर वाले आर्यो को गुरुकुल का तभी अधिकारी बनाया जाए जब वे वानप्रस्थ लेकर अपना सारा समय वहीं रहकर गुरुकुल सेवा मे ही व्यतीत करने का सकल्प करे। प्रतिवर्ष विशेष रूप से गुरुकुल की अधिक उन्नति करने वाले को ही पुन वहा का अधिकारी बनाया जाए। गुरुकुल का अधिकारी वही बनाया जाए जिसके बच्चे (बेटे या पोते) उसमे पढते हो। तभी उसको उसकी पूर्ण चिन्ता होगी। लम्बे समय तक कार्यकारी प्रधान या मत्री बनाना गुरुकुल व आर्यसमाज को कैंसर से ही मारना है इससे बचे।

मतवाद से पनपे आतकवाद को जड से समाप्त करने का एक ही मूल मत्र है और वह है गुरुकुलो में विभिन्न भाषाओं मतो व विषयो मे वैदिक विद्वान व शास्त्रार्थ करने वाले पण्डित तैय्यार करना। इनकी दक्षिणा कम से कम दस हजार रुपये मासिक हो। जो गृहस्थ न हो उसे खर्च के अनुसार कम दिया जाए। किसी आर्यसमाज को योग्य पुरोहित सस्कृत शिक्षा बालसभा या कुमारसभा सस्कृतपाठशाला व आर्यवीर दल शाखा के बिना पूर्ण आर्यसमाज न समझा जाए।

जिस महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन का मुख्यप्रयोजन बताते हुए यह कहा था कि – "सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनो की सहानुभूति से यह सत्यसनातन मानवतावादी वैदिक सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल मे शीघ्र प्रवृत्त हो जाये जिससे सब लोग सहज से धर्म अर्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहे। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है "स्वमन्तव्यामनतव्य प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश से"। आज अत्यन्त दुख का विषय है कि आर्यसमाज के १२५ वर्ष मे विश्व तो क्या हम अपने राष्ट्र के ही सर्वांगीण विकास एकता व आनन्द हेतु सर्वज्ञान विज्ञान सम्पन्न गुरुकुल शिक्षाप्रणाली न चला सके। अपितु उन्नति व एकता के स्थान पर गदे प्रातवाद जातिवाद व लोभवाद व लोकेषणावाद मे फसकर बार बार गुरुकुल की भूमि बेचने लग गये। कभी एक प्रान्तीय सभा ने बेची तो कभी दूसरे प्रान्त की सभा ने। क्या विश्व विद्यालय की उन्नति और भावी प्रसार हेतु भूमि की आवश्यकता नहीं थी ? कहा तो वेद विरुद्ध मतो की सस्थाओ के सस्थानो का दिन दुगना रात चागुना विकास और कहा हमारे निजी स्वार्थ हेतु भूमि बेचने का स्वार्थ ?

अत्यन्त खेद का विषय है कि हम वैदिक विद्वानो विभिन्न विषयो पर वैदिक गवेषको (रिसर्चस्कालरो) व विभिन्न देशो मे वैदिक धर्म की धूम मचाने वाले शास्त्रार्थ महारथी पण्डितो के निर्माण से वैदिक सिद्धान्तो का विकास करके दयानन्द के सपनो का आर्य राज्य तो बना पाए। पर आर्यसमाज व कागडी गुरुकुल विश्वविद्यालय मे वर्तमान की गन्दी राजनीति के जातिवाद प्रान्तवाद व स्वार्थवाद से युक्त अनार्य लोगों की घुसपैठ से समाओं व आर्यसमाजो मे ताले व गुरुकुलो मे परस्पर मुकदमे चलाये। जातिवाद प्रान्तवाद व स्वार्थवाद की गुटबदी ने हमें इतना अधा बना दिया कि हमे ऋषिभक्त वेदोक्त सच्चे आर्य व आर्यसमाज के हित वेद प्रचार मे जीवन देने वाले भी पराये लगने लगे। विधर्मियो के ज्ञान विज्ञान व राष्ट्रविरोधी पाखण्ड को रोकने की अपेक्षा हम अन्धे होकर परस्पर एक दूसरे को पछाडते वेदप्रचार को रोकते महर्षि दयानन्द के मुख्य प्रयोजन के ही हत्यारे बनने लगे। अत जब भारत की वैदिक सस्कृति के रक्षक आर्यजन ही एक दूसरे के हत्यारे हो जाए तो फिर उन्नति व आनन्द के विनाशक आतकवादी विदेशी व पाखण्डी हत्यारे क्यो न बढें ?

अत सच्चे ह्रदय से महाबलिदानी दयानन्द व वेद के प्रति श्रद्धा रखें। घर पर या बाहर सभी प्रकार के पाखण्ड पाखण्डी गुरु या पाखण्ड युक्त पूजा पाठ व तीर्थयात्रा को छोडकर प्रतिदिन पञ्चमहायज्ञों को अपनाये। महर्षि दयानन्द से विरुद्ध व आर्यसमाज या गुरुकुल की उन्नति से विरुद्ध कोई कार्य न करें। अनार्यों को पहचान कर बाहर करे। श्रद्धानन्द व लेखराम से सच्चे त्याग की शिक्षा लेकर वर्षों तक हेराफेरी जातिवाद व प्रान्तवाद आदि से पदो पर जमे रहने की अपेक्षा एक दो वर्ष के पश्चात दूसरे योग्य व्यक्ति को अवसर दे। समाजों मे ही बोलने व चौधरी बनने की योग्यता न दिखाकर वानप्रस्थ लेकर गुरुकुल आदि सस्थाओ मे व्यवस्था को सभालकर अपनी प्रतिभा का सदप्रयोग करे। जातिवाद प्रान्तवाद या गुटवाद अथवा व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि की गदी भावना को छोडे। वेद ऋषि व किसी सदस्य अधिकारी अथवा विद्वान द्वारा अपनी किसी व्यक्तिगत मान्यता को चोट लगने पर ऋषि के वैदिक सिद्धान्त को ही प्रमुखता दे। व्यक्तिगत 'मान को गौण समझे। कितनी शर्म की बात है कि ऋषि दयानन्द तो पूरी दुनिया के मानवों को वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार द्वारा आर्य बनाकर उनको उन्नत व आनन्दित करना अपना मुख्य प्रयोजन समझते थे। पर हम उनके सिद्धान्तों का (जान की भी परवाह न करके) प्रचार करने वालो को जीवित भी नहीं देखना चाहते। अच्छा हो कि हम इस व्यक्तिगत ईर्ष्या के अज्ञान को छोडकर उन प्रचार करने वाले साधुओ विद्वानो व गुरुकुलो के दीवानो को अपने ही परिवार का सदस्य समझे। जब कभी उनके प्रति कोई शका पैदा हो तो उन्हीं से बात करे और उन्हे अपना ही पुत्र पुत्री भाई बहन व माता पिता समझकर उचित व्यवहार करके सदा सुखी रहें। इसी प्रकार से हम सगठित होकर प्यार सेवाभाव व सहानुभूति से कार्य करते समाज राष्ट्र व विश्व को आर्य बनाते महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाञ्जलि देते गुरुकुल आर्यसमाज व उसके आश्रमो को सार्थक रूप दे सकते हैं।

आर्यजनो ! जब तक हम तथाकथित जाति सम्पत्ति व बिरादरी व नाम की प्रसिद्धि और लोकेषणा की सिद्धि हेतु पदों का लोभ छोडकर त्याग व श्रद्धापूर्वक कार्य की उन्नति हेतु केवल सेवा भावना से ही आर्यसमाजो या गुरुकुलों की सेवा मे नहीं लगते तब तक महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाजलि दे पाना नितान्त असम्भव है।

भारत को आर्यसाम्राज्य बनाने हेतु राष्ट्र से पाखण्ड देशद्रोह नास्तिकता व चरित्रहीनता मिटाने हेतु महर्षि दयानन्द प्रदत्त वैदिक विद्या सभ्यता धर्मात्मता व जितेन्द्रियता से युक्त सभी विषयों वाली गुरुकुलीय शिक्षा नीति चलायें।

– उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल)

आर्यजनों ! जब तक हम तथाकथित जाति, सम्पत्ति व बिरादरी व नाम की प्रसिद्धि और लोकेषणा की सिद्धि हेतु पदो का लोभ छोडकर त्याग व श्रद्धापूर्वक कार्य की उन्नति हेतु केवल सेवा भावना से ही आर्यसमाजो या गुरुकुलो की सेवा मे नहीं लगते तब तक महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धाजलि दे पाना नितान्त असम्भव है।

भारत को आर्यसाम्राज्य बनाने हेतु राष्ट्र से पाखण्ड, देशद्रोह, नास्तिकता व चरित्रहीनता मिटाने हेतु महर्षि दयानन्द प्रदत्त वैदिक विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता व जितेन्द्रियता से युक्त सभी विषयो वाली गुरुकुलीय शिक्षा नीति चलाये।

अन्त समय की तैयारी

– देवी प्रसाद मस्करा

अन्त समय मे परमेश्वर का स्मरण करने वाला मनुष्य परमेश्वर भाव को प्राप्त होता है इसमे सन्देह नहीं है। यह गीता के (५।८) श्लोक का अर्थ है। देह छोडने के समय जिसे परमेश्वर का ठीक–ठीक स्मरण रहेगा वह ईश्वर भाव को प्राप्त होगा।

पाप करने मे मनुष्य जितना सावधान रहता है उतना पुण्य करने मे नहीं रहता। पाप प्रकट हो गया तो जगत मे अप्रतिष्ठा होगी ऐसा सोचकर वह पाप को एकाग्र चित्त होकर करता है। इसी कारण अन्त काल मे उसे पापो की याद आती है।

अपने किए हुए पाप उसे प्रत्यक्ष दीखते हैं। वह समझता है कि मैने मरने की कोई तैयारी नहीं की। मेरा अब क्या होगा ? मनुष्य और तो सभी कामो की तैयारिया करता है परन्तु मरने की तैयारी नही करता। जिस प्रकार शादी की तैयारी करते हो उसी प्रकार खुशी से मरने की तैयारी धीरे–धीरे करनी चाहिए। मोत के लिए सदा सावधान रहना चाहिए। मृत्यु अर्थात परमात्मा को बीते हुए जीवन का हिसाब देने का पवित्र दिन। भगवान पूछेगे – मैने तुम्हे आखे दी कान दिये तुमने उसका उपयोग किया ? तुम्हे तन और मन दिए थे तो तुमने उसका क्या किया ? साधारण इनकम टैक्स का हिसाब देने मे घबडाहट होती है तो फिर पूरे जीवन का हिसाब देने मे क्या दशा होगी ? प्रभु ने हमे जो दिया है उसका हिसाब देना ही होगा।

पूर्व जन्म का शरीर तो चला जाता है परन्तु मन नही जाता। लोग अपने तन के कपडो की तो खूब चिन्ता करते है परन्तु मरने के पश्चात जो साथ जाता है उसकी चिन्ता नहीं करते। धन शरीर आदि की चिन्ता करते हैं परन्तु मरने के पश्चात जो अगूठी उगली मे होगी उसको भी लोग निकाल लेते हैं।

जब तक मनुष्य मे बल रहता है तब तक वह मृत्यु के नग्न सत्य को भूले रहता है। इस प्रकार अज्ञानी मनुष्य जीवन की वास्तविक समस्याओ के प्रति कोई विवेक पूर्ण जिज्ञासा नहीं करता। सभी लोग सोचते है कि वे अभी नहीं मरेगे यद्यपि प्रत्येक क्षण वे नेत्रो से मृत्यु का प्रमाण देखा करते है। पशुता और मानवता मे यही अन्तर है। बकरी जैसे पशु के आगे डाली गई घास के पत्ते प्रेमपूर्वक खाती रहती है उसको यह ज्ञान नहीं होता कि कुछ ही देर बाद उसके गले के ऊपर छुरी फिरने वाली है। यदि मनुष्य को यह ज्ञान नहीं कि कभी भी उसकी मौत आने वाली है तो फिर उस मनुष्य मे और पशु मे अन्तर ही क्या रह जाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति अगले जीवन के लिए अथवा जन्म मृत्यु रूपी बारम्बार होने वाले भव रोग से मुक्त होने की तैयारी करता है।

परीक्षित महाराज को चेतावनी दी गई थी कि सात दिनो के अन्दर उसकी मृत्यु हो जाएगी। इतना सुनते ही उन्होने अगली अवस्था की तैयारी के लिए तत्काल ही अपने राजमहल का त्याग कर दिया। उनके लिए मृत्यु की तेयारी करने के लिए सात दिन थे। परन्तु जहा हम लोगो का प्रश्न है हमको निश्चित मृत्यु की तिथि की जानकारी नही रहती। यहा तक कि महात्मा गाधी जैसे महापुरुष भी यह गणना नही कर सके कि अगले पाच मिनटो मे उनकी मृत्यु होने जा रही है।

अन्य समय मे परमेश्वर का स्मरण करने वाला मनुष्य परमेश्वर भाव को प्राप्त होता है इसमे सन्देह नहीं है। परन्तु यह है बडा कठिन। अन्त समय मे सम्पूर्ण शरीर शिथिल हो जाता है मस्तिष्क कार्य नही करता मन बुद्धि चित्त आदि सब ही क्षीण हो जाते है सोच विचार करना भी असम्भव हो जाता है और किसी किसी समय तो शरीर की पीडा भी असह्य हो जाती है। कई तो मूर्च्छित हो जाते है ऐसे समय मे परमेश्वर का स्मरण करना कैसे सम्भव हो सकता है।

इसके उत्तर मे इतना ही कहना है कि मरने के समय मनुष्य कितना भी क्षीण हो तो भी वह कुछ कहता ही है अर्थात ससार की बातो का स्मरण वह करता है। दिन रात सासारिक बातो का ध्यान करने के कारण ही इसको सासारिक बातो का स्मरण मृत्यु के समय भी हो जाता है। यदि यह बात सत्य है तो हमे एक विशेष महत्वपूर्ण नियम का पता लग गया कि मनुष्य जिस बात का दिन रात ध्यान करेगा उसका स्मरण उसको मृत्यु के समय होगा ही।

य य वापि स्मरनभाव त्यजत्यन्ते कलेवरम।
त तमेवैति कौन्तेय सदा तदभाव भावित ।।

गीता ८/६

भावार्थ – मनुष्य ईश्वर का नित्य स्मरण करता रहेगा तो उसे अन्त समय मे भी ईश्वर का स्मरण होगा। जिसको ईश्वर का स्मरण होगा वह नि सन्देह ईश्वर भाव को प्राप्त होगा। जो मनुष्य जिस भावनां का सदा स्मरण करता है उसका मन सदा उसी भावना मे सलग्न रहने के कारण देह छोडने के पश्चात भी उसी भावना को प्राप्त होता है। अर्थात जो शुभभावना धारण करेगा उसकी शुभ गति होगी और जो अशुभ धारण करेगा नि सन्देह उसकी अशुभ गति होगी। अत मनुष्य सदा शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वरूप ईश्वर का स्मरण करे उसी मे मन बुद्धि को लगावे और उसी मे तन्मय रहे। ऐसा करने से वह उसी के स्वरूप को पा सकेगा इसमे सन्देह नही है। इस सतत ईश्वर का ध्यान करने का नाम ही गीता का अभ्यास योग है।

जेसे लोहे को अग्नि मे रखने मे वह कुछ समय मे अग्नि भाव युक्त होकर अग्निरूप हो जाता है। लकडी भी इसी तरह अग्निरूप धारण कर लेती है। लकडी प्रारम्भ मे जलती नहीं परन्तु जिस समय वह अग्निरूप होती है उस समय अग्नि के समान ही जलती है अर्थात अग्नि के सब गुण धर्म लकडी और लोहे मे आ जाते है। इसी तरह यह सिद्ध पुरुष भी परमात्मा के सब गुण धर्मो से युक्त हो जाता है अर्थात वह परमात्मभाव धारण कर लेता है। यदि यह कहा जाए तो भी अनुचित न होगा कि इस समय वह परमात्मा जैसा ही बन जाता है। वह नर से नारायण बन जाता है जीव से शिव हो जाता है पुरुष का पुरुषोत्तम बन जाता है।

यदि कोई मनुष्य बीमार हो और निद्रा के समय मै निरोग हू यह विचार उसके मन मे स्थिर हो जाए तो निद्रापर्यन्त यही विचार उसके मन मे स्थिर रहेगा और उसको अपूर्व आनन्द प्राप्त होगा उसको अन्त समय मे मृत्यु के समय मे भी परमेश्वर का स्मरण अवश्य होगा ओर उसका बेडा पार हो जाएगा। यह मार्ग मानवीय उन्नति का है और इससे मनुष्य की ऐहिक तथा पारमार्थिक उन्नति हो सकती है।

मातृभाषा विकास परिषद द्वारा समस्त शिक्षण सस्थाओ मे मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम सुनिश्चित करने हेतु जनहित याचिका

भारत की समस्त भाषाओ के उत्थान एव विकास हेतु कार्यरत मातृभाषा विकास परिषद ने देश के शिक्षा सम्बन्धी कार्यो मे सुधार हेतु उच्चतम न्यायालय मे आज प्राथमिक स्तर पर देश की समस्त शिक्षण सस्थाओ मे मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम सुनिश्चित करने हेतु जनहित याचिका प्रस्तुत की है।

इस याचिका मे परिषद के महामन्त्री श्री आनन्द स्वरूप गर्ग ने बताया है कि देश के सविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारो के अन्तर्गत बच्चे को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा मे ही दी जानी चाहिए तथा इस अधिकार को राज्य अथवा कोई भी शिक्षण सस्था अथवा कोई व्यक्ति चाहे वह बच्चे का अभिभावक ही क्यो न हो अतिक्रमण नही कर सकता। भारत की सघ सरकार तथा दिल्ली की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकारो द्वारा उपेक्षा किए जाने तथा दुर्भाग्य से अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन न कर पाने के कारण देश के सविधान द्वारा प्रदत्त बच्चो के मौलिक अधिकारो का निरन्तर हनन हो रहा है।

इस याचिका मे यह भी आरोप लगाया गया है कि देश मे पिछले तीन दशको से अधिक समय से देश मे बच्चो को प्राथमिक कक्षाओ मे शिक्षण देने हेतु सरकारे निहित स्वार्थों वाले तत्वो के साथ साठ गाठ करके बच्चो को मातृभाषा मे शिक्षा न देकर अन्य भाषा के माध्यम से शिक्षा देने मे जुटी हुई है। ऐसी सस्थाओ का जाल सारे देश मे कैसर की भाति बढता जा रहा है। इसके कारण देश मे बच्चो को अवैध सविधानेतर समानातर आततायी तथा उत्पीडन करने वाले विद्यालयो मे विवश होकर पढना पड रहा है। इस हेतु याचिका मे माग की गई हे कि समस्त देश मे प्राथमिक स्तर की शिक्षा मे मातृभाषा को छोड कर अन्य भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा दिए जाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

मनमोहन प्रचार मन्त्री

जागो रात आ रही

– ज्ञानसिह आर्य

जो लोग जाग कर भी सोने का बहाना बना रहे होते है उन्हे जगाना किसी के लिए भी सम्भव नहीं। आर्यसमाज से जुडे लोगो को उनका प्यारा ऋषि जगा कर गया है। मानवता के सबसे बडे शत्रु–अज्ञान से निरन्तर जूझते रहना बता गया है। अब लन्दन से प्रसारित 'एशियन ब्राउन हेज' सम्बन्धी सूचना दयानन्दानुयायियो के लिए एक बडी चुनौती है। 'सूरज का प्रकाश घटा भारत को भी धुन्ध ने लेपटा शीर्षक से वर्णित है– 'दक्षिण एशिया के ऊपर फैलती प्रदूषण की परत के कारण भारत के ऊपर पडने वाली सूरज की रोशनी मे १० फीसदी की कमी आ गई है। इस धुन्ध का निर्माण करने वाले प्रदूषण से लोगो मे श्वास सम्बन्धी बीमारिया बडे पैमाने पर फैलेगी और समय पूर्व मौत के मामलो मे वृद्धि होगी। यह भी अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि भारत के आकाश मे व्याप्त यह विनाशकारी धुन्ध उन देशो से आई है जो स्वय को विश्व भर मे पूर्ण सभ्य और सर्वसम्पन्न मानते हैं।

पर्यावरण शुद्धि का एक मात्र विकल्प यज्ञ है इस वैदिक मान्यता की पुष्टि विज्ञान भी करता है। द्वितीय विश्व युद्ध मे हिरोशिमा की विभीषिका के पश्चात रूस के वैज्ञानिको ने एक महत्वपूर्ण आविष्कार किया है। खोज हो रही है कि परमाणु विस्फोटो के बाद होने वाले रेडियोविकीरण का निराकरण करने के लिए किन–किन चीजे मे कितनी शक्ति है। अभी तक की खोजो से नतीजा निकला है कि इसके लिए गाय के दूध मे सबसे अधिक शक्ति है। जिन घरो को गाय के गोबर से पोतते हैं उन घरो मे रेडियो विकीरण का प्रभाव बिल्कुल नहीं पडता। अगर गाय के घी को आग मे डाल कर धुआ उडाये तो वायुमण्डल मे एटोमिक रेडियेशन का प्रभाव बहुत कम ही पडेगा। गुणो के कारण ही वेदो मे गाय महिमामण्डित है। वहा गोदुग्ध की पीने भर के लिए कामना नहीं की गई है अपितु जैसे पौधे जल मे डूबे रहते हैं वैसे ही हम दूध से सिचित रहे ऐसी याचना ईश्वर से की गई है। मनुष्य ने स्नेहवश गाय को अनेको नामो से पुकारा है। वैदिक युग मे पाच लाख गाये जिसकी निजि हो उनका पालन–पोषण करता हो वह उपनन्द तथा उनकी उत्तरोत्तर सख्या वृद्धि के आधार पर नन्द नन्दराज और वृषभानु उपाधिया गोपालाको की होती थी। इसका कामधेनु विशेषण सर्वथा उपयुक्त है।

पश्चिमी जगत को गोरस नहीं गोमास ही प्रिय है। कुछ ही वर्ष पूर्व अधिक के कारण अमेरिका मे एक लाख से अधिकता गायो का सामुहिक वध किया गया इतना ही नहीं समाचार यह भी था कि वहा कई ट्रक क्रीम समुद्र मे फेक दी गई थी। जाने वहा का अग्निहोत्र विश्वविद्यालय तब क्या कर रहा होगा। चरमसीमा पर पहुच रहा प्रदूषण अब समस्त मानवता का सकट बन गया है जिसे केवल आर्यसमाज टाल सकता है। यज्ञो द्वारा पर्यावरण शुद्धि निमित्त उसके वानप्रस्थियो तथा सन्यासियो को यथाशीघ्र पश्चिम के लिए प्रस्थान कर देना चाहिए। स्थानीय समाजे उनकी परम सहायक होगी। गोघृत की वहा न्यूनता नहीं और हवन सामग्री हिमालय के उत्तराचल जैसे पर्वतीय प्रदेशो से सग्रहीत की जा सकती है। इस सर्वहितकारी योजना का सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जाना चाहिए।

२/४६० सादिकनगर नई दिल्ली

नि शुल्क राष्ट्रीय वैदिक भजनोपदेशक महाविद्यालय एव अनाथालय का शुभारम्भ

प्रवेश आरम्भ

समूचे भारत वर्ष मे इस समय अनेको गुरुकुल व उपदेशक विद्यालय हैं। मगर ऐसे भजनोपदेशक विद्यालय नहीं है जहा वैदिक सिद्धान्तो से युक्त उच्चकोटि के सगीतज्ञ तैयार कर देश विदेशो मे प्रचारार्थ भेजे जा सके। अत आर्य जगत की आवश्यकता अनुभव करते हुए रेलवे स्टेशन के पास उमरा रोड हासी (हिसार) हरियाणा मे नि शुल्क राष्ट्रीय वैदिक भजनोपदेशक महाविद्यालय का शुभारम्भ किया गया हे। जिसका उपकार्यालय शास्त्री निवास के ऊपर लाल सडक हासी मे भी है।

अनाथ व बेसहारा छात्रो को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। शिक्षा सर्वथा नि शुल्क होगी। प्रवेश पाने वाले छात्र की योग्यता कम से कम छठी से दसवीं पास होना अनिवार्य है।

आर्यजगत के समस्त भाई–बहनो से प्रार्थना है कि वेद प्रचारके इस महान कार्य मे अपना यथाशक्ति तन–मन–धन से सहयोग देकर पुण्य के भागी बने। हमारा लक्ष्य है कि आप सबके सहयोग से प्रतिवर्ष सुयोग्य आचार्यो द्वारा उच्चकोटि की एक (सगीत पार्टी) प्रचारक तैयार करके आर्य जगत को समर्पित करे।

– राष्ट्रीय वैदिक भजनोपदेशक महाविद्यालय एव अनाथालय निकट रेलवे स्टेशन उमरा रोड हासी। सम्पर्क सूत्र – शास्त्री निवास के ऊपर लाल सडक हासी १२५०३३ हरियाणा

वैदिक दैनन्दिनी (डायरी) २००३

सन २००२ की भाति २००३ ईस्वी के लिए डायरी की तैयारी प्रारम्भ है। इस वैदिक डायरी मे स्मरणीय पृष्ठ दैनन्दिनी की उपयोगिता आर्य सन्यासी वर्ग आर्य नेता तथा आर्य कर्मठ कार्यकर्त्ता नामावली आर्य वैदिक विद्वान तथा विदुषी महिलाओ की नाम सूची आर्य भजनोपदेशक तालिका आर्य पर्वो की सूची अवकाश सूची मुख्य–मुख्य पत्र–पत्रिकाओ के नाम–पते भारतवर्षीय आर्य प्रतिनिधि सभा तालिका विदेशो मे स्थापित आर्य प्रतिनिधि सभा सूची सभी टेलीफोन कोड नम्बर आर्यसमाज के स्तम्भ आर्ष गुरुकुल (बाल–बालिकाए) आदि–आदि शीर्षक होगे। कृपया अपना नाम जिला फोन नम्बर आदि नि शुल्क प्रकाशनार्थ यथाशीघ्र भेजे।

मधुर प्रकाशन २८०४ गली आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली ११०००६ (फोन ३२३८३६१)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

मोहाक्रान्त हुआ फिर पार्थ

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

द्वापर युग सा आज हुआ है पीडित भारतवर्ष,
मनुज वृत्तियों का होता है आज यहां अपकर्ष।
गली गली में नगर-गांव में दानवता का नर्तन,
मानव के दुष्टकर्मों से होता है युग परिवर्तन।
स्वार्थ वृत्ति है बढ़ी धरा पर, उठता दारुण क्रन्दन,
कदम कदम पर होता है दानवता का अभिनन्दन।
स्वतंत्रता मिल गई हमें है आधी और अधूरी,
भारत मां की इच्छाएं अब कौन करेगा पूरी ?
भारत की पावन धरती पर गउएं अब भी कटतीं,
अर्थव्यवस्था की आधारशिलाएं हैं अब मिटतीं।
शासन तथा प्रशासन सारा, भ्रष्टाचारों से है युक्त,
कौन करे उस श्रेष्ठ राष्ट्र को उनसे अब अवमुक्त।
शासक तथा प्रशासक भी हैं घूस प्राप्ति में लिप्त,
जनता से लेते अवैध धन, फिर भी ना होते हैं तृप्त।
खुली दुकानें मद्य मांस की, गांव नगर चौराहों पर,
बढा जा रहा भूमि निवासी, सर्वनाश की राहों पर।
बढता है आतंक धरा पर, बढ़ते हैं आतंकी,
अनय अभाव अविद्या से है भरी राष्ट्र की टकी।
मोहासक्त हुआ है सारा मानव का समुदाय,
जरासंध शिशुपाल कंस का बढता है अन्याय।
बना जा रहा भारत का जन, दुर्योधन दु:शासन,
रोक इसे है नहीं पा रहा आज देश का शासन।
नेता-अभिनेता में बढता जाता है अब स्वार्थ,
है समाज दिग्भ्रमित यहां का, मोहक्रांत हुआ फिर पार्थ।
आओ, फिर भारत की भू पर, तुम हे कृष्ण ! कन्हैया।
तुम्हें बुलाती है कातर हो, फिर से भारत मैया।।

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 1 9 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 29/30-8-2002

आर्यसमाज का सदस्य (सभासद्) होने के लिए निम्न नियमों का पालन करना आवश्यक है –

१ वेद व वेदो पर आधारित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थो में वर्णित सिद्धान्तो का जानना-मानना व प्रचार करना।
२ अपनी आय का शताश मासिक चन्दे के रूप मे या १००० रुपये या इससे अधिक वार्षिक चन्दा
३ साप्ताहिक सत्सगो में कम से कम २५ प्रतिशत उपस्थिति होना।
४ दैनिक सन्ध्या हवन करना। मास अण्डे बीडी शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करना।
५ जन्मगत जात पात को न मानना।
६ मूर्तिपूजा मृतक श्राद्ध फलित ज्योतिष तीर्थ स्थान टेवा जन्मपत्री आदि अन्धविश्वासों व पाखण्डों को छोड़ना व छुड़वाना

प्रतिष्ठा में

।। ओ३म।।

अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताएं

(वर्ग क) स्कूल, कालिज, गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं आम जनता के लिए :–

प्रत्येक प्रतियोगी को महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। ३०–११–२००२ तक इस प्रश्न पत्र के प्रश्नो के उत्तर लिख कर भेजने होगे। **प्रथम पुरस्कार ३००० रुपये तथा द्वितीय २००० रुपये, तृतीय १००० रुपये प्रशस्ति पत्र एव कुछ सान्त्वना पुरस्कार** भी दिए जाने की योजना है। इस प्रतियोगिता के लिए आयु लिंग मजहब योग्यता आदि का कोई बन्धन नहीं। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी।

(वर्ग ख) स्कूल, कालेज गुरुकुल के आचार्यो एवं वैदिक विद्वानों आदि के लिए :–

सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक **सम्मुलास** पर एक सारगर्भित **निबन्ध** लिखकर **सभा कार्यालय** मे भेजना होगा।

माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी **अन्तिम तिथि ३० ११ २००२, पुरस्कार प्रथम ५००० रुपये** तथा **द्वितीय ४००० रुपये, तृतीय २००० रुपये** तथा कुछ सान्त्वना पुरस्कार।

(वर्ग ग) १८ वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए :–

सत्यार्थप्रकाश मे कुछ रोचक व शिक्षाप्रद कहानियाँ सवादो एव दृष्टातो का वर्णन किया गया है। प्रतियोगियो को उन्हे ध्यानपूर्वक पढकर उनका सार व उनसे मिलने वाली शिक्षाओ को अपने शब्दो मे लिखकर भेजना होगा। प्रतियोगियो की सुविधा के लिए सत्यार्थप्रकाश पर आधारित आर्य भाषा मे एक लघु पुस्तिका नि शुल्क भेजी जाएगी। अन्तिम तिथि ३०–११–२००२ माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी पुरस्कार प्रथम २००० रुपये द्वितीय १००० रुपये तृतीय ५०० रुपये कुछ सान्तवना पुरस्कार।

नोट – जो महानुभाव किसी एक प्रतियोगिता मे भाग लेना चाहे वे मात्र **५० रुपये प्रवेश शुल्क** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश अथवा ड्राफ्ट के द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करे। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयों पुस्तक विक्रेताओ आर्यसमाज कार्यालयो आदि से उपलब्ध न हो तो **अतिरिक्त ५० रुपये हिन्दी सस्करण के लिए १५० रुपये अग्रेजी** सस्करण के लिए धनादेश अथवा ड्राफ्ट द्वारा भेज कर मगवाई जा सकती है।

प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर ही पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र अनुक्रमाक एव अन्य निर्देश आदि प्रेषित किए जाएगे। पता – **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली २,** विजेताओ को **महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह, महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र, गाजीपुर, नई दिल्ली** मे सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। **वर्ग ख के विजेताओ को सत्यार्थ रत्न की उपाधि से भी अलकृत किया जाएगा।** उत्तर पुस्तिकाओं का निरीक्षण उच्च कोटि के विद्वान द्वारा करवाया जाएगा। **धनादेश के नीचे अथवा ड्राफ्ट के पीछे प्रतियोगिता का वर्ग, माध्यम एवं अपना पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें।**

कैप्टन देवरत्न आर्य	**विमल आर्य (वधावन)**	**वेदव्रत शर्मा**	**डॉ० मुमुक्षु आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री	रजिस्ट्रार

निवेदन – समस्त समाजो सभाओ एव आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि इस प्रतियोगिता का स्थानीय स्कूलों कालिजों व आम जनता मे प्रचार करने मे सहयोग करे। दैनिक समाचार पत्रो मे इस सम्बन्धी विज्ञापन अथवा प्रेस विज्ञप्तियो के द्वारा भी प्रचार मे सहयोग अभिनन्दनीय होगा ताकि आम जनता एव बुद्धिजीवी इसमे भाग ले सके और महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार हो सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन [illegible]) फैक्स [illegible] से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन : [illegible])। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट – http://www.[illegible].com

वर्ष ४१ अक १६ ८ सितम्बर से १४ सितम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ भा० शु० २

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

राष्ट्रीय पशु आयोग द्वारा गोहत्या बन्दी की सिफारिश

गौपालन के मूल आर्थिक पक्ष को प्रचारित किया जाए

अल्पसख्यको की रक्षा के लिए अल्पसख्यक आयोग अनुसूचित जनजाति तथा अन्य दलित वर्गो के लिए दलित आयोग महिलाओ के लिए महिला आयोग आदि विभि न प्रकार के आयोग अपनी–अपनी प्रजा के हित मे सलग्न देखे और सुने जा सकते है। इसी प्रकार का एक आयोग बेजुबान पशुओ के लिए भी गठित किया गया है। राष्ट्रीय पशु आयोग (National Commission on Cattle) का गठन केन्द्र सरकार द्वारा किया गया था।

अब यह आयोग गाय माता की रक्षा के लिए एक नया मोर्चा खोलकर खडा हो गया है। इस आयोग ने गृह मन्त्रालय क माध्यम से केन्द्र सरकार को भेजी अपनी रिपोर्ट मे कहा है कि गौहत्या पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबन्ध लगाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पशुपालन विषय को भारतीय सविधान की राज्य विषय सूची से हटाकर केन्द्र और राज्य की सम्मिलित सूची म रखा जाए तभी गोहत्या बन्दी का राष्ट्रव्यापी और प्रभावशाली कानून बनाया जा सकेगा।

पशु आयोग का कहना है कि गोह याबन्दी समूचे राष्ट्र के हित का विषय है जिसे राजनीति से ऊपर समक्षा जाना चाहिए। आयोग का मानना है कि गाय के पूजनीय स्तर को देखते हुए इसके वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए चाहे गाय दूध देने योग्य बच्चे पैदा करने योग्य तथा बेल आदि खती योग्य भी न रहे।

आयोग ने अपनी यह रिपोर्ट के दीय कृषि मंत्री जी अजीत सिंह को भी प्रदान की है। पशु आयोग ने गृह मन्त्रालय से इस बात की भी आवश्यक सस्तुति की है कि गैर कानूनी गो हत्या तथा राज्यो के बीच गाय अथवा गो मास के यातायात को बन्द करने के लिए विशेष दल गठित किए जाने चाहिए। केरल और पश्चिम बगाल मे विशेष प्रयासो के लिए गृह मन्त्रालय को आग्रह किया गया है। इसी प्रकार बगला देश और पाकिस्तान को होने वाले व्यापारिक यातायात मे भी इस तरह की निगरानी के लिए आग्रह किया गया है।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने इस रिपोट पर अपनी हर्षित एव सकारा मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प शु आयोग के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गुमानमल लोढा का साधुवाद किया है।

श्री लाढा को लिखे एक पत्र मे सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने इस रिपोर्ट को एक ऐतिहासिक दस्तावेज बतात हुए कहा ह कि भविष्य मे किसी भी सरकार का गोह या बन्दी पर विचार करने मे यह रिपोर्ट एक प्रमुख आधार रहेगी। आयोग द्वारा विचार किए गए विषयो के अतिरिक्त श्री विमल वधावन ने गाय के सुदृढ आर्थिक पहलुओ पर भी विशेष छानबीन करके निष्कर्ष प्रस्तुत करन का आग्रह आयोग से किया है।

आयोग को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित गौकरुणानिधि की हिन्दी और अग्रेजी की पुस्तिकाए भेजकर यह निदेवन किया गया है कि वित्त मन्त्रालय से इस आशय की विशेष रिपोर्ट तैयार करवाइ जाए।

पत्र मे यह आशा व्यक्त की गई है कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण को ध्यान मे रखत हुए गौपालन की यह आथिक रिपोर्ट ईमानदारी से तैयार की जाए तो कोई भी सरकार भविष्य मे गाह या बन्दी क विषय पर टाल म ोल नही कर पाएगी।

स्वामी आत्मबोध जी नहीं रहे

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान एव सन्यासी आ मबाध जी का दुखद देहावसान ४ सितम्बर की प्रात कालीन ब्रह्म बेला मे हो गया। वे ८० वर्ष के थे। सन्यास आश्रम मे प्रवेश लेने से पूर्व आर्यभिक्षु नाम से प्रसिद्ध स्वामी जी देश के विभिन्न हिस्सो मे घूम घूमकर वैदिक धर्म के प्रचार मे अग्रणीय रहते थे। प्रचार कार्यो से प्राप्त दक्षिणा आदि का सदुपयोग भी वे सदैव आर्य सस्थाओ को दान स्वरूप प्रदान करने मे करते थ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तथा टकारा ट्रस्ट के कार्यो मे स्वामी जी विशेष रूचि लिया करते थे। सार्वदेशिक सभा का उन्होने कई बार इस प्रकार सहयोग करके बहुत बडी राशि की स्थिर निधिया स्थापित कराई।

स्वामी अत्मबोध जी का अन्तिम सस्कार हरिद्वार मे पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न किया गया जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली सभ के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय और ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम के समस्त अधिकारी और सदस्य शामिल हुए

कै० देवरत्न आर्य विदेश प्रचार यात्रा से वापस

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य अमेरिका के विभिन्न राज्यो के बाद कनाडा इग्लैण्ड की प्रचार यात्रा से स्वदेश वापस लौट आए हैं। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई थीं। वापस आगमन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा आर्यसमाज जनकपुरी के कार्यकारी प्रधान श्री सतीजा जी एव मन्त्री श्री रमेश कुमार जी के साथ कई अन्य आर्य कार्यकर्ताओं ने दिल्ली हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया।

कै० देवरत्न आर्य जी की विदेश यात्रा के अनुभवों पर आधारित एक विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र ही सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित करने हेतु तैयार की जा रही है।

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए प्रयास

मेवात की आर्यसमाजो तथा अन्य राष्ट्रवादी सस्थाओ की तरफ से सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा पर एक लक्ष्यबद्ध सम्मेलन नूह की पुरानी धर्मशाला मे आयोजित किया गया है जिसमे लगभग १०० हरिजन और वाल्मीकि नेताओ को आमन्त्रित किया गया है। श्री पदमचन्द्र आर्य इस कार्यक्रम के सयोजक हैं।

श्री विमल वधावन के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री आचार्य यशपाल तथा अन्य प्रमुख आर्य नेताओं के साथ विचार विमर्श करके एक व्यापक प्रचार योजना तैयार की जा रही है जो धर्मान्तरण की रोकथाम मे सहायक हो।

उधर मदुरै मे भी आर्य प्रतिनिधि सभा तमिलनाडू के प्रधान श्री सुबोध चन्द्र ने मुख्यमत्री श्रीमती जयललिता को पत्र लिखकर धर्मान्तरण रूपी समाज विरोधी गतिविधियो पर कडाई से रोक लगाने की माग की है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने आर्य जनता का आह्वान किया है कि धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए तन मन धन से सहयोग करे।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

५ सितम्बर, शिक्षक दिवस पर विशेष

शिक्षा में चरित्र निर्माण की आवश्यकता

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिह चौहान

भारत देश जो सोने की चिडिया कहा जाता था आज उस वैभवपूर्ण काल की अपेक्षा एकदम विपरीत है भले ही सोने की चिडिया न हो आध्यात्म ज्ञान के क्षेत्र मे यह विश्व का गुरु रहा था। नालन्दा विश्व विद्यालय तथा तक्षशिला विश्व विद्यालय इसकी पहचान है जिनके खण्डहर आज भी उपस्थित है। गुरुकुलो तथा आश्रमो मे व इन विश्वविद्यालयो मे दूर देशो के छात्र विद्याध्ययन हेतु आते थे। वन के एकान्त स्थान पर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रो पर ज्ञानार्जन होता था। अन्य विद्याओ के साथ साथ वेद का ज्ञान दिया जाता था। चरित्र को सुधारा जाता था। उनमे चारित्रिक ज्ञान कूट कूट कर भरा जाता था। वही छात्र बडे होकर ऋषि महर्षि राष्ट्रभक्त राजा महाराजा योद्धा व महापुरुष एव विद्वान बनते थे। परिवार व राष्ट्र का नाम ऊचा करते थे। उनका जीवन सत्य पथानुगामी होता था। परोपकार उनका धर्म होता था। वह सदा मानवता के लिए जीते थे। अधर्म से दूर रहते थे। मन मे भी अधर्म की बात न आती थी। जो भी शब्दोच्चारण करते थे वेदानुसार ही बोलते थे। वेद विरुद्ध वाक्य तो बोलते भी न थे। तभी कहा जाता था – प्राण जाय पर वचन न जाय। महाराजा हरिश्चन्द्र महाराजा राम यागीराज श्रीकृष्ण भीष्म पितामह तथा अन्य महापुरुष ऐसे हुए हे जा राष्ट्र की महानता के लिए प्रसिद्ध हुए। यह राष्ट्रपुरुष अच्छा व पवित्र वेदादिक ज्ञान चरित्र का ज्ञान प्राप्त करके ही महान बने। उनमे चारित्रिक शिक्षा व ज्ञान का अभाव न होता था। इसके विपरीत आज की शिक्षा मे चरित्र का ज्ञान नहीं दिया जाता। वेदादि शास्त्रो के ज्ञान के अभाव मे भ्रष्टाचारी अनाचारी दुराचारी लोगो का निर्माण हो रहा है जो राष्ट्र को अवनत दिशा देते जा रहे है।

आधुनिकता का लिबास ओढे हुए महाविद्यालय कार्लमार्क्स की शिक्षा का धन्यवाद करन मे गर्व समझते है। आज की शिक्षा पाश्चात्यता की जजीरो मे जकडी हुई है। राष्ट्र अवश्य स्वतन्त्र हो गया है परन्तु शिक्षा अभी भी कैद ही है। उसमे भारतीयता के दर्शन नही होते। आज शिक्षा सस्थान कोलाहल व प्रदूषण भरे नगरो के मध्य स्थित है। ऐसे शिक्षा सस्थान जहा चारो ओर मधुशालाए और सिनेमाघर होटल हा दिवारो व चौराहो पर बस स्टापो पर अश्लील पोस्टर हो घर घर मे टी०वी० पर केबल नेटवर्क डिस्क चैनलो पर नग्न अश्लील रोमान्स भरे कथानक आते रहे हो। मार धाड हत्याओ मान मर्यादाओ को तिलाजलि देते हुए धारावाहिक हो जहा राष्ट्र के गौरव इतिहास महान पुरुषो के वृत्तचित्र व धारावाहिक न होकर फूहड गीत व सवाद नग्नतायुक्त थिरकते कामुक मादक दृश्य हो। क्या ऐसे वातावरण मे कोई छात्र गम्भीरता व शातिपूर्वक अध्ययन कर सकता है ? अध्ययन के लिए एकदम शात एकान्त पवित्र स्थान की आवश्यकता होती है जहा कामुकता के चारो ओर दर्शन हो वहा छात्र का ब्रह्मचर्य कैसे रह सकता है। ऐसे मे अध्ययन करना छात्र का अपने पर वश रखना दुष्कर कार्य है। आज छात्रो का पहनावा व रहन सहन एकदम बदला हुआ है क्योकि फिल्मो का प्रभाव है। जैसे फिल्मी नायक नायिकाए अपना केशविन्यास वस्त्राभूषण धारण करते है बिजली की भाति वही सस्कार आज की युवा पीढी मे आये बिना नही रहते। बोलचाल की भाषा तथा व्यवहार मे परिवर्तन आये दिन होते रहते हैं।

वेदिक सस्कृति की देन रही है कि आज तक भी नगरो मे अधिकाशत गाव मे बुरे कर्म से बचने को कहा जाता है। अच्छे कर्मो को घर की आन बान शान और मर्यादा से जोडा जाता रहा है यदि घर परिवार मे कोई अनैतिकता का कार्य कर भी दे तो कहा जाता हे कि ऐसा काम किया। इतना बुरा काम यह बड शम की बात है। हमारे बडो ने तो कभी ऐसा सोचा भी न था। यह धारणा वेदिक सस्कृति की देन है जो पीढी दर पीढी परिवारजनो को दुष्कर्मो से बचाती है। परन्तु आज पाश्चात्यता के नगे नाच ने सब उलट पुलट कर दिया है। वैदिक सस्कारो को लोग भूलते जा रहे हैं। पहले बुरा काम करने मे डरते थे। अब जी भर कर करते है। दूसरा का गला काटकर अपने लिए आमोद प्रमोद के साधन कोठी कार आदि जुटाने मे भी नही चूकते। उन्हे अपना लाभ होना चाहिए चाहे व्यक्ति समाज नगर राष्ट्र का अहित क्यो न हो जाये। इस बात की कोई चिन्ता नहीं। यही कारण है कि आज शिक्षा के गिरते स्तर अपसस्कृतिकरण से शास्त्रज्ञ वेद के विद्वान ज्ञानी जन चिन्तित है। वह अनर्थ सहन नही कर पा रहे हैं। देखकर कुण्ठा होती है कि यह सब क्यो हो रहा है। लूट डकैती हत्याये आतकवाद परिवारो मे क्लेश समाज मे अन्धविश्वास अनैतिकता ये सब क्यो हो रहे हैं। सीधा वही उत्तर है। अच्छी शिक्षा की कमी वेद ज्ञान व सस्कृति का ह्रास इसका कारण है।

यदि राष्ट्र का निर्माण करना है तो इन बातो की ओर ध्यान देते हुए विशेष रूप से शिक्षा को अपने भारतीय सस्कृति इतिहास व प्राचीन गौरव से जोडना होगा। भाषा पर ध्यान देना होगा और गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक प्रकार से कम्प्यूटरीकृत करके विकासोन्मुखी करना होगा। गुरुकुल व्यवस्था ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है। जहा सम्पूर्ण ज्ञान युक्त मानव का निर्माण किया जाता है। और सच्चे और अच्छे मानव से श्रेष्ठ गुण व सस्कारो का प्रचार प्रसार होता है। श्रेष्ट गुण सम्पन्न समाज का निर्माण हो। अच्छे राष्ट्र का निर्माण होकर चारो ओर शान्ति व्यवस्था स्थापित हो सकेगी। वृक्ष क जमाव के लिए अच्छे सुदृढ मूल की आवश्यकता होती है। मूल ही कट जाये तो वृक्ष गिर जायेगा। हमारे राष्ट्र का मूल वेद व सत्य शास्त्र महापुरुषो का गौरव व श्रेष्ठ सस्कृति है आज इसकी ओर ध्यान देना परमावश्यक है।

– चन्द्रलोक, खुर्जा, उत्तर प्रदेश

सफल जीवन

– कृष्णा चौधरी

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिण ।
अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशयात।।

ऋग्वेद २/२१/५

प्रस्तुत मन्त्र मानव को जीवन मे सफल व उन्नति शील होने के लिए मार्गदशन करता है क्योकि –

- ✡ जो प्राणी मननशील होकर धर्म कर्म के कर्त्तव्यो को निभाते हैं केवल वही कर्मठ सफल जीवन बिताते हैं।
- ✡ ऐसे मानव पग पग पर करते रहते हे विकासमयी क्राति जीवन को यज्ञमय बनाकर प्राप्त करते रहते हे सुख शान्ति।
- ✡ हा सफल भी वही होते है जिनके मन मे हो कुछ कामना गतिशील बुद्धिद्वारा मननशील होने की हो भावना।
- ✡ ऐस कर्त्तव्यशील उपकारक सुपथ पर बढते व बढाते है तभी तो वे सुपथिक दूसरो के लिए आदर्श बन जात है।
- ✡ जो प्राणी अपने विवेक स नहीं लेते कभी काम केवल सोच विचार तक ही करने लगत है विश्राम।
- ✡ वे तो बस जीवन के हर मोड पर असफल होत रहते हैं धर्म व कत्तव्य की पवित्र दिनचर्या कुविचारो मे फसकर बिताते है।
- ✡ परन्तु जो दृष्टि वृत्ति कृत्ति स्मृति को पल पल मे सवारते हे वही साधक जीवन के लक्ष्य को पाते हैं।
- ✡ जो आत्म निरिक्षक भक्त जन मधुर स्वर मे गाते रहते हे भक्ति के गीत प्रभु भी उनक सरक्षक बनकर करत रहते है उनसे सच्ची प्रीत।
- ✡ सचमुच ऐस मार्गी को ही मिलते हैं दैवी अधिकार फिर यही प्रभु प्रेमी सरलता से पहुच जाते है मोक्ष के द्वार।
- ✡ आइये ! हम भी मिलजुलकर करे वैदिक मूल्यो का अनुष्ठान शुभ कर्मो द्वारा प्राप्त करते रहे प्रभु से आशीषा के वरदान।

– म०न० ६०६, सेक्टर १६, पचकुला हरियाणा।

सार्वदेशिक सभा का स्तुत्य प्रयास

घर-घर में देश-भक्ति और ऋषि-भक्ति पहुंचाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु "आजादी के दीवाने" कैसेट

केवल १५ रुपये में प्राप्त करें

इस कैसेट का निर्माण उ०प्र० के पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा तथा उनके ज्येष्ठ भ्राता पदमश्री भारत भूषण योगाचार्य जी के विशेष प्रयासों से करवाया गया है। इस कैसेट मे देश भक्ति और समाज सुधार की भावनाओ का समावेश किया गया है। "स्वामी दयानन्द घर घर अलख जगाय गयो रे" गीत ने तो स्वामी जी के देशभक्त अनुयायियो ने गुणगान करके श्रोताओं का रोम रोम पुलकित करने का सफल प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त रामप्रसाद बिस्मिल एव अशफाक उल्ला द्वारा फासी से पूर्व लिखे गये गीतो का भी इसमे समावेश किया गया है।

इस कैसेट का प्रकाशित मूल्य ३०/– रुपये है। परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश भक्ति की भावनाओ और ऋषि के गुणगान का अधिकाधिक प्रचार करने के उद्देश्य से इस कैसेट के मूल्य में अपना आर्थिक सहयोग प्रस्तुत किया है।

यह कैसेट केवल १५ रुपये मे सार्वदेशिक सभा कार्यालय में उपलब्ध होगी। पैकिंग तथा डाक व्यय अलग होगा।

आर्य जनता से यह अपेक्षा की जाती है कि अधिक से अधिक सख्या मे इन कैसेटो को प्राप्त कर के घर घर पहुचाए और ऋषि भक्ति का परिचय दें।

– विमल वधावन, वरिष्ठ उप-प्रधान

योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण

– उमाकान्त उपाध्याय

आज से पाच सहस्र वर्षों से भी पूर्व की बात है। द्वापर का अन्त हो रहा था। कलियुग आरम्भ होने वाला था। आज २०५६ वि० २००२ ई० मे कलियुग के ५१०३ सौ वर्ष हो गये। मेगस्थनीज के यात्रा विवरणो के आधार पर ५०७४ वर्षो पूर्व की बात है। भारतीय इतिहास की गणना मे कल्हण की राजतरगिणी के अनुसार गणना करने पर श्री कृष्ण का काल ५१४१ वर्ष के लगभग प्राचीन है। श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के पश्चात ३६ वर्ष जीवित रहे थे। जब भीम ने गदायुद्ध के नियमो के विपरीत दुर्योधन की कमर के नीचे प्रहार करके उसकी जघा तोड दी थी तो बलराम भीम पर बहुत क्रुद्ध हुए। उस समय श्रीकृष्ण बलराम का क्रोध शान्त करते हुए भीम के पक्ष मे दो तर्क देते है। एक तो द्यूतक्रीडा के समय जब दुर्योधन ने अपनी बाम जघा पर से वस्त्र हटाकर नगी जाघ पर बेठाने के लिए बलात द्रौपदी को बुलाया था उस समय भीम ने उसकी जघा तोडने की प्रतिज्ञा कर ली थी। अत भीम ने दुर्योधन की जघा तोडकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया दुष्ट दुर्योधन का उसकी नीचता का दण्ड दिया। द्वितीय श्री कृष्ण ने बलराम से यह कहा था कि अब तो कलियुग आरम्भ हो रहा है – **प्राप्त कलियुग विद्धि।** अर्थात कलियुग का आया हुआ समझो। महाभारत आदि पर्व मे युद्ध का काल या लिखा है –

अन्तरेचैव सम्प्राप्ते कलिद्वापरयोरभूत।

इन सब प्रमाणो पर विचार करने से ५१४१ वर्ष की गणना अधिक समीचीन जान पडती हे।

द्वापर का अन्त ओर कलियुग का आरम्भ दानो युगो का सन्धिकाल इतिहास की दृष्टि से यह ऐसा कालखण्ड है जब भारत वसुन्धरा पर प्रतिकूलता और विपत्ति की काली घटाए उमड उमडकर चारो ओर से घिरती चली आ रही थी। सम्पूर्ण देश खण्ड विखण्ड होकर आत्मघाती मार्ग पर बढता चला जा रहा था। जरासन्ध जेसा अन्यायी राजा मगध मे सम्राट था। अन्य सब माण्डलिक राजा थे। सम्राट तो जरासन्ध ही था। छोटे छोटे आञ्चलिक राजाओ को उसने अपने अधीन कर लिया था। जो विरोधी थे उन्हे उसने गिरिव्रज के कारागार मे बन्दी बना रखा था। वह उन्हे धमकी दे रहा था कि यदि उन्होने उसे सम्राट स्वीकार न किया तो एक सो की सख्या पूरी होने पर उन्हे महादेव की बलि चढा दिया जायगा।

इधर हस्तिनापुर (दिल्ली) मे अजेय बाल ब्रह्मचारी भीष्म और आचार्य द्रोण जेसे शस्त्रास्त्रो के दिग्गज आचार्य थे। किन्तु वहा धृतराष्ट्र की राज्यलिप्सा कौरव–पाण्डवो का कुलघाती सघर्ष इतना भारी पड रहा था कि इनके न कोई उच्च आदर्श न राष्ट्रनीति न अन्याय के प्रतिरोध का भाव कुछ भी न रह गया था। वही इनकी नाक के नीचे इनके ही सम्बन्धी कुन्ती के मातृपक्ष मे एक अन्यायी युवक कस ने मथुरा मे अपने पिता उग्रसेन से यादव वशियो का राज्य छीनकर स्वय राजा बन बेठा ओर अपने पूजनीय पिता को कारागार मे बन्दी बना दिया था। किन्तु भीष्म द्रोण धृतराष्ट्र के कान मे जू तक न रगी। यह था नेतिक ओर राष्ट्रीय पतन का एक उदाहरण।

इधर श्वसुर जरासन्ध और दामाद कस दोनो ही अन्याचार की अति कर रहे थे। श्वसुर राजाओ की बलि की तयारी कर रहा था तो दामाद केवल बाप को कारागार मे बन्दी बनाकर ही सन्तुष्ट न था। उसकी नीति थी

'तस्मात सर्वात्मना राजन्ब्राह्मणान सत्यवादिन। तपस्विनो यज्ञशीलान गाश्च हन्मो हविर्दुधा ।।"

– श्रीमद भागवत

अर्थात सभी उपाय करके तपस्वी सत्यवादी तथा यज्ञशील ब्राह्मणो को मारना तथा यज्ञ हवि का सहारा गायो का मारना। सो कस की नीति थी गो ब्राह्मण वध करना।

राजाओ की बलि की तैयारी गोब्राह्मण वध की नीति का प्रोग्राम यह तो भारत के केन्द्र मगध और मथुरा मे हो रहा था। पश्चिमी भारत सौवीर सिन्ध मे जयद्रथ मद्र (ईरान) मे शल्य गान्धार अफगानिस्तान मे शकुनी पूर्व मे प्रागज्योतिषपुरअसम मे नरकासुर भगदत्त सम्पूर्ण देश अन्याय अत्याचार से कराह रहा था। हस्तिनापुर मे कौरव पाण्डवो का गृहयुद्ध हो रहा था। अन्यायी धृतराष्ट्र अत्याचारी दुर्योधन सफल मनोरथ हो रहे थे। थोडी बहुत आशा पाण्डवो से की जा सकती थी किन्तु वे स्वय धृतराष्ट्र और दुर्योधन की राज्यलिप्सा और अत्याचार से पीडित होकर समय काट रहे थे। घनघोर अन्याय अत्याचार का आलम चारो ओर छाया हुआ था। धर्म की ग्लानि हो रही थी गो ब्राह्मण का नाश हो रहा था। कोई सहारा न दीखता था प्रकाश की क्षीण किरण भी न दिखायी पडती थी।

श्रीकृष्णचन्द्रोदय

इसी समय श्रीकृष्ण चन्द्रोदय हुआ। श्रीकृष्ण की घोषणा हुई –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानाम सृजाम्यहम।। परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम। धर्म सस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे।।

गीता ४/७–८

हे भारत अर्जुन ! जब जब धर्म की हानि ओर अधर्म का उत्थान होता है तब तब धर्म की स्थापना के लिए साधु सन्तो की रक्षा के लिए ओर दुष्टो का विनाश करने के लिए मे जन्म लेता हू। श्रीकृष्ण घोषणा करते हे कि मे तो सदा धर्म की स्थापना करने और दुष्टो का सहार करने एव सज्जनो की रक्षा करने के लिए ही जन्म लेता हू। श्रीकृष्ण अपने जन्म और जीवन का लक्ष्य ही अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना तथा दुष्टो का दमन और सज्जनो साधु सन्तो की रक्षा बता रहे हे।

प्रत्येक महापुरुष धर्म की रक्षा ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हे। वही श्रीकृष्ण घोषणा करते है कि मे तो सदा धर्म की स्थापना करने ओर दुष्टो का सहार करने एव सज्जनो की रक्षा करने के लिए ही जन्म लेता हू।

भाद्रपद की कृष्णा अष्टमी को मध्यरात्रि मे आनन्द कन्द देवकी नन्दन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। उस समय यदुवशियो के १ कुल थे ओर उनकी १८ हजार सख्या थी

'मन्त्रोऽय मन्त्रितो राजन कुलैरष्टादशावरै।

श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से स्वय ही बताया था कि हम यादवो के १८ कुलो ने कस को मारने की मन्त्रणा की थी। यादव थे तो सख्या मे कुल १८ हजार किन्तु अत्याचारी अन्यायी कस से भिडने मे डरते थे –

अष्टादश सहस्राणि भ्रातृणा सन्ति न कुले।

महा० समा० १४–१६

कस से डरने का मुख्य कारण यह था कि मगध का सम्राट जरासन्ध इसका श्वसुर था। उसकी दो पुत्रिया अस्ति ओर प्राप्ति कस को व्याही थी। कस को अपने श्वसुर जरासन्ध का सरक्षण प्राप्त था। उसने यदुवशियो को बलात अन्याय से दबा रखा था वह अपने पिता उग्रसेन को मथुरा की राजगद्दी से जबरदस्ती उतारकर स्वय राजा बन बेठा था। अत्याचारी श्वसुर का अत्याचारी दामाद। श्वसुर तो राजाओ का बलि देने की तेयारी कर रहा था। उसने ८६ राजाओ का कैद मे डाल भी रखा था। एक सो की सख्या पूरी करने की प्रतिज्ञा थी। इधर दामाद ने श्वसुर की सहायता से यादव सघ को दबा रखा था। यादव सघ मे थे १ हजार व्यक्ति किन्तु सराराध की विशाल सेना की सहायता कस के हाथ मे थी। अत लडाई मे कस को हराना सरल कार्य न था, बल्कि यो कहना चाहिए कि असम्भव था।

कस का वध

यादवो के सघ राज की स्थापना श्रीकृष्ण आर अन्य सघो के मुखिया लाग चाहते थ। किन्तु सेना की लडाई मे कस भारी पड रहा था। कस को मारने का उपाय द्वन्द्व युद्ध हो सकता था। श्रीकृष्ण अभी उठते किशोर थे। कस [illegible] और बलराम का मल्ल युद्ध मे मरवा[illegible] कस [illegible] दरबार मे लयाद्धा [illegible] मुष्टिक और चाणूर। आयु से परिपक्व योवन पश से मल्ल सा कस ने इन्हे नियुक्त किया कि ये दोनो पहलवान मल्लयुद्ध मे श्रीकृष्ण आर बलराम को मात के घाट उतार दे

भग्न श्रुत्वाथ कसोऽपि प्राह चाणूर मुष्टिको। मल्लयुद्धे निहन्तव्यौ मम प्राण हरो हि तौ।

विष्णु ५–२०–१७ १

मल्लयुद्ध निश्चित हो गया। यह भी कस की देखरेख मे ओर कस के दरबार मे मुष्टिक का जोड बलराम आर चाणूर का जोड श्रीकृष्ण से निश्चित हुआ। कृष्ण आर बलराम ने मल्लविद्या का बहुत अच्छा अभ्यास कर रखा था। कृष्ण ने चाणूर को आर बलराम ने मुष्टिक को पराजित कर दिया। यह तो प्राणघाती द्वन्द्व हो रहा था। सो चाणूर आर मुष्टिक दोनो को कृष्ण आर बलराम ने जान से मार डाला। यह परिस्थिति देखी तो कस घबडा गया। वह अखाड से भाग जाने का प्रयास करने लगा। इतने मे श्रीकृष्ण ने उसे धर दबोचा। कस का सकट मे पडा देख उसका भाई सुनामा कृष्ण पर झपटा किन्तु उसे बलराम ने तुरन्त ही लपेट लिया ओर श्रीकृष्ण ने कस को ओर बलराम ने सुनामा को आसानी से लीला सी करते हुए मार डाला।

क्रमश

मेंढकी के जुकाम का उपचार

– आचार्य भगवान देव चैतन्य

श्री राजे द्र यादव जी द्वारा सम्पादित हस पत्रिका क अप्रल २००२ क अक मे डा० धमवीर जी व श्री वीरभारत तलवार जी की पुस्तक हिन्दू नवजागरण की विचारधारा सत्यार्थ प्रकाश समालाचना एक प्रयास की चर्चा कीहै। समूचे विवेचन को पढकर लगता हे कि श्री तलवार जी द्वारा लिखित यह पुस्तक पूर्णतय पक्षपातपूर्ण और पूवाग्रह से ग्रसित ह तथा क्योकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी न अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश म अ य मतो के साथ साथ कबीर प थ की भी समालाचना की हे इसलिए लगता हे कि श्री तलवार जी ने अत्यधिक प्रतिक्रियावादी बनकर न केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज पर निराधार व अशाभनीय आक्षप लगाए हे बल्कि वेद जेसे सर्वहितकारी ओर सार्वभोमिक तथा सर्व कल्याणकारी विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ पर भी सवालिया निशान लगान का प्रयास किया ह। प्रत्यक व्यक्ति का अपन विचार कहन की स्वतन्त्रता ह मगर पूणरूप स सत्य असत्य क आधार पर ही विवचन करना चाहिए तथा मूल्यांकन भी यही हानी चाहिए कि उस विवचना म एसी अनर्गल और निराधार बातो का समावश न हा जिसस विवचना मात्र तथ्यहीन तथा कारा प्रलाप बनकर न रह जाए। हा समूची मानवता क विकास म तथा सावभामिक साहार्द पदा करन की दिशा म किया गया विवेचन साथक आर स्तुत्य हे। अपना ग्रन्थ सत्याथप्रकाश लिखने के पीछे महर्षि दयानन्द जी की यही भावना थी। उन्हान बहुत ही बारीकी क साथ सत्य का सत्य और असत्य को असत्य कहा यही उनकी मुख्य विशषता थी। उनके द्वारा की गई समालोचना के पीछे किसी प्रकार की दुभावना को खोजना वास्तव म अपनी ही कुण्ठा या कुत्सित भावना का प्रत्यारोपण करना हे।

महर्षि जी अपने ग्रन्थ की भूमिका मे ही लिखते हे मरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयाजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना हे। अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जा मिथ्या है उसका मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा हे। वह सत्य नही कहाता जा सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य क स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता हे। जो मनुष्य पक्षपाती हाता हे वह अपने असत्य को भी सत्य आर दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य का भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता हे। इसलिए वह सत्य मत का प्राप्त नही हा सकता। मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला हे तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषो से सत्य को छोड असत्य मे झुक जाता हे। परन्तु इस ग्रन्थ मे एसी बात नही रक्खी हे ओर न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि का तात्पर्य हे। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति ओर उपकार हो सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण ओर असत्य का परित्याग कर। क्याकि सत्यापदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही ह। जो जा बात सबक सामन माननीय ह उसका मानना। अर्थात जसे सत्य बालना सबक सामने अच्छा आर मिथ्या बालना बुरा ह एस सिद्धान्ता का स्वीकार करता हू। ओर ज मतमता तर क परस्पर–विरुद्ध झगड ह उनका म पसन्द नही करता क्याकि इन्ही मत वालो न अपन मता का प्रचार कर मनुष्या का फसाक परस्पर शत्रु बना दिए हे। इस बात को काट सर्वसत्य का प्रचार सबको एक्यमत म करा द्वष छुडा परस्पर म दृढ प्रीतियुक्त कराक सब स सब का सुख लाभ पहुचान क लिए मरा प्रयत्न और अभिप्राय हे।

महर्षि दयानन्द जी की इन भावनाओ का दर्शाना इसलिए जरूरी हे क्याकि जब तक हम उनक इस परोपकारी आर निस्पृह स्वभाव से परिचित नही हाग तब तक हम न तो उनका सही आकलन कर पाने म ही सक्षम हो सकेग ओर न ही उनकी शिक्षाओ की गहनता का समझकर उन्हे आत्मसात करने की दिशा मे सक्रिय हो सकेगे। हमे यह मानकर चलना होगा कि महर्षि जी सब प्रकार की एषणाओ से ऊपर थे तथा वे अपना कोई नया मत या सम्प्रदाय बनाकर अपनी पूजा भी नही कराना चाहते थे। उनका उद्देश्य ससार तथा मनुष्य मात्र का उपकार करना था। वे चाहते थे कि अनेक प्रकार की पगडण्डियो म भटके हुए मानव एक सही राह पर आकर चले जिससे आपसी प्यार और साहार्द बने। उनका लक्ष्य मानव–मानव मे आइ दूरियो को पाटकर उनका हार्दिक मिलाप कराना था। वे व्यक्तियो म भेदभाव नही बल्कि मिलाप चाहते थे। ससार के प्रबुद्ध लोगो ने उनकी इस भावना का आदर करते हुए उनकी प्रशसा भी की मगर उनकी मूल भावना से ठीक ढग से परिचित न हो सकने के कारण कुछ व्यक्ति आज भी उन्ह कई प्रकार के विवादो म घरने क कुप्रयास करने की दिशामे लगे हे ताकि उनके द्वारा मानवता को एक सूत्र मे पिरोने की उत्कृष्ट भावना को दरकिनार करके लोगो को आज भी अगडा–पिछडो दलितो आदि की ही कोटी म रखकर क्षेत्रवाद और साम्प्रदायवाद क कोढ को बरकरार रखा जा सके तथा मानव समाज एव राष्ट्र एक समग्र विकास की ओर बढन की बजाए उन्ही कुत्सित काराआ मे भटक कर कष्ट उठाता रहे। माननीय श्री तलवारजी का गरीबा असहायो दलिता तथा मानवमात्र के हितेषी महर्षि दयानन्द जी पर अपनी तलवार चलान का अन्तत क्या उद्दश्य हे यह ता हम स्पष्ट रूप से नही कह सकत ह मगर जसा कि हमने प्रारम्भ म ही कहा हे कि लगता ह कबीर जी के बार म जा बात महर्षि जी न कहे हे उसी की प्रतिक्रिया यह पुस्तक ह।

कबीर जी क बार म महर्षि ने जा अपने भाव व्यक्त किए ह उनका सार लगभग यह ह कि उन्हाने पाषाणदि मूर्तिपूजा का ता खण्डन किया मगर उनके शिष्य मूर्तिपूजा के स्थान पर पलग गददी तकिए खडाऊ ज्योति अर्थात दीप आदि को पूजते है इसलिए महर्षि जी ने कहा कि यह भी जडपूजा ही का रूप हे। अब चिन्तन करे कि उन्हाने क्या असत्य कहा हे ? कबीर जी के जन्म ओर मृत्यु के बारे मे भी नासमझ लोगो न कई प्रकार की कल्पनाए कर ली हे। कहत हे कि उनका जन्म फूलो से हुआ। महर्षि जी ने यदि इस पर यह कहा कि कबीर साहब क्या भुनुगा वा कलिया थे जो फूलो से उत्पन्न हो गए ओर अन्त मे फूल हो गए तो क्या गलत बात है ? फिर महर्षि जी ने कबीर के जन्म के सम्बन्ध मे उस प्रचलित कथा का उल्लेख किया है जिसके अनुसार किसी विधवा नारी ने अपने पाप को छुपाने के लिए अवैध नवजात शिशु को फैक दिया था जिसे काशी का नि सन्तान जुलाहा ले गया तथा उन्हीं ने पालपोष कर बडा किया। बडा होकर वह भी जुलाहे का ही काम करता था। किसी पण्डित के पास पढने के लिए गया तो पण्डित जी ने उस समय की प्रथा के अनुसार जुलाहे को पढाने से मना कर दिया। अन्य पण्डितो ने भी सस्कृत पढाने स मना कर दिया तो वे ऊटपटाग (जिस श्री रामचन्द्र शुक्ल जी ने सुधुक्कडी तथा डा० श्यामसुन्दरदास जी ने पचम खिचडी कहा हे।) भाषा मे भजन बनाकर अपनी बिरादरी के लोगो मे तम्बूरा लेकर गाता था। कबीर जी के शिष्य उनके मरने के बाद उन्ही भजनो को प्रमाण मानकर पढते है तथा कान को मूद कर जो शब्द सुना जाता है उसको अनहद शब्द सिद्धान्त ठहराया। मन की वृत्ति को सुरति कहते है। उसको उस शब्द के सुनने मे लगाना उसी का सन्त और परमेश्वर का ध्यान लगाना बतलाते है बर्छी के समान तिलक और च दनादि लकडे की कण्ठी बान्धत है। महर्षि जी की उपरोक्त बाता मे भला एसा क्या है जिस पर आपत्ति की जा सके ? कबीर जी ने बहुत ही कड शब्दो म मूर्तिपूजा का खण्डन किया है मगर क्या यह हैरानी की बात नही है कि उनके शिष्य जडपूजक बन गए ? इस बात का कम सिद्ध किया जा सकता ह कि वे फूल स ही पदा हुए थे आर मरन के बाद भी फूल हा गए ? अधिकतर विद्वानो ने किसी विधवा या अविवाहित नारी से ही कबीर जी का जन्म माना है जिसने लाकलाज तथा अपने पाप को छुपाने के लिए उन्हे त्याग दिया तथा नीरु जुलाहे न उनको पाला। कुछ विद्वानो ने यह भी उल्लेख किया है कि कबीर जी किसी मुसलमान की सन्तान थे मगर नीरू द्वारा पाले जाने के कारण वे जुलाहे हुए। उनके जुलाहा होने के भी अनेक विद्वानो ने अनेक प्रमाण दिए है जिन्हे स्थानाभाव के कारण यहा उद्धृत करना सभव नही है। उस समय की प्रथा के अनुसार ब्राह्मण किसी नीच जाति के व्यक्ति को सस्कृत नही पढाया करते थे इसलिए कबीर जी विधिवत वेदादि सत्य शास्त्रो का अध्ययन नही कर पाए और उनकी भाषा भी परिमार्जित नही हो सकी। इस सम्बन्ध मे भी वे अपनी अज्ञानता को स्वय स्वीकार करते है – कागद मसि छूयो नहीं कलम गहि नहीं हाथ । इसलिए उन्हे जो भी शब्द जहा कही से भी मिले उन्ही का प्रयोग करके भजन आदि बनाए और अपने लोगो के बीच उन्हे गाकर सुनाया करते थे।

क्रमश

वेद में सांसारिक अध्यात्म

– डॉ० सत्यपाल सिंह

विश्व के इतिहास मे वेद प्राचीनतम पुस्तक है तथा भारतीय संस्कृति के अनुसार वेद अपौरुषेय तथा ईश्वरीय ज्ञान है। शब्द नित्य है इसीलिए इसे अक्षरो से बना मानते हैं अक्षर का अर्थ है जिसका नाश न हो। आधुनिक विज्ञान के हिसाब से ऊर्जा का नाश नहीं होता उसका सिर्फ रूपान्तर होता रहता है। ज्ञान भी इस तरह से एक ऊर्जा है। इस ज्ञान का मूल स्रोत ईश्वर है। उदाहरणार्थ हमने पढना लिखना किसी गुरु से सीखा हमारे गुरु ने अपने गुरु से इस प्रकार पीछे जाते हुए जब दुनिया मे धरती पर प्रथम मानव ने जन्म लिया तो उसका गुरु तब केवल ईश्वर ही हो सकता है। योग दर्शनकार कहता है

स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात। (१/२६)

अर्थात ईश्वर काल की मर्यादा से परे मानव का सर्वप्रथम गुरु है। ईश्वर को ज्ञान देने के लिए बोलने की अथवा आने जाने की जरूरत नहीं है – वह तो हृदय मे ज्ञान का प्रकाश देता है। अलग अलग चारो वेदो का चार ऋषियो (अग्नि वायु, आदित्य व अंगिरा) की आत्माओ मे एक साथ ही प्रकटन हुआ।

वेद का ज्ञान सार्वकालिक सार्वभौमिक वैज्ञानिक तथा कल्याणकारक है। वेदो मे किसी ऐतिहासिक देश जाति धर्म जगह तथा नाम का वर्णन नहीं है। उस पर मानव मात्र का बराबर का अधिकार है। वेद संसार की सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। मनु भगवान उसे सर्व ज्ञान मयो हि स (१/१२६)। अर्थात सब प्रकार के ज्ञान से पूर्ण मानते हैं। अथर्ववेद घोषणा करता है – यस्मिन वेदा निहिता विश्वरूपा (४/३५/६) अर्थात विश्व का रूप वेद मे निहित है। और इसलिए प्राचीन काल से ही वेदो का पढना–पढाना व सुनना–सुनाना आर्य संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। वेद निहित कर्मो को ही आर्यो ने धर्म का नाम दिया था।

आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ है ज्ञानवान है। आर्य ईश्वर–पुत्र अर्थात ईश्वर के पुत्र को आर्य कहा गया है। इस देश मे अंग्रेजो के आने से पहले आर्य शब्द कहीं भी किसी जाति अथवा नस्ल के लिए प्रयोग नही हुआ। यह तो विदेशी इतिहासकारो तथा उनके देशी चाटुकारो के राजनैतिक तथा सांस्कृतिक षडयन्त्र के कारण हुआ। बौद्धो का आर्य सत्य किसी जाति का सत्य नहीं अपितु मनुष्य मात्र का श्रेष्ठ सत्य है। इसी प्रकार आर्य सम्बोधन किसी जाति के लिए न होकर आदर के लिए प्रयोग होता था। रामायण तथा महाभारत के जमाने मे आर्यपुत्र तथा आर्यपुत्री का प्रयोग सामान्य था। कवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम' मे शकुन्तला दुष्यत को आर्यपुत्र' कहती है आर्य का व्यवहार श्वसुर के लिए तथा आर्या' का सास के लिए आदर के लिए होता था। जब दुष्यत शकुन्तला को पहचानने से इन्कार कर देता है तो शकुन्तला उसी दुष्यत को अनार्य' कहती है। यदि दुष्यत आर्य नस्ल का होता तो क्या व्यक्ति एक ही वर्ष के अन्दर अपनी नस्ल बदल सकता है ?

ऋग्वेद ने तो ईश्वरीय घोषणा की है – अहम भूमिमददाम आर्याय' (४/२६/२)। अर्थात भगवान ने तो यह धरती आर्यो के लिए ही दी है। इसीलिए तो वैदिक संस्कृति बार–बार यह उद्घोष करती रही

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम। अपघ्नन्तोऽरावण।

(ऋ० ९।६३।५)

अर्थात इन्द्र (देवत्व) को बढाने के लिए राक्षसो का दुष्टो का सहार करो तथा सारे विश्व को आर्य बनाओ।

जब स हम लोग अपने को आर्य कहना भूल गए हमारा अपने ही वेद शास्त्र उपनिषद रामायण महाभारत गीता आदि संस्कृति–साहित्य से नाता ही टूट गया। इन किसी भी पुस्तक मे भारत देश के लोगो ने अपने को हिन्दु नही कहा। सब जगह हम अपने को आर्य कहकर गौरवान्वित होते रहे। अगर हमारा नाम आर्य है तो हमे श्रेष्ठ बनना ही होगा। अनार्यत्व (अनाडीपन अज्ञानता) को लात मारनी ही होगी। हमे दुष्टो दैत्यो राक्षसो व रावणो का हनन करना ही होगा। जब से इस देश के लोगो ने – विदेशियो के कारण अथवा अपनी गलती के कारण अपने को बेचारा हिन्दु बना लिया हमारी वीरता और वैभव खत्म हो गए। पिछले लगभग डेढ हजार वर्षो का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब से आर्यावर्त हिन्दुस्तान बन गया हिन्दुओ का देश बन गया इस पर विदेशी जातियो के आक्रमण पर आक्रमण होने लगे। इस देश की सम्पत्ति को लूटा गया विशाल व दुर्लभ साहित्य को जलाया गया और धीरे–धीरे यह देश विदेशियो का – जिसको हमारे प्राचीन साहित्य ने म्लेच्छ कहा था – गुलाम बन गया।

जिस गीता के अमृतमय उपदेश ने किकर्तव्य विमूढ मोहग्रस्त अर्जुन को युद्ध करने के लिए खडा किया था – उस गीता के करोडा भक्त पिछले एक डेढ हजार वर्षो मे कायर कमजोर दीनहीन नपुसक बन करके अपनी जिन्दगी गुजारते रहे। हमारे सारे देवी–देवताओ के हाथो मे कोई न कोई शस्त्र है पर उनकी प्रतिदिन की पूजा भी हमे अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा न दे सकी। जो पौधा अपने मूल से उखड जाता है उसे वरुण देव का वर्षा जल सूर्य भगवान का ताप तथा मन्द शीतल समीर भी तो जीवित नहीं रख सकता। आर्य हमारा नाम था आर्यत्व हमारा मूल था वेद हमारा धर्म था उससे दूर जाकर हमारा यह हाल होना ही था। अभी भी समय है कि हम अपने को फिर से आर्य कहकर पुन गौरवान्वित हो।

मानव जीवन की सारी विद्याए व विधाए वेदों के अन्दर बीज रूप मे विद्यमान हैं। मनुष्य जीवन के चारो पुरुषार्थो – धर्म अर्थ काम व मोक्ष का ज्ञान तथा उन्हे प्राप्त करने का मार्ग वेद ने बताया है। अध्यात्म का अर्थ मोक्ष की प्राप्ति नहीं है – मोक्ष भी अध्यात्म का एक भाग है। अध्यात्म तो एक मार्ग है जहा हम अपने को जान पाते हैं या जान सकते हैं। अध्यात्म आत्म तत्व के साक्षात्कार का देवत्व प्राप्ति का महामार्ग है। हम कौन है कहा से आए ह कहा जाना है आदि प्रश्नो का उत्तर अध्यात्म का विषय है। वेद कहता है

ओ३म कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामाऽसि। (यजु० ७/२९)

अर्थात तू कौन हे मै कौन हू ? तू कौन सा है मै कौन सा हू ? तू किसका हे मैं किसका हू ? तू क्या नाम या शक्ति वाला है मै क्या सामर्थ्य वाला हू ? वेद अपनी आत्मा तथा विश्व–आत्मा को जानने की बात करता है। वेद का अध्यात्म वना तथा पर्वतीय कन्दराओ का अध्यात्म नहीं है। वैदिक अध्यात्म मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष की बात करता है। इसलिए मैं उसे सासारिक अध्यात्म कहता हू। उदाहरण के लिए हम वेद भगवान से प्रार्थना करते है –

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्ता पावमानी द्विजानाम। आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम। मह्यम दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम।।

(अथर्व० १९/७१/१)

अथात हे सस्कारित लोगो को पवित्र करन वाली वेद माता मुझे वर दो ताकि मै लम्बी आयु बल (प्राण शक्ति) उत्तम सतान – पशु आदि यश धन ब्रह्म (वेद) ज्ञान पाकर ब्रह्मलोक (मोक्ष प्राप्ति) का अधिकारी बन सकू। वद के एक एक पद मे एक–एक शब्द मे एक एक अक्षर मे उनके क्रमो मे बडा विज्ञान निहित है। शास्त्र ने घोषणा की बुद्धिपूर्वा वाक्य कृतिर्वेदा । अर्थात वेद का प्रत्येक वाक्य बुद्धिपूर्वक है। मनु महाराज तो वेदो को परम प्रमाण मानकर कहते हैं

धर्म जिज्ञासमानानाम प्रमाण परम श्रुति। (१/१३२)

अर्थात धर्म के जिज्ञासुओ के लिए इस विश्व मे सबस बडा प्रमाण परम श्रुति (वेद) है। मनु भगवान यह भी कहते हैं कि – यस्तर्केण अनुसक्ते स धर्मम वेदनेत्तर।

अर्थात जो तर्क से अनुसधान करता है वह ही धर्म के गूढ तत्व को जान सकता है।

अथर्ववेद इसलिए कह रहा है कि हे परम देव मुझे पहले दीर्घ आयु दे फिर स्वस्थ–सुन्दर मन बुद्धि और इन्द्रिया दे गृहस्थ आश्रम मे मुझे उत्तम सतान मिले गौ घोडे आदि पशुओ का सान्निध्य हो। इस व्यक्तिगत व पारिवारिक सुख–शान्ति के बाद मुझे चारो दिशाओ मेयश–कीर्ति मिले। कीर्ति के बाद मुझे धन की भी कोई कमी न रहे। कीर्ति और वैभव के पश्चात मुझे (आत्म) ज्ञान मिले ताकि मैं बाद मे ब्रह्मलोक का अधिकारी बन सकू। वेद का उपदेश स्पष्ट है कि जो लोग धन के लिए अपने स्वास्थ्य परिवार तथा कीर्ति को दाव पर लगाते हैं या उनकी उपेक्षा करते हैं उन्हे बाद मे पश्चाताप करना पडता है। धन (की अधिकता) ने कभी किसी को तृप्त नहीं किया। आत्म ज्ञान के लिए व्यक्ति को पहली सीढियो से गुजरना है। यही बात तो यजुर्वेद के महामृत्युञ्जय मन्त्र मे और भी स्पष्ट रूप से कही गयी है –

त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम। उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

(यजु० ३/६०)

अर्थात हे सारे ससार को सुगन्ध व पुष्टि देने वाले प्रभु ! मुझे खरबूजे की तरह बन्धन से मृत्यु से छुडवा कर अमृत को पान कराओ। खरबूजा तभी बन्धन स छूटता है जब वह पक जाता है औरपकने के लिए उसे बेल से जुडना ही पडता ह वृद्धि व मिठास के लिए उससे रस लेना पडता है। ठीक इसी तरह से व्यक्ति को अपने विकास मिठास तथा परिपक्वता के लिए सासारिक बन्धनो से बधना आवश्यक है। नहीं ता विकास मिठास व पूर्णता मे कहीं कमी रह ही जाएगी। बिना इनके आत्म ज्ञान कैसे होगा और कैसे होगी मुक्ति की प्राप्ति ?

योग शास्त्र मे भगवान पतञ्जलि न योग के लिए आत्म–ज्ञान के लिए अध्यात्म की उच्चता के लिए आठ अगा का पालन आवश्यक बताया। बिना पाच यमो (सामाजिक अनुशासन) व पाच नियमा (व्यक्तिगत अनुशासन) के कोई भी व्यक्ति अध्यात्म की सीढी पर नही चढ सकता। पूरा योग ही एक अनुशासन का नाम है। शासन दूसरो पर होता है पर अनुशासन का अर्थ अपने ऊपर अपन मन व इन्द्रियो के ऊपर – शासन का नाम है। आज तो योग व अध्यात्म के नाम पर हजारो लोग योग शिक्षक बनकर अध्यात्म मार्ग का वस्तुत उपहास कर रह है। बिना यम–नियमो के खान पान के नियन्त्रण के बिना भी आज के लोग मेडिटेशन (ध्यान कहना तो गलत ही होगा) करके चन्द दिनो म विभिन्न प्रकार का प्रकाश देखने का आत्म ढाग करते है।

ऋग्वेद भी प्रेरणा दे रहा है मनुर्भव जनया दैव्य जनम (१०/५३/६) अथात मनुष्य बनो और देवताओ को पैदा करा। इसानियत व देवत्व की प्राप्ति के लिए हमे प्रकाश (ज्ञान) के पीछे चलना होगा। रोशनी के रास्ते की रक्षा कर उसे आग बढाना होगा। और यह सब दुनिया के ताने –बाने बुनते हुए त्यागपूर्वक भोग करते हुए ज्ञान की मशाल हाथ मे लेकर अज्ञान अन्याय व अभाव के अन्धकार को चीरना होगा। तभी हम आत्मज्ञान के अधिकारी बनेगे और तभी अध्यात्म के दिव्य रस का पान हम कर सकेंग।

मित्रो ! यह देश आत्मज्ञान व आध्यात्मिकता के कारण दुनिया का कभी सिरमौर था। यह तभी तक रहा जब तक वेद का दीपक घर–घर मे जलता रहा। अपनी शान्ति के लिए अपने बच्चो की समृद्धि के लिए अपने देश की प्रगति के लिए आओ आज पुन हम वेद की ज्योति घर–घर मे पहुचाए। जिस दिन वेद क अध्यात्म ससार मे फैलेगा तब लोगो के हृदयो से वैर वैमनस्य दूर होकर तथा आतकवाद और अपराध खत्म होकर विश्व एक कुटुम्ब बन पाएगा। एक नीड बन जाएगा – भवत्येक नीडम।

– कृतिका वॉटर फिल्ड रोड भाभा हॉसपीटल के सामने बाद्रा पश्चिम मुम्बई ४०००५०

भारतीय और इण्डियन

– सीताराम आर्य

भारतवर्ष मे अनक प्रकार क लोग रहते है। कोई अरब के अरबियन है जिनका इस्लाम मजहब है। कोई यारापियन इटालियन हे जिनका ईसाई मत ह। कोइ चीन के भक्त चायनीज है जिनकी झण्डी चीन से हिलती है जिन्हे कम्युनिष्ट या वामपन्थी कहा जाता ह। फुटकर और भी कई प्रकार के मतमतान्तर हैं।

लेकिन मैं यहा सिर्फ हिन्दू की बात कर रहा हू जो कि भारत का मूल निवासी ह। इस देश का प्राचीन मूल निवासी आर्य जा वतमान म हिन्दू कहलाता है वह अब दो गुटो मे विभाजित हा गया है। एक गुट है भारतीय और दूसरा है इण्डियन।

प्रथम गुट का हिन्दू वह ह जो श्री राम और कृष्ण का मानता है और सत्य सनातन वेदिक धर्म का अनुयाई है तथा प्राचीन ऋषि मुनियो की भारतीय सस्कृति मे उसकी पूर्ण आस्था है। भारतमाता को वह अपनी मातृभूमि मानकर वन्दना करता हे। इस प्रकार के हिन्दू समूह को हम भारतीय कह सकते है।

हिन्दुओ का दूसरा गुट वह है जो धर्मनिरपेक्षता का अनुयाई है और सवधम सम्भाव मे जिसकी आस्था है। दुनिया के सारे मजहब एव मत मतान्तरो को यह धर्म ही मानता है। उसकी नजरो म दूध भी सफेद ओर मई भी सफेद। य लोग नीर ओर छीर तथा गुड ओर गोबर म कोई अन्तर नही मानते। भारतीय सस्कृति से उन्हे कोई मोह नहीं कोई आस्था नही। अपितु भारतीय सस्कृति के मानने वाला से ये लोग द्रोह पालते हैं। राम–कृष्ण के नाम से ओर अयोध्या काशी मथुरा से इन्हे इलरजी है। ये लोग भारतीय हिन्दुओ को भगवाकरण की गाली से न बाजते हे ओर राष्ट्रविरोधी तत्वो से हाथमिला कर सत्ता मे उन्हे सहभागी बनाते हैं। इस प्रकार के लोगो को इण्डियन कहा जा सकता है।

ये नवधनाढ्य हिन्दू–इण्डियन बनकर विदेशी कुसस्कृति से ओत–प्रोत है इनका आचार विचार खान–पान रहन–सहन भेष–भाषा सब कुछ विदेशी हे और य लाग अग्रेजियत के रग म सराबोर हैं। आजादी से लेकर आज तक शासन और प्रशासन पर यही लोग काबिज हैं। इन अग्रेजो के दत्तक पुत्रो ने देश पर विदेशी कुसस्कृति थोपी और राष्ट्र को गलत दिशा में ले गए। जिसका परिणाम आज हमार सामने हैं।

आइए अब थोडा अतीत की ओर चलत हैं। सर्वप्रथम आदिकाल से ही हमारे देश का नाम आर्यावर्त रहा है और इस देश मे रहन वाला का आर्य कहकर सम्बोधित किया जाता रहा हे। रामायण ओर महाभारत के सीरियल साक्ष्य के लिए काफी है। जिन्हे सम्भवत सभी ने देखा है। हमारे प्राचीन महा मनीषियो ने वेदो के आधार पर सारी दुनिया मे अपना चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किया। सम्पूर्ण पृथ्वी पर ईश्वर की अमृत वाणी वेदो का ज्ञान–विज्ञान फैलाकर परम पवित्र ओ३म् का वैदिक भगवा ध्वज फहराया। अपने प्यारे देश आर्यावर्त को सर्वोच्च शिखर पर बैठाय और विश्वगुरु की उपाधि से प्रतिष्ठित कराया। करोडो वर्ष परियन्त युगो–युगो तक हमारे पूर्वजो ने सम्पूर्ण धरा पर राज्य किया। इतिहास इस बात से भरे पड ह। सतयुग मे सूय के समान तेजस्वी महाराजा मनु का वश हुआ जो सूर्य वश के नाम से जाना गया त्रेतायुग मे वही वश रघुवश कहलाया। यह परम तेजस्वी वश द्वापर के उत्तरार्द्ध तक इस धरा पर सूर्य के समान चमकता हुआ अपने वैभव का आलोक दुनिया मे बिखेरता रहा। लेकिन यह सृष्टि की रचना परिवर्तनशील है नियति के नियमानुसार समय का चक्र घूमा ओर परिवर्तन आया। द्वापर के उत्तरार्द्ध मे दश की बागडोर चन्द्रवशियो के हाथो मे आ गई है। चन्द्रवश क भी कई तेजस्वी महाप्रतापी राजा भरत जेसे हुए जिन्होने चक्रवर्ती राज्य किया आर अपनी आर्य वेदिक सस्कृति के वैभव को सदेव ऊचा उठाया तथा कम नहीं होने दिया। चन्द्रवशी भी आर्य के नाम से ही प्रसिद्ध रहे और आर्यपुत्र कहलाए। कहते हे महाराजा भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पडा। विधि की विडम्बना ही थी और नियति का नियम भी द्वापर के अन्त म चन्द्रवश के ही कुरु वशियो के अधिकार मे देश की बागडोर ओर सत्ता की सारी शक्ति आ गई। कुरुवश भोगवादी प्रवृत्ति का सिद्ध हुआ। जो राज्य सभा मे सरे आम बुजुर्गो के सामने जुआ खेलता हो ओर राज्य के लिए आपस में भाई–भाई लडते हो उन्हें फिर क्या कहा जाए ?

देश का दुर्भाग्य ही था जो कि महाभारत जैसा भयानक गृह युद्ध हुआ। उसमे जनहानि और धनहानि की तो कोई थाह नहीं बेशुमार हानि हुई। लकिन सबसे बडी हानि हुई प्रज्ञा हानि। विद्वानो की तथा बुद्धिमानो की हानि। विदेशो की बात तो छोडो कोइ देश चलाने वाला ही नही बचा। जबकि हमारा देश दुनिया का चक्रवर्ती सम्राट था उसमे कोई विद्वान और बुद्धिवान बचा नहीं था। धन बल और बाहुबल भी बुद्धिबल के आधार पर ही चलते हे। महाभारत के युद्ध से हमारे देश का सर्वनाश हो गया। उसमे जनबल धनबल बुद्धिबल सब कुछ नष्ट हो गया ओर देश निरन्तर कमजोर होता चला गया।

तभी मौका पाकर अरब और अफगानी कबीले लुटेरो ने हमारी आन्तरिक कलह तथा आपसी फूट एव कमजोरी का फायदा उठाकर आक्रमण शुरू कर दिए। हमारे वीर बहादुर पूर्वजो ने मुस्लिम आतताईयो से सैकडोवर्ष सघर्ष किया। अन्तत आपसी फूट के कारण हमारा यह प्यारा भारत वर्ष गुलाम हो गया। मुस्लिम शासन काल मे भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्तान रखकर पुकारा जाने लगा। सम्भव है अरबी भाषा मे थ की जगह त बोला जाता हो इस कारण स्थान को स्तान कहा होगा। उन्होने इस देश के आर्य (श्रेष्ठ) लोगो को हिन्दू कहा और हिन्दू के स्थान को हिन्दुस्तान कहकर पुकारा।

विद्वानो का ऐसा मानना है कि हिन्दू शब्द फारसी भाषा का शब्द है जिसे मुस्लिम शासको ने अरब से लाकर हम पर बलात थोपा है। सस्कृत भाषा एव वैदिक शब्दावली मे हिन्दू शब्द कहीं ढूढने से भी नहीं मिलेगा। वेद–शास्त्र उपनिषद रामायण गीता महाभारत आदि आदि प्राचीन ग्रन्थो मे भी हिन्दू शब्द कही नही हे। वर्तमान मे अब हिन्दू शब्द आर्य शब्द का पर्यायवाची बन गया। अस्तु जो भी हो इस प्रश्न पर आज कोई विवाद पैदा नही करना है। यह मूल प्रश्न भी नहीं और लेख का यह विषय भी नहीं।

मुस्लिम शासन के पतन के बाद हमारे देश पर अग्रेजो ने कब्जा करके अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया और हिन्दुस्तान को इण्डिया बना दिया। तभी से अग्रेजो के मानस पुत्र हिन्दू अधिकाशत इण्डियन बन गए हैं। भारतीय सस्कृति से उन्हें कोई सरोकार नहीं। उनका खान–पान रहन सहन आचार विचार भेष भाषा सब कुछ अग्रेजी है। देश ओर धर्म से तथा यहा की सस्कृति से उन्हे कोई लेना देना नहीं। यही इण्डियन लोग देश की सत्ता और सम्पत्ति पर हावी हैं।

दो दशको से कश्मीर उजड रहा है। वहा नित्य प्रति खून की धारा बहाई जा रही है। हजारो बेगुनाह हिन्दुओ का कत्लेआम हो चुका है। उनकी बहू बेटियो की इज्जत खाक मे मिल चुकी है। लाखो हिन्दू जो करोड पति थे अपनी जान बचाकर वहा से भागकर शरणार्थी हो गए हें। लेकिन धर्मनिरपेक्ष इण्डियन राजनेताओ के कान पर जू भी नही रेगी। मानवाधिकार के ढोग मे भी यही लोग बैठे हैं इसलिए किसी ने भी उजडे हुए कश्मीरी पण्डितो के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाई। इण्डियन लोगो की काली करतूते अन्तहीन है जिनका कोई ओर–छोर नहीं।

गोधरा काण्ड की दिल दहला देने वाली निर्मम घटना पर भी इन धर्मनिर्पेक्ष इण्डियन लोगो को कोई अफसोस नहीं हुआ। किसी ने भी इस दर्दनाक घटना पर अपना मुह नहीं खोला। जब वहा इसकी प्रतिक्रिया हुई तथा दगा फसाद होने लगे और सैक्यूलरपथी राजनेताओ की वोट बैंक उजडने लगी तब इन्होने हाय तोबा मचाना शुरू कर दिया। सिर पीट–पीट कर रोने लगे और आसू बहाने लगे। सच्चा न्याय यह कहता है कि जो पहले चोट करे वही दोषी होता है। बाद मे प्रतिक्रिया होती ही है।

देखना यह होगा कि आग पहले किसने लगाई। और आग लगाने वाले कौन लोग हैं। यह तो निश्चित रूप से कहा ही जा सकता है कि गुजरात मे दगे गोधरा काण्ड की परिणति है। अयोध्या से लौट रहे हिन्दुओ को राष्ट्र विरोधी लोगो ने एक साजिश के तहत जिन्दा जला दिया। माना कि दगा फसाद कोई अच्छी चीज नहीं। आग यह नहीं देखती कि यह गीला है या सूखा। निर्दोष–सदोष सब जलते हैं। इस देश का गाधीवादी हिन्दू सहिष्णु है। कोई एक गाल मे थप्पड मार दे तो दूसरा गाल भी उनके सामने कर दो। इण्डियन राजनेताओं ने देश की जनता को यही पाठ पढाया है। बरना गोधरा काण्ड की आग सारे देश में फैल सकती थी। लेकिन यह सहिष्णुता की पराकाष्ठा है। यह सहिष्णुता नहीं अपितु कायरता है।

पाकिस्तान–बगला देश और कश्मीर मे अभी तक लाखो हिन्दू मारे जा चुके हैं। हजारो बहू बेटियो की इज्जत खाक मे मिल चुकी है। हजारो मन्दिरों को तोड कर मिटटी मे मिलाया जा चुका है। और इस देश का हिन्दू सर्वधर्म सम्भाव की ताली पीट कर सहिष्णुता की पराकाष्ठा को भी पार करके सारी सीमाए लाघ चुका है। शर्म की बात और निलज्जता है दुश्मन हमें घर मे आकर मार रहा है और हम सहिष्णुता की तोतारटन्त रट रहे हैं। योजनाबद्ध तरीके से पाकिस्तान और बगला देश से मुस्लिम घुसपैठिए करोडो की तादाद मे आकर हमारे देश मे बस गए हैं। भारत की सैक्युलर इण्डियन सरकार ने अपना बैंक बनाने बावत महमानों की तरह उनका स्वागत किया। यहा तक कि वोटरलिस्ट मे उनके नाम चढवा दिए और उन सब को विभिन्न प्रदेशो मे बसाकर राशनकार्ड तक बनवा दिए गए।

जब महाराष्ट्र की शिव सेना सरकार ने इन घुसपैठियो को मुम्बई से निकाल कर वापिस बगलादेश भेजने का प्रयत्न किया तो पश्चिम बगाल की वामपथी सैक्युलर इण्डियन सरकार ने महाराष्ट्र पुलिस को पीट कर उन देशद्रोही तत्वो को छुडवा दिया। जरा देखिए इण्डियन राजनेताओ की यह राष्ट्रघातक काली करतूत। ये इण्डियन नेता अपनी कुर्सी के लिए देश को आग के हवाले करने पर तुले हुए हे। आज सारा देश बारुद के ढेर पर बैठा है अगर आगलगी तो क्या होगा। और इसका जिम्मेदार कौन होगा। सैक्युलर इण्डियन राजनेता आग पर घी डाल रहे हैं इन्हे याद रखना चाहिए यदि समय ने पलटा खाया तो ये लोग अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकेगे।

आज देश के अन्दर जिस प्रकार के हालात निर्मित कर दिए गए हैं उसे देख कर तो यही लगता है कि देश अब पुन गुलामी की ओर अग्रसर है। गौर करने की बात यह है कि पाकिस्तान या अन्य कोई भी देश हमारा बाल भी टेढा नहीं कर सकते लेकिन असली खतरा तो हमे आज अन्दर से है। आस्तीन मे पाले गए सापो से देश को आज सबसे बडा खतरा है इसे नजर अन्दाज करना देश घातक सिद्ध होगा। याद होगा एक जयचन्द ने देश को गुलाम बना दिया था आज सत्ता के भूखे लाखों जयचन्द पैदा हो गए हैं इनसे देश को कैसे बचाया जा सकेगा। चिन्तन कीजिए देश को बाटकर भारत माता के टुकडे करने वाले और देश के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय सापों को पालने वाले तथा आज सारे देश को बारुद के ढेर पर बैठाने वाले आखिर कौन लोग हैं। देश की जनता को यह भली–भाति समझना होगा। और इन गद्दार राजनेता को पहचान कर देश की गद्दी से इन्हे उतारना होगा। आजादी से लेकर अभी तक देश की जनता ने धर्म निरपेक्ष इण्डियन लोगों के हाथों मे ही देश की बागडोर सौंपी। जिसका नतीजा आज देश के सामने है। समय रहते देश की प्रबुद्ध जनता भारतीय देश भक्त लोगों के हाथों में देश की बागडोर सौंप कर क्या देश और धर्म को बचाने का परिचय देगी ?

– दयानन्दपुर, विदिशा, मध्य प्रदेश

वेद में सब विद्याएं बीज रूप में

प्रस्तुत लेख वैदिक जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने १६७३ मे मॉरीशस मे सम्पन्न हुए द्वादश अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के वेद सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण के रूप मे दिया था। इस लेख का प्रस्तोता उस समय वहा उपस्थित था। **सम्पादक**

– (स्व०) आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

वेद परम करुणामय भगवान का दिया हुआ ज्ञान है। विश्व के मानव के कल्याणार्थ वेद की शिक्षाओ का प्रचार परमावश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के वास्तविक स्वरूप को विश्व के सम्मुख उपस्थित किया और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज का यही मुख्य कर्त्तव्य है कि वह वेद को विश्व के सम्मुख रखे। विश्व की मानवता जहा अज्ञान रोग और अभाव से ग्रस्त है वहा उसका समाज सशय उदासीनता अविश्वास और भौतिकता से पीडित है। ससार मे इनका इलाज करने मे यदि कोई अमोघ औषधि है तो वह है वेद का ज्ञान जो समस्त मानव के लिए बिना किसी भेदभाव के समान रूप से प्राप्त करने योग्य है।

एक प्रश्न यह खडा होता है कि क्या वेद का ज्ञान वस्तुत समस्त व्यक्तियो के लिए है और सभी उसके पढने और ग्रहण करने के अधिकारी है ? महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे वेद के आधार पर सिद्ध किया है कि वेद के पढने का अधिकार मानव मात्र को है। जब भगवान के बनाए विश्व मे पृथ्वी पानी वायु, प्रकाश आदि सबके लिए है तो फिर उसका दिया ज्ञान भी सबके लिए है।

समस्या मानव के सामने यही है कि ज्ञान और भाषा का मूल क्या है ? और वह मानव को किस प्रकार प्राप्त हुआ ? कुछ लोग कहते है कि भाषा और ज्ञान विकास के सिद्धान्तों के आधार पर मनुष्य ने स्वय विकसित किए हैं। ये सर्वथा विकास के फल है। परन्तु परीक्षणो से यह बात सही नहीं उतरती। भाषा–विज्ञान के नाम पर इस समस्या के समाधान का लोग प्रयास करते हैं। परन्तु परीक्षण करने पर यह कल्पना का एक वाद ठहरता है। यह वस्तुत कोई विज्ञान नहीं और इसके सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर सही उतरते भी नहीं हैं।

विकास तीन श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है। प्रथम सृष्टि विकास (कॉस्मिक इवोल्यूशन) द्वितीय चेतना विकास (बायोलॉजिकल एवोल्यूशन) तथा तृतीय ज्ञान विकास। ये तीनो प्रकार के विकास अब परीक्षणो से ही नि सार और व्यर्थ सिद्ध हो चुके हैं। यदि ज्ञान और भाषा विकास के फल होते तो जिन्हे जगली कहा जाता है उनमे जो सूक्ष्म कलाई पाई जाती हैं वे नहीं होनी चाहिए थीं। परन्तु तथ्य इसके विपरीत है। अत ज्ञान और भाषा परमात्मा की प्रेरणा से आते हैं। परन्तु वह भाषा किसी देश विशेष या बोलचाल की भाषा नहीं होती। वह ज्ञान भी किसी देश–विशेष या समुदाय विशेष के लिए नहीं होता हैं। वेद का ज्ञान और वेद की भाषा परमेश्वर प्रदत्त है और किसी देश–विशेष के लिए नहीं अपितु सभी विश्व के मानवो के लिए है। वेद की भाषा ससार मे कभी बोली की भाषा न रहीं और न बनाई जा सकती है।

ऋषि दयानन्द ने ऐक नियम ही आर्यसमाज का ऐसा बनाया है कि जिसमे वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक स्वीकार किया है। यह सूत्र आर्यसमाज को सर्वथा मान्य है और यही उसका प्रमाण है। पढे लिखे लोग यह कहते हैं कि जब सभी विज्ञान वेदो में हैं तो फिर अनुसंधान और आविष्कार का कोई स्थान नहीं रहेगा। इस का उत्तर सक्षेप मे मैं यही देना चाहूगा कि 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।' अर्थात सब विद्याओ के विस्तार और विवरण का नहीं।

प्राय यह सभी को ज्ञात है कि पानी कभी बर्फ बनता है और बर्फ पानी बनता है। यह परिवर्तन मैं आता है। परन्तु कितनी डिग्री पर पानी है और कितनी पर बर्फ यह नियम अपरिवर्तनीय है। नियम के ज्ञान से पानी और बर्फ का पता चलता है। अथवा पानी और बर्फ को बनाकर एव समझ कर नियमो पर पहुचा जा सकता है। यही स्थिति वेद की है। वेद सृष्टि के नियम हैं और सृष्टि के पदार्थ उस नियम मे नियन्त्रित है। ऋग्वेद १०/१६०/७ का मन्त्र इसी पर प्रकाश डालता है। ऋत वस्तुत ज्ञान सृष्टि के नियम वेद हैं और सत जगत के पदार्थ है।

ऋत च सत्य चाभीद्धात्तपसोऽध्य जायत।
ततो रात्र्य जायत तत समुद्रो अर्णव ।।

अर्थ – (धाता परमेश्वर ने उसी अनन्त ज्ञानमय (ऋतम) सामर्थ्य से सब विद्या का खजाना वेदशास्त्र को प्रकाशित किया। जैसा कि पूर्व सृष्टि मे प्रकाशित किया था और आगे के कल्पो मे भी इसी प्रकार से वेदो का प्रकाश करेगा। (सत्यम्) जो त्रिगुणात्मक अर्थात सत्व रज और तमोगुण से युक्त है जिसके नाम अव्यक्त अव्याकृत सत प्रधान प्रकृति है जो स्थूल और सूक्ष्म जगत का कारण है सो भी (अध्य जायत) अर्थात कार्य रूप होके पूर्वकल्प के समान उत्पन्न हुआ है। (ततोरात्र्य जायत) उसी ईश्वर के सामर्थ्य से जो प्रलय के पीछ हजार चतुर्युगी के प्रमाण से रात्रि कहलाती है वो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है।

इसमे एक और वैज्ञानिक तथ्य का प्रकाश डाला गया है। वह तथ्य यह है कि ससार मे प्रत्यक वस्तु की स्थिति गर्मी पर है। प्रत्येक वस्तु मे एक खास दर्जे का तापमान विद्यमान है। जब तक वह तापमान है तब तक वस्तु विद्यमान है। ज्यो ही तापमान समाप्त होगा वस्तु समाप्त हो जाएगी। सूर्य जा ताप और प्रकाश आदि का महान पिण्ड है उसकी भी स्थिति प्रलय मे यही होगी। यह तापमान जब समाप्त हो जावेगा तव ससार का प्रलय हो जावेगा।

प्रश्न यह उठता है कि फिर कौन शक्ति पुन ताप देगी कि जगत के पदार्थ इस रूप मे आवे ? वेद मन्त्र बतला रहा है कि यह ताप भगवान पुन देगा ताकि जगत बने। वेद मे सम्वतसर नाम का वर्ष भी है और यह पद अन्य कई अर्थो का वाचक है। उनमे इसका एक अर्थ सूर्य भी है। शतपथ ब्राह्मण १०/२/४/३ मे और १४/१/१/२७ मे सम्वतसर का रूपार्थ बतलाया गया है। ऐसा ही जैमिनीय ब्राह्मण मे भी है। इनमे यह प्रकट किया गया है कि सम्वत+सर मिलकर सम्वतसर पद बनता हे। इसका अर्थ करते हुए कहा गया हे जो प्रकाशमान भाग है 'सम्वत' है और जो काला व अप्रकाशमय भाग है वह 'सर' है। इससे सूर्य मे काले धब्बो का वर्णन पाया जाता है।

ऋग्वेद और सामवेद के प्रथम मन्त्र मे अग्नि का वर्णन है। यजु मे अग्नि के ही भेद अग्निपुञ्ज सूर्य का प्रथम मन्त्र में वर्णन है। यह भी एक प्रकार से अग्नि का ही वर्णन है। अथर्व के भी प्रथम मन्त्र मे ये त्रिषप्ता मे अग्नि का प्रकारान्तर से वर्णन पाया जाता है। यह क्यो ? इसलिए कि अग्नि का जगत मे बडा महत्व है। अग्न आ याहि वीतये इस मत्र की एक वैज्ञानिक व्याख्या ब्राह्मण ग्रन्थो मे मिलती है। वहा पर लिखा गया है कि 'वीतये पद एक भी है और वि+इतये ऐसे भी दो पद मिलकर एक पद बनता है पहले पृथ्वी आदि सभी लोक एक दूसरे के अत्यन्त समीप थे। अग्नि ने इनको दूर–दूर कर दिया। यह दूर करने को ही वीतये पद से प्रकट किया गया है। अत वेद मन्त्र बतलाता है यह अग्नि हमारे ज्ञान मे हमे प्राप्त हो जो कि सृष्टि की प्राथमिक अवस्था मे लोको को पृथक किया करता है।

एक कठिन समस्या सामने आकर यह खडी हो जाती है कि वर्तमान समय मे धर्म के साथ विज्ञान का मेल नहीं खाता है। इसका समाधान कुछ विचारक यह करते हैं कि धर्म का वैज्ञानिकीकरण कर देना चाहिए। परन्तु यह पक्ष ठीक नहीं है। वस्तुत विज्ञान का धार्मिकीकरण करना चाहिए। धर्म का पूर्ण रूप दर्शन से भी सम्बद्ध है। अत वेद मे विज्ञान का धार्मिकीकरण और दार्शनिकीकरण मिलता है। इसमे धर्म विज्ञान और दर्शन तीनो समन्वित हैं।

वेद मे किसी प्रकार का इतिहास नहीं है। उसके प्रत्येक पद मे विज्ञान और दर्शन का उदात्त रूप पाया जाता है। जितना ही उस पर विचार किया जावे उतना ही ज्ञान–विज्ञान सामने आता है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने इसी दृष्टि से वेद को सत्य विद्याओ का पुस्तक कहा है।

कभी–कभी लोग ऐसा कहते पाए गए हैं कि वेद मे विधि भी पाई जाती है। उस विधि को मानने के लिए बाध्यता नहीं है। जो भगवान को ही नहीं मानता वह उसकी आज्ञा को ही क्यो मानेगा ? इसका समाधान यह है कि भगवान को न मानने वाले को भी वेद को तो मानना ही पडता है। एक मन्त्र है –

भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्रा।
यजुर्वेद २५/१४

इस मन्त्र मे लिखा है कि अपने कानो से अच्छा ही सुने और आखो से अच्छा ही देखे यहा पर वेद मन्त्र दो प्रकार के विधान बता रहा है। एक आदेशात्मक है और एक नियमात्मक है। हम अच्छे के बजाए बुरा भी सुन सकते हैं और बुरा ही देख सकते है। क्योकि हमे कर्म करने की स्वतन्त्रता है। हम इस आदेशात्मक विधान के विपरीत कर सकते हैं। परन्तु नियात्मक विधान हम नहीं तोड सकते। वह है कान से सुनना और आख से देखना। कोई भी इसमे व्यतिक्रम नहीं कर सकता कि कान से देखे और आख से सुने। यहा भगवान को न मानने वाले को भी नियम को मानने मे बाध्यता है।

यजुर्वेद के ८वे अध्याय का ११वा मन्त्र है जिसमे कहा गया है कि शन्न क्रनिक्रदद देव पर्जन्यो अभिवर्षत। यहा विचार यह खडा होता है कि कनि क्रदद देव कहने की विशेष आवश्यकता क्या थी ? इसका समाधान कारखानो मे खाद बनाने वाले करेगे। बिना गरज के खाद मे उपजाऊ शक्ति नहीं आती। साथ ही बादल की गरज से जब बिजली चिघाड उठती है तब कृषि कीट जो रोग के जन्तु हैं उनका विनाश होता है। वर्षा मे वे अधिक बढते हैं और उनके विनाश का यही साधन है। इसी प्रकार घोर गर्जना के बाद बिजली जब कडकती है तब ओजोन अधिक मात्रा मे प्राप्त होता है। ओजोन बहुत ही जीवन और उल्लास का देने वाला है। यह प्राण वायु का घनीभूत रूप है।

वेद भौतिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति की भी प्रेरणा देता है। बिना इसके मानव पूर्णता को नहीं प्राप्त हो सकता। पुरुष नाम ही पूर्णता का द्योतक है। वह अध्यात्म और भौतिकता दोनो उन्नतियो का समन्वय चाहता है।

वेद विश्व मे शान्ति का उपदेश देता है। इसका मन्त्र यह है –

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षँ शान्ति पृथिवी शान्तिराप शान्तिरोष धय शान्ति।
वनस्पतय शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वँ शान्ति शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।।

द्यौ अन्तरिक्ष लोको पृथिवी लोक जल औषधिया वनस्पतिया सब दिव्य शक्तिया सब पदार्थ मुझे शान्ति देने वाले होवे मुझे शान्ति ही शान्ति प्राप्त होवे। वह मेरी सब प्रकार की शान्ति बढे अर्थात मै पूर्ण शान्ति का अनुभव करू। (यजुर्वेद अ० ३६ मन्त्र स० १७)

इस प्रकार वेद मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। हम मानवता के सामने इस निधि को प्रकाश मे लाने मे सफल हो।

– प्रस्तोता मनुदेव अभय
– सुकिरण अ/१३ सुदामा नगर
इन्दौर ४२२००८, मध्य प्रदेश

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

ट्रेन में नियमित वैदिक धर्म का प्रचार

ईश्वर की प्रेरणा से कठिन काम भी सुगम बन जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है बल्लबगढ से प्रात ८.१५ बजे चलने वाली ई०एम०यू० के पीछे से चौथे डिब्बे मे शुरू हुआ वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य। गुरुकुल कागडी के शताब्दी सम्मेलन के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर बने उत्साहवर्धक वातावरण से प्रेरित होकर तीन नवयुवको ने यह कार्य २२ जुलाई २००२ से आरम्भ किया है। इसमे प्रमुख भूमिका रही धर्मेन्द्र आर्य की जो १९९६ से ट्रेन मे चल रहे पौराणिक कीर्तन – मण्डलो मे वैदिक साहित्य का प्रचार करते रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश पढकर मोहन जी व गणेश जी पौराणिकता के जाल को तोडकर वैदिक – उद्यान मे प्रविष्ट हुए तथा २ वर्षो से लगातार वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करते रहे।

मित्र चेतना मंच

बल्लबगढ से दिल्ली की ओर चलने वाली हर ई०एम०यू० मे सुबह ७ से ९ व शाम को ५ से ७ के बीच पौराणिक ढर्रे पर कीर्तन होता है। मोहन जी व गणेश जी ने शुद्ध वैदिक विचारधारा (महर्षि दयानन्द प्रतिपादित) पर आधारित कीर्तन शुरू करने का सुझाव दिया। कबीर जी से प्रभावित भाई गोविन्द जी भी इससे आ जुडे। मित्र चेतना मच नाम इसलिए रखा गया ताकि अधिक से अधिक लोग इससे जुड सके।

प्रचार का तरीका

मित्र चेतना मच का बैनर केसरिया रग का है जिस पर ऊपर ओ३म बीच मे 'वैचारिक क्रान्ति' तथा नीचे 'सस्कृति–रक्षा शक्ति सचय व सेवा लिखा है। पुस्तक पैम्पलेट ट्रेक्ट आदि बाटे जाते है व पढने को दिए जाते हैं। एक ढफली व दो जोडी मजीरो से सगीत का पुट भी दिया जाता है।

अभिवादन व जयघोष

मच द्वारा सर्वमान्य अभिवादन 'नमस्ते जी' का ही प्रयोग व प्रचार किया जाता है। सच्चिदानन्द भगवान की जय आनन्दकन्द भगवान की जय मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम योगेश्वर श्रीकृष्ण देश व धर्म पर बलिदान वीर व वीरागनाओ की जय ये नारे बोले जाते हैं। इसके अलावा एक नया जयघोष सच्ची शेरो वाली भारतमाता की जय भी बार–बार लगाया जाता है। समापन पर वेद की ज्योति जलती रहे व ओ३म का झण्डा ऊचा रहे ये भी बोले जाते हैं।

कीर्तन का शुभारम्भ व समापन

कार्यक्रम का शुभारम्भ तीन बार गायत्री मन्त्र तत्पश्चात तूने हमे उत्पन्न किया इस प्रार्थना से करके उसके बाद ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के आठ वेदमन्त्रो का काव्यानुवाद गाया जाता है तथा बीच बीच मे हे मेरे परमात्मा शुद्ध करो मेरी आत्मा पापो का हो खात्मा सभी बने धर्मात्मा यह भी गाया जाता है। यह प्रक्रिया बल्लबगढ से फरीदाबाद तक चलती है। निजामुद्दीन से वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना ब्राह्मण स्वराष्ट्र मे हो का गान आरम्भ होता है। तत्पश्चात शन्तिपाठ शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन मे का गान तिलक ब्रिज तक जयघोष बोलकर इसका समापन हो जाता है। यह कार्यक्रम सोमवार से शुक्रवार तक चलता है।

ट्रेन में नियमित वैदिक धर्म का प्रचार

विशेष जोर इस बात पर दिया गया है कि भजन परमात्मा से सम्बन्धित हो। कुछ भजन रोज बोले जाते हैं जैसे ओ३म है परमपिता का नाम भज लो प्यारे ओ३म का नाम ओ३म है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है पीलो पी लो रे ओ३म नाम रस प्याला। श्रीराम हनुमान व श्रीकृष्ण के बारे मे केवल वे ही गीत गाए जाते हैं जिनसे वैदिक विचारधारा या उनका आचरण सामने आए। मच के सदस्य खुद ऐसे भजन लिखते हैं जैसे (१) श्रीकृष्ण हैं योगेश्वर मत कहो उनको भोगेश्वर (२) कहते हैं श्रीकृष्ण भारत से ललकार के कम से कम अब तो अपनी गलती सुधार ले (३) श्रीकृष्ण सभा के बीच ज्ञान का विराट रूप दिखाते हैं (४) हनुमान तेरी जय हो बल–तेज तपधारी बन्दर कहे जो तुमको करते हैं पाप भारी (५) मनुकुल मे भानुसमान हो तुम हनुमान तुम्हारी जय होवे (६) जब सच्चे तीरथ माता–पिता फिर झूठे तीरथ क्या करना (७) भारत मा शेरों वाली है। इसके अलावा पथिक जी बेमोल जी इत्यादि आर्य गीताकारों के भजन भी गाए जाते हैं।

व्याख्यान

ओखला से निजामुद्दीन स्टेशन तक रोज किसी न किसी विषय पर व्याख्यान दिया जाता है। दैनिक अखबारो से पाखण्ड से सम्बन्धित खबरे लेकर फिर वेद उपनिषद् सत्यार्थ प्रकाश बाल्मीकि रामायण इत्यादि के प्रमाणो द्वारा उनका खण्डन व सत्य का मण्डन किया जाता है। लोगो को शका–समाधान के लिए भी आमन्त्रित किया जाता है। अब तक निम्नलिखित विषयो पर व्याख्यान हो चुके हैं (१) नेपाल नरेश द्वारा पशुबलि (२) शिव का सही अर्थ कावड लाने की निस्सारता श्रवण कमार द्वारा माता पिता की सेवा (३) गगा तेरा पानी अमृत गीत गाने के बाद गगा मे बढते प्रदूषण की चर्चा गगा मे भस्म व अस्थि डालने की बजाए गगा की सफाई का आवाह्न महर्षि दयानन्द व नेहरू द्वारा अस्थि खेतो मे बिखरवाने का उदाहरण (४) हरियाणा के सोनीपत मे मौ० अब्दुल्ला द्वारा आर्यसमाज की उपस्थिति मे पुन हिन्दू धर्म अपनाने की घटना का वर्णन व तत्पश्चात हकीकत राय के बलिदान की चर्चा व गीत 'खजर से उडा दो चाहे मेरी बोटी–बोटी को (५) हनुमान जी बन्दर नहीं इन्सान (६) इडियन एक्सप्रैस की खबर 'गुटखा–तम्बाकू की वजह से हरीश विसरौलिया की जीभ कटी व मृत्यु पर चर्चा तथा स्वामी रामेश्वरानन्द द्वारा ससद मे हवन करने व ससद मे धूम्रपान बन्द करवाना।

(७) सत्यार्थ प्रकाश बकिम व लाजपत द्वारा रचित 'कृष्ण चरित्र' के आधार पर माखन चुराने चीर चुराने इत्यादि का खण्डन महाभारत आधारित कृष्ण चरित्र का मण्डन (८) वर्षा न होने के पीछे वैज्ञानिक तथ्य पर्यावरण असन्तुलन यज्ञ का महत्त्व इन्द्र का अर्थ बादल व सूर्य भी। बलि देने उपवास रखने मेढक व गधो की शादी से वर्षा नहीं। (९) दैनिक भास्कर की खबर मुम्बई मे तात्रिको का सफाया शुरू' की चर्चा व तन्त्र–मन्त्र जादू–टोने का खण्डन। मदन रहेजा की पुस्तक अन्धविश्वास निर्मूलन पढने को दी जा रही है। (१०) १४ अगस्त २००२ को 'विमान अपहरण काण्ड'से सबक सीखने की चर्चा तथा हरीश पवाँर की उक्त विषय पर कविता का वाचन (११) १६ अगस्त २००२ को महर्षि दयानन्द की देशभक्ति का वर्णन तथा भारत मा शेरो वाली गीत का गायन।

प्रतिक्रिया

लोगों ने कार्यक्रम को पसन्द किया है। ज्यादातर पौराणिक (उदार) ही कार्यक्रम में सहयोग कर रहे हैं। नाम भले ही 'मित्र चेतना मच' हो लेकिन ओ३म नमस्ते वेद दयानन्द शुद्धि देशभक्ति इत्यादि से आर्यसमाज को सब पहचान जाते हैं। ये मात्र शुरूआत है।

आचार्य चैतन्य जी को रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी सम्मान

अनेक पुरस्कारो से सम्मानित आर्यजगत के अत्याधिक लोकप्रिय तथा सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता एव वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को उनके द्वारा की गई साहित्यिक एव सामाजिक सेवाओं के लिए 'रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी साहित्यिक सम्मान' के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतन्य जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा पत्र पत्रिकाओ में इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हें परमात्मा ने आध्यात्मिक ग्रन्थ लिखने के साथ साथ साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा पर भी लिखने की सामर्थ्य व प्रतिभा प्रदान की है। इन्हें यह सम्मान जैमिनी अकादमी द्वारा आयोजित विशाल सम्मेलन मे हिन्दी दिवस वाले दिन प्रदान किया जाएगा।

– रोशनसिंह चम्बयाल, सचिव
उत्कर्ष कलाकेन्द्र सुन्दरनगर।

चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर का वार्षिकोत्सव

नैतिक शिक्षा से ही भ्रष्टाचार का प्रतिकार सम्भव : डॉ० जोशी

नई दिल्ली २ दिसम्बर। मानव ससाधन विकास मन्त्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने भ्रष्टाचार को आर्थिक और सामाजिक विकास मे सबसे बडी बाधा बताते हुए कहा कि नैतिक मूल्यो से अनुप्राणित शिक्षा से ही इस समस्या का कारगर इलाज सम्भव है।

उन्होने कहा कि नैतिक शिक्षा की आवश्यकता स्व० राजीव गान्धी के प्रधानमन्त्रित्व काल मे स्वीकार की गई थी। "सरकार केवल उस सकल्प को क्रियान्वित कर रही है।"

डॉ० जोशी कल चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर और इससे सम्बद्ध सस्थाओ के वार्षिकोत्सव मे गणमान्य नागरिको को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा आज देश की अधिकाश समस्याए इसलिए है कि हमने नैतिक मूल्यो को तिलाजलि दे दी राष्ट्रहित को तिलाजलि दी और महापुरुषो के जीवन से कोई पाठ नहीं पढा।

सरकार पर भगवाकरण का आरोप लगाने वालो से डॉ० जोशी ने सीधा सवाल किया कि नैतिक मूल्य यदि अध्यात्म से नहीं तो कहा से आयेगे। उन्होने कहा कि पश्चिम प्रवृत्ति [illegible] ताकता ने आज "बिजनस प्रमोशन" के नाम पर हर तरह के भ्रष्टाचार को जायज करार दे दिया है। परन्तु हम पश्चिम से आने वाली अग्राह्य प्रवृत्तियो को स्वीकार नहीं कर सकते।

डॉ० जोशी ने कहा कि वैश्वीकरण के इस युग मे भी स्वदेशी की महत्ता कम नहीं हुई। जरूरत स्वदेशी की युगानुकूल व्याख्या करने की है। सो करोड निवासियो का यह देश अगर डट कर खडा हो जाये तो दुनिया हमारी बात सुनेगी।

मानव ससाधन विकास मन्त्री ने कहा कि किसी तरह का विद्वेष पैदा करना हमारा मकसद नही। लेकिन नयी पीढी को सही तथ्य तो बताने ही होगे। इतिहास पुस्तको का लेखन ब्रिटिश राज के पुराने ढर्रे पर हुआ है जिसमे राष्ट्रीय आन्दोलन के अनेक प्रसगो को नजरदाज कर दिया गया। वह त्रुटि हमे दूर करनी है।

डॉ० जोशी ने कहा दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले महापुरुष थे जिन्होने हिन्दी को राजभाषा बनाने का आग्रह किया। उनसे पहले इतने जोर से यह बात किसी ने नहीं कही थी। उन्होने अस्पृश्यता के विरुद्ध पहल की सती प्रथा का शास्त्रीय प्रतिकार किया महिलाओ का वेद पढने का अधिकार दिलाया और पराधीनता के विरुद्ध सारे देश को जगाया परन्तु इतिहास पुस्तको मे उनके इस योगदान का कोई जिक्र नहीं।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद यदि देश को दयानन्द के रास्ते पर चलाने की कोशिश की जाती तो भारत अब तक विश्व महाशक्ति का दर्जा हासिल कर लेता उपस्थित वृन्द न हषनाद से उनके इस कथन से सहमति व्यक्त की।

प्रौद्योगिकी को प्रकृति अनुकूल बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ० जोशी ने देसराज परिसर मे प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के सफल सचालन की सराहना की। उन्होने कहा कि इस चिकित्सा प्रणाली की जरूरत अब सारी दुनिया मे महसूस की जा रही है।

चिन्तक पत्रकार डॉ० वेद प्रताप वेदिक ने कहा कि सार्वजनिक जीवन मे दयानन्द और लोहिया जैसे दृढ लोगो की जरूरत है जो बुराई से समझौता करने से इकार कर दे।

उन्होने कहा मौजूदा स्थिति को देख कर लगता है कि राजनीति मे विचार धारा का अवसान हो गया है। सारे राजनीतिक दल एक ढर्रे पर चल रहे है और एक ही प्रवाह मे बह गए हैं। सदाचरण के लिए खडा होने की जुर्रत कोई जुटा नही पा रहा। स्थिति मे सुधार लाने के लिए सामाजिक सगठनो को आगे आना होगा।

विद्या मन्दिर के प्रधान वीरेश प्रताप चोधरी ने बताया कि आर्य अनाथालय ओर देसराज परिसर मे ग्यारह सो बसहारा बालक बालिकाओ को मध्यम वर्गीय जीवन स्तर मुहेया करने के अलावा पब्लिक स्कूल से बेहतर शिक्षा दी जाती है। इस सस्थान मे पूर्ण मनुष्य" तयार करने का प्रयास किया जा रहा है जो देश के सुयोग्य नागरिक बनेगे।

श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री ने अभ्यागतो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हे सस्था से स्थायी रूप से"जुडने की प्रेरणा की। चन्द्रवती चोधरी स्मारक ट्रस्ट के प्रधान सुशील प्रकाश प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की सचालक डॉ० मधु गुप्ता शास्त्री चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की कार्यवाहक प्राचार्या राजकुमारी ओर रानी दत्ता आय विद्यालय के प्रधान ज्ञानेश चोधरी सहित अनक गणमान्य व्यक्ति समारोह मे उपस्थित थ।

– हमीर सिह रघुवशी
मानसेवी अधिष्ठाता

वैदिक विद्वान् डॉ० लाजपत का निधन

बहुभाषाविद महान कवि विचारक विणक वैदिक विद्वान डा० लाजपत का निधन गत चार अप्रैल को प्रात सवा छह बज गुरुकुल गोतम नगर मे हा गया। डा० लाजपत लम्बे समय से अस्वस्थ थे आर उनको गुर्दे व लीवर की बीमारी थी। कुछ समय तक उनकी चिकित्सा बत्रा अस्पताल मे भी चली।

उनका अतिम सस्कार ग्रीन पार्क एक्सटशन क श्मशान घाट म किया गया। मुखाग्नि गुरुकुल के आचाय प० हरिदेव जी ने दी। इस अवसर पर उनके साथी श्री दत्तात्रेय तिवारी अनुज अजय भल्ला व प्रशसक कैलाश सत्यार्थी भी थे।

स्वर्गीय चमुपति जी के बडे पुत्र श्री लाजपतराय अपन पिता की तरह ही अनोखी प्रतिभा के धनी थे। वैदिक सस्कृत के व अप्रतिम विद्वान थे। वेद के दुर्बोध स्थलो की अनोखी व्याख्या कर वे कठिन गुत्थिया को खोल कर सबको चमत्कत कर देते थे।

सस्कत के अतिरिक्त अग्रजी जर्मन भाषाओ पर भी उनका अधिकार था ओर इनके लख समाचार पत्रो मे प्रकाशित होत रहते थे। इसी प्रकार राजनीति दर्शन अध्याम [illegible] आदि [illegible] ज्ञान था।

स्वभाव से सकोची मनावृत्ति के श्री लाजपतराय सार्वजनिक सभाओ गोष्ठिया म पीछे ही रहते थे। परन्तु अपनी अदभुत प्रतिभा के कारण इन सभाओ व गाष्ठिया मे भाग लेने वाल विद्वानो मे आदर के पात्र थे।

महर्षि दयनन्द के प्रति उनका अदभुत व अगाध प्रेम था। वह प्राय कहते थे वतमान के आर्यसमाज के नेता विद्वान दयानन्द क सन्देश को पूरी तरह समझने व उस पर चलन मे असमर्थ हे।

पिछले पचास वर्ष से यायावरी जीवन व्यतीत करते श्री लाजपत ने भीषण मानसिक शारीरिक व आर्थिक कष्टो को झला परन्तु उनके व्यवहार मे कही कटुता का प्रभाव नही दिखा। कभी किसी तरह की किसी की भी उन्होने शिकायत नही की और मान अपमान मे समदृष्टि रखी।

उनक निधन से अतरग मित्रो का बडा परिवार अत्यधिक व्यथित हे। ऐसे स्नेहिल स्वभाव वाले मृदुभाषी तथा सब विषयो म सब तरह की जिज्ञासाआ का समाधान करन वाल सरल निरभिमानी ज्ञानी पुरुष का अभाव उन्हे निरतर खलत [illegible]

☆☆

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र सभी ग्राहको को नियमित भेजा जा रहा है डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण कुछ सदस्यो को कभी कभी पत्र न मिलन की शिकायत भी आती है। एसे सदस्य अपने पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करने की कृपा करे तथा अपना वार्षिक शुल्क ५०/– रुपये अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ५००/ रुपये शीघ्र भिजवा कर सभा का सहयोग करें।

नीचे दी गयी ग्राहक सख्या वाले सदस्यो पर तीन वर्ष का वार्षिक शुल्क शेष है कृपया अपनी ग्राहक सख्या देख कर १५०/– रुपये का मनिआर्डर शीघ्र (१५ दिन के अन्दर) भिजवाने की कृपा करे। और मनिआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता (ग्राहक सख्या सहित) अवश्य लिखे।

ग्राहक सख्या १८७४१ १८७४२ १८७४६ १८७४७ १८७५१ १८७५२
१८७५३ १८७५४ १८७५७ १८७५८ १८७५९ १८७६३ १८७६५ १८७७०
१८७७२ १८७७८ १८७७९ १८७८० १८७८३ १८७८४ १८७८६ १८७८७
१८७८९ १८७९० १८७९१ १८७९२ १८७९३ १८७९७ १८७९८ १८८००
१८८०२ १८८०३ १८८०५ १८८०६ १८८०७ १८८०८ १८८०९ १८८१०
१८८१३ १८८१६ १८८१८ १८८१९ १८८२० १८८२२ १८८२३ १८८२४
१८८२६ १८८२८ १८८३१ १८८३२ १८८३३ १८८३४ १८८३६ १८८३८
१८८३९ १८८४० १८८४१ १८८४३ १८८४४ १८८४६ १८८४८ १८८४९
१८८५० १८८५२ १८८५४ १८८५५ १८८५७ १८८५८ १८८५९ १८८६१
१८८६७ १८८६८ १८८६९ १८८७१ १८८७४ १८८७५ १८८७६ १८८७९
१८८८२ १८८८३ १८८८४ १८८८५ १८८८७ १८८८८ १८८९२ १८८९४
१८८९५ १८८९६ १८८९८ १८८९९ १८९०० १८९०१ १८९०२ १८९०३
१८९०४ १८९०५ १८९०७ १८९०८ १८९१४ १८९१५ १८९१८ १८९२०
१८९२५ १८९३२ १८९३४ १८९३७ १८९४२ १८९४६ १८९४७ १८९४९
१८९५० १८९५१ १८९५२ १८९५३ १८९५४ १८९५५ १८९५७ १८९६०
१८९६२ १८९६३ १८९६[illegible] [illegible] १[illegible]९७४ १८९७५ १८९७७६ १८९८५
१८९८६ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १८९९३ १८९९६ १८९९८
[illegible] [illegible] १९००४ [illegible] १९००७ १९००८ [illegible] १९०१२
१९०१५ १९०२१ [illegible] [illegible] १९०२० [illegible] [illegible] १९०२७
[illegible] १९०३१ [illegible] [illegible]

(क्रमश)

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर में वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली–९२ मे २२ अगस्त से ३१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का आकर्षक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसके अन्तर्गत हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत परिवर्तन किया गया तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

२२ अगस्त से ३१ अगस्त तक प्रतिदिन प्रात ७ बजे से ८.३० बजे तक चारो वेदो के शतको से विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यसमाज शकरपुर के पुरोहित श्री विजय प्रकाश शास्त्री तथा आर्यसमाज शकरपुर के मन्त्री श्री ओमप्रकाश रूहिल थे।

२२ अगस्त को श्रावणी पर्व तथा भाई बहन के प्यार का प्रतीक रक्षाबन्धन पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ मे उपस्थित सभी श्रद्धालुओ के यज्ञोपवीत भी परिवर्तित कराये गए।

३१ अगस्त को विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर तीन यज्ञ कुण्डो पर वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कन्धो पर पीतवस्त्र डाले हुए यजमान यज्ञ की सुगन्धि तथा मन्त्रो के उच्चारण की ध्वनि से सारा वातावरण अत्यन्त मनोहारी दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

यज्ञ के उपरान्त दिल्ली सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द जी की अध्यक्षता मे भजन, प्रवचन तथा उपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री तुलसीराम जी, श्री ओमप्रकाश भारद्वाज, श्री ओमप्रकाश रूहिल, श्री पतराम त्यागी सहित अनेको वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए। समारोह के सफल आयोजन मे आर्यसमाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता मन्त्री श्री ओमप्रकाश रूहिल तथा कोषाध्यक्ष श्री राकेश शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कार्यक्रम के उपरान्त श्री प्रदीप गुप्ता के सहयोग से ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर बी०एन० पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली–८८ मे २ सितम्बर से ८ सितम्बर २००२ तक यज्ञ एव वेदकथा का आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर प्रात ५.३० से ६.३० बजे तक ध्यान योग, ६.३० से ८.३० तक यज्ञ एव उपदेश, एव रात्रि ७.४५ से ६.४५ तक भजन एव उपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न होगे। समारोह मे स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डॉ० सुभाष जी भास्कर प० सत्यपाल जी पथिक सहित अन्य विद्वान पधार रहे हैं। रविवार ८ सितम्बर को प्रात ११ बजे से राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

मुख्य अतिथि के रूप मे श्री रविन्द्र जी बसल (विधायक शालीमार बाग) तथा श्री रामकृष्ण जी सिघल (निगम पार्षद शालीमार बाग) पधार रहे है। स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती श्री परमानन्द जी नागर डॉ० शिवकुमार जी शास्त्री डॉ० महेश जी विद्यालकार सहित अनेको विद्वानो के विचारो से लाभान्वित होने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे पधारे।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे २२ अगस्त से ३१ अगस्त २००२ तक वेद प्रचार समारोह के उपलक्ष्य मे श्रावणी पर्व एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात ७.३० से ६ बजे तक आचार्य राजू वैज्ञानिक के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायकाल प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वेदव्यास जी के मनोहारी भजन तथा आचार्य राजू वैज्ञानिक के सुमधुर प्रवचन होत रहे।

श्रावणी पर्व पर २२ अगस्त को सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत का परिवर्तन किया गया। २५ अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस के अवसर पर अमर हुतात्माओ के नामो की सूची पढकर सुनायी गई तथा श्रद्धाजलि अर्पित की गई। ३१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभावसर पर गुरुकुलो के एव स्कूलो के छात्र छात्राओ की भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रि० मोहनलाल जी ने की। सफल प्रतियोगियो को पुरस्कृत भी किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 8-9-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 5/6-9-2002

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वैदिक शौर्य संगोष्ठी सम्पन्न
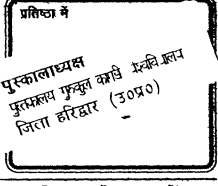
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ मे स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान ने आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज (पूर्व पण्डित बुद्धदेव विद्यालकार) के जन्मदिवस श्रावण शुक्ल एकादशी १८ अगस्त के उपलक्ष्य मे वैदिक शोध सगोष्ठी का आयोजन किया। शोध सगोष्ठी का विषय था – वैदिक वाङमय मे वेदार्थ प्रक्रिया एव व्याकरण।

शोध सगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० भारत भूषण वेद विभागाध्यक्ष गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने की। डॉ० एस०एस० गुप्ता पूर्व कुलपति आगरा विश्वविद्यालय एव डा० रमेशचन्द्र वर्तमान कुलपति गोष्ठी के सयोजक डॉ० निरुपण विद्यालकार थे।

विभिन्न विश्वविद्यालयो के अनेक वैदिक विद्वानो ने अपने शोध लेख प्रस्तुत किए। शोध लेख प्रस्तुत करने वाले विद्वानो मे प्रमुख थ –

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र से डॉ० भीमराम सिह डॉ० राजेश्वर प्रसाद अलीगढ विश्वविद्यालय अलीगढ से डॉ० सत्यप्रकाश शर्मा डा० श्रीनिवास मिश्र चौ० चरणसिह विश्वविद्यालय मेरठ से डॉ० दुर्गाप्रसाद मिश्र डा० विजयेन्द्र तोमर गुरुकुल कागडी हरिद्वार से डॉ० सोमदेव शताशु डा० ब्रह्मदेव दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली से डा० श्रीवत्स निगमालकार।

शोध पत्रो के वाचन के पश्चात शान्तिपाठ से पूर्व सगोष्ठी के सयोजक की प्रार्थना पर गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के आशीर्वचन गोष्ठी वेदभक्त जिज्ञासु जनता एव वै मे सलग्न विद्वानो को प्राप्त हुए

– स्नातक परिषद गुरुकुल आश्रम भोला झाल मेरठ

वैदिक सस्कार कन्या शिविर का आयोजन

श्री वैदिक कन्या विद्यालय आबूरोड मे विगत दिनो पन्द्रह दिवसीय वैदिक सस्कार कन्या शिविर का उदघाटन समारोह स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे विद्यालय की अध्यापिकाओ बालक बालिकाओ व आर्य समाज के सदस्यो ने भाग लिया।

इस अवसर पर स्वामी सकल्पानन्द जी ने अपने प्रवचनो मे कहा कि मनुष्य जीवन सफल करना यह ही सस्कारो का उद्देश्य है।

सस्कार मनुष्य के शरीर और आत्मा से सम्बन्धित है। आज भारत मे बडा भयानक चित्र दीख रहा है पतन के गर्त की सीमा नही रही। आज भारत मे लोग धर्म की दुहाई देते है पर सरासर अधर्म करते नही हिचकते है न्याय की बात बडी बडी कहते हैं पर आचरण अन्याय का ही करते है। नीति से चलन का उपदेश सुनते सुनाते हैं पर स्वय दुराचार अनाचार भ्रष्टाचार के सिवा जीना ही नही जानते। सत्य की घोषणा करते है पर असत्य व्यवहार के बिना काम नहीं करते। क्या हो गया इस समाज को। अगर समाज को बनाना चाहते हो तो बच्चो को सुसस्कृत बनाना होगा बच्चो पर उत्तम सस्कार डालना होगा। तब जीवन सच्चे अर्थ मे जीवन बनगा।

इस अवसर पर पूर्व विधायक जेठमल आर्य ने कहा कि अच्छे सस्कार और अच्छा चरित्र ही मानव जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है हमे अपने जीवन उन्नति के लिए सस्कारित करने के लिए सुविचार धारण करने होगे। हमारे जीवन पर विचारों का गहरा प्रभाव पडता है।

शिविर को प्रधानाचार्या श्रीमति अल्का शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि इस शिविर का मुख्य ध्येय बालिकाओ का सर्वागीण विकास है अर्थात शारीरिक मानसिक और बौद्धिक शक्तियो का विकास। मनुष्य का व्यक्तित्व ही उसके वास्तविक विचारो भावो अनुभूतियो तथा सकल्पो का परिचायक है। उसका व्यक्तित्व ही उसका चरित्र है। जीवन की महान उपलब्धियो मे चरित्र और सुसस्कार का सर्वोपरि महत्वपूर्ण स्थान है।

– मन्त्री आर्यसमाज आबू रोड

ग्राम विकास की एक अभिनवयोजना में भाग लेकर अपना भविष्य उज्ज्वल करें

परममित्र मानव निर्माण न्यास रोहतक ने गाव की उन्नति के लिए कुछ कार्यकर्त्ताओ को प्रशिक्षित कर ग्राममित्र नाम से उन कार्यकर्त्ताओ को विभिन्न ग्रामो मे उस गाव के सर्वांगीण विकास मे सहयोग देने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम बनाया है। इस कार्यक्रम मे २५ से ४० वर्ष तक के नवयुवक कम से कम १२वीं कक्षा उत्तीर्ण सस्कृत लेकर बी०ए० पास या शास्त्री कक्षा पास को प्राथमिकता दी जायेगी। उनकी योग्यतानुसार उन्हे मासिक मानदेय राशि दी जायेगी।

इस कार्यक्रम मे जो नवयुवक रुचि रखते हैं। जो ग्रामीण वातावरण मे ग्रामवासियो के साथ घुल मिलकर कार्य कर सकते हैं उन्हे प्रेरणा और सहयोग दे सकते हैं किसी एक विषय मे विशेष रुचि और योग्यता रखते हैं वे निम्न पते पर सम्पर्क करें। नियुक्ति से पहले उन्हें गुरुकुल आश्रम आमसेना मे होम्योपैथिक चिकित्सा आयुर्वेदिक चिकित्सा का प्रारम्भिक ज्ञान अचानक दुर्घटना या चोट की प्रारम्भिक चिकित्सा फस्ट एड आदि के ज्ञान के साथ योगासन आदि व्यायाम भारतीय सस्कृति के मूल सिद्धान्त सर्वधर्म समन्वय वैदिक सस्कार आदि का क्रियात्मक ज्ञान भी कराया जायेगा। प्रत्येक छात्र को होम्योपैथिक गाइड स्वास्थ्यरक्षक सस्कारविधि वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी आदि पुस्तके भी दी जायेगी। शिविर शुल्क मात्र ३०० रुपये। शिविर १५ सितम्बर से १० अक्टूबर तक लगेगा। इस वर्ष पहले शिविर मे सीमित लोगो को ही लिया जायेगा। शिक्षण के पीछे परीक्षा लेकर उन सफल नवयुवको को पुन एक मास का गहन प्रशिक्षण दिया जायेगा। फिर किसी ग्राम मे नियुक्त किया जायेगा। जो नवयुवक इस शिक्षण शिविर मे भाग लेकर कार्य करना चाहते हैं वे आवेदन फार्म मगा ले उसे शीघ्र भरकर भेजें।

सम्पर्क सूत्र आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड नवापारा उडीसा

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा पूर्ववत् वेद प्रचार कार्य में रत

Office Bearers तथा आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामा के नेताओं की एक सम्मिलित बैठक से० वेर्ड के ऑफिस मे हुई जिसमे निम्नांकित निर्णय सर्व सम्मति से लिए गए।

सभी मतातर त्याग कर १६ वे आर्य महासम्मेलन (तठेगाव) मे चुनी गयी आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामा की ई० सी० पूर्ववत वै० धर्म प्रचार कार्य करेगी।

साथ ही आर्यसमाज यागों की समस्या का भी समाधान हो गया।

पुन ३०–६–२००२ को (यागो आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त) प्रात ६ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामा की ऑफिस मे एक चाय पार्टी का आयोजन हुआ जिसमे ऑल म्यामा हिन्दू सेन्ट्रल वोर्ड आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामा तथा आर्यसमाज यागों के नेताओ ने भाग लिए।

आल म्यामा हिन्दू सेन्ट्रल वोर्ड मुख्य ऑफिस में सम्पन्न २६–६–२००२ की बैठक म्यामा मे हिन्दू धर्मावलम्बियो के लिए एक स्वर्ण दिवस है। इस नेक कार्य के लिए ऑल म्यामा हिन्दू सेन्ट्रल बोर्ड मुख्य कार्यालय तथा म्यामा के समस्त आर्य नेता साधुवाद के पात्र हैं। म्यामा के सभी समाजों से आग्रह है कि परम पिता परमेश्वर की इस अनुकम्पा के लिए सत्सगों मे कम से कम गायत्री यज्ञ अवश्य करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन

(क) उम्र – १२ वर्ष तक सन्ध्या हवन यज्ञ भक्त जन प्रार्थना कम से कम १० भजन आर्य समाज के दस नियम कण्ठस्थ होना सस्वर पाठ आना उच्चारण शुद्ध होना स्वतन्त्र रूप से हवन यज्ञ आदि से अन्त तक विधिवत सम्पन्न करने का अभ्यास होना।

(ख) उम्र – १२ से १८ वर्ष तक ईशोपनिषद् के (१८) मन्त्र कण्ठस्थ होना प्रत्येक मन्त्र का साधारण अर्थ ज्ञान उन पर सोदाहरण व्याख्या के साथ प्रवचन करने का अभ्यास होना।

धर्म वैदिक धर्म आर्य समाजके (१०) नियम इन शीर्षको पर प्रवचन का अभ्यास तत्सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर की क्षमता।

निर्देश प्रतियोगिता दो स्तर पर होगी –

(१) स्थानीय स्तर पर – इनमे अव्वल आने वाले प्रतियोगी चुने जायेगे। तिथि ६–१०–२००२ को। (समय ६ से १२ बजे।)

(२) देशीय स्तर पर – स्थानीय स्तर के अव्वल प्रतियोगियो की परीक्षा केन्द्रीय स्तर पर होगी। तिथि २१–१०–२००२ समय ६ से १२ बजे। स्थान की सूचना समय पर दी जायेगी।

(ग) सत्यार्थ प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताओ में जो भाग लेने के इच्छुक हो वे जल्द से जल्द आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामा के कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करे।

विशेष अनुरोध उपरोक्त प्रतियोगिताए म्यामा देशीय जिन जिन आर्यसमाजों में सम्पन्न कराने में यदि अध्यापक एव पण्डितो की आवश्यकता प्रतीत हो तो आर्य प्रतिनिधि सभा को पत्र लिखे – हम यहा से किसी एक योग्य शिक्षक व पण्डित को एक दो माह के लिए भेजने का प्रयास करेंगे। उनकी (आवास) ठहरने तथा भोजन की व्यवस्था स्थानीय आर्यसमाज को वहन करनी पडेगी। इसके अतिरिक्त एक दो माह की दक्षिणा यदि स्थानीय समाज नहीं दे पाएगी तो उस दक्षिणा को आर्य प्रतिनिधि सभा स्वय वहन करेगी।

टी०के० आहूजा, प्रधान
प्रो० दयाराम, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, म्यांमा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५..., [illegible]) फैक्स ३२७०५०७ से मुदित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, [illegible])। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट - http://www.whereis[illegible]

वर्ष ४१ अक २० १५ सितम्बर से २१ सितम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ भा० शु० ६
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्थिक पवित्रता न होने का अर्थ है समाज की सेवा के स्थान पर समाज का दोहन

मोक्षायतन अन्तर्राष्ट्रीय योगाश्रम सहारनपुर के तत्वावधान मे एक विशेष देशभक्तिपूर्ण समारोह का आयोजन किया गया जिसमे उ०प्र० के राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन परमवीरचक्र विजेता श्री योगेन्द्र यादव श्री अश्फाक उल्ला खा शहीद ठाकुर रोशन सिह जी क सुपोत्र ठाकुर जगदीश सिह आर्य तपस्वी श्री सुखदेव उ०प्र० पुलिस के इस्पेक्टर जनरल श्री हरभजन सिह आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का सचालन आश्रम के अध्यक्ष पदमश्री भारतभूषण तथा उनके भ्राता पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा ने किया। राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी ने कहा कि योग मे हम जिस आसन की बात करते है। वह केवल यम नियम का अनुशासन स्थापित होने के बाद ही सफल हो सकता है। पतजलि का जो योग सूत्र है उसी का रूप बिगाडकर केवल मात्र शारीरिक क्रियाओ को योग के नाम से प्रचारित किया जा रहा है

उन्होने कहा कि समाज के क्षेत्र मे कार्य करने क लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी आर्थिक शुचिता को स्थापित करे। जिस प्रकार यम नियम के बिना याग सिद्धी नहीं हो सकती उसी प्रकार अर्थ अर्थात धन की पवित्रता के बिना समाज सेवा नहीं हो सकती। बेईमान और भ्रष्ट आचरण समाज सेवा के स्थान पर समाज का दोहन प्रारम्भ कर सकते हैं।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि आज की युवा पीढी विशेष रूप से शिक्षित युवक वर्ग उचित मार्ग दर्शन के अभाव मे या तो अपना जीवन व्यर्थ गवा रहा है या उनका जीवन बुराइयो मे फसता जा रहा है। उनके जीवन को मार्ग दर्शन की आवश्यकता है।

उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के अभियान के पीछे भी यही लक्ष्य था कि सबसे पहले हम अपना सुधार सम्पन्न करे और उसके बाद ऐसे प्रयास किए जाए जिससे हमारे सम्पर्क मे आने वाले लोगो मे सुधार लाने के लिए हम सहायक हो सके। प्रथम कार्य को कृण्वन्तो स्वयमार्यम और दूसरे कार्य को कृण्वन्तो विश्वमार्यम कहा जा सकता है।

योगाचार्य पदमश्री भारतभूषण जी ने कहा कि ईश्वर भक्ति और राष्ट्रभक्ति ही हमारे जीवन के दो लक्ष्य होने चाहिए। उन्होने देशभक्ति और समाज सेवा से सम्बन्धित अपने कई कार्यो का प्रदर्शन कार्यक्रम मे किया।

रा्यपाल जी को स्वास्थ्यश्री अवार्ड से विभूषित किया गया।

उ०प्र० के पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा ने देशभक्ति के गीतो पर आधारित **आजादी के दीवाने** नामक **कैसेट** और **सी०डी०** को राज्यपाल जी के कर कमलो के माध्यम से सहारनपुर की जनता को समर्पित किया।

✡

धर्मान्तरण पर संवैधानिक प्रतिबन्ध लगाया जाए

धर्मान्तरण की बढती गतिविधियो के दृष्टिगत सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री कन्हैयालाल तलरेजा ने धर्मान्तरण पर सवैधानिक प्रतिबन्ध लगाने के पक्ष मे एक समुचित ग्रन्थ की रचना की है जिसे राष्ट्रीय चेतना मच की ओर स प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तक का विमोचन कास्टीटयूशन क्लब के सभागार मे किया गया। विमाचोन समारोह मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के सर सघचालक श्री सुदर्शन ससद सदस्य श्री दीनानाथ मिश्र तथा सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन उपस्थित थे।

श्री सुदर्शन ने इतिहास की पिछली कई शताब्दियो की घटनाओ के आधार पर सिद्ध किया कि इस्लाम के भारत मे प्रवेश करने के बाद ही हमारी धार्मिक व्यवस्थाए बिगडी। यह बिगडने की अवस्था अब यहा तक पहुच गई है कि किसी भी कार्य के लिए कुछ गुटो का तुष्टिकरण करना आज की राजनीति का प्रमुख लक्षण बन चुका है।

उन्होने भारत विभाजन के उपरान्त भी कई प्रकार की राष्ट्रद्रोही परम्पराओ की ओर इशारा करते हुए कहा कि यदि राजनेताओ ने दूरदृष्टि से काम लिया होता तो आज धर्मान्तरण की यह बडी समस्या खडी न होती।

सेक्युलरिज्म को एक कमजोरी बताते हुए उन्होने कहा कि यह हिन्दू समाज का तेज भग कर रही है। प्राचीन परम्पराओ को नष्ट किया जा रहा है। इसी तरह से ज्योति बसु के नेतृत्व मे कम्युनिस्टो ने पश्चिम बगाल मे बाग्लादेश से घुसपैठ को बढावा दे रखा है और इन घुसपैठियो को पश्चिम बगाल मे धडल्ले से भारतीय नागरिकता प्रदान की जा रही है।

इस तरह की स्थिति देश और हिन्दू समाज के लिए घातक है। हम उदार जरूर है लेकिन उदारता कमजोरी न बने इस पर विशेष ध्यान देना होगा ओर धर्मान्तरण करने की कोशिशो को नाकाम करना होगा।

ससद सदस्य श्री दीनानाथ मिश्र ने कहा कि धर्मान्तरण की बढती आधी अगले कुछ वर्षो मे एक नई अव्यवस्था खडी करने मे सक्षम हो जाएगी। लगभग १५० से अधिक एसे ससदीय क्षेत्र बन जाएगे जहा मुसलमानो की सख्या प्रभावशाली होगी। इससे न केवल राजनीति का प्रभाव कायम होगा अपितु इस्लामी आतकवाद भी इन क्षेत्रो मे बढने की आशका है।

सावदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि धर्मान्तरण के विरुद्ध आवाज उठाना तो आवश्यक है परन्तु उससे भी आवश्यक है प्रत्येक क्षेत्र मे इसकी रोकथाम के प्रभावशाली उपाय करना।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

श्रावणी उपाकर्म एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज कीर्तिनगर मे यज्ञ भजन एव वेद प्रवचन आदि कार्यक्रम बडे हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किये गये। प्रारम्भ मे चार दिन कीर्तिनगर एव मोतीनगर सुदर्शनपार्क मे प्रभात फेरी निकाली गयी जिसमे आर्यजनो आर्यवीरो एव माताओ ने भारी सख्या मे भाग लिया। ईश भक्ति एव ऋषि गुणगान के भजनो ने प्रभात फेरी की शोभा को द्विगुणित बढा दिया। आयसमाज सुदर्शन पार्क एव आर्य परिवारो के द्वारा प्रभात फेरी मे आये आर्यवीरो आर्यजनो एव माताओ का बहुत सुन्दर ढग से स्वागत किया।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। उन्होने अपने उदबोधन मे कहा कि आज देश के सामने इस्लाम और ईसाइयत की विचारधारा एक षडयन्त्र कारी ताकत के रूप मे कार्य कर रही है। उन्होने कहा कि इन षडयन्त्रो का मुकाबला करने की क्षमता केवल मात्र आर्यसमाज मे ही है।

श्री मनोहर लाल कुमार ने कहा कि आर्यसमाज के चिन्तन का प्रत्येक अश राष्ट्रवादी है। उन्होने यह आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज का नेतृत्व अपने अभियान को अपने प्राचीन स्वरूप के अनुसार ही चलाए तो समूचे हिन्दू समाज की रक्षा सम्भव हो सकेगी।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्य समाजी ही नहीं पौराणिक हिन्दू भी इस तथ्य को स्वीकार करते है कि अपने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के कारण आर्यसमाज हिन्दू जाति का सुदृढ प्रहरी है परन्तु धर्मान्तरण के विरूद्ध सार्वदेशिक सभा के देशव्यापी प्रयासो मे साधारण पौराणिक तो क्या अभी स्वय आर्यसमाजी भी लक्ष्यबद्ध होकर सहयोग नहीं दे पा रहे। धर्मान्तरण विरोधी कार्यो मे हर व्यक्ति को तन मन धन से सहयोग देना चाहिए।

प्रो० रतनसिह जी ऋग्वेदीय यज्ञ के ब्रह्मा रहे एव रात्रि मे वेद प्रवचन के द्वारा सबको ज्ञानामृत का पान कराते रहे। महाशय जनार्दन जी सुन्दर भजनो के द्वारा सबको आनन्दित करते रहे। २५ अगस्त को पूर्णाहुति के कार्यक्रम मे अन्य वक्ताओ मे डा० महेश विद्यालकार श्री मनोहर लाल कुमार श्री विमल वधावन श्री रामनाथ सहगल श्री जगदीश आर्य ने विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने की। सुन्दर ढग से कार्यक्रम का सचालन श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा मन्त्री आर्यसमाज ने किया। आर्यवीरो के प्रदर्शन ने सबके मन को मोह लिया।

— *सुरेन्द्र बुद्धिराजा*

डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा को शोक

आर्य जगत मे बडे दु ख के साथ यह जाना जाएगा कि ग्रेटर अटलाण्टा वैदिक टेम्पल (अमेरिका) के कर्णधार डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा के ज्येष्ठ पुत्र आदित्य चन्दोरा का पिछले दिनो जोधपुर मे एक सडक दुर्घटना मे दर्दनाक निधन हो गया। युवा आदित्य एक फिल्म पर सम्पादन कार्यार्थ हैदराबाद आए हुए थे। कुछ दिनो की छुटटी मनाने पैतृक स्थान जोधपुर आए थे। जहा यह असामयिक दुर्घटना घटी। आदित्य अपने माता पिता के अतिरिक्त बहन मुक्ता व अनुज आलोक को भी रोता बिलखता छोड गए है।

पिछले महीने कै० देवरत्न जी आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के दौरे मे अटलाण्टा भी गए थे। डा० चन्दोरा जी की स्वाध्यायशीलता व कर्मठता सबको प्रभावित करती है। प्रधान जी ने शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की है। ईश्वर उन सबको इस असह्य दु ख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य दे। वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन जी ने फोन पर श्री चन्दोरा को शोक व्यक्त किया तथा सार्वदेशिक सभा की ओर से शोक सन्देश प्रषित किया है।

हिन्दी से प्रेम राष्ट्र प्रेम का प्रतीक है

आइए ! संकल्प लें

- **समस्त व्यक्तिगत कार्यो मे अधिकाधिक हिन्दी का ही प्रयोग करेगे। जैसे बैको पर हस्ताक्षर, विवाह तथा अन्य अवसरो पर निमन्त्रण पत्र तथा सूचनाए आदि दुकानो के बोर्ड एव अन्य व्यापारिक कार्य।**
- **हम जिस किसी भी समाज, सभा या अन्य सस्था से सम्बन्धित है, उनके नाम पर लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्यो सहित अन्य सरकारी उच्चाधिकारियो को हिन्दी के सम्बन्ध मे ज्ञापन प्रस्तुत करे।**
- **जिस प्रकार हमने व्यक्तिगत कार्यो के लिए हिन्दी भाषा मे कार्य करने का सकल्प लिया है उसका प्रचार प्रसार अन्य नागरिको के बीच करते हुए उन्हे भी इस कार्य हेतु प्रेरित करेगे।**
- **हिन्दी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढावा मिलता है। इस आशय का भी अधिकाधिक प्रचार लेखो और लघु साहित्य के माध्यमो से करेगे।**

— *वेदव्रत शर्मा,*
सभा मन्त्री

धर्मान्तरण के विरोध हेतु समस्त हिन्दू समाज को प्रेरित किया जाए

सार्वदेशिक अक १–६–०२ के मुख पृष्ठ का धर्मान्तरण विषयक समाचार निश्चय ही एक चुनौती के रूप मे पुन उभर रहा है। इसके विरोध मे वरिष्ठ उपाध्यक्ष (उपप्रधान) व सार्वदेशिक सभा द्वारा तत्काल उठाए गए कदम अति सार्थक व स्तुत्य हैं।

धर्मान्तरण रूपी विषलता अन्तर्वेदना को अगीकार करे शीर्षकान्तर्गत अपील केवल आर्य जगत की पत्र पत्रिकाओ तक ही सीमित नही रहे। आर्य जगत के बाहर (सम्पूर्ण हिन्दू समाज मे) भी इसका प्रचार प्रसार हो तो अच्छा रहेगा। सगठित हिन्दू समाज ही इस दैत्य को धराशायी करने मे सक्षम होगा। ऐसा मेरा मत है।

— *ईश्वर दयाल माथुर*

पृष्ठ १ का शेष भाग

धर्मान्तरण पर संवैधानिक प्रतिबन्ध लगाया जाए

उन्होने बताया कि श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने प्रधानमन्त्री के नाते आज से ३० वर्ष पहले इस भयकर समस्या को अनुभव किया। वह स्वय इस बात के इच्छुक थे कि धर्मान्तरण की गतिविधियो को रोका जाना चाहिए।

आर्यसमाज प्रारम्भ से ही धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानता रहा है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि सविधान की रचना करने वाली सविधान सभा मे भी इस विषय पर लम्बी चर्चाए हुई। चर्चा का सार यह था कि भारत मे धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार सार्वजनिक नीति तथा कानून व्यवस्था न बिगाडने की शर्त पर दिया गया था। इसका अभिप्राय यही था कि लोभ–लालच और दबाव से धर्मान्तरण की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज इस विषय को लेकर कानून निर्माताओ अर्थात सासदो और विधायको के बीच सम्पर्क का एक अभियान चलाना चाहता है। उन्होने कहा कि ऐसे कार्यो मे भाजपा सदस्यो को तो दिल खोलकर सहयोग और समर्थन देना चाहिए। उन्होने यह भी आशा व्यक्त की कि अन्य राजनीतिक दलो के प्रमुख लोग इस अभियान मे अवश्य सहयोगी बनेगे।

इस ग्रन्थ के रचयिता श्री कन्हैयालाल तलरेजा ने बताया कि धर्मान्तरण की गतिविधियो का तेज गति से बढना राष्ट्र के लिए एक विशाल सकट खडा करेगा। उन्होने बताया कि इस्लामी और ईसाइयत के षडयन्त्रकारी धर्मान्तरण अभियान को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब भी यदि राष्ट्रवादी जनता चुप बैठी रही तो एक विशाल राजनीतिक सकट खडा हो जाएगा।

श्री तलरेजा ने इस पुस्तक मे शामिल सामग्री का परिचय देते हुए बताया कि शीघ्र ही इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो जाएगा।

हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) पर विशेष

हिन्दी : चिन्दी चिन्दी

– आनन्द मिश्र अभय

हिन्दी! हिन्दी!! हिन्दी!!! कहा है हिन्दी ? किसी को देश भर मे कहीं उसका कोई ठौर–ठिकाना ढूढे मिले तो अविलम्ब सूचित करने की कृपा अवश्य करे।

हा इसी देश मे कभी हिन्दी थी। जन–जन के हृदय मे हिन्दी थी। हिमालय से लेकर सेतुबन्ध रामेश्वरम तक कामरूप से लेकर द्वारका तक। चारो धाम के यात्रियो को कहीं कोई कठिनाई नहीं होती थी। डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या से लेकर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तक सब हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित किए जाने के प्रबल पक्षधर थे। परन्तु देश स्वतन्त्र होते–होते खण्डित क्या हुआ राष्ट्रीय स्वाभिमान भी खण्ड–खण्ड हो गया। जो राष्ट्रभाषा कही जाती थी मानी जाती थी सविधान बनते–बनते 'राजभाषा' बना दी गयी वह भी पन्द्रह वर्षीय वनवास के साथ। फिर 'राजभाषा' से सम्पर्क–भाषा और अब वह भी नहीं रही। जब राष्ट्र ही अखण्ड नहीं रहा तो राष्ट्रभाषा अखण्डित कैसे रहती ? राजभाषा हिन्दी लिपि देवनागरी परन्तु अकावली अग्रेजी की देवनागरी अको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप कह कर। वाह रे हम ! वाह रे हमारे नेता!! वाह रे हमारा सविधान !!! क्या किसी अन्य देश मे ऐसा होना सम्भव हो सकता था कि उसकी भाषा की वर्णमाला तो उसकी अपनी हो और अकमाला किसी अन्य भाषा की ? **आधा तीतर आधा बटेर** आखिर किसी को तब खटका क्यो नहीं और आज भी किसी को अखरता क्यो नहीं ? क्या किसी अमीर खुसरो ने कभी स्वप्न मे भी सोचा होगा कि उसकी तथाकथित पहेली **एक खेत मे ऐसा हुआ आधा बगुला आधा सुआ** वास्तव मे कभी इसी देश मे वह भी स्वतन्त्र होने पर इस रूप मे चरितार्थ होगी। सविधान की बलिहारी ! सविधान बनवाने वालो की बलिहारी!! सविधान बनाने वालो की बलिहारी !!! आज इस सनातन राष्ट्र की तीन पीढिया अपनी भाषा की अकावली और गिनतिया भूल चुकी हैं भूल चुकी है कि देवनागरी लिपि क्यों है ? उसकी वर्णमाला के उद्गम का आध्यात्मिक उद्गम और अधिष्ठान क्या है ? उसकी अकमाला का उत्स कहा है ? उसकी सास्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है ? उसके वर्त्तमान रूप के विकास का इतिहास क्या है ? विदेशी शिक्षा–दीक्षा और परिवेश मे पालित–पोषित नेतृत्व के अज्ञान मे कोई क्या कहे ? स्वातन्त्र्य–वीर विनायक दामोदर सावरकर और आचार्य विनोबा भावे तक देवनागरी लिपि को सुधारने मे लगे रहे। जहा सावरकर जी इ को 'अि ई को अी उ को अु और ऊ को अू बनाते समय यह भूल गये कि यदि मूल स्वर (इ ई उ ऊ) ही नहीं होगे तो उनकी मात्राए (ि ी ु ू) आएगी कहा से वहीं विनोबा जी तो सावरकर जी से भी चार पग आगे निकलकर 'लिपि' को 'लीपी' बनाते रहे। फिर टकण–यत्रो के लिए देवनागरी को 'सुधारा' जाता रहा और मानव ससाधन विकास मन्त्रालय ने तो पराकाष्ठा ही कर दी। उसकी बनाई विशेषज्ञों की समिति के 'बुद्धिमहासागरो ने हिन्दी वर्तनी ही 'सुधार' कर रख दी। उनके अनुसार 'सृष्टि' की वर्तनी 'सृषटि और 'दृष्टि की वर्तनी 'दृषटि होनी चाहिए। इनकी मानी जाए या चले तो अब तक देवनागरी मे लिखित और प्रकाशित हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय वाडमय को तिलाजलि दे दी जानी चाहिए।

•इतिहास के कुछ पिछले पृष्ठ जरा पलट कर देखे। हिन्दी की राह मे क्या–क्या रोडे नहीं अटकाए गए। गान्धी जी को मौलानाओ के ससर्ग से हिन्दी को हिन्दुस्तानी बनाने की सूझी और सविधान बनते समय तो इसके लिए एडी–चोटी का पसीना एक कर दिया गया। लेकिन तब एक दधीचि जीवित था – राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के नेतृत्व मे चले सघर्ष मे हिन्दी जीत तो गयी परन्तु अग्रेजी की बेडिया पहले १५ वर्ष के लिए और फिर अनन्त काल के लिए डाल दी गयीं। यहा तक कि नगालैण्ड जैसा छोटा–सा प्रदेश भी जब तक न चाहे हिन्दी नहीं चल सकती। अग्रेजी को विशेषाधिकार ही नहीं निषेधाधिकार तक दे दिया गया। रही वत्ती कसर पूरी कर दी गयी सविधान की आठवी अनुसूची मे उस उर्दू को समाविष्ट करके जो देश–विभाजन की जननी थी है और सदैव रहेगी। जिसने भारत का ही नहीं पाकिस्तान का भी विभाजन कराया और भारत का पुनर्विभाजन ही नहीं पाकिस्तान का भी विघटन कराने पर तुली है। वह उर्दू जो भारत के किसी भी क्षेत्र की भाषा नहीं (पाकिस्तान के भी किसी क्षत्र की भाषा नहीं) उसे जम्मू–कश्मीर प्रदेश की राजभाषा बना दिया गया कश्मीरी लद्दाखी और डोगरी को प्रदेश निकाला दे दिया गया। वह उर्दू, जो पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा है और भाषा–शास्त्र के किसी नियम के अनुसार भाषा है ही नहीं अधिक से अधिक जिसे अरबी फारसी से लदी–फदी हिन्दी की मात्र एक शैली कहा जा सकता है भाषा की श्रेणी मे सविधान मे जा विराजी जिसकी प्रोन्नति प्रचार प्रसार के नाम पर उत्तर प्रदेश सहित देश भर के विभिन्न प्रदेशो मे 'उर्दू अकादमियो (सम्प्रति १२) का जाल बिछा दिया गया। वोट के भूखे भेडियो के लिए स्यात अञ्जुमन ए तरक्की उर्दू ए हिन्द 'गालिब जन्म शताब्दी कमेटी 'फखरुद्दीन अली अहमद मेमोरियल कमेटी जैसी सस्थाए ही पर्याप्त नहीं थी। इतना ही नहीं शायद ऐसे लोगो के लिए मात्र अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी 'जामिया मिलिया इस्लामिया और उस्मानिया यूनीवर्सिटी ही काफी नहीं थीं उन्होंने कहीं मौलाना आजाद और कहीं किसी और के नाम पर उर्दू विश्वविद्यालयो की स्थापना तक करा डाली। उस पर भी तुर्रा यह कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक 'स्वनामधन्य न्यायमूर्त्ति को पद पर रहते कुछ वर्ष पूर्व उन्नाव (उ०प्र०) में सार्वजनिक मच से यह तक कह डालने मे कोई हिचक नहीं हुई कि 'गुजिश्ता पचास साल से इस मुल्क मे उर्दू को कत्ल किया जा रहा है किसी ने भी इन (अ) न्यायमूर्ति जी से नहीं पूछा कि मी लार्ड कातिलो पर अब तक भा०द०स० की धारा ३०२ मे मुकदमा दायर क्यो नहीं करा दिया ?

विडम्बनाए और भी हैं। मैकाले मार्क्स और मौलाना के मानसपुत्रो ने हिन्दी को नष्ट–भ्रष्ट करने–कराने के लिए क्या–क्या नहीं किया ? अब भी क्या–क्या नहीं कर रहे हैं ? इन्दिरा सरकार ने उर्दू के लिए श्री इन्द्रकुमार गुजराल की अध्यक्षता मे एक समिति बनायी और उसकी अनुशसाओ के आधार पर पूरे देश पर उर्दू लाद दी गयी। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर उनके अनेक केन्द्रो से नित्य दिन मे कई बार 'खबरे और 'तब्सिरा प्रसारित किए जाने लगे। इधर नेहरू जी की तरह आज भी कुछ सत्ताधारी हिन्दी किसी पर लादी नहीं जाएगी की घोषणा यदा–कदा करते रहते है। हिन्दी नहीं लादी तो उर्दू गयी है अग्रेजी गयी है किन्तु प्रलाप हिन्दी को लेकर ही चल रहा है आगे भी चलता रहेगा। हिन्दी को 'आमफहम' बनाने के न जाने कितने 'नुस्खे बना डाले गए। हिन्दी को सरल करने के भी आए दिन उपदेश दिए गए। तदनुसार गान्धीजी की वर्धा स्कीम के अन्तर्गत डा० जाकिर हुसैन की बनायी बेसिक रीडरो मे बादशाह राम' और 'बेगम सीता जैसे प्रयोग किए गए देश के प्रथम शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद की टिकट के लिए 'घरघुस लेटर बॉक्स के लिए पत्रघुसेडू और पोस्ट मास्टर जनरल (पी०एम०जी०) के लिए 'डाक गुरुघण्टाल जैसी हिन्दी ने कम कमाल नहीं दिखाया। जाकिरी हिन्दी मौलाना हिन्दी 'हिन्दुस्तानी हिन्दी तो थी ही सोशलिस्टो ने अपनी सोशलिस्टी हिन्दी भी बना डाली – रजिस्टर के लिए रजटटर 'मजिस्ट्रेट के लिए मजटटर जैसे शब्द प्रयोग प्रारम्भ करने मे डॉ० लोहिया तक अग्रणी रहे। मार्क्स और मैकालेवादियो की तो दुनिया ही निराली है। समाचारपत्रो से लेकर दूरदर्शनी वाहिनियो तक को अपनी जकड मे रखे इन लोगो ने तो हिन्दी को 'हिग्रेजी' 'हिंग्लिश' या 'इग्लिन्दी बनाने का एक प्रकार से बीडा उठा रखा है। पृष्ठ केस्थान पर 'पेज और स्तम्भ के स्थान पर 'कालम को तो न जाने कब से चला ही रखा है इधर अग्रेजी समाचार पत्रो की भोडी नकल मे हर दिन जो रगीन परिशिष्ट निकाले जा रहे हैं जरा उनके शीर्षको उपशीर्षको की बानगी देखे – 'टर्निंग प्वाइण्ट 'मोबाइल मैनर्स गुड न्यूज 'बैड न्यूज फिटनेस स्किन केयर राइट डाइट म्यूजिक वर्ल्ड 'फ्रेण्डशिप डे' 'चैनल टाक' 'फेस्स टु वाच' 'फेस टु फेस इण्टीरियर बालीवुड अपडेट ट्रेण्डस 'कैनवास टाप टेन आल द बेस्ट लाइफ टाइम पास स्टाइल स्टार्स टेल स्पोर्टस फ्लैश बैक आदि। अजदहा फिलवक्त 'साजिश' 'शख्सियत' 'पुरजोश 'गर्मजोशी' 'बेसाख्ता' 'मकसद 'बेगुनाह 'गैर जरूरी' जैसी शब्दावली को खिचडी मे ककड की तरह प्रयोग करने मे ये अग्रणी है। यही है वे लोग जो कभी आचार्य रघुवीर की हिन्दी की रघुवीरी हिन्दी कहकर खिल्ली उडाते थे और यही लोग आज उत्तर प्रदेश जैसे 'हिन्दी के हृदय–प्रदेश के महामहिम राज्यपाल के गरिमामय पद पर अधिष्ठित ऋषिकल्प व्यक्तित्व के धनी आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जैसे मनीषी की हिन्दी को लेकर मास्टरजी मास्टरजी कहकर मखौल उडाने पर उतारू हैं वह भी सनातनी धार्मिक बिडला परिवार के कभी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक रहे समाचारपत्र मे (देखे – हिन्दुस्तान लखनऊ सस्करण रविवार दिनाक १४ अप्रैल २००२ पृष्ठ ६) पर मास्टरजी का आतक शीर्षक आलेख राजरग स्तम्भ मे) क्योकि हिन्दी की उपेक्षा उन्हे सहन नहीं होती अशुद्ध हिन्दी–उसकी अशुद्ध वर्तनी अशुद्ध उच्चारण अशुद्ध सरकारी प्रयोगो (यथा– उपर्युक्त की जगह 'उपरोक्त 'भवन्निष्ठ की जगह भवनिष्ठ आदि) के प्रति सहयोगियो अधीनस्थो को सचेत करते रहते हैं और हिन्दी के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा को सार्वजनिक मचो से अभिव्यक्त करने मे कभी चूकते नहीं।

लेकिन ऐसे लोग भूल जाते है कि हिन्दी कभी राज्याश्रय के भरोसे नहीं बढी है। उसके लिए **कभी घी घना कभी मुटठी भर चना कभी वह भी मना मे से कभी घी घना** रहा ही नहीं हमेशा **कभी मुटठी भर चना कभी वह भी मना** ही रहा है। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन से लेकर प० श्रीनारायण चतुर्वेदी तक न जाने ऐसे कितने त्यागियो तपस्वियो बलिदानियो और स्वाभिमानियो की एक पूरी श्रृखला खडी है उसके पीछे जिन्होने हिन्दी के लिए सर्वस्वार्पण से कभी पीछे पैर नहीं हटाया। महापण्डित राहुल साकृत्यायन यशपाल और डा० रामविलास जैसे कम्यूनिस्टो ने हिन्दी के लिए पार्टी को ठोकर मार देने मे देर नहीं की। लेकिन दोष इनका नहीं हम उन हिन्दीवालो का है जो हिन्दी की रोजी–रोटी खाते हैं और उसी की घोर उपेक्षा करते हैं। अन्यथा कोई कारण नही था कि स्वातन्त्र्योत्तर काल मे धर्मयुग और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' जैसे साप्ताहिक तथा प्रताप और भारत जैसे दैनिक तथा सरस्वती और विशाल भारत जैसे मासिक बन्द हो जाते।

फिर भी अभी कुछ नही बिगडा है। सम्मानो पुरस्कारो आयोगो समितियो आदि का व्यामोह छोडकर हिन्दी के स्वाभिमान की प्राणपण से रक्षा करने की पावन वेला आ गयी है। हिन्दी को आज प० चन्द्रबली पाण्डेय जैसे एकान्त साधको राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसे तपस्वियो निराला तथा आचाय किशोरीदास वाजपेयी जैसे स्वाभिमानियो सेठ गोविन्ददास जैसे नैष्ठिको और प० श्री नारायण चतुर्वेदी जैसे त्यागियो की अतीव आवश्यकता है।

देखे 'हिन्दी की चिन्दी चिन्दी करने वालो की चिन्दी चिन्दी करने के लिए हम बद्धपरिकर होकर कब तत्पर होते हैं ?

– वि०स०के० से साभार

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्यसमाज की देन

– डॉ० अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुजराती होते हुए भी देश को एक सूत्र मे बाधने के लिए अपनी प्रचार की भाषा सस्कृत के स्थान पर जन सामान्य की भाषा हिन्दी को अपनी लेखिनी व प्रचार के लिए अपनाना एक क्रान्तिकारी कदम था। यह सत्य विशेष रूप से उस समय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब कि इस हिन्दी साहित्य के आदि काल के उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती हिन्दी के पूर्व साहित्यिक काल 'रीति काल या श्रृगार काल' के सन्धि समय मे ही हुए थे तथा श्रृगारिकता के दुष्परिणाम स्वरूप जो देश को पराधीनता का मुह देखना पडा था उससे जनमानस को बचाने के लिए न केवल जनभाषा हिन्दी की खडी बोली मे प्रचार आरम्भ किया अपितु उन्होने हिन्दी साहित्य का मुख स्वाधीनता स्वालम्बवन देश भक्ति पूर्व वैभव का स्मरण व अन्धविश्वासो के खण्डन की ओर मोड दिया। जिस कारण तत्कालीन युगाचार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जो श्रृगार काव्य द्वारा ही अपना लेखन कार्य आरम्भ कर चुके थे को भी उल्टी गगा के बहाव मे बहने को बाध्य होना पडा। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तथा उनकी उत्तराधिकारिणी आर्यसमाज ने हिन्दी के प्रचार प्रसार मे कोई कसर न उठा रखी। यहा तक कह दिया कि यदि आप हमारे साहित्य को पढना चाहत हो तो हिन्दी सीखो। विदेशियो को भी ऐसी ही शिक्षा दी। आओ हम हिन्दी के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किये गए कार्यो का मूल्याकन करे

सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही सर सैय्यद अहमद फ्रासीसी विद्वान गार्सा–द–तासी सयुक्त प्रान्त शिक्षा विभाग के तात्कालीन अध्यक्ष मि० हैवल काशी के राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द आदि लोग हिन्दी को गवारो की भाषा कहते हुए तथा इसका विरोध कर रहे थे तथा इस मे फारसी शब्द मिला रहे थे उनके झूठ का भण्डा चौराहे मे फोड कर जन सामान्य को हिन्दी विरोधी होने से बचाते हुए उन्हे बताया कि हिन्दी एक सशक्त भाषा है। इसे देश के प्रत्येक कोने मे समझने वाले लोग है। इसमे हर प्रकार के विचारो की अभिव्यक्ति हो सकती है। उनकी इस बात को राजनारायण बोस भुदेव मुकर्जी तथा कालीचरण काव्य विशारद जैसे उस युग के नेताओ की प्रेरणा कह सकते हे जो हिन्दी को स्वाधीनता का मार्ग मानते थे। अत स्वामी जी द्वारा सस्थापित आर्यसमाज इस प्रकार का प्रथम आन्दालन था जिस मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया गया। मिश्र बन्धु विनोद तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य ग्रन्थो मे इस तथ्य को भली भाति स्वीकार किया है।

हिन्दी अपनाने के पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती केवल आठ वर्ष जीवित रहे इन आठ वर्षो मे वेद प्रचार के अतिरिक्त १५००० पृष्ठो के लेखन द्वारा साठ ग्रन्थ हमे धरोहर मे दे गए जिनमे उनकी वह आत्मकथा भी एक है जिसे हिन्दी समुदाय हिन्दी गद्य साहित्य की प्रथम प्रकाशित आत्मकथा स्वरूप स्वीकार कर चुका है। इन ग्रन्थो मे सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जिसे विश्व की अनेक भाषाओ मे अनुवाद कर लाखो की सख्या मे छपवाया व करोडो की सख्या मे लोगो ने पढा हे।

हिन्दी साहित्य को महर्षि ने नई दिशा दी उन्होने वीरोचित मार्ग अपनाते हुए जहा इसे शात वीर व उत्साह प्रदान करने का मार्ग अपनाया वहा साहित्य मे उपसाहात्मक वृत्ति का भी उदय किया यथा अन्धविश्वासी ब्राह्मण को पोप अभिमानी को गर्वगण्ड सरीखे शब्द देकर हिन्दी के नए शब्दो का सृजन भी किया। पुनरपि पुनश्य नैरोग्य आदि तथा सर्वतन्त्र भुषुण्डी विडालाक्ष आदि सस्कृत के शब्दो को प्रयोग किया जो उनके सस्कृत तथा उनके गाम्भीर्य को दर्शाता है। वह पुजारी शब्द को पूजा का अरि अर्थात शत्रु मानते हुए इसे पुजारि लिखने हेतु प्रेरित करते थे। वह सस्कृत के अनुसार ही हिन्दी मे लिगो का प्रयोग करते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व प्रताप नारायण मिश्र ने भी यही शैली स्वीकार की।

स्वामी जी अपनी भाषा को सशक्त दर्शाने के लिए मुहावरो व लोकोक्तियो का अत्यधिक प्रयोग करते थे। आख का अन्धा गाठ का पूरा उल्टा चोर कोतवाल को डाटे आदि जैसे मुहावरो व लोकोक्तियो का भरपूर प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने गद्य के गुणो तथा ओज सरलता प्रवाह व रोचकता को अपने साहित्य मे विशेष स्थान दिया है। स्वदेश स्वधर्म स्वजाति व देशाभिमान की भावना भरने हेतु ओज युक्त शब्दो का प्रयोग करते थे। देवनागरी के महत्त्व को समझते हुए तो यहा तक कह जाते हैं कि विश्वभाषाओ की कोई भी लिपि इस की प्रतिस्पर्धी नहीं हो सकती। तभी तो रामधारी सिह दिनकर ने उन्हे 'रणारूढ हिन्दुत्व का निर्भीक नेता कहा है। प्रतिमा पूजा पर लिखते है "तोपो के मारे मन्दिर मूर्तिया अग्रेजो ने उठा दी तब मूर्ति कहा गई थी ?"

स्वामी जी भाषा की सुबोधता व स्पष्टता के भी पक्षधर थे। यही कारण है कि उनकी भाषा मे प्रसाद गुण प्रधान है। स्वामी जी मे श्रोताओ व पाठको को अपने प्रवाह गुण मे बहाने की क्षमता भी थी। अत वह प्रवाह गुण का भी समीचीन प्रयोग करते थे। वह अपने उद्धरणो को शास्त्रोक्त प्रमाणो से पुष्ट भी करते थे। जिससे सुधि श्रोताओ का शास्त्रो से सम्बन्ध जुडता था। उनकी इस प्रवृति का हिन्दी साहित्य पर दूरगामी प्रभाव पडा। यही से हिन्दी साहित्य मे प्रमाण ग्रन्थो के आधार पर विवेचना की प्रथा चल पडी है।

स्वामी जी की शैली गाम्भीर्य एव तर्कपूर्ण रही है। जिसका पाठको पर गहरा प्रभाव पडा। हजारो व्यक्ति इन्हे पढकर अन्धविश्वासो से मुक्त हुए।

स्वामी जी ने अपने लेखन व व्याख्यानो मे कुरीतियो का खण्डन करते हुए रोषपूर्ण शब्दो मे क्षोभ प्रकट किया। सोमनाथ मन्दिर प्रसग मे उनका यह आक्रोश अद्वितीय अवस्था मे दिखाई देता है।

स्वामी जी तथा आर्यसमाज की जिस शैली को उस काल के तथा अनुगामी युगीन साहित्यकारो ने बडे जोश के साथ अपनाया वह है उनकी व्यग्यात्मक शैली यथा जन्म पत्र के लिए शोक पत्र मन्त्र शक्ति पर कहना "अगर तुम्हारे मन्त्र मे शक्ति है तो कुबेर क्यो नहीं बन जाते ?" तपोवन को भिक्षुक वन पोपलीला के गपोडे आदि का प्रयोग करते हुए अपनी विनोद वृत्ति का अच्छा प्रदर्शन किया है। वह व्यग्य मे हर की पोडी को हाड की पौडी कहते थे।

स्वामी जी ने अपने गूढ विषयो को पाठको के लिए बडे सरल ढग से रखने के लिए दृष्टात शैली का अवलम्बन किया। एतदर्थ शेखचिल्ली कथा लाल बुझक्कड कथा आदि अनेक कहानियो का भी उन्होने प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने एक नवीन साहित्यिक शैली आरम्भ की जिसे अनुगामी साहित्यकारो ने भी अपनाया वह शैली है "प्रश्न शैली" इस मे स्वय एक प्रश्न रखकर फिर उसका उत्तर विस्तार से समझाया जाता है। आप शास्त्रार्थों व व्याख्यानो मे भी इसका प्रयोग करते थे।

स्वामी जी के प्रभाव से हिन्दी गद्य को नई दिशा मिली तथा अब तक अछूते रहे विषयो पर भी साहित्यिक कलमे उठने लगी। कथा कहानियो मे दार्शनिकता भी पैदा हुई। समाज सुधार शास्त्रीय व वैज्ञानिक विषयो की विवेचना के साथ ही साथ राजनैतिक प्रश्नो को भी हिन्दी साहित्य ने अपनाना आरम्भ कर दिया। सत्यार्थ प्रकाश मे जो दार्शनिक आध्यात्मिक नैतिक सामाजिक व राजनैतिक प्रश्नो की विवेचना की गई है उनके बारे मे आचार्य चतुरसैन जी कहते है – "तुलसी कृत रामायण के बाद सत्यार्थ प्रकाश ही इस युग का इतना लोकप्रिय ग्रन्थ हुआ है।" हजारो व्यक्तियो ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से हिन्दी सीखी। बाबू श्यामसुन्दर दास के अनुसार "सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज के प्रभाव से पजाब मे हिन्दी का वह असर हुआ जिसकी कदापि आशा नहीं थी।" इससे हिन्दी मे गम्भीर विवेचना की पद्धति आई तथा रोचक एव विनोदात्मक शैलियो का विकास हुआ।

रामधारी सिह दिनकर के अनुसार "स्वामी जी का ब्रह्मचर्य नैतिक शुद्धता और पवित्रता पर बल देना हिन्दी साहित्य के इतिहास मे एक महान उल्लेखनीय तथ्य है। रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल मे हिन्दी भाषी क्षेत्रो मे जो उल्लेखनीय घटना घटी वह स्वामी दयानन्द का पवित्रवादी प्रचार था।"

द्विवेदी युग पर स्वामी जी की विचारधारा का प्रभाव भारतेन्दु युग से भी अधिक पडा। परिणाम स्वरूप नायिका भेद सम्बन्धी साहित्य को हेय समझा जाने लगा। यही कारण है कि कवि नाथूराम शकर ने अपना श्रृगारिक काव्य ग्रन्थ कलित कलेवर स्वय ही नष्ट कर दिया। सुदर्शन को भी अपनी कहानियो का प्रवाह बदलना पडा।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

एकता की सेतु है हिन्दी

— डॉ० कमलेश रानी अग्रवाल

भारत एक बहु भाषा भाषी विशाल देश है जिसमें करोडो निवासी सदियो से एक साथ प्रेम और सहयोग से रहते आ रहे हैं। हिन्दी ने इस भावनात्मक एकता मे सदैव एक सुदृढ सेतु का कार्य किया है। हिन्दी किसी खास प्रदेश की मातृभाषा कभी नहीं रही। हिन्दी तो लोकव्यवहार से उभरी जन भाषा है। वास्तव मे हिन्दी केवल एक भाषा ही नहीं वरन सास्कृतिक सामाजिक और सार्वभौमिक जीवन मूल्यो की शक्ति है। हिन्दी ही भारत के जनमानस की सर्वागीण अभिव्यक्ति है। हिन्दी जातीयता, श्रेत्रीयता, प्रान्तीय धर्मान्धता और सकीर्णता, के तमाम दायरे तोडने मे सक्षम है। हिन्दी द्वारा देशवासियों मे प्रेम एकता और बन्धुत्व भाव का सचार होता है। इसीलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सविधान निर्माता विद्वानो ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान किया।

भारत की अपनी गौरवशाली सस्कृति, वैभवपूर्ण सभ्यता व परम्पराये तथा उदात्त आदर्श है। हमारे देश मे अनेकता में एकता भिन्नता मे अभिन्नता पुरातनता मे आधुनिकता समाहित है। यहा अनेक धर्म सम्प्रदाय मत मतान्तर जाति वर्ग होते हुए भी हम सब एकता के सूत्र मे पिरोए हुए है। क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता की सीमाओ को तोडकर जनभाषा, साहित्यिक भाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी ने एक सूत्र बनकर सम्पूर्ण देश को जोडे रखा है। राष्ट्रीय समारोहो मे इसकी सजीवता सहज ही देखने को मिलती है।

इग्लैण्ड के विद्वान डॉ० मैग्रेगर का मानना है कि हिन्दी दुनिया की महान् भाषाओ मे एक है। भारत को समझने के लिये हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है। महात्मा गाधी जी ने अस्पृश्यता निवारण जैसे व्यापक समाज सुधार के कार्य के लिये हिन्दी का ज्ञान आवश्यक बताया क्योंकि हिन्दी भारत के बहुसख्यक लोगो द्वारा समझी, बोली पढी और लिखी जाती है। भारत के जन जन तक पहुचने के लिये उनका विश्वास अर्जित करने के लिए राष्ट्रवादी हिन्दी का ज्ञान जरूरी है। स्वामी दयानन्द महात्मा गाधी, राजा राममोहन राय, बकिम चन्द्र चटर्जी, सुभाष चन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक, नवीन चन्द राय, विनोबा भावे, काका कालेलकर, केशवचन्द्र सेन, रागेय राघव, सुब्रह्मणयम भारती, सरदार पटेल, स्वामी विवेकानन्द जैसे कितने ही अहिन्दी भाषी महापुरुषों ने हिन्दी को ही राष्ट्र एकता का आधार माना है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सविधान के निर्माताओ ने केन्द्रीय सरकार के काम काज के लिये हिन्दी को और राज्यो का प्रशासन चलाने के लिये उनके यहा बोली जाने वाली एक या अधिक भाषाओ को राज भाषाओं के रूप में स्वीकार किया। उनका विचार था कि देश की सभी प्रमुख भाषायें अपने अपने क्षेत्र मे फले फूलें और जहा विभिन्न भाषा भाषियों को सम्पर्क करना हो वहां हिन्दी को माध्यम के रूप में अपनाया जाये। सविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार भारत सरकार को हिन्दी का विकास करना अनिवार्य है जिससे वह देश की समग्र सस्कृति को भिन्न भिन्न भागो मे अभिव्यक्त करने का योग्य माध्यम बने। विदेशी भाषा पर हमारी निर्भरता समाप्त हो।

हिन्दी किसी न किसी रूप और मात्रा मे भारत के समस्त लोकजीवन मे अपनायी जाती है। हिन्दी भारत की मिट्टी मे ऐसे रची बसी है कि हिन्दी कवियों और साहित्यकारो की वाणी से राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र भक्ति के स्वर फूटते हैं। भूषण, भारतेन्दु, मैथलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, जय शकर प्रसाद, माखन लाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिह दिनकर, सुमित्रा नन्दन पत, श्याम नारायण पाण्डेय जैसे न जाने कितने कवियो ने राष्ट्रीयता की भावना से हिन्दी काव्य श्रगार किया है। पजाबी भाषी लेखनी की धनी अमृता प्रीतम ने स्वीकार किया है कि सम्पूर्ण भारत का चिन्तन राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही निहित है।

पदमश्री आचार्य क्षेमचन्द 'सुमन' मानते है कि काश्मीर से कन्याकुमारी और राजस्थान से सुदूर पूर्वी आचल मे बोली और समझी जाने वाली एक मात्र भाषा हिन्दी है जो सभी भारतीयो को एक सूत्र में जोडने की कडी का काम करती है। हिन्दी केवल हिन्दुओ की या उत्तर भारत के मुट्ठी भर लोगो की भाषा नहीं है वह तो देश के कोटि कोटि कण्ठो की पुकार है। भारतीय जीवन की उदारता और एकात्मता किसी एक भाषा मे दिखाई देती है तो वह हिन्दी मे ही है। अहिन्दी भाषी सन्त विनोबा भावे ने स्वय स्वीकार किया था कि हिन्दी ने मेरी बडी सेवा की है। यदि मैंने हिन्दी का सहारा नहीं लिया होता तो सम्पूर्ण भारत के गाव गाव मे भूदान और ग्रामोदय का सदेश जन जन तक नहीं पहुच सकता था। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर काम नही बनता। इसी तरह अग्रेजी से गाव गाव जाकर क्राति की बात नहीं हो सकती थी। श्री बी०डी० जत्ती मानते थे कि अहिन्दी भाषा भाषियो के प्रयत्नो के कारण ही हिन्दी आज केवल उन लोगो की भाषा बन गई है। इसलिए हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिससे भारतीय सस्कृति सुरक्षित रह सकती है।

हिन्दी भाषा मे समरसता आकर्षण और माधुर्य की प्रधानता है। चैकोस्लोवाकिया के प्रोफेसर स्मैकल भी मानते है कि हिन्दी सशक्त सरल और मनोहर भाषा है। इसलिए इस भाषा का प्रयोग उन सभी जातियो ने भी अपने भावो और विचारो को प्रकट करने मे किया जो समय समय पर भारत मे बाहर से आयी। भारतीय इतिहास के पृष्ठ बताते हैं कि मुसलमान कवियो ने प्रारम्भ से ही हिन्दी और हिन्दी कविता के प्रति आकर्षण व समर्पण भाव रखा है। अमीर खुसरो कबीर मलिक मौहम्मद जायसी मझन रहीम रसखान सुजान आलम ताज जफर आदि अनेक मुसलमान कवियो ने हिन्दी को अमूल्य काव्य राशि देकर साम्प्रदायिक सौहार्द ओर राष्ट्रीय एकता की स्थापना मे महत्वपूर्ण योगदान किया। कबीर ने हिन्दी को बहतानीर कहकर उसे एकता का महत्वपूर्ण साधन बताया है। कदाचित इन्हीं विशाल हृदय मुसलमान हिन्दी सेवियो को लक्ष्य करके भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था – इन मुसलमान हरिजन पर कोटिन हिन्दू वारिये।

फिजी के हिन्दी विद्वान श्री कमला प्रसाद मिश्र के हिन्दी साहित्य की हिन्दी फिजी की राष्ट्रभाषा बन गई है। उन्होने कहा है कि मेरे देश के शत प्रतिशत लोग हिन्दी बोल सकते हैं। हिन्दी ने भारत के राज्यो को ही एक सूत्र मे नहीं जोडा है वरन फिजी मारीशस रूस जापान आदि अनेक देशो को भी भावनात्मक आधार पर भारत से जोडा है।

डॉ० जाकिर हुसैन ने कहा था कि हिन्दी देश की एकता की एक कडी है। अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी अपनी पहचान है स्वाधीन देश की स्वतन्त्र नागरिकता का स्वाभिमान' है। वास्तव मे राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूगा है।

आज हिन्दी का प्रयोग व्यवहार वाणिज्य उद्योग कला विज्ञान तथा विविध क्षेत्रो मे बढ तो रहा है पर अग्रेजी का मोह अभी नहीं छूटा है। भारतवासी जब तक सच्चे मन से अपनी राष्ट्रभाषा को नही अपनायेगे तब तक उसे विश्व मे सही स्थान नहीं मिल सकेगा। चीनी और अग्रेजी के बाद हिन्दी विश्व की तीसरी बडी समृद्ध भाषा है। फादर कामिल बुल्के के अनुसार भारत के सभी धर्मो और विभिन्न भाषा भाषियो ने हिन्दी विकास मे योगदान दिया है। यह किसी विशिष्ट वर्ग प्रदेश या समुदाय की भाषा न होकर सबकी भाषा है। इसलिए इसे सयुक्त राष्ट्र सघ की भाषा के रूप मे मान्यता मिलनी ही चाहिये।

हिन्दी के हित आग चाहिए

— डॉ० कृष्ण लाल

युवकों के उर की धडकन में आज धधकती आग चाहिए।।
करके दृढ संकल्प उसी की पूर्ति हेतु फिर त्याग चाहिए।

तुमने करके सत्य-प्रतिज्ञा अंग्रेजों को दूर भगाया।
अब अग्रेजी की बारी है फिर क्यो उसको गले लगाया ?

उन्नत राष्ट्र, स्वभाषा उन्नत, किन्तु पराई भाषा ले ले।
चला रहे इस लोकतन्त्र को, फिर वह कैसे गाडी ठेले ?

आगे बढ युवको ! दृढता से अपना लो तुम अपनी भाषा।
यह जन-जन की मुखरित आशा पूरी हो सबकी अभिलाषा।।

ले पावन संकल्प हृदय में चट्टानों से टकरा जाओ।
मार्ग तुम्हारा रोक रहा जो उसे गिराओ, मत घबराओ।

जिसका पहला अक्षर बोले, जिसमें मा से प्यार मागते।
जिसमें रोए गाए, खेले, उससे ही क्यों दूर भागते ?

उद्योगों मे कार्यालय की कुर्सी पा भूले निज भाषा।

ससद् में भी हो कृतघ्न जो भग्न कर रहे जन मन-आशा।

युवको ! तुमसे ही आशा है, क्रान्ति एक ऐसी ले आओ।
ले यौवन की आग धधकती उनके लोह-हृदय पिघलाओ।।

जन-भाषा हो शासन की भी अब वो गिट पिट नहीं सहो रे !
आजादी के मुंह से इंग्लिश का कलंक अब तो दूर करो !

इग्लिश रखाने हेतु वहाने झूठ और दलीले थोथी।
नहीं सुनो, ला दो निज भाषा, कमी एक ही निश्चय की है।।

तुम चाहो पर्वत हिल जाए, तुम चाहो यह धरती कांपे।
तुम चाहो अम्बर गिर जाए, चरण तुम्हारे सागर नापे।

सोया ज्वालामुखी जगा दो, बाधाओं की चिन्ता छोडो !
मन में दृढ सकल्प संजोकर जन-जन को आपस में जोडो।

निज भाषा का स्रोत हृदय है और वही आधार जनों का।
निज भाषा ही साधन है जो करवाता है मेल मनों का।

भूत भगाने को इंग्लिश का जन-भाषा में काम करो सब।
बनो हिन्द के प्रेमी मन से हिन्दी में ही काम करो अब।।

छोडो अंग्रेजी हस्ताक्षर, बोली अंग्रेजी भी छोडो।
अंग्रेजी की छोड दासता निज भाभा से नाता जोडो।

वीर ! तुम्हारे उर की धडकन में कुछ ऐसी आग चाहिए।
ऐसा दृढ संकल्प चाहिए फिर ऐसा ही त्याग चाहिए।।

- आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिन्दी – जो अढ़ाई कोस भी नहीं चल सकी

– अशोक कौशिक

स्वतन्त्र भारत के सविधान लागू होने के साथ ही हम भारतवासी अर्थात केन्द्रीय तथा कुछ प्रादेशिक सरकारे हिन्दी लेखक और पत्रकार सरकारी और गैर–सरकारी स्तर पर प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को हिन्दी–दिवस मनाने की लकीर पीटते आ रहे हैं। हिन्दी अग्रेजी की दासी की भाति उसके दरबार मे झाडू बुहारी लगाने का काम पूर्ववत करती आ रही है और हिन्दी की अन्य सखिया अर्थात अवशिष्ट राष्ट्रीय भाषाए अपनी–अपनी सीमाओ मे सिमट कर रह गई हैं। ५५ वर्षीय स्वाधीन भारत राष्ट्र अभी भी अधिकृत रूप से अग्रेजी बोलता है और अग्रेजी मे ही राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्य सम्पन्न करता है। वास्तव मे भारत एक गूगा राष्ट्र है न वह अपनी भाषा का उपयोग कर पा रहा है और न ही उसकी सरकारे राष्ट्रभाषा के साथ राष्ट्रीय भाषाओ मे परस्पर सौमनस्य उत्पन्न होने देती है और न स्वय सौमनस्य उत्पन्न करने का यत्न करती हैं।

कहावत है 'नौ दिन चले अढाई कोस'। हिन्दी की स्थिति इससे भी निम्न स्तर की है। सन १९५० मे हिन्दी को राज्य और राष्ट्र की भाषा की मान्यता साविधानिक और सरकारी तौर पर प्रदान करने का प्रावधान तथा प्रतिज्ञा की गई थी। उस समय सविधान को आत्मार्पित करते हुए कहा गया था कि पन्द्रह वर्ष बाद अर्थात २६ जनवरी १९६५ से हिन्दी राजभाषा हो जाएगी और तब सारे काम–काज हिन्दी मे ही किए जाने लगेगे किन्तु १९६५ आते ही तमिलनाडु जो उस समय मद्रास कहलाता था मे आत्मदाह अनशन और तोड–फोड द्वारा विद्रोह की ज्वाला भडक उठी क्योकि दक्षिण वालो को जिनके आग्रह पर ही सविधान मे १५ वर्ष का समय दिया गया था हिन्दी तथा उत्तरवालो की दासता स्वीकार नही थी। परिणामस्वरूप उनका आन्दोलन हिन्दी के साथ साथ उत्तर भारत विरोधी रूप भी धारण किए हुए था।

आन्दोलनकर्ता हिन्दी वालो को भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के शब्दो का स्मरण कराने लगे। आज तक जवाहरलाल नेहरू के उस आश्वासन का दुरुपयोग करने मे किसी को भी किसीप्रकार की लज्जा अथवा दासता का बोध नहीं होता। यहा तक कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी के सयुक्त राष्ट्र सघ मे हिन्दी भाषण पर भी तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री अपना विरोध जताए बिना नहीं रहे।

कितने आश्चर्य की बात है कि सन १९५० तक जो अहिन्दी भाषी प्रदेश हिन्दी सीखते पढते–पढाते रहे थे वे सहसा काग्रेस की आत्मघाती राजनीति के चलते हिन्दी के विरुद्ध ताल ठोक कर खडे हो गए। उस स्थिति मे श्री नेहरु ने १९५६ मे भाषायी राज्यो का गठन करने के लिए राज्य पुनर्गठन आयोग गठित कर देश को भाषायी आधार पर विभाजित करके न केवल भाषायी शत्रुता और परायेपन को स्थायित्व प्रदान किया अपितु सम्पूर्ण देश से भिन्न एक समानान्तर क्षेत्रीय अस्तित्व अस्मिता और सस्कृति की अवधारणा का बीज भी बो दिया। आर्य और द्रविड सस्कृति की भिन्नता की बात तभी से जोर पकडने लगी थी। इस प्रकार भाषायी बटवारा करके अलगाववाव को बढावा और बल प्रदान किया गया।

हिन्दी को राष्ट्र जीवन मे उचित स्थान न मिलने देने और लगातार हिन्दी विरोध की आग पर अपनी राजनीतिक रोटिया सेकने वालो मे तथाकथित उदारवादी साम्यवादी सेक्युलरिस्ट और क्षेत्रवादी शक्तिया प्रमुख रही हैं। हिन्दी का विरोध सर्वप्रथम १९वीं शताब्दी मे इस्लाम और उर्दूवादिया न किया। हिन्दी के कारण उन्हें अपनी सत्ता देश की जनता के हाथो मे चले जाने का भय था। भारत मे राज कर रहे अग्रेजों के चाटुकारो ने भी हिन्दी का विरोध किया। उर्दू न चल पाने के कारण जब उनकी आशाए विफल होने लगी तब उन्होने अग्रेजी का पल्लू पकड लिया।

ईसाई मिशनरियो ने हिन्दी विरोधियो का समर्थन किया क्योंकि अग्रेजों का यह पिछलग्गू वर्ग भारत के जन–सामान्य को भारतीयता से दूर करने मे यदि सफल हो जाए तो इससे उन्हें भारत मे ईसाइयत फैलाने मे सफलता मिलेगी क्योंकि आम भारतवासी को उसके लोकजीवन सस्कृति और सभ्यता से जोडने के लिए भारतीय भाषाए अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक रही हैं। उनकी यह मान्यता है कि हिन्दी और अन्यान्य भारतीय भाषा–भाषियो का सामाजिक और भाषायी अभिसरण रोक कर ही भारतीयों की सास्कृतिक और राष्ट्रीय एकता एकात्मता को तोडा जा सकता है। इस तथ्य और इन षडयन्त्रों से सभी भारतीय राष्ट्रवादी परिचित तो हैं तो भी भारत के इस विखण्डन को असफल करने का ऐसा कोई प्रबल प्रयास नहीं किया गया कि स्वाधीन भारत अपनी भाषा में बोलता काम करता और अग्रेजी की दासता से भी मुक्त हो जाता। जबकि देश के स्वतन्त्रता–सग्राम में हिन्दी भी एक मुद्दा थी उस समय हिन्दी को न केवल राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था अपितु इसे देश भर में प्रचलित करके परस्पर सम्पर्क की भाषा बनाने का हृदय से प्रयास भी किया गया था।

हिन्दी के विरोधी पहले तो यह कहते रहे कि हिन्दी स्वय में कोई भाषा ही नहीं है उर्दू को देवनागरी लिपि में लिखने से वह हिन्दी हो जाती है। बहुतसमय तक यह वितण्डावाद जारी रहा किन्तु उर्दू क्या थी ? मध्यकाल मे लगभग सम्पूर्ण भारत के जनसामान्य द्वारा बोली जाने वाली एक भाषा जो थोडे बहुत अन्तर के साथ विभिन्न बोलियो के रूप में प्रचलित थी और नागरी लिपि मे ही लिखी जाती थी। उसी को जब मुसलमानों ने फारसी लिपि में लिखा और इसमें अरबी–फारसी के शब्दों का समावेश किया तो वही 'लश्करी भाषा' बाद में उर्दू बनी। समय के साथ–साथ उर्दू भाषा नहीं अपितु उससे अधिक एक मानसिकता बन गई। कालान्तर मे इसने मजहबी साम्प्रदायिकता और साम्राज्यवादी मानसिकता का रूप ले लिया तथा बढते–बढते सन् १९४७ में भारत का और १९७१ में पाकिस्तान का विभाजन कराया। यदि कोई उर्दू को विभाजन की भाषा कहता है तो वह क्या गलत करता है ?

हिन्दी विरोध का अब एक नया स्वर सुनाई देने लगा है। आर्थिक उदारीकरण के विमान पर सवार होकर वह स्वर भारत की भूमि पर उतरे बहुराष्ट्रीय निगमों और उनसे मोटी–मोटी धनराशि पाने वाले भारतीय नौकरशाहों का है। 'स्वदेशी' के विरुद्ध लडाई में हिन्दी और भारतीय भाषाओ का विरोध उनका प्रमुख हथियार है। बहुराष्ट्रीय निगम अपने भारतीय नौकरों द्वारा जनसामान्य पर अग्रेजी थोप कर रखने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। अरब देशों मे अरबी यूरोप तथा लैटिन अमेरिका मे जर्मन फ्रेंच स्पेनिश तथा चीन में चीनी भाषा अग्रेजी को चुनौती दे रही है किन्तु भारत सहित तृतीय विश्व के देशों में कोई भी देश इसे चुनौती देता हुआ दिखाई नहीं देता।

ऐसे में यदि निकट भविष्य में हिन्दी को रोमन लिपि में लिखे जाने पर जोर न दिया जाने लगे तो आश्चर्य ही होगा जो रोमन लिपि अग्रेजी भाषा का व्याकरण सम्मत सन्तोषजनक विकास तक नहीं कर सकी वह हिन्दी का विकास नहीं नाश करने के लिए प्रभावी उपाय हो सकती है। यदि भारतीय भाषाए रोमन लिपि मे लिखी जाने लगीं तो इससे बहुराष्ट्रीय निगमों को अपने व्यापार में आसानी होगी। इस कारण वे इस ओर उन्मुख हुए हैं।

देश के जिन लोगो मे अभी कुछ भी स्वाभिमान शेष है उन्हें हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ के विकास के लिए आगे आना चाहिए। अग्रेजी के प्रति मोह रखने वालों को यह समझने और समझाने की आवश्यकता है कि वे चाहे कितना भी कुचक्र और षडयन्त्र रचें करें हिन्दी और राष्ट्रीय भाषाओं को वे मात नहीं दे सकते। मातृभाषा का विकल्प न कभी था और न आज है। कोई भी देश अपनी भाषा में बोलकर और उसके माध्यम से कार्य करके ही विकास के शिखर पर पहुच सकता है। प्रश्न केवल हिन्दी भाषा का नहीं, राष्ट्र की भाषा भावना और भौतिक समृद्धि का भी है।

सर्वाधिक विडम्बना और वेदना की बात यह है कि आज का राजनीति विशारद चाहे वह किसी दल पार्टी अथवा धडे का हो मतदान के अवसर पर एक प्रकार से भिक्षा पात्र लेकर हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं में याचना करता है और सत्तासीन होते ही यह भूल जाता है कि उसने अपने मतदाताओं से किस भाषा में याचना की थी उन्हें क्या आश्वासन दिए थे और किन स्वर्णिम स्वप्नों का ससार बसाया था।

हिन्दी दिवस के अवसर पर इन्हीं कुछ प्रश्नों पर सबको आत्ममथन करते हुए विचार करना चाहिए। केवल विचार ही नहीं अपितु उस पर आचरण के लिए सकल्प लेकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अपने कर्तव्य पथ पर जब तक आसक्त नहीं हो जाएगे तब तक हिन्दी अपने उचित स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।

देश के जिन लोगो में अभी कुछ भी स्वाभिमान शेष है उन्हें हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिए आगे आना चाहिए। अग्रेजी के प्रति मोह रखने वालों को यह समझने और समझाने की आवश्यकता है कि वे चाहे कितना भी कुचक्र और षडयन्त्र रचें, करें, हिन्दी और राष्ट्रीय भाषाओ को वे मात नहीं दे सकते। मातृभाषा का विकल्प न कभी था और न आज है। कोई भी देश अपनी भाषा में बोलकर और उसके माध्यम से कार्य करके ही विकास के शिखर पर पहुच सकता है। प्रश्न केवल हिन्दी भाषा का नहीं, राष्ट्र की भाषा, भावना और भौतिक समृद्धि का भी है।

मेंढ़की के जुकाम का उपचार (2)

— आचार्य भगवान देव चैतन्य'

गताक से आगे

शास्त्राध्ययन के अभाव मे उन्होने साधना के नाम पर भी अनहत शब्द तथा सुरति आदि की नई परम्पराए चलाई और उनके शिष्यों ने भी अन्य मतवादियो की तरह अपनी अलग पहचान बनाने के लिए अलग तरह का तिलक व कण्ठी आदि धारण करने की प्रथा चलाई। सत्यान्वेषक योगीराज दयानन्द कबीरमत की समीक्षा के अन्त में दुखी हृदय से लिखते है – 'भला विचार देखो कि इसमे आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ सकता है ? यह केवल लडको के खेल के समान लीला है। साहित्य समीक्षको ने भी इस बात को सिद्ध किया है कि जैसे कबीर जी अक्खड स्वभाव के थे भाषा उनकी खिचडी थी वैसे ही दर्शन के सम्बन्ध मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते है – 'कबीरदास कभी तो अद्वैतवाद की ओर झुकते दिखाई देते है और कभी एकेश्वरवाद की ओर कभी वे पौराणिक सगुण भाव से भगवान को पुकारते है और कभी निर्गुण भाव से असल में उनका कोई स्थिर तात्विक सिद्धान्त नहीं था। 'विधिवत् शास्त्राध्ययन न होने के कारण ऐसा होना स्वाभाविक भी है। इसके बावजूद इनके अनुयायी वेदो के उद्भट विद्वान आर्ष ग्रन्थो के अनुपम मनीषी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और ब्रह्मवेत्ता १६वीं शताब्दी के आद्वितीय समाज सुधारक एव राष्ट्रभक्त महर्षि दयानन्द जी के विचारों में कमी निकालने की बात करे तो इस पर क्या कहा जा सकता है ? कुछ कहें भी तो बहुत कटु हो जाएगा। सुना है कि कछ मूर्ख लोगो ने मिलकर आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द पर 'तिमिर भास्कर' नामक तथा एक अन्य पुस्तक में कुछ अनर्गल लिखने का साहस किया था जिसका मुह तोड उत्तर आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० श्रीराम आर्य जी ने 'कबीर मतगर्व–मर्दन' नामक ग्रन्थ लिखकर दिया। उस ग्रन्थ काप्रत्युत्तर कबीरपन्थी नामधारी महन्तो ने आज तक नहीं दिया है। महर्षि जी ने जो कुछ कबीरमत के बारे में कहा है समस्त प्रमाणो से सत्य है अत इन शब्दों का बुरा न मानकर सत्प्रेरणा लेनी चाहिए और अपना ज्ञान बढाकर प्रत्येक व्यक्ति को आत्मोन्नति की दिशा में सक्रिय प्रयास करने चाहिए ।

लगता है पूर्वाग्रह के कारण ही लेखक ने सत्यार्थप्रकाश जैसे सर्वहितकारी ग्रन्थ तथा आर्यसमाज जैसी पूर्णतय असाम्प्रदायिक सस्था के बारे मेकहा है – सत्यार्थप्रकाश और उस पर खडे आर्यसमाज का फन्डामेंटलिज्म अपने ढग का है जिसमें प्रगति सुधारों के साथ–साथ शुद्धतावादी पुनरूत्थानवादी और साम्प्रदायिक प्रवृत्तिया भी दिखाई देती है। यहा तक कि कहीं–कहीं फासिस्ट प्रवृत्ति भी अपने बीज रूप मे नजर आती है। जिस महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को सब प्रकार के पाखण्डों आडम्बरो अन्धविश्वासो और अन्धानुकरण से मुक्ति दिलाकर एक खुले फलक तक पहुचाने का स्तुत्य प्रयास किया है उनके बारे मे इस प्रकार की आधारहीन बात कहना अपने आप मे एक अजूबा ही है। ससार का उपकार करना अपना मुख्य उद्देश्य बताने वाले सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित करने वाले और समूची मानवता को नितान्त तर्कपूर्ण ढग से एकता के सूत्र मे बाधने का प्रयास करने वाले महामानव के बारे मे इस प्रकार की सकीर्ण बात सोची भी नहीं जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज ने कहीं किसी पर हिंसा के बल पर अपनी बात थोपने का प्रयास नहीं किया बल्कि एक वैचारिक क्रान्ति का सृजन करके लोगो की साम्प्रदायिक तथा सकीर्ण विचारधारा को सार्वभौमिकता के साथ जोडने का प्रयास किया है। क्योकि महर्षि जी के लिए समस्त ऋषि–मुनियो द्वारा अनुमोदित वेद ग्रन्थ ही परम प्रमाण था और वेद मे इस प्रकार की भावना और प्रवृत्ति का लेशमात्र भी नहीं है। वेद मे किसी प्रकार के जाति–पाति या सम्प्रदाय आदि का उल्लेख नहीं है बल्कि मानव मात्र के लिए उत्थान कर सकने का ही उपदेश दिया गया है। वहा पर हिन्दू, सिक्ख मुसलमान ईसाई या किसी पन्थ विशेष आदि की तो चर्चा तक नहीं है। वहा पर व्यक्ति के उत्थान और पतन का कारण धर्म या अधर्म को माना गया है तथा वह धर्म भी किसी प्रकार के मतवादियो की तरह नहीं बल्कि मानवीय गुणो से सम्बन्ध रखता है। व्यक्ति या तो अच्छा हो सकता है या बुरा। इसी को आर्य और अनार्य के रूप मे विवेचित किया गया है तथा प्रत्येक व्यक्ति को स्वय आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनकर सारे ससार को आर्य बनाने की प्रेरणा दी गई है। इसकी पुष्टि के लिए वेद के कितने ही मन्त्रो का उल्लेख किया जा सकता है।

हम वेद की बात कर रहे है मगर लेखक को तो जैसे वेद से भी एलर्जी है क्योकि वे महर्षि पर आरोप लगाते है कि – 'उन्होने हिन्दुओ को पुराणो के जगल से बाहर निकाला लेकिन वेदो के खूटे से बान्ध दिया। परम्परा की लकीर पीट रहे लोगो को निर्भीक चिन्तन करने के लिए प्रेरित किया साथ ही एक पुरानी परम्परा को अनुलघनीय बताकर उनके चिन्तन की स्वतन्त्रता को छीन भी लिया। महर्षि जैसे उदारवादी सुधारक के बारे मे इस प्रकार की बात कहना उनके साथ अन्याय करना ही है। उन्होने तो व्यक्ति को भाग्यवाद और जो होना है सो तो होना ही है आदि परम्पराओ से मुक्त करके कहा कि व्यक्ति कर्म करने मे स्वतन्त्र है। वह अच्छा या बुरा जैसा भी कर्म कर सकता है मगर उसका फल भोगने के लिए वह परतन्त्र है। इस परतन्त्रता को जब तक व्यक्ति नहीं समझेगा तब तक वह पाखण्ड और आडम्बरो मे ही भटकता रहेगा क्योकि वह बुरा कर्म तो करेगा मगर उसके फल से बचना चाहेगा। बुरे कर्म के फल से व्यक्ति को बचाने की बात करने वाले मत मजहब तथा सम्प्रदाय ही मानो व्यक्ति को बुरे कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। यही अधर्म असत्य पाखण्ड और आडम्बर है। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के खूटे के साथ व्यक्ति को किसी दुर्भावना या अपना स्वार्थ सिद्ध करने या कोई नया पन्थ चलाने के लिए नहीं बान्धा है बल्कि वेद उनके लिए धर्म–अधर्म सत्य–असत्य और अच्छे या बुरेकी कसौटी थे इसलिए उन्होने वेदानुसार अपने जीवन को चलाकर व्यक्ति को श्रेष्ठ बनकर जीवन की चतुर्दिक उन्नति करने का ही मार्ग प्रशस्त किया है। असल मे इससे व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कोई आच नहीं आती है मगर हमे स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता मे भेद करना होगा। यदि कोई मा या आचार्य अपने बेटे या शिष्य के लए एक आचारसहिता के अनुसार चलने की प्रेरणा देती है तो उसे यह नहीं समझना चाहिए कि उसे तो खूटे के साथ बाध दिया गया है बल्कि उसे उस आचारसहिता का आदर करके अपने जीवन का विकास करना चाहिए। मा या आचार्य ने उसे स्वतन्त्र तो रखा मगर साथ ही उसे स्वच्छन्द होने से भी बचा लिया। दयालु दयानन्द की भावना को इसी रूप मे लेने की जरूरत है। वेद को हम खूटा ही कह ले मगर यह भी महर्षि जी का अपना बनाया हुआ नहीं है बल्कि उन्होने वेद की सार्वभौमिकता मानवीय विचारधारा असाप्रदायिकता मत पन्थ मजहब निरपेक्ष तथा मानव के चतुर्दिक उत्थान के सूत्रो को देखते हुए ही उसे अपनाया है। यही नहीं उन्होने वेदो मे सभी विद्याओ का समावेश देखा तथा समस्त आर्ष ग्रन्थो और ऋषि–मुनियो तथा वेद मे दिए गए अन्त प्रमाण से ही उसे सर्वोत्कृष्ट माना है। यहा भी उनके मन मे किसी प्रकार का पूर्वाग्रह या अपनी एषणा नहीं थी। ससार के सभी बुद्धिजीवियों एव मनीषियो ने वेद की प्राचीनता उत्कृष्टता और सार्वभौमिकता को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है तथा उसमे वेदज्ञ दयानन्द जी की अनुपम देन को सराहा है।

महर्षि दयानन्द जी की मूल विचारधारा को न समझने के कारण लेखक को यह भी भ्रान्ति हो गई है कि – ब्राह्मणवाद के प्रति दयानन्द का रवैया दो तरफा है। एक ओर वे ब्राह्मण–ग्रन्थो को मान्यता देते है खासकर मनुस्मृति को। ज्ञान शिक्षा और सस्कार के कारण ब्राह्मण वर्ण को श्रेष्ठ ठहराते है। दूसरी ओर समाज मे ब्राह्मण के वर्चस्व का विरोध भी करते है। यदि पूर्वाग्रह छोडकर थोडा सा भी चिन्तन किया होता तो लेखक को अपनी इन्हीं पक्तियो मे ब्राह्मणवाद के बारे मे महर्षि जी की मान्यता का पता चल जाता। महर्षि जी ने मनु महाराज द्वारा प्रस्तुत आश्रम एव वर्णव्यवस्था को सामाजिक समरसता और उत्थान के लिए अनिवार्य माना है। वास्तव मे कोई भी महापुरुष जब कोई नियम बनाता है तो उसमे कमी नहीं होती है बल्कि जब लालबुझक्खडो तथा अल्पज्ञो द्वारा उसका कार्यान्वयन अपने–अपने स्वार्थों को दृष्टि मे रखकर होने लगता है तो उसमे बिगाड आ जाता है। मनु जी द्वारा बनाई गई वर्ण व्यवस्था के साथ भी आगे चलकर यही कुछ हुआ। पता नहीं कब और कैसे वर्ण को जाति का पर्याय मान लिया गया तथा इसे जन्म से माना जाने लगा जबकि मनु महाराज ने समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए सभी वर्णो के विधिवत कर्त्तव्य भी निर्धारित किए है। यही नहीं हमारे इतिहास मे ऐसे कितने ही उदाहरण है जहा तक महर्षि दयानन्द जी की बात है वे भी बिना किसी प्रकार के पूर्वाग्रह या द्वेषादि के सभी वर्णों की अपने–अपने स्थान पर उत्कृष्टता और महत्ता को स्वीकार करते है। महर्षि जी ने गुण–दोष के आधार पर ही ब्राह्मण वर्ण की श्रेष्ठता–अश्रेष्ठता को आका है। उन्होने उस बुद्धिजीवी ब्राह्मण वर्ण को मान्यता दी है जो ज्ञान शिक्षा और सस्कारो से परिपूर्ण है तथा उन तथाकथित ब्राह्मणो के वर्चस्व का विरोध किया है जो इन गुणो से परिपूर्ण नहीं है। इस प्रकार उनके ऊपर दोहरी भूमिका का आरोप लगाना मिथ्या है। मनु महाराज जी ने भी गुण–कर्म और स्वभाव के आधार पर ही ब्राह्मण की श्रेष्ठता को स्वीकार किया है तथ। उनकी बडाई ज्ञान से आकी गई है न कि जन्म से। गुणहीन ब्राह्मण की उन्होने न केवल निन्दा की है बल्कि उसके लिए कठोर दण्ड का विधान भी किया' है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

पृष्ठ ७ का शेष भाग

मेंढ़की के जुकाम का उपचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी तथा आर्यसमाज का यह मत है कि वर्णो का विभाग कर्मानुसार होना चाहिए जन्मानुसार नही। यही वैदिक सिद्धान्त है तथा हमारे प्राचीन ग्रन्थ तथा मनीषी भी इसी की पुष्टि करते है। इसलिए यह सस्था बहुत ईमानदारी के साथ अछूत तथा नीच कहे जाने वाले व्यक्तियो के पक्ष मे खडी हो गई और हजारो शूद्रो को पण्डित बनाने की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया। आज भी आर्यसमाज मन्दिरो मे बहुत से शूद्र पण्डित बनकर हवन–यज्ञ आदि कार्यो को सम्पन्न कराते है। आर्यो को इन लोगो के मौलिक अधिकार देने के लिए अनेक प्रकार की यातनाए भी सहन करनी पडी मगर वे इस पवित्र कार्य से पीछे नहीं हटे तथा आज भी यह प्रक्रिया चालू है। आज भी गुरुकुलो मे सभी लोगो के साथ समान व्यवहार किया जाता है तथा सभी को अपने गुण–कर्म और स्वभाव सवारने का पूरा अवसर दिया जाता है। आर्यसमाज की यह सुधार की पद्धति इस रूप मे उत्कृष्ट है कि वे नहीं चाहते कि ऐसे लोगो को अछूत शूद्र हरिजन तथा दलित आदि कहकर एक अलग पहचान बनाई रखी जाए बल्कि इसके विपरीत इस कारा से मुक्त कराके उन्हे आगे बढने के समान अवसर दिए जाने चाहिए ताकि ये अपने जीवन का निर्माण करके ऊपर उठकर स्वय अपने पावो पर खडे हो सके। मगर दुर्भाग्य यह रहा कि शूद्रो का उद्धार करने के लिए चाहे भूत मे चाहे वर्तमान मे जो भी तथाकथित लोग आगे आए उन्होने इनकी अलग पहचान बनाए रखने पर ही बल दिया क्योकि वास्तव मे मसीहा या सुधारक बनने की दिशा मे इससे उनकी स्वय की ही अलग पहचान बनती थी। कबीर जी मे अन्य अनेक बहुत से गुण हो सकते है जिनके कारण उनकी महानता को आका जा सके मगर लेखक के अनुसार भी कबीर महान इसलिए थे क्योकि 'उन्होने वेद से अलग धर्म और जार कानून से भिन्न अलग कानून की दलित परम्परा को निभाया। कबीर जैसे सुधारवादी और असाम्प्रदायिक व्यक्तित्व को भी अन्तत इसलिए महान् कहा गया कि उन्होने तथाकथित दलित परम्परा को निभाया उनका इससे बडा अपमान और क्या हो सकता है ? कबीर ने योग्यता और सद्‌गुणो की कहा अवहेलना की है ? उन्होने कहा यह गुरुमन्त्र दिया है कि दलित सदा दलित बना रहे और इसी रूप मे सदा अपनी अलग पहचान बनाए रखे ? यहा हम इस दिशा मे आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों तथा बलिदानो की चर्चा करके लेख को लम्बा नहीं करना चाहते हैं इतिहास स्वय इसकी मुह बोलती तस्वीर है। इसलिए आर्यसमाज के उन महान कार्यो की महात्मा गाधी के०पी० जायसवाल (सुप्रसिद्ध इतिहासकार) डाक्टर विन्टर निटज रामानन्द चैटर्जी डॉ० भगवानदास प्रि० देवीचन्द डॉ० गोकुलचन्द नारग सी०एफ०इ० ऐण्ड्रूज रगास्वामी आयगर टी०वी० शेषगिरि अयर टी०एल०वासवानी सी०एस० रगास्वामी अयर आदि ने भरपूर प्रशसा की है। फ्रास के सुप्रसिद्ध तत्ववेता रोमा रोला तो यहा तक कहतेहै – 'ऋषि दयानन्द ने अस्पृश्यता के इस घोर अन्याय को सहन नही किया और उनसे बढकर हरिजनों जिन्हे अस्पृश्य या अछूत कहा जाता था के अधिकारो के लिए लडने वाला और कोई नहीं हुआ। इन हरिजनों को आर्यसमाज के अन्दर समानता के आधार पर दाखिल किया गया ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कभी सोचा तक भी नहीं होगा कि जिन शूद्रो के उत्थान के लिए उन्होने जीवनभर सघर्ष करके उनके लिए मुक्ति के दरवाजे खोले उन्ही को लेकर उनकी नीयत पर शका की जाएगी। जिन आर्यसमाजियो ने तथाकथित अछूतो के साथ अपनी प्रतिष्ठा तक को दाव पर लगाकर रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित किया और आज भी कर रहे है उन्हीं को लेकर उन पर शक किया जाएगा। जब अछूत की बीमारी चरम सीमा पर थी तो सवर्णो के कूओ पर पानी पिलाने हेतु आन्दोलन करके जो न केवल अपनी बिरादरी से बहिष्कृत किए गए बल्कि शहीद तक होना पडा।उन लोगो को कभी पलभर के लिए भी ध्यान नहीं आया होगा कि उनकी इन कुर्बानियो का बदला केवल कृतघ्नता के रूप मे ही चुकाया जाएगा।

इस सम्बन्ध मे लेखक का कथन है – 'शूद्रो को लेकर सत्यार्थ प्रकाश मे अन्तर्विरोध मिलते है जिससे ब्राह्मणग्रन्थो के प्रति दयानन्द की दुविधा का पता चलता है पहले सस्करण में सभी वर्णों के साथ शूद्रो को भी स्कूल मे पढाने के लिए कहा गया पर वेद पढने से मना किया दूसरे सस्करण मे उन्हे वेद भी पढने को कहा कुछ मामलो मे फिर भी भेदभाव बना रहा। उपनयन करके गुरुकुल भेजने के प्रसग मे दयानन्द सुश्रुत के सूत्रस्थान के दूसरे अध्याय से व्यवस्था देते हैं कि ब्राह्मण ब्राह्मणो के अलावा क्षत्रिय और वैश्य का क्षत्रिय क्षत्रियो के अलावा वैश्य का और वैश्य सिर्फ वैश्यो को यज्ञोपवीत कराके पढा सकता है और जो कुलीन शुभ लक्षण युक्त शूद्र हो तो उसको मन्त्र सहिता छोडके सब शास्त्र पढावे शूद्र पढ़े परन्तु उसका उपनयन न करे यह मत अनेक आचार्यों का है। इन पक्तियो में कहीं भी शूद्रो को न पढने का आदेश नहीं है। लेखक को मनन करना चाहिए कि ये बाते भी महर्षि जी ने उस समय कही है जब तथाकथित सवर्णों द्वारा शूद्रो पर मनमाने अत्याचार किए जाते थे। वेद मन्त्र पढने व सुनने पर उनकी जिव्हा काट दी जाती थीं या कानो मे पारा भर दिया जाता था। उस समय महर्षि जी ने कुलीन शुभ लक्षणयुक्त (जो शास्त्रो का अध्ययन कर पाने मे समर्थ हो। यह बात केवल इस रूपमे ही ली जानी चाहिए कि जैसे किसी भी कक्षा मे प्रवेश लेने के लिए कुछ तो न्यूनतम योग्यता होनी अपेक्षित होती ही है) शूद्रो को शास्त्र पढाने की वकालत की है क्योकि अन्य शास्त्रो का अध्ययन करने के बाद ही वे वेदादि शास्त्रो की गहनता को समझ सकेगे। जहा तक पहले और दूसरे सस्करण की बात है महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश डिकटेशन देकर लिखवाया था इसलिए लिखने वालो ने बहुत सी त्रुटिया कर दी जिन्हे महर्षि जी ने दूसरे सस्करण मे स्वय सशोधित किया है। महर्षि जी ने कही नहीं कहा कि शूद्रो का उपनयन नहीं होना चाहिए। अपनी अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार सबको पढने का अधिकार है। उपनयन न कराने का मत कुछ आचार्यों का है ऐसा महर्षि जी ने लिखा है न कि यह उनका अपना मत है। उन्होने तो साफ शब्दो मे कहा है कि जैसे सूर्य सभी को प्रकाश देने वाला है वैसे ही वेद की शिक्षाए भी सभी के लिए ज्ञानप्रकाश का स्त्रोत हैं। मनुष्य मात्र को वेद पढने का अधिकार दिलाने के लिए उन्होने यथेमा वाच कल्याणीमा वदानि जनेभ्य (यजुर्वेद २६–२) आदि मन्त्रो को उद्धृत किया है।

महर्षि जी की दृष्टि मे शूद्र हेय और त्याज्य या अछूत नहीं थे। जो पढाने पर भी न पढे या समझाने पर भी न समझे ऐसे लोगो के लिए यदि उन्होने यह व्यवस्था दी है कि – 'शूद्र को योग्य है कि निन्दा ईर्ष्या अभिमान आदि दोषों को छोडके अन्य वर्णों की सेवा यथावत करके उसी से अपना जीवन निर्वाह करे तो इसमे बुरा क्या है। आज भी अपनी अपनी योग्यता और प्रतिभा आदि के अनुसार कोई व्यक्ति विभागाध्यक्ष है तो कोई चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी है। शूद्र अछूत नहीं थे बल्कि जो अपनी मन्दबुद्धि के कारण या अन्य कारणो से अन्य तीन वर्णों की योग्यता प्राप्त नहीं कर सके उन्हे कुछ तो करना ही है। जैसे आज कोई इजिनियर है तो कोई मजदूर भी है। जो इजिनियर नहीं बन सका वह मजदूरी तो करेगा ही। ठीक इसी प्रकार से ऐसे लोगों को शूद्र की सज्ञा दी गई थी। वर्णाश्रम व्यवस्था का यदि बिल्कुल उस रूप मे कार्यान्वयन हो जिस रूप मे मनु महाराज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने करने को कहा हे तो सामाजिक सुव्यवस्था तथा समरसता की इससे अच्छी मिसाल और कोई नहीं हो सकती है। ससार के विचारको ने इसीलिए किसी न किसी रूप मे इस व्यवस्था को सर्वोपरि बताया है या भविष्य में बताना पडेगा। बुद्धि बल धन और सेवा वर्णाश्रम व्यवस्था के यही आधार समाज की चतुर्दिक उन्नति का आधार है। रूस मे एक विचारक हुए हैं – ओसपैस्की। उन्होने 'ससार का एक नया सगठन' नाम का एक विचारपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। एक अध्याय मे उन्होने मनुस्मृति के वर्णव्यवस्था विषयक श्लोको को उद्धृत करके उन पर विचार करते हुए लिखा है कि यह व्यवस्था समाज व्यवस्था की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है और उसी के अनुसार नए मनुष्य समाज की रचना होनी चाहिए। हालाकि उनका यह सत्य कटटरवादियो को पसन्द नहीं आया और उन्हे रूस छोडना पडा था।

हॉलैण्ड के प्रसिद्ध विचारक डाक्टर जी०एच० मीज ने धर्म और समाज' नामक पुस्तक मे वर्णाश्रम व्यवस्था को समाज व्यवस्था की सर्वोत्तम पद्धति माना है। आजकल की साम्यवादी और पूजीवादी दोनों विचारधाराओ पर विचार किया जाए तो हमें बहुत से दोष दिखाई देगे। सुप्रसिद्ध विचारक वेल्स ने सामाजिक सुव्यवस्था और समरसता की दिशा मे कुछ ऐसे सुझाव दिए हैं जो वर्णव्यवस्था का ही अनुमोदन करने वाले हैं। उन्होने मनुष्यो की प्रवृत्तियो को 'पैजेण्ट परसोना नौमैड परसोना और प्रीस्ट परसोना या एजुकेटिड परसोना नाम दिए हैं तथा फिर इन तीनो नामो के नीचे क्रम मे उन सब प्रवृत्तियो का रूख दिया है। पैजेण्ट परसोना मानो वर्ण व्यवस्था का वैश्य है नोमैड परसोना क्षत्रिय है और प्रीस्ट परसोना ब्राह्मण है। द्विज अर्थात ब्राह्मण या पढे लिखे ज्ञानवान बुद्धिजीवी वर्ण की श्रेष्ठता पहले भी रही है आज भी है और आगे भी रहेगी ही। वेल्स के अनुसार मनुष्यो को इन तीनों प्रकार की प्रवृत्तियो के आधार पर बालको को परख कर तदनुसार उन्हें शिक्षा दी जानी चाहिए। प्रीस्ट परसोना की प्रवृत्तियो का उल्लेख करते हुए वेल्स ने लिखा है कि – 'पुरोहितो और ज्ञानियो की श्रेणी के लोगो मे जो नि स्वार्थ, ईमानदारी और सत्य परायणता का कभी न मिटने वाला भाव पाया जाता है जिसकी इन लोगों ने सदा रक्षा की है उसी पर मनुष्य जाति का भविष्य निर्भर है।

(क्रमश)

योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण

गताक से आगे

कसे गृहीते कृष्णेन तद् भ्राताऽभ्यागतो रुषा।
सुनामा बलभद्रेण लीलयैव निपातित ।।

विष्णु० ५–२०–७७

महाभारत द्रोण पर्व मे धृतराष्ट्र ने कहा है –

तथा कसो महातेजा जरासन्धेन पालित ।
विक्रमेणैव कृष्णेन सगण पातितो रणे।।

– द्रोण० ११–६

अर्थात – महाबलवान तेजस्वी जरासन्ध के द्वारा पालिस कस को उसके साथियो समेत युद्ध मे श्रीकृष्ण ने मार गिराया।

कस के मारे जाने पर उग्रसेन को यादव सघ का राजा बना दिया गया। इससे यदुवशी तो कस के अत्याचार से मुक्त हो गए किन्तु जरासन्ध का दामाद मारा गया था। उसकी दो–दो पुत्रिया अस्ति और प्राप्ति विधवा हो गयी थीं। मथुरा का सघ उसके विरोध मे हो गया था फलस्वरूप जरासन्ध का कोप बढ गया था। वह मथुरा पर आक्रमण करने लगा। यदुवशियो की सेना जरासन्ध की सेना के सामने कुछ भी न थी। किन्तु अस्त्र–शस्त्रो का सग्रह तो करना ही था। श्रीकृष्ण और बलराम दोनो ही अस्त्र–शस्त्रो की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अवन्ती पुरी मे सान्दीपनि ऋषि के गुरुकुल मे गए।

गुरुकुल निवास और ब्रह्मचर्य व्रत

श्रीकृष्ण भारतीय सस्कृति और वेद–शास्त्रो के भक्त थे। अवसर पाकर वे अस्त्र शस्त्रो की शिक्षा और उनके सग्रह के लिए सान्दीपनि ऋषि के पास गए –

तत सान्दीपनि काश्यमवन्ति पुर वासिनम।
अस्त्रार्थं जग्मतुर्वीरौ बलदेवजनार्दनौ।।
अहोरात्रैश्चतु षष्ट्या तदद्भुतमभूद द्विज ।
अस्त्रग्राममशेषञ्च प्रोक्तमात्रमवाप्य तौ।।

वि० ५–२१–१६, २० २२

भावार्थ यह हुआ कि दोनो भाई कृष्ण और बलराम अवन्तिकापुरी मे सान्दीपनि आचार्य के पास अस्त्र–शस्त्र सीखने प्राप्त करने के उद्देश्य से गए। वहा से ६४ रात्रिदिन परिश्रम करके अदभुत रूप से सम्पूर्ण अस्त्र–शस्त्रो को प्राप्त करने मे सफल हुए। इतने कम समय मे सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र विद्या को प्राप्त करना भी श्रीकृष्ण बलराम जैसे तेजस्वी सुसस्कारी युवको का काम था।

इतना कम समय गुरुकुल निवास का एक कारण तो यह समझ मे आता है कि दामाद की मृत्यु का बदला लेने और मथुरा के यादव सघ को अपनी अधीनता मे रखने के लिए मगध का सम्राट जरासन्ध बेचैन हो रहा था अन्तत वह सम्राट था और १८ ००० यदुवशियो के सघ का यह विद्रोह जरासन्ध जैसे महत्त्वाकाक्षी सम्राट के लिए स्वाभाविक रूप से असह्य था। जरासन्ध के आक्रमण का भय सदासर्वदा चौबीसो घण्टे बना रहता था। उधर सघ के राजा उग्रसेन अवश्य थे किन्तु कस के कारागार से मुक्त राजा को और गृहयुद्ध मे उलझे यादव सघ को श्रीकृष्ण जैसे नेता अग्रणी की आवश्यकता निरन्तर बनी रहती थी। अत अधिक दिन मथुरा से बाहर रहना कृष्ण के लिए सम्भव न था।

विद्वान योद्धा ब्रह्मचारी श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण मे लोकोत्तर अदभुत गुण थे। वे योद्धा तो थे ही सो भी अप्रतिम। भीष्म ने शिशुपाल के आक्षेपो का उत्तर देते हुए कहा था –

वेद वेदाग विज्ञान बले चाप्यधिक तथा।
नृणा लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्ट केशवादृते।।

– उमाकान्त उपाध्याय

दान दाक्ष्य श्रुत शौर्य ही कीर्तिर्बुद्धिरुत्तमा।
सन्नति श्रीर्धृतिस्तुष्टि पुष्टिश्च नियताच्युते।।

महा० सभा० ३८/१९–२०

शिशुपाल का आक्षेप था कि कृष्ण की अग्र पूजा कैसे हो सकती है इनसे तो आयु वीरता विद्या मे बढ चढकर इतने लोग यहा उपस्थित हैं। सो उनके रहते श्रीकृष्ण की अग्रपूजा नहीं हो सकती। इस पर भीष्म ने श्रीकृष्ण की गुणावली का बखान किया था –

श्रीकृष्ण अद्वितीय हैं। इनसे अधिक निम्नगुणो मे अन्य कोई नहीं है –

(१) वेद वेदाग मे (२) शारीरिक बल विक्रम मे (३) दान मे (४) दक्षता मे (५) यश मे (६) शूरता मे (७) लज्जा मे (८) कीर्ति (९) उत्तम बुद्धि (१०) सुनीति (११) श्री (१२) धृति (१३) तुष्टि (१४) पुष्टि।

इन सारे गुणो के अतिरिक्त कृष्ण अदभुत सदाचारी ब्रह्मचारी थे। अपने पुत्र प्रद्युम्न के जन्म के सम्बन्ध मे एक रहस्य का उद्घाटन श्रीकृष्ण ने स्वय ही सौप्तिक पर्व मे किया है –

ब्रह्मचर्यं महद् घोर चीर्त्वा द्वादश वार्षिकम।
हिमवत पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जित ।।
समान व्रतचारिण्या रुक्मिण्या योऽन्वजायत।
सनतकुमार तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे स्तुत ।।

अ० १२/३०–३१

इन श्लोको का भाव यह है कि श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी साथ हिमालय की तराई मे १२ वर्षों का महान घोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तपस्या की और रुक्मिणी ने भी समान रूप से व्रत के अनुष्ठान मे उनके साथ तपस्या की। फिर दोनो ने सनत कुमार जैसा तेजस्वी प्रद्युम्न नामक पुत्र उत्पन्न किया।

कहने मे आसान लिखने को तो दो श्लोको मे लिख दिया। किन्तु सोचने पर श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का व्रत उनकी तपस्या समझ मे आती है। ऐसे चरित्रवान तपस्वी श्रीकृष्ण के लोकोन्तर पवित्र चरित्र का चिन्तनमनन कथन होना आवश्यक है।

जरासन्ध का वध

कस वध के समान ही जरासन्ध का वध भी आवश्यक था। धर्म की रक्षा और धार्मिको की रक्षा जरासन्ध का वध किए बिना सम्भव न थी। और इधर श्रीकृष्ण के तो जीवन का उदघोषित उद्देश्य ही था –

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म सस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। *गीता०*

उधर जरासन्ध अन्याय अत्याचार पर उतारू था। उसने कस को तो अन्याय के लिए उकसा ही रखा था स्वय भी अन्याय की पराकाष्ठा पर पहुचा हुआ था। उसने ८६ राजाओ को कारागार मे डाल रखा था। एक सौ की सख्यापूर्ण होने पर उनके बलिदान की तैयारी थी। जरासन्ध सम्राट था। उसकी सेना बडी भारी थी। युद्ध के मैदान मे उससे भी मोर्चा लेने का सामर्थ्य किसी मे था नही। श्रीकृष्ण ने इस तथ्य को स्वय स्वीकार किया है –

अनारमन्तोऽविघ्नन्तो महास्त्रै शत्रुघातिभि ।
न हन्यामो वय तस्य त्रिभिर्वर्षशतैर्बलम।।

सभा० १४–१४ ३६

कृष्ण कहते है कि लगातार बिना आराम किए बिना किसी विघ्न बाधा के महाशत्रुघाती अस्त्रो द्वारा यदि हम जरासन्ध की सेना को मारते जाए तो भी तीन सौ वर्षो मे भी उसकी सेना का नाश नही कर सकते।

उस समय दुष्ट राजाओ का एक धडा बन गया था। मथुरा मे कस मगध मे जरासन्ध असम मे नरकासुर हस्तिनापुर मे दुर्योधन सिन्ध मे जयद्रथ पश्चिम मे शिशुपाल सभी अत्याचारियो का एक दल ही बन गया था। जरासन्ध को मारने से यह धडा निर्बल हो जाता था। कृष्ण ने सर्वप्रथम जरासन्ध को ही समाप्त करने की योजना बनायी।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे जरासन्ध सबसे बडा कण्टक था। युधिष्ठिर भी उससे डरते थे। श्रीकृष्ण की योजना द्वन्द्व युद्ध लडने की थी। भीम और अर्जुन सहमत थे। श्रीकृष्ण यही नीति अपनाना चाहते थे। श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को समझाया –

मयिनीतिर्बल भीमे रक्षिता चावयोर्जय ।
मागध साधयिष्याम इष्टि त्रय इवाग्नय ।।

सभा० १५–३[illegible]

अर्थात मुझ मे नीति है भीम मे बल है अर्जुन हमारे रक्षक है। हम जरासन्ध को अवश्य जीत लेगे। युधिष्ठिर कुछ हीला हवालाकरे इससे पूर्व ही नीतिनिपुण वाक्पटु, सभाचतुर कृष्ण ने दूसरा तीर और जोर से जड दिया –

यदि मे हृदय वेत्सि यदि ते प्रत्ययो मयि।
भीमसेनार्जुनौ शीघ्र न्यासभूत प्रयच्छ मे।

वही–३६

यदि आप मेरा हृदय जानते है यदि मुझ पर आपको विश्वास है तो शीघ्र ही आप मुझे भीम और अर्जुन को धरोहर के रूप मे दे दीजिए। श्रीकृष्ण बात को दूर तक इस रूप मे लेकर चले गए कि युधिष्ठिर की वाणी अवरुद्ध हो गयी। धरोहर की बात ही ऐसी थी और युधिष्ठिर भी जरासन्ध के साथ द्वन्द्व युद्ध की नीति से सहमत हो गये। जरासन्ध के भरे दरबार मे द्वन्द्व युद्ध सुरक्षित न था। सो कोई अन्य उपाय ऐसा निकालना था कि जरासन्ध बिना सेना बिना अगरक्षक मल्लो के युद्ध के लिए तत्पर हो जाए।

श्रीकृष्ण भीम अर्जुन तीनो मगध की राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) जा पहुचे। तीनो स्नातक के वेश मे जरासन्ध के दरबार मे उपस्थित हो गए। भीम और अर्जुन ने मौनव्रत का बहाना किया। कृष्ण ने परिचय दिया कि हम स्नातक है और ये दोनो अभी मौन हैं आज आधी रात ये मौन व्रत तोडेगे उसी समय बातचीत होगी। जरासन्ध ने अतिथियो को यज्ञशाला मे ठहरा दिया। रात १२ बज जब इनसे मिलने आया तो श्रीकृष्ण ने तीनो का परिचय दिया और जरासन्ध को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध ने भीम से मल्ल युद्ध स्वीकार कर लिया। वह कृष्ण और अर्जुन को मल्ल युद्ध के लिए अपनी जोड मे ही न समझता था। अगले दिन कार्तिक प्रतिपदा को सारे नगर की जनता की उपस्थिति मे दोनो की कुश्ती शुरू हुई। तेरह दिन लगातार कुश्ती होती रही। चतुर्दशी को भीम ने जरासन्ध को पटक कर उसकी टागे फाड दी। जरासन्ध मारा गया। श्रीकृष्ण की नीतिमत्ता थी कि बिना किसी रक्तपात के मगध का साम्राज्य सेना कोषा सब युधिष्ठिर के अधीन हो गए। कृष्ण ने बन्दी ८६ राजाओ को स्वतन्त्र कर दिया और मगध के सिहासन पर जरासन्ध के पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक कर दिया। इस तरह मगध भी कृष्ण–युधिष्ठिर के अनुकूल हो गया।

महाभारत का नेता

भगवददगीता के माहात्म्य मे एक श्लोक बडा प्यारा लगता है। किसा है कहा का है पता नही किन्तु कवि की कल्पना बडी प्यारी लगती है –

भीष्म द्रोणतटा जयद्रथजला गान्धार नीलोत्पला।
शल्य ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।।
अश्वत्थाम विकर्ण घोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी।

– क्रमश

हिन्दी-दिवस
राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठापना का संकल्प-दिवस

– दिनेश चन्द्र त्यागी

१४ सितम्बर १९४९ को सविधान सभा द्वारा यह स्वीकार कर लिया गया था कि भारत सघ की राजभाषा हिन्दी होगी तथा अन्तरिम रूप से पन्द्रह वर्ष की अवधि तक अग्रेजी का उपयोग किया जाता रहेगा। २६ जनवरी १९५० को सविधान की व्यवस्था पूर्णत स्थापित हो जाने के बाद १९६५ मे १५ वर्ष की अवधि समाप्त हो जानी चाहिए थी। १९६५ मे अग्रेजी का प्रयोग समाप्त होकर राजकाज की भाषा पूर्णत हिन्दी को बनाया जाना चाहिए था किन्तु दीर्घ कालखण्ड व्यतीत हो चुका और हिन्दी राज सिहासन पर प्रतिष्ठित नही की जा सकी। वास्तव मे अग्रेजी का वर्चस्व समाप्त होने के स्थान पर बढता ही जा रहा है। अभी तक भी भारतीय प्रशासनिक सेवाओ मे अगेजी प्रश्नपत्र की अनिवार्यता समाप्त नहीं की जा सकी। माग यह की गई थी कि जिन्हे अग्रेजी प्रश्नपत्र ही लेना है उन्हे उसकी सुविधा दी जाये। किन्तु अन्य प्रतियोगिताओ को हिन्दी अथवा अन्य कोई प्रादेशिक भाषा लेने की सुविधा दी जाय। खेद है कि ऐसा नही किया जा सका। भारतीय भाषा सगठन द्वारा निरन्तर दिया जा रहा धरना व प्रदर्शन इस माग के लिए सक्रिय कार्य कर रहा है अन्य भी भाषा सगठन सचेष्ट है किन्तु सरकार निर्णय लेने को तत्पर नहीं है।

सविधान का अनुच्छेद ३५४ (१) –

अनुच्छेद मे स्पष्ट कहा गया है कि सघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। ३४३ (३ख) मे यह भी लिखा गया है कि १५ वर्ष बाद ससद कानून बनाकर अको के देवनागरी रूप का उपबध निर्माण कर सकती है। इसके पूर्व ३४३ (१) मे कहा गया था कि अको का रूप भारतीय अको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा अर्थात जिसे अग्रेजी के साथ १५ वर्ष तक चलाया जा सकेगा।

देवनागरी अको का विलोप करने का षड्यन्त्र

भले ही अग्रेजी को हटाकर हिन्दी को १९६५ के बाद राजभाषा न बनाया जा सका हो किन्तु ससदीय राजभाषा समिति जैसे आधिकारिक सगठन तथा अन्य स्वैच्छिक राष्ट्रभाषा प्रेमी सगठन बार बार यह माग करते रहे हैं कि हिन्दी को राजभाषा घोषित किया जाय। सरकार ने तो हिन्दी के प्रयोग के विस्तार के लिए प्रत्येक विभाग मे हिन्दी अधिकारी की नियुक्ति भी की हुई है। इस प्रसग मे सर्वाधिक दु खद पहलू यह है कि हिन्दी प्रेमी सगठन भी देवनागरी अको के प्रयोग करने की माग कभी नही उठाते।

हिन्दी प्रेमियो को देवनागरी अको से घृणा क्यो ?

इन बडे बडे धर्मध्वजी हिन्दी सगठनो महान लेखको अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लब्ध प्रतिष्ठ हिन्दी लेखको द्वारा लिखित अथवा सम्पादित पत्र पत्रिकाओ मे सर्वत्र देवनागरी अको के स्थान पर अग्रेजी अको का ही प्रयोग किया जाता है। भारतीय गणित के अक १ २ ३ ६ जो विश्व के गणित ज्ञान की सर्वप्रथम उपलब्धि है इन अको को परिवर्तित कर (विलुप्त करके) अन्तर्राष्ट्रीय अको के नाम पर 1, 2, 3 9 लिखे जाने की व्यवस्था की जा रही है। इस प्रकार हिन्दुओ की प्राचीनतम धरोहर को धारा ३४३ (१) मे समाप्त करने का अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र हमारे राष्ट्रीय सविधान मे राष्ट्रीय नेताओ द्वारा रचा जा रहा है। ३४३ (३) मे जो व्यवस्था इसे १५ वर्ष बाद बदलने के लिए की गई है उसमे अग्रेजी को सुविधा देने के लिए ३४३ (३क) का प्रयोग किया गया है किन्तु देवनागरी अको को प्रतिष्ठा देने के लिए ३४३ (३ख) की उपेक्षा की जा रही है।

राष्ट्र भाषा प्रेमियो से प्रश्न

हिन्दी प्रेमियो से अनुरोध है कि वे जिस प्रकार सरकार से अग्रेजी हटाकर हिन्दी लाने की माग करते हैं उसी प्रकार 1, 2, 3 9 हटाकर १ २ ३ ६ लाने की माग क्यो नही करते यदि 1, 2, 3 [illegible] को अन्तर्राष्ट्रीय अक माना जा सकता है तो ऐसे भाषा प्रेमी एक दिन अग्रेजी भाषा को भी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मान बैठे तो क्या आश्चर्य ?

अत यह नितात आवश्यक है कि अग्रेजी अको का प्रयोग प्रतिबधित कर राज कार्य मे हिन्दी (देवनागरी) अको का प्रयोग ही किया जाय।

न्यायालय मे अग्रेजी भाषा क्यो ?

धारा ३४८ मे प्रावधान है कि उच्चतम व उच्च न्यायालयो मे सभी कार्यवाहिया अग्रेजी मे होगी। मुगलकाल मे न्यायालय की भाषा फारसी रखी गई ब्रिटिश काल मे अग्रेजी ने फारसी स्थान ले लिया। फिर आज अग्रेजी का स्थान हिन्दी क्यो नहीं ले सकती। रूस चीन जापान अरब टर्की आदि देशो मे न्यायालय की भाषा अग्रेजी नही है। उनकी अपनी भाषा मे न्याय दिया जाता है। भारत मे हिन्दी को न्याय देने मे न्यायालय भी अन्याय का सहारा ले रहा है – यह कितना खेदजनक है।

भाजपा ने भी हिन्दी को निराश किया

भाजपा नेतृत्व की केन्द्र सरकार से हिन्दी प्रेमियो को जो आशाए थी वे भी धूलधूसरित हो चुकी है। सत्तारूढ होते ही National Governance का अभिपट लगाकर विदेशी प्रचार माध्यमो को यह दर्शाया गया कि हम उतने ही अग्रेजी भक्त है जितने नेहरुजी थे। भाजपा के सभी सगठनात्मक आयोजनो मे 1, 2, 3 9 को मान्यता मिल चुकी है वहा हिन्दी तिथि ढूढना कठिन है।

रक्षा मत्रालय के राजकाल मे प्रथम बार रक्षामत्री मुलायम सिह जी ने हिन्दी को प्रवेश दिलाया था सयुक्त राष्ट्र सघ मे प्रथम बार हिन्दी प्रवेश श्री अटल बिहारी वाजपेयी (तत्कालीन विदेशमन्त्री) ने दिलाया था। उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी अको वाली सरकारी गाडिया जब दिल्ली नगर मे आई तो यातायात विभाग ने उनके चालान काटने की धमकी दी। अग्रेजी नम्बर प्लेट न होने पर दण्ड मिलता है दिल्ली की सडको पर घूमने वाले वाहनों को। यदि वे नम्बर प्लेट गुरुमुखी तमिल या अन्य किसी प्रादेशिक भाषा लिपि मे हो तो चालान नहीं किया जाता। केवल हिन्दी अको पर ही चालान करने का कानून बनाया गया होगा यह कितना आश्चर्यजनक सत्य है ?

सकल्प दिवस

१४ सितम्बर को हिन्दी दिवस पर प्रत्येक वर्ष हिन्दी हमारा आह्वान करती है कि हम राष्ट्र की आत्मा की प्रतिध्वनि को समझे राष्ट्रभाषा को उसका खोया हुआ वैभव प्राप्त कराये। जिस प्रकार अग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन चलाया गया उसी प्रकार अग्रेजी हटाओ हिन्दी लाओ' आन्दोलन करने का निश्चय दोहराने का स्मरण बार बार हिन्दी दिवस करता रहेगा।

पृष्ठ ८ का शेष

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्यसमाज की देन

इस युग के कवि शृगार रस की कविता लिखने से डरने लगे थे। यही कारण है कि मैथिली शरण गुप्त नाथूराम शकर तथा इस युग के अन्य कवियो के काव्यो मे राष्ट्रप्रेम राष्ट्रोद्धार समाज सुधार आदि की भावनाए विपुलता से पाई जाती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज ने सुधारवादी मार्ग अपनाते हुए बाल विवाह विधवा विवाह अनमेल विवाह छुआछूत आदि अनेक कुप्रथाओ के विरूद्ध आवाज उठाई। इन्हे अनुगामी साहित्यकारो ने भी अपनाया। मिश्र बन्धुओ ने लिखा है कि "अनेक भूलो और पाखण्डो मे फसे हुए लोगो को सीधी राह दिखाकर जो अपने समय मे महात्मा बुद्ध स्वामी शकराचार्य रामानन्द कबीर दास, बाबा नानक वल्लभाचार्य चैतन्यमहाप्रभु और राममोहन राय ठौर ठौर कर गए हम आर्यसमाजी नहीं है तो भी हमारी समझ मे ऐसा आता है कि हम लोगो को जो वास्तविक हित इस दृष्टि के प्रयत्नो द्वारा हुआ और होना सम्भव है उतना उपर्युक्त महात्माओ मे से बहुतो ने नही कर पाया। वैष्णव व रामभक्त मैथिलीशरण गुप्त की भारतभारती में स्वामी जी के प्राय सभी सुधारो का वर्णन है तभी तो दिनकर ने कहा है कि "साकेत के राम तो स्वामी दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का नारा लगाते हैं।"

हिन्दी को आरम्भ से ही राष्ट्रभाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास उन्होने किया। आप विदेशियो को भी हिन्दी मे पत्र लिखने का अनुरोध करते थे। मदाम ब्लैवेटस्की को लिखा था कि जिस पत्र का हमसे उत्तर चाहते हो वह हिन्दी मे लिखा करे। कर्नल अल्काट को हिन्दी सीखने को प्रेरित किया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी लिखा था कि "अब भी वेदपाठी के लिफाफे के ऊपर देवनागरी नही लिखा गया।"

आपने हिन्दी शैली का परिष्कार भी किया। पूर्व मे तो शैलिया प्रचलित थीं। (१) राजा लक्ष्मण सिह की शैली जिसमे तत्सम् शब्दो पर बल था। (२) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की शैली जिसमे उर्दू शब्दो पर बल था। स्वामी जी ने जनता तक अपनी आवाज पहुचाने के लिए अपनी भाषा मे स्पष्टता ओज विशदता तथा पाठको को प्रभावित करने के गुणो का खूब प्रदर्शन किया। कुछ लोग कहते हैं कि विरोधियो को चुप कराने हेतु आप लक्कड तोड भाषा का प्रयोग करते थे। किन्तु तात्कालिक सामाजिक बुराईयो के नाश के लिए स्वामी जी ने ऐसी कठोर भाषा का प्रयोग करने के साथ ही साथ साधारण क्षणो मे सरल सुबोध व प्राजल भाषा का प्रयोग किया। तत्सम और तद्भव दोनो प्रकार के शब्दो का प्रयोग किया। तत्सम ओर तद्भव दोनो प्रकार के शब्दो का प्रयोग करते हुए अनेक प्राचीन शब्दो को पुन हिन्दी को लौटाया। उन्होने हिन्दी को केवल बोझिल व विद्वतगण की भाषा नही बनने दिया। उनकी भाषा मे न तो गवाह निर्वासित हुआ और न ही कलक्टर शब्द को धक्का लगा।

डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार "आर्यसमाजी की भाषा से हिन्दी भाषा मे एक नइ शैली का प्रतिपादन हुआ इससे भाषा मे गहन से गहन विषयो पर भी वाद विवाद करने की शक्ति आ गई। आर्यसमाज के कारण व्याख्यानो की धूम मची इससे हिन्दी भाषा का समस्त उत्तर भारत मे प्रचार हुआ। इस प्रकार हिन्दी गद्य शैली का विकास हुआ यह निर्विवाद है।

सस्कृति के वैदिक तथा शास्त्रीय साहित्य को भी अनुवाद द्वारा हिन्दी मे सुलभ किया गया।

आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्यकारो का विवरण इस प्रकार है –

आर्य उपन्यासकार पण्डित गौरी दत्त मुन्शी प्रेमचन्द डॉ० अशोक आर्य सुदर्शन धनीराम द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण सत्यदेव परिव्राजक बलराज साहनी भीष्म साहनी यशपाल श्रीमती सत्यवती मल्लिक श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरिक्सा।

आर्यसमाज के निबन्ध लेखक कालीचरण पण्डित मोहन लाल विष्णु लाल पण्डया प० रूद्रदत्त शर्मा प० पदमसिह शर्मा डॉ० हरिशकर शर्मा वेदक कृष्ण प्रसाद गौड बेढब डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल डॉ० नगेन्द्र डॉ० सत्यदेव डॉ० विजयेन्द्र स्नातक डॉ० मुन्शीराम शर्मा सोम डॉ० धर्मवीर भारती श्री क्षेमचन्द्र सुमन।

आर्यसमाज के नाटककार प० रूद्रदत्त शर्मा नारायण प्रसाद बेताब तुसलीदास शैदा मुन्शी प्रेम चन्द श्री सुदर्शन हरिशकर शर्मा आ० चतुरसेन शास्त्री श्री चन्द्रगुप्त विद्यालकार इन पक्तियो के लेखक डॉ० अशोक आर्य ने भी कुछ एकाकी लिखे।

आर्य गद्यकार आचार्य चतुरसेन आचार्य अभयदेव विद्यालकार देवदूत विद्यार्थी।

आर्यसमाज के समीक्षक (सैद्धान्तिक) – प० शालीग्राम शास्त्री प० उदयवीर शास्त्री डॉ० हरिदत्त शास्त्री आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री प० क्षेमचन्द्र सुमन डॉ० नगेन्द्र (व्यवहारिक समीक्षा) तुलनात्मक समीक्षा पद्धति के जन्मदाता पद्म सिह शर्मा डॉ० मुन्शीराम शर्मा डॉ० विजयेन्द्र स्नातक डॉ० सरयुप्रसाद अग्रवाल डॉ० सुरेश कुमार विद्यालकार डॉ० हरदेव बाहरी।

आर्य समाजी टीकाकार प० पदम सिह शर्मा डॉ० बाबू लाल सक्सेना डॉ० वासुदव शरण अग्रवाल।

इतिहासकार आर्यसमाजी डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री आचार्य चतुरसेन शास्त्री डॉ० विजयेन्द्र स्नातक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन डॉ० हरिवश कोछड डॉ० धर्मवीर भारती डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० नागेन्द्र।

आर्य समाज के तुलनात्मक साहित्य लेखक डॉ० भर्ग सिह डॉ० विजयवीर विद्यालकार ओमप्रकाश विद्यालकार ओम प्रकाश वेदालकार चन्द्रभाणु सोणवणे डॉ सुरेश कुमार विद्यालकार प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु डॉ० भवानीलाल भारतीय।

हिन्दी के आर्यसमाजी कवि मुन्शी केवल कृष्ण चारण उमरदान कवि कुमार शेर सिह वर्मा प० बलभद्र मिश्रा प० बाबूराम शर्मा सेठ मागी लाल गुप्त कविकिकर नाथू राम शकर बद्रीदत्त शर्मा जोशी नारायण प्रसाद बेताब ठाकुर गदाधर सिह लोकनाथ तर्कवाचस्पति स्वामी आत्मानन्द श्री कर्णकवि स० जसवन्त सिह टोहानवी भूरा लाल व्यास हरिशकर शर्मा विद्याभूषण विभू, प० चमूपति प० बुद्धदेव विद्यालकार प० वागीश्वर विद्यालकार प० दुलेराम काराणी प० राम प्रसाद बिस्मिल प० विश्वम्भर सहाय प्रेमी राजकुमार रणवीर सिह प० अनूप शर्मा प० सिद्धगोपाल कविरत्न प० भद्रजित चन्द्र श्री हरिशरण श्रीवास्तव मराल प० धर्मदत्त विद्यावाचस्पति राजा रणन्जय सिह डॉ० सूर्यदेव शर्मा गायत्री देवी डॉ० मुन्शी लाल शर्मा सोम प० प्रकाश चन्द्र कविरत्न प० सत्यकाम विद्यालकार स्वामी सत्यप्रकाश प० अखिलेश शर्मा प० लक्ष्मीनारायण शास्त्री (नारायण मुनि चतुर्वेदी) प० विद्यानिधि शास्त्री राम निवास विद्यार्थी डॉ० सुशीला गुप्ता कृष्णलाल कुसुमाकर प० रमश चन्द्र शास्त्री रामनारायण माथुर (स्वामी ओम प्रेमी) प्रो० उत्तम चन्द शरर प० ओकार मिश्र प्रणव डॉ० मदन मोहन जावलिया प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु कु० सुख लाल आर्य मुसाफिर कु० जोरावर सिह प्रभा देवी राधेश्याम आर्य।

आत्मकथा लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भवानी दयाल सन्यासी प० नरेन्द्र जी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती स्वामी वदानन्द भाई परमानन्द सत्यव्रत परिव्राजक देवेन्द्र सत्यार्थी प० गगा प्रसाद उपाध्याय गगाप्रसाद जज आचार्य नरदेव प० राम प्रसाद बिस्मिल म० नारायण स्वामी प० इन्द विद्यावाचस्पति सन्तराम बी०ए० पृथ्वी सिह आजाद आचार्य रामदेव सत्यव्रत सिद्धान्तालकार प० रूचिराम डॉ० भवानी लाल भारतीय प० युधिष्ठिर मीमासक लाला लाजपतराय।

हिन्दी गद्य मे जीवनी लेखक आर्यसमाजी गोपालराव हरिदेशमुख चिम्मन लाल वैश्य सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी दयाराम मुन्शी रामविलास शारदा चौ० राय सिह स्वामी सत्यानन्द दीवानचन्द जगदीश विद्यार्थी (स्वामी जगदीश्वरानन्द) त्रिलोक चन्द आर्य म० आनन्द स्वामी प० मुनीश्वर देव भूदेव शास्त्री वैद्य गुरुदत्त डॉ० भवानी लाल भारतीय प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु डॉ० अशोक आर्य श्रीमती राकेश रानी विश्वम्भर प्रसाद शर्मा हरिश्चन्द्र विद्यालकार इन्दु विद्यावाचस्पति धर्मदेव विद्यावाचस्पति भारतेन्दु नाथ वेदानन्द तीर्थ श्रीराम शर्मा स्वामी वेदानन्द सरस्वती (दयानन्द तीर्थ) सत्यप्रिय शास्त्री डॉ० राम प्रकाश आचार्य विष्णुमित्र अलगूरायशास्त्री राम विचार भक्तराम डॉ० देशराज सत्यव्रत अवनीन्द्र कृष्णकान्त स्वामी श्रद्धानन्द प० शकर शर्मा वीरेन्द्र सिधु ईश्वर प्रसाद वर्मा धर्मवीर उषा ज्योतिष्मति स्वामी स्वतन्त्रानन्द देवी लाल पालीवाल डॉ० ब्रजमोहन जावलिया फतहसिह मानव दीनानाथ शर्मा परमेश शर्मा रघुवीर सिह शास्त्री पृथ्वी सिह आजाद ओमप्रकाश आर्य महावीर अधिकारी परमेश शर्मा भाई परमानन्द जगदीश्वर प्रसाद प० लेखराम।

हिन्दी मे सस्मरण, यात्रा वृतान्त शिकार कथा आदि के लेखक इनके अतिरिक्त है वास्तव मे हिन्दी साहित्य की सेवा के क्षेत्र मे आर्यसमाजियो के नामो की पूर्ण गणना कर पाना सम्भव नही है। इतना कहा जा सकता है कि हिन्दी लेखन क्षेत्र मे आर्य समाजियो की असीमित सख्या के अतिरिक्त ऐसे भी सैकडो नाम मिलेगे जो सीधे रूप मे आर्य समाजी न होते हुए भी आर्यसमाज से प्रभावित थे।

– आर्य कुटीर ११६ मित्र विहार मण्डी डबवाली (हरियाणा)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 15 9 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 12/13-9-2002

सूचना

आर्यसमाज के प्रखर प्रवक्ता एव प्रचारक डॉ० आनन्द सुमन जो कि विगत तीन वर्षो से अपनी सहधर्मिणी स्व० श्रीमती सरस्वती सिह के निधन के कारण कही प्रचार मे नही जा सके थे। अब पुन प्रचार [illegible] जुट गये है जा भी आयसमाजे उन्हे आमन्त्रित करना [illegible] सम्पर्क करे

डॉ० आनन्द सुमन
मानसरोवर १ छिब्बर मार्ग आर्यनगर, देहरादून
फोन ०१३५ ७४००६०

प्रतिष्ठा मे

10150 पुस्तकालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी वि०वि०
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

आचार्य चैतन्य जी को रामकृष्ण बेनीपुरी शताब्दी सम्मान

अनेक पुरस्कारो से सम्मानित आर्यजगत के अत्यधिक लोकप्रिय तथा सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता एव वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को उनके द्वारा की गई साहित्यिक एव सामाजिक सेवाओ के लिए 'रामकृष्ण बेनीपुरी शताब्दी साहित्यिक सम्मान' के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतन्य जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं तथा पत्र पत्रिकाओ मे इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हे परमात्मा ने आध्यात्मिक ग्रन्थ लिखने के साथ साथ साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा पर भी लिखने की सामर्थ्य व प्रतिभा प्रदान की है। इन्हे यह सम्मान जैमिनी अकादमी द्वारा आयोजित विशाल सम्मेलन मे हिन्दी दिवस वाले दिन प्रदान किया जाएगा।

– रोशनसिह चम्बयाल
सचिव उत्कर्ष कलाकेन्द्र सुन्दरनगर।

सार्वदेशिक सभा का स्तुत्य प्रयास

घर घर मे देश भक्ति और ऋषि भक्ति पहुचाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु "आजादी के दीवाने" कैसेट

केवल १५ रुपये में प्राप्त करें

इस कैसेट का निर्माण उ०प्र० के पुलिस अधिकारी श्री विद्यार्णव शर्मा तथा उनके ज्येष्ठ भ्राता पदमश्री भारत भूषण योगाचार्य जी के विशेष प्रयासो स करवाया गया है। इस कैसेट मे देश भक्ति और समाज सुधार की भावनाओ का समावेश किया गया है। स्वामी दयानन्द घर घर अलख जगाय गयो रे गीत ने तो स्वामी जी के देशभक्त अनुयायियो ने गुणगान करके श्रोताओं का रोम रोम पुलकित करने का सफल प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त रामप्रसाद बिस्मिल एव अशफाक उल्ला द्वारा फासी से पूर्व लिखे गये गीतो का भी इसम समावेश किया गया है।

इस कैसेट का प्रकाशित मूल्य ३०/– रुपये है। परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश भक्ति की भावनाओ और ऋषि के गुणगान का अधिकाधिक प्रचार करने के उददेश्य से इस कैसेट के मूल्य मे अपना आर्थिक सहयोग प्रस्तुत किया है।

यह कैसेट केवल १५ रुपये मे सार्वदेशिक सभा कार्यालय में उपलब्ध होगी। पैकिंग तथा डाक व्यय अलग होगा।

आर्य जनता से यह अपेक्षा की जाती है कि अधिक से अधिक सख्या मे इन केसेटो को प्राप्त कर के घर घर पहुचाए और ऋषि भक्ति का परिचय दे।

विमल वधावन *वरिष्ठ उप प्रधान*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

वर्ष ४१ अक २१ २२ सितम्बर से २८ सितम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ आ० कृ० १

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

मदर टेरेसा ने जो काम किया, देसराज चौधरी पहले से और काफी अच्छे तरीके से कर रहे थे – जार्ज फर्नांडिस

नई दिल्ली १७ सितम्बर। रक्षा मन्त्री जार्ज फर्नांडिस ने बेसहारा बच्चो को पोषण और उत्तम शिक्षा प्रदान करने को देश की महत्वपूर्ण सेवा बताते हुए आशा व्यक्त की है कि ये बच्चे २१ वीं सदी के शक्तिशाली और समृद्ध भारत की नींव बनेगे।

श्री फर्नांडिस ने यह बात आर्य अनाथालय आर्य बालगृह आर्य कन्या सदन और रानी दत्ता आर्य विद्यालय के वार्षिक उत्स्व पर आर्शीवाद के लहजे मे कल भेजे अपने सदेश मे कही। संस्था कुल के सचालक वीरेश प्रताप चौधरी को प्रेषित सदेश मे उन्होने कहा "बेसहारा बालक बालिकाओ की देखभाल मे आपकी सस्था का सराहनीय योगदान रहा है। मुझे विश्वास है कि यह सस्था इन बच्चो को ऐसा जिम्मेदार नागरिक बनाने मे सफल होगी जिन पर हर भारतवासी गर्व कर सके। मैं आपकी सस्था की उत्तरोत्तर सफलता की कामना करता हू।

इस अवसर पर जारी स्मारिका मे प्रकाशित एक अन्य उदगार मे रक्षा मत्री ने कहा "हमारे देश में बाहर से आकर कोई कुछ करता है तब हमारा ध्यान जाता है। मदर टेरेसा ने जो काम किया देसराज चौधरी काफी पहले से और ज्यादा अच्छे तरीके से कर रहे थे। मैं चाहता हू कि देश मे इस काम की पहचान बने।

जार्ज फर्नांडिस मुख्य अतिथि के रूप मे इस समारोह मे शिरकत करने वाले थे। परन्तु ताजा घटनाक्रम की वजह से अन्तिम क्षण पर व्यस्त हो जाने के कारण नहीं आ सके। वह इन सस्थाओ मे पहले दो बार आ चुके हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होने कहा कि पूरा ससार आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र है और इसका लक्ष्य मानव मात्र की सेवा करना है। भारत मे शुरू किए गये आर्य अनाथालय और विधवा आश्रम इस प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हैं।

तनाव ओर अशान्ति से मुक्ति पाने के लिए उन्होने एक सूत्र दिया जब भी तुम दुविधा मे हो तो खुद से यह सवाल करो कि अपने से कम सम्पन्न के लिए मैं क्या कर रहा हू। उन्होने जोर देकर कहा कि आर्य समाज हर वचित की राह से काटे हटा कर उसके मार्ग को निरापद बनाना चाहता हे।

विशिष्ट अतिथि राज्य सभा सासद भारतेन्द्र प्रकाश सिहल ने बच्चो को नसीहत की 'हर कठिन परिस्थिति मे तुम अतरात्मा की आवाज सुनना शरीर की आवाज पर ध्यान मत दना आत्मा कठिन रास्ता सुझाये तो स्वीकार कर लेना। शरीर सुविधा की ओर प्रेरित करेगा लेकिन याद रखना कि यह नश्वर है। उन्होने भरोसा दिलाया कि हर शरीर मे निवास कर रही आत्मा वास्तव मे परमात्मा का ही अश है। उनकी यह बात बडे ध्यान से सुनी गयी।

वीर अर्जुन के प्रधान सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र ने एक परिचय पुस्तक का लोकार्पण किया जिसमे आर्य अनाथालय की ८२ वर्ष की विकास यात्रा का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है। उन्होने सस्था के विकास के लिए अपने परिवार और वीर अर्जुन परिवार की ओर से दस हजार रुपयें की राशि भेट की।

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती में स्वर्ण पदक जीते

महर्षि दयानन्द युवा स्पोर्टस ऐसोसियेशन के नाम से चलाए जा रहे एक खेल सगठन की कुश्ती टीम दक्षिण अफ्रीका मे कुश्तियो की चैम्पीयनशिप से सफल होकर लौटी है। इस टीम ने दक्षिण अफ्रीका की इस खेल प्रतियोगिता मे कई स्वर्ण पदक भी जीते हैं। महर्षि दयानन्द के भक्त श्री अजीत सिह इस टीम के मैनेजर के रूप मे साथ गए थे। भारत वापस पहुचने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सभा कार्यालय मे पहलवानो के इस विजेता दल का स्वागत किया।

सभा कार्यालय मे आयोजित स्वागत समारोह मे खिलाडियो को सम्बोधित करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि खेल की भावना केवल खेल के मैदान मे ही नही अपितु हमारे दैनिक जीवन मे भी परिलक्षित होनी चाहिए। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने शरीर और आत्मा दोनो की उन्नति का आह्वान किया था। कुश्ती दल के पहलवान अपनी शारीरिक क्षमता को बढाकर जहा शरीर की उन्नति कर रहे हैं

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व में मॉरिशस यात्रा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे आर्यजनों का एक समूह मॉरिशस की धर्म प्रचार यात्रा पर रवाना हुआ। उनके साथ सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी भी सपत्नीक गए हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी भी दो दिन बाद मारीशस के लिए रवाना हुए।

मॉरिशस आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मोहन लाल मोहित जी का १००वा जन्म दिवस २२ सितम्बर को विशाल स्तर पर मारिशस मे मनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त कई अन्य प्रचार कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। यह प्रचार यात्रा २५ सितम्बर के बाद आर्यजनो के दिल्ली आने पर समाप्त होगी।

वृहद सत्यार्थ प्रकाश का पुनः प्रकाशन

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के अनुसार बृहद आकार का यह सत्यार्थ प्रकाश बहुत मोटे अक्षरो मे है तथा इसमे स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महाराज द्वारा लिखी गई कई टिप्पणिया भी प्रकाशित हैं। १३ ईंच लम्बा और १० ईच चौडा यह बृहद सत्यार्थ प्रकाश मजबूत गत्ते की कडी जिल्द में सजाया गया है।

इस सस्करण का प्रकाशन अत्यन्त उत्तम कागज पर किया गया है जिसके कारण इसका वजन २ किलो ७५० ग्राम एक प्रति हो गया है।

इस बृहद सत्यार्थ प्रकाश की कीमत २००/– रु० है जो १५ प्रतिशत छूट पर १७०/– रु० मे सार्वदेशिक सभा कार्यालय से प्राप्त होगा। इसका डाक व्यय अलग से देय होगा।

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पाठकों की अनमोल प्रतिक्रियाए

वर्तमान युग के सच्चे तपस्वी

आदरणीय श्री आचार्य
आय तपस्वी सुखदेव जी

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र २५ अगस्त २००२ पृष्ठ ३ पर सभामत्री जी द्वारा हरिद्वार महासम्मेलन म आपकी निस्वार्थ सेवाओ से प्रभावित होकर आपको सम्मानित किया गया ह। इसके लिए हमारी ओर से व हमार समाज क सभी सदस्या की ओर स आपको शुभकामनाए प्रषित है।

आपने प्रवचन आदि कार्यो क लिए किसी प्रकार की दक्षिणा स्वीकार नही करन का सकल्प लिया है यहा तक कि कही भी किसी भी माध्यम स प्रवचन के लिए आने हेतु मार्ग व्यय तक नहीं लेने का सकल्प भी लिया है।

आप जसे निस्वार्थ समाज सेवी आर्यसमाज म ही क्या अन्य समाजो मे वर्तमान युग म बिरले ही मिल पाते है। आपम त्याग की भावना आयसमाज के प्रति कूटकूट भरी हुइ ह। इसके लिए वास्तव म आप सम्मान के योग्य है। हम आपकी किन शब्दों म प्रशंशा व सम्मान कर ।

मन्त्री आर्यसमाज जुरहरा
जिला भरतपुर (राज०)

धर्मान्तरण के विरुद्ध प्रधानमन्त्री को पत्र

बडादरा आर्यसमाज की ओर से प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का ध्यान धर्मान्तरण गतिविधियो की ओर विशष रूप से आकष्ट करते हुए कहा गया हे कि

(१) धर्मान्तरित व्यक्तियो को सम्बन्धित कटटरपन्थियो के भय से मुक्त कराके उनके मूल हिन्दू धम मे पुन प्रवेश का मार्ग खोल दिया जाय।

(२) धर्मान्तरण के लिए जिम्मेदार व्यक्तियो प कडी स कडी कार्यवाही की जाए

( ) भविष्य म ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इसक लिय कोइ ठोस कदम उठाया जाए।

इस प्रकार की घटनाए दिन प्रतिदिन प्रकाश म आ रही है ओर बढती ही जा रही हे। निसन्देह इसमे विदेशी ताकतो का भी हाथ है। धर्मान्तरण का यह षडयन्त्र योजनाबद्ध तरीके से चलाया जा रहा है। यदि यही क्रम चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दू अल्प मत म आजाएग। एक विभाजन का दद तो अभी हम भुला नही पाय ह ओर परिस्थितिया एसी निर्मित होती जा रही ह कि फिर स यह देश विभाजन के कगार पर आ कर खडा दिखाइ दे रहा ह।

आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली मे

शहीद चित्र प्रदर्शनी का आयोजन

दिनाक २६ से २६ सितम्बर २००२
प्रात ६ बजे से ४ बजे तक

प्रश्न मच

दिनाक २८ सितम्बर २००२
साय ४ ३० बजे से

आप सब से प्रार्थना ह कि समय पर पधार कर शहीदो को विनम्र श्रद्धाजलि दे और राष्ट्र अर्चना मे सहभागी बने। ✡✡

स्व० श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे विशेषाक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी की अध्यक्षता मे आयोजित पदाधिकारियो अन्तरग सदस्यो की एक विशेष बैठक मे स्व० श्री सूर्यदेव जी की स्मृति म आर्य सन्देश का एक विशेष अक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

स्व० श्री सूर्यदेव जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थापना काल से ही इस सभा के साथ जुडे रहे और उन्होने विभिन्न पदो पर रहकर आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा महामन्त्री भी रहे। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सर्वोच्च पद को सुशोभित करते हुए कई वर्षो तक इस महान सस्था के कुलाधिपति भी रहे। ७ नवम्बर १६६८ को वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री बने।

जो महानुभाव श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे विशेष सन्देश भेजना चाहे उनसे निवेदन है कि अपना सन्देश अधिकतम १०० १५० शब्दो मे लिखकर भेजे।

इस विशेषाक के लिए विज्ञापन भी आमन्त्रित किए गए है। जिनकी दरे एव आकार इस प्रकार है –

विशेषाक का आकार २०X३०/८
पूरा पृष्ठ (रगीन) ३१००/ रुपये
पूरा पृष्ठ (सामान्य) २१००/ रुपये
आधा पृष्ठ (सामान्य) ११००/ रुपये

श्री सूर्यदेव जी से सम्बन्धित विशेष चित्र यदि किन्ही महानुभावो के पास उपलब्ध हो तो उन्हे भी सभा कार्यालय मे भिजवाने का कष्ट करे। इस विशेषाक से सम्बन्धित सन्देश लेख तथा विज्ञापन **३० सितम्बर २००२** तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कायालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ मे अवश्य पहुच जाने चाहिए। – **वैद्य इन्द्रदेव** महामन्त्री

श्रद्धा, प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए

Be Positive Act Positive

दिल्ली में आर्य कार्यकर्त्ता कार्यशाला २ अक्तूबर को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के **वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन के अनुसार सारे देश के विभिन्न प्रान्तो मे** आर्य कार्यकर्ता कायशाला के आयोजन के लिए समस्त प्रतिनिधि सभाओ को प्रेरित किया जा रहा है। इसी श्रृखला म दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान म दिनाक २ अक्तूबर २ २ (बुधवार) को प्रात १ बजे स १ बज तक आर्यसमाज रमश नगर क सभागार मे एक आर्य कार्यकर्त्ता कार्यशाला (Work Shop) का आयोजन किया जा रहा ह।

इस कार्यशाला मे भाग लेने क लिए प्रत्येक आर्यसमाज को अपनी समाज की तरफ से यूनतम एक प्रतिनिधि भेजना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अन्य महानुभाव भी ज्ञानवधन ओर मार्गदर्शन प्राप्त करने की दृष्टि स कायशाला मे पधार सकते है।

प्रतिनिधियो स यह अपक्षित हे कि वे निम्न विषयो मे से किसी एक विषय पर सार गर्भित १०० शब्दो का प्रस्ताव तेयार करके अग्रिम रूप से इस कार्यशाला क आयाजको तक पहुचा द।

१ हमारी आर्यसमाज के तहत विशष प्रशसनीय धर्मप्रचार गतिविधिय की रूपरेखा ओर उनका प्रभाव या विपद परिणाम गच्चा महिलाओ ओर गरीब बस्तिया क लिए विशेष कायक्रम
२ आयसमाज भवनो का मदप्याग या दूसरा शब्दो म दुरुपयाग रचना।
३ समाचार पत्रो मे प्रकाशित अच्छी सामग्री की प्रशसा और बुरी बाता की निन्दा करत हुए समाचार पत्रो को पत्र।
४ आर्यसमाज की साधारण सदस्यता ओर सभासद की योग्यताओ मे अन्तर।
५ साप्ताहिक सत्सगो की रूपरेखा विभिन्न विषयो पर आधारित प्रवचन।
सगठनात्मक सुदृढता (त्रिस्तरीय सगठन के ढाचे का मजबूत बनाना)।
७ आयसमाज को राजनीतिक प्रभाव स मुक्त रखना।
आर्यसमाज सदस्यता व्यक्ति पर नही अपितु परिवार पर केन्द्रित/पूरा आर्य समाज एक बृहद परिवार कैसे बने ?

माननीय प्रतिनिधि गण जिस विषय पर भी अपने विचार तेयार करके उपलब्ध कराएगे उन्ही का कार्यशाला मे प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया जाएगा।

आर्यसमाज के सगठन मे श्रद्धा प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम सकारात्मक बुद्धि को अपनाए। दूसरे लोग क्या कार्य नहीं कर रहे इससे अधिक हमे इस बात को प्रस्तुत करना चाहिए कि हम स्वय क्या कर रहे है ? हमार काय दूसरा की प्रेरणा बन सके इससे बडा सौभाग्य अन्य कुछ नहीं हा सकता। आप ओर आपकी आर्यसमाज के सदस्य इस सौभाग्य का प्राप्त कर ओर २ अक्तूबर को आयाजित इस कार्यशाला मे अपने प्रतिनिधि क माध्यम स इस विशाल सगठन को सुदृढ बनाए रखने मे सहयोग करे।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा प्रधान (२३७१६१५) — **वेद्य इन्द्रदेव** महामन्त्री (३६५१२८५) — **नरेन्द्र आर्य (प०)** सयोजक (५४५७७५५)
पतराम त्यागी (पू०) (२४६२३२१) **रवि बहल (पू०)** (२४१२४२६)
राजीव भाटिया (को०) (३७४२२५१) **सत्येन्द्र मिश्रा (द०)** (६५४६७७४)
रोशन लाल गुप्ता (द०) (२४११७४०) **पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (द०)** (६८३४८२२)
राजेन्द्र आनन्द (उ०प०) (७४४४३) **भजन प्रकाश आर्य (उ०प०)** (७०१७७८०)
गोपाल आर्य (उ०) (३६७१२४६) **शशि प्रभा आर्या** (महिला) ५४३६८२८

नोट –
१ अपनी आर्यसमाज के प्रतिनिधि महानुभाव तथा कार्यशाला मे भाग लेने वाले अन्य सदस्यो के नाम पते और दूरभाष न० तुरन्त सयोजक को लिखवा दें।
२ इस आयोजन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधियो को नोट बुक पैन वहीं पर प्रदान किया जाएगा।
३ कार्यक्रम के उपरान्त समस्त प्रतिनिधियो और उनके साथ आने वाले अन्य महानुभावो का प्रबन्ध स्वागतकर्ता आर्यसमाज रमेश नगर के द्वारा ही किया गया है।

एक श्रद्धांजलि – प० धर्मदेव निरुक्ताचार्य को

हमे खेद के साथ आर्य जगत को यह सूचित करना पड रहा है कि प० धर्मदेव निरुक्ताचार्य का ६ सितम्बर २००२ को अजमेर मे निधन हो गया है। वे ८६ वर्ष के थे।

श्री धर्मदेव जी स्वर्गीय प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के प्रमुख शिष्यो मे से एक थे। उन्होने युवावस्था मे ही आर्ष ग्रन्थो के पठन पाठन का व्रत लिया था जिसे जीवन भर निभाया। गुरुकुल देवरिया के आचार्य 'वेदवाणी' के सम्पादक महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के व्यवस्थापक और गुरुकुल करतारपुर के भी आचार्य रहे। श्री स्वर्गीय धर्मदेव जी ने अपने जीवन का एक बडा हिस्सा श्री जिज्ञासु जी और आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान प० युधिष्ठिर जी मीमासक के सान्निध्य मे रहते हुए वैदिक अनुसधान कार्य मे बिताया वहीं अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में वैदिक यन्त्रालय से जुडे रहे। अजमेर मे उनका सान्निध्य अपने सहपाठी और प्रिय मित्र स्वर्गीय प० भद्रसेन जी आचार्य के साथ भी रहा। श्री धर्मदेव जी का निधन आर्य जगत् की एक और क्षति के रूप मे देखा जाएगा।

मार्क्सवादी समीक्षक डा० नामवरसिंह द्वारा

1

महर्षि दयानन्द की मिथ्या आलोचना

— डॉ० भवानीलाल भारतीय

कोई मार्क्सवादी तथा साम्यवाद के प्रति आस्था रखने वाला दयानन्द के प्रति श्रद्धा क्यो रखे ? उस पर तुर्रा यह कि डॉ० रामविलास ने स्वामीजी की प्रशसा मे कोई कसर नहीं रखी। वे स्वामीजी को देशज प्रतिभा के धनी मानते हैं तथा उनका दावा है कि नवजागरण की क्षमता इसी देश (भारत) मे विद्यमान थी। यह जागरण अग्रेजी राज्य के समर्थन के द्वारा नहीं अपितु उसके विरोध के उपरान्त भी होकर रहा। दयानन्द जैसे नवजागरण के सूत्रधार के उत्कट देश प्रेम ने भारत के भावी विकास (प्रगति) के मार्ग को सुनिश्चित कर दिया। भला एक कटटर मार्क्सवादी को दयानन्द का यह स्तुति गान कैसे सुहाता ?

मार्क्सवाद और प्रगतिशीलता के अलम्बरदार जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के हिन्दी विभाग से सम्बद्ध डॉ० नामवरसिह ने जब अपने ही एक अग्रज साथी और हमसफर स्व० रामविलास शर्मा की समीक्षा शैली की आलोचना करना आरम्भ किया तो खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे की किवदन्ती चरितार्थ हुई। पाठक जानते हैं कि हिन्दी के प्रगतिशील समीक्षको मे डा० रामविलास शर्मा का नाम कितना ऊचा है। उनकी विशेषता यह रही कि माक्सवाद तथा द्वन्दात्मक भौतिकवादी विचारधारा से प्रतिबद्ध होने पर भी उन्होने भारत की उदात्त परम्पराओ एव गौरवमयी सस्कृति को कभी नकारा नहीं। गगा और यमुना के जल की शीतलता तथा पवित्रता को विस्मृत कर उन्होने वोल्गा का वृथा गुणगान नहीं किया। इसके विपरीत उन्होने हिन्दी साहित्य मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रेमचन्द तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे भारतीयता से जुडे लेखको के अवदान को सदा प्रशसा की दृष्टि स देखा। उसक विपरीत पदे पदे मार्क्स लेनिन ओर स्टालिन की कसम खाने वाले डा० नामवरसिह की दृष्टि मे वही साहित्य श्रेष्ठ है जो साम्यवादी मूल्यो पर खरा उतरे।

मै अपनी बात को आगे बढाता हू। यह लेख लम्बा होगा और इससे पाठको के धैर्य की परीक्षा होगी। हिन्दी की आलोचना शीर्षक समीक्षा पत्रिका (त्रैमासिक) के अप्रैल जून २००१ के अक मे डा० सिह का इतिहास की 'शव साधना शीर्षक से एक लम्बा लेख छपा है। इसमे उन्होने डा० रामविलास शर्मा के इतिहास बोध की खबर लेते लेते आर्यसमाज स्वामी दयानन्द तथा वेदो पर भी कुछ भ्रामक कटाक्ष किए हैं। उन्हे शिकायत है कि गत शताब्दी के अन्तिम दशक की प्राय सभी पुस्तके ऋग्वेद से आरम्भ होती हैं। उनको बडी आपत्ति है कि डॉ० शर्मा ने भारतीय नवजागरण का आरम्भ ऋग्वेद से क्यो माना? वे तीखा व्यग्य करते हुए लिखते हैं — **भारतीय सस्कृति का गोमुख (मूल उत्स) ऋग्वेद है इसलिए शर्मा जी ने भी अपना विवेचन ऋग्वेद के कवि और काव्य शिल्प से किया है।**

हमारा निवेदन है कि डॉ० सिह को इस तथ्य के प्रति शका ही क्यो हुई कि भारतीय सस्कृति (कला साहित्य दर्शन अध्यात्म धर्म आदि सभी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं) का गोमुख ऋग्वेद (अन्य वेद भी) है। सस्कृति कला साहित्य समाज दर्शन अथवा यो कहें कि मानव जीवन से जुडी ऐसी कौन सी विद्या विधा या ज्ञान विज्ञान है जिसके मूल को वेदो मे नहीं देखा जा सकता। केवल काव्य या साहित्य को ही ले तो ऋग्वेद मे पाई जाने वाली काव्य छटा अलकार योजना रस निष्पत्ति विविध छन्दो का नाद सौन्दर्य शब्द शक्तियो का अनूठा प्रयोग वाग विदग्धता सभी कुछ वेदमन्त्रो मे मिलता है। निश्चय ही कालान्तर मे जब काव्य रचना आरम्भ हुई और श्रव्य एव दृश्य काव्य के रूप मे साहित्य का द्विधा विभाजन हुआ तो नाटय शास्त्र के आचार्य भरत ने स्पष्ट कहा — जग्राह पाठय ऋग्वेदात सामभ्योगीतमेव च यजुर्वेदादभियान रसानाथर्वणादपि (प्रथमाध्याय)

नाटक लेखको ने नाटको मे पाठय तत्त्व ऋग्वेद से लिया गीत शैली सामवेद से ग्रहण की यजुर्वेद से उन्होने अभिनय का तत्त्व लिया तथा रस तत्त्व को अथर्ववेद से ग्रहण किया। क्या आचार्य भरत का यह कथन मिथ्या है ? पूर्वाग्रही नाट्य समीक्षकों ने तो यहा तक कहा था कि सस्कृत नाटको पर ग्रीक नाटको का प्रभाव है किन्तु इस स्थापना को कभी स्वीकृति नहीं मिली।

डा० रामविलास शर्मा ने अपने ग्रन्थ मे वैदिक कवियो (मन्त्र द्रष्टा ऋषियो) के सौन्दर्यबोध की विवेचना की और इस प्रसग मे तुलसीदास के काव्य को उल्लिखित किया तो डॉ० सिह पुन भडक उठे। जब कहने के लिए कुछ अधिक नहीं मिला तो यही कहा कि तुलसीदास ने तो वेद से पहले लोक को याद किया है डॉ० शर्मा वेद को पहले क्यो लेते हैं ? उत्तर मे निवेदन है कि गोस्वामी ने भी लोक का निर्वाह करते हुए वेद को कभी पीछे नहीं रखा। उनके 'मानस' की कथा का मूल आधार ही 'नाना पुराण निगमागम सफत' इस कथन में निहित है। यह दूसरी बात है कि रामकथा का वेदो मे उल्लेख होना तो सम्भव ही नहीं था। तथापि तुलसीदास ने अपनी समझ के अनुसार यथासाध्य वेद की मर्यादा का निर्वाह किया। डा० सिह की दृष्टि मे यदि कोई विवेचना वेद से आरम्भ होती है तो 'लोक अक्सर छूट जाता है। यह उनकी एकागी जीवन दृष्टि है। भारतीय जीवनदर्शन मे लोक और वेद (लोक और शास्त्र) का तुल्य महत्त्व मिला है बल्कि वेद को ही वरीयता प्राप्त हुई है। लोकाचार भी वही प्रशस्त माना जाता है जो शास्त्र (वेद) सम्मत हो। डा० नामवरसिह को तो यही शिकायत हे कि डा० शर्मा तुलसीदास को पीछे रख कर ऋग्वेद की ओर क्या भागे ? और यह शिकायत अकले शमाजी से ही नहीं है उन सभी लेखको और सस्कृति–समीक्षको से है जो भारतीय जीवनदर्शन चिन्तन धर्म और अध्यात्म का मूल उत्स वेदो को मानते हैं।

साहित्य समीक्षक से हम यह अपेक्षा रखते है कि वह अपनी विवेचना को विशुद्ध साहित्यालोचना तक ही सीमित रखेगा और किसी कृति के गुणावगुणो की चर्चा समीक्षा के स्वीकृत मानदण्डो का आधार लेकर ही करेगा। किन्तु डा० सिह ऐसी किसी मयादा या सीमा रेखा से बधने वाले नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति मे उनके दिमाग मे मुलायम सिह नही नहीं सोमनाथ चट्टर्जी का भूत आ बैठता है और वे शर्मा जी द्वारा भारतीय नवजागरण की मीमासा को नजरअदाज कर ६ दिसम्बर १९९२ की घटना तथा 'रामलला के लाडले कारसेवको' को अपने व्यग्य बाणो का निशाना बनाते हैं। वे तथ्य और अतथ्य के अन्वेषण के पचडे मे न पडकर कथित मसजिद के ध्वस पर जार जार आसू बहाने लगते हैं।

(लेखक — नो कमेन्टस)

डॉ० रामविलास शर्मा ने भारतीय नवजागरण के चार प्रस्थान माने हैं — (१) ऋग्वेद (२) उपनिषद् (३) भक्ति का प्रादुर्भाव (४) १९वीं शताब्दी का धार्मिक सास्कृतिक जागरण। नामवर जी को आपत्ति है कि इसमे बुद्ध का कहीं जिक्र नहीं है। उनके विचार से शर्मा जी ने पूरी श्रमण परम्परा को ही बहिष्कृत कर दिया है। इस आक्षप का उत्तर तो यही हा सकता है कि प्रथमत बुद्ध के विचार तो ब्राह्मण धर्म मे आई विकृतियो की प्रतिक्रिया से ही उत्पन्न हुए हे। उनकी नैतिक और आचारमूलक अवधारणा वैदिक धर्म की एतदविषयक धारणा से कहा भिन्न है ? धम्म पद और गीता एव मनु के नैतिक उपदेशा मे अपूर्व समानता है। फिर हम यह क्यो भूले कि बुद्ध की क्रान्ति को कालान्तर मे हुए ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान ने पूरा कर पूरा लील लिया था। बाद्ध धर्म तो अपने ही भिक्षुओ और सघाश्रमो म व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण समाप्त हुआ। बुद्ध स्वय विष्णु क नवे अवतार मान लिए गए।

स्वामी दयानन्द की आलोचना

यहा स आग डा० सिह स्वामी दयानन्द के प्रति अभिमुख हुए है। ऋग्वद को भारतीय नवजागरण का मूल स्रोत बताने पर डा० सिह अपनी आपत्ति व्यक्त करते हे ओर इसे बुनियाद परस्ती या फण्डामन्टलिज्म कहत हैं। उनके विचार से ऋग्वेद का भारतीय सस्कृति का उत्स मानन का विचार शर्मा जी को स्वामी दयानन्द से मिला। इससे आगे वे स्वामी दयानन्द की ओर अपना निशाना साधते है डा० शर्मा द्वारा स्वामी दयानन्द की प्रशसा करना सिह जी को रास नही आया। कोई मार्क्सवादी तथा साम्यवाद के प्रति आस्था रखने वाला दयानन्द के प्रति श्रद्धा क्यो रख उस पर तुर्रा यह कि डा० रामविलास ने स्वामीजी की प्रशस मे कोई कसर नहीं रखी। वे स्वामीजी के **देशज प्रतिभा** के धनी मानत है तथ उनका दावा है कि नवजागरण की क्षमत इसी देश (भारत) मे विद्यमान थी। यह जागरण अग्रेजी राज्य के समर्थन के द्वार नहीं अपितु उसके विरोध के उपरान्त भी होकर रहा। दयानन्द जैसे **नवजागरण के सूत्रधार के उत्कट देश प्रेम ने भारत के भावी विकास (प्रगति) के मार्ग को सुनिश्चित कर दिया।** भला एक कटटर मार्क्सवादी को दयानन्द का यह स्तुति गान कैसे सुहाता ? डा० रामविलास जी ने तो एक अन्य प्रसग मे यह भी लिखा था कि कतिपय इतिहासकारो द्वारा रचे गए इस मिथक (झूठी कल्पना) मे कोई सच्चाई नहीं है कि उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण मे अग्रेजी शिक्षा या पश्चिम का कोई हाथ था। स्वामी दयानन्द जैसे विशुद्ध सस्कृतज्ञ द्वारा जागरण का शखनाद करना भारत के इस नवोदय को खालिस स्वदेशी सिद्ध करता है।

क्रमश

मेंढ़की के जुकाम का उपचार (3)

— आचार्य भगवान देव चैतन्य

गताक से आगे

पढ लिख कर या ज्ञानवान न बन सकने के कारण शूद्र को सेवा का कार्य सौपा गया और महर्षि दयानन्द जी ने इस प्रकार के लोगो को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देते हुए अन्य वर्णो को आदेश दिया है कि — द्विज लोग इसके खान–पान वस्त्र स्थान विवाहादि मे जो कुछ व्यय हो सब कुछ देवे अथवा मासिक कर देवे महर्षि जी की मूल भावना को न समझने के कारण यदि लेखक को इन पक्तियो मे भी दोष दिखाई देता है तो क्या किया जा सकता है ? लेखक आगे लिखते हैं — उन्होने ब्राह्मणवादी किले के कुछ दरवाजो को शूद्रो के लिए खोल दिया लेकिन उस किले को ध्वस्त करने की जरूरत नहीं समझी। इसी क्रम में लेखक ने यहा तक कह दिया कि दयानन्द आमतौर पर उभरते हुए पूजीपति और शहरी भद्र वर्ग के प्रवक्ता थे। आम आदमी के दुख–दर्द को समझकर उसे दूर करने की दिशा मे अपना समूचा जीवन उत्सर्ग कर देने वाले व्यक्ति के बारे मे इस प्रकार की उक्ति कृतघ्नता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती है। उन्होने सदियो से बन्द पडे दरवाजो को खोल दिया क्या इसके लिए उनका कृतज्ञ नहीं होना चाहिए ? उन्होने दलित लोगो को आगे बढने के लिए क्रान्तिकारी विचार दिए एक आधार दिया और प्रगति के दरवाजे खोल दिए मगर अपने परिश्रम और ज्ञान तथा सस्कारो के आधार पर दलितो ने जिस किले को ध्वस्त करना था वे नहीं कर पाए। उसके बहुत से कारण है मगर सबसे बडा कारण है दलित या अछूत ही बने रहने की मानसिकता को पल्वित और पोषित करना। आज भी दलित शब्द का प्रयोग करने मे कुछ लोग गौरव का अनुभव करते है यह बडे आश्चर्य की बात है। दलित मन दलित सस्कृति दलित समाज आदि शब्दो को बनाए रखना तथा स्वय भी दलित ही बने रहने की कारा मे बन्धे रहने वाले लाग भला उस किले को कैसे ध्वस्त कर सकेगे ? यह दुर्भाग्य की बात है कि अपनी लीडरी चमकाने तथा अपनी अलग पहचान बनाए रखने की भावना के कारण कुछ लोग आज भी समाज के इस वर्ग को जस का तस बनाए रखने के प्रयास मे जुटे हुए है। यह निश्चित बात है कि केवल आरक्षण आदि की वैसाखियो के सहारे तथा अपनी दलित बने रहने की पहचान बनाए रखने और तथाकथित लीडरो के बहकावे मे आने से ये प्रताडित और पिछडे लोग आगे नहीं बढ सकते है। इसका आधार महर्षि जी ने पहले ही दे दिया है कि ज्ञान शिक्षा और सस्कार ही वे हथियार है जिनको आत्मसात करके इस किले की दीवारो को ध्वस्त किया जा सकता है। हमारा निवेदन है कि वैर–वैमनस्य अलगाववाद आदि से ऊपर उठकर एक सहयोगी भावना के साथ सभी वर्ण समाज मे समरसता का वातावरण पैदा करे जिससे व्यक्ति समाज और राष्ट्र का चतुर्दिक विकास हो।

एसा समरसता का वातावरण निर्मित करने मे बुद्धिजीवी नेता तथा आध्यात्मिक महापुरुष अपनी अहम भूमिका निभा सकते हैं मगर उनके चिन्तन का स्तर स्वार्थ और पूर्वाग्रह से मुक्त होना जरूरी है। यह भी जरूरी है कि वे ऐसे विवादास्पद मुद्दो को उठाने से परहेज करें जिससे अनावश्यक रूप से कटुता पैदा हो। हमे अपने पूरे प्रयास से उस भूमि को और अधिक दृढता प्रदान करनी चाहिए जिससे कि आज जाति पाति का कलक जडमूल से उखड सके। लेखक अपनी पुस्तक मे नियोग की बात किस आशय से उठाकर अत्यधिक घृणित शब्दो मे कटुता पैदा करने का प्रयास कर रहा है यह बात समझ से परे की है। नियोग को उन्होने इस रूप मे विवेचित किया है मानो वह कोई आम प्रचलित व्यवस्था रही हो। नियोग की अनुमति किन आपात परिस्थितियो या योग्यता–अयोग्यता के आधार पर अपेक्षित है इस बात को लेखक ने समझते हुए भी मानो जानबूझकर दरकिनार किया है क्योकि उनका लक्ष्य तो कुछ और ही है। क्योकि उनके अनुसार नियोग एक पवित्र और आपात सामाजिक व्यवस्था न होकर जार कर्म है इसी लक्ष्य को लेकर वे अपनी मानसिक कल्पना से द्विज सस्कृति और शूद्र सस्कृति की चर्चा करते हुए इसे जार सस्कृति और गैर जार सस्कृति के रूप मे प्रस्तुत करते है। नियोग व्यवस्था के बारे मे पूर्ण तथ्यो पर विचार न करने तथा द्विज सस्कृति को जार सस्कृति सिद्ध करने के पूर्वाग्रह ने लेखक को भ्रमित किया है। लेकिन कबीर जी का जन्म साहित्यकारो द्वारा किसी विधवा के गर्भ से हुआ बताया गया है अत अब यह लेखक ने ही सिद्ध करना है कि वह नियोग था जार कर्म था या व्यभिचार था। कबीर के कुछ भक्तो का मानना है कि कबीर जी ब्रह्मचारी साधक थे कुछ का कहना है कि उनके लोई नाम की पत्नी थी। लोई के बारे मे भी कई प्रकार की किवन्दतिया है। कुछ लोगो का कहना है वह लोई मे लिपटी एक कन्या थी जिसे कबीर ने पाला और जवान होने परउसी से (अनमेल) विवाह कर लिया। कुछ कहते है कि वह पहले कबीर जी की शिष्या थी तब बाद मे उन्होने उसे ही अपनी पत्नी बना लिया। डॉ० रामकुमार वर्मा जी के अनुसार कबीर जी के दो पत्निया थी तथा उनमे से एक वैश्या थी। यह भी कहा जाता है कि लोई को कुरूप होने के कारण कबीर जी ने त्याग दिया था। लोई से उनके कमाल और कमाली नाम की दो सन्ताने भी थीं मगर कबीर जी का गृहस्थ सुखी नहीं था। कमाल से वे दुखी थे — डूबा वश कबीर का उपजा पूत कमाल। पत्नी से भी असतुष्ट रहे — 'जादि का भाई जनमिया कहू न पाया सुख। डाली–डाली मैं फिरौ पाती–पाती दुख। 'कबीर जी के बारे मे विस्तार से इसलिए लिखना अपेक्षित था ताकि हम उनके जीवन तथा दर्शन को तथ्यो के आधार पर समझ सकें क्योकि लेखक के अनुसार 'उन्होने वेद से भिन्न अलग धर्म और जार कानून से भिन्न अलग कानून की दलित परम्परा को निभाया।

दलित परम्परा के दिग्दर्शन के बाद अब हम जिन्हे नियोग मे व्यभिचार वैश्यागमन और पाप मालूम पडता है उनके सामने महर्षि जी द्वारा दिया गया तर्क प्रस्तुत करते हैं कि अगर ऐसे सोचने लगे तो विवाह भी एक तरह का व्यभिचार ही लगेगा मगर कुवारी कन्या और युवक का सभोग करना व्यभिचार माना जाता है तथा जब एक सामाजिक व्यवस्था के तहत उनका विवाह करके वे सभोग करते है तो उसे व्यभिचार नहीं माना जाता है। नियोग भी एक सामाजिक व्यवस्था है इसलिए उसे व्यभिचार नहीं जा सकता है। उसी प्रकार वैश्यागमन मे कोई सामाजिक नियम नहीं बनाया जाता इसलिए वह तो पाप है मगर नियोग तो एक सामाजिक व्यवस्था है इसलिए इसे व्यभिचार नहीं कहा जा सकता है। महर्षि जी इस सम्बन्ध मे लिखते है कि नियोग तो पाप रोकने मे सहायक है। उनका कथन है कि समाज मे जो छुप–छुप कर व्यभिचार होता है भ्रूणहत्या आदि होती है उसे रोकने के लए समाज मे नियोग की व्यवस्था को मान्यता दी गई थी। यह जार कर्म नही था बल्कि — व्यभिचार और कुकर्म को रोकने का एक यही श्रेष्ठ उपाय है कि जो जितेन्द्रिय रह सके वे विवाह वा नियोग भी न करे तो ठीक है। परन्तु जो ऐसे नहीं हैं उनका विवाह और आपातकाल मे नियोग अवश्य होना चाहिए। इससे व्यभिचार का न्यून होना प्रेम से उत्तम सतान होकर मनुष्यो की वृद्धि होना सम्भव है और गर्भहत्या सर्वथा छूट जाती है। नीच पुरुषो से उत्तम स्त्री और वेश्यादि स्त्रियो से उत्तम पुरुषो का व्यभिचाररूप कुकर्म उत्तम कुल मे कलक वश का उच्छेद स्त्री पुरुषो का सताप और गर्भहत्यादि कुकर्म विवाह और नियोग से निवृत होते हैं इसलिए नियोग करना चाहिए। 'इस प्रकार यदि हम वास्तव मे देखे तो नियोग को लोगो ने जैसे बात का बतगड बना दिया है वैसा नहीं है बल्कि यह एक आपात व्यवस्था है और वह भी उनके लिए जो ऐसा चाहते हो अन्यथा वे जितेन्द्रिय रहे तो अच्छा है। ऋ०भा०भू० मे भी महर्षि जी लिखते हैं कि यदि सतान प्राप्ति आदि की इच्छा न हो तो न करे। अन्यत्र कहते है — 'जो स्त्री–पुरुष ब्रह्मचर्य मे स्थिर रहना चाहे तो कोई भी उपद्रव न होगा और कुल की परम्परा रखने के लिए किसी अपने स्वजाति का लडका गोद ले लेंगे इससे कुल चलेगा और व्यभिचार भी न होगा और जो ब्रह्मचर्य न रख सकें तो नियोग करके सतान उत्पन्न कर लेवें।

— शेष भाग पृष्ठ ६ पर

एक लघु ग्रन्थ सांध्य-योग – प्रकाश

1

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

– भगवन्त सिंह कपूर

ब्रह्म-यज्ञ

ब्रह्म – यज्ञ अर्थात वह यज्ञीय कार्य जो ब्रह्म मुहूर्त मे ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किया जाए। व्यक्तिगत साधना की उत्तम विधि यह ब्रह्म–यज्ञ या वैदिक–सध्या योग के आठो सोपान चढने का भावनात्मक अभ्यास है। यह मोक्ष के अभिलाषी मानव मात्र के लिए अति आवश्यक है। मोक्ष प्रभु से योग या परमानन्द का सानिध्य मात्र मानव–योनि – जो कर्म–योनि है मे ही सम्भव है अन्य किसी भी भोग–योनि मे नहीं। मनुष्य मात्र को आत्मोन्नति के लिए अति आवश्यक पच–महायज्ञ निर्देशित है। ब्रह्म–यज्ञ देव–यज्ञ मात्रपित्रयज्ञ अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ। इनमे से एक ब्रह्म–यज्ञ या 'साध्ययोग ही व्यक्तिगत साधना का है शेष चार तो सामाजिक यज्ञ है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा की उन्नति के लिए अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिए स्वय प्रयास करना पडता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष चाहे किसी भी सम्प्रदाय वर्ण या जाति का हो। किसी एक के लिए किसी अन्य का प्रयास लाभदायक नहीं हो सकता पति–पत्नी गुरु–शिष्य पिता–पुत्र यजमान–पुरोहित या विद्वान–अनपढ कोई भी एक दूसरे के लिए नहीं अपितु अपने स्वय के लिए ही प्रयास कर सकते है। ऋग्वेद का आदेश है **न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा** (ऋ० ४ ३३ ११)

प्रभु कोई देहधारी है जो कानो से सुनेगा मुख से बोलेगा या किसी भाषा विशेष का प्रयोग कर हमे कुछ सुनाएगा ? वह तो आप–हम सभी म व्याप्त है अत अन्दर ही हमारी भावनाए सुनेगा भावना मे ही प्रेरणा से बोलेगा। अतएव मानव मात्र की भावनाए ही उसकी भाषा है। उससे योग भी भावनात्मक ही होगा वह भी जब हम दोनो मे काल एव स्थान का अन्तर न रहे आत्म–प्रकाश हो अज्ञान एव अविद्या अन्धकार न हो। बस ऐसी ही सधि है प्रात एव साय की 'सन्ध्या अर्थात 'ब्रह्म–यज्ञ जो वेदमन्त्रो की भावना के साथ मौन स्थिर एव एकान्त मे सधिबेला मे की जाती है। यही उस सच्चिदानन्द प्रभु से मिलन की यौगिक विधि साध्ययोग प्रकाश है।

इसका विधान देव दयानन्द ने प्रभु–वाणी वेद का मथन कर १८+१ उन्नीस मन्त्रो की मणिमाला 'वैदिक सन्ध्या के रूप मे प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं स्वय सिद्ध योगी होने के नाते सर्वोच्च साधना पातजलि के राजयोग के अष्टाग यम–नियम से समाधि तक पहुचने हेतु, इन उन्नीस मन्त्रो का क्रम एव भिन्न भिन्न शीर्षक बताकर मनोभाव से

सन्ध्योपासना करने की विधि भी बताई। निसन्देह भौतिक अन्नमय कोष से उठ आत्मोन्नति कर पाचवे आनन्दमय कोष तक पहुचन की सरलतम विधि स्वानुभूत हो योगी–आनन्दकन्द–दयानन्द ने हम मनुष्यो के कल्याणार्थ ही बताई है।

अर्थात पचकोष सहित योग के अष्टाग साधकर आनन्दमय समाधि की सरलतम विधि ब्रह्मयज्ञ

वेद एवं वेदमन्त्र

वेद प्रभु की वाणी है। सृष्टि के आरम्भ मे ऋषिरूप मे उत्पन्न चार पुण्यात्माओ को प्रेरणा से प्रभु ने वेद ज्ञान दिया। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद जो ज्ञान–प्रधान है वायु को यजुर्वेद जो कर्म प्रधान है आदित्य को सामवेद जा उपासना–प्रधान है एव अगिरा को अथर्ववेद जो विज्ञान प्रधान है। चारो वेदो मे लगभग बीस सहस्र चार सौ मन्त्र और लगभग सात लाख अडसठ सहस्त्र शब्द है। प्रभु की वाणी होने से वेद स्वत प्रमाण है। इन ऋषियो ने प्रभु के इन आदेशो निर्देशो का काव्य रूप मे अन्य ऋषियो और मनुष्यो को उपदेश दिया। ससार–भर की सब विदयाए वेदो से ही निकली है। वेद मन्त्रो मे मानव मात्र को आदर्श जीवन के लिए आवश्यक आदेश दिए है। ससार मे चार पन्थो के मनुष्य है जो इस प्रकार है – १ – नास्ति पन्थाम – नास्तिक – प्रभु पर आस्था न रखन वाले। २ रास्ति पन्थाम – उदासीन – बस जीना है इसलिए जी रहे हैं। ३ आस्ति पन्थाम – आस्तिक – प्रभु पर आस्था रखने वाले। ४ स्वस्ति पन्थाम – आशावादी सु+आस्तिक धर्म अर्थ काम मोक्ष के साधक कल्याण मार्ग के पथिक।

ऐसे चौथे पन्थ के सत्य मार्गियो का इन विद्वान वेद–ज्ञानियो के सत्सग से मन्त्र आदेशानुसार ज्ञान–पूर्वक आचरण करने का निर्देश स्वय ऋग्वेद मे इस प्रकार दिया हे –

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सगमेमहि।।

ऋ० ५–५१–१५

अर्थात ऐसे स्वस्ति पन्थ के पथिक सूर्य चन्द्र के समान अहिसक ज्ञानियो दानियो ऋषियो के सत्सगति से प्राप्त वेद आदेश का ज्ञान पूर्वक आचरण करे।

इससे यह स्पष्ट है कि वेद मन्त्रा मे मात्र स्तुति व प्रार्थना ही नही अपितु किस प्रकार व्यवहार करना व ससार मे भौतिक साधनो व शरीर का सदुपयोग कर स्वस्ति पन्थ से मोक्ष प्राप्त करने का आदेश अर्थात उपासना का निर्देशन भी है। अत वेद रूपी निर्देशिका मे मन्त्रो के माध्यम से मानव–मात्र कल्याणार्थ तीन आदेश निहित है। जो इस प्रकार है –

१ **स्तुति** – प्रभु क गुणगान ताकि पवित्र गुणो का प्रचार व प्रसार हो अन्यथा प्रभु अपनी प्रशसा का भूखा तो नही है।

२ **प्रार्थना** – मनुष्य अल्पज्ञ अपूर्ण व आनन्दरहित है उसे ज्ञानप्राप्ति पूणता व आनन्द प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण से सहायता की प्राथना।

३ **उपासना** मन्त्रो मे अलकारिक भाषा मे भावात्मक आदेश है जो पालन करने स उसक समीप–उपासन के योग्य बनाता हे।

आदेशो–निर्देशो का आचरण मे लाना ही वेदमन्त्रो का मुख्य उद्देश्य है।

इस प्रकार प्रभु स्तुति गुणगान कर उन गुणो की प्राप्ति की प्रार्थना एव तदनुसार उन गुणो का या आज्ञा को जीवन मे धारण कर आचरण मे लाना ही मन्त्र की सिद्धि कहलाता है। वेदमन्त्रो मे इस शुद्ध ज्ञान कर्म व उपासना का विधान कर बहुधा अलकारिक दृष्टान्त के रूप मे समझाया गया है।

क्रमश

योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण

– उमाकान्त उपाध्याय

गताक से आगे

महाभारत का नेता

भगवददगीता के माहात्म्य मे एक श्लोक बडा प्यारा लगता है। किसा है कहा का है पता नहीं किन्तु कवि की कल्पना बडी प्यारी लगती है –

भीष्म द्रोणतटा जयद्रथजला गान्धार नीलोत्पला।
शल्य ग्राहवती कृपेण वहनी, कर्णेन वेलाकुला।।
अश्वत्थाम विकर्ण घोरमकरा, दुर्योधनावर्तिनी।
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवै रणनदी, कैवर्तक केशव ।।

महाभारत का युद्ध एक भयानक नदी थी। भीष्म और द्रोण उसके दोनो किनारे थे जयद्रथ जल और शकुनी कमल था। शल्य उसमे ग्राह कर्ण लहर अश्वत्थामा विकर्ण मगर दुर्योधन भवर था। ऐसी उफनती लहराती नदी को पाण्डव पार कर गए इसलिए कि इनकी नैया के खेवैया श्रीकृष्ण थे।

श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण परिदृश्य से हटा देने पर पाण्डव पक्ष अन्धकार मे डूब जाता है। श्रीकृष्ण न होते तो भीष्म की शरशय्या द्रोण–जयद्रथ–कर्ण–दुर्योधन का वध का क्या रूप बनता ? श्रीकृष्ण ने पाण्डवो की रक्षा की शत्रुओ का वध करवाया। युधिष्ठिर सिहासनारूढ हुए। अश्वमेघ यज्ञ हुआ। सैकडो राजघराने एक सम्राट के अन्दर आ गए। खण्ड–खण्ड विभक्त भारत वृहत्तर महाभारत बना यह सब श्रीकृष्ण के नेतृत्व के कारण हुआ। काबुल गान्धार से असम तक सम्पूर्ण भारत एक राष्ट्र महाभारत बन गया यह श्रीकृष्ण की ही सूझ बूझ थी।

राजनीतिक दृष्टि से राजनीति विज्ञान (Political Science) की दृष्टि से श्रीकृष्ण का महाभारत का निर्माण या युधिष्ठिर का अवश्वमेघ यज्ञ केवल सम्राट बनने की घोषणामात्र न था। श्रीकृष्ण ने एक सम्राट के झण्डे के नीचे एक सघशासन (Federal State) की स्थापना कर डाली थी। श्रीकृष्ण स्वय राजा न थे। किन्तु राजा के निर्माता अवश्य थे। उग्रसेन को कस वध के पश्चात राजा इन्होने बनाया था। जरासन्ध की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र सहदेव को मगध का राजा इन्होने बनाया था। युधिष्ठिर का राज भी तो इन्हीं का निर्माण था। युधिष्ठिर ने अश्वमेघ यज्ञ किया वे सम्राट भी हुए किन्तु श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के साम्राज्य को सघीय स्वरूप दिया। युधिष्ठिर के साम्राज्य का प्रत्येक राज्य अपनी आन्तरिक रीतिनीति परम्परा व्यवस्था आर्थिक विकास शिक्षा सभ्यता रहन–सहन मे पूर्ण स्वतन्त्र था। यह प्रत्येक राज्य की आचलिक स्वायत्तता के साथ सम्पूर्ण भारत वर्ष का एक राष्ट्र मे आबद्ध कर महाभारत बनाने की योजना श्रीकृष्ण का राजनीतिक उद्देश्य था। यह उनका महाभारत बनाने का नेतृत्व था। इसमे अर्जुन उनका सबसे बडा सहायक मित्र शिष्य था। अर्जुन अद्वितीय योद्धा उनका दाहिना हाथ था। कृष्ण सोचते थे अर्जुन कार्य रूप मे परिणत कर देता था। श्रीकृष्ण योजना और ज्ञान थे तो अर्जुन कर्म था। यह ज्ञान और कर्म की जोडी थी जिसन महाभारत को वास्तविकता मे रूपायित किया।

श्रीकृष्ण का सन्ध्या वन्दन

महाभारत का युद्ध खडा दिखायी पड रहा था। दुर्योधन अपनी अनीति पर डटा था। धृतराष्ट्र–भीतर–भीतर हृदय से दुर्योधन के साथ था। भीष्म द्रोण विदुर ये सब दुर्योधन को समझाने मे असमर्थ थे। अत श्रीकृष्ण ने पाण्डवो की ओर से सुलह समझौता कराने के लिए दूत बनकर हस्तिनापुर जाने का निश्चय किया। हस्तिनापुर के रास्ते मे सन्ध्या हो गई तो कृष्ण ने रात रास्ते मे काटने का निश्चय किया। वहा इन्होने सन्ध्या की –

अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौच यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह।।

उद्यो० ८२–१

श्रीकृष्ण रथ से उतर कर रथ खोलने का आदेश देकर विधिपूर्वक शौच आदि से निवृत्त होकर सन्ध्या करने के लिए बैठे।

एक और घटना ध्यान देने योग्य है। चक्रव्यूह के युद्ध का दिन था। सशप्तको ने अर्जुन को ललकार कर उन्हे मुख्य युद्धभूमि से दूर हटा ले गए। अर्जुन और कृष्ण सशप्तको को पराजित करके लौटे तो मुख्य युद्ध के लिए अर्जुन चिन्तित हो रहे थे। रास्ते मे सन्ध्या हो गयी तो दोनो ने युद्ध के मैदान मे ही सन्ध्या की –

तत सन्ध्यामुपास्यैव वीरौ वीरावसादने।
कथयन्तौ रणे वृत्त प्रयातौ रथमास्थितौ।।

द्रोण० १८–६

वीरो के उस सहारक युद्ध मे दोनो कृष्ण–अर्जुन ने सन्ध्योपासन किया। फिर युद्ध की बात करत हुए रथपर बैठकर चल पडे।

हमारा इतना ही आशय है कि रणभूमि म भी श्रीकृष्ण सन्ध्या करने मे नागा नही करते थे।

गीता गायक श्रीकृष्ण

श्रीमद भगवद्गीता भगवान श्रीकृष्ण ओर अर्जुन का सवादात्मक काव्य है। भगवद्गीता का अर्थ है भगवान के द्वारा गायी हुई । इसमे कृष्ण के विचारो का बडा सुन्दर काव्यात्मक सग्रह महर्षि व्यास के द्वारा किया गया है। गीता मे ज्ञान–कर्म–उपासना का बडी विचित्रता से वर्णन हुआ है।

प्रत्येक महापुरुष क जीवन ओर विचारो से ससार प्रभावित होता है। ससार जीवन का अनुकरण और विचारो का आचरण अनुसरण करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कहते ह।

श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आपत पुरुषो के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा।

श्रीकृष्ण का जीवन योगेश्वर का जीवन था। इसका अच्छा निदर्शन महाभारत मे मिलता है।

श्रीकृष्ण के जीवन से अधिक उनके विचारो ने ससार को प्रभावित किया है। यो तो श्रीकृष्ण के विचार महाभारत जैसे बृहद ग्रन्थ मे अनेकत्र बिखरे पडे हैं। किन्तु भगवद्गीता तो उनके उपदेशो का ही सग्रह है। उन्ही उपदेशो से अर्जुन का मोह नष्ट हुआ और अपने क्षत्रिय धर्म पर वह स्थिर दृढ हुआ।

गीता ज्ञान कर्म और भक्ति के उपदेशो का सुन्दर वर्णन है। ज्ञान और भक्ति दोनो की वास्तविकता की परीक्षा तो कर्म मे ही होती है। ज्ञानी हो या भक्त जब कर्म कोलाहलमय ससार मे आता है तो उसकी वास्तविकता प्रकट होती है। श्रीकृष्ण ने ज्ञान की महत्ता बताते हुए कहा है –

नहि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिहविद्यते। *गीता० ४–३८*

इस ससार मे ज्ञान जैसा पवित्र और कुछ नहीं है। किन्तु यात्रा तो अभी काफी आगे तक है। श्रीकृष्ण कहते है –

श्रेयोहि ज्ञानमभ्यासात् ज्ञानद्ध्यान विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्याग त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।

अभ्यास से ज्ञान बढकर है। ज्ञान से ध्यान का स्थान ऊपर है। ध्यान से बढकर है कर्मफल का त्याग कर्मफल को परमेश्वर को अर्पण कर देना इसके पश्चात ही मनुष्य शान्ति पाता है। कर्म का मापदण्ड नपना है –

सर्वभूत हितेरता *गीता० १२–४*

कर्म इस प्रकार करे कि उसक द्वारा सभी प्राणियो का हित सिद्ध हो।

अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् मैत्र करुण एव च।

प्राणीमात्र से अद्वेष्टा द्वेष रहित प्रेम स्नेह पूर्वक रहे। प्राणियो के प्रति मैत्रीभाव और करुणा का भाव रहे। श्रीकृष्ण ने भक्ति करने को श्रेष्ठ मार्ग सुझाया है –

स्वकर्मणातमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव

गीता ० १८–४६

परमेश्वर की अर्चना करने की सामग्री पूजा करने का सामान मनुष्य का अपना कर्म है। उसी कर्म के द्वारा अर्चना करने से मनुष्य को सिद्धि प्राप्त होती है। श्रीकृष्ण जैसे महामानव के लिए या किसी अन्य शरीरधारी ऋषि मुनि गुरु आचार्य की अर्चना तो –

पत्र पुष्प फल तोय यो मे भक्त्या प्रयच्छति

गीता० ९–२६

पत्रपुष्प फलमूल अन्न जल से होती है किन्तु परमेश्वर की भक्ति मानव जीवन की सफलता सिद्धि तो परमेश्वर को अपने कर्मो को अर्पित करने से निष्काम कर्म करने से ही मिलती है –

स्वे स्वे कर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर ।

गीता १८–४५

गीता गायक श्रीकृष्ण का ससार के विद्वानो मे बडा सम्मान है। ससार के सभी देशो के अनेक विद्वानो ने गीता का अनुवाद किया है। गीता ने लाखो करोडो मनुष्यो को जीवन जीने की कला सिखाई है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व बहुआयामी था। विद्वान वे थे वेदवेदाग शास्त्रज्ञ योद्धावीर वे थे। कोई एक अस्त्र का जानकार था तो कोई दूसरे अस्त्र के मर्म को समझता था। किन्तु श्रीकृष्ण चक्र सदुर्शन धारी तो थे ही वे असिधर खडगधर धुनर्धर बहुत कुछ थे। चक्रधर तो वे बेजोड थे ही व परम नीतिमान भी थे। उनके व्यक्तित्व का योगेश्वर स्वरूप भी अत्यन्त मनमोहक है।

गीता के अन्तिम श्लोको मे सजय धृतराष्ट्र से कहते है –

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम।।

गीता० १८–७८

जहा जिस पक्ष मे योगेश्वर श्रीकृष्ण है जिस पक्ष मे धनुर्धर अर्जुन है उसी पक्ष मे श्री विजय भूति और ध्रुवनीति है यही मेरी सम्मति है।

श्रीमद्भगवदगीता के अठारहो अध्यायो मे प्रत्येक अध्याय के अन्त मे ग्रन्थ की पुष्पिका परम्परा से छपती आ रही है। प्रत्येक अध्याय के अन्त मे कुछ इस प्रकार लिखा रहता है –

ओ३म तत्सदिति श्रीमदभगवद गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे अमुक योगोनाम अमुकोऽध्याय। सो गीता ब्रह्म विद्यायोग शास्त्र है।

सजय वहीं और भी कहते है –

व्यास प्रसादाच्छुतवानेदुह्यमह परम्।
योग योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात्कथयत स्वयम्।।

महर्षि व्यास देव की कृपा से मैंने इस परम रहस्यमय योग को वर्णन करते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण के मुख से स्वय सुना है।

योग की परम्परा नष्ट हो गई थी उस सनातन योग की परम्परा का उपदेश स्वय अर्जुन को दे रहे हैं। श्रीकृष्ण कहते है –

एव परम्परा प्राप्तमिम राजर्षयोविदु ।
स कालेनेह महता योगो नष्ट पर तप।।
स एवाय मया तेऽद्य योग प्रोक्त पुरातन ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्य ह्येतदुत्तमम्।।

गीता ४। २–३

यह योग (राजयोग) परम्परा से राजर्षियो को ज्ञात था सो काल के महान व्यवधान से नष्ट हो गया लुप्त हो गया था। उसी योग को आज मैने तुम्हे बताया है। अर्जुन ! तुम मेरे मित्र भी हो भक्त भी हो तभी यह उत्तम रहस्य तुमको बताया है।

एक स्थान पर श्रीकृष्ण कहते है –

पश्य मे योगमैश्वरम्। मेरे ऐश्वर (ईश्वर से युक्त) योग को देखो।

श्रीकृष्ण योग के इतने भक्त थे कि गीता का षष्ठ अध्याय योग की विधि स्थान आसन ध्यान सब की शिक्षा की गहराई मे जाकर योग का वर्णन करता है।

जन्माष्टमी के दिन चक्र सुदर्शनधारी श्रीकृष्ण का चित्र लगाना चाहिए महाभारत युद्ध का सचालन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण के चित्र एव चरित्र का प्रचार करना चाहिए। माता रुक्मिणी के साथ श्रीकृष्ण के चित्र बनाने चाहिए। ○

हमारी गोसंवर्द्धन परम्परा और आज की समस्या

– सुबोध कुमार

धन धान्य बल पराक्रम ज्ञान और आनन्द रस से परिपूर्ण पुरातन भारतीय समाज की व्यवस्था मे गौ और गौसम्वर्द्धन केन्द्र बिन्दु थे। इस बात के भी इतिहास मे सकेत मिलते हैं कि चगेज खा की मुगलो की पैत्रिक परम्परा मे भी गौ को एक सम्मानित केन्द्र बिन्दु का सम्मान दिया जाता था। (देखें बाबर नामा पेन्टिगस प्लेट IV 1502 इस्वी)

मुगलो के प्रारम्भिक शासन काल मे आर्थिक शोषण प्रमुख लक्ष्य रहते हुए भारत वर्ष की गौ पर सामाजिक शोषण का प्रभाव पडना स्वाभाविक था। परन्तु धर्मान्धता की नीतियो ने हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन मे जहा मदिरो की तोड फोड थी वहीं आर्थिक कठिनाइया पैदा करने की एक योजना चल रही थी। गरीब हिन्दु जजिया कर देने मे असमर्थ धर्मपरिवर्तन करने पर जजिया के आतक से निर्भयता पा सकते थे। ग्रामीण हिन्दु अर्थ व्यवस्था को नष्ट करना सर्वाधिक धर्म परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य था। गौ सदैव से ग्रामीण सम्पन्नता की रीढ की भाति रही थी। गोहत्या को एक धार्मिक मुस्लिम दायित्व बना कर ग्रामीण अर्थ सम्पन्नता का विनाश गरीबो की सख्या बढाने का सब से सुगम रास्ता था। या कर न दे पाने की परिस्थिति मे धर्म परिवर्तन ही एक विकल्प रह पाता था। अग्रेजो मे भी यही सोच थी कि आर्थिक दरिद्रता ही धर्म परिवर्तन के लिए सही योजना है। मुगलो द्वारा गोहत्या आरम्भ करने पर भी अनन्य गोभक्ति और श्रद्धा के कारण गौ फिर भी भारतीय ग्राम्य जीवन की आर्थिक सम्पन्नता मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। इसलिए भारतीय मानस से गौ के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करना भारत वर्ष मे दरिद्रता फैलाने के लिए एक महत्वपूर्ण नई शिक्षा प्रचार पद्धति का अग बनाया गया।

यद्यपि अपनी अग्रेज फौज के लिए गाय के दूध के लिए मिलिटरी डेरी फार्म की व्यवस्था ईस्ट इण्डिया क० के समय से ही चला रखी थी। जिसमे केवल स्वस्थ स्वच्छ गाय का ही पोषण किया जाता था। परन्तु भारतीयो के लिए भैंस को प्रोत्साहन देना आरम्भ किया गया। सुखद बात यह है कि यदि भारत वर्ष में गोसवर्द्धन का श्रेय किसी सस्था को दिया जा सकता है तो वह है मिलिटरी फार्म जहा लगभग पचास हजार अत्युत्तम गौ का पालन पोषण हो रहा है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से प्रभावित अधिकाश कृषि डेरी आयुर्विज्ञान विशेषज्ञ हर पारम्परिक भारतीय धारणा और ज्ञान को त्याज्य समझते हैं। यद्यपि उन्हे आज के पाश्चात्य समाज की कृषि और गौ वनस्पति के बारे मे जानकारी हो तो ज्ञात होगा कि हर आधुनिक वैज्ञानिक खोज वहा पर आज इतनी हठधर्मिता से मान्य नहीं है जितनी भारत मे आज भी है और वहा दस साल पहले तक थी। बढती हुई नई नई बीमारियो पर्यावरण के ह्रास को समझ कर अब सारा विश्व वही प्राकृतिक जीवन शैली अपनाने का प्रयास कर रहा है जो कभी भारतीयता की पहचान थी। इस मे प्राकृतिक ढग से

पाली गाय और उस के पोषण को वही गौरवमय स्थान हमे अपने देश मे फिर से देना होगा। भारतीय डेरी विशेषज्ञ आज गाय के दूध भैंस के दूध सोयाबीन के दूध मे कोई अन्तर नही करते डेरी के दूध मे उस दूर दूर से ढो कर लाने और खराब न हान क लिए जो रसायन प्रयोग मे लाए जाते है और जो क्रियाए की जाती है वे सब फार्मूले या तो गोपनीय है या मानव स्वास्थ्य पर उनका दुष्प्रभाव और नए नए रोगो का फैलना ऐसे विषय है कि जिन पर अनुसधान करने का खर्च कोई सरकार या स्वयसेवी सस्था नहीं कर सकती। बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपने लाभ के लिए जो कुछ खाद्य सामग्री बाजार मे बढिया प्रचार के खर्च से ला पाती हैं उस से समाज के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव को रोकने के लिए पारदर्शिता प्राकतिक वस्तु शैली और विकेन्द्रीकरण पर आधारित पदार्थो के उपभोग का प्रचार ही विकल्प है।

बच्चो को डिब्बे का पाउडर दूध घोल पिलाने से एस्थमा डाइबिटेज डेरी दूध के अदर आक्सीजन तत्व के न पाने से दूध के दुष्परिणाम से स्त्रियो और बूढो की हडिडयो की कमजोरी डेरी के दूध मे भेस के दूध की अधिक मात्रा के प्रयोग से बढता हवा आरथराइटिस डेरी दूध आइक्रीम दही मे सूक्ष्मीकृत होने के कारण धमनियो मे रुकावट xauthian oxidose के अलग हो जाने से धमनियो का आक्सीडाइजेशन होकर सख्त होकर हृदय रोग और रक्तचाप के विकार ऐसे विषय हैं जिनकी वैज्ञानिक खोजो के सत्य पर बडे बिजनेस की आर्थिक प्रभुता के सोने का ढकना सत्य को बाहर नही आने देता (ईशोपनिषद मे कहा है कि सत्य को ऐसे ही ढकते हैं)।

गोसम्वर्द्धन का सबसे सक्षम प्रभावकारी और भारत सरकार तक की नीति निर्धारण करने वाला अपकारी प्रत्यक्ष मे तटस्थ परन्तु वास्तव मे गो विरोधी एक सगठन है उन आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा प्रशिक्षित कृषि और डेरी विज्ञान के विशेषज्ञो का जिनकी आर्थिक जीवन उन्नति डेरी व्यवसाय के स्वामीभक्त बनकर रहने मे है।

इन विशेषज्ञो के मापदड से कुमकरण राम से कही अधिक (प्रत्यक्ष मे गरुता प्रधान होने के कारण) ग्राह्य है। आधुनिक विज्ञान गुणो की विशेषता परख कर पाने की क्षमता नहीं रखता। राम के गुण उनके शरीर के डील डोल और भार से देखे तो वास्तव मे कुमकरण अपने भारी भरकम डील डोल से अधिक महत्वपूर्ण दिखेगा। परन्तु राम के सात्विक आदर्श कुमकरण की अजोतामसिक शोचनीय दशा का माप किसी वैज्ञानिक अनुसधानशाला मे सम्भव नही।

indiadairy.com की नव प्रकशित भैस और गाय के परस्पर तुलनात्मक अध्ययन मे भैंस का दूध हर दृष्टि से गाय के दूध से अधिक गुणकारक पौष्टिक प्रोटीन विटामिन मिनरल युक्त और सस्ता भी होता है। इतना ही नही गोराग भक्ति के अनुरूप श्वेत रग का है। जिसके मक्खन पनीर दही श्वेत और ग्राहक को अधिक रूचिकर लगते है। इस के विपरीत गाय का दूध पीलापन लिए होता है। जिस से मक्खन दही पनीर भी गोरा नही होता। गाय का दूध अधिक पनियाला भी होता है। जिससे चाय भी अच्छी नहीं बनती।

इस लेख के साथ indiadairy.com का वह लेख भी यहा सलग्न है। जिसे सब गोभक्त पाठक स्वयम पढ कर निष्कर्ष निकाल पाए कि सर्वप्रभुत्व आदरणीय भारत सरकार की नीति निर्धारण करने वाले तत्र की ऐसी मानसिकता के होते स्वतत्रता के छटे दशक तक गोसम्वर्द्धन के सारे सकल्प और प्रयास क्यो निष्फल हो रहे हैं। हमारे समाज मे स्वस्थ सात्विक चेतना की जागृति न हो और एक तामसिक निष्क्रय सवेदना हीन समाज बढे यह मानसिकता क्या एक बहुत बडे पाश्चात्य षडयन्त्र की विनाशकारी दूरगामी योजना का अग नही दीखती। साथ ही हृदय रोग डाइबीटीज आर्थराइटिस एस्थमा एलर्जी रोग महामारी की तरह समाज को बाल्यकाल से ही जकडना बढाए इस योजना के पीछे क्या स्वार्थवश अन्तराष्ट्रीय विश्व व्यापार का हमारे देश वासी सुशिक्षित विद्वानो के द्वारा चलता अभियान नहीं दीखता।

इस सबके चलते हमारे गोप्रेमी सगठनों का समाज को सत्यपक्ष के प्रचार मे एक बडा सघर्ष करना होगा। हम हर प्रचार माध्यम से गौ को पुन गुणो के आधार पर (केवल भक्ति और श्रद्धा के आधार पर नही) जब तक प्रतिष्ठित नहीं करते गोसवर्द्धन ऐसे ही होगा जैसा अब तक होता आया हैं केवल योजनाओ और सम्मेलनो तक सीमित।

ओ३म इषेत्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भाग प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश ँसो ध्रुवा अस्मिन गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून पाहि।।

यजुर्वेद १–१

यजुर्वेद के इस प्रथम मत्र मे गौ के लिए जो विशेष चार बाते कहीं गई है वे हैं – प्रजावती अनमीवा अयक्ष्मा अघ्न्या।

प्रजावती – उत्तम अच्छी अनेक सन्तान वाली गौ। इस के गर्भ धारण कराने के लिए उत्तम वृषभ की व्यवस्था वृषभ गोत्र न हो स्वस्थ और पुष्ट हो इन बातो पर अथर्वेद मे भी सविस्तार ज्ञान मिलता है। (देखे अथर्ववेद ६–१४२)

आज अच्छी गौशालाओ तक मे इसकी व्यवस्था नहीं हो पाती कि वृषभ किस परिवार का है। गर्भ धारण कराने के लिए उपयुक्त है या नहीं। ग्रामीण क्षेत्रो मे तो इस बात का कही भी ध्यान नही दिया जा पाता। गोसन्तति के भारत मे पतन का यह मुख्य कारण है। अच्छे वृषभ उपलब्ध कराना उनके आहार के समुचित प्रबन्ध करने उनके स्वास्थ्य और आवास के साधन की व्यवस्था और कोई भी वृषभ एक परिवार मे दो वर्ष बाद स्थानान्तरित करने का योजना बद्ध कार्यक्रम हमे चलाना होगा आधुनिक कत्रिम गर्भाधान की योजना हृदय शल्य चिकित्सा की भाति विज्ञान की एक बडी खोज है। परन्तु जैसे यह चिकित्सा हर शहर के हर अस्पताल मे नहीं किया जाता वैसे ही समस्त ग्रामीण क्षेत्रो मे कत्रिम गर्भाधान योजना व्यर्थ के साथ साथ ग्रामीण किसान की दरिद्रता बढाती है। अब तक भारत सरकार इस योजना पर कई हजार करोड खर्च कर चुकी है परन्तु लाभ केवल मास कपनिया पा रही है क्योकि बाझ गाय इस प्रक्रिया से बढती है। भारत सरकार के अपने आकडो के अनुसार कत्रिम गर्भाधान की सफलता केवल २० प्रतिशत रही है। चार पाच बार की क्रिया से गाय का बाझ बनना निश्चित हो जाता है। विश्व मे ५० प्रतिशत है।

शेष भाग पृष्ठ ११ पर

महर्षि के दीवाने - स्वामी आत्मबोध सरस्वती

— आनन्द कुमार आर्य

५ सितम्बर को प्रात आर्य लोक वार्ता लखनऊ के सम्पादक डा० वेद प्रकाश जी आर्य ने सर्वप्रथम फोन पर सूचना दी कि स्वामी आत्मबोध जी (पूर्व महात्मा आर्य भिक्षु) का ४ सितम्बर को निधन हो गया सोए के सोए रह गए प्रात उठे ही नहीं। समाचार सुनकर स्तब्ध सा रह गया और मर्माहत विह्वल हृदय को सान्त्वना देता हुआ आश्वस्त हुआ कि महात्मा जी एक त्यागी तपस्वी परोपकारी श्रद्धा भक्ति से परिपूर्ण कर्मशील व्यक्तित्व के धनी थे। जिसका प्रमाण उनके जीवन का अन्त सुखदायी रहा प्रत्यक्ष रूप मे परिलक्षित है।

मैंने अपनी किशोरावस्था से महात्मा जी को नजदीक से देखा है जब कि वह रामजी प्रसाद गुप्त के नाम से जाने जाते थे कालान्तर मे महात्मा आर्य भिक्षु के सान्निध्य मे २० वर्षो से रहा। यज्ञ मे अटूट श्रद्धा थी यज्ञोपरान्त ही अन्न ग्रहण करते थे। प्रचार कार्य से यात्राए करनी पडती थीं ट्रेन मे भी नियमित रूप से यात्रियो को सम्मिलित करके यज्ञ करते थे। महर्षि के ग्रन्थो विशेषकर सत्यार्थ प्रकाश का गहन अध्ययन था उसके आधार पर महात्मा जी ने सूक्तिया तैयार की हुई थीं। जिसे उनकी वाकपटुता मनमोहक रूप से प्रदर्शित करती थी जिससे जनसमुदाय मन्त्र मुग्ध हो जाता था। गजब की उनकी शैली थी और जिस मस्ती मे वह बोलते थे वह देखते बनता था आज वह अभाव आर्यजगत को खटकेगा और सम्भवत निकट भविष्य मे उसकी पूर्ति कठिन है।

मेरे पूज्य पिता श्री मिश्रीलाल आर्य टाण्डा (उत्तर प्रदेश) निवासी महर्षि के अनन्य भक्त आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता नेता स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी सादा जीवन उच्च विचार के धनी खद्दर का कुरता–धोती–टोपी उनका परिधान था आर्यजगत के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। महात्मा आर्य भिक्षु जी से उनकी गहरी आत्मीयता थी प्राय वार्षिकोत्सवो मे उन्हे बुलाते थे वह भी बाबूजी को पितातुल्य मानते थे। महात्मा जी के जीवन से सम्बन्धित एक सत्य घटना को उद्धृत करना समीचीन होगा। जो आर्यसमाज की नीव का आधार परिलक्षित करती है और यह सिद्ध करती है कि आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है।

महात्मा आर्य भिक्षु जी का जन्म मुगलसराय मे एक कटटर पौराणिक वैश्य परिवार मे सन १९२२ मे हुआ था। उनके माता पिता ने उनका नाम रामजी प्रसाद गुप्त रखा था। शिक्षा दीक्षा अच्छी हुई थी उन्होने एम०ए० तक की डिग्री हासिल की थी। उन दिनो स्वतन्त्रता आन्दोलन का जोर था और उसमे अधिकाश आर्यसमाजी आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे। रामजी प्रसाद एक शिक्षित युवक होने के नाते कैसे वचित रहते और सहजभाव से वह आर्यसमाज की मीटिगो मे जाने लगे इससे उनके पिता चितित रहने लगे और प्रयास मे जुट गए कि रामजी को आर्यसमाज से दूर कैसे किया जाए। उन्हे सफलता मिलती नजर नही आने पर उनकी शक्ति बढ गई। दूसरी तरफ आर्य समाज के क्षेत्र मे रामजी प्रसाद की ख्याति बढती गई। एक सम्पन्न परिवार का आर्य विचार वाला युवक का पता लगने पर मेरे पिता श्री मिश्रीलाल जी अपनी भाजी का रिश्ता लेकर मुगलसराय रामजी प्रसाद के घर पहुचे वहा उनके पिता जी से साक्षात्कार हुआ दरवाजे पर आये हुए अतिथि से आतिथ्य सत्कार तो दूर रहा शिष्टाचार की भी परवाह किये बिना ही मिश्रीलाल जी से तबाक से प्रश्न कर बैठे कि वेशभूषा से आप काग्रेसी लगते है कही आप आर्यसमाजी भी तो नही हैं ? मिश्रीलाल जी ने सरल भाव से उत्तर दिया कि जी हा पक्का आर्यसमाजी हू। यह सुनते ही गुप्तजी ने बाबूजी को वापस जाने को कहा कि मैं आर्यसमाज से नफरत करता हू आपको समझबूझ कर मेरे यहा आना चाहिए था। एक वह समय था जबकि आर्यसमाजी हाने स लोग जाति से बहिष्कृत कर दिये जात थे। अनेक यातनाओ मान अपमान को सहन करके त्यागी तपस्वियो ने आर्यसमाज रूपी पौधे को सीचा है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का सपूर्णजीवन मृत्युपर्यन्त सघर्षो से घिरा हुआ था उन्हे विषपान तक करना पडा किन्तु उस त्याग तपस्या और बलिदान का ही तो फल है कि कालान्तर मे रामजी प्रसाद गुप्त जैसे बालक आर्यसमाज के विद्वान हुए और दीवाने होकर महर्षि प्रतिपादित सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार मे अपने जीवन की आहुति दी। वही युवक रामजी प्रसाद गुप्त आर्यसमाज टाण्डा के वार्षिकोत्सव पर पधारे तो श्री मिश्रीलाल जी ने उत्सव मे उपस्थित जन समुदाय के समक्ष उपर्युक्त रहस्योद्घाटन करते हुए दर्शाया कि इस युवक रामजी प्रसाद गुप्त का एक दामाद के रूप मे स्वागत तो नहीं कर सके थे किन्तु आज हम आर्यसमाज की वेदी पर इनका स्वागत करते हुए गौरवान्वित हो रहे हैं। वही रामजी प्रसाद गुप्त अपनी विद्वता योग्यता श्रद्धा तयाग निष्ठा के बूते पर महात्मा आय भिक्षु के नाम से विभूषित हुए। उस युवक ने घर समाज मे व्याप्त अधविश्वास पाखण्ड रूढिवादिता जन्मजात सामाजिक वर्ण व्यवस्था के विरूद्ध सघर्ष किया और सफलता प्राप्त की और उच्च जीवनादर्शों को प्राप्त कर सके। अपने ७५ वे जन्म दिवस पर महात्मा जी ने विधिवत सन्यास ग्रहण करके सन्यास आश्रम मे प्रविष्ट हुए और स्वामी आत्मबोध सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए।

स्वामी जी महर्षि के दीवाने थे और सपूर्ण जीवन आर्यसमाज को समर्पित था। महर्षि की जन्मस्थली टकारा और निर्वाण स्थली अजमेर प्रतिवर्ष पहुचते थे यह दोनो स्थान आर्यो के तीर्थ स्थान है यहा आर्यो को अवश्य आना चाहिए उन्हे आत्मिक शाति मिलेगी जीवन आदर्शमय होगा। महर्षि के प्रति निष्ठा श्रद्धा का इससे अधिक क्या मिसाल हो सकता है। समाजो से दक्षिणास्वरूप प्राप्त धन राशि को आर्यसमाज की सस्थाओ को दान कर देते थे अनेको सस्थाओ को अपने दान से सुदृढ करके उसकी देख भाल भी करते थे। वानप्रस्थ ग्रहण करने के पश्चात आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) मे एक कुटिया मे निवास करने लगे और मरणोपरान्त उसी मे रहे। आर्य वानप्रस्थाश्रम के वर्षो प्रधान रहे एक तरह से उसके प्राण ही थे। स्वामी जी जैसा व्यवस्थापक ही आश्रम को व्यवस्थित रूप मे ला सका। स्वामी जी एक कुशल प्रशासक प्रबन्धक भी थे। उल्लेखनीय है कि आश्रम मे वह और उनकी पत्नी आश्रम के नियमो का स्वय कटटरता से पालन करते थे ओर भोजनादि का व्यय स्वय वहन करत थ। उनकी धर्मपत्नी ने रामजीप्रसाद गुप्त महात्मा आर्य भिक्षु – स्वामी आत्मबोध सरस्वती की आश्रमो के नियमानुसार सेवा करती थीं और लगभग दो वर्ष पहले स्वय विदा हो गई।

स्वामी जी की आस्था श्रीमती परोपकारिणी सभा और आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे थी। सार्वदेशिक सभा के सम्माननीय सरक्षक सदस्य के रूप मे भी उन्होने सभा को अपनी सेवाए अर्पित की थी सार्वदेशिक सभा मे उनके साथ रहने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अन्त मे अभी स्वामी जी ने अपनी अर्जित पूजी एक लाख का सात्विक दान स्थिर निधि के रूप मे सभा को अर्पित कर दिया था।

स्वामी जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज को सुदृढ करने आर्यो को विचारशील निष्ठावान श्रद्धालु बनाने मे अर्पित कर दिया। उनके अन्दर एक तडप थी कि आर्यसमाजी और पौराणिक जीवनादर्शों पर एक हो जाये तो महर्षि का कृण्वन्तोविश्वमार्यम सम्पूर्ण जगत को श्रेष्ठ (आर्य) बनाने का स्वप्न पूरा हो सकता है। उनकी मान्यता थी कि श्रद्धा और बुद्धि का समन्वय जब तक नहीं होगा मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर सकेगा और अशाति मे भटकता रहेगा। आर्यसमाजियो मे तर्क और युक्ति पौराणिको मे श्रद्धा और विश्वास दोनो की युक्तिया एक दूसरे मे निहित हो जाए तो हमारे आर्यावर्त देश मे सुख की प्राप्ति हो सकती है।

अभी गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की शताब्दी पर २४ अप्रैल २००१ को आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर देखने और पूज्यपाद स्वामी जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग ढाई घण्टे उनके पास बैठा रहा आर्यसमाज के सगठन सम्बन्धी उनके अनुभव जनित विचार व उनकी वेदना तडप का श्रवण करता रहा। आर्यसमाज मे वह एक निर्विवादित व्यक्तित्व बन कर रहे कभी भी विवादो के घेरे मे नहीं आये। उनके जीवन के अनुभव अनुभूतियो को मैं यदि अपने मे आत्मसात करा सका तो मैं अपने जीवन को धन्य समझूगा। यह तो अवश्य है कि वह मेरे पास स्वामी जी के धरोहर रूप मे सुरक्षित है।

इस वर्ष मेरे पूज्य पिता श्री मिश्रीलाल जी की जन्मशती है जो आर्यों को प्रेरणा प्रदान करने निमित टाण्टा मे १५ से १६ नवम्बर २००२ तक समारोह रूप मे मनाया जायेगा। स्वामी जी की अपार श्रद्धा पूज्य बाबूजी मे थी उन्होने तपाक से कहा कि यह मेरा सौभाग्य होगा मैं जरूर टाण्डा पहुचूगा और मेरी माता श्रीमती रामप्यारी देवी के दर्शन करूगा। माता जी भी उन्हे बहुत प्यार करती थीं और स्नेह रखती थी। मैं अभी तक माता जी को स्वामी जी के निधन का समाचार देने का साहस नही जुटा पा रहा हू। उसी समय स्वामी जी ने एक चाभी उठाई और मुझे दी कि यह नया कमरा तुम लोगो के अनुकूल आधुनिक ढग का माता जी (महात्मा जी की पत्नी) के नाम से निर्मित हुआ है तुम उसमे एक दिन अवश्य रहो किन्तु मुझे आज अपार कष्ट का अनुभव हो रहा है कि व्यस्तता के कारण मे उस समय उसमें आवास नहीं कर सका किन्तु निकट भविष्य मे मैं उनके उस आदेश का पालन अवश्य करूगा। २४ अप्रैल को ऐसा कुछ लेशमात्र भी प्रतीत नहीं हो रहा था कि स्वामी जी के यह अतिम दर्शन हो रहे हैं।

मैं स्वामी जी के प्रति सम्वेदना प्रकट करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि स्वामी जी की आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा हम सभी आर्यों की उनके जीवनदर्शी उपदेशो को अपने जीवन मे आत्मसात करने की बुद्धि प्रदान करे। ऐसे कर्मयोगी महात्मा की वाणी मे जो मधुरता चिन्तन ज्ञान और आकर्षण था तथा विषय को सरल भाव से उद्धृत करने की अदभुत विलक्षण शैली थी वह मात्र उनकी थी जिससे आज आर्यजगत शून्य हो गया है। जीवन मरण ईश्वर का विधान है उसे स्वीकारते हुए स्वामी जी जैसे मनीषियो के अमृतवचन हमारे बीच जीवित हैं तथा रहेंगे और हम आर्यसमाजी उसका अनुसरण करते रहें तो आर्यसमाज की दुदुभी बजती रहेगी।

— प्रधान आर्यसमाज टाण्डा
महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल
उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ ४ का शेष भाग

मेंढ़की के जुकाम का उपचार

महर्षि दयानन्द जी ने नियोग की इच्छा करने वाले स्त्री–पुरुष को व्यवस्था दी है कि जैसे वर और वधु विवाह की इच्छा अपने सम्बन्धियों तथा भद्र पुरुषों के सामने प्रकट करते हैं वैसे ही वे भी करें तथा जब नियम पूरा हो जाए तो सयोग न करें। यदि ऐसा करेंगे तो वे पापी और जाति वा राज्य की ओर से दण्डनीय हो। इस प्रकार से नियोग कोई व्यभिचार या जार कर्म नहीं था क्योंकि व्यभिचार तो वह होता है जो वेद एव वेदानुमोदित स्मृतियों आदि और सामाजिक नियमों व रीति–रिवाजों से विरुद्ध हो। वेद और स्मृतियां तथा हमारे समाज की यह व्यवस्था रही है कि आपातकाल में स्त्री पुनर्विवाह या नियोग करके सतान उत्पन्न कर सकती है। और यह व्यवस्था भी महर्षि जी ने सबके लिए अनिवार्य नहीं की है। उनका आदर्श तो यही है कि पति के मरने के पश्चात् स्त्री ब्रह्मचारिणी रहकर प्रभु भक्ति मे अपना जीवन यापन करें, परन्तु यदि वह ऐसा जीवनयापन न कर सके तो उसके लिए व्यवस्था है कि व्यभिचार व कुकर्म आदि न करके यह पुनर्विवाह कर ले या नियोग आदि करके सन्तानोत्पत्ति करें। शूद्र वर्ण के लिए पुनर्विवाह ही करना बताया गया है उसके लिए नियोग की व्यवस्था नहीं है क्योंकि ज्ञान, शिक्षा और सुसस्कारो के अभाव में वह नियोग की पावन शर्तों का निर्वाह करने में समर्थ नहीं होते। इस प्रकार हम देखते है कि नियोग कोई अनिवार्य नहीं है बल्कि एक आपात व्यवस्था है और वह भी विधिवत् केवल श्रेष्ठ और सस्कारित व्यक्तियो द्वारा सामाजिक नियमों के अन्तर्गत की जाती है। कहते है कि मुसलमानों के यहा लहू, सुअर और मूर्दा ये तीन वस्तुए हराम है परन्तु कुरान शरीफ में लिखा है कि यदि किसी आदमी की जान भूख के मारे निकली जाती हो तो वह अपने जीवन को बचाने के लिए इन वस्तुओं मे से भी जरूरत के अनुसार प्रयोग कर सकता है परन्तु आज तक शायद ही कोई ऐसा मुसलमान होगा जिसने अपनी जान बचाने के लिए इन तीनों वस्तुओं में से किसी एक का भी प्रयोग किया हो। हां विधान बनाने वालों ने अपने विधान को पूर्ण बनाने के लिए इस विधान के प्रत्येक बिन्दू पर तर्क–वितर्क करते हुए एक व्यवस्था दे दी है, कोई प्रयोग करे या न करे यह उसकी इच्छा है। इसी प्रकार नियोग भी आपद्धर्म है क्योंकि उस समय तक गृहस्थ में व्यभिचार को बहुत ही नीच कार्य तथा मृत्यु का ही पर्यायवाची माना जाता था। इससे बचाने के लिए शास्त्रकारो ने विधान के प्रत्येक बिन्दू पर विचार करके पुनर्विवाह और नियोग की आज्ञा दी है। इसे व्यभिचार या जारकर्म नहीं कहा जा सकता है क्योंकि वेदानुकूल, सम्बन्धियों की सहमति और पचायत के नियमों के अनुसार पुनर्विवाह और नियोग की रस्म पूरी की जाती है। आज व्यक्ति का चिन्तन इतना कामुक और कुत्सित हो गया है कि वासना के नाम पर जो कुछ भी अनाचार हो रहा है उस पर तो कोई आपत्ति नहीं मगर नियोग जैसी व्यवस्था को अपवित्रता और अश्लीलता के साथ जोड दिया, यह नियोग व्यवस्था का दोष नहीं बल्कि समाज में फैली अनैतिक विचारधारा का दोष है।

क्रमशः

भारत की विश्व को देन - एक अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन

– डॉ० हरिश्चन्द्र

अमेरिका में पजीकृत सस्था World Association for Vedic Studies (WAVES) अर्थात् वेव्स (वैदिक अध्ययन हेतु विश्व सगठन) का चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन University of Massachusetts, Dartmouth में १२–१४ जुलाई २००२ को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्देश्य 'भारतीय चिन्तन की विश्व को देन' को रेखाकित करना था। सम्मेलन में ५–७ समानान्तर गोष्ठियों के प्रमुख विषय – चेतना व भारतीय चिन्तन, वैदिक दर्शन, प्रबन्ध व राजनीति पर भारतीय विचारधारा, कश्मीर का शैववाद, गीता, महाभारत, रामायण, अहिंसा, आयुर्वेद व स्वास्थ्य इत्यादि थे। भारत से पहुंचे लगभग ५० प्रतिनिधियों के अतिरिक्त अमेरिका के लगभग १०० प्रतिनिधि उपस्थित थे। कैनेडा, ट्रिनिडाड, हॉलैण्ड, बेल्जियम, नेपाल, चीन से भी प्रतिनिधि आए थे। 'जहां भारतीय मूल के व्यक्ति बहुतायत में थे वहां अमेरिका व कनाडा के अ–भारतीय मूल के प्रोफेसरो द्वारा प्रस्तुत शोधपत्रो ने सबका ध्यान आकृष्ट किया। प्रो० होप फाइट (दर्शन विभाग, ईस्टर्न कनेक्टीकट यूनिवर्सिटी) ने अहिंसा पर पुरातन व नवीन भारतीय मान्यताओ को प्रस्तुत किया। Dr. Francis Clooney (बॉस्टन कॉलेज) ने उपनिषदों की शिक्षाओं का वर्तमान सन्दर्भ में दिग्दर्शन कराया। Dr. Klaus Wite ने अध्यात्मवाद पर एक व्यापक दृष्टिकोण रखा।

जीवन व उससे जुडे चेतनतत्त्व पर भारतीय मनीषियों का चिन्तन सबको आकृष्ट करता रहा है। पश्चिम के विद्वान् भारतीय मनोविज्ञान को पुन नये सिरे से देखना चाहते हैं। इस विषय की गोष्ठी दो सत्रों मे चली व अधिकांश शोध पत्र पश्चिम के विद्वानों ने प्रस्तुत किए। एक सत्र में मैंने 'सांख्य दर्शन के अनुसार मन की गतिविधि' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। एक अन्य सत्र में विभिन्न मत–मतान्तरों के मध्य संवाद की रूपरेखा पर प्रकाश डाला गया था। इस सत्र मे मैने 'वैदिक सिद्धान्तो के वैज्ञानिक चिन्तन द्वारा मानवतावाद की ओर' शीर्षक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

वेव्स का सम्मेलन जब चल रहा था उन दिनों ही अमेरिका की आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक आर्य महासम्मेलन कलीवलैण्ड (ओहायो) मे सम्पन्न हो रहा था जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी विशेष रूप से उपस्थित थे। तिथियो के टकराव के अतिरिक्त यह भी आश्चर्यजनक था कि वेव्स के सम्मेलन में आर्य जगत् अनुपस्थित ही था।

आशा करनी चाहिए कि सार्वदेशिक सभा व अमेरिका की आर्य प्रतिनिधि सभा मिलकर ऐसे आर्य विद्वानो को सूचीबद्ध करेगी जो इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे वेद सम्बन्धी आर्यसमाज की मान्यताओ को अग्रेजी मे सशक्त रूप से प्रस्तुत कर सके। आज जब वेद को लेकर बहुत जिज्ञासाएं विश्व के जनमानस व शोधार्थियों में हैं तब यह भय भी है कि कई भ्रान्तिया भी उत्पन्न हो सकती हैं जैसी कि योग, वैदिक गणित, फलित ज्योतिष आदि पर दिखायी दे रही हैं। वेव्स द्वारा प्रत्येक दूसरे वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन होता है। अगला सम्मेलन सन् २००४ मे होगा।

एक अन्य सम्मेलन की जानकारी मुझे अभी ही मिली है जो कि दिल्ली मे ११–१४ दिसम्बर, २००३ मे आयोजित होगा। अच्छा हो, सार्वदेशिक सभा उसमें न्यूनतम एक Symposium की प्रस्तुति का प्रस्ताव आयोजको को भेजे। प्रस्ताव भेजने की अतिम तिथि ३० नवम्बर, २००२ है। सम्मेलन का शीर्षक है Study of Religions in India आयोजकों से सम्पर्क सूत्र हैं –दूरभाष (011) 395-1190, 3943450, Email: iahr_csds@email.com

The Programme Committee, IAHR Conference, Centre for the Study of Developing Societies, 29 Rajpura Road, Delhi-110054

कर्णाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से की गई इस यात्रा मे, वेव्स सम्मेलन के बाद मैंने न्यूयार्क, अटलाण्टा व डिट्रॉयट क्षेत्रों में व्याख्यान दिए। मुख्य उपलब्धि यह रही कि डिट्रॉयट स्थित फोर्ड मोटर क० के अनुसधान विभाग के सभागार मे मेरा 'आत्मविकास' एक वैदिक अध्ययन' विषय पर व्याख्यान हुआ। इस व्याख्यान की सराहना की गयी। फलत कुछ व्याख्यान फोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियो ने सायंकालीन वेला में अपने घरो पर भी आयोजित किए।

– डॉ० हरिश्चन्द्र, ६-१-१०३/४३ अभिनव कॉलोनी, पद्माराव नगर, हैदराबाद ५०००२५

स्वामी अग्निवेश द्वारा लिखित 'होर्वरट आफ हेट'

घृणा और साम्प्रदायिकता का विष फैलाने वाली पुस्तक

स्वामी अग्निवेश तथा वाल्सन थम्यू रूपा द्वारा लिखी गई १४० पृष्ठ की पुस्तक होर्वस्ट आफ हेट मे स्वामी अग्निवेश मुस्लिम अतिवादियो का साथ देते है। इस पुस्तक का मूल्य १५० रुपये है। इण्डिया टुडे २४ ७ २००२ में फ्रासीसी पत्रकार फ्रान्टवा ग्वातिया की समीक्षा प्रकाशित हुई है। इस समीक्षा का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध विद्वान डॉ० भवानीलाल भारतीय ने किया जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है।

— *सम्पादक*

भारत मे स्वामी अग्निवेश एक सम्मानित व्यक्ति माने जाते हैं। कहा जाता है कि उन्होने अनगिनत बधुवा मजदूर बच्चो को मुक्त कराया है। एक ईसाई पादरी वाल्सन थिम्यू के सहयोगी बन कर लिखी इस पुस्तक मे गुजरात के दगो के दौरान मुसलमानो पर किए गए हिन्दुओ के अत्याचारो का विस्तार से विवरण दिया गया है। दुर्भाग्य की बात है कि इस पुस्तक के द्वारा दोनो कोमो के बीच घृणा की खाई बढन की ही उम्मीद है जब कि आवश्यकता दानो सम्प्रदायो मे सौहार्द स्थापित करने क॑ हे। इस पुस्तक का तो पहला वाक्य ही आपत्तिजनक है ? हम चाहे महात्मा गाधी के आदर्शो को भूल जाए हमे यह नहीं भूलना है कि उनका हत्यारा कौन था। स्वामीजी की यह विचित्र सीख है कि हम गाधी जी के प्रेम और सहिष्णुता के आदर्श को चाहे भूल जाए हमे याद रखना चाहिए कि उनकी हत्या करने वाला एक हिन्दू था। स्वामी अग्निवेश का सघ परिवार के प्रति द्वेष यहा स्पष्ट दिखाई देता है। साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बे को जलाने का उल्लेख इस पुस्तक के १७वे पृष्ठ पर हुआ है और यहा भी उन्होने इस दुर्घटना के वे ही कारण बताए हैं जो मुसलमानो की ओर से दिए गए हैं। अर्थात कथित कारसेवको ने मुसलमान चाय वालो को चाय देने के पहले जय श्रीराम का घोष करने के लिए मजबूर किया। जिन्होने इन्कार किया उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। ये स्वामीजी इस बात का उल्लेख क्यो नहीं करते कि १९६१ मे गोधरा के एक मदरसे क उन सभी हिन्दू अध्यापको का मुसलमानो ने कत्ल कर दिया था जो वहा पढाते थे। वे यह क्यो नहीं लिखते कि गोधरा के मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे बिजली की भरपूर चोरी होती है किन्तु बिजली बोर्ड के अधिकारी वहा जाने से भयभीत हैं। बजरग दल ने चाहे तलवार के जोर से दहशत फैलाई हो किन्तु कमल की ताकत से यह पुस्तक नफरत फैलाने मे बाजी ले गई।

यह तो सत्य है कि इन दगो मे ऐसी खौफनाक घटनाए भी हुईं जो दिल दहलाने वाली थीं और जिन्हे कभी माफ नहीं किया जा सकता। किन्तु स्वामी अग्निवेश तथा उनका सह लेखक पादरी थम्यू यह नहीं लिखते कि दगो मे मरने वाले पच्चीस प्रतिशत लोग हिन्दू थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि पुलिस के विवरणो से पता चलता है कि गुजरात मे घटित १५७ दगे मुसलमानो द्वारा भडकाए गए थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि साबरमती ट्रेन के हादसे के बाद सवा लाख हिन्दू जिनमे से बहुत से दलित और आदिवासी थे क्यो सडको पर उतर आए। उनके आक्रोश को क्या स्वामी ने समझा है ? इनमे उच्च वर्ग के लोग भी थे। उनके इस भयकर कर्मो की निन्दा करने के साथ लेखको को यह भी जानना चाहिए था कि उनके इन गहराई मे पैठे क्रोध का कारण क्या था ? शताब्दियो से हिन्दू यह बताते आए हैं कि उनमे कितना धैर्य और सहनशीलता है। इस पुस्तक मे मुस्लिम मोहल्लो मे जाकर सहायता कार्य करने वाले हिन्दुओ की भी कोई चर्चा नहीं है। अहमदाबाद के एक हिन्दू व्यापारी ने उन मुसलमानो के लिए ६० घरो का निर्माण कराया था जिनके घर जलाए गए थे।

स्वामी अग्निवश ने दिषाध होकर मुसलमानो का पक्ष लिया है। उनके ऐसे पूर्वाग्रह पूर्ण वाक्यो को देखे — **यह एक अविश्वसनीय सत्य है कि देशवासियों ने मुसलमानो को पूर्णतया भुला दिया। इससे भी भयकर कथन — क्या हम सचमुच गुजरात के मुसलमानों को दोष दे सकते है यदि वे नरेन्द्र मोदी की अपेक्षा दाउद इब्राहिम को पसन्द करें।**

निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक मुस्लिम उग्रवादियो को ताकत देगी तथा उदार विचार वाले मुसलमामो को जिहादी बनने की प्रेरणा देगी। पुस्तक का हिन्दू द्वेष इतना प्रबल है कि इसे पढकर उदार विचारों वाले हिन्दू भी कटटर पथियो के समर्थक बन जाएगे। निश्चय ही यह पुस्तक विपरीत परिणाम देगी शायद स्वामी अग्निवेश ने भी ऐसा नहीं सोचा होगा जब उन्होने इसे लिखना आरम्भ किया था।

— समीक्षा लेखक फ्रान्टवा ग्वातिया (फ्रासीसी पत्रकार)

इण्डिया टुडे दिनाक २४ ७ २००२
अनुवादक डॉ० भवानीलाल भारतीय

पृष्ठ १ का शेष

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती में स्वण पदक जीते

वहीं उन्हे स्वाध्याय के द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति भी सुनिश्चित करनी चाहिए। जिस दिन शरीर से सुदृढ व्यक्ति स्वाध्याय द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति करके आर्यजनता का मार्गदर्शन करेगा उसी दिन शारीरिक और आत्मिक उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत होगा।

का सेवन करके व्यक्ति कुछ घण्टो के लिए अपने शरीर मे बल की उत्तेजना अवश्य पैदा कर लेता है परन्तु स्थाई शक्ति अर्जित करने के लिए केवलमात्र ब्रह्मचर्य ही एकमात्र उपाय है। ब्रह्मचर्य की रक्षा शाकाहारी खान पान तथा गाय के दूध र घी के सवन से शरीर की

उनके प्रबन्धक एव कोच को भी सार्वदेशिक सभा की ओर से सार्वदेशिक साप्ताहिक की सदस्यता नि शुल्क प्रदान करके सम्मान किया। समस्त विजेताओ का माल्यार्पण द्वारा विभिन्न आर्यजनो ने स्वागत किया। स्वागत करने वाले आर्य महानुभावो मे प्रमुख थे सवश्री हरिसिह आय कण्णा

(नेपाल) विनय आर्य अश्विनी कमार आय अरूण वर्मा आदि। कुश्ती दल के विजेता सदस्य थे सर्वश्री बिजेन्द्र विजयेन्द्र मनाज शर्मा विनोद कुमार रविन्द्र कुमार अमनदीप सिह गुरुमीत सिह अजीत सिह वीरन्द्र सिह एव उमेश कुमार तथा कोच श्री नवल किशोर। ✿

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय कुश्तियों की प्रतियोगिता में सफल होकर लौटे विजेता दल का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में स्वागत का एक दृश्य।

श्री विमल वधावन ने कहा कि समूचे विश्व मे इस युग मे शारीरिक ... बढान के लिए कुछ दवाइयो आदि के सेवन की प्रवृत्ति भी बढ रही है। दवाइयो शक्ति विशाल और स्थाई ही नही होती अपितु इसी माध्यम से आत्मा की भी उन्नति सम्भव है।

उन्होने कुश्ती दल के समस्त सदस्यो

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली में वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज निर्माण विहार विकास मार्ग दिल्ली–९२ के तत्वावधान मे २५ से २८ सितम्बर तक वेद प्रचार समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर रात्रि ८ बजे से ९ ३० तक आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान वैदिक प्रवक्ता श्री प्रणव शास्त्री के प्रवचन तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री श्यामसिह जी राघव के भजनोपदेश होंगे। यह कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक निमाण विहार दिल्ली–९२ मे सम्पन्न होगा। सभी भाई बहनो से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे परिवार एव मित्रगणों सहित पधारकर धर्म लाभ उठाए। – रवि बहल मन्त्री

पृष्ठ ७ का शेष भाग

हमारी गोसवर्द्धन परम्परा और आज की समस्या

अनमीवा गो के आहार और पीने का जल व्याधि जन्य कृमिया से दूषित न हो। ग्रामीण क्षेत्रों मे मनुष्यो तक के लिए स्वच्छ पेय जल उपलब्ध नही होता तो पशुओ की तो बात ही क्या। दाना खल इत्यादि भी पुरानी सडी हुई कीडे ककर वाली फफूदी लगी हुइ खल का गो आहार मे कोई विचार नहीं करता इसी कारण से अधिकाश ग्रामीण क्षेत्रो मे गोपशु स्वस्थ नही रहता। घाव थनेल खुरपका इत्यादि रोग बने रहते हैं क्योंकि गाय एक चेतन्य पशु है। इस के विपरीत भेस जो सूअर की तरह गन्दे नाले मे ही पडा नहाता रहता है। सामान्यत ये रोग लक्षण नही दिखाता। परन्तु गन्दगी जिस मे भैस पडी रहती है। उसका अश और प्रभाव भैस के दूध मे भी रहता है जिससे लडने का भैंस तो अभ्यस्थ है पर उसके दूध पीने वाले मनुष्यो को अनेक प्रकार के रोग बढते जा रहे हैं। भले आधुनिक वैज्ञानिक भैस के दूध को स्वच्छ होने का प्रमाण पत्र देते रहे। कोपरेटिव प्रणाली पर दूध एकत्रित करने की व्यवस्था की भी यह त्रुटि है कि कोपरेटिव सोसाइटी को केवल दूध इकटठा करना हे। पशु कितने स्वस्थ थे या उन को क्या आहार दिया जाता है और क्या इन्जेक्शन लगा कर दूध निकाला जाता है यह cooperative प्रणाली की जाच का विषय नहीं। जहा गोदुग्ध सात्विक चेतना प्रदान करता है वहीं भैंस का दूध तामसिक रोगी समाज का आधार बनता हे।

अयक्ष्मा – गो का निवास स्वच्छ हवादार सूर्य की ज्योति द्वारा प्रभावित हो एसा वदो मे आदेश मिलता है। गोचर जिसमे गो रूचि अनुसार चल फिर कर व्यायाम करे। उनकी भी व्यवस्था रहनी चाहिए जो एक स्थल भूमिगत पशु है और उसे चलने फिरने के लिए स्थल भूमि आवश्यक हे। न चलने फिरने वाली गौ सग्रहणी जैसे रोग से ग्रस्त हो जाती है। भैस एक जलप्लावित स्थल का प्राणी हे जैसे कछुवा। भैंस को सग्रहणी से निरोगता हो सकती हे परन्तु भैस के दूध पर निर्भर समाज मे तो सग्रहणी बढ ही रहा है।

अघन्या – अच्छी स्वस्थ दूध व सतान बैलो से समाज कल्याण करने वाली गौ समाज पर बोझ नहीं वरदान सिद्ध होने के कारण अहिसनीय होती हे। इसलिए यदि गोहत्या रोकनी है तो गो को उन्नत बनाना ही होगा। साथ ही यह भी दुष्प्रचार रोकने की आवश्यकता है कि गोपालन अर्थ की दृष्टि से स्वावलम्बी नहीं है। आठ दस किलो दूध वाली गाय पर आठ दस किलो वाली भैंस से खर्चा बहुत कम होता हे। एक गो अपने एक ब्यात मे इतना दूध देती है कि उसकी तीन वर्ष तक तीन सतान पल जाती है। गोपालन यदि व्यवसाय की योजना से ही देखे तो २० प्रतिशत का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष होता है। ऐसी गौ ही अघन्या होती है। यह गोपालन के अनुभव पर आधारित विश्वास है कोई आस्था जन्य किताबी ज्ञान नहीं। क्रमश

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22 9 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 19/20 9 2002

मदर टेरेसा ने जो काम किया देसराज चौधरी पहले से और काफी अच्छे तरीके से कर रहे थे – जार्ज फर्नांडिस

श्री वीरेश चौधरी ने बताया कि बडी सख्या मे दानदाता इन सस्थाओ के लिए प्रतिवर्ष पाच हजार रूपये से लेकर पाच लाख रूपये तक की राशि देते है।

८८ वर्षीय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के नीवनतम सस्करण का लोकार्पण किया।

रानी दत्ता आर्य विद्यालय के प्राचार्य गजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने बताया कि विद्यालय का स्तर शीघ्र ही १२वीं कक्षा तक उन्नत किया जाएगा। उन्होने जानकारी दी कि विद्यालय के बच्चो द्वारा गणतन्त्र दिवस परड मे प्रस्तुत सास्कृतिक कायक्रम को राजधानी मे प्रथम ओर राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

६३ वर्षीया समाज सेविका डा० शारदा नारग को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सुरेश वाजपेयी नगर निगम मे विपक्ष के नेता सुभाष आर्य तीन अन्य निगम पार्षद सविता गुप्ता डा० मीना ठाकुर और गगा सहाय बैरवा आर्यसमाज के नेता राम नाथ सहगल दिल्ली समाज कल्याण बोर्ड की पूर्व अध्यक्ष डा० सरोज दीक्षा सुशील प्रकाश चौधरी प० महेन्द्र कुमार शास्त्री डा० मधु गुप्ता वीणा मल्होत्रा ज्ञानेश चोधरी हमीर सिह रघुवशी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति सभा में उपस्थित थे।

विद्यार्थियो द्वारा प्रस्तु[illegible] सास्कृ[illegible] कार्यक्रम ने दर्श[illegible] मोह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य आर्य सस्थाओं के वार्षिकोत्सव के अवसर पर "वृहद सत्यार्थ प्रकाश" के नवीनतम सस्करण का लोकार्पण करते हुए [illegible] सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती प० महेन्द्र कुमार शास्त्री एव वीरेश प्रताप चौधरी।
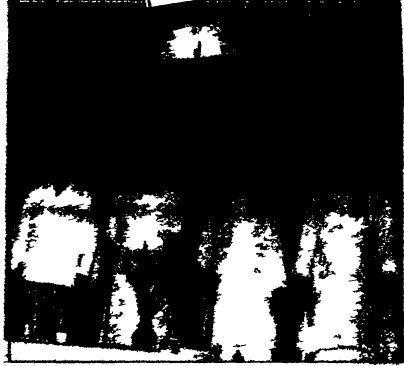
आर्य अनाथालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपस्थित आर्य नेताओ का एक विहगम दृश्य।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२९६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित फोन [illegible]
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda vsnl net in तथा वेबसाइट http://www whereisgod com

वर्ष ४१ अक २२ | २६ सितम्बर से ५ अक्तूबर २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ | सम्वत २०५९ | आ० कृ० ७

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

प्रथम कालम प्रथम विचार
सदा सत्य रहने वाली वाणी

वेद वाणी

अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम। होतार रत्न धातमम।। ऋ० १/१/१

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज जी ने सुप्रसिद्ध निरुक्ताकार यास्कमुनि जी के अनुरुप अग्नि शब्द को ईश्वर और भौतिक दोनो पक्षो के दृष्टिकोण से सिद्ध किया है।

पदार्थान्वय = **(यज्ञस्य)** हम लोग विद्वानो के सत्कार सगम महिमा और कर्म के **(होतारम्)** देने तथा ग्रहण करने वाले **(पुरोहितम्)** उत्पत्ति के समय से पहिले परमाणु आदि सृष्टि के धारण करने और **(ऋत्विजम्)** वारवार उत्पत्ति के समय मे स्थूल सृष्टि के रचनेवाले तथा ऋतु ऋतु मे उपासना करने योग्य **(रत्नधातमम)** और निश्चय करके मनोहर पृथिवी वा सुवर्ण आदि रत्नो के धारण करने वा **(देवम्)** देने तथा सब पदार्थो के प्रकाश करने वाले परमेश्वर की **(ईळे)** स्तुति करते हैं।

तथा

उपकार के लिए **(यज्ञस्य)** हम लोग विद्यादि दान और शिल्पक्रियाओ से उत्पन्न करने योग्य पदार्थों के **(होतारम्)** देनेहारे तथा **(पुरोहितम्)** उन पदार्थो के उत्पन्न करने के समय से पूर्व भी छेदन धारण और आकर्षण आदि गुणो के धारण करने वाले **(ऋत्विजम्)** शिल्प विद्या साधनो के हेतु **(रत्नधातमम्)** अच्छे अच्छे सुवर्ण आदि रत्नो के धारण कराने तथा **(देवम्)** युद्धादिको मे कलायुक्त शस्त्रो से विजय करानेहारे भौतिक अग्नि की **(ईळे)** बारवार इच्छा करते हैं।

इस अंक में ...

आतंकवाद को मिटाना राजनीतिक कार्य नहीं

पुलिस और सेना कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र

गाधीनगर (गुजरात) मे योगीराज श्रीकृष्ण के भक्तो द्वारा बनाए गए अक्षरधाम मन्दिर पर आतकवादियो का जुनूनी हमला भारतीय समाज मे वर्ग सघर्ष पैदा करने की दृष्टि से ही किया गया एक और प्रयास है। इस हमले और गोधरा मे रेलगाडी क डिब्बे मे यात्रियो को बन्द करके जला देन वाली घटना मे मौलिक समानता है। हमले का षडयन्त्र रचने वाले लोगो का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट हो रहा है कि जिस प्रकार गोधरा काण्ड के बाद प्रतिक्रियात्मक घटनाओ से गुजरात की शान्ति व्यवस्था भग हुई और काफी दिन उथल–पुथल के बाद अब शान्त नजर आन लगी; उसी प्रकार इस मन्दिर हमले स भी यही आशा इन भारत विरोधियो ने बाधी होगी कि वही वर्ग सघर्ष एक बार फिर पैदा हो।

यह भी स्पष्ट है कि इस प्रकार भारत मे अशान्ति फैलाने का उद्देश्य पाकिस्तान प्रायोजित ही हो सकता है – प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष।

अक्षरधाम मन्दिर पर हमले से मुस्लिम समुदाय स्वत ही अपने आपको कटघरे मे खडा पाता है। परन्तु यह बात न्यायोचित मानवीय और राष्ट्रीय हित मे है। हिन्दुओ पर हुए एक तरफा हमले की निन्दा मुस्लिम समुदाय के नेताओ को जोरदार शब्दो मे करनी चाहिए।

सेक्यूलरवादी राजनेता भी ऐसे समय मे चुप्पी साध लेते है। मृतक परिजनो दर्द से करहा रहे लोगो का कष्ट बाटने के लिए इन सेक्यूलरवादी नेताओ को आगे आना चाहिए।

प्रतिक्रियात्मक विनाशलीला को रोका जा सकता है यदि भारत मे रहने वाले समस्त देशवासी न केवल ऐसी घटनाओ की निन्दा करे बल्कि सरकार को देशद्रोही ताकतो का सिर कुचलने के लिए प्रेरित करे प्रोत्साहित करे व बाध्य करे और हर प्रकार का सहयोग दे।

इन सभी षडयन्त्रो के पीछे पाकिस्तानी गुप्तचर सस्थाओ के हाथ पूरी तरह से नजर आ सकते हैं। आई० एस० आई० तथा अन्य सस्थाए भारत मे अपने विधिवत केन्द्र स्थापित कर कार्य कर रही है।

सरकार यदि सख्त कानून कभी टाडा और कभी पोटा लागू करने का प्रयास करती है तो ससद मे वही तथाकथित सेक्यूलरवादी नेता ऐसे शोर मचाते है जैसे इन कानूनो से भारतवासियो पर अत्याचार प्रारम्भ हो जाएगा।

ऐसे देशद्रोही लोगो के लिए ये कानून ही नहीं बल्कि चौक पर खडा करके सार्वजनिक फासी का प्रावधान भी ऐसे कानूनो मे शामिल कर दिया जाए तो भी किसी देशभक्त भारतीय को आपत्ति नही होनी चाहिए परन्तु राजनेता और देशभक्ति अब विपरीतार्थक शब्द बन चुके हैं। स्वय पाकिस्तान का फौजी शासक यह स्वीकार कर चुका है कि आतकवादी मदरसा का भरपूर प्रयोग करते हे। भारत के नेता इस बात को स्वीकार करने की हिम्मत नही जुटा पा रहे है। आतकवाद के विरुद्ध हर आवाज को वे मुस्लिम विरोधी मानकर मुस्लिम वोटो के लालच मे ऐसे प्रयासो का विरोध करते है।

शेष पृष्ठ २ पर

सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे

आर्य वीर दल की अत्यावश्यक बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता म सार्वदेशिक आर्यवीर दल की एक अत्यावश्यक बैठक विचार विमर्श हेतु १२ अक्तूबर २००२ (शनिवार) को प्रात ११३० पर सार्वदेशिक सभा कार्यालय म आयोजित की गई है जिसमे आर्यवीर दल की गतिविधियो को समूचे विश्व म व्यापक स्तर पर व्यवस्थित करने से सम्बन्धित योजनाओ पर सभा प्रधान जी अपने अनुभवो पर आधारित विचार प्रस्तुत करना चाहते है।

शेष पृष्ठ १२ पर

मारीशस से वेद–प्रचार दल स्वदेश लौटा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व म धर्म प्रचार यात्रा पर मारीशस गया आर्य नेताओ का दल वापस दिल्ली पहुच गया। इस दल मे सभा के उप प्रधान आचार्य यशपाल जी तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी भी थे। वापस पहुचने पर हवाई अड्डे पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सम्पदाधिकारी श्री करतार सिह ने समस्त वेद प्रचार यात्रियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

सभा प्रधान कै० देवरत्न जी ने बताया कि लगभग एक सप्ताह का यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। मारीशस के विभिन्न क्षेत्रो मे एक एक दिन मे ८ कार्यक्रम आयोजित किए जाते थ। आर्य जनता का उत्साह तथा श्रद्धा अनुकरणीय है। मारीशस यात्रा की विस्तृत रिपार्ट शीघ्र ही प्रकाशित की जाएगी।

मारीशस के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल माहित जी का १००वा जन्मदिवस बहुत ही विशाल स्तर पर आयोजित हुआ जिसमे मारीशस के प्रधानमन्त्री एव अनेक मन्त्री भी पधारे।

सामयिक चर्चा

आतंकवाद को जड़मूल से कैसे समाप्त करें ?

पाठकवृन्द इस विषय पर अपने सक्षिप्त विचार अधिकतम १०० शब्दो मे लिखकर हमे भेजे। जिन्हे एक विशेष चर्चा के तहत **सार्वदेशिक साप्ताहिक** मे प्रकाशित किया जाएगा। पत्र के ऊपर सामयिक चर्चा शीर्षक लिखकर इस विषय पर प्रकाश डाले। आपके सुझाव **७ अक्तूबर, २००२** तक हमारे पास पहुच जाने चाहिए।

– *विमल वधावन* वरिष्ठ उप प्रधान

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

अमृत महोत्सव पर "महान समाजसेवी" का विमोचन

परमार्थ व मानवता न न क नैतिक गुण है। प ी कर्मयोगी हे चौधरी न। य सदविचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट ने आर्यसमाज सरस्वती विहार मे अमृत महोत्सव पर उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाशित सचित्र पुस्तिका महान समाजसेवी के लोकार्पण समारोह मे कहे। उन्होने कहा कि चौधरी चन्द्रभान जी ने अपना जीवन पुलिस के माध्यम से देश सेवा मे लगाया है। आगे भी उनकी सेवाओ का महत्व कम नही हुआ। आज भी उनके माध्यम से आर्यसमाज देश की महान सेवा कर सकता है।

वैदिक विद्वान आचार्य सुखदेव तपस्वी ने कहा चौ० चन्द्रभान दीन दुखियो व समाज के कमजोर वर्ग की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते है।

आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान डा० शिव कुमार शास्त्री ने कहा – पुलिस उपायुक्त के गरिमामय पद पर रहकर चौधरी जी ने राष्ट्र की अविस्मरणीय सेवा की जिसके लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक विशेष कर्तव्यनिष्ठा पुलिस पदक से उनका सम्मान हुआ। सेवा निवृत्ति के पश्चात भी वे सेवा व साहित्य के माध्यम से देश के विभिन्न प्रान्तो मे रचनात्मक गतिविधिया चला रहे है।

वैदिक प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री विदुषी डा० रमा शर्मा श्री रमेश डाबर श्री भजन प्रकाश आर्य ऋषि आनन्द ने भी चौधरी चन्द्रभान के महान कार्यो पर प्रकाश डाला।

चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव

डॉ० आनन्द सुमन के भ्रान्तिपूर्ण वक्तव्य का खण्डन

डा० आनन्द सुमन सिह ने उदयपुर से प्रकाशित एक समाचार पत्र को साक्षात्कार मे कुछ मनगढन्त और बेबुनियाद तथा झूठे तथ्यो के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर कुछ वक्तव्य छपवाए है जिनमे करोडो रुपय की भावी योजनाए प्रस्तुत की गई है जबकि **सार्वदेशिक सभा की ओर से ऐसी कोई योजनाए नहीं बनाई गई।**

समूचे आर्य जगत को यह सूचित किया जाता है कि **डॉ० आनन्द सुमन न तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य है और न ही उन्हे सभा की ओर से कभी प्रवक्ता नियुक्त किया गया।** आर्य जनता ऐसे गुमराह करने वाले वक्तव्यो को सार्वदेशिक सभा का वक्तव्य न समझे।

– सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष भाग

पुलिस और सेना कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र

दूसरी तरफ जब प्रतिक्रिया मे कुछ माहौल बिगडने लगता है तो मुस्लिम समुदाय को होने वाला कष्ट एक राजनीतिक चुनावी मुद्दा बनकर चर्चा मे आ जाता है। इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का सेक्यूलर नहीं बल्कि देशद्रोही असामाजिक और अमानवीय कार्य कहा जाना चाहिए वर्तमान राजनेताओ को पूरी तरह से देशद्रोही कहने के हमारे पास एक से अधिक कारण है। स्वार्थो मे लिप्त ये राजनेता हर घटना पर इस ताक मे रहते हे कि चल रही सत्ता को निकम्मा साबित करके अपना दावा कैसे प्रस्तुत किया जाए। भारतीय समाज का माहौल बिगडन की हमेशा प्रतीक्षा म ससद के वातानुकूलित कमरा मे बैठे ये राजनेता (पक्ष और विपक्ष दोनो) तुरन्त उस समय अपने बिलो से बाहर निकलते है जब मार–काट और वर्ग सघर्ष उग्र रूप ले चुका होता है। उस समय सरकारो को बर्खास्त करने की माग राष्ट्रपति शासन की माग कभी चुनाव करवाने और कभी रुकवाने की माग करने वाले ये देशद्रोही (यदि स्वय को देशभक्त समझते है तो) तब क्यो चुप रहते है जब आतकवादी भारतमाता की छाती पर कूदते हुए दनादन कर रहे होते है ? क्या यह देश द्रोह नही है ?

भारत की अन्दरुनी अव्यवस्थाओ से अपने राजनीतिक व्यापार का हित चाहने वाले कभी ये माग क्यो नही करते कि पाकिस्तान के फौजी शासक को मिट्टी मे मिला दिया जाए पूरे पाकिस्तान मे भारत के राष्ट्रपति का शासन हो पाकिस्तान पर पुरजोर हमला करके एक–एक पाकिस्तानी आतकवादी को तडफा तडफाकर मारा जाए। क्या ऐसी मागे न करना देश द्रोह नही ?

अमेरिका की मात्र दो बिल्डिगे टूटी तो उस देश के राष्ट्रपति का पहला बयान जिसने भी देखा उसने अनुभव किया होगा कि बुश की आखो मे खून उतरा हुआ था। उपरोक्त सभी मागे जो हमने व्यक्त की है वही बुश दोहरा रहा था अफगानिस्तान के लिए। परन्तु हमारे प्रधानमन्त्री की आखो मे खून उतरना तो दूर मुझे लगता है भाग के नशे से आखे ही नही खुलती। आखे बन्द करके सोया हुआ कवि कोई नई कविता जरुर सुना देगा। क्या यही देशभक्ति है ?

ससद पर हमले के बाद भारत की सुरक्षा सस्थाओ– दिल्ली पुलिस तथा गुप्तचर कम्पनीयो की कार्यवाही के बाद आई०एस०आई० के जो केन्द्र पुरानी दिल्ली की तग गलियो मे चलाए जा रहे थे उन्हे स्थानान्तरित कर दिया गया है। ये केन्द्र अब मेवात के क्षेत्रो में ऐसे चल रहे हैं जैसे कि स्वतन्त्र देश की सत्ता के तहत चल रही सस्थाए। करोडो का लेन–देन विदेशो से बेरोकटोक हो रहा है। एक एक मस्जिद/मदरसे मे करोडो रुपये का भवन खडा है। अन्तराष्ट्रीय टेलीफोन का सबसे अधिक उपयोग इन्ही क्षेत्रो मे है। धर्मान्तरण के लिए भी अच्छी खासी राशिया पानी की तरह बहाई जा रही है। परन्तु सरकारे इन क्षेत्रो पर अपनी नजरे बन्द बन्द करके चल रही है। देखकर भी रोक लगाने का कोई प्रयास नहीं। यदि कोई हिम्मत करे तो वोट का लालच बाधा बनता है और विपक्षी दल उसका अधिक फायदा उठाने की ताक मे बैठे नजर आते है। इसलिए भारत के समस्त नेताओ की आखे बन्द है। हालाकि इस आशय का एक स्पष्ट विवरण भारत के गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के कार्यालय मे उनके निजी सचिव श्री दीपक चोपडा जी को हमने स्वय दिया था।

जनता मरती रहेगी प्रतिक्रिया में सारा समाज कष्ट भोगता रहेगा। भारत मे आतकवाद किसी दिन सचमुच ससद को मिट्टी मे मिला देगा तो प्रधानमन्त्री एक बार फिर कह उठेगे – अब हमारे सब्र का बाध और अधिक प्रतीक्षा नहीं करेगा। सत्ता का मोह लोभ और भोग छूटेगा नहीं। परन्तु कब तक ? आतकवाद कोई राजनीतिक समस्या नहीं है यह तो केवल क्षात्र धर्म की परीक्षा है।

दर्जनो सैकडो राजनेता जब सामूहिक रूप से आतकवाद का शिकार होगे तो एक ऐसा समय आएगा जब पुलिस और सेना के हाथ मे पूरा नियन्त्रण होगा तब शायद बिना भेदभाव के आतकवाद को आतकवाद समझकर निपटा जाएगा। ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

वास्तव मे यह प्रार्थना परमात्मा के नाम पर परमात्मा के उन क्षत्रिय पुत्रो को करना चाहता हू जिन्होने पुलिस या फौज मे भर्ती होते समय सम्भवत मन मे यह सकल्प अवश्य लिया होगा कि भारतमाता की अन्दर–बाहर से हर प्रकार रक्षा करने का प्रयास करेगे।

क्या पुलिस और फौजियो के वह सकल्प भी केवल मात्र अपने बच्चे और परिवार पालने के लक्ष्य की पूर्ति का कवर मात्र थे। इन्हे याद रखना चाहिए कि शहीद पुलिस अफसर या फौजी अफसर के बच्चो को तो भारतीय समाज सिर पर बैठाकर रखता है। इतनी इज्जत एक सेवानिवृत्त अफसर तथा उसके परिवार को नहीं मिलती जितनी शहीद होने वालो के परिवारो को मिलती है।

क्या इन अफसरो का खून भी चाय और शराब के नशे मे मिलावटी हो चुका है। क्या उस खून मे से भारत माता के प्रति समर्पण की गन्ध भी समाप्त हो चुकी है।

क्या इन पुलिस या फौजी अफसरो को यह बात समझ नहीं आ रही कि आतकवाद को जडमूल से मिटाना उनका दायित्व है ?

यदि वे इस बात को स्वीकार करते हैं तो उनके मार्ग मे बाधा क्या है ? राजनीतिक बन्दर यदि बाधा उत्पन्न कर रहे हैं तो उनका इलाज भी मुश्किल नही। राजनीति के खिलाडी चाहे कितने ही धुरन्धर क्यो न हो रहते तो पुलिस और फौज के सरक्षण मे ही है। जिस दिन पुलिस और फौज ने ये ठान लिया कि आतकवाद को मिटाना है उसी दिन इस मार्ग मे आने वाली ये बाधाए मिटाना बडी बात नही होगी। अब एक–एक करके कोई कार्य सफल नही होगा। अब आतकवाद से सम्बन्धित कानून बनाने की ताकत या सीमाओ पर रक्षा के निर्देश जारी करने का अधिकार इन राजनेताओ से छीनना होगा। अब तो उस घडी की प्रतीक्षा है जब ससद मे सभी राजनेता मिलकर उछलकूद मचा रहे हो और फौज की एक टुकडी देश पर नियन्त्रण के लिए अग्रेजो की बनाई इस ससद और इसके कानूनो के स्थान पर प्रजा पालन का एक नया मन्दिर और एक नया विधान बनाकर लागू कर दिखाए

भारत मे एक साधारण व्यक्ति से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक इस मूल सिद्धान्त को **स्वीकार करे कि आतकवाद मिटाना राजनीतिक समस्या नहीं है इसके लिए क्षात्रधर्म (पुलिस और फौज) को कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र** करना चाहिए।

– विमल वधावन,
वरिष्ठ उप-प्रधान

श्राद्ध पितरों का या मृतकों का ?

– स्वामी केवलानन्द सरस्वती

जिस कर्म से विद्वान्, देव ऋषि माता-पिता सुखी हों उनकी तृप्ति हो तथा उसके लिये जो कर्म सेवा श्रद्धा से किये जायें उस कर्म को तर्पण और श्राद्ध कहते हैं। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपनी पच महायज्ञ विधि पुस्तक में इन पच यज्ञो का फल लिखा है – आत्मोन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होती है तथा धर्म अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। यह कितना बड़ा फल है इन पच महायज्ञो के करने का। अर्थात् इन पच यज्ञों के करने से मनुष्य जीवन सफल होता है।

इसलिए मनु महाराज ने कहा 'यथाशक्तिर्नहापयेत् अर्थात् प्रत्येक मनुष्य इस यज्ञ को अवश्य ही करे। इनको न करने से मनुष्य पाप का भागी होता है। ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ भूतयज्ञ नृयज्ञ इन यज्ञों में तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ है। इसी का नाम श्राद्ध है।

विद्वानो तथा जीवित माता पिता की श्रद्धा से जो सेवा की जाती है उसे श्राद्ध कहते हैं। बहुत से लोग मोह तथा अज्ञानवश मृत माता पिता का श्राद्ध करते हैं जो सर्वथा बुद्धि विरुद्ध है क्योंकि मरने पर जीव अपने कर्मानुसार पता नहीं कहा किस योनि मे जन्म लेता है। यहा किसी को खिलाया गया भोजन या दी गई वस्तु कैसे मिल सकती है ? वह जीव हाथी घोडा शेर साप चींटी पता नहीं किस योनि में गया है।

इसलिए मरने पर बडो के नाम से श्राद्ध करना व्यर्थ तथा बहुत बड़ी भूल और अज्ञान का कार्य है। जीवित माता पिता की सेवा श्रद्धा भक्ति से की जावे यही सच्चा श्राद्ध है। माता पिता की सेवा से यश और पुण्य दोनो प्राप्त होते हैं। माता पिता को सेवा से सन्तुष्ट करना जीवन की एक बहुत बडी सफलता है पुण्य है। मरने पर उनका आशीर्वाद सन्तानों को नहीं प्राप्त हो सकता। जीवित माता पिता ही सेवा से सन्तुष्ट होकर अपने आशीर्वाद के साथ अपना सर्वस्व सन्तान को दे जाते हैं, इसलिए जीवित माता पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध है। जिन लोगों ने जीवित माता पिता की आज्ञा का पालन किया तथा उनकी सेवा की उनका नाम हजारों वर्ष बीतने पर भी लोग नहीं भूलते।

वर्तमान मे अपने हिन्दू समाज मे अनेक अन्ध प्रथाएं प्रचलित हैं। उनमें मृतकों का श्राद्ध भी एक बहुत ही विचित्र तथा भ्रान्तिपूर्ण प्रथा प्रारम्भ हो गयी है। वास्तविक श्राद्ध व पितर शब्दों के अर्थ के अनर्थ करके पौराणिक पडितों ने इसे अपनी जीविका का साधन बना रखा है। अब हमे यह देखना है कि श्राद्ध तर्पण पितरो का करना है या मृतकों का ? वास्तव मे शास्त्र मर्यादा का पालन करना प्रत्येक मानव का धर्म है।

वेदों मे पितरो का श्राद्ध व तर्पण

ओ३म् । ऊर्ज वहन्ती अमृत घृत
पय कीलाल परिस्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।।

यजु० २/३४

अर्थ – (पितृन) पितरो को अर्थात उच्चकोटि के विद्वानों व सत्योपदेशको को (तर्पयत) प्रसन्न तृप्त करो। किन किन पदार्थो से (ऊर्ज वहन्ती अमृत घृतम) दूध उत्तमान्न ऋतु के ताजा फल आदि देकर स्वधास्थ अपनी पवित्र कमाई से ही उनकी सेवा करो और धर्मानुकूल अर्थ के उपार्जन में दृढ रहो।

भावार्थ इस उपरोक्त वेद मन्त्र के अर्थ पर हम ध्यान दे तो पालन व रक्षा कराने वालो का नाम पितर है अर्थात माता पिता गुरु आचार्य विद्वान् आदि पूजनीय महाजनों की अपनी पवित्र कमाई से सदा सेवा करनी चाहिए उत्तमोत्तम पदार्थों से सदा उनकी तृप्ति करो इसी का नाम 'तर्पण है और श्रद्धा से सेवा करना ही श्राद्ध है। यह जान लेना आवश्यक है कि एक सेव्य जिसकी सेवा करनी है और दूसरा सेवक जिसे सेवा करनी है वह दोनो ही वर्तमान मे हो तभी सेवा सभव है।

अत श्राद्ध व तर्पण का सम्बन्ध जीवित पितरो से ही हो सकता है मृतको से इसका सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसलिए मन वचन कर्म से जीवित पितरो को सुख देते रहो। जैसे हमारे पितर जन अपनी सत्य शिक्षा देकर हमारा कल्याण करते हैं उसी प्रकार उनकी सेवा करना हमारा कर्तव्य है।

आजकल अविद्या अन्धकार के कारण लोग श्राद्ध का स्वरूप ही भूल गये और माता पिता के मर जाने पर उनको पानी देकर तर्पण और पिण्डदान तथा ब्राह्मण को भोजन कराकर श्राद्ध करते हैं। प्राय देखा जाता है कि लोग देवता स्वरूप जीवित माता पिता की सेवा में तो उपेक्षा करते हैं और मरने पर गगाजी में पहुचाने को ही तर्पण व श्राद्ध मानते हैं। इसी पर किसी अनुभवी कवि ने ठीक ही कहा है

जियत माता-पिता से दगम दगा।
मरे माता पिता पहुचाये गगा।।

अब ! आप ही विचार करें। इससे क्या लाभ ? क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपने अपने कर्मानुसार मरने पर उत्तम मध्यम निकृष्ट योनि मे जन्म लेता है जिसको उसी प्रकार का भोजन भगवान् अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार उपलब्ध कराता है। इसलिए अपने पितरों की आत्मा को शान्त व तृप्त करना चाहते हो तो अपने जीवित माता पिता व गुरुजनो की श्रद्धा से सेवा करके उन्हे तृप्त करो। यह वास्तव मे सच्चा व प्रत्यक्ष श्राद्ध व तर्पण है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने श्राद्ध और तर्पण शब्द पर अपने अमर ग्रन्थ जगद्विख्यात सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला है।

ऋषियज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ व सर्वदा।
नृयज्ञ पितृयज्ञ च यथाशक्तिर्न हापयेत।।

मनु० ३/७०

अध्यापन ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञस्तु तर्पणम।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम।।

मनु० ३/७०

महर्षि लिखते हैं – दो यज्ञ ब्रह्मचर्य मे लिख आए। वे अर्थात एक वेदादि शास्त्रो का पढना पढाना सन्ध्योपासना योगाभ्यास दूसरा देवयज्ञ विद्वानो का सग पवित्रता दिव्य गुणो का धारण दातृत्व विद्या की उन्नति करना है ये दोनो यज्ञ प्रात साय करने होते हैं।

तीसरा पितृयज्ञ अर्थात जिसमे देव विद्वान ऋषि पढाने वाले पितर माता पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियो की सेवा करनी चाहिए। पितृयज्ञ के दो भेद हैं – एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात श्रत सत्य का नाम है। **श्रत्सत्य दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया सत् क्रियते तच्छ्राद्धम।** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसका नाम श्राद्ध है और 'तृप्यान्ति तर्पयन्ति येन पितृन तत्तर्पणम जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि पितर प्रसन्न हो और प्रसन्न किए जाये उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितो के लिए है मृतको के लिए नहीं। महर्षि की यह शिक्षा यदि हम अपने आचार विचार व व्यवहार मे लाये तो हम सबका जीवन सुखी बन जाए।

पच महायज्ञो में पितृयज्ञ

प्रत्येक ब्रह्मचारी व गृहस्थ का परम कर्त्तव्य है कि जीवित माता पिता दादा दादी एव आचार्य गुरुजनो आदि अपने बडो की नित्य श्रद्धा पूर्वक भक्तिभावना से सेवा करे। जिन माता पिता ने अनेक प्रकार से कष्ट उठा कर हमारा पालन पोषण किया उनके ऋण से उऋण होना तो असभव है। जो लोग अपने इस कार्य मे प्रमाद आलस्य करते हैं वे निश्चय ही नरकगामी होते हैं अत प्रत्येक गृहस्थ का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवित माता पिता व गुरुजनो को अपनी आत्मिक श्रद्धा द्वारा सेवा कर उन्हे तृप्त करे। इसी को नीतिकारो ने श्राद्ध कहा है और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सेवा करने को ही तर्पण कहा है।

प्राय देखा जाता है कि अविद्या अन्धकार के कारण लोग श्राद्ध तर्पण का अर्थ ही भूल गए हैं और माता पिता के मरने पर उनकी हड्डियो को हरिद्वार पुष्कर गया आदि कल्पित तीर्थ स्थानो पर जाकर पानी तर्पण और पिण्डदान तथा नामधारी ब्राह्मणो को भोजन करा कर श्राद्ध करते हैं परन्तु यह सब व्यर्थ है क्योंकि जीवात्मा यह भौतिक शरीर छोडने पर अपने कर्मानुसार दूसरी योनि धारण कर लेता है इस प्रकार के तर्पण व श्राद्ध से उन्हे कोई लाभ नहीं पहुच सकता है। न्यायकारी परमात्मा उसकी योनि के अनुसार ही भोजन की व्यवस्था करता है।

सच्चा तर्पण व श्राद्ध तो यही है कि जीवित माता पिता की नित्य श्रद्धा व भक्ति भाव से सेवा की जावे और उनकी आत्मा को हर प्रकार से तृप्त रखा जावे। यही पितृ यज्ञ है। जो परिवार ऐसा करते हैं उनकी प्रत्येक कामना भगवान पूर्ण करता है।

श्रद्धा पूर्वक अभिनन्दन का फल

अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन । चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम।।

यह है वास्तविक जीवित पितरो की सेवा भक्ति तथा श्रद्धा पूर्वक अभिवादन (नमस्ते) करने का सुन्दर फल। हमारे विद्वान पितर आचार माता पिता को आगे होकर चरण स्पर्श अभिवादन करने पर हमे क्या आशीर्वाद देते हैं इस पर ध्यान दे। प्रथम आयु विद्या यश बल इन महाशक्तियो के द्वारा मानव इस ससार सागर के अज्ञान रूपी भवर से तर जाते हैं। इसलिए इसका नाम वास्तविक तीर्थ है। सत महात्माओ का सत्सग व उपदेश ही भवसागर से तारने वाली नौका है। न की किसी कल्पित तीर्थ स्थानो मे स्नान करने से प्राणी तरता है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धन्ति मन सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्याम भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

मनुष्य का बाह्य शरीर जल से शुद्ध होता है। मन सत्य उपदेश से शुद्ध होता है विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होती है। बुद्धि सत्य ज्ञान से शुद्ध होती है।

हमारी गोसंवर्द्धन परम्परा और आज की समस्या

– सुबोध कुमार

गताक से आगे

समस्त भारत मे ऐसी परम्परा गत प्रथा है कि कृषि तथा कृषि सम्बन्धित अन्य कार्यो मे जिन पशुओ का प्रयोग किया जाता है उनको प्रतिमास अमावस्या के अत पर विश्राम दिया जाता है। ऋतु अनुसार पशुओ को मल कर स्नानादि से स्वच्छ करके शरीर का परीक्षण सींग खुरो इत्यादि को तेल से चुपड कर माथे और पुटठों आदि को चित्रित करके सामूहिक प्रदर्शन इत्यादि करे जाते है। गाय का दूध बेचते नहीं हैं वरन खीर बना कर बाटते है।

पशुयाग के अन्तर्गत तीन प्रकार के पशु माने जाते है। अग्निषोमीय सवनीय अबन्धनीय पशु।

अग्निषोमीय पशु अग्नि द्युलोक स्थित सूर्य और भूमि के अन्तर्गत विद्यमान ऊष्णता का प्रतीक है। सोम अन्तरिक्ष मे विद्यमान चन्द्रमा विविध तरल रसायनो भूमिगत जल तथा ऋतु अनुसार बरसने वाले जल का प्रतीक है। ये देवता समस्त वनस्पति ओषधि के प्राण होकर समस्त कृमि कीट से लेकर विशाल प्राणियो के जीवनाधार है। इन्ही देवताओ (अग्नि और सोम) के सहयोग से एक बीज पृथ्वी के गर्भ मे अकुरित होकर भूमि के ऊपर सिर निकौलता है। परमेश्वर के रूद्र स्वरूप से बीज भूमि मे विलीन होकर शिव रूपीण कल्याणकारी अकुर बनकर भूमि से बाहर निकलता है। इसी कल्याणकारी शिव का वाहन बेल है। सवारी आधार और सवार आधेय होता है। शिव समाज का कल्याण – बेल पर आधारित होने का इससे सुन्दर प्रमाण नही बन पडता।

सवनीय पशु गौ बकरी इत्यादि पशु जो बच्चे देते है। वे गाय व बच्चे जो उत्पादक व्यवस्था मे आती हो दूध बच्चे देने वाली गाय बकरी इत्यादि और उनके बच्चे।

अनुबन्ध्य पशु मर जाने के लिए पशु जो अबन्धनीय है। (वामन शिवराम आप्टे सस्कृत हिन्दी कोश) (यह विषय अत्यन्त विचारणीय है और परम्परा आस्था श्रद्धा जन्य होने के कारण अबन्ध्य पशु पर निर्णय भी याग मे किया जाता है।) दैनिक प्रात साय अग्निहोत्र पर्यावरण के लिए दर्शष्टि गो पशुयाग भी था इसलिए प्रासगिक है।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को प्रात काल बेला मे (मास का अत) दर्शेष्टियाग का आयोजन होता है। प्रात काल बेला मे जहा यजमान पत्नि सहित

और अध्वर्यु ऋत्विज याग स्थल पर एकत्र होकर तैयारी करते है वही यज्ञशाला के चारो ओर खूटो से (सवनीय) सेवनीय दूध देने वाली गाय लाकर बाधी जाती हे। इन गौवो के आहार को एक (शकट) गाडी में लाकर यज्ञशाला के पास रखा जाता था। ऋत्विजो के निर्देश पर कोई तीन या चार गाय सब के सामने दुही जाती थी।

शकट से रेन्डम सेम्पल के रूप मे हर गौ आहार को मुटठी भर लेकर ऋत्विजो तक पहुचाया जाता था। ऋतु अनुसार इस आहार मे आठ से लेकर बारह तक भिन्न भिन्न पदार्थ होते थे। जो आज भी पाए जाते है। जैसे खाद्यान्न यव चना मक्का बाजरा धान पुष्टिकारक पदार्थ लवण इत्यादि।

उस काल मे गौए स्वयम जगल मे घूम कर न केवल शारीरिक व्यायाम ही कर पाती थीं साथ ही अपनी रूचि अनुसार वनस्पतियो घास इत्यादि का भी सेवन करती थीं। दूध निकालने के समय दूध देने के लिए खाद्यान्न का आहार देना दूध निकालने वाले का कर्तव्य था।

इस खाद्यान्न के सभी पदार्थ ऐसे होते थे कि जिन्हे हम सब खा सके। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि शकट सेप्राप्त किए गए पदार्थो का याग मे सम्मिलित ऋत्विज सूप मे निरीक्षण करते थे। ककर पत्थर तिनको को अलग करके एक उत्कर मे इकटठे करते थे। फिर ओखली मे उस खाद्यान्न को कूटकर अन्न के अश निकाल कर वहीं सिल बटटे पर पीस कर उसकी पिष्टी बनाते थे जो मिट्टी के छोटे छोटे तवो (कपाल) पर रख कर यज्ञाग्नि मे बाटी की तरह पकाते थे। इन कपालो की सख्या अष्टकपाल एकादस कपाल द्वादश कपाल इत्यादि के वर्णन से समझी जा सकती है।

इन पकी हुई बाटियो और गो से ली हुई दूध दही मीठा भात या खीर गोघृत की आहुतियो का यज्ञ मे दने के पश्चात यज्ञशेष के रूप मे गौवो सहित सब मे वितरित करते थे।

यहा विचारणीय है कि गोपालन के हर साधन और पदार्थ का बडी सूक्ष्मता से मास मे एक बार निरीक्षण और मत्रणा इस परम्परा मे निहित थे। यजुर्वेद के प्रथम और द्वितीय अध्याय के मत्र जो इन यागो मे प्रयुक्त थे। आज के प्रोद्योगिकी की प्रति मास निरीक्षण पद्धति के स्वरूप मे पाए जाते है। गौवो के आहार सेवनीय जल निवास प्रजनन व्यवस्था स्वास्थ्य सभी पर निर्देश प्राप्त होता है।

दर्शेष्टियाग में निहित सवनीय सत्र मे सब उपस्थित समाज के सामने (१) सब गौवो को लाकर बाधने पर उनके स्वास्थ्य की जाच और मत्रणा होती थी।

(२) अग्निहोत्री गौ यजमान की सब से अच्छी गौ को दुहने पर सबके सामने न केवल दूध निकालने की विधि परन्तु दूध की मात्रा का भी निरीक्षण होता था और अच्छी उत्पादक गौवश का सस्करण होता था। (वसो पवित्रमसि शतधार ते यज्ञ पतिर्द्धार्षीत।। वसो पवित्रमसि सुप्वा कामधुक्ष य० १–२३) मत्र इसी सदर्भ मे हैं।

शकट – गोशाला में आहार चारा ढोने की गाडी के धुरों पहियों फर्श का निरीक्षण कि गोशाला के सब पात्र साधन टूटे फूटे जीर्ण अवस्था मे न हो जिससे आहार इत्यादि पदार्थ बिखर गिर कर व्यर्थ हो जाए। (धूरसि धूर्व धूर्क्त प्रपितम जुष्टतम देव हूतमम।। य० १ – ८) इसी सदर्भ मे हैं।

गौ आहार के नमूने शकट से लेकर सूप मे छाट कर ककर तिनके कृमि दोष आदि से स्वच्छता का परीक्षण तथा ऋतु स्थान अनुसार उपयोगिता उपलब्धता का विचार विमर्श किया जाता था। (देवस्य त्वा सवितु जुष्ट ।। भूताय त्वा नारातये हव्य रक्षा।। य० १ – १० ११) मत्र इसी सदर्भ मे हैं।

जल और निवास के लिए शोधक वायु द्वारा तथा सूर्य की किरणो द्वारा पवित्रता की व्यवस्था। गौवो के बैठने के स्थान पर पृथ्वी जैसी त्वचा हो। इन सब व्यवस्थाओ का निरीक्षण होता था। (पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ यज्ञपति देवयुवम।। युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये वस्तच्छुन्धामि।। शर्मास्यवधूत रक्षोऽवधूता त्वादिव्यास्त्वग्वेत्तु।। य० १२ १३ १४) मत्र इसी गाय दोहने के सदर्भ मे है।

शकट से गौ आहार के नमूनो को छिलके तिनके अलग करके कूट पीसकर (तवो) कपाल पर पका कर खाने योग्य बनाकर यज्ञाहुति गौ आहार का सूक्ष्मता से निरीक्षण ही बताता है। य० १–१५ से २४ तक के मत्र इसी आहार की गुणवत्ता और पुष्टिकारित के लिए हैं।

यह आहार सन्तति की उन्नति और स्वास्थ्य प्रद हो वृषभ गर्भधारण कराने के लिए योग्य बने। गर्भधारी गौ अच्छे प्रजनन के लिए उपयुक्त स्वच्छ आहार और जल और आवार पाए।

पृथिवी देवयजन्योषध्यास्ते मा मौक।। अपाररु पृथिव्यै व्रज गच्छ गोष्ठान वर्षतु ते द्यौर्बधान मा मोक।। य० १–२५–२६ मत्र इसी सदर्भ मे हैं कि गर्भवती गौ तथा वृषभों इत्यादि के व्रज चरने के स्थान और गोष्ठ आवास के स्थान वर्षा और सूर्य दोनो से सुरक्षित भी हो। आज हमारे वृषभ अनाथ है। इसी सदर्भ में अथर्ववेद ६–१४२ से यह मार्गदर्शन भी मिलता है कि सगोत्र सन्तानोत्पत्ति को रोकने के लिए गोपरिवार को कैसे चिन्हित करे। क्रमश

एक लघु ग्रन्थ सांध्य योग-प्रकाश

2

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

– भगवन्त सिंह कपूर

पंचकोष और अष्टांग योग

यह धारणा भ्रमयुक्त है कि 'योग सासारिक स्त्री पुरुषो के लिए नहीं है यह तो केवल सन्यासियों योगियो के लिए है। योग की शिक्षा तो प्रकार भेद से त्यागियो महात्माओ प्रत्येक नर नारी बालक-वृद्ध रोगी स्वस्थ एव विद्यार्थियो सभी के लिए अति आवश्यक तथा उपयोगी है।

मानव जीवन के लिए आवश्यक शारीरिक मानसिक बौद्धिक एव आत्मिक विकास मे यही विद्या सफलता दिलाती है। मन का सयम अर्थात किसी एक समय मे किसी एक ही वस्तु पर चित्त एकाग्र करना एव इसके दीर्घकालीन अभ्यास से हर साध्य शक्ति प्राप्त करना सम्भव है।

महर्षि पातजलि के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्ति निरोघ अर्थात चित्त की वृत्तियो का निरोध करना ही योग है। और महर्षि व्यास जी कहते है योग सार्वभौम चित्तस्य धर्म अर्थात योग ही सम्पूर्णता से चित्त का धर्म है अन्य सभी अग सहायक हैं।

योग का अर्थ जोड सधि है। स्थूल से सूक्ष्म मे अधिक शक्ति होती है तो स्थूलता को सूक्ष्मता से जोडना ही योग है। अत स्वभावत अल्पज्ञ एकदेशीय आत्मा भी प्राप्त मानव चोले के शरीरस्थ स्थूलतम भौतिकता को सूक्ष्मता से योग कर उत्तरोत्तर सूक्ष्म शक्तिया प्राप्त करके अति सूक्ष्म परमात्मा से योग अर्थात 'मोक्ष चाहता है। तदर्थ योग को पाच कोषो मे विभक्त किया गया है –

१ अन्नमय कोष, २ प्राणमय कोष, ३ मनोमय कोष ४ विज्ञानमय कोष, और ५ आनन्दमय कोष

१ स्थूलतम अन्नमय कोष अर्थात इन्द्रिया एव भौतिक शरीर। इनको यम–नियमानुसार साधकर अगर आसनो से स्वस्थ रर हैं तो मात्र पौष्टिकता के व्यायाम करते है। भौतिकता मे ही भटकते हैं।

२ जब इनसे सूक्ष्म प्राणायाम से आसनो का योग कर अभ्यास करते हैं तो ये योगासन बन जाते हैं। तभी स्थिर आसन सधता है एव इन्द्रियनिग्रह होता है और हम 'प्राणायाम कोष मे पहुचते है।

३ अगर मात्र श्वास प्रश्वास के विच्छेद के प्राणायाम करे तो विभिन्न प्रकारो से चिकित्सा का काम तो करते हैं परन्तु जब गति विच्छेद कर मनोवाछित चक्र पर प्राणायाम से भी सूक्ष्म मन से इनका योग करते हैं तो ध्यान केन्द्रित होता है। इन्द्रियो रूपी घोडो की लिप्तता पर मन रूपी लगाम कसती है और हम मनोमय कोष पर पहुचते हैं।

४ मन से भी सूक्ष्म बुद्धि से जब मन का योग होता है अर्थात मन रूपी लगाम पर बुद्धि का नियन्त्रण रहता है तब ईश्वर प्रणिधान से प्राप्त मेधा मे आत्म विज्ञान समझते हैं। मन निर्विकार होता है। इस एकाग्रता से प्राप्त प्रज्ञा विज्ञानमय

कोष मे पहुचाती है। यही सम्प्रज्ञात समाधि मे आत्मानुभूति करते है।

५ आत्मानुभूति के भी आगे आत्मा से भी सूक्ष्म परमात्मा के योग मे ध्यानस्थ अपना सब कुछ भूलकर असम्प्रज्ञात समाधि मे परमात्मानुभूति आनन्दमय कोष मे पहुचाती हैं। यही हम सच्चिदानन्द के परमानन्द मोक्ष का आनन्द प्राप्त करते है।

क्रमबद्ध साधना की सुविधा के लिए महर्षि पातजलि ने अन्नमय कोष के यम नियम एव आसन तीन सोपान किए है। प्राणायाम एव मनोमय कोष को यथावत प्राणायाम और प्रत्याहार सोपान बताया है। विज्ञानमय कोष को धारणा एव ध्यान सोपान बता कर आनन्दमय कोष को अन्तिम उच्चतम समाधि सोपान नाम दिया। इस प्रकार योग विधि को अष्टाग मे विभक्त कर राजयोग विभूषित किया।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रमाणित राजयोग के ये अष्टाग जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओ पर नियन्त्रण करने की विधि है जो साधना की पहली सीढी से आरम्भ कर उच्चतम सीढी आत्मिक उत्थान की अवस्था तक पहुचने का अभ्यासक्रम है। अष्टाग योग को साधना की सर्वोत्तम विधि माना गया है। ये अष्टाग सक्षेप मे इस प्रकार है –

'यमनियमासनप्राणयामप्रत्याहारधारणाध्या समाध्योऽष्टावन्गानि'।

यो० २/२९

बहिरंग योग

१ यम – अदिसासत्या स्तेब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा ।

यो० २/३०

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है श्रष्ठ विधि से समाज मे रहने के स्वर्णिम नियम ही मन्त्र मे वर्णित पाच यम योग की नींव है।

२ नियम – 'शौचसन्तोषतप स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा '। यो० २/३२

मोक्ष मार्ग का पथिक बनने हेतु स्वपालनार्थ मन्त्र मे वर्णित पाच नियम ही नीव के पत्थर रूपी आधार है।

३ आसन स्थिरसुखमासनम् ।

यो० २/४६

मानव मात्र के स्वास्थ्य लाभ के लिए आसन लाभप्रद तो है ही साधना के लिए स्थिर आसन अति आवश्यक है।

४ प्राणायाम 'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेद प्राणायाम ।

यो० २/४९

श्वास प्रश्वास की गति के विच्छेद को प्राणायाम कहते है। इससे इन्द्रियनिग्रह होता है एव शरीर सध जाता है।

५ प्रत्याहार – 'स्वविषयासप्रयोगे चित्तस्वरूपाऽनुकार हवेन्द्रियाणा प्रत्याहार ।

यो० २/५४

इन्द्रियो का विषयो के साथ सम्बन्ध न रख मन के अनुरूप होना अथवा मन का बुद्धि के अनुरूप होना ही प्रत्याहार है।

अन्तरंग योग

भौतिक शरीर रूपी स्वय के वाहन पर इतना नियन्त्रण हो जाने पर आध्यात्मिक सोपान मे प्रवेश करते है –

६ धारणा – देशबन्धश्चित्तस्य धारणा

यो० ३–१

किसी स्थान विशेष पर चित्त का स्थिर करना धारणा है। यह निश्चित धारणा बना लेना कि मै यह नश्वर शरीर नही हू अपितु इसका स्वामी अनश्वर नित्य आत्मा हू।

७ ध्यान – तत्रप्रत्ययेकतानता ध्यानम्

यो० ३–२

आत्मानुभूति होते ही अपनी निराकार आत्मा मे परमात्मा परमनित्य निराकार का स्मरण ध्यान व उनसे मिलने की तीव्र उत्कण्ठा से ही ध्यान सधता है। ध्यान ज्ञान का प्रवाह बना रहना ही ध्यान सोपान है।

८ समाधि तदैवार्थमात्रनिर्भास स्वरूपशून्यमिव समाधि यो० ३–३

स्वरूप रहित हो अपना सब कुछ ससार ससारी व अपना शरीर भी भूलकर केवल प्रभु के स्वरूप परमात्मा के प्रकाश पुज मे अपनी आत्मज्योति का विलय कर आनन्दानुभूत का स्थिर होना ही समाधि है।

पहले सम्प्रज्ञात समाधि मे ससार व ससारी से अलग होना फिर उसके प्रकाश स्वरूप म अपना मिलन विलय अर्थात असम्प्रज्ञात समाधिस्थ होते है।

क्रमश

मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० नामवरसिंह द्वारा

महर्षि दयानन्द की मिथ्या आलोचना

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

डा० रामविलास ने स्वामी दयानन्द के देश प्रेम को सिद्ध करने के लिए जो प्रमाण दिए वे डा० सिह को हजम नहीं हो सके। उन्होने इसके खण्डन मे स्वामी श्रद्धानन्द का एक वक्तव्य (सन्दर्भ से हटकर) प्रसारित किया जो उन्होने पटियाला म चलाए गए उस अभियोग के परिप्रेक्ष्य मे दिया था जब गोराशाही के दबाव म आकर पटियाला के नाबालिग राजा ने अपने नगर के आर्यसमाजियो को राजद्रोही ही करार नहीं दिया उन्हे जेल मे डाल दिया तथा उन पर अग्रेजी राज को उलटने का षडयत्र रचने का अपराधी बताकर उन पर मुकद्दमा चलाया। जिस पुस्तक (आर्यसमाज एण्ड इटस डिट्रैक्टर्स ए विण्डिकेशन के चद वाक्यो को डा० सिह ने उद्धृत किया हे वह भी जानबूझ कर प्रसग से हट कर किया गया अनर्थकारी दुष्कर्म है। स्वामी दयानन्द के स्वदेश प्रेम उनकी स्वराज्य के प्रति अवधारणा विदेशी राज्य को समाप्त हुआ देखने की उनकी तीव्र ललक उनके द्वारा सुझाए गए स्वराज्य प्राप्ति के उपाय आदि का विस्तृत विवेचन करना यहा स्थान सकोच के कारण सम्भव नहीं है तथापि इस तथ्य को स्वीकार करने म कोई विप्रतिपत्ति नही हे कि स्वामीजी ने एक कारण से अग्रेजी राज्य की प्रशसा भी की थी। उनका कहना था कि इस राज्य म प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के प्रचार तथा मतमतान्तरो की समीक्षा (खण्डन मण्डन करने की पूरी आजादी है। यदि इस समय (स्वामीजी के समय मे) मुसलमानो का राज्य होता तो इस्लाम की आलोचना करना अपनी मौत को न्यौता देना होता। डा० सिह ने तो एक ही उद्धरण दिया हे मेरे पास तो स्वामी दयानन्द के अग्रेजी राज्य के प्रति दृष्टिकोण को स्फुट करने वाले कोई आधा दर्जन उद्धरण है जिनसे उनकी ब्रिटिश राज्य विषयक स्पष्ट दृष्टि का पता लगता ह। यदि डा० सिह दयानन्द वाङमय का गहराइ से अनुशीलन करते तो उन्हे पता चलता कि स्वामीजी ने सुराज्य की तुलना मे स्वराज्य को ही तरजीह दी थी तथा उनकी दृष्टि म विदेशियो का राज्य कितना ही सुखद न्यायपूर्ण मतमतान्तर के पक्षपात स रहित यहा तक कि माता पिता के वात्सल्य से सिक्त ही क्यो न हो वह स्वराज्य की तुलना मे कदापि ग्राह्य नहीं हो सकता। इस परिप्रेक्ष्य मे स्वामी दयानन्द का रामविलास शर्मा कृत मूल्याकन सही है तथा डा० सिह के कथन मे प्रत्यक्ष खोट है।

अब डा० सिह यह सिद्ध करने पर उतरे कि १९ वी शताब्दी के नव जागरण मे अग्रेजो की भूमिका भी थी। साथ ही वे इस जागरण मे दयानन्द के अवदान को भी नकार नही सकते। तब उन्होने एक अनोखा रास्ता अपनाया। क्यो नही दयानन्द की वेद भक्ति वेदो को अपना मार्गदर्शक बनाने तथा वेदो की शिक्षाओ को ही भारतवासियो द्वारा मार्गदर्शक स्वीकार करने उन सबके पीछे यूरोप मे किया जाने वाले वेदाध्ययन को कारण

डॉ० नामवरसिह को इस बात पर आपत्ति है कि दयानन्द ने हिन्दू हिन्दी और हिन्दुस्तान की जगह आर्य, आर्यभाषा और आर्यावर्त को प्रचलित करना चाहा, परन्तु इसमे आपत्तिजनक क्या है,यह उन्होने नहीं बताया। यदि सिलोन स्वतन्त्र होकर 'श्रीलका कहलाने मे गर्व अनुभव करता है और बर्मा म्यामार' कहलाने लगता है तो हिन्दुस्तान (इण्डिया) को आर्यावर्त कह कर पुकारना कदापि दोषावह नहीं है।

बताया जाए। डा० सिह को इन तथ्यो का तो पता ही नही ह कि दयानन्द का शास्त्राध्ययन वेदाध्ययन तथा वेदो के प्रति उनकी प्रगाढ आस्था कब किन परिस्थितियो तथा किन साधन–सम्बलो के द्वारा हुई। यदि यह जानकारी उन्हे होती तो वे झटपट यह नहीं कह बैठते कि दयानन्द का वेद (ऋग्वेद) स परिचय यूरोपीय विद्वानो के कृतित्व से परिचय होने के बाद हुआ। मेरा उनसे अनुरोध है कि व दयानन्द की कोई प्रामाणिक जीवनी पढे। स्वामीजी ने १८६० से १८६२ तक दण्डी विरजानन्द के मथुरा स्थित विद्यालय मे अध्ययन किया। यहीं उनके वेद विषयक विचारो मे निश्चयात्मकता आई। इसके बाद उन्होने दो वर्ष आगरा मे रहकर वेद सहिताओ का गम्भीर अनुशीलन किया और अब उनके वेद विषयक विचारो मे पूर्णता और परिपक्वता आई। वे दयानन्द की जिस कलकत्ता यात्रा का उल्लेख करते है यह तो दस बरस बाद १८७२–१८७३ मे हुई थी। नामवरसिह स्वामी दयानन्द की वेदो मे वैज्ञानिक आविष्कारो के विद्यमान होने की धारणा का तो उपहास करते ही है वे ऋग्वेदीय मन्त्रो की डा० रामविलास कृत कतिपय रूपकात्मक व्याख्याओं पर भी व्यग्य करते हैं।

डॉ० नामवरसिह को इस बात पर आपत्ति है कि दयानन्द ने हिन्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तान की जगह आर्य आर्यभाषा और आर्यावर्त को प्रचलित करना चाहा परन्तु इसमे आपत्तिजनक क्या है यह उन्होने नहीं बताया। यदि सिलोन स्वतन्त्र होकर श्रीलका कहलाने मे गर्व अनुभव करता है और बर्मा म्यामार कहलाने लगता है तो हिन्दुस्तान (इण्डिया) को आर्यावर्त कह कर पुकारना कदापि दोषावह नहीं है। डा० नामवर सिह तो उन पाश्चात्य इतिहासकारो तथा उनके उच्छिष्ट भोजी विपिन चन्द्र रोमिला थापर जैसो के पिछलग्गू हैं जिन्होने आर्यों को भारत का मूल निवासी न मान कर बाहर से आया सिद्ध करने मे एडी स चोटी तक का प्रयास किया है। तब उन्हे रामविलास शर्मा की यह स्थापना कैसे सहन होती कि आर्यों का आदि निवास भारत ही है और वे किसी अन्य स्थान से यहा नहीं आए। उन्हे शमा जी का यह कथन भी नहीं सुहाया कि आर्यो की सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। वे वैदिक सभ्यता से प्राचीन हडप्पा की सभ्यता को मानते हैं किन्तु यह तो इतिहास सिद्ध हे कि पुरावशेषो की खुदाई से प्राप्त निष्कर्ष वैदिक सभ्यता और वेदिक वाडमय एव चिन्तन के प्राचीनतम होने को नहीं झुठला सकते। डा० रामविलास ने जब यह सिद्ध किया कि वैदिक युग के आर्यो ने ही भारत से बाहर जाकर ईरान और यूनान होते हुए सम्पूर्ण यूरोप मे सभ्यता का प्रचार किया तो डॉ० सिह ने इसे सिरे से ही खारिज कर दिया। सच तो यह है कि आर्यो का ज्ञान विज्ञान उनकी कलाए दर्शन तथा साहित्य किस प्रकार एशिया तथा यूरोप तक गया इसे बताने के लिए पृथक ग्रन्थ की आवश्यकता है। पचतन्त्र और हितोपदेश की कथाए यूरोप मे गई भारत के गणित को अरबो ने अपनाया और शाहजादा दाराशिकोह कृत उपनिषदों के फारसी अनुवाद ने यूरोप के दार्शनिकों को प्रभावित किया यह सब बताने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। किन्तु डॉ० सिह तो रामविलास जी की स्थापना को अध राष्ट्रवादी प्राच्यवाद कहकर धिक्कृत करते हैं। १९४७ में देश विभाजन की वकालत करने वाले नेताजी को जापानी सेनापति तोजो का कुत्ता कहने वाले तथा देशभक्त सावरकर की राष्ट्रभक्ति को नकारने वाले डॉ० सिह जैसे साम्यवादियो की मानसिकता इससे भिन्न हो भी नहीं सकती थी।

अब डॉ० सिह की दयानन्द कृत वेदभाष्य के बारे मे विचित्र राय को जाने। वे लिखते हैं कि भारतीय नवजागरण के लिए दयानन्द ने ऋग्वेद का एक नया भाष्य लिखा। उन्हे कौन समझाये कि किसी देश या काल मे युगान्तरकारी परिवर्तन लाने वाला नवजागरण किसी ग्रन्थ या उसके किसी विशेष भाष्य का मुखापेक्षी नहीं होता। उसके कारक तत्व अधिक व्यापक तथा विराट होते हैं। फिर उन्नीसवी शताब्दी के नवजागरण के सूत्रधारो मे दयानन्द सरस्वती अन्यतम भले ही हो उनसे पहले के तथा बाद के महापुरुषो के अवदान को भी नकारा नहीं जा सकता। यह कहना जरूरी नहीं है के दयानन्द को वेदभाष्य का प्रयोजन वेदार्थ के यथार्थ स्वरूप का उद्घाटन करना था उसके द्वारा देश मे नवजागृति और नवचेतना व्याप रही है यह तो उसका परोक्ष परिणाम था। यहा डॉ० सिह का दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य विषयक अज्ञान खुलकर सामने आ गया है। उन्हे यह पता ही नहीं कि स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद का भाष्य कहा तक किया है? ज्ञातव्य है कि दयानन्द का ऋग्वेद भाष्य ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ६२वे सूक्त के दूसरे मन्त्र तक ही है। इसके बाद का भाष्य वे नही लिख सके थे। उनका निधन इस बीच ३० अक्तूबर १८८३ को हो गया। दयानन्द ने ऋग्वेद के ५६४६ मन्त्रो का भाष्य किया था जब कि डॉ० सिह लिखते है – 'दयानन्द सिर्फ ७२ मन्त्रो का ही भाष्य कर पाए थे। वे अपनी भूल सुधार ले। ऋग्वेद के आधे से अधिक का भाष्य करने के साथ साथ वे समग्र यजुर्वेद (कुल मन्त्र १९७५) का भाष्य भी कर चुके थे। डॉ० सिह की यह टिप्पणी व्यर्थ है कि रामविलासजी ने प० सातवलेकर के हिन्दी वेद भाष्य से सहायता लेकर अपनी विवेचना प्रस्तुत की है। शायद उन्हे अधिक सन्तोष होता यदि डॉ० शर्मा ग्रिफिथ या किसी अन्य यूरोपीय वेदानुवादक का सहारा लेते। किन्तु क्या ये यूरोपीय विद्वान वेद के साथ न्याय कर सके हैं। कदापि नहीं।

क्रमश

मेंढ़की के जुकाम का उपचार (4)

गताक से आगे

— आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'

जिस महर्षि की विशेष विशषता ही यह रही हो कि उन्होने व्यक्ति को कर्म करने मे स्वतन्त्र बताया उसी के बारे मे यह कहना कि – 'कर्म की स्वतन्त्रता को नियन्त्रित और निर्धारित करने वाली सामाजिक शक्तियो के बारे मे कुछ नहीं कहा। इसके बजाए उन्होने पिछले जन्म के कर्मो के बारे मे सोचा जो आदमी के इस जन्म को तय करते हैं। व्यक्ति सुख–दुख अभावों और ऐश्वर्य का कारण सामाजिक परिस्थितियो और व्यवस्था मे न ढूढकर उन्होने इनकां सम्बन्ध अज्ञात पूर्व जन्म के कर्मो की कल्पना से जोड दिया। लेखक ने अपनी पुस्तक के आरम्भ मे ही कहा हैं कि – इसमे सत्यार्थप्रकाश का गहन विश्लेषण नही है बल्कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे उसकी विचारधारा को समझने का एक आलोचनात्मक प्रयास भर है। हमे लेखक के गहन चिन्तन पर सन्देह नही है मगर अच्छा यह होता कि किसी विद्वान के पास जाकर सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करते ताकि वे महर्षि कृत इस ग्रन्थ का विश्लेषण ठीक ढग से कर सकते। हमारा यह दावा है कि फिर लेखक की समस्त शकाओ का स्वत ही समाधान हो जाता तथा वे दयानन्द जी की विचारधारा को समग्ररूप से समझकर किसी एकागी पक्ष को लकर कल्पना के घोडे दौडाने से बच जाते। जीवात्मा क्योकि कर्म करने मे स्वतन्त्र हे इसलिए किए गए कर्म का फल मिलना भी नितान्त जरूरी है। हम समाज मे देखते ही है कि व्यक्ति को उसके किए हुए कर्मो का फल मिलता ही है। कर्म की फिलासफी को समझने के लिए इस पर समग्र रूप से विचार करने की जरूरत है। किए हुए कर्मो के जो सस्कार हमारे सूक्ष्म शरीर पर पडते हैं उसी के अनुसार व्यक्ति को फल भी मिलता है। कुछ कर्मो का फल दृष्ट अर्थात इसी जन्म मे भोगना पडता है और कुछ का अदृष्ट अर्थात अगले जन्म मे मिलता है। जो कर्म जीते जी बिना भोगे हुए रह जाते है उन्हे ही अगले जन्म में जीवात्मा को भोगना पडता हे। पुनर्जन्म का सिद्धान्त महर्षि या आर्यसमाज के द्वारा स्थापित नहीं किया गया है बल्कि हमारे शास्त्रो मे इसका विधिवत् वर्णन है तथा हमारे मनीषियो ने इसे अनेक तर्को और प्रमाणो से सिद्ध किया है। महर्षि जी ने भाग्य के भरोसे बैठे रहने की प्रेरणा कही नहीं दी है बल्कि उन्होने साफ शब्दो मे कहा है कि कर्म ही बडा है क्योकि वही भाग्य बनाने वाला है। किसी का अमीर घर मे पैदा होना किसी का गरीब घर मे आदि बातें महर्षि जी ने पुनर्जन्म के होने केहेतु के रूप मे विवेचित की है न कि भाग्यवादी बनने के लिए। इसी प्रकार जा सजाए मिलने की बात उन्होने कही हैं वह भी इसी आशय से कि हमारे चिन्तकों का यह विचार रहा है कि यदि अमुक कर्म व्यक्ति करेगा तो उसे अमुक सजा मिलेगी। आज भी अपराधी के अपराधको देखकर ही वकील या न्यायाधीश बता देते है कि इस व्यक्ति ने यह पाप किया है इसलिए इसको इस कानून के तहत अमुक सजा मिलेगी । यदि इस पर यह किया जाए कि यदिआर्यसमाजियो को यह पता ही है कि किस कर्म का कौना सा फल मिलना है तो पुलिस तथा जज–व्यवस्था की जरूरत नहीं है तो यह तो लेखक की ओर से बेहद ही बचकाना बात कही गई है लेकिन फिर भी लेखक की ही तर्ज मे हम आगे कुछ ऐसे प्रसग दे रहे है जिससे सिद्ध हो जाएगा कि इस विद्या मे कबीर और उनके शिष्या को अधिक महारत हासिल है।

लेखक का कहना है कि 'महान कबीर जी ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नकारा है मगर कबीर जी स्वय लिखते है – कहत कबीर मोहि भगत उमाहा। कृतकरणी जाति भया जुलाहा। यहा पर कबीर जी साफ कह रहे हैं कि पूर्वजन्मो के कर्मो के कारण ही उन्हे जुलाहे का जन्म मिला है। पुनर्जन्म की धारणा को लेकर ही वे कहते है – धरमराई जब लेखा माग बाकी निकसी भारी अर्थात मरने के बाद जब मेरे पाप पुण्य का लेखा–जोखा धर्मराज जी देखेगे तो पुण्य कर्म बहुत कम होगे पाप–पुन्नि दोई जन्म सघाति–अर्थात पाप और पुण्य ही अगले जन्म के साथी होते है। एक ओर पद मे कबीर जी बडे स्पष्ट शब्दो मे कहते है –

पूरब जनम हम बाम्हन होत ओछे करम तप हीना। रामदव की सेवा चूका फकीर जुलाहा किना। कबीर कह रहे है कि पूर्वजन्म मे वे ब्राह्मण के उच्च वर्ण मे थे मगर कर्म अच्छे नही किए इसलिए परमात्मा ने उन्हे जुलाहे का जन्म दे दिया है। ऐसे कितन ही प्रसग कबीर जी के साहित्य मे देखे जा सकते हैं जहा उन्होन किए हुए कर्मो क फल मिलने की चर्चा की है। उन्होने कृतकर्मो की गठरी लिए हुए जीवात्मा का जन्म–मरण के चक्कर मे भटकते हुए बताया है,और कहा है कि जब तक परमात्मा के साथ मिलन नही हो जाता तब तक अनेक यानियो मे यह भटकता ही रहेगा। ज्ञानसागर–बोध मे कबीर और धर्मदास के वार्तालाप के द्वारा यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि 'कबीर जी ने प्रत्येक युग मे जन्म ग्रहण किया है और करते है। 'ज्ञानसागर नाम के एक कबीर पन्थी ग्रन्थ मे कबीर साहब के पूर्वजन्म में ब्राह्मण होने की बात पर जोर न देकर इनके पोषक पिता नीरू को ही पूर्वजन्म का ब्राह्मण कहा गया है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार जब नीरू जुलाहा बालक कबीर को लेकर अपने घर गया और यहा पर बच्चे को बिना दूध पीए भी हृष्ट–पुष्ट होते देखा तब उसे महान आश्चय हुआ और उसने स्वामी रामानन्द के पास जाकर पूछा जिस पर उक्त स्वामीजी ने उत्तर दिया पूर्वजन्म तैं ब्राह्मण जाति हरि सेवा कीन्हसि बहु भार्ती। कछु तुसेवा हरि की चूका तातैं भया जुलाहा को रूपा। अर्थात वास्तव मे तुम पूर्वजन्म मे ब्राह्मण थे किन्तु किसी प्रकार भगवान की सेवा मे भूलचूक होने के कारण तुम्हे जुलाहा होना पडा है। यहा पर नीरू को पूर्वजन्म मे ब्राह्मण कहा गया है तथा परमात्मा की उपासना मे त्रुटि होने के कर्मफल के रूप मे उसे भी कबीर की तरह ही अगले जन्म मे ब्राह्मण से जुलाहा बन जाना पडा। इसस साफ पता चलता है कि कबीर तथा नीरू ने ब्राह्मण होकर भी सुकर्म नहीं किए इसलिए सजा के रूप मे उन्हे जुलाहे की योनि मे आना पडा। लेखक को यह मान लेना चाहिए कि कबीर जी का भी पूर्वजन्म तथा कर्मो के फल मिलने मे पूरा विश्वास था। भोले भाले लोगो को भरमाने तथा महान तपस्वी महर्षि दयानन्द जी पर निराधार आक्षेप लगाने रूपी पाप की सजा न्यायकारी परमात्मा द्वारा लेखक को भी मिलेगी क्योकि महात्मा गाधी जी ने भी कहा है – स्वामी दयानन्द एक भारी विद्वान तथा सशोधक थे। ऐसे व्यक्ति का यदि कोई अपमान करेगा तो मैं उसे महापापी समझूगा। इस पाप से बचने का प्रायश्चित केवल इतना भर है कि लेखक असत्य को त्याग कर सत्य को ग्रहण करने के लिए उद्यत हो जाए ।

लेखक ने यह भी कहा हे कि हवन व यज्ञ से धम का कोई लेना–देना नहीं है फिर भी दयानन्द ने इस खारिज नहीं किया बल्कि वायु को शुद्ध करने आदि के नाम पर इन्हे बनाए रखा। यदि वायु को शुद्ध करना धम नही है तो क्या वायु को अशुद्ध करना धर्म हे ? महर्षि दयानन्द जी ने पाखण्ड और आडम्बरो मे उलझी मान्यताआ को दरकिनार करके धर्म को व्यवहारिकता के साथ जोडने का महान कार्य किया है। उनकी दृष्टि मे मानवमूल्या का कार्यान्वयन ही धर्म है। आज ससार के वेज्ञानिक भी इस बात को मान रह हे कि हवन भारत क महर्षियो की पर्यावरण को शुद्ध करने की 'दिशा' म दी गई एक महान वैज्ञानिक तकनीक है तथा अनेक बाहरी देशा मे भी इसका प्रचलन हो रहा है और अनेक प्रकार की रिसर्च की जा रही है। यही नही यदि लेखक हवन क बार मे गहन अध्ययन करे तथा वह ब्राह्मण कल्प औरविनियोग के रहस्यो का मनन और चिन्तन करे ता उसके सामने यह बात स्पष्ट हा सकगी कि हवन से व्यक्ति का लोक–परलोक सवरता है इसलिए हमारे शास्त्रो मे साफ कहा हे – यज्ञोवे श्रेष्ठतम कम । यदि लेखक किसी वैदिक विद्वान की शरण मे जाकर दयानन्द जी के दर्शन का गहन अध्ययन कर लेता या विचार–विमर्श अथात शास्त्रार्थ कर लता तो उसे इतना बडा झूठ लिखने की जरूरत ही न पडती कि – दयानन्द का असली उद्देश्य तर्कशीलता और बुद्धिविवेकशीलता की प्रतिष्ठा करना नही था। महर्षि जी ने अन्य मत–पन्थ वालो की तरह काल्पनिक गपोडे नहीं लिखे हैं बल्कि उनकी एक–एक बात प्रमाणित और तर्क पर आधारित है। यही कारण है कि महर्षि दयानन्द जी के विचारो से प्रभावित होकर तत्कालीन पाश्चात्य वैज्ञानिको और दार्शनिको ने भी महर्षि जी की बातो को सत्य माना और उनकी प्रशसा की। आज भी महर्षि जी द्वारा स्थापित सिद्धान्त सृष्टिनियमो और आधुनिक खोजो द्वारा प्रमाणिक और सत्य सिद्ध हो रहे है। लेख लम्बा हो जाने के भय से हम यहा वे सभी प्रसग दे पाने मे असमर्थ है।

लेखक को इस बात की शिकायत है कि वतमान मे मूर्तिपूजा' के विरोध जैसे बुनियादी धार्मिक सुधारो मे आर्यो की अब गम्भीर दिलचस्पी नही रही उसके धर्मसुधार की धारा अपना ऐतिहासिक प्रभाव छोडकर सनातन हिन्दू धर्म के व्यापक समुद्र मे विलीन हो रही है १९वी सदी के नवजागरण की सबसे प्रभावशाली विचारधारा और सगठन की यह परिणति दुर्भाग्यपूर्ण होते हुए भी आकस्मिक नही कर्म तथा कर्मफल का विरोध करने वाले लेखक द्वारा दुर्भाग्य शब्द किस बात का परिचायक है यह तो लेखक ही जाने मगर पता नही लेखक किन तथ्यो के आधार पर यह बात लिख रहा है कि आर्यसमाज परमात्मा की उपासना करन के स्थान पर लोगो को मूर्तिपूजा करने को प्रेरित कर रहा है। आर्यसमाज के सिद्धान्त और कार्यपद्धति मे कोइ बदलाव नहीं आया है। मूर्तिपूजा का घोर खण्डन करने वाले कबीर के शिष्य भले ही किसी न किसी रूप मे जडपूजा करने लग पडे हो मगर आर्यसमाज आज भी परमात्मा के नाम पर मूर्तियो और व्यक्तियो की पूजा करने का घोर विरोध करता है क्योकि इससे बडी नास्तिकता की बात और कोई नही हो सकती है। न ही आर्यसमाज हिन्दू धर्म मे विलीन हो रहा है बल्कि आज भी उसकी अपनी एक अलग पहचान है और इस सस्था न यदि १९वी सदी म समाज एव राष्ट्र मे नवजागरण के प्राण फूककर एक नई दिशा देकर भारत को स्वतन्त्र करने मे भी प्रमुख भूमिका निभाई है तो आज भी वह एक जागरूक प्रहरी की तरह समाज और देश की हर समस्या के साथ जूझने मे लगा हुआ हे। आर्यसमाज का अतीत स्वर्णिम था वर्तमान स्वर्णिम है और भविष्य भी स्वर्णिम ही रहेगा क्योकि हमारे साथ वेद का वह परम सत्य है जा सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। हमारा यह विश्वास है कि केवल भारत ही नही बल्कि समूचे विश्व का एक न एक दिन इसी सार्वभौमिक मानव धम की शरण मे आना पडेगा। इसी स गोरे–काले जाति–पाति ऊच–नीच साम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद आदि के अमानवीय किले ध्वस्त हो सकेगे तथा ससार प्रेम व एकता के सौहार्दपूर्ण सूत्र मे बन्ध सकेगा अन्यथा दश–विदश मे जो सामूहिक भ्रष्टाचार व आतकवाद का वातावरण बन रहा है वह तो केवल सर्वनाश तक ही पहुचा सकता है

✿✿✿

– ८९/एस ४ सुन्दरनगर कालोनी, जिला मण्डी हिमाचल प्रदेश

स्वास्थ्य चर्चा

दातों की सुरक्षा भुट्टों के द्वारा कीजिए

–सावित्री सिंघल

'हरी थी मनभरी थी – राजाजी के बाग मे दुशाला ओढे खडी थी। सो आप समझ गए होगे कि ये किसकी महानता कही जा रही है। क्योकि यह मनुष्य की दात रक्षक औषधि भी है। आज से २ ३ दशक पहिले भुटटो छल्ली को सभी बडे ही चाव से खाते थे। यह केवल पेट भरने की ही नहीं दातो को सुरक्षित व सुदृढ रखने मे भी सक्षम है। आप जितना भी चबा–चबाकर खाएगे उतना ही दातों को मजबूत करती है तथा दातो की कीडो से भी रक्षा करती है। औषधि जगत मे आज–अभी तक कोई भी दवाई व टूथपेस्ट नहीं बन पाया है जो कि दातों को आजीवन सुरक्षित रख सके।

आज हमारी ८०प्रतिशत जनता आबादी मसूडो के रोगो से पीडित है ६०प्रतिशत बच्चो के दातो मे कीडा लगा है ४० प्रतिशत आबादी दातो मे जबर्दस्त दर्द से परेशान हैं। परन्तु डाक्टरो–दत चिकित्सको के पास इसका कोई सही इलाज नहीं है। जनता बाजार मे बिकने वाले टूथपेस्टो की सुगध के पीछे ऐसी बावली बनी है उसे ना कुछ दिखाई देता है नाही सुनाई। इण्डियन डेन्टल एशोसिएशन और कामन वैल्थ डेटल एशोसिएशन बारम्बार चेतावनी दे रहे हैं कि बाजारो मे बिकने वाले तमाम टूथपेस्ट दातो के बैक्टीरिया पर बेअसर है वे बाकायदा जाच व परीक्षणो के द्वारा बता रहे हैं कि इनका दातो के सेहत से कुछ भी लेना देना नही है। बाजार मे उपलब्ध अधिकतर टूथपेस्ट–ब्राण्ड दातो के निर्धारित मापदण्डो मे खरे नहीं उतरते है सभी बेकार हैं। उपभोक्ता को न कुछ ध्यान आता है ना ही समझ रहा है। रगबिरगे टी०बी० विज्ञापनो द्वारा ऐसा प्रचार प्रसार हो रहा है कि हमे विश्वास ही नहीं होता है – फ्रेश सुपर फ्रेश आक्सी फ्रेश डबल एक्शन डबल एक्शन्स स्पार्कल १२ घण्टे काम करने वाला २४ घण्टे वाला आदि–आदि। हम आखे मूदे उसी तरफ भागे जा रहे हैं। बेचारे चेतावनी देने देने वालो की इनके सामने कुछ नहीं चल पाती है। ओर हर साल ८०–६० हजार टन टूथपेस्ट हम भारतवासी ताजा ...े व लुभावने प्रचारो के कारण ही ...ैं। केवल भ्रामक प्रचार के ...े व कैमिकल वाली ...लने के आदी हो गए ...भी का दातो की सुरक्षा–स्वस्थता व टिकाऊपन से दूर का भी रिश्ता नहीं है। और दातो की नित नई–नई बीमारियो के होने पर आज केवल दात–दाढो को निकाल दिया जाता है उसका क्या प्रभाव पडता है किसी का भी इस ओर ध्यान नहीं है।

दातो की तरफ हमारा बहुत ही कम ध्यान है यदि दातो की ठीक सफाई न की जाए तो मुह मे बदबू आने लगती है – बदबू व पीप बनने पर पेट मे भी जाकर हमारी पाचन शक्ति को भी छिन्न भिन्न कर देती है। आज हम घरेलू मजनो व नीम पीपल कीकर को छोडकर बाजारू टूथपेस्टो पर ही आश्रित हो गए हैं। जोकि नित नई परेशानिया पैदा कर रहे हैं। दातो को स्वस्थ व कीडा रहित रखने के कुछ घरेलू उपचार व उपाय भी अनमोल हैं ही पर श्रद्धा विश्वास भी आवश्यक है नियमपूर्वकता –

१ यदि दातो मे कीडा लग गया है अथवा दातो मे सुराख भी है या सभी को कीडो ने खोखला कर दिया है तो भुटटे खाईये अर्थात दाने खाकर वे गिल्लिया जो बचती है उनको फेके नहीं और जब १०–१२ गिल्लिया इकटठी हो जाए तो उन्हे किसी साफ स्थान पर अथवा लोहे की कढाई मे कपूर रख कर जलाले जब ये धुये रहित हो जाये तो ऊपर से ढक दे ताकि वे राख न बने और ठण्डा होने पर उनमे थोडा सा सादा नमक व छोटी आधी चम्मच काली मिर्च व थोडा सा ५ ग्राम डली वाला कपूर डालकर बारीक पीस ले और प्रात–साय दोनों समय दातों पर अगुली से मले अथवा ब्रश से भी दातो पर सम्यक प्रकार से मले कुछ ही दिनो मे आपके दातों के सभी कीडे मर जाएगे और धीरे–धीरे वह खोखले दात भी झड जाएगे और उसकी जगह नये दात व दाढे भी आप ही निकल आते हैं। छोटे बच्चे के दात तो बहुत जल्दी ही दुबारा निकल आते हैं। यदि काफी बडे हैं तो ४–५ महीने मे नये दात आ जाते हैं। परन्तु उन खोखले दातो को भूलकर भी भरवाए नहीं क्योकि भरने से जल्दी ही भराव निकल जाता है और कुदरती नये दात भी नहीं निकल पाते हैं दातो की बीमारिया तो भुटटे खाते ही दूर हो सकती है क्योकि पहले हम व हमारे बच्चे सभी भुटटे खाते थे। यह मजन करने से दातों को सुरक्षित व मजबूत बनाए।

२ दातो मे कीडा आदि नहीं फिर भी दर्द होता है अथवा हिलते या मुह से बदबु आती है तो १०० ग्राम फिटकरी डली वाली ले और उसे कढाई मे फुलाए जब फूल कर सफेद पड जाए तो उसमे सादा नमक व काली मिर्च व सोठ पिसी व कपूर मिलाकर बारीक पीसकर शीशी मे भरकर रखे दोनो समय हाथ से अथवा ब्रुश से करे तो दातों की सभी बीमारिया भी दूर होगी और आखिरी समय तक दात आपका साथ देगे। यदि हो सके तो थोडी सी पीपल या नीम की छाल पीसकर मिला ले और ५ ग्राम डली वाला कपूर भी डालें। आपके दातों का अचूक मजन तैयार है।

३ यदि किसी भी समय रात को या दिन मे दातो मे कहीं भी दाढ से दर्द हो जाए तो पिसी सोठ छोटा आधा चम्मच उसमे चुटकी भर सादा नमक मिलाकर खा ले ऊपर से ताजा पानी पीये। तत्काल ही लाभ होगा फिर भी दर्द है तो सोठ नमक मिलाकर दर्द वाले स्थान मे मले उससे भी लाभ होगा। तत्काल दर्द मे शान्ति भी।

४ बहुत सी दवाईया खाने के कारण बार–बार दर्द होता है वह भी बडी भयानकता से होता है तो जगह–जगह उगने वाले छोटे–छोटे पीपल के पत्ते खा लीजिए और ज्यादा दर्द है तो बादाम गिरी के साथ खाए। तथा उस दर्द वाले स्थान पर २ पत्ते भी रख लीजिए। जब खत्म हो जाए तो फिर उसी दर्द वाले स्थान को खाली न छोडे फिर पत्ते रख ले। ऐसा लगभग तीन–चार दिन करेगे तो वह बरसो पुराना दर्द भी समाप्त हो जाता है।

५ उल्टे हाथ की कनिष्ठा उगली मे ताम्बे अथवा चादी छल्ला या अगूठी जरा फिट सी पहने।

६ यदि ये सभी उपरोक्त बनाने मे टाइम लगता है परन्तु अचानक ही दर्द व सूजन आ जाए तो उस स्थान पर दातो मे मसूडो मे दर्द है तो नींबू काट कर मलने से भी सभी प्रकार की सूजन व दर्द भी खत्म हो जाते हैं।

भुट्टे खाईये दांत बचाईये तथा बच्चो को अवश्य खिलाइये।

यह छोटे–छोटे भुटटो के व दूसरे उपचार आपके सम्मुख रखे हैं ये सभी अचूक व तत्काल लाभ पहुचाएगे जिन रोगो को दूर करने में औषधि–विज्ञान में आज तक सफलता नहीं पाई है उन्हे इन मामूली से प्रयोगो द्वारा समाप्त किया जा सकता है। आज हम दातो की तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं। परन्तु जब ये असह्य पीडा देते हैं तो डाक्टरो पर ही भागते हैं जिनके पास दातो के रोग की आजतक कोई ऐसी खोज नहीं है कि जिससे दात को स्वस्थ व सुरिक्षत रखा जा सके उनके पास सिर्फ दात दाढ निकालने के सिवाय कुछ नहीं है उसका परिणाम चाहे कुछ भी हो । एक बात का ध्यान अवश्य रखे कि प्रात शौच को जाते समय दातो को आपस मे कसकर भींचकर बैठे इससे आपके दातो के रोग तो दूर होते ही हैं साथ मे कुछ ही समय मे पुरानी कब्जी भी खत्म हो जाती है। जिसको दूर करने के लिए आप परेशान हैं वह भी चली जाएगी। दात कभी हिलेगे नहीं न ही कोई बीमारी होगी और दात जीवन भर आपका साथ देगे लकवा मारने का डर भी नहीं रहेगा।

भुटटे (कूकडी) मे जितना कैल्शियम – प्रोटीन व क्षार तत्व है जोकि जीवन अथवा दातो को क्षमता प्रदान करते हैं। मैने अपने जीवन मे कभी भी बडे–बूढो दादी–ताई–नानी किसी को भी दात निकलवाते नहीं देखा ना ही नकली दात लगाते भी। मेरी माता जी के ४० वर्ष की आयु मे मुह से बदबू आने लगी तथा सभी दात हिलने लगे डाक्टरो ने कहा दातो को निकलवा दो अन्यथा पेट मे पीप जा–जाकर अल्सर हो जाएगा। परन्तु उनको किसी ने बताया कि सरसों के तेल मे हल्दी मिलाकर मजन करो। उन्होने यही किया था उसके बाद वह ८२ साल की आयु मे भी भुटटा खाती थी व चने भी चबाती थी और मरते समय पूरे दात सुरक्षित थे। आज हम अपने कीमती व अनुभूत उपचारों को भुलाकर डाक्टरो की ओर ही भागे जा रहे हैं चाहे उसका नतीजा कितना ही भयानक हो। अत घरेलू उपयोगो को अपनाएगे रोगों से तो बचेगे ही साथ ही जीवन भी सुरक्षित रहेगा।

– आर्यवानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार

आर्यसमाज का सदस्य (समासद्) होने के लिए निम्न नियमों का पालन करना आवश्यक है :-

१. वेद व वेदों पर आधारित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों मे वर्णित सिद्धान्तों का जानना-मानना व प्रचार करना।

२. अपनी आय का शतांश मासिक चन्दे के रूप में या १००० रुपये या इससे अधिक वार्षिक चन्दा देना।

३. साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत उपस्थिति होना।

४. दैनिक सन्ध्या हवन करना। मांस अण्डे, बीडी शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करना।

५. जन्मगत जात-पात को न मानना।

६. मूर्तिपूजा मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, तीर्थ स्थान, टेवा जन्मपत्री आदि अन्धविश्वासो व पाखण्डो को छोडना व छुडवाना

।। ओ३म्।।

अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिताएं

(वर्ग क) स्कूल, कालिज, गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं आम जनता के लिए :-

प्रत्येक प्रतियोगी को महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक प्रश्न पत्र भेजा जाएगा। ३०-११-२००२ तक इस प्रश्न पत्र के प्रश्नो के उत्तर लिख कर भेजने होगे। **प्रथम पुरस्कार ३००० रुपये तथा द्वितीय २००० रुपये, तृतीय १००० रुपये प्रशस्ति-पत्र एव कुछ सान्त्वना पुरस्कार** भी दिए जाने की योजना है। इस प्रतियोगिता के लिए आयु लिग मजहब योग्यता आदि का कोई बन्धन नही। प्रतियोगिता का माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी।

(वर्ग ख) स्कूल, कालेज गुरुकुल के आचार्यो एवं वैदिक विद्वानों आदि के लिए :-

सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक **सम्मुलास** पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखकर **सभा कार्यालय** मे भेजना होगा।

माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी **अन्तिम तिथि ३० ११ २००२, पुरस्कार प्रथम ५००० रुपये** तथा **द्वितीय ४००० रुपये, तृतीय २००० रुपये** तथा कुछ सान्त्वना पुरस्कार।

(वर्ग ग) १८ वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए :-

सत्यार्थप्रकाश मैं कुछ रोचक व शिक्षाप्रद कहानियो सवादो एव दृष्टातो का वर्णन किया गया है। प्रतियोगियो को उन्हे ध्यानपूर्वक पढकर उनका सार व उनसे मिलने वाली शिक्षाओ को अपने शब्दो मे लिखकर भेजना होगा। प्रतियोगियो की सुविधा के लिए सत्यार्थप्रकाश पर आधारित आर्य भाषा मे एक लघु पुस्तिका नि शुल्क भेजी जाएगी। अन्तिम तिथि ३०-११-२००२ माध्यम हिन्दी अथवा अग्रेजी पुरस्कार प्रथम २००० रुपये द्वितीय १००० रुपये तृतीय ५०० रुपये कुछ सान्तवना पुरस्कार।

नोट :- जो महानुभाव किसी एक प्रतियोगिता मे भाग लेना चाहे वे मात्र ५० रुपये प्रवेश शुल्क सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम धनादेश अथवा ड्राफ्ट के द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करे। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश यदि स्थानीय पुस्तकालयो पुस्तक विक्रेताओ आर्यसमाज कार्यालयो आदि से उपलब्ध न हो तो अतिरिक्त ५० रुपये हिन्दी सस्करण के लिए १५० रुपये अग्रेजी सस्करण के लिए धनादेश अथवा ड्राफ्ट द्वारा भेज कर मगवाई जा सकती है।

प्रवेश शुल्क प्राप्त होने पर ही पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र अनुक्रमाक एव अन्य निर्देश आदि प्रेषित किए जाएगे। पता - **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२,** विजेताओ को **महर्षि दयानन्द जन्म दिवस समारोह, महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र, गाजीपुर, नई दिल्ली** मे सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। **वर्ग ख के विजेताओं को सत्यार्थ रत्न की उपाधि से भी अलकृत किया जाएगा।** उत्तर पुस्तिकाओ का निरीक्षण उच्च कोटि के विद्वान द्वारा करवाया जाएगा। **धनादेश के नीचे अथवा ड्राफ्ट के पीछे प्रतियोगिता का वर्ग, माध्यम एव अपना पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखे।**

कैप्टन देवरत्न आर्य	**विमल आर्य (वधावन)**	**वेदव्रत शर्मा**	**डॉ० मुमुक्षु आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री	रजिस्ट्रार

निवेदन - समस्त समाजो सभाओ एव आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि इस प्रतियोगिता का स्थानीय स्कूलो कालिजो व आम जनता मे प्रचार करने मे सहयोग करे। दैनिक समाचार पत्रो मे इस सम्बन्धी विज्ञापन अथवा प्रेस विज्ञप्तियो के द्वारा भी प्रचार मे सहयोग अभिनन्दनीय होगा ताकि आम जनता एव बुद्धिजीवी इसमे भाग ले सके और महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार हो सके।

स्वामी आत्मबोध (महात्मा आर्य भिक्षु) सरस्वती जी के निधन पर

हा ! ४ सितम्बर २००२ की वह ब्रह्ममुहुर्त की वेला थी जिसमे ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की एक छोटी–सी कुटिया मे रहने वाले ऋषि दधीची सम क्षीण काया वाले किन्तु फौलादी सीने वाले महात्मा की आत्मा पच भौतिक शरीर को त्यागकर पच भूतो मे विलीन हो गई। ससार मे जो आया है उसे जाना ही होता है एक दिन। किन्तु शरीर तो यहीं रह जाता है वो वैसे ही है जैसे सर्प पुरानी केचली को छोडकर नई को धारण करता है। गीता मे कहा भी है –

वासासि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति सयाति नवानि देही।। २२/२

अर्थात जीवात्मा तो अमर है वह अपने पुराने शरीर रूपी वस्त्र को त्यागकर अपने कर्मानुसार नया शरीर धारण कर लेता है। जो शाश्वत नियम है। वस रह जाना है तो वस उसका पुराना शरीर और उसके शुभ–अशुभ कार्य यश व अपयश। जिन्हे ससार उसके जाने के बाद उसे याद करके उसका गान करता है। महान आत्माओ का उनके कार्यों के द्वारा उनका यशोगान किया जाता है प्रेरणा के रूप मे कि अन्य जो बच्चे हैं वो भी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सार्थक बना सके।

अपने जीवन को सार्थक करने वाले स्वामी आत्मबोध जी की मृत्यु से आज सम्पूर्ण आर्य जगत शोकाकुल है। क्योकि न जाने वो कितने दीन–दुखियों की पीडा को विशेष रूप से आर्थिक दृष्टि से जो कष्ट मे होते थे उनसे आर्थिक अनुदान पाकर अपना निर्वाह करते थे। कई छात्रवृत्ति के रूप मे उनसे राशि पाकर अपनी शिक्षा को पूर्ण कर रहे थे।

वैश्य कुलोत्पन्न मुगलसराय मे धनाढय पिता के घर सन १९२३ मे जन्मे जिनका नाम राम जी प्रसाद था। वानप्रस्थ की दीक्षा के बाद उनका नाम आर्य भिक्षु हो गया जिससे वो सम्पूर्ण आर्य जगत मे प्रसिद्ध हुए। यहा तक कि वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर को भी लोग भिक्षु जी के ही नाम से जानते थे। वे आश्रम के पयार्य थे। लगमग सम्पूर्ण भारत मे शायद ही कोई समाज हो जहा महात्मा भिक्षु जी ने प्रवचन न कियाहो अथवा दान न दिया हो। विपुल राशि के स्वामी स्वय बहुत ही सादे व मितव्ययी रहे। केवल अपने घर से जो पैसा वो लाए थे अपनी कमाई का हक मानते थे उसे ही अपने ऊपर खर्च किया। उन्होने पूरी आयु मे ऋषि के नाम से प्राप्त व प्रवचनो भाषणो उदबोधनो से प्राप्त धन को अपना निजी पैसा नहीं माना। उनका कहना था कि ऋषि का पैसा ऋषि के कार्यों मे लगाना चाहिए। एक–एक पैसा जमा करके दान भी देते रहे व बैक मे जमा करते एफ०डी० बना–बनाकर वृद्धिकर सम्पूर्ण धन को 'माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारी न्यास' के रूप में परिवर्तित कर दिया। जगह जगह पर बम्बई कलकत्ता अजमेर दिल्ली मेरठ रुडकी और हरिद्वार न जाने कितने ही (१०० से ऊपर) स्थानो पर ऋषि के द्वारा बनाए आर्यसमाज के दस नियमो को पत्थर पर लिखवाकर लगावये एव समाजे स्थापित की। चिकित्सालय गुरुकुल खुलवाए और वर्ष मे दो या तीन बार विद्वानो लेखको एव समाज सेवियों को भी सम्मानित करते रहे किसी को पाच हजार किसी को ११ हजार और शाल आदि व प्रमाण पत्र देकर २६–७–२००२ को मुझे भी उनके द्वारा सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। मेरे बाद भी दो और आर्यों को श्री वेदप्रकाश जी तथा श्री देवराज जी को सम्मानित किया है। सत्यार्थ प्रकाश तो क्या उन्हें रामायण भी पूरी याद थी। उनके प्रवचनो का आधार अधिकतर सत्यार्थ प्रकाश ऋषि वचन व रामायाण ही होता था। जब वह झूम–झूमकर रामायाण की चौपई गाते थे तो श्रोतागण भी मन्त्रमुग्ध हो जाते थे समय का पता ही नहीं चलता था लगता था उन्हे सुनते ही जाए परन्तु वह समय के तो इतने पाबन्द थे कि एक–एक मिनट का ध्यान रखते थे। सप्ताह मे सोमवार का मौन रखना व सन्यास से पूर्व एक दिन भी यज्ञ किए बिना उन्होने भोजन ग्रहण नहीं किया और भोजन का भी समय जो नियत था उसी समय करते थे। भोजन तैयार न होने पर भले ही भूखे रह गए पर निर्धारित समय पर ही हर काम करना करवाना उनका अटल नियम था। उनका इग्लिश उर्दू फारसी आदि भाषाओ पर भी पूरा–पूरा अधिकार था। जो उनके प्रवचनो मे शेयरो–शायरी के रूप में एव अग्रेजी के कोटेशनो के रूप मे सुनने को मिलते थे।

सब को समान रूप से प्यार डॉट–फटकार भी खूब किया करते थे। 'स वो मनासि जानताम मन्त्र को मानने वाले थे इसलिए उन्हे हर व्यक्ति अपना ही मानता था वा सबको वो ऐसे लगते थे कि वो हमे ही ज्यादा प्यार करते हैं अथवा हमारे ज्यादा पास हैं। उन्होने जीवन मे चारो ही आश्रमो का सस्कार विधि के अनुसार पूर्व रूप से निर्वाह किया व पालन किया। और पुस्तक मे जो आयु जितने वर्ष पर जिस आश्रम को ग्रहण करने को बताई गई है बिना कोई बहाना किए उसको समय पर ग्रहण किया।

अच्छे सदस्य व प्रशासक रहे मुगल सराय मे कितनी ही समाजों के प्रधान व मेयर भी रहे और बडे कठोर अनुशासन के साथ अपने पद को सुशोभित किया व पालन किया।

आज भले ही शरीर से वो हम लोगों के बीच नहीं रहे किन्तु अपने सुकार्यों के लिए गुणो के लिए हर जनमानस के ह्रदय पटल पर अकित रहेगे व अमर रहेंगे वो सबके ह्रदयों के सम्राट थे। उनका जाना वास्तव में सत्यार्थ प्रकाश का उद्घोषक मा गायत्री विश्वानि देव मन्त्र का उद्गाता उनके समान हमने अपने जीवन मे नहीं देखा था और न सुना था। ऋषि दयानन्द और उनका सत्यार्थ प्रकाश तो मानों उनके रोम–रोम में समाहित था वह उसी मे सोते–जागते उठते बैठते थे। वह ऋषि के पक्के दीवाने थे तथा समग्र व्यक्तित्व के धनी थे। ऋषि के लिए ये निम्न पक्तिया तो वह अक्सर दोहराया करते थे –

दारे फना में आ गया सब तो बता तू कौन था
दौरे खिजा मिटा गया, सब तो बता तू कौन था
गुरुदत्त तुझपे था फिदा, कुर्बान लेखराम था
मस्ना इन्हें सिखा गया सबको बता तू कौन था
मिलु की आख जब खुली पाया न तुझसा ऐ ऋषि
नजरो मे तू समा गया, सब तो बता तू कौन था

इस प्रकार उनके बारे में तो जितना लिखें कम है। आज हम सभी आश्रमवासी उनको अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं। किन्तु हमारी सच्ची श्रद्धाजलि वही होगी कि हम भी उनसे प्रेरणा लेकर यज्ञ का सत्यार्थ प्रकाश को नित्य प्रतिदिन पढना अपना परमावश्यक कर्म मानकर उस पर अमल करे और सब उन्हें नमन करे।

— **लक्ष्मी आर्या**
२/१७ आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर हरिद्वार, उत्तरांचल

स्वाध्याय साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा सभा के धार्मिक एव सामाजिक आयोजना के मुख्य कार्यस्थल ऋषि उद्यान आनासागर घाटी पुष्कर रोड अजमेर मे साधना स्वाध्याय एव सेवा शिविर का आयोजन दिनाक २० से २६ अक्टूबर तक किया जा रहा है।

यदि आपके मन के किसी कोन मे साधना करने की इच्छा बीज रूप मे अकुरित हो रही हो अपने सर्वश्रष्ठ जीवन को वेद एव ऋषियो के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हो अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हो वैदिक साधना पद्धति को जानना चाहते हो तो कृपया इस आयोजित शिविर मे भाग लेने हेतु आप सादन आमत्रित है।

शिविर मे पजीयन एव अन्य आवश्यक जानकारी हेतु कृपया सम्पक कर –

सम्पर्क स्थल

१ परोपकारिणी सभा कसर गज अजमेर समय प्रात १० बजे से साय ५ बजे तक। दूरभाष ४६०१६४

२ आचार्य सत्यजित ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर। दूरभाष ६२१८६१

गुरुकुल शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण संभव

महाभारत कालीन प्राचीन तीर्थ स्थली पुष्पावती नाम से प्रसिद्ध गगा किनारे गढ मुक्तेश्वर क निकट गुरु द्राणाचार्य की तपस्या स्थली कौरव पाण्डवो की परीक्षा स्थली एकलव्य की साधना स्थली पर सचालित गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का स्थापना दिवस एव वेदारम्भ सस्कार महोत्सव विभिन्न कार्यक्रमो तथा सम्मेलनो के बीच सम्पन्न हो गया जिसमे ३१ अगस्त से सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति ८ सितम्बर को हुई। ७–८ तारीख को विशेष सम्मेलनो का आयोजन हुआ इसम अनेको विद्वानो तथा नेताआ ने अपने विचार प्रकट किए। ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल के सचालक डॉ० धर्मपाल आचार्य ने सभी का आभार व्यक्त कर कहा कि गुरुकुल शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण सभव ह। हमे परमात्मा का आशीर्वाद पाने का यत्न करना चाहिए।

तपोवन का शरदोत्सव २ अक्तूबर से

वैदिक साधनाश्रम तपोवन दहरादून का शरदोत्सव २ से ६ अक्टूबर २००२ तक बृहद यज्ञ तथा योग साधना शिविर के रूप मे मनाया जाएगा। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा तथा योग साधना शिविर के निदेशक पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ह गे। प्रवचनकर्ता के रूप म मुरादाबाद से आचाय यशपाल जी आर्यबन्धु पधारेगे। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शास्त्रीय गायक श्री सुचित नारग तथा अन्य कलाकार भक्ति सगीत प्रस्तुत करेगे।

– देवदत्त बाली
मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र सभी ग्राहको की नियमित भेजा जा रहा हे डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण कुछ सदस्यो का कभी कभी पत्र न मिलने की शिकायत भी आती है। ऐसे सदस्य अपने पास्ट ऑफिस से सम्पर्क करन की कृपा कर तथा अपना वार्षिक शुल्क ५०/– रुपय अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ५००/ रुपये शीघ्र भिजवा कर सभा का सहयोग करे।

नीचे दी गयी ग्राहक सख्या वाले सदस्यो पर तीन वष का वार्षिक शुल्क शेष है कृपया अपनी ग्राहक सख्या देख कर १५०/– रुपये का मनिआडर शीघ्र (१५ दिन के अन्दर) भिजवान की कृपा करे। और मनिआडर कूपन पर अपना पूरा पता (गाहक सख्या सहित) अवश्य लिखे।

ग्राहक सख्या १७ ६५ १००, १२६, १३८, २२१ २४६ ७४६७ ८६६, १०६२, ११६७, १२८१, १३६५, १४७४ २००२, २०८३, २१७७, २६३४, ३२१६, ३४४२, ३७३०, ४१८१, ४३५८ ४८३६ ४८५३, ४८७८, ४६७६, ५१६१, ६६१८, ६२१८, ६२२३, ६२३६, ६२४७ ६६७५, ६६७७, ६७३३, ६७७४, ६७६८, ७०६५, ७६०७, ७६५६, ७७०१, ७७६४, ७८४८, ८०६६, ८१६२, ८२५६, १३४६०, १३५५५, १३६५२, १३६७१, १३७२५, १३७८४, १३७८६, १४७३५, १४७५७, १४८४२, १५१२१, १६००२, १६०६६, १६०८५, १६१०४ १६१७५, १६२२२, १६२३३, १६२६०, १६३०६, १६४१७, १६४७२, १६४७७, १६५३०, १६६०७, १६६६६, १६७०१, १६८१६, १६८५१, १६८६७, १६६१३, १६६३२, १६६६३ १७१२१, १७४५१ १७५६४, १७६५७, १७६६८, १७७०४, १७७०६, १७६८४ १८०६०, १८०७०, १८११४, १८१२७, १८१३०, १८१३१, १८१८८, १८२३५,ख १८३६६, १८३६६, १८४५०, १८४७६ १८४८०, १८४६०, १८४६८, १८५३७, १८५३८, १८५४१, १८५४२ १८५५६, १८५६५, १८६०४, १८६०६, १८६१४, १८६१५, १८६३४, १८६४६, १८७३१, १८७७१, १८७७३, १८७७४, १८७८८।

(क्रमश)

स्वामी वेद व्रतानन्द सरस्वती नहीं रहे

आर्य जगत के उदभट वैदिक विद्वान एव सन्यासी स्वामी वेद व्रतानन्द सरस्वती जी का देहावसान १० सितम्बर २००२ अपराह्न ५ बजे हो गया। स्वामी जी अनेको स्थानो तथा दजनो गुरुकुलो मे वेदा का उपदेशामृत सदैव पान कराते रहे। माता निर्माता भवति कहकर सदा स्त्रियो की शिक्षा पर बल दिया।

उनका देहात श्री वैद्यनाथ आर्य पूर्व प्रधान आर्यसमाज मनिहारी टोला के प्रागण मे हुआ। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से उनके भतीजे श्री वेदप्रकाश आर्य जी के द्वारा सम्पन्न हुई। उनके परम शिष्य स्वामी नित्यानन्द जी एव प्रभामित्र जी अश्रुपूर्ण नयनो से मत्रोच्चारण करते रहे। **– काशी नाथ आर्य, प्रधान**

श्री देवराज आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार से सम्मानित

हरिद्वार ११ सितम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के मत्री श्री देवराज को आर्य समाज मुम्बई मे आय कायकर्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। काकडवाडी मे आयोजित सम्मान समारोह म यह पुरस्कार उन्हे आर्यसमाज मे समर्पित भावना स की गइ सवश्रेष्ठ सवाओ के लिए प्रदान किया गया।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती तथा आर्यसमाज मुम्बई द्वारा सस्थापित निधि से राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले इस पुरस्कार का समाज के मैनेजिग ट्रस्टी अश्विन भाइ पटल न प्रदान किया। उन्होने तालियो की गडगडाहट के बीच श्री दवराज का शाल ओढाकर तथा प्रशस्ति पत्र ग्यारह हजार रुपये एव रजत कलश प्रदान कर सम्मानित किया।

समाज सेवा का पावन सकल्प धारण कर अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सुखो की इच्छा का परित्याग करने वाले ५१ वर्षीय दवराज आर्य अनक धार्मिक सामाजिक शैक्षिक सस्थाआ तथा पत्रकारिता स जुड हुए है। वह जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज ज्वालापुर क प्रधान गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सीनेटर माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी ट्रस्ट क मत्री भारत विकास परिषद तथा अनेक विद्यालयो की प्रबन्ध समितियो के पदाधिकारी एव सदस्य है। इससे पूर्व वह पत्रकारिता एव सामाजिक जीवन मे सहभागिता तथा स्थानीय समुदाय मे प्राप्त प्रतिष्ठा के आधार पर अनेको बार सम्मानित किए जा चुके है।

हर्ष-समाचार

समस्त आर्य बन्धुओ को हमे यह सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि **'गीता प्रेस गोरखपुर'** के अनुरूप ही **'ज्ञान प्रेस गाजियाबाद'** के नाम से एक सगठन तैयार किया गया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार का वैदिक साहित्य अत्यन्त ही कम मूल्य पर उपलब्ध कराया जाएगा।

माह अक्टूबर सन २००२ ई० मे प्राप्त होने वाला साहित्य –

१ **सत्यार्थ प्रकाश (डिमाई साइज)** *महर्षि दयानन्द सरस्वती*
२ **सस्कार विधि (डिमाई सजिल्द)** *महर्षि दयानन्द सरस्वती*
३ **भूत प्रेत, अन्धविश्वास कारण एव निवारण** *राकश कुमार आर्य एडवोकेट*
४ **गागर मे सागर (बाल कहानिया)** *डॉ० मुमुक्षु आर्य*
५ **अनुपम ओषधिया** *लाजपत राय अग्रवाल द्वारा सकलित*
६ **सत्यनारायण व्रत कथा का रहस्य** *डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल (एम०ए० पी०एच०डी० डी०लिट०)*

नोट – ***सत्यार्थ प्रकाश एव सस्कार विधि मात्र १३/ (तेरह रुपये प्रति कापी) दी जाएगी। इसी तरह उपरोक्त अन्य साहित्य भी, गीता प्रेस-गोरखपुर की तरह ही अत्यन्त कम मूल्य पर दिया जाएगा।***

विशेष जानकारी के लिए निम्न पतों पर सम्पर्क कर सकते है –

1 **राकेश कुमार आर्य, एडवोकेट**
तहसील कम्पाऊन्ड
दादरी (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष (0120) 4674279
4664217, 4664162

2 **अजय शर्मा (लेखाधिकारी)**
1062 - विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद 201001 उत्तर प्रदेश
दूरभाष (0120) 4701337

3 **अमर स्वामी प्रकाशन विभाग**
1058 विवेकानन्द नगर
गाजियाबाद 201001 उत्तर प्रदेश
दूरभाष (0120) 4701095

4 **अरुण कुमार (इन्जीनियर)**
आर० 7/115 राजनगर गाजियाबाद
पिन 201001 उत्तर प्रदेश
दूरभाष (0120)-4723710

विशेष प्रार्थना आप अगर चाहें तो हमारा सहयोग, अधिक से अधिक साहित्य खरीद कर एव इस सगठन के सदस्य बन कर दे सकते हैं।

निवेदक
राकेश कुमार आर्य, उपाध्यक्ष

आदर्श समाज सेवी श्री जगदीश शरण जी आर्य दिवंगत

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के भूतपूर्व आय-व्यय निरीक्षक आर्यसमाज कोट पूर्वी सम्भल के प्रधान मान्य श्री जगदीश शरण जी आर्य दिनाक २६ अगस्त २००२ को इस असार ससार को छोडकर परमतत्व मे विलीन हो गये। इनका पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार किया गया। इस अवसर पर हजारो व्यक्तियो ने भावपूर्ण विदाई दी। आर्य उप प्रतिनिधि सभा ज्योतिबा फूलेनगर की अन्तरग सभा मे भी उस महान व्यक्तित्व को श्रद्धासुमन समर्पित किए गए। *– हरिश्चन्द्र आर्य*

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29 9 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/20
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 26/27 9 20

मन्त्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल को मातृशोक

दिनाक २८ ७ २००२ को गगा प्रसाद सौम्य मत्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल की माता जी ने प्रात ८ १५ बजे अपने निवास स्थान स्यूसी नगर मे अन्तिम सास ली। व ८५ वर्ष की थी। उनकी शवयात्रा मे स्थानीय गण्यमा य व्यक्ति अध्यापक वर्ग कर्मचारी तथा आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढवाल के प्रधान श्री चन्द्र प्रकाश जी तथा सभी आर्य सभासद सम्मिलित हुए। अन्तिम सस्कार वेदिक रीति से पूर्वी नयार नदी के तट पर श्री वच्चीराम जी आर्य पुरोहित आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढवाल के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

अन्त मे एक मिनट का मौन रखकर स्वर्गीय आत्मा की सदगति की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से की गई।

— मन्त्री आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी पौडी गढवाल

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा हरियाणा की ओर से क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन २० अक्तूबर २००२ को डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल थर्मल कालोनी पानीपत मे प्रात ६ बजे से १ बज तक बडी धूम धाम से मनाया जा रहा है जिस को पदम श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपडा सम्बोधित करेगे। सम्मेलन मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक भी अपना सारगर्भित उपदेश देगे। यज्ञशाला का सभा प्रधान जी उदघाटन करेगे।

पृष्ठ १ का शेष

अत्यावश्यक बैठक

इसी बैठक मे आर्यवीर दल की स्थापना के ७५ वर्ष पूर्ण होन के उपलक्ष्य मे विशाल समारोह आयोजित करने पर भी विचार होना है।

आर्यवीर दल के समस्त प्रान्तीय सचालको प्रान्तीय सभाओ द्वारा नियुक्त अधिष्ठाताओ तथा सार्वदेशिक आर्यवीर दल के पदाधिकारियो को इस विज्ञापन द्वारा सूचित किया जाता है कि समस्त आर्यवीर दल हितैषी इस बैठक मे निश्चित समय एव स्थान पर अवश्य पहुचे।

उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक आर्यवीर दल की कार्यकारिणी की एक बैठक प्रधान सचालक आचार्य देवव्रत जी के द्वारा गुरुकुल गौतमनगर मे रात्रि ८ बजे आहूत की गई है। इस बैठक से पूर्व प्रात ११३० बजे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य कार्यकारिणी के समस्त सदस्यो से उपरोक्त विषयो पर विचार विमर्श करेगे।

विमल वधावन — वरिष्ठ उपप्रधान
वेदव्रत शर्मा — मन्त्री

विवाह की वर्षगांठ

प्रतिष्ठा मे
10150 पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कां० वि०वि०
जिला हरिद्वार (उ०प्र०)

पण्डित धर्मवीर और बहन सावित्री घूरा ने अपने निवास स्थान पर अगस्त मास के अन्त मे अपनी शादी ४८वीं वर्षगाठ धूम धाम से मनाई।

मौके पर आर्योदय पत्रिका के प्रमु सम्पादक और आयसभा के उपप्रधा श्री सत्यदव प्रीतम न इस परिवार की सामाजिक सेवाओ का उल्लेख किया। डाक्टर एव पण्डित धर्मवीर रजीत ने कहा कि सावित्री बहन कहानी लेखिका हैं। प० धर्मवीर घूरा गत ५२ वर्षो से स्थानीय रेडियो स्टेशन और विदेश के रेडियो स्टेशनो और दूरदर्शन केन्द्रो मे हिन्दी अग्रेजी तथा फ्रेच भाषाओ मे कार्यक्रम करते आये है। आपने ५० देशो की यात्रा की है।

गत ५० वर्षो से घूरा जी ने देश विदेश की पत्र पत्रिकाओ मे लेख कहानिया और कविताओ का प्रकाशन किया है।

आप मारीशस हिन्दी लेखक सघ के प्रधान और मारीशस पुरोहित मण्डल न्य प्रधान है। इस दम्पत्ति ने हिन्दी लेखक सघ को एव निधि दान मे दी है। उसके ब्याज व पैसे से प्रकाशन का कार्य भविष्य में होत रहेगा और नवजवान को लेखन के कार्यो प्रोत्साहन मिलता रहेगा

इस वर्षगाठ व मौके के लिए उनव सुपुत्र जो वाशिगट अमेरीका मे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्र कोष के एक प्रमुर अधिकारी तथा सलाहकार है अप परिवार के साथ आये थे। उनका ना धनश्वर है। उनकी पत्नी अमेरीका डाक्टरी का कार्य करती हैं। पण्डित ज के दूसरे पुत्र का नाम राजेश्वर है राजश्वर भूतपूर्व प्रधान मन्त्री डा नवीनचन्द्र रामगुलाम जी के सलाहका थे। वे एक सिद्धस्थ पत्रकार भी है पुत्री का नाम प्रतिभा है। वे सरकार कालेजो मे व्यस्क छात्रो को पढाती है वे कवियत्री है। ज्येष्ठ पुत्र राजेश्व एक समय स्थानीय प्रसारण केन्द्र व वरिष्ठ पत्रकार थे।

श्री नारायणदत्त बनर्जी वाक्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५ सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.co

प्रथम कालम – प्रथम विचार,
सदा सत्य रहने वाली वाणी
वेद वाणी

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे।
पदार्थान्वय -- यशस वीरवत्तमम्।। ऋ० १/१/३

यह मनुष्य (अग्निना एव) अच्छी प्रकार ईश्वर की उपासना और भौतिक अग्नि ही को कलाओ मे सयुक्त करने से (दिवे दिवे) प्रतिदिन (पोषम्) आत्मा और शरीर की पुष्टि करनेवाला (यशसम्) जो उत्तम कीर्ति का बढानेवाला और (वीरवत्तमम) जिसको अच्छे अच्छे विद्वान वा शूरवीर लोग चाहा करते है (रयिम) विद्या और सुवर्णादि उत्तम उस धन को सुगमता से (अश्नवत्) प्राप्त होता है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४१ अक २४ | १३ अक्तूबर से १६ अक्तूबर २००२ तक | दयानन्दाब्द १७६ | सृष्टि सम्वत १६७२९४९१०३ | सम्वत २०५६ | आ० शु० ८

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

तमिलनाडु ने अवैध धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाया

सार्वदेशिक सभा शेष प्रान्तों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित करेगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने तमिलनाडु मे धर्मान्तरण विरोधी अध्यादेश जारी करने के लिए तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री की सराहना की है।

आर्य नेताओ ने इसे सही दिशा में उठाया गया एक आवश्यक कदम बताया है। तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री श्रीमती जयललिता तथा राज्यपाल श्री रगाराजन को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लिखे गए एक पत्र मे धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने से सम्बन्धित अध्यादेश जारी करने के लिए धन्यवाद किया गया। पत्र मे कहा गया है कि लोभ लालच और दबाव से किया गया धर्मान्तरण असवैधानिक है। इस आशय के कई निर्णय सर्वोच्च न्यायालय पहले भी दे चुका है। हालाकि मध्य प्रदेश उडीसा और अरुणाचल प्रदेश की सरकारो ने भी धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाते हुए विधेयक बना रखे हैं परन्तु वे या तो प्रभावशाली नहीं है या उन्हे ठीक प्रकार से लागू नहीं किया जा रहा।

उल्लेखनीय है कि गत माह मदुरै मे लगभग २५० स्कूली छात्रो का छल कपट से धर्मान्तरण की सूचना प्राप्त होते ही श्री विमल वधावन ने मदुरै के कलेक्टर श्री रामचन्द्र से टेलीफोन पर सम्पर्क करके इस प्रकार की गतिविधियो के विरुद्ध कडी कार्यवाही करने के लिए प्रेरित किया था। इसी घटना के बाद सम्भवत उच्चाधिकारियो ने सरकार को कमजोर कानून की स्थिति से अवगत कराते हुए सख्त कानून बनाने की अपनी सस्तुति भेजी। तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबोध कुमार ने भी मुख्यमन्त्री से इस प्रकार का अध्यादेश तत्काल जारी करने के लिए आग्रह किया था

दैनिक समाचार पत्रो मे भी इस अध्यादेश को विगत माह की उपरोक्त सामूहिक धर्मान्तरण की प्रतिक्रिया बताया जा रहा है।

इस अध्यादेश के अनुसार लोभ लालच या दबाव से किए गए धर्मान्तरण का दोषी पाए जाने पर तीन वर्ष की सजा और ५० हजार रू० जुर्माने का प्रावधान है। यदि धर्मान्तरित व्यक्ति १८ वर्ष से कम आयु का हो या महिला हो या दलित वर्ग का व्यक्ति हो तो यह सजा और अधिक होगी

इस अध्यादेश मे यह भी प्रावधान है कि धर्मान्तरण करने की पूर्व सूचना धर्मान्तरण करने वाले तथा जिनका धर्मान्तरण किया जा रहा है दोनो के द्वारा जिला प्रशासन को देनी आवश्यक है। ऐसा न किए जाने पर एक वर्ष की सजा भी सबन्धित पादरी को हो सकती है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेजे इस पत्र मे श्री वधावन ने कहा कि यह अध्यादेश भारत की अन्य सरकारो के लिए भी एक प्रेरणा का कार्य करेगा। अध्यादेश की प्रमाणित प्रति मिलने पर सार्वदेशिक सभा अन्य प्रान्तों कीसरकारो को सीधे तथा प्रान्तीय सभाओ के माध्यम से एक विशेष ज्ञापन तैयार करके भेजेगी।

समस्त आर्यजन सुश्री जयललिता का धन्यवाद करे

विश्व के समस्त आर्यजनो आर्यसमाजो और सभाओ के अधिकारियो का यह दायित्व है कि धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने वाला अध्यादेश जारी करने के लिए तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता का धन्यवाद पत्रो/टेलीग्राम द्वारा करे। उनका चेन्नई का पता इस प्रकार है –

Km J Jayalalitha
36 Boes Garden
Channai 86

तमिलनाडु सरकार का यह महान कदम भारत के अन्य प्रान्तो की सरकारो के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

कृपया अपने पत्र की एक प्रति हमे भी भेजे।

विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान

सगठनात्मक सुदृढता एव वेद प्रचार को व्यापक बनाने के लिए समस्त प्रान्त, जिला और ईकाई स्तर प

आत्ममंथन कार्यशालाएं आयोजित हों

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एव निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी दिल्ली की आर्य समाजो के पदाधिकारियो को कार्यकर्ता सम्मेलन मे आमत्रित किया। २ अक्तूबर २००२ (बुधवार) को आर्यसमाज मन्दिर रमेश नगर मे आयोजित इस कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने की और सचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ता सम्मेलन के विषयों को निर्धारित करने से लेकर मच सचालन की देखरेख में सहयोग दिया।

कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा साथ मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य सम्बोधन करते हुए श्रीमती शशि प्रभा आर्या मचस्थ डॉ० महेश विद्यालकार वैद्य इन्द्रदेव श्री जगदीश आर्य श्री राजसिह भल्ला श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त श्री पतराम त्यागी एव अन्य आर्य नेता।

देश भर में कार्यकर्ता सम्मेलन के आयोजन का लक्ष्य प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा ने यह निश्चय किया है कि श्रद्धा प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए प्रत्येक प्रान्त में इस प्रकार के कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए जाए। इस प्रकार के सम्मेलनो मे अधिक से अधिक सख्या मे सम्बन्धित प्रान्त की आर्यसमाजो के प्रतिनिधि अपने अनुभव प्रेरणा के रूप मे प्रस्तुत करते हैं और अपनी समस्याओं पर सभाओ से मार्ग दर्शन प्राप्त कर पाते हैं। विभिन्न आर्यसमाजों को एक दूसरे की गतिविधियो से अवगत होने का साक्षात अवसर प्राप्त होता है।

शेष भाग पृष्ठ २

इस अंक में .....

सम्पादक

मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० नामवरसिंह द्वारा

5

महर्षि दयानन्द की मिथ्या आलोचना

वेद मैक्समूलर तथा दयानन्द की चर्चा करत करते साम्यवादी लेखक पर पता नहीं कौन सा भूत सवार हो गया कि उसे अयोध्या क एक पुराने ढाचे की विध्वस लीला मे दयानन्द के विचारो के अनुयायियो के मौजूद होने का सपना आ गया। उसने यह निष्कर्ष तुरन्त निकाल लिया कि आर्यसमाज से ही कुछ लोग सघ परिवार मे आ गए है। उन्हे इस बात का भी दुख है कि लोग स्कूलो मे सरस्वती वन्दना को अनिवार्य बनाने पर तुले है। साम्यवादी लेखक की सतुष्टि शायद तब होती जब विद्यालयो मे मार्क्स की कैपिटल तथा कम्यूनिष्ट मैनिफेस्टो का अनिवार्य पाठ कराया जाता। यह तो एक सिद्ध बात है कि भारत के साम्यवादी सरदार भगतसिह तथा बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारियो की विचारधारा से सहमति नहीं रखते। इसलिए जब राम विलास शर्मा ने स्वामी दयानन्द के विचारो से प्रभावित भगतसिह तथा राम प्रसाद बिस्मिल की चर्चा की तो डॉ० सिह को कुछ अस्वस्ति अनुभव हुई।

डॉ० शर्मा ने धर्म की रुढियो पर प्रहार करने मे दयानन्द और कबीर को एक ही धरातल पर खडा पाया। यह कथन काफी हद तक ठीकहै। अन्तर इतना ही है कि दयानन्द का चिन्तन और विश्लेषण शास्त्रानुगामी है जबकि शास्त्र से अनभिज्ञ कबीर ने अपनी प्रबल अनुभूति तथा तर्क शक्ति से पाखण्ड और अधविश्वासो का खण्डन किया। डॉ० नामवर सिह का कथन व्यग्यपूर्ण है – दयानन्द और रामविलास जी की तर्क शैली मे काफी समानता है और सारे विचार स्वातन्त्र्य के बावजूद दोनो (दयानन्दऔर रामविलास) की वेदो मे आस्था अडिग है। जब विचार स्वातन्त्र्य की बात चली तो नामवरजी को राहुल साकृत्यायन की याद आई। उन्होने इस तथ्य को दुहराया कि राहुल जी लगभग दस वर्ष तक आर्यसमाजी रहे किन्तु आर्य समाजिक सकीर्णता (?) के कारण वे आर्यसमाज से बाहर आ गए। यही विचार– स्वातन्त्र्य उन्हे बुद्ध की ओर ले चला। नामवर जी ने बात को अधूरा रख दिया। यह प्रसग पूरा हो जाता यदि वे इतना और लिख देते कि राहुल जी बुद्ध से भी बधे नहीं रहे। उनकी विचार स्वतन्त्रता (या स्वछन्दता) ने उन्हे बौद्ध भिक्षु का बाना छोडने के लिए कहा। अब वे नामवर जी की भाति साम्यवादी खेमे मे आ गए। मार्क्स लेनिन स्टालिन और मार्को का बहुत कुछ स्तुति पाठ करने पर भी साम्यवादी रूस से उन्हे कटुता ही मिली। १ उनकी रुसी पत्नी लोला और उनसे उत्पन्न पुत्र को सोवियत रुस ने भारत आने की इजाज नहीं दी। २ इससे भी बढकर रुस मे रहते हुए उनके द्वारा लिखित ग्रन्थो कीपाण्डुलिपियो को सोवियत अधिकारियो ने जब्त कर लिया। भारत लौटने के बाद तो राहुल जी को कम्यूनिष्ट पार्टी से उसकी राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति विद्वेषपूर्ण नीति के कारण इतनी विरक्ति हुई कि उन्होने इस दल से तौबा कर ली। यह सब तथ्य भी पाठको के सामने आने चाहिए।

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

विवेक और गुरु में कौन बडा ?

डॉ० रामविलास शर्मा ने इतिहास साहित्य और सस्कृति जैसे गम्भीर विषयो पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे थे। इनसे उनके विशाल अध्ययन तथा विवेचन क्षमता का पता चलता है। "भारतीय सस्कृति और हिन्दी प्रदेश" शीर्षक अपने एक ग्रन्थ मे उन्होंने अनुत्तर निकाय (बौद्ध ग्रन्थ) को उद्धत कर बताया कि महात्मा बुद्ध ने मनुष्य के विवेक को सर्वोपरि माना और कहा कि किसी गुरु ग्रन्थ व्यक्ति अनुश्रुति आदि के द्वारा कही गई होने से से ही कोई बात प्रामाणिक और मान्य नही होती। जब तक कि वह हमारे विवेक (तर्क तथा विवेचन बुद्धि) पर खरी नहीं उतरती है। बुद्ध का यह कथन निर्दोष ही है क्योकि वस्तुत मनुष्य का विवेक ही सत्यासत्य धर्माधर्म एव कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्णायक होता है। किन्तु जब डॉ० शर्मा ने बुद्ध के उक्त कथन के समानान्तर तैत्तरीय उपनिषद के उस कथन को उद्धृत कर दिया जिसमे कहा गया है –

यान्यन्वघानि कर्मणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि तथा यान्यस्माक सुचरितानी तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।। १/११/२

अर्थात आचार्य का शिष्य के प्रति कथन है कि जो हमारे अनिन्दित कर्म हैं तुम उनका ही सेवन करो जो हमारे सुचरित है उनका ही आचरण करो अन्यो (निन्दित तथा दुश्चरित) का नहीं। तो डॉ० सिह के तेवर चढ जाते है। उन्हे शर्माजी का यह कथन घोर आपत्तिजनक लगा कि बुद्ध का कथन और उपनिषद की उक्ति मिलती जुलती है। वे बुद्ध की घोषणा को शानदार कहते है जबकि उपनिषद का कथन उन्हे निम्नकोटि का लगता है। उपनिषदकार के कथन से भी यही ध्वनि निकलती है कि गुरु के कार्यो मे भी यदि दोष नजर आए तो शिष्य उसका अनुकरण न करे। वह अपने आचार्य के सुचरितो का ही पालन करे। बात यह है कि डॉ० सिह को तो वेद और श्रुति का नाम ही नही सुहाता। बुद्ध ने यदि अपने युग मे वेद या श्रुति का निषेध किया था तो उसके कुछ कारण थे। उन्हे तो इसी बात पर आपत्ति है कि सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बुद्ध वचन को एक औपनिषदी श्रुति के बराबर क्यो रखा गया ? उनकी शिकायत है कि हर बात के लिए वैदिक मुहर जरुरी है। यहा हम यही कहना चाहते हैं कि भारतीय दर्शन धर्म और चिन्तन की परम्परा मे वेद की मोहर आवश्यक मानी गई है उसे कोई माने या न माने यह दूसरी बात है। कम्यूनिष्टो के लिए तो मार्क्स का कैपिटल वेद से भी बढकर है।

क्रमश

पृष्ठ १ का शेष

आत्ममंथन कार्यशालाएं आयोजित हों

उन्होने बताया कि सगठनात्मक मजबूती और वेद प्रचार गतिविधियो मे व्यापकता लाने के उद्देश्य से इस प्रकार के कार्यक्रम सहायक होते हैं। उन्होने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि प्रान्तीय स्तर के कार्यक्रमो के साथ साथ इसी प्रकार के कार्यकर्ता सम्मेलन क्षेत्रीय जिला स्तरो पर भी आयोजित होने चाहिए। यही नहीं बल्कि विभिन्न आर्य समाजो को भी अपने सभासदो और पदाधिकारियो की आत्मावलोकन बैठके नियमित रूप से रखनी चाहिए। जिससे प्रेमपूर्वक आन्तरिक विषयो पर चर्चा सम्भव हो सके और व्यवहार मे किसी प्रकार का भेद न उत्पन्न हो। परस्पर मेलजोल से एक दूसरे की छोटी मोटी गलतियो को क्षमा करने की भावना भी उत्पन्न हो।

कार्यकर्ता सम्मेलन के सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य ने बताया कि इस कार्यक्रम मे दिल्ली की ७० से भी अधिक आर्यसमाजो ने भाग लिया है। हालाकि कार्यक्रम मे केवल ३० आर्य समाजो के प्रतिनिधि ही अपने विचार व्यक्त कर पाए जिनकी एक विस्तृत रिपोर्ट दिल्ली सभा के मुख पत्र 'आर्य सदेश' मे प्रकाशित की जाएगी।

इसके साथ जितने भी लिखित विचार और सुझाव हमे प्राप्त हुए हैं उन्हे भी बारी बारी से प्रकाशित किया जाएगा।

कार्यकर्ता सम्मेलन का अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि सगठनात्मक एकता की भावना के साथ जो भी कार्य सम्पन्न किया जाता है उसमे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है। उन्होने कहा कि कार्यकर्ता सम्मेलन के सयोजक और सभामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य को यह निर्देश दिया गया है कि वह बारी बारी से समस्त क्षेत्रो मे भी इस प्रकार के अलग अलग सम्मेलन आयोजित करे जिससे धर्म प्रचार कार्यक्रम मे व्यापकता आए।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि लगभग डेढ वर्ष पूर्व १४ अप्रैल २००१ के दिन आर्यसमाज मदिर मिण्टो रोड ध्वस्त किए जाने के बाद दिल्लीवासियो की एकजुटता का ही यह प्रयास है कि आज सरकार को आर्यसमाज की शक्ति के सामने घुटने टेकने पडे और मन्दिर के मूल स्थान पर पुनरुद्वार की स्वीकृति देनी पडी।

श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि इस समूचे कार्य मे मैने और मेरे समस्त सहयोगी साथियो ने आर्यसमाज के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्य किया। इस सारे प्रकरण मे कुछ लोगो ने हम पर यह दोषारोपण करने का प्रयास किया कि वेदव्रत शर्मा लाखो रुपए सरकार से लेकर मदिर निर्माण के मुद्दे पर समझौता कर बैठा है। आज सबको अहसास हो गया कि कोई भी व्यक्ति उस सस्था के साथ धोखा नहीं कर सकता जिसे वह अपनी मा समझता हो।

इस कार्यकर्ता सम्मेलन मे सर्वश्री जगदीश वर्मा (सुन्दर विहार) पूर्ण सिह डबास (साकेत) सुभाष गम्भीर (पश्चिम पुरी) ओ३म प्रकाश अरोडा (अशोक विहार–३) श्रीमती कृष्णा रसवन्त (मानसरोवर गार्डन) कीर्ति शर्मा (करोल बाग) वेदप्रकाश वानप्रस्थी (शक्कर पुर) श्रीमती प्रभु शरणिता (ग्रीन पार्क) आदित्य मुसद्दी लाल (कापसहेडा) बलदेव राज (मुल्तान नगर) सोमदेव मल्होत्रा (गोविन्दपुरी) डॉ० महेश विद्यालकार (शालीमार) रमेश चन्द्र गुप्ता (टैगोर गार्डन) चन्द्रमोहन खन्ना (बैरा एन्क्लेव) बलदेवराज (तिलक नगर) वीरेन्द्र सरदाना (ए ब्लाक जनकपुरी) यशपाल मिगलानी (ग्रेटर कैलाश–२) रामभज मदान (बाली नगर) शशि प्रभा आर्या (राजौरी गार्डन) सत्यदेव वर्मा (इन्द्रपुरी) हीरालाल चावला (पश्चिम विहार) मनवीर सिह राणा (केशव पुरम) केवल कृष्ण कम्पानिया (बी–ब्लाक जनकपुरी) कान्ति प्रकाश (प्रशान्त विहार) विद्याभानु शास्त्री (जम्मू कश्मीर) हरबन्स लाल कोहली (आर०के० पुरम) विश्वम्भर नाथ अरोडा (कृष्णा नगर) पतराम त्यागी (शक्कर पुर) श्रीमती रामचमेली (लडडूघाटी) श्री राजसिह भल्ला (दीवान हाल) श्री वैद्य इन्द्रदेव (सदर बाजार) श्री वेदव्रत शर्मा (हनुमान रोड) आदि ने अपने विचार प्रकट किए। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने समस्त आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आगे भी सभा के कार्यक्रमो मे आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

एक लघु ग्रन्थ संध्या-योग-प्रकाश

4

संध्या और योग
(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

– भगवन्त सिंह कपूर

साधक को स्मरणीय कुछ विशेष बातें

१ बीते को सुधार नहीं सकता इससे उसे भूल जा हा उससे कुछ सीख शिक्षा अवश्य ग्रहण कर।

२ भविष्य की चिंता मत कर वह अपने आप सुधर जाएगा अगर।

३ वर्तमान सम्हाल लिया और देरी मत कर सदुपयोग कर वर्तमान का समय बहुत अनमोल है एक क्षण भी नष्ट न होने दे ?

अ अगर अनुकूलता आवे तो कोई राग न लाना घमण्ड न करना।

ब अगर प्रतिकूलता आवे तो दुखी न होना द्वेष न करना।

स कोई दुख दर्द या कष्ट आवे तो भी अपने ही किसी कर्म–फल का शारीरिक भोग रूपी प्रभु प्रसाद समझ प्रसन्नता से ग्रहण करना।

भूतकाल भविष्य व वर्तमान काल ये तीनो एव यह ससार सभी अनित्य हैं। इन्हे विसारकर अपनी नित्य आत्मा को उस 'परम–नित्य परमात्मा से मिलाने की साधना यात्रा अविराम मोक्ष पर्यन्त करते रहना।

सन्ध्या की पूर्व तैयारी

नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्नान कर एक निश्चित स्थान पर जो स्वच्छ एकान्त एव ताजी वायु के आवागमन वाला हो, अधिक वायुवेग वाला नही सूर्य निकलने के एक से दो घण्टे पहले पूर्वाभिमुख कुशा या ऊनी आसन पर स्थिर बैठे। पद्मासन वज्रासन या सुखासन जिसमें सुखपूर्वक दो घण्टे तक बैठ सके।

सर्वप्रथम निम्नलिखित दो क्रियाए अवश्य करे – १ नाद एव २. नाडी–शोधन या अनुलोम–विलोम

१ नाद क्रिया विधि – श्वास अन्दर भरकर प्रश्वास के समय प्रभु के किसी नाम या गुण का एक–एक अक्षर बोलते हुए, धीरे धीरे स्वर के साथ निकाले – जैसे ओ मा आ आ न न्द म श्वास समाप्त होने तक आलाप करते रहे।

पुन श्वास भरकर प्रभु के इसी नाम या गुण का पूर्ण शब्द बोलकर धीरे–धीरे प्रश्वास समाप्त होने तक वही प्रभु नाम या गुण का स्मरण करे एव वैसा गुण अपने आचरण मे लाने का सकल्प मन ही मन दुहराते रहे। एक समय मे एक ही नाम या गुण का नाद करना चाहिए। ऐसे कम से कम ग्यारह बार या सुविधानुसार जितना चाहे बोले।

प्रभु के नाम या गुण जैसा ऊपर ओमानन्द बोलकर बताया है के स्थान पर प्रभु के अन्य गुण का भी नाद किया जा सकता हैं आर्यसमाज के नियम दो मे कुछ कुछ गुण इस प्रकार वर्णित हैं – जैसे न्यायकारी, महान् अजन्मा सर्वज्ञ, दयालु, नित्य पवित्र सर्वान्तर्यामी एव सर्वाधार आदि।

प्रभु के मात्र नाम की माला फेरते समय मन कहीं अन्यत्र रहने के जाप नहीं होता अपितु सच्चा जाप तो मन को अन्यत्र न जाने देकर, नाम एव गुण

का बरम्बार स्मरण कर आचरण मे लाना ही है।

२ नाडी शोधन अनुलोम विलोम –

नासिका के दो छिद्रो मे से दाहिने को सूर्य–स्वर एव बाए को चन्द्र–स्वर कहते हैं। नासिका के पास अगुलियो से अनुभव करे जिस स्वर से श्वास तेज चल रहा हो उसी से आरम्भ करना है। स्वर को बन्द करने के लिए बाए हाथ का ही उपयोग करे। अगर बाया चन्द्र स्वर बन्द करना है तो बाए हाथ के अगूठे से अगर दाया सूर्य स्वर बन्द करना है तो बाए हाथ की अनामिका एव मध्यमा अगुलिया मिलाकर करे।

विधि (१) जो स्वर तेज चल रहा है उससे श्वास बाहर निकालकर थोडा रुके फिर धीरे–धीरे अन्दर लेवे इस प्रकार जिससे लेना उसी से छोडना ५ से १० बार करे –

२ फिर दूसरे स्वर से भी ५ से १० बार करे। बदलते समय जिस 'स्वर से श्वास–प्रश्वास कर रहे हैं उस स्वर से जब बाहर श्वास हो तो कुछ रुककर धीरे अन्दर भरकर अन्दर भी रोके तब इस स्वर को बन्द कर दूसरे स्वर से बाहर निकाले एव उस स्वर से प्रारम्भ करे। ३ जब दोनो स्वरो से क्रिया हो जावे तो बाए हाथ की अगुलियो की ही सहायता से सूर्य–स्वर से श्वास भरकर चन्द्र–स्वर से निकाले यह भी ५ से १० बार करके। ४ फिर बदलकर चन्द्र स्वर से भरकर सूर्य स्वर से निकालने की क्रिया भी ५ से १० बार हो जाने के बाद।। ५ बाया हाथ नीचे कर लेवे अब दोनो स्वरो से श्वास छोडना रोकना धीरे लेना रोकना व धीरे छोडना यह क्रिया भी ५ से १० बार कर अपने स्वाभाविक श्वास–प्रश्वास पर आ जावे। नाडी-शोधन या अनुलोम–विलोम क्रिया समाप्त हुई।

प्राणायाम

सन्ध्या की पूर्व तैयारी मे स्वामी दयानन्द ने तीन प्राणायाम करने का प्रावधान किया है अत पहले सरल प्राणायाम के अग प्रकार एव विधि प्रस्तुत है – प्राणायाम के तीन अग हैं –

१ रेचक – प्रश्वास का बाहर निकलाना अपान वायु बाहर फेकना।

२ पूरक – श्वास अर्थात प्राण वायु को अन्दर खींच कर भरना।

३ कुम्भक – श्वास का बाहर या अन्दर रोकना।

अ आभ्यन्तर कुम्भक – श्वास का अन्दर रोकना।

ब बाह्य कुम्भक – प्रश्वास का बाहर रोकना।

महर्षि पातजलि के अनुसार प्राणायाम चार प्रकार के है –

बाह्याभ्यन्तर स्तम्भ वृत्तिर्देशकाल सख्याभि परिदृष्टो दीर्घ सूक्ष्म

बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी चतुर्थ

यो० सा०पा० २–५० २–५१

१ बाह्य वृत्ति २ आभ्यन्तर वृत्ति ३ स्तम्भ वृत्ति और ४ बाहया आभ्यन्तर–विषयाक्षेपी ४ अ बाह्याभ्यन्तर वृत्ति। प्राणायामो की विधि बताने के पहले कुछ सवाधानिया समझनी आवश्यक हैं –

१ श्वास प्रश्वास की क्रिया करते समय शरीर मे किसी प्रकार का धक्का या झटका नहीं लगना चाहिए। चेहरे पर तनाव व सिकुडन उत्पन्न नही हो। फेफडे मे भी अनावश्यक तनाव नहीं पडना चाहिए।

२ रोकी हुई अवस्था से श्वास छोडते समय झटका न लगे अत श्वास को रोकी हुई तरफ ही किचित करके तब अगली क्रिया करनी चाहिए।

विधि – १ बाह्य वृत्ति (बाहर रोकना) नासिका से सम्पूर्ण वायु प्रश्वास द्ववारा बाहर निकालकर यथाशक्ति रोकना जब कुछ घबराहट हो तो एक ओम बोलने तक और रुके कुछ बाहर ही की तरफ धकेलकर धीरे धीरे अन्दर लेवे अन्दर बिना रुके तुरन्त धीरे धीरे श्वास बाहर निकालना।

२ आभ्यन्तर वृत्ति (अन्दर रोकना) – नासिका से पूर्ण वायु प्रश्वास से बाहर निकालकर बिना इनके तुरन्त धीरे–धीरे अन्दर लेकर यथाशक्ति रोकना जब घबराहट होने लगे तब एक ओम बोलने तक किचित अन्दर ही धकेलकर धीरे–धीरे अपना वायु श्वास द्वारा बाहर निकालना।

३ स्तम्भ वृत्ति (जहा कर तहा रोकना) जिस अवस्था मे श्वास है उसी अवस्था मे रोकना घबराहट होने पर साधारण रीति से श्वास–प्रश्वास कर जहा से आरम्भ किया पूर्ववत वहीं के रोककर करना।

इन प्राणायामो मे श्वास रोके हुए अवस्था मे ठोडी को कण्ठ के साथ लगाकर नाभि से गुदा तक के भाग को अन्दर की तरफ पीछे की ओर खींच लिया जाता है। इस निश्चल अवस्था मे भावना कीजाती है कि मै शरीर के सारे प्राण को मस्तिष्क की ओर खींच रहा हू। बहिमुख निर्लिप्त रहने के लिए मन को ओम जाप मे व्यस्त रखते हैं।

क्रमश

हमारी गोसंवर्द्धन परम्परा और आज की समस्या

२६ ९ २००२ से आगे

– सुबोध कुमार

सारे पर्यावरण व्रज गोष्ठ की शुद्धि हेतु यज्ञ द्वारा विघ्नकारी राक्षस रूप प्रदूषण जन्य कृमि कीट पतग हटा कर होमाग्नि द्वारा स्वास्थ्य और उत्साहित जीवन लाभ भी होता है यह विषय (गायत्रेण त्वा छन्दसा चासि पयस्वति च।। और पुरा क्रूरस्य विसृपो द्विषतो वधोऽसि।। प्रत्युष्ट रक्ष प्रत्युष्टा अरातयो त्वा वाजेध्याय सम्मार्जिम।। प० १–२७२८२६। मन्त्र राष्ट्र को अन्नादि पदार्थो से युक्त करक सम्पन्न बनाने के सन्दर्भ मे हैं।

अबन्धनीय पशु विषय – इन्हे अनुबन्धनीय भी कहा जाता था। जिन पशुओ की उत्पादकता समाप्त होने लगती थी उन के उपचार व सेवा की व्यवस्था पर विचार विमर्श तथा जैसे वृद्धावस्था मे मनुष्यो मे भी सन्यासाश्रम मे अन्तिम दिनो मे समाज से दूर हिमालय जैसे पर्वतो गगा इत्यादि जलस्थानो मे समाधी ग्रस्त होने की प्रथा थी उसी प्रकार अबन्धनीय पशुओ को वनो से स्वतन्त्र छोड कर समाज के दायित्व से निवृत्त होने पर भी समाज निर्णय लेता था।

यह सारी व्यवस्था मासिक दर्शेष्टि यागा द्वारा गृहस्थो के कर्त्तव्य मे आती थी। इस आयोजन के तीन महत्वपूर्ण अग ऐसे भी है जो अदृष्ट हैं।

१ सारी व्यवस्था और निर्णय सामूहिक समाज के निर्णय होते थे। व्यक्तिगत आचरण की परिसीमाओ से समाज स्वतन्त्र रहता था।

२ समाज के सब अनुभवी ज्ञानी बुद्धिजीवी वर्ग के सम्मिलित होने से ज्ञान का लोप नहीं परन्तु सम्वर्द्धन होता था।

बाल्यकाल से बच्चो को क्रियात्मक व्यवस्था के साथ ज्ञान और समाज का यज्ञ एक शिक्षा का माध्यम बनता था जो बच्चो मे आरम्भ से सस्कृति सस्कार और कार्यकुशलता की नीव बनती थी।

इस सारी प्राचीन परम्परा से यह स्पष्ट है कि हमारी वैदिक व्यवस्था और ज्ञान सम्पूर्ण विज्ञान और प्रौद्योगिकी लिए हुए था। इसी परम्परा को आज के परिवेश मे पुन आयोजित कर पाने से ही भारत वर्ष मे गोसम्बर्द्धन की नींव पर गौरव पूर्ण देश का पुनर्जागरण हो सकता है।

गोसम्वर्द्धन की व्यावहारिक योजना बना पाना एक अपने मे बहुत भारी कार्य है जिस को एक इस प्रकार के लेख द्वारा प्रस्तुत करना हास्यास्पद या केवल लेख पूरा करना ही रह जाएगा।

परन्तु एक विश्वास है कि बिना किसी सरकारी आलवन के यदि गोसम्बर्द्धन मे आस्था रखने वाली सारी सस्थाए अपनी सारी ऊर्जा व्यवस्थित होकर केन्द्रित करेगे तो एक पचवर्षीय योजना द्वारा हम इस पवित्र कार्य को सफलता पूर्वक कर पाएगे। इस योजना के कई स्वतन्त्र रूप से काम करने वाले विभाग हो सकते है। जैसे –

१ एक विभाग गोमक्तो को प्राचीन परम्परा अनुकूल आधुनिक परिस्थितियो मे गोवश के लिए कम से कम लागत वाली स्थान परिस्थिति अनुकूल दो चार गौ से लेकर बीस पचास गौ तक के निवास आहार भण्डार जल भण्डार जल उपयुक्तता करने के बारे मे जानकारी आवास मण्डार गृह निर्माण के बारे मे प्राद्योगिकी का स्वयम ग्रामीण क्षेत्रो मे निर्माण गौ आहार वृषभ निवास आहार तथा स्वच्छ निरोग्य अवस्था मे गो वश को रखने की जानकारी और प्रशिक्षण की व्यवस्था के लिए।

२ दूसरा विभाग दो से पाच गाय तक आरम्भ कर के अपने अर्थोपार्जन मे गोसम्बर्द्धन द्वारा ग्राम्य भाइयो का चयन करके उनके लिए अनुकूल बछिया गाय की व्यवस्था करने के लिए। तथा इन इकाइयो और गोशालाओ मे सहयोग सहायता के लिए।

३ तीसरा विभाग प्रचलित डिब्बो द्वारा खुले दूध के वितरण के स्थान पर सीलबन्द पैकट पद्धति से। ५० लीटर से ५०० लीटर तक पैकेट बनाने की बिना विशेष बिजली या कीमत की मशीन लगाए छोटे दूध उत्पादको के अनुकूल विधि FAO द्वारा विकसित प्रणाली इत्यादि के प्रचार और प्रशिक्षण से ग्राहको तक प्रमाणित शुद्ध स्वच्छ प्राकृतिक दूध उपलब्ध कराने के लिए।

४ ग्रामीण क्षेत्रो मे अनुकूल उपयुक्त आधुनिक वैज्ञानिक अनुसधान आधारिक चारा फसलो के उत्पादन पौध बीज इत्यादि उर्वरक इत्यादि की सामग्री जानकारी प्रशिक्षण के लिए।

५ सोर ऊर्जा गोबर गैस पचगव्य उत्पादन सम्बन्धी प्रशिक्षण और सुविधाए प्राप्त करने के लिए।

६ जन साधारण मे प्रचार–सम्पर्क द्वारा गौ को पुन प्रतिष्ठित करना और पचगव्य और दुग्ध प्रौद्योगिकी मे नई वस्तुओ के निर्माण और विक्रय की योजना के लिए। बच्चो की शिक्षा मे गोसम्बर्द्धन विषय विस्तार के लिए।

७ गोसम्बर्द्धन स्वास्थ्य उपचार गो दुग्ध प्रौद्योगिकी के लिए अनुकूल पाठयक्रम और प्रशिक्षण विषय के लिए।

नोट **इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए उत्तम प्रजाति के बछिया बछडो इत्यादि का प्रबन्ध करने के विषय पर भी पूरा विचार हो चुका है।**

आर्यसमाज और अमेरि

– कै० देवरत्न आर्य

मै दक्षिण अफ्रिका की आर्यसमाजो मे भ्रमण व प्रचार कार्य करके दिनाक १५ जून २००२ को भारत आया। लगभग २५ दिन भारत मे रहने के पश्चात मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान माननीय डॉ० सुखदेव सोनी का निमन्त्रण अमेरिका से मिला। अमेरिका के क्लीवलैण्ड (ओहार्टो) में दिनाक १२ से १४ जुलाई तक आर्य महासम्मेलन होने वाला था। मुझे व मेरी धर्मपत्नी को इस सम्मेलन मे उपस्थित होने का आमन्त्रण था। मुम्बई में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे डॉ० सुखदेव सोनी स्वागताध्यक्ष थे। यहा के लोग उनके व्यक्तित्व एव विचारो से बहुत प्रभावित हुए। उनके साथ वैदिक विद्वान डॉ० दिलीप वेदालकार व आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री माननीय श्री गिरीश खोसला भी उपस्थित थे। डॉ० सोनी बडे शान्त स्वभाव एव आर्यसमाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व है। ठीक ऐसे ही सक्रिय कार्यकर्त्ता है डॉ० दिलीप वेदालकार एव श्री गिरीश खोसला।

मैं और धर्मपत्नी सुनीता आर्या दोनो १० जुलाई २००२ को रात्री ब्रिटिश एयर वेज से शिकागो के लिए रवाना हुए। इससे पूर्व आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी ने ८ जुलाई को हमें बडी भावभीनी विदाई दी। समारोह को भव्य बनाने के लिए उसके प्रधान श्री सोमदत्त जी महाजन एवं मन्त्री श्री रमेश जी ने अथक प्रयास किया। उसी दिन मेरा जन्म दिन भी था अत बडी शालीनता के साथ जन्म दिन भी मनाया। टकारा ट्रस्ट के मन्त्री मान्यवर श्री रामनाथ सहगल भी इस समारोह में उपस्थित थे।

अनेक आर्यो ने १० जुलाई २००२ की रात्री को एयरपोर्ट पर पहुच कर विदाई दी व इन्दिरा गाधी अन्तर्राष्ट्रीय एयर पोर्ट को वैदिक धर्म के नारों से गुजा दिया। हमारा विमान इग्लैण्ड होता हुआ शिकागो के लिए रवाना हुआ। अमेरिका की हमारी यह पहली यात्रा थी। समय के अन्तर के कारण हम १० जुलाई २००२ को प्रात ७ बजे इग्लैण्ड पहुचे, वह ५ घण्टे पश्चात् शिकागो (अमेरिका) के लिए रवाना हो गये। ८ घण्टे की यात्रा के पश्चात् सायं ७ बजे शिकागो पहुच गए।

विमान स्थल पर डॉ० दिलीप वेदालकार, डॉ० वीरेन्द्र माथुर आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति हमारे स्वागत के लिए उपस्थित थे। डॉ० वीरेन्द्र माथुर मेरी मौसी व आर्यसमाज के विशिष्ट व्यक्ति श्री विजय बिहारी लाल जी माथुर के सुपुत्र है। वे हमे अपने विशाल बगले पर जो शिकागो मे है ले गए और हम अपने शिकागो आवास के दौरान उनके यहा ही रहे। ११ जुलाई को हमने वहीं आराम किया।

१२ जुलाई २००२ को प्रात हम कोन्टीनेन्टल एयर वेज से रवाना होकर आर्य महासम्मेलन मे उपस्थित होने क्लीव लैण्ड (OHIO) पहुचे। एयरपोर्ट पर हमारे स्वागत के लिए अनेक आर्य जन आए हुए थे जिसमे विशेष रूप से डॉ० भूषण एव श्रीमती वाधवा मुख्य थी। हम कार द्वारा सीधे हाटेल रेडिसन्स पहुचे जहा सम्मेलन होना था और हमारे रहने की व्यवस्था भी वही थी। सम्मेलन मध्याह्न ३ बजे से प्रारम्भ होना था। उससे पूर्व आए हुए प्रतिनिधियो का रजिस्ट्रेशन आदि होना था। इस सम्मेलन मे भाग लेने हेतु अमेरिका के विभिन्न भागो से लगभग २०० व्यक्ति उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त लगभग १४ व्यक्ति श्री अमर ऐरी जी के नेतृत्व मे कनाडा से आए व कुछ विशिष्ट व्यक्ति हालैण्ड आदि स्थानो से भी आए हुए थे।

१२ जुलाई को मध्याह्न उदघाटन समारोह सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर एव व्यवस्थित ढग से की हुई थी। उपस्थित जन समुदाय इस तथ्य से बडा प्रसन्न था कि पहली बार अमेरिका मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पत्नी के साथ आए हुए है। सम्मेलन की सारी व्यवस्था डॉ० विनोद सेठी व श्री गिरीश खोसला ने सम्हाली हुई थी। इस उदघाटन समारोह को डॉ० सुखदेव सोनी और मैंने सम्बोधित किया। डॉ० सेठी इस समारोह के सयोजक थे।

साय ८ बजे सम्मेलन का पहला सत्र प्रारम्भ हुआ। सत्र का विषय था 'How can we make Warld noble' अर्थात् 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' सत्र के अध्यक्ष थे डॉ० रमेश गुप्ता। अमेरिका निवास के दौरान हमे एक दिन डॉ० रमेश गुप्ता के निवास पर रहने का अवसर मिला। पूरा परिवार वैदिक वातावरण से भरा हुआ था। वे उदयपुर (राजस्थान) के निवासी थे। उनके परिवार मे मुम्बई आर्य महासम्मेलन के चित्र देखे जो उनके पिता श्री ने उन्हे भारत से भेजे थे। मेरे कई चित्र उनमे थे।

इस सत्र की माडरेटर थी श्रीमती साथी गुरदयाल और मुख्य वक्ता थे श्री अमर ऐरी (कनाडा)। श्री ऐरी जी ने विश्व को कैसे श्रेष्ठ व्यक्तियो का समाज बनाया जा सकता है विषय पर ५० मिनट मे बडा सारगर्भित भाषण दिया। उनके इस व्यक्तित्व से मैं बडा प्रभावित हुआ।

शनिवार १३ जुलाई २००२ को प्रात ६ बजे 'योग और ध्यान विषय पर श्री भूपीन्दर सोनी ने कक्षा ली। एव ७ ३० बजे सम्मेलन हाल मे यज्ञ हुआ। सयोग से इस अवसर पर महात्मा प्रेम प्रकाश जी धुरी पजाब वाले भी उपस्थित थे। वे अपने पुत्र श्री सुधीर सिंगल के पास जो कोलम्बस मे रहते है आए हुए थे।

प्रातराश के पश्चात सम्मेलन का दूसरा सत्र प्रारम्भ हुआ। विषय था 'Basic believes of Vedas & Principles of Arya Samaj' श्री सुरेन्द्र मेहता इस सत्र के अध्यक्ष थे और माडरेटर थी श्रीमती ज्योति गाधी वैदिक विद्वान श्री चमन लाल गुप्ता मुख्य वक्ता। वे गुरुकुल के पढे विद्वान है और उन्होने अपने विषय पर बडा प्रभावशाली भाषण दिया। अपने विचारो से उन्होने श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध कर दिया। समस्त सत्रो मे जिस प्रकार प्रमुख वक्ताओं ने अपने विचार रखे मुझे यह सोचने पर बाध्य कर दिया कि विदेशो मे भी प्रभावशाली वैदिक विद्वानो की कमी नहीं है।

चाय व काफी ब्रेक के पश्चात तीसरा सत्र प्रारम्भ हुआ। विषय था – 'Survival of Vedic Values in non Vedic Enviremant अमेरिका के ह्यूसटन शहर से आए आर्यसमाज के प्रमुख स्तम्भ श्री देव महाजन जी इस सत्र के अध्यक्ष थे और मोडरेटर थे प्रो० वेदश्रवा (वैदिक विद्वान आचार्य विश्वेश्रवा के सुपुत्र) मै व त्रिनिदाद से आए प० सदानन्द रामनारायण प्रमुख वक्ता थे। मैने अपने विचार दिए। अनेक बार तालियो से उन विचारो का स्वागत किया गया। मेरे भाषण को बहुत पसन्द किया गया। भाषण अग्रेजी मे हुआ चूकि वहा के आयोजको की ऐसी ही माग थी।

मध्याह्न दो बजे भोजन के पश्चात चौथे सत्र का प्रारम्भ हुआ। विषय था 'Why bad thing happen to good people' अच्छे व्यक्तियो के साथ बुरी घटनाए क्यो होती है ? सत्र के अध्यक्ष थे न्यूजरसी से आए डॉ० प्रताप सिगल (महात्मा प्रेम प्रकाश जी के छोटे भाई) मोडरेटर थी श्रीमती सुदर्शन सुनेजा। वक्ता डॉ० सुधीर आनन्द ने बडे उदाहरण देकर कर्मभोग के आधार पर अपने विषय का प्रतिपादन किया। अपने भाषण में अनेक बार उन्होने पूजनीय स्वामी डॉ० सत्यम के विचारो को व्यक्त किया। स्वामी सत्यम जी किसी कारण वश इस सत्र मे उपस्थित नहीं हो पाए थे पर उनके विचारो को डॉ० आनन्द ने बडे सुन्दर ढग से आम श्रोताओ के सामने रखा।

साय ४ बजे पाचवा सत्र प्रारम्भ हुआ। विषय था 'Working Plan for speading Arya Samaj Massage' श्रीमती कोहली अध्यक्ष थी व श्री विमल वेलानी मोडरेटर। श्रीमती कामनी पहुजा व डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर ने अत्यन्त प्रभावशाली सुझाव आम जनता के सामने रखे। रात्री को भोजन के पश्चात मनोरजन कार्यक्रम हुआ। हरिद्वार गुरुकुल कागडी शताब्दी समारोह पर निर्मित स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित डाक्यूमेन्टरी भी दिखाई गई।

१४ जुलाई को सम्मेलन का समापन सत्र था। प्रात योग और ध्यान की कक्षाओ के पश्चात महात्मा प्रेम प्रकाश जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात सम्मेलन का छठा सत्र प्रारम्भ हुआ। विषय था 'Science of Yagya' यज्ञ विज्ञान सत्र के मोडरेटर थे श्री अमर ऐरी व वक्ता थे श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी। महात्मा जी ने लगभग ४० मिनट के अपने भाषण मे यज्ञ विज्ञान पर अपना व्यवहारिक अनुभव रखा। श्रोताओ ने उनके भाषण को बहुत सराहा था। धन्यवाद के साथ सम्मेलन का समापन हुआ। शान्ति पाठ से पूर्व मैंने सार्वदेशिक सभा की ओर से समस्त कार्यकर्त्ताओ वक्ता एव विद्वानो का भगवे पटके व वैदिक भजनो के कैसट से उनका सम्मान किया। मेरे द्वारा किए गए इस सम्मान की सबने प्रशसा की।

[illegible]र्यसमाज और अमेरिका

सम्मेलन मे निवास एव भोजन की बडी सुन्दर व्यवस्था थी। साथ ही विभिन्न सत्रो मे जिस प्रकार विषयों का चयन किया गया एव वक्ताओं ने अपने विचार दिये उसकी जितनी प्रशसा की जाए कम है। सम्मेलन के दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की साधारण सभा एव अन्तरंग सभा की बैठके भी चलती रही। इस बार चुनाव मे श्री विनोद सेठी प्रधान, श्री वेदश्रवा मन्त्री एवं श्री गिरिश खोसला, कोषाध्यक्ष चुने गए। डॉ० सुखदेव सोनी व प० रामलाल जी को संरक्षक के रूप में मनोनीत किया गया।

इन बैठको की एक विशेष बात रही। श्री प० रामलाल जी ने साधारण सभा मे प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा के संविधान में यह परिवर्तन किया जाए कि उसका प्रधान शाकाहारी और मद्यपान न करने वाला होना चाहिए जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

सम्मेलन समाप्त होने के पश्चात् मुझे वापिस शिकागो जाना था। मुझे भारत में कनाडा का वीसा नहीं मिला था। श्री अमर ऐरी जी का आग्रह था कि किसी भी कीमत पर मुझे अमेरिका के पश्चात् कनाडा आना है अत हम डॉ० प्रताप सिगल व डॉ० रमेश गुप्ता की कार से न्यूयार्क के लिए रवाना हो गए। न्यूयार्क जाने से पूर्व हम एक रात्री डॉ० रमेश गुप्ता के निवास पर रुके व दो दिन प्रो० वेदश्रवा के निवास पर। प्रयत्न करने पर हमें दो दिन के पश्चात् कनाडा एम्बेसी—न्यूयार्क से कनाडा के लिए वीसा मिल गया। हम वीसा लेकर विमान द्वारा ४ दिन के पश्चात् शिकागो आ गए। न्यूयार्क में हम अपने पुराने मित्र और सहयोगी श्री मनमोहन् माहेश्वरी (कलकत्ता निवासी) के निवास पर दो दिन रुके। उन्होंने हमें न्यूयार्क के प्रमुख स्थानों को भी दिखाया। अपने न्यूयार्क के निवास के दौरान हम आर्यसमाज न्यूयार्क और 'Arya Spritual Centre' क्वीन्स भी गए। जिसका वर्णन मैं अपने लेख में बाद में करूंगा।

हम १८ जुलाई २००२ को शिकागो आ गए। खराब मौसम के कारण हमारा विमान ३ घण्टे विलम्ब से उडा। डॉ वीरेन्द्र माथुर हमें लेने आ गए थे।

२० और २१ जुलाई को हमारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम आर्यसमाज शिकागो लेण्ड मे था। डॉ० सोनी इस समाज के प्रधान है। उनके प्रयत्नो और आर्थिक सहयोग का परिणाम है कि शिकागो में सुन्दर आर्यसमाज भवन है जो लगभग ३ एकड भूमि में फैला हुआ है। वहां २० व २१ जुलाई को उनका वार्षिकोत्सव था। २० तारीख को प्रात १० बजे ध्वजारोहण हुआ। डॉ० सोनी ने अमेरिका का मैंने भारत का और महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने ओ३म् का ध्वजारोहण किया। डॉ० दिलीप वेदालकार के ब्रह्मत्व मे पाच कुण्डीय विश्व शाति यज्ञ का आयोजन था, मुख्य यजमान थे डॉ० सुखदेव सोनी। यज्ञ के पश्चात् श्रीमती मीनू पुरुषोत्तम (भारत की पार्श्व गायिका) के लगभग १ घण्टे तक भजन हुए और उसके पश्चात् महात्मा प्रेम प्रकाश जी का भाषण। अमेरिका में दो भव्य भवन चर्च में बने है एक शिकागो लेण्ड और दूसरा क्वीन्स न्यूयार्क में। २० जुलाई को शिकागो लेण्ड उत्सव का दूसरा दिन था। प्रातः १० बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ मैं मुख्य यजमान था। यज्ञ के पश्चात् महात्मा प्रेम प्रकाश जी व मेरा भाषण हुआ। मीनू पुरुषोत्तम के भजन। भोजन के पश्चात् श्रीमती मीनू पुरुषोत्तम जी के २ घण्टे तक भजन हुए। इस सुन्दर और आकर्षक कार्यक्रम के कारण मैंने भगवा पटको व कैसट से श्रीमती मीनू पुरुषोत्तम, डॉ० दिलीप वेदालकार, डॉ० सुखदेव सोनी, श्री विनय शर्मा मन्त्री, श्री सुदर्शन प्रेम कोषाध्यक्ष, और श्रीमती पुरी का सम्मान किया। यज्ञ में स्थानीय पुरोहित श्रीमती शशी टण्डन एवं श्री भगत ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम में सयोग से वैदिक विद्वान पं० धर्मपाल जी (मेरठ) भी उपस्थित थे।

समारोह की समाप्ति पर हम डॉ० सुखदेव सोनी के साथ हिन्दू टेम्पल (Hindu Temple) गए। वहां फ्रांस के संवाददाता Mr. Francoi Gauitier का भाषण हिन्दुत्व पर था। उन्होंने हिन्दुओं को भारत की दुर्दशा पर चेताया। उनका पूरा भाषण अलग से हमारी पत्रिका 'वैदिक लाइट' में प्रकाशित होगा।

२२ जुलाई को हमारा कोई विशेष कार्यक्रम नहीं था। हम अपने छोटे मौसेरे भाई डॉ० सुभाष भटनागर के यहां मिलवाकी स्थान पर गए जो शिकागो से १२० किलो मीटर दूर था। सुभाष ने ब्रेन हेमरेज पर पुस्तकें लिखी है। उसकी उन्नति देखकर बडी प्रसन्नता हुई।

२३ जुलाई को हमने शिकागो की सबसे ऊची इमारत सियर्स टावर व नेवी पीयर आदि दार्शनिक स्थानों को देखा। २४ जुलाई का दिन हमने डॉ० दिलीप वेदालकार के निवास पर बिताया।

२५ जुलाई २००२ को हम आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा निश्चित कार्यक्रमानुसार ह्यूसटन के लिए विमान द्वारा रवाना हुए। लगभग साय ५.३० बजे ह्यूसटन पहुंचे। विमान स्थल पर अनेक व्यक्तियों के साथ श्री देव महाजन जी व उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सुषमा जी उपस्थित थी। हम श्री देव महाजन जी के साथ उनके निवास गए जहा हमारे रहने की व्यवस्था भी थी।

श्री देव महाजन जी वहां की आर्यसमाज के प्रमुख स्तम्भ के रूप में जाने जाते हैं। सम्पन्न परिवार के श्री देव महाजन जी, श्रीराम चन्द जी महाजन के सुपुत्र है। वे अमेरिका में ६३ वर्ष के आयु में अमेरिका गए। हिन्दू समाज को सस्कारित करने की उनकी तीव्र इच्छा थी। हिन्दू समाज मे व्याप्त बुराईयो को दूर करने की उनमे तीव्र तडप थी। उन्होने स्वय को पुरोहित के कार्य में संलग्न कर दिया और युवकों के लिए संस्कार केन्द चलाने की योजना बनाने लगे।

उनके अथक प्रयासों का परिणाम था कि ह्यूस्टन में आर्य संस्कृति और महर्षि दयानन्द की यश गाथा की दुदभि बजने लगी। वहां आर्यसमाज के भवन का निर्माण किया जो सम्भवतः पूरे अमेरिका मे सबसे बड़ा भवन है। वहा के आर्य प्रेमियों द्वारा मिलकर इस भवन का निर्माण हुआ। यहा की आर्यसमाज दो एकड भूमि में निर्मित्त है। वातानूकुलित सत्सग भवन जिसमें लगभग १००० व्यक्ति बैठ सकते है, विशाल एवं सुसज्जित मंच, हाल के पीछे खुले मैदान में विशाल यज्ञशाला (जैसी सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर में बनी है) जहां ५०० व्यक्ति बैठ सकते है। उसके पीछे डी०ए०वी० मान्टेसरी स्कूल, विद्वान के रहने के लिए सुसज्जित फ्लेट जिसमें माइक्रो वेव, रेफ्रिजरेटर, कपडे धोने और सुखाने की मशीन तथा कम्प्यूटर आदि लगे हुए है विशाल कार पार्क व बगीचे आदि सुविधाओं से निर्मित्त इस भवन को देखकर मन प्रसन्न हो गया। कभी—कभी मन में आता था कि उस महापुरुष देव दयानन्द ने हरिद्वार कुम्भ के मेले में जब पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी अकेला था। सम्भवत उन्हें उस समय यह अनुमान भी नहीं होगा कि जिस सत्य मार्ग पर चलने की मैं प्रेरणा कर रहा हूं समय आने पर उसके विशाल केन्द्र विदेशों में भी होगे। मैं दंग रह गया जब मैंने मॉरिशस केन्या, दक्षिण अफ्रिका अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड में आर्यसमाज के विशाल भवन और गतिविधिया देखी। उसके अतिरिक्त बर्मा, जापान बैकांक, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, युगांडा, तनजानिया, गायना, त्रिनीदाद, नीदरलैण्ड आदि देशो में आर्य धर्म की पताका फहरा रही है, उनके पास विशाल भवन है और अनेक सक्रिय कार्यकर्त्ता।

ह्यूस्टन आर्य समाज में दिल्ली निवासी डॉ० प्रेम चन्द जी श्रीधर वैदिक विद्वान के रूप में कार्यरत है। अपने कार्यो के अतिरिक्त वे इस भवन की देखरेख का कार्य भी बडे मनोयोग से कर रहे है। वे वहा पिछले ढाई वर्ष से कार्यरत् हैं। प्रति रविवार उनका भाषण वेदवाणी शीर्षक से प्रात. आधा घण्टे का रेडियो पर होता है। उनका समर्पित जीवन आर्यो के लिए प्रेरणा स्रोत्र हैं।

२६ जुलाई २००२ को श्री देवमहाजन जी हमें National Awromtics & Space Administration (NASA) दिखाने ले गए। इस केन्द्र को देखने के लिए पूरा दिन चाहिए। इस केन्द्र में १४००० व्यक्ति कार्यरत् है। सैकडे एकड जमीन में यह संस्था फैली हुई हैं। किस प्रकार एस्ट्रोनेन्ट की ट्रेनिंग होती है, किस प्रकार चन्द्रमा पर जाने वाले राकेटों का निर्माण होता है, कैसी वैधशाला वहां बनी है – चन्द्रमा से लाए पदार्थ आदि वहां प्रदर्शनी में रखे हुए है उनका केमिकल विश्लेषण – शिक्षा का प्रोग्राम – किस प्रकार उनका चुनाव होता है आदि देखने और समझने को मिला। इस केन्द्र को देखने से वैज्ञानिक जगत् की उपलब्धि और उसके ज्ञान को जानने का अवसर मिला।

क्रमशः

पृष्ठ ८ का शेष भाग

आर्यसमाज और अमेरिका

२७ जुलाई को आर्यसमाज ह्यूस्टन मे समस्त हिन्दू सगठनो की ओर से स्वागत समारोह आयोजित किया गया था। विभिन्न हिन्दू सगठनो के प्रधान मन्त्री व कार्यकर्त्ता वहा उपस्थित थे। विदेशों मे समस्त आर्य समाजे हिन्दू सगठनो के साथ मिलकर कार्य करती है। अफ्रिका मे अनेक मन्दिर है जहा आर्यसमाज के सत्सग लगते है ठीक इसी प्रकार अनेक हिन्दू सस्थाओ के कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर मे होते है यदि वह हमारे सिद्धान्तो के विरुद्ध न हो। इस समारोह मे विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ मीनाक्षी मन्दिर के अधिकारी आदि अपनी धर्मपत्नियो के साथ उपस्थित थे।

श्री देव महाजन जी ने मेरा परिचय दिया। हिन्दू सगठनो के अधिकारी बोले तत्पश्चात मैं हिन्दू सगठन पर लगभग ३५ मिनट बोला। मैंने स्वामी दयानन्द की बात को सबके सामने रखा कि हिन्दू तभी सम्भव है जब हमारी भाषा ईश्वर जाति और पूजा पद्धति एक हो। अनेक लोगो ने विभिन्न प्रश्न किए जिसका मैने उत्तर दिया। डॉ० प्रेम चन्द श्रीधर ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। भोजन के पश्चात सभा समाप्त हुई। मैंने सभी सगठनो के मन्त्री व प्रधान का भगवा पटको से सम्मान किया। सायकाल ४ बजे आर्य नेता श्री गजानन्द आर्य के बहनोई श्री शत्रुघ्न गुप्त की सुपुत्री श्री बेला जैन हमसे मिलने आई व हमे कुछ स्थान दिखाने ले गई। सायकाल भोजन हमने उनके साथ ही किया।

२८ जुलाई का दिन हमारे लिए बडा महत्त्वपूर्ण था। आज रविवार था – और हम आर्यसमाज के सत्सग मे गए। इससे पूर्व लगभग २० मिनट की मेरी वार्ता आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द पर रेडियो स्टेशन से प्रसारित हुई। मै आर्यसमाज मे होने वाले यज्ञ मे यजमान के रूप मे सपत्नी बैठा। श्रीमती मीनू पुरुषोत्तम जी के भजन हुए। श्री देव महाजन जी ने मेरा विस्तृत परिचय दिया। शाल श्रीफल से सम्मान किया। इसके पश्चात लगमग ४० मिनट तक मेरा भाषण हुआ। आर्यसमाज के अतीत व इतिहास पर बोलते हुए अनेक उदाहरणो से मैंने आर्यसमाज की छवि का परिचय देते हुए पुन उसे स्थापित करने की प्रेरणा दी। उपस्थित जनसमुदाय प्रसन्न हुआ। इस आर्यसमाज के प्रमुख पाच स्तम्भो के रूप मे जिन आर्यो ने इसके विकास एव निर्माण मे सहयोग दिया मैंने उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से सम्मानित किया वे थे – श्री देव महाजन श्री सुनील मेहता श्री शेखर अग्रवाल श्री वृज कथूरिया और श्री प्रवीण गुलाटी। श्री प्रवीण गुलाटी के छोटे भाई श्री मनीष गुलाटी जो आजकल दिल्ली मे रहते हैं का भी बहुत बडा योगदान रहा है। वे ह्यूस्टन आते जाते रहते है। पक्के आर्य विचारो के है। मेरा उनसे पूर्व परिचय भी रहा है। सत्सग मे लगभग १५० व्यक्ति उपस्थित थे। अधिकाश युवा थे यह प्रसन्नता की बात थी।

आर्यसमाज सत्सग के पश्चात लगभग १५ किलामीटर दूर विश्व हिन्दू परिषद का सस्कार शिविर लगा हुआ था। उसका आज समापन समारोह था। हम विशेष रूप से आमन्त्रित थे। लगभग १५० युवक उसम भाग ले रहे थे। हिन्दू सस्कृति और सस्कारो की उन्हे शिक्षा दी जा रही थी। समापन समारोह मे मेरा भाषण हुआ।

आर्यसमाज ह्यूस्टन की एक विशेष प्रथा का मै यहा वर्णन करना चाहूगा। वहा आर्यसमाज मे कोई पदाधिकारी नही है। उन्होने अलग–अलग कार्यो के लिए समितिया बनाई है और उनके सयाजक नियुक्त किए हुए है। उस समिति के काय को सुचारु रूप से करने का उत्तरदायित्व सयोजक पर है। उदाहरणार्थ – एक समिति है कम्यूनिकेशन समिति–सत्सग मे माईक की व्यवस्था ठीक हो – यह उनको देखना है। वह सत्सग प्रारम्भ होने से पूर्व आते है – माईक व्यवस्था को चैक करते है। इसी प्रकार यज्ञ समिति यज्ञ की व्यवस्था भोजन समिति भोजन की व्यवस्था फाईनेन्स कमेटी – एक रूप मे आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष का कार्य करती है। सयोजक अपने कार्य के लिए किसी से नहीं पूछते और उन सब सयोजको को मिलाकर व पाच स्तम्भ जो समाज है अन्तरग सभा का निर्माण होता हैं उसके प्रमुख चीफ कार्डिनेटर के रूप मे कार्य करते हैं जो आजकल श्री देव महाजन है। इसका लाभ यह है कि हर व्यक्ति समाज के कार्य मे स्वतन्त्रता के साथ जुडा हुआ है और आर्यसमाज प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष पदो के अहकार से दूर रहता है। मुझे यह तरीका बहुत पसन्द आया।

२८ जुलाई को हम ह्यूसटन से अटलान्टा विमान द्वारा रवाना हुए। लगमग ६ बजे साय हम अटलान्टा पहुचे। विमान स्थल पर श्री अरोडा श्री अमिताभ शर्मा आदि हमे लेने के लिए उपस्थित थे। श्री अरोडा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रीतम अरोडा आर्यसमाज की मत्राणी है। वे कनाडा से यहा कुछ समय के लिए आ गए। श्री अरोडा और उनकी धर्मपत्नी बडी मिलनसार और पक्का आर्यसमाजी परिवार है। हमारे एटलान्टा निवास के दौरान हम उन्हीं के निवास पर ठहरे। हमारी देखभाल मे श्रीमती प्रीतम अरोडा ने कोई कसर वाकी नहीं रखी।

रात्री को हम अटलान्टा आर्यसमाज के प्राण डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा के निवास पर गए। रात्री उन्ही के पास रहे। आर्यसमाज के दीवाने है डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा। सारा घर आर्यसमाज का पुस्तकालय बना हुआ है। कम्प्यूटर मे सारा काम आर्यसमाज का होता है। आर्यसमाज उनके रग–रग मे भरा है। सोते जागते अपना व्यवसाय करतेहुए उनका ध्यान आर्यसमाज के विकास पर ही लगा है। आर्यसमाज की अनेक पुस्तके उनकी लाइब्रेरी मे है – एक–एक पुस्तक की ८ से १० प्रतिया लगी हुइ है। जो आता है घर मे उसे ही पुस्तक भेट। आर्यसमाज भवन के पुस्तकालय रिकार्ड मे लगभग १००० पुस्तके थी – मै गया तो लगभग २०० पुस्तक भी नहीं थी। जो व्यक्ति पुस्तके ले गया पढने के लिए और लौटाई तो बडे खुश होते है कि किसी भी बहाने उसके घर मे वैदिक साहित्य पहुच गया है। अनेक पुस्तको का उन्होने प्रकाशन भी किया। आर्यसमाज के प्रति ऐसी दीवानगी मैने सम्भवत किसी व्यक्ति मे नहीं देखी। उनके एक सोचने का ढग देखिए। उनके बडे पुत्र अविवाहित ३० वर्ष की आयु भारत मे एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाने आए। अभी हाल ही में उनकी एक दुर्घटना जोधपुर मे हो गई। उन्हे उपचार के लिए दिल्ली लाया गया पर वह नही बच सके। डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा भारत आए मैं उस दिन मुम्बई मे था। मुझे पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार हैदराबाद जाना था। ६ सितम्बर को मैंने अफसोस करने के लिए उन्हे दिल्ली टेलिफोन किया। सयत स्वर डॉ० चन्दोरा का। विशेष बात नहीं। कहने लगे मैंने दिल्ली मे डाक्टरो को कह दिया था – कि मृत्यु पर उसका दिल–आखे–किडनी और जितनी जरूरत के अग है निकाल लेना। ये अग जिस व्यक्ति को आवश्यकता हो उसे लगा देना। मुझे तसल्ली हैं कि इस रूप मे तो पुत्र जीवित है। डॉ० चन्दोरा राजस्थान के रहने वाले है। यह भी एक सयोग रहा कि मेरा ननिहाल सोजत सिटी मे है और डॉ० चन्दोरा का निवास भी उसी मोहल्ले मे है।

डॉ० चन्दोरा के निवास पर जाने से पूर्व हम आयसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता और बीकानेर निवासी डॉ० अरोडा के घर गए। विशाल बगला जहा एक मारवाडी परिवार का विवाह से पूर्व होने वाला समारोह चल रहा था। डॉ० अरोडा का परिवार बडा सुसस्कृत परिवार है।

३० अगस्त की प्रात १२ बजे तक हम डॉ० चन्दोरा के निवास पर आर्यसमाज के विकास पर चर्चा करते रहे। क्या तडप थी उनमे। उनका वश चलता तो वे सारे विश्व को आर्य बनाकर ही दम लेते। उनकी पत्नी ने कई बार उन्हे टोका कि डयूटी पर नहीं जाना है क्या ? पर वे मस्त थे आर्यसमाज की प्रगति के चिन्तन मे। उसके पश्चात हम श्री प्रीतम अरोडा के निवास पर आ गए। रात्रि को ७ बजे हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज एटलान्टा मे था। दो सुन्दर भवन। लगभग २ एकड का प्रागण। आयसमाज मे सगीत की कक्षाए चल रही थी। एक भवन मे विद्वान के रहन की व्यवस्था – पुस्तकालय – भोजन करने की व्यवस्था आदि थी। बाहर भवन के मुख्य प्रवश पर एक रैक मे आर्यसमाज से सम्बन्धित अत्यन्त सुन्दरता से पूर्ण छोटे–छोटे फोल्डर लगा रखे थे। उनके विषय थे Vedic Dharma, Sanskars (Sacraments), Founder of Hindu Renaissauce Movement, Principles, Traditions and Code of conduct, Vedic Temple Activities, Hindu Satakam, आदि। Folder की कोई कीमत नहीं। जो आये व जितना चाहे ले जा सकता है – उद्देश्य था – वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार।

८ बजे समारोह प्रारम्भ हुआ। लगभग ७०–७५ व्यक्ति उपस्थित थे। मेरा परिचय डॉ० चन्दोरा जी ने कराया। विशिष्ठ व्यक्ति के रूप मे उपस्थित थे नेपाल निवासी डॉ० बिस्त। डॉ० बिस्त इससे पूर्व साउथ अफ्रिका मे काम कर रहे थे और आर्यसमाज के अच्छे विद्वान हैं। मैंने लगभग ४५ मिनट अपना भाषण दिया। श्रोता बहुत खुश थे। मेरे पश्चात मेरे विचारो की प्रशासा मे डॉ० बिस्त ने लगभग १५ मिनट अपना भाषण दिया। मैने समारोह के अन्त मे डॉ० चन्दोरा डॉ० बिस्त श्रीमती अरोडा श्री अरोडा प० गिरी जी श्री कुमार आदि का भगवे पटके व १२५वीं जयन्ती के बिल्लो से सम्मान किया। पूर्व उसके किसी भी व्यक्ति ने इस प्रकार सम्मान नहीं किया। वे बडे प्रसन्न थे कि सार्वदेशिक के प्रधान ने आर्यसमाज के प्रति की गई उनकी सेवाओ को पहचान दी है। समारोह समाप्ती पर भोजन की व्यवस्था थी। आर्यसमाज ने सभा को ५०१ डालर का दान भी दिया।

३१ अगस्त की साय डॉ० चन्दोरा हमे 'स्टोन माउन्टेन' स्थान दिखाने ले गए। विश्व का सबसे बडा लेजर शो लगभग १ घण्टे यह शो चला। खुले मे विशाल पहाड को परदे की तरह प्रयोग कर यह शो दिखाया जाता है। इसमे दक्षिण अमेरिका व उत्तर अमेरिका के आपसी विवादो की झलकिया देखने को मिली। इस विशाल सपाट पहाड के चारो ओर झील–होटल आदि बने है जहा प्रकृति का आनन्द लेने के लिए लोग बाहर से आकर ठहरते है। लेजर शो देखकर हम डॉ० चन्दौरा जी क निवास पर आए और फिर वही आर्यसमाज की बाते। अन्टालान्टा विनान स्थल विश्व का व्यस्ततम एयरपोर्ट माना जाता है। विमान स्थल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए इलेक्ट्रिक ट्रेन चलती है। दिन म हर ३ मिनट मे एक विमान उडान भरता है व एक विमान नीचे उतरता है।

१ अगस्त २००२ को हम एटलान्टा से रवाना होकर न्यूयार्क विमान स्थल पर साय ५ बजे पहुचे। यह विमान स्थल न्यूयार्क शहर से लगभग २०–२५ किलोमीटर दूर है। लगभग १ घण्टा हमे न्यूयार्क आने मे लूगा। न्यूयार्क समाज के प्रधान श्री सुभाष अरोडा ने हमारे रहने की व्यवस्था हॉटल PAN AMERICAN मे कर रखी थी। साय वे होटल मे आये और हमे एक पजाबी रेस्टोरेन्ट मे ले गए।

श्री सुभाष अरोडा आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता है। फिरोजपुर पजाब के रहनेवाले है। आर्यसमाज न्यूयार्क के मन्त्री श्री मुखी बडे उत्साह से आर्यसमाज के कार्य को कर रहे है। वे शक्तिनगर दिल्ली के निवासी है और आज भी शक्ति नगर आर्यसमाज के साथ सलग्न है।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

पृष्ठ ६ का शेष भाग

आर्यसमाज और अमेरिका

जैसा मैं पूर्व मे वर्णन कर चूका हू कि मुझे आर्य महासम्मेलन क्लिव लेण्ड के पश्चात कनाडा का वीसा लेने के लिए न्यूयार्क आना पडा था। मैंने कनाडा जाने का विचार बदल दिया था। पर श्री अमर ऐरी के विशेष आग्रह पर न्यूयार्क वीसा के लिए आया। १५ जुलाई को हमे प्रो० वेदश्रवा (सुपुत्र आचार्य विश्वेश्रवा जी) जो हडसन वेली मे रहते है हमे डॉ० रमेश गुप्ता (न्यू जरसी) के घर से अपने यहा ले आए थे। उन्होने मुझे अपने बडे भाई की तरह सम्मान दिया। उनकी पत्नी डॉ० सुनीता बच्चो की विशेषज्ञ है और अपने बगले पर ही प्रेक्टिस करती है। अपने पिता श्री के समान प्रो० वेदश्रवा भी आर्य हैं उन्होने घर मे ही एक हाल को आर्यसमाज बना रखा है।

१६ जुलाई को हम प्रो० वेदश्रवा जी के साथ न्यूयार्क कार द्वारा गए। न्यूयार्क वहा से करीब ७५ किलोमीटर दूर था। कनाडा के दूतावास मे अपना कार्य करके हम आर्य स्प्रिच्यूल सेन्टर क्वीन मे आए। यह विशाल आर्यसमाज एक चर्च को खरीदकर बनाई गई है। वहा के विद्वान प० रामलाल जी का इस क्रय मे विशेष हाथ रहा। आर्यसमाज के लोग उन्हे बडे सम्मान के साथ देखते है। हम आज इस आर्यसमाज मे प० रामलाल जी के विशेष आग्रह पर आए थे। वहा आर्यवीर दल का शिविर चल रहा था। लगभग १३० बच्चे भाग ले रहे थे। ७८ वर्ष तक के बच्चे भी उसमे मौजूद थे। प० रामलाल जी ने मेरा व प्रो० वेदश्रवा का परिचय बच्चो से कराया। लगभग १ घण्टे तक बच्चो ने जो सीखा उसका प्रदर्शन किया। तत्पश्चात मैंने व प्रो० वेदश्रवा ने बच्चो को सम्बोधित किया। छोटे-छोटे बच्चो ने भाषण के बाद बडे-बडे प्रश्न कर डाले – आप सार्वदेशिक के प्रधान कैसे बने – आपका क्या काम होता है ? सेना मे आप क्या करते थे ? भारत मे आर्यवीर दल कैसा काम करता है ? गुजरात मे भूकम्प पर आर्यसमाज ने क्या किया ? आदि आदि। इन दिनो अमेरिका मे स्कूलो का अवकाश होता है अत मा बाप बच्चो को आर्य सस्कृति के ज्ञान के लिए शिविरो मे भेज देते हैं। मैं इस कार्य को देखकर प० रामलाल जी के व्यक्तित्व से बडा प्रभावित हुआ। मेरी पत्नी श्रीमती सुनीता आर्य ने भी बच्चो को सम्बोधित किया।

रात्री को हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज न्यूयार्क हिल साईड ऐवेन्यू जमाईका मे हुआ। लगभग ३५ व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री सुभाष जी अरोडा मन्त्री श्री वीरसेन जी मुखी व आचार्य प० बलजीत आदि विशिष्ठ व्यक्ति उपस्थि थे। श्री मुखी जी ने मेरा परिचय दिया। मैंने सभा को लगभग ४० मिनट तक सम्बोधित किया। गुरुकुल कागडी की जमीन विक्रय पर आम रोष था। मैंने भाषण मे आर्यसमाज के सक्रिय सगठन – मुम्बई मे व हरिद्वार मे आयोजित आर्य महासम्मेलन का विवरण दिया व आर्यसमाज के सुदृढ सगठन का परिचय दिया। इस सभा मे स्वामी इन्द्रवेश को भी आमन्त्रित किया गया था पर वे नहीं आए। हम रात्री को लगभग ११ बजे रवाना होकर १२-३० बजे प्रो० वेदश्रवा के निवास पर पहुचे।

मेरे मित्र और बडे भाई के समान श्री मनमोहन माहेश्वरी जो कलकत्ता मे रहते है और जिन्हे मैं सम्मान से दद्दा कहकर पुकारता हू – वे उन दिनो अमेरिका मे ही थे। उनका न्यूयार्क मे निवास व व्यवसाय था। वे मैनहटन नामक स्थान पर रहते थे। उन्होने प्रात काल ही प्रो० वेदश्रवा के निवास पर प्राईवेट कार भेज दी थी और हम उनक निवास प' रहे और वही से वीसा का कार्य किया। वीसा मिलने मे दो दिन की देरी थी अत श्री माहेश्वरी जी ने हमे न्यूयार्क के सभी प्रसिद्ध स्थानो को दिखाया। १६ जुलाई को हम कनाडा दूतावास में गए और हमें वीसा मिल गया। उसी शाम हम विमान से शिकागो के लिए रवाना हो गए। शिकागो पहुचने के पश्चात हमारे जितने कार्यक्रम अमेरिका के विभिन्न स्थानो पर हुए उसका मैं पूर्व वर्णन कर चुका हू।

हम एटलाण्टा शहर से विमान द्वारा पुन १ अगस्त २००२ को रवाना होकर न्यूयार्क आए। आर्यसमाज न्यूयार्क के प्रधान माननीय सुभाष जी अरोडा ने हमारी व्यवस्था न्यूयार्क विमान स्थल पर लाने की कर रखी थी एव हमारे ठहरने की व्यवस्था क्वीन्स क्षेत्र मे स्थित होटल 'पेन अमेरिकन' मे कर रखी थी। रात्री को वे होटल में मिलने आए और हमे एक प्रसिद्ध पजाबी होटल में भोजन के लिए ले गए। २ और ३ अगस्त को कोई काम न होने के कारण हम होटल में ही रहे और न्यूयार्क में घूमने निकल गए। हमने स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी सेंट पाल चर्च एम्पायर एस्टेट बर्ल्ड ट्रेड सेन्टर का सपाट मैदान जहा नया भवन बनाने की नींव रखी जा रही थी आदि देखें। ११ सितम्बर २००१ को यह भवन मुस्लिम आतकवाद का शिकार हो गया था। जिसमें लगभग ३००० व्यक्तियो की मृत्यु हो गई थी और अरबो की सम्पत्ति नष्ट हो गई थी। सारे विश्व ने इस आतक विरोधी गतिविधि की तीव्र भर्त्सना की थी।

सायकाल ७ बजे हमारा कार्यक्रम वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर में न्यूयार्क की समस्त आर्यसमाजो की ओर से सार्वजनिक सभा हमारे सम्मान मे रखी थी। इस समारोह मे डॉ० हरिश्चन्द हैदराबाद भी उपस्थित थे। डॉ० हरिश्चन्द एक निष्ठावान आर्यसमाजी है एव इस समय हैदराबाद मे दयानन्द वैदिक एकाडमी के नाम से चल रही सस्था का सचालन कर रहे है। अमेरिका मे एक सस्था वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ वैदिक स्टडिज (WAVES) की अन्तर्राष्ट्रीय कानफ्रेन्स दिनाक १२ से १४ जुलाई २००२ को सम्पन्न हुई थी। डॉ० हरिश्चन्द्र उस कानफ्रेन्स मे वक्ता के रूप मे आए हुए थे। वे अनेक कोर्स जन कल्याण के लिए चलाते है और उसमे एक है SCOPE The Short Course of Resronality Enhancement इस विषय पर उन्होने अपना भाषण दिया। सभी उपस्थित व्यक्ति आर्यसमाज भवन मे इन भाषणो से प्रसन्न थे। आदरणीय प० रामलाल जी ने इस सम्मान समारोह का सयोजन किया। इस अवसर पर मैंने प० रामलाल जी श्री सुभाष अरोडा श्री मुखी जी आदि आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ का भगवे पटके से सम्मान किया जिससे सब बडे प्रसन्न थे। सहभोज के साथ सभा सम्पन्न हुई।

४ अगस्त को रविवार था और हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज न्यूयार्क के साप्ताहिक सत्सग मे था। मैंने विशेष आग्रह कर आर्यसमाज मे ही रहने का निर्णय किया व होटल छोड दिया। हम वहा २ दिन रहे आदरणीय प० बलजीत जी व उनके परिवार ने हमारी खूब देखभाल कीं।

रविवार होने के कारण हम पहले वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर गए। वहा मेरा भाषण हुआ व वहा से श्री सुभाष अरोडा हमे न्यूयार्क आर्यसमाज ले गए। वहा पहले आचार्य बलजीत जी का भाषण हुआ और पश्चात् मेरा। प० बजजीत जी श्री सुधाशु महाराज के चाचा है। उन्होने आर्यसमाज के कार्य को बहुत सम्हाल रखा है। इस साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् वैदिक विद्वान् प० सत्यानन्द जी से मिलने का मुझे सौभाग्य मिला। उनके पुत्र भी आए हुए थे। उन्होने ३० वर्ष पूर्व प्रकाशित आर्याभिविनय का अग्रेजी अनुवाद पुस्तक मुझे भेट की व अन्य ग्रन्थ भी। हम ४ बजे तक अनेक व्यक्तियो से मिलते रहे। उनके पुत्र ने इस पुस्तक को पुन प्रकाशित करने की मुझे अनुमति दी।

इस समाज के प्रधान माननीय श्री सुभाष अरोडा जनकल्याण के अनेक कार्यक्रम समय-समय पर ससार के उपकार के लिए इस आर्यसमाज के माध्यम से करते रहते है। तरह-तरह के मेडिकल शिविर कैंसर डिडेक्शन शिविर आदि। यह आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है और समस्त आर्यसमाजो को इस प्रकार के क्रिया कलापो मे सलग्न रहना चाहिए।

४ बजे हम पुन आर्य स्पीच्यूल सेन्टर गए। वहा के आर्य समाज की मन्त्राणी श्रीमती साकी की सुपुत्री कुमारी नादिया की ग्रेज्यूशन पार्टी थी। अमेरिका मे जब बच्चा पहली बार ग्रेज्यूशन के लिए विश्वविद्यालय मे जाता है तो इस प्रकार की पार्टिया आयोजित होती है। बच्चा घर छोडकर विश्वविद्यालय मे जाता है और वही रहता है। मेरे अमेरिका निवास के दौरान मै ऐसी अनेक पार्टियो मे गया।

परन्तु यह पार्टी अलग ही तरह की थी। प० रामलाल जी ने इस पार्टी को गुरुकुल जाने की प्रथा से जोड दिया एव कुमारी नादिया का यज्ञोपवीत सस्कार किया व विश्वविद्यालय मे जाने व रहने की अनुमति मा बाप से ली। मुझे यह सस्कार बहुत अच्छा लगा। मात्र एक साधारण सी पार्टी को उन्होने अच्छे सस्कार देने की प्रथा में बदल दिया। उसके पश्चात बडे स्तर पर भोज का आयोजन किया गया।

हम ५ और ६ अगस्त को आर्यसमाज न्यूयार्क मे ही रहे। होटल से भी ज्यादा आराम हमे वहा मिला और मिला प० बलजीत जी का सानिध्य। वे हमे अपनी कार से अनेक स्थानो मे घुमाने ले गए। और इस पकार ६ अगस्त २००२ को हमारी अमेरिका यात्रा समाप्त हुई।

अमेरिका मे आर्यसमाज की ४३ शाखाए है। आर्यसमाज का कार्य बडी सक्रियता से चल रहा है। बडे-बडे भवन सक्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यवीर दल के सगठित शिविर। मेरा सौभाग्य रहा कि वहा मुझे आदरणीय डॉ० सुखदेव जी सोनी डॉ० दिलीप वेदालकार प० रामलाल जी डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा श्री देव महाजन श्री सुभाष अरोडा डॉ० प्रेम चन्द श्रीधर आदि विद्वानों व सक्रिय कार्यताओ से मिलने का सौभाग्य मिला। वर्तमान में – डॉ० विनोद सेठी प्रो० वेदश्रवा और श्री गिरिश खोसला आर्यसमाज के मिशन को उत्तरोत्तर आगे बढाने मे प्रयत्नशील हैं। यदि मे यह लिखू तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इन सब सक्रियताओ के पीछे श्री गिरिश खोसला का विशेष हाथ रहा है। उनका जन सम्पर्क समस्त आर्यसमाजो के साथ सराहनीय है।

अमेरिका मे शाकाहार का कोई विशेष प्रचार नहीं हो पाया। स्थानीय नागरिको को हम अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाए है। लोगो को कहते सुना कि यदि मानव का करिश्मा देखना हो तो न्यूयार्क जाओ जहा समुद्र के किनारे सैकडो बहुमजिल इमारते देखकर आश्चर्य चकित रह जाओगे। इतनी ऊची इमारते है कि आप ऊपर तक अपनी निगाहे टिकाने का प्रयत्न करोगे तो चक्कर खाकर गिर जाओगे और यदि ईश्वर का करिश्मा देखना हो तो 'न्याग्रा प्रपात' देखो जिसका भव्य स्वरूप कनाडा मे जाकर देखने को मिलता है।

भारत के समान सास्कृतिक एव पारिवारिक धरोहर उनके पास नहीं है। कहते है वहा चार W पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता है – W- for Weather, W for Wine W for Work & W - for Women यह कब बदल जाएगे कहा नहीं जा सकता। आचार्य बलजीत जी ने अपनी पुस्तक 'मेरा अमेरिकी प्रवास पुस्तक मे बडे सुन्दर ढग से लिखा है जब प्रथम बार कोई अमेरिका आता है तो उसे दो वर्ष यहा के तौर तरीके सीखने मे लगते है और दो वर्ष अपने देश को भूलने मे लगते है। पाचवे वर्ष मे व्यक्ति पूरा अमेरिकन हो जाता है। यह सब उसको धीरे-धीरे गिरफ्त मे ले लेता हैं। परन्तु दस साल बाद जब वह अमेरिका उसकी हड्डियो मे रम जाता है और बच्चे बडे हो जाते है या अमेरिकन हवा उन्हे लगने लगती है तब सस्कृति के हिसाब से उसे अपना भारत देश याद आने लगता है। तब वह कुछ भी नहीं कर पाता। रो कर मन मारकर यही इसी डालर की सस्कृति मे दफन हो जाता है। परन्तु इस स्थिति तक न पहुचने में यदि कोई सहायक होता है तो वह है आर्यसमाज। और अपनी इन स्मृतियों को अपने साथ लेकर हम ७ अगस्त २००२ को प्रात विमान से कनाडा के लिए उड गए।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

१७ अक्तूबर १२५वीं जयन्ती पर विशेष

गढवाल के जाज्वल्यमान नक्षत्र

कर्मवीर जयानन्द भारतीय

– धर्मसिह शास्त्री डबल एम०ए०

किसने सजग किया पीडित समाज यहा कौन वह आर्य वीर त्याग मे आनन्द था ?
वैदिक सुधर्म हित ओम की पताका गहे कौन फिर गढ–गिरि शेर सा स्वच्छन्द था ?
देश की पुकार सुन बार बार धाया कौन कारागार–वास मिला सहा दु ख द्वन्द था ?
प्रेम सुनो धीर वीर योद्धा के समान वह भारत का भारतीय लाल जयानन्द था।।

कटको से भरे हुए पथ का पथिक बने जाति को बचाने निज घोर अत्याचार से।
जाति अभिमानियो ने कष्ट दिए ठौर ठौर मान गए हार तक विमल विचार से।।
देश की स्वतत्रता के युद्ध मे भी भाग लिया कारागार वास मिला प्रेम सरकार से।
आपका धवल यश फैला गढ देश मे है शक्ति नही लेखनी लिखे जो विस्तार से।।

बान्धवो की दुर्दशा का जाति पडी पर वशा का क्लेश लेके कौन मिला स्वामी श्रद्धानन्द से ?
वैदिक सुधर्म की सुदीक्षा लेके स्वामी जी से कौन चला मुक्त होने पाखण्ड के फन्दे से ?
जाति हित कागडी मे प्रण कौन ठान रहा धर्म प्रतिबन्ध के अनेक दु ख द्वन्द से ?
स्वदेश और जाति का हितैषी मित्र आर्यो का होगा कौन और अतिरिक्त जयानन्द से।।

विकट विशाल शैल द्वार द्वार घूम कर पान है कराया ज्ञान वेद भगवान के।
दया धर्म प्रेम युक्त हिसा से विरक्त किए भक्त किए भगवान सर्व शक्तिमान के।।
शिक्षा सुधा मधु पान ज्ञान भी कराया तूने याद रखे आर्य गण गुण गुणवान के।
गढवाली आर्य बन्धु आज है आभारी बडे जयानन्द भारतीय तेरे दयावान के।।

मानव ने मानव को दानव बनाया जहा दीन किए हीन बलवान मतिमन्द ने।
नष्ट किए धर्म कर्म छीने अधिकार सभी जाति प्रतिबन्ध के अनेक दु ख द्वन्द ने।।
दु खियो का देख दु ख कापा गिरिराज महा बापू ने बहाए आसू और श्रद्धानन्द ने।
तम परिपूर्ण ऐसे गढ मे प्रकाश किया कर मे सुधार का ले दीप नेता जयानन्द ने।।

पीडित समाज तेरी दुर्दशा विलोक कर दीन बन्धु भगवान तब दयावान थे।
स्वामी दयानन्द जी ने दया का भण्डार खोल सत्यसार सौप तुझे वेद भगवान थे।
गाधी जी ने स्नेह साथ हाथ था पसारा तुझे न्याय युक्त अधिकार किए बलवान थे।
हाथ ले सुधार दीप शून्य से सहारा बना नेता जयानन्द तेरे प्रेम मतिमान थे।।

काल वह एक जब जयानन्द भारतीय देवो का पुजारी रहा कई परिवार का
अन्न धन मान आदि लाभ थे अनेक पर पाना अधिकार था महान प्रभु प्यार का।।
एक प्रभु शक्ति का प्रचार कर घूम घूम नष्ट किया फैला जो अज्ञान अन्धकार का।
बोध किया सत्य का असत्य खोद खोद कर एक भक्ति देखिए बना था सत्य सार का।।

कई बार आजादी के युद्ध मे अनेक नेता जेल भरे ठेल ठेल गौराग के राज मे।
युक्त प्रान्त लाट हेली ऐसे मे बुलाया यहा राज भक्त लोगो ने अनेक साज बाज मे।।
लाट को बताया यहा गाधी के सिपाही नही खूब ही सजाई पौडी स्वागत के साज मे।
गुपत मे तिरगा लिए गाधी का सिपाही एक वीर जयानन्द चला था स्वागत समाज मे।।

शस्त्रधारी सैनिक थे चारो ओर घूम रहे शेर सा स्वच्छन्द घुसा जनता के ठेल मे।
आगे बढा और बढा मच ही के पास गया बोलता था लाट जहा स्वागत के मेले मे।।
हाथ मे तिरगा उठा नारे भी गुजार उठे भाग चला लाट निज साथियो की रेल मे।
जनता पुलिस मध्य शेर यहा घेर लिया वीर जयाननद चला था पौडी वाले जेल मे।।

विश्व मे रहेगा याद सन बयालीस सदा भारत स्वतत्रता का भारी युद्ध काल था।
भीषण दमनचक्र चारो ओर चला पर भारतीय लडे जब साहस कमाल था।।
श्वेत खादी वस्त्र जटा धारी हाथ हथकडी डाले घिरा हुआ सैनिको से उच्च किए भाल था।
जिलाधीश गौराग (अग्रेज) के मान को विचूर्ण कर जेल चला कौन ? प्रेम जयाननद लाल था।।

वेद का सन्देश लिए टेहरी गढवाल मे कौन वह धर्मवीर जा रहा स्वच्छन्द था ?
करने सुधार चला दु खितो की देख दशा रोक रहा किसको विरोधिकयो का द्वन्द्व था।
गालियो की कौन कहे लाठियो की मार पड़ी होता नही धर्म के प्रचार मे जो बन्द था।
विजयी वेद नाद टेहरी मे बजाने वाला वीर वृद्ध सेनानी वह आर्य जयानन्द था।

स्वच्छता सुधार रहे धर्म प्रति प्यार रहे देश का उद्धार रहे ईश दयावान हो।
सम अधिकार रहे तम हुआ पार रहे वैदिक प्रचार रहे मुक्त अभिमान हो।।
बली गुणवान बने मूर्ख मतिमान बने हीन धनवान बने दीन बलवान हो।
दूर दु ख द्वन्द रहे अत्याचार बन्द रहे जय जयानन्द रहे गढ आयुवान हो।।

(जयाननद गौरवगान से)

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के चित्र का अनावरण

स्व० लाला दीवानचन्द जी का ११८वा जन्मदिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली २३ सितम्बर। आर्यसमाज दीवान हाल चादनी चौक दिल्ली मे परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का ११८वा जन्मदिवस बडे समारोहपूर्वक रविवार २२ सितम्बर २००२ को मनाया गया।

इस अवसर पर केन्द्रीय श्रम मत्री डा० साहिब सिह वमा ने कहा कि जो महापुरुष श्रेष्ठ कार्य कर जनता की भलाई करते है वे हमेशा अमर रहते हैं और लाला दीवानचन्द जी भी उन महापुरुषो मे एक थे। उन्होने कहा कि लाला दीवानचन्द जी आर्य जगत के स्तम्भ थे आर्यसमाज दीवान हाल उसकी एक मिसाल है। वे एक आदर्श पुरुष थे और हमे हमेशा एक आर्दा पुरुष की तलाश रहती है जिससे हमारा जीवन भी बदल जाता है। हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री वर्मा ने कहा कि वे स्वय भी महापुरुषो के आदर्शो पर चलकर देश की सेवा करने का प्रयत्न कर रहे है।

इस अवसर पर श्री राजेन्द्र गुप्त ने कहा कि लाला दीवान चन्द ट्रस्ट की इच्छा है कि एक आधुनिक लाइब्रेरी बनाई जाए और एक इन्स्टीटयूट भी बनाया जाए ताकि वेदो का प्रचार प्रसार हो सके। इस अवसर पर डा० साहिब सिह वर्मा और श्री राजेन्द्र गुप्त ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्व० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के चित्र का अनावरण भी किया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्र देव जी ने की तथा कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज दीवान हाल के मत्री मेजर डा० रविकान्त ने किया।

इस अवसर पर दिल्ली सरकार के पूर्व मत्री व लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के सचिव श्री राजेन्द्र गुप्ता डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री पडित महेन्द्र कुमार शास्त्री श्री कृष्ण गोपाल दीवान चौधरी लक्ष्मी चन्द आदि आर्य नेता उपस्थित थे।

– (मेजर) डा० रविकान्त
(सेवानिवृत्त)
मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 13 10 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 10/11 10 2002

सत्कर्म के बिना सद्गति असम्भव

नई दिल्ली। आर्य समाज बी ब्लाक जनकपुरी मे प्रवचन करते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री गणेश प्रसाद विद्यालकार ने बताया कि मनुष्य जन्म परमात्मा का दिया वरदान ही नही अपितु सर्वोत्तम पुरस्कार है। पुरस्कृत व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अपने पुरस्कार की गरिमा को बनाये रखे। इसके लिए आवश्यक यह है कि हम अच्छे कर्म करे। अज्ञानी यदि कोई अपराध करता है तो वह क्षम्य माना जा सकता है या फिर उसे कम सजा दी जा सकती है। पर जो जानबूझ कर ज्ञानी हाते हुए भी कोई अपराध या दुष्कर्म करता है तो उसका दण्ड बडा होता है। इसलिए यह जरूरी है कि हम जान बूझकर कोई दुष्कर्म न करे क्योकि सत्कर्मो के बिना सदगति नहीं मिलती। इसका उदाहरण देते हुए उन्होने बताया कि सत्यवक्ता मानसिक रूप से स्वतन्त्र किन्तु असत्य वक्ता मानसिक रूप से परतन्त्र रहता है। असत्य वक्ता को अपने द्वारा बोले गए असत्य को निरन्तर ध्यान मे रखना पडता है कि उसने कब और किससे किस प्रकार का असत्य भाषण किया है जबकि सत्य वक्ता को ऐसा कुछ नहीं करना पडता।

उनके प्रवचन पर कुछ जिज्ञासाए श्रीमती विमला मलिक और श्री कृष्ण देव जी ने रखीं जिनका समुचित समाधान विद्ववान वक्ता ने किया। कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी जी ने किया तथा वक्ता महोदय का धन्यवाद ज्ञापन प्रधान पदासीन श्री डा० सुन्दरलाल कथूरिया जी ने किया। शान्तिपाठ व प्रसाद वितरण के उपरान्त सत्सग सम्पन्न हुआ।

श्री तीर्थ राम आर्य (टडन) को भ्रातृ शोक

श्री तीर्थ राम आर्य (टडन) प्रधान आर्य समाज एव सस्थापक महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर नई दिल्ली के छोटे भाई श्री चरणदास टडन की हलद्वानी उत्तर प्रदेश मे २ अक्तूबर रात्रि को अनायास लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु हो गई। श्री चरणदास टडन हलद्वानी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। वह अपने भरे पूरे परिवार मे पत्नी तीन पुत्र एव दो पुत्रिया छोड गए है। परमात्मा दिवगत को शान्ति तथा परिवार को धैय प्रदान करे।

प्रतिष्ठा मे

राष्ट्रभाषा से जुड़ी है राष्ट्रीय अस्मिता

नई दिल्ली। हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आर्यसमाज बी० ब्लॉक जनकपुरी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम मे व्याख्यान करते हुए श्री कैलाश चन्द्र ने कहा कि राष्ट्र भाषा से राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न भी जुडा हुआ है। भाषा और सस्कृति का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। भारतीय सस्कृति का मूल स्रोत सस्कृत एव वैदिक साहित्य है किन्तु आज इस दायित्व का निर्वाह राष्ट्रभाषा हिन्दी को करना है क्योकि वह सस्कृत की पुत्री है। अनेक देशो के उदाहरण देते हुए उन्होने कहा कि राष्ट्र भाषा के समुचित प्रयोग के बिना न तो राष्ट्र की पहचान बनती है न उसके गौरव की रक्षा ही होती है।

प्रधानपद से बोलते हुए सुन्दरलाल कथूरिया ने हिन्दी व सवैधानिक स्थिति को स्पष्ट किया और इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि यद्यपि रस्मी तौर पर प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है तथापि स्वाधीनता प्राप्ति के इतने वर्षो के बाद भी हिन्दी राजकाज की भाषा नहीं बन सकी है। हालाकि सविधान के अनुच्छेद १४३ मे इसका स्पष्ट निर्देश है हिन्दी को जब तक सरकारी दफतरो और न्यायालयो की भाषा नहीं बनाया जाएगा और उसे समुचित रूप से रोजी रोटी से नहीं जोडा जाएगा तब तक इस देश के राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा सम्भव नहीं।

मुख्य वक्ता के व्याख्यान पर श्रीमती विमला मलिक श्रीकृष्ण देव आदि ने कुछ जिज्ञासाए रखीं जिनका समाधान करने की चेष्टा वक्ता ने की। कार्यक्रम का सफल सचालन श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

– योगेश्वर चन्द्रार्य प्रचार मन्त्री

महान सन्यासी स्वामी वेदव्रतानन्द नही रहे

आर्यसमाज का जीवनदानी बाल्यवस्था से वैदिक वागमय मे पल कर वैदिक सिद्धान्त के तथा वैदिक व्याकरण आदि शिक्षा से ओत प्रोत होकर पूरे जीवन को शिक्षा क्षेत्र मे लगाने वाले कई गुरुकलो मे रहकर वैदिक शिक्षा का प्रचार प्रसार करने वाले कई छात्रो को छात्रवृत्ति देने वाले महान सन्यासी स्वामी वेदव्रतानन्द जी (पूर्व नाम देवमित्र शास्त्री) अब हम लोगो के बीच नही रहे। पिछले १० सितम्बर को झारखण्ड प्रान्त के बरहडवा मनिहारी टोला मे अन्तिम सास लिया। दिनाक ११/६/२००२ को स्वामी नित्यानन्द सरस्वती आचार्य प्रभामित्र आर्य ने वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार किया। आर्य समाज मनिहारी टोला के सभी सदस्य उपस्थित थे। आर्यसमाज की यह क्षतिपूर्ति सम्भव नहीं है। दुखी मन से स्वामी जी की शिष्य मण्डली –

– अशोक कुमार शास्त्री
आर्यसमाज पहाडगज
नई दिल्ली ५५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५) सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

।। ओ३म्।।

शतवर्षीय, ऋषि भक्त, परमपुरुषार्थी, श्रद्धेय श्री मोहनलाल मोहित जी को सादर समर्पित

सार्वदेशिक साप्ताहिक

वर्ष : ४१ | २७ अक्तूबर से २ नवम्बर, २००२ | अंक : २५

दयानन्दाब्द : १७६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ | सम्वत् २०५९ | का० कृ० ६

वार्षिक शुल्क : ५० रुपये | इस अंक का मूल्य १०/- | आजीवन शुल्क : ५०० रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ (भारत)

दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५, फैक्स : ३२४८०८६

ई-मेल : vedicgod@nda.vsnl.net.in

अनुक्रमणिका

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के सम्माननीय पाठको, एजेण्टों तथा विद्वान लेखकों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिनांक 20 से 26 अक्तूबर, 2002 का अंक विषेशांक प्रकाशित किये जाने के कारण नहीं प्रकाशित किया गया, अब 27 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2002 का अंक *"श्री मोहन लाल मोहित"* विषेशांक के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत है। कृपया अप्रकाशित अंक के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार न करें। धन्यवाद।

- *सम्पादक*

शत वर्षीय श्री मोहनलाल मोहित के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में

मारीशस यात्रा

(१८ सितम्बर से २६ सितम्बर २००२)

– कै० देवरत्न आर्य

मै और मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या २७ अगस्त २००२ को अमेरिका कनाडा व इगलैड की यात्रा करके दिल्ली पहुचे मुझे अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार १८ सितम्बर को मारीशस जाना था। मारीशस मे आर्य सभा ने आर्यनेता श्री मोहनलाल जी मोहित के १०० वर्ष पूर्ण होने के शुभावसर पर एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। साथ ही श्री मोहन लाल जी के गाव सेन्ट लावेनियर (मारीशस) मे विशाल महायज्ञ का आयोजन भी श्री मोहनलाल मोहित फाउण्डेशन की ओर से किया गया। ?

आयनेता श्री मोहनलाल जी मोहित का जन्म २२ सितम्बर १६०१ को मारीशस मे हुआ और उन्होने जीवन के १०० वर्ष २२ सितम्बर २००२ को पूरे कर लिए। पिछले वर्ष इसी अवसर पर उनका १००वा जन्म दिवस मनाया गया था। मै उस समारोह मे भी उपस्थित था। परन्तु इस वर्ष १०० वर्ष पूरे करने पर पूरे एक सप्ताह तक सम्पूर्ण मारीशस के अलग-अलग स्थानो पर मारीशस सरकार आर्यसभा विभिन्न आर्यसमाजो महात्मा गाधी इस्टीटयूट आदि सस्थानो द्वारा उनकी १००वी वर्ष गाठ पर कार्यक्रम रखे गए।

इस अवसर पर सम्मिलित होने के लिए मै और भारत के विभिन्न स्थानो से लगभग ६० व्यक्ति विमान द्वारा १८ सितम्बर २००२ को मारिशस के लिए रवाना हुए। अगले दिन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो० स्वतन्त्रकुमार जी भी मारीशस पहुच गए। हमारे साथ श्री धर्मपाल जी प्रधान केन्द्रीय सभा दिल्ली डॉ० तुलसीराम बागिया मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई श्री यशपाल आचार्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व उप प्रधान सार्वदेशिक सभाव प० रामकृष्ण जी उप कुलपति गुरुकुल अयोध्या (लखनऊ) भी हमारे दल मे सम्मिलित थे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी से विचार विमर्श करते हुए।

१८ सितम्बर की सायकाल ८ बजे हम मारीशस विमान स्थल पर पहुचे। आर्यसभा के अधिकारी वहा हमारे सम्मान के लिए दो बसे लेकर उपस्थित थे। उनमे विशेष रूप से आर्यसभा के प्रधान डॉ० रूद्रसेन निडर, मन्त्री डॉ० उदयनारायण गगू,

कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार मोहित उप मन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम, उप प्रधान श्री भरत मंगरु जी आदि उपस्थित थे।

१७ सितम्बर, २००२ से आर्यसमाज सेंट लावेनियर के विशाल प्रांगण में जो श्री मोहनलाल मोहित के निवास स्थल से लगा हुआ है – विशाल स्तर पर उनके शतायु होने के उपलक्ष्य में मोहन लाल मोहित फाउण्डेशन की ओर से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री जयदेव जी शास्त्री थे। श्रीमती उषा शास्त्री यज्ञ का संचालन कर रही थी एवं अपने द्वारा शिक्षित वेदपाठी महिलाओं के साथ वेदपाठ कर रही थी। श्रीमती उषा शास्त्री ने बड़ी कड़ी मेहनत के साथ जहां सम्पूर्ण यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ किया वहां अन्त में भजन गीत आरती गाकर उपस्थित जन समुदाय को बहुत प्रभावित भी किया। प्रातः सांय यज्ञ के पश्चात् विद्वानों के भाषण होते रहे। भारत से गए श्री धर्मपाल जी, आचार्य यशपाल जी, आचार्य रामकृष्ण जी, डॉ० तुलसीराम बांगिया आदि ने भी अपने विचार यज्ञ के पश्चात् उपस्थित जनता के सामने रंखे। १८ सितम्बर को आदरणीय श्री मोहित जी ने बड़े सारगर्भित शब्दों में सदाचार पर भाषण दिया। १०० वर्ष की आयु में उनकी बुलन्द आवाज और विचारों को सुनकर लोग दंग रह गए। समय-समय पर मुझे भी अपने विचार रखने का अवसर मिला।

सितम्बर २१ से २४ तक श्री मोहित जी के शतायु होने पर अनेक कार्यक्रम हुए। पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने लगभग १०० वेद मन्त्रों का चुनाव कर श्री जयदेव जी शास्त्री को भेजा था। जिसमें श्री मोहित जी के दीर्घ एवं स्वस्थ आयु की कामना की गई थी। सांय पूजनीय स्वामी सत्यम जी के वेदोपदेश होते रहे।

२१ सितम्बर को आर्यसभा मारीशस में सार्वजनिक सभा श्री मोहित के शतायु वर्ष मनाने के लिए आयोजित की गई। हाल खचाखच भरा हुआ था। मारीशस गणतन्त्र के प्रधान मन्त्री माननीय श्री जगन्नाथ जी, अनिरुद्ध मुख्य अतिथि थे। वे तीन घण्टे के इस समारोह में प्रारम्भ से अंत तक उपरिथत रहे। इस अवसर पर मारीशस सरकार के अनेक मन्त्री भी उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान होने के नाते मैंने की। आर्यसभा के प्रधान श्री रूद्र सेन निडर से स्वागत भाषण दिया। भारत के उच्चायुक्त श्री विजय कुमार ने अपने विचार रखे। श्री विजय कुमार जी श्री पृथ्वी सिंह आजाद जो कभी सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री रहे, उनके सुपुत्र हैं।

इस अवसर पर श्री अनिल कुमार मन्त्री, लैंड ट्रांस्पोर्ट एवं शिपिंग मन्त्रालय श्री मुखेश्वर मन्त्री हाउसिंग एंड लैंड मन्त्रालय, श्री शिशुपाल जी रामभरोस आजीवन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा द० अफ्रीका, पं० रामलाल जी संरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, पूजनीय स्वामी सत्यम जी ने अपने विचार श्री मोहनलाल जी मोहित पर रखे।

प्रधानमन्त्री श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध ने मोहित जी द्वारा आर्यसमाज और मारीशस राष्ट्र के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण पर मैंने श्री मोहित जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर अपने विचार रखे तो उपस्थित जन समूह ने अनेक बार तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। अपने भाषण में मैंने कहा कि मैंने श्री मोहित जी से एक बार पूछा कि आप रविवार को प्रातः भोजन क्यों नही करते। तब उन्होनें कहा कि मैं हर रविवार को अपनी युवा अवस्था में, जब यहां कार और बसें आदि नहीं होती थी, १० से १५ मील पैदल चलकर विभिन्न गावों में जाया करता था। मैं युवकों को वैदिक धर्म का सच्चा ज्ञान देने जाता था, पर लोग मुझसे भोजन के लिए नही पूछते थे, तो मुझे बड़ा दुख होता था। मैंने तब निश्चिय किया कि मैं रविवार को भोजन नहीं करुंगा। उसके पश्चात् जब गांव के लोग भोजन के लिए नहीं पूछते थे तो मुझे दुख नहीं होता था, क्योंकि मैं रविवार को भोजन नहीं करता था। उनका जीवन प्रेरणा स्रोत रहा सबके

लिए। उनकी कठोर मेहनत का ही परिणाम रहा कि मारीशस से छोटे देश में आज ४५० आर्यसमाजें हैं और अनेक डी०ए०वी० कालेज व अनाथालय। मैंने आगे कहा कि एक सम्मेलन में किसी व्यक्ति ने अपने भाषण में कहा कि हम प्रार्थना करते है प्रववाम शरदः शतम् जीवेम शतम्....... और श्री मोहित जी गुस्से में आ गए। यह प्रार्थना मेरे लिए नहीं हो सकती, मेरे लिए कहो भूयश्च शरदः शतात्।

इस अवसर पर श्री मोहित जी पर प्रकाशित आर्योदय के विशेष अंक का विमोचन प्रधानमन्त्री ने किया। जिसके सम्पादक थे श्री सत्यदेव प्रीतम। सभा का संयोजन श्री उदयनारायण गंगू ने किया। श्री मोहनलाल,मोहित जी की दीर्घायु की कामना का भजन श्रीमती उषा शास्त्री ने गया। श्री मोहित जी ने अपने भाषण में सबको आशीर्वाद दिया। २५ सितम्बर, २००२ वह शुभ दिन था जब श्री मोहित जी के पूरे १०० साल हो गए। स्वयं चलकर यज्ञ में आए। लावेनियर के कार्यक्रम में उपस्थित हुए। इस पण्डाल में लगभग १००० व्यक्ति उपस्थित थे। यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और उसके पश्चात् कई मन्त्री, मित्र एवं आर्य नेताओं ने उन्हें बधाइयां दी। आचार्य यशपाल, श्री धर्मपाल, डॉ० तुलसीराम बांगिया, आचार्य रामकृष्ण आदि ने अपने बधाई सन्देश देकर मोतियों की माला से उनका सम्मान किया। कैप्टन देवरत्न आर्य ने विश्व के समस्त आर्यसमाजों की ओर से बधाई सन्देश के साथ मोती की माला, शाल और श्रीफल से उनका स्वागत किया। श्री स्वतन्त्रकुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वद्यिालय की ओर से उनका शाल व माला से स्वागत किया व उनके स्वस्थ्य रहने के लिए गुरुकुल फार्मेसी की दवाओं का पैकेट भेंट किया। डॉ० श्रीधर जो बैंगलोर से आए थे, उन्होंने भी स्वागत किया।

मारीशस गणतन्त्र की एक परम्परा है कि जो व्यक्ति १०० वर्ष का जीवन जीता है उसका सरकार की ओर से भी सम्मान होता है। यह सम्मान ११:३० बजे प्रातः प्रारम्भ हुआ। अनेक मन्त्री इस सभा में उपस्थित थे। सरकार की ओर से मोहित जी को ११००० मारिशियन रुपये, एक मोबाईल टेलिफोन, शत वर्षीय केक, गुलदस्ते आदि उन्हें भेंट किए गए। लोगों का जोश और उत्साह देखने योग्य था। शानदार प्रीतिभोज के साथ सभा समाप्त हुई। यहां यह लिखना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर भी श्री मोहित जी ने आज तक चश्मा नहींलगाया। उनकी याददाश्त तथा दृष्टि आज भी गजब की, शक्ति रखती है। वे ऊंचा जरूर सुनने लगे हैं पर अनेक आग्रह करने पर भी उन्होंने कृत्रिम श्रवणयन्त्र अपने कान में नहीं लगाया है। वे कृत्रिम जीवन नहीं जीना चाहते।

उनके शतायु सम्मेलन के पश्चात् उसी पण्डाल में बाल सम्मेलन हुआ। छोटे-छोटे बच्चों ने बड़े प्रभावशाली ढंग से भजन, कहानियां और मन्त्रपाठ प्रस्तुत किए। दिन में डेढ़ बजे आर्य युवा एवं गुरुकुल सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। अध्यक्षता की श्री स्वतन्त्र कुमार जी, उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने, संयोजक थे डॉ० उदयनाराण गंगू। पूजनीय स्वामी सत्यम जी ने उद्घाटन भाषण दिया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति युवाओं पर वक्ता के रूप में डॉ० श्रीधर बैंगलोर, श्री यशपाल आचार्य, सोनीपत, श्री रामकृष्ण शास्त्री, लखनऊ, श्रमती प्रेमलता भटनागर दिल्ली ने बड़े सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

२३ सितम्बर को प्रातः श्री मोहित जी से पूछा कि आपको कैसा लग रहा है जब आप १०१ वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। कहने लगे कि मैं रात्री को उठा और परमपिता परमात्मा का धन्यवाद किया कि उसने मुझे मेरे जीवन में यह दिन देखने को दिया। वह प्रसन्न थे। श्री मोहित जी आज भी नियम से प्रातः ३ बजे उठते हैं - ध्यान, योग संन्ध्या व एक घण्टे स्वाध्याय करतेहैं इस दिनचर्या में कोई परिवर्तन नही है। मध्याह्न २ से ३ बजे तक महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट में उनके सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। श्री मोहित जी इस संस्थान के निदेशक मण्डल के सदस्य रह

चुके हैं। जब यह प्रारम्भ हुआ, इस अवसर पर भी मारीशस सरकार के संस्कृति मन्त्री श्री मोती रामदास, एम०जी०, भारतीय उच्चायुक्त श्री विजय कुमार, एम०जी०आई० की डायरेक्टर श्रीमती सूर्याकान्ती गायन, पूर्व डायरेक्टर श्री उत्तम विष्णु दयाल उपस्थित थे। भारतीय प्रतिनिधि भी सब उपस्थित थे। डॉ० उदयनारायण गंगू, जो इस संस्थान के सीनियर लेक्चरार हैं ने श्री मोहित जी के जीवन पर प्रकाश डाला। संस्थान की ओर से प्रकाशित दो पत्रिकाएं बसन्त और रिमझिम के विशेष अंक जो श्री मोहितजी के जीवन और कार्यकलापों पर समर्पित थे, का लोकार्पण हुआ। चाय पार्टी के साथ पार्टी समाप्त हुई। सभा का संचालन डॉ० जागा सिंह ने किया।

इसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री देवरत्न आर्य का मारीशस ब्रोडकास्टिंग सेन्टर से रेडियो पर आधा घंटे का सीधा प्रसारण श्री मोहित जी के जीवन पर हुआ। सांयकाल ४ से ६ बजे विश्व के प्रसिद्ध सागर किनारों के बल्यु बे के पास स्थित आर्यसमाज माहेबर्ग ने श्री मोहित जी का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया। यज्ञ के पश्चात् यज्ञ व योग पर श्री श्रीधर, स्वामी सत्यम जी, डॉ० उषा शास्त्री, श्री स्वतन्त्रकुमार जी के भाषण हुए। पं० रामकृष्ण जी ने समारोह की अध्यक्षता की। समाज के प्रधान श्री भरत मंगरु ने स्वागत भाषण दिया। और श्री हरिदेव रामधनी ने संयोजन किया। रात्रि को ८ बजे आर्यसमाज क्लेयरफोंड में सम्मेलन हुआ। श्री सत्यदेव प्रीतम ले स्वागत भाषण दिया और विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

२४ सितम्बर को जितने प्रतिनिधि विदेश से आए थे उनके सम्मान में सामूहिक भोज आर्यसभा मारीशस के भवन में रखा गया। हर देश के एक–एक प्रतिनिधि ने अपने–अपने विचार रखे। मध्याह्न २ बजे हिन्दू हाउस ने समस्त प्रतिनिधियों के सम्मान में चाय पार्टी रखी व कैप्टन देवरत्न आर्य ने सबकी ओर से हिन्दू एकता पर अपने विचार रखे। सायं ४ बजे से आर्यसमाज चिमोनी ने श्री मोहित के सम्मान में समारोह रखा एवं भोज भी। रात्रि साढे सात बजे आर्य समाज कैम्परोबेट आर्यसमाज में सम्मान रखा। इन समस्त समारोह में उपस्थित रहकर रात्रि १० बजे मैं श्री मोहित जी के निवास पर जाकर उनसे विदा लेने गया। मैंने उनसे एक प्रश्न किया ईश्वर ने आपको धन–ऐश्वर्य, सम्मान, पारिवारिक सुख, आदि खूब दिया। आपने अपना जीवन एक श्रमिक रूप में प्रारम्भ किया। १०० वर्ष की स्वस्थ आयु आपको प्रदान की। इतना सब मिलने के पश्चात आपको जीवन में कोई अभाव का अनुभव होता है? कहने लगे हां। वेदों का पवित्र ज्ञान हमें महर्षि दयानन्द ने दिया पर हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् तो कहते रहे पर उसे सारे संसार में नहीं फैला सके। यह कमी मुझे मेरे जीवन में सदा बनी रहेगी।

श्री मोहित जी की शिक्षा किसी स्कूल में नहीं हुई। वे श्रमिक की तरह काम करते रहे। सत्यार्थ प्रकाश आदि उन्होंने आर्यसमाज के समीप आकर पढ़े। वहीं हिन्दी लिखना सीखा। १९१६ में पं० काशीनाथ जी मारिशस गए। उनके भाषणों ने उनका जीवन बदल दिया। सन् १९३० में वे आर्यसभा के मन्त्री व १९६७ में प्रधान बने। उन्होंने सैकड़ो लेख आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर लिखे। आज उनके पुत्र डॉ० जगदीश व द्वितीय पुत्र राजेन्द्र मोहित उनके पदचिन्हों पर चलकर आर्यसमाज के कार्यों में लगे हुए हैं। परिवार आर्य विचारधारा में पल रहा है। और हम सब इस प्रेरणा के स्रोत के लिए सिर्फ एक ही प्रार्थना करते हैं कि भूयश्च शरदः शतात्।

इसी अवसर पर श्री मोहित जी ने अपने फाउण्डेशन की ओर से सार्वदेशिक सभा में विशाल वातानुकूलित सभागृह के निर्माण हेतु मुझे १०लाख रुपये का योगदान दिया। हम उनकी शतायु स्मृति में "श्री मोहन लाल मोहित सभागृह" बनाएंगे

– प्रधान,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

एक आदर्श जीवन

– **विमल वधावन,** *वरिष्ठ उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा*

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दौर में २२ सितम्बर, १९०२ को एक साधारण माता पिता के आंगन में जन्म लेने के बाद साधारण परिस्थितियों में पलने के बाद बल्कि यह कहना उचित होगा कि अभाव और अज्ञान में बचपन बिताने के बाद यदि कोई व्यक्ति सौ वर्ष के बाद एक विशाल सम्पदा का मालिक और ख्याति के नाम पर समूचे विश्व के ज्ञानमय आर्य जगत में एक विशिष्ट स्थान रखता हो, तो ऐसे व्यक्ति के बारे में सुनना, पढ़ना और समझना कितना सुखद लगता है।

परन्तु यह कहानी एक वास्तविकता है।

(१) श्री मोहन लाल मोहित जी ने अभाव ग्रस्त जीवन में से सम्पन्नता की खेती की।

(२) श्री मोहनलाल मोहित जी ने बिना किसी स्कूली शिक्षा के उस अज्ञानमय वातावरण को ज्ञानमय बना दिया और विश्व के श्रेष्ठ ज्ञान को पढने और समझने वाले आर्य जगत में अपना एक विशेष स्थान बनाया।

(३) श्री मोहनलाल मोहित ने ऐसे क्षेत्र (मॉरिशस) में काम किया जहां उन्हें अन्य समस्याओं में अतिरिक्त भाषा की समस्या से भी जूझना पड़ा होगा।

(४) विदेशी वातावरण के मध्य श्री मोहन लाल मोहित ने धोती, कुर्ते और पगड़ी की वेश भूषा का एक दिन भी त्याग नहीं किया।

(५) श्री मोहनलाल मोहित ने न केवल वैदिक सिद्धान्तों पर अपने जीवन को चलाया अपितु अन्य लोगों को भी प्रेरित किया। इतना ही नहीं, इन कार्यों को करते हुए वे मारीशस के राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी एक विशेष पहचान और प्रभाव स्थापित करने में सक्षम हुए।

इतनी सारी विशेषताएं एक व्यक्ति में समाहित होना कोई सरल कार्य नहीं है। परन्तु इस सरल व्यक्तित्व को देखकर व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि यह कार्य इतने कठिन भी नहीं है परन्तु आवश्यकता है कुछ सिद्धान्तों को अपने जीवन में इस प्रकार धारण करने की कि एक क्षण के लिए भी जीवन रूपी गाड़ी उन सिद्धान्तों की पटरी से नीचे न उतरे।

मेरी समझ के अनुसार हम सब भी अपने जीवन में श्री मोहनलाल मोहित जी की प्रेरणाओ को धारण कर सकते हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि समूचे विश्व में अधिक से अधिक लोग ऐसे आदर्श जीवन को अपना संकल्प बनाएं।

आर्य जीवन में वेद मन्त्र

एक आर्य वेद के मन्त्रों के उच्चारण के साथ पैदा होता है और वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ ही उसकी अन्त्येष्टि (शरीर भस्म) की क्रिया सम्पन्न होती है। जन्म और मृत्यु के बीच होने वाले सैंकड़ों हजारों धार्मिक तथा सामाजिक कृत्य भी वेद मन्त्रों के द्वारा ही निष्पन्न होते हैं।

श्री मोहनलाल मोहित की १००वीं जयन्ती पर मारीशस आर्यसभा, पोर्ट लुई में, भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री विजय कुमार का भाषण

सौ वर्ष का जीवन पाना विधाता का बहुत बड़ा उपहार है। लेकिन उससे भी बडा उपहार है – सौ वर्ष का ऐसा जीवन जैसे केवल अपने लिए नहीं जिया गया हो, जो समाज के लिए जिया गया हो– मानवता के लिए जिया गया हो। श्री मोहनलाल मोहित जी का जीवन ऐसा ही यशस्वी है। उनके जीवन की घटनाओं के आधार पर मारीशस में आर्यसमाज का इतिहास लिखा जा सकता है। हम उन्हें प्रणाम करते हैं– उनका अभिनन्दन करते हैं।

२०वीं शताब्दी में मारीशस में आर्यसमाज के विकास के हर चरण में मोहनलाल मोहित जुडे रहे हैं। वह १६२७ में आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापकों में रहे। १६४६ में वह पहली बार भारत गए। वह आर्योदय के सम्पादक भी रहे। १६६७ में वह आर्यसभा के अध्यक्ष बने। आर्यसभा में महिलाओं तथा युवाओं की भागीदारी बढाने में उनका योगदान बडा महत्वपूर्ण रहा। उन्हीं की अध्यक्षता में १६७३ में १२वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ। श्री मोहित जी ने आर्यधर्म और संस्कृति की जो पताका सम्भाली थी, अब उसे थामने वाली कई पीढियां आगे आ गई हैं।खुशी की बात है कि श्री मोहित जी के सुपुत्र श्री राजेन्द्र मोहित आज सभा के कोषाध्यक्ष हैं और निरन्तर निष्ठाभाव से आर्यसभा का काम देख रहे हैं। खास तौर से युवा पीढ़ी को दिशा देने में तो इनका विशेष योगदान रहा है।

श्री मोहनलाल मोहित जी का जीवन कर्मठता और कर्त्तव्य की गाथा है। श्री मोहित इस शताब्दी में आर्यसभा के महत्वपूर्ण घटनाक्रम के गवाह रहे हैं। १६५० के दशक में भारत के स्वामी स्वतन्त्रानन्द की प्रेरणा से आर्य परोपकारिणी सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा का विलय हुआ। बाद में, इसी दशक में स्वामी ध्रुवानन्द जी के प्रयासों से यह एकता स्थाई बनी। मोहित जी इन सभी ऐतिहासिक गतिविधियो के गवाह रहे हैं। आर्यसमाज से जुडे हर क्षेत्र – चाहे वह शिक्षा का हो, चाहे स्त्रियों और युवाओं को प्रोत्साहन देने का हो, चाहे आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार हो, मोहित जी हमेशा अगली पंक्ति में रहे हैं।

आर्यसमाज से गहराई से जुडे परिवार से मेरा सम्बन्ध रहा है। मारीशस में आर्यसमाज से जुडी विभिन्न घटनाओं की भी मुझे, बचपन से जानकारी रही है। मेरे जीवन के निर्माण में, आर्यसमाज के आदर्शो और नियमों का बहुत बड़ा योगदान रहा है और मैं इस आन्दोलन को बड़े सम्मान की दृष्टि से देखता हूं। महामहिम प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी की उपस्थिति ने इस अवसर का गौरव बढाया है। मारीशस की सांस्कृतिक विविधता को संजोए रखने और उसे प्रोत्साहित करने में महामहिम हमेशा तत्पर रहे हैं, मैं आपका अभिनन्दन करता हूं।

माननीय मन्त्री महोदय श्री अनिल बेचू और श्री मुकेश्वर चूनी जी का भी मैं अभिनन्दन करता हूं आपने इस आयोजन को सम्मान प्रदान किया।

भारत और मारीशस दोनों ही देशों में आर्यसमाज का इतिहास राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और नवनिर्माण के इतिहास के साथ–साथ चला है। इस आन्दोलन का अतीत गौरवपूर्ण रहा है, उतना ही सम्मानजनक इसका वर्तमान भी है। मेरी कामना है कि इस संस्था का भविष्य भी गौरवपूर्ण हो, सम्मानजनक हो।

श्री मोहित जी जैसे नेताओं के आशीर्वाद की छांव में आर्य सभा ने निरन्तर प्रगति की है। मुझे विश्वास है कि यह आर्य परम्परा निरन्तर जारी रहेगी। मेरी यही कामना है कि पूज्य श्री मोहित जी का आशीर्वाद और उनके कर्मठ जीवन की प्रेरणा हमें मिलती रहे। हम कर्त्तव्य पथ पर निरन्तर बढ़ते रहें।

आर्यवंशी श्री मोहनलाल मोहित ओ०बी०ई०, आर्य-रत्न

आयुष्मान भव:

मोहनलाल मोहित ओ०बी०ई०, आर्य-रत्न
वर्षों से आर्यों के दिल में हैं विराजमान
सभी उन्हें पुकारते हैं प्रधान।

हमेशा है उनके दिल में ऐसा दृढ़ विश्वास
करें परोपकार, परकल्याण
कभी न होवे मन में अभिमान।

न किसी से बैर, न ही दुश्मनी
हर एक से निभाई दोस्ती
ईमानदारी है उनकी पूंजी।

लावण्यमय किया सभी आर्यों का जीवन
दे-देकर मधुर और शिक्षाप्रद भाषण
और कभी देकर अपना धन।

लट-ललाट मस्तक उनका
करते हैं नित्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन
यही है उनका असली आभूषण।

मोह-ममता त्याग कर
बना आर्यसमाज का कर्म सेवक
जीवन अपना किया सार्थक।

हिम-सा निर्मल सफेद उनका मन
कठोर तप-त्याग का है परिणाम
आयुष्मान भव, हमारे प्रधान।

तज सामाजिक आडम्बर आप
झूठ-अत्याचार से रहते कोसों दूर
जो सत्य है उसी को करते हैं स्वीकार।

मोहनलाल जी मोहित आपको बारम्बार प्रणाम।।

— दयानन्द येंगी,
लेस्पेरांस पितों

शतवर्षीय कर्मठ धर्म प्रचारक वैदिक रत्न श्री मोहनलाल मोहित द्वारा ५-३-१९५५ को लेस्पेरांस आर्य समाज में दिया गया प्रवचन

– डॉ० डी० सोब्रन

जब यह भाषण मैंने सुना उस समय मेरी आयु १७ वर्ष की थी मेरी नोट बुक से संगृहित ।

डॉ० सोब्रन–६८६३६३७

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतम् गमय।

मेरे भद्र आर्य सज्जनों ! महर्षि दयानन्द संचालित वैदिक धर्म की परम शिक्षा कैसी है सुनिये।

आत्मिक उन्नति करना। मेरे भटके हुए मारिशस वासियो ! दयानन्द ईश्वर के समान दयानिधान और युग द्रष्टा थे। हम मानव कल्याण की पहली शिक्षा या पाठ को देखें – **संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना।** मेरे मित्रो ! आज का सत्संग इसी छटे नियम के ऊपर होगा। हम मानव के लिए उपदेश है कि निरामिष भोजी बने साथ में सदाचारी और हमको चरित्र का भी धनवान् होना चाहिए। मछली मांस और शराब छोड़े। बिना निरोगी हुए सुख एवं लंबी आयु कैसी मिलेगी। जरा देखिये न महात्मा गांधी पहले सदाचारी बने थे, फिर अंग्रेजों पर बिना गोली चलाये बाहर किया। भारत मां को स्वतन्त्रता दिलाकर तीन रंग झण्डे को गगन पर फैलाये। इस का नाम पहला सदाचार और परम धर्म। सदाचार पनपता है शाकाहारी भोजन से। अब शरीर में महावीर स्वामी जैसा बल आने पर ही हनुमान जैसे कहलाएंगे तभी हम परोपकारी बन सकेंगे। मूलसंजीवनी लाकर लक्ष्मण की रक्षा और सीता की खोज संभव भैल। अरे सड़े गले सारा दिन मांस खा खा कर वीर धीर बजरंगबली महावीर हनुमान का भक्त कभी नहीं बनेंगे। हम सब बलवान बनकर ही इस समाज से तन्त्र मन्त्र भूत प्रेत को लात मार कर भगा सकेंगे। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ो और अज्ञान रात्रि से अपने जीवन और परिवार की रक्षा करो। समाज की सेवा करने का पहला मूल उपाय यह है कि निडर भीम, अर्जुन बनो ऐ नवजवानो मारिशस को भी स्वतन्त्र करना होगा जब तक हम पराधीन रहेंगे तो कभी इस समाज की उन्नति नहीं होगी। अरे प्रवासीभारतीयो ! दयानन्द और गांधी बनना होगा। परपञ्च की पुस्तको को पढ़ना छोड़ो। केवल सत्यार्थ प्रकाश पढो। सत्यार्थप्रकाश पढ़ो। सत्यार्थ प्रकाश के पढ़े बिना आर्थिक और सामाजिक उन्नति मारिशस में नही होगी, गरीबी नहीं हटेगी। शराब पीने से गरीबी कभी नहीं घटेगी गरीबी बढ़ेगी सामाजिक उन्नति का मतलव है समाज की सेवा करो। आडम्बर में फसे हुवे भाई बहनों को सही मार्ग में लाने का नाम सामाजिक उन्नति है। परोपकार ही सबसे बढ़ा धर्म है। वे दयानन्द और श्रद्धानन्द लेखराम परोपकार के मारग पर शहीद होगैल। हम सब को भी करके बा, अच्छा काम करके मरब जा तो अच्छा धर्म पुण्य होई। अब हम आगे आध्यात्मिक के मारग बतायब सुन जा साम सवेरे मसंध्या करें – साप्ताहिक यज में जाना लड़की, बहू और बुड़िया लोगों को भी सत्संग में जाना जरूरी है। असली शिव का मन्दिर दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश है। मूर्ती के भावर देने से आत्मा विकास नाही मिली भाई। राम राम शिव शिव छोड़ जा, गायत्री मन्त्र का जप करो बुद्धि बढ़ेगी परिवार में बच्चे लोग विद्वान बनेंगे। परिवार से गवांर हट जाय। आद्यात्मिक का एक सरल मारग नारायण स्वामी का कर्तव्य दर्पण पढ़ो आत्मा का विकास होगा। अब भोर भई मोसाफिर जाग चलो,

इस संसार को सत्याथ्र प्रकाश ही जगाय उठ जा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो। केवल दुगो रुपये में करोड़ो रूपये की बात दयानन्द की पुस्तक में है। विष्णु पुराण सतनरायण लकड़हारा की कथा से लाभ होई। नकली सतनारायण की कथा में गड़बढ़ बा। जीवन के मार्ग नहीं मिलेगा। सच्ची सत्यनारायण की कथा तो स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में है। स्वामी ने चार वेद की शिक्षाओं को चौदह रत्न में बटलेहवन। सत्यार्थप्रकाश की शिक्षा से ही शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति संसार में होगी। अंग्रेजी भाषा के साथ हिन्दी भी पढ़ो लिखो और बोललजाय तभी तो मारिशस भी अंग्रेजे के पन्जों से छुटीमिली। इतने ही मेरी ओर अंगुली धिरा कर कहा नवजवानों संस्कृत भाषा भी पढ़ो तभी तो वेद समझ में आयगा। आर्यसमाज का मतलब मनुष्य समाज साधु बने दुनियां से पाप हटे। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् वीर धीर बनो, यही आर्यसमाज का धर्म है। आज के लिए सत्संग समाप्त अगले बार बतयाब आर्यो का परम धर्म कैसे है।

सम्माननीय पाठको इस तरह मेरे पास २९५५ से लेकर १९५६ तक ५२ संग्रह भाषणप्रवचन मेरी कापी में है उन में प्रधान जी के प्रवचन १३ तक होगे शेष स्वामी आनन्द, ध्रुवानन्द के है। मेरे उपर इन विद्वानों का प्रभाव पढ़ा, तभी तो मैं स्वामी दर्शनानन्द वरिचित गुरुकुल महाविद्यालय से दो स्नातक और श्रद्धानन्द विरचित गुरुकुल कांगडी से वेदविषय का एम ए होने का सौभाग्य मिला। मोहनलाल मोहित मारिशस आर्यसमाज की सर्वश्रेष्ठ पुण्य आत्मा है। जिस प्रकार भारतवर्ष में स्वामी देवदयानन्द के समान दूसरा समाज सुधारक वेदज्ञ अब होने की आशा नही वैसे ही अब मारिशस में भी दूसरा मोहनलाल मोहित शतायु परोपकारी दानी त्यागी समाज सुधारक विद्वान कर्मठ वेद धर्म को जीवन में चरितार्थ कर के कर्ण के समान दानी मानी और भीष्मपितामह धर्मराज जन्म नही ले सकेगा।

Dr, D.Soburrun, B.A.M.S.M.A.
Ayurvedic Panchkarm Clinic Castel,
Tel - 6863637

महर्षि दयानन्द द्वारा वेदाध्ययन के निर्देश

ऋषि दयानन्द न तो वेद में किसी प्रकार के प्राणी हिंसा परक यज्ञों के विधान को स्वीकार करते हैं, न वेद में किसी प्रकार के अनित्य व्यक्तियों के इतिहास होने की बात को मानते हैं, न वेद में जादू-टोने की बात को मानते हैं और न ही वेद मन्त्रों में अश्लील होने की बात को स्वीकार करते हैं। वे इन सभी मान्यताओं का तीव्र से तीव्र विरोध करते हैं और वेद को शुद्ध ज्ञान-विज्ञान का ईश्वरीय ग्रन्थ मानते हैं।

शतायु श्री मोहनलाल मोहित जी हों !

रा० राधाकृष्ण जी द्वारा लिखित निम्न लेख सन् १६८२ में सार्वदेशिक पत्रिका में छपा था। उस समय श्री मोहन लाल जी मोहित ८० वर्ष की अवस्था के थे। इस लेख में श्री मोहित जी के लिए शतायु होने की कामना की गई थी जो अब पूर्ण हो गई है। यह लेख अविकल रूप से पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। – *सम्पादक*

मोका नाम सुनते ही कई वयोवृद्ध याद करते हैं कि बीसवीं सदी की शुरूआत में एक गोरा जो उस जिले का निवासी था, धोती धारण करके बैठक में कथा सुना करता था। अन्य श्रोताओं तथा कथावाचक से भोजपुरी में बातचीत करता था।

रहस्य खुला जब लगभग श्री मोहनलाल मोहित की उम्र वाले अप्रवासी वेदो की अपने ढ़ंग से खोज करने लगे। पता चला कि उस गोरे के निजी पुस्तकालय में एक फ्रेंच ऋग्वेद विद्यमान है। वह चल बसा पर उसका विशाल पुस्तकालय जो अलभ्य ग्रन्थों से भरा है, इस जमाने में भी मौजूद है। देश भर में उस ऋग्वेद की तीन ही प्रतियां पायी जाती हैं।

श्रीमती जी के साथ श्री मोहनलाल मोहित जी

उक्त वेद की भूमिका पढ कर निष्पक्ष पाठक मान जाते हैं कि वेद सचमुच ईश्वर की ओर से मानव को प्राप्त हुआ है।

वह गोरा भूमिका पढ़कर ही हमारी ओर आकृष्ट हुआ होगा।

शिक्षित अप्रवासी अंग्रेजी के सहारे अपने धर्म के बारे में थोड़ा–बहुत ज्ञान पाने को उत्सुक्त थे। स्व० मंजुल दर्शन प्लेन मायां के सरकारी स्कूल के मुख्याध्यापक थे जब स्व० नारायणदत्त सुकन अभी उस स्कूल के छात्र थे। स्व० मायावरम सुयाक के स्कूल मुख्याध्यापक थे, जब हमारे ८६ वर्ष के युवा पंडित श्री चिन्तामन ने अपनी बाल्यावस्था में उन्हें देखा था।

जाने कैसे श्री मायावरम तथा श्री विश्वेश्वर हलुमान के पास थे ओसोफिकल सोसायटी के प्रकाशन पहुंचे। दोनों मिलकर पोर्ट लुई की वेलिगटन गली के एक कमरे को किराये पर लेकर सोसायटी को चलाने लगे।

मायावरम जी इतने में गुजर जाते है और हलुमान जी अकेले पड जाते हैं।

पंडित मेहता जैमिनी का आगमन इनके लिए आशीर्वाद हुआ। पंडित महोदय ने इनके लिए वेद और उपनिषदें जो अंग्रेजी में रूपांतरित थी, मंगवायीं। ऐसी पुस्तकें श्री मञ्जुल दर्शन के हाथ लगतीं तो वे भी सर्वश्री मायावरम और हलुमान से अवश्य मिलकर उस सभा विशेष का संचालन करते। १६२५ के बाद फ्लाक में वेद की चर्चा होने लगी। आर्य मसाज उक्त सोसायटी से कहीं श्रेष्ठ है यह हलुमान जी को मालूम हुआ। दोनों का जन्म १८७५ में हुआ है।

मोका में स्वर्गीय महेश सरदार निवास करते थे। उन्हीं दिनों मोहित जी भी सरदार हो गये थे किन्तु उनके नाम के साथ 'सरदार' शब्द लगाया न गया।

थोड़े ही दिनों में लावेनिर, रिपाई नुवेल देकुर्वेत ग्रामों की प्रसिद्धि इस कारण हुई क्योंकि बड़े सरदार तथा छोटे सरदार अर्थात् महेश जी तथा मोहित जी के ये ग्राम समझे जाने लगे।

हर्ष का विषय है कि मोहित जी इस साल ८० वर्ष के युवा कहलायेंगे। वे अभी तक अपने से कम उम्र वालों को चुनौती देते हुए कार्य करते जा रहे हैं।

जब १६१० में मारीशसीय समाज की नींव शहर में रखी गई थी आप किशोर थे।

वाक्वा और पोर्ट लुई समाज के सदस्यों को आरम्भ में प्रिय हुआ था। डॉ० चिरंजीव भारद्वाज के पुत्र दिल्ली स्थित सत्यकाम भारद्वाज जो इस समय विद्यमान हैं, लगभग मोहनलाल जी की वय के हैं। अब भी वाक्वा वासी उन से दिल्ली में मिलते हैं तो बताते हैं कि वाक्वा की किस गली किस तरफ हैं। उनके लिए हमारा द्वीप अविस्मरणीय है।

जब वे बालक थे उनके पिता ने तत्कालीन प्राथमिक पाठशाला के अध्यापक श्री झगरु को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया था।

झगरू जी के ज्येष्ठ पुत्र आज से एक दो दशक पूर्व गुजरे हैं। जब एक बार फ्लोक के एक लघु ग्राम में कुछ व्यक्तियों की शुद्धि की गई थी पोर्ट लुई के जवान आर्यों में इतना उत्साह था कि वे यहां से एक स्पेशल बस में घटना स्थल पर गये थे। झगरू जी भी साथ थे। यह लिखते वक्त दुःख होता है कि मेजिन से अपने पिता के साथ स्वर्गीय रधुनंदन भारद्वाज जी पधारे थे यद्यपि बालक होने के कारण समझ न पाये कि क्या हो रहा था। अपने पिता को कहीं जाने की तैयारी में लगे देख कर बालक ने पूछा – "कहां जात हव ?" पिता ने कहा – हम देखे जात हय कि क्रियोल के हिन्दू बनावल जाय।" बालक ने झट से कहा – "हम भी जायब" वह जमाना रह रह कर याद आ रहा है।

पोर्ट लुई और वाक्वा से भी पहले क्यूर्पिप में ऋषि दयानन्द का संदेश पहुंचा था। पहुंचाने का खतरनाक काम श्री खेमलाल लाला जी ने किया था। उन दिनों संदेश पहुंचाना खतरा मोल लेना था। मोरिशस में पधारे हुए प्रथम संन्यासी स्वामी मंगलानन्द पुरी अपने ग्रन्थ "अफ्रीका यात्रा" में जिसके बीच मारीशस का इतिहास है, लाला के बारे में बहुत कुछ लिख गए हैं।

केन्द्र तो राजधानी पोर्ट लुई ही है जहां गुरुकुल खोलने तक का स्वप्न देखा गया था। शां दे मार्स के सामने डॉ० चिरंजीव भारद्वाज के प्रयत्न से जमीन खरीदी गई थी। उनके पुत्र कभी कभी शां दे मार्स में दौड़ा करते थे।

यदि मोका का नाम लिया जाता है तो जैसे कि आरंभ में बताया गया है, मुख्यतः स्व० महेश सरदार जी तथा हमारे मध्य में विद्यमान मोहनलाल जी के कारण ही।

ऋषि दयानन्द की जन्मशती के अवसर पर पं० मेहता जैमिनि पधारे हुए थे जिन्होंने "मेरी मोरिशस यात्रा" के नाम से अपना यात्रा विवरण लिखा। उस पुस्तक को उन्होंने सरदार जी को समर्पित किया था।

पुस्तक पत्रिका आदि से मोहललाल जी का भी सम्बन्ध रहा है।

पं० काशीनाथ लाहौर से उच्च शिक्षा पा कर लौट आये थे जब युवक मोहनलाल जी को संस्कृत सीखने की इच्छा हुई। पंडित जी ने इन्हें पढाया। अभी तक इन्हें व्याकरण के कई सौ सूत्र कण्ठस्थ हैं।

समाज का ध्यान संस्कृत पर था क्योंकि वेद शास्त्र के रहस्य को समझने में सब उस समय में प्रयत्नशील थे। जब कभी कोई मारीशसीय विद्यार्थी हिन्दी सीखने की इच्छा करते थे लाहौर के पण्डित यही कहा करते थे कि हिन्दी घास की तरह अपने आप उगती है।

हम यहां उस समय का इतिहास लिख रहे हैं जब मोहनलाल जी सामाजिक कार्य में भाग लेने के लिए आर्य भवन में आया करते थे। तब भवन

का नाम दयानन्द धर्मशाला था। यही नाम था जब भारतीय श्रमिकों के आगमन की शती बंरिस्टर बुधन के प्रधानत्व में मनायी गई थी।

थोडे दिन बाद दो सभाओं में अर्थात परोपकारिणी सभा तथा प्रतिनिधि सभा में मुठभेड होने लगी। मोहनलाल जी द्वितीय सभा के कर्णधार थे।

ज्योंही प्रस्ताव आया कि दोनों को एक करके आर्य सभा नाम दिया जाय, इन्होंने उसका स्वागत किया।

पहले आर्यो ने दो बार 'आर्य पत्रिका' एक एक बार 'आर्य वीर' तथा 'जागृति' चलायी। इन्हीं की जगह में आज 'आर्योदय' प्रकाशित हो रहा है जिसके सम्पादन का भार मोहनलाल जी के कंधों पर है।

आप साहित्य सेवी भी हैं। संध्या हवन के मंत्रों के संग्रह प्रकाशित करके आप संतुष्ट न थे। एक दिन पं० विश्बेश्वर धुरंधर ने आप से आग्रह किया कि हाथ बटा कर फ्रेंच संध्या प्रकाशित की जाय तो अस्पताल के मरीजों के मध्य वितरित की जा सकेगी। आप ने तत्काल सहायता पहुंचायी।

जिस पुस्तक के कारण लोग आप का स्मरण करते रहेंगे वह आप के द्वारा विरचित आर्यसमाज का इतिहास है जो भारत में प्रकाशित हुआ है।

इतिहास के ग्रन्थ अनेक हैं और सब पठनीय हैं। आर्य समाज अभी ७२ साल का ही हुआ है। भूमिकाय ग्रन्थ रचने की अभी आवश्यकता नहीं है। आप ने जो पुस्तक लिखी, वही सब से बड़ी है। उसमें अनेक अलभ्य चित्र हैं।

•आपके यहां पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का एक अच्छा संग्रह है, इसीलिए शोध कार्य करने वाले आप के पास पहुंचा करते हैं। शायद ही किसी और व्यक्ति के पास संस्कृत में रुपान्तरित सत्यार्थ प्रकाश हो।

आप लगातार 'आर्योदय' के लिए लिखते आये हैं। इस देश में इने गिने ही लोग 'आर्य मित्र' के ग्राहक हैं। ग्राहकों से यह बात छिपी नहीं हैं कि इस पत्र के प्रत्येक विशेषांक में आप का लेख रहता है।

आप बोलते भी खूब हैं। उत्सवों के अवसर पर आप जो भाषण देते हैं उन को बहुत लोग पसन्द करते हैं।

युवावस्था में आप ने भारत यात्रा न की थी। उसके बाद आप ११ बार भारत गये। आप की भारत यात्राएं व्यर्थ न रहीं। जितने भी आर्य विद्वान एवं नेता भारत में विद्यमान हैं आप सब से परिचित हैं।

आप उस युग में भी कर्मण्य रहे जब आर्य और सनातनी में मेल न था और इस संघटन के युग में भी कर्मण्य हैं। सहायता देते वक्त आप नहीं देखा करते कि कौन आर्य हैं और कौन सनातन धर्मी।

आप के समसामयिकों में से एक ही दो अब विद्यमान हैं। जब समाज के सेवकों के नाम लिये जाते हैं मास्टर गोपीचंद छत्तर तथा मास्टर रामशरण मोती के नाम लिये जाते हैं। ये दोनों कार्य करने में लगे थे जब आप धर्मशाला में पधारने लगे थे। डॉ० चिरञ्जीव भारद्वाज उपस्थित थे जब पहले पहल आर्य परोपकारिणी की कार्य कारिणी का चुनाव हुआ। मास्टर मोती कद के छोटे थे। वे मंत्री चुने गये। डॉ० भारद्वाज उन्हें अपनी गोद में लेकर आर्यो से कहने लगे, देखिए कौन आप लोगों की सभा के महामंत्री निर्वाचित हुए हैं।

आर्यो की संख्या थोडी थी। जब कभी दो लाइन की सूचना यहां के दैनिक पत्रों में छपवानी पडती थी। बार बार सम्पादकों के पास जाना पड़ता था। पाठक लोग 'आर्य त्योहार' या 'फेत आर्येन' शीर्षक देख कर आनन्द विभोर होते थे।

अब इस देश में आर्यो की संख्या सवा लाख है। स्थानीय आर्य समाज के सम्बन्ध में अभी हाल ही में एक लेखमाला लिखी गई जो यहां के साप्ताहिक पत्र में छपी जिस के पैतीस हजार ग्राहक हैं। मतलब यह हैं कि एक लाख लोगों ने उसे पढ़ा।

आप ही के सेवा काल में एक अपूर्व घटना घटी और वह यह कि प्रथम बार आर्य सार्वदेशिक सभा की ओर से महासम्मेलन का आयोजन भारत के बाहर हुआ।

लोग रट लगाते रहते हैं कि युवा पीढ़ी का युग है। युवकों का स्वागत करना हमारा धर्म है, पर यह भी देखना चाहिए कि अभी ये अनुभव, अर्जित करके आगे आने की तैयारियां कर चुके हैं या नहीं। युवक पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के समान हों। एक समय में मास्टर मोती युवक थे, दूसरे में मोहनलाल जी हुए। इसी तरह समय आने पर योग्य युवक अवश्य कार्य सम्भालने के योग्य हो जायेंगे। आर्य समाज की सेवा करने के लिए त्याग, उत्साह एक रस रहना, मान अपमान का स्वागत करते रहना ऐसे गुणों की आवश्यकता है। कोई कोई वृद्ध हो जाने पर भी जवानों की तरह काम करते रहते हैं।

यह युग बदनाम हुआ है। कहा जाता है कि अब ईश्वर का देहान्त हो गया है, धर्म की आवश्यकता न रही। ऐसी स्थिति में केवल दृढ़ संकल्प करके अन्त तक काम करने वाले ही समाज की सेवा करने में समर्थ हो सकेंगे। जब सब कोई 'न' करते हों और ढूंढ़ने पर एक ही दो 'हा' कहने वाले दिखाई देते हैं बिरले ही लोग 'हा' कहने का साहस करते हैं। यह साहस मोहनलाल मोहित जी में है। परमात्मा करे कि अंतिम घड़ी तक यह इन के साथ रहे।

आर्यसमाज की उदारता ने एक पीढ़ी को दूसरी से मिलाया। झगरू नामक अध्यापक ईसाई थे क्योंकि गैर ईसाई ईसाई स्कूलों के अध्यापक होते न थे। १६०१ में युवा बैरिस्टर गांधी को मास्टर झोला ने बताया था कि हिन्दुओं के लिए ईसाई स्कूल में स्थान नहीं है। जो मजबूर होकर ईसाई बनाये गये उन पर डॉ० भारद्वाज दया करते थे। वे इस शर्त पर किसी ईसाई को अपने पुत्र का अध्यापक बनाते न थे कि वे हिंदू हो जायें, पर उनका व्यवहार इतना अच्छा रहा कि झगरू मास्टर के पुत्र आर्य कमार सभा के सदस्यों के मित्र हो गये थे और बिना संकोच किये अपने मित्रों से मिलने के लिए दयानन्द धर्मशाला में बार बार पधारते थे।

हम कष्ट सहिष्णु न होते, उदार न होते तो इस देश के कोने कोने में आर्य सिद्धांत के मानने वाले पाये न जाते। ग्राम ग्राम में और नगर नगर में आर्य मन्दिर निर्मित नहीं होते।

आज हम ईसाई से सत्यार्थ प्रकाश पढ़वा सकते हैं, जिस को फुरसत नहीं है वे अंग्रेजी में रचा गया सत्यार्थ प्रकाश सार पढ लेता है।

यह देख कर हम आशा करने लग जाते हैं कि अन्य आर्य भी मोहनलाल जी की तरह पुस्तक प्रेमी बनेंगे, अपने यहां एक छोटा पुस्तकालय रखेंगे। अपने निजी ग्रन्थ औरों से पढ़वायेंगे। प्रचार आर्य समाज के प्राण है। हम वे दिन देखने को उत्सुक है जब सभाओं के सब सदस्य तन मन धन से क्या सभा, क्या देश की सेवा सहर्ष करेंगे।

किस ने मेक्स मूलर का नाम नहीं सुना ? मूलर ने अपने किसी ग्रंथ में ऋषि दयानन्द की जीवनी दी है। मूलर भारत पधारे न थे, अतः ऋषि से मिल न पाये।

दयानन्द युग के १०० साल बाद मूलर ही के समान प्रो० जां फिल्योजा संस्कृतज्ञ हुए हैं। उनसे मारीशस में हम आर्यो को मिल कर आनन्द उपलब्ध हुआ। मोहित जी के सेवा काल में यहां फ्रेन्च सत्यार्थ प्रकाश यन्त्रस्य था जब फिलयोजा, मोहनलाल जी तथा कालीचरण जी प्रेस में पधारे। एक संस्कृतज्ञ को इन दो आर्य सज्जनों ने उक्त ग्रन्थ बताया। फिल्योजा के लिए, यह एक अप्रत्याशित घटना थी। वे मन्त्र मुग्ध से हो गये।

मोहित जी के जीवन में इतनी घटनाएं घटी हैं कि सब का उल्लेख कभी किया जाएगा तो १०० पृष्ठ की पुस्तक बन जायेगी। आप कार्यरत रहे और आज भी सेवा करने में लगे हुए हैं। आशा है कि युवा पीढ़ी इस बात को न भूलेगी।

— रा० राधाकृष्ण

आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित दीर्घायुष्काम उत्सव सम्पन्न

मारिशस मे आर्य सभा के तत्वावधान मे वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित के १०० वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। साथ ही गाव सेण्ट लावेनियर मारिशस मे विशाल महायज्ञ का आयोजन भी श्री मोहनलाल मोहित फाउण्डेशन की ओर से आयोजित किया गया।

आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित का जन्म २२ सितम्बर १९०१ को मारीशस मे हुआ और उन्होने अपने जीवन के १०० वर्ष २२ सितम्बर २००२ को पूरे कर लिये। १०० वर्ष पूर्ण करने पर एक सप्ताह तक सम्पूर्ण मारिशस के अलग अलग स्थानो पर मारिशस सरकार आर्य सभा आर्यसमाजो, एव महात्मा गाधी इस्टीट्यूट आदि सस्थानो द्वारा उनके १००वीं वर्षगाठ पर अनेक कार्यक्रम रखे गये।

दाएं से : स्व० ब० रामखेलावन, भारतीय उच्चायुक्त, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, सर अनिरूद्ध जगनाथ एवं मोहनलाल मोहित जी

इस अवसर पर भारत की विभिन्न आर्य समाजो से लगभग ६० व्यक्ति १८ सितम्बर, २००२ को मारिशस के लिए रवाना हुए। इस सद्भावना प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कैप्टन देवरत्न आर्य कर रहे थे। इस मे सम्मिलित प्रमुख व्यक्तियो मे कागडी विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के डॉ० तुलसीराम जी, श्री यशपाल आचार्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एव पडित रामकृष्ण जी उप कुलपति गुरुकुल अयोध्या सम्मिलित थे।

मारिशस पहुचने पर आर्य सभा के अधिकारी हमारे सम्मान के लिए उपस्थित थे उनमे विशेष रूप से आर्य सभा के प्रधान डॉ० रूद्रसेन निडर मत्री डॉ० उदय नारायण गगू कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार मोहित उपमत्री श्री सत्यदेव प्रीतम उप प्रधान श्री भरत मगर जी आदि उपस्थित थे।

१७ सितम्बर २००२ से आर्य समाज सेट लावेनियर के विशाल प्रागण मे विशाल स्तर पर मोहित जी के शतायु होने के उपलक्ष्य मे मोहन लाल मोहित फाउन्डेशन की ओर से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री जयदेव जी शास्त्री थे। श्रीमती उषा शास्त्री यज्ञ का सचालन कर रही थी एव उनके द्वारा शिक्षित वेद पाठी महिलाओ के साथ वेद पाठ कर रही थी। पूज्यनीय स्वामी सत्यम् जी के तत्वावधान मे यह यज्ञ चल रहा था। श्रीमती उषा शास्त्री ने बडी कडी मेहनत के साथ जहा सम्पूर्ण यजुर्वेद के मत्रो का पाठ किया वहा अन्त मे भजन, गीत, आरती गाकर उपस्थित जन समुदाय को बहुत

प्रभावित भी किया। प्रातः सायं यज्ञ के पश्चात् विद्वानों के भाषण होतें रहे। भारत से गए श्री ६ र्मपाल जी, आचार्य यशपाल जी, आचार्य रामकृष्ण जी, डॉ० तुलसीराम बागिया आदि ने भी अपने विचार यज्ञ के पश्चात् उपस्थित जनता के सामने रखे। १८ सितम्बर को आदरणीय श्री मोहन लाल जी मोहित ने बड़े सारगर्भित शब्दों में सदाचार पर भाषण दिया। १०० वर्ष की आयु में उनकी बुलंद आवाज और विचारों को सुनकर लोग दंग रह गये। इस अवसर पर कैप्टन देवरत्न जी ने भी अपने विचार रखें।

सितम्बर २१ से २४ तक श्री मोहित जी के शतायु होने पर अनेक कार्यक्रम हुए। पूज्यनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने लगभग १०० वेद मंत्रों का चुनाव कर श्री जयदेव जी शास्त्री को भेजा था जिसमें श्री मोहित जी की दीर्घायु एवं स्वस्थ आयु की कामना की गई थी। सायं पूजनीय स्वामी सत्यम् जी के वेदोपदेश होते रहे।

२१ सितम्बर को आर्य सभा मॉरिशस ने एक सार्वजनिक सभा श्री मोहित जी के शतायु वर्ष मनाने के उपलक्ष्य में आयोजित की। हाल खचाखच भरा हुआ था। मारिशस गणतंत्र के प्रधान मन्त्री माननीय श्री जगन्नाथ जी अनिरूद्ध मुख्य अतिथि थे। वे तीन घंटे के इस समारोह में प्रारम्भ से अंत तक उपस्थित रहे। इस अवसर पर मारिशस सरकार के अनेक मंत्री भी उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने की। आर्य सभा के प्रधान डॉ० रूद्रसेन निडर ने स्वागत भाषण दिया। भारत के उच्चायुक्त श्री विजय कुमार ने अपने विचार रखे। श्री विजय कुमार जी, श्री पृथ्वी सिंह आजाद जो कभी सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री रहे उनके सुपुत्र है।

इस अवसर पर श्री अनिल कुमार मंत्री लैण्ड ट्रांसपोर्ट एवं शिपिंग मंत्रालय, श्री मुखेश्वर, मंत्री हाउसिंग एवं लेण्ड मंत्रालय, श्री शिशुपाल जी रामभरोस आजीवन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, पूजनीय स्वामी सत्यम जी ने अपने विचार श्री मोहन लाल जी मोहित के जीवन पर रखे।

प्रधानमन्त्री श्री जगन्नाथ अनिरूद्ध ने श्री मोहित जी द्वारा आर्य समाज और मारिशस राष्ट्र के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में कैप्टन साहब जी ने श्री मोहित जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं पर अपने विचार रखे तो उपस्थित जनसमूह ने अनेक बार तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि श्री मोहित जी से एक बार पूछा कि आप रविवार को प्रातः भोजन क्यों नहीं करते। तब उन्होंने कहा कि मैं हर रविवार को अपनी युवा अवस्था में, जब यहां कार और बस आदि नहीं होती थी, १० से १५ मील पैदल चलकर विभिन्न गांवों में जाया करता था और वहां आर्य समाज की स्थापना करता था। मैं युवकों को वैदिक धर्म का सच्चा ज्ञान देने जाता था पर लोग मुझसे भोजन तक के लिए नहीं पूछते थे तो मुझे वहां दुख होता था। मैंने तब निश्चय किया कि मैं रविवार को भोजन नहीं करूंगा। उसके पश्चात जब गांव के लोग भोजन के लिए नहीं पूछते थे तो मुझे दुःख नहीं होता था क्योंकि मैं रविवार को भोजन करता ही नही था। उनका जीवन प्रेरणा श्रोत रहा सबके लिए। उनकी कठोर मेहनत का ही परिणाम रहा कि मारिशस छोटे देश में आज ४५० आर्य समाजें हैं और अनेक डी०ए०वी० कालेज व अनाथालय। आपने आगे कहा एक सम्मेलन में किसी व्यक्ति ने अपने भाषण में कहा हम प्रार्थना करते हैं प्रब्रवाम शरदः शतम् जीवेम् शरदः शतम् .... और श्री मोहित जी गुस्से मैं आ गये, यह प्रार्थना मेरे लिये नहीं हो सकती मेरे लिये कहो भूयश्चः शरदः शतात्।

इस अवसर पर आर्योदय पत्रिका द्वारा श्री

मोहित जी पर प्रकाशित विशेष अंक का विमोचन मारिशस के प्रधान मंत्री जी ने किया। जिसके सम्पादक थे श्री सत्यदेव जी प्रीतम। सभा का संयोजन श्री उदयनारायण गंगू जी ने किया। श्री मोहित जी की दीर्घायु की कामना का भजन श्रीमती उषा शास्त्री ने गाया। श्री मोहित जी ने अन्त में सबका धन्यवाद किया।

२२ सितम्बर, २००२ वह शुभ दिन था जब श्री मोहित जी पूरे १०० साल के हो गये। स्वयं चलकर यज्ञ में आये। लावेनियर के कार्यक्रम में उपस्थित हुए। इस पण्डाल में लगभग १००० व्यक्ति उपस्थित थे। यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और उसके पश्चात् कई सरकारी मंत्री, मित्र एवं आर्य नेताओं ने उनको बधाई दी। आचार्य यशपाल, श्री धर्मपाल, डॉ० तुलसीराम बॉगिया, आचार्य राकृष्ण आदि ने अपने बधाई सन्देश देकर मोतियों की माला से उनका सम्मान किया। कैप्टन देवरत्न आर्य ने विश्व की समस्त आर्य समाजों की ओर से बधाई सन्देश के साथ मोती की माला, शाल और श्रीफल से उनका स्वागत किया। श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की ओर से उनका शाल व माला से स्वागत किया व उनके स्वस्थ रहने के लिए गुरुकुल फार्मेसी की दवाओं का उपहार भेंट किया। डॉ० श्रीधर जो बंग्लौर से पधारे थे उन्होंने भी स्वागत किया।

मारिशस गणतंत्र की एक परम्परा है कि जो व्यक्ति १०० वर्ष का जीवन जीता है उसका सरकार की ओर से भी सम्मान होता है। यह सम्मान ११. ३० बजे प्रातः प्रारम्भ हुआ। अनेक राज्य मंत्री इस सभा में उपस्थित थे। सरकार की ओर से श्री मोहित जी को ११००० मारिशिसी रूपये, एक मोबाइल टेलीफोन, शत् वर्षीय केक, गुलदस्ते आदि उन्हें भेंट किये गये। लोगों का जोश और उत्साह देखने योग्य था।

शानदार प्रीतिभोज के साथ सभा समाप्त हुई। यहां यह लिख़ना अप्रासंगिक नही होगा कि सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर भी श्री मोहित जी ने आज तक चश्मा नहीं लगाया। उनकी याददाश्त, दृष्टि आज भी गजब की शक्ति रखती है। वे ऊंचा जरूर सुनने लगे है पर अनेक आग्रह करने पर भी उन्होंने श्रवणयंत्र अपने कान में नही लगाया है। वे कृत्रिम जीवन नहीं जीना चाहते।

उनके शतायु सम्मेलन के पश्चात् उसी पण्डाल में बाल सम्मेलन हुआ। छोटे-छोटे बच्चों ने बडे प्रभावशाली ढंग से भजन, कहानियां और मंत्र पाठ प्रस्तुत किये। दिन में १.३० बजे आर्य युवा एवं गुरुकुल सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। अध्यक्षता की श्री स्वतंत्र कुमार जी उप कुलपति गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने व संयोजक थे डॉ० उदय नारायण गंगू। पूजनीय स्वामी सत्यम् जी ने उद्घाटन भाषण दिया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति व युवाओं पर वक्ता के रूप में डॉ० श्रीधर बंग्लौर, श्री यशपाल आचार्य, सोनीपत, श्री रामकृष्ण जी शास्त्री, लखनऊ, श्रीमती प्रेमलता भटनागर, दिल्ली ने बडे सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये।

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने श्री मोहित जी से पूछा आपको कैसा लग रहा है। जब आप १०१ वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। कहने ले मैं रात्री को उठा और परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे मेरे जीवन में यह दिन देखने को दिया। वह प्रसन्न थे। श्री मोहित जी आज भी नियम से प्रात. ३ बजे उठते हैं – ध्यान योग, सन्ध्या व एक घंटे स्वाध्याय करते हैं इस दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं है।

२३ सितम्बर को मध्याह्न २ से ३ बजे तक महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट में उनके सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। श्री मोहित जी इस संस्थान के निदेशक मण्डल के सदस्य रह चुके हैं। इस अवसर पर भी मारिशस सरकार के सांस्कृतिक मंत्री श्री मोती रामदास, भारतीय उच्चायुक्त श्री विजय कुमार, एम जी आई की डायरेक्टर श्रीमती सूर्याकान्ती गायन, पूर्व डायरेक्टर श्री उत्तम विष्णु

दयाल उपस्थित थे। भारतीय प्रतिनिधि भी उपस्थित था। डॉ० उदय नारायण गंगू जो इस संस्थान के सीनियर लेक्चरार है, ने श्री मोहित जी के जीवन पर प्रकाश डाला। संस्थान की ओर से प्रकाशित दो पत्रिकाएं बसंत और रिमझिम के विशेष अंक जो श्री मोहित जी के जीवन और कार्यकलापों पर समर्पित थे का लोकार्पण हुआ। अल्पाहार के साथ सभा समाप्त हुई सभा का संचालन डॉ० जागा सिंह ने किया।

इसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री देवरत्न आर्य का मारिशस ब्रोडकास्टिंग सेन्टर से रेडियों पर आधा घंटे का सीधा प्रसारण श्री मोहित जी के जीवन पर हुआ। सायंकाल ४ से ६ बजे विश्व के प्रसिद्ध सागर किनारा के पं० बल्यु बे० के पास स्थित आर्य समाज माहेवर्ग ने श्री मोहित जी का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया। यज्ञ के पश्चात् यज्ञ व योग पर श्रीधर, स्वामी सत्यम् जी, डॉ० उषा शास्त्री, श्री स्वतंत्र कुमार जी के भाषण हुए। पंडित रामकृष्ण ने समारोह की अध्यक्षता की। समाज के प्रधान श्री भरत मंगरू ने स्वागत भाषण दिया और श्री हरिदेव रामधनी ने संयोजन किया।

रात्री को ८ बजे आर्य समाज क्लेयरफोंड में सम्मेलन हुआ। श्री सत्यदेव प्रीतम ने स्वागत भाषण दिया और विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

२४ सितम्बर को जितने प्रतिनिधि विदेश से आये थे उनके सम्मान में सामूहिक भोज आर्य सभा मारिशस के भवन में रखा गया। हर देश के एक एक प्रतिनिधि ने अपने विचार रखें। मध्याह्न २ बजे हिन्दू हाउस ने समस्त प्रतिनिधियों के सम्मान में चाय पार्टी रखी व कैप्टन देवरत्न आर्य ने सबकी ओर से हिन्दू एकता पर अपने विचार रखे।

सायं ४ बजे से आर्य समाज चिमोनी ने श्री मोहित जी के सम्मान में समारोह एवं भोज का आयोजन किया। रात्रि को साढ़े सात बजे आर्यसमाज कैम्प रोबेट ने सम्मान् कार्यक्रम का आयोजन किया। सार्ददेशिक के प्रधान श्री देवरत्न जी जब मोहित जी के निवास पर विदाई लेने पहुंचे तो उनसे एक प्रश्न किया, ईश्वर ने आपको धन, एश्वर्य, सम्मान, परिवारिक सुख, आदि खूब दिया। आपने अपना जीवन एक श्रमिक के रूप में प्रारम्भ किया। १०० वर्ष की स्वस्थ आयु आपको प्रदान की। इतना सब मिलने के पश्चात् आपको जीवन में कोई अभाव का अनुभव होता है ? मोहित जी कहने लगे – हां ! वेदों का पवित्र ज्ञान हमें महर्षि दयानन्द ने दिया पर हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् तो करते रहे पर उसे सारे विश्व में नहीं फैला सके। यह कमी मेरे जीवन में सदा बनी रहेगी।

श्री मोहित जी की शिक्षा किसी स्कूल में नही हुई। वे श्रमिक की तरह काम करते रहे। सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ उन्होंने आर्यसमाज के समीप आकर पढे। वहीं हिन्दी लिखना सीखा। १९१६ में पंडित काशीनाथ जी मारिशस गये। उनके भाषणों ने उनका जीवन बदल डाला। सन् १९३० में वे आर्य सभा के मंत्री व १९६७ में प्रधान बने। उन्होंने सैकड़ो लेख आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर लिखें। आज उनके पुत्र डॉ० जगदीश व द्वितीय पुत्र राजेन्द्र मोहित उनके पदचिन्हों पर चलकर आर्य समाज के कार्यो में लगे हुए है। परिवार आर्य विचारधारा में पल रहा है और हम सब इस प्रेरणा श्रोत के लिये सिर्फ एक ही प्रार्थना करते है – भूयश्चः शरदः शतात्।

इस अवसर पर श्री मोहित जी ने अपने फाउंडेशन की ओर से सार्वदेशिक सभा में विशाल, वातानुकूलित सभागृह के निर्माण हेतु सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न जी को १० लाख रुपये का योगदान दिया। सार्वदेशिक सभा उनकी शतायु स्मृति में श्री मोहनलाल मोहित सभागृह दिल्ली में बनवायेगी ऐसा सभा प्रधान जी ने घोषणा की।

..... *विशेष सम्वाददाता द्वारा*

आत्मविश्वास सफलता की नींव है

– शत्वर्षीय श्री मोहनलाल मोहित

प्रत्येक मनुष्य सफलता की इच्छा रखता है, परन्तु कम मनुष्य सफलता प्राप्त करते हैं। पूरी सन्तोषदायक सफलता तो बिरले ही प्राप्त कर पाते है। प्रायः असफल व्यक्ति भाग्य को कोसते हैं या समय को दोश देते है। कार्य में असफल होने पर भाग्य और समय के सिर पर दोष देकर बचाव करना मानवीय निर्बलता है। यदि मनुष्य अपना मिथ्या अहंभाव त्याग कर विमल विवेक से अपने आपको अध्ययन करे, तो साफ विदित होगा कि सारी असफलताओं का कारण अपना ही दोष है। बाहरी घटना या दशा का प्रभाव वैयक्तिक विफलता पर नाम मात्र का होता है। आवश्यकता है कि मनुष्य अपने व्यक्तित्व का निपुणता से निरीक्षण कर ले। जीवन की कमी की पूर्ति और दोषों का सुधार प्रयत्न से करे और अपनी शक्ति को विकसित कर अपनी योग्यता की ठीक जानकारी प्राप्त कर ले। अपनी दूषित आलोचना तथा आत्मा में हीनता की भावना से आत्मबल का ह्रास होने पर व्यक्ति आत्मविश्वास खो देता है। आत्मविश्वास गवां देने से सारी प्रगति कुंठित हो जाती है। विद्वानों का आदेश है कि आत्मविश्वास सफलता का सबल सोपान है।

मनुष्य को चाहिए अपने बल–प्रभाव पर विश्वास रख आगे बढ़े और प्रगति–बाधक शक्तियों पर विजय प्राप्त करे। आत्मविश्वासहीन व्यक्ति कर्म–कायर, भीरु, भंवर में बहने वाला मनुष्य असफलता की निराशा–निशा में ही भटक मरता है, क्योंकि कर्मक्षेत्र के कायर, कर्मवीरता से दूर भागने वालों के कम्पित पद सफलता के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। इसलिए सफलता के अभिलाषी को कर्मवीरता का पाठ अध्ययन करके आगे बढ़ना चाहिए। बुद्धिमानों ने कहा – जो काम एक ने किया है, उसको दूसरा भी कर सकता है। यह बात बुद्धिसंगत ही है कि विवेकपूर्वक पुरुषार्थ से ही व्यक्ति प्रत्येक काम में सफलता पा सकता है। जिस काम में एक ने सफलता पाई है, दूसरा भी विधिवत् प्रयत्न से सफलता निःसन्देह पा सकता है। परन्तु ध्यान रहे, सफलता के अभिलाषियों को हृदय में अंकित कर लेना चाहिए कि उनमें सुयोग्यता और आत्मविश्वास की अनिवार्य आवश्यकता है। इनके बिना सफलता का भवन वैसे ही खड़ा नहीं रह सकता जैसे रेत पर दीवार।

आशा, उत्साह और साहस प्रगतिशील जीवन के सजीव पावन प्रतीक है। एक विचारक ने कहा है – उत्साह ही सफलता की जननी है, उत्साह पूर्वक हाथ बटाने पर कठोर कार्य भी सरल बन जाता है। सुनिश्चित विचार और दृढ़ हृदय, कार्यकुशल लौहपुरुष का विजयशील गुण है। दुर्बल हृदय, ढुल–मुल विचार वाला जीवन–संग्राम में दोहरा घाटा उठाता है। एक तो हाथ का निश्चित काम खो देता है और कलंक भी अपने सिर लेता है। जिसका मनोबल निर्बल और विचार अनिश्चित है, वह अपनी शक्ति को वांछित कार्य में उपयोग नहीं कर सकता है। कार्य को सफलता पूर्वक करने के

लिए आवश्यक है अपनी शक्तियों का केन्द्रीयकरण किया जाए। शारीरिक और मानसिक शक्तियों को दृढ़ता से केन्द्रित करने से जीवन में दैवी बल का विकास होता है।

जहां इन दोनों शक्तियों का संगठित उपयोग होता है, वहीं सफलता करबद्ध खड़ी रहती है। साथ ही सफलता के लिए यह भी आवश्यक है कि समय और शक्ति के अनुसार कार्यो के चुनाव में दक्षता चाहिए। यदि इसमें गलती होगी, तो विफलता के साथ ही शक्ति का भी दुरुपयोग होगा। जैसे दस मन बोझ उठाने वाले पर लोभवश २० मन भार देकर जीवन को ही समाप्त कर देना है। कार्य का चुनाव और पूर्व की तैयारी सर्व कामों की सफलता मे सफल साधन है। दृढ़ इच्छा शक्ति-सम्पन्न पुरुष ही उपर्युक्त नीति-विधि को सफल कार्य रूप दे सकता है। जहां चाह है, वहीं राह भी है। सफलता के इच्छुक का कर्त्तव्य है कि अपनी योग्यता तथा अपनी रुचि-प्रवृत्ति के अनुसार व्यवसाय का चुनाव कर, बड़ी दक्षता और सावधानी से हाथ डालें। सावधानी और पूरा प्रयत्न सफलता के अचूक साधन हैं। आत्मविश्वासी पुरुष ही अपना भाग्य-निर्माता है। आत्मविश्वासी जन विवेकवान होते हैं। विवेकपूर्वक पुरुषार्थ द्वारा संसार के नवनिर्माण में सदा सफल योगदान प्राप्त होता है।

– (सम्पादकीय, आर्योदय, १७-१२-१९६५)

वेदाध्ययन का युग कैसा होगा ?

ऋषि दयानन्द मानते थे कि यदि धरती के लोग वेद को अपना लें और उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन बिताने लग जाये तो उनके जीवन से सब प्रकार के दोष दूर हो जाएंगे, सब प्रकार के असत्य और झूठ, सब प्रकार के कपट और छल-छन्द, सब प्रकार के वैर-विद्वेष, कलह और लड़ाई झगड़े, सब प्रकार के लोभ-लालच, लूट-खसोट, चोरी-डाके और सब प्रकार की कुत्सित कामनाएं और वासनाएं परे भाग जाएंगी और वे परम पवित्र बन जाएंगे। सब लोग भाई-भाई की भांति प्रेम से मिलकर रहा करेंगे। सब सुख-दुख में एक-दूसरे की सहायता किया करेंगे। कोई किसी के अधिकारों को हड़पेगा नहीं। संसार से लड़ाईयों और युद्धों की विभीषिका मिट जाएगी। सर्वत्र शान्ति और प्रेम का साम्राज्य छा जाएगा। धरती स्वर्ग बन जाएगी और उस पर रहने वाले लोग देवता बन जाएंगे। सब लोगों के घरों में सुख-समृद्धि और आनन्द की गंगा बहने लगेगी।

एक विशिष्ट पुरुष
श्री मोहनलाल मोहित जी

– डॉ० उषा शर्मा, *(आचार्या–गुरुकुल ब्रह्माश्रम)*

शतायु ब्रह्मवर्चस भी सदा सबको नहीं मिलती
जो दी मोहित को दाता ने, सभी सबको नहीं मिलती।

दिया माता ने आंचल से, प्रभु का प्यार जिनको है।
वही भागी है इस धन का, सभी सबको नहीं मिलती।।

मनस्वी ज्ञानमय जीवन, सदा आत्मा का बल पाया।
जो पाया बुद्धिबल को भी, सभी सबको नहीं मिलती।।

महादानी, महाप्रभुता, महाधन का जो हो स्वामी।
सभी गुण एक मानव में, कभी सबको नहीं मिलती।।

बनाया यज्ञमय जीवन, हवि सा हो समर्पित भी।
रवि और अग्नि की तेजस्, सभी सबको नहीं मिलती।।

शती मधुमास का जीवन, शती सौभाग्य वेलाएं।
भरा अमृत-सा सौरभ भी, कभी सबको नहीं मिलती।।

हमें मिलती रहे छाया, अमिट मोहन के जीवन से।
मिले उपदेश हम सबको, जो सबको है कभी मिलती।।

– लावेनीर, सें प्येर

विद्वानों के बीच यह नियम होना चाहिये कि अपने–अपने ज्ञान और विद्या के अनुसार असत्य का खण्डन कोमल वाणी से करें जिससे कि सब लोग प्रीति से मिलकर सत्य का प्रकाश करें।

श्री मोहन लाल मोहित जी के १००वें जन्म दिवस महोत्सव की भावपूर्ण झलकियां

(१) श्री आचार्य यशपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा बधाई भाषण देते हुए।

(२) आर्य सभा कार्यक्रम मे बधाई देते हुए गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय हरिद्वार के उप कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी। बाये से श्री मोहित जी प्रधानमन्त्री भारतीय उच्चायुक्त एव सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० दवरत्न आर्य।

(३) श्री धर्मपाल आर्य प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली बधाई भाषण देते हुए।

(४) मारिशस गणतन्त्र के प्रधान मन्त्री श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध बधाई देते हुए – यह समारोह आर्य सभा के भवन मे आयोजित किया गया था।

श्री मोहन लाल मोहित जी के १००वें जन्म दिवस महोत्सव की भावपूर्ण झलकियां

(६) श्री राजसिह भल्ला दिल्ली शाल से श्री मोहित जी का सम्मान करते हुए साथ मे बेठे है सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

(८) लावेनियर गाव मे यज्ञ के पश्चात अपना सन्देश देत हुए आर्य नेता श्री माहनलाल जी मोहित।

(५) सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य सभा की ओर से शाल श्रीफल व माला से श्री मोहित का सम्मान करते हुए। पीछे खडे है उनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ० जगदीश मोहित।

(७) प्रधानमन्त्री श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध उपहार भट करत हुए।

(६) आर्यसभा द्वारा आयोजित जन्म दिवस बधाई समारोह बाये से श्री मोहनलाल जी मोहित प्रधान मन्त्री श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री विजय कुमार सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य पूज्य स्वामी सत्यम जी एव डॉ० उदय नारायण गगू। श्री सत्यदेव प्रीतम सम्बोधित करते हुए।

(११) First Day Cover का विमोचन करते हुए पूजनीय स्वामी सत्यम जी।

(१०) लावेनियर गाव म सम्पन्न यज्ञ मे श्री राजेन्द्र मोहित यजमान के रूप मे सपत्नीक उपस्थित। कुर्सी पर बैठ है श्री मोहनलाल जी माहित।

(१२) अय सभा क समारोह म उपस्थित बाय स श्री राम भरोस जी (दक्षिण अफ्रीका श्री माहित जी एव डा जगदीश माहित।

श्री मोहन लाल मोहित जी के १००वें जन्म दिवस महोत्सव की भावपूर्ण झलकियां

(१३) मच पर श्री मोहित जी, श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध, श्री विजय कुमार कै० देवरत्न आर्य।

(१४) आर्य सभा मारिशस मे बधाई समारोह से पूर्व स्वामी सत्यम जी यज्ञ करात हुए।

(१५) आर्य सभा पोर्ट लुईस मारिशस का भवन।

(१६) आर्य सभा के कार्यक्रम मे उपस्थित जन समुदाय।

श्री मोहनलाल मोहित संघर्ष से उत्कर्ष तक

– डॉ० बीरसेन जागासिह

बहुप्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व

२२ सितम्बर २००२ को आर्य-रत्न श्री मोहनलाल मोहित के जन्म की एक सदी पूरी हो गयी है। ससार भर के आर्य समाजियो म अपने साथ साथ मारिशस राष्ट्र का नाम प्रसिद्धि

मोहनलाल मोहित जी पुत्रों - जगदीश, रेजेन्द्र एवं सुभाष के साथ।

के ऊचे शिखर पर पहुचाने वाले श्री मोहनलाल मोहित अपने कर्मो के कारण अमर हो गए है। उनके बहुप्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व को देखने पर उसका हरेक हिस्सा अश होते भी पूर्णता लिए हुआ मिलता है। चाहे सरस्वती-पुत्र या लक्ष्मी-पुत्र हो चाहे किसान या व्यवसायिक हो आर्य-नेता या हिन्दू नेता हो आदर्श गृहस्थ या सामाजिक जीवन हो सम्पादक या इतिहासकार हो – मोहित जी ने पूरी समग्रता के साथ अपने कर्त्तव्यो का पालन किया। जिस भी कार्य को प्रारम्भ किया उसे पूरे विश्वास और पूरी निष्ठा के साथ निर्वाह किया और गति दी। वे तन-मन-धन के साथ सेवा और परोपकार करते रहे है। जहा अन्यो ने आर्य समाज के लिए तन-मन से सेवा की वही उन्होने धन का भी सर्वोचित सदुपयोग भी किया है। उनके व्यक्तित्व का सर्वोत्तम पक्ष यह है कि उनकी कथनी और करनी मे कोई अन्तर नही होता है। मन-वचन कर्म से समर्पित होने के कारण वे जहा भी रहे प्रकाश और सुगन्ध फैलाते रहे अपने आस-पास के वातावरण को प्रभावित करते रहे और लोगो के बीच स्वानुभूत ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य-समाज का सन्देश फैलाते रहे है।

वंश वृक्ष

मोहनलाल मोहित जी के प्रपितामह का नाम बुलाकी था। उनके दो पुत्र हुए दुखुनी और सुगन मोहित। सुगन मोहित १८६८ मे बिहार के आरा जिले के देव गाव से गिरमिटिए के रूप मे सपत्नीक मारिशस आए थे। उनकी सात सतान थी उगर मोहाबीर रामावतार पिजाधर बसमन राजवन्त और राधा। सुगन मोहित की तीसरी सतान रामावतार मोहित का जन्म १७.१२.१८७५ मे हुआ था। उनका विवाह भागवती देवी के साथ हुआ था। रामावतार और भागवती के नौ बच्चे हुए। उन नवरत्नो मे मोहनलाल मोहित पहले पुत्र है। श्री मोहनलाल ने वशानुक्रम से अर्जित पैतृक यश को अपने कर्त्तव्यो से अधिक बढाया और अपूर्व मान-सम्मान पाया। १९२६ मे मोहनलाल जी के कुमारी जसवन्ती रामधनी से विवाहोपरान्त तीन पुत्र चार पुत्रिया एव अठारह नाती-पोते हुए है। मोहित परिवार के

नाम और यश को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने वाले श्री मोहनलाल ने अपनी मातृभूमि मोरिशस का भी नाम रोशन किया है। आज उनकी पांचवी संतान सुभाषचन्द्र का देहान्त हो गया है। शेष बच्चे जीवित है – डॉ० जगदीशचन्द्र, राजेन्द्रचन्द्र, पद्मावती, यशवन्ती, सरस्वती एवं भगवन्ती।

हिन्दी के लेखक-प्रचारक

श्री मोहनलाल मोहित को अपने पूर्वजों की भाषा भोजपुरी पर अधिकार तो है ही, साथ–साथ उनका हिन्दी का ज्ञान साधारण नहीं है। मोरिशस में आर्यसमाज के मंच से उन्होंने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में योगदान किया है। आर्यसभा के प्रधान के रूप में उनके भाषाण हिन्दी में हुआ करते थे। अपनी शुद्ध हिन्दी से वे श्रोताओं को प्रभावित और आकर्षित करते रहे हैं। विशेष रूप से आर्योदय में प्रकाशित उनके सम्पादकीय एवं अन्य लेख उल्लेखनीय एवं संग्रहणीय हैं। महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश, ऋषिबोध, विश्व को आर्यसमाज की देन, युग–धर्म की मांग, संकल्प शक्ति, परिश्रम ही सफलता का साधन है, पावन प्रेम ही जीवन है, दिवाली और दयानन्द, कर्मयोगी श्रद्धानन्दजी, स्थानीय आर्यसमाज का हिन्दी प्रचार में योगदान आदि गम्भीर विषयों पर वे लिखते रहे। ध
र्म–संस्कृति–भाषा की उन्नति को ध्यान में रखकर लिखित इन लेखों एवं निबन्धों को श्री मोहनलाल मोहित ने चाहे प्रत्यक्ष रूप से साहित्य सर्जना को ध्यान में रखकर नहीं लिखा परन्तु ये उच्च कोटि के साहित्यिक लेख और निबन्ध
ा हैं। अब समय आ गया है कि धूल में सने ऐसे साहित्यिक हीरेमोतियों को पोंछ–साफ करके मोरिशस में पढाए जा रहे बी०ए० और एम०ए० हिन्दी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाए। विषय के ज्ञाता परम्परा से आ रहे विषयों में स्थानीय साहित्य को स्थान देकर मोरिशस के साहित्य और साहित्यकारों को प्रकाश में ला सकते हैं।

आर्योदय के सम्पादक

१९५० से छप रहे 'आर्योदय' का सम्पादन उन्होंने १९६२ से सम्भालना शुरू किया। स्मरण रहे कि आर्य परोपकारिणी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा के एकीकरण के साथ–साथ 'आर्यवीर' एवं 'जागृति' दोनों पत्रों को १९५० ही में 'आर्योदय' नाम देकर प्रकाशित किया जाने लगा था। उस समय पं० आत्माराम 'आर्योदय' के सम्पादक थे। उनकी मृत्यु १९५५ में हो जाने के पश्चात् सर्वश्री लक्ष्मी जोधन, दीपनारायण पदारथ एवं अन्य आर्यसमाजियों ने सम्पादन–कार्य सम्भाला। भारी आर्थिक हानि सहकर भी आर्यसभा ने 'आर्योदय' का प्रकाशन जारी रखा है। श्री मोहनलाल मोहित के लेखों और सम्पादकियों की चर्चा पहले ही हो चुकी है। १९६२ के बाद 'आर्योदय' में स्थानीय एवं भारतीय विद्वानों की अनेक रचनाएं छपती रही हैं। अनेक विशेषांक निकले हैं। जब–तब–कुछ साहित्यिक लेख भी छपते रहे है। 'आर्योदय' में अंग्रेजी–फ्रेंच में भी लेख छपने लगे। श्री मोहनलाल मोहित ने १९६७ में सभा की अध्यक्षता सम्भाली थी। परन्तु उस तिथि से बहुत पहले से उनकी रचनाएं 'आर्यवीर' और 'आर्यवीर–जागृति' में छपती रही। भारत में प्रकाशित 'सार्वदेशिक', 'आर्यजगत' एवं 'परोपकारी' आदि पत्रिकाओं में इनके लेख छपते रहे। इन्होंने १९६४ से १९६७ तक 'दीपावली सन्देश, वार्षिक पत्रिका का सम्पादन किया था। 'सत्संग–सुमन' का प्रकाशन १९६७ में और 'आर्यसभा मोरिशस का इतिहास' १९७३ में प्रकाशित हुआ था ! अतः मोहित जी विद्वान् लेखक एवं सफल सम्पादक भी है।

सनातनी से आर्यसमाजी

१९१० में स्थापित 'आर्यसमाज' का प्रसार धीरे-धीरे देश भर में हो रहा था। श्री मोहनललाल का परिवार आर्यसमाजी नहीं था। उनके पिता और पूरा परिवार सनातनी थे। उनके घर पूजा और रामायण का पाठ हुआ करते थे। किशोर

मोहनलाल को पं० काशीनाथ किष्टो ने अपने विद्वता पूर्ण भाषाणों से बहुत प्रभावित किया था। पण्डित काशीनाथ की प्रेरणा और प्रभाव से किशोर मोहनलाल ने 'सत्यार्थप्रकाश' का अध्ययन और वेद-मन्त्रों का उच्चारण करना प्रारम्भ किया। ला लोरा कोठी में तब शक्कर का कारखाना था। वहां की बस्ती बडी थी। वहां लावेनीर से पहले आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। युवक मोहनलाल वहां सत्संग में जाया करते थे। वे अपने दादा और पिता के समान ही उन्नीस वर्ष की आयु से मोंदेजेर बो-ब्वा कोठी में सरदारी करने लगे थे। उन्होंने १६२० में लावेनीर आर्यसमाज की स्थापना की थी। आज उन्हीं के दान से लावेनीर में एक भव्य सभाभवन एवं यज्ञशाला का निर्माण हुआ है। मोंताई लोंग में १६१८ में आयोजित शास्त्रार्थ में आर्य समाजियों की जीत हुई थी परन्तु १६१३ में स्थापित 'आर्य परोपकारिणी सभा' की पत्रिका: 'मोरिशस आर्य पत्रिका' और बाद में, १६२७ में स्थापित 'आर्य प्रतिनिधि सभा' और उनकी पत्रिका 'आर्यवीर' के बीच बहुत दिनों तक वाग्युद्ध चलता रहा। एक तरफ पं० वेणीमाधव सतीराम थे तो दूसरी ओर पं० काशीनाथ। एक ने दूसरे को 'आर्यपीर' कहा तो दूसरे ने पहले को 'आर्य पतुरिया' तक कहा ! तात्पर्य यह कि सनातनियों को पराजित करके आर्यसमाजी आपस में लडने लगे थे। और ऐसा १६५० तक चलता रहा। जब दोनों महासभाओं का विलय १६५० में हुआ तब श्री मोहनलाल मोहित विदेश-यात्रा पर थे परन्तु उन्होंने प्रतिनिधि सभा की बागडोर १६५० से पहले तक थामे रखी थी। उन्होंने आपसी खण्डन-मण्डन भी नहीं किया। उन्होंने आर्यसभा का अध्यक्ष पद १६६७ से १६७६ तक सम्भाला। और आज वे 'आर्यनेता' उपाधि के साथ प्रसिद्ध पाकर अमर [illegible]ए हैं।

सहृदय दानवीर

एक और विशेष गुण उनमें यह भी है कि वे कट्टर आर्यसमाजी तो हैं ही परन्तु सनातन धर्मी हिन्दुओं में भी उनका बराबर उठना-बैठना हैं। बो शाँ के लालुसी राय निवासी उनके परम मित्र श्री रामनारायण राय बो शाँ के उमाकान्त मन्दिर के सर्वेसर्वो थे। मोहित जी ने राय जी की सेवाओं से प्रभावित होकर उनपर 'आर्योदय' का एक विशेषांक, सम्भवतः १६७२ में निकाला था। वे मन-वचन-कर्म से आर्यसभा के माध्यम से महर्षि दयानन्द के विचारों के प्रचारक हैं। वे हिन्दी-हिन्दुत्व-आर्यसमाज के प्रसारक-हितैषी हैं। इन सभी सद्गुणों से अलग और ऊपर वे एक सहृदय मनुष्य भी है। उनके सम्पर्क में आने और रहने वाले लोग इस तथ्य से परिचित हैं कि उनमें अन्यान्य गुणों से मनुष्यता अधिक है। यही कारण है कि उनके द्वारा से आज तक कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा। लोगों की कठिनाइयों से द्रवित होकर सहायता करते समय वे नहीं देखते और न ही पूछते कि दुखी व्यक्ति आर्यसमाजी या सनातनी है, हिन्दी भाषी है या तमिल भाषी, हिन्दू है, मुसलमान है या कृश्चियन ! वे सच्चे हृदय और मुक्त हाथों से याचक को दान दे देते हैं। हिन्दी पाठशालाओं के वार्षिकोत्सवों में पहुंचकर वे अर्थ-दान तो देते ही हैं, साथ-साथ विचारों का दान भी हिन्दी भाषा में भाषण देकर करते हैं। अपने गांव लावेनीर में आर्यसमाज के लिए जमीन दान करके उस पर 'लेवेनीर आर्य मन्दिर' का निर्माण भी करवाया है। डॉ० उषा शर्मा वहां अंशकालिक गुरुकुल चला रही हैं। 'सार्वदेशिक' एवं 'अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ' को क्रमशः एक लाख और दस लाख के दान किए हैं। बम्बई के 'वेदनिधि' को पचास लाख, ' मोहित संस्थान लावेनीर' को पचीस लाख, मोरिशस भ४ में भवन एवं भूमि के लिए तीस लाख, 'महर्षि दयानन्द इस्टीच्यूट', वैदिक धर्म प्रचारांर्थ,

आर्य-साहित्य प्रकाशनार्थ, गुरुकुल, डी०ए०वी० तथा अन्य संस्थाओं के लिए भी लाखों का दान किया हैं मोरिशस, नई दिल्ली और बम्बई में यदि उनके दान के द्रव्य का सोद्देश्य और समुचित सदुपयोग किया जाएगा तो महर्षि दयानन्द के सपने का भारत साकार हो जाएगा। भारतेतर देशों में बसे भारतीयों वंशुजो का कल्याण और उद्धार हुए बिना नहीं रह सकता। क्या ही अच्छा होता यदि श्री मोहनलाल मोहित के स्वनामधन्य सुपुत्र राजेन्द्रचन्द्र मोहित के अलावा 'आर्यसभा मोरिशस' के कर्मठ सज्जन महामन्त्री डॉ० उदयनारायण गंगू एवं प्रधान जी के संरक्षण में एक न्यास बनाया जाता है और इन तीनों महोदयों को स्थायी न्यासी बनाकर मोहनलाल मोहित जी द्वारा किए गए दानों का अनुवर्तन किया जाता। देखा जाता कि धन-राशि का सदुपयोग हो रहा है या नहीं ! तदुपरान्त सुझाव और परापर्श भी दिया जाता ! ऐसा होना सम्भव है।

उपसंहार

श्री मोहनलाल मोहित को 'आर्य-भूषण' कहें, चाहे 'आर्यरत्न' उपाधि दें, ओ०बी०ई० पदवीं दें, या मान-पत्र एवं अभिनन्दन पत्रम् से सम्मानित करें, 'आर्य-नेता' कहें या 'पण्डित' कहें परन्तु उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सम्पूर्णता को मात्र उन पदवियों, उपाधियों एवं मान-पत्रों से बांधा नहीं जा सकता। उनके हिन्दी-प्रेम, उनकी धर्मपरायणता, उनके सफल सम्पादक व्यक्तित्व, उनकी दानवीरता, आर्यसमाज के प्रचारक-प्रसारक, आदर्श पति-पिता-नाना-दादा के रूप में उनको कैसे भुलाया जा सकता है। हर कोण से देखने पर हरेक अंश पूर्ण और सुन्दर लगता है, कालेदोस्कोप की तरह। और उनकी सहृदयता भी स्मरणीय है । और सर्वोपरि है उनकी मानवता। श्री मोहनलाल मोहित एक वास्तविक युग-पुरुष भी हैं। समाज, गांव, जिले देश और आर्यसमाज के इतिहास में उनके पद्चिन्ह अक्षुण्ण हैं और रहेंगे। उनके द्वारा किए गए समस्त उपकारों के लिए हम मोरिशस के सभी आर्यवंशज हिन्दू आभारी हैं। गजलकार दुष्यन्त कुमार के शब्दों में उनके बारे में कह सकते हैं ·

चट्टानों पर खड़ा हुआ तो
छाप रह गई पांवों की
सोचो कितना बोझा उठाकर
मैं इन राहों से गुजरा !

श्री मोहनलाल मोहित जी आप अपनी जन्म-शती के अवसर पर हमारी समस्त शुभ एवं मंगल कामनाएं स्वीकार करें। आप स्वस्थ एवं सानन्द रहकर और अधिक बसंत देखें और अपनी कृपा और आशीर्वाद से हम बच्चों का मार्ग दर्शन और कल्याण करें – शतम् जीवेम् शरद।

"आयुश्मानभवः"।

परमात्मा किसको और कैसे वेद ज्ञान देता है ?

परमात्मा तो सर्वव्यापक है ही, वह मनुष्यों की आत्मा में भी व्यापक हैं। जिन मनुष्यों को परमात्मा ने ज्ञान देना होता है उनकी आत्मा में ज्ञान का प्रकाश परमात्मा कर देते हैं, क्योंकि वे उनकी आत्मा में रमें हुए हैं। इसी प्रक्रिया से परमात्मा ने आदिम ऋषियों को वेद का ज्ञान दिया। इस सन्दर्भ में योग-समाधि का विशेष महत्व है।

मोहनलाल मोहित एकशती का व्यक्तित्व

– रामदेव धुरंधर

हमारे देश से धर्म प्रचारकों का साया उठता जा रहा है और आज अंगुलियों में गिनें तो उनकी संख्या लगभग नगण्य लगे। विशेषकर एक शती जीने वाले किसी विशेष धर्म प्रचारक को अपने सामने जीवित देखना चाहें तो निराशा और भी गहराएगी। सम्भवतः श्री मोहनलाल मोहित एक शती जीने वाले एक विशेष व्यक्ति के रूप में नजर आते हैं और धर्म प्रचारक के रूप में तो उनका इतिहास हर दृष्टि से विस्तृत ही रहा है। वे धर्म को अपनी धमनियों में जीते रहे हैं और दूसरों को भी इस बात के लिए प्रेरित करते रहे कि धर्म को अपने जीवन का हिस्सा बनाने के प्रयत्न में लगे रहें।

२२ सितम्बर, १८०२ को मोरिशस की जमीन पर जन्म लेने वाले मोहनलाल मोहित के बारे में जब हम सोचें तो उस समय के इतिहास के बारे में भी सोचने की भावना बनने लगेगी। आज की अपनी छोटी–सी उम्र में हम उस इतिहास के बारे में केवल सोच सकते हैं, जब कि मोहनलाल मोहित जी ने उस इतिहास को अपने बचपन का मित्र बनाया था। वे गांव के थे और गांवों की हालत शोचनीय थी। आने–जाने के लिए पक्की सड़कें न के बराबर थीं। रात का अन्धेरा पाटने के लिए मद्धिम लौ में जलने वाले चिराग भर हुआ करते थे। चांद तारों और सूर्य को टकटकी लगाए देखना तब के लोगों को जरूर अच्छा लगता होगा। घरों में कलैण्डर होते होगे, जानकारी पाते होगे और मुर्गों की बांग से सुबह का परिचय पाते होंगे। सूर्य उगने पर जीवन के संघर्ष में गहरे डूबने की उमंग पैदा होती होगी और सूर्यास्त होने पर गणित बनता होगा कि आज का जीवन–संघर्ष यहीं पूरा हुआ।

श्री मोहनलाल मोहित ने उस गुमनाम से इतिहास में अपने बचपन का नाम कुछ अलग ही लिखा और समय ज्यों-ज्यों आगे बढता गया उन्होंने बचपन के उस नये नाम को और विस्तार दिया। उन्हें हिन्दी से अगाध प्रेम हो चला था। उसी दिन प्रेम ने उन्हें दूसरे बच्चों की अपेक्षा विशेष बनाया और कालांतर में वे जवानों के बीच हिन्दी की अगवानी करने में समर्थ बन निकले। वे देश के किसी भी कोने के किसी हिन्दी विद्वान के बारे में ज्योंही सुनते थे कि उनसे मिलने के लिए हृदय से आवाज आने लगती थी। जाना कठिन ही होता था, लेकिन वे जाते जरूर थे। भारत से विद्वानों के आने पर उनकी मनोदशा ऐसी ही होती थीं। उन्होंने कहा कि हिन्दी पढ़ने के लिए उन्हें योजनाबद्ध तरीके से अवसर कभी नहीं मिला। उन्होंने रात्रिकालीन हिन्दी बैठकाओं में और ऐसे ही घूम–घूम कर हिन्दी के विद्वानों के सन्सर्ग में पहुंच कर हिन्दी सीखी। कबीर ने सत्संग की महिमा बतायी है, भ्रमण से ज्ञान हासिल करने का मर्म समझाया है। मैंने श्री मोहनलाल मोहित के बारे में लिखा हुआ बहुत कुछ पढ़ा है, लेकिन कहीं ऐसा पढने को नहीं मिला कि उन्होंने कबीर के घुमंतू स्वभाव से एक मेक थे। हो सकता है उन्होंने अनजाने में कबीर का यह स्वभाव अपनाया हो। इससे आज इतना अर्थ तो निकाल ही सकते हैं कि चाहे वह कबीर हो या मोहनलाल मोहित, संत की भावना जब हृदय में पैदा होती है तो स्वभाव ऐसे ही बन आते हैं, या तो संतों के पास जाएं या संत की अपनी उज्ज्वल महिमा से दूसरों को अपने पास आने के लिए प्रेरित करें।

श्री मोहनलाल मोहित के बचपन के मित्र, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि जैसे भी रहे हों, लेकिन उन्हें मोरिशस ने हिन्दी प्रेमी और आर्य पुरुष के रूप में विशेष रूप से जाना है। उन्होंने कहा है कि हिन्दी ने ही उन्हें आर्य सिद्धान्त की ओर उन्मुख किया था और वे आजीवन इसी सिद्धान्त में आबद्ध रहने के लिए स्वयं से प्रतिज्ञा लेते रहे। उनकी उस प्रतिज्ञा को इसलिए दाद देना आवश्यक है, क्योंकि एक शती की लम्बी उम्र में वे उसी एक प्रतिज्ञा के बने रहे। मात्र राजनेता ही दल नहीं बदलते, धर्म–पुरुष होने का दावा करने वाले भी अकसर इस खेमे से नाखुश होकर उस खेमे में चले जाते हैं। धर्म के मामले में ऐसे कितने ही बहुरूपियों का हमारे देश में पर्दाफाश होता आया है, लेकिन मोहनलाल मोहित ऐसे कलंक से तब भी मुक्त थे और आज भी मुक्त है।

मोहित जी ने आर्य धर्म के प्रचार में अपना जीवन समर्पित किया तो जाहिर है कि कुछ ऐसी विशेष बातें होगी जिनके कारण वे इतने गहरे और अटूट आर्यवादी बने। उन्होंने गांव में जन्म लिया था और यह बात किसी से छिपी नहीं है कि धर्म के मामले में अंधेर मचाने वाले विशेषकर गांवों को ही सोझिया की गाय बनाते हैं। धर्म की झूठी नाव चला कर भोले–भाले लोगों को ठग लें, दिखावे के कर्मकांड का चक्कर चलाकर लोगों को लूट लें। श्री मोहनलाल मोहित ने ऐसे निकृष्ट कर्मकाण्ड को जाना–परखा होगा और जब आर्य–धर्म का मर्म उनकी समझ में आया हो तो बिना कोई आना–कानी लिए इस धर्म के समर्थ सिपाही बन गए होंगे। परन्तु जब अन्धेर मचाने वालों का बोलबाला था तो जाहिर है आर्य का झण्डा हाथ में थाम कर चलना सहज नहीं होता। उन दिनों का कर्मकाण्ड तो यहां तक मानता था कि जो आर्य बना, वह जाति से च्युत हुआ। मोहित जी ने उस शुरूआती आर्य–धर्म के प्रचार के क्षणों में ऐसी कठिनाइयों का सामना किया था लेकिन कठिनाइयों के आगे वे झुके नहीं थे। उन के उस अदम्य साहस का ही परिणाम था कि बहुत जल्द आर्य–धर्म के प्रचारक के रूप में उनकी पहचान बन गयी थी। देश के चहुंदिशाओं में उनका नाम गूंजना शुरू हुआ और आर्य सिद्धान्त के प्रचार से भारतीय मन के लोगों का दिमाग विकसित होने लगा। दिखने–दिखाने के कर्मकाण्ड से लोगों ने सिर उठाना शुरू किया और सामाजिक विद्रोह का यह कारवां कभी नहीं ठहरा। कारवां आगे बढता गया और जन–मानस में यह विश्वास टिकता गया कि अगर वास्तविक ज्ञान का परिचय पाना चाहते हैं तो आर्य–धर्म से अपने जीवन की डोर बांधे।

स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम निर्धारित किए है। सभी धर्मो का निचोड, ईश्वर, भक्ति, ज्ञान और मानव धर्म है। श्री मोहनलाल ने इसी में अपना जीवन समर्पित किया। मानव धर्म के अनेक आयाम हो सकते हैं, जिनमें एक परोपकार है। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि अपनी उन्नति मात्र से सन्तुष्ट होना जीवन का सम्पूर्ण लक्ष्य नहीं होता, बल्कि परोपकार के लिए भी सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। मोहनलाल मोहित जी इसी भावना के अनुपम पुरुष प्रमाणित हुए हैं। उन्होंने अपनी लगन और मेहनत से अपनी सम्पति में वृद्धि की, लेकिन उसमें से दान करना भी उन्हें आया। उन्होंने विशेषकर आर्य–धर्म के प्रचार के लिए अपना बहुत सारा धन लगाया। उन्होंने अनेक आर्य संस्थाओं को खुले हाथों रुपये दान किए और अनेक निधियां स्थापित कीं, जिनके व्याज से अनेक गतिविधियां संचालित होती हैं। उन्होंने विद्यार्थियों की पढाई के लिए भी अपने पैसे से छात्रवृत्ति की नींव रखी। भारत में भी दान की उनकी उदारता देखी गयी है। आर्य–धर्म के प्रचार के लिए श्री मोहनलाल मोहित जी को जहां भी भारत में धन लगाने की सलाह दी गयी, उन्होंने मुट्ठियां उदारतापूर्वक खोले ही रखीं।

उदारता और हिन्दी ज्ञान के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष बन जाना शायद एक मोहनलाल मोहित के खाते में ही जाता है। आज तमाम

सुविधाओं के बुते शायद इतनी ख्याति कोई दूसरा हिन्दी प्रेमी नहीं पा सकता, अतः मोहित जी को इस कसौटी का अकेला और अन्तिम हिन्दी प्रेमी कहें तो इसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हमारे देश का एक सत्य यह भी है कि स्वतन्त्रता का अभियान चलाने में हिन्दी का विशेष योगदान रहा था। शहर वालों ने क्रिओली और फ्रेंच भाषा की दुहाई देकर स्वतन्त्रता का विरोध किया था, लेकिन गांवों की परिभाषा इसके विपरीत थी। गांवों में मोरिशस की स्वतन्त्रता को भारत की स्वतन्त्रता से जोड़कर देखने की भावना बनी थी। गांवों में हिन्दी और भारतीय मन का आकाश तो हर दृष्टि से ऊंचा ही था। गांवों की धरती उसी भारतीयता और हिन्दी में हरियाली के गीत गाती थी। स्वतन्त्रता पाने में यही सब काम आया और जो राजनेता कृतघ्न नहीं थे, उन्होंने ऊंची आवाज से कहा कि स्वतन्त्रता का सूत्र यही था और मजबूती से था। मोहनलाल मोहित का हिन्दी प्रेम यहां और भी सार्थक हुआ, क्योंकि स्वतन्त्रता के साथ उस हिन्दी प्रेम का अटूट रिश्ता बन गया था। मोहित जी ने तो हिन्दी के प्रचार के लिए पूरे देश का दौरा किया था, लेकिन उन्हें जरूर किसी ने याद दिलाया होगा कि आपने तो अनजाने में भावी स्वतन्त्रता के सपने को बुलन्दी पर पहुंचाने का काम किया है। सम्भवतः स्वयं मोहित जी को अपने इस महत कार्य का आभास हुआ भी हो, लेकिन उन्होंने व्यवहार अथवा भाषण में यह दर्प कभी नहीं जताया।

श्री मोहनलाल मोहित जी की 'जीवन-शताब्दी' उनके जीवन और कार्य-निष्ठा को यही पूर्ण विराम नहीं लगाए। हमारी कामना है कि जीवन के दिन उन्हें और मिलें और हमारे आदर्श के रूपमें उनका व्यक्तित्व फूल की तरह खिला रहे।

महर्षि दयानन्द की इच्छा पूर्ण हो ....

"आर्य धर्म की उन्नति हो इसलिये मेरे सदृश बहुत से धर्मोपदेशक अपने इस देश में उत्पन्न होने चाहियें। एक व्यक्ति द्वारा यह कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। फिर भी अपनी बुद्धि और सामर्थ्य के अनुकूल जो दीक्षा मैंने ली है, उसे चलाऊंगा ऐसा संकल्प किया हुआ है। आर्यसमाज की स्थापना सर्वत्र होकर मूर्तिपूजा आदि दुष्ट आचार कहीं न हों, वेद शास्त्र का सत्यार्थ प्रकाशित हो और उसी के अनुकूल आचरण होकर देश की उन्नति हो, ऐसी ही ईश्वर से प्रार्थना है। तुम्हारी सबकी सहायता से अन्तःकरण पूर्वक मेरी वह प्रार्थना सिद्ध होगी, ऐसी पूर्ण आशा हैं। और मैंने जो उपकार करना निश्चित किया है, जहां तक बन सकेगा, आमरण तक करुंगा पुनर्जन्मान्तर में भी।"

श्री मोहनलाल जी मोहित और हिन्दी

– डॉ० उदय नारायण गंगू

सन् १८३४ ई० में भारतीय अप्रवासियों का जब मॉरीशस की धरती पर पदार्पण हुआ, तब यहां पुण्य भूमि भारत ही आकर बस गया। भारतीय श्रमिक अपने प्राचीन ऋषि–महर्षियों की संस्कृति साथ ले आए थे। भिन्न–भिन्न प्रान्त से आने वाले लोग अपने–अपने प्रान्त की भाषाएं बोला करते थे। उनके बीच खड़ी बोली का व्यवहार नहीं होता था। सन् १८९८ ई० में जब इस देश में सत्यार्थ प्रकाश का आगमन हुआ, तब खड़ी बोली की ओर यहां के भोजपुरी भाषियों का ध्यान आकृष्ट हुआ।

सन् १९०१ ई० में युवा बारिस्टर श्री मोहनदास गांधी, सन् १९०७ में मणिलाल मगनलाल डॉक्टर और सन् १९१२ ई० में स्वामी मंगलनन्द पुरी अपनी चरण–धूलि से इस धरती को पवित्र कर गए थे। इन्हीं नर–पुंगवों ने यहां के भारतीय मूल के लोगों के कर्ण–कुहरों में अपने भाषणों से पहले–पहल खड़ी बोली को ध्वनित किया था। १५ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में जब डॉ० भारद्वाज अपनी पत्नी सुमंगली देवी के साथ पधारे, तब खड़ी बोली हिन्दी की पढाई होने लगी। उस समय श्री मोहनलाल जी मोहित ग्यारह वर्ष के थे। १९१४ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी यहां आए और १९१६ में पण्डित काशीनाथ जी भारत से उच्च शिक्षा प्राप्त करके लौटे। इन महापुरुषों ने मॉरीशस में खड़ी बोली का खूब प्रचार–प्रसार किया। श्री मोहनलाल जी इन सब के शिष्य बने और अपने हिन्दी–ज्ञान को बढ़ाते रहे। सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से उन्होंने धार्मिक ज्ञान के साथ–साथ हिन्दी का प्रकाश प्राप्त किया। वे किशोरावस्था से ही अपने निवास स्थान के आस–पास के गांवों के युवकों को हिन्दी पढ़ाने लगे।

स्मरण रहे कि श्री मोहनलाल जी ने पण्डित उमाशंकर गिरजानन्द, श्री जयनारायण राय और पण्डित वासुदेव विष्णुदयाल की भांति किसी विश्वविद्यालय में जाकर हिन्दी नहीं सीखी थी। वे तो केवल आर्यसमाज की गोद में बैठकर अनौपचारिक रूप से हिन्दी–ज्ञान प्राप्त करते रहे। युवावस्था तक पहुंचते–पहुंचते उन्होंने खड़ी बोली पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया। वे भारतीय पत्र–पत्रिकाओं के नियमित ग्राहक बन गए। आज जब उनकी जन्मशती मनाई जा रही है, तब भी वे दर्जनों पत्र–पत्रिकाएं पढ़ते दिखाई देते हैं।

मोहनलाल जी मोहित ने स्थानीय पत्रों पर उस समय लिखना शुरू किया, जब यहां हिन्दी के इने–गिने विद्वान् थे। भाव–भाषा की दृष्टि से उनके लेखों में दम होता था। इस देश की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में उनके लिखे सैकड़ों लेख बिखरे पड़े हैं।

'आर्य प्रतिनिधि सभा' के मन्त्री होने के नाते वे अकसर 'आर्यवीर' में लिखा करते थे। उन लेखों के अवलोकन से यह विदित होता है कि उनका शब्द–भण्डार समृद्ध था। उदाहरण स्वरूप २ फरवरी सन् १९४० में प्रकाशित उनका एक लेख द्रष्टव्य है :–

आर्यसमाजों की सेवा में

लेखक – श्री मोहनलाल मोहित

मन्त्री – आर्य प्रतिनिधि सभा

'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।'

– ऋषि दयानन्द

मोरिशस के आर्य भ्राता गण ! उपरोक्त ऋषि–वाक्य में कितनी उच्चतम महानता है, उसपर एक बार विशुद्ध मन से गम्भीरता पूर्वक विचारने से ही अनुभव होगा।

सब काम वा प्रत्येक काम मन, वचन और काया से किए जाते हैं। अतः प्रत्येक कर्म प्रथम मन से, पुनः वचन से और अन्तिम स्थूल, कर्म रूप तन से प्रत्यक्ष होता है। सर्वप्रथम हमारी मानसिकता संकल्प-विकल्प क्रिया की शुद्धि चाहिए। एवं चिन्तन शैली सर्वथा शुद्ध और सर्वहितकारी हो और उन्हीं विचारों को हृदय में स्थान देवें, जिनको निकट भविष्य में कार्य रूप में परिणत करना हो, क्रियात्मक कलेवर देना हो। जो जन अपने संकल्पों तथा विकल्पों का ताना-बाना तो बहुतेरा बुनते रहते हैं, परन्तु कर्म में लाकर उनका वस्त्र नहीं बुनते, शुद्ध विचार को क्रिया रूप में नहीं लाते, उनका मस्तिष्क निर्बल होता जाता है। कोरे चिन्तनशील की स्मरणशक्ति शिथिल पड़ जाती है।

दूसरा है – वचन-विचार। मनु महाराज ने कहा है – 'सारे प्रयोजन वाणी में पिरोये हुए हैं।' अर्थात् सारे संसार का व्यापार-विनिमय, लेन-देन का सर्व सन्धि-सम्बन्ध वचन-रज्जु में बंधा हुआ है। वचन में सत्यता और हित भाव होना अत्यावश्यक है। ये दो प्रधान गुण हैं। साथ ही मीठे-मधुर भद्र-भाव से भरपूर हो। ऐसे जनहितकारी एवं सद्साहस वर्द्धक वचन सदा और सर्वथा लोक-लाभकारी है। ऐसे वचन वाले पुरुष प्रायः परोपकारी होते हैं।

तीसरा है – कायिक कर्म। इस में दान देना, स्वच्छ, शुद्ध रहना और कर्त्तव्य पालन में साहस सम्पन्न हो वीर, धीर, निर्भय हो, कठिन से भी कठिन काम में कूद पढ़ना, शीतोष्ण, सुख-दुखादि से न घबराकर, निरालस हो वीर भाव से कार्य सफल करना उद्योगशील पुरुष का लक्षण है। उपरोक्त त्रयगुण सम्पन्न पुरुष ही सभा, समाज और देश, जाति का रक्षक अधिकारी नेता हो सकते हैं। समाज और सभा की बागडोर उन्हीं के कर-कमल में देना चाहिए। तभी सभा तथा जाति उन्नतिशील होकर विश्व विजयी हो सकती है और निम्न वर्ग के पुरुष से सदा सावधान रहना चाहिए –

'मन मलिन मुख सुन्दर कैसे,
कनक-घड़ा विष भरा जैसे।'

जिनका मलिन मन और सज्जनों केप्रति अनिष्ट चिन्तन करने वाले और वचन मधुर, परन्तु छलपूर्ण और पर गुण में भी दोष-दृष्टि रखने वाले धूर्त दल-पोषक अपने दुष्ट दल केगुण-गायक (पिपेर) और कर्म-क्षेत्र में आने से कांपने वाले अपनी कोमल काया को काम से लुकाने वाले कामचोर (मरुआ) जो केवल बात बनाने और बाहरी भेष बदल कर नकली रेखा देखाने वाले हैं, जैसे कहा है –

चिकनी चुपडी भेष धरे, नाम धरे जस शीतल।
ऊपर सोना जैसे, भीतर कोरा पीतल।।

पाठक गण !

यदि उपयुक्त भाषा पर दृष्टि डाली जाए तो अनेक विशेषताएं दृष्टिगोचर होंगी। भाषा अलंकृत है। अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि का सुन्दर प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दावली से भाषा को सजाया गया है। यह और बात है कि यत्र-तत्र कुछेक व्याकरणिक अशुद्धियां नजर आती हैं।

वयोवृद्ध मोहनलाल मोहित जी ने हिन्दी की जो बहुमूल्य सेवा की, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। यदि उनके लेखों का संग्रह किया जाए तो हमारे सम्मुख एक वृहदाकार ग्रन्थ उपस्थित हो जाएगा।

लेखन के साथ-साथ श्री मोहित जी ने भाषण के द्वारा भी हिन्दी का खूब प्रचार-प्रसार किया। इस देश में शायद ही कोई ऐसा गांव होगा, जहां उनके अनेकों बार भाषण न हुए हों। वे अपने भाषणों द्वारा सभी को हिन्दी बोलने, पढने और लिखने की प्रेरणा देते रहे हैं।

हिन्दी जगत् श्री मोहनलाल जी मोहित की हिन्दी सेवा से गौरवान्वित है। इस देश के हिन्दी भाषा के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। अवश्यकता इस बात की है कि नई पीढ़ी उनके पद-चिन्हों का अनुसरण करें।

सौवें बसन्त का अभिषेक

जब जीवन चरैवेति–चरैवेति सिद्धान्त पर नित्य मानव सेवा के प्रति समर्पित हो जाये तो ऐसे महान उद्देश्य की महत्ता स्वयमेव सर्वव्यापी एवं सर्वकालिक हो जाती है। कुछ ऐसे भी महान् पुरुष होते हैं जो बिजली की तरह समाज में आते हैं और अपनी रोशनी से मानव–समुदाय को प्रतिभासित कर विलीन हो जाते हैं। परन्तु कम ही ऐसे मानव होते हैं, जो पृथ्वी की भांति समस्त भारत को उठाने की सामर्थ्य रखते हैं तथा निरन्तर नदी की धारा के समान अपने जीवन–पथ पर अग्रसर होते हैं। ऐसे बहुगुण सम्पन्न मानव और कोई नहीं श्री मोहनलाल मोहित ही हो सकते हैं।

उनका स्मरण होते ही 'ऐतरेय उपनिषद्' का एक सन्देश मुझे बराबर याद आता है –

आस्तेभग आसीनस्य उर्ध्वस्तिठति तिष्ठतः।
शेते निषधमानस्य चराति चरतो भगः।।

श्री मोहित जी के प्रसंग में यह बात सोलहों आने सही उतरती है वे न तो कभी बैठे हैं और न कभी चलने से थके हैं। न कभी बोलने से हिचके हैं और न कभी कोई कदम उठाने की सोचकर ठिठके हैं। ऐसे महान् तपस्वी, कर्मयोगी का सौवा जन्म–दिन हम समस्त मोरिशसवासियों के लिए सुखद एवं आत्मगौरव का शुभावसर है।

जीवन की इस बेला में जबकि वे सौवां वर्ष पूरा कर रहे हैं, उनके व्यक्तित्व में कहीं भी पतझड़ का आभास नहीं होता, सदा बहार बसन्त ही बसन्त देखने में आता है। सौरभमय बसन्त ! सुरभियुक्त बसन्त !! कुसुमभार से पल्लवित गुंजरित बसन्त !!!

मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि मुझे ऐसे महान् पुरुष का सान्निध्य एवं अपार स्नेह मिला है। उनसे हमारे सम्बन्धों की जो अन्तरंगता रही है उसमें मेरे देखने के अनुसार कहीं कोई औपचारिकता की जगह ही नहीं। वे मिलनसार, व्यवहारकुशल, मृदुभाषी और सच्चे अर्थों में ज्ञानी पुरुष हैं। वेदादि अपौरुषेय धर्मग्रन्थों का अध्ययन आज भी वे बड़े चाव से करते हैं।

मॉरिशस–आर्य समाज के वे स्तम्भ हैं। आर्यसमाज के क्षेत्र में उनके दिखाए मार्गदर्शन के अतिरिक्त आज भी कई अवसरों पर मुझे उनका सहयोग एवं स्नेह मिलता आ रहा है। मॉरिशस में आज आर्यसमाज की अमूल्य उपलब्धियों को मात्र रेखांकित कर देना न्यायसंगत नहीं होगा। आर्यसमाज के उदात्त प्रयासों से ही यहां का जंगल सुरम्य धरती खण्ड हो पाया है। मोहित जी निश्चित रूप से इस सुरम्यता के नियन्ता के रूप में आज भी कर्मठता से समाज के पौधों की एक–एक पत्ती से अपना सम्बन्ध बनाए रखने में ही अपने जीवन का सार मानते हैं।

अपने आप में सतत् डूबे और क्षण–क्षण को निर्माणकारी सिद्ध करते हुए बेलौस जिन्दगी जीने की कला कोई उनसे सीखे। उनकी चुस्त–दुरस्त कार्य–शैली और कर्मठता को अनुकरण कर कोई व्यक्ति धन्य हो सकता है। वे सच्चे अर्थों में महान् कार्यकर्ता हैं और समाज के उद्धार एवं नेतृत्व के लिए सच पूछिए तो नेता की आवश्यकता नहीं, कार्यकर्ता की आवश्यकता है। समाज में जहां इस तरह का एक भी कार्यकर्ता हो जाए, वहां नेता की चकाचौंध कार्यकर्ता की कर्मठता में खो जाती है। जीवन भर उन्होंने सा–ग्राह भूमिका बाकायदा निभाई है। हाल हीं में उनकी भारत–यात्रा इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

उनके व्यक्तित्व में एक साथ कर्त्तव्य, वकृत्व एवं नेतृत्व सभी गुण विद्यमान हैं। समाज की

चहुंमुखी विकास के लिए जहां उन्होंने आर्य सभा के प्रधान का पद तथा आर्योदय के प्रधान सम्पादक के पद की जिम्मेवारी को बखूबी निभाया है वहीं आर्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार की भूमिका एवं आर्य महिला जगत् की प्रगति के लिए उनके अथक प्रयास, मॉरिशस के आर्य जगत् में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे।

कभी–कभी जब मैं अतीत का स्मरण करते हुए उस पीढ़ी को देखता हूं, तब–तब ऐसा भान होता है मानों हमारा जीवन उन पुरुषों के सहारे ही चल रहा है। आज जिस तेजी से हमारे समाज में और हमारी भावी–पीढी में मर्यादा–विश्वास एवं चरित्र का पतन हो रहा है, वह चिन्तनीय है। ऐसे में समय–सन्दर्भो की इस पुलक–भरी यामिनी में उनके जैसा तेजस्वी का हमारे बीच होना ही हमारे लिए प्रेरणादायी एवं सुखद है। पीढी–दर–पीढी को अपने में समेटे यह महान् हस्ती सदा विधाती और जाग्रत रहे तथा उनकी छाया सदैव हमें मिलती रहे, परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना है।

– श्री रामनाथ जीता, प्रबन्ध निर्देशक,
प्रो वासुदेव विष्णुदयाल कॉलेज

श्री मोहनलाल मोहित : आर्यसमाज के अटूट स्तम्भ

भारतीय मजदूर जब मोरिशस पहुंचे थे तो उनके लिए यहां सबसे पहले कांटे बिछे, फिर धीरे–धीरे उनके जीवन में फूलों की बाहर आनी शुरू हुई। परन्तु फूलों के लिए संघर्ष करना पड़ा, अन्यथा कांटों से कांटों को ही विस्तार मिलता जाता। कांटों की कल्पना मात्र से आज हमारी आत्मा हिल जाएगी, जब कि हमारे पूर्वजों ने कांटों को अपनी धमनियों में जिया था। उन्हीं के महान् कामों का परिणाम है कि मोरिशस में आज भारतीयता अक्षुण्ण है। हमारे लिए रास्ते प्रशस्त करने वाले न जाने कितने सज्जन कालगत हो गए। श्री मोहनलाल मोहित सम्भवतः उन महान् लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले एकमात्र सज्जन जीवित हैं, जिनके नाम के स्मरण मात्र से लगता है कि एक पूरा इतिहास उनसे जुड़ा हुआ है। उस इतिहास को श्री मोहनलाल मोहित के बाद निश्चित ही आज की पीढ़ी के हाथों में आना है। देखें, यह पीढ़ी उस महान् भारतीय सांस्कृतिक धरोधर को कहां तक सुरक्षा दे पाएगी। काम ठीक से सम्पन्न हो तो श्री मोहित, उनके समकालीन और उनसे पहले महान् कामों की नींव रख जाने वालों के प्रति उससे बड़ी दूसरी श्रद्धांजलि हो ही नहीं सकती। अन्यथा जिन काटों से जूझ कर यहां भारतीयता के फूल खिलाएं गए, उसके नाश के लिए तो यहां दूसरे लोग ताक में बैठे ही हैं।

श्री मोहनलाल मोहित ने हिन्दी और भारतीय संस्कृति के लिए अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों की बलि चढ़ायीं है। सम्भवतः उन्हें कभी अपने घर की किसी समस्या को सुलझाने में समय देना आवश्यक लगा हो, लेकिन जब हिन्दी और भारतीयता का मसला सामने आया होगा तो उन्होंने घर की समस्या से निबटने से अधिक इन कामों को विशेष महत्व दिया होगा। उन्होंने उन दिनों हिन्दी पढायी, तो जाहिर है, इसमें अपना समय जाता, अपनी जेब से पैसा भी जाता। वह ऐसा समय था जब घर का आटा गीला करके ही सामाजिक काम निबटाये जाते थे। श्री मोहनलाल मोहित किसान थे, जिन्हें अपने खेतों की देखरेख करना ज्यादा आवश्यक था। परन्तु एक हाथ खेतिहर होने और दूसरे हाथ सामाजिक, सांस्कृतिक और हिन्दी शिक्षक होना उनके लिए जैसे बाएं हाथ का खेल था। उन्होंने दोनों में संतुलन बनाए रखा और सौ की उम्र तक यह संतुलन यथावत् है।

श्री मोहनलाल मोहित पर आर्यसमाज का प्रभाव बाद में पड़ा। पहले वे सनातनी परिवार से थे और घर में मिले सनातनी संस्कार का वे निर्वाह करते जाते थे। कहते हैं कि नेक काम अपने लिए नेक पात्र ढूंढ लेता है। आर्य समाज ने श्री मोहनलाल मोहित को नेक जान कर नेक काम के लिए ढूंढा और यह चयन हर दृष्टि से लाभ का चयन ही प्रमाणित हुआ। बालक मूलशंकर किन्हीं परिस्थितियों से विचलित होकर वेदों के महान् प्रचारक बने थे। ठीक इसी तरह श्री मोहनलाल मोहित के जीवन में भी ऐसी तमाम परिस्थियां आती गयी थीं, जिसके परिणाम में उनके भीतर आर्यसमाज के सिद्धान्त अपने लिए स्थान बनाते गए थे। प्रायः गुण जन्मजात होते हैं, जिन्हें अवसर मिले तो वे कालांतर में अपनी चमक से लोगों को विस्मित कर देते हैं। श्री मोहनलाल मोहित के गुण भी ऐसे ही थे, जिन्हें आर्यसमाज का थोड़ा सा प्रकाश मिलते ही घटाटोप अन्धेरा एकदम से छंट

गया। भावना समाज सेवा की थी, भाषा, संस्कृति और परोपकार की थी। श्री मोहित ने अनुभव किया कि हृदय की जो अपनी मांग और निष्ठा है, उनके साथ एकमात्र आर्यसमाज का ही मेल ठीक बैठ सकता है। श्री मोहित सनातनी से आर्यसमाज में परिवर्तित तो हुए ही, अपने पूरे परिवार को भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश में ला खड़ा किया। शुरू–शुरू में यह कठिन रहा होगा लेकिन उन्होंने अपनी शक्ति, भावना और समझ के बूते पर ऐसा करके ही दम लिया।

ईश्वर की कृपा से श्री मोहनलाल मोहित के पास पैसा था और यह उनकी कृपा थी कि उन्होने आर्य–समाज के प्रचार के लिए पैसा लगाना अपना जीवनधर्म बनाया। आर्यसमाज के दस नियमों में यह सिद्धान्त विशेष है कि परोपकार के लिए सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। श्री मोहित जी इस सिद्धान्त के आदर्श पुरुष हैं। मोरिशस में देखा जाता है कि दूसरी जातियों के लोगों ने अपने समुदाय के उत्थान के लिए हमेशा पैसे से सहायता पहुंचायी है। यह सहायता ऐसी है कि पूरे देश में उससे एक चमक बन आयी है। परन्तु ऐसी उदारता हमारे लोगों में बहुत कम देखने को मिलती है। हिन्दी शिक्षण, विवाह, सत्संग आदि के लिए जहां–जहां हिन्दुओं ने सुन्दर भवन खड़े कर लिए, इसके प्रति तो माथा नत होना ही चाहिए। परन्तु आज भी देश में ऐसे अधूरे हिन्दू भवन खड़े हैं, जिनके साथ न जाने कैसे–कैसे झगड़े जुडे हुए हैं। दादा ने जमीन दान कर दी तो पुत्र–प्रपोत्र इस बात पर अड जाते हैं कि अब जमीन उन्हें वापस मिलनी चाहिए। जिसकी अपनी चीज हो वह यदि अपनी चीज के लिए लड़े तो दूसरों को कुछ कहने का अधिकार नहीं है। परन्तु इस उदाहरण से इतना समझा जा सकता है कि मोरिशस में अपनी संस्कृति के सन्दर्भ में हम कितने निहत्थे हैं।

श्री मोहनलाल मोहित ने हमारे निहत्थेपन को बहुत गहराई से समझा था। उन्होंने अर्द्ध निर्मित बैठकों को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए हमेशा अपने को आगे रखा। यही नहीं, बल्कि और भी अनेक क्षेत्रों में अपनी दान परायणता के लिए वे बड़ी श्रद्धा से याद किए जाते हैं। उनकी ऐसी उदारता अनुकरणीय है, किन्तु दुर्भाग्य कि अनुकरण के लिए आने वालों की संख्या बहुत गौण होती है। मोरिशस के भारतीय मानव के लोगों को एक बाती से दूसरी बाती जलाने में अब तो दत्तचित्त होना ही पड़ेगा, अन्यथा देर हो जाने पर फिर से उचित अवसर के लिए पता नहीं समय आए कि न आए।

श्री मोहनलाल मोहित को और लम्बी उम्र मिले, ऐसी हमारी कामना है।

– रामदेव धुरंधर

हे परमेश्वर ! तू क्यों न इन पशुओं पर दया नहीं करता ? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या इनके लिए तेरी न्यायसभा बंद हो गई है। क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता ? और उनकी पुकार नहीं सुनता ? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खतादि दोषों को दूर नहीं करता ? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।"

श्री मोहनलाल मोहित जी का जीवन-स्त्रोत

– *केवल नायक*

संसार के सभी तत्त्वों का बाल्यकाल सर्वथा सामान्य है। वृक्ष, वनस्पति, मनुष्य, पशु आदि भी बाल्यकाल से गुजरते हैं। किसी किसी का बाल्यकाल अत्यन्त विलक्षण होता है, जैसे राम का बाल्यकाल, श्रीकृष्ण का बाल्यकाल आदरणीय है, ऐसे ही मॉरीशस में श्री मोहित जी का विलक्षण बाल्यकाल देखा गया है – कहते हैं –

पूत के पांव पालने में ही दीख जाते हैं,
या
गुदडी में लाल छिपे हैं,
या होनहार बिरवान के होत चीकने पात

ये सभी उक्तियां इनमें चरितार्थ होती देखी गई है। २२ सितम्बर, १९०२ को जन्मे श्री मोहित जी २२ सितम्बर २००२ को पूरे शतायु हो गये हैं।

इनका वंश वृक्ष गहन तथा गम्भीर है। श्री मोहित जी के दादा सहित पत्नी १८६८ में शर्तबन्दी लोगों में से एक थे जिनका नाम श्री सगुन मोहित था। इनकी सात सन्तानें थीं जिनमें चार पुत्र तथा तीन पुत्रियां थीं। जिन के नाम उगर, महावीर, रामावतार, तथा विजाधर (पुत्र) थे, पुत्रियों के नाम बसमत, राजवंत तथा राधा थे। तीसरे पुत्र श्री रामावतार का विवाह श्रीमती भागवती देवी से १७ दिसम्बर, १८७५ को हुआ। इस दम्पति के छः पुत्र तथा तीन पुत्रियां हुई। मोहनलाल, जसकरण, सुन्दरप्रसाद, लक्ष्मीप्रसाद, धनपत तथा रामचन्दर तथा लखपति, सुन्दरी तथा लक्ष्मीन हुई। मोहनलाल जी मोहित श्री रामवतार जी के ज्येष्ठ पुत्र थे।

कहते हैं कि भाग्य का सितारा अन्धेरे और तप की भट्टी में से ही होकर चमकता है। श्री मोहित जी का जन्म एक प्लेग नामक महामारी के फैलने के समय हुआ। गन्ने की खेती समाप्त होने पर चूहे इधर–उधर घूमते थे जिससे यह बीमारी जोर पकड़ती थी और बड़ी संख्या में मृत्यु हो जाती थी। डाक्टर भी इसका इलाज नहीं कर पा रहे थे। इसके अतिरिक्त १९०२ में ही सुरा नाम की पशुओं की भी बीमारी फूट निकली थी जो गन्ना कटने के ठीक समय पर हुई, इससे घोड़े, खच्चर तथा बैल, गऊ आदि पशु बड़ी संख्या में मर रहे थे। पशुओं के अभाव में दस–दस व्यक्ति गाड़ी खींचकर गन्नों को कारखाने ले जाते थे। इसी कारण से १९०३ में यहां ट्राम्बवै चलने लगे थे।

इनके जन्म के समय इनके पिता मों देजेर बो–बुआ स्टेट में सरदारी का काम करते थे। यह समय भारतीयों के लिए अत्यन्त संघर्ष का समय था। हालत अच्छी नहीं थी। बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं। स्थानीय लोगों के बच्चों को अंग्रेजी व फ्रेंच पढ़ाई जाती थी। पाठशालाओं को पादरी लोग ही चलाते थे। यही कारण था कि बहुत हिन्दू उन भाषाओं के पढ़ने के बाद ईसाई बनने लगे थे। यही कारण था हिन्दू अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेजते थे। इसके अतिरिक्त उनके जन्म के समय खाने–पीने की वस्तुएं भी आसानी से नहीं मिलती थीं। स्वच्छ पानी भी लोगों को दूर–दूर से लाना पड़ता था। स्वास्थ्य की सुविधा, पक्के रास्ते, तथा आने–जाने का साधन भी नहीं था।

यही कारण थे कि उनका बाल्यकाल अत्यन्त संघर्षमय बीता। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण पिता की भी सहायता करनी पड़ती थी। गायों के लिए घास लाना, ईख की खेती में मजदूरी करना, पत्थरों को ढोना आदि कठिन कार्य करने पड़ते थे, कोई मनोरंजन का साधन नहीं था, गेंद भी नहीं

खेलने को मिलती फुटबाल आदि तो बहुत दूर की बात है। फिर भी गुल्ली डण्डा, काकू आदि खेलों से बच्चे मन बहलाते थे, जिससे गरीबी के कष्ट से थोड़ी राहत मिल पाती थी।

बड़े लोग दुकानों पर बैठकर गपशप करते गांजादि पीते थे, बालक मोहित जी इन सबसे कोसों दूर थे। यह परमात्मा की उन पर असीम कृपा थी। उनके माता–पिता गौ–ब्राह्मणों के अनन्य भक्त थे। पौराणिक विचार के थे। बालक मोहित को इस प्रकार की धार्मिक श्रद्धा विरासत में मिली थी।- जिसके परिणाम स्वरूप उनको एक शुद्ध पवित्र मनोरंजन का साधन मिला 'रामचरितमानस' का पठन–पाठन। इससे जो सब से अधिक लाभ हुआ या महान् उपलब्धि हुई वह यह थी कि उनमे सम्पूर्ण आध्यात्मिक भावना थी। इसी से देवनागरी लिपि का भी अभ्यास उन्होंने किया। इस बात को उन्होंने स्वयं बताया कि, रामचरित मानस का जहां पाठ होता था पिता जी मुझे वहां ले जाते, पाठ का उच्चारण करवाते फिर बाल बोधिनी पुस्तक लाकर दी थी जिससे रामायण का अभ्यास कर पाया था। तथा थोड़ी फ्रेंच भी मैं सीख गया था। उस समय निर्धनता का तकाजा यह था कि पढ़ाई बड़े धनवानों की थाती बनकर रह गई थी। यही कारण था कि मोहनलाल जी मोहित का शिक्षाभ्यास औपचारिक रूप से नहीं हो पाया था।

एक कहावत है कि जहां चाह वहां राह, या आवश्यकता आविष्कार की जननी है। कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी स्वभाव ने उन्हें पढ़ाई की ओर प्रेरित किया जिससे शीघ्र ही हिन्दी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर लिया। मुख्य मार्ग खुला फिर क्या था ? अनेकों मार्ग उन के सामने खुलते चले गए, संस्कृत, अंग्रेजी व फ्रेंच का भी ज्ञान प्राप्त हो गया।

महर्षि ने पितृ यज्ञ का लाभ बताते हुए कहा है कि पितरों का वरदान मिलता है, मनु महाराज ने लिखा है कि बड़ों के अभिवादन से विद्या मिलती है। इस का सत्य ज्ञान भी उनके जीवन का ज्वलन्त उदाहरण है – वे बताते हैं – 'मेरी दादी मेरे घर के कुछ दूर पर ही रहती थी, वे खिचड़ी बहुत स्वादिष्ट बनाती थी। मैं केवल चार वर्ष का था, उनके घर चला जाता था और प्रायः सायं ही जाता था। उनकी कहानियां भी मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। सूर्यास्त के समय मुझे आज्ञा देती थी कि मैं दीपक जलाकर लक्ष्मी और संध्या देवी की वन्दना करूं। उनकी आज्ञा के पालन से उनका स्नेह तथा शील सौजन्य के साथ–साथ धार्मिक भावना भी मिलती चली गई जिससे मानसिक शान्ति मिलती थी।'

एक वर्ष के उपरान्त दादी इहलोक को त्यागकर परलोक सिधार गईं। सन्ध्या सूनी हो गई। परन्तु विधाता ने दूसरा मार्ग प्रशस्त कर दिया। कहीं पर जहां रामायण और महाभारत की कथा होती थीं वहां सुनने के लिए अवश्य जाता था। उसी से उनके जीवन में एक ऐसा मोड़ आया कि उनका साक्षात्कार – पं० काशीनाथ किश्टो जी से हुआ, वे अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता थे। आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के विषय में जो तर्क संगत विचार वे देते थे, उससे मोहित जी अत्यन्त प्रभावित हुए। जिससे मोहित जी दृढ़ आस्थावान् आर्यसमाजी बन गए। इतना ही नहीं, काशीनाथ जी के सत्संगों में भी वे जाने लगे। उनसे प्रभावित मोहनलाल जी स्वयं भी वैदिक सन्देशों का प्रचार–प्रसार करने लगे। इनमें सब से विशिष्ट बात यह थी कि वे जिसको अपनाते हैं मूल से ही अपनाते हैं – पहले उन्होंने आर्यसमाज के नियमों को अपने हृदय से स्वीकार किया तथा उनको आत्मसात किया। फिर किशोरावस्था में ही अपने पिता को भी आर्यसमाजी बना दिया। १९२० में मोहित जी ने सम्पूर्ण द्वीप का भ्रमण करके आर्यसमाज की, अनेक शाखाओं की स्थापना भी कर दी। उनका मुख्य उद्देश्य था हिन्दी, वैदिक धर्म तथा हिन्दी संस्कृति का प्रचार करना और इसमें उन्होंने कभी कोई कसर नहीं छोड़ी।

एक स्थान पर श्री जसकरण मोहित जी ने कहा कि, मेरा भाई वैदिक धर्म के प्रचार के लिए दिन रात मीलों पैदल चलकर वन–वन, पर्वत–पर्वत, उनकी घाटियां तथा उपगिरियों को पारकर वैदिक धर्म के प्रचार के लिए पण्डित जी के साथ जाया करते थे। वापिस उसी मार्ग से पुन: आना पडता था। यदि बैठक देर रात तक होती थी तो वहीं किसी बैठक में चटाई बिछाकर भूखे प्यासे सो जाया करते थे।

पण्डित जी जब भारत से पढकर लौटे उनकी भाषा से प्रभावित मोहित जी भारत से पत्र–पत्रिकाएं मंगाकर स्वाध्याय करने लगे, उनकी यह प्रवृत्ति आज भी देखी जा सकती है।

जैसे हमने ऊपर लिखा कि कुछ वस्तुएं विरासत में ही मिलती हैं, भारत में कहते हैं कि पं० जवाहरलाल नेहरू मुख में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुए थे, उसी तरह श्री मोहित जी अपनी दोनों मुट्ठियों में अपने कर्म तथा उसका फल लेकर पैदा हुए थे। उनके अन्दर अपने पितरों की कर्त्तव्य परायणता, धर्म परायणता तथा उद्योगशीलता भी कूट–कूट कर भरी थी। यही कारण था कि उनको मजदूरों का सरदार बना दिया गया। इस प्रकार १६११ में मों देजेर बोबुआ स्टेट में सरदारी करने लगे थे। उल्लेखनीय है कि मोहित–परिवार की तीसरी पीढ़ी के मोहनलाल जी सरदार थे।

उस समय हिन्दू समाज में अन्धविश्वास सहित अनेक कुरीतियां चलरही थीं, उनके उन्मूलन करने के माध्यम से श्री मोहित जी हिन्दी, संस्कृत, व हिन्दू संस्कृति के अध्यापक भी बन गए। इस विषय में श्री उदय नारायण गंगू जी ने अति उत्तम भाव प्रगट किए है कि मोहित जी दिन में कुदाली चलाते, अपने बडों के साथ जानलेवा परिश्रम करते तथा रात्रि में अपने घर के आस–पास के गांव–गांव जाकर हिन्दी का पाठ, बच्चों व युवकों को देते थे। अन्य श्री मिथिल जी ने भी उसी को दोहराते लिखा है कि लावेनीर, लालोरा आदि गांवों में निःशुल्क हिन्दी शिक्षण का प्रचार किया। ये इसकेप्रति पूर्ण समपिर्त थे पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का व्याकरण लेकर बच्चों को पढाते थे। केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि हम बडी उमर वाले को भी हिन्दी शिक्षा देते थे।

अन्त में – जो सूर्य बाल अवस्था में ज्योति दे रहा था वही सूर्य वार्द्धक्य में भी अपनी ज्योति से उनके मुखमण्डल को और भी अधिक ज्योति प्रदान करते हुए कह रहा है।

तुमने सौ शरद मांगे थे लो मैं तुम्हें सौ शरद दे चुका हूं अब भी मागोगे तो और भी दूंगा। आगे बढ़ो और मेरी तरह सब को प्रकाश दो।

हत्या अर्थात् आत्मा से शरीर छीन लेना

जैसे किसी बालक के हाथ में छड़ी हो और वह उस छड़ी से दूसरों को पीटता चला जाए। मना करने पर भी वह न माने, तो उसके हाथ से छड़ी को छीन लेना ही उचित है। किसी असुर की हत्या कर देने का भी यही प्रयोजन है। जब कोई असुर परमात्मा की ओर से दिये गये शरीर का दुरुपयोग करने लगता है, तब शरीर को उस आत्मा से छीन लेना ही उचित उपाय है।

The Mauritian Lighthouse

Homage to Shri Mohunlal Mohit

by Dr. Swami Satyam,

Kurvannveha karmaani Jijeevishet Shatam Samaah - Yaju

'One should desire from his heart to live for hundred years and more by working for humanity constantly and selflessly.'

In 1917 a 15-year-old boy striving for bringing the Vedic Light to this island - Shri Mohunal Mohit suceeds in his attempt and the whole country gets light with the establishment of the first Arya Samaj in the island. Mauritius has been prosperous in every field thanks to the Indians brought by the British colonists for helping in growing the sugacane crop. One of those immigrants brings a copy of Satyartha Prakash with him and lights the lamp of true knowledge amongst his brothers and sisters. There is no doubt that this marvelous book written by Maharshi Dayanand Saraswati has played the biggest role in spreading this Vedic Light in India and abroad. It has brought revolution in thinking of great many people. Shri Mohit is one of them who went through the book and came up as the first revolutionist in this green island.

The Arya Samaj movement here flourished due to his sacrifice and hard work. The Arya Jagat will remain grateful to him for ever for this great revolution. This new light made him so popular in the country that he became one of the great leaders of the Hindu community. He had very good friends among the people like Seewoosagar Ramgoolam who became the first Prime Minister of the country after independence. They not only love him but also consulted him on a number of matters and valued his advice. From the very beginning he has come up as a strong man physically as well as mentally. He would get up very early in the morning and go to the farm at 5, stayed there working for 2-3 hours and then return home for his daily duties and working in the field made him a physically strong and healthy person. The regular study of Satyarthaprakash made him mentally and intellectually strong.

Even now he is a young man. He says :

"Do not chant the mantra 'Jeevema Sharadah Shatam' for me because I have

crossed hundred years and these words have become meaningless for me. Only chant 'Bhooyashcha Sharadah Shataat' praying to God for me to live beyond the age of hundred years. His memory is very sharp. Even now the events of 40 to 50 years ago in the Arya Samaj movement flash in my mind every now and then. His voice is full of vigour and he roars like a lion. He is very enthusiastic and wants to see the Arya Samaj flourishing like it did 60 years ago. Even now he rises in the early morning at 3 and starts his work. He is a very studious person and we can see a number of magazines and books spread over his bed.

Recently he had gone to India and attended the conference in Gurukul Kangri, Haridwar. He is a staunch Arya and wants everyone to come up like him. He cannot tolerate delay in any work. He himself is punctual and wants every one to stick to the timings. Why can these Pundits not come on time ? They should be here 10 minutes earlier before the function starts. What will happen if the Pundits are lazy like this ? These were his words full of agony and pain in a function recently held.

He is 100 but is not old. Mentally he is still alert and cannot stand any mistake being committed by any Arya. His life has been very clean. A turban is on his head in every function. That is very essential for him, and reminds us of the olden days of Arya Samaj when the leaders made it necessary to wear such a head-dress. He has great dreams and is very upset when any of them does not materialize. The revolutionary spirit he had earlier has not died out even at this age. He was and is a great pioneer of Aryasamaj movement. He can sit for hours together in a function enjoying the people speaking, chanting mantras and singing songs. The crowd of people in functions brings a thrill in him and he appears to be trying to find out the spirit of the earliest days. What is the secret behind his long life, steady health and unfailing fire of spirit ? Here is the message of Shri Krishna in Bhagavadgita (6.17)

Yuktaahaara-vihaarasya
Yuktacheshtasya Karmasu
Yukta-svapnaa vabodhasya
Yogo Bhavati Buhkhhaa.

' He who eats and enjoys the world properly, keeps himself engaged in benevolent deeds with in limits and without exerting himself too much and goes to bed and rises at right times does practice yoga. This kind of Yoga keeps him away from all kinds of suffering."

And Shri Mohunlal Mohit has confirmed this fact with his way of life. He was never lazy in his life. He en-

joyed life but not beyond limits. Crosssing limits in any situation is an invitation to suffering. That is why the Gita says ' Samatvam Yoga Uchyate' - Yoga means to lead a balanced life with a balanced mind." This kind of life saves a person from all kinds of tensions and worries, and the state of pure and balanced mind helps a lot in achieving longevity. One should fix limits for everything, never cross the limits. The older one grows, the stricter he should become in taking food. One should never indulge in entertainments and enjoyments beyond limit, should fix the timings for taking food, going to bed, having a sleep and rising in the morning. He who wants to live long should be ever engaged in some work or other. Wasting time in gossips, games, unnecessary activities and useless works shortens the period of life. Laziness and whiling away the time are the greatest enemies of a person. Shatapatha Brahmana declares : ' Deerghayuh Bhavati - one who takes to Svaadhyaaya achieves longevity'. It is so because when a person is involved in studying books and scriptures his mind is engaged in collecting the knowledge that is beneficial for the mind and the soul. Through Svadhyaaya he accomplishes a Maanasa Yajna by giving oblations of his physical, mental and intellectual powers. He sacrifices his senses and they never bring useless thoughts and ideas from outside that would destroy the spiritual power of the person, but, instead bring good ideas that intensify the fire in the mind and soul just like the ghee and other things intensify the fire in a yajna. The life itself changes into Yajna that takes the soul towards God and keeps it under His cooling shelter. As the

Vedas say, Yasya Chhaayaa Amritam Yasya Mrityuh - keeping oneself away from the shelter of God is death while keeping oneself always under His shade is immortality.

Shri Mohit has understood all these Vedic teachings very well and has been practicing them in his life. It is this secret that has made him 'Shataayuh' and 'Deerghaayuh.' The people like him never talk too much. Never boast of thier qualities. One does not know what is going on in their minds. They are so silent that the children sometimes are unable to understand them. Just like him was my father, too. Whenever I look at Shri Mohitiji I recollect my father who was as staunch and strict as he is. He is the spiritual Lighthouse of the Aryasamaj in Mauritius and the world. May God bless us with his sweet company for many more years to come.

Homage to Pundit Mohit, Arya Ratna GOSK
A Man of Vision, Insight and Zeal

By - Sookhraj Bissessur, B.A.

It is a pious duty of a grateful nation to remember its heroes, and rededicate itself to the great cause they lived and died for. If we wish to identify a disciple of Maharshi Dayanand Saraswatee among the followers of Arya Samaj in Mauritius, Shri Mohunlal Mohith, would be one among a few who would be shortlisted.

Shri Mohunlall Mohith is not only a man of spiritual vision, but, he sincerely preaches and practices what he believes in, as a great, well-known, sublime and staunch Mauritian Arya Samajist. In the context of the propagation of Vedic Culture in Mauritius, he is still toiling and moiling ceaselessly to make his spiritual vision come true and blossom into sweet fruition. All his endeavours are not only meant for the benefit of the entire Arya Samajists of our country, but, he also considers it his bounden duty to make all Mauritians (Hindus) benefit from his deep sense of understanding, religious motives, sharp and divine Vedic intellectual capacity and spiritual sagacity.

Strongly endowed with a profound sense of gratitude, Shri Mohunlall Mohith possesses a profound and penetrating insight in all sphere of activities, most especially in the Vedic concepts of life. Shri Mohith, this 'gentleman' of great personality is 100 hundred years old this year (22nd September 2002). He is noted for his monumental philanthropic work, specially in the propagation of Vedic culture in every nook and corner of our island. Shri Mohit, who, at this age is still hale and hearty, is noted for his noble actions, kind words, true sense of devotion, patriotism, altruism and benevolence. He is the man who strongly anticipated the needs for propagating the Vedic course, culture and religion, and also the propagation of the Arya Samaj Movement of Swami Dayanand Saraswatee.

In truth, Shri Mohithji is truly one of the few genuine Vedic spiritual Gurus produced by the Arya Samaj in Mauritius. That is why he has such a deep and profound understanding of Vedic Culture and also a foresight of our social and spiritual needs and requirments. He will be also ever remembered as a very strict disciplinarian who led a honest life of austerity and dedication that has kept him on his feet for a century. As per his daily eating habits, he has been a very strict

vegetarian, and has always enjoyed a healthy life free from the normal and common ailment of a highly advanced industrial society. He is also a person who never went even to the primary school, but owing to his true sense o dedication, self teaching (swadhya) and untold sacrifice (tapasya) he has eventually climbed the ladders of Vedic Vidya. and has also written several instructive, informative, educative and productive books in good and perfect Hindi. While having a working knowledge of Sanskrit and the ability to understand English and French. In fact, that spirit of swadhya and tapasya has taken him from a life of humility and poverty in the Beau Bois Sugar Estate to that of a person who can contribute hundreds of thousands of rupees to the good and noble cause of social upliftment for his fellow countrymen. Truly, this general transformation is directly attributable only to the lofty teachings of the Arya Samaj - that he acquired at the behest of pundits like Kashinath Kistoe, Sharma Anirood and Gayasingh.

Shri Mohunlal Mohith is also a man of great conviction, who for the betterment and welfare of our society, Vedic community and country, has never been afraid to express his views, however unpleasant they may be. Also imbued with a profound sense of integrity and intellectual ability, Shri Mohith deserves to be saluted for his competence, and in this context, it goes without saying that words are not sufficient enough to describe and embellish the authenticity of this man on the social and cultural plane. In fact, his preaching on education, philosophy, Vedic Culture, history of Arya Samaj Movement In Mauritius and several other socio-religious topics is entirely in accordance with Vedic thought and Vedic philosophy of life.

May he complete his centenary and see the very fruits of his unfulfilled dreams ! And may the blooming younger generation learn a lot from the valuable progress and remarkable achievements of this disciplinarian who has always kept the entire torch of the Arya Samaj burning through thick and thin.

Henceforth, it goes without saying that Shri Mohunlall Mohith is a great and famous social reformer. And, while being a man of society, he is also an exemplary family man. Shri Mohunlal Mohith is known to have three addictions – Work, worship and meditation.

By way of conclusion, it should be noted that Shri Mohunlall will always be remembered as a "shining and shimmering star" in the galaxy of the country. During his whole lifetime, he has been laying stress (he still continues to do so) upon the Vedic view of life and society - that the entire society should be ruled and defended in accordance with the Rta or dharma. Quite rightly has a very famous English poet, so beautifully penned :" The heights of great men reached and kept, were not attained by sudden flights !!

पारटल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 27-10-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 24/25-10-2002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६ फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in

दीपावली मंगलमय हो, निर्वाण दिवस प्रेरणादायक हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० दवरत्न आर्य वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शमा ने सम्पूर्ण आर्यजगत के लिए दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख समृद्धि और शान्ति से परिपूर्ण उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। दीपावली क दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यो के लिए इश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बन ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

वर्ष ४१ अक २६ ३ नवम्बर से ६ नवम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२६४६१०३ सम्वत २०५६ का०कृ० १३

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

14 अप्रैल 2001 में ध्वस्त आर्यसमाज मिण्टो रोड का

मूल भूमि पर ही हर्षोल्लासपूर्वक शिलान्यास

नई दिल्ली ६ अक्टूबर। दिल्ली के सासद एव पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना एव केन्द्रीय श्रम मन्त्री डा० साहिब सिह वर्मा क अथक प्रयासो स आज आर्यसमाज व भाजपा के बीच पैदा हुइ खटास ब्याज सहित समाप्त हा गइ।

उल्लेखनीय है कि अ न म ढ वष पूर्व सौन्दर्यीकरण की आड म मिण्टो रोड क जिस प्राचीन आयसमाज मन्दिर को तोड दिया था आज उसी स्थान पर स्वय केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार ने उपस्थित होकर भव्य मन्दिर निर्माण का शिलान्यास कराया।

श्री मदनलाल खुराना के साथ एक ही वाहन म आए श्री अनन्त कुमार ने यह भूमि सापन की नब घोषणा की तो उपस्थित हजारा अग नियो ने स्वश्री र ना अनन्त कुमार व डा० वर्मा के पक्ष म नारेबाजी की और बार बार वैदिक जयघोष करवाकर मच सचालक श्री विमल वधावन ने पण्डाल मे एक विचित्र उत्तजना का सचार कर दिया। श्री विमल वधावन ने कहा कि पहल हमन कहा था कसम वद की खाते है हम मन्दिर यही बनाएग अब हमारा नारा है कि कसम वद की खात ह कि मन्दिर भव्य बनाएग।

श्री अनन्त कुमार न कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती न मातृशक्ति के प्रति श्रद्धा का निर्देश दिया था। मातृशक्ति स अभिप्राय महिलाओ क साथ साथ प्रकृति माता और धरती माता स भी है। उन्होने कामना करत हुए कहा कि प्रकृति की गोद मे एक भव्य आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हो यही हमारी महर्षि दयानन्द क प्रति श्रद्धाजलि हो।

दिल्ली क पूव मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना न कहा कि गत वष जब मन्दिर ध्वस्त किया गया था तो मैने कन्द्र सरकार के सभी वरिष्ठ नताओ को आयजनता की भावनाओ स अवगत करान का ही प्रयास किया ... आयसमाज की सगठन शक्ति क सम्मुख हम ता कवल नतमस्तक हुए है

शेष भाग पृष्ठ २ पर

आयसमाज मिण्टो रोड क शिलान्यास समारोह क मच पर का दृश्य सचालन करत हुए श्री विमल वधावन तथा दिल्ली सभा क प्रधान श्री दव्रत ... आय के साथ मुख्य अतिथि श्री अनन्त कुमार श्री मदनलाल खुराना एव अन्य आय नता। यज्ञ वदी मे उदबोधन दत हुए श्री विजय कुमार मल्होत्रा ...

टाण्डा में स्व० श्री मिश्रीलाल आर्य जन्मशताब्दी समारोह

आर्यसमाज टाण्डा (उ०प्र०) के १११वें वार्षिकोत्सव एव मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज के सस्थापक श्री मिश्रीलाल आर्य जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर एक विशाल भव्य समारोह १५ से १६ नवम्बर की तिथियो मे जनपद अम्बेडकर नगर के टाण्डा क्षेत्र म आयोजित हो रहा है।

चार दिवसीय इस आयोजन मे पूर्वोत्तर भारत के सभी प्रान्तो का आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन भी आयोजित होगा।

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने आर्यजनो से आहवान किया है कि अधिक से अधिक सख्या मे इस भव्य सम्मलन मे भाग लेने के लिए पहुचे। आगन्तुक महानुभाव ३०/- रु० प्रति व्यक्ति की दर से अपना रजिस्ट्रेशन शुल्क अवश्य भेज दे जिससे आगन्तुको के अनुमान के आधार पर भोजन की व्यवस्था की जा सके। भोजन व्यवस्था पूर्णत निशुल्क है। हल्की ठण्ड के कारण साथ मे कम्बल आदि अवश्य लाए।

उन्होने बताया कि बाबू मिश्रीलाल आर्य जी के जीवन और कार्यो पर एक विशेष स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। चार दिन के समारोह मे देश के विभिन्न भागो से सुविख्यात वैदिक विद्वान पधार रहे हैं। जिनके विशेष प्रवचन आयोजित होगे।

सार्वदेशिक सभा की कार्यकारिणी एव अन्तरग सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी एव अन्तरग बैठक भी क्रमश १५ नवम्बर दोपहर ३ बजे तथा १६ नवम्बर प्रात १० ३० बजे रखी गई है।

इस अंक में .....

धन एकत्र करने वालों से सावधान

हमे अनेक स्थानो से ऐसे समाचार मिल रहे है कि कुछ व्यक्ति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम स योजना बनाकर धन एकत्र कर रहे है जबकि सभा की ऐसी कोइ योजना नही है। ज्ञात हुआ है कि उदयपुर की एक प्रेस कान्फ्रेन्स म श्री आनन्द सुमन नाम के व्यक्ति ने सभा की ओर से घोषणा की है कि यह सभा १००० सरस्वती विद्या मन्दिर खोल रही है व ५० विद्या मन्दिर खोले जा चुके है। यह असत्य है।

मेरे अमेरिका प्रवास के दौरान अनेक आयसमाजो ने शिकायत की कि नवम्बर २००१ मे होने वाले आय महासम्मेलन दिल्ली (जो हुआ ही नही) के नाम से भोजन के लिए एक सयासी ने हजारो डालर एकत्र किए है। वह पैसा न तो सार्वदेशिक सभा मे जमा हुआ और न प्रतिनिधि सभा मे।

आम आयजनो से प्रार्थना है कि जब तक सार्वदेशिक सभा की ओर से कोइ परिपत्र जारी न हो दान न दे ... बैंक ड्राफ्ट A/C Payee सार्वदेशिक सभा के नाम स ही द। **सभा प्रधान**

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष

मूल भूमि पर ही हर्षोल्लासपूर्वक शिलान्यास

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व मे शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे केन्द्रीय श्रम मन्त्री ... सिह वर्मा एव पारित किया गया जिसमे मे तमिलनाडु सरकार द्वारा इस सम्बन्ध मे जारी अध्यादेश का भी स्वागत किया गया। महत्वपूर्ण दायित्व पूरा कर पाएगे। इस कायक्रम मे प्रतिपक्ष के नेता श्री जगदीश मुखी सुभाष आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदव जी आर्य नेता सर्वश्री जगदीश आर्य रामनाथ सहगल वीरेश प्रताप चौधरी राज सिह भल्ला तथा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से बडी सख्या म आर्यजन पधारे हुए थ।
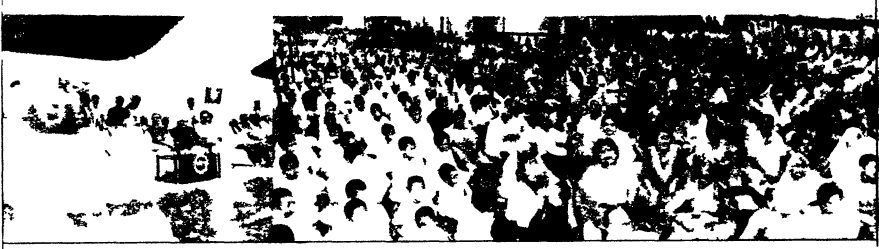
सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान कप्टन दवरत्न आय सम्बाधित करत हुए एव मन्त्रमुग्ध हाकर सुनते आर्यजन।

प्रो विजय कुमार मल्होत्रा ने आहुतियां अर्पित की सभा का सचालन करत हुए श्री विमल वधावन ने भारतीय सविधान के अनुसार अवध धमान्तरण की गतिविधियो पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु देशव्यापी कानून की माग की इस अवसर पर एक प्रस्ताव

समारोह की अध्यक्षता करत हुए क दवरत्न आर्य ने कहा कि आयसमाज ने अपने स्थापना काल से ही बुराइया के उन्मूलन क लिए काय किए ह। आज जिस आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि का शिलान्यास किया जा रहा है वहा पर हम मानव निमाण का

आर्यसमाज मिण्टो रोड की जन सभा में धर्मान्तरण पर देशव्यापी कानून की मांग

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन न आयसमाज मिण्टो राड क शिलान्यास समाराह के अवसर पर केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार एव दिल्ली क पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना की उपस्थिति मे एक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए देशव्यापी कानून की माग करते हुए कहा कि धर्मान्तरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

प्रस्ताव मे कहा गया कि लोभ लालच और दबाव के द्वारा एक पथ से दूसर पथ मे देश के नागरिको का शामिल हाने के लिए चलाए जा रहे धर्मान्तरण अभियान न कवल राष्ट्रद्राही एव अखण्डता म बाधक है अपितु सर्वोच्च न्यायालय क निदेशानुसार असवधानिक भी ह

भारत का सविधान भारत मे रहने वाल नागरिको का धम की स्वतन्त्रता दता ह परन्तु धर्मान्तरण की नही।

तमिलनाडु सरकार द्वारा धर्मान्तरण जसी गतिविधिया को रोकन क लिए जो यह आदेश जारी किया गया ह प्रस्ताव म इस महान कार्य क लिए प्रशसा की गइ हे।

प्रस्ताव म हरियाणा सरकार स भी आग्रह किया गया है कि मवात म धमान्तरण के बढते दबाव के कारण पूरे हरियाणा मे भी ऐसा कानून लागू किया जाए।

उपस्थित आर्य जनता न वेदिक जयघोष के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

अष्टम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २३ से २५ फरवरी, २००३

श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास क अध्यक्ष पू० स्वामी तत्वबाध जी सरस्वती की अध्यक्षता म सम्पन्न एक अत्यावश्यक बठक म निर्णय लिया गया कि **अष्टम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००३ का आयोजन नवलखा महल उदयपुर म दिनाक २३ २४ व २५ फरवरी २००३ मे** किया जाएगा। हाल ही मे विदेशा मे आर्य सामाजिक गतिविधियो का आकलन कर लौटे बैठक मे समुपस्थित न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एव सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि विदेशो मे बस आर्यो मे भारत आकर महर्षि से सम्बन्धित पवित्र स्थला के अवलाकन की हार्दिक अभिलाषा है अत इस समाराह को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान किया जाएगा।

बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उदयपुर मे पूर्व मे आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव की श्रृखला मे प्रति वर्ष जिस प्रकार आर्य जगत क मूधन्य तपस्वी सनो के अभिनन्दन की गौरवशाली परम्परा रही है उसी क्रम म आगामी महोत्सव म न्यास अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती का उनक चरणो मे आर्यजनो की ओर से **३१ लाख रुपये की थेली भेट** कर अभिनन्दन किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि स्वामी तत्वबोध जी वही अद्वितीय दानवीर तपस्वी मनीषी व्यक्तित्व है जो पूर्वाश्रम मे राज्य के दक्षिण अचल क प्रमुख उद्यागपति श्री हनुमान प्रसाद चौधरी के नाम से विख्यात थे तथा जिन्होने अपना सर्वस्व होमकर चतुर्थाश्रम मे प्रवेश कर चौबीसो घण्टे अनथक प्रयत्न कर सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थल नवलखा महल उदयपुर (परोपकारिणी सभा का स्थापना स्थल भी) को अपने कुशल निर्देशन मे कुछ नही की स्थिति से एक करोड रुपये से भी ऊपर व्यय कर विकसित कर भव्य स्मारक का रूप प्रदान किया और इसे वद प्रचार व सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओ के प्रचार प्रसार का सशक्त केन्द्र बना दिया है। उन्होने अपनी ओर से इस पवित्र कार्य हेतु **८१ लाख रुपये** भी समर्पित किए हैं।

शेष भाग पृष्ठ १२ पर

योग्य प्रशासक की आवश्यकता

श्री मोहनलाल जी मोहित द्वारा स्थापित विश्व वैदिक अनुसधान केन्द्र की शाखा के रूप मे समर्पण शोध सस्थान अगले माह से कार्यरत हो जायेगा। पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी इसके निदेशक होगे।

इस सस्था को समर्पित योग्य व्यक्ति की प्रशासक के रूप मे आवश्यकता है। इस कार्य मे रूचि रखने वाले सज्जन अपना प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजने की कृपा करे।

देवरत्न आर्य प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली २

गुरुकुलो के नव स्नातको की आवश्यकता

समर्पण शोध सस्थान द्वारा विश्व वैदिक अनुसधान केन्द्र के अन्तर्गत शीघ्र ही देश और विदेश के लिए वैदिक विद्वान तैयार करने का कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। इस प्रशिक्षण के निदेशक होगे पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती। गुरुकुलो से उत्तीर्ण मेधावी स्नातक अपने प्रार्थना पत्र अपनी योग्यता आदि विवरण के साथ निम्न पते पर भेजने की कृपा करे। वर्तमान म १२ छात्रो का ही चयन किया जायेगा व उन्हे वैदिक सिद्धान्तो व विदेशी भाषा मे प्रशिक्षित किया जायेगा।

देवरत्न आर्य
निदेशक (प्रशासन) समर्पण शोध सस्थान
४/४२ राजेन्द्र नगर सेक्टर ५ साहिबाबाद (गाजियाबाद)

बधाई महा बधाई

स्वामी श्रद्धानन्द की इस नगरी मे अरे दुहाई है दुहाई
मन्दिर ध्वस्त है हो रहे नहीं सुनते अब अपने भाई
कैप्टन देवरत्न जी सार्वदेशिक को हो आज महाबधाई
विमल आर्य वेदव्रत इन्द्र क्सल विजय अनन्त साहिब मदन के
यत्नों से स्वामी दीक्षानन्द जी के आशीष से यह शुभ घडी है आई
दिल्ली नहीं पूरे भारत में आर्यजनता मे क्या जाग्रति है आई
यह जागरूकता प्रभु बनी रहे ऋषि सदा रहे सहायी
मिण्टो रोड आर्यसमाज को पूरे आर्यजगत की हो शुभ बधाई।

— बी०के० चौधरी,
आर्यसमाज, मुखर्जी नगर

आतंकवाद को जड़मूल से कैसे समाप्त किया जाए

विद्वान पाठकों की प्रतिक्रिया

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे 'आतंकवाद को जडमूल से कैसे समाप्त करें' शीर्षक से हमने विद्वान पाठको से विद्वतापूर्ण सुझाव मांगे थे। इस पर कतिपय पाठकवृन्द अपनी लेखनी के माध्यम से कर्त्तव्यबद्ध होकर अपने राष्ट्रवादी विचारों के साथ सामने आए। उनके प्रमुख विचारों को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं —

ब्रज पाल गुप्ता (गाजियाबाद)

राष्ट्र मे छिपे शत्रु भी न रहने पाए। शत्रु छोटा हो या बडा उसकी उपेक्षा न करे। जैसे विष और अग्नि अल्प मात्रा मे भी घातक व नाशक है। इन्हे शीघ्रातिशीघ्र बाहर निकालना चाहिए।

विजय विहारीलाल माथुर (जयपुर)

भारत सरकार को सयुक्त राज्य अमेरिका ब्रिटेन व अन्य पाश्चात्य दशो क भरोसे रहने व यह विश्वास करने कि वे हमारी लडाई लडेगे पूर्ण रूप से त्याग देना होगा। हमारी समस्या हमे स्वय ही सुलझानी हागी।

सैन्य बल के साथ जनता के विश्वस्त अश को भी शस्त्र ट्रेनिग व लाइसेस व शस्त्र देकर सहयोगी शक्ति बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

विश्वकान्त शुक्ल (मध्य प्रदेश)

आतकवाद का मूल सम्प्रदायवाद है। वह सम्प्रदायवाद धार्मिक राजनैतिक आर्थिक सास्कृतिक जातीय नस्लीय या राष्ट्रीय कोई भी हो सकता है। जैसे एक गुण्डा अपनी सोच मे अविवेकी बन हिसा पर उतारू रहता है उसी तरह एक गिराह अपने किसी भी अविवेकपूर्ण विचार पर अतिवादी बन आतक के बल पर दुराग्रह करता है। आज का आतकवाद धार्मिक एव सास्कृतिक है। जिससे आर्थिक आतकवाद हवा दे रहा है। जा अपनी विस्तारवादी नीति पर चल रहा है। पाकिस्तान निर्माण से उसे बल मिला है। इधर सत्य के जानने वाले मौन और उदासीन है। यही तो आतकवादियो की ताकत है। सत्य जानने वाले राष्ट्रवादियो को चाहिए कि वे अपनी बुजदिली और उदासीनता छाड सामने आए चाहे वे जीवन के किसी भी क्षेत्र मे हो। जनचेतना और जागरूकता जब आतकवाद को दृढता के साथ चुनौती देगी तब जैसे सूर्य के उदय होते ही उल्लू छिप जाते है आतकवाद समाप्त हो जाएगा। राष्ट्र अपनी व्यक्तिवादी स्वार्थ तुष्टीकरण की और झूठी सहिष्णुता व उदारवादी नीति त्याग सत्य को सत्य कहने का साहस भर दिखा दे तो समस्या अपने आप समाप्त हो जाएगी। स्वामी दयानन्द का हमारे सामने प्रत्यक्ष उदाहरण है।

स्वामी दयानन्द विदेह (करनाल)

१ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली बेहतर उपाय है। २ जो सम्पन्न राष्ट्र अमरिका आदि देशो के द्वारा धन दिया जा •हा है उस पर अकुश लगाना होगा ३ गरीब राष्ट्रो को एक झण्डे के नीचे बेठना होगा। ४ सभी के सुख—दुख मे हाथ बढाना होगा। ५ सेना पुलिस ऑफिसर राजनीतिक पार्टियो धार्मिक सस्थानों सस्थाओ से जाति वर्ग भेद मिटाना होगा तथा बेरोजगारी मिटाना होगा।

नवल सिह (उत्तर प्रदेश)

आतकवाद मे सलिप्त लोग इस्लाम और ईसाई मत वाले ही है और ये दोनो ही मत विदेशो से आए है। यदि भारत की ससद ऐसा कानून बना दे कि जिन देशवासियो ने विदशो से आए मतमतान्तरो को अपना लिया है या आगे अपनाएगे उन्हे किसी निर्वाचन मे वोट देने का अधिकार नही होगा। इससे केवल आतकवाद ही नहीं कई अन्य समस्याओ का भी समाधान होगा। इससे कुछ प्रतिक्रिया होना सम्भव है उसके लिए देश तैयार रहे।

वीरेन्द्र कर (भुवनेश्वर)

श्रीराम और श्रीकृष्ण अकेले उनके भाई के साथ आतकवाद से लडते थे और सफल भी हुए। हमारे तीनो सेनाध्यक्षो के चाहने से सब ठीक हो सकता है लेकिन वे नही चाहते। वे सासदो की अपेक्षा रखते हैं। इसलिए हमारे सेनाध्यक्षो जागो और जगाओ ताकि पाकिस्तान से घुसपैठ हमारे देश मे न घुस पाए और आतकवाद न फैला सके।

सावित्री कर (उडीसा)

देश की समस्याओ को हल करने वाली युवा पीढी खाने पीने और मौज उडाने मे व्यस्त है तथा अनावश्यक टी०वी० सीरियल मे मस्त है। देश की कठिनाई के बारे मे सोचते नहीं। अत हरेक व्यक्ति को निर्भय होकर आतकवाद के विरुद्ध लडना चाहिए ताकि आतकवादी को कही भी छुपने की जगह न मिल पाए।

ब्रजेश कुमार गुप्ता (पूर्वी चम्पारण)

आतकवाद को जडमूल से समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि पुलिस बल को प्रशिक्षित किया जाए एव न्याय व्यवस्था को चुस्त किया जाए इसके अलावा जनता मे जागरूकता जिम्मेवारी एव सहभागिता की भी अत्यन्त आवश्यकता है। सरकार प्रशासन न्याय व्यवस्था एव विद्वान इन सभी को मिलकर भारत म एक सवसम्मत और साझी रणनीति बनाकर ऐसा माहौल बनाने की आवश्यकता है जहा जनता म सहभागिता उभर सके।

महादेव प्रसाद आर्य (बिहार)

१ देश के नेताओ की गुण्डा—गर्दी बन्द हो और वोट के कारण अल्पसख्यको से न बिके। २ देश मे सेनाओ को आतकियो को भगाने हेतु पूरी छूट मिले। ३ बाहर से आए मुसलमानो को देश से बाहर करे। ४ कुछ ही मुसलमान देश का सच्चा नागरिक है। ५ अन्तिम निदान है — पाकिस्तान से युद्ध।

तारकनाथ मुंडा (उडीसा)

देश जाति धर्म की अनेकता एव इन विषयो पर गलत धारणा ही आतकवाद का मूल कारण है। अत आतकवाद को जड से समाप्त करने के लिए इस अनेकता को समाप्त करना ही होगा।

आनन्द पंड्या (नई दिल्ली)

हिन्दुओ को मुसलमानो से उनकी एकता और ईसाइयो से उनकी सेवा सीखनी होगी। लाखो साधू, धर्माचार्य व्यापारी सेना व पुलिस के लोग देशभक्ति द्वारा देश की रक्षा करे सारा देश उनकी ओर देख रहा है।

गोविन्दराम़ आर्य (कलकत्ता)

हमे भी प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर नवयुवको को प्रशिक्षित करके पाकिस्तान के मुख्य मुख्य केन्द्रो पर हमले करने होगे तभी पाकिस्तान ठण्डा हो सकता है। पाकिस्तान के साथ युद्ध करना इसका हल नही है कारण युद्ध करने से विश्व का सर्वनाश है और भारत के लिए भी घाटे का सौदा है।

इन विचारो के अतिरिक्त यदि कोई पत्र किसी कारण से हमे प्राप्त न हो पाया हो या छूट गया हो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी है। आशा है विद्वान पाठको का सहयोग हमे पूर्ववत प्राप्त होता रहेगा।

छात्रवृत्ति समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान की ओर से १० नवम्बर का प्रात १० बजे से १०० बजे तक गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को छात्रवृत्तिया प्रदान करने का समारोह गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली मे आयोजित किया गया है। प्रधान श्री रामपाल शास्त्री ने बताया के इस कार्यक्रम मे आचार्य हरिदत्त उपाध्याय जी (रोहतक) का अभिनन्दन भी किया जाएगा।

दीपावली का सन्देश

– श्री राम सुमेर मिश्र

वैदिक धर्म के अभाव मे हिन्दू सस्कृति यह विश्वास करती चली आ रही है कि पर्व ऐतिहासिक हैं। दीपावली का शुभ पर्व इसलिए मनाया जाता है कि इस दिन रामचन्द्र जी १४ वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या मे राजगद्दी पर बैठे थे। इसी प्रकार सभी पर्वो मे दन्त कथाए लगा दी गई है। किन्तु वह चार वैदिक पर्व श्रावणी दशहरा दीपावली और होली इतिहास से अछूते है। यह चार पर्व जीवन के चार पडाव है। जीवन के चार लक्ष्य हे धर्म अर्थ काम और मोक्ष। यह चार पर्व इनसे ही सम्बन्धित हैं। अत यह चार पर्व जीवन को अपने लक्ष्य से अभिन्न करते है तथा साधन पथ पर स्थापित करते ह।

दीपावली का शुभ पर्व चार पदार्थो मे से काम से सम्बन्धित है। काम का यहा अथ काम क्रोध लोभ मोह वाल काम से सम्बन्धित नही है। यह तो जीवन के शत्रु है किन्तु साधना का यह काम एक सत्य पदार्थ हे। जीवन हे तो उसका कोई उद्देश्य है उसका कोई अर्थ है जो अर्थ होता है वही सत्य होता है। जो सत्य हाता है वह अवाधित होता है ओर सहज प्राप्त होता है। अर्थात जीवन मे सहज प्राप्त अबाधित सत्य जो है वही काम है। अथात जीवन की जा माग हे जीवन जिसके लिए साधन रूप ह वही काम हे। जीवन उत्पन्न होता है प्रौढ हाता है श्रम करता है शिथिल होता है और अन्त है। इस सारी धारा के अन्दर वह किसी आवश्यकता की पूर्ति मे सलग्न रहता है यह आवश्यकता किसी माग के अस्तित्व का सकत करती है यह माग जिसकी हे वही मै हू। यह माग ही मेरा काम है। अब हमको जिज्ञासा होती है कि हमारी माग क्या हे ? एक ऋषि से एक जिज्ञासु न पूछा कि ईश्वर ने सृष्टि क्यो की और मुझे क्यो पैदा किया। ऋषि ने उत्तर दिया वासना के कारण काम के कारण। कार्ल मार्क्स ने कहा अध प्रेरणा ही जीवन और जगत की उत्पत्ति का कारण है। बुद्ध ने कहा काम ही उत्पत्ति का हेतु है। महर्षि स्वामी दयानन्द कहते है कि कोई जीव का कर्म ऐसा नहीं हो सकता कि काम का मूल ही क्षय हो जाए अत जीव प्रवाह से सदा जन्म लेता रहेगा मोक्ष के बाद भी जन्म लेगा।

महर्षि दयानन्द के शब्दो मे वैदिक धर्म यह घोषित करता है काम का क्षय सम्भव नहीं है। अत मनुष्य को काम की पूर्ति की साधना करना उसका धर्म है।

दीपावली का शुभ पर्व इस पूर्ति के लक्ष्य की सिद्धि करने की साधना बतलाया है। महर्षि दयानन्द इसकी सिद्धि के लिए ईश्वर की कृपा का होना अनिवार्य बतलाते है। कार्ल मार्क्स कहता है कि काम की सिद्धि एक मात्र अर्थ से ही हो सकती है। अर्थ शास्त्री भी ऐसा ही विश्वास करते हे।

धर्म शास्त्री कहते है कि अर्थ से किसी काम की एक बार पूर्ण तुष्टि अवश्य हो जाती है किन्तु काल के भवसान मे वह पुन उठती है। तुष्टि के पूर्व नीरसता रहती है कलपना पडता हे और अभाव की अनुभूति होती है। तुष्टि के बाद पुन स्मृति एक नए राग के साथ कलपाती है। ऐसा क्यो होता है ? इससे जीवन मे अशाति और दुख बराबर बना रहता है।

खोज करने पर ज्ञात होता है कि जिसने जीवन दिया है उसी ने सृष्टि भी दी है जीवन की माग के हेतु सृष्टि का निर्माण है। माग की पूर्ति किसी नए अर्थ का उत्पादन नहीं करना है। वरन प्राप्त पदार्थ का सदुपयोग करना है जीवन जिस परिस्थिति मे उत्पन्न होता हे उसी परिस्थिति मे उसके काम की पूर्ति की सामग्री उपस्थित है। बच्चे क आने के साथ मा के स्तन मे दूध विद्यमान से है।

हमारी सबसे बडी भूल यह हाती हे कि हम जीवन के प्रति राग रखकर मोह मे एस आवद्ध हो जाते है कि जीवन के श्रम को माग की पूर्ति मे व्यय न करके उसको सुख देने की कल्पना मे आबद्ध हो जाते ह। यह झूठी इच्छाओ की मूल माग पर आच्छादन माग को ढक लेता है किन्तु समय पाकर वह पुन अतृप्त अवस्था सम्मुख होती है जिससे नीरसता अभाव और विकलता अनुभव होती है।

इस मोह से छूटे बिना सुखासक्ति का नाश नही हो सकता। और इसका अन्त हो सकता है एक मात्र ईश्वर विश्वास से। इसी कारण महर्षि ईश्वर की कृपा को साधना का अबाधित अग मानते हे। यदि हम मोह को छोडकर ईश्वर के दिलाए हुए विवेक का आदर कर ले तो प्राप्त सामर्थ्य से प्राप्त परिस्थिति का सदुपयोग करके काम की पूर्ति सरलता से कर सकते हे।

विवक हमको यह बतलाता है कि किसी भी मानव की सारी आवश्यकताए अकेले श्रम से पूरी नही हो सकती और साथ ही यह भी बतलाता है कि एकाकी मानव अपने सार श्रम से प्राप्त भोग को भाग भी नही सकता। अत मानव एक समाज है जिसमे व्यक्ति अभिन्न है। अत शुभ भावना से आयसमाज स अभिन्न हाकर ही मानव काम की सिद्धि कर सकत हे। हमारी आवश्यकता यही हे कि हम किसी की आवश्यकता हो जाए। यदि इस प्रकार समाज मे सब अभिन्न हो जाए तो मोह भी छूट जाए आसक्ति भी मिट जाए और काम की पूर्ति से कृतकत्य भी हा जाए

यह दीपावली का वैदिक पव वैदिक धम का यह सन्दश देता हे इसको स्वीकार करके सभी सुख समृद्धि से सम्पन्न हा आनन्द पा सकते हे।

जगमग दीप जलाएं

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आओ ! आर्य सपूतो आओ ! जगमग दीपजलाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

मिटटी के दीपो से निश्चय मिटता नही अधेरा
अगणित तारो के उगने से होता नही सबेरा

दानवता के तिमर सैन्य ने महिमण्डल है घेरा
रहा नही है मानवता का सुन्दर सुखद बसेरा

बिखरा किरणे ज्ञान ज्योति की नया सबेरा लाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

तम के अचल मे सोता हे आज यहा दिनमान
ज्ञान हमारा कहा लुप्त है विस्तृत क्यो अज्ञान ?

चलो देख लो कहा सो रहा भारत का अभिमान
सत्य शिवम सुन्दरता पूरित कहा गए प्रतिमान ?

बन करके आलोक पुज हम जाग्रत ज्योति जगाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

लोभ मोह मद मत्सर का है फैला पारावार
काम क्रोध बढ रहा चतुर्दिक नष्ट धर्म का सार

मानवता के तत्वो का क्यो ? होता है व्यापार
भौतिक सस्कृति नही कभी कर सकती हे उपचार

धर्माध्यात्म प्रदीप प्रमाहम पुन प्रदीप्त कराए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

ऐसा दीप जले जिससे न रहे तिमिर का लेश
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा यह प्रगटे ज्ञान दिनेश

दम्भ द्वेष मिथ्या हिसा का बचे नही अवशेष
प्रेम दया ममता का सदा रहे उन्मेष

शान्ति सफलता समृद्धि के सगीत मनुज सब गाए।
गहन तिमिर मे भटक रही जगती को राह दिखाए।।

– मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

मेरे गुरुदेव

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान गुरुदेव दयानन्द को जिसकी दृष्टि मे भारत के आध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था।

– रविन्द्र नाथ ठाकुर

मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० नामवरसिंह द्वारा

महर्षि दयानन्द की मिथ्या आलोचना

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

दयानन्द के वेदवाद पर अनावश्यक प्रहार करने वाले डॉ सिह को यह बता दू कि स्वामी दयानन्द ने भी अपने शिष्यो और अनुयायियो को यह स्पष्ट कह दिया था कि वे उनके कथन को केवल इसीलिए नही माने कि यह उनका कहा है बल्कि उनके उपदेश मे भी उन्हे कोई त्रुटि प्रतीत हो तो वे स्वविवेक से उसे सुधार ले। दयानन्द के प्रासगिक वाक्य इस प्रकार है – "मेरा कोई स्वतन्त्र मत नही है और मै सर्वज्ञ भी नही हू। इससे यदि मेरी कोई गलती आगे पाई जावे तो युक्ति पूर्वक परीक्षा करके उसे भी सुधार लेना।" (आर्यसमाज मुम्बई नो इतिहास– दामोदर सुन्दरदास लिखित।)

राहुल प्रसग को लेकर डॉ० सिह डॉ० शर्मा पर व्यग्य बाणो की वर्षा करने से नही चूकते। इस लपेटे मे वे गाहे बगाहे आर्यसमाज को भी ले लेते हैं। उनके अनुसार जिस आर्यसमाज को राहुल जी ने १६२० मे छोडा उसी ओर रामविलास जी ७० वर्ष बाद आ गए। यहा यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि डॉ० शर्मा आर्य समाज तथा दयानन्द के कितने ही प्रशसक रहे हो वे औपचारिक रूप से आर्यसमाज से कभी सम्बद्ध नही रहे। डॉ० सिह को इस बात से भी गिला है कि आर्यसमाज से जुडे बहुत से लोग आर० एस० एस० विश्व हिन्दू परिषद् बजरगदल तथा भाजपा मे आ गए है। उन्हे पता होना चाहिए कि आर्यसमाज भी विचार स्वातन्त्र्य का कटटर हामी है। उसका कोई सदस्य अपने सिद्धान्तो पर दृढ रहता हुआ यदि किसी समानधर्मा राजनैतिक दल या सामाजिक सस्था से जुडता है तो इसमे कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है।। कोई नामवर सिह जी से भी पूछ सकता है – आप उस मार्क्सवादी दल से क्यो जुडे हैं जिसने १६४७ मे पाकिस्तान का समर्थन मुसलमानो के आत्मनिर्णय के कथित अधिकार की दुहाई देकर किया था। जिस पाकिस्तान का समर्थन भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी ने किया था आज उस पार्टी को पाकिस्तान मे क्यो नही पनपने दिया जाता।

इस लेख मे कहीं–कही डॉ० सिह ने भी समझदारी की बात लिखी है। यथा –"१६२० के आसपास तो बात ही कुछ और थी। उस समय तो लाला लाजपत राय जैसे आर्यसमाजी भी स्वाधीनता सग्राम के अग्रणी नेताओ मे थे। यही नही बल्कि प्रेमचन्द जैसे लोकहृदय साहित्यकार भी आर्यसमाज से सहानुभूति रखते थे। राहुल जी ब्राह्मणवादी रुढियो से मुक्त होने के लिए दयानन्द के मार्ग पर आए थे। जिनसे हिन्दू समाज को मुक्त कराने के लिए दयानन्द ने पूरे उत्तर भारत मे अभियान चलाया था।"

सच तो यह है कि डॉ० सिह को ६ दिसम्बर १६६२ को घटी घटना का पूरा मलाल है। किन्तु इसक लिए वे आर्यसमाज को क्यो दोष देते हैं ? उनकी धारणा है कि १६६२ तक आर्यसमाज का एक हिस्सा साम्प्रदायिक हो चुका था और उन्हे शिकायत है कि रामविलास जी का दयानन्द मोह इसे साफ साफ स्वीकार करने के लिए तैयार नही है। सच तो यह है कि आर्यसमाज के भीतर क्या घट रहा है और वह साम्प्रदायिक बन चुका है या नहीं इस पर डॉ० सिह की राय का कोई महत्व नहीं है। यह आर्यसमाज का आन्तरिक मामला है। किन्तु उनका उद्देश्य तो रामविलास जी के दयानन्द मोह पर कटाक्ष करना है सो उन्होने कर दिया। रामविलास जी के लिए सच कहना भी गुनाह हो गया।

डॉ० राम विलास अपने लेख मे परम्परा और विकास दोनो के महत्व को स्वीकार करते हैं। यही बात स्वामी दयानन्द के चिन्तन पर भी लागू होती है। वे परम्परा को उचित महत्व देते हैं किन्तु वहीं रुकते नहीं। वे मनुष्य को आगे बढने प्रगति करने तथा विकास के मार्ग पर बढने की बात करते हैं। दयानन्द के जीवनदर्शन तथा उनके उपदेशो को समझने मे परम्परा और प्रगति को एक साथ देखना चाहिए। डॉ० सिह ने शर्माजी द्वारा किए गए ऋग्वैदिक समाज के चित्रण पर भी आपत्ति उठाई है। ऋग्वैदिक समाज का एक चित्र राहुल जी ने भी उपस्थित किया था जो आर्यजाति और वेदो से जुडे उनक पूर्वाग्रहो से ग्रस्त था। जब डॉ० राम विलास ने ऋग्वेदकालीन समाज मे दिव्यता और उदात्तता को देखा तो यह सिह जी को खटक गया। वे तो राहुल जी के चश्मे से वेदिक समाज को देखने के आदी है। अत पूछते है – क्या वेद कालीन आर्य आपस मे कभी नही लडते थे। सच तो यह है कि वेदो मे मानवी हित की बाते तो है जिनस व्यक्ति परिवार समाज तथा राष्ट्र क निर्माण मे सहायता मिलती है किन्तु वह किसी विशिष्ट युग के समाज का चित्राकन नही करता जैसा कि वेदो का ऐतिहासिक अर्थ निकालने वाले लोगो का आग्रह है। ऐसे लोगो मे राहुल साकृत्यायन तथा कन्हैयालाल मुशी जैसे महानुभावो के साथ–साथ डॉ० नामवर सिह को भी गिनना होगा। जिनके अनुसार वेदो के ऋषि कविता करते है (मन्त्रो की रचना करते है।)। गीत गाते हैं और आग जलाकर नाचने मे मग्न रहते है।" वेदो के सहस्त्रो मन्त्रो मे जो उच्च उदात्त भाव हैं दार्शनिक और आध्यात्मिक तत्व हैं उन्हे न देखकर डॉ० सिह यही सब देखते हैं। लोकोपकारी यज्ञ को वे आग जलाना कहते हैं।

क्या बौद्धों ने वेदों के लिए कोई सकट खडा किया था ?

यहा डॉ० सिह ने एक विचित्र बात लिखी है। उनका कहना है कि बुद्ध द्वारा अपने धर्मचक्र के प्रवर्त्तन तथा उसके बाद सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के तीव्र प्रचार ने वेदो के अस्तित्व का सकट उपस्थित कर दिया था। शायद वे कहना चाहते हैं कि बौद्ध धर्म जिस रफ्तार से बढ रहा था पूरी आशका थी कि वेद और वैदिक धर्म लुप्त न हो जाये। एक कदम आगे बढकर वे कहना चाहते है कि ऐसी सकट कालीन स्थिति मे महर्षि पतजलि ने जब व्याकरण महाकाव्य का प्रणयन किया और इस ग्रन्थ के आरम्भ मे व्याकरण ज्ञान की आवश्यकता बताई तो वे यह कहना नही भूले कि वेदो की रक्षा करना व्याकरण का एक उद्देश्य है – रक्षार्थ वेदानाम ध्येय व्याकरणम। यह रक्षा बौद्धो के वेदो पर हमलो के कारण आवश्यक थी। किन्तु यह डाक्टर महोदय की कोरी (खाम ख्याली है। न तो बौद्ध धर्म के कारण वेदो पर कोई सकट आया था और न किसी युग मे उनका अध्ययन सर्वथा बद हो गया था। यदि पतजलि व्याकरण के अध्ययन को वेदो की रक्षा के लिए आवश्यक मानते है तो यह उनका कथन किसी अन्य सदर्भ मे (जेसा डा० सिह साचत हे) न होकर सामान्य कथन ही है। व्याकरण के अध्ययन की उपयोगिता तथा उसके लाभ बताना उस शीर्ष वैयाकरण के लिए आवश्यक था। वेदो के यथार्थ ज्ञान के लिए व्याकरण ज्ञान आवश्यक है।

डा सिह ने अपने ढग से शर्मा जी के परम्परा और विकास के लिए सूत्र की आलोचना की है। उनका कहना है कि परम्परा को छोडे बिना प्रगति की राह पर आगे बढना सर्वथा दुष्कर है। किन्तु यह भी एक पूर्वाग्रह या दुराग्रह ही है। अच्छी परम्पराओ से नाता तोडना प्रगति या विकास के लिए आवश्यक नहीं है। परम्परा और विकास साथ साथ चल सकते हैं।

वेद की भाषा सर्वाधिक प्राचीन डा० सिह ने शर्माजी को परम्परा मोह से ग्रस्त बताया और इस प्रसग में भाषा विज्ञान का प्रसग ले बैठे। भाषा विज्ञान के अध्येताओ को ज्ञात है कि जब यूरोप मे इस विद्या का आरम्भ और विकास हुआ तो इस शास्त्र के अध्येताओ के समक्ष एक समस्या यह ज्ञात करने की थी कि ससार की प्रथम (आदिम) भाषा कौन सी है ? यद्यपि वैदिक सस्कृत से अधिक प्राचीन किसी भाषा का अस्तित्व वे तलाश नहीं कर सके किन्तु उनका पूर्वाग्रह ग्रस्त मानस इस बात की इजाजत नहीं देता था कि वे ऋग्वेद की भाषा को ससार की आदिम भाषा स्वीकार करे ? तब क्या किया जाये ? इन भाषा वैज्ञानिको ने एक नई कल्पना की वैदिक भाषा से भी कोई पुरानी भाषा अवश्य रही होगी यद्यपि उसका अस्तित्व नष्ट हो चुका है। इस काल्पनिक भाषा को उन्होने ससार की प्रथम आदि भारोपीय भाषा का नाम दिया और किसी मनचले ने तो उसकी कल्पित शब्दावली भी बना ली। यह किस्सा आज भी भाषा विज्ञान के विद्यार्थी अपने पाठयक्रम मे पढते है।

सर्वप्रथम वैदिक रिसर्च स्कालर प० भगवद्दत्त ने पश्चिमी भाषा वैज्ञानिको की उक्त धारणा को चुनौती दी तथा सप्रमाण सिद्ध किया कि वैदिक भाषा से प्राचीन कोई भाषा इस धरती पर कभी नहीं रही। डा शर्मा की भी यही स्थापना है जिसे उन्हाने बकौल डा० सिह 'वैदिक आर्य भाषा को ही आदि भारोपीय भाषा सिद्ध करने के लिए राम विलास जी ने 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी नामक तीन जिल्दो के डेढ हजार पृष्ठ और अपने जीवन के अमूल्य डेढ दशक (१५ वर्ष) सर्फ कर दिये। यह है हमारे कम्युनिस्ट समीक्षक की पीडा कि डा० शर्मा ने ऋग्वैदिक सस्कृत को ससार की आदिम भाषा सिद्ध करने मे अपना समय और श्रम क्यो गवाया ? उन्हें इस बात का भी कष्ट है कि वैदिक भाषा को प्राचीनतम सिद्ध करने के साथ साथ डॉ० शर्मा ने आर्यों को भारत का मूल निवासी सिद्ध करने मे क्या परिश्रम किया ? वे डॉ० शर्मा द्वारा अपने विचार की पुष्टि मे पेश की गई भाषाई दलीलो तथा पुरातात्विक प्रमाणो का उपहास तो करते हैं किन्तु इनका खण्डन करने का साहस नहीं जुटा पाते। क्रमश

लक्ष्मी की सही पूजा

— खुशहाल चन्द्र आर्य

किसी चीज की पूजा करने का तात्पर्य होता है उस चीज का सदुपयोग करना अथवा उसकी प्राप्ति करना। यहा लक्ष्मी की पूजा का मतलब जिन कार्यों के करने से लक्ष्मी की प्राप्ति हो उन कार्यों को करना। जैसे सरस्वती की पूजा या प्राप्ति विद्या पढने से होती है वैसे ही लक्ष्मी की पूजा या प्राप्ति सच्ची लगन से मेहनत परिश्रम व पुरुषार्थ करने से होती है। लक्ष्मी को अजित करना हो तो आप बुद्धिपूर्वक लगन के साथ परिश्रम व मेहनत करो आपको लक्ष्मी अवश्य प्राप्त हो जायेगी। अधिकतर लोग लक्ष्मी की प्राप्ति भाग्य से मानते हैं। उनका कहना है कि मेहनत और पुरुषार्थ से ता मनुष्य ज्यादा से ज्यादा पेट ही भर सकता हे लेकिन लक्ष्मी तो जिसक भाग्य मे लिखी हाती हे उसी को मिलती ह। यानि यह इश्वर की इच्छा पर निर्भर है कर्म इसमे आडे नही आता। यह उनका कहना वैदिक सिद्धान्तो से सही नही है। हमने कितने ही लक्ष्मीपतियो को देखा है जो पहले एक साधारण व्यक्ति ही थे फिर अपनी बुद्धिपूर्वक ईमानदारी के साथ मेहनत व पुरुषार्थ करने से धीरे धीरे लक्ष्मीपति बन गये। उदाहरण के तौर पर छज्जूराम जो हरियाणा के एक छोटे से गाव अलखपुरा मे एक इतने गरीब जाट परिवार मे पैदा हुए थे जिसको बचपन मे पेट भरने के लिये दो समय की रोटी भी नसीब नही थी। उसने बडी कठिनाई से तीन चार क्लास तक की पढाई गाव की ही पाठशाला मे की और फिर चौदह पन्द्रह वर्ष की अल्पायु मे ही उसको मकान बनाने वाले मिस्त्री के नीचे ईंट व मिटटी पकडाने का काम करना पडा। एक दिन बच्चा होने के कारण उससे मिस्त्री की कुण्डी (जिसमे पानी व मिटटी घुली हुई होती है) पकडाते समय कुछ घुली हुई मिटटी नीचे गिर गई। मिस्त्री ने गुस्सा मे आ कर न आव देखा न ताव कर्णी जो उसके हाथ मे थी उस छोटे बच्चे छज्जूराम के माथे मे मार दी। उसके मारते ही छज्जूराम के मन मे अपने इस अपमानित जीवन से घृणा उत्पन्न हो गई और यह भाव जाग्रत हुए कि इस बेइज्जत जीने से तो कही बाहर जाकर भूखे मरना ही कहीं अच्छा है। वह काम से छुटटी पाने के बाद अपनी मा के पास आकर दुखित भाव से बोला माताजी आप किसी प्रकार से भी पन्द्रह बीस रुपये की व्यवस्था कर देवे मै कलकत्ता जाऊगा और वहा जैसे मेरे गाव के वैश्य भाई रुपये कमाते है तो क्या मै नहीं कमा सकूगा ? ईश्वर ने मुझे भी ता बल व बुद्धि दी है मै अपनी पूरी मेहनत और ईमानदारी से कलकत्ता जाकर काम करूगा ता इश्वर मुझ भी अवश्य सफलता दग। पहले ता माता ने अपने लाडले बच्चे को प्यार से गले लगाया और फिर बच्चे का दृढ निश्चय देखकर माता ने एक दो बर्तन बेच कर पन्द्रह बीस रुपयो की व्यवस्था कर दी और अपने होनहार बच्चे को ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कलकत्ता के लिए विदा कर दिया। वह बच्चा इतना मेहनती बुद्धिमान सच्चा ईमानदार व कर्त्तव्य परायण निकला कि कलकत्ता आते ही किसी अग्रेज ऑफिसर को अपने विनम्र व्यवहार से खुश करके एक हैसियन जूट मिल मे चौकीदारी का काम करना शुरू कर दिया। उसी दिन से उसके जीवन का उत्थान होना आरम्भ हो गया। उसी ऑफिसर की सहानुभूति से वह हैसियन का अच्छा बडा दलाल बन गया और देखते ही देखते अपनी कार्य कुशलता के बल पर कलकत्ता के अच्छे धनी मानी लोगों मे अपना एक विशेष स्थान बना लिया। कलकत्ता महानगर मे खूब अच्छा व्यवसाय करके खूब धन कमाया गाडी ली कई मकान बनाये खूब प्रतिष्ठा प्राप्त की। दान की प्रवृत्ति होने से उसने अनेको स्कूल कालेज पाठशाला अनाथालय व गऊशाला खुलवा कर बडा यश कमाया। यही कहानी सभी ध नी लोगो के जीवन मे घटित होती है। बिडला व डालमिया भी एक साधारण परिवार म उत्पन्न हो कर अपने परिश्रम ईमानदारी लगन व पुरुषार्थ से भारत के शीर्ष धनाढय लोगो मे गिने गये।

जो व्यक्ति लक्ष्मी को भाग्य की बात मानते हे उनको यह मालूम होना चाहिए कि भाग्य भी तो इस जन्म व पूर्व जन्म मे किये हुए शुभ कर्मो का सचय (सग्रह) ही होता है। इसका अपने आप बन जाना मानना सिर्फ पुरुषाथ हीन लोगो की कोरी कल्पना मात्र ह।

ईश्वर अपनी इच्छ स किसी को भाग्यवान या भाग्यहीन नही बनाता। वह ता जीव [illegible] अच्छे या बुर किये हुए कर्मो का फल ही दता है। ईश्वर सब विषयो से पर होने के कारण उसकी न कोई इच्छा होती है और न किसी से राग (लगाव) और न किसी से द्वेष होता है। उसका हर काम न्याययुक्त और पक्षपात रहित होता है। जीव जैसा कर्म शुभ या अशुभ करेगा उसी के अनुसार ईश्वर फल देगा। गीता मे भगवान श्रीकृष्ण ने बिल्कुल ठीक कहा है। अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम।

आपको यह जानकर आश्चर्य भी हो सकता है कि वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार ईश्वर भी अपने नियम व व्यवस्था से बधा हुआ है। वह जीव को अपनी इच्छा से कम या ज्यादा फल दे ही नही सकता। यदि ऐसा न करे यानि अपनी इच्छा से किसी को कम और किसी को ज्यादा फल देवे तो उसकी न्याय व्यवस्था मे दोष आ जाता है। प्रसगवश यहा यह लिख देना भी उचित है कि कई हमारे पौराणिक भाई कह देते है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान होने से वह अपने भक्तो को खुश करने के लिए या उनका दुखहरण करने के लिए नौकर नाई आदि भी बनता है। यह भी असम्भव है इससे भी ईश्वर की न्याय व्यवस्था को आघात पहुचता है। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने सर्वशक्तिमान का अर्थ यह बतलाया है कि ईश्वर अपने काम मे किसी दूसरे का सहयोग नही लेता। वह सब काम अपनी शक्ति व सामर्थ्य से स्वय ही करता है। उसी विषय को आगे बढाते हुए मै लिखना चाहता हू कि भाग्य किसी का भी ईश्वर अपनी इच्छा से नही बनाता। भाग्य मनुष्य अपने कर्मो से स्वय बनाता हे और उसका फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था क अनुसार जीव को स्वय ही भोगना पडता है। कम करने मे जीव स्वतन्त्र ह ओर फल इश्वर अपनी न्याय व्यवस्था व अनुसार उसका दता ह यानि जीव [illegible] म परतन्त्र हे।

लक्ष्मी या धन क्या चीज है मे आपको एक उदाहरण देकर समझाने की कोशिश करूगा। जैसे एक मजदूर एक दिन मे पचास रुपये कमाता है। उसमे से वह पच्चीस रूपये खाने पीने पहनने व रहने मे खर्च कर देता है। बाकी पच्चीस रूपये बचा लेता है। यही पच्चीस रूपये एक साल मे नौ हजार रुपये बन जाते है। इसी नौ हजार रुपयो को हम उसकी लक्ष्मी धन या पूजी कहते हे। सही रूप मे देखा जाये तो यह एक साल का सग्रह किया हुआ श्रम ही है। यदि वह अपनी पूरी कमाई पचास रूपये प्रतिदिन खर्च देता तो क्या उसके पास नौ हजार रुपये बचे रहते ? यही बात व्यापार नौकरी व खेती मे लागू होती है। खर्च करने के बाद जो बचे हुए रुपये हे उसी को हम धन या लक्ष्मी कहते है। यह सग्रहित परिश्रम ही धन या लक्ष्मी होता है इसके अलावा और कुछ नही। वैसे ही पूर्व जन्म मे जीव जो शुभ या अशुभ कर्म करता है उसका फल कुछ तो उसी जन्म मे उसको मिल जाता है ओर कुछ शुभ या अशुभ कर्मो का फल उस जन्म मे जीव जो नही भुगत पाता वही सचित शुभ या अशुभ कर्म अगले जन्म मे सौभाग्य या दुभाग्य क रूप म जीव को भुगतने पडत हे। यदि किसी मनुष्य क सचित शुभ कर्म भुगतने बाकी रह जाते हे ता वह साभाग्यशाली कहलाता है ओर जिसक बुरे कम भुगतन बाकी है वह दुभाग्य वाला कहलाता ह। जा उसक इस जन्म मे भुगतने पडते ह। यह शुभ या अशुभ कम जो हमार ही किये हुए होते ह उसका हम जो प्रतिफल मिलता हे वही हमारा भाग्य कहलाता हे इसलिए यह भाग्य हमारे ही किये हुए कर्मो का फल है न कि ईश्वर की इच्छा।

वेद के इस मन्त्र से कर्म का सिद्धान्त स्पष्ट हो जाता है।

कृत मे दक्षिणे हस्ते
जयो मे सत्य अहित ।

ईश्वर जीव से कहता है कि तू दाहिने हाथ से कर्म व पुरुषार्थ कर तो बाये हाथ मे विजय सफलता या फल निश्चित है मै किसी से भी राग द्वेष अन्याय व पक्षपात नही करता।

एक लघु ग्रन्थ साध्य-योग-प्रकाश

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

– भगवन्त सिंह कपूर

तीनो ही निरोधो के देश काल और सख्या का परिमापण

देश निरोध के समय जहा तक चींटिया सी चलती प्रतीत हो शरीर म वहा तक प्राण फैले – यह देश का परिमापण है। रेचक म वायुवेग हाथ पर पडने के आभास की दूरी स देश का अनुमान होता है। रेचक मे यह दूरी जितनी कम हो अर्थात प्रश्वास जितना धीरे हो उतना ही लाभदायक होता है।

काल निरोध कितने समय तक रहा अथवा श्वास प्रश्वास न समय का काल कहते है। इस कुछ कुछ दिनो के अभ्यास के बाद बढाते रहना चाहिए शीघ्र नही।

सख्या कितनी बार मे श्वास प्रश्वास किया अथवा प्राणायाम की कितनी आवृत्तिया कर सके।

निरोध की दीर्घता एव सूक्ष्मता का अवलोकन

दीर्घता दश काल एव सख्या को शीघ्र नही अपितु कछ कुछ दिनो के अभ्यास के बाद बढाना चाहिए। इस बढे हुए काल की लम्बाई का नाम दीर्घता है।

सूक्ष्मता प्राणायाम म श्वास प्रश्वास की गति अति सूक्ष्म हल्की या धीरे हो जाये जो पता भी न चले और अभ्यास म कष्ट भी न हो इस अति धीमी गति और श्वास के अनुभव के अभाव को यहा सूक्ष्म कहा गया है

४ बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी

प्राणायाम बाहर भीतर रोकने से होता है अर्थात जब श्वास बाहर स भीतर को आवे तब प्राणो को विपरीत धक्का देते हुए कुछ कुछ बाहर ही रोकते रहना। जब प्रश्वास भीतर स बाहर को जाने लगे तब भी विपरीत धक्का देते हुए भीतर ही कुछ कुछ रोकते रहना। बाह्य एव आभ्यन्तर के देश काल सख्या की अग्रिम अवस्था पर बढना श्वास प्रश्वास का निरोध करना। यह पूर्ण प्राणायाम है।

४ अ बाह्याभ्यन्तर वृत्ति नासिका से सम्पूर्ण प्रश्वास का बाह्य कुम्भक से आरम्भ कर प्राणायाम के सभी अग पूरक धीरे धीरे आभ्यान्तर कुम्भक यथाशक्ति अन्दर रोककर रेचक बहुत धीरे बाहर निकालना पूववत करना।

स्वास्थ्य लाभ एव रोग निवारणार्थ इन्ही के भाग उपभाग और कुछ परिवर्तन के साथ कई प्रकार के प्राणायामो का विधान है अन्यथा सामान्यत प्राणायाम के अगो का अनुपात अगर पूरक एक मत्रजाप अभ्यातर कुम्भक दो रेचक तीन एव बाह्य कुम्भक चार मत्र जाप तक करते है। तो समस्त शरीर निरोग रहता है।

गायत्री मत्र

सध्या से पूव तीन प्राणायाम के बाद गायत्री मत्र से शिखा बन्धन का आदेश है। इसलिए गायत्री मत्र के अर्थ भावना एव क्रिया पर विचार करते है।

वेद मत्रो म जैसा पहले बता चुके है स्तुति प्राथना व उपासना का समावेश रहता ही है।

गायत्री मत्र स बल विद्या व बुद्धि प्राप्त होती है ऐसा कहा जाता है। जो प्रभु की स्तुति व प्राथना करने के साथ मत्र म कहे प्रभु गुणो को बुद्धि पूवक धारण करने स अथात उपासना स होती है अब हमे यह ढूढना है कि किस विशेष गुण को बुद्धि म धारण करने से मोक्ष मार्ग के पथिक बन सकते है – इसलिए गायत्री मत्र के भावात्मक अर्थो के साथ किया जाने वाला सकल्प नीचे दिया है –

अथ गायत्री मन्त्र

ओ भूर्भुव स्व। तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात।।

य०अ० ३६ म० ३।। ऋ० मण्ड० ३ सू० ६२ म० १०।।

ओ भू र्भुव स्व – ये तीन महा व्याहृतिया हैं जो प्रभु के गुण व स्वभाव प्रदर्शित करते हैं अर्थात उत्पादक पालक व सहारक।

आगे गायत्री मत्र के तीन भागो के भावार्थ प्रस्तुत हैं

१ स्तुति तत्सवितुर्वरेण्यम – तेरे सवित्र गुणो का हम वरण करते है। तेरे पवित्र पवित्र गुणो को स्तुति व जप द्वारा स्मरण करते हैं।

२ उपासना सकल्प भर्गो देवस्य धीमहि – देवस्य हे दव धीमहि अपनी धी (बुद्धि) मे अपने आप को भर्गो तपाकर शुद्ध करके – भूजकर तपस्या साधना का सकल्प लेता हू।

३ प्रार्थना – धियो यो न प्रचोदयात – धियो यो न अब मेरी धी (बुद्धि) प्रज्ञा को यो न ऐसी बनी रहने की प्रचोदयात प्रचो प्रेरणा दयात दे प्ररणा मिलती रहने की प्राथना कि प्रभु आप प्ररणा देते रहना।

सक्षेप म – हे प्रभु! तेरे सवित्र पवित्र गुणो वाले तेज स्वरूप की स्तुति कर हम वरण करते हैं एव शुद्ध करने वाले भर्ग (तपाने) को बुद्धि मे निश्चय कर सकल्प करते है कि हम भी तपस्या साधना से अपने आप को शुद्ध करने का प्रयास कर उपासना करेगे बस आपसे प्रार्थना है कि मेरी बुद्धि इस तपस्या साधना मे लगी रहे ऐसी प्रेरणा देते रहना। या हे प्रभु! हमको सदबुद्धि दे ताकि सदमार्ग मिले और तेरे इस प्रकाश से प्रेरित हर सुख दु ख मे आनन्दित रहे।

मत्र महत्व गायत्री मत्र मानव मात्र का गुरु मत्र तीन वेदो मे है। चौबीस अक्षर वाले इस मत्र को सर्वश्रेष्ठ बल एव बुद्धि प्रदाता कहा गया है। स्वामी दयानन्द ने सध्या मे तीन बार इसका प्रयोग कर इसकी महत्ता सिद्ध की है।

सध्या के तीन स्थानो पर गायत्री मत्र के उपरोक्त तीन भार्गो की क्रमश प्रत्येक स्थान पर भावना करने से साध्ययोग साधना मे प्रगति होती है। समाधि का प्रावधान भी इसी गायत्री मत्र द्वारा करके विशेष महत्व प्रदर्शित किया गया है।

साध्य विधि एक सर्वप्रथम बाह्य वृत्ति प्राणायाम (प्रकरण छह मे प्राणायाम के प्रकार एव विधि का पहला) तीन बार करें अर्थात श्वास निकालकर बाहर रोकना धीरे धीरे अन्दर लेना अन्दर बिना रोके तुरन्त बाहर निकालना।

विधि एव भावना प्राणायाम आरम्भ करते समय ध्यान नासिका के अग्र भाग पर होता है वमन के समान पूर्ण वायु जब बाहर निकालते हैं तो विचार करना है कि सारी मलिनता बाहर फेक दी और श्वास भरते समय ध्यान को भृकुटिया के बीच मे लावे आखे व मुह बन्द मे पूरक के समय मन मे ओम के उच्चारण के साथ सोचे कि प्रभु की प्राण शक्ति प्राप्त हो रही है अन्दर बिना रूके जब रेचक कर रहे हैं तब मनो विकार बाहर निकल रहे हैं। ऐसा विचार रहेगा।

मुह बन्द मे ही अगर ओम के अतिम 'म' को नासिका से निकल रही वायु से ही गुन्जायमान करे तो शिर का भाग कम्पायमान होगा। यह बहुत लाभकारी रहता है।

सध्या आरम्भ करने की क्रियाए इस प्रकार है –

१ तीन बाह्य वृत्ति प्राणायाम निन्द्रा व आलस्य हटाने की सहायक क्रिया है। इससे शिर मे ओम् के गुन्जन से जो कम्पन हुआ उससे एकाग्रता में बहुत सहायता मिलती है इस प्रकार मन ही मन ओम का ध्यान कर पूरक करें अन्दर बिना रूके रेचक के समय 'म का नासिका से गुन्जनम म अ । शिर कम्पन ।

२ ध्यान भृकुटि मे ही है तीन प्राणायाम के बाद गायत्री मत्र से शिखा बन्धन अथवा बालो का समेटना

ओं भूर्भुव स्व।
तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो
देवस्य धीमहि।
धियो यो न प्रचोदयात्।।

प्रकरण सात मे उपरोक्त मत्र के भाग एक के अनुसार तत्सवितुर्वरेण्यम प्रभु गुणो का धारण करने का सकल्प। आत्मा पति परमेश्वर का वरण कर शिखा बाध समर्पण भाव से व्रत लेता है।

विधि व भावना – इस क्रिया का अर्थ है कि बिखरे बालो का दृढ कर रखना ताकि सध्या की एकाग्रता म बाधक न बने। अथात बिखरे विचारो की गाठ लगाना ताकि सध्या मे किसी भी प्रकार का विचार एकाग्रता मे बाधा उत्पन्न न करे। उपरोक्त गायत्री मत्र।

३ आसन स्थिर पीठ सीधी अन्यथा जहा से भी पीठ झुकी होगी उसी स्थान के मेरुदण्ड के चक्र या उपकेन्द्र से सचालित किसी अग पर ध्यान खिचेगा। अगर मेरुदण्ड सीधा होगा तो ध्यान सहस्त्रार से मूलाधार तक 'धारा प्रवाह' से आना जाना करता रहेगा।

४ मुद्रा – हाथ मुद्रा की विधि एव भाव – हाथ की निचली तीन अगुलियो को सीधा रख तर्जनी मोडकर अगूठे के अन्तर्गत रखना। (अर्थ या मुद्रा की भावना मात्र सकेत के लिए है) इस समय ससारिक तीनो प्रकार के सत रज व तम गुणों को तीनों अगुलियों के रूप में आत्मा रूपी तर्जनी से अलग कर रहे हैं। तर्जनी के रूप में आत्मा को झुकाकर अगूठे रूपी परमात्मा के आधीन कर रहे हैं। अभिमान एव क्रोधादि की प्रतीक तर्जनी को दबाकर रखना उसकी यह मुद्रा मात्र स्मरण हेतु सकेत है कि श्रद्धा व विश्वास के साथ साधना में प्रवेश करें। क्रमश

एक विशेष चिन्तन

आर्य बन्धुओ ! सावधान !! कामरेड अग्निवेश से

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आर्य बन्धुओ !

आप सभी जानते हैं कि इस ससार मे देवासुर सग्राम सदा चलता रहता है। जब ससार मे विद्या का पठन पाठन अधिक होता है तो धर्मात्मा विद्वान देव प्रवृत्ति के मनुष्य ज्यादा होते हैं। और जब वैद्या का पठन पाठन न्यून होता है तब अज्ञानी अधर्मी असुर प्रवृत्ति के मनुष्य ज्यादा होते हैं। दुर्योधन की नीचता व युधिष्ठिर की मूर्खता के कारण विद्या का पाठन प्राय समाप्त सा हो गया था।

लगभग ५ हजार वर्षों के पश्चात परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से पूर्व जन्म की ऋषि आत्मा ने इस भारत भूमि मे महर्षि दयानन्द के रूप मे जन्म लेकर परमपिता परमात्मा के परम पवित्र वेद ज्ञान का दुबारा प्रचार–प्रसार किया। ऋषि द्वारा फैलाए गए विद्या रूपी प्रकाश का अनेक असुर प्रवृत्ति के लोगों ने खुला विरोध तो किया ही पर इसके साथ मे अग्रेज सरकार द्वारा रायबहादुर मूलराज को अग्रेजो ने अपना गुप्तचर बनाकर आर्य समाज मे घुसपेठ कराई। और इसके पश्चात विश्वबन्धु शास्त्री जी व उसके चेले प्रिंसिपल श्रीराम जी आदि यथाशक्ति वैदिक धर्म के नाश करने का कार्य करते रहे। इस विषय मे पूर्ण जानकारी हेतु अमर स्वामी प्रकाशन गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित विश्वबन्धु चालीसा पढे।

विधर्मियो द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार मे बाधा डालने के अनेको प्रकार के प्रयास होते रहते है। अभी हाल मे ही शिमला से किसी भारत वीर तलवार नाम के किसी व्यक्ति ने एक पुस्तक भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित करवाई। इस पुस्तक मे सारी हिन्दू जाति पर प्रहार किया गया है। महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के अन्य महापुरुषो पर अनेको दोषारोपण करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के विषय मे अनर्गल प्रलाप किया है। इस पुस्तक के लेखक को उत्तर देते समय श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु लिखते है कि ऐसा लगता है कि लेखक अग्निवेश जी का मित्र है। इस पुस्तक के लेखक को उत्तर श्री राजेन्द्र जी अपने लेखों से दे रहे हैं। फिर आवश्यकता पडी तो पुस्तक रूप से भी देगे।

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को रोकने मे कम्युनिस्ट लोग भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। उन्होने भी अपने कामरेड अग्निवेश जी को आर्यसमाज मे भेजा। अग्निवेश जी ने अपना कार्य आर्यसमाज के गढ जाट बाहुल्य क्षेत्र हरियाणा से शुरू किया। जाट बडे सरल ह्रदय के जल्दी विश्वास कर लेने वाले भले लोग होते है। इसलिए अग्निवेश जी ने वैदिक धर्म के प्रमुख गढ गुरुकुल झज्जर को निशाना बनाकर आचार्य इन्द्रदेव जी (वर्तमान के इन्द्रवेश) को अनेको प्रकार के राजनैतिक सब्जबाग दिखाकर अपने जाल में फसाकर गुरुकुल झज्जर के नौजवान जाट आचार्य की आड मे अपना चक्र चलाना शुरू किया।

कामरेड जी के कारनामे –

(१) मै जब दयानन्द कालेज हिसार मे पढता था तब सन १९७० मे दशहरा अवकाश के दिनो मे अग्निवेश जी ने कालेज मे विद्यार्थियो का शिविर लगाया था। मैंने तो किसी कारण से शिविर मे भाग तो नहीं लिया था पर सुनने चला जाता था उस समय इन्होने छुपे रूप से विद्यार्थियो मे वैदिक समाजवाद के नाम से कम्युनिस्ट विचारो को भरने का पूरा प्रयत्न किया। इनके विचार सुनकर मैने मेरे एक सहपाठी से कहा कि या तो यह अज्ञानी है आर्यसमाज के सिद्धान्तो को जानता नही या फिर यह कम्युनिस्ट है।

(२) श्री ओमप्रकाश जी झवर ब्यावर (भूतपूर्व मन्त्री) आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के द्वारा वर्णन की गई घटना। मैं (ओमप्रकाश झवर) एक दिन एक स्कूल के वरिष्ठ अध्यापक श्री मिश्राजी जो आर्यसमाज के किसी मकान मे किरायेदार के रूप मे रहते थे उनसे किराया लाने उनके घर गया जब उन्होने मुझे बताया कि आपके यहा जो अग्निवेश नाम के सन्यासी है वे तो हमारी मीटिग मे थे। मैंने कहा कि आपकी मीटिग से क्या तात्पर्य है। तो उन्होने बताया कि इमरजेन्सी के समय की घटना है। दिल्ली में नक्सलाइट की एक मीटिग हुई थी। मैं भी उसका सदस्य था अत मै भी गया था। यह बात मिश्राजी ने मुझे बताई। आगे उन्होने कहा कि उस मीटिग मे हम एक एक करके हमारे बोस से मिलने गये थे। जब मेरा (मिश्रा जी का) नम्बर आया तो उस कमरे मे जिसमे नक्सलाइट सस्था का बोस् बैठा था उसमे एक गेरुए कपडे मे सन्यासी बैठा था। मैंने अपने बास से पूछ' ये कौन है ? तो बोस ने कहा कि चिन्ता नहीं करो ये तो अपने ही आदमी हैं। बुद्धिजीवियो पर कब्जा करने के लिए हमने इनको आर्यसमाज मे भेजा है। यह बात स्वय मिश्राजी ने मुझे बताई। रात्री के समय सभा मे अग्निवेश जी का भाषण भी हुआ था।

(३) श्री उत्तमचन्द जी शरर पानीपत वालो ने श्री भवानीलाल जी भारतीय को बताया कि एक बार अग्निवेश जी से हमारी चर्चा हो रही थी हमने उनसे कहा कि आप कार्ल मार्क्स व दयानन्द मे से किस को चुनोगे तब उन्होने कहा कि कार्ल मार्क्स को यह बात मुझ को श्री भवानीलाल जी भारतीय ने बतलाई। वाह रे कामरेड कहा तो परमपिता परमात्मा को जानने वाला वेदो का विद्वान बाल ब्रह्मचारी प्राणी मात्र का कल्याण करने वाला महर्षि दयानन्द और कहा वर्ग भेद कराके मानव मानव को लडाने वाला कार्ल मार्क्स।

(४) श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक इन्दौर वालो ने लिखा कि मैने अग्निवेश जी से उनके कम्युनिस्ट विचारो के लिए कई बार उनसे चर्चा की है तब उनका कहना यही होता है कि मैं भविष्य मे आर्यसमाज का ही कार्य करूगा। लेकिन कम्युनिस्ट ही बने हुए है।

(५) सन्यास ग्रहण करने के पश्चात इन्दिरा गाधी द्वारा लगाई गई सकटकालीन स्थिति मे गिरफ्तारी के भय से बचने के लिए कुछ समय तक सन्यासी के कपडे उतार कर कोट पेन्ट पहन कर भूमिगत हो गए थे। क्योकि सन्यास के कपडे श्रद्धा से नहीं लिए थे स्वार्थ से लिए थे। इसलिए उतार दिए।

(६) अग्निवेश जी का New Indian Express मे कोचीन की एक सभा मे मक्का यरुशलम आदि विभिन्न मतो के धर्म स्थानो की मिलकर यात्रा करने का व हिन्दू मुस्लिम इसाई लोगो के परस्पर विवाह का उपदेश भी छप चुका है। महर्षि दयानन्द ने विधर्मियो को लडकिया ८ने का पाप छुडवाया था प० लेखराम जी व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य जाति की देवियो की रक्षा के लिए जान वार दी थी।

(७) उदयपुर के नवलखा महल मे आयोजित सम्मेलन म अग्निवेश ने आर्यसमाजिया से आह्वान किया कि व अपनी बेटिया का निकाह मुसलमानो से कराए। इस पर मच पर विराजे हुए श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु न उसा समय मच स अग्निवेश को ललकारते हुए समाज विरोधी वक्तव्य की घोर निदा की। वाह र बुद्धि के ठेकेदार कामरेड एक धार्मिक शाकाहारी गाय का दूध पीने वाली बालिका को गाय का मास खाने वाली एक आदमी के चार पत्नियो के रूप मे नरकमय जीवन बिताने की शिक्षा आर्य बन्धुओ को दे रहा है। यह शिक्षा अग्निवेश जी को मुसलमान बन्धुओ को देनी चाहिए थी कि आप अपनी लडकियो की हिन्दुओ मे शादी करे जिससे शुद्ध सात्त्विक शाकाहारी भोजन करते हुए एक पत्नी के रूप मे रहकर अपना आनन्दमय जीवन बिताए। अब सोच लो आर्य बन्धुओ। महर्षि दयानन्द की व अन्य आय महापुरुषो की बात मानेगे या कामरेड अग्निवेश की।

(८) अफगानिस्तान मे तालिबान सरकार द्वारा बौद्ध प्रतिमाए (जो कि इस्लाम के जन्म से पहले की बनी हुई थी) तोडने पर अग्निवेश जी कहते है यह तो हिन्दुओ द्वारा अयोध्या म बनी बाबरी मस्जिद को तोडने पर प्रतिक्रिया हुई है। प्रिय आर्य बन्धुओ। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि रामायण व महाभारत यह हमारे गौरवशाली इतिहास है इसे हर भारतवासी को पढना चाहिए। आज से ६ लाख वर्ष पुराने ससार के एक ऐतिहासिक महापुरुष श्री रामचन्द्र जी जैसे के जन्म स्थान को तोडकर मुगल हमलावर बाबर द्वारा बनाई गई मस्जिद के खण्डर को तोडने की तुलना बौद्ध प्रतिमाओ से कर रहा है।

– अगले पृष्ठ पर जारी

मोह भंग

अग्निवेश तथा कुछ अन्य स्वार्थी तत्वों के द्वारा अवैध रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम का दुरुपयोग किया जा रहा है। इनके स्वार्थपूण दृष्टिकोण से अब समूची आर्यजनता अवगत होती जा रही है। बोगस रूप मे सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री के रूप मे अनिल आर्य को भी जोडा गया था जिनका पत्र दिनाक ६ अक्तूबर २००२ हमे प्राप्त हुआ है जिसे अविकल रूप से यहा प्रकाशित किया जा रहा है –

सेवा मे
माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य जी
प्रधान सार्वदेशिक सभा
नई दिल्ली–११०००२

महोदय

निवेदन यह है कि मै एवम केन्द्रीय आय युवक परिषद के समस्त सदस्य आपके नेतृत्व मे विश्वास व्यक्त करते है। तथा जो भी सार्वदेशिक सभा का आदेश निर्देश होगा उसका पालन करेगे। योग्य सेवा।

हमे पूरा विश्वास है कि आपका केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का स्नेह व मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा तथा हम सब मिलकर आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द जी के आदर्शो को पूरा कर सकेगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय
(अनिल आर्य)

आर्य बन्धुओ ! सावधान !! कामरेड अग्निवेश से

(९) हेदराबाद मे आर्यसमाज द्वारा निजाम के क्रूरताओ और वैदिक धर्मियो के जारी सत्याग्रह की स्मृति मे एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। वहा पर अग्निवेष दो मालवियो को लेकर मच पर आ गया और कहने लगा कि जब मै दुबई गया था तो जामा मस्जिद के इमाम ने दुबई के मालवियो को फोन करके मेरी आवभगत करने को कहा। इस प्रकार आज जब मै हेदराबाद आया तो ये दोनो मालवी मुझे हवाई अड्डे पर लेने पहुचे, क्योकि इन्हे जामा मस्जिद के इमाम के निर्देश मिले थे।

(१०) अग्निवेश व पादरी वाल्सन थय्यूरूपा द्वारा लिखी गई **'होर्वस्ट आफ हेट'** पुस्तक को एक फ्रासीसी पत्रकार फ्रान्स्वा ग्वातिया ने भी देश मे हिन्दू व मुसलमानो के बीच घृणा और साम्प्रदायिकता का विष फैलाने वाली पुस्तक बताया है, जिसका लेख इण्डिया टुडे २१-०७-२००२ मे छपा था। इस पुस्तक मे गुजरात मे हुए दगो को गलत ढग से प्रस्तुत करते हुए, हिन्दुओ को पूर्ण दोषी ठहराया है। इस पुस्तक के द्वारा दोनो कौमो के बीच घृणा की खाई बढेगी जब कि आवश्यकता दोनो सम्प्रदायो मे सोहार्द स्थापित करने की थी। इस पुस्तक के प्रारम्भ मे ही लिखा है कि **' हम चाहे महात्मा गांधी के आदर्शों को भूल जाए, पर हमे यह नहीं भूलना कि उनका हत्यारा कौन था।'** देखिए कैसी बुद्धिमानी की शिक्षा अग्निवेश देते है। उस पुस्तक में स्वामीजी ने इस बात का उल्लेख नहीं किया कि १९९१ मे गोधरा के मदरसे मे उन सभी हिन्दू अध्यापको को मुसलमानो ने कत्ल कर दिया था, जो उसमे वहा पढाते थे। यह भी नहीं लिखा कि गोधरा के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र मे बिजली की भरपूर चोरी होती है, किन्तु बिजली बोर्ड के अधिकारी वहा जाने से भयभीत है। निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक मुस्लिम उग्रवादियो को ताकत देगी तथा उदार विचार वाले मुसलमानो को जिहादी बनने की प्रेरणा देगी। पुस्तक का हिन्दू द्वेष इतना प्रबल है कि इसे पढकर उदार विचार वाला हिन्दू भी कट्टर विचारो का समर्थक बन जावेगा। निश्चय ही यह पुस्तक विपरीत परिणाम देगी। सरकार को चाहिए कि देश में घृणा फेलाने वाली पुस्तक को जब्त कर लेवे। व देशभक्त नागरिको को चाहिए ऐसी पुस्तक की होली जला देवे।

(११) अग्निवेश जैसे भगवाधारी तथाकथित सन्यासी को पोप हवाई जहाज का टिकट भेजकर यदि वैटिकन शहर बुलाता है, तो स्पष्ट है कि उससे इसाई धर्म के प्रचार प्रसार और धर्मान्तरण मे सहयोग करने जैसी बातों पर सहयोग मांगता है। यह षडयन्त्र अग्निवेश के उन दर्जनों वक्तव्यों व कार्यों से स्पष्ट होता है जिस मे ये ईसाईयों द्वारा किए गए धर्मान्तरण को उचित ठहराता है, तो कभी धर्मान्तरण को ईसाईयों द्वारा किए जा रहे उनके सेवा का फल बताता है। इसके विपरीत हिन्दुओ द्वारा किए जा रहे शुद्धि कार्य को ढोग व अनुचित बताता है तो कभी इसे व्यापार बताता है। उड़ीसा में भोले गरीब हिन्दुओं के अवैध ढंग से धर्मान्तरण कार्यों में लिप्त पादरी स्टीफन की हत्या के बाद ईसाईयों द्वारा आयोजित अनेकों शोक सभाओं में अग्निवेश ने भाषण दिए। इनके भाषणं मे ईसाईयो का अन्धा समर्थन व हिन्दुओ की घोर निन्दा की गई थी। इसलिए इनके भाषणो के टेप बनाकर इसाई सगठनो ने मुम्बई मे हजारो की सख्या मे बाटे थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि अपने आप को आर्यसमाज का सन्यासी कहने वाला इसाई मत का खुला प्रचारक कैसे हो गया।

(१२) दिनाक २५ नवम्बर, २००१ को आर्य मित्र के ऊपर 'जनमानस को सन्देश' के शीर्षक से एक समाचार श्री केलाशनाथ सिह, प्रो० शेरसिह जी के नाम प्रकाशित हुआ। 'दीपावली पर्व की चर्चा करते हुए लिखा है क्या सुखद सयोग है कि आज से कुछ ही दिनो मे रमजान का पवित्र त्योहार लगभग एक महीने तक हमें पवित्रता की ओर ले जाएगा। उसके बाद भगवान ईसा मसीह का जन्म दिन किसमस हम सबको करुणा और शान्ति का सन्देश देगा। हम सभी समर्पित होकर एक ऐसा समाज बनाने के लिए प्रयत्न करे जो हजरत मुहम्मद के शाति का पैगाम इस्लाम होगा, और ईसा मसीह के सपनो का ईश्वरीय साम्राज्य होगा। श्री प्रो० शेरसिह जी व श्री केलाशनाथ सिह जी तो आर्यसमाज के सिद्धान्तो को जानते और मानते हैं, उन्हे तो वैदिक ज्ञान के अनुसार मनु महाराज की मनुस्मृति के सुखद राज्य का ज्ञान जनता को देना था न कि कुरान की आज्ञा (काफिरो को मारो) से रक्त रजित तलवार की धार से फैलने वाली संस्कृति का। न जाने दोनो सज्जनो ने अनजाने मे या किस स्वार्थवश कामरेड के इस वक्तव्य पर अपनी सहमति प्रदान की है। आर्य बन्धुओ! समझो इस ससार में मनुष्य मात्र का उपकार परमपिता परमात्मा के पवित्र वेद ज्ञान से होगा। न बाईबल से होगा, न कुरान से होगा, जिस पुस्तक मे उस पुस्तक को व उस पुस्तक के बनाने वाले को न मानने वालो को कत्ल करने का आदर्श दिया हुआ हैं। अग्निवेश जी का मत है कि मुहम्मद का इस्लाम मजहब और ईशा का ईसाई मत ससार मे करुणा और शान्ति के फैलाने वाले है। और महर्षि दयानन्द कहते है कि यह मत ससार में अशान्ति पैदा कर उपद्रव मचाने वाले हैं। जैसा आज ससार में आप देख ही रहे हैं। अब मैं सभी आर्य बन्धुओं से पूछना चाहता हूं कि क्या आप महर्षि दयानन्द की मानोगे या कामरेड अग्निवेश की।

(१३) ब्रह्माकुमारी पाखण्ड मत, जो भारतीय सस्कृति को नाश करने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है, उनके सभी सिद्धान्त भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है, इस पाखण्ड मत के द्वारा परमपिता परमात्मा द्वारा दिए गए पवित्र वेद ज्ञान की निन्दा की जाती है, उसे गलत बताया जाता है। रामायण, महाभारत को इतिहास न मानकर उपन्यास बताया जाता है। श्री रामचन्द्र जी व श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों को ऐतिहासिक पुरुष न मानकर उपन्यास के पात्र बता रहे हैं। सन्ध्या हवन जैसे पवित्र कार्यों को मूर्खता का कार्य बताया जा रहा है। आत्मा व परमात्मा सम्बन्धी पुरातन ज्ञान के विपरीत पाखण्ड फैला रहे हैं। ईसाई व मुसलमानों के चौथे व सातवें आसमान की भांति यह ऊपर से ऊपर वाले आसमान पर परमात्मा को बैठा बता रहे हैं। चारों युगों के काल सम्बन्धी सिद्धान्त को गलत बता रहे हैं। इस प्रकार से भारतीय संस्कृति की जड़ों का काटने वाले महिला मण्डल के पाखण्ड मत मे आकर यहा कई दिनों तक उनमें रहते हुए उनकी खूब प्रशसा करते हुए फोटो सहित अपना वक्तव्य अखबारो मे छपवाते रहे हैं। अग्निवेश के इस निन्दनीय कार्य की इस क्षेत्र के सभ्य आर्य पुरुषों द्वारा निन्दा की गई। परन्तु अग्निवेश के कुछ बुद्धि के अन्धे स्वार्थी सहयोगी स्वार्थवश मूक दर्शक बने रहे। पर जालोर के कुछ आर्यजनो द्वारा अग्निवेश के इस धर्मविरोधी कार्य का विरोध किया गया, जिससे वह आर्य जन प्रशसा के पात्र हैं।

(१४) प्रिय आर्य बन्धुओ। इमाम व पादरी अग्निवेश जी के साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं ? आप सहज मे ही अनुमान लगा सकते है, कि जहा पर जाने या अनजाने में हिन्दुओ द्वारा मुसलमान या ईसाईयो की आर्थिक हानि या जनहानि हो जाती है तो अग्निवेश जी उनके मसीहा बनकर जाते हैं और घडियाली आसुओं की नदी बहा देते है। और हिन्दुओ पर दोषारोपण करने मे किसी प्रकार की कमी नहीं रहने देते। देश में अनेक स्थानों पर समय समय पर मुसलमानो ईसाईयो व कम्युनिस्टों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार होते हैं, उस समय अग्निवेष को कोई परेशानी नहीं होती।

(१५) इस वर्ष लातुर (महाराष्ट्र) में हुए वैदिक सम्मेलन मे कामरेड अग्निवेश ने परमपिता परमात्मा द्वारा दिए गए वेद ज्ञान को अप्रासगिक बताते हुए, इसे वर्तमान परिस्थितियो मे प्रासगिक बनाने का सुझाव दिया। अरे कामरेड ध्यान रख सोने चादी आदि धातुओं में तो कोई बेईमान कारीगर खोट मिला सकता है, पर हीरे में ससार का कोई आदमी कुछ मिला नहीं सकता। इसी तरह कोई भी व्यक्ति वेद में किसी प्रकार की मिलावट नहीं कर सकता। आर्य बन्धुओ। जरा सोचो, परमपिता परमात्मा द्वारा बनाए गए ससार के पवित्र सविधान वेद ज्ञान, जिसे आदि काल से लेकर महर्षि दयानन्द तक सभी ऋषि मुनियो ने माना है, और उस पथ पर चलकर सारा ससार सुखी समृद्ध व ऐश्वर्यवान् था, उस ज्ञान में यह कामरेड कार्ल मार्क्स के विचारो के आधार पर परिवर्तन करने की बात करता है। जब कि आज ससार ने वर्ग भेद करके खून खराबा करने वाले इस साम्यवादी विचारधारा को त्याग दिया है। इतना ही नहीं बल्कि इस विचारधारा को प्रारम्भ करने वाली भूमि रूस से लेनिन व स्टालिन आदि के गड़े शवों को भी बाहर निकाल डाला। पर हमारे देश के कामरेड अब भी इस विचारधारा से ऐसे चिपके रहे हैं, जैसे मरे हुए बच्चे को भी बन्दरिया चिपकाए फिरती है।

(१६) अग्निवेश जी, यह आपकी नकली सद्भावना यात्रा किसी इस्लामी देशों में जाकर निकाल कर बताएं, जहां इस्लाम के विरुद्ध शब्द निकालने वाले की जबान निकाल दी जाती है। किसी इस्लामी देश में कोई हिन्दू मन्दिर नहीं बना सकता, हिन्दू अपने मुर्दों को नहीं जला सकता, हिन्दू अपने धर्म ग्रन्थों को नहीं रख सकता, हिन्दू धर्म की बात करना तो दूर रहा। यह भारत का हिन्दू ही ऐसा सहनशील है, बेचारा हर चीज को सहन कर लेता है। आज तक तुमने कितने लोगों को बाईबल व कुरान की गलत शिक्षा को छुड़ा कर सच्चे वेद पथ के मार्ग पर चलने वाला बनाया है।

अग्निवेश जी, मैं आपका भला चाहता हूं, आपका भला तब होगा, जब आप अपने नास्तिक वादी कामरेडीपन को छोडकर, वेदपथ पर चलने वाले ऋषि मुनियों के मार्ग पर चलकर मन से सच्चे सन्यासी बनोगे। मेरी परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपको सद्बुद्धि प्रदान करे। अब भी समय है, दिन का भूला भटका सायंकाल घर आ जावे तो भी काम चल जाता है। रत्नाकर नाम का डाकू सन्यासियों के सम्पर्क में आकर वाल्मीकि ऋषि बन सकता है। आप भी वेद पथ पर चल कर अपना भला कर सकते है।

आर्य बन्धुओं ! कामरेड अग्निवेश जी के वैदिक संस्कृति व ज्ञान विज्ञान के विरोधी व मुसलमान ईसाई व कम्युनिस्ट प्रेम के कुछ विचारों को आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत किया है। अब निष्पक्ष व नि:स्वार्थ भाव से आपको सोचना है कि अपने देश व धर्म के हित में क्या है। क्या महर्षि दयानन्द से लेकर आजतक लाखों भोले हिन्दू भाईयों को शुद्ध करके अपने में वापिस मिलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी, लेखराम जी व अनेक आर्य महापुरुषों ने जो कार्य किया है, और इस समय भी किया जा रहा है, जैसे उडीसा में श्री स्वामी धर्मानन्द जी हजारो भटके हुए हिन्दू भाईयों को शुद्ध करके दुबारा अपने मे मिला रहे हैं वह कार्य ठीक है, या इसाई मुसलमानों द्वारा अपने भोले हिन्दू भाईयो को लोभ, भय, व गुमराह करके हो रहे धर्मान्तरण के कार्यों का अग्निवेश जी द्वारा समर्थन किया जा रहा है व आर्यजनों द्वारा किए जा रहे शुद्धिकरण के कार्यों को ढोग व व्यापार बताया जा रहा है। इस विषय में मेरा श्री स्वामी धर्मानन्द जी से भी निवेदन है कि आप भी ज़रा सोचे कि आपका कार्य ठीक है या अग्निवेश जी का कार्य ठीक है।

महर्षि दयानन्द से लेकर आज तक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार व पठन पाठन में आर्यसमाज के कितने ही महापुरुषों ने अपना तन मन धन लगा दिया। उस वेद विद्या को अग्निवेश अप्रासंगिक बता कर उसमें सशोधन करने की बात कर रहा है। आर्य बन्धुओं सोच लो, इसमें अपने महापुरुष ठीक है या अग्निवेश ठीक है।

आर्य बन्धुओं, ऋषि के अनुयायियों, वेदपथ के पथिकों, आप सभी से मेरा नम्र निवेदन है कि मानव मात्र के कल्याणकारी वेद पथ को विकृत करने वाले किसी भी पुरुष का जाने में या अनजाने में समर्थन न करें। परमेश्वर सर्वव्यापक है, सब के मन के भावों को जानता है। इसलिए मनसा, वाचा, कर्मणा (मन, वचन, कर्म) से किए गए सभी प्रकार के कर्मों का फल कृत, कारित, अनुमोदित पुरुषों को भोगना ही पड़ता है। देश व धर्म के विनाशक के रूप में दुर्योधन को दोषी माना जाता है, वहां उसके समर्थक भी पाप के भागी हैं। इसी प्रकार से देश व धर्म विनाशक जयचन्द को दोषी माना जाता है, वहां उसके समर्थक व सलाहकार भी पाप के भागी बने हैं। इसलिए ऋषि भक्त आर्य बन्धुओं से मेरा निवेदन है कि देश व धर्म को क्षति पहुंचाने वाले किसी भी व्यक्ति का समर्थन न करें।

— [illegible]

आर्यो ! याद करो ऋषि की कुर्बानी

– डॉ० महेश विद्यालंकार

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। अज्ञान अन्धविश्वास असत्य अधर्म पाखण्ड आदि के विरोधी महामानव एव युग पुरुष महर्षि दयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमर बेला का नाम दीवाली है। आजीवन विषपायी ऋषि के तप त्याग बलिदान उपकारों के प्रति आभार एव कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्य तिथि है। सजल नेत्रो से देवात्मा को नम्र श्रद्धाजलि देने का यह स्मृति पर्व है। एक ओर दीपावली की प्रसन्नता एव उल्लास है। दूसरी ओर युगो के बाद वरदान रूप मे प्राप्त ऋषिवर के नश्वर शरीर छोडने की विदा बेला है। ऋषि ससार को सत्यज्ञान सत्यधर्म एव सत्य परमेश्वर का मार्ग दिखाने आये थे। दीपावली के दिन असख्य दीप जलाकर चले गए। उसी महाबलिदान की अमर कहानी दीवाली हर साल दुहराती है। इसी दिन उस पुण्यात्मा ने ससार से महायात्रा की थी। इसलिए दीपावली आर्यसमाज के इतिहास म विशेष महत्व रखती हे।

सूर्य अस्ताचल को बढ रहा था। अजमेर के भिनाई भवन मे ऋषिवर शान्त भाव से लेटे थे। वह महायोगी अनुभव कर रहा था। आज प्रयाण बेला है। पूछा ! आज कौन सा मास पक्ष व दिन है। किसी भक्त ने कहा – आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीपावली का पर्व है। उनका मुखमण्डल प्रसन्न एव शान्त था। थोडी देर बाद बोले – सभी दरवाजे और खिडकिया खोल दो। मुक्तात्मा ने ऊपर की ओर दृष्टि करके चारों ओर अलौकिक और चमत्कारी भाव से देखा। प्रार्थना की गायत्री मन्त्र का पाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म का उच्चारण करने लगे। चेहरे पर अपार शान्ति सन्तोष व प्रसन्नता थी। शान्तभाव से मुख से उच्चारित होने लगा – हे दयामय सर्व शक्तिमान ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह बोलकर लम्बी सास खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा प्रभु की शरण मे चला गया। भक्त जन असहाय बनकर देखते रहे। यह निराले योगी की निराली अन्तिम यात्रा थी। यह दुनिया के इतिहास मे निराली ही घटना है। जो कोई होश मे तिथि दिन पूछकर मुस्कराता तथा प्रभु को स्मरण करता हुआ गया हो। ऋषि प्रभु की इच्छा से ससार मे आये थे। प्रभु की इच्छा को पूर्ण करके चले गए। जाते जाते भी नास्तिक गुरुदत्त का आस्तिक बना गए। विष देने वाले को भी जीवनदान दे गए। सपूर्ण जीवन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार वेदप्रचार और मानवता के कल्याण एव उत्थान मे लगा गए। ऋषि का पूरा जीवन प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी।

ऐसा अद्वितीय इतिहास पुरुष युगो के बाद देश को मिला था। दुर्भाग्य है कि उस महापुरुष का अपनो और परायो किसी ने उचित मूल्याकन नहीं किया। सच्चाई है कि ससार आज तक उनके विचारो आदर्शो एव जीवन सन्देशो को समझ नही सका। वे सत्य के पुजारी सत्यवक्ता सत्य के प्रचारक आर सत्य पर ही शहीद हा गए। ऋषि का समग्र जीवन कठिनाइया विरोधो और सघर्ष मे गुजरा। उन्हाने कभी अपने लिए न चाहा न मागा और न सग्रह किया। कोई मठ मन्दिर आश्रम आदि नही बनाया। वे देश की दीन हीन दुर्दशा को देखकर बेचैन होते थे। जो देश कभी आध्यात्म सम्पदा और सत्यज्ञान के कारण जगद्गुरु था। जो देश धन धान्य वैभव के कारण सोने की चिडिया कहलाता था। ऋषि देश मे फैले अज्ञान अविद्या अन्धविश्वास पाखण्ड गुरुडम आलस्य आपसी फूट आदि के लिए घण्टो करुणक्रन्दन किया करते थे – किसी कवि ने उनकी पीडा को इन शब्दो मे रखा है –

एक हूक सी दिल मे उठती है
एक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते है
जब सारा आलम सोता है।।

वह महामानव अपन दुख दर्द व अभाव के लिए कभी नही रोया। वे जीवन भर कभी चैन से नहीं सोवे। वे जहर पीते रहे पत्थर खाते रहे अपमान सहते गए गालिया सुनते रहे। फिर भी वह दया का भण्डार रो रोकर आर्य जाति को जगाता रहा। यदि समय के सभी महापुरुषो को तराजू के एक पलडे मे रखा जाय और दूसरे पलडे मे ऋषि को तो ऋषि अपन कतित्व व्यक्तित्व योगदान तप त्याग बलिदान आदि की दृष्टि से भारी होगे। उन्होने ससार के बडे से बड प्रलोभन पद धन महत्व नाम आदि को ठुकरा दिया। जीवन म कही दाग नहीं लगने दिया। व तो जगत म उनसठ साल के डेपुटेशन पर आये थे। ससार को प्रत्येक क्षत्र मे सत्यज्ञान व आदर्श देकर चले गए।

आर्यो ! सोचो ? यदि ऐसे दैवीय गुणो वाला महापुरुष दुनिया की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उनकी देवदूत पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करत। उनके प्रेरक सन्देश एव उपदेशो को शिलालेखा व इतिहास मे अमर बना न्त। उनके चित्रो को देवताओ की तरह पूजते। उनके चरण रज को पाकर सोभाग्य मनाते। उनके नाम की माला पहनते। हम भारतीयो ने ऋषि के उपकारो व बलिदान के बदले मे दिया ही क्या है ? अनेक बार जहर देकर मारने की कोशिश की अन्तत उहे हलाहल पिलाकर ही हमे चैन आया ?

खजर भी चलाये
जहर भी पिलाये अपनो ने।
अपनों के अहसा क्या कम हैं
गैरो की शिकायत क्या होगी ?

ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओ आदर्शों और उपकारो से भरा हुआ है। जिसने उन्हे देखा सुना पढा समझा और सम्पर्क मे आया। उसकी जीवन धारा बदल गई। कायाकल्प हो गया। न जाने कितने गुरुदत्त श्रद्धानन्द हसराज लेखराम अमीचन्द आदि के जीवन सन्त और परोपकारी बन गए। इतनी चुम्बकीय व जादुई शक्ति और आकर्षण और किसी महापुरुष मे नजर नहीं आता है। लोग तलवार लेकर आये और शिष्य बनकर गए। जिधर से निकले उधर से ही ढोग पाखण्ड अज्ञान पोपलीला आदि मिटाते गए। सन्मार्ग एव सद्धर्म का प्रकाश फैलाते गए। रोती हुई भारत माता के आसू किसी ने पोछे है – वह केवल ऋषि दयानन्द थे। ऋषि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खडे हुए। देश धम जाति और मानवता का दर्द उन्ह बैचेन करता था। इन्ही के निर्माण व उद्धार के लिए उन्होने अपना सारा जीवन लगाया तथा बलिदान कर दिया। ऋषि ने असत्य अधर्म और गलत बाता से कभी समझोता नही किया। यदि उन्हाने समझौता तथा दूसरो को राजी करने वाली बाते की होती तो वे अपने युग क सबसे बड भगवान होते। ऋषि ने अपने जीवन मे कभी चमत्कारी और दैवीय रूप नही आए दिया। आज उन्ही के अनुयायी समझौतावादी सुविधावादी तथा अवसर वादी बनकर सिद्धान्तो आदर्शो एव विचारधारा का हनन कर रहे हैं। यह गभीर चिन्ता का विषय है। आज आवश्यकता है आर्यसमाज सभा सस्था सगठन और ऋषि के नाम पर चलने वाले स्कूल कालज आश्रम सस्थान आदि को ऋषि के अस्तित्व स्वरूप सिद्धान्त परम्परा एव आदर्शों की कठोरता से रक्षा करे। जो उस पुण्यात्मा ने ज्ञान व विचारो का दीप जलाया था। उसे वर्तमान मे तेजी मे फैलते ढोग पाखण्ड गुरुडम अज्ञान मूर्तिपूजा अवतार गुरु महन्त आदि बुझा रहे हैं। स्वामी दयानन्द का नाम आर्यसमाज के अलावा कोई नहीं लेता है ? यदि हमी ऋषि को जीवन व्यवहार सभा सगठन सस्थाओ आदि से निकाल देगे। उनके आदर्शो व विचारो को भुला देगे ? तो कौन उन्हे जीवित रखेगा ? महापुरुष जीवित और अमर अपने सिद्धा तो अनुयायिया विचारा तथा आदर्शों से रहते है।

परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है। हम आर्यजन भी श्रद्धाजलि के रूप मे निर्वाणोत्सव मनाते है। लाग मिलते है। मेला लगता है। नेतागण आत है। जोर शोर से भाषण हाते हे। कुछ देर बाद भीड बिखर जाती हे। बस हमारा कर्त्तव्य पूरा हा गया। क्या थी निर्वाणोत्सव की मूल चेतना भावना और सन्दश है ? क्या यही उस महामानव के सम्पूर्ण कृतित्व एव व्यक्तित्व का मूल्याकन है ? क्या यही आजीवन विषपायी के तप त्याग एव बलिदान का प्रतिदान है ? केवल जलसा जलूस लगर फोटा व माला तक ही हमारे भावी कार्यक्रम होते है ? क्या इसीलिए उस देवात्मा ने मुक्ति के आनन्द को ठुकराकर आर्यसमाज बनाया था ?

ये पर्व स्मृतिदिवस जयन्तिया सम्मेलन आदि हमे जगाने आते है ? क्या खोया क्या पाया ? कहा के लिए चले थे कहा जा रहे हैं ? सोचो ! ठहरो ! देखो ! मूल मे भूल कहा है ? ऋषि निर्वाण दिवस हमे सन्देश देता है – जिस उददेश्य आदर्श सिद्धान्त तथा कार्यो के लिए आर्यसमाज बनाया था। उसके लिए हम क्या कर रहे है ? ऋषि का महान बलिदान हमे पुकार रहा है। यदि सच्चे अर्थ मे ऋषि को स्मरण और श्रद्धाजलि देनी है तो उनके बताए मार्ग पर चलो। उनकी कुर्बानी को स्मरण करो। यही निर्वाणोत्सव का सन्देश और प्रेरणा है। ✡

जितने बुझे पडे है दीप,
उठकर सारे जला डालो।

नन्हे दीपक ने ज्यो अधकार को ललकारा हे
बढती दानवता ने आज मानवता को नकारा है।
निराशा सस्कृति नही हमारी विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोन वालो जागो आनवाला कल तुम्हारा हे।
कुर्वन्नेवेहकर्माणि को जीवन सदेश बना डालो
जितन बुझे पडे हे दीप उठकर सारे जला डालो।

– प्रकाश आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 3-11-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 1-11-2002

विस्तृत कार्यक्रम

स्थापना-स्मृति-यज्ञ

दिनांक : ३ नवम्बर, २००२ (रविवार)

यज्ञ प्रात ७ से ८ बजे तक ब्रह्मा **श्री राजसिंह भल्ला**

स्थान आर्यसमाज आर्य कन्या हायर सैकेण्डरी विद्यालय, चावडी बाजार, दिल्ली

यज्ञ-ज्योति यात्रा : प्रातः ८ बजे

'यज्ञ-ज्योति यात्रा' चावडी बाजार से चलकर, नई सडक, घण्टाघर, दीवान हाल चान्दनी चौक, लाल किला, दिल्ली गेट, तिलक ब्रिज इण्डिया गेट, सफदरजंग पुल के ऊपर से बाईं ओर पुल के नीचे से नौरोजी नगर, राजनगर चौक से होती हुई आर्यसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क नई दिल्ली पहुंचेगी।

आर्यसमाज ग्रीनपार्क यज्ञ प्रात ६ से १० ३० बजे ब्रह्मा **श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी**

मुख्य समारोह

प्रात १० ३० बजे से १ ३० तक स्थान आर्यसमाज मन्दिर, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

गौरवशाली इतिहास की स्मृति

इस अवसर पर **८५ वर्ष से अधिक की आयु के आर्य पुरुष एव माताओ** को सम्मानित किया जाएगा।

उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा

दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज के प्रधान/मन्त्री या किसी अन्य अधिकृत पदाधिकारी को यह भव्य प्रतीक चिह्न भेंट किया जाएगा।

अध्यक्षता	श्री वेदव्रत शर्मा, प्रधान – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
आशीर्वाद	श्री रामफल बसल, अध्यक्ष – सार्वदेशिक न्याय सभा
	महाशय धर्मपाल, पदमश्री श्री वीरेश प्रताप चौधरी, श्री राजसिह भल्ला
मुख्य अतिथि	पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा, प्रधान – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली
विशिष्ट अतिथि	श्री पूनम सूरी, उपप्रधान – आर्य प्रादशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली
मुख्य वक्तागण	प० मोद प्रकाश शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम शास्त्री
सयोजक	श्री विमल वधावन एडवोकेट

निवेदक

वेदव्रत शर्मा, *प्रधान* वैद्य इन्द्रदेव, *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ २ का शेष **अष्टम सत्र**

के० देवरत्न आर्य ने विश्वभर के आर्यों से अपील की कि वे ऐसे महनीय व्यक्तित्व का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर की ओर से किए जा रहे (सयुक्त रूप से) अभिनन्दन मे अधिकाधिक सख्या मे उक्त समारोह मे पधारे एव भेट किए जाने वाले ३१ लाख रुपये की पूर्ति हेतु (स्पष्ट है कि इस राशि का उपयोग भी पूज्य स्वामी जी न्यास की योजनाओ को विस्तारित करने मे करेगे) अपनी छोटी बडी आहुति अवश्य प्रदान करे। आपका सात्विक योगदान **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर ३१३००१** के पते पर भेजें। यह सहयोग आयकर अधिनियम की **धारा ८० जी** के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

समारोह की विस्तृत रूपरेखा से आर्यजनो को शीघ्र ही अवगत कराया जाएगा।

निवेदक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली
राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर

राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक विचारों के लिए

वार्षिक सदस्यता शुल्क – ५०/– आजीवन सदस्यता शुल्क – ५००/–
नोट – यह दरे केवल भारत मे ही लागू हैं

शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४७१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट - http://www.whereisgod.com

अग्ने य यज्ञमध्वर विश्वत परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति।। ऋ० १/१/४

पदार्थ (अग्ने) हे परमेश्वर ! आप (विश्वत) सर्वत्र व्याप्त होकर (यम्) जिस (अध्वरम्) हिंसा आदि दोषरहित (यज्ञम्) विद्या आदि पदार्थों के दानरूप यज्ञ को (परिभू) सब प्रकार से पालन करने वाले हैं (स इत्) वही यज्ञ (देवेषु) विद्वानो के बीच में (गच्छति) फैलकर जगत् को सुख प्राप्त करता है।

तथा (अग्ने) जो यह भौतिक अग्नि (विश्वत) पृथिव्यादि पदार्थों के साथ अनेक दोषो से अलग होकर (यम्) जिस (अध्वरम्) विनाश आदि दोषो से रहित (यज्ञम्) शिल्पविद्यामय यज्ञ को (परिभू) सब प्रकार से सिद्ध करता है (स इत्) वही यज्ञ (देवेषु) अच्छे अच्छे पदार्थों में (गच्छति) प्राप्त होकर सब को लाभकारी होता है।

वर्ष ४१ अक २७ १० नवम्बर से १६ नवम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ का०शु० ६

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत एक वर्ष की गतिविधियां

३ नवम्बर २००१ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्पन्न चुनावो मे कै० देवरत्न आर्य के प्रधान बनने तथा अन्य पदाधिकारियो के निर्वाचन होने के उपरान्त नव निर्वाचित अधिकारियो ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यभार सम्भाला। निर्वाचन अधिकारी श्री रामफल बसल जी ने इन नव निर्वाचित अधिकारियो को शुभ प्रेरणाओ सहित कार्यभार सौंपा। वर्तमान कार्यकारिणी ने विगत् एक वर्ष के अन्तराल मे जिन प्रमुख कार्यों को सम्पन्न किया उन्हे आर्य जनता की प्रेरणार्थ एव स्मृति हेतु क्रमवार प्रस्तुत किया जा रहा है

१ गुजरात के भूकम्प पीडित परिवारो के अनाथ बच्चो एव विधवाओं के लिए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन के प्रयास से तत्कालीन जहाजरानी मन्त्री श्री अरूण जेटली ने २ एकड भूमि अनाथाश्रम एव विधवाश्रम के लिए उपलब्ध कराई जिसका बाजार मूल्य एक करोड से भी अधिक था परन्तु यह भूमि इस पवित्र कार्य के लिए निशुल्क दी गई। सार्वदेशिक सभा द्वारा ६ नवम्बर २००१ को २० लाख रुपये की राशि जीवन प्रभात के लिए श्री अरुण जेटली के कर कमलों से आर्यसमाज गाधीधाम को प्रदान करवाई गई।

२ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने विभिन्न पदाधिकारियो को प्रान्तवार प्रचार कार्यो का दायित्व सौंपते हुए अधिक से अधिक प्रचार के लिए प्रेरित किया।

३ सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान वन्देमातरम रामचन्द्र राव के निधन पर शोक सभा मे भाग लेने के लिए सभा प्रधान कै० आर्य तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन हैदराबाद गए।

४ इतिहास की पुस्तको मे सशोधन और आर्यों को विदेशी तथा आक्रमणकारी कहने वाली बातो को हटाए जाने के लिए सार्वदेशिक सभा का शिष्टमण्डल विभिन्न नेताओ से मिला तथा दिल्ली मे एक विशेष सगोष्ठी आयोजित की गई।

५ सार्वदेशिक सभा की धर्म प्रचार समिति की प्रथम बैठक नवम्बर माह मे ही सम्पन्न हुई। वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने धर्मप्रचार की गतिविधियो मे तेजी लाने के लिए आर्यजनता से सुझाव मागे।

६ सभा प्रधान कै० आर्य के नेतृत्व मे दिल्ली मे बलिदान दिवस पर विशाल शोभा यात्रा आयोजित हुई।

७ कोलकाता मे भी आर्यो से आक्रमणकारी कहने वाली बातो के विरुद्ध एक सगोष्ठी आयोजित की गई तथा इसी अवसर पर एक कार्यकर्ता सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

८ धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए आदिवासी क्षेत्रो मे प्रचार प्रसार तेज करने की दृष्टि से एक प्रचार वाहन सभा प्रधान कै० आर्य ने रवाना किया।

९ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जनम दिवस पर कै० आर्य के नेतृत्व मे एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला। उनके साथ कई केन्द्रीय मन्त्री सासद तथा सभा अधिकारी भी थे।

१० गुरुकुल कागडी के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन विशाल स्तर पर हरिद्वार मे आयोजित किया गया। जिसमे लगभग ५० हजार से भी अधिक आर्यजनता ने भाग लिया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

तीन शताब्दियों के प्रत्यक्षदर्शी पं० सुधाकर चतुर्वेदी – विमल वधावन

वयोवृद्ध वैदिक विद्वान प० सुधाकर चतुर्वेदीय जी अपनी आयु के १०६ वर्ष पूर्ण करने के बाद उत्तर भारत भ्रमण करते हुए दिल्ली पधारे और मेरे निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए अपनी तीन सुपौत्रियों के साथ सार्वदेशिक सभा कार्यालय में पधारे जहा श्री वेदव्रत शर्मा तथा कई अन्य आर्य नेताओ ने उनका भाव-भीना स्वागत और अभिनन्दन किया।

प० सुधाकर जी का जन्म १८९७ ई० की रामनवमी के दिन हुआ था। गुरुकुल कागडी के प्रारम्भिक काल मे वे यहा से स्नातक बनकर निकले और दक्षिण से उत्तर तथा पश्चिम से पूरब सभी क्षेत्रो मे प० सुधाकर जी ने घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आज १०६ वर्ष की अवस्था मे भी एक भावुक एव उत्साही युवक की भावनाओ का प्रदर्शन शरीर की कमजोरियों को भी दबा देता है तीन शताब्दियो के प्रत्यक्षदर्शी इस महान् आत्माओ को आज भी स्वामी धर्मदेव विद्यामार्तण्ड आचार्य रामदेव स्वामी श्रद्धानन्द प० बुद्ध देव विद्यालकार प० अभय देव तथा महात्मा गाधी के साथ बिताए दिन इस तरह से याद है जैसे ताजा घटना चक्र हो।

स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री डा० जाकिर हुसैन जी ने एक बार जब हिन्दू मुस्लिम एकता पर चर्चा करते हुए एक अद्वितीय पुस्तक लिखने की बात कही तो प० सुधाकर जी ने तुरन्त जवाब दिया कि क्या आप ऐसी पुस्तक मेरे से लिखवाना चाहते है जिसमे मैं आदर्श पात्रो को मौलाना वाल्मीकि बादशाह दशरथ तथा बेगम सीता कहकर सम्बोधित करू अर्थात हिन्दू विचारधारा का इस्लामीकरण हो तो क्या इसी को हिन्दू मुस्लिम एकता कहा जाएगा ? इस पर जाकिर हुसैन उनके व्यग्य को समझकर शर्मिन्दा हुए।

हसमुख स्वभाव के प० सुधाकर जी ने कहा कि वेदश्री वेद शिरोमणी और वेद वेदाग आदि कई उपाधिया मुझे मिली परन्तु मुझे सबसे अधिक अच्छी गाधी जी की उपाधि लगी जो मुझे 'मुहफट' कहा करते थे

शेष भाग पृष्ठ २ पर

बाए से प० सुधाकर चतुर्वेदी जी का चित्र दाए श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा श्री अजय भल्ला आदि के साथ लिया गया चित्र

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की....

सभा प्रधान कै० दवरत्न आर्य इस महासम्मेलन के अध्यक्ष थे और इस पूरे सम्मेलन का सचालन वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने किया तथा प्रबन्ध सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया। इस महासम्मेलन मे विगत सौ वर्षो मे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के विकास की तसवीर पेश की गई। सम्मेलन मे पहुचन वाले आर्यजनो के लिए भारत सरकार की ओर से रेल किराए मे छूट की सुविधा प्राप्त की गई। चार दिन तक चलने वाला यह सम्मेलन प्राकृतिक तथा मानवीय बाधाओ के बावजूद अशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट कई महीनो तक सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित होती रही जिसे अलग से एक पुस्तक रूप मे लाने का भी प्रयास चल रहा है।

११ सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० आर्य धर्म प्रचार यात्रा तथा सगठनात्मक सुदृढता के लिए दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर गए। यह यात्रा २८ दिन की थी। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी [illegible] पर गई।

१२ स[illegible] प्र[illegible] [illegible] आर्य के नेतृत्व मे दिल्ली सरकार की शराब नीति के विरुद्ध एक प्रचण्ड प्रदर्शन किया गया।

१३ सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रताप भाई का सभा कार्यालय मे स्वागत किया गया।

१४ सार्वदेशिक सभा तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के प्रयास से पूर्वी प्रान्तो मे लगभग १०० बच्चो को दिल्ली तथा उसके आसपास के गुरुकुलो मे दाखिल किया गया। माता प्रेमलता शास्त्री जी ने इस कार्ययोजना को तन्मयता के साथ क्रियान्वित किया।

१५ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता आर्या धर्म प्रचार यात्रा पर अमेरिका कनाडा तथा इग्लैण्ड के लिए रवाना हुए। यह यात्रा एक माह से अधिक समय तक चली।

१६ सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अल्पसख्यक आयोग की बैठक मे सामाजिक एकता से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किए।

१७ वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार पर भूमाफिया की कुदृष्टि के विरुद्ध सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सारे देश के आर्यजनो का आह्वान करते हुए कहा कि वे हरिद्वार प्रशासन को विरोध पत्र भेजे।

१८ भारत के १२वे राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम से भेट करने के लिए सार्वदेशिक सभा का एक शिष्ट मण्डल उनके आवास पर गया।

१९ बीते वर्ष सूखे की स्थिति उत्पन्न होने के कारण सार्वदेशिक सभा द्वारा एक वृहद वृष्टि महायज्ञ आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द थे। इस यज्ञ के परिणाम स्वरूप दिल्लीवासियो को वर्षा प्राप्त हुई।

२० भारत छोडो आन्दोलन एव स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनो का भारत विषय पर एक सगोष्ठी आयोजित की गई।

२१ ईसाई तथा मुस्लिम मत मे धर्मान्तरण की गतिविधिया बढने पर सार्वदेशिक सभा का एक शिष्टमण्डल केन्द्रीय ग्रह राज्यमन्त्री श्री आई०डी० स्वामी से मिला तथा उनसे कुछ कडे प्रशासनिक उपायो की माग की गई।

२२ सभा प्रधान कै० दवरत्न [illegible] [illegible] मे लगभग ५० सदस्या का एक दल लगभग एक सप्ताह की धर्म प्रचार यात्रा पर मारिशस पहुचा जहा वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित जी का सौवा जन्मदिवस मनाया गया।

२३ विगत लगभग डेढ वर्ष से आर्यसमाज मन्दिर मिण्टोरोड का विवाद सभा के पदाधिकारियो की सूजबूझ और कर्तव्य परायणता से समाप्त हो गया। ६ अक्तूबर २००२ को **मूल भूमि** पर केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार ने स्वय शिलान्यास किया।

२४ सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने तमिलनाडु मे मदुरै जिला के कलेक्टर को भी धर्मान्तरण रोकने के लिए विशेष रूप से प्रेरित किया। परिणामत तमिलनाडु सरकार ने एक विशेष अध्यादेश के द्वारा लोभ लालच और दबाव से धर्मान्तरण को प्रतिबन्धित कर दिया। इस महान कार्य के लिए सुश्री जय ललिता का धन्यवाद किया गया तथा सभा अब इस प्रयास मे है कि इस आशय का एक ज्ञापन प्रत्येक प्रान्त को भेजा जाए। सभा की अपील पर बहुत से आर्यसमाजो तथा आर्य महानुभावो ने सुश्री जयललिता का इस कार्य के लिए समर्थन किया।

जीवन को यज्ञमय बनाता है अग्निहोत्र

आर्यसमाज नपियर टाउन द्वारा आयोजित चतुर्वेद शतकम यज्ञ के अवसर पर राहिणी देहली से पधारे आर्यजगत के आचार्य सुखदेव जी ने अपने उदबाधन मे कहा कि यज्ञ एक श्रेष्ठतम कर्म है इसमे परोपकार की भावना निहित है ऋषियो का मत है कि समस्त दुखो से छूट कर पूर्ण आनन्द प्राप्त करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक इन तीन प्रकार के दुखो की निवृत्ति कर देना सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है मृत्यु आदि दुखो से छूटने का उपाय ईश्वर प्राप्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं है ससार मे वस्तुत कुछ करने को है तो वह ईश्वरोपासना अर्थात इश्वर प्राप्ति है जब तक मनुष्य दुष्कर्मो से अलग होकर अपने मन को शात और आत्मा को पुरुषार्थी नहीं बनाता तथा भीतर के व्यवहारो को शुद्ध नहीं करता तब तक उसको ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर से बडा हितैषी कोई नहीं हो सकता।

दुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा हम प्राप्त कर्मयोनि का लाभ उठाना होगा अन्यथा भटकाव लगा रहेगा। अपने दैनिक चर्चा मे शास्त्रो मे वर्णित कर्मयज्ञ को शामिल करना श्रेष्ठ है जीवन की साथकता इसी मे है कि हम लगातार अपने आचरण व्यवहार मे शुद्धता लाये जिससे हम प्रभु की पात्रता अर्जित कर सके।

यज्ञ मात्र अग्निहोत्र का नाम नहीं उसका **व्यक्ति तथा समाज से सम्बन्धित लौकिक व पारलौकिक महत्व है। देवयज्ञ जीवन को यज्ञमय बनाने का प्रतीक है इसके द्वारा हम अपनी प्रिय वस्तुओ का होम करके परोपकार की भावना को मूर्तरूप देकर उसका विकास करते है शतपथ ब्राह्मण मे कहा गया है कि यज्ञो मे श्रेष्ठतम कर्म वह है जो स्वार्थ न होकर परार्थ हो सुगधयुक्त पुष्टिकारक तथा रागनाशक पदार्थो से जो यज्ञ होता है वह अग्नि द्वारा प्रखर होकर प्राणी मात्र के लिए सुखदायक होता है।**

> **सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े**

पृष्ठ १ का शेष

तीन शताब्दियों के प्रत्यक्षदर्शी पं० सुधाकर चतुर्वेदी

प० सुधाकर जी ने कन्नड वेदभाष्य का महान सकल्प किया और उसे पूरा करने मे जुट गए बहुत विशाल कार्य पूर्ण हो चुका है। कई ऋषिकृत ग्रन्थो जैसे सत्यार्थ प्रकाश गोकरुणानिधि आर्योद्देश्यरत्नमाला ओर व्यवहार भानु आदि का कन्नड भाष्य कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किया गया जिसमे प० सुधाकर जी का प्रयास दृष्टिगोचर होता है।

आजीवन ब्रह्मचारी रहे प० सुधाकर जी ने एक बालक को अपना धर्मपुत्र स्वीकार किया और उसी पालित पुत्र के परिवार मे आज तक हस खेलकर अपना जीवन यापन कर रहे है। ईश्वर की कृपा से परिवार के सदस्य अच्छी आध्यात्मिक भावनाओ से ओत प्रोत प्रतीत हुए।

माननीय प० सुधाकर जी का दर्शन पहली बार मुझे मार्च २००१ मे बम्बई आर्य महासम्मेलन के मच पर करने का सौभाग्य हुआ। यह दूसरा अवसर था कि जब सभा कार्यालय मे उनके दर्शन हुए। इस विशेष भेट को आजीवन भुला पाना सम्भव नहीं क्योकि ऐसा व्यक्तित्व बहुत कम देखने को मिला। श्री प० सुधाकर जी को देखकर आर्यसमाज की प्रथम पीढी के स्वभाव और मनोवृत्ति के साक्षात दर्शन हो गए। उन्हे मिलकर ऐसा लगा जैसे स्वामी दयानन्द जी के अनुयायियो की प्रथम श्रृखला से साक्षात हो रहे हो।

उनकी सुपौत्री डा० सुमित्रा ने जैसे ही मुझे फोन पर बताया कि प० सुधाकर चतुर्वेदी नई दिल्ली मे है तो इससे पूर्व कि वे उनकी सभा कार्यालय आने की इच्छा बता पाती मेरे उत्साह ने छलाग मारी और तुरन्त उनसे निवेदन किया कि आप उनको सभा कार्यालय मे ला सके तो हम यहीं पर उनका अभिनन्दन करना चाहेगे। अगले ही दिन प० जी अपनी तीन पौत्रियो तथा अन्य परिजनो के साथ कार्यालय मे आए जहा श्री वेदव्रत शर्मा श्री अजय भल्ला श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता बलदेव राज आर्य श्री रोशन लाल गुप्ता तथा श्री विनय आर्य ने भी इस सगतिकरण का लाभ उठाया।

मैंने जब प० सुधाकर जी से १९वी २०वीं और २१वी शताब्दी के प्रत्यक्षदर्शी ओर अनुभव सम्पन्न होने के कारण अपने सूत्ररूप विचारो की माग की तो उनके विचार हमे इस रूप मे प्राप्त हुए।

१ भगवान पर भरोसा और आत्मा पर विश्वास रखो तथा इस सम्पत्ति को निरन्तर बढाते चलो।

२ मानसिक क्षमता कभी भी खोनी नहीं चाहिए।

३ यदि हम शिक्षक है और हमारे शिष्य योग्य नही बनते तो यह हमारा दोष है। इसी प्रकार यदि हम माता–पिता हैं और हमारी सतान योग्य नहीं बनती तो यह भी हमारा दोष है।

४ हसना हसाना धर्म है और रोना सताना अधर्म है।

प० सुधार जी का पता है –
२८६ सीं० १० वा मेन
पाचवा ब्लाक जय नगर
बैगलोर ५६००४१ कर्नाटक

आर्यजनता से भी मै कामना करता हू कि ऐसे वैदिक विद्वानो का पत्रो द्वारा ही बेशक अभिनन्दन करे इसी में हम सबका भी सौभाग्य होगा। प० सुधाकर जी इस अवस्था मे भी आशा और विश्वास के साथ वेद भाष्य के कार्य मे लगे हुए है १०६ वर्ष की अवस्था मे भी उनका विश्वास है कि मेरे वेद भाष्य का कार्य १० वर्ष मे सम्पन्न होगा।

हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी यह भावनाए लक्ष्य तक पहुचे जिससे दक्षिण भारत मे विशेष रूप मे कन्नड मे वेद प्रेमियो का आध्यात्मिक लाभ हो।

मार्क्सवादी समीक्षक डा० नामवरसिंह द्वारा

7

महर्षि दयानन्द की मिथ्या आलोचना

दबे स्वर मे डॉ० सिह मानते है कि हमारी वैदिक सभ्यता लुप्त नहीं हुई किन्तु पिछड गई है। उन्हे इस बात पर आपत्ति है कि भारत के पिछडेपन का सारा दोष शर्मा जी ने अग्रेजी राज पर डाल दिया। निश्चय ही विदेशी राज्य ने हमारे प्रगति के मार्ग को अवरुद्ध तो किया ही है। यह भी सच है कि हमारे सामाजिक ढाचे मेंआई विकृतिया भी हमारे पतन का कारण बनी हैं।

मार्क्सवादी आलोचना की भाषा मे पुनरुत्थानवादी होना किसी गाली से कम नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यासो के प्रसिद्ध लेखक आचार्य प० हजारीप्रसाद द्विवेदी को किसी प्रसग मे डॉ० शर्मा ने पुनरुत्थानवादी कहा तो डॉ० सिह भडक उठे। वे अपनी भडास निकालते हैं स्वामी दयानन्द पर जिन्हे डॉ० रामविलास वेदो की ओर लौटने का आह्वान करने पर भी नवजागरण के अग्रदूत घोषित करते हैं। उनकी शिकायत है कि कबीर के क्रान्तिकारी विचारो के प्रस्तोता हजारी प्रसाद को पुनरुत्थानवादी क्यो कहा तथा वेदो की ओर लौटने की प्रतिगामी बात करने वाला दयानन्द नवजागरण का अग्रदूत कैसे हो गया ? हमारे विचार से पुनरुत्थान की प्रक्रिया और नवजागरण मे कोई मौलिक विरोध नहीं है। जब कोई देश अपने गौरवशाली अतीत तथा विगत की उपलब्धियो पर दृष्टिपात करता है उनसे प्रेरणा लेता है तथा उनमे से साम्प्रतिक समय मे ग्राह्य प्रवृत्तियो को पुन पनपाता है तो वह नवजागरण के पथ को प्रशस्त ही करता है। अवरुद्ध नहीं करता।

डॉ० सिह ने अपने इस लेख का शीर्षक इतिहास की शव साधना रखा है। यो तो इसमे निहित व्यग्योक्ति ही नहीं कटूक्ति भी यत्र तत्र स्पष्ट दिखाई पडती है किन्तु एक सत्य तो उनकी कलम से निकल ही गया। स्वामी दयानन्द द्वारा हठ योग में उल्लिखित शरीर के चक्रो तथा नाडियो की यथार्थता की परीक्षा के लिए उन्होने नदी में बहते एक शव को निकाल कर सचमुच उसका परीक्षण कर डाला था। डॉ० रामविलास जैसे यथार्थवाद समीक्षक ने इसे यथार्थवादी कहा और स्वामी दयानन्द के इस कृत्य की श्लाघा की। शायद व्यग्य करते हुए डॉ० सिह इसे दार्शनिक यथार्थवाद कहते हैं।

सच तो यह है कि मार्क्सवादियों को उन सब सिद्धान्तो मान्यताओ आस्थाओ धारणाओ तथा मूल्यो से परहेज है जो भारत की गौरवशाली उपलब्धि माने जाते हैं। यही कारण है कि वे योग के नाम से वैसे ही भडकते हैं जैसे स्पेन का साड लाल कपडे को देखकर भडकता है। डॉ० रामविलास का योग के प्रति झुकाव उन्हे पसन्द नहीं आया तो वे व्यग्य कर बैठे – राम विलास जी को ढलती उम्र मे सहसा योग की शक्ति मे विश्वास होने लगा। इसमे उन्होने प्रमाण भी दिया – १९३३ मे किए गए स्वामी विवेकानन्द के योग विषयक तीन ग्रन्थो के अनुवाद को १९६५ मे उन्होने पुन प्रकाशित कराया। सिह जी की दृष्टि मे मानो यह बहुत बडा अपराध है। वे इससे निष्कर्ष निकालते है – योग मे उनकी (शर्माजी) दिलचस्पी पहले भी थी योग मे आस्था प्रकट हुई है ढलती उम्र मे और ढलती सदी के वर्षो मे। किसी वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध साहित्यकार के लिए ऐसी कटूक्ति करने वाले के लिए क्या कहा जाए ? किन्तु यहा भी डॉ० सिह योग से अधिक वेद पर कटाक्ष करना चाहते थे। वे लिखते हैं – 'ऋग्वेद के प्रसग मे उन्होने (डॉ० रामविलास ने) योग की चर्चा इतने विस्तार से की है कि ऋग्वेद योगशास्त्र का ग्रन्थ प्रतीत होता है। वेद के ऋषि योगी हैं और देवता इन्द्र भी योगी है। जो योग को काव्य का शत्रु समझते है उनका मुह अब यह जानकर बद हो जाएगा कि वैदिक ऋषियो की वाणी से (वेद का) काव्य योग के कारण ही फूटा था। इस व्यग्योक्ति मे भी सत्य तो है ही।

सच तो यह है कि ऋग्वेद को योग का ग्रन्थ कहे या नही किन्तु यह तो निर्भ्रान्त मत है कि वैदिक मन्त्रो मे अष्टाग योग को मूल रूप मे देखा जा सकता है। अहिसा सत्य अस्तेय आदि यम और शौच सन्तोष तप तथा स्वाध्याय आदि नियमो को प्रतिपादित करने वाले सहस्रो मन्त्र इन सहिताओ मे हैं। डा० योगेन्द्र पुरुषार्थी ने तो वेद के सभी अगो को वेदमूलक सिद्ध किया है तथा अपने कथन की सिद्धि मे ततसम्बद्ध मन्त्रो को प्रमाण रूप मे प्रस्तुत किया है। अत प्राकारान्तर से ऋग्वेद को योग का ग्रन्थ कहे तो अनुचित नहीं है। यजुर्वेद के कई मन्त्र योग के चित्तवृत्ति निरोध रूपी लक्ष्य की ओर इगित करते है। काव्य की रचना तो कवि की भावना प्रवण मन स्थिति मे ही होती है और यदि वादितोष न्याय से ऋषियो को मन्त्रो का कर्त्ता भी माने तो इस कथन को अदुष्ट ही कहा जाएगा कि ऋषियो की वाणी से वेदरूपी काव्य उनकी योगज अनुभूतियो से ही व्यक्त हुआ था। योग के व्यास भाष्य मे जिस मधुमती भूमिका की चर्चा आई है उसकी तुलना साहित्य समीक्षको ने काव्य जन्य रस के आस्वाद से की है। (द्रष्टव्य – डा० श्यामसुन्दरदास का साहित्यालोचन ग्रन्थ)

निष्कषत डा० नामवर सिह की आलोचना एक दिवगत मनीषी चिन्तक और लेखक (रामविलास शर्मा) के प्रति निर्मम कटूक्तियो और व्यग्य वचनो से भिन्न कुछ नहीं है। यह और भी खेदजनक है कि एक यशस्वी साहित्य समीक्षक की धारणाओ से असहमति जताते जताते वे वेदो और उनके समर्थ भाष्यकार स्वामी दयानन्द के प्रति कुछ तर्कहीन तथा प्रमाणहीन बाते लिख बैठे। शर्माजी के प्रति यह दुर्वचन भी उनकी मृत्यु के बाद कहे।

– डॉ० भवानीलाल भारतीय
– ८/४२३ नन्दनवन जोधपुर

हजारों आर्य वीरों के प्रेरणा स्त्रोत आचार्य फूलसिंह नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के सचालक प० फूलसिह आर्य को भाव भीनी श्रद्धाजलि दी गई। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बुढाना के खचाखच भरे प्रागण में हजारों स्त्री पुरुषों ने उन्हे भरे हृदय से याद किया।

समस्त आर्य जगत् मे युवाओ के प्रेरणा स्रोत आचार्य पण्डित फूलसिह आर्य के आकस्मिक निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है। विदित हो कि आचार्य प० फूल सिह का गत ८ अक्तूबर को हृदय गति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया था। उनके देहावसान की सूचना पाकर हजारो नर नारी उनके बुढाना स्थित आवास पर एकत्र हो गए थे। जो उनके पैतृक गाव धनौरा टीकरी में उनके अन्तिम सस्कार तक अश्रुपूरित नेत्रो से सम्मलित रहे।

आचार्य जी की श्रद्धाजलि सभा के उपलक्ष्य मे उनके निवास बुढाना (मुजफ्फरनगर) पर एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रथम प्रात काल शान्ति यज्ञ किया गया। प० धनकुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया और क्षेत्रवासियो और दूर दराज से भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया। इसके पश्चात हुई श्रद्धाजलि सभा मे देश के विभिन्न स्थानो से अनेक आर्य नेताओ ने भाग लिया। स्थानीय डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के प्रागण मे आयोजित इस सभा मे आचार्य जी की स्मृति मे प० फूलसिह आर्य स्मृति मानव सेवा न्यास गठित करने का निर्णय किया गया इसके लिए सभा मे उपस्थित स्वामी विवेकानन्द सरस्वती स्वामी धर्ममुनि जी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान स्वामी देवव्रत आचार्य एव यज्ञमुनि वानप्रस्थी ने इसके लिए पूर्व मे ही स्वीकृति प्रदान कर दी थी। इस श्रद्धाजलि सभा मे पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के अतिरिक्त सहारन पुर मुजफ्फरनगर बागपत मेरठ गाजियाबाद दिल्ली हरियाणा राजस्थान के अनेक आर्यनेताओ और अधिकारियों ने भाग लिया। प० श्री देव शर्मा ने आचार्य जी के जीवन पर मर्मस्पर्शी कविता का पाठ करके सबको सम्मोहित कर दिया। इस अवसर पर सर्वश्री वेदप्रकाश आर्य सत्यवीर आर्य विनय आर्य हरि सिह आर्य वीर सिह आर्य अरविन्द्र कुमार ऋषिपाल वर्मा वीरेन्द्र सिह राणा उत्तम सिह आर्य जगदीश प्रसाद आर्य अभिमन्यु गुप्ता रणसिह आर्य वेद सिह प्रधान आदि अनेको आर्यसमाजो के अधिकारि उपस्थित थे।

शिक्षा की भारतीय दृष्टि

शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एव विकास की प्रणाली है। जीवन के प्रत्येक अनुभव को शिक्षा कहा जा सकना है। जो कुछ भी व्यवहार मनुष्य के ज्ञान की परिधि को विस्तृत करे उसकी अन्तर्दृष्टि को गहरा करे उसकी प्रतिक्रियाओ का परिष्कार करे भावनाओ और क्रियाओ को उत्तेजित करे अथवा किसी न किसी रूप मे उसको प्रभावित करे यह शिक्षा ही है। शिक्षाशास्त्र मे व्यक्तित्व के सन्तुलित एव सम्पूर्ण विकास को शिक्षा का लक्ष्य माना गया है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियो का सर्वागीण अर्थात शरीर मन बुद्धि और आत्मा का विकास है।

शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है। व्यक्ति का चरित्र व्यक्तित्व सस्कृति चिन्तन सूझबूझ कुशलताए आदते तथा जीवन की छोटी से छोटी बाते शिक्षा पर निर्भर है। वास्तव मे शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव–शिशु सब प्रकार से विकसित होकर समाज मे उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से सहस्त्रो वर्षो से समाज द्वारा अर्जित अनुभव बालक को हस्तान्तरित कर दिया जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपनी राष्ट्रीय थाती एव सस्कृति को ग्रहण करता है। शिक्षा के द्वारा उसका शारीरिक मानसिक नैतिक एव आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है उसका समाजीकरण होता है और वह मनुष्य की सज्ञा पाने योग्य बनता है।

शिक्षा के माध्यम से ही प्रत्येक पीढी के साथ समाज की प्राचीन निधि का सरक्षण सवर्धन एव हस्तान्तरण होता रहता है। यदि शिक्षा हो तो समाज का जन्म ही न हो। समाज जीवन का प्रवाह शिक्षा के कारण ही गतिशील होकर विकास की ओर अग्रसर होता है अत शिक्षा की प्रक्रिया को मूलत सामाजिक दृष्टिकोण से ही देखना आवश्यक है। यह कहने मे कोई आपत्ति नहीं कि देश वैसा ही होता है जैसी उस देश की शिक्षा होती है। देश की भौतिक सम्पन्नता बौद्धिक श्रेष्ठता सस्कारित मानवीय रुचि की परिष्कृतता सद्‌गुण सदाचार जीवनमूल्य आदि सभी का मूल आधार उस देश की शिक्षा ही होती है। भारत का भी अपना एक शिक्षा शास्त्र है। सहस्त्राब्दियो मे उसका विकास हुआ है। सहस्त्राब्दियों का उसका इतिहास है। भारत के शिक्षा केन्द्रो की ख्याति विश्व मे रही है। विश्व मे भारत की शिक्षा परम्परा श्रेष्ठतम रही है। भारत ने अपने शिक्षाशास्त्र को शिक्षादर्शन कहा है।

आज भारत मे शिक्षा के क्षेत्र मे बहुत अव्यवस्था हो गई है। हम कितना भी प्रयास करे शिक्षा से हमे व्यक्तिगत से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर अच्छे परिणामप्राप्त नहीं हो रहे हैं। हमारी सोच भी उलझ गई है। इस परिप्रेक्ष्य मे भारत मे शिक्षा विषयक दृष्टि क्या रही है और उसके व्यावहारिक सन्दर्भ क्या हैं यह स्पष्ट रूप से समझने की महती आवश्यकता प्रतीत हो रही है। शिक्षा राष्ट्र का निर्माण का सशक्त माध्यम है परन्तु यह तभी सम्भव हो पाता है जब उसका आधार राष्ट्र का जीवन–दर्शन हो। भारत मे भी शिक्षा को सफल होने के लिए भारत के जीवन–दर्शन का आधार चाहिए।

हम शरीर मन बुद्धि आदि नहीं परन्तु आत्मा हैं – यह जानना ही हमारा लक्ष्य है। उसी मे स्थित होकर व्यवहार करना ही सही जीवन पद्धति है। इसी को हमने मोक्ष कहा है। इसी को हमने शिक्षा का परम लक्ष्य बनाया। अत शिक्षा के उद्देश्यो को निरूपित करते हुए मूल उद्देश्य एक ही वाक्य मे बताया गया सा विद्या या विमुक्तये। परन्तु यह वाक्य सुनते ही आज लोग भडक उठते है। ऐसा मानने लगते है कि आत्मा परमात्मा आध्यात्मिकता की बात करके हम जीवन के दैनन्दिन व्यवहार से कटने की बात करते है ऋषि मुनियो सन्यासियो की बात करते हे। दैनन्दिन व्यावहारिक जीवन की सामान्य मनुष्य की बात नहीं करते हैं। ऐसी बात करने से हम थोडे लोगो का ही विचार कर रहे हैं सभी का नहीं। आज के जमाने मे यह असगत है। परन्तु जीवन दर्शन आत्मतत्व मुक्ति आदि केवल आध्यात्मिक स्तर की बाते नही है अध्यात्म के आधार पर व्यावहारिक जीवन की चर्चा है। अध्यात्म तो भारत का मूल विचार है। उसके आधार पर भौतिक जीवन की रचना खडी होती है। इस प्रकार से देखे तो – 'सा विद्या या विमुक्तये' का व्यावहारिक अर्थ क्या है ? जो कर्मेन्दियो को जडता एव प्रमाद से मुक्त करे ज्ञानेन्द्रियो को असवेदनशीलता से मुक्त करे मन को वासना लालसा लोभ मोह आदि षडरिपुओ से मुक्त करे बुद्धि को अज्ञान एव अविवक से मुक्त करे स्वय आत्मा को मन बुद्धि अहकार आदि के साथ तादात्म्य से मुक्त करे अर्थात मनुष्य को सर्वार्थ मे स्वतन्त्रता एव पूर्णता प्राप्त कराए वही शिक्षा है।

शैक्षिक चिन्तन मे आज सर्वागीण व्यक्तित्व विकास बहुत लोकप्रिय शब्दावली है परन्तु इसका सा विद्या या विमुक्तये के सन्दर्भ मे अर्थ क्या है ? विकास का प्रारम्भ बिन्दु शारीरिक विकास है। मनुष्य के व्यक्तित्व मे सबसे ठोस एव बाहरी जगत मे क्रियाशील पहलू उसका शरीर ही होता है। शरीर अच्छा होने का अर्थ है – शरीर मे बल एव ओज होना शरीर स्वस्थ होना अर्थात् शरीर के सभी सस्थानो का अपना कार्य सुचारू रूप से करने मे सक्षम होना शरीर मे कष्ट सहने की विपरीत परिस्थितियो मे भी स्वस्थ रहने की क्षमता होना कमेन्द्रियो का अपना-अपना कार्य करने मे कुशल होना। जब यह सब होगा तो शरीर जडता आलस्य अकुशलता प्रमाद आदि से मुक्त होगा। ऐसे शरीर को धर्माचरण मे प्रयुक्त करना सही शारीरिक विकास है। यह मुक्ति का प्रथम चरण है।

प्राण का बलवान होना आत्मविश्वास होना उत्साह होना विजिगीषु मनोवृत्ति होना दीनता की भावना न होना दब्बू न होना विधायी दृष्टिकोण होना हमेशा कर्म मे प्रवृत्त होना निराशा एव हताशा से ग्रसित न होना मनुष्य जीवन को अच्छा एव सतुलित बनाता है। यह मुक्ति का अगला चरण है। शिक्षा के माध्यम से यह होना अपेक्षित है।

इक्कीसवीं शताब्दी का महारोग है मनोरुग्णता। छोटे बालक से लेकर बडे तक सभी मे तनाव उत्तेजना असूया अरुचि लालसा चचलता अस्थिरता अनिश्चितता सशयग्रस्तता बहुत व्यापक रूप मे दिखाई देती है। परिणामस्वरूप एक दूसरे मे अविश्वास स्वार्थ असुरक्षितता का भाव बहुत अधिक मात्रा मे बढ गया है। इसी के कारण से सघर्ष बढा है। सघर्ष हमेशा विनाश की ओर ले जाता है। आज केवल भारत ही नहीं पूरा विश्व विनाश की दिशा मे ही तेजी से दौड रहा है। व्यक्ति की इस मनोरुग्णता को दूर करना उसे मानसिक रूप से स्वस्थ बनाना एकाग्रता सिखाना वासना लालसा मोह आदि दूर कर उसमे दया करुणा परोपकार स्नेह अनुकम्पा के भाव जागृत करना मनोबल बढाना मन की शक्तिया जागृत करके उन्हे जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने मे लगाना मानसिक विकास है। यह भी मुक्ति का एक चरण है। शिक्षा से ऐसा विकास होना अपेक्षित है।

मनुष्य बुद्धि से सब जानता है समझता है। बुद्धि सकल्प करती है विवेक करती है निर्णय करती है। सही क्या गलत क्या उचित क्या अनुचित क्या सत्य क्या असत्य क्या अच्छा क्या बुरा क्या यह ठीक से जानने को विवेक कहते हैं। जब बुद्धि का विकास होता है तो विवेक जागृत होता है और मनुष्य सही निर्णय लेकर सही व्यवहार कर सकता है। निरीक्षण करना परीक्षण करना विश्लेषण और सश्लेषण करना तर्क एव अनुमान करना साम्य भेद के आधार पर तुलना करना आदि माध्यमों से बुद्धि विवेक करती है। मन जब स्थिर एव शान्त होता है जब बुद्धि ठीक से कार्य कर सकती है। ज्ञानेन्द्रिया सवेदनशील होती हैं नाडी सस्थान शुद्ध होता है तभी बुद्धि निरीक्षण एव परीक्षण का कार्य ठीक से कर सकती हैं। बुद्धि जब अच्छी तरह से विवेकशील बनती है तब अपने स्वरूप को जानने मे सहायक होती है। अत बुद्धि विकास होना मुक्ति की ओर अग्रसर होने का अगला चरण है। शिक्षा से इस प्रकार का बुद्धि विकास अपेक्षित है।

शरीर प्राण मन बुद्धि का जब ठीक से विकास होता है तो जडता प्रमाद मोह चचलता अज्ञान अविवेक आदि के आवरण दूर हो जाते हैं और अन्तर्निहित ज्ञान अनावृत्त होता है उदघाटित होता है। आत्मा स्वय ज्ञान स्वरूप है आनन्द स्वरूप है प्रेम स्वरूप है। इसकी अनुभूति होना ही मुक्ति है।

आज दोष इस बात का है कि हम शिक्षा से बुद्धि विकास करना चाहते हैं। शारीरिक प्राणिक मानसिक विकास के आयामो को छोड देते हैं। ये सब तो बुद्धि विकास मे बहुत सहायक होते हैं। इनको भुलाने से बुद्धि का विकास भी ठीक प्रकार से नहीं होता। दूसरा दोष यह है कि केवल बुद्धि विकास ही प्रर्याप्त नहीं है। मनोभाव अच्छे नहीं बने तो बुद्धि का उपयोग करके मनुष्य स्वार्थी एव शोषण करने वाला बनता है और दुनिया की शान्ति और सुख सकट मे पड जाते हैं। आज यही हो रहा है। तीसरा दोष यह है कि बुद्धि विकास से भी आगे आत्मिक विकास है। वहा तक नहीं पहुचे तो मनुष्य जीवन सार्थक नहीं होता है।

भारतीय शिक्षा विचार मे इन तीन दोषो का प्रारम्भ से ही परिषकार किया गया है। भारत ने हमेशा पूर्णता के परिप्रेक्ष्य मे ही सोचा है। इस दृष्टि से जहा एक ओर विद्या मुक्ति के लिए है ऐसा कहा गया है वहीं पर विद्या को भोगकारी (भोग प्राप्त कराने वाली) 'यशकारी' (यश प्राप्त कराने वाली) 'सुखकारी' (सुख प्राप्त कराने वाली) भी कहा गया है। अर्थात भारत के चिन्तन मे कहीं पर भी भौतिक पक्ष की उपेक्षा नहीं की गई है। उसे अध्यात्म के स्तर तक ले जाकर पूर्णता प्रदान की गई है।

भारत के मनीषियो ने देखा कि व्यक्ति अपने मूलरूप मे आत्मा है परन्तु वह अकेला और सबसे अलग नहीं है। व्यक्ति परमात्मा का अश है। सर्वव्यापी है। जड चेतन दृश्य अदृश्य जितनी भी सृष्टि है उसमे परमात्मा आत्मतत्व होकर बसा है।

जब सारी सृष्टि एकात्मता के सूत्र मे एक दूसरे के साथ सम्बद्ध है तो सभी के सम्बन्ध स्वाभाविक रूप से ही प्रेम के बनते है। प्रेम से प्रेरित व्यवहार त्याग और सेवा पर आधारित ही होता है। दूसरे के लिए कष्ट उठाना दूसरे के कल्याण की इच्छा होना दूसरे के लिए त्याग करने और कष्ट उठाने के बाद भी आनन्द और सन्तोष का अनुभव करना मनुष्य के लिए सहज है। यही उसका मूल स्वभाव है।

जीवन अखण्ड है – अतीत वर्तमान और अनागत मे अत्र तत्र सर्वत्र और अचेतन चेतन अति चेतन मे। ज्ञान से प्रेम से त्याग से तपश्चर्या से उस अखण्डता का बोध होता है।

ईशावास्य उपनिषद् जब कहता है तेन त्यक्तने भुजीथा परम पूजनीय गुरु जी जब कहते हैं 'मैं नहीं तू ही' गोस्वामी तुलसीदास जब कहते हैं 'परहित सरिस धर्म नहि भाई पर पीडा सम नही अधमाई स्वामी विवेकानन्द जब कहते है त्याग और सेवा ही भारत के युवाओ का आदर्श है' राजा शिव जब कबूतर को बचाने के लिए बाज पक्षी को अपना मास देने के लिए तैयार होते हैं' महाप्रभु चैतन्य जब मित्र के सुख के लिए स्वरचित श्रेष्ठ ग्रन्थ गगा मे वहा देते हैं लोक कथा का सर्वगुण सम्पन्न दम्पत्ति लोक कल्याण के लिए अपने आपको जल समाधि मे समर्पित कर देता तब चराचर मे व्याप्त आत्मतत्व उसके ऊपर आधारित एकात्मकता का सिद्धान्त उससे प्रेरित प्रेम का सम्बन्ध और उससे प्रेरित त्याग और सेवा के तत्वानुसार ही व्यवहार हो रहा है। इसका बोध कराने का एव इस प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरित करने का कार्य भारत की शिक्षा सदा से कराती आई है।

– वि०स०के० से साभार

आर्यसमाज और कनाडा

– डॉ० देवरत्न आर्य

अमेरिका की यात्रा पूर्ण करके हमारा कार्यक्रम ७ अगस्त २००२ से १४ अगस्त २००२ तक कनाडा मे आर्यसमाज की गतिविधियो से अवगत होना था। हम दिल्ली से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान माननीय डॉ० सुखदेव जी सोनी के आमन्त्रण पर गए थे। उन्होने मेरा व मेरी पत्नी सुनीता आर्य का विमान टिकट भेज दिया था। अमेरिका में हमारे आमन्त्रण हेतु डॉ० दिलीप वेदालकार जो शिकागो में रहते है विशेष रुचि ली और हमें आर्य महासम्मेलन क्लिवलैण्ड के लिए आमन्त्रित किया।

कनाडा और अमेरिका साथ साथ लगे है। न्यूयार्क से टोरेन्टो की सिर्फ दो घण्टे की विमान यात्रा है। श्री अमर ऐरी जी जो कनाडा में आर्यसमाज के सुदृढ स्तम्भ हैं उनके विशेष आग्रह पर हम ७ अगस्त २००२ को प्रात १० बजे के विमान से न्यूयार्क से कनाडा के लिए रवाना हुए। श्री वेदश्रवा जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका हमें आर्यसमाज न्यूयार्क जहा हम ठहरे हुए थे लेने आ गए। वे वहा से लगभग ७५ किलोमीटर दूर रहते हैं। श्री सुभाष जी अरोडा भी हमें छोडने के लिए आ गए थे परन्तु हमें उनसे क्षमा मागनी पडी।

न्यूयार्क के पास लवाडिया नाम से विमान स्थल है वहीं से हमारे विमान ने उडान भरी और हम अमेरिका की धरती से कनाडा के लिए रवाना हो गए। लगभग १ बजे हम टेरेन्टो विमान स्थल पर पहुचे। विमान स्थल पर श्री अमर ऐरी उनकी धर्मपत्नी मेरे छोटे भाई डॉ० वीररत्न आर्य की सुपुत्री श्रीमती मधु जो वहीं रहती हैं श्री बेरी जी मन्त्री टोरेन्टो आर्यसमाज श्री जयन्त (आधुनिक भीम) श्री अभय शास्त्री आदि १५ गणमान्य व्यक्ति हमे लेने के लिए आए हुए थे। वहा से हम श्री अमर ऐरी जी के निवास पर गए। वहा पहुचते ही हमें अमेरिका से श्री विनोद सेठी का टेलीफोन आया कि आपके पुत्र अश्विनी ने ई-मेल पर सूचना दी है कि श्री ओकार नाथ जी आर्य का देहान्त हो गया है व उनका अत्येष्टि सस्कार ८ अगस्त को है। मेरे कनाडा आने का उत्साह बिल्कुल समाप्त हो गया। मैं जा भी नहीं सकता था उनके अन्तिम दर्शन करने।

श्री ओकार नाथ जी मेरे लिए पिता के समान थे। आज जिस पद पर मैं बैठा हू वहा तक पहुचाने मे उनका विशेष हाथ रहा। अमेरिका के लिए रवाना होने से पूर्व उन्होंने मुझे मेरे मुम्बई निवास पर टेलीफोन किया। जब उन्हे पता चला कि मैं कल राजधानी एक्सप्रेस से दिल्ली जा रहा हू और वहा से अमेरिका चला जाऊगा तो वे श्रीमती शिवराजवती के साथ मिठाई का डिब्बा लेकर मेरे निवास पर आए। मैंने उनके पैर छुए और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। वे बडे प्रसन्न थे। जब मुझे अमेरिका का वीसा मिल गया और वो भी दस साल के लिए तो उन्होने प्रसन्नता के साथ १०-१५ व्यक्तियों को टेलीफोन किए। मेरे विदेश जाने से बडे प्रसन्न थे। मुझ से कहा खूब काम करो आर्यसमाज का। कोई भी कमी हो तो मुझे बताना। ऐसे प्रेरणा स्रोत को खोकर मेरा उदासीन होना स्वाभाविक था। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। मैंने उसी दिन वहीं से अपना शोक सन्देश श्री अजय सहगल सम्पादक टकारा समाचार व श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री सभा को दिल्ली में भेजा। श्री अमर ऐरी जी के परिवार मे लगभग डेढ घण्टा बिताने के बाद मेरी भतीजी मधु के विशेष आग्रह पर श्री ऐरी जी हमे उनके निवास पर छोड आए। हालाकि श्री ऐरी जी चाहते थे कि हम उनके निवास पर ही रहें। दोनों घर पास पास थे अत कोई दिक्कत नहीं आई।

सायकाल हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज मारखम में था। श्री अमर ऐरी जी के साथ हम आर्यसमाज मन्दिर गए। इस आर्यसमाज का निर्माण दो समाजों ने मिलकर किया। गायना के आर्यसमाजी अपनी आर्यसमाज बनाना चाहते थे और भारतीय अपनी। फिर दोनो ने मिलकर इस आर्यसमाज का निर्माण किया। एक वर्ष भारतीय रविवार का सत्सग प्रात करते है और गायना के व्यक्ति साय। ठीक इसी प्रकार एक वर्ष गायना के व्यक्ति प्रात और भारतीय साय।

ह्यूसटन (अमेरिका) के भव्य भवन को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ था। परन्तु आर्यसमाज मारखम के भवन को देखकर मैं और भी अधिक प्रसन्न हुआ। एक छोटी से टेकडी पर दो एकड भूमि मे विशाल भवन और बाहर से बडी सुन्दरता के साथ छवि बिखेरता हुआ यह समाज मन्दिर था। वातानूकूलित भवन व तलघर जिसमें लगभग १५०० व्यक्ति आराम से बैठ सकते है व तलघर मे भोजन कर सकते हैं। आधुनिक सामानो से सुसज्जित विशाल रसोई घर विशाल पुस्तकालय मीटिंग रूम पुरोहितो के लिए सुसज्जित दो फ्लेट लगभग २०० कारे खडी करने हेतु पार्किंग। रात्रि को ऊचाई से मारखम व टोरेन्टो शहर देखने का विद्युत नजारा अगर लिखू तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत मे भी इतना विशाल आर्यसमाज भवन देखने को नहीं मिलेगा।

भवन की एक और विशेषता है इसकी मुख्य मजिल लगभग १५००० स्क्वायर फुट की है और नीचे की मजिल भी लगभग ११५०० स्क्वायर फुट सम्पूर्ण भवन लगभग २६५०० स्क्वायर फुट का है। भवन की ऊचाई ६० फुट की है। और भवन २ एकड जमीन पर बना है।

भवन में बनी हर एक वस्तु किसी न किसी वैदिक सिद्धान्त का प्रतीक है। मुख्य प्रवेश पर दो बडे स्तम्भ बने हैं जो पुरुष और महिला को सम्बोधित करते है जिससे आर्य परिवार बनता है। शिखर का रग गहरा भगवा रग का है जो अग्नि का प्रतीक है जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। शिखर पर हर दिशा में १२ त्रिभुज बने है जो भारतीय सस्कृति के ६ उपनिषद् ओर ६ वेदागों के प्रतीक है। इन १२ त्रिभुज के साथ ४ छोटे स्क्वायर बने है जो ४ वेदों की प्रतीक है। भवन के दाहिने ओर समाज का पुस्तकालय है उस पर ११ मनुष्य की आकृति बनी है जो ग्यारह उपनिषदों के प्रतीक हैं। मुख्य प्रार्थना भवन के ऊपर तीन खुले-आसमान प्रकाश बने है जो ईश्वर जीव व प्रकृति के प्रतीक है। इस प्रकार भवन निर्माण की हर वस्तु भारतीय सस्कृति के किसी न किसी पहलू को दर्शाती है।

७ अगस्त की सायकाल आर्यसमाज के भारतीय अधिकारी अन्तरग सदस्य व कार्यकर्त्ताओ की बैठक थी। श्री अमर ऐरी जी ने आदरणीय ओकार नाथ जी के देहावसान की सूचना सभी को दी और उनकी पृष्ठ भूमि को सबके सम्मुख रखा। एक मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की।

मैंने अपने विचार उसके पश्चात सभा में रखे। भारत मे आर्यसमाज की गतिविधियो द० अफ्रिका मे आर्यसमाज का विस्तृत कार्य अमेरिका में आर्यसमाज की सक्रियता और आर्यसमाज के विशाल सगठन से सभी को अवगत कराया। उपस्थित आर्यजनो ने अनेक प्रश्न पूछे और मैंने उनका उत्तर दिया। एक प्रश्न अमेरिका की समस्त आर्यसमाजों मे और यहा भी पूछा गया कि हम आर्यसमाज मे नवयुवको को कैसे आकर्षित करे। मैंने प्रश्नकर्त्ता से ही पूछा कि क्या आपके बच्चे आर्यसमाज मे आते है। मैंने कहा जिस दिन आप अपने सभी पारिवारिक सदस्यो के साथ आर्यसमाज में सक्रियता से भाग लेगे और नवयुवको को उत्तरदायित्व देगे नवयुवक स्वत आर्यसमाज के कार्यों मे रुचि लेने लगेगे।

८ अगस्त २००२ को श्री एव श्रीमती ऐरी हमे Toronto down Town दिखाने ले गए। हमने सगम नाम के भारतीय रेस्टोरेन्ट मे भोजन किया। भारतीय उच्चायुक्त श्री दिव्यम मानचन्दा ने हमे ११३० बजे चाय पर आमन्त्रित किया हुआ था। हम उनसे मिले। उन्होने बडे स्नेह और सम्मान से हमारा स्वागत किया। उनके दिव्यम नाम पर जब मैंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की तो मालूम पडा वे दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यसमाजी मानचन्दा परिवार के है जिन्होंने मानचन्दा कालेज आदि शिक्षण सस्थाए भी चला रखी है। जब उन्हे आर्यसमाज मारखम की सक्रियता एव भव्यता के बारे मे बताया तो उन्होने कहा मैं एक दिन अवश्य ही इस आर्यसमाज मन्दिर को देखने आऊगा।

भोजन के पश्चात हम विश्व की प्रसिद्ध सर्वोच्च ऊचाई को प्राप्त सी०एन० टावर देखने गए। १४१ मजिल की ऊचाई का यह टावर २६०० फीट का है। आश्चर्य इस बात का था कि तल मजिल से १४१ मजिल तक जाने के लिए लिफ्ट सिर्फ सवा मिनट लेती हैं। सामने से लिफ्ट मे आप टोरेन्टो नगर भी देख सकते है। ऊपर जाने के बाद सडको पर दौडती कारें चीटियों के समान लगती है। दुनिया की यह आश्चर्यजनक टावर को देखने के लिए सैकडो आदमी पक्ति मे खडे थे। ऊपर जाने से पूर्व एक छोटी सी फिल्म भी दिखाई गई जिसमें टावर के निर्माण का इतिहास फिल्माया गया था।

ऊपर जाकर ५० ६० मजिल की इमारतें भी छोटी छोटी लग रही थी। १४०वीं मजिल पर Glass Floor बना हुआ था। बच्चे उस पर खेल रहे थे। लेकिन हमे तो उस ग्लास पर कदम रखने का साहस नहीं हुआ। ग्लास से १४० मजिल नीचे का दृश्य देखने से अजीब सी सिरहन पैदा होती थी शरीर मे। मेरी पत्नी सुनीता ने उसका खूब आनन्द लिया। उसी मजिल में बने एक रेस्टोरेन्ट मे हमने आइसक्रीम खाई और उस ऊचाई पर बैठकर खाने का आनन्द लिया। आइसक्रीम इतनी सारी एक विशाल कप मे दी गई कि उसे पूरा खाने मे एक घण्टे का समय चाहिए। हम चारो ही उसे पूरा नहीं खा पाए।

जैसा मैंने पूर्व मे लिखा है वैदिक स्प्रीच्यूल सेन्टर मारखम का भवन दो आर्य समुदायो द्वारा बनाया गया है। आज सायकाल हमे। गायना के आर्यसमाजियो का निमन्त्रण था। सायकाल ८ बजे उस समुदाय के अधिकारी अन्तरग सदस्यो एव सक्रिय कार्यकर्त्ताओ की बैठक को मैंने सम्बोधित किया। लगभग ३० मिनट के भाषण के पश्चात् जो आर्यों के सुदृढ सगठन पर था – वे प्रसन्न हुए और यही कहते रहे कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूर्व में भी आते जाते रहते तो हम महर्षि के मिशन को और विकासमय गति देते। उपस्थित आर्यो ने अनेक प्रश्न किए जिसका मैंने उन्हें सन्तोषजनक उत्तर दिया वे भारत की आर्यसमाजो की गतिविधियो को जानकर बडे प्रसन्न हुए। मैंने अपने समस्त कार्यक्रमो में व भाषणों मे सिर्फ आर्यसमाज की सकारात्मक भूमिका ही आम सदस्यो के सामने रखी। हालाकि उनकी ओर से किए गए अनेक नकारात्मक प्रश्न आए थे पर मेरे सकारात्मक उत्तर से वे बहुत प्रसन्न हुए।

एक प्रश्न था कि आर्यसमाज ने चर्च मस्जिदो व गुरुद्वारों जैसी उन्नति क्यो नहीं की ? मैंने उत्तर दिया आपकी यह तुलना करना गलत है। ईसाई धर्म लगभग २००० साल पहले प्रारम्भ हुआ था। इस्लाम १४०० वर्ष पूर्व और सिक्ख धर्म ४०० वर्ष पूर्ण कर चुका है। जबकि आर्यसमाज ने सिर्फ १२५ वर्ष ही पूर्ण किए है। इन १२५ वर्ष मे ६००० आर्यसमाजे बनी है। २००० स्कूल कालेज मेडिकल कालेज आदि बने हैं सैकडों अनाथालय विधवा आश्रम दयानन्द सेवा आश्रम आदि बने हैं। विश्व के समस्त देशों में आर्यसमाज का विस्तार है। अकेले मॉरिशस जैसे छोटे देश मे ४५० आर्य समाजें ३ सेवाश्रम और अनेक डी०ए०वी० कालेज है।

आज भारत मे तीन विश्वविद्यालय आर्यसमाज के नाम है। रोहतक मे 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय' अजमेर में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय और हरिद्वार मे 'गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय' है इसके अतिरिक्त सैकडो सस्थाए अलग से बनी है वे अपने अपने क्षेत्र मे कार्यरत है। आप बताए कि ससार मे कौन सा धर्म या मजहब है जिसने अपने १२५ वर्षों के जीवन मे इतना विकास किया है। भारत के स्वतन्त्रता सग्राम में ८५ प्रतिशत आर्यों ने भाग लिया। सरदार भगतसिह रामप्रसाद विस्मिल सुख देव राजगुरु लाला लाजपत राय स्वामी श्रद्धानन्द श्याम जी कृष्ण वर्मा भाई परमानन्द आदि अनेक महापुरुष या तो फासी के तख्ते पर लटक गए या शेष ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। ऐसा कोई उदाहरण किसी धर्म या मजहब मे मिलता हो तो बताए। मानव निर्माण की ऐसी विचित्र फैक्टरी किसी के पास हो तो बताए। मेरा उत्तर सुनकर जो उल्लास उनके चेहरे पर था ओर जो सतुष्टी की भावना उनके चेहरे पर देखने को मिली वह अनोखी थी। श्री अमर ऐरी तो मेरे कनाडा निवास के दौरान अनेक बार मुझसे कहते रहे आपने जो उत्तर उस दिन दिया मैं उससे बडा प्रभावित हुआ हू।

– शेष पृष्ठ ८ पर

कनाडा यात्रा
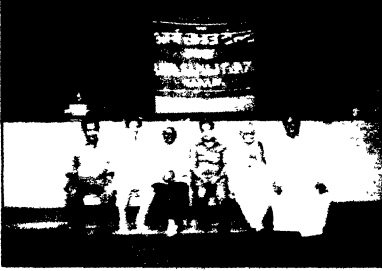
आर्यसमाज टोरण्टो के भवन मे सर्वश्री आनन्दरुप नारायण, अमर ऐरी, डॉ० तुलसी शर्मा, कै० देवरत्न आर्य, महात्मा प्रेम प्रकाश जी व श्री जयन्त जी।

आर्यसमाज मारखम मे आयोजित गायत्री यज्ञ के अवसर पर उद्‌बोधन करते कै० देवरत्न आर्य। पीछे बैठ है यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा प्रेम प्रकाश जी।

आर्यसमाज टोरण्टो के अधिकारियो व गणमान्य व्यक्तियों के साथ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

गायत्री महायज्ञ के एक हवन कुण्ड पर बैठे श्री दक्ष आर्य, श्रीमती सुरोज आर्या, श्री अमर ऐरी एव सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

गायत्री महायज्ञ के एक अन्य हवन कुण्ड पर बैठे यज्ञमान। मध्य मे है श्रीमती सुनीता आर्या, श्रीमती अमर ऐरी एव एक विदेशी महिला।
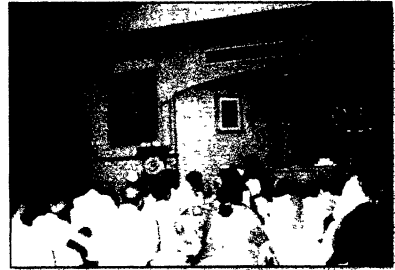
आर्यसमाज मारखम के साप्ताहिक सत्सग मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य भाषण देते हुए। सबसे पीछे बैठे हैं श्री अमर ऐरी, डॉ० सुखदेव सोनी एव श्रीमती सरोज सोनी।

की झलकियाँ

१४०वीं मजिल पर बने सी०एन० टावर रेस्टोरेन्ट मे श्री अमर ऐरी व कें० देवरत्न आर्य।

विश्व की सर्वोच्च स्तम्भ सी०एन० टावर के साथ श्रीमती सुनीता आर्या एव कें० देवरत्न आर्य।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री दिव्यभ मानचन्दा के साथ बाए से श्री अमर ऐरी, श्रीमती सुनीता आर्या, सभा प्रधान कें० देवरत्न आर्य एव श्रीमती अमर ऐरी।
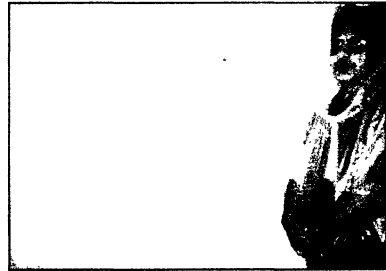
न्यागरा जलप्रपात पर सभा प्रधान कें० देवरत्न आर्य।
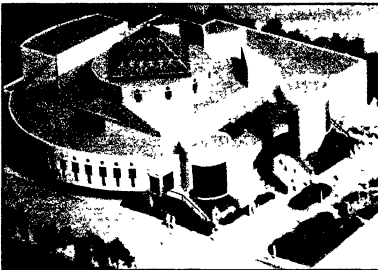
आर्यसमाज मारखम (कनाडा) के भव्य भवन का एक चित्र।

कनाडा विमान स्थल पर विदाई के क्षणो मे सभा पधान कें० देवरत्न आर्य एव श्रीमती सुनीता आर्या के साथ श्रीमती मधु शर्मा उनके सुपुत्र श्री शर्मा सभा आर्यसमाज पील के प्रधान श्री लीवनेल, श्रीमती अमर ऐरी एव आर्यसमाज मिसिसागा के प्रधान श्री वेद खन्ना।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

आर्यसमाज और कनाडा

मैने कहा आप सब सगठन के सूत्र मे बधे और हम मिलकर ईमानदारी और सच्चाई से महर्षि के मिशन को विकसित करने के लिए कदम उठाएगे तो आने वाले समय मे कोई धर्म हमारा मुकाबला नहीं कर पाएगा। रात्री को लगभग १०.३० बजे यह सभा समाप्त हुई।

६ अगस्त को हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज पील मे था। श्री ऐरी जी हमे साय ५ बजे ले गए। उद्योगो की नगरी मे ही किसी उद्योग के भवन को लेकर इस सुन्दर आर्यसमाज का निर्माण हुआ। वातानुकूलित भव्य भवन अत्यन्त साफ सफाई से चमकती उस आर्यसमाज को देखकर कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। इसके प्रधान है श्री लाईनेल प्रसाद और मन्त्री डा० कृष्णबृज पाल। दोनो मिलकर शेष सदस्यो के साथ अत्यन्त सक्रिय है। इस आर्यसमाज को ब्रिटिश गायना से आए आर्यो ने बनाया है। मेरा भाषण हुआ। श्री अमर ऐरी जी ने मेरा परिचय कराया। और फिर वही प्रश्नो की बौछार। युवा वर्ग कैसे आर्य समाज मे आए सार्वदेशिक का प्रधान पूर्व हमारे देश मे क्यो नहीं आया – सार्वदेशिक का क्या अर्थ है – आदि आदि। मैने हसते हुए कहा यह प्रश्न गलत है कि सार्वदेशिक का प्रधान पहली बार यहा आया। वास्तविकता यह है कि आपने सार्वदेशिक के प्रधान को पहली बार आमन्त्रित किया है। आप पूर्व मे भी आमन्त्रित करते तो वे अवश्य आते। वहा मुझे आर्य महिला समाज अन्धेरी मुम्बई की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला भी मिली वे वहा पर अपने पुत्र के पास आई थीं। मुझसे विदेश मे मिलकर बडी प्रसन्न हुई।

१० अगस्त को आर्यसमाज मारखम मे एक आर्य परिवार का विवाह सस्कार था। उनके विशेष आग्रह पर मैं उसमे सम्मिलित हुआ। आर्यसमाज भवन को दुल्हन की तरह सजाया हुआ था। लगभग ४०० व्यक्ति उपस्थित थे। हमने नवदम्पत्ति को आशीर्वाद दिया। अनेक विद्वान व कार्यकर्त्ताओ से मिलना हुआ व वही भोजन किया।

साय ४ बजे कनाडा देश की समस्त आर्यसमाजो की ओर से हमारे सम्मान मे एक सयुक्त कार्यक्रम रखा गया था। कनाडा की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधि वहा उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सूचना पिछले तीन दिनो से ए०टी०एन० टी०वी० पर प्रसारित हो रही थी।

स्वागत समारोह मे बडी अच्छी उपस्थिति थी। मैने भारत की आर्यसमाज व विदेशो की आर्यसमाज गतिविधियो पर प्रकाश डाला। मेरे सहित सभी आर्य इस बात पर आश्चर्य चकित थे कि विदेशो मे आर्यसमाज का इतना कार्य हो रहा है। इस कार्यक्रम मे शुद्धि कार्यो पर अनेक प्रश्न पूछे गए। वास्तव मे अमेरिका दक्षिण अफ्रिका इग्लैण्ड की सरकारे भी धर्मान्तरण के कार्यो से परेशान है। यहा इस्लामीकरण तेजी से हो रहा है। यह कार्यक्रम लगभग ६ बजे समाप्त हुआ। मैने सभा की ओर से जितने प्रधान व मन्त्री एव विद्वान उस सभा मे आए उनका भगवा पटको से सम्मान किया।

समारोह समाप्त होते ही हमे श्री सुरेश शर्मा जी (वैदिक विद्वान निरुकाचार्य श्री धर्मदेव जी के सुपुत्र और हमारे परिवार के दामाद) व मेरी भतीजी मधु शर्मा हमे न्यागरा प्रपात दिखाने ले गए। वहा जाकर उस प्राकृतिक दृश्य को देखकर क्या आनन्द आया इसका वर्णन करना कठिन है। यह प्रपात अमेरिका और कनाडा की सीमा के साथ बह रहा है। एक पुल बीच मे है उसे पार कर लो तो अमेरिका और इस ओर कनाडा। लेकिन इस प्रपात की सुन्दरता देखनी हो तो कनाडा मे खडे होकर देखे। प्रकृति और ईश्वर का करिश्मा है यह प्रपात। सतत बारहो माह एक विशाल ऊचाई से पानी गिर रहा है। पानी गिरने की आवाज आप कई मीलो तक सुन सकते है। हमे जहा पानी गिर रहा है एक मानव निर्मित गुफा द्वारा उस सतह तक जाने का अवसर मिला। एक विशाल सफेद परदा जो बह रहा है तेजी से उसे देखने का आनन्द कितना आया लिखा नहीं जा सकता। थोडी देर मे अधेरा हो गया और प्रपात के गिरते हुए पानी पर रग बिरगी रोशनी डाली गई। अनेक रगो मे प्रपात का गिरता हुआ पानी देखने को मिला। वहा एक बोर्ड पर लिखा था यह प्रपात १७६ फीट की ऊचाई से गिर रहा है। हर मिनट पर यहा १५४ मिलियन लीटर पानी गिरता है। हमारी इच्छा वहा से जाने की नहीं हो रही थी फिर भी लगभग ११ बजे हम वहा से वापिस लौटने की तैयारी करने लगे। इस प्रपात को देखने के लिए वहा हजारों पर्यटक घूम रहे थे। वहा पर अनेक पाच सितारा होटल और सैकडों दुकाने पर्यटकों को लुभाने के लिए बनी हुई है।

११ अगस्त को हमारा बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा। रविवार होने के कारण हम प्रात आर्यसमाज मारखम पहुचे। आज यहा प्रात ब्रिटिश गायना सेआए आर्यों का सत्सग था। पडिता यशोधरा जी यज्ञ का सचालन कर रही है। वेद मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण बीच बीच मे वेद मन्त्रो को सगीत वाद्यो के साथ गाकर उनकी आहुति दी जाती रही। मैंने अपने जीवन मे इतना आकर्षक यज्ञ इससे पूर्व नहीं देखा था। मैने उसके वीडियो कैसेट की भी माग की। आज यज्ञ मे मुख्य यजमान के रूप मे श्री एव श्रीमती दलजीत थे जो अपनी ५० वीं वैवाहिक वर्षगाठ मना रहे थे। सबको मिठाई के डिब्बे व भोजन उनकी ओर से दिया गया था।

सत्सग मे लगभग ३०० व्यक्ति उपस्थित थे। समाज के प्रधान श्री आदित्य कुमार जी ने हमारा स्वागत किया। श्री अमर ऐरी जी ने मेरा परिचय दिया। मैंने आर्यसमाज की स्थापना क्यो और कैसे हुई एव आर्यसमाज के गौरवमय अतीत पर अपने विचार रखे। कुछ प्रश्न भी श्रोताओ ने पूछे। इस सत्सग के समाप्त होने पर हम लगभग १.३० बजे अगले कार्यक्रम के लिए रवाना हो गए।

३ बजे से हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज मिसीसागा मे था। श्री रणवीर सरदाना हमे मिसीसागा ले जाने के लिए १.३० बजे आ गए थे। आर्यसमाज का यह कार्यक्रम एक कम्यूनिटी हाल मे होता है। अब उन्होने अपना भवन बनाने का निश्चय कर लिया है। जमीन खरीद ली गई है योजना व नक्शा बन गया है व एक वर्ष मे यह भवन बनकर तैयार हो जाएगा। समाज के प्रधान श्री विनोद खन्ना बडे भावुक एव पक्के आर्य विचारो के है। मेरे भाषण के पश्चात बोले हमारे नए भवन के उद्घाटन पर आप अवश्य आना। और मैंने कहा आप आमन्त्रित करेगें तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूगा।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री सुशील कुमार जी एव विद्वान डॉ० श्री वास्तव जी मच पर उपस्थित थे। डॉ० श्रीवास्तव अध्यापन के साथ साथ विशेष आमन्त्रण पर सस्कार भी कराते है। मेरा परिचय प्रधान श्री विनोद खन्ना ने दिया। इस सत्सग मे मुम्बई की श्रीमती पुष्पा भण्डारी और आदरणीय श्री ओकार नाथ जी की छोटी बहिन भी उपस्थित थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान आदरणीय डॉ० सुखदेव सोनी एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज सोनी अमेरिका से प्रात आर्यसमाज मारखम के सत्सग मे एव मध्याह्न आर्यसमाज मिसीसागा के सत्सग मे उपस्थित होने के लिए अमेरिका से आए हुए थे। समाज के अधिकारियों ने उनका पुष्प गुच्छों से सम्मान किया। वास्तव मे मैं और पत्नी सुनीता आर्या उन्हीं के निमन्त्रण पर अमेरिका मे होने वाले आर्यमहासम्मेलन मे आए थे। आज भाषण के पश्चात उन्होंने मुझे जनवरी २००३ में वर्मा देश मे आर्यसमाज का कार्य देखने के लिए आमन्त्रण दिया जिसे मैंने स्वीकार किया। डॉ० सोनी जी मूलत बर्मा देश के है और पिछले ४० वर्षों से अमेरिका मे बस गए हैं।

मेरे भाषण के पश्चात मैंने आर्यसमाज मिसीसागा के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ का भगवा पटको से सम्मान किया। उसके पश्चात श्री सरदाना जी हमे ५ बजे आर्यसमाज मारखम छोड गए।

सायकाल वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर मारखम में भारतीयो का रविवारीय सत्सग था। मेरा भाषण हुआ। मैंने आधुनिक परिवेश मे आर्यसमाज की आवश्यकता कितनी है और आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य मानव निर्माण का है विषय पर अपने विचार रखे। भाषण के पश्चात उपस्थित आर्यों मे जो उत्साह था देखने योग्य था। मुझे इस भाषण के पश्चात अनेक बुजुर्गो ने गले लगाकर बधाई दी। भोजन के पश्चात हम अपने निवास पर आ गए।

कनाडा मे आर्यसमाज का कार्य श्री अमर ऐरी जी जिस उत्साह और तन्मयता से कर रहे है वह हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत है। मैं इन समाजो मे जाकर वहा उनके कार्य व गतिविधिया देखकर बडा प्रभावित व प्रसन्न हुआ। मैंने श्री अमर ऐरी जी से प्रार्थना की कि विदेशो मे अपने अपने देश की आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यरत है। आप भी समस्त आर्यसमाजो को सगठित कर आर्य प्रतिनिधि सभा कनाडा का निर्माण करे व हमे सूचित करे ताकि मान्यता देकर एक नवीन आर्य प्रतिनिधि सभा हमारे सगठन से जुड सकें।

१२ अगस्त से एक सप्ताह के लिए आर्यसमाज मारखम मे 'गायत्री यज्ञ' का आयोजन रखा गया था। प्रात १० से १२ बजे तक एव साय ७ से ६ बजे तक यज्ञ होता रहा। यहा दिन बहुत बडे होते हैं। रात्री ६ बजे तक भी सूर्य की रोशनी देखने को मिल जाती है। यज्ञ के ब्रह्मा आदरणीय महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी (पजाब) थे। वे प्राय उन दिनो अपने सुपुत्र के पास कोलम्बस (अमेरिका) मे आ जाते हैं। मैं प्रात यज्ञ मे सम्मिलित हुआ। उसके पश्चात श्री प० अभयदेव जी शास्त्री हमे अपने निवास पर भोजन कराने ले गए। प० अभय देव जी अत्यन्त व्यस्त विद्वान हैं फिर भी समय निकाल कर वे हमे भोजन के लिए ले गए। जब हम कनाडा पहुचे थे उस समय भी प० अभय देव शास्त्री और श्री जयन्त जी विमान स्थल पर स्वागत के लिए उपस्थित थे।

सायकाल हम कनाडा के भव्य मार्किट जिन्हे वहा मोल कहा जाता है देखने गए। इस मोल की भव्यता देखकर बडा आनन्द आया। सारी आवश्यक वस्तुए उस एक छत के नीचे उपलब्ध थी।

१३ अगस्त को हम प्रात गायत्री यज्ञ मे उपस्थित हुए। यज्ञ के पश्चात आ० प्रेम प्रकाश जी महात्मा व मेरा प्रवचन हुआ। मैंने देव पूजा सगतिकरण और दान पर अपने विचार रखे और अनेक भावुक उदाहरणो को श्रोताओं के सामने रखा। इस भाषण को विशेषकर महिलाओ ने बहुत पसन्द किया। यज्ञ के पश्चात इस विषय पर कि 'हम ससार का उपकार कैसे कर सकते हैं महिलाओ ने अनेक उपयोगी सुझाव दिए। लगभग १.३० बजे हम घर आ गए और उस दिन फिर कहीं नहीं गए।

१४ अगस्त को प्रात हम गायत्री यज्ञ मे सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात मेरा भाषण हुआ। आज हमे इग्लैण्ड के लिए रवाना भी होना था। श्री अमर ऐरी जी चाहते थे कि हम गायत्री यज्ञ की सामाप्ति तक यहीं रहें परन्तु हम पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ही चलना चाहते थे।

वैदिक विद्वान एव अनेक पुस्तको के लेखक आदरणीय डॉ० तुलसी राम जी मुझसे मिलने आर्यसमाज मन्दिर आ गए थे। अपनी कई पुस्तके उन्होने मुझे भेट की। श्री गिरिश खोसला ने अनेक टेलीफोन कर हमारी इग्लैण्ड मे रहने आदि की व्यवस्था कर दी थी। वे एक कुशल प्रशासक के रूप मे सारी व्यवस्था सारे देशो मे हमारे लिए करते रहे।

सायकाल ६ बजे हम श्री ऐरी जी के साथ व श्री सुरेश शर्मा व मधुशर्मा के साथ टोरेन्टो विमान स्थल के लिए रवाना हुए। वहा पील आर्यसमाज के प्रधान श्री लाईनेल प्रसाद व मिसीसागा आर्यसमाज के प्रधान श्री विनोद खन्ना पहले ही हमे विदा देने के लिए उपस्थित थे। वे हम से विदा लेकर चले गए और रात्री ६ बजे ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाईट सख्या बी ए ९८ से हम इग्लैण्ड के लिए रवाना हो गए।

कनाडा देश हमे बहुत अच्छा लगा। खुला शहर स्वच्छता पर्यावरण की शुद्धता और विभिन्न आर्यसमाजो की सक्रियता देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। श्री अमर ऐरी जी के कार्यों ने हमे बहुत प्रभावित किया। दिन रात वे आर्यसमाजो की गतिविधियो मे लगे रहते हैं। आर्यसमाज मारखम उनकी दूरदृष्टि और सक्रियता का प्रमाण है। उनका मधुर और सरल स्वभाव एव आर्यसमाज के प्रति उनकी समर्पित भावना हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके मन्त्री श्री सुदर्शन बेरी जी निष्ठावान कार्यकर्त्ता है और कधे से कधा मिलाकर आर्यसमाज का कार्य कर रहे है। ईश्वर सभी कार्यकर्ताओ को दीर्घायु प्रदान करे ताकि हम सब मिलकर महर्षि के मिशन को तीव्र गति दे सके। अपनी इन मधुर स्मृतियो को लेकर हम इग्लैण्ड चले गए।

– प्रधान सार्वदेशिक सभा
दिल्ली

एक लघु ग्रन्थ साध्य-योग-प्रकाश

6

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

५ आत्मानन्द पाने के लिए चेहरे पर उदासीनता न रख मुस्कान आवश्यक है क्योकि आनन्दित गम्भीर व मौन अवस्था मे ही आनन्द कन्द परमानन्द से मिलने का आनन्द आएगा। वैसे भी सदानन्द से मिलने मे चेहरे पर मुस्कान होना ही चाहिए। चेहरे से मुस्कान लुप्त होने का अर्थ है कि चचल मन अन्य विचारो मे उलझ गया।

६ साध्योग एकात स्थिर व एकाग्र हो अन्त करण मे प्रभु मिलन के माग ब्रह्म यज्ञ का अभ्यास है। इसमे किसी शारीरिक चेष्टा हिलना डुलना स्पर्श मार्जन या किसी बाह्य भौतिक पदार्थो का चिन्तन परिक्रमा आदि तक सगत नही लगता। अत मन्त्रो मे एव विभिन्न शीर्षको मे जिस भावना से ध्यान करने की क्रिया की ओर इगित किया है वह बाह्य न होकर आतरिक मन से व बुद्धिपूर्वक विचार कर ध्यानस्थ ही करनी चाहिए।

७ सध्यारम्भ मे इस अवस्था मे जब हम तीन प्राणायाम कर आगे तीन आचमन भी करेगे तब प्रभू को किन गुणो से स्मरण कर किन दु खो से दूर कर किस कम के लिए प्रार्थना करनी है उसकी तालिका इस प्रकार है –

भगवन्त सिह कपूर

२ सतत आजीवन करता रहूगा।

३ नियम काल एव स्थान से बधा अभ्यास का पालन करूगा।

इस प्रकार तीन आचमन से उपरोक्त व्रत के

क्रमाक	प्रभुगुण	ताप दुख	किस उन्नति हेतु	प्रार्थना या कर्म व्रत
१	भू उत्पादक	आधिभौतिक	शारीरिक	शुद्ध ज्ञान
२	भुव पालक	आधिदैविक	मानसिक	शुद्ध – कर्म
३	स्व सहारक	आध्यात्मिक	आत्मिक	शुद्ध उपासना

कहा भी है –

ईश्वर प्रेरित बुद्धि से गायत्री का कर जाप।
शन्नो देवी मन्त्र से करो तीन आचमन आप।।

।। अथ आचमनमन्त्र ।।

ओ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शयोरभि स्त्रवन्तु न ।। *(यजु० अ० ३६/१२)*

इस मन्त्र के तीन भाग है –

१ स्तुति – ओम शन्नो देवीरभिष्टय – हे प्रभु ओम आप शाति के देवता मुझे मेरे अभीष्ट हेतु, आपकी स्तुति करता हू।

२ उपासना – आपो भवन्तु पीतये – अमृत रूपी आपका सहारा लेकर। सानिध्य प्राप्ति हेतु साधना व्रत लेता हू – उपासना –

३ प्रार्थना – शयोरभि स्त्रवन्तु न ।। सुख की सफलता की सब ओर चारो ओर से कृपा करो आशीर्वादो को वर्षा करो। प्रभु से प्रार्थना।

यहा सध्या के आरम्भ मे मन्त्र के पहले भाग अर्थात **अमीष्ट की सफलता की प्रार्थना के रूप मे इस मन्त्र को मन मे बोलकर भावना से स्वामी दयानन्द के निर्देशित तीन आचमन के रूप मे – अमीष्ट की सफलता के लिए तीन व्रत लेते है**

१ साधना – तपश्चर्या करुग।

पालन हेतु सकल्प स्वरूप भृकुटि मे ही ध्यान से मन को दृढ करना है।

काल्पनिक वार्तालाप

साधक प्रभु ! आपकी शरण आया हू, समर्पण भाव से तीन आचमन कर व्रत लेता हू कि ससारी तीनो सत रज व तम गुणो एव सभी प्रकार के विचारो की गाठ लगाकर अलग कर रहा हू। अब साधना मे बैठ आपसे अभीष्ट लक्ष्य की सफलता हेतु आशीर्वादकी शिक्षा चाहता हू। कृपया मेरा पात्र प्रेरक मार्ग दर्शन रूपी आशीर्वादो से भर दो ?

आवाज – साधना पर बढने के पहले ऐ पथिक कुछ वचन देने होगे

साधक – प्रभु आज्ञा करो हर कठिन से कठिन आज्ञा शिरोधार्य करूगा।

आवाज – यम – नियमो का पालन जो योग साधना अथवा साध्ययोग की नींव एव पहली सीढी है। इस प्रकार है।

१ अहिंसा सत्यास्ते ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा ।
यो० २–३२

२ शौच सन्तोष तप स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा ।।
यो० २–३२

साधक – (ध्यान भृकुटि मे ही रख इन व्रतो के पालन का सकल्प कर कहता है) मैं पालन करूगा प्रभु ! आज्ञा शिरोधार्य करता हू।

अथेन्द्रियस्पर्श मन्त्र

ओ वाक वाक। ओ प्राण प्राण ।
ओ चक्षुश्चक्षु । ओ श्रोत्रम श्रोत्रम।
ओ नाभि । ओ हृदयम। ओ कण्ठ ।
ओ शिर । ओ बाहुभ्या यशोबलम।
ओ करतलकरपृष्ठे।

विधि – इन्द्रिया स्वस्थ हैं एव अपना प्रयोजन सही साध रही है यह देखना ही इन्द्रियस्पर्श का अर्थ होता है। इन्द्रियो का प्रयोजन तो स्पष्ट है पौष्टिक भौतिक पदार्थ शरीर को पहुचाना है एव आवश्यकतानुसार प्राकृतिक साधन उपलब्ध कराना है उनमे लिप्त न होकर शेष समय के लिए निग्रह करना है। सध्या मे जब हमे स्थिर बैठकर साधना करनी है तो अगो का हिलाना स्पर्श या उपयोग करना तो तर्क सगत नही लगता। सध्या मे स्पर्श मार्जन या परिक्रमा आदि का अर्थ होना चाहिए मन से उन इन्द्रियो तक पहुच कर निर्देशित क्रिया करवाना है। यही इन्द्रिय स्पर्श का अर्थ है।

मन्त्र मे कहीं इन्द्रियो पर ध्यान से पहुच यह देखना कि वे अपना धर्म पालन करत हुए जिन यम नियमो का उन्हे पालन करना है वह पूर्ण रूप से पालन करे।

भावना ध्यान भृकुट मे ही रखकर मन्त्र मे कही प्रत्येक इन्द्रिय पर क्रमश पहुचकर निम्न लिखित भावना करे –

ओ वाक वाक – (बोलना व भोजन) अब मै वाणी से सार्थक सत्य व शुद्ध ही बोलूगा। मुख से हित मित ऋत अनुसार सात्विक भोजन ही करूगा। सत्य सतोष शुच ब्रह्मचर्य और अहिसा यम नियमो का पालन करूगा।

ओ प्राण प्राण (प्राण–वायु व गध) शुद्ध हितकर व रक्त शोधक पौष्टिक प्राण वायु ही ग्रहण करूगा। प्रश्वास द्वारा प्रदूषण की सम्भावना को यज्ञ कर हटाता रहूगा। सुगध ही ग्रहण कर सुगन्धि ही फैलाकर वातावरण शुद्ध एव पवित्र रखूगा। तप शुच व सतोष यम नियम को निभाऊगा।

ओ चक्षुश्चक्षु – (देखना व मनोभाव प्रगट करना) ससार की भौतिकता मे प्रभु के आध्यात्मिक विज्ञान का प्रत्यक्ष करना। बुराई के लिए आखे बन्द सत्य पवित्र व दूसरो के गुणो के ही दर्शन करूगा। आतरिक कुभावना या राग द्वेष के स्थान पर प्रेम व दयादृष्टि से ही देखूगा। अस्तेय अहिसा स्वाध्याय व ईश्वर–प्रणिधान यम नियम का पालन करूगा।

ओ श्रोत्र श्रोत्रम – (सुनना व सत्सग) जानता स गमेमहि सत्य शुद्ध व पवित्र ही सुनूगा। ज्ञानियो के सत्सग से श्रुत प्राप्त प्रेरणामय वेदज्ञान की आतरिक आवाज को ही सुनूगा। निन्दा चुगली आदि नहीं सुनूगा। ओममय सब जग जानी को प्रत्यक्ष कर सभी के वैदिक विज्ञानयुक्त विचार ही सुनूगा अवैदिक नही। सत्य शुच सतोष ईश्वर प्रणिधान व स्वाध्याय यम नियम का पालन करूगा।

– क्रमश

सिख भाई मुसलमानों के अधिक समीप हैं या कि हिन्दुओं के

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

कुछ काल पूर्व पजाब मे सत्"सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए जब लेखक ने यह नारा सुना कि सिख मुस्लिम भाई भाई हिन्दू कौम कहा से आई ? तो मेरा माथा ठनका क्याकि मैं बाल्यकाल से ही स्वर्ण मन्दिर तथा गुरुवाणी से जूडा हू। अत यह बात सुन कर लेखकी की हार्दिक दु ख हुआ। तब उसने पजाबी भाषा अर्थात गुरुमुखी लिपि मे एक पुस्तक छपवाई और उसे पजाब तथा जम्मू मे नि शुल्क वितरित किया क्योकि जम्मू मे सिखो के साथ साथ मुसलमान भी रहते है। अत लेखक सर्वप्रथम उपर्युक्त व समस्या का समाधान करने वहीं पहचा।

जम्मू मे एक सरदार साहब एडवोकेट लेखक ने प्रवचनो को सुनने आते थे। एक दिन प्रवचन के बाद मैने उन्हे वही रोक लिया और प्रश्न पूछा कि आप बताए श्रीगुरु नानक देव जी हिन्दू थे या मुसलमान ? प्रश्न पर बिना विशेष विचार किए वे 'सिख भाई बोल उठे – श्री गुरु नानक देव सिख ही थे। मैने कहा देखो मेरे प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं मिला क्योकि सिख शब्द जो कि शिष्य शब्द का अपभ्रश है उसका वास्तविक अर्थ है चेला तो क्या श्री गुरु नामकदेव जी आप के चेले थे ?

मेरी इस विवेचना को सुनकर वह सिख एडवोकेट महोदय गहरी चिन्ता मे डूब गए। जब वह थोडी देर के लिए चुप रहे तो मैने प्रश्न किया कि बताइए नाकि श्रीगुरु नानकदेव जी मुसलमान थे या हिन्दू ? उन्होने दबी आवाज मे कहा – जो मै जानता था बता दिया। मैने कहा आप तो पढे लिखे व्यक्ति ही नहीं अपितु बात की गहराई म जान वाले एडवोकेट है जो और तर्क वितर्क तथा बहस से मामले सुलझते है। यदि आप नानक जी को सिख कहते हैं तो यह उनका अपमान है क्याकि वह आप के पूज्य गुरु थे न कि शिष्य औरयदि आप उन्हे मुसलमान कहते हैं तो यह उससे भी बडा अपमान होगा क्योकि उनका सम्पूर्ण जीवन तथा उपदेश सार ओम वेद यज्ञ चारो वर्ण योग तथा धोती और सजातन वैदिक सस्कारो से पूर्ण मिलता है।

गत दिनो मुझे पजाबी विश्वविद्यालय से छपी श्री गुरुनानक देव जी का महत्वपूर्ण चित्र मिला। उस चित्र के देखने से यह बात बिल्कुल साफ सिद्ध हो जाती है कि आखिर वे कौन थे ? उस रगीन मे चित्र मे श्री गुरु नान देव स्नान करते हुए दिखाया गए हैं क्योकि स्नान वस्त्रों को उतार कर अर्थात टोपी पगडी एव कुर्ते को उतारे बिना नहीं होता तथा सभी प्राचीन चित्रों मे उन्हे टोपी में ही दिखाया जाता है। वर्तमान के सभी लम्बी दाढी व पगड़ी वाले चित्र स्व० श्री शोभा सिह चित्रकार को धमकी देकर बने थे।

पटियाला से मिले इस चित्र मे दिखाया गया है कि उनके नगे सिर पर केशो के स्थान पर चोटी है तथा बदन पर छुरी के स्थान पर यज्ञोपवित है। आज से लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व जब लेखक E S I R नेशनल फिजिकल लैबोटरी दिल्ली मे एक इजीनियर के रूप मे सेवारत था तो वहा ठेकेदार की ओर से एक बडी आयु के इजीनियर सिख सज्जन भी कार्यरत थे। एक दिन भोजन अवकाश के समय मैने उनसे पूछा कि आप यज्ञोपवित रखते है ? कहने लगे नही। तब मैने कहा कि आप नहीं मै पक्का सिख हू, क्योकि मैं यज्ञोपवित रखता हू। उन्होने हडबडाकर कर कहा 'यह कैसे हो सकता है ? क्योकि तुम्हारे पासन तो केश है न पगडी है न कडा है और न ही कृण्पान। अत आप सिख कभी नहीं हो सकते। मैने कहा लगता है आपने ध्यान से गुरुवाणी पाठ नहीं किया। उन्होने कहा आप कैसे बोलते है ? मैने कहा मै बिल्कुल ठीक कह रहा हू और गुरु मर्यादा के अनुसार ही बोल रहा हू। मैंने कहा गुरुवाणी मे लिखा है – केश धरे न मिल हरि प्यारे तथा सुन अधी लोई वे पीर इन मुण्डियन सरन भज कबीर अर्थात केवल यू ही केश रखने से ईश्वर नहीं मिलता और यदि ईश्वर को पाना है तो किसी मुण्डे मुण्डाये ब्रह्मनिष्ठ बिना बाल बाले सन्यासी की शरण मे जा।

लेखक की यह सप्रमाण बात सुनकर उस वृद्ध सिविल इजीनियर ने उत्तर तो कुछ नहीं कहा अपितु अपने सिर पर जोर जोर से हाथ मार कर रोने लगा। इससे लेखक डर गया क्योकि उस समय वे बहुत छोटा था कि कहीं यह इस सरकारी कार्यालय मे मेरे विरुद्ध कुछ मजहब की तौहीन की शिकायत न कर दे। मैंने केशो के न रखने के समर्थन मे उन्हे यह भी कहा थाकि 'देखिए केश कडा आदि नित्य रखने की व्यवस्था श्री गुरु गोविन्द सिह ने तब युद्ध के लिए ही की थी। अब तो हमारे देश की एक अलग ही फौज बन चुकी है। अत अब इसकी क्या आवश्यकता है।

इतना ही नहीं अपितु यह बात भी आप ध्यान मे रखे कि किसी व्यक्ति के देश धर्म हित सेना (फौज) मे भर्ती होने मात्र से उसकी जाति या धर्म नहीं बदल जाता। क्या किसी व्यक्ति के द्वारा भारत की फौज मे भर्ती होने से और खाकी कमीज पैंट पेटी बोतल किट या खास जूते पहनने से अब उसका धर्म खाकी फौजी या फोजा अथवा फोजीस्तानी हो जाना चाहिए। क्या फौज मे भर्ती हो जाने से उसका प्राचीन धर्मग्रन्थ वेद अथवा इष्टदेव राम कृष्ण या शिव न रहकर उनका ब्रिगेडियर आदि होगे ? अत बुद्धिजीवी यह कभी न भूले कि श्री गुरु गोविन्द सिह ने एक देश धर्म रक्षक सेना 'खालसा' पथ' सजाया था न कि पृथक मत–पथ या मजहब।

श्री गुरुगोबिन्द सिह का धर्म क्या था और उन्होने फौज किसलिए बनाई ?

गुरुद्वारा श्रीशमी पा० रिवाल्सर जिला मण्डी हिमाचल

वहा बोर्ड पर गुरुमुखी हिन्दी तथा इग्लिश मे छपे शब्द (इसकी असली कैमरा फोटो जिसम साथ ही वहा का ग्यानी भी खडा है मेरे पास सुरक्षित है)

श्री गोविन्द सिह जी महाराजने मुसलमान बादशाह औरगजेब के हिन्दू धर्म के विरुद्ध अत्याचार को रोकने हेतु तथा भारत देश की आजादी हेतु रिवालसर मे सम्वत १७८५ मे एक बैठ की थी।

इन वाक्यो से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि गुरु गोबिन्द सिह तथा उनकी फौज हिन्दू–धर्म ही मानती थी और किसी पृथक स्थान की बात न करके भारत को ही अपना देश समझती थी।

लेखक मन्दिरो के साथ गुरुद्वारो मे भी प्रवचन करता है। दिसम्बर २० से २२ विक्रमी २०५७ मे मेरे गुरुद्वारा सिह सभा उडलाना कला पानीपत मे निम्नलिखित विषयो पर प्रवचन हुए। इससे पूर्व भी लेखक भारत के रिवालसर मुरादाबाद हरिद्वार नरकटियागज सूरत तथा भुवनेश्वर के गुरुद्वारो मे प्रवचन कर चुका हू।

स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से प्रकाशित श्री ग्रन्थ साहब मे उ के स्थान पर ओ ही लिखा है।

कुछ वर्ष पूर्व हुई मेरी बातचीत – वर्तमान की स्थिति मे शहीद भगत सिह का परिवार क्या कहता है ?

१ हमारे दादा सरदार अर्जुन सिह जी कहते थे कि हमारा धर्म वेद है। उन्होने अपनी एक पुस्तक हमारे सिख गुरु वेदो के पैरवी थे मे लिखा है कि सब गुरु वेदभक्त थे।

२ सरदार अर्जुन सिह जी कहा करते थे कि गुरु का सच्चा सिख बनने के लिए केश रखने की आवश्यकता नहीं जितनी की प्राचीन वद मर्यादा पर चलने की आवश्यकता है।

३ प्राचीन चित्रो को देखने से पता चलता है कि नौ गुरुओ के सिरो पर लम्बे लम्बे केश नहीं थे विशेष जानकारी के लिए दिल्ली की कोतवाली का चित्र देखें। जो लोग शहीद भगतसिह को बिना वालो के टोपी मे नहीं चाहते वे वास्तव मे उन्हे हृदय से नहीं चाहते और यदि चाहते हैं तो केवल अपने स्वार्थ के लिए।

उन्होने मास मछली अण्डा खाना छोडकर ऋषि दयानन्द से प्रभावित होकर यज्ञोपवित लिया था तथा वह प्रतिदिन सन्ध्या व यज्ञ (हवन) करते थे। जिन्होने हम सबको भी यज्ञोपवीत पहनाया था।

४ वह ग्रामों मे वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए साइकिल द्वारा यज्ञ व वेदप्रचार करते थे।

५ वह जन्म से जातिवाद व कौमवाद नहीं मानते थे।

६ उनके हृदय मे अद्भुत राष्ट्र–भक्ति थी और वह राष्ट्रीय एकता व सुरक्षा के समक्ष और किसी विवाद को कुछ न समझते थे। ऐसी ही शिक्षा देशहित पर मर मिटने की उन्होने हम सब भाईयो को दी।

७ वह जड वस्तुओ को सिर झुकना पाप समझते थे उनका सिर तो परमात्मा के हृदय मन्दिर मे ही झुकता था।

८ हमारे पिता श्री किशन सिह जी ने एक पुस्तक दसो गुरुओ के विवाह सस्कार पर लिखी थी जिसमे उन्होने जन्मसाखियो के प्रमाण देकर सिद्ध किया था कि हमारे दसो सिख गुरुओ का विवाह यज्ञ एव वेद मन्त्रो की वैदिक रीति से ही थे।

९ वर्तमान के सिखो द्वारा बिना यज्ञ केवल वेद मन्त्रो के गुरु ग्रन्थ साहब के चारो ओर चक्र काटकर विवाह करने की रीति को वह दसो गुरुओ की मर्यादा के विरुद्ध समझते थे।

१० वह कहते थे कि मिस्टर मैकालिफ नामक धूर्त अग्रेज की कूटनीति से यह वेद विरुद्ध परम्परा सिखो मे प्रचलित हुई। मि० मैकालिफ नामक अग्रेज की भी यह चाल थी कि भारत पर शासन करने के लिए उसे कमजोर किया जाए और कमजोर करने के लिए उसे फिरको मे बाटा जाए। उसकी चाल सफल हुई और बहुत से गुरुभक्त अज्ञान से आदि गुरुओ की वैदिक रीति छोडकर नए मजहब मे फस गए। ईश्वर उन्हे सदबुद्धि दे। जिससे कि वे आदि गुरुओ के आदर्श पर चलकर तथा विदेशी मुसलमानो व अग्रेजो की चाल से बचाकर राष्ट्र को सगठित तथा शक्तिशाली बनाए और सच्चे सिख (शिष्य) कहला सके।

– शहीद भगतसिह के भाई सरदार कुलवीर सिह जी

कुछ ज्वलन्त प्रमाण –

१ श्री ग्रन्थ साहब 'वाहे गुरु से नहीं एक ओकार से शुरू होता है।

२ उसमे सब से पहले किसी अन्य ग्रन्थ या वाणी के पाठ का विधान न होकर सुनये शास्त्र सिमरत 'वेद का विधान है।

३ उसमे सर्वप्रथम किसी जप तप या क्रिया का नहीं 'योग' युक्त तन 'मेघा' करने का विधान है।

४ ग्रन्थ साहब मे सनातन सन्ध्या तथा होम' का विधान है।

५ श्रीराम श्रीकृष्ण की स्तुति का विधान है।

६ श्री गुरुगोबिन्द सिह जी ने अपने अमर ग्रन्थ दशम ग्रन्थ के विचित्र नाटक में 'पथ चलाना' – पडे–पात अपने ते जले से नया पथ न चला कर केवल प्राचीन धर्म की ही मान्यता की है।

– उद्गीथ साधनास्थली, हिमाचल

पितृयज्ञ समारोह का भव्य आयोजन

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा रविवार दिनाक ६ अक्तूबर २००२ को आर्यसमाज के विशाल सभागृह मे शरद ऋतु के सुअवसर पर वैदिक परम्परा के अनुसार पितृयज्ञ अर्थात जीवित माता पिता की बडी श्रद्धा और निष्ठा से सेवा के अन्तर्गत वयोवृद्धो को शाल श्रीफल एव मोती माला भेट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर प्रात ८ बजे से ६ बजे तक बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया तदन्तर साप्ताहिक सत्सग के मध्य आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डा० सोमदेव शास्त्री एव अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियो ने आर्यसमाज को गति प्रदान करने वाले तथा अनेक गतिविधियो मे सक्रिय भूमिका निभाने वाले एव तन मन धन से पूर्ण सहयोग देने वाले निम्न महानुभावो का अभिनन्दन किया।

श्री भगवती प्रसाद गुप्त एव श्रीमती विद्यावती गुप्त श्रीमती प्रभावती मूना श्रीमती प्रकाशवती अरोडा श्री नारायणदास हासानन्दानी एव श्रीमती भगवानी देवी हासानन्दानी श्री इन्द्रबल मल्होत्रा श्रीमती पुष्पा मल्होत्रा श्री कान्तिभाई जगबारी श्रीमती लीलावती महाशय श्री आनन्द गहलोत श्रीमती चन्द्रावती मल्होत्रा।

इस समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य उपस्थित थे।

उन्होने अपने वक्तव्य मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज की इस स्वस्थ परम्परा की भूरि भूरि प्रशसा की तथा आगे कहा कि यह वृद्धो के सम्मान की प्रथा देश विदेश म स्थित समस्त आर्यसमाजो के लिए अनुकरणीय है।

कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री सगीत आर्य ने किया।

✡

बदनाम भी होंगे, तो क्या नाम न होगा ?

नामी अखबारो के मुख पृष्ठो पर महामहिम राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति प्रधानमन्त्री केन्द्रीय सरकार के मन्त्री प्रातीय मुख्यमन्त्री अन्य मन्त्रियो धर्माचारियो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाडियो बडे उद्योगपतियो महान सगीतकारो तथा फिल्मी सितारो के अतिरिक्त अब चन्दन तस्करी से जुडे वीरप्पन दाउद इब्राहिम शिवानी हत्याकाण्ड से जुडे आई०पी०एस० अधिकारी आर०के०शर्मा घरेलू नौकर की पत्नी से बलात्कार करने वाले देहरादून के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त शर्मा अबू सलेम अबू सलेम के अपराधी साथियो तथा निर्दोष आदमी को कार से कुचलकर मारने वाले फिल्मी कलाकार सलमान खान के फोटो भी अब कई दिनो तक छपते रहते है।

इस तरह यदि देखा जाए तो घर घर मे पढे जाने वाले अखबारो मे विज्ञापन और नामी हस्तियो के साथ ही घिनौने तथा निन्दनीय अपराध करने वाले भी लगभग बराबर की पब्लिसिटी पा रहे है। उरीकी से यदि देखा जाए तो किसी सयाने के ये शब्द – **कि बदनाम भी होगे तो क्या नाम न होगा** भली भाति चरितार्थ हो रहे है।

सभ्य समाज की अपनी कुछ मर्यादाए भी होती है। एक न्यायाधीश की सम्माननीय कुर्सी पर बैठकर किसी अपराधी की सजा लिखते समय यह भी विचार किया जाता है – **कि उस अपराधी ने कितनी नृशसता से अपराध किया और ऐसे अपराधो के बढने से सभ्य समाज को कितनी हानि हो सकती है ?**

अखबार बेचना और बिक्री के रिकार्ड कायम करना अलग बात है किन्तु सभ्य समाज की मर्यादा को यदि बचाना है तो जिम्मेदार सम्पादको को भले और बुरे विख्यात और कुख्यात सभ्य और असभ्य विवाहित एव अविवाहित सामाजिक तथा असामाजिक निर्दोष और दोषी देशभक्त और देशद्रोही तथा सृजनकारी और विघटनकारी के बीच अन्तर स्थापित करना जरूरी है। क्या ही अच्छा हो कि अपराध और अपराधियो से जुडी खबरो को खेलकूद की खबरो के समान भीतर के किसी निर्धारित पृष्ठ पर ही छापा जाए और उन्हे मुख पृष्ठ पर महिमा मण्डित न किया जाए।

भूषण द्विवेदी
साऊथ मोती बाग नई दल्ली

गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का ३६वा एव गुरुकुल करतारपुर का ३२ वा वार्षिकोत्सव गुरु विरजानन्द भवन जी०टी०रोड करतारपुर म बडे उत्साह से मनाया गया।

कार्यक्रम ३० सितम्बर से ६ अक्तूबर रविवार तक हुआ। ६ अक्तूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात यज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय न सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली) श्री आचार्य अखिलेश्वर (जम्मू) श्री आचार्य भद्रसेन (होशियारपुर) श्री गणेश प्रसाद विद्यालकार (दिल्ली) श्री सत्यपाल जी पथिक (अमृतसर) के उपदेश व भजन हुए।

६ अक्तूबर को प्रात ६ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। श्री गुरु विरजानन्द सम्मेलन प्रात १० बजे से १३० बजे तक श्री आचार्य अखिलेश्वर जी की अध्यक्षता मे हुआ।

इस समय गुरुकुल म १२५ ब्रह्मचारी पढ रहे है भोजन आवास दूध व शिक्षा निशुल्क है। ५४ लाख रुपये की अनुमानित लागत से परिसर का निर्माण हो रहा है।

श्रीमती नीलम चुघ दिवंगत

श्री दिनेश चुघ ११ बी सुप्रिया अपार्टमेन्ट पश्चिम विहार नई दिल्ली की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम चुघ अपनी पुत्री प्रियवदा तथा पुत्र प्रफुल जिन की आयु मात्र १६ वर्ष तथा १२ वर्ष है को ससार रूपी मझधार मे छोड ४० वर्ष की अल्पायु मे ही देहावसान कर गई।

आपका परिवार आर्यसमाज मुल्तान नगर से जुडा है। आप बी०के० बाल ज्योति पब्लिक स्कूल पश्चिम विहार के प्रबन्धक श्री वेदप्रकाश चुघ की पुत्र वधू थी तथा वे विद्यालय के कार्यो मे भी बढकर सहयोग करती थी।

उन की आत्मा की सदगति और शान्ति के लिए शोक सभा रविवार २० अक्तूबर २००२ साय ४ बजे सुप्रिया अपार्टमेन्ट मे हुई जिसमे आशा माता जी श्री राजेन्द्र शास्त्री श्रीमती कण्व प्रधाना आर्यसमाज पश्चिम विहार श्रीमती शकुन्तला सेठ प्रधाना आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर तथा श्री पी०एल० सेठी प्रधान सुप्रिया अपार्टमेन्ट ने दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना की।

सार्वदेशिक परिवार परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सदगति की कामना करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता है कि उनके परिवार को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति दे।

✡

आर्यसमाज मे निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र उद्घाटित

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी मे निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन करते हुए साहित्यकार समाज सेवी एव आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के प्रधान डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि कम्प्यूटर वर्तमान समय की अनिवार्यता है। रोजगार उन्नति और प्रगति चाहने वाले बच्चो के लिए इसका ज्ञान आवश्यक है किन्तु व्यावसायिक शिक्षण सस्थान इसके लिए छात्रो से हजारो रुपये वसूलते हैं। ऐसी स्थिति मे प्रतिभा सम्पन्न एव निर्धन छात्र इसके प्रशिक्षण से वचित रह जाते है। ऐसे छात्रो की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए 'सीमा (सोसायटी फार इटर्नल एजूकेशन ऑफ म्यूजिक एण्ड आर्ट) (पजीकृत) नामक सामाजिक सस्था ने एक पखवाडे के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण देने का निश्चय किया है जिसके लिए आर्यसमाज इस सस्था के पदाधिकारियो का आभारी है। इस अवसर पर सीमा के अध्यक्ष श्री अजय भल्ला ने कहा कि इस सस्था का उद्देश्य समाज के कमजोर वर्ग एव निर्धन छात्रो की हर प्रकार की सहायता करना है।

कम्प्यूटर का यह निशुल्क प्रशिक्षण सीमा के सौजन्य से आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी मे दिनाक ७ अक्तूबर से दिनाक २० अक्तूबर तक प्रतिदिन अपराह्न ३ बजे से साय ६ बजे तक दिया गया।

सर्वहित में स्वहित की भावना जागृत करता है यज्ञ

विश्व शान्ति एव मानव कल्याण हेतु आर्यसमाज एव वैदिक यज्ञ समिति विकास कुज के तत्वाधान मे आयोजित २१ कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे सेन्ट्रल पार्क विकास कुज मे उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर धार्मिक जगत के महान प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ससार मे परोपकार का सबसे बडा उदाहरण यज्ञ हवन है। मनुष्य दूसरो का भला करके सुनाता व जतलाता है। अच्छे काम करके इतराता है। जिससे बैर द्वेष हो उसका भला करने की सोच भी नहीं सकता परन्तु हवन का लाभ सबको पहुचता है मित्र हो या शत्रु।

वेदज्ञ विद्वान आचार्य श्री ने श्रद्धालुओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञकुण्ड की अग्नि मे घृत की आहुति से प्रखर उष्णता की ऊर्जा तैयार होती है जिसमे अशुद्ध वायु को शुद्ध करने तथा शरीर और मन के तनावो को भी दूर करने का अद्भुत सामर्थ्य है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध पुष्ट एव सुगन्धित होता है। यज्ञ मानव को दानशील बनाता है तथा इससे मनुष्य सर्वहित मे अपना हित समझता है।

मुख्य यजमान श्रीमती भारती तनेजा श्री सुधीरकान्त सेठ श्रीमती निर्मला सेठ श्री हरीश ओबराय आदि को आचार्य श्री चन्द्रशेखर जी के कर कमलो से स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। इस अवसर पर अनेक लोगो ने मासाहार एव मादक पदार्थो को छोडने का सकल्प लिया। हजारो लोगो ने यज्ञ समारोह मे उपस्थित होकर विश्व शान्ति एव मानव कल्याण हेतु घृत सामग्री की आहुतिया प्रदान की।

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा मानव कल्याण हेतु किए हुए कार्यो को देखते हुए स्मृति चिह्न देकर उन्हे सम्मानित किया गया। डॉ० रमा शर्मा के क्रान्तिकारी भाषण एव भजन सम्राट श्री नरेश सुमधुर भजन हुए। इ प्रत्येक समुदाय के लोग थे। विकास कुज मे प २१ कुण्डीय यज्ञ का था जिसकी भूरि भूरि प्रशसा हुई।

इस अवसर पर श्री यशपाल आर्य (प्रदेश मन्त्री भाजपा) श्री अशोक सुनेजा (उपप्रधान भारत विकास परिषद) श्री कुलभूषण कपूर (नेशनल बुक ट्रस्ट) श्री वी०एस० नागिया (समाज सेवी) डॉ० पुष्पलता वर्मा (प्रधान आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी) श्री विजय आर्य आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के सयोजक श्रीमती चचल विज एव समाज प्रधान डॉ० पुष्पलता ने सभी का आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के अन्त मे नागिया परिवार द्वारा दैनिक यज्ञ पद्धति नामक पुस्तक का वितरण किया गया तथा हजारो लोगो ने ऋषि लगर ग्रहण किया।

– डॉ० पुष्पलता प्रधान

...ा पर

अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण

समस्त आर्यजनो के लिए अत्यन्त हर्षकारक स्वास्थ्य दायक एव गौरवपूर्ण समाचार है कि आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी तपोनिष्ट सन्त नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य बलदेव जी के परम शिष्य गुरुकुल कालवा के स्नातक वेद व्याकरण व योग के प्रकाण्ड विद्वान दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) कनखल हरिद्वार के सस्थापक आर्ष गुरुकुल किशनगढ घासेडा (रेवाडी) के सचालक सिद्ध योगी परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा योग की चमत्कारिक विधियो से उच्च रक्तचाप मधुमेह ह्रदय रोग मोटापा एसिडिटी कब्ज व सर्वाइकल जैसे खतरनाक रोगो से तुरन्त छुटकारा पाने तथा आत्म साक्षात्कार हेतु अष्टाग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण देखिए। ८ अक्तूबर मगलवार से प्रतिदिन साय ६ ४० बजे ७ ०० बजे तक सस्कार चैनल पर – ४५ दिनो तक।

– *आचार्य सत्यवीर शर्मा*
धर्माचार्य
आर्यसमाज करोल बाग दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुदित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट http://www.whereisgod.com

अग्निर्होता कविक्रतु सत्यश्चित्रश्रवस्तम ।
देवो देवेभिरागमत।। ऋ० १/१/५

पदार्थान्वय –

पदार्थान्वयभाषा जा सर) अविनाशी (देव आप स आप प्रकाशमान (कविक्रतु) सवज्ञ है जिसन परमाणु आदि पदार्थ और उनक उन उत्तम गुण रचक दिखलाये हैं जा सब विद्या का उपदेश करता है अ जिस परमा अ दे पदार्थों सहित सृष्टि व उत्तम पदा का शन होता है वही कवि अथात सवज्ञ इश्वर है तथा भौतिक अग्नि भी थल ओ सूक्ष्म द में कलायुक्त द दश न ग कर नव देखलाय है (चित्रश्रवस्तम जिसका अति आश्चयरूपी श्रवण है वह श्व देव) विद्वानो के साथ समागम करने से (आगमत्) प्राप्त हाते है

तथा जा (सत्य) श्रेष्ठ विद्वानो का हित अर्थात उनक लिय सुखरूप (देव) उत्तम गुणो का प्रकाश करनवाला (कविक्रतु) सब जगत को जानने और रचनेहारा परमात्मा और भौतिक अग्नि सब पृथवी आदि पदार्थों के साथ व्यापक और शिल्पविद्या क मुख्य हेतु (चित्रश्रवस्तम) जिसका अदभुत अथात अति आश्चयरूप सुनना है वह दिव्य गुणो के साथ (आगमत) जाना जाता

वर्ष ४१ अक २८ १७ नवम्बर से २३ नवम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ का०शु० १३

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित नहीं

सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक संपुष्टि

वण व्यवस्था को जन्म पर आधारित न मानकर याग्यता और कम क आधार पर माना जाए। इस सिद्धान्त की स्थापना के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी न जातिवाद ओर छुआछूत जेसे विशाल ओर विषल अजगर को समाप्त करने का प्रयास किया था जो भारतीय समाज की एकता म विष फेला रहा था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी न वेद आर मनुस्मृति के आधार पर यह साबित कर दिखाया कि ज्ञान की प्राप्ति और उसका प्रचार प्रसार करने का सकल्प तथा इस क्षेत्र मे अर्जित याग्यता क बल पर कोइ भी व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या स्त्री ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी बन सकता है। ब्राह्मण कहलाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति का जन्म ब्राह्मण माता पिता से ही हा। इसके विपरीत यदि ब्राह्मण माता पिता की सन्तान ब्राह्मणत्व की योग्यताओ ओर कार्यो के सम्पादन का स्तर नहीं प्राप्त कर पाती या उनके अन्यत्र कार्यो को करती है तो वह ब्राह्मण कहलाने की अधिकारी नहीं हागी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इन वैदिक उपदेशो को भारत के प्रबुद्ध वग न सहर्ष स्वीकार किया जिसका परिणाम था कि आय समाज रूपी आन्दालन क प्रत्येक पहलू म जातिवाद रहित व्यवस्था को लागू किया जान लगा। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ओर शूद्र नामक व्यवस्थाओ को जन्म पर आधारित मानने स इन्कार करते हुए आर्य समाज की जनता न कवल याग्यता पर आधारित व्यक्तित्व का मान्यता देन की आवाज उठाई

गुरुकुल शिक्षा पद्धति से निकलन क बाद व्यक्ति को उसकी अजित याग्यता शास्त्री वेदालकार विद्यालकार आदि स सम्बाधित किया जान लगा। यहा तक कि सामान्य गृहस्थी परिवारा न भी जाति सूचक शब्द क स्थान पर आय शब्द का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया।

भारत क स्वतन्त्रता आदालन म भी इस सामाजिक एकता सूत्र का भारी यागदान रहा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के नवनिर्मित सविधान मे अस्पृश्यता निवारण का विधिवत शामिल किया गया।

इस पृष्ठभूमि म भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही मे दिया गया एक निर्णय भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हागा जिसमे हिन्दू मन्दिरो की पुराहिताइ कवल ब्राह्मण परिवारा मे जन्म व्यक्तिया का देने की परम्परा पर चोट करते हुए कहा गया ह कि सबधित अनुष्ठानो स भलीभाति परिचित हो ता गेर ब्राह्मण भी पुराहित क रूप म धार्मिक समारोह सम्पन्न करा सकत ह।

केरल [illegible] की पूर्ण पीठ क एक निणय की पुष्टि करत और इसक विरुद्ध दायर अपील र [illegible] करत हुए न्यायालय न कहा कि संविधान लागू हान क पहल स मौजूद किसी परम्परा या प्रथा स अगर मानवाधिकारा मानवीय गरिमा सामाजिक समता और सविधान तथा ससद क किसी कानून का उल्लघन हाता हे तो उस कानून का स्रात नही माना जा सकता [illegible] इस [illegible] किसी अधिकार का दावा नहीं किया जा सकता। **शेष भाग पृष्ठ २ पर**

शहीद मेजर अश्विनी कण्व का १६ वा स्मृति दिवस

शहीदों का जीवन स्व-संस्कृति, स्व-भाषा और मातृभूमि के प्रति समर्पित था

मृत्यु एक जीवन म आने वाले जातीय बदलाव की एक मामूली सी घटना है जो यजुर्वेद के ४ वे अध्याय क १५ व मन्त्र के अनुसार शरीर क अन्दर की महत्त्वपूण वायु रूप आत्मा का बाहरी अनिल वायु मे मिलकर अमृत हो जाना है। अत मानव जीवन मे बुद्धि की सर्वोच्चता का लाभ उठाते हुए हमे जीवन का सचालन इस प्रकार करना चाहिए कि हमारे कर्म बीज बनकर इस ब्रह्माण्ड मे स्थापित हो और हम जैसा कर्म करे (बीज बोए) वेसा ही फल और आगामी जीवन हमे प्राप्त होता रहे। यह विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने मेजर अश्विनी कण्व के १६वे स्मृति दिवस पर व्यक्त किए।

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम
ओ३म क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृत स्मर।।

इस मन्त्र से प्रारम्भ करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि मेजर अश्विनी कण्व ने जिस प्रकार अपनी युवा अवस्था मे ही अपनी आहुति राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे दी वह वास्तव मे हमारे देश की परम्पराओ और सस्कृति के अनुरूप ही थी। इसीलिए एस महान वीरो का नाम महान शहीदा की सूची म आ जाता ह इसीलिए एस वीर पुरुषो क जन्मदाता और अन्य परिजन मित्र आदि भी उनक यश म भागीदार हाते हे सम्मान की दृष्टि से ऐसा कुछ नहीं जो उनका मिलने वाल सम्मान स बडा हा

श्री वधावन ने कहा कि एसी शहीद आत्माओ की स्मृति मात्र स हमारे अन्दर देश सवा का भाव और उत्साह सचारित होने लगता हे इसलिए मेरी ता सदव यही अभिलाषा रहती है कि मृत्यु के समय तक मेरा प्रत्येक कार्य देश समाज और मानवता की सेवा म ही सम्पन्न हो ओर अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए मैं न्यून से न्यून आवश्यक कार्य करके ही सन्तोष कर सकू।

उन्होने शहीद मेजर अश्विनी कण्व के जीवन की प्रेरणा घर घर मे स्थापित होने की प्रार्थना करते हुए कहा कि प्रत्यक घर मे ईला सरस्वती मही अथात स्व सस्कृति स्व भाषा आर मातृभूमि के प्रति समपण की भावनाए स्थापित होनी चाहिए। इसकी सबस अधिक जिम्मेवारी माता पिता की ही हाती ह।

मजर अश्विनी कण्व स्मृति दिवस प इस कायक्रम का आयाजन शहीद वीर क पश्चिम विहार निवास पर ही किया गया था जिसका सचालन आय केन्द्रीय सभा क पूर्व प्रधान डा० शिव कुमार शास्त्री ने किया। उन्होन शहीद अश्विनी के जीवन क बहुत स प्रेरक सस्मरण सुनाए। दिल्ली की पूर्व महापार माता शकुन्तला आया ने शहीद आत्मा के गौरव का भारत क भविष्य की प्रेरणा क रूप म प्रस्तुत किया श्रीमती उमा व्यास ने मधुर काव्य रचना क द्वारा शहीद अश्विनी कण्व का श्रद्धाजलि दकर वातावरण का भाव विह्ल बना दिया

इस अंक में .....

आध्यात्मिक चर्चा

‘अच्छे लोगों को बुरा समय क्यों देखना पड़ता है ?’

पाठकवृन्द इस विषय पर अपने अनुभव स्वाध्याय और चिन्तन के आधार पर सक्षिप्त विचार अधिकतम १०० शब्दो मे लिखकर भेजे।

अपने विचार भजते समय पत्र एव लिफाफे पर ***आध्यात्मिक चर्चा*** अवश्य अकित कर दे। आपक विचार हमे **१० दिसम्बर २००२** तक पहुच जाने चाहिए।

विमल वधावन

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

पृष्ठ १ का शेष

वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित नहीं

श्री एन० आदित्यन ने केरल उच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध अपील में यह प्रश्न उठाया था कि केरल के एनाकूलम जिले के मलगाड गाव में कोगारपिल्ली नेरिकोड शिव मदिर के पुजारी के रूप में एक गैर मलयाली ब्राह्मण व्यक्ति की नियुक्ति का अपीलकर्ता के सवधानिक एव वेधानिक अधिकार का उल्लघन नहीं है।

इस मदिर के पुरोहित के रूप मे एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया गया था जो मलयाली ब्राह्मण नहीं था। इस नियुक्ति को चुनौती दी गइ थी लकिन केरलउचच न्यायालय ने इसे सही ठहराया था। इस फैसले के खिलाफ की गइ अपील का खारिज करते हुए नयायमूर्ति एस राजद्र बाबू और न्यायमूर्ति दुरैस्वामी राजू ने सवधानिक सामाजिक और सावजनिक महत्व के एसे कई मुददा पर टिप्पणी की जिनके साथ धार्मिक मसल जुडे है।

न्यायालय ने कहा कि यह अनिवाय नही है कि सिफ एक ब्राह्मण ही पुरोहित बन सकता है भले ही वह न तो योग्य हो और न ही अनुष्ठाना से परिचित हो।

न्यायालय ने १९६६ के एक निर्णय का हवाला दिया जिसमे कहा गया है हिदू धर्म महज ब्राह्मणवाद पर आधारित आस्तिकता का एक रूप भर नही है।

न्यायालय ने अस्पृशष्यता को समाप्त करने सबन्धी सविधान के अनुच्छेद १७ का हवाला दिया। निणय मे भगवद गीता के उन कथना को भी उद्धृत किया गया है जिनके अनुसार जाति और वण पर आधारित सभी भद समाप्त कर दिये जाने चाहिए तथा मनुष्य को केवल उसके कार्यो के आधार पर ही मान्यता दी जानी चाहिए चाहे वह किसी भी जाति मे जन्मा हो।

मदिर मे प्रतिष्ठापित मूर्तियो की पवित्रता बनाए रखने के लिए दैनिक अनुष्ठान पूजा और मत्राच्चार के महत्व की चर्चा करते हुए न्यायालय ने कहा कि इसमे कोइ सदह नही कि केवल एक योग्य सुशिक्षित और इस उददश्य के लिए प्रशिक्षित और इस उददेश्य के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति ही मदिर मे पूजा करा सकता है क्योकि उसे न केवल गर्भगृह मे प्रवेश करना होता है बल्कि वह प्रतिष्ठापित मूर्तियो का छूना भी पडता है। यह निणय एन० आदित्य बनाम ट्रेवनकोरदेवास्वम नाम से पुस्तक सुप्रीम (७) २००२ पृष्ठ २४२ पर प्रकाशित है।

– *विमल वधावन*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पाली, हरदोई

प्रधान	श्री सुरेन्द्र कुमार वाजपेयी
मन्त्री	श्री करूणाकान्त मिश्र
कोषाध्यक्ष	श्री परमानन्द कटियार

आर्यसमाज दरियागज, दिल्ली

प्रधान	श्री श्रीदत्त यादव
मन्त्रिणी	श्रीमती श्रीबाला चोधरी
कोषाध्यक्ष	श्री महेन्द्र सिह चाहान

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

आचार्य देवव्रत, प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र, अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर से सम्मानित

आचार्य देवव्रत जी

समस्त आयजगत को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य आचाय देवव्रत को अमरिकन बायाग्राफिकल इन्स्टीच्यूट द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र मे अति सराहनीय योगदान के लिए अमेरिकन मैडल आफ आनर से सम्मानित किया गया है।

अमरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीच्यूट अपनी गहरी एव पेनी नजर द्वारा अपने प्रतिनिधियो के माध्यम से समस्त विश्व मे निष्काम भाव से समाज सेवा के क्षेत्र मे कायरत समान सविया की खोज करता है।

ध्यान रहे आचाय देवव्रत शिक्षाविद प्रखर वदिक प्रवक्ता है। ये २१ वर्ष की अल्पायु मे ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचाय बने। अपने २१ वर्ष के कायकाल मे इन्होने गुरुकुल कुरुक्षेत्र का चहुमुखी विकास करते हुए भारतवर्ष मे शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र को अगणी पक्ति मे ला खडा करने मे महत्वपूर्ण यागदान किया। यहा के छात्र विभिन्न खेलो मे राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके है। जिम्नास्टिक एथलेटिक्स कबडडी फुटबाल घुडसवारी एनसीसी निशानबाजी आदि खेलो मे भी कीर्तिमान स्थापित कर चुके है। यहा की गाशाला भारतवष की उच्चकोटि की गौशाला कही जा सकती है जिसमे २० कि०ग्रा० से कम दूध दने वाली कोई गाए नही है और अधिकतम दूध ४० कि०ग्रा तक दने वाली गाए है।

आचाय दवव्रत के प्रयासो द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे अति सुन्दर स्वामी श्रद्धानन्द योग एव प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना की गइ जिसमे सैकडो रोगी प्रतिदिन सफल उपचार लेकर असाध्य रोगो से मुक्त हो रहे है। इस चिकित्सालय मे मरीजो हेतु आवासीय सेठ ज्योति प्रसाद आरोग्य धाम का भी निर्माण किया गया है इस समूचे काय पर लगभग ५० लाख रुपये लगाए गए हे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्रबन्धक समिति पूर्ण एकता भाव से आचाय दवव्रत द्वारा किए जा रहे प्रयासो की प्रशसा करती है तथा अमरिकन बायाग्राफिकल इन्स्टीच्यूट का भी धन्यवाद करती है कि जिन्हाने अमेरिकन मैडल आफ आनर से आचार्य दवव्रत का सम्मानित किया है।

आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कार्य का देखने के अतिरिक्त गावो के किसानो के समग्र विकास के लिए गत ८ वर्षो से निरन्तर सघर्षशील रहते है। गावो मे जाकर यज्ञ एव उपदेशो के माध्यम से अनेक लोगो का धूम्रपान शराब आदि व्यसन छुडा चुके है। सामाजिक कुरीतियो से मुक्त करने के लिए निरतर प्रयासरत रहते हैं तथा वेदप्रचार के लिए विभिन्न स्थानो पर जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं।

– **डॉ० सत्यवीर विद्यालकार प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र**

एक लघु ग्रन्थ सांध्य-योग-प्रकाश

7

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

ओंम् नाभिः– हित, मित ऋतु अनुसार सतोष एव आनन्द से भोजन ग्रहण कर, तथा शुद्ध एव पौष्टिक बना, रसायन मिला शरीर के प्रत्येक भाग के उपयुक्त बनाकर, इदन्न–यमम् की भावना एव नियम से यथायोग्य वितरण करना। शुच, तप, सतोष, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य एव ईश्वर–प्रणिधान व्रतो का पालन करना।

ओंम् हृदयम् – महान्, उदार एव न्यायकारी व्यवस्थापक बनना रक्त सचार एव बुद्धि प्रेरित आज्ञाओ का इन्द्रियो और अग प्रत्यग से पालन करवाना, वासनामयी वृत्ति का नियमन करना। प्रभु प्रेरित प्राकृतिक नियमानुसार शारीरिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो इन्द्रियो को भी तदनुसार चलाना। सत्य, सन्तोष, धैर्य, तप, अस्तेय, शुच स्वाध्याय, एव ईश्वर प्रणिधान व्रतो का पालन करूगा।

ओंम् कण्ठः : – मधुर स्वर से ईश्वर गुणगान के गीत आलापना, सत्य धर्म निभाते, वेद प्रचार व प्रसार करना। वैदिक ज्ञान दान सत्य विज्ञान-युक्त प्रवचनो का सुनाना। सत्य, अहिसा, स्वाध्याय एव ईश्वर प्रणिधान व्रतो का पालन करना।

ओंम् शिराः – प्रभु प्रेरित विद्या एव ज्ञान प्राप्त करना। आत्मोन्नति के मार्ग का बुद्धि पूर्वक निर्णय लेकर मन एव 'इन्द्रियो को प्रेरित करते रहना। कुमार्ग से हटा स्वस्ति पन्था' के सुसस्कार की ओर अग्रसर करना। वेद प्रचार व प्रसार के लिए बलिदान एव तदर्थ शीशदान को भी प्रवृत्त रहना। ईश्वर-प्रणिधान से प्राप्त मेधा, तेज व विज्ञानानुसार सभी अग-प्रत्यगो से यम-नियमो का पालन करवाना। धैर्य, तप सन्तोष, स्वाध्याय सत्य एव अहिसा आदि नियमो का पालन करना।

ओं बाहुभ्यां यशोबलम् – सभी भौतिक पदार्थ, बल, यश एव धन आदि सत्य व शुद्ध कर्म से प्राप्त करना। इनका यथायोग्य सदुपयोग कर आवश्यकतानुसार ही सचित करना। शुच, तप अहिसा, अस्तेय व अपरिग्रह यम-नियम का पालन करूगा।

ओं करतल कर पृष्ठे – मै, मेरा मेरे की गर्व वृत्ति को त्यागकर सब कुछ ईश्वर का है, तदनुसार, प्राप्त पदार्थो का मात्र उपभोग कर, समर्पण भाव से उसी के कार्यो मे, लोक-कल्याणार्थ लगाना। ईशावास्योपनिषद् के पहले मन्त्र के आदेशानुसार –

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किं जगत्।
तेन त्यक्तने भुंजीथा मागृधः कस्य स्विध्दनम्।।

यजु० ४०-१

अपरिग्रह, ईश्वर-प्रणिधान अस्तेय व सतोष व्रतो का पालन करूगा।

'यम-नियम ही योग साधना की नीव है। इन व्रतो का पूर्ण रूप से पालन हेतु, भृकुटि मे ध्यानिस्थ उपरोक्त भावना से मन्त्र मे कहीं प्रत्येक इन्द्रिय को प्रेरणा देना। तब अगले मन्त्र पर अग्रसर होना।

अपने जीवन मे, मन्त्र की भावना एव निर्देशानुसार आचरण का पूर्णत पालन कर लेना ही मन्त्र की सिद्धि कहलाती है। पहले मन्त्र की सिद्धि के बाद ही अगले मन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है।

इन्द्रिया अपने स्वाद का ज्ञान तो रखे शरीर को पौष्टिक बनाने वाले सात्विक भौतिक पदार्थो का उपभोग भी करे, परन्तु रसास्वादन मे लिप्त न हो तदर्थ मन्त्र मे कहीं प्रत्येक इन्द्रिय को ऐसा सयमित बल व यश किस से बढता या प्राप्त होता है यह आगे तालिका मे उल्लिखित है।

क्रमांक	इन्द्रिय	बल किससे	यश किससे
१	वाक-मुख वाणी	सात्विक पदार्थों के ग्रहण एव सत्य से	पदार्थो को मधुर व सुपाच्य बनाने एव प्रिय व मधुर बोलने से
२	प्राण	प्रभु स्मरण से	दूसरो की प्राण रक्षा से
३	चक्षु	लज्जा से	सबको मित्र दृष्टि से
४	श्रोत्र	वेद–ज्ञान एव सत्योपदेश से	दीन दुखी की पुकार सुनने से
५	नाभि	ब्रह्मचर्य व सयम से	उत्तम सुसतान एव स्वय के स्वस्थ दीर्घायु होने से
६	हृदय	धैर्य व सतोष से	उदारता व नम्रता से
७	कण्ठ	प्रभु गुण गान एव सत्य, मित भाषण से	मधुर व उत्तम स्वर आलाप सत्य विदया दान एव वैदिक विज्ञान प्रवचनो से
८	सिर (शिरा)	निश्चयात्मक सुविचार एव प्रभु प्रेरित बुद्धि से	सत्य विदया दान एव वेद-प्रचार मे बलिदान या सत्य के लिए शीशदान
९	बाहु	आत्म–विश्वास के शुद्ध सत्य कर्म से	दीन पतितो वे मार्गच्युतो की अगुली पकड, भार अपने ऊपर लेने से
१०	करतल कर पृष्ठे	करतल–हथेली को साफ लेन देन व शुद्ध एव पवित्र कमाई से	कर–पृष्ठे–हाथ उल्टा गुप्त दान वइदन्न–मम से कर+ऊणा=करुणा से आख व हाथ ऊणा–नीचा करके देने से।

– क्रमशः

धर्माचार्य पं० रामकुमार जी आर्य का देहावसान

आर्य पुरोहित सभा के प्रधान प० अमरदेव जी शास्त्री एव उपप्रधान श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि आर्यजगत् के सुयोग्य धर्माचार्य एव ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता प० रामकुमार जी आर्य का २७ अक्तूबर, २००२ को असामयिक निधन हो गया। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। उनकी स्मृति मे आर्यसमाज मन्दिर ई–३६, ए मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली मे ३० अक्तूबर २००२, को दोपहर ३ बजे से ४ बजे तक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमे उनको अश्रुपूरित श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

– अमरदेव शास्त्री, सीताराम बजार

संकल्प-आयुर्वेद स्वस्थ्यवृत

— वैद्य अखिलेश उपाध्याय

देव इन्द्र के शिष्य धन्वन्तरि को आयुर्वेद का आदि प्रवतक माना जाता है पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि नारद ने पृथ्वी वासियो को शारीरिक मानसिक आकस्मिक और स्वाभाविक व्याधियो से ग्रसित देखा तो उन्होने भगवान विष्णु से प्रार्थना की आप व्याधिग्रस्त जनता के दुख दूर करें। प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु ने आश्वासन दिया कि मै धन्वन्तरि विष्णु काशी मे दिवोदास नाम से राजकुल मे अवतीर्ण होऊगा और देव इन्द्र से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर मनुष्यो को रोग मुक्त और दीर्घ आयु प्रदान करूगा।

यह कथा वैचारिकता मे सत्य है अथवा नही। लेकिन क्रियात्मक अटल सत्य है देव धन्वन्तरि मनुष्य के स्वास्थ्य रक्षक है। वेदज्ञ है। वेद का उपवेद आयुर्वेद सार्वभौम और सार्वजनीन है क्योकि इसका मूल उद्देश्य सर्वमिज्जगदक्ष्म सुमनाऽसयत अर्थात यह सब जगत शारीरिक ओर मानसिक रोगो से मुक्त रहकर स्वस्थ एव सुखी रहे।

वेद का कथन है कि मानव जीवम शरद शतम अथात सौ वर्ष तक जीये लेकिन अदीना स्याम शरद शतम रोग भोग कष्ट और पराधीनता से नही अपितु पूर्ण स्वस्थ ओर स्वालम्बी होकर शतायु हो। इतना ही नही **पश्येम शरद शत श्रृणुयाम शरद शत प्रब्रवाम शरद शत** अर्थात पूर्ण दृष्टि श्रवण एव वाणी शक्ति को प्राप्त करे इस प्रकार भूयश्च शरद शतात सौ वर्ष से भी अधिक आयु प्राप्त करे और भू मण्डल पर विश्व बन्धुत्व को साकार करे।

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान का अपना सार्वदेशिक त्रिदोष सिद्धान्त है। इसके अनुसार जगत का निर्माण करने वाले और उसको धारण करने वाले जितने भी तत्व और शक्तिया है वे ही सब मानव शरीर मे विद्यमान है। मानव का भौतिक शरीर प्रकृति का बना हुआ है प्रकृति मे सम्पूर्ण विश्व व्याप्त है। सम्पूर्ण विश्व अन्तरिक्ष मे व्याप्त है। यही अन्तरिक्ष स्थान प्रदान करता है। इसको आकाश तत्त्व कहते है। यह आकाश तत्व समस्त प्राणियो के भीतर और बाहर है आकाश तत्व मे चार भूत अग्नि जल पृथ्वी वायु विद्यमान अत सम्पूर्ण सृष्टि पचमहाभूत से निर्मित है। यही यत पिण्डे तत ब्रह्माण्डे का सार है।

[illegible] त्रिदोषज सिद्धान्त का है कि अग्नि तत्व उष्णता का स्वरूप है पृथ्वी तत्व सौम्यता का स्वरूप है। जल तत्व अग्नि के साथ मिलकर पित्त दोष बनाता हे जो उष्ण है। इसी प्रकार जल तत्व पृथ्वी के साथ मिलकर कफ दोष निर्माण करता है जो सौम्य है। पित्त तथा कफ पगु है वायु तत्व चालक है। मानव जो कुछ भी आहार ग्रहण करता है। ये सप्त धातुये रस रक्त मास मेद अस्थि मज्जा और शुक्र है। शुक्र शुद्ध स्वरूप है तथा इसका आधार शरीर मे ओज है। तीन वात पित्त कफ और सप्त धातुओ का समन्वय ही सुस्वास्थ्य है। इनकी विषमता ही रोग है। इसीलिए ऋतभरा बुद्धिजीवी आयुर्वेदज्ञो का मानना है कि इस जगत मे असख्य रोग है जिनका नामकरण सम्भव नही। अत त्रिदोषज सिद्धान्त के आधार पर रोगो की चिकित्सा करे

आयुर्वेद शास्त्रो मे वैयक्तिक स्वास्थ्य रक्षा का वृहत विवेचन है। रोग निवृति की अपेक्षा रोग होने ही न देना मूल बात है। आयुर्वेदोक्त स्वस्थ्यवृत जिसमे दिनचर्या रात्रिचर्या ऋतुचर्या और सदवृत का वर्णन है वर्तमान मे मनुष्य को सख्त आवश्यकता हे पदाथवादी युग मे प्रत्येक मनुष्य अनेक रोगो से ग्रस्त है। टेशन लाकेट बच्चो से वृद्धो तक के गले मे लटका हुआ है ऐसे मे आयुर्वेद स्वस्थ्यवृत का मूल सूत्र **त्रय उपस्तम्भा आहार निद्रा ब्रह्मचर्य मिति** अथात आहार निद्रा ब्रह्मचर्य (सयम) यथावत रहे तो अनेक रोगो से बचा जा सकता है।

पचभौतिक शरीर की वृद्धि अथवा ह्रास आहार पर आश्रित है। भोजन से ही शरीर को ओज प्राप्त होता है। आयुर्वेद का कथन हे **पथ्य पूतन अनायास्यम** अर्थात हमारा आहार हमारे शरीर के लिए पथ्य हो। शुद्ध आहार से ही स्मरण शक्ति आयु सामर्थ्य उत्साह धैर्य की प्राप्ति होती है। उपनिषदो का कथन है **आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुव स्मृति** अर्थात आहार की शुद्धि से मन बुद्धि शुद्ध होती है। बुद्धि की शुद्धि से स्मृति दृढ होती है। स्मृति की स्थिरता से हृदय की समस्त भ्रान्त धारणाए निमूल हो जाती है। यही धर्म अर्थ काम मोक्ष का लघु सरल मार्ग है। आयुर्वेद आहार सिद्धान्तो मे हिताशन मिताशन और नियताशन का उल्लेख है। हिताशन अर्थात हितकर पूर्णपोषक सुपाच्य षडरस युक्त उचित साधन से बना हुआ आहार है। षडरसो मे मधुर खटटा नमकीन चरपरा कडवा कसैला रस है। भोजन मे इनका क्रम प्रथम मधुर पदार्थ तदनन्तर खटटे तथा नमकीन और तत्पश्चात चरपरे कडवे और कसैले द्रव्य ग्रहण करने चाहिए। इनमे मधुर खटटा नमकीन वायु, चरपरा कडवा कसैला कफ और मधुर कडवा कसैला पित्त को शान्त करते है।

मिताशन अर्थात उचित मात्रा मे भोजन ग्रहण करना है। अधिक या न्यून मात्रा मे भोजन ग्रहण करना विषमाशन है। अधिक भोजन करने से स्वास्थ्य नाश आयु नाश दुख उत्पन्न होता है। वात पित्त कफ दूषित होता है। कम मात्रा मे किया गया भोजन उदर मे वायु की वृद्धि करता है। ओज क्षीण कर स्नायु दौर्बल्यता से ग्रसित बना देता है। चरपटे खटटे नमकीन अति उष्ण तीख रुखे दाह उत्पन्न करने वाल आहार द्रव्य राजसिक द्रव्य है। इसी प्रकार अधपका नीरस दुर्गन्ध युक्त बासी जूठा अपवित्र आहार द्रव्य तामसिक मनुष्यो के द्रव्य है। यह सब विषमाशन के अन्तर्गत ही आते है।

नियताशन अर्थात निश्चित समय पर आहार ग्रहण करना। पूर्व मे ग्रहण किए गए भोज्य पदार्थ के पच जाने पर पुन आहार लेना चाहिए इससे भोजन का परिपाक उचित होता है। भूख निश्चित समय पर लगती है। जठराग्नि प्रबल रहती हे। भोजन ग्रहण करने वाले को हमेशा तीन चौथाई भाग ही आहार ग्रहण करना चाहिए। एक भाग मे रोटी ठोस द्रव्य दूसरा भाग दुग्ध रस जल तीसरा भाग रिक्त रखे जिससे उस भाग मे वात पित्त कफ का सचार हो सके। भोजन मे जल महत्वपूर्ण है। अति जल पीने से अन्न नही पचता है। कम पीने से भी यही दोष होता है। अत जठराग्नि के उददीपन के लिए बार बार किन्तु अल्प मात्रा मे जल पीये। इससे भोजन का परिपाक हो जाता है।

भोजन मे दुग्ध और इससे बने पदार्थो का विशेष महत्व है। लेकिन अज्ञानता के कारण यही सयोग विरुद्ध हो अनेक कष्टदायक रोगो की उत्पत्ति कर देते है। दुग्ध स्वतन्त्र ही लिया जाए। दुग्ध के साथ पका आम मुनक्का मधु घृत सोठ पिप्पली काली मिच मिश्री शक्कर सैन्धा नमक परवल अदरख आमला जौ लिया जा सकता है। लेकिन दुग्ध के साथ मछली मास मूली खाने से सफदे दाग (श्वित्र) मद्य और पत्ती के शाको के सेवन से शरीर मे विषाक्ता उत्पन्न हो जाती है। तेल खल सरसो कैथ जामून नीबू, कटहल करील बेर केला खटटा अनार खाने से बहिरापन अन्धता गूगापन यहा तक कि मृत्यु भी हो सकती है।

अमन्ति रोगिणो भवन्ति येन भक्षितेन तदामिषम अर्थात जिस आहार द्रव्य के ग्रहण करने से मनुष्य रोगी हो जाए उसे अभिष आहार कहते है। अण्डे मास मदिरा मनुष्य के लिए अमिष भोज्य पदार्थ है। वर्तमान समय मे इनके बारे मे जो भी तर्क दिए जाते है वो मनुष्य कृत कपोल कल्पित है। अथर्ववेद मे स्पष्ट सकेत है **पय पशूना रस मोषधीना** अर्थात पशुओ का दुग्ध और औषधियो का सारभाग ही भोज्य है अमिष द्रव्य मानसिक अस्वस्थता तो भेट करते ही है। साथ ही भगन्दर क्षय गठिया कैसर झोद हिस्टीरिया निद्रानाश श्वास जैसे कष्टदायक रोगो के जनक है।

निद्रायत्तम सुखम अर्थात निद्रा पर सुख निर्भर है शरीर की समस्त शक्तिया निद्रा के अधीन है। शरीर गतिमान है शक्ति का ह्रास और सवर्धन निश्चित रूप से होना ही है आयुर्वेद का कथन है

निद्रायत सुख दुख पुष्टि कार्श्य बलाऽबलम।
वृषता क्लीबता ज्ञानम ज्ञान जीवित न च।।

सुख और दुख पुष्टि और दुबलापन बल और निर्बलता पुस्त्व ओर नपुसकता ज्ञान और अज्ञान तथा जीवन ओर मृत्यु ये सब निद्रा के अधीन है आयुर्वेद के अनुसार निद्रा तीन प्रकार की है। तामसी आगन्तुकी और भूत धात्री निद्रा। तामसी निद्रा मन शरीर के थकने पर कफ दोष के कारण होती है। आगन्तुकी निद्रा रोग जनित अथवा नशे की निन्द्रा से प्राप्त होती है। भूतधात्री निद्रा प्रतिदिन रात्री काल की निद्रा है। निद्रा तमोगुण प्रधान है। रात्री काल भी तम है। इसीलिए मनुष्य के लिए भूतधात्री निद्रा ही श्रेष्ठ है। मनुष्य को सामान्यत सात घण्टे अवश्य सोना चाहिए। बालको को प्रारम्भ मे १८ २० घण्टे तत्पश्चात निन्द्रा का समय विकास क्रम से कम होता जाता है रात्री जागरण से मनुष्य को बचना चाहिए। ये अनेक रोग जैसे स्मृति नाश चित्त भ्रमित उन्माद पैदा करता है। मनुष्य को रात्री के चौथे पहर (ब्रह्ममुहूर्त) मे उठना चाहिए। इस समय वायुमण्डल शुद्ध रहता है। सर्वत्र शान्ति और प्रसन्नता का वातावरण रहता है। मन की सदवृत्तिया जाग्रत हो उठती है।

शेष भाग पृष्ठ १० पर

आर्यसमा[illegible]

– कै० देवरत्न आर्य

दक्षिण अफ्रीका अमेरिका और कनाडा देशो की यात्रा करके हमे भारत आना था। कनाडा से भारत आने के लिये लदन पहुचना था और फिर लदन से दिल्ली। अत हमने लदन से तुरन्त विमान यात्रा करने के बजाय नौ दिन का अन्तर लिया और हमने १४ अगस्त २००२ को कनाडा से लदन के लिये प्रस्थान किया। हमारा विमान १५ अगस्त २००२ को प्रात ६ बजे लदन विमान स्थल पर पहुचा।

भारत से अमेरिका जाने से पूर्व मैने अपना कार्यक्रम श्री सुरेन्द्र भारद्वाज को टेलीफोन द्वारा सूचित किया व उनसे एक पत्र मगवाया जो वीसा लेने के लिये आवश्यक था। मुझे लदन आर्य समाज के मत्री श्री ए०बी० भारद्वाज का पत्र मिला और हमने मुम्बई स लदन जाने का वीसा प्राप्त कर लिया।

कनाडा से लदन जाने से पूर्व श्री गिरीश खोसला ने अमेरिका की आर्य समाजो को मेरे आने की सूचना दे दी। मुझे श्री खोसला जी का टेलीफोन आया था कि लदन विमान स्थल पर आपको श्री भसीन लेने आयेगे और हम उनके निवास पर ही ठहरेगे।

लदन विमान स्थल पर किसी कारणवश श्री भसीन नही आ सके और न ही आर्य प्रतिनिधि सभा लदन के कोई अधिकारी। विमान स्थल पर हमे ले जाने के लिए श्री ए०बी० भारद्वाज श्री अमर गिरधर श्रीमती दयाकपूर आचार्य ताना जी प० राम चन्द्र जी शास्त्री आचार्य डा० सोनेराव आदि णमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। डा० सोनेराव जी से मेरा पूर्व परिचय था। उन्हे आर्य समाज बरमिघम के अधिकारियो ने भेजा था कि हमे सीधा कार द्वारा बरमिघम ले आये।

हमारे पास सामान ज्यादा था – अत कार या बस से जाना सम्भव नही था। श्री गिरधर जी व श्रीमती दया कपूर का निवास विमान स्थल के समीप था। श्रीमती दया कपूर के विशेष आग्रह पर हम उनके निवास पहुच गये और वहीं पर पूरा दिन रूके।

दक्षिण अफ्रीका अमेरिका व कनाडा की यात्रा कर व वहा की आर्यसमाजो की सक्रियता व गतिविधियो को देखकर जितना उत्साह मेरे मन मे भरा था – लदन आकर समाप्त हो गया। मैने लदन आर्यसमाज व उनके अधिकारियो विशेषकर प्रो० सुरेन्द्र भारद्वाज के बारे मे जितना सुना था वहा जाकर वैसी अनुकूलता नहीं पाई। एक चर्च को खरीद कर वहा उसे आर्यसमाज मदिर के रूप मे परिवर्तित कर दिया था। अधिकाश सदस्य वे थे जो नैरोबी को छोडकर वहा बस गये थे और नैरोबी आर्य समाज की जैसी सक्रियता थी वैसी आर्यसमाज की गतिविधिया वहा प्रारम्भ करना चाहते थे। इसीलिए नैरोबी के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यदेव भारद्वाज जो गुरुकुल के स्नातक भी थे व जिन्होने भारत मे सन फ्लेग आयरन एण्ड स्टील इन्डस्ट्रीज भी लगाई है खुले मन से इस चर्च को खरीदने के लिए योगदान दिया।

इस आर्यसमाज का विशाल भवन देखकर बडी प्रसन्नता हुई। जब हम वहा पहुचे उसमे ताला लगा हुआ था। मैने एक सज्जन से पूछा कि यहा इस भवन मे क्या कार्य होता है तो उसने उत्तर दिया यहा रविवार को कुछ लोग एकत्रित होते है और उनका एक ही कार्यक्रम होता है आओ गाओ खाओ और जाओ। मुझे अनक व्यक्तियो ने इस आर्यसमाज की निष्क्रियता के बारे मे कहा। वहा आर्य प्रतिनिधि सभा लदन बनी है जिसने पिछले १० वर्षो मे कोई बैठक नहीं की। किसी विद्वान को आमन्त्रित नही किया। जो विद्वान स्वय वहा चले गये उनके रहने भोजन आदि की व्य[illegible] नहीं की। अगर वे स्वय र[illegible]वार के सत्सग मे चले गये तो उन्हे १०–१५ मिनट बोलने का समय द दिया। मुझे लिखते हुए खेद होता है कि मेरे साथ भी प्रतिनिधि सभा के सर्वोच्च अधिकारी का यही व्यवहार रहा। अत मै बिना बुलाये रविवार के सत्सग मे भी नही गया।

समाज भवन मे विद्वान पुरोहित के रहने की सुन्दर व्यवस्था है। समाज की व उनके निवास की चाबिया उनके पास ही रहती है। वे उस भवन मे अकेले रहते हैं। वे आये और बडे सम्मान से हमे अपने निवास मे ले गये और आवभगत की। वे लातूर (महाराष्ट्र) से थे वे मुझे बचपन से जानते थे।

उनसे पूर्व इस समाज मे आचार्य ताना जी रहा करते थे। आर्यसमाज का जितना कार्य आचार्य ताना जी ने लदन मे किया वह प्रशसनीय है। जिन जिन परिवारो मे मै गया वहीं ताना जी के कार्यो की प्रशसा सुनी। अपनी कार की डिक्की मे वे हमेशा हवनकुण्ड घी सामग्री व समिधा लेकर चलते है। कहीं भी उनके मोबाइल पर फोन आ जाये तो वे सीधे सस्कारो पर चले जाते है। स्वभाव से सरल मेहनती आर्यसमाज के प्रति समर्पित व उदार हृदय के विद्वान है। कुछ समय के लिये वे कनाडा व अमेरिका म भी रहे पर पुन लदन आकर अपना कार्य स्वतन्त्र रूप से कर रहे है।

१६ अगस्त को हमे बरमिघम जाना था। आचार्य सोनेराव जी भी १५ अगस्त को बरमिघम न जाकर आचार्य ताना जी के निवास पर ही रूक गये थे। बरमिघम जाने से पूर्व आचार्य ताना जी हमे एक आय परिवार श्री बत्रा जी के निवास पर ले गये। व[illegible] पारिवारिक सत्सग था। आचार्य ज्ञानेश्वर जी (पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के शिष्य) वहा पूर्व ही आ गये थे। उनका भाषण हुआ और पश्चात मेरा। दो[illegible] भाषणो स यह परिवार बडा प्रसन्न हुआ। वही पर चाय नाश्ता करक हम आचार्य सोनेराव की कार मे बरमिघम के लिये रवाना हो गये वरमिघम लदन विमान स्थल से लगभग २०० किलोमीटर दूर है। मुझे बडी प्रसन्नता हुई जब आचार्य जी को कार चलाते देखा। क्योकि मेरा उनसे पुराना परिचय था।

हम बरमिघम मे प्रसिद्ध आर्य नेता आदरणीय श्री गोपाल जी चन्द्रा के निवास पर रूके। ८१ वर्षीय श्री चन्द्रा जी एक निष्ठावान आर्यसमाजी है। वह अपने बगले मे अकेले ही रहते है। घर का सारा काम भी वही करते है। अनेक लेख उनके पत्रिकाओ मे छपते रहते है। अलग एक कमरे मे उनका पुस्तकालय है वही कम्प्यूटर व टाईपिग मशीन है। स्वय को दिन भर किसी न किसी काय मे व्यस्त रखते है। वे स्वय कम्प्यूटर पर काम करते है और स्वय ही अपने लख व पत्राचार टाईप करते है। दिन भर आर्यसमाज के कार्य के अतिरिक्त उनकी रूचि किसी मे नही है। वे लदन आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान अवश्य है पर बडे असतुष्ट है। हम रात्रि को ८ बजे उनके निवास पर पहुचे तो ब्रिगेडियर चितरजन सावत (नोएडा) भी वहा उपस्थित थे। वे भी आज ही लदन आये थे। आर्यसमाज बरमिघम के निमन्त्रण पर। आर्यसमाज ने उनके ८ भाषण रेडियो पर प्रसारित करने की व्यवस्था कर रखी थी। अत वे इस हेतु वहा लगभग डेढ माह रूकने वाले थे। श्री चन्द्रा जी का सक्रिय एव सादगी भरा जीवन देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। इस आयु मे भी वह स्वय कार चलाते हैं और किसी भी काम के लिये किसी पर भी निभर नही हैं।

१७ अगस्त को श्री कष्ण चापडा जो स्वय भारत मे गुरुकुल मे पढ हुए थ और आज सम्पन्नता मे खेल रह है। हमे घुमाने के लिये कार लेकर आये। व हमे बरमिघम से लगभग ४० किलोमीटर दूर शेक्सपीयर गाव मे ले गये। यह वह स्थान है जहा शेक्सपीयर का जन्म हुआ था। इस सम्पूर्ण गाव को सरकार न एक सुन्दर पर्यटक स्थल बना दिया है। बडे बडे बगीचों प्राकतिक सौदर्य हजारो फूलो से सजा यह गाव है। शेक्सपीयर का जन्म भवन पर्यटको का विशेष आकर्षण हैं जिसमे शेक्सपीयर द्वारा प्रयोग की जाने वाली हर वस्तु बडी सुरक्षित व सजा कर रखी है। उनका पलग बर्तन कपडे पुस्तके आदि सब सुरक्षित व सजा कर रखी हुई थी। पास मे ही एक विशाल थियेटर था जिसमे शेक्सपीयर के लिखे नाटको का मचन होता था। लगभग २०० दुकाने आस पास बनी थी चूकि बडी सख्या मे वहा पर्यटक आते हैं। जब हम गये उस समय भी वहा लगमग २००० पर्यटक घूम रहे थे।

इस गाव को शेक्सपीयर गाव घोषित करने से पूव बिट्रिश सरकार ने एक कमेटी बनाई थी। इस कमेटी को यह कार्य दिया गया था कि वह इस तथ्य की खोज करे कि जो साहित्य शेक्सपीयर ने लिखा है क्या वास्तव मे वह उन्हीं की कृति है या किसी अन्य लेखक की। कहते है पूरी जाच करने के बाद इस कमेटी ने अपना निष्कर्ष एक पक्ति मे सरकार को दिया कि शेक्सपीयर – शेक्सपीयर ही है इसी गाव से चलने वाली एक बस मे हमने इस गाव के चारो ओर बिटारी प्राकृतिक सौदर्य हरे मैदान और पहाडो को देखा।

इस गाव का सौंदर्य इतना था कि मेरे मन मे आया हमारे भारत मे भी श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे साहित्यकार हुए है जिन्हे नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और जो किसी शेक्सपीयर से कम नही थे पर ऐसी सुन्दर स्थली उनके नाम से हमारी सरकार नही बना सकी।

इस सौंदर्य को देखकर हम वापिस आ गये। हमारा व श्री चन्द्राजी व बिग्रेडियर चितरजन सावत का रात्रि का भोजन डा० न्रेन्द्र कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज बरमिघम के निवास पर था। वहा जाकर पता लग कि डा० नरेन्द्र कुमार आर्य सावदेशिक सभा के उपप्रधान श्री भानन्द कुमार आर्य के छोट भाई है और उन्ही की तरह विदश म बदी सक्रियता और [illegible] क साथ आर्यसमाज का काय क[illegible] हे है। उनके पिता श्री मिश्री लाल जी आर्य टाण्डा न अपना समस्त जीवन आयसमाज का समर्पित कर दिया था व नवम्बर २००२ मे टाण्ड' मे उनकी जन्म शताब्दी बहुत बडे स्तर पर मनाई जा रही है। रात्रि को भोजन कर हम पुन आदरणीय श्री चन्द्रा जी के निवास पर आ गये।

अगले दिन १८ अगस्त रविवार को हम सब प्रात श्री कृष्ण चोपडा जी के निवास पर भोजन करने गये। श्री कृष्ण चापडा आर्य समाज के सक्रिय कार्यकता है। गुरुकुल मे पढे आप सस्कृत हिन्दी व अग्रेजी भाषा के विद्वान है। आपने अनेक वेदमन्त्रो की विशेषकर हवन व सध्या के मत्रो के भावार्थ का अग्रेजी अनुवाद वैदिक प्रार्थना पुस्तक के रूप मे प्रकाशित किया है। आजकल वे वेदो के मत्रो के भावार्थ का अग्रेजी अनुवाद करने मे व्यस्त है वे पिछले वर्ष इस आर्यसमाज के प्रधान पद को भी सुशोभित कर चुके है। उनकी पत्नि व्यवसाय से डाक्टर है। श्री कृष्ण चौपडा जी ने अपने युवा पुत्र को वैदिक मान्यता और भारतीय सस्कति के ज्ञान के लिय ६ माह हेतु उपदेशक महा विद्यालय हिसार मे भेजा था वह भी २ दिन पूर्व ही वहा से शिक्षा प्राप्त कर लदन लौटा।

सायकाल ४ बजे आर्यसमाज बरमिघम के सत्सग मे हम गये। इस सत्सग को उन्होने भारत स्वतन्त्रता दिवस के रूप मे मनाया। विशाल आर्यसमाज का भवन विद्वान पुरोहितो के निवास की समुचित व्यवस्था। विदेशो मे आर्यसमाज के इस स्वरूप को देखकर प्रसन्न होना स्वाभाविक था।

इस समारोह मे लदन के अग्रेज व्यक्ति भी ब्रि० चितरजन सावत के कारण उपस्थित थे। आचार्य सोनेराव जी ने यज्ञ सम्पन्न किया। उसके पश्चात मुझ भारतीय झण्डा फहराने के लिए आमन्त्रित किया गया। तत्पश्चा[illegible] भा[illegible] [illegible] आजादी पर ब्रि० चितर[illegible] [illegible] और पश्चात मेरा भाष[illegible] हुआ समाज का [illegible]ल पूरा भरा हुआ था। लगभग ३०० व्यक्ति उप[illegible] होगे। डा० नरेन्द्र कुमार आ[illegible] समारोह का सचालन कि[illegible] [illegible] समाज के कार्यो [illegible] [illegible] देखकर मै बहु[illegible] प्रसन्न [illegible] अधिकारी बदी [illegible] आर्यसमाज [illegible] [illegible] बरमिघ[illegible] [illegible] यात्रा [illegible] [illegible]फीन्ड [illegible]

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

इग्लैण्ड यात्रा

आर्यसमाज वरमिंघम मे श्रीमती सुनीता आर्य व सभा प्रधान के० देवरत्न आय का सम्मान करते हुए श्री गोपाल जी चन्द्रा
पीछे खडे ह डॉ० नरन्द्र कमार आय आयसमाज के प्रधान

आयसमाज बरमिंघम म भारत का राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए सभा प्रधान के० देवरत्न आय साथ मे है ब्रिगेडियर चितरजन सावत व श्री गोपाल चन्द्रा जी

आयसमाज वरमिंघम मे भाषण देते सभा प्रधान के दवरत्न आर्य

आयसमाज बरमिंघम म सभा प्रधान क० दवरत्न आर्य एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आय व उपस्थित जन समुदाय
पहली पक्ति मे दो ब्रिटिश नागरिक भी बैठे है

I ...ı ı s ſ nd n म अभिनेता अमिताभ बच्चन के माम क पुतले क ... श्रीमती सुनिता आय ... सभा प्रधान के ... व त्न आर्य

श्री गोपाल चन्द्रा जी के निवास पर बाये से डॉ० नरन्द्र कमार आय श्री चन्द्रा जी के० देवरत्न भाय एव ब्रि० चितरजन सावत

पृष्ठ ५ का शेष

[illegible]

[illegible] मरी मासरी बहन डा० स[illegible] व डा० सतीश माथुर [illegible] प्रसद्धि नता व ल[illegible]क आद णीय श्री विजय बिहारी लाल जी माथुर की सुपुत्री व दमाद) रहते है। अत आर्य समाज के कायक्रम के पश्चात हम ट्रेन द्वारा शफील्ड चल गए। रात्रि को व अगले दिन हम वहीं रहे।

१६ अगस्त का हम शेफील्ड से डयूक आफ डेविन्यर का महल उनका म्यूजियम वहा बने विशाल बगीचे दखने गये। डयूक अभी भी इस महल के एक हिस्से मे रहते है। तीन मजिल का यह महल और सुन्दर बगीचे जहा Duke की विलासिता के परिचायक थ। वहा सुन्दर और भव्य बगीचे और नदी की। प्राकृतिक सौदर्यता को निहार कर मन प्रसन्न हुआ। हम वहा से कार द्वारा लगभग २५ मील दूर तक गए। अनेक हरियाली से भरे छोटे छाटे पहाड एक पहाड से दूसरे पहाड पर जाती सडके प्राकृतिक सुन्दरता से भरा नजारा देखने को मिला।

२० अगस्त को प्रात हम ट्रेन से रवाना होकर साऊथ हाल जहा हम पहले दिन ठहरे थे श्रीमती दयावती जी कपूर के घर पहुचे। ७० वर्षीय श्रीमती दयावती जी कपूर अपने निवास पर अकेली रहती है। हम अपना सौभाग्य समझते है कि हमे ऐसे घर मे ठहरने का अवसर मिला। ममता भरी मा की सी उनकी छवि है। परिवार मे कोई अतिथि आ जाये विद्वान या पुरोहित आ जाये तो उनकी देखभाल बडे प्यार और स्नेह से करती है। प्रतिदिन प्रात यज्ञ और सध्या सात्विक खान पान सादा जीवन प्रतिदिन स्वाध्याय उनकी दिनचर्या है। उनके निवास पर अनेक विद्वान जो भारत से आते है ठहरते है। स्वामी दिव्यानन्द जी जब भारत से गये उनके पास ही रहे पर समीप मे ही बनी आर्यसमाज लदन ने कोई व्यवस्था नहीं की। श्रीमती कपूर का हमारे निवास के दौरान तीन दिन के लिये किसी की मृत्यु पर स्विटरजरलैण्ड जाना पडा – पर हम वही रहे अपने घर की चाबिया और तीन दिन का हमारे लिए भाजन बना कर हमे दे गई। कैसा अनूठा प्यार और स्नेह था।

हमारे वहा पुन पहुचने पर श्री गिरधर जी आचार्य ताना जी हम से मिलने आए व अगले दिन का कार्यक्रम बनाकर चले गए।

२१ अगस्त का श्री ताना जी अपनी कार से हमे घुमाने ले गए हमने रानी एलिजाबेथ का विडसर महल जहा राजकुमारी डायना भी रहती है दखा। किल की तरह एक छाटे पहाड पर यह विशाल महल बना हुआ है। चारो और बडे–बडे बाजार टेम्स नदी के दानो ओर प्राकृतिक फूलो से सुसज्जित विशाल बगीचे। सैकडो पर्यटक घूम रहे थे वहा।

हम २२ अगस्त को फिर आचार्य ताना जी के साथ मध्य लदन देखने गए। पूरा दिन कार मे बेठे–बैठे ही हमने लदन के अनेक दर्शनीय स्थल देखे जिसमे मुख्य थे लदन का म्यूजियम बरमिघम महल जहा रानी एलिजाबेथ रहती है बिग बेन टावर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट प्रधानमन्त्री का निवास १० डाऊनिग स्ट्रीट इण्डिया हाऊस टेम्स नदी उस पर बने विशाल पुल मिलेनियम आई आदि आदि। हमारे साथ लदन आर्यसमाज के विद्वान पुरोहित श्री प० राम चन्द्र जी शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीनाक्षी भी थी।

सायकाल हमे आचार्य ताना जी उस ऐतिहासिक स्थल को दिखाने ले गए जहा क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। स्वामी जी के आदेश पर वे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारत को आजादी दिलाने हेतु लदन गए थे। एक मध्यम स्तरीय बगला जहा श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे हमने बाहर से खडे होकर उसके चित्र लिए। उसी समय एक नवयुवती उस बगले से बाहर निकली नाम था स्टेफनी। कुमारी स्टेफनी ने बगले के फोटे लेने का कारण पूछा। आचार्य ताना जी ने मेरा परिचय देते हुए उनसे कहा यह स्थान हमारे लिए ऐतिहासिक स्थान है। यहा श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे जिन्हे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्रिटिश सरकार के विरोध मे भारत को आजादी दिलाने हेतु भेजा था। इतने मे ही कुमारी स्टेफनी की माता भी बाहर आ गई। उन्होने बडे सम्मान से हमे घर मे बुलाया – हमारी बाते सुनी और कहा यह हमारा सौभाग्य है कि हमने यह बगला खरीदा। उन्होने कहा मेरे ऐसे पेपर है कि इस मकान मे श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे। यह रशियन परिवार था और उनके पति किसी शिपिग कम्पनी मे काम करते है। उन्होने वह पेपर खोजने शुरू किए पर नहीं मिले परन्तु वायदा किया कि मिलते ही मुझे मेरे पते पर भेज देगीं। उन्होने हमारे साथ फोटो खिचवाए सारा घर दिखाया ऊपर से नीचे तक। यह भवन उन्होने ४ वर्ष पूर्व ही खरीदा था। मुझे यह भी पता चला कि श्री गोडवोले जो लदन मे रहते है उन्होने इस भवन पर काफी अनुसधान किया है।

यहा यह लिखना भी अप्रासगिक नही होगा कि महर्षि दयानन्द न अपनी उत्तराधिकारिणी सभा म श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को एक ट्रस्टी भी बनाया था।

मेरे मन मे बडा दुख हुआ कि जब ४ वर्ष पूर्व यह भवन बिका था तो यहा के आर्यो ने इस ऐतिहासिक स्थल को क्यो नहीं खरीदा। यदि वे अपील भी निकालते तो पैसा चारो ओर से आ जाता। परन्तु मै पूर्व ही यहा की पुरानी आर्यसमाज की निष्क्रियता का जिक्र कर चुका हू।

श्याम जी कृष्ण वर्मा जब लदन मे रहते थे उस समय बाल गगाधर तिलक ने उन्हे पत्र लिखा था कि भारत की आजादी के सग्राम हेतु श्री वीर सावरकर लदन आ रहे है – अत उनकी व उनके साथियो के रहने की व्यवस्था करना। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जहा उनके रहने की व्यवस्था की उस स्थान को पहले भारतीय होस्टल के रूप मे जाना जाता था कुछ समय के पश्चात उस भवन का नाम इण्डिया हाऊस पड गया। हमे आचार्य ताना जी वह स्थान दिखाने ले गए। भव्य भवन उसमे एक अग्रेज परिवार रहता है। बाहर भवन पर एक नीले रग का बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था – यहा वीर सावरकर अपने साथियो के साथ भारत की आजादी के लिए रहते थे। मुझे उसे देखकर भी आश्चर्य हुआ कि लदन मे इतने भारतीय और कुछ तो कटटर हिन्दू रहते है – पर इस भवन को अपने कब्जे मे लेकर वीर सावरकर का स्मारक क्यो नहीं बनाया। हमने उसे अन्दर से देखना चाहा पर उस अग्रेज परिवार ने जो अन्दर रहता था इस बात की अनुमति नहीं दी।

वीर सावरकर ने यहीं रहकर बेरिष्टर की शिक्षा प्राप्त की। जब वे अपनी डिग्री लेने गए तो उस समय ब्रिटिश नियमानुसार हर स्नातक को शपथ लेनी होती थी कि मै ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार रहूगा। वीर सावरकर ने इस शपथ को लेने से मना कर दिया और डिग्री को ठुकरा दिया। ओर हम भारतीय उस स्थान को खरीदकर उसे वीर सावरकर का स्मारक भी नहीं बना पाए।

वहा से आकर श्री ताना जी हमे एक आर्य परिवार श्री वर्मा जी के यहा ले गए। प० रामचन्द्र जी विवाह के पश्चात हाल ही मे अपनी पत्नी सौ० मीनाक्षी को लदन लाए थे। उनके सम्मान मे उन्होने अपने घर यज्ञ रखा इस दम्पत्ति को यजमान बनाया और उसके पश्चात सह भोज। आज रक्षा बन्धन का पर्व भी था। अत दोनो आयोजन उन्होने अपने परिवार मे रखे। वहा मैंने सबसे पहले प्रो० सुरेन्द्र भारद्वाज को देखा जो स्वय को आय प्रतिनिधि सभा का प्रधान कहते है। सार्वदेशिक के प्रधान का लदन आने पर उन्होने न तो मिलने की आवश्यकता समझी न व्यवस्था की। न ही उन्होने मुझसे रविवार को सत्सग मे आने का कहा। दूसरी ओर जब श्री वर्मा जी को पता चला कि उनकी तरह मुझे भी लाइन्स क्लब को सर्वोच्च अवार्ड मिला हुआ है तो वे बडे गरम जोशी के साथ मुझ से मिले। भोजन करके हम लगभग रात्री को १२ बजे श्रीमती दया कपूर के निवास पर पहुचे।

२३ अगस्त २००२ को एशियन फाऊडेशन आफ यूनाईटेड किगडम फार हेल्प की प्रधाना श्रीमती इन्दु बेन मेहता और मन्त्री श्री गोपाल भाई पोपट ने हमारे सम्मान मे ब्रेन्ट इडिया एशोसियेसन मे एक पार्टी रखी। यह एशोसिएशन जा कि आर्यो की नही है मुझे आर्य मेडिकल रिलिफ मिशन के नाम से पिछले १० सालो स किसी न किसी रूप मे सहायता कर रही। १० वर्ष पूर्व स्व० स्वामी रामानन्द जी शास्त्री जो आर्य मेडिकल रिलिफ मिशन के सस्थापक थे उन्हे ८ लाख की लागत से एक्स रे वेन भट की थी ताकि भारत के कौने–कौने मे जाकर विशेषकर गावो मे टी०बी के मरीजो का पता कर उन्हे दवा दी जाए। यह वेन आज भी कार्य कर रही है। उसके अलावा एक वातानूकुलित रुग्णवाहिका आर्यसमाज साताक्रुज को एक आचार्य भद्रसेन चेरिटेबल ट्रस्ट अजमेर को भेट की। लाखो रुपये उन्होने मुझे मडिकल कैम्पो के लिए कच्छ मे भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए दयानन्द टकारा ट्रस्ट के लिए राजस्थान मे सूखा पडने पर जानवरो के घास आदि के लिए समय–समय पर भेजते रहे। मेरे लदन आने पर वे बहुत खुश हुए। उन्होने मेरा भाषण कराया मेरा व मेरी पत्नी का शाल व श्रीफल से सम्मान किया और गरीबो की मदद करने के लिए १ लाख का चैक दिया। परोपकार पर मेरे भाषण से वहा कई लोग प्रभावित हुए और उन्होने एशियन फाउन्डेशन को भी आर्थिक मदद दी। उसके पश्चात श्री गोपाल भाई हमे भोजन के लिए अपने घर ले गए। कई दिनो के बाद विशुद्ध भारतीय भोजन खाकर हम बहुत प्रसन्न हुए।

साय श्री गोपाल जी गिरधर के निवास पर हमारा भोजन था। श्री गिरधर जी ने हमारा बहुत ध्यान रखा। स्वभाव से वे बडे नम्र व मिलनसार इन्सान है। हमे विमान स्थल से लाना व भारत आने पर प्रात विमान स्थल पर छोडने के लिए आना हमारी देखभाल उन्होने बडी तत्परता के साथ की। उनकी पत्नी स्वस्थ नही थी फिर भी उन्होने हमारा भोजन पर स्वागत किया। हम उनका मधुर व्यवहार नही भूल सकते।

२४ अगस्त को हमारे पास कोई कार्यक्रम नहीं था। हम ट्रेन से लदन घूमने चले गए। हम Madam Tussaud भवन देखने गए। वहा लगभग १५० मोम के पुतले विशिष्ट व्यक्तियो के बने है। उन्हे देखने सेलगता है कि सत्य मे ही कोई व्यक्ति खडा है। भारत के अभिनेता अमिताभ बच्चन इन्दिरा गाधी आदि अनेक व्यक्तियो के मोम के पुतले देखकर हम आश्चर्य चकित रह गए। यह भवन इतना बडा है कि इसे देखने मे करीब–करीब पूरा दिन ही चाहिए। वहा से हम Haarrods shopping Centre देखने गए। यह ६ मजिला भवन है और उनका दावा है कि विश्व की सारी वस्तुए और रेस्टोरेन्ट मे समस्त प्रकार के व्यजन उपलब्ध है।

इस प्रकार हम लदन की यात्रा पूरी कर २६ अगस्त को लदन से रवाना होकर २७ अगस्त को दिल्ली पहुचे। लदन मे आर्यसमाज का काफी कार्य है परन्तु सगठन न होने के कारण समाजे बिखरी हुई है। जब एक व्यक्ति २०–२० साल तक बिना कुछ कार्य किए अपनी कुर्सी से चिपका रहता है तो सगठन का कमजोर होना स्वाभाविक है। दूसरी बात हम सारे विश्व के सगठन का नेतृत्व करते है। हम कभी विदेशो मे नहीं गए अत वहा के व्यक्तियो ने सार्वदेशिक सगठन के महत्व को नहीं समझा। आशा है हम भविष्य मे इस ओर पूरा ध्यान देगे और निष्क्रिय व्यक्तियो से योग्य व्यक्तियो के हाथो मे सगठन सोपेगे ताकि हम महर्षि के मिशन को आगे बढाने मे समर्थ हो सके।

अपनी इन विदेश यात्राओ मे जो हमने दक्षिण अफ्रिका अमेरिका कनाडा यू०के० और मॉरिशस की की मुझे बहुत सीखने को मिला। विदेशो मे आर्यसमाजो का कार्य बहुत सुदृढ और सक्रिय है कमी है तो हमारे स्तर पर जिसे हम दूर करने का प्रयत्न करेगे। अपने लेख मे मैंने उन व्यक्तियो का धन्यवाद समय–समय पर किया है जिनसे मुझे स्नेह और सम्मान मिला। पुनरपि मे डॉ० सुखदेव जी सोनी और वैदिक विद्वान डॉ० दिलीप वेदालकार का विशेष आभारी हू जिनके कारण ही यह सब सम्भव हो पाया।

– प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

आस्तिकता व अहिंसा का प्रेरक महर्षि निर्वाण

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

नवसस्येष्टि नामक यज्ञ व सुगन्धित दीपमालाओ द्वारा आमोद प्रमोद की वर्षा करते हुए कीर्तिकी अमावस्या के दिन प्राचीन काल से दीपावली का उत्सव मनाया जाता है। इस महत्त्वपूर्ण पर्व को महर्षि दयानन्द के निर्वाण की असाधारण घटना ने पूर्वापेक्षया अधिक गौरवान्वित किया है। महापुरुषो का देहावसान साधारण व्यक्तियो की भाति शोकोत्पादक न होकर प्रेरणादायक होता है। वे परोपकार के लिए अपने शरीर के उत्सर्ग द्वारा उत्तम आदर्शो की स्थापना करके सुखो का सयोजन करते है। कृतज्ञ जन उनके चरित्र के गुणानुवाद से प्रेरणा लेकर आनन्दानुभव करते है। तनिक इस अभूतपूर्व निर्वाण पर दृष्टिपात कीजिए – महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान की गाथा आस्तिकता व अहिसा का पावन सन्देश है। स्वामी जी महाराज जाधपुर नरेश महाराजा यशवन्तसिह के निमन्त्रण पर जोधपुर पदार्पण करत है। वहा नीर क्षीर क विवेक करान वाल उनके व्याख्याना मे सदा की भाति न्याय होता था नीति होती थी युक्तिया थीं प्रमाणो से सुसज्जित सर्वोपरि सत्य का प्रकाश होता था। उनके उपदशवारिवर्षण म स्नान करके सारे भ्रम दूर हाकर श्रद्धालुआ के अन्त करण निर्मल हो जात थे।

वेदामृत का आनन्द लेन के लिए जोधपुराधीश महाराजा यशवन्तसिह भी स्वामी जी के दर्शनार्थ तीन बार उनके आसन पर आय तथा तीन बार ही श्रीचरणो को अपने आवास पर निमन्त्रित किया। एक दिवस जब व जोधपुराधीश के निवास पर दर्शन देन गए तब उन्हान नन्ही जान नामक वारागना को पालकी द्वारा वहा स विदा होत देख लिया। वारागना ता वहा से चली गयी परन्तु इस दृश्य का देखकर राष्ट्रहितैषी देव दयानन्द का हृदय द्रवित हो उठा। वे महाराजा को इस पापपक से मुक्त कराने के लिए देश हितैषिता की भावना से कहने लगे – हे राजन ! राजा लोग तो सिह समान समझे जाते है उनका कुक्कुरी सदृश वेश्या मे आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है। इस दुर्व्यसन के कारण धर्म–कर्म भ्रष्ट होकर पुरुष का अध पतन स्वत हो जाता है। आप पर देश का भार है अत इस दुर्व्यसन को तिलाजलि देनी चाहिए।

वेश्या व्यसन क विरुद्ध महाराजा को किए उपदेश स खिन्नमना नन्ही जान विकट वैर की विषम ज्वाला से अहर्निश सन्तप्त रहने लगी। वह स्वामी जी के विरुद्ध षडयन्त्र रचना म लग गयी। उसके साथ वे सब भी क्रियात्मक सहानुभूति मे उद्यत हो गए जो अपने–अपने स्वार्थवश स्वामी जी के सत्यवचना का स्पर्श न कर पान के कारण मतभेद रखने लगे थ। स्वामी दयानन्द के उपदेशामृत स जहा सत्यप्रिय शुद्ध भावभावित जन अमर पथ के पथिक बनकर शान्ति का अनुभव कर रहे थे वही सस्कारविहीन दुराग्रही व्यक्ति द्वेषाग्नि मे जल रह थे। उस देवता के मानस महत्त्व का विषयानन्द के रसिक मर्त्यलोक क साधारण जीव क्या समझत ? परन्तु जब तक अपने ही भेदी न हो तब तक काई कुछ भी अनिष्ट नही कर सकता। अपने ही दीपक स भवन भस्म होत है। ऐसे ही नराधम ऋषि के समीप भी रहत थे। आश्विन कृष्णा चतुर्दशी सम्वत १६४० को ऋषिवर दुग्धपान करके सो गए। नही नही आज दुग्धपान कहा किया था वस्तुत आज तो षडयन्त्रकारियो न पतित जगन्नाथ क द्वारा अनीति अन्याय और नीचता स दुग्ध क साथ हलाहल विषम विष का प्रयोग कराकर सबके लिए दुखद घृणित अनर्थ करा दिया। आ !!! आश्चय है कि विश्वासपात्र जगन्नाथ ही ब्रह्मघाती बन गया।

ऋषिवर ने अपराधी के अपराध को जान लिया। वह भी अपने अधमतम अपराध को स्वीकार करत हुए प्रायश्चित्त की ज्वाला मे जलने लगा। अपराधी को प्रायश्चित्त करने देखकर कर्मगति व फलभोग के विश्वासी देव दयानन्द अपन प्राणघातक की प्राणरक्षा का उपाय सोचन लग आर बोल हे जगन्नाथ ! मरे इस समय शरीर छोडन से कार्य अपूर्ण रह जाएगा तुम नहीं जानते कि इसस लोकहित को कितनी बाधा पहुची है। इतना कहकर क्षमाशील दयालु दयानन्द अपने घातक को पाथेय देकर प्राणरक्षा के उपाय मे प्रवृत्त करते हुए बोले है – जगन्नाथ ! लो ये कुछ रुपये है इन्हे लेकर इस राज्य की सीमा से पृथक नेपाल जाकर अपने प्राणो की रक्षा करो किसी को भी अपन इस जघन्य कर्म का पता न हान दना। इस प्रकार इस अहिंसाव्रती ने अपने घातक का भी जीवन देकर विश्व के इतिहास म अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

भयकर विष के प्रभाव से स्वामी जी महाराज का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगडन लगा। परन्तु दुख व आश्चर्य तो डा० अलीमर्दान खा पर होता है कि जिनकी चिकित्सा निरन्तर विष का काय कर रही थी इस रहस्य को परमपिता परमात्मा ही भली भाति जानते है। स्वामी जी जाधपुर से आबू पहुचे। वहा भी चिकित्सा अनुकूल न दख भक्तो के आग्रह पर अजमेर प्रस्थान करत है परन्तु विष का प्रभाव सार शरीर मे व्याप्त हो गया था फलत रोग ने उग्ररूप धारण कर लिया। अन्तदाह व शरीर पर छाले बढते ही गए। इस विकट विपत मे भी स्वामी जी धैर्यपूर्वक भक्तो की खिन्नता दूर कर रहे थे दीपावली स दो दिन पूर्व लाहार से प० गुरुदत्त विद्यार्थी व जीवनदास जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ अजमेर पहुच गए।

अन्तिम दृश्य का आश्चर्यजनक समय दीपावली का दिवस भी आ पहुचा। स्वामी जी के तन का यद्यपि विषजन्य भयकर व्याधि ने सत्वहीन कर दिया था तथापि व प्रसन्नचित्त थ ओर अपने पवित्र प्रेम के सुपात्र भक्तो को कर्त्तव्य कर्म का पालन करन व आनन्दपूवक रहन के लिए उपदेश करते रहे। ऐसी दशा मे ही शाम के साढे पाच बजे गए। स्वामी जी देवेच्छा का भलीभाति समझ चुके थे। इसलिए परमात्मा की व्यवस्था का सानन्द स्वीकार करके उसम अपनी भी सहमति का साझा करते हुए महाप्रयाण के लिए सन्नद्ध होकर भवन के सभी द्वार व वातायन खुलवा दिए और समागत भक्तो को अपनी पीठ के पीछे खडा कर दिया। फिर पूछा कि आज कौन सा पक्ष तिथि व वार है ? भक्त मोहनलाल ने कहा कि भगवन ! आज कार्तिक मास की अमावस्या व मगलवार है। यह सुनकर अपनी दिव्य दृष्टि से भवन के चहु आर दृष्टिपात किया और गम्भीर ध्वनि से वदपाठ प्रारम्भ हो गया। मानो दयानन्द के आत्मा व परमात्मा की अन्तरग परिषद प्रारम्भ हो गयी ऋषिभक्त गुरुदत्त उस कमरे के एक कान म भित्ति के साथ लगे हुए निर्निमिष नत्रो से दो सखाआ (ऋषि दयानन्द व परमात्मा) के अनिर्वचनीय मिलन का अवलोकन कर रहे थे। उन्हाने देखा कि प्रभुमग्न दयानन्द न वेदगान के अनन्तर परमप्रीति से पुलकित हाकर सस्कृत शब्दो मे परमात्म दव का गुणगान किया। तत्पश्चात हिन्दी म स्तुति करते आनन्द मग्न होकर गायत्री मन्त्र का पाठ करते करते शान्त समाधिस्थ हो गए। कुछ काल पश्चात समाधि की उच्चतम भूमि स उतरकर परमप्रिय पिता से आह्लादक वार्तालाप मे निमग्न होकर अतीव मैत्रीभाव से कहत है ह दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर ! तरी यही इच्छा है तेरी यही इच्छा है तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा !!! तूने अच्छी लीला की। इतना कहकर करवट ली और एक बार श्वास को रोककर पुन सदा क लिए बाहर निकाल मोक्षानन्द का प्राप्त हो गए।

कार्तिकी अमावास्या सम्वत १६४० को वह साय छ बजे का समय भी कैसा निर्मम था कि जिसन विश्व की महान विभूति आयजनो के प्राणभूत महर्षि का सर्वदा के लिए छीन लिया। आ !!! इधर सरस्वती का अक्षीण कोष विलुप्त हो गया सुधारक समाज का अवलम्ब निरवलम्ब हो गया श्रुतिपथ का उदधारक अस्त हा गया वैदिक सुधारक व रुढियो का निवारक सदवैद्य गुप्त हो गया तो उधर ऋषिवर अपने अनिवचनीय इश मिलन स नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिकता का पवित्र जीवन दे गए गुरुदत्त ने एक इश्वरभक्त योगी को मृत्यु पर विजय करत दखा और परमेश्वर की व्यवस्था म उस यागी द्वारा अपनी सहमति का साझा करत देखा ता वे साचने लग कि इतनी असह्य वदना व अन्तर्दाह के हात हुए अतिशय आनन्द मे निमग्न हाकर दयानन्द का आत्मा जिससे प्रेमालाप करते हुए उसकी इच्छा व लीला का प्रत्यक्ष कर रहा था और दिव्य शक्ति दयानन्द का आह्वान कर रही थी उस ईश्वर का अस्तित्व अवश्य है

इस दयानन्द निर्वाण रूप सुन्दरतम दैवी दृश्य स नास्तिकता के समस्त तर्क विलुप्त हो गए। गुरुदत्त आस्तिक शिर मणि बनकर सच्चा जीवन पा गए और समस्त जग क अहिसा व आस्तिकता आदि पावन गुणो का प्रेरक अध्याय मिल गया।

आदर्शनगर नजीबाबाद उ०प्र

नागपुर में वर्ण व्यवस्था बनाम जाति व्यवस्था पर

ऐतिहासिक राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

डा० अम्बेडकर ने जिस शहर मे बौद्ध मत का स्वीकार किया था उसी शहर मे वेद प्रचारिणी सभा नागपुर द्वारा आयोजित दो दिवसीय सगोष्ठी १४ व १५ सितम्बर २००२ को नागपुर के आईएमए० सभागृह मे सम्पन्न हुइ। शास्त्रार्थो का युग समाप्त होने के बाद सम्भवत यह पहली बार था कि किसी बहुत ही सवेदनशील मुददे पर विचार करने के लिए परस्पर विरोधी विचार रखने वाले विद्वान एक ही मच पर उपस्थित हुए हो। सगोष्ठी मे वर्ण व्यवस्था बनाम जाति व्यवस्था विषय पर गम्भीर व गहन चर्चा हुइ आमन्त्रित विद्वान देश के बहुत ही नामी विद्वान है और अपने अपने क्षेत्र मे विशषज्ञ का स्थान रखते है वे थे मनुस्मृति के आधुनिक भाष्यकार डा० सुरेन्द्र कुमार झज्जर से परोपकारिणी सभा के सचिव प्रो० धर्मवीर जी अजमेर से आर्ष साहित्य ट्रस्ट व मनु सघर्ष समिति के प्रमुख आचार्य धर्मपाल जी नई दिल्ली से एटा गुरुकुल के आचार्य डा० वागीश शर्मा डा० अम्बेडकर और आर्यसमाज पर खोजपूर्ण पुस्तको के लेखक डा० कुशलदेव जी शास्त्री नादेड से डा० ज्वलत कुमार शास्त्री अमेठी से आम्बेडकर पीठ नागपुर वि०वि० के अध्यक्ष डा० भाऊ लोखडे प्रो० कुमुद पावडे श्रीमती नलिनी सोमकुवर कार्यक्रम के अध्यक्ष थे नागपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० हरिभाऊ केदार तथा मुख्य अतिथि थे भूतपूर्व आयकर आयुक्त सुभाषचन्द जो नागपाल पुणे से। विषय के प्रति लोगो की इतनी रुचि थी कि दोनो दिन सभाग्रह खचा–खच भरा रहा। प्रात दस बजे से साय छ बजे तक लोग लगातार बैठे रहे श्रोताओ के भोजन की भी व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर ही की गयी थी। कार्यक्रम अत्यन्त सौहार्द पूर्ण वातावरण मे हुआ। वक्ताओं और श्रोताओ ने अत्यन्त शालीनता से वैचारिक विरोध को भी सराहा।

जो मुददे बहुत प्रखरता से सगोष्ठी मे उभर कर सामने आए वे थे डा० ज्वलत कुमार शास्त्री द्वारा कहा गया कि मनुस्मृति मे जिन श्लोको पर आपत्ति की जाती है उनमे से अधिकाश ज्यो के त्यो रामायण और महाभारत मे भी हैं पर उनपर कोई नहीं चिल्लाता केवल मनुस्मृति को ही निशाना बनाया जा रहा है। वेद को छोड कर अन्य सभी ग्रन्थो मे लगातार प्रक्षेप हो रहे हैं और हिन्दू समाज प्रक्षेपो को बहुत ही लापरवाही से मूल ग्रन्थ जैसा ही सम्मान दे रहा है डॉ० सुरेन्द्र कुमार ने स्थापित किया कि जाति व्यवस्था मनुस्मृति मे नहीं है। मनुस्मृति मे प्रक्षेपो की भरमार है जिनकी पहचान सात बाते देखकर की जाती हैं १ परस्पर विरोध २ प्रसग विरोध ३ प्रकरण विरोध ४ शैली विरोध ५ अवान्तर विरोध ६ पुनरुक्ति दोष ७ वेद विरोध ८ मनुस्मृति मे २६८६ श्लोक है जिसमे से १२१४ शुद्ध सिद्ध होते है पुरानी टीकाओ को देखकर भी प्रक्षेप सिद्ध होता है डा० कुशलदेव शास्त्री ने डा० अम्बेडकर और अम्बेडकरी विचारधारा का विश्लेषण किया और डा० अम्बेडकर पर आर्यसमाज का प्रभाव बताया। डा० वागीश शर्मा ने सभी के लिए समान शिक्षा और उन्नति के अवसरो और बिना भेदभाव के किसी भी व्यवसाय के अपनाने और फिर हर क्षेत्र के लाभ और हानि को बिना चीख पुकार के अपनाने पर जोर दिया उन्होने वर्णो को सम्मान सत्ता सम्पन्नता और निश्चिन्तता का देने वाला बताया जो व्यक्ति जिस बात को पाने चलेगा वो उसके अलावा दूसरी बात नही पा सकता। डा० भाऊ लोखण्डे ने हिन्दू समाज को सविधान मे सशोधनो के लिए लताडते हुए कहा कि हिन्दुओ को चाहिए कि पहले अपने धर्म ग्रन्थो मे जो प्रक्षेप घुस गया है उसे निकाल कर बाहर करे प्रक्षिप्त को गलत घोषित करे प्रक्षेपो के कारण जो हानि हुई है उसकी भरपाई करने तथा समाज व्यवस्था पुन शुद्ध करने की दिशा मे कदम उठा कर अपनी ईमानदारी बताए अन्य किसी भी बात से समाज मे हो रहे विघटन को रोका नही जा सकता है। प्रो० धर्मवीरजीने कहा कि हर मुददे पर सकीर्ण विचार से केवल स्वत अपने परिवार और जाति तक विचार करना बन्द कर राष्ट्रीय हितो के बारे मे भी सोचना चाहिए जो भी बात राष्ट्र के विरोध मे जाती है उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। धर्मपाल जी ने मनु का विरोध न करने का अनुरोध करते हुए मनु द्वारा स्त्री तथा शूद्रो के लिए किए गए श्रेष्ठ विधान को बताया साथ ही मनु सघष समिति द्वारा जयपुर हाईकोर्ट मे स्थापित मनु प्रतिमा को यथास्थान रहने देने के लिए किए गए प्रयासो की चर्चा की।

समाज के विभिन्न वर्गो मे बढते द्वेष तथा अलगाव को मिटाने के उद्देश्य से आयोजित यह सगोष्ठी अन्यो के लिए स्रोत बने ओर इस प्रकार के कार्य देश भर मे आयोजित हो यही वेद प्रचारिणी सभा नागपुर के सचिव श्री उमेश राठी का विचार था। एक दूसरे के दोषो को ढूढकर परस्पर सम्बन्ध खराब करने से हमारे पास केवल दोषो का ही कबाड जमा होता है आवश्यकता है कि व्यक्तिगत और सामाजिक तौर पर दूसरो के गुणो को देखकर स्वय सुधरने का प्रयास करे तभी हम गुणो के स्वामी बनेगे और दूसरो से प्रेम बढेगा ऐसा विचार वेद प्रचारिणी सभा नागपुर के अध्यक्ष श्री नारायण राव आर्य ने रखा।

प्रो० धर्मवीर जी ने कार्यक्रम का सचालन बहुत ही चुस्त और परिस्थिति के अनुकूल किया। बिगडती हुई स्थिति को भटकते हुए विषय को पुन रास्ते पर लाना जख्मो पर मरहम लगाना श्रेष्ठ विचारो की प्रशसा हीन विचारो की भर्त्सना सभी कार्य वे साथ साथ करते नजर आए।

कार्यक्रम की ओडियो और वीडियो रिकोर्डिग भी की गई है साथ ही साथ एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया है जो भी व्यक्ति अथवा आर्यसमाज इन्हे प्राप्त करना चाहे उन्हे ये लागत मूल्य पर उपलब्ध करवाए जाएगे। (**७ औडियो कैसेट (नब्बे मिनट) २५०/ रुपये ४ वीडियो कैसेट १०००/ रुपये व स्मारिका ५० रुपये डाक व्यय अलग से**) वे कृपया सम्पर्क करे –

श्री उमेश राठी ३०२
अमर ज्योति पैलेस लोकमत चौक
वर्धा रोड नागपुर ४४००१२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

संकल्प–आयुर्वेद स्वस्थ्यवृत

वर्तमान समय मे अनिद्रा सर्वव्यापक रोग बनता जा रहा है। स्लीपिंग ड्रग्स लेना स्टेटस सिबल बन चुका है। ऐसे अज्ञानी मनुष्य निद्रा पर अप्राकृतिक विजय प्राप्त कर प्रमेह अवसाद स्नायु–दौर्बल्यता का शिकार हो रहे हैं। क्या ऐसे मे आत्मबल और प्राकृतिक उपायो से निद्रा प्राप्ति नहीं हो सकती ? निद्रा सात्विक मन और परिश्रम के अधीन है। सोने से पूर्व धर्मानुकूल ईश्वर उपासना अवश्य करनी चाहिए। जिससे निद्राशात भाव से आ सके साथ ही बुरे स्वप्नो से भी बचा जा सके।

ब्रह्मचर्य अर्थात सयम। ब्रह्मचर्य दो शब्दो का योग है। ब्रह्म अर्थात ईश्वर वीर्य सत्य आत्मा। चर्य चिन्तन मनन का घोतक है। ब्रह्मचर्य ही मनुष्य को मनुर्भव मनुष्य बनो की प्रेरणा देता है। जीवन पद्धति सस्कार और नैतिक मूल्यो का पथ दर्शाता है। मनुष्य मन वाणी शरीर के अधीन है। जीवन यात्रा के चारो आश्रम ब्रह्मचर्य के अधीन है। अत मनुष्य को जीवन मे सत्वगुण प्रधान कर्म अर्थात् अध्ययन तप ज्ञान इन्द्रियो का निग्रह धर्म क्रिया और आत्मा का मनन करने मे उददत रहना चाहिए। आरम्भ मे रुचि होना फिर अधैर्य निषिद्ध कर्मो मे लिप्त होना और विषय भोग मे लीन ये रजोगुण प्रधान कर्म है। लोभ नीद अधीरता क्रूरता नास्तिकता अनाचारीपना प्रमाद – ये तमोगुण कर्म है। मनुष्य को रजो और तमो गुण युक्त कर्मो से सदैव दूर रहना चाहिए। यजुर्वेद का कहना है – **तदेव शुक तद्ब्रह्म ता आप स प्रजापति** अर्थात वीर्य ईश्वर जीवन एक है यही सृष्टि कर्ता है। यही सत्व कर्मो का प्रधान है। शरीर का प्रत्येक अग नियमानुसार कार्य करने के लिए है। अगो का उचित उपयोग अतियोग अथवा दुरुपयोग शरीर की प्राकृतिक व्यवस्था के प्रतिकूल है। न आवश्यकता से अधिक योग अच्छा है न अधिक भोग न बहुत परिश्रम उचित है न ही निकम्मापन। मनु का स्पष्ट कथन है कि – **आलस्या दन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रान्जिघासति** अर्थात आलस्य और अन्न दोष से मनुष्य अतिशीघ्र मृत्यु का ग्रास बन जाता है। जरा व्याधि मृत्यु वीर्य के अधीन है। वीर्य शरीर का सार पदार्थ जीवनी शक्ति का स्रोत जीवन की उत्पत्ति का हेतु और बल तेज का आधार है। वीर्य क्षीणता से मनुष्य कृश्य निर्बल निस्तेज उत्साहहीन चित्त भ्रमित आत्महीन हो आयु क्षीणता को प्राप्त होता है।

आज मनुष्य शत्रुता के व्यामोह मे आबद्ध है। विध्वस का महाताण्डव सम्पूर्ण विश्व मे प्रदर्शित हो रहा है। सामजस्य सन्तोष सहिष्णुता हतप्रद बने हुए है। मायावी शक्तिया उद्योग मे समाहित हो चुकी है। जनसख्या वृद्धि कैसर एडस मधुमेह नवीन रोग एथ्रेक्स अपनी जडे विकसित कर चुके हैं। क्या इन सब समस्याओ का निराकरण 'सयम' मे नही है ?

आज विश्व गुरु भारत के प्रत्येक चिकित्सक का चाहे वो किसी भी चिकित्सा प्रणाली का हो। सकल्प रोगी को रोग मुक्त और समाज मे दुखो की रोकथाम का ही है। आईए पुन दृढ सकल्प करे कि प्रत्येक मानव शिव सकल्पयुक्त बने। यही सत्य वसुधैव कुटुम्बकम का भाव है। ***

उपरोक्त लेख के लेखक अपने स्व० पिता वैद्य श्री मुनिदेव उपाध्याय की स्मृति मे समस्त आर्यजनों को नि शुल्क आयुर्वेद चिकित्सा परामर्श प्रतिदिन देते है। बाहर के रोगी जवाबी पत्र द्वारा सेवा का लाभ उठाए।

– वैद्य अखिलेश उपाध्याय
३ गणेश विहार, भाकरोटा
जयपुर, पिन ३०३०११

दिल्ली

गुरु विरजानन्द दण्डी जन्मदिवस उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के तत्वावधान मे गुरुवर विरजानन्द जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य मे आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे विराट यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ।

समाज प्रधान डॉ० पुष्पलता जी ने ब्रह्मा श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं आचार्य विश्वमित्र मेघावी जी का पुष्पमाला से स्वागत किया।

इस अवसर पर आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने श्रद्धालुओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी विरजानन्द जी संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान भारतीय नवजागरण के पुरोधा आर्षग्रन्था के प्रतिष्ठापक तथा स्वामी दयानन्द जी के विद्या गुरु थे। श्री मेघावी जी ने गुरुविरजानन्द जी के समस्त पहलुओ पर प्रकाश डाला तथा गुरु शिष्य धर्म पर लोगो को प्रेरणादायक जानकारी दी। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से समस्त श्रोताओ को गुरुविरजानन्द जी से सम्बन्धित एक पुस्तक भेंट की गई। विराट जनसमूह ने स्वामी विरजानन्द जी का जन्मोत्सव मनाया।

समाज प्रधान डा० पुष्पलता मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार चौधरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त मे जलपान एवं वैदिक साहित्य का वितरण किया गया।

— डॉ० पुष्पलता प्रधान आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी

आर्यसमाज किरण गार्डन में वार्षिकोत्सव एव मानव सुधार सम्मेलन का भव्य आयोजन

आर्यसमाज किरण गार्डन का वार्षिकोत्सव दिनाक २०-१० २००२ को मानव सुधार सम्मेलन के रूप मे पैराडाइज पब्लिक स्कूल नजफगढ रोड किरण गार्डन मे प्रात ८ बजे से १२ ३० तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री हीरा लाल चावला ने की। मुख्य अतिथि के रूप मे श्री मुंशी राम सेठी तथा स्वागताध्यक्ष श्री राजतिलक नेय्यर थे। इस अवसर पर श्री हरफूल सिंह जी निगम पार्षद सारस्वत मोहन मनीषी श्री जगदीश आर्य श्रीमती सावित्री चावला सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचारो से श्रोताओ का मार्ग दर्शन किया। श्री नरेन्द्र आर्य के भजनो ने समा बाध दिया। इस अवसर पर लगभग ६०० व्यक्ति उपस्थित थे।

इसके पूर्व प्रात काल श्री खुशीराम आर्य के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुए विशेष यज्ञ मे बडी श्रद्धा और भक्ति से सैकडो लोगो ने आहुतियां अर्पित की। आयनता श्री अशोक कुमार सम्पादक करुणा सागर के अथक प्रयासो से उक्त समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हो सका।

— अशोक कुमार मन्त्री

राजस्थान

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा सघन वेद प्रचार

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा चित्तौड जिले के ग्रामो मे वेद प्रचार वाहन के माध्यम से श्री रघुनाथ देव वैदिक भूषण के नेतृत्व मे प्रथम बार वेदो का सन्देश पहुचाया गया। न्यास के ही श्री गंगाधर आर्य एव श्री नारायण कुमार ने श्री भूषण का सहयोग किया। १ सितम्बर से १७ अक्तूबर के एक माह की अवधि मे चित्तौड जिले के डिण्डाली हरनाथपुरा राशमी आरणी पहुना नवरिया मरमी मुराली चटावरी भैंसगढ सद बाबलास बूढ गगरार सानियाना कुरानिया वामनिया लागच हिंगारिया खेड़ा और भटटा के वामानिया गावो मे ऋषि दयानन्द का सन्देश पहुचाया गया। इन गावो के राजकीय विद्यालयो के छात्र–छात्राओ व अध्यापक–अध्यापिकाओ तथा सार्वजनिक स्थानो पर ग्रामीण वासियो को ईश भजन व वेद प्रवचन द्वारा वैदिक संस्कृति का पावन प्रसाद वितरित किया। कुछ स्थानो पर प्रात यज्ञ भी आयोजित हुए तथा रात्रि मे महर्षि दयानन्द की जीवनी पर चलचित्र प्रदर्शित किया गया। इस अवधि मे वेद प्रचार वाहन से ११९००/ रुपये का वैदिक साहित्य का विक्रय हुआ। १११ व्यक्तियो ने वेद प्रचार मण्डल की सदस्यता ग्रहण की। इन सदस्यो को निःशुल्क वैदिक साहित्य प्रदान किया गया।

पुस्तक समीक्षा — राम गाथा (चार भागों मे)

लेखक डॉ० ओम जोशी
प्रकाशक आध्यात्मिक शोध संस्थान ई० ३०६ ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली ६५

श्रीराम लोकनायक है प्रस्तुत ग्रन्थ मे रचनाकार ने अपनी चेतना की वर्तिका से मानव मन की आस्था के इसी बिन्दु को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया है। सम्पूर्ण काव्य मे कवि के मौलिक चिन्तन की छाप है। वह आदर्शो का समर्थक है उसने अतिवादी चरित्र के सन्दर्भ मे जीवन दृष्टि को स्पष्ट किया है।

रामगाथा मे त्याग है तप है अदम्य वीरता है मर्यादा है तथा जीवन कर्म की विविध रहस्यमयी अभिव्यक्तिया भी है। भारत की हर भाषा मे राम का चरित्र चित्रण किया है रामगाथा – लोकगीतो मे पहली बार सत्ताइस हजार पाच सो से भी अधिक दोहा के रूप मे प्रकाशित की है। यह दोहामय रामगाथा महाकाव्य महिमामयी काव्य प्रेरणा से अपने एक श्रेष्ठ महाकृति है। इस महाकाव्य मे वाल्मीकि की रामायण है कालीदास का रचना साहित्य है तथा गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति शक्ति की अभिव्यक्ति युगबोध व रस है। भारत की हर भाषा मे राम के गुणानुवाद मिलता है। रामगाथा लोकगीतो व लोक कथाओ मे भी उपलब्ध है। यही वह गाथा है जिसने अनेक निरक्षर असंस्कारित हृदयो को भी निरन्तर आनन्दित किया है। यह प्रतिमान महाकाव्य है जो कला भाव शिल्प से सहज सम्प्रेषणीय है।

प्रथम खण्ड मे बालकाण्ड द्वितीय मे अयोध्या काण्ड फिर तृतीय है अरण्य काण्ड। **द्वितीय खड मे** किष्किन्धा काण्ड और सुन्दरकाण्ड। **तृतीय खण्ड मे** युद्ध काण्ड तथा रामगाथा है। **चतुर्थ खण्ड मे** उत्तर काण्ड रचा है।

रामकाव्य का विलक्षण अक्षर अक्षर रत्न।
इसको पाने के लिए प्रतिदिन करें प्रयत्न।
राम काव्य यह पढ मनुज पा दैविक आभास।
भागजगत ऐश्वर्य सब जाता राघव पास।

बाल्मीकि का संस्कृत मे रामचरित तथा तुलसीदास के महाकाव्य की भांति डॉ० ओम जोशी की काव्य रचना अपने मे अप्रतिम है। विशाल चार खण्डो मे रचित इस ग्रन्थ को आध्यात्मिक शोध संस्थान ईस्ट आफ कैलाश ने प्रकाशित कर लेखक का उत्साह वर्धन किया है। लेखक व प्रकाशक रामगाथा के प्रचार प्रसार मे बधाई के पात्र है। *— डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री*

आर्यसमाज निर्माण विहार, दिल्ली का १६ वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली का १६ वा वार्षिक उत्सव सोमवार दिनाक १८ नवम्बर २००२ से २४ नवम्बर २००२ तक उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ७ ०० बजे से ६ ३० बजे तक प्रतिदिन यज्ञ तथा उपदेश ओर रात्रि ७ ३० बजे से ६ ३० बजे तक भजन एव वेद कथा पूज्यवाद स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा एव भजन आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश वर्मा द्वारा होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति २४ नवम्बर रविवार को प्रात होगी। इसके पश्चात आर्य सम्मेलन ११०० से १०० तक होगा जिसकी अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा करेगे तथा मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान केप्टन देवरत्न जी तथा विशिष्ट अतिथि सवश्री विमल वधावन जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा तथा श्री वेदव्रत शर्मा जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव मन्त्री सार्वदेशिक सभा भी सम्मिलित होगे। श्री नसीब सिह जी विधायक तथा श्री रमेश पण्डित भी मुख्य वक्ता के रूप मे आमन्त्रित है।

सभी आर्य जनता से अनुरोध है कि वे सम्पूर्ण कार्यक्रम मे भाग लेकर धर्मलाभ उठाए तथा आर्य समाज निर्माण विहार के कार्यकर्त्ताओ का उत्साह बढाए।

— रवि बहल मन्त्री

उ०प्र०

यज्ञ, वैदिक प्रवचन एवम् रामायण कथा

वेद मन्दिर आर्य नगर बिजना की नगलिया के तत्वावधान मे पहलवान चौधरी सोहन पाल सिह आर्यवीर की स्मृति मे दिनाक २१ नवम्बर से २४ नवम्बर २००२ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेद प्रचार का भव्य आयोजन किया गया है।

— कार्यक्रम —

प्रतिदिन प्रात ६ ३० बजे से १० बजे तक यज्ञ भजन प्रवचन एवम साय ६ ३० बजे से रात्रि १० बजे तक भजन वैदिक प्रवचन व रामायण कथा।

दिनाक २२ नवम्बर २००२ ई० को सर्वापयोगी इण्टर कालेज पलसेडा (अलीगढ) मे प्रात १० बजे से १ बजे तक भजन व वेद प्रचार।

दिनाक २३ नवम्बर २००२ ई० को रौयल पब्लिक स्कूल उसरह मार्ग जटटारी (अलीगढ) मे प्रात १० बजे से १ बजे तक भजन व वेद प्रचार।

आमन्त्रित विद्वान १ पडित शोभाराम प्रेमी २ पडित बेगराज आर्य ३ आचार्य पडित ओम दत्त शर्मा ४ पडिता राजबाला आर्या ५ पडित मोहनलाल आर्य वीर ६ श्री रामजीत सिह व ब्रह्मचारी राकेश आर्य द्वारा व्यायाम प्रदर्शन।

मान्य धर्म अभिलाषी सज्जनो ! आप सभी इस पवित्र यज्ञ एवम कथा मे सम्मिलित होकर पुण्य के भागी बने और धर्मलाभ प्राप्त करे। अत अधिक से अधिक सख्या मे बन्धु–बाधवो व इष्ट मित्रो के साथ आकर उत्सव की शोभा बढाव।

भवदीय

स्वामी सुरेन्द्रानन्द सरस्वती एव समस्त ग्रामीण जन

ग्रे. दा रजिस्ट्रार न. डी.एल. 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 17 11-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 14/15-11-2002

उत्तरांचल

कर्मवीर जयानन्द भारतीय का जयन्ती समारोह सम्पन्न

आंचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के तत्वावधान में बृहस्पतिवार दिनाक १७ अक्तूबर २००२ को प्रात ८ ३० बजे से १ बजे तक गढवाल के जाज्वल्यमान नक्षत्र वैदिक ६ र्मावलम्बी स्वतन्त्रता सेनानी महान क्रान्तिकारी देशभक्त समाज सुधारक कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२१वी जयन्ती श्री मोहनलाल जिज्ञासु के निवास स्थान यमुना विहार दिल्ली मे मनाई गयी। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमे श्री जिज्ञासु यज्ञमान बने। यज्ञपरान्त एक लघु समारोह का आयोजन किया गया जिसम सवश्री जिज्ञासु समाज प्रधान धर्मसिह शास्त्री अमरदत्त आर्य एव हीरासिह वक्ता थे। वक्ताओ न कहा कि जिस प्रकार स्व० भारतीय ने गढवाल मे सामाजिक कुरीतियो धार्मिक आडम्बरो एव अन्धविश्वासो जैसी विषमताओ का सामना किया तथा आर्यसमाज के सार्वभौमिक आन्दोलन को आगे बढाया वह सदैव प्रेरणादायक एव चिरस्मरणीय रहेगा।

इसके उपरान्त साय ४ ३० बजे उत्तराखण्ड दिवगत विभूति विचार मच के तत्वाधान मे कर्मवीर जयानन्द भारतीय की जयन्ती समारोहपूर्ण गढवाल भवन पचकुइया रोड नई दिल्ली मे मनाई गइ जिसकी अध्यक्षता श्री कुलानन्द भारतीय ने की। श्री हरीश रावत अध्यक्ष उत्तराचल काग्रेस समारोह के मुख्य अतिथि थे। आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के कार्यकर्त्ताओ एव सभासदो न इसमे भाग लेकर मच का साथ दिया। श्री धर्मसिह शास्त्री समाज प्रधान ने समारोह मे जयानन्द गौरव गान कविता पढकर सुनायी एव स्व० भारतीय जी की सघर्षमय एव एक प्रखर वदिक क्रान्तिवीर क रूप मे उनके अनेकानेक सामाजिक धार्मिक राजनेतिक कार्यो का वर्णन किया।

– हीरासिह समाज मन्त्री
आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली

हरियाणा

आर्यसमाज बीगोपुर का तेरहवां वार्षिकोत्सव

आर्यसामज बीगोपुर ने अपना तेरहवा वार्षिकोत्सव दिनाक १६ व २० अक्तूबर २००२ (शानिवार रविवार) को बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया। आमन्त्रित विद्वानो न समाज मे फेली कुप्रथाओ युवा पीढी का मार्गदर्शन तथा नारी उत्थान पर विशेष जोर दिया।

इस अवसर पर राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर (उप कार्यालय–बीगोपुर) द्वारा विभिन्न सस्थाओ को दान वितरित किया गया। जिनमे दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय गपुर १३०० रुपये आयसमाज धोलेडा ५१००० रुपये दयानन्द सेवाश्रम आय्रसमाज बीगोपुर – ३५००० रुपये आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर २५००० रुपये वैदिक आश्रम पिपराली १०००० रुपये पातान्जल योग आश्रम भऊ अकबरपुर २१००० रुपये डा० भवानीलाल भारतीय जोधपुर ५००० रुपये अखिल भारतीय दयाननद सेवाश्रम झाबुआ (म०प्र०) ५१०० रुपये 'ग्राम सेवा समिति बीगोपरु १००० रुपये तथा प्रतिभाशाली छात्रो को छात्रवृति प्रदान की गई।

फूल सिह आर्य

उड़ीसा

तीन समाजसेवी आर्य सन्यासियों का सम्मान

परममित्र मानव निर्माण न्यास के अध्यक्ष एव गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रधान चौ० मित्रसैन जी आर्य के पूज्य पिता स्व० चौ० शीशराम की पुण्य स्मृति मे गुरुकुल आश्रम आमसना के वार्षिक महोत्सव पर प्रतिवर्ष कुछ पुरस्कार नैष्ठिक ब्रह्मचारियो वानप्रस्थियो सन्यासियो को दने की योजना चल रही है। इस वर्ष इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निःस्वार्थ और त्यागपूर्वक समाज सेवा मे समर्पित होकर लगे तीन आर्य वानप्रस्थी एव सन्यासियो के सम्मान करने की योजना है। सम्मान पाने वाले की आयु ५० वर्ष से अधिक हो वह चाहे सारे देश मे प्रसिद्ध न हो परन्तु अपने क्षेत्र मे एकनिष्ठ भाव से कार्य कर रहा हो। अत जिन आर्यजनो की दृष्टि म ऐसे कर्मठ त्यागी तपस्वी सन्यासी या वानप्रस्थी हैं उनका विवरण शीघ्र आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के पते पर भिजवाने का कष्ट करे। नाम भेजने की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर तक है। इसके पीछे प्राप्त नामो पर कोई विचार नही हो सकेगा। प्राप्त नामो पर निश्चय और निर्णय करने का अधिकार गुरुकुल आश्रम आमसेना न्यास को होगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक सन्यासी को पन्द्रह हजार रुपये नगद शाल श्रीफल और अभिनन्दन पत्र प्रदान किया जाएगा।

– धर्मवीर सरस्वती
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड नवापारा उडीसा ७६६१०६१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

प्रथम कालम – प्रथम विचार, सदा सत्य रहने वाली वाणी

वेद वाणी

**यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्र करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिर ।। ऋ० १/१/६**

पदार्थान्वय – हे (अङ्गिर) ब्रह्माण्ड के अग पृथ्वी आदि पदार्थो को प्राणरूप और शरीर के अगो को अन्तर्यामी रूप से रसरूप होकर रक्षा करने वाले होने से यहा अङ्गिर शब्द से ईश्वर लिया है। (अङ्ग) हे सब के मित्र (अग्ने) परमेश्वर। (यत्) जिस हेतु से आप (दाशुषे) निर्लोभता से उत्तम उत्तम पदार्थों के दान करने वाले मनुष्य के लिए (भद्रम्) कल्याण, जोकि शिष्ट विद्वानो के योग्य है उसको (करिष्यसि) करते हैं सो यह (तवेत्) आपही का (सत्यम्) सत्य व्रत = शील है।

वर्ष ४१ अक २६ २४ नवम्बर से ३० नवम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ मा०शी०कृ०४

एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे

धर्म रक्षा महाभियान समिति गठित करने की स्वीकृति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की टाण्डा (उ०प्र०) मे आयोजित अन्तरग बैठक मे कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। जिनमे सर्वप्रमुख हैं धर्म रक्षा महाभियान" के लिए एक विशेष कार्यकारिणी समिति के गठन की घोषणा।

उल्लेखनीय है कि देश के विभिन्न भागो मे धर्मान्तरण के नाम पर ईसाइयो और मुसलमानो के प्रयास जोर शोर से चल रहे हैं।

समूचा आर्य जगत धर्मान्तरण की इन गतिविधियो के विरुद्ध समय समय पर अपनी आवाज उठाता रहा है। तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता ने धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने वाले कानून को बनाकर समूचे आर्य जगत से प्रशसा प्राप्त की है।

अन्तरग सभा ने कै० देवरत्न आर्य को इस धर्म रक्षा महाभियान समिति के गठन के लिए अधिकृत किया है।

इस अंक में ....

अग्निवेश के घृणित और वैदिक धर्म विरोधी कार्यो से आर्यजनता सावधान रहे

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी ने कहा कि यह खेद का विषय है कि जहा समूची राष्ट्रवादी जनता धर्मान्तरण की गतिविधियो को राष्ट्रद्रोह मानती है वही अग्निवेश जैसे कुछ व्यक्ति स्वय को आर्यसमाजी कहते हुए धर्मान्तरण का समर्थन करते है। इतना ही नही चतुर राजनीतिज्ञो की तरह वे मुसलमानो और ईसाइयो के निराधार तुष्टीकरण मे लगे रहते हैं।

विशिष्ट रूप से आमन्त्रित वैदिक विद्वान डॉ० भवानीलाल भारतीय ने हिन्दुओ के सम्बन्ध मे अग्निवेश द्वारा अखबारो मे दिया गया एक वक्तव्य सदन को पढकर सुनाया।

वैदिक विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय ने कहा कि सर्वप्रथम जोर शोर से इस बात को स्पष्ट किया जाना चाहिए कि अग्निवेश आर्यसमाज का प्रवक्ता नही है ओर न ही आयसमाज ने नरेन्द मोदी और बाल ठाकर तथा अन्य हिन्दू नेताओ की आतकवादी कानून म गिरफ्तारी की माग की ह

इस वक्तव्य मे अग्निवश जी द्वरा ११ अल्पसख्यका को आयसमाज का एशा सेए८ मेम्बर बन, जाने का भी विराध किया जाना चाहिए क्याकि आयसमाज की सदस्यता केवल उन्ही के लिए है जो आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे विश्वास करते है।

उन्होने कहा कि इस वक्तव्य से एसा भी प्रतीत होता है कि जैसे अग्निवेश जी ईद और क्रिसमस जैसे त्योहारो का भी आर्य पर्वो की तरह मनाने का आह्वान करना चाहते हे।

अन्तरग सभा ने सवसम्मति से यह प्रस्ताव प ,त किया है कि अग्निवश के इन घृणित एव वदिक धम विरोधी कार्यो क वे द्ध य पम्भव आयजनता का सावधान किया जाए तथा एक विशेष ट्रक्ट भी इस सम्बन्ध मे प्रकाशित किया जाना चाहिए।

✡

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश की तदर्थ समिति गठित

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश द्वारा लगातार की जा रही अनियमितताओ ओर असवैधानिक कार्यो के कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने वैदिक विद्वान प्रो० कविशासन रधुमन्ना के नेतृत्व मे कर्मठ आर्य नेताओ सहित एक तदर्थ समिति का गठन किया है जो आगामी छ माह मे आन्ध्र प्रदेश की समस्त आर्य समाजो से प्रतिनिधि फार्म मगवाकर विधिवत निर्वाचन सम्पन्न करवाएगी।

इस तदर्थ समिति मे आचार्य कविशासन रधुमन्ना जी को प्रधान डॉ० सन्ध्या वन्दनम लक्ष्मी देवी को उपप्रधान तथा श्री आर० रामचन्द्र आर्य को मन्त्री सहित कुल ११ सदस्य मनोनीत किए गए है।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक मे आन्ध्र प्रदेश सभा के कार्यकलापो पर विस्तृत चर्चा हुई जिसमे प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने अपने विगत हैदराबाद दौरे से प्राप्त जानकारी प्रस्तुत की। इस चर्चा के परिणामस्वरूप अन्तरग सभा द्वारा पारित प्रस्ताव मे सभा प्रधान जी को तदर्थ समिति के गठन की विधिवत घोषणा करने के लिए अधिकृत किया गया।

अग्निवेश के नाम खुला पत्र

श्री अग्निवेश जी

सप्रेम नमस्ते

यदि आप के साथ रहने वाले पादरी और मौलवी मानवता के रक्षक व आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश क १३वे व १४वे समुल्लास के अनुसार उन ग्रन्थो के विज्ञान विरुद्ध पाखण्ड जीवो की हत्या व्यभिचार तथा मानवता पर अत्याचार को छोडकर श्रेष्ठ मानव आर्य बन गए होते तो हम आपके अभियान को ठीक समझते। इतना नहीं तो कम से कम भारत सरकार के जज द्वारा घोषित दगे करवाने और भडकाने वाली २४ आयते ही छोडने की घोषणा करते। यदि नहीं तो आपका यह कार्य केवल एक पाखण्ड है।

– आर्य नरेश,
उद्‌गीथ साधना स्थली हिमाचल प्रदेश १७३१०१

सम्पादक

बच्चों में पत्रकारिता कैसे विकसित करें ?

आर्य शिक्षण सस्थाओ मे विद्याध्ययन करन वाले छात्र छात्राओ के मध्य पत्रकारिता की कला का विकास करने के उददेश्य स २१ सितम्बर को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन के प्रबन्धक श्री जगदीश आर्य तथा प्रधानाचार्या श्रीमती विभापुरी के साथ विचार विमर्श के बाद निर्धारित कार्यक्रम मे नौवी और दसवीं कक्षा के बच्चो को मार्गदर्शन देने के लिए मै स्वय आर्यसमाज मन्दिर के भवन मे सचालित इस विद्यालय मे गया।

पत्रकारिता कोई बहुत बडे प्रशिक्षण की माग नहीं करती। इस कार्य मे निपुणता प्राप्त करने के लिए मूलत देशप्रेम और समाज सेवा की भावना की आवश्यकता होती है। जब हमे किसी अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठानी होती है तो हम सम्बन्धित अधिकारियो या विभागो को पत्र लिखते हैं। बस यहीं से शुरूआत होती है पत्र के द्वारा कलाकार बनने की। हम उस पत्र मे एक कलाकार की तरह अत्याचार या अव्यवस्थाओ आदि का चित्र खींचकर अपने सुझाव रूपी शुभ कल्पनाओ का समावेश करते हैं। कालान्तर मे जब अखबारो का छपना प्रारम्भ हुआ तो पत्रकारिता एक निश्चित उद्देश्य बन ग्या।

बुराईयों को दूर करने और अच्छे कार्यो और कल्पनाओ की स्थापना पत्रकारिता का मूल उददेश्य था। परन्तु अब इसके साथ जीविका अर्जन भी जुड गया है।

हमारे विद्यालया के स्तर पर ही यदि बच्चा को इस कार्य के लिए अभ्यस्त कर दिया जाए और जिस तरह कक्षाओ मे विभिन्न विषयो पर प्रस्ताव लिखवाए जाते है उसी प्रकार समाज के विभिन्न विषयो पर बच्चो को कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया जाए तो स्वाभाविक है कि १० या २० प्रतिशत बच्चो मे स्वत ही आगे चलकर यह कला उन्हे इतना निपुण बना देगी कि वे एक योग्य पत्रकार से अपना जीवन प्रारम्भ करके समाज मे अपने कार्यो के द्वारा विशिष्ट स्थान बना ले।

इसके अतिरिक्त मैंने बच्चो से यह भी निवेदन किया कि वे अपने छोटे छोटे लेख अपने विचार और जहा उचित समझे उन व्यवस्थाओ की प्रशसा और जहा विरोध अपेक्षित हो वहा अपने सुझावो सहित विरोध लिखकर दैनिक समाचार पत्रो को सम्पादक के नाम से अवश्य भेजा करे। उत्साहवर्धन के लिए मैंने उन्हे सार्वदेशिक तथा अन्य आर्यसमाजी पत्र पत्रिकाओ मे अपने विचार भेजने के लिए आमन्त्रित भी किया।

मुझे प्रसन्नता हुई एके दिन डाक मे एक बहुत बडा पुलन्दा देखकर जिसमे लगभग २० छोटे छोटे हिन्दी तथा अग्रेजी लेख छात्र छात्राओ के चुनकर प्रधानाचार्य श्रीमती विभापुरी ने मेरे पास भेजे। लगभग २ माह के अल्प समय मे उन्होंने बच्चों को इस पहले प्रयास के लिए सफलता पूर्वक प्रेरित किया।

इस लेख के माध्यम से मैं समूचे विश्व के बालक बालिकाओ को इस कार्य के लिए आमन्त्रित करता हू कि वे जिस किसी विषय पर भी चाहे अपने विचार लिखकर हमारे पास भिजवा दे। अच्छा होगा कि यदि भेजने से पूर्व किसी आर्यसमाजी महानुभाव का पढवा ले क्योकि हम केवल उन्हीं लेखा को प्रकाशित करेगे जो निम्न मूल भावनाओ से सुसज्जित होगे।

१ जिनमे राष्ट्रभक्ति ईमानदारी और अच्छे चरित्र का समर्थन हो।
२ जिनमे परोपकार और वैदिक धर्म के सिद्धान्तो का समर्थन हो।
३ जो समाज मे अच्छी व्यवस्थाओ का प्रचार करने वाले हो।

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन के बच्चो द्वारा भेजे गए लेखो मे से कुछ लेख हम प्रकाशित करना प्रारम्भ कर रहे हैं। अग्रेजी मे भेजे गए लेखो को वैदिक लाईट मे प्रकाशित किया जाएगा।

परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे बच्चो के मन मे सामाजिक राष्ट्रीय और धार्मिक भावनाओ के बीज विकसित हो तथा वे समाज को एक सुन्दर वाटिका बनाने वाले साबित हों। — विमल वधावन

फैशन का अन्धा अनुकरण

— **पारुल गुप्ता,**
महर्षि दयानन्द पब्लिक विद्यालय

आज फैशन का युग है। फैशन की तडक भडक वाली आधुनिक वेशभूषा व साज सज्जा का आकर्षण युवक युवतियो के मन मे दूषित भावनाओ को जन्म देता है। फैशन ने लोगो को अन्धा अनुकरण करने के लिए पैर तो दिये हैं किन्तु सूझ बूझ के लिए आखे नहीं दी। फैशन का भूत स्कूल और कालेज के विद्यार्थियो पर अधिक चढता है क्योकि उनमे सूझ बूझ नहीं होती। अपने रूप सौन्दर्य को प्रकट करने के लिए युवक युवतिया फैशन की दौड मे होड लगाने के लिए तुल जाते हैं।

अनुकरण करने की प्रवृत्ति सिनेमा जगत के प्रभाव मे आकर हीरो और हीरोइन की वेशभूषा तदनुकूल अपनाने के लिए उन्हे प्रेरित करती है। धनी वर्ग के पास फैशन के नए नए साधन खरीदने के लिए धन की कमी नहीं होती। पश्चिमी सभ्यता का तेजी से बढता हुआ प्रभाव भी भारतीयो को फैशन परस्त बना रहा है।

फैशन का मीठा विष विद्यार्थियो की रग रग मे फैल चुका है। फेशन क कारण विद्यार्थियो का नैतिक पतन हो रहा है। आज फैशन उसी सीमा तक उचित है जहा तक वह कुत्सित भावनाओ को न उकसाए। सरकार को फैशन को बढावा देने वाले उन चित्रो फिल्मो व पत्रिकाओ पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए जो कामोत्तेजक हो। माता पिता व अध्यापको को भी बच्चो के सम्मुख एक ऐसा नैतिक वातावरण पैदा करना चाहिए जिससे विद्यार्थियो मे फैशन के दुष्परिणामो को समझने की सूझ बूझ पैदा हो जाए।

ऐसे छद्म सन्यासियों से आर्यसमाज सावधान रहे

आज से प्राय दो दशक पूर्व स्वामी अग्निवेश जी समाजवादी पार्टी क निमत्रण पर इन्दोर आए। यद्यपि यह समाजवादिया की बैठक थी। इन पक्तियो का लेखक आर्यसमाजी होने के कारण स्वतत्रता सेनानी रहा है किन्तु पेशन का याचक नही रहा। उन दिनो प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री ओम प्रकाश जी रावल बहुचर्चित तथा लोकप्रिय नेता थे। चूकि श्री रावल जी के पिता महर्षि दयानन्द के विचारा के अनुयायी तथा पुरान देशभक्त थ। इस कारण रावल परिवार से मेरा पारिवारिक सबन्ध रहा है।

सयोगवश मै और श्री ओ३म प्रकाश रावल (अब दिवगत) सुदामा नगर मे निकट ही रहते आये है। स्वामी अग्निवेश का श्री रावल न अपने निवास पर भोजन हेतु आमन्त्रित किया। इस अवसर पर आर्यसमाज क वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा लखक होने के नात उन्हाने मुझ भी आमन्त्रित किया। भोजनोपरा त मरे आथित्य श्री रावल ने स्वामी अग्निवेश जी से मेरा परिचय कराया। स्वामी जी ने प्रत्युत्तर म कहा कि मनुदेव अभय को म भली भाति जानता हू। इसके पश्चात चर्चा मे स्वामी अग्निवेश न प्रारम्भ मे इन्दौर मे आयसमाजो की सख्या अत्यधिक सक्रिय आर्यसमाज आदि के बारे मे पूछा। मैने उन्हे नगर की ७ आर्यसमाजो पारिवारिक यज्ञमाला तथा आर्यसमाज मल्हारगज को सबसे अधिक सक्रिय और जीवित आर्यसमाज बताया। उन्होने आयसमाज मल्हारगज मे उनके व्याख्यान आदि की भूमिका बाधी। मै स्वामी अग्निवेश जी के साम्यवादी विचारो से पहले ही परिचित था। इसी चर्चा के अन्तराल मे स्वामी अग्निवेश जी ने मुझसे कहा –

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रथो मे जो आर्थिक विचार व्यक्त किये है वे मार्क्सवादी विचारो से प्रभावित होकर कहे और लिखे है। महर्षि दयानन्द मनै ही मन कार्लमार्क्स को बहुत चाहते थे। आर्यसमाज जब तक कार्लमार्क्स के विचारो को अपनाकर आगे नही बढेगा तब तक उसका क्षेत्र व्यापक न्ही हो सकेगा। मै मार्क्स के विचारा को आयसमाज का प्लेटफार्म (मञ्च) देना चाहता हू। ऋषि दयानन्द को मै मार्क्स के समीप मानता हू। मार्क्स का विचार स्टालिन की क्राति का रहस्य जब तब आर्य समाज नही समझेगा तब तक वह अपनी जडे मजबूत न्ही कर सकेगा। मै ऋषि दयानन्द की इच्छा पूर्ण करना चाहता हू।

चूकि मैंने एम०ए० राजनीति विज्ञान विषय लेकर ही किया है इस कारण मै कार्ल माक्स के दशन स परिचित हू। स्वामी अग्निवेश की बाते सुनकर उनसे केवल एक ही बात कही – स्वामी जी यह काषाय वेश छोडकर आप शुद्ध हसिया – हथौडा झडा हाथ मे लेकर साधारण कपडो मे क्यो नही आते ?

उन्होने कहा – समाज मे सन्यासियो का अभी भी सम्मान है इसलिए यह काषाय आवरण मेरी प्रतिष्ठा की नीव है। यह सुनकर उनका छदमवेश मेरे मित्र ओमप्रकाश रावल को बडा विचित्र लगा। उन्होने कहा क्या आर्य समाज मे ऐसे भी भगवावस्त्रधारी सन्यासी है जो साम्यवाद के गुप्त प्रचारक है ? मै अग्निवेश जी के सम्मुख आर्यसमाज की प्रतिष्ठा बचाने के कारण कुछ नही कह सका।

जब स्वामी अग्निवेश ने दूसरे दिन आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर मे उनके व्याख्यान रखने की बात पुन दोहराई तब मैने मन ही मन नकारते हुए कहा – हमारे यहा एक सप्ताह पूर्व ही कार्यक्रम निश्चित हो जाता हे और फिर आपके समान प्रतिष्ठित सन्यासी को बिना निमत्रण के कही जाना भी नही चाहिए। यह कहकर मै अपना पीछा छुडाकर घर लौट आया।

हा तो इस चर्चा का कुप्रभाव उपस्थित समाजवादी मित्रा पर बहुत बुरा पडा। जब मेरे मित्र श्री ओ३म प्रकाश जी रावल मध्य प्रदश के शिक्षा राज्यमत्री बने तब आर्यसमाज मल्हारगज इन्दौर ने ऋषि बोधोत्सव पर सादर आमन्त्रित किया। इस उदबोधन मे श्री रावल (अब स्वर्गीय) ने स्पष्ट कहा था – आर्यसमाज को छद्म सन्यासियो से सतर्क रहना चाहिए।

— मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति
सुकिरण अ/१३
सुदामा नगर इन्दौर,
मध्य प्रदेश

संविधान की भावनाएं जातिवाद और मतान्तरण की पक्षधर नहीं

विमल वधावन एडवोकेट

इस वक्त भारत के अन्दर एक ऐसी आधी चल रही है जिसकी सूचना केवल मात्र एक समाचार की भाति बहुतायत देशवासियो को है। परन्तु उसके दूरगामी प्रभाव की ओर बहुत कम लोगो का ध्यान है। उससे भी कम सख्या मे ऐसे लोग है जो इन समाचारो पर गम्भीर चिन्तन कर रहे होगे या देश मे चल रही इस आधी का समय से इलाज करने के लिए कुछ योजनाए बना रहे होगे। इस आधी का नाम है धर्मान्तरण।

धर्मान्तरण को साधारणतया परिभाषित करना हो तो यह कहा जा सकता है कि एक मत पथ को छाडकर किसी दूसरे मत या पथ को स्वीकार कर लेना। तकनीकी दृष्टिकोण से इसे धर्मान्तरण कहने के बजाए मतान्तरण कहना चाहिए। मत या पथ से अभिप्राय होता है हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख या ईसाई आदि। जबकि धर्म शब्द की परिभाषा एक सर्वमान्य सच्चाई है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा की पवित्रता के साथ ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता (अव्यक्त ब्रह्माण्डीय ताकत) को सब से बडा पिता मानकर समूचे प्राणीमात्र को उस पिता की सन्तान समझता हुआ जहा तक सम्भव हो परोपकार के विभिन्न तरीको के द्वारा उनकी सेवा मे लगा रहता है। परन्तु उस सेवा के बदले किसी प्रकार से अपनी सामाजिक या भौतिक ताकत को बढाने का कोई प्रयास नही करता। सेवा से सत्ता पर अपना प्रभाव स्थापित करने का मार्ग धार्मिक नही अपितु एक षडयन्त्र है।

जब मतान्तरण होता है तो स्वाभाविक है व्यक्ति की परम्पराए और रीति रिवाजो के साथ साथ विश्वास के केन्द्र भी बदल जाते है। यह स्वत स्वीकृत तथ्य है कि इस्लामिक और ईसाइयत मतो के विश्वास का केन्द्र भारत की धरती नही है। उनके विश्वासो के केन्द्र क्रमश मक्का और वेटिकन हैं।

मतान्तरण करने के लिए कही लोभ लालच तो कही दबाव और कहीं कहीं धोखाधडी का सहारा भी लिया जाता है। मतान्तरण करने वाले पथो के नेता इस बात से इन्कार करते हैं। यदि उनका यह कहना है हम लोभ लालच दबाव और धोखे से मतान्तरण नहीं करते तो फिर उन्हे इस प्रकार के हथकण्डो पर प्रतिबन्ध लगाने पर आपत्ति क्यो है ?

मध्य प्रदेश मे 70 के दशक मे काग्रेस पार्टी की सरकार ने ऐसा ही एक कानून बनाया तो इसाई मिशनरियो ने उसे उच्च न्यायालय मे चुनोती दी। वहा उनके पक्ष म निणर्य नही हुआ तो वे सर्वोच्च न्यायालय मे भी पहुचे।

> **धर्मान्तरण को साधारणतया परिभाषित करना हो तो यह कहा जा सकता है कि एक मत पथ को छोडकर किसी दूसरे मत या पथ को स्वीकार कर लेना। तकनीकी दृष्टिकोण से इसे धर्मान्तरण कहने के बजाए मतान्तरण कहना चाहिए। मत या पथ से अभिप्राय होता है हिन्दू मुस्लिम सिक्ख या ईसाई आदि। जबकि धर्म शब्द की परिभाषा एक सर्वमान्य सच्चाई है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा की पवित्रता के साथ ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता (अव्यक्त ब्रह्माण्डीय ताकत) को सब से बडा पिता मानकर समूचे प्राणीमात्र को उस पिता की सन्तान समझता हुआ जहा तक सम्भव हो परोपकार के विभिन्न तरीको के द्वारा उनकी सेवा मे लगा रहता है। परन्तु उस सेवा के बदले किसी प्रकार से अपनी सामाजिक या भौतिक ताकत को बढाने का कोई प्रयास नहीं करता। सेवा से सत्ता पर अपना प्रभाव स्थापित करने का मार्ग धार्मिक नहीं अपितु एक षड़यन्त्र है।**

सर्वोच्च न्यायालय की संवेधानिक पीठ ने भी लोभ लालच ओर दबाव एव धोखो से धर्मान्तरण को प्रतिबन्धित करने वाल कानूनो का मान्यता प्रदान की। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय म यह स्पष्ट कहा गया कि सविधान के अनुच्छद 19 म धमप्रचार करने की स्वतन्त्रता तो दी गइ है परन्तु लोभ लालच दबाव और धाखे से किए गए किसी काय को धर्म की स्वतन्त्रता की आड मे मान्यता नही दी जा सकती।

हाल ही मे इसी प्रकार का कानून जयललिता की तमिलनाडु सरकार ने पारित किया तो फिर से यह शोर मचने लगा। हो सकता है इस बार फिर एक कानूनी युद्ध शुरू हो। परन्तु किसी दृष्टिकोण से भी निणय सविधान की मान्यताओ के बाहर नही हो सकता और सविधान की मान्यताए पहले ही व्यक्त हो चुकी है।

विगत ५० वर्षो मे हमने देखा है कि सरकारो के सोचने का तरीका अपनी राजनीतिक महत्वाकाक्षाओ मे मिलने वाली सहायता से निर्धारित होता है। कानून उस गुट विशेष की इच्छाओ की पूर्ति के लिए बनाए जाते हैं जहा से सामूहिक वोटो की कुछ समानता नजर आ रही हो। राजनीतिक सोच और व्यवहार पर इतने आसू बहाए जा चुके है कि शायद उन आखो का पानी ही सूख गया होगा यह सोच सदैव निन्दा का पात्र रही है और रहेगी।

कानून के प्रावधानो से मतान्तरण रूपी अव्यवस्था और सख्या खेल पर नियन्त्रण करना केवल एक मार्ग है। परन्तु जबकि दूसरा प्रभावशाली मार्ग जिसकी तरफ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सारे भारतवासियो का ध्यान आकृष्ट किया था वह है सामाजिक एकता और सुदृढता का मार्ग दलितो गरीबो महिलाओ और अन्य असहाय वर्ग के लोगो के लिए परोपकारी दृष्टि का विकास होना चाहिए। शहरो म शायद यह जातिगत भदभाव कुछ कम हो गया हो परन्तु सुदूर क्षेत्रो मे अब भी यह भेदभाव देखने को मिलता है जिसके कारण इन वर्गो पर दूसरे पथो के लोगो का प्रभाव चल जाता है। जब मतान्तरण हो जाता है तो बाद मे हिन्दूवादी सस्थाए चिन्तित होती है।

आर्यसमाज की स्थापना कवल मात्र एक सुधारवादी आन्दोलन के रूप म की गई थी जिसका धर्म के नाम पर वेद के सदा सत्य रहने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्तो मे विश्वास है और राष्ट्र के नाम पर ईमानदारी और चरित्र निर्माण की प्रेरणाओ का प्रचार प्रसार विगत लगभग १२८ वर्षो मे प्रर्याप्त मात्रा मे किया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दलित या शूद्र व्यवस्था का पूरा खण्डन किया अस्पृश्यता को दूर करने के लिए उन्होने स्वय कई बार चमार और भगी अनुयायियो के घर पर भोजन भी स्वीकार किया आयसमाज मन्दिरो मे पुरोहितो की नियुक्ति करते समय कभी किसी से उसकी जाति नही बल्कि हमशा गुरुकुल से प्राप्त योग्यता ही पूछी गई। गुरुकुलो मे प्रवेश के समय भी फार्मो मे जातिवादी पूछताछ का कोई स्थान ही नहीं रखा गया

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस दृष्टिकाण को विगत माह सर्वोच्च न्यायालय द्वारा (एन० आदित्यन बनाम ट्रेवन कोर दवास्वम बार्ड) मुकदमे मे दिए गए निर्णय ने भी पुष्टि प्रदान की है। इस मामले मे एक गैर ब्राह्मण व्यक्ति को केरल के अनाकुलम जिले के एक मन्दिर म शान्तिकरण (पुजारी) रखा गया था। याचिकाकर्ता एन० आदित्यन ने स्वय को ब्राह्मण बताते हुए यह कहा कि एक गैर ब्राह्मण के हाथो मन्दिर मे पूजा से उसका धर्म भ्रष्ट हो रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय ने याचिका कर्ता की सभी दलीलो को रद्द करते हुए कहा है कि गीता के उपदेश भी जाति व्यवस्था का जन्म पर आधारित नही मानते ओर सामाजिक भेदभाव समाप्त करने के पक्षधर है। सर्वोच्च न्यायालय ने सविधान के अनूच्छद २५ का हवाला देते हुए भी यह स्पष्ट कहा कि भेदभाव पूरक कोई व्यवस्था इस देश म नही चल सकती। मन्दिरो मे दलितो के प्रवेश का तो सविधान के अनुच्छेद २५ म पहले ही स्वीकार किया जा चुका है

अब भी यदि मतान्ध हिन्दुओ की आखे नही खुली और सर्वोच्च न्यायालय के निणय के बावजूद भी यदि वे इस भेदभाव को समाप्त करने का सकल्प नही करते तो उन्हे भी देशभक्त नागरिको की श्रेणी म नही रखा जा सकेगा ठीक उसी प्रकार जैसे उन मुसलमानो और इसाइयो के साथ साथ उन राजनीतिज्ञो को भी हमने लेख के प्रथम भाग मे निन्दा का पात्र बनाया है जो सविधान की भावनाओ तथा सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार लोभ लालच दबाव और धोखे से चल रहे मतान्तरण अभियान के पक्षधर है

देश मे जहा कहीं भी इस प्रकार का जातिगत भेदभाव सामने आए उसकी सूचना हमे vedicgod@ndavsnl.net.in पर ई मेल द्वारा दे। राष्ट्रवादी देशवासियो से यह अपेक्षित है कि वे भेद भाव रहित समाज की स्थापना मे हमारा सहयोग अवश्य करेगे

वरिष्ठ उप प्रधान
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

कश्मीर विभाजन, भ्रान्तियां और तथ्य

—डॉ० रुद्रदत्त चतुर्वेदी

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती से एक बार पूछा गया स्वामी जी ! क्या आपको विश्वास है कि इस देश मे एकता स्थापित हो जाएगी ? स्वामी जी ने एक क्षण सोचकर कहा हा हो जायेगी। जब एक भाषा एक वेश और एक सस्कृति हो जायेगी तो भारत मे स्थायित्व आ जायगा।

कश्मीर मे वर्तमान आतकवाद और विभाजन की माग को समझने और औचित्य जानने के लिए आवश्यक है कि वहा की भौगोलिक स्थिति और इतिहास से परिचय कराया जाय क्योकि साठोत्तर पीढी इसे मात्र साम्प्रदायिक और सघ बनाम धर्म निरपेक्ष राजनीति से अधिक कुछ नहीं समझता।

भारत का यह स्वर्ग महर्षि कश्यप द्वारा बसाये जाने के कारण कश्यपमीर था जो अपभ्रश – कश्मीर के नाम से विख्यात है। इस सुरसम्य भूमि मे झीले उपत्यकाये और कुकुम की क्यारिया है तो पाणिनी पातजलि कल्हण और वीर बन्दा बैरागी की यह जन्म भूमि है। कश्मीर राज्य के चार प्रमुख भाग है – जम्मू, लद्दाख गिलगित और कश्मीर घाटी जिसका क्षेत्रफल एक लाख इकतीस हजार छ सौ बारह कि०मी० था जिसमे से एक तिहाई से अधिक पर पाकिस्तान ने बलात कब्जा कर रखा है जिसे आजाद कश्मीर या गुलाम कश्मीर के नाम से जाना जाता है। इसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व इसलिए है कि इसकी सीमाये रूस चीन पाकिस्तान अफगानिस्तान और तिब्बत से मिलती थी। चूकि पाकिस्तान ने कश्मीर के गिलगित वाले क्षेत्र पर कब्जा कर लिया है अत अब भारतीय कश्मीर की सीमा केवल पाकिस्तान से मिलती है और पाक अधिकृत कश्मीर की अन्य पाच राष्ट्रो से। इतने से ही विवरण से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कश्मीर मुददे का कितना राष्ट्रीय और कितना अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है।

अब यहा प्रश्न उठता है कि कश्मीर समस्या का उलझाव कब से ? और कैसे? प्रारम्भ हुआ। १५ अगस्त १६४७ को हमे आजादी खडित रूप मे प्राप्त हुई और अग्रेज चलते समय यह पुछल्ला लगा गये थे कि जो रियासत भारत मे शामिल होना चाहे वह भारत मे शामिल हो और जो पाकिस्तान मे शामिल हो वह पाकिस्तान का भाग बने। लौह पुरुष सरदार पटेल ने दूरदर्शिता का सहारा लेकर साढे छ सौ रियासतो को भारतीय सघ मे सविलयन करा लिया परन्तु तत्कालीन कश्मीर नरेश अनिर्णय की स्थिति मे फसे रहे। चूकि मुस्लिम काफ्रेस (वर्तमान मे नेशनल काफ्रेस) के अध्यक्ष शेख अब्दुल्ला (वर्तमान मुख्यमन्त्री फारुख अब्दुल्ला के पिता) कश्मीर के सर्वेसर्वा बनने के लिए १६३१ मे कश्मीर मे हिन्दू मुस्लिम दगा करा चुके थे जिसमे अकेले राजौरी जिले मे ही हजारो हिन्दुओ का वध कराया था और जो पाकिस्तान के जनक जिन्ना के साथ कश्मीर की स्वतत्रता की माग कर चुके थे। ऐसे मे तत्कालीन कश्मीर नरेश महाराजा हरी सिह इस पशोपेश मे थे कि राज्य के भारत विलय पर सवेगात्मक रूप से जुडे नेहरू जी कहीं शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को कश्मीर का राज प्रमुख न बना दे।

यह भी प्रचारित किया गया है कि महाराजा हरी सिह (डॉ० कर्ण सिह के पिता) स्वार्थी थे और भारत मे सविलयन नहीं चाहते थे अत यहा दूसरी 'राउण्ड टेबिल काफ्रेस की घटना को उद्घृत करना समीचीन होगा। जब अग्रेजो ने गाधी जी से प्रश्न किया कि यदि भारत स्वाधीन कर दिया गया तो रियासतो का क्या होगा ? इस पर गाधी जी की ओर से उत्तर देते हुए महाराजा हरी सिह ने कहा था कि 'हम रियासतो को भारत मे मिला देगे आप भारत को आजाद तो करे। हमारे लिए वह सौभाग्य दिन होगा जब राजगददी से उतर कर हम स्वाधीन भारत की सेना मे शानदार सैनिक के रूप मे खडे होगे। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि महाराजा हरी सिह की सोच स्पष्ट थी।

दूसरी ओर फारुख अब्दुल्ला के पिता की सोच और कारगुजारियो का जायजा सन १६३१ के दगे और पाकिस्तान की माग के समय के आसपास उन घटनाओ से भी समझा जा सकता है जब उन्होने कश्मीर की स्वतत्रता के लिए मुसलमानो को लेकर आन्दोलन किया था और कहा था कि मुस्लिम समुदाय अस्सी लाख (८०००००) रुपये चन्दा करके हरीसिह को दे दे और कह दे कि तुम्हारे पूर्वजो ने जितने मे कश्मीर खरीदा वह धन लो और कश्मीर छोड दो। ज्ञातव्य है कि सन १६५६ मे अफगानिस्तान के मुस्लिमो ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया था और धर्म परिवर्तन तथा विध्वस की घटनाओ पर जिन्हे शान्ति प्रिय इस्लाम के अनुयायी सदैव करते आये हैं। हिन्दुओ की रक्षार्थ महाराजा रणजीत सिह ने अफगानिस्तान वालो से कश्मीर मुक्त कराकर महाराजा कर्ण के पूर्वज श्री गुलाब सिह को जम्मू वाला भाग (और अग्रेजो को अस्सी लाख रुपया देकर शेष भाग) सौंप दिया था। उसी अस्सी लाख का चन्दा करके महाराजा हरी सिह के विरूद्ध क्विट कश्मीर आन्दोलन के सूत्र धार थे शेरे कश्मीर मुहम्मद अब्दुल्ला यानी श्री उमर अब्दुल्ला के दादाजी।

आइये अब पृष्ठभूमि से आगे बढकर कश्मीर समस्या के तात्कालिक वास्तविक और निमित्त कारण की ओर चलते हैं। सन १६४७ मे। कश्मीर की अनिश्चित स्थिति देखते हुए और यह जानकर कि उसका भारत मे विलय नहीं है। पाकिस्तान ने २१ अक्टूबर १६४७ को कश्मीर पर हमला कर दिया। महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस आक्रमण का सैन्य सचालन कश्मीर रियासत का अवकाश प्राप्त कमाडर इन चीफ कर्नल स्काट कर रहा था जो कश्मीर के चप्पे चप्पे से परिचित था। रियासत कश्मीर की थोडी सी फौज के मुस्लिम सिपाही पाक सेना से जा मिले। जब पाकिस्तानी सेना श्रीनगर से कुछ ही दूर रह गई तब महाराजा ने कश्मीर के भारत विलय की वैधानिक प्रक्रिया पूर्ण करके भारत सरकार से रियासत बचाने की माग की। २७ अक्टूबर १६४७ को भारतीय सेना हवाई जहाज से श्रीनगर हवाई अडडे पर उतारी गयी। जब भारतीय सेना हजारो सैनिको और कई प्रमुख जनरलो की शहादत के बाद विजय की ओर बढ रही थी और वहा तक पहुची जिसे आजाद कश्मीर कहा जाता है। तब पाकिस्तानी प्रधानमत्री की माग पर तत्कालीन प्रधानमत्री प० जवाहरलाल नेहरू ने वार्ता की खातिर युद्ध रोक दिया और भारतीय सेना तडप कर रह गयी। चूकि कश्मीर की सीमा चीन रूस से भी मिलती थी और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वह शीत युद्ध' का दौर था अत परोक्ष रूस से अमेरिका और इग्लैण्ड द्वारा लेडी माउन्टवेटन के माध्यम से प्रेरित किये जाने पर जीतता हुआ भारत न्याय की प्रत्याशा मे अपना केस सयुक्त राष्ट्र सघ ले गया जहा यही ये दो राष्ट्र न्यायाधीश भी थे जिनकी कूटनीति से सदैव रूप ने वीटो का प्रयोग करके कश्मीर की रक्षा की।

सयुक्त राष्ट्र ने निर्णय दिया कि पाकिस्तान अपनी फौजे गुलाम कश्मीर से हटा ले यानी २१ अक्टूबर १६४७ से पूर्व की स्थिति मे पहुच जाए और भारत सरकार वहा जनमत सग्रह कराकर विलय का अन्तिम निर्णय ले। यहा पुन दो बाते विचारणीय हैं –

१ क्या भारत और पाकिस्तान मे रियासतो का विलय जनपद के आधार पर हुआ था अथवा राजाओ की इच्छा पर।

२ क्या पाकिस्तान ने अपनी फौजे कश्मीर से हटाई।

यहा पुन हमारे प्रधानमन्त्री प० नेहरु सरदार पटेल की सलाह की उपेक्षा करके दो भूले कर गये।

१ जनमत सग्रह को तैयार होना और

२ कश्मीर को विशेष देने वाली धारी ३७० की व्यवस्था (जिसके अन्तर्गत कश्मीर का अलग विधान अलग प्रधान अलग निशान (झडा) और अलग न्याय पालिका की व्यवस्था की। यद्यपि यह व्यवस्था अस्थाई थी परन्तु आज तक बनी हुई है। यदि यह व्यवस्था अस्थाई है तो स्थायी किसे कहेगे ?

अलग कश्मीर के स्वप्न दृष्टा शेख अब्दुला कश्मीर के प्रधानमत्री (मुख्यमन्त्री नहीं) और युवराज कर्ण सिह सदरे रियासत (राज्यपाल नहीं) बनाये गये और कश्मीर मे किसी भी भारतीय को बसने और सम्पत्ति खरीदने के अधिकार से वचित रखा गया। बस यहीं से शुरू होती है कश्मीर की वर्तमान त्रासदी।

फारुख अब्दुल्ला की तरह शेख अब्दुल्ला पाकिस्तान के विरूद्ध शब्दो की आग तो उगलते थे पर कार्यकलाप वे थे जिनके कारण कश्मीर को मुस्लिम बहुल बनाकर पाकिस्तान के पक्ष मे जनमत सग्रह का मार्ग प्रशस्त करना थ। इन्हीं कारगुजारियो के चलते इस शेरे कश्मीर को प्रधानमन्त्री की सहमति से गृहमत्री आर्यगर ने गिरफ्तार कराया और देश द्रोह का मुकदमा चला। यहा मै पुन कहना चाहूगा कि लेख मे स्थानाभाव के कारण शेख अब्दुल्ला की कश्मीर को मुस्लिम बहुल बनाने की योजना के प्रमाण नहीं दिये जा रहे है जिन्हे उचित समय पर पुन आलेखबद्ध किया जाएगा।

भारतीय राजनीति की दो विसगतिया रही है –

१ वोटो की राजनीति पर राष्ट्रहित को तिलाजलि

२ सत्ता की खातिर प्रतिपक्ष की भूमिका की अपेक्षा विपक्ष की भूमिका निर्वहन।

कश्मीर को मुस्लिम बहुल बनाने के लिए शेख अब्दुल्ला ने भारत छोडकर गये मुस्लिमो को हिन्दू बहुल जम्मू तथा घाटी मे और बौद्ध बहुल लददाख मे बुलाकर बसाना प्रारम्भ किया जिसका विरोध तत्कालीन बौद्ध लामा कुशक वकुल ने और प्रजा परिषद के प० प्रेमनाथ डोगरा ने विरोध किया परन्तु नेहरू युग मे उनकी कभी सुनी नहीं गई। शेख अब्दुल्ला द्वारा अलग विधान अलग निशान (भारतीय झडा वहा प्रयुक्त नहीं होता था और अलग प्रधान यानी सरल शब्दो मे स्वायत्तता के नाम पर स्वतत्र कश्मीर या कश्मीर कश्मीरियो की अवधारणा का विरोध करने के दण्ड स्वरूप श्यामा प्रसाद मुखर्जी की हत्या की गयी।

यहा पुन प्रश्न उठता है कि यदि कश्मीर – कश्मीरियो का तो बगाल – बगालियो पजाब पजाबियो और केरल – केरलियो का क्यो नहीं। यह प्रश्न इसलिए उठा रहा हू ताकि प्राचीन इतिहास के परिप्रेक्ष्य मे युवा वर्ग और जनसाधारण यह जान सके कि धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदारो ने राष्ट्रकी कितनी अपूरणीय क्षति की है और धारा ३७० का अस्तित्व तथा कश्मीर की स्वायत्ता के असली मायने क्या हैं।

और अब अन्त मे मूल प्रश्न की ओर बढते है कि कश्मीर के तीन भागो मे विभाजन का औचित्य क्या है ?

भारत सरकार की कश्मीर के प्रति अनिश्चयात्मक नीतियो धारा ३७० का अस्तित्व सन ४७ से कश्मीर को मुस्लिम बहुल बनाये जाने की साजिश और पाकिस्तान प्रेरित आतकवाद ने आज घाटी को पूर्ण रूप से मुस्लिम बना दिया है। साढे तीन लाख कश्मीरी पडित अपने ही देश मे शरणार्थी हैं जिसकी ओर किसी विपक्षी का ध्यान नहीं जाता। अब जम्मू और लद्दाख को मुस्लिम बहुल बनाने की दीर्घकालीन योजनाये चल रही है (पुन स्मरण कराना चाहूगा कि डॉ० फारुख अब्दुल्ला द्वारा कश्मीर विधान सभा मे पारित प्रस्ताव कि "कश्मीर छोडकर गये मुसलमान पुन पाकिस्तान से लौट कर बस सकते हैं"।

कैसी विडम्बना है कि घाटी से निष्कासित साढे तीन लाख कश्मीरी पडितो की वापसी और उनकी सम्पत्ति दिलाये जाने के प्रश्न पर अब्दुल्ला पिता पुत्र मौन हैं और सन ४७ मे पाकिस्तान गये मुसलमानो की वापसी के लिए वैधानिक पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है। प्रसन्नता का विषय है कि उच्चतम न्यायालय ने मतव्य समझते हुए इस निर्णय पर रोक लगा दी है।

ऐसे मे कश्मीर (जो भारत का अभिन्न अग है) को बचाने का एकमात्र विकल्प है कि हिन्दू बहुल जम्मू को अलग प्रान्त और बौद्ध बहुल लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश बनाकर उन्हे मुस्लिम बहुल बनाने से रोका जा सके। यदि यह विकल्प सही नहीं है तो दूसरा विकल्प धारा ३७० हटाकर इसे भारत के अन्य राज्यो की भाति सामान्य दर्जा दिया जाय क्योकि कश्मीर की अनत काल तक रक्षा सेना से नहीं अपितु भारतीयता से हो सकती है। चूकि विपक्ष गुण दोष विवेचन किये बिना धारा ३७० को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना चुका है अत कश्मीर पुनर्गठन विभाजन ही कश्मीर की रक्षा का एकमात्र उपाय है राजनीतिक दल जो चाहे सो कहते रहे।

– उपाचार्य, मनोविज्ञान,
राजकीय महाविद्यालय
गजरौला (उ०प्र०) २४४२३५

एक लघु ग्रन्थ सांध्य-योग-प्रकाश 8

संध्या और योग
(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

— भगवन्त सिह कपूर

अथैश्वर प्रार्थना पूर्वक मार्जन मन्त्रा

यम नियम के स्वर्णिम व्रतो से इन्द्रियो को सुसस्कारित करने के लिए आवश्यक है कि पहले जन्म जन्मान्तरो के कुसस्कारो को तो हटाए। तदर्थ अगला मन्त्र अग प्रत्यग व इन्द्रियो को अन्दर बाहर से जमी वृत्तियो रूपी कल्मष को माज कर देखने की विपश्यना मे ईश सहायता की प्रार्थना का है।

मार्जन मन्त्रा

ओं भू पुनातु शिरसि। ओं भुव पुनातु नेत्रयो। ओं स्व पुनातु कण्ठे। ओं मह पुनातु हृदये। ओजन पुनातु नाभ्याम्। ओं तप पुनातु पादयो। ओं सत्य पुनातु पुनश्शिरसि। ओं ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।।

इस मार्जन मन्त्र मे —

ईश्वर के गुणो मे से सात शक्तियो की सहायता से शरीर के सात स्थानो द्वारा सारे अग प्रत्यग व इन्द्रियो को माजने अर्थात स्वच्छ करने का आदेश है।

शरीर मे इन सात स्थानो का विशेष महत्त्व है। जिनके माध्यम से सारे शरीर के अग प्रत्यग पर पहुचा जा सकता है इसलिए मार्जन करने या इसकी विधि व भावना समझने के पहले शारीरिक सूक्ष्म रचना का समझना आवश्यक है।

सम्पूर्ण शरीर का नियन्त्रण शिर द्वारा रीढ की हडडी मेरुदण्ड की कसेरुकाओ के अन्दर के स्नायु तत्र के माध्यम से होता है।

मेरुदण्ड मे स्थान-स्थान पर कई उप नियन्त्रण कक्ष हैं जहा से शरीर के उस भाग के अगो का नियन्त्रण होता है। ये उप नियन्त्रण कक्ष शिर के मुख्य नियन्त्रण कक्ष से जुडे रहते है। इस प्रकार इन उप-नियन्त्रण कक्षो के माध्यम से सारा शरीर मुख्य नियन्त्रण-कक्ष अर्थात शिर से नियन्त्रित रहता है सम्बन्धित रहता है। अगर इन मुख्य एव उप नियन्त्रण कक्षो पर पहुचा जा सके तो सारा शरीर देखा समझा व नियन्त्रित किया जा सकता है। इन्हीं कक्षो को यौगिक भाषा मे चक्र कहा गया है। इस मन्त्र मे इन्ही चक्रो के सम्बोधित स्थानो द्वारा प्रभुगुणों की शक्तियों की सहायता से, अग-प्रत्यग माजने, स्वच्छ करने, विपश्यना करने के अभ्यास का निर्देशन है।

जब विपश्यना करते करते पचभूत के शरीर का विश्लेषण करते हैं तो आतरिक चमत्कार देखकर आश्चर्य होता है। सृष्टि स्वरूप कण कण के सयोग से बने इस पचभूत शरीर के सूक्ष्मति सूक्ष्म परमाणु के भी हजारवे अन्तिम भाग मे कोई क्रमबद्ध गति पाते हैं। हो न हो यही प्रभु की सत्ता एव व्यापकता का आश्चर्य जनक चमत्कार है। जिसे ध्यानयोग की सूक्ष्म एव ऊची अवस्था मे अनुभूत कर हम गद गद हो जाते हैं। इस भावात्मक योगिक अवस्था तक पहुचने का मार्जन- विपश्यना — या स्वच्छता

प्रारम्भिक अभ्यास है।

प्रभु की किस शक्ति से किन चक्रो पर पहुच किस अग प्रत्यग का मार्जन करना है। उसकी तालिका नीचे प्रस्तुत है ध्यान व भावना से इन्ही का विपश्यना करना है —

विधि — अग स्पश के बाद भृकुट से मन्त्र मे कहे मेरुदण्ड के एक एक उप कक्ष या चक्र पर क्रमश ध्यान ले जाना। वहा निरीक्षण करना कि वहा से सचालित प्रत्येक अग-प्रत्यग म आज इस समय क्या परिस्थिति है। कितना स्थूल व कितना सूक्ष्म विकार जमा है। मन्त्र मे बताई प्रभु-शक्ति की सहायता से अब और विकार नही जमने दूगा। यह सकल्प कर अगले कक्ष मे मन मे मन्त्रोच्चार कर पहुचना। इस प्रकार आगे बढते जाना है।

भावना — न भूतकाल के कर्म याद कर न भविष्य की चिन्ता कर इन दोनो को आज अभी मे बदल नही सकता। उल्टा उनका विचार आते ही सन्ध्या से मन व ध्यान भाग जाएगा भटक जाएगा। मन उडान भरने लगेगा। सन्ध्या भग हो जाएगी फिर सब कुछ प्रारम्भ करना पडेगा। इसलिए मात्र वर्तमान का ही इस समय सोचो। मन का मार्जन मे व्यस्त रखो एक क्षण के लिए भी खाली छोडा कि भाग जाएगा। मन्त्र की भावनानुसार एक क्रिया समाप्त होते ही अगला कार्य ध्यान द्वारा मन को दते रहो।

प्रत्येक चक्र — उपकक्ष स नियन्त्रिन अग-प्रत्यग या इन्द्रिय का मार्जन अर्थात मात्र साक्षी भाव से देखना हे कि वे कित्न पवित्र या अपवित्र है। अब आग से और विकार न चढने पावे इसका सकल्प कर आगे बढ जाना है। इसी प्रकार सत्य पुनातु पुन शिरसि स पुन शिर मे ध्यान लाकर ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र के समय जब सारे शरीर रूपी ब्रह्माण्ड का ध्यान करे तो पुन भृकुटि मे आ जावे। सारे शरीर अर्थात शारीरिक आसन का सिद्ध कर स्थिर बैठना है।

क्र०	मन्त्र	प्रभु शक्ति	मेरुदण्ड का भाग चक्र	शरीर के अग
१	ओ भू पुनातु शिरसि	भू- सृष्टिकता प्रकाशक	मेरुदण्ड के ऊपर शिर- सहस्त्रार	मन बुद्धि व चित्त
२	ओ भुव पुनातु नेत्रयो	भुव — पालक प्राण रक्षक	नत्रो के पीछे आज्ञा-चक्र	नाक कान आख मुह आदि
३	ओ स्व पुनातु कण्ठे	स्व-आधार दु ख हरता	कण्ठ के पीछे विशुद्ध चक्र	गदन श्वास नली भोजन नली आदि
४	ओ मह पुनातु हृदय	मह महान सर्वज्ञ सर्वेश्वर	हृदय के पीछे अनाहत चक्र	हृदय बाहु फेफडे छाती आदि
५	ओ जन	जन — सृष्टि रचयिता उत्पादक	नाभि के पीछे मणिपुर चक्र	पेट व जननेन्द्रिय आमाशय व आते आदि
६	ओ तप	तप — कष्टसहना तपाना शुद्धता	लिग के पीछे स्वाधिष्ठान	कूल्हा पैर गुदा आदि
७	ओ सत्य पुनातु पुन शिरसि	सत्य — अविनाशी	गुदा के पास मूलाधार	मेरुदण्ड का अत कुण्डलिनी
८	ओ ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र	ब्रह्म — सर्वज्ञ सर्वव्यापक	पूर्ण शरीर सीधा मेरुदण्ड	यह स्थिर आसन को इगित करता है

क्रमश

वायुमण्डलीय ताप में वृद्धि, हमारे अस्तित्व के लिए खतरा

– सूर्य देव चौधरी

विषय प्रवेश विज्ञान के तीव्र विकास के साथ औद्योगीकरण की प्रक्रिया भी तेज हुई है। इसके साथ ही हाल के वर्षो मे जनसख्या मे भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। बढती हुई जनसख्या की बढती हुई आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक साधनो द्वारा प्राकृतिक ससाधनो का मानव ने बडी बेदर्दी से दोहन किया है। प्राकृतिक ससाधनो के अधाधुन्ध दोहन से जहा मानव ने एक ओर अपनी सुख सुविधा के लिए अनेकानेक साधन जुटाए है वही दूसरी ओर अनेक समस्याओ को जन्म भी दिया है। इन समस्याओ मे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सबसे जटिल और भयकर है।

आज पृथ्वी जल वायु आकाश ध्वनि आदि सभी प्रदूषित हो गए है जिससे मानव का जीवन दूभर होता जा रहा है। इन सभी प्रदूषणो मे वायु प्रदूषण सबसे भयकर है क्योकि एक बार स्रोत से निकलने के बाद इन्हे न तो रोका जा सकता है और न ही उपचारित किया जा सकता है। ऐसे मे ये प्रदूषक लम्बी दूर तय करते है और मानव जीवन पर मृत्युकारक प्रभाव डालते है। कुछ प्रदूषक गैसे प्रत्यक्ष प्रभाव न डालकर परोक्ष रूप से दूरगामीप्रभाव डालती है। ये गैसे पृथ्वी के तापमान को बढाती है। पृथ्वी का बढता हुआ तापमान अनेक समस्याओ को जन्म दे रहा है जिससे भविष्य मे अनेक भयकर परिणामो क साथ जीवन के अस्तित्व पर भी खतरा उपस्थित होने की आशका है। आगे हम देखेगे कि धरती के तापमान–वृद्धि के कोन–कौन कारण है उनके क्या क्या खतरे है और उससे बचने के लिए क्या क्या सुरक्षात्मक उपाय किए जा सकते है ?

ताप मे वृद्धि के कारण वैसे तो वायु मे अनेकानेक विषैली और हानिकारक गैसे फैल रही है लेकिन ताप मे वृद्धि के लिए सबस अधिक जिम्मेवार ग्रीन हाउस गैसे है। कार्बन डाइक्साइड जलवाष्प मिथेन और मानव निर्मित क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) ग्रीन हाऊस गैसे कहलाती है क्योकि ये गैसे है धरती के वातावरण को ग्रीन हाउस जैसा बनाती है। पिछले कुछ दशको से इन ग्रीन हाऊस गैसो का उत्सर्जन बहुत बढा है। जिस तेजी से ये गैसे वातावरण मे इकटठी होती जा रही है उससे धरती के वातावरण का तापमान बढ रहा है क्योकि ये ग्रीन हाउस गैसे धरती की सतह से विकसित होने वाली उष्मा को थोडी ही ऊचाई पर बदी बना लेती है।

कार्बन डाइक्साइड इन ग्रीन हाउस गैसो मे भी कार्बन डाइक्साइड धरती के तापमान बढाने मे अधिक जिम्मेवार है। वैज्ञानिको के अनुसार कार्बन डाइक्साइड गैसे अकेले ही पचपन प्रतिशत तापमान वृद्धि के लिए सीधे जिम्मेवार है। फिर भी इसकी मात्रा धरती के वायुमण्डल मे अनेकानेक कारणो से बढती ही जा रही है। अभी पूरे विश्व मे ऊर्जा का कुल उपभोग आठ अरब टन पेट्रोल उत्पादो के बराबर है। इसमे ४० प्रतिशत उपभोग तेल का और २७ प्रतिशत उपभोग कोयले का हो रहा है। तेल और कोयले का विपुल भण्डार धरती के अन्दर है जिसका उपभोग मानव आगामी ३०० वर्षो तक करता रहेगा। इससे निरन्तर कार्बन डाइक्साइड की मात्रा वायुमण्डल मे बढती रहेगी और बढता रहेगा धरती का तापमान। अकेले भारत मे हीं ८८ ८६ मे CO_2 का कुल उत्सर्जन १३४ २ मीट्रिक टन प्रतिवर्ष था जो बढकर २००४–५ तक ३५७ ५८ मीट्रिक टन प्रतिवर्ष हो जाने की सम्भावना है। इस प्रकार वायुमण्डल मे CO_2 की मात्रा बढने के साथ धरती का तापमान बढता जाएगा।

जलवाष्प ऊपर मे हमने देखा कि कार्बन डाइक्साइड की वृद्धि से ६ रती का तापमान बढ रहा है। तापमान की इस वृद्धि से वायुमण्डल मे वाष्पीकरण की प्रक्रिया तेज होगी जिससे जलवाष्प की मात्रा वायु मे बढेगी। हम देख चुके है कि ग्रीन हाउस गैस का दूसरा घटक जलवाष्प स्वय ही तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेवार है। इस तरह जलवाष्प–वृद्धि के कारण वायुमण्डल का ताप बढेगा। अत तापमान–वृद्धि से जलवाष्प की वृद्धि और जलवाष्प वृद्धि से तापमान मे वृद्धि का क्रम निरन्तर जारी रहेगा।

क्लोरो फ्लोरो कार्बन ग्रीन हाउस गैस का तीसरा घटक क्लोरो–फ्लोरो कार्बन है। यह कारखानो से उत्पन्न होता है। पृथ्वी के धरातल से लगभग २५ किलोमीटर की ऊचाई पर स्थित ओजोन परत के ओजोन को यह गैस पुन आक्सीजन मे परिवर्तित कर देती है। इससे ओजोन–परत क्षीण होती है। ओजोन परत के क्षीण होने से सूर्य से आनेवाली पराबैंगनी किरणे अवशोषित नही हो पाती हैं और धरती पर आकर इसके तापमान मे वृद्धि करती है। इस प्रकार जिस तेजी से मनुष्य क्लोरो फ्लोरो कार्बन का उत्पादन करेगा ताप मे वृद्धि उसी तेजी से जारी रहेगी।

वन सम्पदा में ह्रास तापमान मे वृद्धि के लिए सबसे अधिक जिम्मेवार कार्बन डाइक्साइड गैसे है। इसका अवशोषण वृक्षो के द्वारा ही होता है। १६४५ के बाद से आज तक वनो की कटाई मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। आज वनो की कटाई दर १४० से ५०० लाख एकड प्रतिवर्ष हो गई है। इस तरह वन–सम्पदा के तीव्र ह्रास के कारण कार्बन डाइक्साइड का समुचित अवशोषण नही हो पाता है जिससे वायुमण्डल का तापमान बढ रहा है। अत तापमान मे वृद्धि का एक कारण वन–सम्पदा मे तीव्र ह्रास भी है।

उपरोक्त कारणो से धरती का तापमान निरन्तर बढ रहा है। अमेरिकी सस्था वर्ल्ड वाच इन्स्टीच्यूट के ताजे आकडो के अनुसार पिछले ४५ वर्षो मे धरती का औसत तापमान ११ ८७^{0}C से बढकर १५ ३२^{0}C तक जा पहुचा है। सस्था का अनुमान है कि तापमान–वृद्धि की प्रक्रिया इसी तरह जारी रही तो सन २०५० तक विश्व का तापमान १६^{0}C से १९^{0}C के बीच पहुच जाएगा। विश्व मौमस विज्ञान सगठन (WMO) के अनुसार आज वाशिगटन डीसी प्रतिवर्ष एक दिन के औसत से तापमान ३८^{0}C को भी पार कर जाता है। सगठन का दावा है कि वर्त्तमान प्रवृत्तिया जारी रहने पर अगली सदी के मध्य तक वहा १२ दिन तापमान ३८^{0}C और ८५ दिन तापमान ३२^{0}C को पीछे छोड देगा। वैज्ञानिको का अनुमान है कि आगामी सौ वर्षो मे ६ रती का तापमान ३^{0}C बढ जाएगा।

धरती का तापमान जिस तेजी से बढ रहा है उसके कारण आगामी वर्षो मे भयावह परिणाम सामने आएगे और धरती पर हमारे अस्तित्व को चुनौती दे रहे होगे। धरती के ताप मे वृद्धि के साथ समुद्र कृषि स्वास्थ्य वनस्पति जलवायु आदि सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगे।

(क) सागर तल मे वृद्धि अब यह स्थापित तथ्य है कि धरती के गरम होने से दुनिया भर मे सागरो का जल–स्तर ऊपर उठेगा। इससे दुनिया के अनेक देशो का कुछ हिस्सा डूब जाने की आशका है। सेटर फॉर अर्थ साइसेज के समद्र विज्ञान प्रभाग द्वारा हाल ही मे पर्यावरण एव वन मन्त्रालय को सौंपी एक रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि कोच्चि गोवा एव मुम्बई मे समुद्र का जल–स्तर क्रमश २२ १६८ एव ०५ मिलीमीटर प्रतिवर्ष की दर से ऊचा उठ रहा है जिससे इन क्षेत्रो मे तटो का सफाया होने का खतरा है। आई०पी०सी०सी० ने भविष्यवाणी की है कि धरती के गर्माने के कारण अगली सदी के अन्त तक समुद्र के जल–स्तर मे लगभग ६५ सेटीमीटर तक वृद्धि हो सकती है जिसके कारण ३०० प्रवाल प्रशात द्वीप पूरी तरह पानी मे डूब सकते हैं। फलत दुनिया के कई हिस्सो मे भूमि–जल की आपूर्ति भी दुषित हो जाएगी।

(ख) कृषि पर प्रभाव सागर–तल मे वृद्धि से समुद्र का खारा पानी उर्वर–भूमि मे फैल जाएगा जिससे भूमि की उर्वराशक्ति कम हो जाएगी। सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूनेप) के अनुसार धरती के गर्म होने से दुनिया के अनेक भागो मे मिटटी की आर्द्रता मे कमी आने से खाद्यान्न उत्पादन का ग्राफ काफी नीचे चला जाएगा। इसके साथ ही तपते–झुलसते वातावरण मे फसलो के लिए घातक कीट–पतगो की आबादी तथा पादप रोगो मे वृद्धि एव वर्षा मे कमी के फलस्वरूप कृषि उत्पादन मे भारी गिरावट की सम्भावना है। कुल मिलाकर तापमान–वृद्धि से कृषि पर प्रतिकूल असर पडेगा।

(ग) वनस्पति जगत पर प्रभाव धरती का तापमान बढने से पौधो को प्राप्त होने वाली मृदा नमी मे कमी हो जाती है तथा पौधो की वाष्प–उत्सर्जन दर बढ जाती है। फलत पौधे अपनी सामान्य जैविक क्रियाए जैसे खनिज लवणो का अवशोषण प्रकाश–सश्लेषण आदि पूरी करने मे असमर्थ हो जाते हैं जिससे उनकी मृत्यु तक हो जाती है। ताप–वृद्धि के कारण पौधो की जल उपयोग क्षमता एव जल–धारण क्षमता तथा उनके उत्पादन मे भारी कमी होने की आशका रहती है। कुछ प्रजातिया समाप्त भी हो सकती हैं। अत धरती के तापमान बढने से वनस्पति जगत पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडेगा।

– शेष भाग १० पर

वेदोक्त धर्म उत्थान चाहिए या धृति–ध्वंसक विज्ञान चाहिए

– देवनारायण भारद्वाज

एक राजा बडा लोकप्रिय था। नित्य यज्ञ अर्थात देवजनो का सम्मान योग्यजनो का सम्मेलन और पात्रजनो को दान देता रहता था। रात्रिकाल मे विश्राम करते हुए उसने देखा कि सजी सवरी स्त्री उनके सामने आकर खडी हुई। राजा ने पूछा देवि ! आप कौन हैं ? उसने कहा – मै लक्ष्मी हू। अब मै आपके पास नही रह सकती हू, क्योकि आपने अति दान करके मुझे क्षीण कर दिया है। मै जा रही हू। राजा ने प्रणाम करते हुए कहा – देवि ! जैसी आपकी इच्छा। इसके पश्चात एक और स्त्री निकली। राजा ने उससे भी पूछा – आप कौन है ? उसने कहा – मै कीर्ति हू। जहा लक्ष्मी रहती है वहा रहने मे मुझे सुविधा होती है। मै उसी के साथ जा रही हू। राजा ने कहा – एवमस्तु। बाद मे एक भयकर स्त्री राजा के सम्मुख आकर खडी हो गयी। राजा बोले आप कौन है ? क्या आप भी जाने के लिए आयी है। स्त्री बोली – मैं मृत्यु हू। जाने के लिए नही – तुम्हे लेकर जाने के लिए आई हू। जहा लक्ष्मी और कीर्ति नही रहती वहीं मै आ जाती हू। राजा ने कहा – तथास्तु। वह स्त्री डरके मारे लौट गयी। उसने देखा – राजा तो मौत से डरते ही नहीं। जो मौत से नही डरता मौत उससे डरती है। राजा लेटे रहे। लो एक नारी और निकल आयी। राजा ने पूछा मा आप कौन है। उसने कहा मै धृति हू। राजा बोले – आप कैसे बाहर निकली। वह बोली – जहा से श्रीकीर्ति चली जाती है और मृत्यु आने लगती है वहा मै टिक नही सकती क्योकि धैर्य की भी कोई सीमा है। अत अब मै चली। राजा ने मनुहार पूर्वक उसके पैर पकड लिए। बोले मा ! ऐसा मत कहो। तेरी ही कृपा से तो मैने आज तक इन सबको ठुकराये रक्खा है। तू चली गयी तो मेरे पास और क्या बचेगा ? तुझे मैं नहीं छोड सकता। धृति पुन राजभवन मे लौट आयी। देखते क्या है कि कुछ ही पलो मे श्री एव कीर्ति भी वापस लौटने लगी। राजा ने पूछा मा ! आप चली गयीं थी – पुन वापिस कैसे आ गयी ? दोनो एक स्वर मे बोल पडी – क्या बताए राजन ! जहा धृति (धैर्य) होता है वहा रहना हमारी बाध्यता है। यह आख्यान कभी पढा था। यहा लिख दिया।

१ धर्म का मूल धृति

नीतिज्ञ महर्षि भर्तृहरि ने भी कहा है कि चाहे कोई निन्दा करे या स्तुति अपयश फैले या यश लक्ष्मी रहे या दूर चली जाए मृत्यु आज आये या युगो वाद – धैर्यशील पुरुष याय धर्म पथ से कभी विचलित नही होते। महाराज मनु ने धर्म के जो दस लक्षण निरूपित किए है उन मे धृति (धैर्य) सर्वप्रथम है। दोनो मे धृ धारण करने का सकेत प्रदान करता है। १ जिसमे धैर्य धारण करते हुए सहन करने की क्षमता होगी। २ वही किसी को क्षमा करने की उदारता दिखा सकता है। ३ सहन शक्ति क्षमाधनी व्यक्ति ही दम मन की वृत्तिओ का निग्रह कर सकता है। ४ मन की वृत्तियो पर नियन्त्रण करने वाला व्यक्ति लोभ त्याग कर अस्तेय (अचौर्य) चोरी न करने के व्रत का पालन कर सकता है। ५ चोरी न करने वाला व्यक्ति सर्व प्रकारेण भ्रष्टाचरण से बचकर शौच शारीरिक एव मानसिक शुद्धता का अधिकारी व्यक्ति ही। ६ इन्द्रिय निग्रह अपनी इन्द्रियो को वश मे रख सकता है। ७ जिसने अपनी इन्द्रियो को वश मे कर लिया – तो समझो इन्द्र बन गया। ऐश्वर्यमती बुद्धि का अधिष्ठाता बन गया। ८ बुद्धिमान व्यक्ति विद्या को पाकर स्वावलम्बी व समर्थ हो जाता है। ८ वह व्यक्ति सत्य–सत्यभाव सत्यवचन सत्य क्रिया का स्रोत्र बन जाता है। १० सत्य सम्पन्न व्यक्ति सभी ओर से दृढ व सशक्त हो जाता है। और अक्रोध का अभ्यासी हो जाता है। क्रोध उसके आसपास भी फटकने नही पाता है। धर्म के ये लक्षण धैर्य से प्रारम्भ होते है। एक धैर्य को साधने से सभी दस लक्षण मनुष्य मे झलकने लगते है। अन्तिम लक्षण है क्रोध पर नियन्त्रण–एक क्रोध के आने पर सभी दस लक्षण तिरोहित हो जाते है। महर्षि दयानन्द ने अपने पूना प्रवचन मे धर्म का एक और लक्षण अहिसा भी बताया जो क्रोध के नियन्त्रण से ही प्राप्त होता है। गीता (२ । ६३) मे कहा गया है कि क्रोध से विवेक नष्ट हो जाता है। विवेक न रहने पर स्मृति नष्ट हो जाती है। स्मृति नष्ट होने से बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धि नष्ट होने से मनुष्य समूल नष्ट हो जाता है।

२ धैर्यहीनता का जनक विज्ञान

आधुनिक विज्ञान ने एक निर्लज्ज चमत्कार कर दिखाया है। दसवे लक्षण का अ' पहले लक्षण के साथ जोड दिया है। अब मनुष्य मे अधैर्य एव क्रोध की प्रचुरता हो गयी है। इसमे सन्देह नही इस विज्ञान ने अनेक ऐसे चमत्कार पूर्ण अविष्कार कर दिए है जिनसे मानव जीवन बहुत ही सुखमय और त्वरित हो गया है। इतने पर भी इनका प्रारम्भ सुखद और परिणाम दुखद सिद्ध हो रहा है। दूरदर्शन कम्प्यूटर इन्टरनेट ई मेल सचल दूरभाष सभी बडे उपयोगी हैं किन्तु इनकी निर्भरता ने मनुष्य को अधीर बना दिया है। दीपक लालटेन के स्थान पर हम बिजली ले आए। अब हम उसके दास हो गए है। उसका चला जाना हमे सहन नही। इनवर्टर चाहिए जिससे बिजली जाने पर भी प्रकाश व हवा मिलती रहे। इनवर्टर की बैटरी समाप्त हो गयी वह बन्द हो गया। हमे जनरेटर चाहिए। सत्सग व यज्ञ मे बैठा यजमान बेचैन है। जेब मे घण्टी बोल पडती है। वह अपना सचल फोन निकाल कर जहा बैठा है उसे ठुकराकर कही दूर से बात करने लगता है। ऐसे अवसरो पर पहले मनुष्य का मन ही भागता था अब इन्द्रिया भी भागने लगी है। विज्ञान ने मन को वश मे करने का सूत्र तो बताया नही उल्टे इन्द्रियो को भी परवश कर दिया। सोचिए यह उत्थान है या पतन। बच्चे तो बच्चे बाप रे बाप सचल फोन कम्पनी का विज्ञापन देखिए। एक भव्य सुसज्जित भगवावस्त्र धारित महात्मा के एक हाथ मे माला और दूसरे हाथ मे कान पर रक्खा हुआ सचल फोन – इसने तो मन मे राम बगल मे छुरी की लोकोक्ति का खाका ही खीच दिया है। पहले परिवार का कोई सदस्य जब कभी कही बाहर दूर जाता था तब लोग उसकी सुरक्षा के लिए शुभकामनाए करते थे। प्रभु से प्रार्थना करते थे। अब इनसे अधिक वे उसके फोन की प्रतीक्षा करते है और इसके लिए उतावले बने रहते हैं व्याकुल होकर कहते रहते है अभी उसका फोन नहीं आया। यह धैर्यनाश नही तो और क्या है।

३ उपभोग के लिए अधीरता विज्ञान की देन

विज्ञान की बिजली से जगमगाते कारो के आवागमन से इतराते फिल्मी सगीत को गुनगुनाते हुए दिल्ली के भव्य बाजार मे एक व्यक्ति आइसक्रीम खाने को मचल पडा। दुकान पर गया – उसने अपने पसन्द की आइसक्रीम मागी। दुकानदार ने अनेक प्रकार की आइसक्रीम प्रस्तुत की। उसे उनमे से कोई नही चाहिए थी। उसे वहीं चाहिए थी जो उसने मागी थी। मना करने पर उस व्यक्ति ने दुकानदार को गोली मार दी। आधी रात केबाद भी महानगर जगता ही नही जगमगाता रहता है। यहा मदिरालय मे युवती ने वाछित मदिरा देने मे असमर्थता व्यक्त कर दी। ग्राहक ने उसकी हत्या कर दी। यह सभी घृति – ध्वस (धैर्य हीनता) व क्रोधवेश के ही परिणाम है। जो विज्ञान मनुष्य को सारी उपलब्धिया अल्प समय मे ही प्राप्त करने के लिए लालायित करदे उसे मर्यादित करने की आवश्यकता है। जो उसे कल करना चाहिए उस भाग का उपभोग वह आज–अभी कर लेना चाहता है। कलुषित धन के लिए एक डाक्टर रोगी को अपने यहा किसी चिकित्सा के लिए रखता है और धोखे से उसके शरीर के अग निकाल लेता है। रोग के निदान हेतु विज्ञान ने यन्त्र बना दिए है। डाक्टर आवश्यक – अनावश्यक जाचे कराते है क्योकि उन्हे धन चाहिए। कुछ ही दिन पूर्व हमारे राष्ट्र के बिजली मन्त्री कुमार मगलम के साथ क्या हुआ ? राजधानी केनामी अस्पताल के डाक्टर उनकी जाच करते रहे। लम्बे समय तक कोई लाभ नही हुआ। वे दूसरे बडे आयुर्विज्ञान सस्थान मे पहुचे। पता चला कि जिन अनेक रोगो का उपचार होता रहा उनमे से कोई था ही नही। जो रोग था उसका यहा उनको पता चला। अब बहुत देर हो चुकी थी। यह युवा राष्ट्रीय व्यक्तित्व हमसे छिन गया। भले ही लोकसभा मे गूज होती रहे। अब क्या होना है। यह सब धन कमाने की असीमित इच्छा का परिणाम है। साधारण व्यक्तियो के साथ तो ऐसा आए दिन होता है जिसकी चर्चा भी नही होने पाती। इस प्रकरण से यह भी शिक्षा मिलती है कि विशिष्ट तभी सुरक्षित होगे जब साधारण जन की रक्षा का प्रयत्न किया जाएगा। मेरी किशोरवय मे आकाशवाणी लखनऊ के देहाती कार्यक्रम मे रमईकाका अपनी व्यग्य कविता औजार भूलिगा पेटे मॉ कहकर हसाते थे वह लापरवाही मेरी इस साठोत्तर प्रौढावस्था मे कई गुना बढकर उपचार केन्द्रो के जाल फैलकर हमे रुलाने लगी है।

– शेष भाग १० पर

राष्ट्रभाषा हिन्दी और अस्मिता का प्रश्न

– कु० रमोला रूथ लाल

दिवस मनाना एक बहुत पुरानी परम्परा है। इधर विगत कुछ वर्षो मे दिवस मनाना एक जुनून एक फैशन सा बन गया है। यह किसी पर आक्षेप नही है। जरा वर्तमान को और थोडा मुड कर पीछे अतीत मे देखे तो कहीं कुछ कचोटता है। क्या इन दिवसो के साथ जुडी हमारी निष्ठा हमारी ईमानदारी हमारी भावना मे अन्तर नहीं आ गया है ? क्या इन दिवसो का मनाया जाना यात्रिक या खानापूर्ति नहीं रह गया है। जैसे जैसे हम अधिक सभ्य होते जा रहे हैं वैसे वैसे हम अधिक कृत्रिम होते जा रहे हैं भावशून्य होते जा रहे हैं। आज हमारे स्वार्थ प्रबल हैं।

हम किसी भी क्षेत्र से धर्म से जुडे हो जब राष्ट्र और राष्ट्रीयता की बात आती है तो हम राष्ट्रप्रेमी कहलाना पसद करते है और गर्व का अनुभव भी करते हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि ज्ञान विज्ञान भाषा विचार सभी मुद्दो पर हम अपने स्वार्थों को सबसे ऊपर रखते हैं। देश समाज पीछे रह जाता हे और अधिकतर हम अपने स्वार्थो मे फस कर बिक जाते हैं।

हमारी राष्ट्रीयता का अहम बिन्दु है हमारी राष्ट्रभाषा। किसी भी देश की राष्ट्रीयता की पहचान उसकी राष्ट्रभाषा की अस्मिता से जुडी हाती है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हमे उसकी अस्मिता की कितनी सुध है ? कितनी परवाह है ? इसे अपने भीतर टटाल। यदि हमे अपने राष्ट्र से प्रेम है तो हमे अपनी राष्ट्रभाषा को अपनी सासो के साथ लेकर चलना होगा। उसे किसी प्रदेश विशष की पहचान ही नहीं पूरे देश की और अन्तर्राष्ट्रीय मच की पहचान बनाना होगा। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने कहा

निज भाषा उन्नति हुै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल।।

सीधी सी बात है सर्वागीण उन्नति का मार्ग अपनी भाषा को उचित सम्मान देना ही है।

क्या वर्ष के ३६५ दिनो मे से किसी एक दिन के कुछ घण्टो मे रटे रटाये शब्दो मे राष्ट्रभाषा की महिमा का गान कर लेने से हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री हो जाती है ? हम दूसरो को राष्ट्रभाषा का पाठ पढाए उससे पहले हमारे अपने हृदयो मे अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए।

अग्रेज चले गए अग्रेजी छोड गए। स्वतन्त्रता के बाद सवैधानिक सीमा भी बाध दी गई कि हिन्दी के समर्थ हो जाने तक इस समय से लेकर इस समय तक (१६५० से १६६५) हिन्दी के साथ अग्रेजी का व्यवहार होगा। यह अवधि बढाई भी जा सकती है। और सच्चाई यह है कि यह अवधि बढती ही जा रही है। मानसिक रूप से हम आज भी पराधीन हैं। मूल मे अग्रेजी ही चल रही है। और हमारी इसी मानसिक पराधीनता से धीरे–धीरे वह हम पर हावी होती जा रही है। प्रशासन द्वारा थोपे जाने से हिन्दी का उद्धार नहीं होने वाला है। हिन्दी का उद्धार होगा हमारे और आपके द्वारा उसका व्यवहार करने से। हिन्दी का प्रयोग हो रहा है अलकरण के लिए पर्चो पर नारो मे। हिन्दी के नाम पर राजनीति की जा रही है।

किसी भी जीवन्त भाषा को अधिकाधिक बोलचाल के निकट होना चाहिए। बहुत क्लिष्ट या सस्कृत निष्ठ हिन्दी स्वरूप हिन्दी का वास्तविक स्वरूप नहीं है। इसलिए हिन्दी के सहज रूप का प्रयोग करना चाहिए। हिन्दी को अधिक से अधिक व्यवहार की भाषा बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

हिन्दी की प्रगति के आकडे देखे तो बडा दुख होता है कि न तो अखिल भारतीय स्तर पर और न हिन्दी भाषी प्रदेशो मे ही हिन्दी की प्रगति सन्तोषजनक नहीं है प्रगति न होने के कारण कई हैं किन्तु प्रमुख कारण सम्भवत यही है कि हिन्दीवालो की ही दृष्टि मे हिन्दी के प्रति सम्मान का भाव नहीं है। साहित्य का विद्यार्थी पक्ति बोलना भूल गया है वह 'दीज लाइन्स हैव बीन टेकेन' की तर्ज पर 'लाईन' बोलने लगा है। शीर्षक को 'हैडिग' और न जाने कितने ऐसे शब्दो का धडल्ले से व्यवहार करता है जैसे वह हिन्दी के शब्द हो। हिन्दी को सामासिकी वृत्ति और सब को आगे बढकर गले लगा लेने की विशेषता के कारण प्रशसा भी खूब मिली है किन्तु ऐसा न हो कि इसी भ्रम मे पडे रहे और हिन्दी पराई हो जाए। जब हमारे पास सरल सहज बोधगम्य शब्द है तो थोडा–बहुत परहेज करना भी हिन्दी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होगा।

हममे कहीं भीतर एक डर एक हीनता की भावना आत्म विश्वास की कमी हो गयी है कि क्या हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके साथ चल सकेगे। खडे रह सकेग। हमे इस भय को इस हीनभावना को मन से निकालना होगा। जब तक अपनी भाषा के लिए स्वय को विश्वास नहीं होगा तब तक हम दूसरो को कैसे उसका विश्वास दिला सकेगे।

हिन्दी का उद्धार करने का श्रेय कई हिन्दीभाषी लेते है किन्तु हिन्दी का सर्वाधिक अहित हिन्दीवालो ने किया है। प्रयोजक मूलक हिन्दी स्वरूप का निर्धारण करते समय विभिन्न क्षेत्रो की पारिभाषिक शब्दावलियो के निर्माण मे सहज बोध की जैसी पकड रखनी चाहिए थीं उस पर दृष्टि न रखने के कारण ही हिन्दी क्लिष्ट और कहीं कहीं हास्यास्पद रूप धारण करती रही है। हमे इस दिशा मे वह सभी प्रयत्न करने होगे जिससे राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारे हृदयो के निकट आ सकगे।

बडा दुख होता है जब देखती हू कि जिस भाषा ने हमे सोच दी सस्कार दिए रोजी–रोटी के योग्य बनाया। उसी भाषा को कुछ समर्थ हो जाने के बाद किसी पद पर पहुच जाने के बाद कोई बहुत आवश्यक कारण न होने पर भी लोग छोडकर परस्पर अग्रेजी का व्यवहार करते हैं और उसमे अपनी शान समझते हैं। मानो अग्रेजी का व्यवहार करने से हमारी जीवन शैली हमारा स्तर ऊचा हो जाता है। जब तक हिन्दी के प्रति इस प्रकार का सौतेला व्यवहार रहेगा हिन्दी के साथ राजनीति करने वालो के हाथो से यदि इसे उबार ले तो भी हिन्दी पर बडा उपकार होगा।

– वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
यूइग क्रिश्चियन महाविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

हिन्दी प्रेमियों से.......

मान्यवर

भारत को स्वाधीन हुए ५५ वर्ष से भी अधिक हो गए हैं किन्तु इतने वर्षों मे भी राजभाषा के प्रश्न का निर्धारण नहीं हो सका है। क्या इससे भारत की स्वाधीनता के अपूर्ण होने और भाषायी दृष्टि से देश के पराधीन होने का आभास नहीं होता। आपसे निवेदन है निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देने की कृपा करे

१ सविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के अनुसार हिन्दी स्वाधीन भारत की राजभाषा तथा देवनागरी इसकी लिपि है।

२ सविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार राजभाषा का विकास करना तथा उसके प्रचार प्रसार के उपाय करना केन्द्रीय सरकार का उत्तरदायित्व है।

३ भारत की लोकसभा मे १८ जनवरी १६६८ ई० को सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया था कि केन्द्रीय सरकार का समस्त कार्य राजभाषा हिन्दी मे होगा। उस प्रस्ताव का क्रियान्वयन आज तक क्यो नहीं हुआ ?

४ केन्द्रीय शासन की उदासीनता तथा मानव ससाधन विकास मन्त्रालय की शिथिलता के कारण अग्रेजी इस देश मे जिस गति से बढ रही है उससे सारे भारतीय मूल्य ध्वस्त हो जाएगे तथा देश अग्रेजी का उपनिवेश बनकर रह जाएगा।

५ केन्द्रीय सरकार की ओर से राजभाषा हिन्दी और भारत की दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं में जो क्षमता छिपी हुई है उसे उजागर करने का कोई प्रयास नहीं किया जाता। न विधि न्याय प्रशासन चिकित्सा विज्ञान प्रोद्योगिकी तथा यात्रिकी मे मौलिक ग्रन्थो के लिखने की कोई योजना है और न उनके लिए कोई प्रोत्साहन है।

६ राजभाषा हिन्दी की उपेक्षा करने वालो से यह पूछा जाना चाहिए कि इस बहुभाषी देश की एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता का उनका क्या स्वप्न है और उसकी पूर्ति के लिए क्या योजना है ?

७ यह कार्य ढुल मुल नीति से नहीं होगा इसके लिए दृढ सकल्प और राष्ट्रीयता की उत्कृष्ट भावना की आवश्यकता है। उसी के आधार पर हिन्दी के खोए हुए गौरव की प्राप्ति हो सकेगी और स्वाधीनता के प्राणो मे स्वाभिमान का सचार हो सकेगा।

अत आपसे निवेदन है कि आप भारतीय सविधान की मर्यादाओ की रक्षा हेतु केन्द्रीय सरकार के काम काज में हिन्दी को लागू करने की तुरन्त चेष्टा करे।

इसके अतिरिक्त मानव ससाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत सभी प्रदेशों में कक्षा १० तक हिन्दी को अनिवार्य करने का आदेश दें।

साथ ही केन्द्रीय सरकार की तथा निगमों, प्रतिष्ठानों व अन्य निकायों की सभी प्रतियोगी परीक्षाए अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी माध्यम से कराई जाए।

सघ लोक सेवा आयोग की सभी परीक्षाओं में अग्रेजी के साथ ही हिन्दी में भी उत्तर देने की सुविधा मिलनी चाहिए।

आशा है कि आप इतिहास की धारा को मोडने का प्रयास करेंगे और इस विशाल लोकतन्त्र को अपमान की वेदना से बचाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान प्रदान करने की चेष्टा करेंगे।

– डॉ० मित्रेश कुमार गुप्त,
महासचिव, राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ

कस्मै देवाय हविषा विधेम

कस्मै देवाय हविषा विधेम

यजुर्वेद मे यह मन्त्राश अनेक स्थलो पर आया है – 'कस्मै देवाय हविषा विधेम'। ईश्वर की प्रार्थना तथा यज्ञ करते हुए इसकी बहुत आवृत्ति की जाती है। इस प्रसिद्ध मन्त्राश का अर्थ यह है कि हम योगाभ्यास एव प्रेम पूर्वक ईश्वर के लिए अपनी सकल सामग्री से हविया अर्पित करके उसकी उपासना करते रहे।

(कस्मै) प्रश्न उठता है कि हम आहुतिया किसे समर्पित करे ? हम अपने अधिकाश समय धन एव जीवन को अपने माता–पिता पति वा पत्नी भाई–बहिनो और मित्रो के लिए लगा देते हैं। तो फिर हवि इनको क्यो नहीं समर्पित करते ? वास्तव मे येसब बन्धु बान्धव सीमित निकटता वाले होते हैं। इनका हमारे साथ न तो सदैव का सम्बन्ध है और न ही ये हमारी आत्मा मे प्रविष्ट हो सकते हैं। ये कभी प्रेम करते हैं तो कभी द्वेष। कभी न्याय करते हैं तो कभी अन्याय। कभी सुख देते है तो कभी दुख। किन्तु ईश्वर सब प्राणियो का सदैव मित्र है। वह सबके लिए सदा प्रेम न्याय एव सुख स्वरूप ही रहता है। कभी अन्यायी लोभी वा द्वेषी नहीं हो सकता। दूसरे वह पिताओ का पिता माताओ की माता और पतियों का पति है। इसलिए उस आनन्दस्वरूप प्रजापति परमेश्वर को ही हमारी समस्त हविया समर्पित होने योग्य हैं।

(देवाय) ईश्वर देवो का देव है। वह शुद्धस्वरूप प्रकाश करने हारा और कामना करने के योग्य है। वह अपने स्वरूप से ही दिव्य गुण–कर्म–स्वभाव वाला है। उसकी दिव्यता मे कभी कोई परिवर्तन वा हास नहीं होता। मनुष्य भी उसकी उपासना करके ही दिव्यता को प्राप्त कर सकता है। अत हम उस दिव्य स्वरूप परमदेव को ही अपना पूर्ण समर्पण करके विशेष भक्ति किया करे।

(हविषा) हविया अनेक प्रकार की होती हैं। अग्निहोत्र मे घृत अगर तगर जावित्री जायफल केसर कस्तूरी शहद गिलोय कपूर अन्न आदि जो पदार्थ डाले जाते हैं वे अपने शुद्ध एव परिष्कृत रूप में हवि कहलाते हैं। जो व्यक्ति मद्य-मासादि का सेवन करने वाले और मूर्तिपूजक हैं वे भी मूर्ति को भोग लगाने के लिए मद्य–मासादि के स्थान पर घी दूध मेवा मिठाई आदि का ही प्रयोग करते हैं। जो हवन करने वाले व्यक्ति अपने भोजन मे चाय प्याज लहसुन वनस्पति घी आदि का सेवन करते हैं वे भी अग्निहोत्र मे पूर्वोक्त शुद्ध पदार्थ ही डालते हैं। ऐसा इसलिए क्योकि शुद्धतम पदार्थ ही हवि कहाता है। अत भोजन करते समय भी श्रेष्ठ आर्यजन उन्हीं पदार्थो का सेवन करते है जिन्हे अग्निहोत्र मे आहुत किया जा सके। ऐसा इसलिए ताकि आहार यज्ञशेष कहला सके। इससे हमारा आहार हवि द्वारा समर्थित हो सकेगा। कहा भी गया है – आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि अर्थात आहार शुद्ध होने पर ही मन बुद्धि की शुद्धि होती है।

एक कृषक अन्न उपजाने मे और एक श्रमिक कार्यशाला मे जो पसीना बहाता है वह हवि से कम नहीं है। एक वैश्य की हवि यह है कि वह सत्यनिष्ठा से धन सग्रह करके समाज के उपयोगार्थ लगाए। एक क्षत्रिय की हवि न्याय की स्थापना एव समाज की रक्षा मे है। एक ब्राह्मण की हवि विद्या एव धर्म के प्रसार हेतु तप करने मे है। इसी प्रकार एक ब्रह्मचारी की हवि मन–वचन–कर्म से पवित्र रहते हुए ज्ञान प्राप्त करने मे वानप्रस्थी की हवि परिवार का त्याग कर समाज का उत्थान करने मे और सन्यासी की हवि आत्म–दान कर समाज का सुधार करने मे है। इस प्रकार केवल धृत दूध जडी–बूटियो एव अन्न आदि को अग्नि मे होम करना ही हवि नहीं कहलाता। हवि तो मनुष्य की प्रत्येक चेष्टा मे निहित है। जिस मनुष्य के आचार विचार एव व्यवहार मे शुद्धता दिव्यता एव परोपकार है उसकी दृष्टि श्रुति वचन शब्द आदि सभी हविया हैं। इन्हीं हवियो से जीवन वास्तविक रूप मे यज्ञमय बनता है। अत हम सभी आर्यजन इन हवियो की आहुति देकर याज्ञिक बने।

(विधेम) अन्न और धृत की हवि तो अग्निहोत्र के समय ही दी जाती है। किन्तु उपर्युक्त हविया प्रतिक्षण देने वाली हैं। इन्हे स्वार्थ की पूर्ति वा प्रदर्शन के लिए नहीं दिया जाता अपितु ईश्वर के प्रति समर्पण एव ससार के उपकार के लिए दिया जाता है। ईश्वर प्रतिक्षण यज्ञ कर रहा है। हमारा यज्ञ तो यही होगा किहम उसके यज्ञ से सामजस्य स्थापित करते हुए जीवन–यापन करे। इसके लिए हमे भी प्रतिक्षण उपर्युक्त हविया देनी होगी। अत हम इन हवियो की आहुति देते हुए ईश्वर की दिव्य सेवा मे तत्पर रहे औरअपने जीवन को वैदिक एव यज्ञमय बनाकर सच्चे आर्य बने। कस्मै देवाय हविषा विधेम (यजुर्वेद अध्याय १३ मन्त्र–४)

– प्रधान आर्यसमाज श्रृगारनगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

'पहले जन्म की याद'

लेखक - प० रामानन्द तिवारी

पता ग्राम ढाण तहसील हासी, जिला हिसार, हरियाणा

इस पुस्तक मे लेखक ने पुनर्जन्म के सिद्धान्त की पुष्टि करते हुए ५३ भिन्न–भिन्न घटनाओ का समावेश किया है जो पुनर्जन्म की प्रमाणिक घटनाए मानी जा सकती है। यह घटनाए जहा कहीं समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुई है उनका उल्लेख भी साथ–साथ किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ एव अन्त मे पुनर्जन्म के सिद्धान्त को व्याख्यात्मक शैली मे भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हालाकि सैद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या गहराई को तो नहीं छूती परन्तु प्रस्तुत घटनाओ को पढने से कोई भी व्यक्ति पुनर्जन्म को अस्वीकार करने की स्थिति मे नहीं रहता। इन घटनाओ को पढकर ग्न रोमाचित भी होता है।

पुस्तक की कीमत लिखी ही नहीं गई परन्तु लेखक ने इस पुस्तक के व्यय मे दान की अपील अवश्य की है। अत इच्छुक महानुभाव लेखक से पत्र व्यवहार करके या अपनी इच्छानुसार कुछ राशि भेज कर यह पुस्तक मगवा ले। इस पुस्तक के ६० प्रकाशित पृष्ठ है।

– **विमल वधावन** *वरिष्ठ उपप्रधान*

मानव निर्माण में संस्कृत भाषा की उपयोगिता

आज का मानव पतन की ओर उन्मुख हैं। जीवन का लक्ष्य रोजी रोटी हो गया है। पाश्चात्य सभ्यता के कारण भौतिकता मे लिप्त भोग विलास मे फस कर अपना मूल लक्ष्य मानव भूल सा गया है। ऐसी परिस्थिति मे शिक्षित होना तो दूर की बाते हैं। सरकारी सेवा प्राप्ति के लिए किसी तरह डिग्री प्राप्त करने निमित साक्षर होने के बहाने शिक्षा ग्रहण करते हैं।

जिस भाषा से मनुष्य सस्कारित होता है वह भाषा सस्कृत है। दुनिया की सारी भाषाये सस्कृत से निकली हैं। परन्तु सरकार द्वारा सरकारी सेवा मे सस्कृत भाषा की उपयोगिता समाप्त कर दी गई है। सस्कृतज्ञ को सरकार उपेक्षा की दृष्टि से देखती है इसी कारण सस्कृतज्ञ समाज से भी उपेक्षित है।

इस तरह मानव निर्माण की प्रक्रिया समाप्त करने मे सरकार की मुख्य भूमिका है। सरकार तो मानव निर्माण की बात सोचती ही नहीं। व्यक्ति से समाज बनता है और समाज व्यक्ति निर्माण मे मुख्य भूमिका निभाता है। प्रत्येक व्यक्ति की सोच मे गिरावट है। मनुष्य को रहने के लिए बढिया घर मिल जाय खाने के लिये बढिया भोजन पहनने के लिए बढिया वस्त्र इसके अतिरिक्त टेलीविजन कार हवाई जहाज एव अन्यान्य तकनीकि यत्र आदि प्राप्त हो जाय इससे मनुष्य अपने को सभ्य समझता है। यह भौतिक सामग्री किसी तरह प्राप्त हो जाय इससे वह अपने भाग्य पर इतराता है। समाज भी ऐसे ही सम्पन्न लोगो को प्रतिष्ठा देता है जबकि मनुष्य का निर्माण उसके सस्कारिक जीवन पर निर्भर करता है। सस्कारिक जीवन उसके सस्कृत भाषा ग्रहण करने से चरित्र निर्माण की ओर उन्मुख होता है। शिक्षा मे प्रत्येक को उसके चरित्र निर्माण की प्राथमिकता दी जाय विद्यालय मे वेद उपनिषद पढाने और सस्कृत भाषा पढने के लिये उसमे दक्षता प्राप्त विद्यार्थी को प्रोत्साहित किया जाय सरकारी सेवा मे उच्च पद पर वेद उपनिषद एव सत्यार्थ प्रकाश पढने और उस पर चिन्तन करने के लिये सस्कृत भाषा पढना अत्यन्त वाछित है। समाज के प्रत्येक सदस्य नित्य सध्या हवन यज्ञ करते रहे माता पिता आचार्य की सेवा भी करना उनका वाछित कर्त्तव्य है। ससार के सम्पूर्ण लोग वैदिक जीवन व्यतीत करे तब मानव जीवन की सार्थकता होगी। आज का मनुष्य पशु तुल्य है। जबकि उसे सस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं है। अतएव उसका जीवन भी सस्कारिक नहीं बनता। महाभारत काल से पूर्व मनुष्य वैदिक जीवन व्यतीत करते थे तब के गडरिया जैसा जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य भी सस्कृत ज्ञाता थे। उनका जीवन वैदिक था। सुख चैन से जीवन निर्वाह करते थे। उस समय वे सच्चे अर्थो मे मनुष्य थे क्योकि उन सबके अन्दर मनुष्यत्व था। आज के मनुष्य के अन्दर मनुष्यत्व ही समाप्त सा हो गया है। इसी लिये तो आज के मनुष्य पशुत्व का जीवन यापन करते हैं। आज भौतिकता से ओत प्रोत सम्पन्न मनुष्य भी चैन से शान्तिपूर्ण जीवन नहीं व्यतीत करता। जो जन जितना ही भौतिकता मे लिप्त है उतना ही वह अशान्तिमय है। जो जन सस्कारिक जीवन व्यतीत करते है वे अध्यात्मिक व्यक्ति हैं और उनका जीवन शान्तिमय है। सस्कारिक जीवन के लिये सस्कृत भाषा की उपयोगिता काफी महत्त्व की है।

– सिद्धनाथ प्रसाद आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज पीरो भोजपुर (बिहार)

सुभाषित

परोक्षेकार्यहन्तारं, प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्ताहशं बन्धु, विषकुंभं पयोमुखम्।।

जो परोक्ष में कार्य को नष्ट करने वाला एवं प्रत्यक्ष अर्थात् सामने में मीठा बोलने वाला हो, ऐसे मित्रको छोड देना चाहिए क्योंकि वह वैसे विषकुंभ के समान है जिसके अन्दर विष एवं मुख पर दूध भरा रहता है।

– चाणक्य नीति

पृष्ठ ७ का शेष भाग

वेदोक्त धर्म उत्थान चाहिए या धृति–ध्वंसक विज्ञान चाहिए

४ अधीरता हिसा को उत्पन्न करती है विज्ञान ने बच्चो मे उपभोग की अभिलाषा को बहुत तीव्र कर दिया है। जैसा वे दूरदर्शन आदि क चलचित्रो मे देखते है वैसा ही करना चाहते हैं। तुरन्त करना चाहते हैं। गणेश जी सबको बचा लेते है। गणेश जी का चित्र लेकर एक बालक फासी पर झूल गया। परिवार सन्तप्त रह गया। जैसी हत्याए दिखाई जाती हैं बच्चे वैसी ही हत्याए अपने स्कूल–गालियारो मे करने लगते हैं। पौराणिक धारावाहिको से भी होनी–अनहोनी के चमत्कारी दृश्य देखकर बच्चे भ्रमित हो जाते हैं। इन वैज्ञानिक उपकरणो के प्रयोगवश मनुष्य ने अपनी समझ को भी तिलाजलि दे दी है। भीड भरी सडक पर अपने अपने वाहनो पर सभीदौडते जाते है। ऐसे मे चौराहे पर लाल बत्ती के कारण एक मोटर साईकिल वाला रुका। पीछे से दूसरा मोटर साइकिल वाला आया – वह पहले रुकने वाले को इसलिए मारने लगा क्योकि उसके रुकने के कारण उसे भी रुकना पडा। आधुनिक सभ्यता के उच्च शिक्षित व्यक्ति अपनी अपनी कारो से दौड रहे थे। एक की कार दूसरे की कार से छू गयी थी। वह उलाहन' करने के लिए पहली कार के सामने आकर खडा हो गया। कार वाला उलाहाना करने वाले को तब तक कुचलता रहा जब तक उसके प्राण पखेरू उड नही गए।

हमारे मित्र और मार्गदर्शक प्रो० राजकमार वार्ष्णेय अभी अमेरिका से लौटे है। वे वहा के अखबारो की कतरने अपने साथ लेकर आए – आइए उनसे वहा हाल मे हुए एक सर्वेक्षण का नमूना आपको दिखाए। वहा हाई स्कूल मे आते आते लगभग ५० प्रतिशत बच्चे योनाचार मे लिप्त पाए जाते हैं पहले ४६ २ प्रतिशत बच्चे निरोध का प्रयोग करते थे अब ५८ प्रतिशत बच्चे इसका प्रयोग करने लगे हैं पहले २७ ५० प्रतिशत बच्चे सिगरेट पीते पाए गए थे अब ३४ ८ प्रतिशत। कोकीन प्रयोग कर चुके बच्चो की सख्या ५ ८ प्रतिशत से बढकर ८ ५ प्रतिशत तक हो गई हैं। यह सब तो परोक्ष मरण है। प्रत्यक्ष मे आत्महत्या के लिए प्रयत्नशील बच्चो की सख्या भी ७ ३ प्रतिशत से बढकर ८ ३ प्रतिशत हो गई है। १७ से २६ प्रतिशत बच्चे अपने साथ शस्त्र लेकर चलते हैं। अमर उजाला (१३ सितम्बर २०००) ने सावधान बच्चो को शैतान बना रहा है हॉलीबुड शीर्षक के अन्तर्गत व्यक्त किया है कि राष्ट्रपति बिल क्लिटन ने बच्चो मे पनप रही हिसा पर आयोग से अपनी आख्या देने को कहा था। इस आयोग ने अपने वृतान्त मे कहा है कि हॉलीबुड की फिल्मे सगीत और इलेक्ट्रानिक खेल नई पीढी के दिमाग मे हिसा का जहर भरने का काम कर रहे हैं। हर साल अमेरिका के किसी न किसी बडे शहर मे स्कूली गोलाबारी के कारण सैकडो बच्चो की जाने जाती हैं। कोलाराडो के दिलदहला देने वाले काण्ड में १२ निर्दोष छात्रों सहित एक अध्यापक को जान से हाथ धोना पडा था। बाद में हमलावरों ने स्वय को भी गोली मार ली थी।

धैर्य हीनता का विकराल दैत्य अपना मुह फैलाकर तब खडा हो जाता है जब हम देखते हैं कि प्रात पानी भरने जाने वाली महिला के खाली घडे को अपशकुन मान कर ट्रेक्टर पर जाने वाला व्यक्ति खचा खच भारी भीड के सामने उस महिला को मार देता है। कहीं पर महिला को डायन बताकर मार दिया जाता है। पिता और सगे भाई अपनी बेटी–बहिनो के साथ बलात्कार करते पाए जाते है। अतिशय उपभोग वादी दूरदर्शन की इस अदूरर्शी सभ्यता को यदि रोका नहीं गया – तो मानव को दु सह – दुष्परिणामो का सामना करने को तैयार रहना पडेगा।

५ प्रकृति-दोहन की अधीरता पर्यावरण के प्रदूषण का कारण आइये देखिये' विज्ञान का विध्वसक एक और खेल। हमारे सौर मण्डल मे सम्भवत पृथ्वी ऐसा अनोखा ग्रह है जिसका वायु मण्डल रासायनिक दृष्टि से सक्रिय एव आक्सीजन से भरा है। आक्सीजन के ३ परमाणु मिलकर ओजोन का एक अणु बनाते हैं। यही ओजोन की तह हमारे वायुमण्डल के ऊपर स्थित है जो सौर पराबैगनी किरणो के घातक दुष्प्रभावो से मानव की रक्षा करती है। वैज्ञानिको ने १६७३ मे ही पता कर लिया थाकि १६२८ मे खोजी गयी मानव निर्मित गैस क्लोरोफ्लोरो कार्बन (सी०एफ०सी०) ओजोन पर्त को नष्ट कर सकती है। अटार्कटिका (दक्षिण ध्रुव) मे शोधरत एक ब्रिटिश वैज्ञानिक दल ने पुष्टि की कि वहा अधिकाश ओजोन परत विलुप्त हो गई है। हम सी०एफ०सी० गैसो का प्रयोग रेफ्रिजरेटरो वातानुकूलयन्त्रो स्प्रे पैकेजिग तथा कम्प्यूटर चिप्स मे करते हैं। ओजोन ह्रास के लिए यही सब उत्तरदायी हैं। भारत जहा विभिन्न स्वाद सुख की ६ ऋतुए हैं यहा भी मानव इन उपकरणो का असीमित प्रयोग कर अपने ही पैर पर कुल्हाडी मारने को तैयार है। इस अधैर्य पूर्वक किए जाने वाले उपयोग से गगनचुम्बी भवनो मे रहने वाले तो प्रभावित हाते ही है वे पहले हो जात हैं जो नीली छतरी के नीचे अपने दिन गुजारते है। पूर्व मे अभी पर्याप्त श्वासे बची हैं जिनसे वह स्वय को उबार सकता है और पश्चिम को सुधार सकता है। अमर उजाला ६ सितम्बर २००० के अनुसार हाल मे मास्टर कार्ड इन्टरनेशनल द्वारा हागकाग चीन जापान थाइलैण्ड सिगापुर मलेशिया समेत एशिया प्रशान्त क्षेत्र के १३ देशो मे किए गए सर्वेक्षण मे ५४६६ लोगो ने भाग लिया। इनमे से ४६ प्रतिशत लोगो ने कहा कि सुखी जीवन के लिए वे स्वास्थ्य को सबसे आवश्यक मानते है। दूसरे स्थान पर २२ प्रतिशत लोगो ने इसके लिए परिवार एव मित्रो को माना है। तीसरे स्थान पर धर्म एव व्यवसाय आया और धन चौथे स्थान पर लुढक गया। बचने का मात्र उपाय एक ही है जो वेद ने बताया है।

६ वेदोक्त धर्म उत्थान का वरदान त्व च सोम नो वशो जीवातु न मरामहे। प्रियस्तोत्रो वनस्पति।। (ऋ० १ ६१६) अर्थात श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव की प्रेरणा देने वाले प्रभु व अन्य मार्ग दर्शक – प्यारे उपदेश तथा उपाय बताते रहेगे तो हमे कोई मार नहीं सकता है हम जीवित रहेगे। इसके लिए हमे अपने मन और मन्दिर की एक खिडकी बन्दर करनी होगी और दूसरी खिडकी खोलनी होगी। जिधर से विषैली किरणे आती हैं। वे हैं दूर दूरदर्शन और अखबार। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले हिसक कामुक दृश्यो को रोके। अखबारो मे भी अश्लील चित्र–चित्रण होते है। उन्हे भी रोके। दूसरी खिडकी खोले। जिसमे से हरे भरे प्राकृतिक दृश्य दिखाईदे ताजी प्राण वायु आती हो। वह है वेद अर्थात सद्ज्ञान की खिडकी। मनावोद्धार का उपाय जहा से मिले ग्रहण करना चाहिए। बालको द्वारा धैर्य एव सहनशीलता का अभ्यास करने का अर्थ होता है जीवन भर के लिए धर्म के पोषण से समर्थ बन जाना। वेद कहता है श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता। (अथर्व १२/५/१) अर्थात भोगने योग्य समस्त धनादि को श्रम–तप एव वेद मार्ग से न्याय पूर्वक कमाए और न्यायपूर्वक उनका उपभोग करे।

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।। – *अथर्व १२/५/३*

अर्थात परिश्रम से जो धन धान्य जितना अपने भाग मे आवे वही अमृतोपम ग्राह्य है। प्रत्येक कर्म सत्यासत्य की पहचान करके श्रेष्ठ आचरण को प्रदर्शित करने वाला हो। नकल और पिछले दरवाजे से मालामाल होने की इच्छा न करके योग्य शिक्षा–दीक्षा प्राप्त करके सुरक्षित बनने का उद्योग करो। सबका जीवन याज्ञिक भावना व परहित कामना से भरपूर हो। वेद के इन आदेशो का पालनकरके हमारी समझ मे यह आएगा कि जो व्यवहार हमारे लिए अच्छा नहीं वह हम दूसरे के लिए क्यो करे ? 'परहित सरिसधर्म नहि भाई। पर पीडा समनहि अध माई को समझकर मानवमात्र एक दूसरे का द्वैषी नहीं हितैषी बन सकता है।

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्च सुवीर्य। दधद्रयि मयि पोषम्।। (ऋ० ६ ६६ २१)

अर्थात हे ज्ञान प्रकाश स्वरूप परमात्मन हमारे उत्तम उत्तम काम आचरण या बल को पवित्र बनाइए जिससे धन अपनी सुरक्षा एव पोषण क्षमताओ की वृद्धि होती रहे। 'वयस्याम पतयो रयीणाम' (ऋ० १० १२१ १०) अर्थात हम स्वच्छ धन–ऐश्वर्यों के स्वामी बने उसके दासनहीं। 'नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा (ऋ० १० ६३ ४) अर्थात निशिवासर कर्मशील रहकर जो नहीं समय को खोते है। जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं जन वही प्रतिष्ठित होते हैं। वेद विज्ञान का विरोधी नहीं। उसके तो ज्ञान कर्म उपासना एव विज्ञान चार प्रधान विषय हैं। वेद विज्ञान पर धर्म का अनुशासन चाहता है क्योकि धर्म के जीवति रहने से मानव समुदाय जीवन्त हैं और धर्म के मर जाने पर उसके अन्त को कोई रोक नहीं सकता।

– वरेण्यम्, एम०आई०जी०, ४५ पी०, अवन्तिका कालोनी (ए०डी०ए०), रामघाट मार्ग, अलीगढ

पृष्ठ ६ का शेष भाग

वायुमण्डलीय ताप में वृद्धि हमारे अस्तित्व के लिए खतरा

(घ) स्वास्थ्य पर प्रभाव धरती के तापमान मे वृद्धि हमारे और पशुओ के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करेगी। क्लोरो फ्लारो कार्बन से ओजोन परत क्षीण होगी जिससे पराबैंगनी किरणे अवशोषित न होकर सीधे धरती पर पडेगी। वैज्ञानिको की राय मे इससे चर्म कैसर एव अन्य चर्म रोगो मोतियाबिंद श्वास रोगो तथा अनेक सक्रामक रोगो का प्रकोप बढने की सम्भावना है। अत बढती हुई गर्मी के कारण अनेक ज्ञात अज्ञात रोगो से धरती के मानव एव पशुओ के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडेगा।

(ङ) जलवायु परिवर्तन धरती के तापमान मे होनेवाली वृद्धि से जलवायु मे महत्वपूर्ण परिवर्तन होगे। इससे परिस्थितिक तन्त्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया एक बार समाप्त होने के बाद सतुलन स्थापित होने मे काफी समय लग सकता है और यह सक्राति काल मानव जाति के लिए काफी कष्टदायक साबित हो सकती है। जलवायु परिवर्तन से विश्व के अनेक भागों में तूफानों चक्रवातों, सूखे एव बाढ के लगातार बढते प्रकोप का सामना करना पडेगा। इससे 'पर्यावरण शरणार्थियों' की समस्या भी बढ जाएगी।

धरती के बढते तापमान और उसके कारण जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने के लिए जेराल्ड फौली नामक वैज्ञानिक ने अपनी पुस्तक हू इज टेकिग द हीट मे कुछ महत्वपूर्ण सुरक्षात्मक सुझाव दिए है। उनमे प्रमुख हैं – ग्रीन हाउस गैसो को वातावरण मे घनीभूत होने से रोकना ऊर्जा बचत एव ऊर्जा सचय सी एफ सी का उपयोग मे कटौती मीथेन तथा नाइट्रोजन आक्साइडों के उत्सर्जन मे कमी लकडी तथा फसलो के अवशिष्टो से जलने वाले चूल्हो के उपयोग को लोकप्रिय बढना नवीकरण योग्य ऊर्जा प्रौद्योगिकी वृक्षारोपण आदि। इनमे से कितने उपाय व्यावहारिक हैं यही बहस का असली मुद्दा है क्योकि इसका सीधा सम्बन्ध हमारी जीवन शैलियो को बदलने से है। कुछ अर्थशास्त्रियों ने CO_2 के उत्सर्जन को सीमित करने के लिए कार्बन कर लगाने का सुझाव दिया है। कुछ अन्य अर्थ शास्त्रियो ने हिजारती परमिट' का विचार सामने रखा है। इसके अनुसार हर देश के लिए उसके द्वारा उत्सर्जित करने का कोटा निर्धारित कर दिया जाना चाहिए। निर्धारित कोटे से अधिक CO_2 उत्सर्जित करने के लिए उस देश को अन्य देश से इसके परमिट खरीदने होगे। लेकिन ये दोनों सुझाव भी काफी जटिल है।

उपसहार ये सही है कि धरती का तापमान बढ रहा है। इसके दूरगामी एव भयावह परिणाम होगे। अत हमे अभी से ही इसके सुरक्षात्मक सुझावो एव उपायो पर ध्यान देना पडेगा। इसके लिए यदि हमे अपने जीवन शैली मे परिवर्तन करना पडे तो भी हमे इसके लिए तैयार रहना पडेगा क्योकि हमे हर हालत मे अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है। इस परिपेक्ष्य मे भारतीय जीवन शैली 'सादा जीवन उच्च विचार को प्राथमिकता देनी होगी। साथ ही पर्यावरण शुद्धि एव सतुलन के वैदिक साधन यज्ञ इसमें हमारी अपेक्षित सहायता कर सकता है। हम अपनी आवश्यकताए कम से कम रखें और प्राकृतिक जीवन शैली को अपनाए ताकि हानिकारक एव विषैली गैसो का कम से कम उत्पादन करना पडे। अन्य वैज्ञानिक विकल्पो के अभाव मे यही विकल्प हमारे अस्तित्व की रक्षा मे सहायक सिद्ध होगा।

– स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची-१

पूर्वी दिल्ली

आर्यसमाज निर्माण विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार देल्ली का १६वा वार्षिक उत्सव सोमवार दिनाक १८ नवम्बर २००२ से २४ नवम्बर २००२ तक उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ९०० बजे से ६ ३० बजे तक प्रतिदिन यज्ञ तथा उपदेश और रात्रि ७ ३० बजे से ६ ३० बजे तक भजन एव वेद कथा पूज्यवाद स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा एव भजन आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश वर्मा द्वारा होगे। यज्ञ की पूर्णाहुति २४ नवम्बर रविवार को प्रात होगी। इसके पश्चात आर्य सम्मेलन ११०० से १०० तक होगा जिसकी अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा करेगे तथा मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य तथा विशिष्ट अतिथि सर्वश्री विमल वधावन जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा तथा श्री वेदव्रत शर्मा जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव मन्त्री सार्वदेशिक सभा भी सम्मिलित होगे। श्री नसीब सिह जी विधायक तथा श्री रमेश पण्डित निगम पार्षद भी मुख्य वक्ता के रूप मे आमन्त्रित है। सभी आर्य जनता से अनुरोध हैं कि वे सम्पूर्ण कार्यक्रम मे भाग लेकर धर्मलाभ उठाए तथा आर्य समाज निर्माण विहार के कार्यकर्त्ताओ का उत्साह बढाए। *– रवि बहल, मन्त्री*

आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली–३२ का १८वा वार्षिकोत्सव १८ से २४ नवम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर शोभायात्रा आचार्य प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण महायज्ञ भाषण प्रतियोगिता आर्य महिला सम्मेलन सहित अनेको कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर आचार्य सुखदेव आर्य तपस्वी के प्रवचन तथा श्री रामदास आर्य के भजन सुनने को मिलेगे।

आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। वेद कथा डॉ० अन्नपूर्णा जी एव मधुर भजन श्री नरदेव आर्य द्वारा होगे। आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदशक तथा नेतागण पधार रहे हैं।

उत्तरी दिल्ली

आर्यसमाज बिडला लाइन्स, कमलानगर, दिल्ली का ६७वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर दिल्ली–७ का ६७वा वार्षिकोत्सव शुक्रवार २२ नवम्बर २००२ से रविवार २४ नवम्बर २००२ तक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर होने वाले विशेष यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० कुवरपाल शास्त्री होगे तथा वेदकथा श्री आचार्य छविकृष्ण शास्त्री द्वारा तथा भजन प० जीवनसिह आर्य के सम्पन्न होगे।

आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली का वेदप्रचार समारोह

आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली मे २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक वेदप्रचार समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आचार्य राजू वैज्ञानिक द्वारा वेद प्रवचन एव श्री भगतराम एव श्रीमती रेखा शर्मा के मधुर भजन होगे। यह कार्यक्रम प्रतिदिन रात्रि ७४५ से ६ ३० तक आयोजित किया जाएगा।

आर्यसमाज पुष्पनगर का ३०वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पुष्पनगर (आर्यमगढ) उत्तर प्रदेश का ३०वा वार्षिकोत्सव दिनाक २४ २५, २६ तथा २७ अक्टूबर २००२ को बडे उल्लासपूर्वक मनाया गया। स्वामी केवलानन्द सरस्वती अलीगढ स्वामी शुभानन्द जी स्वामी ऋतुमानन्द जी ब्रह्मचारी नरेन्द्र जी आर्य (सन्यास आश्रम आर्यमगढ) के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। बृहदयज्ञ की ब्रह्मा डॉ० सरस्वती देवी आचार्या राजकीय बालिका इण्टर कालेज बाराणसी रही। सगीताचार्य प० रामप्रसाद पाण्डेय वाराणसी प० परमानन्द रेडियोकलाकार मऊ तथा डॉ० वागीश प्रसाद मिश्र पुष्पनगर के मधुर भजन के साथ बहुत ही सुन्दर उपदेश हुए।

पश्चिमी दिल्ली

आर्यसमाज बी० ब्लॉक जनकपुरी द्वारा वेदप्रचार समारोह

आर्यसमाज बी ब्लॉक जनकपुरी ५८ द्वारा २० नवम्बर से २४ नवम्बर २००२ तक वेदप्रचार समारोह का भव्य आयाजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्री हरिप्रसाद जी के ब्रह्मत्व मे ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव वेदोपदेशक का आयोजन किया गया है। श्रीमती सुदेश जी आर्या के भजनोपदेश तथा डॉ० शिवकुमार शास्त्री डॉ० सोमदेव जी शास्त्री के प्रवचनो से लाभान्वित होने का अवसर है।

इस अवसर पर महिला सत्सग आर्य वीर सम्मेलन सहित अनेक अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होगे। २४ नवम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ० सुन्दरलाल जी कथूरिया करेगे तथा श्री विमल वधावन वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित रहेगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

आर्यसमाज टैगोर गार्डन नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर ए सी ब्लॉक टैगोर गार्डन नई दिल्ली का ३६वा वार्षिकोत्सव १८ से २४ नवम्बर २००२ तक मन्दिर प्रागण मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर शोभायात्रा ऋग्वेदीय वृहद यज्ञ राष्ट्रनिर्माण सम्मेलन मनोहर भक्ति सगीत वेद कथा आर्य महिला सम्मेलन गोष्ठी तथा चित्र प्रदर्शनी सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

इस अवसर पर श्री हीरालाल चावला श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

महाशय कल्याण दास आर्य नहीं रहे

बडे दुख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज ब्रह्मपुरी के सरक्षक महाशय कल्याण दास जी आर्य का दिनाक १४ सितम्बर २००२ को प्रात ८ बजे आकस्मिक निधन हो गया। वे गत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका पूरा जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। आर्यसमाज ब्रह्मपुरी की स्थापना के समय उनके द्वारा ही यज्ञशाला का निर्माण किया गया। परम पिता परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोक सतप्त परिवार एव सम्बन्धियो को इस अपूर्णनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

– मन्त्री,
आर्यसमाज ब्रह्मपुरी

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व उपदेशक प० जीत नारायण शास्त्री (आर्य समाज पुष्पनगर आर्यमगढ के पुरोहित) का स्वर्गवास २६ अक्टूबर २००२ को सायकाल ३ ३० बजे ग्राम रामशाला नरईपुर मे हो गया। उनकी अवस्था ८५ वर्ष की थी।

दक्षिणी दिल्ली

आर्यसमाज सरिता विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरिता विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे विशेष यज्ञ सम्पन्न होगा तथा श्री दिनेश दत्त एव श्री श्यामवीर राघव के मनोहर भजन सुनने को मिलेगे।

आर्य समाज, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता विंग कमांडर राजेन्द्र पाल का देहान्त

विंग कमाडर राजेन्द्र पाल का सोमवार ४ नवम्बर २००२ को अकस्मात निधन हो गया। श्री राजेन्द्र पाल दिल्ली से बाहर जहा भी कार्यरत रह वह आर्यसमाज की तन मन धन मे सेवा करते रह और अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरला पाल जो इस समय भी स्त्री आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी की प्रधाना हैं वह भी दिल्ली से बाहर जहा भी रही स्त्री आर्य समाज की कर्मठ कार्यकर्त्री रही और तन मन धन से वह भी स्वर्गीय श्री राजेन्द्र पाल के साथ आर्य समाज की सेवा करती रही। उनके निधन से एक दिन पूव रविवार ३ नवम्बर २००२ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज दिल्ली की १२५वे स्थापना के समारोह के अवसर पर उन्हे गौरवशाली इतिहास की स्मृति मे एक प्रतीक चिन्ह भट किया गया क्योकि वह ८५ वर्ष आयु क हो गए थे।

आर्यसमाज ग्रीन पार्क म वृहस्पतिवार ७ नवम्बर २००२ को श्रद्धाजलि सभा हुई जिसमे कनल दीवान इन्द्रसेन साहनी पूर्व प्रधान आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी वतमान प्रधान ब्रिगेडियर धवन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा क काषाध्यक्ष तथा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से श्रीमती शकुन्तला आर्या ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 24 11 2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 21/22-11-2002

हरियाणा

प्रो० उत्तम चन्द जी शरर अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह

आर्यजगत के प्रतिष्ठित विद्वान प्रो० उत्तम चन्द जी शरर का अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्लीतथा अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह समिति पानीपत के सयुक्त तत्वावधान मे शीघ्र ही पानीपत नगर मे मनाया जायेगा।

जो सस्था इस पवित्र कार्य के लिए अपना आर्थिक योगदान देना चाहे वे ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजकर अनुगृहीत करें तथा समारोह को सफल बनाए। कृपया चैक ड्राफ्ट मनीआर्डर इत्यादि निम्नलिखित खाते के नाम से भेजे।

प्रो० उत्तमचद शरर अभिनन्दन समारोह समिति पानीपत। उपरोक्त ड्राफ्ट चैक मनीआर्डर इत्यादि निम्नलिखित पतो पर भेजे।

१ मुनीष चन्द अरोडा प्रधान वेद प्रचार एव पारिवारिक सत्सग समिति १६६ पुरानी हाउसिग बोर्ड कालोनी पानीपत।

२ मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आसफ अली रोड रामलीला मैदान नई दिल्ली।

– मुनीष चन्द अरोडा
प्रधान वेद प्रचार समिति

श्री नरेन्द्र नाथ गुप्ता का 70वां जन्मदिवस

अमेरिका मे रह रहे श्री नरेन्द्र नाथ गुप्ता ने अपने जीवन के सात दशक सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिए हैं। इस अवसर पर श्री नरेन्द्रनाथ जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को १२६ डालर का सात्विक दान भेजा है। श्री नरेन्द्र नाथ जी यथा सम्भव वर्ष मे कई बार अपने प्रचार कार्यो से प्राप्त धनराशि तथा स्वय अपनी ओर से भी दान भेजते रहते हैं। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के आदिवासी क्षेत्रो मे चल रहे सेवा कार्यो के प्रति उनका विशेष अनुराग है।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने समूचे आर्य जगत की ओर से उन्हे इस अवसर पर शुभ कामनाए भेजी है।

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें

प्रतिष्ठा मे
10150 पुस्तकालाध्यक्ष
[illegible]
जिला हरिद्वार (२०१४०)

उत्तर प्रदेश

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव

पाणिनि कन्या महाविद्यालय बनारस का ३१वां वार्षिकोत्सव ६ से ८ दिसम्बर २००२ तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ८ बजे से ६ ३० बजे तक वृहद देवयज्ञ भजन वेदोपदेश तथा कन्याओ के कार्यक्रम होगे। प्रतिदिन सायकाल ५ बजे से कार्यक्रम सम्पन्न होगे। समारोह मे विशिष्ट सामगान नवनिर्मित शालाओ का उद्घाटन विद्यालय की सस्थापिका आचार्या स्व० डॉ० प्रज्ञा देवी जी की ७वीं पुण्यतिथि का आयोजन दीक्षान्त कार्यक्रम सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शास्त्र चर्चा वाद विवाद प्रतियोगिता शौर्यपूर्ण धनुर्विद्या परेड स्तूप आदि खेलों का प्रदर्शन तथा विशेष व्याख्यानो सहित अनेको अन्य आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस अवसर पर श्री विष्णुकान्त शास्त्री (राज्यपाल उ०प्र०) डॉ० धर्मवीर जी आचार्य विजयपाल जी डॉ० राजाराम दीक्षित श्री सुचित नारग जी श्रीमती वसुधा शास्त्री आचार्य अरविन्द शास्त्री सहित अनेकों विद्वान तथा गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाये।

महाराष्ट्र

प्रथम वार्षिक महोत्सव

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय जरोडा का प्रथम वार्षिक महोत्सव एव माता सोमकुमारी आर्ष पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह २७ दिसम्बर से २६ दिसम्बर २००२ तक सम्पन्न होगा। इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। समारोह में गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन रात्रिकालीन वेद एव आर्य महासम्मेलन तथा भजनोपदेश विशाल आर्ष पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह सहित अनेको कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान नेता तथा गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। इस पुण्य भूमि में पधारकर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे अपना योगदान प्रदान कर पुण्य के भागी बने।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन [illegible]) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन [illegible])
सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

प्रथम कालम – प्रथम विचार, सदा सत्य रहने वाली वाणी
वेद वाणी

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमान स्वे दमे।। ऋ० १/१/८

पदार्थान्वय

(स्वे) अपने (दमे) उस परम आनन्द पद मे कि जिसमें बडे बडे दुःखो से छूटकर मोक्ष सुख को प्राप्त हुए पुरुष रमण करते हैं (वर्धमानम्) सब से बडा (राजन्तम्) प्रकाश स्वरूप (अध्वराणाम्) पूर्वोक्त यज्ञादिक अच्छे अच्छे कर्म और धार्मिक मनुष्य तथा (गोपाम्) पृथिव्यादिको की रक्षा (ऋतस्य) सत्यविद्यायुक्त चारो वेदो और कार्य जगत के अनादि कारण के (दीदिविम्) प्रकाश करने वाले परमेश्वर को हम लोग उपासना योग से प्राप्त होते है।

वर्ष ४१ अक ३२ १५ दिसम्बर से २१ दिसम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७६ सृष्टि सम्वत १६७२९४६१०३ सम्वत २०५९ मा०शी०शु०११
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीयन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण मानवों का निर्माण आर्यसमाज का दायित्व

आर्यसमाज लाजपत नगर कानपुर महानगर का ४८वा वार्षिकोत्सव दिनाक २१ नवम्बर २००२ से २४ नवम्बर २००२ तक अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह का प्रारम्भ दिनाक १७ ११ २००२ को लाजपत नगर क्षेत्र मे भारी जनसमूह के साथ जन जागरण हेतु निकाली गयी शोभा यात्रा से हुआ जिसमे आर्यसमाज के अधिकारीगण सदस्यगण व विभिन्न विद्यालयो जिसमे से कानपुर विद्या मन्दिर महिला पी०जी० महाविद्यालय कानपुर आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर सिलाई स्कूल के छात्र छात्राओ ने अत्यन्त उल्लासपूर्वक भाग लिया। छात्राए महर्षि दयानन्द के झण्डे बैनर व उनके दिए गए सिद्धान्तो से सम्बन्धित नारो की पटिटया हाथ मे लेकर तथा उनके गीत गाते चल रही थी।

वार्षिकोत्सव मे यजुर्वेद महायज्ञ का अनुष्ठान किया गया। जिसमे ब्रह्मा एव यज्ञ सचालक मान्या प्रीती विमर्शिनी वाराणसी रही। वेद पाठ कानपुर विद्या मन्दिर महिला पी०जी० महाविद्यालय की वेदपाठी छात्राओ द्वारा सस्वर किया गया। इस अवसर पर डा० आशा रानी राय द्वारा लिखित दैनिक यज्ञ की पुस्तक यज्ञ पद्धति का वितरण किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय कै० देवरत्न आय का भव्य स्वागत आर्यसमाज लाजपत नगर के प्रधान श्री हीरालाल चावला द्वारा शाल प्रशस्ति पत्र तथा श्रीफल के साथ किया। अन्य पदाधिकारियो तथा नगर की विभिन्न आर्यसमाजो के पदाधिकारियो द्वारा तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर के प्रधान डा० हरपाल सिह मत्री डा० आशा रानी राय कोषाध्यक्ष श्री प्यारे लाल आर्य उपमत्री श्री रामजी आर्य आम प्रकाश आर्य सुरेन्द्र कुमार सक्सेना आदि ने भी माल्यार्पण स स्वागत किया। डा० आशारानी राय ने श्री राजेन्द्र राय की ओर से ११०००/ रुपये माननीय आर्य जी को भेट किये। डा० आई०सी० गुप्त जी ने ५०००/ रुपय का चेक टकारा मे ऋषि दयानन्द द्वार के लिए सार्वदेशिक क प्रधान श्री आर्य जी को भेट किया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का कानपुर सैन्ट्रल रेलवे स्टेशन पर स्वागत करती डॉ० आशारानी राय मंत्री आर्यसमाज लाजपत नगर कानपुर एव मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर एव उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० डॉ० हरपाल सिह प्रधान आर्य उपप्रतिनिधिसभा कानपुर श्री रामजी आर्य उपमत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर। आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर के वार्षिकोत्सव पर बुजुर्गों का सम्मान समारोह में श्रीमती सत्यारानी वाहरी को सम्मानित करते हुए कै० देवरत्न आर्य तथा अन्य।

अर्जित धन की तरह अर्जित ज्ञान भी परिवारों में बांटें

नई दिल्ली आर्यसमाज बी० ब्लाक जनकपुरी द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के समापन समारोह पर मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने आर्यसमाज के प्रधान डा० कुन्दनलाल कथूरिया द्वारा सम्पादित लघु पुस्तिका कुछ ज्वलन्त समस्याए और आर्यसमाज का लोकार्पण करत हुए कहा कि इस प्रकार के ट्रेक्टो के माध्यम से आर्य विद्वान देश की ज्वलन्त समस्याओं पर आर्यसमाज का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे राजनेताओ तथा प्रशासको को यथा सम्भव प्रेरित किया जा सके।

आर्यसमाज बी० ब्लाक जनकपुरी मे मुख्य अतिथि श्री विमल वधावन एव श्री सुन्दरलाल कथूरिया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि वद क रूप मे हमारे पास समूची धरती का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान उपलब्ध है जिसम न केवल व्यक्तिगत सुखशान्ति और आध्यात्मिक उत्थान उपलब्ध है अपितु रचनात्मक विज्ञान भी मार्गदर्शन के लिए खोजा जा सकता है। आज दुनिया मे विज्ञान ने जितनी भी तरक्की की है उसकी परिणति और सूक्ष्म प्रभाव केवल विनाशात्मक ही है। यदि विज्ञान को जानने वाले महानुभाव वैदिक ज्ञान को आधार बनाकर कुछ प्रयास करे तो रचनात्मक विज्ञान भी विकसित किया जा सकता है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक

राष्ट्र का सम्बन्ध संस्कृति से है जो भूगोल की सीमाओं में बंधी नहीं

नई दिल्ली आर्यसमाज टैगोर गार्डन के वार्षिकोत्सव का आयोजन धूमधाम से किया गया जिसमे सार्वदशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य दिल्ली सभा की मन्त्रिणी श्रीमती शशि आया तथा शकुन्तला आर्या उपस्थित थीं। सभा की अध्यक्षता श्री हीरालाल चावला ने की।

इस अवसर पर वयोवृद्ध श्री चुग तथा कृष्णा चडढा का अभिनन्दन किया गया।

राष्ट्र एव सस्कृति की रक्षा के लिए मार्गदशन देते हुए वैदिक विद्वान श्री रामकिशोर शर्मा ने कहा कि वेद ज्ञान का अक्षरश अनुसरण ही राष्ट्र और सस्कृति की रक्षा कर सकता है।

सावदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि वेद के अनुसार राष्ट्र का अर्थ भौगेलिक नही हो सकता। राष्ट्र से अभिप्राय सस्कृति से है और सस्कृति का प्रचार प्रसार भौगोलिक सीमाओ मे नहीं बधता। सस्कृति का प्रचार समूची धरती का विषय है। इस अवधारणा को महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो से बल मिलता है क्योकि उन्होने भी प्रचार प्रसार का लक्ष्य **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम"** के रूप मे दिया है।

उन्होने कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक व्यक्ति इस योजना से जुडे और इस प्रचार प्रसार का शुभारम्भ स्वय अपने आपसे करे। स्वय को आर्य बनाने से हमारा जीवन चुम्बक की तरह दूसरो को इस सस्कृति की ओर आकर्षित करने लगेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए जहा अपने आपको सुधारने की प्राथमिक आवश्यकता है इसके साथ ही समाज से बुराईयो के उन्मूलन का आन्दोलन जोर शोर से चलाने की आवश्यकता है। परन्तु विडम्बना है कि देश वासियो ने पाखण्ड उन्मूलन अभियान को केवल आर्यसमाज की कार्यशैली मानकर सीमित समझे रखा जिसका नतीजा है कि आज के वैज्ञानिक युग मे भी श्रीकृष्ण की मूर्तियो के विवाह रचे जा रहे है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं वार्षिक यज्ञोत्सव

आर्यसमाज शान्ति नगर चार मरला सोनीपत हरियाणा मे २० से २२ दिसम्बर २००२ तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव वार्षिक यज्ञोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर यज्ञ भजन उपदेश एव डी० ए० वी० माध्यमिक विद्यालय के छात्रो द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएगे। समारोह मे आर्य तपस्वी सुखदेव आचार्य देवव्रत जी श्रीमती कुसुम जी अग्रवाल श्री राजकरणी अरोडा श्री उपेन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक और श्री वेदपाल जी आर्य सहित अनेको विद्वान तथा नेता पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

पृष्ठ १ का शेष

राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण ...

इस अवसर पर उद्बोधन करते हुए श्री आर्य ने कहा कि पाखण्ड को दूर करना ससार का उपकार करना नारी शिक्षा की अनिवार्यता समेत समाज मे राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण मानव का निर्माण करना ही आर्यसमाज का प्रमुख उददेश्य है। उन्होने बताया कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन १८७५ मे मुम्बई मे की थी। आर्य वह है जो सदाचारी सत्य का आचरण करने वाले श्रेष्ठ पुरुष होते है। उनके समूह का नाम ही आर्य समाज है। पाखण्ड को दूर करना ससार का उपकार करना अच्छे चरित्रवान मानव का निर्माण विधवा विवाह को प्रोत्साहन तथा नारी शिक्षा की अनिवार्यता के लिए इस समाज ने बीडा उठाया है। उन्होने बताया कि काग्रेस के पूर्व वरिष्ठ पदाधिकारी सीतारामैया ने काग्रेस के इतिहास मे लिखा है कि देश की स्वतन्त्रता की लडाई मे जेल जाने वाले ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे। फासी के तख्ते को चूमने वाले सरदार भगतसिह राजगुरु सुखदेव रामप्रसाद बिस्मिल आदि सभी को आर्यसमाज से प्रेरणा मिली तथा वे सभी आर्यसमाजी ही थे।

उन्होने आगे कहा कि वास्तविकता एव सच्चाई को जानने के बाद ही वे सभी इससे जुडे। श्री आर्य ने कहा कि जो व्यक्ति जनतान्त्रिक तरीके से चुनकर आए हैं उनका साथ देकर सगठन को मजबूत बनाए। बुजुर्ग सम्मान समारोह मे श्री रघुवीर चन्द सरीन श्री हसराज सेठ डॉ० आई०सी०सी० गुप्त श्रीमती मीरा बग्गा श्रीमती सत्या रानी बाहरी श्रीमती शान्ती त्रेहन छ आर्य बुजुर्गो का सम्मान शाल ओढाकर सम्मान पत्र श्रीफल तथा माल्यार्पण करके सार्वदेशिक के प्रधान माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य जी एव आचार्य आर्य नरेश ने सयुक्त रूप से किया। प्रधान श्री आर्य जी ने इस समारोह की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम पूरे राष्ट्र मे होने चाहिए। क्योकि बुजुर्गो का आशीर्वाद व वरदहस्त समाज की प्रेरणा के लिए आवश्यक है।

हिमाचल प्रदेश से पधारे आचार्य आर्य नरेश ब्रह्मचारी ने जीवात्मा के छ लक्षण बताए – इच्छा द्वेष ज्ञान प्रयत्न सुख व दुख को जीवात्मा धारण करता है मानव शरीर से ही शुभ कर्म करते हुए मोक्ष मार्ग का पथिक बन जाता है। उन्होने आत्मा और परमात्मा की व्याख्या करते हुए कहा कि आत्मा ही ब्रह्म है। उन्होने विचारहीनता अज्ञानता व शक्ति का अहसास न होना ही कष्ट का कारण बताया।

इस अवसर पर लब्ध प्रतिष्ठ उपदेशक व भजनीक माननीय डॉ० विक्रम कुमार विवेकी चडीगढ ने बताया कि सत्य सूक्ष्म व अदृश्य होता है किन्तु वह सार्वकालिक है।

डॉ० कुमार ने कहा कि मानव के अन्दर जो पाशविक प्रवृत्तिया काम क्रोध मोह ईर्ष्या व लालच की है उनका शमन करके ही मनुष्य ममता सहिष्णुता अहिंसा व सत्य आदि को धारण करके ही मनुष्यता का निर्वाह किया जा सकता है।

समारोह का सचालन करते हुए डॉ० आशा रानी राय मत्री ने बताया कि गृहसूत्रो मे बालक बालिका सभी के लिए सस्कार अनिवार्य बताए है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गृहसूत्रो के आधार पर १६ सस्कारो की अनिवार्यता सभी के लिए बताबी। सस्कारवान बालिकाए परिवार की यश कीर्ति को बढाती है इसलिए यज्ञ यज्ञोपवीत व सस्कार सभी परिवार मे होने चाहिए। प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रधान श्री हीरा लाल चावला ने कहा कि समाज से जुडे स्त्री और पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण करना और मन्त्रो के अर्थ के बारे मे ज्ञान होना जरूरी है।

पृष्ठ १ का शेष

अर्जित धन की तरह अर्जित ज्ञान भी...

उन्होने कहा कि आर्यसमाज के सदस्यो को पूर्ण श्रद्धा के साथ अपने समस्त परिवार को आर्यसमाज की विचारधारा के साथ जोडने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार व्यक्ति अपने अर्जित धन को अपने परिवार मे बाटता है उसी प्रकार वैदिक ज्ञान को भी अपने परिवार मे अवश्य बाटना चाहिए। जो लोग इस परम्परा का निर्वहम करने मे लापरवाही करते है उनके परिवार आर्यसमाज के सहयोगी नहीं बन पाते। अक्सर ऐसे लोग ही यह कहा करते हैं कि आर्यसमाज मे वर्तमान पीढी क्यो नहीं आ रही ? इस प्रश्न का समाधान हर व्यक्ति के मन मे छुपा है।

मुम्बई से पधारे वैदिक विद्वान डॉ० सोमदेव ने कहा कि पितृ यज्ञ वयोवृद्धो की सेवा और तृप्ति (तर्पण) का अवसर प्रदान करता है तथा इसके द्वारा हम अपनी आयु विद्या यश और बल को बढा सकते है। हम मे से प्रत्येक को प्रतिदिन यह यज्ञ करना चाहिए। इस यज्ञ का विधान तीन पीढियो तक है अर्थात यदि किसी परिवार मे माता पिता दादा दादी पडदादी जीवित हैं तो उन सब की सेवा करना सन्तान का कर्त्तव्य है। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धापूर्वक सेवा करना और श्राद्ध जीवित पितरो (माता पिता) का किया जाता है मृतको का नहीं। पारिवारिक सन्ध्या यज्ञ एव सत्सग के द्वारा हम अपने बच्चो मे यह भावना विकसित कर सकते हैं तथा उन्हे अच्छे सस्कार दे सकते हैं। साधना ध्यान कक्ष का उद्घाटन करते हुए स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी ने कहा कि इस आर्य समाज ने बहुत अच्छा कार्य किया है तथा इसका अनुकरण अन्य आर्यसमाजो को भी करना चाहिए। ध्यान का जीवन मे अत्यधिक महत्व है तथा जीवन का साधारण से साधारण काम भी बिना ध्यान के नहीं किया जा सकता फिर योग साधना मे तो इसका और अधिक महत्व है।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल जी ने २५ दिसम्बर को आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को बडी सख्या मे पधार कर सफल बनाने का आर्य जनता का आह्वान किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ मे भजन उपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने अपने सुमधुर प्रेरक भजनो से सभी श्रोताओ को मुग्ध कर दिया। इस समारोह में सर्वश्री शिवकुमार मदान चावला जी कृष्ण चन्द्र वर्मा योगेश्वर चन्द्रार्य श्रीमती राजमैहन विमला मलिक उषा टुटेजा व प्रभार्या पुष्पा खुराना आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानन्द के ७६वे बलिदान दिवस पर २५ दिसम्बर २००२ बुधवार को विशाल शोभायात्रा

स्थान : स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार दिल्ली

समय यज्ञोपरान्त प्रात १० बजे जनसभा लाल किला मैदान, दिल्ली

केसरिया पगडी अथवा टोपी तथा केसरिया साडी एव दुपटटा ओढकर अपनी अपनी आर्यसमाजो के वाहनो को ओ3म ध्वज एव अपनी अपनी आर्यसमाजो के नाम पट से सुसज्जित कर अपने इष्ट मित्रो के साथ भारी सख्या मे कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर सगठन शक्ति का परिचय दे।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी श्रद्धानन्द के पहलवान शिष्य जगन्नाथ पहलवान

धर्मनिष्ठ शाकाहारी मल्ल विद्याचार्य, लोकप्रिय आर्यवीर केसरी
श्री जगन्नाथ पहलवान शाहपुरजट (दिल्ली)

स्वामी प्रणवानन्द ब्रह्मचारी

हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि ईश्वर की व्यवस्था अनुसार इस लेख के लेखक को मनुष्य योनि मे आने का सौभाग्य मिला तो भौतिक रूप मे उन महान् एव पवित्र वीर्य के धारक श्री जगन्नाथ पहलवान को इन्होने पिता के रूप मे पाया। आज लेखक 61वें वर्ष मे चल रहे है। वैसे यह सत्य है कि माता निर्माता भवित परन्तु लेखक ने अपने पिता द्वारा दी गई ब्रह्मचर्य रूपी विरासत को आजीवन ब्रह्मचारी रहकर पूर्ण सरक्षण प्रदान किया है जिसने पिता द्वारा भी सस्कार प्रदान किए जाने वाले सिद्धान्त को मान्यता दी है।

विद्वान् लेखक का पूर्व नाम ब्रह्मचारी डा0 नरेश कुमार था। वर्ष 2000 मे लेखक ने सेवा निवृति के बाद सन्यास ग्रहण किया और शरीर चिकित्सा के परामर्श का दान देकर ऋषि ऋण से उऋण होने मे प्रयासरत है। स्वामी प्रणवानन्द ब्रह्मचारी के नाम से प्रसिद्ध लेखक अपने सरकारी सेवा काल मे भी योग शिक्षा से ही जुडे रहे।

विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान

बात बीसवी शताब्दी के दूसरे दशक की है। आयसमाज तथा काग्रेस के युद्धस्तर पर चल रहे सघष के फलस्वरूप देश को स्वतन्त्रता मिलने की आशाए दीख पडने लगी थी। तभी युगदृष्टा स्वामी श्रद्धानन्द जी के मन को एक विचार ने घेर लिया था कि स्वतन्त्रता मिलने पर जब जनतान्त्रिक विधि से देश की बागडार सभालने का अवसर मिलेगा तब सवर्ण जातियो के अत्याचारो से सताई पिछडी जातिया मुसलमाना तथा ईसाइया के बहकावे म आकर उच्च जातियो के खिलाफ न चली जाए। ऐसी स्थिति मे सत्ता पुन मुसलमानो के हाथ म जा सकती है। भारत के मुसलमानो मे अधिकाश परिवर्तित हिन्दू ही है। अत उन्हे मुख्य राष्ट्रधारा मे लाने के लिए पुन हिन्दू बनाया जाए तथा हिन्दू जाति मे वतमान ऊच नीच के भेद को मिटा कर पारस्परिक रोटी-बटी के व्यवहार को पुन कायम किया जाए। इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए उस प्रखर राष्ट्रवादी सन्त ने दो आन्दोलन चलाए पहला शुद्धि आन्दोलन तथा दूसरा जाति तोडो आन्दोलन। स्वामी जी के इन दोनो आन्दोलनो में समाज के सभी वर्गो के साथ साथ दो पहलवान नवयुवक भी शामिल हुए जिन्हे स्वामी जी ने अपने पवित्र कर कमला द्वारा यज्ञोपवीत भी दिए। इनक नाम थ जगन्नाथ और विजयपाल। स्वामी जी प्यार से इन्हे जगन' और 'पाल कहकर पुकारते थे। य दोनो ही सवल सदाचारी तथा आर्यसमाज मे प्रबल निष्ठा रखने वाल थ। उस समय अविभाजित भारत मे यद्यपि हिन्दू युवकों मे भी पहलवानी का शाक था किन्तु हिन्द केसरी आदि पदो पर अरस स गुलाम हमीदा गामा आदि मास भक्षी मुसलमान पहलवाना का ही दबदबा बरकरार था जबकि स्वामी जी देश के सबसे बलिष्ठ व्यक्ति क रूप म किसी शाकाहारी का देखना चाहते थे। अत देश की भावी पीढी को बलवान आर सदाचारी बनाने के लिए स्वामी जी ने इन दोनो युवा पहलवानो को बहुत प्रोत्साहन दिया। आगे चलकर ये दोनो पहलवान गुरु जगन्नाथ तथा गुरु हनुमान के नाम से प्रसिद्ध हुए और इन्होने हजारो युवकों को सदाचारी बलिष्ठ तथा आर्य बनाया।

प्राय बल की अधिकता तथा भोलेपन के कारण पहलवान लोग पथभ्रष्ट होकर डाका चोरी व्यभिचारादि मे पडकर समाज के लिए सिरदद बन जात ह किन्तु इन दोनो पहलवानो के अखाडे मे ब्रह्मचय शाकाहार आर निव्यसनता सभी के लिए अनिवाय थी उस सत्यवादी सन्त का सत्य सकल्प अन्तत साकार हुआ तथा स्वामी जी क इन पहलवान शिष्यो क परिश्रम स महाबली सतपाल चन्दगीराम तथा करतार सिह आदि शाकाहारी पहलवानो ने भारत केसरी पद को शोभित किया। आज भी चन्दगी राम के पुत्र जगदीश काली रमण इस पद पर आसीन हे।

हिन्दू मुसलिम पहलवानो मे प्रतिस्पर्धा

गुरु हनुमान जी ने हम बताया कि जगन्नाथ पहलवान ने सेकडो चुनीदा मुसलिम पहलवानो का पछाडा था। जिनमे स एक घटना यहा प्रस्तुत है मेरठ म नौचन्दी क मेले म एक बड़ा दगल का आयोजन होता था। हिन्दू मुसलिम पहलवानो म उस दगल को जीतन की बडी प्रतिस्पर्धा रहती थी पर कई वर्षो स मेरठ का ही अय्यूब पहलवान पहला इनाम जीत ले जाता था। कुछ स्वाभिमानी हिन्दुओ को यह बात बडा चुभी। 1925 का नौचन्दी का मेला नजदीक आया देखकर वे दिल्ली से जगन्नाथ तथा हनुमान पहलवान को लिवा लाए। अय्यूब तथा जगन्नाथ पहलवान का जोड तय हुआ

शाकाहारी का विचित्र सामर्थ्य

अय्यूब की महारत और प्रसिद्धि को देखकर लोगो को लगा कि अय्यूब बडी आसानी से कुश्ती जीत लगा। यहा तक कि मेले के अध्यक्ष (मेरठ के कलेक्टर) ने भी जगन्नाथ पहलवान को नवसिखिआ समझकर उन्हे पुनर्विचार करने का कहा इस पर जगन्नाथ पहलवान ने पूरे विश्वास से कहा कि अय्यूब दो मिनट तक भी मेरे सामने नही टिक सकता खेर कुश्ती आरम्भ हुइ दोनो ओर स भरपूर दाव पेच चले पर जगन्नाथ पहलवान ने 20 22 सेकिण्ड म ही अय्यूब को हाथो पर उठा लिया चारो ओर घूमकर दशको को दिखाया तथा इतना जोर स पटका कि वह बेहोश हो गया। दर तक जल के छींटे दन तथा हाथ पेर मलने पर उसे होश म आया दशको ने खुश होकर जगन्नाथ पहलवान की जय जयकार की तथा 65 रुपये इनाम म दिए। मेरठ से लौटने पर य दोनो पहलवान स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिलने गए वहा हनुमान ने स्वामी जी को मेरठ की बात सुनाई। तभी एक वृद्धा स्वामी जी के पास आकर बेटी की शादी के लिए धन की गुहार करने लगी। स्वामी जी क सकेत पर। जगन्नाथ पहलवान ने वे 65 रुपये उस बुढिया को दे दिए। इस व्यवहार से प्रसन्न होकर स्वामी जी ने अपने शिष्य जगन पहलवान की पीठ थपथपाई।

जाति तोडो आन्दोलन मे योगदान

उन दिनो हिन्दू जाति मे ऊच नीच का भेदभाव बहुत अधिक था। श्री जगन्नाथ पहलवान के गाव शाहपुर जट म भी सवर्ण जातिया के कुए अलग थ तथा पिछडी जातियो के अलग एक कुआ तो बाल्मीकि (भंगियो) का था जिस पर गाव का अन्य किसी जाति का कोइ आदमी पेर न रखता था स्वामी जी की प्रेरणा स जगन्नाथ पहलवान ने इस भेदभाव का दूर करने की ठान ली तथा एक दिन अपने अखाड क 15 20 शिष्यो का लेकर उस कुए पर जाकर जलपान स्नानादि किया भंगियो के कुए पर पहलवानो के स्नान करने की यह खबर गाव भर मे फैल गई गाव म 80 फीसदी आबादी जाटो की थी पचो ने इस बात को गम्भीरता से लिया आर जगन्नाथ पहलवान को गाव बिरादरी म निकाल दिया यह वृत्तान्त सुनकर शिष्य वत्सल स्वामी जी ने गाव मे पधारने की तिथि दे दी स्वामी जी के आने की खबर सुगन्धि की तरह पूरे इलाके म फैल गई महर्षि दयानन्द के जिस मूर्धन्य शिष्य को महात्मा गाधी जैसे राष्ट्र नेता सम्मान करते थ उनका एक साधारण से गाव म आना एक ऐतिहासिक घटना थी। अन पूरे देहात के लोग शाहपुरजट गाव मे इकट्ठे हो गए स्वामी जी का तपपूत तेजस्वी शरीर देखकर लगता था कि साक्षात् त्रिय पुण्य पुञ्ज धरा पर उतर आया ह

क्रमश

धर्म परिवर्तन नहीं, मर्म परिवर्तन

डॉ० वेदप्रताप वैदिक

जयललिता ने धर्म-परिवर्तन विरोधी अध्यादेश जारी क्या किया, जैसे मुर्गियो के दड़बे मे बिल्ली घुस गई। पादरी और मुल्ला इस कदर चिल्ला रहे है, मानो कयामत आ गई हो। विरोधी दल कह रहे हैं कि भाजपा की खुशामद का यह नायाब तरीका है। जयललिता अपने मुकदमे जीतना चाहती है और केन्द्र सरकार मे भागीदारी भी। वे कावेरी मुद्दे से भी लोगो का ध्यान हटाना चाहती है। इसलिए उन्होंने हिन्दू साम्प्रदायिकता का तुरूप का यह पत्ता फेंका है। ये सन्देह साधार हो सकते है लेकिन क्या इसी कारण घोड़े को गधा कहा जा सकता है और गुलाब के फूल को गेंदा माना जा सकता है ! धर्म-परिवर्तन जैसी घृणित, अमानवीय और अधर्मकारी प्रथा पर तमिलनाडु ही नहीं, देश के हर प्रात मे निगरानी का कानून बनना चाहिए। मध्यप्रदेश, उड़ीसा और अरूणाचल मे तो यह कानून पहले से ही लागू है लेकिन अब इसका पालन पूरी कठोरता के साथ होना चाहिए। कारण जो भी हो, जयललिता ने जो काम किया, वह ठीक है।

जयललिता के अध्यादेश या म०प्र० और उडीसा के कानूनों ने धर्म-परिवर्तन पर प्रतिबंध नहीं लगाया है। ऐसा नहीं है कि कोई अपना धर्म-परिवर्तन करना चाहे तो भी नही कर सकता। उसका अर्थ केवल इतना है कि वह धर्म-परिवर्तन प्रलोभन, भय और बहकावे के आधार पर नही होना चाहिए और प्रत्येक धर्म-परिवर्तन की रपट जिलाधीश के कार्यालय मे दर्ज होनी चाहिए। इसमें बुराई क्या है ? आपत्तिजनक क्या है ? इन प्रावधानो का पादरी और मुल्ला किसलिए विरोध कर रहे है ? इन प्रावधानों के कारण क्या उनका धधा मारा जाएगा ? क्या वे प्रलोभन और भय के जरिए ही धर्म-परिवर्तन करते हैं ? इसी कार्य के लिए उन्हे विदेशों से मोटी-मोटी धनराशिया मिलती हैं। उनका चिल्लपों मचाना क्या यह सिद्ध नहीं करता कि चोर की दाढ़ी में तिनका है ? यदि लोग सचमुच अपना धर्म-परिवर्तन करना चाहते हो तो स्वय परमात्मा भी उन्हे नहीं रोक सकता। आत्मा की आवाज के आगे राज्य और समाज की ताकत कुछ भी नहीं है। धर्म गोबर की तरह बाहर से नहीं थोपा जाता, वह कमल की तरह अन्दर से खिलता है। यदि कोई व्यक्ति किसी धर्म के सिद्धान्त और व्यवहार को भली-भांति समझकर उसमे दीक्षित होना चाहता है तो यह निश्चय ही पवित्र घटना है। लेकिन जब धर्म थोक मे बांटा जाता है, मलेरिया की गोलियों की तरह बांटा जाता है, तब वह धर्म नहीं, शुद्ध राजनीति होता है। उसका सम्बन्ध अध्यात्म से कम, पशुबल से अधिक होता है। हर संगठित मजहब अपना संख्याबल बढ़ाना चाहता है। इसमें प्रकटत. कोई बुराई भी नही लेकिन सख्या बढाने का आधार प्राय केवल बल होता है, धन-बल, सत्ता-बल, सेवा-बल, मेवा-बल,यौन-बल। ये सब बल क्या अध्यात्म के आयाम हैं ? नहीं। ये शुद्ध पशु बल के पर्देदार आयाम है। कुछ मजहबो के पवित्र ग्रन्थो मे इन आयामों को सही बताया गया है और कुछ मजहबों के महन्तों ने उन्हें धर्मसम्मत करार दे दिया है इसीलिए धर्मान्तरण करते समय धर्म-ध्वजी यह भूल जाते हैं कि वे घोर अधर्म का कार्य कर रहे हैं।

इस अधर्म की ओर इशारा करते हुए महात्मा गांधी ने 1935 के 'हरिजन' में छपी एक भेंटवार्ता में कहा था, 'अगर.. मैं कानून बना सकूं तो मै धर्मान्तरण पर निश्चित ही रोक लगा दूंगा।' मानव अधिकार का इससे बड़ा उल्लंघन क्या होगा कि आपने किसी को दवा दी और बदले में उसका धर्म छीन लिया, आपने किसी को शिक्षा दी और बदले मे उसकी परम्परा का विनाश कर दिया, आपने किसी को आजीविका दी और बदले में उसका सारा जीवन ही कैद कर लिया। यदि यह सच नहीं है तो इस प्रश्न का क्या उत्तर है कि धर्म-परिवर्तन का कार्य केवल आदिवासियो, दलितों, ग्रामीणों और गरीबो के बीच ही क्यो होता है ? उसे शहरों के शिक्षित, सम्पन्न और समर्थ वर्गो तक क्यो नही ले जाया जाता ? क्या ये करोड़ों लोग ईश्वर के पुत्र नही है ? क्या इन्हें रोशनी की जरूरत नहीं है ? यदि आपका धर्म 'बेहतर' है तो इन 'बेहतर' लोगों पर भी तो उसे आजमाकर देखिए। यदि आपके धर्म में अध्यात्म गहरा है, युक्ति पैनी है और मानव उद्धार की अद्भुत क्षमता है तो किसी कट्टर से कट्टर विधर्मी को पिघला देने की क्षमता भी उसमें होनी चाहिए। लेकिन आश्चर्य यह है कि धर्मान्तरण केवल दलितों, आदिवासियों और गरीबों का ही होता है और उनमें भी केवल हिन्दुओं का क्या हम कभी सुनते हैं कि कहीं इतने मुसलमानों को ईसाई बनाया गया या इतने ईसाइयों को मुसलमान बनाया गया ? यदि ऐसा होने लगे तो अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई समाज और मुस्लिम समाज में खलबली मच जाएगी। वह 'सभ्यताओं के संघर्ष' का रूप धारण कर लेगा। लेकिन वे भारत में कुछ भी करें, यहां कोई सघर्ष नहीं है।

शताब्दियों से भारत मजहबी शिकारियों का चरागाह बना हुआ है। कभी तलवार, कभी थैली, कभी दवा-दारू और कभी सुरा-सुन्दरी के जरिए भारत के भोले और गरीब लोगों को धर्म की दीक्षा दी जाती है। इन तिकड़मों पर प्रतिबन्ध के लिए जब कानून बनाया जाता है, तो उसे लोग साम्प्रदायिकता की संज्ञा देते है। जो लोग इस तरह के कानून का विरोध कर रहे हैं, अगर वे सच्चे धार्मिक व्यक्ति होते तो वे जयललिता का अभिनन्दन करते और उनसे कहते कि आपके कानून की वजह से अब हमारी प्रामाणिकता बढ़ेगी यानी अब जो भी धर्म-परिवर्तन होगा, उस पर राज्य की मुहर भी लग जाएगी। प्रत्येक धर्मान्तरित व्यक्ति वह होगा, जो कानून की छलनी से छनकर बाहर आएगा। भय और प्रलोभन का कचरा ऊपर ही अटक जाएगा।

भय और प्रलोभन से होने वाले धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध सर्वथा स्वागत योग्य है लेकिन क्या यह मानकर चलना ठीक है कि सारे धर्मान्तरण भय और प्रलोभन से ही हुए हैं। यह ठीक है कि मुहम्मद सा० के पास तलवार थी लेकिन बुद्ध के पास क्या था, महावीर के पास क्या था, ईसा के पास क्या था, नानक के पास क्या था, दयानन्द के पास क्या था ? धर्मान्तरण के बाद इन सब महान पुरोधाओं के पास न तलवार थी और न तिजोरी थी। केवल उजाला था, तर्क था, उद्धार का नया रास्ता था। मुहम्मद्ध सा० ने भी अज्ञानलोक (जाहिलिया) मे पडे अरबों को नई और जबर्दस्त रोशनी दी। आदमी जब से पैदा हुआ है, उसे रोशनी की तलाश है। तलाश का यह वेग उतना ही प्रबल है जितना कि भय और प्रलोभन का। रोशनी की तलाश ने भय और प्रलोभन को इतिहास मे कई बार जबर्दस्त मात दी है। यह ठीक है कि दुनिया के दूसरे देशों की तरह भारत पूरी तरह ईसाइयत और इस्लाम की गिरफ्त में नही चला गया लेकिन यह भी नग्न सत्य है कि भारत का सामाजिक परिदृश्य काल-कोठरियों की तरह दमघोटू है। जातिवाद, अस्पृश्यता और दरिद्रता की इन काल-कोठरियो से मुक्त होने की चाह में अगर लोग इस्लाम, ईसाइयत और बौद्ध धर्म की शरण में जाते हैं तो उन्हें कौन रोक सकता है ? समाज उन्हें ठेलेगा और राज्य उन्हें रोकेगा तो राज्य को मुहं की खानी पड़ेगी। यदि धर्मान्तरण सम्बन्धी कानूनों का लक्ष्य उक्त सामाजिक जड़ता को बनाए रखना है तो उससे अधिक प्रतिगामी कदम क्या हो सकता है। जातिवाद और अस्पृश्यता पर प्रहार किए बिना मुसलमानों और ईसाइयों को दुबारा हिन्दू बनाने की कोशिश उतनी ही अधार्मिक है और अमानवीय है, जितनी कि पादरियो और मुल्लाओ की कोशिश। याद रहे कि हिन्दू धर्म में लौटने के दरवाजे खोलने वाले 19वीं सदी के महानायक महर्षि दयानन्द ने जन्मना जाति को पूरी तरह रद्द किया था। भारत के दलितों, आदिवासियों और गरीबों का दुर्भाग्य यह है कि धर्मपरिवर्तन के बावजूद उनका मर्म परिवर्तन नहीं होता। वे किसी भी संगठित धर्म मे जा घुसें, उनकी मूल स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहती है। धर्म-परिवर्तन भी मृग-मरीचिका ही सिद्ध होता है। भारत का उद्धार धर्म-परिवर्तन से नहीं, मर्म-परिवर्तन से होगा।

मानव अधिकार का इससे बड़ा उल्लंघन क्या होगा कि आपने किसी को दवा दी और बदले में उसका धर्म छीन लिया, आपने किसी को शिक्षा दी और बदले में उसकी परम्परा का विनाश कर दिया, आपने किसी को आजीविका दी और बदले में उसका सारा जीवन ही कैद कर लिया। यदि यह सच नहीं है तो इस प्रश्न का क्या उत्तर है कि धर्म-परिवर्तन का कार्य केवल आदिवासियो, दलितों, ग्रामीणों और गरीबों के बीच ही क्यों होता है ? उसे शहरों के शिक्षित, सम्पन्न और समर्थ वर्गो तक क्यों नहीं ले जाया जाता ? क्या ये करोड़ों लोग ईश्वर के पुत्र नहीं है ? क्या इन्हें रोशनी की जरूरत नही है ? यदि आपका धर्म 'बेहतर' है तो इन 'बेहतर' लोगों पर भी तो उसे आजमाकर देखिए। यदि आपके धर्म में अध्यात्म गहरा है, युक्ति पैनी है और मानव उद्धार की अद्भुत क्षमता है तो किसी कट्टर से कट्टर विधर्मी को पिघला देने की क्षमता भी उसमें होनी चाहिए। लेकिन आश्चर्य यह है कि धर्मान्तरण केवल दलितों, आदिवासियों और गरीबों का ही होता है और उनमें भी केवल हिन्दुओं का, क्या हम कभी सुनते हैं कि कहीं इतने मुसलमानों को ईसाई बनाया गया या इतने ईसाइयों को मुसलमान बनाया गया ? यदि ऐसा होने लगे तो अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई समाज और मुस्लिम समाज में खलबली मच जाएगी। वह 'सभ्यताओं के संघर्ष' का रूप धारण कर लेगा।

दण्डी विरजानन्द के हस्तलिखित जीवनचरित की खोज

विद्वत् जगत् को सामान्यत तथा आर्यजगत् को विशेषत. यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द के विद्यागुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द का एक महत्वपूर्ण हस्तलिखित जीवन चरित प्रसिद्ध वक्ता एव विद्वान डॉ० रामप्रकाश (सेवानिवृत्त प्रोफेसर पंजाब विश्वविद्यालय) ने ढूढ निकाला है जो शीघ्र ही उनके द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित किया जाएगा। इस जीवनी के लेखक स्वामी दयानन्द के सहपाठी विद्वान प० उदयप्रकाश के पुत्र प० मुकुन्ददेव ने १९२५ ई० मे लिखा था और यह पाण्डुलिपि उनके परिवार मे सुरक्षित थी। वर्षों पूर्व विरजानन्द प्रकाश के लेखक कोटा निवासी पं० भीमसेन शास्त्री ने इसे देखा था तथा इसकी प्रतिलिपि भी की थी जो उनके यहा सुरक्षित नहीं रह सकी। मैंने भी डॉ० त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल (मथुरा निवासी सेवानिवृत्त प्राचार्य) के माध्यम से इस जीवनी को प्राप्त करने की चेष्टा की थी, किन्तु मुझे सफलता नहीं मिली। अन्ततः डॉ० रामप्रकाश इस दुर्लभ हस्तलेख को प्राप्त करने मे सफल रहे और उन्होने अपनी नूतन कृति दण्डी जी की जीवनी मे इसका उपयोग भी किया है।

इस ग्रन्थ का लेखक न तो आर्यसमाजी है और न स्वामी दयानन्द का अनुयायी, किन्तु दण्डी जी के व्यक्तित्व, उनकी विद्वता तथा पाठन पद्धति मे उसकी प्रबल निष्ठा थी जो पुस्तक मे पदे पदे दृष्टिगोचर होती है। स्वाध्यायशील लोग इस अलभ्य कृति को पाठकों को सुलभ कराने के लिए डॉ० रामप्रकाश के कृतज्ञ होगे। आशा है यह ग्रन्थ शीघ्र ही पाठको के हाथों में आ सकेगा।

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज और हमारा समाज

- मदन रहेजा

आर्यसमाज और हमारा समाज

ईश्वर की कृति मे कभी कोई त्रुटि नहीं होती क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है और दूसरी ओर मनुष्य हर कदम पर अनेक भूलें करता है परन्तु उसे उस समय अपनी भूलों का एहसास नहीं होता और फिर जब कालान्तर में उसे अपनी की हुई गलतियों का फल प्राप्त होता है तो उसका मस्तिष्क उसे (अपने स्वभाविक अज्ञानता के कारण) मानने से इन्कार करता है कि उसने कभी कोई भूल की होगी। यहां हम स्पष्ट करना चाहते है कि वैदिक सिद्धान्तानुसार (वैज्ञानिक नियमानुसार) बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता और मनुष्य जब अपनी स्वतन्त्रता से जो कर्म करता है उसका फल उसे कालान्तर में मिलता है और कर्त्ता को अवश्यमेव भुगतना पडता है।

सुलगते चुभते प्रश्न :

आज सब की जुबान पर एक ही बात सुनने को मिलती है कि - 'आर्यसमाज के पास वेदों तथा शास्त्रों का अथाह ज्ञान होने के पश्चात् भी अखिर क्या कारण है कि लोग उसकी ओर आकर्षित नहीं होते या आर्यसमाज लोगों को अपनी ओर क्यों आकर्षित नही कर पाता ? लोग दूसरी संस्थाओ में अधिक जाते हैं और हमारी समाजो में बहुत कम उपस्थिति होती है - क्यों ? आजकल के (तथाकथित) गुरुओं के पास अधिक मात्रा मे लोगो की भीड़ देखी जाती है और हमारे सन्यासियो को मिलने कोई नहीं जाता - क्यों ? क्या 'मन की शान्ति' का ठेका केवल आर्यसमाज के ही पास है - क्या दूसरी सस्थाओ के लोग अशान्त हैं ? आखिर क्या कारण है कि अन्य सम्प्रदायों के मन्दिर इतने विशाल और समृद्ध हैं और हमारी समाजों में हमेशा धन की कमी रहती है ? प्रश्न अनेक है परन्तु उत्तर कोई नही देता - क्यों ?

प्रिय सज्जनो ! प्रश्न पूछना अच्छी वात है - इससे ज्ञान वृद्धि होती हे ओ सुधरने सुधारने का सुअवसर मिलाता हे परन्तु अपने मस्तिष्क से इस गलतफहमी को निकाल दे कि आर्यसमाज उन्नति के पथ पर नही चल रहा।

भ्रम-भ्रान्तियां-अन्धविश्वास :

बाबाओ की आशीर्वाद से वाझ को भी बच्चे होते हैं - महात्माओ के द्वारा प्राप्त प्रसाद खाने से जिस महिला को सतान नहीं होती, उसको हो जाती हे - साधु बावा के छू मन्तर करने से या झाडफूक करने से भूत प्रेत भाग जाते हैं - जन्मपत्री के मेल करने से ही विवाह सफल होते हैं - ग्रह उपग्रहादि के कारण मनुष्य दुःखी अथवा सुखी होता हे - पूजा पाठ करने से क्रोधित ग्रह शान्त होते हे - कीमती पत्थर पहनने से घर में सुख शान्ति आती है -मुहूर्त देखकर ही घर से बाहर निकलना चाहिए - गुरुजनों की जूठन खाने से जीवन सफल होता है - गुरु की हरेक बात को बिना सोचे समझे या प्रश्न किए बिना मानना चाहिए - मृतकों का श्राद्ध अर्थात् ब्रह्मणों को खिलाना पिलाना चाहिए - जागरण करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हें - सत्यनारायण का प्रसाद न खाने से सर्वनाश होता है - जादू टोने से किसी को भी अपने वश मे या व्यक्ति विशेष की मृत्यु करवाई जा सकती है - मूर्तियों से बभूति निकलती है - बावाओ के हाथ घुमाने या फिराने से सोने के मंगल सूत्रादि आभूपण, कीमती विदेशी घड़िया, बभूति अथवा फल निकलते हे. .... इस प्रकार के अनेक अनहोनी घटनाएं हैं जिनको मूर्ख लोग सत्य समझते हें - वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं हांता क्योंकि ये सब प्रकृति नियम के विरुद्ध बाते हैं। इन अन्धविश्वासों को फैलाने में कौन है - क्या आप जानते हे ?

इनके पीछे स्वार्थी, ढोंगी, फरेबी, बहुरूपिये, पाखण्डी, निकम्मे, अघोरी, नकली साधु-सत-बाबा-बापू-महात्मादि तथा मानव जाति के शत्रु होते हे जिनको और कोई कामकाज नहीं होता और फोकट मे (बिना परिश्रम के फ्री मे) बेठे बिठाए हराम की मिलती हैं और तीनों ऐपणाएं पूरी होती हे।

श्रेष्ठ, सुशिक्षित ओर सभी समझदार लोगो का यह कर्त्तव्य हे कि यदि वे मानव जाति का हित चाहते हें तो वे साधारण ज्ञान रखने वाले लोगों का मार्गदर्शन करें तथा उन्हें सावधानी वरतने को कहे। अपने बच्चों को समझाए। ये सव तब हो सकता हे जब कि हम स्वय सुधरें - समाज स्वय सुधर जाएगा क्योंकि समाज हमी से वनता हे - समाज से ही देश बनता हे वरना देश पिछड जाएगा ओर सर्वनाश हो रहा हे ओर आगे भी होगा फिर इसे ईश्वर भी नही रोक सकता।

समाधान एवं उत्तर

आर्यसमाज 'सार्वभौम मानव निर्माण सस्था' हे जिसम ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' तथा आर्षग्रन्थों के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य वनाया जाता हे क्याकि जब तक मनुष्य मनुष्य नही बनता वह इस ससार मे अच्छी प्रकार से सुख नही भोग सकता ओर अपने परम लक्ष्य अर्थात् 'मोक्ष' को प्राप्त नही कर सकता। आर्यसमाज मे सामने मूर्तिया रखकर गाने-बजाने नही होते जेसे कि अन्य सस्थाओं मे होते है। हमारे यहा रास लीलाए नही होती अपितु योगाभ्यास होता हे। यहा किसी प्रकार का टाईम-पास नही होता-साधना होती है। जिन लोगो को एसी शिकायत हे कि हमारे यहा लोग कम आते हे उनको सच्चाई को ग्रहण करने का अनुभव नही हे क्योंकि सत्य को ग्रहण करना न तो आसान है न ही कठिन - सत्य स्वाभाविक होता हे। जिनके यहा अधिक भीड होती हैं वहा जाकर देखे तो सही कि वहा सत्य का पाठ कितना पढ़ाया जाता है और क्या क्या होता है। किसी ऊर्दू के शायर ने ठीक ही कहा हे कि 'सच्चाई छुप नही सकती वनावट के उसूलों मे, और खुशवू आ नही सकती कभी कागज के फूलो से। अत दूर के ढोल सुहावन लागे इसलिए सत्य क्या हे ओर असत्य क्या हे - यही तो आर्यसमाज सिखाता ह।

वक्त का तकाजा :

हमे दूसरों को नहीं स्वय को देखना हे। हमारे यहा (आर्य समाजो मे) सत्य के सुगन्धित फूल बटते हे ओर वहा (अन्य सस्थाओ, मन्दिरो तथा तथाकथित गुरुओं के पास) अन्धविश्वास के काटे बिकते हे। अज्ञानता के कारण लोग काटे खरीदते हे ओर हमारे यहा कोई भी आकर नि शुल्क अमृत का पान कर सकता हे। अनेक लोगो को इस बात से आपत्ति हे कि आर्य दूसरो का खण्डन करता हे इसलिए तो आर्यसमाज की उन्नति नही होती। यह धारणा शत प्रतिशत असत्य है क्योकि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है **'ससार का उपकार करना'** इसी को मद्दे नजार रखते हुए यदि मानव समाज मे कहीं भी कुरीतिया पनपती हैं, अन्धविश्वास फैलता हे, पाखण्ड से लोग पीडित होते हे, छूआ-छूत, सति प्रथा, वलात्कार, अन्याय इत्यादि वढते ह तो क्या श्रेष्ठ पुरुष हाथ धरे अपने घर में बेठ सकते हे ? कदाचित् नही। ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज (अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यो की समाज) ही ऐसी सस्था है जो अपना उत्तरदायित्व समझकर खुलकर सबके सामने आती हे ओर सत्य बात को कहने मे नही झिझकती। इसका अर्थ अन्य सम्प्रदाय वाले कुछ भी निकाल सकते हे परन्तु सत्य का मुह कोई बन्द नहीं कर सकता।

हम अपने सभी मित्रो से पूछना चाहते है कि - ईश्वर साकार हे कि निराकार ? यदि कहो कि वह साकार हे तो वह निराकार नही हो सकता ओर कहा कि वह परमात्मा निराकार हे तो फिर मूर्ति पूजा करना पाप हुआ - है ना ? यदि परमात्मा साकार ह तो उसकी सीमा निश्चित हो जाएगी अत वह इतने बडे ब्रह्माण्ड का निर्माण नही कर सकता और यदि कहो कि वह सर्वशक्तिमान ह - वह सव कुछ कर सकता ह तो हम आप से पूछते है कि - 'क्या परमात्मा स्वय मृत्यु को प्राप्त हो सकता ह ?' क्या वह अपने जेसा दूसरा ईश्वर उत्पन्न कर सकता हे ? क्या वह सो सकता है, खाना खा सकता हे, पानी पी सकता हे, चोरी कर सकता ह ? इसका उत्तर होगा - कभी नही। जी हा ! सर्वशक्तिमान का अर्थ यह नही हे कि वह सव कुछ कर सकता हे अपितु सर्वशक्तिमान का सही अर्थ हे - वह परमात्मा अपने सभी कार्य स्वय करता है और उसे उसमें किसी के सहायता की आवश्यकता नहीं पडती।

आज संसार में अनेक अन्धविश्वासो ओर अन्धश्रद्धाओ का वालवाला ह जिसकी आड मे अनेक पाखण्डी, कुकर्मी लोगो ने साधारण लोगो को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हे। तथाकथित बाबाओं तथा वापूओ की भीड़ मे भोले भाले ही नहीं पढे-लिखे लोग भी फस जाते हे। याद रहे ! आखें प्रायः धोखा खाती ह परन्तु वद्धिमान मनुष्य वही है जो तर्क ओर ज्ञान की सहायता से तो ही सत्य ओर असत्य को परखा जा सकता हे। जीवन मे धन दोलत से ही जीवन की सफलता को मापा नही जा सकता। हमने अनेक धनाड्यो को देखा है - वाहर से सभी सुखी लगते हे परन्तु उनके समीप जाकर देखे तो वे बहुत दु खी होते ह। सर्वविदित हे कि अधिक धन आने के वाद नींदे उड जाया करती हे, भूख लगती हे पर खाना नसीब नही होता क्योकि शान मान वाली बीमारिया सामने खडी हो जाती हे। अतः ससार मे धन-दोलत ही सव कुछ नही हे।

हमारे मित्रों ने वताया हे कि जव से उन्होने गुरु किया हे और मूर्तिपूजा करनी प्रारम्भ की हे तव से उनके व्यवसाय मे वढोत्तरी हुई हे ओर उन्हे मन की शान्ति भी प्राप्त हुई ह। क्या यह सच ह ? हमारा उत्तर ह - नही ! क्योकि धन, दोलत, ऐश्वर्य ओर समृद्धि - ये सब मनुष्य के अपने प्रारव्ध, पुरुषार्थ, ज्ञान के कारण प्राप्त होते हे ओर ईश्वर की कृपा से ही मिलते ह। जिन सज्जनो को जड अर्थात् मूर्ति आदि साकार वस्तुओ की पूजा करने मे मन की शान्ति या सुख प्रतीत होता हे वास्तव मे वह होता नही हे - यह उनका भ्रम है। स्थाई सुख या शान्ति के लिए प्रभुभक्ति जिसको दार्शनिक भाषा मे 'योगाभ्यास' कहते हे - परमावश्यक हे।

'योग' आसन करने का नाम नही हे अपितु 'आत्मा का परमात्मा से मिलन' को कहते ह। जब जीव ज्ञानपूर्वक परमात्मा के सम्पर्क मे मग्न रहता ह - वह योग की पराकाष्ठा होती ह जिसे योग की भाषा मे 'समाधि' कहते ह। आज योग के नाम पर भी अनेक भ्रान्तिया फैली हुई ह - उठन-वठने-लटने या हाथ-पाव हिलाने डुलाने का नाम योग नही हे। महर्षि पतजली के योगदर्शन को ध्यान से पढे या किसी योगाभ्यासी सन्यासी से शिक्षा प्राप्त करे। योग कक्षाओ मे केवल आसन सिखाए जाते ह जो अष्टाग योग का तीसरा अग ह जिससे शरीर को स्वस्थ ओर लचकीला वनाया जाता ह ताकि इश्वर के ध्यान मे लम्बे समय तक वैठने मे कठिनाई न हो। स्मरण रहे कि मन बुद्धि चित्त, तथा आत्मिक उन्नति ओर शुद्धि के लिए योग के आठो अगो का अभ्यास करना आवश्यक हे।

- शेष भाग 10 पर

एक लघु ग्रन्थ संध्य-योग-प्रकाश

11

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

— भगवन्त सिंह कपूर

इन्ही तीन भावनाओं में से प्रत्येक के सात प्राणायामो की एक श्रृंखला कह कर, आगे तीन श्रृखलाओं की विधि वर्णित है।

विधि वताने के पहले कुछ विमर्श आवश्यक हैं, जो इस प्रकार हैं :-

1. प्राणायाम आरम्भ करने के पहले, अति आवश्यक हे कि नासिका के दोनों, सूर्य व चन्द्र स्वर चल रहे हों। अगर कोई स्वर बंद है तो उसी तरफ की कांख में, दूसरे के तरफ हाथ की मुठ्ठी को जोर से दबा कर उसकी तरफ झुक जावें। और दूसरे स्वर से जोर जोर से श्वास प्रश्वास करें। इस प्रकार बन्द स्वर चलने लगेगा।

2. भृकुटि को त्रिवेणी भी कहा गया है। इडा, पिगला व सुषुम्णा इनकी भी त्रिवेणी का संगम स्थान आज्ञा ही है। जो भृकुटि के ही पीछे मेरूदण्ड में माना गया है। हमारा ध्यान इस समय भृकुटि में है। यहीं से प्राणायाम का आरम्भ है। तीनों शक्तियों, अर्थात् इडा, पिन्गला सुषुम्णा का सगम स्थान भृकुटि पर जब दोनो स्वर भी शक्ति खींच रहे हों तभी सभी शक्तिया के समावेश से प्राणायाम बहुत लाभप्रद होता है।

3. श्वास तो नासिका के फेफडों में जाता हे परन्तु ध्यान त्रिवेणी से मेरूदण्ड के चक्रों पर ले जाने के लिए, भावना से, प्राण का मार्ग, नासिका से भृकुटि, शिर से होकर पीछे मेरूदण्ड में ले जाने को बताया हे। इस प्रकार एक-एक चक्र पर होते हुए क्रमशः सहस्रार से मूलाधार चक्र तक एक एक प्राणायाम करते जाना है।

4 श्वास से प्राण वायु खींच कर, प्रश्वास से दूपित वायु फेफडों से बाहर निकालने की शारीरिक प्रक्रिया हे। इसका प्राणायाम करते समय भावना से यह ध्यान करना है कि ओम की प्राण शक्ति खींच कर आतरिक, वृत्ति, लिप्तता एवं विकार रूपी कल्मप को बाहर निकाल रहे है। तभी मन्त्र में सात बार ओम के साथ उसकी शक्ति के नाम भी क्रमश: चक्रों को वैसी शक्ति पहुचाने हेतु, जोडे गए हे। मार्जन विधि से ऐसी ही क्रिया स्थूल स्वच्छता हेतु कर आए हे। अव सूक्ष्म आतरिक कल्मप निकालकर निर्विकार होना हे।

प्राणायाम की प्रथम श्रृंखला की विधि

प्राणायाम प्रकरण में वर्णित, प्राणायाम के प्रकार का क्रमांक दो 'आभ्यन्तर वृत्ति' प्राणायाम करेंगे। श्वास अन्दर लेना-'पूरक', रोकना - 'कुम्भक', उस चक्र पर क्रिया करनी, ओर वाहर निकालना -'रेचक'। वाहर न रोककर, वाह्य कुम्भक न कर तुरन्त अन्दर लेना। यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार मन्त्र मे दिए प्रभु गुणानुसार बताए प्रत्येक चक्र पर क्रमशः एक-एक प्राणायाम करते सात आभ्यन्तर वृत्ति प्राणायाम करने हें।

भावना : सात चक्रों पर सात प्राणायाम -

1. ओं भूः, मन मे वोलकर, श्वास वहुत कम लेना, नाकि ध्यान से प्रभु को 'भूः' शक्ति खींचकर

भृकुटि से सहस्रार चक्र अर्थात् शिर तक ही पहुचे। इस चक्र के अन्तर्गत वहां के अंगों का निरीक्षण करना, किन विपयों विकारों की तरफ जाने की तृष्णा इनमें है। जन विकारों की लिप्तता को खींची 'भूः' शक्ति की सहायता से झाड-पोंछकर उस केन्द्र व उन सभी अंग-प्रत्यगों को पूर्ण स्वच्छ करते रहना। जब श्वास न रूके तो एक ओम् और मन में बोलने तक रूककर, प्रश्वास के द्वारा, भावना से सारे कल्मष बाहर फेक देना।

2. ओं भुवः, मन में ही बोलकर, ध्यान से प्रभु की 'भुवः' शक्ति खींच, पहले से कुछ अधिक श्वास भरते हुए, उसी मार्ग से अर्थात् भृकुटि-शिर से होकर नेत्रों के पीछे आज्ञाचक्र (मेरूदण्ड व शिर के जोड) तक ले जाकर रूकें भावना से खींची 'भुवः' शक्ति की सहायता से भावना द्वारा, उस कक्ष एवं उसके अन्तर्गत सभी अंग-प्रत्यंगों के विपय विकारो आदि को झाड़े पोंछें। जब श्वास न रुक सके, तो एक ओम् और बोलने तक रूककर, प्रश्वास के साथ कल्मष बाहर फेंक देवें।

3. ओंम् स्वः बोलकर, ध्यान से प्रभु की 'स्वः' शक्ति खींचने की भावना के साथ श्वास अन्दर लेवें। पूरक करें। दूसरे प्राणायाम से कुछ और अधिक श्वास भरना है। ताकि सिर से पीछे की ओर के मार्ग से विशुद्ध चक्र अर्थात कण्ठ के पीछे मेरूदण्ड में पहुंचे। यहां से भी खींची 'स्वः' शक्ति की सहायता से, इस उपनिरीक्षण कक्ष एवं इसके अन्तर्गत सभी अग-प्रत्यगों के विषयों की तृष्णा आदि को झाड़ पोंछकर, जब न रूक सकें तो भी एक ओम् बोलने तक और रूक कर, प्रश्वास के साथ कल्मप बाहर फेंक देवें।

4. ओंम् 'महः' मन में ही बोलकर, ध्यान से प्रभु की 'महः' शक्ति खींचने की भावना के साथ, कुछ और अधिक श्वास भरना। ताकि पूरक की 'मह', शक्ति द्वारा उसी मार्ग से हृदय के पीछे मेरूदण्ड में अनाहत चक्र तक पहुंचे। आभ्यांतर कुम्भक के समय, उस उप-कक्ष एवं उसके अन्तर्गत सभी अंग हृदय, फेफड़े, बाहू, आमाशय की विषय वासना, तृष्णा आदि को, खींची 'महः' शक्ति की सहायता से झाड़-पोंछकर, जब न रूक सके तो भी एक और ओम् बोलने तक रुकें।

एवं प्रश्वास के साथ कल्मप बाहर फेंक देवें। (बाहर न रुककर)

5. ओंम् 'जनः', मन में ही बोलकर, ध्यान में प्रभु की 'जनः' शक्ति खींचने की भावना करें। पहले से और अधिक श्वास भरना है। ताकि उसी मार्ग से नाभि के पीछे मेरूदण्ड में मणिपुर चक्र तक पहुंचे। यहां भी वही प्रक्रिया, उस कक्ष व सभी अंग-प्रत्यंगों की विपय-वासना की लिप्तता की, खींची 'जन': शक्ति की सहायता से, स्वच्छ करें। यहां के अंग - आतडियां, गुर्दे, तिल्ली, जिगर आदि की बीमारियों को भी विनष्ट कर, एक ओंम् और बोलकर, प्रश्वास के साथ सारी कल्मष व कमजोरियां बीमारियां सब बाहर फेंक देवें।

6. ओं 'तपः' मन में ही बोलकर, ध्यान से प्रभु की 'तपः' शक्ति खींचने की भावना के साथ, श्वास वहुत अधिक भरना। नाकि पूरक में, लिंग के पीछे मेरूदण्ड में, स्वाधिष्ठान चक्र तक पहुंचा जा सके। यहां भी ध्यान में, कुम्भक में रूककर, वही प्रक्रिया करें। खींची शक्ति तपः की सहायता से, उस कक्ष एवं अन्तर्गत सभी अंग-प्रत्यंगों की वृत्तियों को, विषयवासना को झाड़-पोंछकर, एक ओम बोलने तक और रूकें। तब प्रश्वास के साथ यह कल्मष बाहर फेंक देवें।

7. ओंम् 'सत्यम' - मन में बोलकर, प्रभु की 'सत्यम्' शक्ति खींच रहे हैं ऐसी भावना से, यथाशक्ति पूर्ण श्वास भरकर पूरक करें। ताकि अंतिम चक्र मूलाधार, मेरूदण्ड के अन्तिम भाग तक पहुंच सकें। गुदा को ऊपर की ओर खींचे रहें, संकुचित करे रहें। और वही प्रक्रिया दुहरावें, निचले अंगों या शरीर के किसी भी अन्य भाग में कुछ विषयवासना, इस प्रकृति के प्रति, रह गई हो, उन सभी को यथाशकित अधिक, कुम्भक में रूककर, खींची सत्यम् शक्ति की सहायता से शुद्ध करे। एव कल्मष को प्रश्वास के साथ बाहर निकाल फेकें।

विशेष :- सत्यम् शक्ति का स्थान ब्रह्मरंध्र ही है। परन्तु, मेरूदण्ड के अन्तिम पूंछ समान भाग में कुण्डलिनी नामक सम्भावित स्थान है। जिसका मेरूदण्ड के मध्य भाग से सीधा सम्बन्ध ब्रह्मरंध्र से होता है। इसलिए यहां सत्यम का प्रावधान किया गया है।

गुदा संकुचित करते समय जो एक डंक के समान झटका सा लगता है, संवेदना सी होती है। यही संवेदना ध्यान को स्वयं ब्रह्मरंध्र तक पहुंचा देती है। अर्थात् इन सात प्राणायामों के बाद ध्यान स्वयमेव शिर मे 'ब्रह्मरध्र पर पहुंचता है।

क्रमशः

आर्यसमाज का द्वितीय नियम

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार......

– विजय बिहारी लाल माथुर

द्वितीय नियम

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ताहै। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्यसमाज के इस द्वितीय नियम में परमेश्वर के 20 विशेषणों का उल्लेख है। परमेश्वर का निजनाम 'ओऽम्' है। उसके अनन्त गुण, कर्म एवं स्वभाव हैं तथा उनके सूचक अनन्त ही नाम एवं विशेषण हैं। इन अनन्त नामों को कुछ शब्दों में समेटना असम्भव है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में परमेश्वर के 100 नामों की व्याख्या की है। ईश्वर के प्रमुख प्रमुख गुण, कर्म एवं स्वभाव का परिचय इन 100 नामों से होता है। उसी भावना से परमेश्वर के अति प्रमुख गुण, कर्म, स्वभाव 20 नामों को आर्यसमाज के द्वितीय नियम में इस प्रकार से सम्मिलित किया गया है, जिससे कि महर्षि दयानन्द की परमेश्वर सम्बन्धी मान्यता जो वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर एव ब्रह्म से जैमिनि पर्यन्त ऋषि महर्षियों की सम्मति के आधार पर हैं, उनके द्वारा परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का किंचिन्तमात्र परिचय तथा उसके लक्षण का आधार स्थापित हो सके।

इस नियम में वर्णित परमेश्वर के नाम उसके गुण, कर्म, स्वभाव के सूचक विशेषगुणरूप हैं। उसका निज नाम 'ओऽम्' है तथा इसके समर्थन में महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में विपुल प्रमाण दिये हैं। 'ओऽम्' नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। यह 'अ' कार से विराट, अग्नि और विश्वादि, 'उ' कार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। 'म' - कार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक है। इन तीन अक्षरों में प्रत्येक से तीन-तीन नामों के स्पष्टीकरण हेतु महर्षि लिखते हैं -

अकार से गृहीत नाम

(वि) उपसर्गपूर्वक (राजृ दीप्तौ) इस धातु से क्विप् प्रत्यय करने से विराट शब्द सिद्ध होता हे। 'यो विविध नाम चराऽचरं जगद्राजयति प्रकाशयति स विराट्' विविध अर्थात् जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे, इससे विराट् नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

(अञ्चु गतिपूजनयोः) अग, अगि, इण गत्यर्थक धातु हैं, इनसे अग्नि शब्द सिद्ध होता है। 'गतेस्त्रयोऽर्था ज्ञान गमन प्राप्तिश्चेति पूजनं नाम सत्कारः।' 'योऽञ्चति अच्यतेऽगत्य ङ्गत्येति सोऽयमग्नि.'। जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्तहोने और पूजा करने योग्य है, इससे परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है।

(विश प्रवेशने) इस धातु से 'विश्व' शब्द सिद्ध होता है - 'विशन्ति प्रविष्टानि सर्वाण्याकाशादीनि भूतानि यस्मिन् यो वाऽऽकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्टः स विश्व ईश्वरः'

वह ब्रह्म प्रकृति आदि का प्रवर्तक होने से रूपवान नहीं, निराकार है।

वह पंच क्लेशों के सुख-दुख और उनसे उत्पन्न होने वालों फलों से कर्मो के संस्कारों से और उनके भोगों से परे है। वह तीनो कालों का ज्ञाता है। (यह सब केवल निराकार होने पर ही सम्भव है।)

ईश्वर को समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता, पालक, नियामक एवं सहारक स्वीकार करने की स्थिति में ईश्वर को साकार मानना सर्वथा असम्भव है। ब्रह्माण्ड में जहां एक ओर जिनके भी अवयव हैं, वे अणुवीक्षण यंत्र से ही दिखनेवाले सूक्ष्म-से-सूक्ष्म कीटाणु हैं, दूसरी ओर हमारी पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा सूर्य तथा सूर्य से भी सहस्रो लाखों गुणा बड़े अन्य तारे है, जिनकी दूरी व संख्या के मापने में मानव गणित अपने को अति लघु पाता है। इन अति सूक्ष्म व अति विशाल आकारो का साकार ईश्वर द्वारा निर्माण कैसे सम्भव है ? यजुर्वेद (40 मन्त्र स01।) सारे ब्रह्माण्ड को ईश्वर से आच्छादित - आवासित कहा है। इस अनन्त ब्रह्माण्ड को साकार ईश्वर किस प्रकार आच्छादित कर सकता है ? यदि ईश्वर का आकार इतना विशाल माना जाए जोकि ब्रह्माण्ड को ईश्वर से आच्छादित - करे तो वह सर्वथा कल्पना का ही विषय होगा एवं बुद्धि के अनुरूप नहीं होगा। इतने विशाल आकारवाला ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म कीटाणुओं के आवयवों का निर्माण किस प्रकार कर सकेगा ? ईश्वर का आकार सूक्ष्म माना जाए तो सूक्ष्म आकारवाले ईश्वर के लिए विशाल सूर्य नक्षत्रादि बनाना कैसे सम्भव है ? ईश्वर का आकार होगा तो वह ससीम होगा, उसकी शक्ति सीमित होगी तथा वह एकदेशी होगा। स्पष्ट है ईश्वर को साकार मानने पर उसकी सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता एवं उसकी अनन्तता के गुण बुद्धि एव तर्क से सिद्ध नहीं होते।

कुछ यह मानते हैं कि ईश्वर निराकार भी है व साकार भी है। निराकारता तथा साकारता परस्पर विरोधी गुण हैं, अतः ये दोनों एक ही सत्ता में, एक समय मे एक साथ रहें यह सम्भव नहीं। जो मानते हैं राक्षसों के विनाश के लिए ईश्वर साकार होकर शरीर धारण करता है, उनसे निवेदन है कि जो ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का सृजन, नियमन एव सहार कर सकता है, क्या उसे कस, रावणादि राक्षसो के मारने के लिए, अपने सारे गुणों को छोड़कर शरीर धारण करना पड़ेगा ? यदि कहा जाए कि भक्तों को अपनी लीला दिखाने हेतु वह साकार और सशरीर होता है तो विचारिए कि प्रकृति के सारे कार्य, यह विशाल सूर्य, चन्द्रमा की कलाएं, शीतल, मंद समीर, यह रम्य प्रकृति के खिलते, पुष्प, यह असख्य प्राणियों का जन्म, विकास, विनाश आदि आदि क्या ईश्वर की लीला स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं ? प्रमाणों के आधार पर स्वतः प्रमाण, परमेश्वर के निज ज्ञान अपोरुषेय वेद के अनेक मन्त्र उदघृत किए गए है तथा कही अधिक ओर उद्घृत किए जा सकते है जिनसे ईश्वर का निराकार होना सिद्ध होता हे, परन्तु वेदमन्त्रों में कोई मन्त्र ऐसा नहीं है, जिसके आधार पर ईश्वर को साकार या मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिह या मानव शरीरधारी सिद्ध कर सकें, अतः स्पष्ट है कि ईश्वर का केवल निराकार स्वरूप ही मान्य है।

सर्वशक्तिमान्

'सर्वाः शक्तयो वियन्ते यस्मिन् स सर्वशक्तिमानीश्वरः' (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 1) 'योऽस्ति खलु सर्वशक्तिमान् स नैव कस्यापि सहाय कार्य कर्तु गृह्णाति। यथास्मदादीनां सहायेन बिना कार्य कर्तु सामर्थ्य नास्ति न चैवमीश्वरे' (ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका)। ईश्वर सर्वशक्तिवाला है अर्थात् अपने सारे कार्यो की सब शक्ति रखनेवाला हे तथा अपने किसी भी कार्य में किसी अन्य की सहायता की आवश्यकता उसे नहीं है।

ईश्वर के असख्य कार्यो को चार मुख्य कार्यों में सन्निहित किया जा सकता। 1. सृष्टि की रचना, 2. सृष्टि का नियमन, 3. सृष्टि प्रलय तथा 4 असख्य जीवो के कर्मो का न्यायव्यवस्था से फल प्रदान करना। हम प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं कि ये सारे कार्य कठोर नियम-बद्धता के साथ होते है। सृष्टि का नियमन जिसमें असख्यो वनस्पतियो, कीट-पतंग, पशु-पक्षी, जलचर प्राणियों व मनुष्यादि का जन्म, विकास एवं विनाश सम्मिलित है, आश्चर्यजनक नियमों के अनुसार होता है। अनन्त आकाश मे असख्यो ग्रह-उपग्रह आदि का भ्रमण एव सचालन इतने कठोर नियमों के अन्तर्गत होता है कि सैकडो-सहस्रों वर्षो में भी सेकिण्ड के सहस्राश का भी अन्तर नही पडता। सृष्टि के नक्षत्रादि जड पिंड स्वयमेव अपना निर्माण, संचालन एवं नष्ट होने का कार्य नहीं कर सकते, अत. ऐसी चेतन, ज्ञानवान् एव सर्व-शक्ति-मत्तायुक्त सत्ता को स्वीकार करना ही पड़ेगा जो जड़ पदार्थो के संयोग वियोग से पदार्थो का निर्माण करे, संचालन करे तथा नियमानुसार ही नाश भी करे। यह सत्ता वही हो सकती है जो सारे अनन्त ब्रह्माण्ड को जहा एक ओर अपने से आच्छादित किए हुए हो तथा दूसरी ओर इस ब्रह्माण्ड के कण-कण व परमाणु-परमाणु मे व्यापक भी हो। इस प्रकार के गुणो व शक्ति से सम्पन्न सत्ता उपर्युक्त चारो कार्य स्वयमेव बिना किसी अन्य की सहायता के अनादि काल से सम्पन्न करती रही है व अनन्तकाल तक करती रहेगी।

जिन विचारको ने ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता पर सन्देह किया, उन्होंने उसकी सहायता के लिए अन्य देवी-देवताओ आदि की कल्पना कर ली। सृष्टि-निर्माण, संचालन, प्रलय एव अनन्त जीवो के कर्मानुसार फल देने के लिए क्रमश ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं चित्रगुप्त की कल्पना की तथा इनके स्वरूप, कार्य व्यवहार विचित्र-विचित्र प्रकार के मनुष्यवत् जन्म, विवाह, सन्तान आदि भी माने, इतना ही नही पुराणो मे इन देवताओ के चरित्र अतीव पतित चित्रित किए गए है एव ऐसे पमार कोटि के कर्म इनसे कराये गए हैं जिनके लिखने मे लज्जा को भी लज्जा आए व सामान्य मनुष्य भी जिन कर्मो को करने में घृणा करे। ब्रह्मा व सावित्री की कथा, विष्णु व वृन्दा की कथा और शिव के खाण्डव वन की ताण्डव नृत्य से पहिले की कथा अनेकानेक घटनाओं से पुराण भरे पडे हैं। यह निश्चित है कि इस प्रकार के कर्म करने वाली सत्ता सृष्टि रचना सचालन व सहार कर सकती है, व इतने निम्न स्तर के चरित्रहीनता के कार्य नहीं करेगी। (परिवर्तन एवं गति) उत्पन्न करता है जिससे सृष्टि पुनः अस्तित्व में आती है। सृष्टि तथा प्रलय अवान्तर क्रमानुसार अनन्तकाल से एक के पश्चात् दूसरा होता आया है व होता रहेगा। इस प्रकार प्रकृति प्रवाह से सत् सदा सर्वदा केवल रूप परिवर्तन के साथ अस्तित्व में रहती है, परन्तु यह प्रकृति जड़ है, तथा निर्माण, व्यवस्था नियमन एव विनाश सारे कार्य चेतनस्वरूप सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के द्वारा होते है।

वैदिक विचारधारा के लगभग सभी अग व शाखा में आत्मा के अस्तित्व को न केवल स्वीकार करते हैं वरन् आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त के अनुसार केवल शरीर को नाशवान् मानते हैं। शरीर के जीर्णशीर्ण होने व आत्मा के निवास के योग्य न रहने की अवस्था में शरीर-नाश की स्थिति मे, आत्मा अपने कर्मानुसार अन्य योनि मे अथवा कर्म अतीव श्रेष्ठ होने की स्थिति मे मोक्ष को प्राप्त होती है। आत्मा ही है जिसके चेतनस्वरूप होने के कारण जड पंचभौतिक तत्त्वों से निर्मित शरीर में चेतनता होती है। इस चेतन आत्मत्त्व के शरीर छोड़ते ही चेतन प्रतीन होने वाला शरीर जड हो जाता है। इस प्रकार आत्मा सत् - सदा (प्रवाह से) रहने वाली भी है तथा चेतनस्वरूप भी तथा इस प्रकार ईश्वर के सत्-चित्-आनन्दस्वरूप तीन गुणो मे से दो गुण सत् व चित् आत्मा में भी है।

हम देखते है कि आत्मा से सयुक्त कोई जीवधारी सामान्य कीट-पतंग से लेकर प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ मानव तक कोई भी दुःख से पूर्ण निवृत्त नही है। किसी-न-किसी दुःख से प्राणिमात्र दु खी है क्योंकि कर्म-फल-सिद्धान्त के अनुसार दु:ख भी भोगने नितान्त अवश्यम्भावी हैं तथा उन्हे भोगने के अतिरिक्त कोइ उपाय नही। **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्।'**

दुःख की पूर्ण निवृत्ति, आनन्द की पूर्ण पराकाष्ठा तथा आनन्द की सर्वदा विद्यमानता यदि कही है तो यह केवल परमेश्वर मे ही। कोई प्राणी यदि स्थायी सच्चे आनन्द की अभिलाषा रखे तो वह आनन्द वही से उपलब्ध हो सकता है जो स्वय आनन्दस्वरूप, आनन्द का स्रोत है। दु:ख की अत्यन्त निवृत्ति, मोक्ष का आधार भी उसी आनन्दस्वरूप परमेश्वर की सत्ता मे है, अत स्पष्ट है कि तीन सनातन सत्ताए ईश्वर, जीव व प्रकृति सदा रहने वाली सत्, ईश्वर व जीव सत् एव चेतनस्वरूप तथा ईश्वर सत्, चेतनस्वरूप एवं आनन्दस्वरूप है।

क्रमशः

लुप्त होती स्वदेशी गऊ बनाम श्वेत क्रान्ति

– रमेश चन्द्र आहलुवालिया

गोपाल कृष्ण की बाल लीला व गोप्रेम भक्ति की साक्षी पवित्र यमुना नदी हिमालय व शिवालिक पर्वत श्रृखलाओं से होती हुई, नटखट उछल-कूद छोड कर शांत स्वभाव से बहने के लिए जहा से मैदान में प्रवेश करती है यह बात उसी स्थान से लिखी जा रही है। यह हरियाणा प्रांत का बिल्कुल उत्तर पूर्वी छोर है। यह विषय क्योंकि गोपालक श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज के पवित्र स्मरण से शुरू हुआ है, इसलिए जरूरी है कि भारतीय सस्कृति के प्राण, पुण्यदायिनी गऊ माता के विषय में ही चर्चा की जाए। शिवालिक की तलहटी व ऊपरी जंगलों में हरिद्वार से होशियार पुर व जम्मू तक गुज्जर या गुर्जर समुदाय के लोग बसे हुए हैं। इसी तरह गंगा व यमुना के किनारो व पठारों मे गुर्जर कहलाने वाले लोगों की बड़ी आबादी निवास करती है। यह समुदाय गो पालन के क्षेत्र में दूसरे लोगों से कहीं आगे रहा है व इन इलाकों में गुर्जर कहलाने वाले लोग आज भी गो पालन दूसरे समुदायों से ज्यादा कर रहे हैं।

शिवालिक आंचल के गुर्जर बहुतायत में इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। यमुना व गगा के मैदानी क्षेत्रो मे बसे गुर्जरों में हिन्दू आबादी बहुतायत में है। कृषि क्षेत्र मे आई हरित क्रान्ति के फलस्वरूप मैदानी इलाकों में चारागाह समाप्त प्रायः हो गए हैं। इसलिए विदेशी नस्लों की होस्टन, फ्रिजन, जर्सी, आस्ट्रियन आदि किस्मे लोग पालने लगे हैं। पारम्परिक स्वदेशी गायों को चारागाहों के अभाव में रखना बंद कर दिया है। नई विदेशी वर्ण संकर नस्लों ने हमारी पुरानी देसी नस्लों को लील लिया है। हमारे घरों से तो गाय पहले ही विदा हो चुकी है। गाय को छोड कर कुत्ते हमारी श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु बन गए हैं। लेकिन इन गुर्जरों ने अभी तक अपनी पुरातन गो पालन परम्परा को ही बनाए रखा हुआ है। गऊओ के बड़े-बड़े लगारे ये गुर्जर हाकते और चराते मिलते हैं। क्योंकि ये लोग ऐसे इलाकों में बसे हैं जहा जगल अभी भी बहुतायत मे मिलते हैं। हरियाणा के शिवालिक आंचल के गुर्जर मार्च महीने में अपनी गायों को लेकर हरिद्वार व देहरादून आदि क्षेत्रों के जंगलों में चले जाते है व जुलाई-अगस्त में वर्षा शुरू होने पर ही अपने शिवालिक आंचल में स्थित गाव मे वापिस लौटते हैं,क्योंकि इनका रास्ता मेरे गांव से होकर जाता है मैं बचपन से अब तक इनको हर वर्ष आते जाते देखता हूं। ये लोग अपने गाय व बछड़ों से बहुत प्यार करते है। इन लोगों मे गऊओं के प्रति जो श्रद्धा व आत्मीयता दिखाई पड़ती है वह अन्तर्मन से होनी है। नवजात बच्चे व बच्छियों को यह लाग अपने कंधे पर उठा कर चलते हैं। उन्हें पैदल चलना नहीं पड़ता। विशेष बात यह है कि गऊओं के ये झुण्ड सभी देसी किस्म की गायों के होन हे। इनमें बहुधा, लाल, सफेद व चिनकबरी गऊयें होती हैं। ये गऊयें लघु आकार की होती है। यह प्रजाति केवल घास-फूस व पत्तियां चर कर अपना पेट भर लेती है। ऊंची-नीची, पत्थरीली कंकरीली जगहों पर चर सकती है। छोटे पहाडी टीलों पर आराम से चढ उतर सकती है। फिर भी अपनी क्षमता के अनुसार दूध दे देती है। विदेशी नस्ल की गाय पत्थरो में चर कर दूध नहीं दे सकती। भैस भी पत्थरीली जगहों में ठोकर महसूस करती है व दूध सूख जाता है। विदेशी नस्लों को गर्मी में पानी में बार-बार नहलाना पड़ता है। ये यहां बहुत गर्मी महसूस करती हैं। इनको कहीं कहीं तो नहलाने के बाद भी पखे या कलूर के आगे रखा जाता हे। जबकि स्वदेशी नस्ल की गाय धूप मे खडी रह सकती है, गर्म मौसम मे गर्मी महसूस नहीं करती ओर सूर्य की धूप मे खड़ी रह कर सूर्य से असाधारण ऊर्जा प्राप्त करके स्वर्ण का निर्माण करती है। इस सोने का मिश्रण स्वदेशी गाय के दूध में होता है। इसीलिए स्वदेशी गाय का दूध पीला रग लिए होता है।

स्वदेशी नस्ल की गाय बाहर चर कर अपना निर्वाह कर लेती है जबकि विदेशी नस्ल की गाय खडी-खड़ी क्विंटलों घास खा जाती हैं। इनको अनाज भी खिलाना पड़ता है। तभी इनसे दूध ज्यादा मात्रा में प्राप्त किया जा सकता है। ये विदेशी गाय एक स्वदेशी गाय से चार या पांच गुणा ज्यादा घास खा कर उतना दूध देती है जिसके भ्रम में इनसे बहुत ज्यादा दुग्ध उत्पादन का सपना भारत के गोपालकों को दिखाया जा रहा है। क्योंकि ये विदेशी गाय एक जगह खडी-खड़ी खाती हैं इसलिए जगलों से वृक्षों के पत्ते काट कर लाने पड़ते हैं। इससे जगलो का क्षेत्र घटता जाता है व पर्यावरण को खतरा पैदा होता है। जबकि स्वदेशी नस्ल की गाय छोटा - छोटा घास जो काटने लायक भी नहीं रहता उससे चर कर गुजारा कर लेती हैं, छोटी छोटी झाडिया आदि खा लेती हैं व इसके साथ-साथ जड़ी बूटियां आदि भी चर लेती हैं, पत्त व घास खाकर जो गाय दूध देती है उसमे कोनेस्ट्रोल की मात्रा कम पाई जाती है जिससे बहुत सी बीमारियों सेबचा जा सकता हे। देसी गाय के बछड़े बड़े चुस्त होते है। बड़े होकर लाखों टन अनाज पैदा करते है। विदेशी नस्ल के बैल या बछड़े बहुत सुस्त होते हैं। विदेशी गाय की आवाज भी गाय जैसी नहीं लगती। स्वदेशी नस्ल की गाय पुराने गौशाला वाले वातावरण मे चाहे वह घास-फूस की झोपड़ी क्यों न हो, आसानी से रह सकती है। जबकि विदेशी नस्ल की गाय के लिए विशेष प्रबन्ध उसकी जरूरतों के अनुसार करने पड़ते हैं।

भारत एक गर्म देश है। कुदरत ने देसी नस्ल की गऊओं को यहीं के लिए बनाया है जो विदेशी नस्लें यहां थोंप दी गई हैं वे यहां के वातावरण से मेल नहीं खाती। यह नस्लें ठण्डे देशों से आयात की गई हैं। विदेशी नस्लों ने शुरू में यहां आकर ज्यादा दूध दिया परन्तु पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी दूध देने की क्षमता घटती जाती है। सरकारी डेयरी फार्मो में, किसी सस्था, मठ - मन्दिर की गऊशालाओं में भी इन्हीं विदेशी नस्लों को पाले जाने की होड़ लगी है। पुरानी नस्लों को वर्ण संकर करके उनकी मौलिक सरचना एव गुणो को समाप्त किया जा रहा है। इससे जैनेटिक प्रदूषण का खतरा पैदा हो गया है।

60 और 70 के दशक में सरकार ने खेती में रासायनिक खादों व दवाईयों आदि का प्रयोग फसलों में करके उपज बढाने के लिए किसानों को प्रेरित किया था। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति कम होती चली गई। हाईब्रिड बीजों के बोने के कारण पानी, रासायनिक खाद आदि को ज्यादा आवश्यकता भूमि को होने लगी। पेस्टीसाईड्स के प्रयोग के कारण जो कीड़े हानिकारक कीड़ों को खाते थे वे समाप्त होते चले गए। फसलों मे हजारों तरह की नई बीमारियां फैलने लगी हैं जिनसे आजकल कृषि वैज्ञानिक भी हाथ खडे कर देते हैं। रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण दलहन ओर तिलहन हमारी जमीनों में पैदा होना बंद हो गए हैं। जिससे इनका विदेशों से आयात करना पड रहा है। अब कृषि वैज्ञानिक रासायनिक खादों को छोड कर जैविक खादों के प्रयोग की सलाह दे रहे है। फसलों में गोबर की खाद डालने के लिए किसानों को प्रेरित कर रहे है। क्योंकि हमने अंधाधुध पश्चिम का अनुसरण हरित क्रान्ति लाने में किया। हमने गुणों की अपेक्षा मात्रा बढ़ाने पर जोर दिया। हमारे पुरातन परम्परागत फसलो के गुणों को देखते हुए अमरीका आदि देशों ने हमारे परम्परागत अनाजों के पेटेन्ट करा लिए हैं व हमें थोथा अनाज खाने को विवश कर दिया है।

हरित क्रान्ति के खराब परिणामों की ही तरह श्वेत क्रान्ति के परिणाम भी पश्चिम का अन्ध अनुकरण करते हुए कोई अच्छे निकलने वाले नहीं हैं। सरकार ने विदेशी नस्लों की गायों के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र बहुत बड़े स्तर पर खोल रखे हैं। जिसके कारण हमारी पुरातन नस्ले लुप्त होने जा रही हैं। जंगलों को साफ करके उस जमीन पर घास और अनाज बोया जा रहा है। विदेशी नस्लों की गायों के दूध, गोबर व मूत्र आदि में वो अमूल्य तत्व या अवयव नहीं पाए जाते जो देसी नस्ल की गायों में पाए जाते हैं। देसी नस्ल की गायों की दूध देने की क्षमता भी कम नहीं है। स्वदेशी गुजरात की गीर नस्ल की गाय 40 लीटर तक दूध देती है। बताया जाता है कि इजराईल देश ने गीर नस्ल की गाय को अपने यहां ले जाकर उससे 120 लीटर दूध का उत्पादन करके दिखाया है। यह मात्रा ससार में सर्वाधिक बताई जाती है व गिन्नीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में इस सर्वाधिक दूध देने वाली धेनू का नाम दर्ज है। इससे साबित होता है कि भारत में अपनी स्थानीय स्वदेशी नस्लों का ही संवर्धन उचित है। जो यहां के मौसम व तापमान आदि के अनुसार जी सकती हैं। इसी से गऊ वंश का संवर्धन हमारे लिए सदा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता हे।

अब इन देसी प्रजाति की गायों के लिए एक नया खतरा पैदा हो गया है। ऊपर जो गुर्जर समुदाय के विषय में लिखा गया है। मेरी जानकारी के अनुसार अभी तक ये लोग मुसलमान होते हुए भी बहुतायत में शाकाहारी थे और अब भी है। यहां तक कि अभी तक चाय से भी दूर भागते थे। ये लोग लस्सी व दूध के शौकीन होते थे। लेकिन तबलीगी जमातो के प्रचार के प्रभावों के कारण कुछ लोग मांस भक्षण करने लगे हैं। इसी विषय में एक बुजुर्ग मुसलमान गुर्जर ने एक रहस्योद्घाटन मेरे आगे किया कि - विदेशी नस्ल की गायों मे सूअर के खून का मिश्रण बताया जाता है। पता नहीं यह अफवाह है या सच है। लेकिन उस बुजुर्ग के अनुसार गौ मांस भक्षक मुस्लिम विदेशी नस्ल की गायों का मांस इस कारण खाना छोड़ गए हैं और अब देसी नस्ल की गायों पर ही कुल्हाड़ा चल रहा है। ये देसी प्रजातियां अब जल्दी खत्म हो जाएगी। इस बात को ध्यान में रखकर अपनी पुरातन सम्पदा को बचाने हेतु गौ रक्षक संस्थाओं को गहन प्रयास शुरू कर देने चाहिएं। गाय भक्षको तक इस प्रकार की जानकारी पहुंचाने का भी प्रयास करना चाहिए कि ब्रिटेन आदि यूरोपीय देशों में मैड-काउ नामक बीमारी किस प्रकार से फैल गई थी जिसमें एकाएक गौ मांस खाने वाले को जान से हाथ धोने पड़ते है। और स्वदेशी नस्ल की गायों में भी इस प्रकार का कोई कृमि प्रवेश कर गया है इस विषय में भी इस वर्ग को अवगत कराना चाहिए।

- शेष भाग पृष्ठ 10 पर

व्यसनों की विभीषिका

आधुनिक युग के सभी विनाशकारी उपकरण करोडो प्राणियों मानवो को नष्ट कर सकते हैं और करते रहे हैं किन्तु शेष बचे लोगो के माध्यम से पुन सृष्टि रची जाती रही है और मानवता का चक्र चलता रहा है।

अब तो भारत की कुछ सरकारे ऐसी विनाशकारी व्यसनो का प्रचलन करने लगी हैं जिनमे फसने के बाद तीसरी नही तो चौथी पीढी कैसिनो मे लाटरियो मे जो कुछ आपने उनके भविष्य के लिए बनाया है सभी को दाव पर लगा देगे या रहडियो पर बिकने वाली शराब को पी पीकर मानवता का सर्वनाश निश्चित रूप कर देगे। यदि आप जिम्मेदार उत्तराधिकारी पीढी चाहते है और मानवता के भविष्य को उज्ज्वल देखना चाहते है तो कुछ रिवैन्यू बटोरने मात्र के लिए उठाए जा रहे ऐसे विध्वसक व्यसनो को तत्काल बन्द कराना होगा। ऐसा न हो कि हमारी मा बहिनो को भी महाभारत काल की तरह दाव पर लगाया जाने लगे।

सावधान! रामराज्य लाते लाते दुर्योधन राज्य स्थापित होता जा रहा है। अत विदुर बनकर इन्हे सन्मार्ग दिखाइये अन्यथा न हम रहेगे और न ही मानवता।

आशा है भारत का प्रत्येक नागरिक इस विभीषिका की गम्भीरता को समझते हुए इस प्रकार के व्यसनोन्मुख कार्यक्रमो को रोकने मे अपनी अपनी सक्रिय रचनात्मक भूमिका निभाएगा।

व्यथित हृदय
– डॉ० सत्यदेव प्रधान
आर्यसमाज फरीदाबाद

योग्य प्रशासक की आवश्यकता

श्री मोहनलाल जी मोहित द्वारा स्थापित 'विश्व वैदिक अनुसंधान केन्द्र' की शाखा के रूप मे 'समर्पण शोध सस्थान' अगले माह से कार्यरत् हो जायेगा। पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी इसके निदेशक होगे।

इस सस्था को समर्पित योग्य व्यक्ति की प्रशासक के रूप मे आवश्यकता है। इस कार्य मे रूचि रखने वाले सज्जन अपना प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजने की कृपा करें।

कै० देवरत्न आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली २

गुरुकुलों के नव स्नातकों की आवश्यकता

समर्पण शोध सस्थान द्वारा विश्व वैदिक अनुसधान केन्द्र के अन्तर्गत शीघ्र ही देश और विदेश के लिए वैदिक विद्वान तैयार करने का कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। इस प्रशिक्षण के निदेशक होगे पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती। गुरुकुलो से उत्तीर्ण मेधावी स्नातक अपने प्रार्थना पत्र अपनी योग्यता आदि विवरण के साथ निम्न पते पर भेजने की कृपा करे। वर्तमान मे १२ छात्रो का ही चयन किया जायेगा व उन्हे वैदिक सिद्धान्तो व विदेशी भाषा मे प्रशिक्षित किया जायेगा।

कै० देवरत्न आर्य
निदेशक (प्रशासन) समर्पण शोध सस्थान
४/४२ राजेन्द्र नगर, सेक्टर ५, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

अब ईसाई भी दाह संस्कार के पक्ष मे

पटना (विसके) शवो को कब्रिस्तान मे दफनाने मे जमीन की कमी की बढती समस्या से ईसाई युवको मे अब यह सोच बलवती हो रही है कि क्यो न ईसाई भी हिन्दुओ के समान शवो का अतिम सस्कार जला कर करे। पिछले कुछ समय से ईसाई युवा वर्ग मे शवो को जलाकर अन्तिम सस्कार करने के प्रति रुझान काफी बढा है।

गत दिनो अपने पूर्वजो को याद किये जान वाले दिन आल सोल्ड डे पर जब ईसाइयो ने अपने पूवजो की कब्र पर फूल अर्पित किये तो अधिकाश ने कहा कि वे अपनी मृत्यु क बाद शव को दफनाए जाने की बजाए उसका दाह सस्कार करवाने का विकल्प चुनेग।

उधर उत्तर भारत के चर्च के एक मत्री दीपक साइमन का मानना है कि मृत्योपरात अतिम सस्कार किये जाने के लिए दाह सस्कार ही एकमात्र आधुनिक व सर्वोत्तम विकल्प है।" केरल के ईसाइयो का भी मानना है कि कब्रिस्तान म शवो को दफनाए जाने की प्रक्रिया के कारण अब जगह का अभाव होता जा रहा है। अत दाह सस्कार की प्रक्रिया ही इस समस्या का एक अच्छा समाधान है। सभव ह कि ईसाई समुदाय दाह सस्कार शीघ्र शुरु करेगा।

संस्कार शास्त्री बनें

सस्कार प्रशिक्षण विद्यालय आर्यसमाज मन्दिर यारपुर पटना–१ से पाठयक्रम मगाकर १६ सस्कारो और पूजा पाठ (कर्मकाण्ड) कराने का वैज्ञानिक अध्ययन करे तथा अपने घर से परीक्षा देकर तथा सस्कार शास्त्री की उपाधि प्राप्त कर एव पुरोहित बनकर समाज का नेतृत्व करे। पाठयक्रम मे महर्षि दयानन्द रचित ४ पुस्तके – १ सत्यार्थ प्रकाश २० रुपये २ सस्कार विधि २० रुपये ३ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ३० रुपये और ४ दैनिक यज्ञ प्रकाश ५ रुपये निर्धारित हैं। पुस्तके इस विद्यालय से अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड नई दिल्ली–२ से मगा सकते है। एक स्थान पर २० शिक्षार्थी होने पर वहा व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविर लगाया जाता है। इस क्रान्तिकारी/वैज्ञानिक शिक्षा से अधविश्वास गुरुडम और पाखण्ड मिटेगा और हम प्रगतिशील विचारक सुधारक एव राष्ट्रवादी बन सकेगे। पत्राचार मे सादा पाच रुपये का लिफाफा भेजे।

- आचार्य बनारसीसिंह 'विजयी'
मंत्री, संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय
आर्यसमाज मन्दिर, यारपुर, पटना-८००००१
दूरभाष · २४४०४०

आचार्य चैतन्य जी को, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान

आर्यजगत के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता लेखक तथा वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवानदेव चैतन्य जी को वष २००२ के आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी साहित्यिक सम्मान के लिए चुना गया है। इस निर्णय की घोषणा अखिल भारतीय साहित्यकार कल्याण मच रायबरेली (उ०प्र०) के महासचिव श्री अवतश रजनीश जी ने करते हुए श्री चैतन्य जी के साहित्य को मानवमूल्यो का पोषक तथा तात्विक दृष्टि से मील का पत्थर बताया। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतन्य जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा आर्यजगत के ये सैद्धान्तिक एव अत्यधिक लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता हैं। पत्र पत्रिकाओ मे इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इससे पूर्व भी अनेक सस्थाओ ने इनके सराहनीय कार्यो के लिए आचार्य जी को सम्मानित किया है।

आर्यसमाज आर०एस०पुरा जम्मू का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर रणवीर सिह पुरा मे वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। यह दिनाक १५ से २० अक्टूबर २००२ तक कार्यक्रम चला। अन्त में २० तारीख को प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको के उपदेशो द्वारा सम्पन्न हो गया। इसमे आर्यजगत की सुविख्यात विदुषी डॉ० निष्ठा विद्यालकार के अत्यन्त प्रभावशाली एव प्रेरणास्पद प्रवचन हुए। प्रतिदिन प्रात काल ८ ३० बजे से १० ३० बजे तक यजुर्वेद परायण यज्ञ चला जिसका ब्रह्मत्व आधुनिक गार्गी के नाम से विख्यात वेद विदुषी डॉ० निष्ठा जी ने किया। यज्ञोपरान्त यज्ञविषयक व्याख्या भी वैदुष्यपूर्ण ढग से प्रस्तुत की।

मध्यान्ह कालीन सत्र मे पारिवारिक सत्सग भी चला। जिसमे आर्यजगत के वैदिक प्रवक्ता आचार्य अखिलेश्वर जी ने सुन्दर सगीतमय ढग से गीता की रोचक कथा प्रस्तुत की। यज्ञ मे वेदपाठ ब्र० रणविजय एव ब्र० नरेन्द्र ने किया।

दिल्ली आगरा मार्ग पर आर्यजन महर्षि दयानन्द स्मारक पर आमंत्रित

सभी आर्य सज्जनो से निवेदन है कि वे दिल्ली से मथुरा आगरा या मथुरा आगरा की ओर से दिल्ली की तरफ यात्रा करते समय महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र पर विश्राम एव केन्द्र को देखने के लिए सादर आमत्रित हैं।

स्मरण रहे कि केन्द्र की स्थापना सन १९६४ मे की गई थी। केन्द्र मे अब तक एक भव्य यज्ञशाला दो सुदर एव सुविधा सम्पन्न कुटिया बनकर तैयार हैं। ऐलोपैथिक हस्पताल का काम समाप्त होने को है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व के अनुरूप एक विशाल एव दर्शनीय भवन बनाया जाना है।

५ एकड भूमि मे फैले घास के मैदान और फूलो से सज्जित केन्द्र का प्राकृतिक वातावरण अवश्य ही आपको मोहक लगेगा।

लखीराम कटारिया
अध्यक्ष

ज्ञान सागर भाटिया
प्रबन्धक ट्रस्टी

आवश्यकता है

वैदिक प्रचारक जो आष्टाग योग का प्रशिक्षण भी दे सके व कर्मकाण्ड मे निपुण हो। आवास नि शुल्क। योग्यतानुसार मानदेय दिया जावेगा।

सम्पर्क · - ओमप्रकाश, प्रधान
वेद प्रचार ट्रस्ट
२८ बी. फ्लेट १० बी
कोलकाता-१७
फोन २८००१२१ २४०६२२६

विदेश में विवाह हेतु कन्या चाहिए

मोरिशस का श्री सजय छेदी उम्र ३८ वर्ष लम्बाई ५ फीट ७ इच रग गेहुआ (सरकारी नौकरी) स्वस्थ शरीर एक भारतीय लडकी वैदिक विचारधारा वाली शाकाहारी कम से कम १२वीं पढी हुई कम्प्यूटर जानने वाली से विवाह करने की इच्छा रखता है।

इच्छुक लोग जल्द से जल्द इस पते पर सम्पर्क करे –

– सत्यप्रकाश बीगो
यूनियन पार्क फ्रास ब्रेवेली
मॉरिशस

पृष्ठ ८ का शेष भाग

लुप्त होती स्वदेशी गऊ बनाम श्वेत क्रान्ति

पहले मुसलमान व्यापारी पजाव आर हरियाणा से गो वश को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर आदि स्थानों पर मारने के लिए ले जाते थे। अब मुसलमान व्यापारियों के पशु यमुना नदी या हरियाणा की सीमा को पार कराने का ठेका कुछ हिन्दू भाई भी लेने लगे हे। पुलिस पैसे लेकर इनकी सहायता के लिए तत्पर रहती हे। पहले लोगों के सहयोग से पुलिस गौ वश को उत्तर प्रदेश में जाने से रोकती थी। लेकिन कानूनन इस प्रक्रिया मे एकाधिक जटिलताएं हैं। पकड़े हुए पशुओं के नकारा होने का प्रमाण पत्र वैटरनरी डाक्टर से लेना होता हे। नियम के मुताविक पुलिस केवल नाकारा गऊ बैलों को ही उत्तर प्रदेश ले जाने से रोक सकती है परन्तु इनमें से लगभग 90 प्रतिशत गऊ, बैल व बछड़े कारामन्द होते है। कई दिनो तक थाने में ही इन पशुओं को रोक कर रखना होता है। यह पुलिस के लिए वहुत उलझन वाली प्रक्रिया होती हैं। इन पकडे हुए पशुओ का चारे पानी आदि का सत्कार या किसी गऊ रक्षक सस्था के सौजन्य से कोई प्रबन्ध नहीं होना इसलिए पुलिस के लोग भी इनको पकड़ने से कतराते है। पशुओं के नाकारा सावित न होने कारण कोर्ट से छोड़े जाने के आदेश हो जाते हैं। इसलिए स्थानीय लोग भी गायों के भरे ट्रक पकडने के कार्य मे हतोत्साहित हो रहे हैं। इन ट्रकों में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम का उल्लंघन करते हुए 20 से 30 तक गाय बैल लदे होते हैं। लेकिन इस अधिनियम के अन्तर्गत भी इनके व्यापारियों के विरूद्ध कार्यवाही लगभग नगण्य होती है। इन ट्रकों में या मरने के लिए पैदल जाने वाले गौ वंश में सारे का सारा पुरातन स्वदेशी नस्ल का होता है। इससे साबित होता है कि इसी स्वदेशी नस्ल को समाप्त प्रायः करने के लिए गऊ मांस-भक्षक कटिबद्ध हैं।

जिस प्रकार विदेशी नस्ल की गाय के शरीर में सूअर का जीन होने की अफवाह फैलाई गई है यह पुरातन भारतीय, स्वदेशी प्रजाति को समाप्त करने का ही एक योजनाबद्ध षड्यन्त्र प्रतीत होना है। स्वदेशी गऊओं के संरक्षण के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है। जिस तरह से स्वदेशी नस्ल को समाप्त करने के लिए इस प्रकार की अफवाह फैलाई गई है। शठ शाठ्यं समाचरेत् के आधार पर स्वदेशी नस्ल की गऊओं को सूअर के खून के टीके लगाने का प्रोपेगंडा करना चाहिएं। इससे इस बात का प्रचार स्वयंमेव हो जाएगा व कोई भी गऊ मांस भक्षण से परहेज करेगा। पूर्व उद्धत गुर्जर समुदाय अपनी युगों पुरानी विरासत, पुण्य दायिनी स्वदेशी गाय का पालन करने में सम्प्रति जिस प्रकार से प्रवृत है को नैतिक बल देकर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार के दूसरे मानव समूह भी, जो जंगलों के आस-पास या जंगलों में रहते हैं, स्वदेशी प्रजातियों के पालन में ही लगे हुए हैं। गऊ सेवा के माध्यम से ये लोग अभी तक वहुत सारी बातों में भारतीय संस्कारों से जुड़े हुए हैं। गऊ के प्रति श्रद्धा होना भारतीयता के प्रति आस्था रखना ही है। पुरातन प्रजातियों की स्वदेशी गायों के संवर्धन से ही भविष्य में भारत में फिर से दूध की नदियां बह सकती हैं व श्वेत क्रान्ति के अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकेंगे।

- ग्राम किशनपुरा,पं० रिवजराबाद, जिला यमुनानगर, हरियाणा

आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा तमिलनाडु में धर्म परिवर्तन अध्यादेश पर गोष्ठी

दिनाक २७-१०-२००२ रविवार को प्रात १०३० बजे परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान श्री गजानन्द जी आर्य की अध्यक्षता में एक गोष्ठी आयोजित की गई जिसमे निम्न प्रस्ताव पारित किया गया -

धर्म परिवर्तन अध्यादेश पर आयोजित संगोष्ठी का एक दृश्य

१ यह सभा तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता द्वारा धर्म परिवर्तन पर जारी अध्यादेश का सर्वसम्मति से समर्थन करती है तथा इस कार्य के लिए माननीया मुख्यमत्री और तमिलनाडु सरकार की प्रशसा करती है, बधाई देती है और आग्रह करती है कि स्वार्थियो के दवाव मे न झुके तथा शीघ्रातिशीघ्र इसे कानून का रूप दे दवे।

२. यह सभा यह भी जोरदार मांग करती है कि इस तरह के वलात् तथा लालच देकर अथवा धोखाधडी से किये गए धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए केन्द्रीय सरकार बडा से बड़ा कानून बनाये।

३ यह सभा सर्वसम्मति से अन्य राज्य सरकारो से आग्रह पूर्वक अनुरोध करती है कि वे भी इस तरह का कानून अपने यहा बनाकर धार्मिक स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुरक्षित करे।

४ यह सभा तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री श्री करुणानिधि की अथवा छल प्रपच से धर्म परिवर्तन की आड में कार्य करने अथवा साथ देने वालों की तथा इस अध्यादेश का विरोध करने वालोक की घोर भर्त्सना करती है।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

आर्यसमाज और हमारा समाज

मन की शान्ति :

'मन की शान्ति' के पीछे अनेक कारण होते हे। 'मन की शान्ति' - मन के एकाग्र होने पर ही मिलती है। चंचल मन को कार्य मे लगाए रखने से मन स्थिर होता है ओर शान्त होता है, परमात्मा के नाम का ध्यान करने मे मन स्थिर होता है, तत्त्वज्ञान होने पर मन प्रसन्न और शान्त होता हे, परोपकार करने से मन की शान्ति मिलती है, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना से मन एकाग्र ओर शान्त होता है. ...ऐसे अनेक कारण होते हैं। जब तक मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान, ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान तथा नश्वर सृष्टि का सही ज्ञान नही हो जाता तब तक उसे स्थायी 'मन की शान्ति' नही मिल सकती। क्षणिक सासारिक सुख का पाकर मनुष्य समझता है कि उसे मन की शान्ति प्राप्त हो गई है - तो यह उसका भ्रम मात्र है। 'मन की शान्ति' हासिल करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है - सासारिक विषयभोगादि की इच्छाओ से दूर रहना अर्थात् सभी ऐषणाओ का त्याग करना और यह तव सम्भव हो सकता है जब मनुष्य अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, चुगली, मान, अपमान इत्यादि शत्रुओं को मार भगा नही देता और यह भी तभी सम्भव है जब मनुष्य को तत्त्वज्ञान (ईश्वर, जीव और प्रकृति का यथार्थ ज्ञान) हो जाता है। विषय विकारों के होते 'मन की शान्ति' तो वहुत दूर की बात हे - मनुष्य यदि इस पृथ्वी का सम्पूर्ण साम्राज्य भी प्राप्त क्यों न करले उसका मन अशान्त ही रहेगा - वह चैन की नींद भी नहीं सो सकता।

मनुष्य मात्र का समाज :

आर्यसमाज न हिन्दुओं का मन्दिर है न ही मुसलमानों की मस्जिद, यह न तो ईसाइयो का गिरजाघर है और न ही सिक्खों का गुरुद्वारा है - सच मानो 'आर्यसमाज - मनुष्य मात्र का अद्भुत् संगठन है' जहां कोई भी आ सकता हे। किसी की जाती-पाती का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हम मनुष्य को मनुष्य ही जानते और मानते हैं। हम एक ईश्वर को अपना गुरु, आचार्य, न्यायाधीश और राजा जानते और मानते हैं। हम परम पिता परमात्मा को ही माता-पिता-बन्धु-सखा जानते और मानते हैं। हम वेदो की वाणी को ही ईश्वरीय वाणी जानते और मानते है। इस संसार में जितने भी ग्रन्थ और धर्म शास्त्र उपलब्ध हे उन सभी ग्रन्थों का किसी न किसी रूप में वेदों से ही सम्बन्ध है परन्तु खेद की बात है कि कुछ स्वार्थी लोगो ने इन ग्रन्थों में भी मिलावट की हे तथा अपनी अनेक बुराइयों को इन ग्रन्थों में जोड़ दिया है ओर इतने अच्छे ढग से जोड़ा हे कि पढ़े लिखे लोग भी भ्रमित हो जाते हे कि क्या सत्य है और क्या असत्य है।

रही बात भीड़ की तो हमारे पाठक वृन्द जान ही सकते हैं कि भीड कहा इकट्ठी हुआ करती हैं ? रास्ते पर मदारी खेल दिखाता हे वहा भी भीड़ जमा होती हे, जहां स्वार्थी लोग होते हैं भीड वहां भी होती है, जहां सस्ता सामान विकना है, जहां प्रसाद बंटता है, जहा हंसी मजाक होता है, जहा कहानियां सुनाई जाती हैं, जहा प्रदर्शन होता है, जहा तफरी का माहोल होता है, जहां टाईम पास होता है. ....ऐसे अनेक स्थान हैं जहां हमेशा भीड होती है - इसका अर्थ यह नहीं कि वहां धर्मकर्म की बातें होती है।

सस्ती वर्तनों की दूकानो में अधिक भीड़ होती है और जहां चान्दी बिकती है वहां भीड़ कम होती है वैसे ही जहां सोने और हीरे के आभूषण बिकते हैं वहां वे ही लोग जाते हैं जिनके पास ऐसी वस्तुए खरीदने की शक्ति होती हैं। अत भीड भडके की बात करने वालो को समझ लेना चाहिए कि सत्य महगा होता है जिसे ज्ञानी लोग ही अपना सकते हैं अतः संसार में उस जानने-मानने वाले लोग बहुत कम मात्रा में होते है और असत्य निःशुल्क होता है जहां अज्ञानी लोग ही भीड़ जमाकर लेते हैं अतः इस संसार में अज्ञानियों की कोई कमी नहीं है।

माथे पर तिलक, गले में माला, हाथ में माला फेरने से या नाम में परिवर्तन करने से कोई भी व्यक्ति ज्ञानी या धार्मिक नहीं हो जाता और धर्म या ज्ञान किसी एक की धरोहर नहीं है क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सब के लिए होता है। तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के किस्से प्रायः सभी ने समाचार पत्रों में पढ़े ही होंगे। जितने कुकर्म, पाखण्ड, अन्धविश्वास इन तथाकथित धर्म स्थानों मे होते हैं वैसे कहीं नहीं होते।

इस पृथ्वी पर यदि कोई ऐसी संस्था है जहां वैदिक धर्म अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है तो वह केवल और केवल 'आर्यसमाज' ही है। जिनको तनिक भी शंका हो हम उन्हें निमन्त्रण देते हैं (वैसे तो आर्यसमाज सब का है) कि वे कभी भी आर्यसमाज में पधारें और अपनी शकाओं का समाधान कर सकते हैं। यह एक ऐसी समाज है जहां वेदों का पठन-पाठन होता है और वैसे ही आचरण होता है। हम केवल निराकार परमात्मा, जिसने ब्रह्माण्ड की रचना की है जो इसकी स्थिति करता है और अन्त में प्रलय करता है, उसी एक परम पिता परमात्मा की स्तुति-उपासना करते हैं। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वैदिक उद्घोष है, ईश्वर का आदेश है ओर यही हमारा कर्त्तव्य है। ईश्वर प्राप्ति करना ही सब मनुष्य मात्र का परम पुरुषार्थ और लक्ष्य है। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है अब यह उसकी मर्जी है, उसके अपने कर्म हैं कि वह ईश्वर की वाणी - वेद को माने, न माने या उल्टा माने।

इत्योम्।

- मन्त्री आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई,

महर्षि दयानन्द के पथ पर चलने से ही विश्व का कल्याण सम्भव

आर्य प्रतिनिधि सभा मुंम्बई द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुज के भवन मे स्थानीय समस्त आर्यसमाजो की ओर से महर्षि निर्वाण दिवस समारोह मनाया गया। प्रात ८ से ६ ३० तक वृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात माननीय मिठाई लाल जी आर्य की अध्यक्षता मे महर्षि निर्वाण दिवस समारोह प्रारम्भ हुआ। श्री योगेश्वर आर्य एव श्रीमती शिवराज वती आर्या के भजनोपरान्त श्री यशप्रिय आर्य ने प्रश्नोत्तरी का रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री कृपाशकर सिह गृह राज्य मन्त्री महाराष्ट्र सरकार न अपने भाषण मे कहा कि ससार मे यदि कोई समाज विद्या शिक्षा सस्कार व सात्विकता दे सकता है तो वह आर्यसमाज ही दे सकता है। ज्ञान के आलोक मे ही वैभव का व्यापार होना चाहिए।

इस अवसर पर समारोह के विशिष्ठ अतिथि कै० देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि श्री दयानन्द ने जीवनपर्यन्त पाखण्ड को दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होने पण्डित मदन मोहन मालवीय की उक्ति को दोहराते हुए कहा कि आर्य दौडता है तो हिन्दू चलता है और आर्य चलता है तो हिन्दू बैठता है।

इस अवसर पर डॉ० सोमदेव शास्त्री डॉ० सत्यपाल सिह आई०जी० मुम्बई सहित कई वक्ताओ ने अपने विचार रखे।

प्रथम वार्षिक महोत्सव

महाराष्ट्र प्रान्त के जिला नादेड एव जिला हिंगोली के बीच स्थापित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल विद्यालय जरोडा का प्रथम वार्षिक महोत्सव एव माता सोमकुमारी आर्ष पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह २७ दिसम्बर से २६ दिसम्बर २००२ तक विभिन्न भव्य सम्मेलनो के साथ सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण महायज्ञ प्रात ७ बजे से १० बजे तक सम्पन्न होगा। सामवेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति तथा पुस्तकालय का उदघाटन २६ दिसम्बर को प्रात ७ बजे से १ बजे तक सम्पन्न होगा। समारोह मे स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आचार्य हरिदेव जी श्री जगद् देव नैष्ठिक सहित अनेको विद्वान एव नेता पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

गुरुकुल मधुवन स्थापनोत्सव

ग्राम खरकाली करनाल में आर्यसमाज खरकाली और राष्ट्रीय गुरुकुल मधुवन एजुकेशन सोसायटी के सहयोग से दिनाक १ जनवरी २००३ को गुरुकुल मधुवन का दूसरा स्थापनोत्सव ५१ कुण्डीय महायज्ञ के साथ धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों सहित व्यायाम योग प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया है। प्रशिक्षण शिविर २५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २००२ तक योग्य प्रशिक्षको के सान्निध्य में सम्पन्न होगा।

वैदिक शिक्षा पद्धति ही मानव का निर्माण करती है

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज रानीमाजरा मे आयोजित आर्य महासम्मेलन के अवसर पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति मानव का निर्माण करती है। इससे ऐसे सुसस्कारित बच्चो का निर्माण होता है। जो समाज मे मजबूती के साथ खडे होकर राष्ट्र निर्माण मे अग्रणी भूमिका निमाते हैं। उन्होने कहा महर्षि दयानन्द ने वेदो का पुनरुद्धार कर वेद ज्ञान की ज्योति से अविद्या अन्धकार को मिटाया। प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने बताया कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय शीघ्र ही अमेरिका मे ५ योग शिक्षा के केन्द्र खोलेगी। मारिशस मे भी ऐसे ही केन्द्र खुलेगे। इससे पूर्व हृदय राम आर्य के ब्रह्मत्व मे वृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महेन्द्र कुमार लल्लन चमनलाल आर्य प्रकाशचन्द्र चौहान हृदयराम आर्य वैद्य प्रभुलाल श्यामलाल पुखाला श्री रूहेल सिह करतार सिह गिरधारी लाल चन्दवानी प्रतिभा निर्मला रजत आर्य आदि ने अपने उदबोधन तथा भजनो से श्रोताओ को लाभान्वित किया। सम्मेलन की अध्यक्षता कर रह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के महामन्त्री देवराज आर्य ने कहा कि आर्यसमाज एक कारखाना है इस कारखाने मे श्रेष्ठ पुरुषो का निर्माण होता है इससे निर्मित मनुष्य प्रत्येक स्थान पर चमकते और दमकते हुए नजर आते है। सम्मेलन का सचालन प्रकाशचन्द चौहान और आभार कबूल सिह ने व्यक्त किया।

विशाल नि:शुल्क पोलियो शल्य चिकित्सा शिविर

आयुक्त निशक्तजन व समाज कल्याण विभाग राजस्थान जयपुर के सौजन्य से परोपकारिणी सभा दयानन्द आश्रम केसर गज अजमेर के सहयोग से नारायण सेवा सस्थान उदयपुर एव शाखा सुजानगढ द्वारा आयोजित विशाल निशुल्क पोलियो शल्य चिकित्सा शिविर का उदघाटन समारोह 'बगडिया नोहरा नाथो तालाब के पास सुजान गढ जिला चुरु मे १६ दिसम्बर २००२ को प्रात सम्पन्न होगा। उद्घाटन कर्ता योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी होगे तथा मुख्य अतिथि के रूप मे कै० देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधार रहे है।

श्री सत्यनारायण लाहौटी अध्यक्ष शाखा सुजानगढ का दिनाक १६ दिसम्बर को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्रदान की जाएगी। दीक्षा समारोह का सयोजन आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य के द्वारा सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर लाभ उठाये।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा श्रावस्ती/बहराइच के निर्वाचन में निर्वाचित पदाधिकारी

प्रधान — श्री वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री — श्री चन्द्र केतु आर्य
कोषाध्यक्ष — श्री अनिल कुमार आर्य

समय का आह्वान

स्वतन्त्रता उपरात ५४ सालो मे भारत की वैज्ञानिक उपलब्धिया सराहनीय है। परन्तु इन ५४ सालो मे शनै शनै मानव मूल्यो का जो हनन हुआ है क्या भारत पुन कभी जगत गुरु बन पायेगा ? विज्ञान ने हमे आकाश मे उडना तो सिखाया है परन्तु धरातल पर चलना नहीं सिखाया।

अब हमारा देश पुन विघटन के कगार पर खडा है। विघटन केवल सामाजिक एव शैक्षणिक ही नहीं सास्कृतिक एव धार्मिक भी हुआ है।

ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज एव डी०ए०वी० की विशाल सस्थाये केवल एक मात्र ज्ञानशील क्रान्तिकारी ज्वलित ज्योति स्तम्भ की भाति देश को दिशा देने मे सक्षम थीं आज किकर्तव्यमूढ क्यो बन गई है ? यह विशाल सस्थाये केवल ईट और पत्थर के विशाल भवन ही बन कर क्यो रह गई है ? इन भवनो की आत्मा कहा सो गई है ? कहा खो गई है ?

आने वाले १० साल इस देश के भाग्य के प्रति विशेष निर्णायक दीख रहे है। कौन भूल सकता है कि आर्य जनो ने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा की थी। उसमे सास्कृतिक प्राणो का सचार किया था। देश को स्वतन्त्र कराने के लिये हमने अनेक बलिदान दिये थे। काग्रेस के वरिष्ठ कार्यकर्ता दयानन्द के अनुयायी थे दयानन्द के सिपाही ही थे। समाज मे व्याप्त विषमताओ रूढियो अन्धविश्वासो कुरीतियो को नष्ट करने के लिए आपकी एक हुकार ही पर्याप्त थी। सत्य के प्रकाश को बचाने के लिए आपके ही आगे निजाम ने घुटने टेक दिये थे। छुआछूत को नष्ट करने स्त्री जाति का उद्धार करने के लिए आपके पास एक निश्चित योजना थी। विदशी भाषा और विदेशी शिक्षा का सशक्त उत्तर दिया था। आपने देश के युवको को सस्कारी बनाकर ऊचा उठाकर उससे समाज राष्ट्र व विश्व के लिए अपने प्राणो को न्योछावर करने को शक्ति भर दी थी। गायो के लिए गौशालाए अनाथो के लिए अनाथाश्रम किस ने बनवाए – सम्पूर्ण स्वतत्रता का घोष सर्व प्रथम किस ने गुजाया ?

देश का राष्ट्रीय चरित्र तो लुप्त हो ही गया है। हर नेता बिकाऊ है। जयचन्दो की भरमार हो गई है। आधुनिकवाद की आड मे पाश्चात्यवाद घर कर गया है। समाज मे प्रजातन्त्र को वोट नोट से तोल कर खरीदा जाता है। विदेशी कर्जो के बोझ से दब गया है देश। घूस के कैसर से उत्पीडित है देश। विदेशी पूजी निवेश हमारे लिए कौन सा भविष्य लायेगा। धर्मान्तरण का षडयन्त्र इस देश को चाट गया है। १५ करोड हरिजन भाई नियोबौद्ध का नया पथ बना रहे है। सीमाओ पर देश को काटने और बाटने का शोर हमे क्यो सुनाई नहीं दे रहा है।

अपने गौरवमय अतीत को स्मरण कर आज की जटिल परिस्थितियो के प्रति उदासीन हो आसू बहाने वालो उठो पुन सगठित करो अपनी शक्ति को भूल जाओ आपसी मतभेद और कानूनी झगडे। अपने मे नई शक्ति का सचार कर देश को दिशा दो। आज तुम्हारे सामने हिन्दू (आर्य) जाति एव भारतीय सस्कृति की अस्मिता का प्रश्न है। सम्मान से जीवित रहने या मिट जाने का प्रश्न है।

— *वी०पी० गुप्ता*

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मगर पूजला पुर (जोधपुर) राजस्थान का देवर्षीय वार्षिक महोत्सव बडी धाम से मनाया गया। जिसमे के द्वारा आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता हांसी हरियाणा) विदुषी बहन शास्त्री उपदेशिका रवाडी हरियाणा) श्री देवीप्रसाद जी आर्य उपदेशक (जोधपुर) राजस्थान ब्रह्मचारी अमित कुमार आर्य (हरियाणा) आदि विद्वानो ने अपने विचारो से श्रोताओ का लाभान्वित किया। पूर्णाहुति एव उत्सव के समापन पर अन्तिम दिन उक्त विद्वानो को राजस्थानी पगडी पहना कर तथा फूल मालाओ से स्वागत करके अभिषेक किया गया।

श्री प्रभाकर को मानवाधिकार अवार्ड

नागपुर के प्रतिष्ठित आर्य श्री प्रभाकर सामराव बोलकर को दलितोत्थान कार्यो के लिए डॉ० अम्बेडकर फलोशिप सम्मान से अलकृत किया गया है। यह सम्मान श्री प्रभाकर को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रदान किया गया है। श्री प्रभाकर की समाज सेवाओ के प्रतिफल स्वरूप वर्ष २००२ का विश्व मानवाधिकार प्रमोशन अवार्ड भी गत ८ दिसम्बर को दिल्ली मे आयोजित एक समारोह मे प्रदान किया गया। श्री प्रभाकर युनाइटेड इण्डिया इन्श्योरेन्स कम्पनी मे कार्यरत है और हिन्दी कविताओ के माध्यम से भी समाज सेवा कार्यो मे जुटे है। हाल ही मे प्रकाशित "मानवता से दूर" लघु पुस्तिका के माध्यम मे उनका कविता सग्रह भी प्रकाशित हुआ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने श्री प्रभाकर की इन उपलब्धियो पर उन्हे बधाई देते हुए कहा है कि दक्षिण भारत के नागरिको मे हिन्दी प्रेम जगाकर आप उन्हे राष्ट्रवाद की मुख्य धारा मे लाने का पवित्र कार्य कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि श्री प्रभाकर के सुपुत्र श्री वेदप्रकाश भी प्राचीन भारतीय विज्ञान और खगोल विद्या के विशेषज्ञ है।

श्रुति (न्यास) ट्रस्ट पंजीकृत

इसके द्वारा वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल वेद प्रचार का कार्य था सामाजिक कार्य (सोशल वर्क) किया जाएगा।

मैनजिग कमेटी निम्न प्रकार है –

१ स्वामी सुरेन्द्रानन्द सरस्वती	चेयरमेन (मैनेजिग ट्रस्टी)
२ श्री राजकुमार आर्य	मन्त्री
३ श्री सर्वदमन आर्य	कोषाध्यक्ष
४ डॉ० जितेन्द्र चिकारा	परामर्शदाता
५ डॉ० ओमवीर शास्त्री	प्रतिष्ठित सदस्य
६ डॉ० ओमदत्त शर्मा	प्रतिष्ठित सदस्य
७ श्री भास्कर आर्य	प्रतिष्ठित सदस्य

मुख्य कार्यालय वेद मन्दिर आर्य नगर विजना की नगलिया डॉ० शादीपुर (जट्टारी) जिला अलीगढ (उ०प्र०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली २ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०६८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट http://www.whereisgod.com

प्रथम कालम – प्रथम विचार,
सदा सत्य रहने वाली वाणी

स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा न स्वस्तये।। ऋ० १/१/९

पदार्थान्वय –

हे (स) उक्त गुणयुक्त (अग्ने) ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! (पितेव) जैसे पिता (सूनवे) अपने पुत्र के लिये उत्तम ज्ञान का देने वाला होता है वैसे ही आप (न) हम लोगो के लिये (सूपायन) शोभन ज्ञान जो कि सब सुखो का साधक और उत्तम पदार्थो का प्राप्त करने वाला है उसके देने वाले होकर (न) हम लोगो को (स्वस्तये(सब सुख के लिये (सचस्व) सयुक्त कीजिये।

वर्ष ४१ अक ३३ २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर २००२ तक दयानन्दाब्द १७९ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ सम्वत २०५९ पौ० कृ० ३
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज के नेताओं की प्रधानमन्त्री से भेंट
अगला चुनाव राष्ट्रवाद के मुद्दे पर लड़ने की मांग

नई दिल्ली १८ दिसम्बर। गुजरात चुनावो में भाजपा को मिली भारी सफलता पर आर्यसमाज के एक शिष्ट मण्डल ने प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को शुभकामनाए दी और देश की राजनीतिक परिस्थितियो पर गहन विचार–विमर्श किया।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शमा तथा सासद श्री रासासिह रावत ने श्री वाजपेयी के साथ गहन मन्त्रणा की।

श्री विमल वधावन ने प्रधानमन्त्री से कहा कि गुजरात का चुनाव प्रशासनिक सफलताओ या चुनौतियो पर नहीं लडा गया। वास्तव मे यह चुनाव आतकवाद की पीडा से उत्पन्न वोट का केन्द्रीयकरण था। भाजपा ने आतकवाद के विरुद्ध खुलकर आवाज उठाई इसीलिए जनता ने उसे समर्थन दिया।

श्री विमल वधावन ने प्रधानमन्त्री जी से निवेदन किया कि अगला लोकसभा चुनाव उन प्रमुख मुद्दो पर लडा जाना चाहिए जिनसे देश का एक निश्चित मार्ग निर्धारित हो। **राष्ट्र क्या है ? राष्ट्रवाद क्या है ? राष्ट्रवादी कौन है ? धर्म का मूल स्वरूप क्या है ? और भारत मे किस प्रकार के धर्म की स्थापना की जानी चाहिए। जनता से यह आह्वान किया जाना चाहिए कि वे किस प्रकार का शासक चाहते है ?**

सासद श्री रासा सिह रावत ने प्रधानमन्त्री जी को आर्यसमाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे योगदान के सन्दर्भ मे बताया कि आर्यसमाज ने ब्रिटिश आतकवाद के विरुद्ध युवको को जागृत किया और साथ ही उनमे चरित्र निर्माण की अलख जगाई। जनता को राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रसेवा के साथ–साथ दया और परोपकार पर आधारित धर्म का अर्थ समझाया। आज पुन ऐसा वातावरण खडा करने की आवश्यकता है।

आर्य नेताओ ने श्री वाजपेयी को यह भी कहा कि गुजरात की विजय को हिन्दुत्व की जीत न बताया जाए क्योंकि ऐसा करना राष्ट्रीय एकता के सिद्धान्तो के विपरीत है।

आर्यसमाज की देश सेवा का स्वरूप चरित्र निर्माण है

कन्या सस्कृत महा विद्यालय गुरुकुल खरल (जीन्द) हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य मुख्य अतिथि तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन विशिष्ट अतिथि के रूप मे पधारे। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री रोशनलाल आर्य स्वामी कर्मपाल चौ० मित्रसेन जी तथा श्री राममेहर एडवोकेट ने भी इस समारोह मे पहुचकर कार्यक्रम की शोभा बढाई।

लगभग ३००० बच्चियों को विद्या में पारगत करता यह महाविद्यालय क्षेत्रीय जनता मे श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। अनुशासन और शिक्षा मे सर्वोच्चता इस महाविद्यालय की पहचान बने हुए हैं।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूज्य स्वामी रतनदेव सरस्वती जी के त्याग और तपस्या के फलस्वरूप तथा सचालिका डॉ० कु० दर्शनादेवी के प्रयास से इस महाविद्यालय को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए यहा की छात्राओ को अपने सामान्य जीवन में भी ऐसे ही चरित्र को बनाकर रखना चाहिए जिसे देखकर लोगो के मन मे इस महाविद्यालय की छवि निखरती रहे और चरित्र निर्माण की यह प्रेरणा सारे समाज मे फैलती रहे।

उन्होने कहा कि हरियाणा की धरती पर आर्यसमाज का सन्तोषजनक प्रचार रहा है। हरियाणा की धरती ने गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था मे बहुत बडा योगदान दिया है परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी हरियाणा की धरती पर शराब का प्रचलन भी सम्भवत सबसे अधिक है। यह आर्यसमाजियो के लिए एक चुनौती समझनी चाहिए। चरित्र निर्माण के प्रचार प्रसार से शराब का ही नहीं बल्कि भ्रष्टाचार और बेईमानी का विरोध भी स्वत होने लगेगा।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि आर्यसमाज की एक पवित्र छवि समाज मे व्याप्त थी। उन्होने कई आर्यनेताओ और कार्यकर्ताओं के जीवन व्यवहार से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत करते हुए छात्राओ के मन मे यह विचार स्थापित करने का प्रयास किया कि आर्यसमाज की जीवन पद्धति हमेशा सद्चरित्र की पोशक रही है।

उन्होने आर्यों से आवाहन किया कि चरित्र निर्माण के कार्य को तेज गति से बढाए। आर्यसमाज का कार्य करते समय आलस्य या स्वार्थ न पनपने दे तभी देश की मूल सस्कृति को बचाया जा सकेगा।

इस समारोह मे विशेष रुप से पधारे श्री चौ० मित्रसेन जी ने एक लाख रुपये की राशि इस महाविद्यालय को भेट की। उनके साथ श्री राममेहर एडवोकेट ने छात्राओ को ज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिक ज्ञान विकसित करने की प्रेरणा देते हुए बताया कि पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमन्त्री बेनजीर भुटटो का भी यह कहना है कि राजनीतिक उतार चढाव के बीच मैंने एक एक दिन मे २० – २० बार प्राणायाम करके अपने आप को सुरक्षित रख पाने मे सफलता हासिल की है।

इस कार्यक्रम से पूर्व हरियाणा के विभिन्न जिलो से पधारे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओ एव पदाधिकारियो की एक कार्यकर्ता सगोष्ठी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो की उपस्थिति मे हुई। हरियाणा के आर्यजनो मे हरिद्वार के गुरुकुल कागडी भूमि घोटाले तथा इसी तर्ज पर हरियाणा मे भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध गहन क्षोभ प्रदर्शित किया और सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो से हरियाणा की आर्यसमाजो के कार्यकलापो की विस्तृत छानबीन की माग की।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने हरियाणा के कार्यकर्ताओ को आश्वस्त किया कि वे इस सम्बन्ध मे अवश्य ही ध्यान देगे। उन्होने कार्यकर्ताओ को आर्यसमाज की गतिविधिया बढाने के लिए प्रेरित किया। देश विदेश मे आर्यसमाज के बढते प्रभाव की चर्चा करते हुए उन्होने प्रेरणा ग्रहण करने की अपील की।

सम्पादक

इस अंक में .....

गुरुकुल शताब्दी पर स्मृति डाक टिकट

नई दिल्ली १७ दिसम्बर। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा १९वीं शताब्दी मे प्रतिपादित मूल्यो पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के निर्देश का अनुसरण करते हुए अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा की गई १९०२ ई० मे हरिद्वार के निकट गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे भारत सरकार के डाक तार विभाग द्वारा **एक स्मृति डाक टिकट** का विमोचन किया जाएगा।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने बताया कि प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी गुरुकुल शताब्दी स्मृति डाक टिकट का लोकार्पण करेगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे आयोजित इस समारोह मे केन्द्रीय सचार मन्त्री श्री प्रमोद महाजन सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज केन्द्रीय श्रम मन्त्री डा० साहिब सिह वर्मा प्रधानमन्त्री कार्यालय मे राज्य मन्त्री श्री विजय गोयल ससदीय राज्य मन्त्री श्री सन्तोष गगवार तथा कई प्रमुख सासद सर्वश्री विजय कुमार मल्होत्रा मदन लाल खुराना रासासिह रावत आदि उपस्थित रहेगे।

श्री विमल वधावन के अनुसार विगत १०० वर्षो मे लगभग २०० से अधिक गुरुकुलो की स्थापना भारत मे की गई है। शताब्दी वर्ष पर आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था ने यह आह्वान किया है कि आगामी ५ वर्षो मे गुरुकुलो की सख्या १००० तक पहुचाने का प्रयत्न किया जाएगा। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का विदेशो मे प्रचलित करने के लिए भी प्रयास प्रारम्भ कर दिए गए है। हाल ही मे मलेशिया मे भी एक गुरुकुल स्थापित किया गया है।

बच्चों में पत्रकारिता कैसे विकसित करें ?

स्वभाव ही पहचान है

स्वभाव ही मनुष्य की पहचान है। यदि मनुष्य का स्वभाव अच्छा है तो समझिए कि स्वर्ग उसके साथ है। वह हमेशा सुखी रहता है व भगवान भी उससे बहुत प्रसन्न होते है। यदि उसका स्वभाव दोषपूर्ण है तो वह जहा बैठेगा दुःख के साथ चलेगा व वह अपने आप को सदा निःसहाय अनुभव करेगा। उसके मन मे सदा निराशा का भाव छाया रहता है। शान्त रहना चेहरे पर मुस्कुराहट और वाणी मे माधुर्य हम सब के श्रृगार है जिन्हे लेकर घर से हम बाहर जाते हैं और लौटते हुए लेकर आते है। यदि ऐसा है तो समझना चाहिए कि घर से हम सुख शान्ति लेकर गए थे और सुख शान्ति लेकर घर आ गए। हम अगर दूसरो के साथ अच्छे व्यवहार से बात करेगे व उनकी सहायता करेगे तो वे भी हम से अच्छे से बात करेगे व जरूरत पडने पर हमारी सहायता भी करेगे। अत हमारा स्वभाव व व्यवहार अच्छा होना चाहिए वरना एक दिन ऐसा आएगा जब कोई हमसे बात नही करेगा और हमारी मदद नही करेगा।

नाम वरुण भाटिया
कक्षा आठवीं
स्कूल महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल

पीछे मुड़ कर मत देखा – सफलता मिलेगी, ऐश्वर्य प्राप्त करेगा

'अप्रतीतो जयति सं धनानि' ऋ० ४/५०/६

सत्ता के भूखे भेड़ियों – अन्याय के लिए मत लड़ो, मत डटो, मत अड़ो – विनाश निश्चित है

वेद का मन्त्र ससार वासियो को प्रेरणा देकर चेतावनी देता है कि प्राणी ससार मे किसी से द्वेष हिसा अन्याय दम्भ छल स्वार्थ अप्रीति मत कर अन्यथा जीवन मे कभी सफलता विजय प्राप्त नहीं कर पाएगा और ऐश्वर्य को भी प्राप्त नहीं कर पाएगा। यदि जीवन मे सच्चे सुख और ऐश्वर्यों को प्राप्त करना चाहता है तो सतत पुरुषार्थ करते हुए आगे बढते रहने का सकल्प कर।

अप्रतीतो का अर्थ है कभी पीछे मुड कर न देखना। पीछे कदम न हटाने वाला प्राणी ही विजय को प्राप्त करता है और ऐसा व्यक्ति विजयी होकर ऐश्वर्यो को प्राप्त करता है। जो प्राणी स्वार्थ के मोह मे फसने का प्रयास करता है वह दूसरो को दुख देगा और दूसरो को दुख देने वाला कभी विजय प्राप्त नहीं करेगा और न ही ऐश्वर्यों को प्राप्त कर पाएगा। जीवन पर्यन्त ठोकरे खाते भटकता फिरेगा।

ईश्वर का सच्चा पुत्र इस ससार मे आकर ऐसा हितकारी कार्य करना चाहता है जो जनहित मे हो। जनहित कार्यो मे जब किसी एक व्यक्ति के कल्याण का कार्य करता है तो वैयक्तिक सुख व ऐश्वर्य मिलता है और जब सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर जनहित कार्यों का उद्यम करता है तो सामाजिक व राष्ट्रीय ऐश्वर्यों पर विजय प्राप्त करता है। इस प्रकार की सफलता वही प्राणी प्राप्त कर पाता है जो धैर्यवान लगनशील और जिसमे चिरकाल तक परिश्रम करते रहने की असीम शक्ति जिसमे सदा अडे रहने डटे रहने का गुण होता है। जिनके कदम कभी पीछे नहीं हटते जिनमे इस प्रकार के गुण नहीं होते वे इस धरती पर एक भार के समान पडे रहते है। ऐसे व्यक्ति सस्था राष्ट्र के लिए ससार मे कोई ऐश्वर्य नहीं है।

आज ससार मे अडे रहना डटे रहना दूसरे अर्थो मे लिया जा रहा है। सम्पूर्ण विश्व मे प्राय सत्ताधारी अहकारी धनाढय मनुष्य राष्ट्र स्वार्थवश अन्याय के लिए अडे रहते है डटे रहते हैं और लडते रहते हैं इस प्रकार के चाहे चक्रवर्ती क्यो न हो विनाश निश्चित है। अडे रहना डटे रहना सदैव अन्याय के विरुद्ध और न्याय के लिए ही होना चाहिए ऐसा प्राणी जो ससार वासियो को सत्य कर्म करते हुए सभी ऐश्वर्यो को प्राप्त कराने हेतु सत्य उपदेश देने की बात करता है और उसके लिए अडे रहने डटे रहने की बात करता है और नम्रता से सुनता नहीं है न तो अपना कल्याण कर पाता है और न ही राष्ट्र का कल्याण कर पाता है।

सत्ताधारी यदि अपना कल्याण चाहते है तो उन्हे चाहिए कि ज्ञानी विनम्र चरित्रवान गुणवान पुरुषो के सुझावो को सुने सत्कारपूर्वक समझे और उनके शुभ सुझावो को तुरत मान कर अपने आचरण मे लाने का प्रयास करे। सभी के भले की सोचे सबके कल्याण की कामना करे।

आज सबसे बडी आवश्यकता इस बात की है कि निर्बल निर्धन पद दलित सत्य पर चलना सीखे सत्य के लिए अडना सीखे और सत्ताधारी सदैव नमना सीखे। प्रत्येक को सजग होकर देखना है कि कहीं बलवान अन्यायी के आगे कहीं झुक तो नहीं गया है बिक तो नहीं गया हैं अपने कदम पीछे तो नहीं हटा रहा है। पवित्र वह होता है जो सच्चे पुरुष के सामने अडता डटता व लडता नही है।

अन्याय के विरुद्ध अडने डटने व लडने वाले इसान सस्थाए तथा राष्ट्र सदैव विजयी रहते हैं बलशाली रहते हैं और ऐश्वर्यो को प्राप्त करते हैं। हम सभी को इसी लक्ष्य की ओर सदैव अग्रसर होते रहना है।

– आर्य तपस्वी (सुखदेव) वैदिक प्रवक्ता
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

भूकम्प का धन ३१ मार्च, २००३ से पहले खर्च करना अनिवार्य

गुजरात मे **२६ जनवरी, २००१** को आए विनाशकारी भूकम्प मे खर्च करने के लिए अनेक आर्यसमाजो व ट्रस्टो ने धन एकत्रित किया है। भूकम्प हेतु प्राप्त पैसे का उपयोग इस कार्य के लिए **३१ मार्च, २००३** तक करना कानूनन जरूरी है।

सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो तथा ट्रस्टो से अनुरोध है कि भूकम्प से असहाय हुए बच्चो का पालन पोषण आर्यसमाज गाधीधाम कर रहा है तथा बच्चो के लिए **"जीवन प्रभात"** भी निर्माणाधीन है। कृपया आप इस निमित्त एकत्रित बचा हुआ धन **चैक/ड्राफ्ट "आर्यसमाज गाधीधाम"** के नाम **आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, गाधीधाम (कच्छ) ३७०२०१ गुजरात** के पते पर भेजने का कष्ट करे।

– **वेदव्रत शर्मा**, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के समाजसेवियों का मध्य प्रदेश और राजस्थान में सघन दौरा एवं निरीक्षण सम्पन्न

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की महामन्त्रिणी माता प्रेमलता शास्त्री मत्री माता ईश्वररानी एव सुमधुर ओजस्वी गायिका माता सरला देवी दिल्ली ने मध्य प्रदेश एव राजस्थान के आदिवासी बहुल क्षेत्र बासवाडा एव झाबुआ क्षेत्र के विभिन्न आश्रम विद्यालय औषधालय एव बालवाडियो का निरीक्षण दिनाक १६ से २८ नवम्बर २००२ तक किया। इस दौरान ग्राम कटठीवाडा के राजेन्द्र आश्रम मे आर्यवीर दल आर्य वीरागना दल एव कन्या वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन किया गया इसका सचालन माता प्रेमलता शास्त्री व श्री बसन्त कुमार ने किया।

ग्राम काकनवानी बालवासा भामल बलवन आदि गावो मे सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे हजारो ग्राम वासियो ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर नवीन यज्ञोपवीत धारण किया। जन सहयोग से ग्राम सागवानी हेडावा दौलतपुरा पञ्चरवेरिया कुशलपुरा मे चल रही बालवाडियो का आकस्मिक निरीक्षण कर कार्यकर्त्ताओ को साहसिक उद्बोधन कर मार्गदर्शन दिया।

महर्षि दयानन्द बालवाडी का उद्घाटन – ग्राम नगारी मे महर्षि दयानन्द बालवाडी का उदघाटन सामूहिक यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र – ग्राम काकनवानी मे माता कमला सूद दिल्ली के सहयोग से महर्षि दयानन्द आर्य सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन आए हुए अधिकारियो ने सामूहिक यज्ञ के साथ सम्पन्न किया।

इसी तारतम्य मे राजस्थान बासवाडा मे महर्षि दयानन्द सेवाश्रम मे आवासित बालको का सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार कर कुशलगढ के छात्रावास का आकस्मिक निरीक्षण किया।

इस १० दिवसीय प्रचार यात्रा मे आचार्य दयासागर प० जीववर्धन शास्त्री एव श्री बसन्त कुमार ने सभी स्थानो पर कार्यक्रम आयोजित करवाया एव अतिथि जनो का पारम्परिक स्वागत कर सभी अधिकारियो का धन्यवाद किया।

– **आचार्य दयासागर** सचालक महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला
जिला – झाबुआ (म०प्र०)

धर्म के आधार पर आरक्षण असंवैधानिक मांग

नई दिल्ली १६ दिसम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने केन्द्र सरकार के इस कदम का स्वागत किया है जिसमे अल्प सख्यक आयोग के उस सुझाव को नामजूर कर दिया है जिसमे अल्प सख्यको को केन्द्रीय तथा राज्य पुलिस बलो मे भर्ती के लिए विशेष रियायते एव सुविधाए देने का प्रस्ताव किया गया था। इस आशय की जानकारी केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री आई० डी० स्वामी ने लोक सभा को दी।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने गृह राज्य मन्त्री को लिखे एक पत्र मे केन्द्र सरकार के इस निर्णय का समर्थन करते हुए कहा है कि सरकार के अधीन सभी आयोगो को यह पहले से ही मार्गदर्शन और निर्देश दिये जाने चाहिए कि कोई भी प्रस्ताव या सुझाव सविधान तथा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समय समय पर दिए गए निर्णय इस सिद्धान्त के स्पष्ट विरोधी है। क्योकि धर्म पर आधारित कोई भी भेदभाव या विशिष्ट सुविधा सविधान की मान्यताओ के विरुद्ध है।

२३ दिसम्बर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

– कै० देवरत्न आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वराज्य, स्वदेशी वस्तुओं और स्वभाषा के प्रयोग की प्रेरणा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रंथों से दी, जिसे पढ़ कर मुंशीराम ने इसे क्रियात्मक रूप देने का निश्चय किया। वे चाहते थे कि कुछ ऐसी शिक्षण संस्थाएं खोली जाएं, जिनमें केवल शब्द और विषय ज्ञान ही नहीं, अपितु विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों का विकास भी हो तथा वहां पढने वाला विद्यार्थी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महात्मा मुंशीराम ने ४ मार्च १९०१ में गुरुकुल की स्थापना करके शिक्षा क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी अध्याय का सूत्रपात किया।

१९वीं शताब्दी में भारत में अनेक सुधारवादी आन्दोलन प्रारम्भ हुए। बगाल के अन्दर ब्रह्मसमाज ने धार्मिक अन्धविश्वास और रूढियो से सघर्ष किया, तो महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज ने सुधारवादी कार्यों का श्रीगणेश किया। पारसियों ने पारसी धर्म में विद्यमान कुरीतियों को दूर करने के लिए सन् १८५१ में 'रहनुमाए माजदायस्नान' नामक सस्था की स्थापना की। सुधारवादी कार्यक्रमो को विशाल और व्यापक रूप महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करके दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पजाब के जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में अप्रैल सन् १८५६ में हुआ। इनके पिता श्री लाला नानकचन्द जी एक पुलिस अधिकारी थे। स्वामी श्रद्धानन्द का सन्यास से पूर्व का नाम मुंशीराम था। माता के बहुत लाड प्यार और पिता की व्यस्तता तथा बुरे लोगों की सगति के कारण वे अनेक दुर्व्यसनों से ग्रस्त हो गए जिससे धार्मिक प्रवृत्ति के माता पिता सदैव मुशीराम के बारे में चिन्तित रहते थे।

महर्षि के प्रभाव में

इस बीच महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने क्रान्तिकारी सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। उन दिनो लाला नानकचन्द भी वहा थे। महर्षि दयानन्द के उपदेश के समय किसी प्रकार की शान्ति भग न हो, इसलिए सरकार ने पुलिस अधिकारी लाला नानकचन्द की सभा स्थल पर ड्यूटी लगाई। अपनी ड्यूटी पर रहते हुए उन्होंने स्वामी जी के विचार सुने, उससे प्रभावित हुए और घर आकर अपने पुत्र से कहा – 'बेटा मुंशीराम, एक संस्कृत का विद्वान् संन्यासी अपने शहर में आया है, जो बहुत तर्कसंगत व्याख्यान देता है। अनेक अंग्रेज अधिकारी भी वहां पर उनका व्याख्यान सुनने के लिए आते हैं। तुम भी चलो, तुमको अच्छा लगेगा। पिता की बात सुनकर मुंशीराम ने हंसते हुए कहा – पिताजी संस्कृत का विद्वान् तर्क और बुद्धिसंगत बात कहेगा, मुझे तो विश्वास नहीं होता, फिर भी आप कहते हैं, तो मैं कल सुनने अवश्य चलूंगा।

जब लाला मुंशीराम अपने साथियों के साथ सभा स्थल पर पहुंचे, तो वहां उन्होंने श्रोताओं में पादरी स्काट तथा तीन अन्य यूरोपियनों को देखा। ध्यानपूर्वक महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रवचन सुना। उन्होंने अपनी शंकाओं का समाधान भी किया। एक दिन शंका समाधान के क्रम में मुंशीराम ने ह्रदय की बात दयानन्द सरस्वती से कही कि आप ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर मुझे चुप तो कर देते हैं, किन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि ईश्वर है। दयानन्द सरस्वती ने बडी सरलता से उत्तर दिया – मुशीराम, तुम्हारा काम प्रश्न करने का है और मेरा काम उत्तर देना है। ईश्वर में विश्वास तो ईश्वर की कृपा से होता है। जब कभी समय आएगा, तब ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास भी हो जाएगा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस उत्तर से नवयुवक मुंशीराम बहुत प्रभावित हुए। स्वामी दयानन्द की जीवनचर्या ने उनके जीवन को बदल दिया और इसके पश्चात् नास्तिक, शराबी, मासाहारी मुशीराम आस्तिक मुशीराम ही नहीं बने, अपितु जीवन में महात्मा मुशीराम और स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में विश्व विख्यात हुए।

स्वराज्य, स्वदेशी वस्तुओं और स्वभाषा के प्रयोग की प्रेरणा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रथो से दी, जिसे पढ कर मुशीराम ने इसे क्रियात्मक रूप देने का निश्चय किया।

गुरुकुल की स्थापना

वे चाहते थे कि कुछ ऐसी शिक्षण संस्थाए खोली जाए, जिनमे केवल शब्द और विषय ज्ञान ही नहीं, अपितु विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों का विकास भी हो तथा वहा पढ़ने वाला विद्यार्थी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महात्मा मुंशीराम ने ४ मार्च १९०१ में गुरुकुल की स्थापना करके शिक्षा क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी अध्याय का सूत्रपात किया।

महात्मा मुंशीराम स्वराज्य और स्वाधीनता की प्रेरणा गुरुकुल के विद्यार्थियों को हमेशा देते रहते थे। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने एक महीने तक निरन्तर एक समय का भोजन बचा कर और दधिया बांध पर पत्थर ढोकर १५०० रुपया इकट्ठा किया और वह राशि अफ्रीका में संघर्षरत मोहनदास कर्मचन्द गांधी (महात्मा गांधी) को भेजी। तब महात्मा गाधी ने लिखा था कि "यह राशि इस तथ्य का प्रतीक है, कि आप जैसा महात्मा स्वतत्रता के लिए विद्यार्थियो मे ऐसे महान् सस्कार डाल रहा है, जो अपने देश पर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए कटिबद्ध हैं। मैं आपके दर्शन करना चाहता हू – गुरुकुल के इन विद्यार्थियों से मिलना चाहता हूं। मैं स्वदेश आकर सर्वप्रथम गुरुकुल आऊगा और आपके दर्शन करूगा।" महात्मा गाधी दक्षिण अफ्रीका से जब भारत आए, तब गुरुकुल हरिद्वार भी गए। उन्होंने महात्मा मुशीराम के चरणों में अपना सिर झुकाया। महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने उन्हें "महात्मा" कहते हुए अपने हाथो से उठा लिया, तभी से महात्मा गाधी 'महात्मा' के नाम से विश्वविख्यात हुए।

राष्ट्रभाषा के प्रबल समर्थक

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होनी चाहिए, उसके लिए इसका प्रयोग और प्रचार भी आवश्यक है। उसको व्यावहारिक रूप देने का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द ने किया। जलियावाला कांड के बाद अमृतसर में काग्रेस का अधिवेशन हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। कांग्रेस के इतिहास में यह पहली घटना थी, जब स्वागताध्यक्ष ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में पढ़ा। उससे पूर्व हिन्दी राष्ट्रभाषा हो, यह केवल प्रस्ताव तक ही सीमित था। प्रयोगात्मक रूप साहसी स्वामी श्रद्धानन्द ने देकर राष्ट्रीय नेताओं का मार्गदर्शन किया।

पंजाब प्रान्त में उर्दू का अधिक प्रचार था। हिन्दी के प्रचार को व्यापक बनाने के लिए गुरुकुल से आपने 'सद्धर्मप्रचारक' हिन्दी का मासिक पत्र निकाला। अपने सुपुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति को प्रेरणा देकर दिल्ली से 'अर्जुन' दैनिक पत्र निकलवाया। यह पहला समाचार पत्र था, जो दिल्ली से हिन्दी भाषा में निकला।

संकल्प के धनी

शिक्षा के विषय मे महात्मा मुशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार "सत्यार्थ प्रकाश" में पढे। गुरुकुल का वर्णन करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा कि "जहा राजकुमार और निर्धन का बेटा दोनो के लिए एक समान आसन, भोजन, वस्त्रादि हो तथा गुरु उनका माता पिता के समान ध्यान रखते हुए उनको शिक्षा दे, विद्या प्राप्ति का सस्थान शहरो के भीड भरे वातावरण से दूर एकान्त शान्त स्थान में होना चाहिए।

मुशीराम ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं गुरुकुल के लिए ३० हजार रुपया एकत्र नहीं कर लूगा, तब तक घर पर नहीं आऊंगा। चार मास के भीतर ही चालीस हजार रुपया एकत्र कर लिया। हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल कागडी की स्थापना की गयी।

मुंशीराम ने घोषणा की और सबसे पहले अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया तथा नेताओं को संकेत दिया कि जो काम जनता से कराना चाहते हो, वह पहले स्वयं करो बाद में जनता से कहो तभी प्रभाव होगा। यही मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने किया। इतना ही नहीं, अपितु अपनी वकालत छोड कर अहर्निश गुरुकुल के उत्थान में लग गए। गुरुकुल का इतना प्रचार हुआ कि १९२३ में निर्वाचित ब्रिटेन के भावी प्रधानमंत्री रैम्से मैकडानल्ड जब भारत आए तो गुरुकुल देखने गए। १९१४ में उन्होंने गुरुकुल और स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में लिखा कि "वर्तमान काल में अगर किसी कलाकार को प्रभु यीशु की मूर्ति बनानी हो तो मै जीवित माडल स्वामी श्रद्धानन्द का नाम लूगा। मध्य युग के किसी चित्रकार को अगर सेट पीटर का चित्र बनाना हो, तो मैं उसे स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य मूर्ति देखने को कहूगा।"

अग्रेज सरकार से बिना सहायता लिए गुरुकुल चलाना, सब विषयो का ज्ञान स्वदेशी भाषा मे देना, छात्रो को सरकारी डिग्रिया देना, राष्ट्रीय नेताओ का गुरुकुल मे आना, यह सब अग्रेज अधिकारियो के लिए आश्चर्यजनक था। वे गुरुकुल के विषय मे विविध कल्पनाए किया करते थे। एक बार एक अधिकारी गुरुकुल मे आया और उसने स्वामी श्रद्धानन्द से कहा कि आप यहां बम बनाते हैं। स्वामी जी ने उत्तर देते हुए कहा "हा, मैं बम बनाता हू, और ये बम आपके सामने हैं", कहते हुए उन्होने गुरुकुल के छात्र दिखाए और कहा कि यहा का पढने वाला हर एक विद्यार्थी विदेशी सरकार को जड से उखाडने के लिए एक बम का कार्य करेगा। स्वामी श्रद्धानन्द के निर्भीक शब्दो को सुनकर अग्रेज अधिकारी निरुत्तर हो गया।

आदर्श व्यक्तित्व

सारी मनष्य जाति एक है। जन्म से कोई छोटा बडा या ऊचा नहीं है। जन्मगत जात पात, हिन्दू मुस्लिम, सिख ईसाई, ये सब मनुष्यों के बनाए हुए विभाग हैं, ईश्वरीय व्यवस्था में सब एक हैं, इस मान्यता को स्वामी श्रद्धानन्द ने हमेशा ही ध्यान में रखा। अपने सभी पुत्र पुत्रियो के अन्तर्जातीय विवाह कराए। एक ओर जहा हिन्दू मन्दिरो में उपदेश दिया व आर्यसमाज का प्रचार किया, वहीं दूसरी ओर दिल्ली की जामा मस्जिद के इतिहास मे यह पहली घटना थी कि सन् १९१६ मे उन्होंने मुसलमानों को वहा से उपदेश दिया।

गुरुकुल में रहते हुए उन्होंने सभी का उदारता से स्वागत किया। स्वामी शकराचार्य (भारतीय कृष्णतीर्थ) गुरुकुल में अपनी पूजा करते रहे, मुसलमान भाइयों ने पांच वक्त अपनी नमाज अदा की। ईसाई पादरियों ने अपने धर्म के अनुसार उपासना की। सिखो के गुरुद्वारों को महतों के हाथो से मुक्त कराने पर स्वामी श्रद्धानन्द ने भी उनके साथ सत्याग्रह किया और उन्हें धार्मिक स्वतत्रता दिलवाई। गुरु का बाग के नाम से वह सत्याग्रह सिख समुदाय मे आज भी प्रसिद्ध है।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

स्वामी श्रद्धानन्द के पहलवान शिष्य जगन्नाथ पहलवान

गताक से आगे

स्वामी प्रणवानन्द, ब्रह्मचारी

हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि ईश्वर की व्यवस्था अनुसार इस लेख के लेखक को मनुष्य योनि मे आने का सौभाग्य मिला तो भौतिक रूप मे उन महान् एव पवित्र वीर्य के धारक श्री जगन्नाथ पहलवान को इन्होने पिता के रूप मे पाया। आज लेखक 61वे वर्ष में चल रहे है। वैसे यह सत्य है कि 'माता निर्माता भवति' परन्तु लेखक ने अपने पिता द्वारा दी गई ब्रह्मचर्य रूपी विरासत को आजीवन ब्रह्मचारी रहकर पूर्ण सरक्षण प्रदान किया है, जिसने पिता द्वारा भी सस्कार प्रदान किए जाने वाले सिद्धान्त को मान्यता दी है।

विद्वान् लेखक का पूर्व नाम ब्रह्मचारी डॉ0 नरेश कुमार था। वर्ष 2000 मे लेखक ने सेवा निवृति के बाद सन्यास ग्रहण किया और शरीर चिकित्सा के परामर्श का दान देकर ऋषि ऋण से उऋण होने मे प्रयासरत है। स्वामी प्रणवानन्द ब्रह्मचारी के नाम से प्रसिद्ध लेखक अपने सरकारी सेवा काल मे भी योग शिक्षा से ही जुडे रहे।

विमल वधावन, वरिष्ठ उप प्रधान

धर्मनिष्ठ शाकाहारी मल्ल विद्याचार्य
लोकप्रिय आर्यवीर केसरी
श्री जगन्नाथ पहलवान
शाहपुरजट (दिल्ली)

स्वामी जी का उपदेश

अपने सम्बोधन मे सिह के समान कडकडाते स्वर मे स्वामी जी ने कहा – हिन्दू जाति मे जातीय भेदभाव कोढ की तरह लगा हुआ है जो इसे निरन्तर बिखराव निर्बलता और समाप्ति की तरफ ले जा रहा है। हे सवर्ण हिन्दुओ ! आप कब जगोगे। आज ससार मे ईसाई मुसलमान आदि सभी जातिया निरन्तर बढ रही है किन्तु हिन्दू प्रजाति जो सबसे वरिष्ठ है लगातार घट रही है। क्या यह सच नहीं है कि हमारे पिछडे भाई जब तक हमारे तीज त्यौहारो को मनाते हैं हमारे वेद शास्त्रादि धर्म ग्रन्थो को मानते है हमारे मन्दिरो और तीर्थों मे श्रद्धा रखते है तथा हमारे राम कृष्णादि महापुरुषो को पूज्य मानते है तब तक हम उन्हे हीनभाव से देखते है और जब वे मुसलमान या ईसाई बनकर हमारे पूजा स्थानो तीज त्यौहारो वेदशास्त्रो और महापुरुषो मे श्रद्धा रखना बन्द कर देते है तब हम उन्हे बराबरी की निगाह से देखते है। तो क्या हम अपने इस आचरण से अपने धर्म ग्रन्थो के अपने पूजा स्थानो के होली दीवाली आदि अपने त्योहारो के तथा रामकृष्णादि अपने महापुरुषो के विरोधी नहीं बन गए हैं। हजारो वर्षों से चल रहा यह आत्मघाती खेल कब बन्द होगा। ससार के सभी धर्मों के लोग मेहनत और खर्चा करके अपने समर्थको की सख्या बढा रहे हैं किन्तु हम अपने भाइयो का अपमान और तिरस्कार करके उन्हे अपने घर मे ही पराया बना रहे है तथा हिन्दू धर्म को छोडकर दूसरे धर्मों को अपनाने के लिए बाध्य कर रहे है। उठो ! जागो !! इस अज्ञान की नींद को त्यागो !!! तथा अब तक जिनका अपमान किया अपने उन भाइयो को छाती से लगाना सीखो। अपने अस्तित्व को स्वय मत मिटाओ। क्या किसी कुए का जल इसीलिए अपवित्र है कि वह कुआ हमारे उन बाल्मीकि भाइयो के मुहल्ले मे है जो हजारो वर्षो से हमारी सेवा करते आ रहे हैं तथा जिनका अहसान मानने की बजाय हम उन पर जुल्म करते रहे हैं। हिन्दू समाज की इन पापमयी कुरीतियो के जजाल से बाहर निकलने के लिए मैं आप सबका आवाहन करता हू। जातीयता के झूठे अहकार को छोडकर अपने बाल्मीकि भाइयो के कुए पर स्नान कर इस भेदभाव की दीवार को तोडो।

उपदेश का जादुई असर

स्वामी जी के उस निर्भीक तथा ओजस्वी उद्‌बोधन का जादू जैसा प्रभाव पडा। फलत जिस कुए पर स्नान करने के दण्ड स्वरूप श्री जगन्नाथ पहलवान को गाव बिरादरी से निकाल दिया गया था उस पर तीर्थ स्थान की भाति स्नान करने वालो की भीड टूट पडी। स्नान करने वालो की सख्या बेकाबू हो जाने पर गाव पचायत ने अपना निष्कासन आदेश रद्द किया।

अन्तर्जातीय भण्डारा

स्वामी जी की सवर्ण तथा पिछडी जातियों मे भेदभाव मिटाने की प्रबल इच्छा थी। अत उनकी प्रेरणा से जगन्नाथ पहलवान ने शाहपुरा जट गाव मे एक बडे भण्डारे का आयोजन किया। यद्यपि भोजन का आमन्त्रण गाव के सभी जाति वर्गो के लोगो को दिया गया किन्तु भण्डारा बनाने और परोसने का कार्य बाल्मीकि भाइयो को ही सौंपा गया। पहले पहल ता सवर्ण जातियो मे स कुछ स्वाभिमानी पडित, चौधरी तथा सेठ लोग भण्डारे मे नहीं आए किन्तु जब भण्डारे के शुद्ध घी से बने हलवे तथा व्यजनो की सुगन्धि वायुमडल मे फैली तो इनमे से अधिकाश लोग भण्डारे मे पहुच गए। स्वामी जी की प्रेरणा से जगन्नाथ पहलवान इस प्रकार के भण्डारे जब तव करते रहते थे जिनमे लगभग सभी लोग धीरे धीरे पहुचने लगे थे और इस प्रकार गाव के भाईचारे मे काफी बढोतरी हुई थी।

– जे० ४/७६ खिडकी एक्स्टेंशन
निकट मालवीय नगर
नई दिल्ली-१७

पृष्ठ ३ का शेष

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

अपने व्यक्तिगत जीवन मे वे हमेशा तप और त्याग के मार्ग पर चलते रहे। चारो आश्रमो को वैदिक व्यवस्थानुसार उन्होने अपनाया। सन १६१७ मे गुरुकुल मे कागडी के वार्षिकोत्सव पर सन्यास की दीक्षा ली। सन्यास लेने के पश्चात आप सार्वजनिक सेवा मे जीवन लगाने हेतु गुरुकुल छोड कर दिल्ली आ गए।

वीर योद्धा

स्वाधीनता आन्दोलन में काग्रेस का ४३वा राष्ट्रीय अधिवेशन जो अमृतसर मे हुआ विशेष महत्व रखता है। जनरल डायर ने जलियावाला बाग मे वैशाखी के पुण्य अवसर पर हजारो निर्दोष भारतीयो को बिना चेतावनी के गोलियो से भून दिया था जिससे भारतीय स्वाधीनता प्रेमी घबराए हुए थे। उनके मानस को बल देने और विदेशी शासन को उखाड फेकने के लिए यह अधिवेशन बुलाया गया था। उसकी सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व स्वामी श्रद्धानन्द को सौंपा गया और उन्हे स्वागत समिति का अध्यक्ष बनाया गया। अधिवेशन की पूरी तैयारिया हो गई थीं कि तभी मूसलाधार वर्षा ने सारे तम्बू उखाड दिए। शहर की गलियो मे घुटनो तक पानी भरा था और दूसरे दिन अधिवेशन के लिए १२ विशेष ट्रेने प्रतिनिधियो की आनी थीं। स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसरवासियो को प्रेरणा दी और सारे प्रतिनिधि अमृतसर नगरवासियो के घरो के अतिथि बने। काग्रेस का महान अधिवेशन प्राकृतिक विपदा के बावजूद सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द ने काग्रेस के इतिहास मे सर्वप्रथम स्वागत भाषण हिन्दी मे दिया। सम्मेलन मे अछूतोद्धार का प्रस्ताव रखा गया। रोलेट ऐक्ट के विरोध मे गाधी जी ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया हडताल हुई जुलूस निकाले गए।

दिल्ली मे चादनी चौक मे जुलूस आगे बढ रहा था जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द कर रहे थे। अग्रेज सैनिको ने बन्दूके तान दीं तब स्वामी श्रद्धानन्द आगे आए और अग्रेज सैनिक के सामने खडे होकर छाती खोलकर उन्हे ललकारते हुए कहा "साहस है तो पहले गोली मुझ पर चलाओ।" स्थिति बडी भयानक हो गई। एक वीर योद्धा हजारो योद्धाओ के साथ विदेशी आक्रान्ताओ से मुकाबला कर रहा था। सरकार घबराई और सैनिको को पीछे हटने का आदेश दिया। इस प्रकार इस वीर योद्धा ने देश को नया साहस एव नेतृत्व दिया।

शुद्धि आन्दोलन

देश के स्वाधीनता के आन्दोलन मे सकीर्ण मस्तिष्को ने साम्प्रदायिक वातावरण बना कर बाधा उपस्थित की। हिन्दू मुस्लिम दगे होने लगे। बलात व प्रलोभन से हिन्दुओ को मुसलमान व ईसाई बनाया जाने लगा। इस कार्य को रोकने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने निर्भीक कदम उठाया। हिन्दुओ से मुसलमान ईसाई बने लोगो को शुद्धि आन्दोलन द्वारा पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया।

इसी क्रम मे कराची की असगरी बेगम एक मुस्लिम महिला अपने बच्चो के साथ दिल्ली आई और उसने हिन्दू धर्म स्वीकार किया और उसका नाम शान्ति देवी रखा गया। उसके पिता और पति ने शान्ति देवी और स्वामी श्रद्धानन्द पर मुकदमा चलाया। ४ दिसम्बर १६२६ को मुकदमे का फैसला सुनाया गया जिसमे शान्ति देवी की जीत हुई। इससे कुछ साम्प्रदायिक लोग स्वामी श्रद्धानन्द से चिढ गए और उनको जान से मारने की धमकिया देने लगे। जो वीर योद्धा अग्रेजों की सगीनों से नहीं डरा वह इन धमकियों से क्या डरता ? स्वामी श्रद्धानन्द ने इन धमकियो की ओर ध्यान नहीं दिया और वे अपने कार्य मे लगे रहे।

२३ दिसम्बर १६२६ को अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति उनसे मिलने आया। वे बीमार थे फिर भी उसको मिलने का समय दिया और उस आततायी ने उन पर गोलिया चलाईं और वीर योद्धा स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। उस समय गोहाटी में काग्रेस का अधिवेशन चल रहा था। अधिवेशन की कार्यवाही रोक दी गई और शोक प्रस्ताव पारित किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए गाधी जी ने 'यग इडिया' मे लिखा था कि 'वे एक वीर योद्धा थे वीर की तरह जीवित रहे। वीर कभी चारपाई पर नहीं मरता वह तो युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है। उनकी मृत्यु भी वीर की भाति धर्मयुद्ध के मैदान मे हुई। उन्होने वीरगति प्राप्त की उनकी वीरता से मुझे ईर्ष्या होती है।

शहीदी दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
एक झलक

— डॉ० अशोक आर्य

महान पुरुष अपने समय का कालचक्र कहे जा सकते हैं। अपने देश प्रेम समाज सेवा व सर्वहितकारी कार्यों के द्वारा वह समय धूलि पर अपने जो पद चिन्ह छोड जाते हैं उन्हें शताब्दियों पर्यन्त लोग देखकर उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं। फाल्गुन बदी १५ सम्वत १६१३ विक्रमी सन १८५६ ई० मे पजाब के तलवन जिला जालन्धर के लाला नानक चन्द के यहा बालक बृहस्पति जिसे मुन्शी राम और सन्यास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाना जाने लगा भी ऐसे ही महापुरुषो की श्रेणी मे आते हैं।

कुशाग्रबुद्धि बालक मुन्शी राम के पिता सरकारी कर्मचारी होने के कारण समय समय पर विभिन्न स्थानो पर बदलते रहे। इस कारण इनकी शिक्षा ठीक से न चल सकी किन्तु जो अध्यापक उनके भाईयो को पढाता था उसी की पढाई सम्बन्धी चर्चा को सुनते सुनते पारगत हो गए। ऐसे कुशाग्र बुद्धि मुन्शीराम ने वकालत पास कर अनेक अविस्मरणीय केसो मे विजय प्राप्त की।

मुन्शी राम आरम्भ से ही धर्मप्रेमी थे किन्तु कुछ ढोगो व गन्दे आचरणो को देखकर धर्म से तब तक विमुख रहे जब तक अनोखा जादूगर कहे जाने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान नही सुने। स्वामी दयानन्द के लिए तो वह पूरी तरह समर्पित हो गए तथा उनकी पूर्ण दिनचर्या मे उनका साथ देने लगे। महर्षि दयानन्द से इतने सम्बन्धो को देख अग्रेज हाकिम तिल मिलाए किन्तु मुन्शीराम ने चिन्ता नहीं की। बरेली मे जो महर्षि दयानन्द के व्याख्यान मे ओ३म् चर्चा सुनी इससे इनके विचारो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। धीरे धीरे यह ब्रह्मसमाज सर्वहितकारिणी सभा इत्यादि के भी सम्पर्क मे आए किन्तु जो शान्ति इन्हे मा आर्यसमाज की शरण मे मिली वह अन्यत्र कहीं भी न मिल सकी।

अब इन्होने सत्यार्थ प्रकाश सहित ऋषि कृत ग्रन्थो का अध्ययन कर दृढ सिद्धान्तो को अपनाकर अपने आपको आर्यसमाज के कठोर साचे मे ढाल लिया। स्वय आर्य समाज के सदस्य बने तथा हृदय मे धैर्य को स्थापित किया।

आर्य सिद्धान्तो पर अटल

मुशी राम जी वैदिक सिद्धान्तो पर इतने पक्के हो गए कि पिता जी के विशेष आग्रह पर भी निर्जला एकादशी का व्रत नहीं रखा किन्तु पिता जी की सेवा व आर्थिक सहायता में सदैव तत्पर रहे। बाद मे पिता जी भी वैदिक सिद्धान्तो को समझने लगे। उनकी मृत्यु पर उनका दाह सस्कार भी वैदिक रीति से किया। मुन्शी राम जी की बढती लोकप्रियता से पौराणिक पण्डितो मे खलबली सी मच गई। उन्होने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा गुण्डा गर्दी का प्रयास किया किन्तु नित्य कठोर व्यायाम प्राणायाम करने वाले मुन्शी राम के सामने आने की उनको कभी हिम्मत न हुई। जाति बहिष्कार का भय भी दिखाया किन्तु सत्य प्रकट होने पर कोई सामने न आया। लाला देवराज जी का उन्हे सदैव सहयोग मिला। उनका कथन था कि कोई भी ढोगी व्यक्ति कभी भी सुधारोन्मुख व्यक्ति का बाल भी बाका नहीं कर सकता। इन के प्रभाव से ईसाईयो का प्रभाव भी फीका पडने लगा।

आटा रद्दी फण्ड

सर्वहितकारी कार्यो मे आर्थिक कठिनाई आने लगी तो इन्होने एक आटा रद्दी फण्ड स्थापित किया। इसके अन्तर्गत लोगो से अपील की गई कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर एक घडे मे एक मुटठी आटा प्रतिदिन डाले तथा रद्दी अखबार एकत्र करे। बाद मे वह इसे दान करे। इससे उन्हे भारी सहयोग मिल। इस सहयोग से उ हो ने अछूतोद्धार व अन्य जन हितकारी कार्य किये। अब अपना पूरा समय आर्यसमाज की सेवा मे लगाने लगे।

काग्रेस मे

आप पायनियर व ट्रिब्यून के नियमित पाठक थे। इस कारण आप मे राष्ट्रीय भावनाओ को भी बल मिला। अत आप भी काग्रेस मार्ग पर चले। आपने प्रत्येक जिले मे काग्रेस कमेटी स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। जालन्धर व होश्यारपुर से आपको भारी सहयोग मिला। इस अवसर पर सर सैयद अहमद खा का विरोध भी आपके कदम रोक न सका।

गृह सुधार तथा स्त्री शिक्षा

समाज सुधार हेतु आपने सर्वप्रथम अपना घर सुधारना आवश्यक समझा। अत आपने सर्वप्रथम अपनी पत्नि को शिक्षित किया। उसका घूघट हटवाया सैर करते समय उसे साथ ले जाने लगे। इस प्रकार स्त्री को समान अधिकार दिये। अपनी बेटियो को स्कूल भेजा। एक दिन ईसाई स्कूल से लौटी बैटी गा रही थी —

एक बार ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल

ईसा मेरा राम रमैया ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।

यह सुनकर मुन्शी राम जी के हृदय मे चोट लगी तथा तत्काल लाला देवराज जी के सहयोग से एक अपील की जिससे प्राप्त धन से विक्रमी १६४७ को जालन्धर मे कन्या विद्यालय की स्थापना की। यही कन्या महाविद्यालय आज स्त्री शिक्षा की अग्रणी सस्था है। इसी से आपका जन्म नाम बृहस्पति (गुरु) भी साथक हुआ।

सद्धर्म प्रचारक पत्र

अब आपने एक समाचार पत्र की आवश्यकता अनुभव की। अत साथियो के सहयोग से सद्धर्म प्रचारक पत्र आरम्भ किया। उर्दू मे प्रकाशित इस पत्र की भाषा हिन्दी सरीखी बना दी। आरम्भ मे मुसलमानो ने इस भाषा का विरोध किया किन्तु धीरे धीरे अन्यो ने भी इसी भाषा का अनुसरण किया। इसमे सस्कृत के शब्द अधिक होते थे। इसे आर्यसमाजी उर्दू कहा जाने लगा। बाद मे यह पत्रिका हिन्दी मे प्रकाशित होने लगी। इससे आर्यसमाज के प्रचार को भारी गति मिली। इसी से ही राहू केतु का खण्डन करने वाले पहलवान चिरजी लाल सरीखे सहयोगी मिले।

आचार विचार के दृढ

मुन्शी राम जी मन्दिरो के अनुचित प्रयोग के सदा विरोधी रहे। उन्होने कभी सर्वप्रियता नाम व पद की इच्छा नही की। सभी ऐष्णाओ से सदैव दूर रहे। यदि कार्य क्षेत्र मे कभी सस्था के पदाधिकारी आए तो उनकी भी परवाह नही की। इसी कारण उनकी धर्मवीर प० लेखराम तथा प० गुरुदत्त विद्यार्थी से अत्यधिक घनिष्ठता थी। स्वाध्याय व धर्म प्रचार के मानो आप स्त्रोत थे। इसी कारण आप आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने तो पूरे पजाब मे शास्त्रार्थो की खूब धूम रही। आप नवयुवको के लिए उत्साह व साहस का स्त्रोत थे। जब आपकी पत्नि का देहान्त हुआ तो आपने चारो बच्चो की देख रेख का जिम्मा अपने भाई के कन्धो पर डाल आप स्वय वेद प्रचार व अन्य सार्वजनिक कार्यो मे पूरा समय देने लगे।

वैदिक सभ्यता से विशेष अनुराग

मुन्शी राम जी ने मास भक्षण का खूब विरोध किया सत्य सिद्धान्तो पर चलते समय कभी कष्टो की या विरोध की चिन्ता नही की। डी०ए०वी० आन्दालन मे कमिया को देख विशेष रूप से सस्कत शिक्षण की कमी के कारण प० लेखराम स्वामी पूर्णानन्द आदि के सहयोग से वैदिक शिक्षणालय खोलने का निर्णय लिया जिस हेतु चार वर्ष तक निरन्तर कार्य किया। आप इसमे आश्रम पद्धति गुरु शिष्य पारिवारिक सयमी जीवन चाहते थे। अथक मेहनत से गुरुकुल हेतु ३० सहस्र का स्थापना कोश स्थापित किया तथा नगर से काफी दूर जगली क्षेत्र मे हरिद्वार के पास कागडी स्थान पर गुरुकुल की स्थापना की जो आज विश्वविद्यालय बन गया है। इस निमित्त सरकार से कोई सहायता न ली।

कठिन परीक्षाए

गुरुकुल मे ब्रह्मचारियो को घुडसवारी व धनुर्विद्या की शिक्षा देने के प्रावधान से सरकार की क्रूर दृष्टि व सन्देह बढ गया। लाला लाजपत राय के निर्वासन पर तथा सरकारी नौकरी के समय भी निर्भीक व्यवहार के कारण आप पर सरकारी सन्देह बढता ही गया तो भी आप ने कभी चिन्ता नहीं की।

पटियाला मे आर्यो पर विद्रोह के आरोप मे सभी आर्य समाजियो को गिरफ्तार किया जाने लगा। आपने आगे आकर उनक लिए मुकदमा लडा तथा उन्हे सम्मान पूर्वक बरी करवाया।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष पर्यन्त निरन्तर समाज सेवा के पश्चात आपने सन्यास दीक्षा ली। अब आपको स्वामी श्रद्धानन्द नाम से जाना जाने लगा। आपने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान की तथा घर छोड देहली को केन्द्र बनाया। जो देहली देश की राजधानी होते हुए भी पिछडी हुई थी उसे समय की धारा के साथ जोड दिया।

काग्रेस मे सक्रिय सेवा

आपने गाधी जी के अफ्रीका सत्याग्रह के अवसर पर वहा आर्थिक सहयोग हेतु धन भेजा। पजाब मे मार्शल ला लगा चाहे रोलेट एक्ट विरोधी आन्दोलन या दिल्ली मे कोई काग्रेस का आन्दोलन हुआ सर्वत्र आप नेता स्वरूप सबसे आगे रहे। देहली मे जब अग्रेजी सेना ने निहत्थे लोगो पर गोली चलाने की तैयारी की तो आपने सगीनो के आगे अपना सीना तानकर कहा कि निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती मे सगीन घोप दो।

हिन्दु मुस्लिम एकता

आपने जामा मस्जिद के पवित्र मच से वेद मन्त्रो द्वारा एकता का सन्देश दिया। मुसलमान आपके दीवाने व रक्षक बन गए। असहयाग आन्दोलन मे खूब कार्य किया। जलियावाला काण्ड के बाद जब ४०००० लोग जलो मे थे मार्शल ला लगा हुआ था जब काग्रेस का महाधिवेशन अमृतसर म करने का निर्णय हुआ ऐसे भयान्क अवसर पर आपने पजाब मे आकर लोगो का साहस बढाया। स्वय स्वागत समिति के प्रधान बने। यह पहला अवसर था जब किसी सन्यासी ने यह पद सम्भाला।

अछूतोद्धार

अछूतोद्धार के आप मानो मसीहा थे। काग्रेस के नागपुर अधिवेशन मे एतदर्थ एक प्रस्ताव भी पेश किया। यह कार्य छोडने हेतु ईसाईयो द्वारा दिया प्रलोभन भी आडे न आया।

शुद्धि हिन्दू सगठन

आगरा क्षेत्रिय ५ लाख मलकाना राजपूत मुसलमान बने। यह आगरा भरतपुर मथुरा क्षेत्र के थे। आर्यसमाज ने इन्हे शुद्ध करन का निर्णय लिया। शुद्धि के सभी अधिकार स्वामी जी को दिए गए। आपके प्रयास से हिन्दु पण्डितो म भी सहानुभूति की भावना पदा हुइ अन्त मे सब पर गगाजल छिडककर उन्हे शुद्ध किया गया। आपने भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा की स्थापना की। मालाबार मे हिन्दुओ पर हो रहे अत्याचारो के विरुद्ध भी आप भिड गये। मोपला विद्रोह मे भी आपने महत्वपूर्ण कार्य किया।

आपने हिन्दू सगठन का नाद बजाया हिन्दू रक्षार्थ महाबीर दलो के आन्दोलन व अनेक सभाओ की स्थापना की। इन सभी कारणो से मुसलमान आपकी जान के प्यासे ही बन गये। आप सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। पद्रह वर्ष तक गुरुकुल कागडी के अधिष्ठाता रहे। मथुरा मे महर्षि स्वामी दयानन्द शताब्दी हिन्दु शुद्धिसभा तथा दलितोद्धार सभा के आप कार्यशील प्रधान रहे

अत्यधिक परिश्रम के परिणाम स्वरूप जीवन के अन्तिम सात वर्ष अस्वस्थ रहते हुए भी लम्बी लम्बी प्रचार यात्राए करने स पुराने रोग भी पुन जाग उठे। ऐसी ही अवस्था मे जब आप (श्रद्धानन्द बाजार देहली मे) रोग शैय्या पर थे ता २३ दिसम्बर १६२६ पोष सवत १६८३ विक्रमी को एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोली मार आपको शहीद कर दिया।

इस प्रकार आजीवन आर्यसमाज के लिए तन मन धन बलिदान करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना बलिदान देकर आर्यो मे एक नया साहस व प्रेरणा दी वेद प्रचार का मार्ग प्रशस्त किया।

आर्य कुटीर मित्र विहार
मण्डी डबवाली (हरि०)

एक लघु ग्रन्थ सांध्य-योग-प्रकाश

12

संध्या और योग

(एक समन्वयात्मक अध्ययन)

– भगवन्त सिह कपूर

प्राणायाम की द्वितीय श्रृखला की विधि

अब अगले सात प्राणायाम प्राणायाम प्रकरण मे वर्णित प्रणायाम के प्रकार का चौथा बाह्यभ्यन्तर प्राणायाम करने है। अथात – रेचक – श्वास बाहर फककर बाह्य कुम्भक श्वास रोककर करना धीरे धीरे पूरक श्वास अन्दर भरकर आभ्यातर–कुम्भक करना और धीरे धीर बाहर निकालना।

यह एक प्राणायाम हुआ। ऐसे प्राणायाम को पूण प्राणायाम कहा गया है। इनका क्रम पहली श्रृखला के सात प्राणायामो के समान ही है। शिर से मेरूदण्ड के चक्रो पर रूकते रूकते एक एक प्राणायाम करते क्रमश ब्रह्मरध्र से मूलाधार तक जाना।

भावना द्वितीय श्रृखला

पूरक के समय तो श्वास के साथ उस चक्र की मन्त्र म कही प्रभु शक्ति ही खीचना है। जब अभ्यातर कुम्भक हो अर्थात श्वास अन्दर रोका हुआ है तब ध्यान व भावना यह करनी है कि अब ये अग प्रत्यग एव कक्ष निर्मल हो चुके है प्रभु सर्वत्र व्यापत होने से इनमे प्रभु की गति है उस चक्र मे मन्त्र मे कहे प्रभुगुणो की शक्ति है। बस उस शक्ति व गति की ज्ञान प्रकाश पाने के लिए मै साधक मुमुक्ष ज्योति प्रदीप्त हू। इस भावना के साथ कुम्भक म ही शेष समय मे ओम का या इसी प्राणायाम मन्त्र का जप करना है। जब न रूक सके ता भी एक या दो ओम या एक आधा यही मन्त्र का जाप और बढाना। वापिस रेचक मे धीरे–धीरे जाप करते प्रश्वास करना है।

पहली श्रृखला के सात प्राणायामो स इस दूसरी श्रृखला के सात प्राणायामो मे कुछ अधिक समय लगेगा। इसके सातवे प्राणायाम के बाद ध्यान सहस्त्रार – शिर – मे न ल जाकर मूलाधार पर रखना है। ताकि तीसरी श्रृखला के प्राणायाम मूलाधार से आरम्भ कर सहस्त्रार की ओर कर सके।

प्राणायाम के तृतीय श्रृखला की विधि

दूसरी श्रृखला के समान ये सात प्राणायाम भी बाह्ययाभ्यन्तर ही करेगे। ये प्राणायाम मूलाधार से ऊपर वापिसी ब्रह्मरध्र पर पहुचने के है। अर्थात दूसरी श्रृखला के अन्त म जब अधिक से अधिक दीर्घ प्राणायाम लकर मूलाधार पर ज्योति प्राप्तकर ज्ञान–मुमुक्षु बन ओम–सत्यम कहकर बठ थे वही से इसका पहला प्राणायाम आरम्भ कर क्रमश ऊपर बढना है।

भावना इन तीसरी श्रृखला के सात प्राणायामो मे स पहल का यथाशक्ति दीघ पूर्ण श्वास भरकर एव ओम सत्यम ही मन मे बोलकर करना है। भावना से श्वास भरन समय प्रभु की सत्यम शक्ति अन्दर खीच रह ह। हिम्मते मदा मदद खुदा कहावत के अनुसार जब हमने दूसरी श्रृखला म मुमुक्षु बनकर अपनी भूख बताई ज्ञान पिपासा की ज्योति जलाई तो अन्दर ही विदयमान प्रभु ने अपने ज्ञान–प्रकाश स उस कक्ष मे बैठे मुमुक्षु की टिमटिमाती ज्योति का कई गुण प्रज्ज्वलित कर दिया। इतना ही नही उस ज्योति का मन्त्र मे कही उस चक्र शक्ति के अनुरूप रग देकर आभावान भी बना दिया। अर्थात जब हम ज्ञान मुमुक्षु बने – बढे तो प्रभु कृपा स उसम विज्ञान मिल गया। यह पहला प्राणायाम ओम सत्यम का मूलाधार चक्र का है। यहीं

मेरूदण्ड के अत की पुन्छ मे प्राप्त ज्योति को ही सम्भावित कुण्डलिनी जागरण भी कहा गया है। डक समान अनुभूति सीधी ब्रह्मरध्र से सम्बन्ध स्थापित करती है। तो यहा की आभा शुभ्र स्फटिक समान सफेद एव पवित्र है।

इस प्रकार की भावना से हम वही विधि एक एक चक्र पर एक एक प्राणायाम करते क्रमश ऊपर के चक्रो की ओर उठते जाएगे। श्वासप्रश्वास व कुम्भक का समय कम करते जाएगे। भावना उपरोक्त ही होगी परन्तु प्रभु प्रज्ज्वलित आभा भिन्न–भिन्न। मन्त्र मे कहे प्रभु–शक्ति स सम्बोधित चक्रो के नाम भी पहले की दोनो श्रृखलाओ से विपरीत नीच से ऊपर की ओर चढने के लिए होग। ये दोनो बाते आगे दी तालिका मे स्पष्ट वर्णित है। इस श्रृखला का सातवा प्राणायाम अल्प अवधि का होगा।

इस प्रकार ध्यान धारा–प्रवाह अटूट रख जब हम श्रृखला का सातवा या प्राणायाम विधि का २१ वा अन्तिम प्राणायाम समाप्त कर सहस्त्रार मे पहुचेगे तो श्वास स्वाभाविक होगा एव ध्यान ब्रह्मरन्ध्र मे रहेगा।

प्राणायाम का महत्त्व एव लाभ

सोने पर सुहागा के अनुसार साध्योग स्वर्ण तो है ही प्राणायाम इस पर सुहागे का काम करता है। जिस प्रकार सुहागे मे तपाकर स्वर्ण खरा व आभायुक्त बनाया जाता है। उसी प्रकार उपासक प्राणायाम से हृष्टपुष्ट नीरोग शरीर एव स्थिर पवित्र मन बुद्धि वाला आभामय हो जाता है। वह ब्रह्मरघ्र मे ध्यानस्थ हो चाद तारो सूर्य व अनेक सौर मण्डलो की अनन्त अनादि सुसचालित आश्चर्य जनक रचना का अवलोकन कर पाता है। तभी उसके रचयिता की विराटता के साथ अति सूक्ष्मता को समझ सकता है। आत्म परमात्मा के ज्ञान को ढकने वाला अविद्या रूपी आवरण तो हटता ही है। नित्य प्रति अभ्यास से ज्ञान का प्रकाश भी बढता जाता है। तत क्षीयते प्रकाशावरणम – यो० २–५२ इतना ही नहीं धारणासु व योग्यता मनस यो० २–५३ मन के स्थिर रहने की क्षमता मे और बुद्धि स्मृति एकाग्रता मे आश्चर्यजनक वृद्धि होती है।

शारीरिक स्वास्थ्य लाभार्थ एव रोग निवारणार्थ प्राणायाम के भाग उपभाग एव कुछ परिवर्तन के साथ कई प्रकार के प्राणायामो का विधान बना लिया गया है। प्राणायामो मे हर प्रकार के रोगो का निदान भी सम्भव है। कुछ विशेष आसनो के साथ विशेष स्थान पर ध्यान केन्द्रित कर विशेष प्रकार के प्राणायाम से स्वामी ओमानन्द जी ने हर प्रकार के रोगो का स्थाई निवारण कर दिखाया है।

– क्रमश

तीसरी श्रृखला के सात प्राणायाम का क्रम, प्रभुगुण, स्थान एव चक्रों पर प्रज्ज्वलित आभा का रग

क्र०	मत्र	प्रभू गुण	चक्र	स्थान	रग
१	ओ सत्यम	सर्वज्ञ अमर परमात्मा अविनाशी	मूलाधार	गुदा सकुचित	शुभ्र स्वच्छ पवित्र सफेद
२	ओ तप	कष्टहारी दुष्टो का विनाशक	स्वाधि ष्ठान	लिग के पीछे सकुचित	पीला
३	ओ जन	उत्पादक जन्मदाता वर्धन	मणिपुर	नाभि पेट• अन्दर खीचना	गेरुआ पीला+लाल
४	ओ मह	महान तेजधारी सचालक	अनाहत	हृदय जीवन आधार	गाढा लाल रक्तिम
५	ओ स्व	मृत्यु जन्म मरण सर्वाधार	विशुद्ध	कण्ठ वयान	गाढा बैगनी लाल+नीला
६	ओ भुव	रक्षक दुख हर्ता	आज्ञा	त्रिकुटि अपान	नीला
७	ओ भू	रचयिता सर्वाधिकार सचालक	सहस्त्रार	ब्रह्मरघ्र शिर प्राण	हल्का नीला आसमानी नीला+सफेद

आर्यसमाज का द्वितीय नियम

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार......

– विजय बिहारी लाल माथुर

द्वितीय नियम

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

गतांक से आगे

निराकार

ईश्वर का द्वितीय गुणवाचक विशेषण 'निराकार' है। 'निर् और आङ् पूर्वक' **'डुकृञ करणे'** धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है। 'नास्ति आकार यस्य स निराकार' जिसका आकार कोई भी नहीं और जो कभी शरीर धारण नहीं करता है वही सत्ता निराकार है। वह अवयवहीन देहादि विकार वर्जित ब्रह्म है।

ब्रह्म के निराकार होने के पक्ष मे अपौरुषेय स्वत प्रमाण वेद मे विपुल सख्या मे मन्त्र है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित मन्त्र या मन्त्रभाग स्पष्टरूप से ईश्वर के निराकारस्वरूप का समर्थन करते है।

१. न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः यजुर्वेद ३२/३

(यस्य) जिसका (महत्) महान् (नाम) प्रसिद्ध (यश) यश है। (तस्य) उस परमात्मा की कोई (प्रतिमा) प्रतिमा (न अस्ति) नही है।

२. ... अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोयुवानो वृषभस्य नीळे।

ऋग्वेद ४/१/११

वह (अपात्+अशीर्षा) पाव सिर आदि अवयवो से रहित (अन्त गुहमान) अन्दर गुप्त है। वह (वृषभस्य नीळे) वीर्ययुक्त पुरुष के स्थान मे (आ योयुवान) सगठन का कार्य करता है।

३. स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-मस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।

यजु० ४०/८

वह ब्रह्म (शुक्रम्) शीघ्रकारी तेजस्वी सर्वशक्तिमान (अकायम अव्रणम् अस्नाविरम्) शरीरो से रहित कभी भी नस-नाडी के बन्धन मे न आनेवाला (शुद्धम्) अविद्यादि दोषो से रहित सदा पवित्र और (अपापविद्धम्) पाप ससर्ग से सदा पृथक् है।

४. अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत।......

ऋ० ८/६६/११

(इन्द्र) अखिल ऐश्वर्यसम्पन्न प्रभु (अपात्) चिह्नरहित निराकार है (अग्नि) चेतन जीव (अपात्) निराकार है और (विश्वे देवा अमत्सत) सब इन्द्रिया या सूर्य-चन्द्र आदि सुख के साधन है।

५. अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया। गृभ्णन्ति जिह्वया ससम्।

ऋ० ८/७२/३

वह (मनीषया) बुद्धि से (पर) परे है, (त रुद्रम्) उस रुद्र प्रभु को ज्ञानी मुमुक्षु (जने अन्त) मनुष्य की आत्मा की भीतर (इच्छन्ति) चाहते है जैसे (ससम्) फल को (जिह्वया) जिह्व से) (गृभ्णन्ति) ग्रहण करते है, अर्थात् जैसे फल का स्वाद चखने से ही सम्भव है, वर्णन से नही, इसी प्रकार निराकार होने से परमात्मा वाणी, चक्षु, श्रोत्र, नासिका त्वचा आदि ज्ञानेन्द्रियो से परे है। उसका योगाभ्यास आदि साधनो से आत्मा मे ही साक्षात्कार सम्भव है।

६. न तस्य प्रतिमानमस्ति।....

ऋ० ४/१८/४

उसकी उपमा कोई दूसरा नहीं है (यह स्थिति केवल निराकार ब्रह्म की ही सम्भव है)।

७. यदच्छायमशरीरम्।......

प्रश्नोपनिषद् ८/१०

वह छायारहित एव शरीर रहित है – निराकार है।

८. अशरीरं शरीरेषु।.. ....

कठोपनिषद ३/२२

शरीरधारियो मे वह ब्रह्म शरीररहित है।

६. अरूपवदेव हि तत् प्रधानत्वात्।.

वेदान्तसूत्र ३/२/१४

वह ब्रह्म प्रकृति आदि का प्रवर्त्तक होने से रूपवान नही, निराकार है।

वह पच क्लेशो के सुख-दुख और उनसे उत्पन्न होने वालो फलो से कर्मो के सस्कारो से और उनके भोगो से परे है। वह तीनो कालो का ज्ञाता है। (यह सब केवल निराकार होने पर ही सम्भव है।)

ईश्वर को समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता पालक नियामक एव सहारक स्वीकार करने की स्थिति मे ईश्वर को साकार मानना सर्वथा असम्भव है। ब्रह्माण्ड मे जहा एक ओर जिनके भी अवयव है, वे अणुवीक्षण यत्र से ही दिखनेवाले सूक्ष्म-से-सूक्ष्म कीटाणु है, दूसरी ओर हमारी पृथ्वी से लाखो गुना बडा सूर्य तथा सूर्य से भी सहस्त्रो लाखो गुणा बडे अन्य तारे है, जिनकी दूरी व सख्या के मापने मे मानव गणित अपने को अति लघु पाता है। इन अति सूक्ष्म व अति विशाल आकारो का साकार ईश्वर द्वारा निर्माण कैसे सम्भव है ? यजुर्वेद (४० मन्त्र स०१।) सारे ब्रह्माण्ड को ईश्वर से आच्छादित – आवासित कहा है। इस अनन्त ब्रह्माण्ड को साकार ईश्वर किस प्रकार आच्छादित कर सकता है ? यदि ईश्वर का आकार इतना विशाल माना जाए जोकि ब्रह्माण्ड को ईश्वर से आच्छादित – करे तो वह सर्वथ: कल्पना का ही विषय होगा एव बुद्धि के अनुरूप नहीं होगा। इतने विशाल आकारवाला ईश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म कीटाणुओ के आवयवो का निर्माण किस प्रकार कर सकेगा ? ईश्वर का आकार सूक्ष्म माना जाए तो सूक्ष्म आकारवाले ईश्वर के लिए विशाल सूर्य नक्षत्रादि बनाना कैसे सम्भव है ? ईश्वर का आकार होगा तो वह ससीम होगा उसकी शक्ति सीमित होगी तथा वह एकदेशी होगा। स्पष्ट है ईश्वर को साकार मानने पर उसकी सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता एव उसकी अनन्तता के गुण बुद्धि एव तर्क से सिद्ध नही होते।

कुछ यह मानते है कि ईश्वर निराकार भी है व साकार भी है। निराकारता तथा साकारता परस्पर विरोधी गुण है अत ये दोनो एक ही सत्ता मे एक समय मे एक साथ रहे यह सम्भव नही। जो मानते है राक्षसो के विनाश के लिए ईश्वर साकार होकर शरीर धारण करता है, उनसे निवेदन है कि जो ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का सृजन नियमन एव सहार कर सकता है, क्या उसे कस, रावणादि राक्षसो के मारने के लिए अपने सारे गुणो को छोडकर शरीर धारण करना पडेगा ? यदि कहा जाए कि भक्तो को अपनी लीला दिखाने हेतु वह साकार और सशरीर होता है तो विचारिए कि प्रकृति के सारे कार्य, यह विशाल सूर्य, चन्द्रमा की कलाए शीतल मद समीर, यह रम्य प्रकृति के खिलते पुष्प, यह असख्य प्राणियो का जन्म, विकास विनाश आदि आदि क्या ईश्वर की लीला स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है ? प्रमाणो के आधार पर स्वत प्रमाण परमेश्वर के निज ज्ञान अपौरुषेय वेद के अनेक मन्त्र उदघृत किए गए है तथा कही अधिक और उदघृत किए जा सकते है जिनसे ईश्वर का निराकार होना सिद्ध होता है परन्तु वेदमन्त्रो मे कोई मन्त्र ऐसा नहीं है, जिसके आधार पर ईश्वर को साकार या मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिह या मानव शरीरधारी सिद्ध कर सके अत स्पष्ट है कि ईश्वर का केवल निराकार स्वरूप ही मान्य है।

क्रमश

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द जी की उपादेयता

– डॉ० धर्मपाल आचार्य

आर्यसमाज के जाज्वल्यमान नक्षत्र निर्भीकता एव कर्मठता की प्रतिमूर्ति शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्त्तक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उन्नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज सच्चे अर्थो मे महर्षि दयानन्द जी महाराज के शिष्य बनकर उनके कार्यो को मूर्त रूप देने मे ही सारा जीवन समर्पित करने वाले हैं जैसा एक शताब्दी पहले अनुभव हो रहा था अथवा उन्होने समाज की रक्षा हेतु ज्ञान यज्ञ मे अपने जीवन की आहुति लगाकर योगदान किया था ठीक उसी प्रकार आज के परिप्रेक्ष्य मे भी उनकी उतनी ही महती आवश्यकता अनुभव की जा रही हैं। जितनी एक शताब्दी पूर्व थी। राजनैतिक रूप मे धार्मिक रूप मे सामाजिक रूप मे शारीरिक एव आत्मिक रुपेण भी हर दृष्टि से उनके दृष्टिकोण और मानसिक स्वर पर चिन्तन करने की आवश्यकता हैं। आर्यसमाज के प्रखर मनीषी नेता जो आज भी प्रान्तवाद जातिवाद एव वर्गवाद की कीचड मे फसकर आर्यसमाज के गगन चुम्बी महल की सुरक्षा करने मे असमर्थ हो रहे है। उन्हे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर सकल्प लेना चाहिए कि जो नहीं होना चाहिए था वो हो रहा है जो होना चाहिए था उसकी और हमारा ध्यान ही हट गया है। उसकी पूर्ति के लिए सभी को सकल्प लेकर सगठन का परिचय देना है। सारे ससार को **सगच्छध्व सवदध्व'** का पाठ पढाने वाला सगठन आज स्वय मे ही बिखर गया है। और भविष्य की परिकल्पनाओ मे भी यदि ऐसा ही स्वरूप बना रहा तो आर्यसमाज के प्रति आस्थावान लोगो के हृदय मे जो श्रद्धा और विश्वास है वह किसी अन्य सगठन के साथ मे जुड जाएगा और यह केवल भूतकाल के गीत गाने और देश को स्वतन्त्र करने के इतिहास तक ही पढने के लिए बच्चो को प्रेरणा का स्रोत्र के रूप मे सुना जाएगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने पजाब प्रान्त मे जन्म लेकर उत्तर प्रदेश को कार्य क्षेत्र बनाया और दिल्ली को केन्द्र बनाकर वही पर बलिदान होकर अपने जीवन की पूर्णाहुति दे डाली ऐसे सन्यासी के प्रति तत्कालीन नेताओ ने जो अपनी श्रद्धाजलीया दी थी वे याद करने योग्य है राष्ट्रपिता महात्मा गाधी जी कहते है कि मुझे उनकी मौत को देखकर मन मे इच्छा होती है मेरी मौत भी ऐसी वीरतापूर्ण हो प० जवाहर लाल नेहरू ने उनकी भव्यता और व्यक्तित्व के बारे मे लिखा था कि उनका सिह जैसा सीना मोटी आखे विशाल भव्यता का आकर्षण स्वत ही मन को मोह लेता था इसी से आप अनुमान लगा सकते है कि उनके प्रति श्रद्धा के कितने भाव थे। प्रतिवर्ष हम उनका बलिदान दिवस मनाते है सकल्प लेते है लेकिन आर्यसमाज के नेता अपने सकल्प को अभी साकार रूप नहीं दे पाए है। आप उनकी आत्मीयता से आत्मीय भावनाओ को पहचानने का प्रयास करे महर्षि स्वामी दयानन्द जी के निवार्ण के पश्चात आर्यसमाज के नेताओ ने डी०ए०वी० कालेज के रूप मे उनकी स्मृति के रूप मे लाहौर मे विद्यालय की स्थापना की जिसमे स्वामी जी प० हसराज जी प० गुरुदत्त विद्यार्थी ही मुख्य रूप से थे। एक शताब्दी पूर्व अग्रेजी शिक्षा इतनी प्रभावी नहीं थी लेकिन स्वामी जी ने डी०ए०वी० कालेज के होते हुए भी अपनी आत्मिक शक्ति का परिचय देकर ही इसमे उल्टी गगा बहाकर दिखाई कि गुरुकुल शिक्षा के बिना हमारे बच्चो का सर्वांगीण विकास असम्भव हैं। अत सकल्प लेकर उसमे जीवन की जवानी की आहुति प्रदान कर दी आज भी यह प्रश्न उसी प्रकार हमारी और निहार रहा हैं आज की शिक्षा पद्धति ने हमारे बच्चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति घृणा पैदा कर दी हैं और चरित्र निर्माण के प्रति पूर्णरूपेण उदासीनता आ गयी हैं। अत प्राचीन शिक्षा के लिए मुस्लिम मदरसो की तरह जगह जगह गुरुकुल स्थापना के कार्यक्रम की महती आवश्यकता है। देवबन्द की तरह केन्द्र बनाकर जहा आचार्य एव उपदेशक तैयार होकर आर्यसमाज रूपी उद्यान की रक्षा के लिए सकल्पित विद्वान तैयार हो सके इस कार्यक्रम को प्रमुखता प्रदान की जाए। इस समय न प्रतिनिधि सभाए थी और न ही ऐसा वातावरण था। उन्होने लोगो को समझाने के लिए स्वय वानप्रस्थ लेकर अपने बच्चो को साथ लेकर हरिद्वार मे बैठना आवश्यक हो गया था आज के नेताओ के सामने कथनी और करनी मे बडा अन्तर दिखाई दे रहा है इसके लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से कभी कभी पत्राचार होता है लेकिन पता नही क्यू उसमे गति नहीं हो पाती क्यो इसके लिए समर्पित व्यक्तित्व नहीं मिलता अथवा किसी की रुचि दिखाई नहीं देती न केवल लोगो की भावनाए भडकाने के लिए समय समय पर चर्चा करने मात्र से ही सगठन बन जाते है और पत्रावलियो मे ही योजनाए बनाकर इतिहास बन जाता हैं इतिहास जिन्दा बलिदानो से ही होता हैं उसके लिए तो बलि देनी ही होगी कौन आता है श्रद्धानन्द बनकर देखना हैं। शुद्धि आन्दोलन की रूपरेखा उन्होने प्रारम्भ की आज उधर भी आर्यसमाज का ध्यान नहीं है। जातिवाद को बढावा देकर सरकार वोट के माध्यम से चुनाव लडाती हैं। आप उसी आधार पर लोगो मे प्रचार करके उन्हे पुनर्मिलन के रूप मे अपने घर वापस बुलावे। क्योकि कठमुल्लापन से वे भी आहत है प्रचार से वातावरण बनाया जाए दिल्ली की जामा मस्जिद से भाषण देने का अभिप्राय उनकी लोकप्रियता निर्भीकता एव कर्मठता तथा समर्पण भाव था। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी गिरजाघर मे जाकर वेदो का सन्देश सुनाया था हमे भी इस दिशा मे सोचना होगा क्या आज की परिस्थितिया उस समय की अपेक्षा अधिक चिन्तनीय हो रही हैं आज चारो तरफ आक्रमण हो रहे है। राजनीति मे मनुवाद का नाम लेकर आर्यसमाज की भावनाओ पर कुठाराघात हो रहा हैं। उन्हे समझाया जाए कि मनुवादी व्यवस्था से ही आप ऊपर उठकर मुख्यमन्त्री बनी हैं। अन्यथा और कोई वाद ऊपर उठने की आज्ञा नही देता ऐसा प्रकोष्ठ आर्यसमाज मे होता था जो प्रत्येक आक्रमण का उत्तर देकर अपनी मान्यताओ की स्थापना करता था। चाहे सम्प्रदायवादियो का उत्तर हो और चाहे राजनैतिक स्तर हो। आज आर्यसमाज अपनी पहचान समाप्त करके समझौतावादी नीति की तरह नई पहचान बनाने मे लगा है। स्वामी दयानन्द के बलिदान दिवस पर प्रत्येक आर्यसमाज के सैनिक को चिन्तन करने की आवश्यकता है और अपने को उस तुला पर तोलकर जो जहा जिस प्रकार (स्तर) का नेता है विद्वान है उपदेशक ब्रह्मचारी है ग्रहस्थ है – वानप्रस्थ अथवा सन्यासी है राजनीति मे या किसी भी कार्यक्षेत्र मे सबसे पहले अपनी मान्यताओ की पहचान कराने याद दिलाने का सकल्प लेना है। वर्ण व्यवस्था आश्रम व्यवस्था को लागू करने के लिए आन्दोलन का रूप तैयार किया जाए और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रत्येक पहलू पर चिन्तन करके उसे क्रियान्वित करने की योजना तैयार की जाए उसके लिए हम सभी आर्यों को नेताओ को अपने अहकार को समाप्त करके सगठन को प्रभुसत्ता प्रदान की जाए तभी हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस से प्रेरणा प्राप्त कर सकते है और उसका मनाना तभी सार्थक होगा क्योकि उनकी आवश्यकता एक शताब्दी के बाद भी अनुभव हो रही है। हम उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का सकल्प ले और उनके सच्चे अनुयायी होने का परिचय देकर जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सके तो हमारा और आर्यसमाज का भी सौभाग्य होगा।

– गुरुकुल पूठ, गढमुक्तेश्वर

स्वामी श्रद्धानन्द को प्रणाम

- डॉ० महेश विद्यालकार

मुंशीराम का जीवन अनेक घात प्रतिघातो सघर्षों कठिनाईयो दुर्गुणो दोषो विरोधो आदि के बीच से निकलकर श्रद्धेय श्रद्धानन्द की पदवी पर पहुचा। इस चमत्कारिक और अकल्पनीय परिवर्तन का श्रेय ऋषिवर देव दयानन्द को जाता है। जिनकी चुम्बकीय आत्मिक शक्ति तथा अगाध सत्य ज्ञान से पतित मुशीराम श्रद्धानन्द के रूप मे कुन्दन बन गए। ऐसा तपस्वी त्यागी बलिदानी और गुरु के प्रति दीवाना चरित्र इतिहास मे दुर्लभ नजर आता है। उन्होने देश धर्म सस्कृति शिक्षा समाज सुधार राजनीति राष्ट्रीय एकता शुद्धि आदि के लिए जो महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। वे इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगे। उनका बलिदान आर्य जाति को सदा नवप्रेरणा जीवन्त चेतना और सगठित होकर चलने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व एव कृतित्व अपने में महनीय है। उनकी तप–त्याग तपस्या कर्मठता सेवा श्रद्धा दृढता राष्ट्रीय प्रेम प्रभु विश्वास आदि वन्दनीय हैं। उनका उत्तरार्द्ध का जीवन अनुकरणीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य प्रशसनीय है। उनका बलिदान प्रेरणीय है। उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनो से मुक्ति अनुकरणीय और अर्चनीय है। उनकी देश धर्म जाति और मानवता की सेवा श्लघनीय है। उनका सर्वस्व त्याग तथा समर्पण आदरणीय है। उनका गुरुकुल निर्माण उल्लेखनीय है। उनके जीवन्त स्मारक गुरुकुल कागडी का अतीत वन्दनीय है। (वर्तमान नहीं) उनका वेदमन्त्र बोलकर जामा मस्जिद मे हिन्दु मुस्लिम एकता का सन्देश देना विश्व इतिहास मे उल्लेखनीय है। उस वीर योद्धा का सगीनो के सामने सीना खोलकर खडे हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन लीला समाप्ति पर जो भावभीनी श्रद्धाजलिया और उद्गार देश विदेश के गणमान्य व्यक्तियो ने प्रकट किए थे। उससे उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व की झलक मिलती है। किसी ने उन्हे राष्ट्र निर्माता किसी ने महान स्वतन्त्रता सेनानी किसी ने पथ प्रदर्शक किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति किसी ने सत्य श्रद्धा और दृढता की प्रतिमा किसी ने गुरुकुल शिक्षा का उद्धारक किसी ने निर्भय सेनापति किसी ने गुरुकुल शिक्षा का उद्धारक किसी ने निर्भय सेनापति किसी ने असीम साहस की प्रतिमूर्ति किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार किसी ने सभी का हितैषी किसी ने हिन्दू मुस्लिम एकता का पक्षधर किसी ने भारत की सर्वश्रेष्ठ विभूति किसी ने समाज राष्ट्र सुधारक किसी ने सेवा त्याग तथा बलिदान का आदर्शव्रती किसी ने प्रेरक गुरु आदि विशेषताओ से सम्मानित एव स्मरण किया है।

स्वामी श्रद्धानन्द के आरम्भिक जीवन की ओर झाकते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का चित्र बनता है। जिसमे नास्तिकता विलासिता खान-पान व आचरण की अपवित्रता भोगी विलासी धर्म कर्म ईश्वर भक्ति आदि से जिसका दूर का भी नाता नहीं था। प्रभु की कृपा हुई। ऋषिवर का सानिध्य मिला। ज्ञान चक्षु खुले। जीवन की दिशा ही बदल गई। जीवन का कायाकल्प हो गया। देवत्व की प्रवृत्ति जाग उठी। जीवन का रग ढग बदल गया। सात्विक धार्मिक तथा तपपूत महापुरुषो के सत्सग एव निकटता मे यह चमत्कारी प्रभाव सम्भव होता है। यह सब ऋषि का जादू था। जिसने मुशीराम के पतित जीवन को प्रेरक जीवन बना दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन उत्थान पतन की ज्वलन्त कहानी है। ऐसा व्रती सकल्पी चरित्र इतिहास मे दुर्लभ नजर आता है। जो इतने पतन से इतना ऊचा उठा हो। जिसके उत्थान और निर्माण ने इतिहास मे लम्बी लकीर खींच दी हो। जिसने दुर्दान्त डाकुओ को भी साहस वीरता तप त्याग आदि से अपनी ओर खींच लिया हो। जो हिसक जगली जानवरो को भी अपने सानिध्य मे बैठाने का साहस रखता हो। ऐसा अद्भुत प्रेरक स्वामी श्रद्धानन्द का चरित्र हमारी धरोहर है। ऐसे महान महापुरुष पर हमे गर्व है। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित्र हमे पुकार पुकार कर चेतना व प्रेरणा दे रहा है।

यदि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा व सीख लेना चाहे तो बहुत कुछ सीख सकते है। हमारे जीवन तथा जगत मे अनेक दुर्गुण दुर्व्यसन बुराईया आदि धर किए बैठी है। जीवन ऊपर की बजाए नीचे की ओर जा रहा है। व्यर्थ की बातो उलझनो समस्याओ विवादो स्वार्थ अहकार पद लिप्सा आदि मे जीवन तेजी से निकला जा रहा है। हमारे मनो मे दोष बुराईया तथा गलत बातो को छोडने की दृढता सकल्प एव ललक नहीं है ? इसी कारण इतना सुनने पढने और देखने के बाद भी हमारा सुधार नहीं हो पा रहा है ? सुधार व परिवर्तन आत्मज्ञान से आता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने जो कहा – वह कर दिखाया। हम कहते कुछ और हैं ? कथनी तथा करनी मे बडा अन्तर है। इसी कारण समस्याए तथा विवाद बढ रहे हैं। मुशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं ? तो हम भी अपने दोषो और कमियो को दूर करके श्रेष्ठ महान एव प्रेरक बन सकते है। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन सकता है। यह तब होगा जब हमारे अन्दर अपने को सुधारने सम्भालने और श्रेष्ठ बनने की लग्न निष्ठा एव इच्छाशक्ति होगी। ऋषिवर दयानन्द के एक प्रवचन ने ही मुशीराम के जीवन को बदल दिया था ? हमने कितने प्रवचन सुने मगर स्थायी सुधार व बदलाव नहीं आएगा। महापुरुषो के जवीन चरित्रो पर्व जयन्तियो बलिदान दिवस आदि हमे सम्भालने सोचने और कुछ करने की प्रेरणा देते है। स्वामी श्रद्धानन्द महान थे। सवाल सीधा सा है – हमने उनके जीवन से क्या शिक्षा और प्रेरणा ली है ? क्या हमारे जीवन मे उनका कोई प्रेरक गुण आया है या नहीं ? नहीं आया है तो चिन्तन एव मनन करना चाहिए।

यदि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा व सीख लेना चाहे तो बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमारे जीवन तथा जगत मे अनेक दुर्गुण, दुर्व्यसन, बुराईया आदि धर किए बैठी है। जीवन ऊपर की बजाए नीचे की ओर जा रहा है। व्यर्थ की बातो, उलझनो समस्याओ, विवादो, स्वार्थ, अहकार, पद लिप्सा आदि मे जीवन तेजी से निकला जा रहा है। हमारे मनो मे दोष, बुराईया तथा गलत बातो को छोडने की दृढता, सकल्प एव ललक नहीं है ? इसी कारण इतना सुनने, पढने, और देखने के बाद भी हमारा सुधार नहीं हो पा रहा है ? सुधार व परिवर्तन आत्मज्ञान से आता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने जो कहा - वह कर दिखाया। हम कहते कुछ और है ? कथनी तथा करनी मे बडा अन्तर है। इसी कारण समस्याए तथा विवाद बढ रहे है। मुशीराम श्रद्धानन्द बन सकते है ? तो हम भी अपने दोषो और कमियों को दूर करके श्रेष्ठ, महान् एव प्रेरक बन सकते है।

प्रतिवर्ष महापुरुषो के जन्मदिन जयन्तिया स्मृति दिवस बलिदान पर्व आदि आते है। हम वाचिक जलसे जलूस तथा श्रद्धाजलि देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते है। महापुरुष अपने कार्यों विचारो और आदर्शों से अमर रहते है। सच्ची श्रद्धाजलि वही होती है। जिसमे महापुरुषो के अधूरे कार्यों को पूरा किया जाता है। उनके बताए मार्ग का अधिक से अधिक लोग अनुसरण करते हैं। उनकी कल्याणी विचारधारा को जन–जन तक पहुचाया जाता है।

आर्यों ! स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हमे पुकार रहा है। जो उन्होने हमे वसीयत और विरासत दी थी। उसे हम कितना आगे बढा रहे हैं ? उनके जीवन्त स्मारक गुरुकुल कागडी को किस दिशा मे ले जा रहे है ? उस सर्वस्व त्यागी फकीर के गुरुकुल को स्वार्थ लोभ और लाभ के चगुल से बचाना हम सब आर्यों का परम कर्त्तव्य है। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन मे आस्तिकता धार्मिकता और आध्यात्मिकता थी। आज इन बातो का आर्यों के जीवन मे अभाव है। इसी कारण मूल मे भूल हो रही है। जब तक जीवन मे सत्य धर्म सेवा त्याग आदि के भाव नहीं होंगे तब तक जीवन पवित्र सेवाभावी न बन सकेगा। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

बलिदान दिवस के प्रेरक अवसर पर महामानव स्वामी श्रद्धानन्द की पावन स्मृति को अनेकश स्मरण नमन और श्रद्धाजलि। प्रभु हम सब आर्यजनो को बुद्धि बल प्रेरणा और सगठन का भाव प्रदान करे। जिससे हम स्वामी श्रद्धानन्द के पद चिह्नो पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाए। ***

श्रद्धा और श्रद्धानन्द

— पं० मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

कहा जाता है कि सूर्य जब अस्ताचल की ओर जाने लगता है, वृक्षो की छाया लम्बी होने लगती है, मानो वे आगामी दिवस सूर्य को शीघ्र ही वापस लौटने का निमन्त्रण दे रही हो। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को प्राय आठ दशक पूर्ण होने को आ रहे है, परन्तु उनके द्वारा छोडे गए अनेको कार्य अभी भी अधूरे पडे हुए हैं। सम्प्रति, उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये जन्मना जाति पाति उन्मूलन, अन्तर्जातीय विवाह आन्दोलन, शिक्षा का भारतीय (वैदिक) करण तथा भूले भटके, लालच, भरा, प्रलोभन, आकर्षण तथा आतक के कारण हमारे बिछडे बन्धुओ को वापस अपने वृहत्तर परिवार में लाने का कार्य अर्थात् शुद्धि का कार्य अभी भी अपूर्ण, अधूरा पड़ा हुआ है। इधर आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र इतना अधिक विस्तृत हो गया है कि इन कार्यों को करने की समय, शक्ति और संसाधनों की कमी महसूस होने लगी है। हम तो यहा शुद्धि कार्य के सम्बन्ध में अधिक गहराई से विचार कर रहे हैं।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्त मनसो धियः। पुनन्तु विश्व भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।

यजुर्वेद १६/३६

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूंरनु।

यजुर्वेद १६/४०

अर्थात् मंत्रदृष्टा वैदिक ऋषियों ने परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त कर समाज को सगठित, बलशाली और प्रगतिवान बनाने के लिए उपरोक्त मंत्रों द्वारा स्पष्ट निर्देश दिये है कि हम सभी मनसा, वाचा, कर्मणा से शुद्ध रहे। ज्ञान द्वारा निरन्तर शुभ कर्मों को करते रहे हैं। यदि कोई हमारे परिवार, समाज तथा राष्ट्र की स्वाभाविक धारा से किन्हीं कारणों से विलग या अशुद्ध हो जाये, तो उसे बिना किसी संकोच के पुनः अपने समाज में आत्म सात कर ले। इतना ही नहीं।

यत्रे पवित्र मर्चिष्यऽग्ने वितत्मन्तरा। ब्रह्मतेन पुनातु मा।

यजु० १६/४१

पवमान सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः यः पोतास पुनातु मा।

यजु० १६/४२

अर्थात् प्रत्येक वैदिक धर्मी सदैव सचेत रहे कि वह वेदानुकल आचरण करता रहे। यदि किन्हीं प्रत्याशित अथवा अप्रत्याशित कारणों से पथ भ्रष्ट हो जावे, तो वह परमात्मा से प्रार्थना कर प्रायश्चित्त द्वारा अपनी भूल पुन सुधार ले। अपने समुदाय, समाज और राष्ट्र की धारा से दूर न रहे। ध्यान हरे, यह-आज्ञा वेद की है और इसकी पुष्टि अनेक स्मृतियो ने की है।

इतनी स्पष्ट वैदिक आज्ञा के उपरान्त भी हमारे पूर्व आचार्यो तथा मनीषियो ने इसके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं दिया। आग्ल भाषा के एक चिन्तक ने कहा है – वी आर टू मेड, नाट टू एण्ड अर्थात् यदि अज्ञानता/सज्ञानता से कोई भूल हो जाय तो उसे तत्काल भूल सुधार कर ले। हमारे पैरो की रक्षा करने वाली पनही (जूता या चप्पल) यदि थोड़ी सी टूट फूट जाती है तो हम तत्काल दौडकर चर्मकार से उसे सुधरवा लेते हैं। जब किसी जड अथवा उपयोगी वस्तु के प्रति यह हमारी मानसिकता है, तब हमारे समाज के ही किसी जीवित सदस्य से भूल होने पर उसका सदा के लिए तिरस्कार या बहिष्कार करना कौन सी बुद्धिमत्ता है ?

स्वामी श्रद्धानन्द करांची कागेस मे उपस्थित थे। वहा छः करोड अछूत हिन्दुओं को आधा आधा बाटकर मुसलमान बनाये जाने और सामाजिक समस्या को हल करने का सुझाव आया। इसके पूर्व गाधी जी के चहेते मोहम्मद अली और शौकत अली भरी सभा में गाधी जी के सामने कह चुके थे –'गदा, मलिन, शराबी और व्यभिचारी मुसलमान मोहनदास गाधी (हिन्दू) से कहीं अधिक उम्या (श्रेष्ठ) है, क्योंकि वह इस्लाम और मोहम्मद साहब पर ईमान रखता है।' यह सुनकर भोला मोहनदास गांधी अपना सिर नीचे कर हसता रहा। जब उनसे इस पर प्रत्युत्तर देने के लिए कहा गया, तब गाधी ने कहा – मोहम्मद अली साहब बुजुर्गों से अच्छी मजाक कर लेते हैं। मैं इनकी मजाक का बुरा नहीं मानता। लेकिन उनके निकट बैठे श्रद्धानन्द के कान खड़े हो गए और वे मुसलमानों का षड़यंत्र ताड गये। यह कहानी थी, गांधी और श्रद्धानन्द के विलगाव की।

तभी से स्वामी श्रद्धानन्द ने समाज और राष्ट्र के हित के लिए 'शुद्धि' का सुदर्शन चक्र चलाना प्रारम्भ कर दिया। मुस्लिम लीगी मुसलमान मिलकर गांधी के कान स्वामी श्रद्धानन्द के विरुद्ध करने लगे, गांधी जी में विश्लेषणात्मक बुद्धि का बहुत अभाव था और वे भी बहक कर स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन का विरोध करने लगे। इसके आगे की कहानी बहुत लम्बी है। यहा हम गांधी जी की असफलता का एक मुख्य कारण बताना चाहते हैं। गांधी जी के चारो ओर पूर्वाग्रही सनातनी (पौराणिक) हिन्दुओं का गिरोह था जो उन्हें 'महात्मा' कहकर भ्रमित किये हुए था। दूसरा गांधी जी स्वय जानबूझ कर समाज और राष्ट्र की चिन्ता किए बगैर लोकेषणा के कारण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपने आपको 'स्थापित' करना चाहते थे। इसका परिणाम राष्ट्र को जो भुगतना पडा वह अभी भी पीडा दे रहा है। पं० जवाहर लाल नेहरू अपनी चतुर दृष्टि से गाधी जी की इस कमजोरी को पहचान गए थे, इस कारण स्वतत्रता प्राप्त होते ही वे गाधी जी की उपेक्षा करने लग गये, जिसे गांधी ज्री समझ गये थे लेकिन तब तक तीर कमान से निकल चुका था।
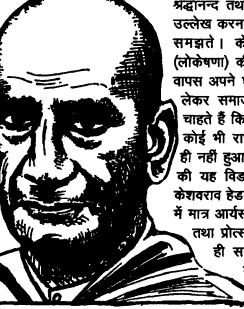
स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ हिन्दूनिष्ठ दल स्वामी श्रद्धानन्द की बात को समझ गये थे। हिन्दू महासभा तो प्रारम्भ से ही शुद्धि समर्थक थी। किन्तु अन्य दल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी आदि शुद्धि का समर्थन एवं मतान्तरण का विरोध राजनैतिक दृष्टि से करते आये हैं, किन्तु आर्यसमाज की तरह मैदान में कूदकर मतान्तरित व्यक्तियों या समूहों की शुद्धि के लिए कुछ भी ठोस रचनात्मक कार्य नहीं कर रहे हैं। कहीं कहीं तो पूर्वाग्रहों से ग्रसित इन हिन्दू नेताओं की पौराणिक मानसिकता ने भी इन्हें बीच में रोक दिया। मतान्तरण का विरोध करना एक अलग बांत है तथा मतान्तरित व्यक्तियों को शुद्ध कर सामज की एक धारा में समायोजित करना कहीं उससे भी अधिक महत्व की बात है। केवल राजनैतिक प्रलोभन रखकर शुद्धि कार्य नहीं किया जा सकता। यह देश का दुर्भाग्य है कि इतनी अधिक हिन्दुत्व पूर्ण राष्ट्रीय चेतना के बाद भी शुद्धि की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यहा तक कि अपने साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं में आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द, वैदिक धर्म, स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं० लेखराम का उल्लेख करना भी वे उचित नहीं समझते। केवल राजनीतक (लोकेषणा) की प्राप्ति के लिए वापस अपने घर लौटो का नाम लेकर समाज को यह बताना चाहते हैं कि सन् १९२५ से पूर्व कोई भी राष्ट्र चिन्तन उत्पन्न ही नहीं हुआ था। हिन्दु समाज की यह विडम्बना है कि जिन केशवराव हेडगेवार को कलकत्ता में मात्र आर्यसमाज ने ही आश्रय तथा प्रोत्साहन दिया, उनकी ही सस्थाएं अब विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुकी है, उसके आधुनिक नेता व वक्ता खुलकर आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन का समर्थन नहीं करते। इतना ही नहीं, स्वा० ब्रह्मानन्द जी चन्दौसी ने राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के तत्कालीन सर संघचालक श्री बालासाहब देवरस के उस सम्बोधन की ओर ध्यान खींचा हैं जिसमें कहा गया था –

'अब आर्यसमाज का सूर्य अस्त हो चुका है। आर्यसमाज के पास पुष्कल सम्पदा है, भवन हैं। आर्यसमाज के भवनों में घुसकर मंच खोलों। जिसका परिणाम है कि उत्तर प्रदेश की प्रमुख १२० आर्यसमाजों में शिशु मन्दिर चलते हैं। आर्यसमाजें हटा दी गई है तथा आर्य समाजियों को घुसने तक नहीं दिया जा रहा है।' सन्दर्भ आर्यसेवक (नागपुर) २४ जून २००२ तथा आर्य राष्ट्र, पीलीभीत १२ अगस्त, २००२.

खेद है कि इस समय राष्ट्र की स्वतन्त्रता और सार्वभौमिकता, अखण्डता का प्रश्न दांव पर लगा हुआ है, ऐसे गम्भीर समय में राष्ट्र भक्ति का वेश धारण करने वाला एक विशाल संगठन आर्यसमाज के समान महान् संगठन का सूर्य अस्त बताकर अपना 'सूर्योदय' का दिवास्वप्न देख रहा है ? आज से १२७ वर्ष यह केवल आर्यसमाज ही था, जिसने कथित हिन्दुओं की चोटी और जुनेऊ की रक्षा की है। स्मरणीय है कि जहां जहां आर्यसमाज हैं, इन हिन्दू–संगठन वादियो को वहा–वहां अपना कार्यक्षेत्र तैयार मिला है और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने उल्लेखनीय सहयोग दिया है। यदि यही सगठन 'आर्यसमाज का सूर्यास्त' कहने लगता है, तो फिर इस देश की संस्कृति, धर्म, सभ्यता, धर्मशास्त्र और स्वतन्त्रता का परमात्मा ही रक्षक है। भगवान् ऐसे हिन्दू नेताओं को उत्तम दृष्टि प्रदान करे, जिससे उन्हें आर्यसमाज का सूर्यास्त नहीं अपितु राष्ट्रद्रोहियों के 'ग्रहण' दिखने लगे। यह सत्य है – जब तक देश के कर्णधारों को आर्य बुद्धि प्राप्त नहीं होती, तब तक वे लोग स्वय अन्धेरे में भटक कर अन्यों को गुमराह करते रहेंगे। भगवान् इन्हें सद्बुद्धि प्रदान करे।

आज के सन्दर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द और उनके शुद्धि आन्दोलन के बहुत बड़ी आवश्यकता है। व्यक्तिगत शुद्धि के साथ ही साथ सामूहिक शुद्धियों से सामाजिक व्यवहार में कोई बडी कठिनोई नहीं आती हैं। आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के ५५ वर्ष के पश्चात् भी किसी ईसाई या मुस्लिम को शुद्ध करने के पश्चात् उसे समाज में हजम करने की क्षमता उत्पन्न नहीं हुई है। हमारा तो यहा यह कहना है कि शुद्ध किए हुए व्यक्ति या परिवार से यह प्रतिज्ञा करवाना चाहिए

शुद्धि के पश्चात् घोषणाएं

१ आज से मेरा/हमारा इष्ट और उपास्य देव ईश्वर, परमात्मा, जिसका नाम 'ओ३म्' है ही होगा।

२ वेद मेरा धर्म, पुस्तक तथा वेदों की शिक्षा–दीक्षा, मेरा धर्म वैदिक होगा।

३. राम, कृष्ण, कपिल, कणाद, गौतम, दयानन्द आदि महापुरुष ही मेरे पूज्य महापुरुष होंगे।

४. भारत भूमि मेरी मातृ भूमि तथा गाय मेरी माता होगी और इसकी रक्षा में मैं सदैव प्रयत्नशील रहूंगा।

५. मेरी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी तथा मैं वैदिक धर्म, संस्कृति, आचार-विचार परम्पराओं व मान्यताओं के विरुद्ध कभी ऐसा आचरण नहीं करूंगा जिससे वे कलंकित हों। वन्दे मातरम्।

अन्त में, यही कहना अति सार्थक होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा चलाये गए शुद्धि आन्दोलन शुद्धि सुदर्शन चक्र को तीव्रगति देकर उन्हें विधर्मियोंको समाज में आत्मसात् करना हमारा अपना पुनीत कर्त्तव्य होगा। धर्म, राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा करते हुए अमर हुतात्मास्वामी श्रद्धानन्द को बारम्बार प्रणाम।

– 'सुकिरण' अ/ १३, सुदामा नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश.

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव स्थगित

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव जोकि नवम्बर मास के अन्तिम सप्ताह मे अथवा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह मे मनाया जाता था वह इस वर्ष स्थगित कर दिया गया है क्योकि हम दिल्ली से प्रतिवर्ष जो बसे ले जाते थे वे अब सी०एन०जी० मे परिवर्तित हो गई हैं। दूसरा हम वहा पर एक भव्य सत्सग हॉल एव छात्रावास का निर्माण कर रहे हैं यह कार्य हमने मास सितम्बर मे आरम्भ किया था। हमारा विचार था कि नवम्बर के अन्त मे अथवा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक कार्य सम्पूर्ण हो जायेगा परन्तु अभी इस कार्य मे सम्भवतया दो मास का समय और लग जाएगा उसके पश्चात छात्राओ की परीक्षाए आरम्भ हो जाएगी जिस कारण उक्त उत्सव स्थगित करना पडा है।

हम दाधिया गुरुकुल मे जो सत्सग हॉल एव छात्रावास का निर्माण कर रहे हैं उस पर लगभग ७ – ८ लाख रुपये की राशि व्यय होने का अनुमान है। समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि इस कार्य हेतु अधिक से अधिक राशि आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया के नाम आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया अलवर राजस्थान अथवा आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर भिजवाकर पुर्ण्याजन करे।

रामनाथ सहगल मन्त्री

बलिदान दिवस (२३ दिसम्बर) पर विशेष

पूरा बारहठ परिवार चढ़ गया आजादी की बलिवेदी पर

— **डॉ० अशोक आर्य**

विश्व प्रथम विश्वयुद्ध की लपटो मे जल रहा था। ऐसे मे क्रातिकारियो ने सोचा कि यदि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को तेज कर दिया जाये तो देश स्वाधीन हो सकता है क्योकि तत्कालीन भारतीय शासक विश्वयुद्ध मे उलझे हुए थे। इस बात को ध्यान मे रखते हुए रामबिहारी बोस के नेतृत्व मे क्रातिकारियो ने जो योजना बनाई उसे क्रियात्मक रूप देने के लिए देश के अन्दर व बाहर से भारत मे सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया बडे जोर शोर से आरम्भ कर दी गयी।

स्वामी विवेकानन्द के भाई भुपेन्दर नाथ दत्त राजा महेन्द्र प्रताप बरकत उल्ला लाला हरदयाल व उनके साथियो ने इसे व्यावहारिक जामा पहनाने के लिए 'बर्लिन कमेटी नामक एक ग्रुप का गठन किया। इसी कमेटी के माध्यम से जर्मनी से एक सधि की गई जिसके अन्तर्गत जर्मनी से धन शस्त्र तथा सैनिक विशेषज्ञ इन क्राति वीरो को मिलने थे। भारत मे सशस्त्र विद्रोह के लिए अमेरिका से क्रातिकारियो को लादकर कामागाटामारू तथा तोशियामारू नामक दो जहाज भारत के लिए रवाना हुए। इसी अवसर पर रास बिहारी बोस ने भारत के प्रत्येक भाग से कुछ क्रातिकारियों को चुना ताकि भारत मे सशस्त्र क्राति का आयोजन किया जा सके। राजस्थान मे इस सशस्त्र क्राति के लिए बारहठ परिवार को चुना गया। इस परिवार के मुखिया थे केसरीसिह बारहठ।

राजस्थान के राज दरबारो मे अत्यत प्रतिष्ठित में से एक चारण परिवार मे केसरी सिह बारहठ का जन्म हुआ। उनमे पैतृक विरासत का विपुल भण्डार था इसी कारण उदयपुर व कोटा के नरेश उनमे पूर्ण विश्वास रखते थे। उनकी सलाह का सदैव आदर किया जाता था। उनकी उच्च कोटि की काव्य क्षमता तथा विद्वत्ता ने इन नरेशो का मन मोह लिया था। किन्तु देश की पराधीनता के कारण उनकी आत्मा आहत रहती थी। अत देश को स्वाधीन कराने के लिए केसरी सिह ने क्रातिकारी दलो का सदस्य बन कर सक्रिय रूप से कार्य आरम्भ कर दिया। उनकी सपत्ति जब्त कर ली गई परिवार बेसहारा होकर गलियो मे ठोकर खाता रहा। उनको कोई आश्रय तो क्या अन्न का एक दाना देने पर भी भयभीत होता था किन्तु बारहठ ने कभी इसकी चिता न की तथा स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य मे वह अनवरत लगे रहे। इतना ही नहीं अपने परिवार को भी स्वाधीनता की वेदी को अर्पण कर दिया। पुत्र प्रताप सिह बारहठ तथा जामाता ईश्वर दास आसिया को भी देश की स्वाधीनता के लिए रासबिहारी बोस की सेवा मे भेज दिया। इस प्रकार अपनी बच्चियो की माग के सिदूर की भी चिन्ता न की।

कोटा षडयत्र केस मे किसी प्रकार केसरी सिह बारहठ पुलिस के हाथ मे आ गये। इस अभियोग मे उन्हे बीस वर्ष के कठोर कारावास का पुरस्कार मिला। इतना ही नहीं इस सजा के साथ ही उनकी जागीर सहित सारी सपत्ति जब्त कर ली गई तथा उन्हे हजारी बाबा की जेल के सीखचो मे बन्द कर दिया गया।

वह सन १९१२ की २३ दिसबर थी जब अपने क्रातिकारी नेता रासबिहारी बोस के आदेशो का पालन करते हुए वीर जोरावर सिह बारहठ तथा उनके सहयोगी बसत विश्वास ने भारत के तात्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिग पर बम फेक कर न केवल उसे घायल कर दिया अपितु दुनिया को यह बता दिया कि इस देश को पराधीन करने वाले बडे से बडे व्यक्ति का भी जीवन भारत मे सुरक्षित नहीं है। वीर जोरावर सिह बारहठ फरार हो गये।

इन्हीं के भाई प्रताप सिह बारहठ रासबिहारी बोस के सर्वाधिक विश्वसनीय व अतरग साथी व सैनिक थे। इसी कारण राजस्थान सहित उत्तर भारत मे सशस्त्र क्राति की बागडोर उन्हीं को सौंपी गई। एक देशद्रोही के कारण मारवाड मे आशानाडा स्टेशन पर प्रताप सिह बारहठ भी क्रूर पुलिस के शिकजो मे जकडे गये। उन पर बनारस षडयन्त्र केस का अभियोग चला कर न्याय का नाटक रचाया गया। परिणामत उन्हे भी पाच वर्ष का कठोर कारावास का पुरस्कार सुनाकर बरेली जेल मे भेज दिया गया।

भयकर यातनाओ ने उन्हे जेल से बाहर नहीं आने दिया तथा इन पाच वर्षों मे जेल के अदर ही उन्होने अपना शरीर त्याग कर पुन देश को स्वाधीन कराने के लिए दूसरा जन्म लेने की इच्छा प्रकट की।

— आर्य कुटीर ११६ मित्र विहार मण्डी डबवाली

देश की राजधानी में भी बांग्लादेशी नागरिकों की भरमार

नई दिल्ली (विसके) बाग्लादेश की सीमा से लगने वाले भारतीय राज्यो मे बाग्लादेशी घुसपैठ का सकट जहा निरतर गहरा रहा है वही देश की राजधानी दिल्ली भी बाग्लादेशी नागरिको के सकट से बुरी तरह ग्रस्त है। यह बाग्लादेशी अब दिल्लीवासियो के लिए खासे सिरदर्द बनते जा रहे हैं। अपनी सारी गतिविधिया निर्बाध चलाने तथा भारत मे निर्विघ्न बने रहने के लिए इन घुसपैठियो की ओर से पुलिस को भी पटाया गया है। उ०पू० दिल्ली मे सीमापुरी नदनगरी भजनपुरा और दिलशाद गार्डन आदि ऐसे इलाके हैं जहा इन घुसपैठियो की झुग्गी बस्तिया बडी तादाद मे बन गयी है। पूर्वी दिल्ली के कल्याणपुरी न्यू अशोक नगर मयूर विहार के अलावा शकरपुर गीता कालोनी गाधी नगर मे यमुना किनारे बसी झुग्गी बस्तियो मे ७० प्रतिशत बाग्लादेशी रहते है। उत्तरी दिल्ली मे कोतवाली इलाके मे बसी सजय अमर कालोनी बाग्लादेशियो के सबसे बडे ठिकाने के नाम से मशहूर है। दक्षिण दिल्ली मे सगम विहार ओखला सरिता विहार गोविदपुरी बदरपुर अम्बेडकर नगर मे बाग्लादेशियो की काफी बडी तादाद है। उत्तर पश्चिम दिल्ली मे आजादपुर वजीरपुर जहागीरपुरी और सुल्तानपुरी इलाको मे भी बाग्लादेशियो ने अपने धधे जमाये हुए है। राजधानी के अलावा नोएडा और गाजियाबाद मे भी बडी तादाद मे बाग्लादेशी अब नजर आते है।

यह बाग्लादेशी कूडा बीनने व रिक्शा चलाने के काम बहुतायत से करते है जबकि इनके परिवारो की महिलाए घरो मे साफ सफाई करने से लेकर देह व्यापार तक का धधा करती है। पुलिस को इनकी जानकारी होने के बाद भी वे या तो आखे बद रखते हैं या फिर उनके अधिकारी यह बहाना बनाते रहते हैं कि रिकार्ड न होने से उन्हे पकड़ना मुश्किल हो जाता है।

बाग्लादेशी पुरुष दो तीन पत्निया रखते हैं और उनकी कमाई पर आराम से जिदगी व्यतीत करते रहते हैं। बाग्लादेशी जब भी अपने वतन जाते हैं तो काम दिलाने का झासा देकर वहा से एक दो युवतियो को साथ ले आते हैं और यहा लाकर उन्हे जिस्मफरोशी के धधे मे ढकेल देते है।

इन बाग्लादेशी नागरिको को काग्रेसी व अन्य राजनेताओ का सरक्षण भी प्राप्त है। वे वोट बैंक के रूप मे इनका इस्तेमाल करते है। उन्होने लगभग ४ लाख बाग्लादेशियो के नाम मतदाता सूची मे दर्ज करा रखे है। १९६३ मे गृह मत्रालय ने रिपोर्ट जारी कर बताया था कि राजधानी मे दो ढाई लाख बाग्लादेशी है जिनमे से अधिकाश के नाम मतदाता सूची मे थे। तत्कालीन नरसिहराव सरकार ने डेढ लाख बाग्लादेशियो के नाम मतदाता सूची से कटवाये भी थे पर एकसाल बाद फिर से सूची मे जोड दिए गए। शीला दीक्षित के राज्य मे इस समय लगभग ७० प्रतिशत बाग्लादेशियो के पास राशन कार्ड पहचान पत्र और अन्य ऐसे कागजात हैं जिनसे वह अपने आप को बडी सरलता से भारत का नागरिक साबित कर सकते हैं। कई बाग्लादेशी नागरिक तो पासपोर्ट धारक भी हैं। वे भारतीय नागरिक बनकर विदेशो मे आते जाते है।

विगत मई माह मे एक जनहित याचिका की सुनवाई पर उच्च न्यायालय ने निर्देश दिये थे कि इन बाग्लादेशी नागरिको की पहचान कर उन्हे स्वदेश भेजने की मुहिम मे तेजी लाई जाए। इस आदेश के बाद इन बाग्लादेशी नागरिको को भारत से बाग्लादेश भेजने की कुछ गति तो बढी पर यहा से बाहर निकाले गये बाग्लादेशी नागरिको की सख्या बहुत कम ही रही।

स्थानीय एफ०आर०आर०ओ० सदीप गोयल ने बताया कि विगत ५ महीनो मे २००० से अधिक बाग्लादेशियो को बाग्लादेश भेजा जा चुका है। जानकार सूत्रो के अनुसार बाग्लादेशियो को पकडवाने मे मुखबिर अहम भूमिका निभाते हैं किन्तु यह मुखबिर खुद बाग्लादेशी होते है तथा जो बाग्लादेशी उन्हे पैसे नही देते केवल उन्हे ही वे पकडवा देते हैं। *(विसके से साभार)*

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री अस्वस्थ

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री २–३ मास से अस्वस्थ चल रहे है उन्हे गुर्दे मे पथरी तथा पेशाब मे रूकावट की शिकायत है जिसका उन्हे आपरेशन कराना पडेगा। आज कल उनका लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल मे उपचार चल रहा है। पीछे कुछ समय पहले उनका हार्निया का आपरेशन हुआ था। अब पुन (पथरी व पेशाब) का आपरेशन होना है। वर्तमान मे वे सभा भवन मे रहकर औषधि सेवन कर रहे है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2002 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22-12-2002 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U(C) 93/2002
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2002 in NDPSo on 19/20-12-2002

विहार

रोसडा आर्यसमाज के प्रधान अनूप बाबू नहीं रहे

लम्बे वर्षो से डायबिटिज की बीमारी से सघर्ष करते हुए ८० वर्ष की आयु मे अनूपबाबू दिनाक ६–१२–२००२ शनिवार को १२ ३० बजे इन्दिरा गाधी आयुर्वेद सस्थान पटना मे दिवगत हो गए वे रोसडा के महान विभूति मे एक थे अपने कार्यक्षेत्र मे उन्होने अजमेर मे दीक्षा ली और प्रसन्नतापूर्वक अपने कोष से दो मजिला इमारत डी०ए०वी० एव अधूरे आर्यसमाज वेद मन्दिर के निर्माण कार्य को सम्पन्न किया शन्ति प्रिय एव मनोविनोदी स्वभाव होने के कारण वे छोटे बडे सबके प्रिय थे वे जीवन भर योगासन प्राणायाम हवनयज्ञ एव गायत्री मन्त्र की साधना करते रहे उनकी अन्त्येष्टि क्रिया पूर्ण वैदिक रीति से उनके पुत्रो ने की। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

– राजन कुमार आर्य,
आर्यसमाज रोसडा बिहार

गुजरात

गुजरात प्रान्तीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का राजकोट में आयोजन

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का राजकोट मे भव्य आयोजन दिनाक ८–११–२०००२ से दिनाक १५–११–२००२ तक किया गया। उक्त शिविर मे गुजरात के प्रत्येक आर्यसमाजो से चुने हुए लगभग १०० की सख्या मे आर्यवीरो ने हिस्सा लिया। प्रात ४ ३० से रात्रि ६ ३० तक निश्चित दिनचर्या मे आर्यवीरो ने शारीरिक विकास हेतु एव आर्यसमाज के सिद्धान्तो का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण शिविर के अन्त मे शोभा यात्रा निकाली गयी एव आर्यवीरो द्वारा अनेक प्रकार की शारीरिक कलाओ का प्रदर्शन किया गया।

शिविर के अन्तिम दिन राजकोट जिला होमगार्डस कमाण्डर श्री प्रवीण सिह राठोड की अध्यक्षता मे पूर्व सासद श्री शिवलाल भाई वेकरिया मुख्य अतिथि तथा टकारा उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्री विद्यादेव जी ने आर्यवीरो को प्रेरणाप्रद प्रवचन दिया। अन्त मे प्रतिभाशाली आर्य वीरो को पुरस्कृत किया गया। शिविर की समस्त व्यवस्था आर्यसमाज हाथी खाना के मन्त्री श्री रणजीत सिह परमार तथा सभी सभासदो ने किया। सारा खर्च आर्यसमाज हाथी खाना ने वहन किया। कार्यक्रम का समस्त सचालन श्री हसमुख भाई परमार टकारा ने किया।

पुरोहित/धर्माचार्य की आवश्यकता

आर्यसमाज मन्दिर, (पजी0) बी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली 58, दूरभाष 25514794 को धर्माचार्य की आवश्यकता है। पद के लिए आपेक्षित योग्यताए इस प्रकार है –

१ जो वेद विद्या मे पारगत हो एव वेद आधारित प्रवचन देने मे भी दक्ष हो। २ जिसने गुरुकुल से वेदालकार/विद्यालकार तक शिक्षा प्राप्त की हो। ३ जो वैदिक रीति से सस्कार कराने मे निपुण हो। ४ ३५ वर्ष से कम आयु के विद्वान को वरीयता दी जाएगी।

उम्मीदवारो का चयन योग्यता के आधार पर होगा। अपने आवेदन–पत्र पूर्ण विवरण के साथ प्रधान/मन्त्री के नाम प्रकाशन तिथि से एक सप्ताह के अन्दर उपरोक्त पते पर भजे।

– डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया, प्रधान

प्रतिष्ठा में
150 पुस्कालाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उ०प्र०)

श्रद्धानन्द स्वामी से सीखो

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

तन मन धन अर्पण करना हरिश्चन्द्र दानी से सीखो।
रण स्थल मे जौहर दिखाना झासी की रानी से सीखो।।

पति सेवा मे साथ निभाना सीता पटरानी से सीखो।
हर हालत मे निर्मल रहना गगा के पानी से सीखो।।

दीन मित्र का कष्ट मिटाना श्री कृष्ण चन्द से सीखो।
नारी जाति का मान बढाना स्वामी दयानन्द से सीखो।।

कीचड मे से बाहर निकलना अमीचन्द कामी से सीखो।
सारे दुर्गुण दूर भगाना श्रद्धानन्द स्वामी से सीखो।।

आर्यसमाज, कविनगर, गाजियाबाद में पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज कविनगर गाजियाबाद मे सुयोग्य विद्वान अनुभवी सदाचारी पुरोहित की आवश्यकता है। वैदिक कर्मकाण्ड सस्कार मे पारगत वैदिक प्रवक्ता को प्राथमिकता सगीत के ज्ञान वाले को वरीयता दी जाएगी।

परिवार वाला आयु ३५–४० से ऊपर होनी चाहिये। आवास की समाज मे व्यवस्था है। इच्छुक व्यक्ति योग्यता अनुभव के साथ मत्री/प्रधान को लिखे या सम्पर्क करे –

ब्रज पाल गुप्ता प्रधान, आर्यसमाज कविनगर, गाजियाबाद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७, ३२७४२१६) फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५)। सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री। ई मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाइट - http://www.whereisgod.com

वर्ष ४० अक ३६ ३० दिसम्बर से ५ जनवरी २००२ तक दयानन्दाब्द १७८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ सम्वत २०५८ मा०शी०शु० १५
एक प्रति १ रुपया (भारत मे) वार्षिक ५० रुपये तथा आजीवन ५०० रुपये (विदेश मे) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया

धर्मान्तरित लोगों की वैदिक धर्म में वापसी का अभियान तेज हो

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे विशाल शोभायात्रा तथा श्रद्धाजलि सभा

अमर हुतात्मा और शुद्धि आदोलन के प्रणेता तथा महान देश भक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी का ७५वा बलिदान पर्व बडे हर्षोल्लास और नए सकल्पो के साथ सारे विश्व भर की आर्य समाजो सभाओ तथा अन्य सस्थाओ मे मनाया गया।

दिल्ली मे आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा विशाल शोभा यात्रा तथा जन सभा का आयोजन करके पूर्व की भाति यह आयोजन विशाल स्तर पर किया गया। दिल्ली मे विगत ७५ वर्षो से निर्बाध यह आयोजन होता चला आ रहा है।

दिल्ली के इस मुख्य समारोह मे शोभा यात्रा का नेतृत्व और जन सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की। प्रात ६ बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। उसके पश्चात १० ३० बजे से कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे शोभा यात्रा आरम्भ हुई। उनके साथ चल रहे थे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा डा० शिवकुमार शास्त्री चौ० लक्ष्मीचन्द्र श्री रामनाथ सहगल श्री जगदीश आर्य सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी इन्द्रदेव जी महाशय रामविलास खुराना जी तथा सन्यासी वर्ग में प्रमुख थे स्वामी दिव्यानन्द जी तथा स्वामी धर्ममुनि जी आदि। यह शोभायात्रा पुरानी दिल्ली के उन क्षेत्रो से होती हुई लाल किला मैदान पहुची जिन क्षेत्रो से स्वामी जी की शहादत के बाद २५ दिसम्बर १९२६ को उनकी अन्तिम यात्रा सस्कार के लिए निकाली गई थी। स्वामी जी के अतिम सस्कार के अवसर पर आर्य जनता ने उनकी स्मृतियो को अपना प्रबल सस्कार बना लिया और तबसे यह यात्रा दिल्ली मे प्रतिवर्ष बडे जोश व उत्साह के साथ आयोजित की जाती है। दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजे अपने अलग अलग टैम्पो व बसे लेकर इस यात्रा मे शामिल होती हैं। बैनरो और ध्वजो से सुसज्जित वाहन सगठन शक्ति का सुदृढ परिदृष्य प्रस्तुत करते हैं।

श्रद्धानन्द बलिदान पर्व समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वैदिक दर्शन एव सिद्धान्त पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ मे हैं आचार्य प० विशुद्धानन्द जी तथा वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय।

मार्ग मे कई आर्यसमाजे दानी महानुभाव व्यापारी वर्ग तथा अन्य सस्थाए भी स्थान स्थान पर इस यात्रा मे भाग लेने वाले आर्य जनो का पुष्पो और प्रसाद वितरण से प्रसन्नता पूर्वक स्वागत करते हैं। इस बार भव्य शोभा यात्रा का सर्वप्रथम आर्यसमाज नया बास की तरफ से उसके बाद काजी हाउस पर आर्यसमाज सीताराम बाजार की तरफ से चावडी बाजार मे आर्य पुत्री पाठशाला के अध्यक्ष एव प्रिंसिपल ने विद्यालय की अध्यापिकाओं के साथ और चादनी चौक घटाघर पर आर्यसमाज दीवानहाल की तरफ से स्वागत के विशेष प्रबन्ध किए गए थे। पूरे मार्ग मे आर्यसमाज नयाबास सीताराम बाजार तथा दीवानहाल की तरफ से माईक एव बैनरो तथा तोरण द्वार की व्यवस्था की गई थी जिसमे आर्यजनो का भव्य स्वागत किया जा रहा था। शोभायात्रा के मार्ग पर सन्तरे केले ब्रेडपकौडे मिश्री सौंफ मिठाई तथा हलवा इत्यादि श्रद्धालुओ की तरफ से वितरित किए जा रहे थे।

दोपहर बाद २ बजे यह यात्रा लाल किला मैदान पहुची जहा विशाल जनसभा का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की।

कै० देवरत्न आर्य ने आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १०० वर्ष पूर्व कितनी कठिन तपस्या और व्यक्तिगत त्याग से गुरुकुल कागडी हरिद्वार की स्थापना की थी। इन कडे प्रयासो का ही यह फल था कि इस सस्था से निकले स्नातक देश देशान्तर म वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे नक्षत्रो की तरह चमकने लगे। परन्तु आज १०० वर्ष के बाद कुछ महानुभाव स्वामी जी की उस त्याग तपस्या का सही मूल्याकन नही कर पाए और अपने निजी स्वार्थो के वशीभूत जमीने बेचने जैसी घिनौनी कार्यवाही कर बैठे। आर्यजनता ऐसे कार्यो को कदापि बर्दाश्त नहीं करेगी।

कै० देवरत्न जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की छवि एक महान राष्ट्रनायक के रूप मे भी स्थापित है क्योकि वे राष्ट्र की प्रत्येक समस्या पर अपना गम्भीर चिन्तन और मार्गदर्शन प्रस्तुत करते थे।

प्रत्येक आर्य को राष्ट्रीय समस्याओ से स्वय को विमुख नहीं समझना चाहिए।

सभा प्रधान ने कहा कि शस्त्र शास्त्र और शुद्धि का मैं विशेषरूप से आह्वान करना चाहता हू। आर्यजनता शस्त्र के रूप मे नवयुवको को हर प्रकार के प्रशिक्षण के लिए प्रेरित करे। शास्त्र अर्थात स्वाध्याय प्रवचनो की पुरानी प्रवृत्ति को पुन जोश और उत्साह के साथ लागू किया जाए और शास्त्रार्थ परम्परा को भी पुनर्जीवित किया जाए। शुद्धि कार्यक्रमो को वैदिक धर्म मे वापसी या गृह वापसी के रूप मे प्रचारित और क्रियान्वित किया जाए।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार ने कहा कि जब तक हमारे शरीर मे दम है तब तक हमे बेदम नहीं होना चाहिए और हर्ष तथा उत्साह के साथ सामाजिक कार्य सम्पन्न करने चाहिए। भौतिकवादी लक्ष्य के साथ साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक लक्ष्य हासिल करने चाहिए।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादक
वेदव्रत शर्मा

गाय हमारे धर्म और संस्कृति की प्रतीक है
गोरक्षा से ही धर्म की रक्षा है

– रवीन्द्र कुमार

कैसी विडम्बना है कि आजादी के ५४ वर्ष बाद भी इस हिन्दू बहुल देश के हिन्दू भिखारियो की तरह अपनी ही सरकार से गऊ रक्षा की माग कर रहे है जेसे यह हमारा आस्था मूलक अधिकार न होकर सरकार के अनुग्रह का प्रश्न हो। इसका मुख्य कारण हमारी आस्था की अपेक्षा हमारे आचार की स्वार्थ परक स्थिति है जिस के कारण हम जिसकी पूजा करते है उसी का पराभव हो जाता है। हमारी धार्मिक सोच पर हावी पीढी–दर–पीढी पडा–पुरोहित वाद की नजर मे पूजा का अर्थ थाली मे रखकर दिया घुमाना और उन्हे जी खोल कर दान–दक्षिणा देना ही है। गोवश की दुरावस्था का भी एक मुख्य कारण – गो–सेवा को गो–पूजा का रूप देना ही है जिसके फलस्वरूप शहरो मे गूजर–ग्वाले गायो को पेट भर कर चारा खिलाने की बजाए उन्हे दुहने के बाद बाहर सडको पर खुला छोड देते हैं क्योकि वे जानते हैं कि गऊ भक्त हिन्दू उन्हे कुछ न कुछ खिलाते ही रहेगे और गऊ पूजक होने के कारण यदि कोई गाय सडक के बीचो बीच बैठ भी जाएगी तो उसे उठाने–भगाने की बजाए स्वय रास्ता काट कर निकल जाएगे। इसी मनोवृत्ति के फलस्वरूप गऊ वश भुखमरी और अवहेलना की दोहरी मार से प्रताडित निर्बल और निरीह हो रहा है। गऊ पूजा के दम्भ से ग्रस्त हम उनके मस्तक पर गेरू से श्री चिन्ह अकित करके या सडक पर आवारा घूमती हुई गाय को आटे का पेडा खिलाकर ही उनके प्रति दायित्व से मुक्त हो जाने का स्वाग मात्र करके हम यह भूल जाते हैं कि उन्हे पेट भर चारा भी चाहिए। किसी भी अन्य देश मे आप गऊओ को कूडे के ढेर मे भोजन ढूढ़ते नहीं पाएगे जबकि भारत जैसे गऊभक्त देश मे वे कूडा खा कर ही पेट भरती हैं क्योकि थाली म दिया रखकर उसकी पूजा करने वाले उसे पेट भर चारा नहीं खिला सकते। उनके रहने क स्थान को स्वच्छ रखने के झझट से बचने के लिए हम उन्हे सडको पर भटकने के लिए खुला छोड देते हैं। यदि हम सच्चे अर्थो मे गोभक्त हैं तो हमे गऊ पूजा का दम्भ त्याग कर गऊ सेवा का व्रत लेना होगा। उसकी जय बोलने की बजाए उसे पेट भर चारा देना होगा। उसकी पूछ पकडकर वैतरणी पार करने की बाते न करके उसकी सेवा और सवर्द्धन द्वारा धरती पर ही स्वर्ग लाना होगा। हमे अधिकारपूर्ण स्वर से कहना होगा कि गूजर–ग्वाले शहरो की सडको पर गऊओ को न छोडे उन्हे पेट भर चारा दे और उन के रहने के स्थान को साफ तथा स्वच्छ रखे तथा ऐसा न करने वालो को पौराणिक नरक यातना का भय न दिखा कर कानून द्वारा दण्ड दिलाने का प्रावधान करना होगा और यदि जरूरी हो तो उन्हे स्वय भी दण्ड देना होगा।

इससे बढकर हमे याद रखना चाहिए कि गाय हमारे धर्म और सस्कृति की प्रतीक है और प्रतीको को लाभ या उपयागिता की दृष्टि से नहीं आका जाता। अत गाय की सेवा केवल इसलिए करना कि उसका दूध अमृत तुल्य है या गोमूत्र कीटाणु नाशक है या उसके गोबर की खाद सर्वोत्तम जैविक खाद है आदि बाते न करके हमे सीधे गो रक्षा गोपालन और गोसेवा की बात करनी होगी। केवल तभी हम अपने आपको सच्चे अर्थो मे हिन्दू कह सकेगे क्योकि गाय गोविद का ही जीता जागता प्रतिरूप है उसकी पत्थर की प्रतिमा नही जिसे झूठ–मूठ का भोग लगाकर सारा भोजन पडे–पुरोहित स्वय आपस मे बाट लेते हैं। उसे तो पूरा भोजन चाहिए। गोविंद स्वरूप उसके जीते–जागते शरीर की सेवा हमे ऐसे ही करनी होगी जैसे हम अपनी मा की सेवा करते है क्योकि गाय मात्र एक पशु ही नहीं हमारे धर्म और सस्कृति की मातृरूप है। अत गोरक्षा के पक्ष मे हमे तर्क नहीं विश्वास से कहना होगा कि हम गो पूजक नही गोभक्त हैं। गाय हमारे लिए मात्र पशु न होकर मातृरूपा भगवती है और उस का निरादर अथवा हनन हमारे लिए असह्य है। गोरक्षा का आर्थिक पक्ष भी अपनी जगह सही हो सकता है किन्तु हिन्दुओ के लिए यह हमारे धर्म और सस्कृति की धुरी है जो सनातन धर्म के पाच मूलभूत आस्था स्तभो – गगा गायत्री गऊ गोविन्द और गीता का एक प्रमुख स्तम्भ है। अत गाय का निरादर या हनन हिन्दु धर्म एवम सस्कृति पर सीधा प्रहार है। इसीलिए गो रक्षा तर्क–वितर्क का नहीं हमारी आस्था का प्रश्न है। आश्चर्य है कि भारत जैसे हिन्दू बहुल देश म गोवध कैसे सहन किया जा रहा है। इसका उत्तर भी शायद हमे अपनी उसी विकृत सोच मे मिलेगा जो आज भी गाय को एक उपयोगी पशु ही मानती है धर्म और सस्कृति का प्रतीक नहीं। इसी सोच के कारण भूखी गऊए शहरो के कूडे मे भोजन ढूढती हैं और गर्मी हो या सर्दी दिन–रात सडको पर पडी रहती हैं। इसी सोच के कारण गोवध को बढावा मिलता है क्योकि कुछ लोगो के लिए उसके दूध और गोबर की अपेक्षा उसका मास और हाड–चाम अधिक मूल्यवान है। इसी सोच के कारण गूजर ग्वाले उन्हे सडको पर छोड देते है क्योकि इस तरह बिना उन्हे खिलाए और बिना उनकी देखभाल किए वे उन्हे दूध देती है। इसीलिए अब हमे गोरक्षा को एक उपयोगी पशु की रक्षा न मानकर मूर्तिमान धर्म और सस्कृति की रक्षा मानना होगा। केवल तभी हम उसकी रक्षा कर पाएगे अन्यथा गोरक्षा को राजनीति का मुद्दा बनाकर इसके पक्ष–विपक्ष के तर्को–वितर्को मे उलझे रहेगे।

याद रखिए गोरक्षार्थ प्राणोत्सर्ग के लिए तत्पर रहने वाले गोभक्तो की दृष्टि मे गाए एक पशु नही साक्षात मातृरूपा भगवती है जिसकी रक्षा के लिए समय–समय पर गो भक्तो ने प्राण न्योछावर किए है। गोरक्षार्थ शहीद होने वाले उन गोभक्तो के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम भी गोपूजा का दभ छोडकर गो सेवा का व्रत ले और मातृरूप भगवती गोमाता की रक्षा के लिए हर प्रकार से तत्पर रहे।

– ३६७ जागृति एन्क्लेव
विकास मार्ग दिल्ली–११००९२

महर्षि दयानन्द लिखते है
एक गाय के दूध से ३७४८००
मनुष्य तृप्त होते है। गोरक्षा और गोसवर्धन से शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति सम्भव है।

कटती गऊएं करें पुकार
बन्द करो यह अत्याचार

गाय बचेगी गाव बचेगा – नगा भूखा नही रहेगा
गो रक्षा मे सबकी रक्षा – गो हत्या मे सबकी हत्या
गाय कटेगी गाव मरेगा – भूखा हिन्दुस्तान रहेगा
कटती गऊए करे पुकार – बन्द करो यह अत्याचार
मानवता का करते हास – अडा मछली मदिरा मास

पृष्ठ १ का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व

वैदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन मे जनता से अपील करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जितने विशाल कार्य सम्पन्न किए उनकी तुलना मे क्या हम अपना एक भी कार्य प्रस्तुत कर सकते है। उन्होने कहा कि ऐसे महान सन्यासी के जीवन को देखकर हमे भी कुछ सकल्प करने चाहिए। इस अवसर पर शहीद मेजर डॉ० अश्वनी कुमार कण्व की स्मृति मे श्री श्रोत्रिय जी का नारियल शाल तथा सम्मान राशि आदि भेट करके विशेष स्वागत किया गया।

वैदिक विदुषी एव सगीताचार्या बहन उज्ज्वलावर्मा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द प्रत्येक साधारण से साधारण मनुष्य के लिए भी बहुत गम्भीर प्रेरणाए प्रस्तुत करते हैं।

इस समारोह मे आचार्य प० विशुद्धानन्द जी माता शकुन्तला आर्या आदि ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया। मच का सचालन डॉ० शिव कुमार शास्त्री ने किया। समारोह मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री राजसिह भल्ला श्री इन्द्रदेव पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य यशपाल जी स्वामी दिव्यानन्द जी स्वामी धर्ममुनि जी चौ० लक्ष्मीचन्द श्री पी० एन० आर्य श्री सत्यानन्द जी श्रीमती कृष्णा चडढा तथा रामनाथ सहगल आदि आर्यनेता भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज सी० ब्लॉक जनकपुरी की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन कार्यो पर चार विशेष ट्रैक्ट तथा एक १०० पृष्ठीय पुस्तक की हजारो प्रतिया नि शुल्क वितरित की गई।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व कीर्तिर्यस्य स जीवति

स्वामी श्रद्धानन्द का सर्वमेध यज्ञ

– प्राचार्य इन्द्र विद्यावाचस्पति

गताक से आगे

वर्षो तक लाहौर के वच्छोवाली आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर उनका व्याख्यान उत्सव का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय भाग माना जाता था। गुरुकुल के उत्सव पर उनके व्याख्यान के समय अधिक से अधिक भीड रहती थी और अधिक से अधिक सन्नाटा रहता था। सन्यास लेने के पश्चात जब वह राजनीति मे प्रविष्ट होकर सत्याग्रह आन्दोलन के अगुआ बने तब सब बडी सार्वजनिक सभाओ मे उनका बोलना आवश्यक था। जामा मस्जिद के मिम्बर पर हो या पीपल पार्क की व्याख्यान वदी पर हिन्दू मुसलमानो की सम्मिलित भीड उन्हे सुनने के लिए लालायित रहती थी। इससे यह तो स्पष्ट है कि वह वैसे ही वक्ता थे जिन्हे जनप्रिय वक्ता कहते हैं।

इस सम्बन्ध मे समालोचनात्मक दृष्टि से देखने वालो को आश्चर्य मे डालनेवाली बात यह थी कि जब वक्तृत्व के साधारण नपैने से उनकी भाषण शैली को नापा जाता था तब उसकी सफलता का रहस्य समझना कठिन हो जाता था। पिता जी की भाषण शैली की आलोचना करना मेरे छोटे मुह बडी बात ह परन्तु उस की सफलता का रहस्य जानने के लिए थोडा सा विश्लेषण आवश्यक है। यदि उनके किसी भाषण की शब्दश रिपोर्ट ली जाती और फिर केवल भाषण की दृष्टि से उसकी परीक्षा की जाती तो उस मे एक दोष प्रस्तुत होता था कि बहुत से वाक्य अधूरे रहते थे और कभी कभी एक वाक्य की सगति दूसरे से पूरी तरह नही मिलती थी। वक्तृत्वकला मे माने हुए विभावो और अनुभावो का उनके भाषणो मे सर्वथा अभाव रहता था। न कभी वे व्याख्यान को लिखते थे और न व्याख्यान वेदी के अनेक सिहो की तरह बडे आइने के सामने खडे हो कर हाथ आदि की चेष्टाओ का अभ्यास करते थे।

इन सब कला सम्बन्धी त्रुटियो के रहने पर भी यह असदिग्ध बात है कि वे जिस व्याख्यान वेदी पर खडे हो जाते उस पर अपना पूरा प्रभुत्व स्थापित कर लेते थे और जनता को अपनी भावना से प्रभावित कर देते थे।

पिता जी की इस सफलता का रहस्य क्या था ? इस प्रश्न का उत्तर सक्षेप मे यह है कि वे केवल तब बोलने के लिए खडे होते थे जब उनके अन्दर से कोई प्रेरणा उठती थी। श्रद्धा और गहरी धार्मिक भावना के कारण उनकी अन्तरिक प्रेरणा सदा गम्भीर और तेजस्विनी होती थी। केवल बोलने के लिए वे नहीं बोलते थे। उस गम्भीर और तेजस्विनी प्रेरणा से प्रेरित हो कर वे जो कुछ कहते थे वह श्रोताओ के हृदयो को चीरता हुआ चला जाता था। श्रोताओ का ध्यान न उनके वाक्यो के अधूरेपन पर होता था और न वक्तृत्व कला के दोषो पर। श्रोता केवल इतना अनुभव करते थे कि वे एक सच्चे हृदय की पुकार सुन रहे है ओर उससे प्रभावित हो जात थे। एक सफल रिपोर्टर ने यत्न किया कि पिता जी के कुछ बडे बडे व्याख्यानो की शब्दश रिपोर्ट को सग्रह रूप मे प्रकाशित करे वह यत्न बहुत ही भद्दा रहा। पढने से उन व्याख्यानो का महत्व समझ मे नही आ सकता था। वे केवल शब्द थे उन मे वह हृदय नही था जो केवल वक्ता की ध्वनि से प्रतिबिम्बित हो सकता है। इस मौलिक कारण के साथ ही पिता जी का विशाल शरीर भव्य मूर्ति और गम्भीर तथा ऊचा स्वर उन्हे जनता के हृदयो तक पहुचने मे सहायता देता था। जिस व्याख्यान की मैने इस अध्याय मे चर्चा की है वह उनके अत्यन्त प्रभावशाली व्याख्यानो मे से एक था। उस की सफलता का यह एक जबरदस्त प्रमाण था कि उस मे व्याख्यान वेदी पर बैठे हुए अनेक वकीलो की आखो मे आसू बह रहे थे। यह लगभग सर्वसम्मत बात है कि कानून का पेशा करने वाले लोग बुद्धिप्रधान होते हैं अत भावुकताहीन हो जाते हैं उन्हे पिघलाने के लिए बहुत ही असाधारण गर्मी की आवश्यकता होनी चाहिए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी

उस दिन के दानपत्र द्वारा जिस यज्ञ से पुर्णाहुति डाली गई उसका प्रारम्भ लगभग २० वर्ष पूर्व हो चुका था। जालन्धर मे वकालत आरम्भ करने और समाज मन्दिर के सामने वाली कोठी बनाने के मध्य मे लगभग २० साल व्यतीत हुए होगे उन्ही को वस्तुत पिता जी के सासारिक जीवन के वर्ष कहा जा सकता है। माता जी की मृत्यु से पूर्व ही वे आर्य समाज मे प्रवेश कर चुके थे। यह उनके स्वभाव की विशेषता थी कि वे किसी भी क्षेत्र मे आधा प्रवेश नहीं करते थे। आर्य समाज मे भी उन्होने जब प्रवेश किया तो शीघ्र ही तन्मय हो गए। सद्धर्म प्रचारक प्रेस और पत्र की स्थापना भी आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से ही की गई थी। शीघ्र ही उनका ध्यान वकालत की ओर से हट कर आर्य आर्यसमाज की दो पार्टियो के सघर्ष ने उन पर एक महात्मा या गुरुकुल पार्टी क नतृत्व का चोला डाल दिया जिससे उन का अधिक समय आर्यसमाज के लिए अर्पण होने लगा। कभी कभी तो आर्यसमाज के उत्सवो के कारण ने सप्ताहो ओर महिनो तक अदालत मे उपस्थित नही हो सकते थे। गाव जाकर अपनी जमीन की देखभाल करना भी इसी बीच मे छोड दिया था।

लाहौर मे कालेज पार्टी के सघर्ष का मुख्य परिणाम यह हुआ कि महात्मा पार्टी ने वेद प्रचार के कार्य को अपनाया ओर पूरे जोर से चलाया। सघर्ष मे स्वभावत गर्मी उत्पन्न होती है। उसी गर्मी ने महात्मा ने महात्मा पार्टी के कार्य कर्ताओ को असाधारण प्रेरणा दी जिससे आर्य समाजो का जाल पजाब के कोन कोने मे फैल गया।

पार्टी की दृष्टि से यह कार्य बहुत शानदार हुआ परन्तु पिता जी उतने से सतुष्ट नही हो सके। कालेज पार्टी पर महात्मा पार्टी का सब से बडा आक्षेप यह था कि कालेज मे प्रचलित पाठय प्रणाली ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित पाठय प्रणाली के विरुद्ध और अनार्ष है तो तुम आर्ष विधि चलाकर दिखाओ। इस चुनौती का जवाब पिता जी का गुरुकुल सम्बन्धी सकल्प था जिस की पूर्ति मे उन्होने अपने यौवन का उत्तर भाग और सम्पूर्ण प्रौढ भाग सर्वतोभाव से लगा दिया। वकालत तो तभी छूट गई जब पिता जी गुरुकुल के लिए ३०००० /– एकत्र करने की प्रतिज्ञा कर के घर से निकले जिसमे पातूर (अकोला) के ठा गोविन्दसिह जी मनसबदार ने अपने दोनो पुत्र धरमसिह व भीमसिह और १५०००/– रु० नगद दिये थे। जब वह हरिद्वार के समीप गगा के उस पार मुन्शी अमनसिह जी ने गुरुकुल के लिए अपना कागडी ग्राम दे दिया तब पिताजी ने घर भी छोड दिया और अपना बोरिया बिस्तर उठा कर गुरुकुल की भूमि मे आ गए। सद्धर्म प्रचारक प्रेस और पत्र जालन्धर वाली कोठी मे ही चलते रहे। हम दोनो भाइयो को पिता जी ने सब से प्रथम गुरुकुल के छात्रो की सूची मे अकित करा दिया था। इन दिनो सम्भवत ब्रह्मचारियो से १०रु० मासिक फीस ली जाती थी पीछे यह निरन्तर बढती गई। जब तक हम दोनो गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त करते रहे तब तक निरन्तर हमारी फीस दी जाती रही। पिता जी निजी खर्चभी गुरुकुल स नही लेत थ। यह सब राशि सद्धम प्रचारक की आय स की जाती थी। वर्षो स सधर्म प्रचारक जालन्धर से निकलता रहा परन्तु आखो से इतना दूर रहने के कारण पिता जी ने उसे हरिद्वार मगाकर चलाने का निश्चय किया। स्वर्गीय प केशवदेव शास्त्री की प्रबन्धकता मे पत्र हरिद्वार मे कुछ वर्ष तक चलता रहा परन्तु पूरी देखभाल न होने से वहा भी सन्तोश जनक प्रबन्ध नही हो सका फलत पिता जी को कुछ समय के लिए हरिद्वार जा कर रहना पडा। इसका असर गुरुकुल के प्रबन्ध पर पडा जिस से प्रभावित होकर पिता जी ने निश्चय किया कि प्रेस से भी मुक्ति पायी जाय और सम्पूर्ण सद्धर्म प्रचारक प्रस गुरुकुल को दे दिया। सद्धर्म प्रचारक प्रेस मे छपता था और उसकी छपाई गुरुकुल को दी जाती थी। गाव मे हवेली और जमीन के जो टुकडे थे वह इससे पूर्व ही सम्बन्धियो को दिये जा चुके थे प्रेस का दान देने के पश्चात कोठी के सिवा और कोई स्थिर सम्पत्ति पिता जी के पास शेष नहीं बची थी फलत कोठी के दान का सर्वमेघ यज्ञ की पूर्णाहुति कहे तो अत्युक्ति नहीं होगी। दान की घोषणा के पश्चात हितैषी लोग आसुओ से भरी हुई आखे दुख से लम्बायमान मुह लेकर पिता जी के पास गये परन्तु वहा देखा कि उनके मुह पर साधारण से अधिक सन्तोष और प्रसन्नता है। मानो एक भारी बोझ सिर पर से उतर गया हो। जो लोग सहानुभूति प्रकट करने गये थे उनका साहस न हुआ कि कुछ कहे उल्टा मन पर असर पडा कि शायद मकान के बोझ से ही महात्मा जी की सेहत खराब रहती थी जो बोझ उतर जाने से अच्छी हो जाएगी।

कुछ महानुभावो ने हम भाइयो पर करुणा भरी दृष्टि डालने की कृपा की। हम से मिले और कहा कि महात्मा जी ने यह बहुत बुरा किया। यदि तुम लोग उज्रदारी करो तो दान–पत्र रद्द हो सकता है। पाठको को जानकर यह आश्चर्य होगा कि ऐसा कोइ प्रोत्सहन उन्हे नहीं मिला तो उन्होने यही परिणाम निकाला होगा कि हम तो पहले ही जानते थ कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी बुद्धू होते है अपनी भलाई बुराई को नहीं समझते। ✿
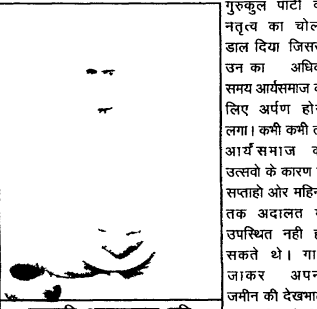
अग्ने नय सुपथा

– डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री

मनुष्य का जीवन ज्ञानमय एव तपामय है। लकिन मनुष्य अपने जीवन को ज्ञानमय एव तपोमय बनाना नहीं चाहता है। इसका जीवन अमूल्य है। इसका जीवन ज्ञानरूपी मोतियो का भण्डार हे। मनुष्य के जीवन म अनन्त ज्ञान है। मनुष्य अपनी सदबुद्धि के द्वारा अधिक से अधिक ज्ञानाजन कर सकता है। परन्तु यह इसे ढूढ नही पा रहा है। इस कौन ढूढ सकता है इसे ढूढने के लिए कवल मनुष्य मे ही एसी शक्ति है। ज्ञानरूपी मोतियो का केवल मनुष्य ही ढूढ सकता है। मनुष्य से पूछने पर वह बतलाता है कि इन मातियो का
ढूढन क लिए हमारे पास समय नही है। ससार का अधिकाश मानव अपने जीवन के लक्ष्य को भूला बैठा हे। वह केवल खाने पीन ओर सोने मे ही मस्त हे। मोतिया को तो वही व्यक्ति ढूढ सकता हे जो गहर समुद्र मे गाता लगान की हिम्मत रखता हो। जिसक पास हिम्मत ही नही है। वह अपन जीवन म क्या कर सकता हे। कुछ भी नही। मानव अपन लक्ष्य से भटक गया है। वह भग विलास को ही वास्तविक जीवन मान बठा हे। भोग विलास काइ जीवन नहीं हे। भोग विलास ता केवल सतानात्पत्ति क लिए ह। अधिकाश लोग भोग विलास मे ही लिप्त हे। आनन्द की कस्तूरी र ड ह। मनुष्य भोग विलास रसव

[illegible]

आराम की तुम भूल भूलेया मे न झूलो।
सपनो के हिलोरे पे मग्न होके न झूलो।।
अब वक्त आ गया है मेरे हसते हुए फूलो।
उठो छलाग मारकर आकाश को छू लो।।

कवि के कहन का आशय यह है कि हे मानव अब तुम्हारे पास आराम करने का समय नही है। तुम आराम का हराम समझकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करो। जिस प्रकार से काटो के बीच रहता हुआ गुलाब का फूल हमेशा मुस्कुराता रहता है। उसी प्रकार तुम भी सर्वदा मुस्कुराना सीखो। यदि तुम्हारे सामने तूफान भी आ जाए पर्वत भी आ जाए तो उसे देखकर डरना मत। हिम्मत बाधकर तुम पर्वतो को लाघ जाना सागर को पार कर जाना। लेकिन अपने कदम को पीछे हटाना मत। आगे बढने वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है और पीछे हटने वाला व्यक्ति निन्दा का पात्र बनता है। ओ ससार के आदर्श पुरुषो। तुम शेर हो शेर किसी के सामने झुकना नही जानता है शेर बनकर गीदड बन जाना यह तुम्हारी कायरता है। मनुष्य का जीवन जन्म से मृत्यु पर्यन्त सघर्ष से जुडा रहता है फिर इस सघर्ष से तुम क्यो डरते हो। सघर्ष से मुकाबला करो। एक समय आएगा सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी। मनुष्य जब तक जीवित रहता है तब तक इसका जीवन सघर्ष रूपी काटो से भरा रहता है। हमारे सामने अनेको मुसीबते आई। कितने लोगो ने मुझे धोखा दिया। एक विद्यालय मे मैने आठ वर्षो तक अध्यापन कार्य किया। पूरा समय दिया। धोखा मिला। परन्त अन्त मे मेरे लिए इसका क्या निष्कर्ष निकला। खोदा पहाड निकली चूहिया। एक मित्र ने इतना बडा झटका दिया एव धोखा दिया। मैंने उस पर पूर्ण विश्वास किया था। किन्तु वह धोखेबाज निकला। मैंने सोचा किस पर विश्वास किया जाए। वास्तव म सम्प्रति अधिकाश मित्र मतलवी होत हे।

किसी कवि ने ठीक कहा है –

हाल किसको सुनाए हम अपना
जख्म सीने पे खाए हुए है।
गैरो से करे क्या हम शिकवा
दोस्तो से सताए हुए है।।
कौन है अपना कौन है दुश्मन।
आज पहचानना भी है मुश्किल
प्रेम से बाते करते है मुख से
दिल के अन्दर भरा है हलाहल।।
दोस्ती का हाथ आगे बढाकर
पीछे खजर छिपाए हुए है।।
हाल किसको सुनाए हम अपना
जख्म सीने पर खाए हुए है।।

सम्प्रति किस पर विश्वास किया जाए। अधिकतर धोखेवाज ही मिलते हे। हे मनुष्य। चाहे तुझे धोखा मिले। या काइ वदनाम भी कर दे। उससे मत डरना ओर लक्ष्य की ओर बढते रहना किसी बाधा से मत डरना। ससार के लोगो बाधाओ से मुकाबला करना सीखो। यदि कोई व्यक्ति तुझ धाखा देता है तो उसे दने दो। समझो वह मर साथ नही बल्कि स्वय के साथ धाखा द रहा है। मनुष्य का जीवन हमेशा काटो स भरा रहता है। इन काटो को देखकर मत डरो। अपने पेरो एव हाथो से इन काटो को मसल एव तोड डालो। पत्थरो को अपनी मेहनत से मोम बना डालो। रास्ते मे यदि पहाड मिले तो अपने परिश्रम स उसी भी काट डाला। ऐसा मत समझो कि यह पहाड हम से मजबूत और बडा है। वह तो तुमसे भी कमजोर है। वह छोटा सा पत्थर है। जिसे तुम अपने पैरा से मसल सकते हो। उसे अपनी मेहनत से चकनाचूर कर सकते हो। परन्तु तुम उसे देखकर डर जाते हो। यह कार्य मुझसे नहीं हो सकेगा। क्यो नहीं हो सकेगा। सब कुछ हो जाएगा। पर सर पर हाथ रखने से कुछ नहीं होगा। पहले सघर्ष करो। फिर बाद मे देखो जीवन का लक्ष्य पूरा हो पाता है कि नहीं।

देखकर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना हो कठिन पर उकताते नहीं
भीड में चचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।

अर्थात परिश्रम करने वाला ही व्यक्ति किन्हीं बाधाओ को देखकर घबराता नहीं है। वह हिम्मत से कार्य करता है। हिम्मती व्यक्ति ही अपने उद्देश्यो को पूर्ण करने मे समर्थ हो जाता है। फूलो के रास्तो पर चलना आसान है। परन्तु काटो के रास्तो पर चलना इतना आसान नहीं है। जितना कि लोग समझ लेते हैं। कुमार्ग पर चलना आसान है। सुमार्ग पर चलना आसान नहीं है। बुराईयो को अपनाना आसान है। अच्छाईयो का अपनाना आसान नहीं है। शैतान बनना आसान है। इन्सान बनना आसान नहीं। सभी लोग आदर्श मानव बनना चाहते है। मानव बन जाना आसान है। आदर्श मानव बनना आसान नही। सभी लोग आदर्श मानव बनना चाहते हैं। समाज मे सम्मान पाना चाहते हे। दुनिया म कीर्ति कमाना चाहते है। लेकिन सुपथ पर चलना कोई नही चाहते है। विरले ही लोग होते है जो सन्मार्ग को अपनाते है। सघर्ष करना कोई नही चाहते है। बिना परिश्रम के ही लोग प्रत्येक वस्तुओ को पाना चाहते है। बिना हाथ से उठाए समझो मेरे मुख मे रोटी चली जाए तो क्या एसा सम्भव हा सकता है। कदापि नही। रोटी के लिए किसान कितना परिश्रम करता है। उसे तुम जानते ही हो। समाज मे प्रतिष्ठा पाने के लिए तुझे चरित्रवान बनना आवश्यक होगा। समाज क हितार्थ कुछ काम करना होगा। समाज को ऊपर उठाने के लिए भूखा प्यासा काम करना पडगा। समाज मे सम्मान पाने के लिए चरित्र को मजबूत बनाना पडगा। तुम्हे गालिया सुननी पडेगी। कभी–कभी मार भी खानी पडगी। तव कही समाज मे तुम्हारे को कुछ सम्मान मिल सकता है। उसमे भी अपमान को सहन करना पडेगा। समाज मे काम करने वालो को सम्मान कम और अपमान ज्यादा मिलना है। समाज म काम करन वाला को चाहिए कि वह समाज म प्रतिष्ठा पाने के लालच म काम न कर। वल्कि समाज के हिताथ काम कर। इसके लिए उन्हे अपमान भी सहन पडेगा। अनेक नौजवान शहीद हो गए। अनक मा बहनो ने अपनी माग की सिन्दूर मिटा दी। अनेक मा–बहनो की गोद सूनी हो गई। देश के लिए शहीद हो जाना स्वग से भी बढकर है। सस्कृत की एक सूक्ति हे। जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी अर्थात जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढकर होती है। जो व्यक्ति और जन्म भूमि की रक्षार्थ स्वय को बलिदान कर दिया। समझो वह स्वर्ग से भी ऊपर चला गया। देश को आजाद करना एक महान कार्य था। जिसको शहीदो ने पूरा किया। सुकार्य करने मे एव सुपथ पर चलने के लिए मनुष्य को बहुत सघर्ष करना पडता है। जो व्यक्ति सघर्षो को देखकर डर जाते है। वे अपने जीवन मे कुछ नहीं कर सकते हैं। सघर्षो से न डरने वाले व्यक्ति ही अपने जीवन मे कुछ कर सकते है। सुपथ पर चलने वालो के साथ बाधाए तो आती ही है। लेकिन अन्त मे सफलता इन्हीं को ही मिलती है।

वेद मे एक बडा प्यारा मन्त्र है –

ओ३म। अग्नेनय सुपथा रायेऽस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम

अर्थात । ओ३म। हे अग्निदेव। आप प्रकाशमान एव ज्ञानमय है। आप हमे ज्ञानमय धर्ममय सन्मार्ग पर ले चलिए। ताकि हमसे कुटिलता युक्त पापरूप कर्म दूर हो। इसी कारण से हम आपकी अनेक प्रकार की स्तुति एव प्रशसा हमेशा करते रहे। इस मन्त्र मे अग्ने नय सुपथा बहुत महत्त्वपूर्ण पक्ति है। इसमें मनुष्य परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे अग्निदेव। आप स्वत प्रकाशमान है। आप हमे सुपथ पर अर्थात अच्छ मार्ग पर ले चले। लेकिन कुछ लोग केवल प्राथना तक ही सीमित रह जाते हैं।

किसी ने ठीक कहा है – जो व्यक्ति जैसा सोचता है और करता है वह वैसा ही बन जाता है। हे ससार के लोगा। यदि आप सन्मार्ग पर चलना चाहते हैं तो इसके लिए आप को अपने नियम पर अटल रहना पडेगा। केवल ईश्वर से प्रार्थना करने से ही नही बल्कि उसमे अच्छे गुण अपनाने से ही प्रार्थना की सार्थकता सिद्ध हो सकती हे। सुपथा अथवा अच्छे मार्ग पर आपको चलकर (देखना भी हागा) इसी मे आपका हित हो सकता हे। हमारा मुह मीठा हो जाए। केवल कहने से कुछ नहीं हा सकता। इसके लिए आपको दुकान स रसगुल्ला बर्फी जलेवी आदि मिठाइया खरीदकर अपन हाथो से मुह तक ल जाना पडेगा। तभी तुम्हारा मुह मीठा हो सकता हे। सुपथ पर चलने के लिए तुझे वैसा करके दिखाना होगा। वेदानुकूल आचरण बनाना पडेगा। वेदानुकूल आचरण करने वाला व्यक्ति ही सुपथ पर चल सकता हे। ईश्वर की उपासना करते हुए अच्छाई और बुराई को साचत हुए सत्य आर असत्य की परख करत हुए जा अन्त म सही पथ का निर्णय लते है। वही व्यक्ति सुपथ पर चलने मे समर्थ हो सकता हे सुपथ पर चलने वालो की भावना मे हमेशा उदात्त होना चाहिए। तभी वह व्यक्ति समाज के लिए कुछ करने मे समर्थ हो पाता है। किसी कवि ने कहा है –

सब वेद पढे सुविचार बढे बल पाय चढे नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहे ऋजू पथ गहे परिवार कहे वसुधा भर को।
धर्म घटे पर दु ख हरे तन त्याग करे भय सामर बने।
हे प्रभो । हम तुमसे वर पावे सकल जगत को आर्य बनाए।
फले फूले सुख सम्पत्ति फैलावे आप बढे प्रिय राष्ट्र बढावे।
वैर विघ्न को मार मिटावे प्रीति नीति की रीति चलावे।
हे प्रभो । हम तुमसे वर पावे सकल जगत को आर्य बनावे।।

यह सम्पूर्ण ससार अपना है। यहा न कोई अपना है न कोई पराया है। समझो तो सभी अपने हैं। मरने के समय कोई किसी के साथ नहीं जाता है। सभी अकेले आए है और सभी अकेले ही चले जाएगे। सभी लोग सुख से जीए। इस प्रकार की भावनाए प्रत्येक लोगो के हृदय मे होना चाहिए। वेदो मे एक मन्त्र आया है।

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद दुखभाग्भवेत।।
हे नाथ सब सुखी हो कोई न हो दु खारी।
सब हो निरोग भगवन धन धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें सन्मार्ग के पथिक हो।
दु खिया न कोई होवे सृष्टि मे प्राणधारी।

इस प्रकार की भावना वाले व्यक्तियो के लिए ही अग्ने नय सुपथा चरितार्थ सिद्ध हो सकेगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन एवं शान्ति का मूल मंत्र धर्मदण्ड

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

किसी भी व्यक्ति परिवार स्थान समाज एव राष्ट्र को शान्त एव सुरक्षित रखने का मूल उपाय धर्मदण्ड है। धर्म से अभिप्राय ज्ञानपूर्वक कर्तव्यकर्म एव दण्ड से अभिप्राय सुरक्षा के साधन हैं। एक अल्पमति व्यक्ति भी जब किसी कार्य को सिद्ध करना चाहता है तो वह उसके करने की विधि जानने का प्रयास करता है। जितना कार्य वह सम्पन्न कर चुका होता है उसे वह सुरक्षित रखने के साधन अपनाता है। एक छोटे से छोटा बालक भी किसी इच्छित वस्तु की प्राप्ति हेतु पूर्ण ध्यान देता है और जब प्रयास करने से वह वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है तब वह उस वस्तु को अपनी पूर्ण शक्ति से मुटठी मे बन्द कर लता है। तब यदि कोइ उससे अधिक बलवान व्यक्ति भी उससे उस वस्तु को छीनने का प्रयास करता है तो वह उसे सहजतया छोडता नहीं और यदि फिर भी कोइ उससे छीनने का प्रयास करे तो वह अवश्य ही अपने दातो से काट देता है। यही जीवन को सुखी बनाने का मूल मन्त्र है कि पहले हम कर्तव्यकर्म की ओर पूर्ण ध्यान दे पश्चात कार्यसिद्ध हो जान पर उसकी सुरक्षा हेतु पूण बल लगा द। इसी बात को परम पिता परमात्मा ने मानवधर्म वेद मे – "यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सन्यञ्चौ चरत सह त लोक पुण्य प्रज्ञेषम" कहा है। अर्थात वही स्थान पुण्य लोक (निर्भयता शान्ति एव सुखयुक्त) हो सकता है जहा के लोग कर्तव्यकर्म का पूर्ण ज्ञान रखते हो और उसकी सुरक्षा हेतु उग्र दण्ड की व्यवस्था करते हो।

सुख का यह मूल सूत्र प्रभु की सम्पूर्ण सृष्टि मे व्याप्त है। परमपिता परमात्मा प्रत्येक प्राणी को उत्पन्न करके जहा उसे जीवन यापन हेतु सामान्य ज्ञान दिया वहा उसे जीवन की सुरक्षा हेतु कठोर एव तीक्ष्ण अग भी प्रदान किए। ससार मे दृष्टिगोचर एक छोटी से छोटी चीटी भी जब कभी हमारे अज्ञान के कारण दब जाती है तो वह भी स्वय को बचाने के लिए हमे काटती है। प्राय ससार के सभी प्राणियो को परमात्मा ने अपनी सुरक्षा के लिए इसी प्रकार के साधन प्रदान किए हैं। किसी को डक तो किसी को नाखून किसी को सींग तो किसी को दात किसी को तीक्ष्ण पजे तो किसी को शूल के समान चुभने वाले बाल। कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य के बालक से लेकर ससार के प्रत्येक बडे से बडे सिह और हाथी तक को भी परमात्मा ने अपनी सुरक्षा हेतु दण्ड प्रदान किया है।

इसमे दो मत नहीं कि दण्ड के बिना ससार का कोई औचित्य नहीं। यदि दण्ड को निकाल दे तो सारी धरा धराशायी हो जाती है। लगभग प्रत्येक प्राणी को मिला मेरुदण्ड इसी बात का सूचक है। यदि जीना है तो दण्ड को सुरक्षित रखे। अन्यथा जेसे मेरुदण्ड के टूटने से जीवन मृत्युवत हो जाता है ठीक वैसे ही परिवार समाज एव राष्ट्र स दण्ड विधान के छूट जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है। दण्ड के भय के बिना भय का ताण्डव नृत्य उददण्डता अनुशासनहीनता दु ख एव अशान्ति आदि अपने पजे जमा देते हैं। क्योकि कर्तव्य न निभाने पर किसी को दण्ड का भय नही अथवा क्षमा मिल जाने की पूर्ण आशा है। अत सम्पूर्ण व्यवस्था भग हो जाती है। व्यक्ति उच्छृखल होकर सब धर्म कर्म को ताक पर रख देता है। जगल राज्य की स्थापना हो जाती है। यदि परिवार मे बच्चो को माता पिता के दण्ड का भय नही होता तो वे बच्चे कर्तव्यहीन असभ्य पढाई लिखाई मे रूचि न लेकर समाज मे अनुशासनहीनता को जन्म देत हे। बाल्यकाल स ही एस सस्कारहीन व्यक्ति आगे चलकर भी राष्ट्र के पतन का ही कारण बनते है। यही स्थिति दण्ड के बिना विद्यालयो एव महाविद्यालयो मे वर्तमान के अधिकाश छात्र छात्राओ की है। मैने एक विद्यालय मे प्रवचन करते हुए बच्चो से पूछा – "आजकल के विद्यार्थियो द्वारा नकल करना विद्यालयो से भागना अध्यापको का अपमान करना आज्ञा का उल्लघन करना आदि अनिष्ट कार्य क्या पहले अधिक होते थे अथवा अब अधिक होते हैं ? उत्तर मिला कि अब अधिक होते है। तब मैने पुन प्रश्न किया कि विद्यार्थियो को अध्यापको के द्वारा दण्ड मार पिटाई और डाट पहले अधिक मिलते थे या अब ? तो उत्तर मिला कि पहले। तब मैने उन्हे कहा कि यदि आप पहले के समान अच्छे विद्यार्थी बनना चाहते हैं तो आज से प्रसन्नतापूर्वक गुरुजनो से दण्ड लेना स्वीकार करो क्योकि जब दण्ड दिया जाता था तब विद्यालयो का वातावरण अच्छा था। अब दण्ड के अभाव मे विद्यालयो का वातावरण अत्यन्त उच्छृखलतायुक्त होता जा रहा है। न तो विद्यार्थियो को अध्यापको का और न ही माता पिता का भय है। दूसरी ओर अध्यापको को भी न तो अपने धर्म का भय है और न अपने अनुशासको का। अत जहा आजकल के विद्यार्थी परिश्रम के बिना केवल नकल से पास होना चाहते है वहा अध्यापक भी पढाने का पुरुषार्थ न करके केवल टयूशन से ही पास करवाना चाहते है क्योकि किसी को किसी प्रकार के दण्ड का भय नहीं है।

पाठकवृन्द ! राष्ट्र की ध्वजा का गौरवमय आधार दण्ड ही है। ध्वजा मे से दण्ड निकाल देने पर ध्वजा का कोई मूल्य नहीं रहता। कठोरता के बिना जीवन का कोई मूल्य नही। विनम्रता भी तभी पूजी जाती है जब वह किसी बलवान व्यक्ति से प्रस्फुटित होती है। कुत्ता पैर चाट जाए तो कोई मूल्य नही रखता।

लगभग प्रत्येक प्राणी को मिला मेरुदण्ड इसी बात का सूचक है। यदि जीना है तो दण्ड को सुरक्षित रखे। अन्यथा जैसे मेरुदण्ड के टूटने से जीवन मृत्युवत हो जाता है ठीक वैसे ही परिवार समाज एव राष्ट्र से दण्ड विधान के छूट जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है। दण्ड के भय के बिना भय का ताण्डव नृत्य उद्दण्डता अनुशासनहीनता दु ख एव अशान्ति आदि अपने पजे जमा देते है। क्योकि कर्तव्य न निभाने पर किसी को दण्ड का भय नहीं अथवा क्षमा मिल जाने की पूर्ण आशा है। अत सम्पूर्ण व्यवस्था भग हो जाती है। व्यक्ति उच्छृखल होकर सब धर्म कर्म को ताक पर रख देता है। जगल राज्य की स्थापना हो जाती है।

मूल्य तो तब आका जाता है जब किसी सिह ने विनम्रता से किसी साधु का पैर चाट लिया हो। अत वेद का ज्ञान भी अग्नि की उग्रता से प्रारम्भ होता है। ओ३म अग्नि मीळे पुरोहितम"। मानव शरीर का मूल्य हडडी के बिना कुछ भी नहीं। एक मास का लोथडा ससार मे कुछ नही कर सकता। सम्मान को दिलाने वाला यह शिर भगवान ने बहुत कठोर बनाया ह। शिर की खापडी सकडो किलो भार उठा लेती है। इतने पर भी यदि कोई आक्रमण करन का प्रयास करता है तो क्षात्ररूपी दोनो भुजाए सहजतया ऊपर उठ जाती है। सिर की सुरक्षा हेतु ऐसा करना कभी किसी को सिखाया नही गया। अत यदि राष्ट्र के गौरव धर्म स्वातन्त्र्य अनुशासन एव शील को बचाकर शिर को ऊपर उठाकर सम्मान से जीना चाहते हो तो दण्ड को उठाओ। सज्जनवृन्द। वस्तु की प्राप्ति करना सुख का साधन है जबकि हम उसे सुरक्षित भी रख सके। कुछ बलिदानी महर्षि दयानन्द के दीवाने वीरो से हमे स्वतन्त्रता तो मिली पर खेद का विषय है हम उसे उचित दण्ड विधान के बिना सुरक्षित न रख सके। एक भोले से भोला किसान भी जब अन्न उगाने की बात सोचता है तो खेत मे बीज डालने से पूर्व उसकी बाड की पहले व्यवस्था करता है। इसीलिए परमात्मा ने मानवधर्म वेद को ऋग रूपी ज्ञान से प्रारम्भ किया और उसके गर्भ मे श्रेष्ठ कर्म एव उपासना की सुरक्षा हेतु उसे अथर्व पर पूर्ण किया। अथर्व का अर्थ ही निश्चित सुरक्षा है। अत यदि आज व्यक्तिगत जीवन को परिवारो को ग्राम को प्रान्तो को अथवा समूचे राष्ट्र को भय अशान्ति और हलचल से मुक्त करना है तो अथर्वरूपी दण्ड को लाना होगा।

अथर्ववेद मे अनेक मन्त्र क्षात्रधर्म की व्यवस्था को दर्शाते हैं। वहा किसी व्यक्ति विशेष को शत्रु न कहकर उन लोगो को शत्रु कहा गया है जो धर्म के हत्यारे है। चाहे वह कोई भी हो। मानवता नारी गौ एव राष्ट्र की सीमाओ की अवहेलना करने वाला व्यक्ति धार्मिक दृष्टि से दण्ड योग्य शत्रु है। ऐसे व्यक्ति पर कभी भी कही भी किसी प्रकार से दया नहीं करनी चाहिए। इसलिए वेद का यह आदश है – "मा नो दु शस ईशत"। अर्थात ऐसे दुष्ट को कभी अपना शासक मत होने दो। "अपहनन्तोऽराव्ण" अर्थात राष्ट्र के ऐश्वर्य मे बाधक जनता का खून चूसने वाले शोषक को समाप्त कर दो। "यदि गो हिसी" यदि कोई गाय की हत्या करता है तो उस गोघातक को गाली से उडा दो। अन्यत्र भी कहा गया है – "राष्ट्रद्रोही शत्रुओ को पुरानी गन्दी रजाई के समान उधेड कर रख दो। उन्हे काट काट कर इस तरह लाशे बिछाओ कि कुत्ते उन्हे फाड फाड कर खा जाए। कहने का अभिप्राय यह है कि ससार का प्रथम मानवधर्म वेदज्ञान स्पष्ट कर रहा है कि यदि सुख शान्ति चाहिए तो शत्रु के लिए दण्ड उग्र होना चाहिए।

विश्व के प्रथम सविधान निर्माता न्यायविदो मे सर्वत्र पूज्य महर्षि मनु वेद का ही अनुकरण करते हुए अपनी प्रसिद्ध कृति मनुस्मृति मे कहते है – नाततायी वधे दोष। अर्थात देश धर्म शील व सस्कृति की हिसा करने वाले को मारने मे कोई पाप नही। अपितु ऐसा व्यक्ति दो प्रकार के पुण्य का भागीदार है। एक तो वह दुष्ट को दण्ड देकर समाज अथवा राष्ट्र को कष्ट से बचाता है और दूसरे उस व्यक्ति का शरीर आत्मा से पृथक करके उसे और अधिक होने वाले पापो से बचाता है। अत जो लोग देशद्रोहियो को मृत्युदण्ड देना उचित नहीं समझते वे उपरोक्त इस सिद्धान्त को समझने का कष्ट करे। वेद एव शास्त्र मे पूर्ण ज्ञान देने पर भी यदि कोई व्यक्ति अपने कर्तव्यकर्म से विमुख होता है तो उसे कठोर दण्ड देने का विधान है। क्योकि सामान्य दण्ड तो पाप की वृति को और ही बढाता है। यदि दण्ड थोडा मिले तो प्रत्येक व्यक्ति यह सोच लेता है कुछ फर्क नहीं पडेगा। अत वह पापकर्म से रुकता नही है। ऐसा होने पर अनेक व्यक्ति थोडे दण्ड से भयभीत न होने के कारण पाप मे प्रवृत्त होने लगेगे। इसीलिए महर्षि दयानन्द स्वरचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं – दण्ड तो कठोर ही होना चाहिए। यदि दण्ड कठोर होगा तो उससे जनता भयभीत होकर पाप करने से बचेगी। इस प्रकार से अधिक लोगो को दण्ड भी नहीं मिलेगा जिससे दण्ड की कुल मात्रा भी कम होगी। अत मनु महाराज कहते हैं – चोरी करने वाले के हाथ काट दो। दुष्ट कर्म करने वाले की आख निकाल दो। व्यभिचारी पुरुष को गर्म गर्म विशाल तवे पर डालकर मार दो। व्यभिचारिणी स्त्री को कुत्तो से नुचवाकर मरवा दो। यह दण्ड दुष्टो को सार्वजनिक स्थान पर दिया जाए जिससे की अधिकाधिक लोग देखकर शिक्षा ग्रहण करे और भय के कारण स्वप्न मे भी कभी पाप करने का विचार न करे।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

पृष्ठ ७ का शेष भाग राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन ....

आर्यावर्त (भारत) जो कभी सोने की चिडिया विश्व गुरु और चक्रवर्ती सम्राट कहाता था जिसकी सीमाए कभी अफ्रीका तक फैली थी। पाकस्थान नेपाल वर्मा भूटान बाग्लादेश आदि जिसके अन्तर्गत थे विश्व म उसकी पूजा सुरक्षा और सम्मान का कारण यही दण्ड था। इसी कठोर दण्ड के कारण लोग धार्मिक थे। सम्पूर्ण राष्ट्र मे प्राय कहीं भी मास अण्डा शराव जुए के स्थान या वेश्यालय नही थे। दश मे कोई रिश्वतखोर नही था। कोई व्यभिचारी कजुस और शोषक नही था। कही चोरी नही होती थी। अत घरो मे कही ताला नहीं दीखता था। यह सब कुछ दण्ड के ही कारण था। धर्ममय जीवन का आधार दण्ड ही था। दण्ड की निष्पक्ष व्यवस्था और क्षमा की कोई आशा न होने से ही लोग धर्म पर आरुढ रहते थे। इसीलिए मनु महाराज कहते है — दण्ड धर्म विदुर्बुधा। अर्थात न्याययुक्त दण्ड ही का नाम राजा और धर्म है यदि दण्ड नहीं तो राजा का कोई औचित्य नहीं। यदि दण्ड नहीं तो धर्म का भी कोई आधार नहीं।

प्रबुद्ध पाठक यह भलीभाति जानते हैं कि विश्व के उस राष्ट्र मे न्यून अपराध होते हैं — जहा दण्ड कठोरतम है। जैसे कि सऊदी अरब आदि। अमेरिका का राष्ट्रपति जब सऊदी अरब के सम्राट से मिला तो उसने वहा की शासन व्यवस्था की जानकारी ली। जब अपराधविषयक चर्चा चली तो वह यह जानकर आश्चयचकित हुआ आखिर इस देश मे कम अपराध होने का कारण क्या है ? सम्राट ने उसे बताया कि हम चोरो के हाथ काट देते हैं। गद्दारो के गले काट देते है। पापी अपराधियो को जमीन मे गाडकर पत्थरो से मार देते हैं पर दूसरी ओर विश्व के धनाढय और महाप्रबुद्ध देश अमेरिका मे प्रत्येक मिनट मे अनेकों चोरिया बलात्कार एव हत्याए जैसे अपराध होते हैं। क्योकि वहा दण्ड अल्प होता है। बताया जाता है कि बगदाद मे बहुत शराब पी जाती थी। वहा के सम्राट ने घोषणा की कि शराब पीने वाले को कोडो से पीट पीट कर मौत के घाट उतार दिया जाएगा। कुछ शराबियो ने इस राजनियम को ढीला करने के लिए सम्राट के पुत्र को शराब पिला दी। जब सम्राट को ज्ञात हुआ तो उसने बिना किसी ननुनच के सामान्य जनता की अपेक्षा अपने पुत्रको दुगने कोडे मारकर मौत के घाट स्वय अपने हाथो से ही उतार दिया। इस घटना को देखकर एव सुनकर सारे शराबी बगदाद से भाग गये और बगदाद सदा के लिए शराब से मुक्त हो गया।

पाठकवृन्द ! यह विधान हमारे ही देश की वैदिक सस्कृति से गया है। हमारे यहा दण्ड धर्म का सम्मान न होकर राष्ट्र धर्म की हत्या हुई पर उन्होने इसे अपनाकर अपने राष्ट्र की उन्नति की। देव दयानन्द एक महाराज भरत की कथा लिखते हैं कि जिसने स्वय अपने हाथो से अपने अनुशासनहीन पुत्र का सार्वजनिकरूपेण वध कर दिया था। क्योकि वह किसी की शिक्षा को मानने के लिए तैयार नहीं था। इसी प्रकार के न्यायप्रिय एव धर्मदण्डप्रिय शासको के कारण ही भारत सोने की चिडिया एव विश्व पूज्य बना था। यदि आज पुन वैदिक धर्मानुसार महर्षि मनु एव दयानन्द की बात को मानकर सर्वप्रथम सामान्य जनो की अपेक्षा विशिष्ट अधिकारियो को हजार गुना अधिक दण्ड दिया जाए तो सामान्य जनता स्वत ही अपराधवृत्ति छोड दे। यदि देश के चुने हुए स्मगलरो रिश्वतखोरो घोटालेबाजो मिलावट खोरो और गोहत्यारो तथा गद्दारो को दूरदर्शन आकाशवाणी एव समाचार पत्रो द्वारा पूर्व सूचना देकर २५ अगस्त एव २६ जनवरी के दिन लालाकिले तथा भारत द्वार (इण्डिया गेट) जैसे सार्वजनिक स्थानो पर कोडे मार मार कर अथवा कुत्तो से नुचवाकर मार दिया जाए तो सम्भवत भारत पुन सोने की चिडिया और विश्ववन्दनीय राष्ट्र बन सके। इसमे दो मत नहीं कि उसी घर उसी सस्था उसी ग्राम अथवा उसी राष्ट्र मे बाहर से अधिक आक्रमण होते है जिसके लोग कमजोर दण्डहीन अथवा तथाकथित अहिसा की भावना से क्षमा करने की मूर्खता करते हैं। क्योकि अहिसा का अर्थ वैदिक शास्त्रो मे कही भी न मारना नही है और न ही न मारना अर्थात शत्रु अपराधी को छोड देना पुण्य ही है। यदि कोई न्यायाधीश कई व्यक्तियो के हत्यारे व्यक्ति को मृत्युदण्ड देने की अपेक्षा छोड देता है तो जनता उसे पापी घूसखोर और अन्यायकारी कहती है। इतना ही नहीं अपितु ऐसे एक हत्यारे को छोड देने से अभयदान के कारण कई और हत्यारे जन्म लेते हैं। इसीलिए भारत की प्राचीन सस्कृति वैदिक धर्म मे अहिसा का अर्थ छोड देना क्षमा करना या न मारना न होकर न्याय करना लिखा है। जिसे महर्षि दयानन्द ने यथायोग्य व्यवहार की सज्ञा दी है। अत श्रेष्ठ का सत्कार करना जहा धर्म एव अहिसा है। अर्थात न्यायोचित कर्म है वहा दुष्ट को यथायोग्य दण्ड देना भी परमधर्म एव अत्यन्त न्यायोचित कर्म है। यही वास्तविक अहिसाकर्म है। यदि भारत के लोग इस वैदिक अहिसा को समझते और दुष्ट तथा देशद्रोही को मारना परमधर्म अपनाते तो भारत कभी गुलाम न होता। यहा कभी गौए न कटतीं कभी कहीं भी धर्मान्तरण न होता कभी मास और और शराब की मण्डी न सजती और न ही कहीं जुआखाने तथा वेश्यालय ही दिखायी देते।

— उद्‌गीथ साधना स्थली
ग्राम डोहर, पत्रा० फागू
तहसील राजगढ
जिला सिरमौर
हिमाचल प्रदेश — १७३१०१

डॉ० रघुवीर वेदालंकार को जीवनदान

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० रघुवीर वेदालकार दिल्ली मे एक खतरनाक सडक दुर्घटना मे घायल हो गए। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से उन्हे लगभग जीवनदान मिला प्रतीत होता है। समूचे आर्य जगत की ओर से हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उन्हे दीर्घ आयु और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करे जिससे वे पूर्ववत ईश्वरीय कार्यो मे अपना योगदान भली प्रकार दे सके।

डॉ० रघुवीर का जीवन पूरी तरह से पहले भी वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु समर्पित था। इस भयकर दुर्घटना के बाद भी वे हसी खुशी अपने दु खो को झेल रहे है परन्तु भविष्य के लिए कृतसकल्प नजर आते है।

१४ दिसम्बर को डॉ० रघुवीर अपने दोपहिया स्कूटर पर कॉलेज से अपने निवास जा रहे थे। मार्ग मे एक राहगीर की लापरवाही से उसके सिर पर रखी गठरी गिर कर इनके स्कूटर से टकराई। स्कूटर बाई ओर गिरा और डॉ० रघुवीर दाई ओर सडक के बीच। अचानक एक ट्रक टैम्पो पीछे से तेज रफ्तार से आया। डॉ० रघुवीर उसके अगले २ पहियो के बीच मे थे और उस ट्रक के बीच फस कर लगभग १०० कदम घिसटते चले गए। इस खतरनाक घटना मे डॉ० रघुवीर का सारा शरीर लहूलुहान हो गया। कुल्हे की हडडी टूट गई। उनका अब उपचार जयपुर गोल्डन हस्पताल मे चल रहा है।

इस दुर्घटना से लगभग एक सप्ताह पूर्व ही डॉ० रघुवीर से लगभग २ घण्टे से अधिक समय निकाल कर सार्वदेशिक प्रेस मे आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाले इतिहास के प्रसगो पर मैंने विस्तृत विचार विमर्श किया था।

हस्पताल मे उन्हे देखते ही मेरे मुख से यह वाक्य निकला — "ईश्वर की व्यवस्था मे जब कुछ विशेष कार्य किसी आत्मा के लिए शेष होता है तो उस का बाल भी बाका नहीं हो सकता। जाको राखे साईया मार सके न कोए।"

परमपिता परमात्मा ने डॉ० रघुवीर वेदालकार को भी विशेष उद्देश्य से यह जीवनदान दिया है। हम परमपिता परमात्मा के सदैव आभारी हैं और रहेगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी इन्हे देखने हस्पताल गए। परिचित आर्य बन्धुओ का आना जाना हस्पताल मे भी थम नही रहा। आर्य जन अपनी शुभकामनाए डॉ० रघुवीर वेदालकार के निवास के पते — बी० २६६ सरस्वती विहार दिल्ली—३४ पर भेजे।

— विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान

आर्यवीर दल का शिविर सम्पन्न

दयानन्द मठ दीनानगर मे १ नवम्बर २००१ को प्रात ८ बजे वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिह जी दिल्ली एव उनके सहयोगी व्यायामशिक्षक श्री नरेन्द्र जी मित्तल गगापुर सीटी राजस्थान ने "आर्यवीर दल" का शिविर प्रारम्भ किया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी सदानन्द जी सरस्वती ने की। इस शिविर का ध्वजारोहण १०२ वर्षीय पूज्य गुरुदेव सतशिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने कर कमलो से किया। इस शिविर मे दीनानगर की आर्य शिक्षण सस्थाओ के विद्वानो ने अपने अमृत वचनो से आर्य वीरो का मार्गदर्शन किया। इस शिविर मे लाठी भाला तलवार कराटे एव योगासन आदि का सफल प्रशिक्षण दिया गया।

१३ नवम्बर २००१ को इस शिविर का समापन समारोह पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे हुआ। स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्वाद मे आर्यसमाज के छठे नियम का उल्लेख करते हुए कहा कि मनुष्य को सबसे पहले शारीरिक उन्नति करनी चाहिए इससे मनुष्य निर्भय बनता है।

अन्त मे स्वामी सदानन्द जी महाराज ने अपने सम्बोधन मे कहा कि प्रतिदिन आर्यवीर दल की शाखा का सचालन होगा ताकि परम्परा बनी रहे तथा आर्यवीरो का अभ्यास प्रतिदिन चलता रहे। कार्यक्रम के पश्चात स्वामी सदानन्द जी महाराज की सरक्षता मे जिला आर्यवीर दल का गठन हुआ जिसमे जिला सचालक — शास्त्री शेखर चन्द्र जी मन्त्री शास्त्री यतिन्द्रकुमार जी उपमन्त्री शास्त्री बलवीर जी तथा कार्यालयाध्यक्ष शास्त्री रमेश सिह जी शाखा नायक शास्त्री मन्मथ जी आर्य उप शाखा नायक ब्र० सजय कुमार पठानिया शास्त्री द्वितीय वर्ष गुरुदासपुर जिला पजाब के इन सभी अधिकारियो की नियुक्ति की गई।

— रमेश शास्त्री
द०म० दीनानगर (पजाब)

गुजरात प्रांतीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज को प्रशिक्षत व निष्ठावान कार्यकर्ता प्राप्त हों इस उद्देश्य से आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर की परम्परा आरम्भ की गई है। इस वर्ष का शिविर दिनाक ८/११/०१ से २७/११/०१ तक आर्य समाज जूनागढ के सौजन्य से लगाया गया। जिसमें गुजरात की आर्य समाजो से १४० (एक सौ चालीस) आर्यवीरो ने भाग लिया। शिविरार्थियो को सर्वाग सुन्दर व्यायाम आसन प्राणायाम दड बैठक लेझिम तलवार चलाना सैनिक शिक्षा आदि का शारीरिक प्रशिक्षण दिया गया। तदुपरात आर्यसमाज वैदिक धर्म सस्कृति आर्यवीर दल का इतिहास व कार्य आदि का बौद्धिक प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक प्रशिक्षण व्यायाम शिक्षक श्री मुकेश खोखाणी श्री जयतीलाल कोरींगा एव श्री कातिभाई आर्य ने दिया एव बौद्धिक प्रशिक्षण श्री योगेश आर्य श्री गिरीश आर्य एव श्री नवानद आर्य ने दिया। शिविराध्यक्ष श्री डॉ० देवव्रत आचार्य (प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल) थे। उनके नेतृत्व मे जूनागढ की मुख्य बाजारो मे पथ सचलन रखा गया। जो आर्यसमाज जूनागढ के इतिहास मे सर्वप्रथम था।

दीक्षात समारोह जूनागढ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रधान श्री कनुभाई दोमडीया की अध्यक्षता मे आयोजित हुआ। जिसमे आर्य वीरो को पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। इस समय श्री वाचोनिधि आर्य श्री धर्मवीर खन्ना श्री रणजीत परमार आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

शिविर को सफल बनाने मे आर्यसमाज जूनागढ के मत्री श्री कातिभाई किकाणी व श्री प्रविणा बहन आर्या ने अपना योगदान दिया।

कार्यक्रम का सचालन श्री हसमुख परमार (उप सचालक आर्य वीर दल गुजरात) ने किया।

— देवकुमार मत्री
आर्यवीर दल गुजरात

शिक्षा का उद्देश्य संवेदना शक्ति को जाग्रत करना है — लोढा

शिवगज। क्षेत्रीय विधायक सयम लोढा ने सवेदना शक्ति के उदय को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया है। यह बात उन्होने कन्या गुरुकुल के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के समापन समारोह मे कही।

समारोह मे मुख्य अतिथि विधायक लोढा ने मौजूदा शैक्षिक व्यवस्था की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है। लोगो के दु ख दर्द को महसूस करना भी है। शिक्षा सही मायने मे तभी सार्थक होगी जब छात्र छात्राओ मे दूसरो की तकलीफे महसूस करने की शक्ति का पादुर्भाव होगा।

आर्य कन्या गुरुकुल की स्थापना को महिला शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कडी बताते हुए उन्होने विद्यालय मे सचालित शैक्षिक गतिविधिया की मुक्त कठ से प्रशसा की।

समापन समारोह के मुख्य वक्ता एव आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के उप प्रधान रामसिह आर्य ने लोगो से अपने अस्तित्व को पहचानने का आह्वान करते हुए कहा कि वैदिक धर्म से ही विश्व मे शाति सभव है तथा इसकी ओर सभी को प्रवृत्त होना होगा। पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या डा० सुश्री मेधादेवी ने आर्य कन्या गुरुकुल की व्यवस्था की सराहना करते हुए इसे महिला शक्ति उदय का द्योतक बताया तथा बच्चो को वैदिक शिक्षा देने पर जोर दिया। भरतपुर की बहिन सत्यवती ने इस अवसर पर ईशवदना एव मातृशक्ति से जुडी कविताए सुनाकर महिला जागृति का सदेश दिया। प० केशव देव (सुमेरपुर) ने भजनो के माध्यम से लागो को आर्यसमाज की ओर प्रवृत्त होने का सदेश दिया।

पथरगामा मे महर्षि दयानन्द गुरुकुल की स्थापना

पथरगामा (गोडडा) ब्रह्मचर्य को शिक्षा प्राप्ति का अनिवार्य अग बनाते हुए वेद और सस्कृत की शिक्षा देने के लिए पथरगामा मे महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल की स्थापना की गयी जिसकी प्रबध समिति के मुख्य सरक्षक आचार्य हरिदेव जी तथा अध्यक्ष ब्रजकिशोर टेकरीवाल (गटू बाबू) बनाये गये विद्यालय की स्थापना हेतु आयोजित बैठक को सबोधित करते हुए आचार्य हरिदेव ने कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ही भारत तथा अन्य देशो की समस्या का समाधान करने मे सक्षम हो पाएगी उन्होने कहा कि इस विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य ब्रह्मचर्य को शिक्षा का आधार बनाकर भारतीय सस्कृति को सशक्त बनाना है। समिति के उपाध्यक्ष गोबर्द्धन प्रसाद ने कहा कि इस विद्यालय मे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को अगीकार करते हुए वैदिक और भारतीय सस्कृति के विभिन्न आयामो की शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाएगा। बच्चो को छात्रवृति देने तथा सरल जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देना भी स्कूल का लक्ष्य है। समिति के सचिव उमेश प्रसाद तथा सयुक्त सचिव शिवनारायण आर्य को बनाया गया है। डा० अशोक कुमार को समिति मे कोषाध्यक्ष बनाया गया। विद्यालय के निर्माण हेतु जगन्नाथ साह ने अपनी जमीन देने की घोषणा की श्री साह ने बताया कि शिक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि गुरु शिष्य म पिता पुत्र का सम्बन्ध हो। उन्होने कहा कि बालको के चरित्र का निर्माण करने की आज आवश्यकता है।

पाचो स्वर्ण पदक प्रभात आश्रम की झोली मे

२६ नवम्बर से २९ नवम्बर तक उदयपुर राजस्थान मे आयोजित २२वी कनिष्ठ वर्गीय अखिल भारतीय तीरन्दाजी प्रतियोगिता मे उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए गुरुकुल प्रभाताश्रम के ब्रह्मचारी कपिल ने पाचो स्वर्णपदक जीत कर उत्तर प्रदेश की झोली मे डाल दिये। ब्रह्मचारी कपिल ने ३० ४० ५० मी० और सम्पूर्ण योग मे चार स्वर्ण पदक जीते। दलीय प्रतियोगिता मे भी ब्रह्मचारी कपिल मुकेश और त्रिलोचन ने स्वर्ण पदक जीतकर पूर्व वर्ष २००० मे आश्रम के ही राजकुमार द्वारा स्थापित वर्चस्व को सुरक्षित रखा।

जहा गुरुकुल प्रभाताश्रम के इन ब्रह्मचारियो ने राष्ट्रीय स्तर पर पाच स्वर्णपदक जीते वही १० से १५ दिसम्बर तक हागकाग मे आयोजित एशिया कप मे गुरुकुल प्रभाताश्रम के तीन ब्रह्मचारी सत्यदेव कैलाश और राजकुमार भारत का प्रतिनिधित्व करने जा रहे हैं।

— तीरन्दाजी प्रशिक्षक गुरुकुल प्रभाताश्रम

गुरुकुल आश्रम आमसेना (नवापारा) मे प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

आमसेना। विगत २६ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक गुरुकुल आश्रम आमसेना मे विशाल आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे २५० से अधिक आर्यवीरो ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर नई प्रेरणा प्राप्त की। पूज्यपाद श्री स्वामी धर्मानन्द जी के आशीर्वाद से यह सप्त दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर मे आर्यवीरो को लाठी भाला कराटे दण्ड बैठक चाकू योगासन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसी बीच १ नवम्बर को खरियार रोड नगर मे भव्य शोभायात्रा (रैली) निकाली गई। शराब एव मास अडो के विरुद्ध नारे भी लगाये गए। खरियार रोड नगरवासियो ने मिष्ठान जलपान आदि से शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया।

उक्त शिविर मे प० विशिकेसन जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सभी आर्यवीरो ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर जीवन को शुद्ध पवित्र रखने का सकल्प लिया। शिविर के सारे व्यय की व्यवस्था श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा से गुरुकुल आश्रम आमसेना में की गयी।

३ नवम्बर को शिविर समापन उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जिसमे मुख्यातिथि नुआपाडा जिलापाल श्री सुदर्शन नायक कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थानीय विधायक बसतकुमार जी पडा एव मुख्यवक्ता श्री राजुभाई धोलकिया थे। आर्यवीरो ने इस शुभावसर पर शारीरिक प्रदर्शन भी किया और अपने गाव मे शाखा निरन्तर चलाने का भी सकल्प लिया। मच का सचालन ब्र० सुदर्शन देव जी नैष्ठिक ने बडी तन्मयता के साथ किया।

— आनन्द कुमार शास्त्री (मत्री)
प्रान्तीय आर्यवीर दल (उडीसा)

योग शिविर एव वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सहर्षोल्लास आर्यसमाज सेक्टर १९ राउरकेला ओडिशा का ३७वा वार्षिकोत्सव दिनाक १२ १३ १४ नवम्बर २००१ को मनाया गया। इससे पूर्व एक त्रयोदश दिवसीय योग प्रिशक्षण शिविर उत्कल वेद प्रचार समिति के सचालक पूजय स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती के प्रत्यक्ष तत्वावधान मे सम्पन्न हुआ।

— आर्यसमाज सेक्टर १९ राउरकेला—५

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० 11049/2001 सार्वदेशिक साप्ताहिक 30 12 2001 बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न0 U(C) 93/2001
R N No 626/57 Licensed to Post Pre payment Licence No U (C) 93/2001 in NDPSo on 27/28 12 2001

आर्यसमाज समग्र जन जागरण का एक सतत अभियान

- मदन लाल खुराना

आर्यसमाज बिडला लाईन्स का ६६वे वार्षिक उत्सव का समापन समारोह रविवार २ दिसम्बर २००१ मे मुख्य अतिथि के रू। मे पधारे हुए श्रीयुत मदन लाल खुराना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा ने आर्यसमाज के मच से बोलते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द के द्वारा स्थापित आर्यसमाज एक धार्मिक सस्था तो है ही इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय समग्र जन जागरण का एक सतत अभियान है। इस समाज की उपलब्धि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए विगत १२५ वर्षो से निरन्तर होती आ रही है। हम सबको महर्षि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलकर देश एव समाज के लिए समर्पित भाव से अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना चाहिए।

साप्ताहिक वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति पर आचार्या डॉ० अन्नपूर्णा जी ने कहा कि वेद एव यज्ञ भारतीय सस्कृति के मूल आधार स्तम्भ है समापन समारोह मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा डॉ० वेद प्रकाश गुप्ता कुलपति द्रोण स्थली देहरादून प्रमुख उद्योगपति श्री श्याम सुन्दर गुप्त श्री गिरधारी लाल अरोडा अध्यक्ष भाजपा कमला नगर मण्डल दिल्ली पुरोहित सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमपाल शास्त्री आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य एवम डॉ० प्रेमपाल शास्त्री आर्यसमाज यमुना विहार के पुरोहित तथा प्रधान जयकृष्ण आर्य मन्त्री योगेश कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार आर्य श्रीमती डॉ० सरोज दीक्षा हसराज काले एवम स्त्री आर्यसमाज बिडला लाइन्स की प्रधाना स्वर्ण गुप्ता एव मन्त्राणि श्रीमती सुषमा एवम आर्यसमाज बिडला लाईन्स के सभी गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानन्द युग-युगान्तर तक प्रेरणास्त्रोत

आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के तत्वावधान मे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का ७५वा बलिदान दिवस श्री गोविन्दराम शास्त्री के निवास स्थान ४६८ नन्द नगरी दिल्ली मे मनाया गया जिसमे सर्वप्रथम यज्ञ किया गया और श्री शास्त्री जी यज्ञमान बने। इसमे समाज के सभासदो मातृशक्ति देवियो एव बच्चो न भाग लिया। यज्ञोपरान्त अम्बाला हरियाणा से पधारे वैदिक धर्मनिष्ठ माननीय श्री आत्माराम जी की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमे सर्वश्री मोहनलाल जिज्ञासु गोविन्दराम शास्त्री धर्मसिह शास्त्री खुशीराम शर्मा आदि वक्ता थे। समाज प्रधान श्री धर्मसिह शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द के श्रद्धारूपी सस्मरणो का वर्णन करते हुए कहा कि गुरुकुल के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करते हुए सर्वमेघ यज्ञ मे अन्तिम आहुति देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का त्याग व बलिदान युगो युगो तक हमे प्रेरणा देता रहेगा। अध्यक्षीय भाषण मे अध्यक्ष ने अपने शब्दो में कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदानुकूल निराकार ईश्वर के प्रचार प्रसार मे व्यस्त थे जिसमें अन्धविश्वास सामाजिक कुरीतिया आदि सम्मिलित थीं। सत्यधर्म की स्थापना के लिए समाज सुधार स्वामी श्रद्धानन्द के लिए एक राष्ट्रीय जागरण बना और आर्य जगत को इस राष्ट्रीय जागरण को सजोए रखना चाहिए।

इसके उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध समाजसवी एव उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मुजाल की ५५ वर्षीय सुपुत्री श्रीमती सुषमा चोपडा धर्मपत्नी श्री जितेन्द्र चोपडा के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया। सवेदनाए व्यक्त करते हुए चार मिनट का मौन रखा गया जिसमे ईश्वर से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्माओ को शान्ति एव सद्गति प्राप्त हो।

– हीरा सिह मन्त्री

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आर्य सम्मेलन

शानिवार १५ दिसम्बर २००१ को श्रीमद् दयानन्द वेद महाविद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली मे सायकाल ४ ०० बजे से ६ ३० बजे तक आर्य सम्मेलन समारोह पूर्वक मनाया गया। इस सम्मेलन मे दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजो ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री कृष्ण लाल जी सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा ने की तथा इसके सयोजक श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता जी थे। इस सम्मेलन मे उच्च कोटि के विद्वान और आर्य नेता सम्मिलित हुए। प्रमुख वक्ता श्री वेदव्रत शर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री रामनाथ सहगल स्वामी इन्द्रवेश जी सरस्वती प्रोफेसर धर्मवीर जी अजमेर वाले प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री विजय गुप्ता आदि थे और श्री सत्यपाल पथिक और श्री ओमप्रकाश वर्मा के प्रभावशाली भजन हुए और अन्त मे स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती महाराज ने आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम को सफल करने मे वेद महाविद्यालय के आचार्य श्री हरिदेव जी ने पूर्ण सहयोग दिया।

– रोशन लाल गुप्त
महामन्त्री

अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें।

दयानन्द की दिव्य ज्योति

दयानन्द की दिव्य ज्योति का घर-घर पुण्य प्रकाश छा गया।
स्मित सी मुस्कान लिए वह दीपरूप मे स्वय आ गया।।
वेद ज्ञान का अवनि गगन मे पावनतम आलोक अमर हो।
यज्ञाग्नि की दिव्य अर्चियो की दाहकता और प्रखर हो।।
यज्ञ कर्म जो कहा श्रेष्ठतम जन-जन के मन में समा गया। स्मित सी
छाई थी चहु ओर धरा पर धर्म रूप मे घोर मूढता।
थक कर टूट चुका मानव पाखण्डो मे पुण्य ढूढता।।
– तर्क तीर देकर मानव को पाखण्डो के किले ढा गया – स्मित सी
सद विद्या ऋत ज्ञान सभी को देकर वह ऋषि राज कहाया।
वेद वागमय भारतीयता का हर एक आवरण हटाया।।
– अन्धकार अज्ञान आदि का आखों से परदा उठा गया – स्मित सी
मानवता के सभी सद् गुणो का उसमे अन्तिम विकास था।
हर क्रिया आदर्श आचरण शब्द मात्र उसका प्रकाश था।।
– रणभेरी और आर्त्तनाद में मानवता का गीत गा गया – स्मित सी०
सदियो से निर्भय होकर पाखण्ड देश और घर उजाडता।
ऋषि के सम्मुख दुर्विनीत सा नत-शिर हो पीछे दहाडता।।
– यह दानव मरता विवेक से ऋषि 'गुण ग्राहक' को सिखा गया
– स्मित सी मुस्कान लिए वह

– रामनिवास गुण ग्राहक पुरोहित आर्यसमाज श्रीगगानगर (राज०) ३३५००१

गुरुकुल प्रभात आश्रम मे वैदिक शोध सगोष्ठी एव वार्षिकोत्सव का आयोजन

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला-मेरठ का ३०वा वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष १४ जनवरी को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का वृहदायोजन किया जा रहा है। महायज्ञ की पूर्णाहुति १४ जनवरी को की जाएगी। देश के सुदूर भागों से आर्य-जगत् के अनेक मूर्धन्य व्याख्याता व भजनोपदेशक वार्षिकोत्सव मे आनेवाली जनता के मार्गदर्शन करने हेतु उपस्थित होकर अपना अमूल्य समय प्रदान कर रहे है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के विविध आकर्षक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएगे।

इसी उपलक्ष्य में वार्षिकोत्सव से एक दिन पूर्व अर्थात १३ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान के तत्वावधान मे वैदिक शोध सगोष्ठी का आयोजन हो रहा है। शोध-सगोष्ठी का विषय – 'वेदार्थ प्रक्रिया एव श्रौतसूत्र' रहेगा।

अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर धर्म लाभ उठाये एव पुण्य के भागी ब[illegible]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सार्वदेशिक प्रेस द्वारा १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-२ (फोन ३२७०५०७ ३२७४२[illegible] फैक्स ३२७०५०७ से मुद्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ से प्रकाशित (फोन ३२७४७७१ ३२६०६८[illegible]
सम्पादक वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री। ई-मेल नम्बर vedicgod@nda.vsnl.net.in तथा वेबसाईट – http://www.whereisgod.co[illegible]